पृष्ठ ५११६ से ५६०२ (स)
१ से २३४ (ह)

(स एव ह)

शब्द संख्या ३१२२५

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]
(तृतीय जिल्द)

सपादक
(सपादन, परिवर्द्धन एव संशोधनकर्ता)
मनीषी, साहित्य भूषण, डॉ० सीताराम लाळस डी. लिट्. (मानद)

व्युत्पति आदि द्वारा परिष्कारक
स्व० पं० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच
[आशुकवि, कविभूषण, व्याकरण, साहित्य, कोपादि तीर्थ
श्रीरामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता
डॉ० सीताराम लाळस डी लिट् (मानद)
स्व० उदयराज उजळ

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर

❁ श्रद्धांजलि ❁
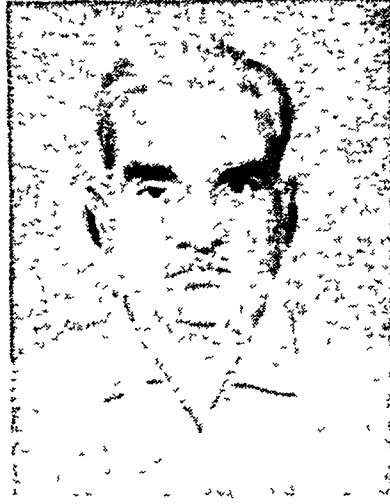
ठा० गोरधनसिंहजी मेड़तिया (खानपुर) *आई ए एस.* !

जन्म वि० सं० १९६६ चैत्र शुक्ल सप्तमी रविवार

निधन · वि० स० २०३४ भाद्रपद शुक्ल ६ रविवार

दोहा

मित्र मनोरथ पूरणा. कवि जपै जग जीह,

इक तो गोरधन धारणा, दुजा गोरधन सीह ।

—सीताराम लालस

—: दूहा :—

सांई तूं वडा धणी, तूझ न वडा कोय।
तूं जिन्नां सिर हत्थ दे, से जग वडा होय॥
सांई सूं सब कुछ हुवै, बंदा सूं कुछ नांहि।
राई सूं परबत हुवै, परबत राई मांहि॥

—महात्मा ईसरदास

प्रधान मंत्री भवन
नई दिल्ली

सन्देश

शब्द संस्कृति के परिचायक होते हैं। व्यक्ति और समाज के विकास की प्रक्रिया में शब्द बनते हैं और प्रयोग की कसौटी पर उनकी परख होती है। 'शब्द कोष' में सांस्कृतिक इतिहास का स्पन्दन सुनाई देता है और उसकी अनुभूतियों का आभास मिलता है। इस दृष्टि से डा० सीताराम लाल्स का राजस्थानी सबद कोस एक अपूर्व एवं अत्यन्त उपयोगी सांस्कृतिक उपलब्धि है। इस सबद कोस में न केवल संख्या की दृष्टि से विपुल शब्द भंडार है बल्कि उसमें व्युत्पत्ति, उदाहरण एवं अर्थवैविध्य की व्याख्या का भी समावेश हुआ है।

'सबद कोस' डा० लाल्स के अध्यवसाय और निष्ठा तथा साधना का फल है। मैं साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में डा० लाल्स की लगन और तपस्या की सराहना करता हूं और आशा करता हूं कि हमारे देश की नई पीढ़ी उनके कृतित्व से प्रेरणा प्राप्त करेगा।

'सबद कोस' के लिए एवं डा० लाल्स के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(मोरारजी देसाई)

नई दिल्ली,
अक्तूबर २२, १९७८

प्रधान मंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई, कोशकर्त्ता व संपादक डॉ० सीताराम लाळस, डॉ० लक्ष्मीमल्लजी सिंघवी के साथ "राजस्थानी सबद कोस" का अवलोकन करते हुए।
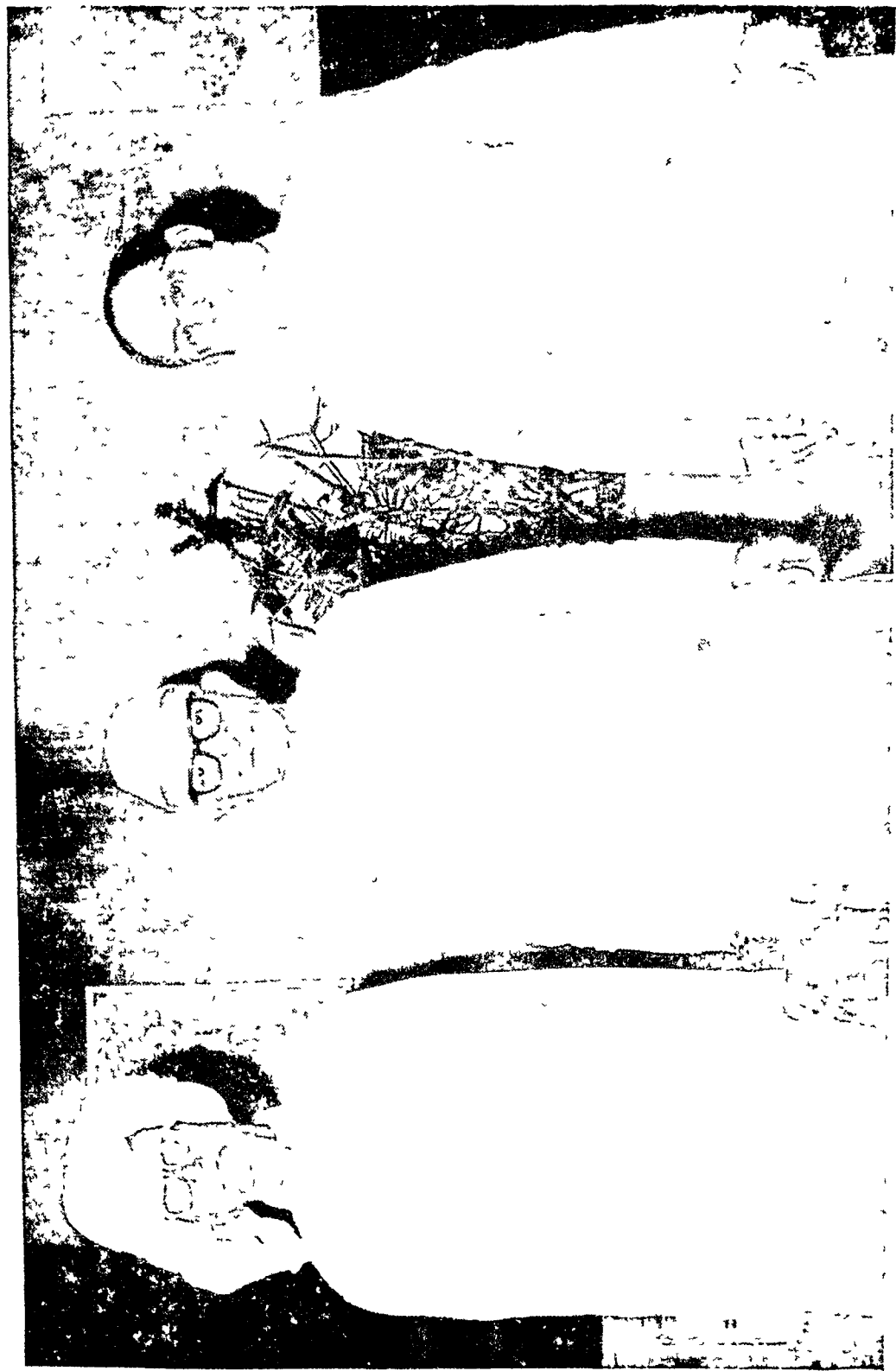
कोशकर्त्ता व संपादक डॉ० सीताराम लाळस, प्रधान मंत्री श्री मोरारजी भाई देसाई व डॉ० लक्ष्मीमल्लजी सिंघवी

दिनांक दिसम्बर ५, १६७८

राजस्थान के वयोवृद्ध विद्वान श्री सीताराम लालस द्वारा ६ जिल्दों में लिखे हुए राजस्थानी कोश को मैं ने देखा। मुझे इस बात से अत्यन्त हर्ष तथा आश्चर्य हुआ कि इस विद्वान ने गरीबी की परिस्थितियों में भी अपने परिश्रम और लगन से कितना बड़ा काम सम्पादित किया।

श्री लालस प्रचार के कृत्रिम प्रकाश से दूर रहने वाले कर्मठ साहित्यकार हैं। इन्होंने जो कोश तैयार किया है वह राजस्थानी भाषा और साहित्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है ही। हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए भी यह एक बहुत उपयोगी सन्दर्भ-ग्रन्थ है।

मैं चाहता हूं कि राजस्थान और भारत के विद्वान लोग इस कोश को देखें। राजस्थानी में और हिन्दी में इस प्रकार के महत्वपूर्ण सन्दर्भ ग्रन्थों की कमी है। मुझे दृढ़ विश्वास है कि श्री लालस का यह परिश्रम विद्वानों द्वारा मान्य और प्रशंसित होगा।

(रघुकुल तिलक)

राज्यपाल रघुकुल तिलक को कोश कर्त्ता : डॉ० सीताराम लाळस राजस्थानी सबद कोस भेंट कर रहे है।
पास में प. विष्णुदत्त शर्मा, अध्यक्ष राजस्थानी साहित्य एकेडेमी, खड़े है।

डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, श्री प्रताप चंद्र चंदर, शिक्षा मंत्री (भारत) एवम् डॉ० सीताराम लालस

493/C M O G/79

मुख्य मन्त्री, राजस्थान
जयपुर
Chief Minister of Rajasthan
JAIPUR
9 फरवरी, 1979

प्रिय श्री लालस,

आपका पत्र प्राप्त हुआ। आपने राजस्थानी शब्द कोष को पूरा कर लिया है, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। शब्द कोष के बारे मे जो जानकारी आपने मुझे भेजी है उसके आधार पर मै कह सकता हूँ कि आपने राजस्थानी साहित्य को एक सुदृढ आधार देने का ऐतिहासिक कार्य किया है। आपने न केवल इस प्रदेश के विभिन्न अचलो मे फैले हुए शब्दो को ढूँढा है बल्कि उनके अर्थ और वैज्ञानिक व्याख्या के साथ उनके प्रयोगो को जिस प्रकार सकलित किया है उसने सचमुच मे इस कोष को राजस्थानी जन-जीवन के विश्व कोष के रूप मे प्रतिष्ठित कर दिया है।

मै आशा करता हूँ कि आपकी अनवरत तपस्या और सतत् साधना ने राजस्थानी साहित्य के निर्माण और आधुनिकरण की दिशा मे एक बुनियादी आधार खडा किया है और मुझे विश्वास है कि भविष्य मे इसी आधार पर राजस्थानी भाषा का भवन खडा होगा। आपका यह प्रयत्न सचमुच मे सराहनीय है और इसके माध्यम से न केवल राजस्थानी साहित्य की श्रीवृद्धि होगी बल्कि इससे हिन्दी भाषा के विकास मे भी महत्त्वपूर्ण योगदान मिलेगा। मै आपकी कठोर तपस्या और साधना के प्रतिफल के रूप मे प्राप्त इस सफलता के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आपका यह योगदान राजस्थानी साहित्य और सस्कृति के लिए न केवल सजीवनी प्रदान करेगा बल्कि इस क्षेत्र मे सदियो से व्याप्त अधकार को दूर कर एक नई आभा और एक नये प्राण का सचार करेगा। मै आपको इस महत्वपूर्ण उपलब्धी के लिए पुन बधाई देता हूँ।

आपने मुझसे मिलने के लिए समय चाहा है। मार्च मे बजट सत्र के दौरान मै अधिकाशत जयपुर मे ही रहूँगा, आप जानकारी करके अवश्य पधारे मै आपका स्वागत करूँगा।

आपका,

(भैरोसिंह शेखावत)

❀ उप समिति राजस्थानी शब्द कोश की ओर से ❀

इस वृहत राजस्थानी शब्द कोश का अन्तिम खण्ड साहित्य-समाज के सम्मुख रखते हुए हमे अपार हर्ष का अनुभव होता है। एक लम्बी साधना के पश्चात् इस ग्रन्थ रत्न के सभी भाग प्रकाश मे आने से हमारे साहित्य की एक बहुत बडी कमी की जहाँ पूर्ति हुई है वहाँ चौपासनी शिक्षा समिति के संकल्प को पूर्ण सफलता प्रदान करने मे कोश के लिये निर्मित इस उप समिति की सेवाएँ भी सार्थक हुई है।

इस भाग मे 'स' और 'ह' दोनो ही अक्षर एक जिल्द मे समाहित कर दिये गये है। इसका मुख्य कारण 'ह' अक्षर की पृष्ठ संख्या का अति सीमित होना ही है। समिति ने यही उचित समझा कि कोश क्रय करने वालो पर एक अतिरिक्त जिल्द बँधाई का व्यय मूल्य निर्धारण मे न पडे।

इस खण्ड के प्रकाशन मे भी भारत सरकार और राज्य सरकार से हमे जो आर्थिक सहायता उपलब्ध हुई है उसके लिये हम उन सभी सज्जनो का भी आभार प्रकट करते है जिन्होने राष्ट्रीय महत्व के इस कार्य मे हमारी विभिन्न प्रकार से सहायता की है। कोश की उप समिति के मन्त्री श्री नारायणसिहजी माणकलाव ने जिस तत्परता और सूझबूझ से कार्य को गति देने मे हमारी सहायता की है उसके लिए उन्हे अनेक धन्यवाद देते है। साथ ही हमारे वयोवृद्ध मनीषी डॉ० सीतारामजी लालस के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते है कि उन्होने अपनी अपूर्व साधना के फलस्वरूप हमारे समाज की अविस्मरणीय सेवा की है, भगवान उन्हे दीर्घायु करे।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी
२५ अगस्त, १९७८

महाराजा प्रह्लादसिंह
अध्यक्ष
उप समिति राजस्थानी शब्द कोश
जोधपुर

इस अवसर पर कोश कार्यालय मे समय-समय पर कार्यरत उन सभी कर्मचारियो को भी मैं उनकी कर्त्तव्यनिष्ठता और सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

यहाँ कोश के मुद्रण व प्रकाशन मे सहयोग देने वाले साधना प्रेस के मालिक हरिप्रसादजी पारीक और सुमेर प्रेस के मैनेजर रामदत्तजी थानवी साहिब को भी नही भुलाया जा सकता जिन्होंने इस विशिष्ट कार्य मे अपना पूरा सहयोग दिया।

इतने बडे राष्ट्रीय महत्त्व के कार्य मे बहुत बडी राशि का खर्च होना स्वाभाविक ही है। चौपासनी शिक्षा समिति जहां अपने साधनो से यह कार्य करने मे यथाशक्य सक्रिय रही है, वहां इस मामले मे अपने आपको बडी भाग्यशाली मानती है कि राजस्थान राज्य सरकार और भारत सरकार दोनो ने ही इस कार्य के लिए समुचित अनुदान की राशि समय-समय पर प्रदान कर हमारे इस कार्य को सुगम बनाया। एतदर्थ हम दोनो ही सरकारो के प्रति विशेष कृतज्ञता ज्ञापित करते है।

इस कोश यज्ञ की पूर्णाहुति पर शिक्षा समिति के समस्त सदस्य और शुभचिंतक तथा योगदान देने वाले सज्जन साधुवादार्ह हैं पर सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य तो यह है कि इस कोश के निर्माता डॉ० सीताराम जी लाळस की सम्पूर्ण जीवन-आराधना का प्रतिफल मातृभाषा के लिए अमृत-घट की तरह निकल कर बाहर आ गया है अतः उनके असीम आनन्द की थाह लेना जितना कठिन है उतना ही कठिन है शब्दों मे उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना। शिक्षा समिति ही क्या, भविष्य मे मे आने वाली विद्वानों की पीढियां और साहित्य प्रेमी इनके चिर कृतज्ञ रहेंगे।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
२५ अगस्त, १९७८

डॉ० गोविन्दसिंह
मन्त्री
चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर

।। श्री ।।

❀ निवेदन ❀

—: दूहा सोरठा :—

नारायण भूले नही, अपणी माया, ईश ।	रोग पैल ओखद रचै, जगवाळा जगदीश ।।१।।
साच न बूढो होय, साच अमर ससार मे ।	कैतो धोवो कोय, ओ सेवट प्रकटे 'उदय' ।।२।।
सेवा देश समाज, धरती मे साचो धरम ।	इण सू पूरै आस सकल मनोरथ सावरो ।।३।।
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री ।	आवे इण एवाह ईशर किरपा स उदय ।।४।।
खत ऊजळा सदेश, उदयराज ऊजल अखै ।	दीपै वारा देश, ज्यारा साहित जगमगै ।।५।।

भारत ससद मे सन् १६५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भसावा मानी गई उणा रे सामल राजस्थानी षा ने नही मानी तो कुदरतो तौर सू राजस्थान मे अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन ो मे शुरु हुवो ।

राजस्थानी रै विरोध मे अक्सर आ वात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नही हो । ओ घाटो टावण सारु म्है सीतारामजी लालस ने कयो क्योकि हूँ जाणतो हो के डिगल रा सग्रह रो उण ने काफी अनुभव । श्री सीताराम जी इण काम सारु तैयार हो गया ने म्हे दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सू मैनत सू कोश रो काम ह कियो ने इण मे खर्च री मदत री जरुरत हुई तो उण बाबत म्है स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहव वार एटला करण ने अरज की । इणा कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सू रुपीया री मदत देणी चालू कर दीवी । तारामजी मथाणिया मे लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दीयो और म्है दोनु ारीख १-५-५१ सूं सन् १६५२ रा आखिर तक सामिल काम कियो जिण सू कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपिया मे खीजीया फेर समय रा हेरफेर सू श्री पोकरण ठाकुर साहव री सहायता वद हो गई, इण सू सन् १६५३ लगायत न् १६५६ तक ४ साल तक कोश रो काम वद रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हा दोनू री लगन ही । म्है करनल श्री स्यामसिहजी रोडला ने जून सन् १६५६ मे ोश मे सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जवाब उणां तारीख २६-६-५६ रा कागद मे म्हने लिखियो के कोश ारु मावार रु ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकू ला । परन्तु उणारा पिता करनल श्री नोपसिहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे मे देरी हुई । उणा रे स्वर्गवास होणे रे बाद मे नवम्बर रा न्त मे ने दिसम्बर रा शुरू मे जोधपुर मे ही जद कर्नल श्री सामसिहजी कोश री मदत बावत बातचीत करणने दोयवार हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणा री सहायता सू सन् १६५७ री जनवरी सू सीतारामजी जोधपुर मे चालू कर दियो क्यू कि जद णा रो तबादलो जोधपुर मे हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दो की स्लिप कोपिया पेली बणी हुई ही । णतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणा अक्षरवार रजिस्टर मे लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १६५८ री माह ई तक पूरो हो गयो । म्है पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोश रनल श्री सामसिहजी री रुपीया री सहायता सू पूरो हुवो ।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिहजी मेडतिया ानपुर वाला श्री झालावाड दरवार सू श्री नीवाज ठाकुर साहव सू रुपिया री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो बन्ध राजस्थानी सोध सस्थान चोपासनी जोधपुर सू हुवो ने तारीख ११-३-५६ ने सीतारामजी ने इण सोध सस्थान शिक्षा वभाग सू लोन पर ले लिया जद सू वे इण सस्थान मे काम करण लागा ।

इण कोश ने तैयार करावण मे व्युत्पति विभाग पूरो करावण मे स्वर्गीय प० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर री णी मतद ही इण वास्ते वैकूठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवा हा । तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो —

चांद बावड़ी

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यंत्रो (मेकेनिकल) के बल सचालित हुवा है।, मैंने इसे देखा, इन्होने प्रत्येक शब्द और धातु को जाचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगो को प्रदर्शित किया है क्योकि इन्होने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श विविध भाषाओ के बल पर यह कार्यभार उठाया है। बीच-बीच मे हर समय मेरे साथ विचार-विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने मे श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश को त्रुटी की पूर्ती से सतुष्ठ होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान काय की प्रशसा करेगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एम० एलन जो ससार री करीब चालीस भाषाओ रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान सबन्धी जाच वो शोध रो काम सारू सन् १९५२ मे राजस्थान आया हा ने जोधपुर मे दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले मे म्हारे कने घणा आता उणाने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणा म्हारो उत्साह बधायो उणा री सम्मति नीचे मुजब है —

Thinity College Cambridge **26 Feb, 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca-bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguisbed Sponsors I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani Language can no Longer be denied

Sd W S Allen M A, P H. D

Professor Comprative Philology
in the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सू शुरू होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियौ ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इण मे दोनू सरदारा रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रो में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोम मरू बाणरो सुणो वण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे वडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पथ घन छोड लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे ससार मे, सुजसफल लगावे घणो सरसे । मिले सुखलाघ हितकर चित समाजा, दिनो दिन किता सनमान दरसै ॥३॥
पाण भरू बान है प्रात रो परपर, वेण परताप राजस्थान ऊचो । रखी नह पढण मे भावखा प्रात री, निरखता जाय है प्रांत नीचो ॥४॥
वणाई चारणो व्याकरण विधोवित्र, वणेगो कोश ही लाखसवदो । 'सीत'रो परिश्रम अथग फलियो सिरे, रेटियो'उदय' मिल सकल सवदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कियो । पडता लाच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले कांम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधी । वार विपरीति मे हजारो खरचवै, दाद उजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणो दोय मिल व्याकरण कोश रचि, वण्या नह वडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह बीस मिलियो॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण ने बनाया वंस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योही उदीयापुर रान के कोष वल घर के।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोष हित कोष बने दानी धन घर के।
प्रात की प्रवल भाषा प्रतिष्ठत परम्परा विवुधन दीनमाल वीरपद वाला हे।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूँ मे रही नही होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित विदाजा है।
जीवित उट्ठेगी प्रीय राजस्थानी आशमात्र, व्याकरण कोश याके बनेगे जिशाला है।

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. ह० उदयराज उज्जवल
Sd. Nami Chand Jain
Civil Judge, Jodhpur

—— भूमिका ——

लेखक डॉ० हीरालाल माहेश्वरी,
एम ए , एल्-एल् बी , डी.फिल् , डी.-लिट्
प्राध्यापक, हिन्दी-विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

राजस्थानी-हिन्दी के वृहत् कोश—'राजस्थानी सवद कोस,' जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की इस अन्तिम जिल्द मे भूमिका लिखना मानो सूर्य को दीपक दिखाना है। अद्यावधि प्रकाशित आधुनिक भारतीय भाषाओ के कोशो मे सामान्यतः और नागरी अक्षरो मे प्रकाशित कोशो मे विशेषत इस कोश का अन्यतम स्थान है, यह नि सकोच कहा जा सकता है।

साधारण पाठक को भी सरसरी तौर से देखने पर इसके महत्त्व का पता चल जाता है, तथापि श्री सीतारामजी लाळस का स्नेहानुरोध है कि मैं इस सम्बन्ध मे कुछ लिखूं। सो, इसका अधिकारी न होते हुए भी, इस भाषा और साहित्य के एक विद्यार्थी के नाते अपनी कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप ये पक्तियाँ लिख रहा हूँ। श्री सीतारामजी लाळस की सतत दीर्घ साधना के साकार रूप इस कोश के महत्त्व-दिग्दर्शन के लिए राजस्थानी भाषा और साहित्य पर दो शब्द कहने आवश्यक है।

राजस्थानी साहित्य अत्यन्त समृद्ध और विशाल है। इसकी अधिकाश महत्त्वपूर्ण रचनाएँ अभी तक हस्तलिखित प्रतियो के रूप मे ही प्राप्त है। इन रचनाओ की प्राप्ति और अध्ययन अत्यन्त श्रमसाध्य है। अनेक पण्डितो के प्रयासो के फलस्वरूप कुछ रचनाएँ पुस्तक रूप मे सामने आई है और अनेक छोटी-छोटी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से प्रकाश मे आई और आ रही है। साधनो के अभाव मे आधुनिक लेखको की बहुत सी कृतियाँ भी प्रकाशित नही हो पा रही हैं। जो रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है, उनकी प्राप्ति मे भी काफी प्रयास करने पडते है। कुल मिलाकर स्थिति सतोषजनक नही है। एक सर्वांगपूर्ण मानक शब्द कोश के लिए उस भाषा की सभी महत्त्वपूर्ण कृतियो का सुसम्पादित रूप मे प्रकाशित होना आवश्यक है। राजस्थानी के लिए यह बात अल्पाश मे ही सत्य है। श्री सीतारामजी को कोश के शब्द चयन मे कतिपय हस्तलिखित ग्रन्थो के अतिरिक्त अधिकतर ऐसी पुस्तको पर निर्भर रहना पडा है। शब्द-चयन और रूप मे इसी अनुपात से कोश की काया का निर्माण हुआ है। शब्द के अर्थ, उसके प्रयोग, व्याकरणिक परिचय, रूप-भेद, तत्सम्बन्धी मुहावरो और कहावतो तथा सम्बन्धित टिप्पणियाँ कर्ता की हे जो इस विषय मे उसके गहन पाण्डित्य की द्योतक है।

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओ के विकास-क्रम मे राजस्थानी का सम्बन्ध शौरसेनी प्राकृत से है। शौरसेनी प्राकृत से शौरसेनी अपभ्र श और गुर्जर या गौर्जरी अपभ्रंश का विकास हुआ है। शौरसेनी अपभ्र श का क्षेत्र मुख्यत मथुरा-मण्डल तथा उसके आसपास का प्रदेश था। गुर्जर अपभ्र श का क्षेत्र गुर्जर-प्रदेश था जिसके अन्तर्गत वर्तमान राजस्थान, गुजरात तथा पजाब, सिन्ध और मध्यप्रदेश के कुछ क्षेत्र सम्मिलित है। प्राप्त अपभ्रंश साहित्य के आधार पर अपभ्र श को पूर्वी, पश्चिमी और उत्तरी रूपो मे विभाजित किया जा सकता है। यहाँ यह भी लक्ष्यनीय हे कि किसी समय अपभ्र श पूरे उत्तर भारत मे साहित्यिक भाषा की मर्यादा ग्रहण कर चुकी थी। उसका एक ऐसा सामान्य रूप था जिसका मूलाधार पश्चिमी अपभ्र श था। पुन , प्राप्त अपभ्र श साहित्य का बहुलाश पश्चिमी अपभ्र श मे है। इस पश्चिमी अपभ्र श अथवा गुर्जरी अपभ्र श की अनेक विशेषताएँ पुरानी राजस्थानी मे पाई जाती है।

विक्रम सवत् 1100 के लगभग गुर्जरी अपभ्रंश से जिस भाषा का विकास हुआ उसके कई नाम दिये गए हैं, यथा—मरु-गुर्जर, पुरानी पश्चिमी राजस्थानी, मरु-सोरठ, जूनी गुजराती, पुरानी राजस्थानी आदि। इनमे मरु-गुर्जर नाम सर्वाधिक सगत लगता है जिससे गुजरात और मरु प्रदेश—दोनो की भाषाओ का बोध होता हे। अपने उद्भव-काल से लेकर लगभग सवत् 1500 तक गुजराती और राजस्थानी एक ही थी। भाषिक दृष्टि से दोनो का इतिहास इसके पश्चात् पृथक्-पृथक् होता है।

मरु-गुर्जर या पुरानी राजस्थानी के उद्भव-काल—सवत् 1100 से लेकर वर्तमान समय तक राजस्थानी मे विभिन्न शैलियो मे प्रभूत परिमाण मे साहित्य-रचना होती रही है। विक्रम की उन्नीसवी शताब्दी उत्तरार्द्ध और बीसवी शताब्दी के आरम्भिक 5–6 दशको मे अग्रेजो के फैलते और सुदृढ होते राजनैतिक प्रभुत्व, तद्जन्य परिस्थितियो, वैचारिक परिवर्तनो आदि के कारण साहित्य की धारा मद तो पडी, पर किसी न किसी रूप मे वह प्रवाहित अवश्य होती रही। वर्तमान शताब्दी मे स्वतन्त्रता-प्राप्ति के आसपास से राजस्थानी मे साहित्य-निर्माण की गति पुन तेज हुई और उसका क्षेत्र-विस्तार हुआ। यह परम्परा अब पूरे जोर से चालू है।

मोटे रूप से इन साढे नौ सौ सालो के राजस्थानी-साहित्य के इतिहास को इन तीन कालो मे विभक्त किया जा सकता है —

साधना से ही महान् कार्य सम्पन्न होते है, यह कोश इसका उत्कृष्ट प्रमाण है।

इससे यह न समझा जाय कि इससे पूर्व राजस्थानी के किसी प्रकार के शब्द कोश थे ही नही। छोटे-मोटे लगभग एक दर्जन कोशो का पता चलता है किन्तु वे विभिन्न भाषाओ के प्राचीन कोशो की भाति छन्दोवद्ध है। ये मुख्यत तीन प्रकार के हैं —

(१) पर्यायवाची कोश (यथा—डिंगळ नाम-माला, नागराज डिंगळ कोश, हमीर नाम-माला, अवधान माला, नाम माला, डिंगळ कोश (कविराजा मुरारीदान कृत) आदि।
(२) अनेकार्थी कोश, जैसे—उदयराम कृत 'अनेकारथी कोश' तथा
(३) एकाक्षरी कोश, जैसे –वीरभाण रतनू तथा उदयराम रचित एकाक्षरी नाम मालाएं।

प्राचीन काल मे ऐसे शब्द कोशो का महत्त्व था जो अनेक दृष्टियो से किसी अश तक अव भी है पर आज के पाठक और उपयोगकर्ता के सामने उनकी उपयोगिता अत्यन्त सीमित और प्रयोग-विधि जटिल है, यह लिखने की आवश्यकता नही है। श्री सीतारामजी ने इनका यथोचित उपयोग किया है। कहा जा चुका है कि राजस्थानी का सम्वन्ध एक ओर तो गुजराती से है और दूसरी ओर हिन्दी से। ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओ की भाँति उसका सम्वन्ध वैदिक सस्कृत, प्राकृत, और अपभ्र श से है ही। इस प्रकार, इनके सन्दर्भ मे राजस्थानी का सवध त्रिकोणात्मक है। अत राजस्थानी शब्द कोश के निर्माण मे इनमे रचित शब्द कोशो से भी सहायता मिलती है। सस्कृत के अमर कोश के अतिरिक्त राजा राधाकान्त देव बहादुर (शब्द कल्पद्रुम), तर्कवाचस्पति तारानाथ भट्टाचार्य (वाचस्पत्यम्) विल्सन, मैक्डानल, मोनियर विलियम्स्, तथा आप्टे आदि के सस्कृत शब्द कोश, प्राकृत-अपभ्र श के धनपाल कृत पाइयलच्छीनाममाला, हेमचन्द्र कृत देशी नाम माला, विजय राजेन्द्र सूरि कृत अभिधान राजेन्द्र तथा हरगोविन्द त्रिकमचन्द शेठ कृत पाइय सद्द महण्णवो, उर्दू–हिन्दी के मुहम्मद मुस्तफा खा मद्दाह कृत उर्दू–हिन्दी शब्द कोश, केदारनाथ भट्ट कृत उर्दू–हिन्दी कोश, रामचन्द्र वर्मा कृत उर्दू-हिन्दी कोश आदि, हिन्दी के वृहत् हिन्दी कोश, (ज्ञानमण्डल वाराणसी), हिन्दी शब्द सागर (नागरी प्रचारिणी सभा), मानक हिन्दी कोश (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, अतिम जिल्द सन् 1966 मे प्रकाशित), व्रज भाषा सूर कोश, अवधी कोश, मानस शब्द सागर तथा गुजराती के 'जोडणी कोश', गुजराती-इग्लिश डिक्शनरी (मेहता तथा मेहता) आदि कोश अपने-अपने क्षेत्रो मे अत्यन्त प्रसिद्ध रहे हैं। इसी प्रकार, अग्रेजी के अतिरिक्त कई भारतीय भाषाओ मे 'ज्ञान कोश' भी प्रकाशित हो चुके है। श्री सीतारामजी ने इनसे तथा ऐसे ही अन्य कोशो से यथोचित सहायता ली है। इससे प्रस्तुत कोश की प्रामाणिकता मे वृद्धि ही हुई है।

मोटे रूप से यह कोश हिन्दी शब्द सागर की पद्धति पर निर्मित हुआ है तथापि प्रत्येक शब्द और उसके प्रचलित रूप-भेद सहित शब्द के अर्थ देकर उनकी पुष्टि सम्बन्धित शब्द-प्रयोग के उदाहरणो से करने मे, यौगिक शब्दो के सन्दर्भ मे भी यही पद्धति अपनाने एव कतिपय स्थलो पर पूर्ववर्ती कोशो की भूल सुधार करने मे इसका समुत्कर्ष देखा जा सकता है। कोश को अधिकाधिक पूर्ण बनाने हेतु, सभी स्रोतो से शब्द-चयन का प्रयास भी किया गया है। इस सवध मे चार उदाहरण दिए जा रहे हैं।

प्रस्तुत कोश की प्रथम जिल्द के पृष्ठ 444 पर 'कल्हार' शब्द को सज्ञा पुल्लिग बताते हुए उसके अर्थ—१ पुष्प २ श्वेत कमल और ३ सुगधित कमल बताए हैं पर उदाहरण एक भी नही है। 'पुष्प' के लिए हमीर नाम माला का सदर्भ दिया है। प्रश्न है कि शेष अर्थ कहाँ से मिले ? हिन्दी शब्द सागर की दूसरी जिल्द के पृष्ठ 859 पर 'कल्हार' को सज्ञा पु० स० बताते हुए उसके अर्थ सफेद कोई, श्वेत कमलिनी दिए हैं और उदाहरण से भी इसकी पुष्टि की है। मानक हिन्दी कोश की प्रथम जिल्द के पृष्ठ 485 पर इसके अर्थ-एक प्रकार का पौधा और उसके फूल तथा २ कमल दिए हैं किन्तु इस कोश मे शब्द-प्रयोग के उदाहरण नही है। 'कल्हार' का प्रयोग अध्यात्म रामायण के अरण्य-काण्ड मे इस प्रकार है —

इत्येव भाषमाणौ तौ जग्मतु सार्धयोजनम्।
तत्रैका पुष्करिण्यास्ते कह्लार कुमुदोत्पलै ॥१५॥

(इस प्रकार आपस मे बातचीत करते हुए वे डेढ योजन (६ कोश) निकल गए। वहाँ कुमुद, कह्लार और कमलादि मे सुशोभित एक पुष्करिणी (तलाई) थी।

मेहोजी रचित राजस्थानी 'रामायण' मे इसका प्रयोग है :—

लख चवरासी जीव सिरज्या, वरणी अठारा भार।
सातू सायर जिणि सिरज्या, नवसै नदी कल्हार।

इसका रचनाकाल सवत् 1572 के आसपास है। कवि गणपति रचित 'माधवानल-कामकन्दल-प्रवन्ध' (गायकवाड ओरियटल सिरीज, बडौदा, सन् 1942) मे भी इसका प्रयोग हुआ है–पृष्ठ २८५, छन्द ३१२ तथा पृष्ठ ३१८, छन्द ६१। शब्द प्रयोग के उदाहरण देने की प्रतिज्ञा सी करके भी श्री सीतारामजी यहाँ ऐसा नही कर पाए। इस कारण यदि वे चाहते तो इस शब्द को छोड भी सकते थे। किन्तु उदाहरण न देकर भी उन्होने इसको लिया। इस एक उदाहरण से उनकी बौद्धिक ईमानदारी का पता चलता है। हमीर नाम माला के साक्ष्य पर उन्होंने यह शब्द ग्रहण किया तथा प्राप्त कोशो और इतर सामग्री के आधार पर उसके अर्थ दिए।

दूसरा उदाहरण 'दिसा' विषयक है। अनेक ग्रथो का मन्थन कर दिशा सवधी उन्होने जो टिप्पणियाँ और दिग्चक्र दिए है, वे उनके गहन पाण्डित्य के साथ-साथ राजस्थानी भाषा की समृद्धि के भी परिचायक है। इस विवेचन की तुलना परिवर्तित, सशोधित हिन्दी शब्द सागर के नवीन सस्करण के पाँचवे भाग के पृष्ठ 2288–89 पर 'दिशा' के अन्तर्गत दी गई टिप्पणियो से करने पर स्पष्टत पता

चलता है कि श्री सीतारामजी ने कितनी सागोपाग अतिरिक्त जानकारी देकर 'दिशा' को स्पष्ट किया है।

तीसरा उदाहरण 'दिक्शूल' सबधी है। हिन्दी शब्द सागर की इसी जिल्द के पृष्ठ 2270 पर इसकी परिभाषा इस प्रकार दी है — फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनो मे कुछ विशिष्ट दिशाओ मे काल का वास जो कुछ विशेष योगिनियो के योग के कारण माना जाता है। जिस दिन जिस दिशा मे कुछ विशिष्ट योगिनियो के योग के कारण इस प्रकार का वास और दिक्शूल माना जाता है, उस दिन उस दिशा की ओर यात्रा करना बहुत ही अशुभ और हानिकारक माना जाता है।' श्री सीतारामजी ने 'दिसासूळ' (स० दिक्शूल) की यह परिभाषा दी है .—फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा मुहूर्त देखने मे शूल की वह उपस्थिति जो विशिष्ट वार व नक्षत्र के कारण विशिष्ट दिशाओ मे रहती है . आदि। फिर हिन्दी शब्द सागर की उल्लिखित पक्तियो को बिना उसका नामोल्लेख किए वे लिखते है —किन्तु उपर्युक्त मत भ्रमपूर्ण है। दिशाशूल काल एव योगिनियो मे पूर्णत पृथक् है। दिशाशूल विशिष्ट वारो और नक्षत्रो के कारण केवल मुख्य दिशाओ मे ही लागू होता है जबकि काल विशिष्ट वार के कारण मुख्य दिशाओ एव उप दिशाओ पर भी लागू होता है। दिशाशूल एव काल की गति एक दूसरे के विपरीत होती है। दिशाशूल एव योगिनियो मे भी कोई सम्बन्ध नही है क्योकि योगिनियाँ तिथियो पर आधारित रहती हे, उनका वारो और नक्षत्रो से कोई सबध नही होता। काल व योगिनियाँ भी परस्पर पृथक् है क्योकि काल विशिष्ट वार के कारण विशिष्ट दिशा अथवा उप दिशा मे रहता है जबकि योगिनी की उपस्थिति विशिष्ट तिथि के कारण विशिष्ट दिशा मे रहती है।

इस टिप्पणी से ही पता चलता है कि उन्होने एक-एक शब्द पर कितना सूक्ष्म विचार किया है तथा यह कोश इस क्षेत्र मे अन्य कोशो से कितना आगे है।

इसी प्रकार, 'दुगडियो' (पृष्ठ 1757) पर दी गई सीतारामजी की टिप्पणी और 'होरा' के अन्तर्गत दी गई हिन्दी शब्द सागर (11 वाँ भाग, पृ० 5564) की टिप्पणी से मिलाने पर भी इस बात की पुष्टि होती है। ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते है।

कोशकर्ता से 'डिंगळ' या 'डिंगल' शब्द पर भी ऐसी ही विस्तृत टिप्पणी की अपेक्षा थी क्योकि इस विषय मे परस्पर विरुद्ध अनेक धारणाएँ व्यक्त की गई है।

हिन्दी शब्दसागर के सशोधित नवीन सस्करण (सन् 1968) मे 'डिंगल' को 'राजपूताने की वह भाषा जिसमे भाट और चारण काव्य और वशावली आदि लिखते चले आते है' बताया हे (पृष्ठ 1950)। 'मानक हिन्दी कोश' मे इसके लिए 'मध्ययुग मे राजस्थान मे बोली जाने वाली एक भाषा जिसमे यथेष्ट स हित्य मिलता है, लिखा हे (दूसरा खण्ड, पृ० 470)। 'शब्दसागर' का कथन तो बिल्कुल गलत है, 'मानक' का कथन सर्वांश मे गलत न होकर आशिक रूप मे सत्य है।

अत यहाँ 'डिंगल' पर भी दो शब्द कहने आवश्यक हैं। इस कोशकर्ता ने इसको 'राजस्थानी भाषा का एक नाम' या मरुभाषा' बताया है। 'राजस्थानी' शब्द के अन्तर्गत उसके दो भाषिक अर्थ दिए गए है —राजस्थान प्रदेश की मरु या डिंगल भाषा' तथा 'इस प्रदेश की बोली'। ये अर्थ सगत है।

सन् 1913 मे प्रकाशित श्री हरप्रसाद शास्त्री की 'प्रिलिमिनरी रिपोर्ट ऑन दि ऑपरेशन—इन-सर्च ऑफ मैन्यूस्क्रिप्टस् ऑफ बार्डिक क्रानिकल्स्' तथा उसके पश्चात् डॉ० टैसीटरी प्रभृति बहुत से विद्वानो ने 'डिंगल', 'डिंगळ' या 'डीगळ' शब्द की (साथ ही 'पिंगल' शब्द की भी) व्युत्पत्ति और उसके अर्थ को लेकर अनेक कल्पनाएँ की है किन्तु उनका परिणाम कुछ भी नही निकला, वे सभी अभी तक अनिर्णयात्मक ही है। (ऐसे विभिन्न मतो के लिए इन पक्तियो के लेखक का राजस्थानी भाषा और साहित्य नामक ग्रथ द्रष्टव्य है)। डिंगल को भाषा भी माना गया है और शैली भी। भाषा मानने वालो मे भी मतैक्य नही है, इसकी किंचित् झलक 'शब्दसागर' और 'मानक-कोश' मे दिए उल्लिखित अर्थो मे भी मिलती हे। इस विषय के विस्तार मे न जाकर इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि डिंगल, मरुभाषा या राजस्थानी का ही पर्याय है, चाहे वह साहित्यिक हो या बोलचाल की। डिंगल के छन्दशास्त्र रचयिताओ और साहित्यकारो ने ऐसा ही समझा और माना है। पिंगळ सिरोमणी (अथ पिंगळ सिरोमणि मारवाडी भाषा लिख्यते), रघुनाथ रूपक गीताँ रो (मरुभूम भाषा तणो मारग, मुरभूम पाठ पिंगळ मता) तथा रघुवरजस प्रकास (मुरधर भाखा जिण निमत, अथ भाखा पिंगळ तथा डिंगळ का रूपग गीत कवित, दूहा गाहा ••') मे आई अनेकश. उक्तियो से मरुभाषा (जिसको कई नामो से सम्बोधित किया गया है) के स्वरूप, उसकी व्याप्ति और उसके आभोग मे आने वाली सामग्री के सकेत मिलते है जिनसे उपर्युक्त बात सिद्ध होती है। ऐसा ही साहित्यकारो ने समझा था। इसके दो उदाहरण पर्याप्त होगे।

१ पदम भगत ने सवत् 1545 के आसपास विभिन्न लोक-प्रचलित राग-रागिनियो मे गेय 'रुकमणी मगळ' या 'हरजी रो व्यावलो' काव्य की रचना की थी। यह राजस्थानी के प्राचीनतम पौराणिक आख्यान काव्यो मे से एक है। मेहोजी कृत रामायण, डेल्हजी कृत कथा अहमनी आदि अन्य आख्यान काव्यो की भाँति इसकी भाषा भी बोलचाल की मरुभाषा या राजस्थानी हे। इसकी अनेकश प्रतियाँ मिलती हे, जिनमे प्राचीनतम प्रति सवत् 1669 की लिपिबद्ध है। इसमे तो नही पर इसके बाद मे लिपिबद्ध बहुत सी प्रतियो मे रचना के पुष्पिका स्वरूप यह दोहा मिलता है —

कविता मेरी डींगळी, नहीं व्याकरण ग्यान।
छन्द प्रबन्ध कविता नहीं, केवल हर को ध्यान।

(पाठान्तर-मोरी)

इसमे इतना तो स्पष्ट ही है कि ये लिपिकार (और अगर यह अश मूल का सिद्ध हो, तो स्वय रचयिता भी) 'मगळ' को 'डीगळी' रचना समझते हैं। तात्पर्य यह कि बोलचाल की राजस्थानी और डिंगल मे अभेद है।

2. चारण स्वरूपदासजी दादूपथी (समय—सवत् 1860–1925) ने अपने सुप्रसिद्ध काव्य पाण्डवयशेन्दुचन्द्रिका मे इसकी भाषा के लिए कहा है :—

डिंगल पिंगल सस्कृत, सब समझन के काज।
मिश्रित सी भाषा करी, क्षमा करहु कविराज ।।

स्पष्ट है कि डिंगल भाषा है और यह 'सब समझन के काज' स्वरूप भाषा भी है। सबके समझने लायक भाषा तो बोलचाल की ही हो सकती है। अत बोलचाल की मरुभाषा और डिंगल एक ही है।

सूर्यमल्ल मिश्रण ने डिंगल उपनाम वाली मरुभाषा (डिंगल उपनामक कहू मरुवाणी ही विधेय) का भी प्रयोग वशभास्कर मे किया है। उनके अनुसार मरुभाषा को कई लोग डिंगल भाषा भी कहते है (मरुभाषा डिंगलभाषा त्वेके)। निष्कर्ष यह है कि 'डिंगल' का आशय राजस्थानी या मरुभाषा ही है।

जहाँ तक डिंगल शब्द के सर्व प्रथम प्रयोग का प्रश्न है, उसका श्रेय आसिया बाँकीदास को नही दिया जा सकता, जैसा कि विद्वान् अब तक मानते आए हैं। इस सम्बन्ध मे ऐतिहासिक दृष्टि से छन्दशास्त्रीय ग्रन्थ 'पिंगळ सिरोमणि' ('परम्परा', भाग 13, सन् 1961–62, राजस्थानी शोध-सस्थान, चौपासनी, जोधपुर) मे एतद् विषयक उल्लेखो की चर्चा आवश्यक है। इसमे 'डिंगळ' (बारहट सुदरसणउ डिंगळ थी कहै, पृष्ठ 110, अयउ डिंगळ नाँममाळा लिख्यते पृ० 145) तथा 'उडिंगळ' (पिंगळ सिरोमणे उडिंगळ नाम माळा ·· पृ० 150) दोनो शब्द छपे मिलते है। ऊपर के प्रथम दो उदाहरणो मे 'सुन्दरसणउ' और 'अयउ' के अन्तिम 'उ' का 'डिंगळ' के साथ जुडकर 'उडिंगळ' शब्द होना अपेक्षाकृत अधिक सगत लगता है। इसके दो कारण है। एक तो इस 'नाम माळा' की पुष्पिका मे स्वतत्र रूप मे 'उडिंगळ शब्द प्रयुक्त है। दूसरे, इसी ग्रन्थ मे अन्यत्र प्रयुक्त अकारान्त सज्ञा शब्दो यथा—चद, गग, संकर, नागराज, कासीराम, केसव, भोज, नरह, हरराज आदि के अन्त मे 'उ' नही जुडा हुआ है। पर 'उडिंगळ' का भाव स्पष्ट नही है, इसको 'डिंगळ का पूर्व रूप या मूल बताने मे और विचार और प्रमाणो की आवश्यकता है। इसके सम्पादक श्री नारायणसिंह भाटी ने इसकी अन्तरग परीक्षा किए बिना ही इसको जैसलमेर के कुँवर हरराज द्वारा रचित तथा रचनाकाल लगभग सवत् 1610 और 1618 के बीच मान लिया है (सम्पादकीय, पृ० 10) जो भूल है। इसके कई कारण है। एक कारण तो यही है कि अधिकाश विद्वान् इसको कुशललाभ की रचना मानते हैं कुँवर हरराज की नहीं। इस पर आगे विचार किया गया है। ··, इसमे कुँवर हरराज के 'कँवरपने' (सवत् 1618) के पश्चात् प्रसिद्ध हुए कवियो की भी रचनाएँ सकलित हैं। इसमे बारहट ईसरदास और दुरसा आढा के गीत दिए हुए है। बारहट ईसरदास का समय सवत् 1595 से 1675 है। उनके आरम्भिक 40 साल जामनगर मे बीते थे। दुरसा आढा का काल सवत् 1595 से 1708 है। उनकी विशेष प्रसिद्धि 34 साल की आयु मे सवत् 1629 के आसपास हुई थी जब राजा रायसिंह कल्याणमलोत ने जोधपुर पर अधिकार के समय अन्य चारणो के साथ इनको भी एक हाथी, एक करोड पसाव और चार गाँव दिए थे। किन्तु जिस ढग से इसमे इन कवियो का उल्लेख हुआ है, उससे यह हरराज के 'कँवरपने' की रचना तो दूर, उनके पूरे जीवनकाल—(सवत् 1634 तक) मे भी रचित हुई सभव नही लगती। नथमलजी कृत तवारीख जैसलमेर, हरिदत्त गोविंद व्यास कृत जैसलमेर का इतिहास तथा गहलोत कृत जैसलमेर राज्य का इतिहास के अनुसार रावळ हरराज का देहावसान सवत् 1634 मे हुआ था। तीसरे, इसमे हरराज के पुत्र भाटी भीम की प्रशसा मे माधवदास द्वारा रचित एक गीत दिया हुआ है (पृ० 155)। यह गीत भीम के रावळ बनने के बाद का रचा प्रतीत होता है। भीम अत्यन्त साहसी और वीर थे। उनके विषय मे यह दोहा बहु-प्रचलित है —

दूजा राजा शाह रे, कर मे ले दारी।
भाटी भीम छोडायदी, नव रोजे नारी ।।

चौथे, समग्र रचना मे जिस रूप में कुँवर हरराज का उल्लेख हुआ है उससे यह उनकी रचना सिद्ध नही हो सकती। श्री अगरचन्द नाहटा प्रभृति अधिकाश लोग इसको जैन कवि कुशललाभ की रचना मानते है। कुशललाभ का समय लगभग सवत् 1580 से 1650 है। इस सम्बन्ध में दो बातें विचारणीय है। एक तो इसमे जिस ढग से कुँवर हरराज और कुशललाभ के प्रश्नोत्तर दिए हैं उनसे यह शका होनी स्वाभाविक है कि यह कितनी और किस रूप मे कुशललाभ की रचना है। दूसरे इसमे गग भट्ट के कथन का भूतकालिक उल्लेख है (पृष्ठ 98)। गग भट्ट तो कुशललाभ के बाद भी 12–15 साल तक जीवित रहे थे। उनकी मृत्यु सवत् 1662–1665 के बीच हुई थी (द्रष्टव्य—गग कवित्त, भूमिका, पृष्ठ 10, ना प्र स, काशी)। वर्तमान मे यह जिस रूप मे प्राप्त है, उस रूप मे इसको कुशललाभ की रचना मानने मे भी सकोच होता है। यदि यह किसी अश तक कुशललाभ की रचना मान भी ली जाए तो यह तो निश्चित ही है किसी परवर्ती लेखक ने इसमे सशोधन, सवर्द्धन करके इसका सम्पादन किया है। अत वैज्ञानिक पद्धति पर इसके सुसम्पादन की नितान्त आवश्यकता बनी हुई है। ऐसा सम्पादन होने पर ही हम 'डिंगळ' या 'उडिंगळ' शब्दो और उनकी व्याप्ति पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार कर सकने की स्थिति मे होंगे। कोशकर्ता ने 'उडिंगळ' को सदिग्ध समझकर सम्भवत कोश मे स्थान नही दिया जो ठीक ही किया हैं। असल मे राजस्थानी और हिन्दी मे भी सम्पादन की स्थिति सन्तोषजनक नही है। 'सम्पादन के नाम पर अधिकाशत या तो एक प्रति का हूबहू पाठ छपा दिया जाता है अथवा प्रति-विशेष के

पाठ को मूल का मान कर फुटनोट मे शेष उपलब्ध प्रतियो के रूपान्तर और पाठान्तर दे दिए जाते है। यह दृष्टिकोण एकागी है। सम्पादन की वैज्ञानिक पद्धति इससे भिन्न है, कदाचित् यह बताने की आवश्यकता नही है।

पिंगळ-सिरोमणि के अतिरिक्त 'डिंगळ' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सुरजनदास पूनिया (सवत् 1640–1748) के एक कवित्त मे मिलता है। विभिन्न हस्तलिखित प्रतियो मे प्राप्त पाठ इस प्रकार है —

कोक पढ्या का होय दुनी करतूत पिछाणै।
गीता का सुध ग्यान, ग्यान का ग्यान न जाणै।।
अमर पढ्या क्या होय, अमर तै अमर न होई।
पींगळ डींगळ प्रीति, दीन घरि दीठा दोई।।
साखी सबदी तत रस, नाद वेद गुण जाण।
सुरजन सुमत गुण उच्चरै, समरत सुणौ वखाण।।

सुरजनजी के 'कवित्तो' और 'रामरासौ' का रचनाकाल सवत् 1700 के लगभग है (द्रष्टव्य—इन पक्तियो के लेखक का जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य नामक ग्रन्थ का दूसरा भाग)। कदाचित् 'डिंगळ' शब्द प्रयोग की परम्परा सवत् 1700 से भी पुरानी रही हो, तो आश्चर्य की बात नही होगी। बाँकीदास के आश्रयदाता जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी ने भी डिंगळ का भाषा के रूप मे प्रयोग किया है, यथा —

डिंगळ पिंगळ सस्कृत, सबयौ न एकौ सोध।
अखर अखर अवतारचित, पूरो मोहि प्रबोध।।

मुशी देवीप्रसाद कृत चारण-चमत्कार (अप्रकाशित) मे यह दोहा दिया गया है—(श्री सीताराम लाळस के सौजन्य से प्राप्त)। कोशकर्ता 'डिंगळ' और 'राजस्थानी' शब्दो पर अधिक प्रकाश डालता तो स्थिति और अधिक स्पष्ट होती।

राजस्थानी-शब्द कोश निर्माण मे कतिपय विशेष प्रकार की कठिनाइयाँ और भी है, जैसे —

(1) शब्दो के मानक रूप के स्थिरीकरण की। तद्भव और देशज शब्दो के अनेक रूप, शब्दार्थ-नियोजन मे भी कठिनाई पैदा करते है।

(2) राजस्थानी के ध्वनि-परिवर्तनो, उदात्त, अनुदात्त ध्वनियो, अनुस्वार तथा 'ल' और 'ळ' वर्णो आदि विषयक।

कोशकर्ता ने इनका ध्यान रखते हुए शब्द-रूप और अर्थ दिए है तथापि कतिपय शब्दो का छूट जाना असम्भव बात नही है। राजस्थानी मे 'र' का आगम और लोप प्राय. होता है। इसी प्रकार 'ऋ' का 'र', 'र' और लोप, 'क्ष' का 'ख', 'क्ख' आदि, छ। कश्यप ऋषि का एक नाम तृक्ष है। तृक्ष का राजस्थानी मे तिखिया, तीख, तिरख, त्रख आदि रूपो मे प्रयोग किया गया मिलता है, यथा —

(1) **होतिब काज हठबाद करि, वीण विरोध विचखिया।**
एक एक तन तीनि करि, तिणि सराप सुर तिखिया।।
(—सुरजनदासजी पुनिया कृत रामरासो)

(2) **तांम कोडि तेतीस, तीख रिख तामस आया।**
वंनवासौ तंन तीनि, रीछ कपि धारै काया।
(—वही)

(3) **पूरव दिशा अपूरव वातू, रंग रळी जहां होय प्रभातू।**
तहां तिरख रिख किरिया सारू, जोग ध्यान बैठे अवधारू।
(—सुरजनदासजी पूनिया कृत भोगळ पुराण)

(4) **बग दाळ्भ सींगी रिख सुणी, गुर गगेव गोतम रिख गिणी।**
कपला रिख त्रख सुर सार, मारकुंड तवर तत सार।
(केसौदासजी कृत कथा विगतावळी)

किन्तु जहाँ तक ज्ञात है, इस कोश मे इस अर्थ मे ऐसे शब्द नहीं दिए गए है। राजस्थानी के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो का सुसम्पादित रूप मे सामने न आना भी इसका एक मुख्य कारण है। पूर्वी राजस्थानी मे क्रियान्त 'णो', 'णौ' के स्थान पर 'वो', 'वौ' का प्रयोग किया जाता है। अत इस कोश मे प्रत्येक क्रिया और उसका रूप जिसके अन्त मे 'णो', 'णौ' होते है, को इस दूसरे 'वो, वौ' अन्त के रूप मे भी प्रस्तुत किया गया है। शब्द के अनेक रूप भेदो का एक कारण यह भी है। श्री सीताराम जी ने यथासम्भव शब्द के रूप भेदो को भलीभाँति दर्शाया है। कोश मे कतिपय शब्दो के रूप भेद देखने से ही इसके कर्ता के तद् विषयक प्रयास का पता चलता है। कई-कई शब्द तो ऐसे हैं जिनके 46-47 तक रूप-भेद दिए गए है, जैसे पहुचाणो (पृ० 24-25) बोलाणो (पृ० 5059) आदि। दस-दस बारह-बारह रूप तो साधारण बात है।

उदाहरणार्थ ऐसे कुछ शब्द नीचे दिए जाते है —

छाव, जुधिष्ठिर, झूबो, दिनद दीयौ, पगड़यौ, पहरणौ, पछताणौ, बहस, बहणो, विसम, विरुदाणौ, विकमाईजणौ, वरती, समरणौ आदि।

कोशकर्ता ने शब्द-विशेष के अनेकश उदाहरण एकत्र कर उनके उपलब्ध सभी अर्थो को सोदाहरण देने का प्रयास किया है। साथ ही मुख्य शब्द के अन्तर्गत उसके पर्यायवाची, उससे सम्बन्धित यथा सम्भव मुहावरे और कहावते भी दी है। इससे पता चलता है कि कोशकर्ता ने कोश को सर्वागपूर्ण बनाने मे कोई कसर नही छोडी है। 'सारग' शब्द के 89 और 'वीर' शब्द के 72 अर्थ दिए गए हैं और इस कोश को ज्ञान कोशीय रूप देते हुए राजस्थानी साहित्य मे बहु प्रयुक्त 52 वीरो की नामावली भी दी है। अनेकश अर्थो के लिए इन कतिपय शब्दो पर दृष्टिपात करना उचित होगा —

कागलौ, चढणौ, जोग, बैठणौ, बहियोडौ, वाट, निकालियोडौ, दिन, लागणौ, विसम, सख, सभाळणौ, सत, सजियोडौ, सर, सरभ, सरस, सहज, साजियोडौ, मारग, सार, सिद्ध, कुत्तौ आदि।

इतना होने पर भी अनेक ऐसे शब्द होगे जिनके सभी अर्थ सम्भवत नही दिए जा सके हो। एक उदाहरण द्रष्टव्य है। सतारा का अर्थ सप्तऋषि तथा सतारो का एक प्रकार का वाद्य यन्त्र बताते हुए उस

पर पूरी टिप्पणी दी है। सतारी (स० सत्वर) का अन्य अर्थ द्रुतगामी या तेज चलने वाला भी होता है। जैसे .—माता ऊट'र घणा सतारा (—वील्होजी कृत कथा जैसलमेर की)। सतारा सतारी का बहुवचन है। यह अर्थ कोश मे नही है।

अर्थों के साथ मुहावरो और कहावतो का ठाठ पदे-पदे लक्षित होता है। 'वात' पर ··· ···, तथा 'हाथ' पर 171 मुहावरे दिए गए हैं। 'पग' और 'हाथ' शब्दो के अन्तर्गत 67 कहावतें दी गई हैं। इनका नमूना निम्नलिखित शब्दो के अन्तर्गत देखा जा सकता है —

आंख, आंधी, आणी, ऊँट, एक कण, करम, चक्कर, छाती, जीव, टको, दिन, सास पाणी, तरवार, आदि।

मुख्य शब्दो के पर्यायवाची शब्द देकर कोश को समृद्ध किया गया है। सूरज के 127 पर्यायवाची दिए है। इसी प्रकार चन्द्रमा, जुध, तरवार, दाता, समुद्र, सत्रु, सिंघ, परवत, पाणी आदि के अनेक पर्यायवाची देखे जा सकते हैं।

शब्दो की यथासम्भव व्युत्पतियाँ दी गई हैं। कोशकर्ता ने इस सम्बन्ध मे प० नित्यानन्दजी शास्त्री के प्रति विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए ठीक ही स्वीकार किया है कि नित्य नवीन खोजो के फलस्वरूप व्युत्पतियो में मतभेद हो सकता है। शब्द की व्युत्पति से उसके ऐतिहासिक विकास-क्रम, तुलनात्मक अध्ययन और अर्थ मे भी पर्याप्त सहायता मिलती है। इस सम्बन्ध मे भिन्न-भिन्न मतो का विवेचन कर सही निर्णयो पर पहुँचना सुधी जनो का कार्य है।

शब्द-विशेष की व्युत्पति विषयक कितना मतभेद हो सकता है यह एक उदाहरण मे स्पष्ट होगा। इस कोश मे 'खोट' (पृ० 649) शब्द को सस्कृत 'क्षोट' से व्युत्पन्न बताया है। हिन्दी शब्दसागर (पृ० 1184) मे स० खोट=खोडा (दूषित) अकित है। सक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर मे इसको सस्कृत 'खोट्', मे, मानक हिन्दी कोश मे सस्कृत 'कूट' से तथा ब्रजभाषा सूर कोश मे सस्कृत 'खोट' से निष्पन्न बताया है।

प्रस्तुत कोश यत्र-तत्र ज्ञान कोश की सीमा भी छूता है। अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक प्रसगो पर यथोचित टिप्पणियाँ दी गई है। सकराचारज, हडवू, सरस्वती, साख, जैमती, जोगणी, साज, मिट्टी, सक्ति आदि अनेकश शब्दो पर दी गई टिप्पणियाँ तथा इसके अतिरिक्त 'सोळै काकरी, 'हीयोडी' जैसे शब्दो के अन्तर्गत बनाए गए नक्शे इस कोश को ज्ञान कोशीय रूप भी प्रदान करते है।

सक्षेप मे कोश का मूल ढाँचा इस प्रकार है —(विशेष द्रष्टव्य—पहली जिल्द मे कोशकर्ता की भूमिका)

(1) शब्द के व्याकरणिक रूप और व्युत्पत्ति दी गई है।

(2) अप्रयुक्त या अल्प प्रयुक्त शब्द भी लिए गए है।

(3) अर्थ की स्पष्टता और प्रामाणिकता के लिए शब्द-प्रयोगो के अनेकश उदाहरण दिए गए हैं।

(4) पर्यायवाची और यौगिक शब्दो के अतिरिक्त मुख्य शब्द के साथ यथा सम्भव रूप-भेद, अल्पार्थ, महत्त्ववाची, विलोम शब्द तथा क्रिया प्रयोग भी तुरन्त बाद ही दिए गए है।

(5) शब्द-क्रम मे देवनागरी लिपि मे प्रकाशित कोशो के अनुसार अनुस्वार प्रधान प्रणाली अपनाई गई है।

(6) अनुस्वार और चन्द्र बिन्दु के स्थान पर अनुस्वार लिया गया है। ध्यातव्य है कि पुरानी हस्तलिखित प्रतियो मे चन्द्र बिन्दु का द्योतक चिन्ह नही मिलता। राजस्थानी मे विशेष ध्वनियो को प्रकट करने वाले विशेष वर्ण हैं, यथा —व–व, ल–ळ, स–स। इनमे नीचे बिन्दी वाले वर्ण पहले लिए गए हैं, जैसे—आळ के बाद आल। व और स से सम्बन्धित शब्दो को क्रमश व और स के अन्तर्गत दिया है। छपाई मे व और स वर्णों की व्यवस्था न होने से ऐसा किया गया है।

(7) शब्द कोशो मे अर्थों का महत्त्व सर्वाधिक होता है। उनका उपयोग मुख्यत अर्थ, परिभाषा मानक रूप, वर्तनी या व्याकरण के लिए किया जाता है। इसमे शब्द के विभिन्न अर्थों की सख्या देकर, पर्याय एव व्याख्या दोनो विधियाँ अपनाई गई हैं। उसको (शब्द को) अलग-अलग वर्गों मे बाँटा गया हैं, साथ ही विवरण भी दिया गया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य है—तर, दाय, धजर, धू आदि।

यहाँ यह सकेत करना भी अनावश्यक न होगा कि इसमे 'ड' और 'ड' वर्णों के क्रम मे हिन्दी कोशो से कुछ भिन्नता है। इसमे 'ड' वर्ण को 'क' वर्ग के अन्तर्गत लेकर उसी अनुसार वर्णानुक्रम रखा है, जबकि हिन्दी मे 'ट' वर्ग के वर्ण 'ड' के पश्चात् 'ड़' रखा जाता है। तदनुसार इस कोश मे 'खग्रास' के पश्चात् 'खड' शब्द है, जबकि हिन्दी शब्द सागर मे इसके पश्चात् 'च' वर्ग का 'खचन' शब्द है। 'सागर' मे 'खड' शब्द 'ट' वर्ग के अन्तर्गत 'खडगा' के बाद आया है (पृ० 1122)।

कोश की काया का निर्माण जिन रचनाओ के शब्दो को लेकर हुआ है उनका उल्लेख कोशकर्ता ने अपनी भूमिका मे किया है। राजस्थानी साहित्य की चारण शैली के काव्य की शब्दावली अपेक्षया कठिन है। इसको सम्यक् रूपेण समझने वाले विद्वान् इने-गिने ही हैं और उनकी सख्या भी कम होती जा रही है। इस प्रकार की शब्दावली के अर्थों की तो अति शीघ्र बहुत ही आवश्यकता थी। यह भी विचित्र सयोग की बात है कि श्री सीतारामजी लाळस स्वय एक चारण हैं तथा इस शैली की काव्य-परम्पराओ और शब्दावली से सुपरिचित हैं। इस कोश का यह सर्वाधिक सबल पक्ष कहा जा सकता है।

चारण शैली का एक बडा भाग ऐतिहासिक और वीर रसात्मक काव्य के रूप मे है, यह लिख आए है। योद्धा, युद्ध, उसके विभिन्न उपकरण आदि आदि से सम्बन्धित सभी शब्दो का सूक्ष्म परिचय इस कोश मे मिलता है। शस्त्र विशेष के पृथक् पृथक् अगो के नामो के लिए बानगी के तौर पर तलवार के विभिन्न अगो से सम्बन्धित ये शब्द

द्रष्टव्य हैं .— कठी, कलसियौ, खजानो, नळ, पेटा, पीपळो, टोक, मोगरौ, बतासौ, थेलौ आदि। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न बनावटो के आधार पर शस्त्र-विशेष के अनेक नाम राजस्थानी मे प्रचलित है। इनका सम्यक् परिचय भी कोशकर्ता ने दिया है, यथा—तलवार के विभिन्न नाम रूमीसूरा, सोसनपता, मगरेव, लालूवाड, देवीकवच, हुमैनी, हलवी, सिरोही, माड् आदि।

कोश मे पूर्व लिखित शेष चार शैलियो की रचनाओ के शब्दो को भी स्थान मिला है। यह भी प्रशसनीय है कि ज्यो-ज्यो कोशकर्ता को अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्राप्त होती गई, वह उनका उपयोग भी यथा स्थान करता गया पर कतिपय महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो का जो इस कोश से पूर्व प्रकाशित थे, उपयोग किया जाना आवश्यक था। इनमे से कतिपय का नामोल्लेख किया जा सकता है:—श्री रामचरणजी महाराज की अणभैवाणी तथा आचार्य भीखणजी की पद्य-रचनाओ का सकलन—भिक्षु ग्रन्थ रत्नाकर (2 भागो मे)। ये दोनो बृहत् ग्रन्थ क्रमश सन्त और जैन काव्यो की शब्दावली के महत्त्वपूर्ण भण्डार हैं। सत सप्रदायो मे विष्णोई, जसनाथी साहित्य के और निम्बार्क सम्प्रदाय के परशुराम-देवाचार्य को (परशुराम रचनाओ के शब्दो को लेने का यत्न भी करना चाहिए था। इसी प्रकार जैन साहित्य तथा लोक साहित्य विपयक शब्दावली पर और अधिक ध्यान दिया जाता जो अच्छा ही होता। ये तो मात्र सुझाव है। वैसे इन शैलियो की रचनाओ मे प्रयुक्त अनेक शब्द किसी न किसी रूप मे कोश मे आ ही गए है।

राजस्थानी के अतिरिक्त यहाँ के साहित्यकारो ने राजस्थानी मिश्रित व्रज और राजस्थानी मिश्रित खडी बोली मे भी प्रभूतश. रचनाएँ लिखी है। पिंगल का तात्पर्य छन्दशास्त्र से है पर यहाँ राजस्थानी मिश्रित व्रजभाषा का नाम भी पिंगळ' है। सामान्यत पिंगळ का व्याकरणिक ढाँचा व्रजभाषा के आधार पर होता है पर उसमे राजस्थानी शब्दो और राजस्थानी-ध्वनि-परिवर्तनो के आधार पर बने शब्दो का प्रयोग भी किया जाता है। एक उदाहरण ले।

राजस्थानी कड (सस्कृत-कटि) शब्द का अर्थ कमर है। 'ड' ध्वनि 'र' मे परिवर्तित हो जाती है। उसके आधार पर 'कड' से शब्द बना 'कर'। साधारणत 'कर' का अर्थ हाथ होता है पर यहाँ 'कर' का अर्थ कमर भी होगा। बृहत् पृथ्वीराज रासौ मे इस तरह के अनेक शब्द प्रयुक्त हुए है। इस कोश मे इनका सकेत-उल्लेख होना अतिरिक्त महत्त्व की बात होती। यो पिंगल का शब्दकोश-निर्माण एक पृथक् कार्य है। ध्यातव्य है कि पिंगल केवल काव्य भाषा के रूप मे ही समादृत रही है। पृथ्वीराज रासौ, वशभास्कर (अधिकाश मे) पिंगल की रचनाएँ है। कतिपय संतो ने भी पिंगल मे रचनाएँ की है पर उनमे भाषायी स्तर भेद काफी पाया जाता है। नीसाणी, झूलणा, चान्द्रायण आदि छन्दो मे रचित रचनाएँ तथा कतिपय सतो और नाथो की वाणियो की भाषा राजस्थानी मिश्रित खडी बोली है। दोनो ही प्रकार की कतिपय रचनाओ का प्रयोग श्री सीतारामजी ने किसी न किसी रूप मे किया है। इसी प्रकार मुख्य-मुख्य आधुनिक लेखको की रचनाओ और प्राचीन गद्य रचनाओ को भी शब्द-चयन मे ग्रहण किया गया है।

इस शब्दकोश मे दिए गए विभिन्न शब्दार्थो मे मतभेद सम्भव है। यह अपने ढग का पहला कार्य है। इस प्रकार के कार्यो मे अनेक कारणो से भूल-चूक और त्रुटियाँ रह जाना बहुत स्वाभाविक है। आशा की जाती है कि विद्वान् इसकी 'चूक' पर द्रष्टिपात करते समय इसकी 'कूक' पर विशेष ध्यान देगे।

श्री सीतारामजी के वैदुष्य का साकार रूप—यह कोश राजस्थानी का गौरव ग्रन्थ है। उनका यह कार्य भारतीय मनीषा के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

यदि कोश मे प्रयुक्त शब्द-सख्या देखी जाए, तो वह लगभग दो लाख होगी। इसमे आए मुहावरो की सख्या हजारो मे है।

यह कोश पिछले अठारह सालो से शनै शनै. प्रकाशित होता रहा है। इसकी इस अन्तिम जिल्द का इस वर्ष प्रकाशित होना एक घटना है। इस महान् कार्य को सम्पन्न हुआ देखकर प्रत्येक विद्या-प्रेमी गौरव का अनुभव करेगा, इसमे सदेह नही।

कोशकर्ता श्री सीतारामजी लाळस राजस्थानी भाषा और साहित्य के तथा भारतीय विद्या के प्रेमियो की ओर से हार्दिक बधाई के पात्र है।

कोश के निर्माण कार्य मे समय-समय पर जिन सज्जनो ने इसके महत्त्व को समझकर तन, मन, धन और विचार-विमर्श से सहयोग दिया है, वे सब बधाई के पात्र है। चौपासनी शिक्षा समिति और उप-समिति 'राजस्थानी सबद कोस' के अधिकारी गण तथा कार्यकर्ता तो विशेष रूपेण बधाई के पात्र है। 'समिति' ने साहित्य जगत् के सम्मुख एक उदाहरण प्रस्तुत किया है जो ऐसी अन्य सस्थाओ के लिए स्पर्धा का विषय होना चाहिए।

भाषा एक सामाजिक दाय है। सभी जीवत भाषाओ का शब्द-भडार निरन्तर बढता ही रहता है। वर्तमान मे राजस्थानी साहित्य की दोहरी प्रगति हो रही है। एक ओर तो उसके प्राचीन ग्रन्थो का सुसम्पादन किया जा रहा है और दूसरी ओर अनेक लेखक साहित्य-सर्जना कर उसकी श्रीवृद्धि कर रहे हैं। अत राजस्थानी शब्द कोश का कार्य ऐसा है जो इसके पश्चात् भी सतत रूप से चालू रहना चाहिए। मैं आशा करता हूँ कि 'समिति' इस ओर भी ध्यान देगी। मैं कोशकर्ता के स्वास्थ्य और शतायु होने की कामना करता हूँ।

सम्पादकीय निवेदन

भाषा की प्रामाणिकता एव उसके सवर्द्धन के लिए शब्द कोश की अपनी महत्ता है। विश्व की समृद्ध भाषाओं के अपने-अपने सुसम्पादित कोश है। राजस्थानी भाषा के पूर्व के प्रकाशित जो शब्द कोश उपलब्ध हैं, वे प्राय अपूर्ण हैं और उनमे वैज्ञानिकता का अभाव है। राजस्थानी भाषा एव उसके समृद्ध साहित्य के अनुरूप उपयोगी एव उच्चस्तरीय शब्द कोश की नितान्त आवश्यकता थी। यह एक सुयोग था कि सुहृदजन से कोश सम्पादन की प्रेरणा से मेरे अन्तर की अभिलाषा बलवती हुई जिसके परिणामस्वरूप 46 वर्ष पूर्व वृहद् राजस्थानी शब्द कोश के आकार एव स्वरूप के प्रारूप का आकलन किया गया। इसी के अनुसार अभावो एव बाधाओ की नानाविध घाटियो को पार करते हुए यह शब्द कोश 4 खण्डो की कुल 9 जिल्दो मे सम्पूर्ण हुआ। अन्तिम खण्ड की इस अन्तिम जिल्द की सप्रस्तुति के साथ कोश की सम्पूर्णता हो रही है, यह आत्मसन्तोष की एक सुखद स्थिति है। 46 वर्षो की अनवरत श्रम साधना की यह सफलता साहित्य मर्मज्ञो एव भाषाविदो की सद्भावनाओ का ही परिणाम है।

शब्द कोश की निर्मिति कितनी श्रम-साध्य, समय-साध्य और व्यय-साध्य है, भाषा प्रेमियो को बताने की आवश्यकता नही। राजस्थानी शब्द कोश सम्पादन के विचार का अकुरण जिस सहज भाव से हो गया था उसके विपरीत इसकी क्रियान्विति उतनी ही कठिन एव दुस्साध्य हो गई थी। इस कोश के सम्पादन कार्यकाल का जो एक दीर्घकालीन इतिहास बना है उसमे अर्थाभाव की अनुभूत विकलताओ और सुहृदसहयोगीजन की सद्भावनाओ का सुन्दर समन्वय हुआ है।

राजस्थानी वृहद् शब्द कोश सम्पादन-कथा एक स्वतन्त्र प्रकरण है, उसकी अभिव्यक्ति सम्प्रति उचित नही होगी। कोश का यह वृहद् आकार किसी एक व्यक्ति की शक्ति की परिसीमा का कार्य नही है। प्रारम्भिक अर्थाभाव की चपेट मे ही कोश निर्माण कार्य मे जो व्यवधान उपस्थित हुआ और जिस विकट परिस्थिति की अनुभूति हुई उस आधार पर कोश की सम्पूर्णता असम्भव ही प्रतीत हो रही थी। धीरे-धीरे यही तथ्य उजागर हुआ कि सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग के अभाव मे कोश निर्माण जैसे अनुष्ठान की सम्पूर्ति कदापि सम्भव नही।

साहित्य सवर्द्धन के लिए सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग देना सरकार का दायित्व भले ही हो, लेकिन इसकी उपलब्धि के लिए सुयोग्य जन की कडी की आवश्यकता होती है। कोश निर्माण का प्रारम्भिक कार्य तो सद्भावी साहित्य प्रेमियो के सहयोग से आरम्भ तो हो गया, लेकिन प्रकाशन और व्यय-साध्य कार्य बिना समुचित अर्थोपलब्धि के अभाव मे कैसे सम्पन्न हो सकता था। विकट अर्थाभाव मे जब कोश प्रकाशन की कोई आशा नहीं रही उस समय स्व० ठाकुर कर्नल श्यामसिंहजी रोडला और स्व० श्री गोवर्द्धनसिंहजी मेडतिया (खानपुर) आई० ए० एस० कोश के लिए ऐसे दृढ अवलम्ब बनकर आए कि इनके सान्निध्य और सरक्षण मे कोश की सम्पूर्ति की आशा बधने लगी।

श्रद्धेय स्व० ठाकुर कर्नल श्यामसिंहजी रोडला साहित्य प्रेमी ही नही साहित्य सेवी भी थे। साहित्य सकलन एव सवर्द्धन के प्रति उनकी विशिष्ट रूचि थी। इस कोश कार्य की प्रारम्भिक स्थिति मे ही मुझे आपका सान्निध्य प्राप्त हुआ। कोश निर्मिति के लिए अपेक्षित साहित्य की उपलब्धि मे आपका विशेष सहयोग रहा। अर्थाभाव के कारण जब-जब प्रकाशन कार्य मे शैथिल्य आया आपने अपने स्तर पर ही अर्थ व्यवस्था कर कोश कार्य को गति दी। बाधाओ से उत्पन्न, नैराश्य से घिरा और परिस्थितियों से थकित जब भी मैं आपके पास पहुँचा आपने आत्मीय भाव से मेरी परिस्थितियो को समझा और अपनी उदारता का परिचय दिया। यह सत्य है कि कोश का वर्तमान स्वरूप आपके ही सहयोग का प्रतिफल है। स्व० ठाकुर साहब कर्नल श्यामसिंहजी ने इस कोश के प्रति जिस निष्ठा और उदारता का परिचय दिया उसे यहाँ शब्दो मे सीमित नही किया जा सकता। मैं इस पुण्यात्मा का ऋणी हूँ और कोश के प्रति आपने जो सहज स्नेहपूर्ण सहयोग प्रदान किया उनके लिए मैं हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस कोश के प्रारम्भिक कार्य को जब स्व० श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया (खानपुर) ने देखा तो अनायास ही उनका लगाव इस कोश के प्रति हो गया। इनके हृदय मे साहित्य के प्रति सेवा भावना थी अत इस कोश की सम्पूर्णता उनके जीवन की एक अभीप्सा बन गई। कोश सम्बन्धी कार्य मे चाहे वह अर्थ सम्बन्धी था या व्यवस्था सम्बन्धी आपने सदैव पूर्ण उदारता दर्शायी। मैंने स्व० श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया मे औदार्य, सौजन्य एव सारल्य से परिपूर्ण जो व्यक्तित्व देखा उसके आधार पर यही कह सकता हूँ कि ऐसे सरल, सौम्य साहित्य प्रेमी इस धरा पर यदा-कदा ही अवतरित होते है। आप कोश के लिए सच्चे अर्थो में गोवर्द्धन बने और समय पर उसको विकट परिस्थितियो के वज्रपात से उबारा।

कोश के प्रति अपनत्व प्रकट करने वाले ऐसे आत्मीय-जन के लिए आभार-दर्शन को शब्दो मे नही बाँधा जा सकता। स्व० श्री गोरधन-सिंहजी मेडतिया (खानपुर) के सौजन्यपूर्ण सहयोग के लिए यह हृदय चिर ऋणि है और ऋणत्व भावना की मूक-स्थिति जितनी सत्य और निष्ठायुक्त है वह मुखर होकर नही रह सकती। मेरे लिए यह अपार दुख की बात है कि राजस्थानी कोश का सच्चा हितैषी, दृढ समर्थक उसकी पूर्णता न देख सका। कोश का अन्तिम खण्ड प्रकाशनाधीन था कि 18 सितम्बर, 1977 को वह दिव्यात्मा इहलोक छोड गई। स्व० श्रीगोरधनसिंहजी मेडतिया का पार्थिव शरीर भले ही कोश के सम्पूर्ण स्वरूप को न देख सके, परन्तु यह मेरी धारणा है कि उनकी आत्मा इस कोश के साथ आत्मसात् हो चुकी है। सृष्टि पर जब तक कोश की विद्यमानता है, उसकी उपयोगिता है, उस पावन आत्मा की स्मृति स्थिर है।

कोश के दूसरे खण्ड की पूर्णता के समय व्यय भार बढने से पुन अर्थभाव का सकट उपस्थित हुआ। इस समय केन्द्रीय सरकार से आर्थिक सहयोग प्राप्त कराने मे तत्कालीन ससद सदस्य डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने नि स्वार्थ भाव से सहयोग प्रदान किया। डॉ० सिंघवी एक अच्छे विचारक और लेखक है। साहित्य के प्रति अनुराग उनकी पैतृक विरासत है। प्रकाशित कोश जिल्दों को देखकर आप बडे प्रभावित हुए। आप ही के सहयोग से मैं भू० पू० प्रधान मन्त्री स्व० श्री लालबहादुर शास्त्रीजी से साक्षात्कार कर उन्हे कोश के प्रकाशित खण्डो का अवलोकन कराते हुए इसकी सम्पूर्णता की मेरी एकमात्र अभिलाषा से परिचित कराया। अभी पुन. वर्तमान प्रधान मन्त्री मान्यवर श्री मोरारजी देसाई से भी साक्षात्कार करने मे आपने सहयोग प्रदान किया। आपके सौजन्य के फलस्वरूप ही मैं मान्यवर मोरारजी देसाई को राजस्थानी शब्द कोश की रचना से परिचित करा सका। डॉ० सिंघवी के समयानुकूल समुचित सहयोग के लिए मैं हृदय से उनका आभार स्वीकार करता हूँ।

कोश की प्रकाशित जिल्दो को देखकर सहज भाव से प्रेरित हो कोश कार्य हेतु सहयोग प्रकट करने वालो मे स्थानीय साहित्य प्रेमी एव राजस्थान उच्च न्यायालय के प्रतिष्ठित अभिभाषक श्री मरुधर मृदुल को भुलाया नही जा सकता। सरल स्नेहभाव से ओतप्रोत श्री मरुधर मृदुल ने सदैव मेरी समस्याओ को सुना और उनके निवारण मे अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया। कोश कार्य के सम्बन्ध मे आपने जो सौजन्य प्रकट किया उसके लिए मैं हृदय से उनका पूर्ण आभार मानता हूँ।

स्थानीय साहित्य प्रेमियो में विशेषकर राजस्थानी भाषा मे रुचि रखने वालो की सद्भावना मुझे कोश निर्माण कार्य के आरम्भ से ही प्राप्त होती रही। इनमे श्री कोमल कोठारी और श्री विजयदान देथा का प्रमुख स्थान है। रूपायन सस्थान बोरून्दा की स्थापना कर आपने लोक साहित्य एव लोक सस्कृति के प्रति अपनी परिष्कृत रुचि का परिचय दिया हे। आप दोनो ने कोश निर्माण के कार्य को निकट से देखा और प्रकाशित खण्डो का अध्ययन कर इसे युग की आवश्यकता बतलाते हुए राजस्थानी भाषा की समृद्धि के लिए अनिवार्य कृति बताया। कोश सम्बन्धी कार्यो के लिए आपने सदैव प्राथमिकता के आधार पर सहयोग प्रदान किया। आप दोनो के इस सौहार्द्रभाव के लिए मैं हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कोश सम्पादन कार्य जिस लम्बी अवधि मे सम्पन्न हुआ उसके अनुसार सम्पादन तथा प्रकाशन-व्यवस्था का अनेक स्थितियो से गुजरना सहज-स्वाभाविक था। सरकार द्वारा आर्थिक सहयोग प्राप्त करना नितान्त आवश्यक था अत' नियमानुसार वैधानिक प्रकाशन समिति की देखरेख मे कोश कार्य होना वाँछनीय था। द्वितीय खण्ड के प्रकाशन कार्य से ही कोश प्रकाशन कार्य "चौपासनी शिक्षा समिति" द्वारा गठित "उप-समिति राजस्थानी शब्द कोश" की देखरेख मे होने लगा। इस उप-समिति के प्रथम अध्यक्ष के रूप मे स्व० भाद्राजून राजा साहब श्री देवीसिंहजी ने कार्य करते हुए कोश कार्य को गति प्रदान की। कुछ ही समय पश्चात् ब्रिगेडियर "आपजी" श्री रणवीरसिंहजी ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया। आपकी हार्दिक चाहना रही कि इस कोश का प्रकाशन सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो। अपनी निजी व्यस्तता के होते हुए भी कोश के प्रकाशन कार्य मे आने वाले व्यवधानो का निवारण करने के लिए व्यक्तिगत रूप से रुचि ली। द्वितीय एव तृतीय खण्ड आपकी अध्यक्षता मे ही प्रकाशित हुए। इस अवधि मे आपका जो स्नेह-सिक्त सरक्षण एव हितैषीजन्य मार्गदर्शन मिला उसके लिए आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना अपना दायित्व समझता हूँ।

कोश के चतुर्थ खण्ड के प्रकाशन का कार्य जब प्रारम्भ हुआ तब माननीय महाराज श्री प्रह्लादसिंहजी ने उप-समिति राजस्थानी शब्द कोश के अध्यक्ष पद को ग्रहण किया। राजस्थानी भाषा एव उसके साहित्य के लिए कोश की अनिवार्यता को आपने समझा और अपने सद्प्रयत्नो से इसे सम्पूर्ण कराने की स्थिति की ओर अग्रसर हुए। मुझे अनेक बार आपसे मिलने का अवसर मिला। आपने कोश सम्बन्धी कार्य निष्पादन मे पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया। आपके सामयिक सहयोग के लिए आभार प्रदर्शित करता हूँ।

कोश कार्य हेतु नि स्वार्थ भाव से समय देने वालो मे डॉ० हीरालालजी माहेश्वरी, प्राध्यापक राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर का नाम भी उल्लेखनीय है, कोश की अन्तिम जिल्द मे आपने भूमिका लिखकर साहित्य प्रेमियो के लिए कोश के स्वरूप का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया हे इस सहयोग के लिए डॉ० माहेश्वरी निश्चय ही धन्यवाद के पात्र है।

उदार महानुभावो के सद्प्रयत्नो से सरकार की ओर से कोश प्रकाशन के लिए समय-समय पर आर्थिक सहयोग प्राप्त होता रहा। इस कार्य हेतु वाछित पत्रो की प्रस्तुति के लिए शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियो से मेरा सम्पर्क हुआ। तत्कालीन शिक्षा आयुक्त श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता एव भूतपूर्व शिक्षा निदेशक श्री अनिल बोडिया

ने कोश जैसे कार्य की महत्ता को पहिचाना और मुझे कोश कार्य हेतु पूर्ण सहयोग प्रदान किया। जोधपुर मे जिलाधीश के पद पर कार्य करते हुए श्री कृष्णकुमारजी भटनागर एव श्री नरेन्द्रसिंहजी सिसोदिया ने भी मेरी समस्याओ के निवारण मे सहयोग का हाथ बढाया। आप सभी महानुभावो के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।

स्थानीय सहयोगियो मे श्री सतीशचन्द्र गोयल, भूतपूर्व उपकुलपति जोधपुर विश्वविद्यालय, श्री जहूरखाँ मेहर प्रवक्ता विश्वविद्यालय, जोधपुर, श्री रामनिवास शर्मा, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, श्री ओमप्रकाश शर्मा एव श्री शान्तिलाल आदि का नाम उल्लेखनीय है। कोश सम्बन्धी कार्य के लिए आप सभी का सहयोग मुझे मिला इसके लिए मैं आपके प्रति धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

इस कोश के सम्पादन मे लगभग अर्द्ध शताब्दी की अवधि व्यतीत हुई इस अवधि मे कोश सम्बन्धित कार्य वैविध्य के कारण अनेक महानुभावो के सहयोग की अपेक्षा होना नितान्त आवश्यक बात थी। कोश कार्य को लेकर मैं जिन महानुभावो मे मिला उन्होंने मुझे यथा समय पूर्ण सहयोग प्रदान किया। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मेरे प्रति सच्ची महानुभूति रखने वाले एवं हृदय से कोश कार्य मे सहयोग देने वाले सभी महानुभावो के नामो का उल्लेख यहाँ नही हो पाया है। आवश्यकतानुसार प्रथम खण्ड व द्वितीय खण्ड की प्रथम जिल्द के प्रकाशन के अवसर पर मैं आभार प्रदर्शित कर चुका हूँ फिर भी उन सभी महानुभावो से क्षमा चाहते हुए उनके प्रति हृदय मे आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होने परोक्ष या अपरोक्ष रूप से कोश सामग्री संग्रह करने प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग देने तथा अन्य स्रोत से उपयोगी साहित्य सामग्री उपलब्ध कराने मे सहयोग प्रदान किया है।

इस खण्ड के प्रकाशन के साथ "राजस्थानी शब्द कोश" का पूर्ण स्वरूप जिसमे लगभग दो लाख शब्दो का संग्रह है, विद्वज्जन के समक्ष है। उपादेयता की कसौटी साहित्यिक समाज है। मुझ अकिंचन से जो प्रयास सध सका वही सप्रस्तुत है। न्यूनताओ और त्रुटियो के लिए विज्ञसमाज मुझे क्षमा करते हुए उपयोगी सुझाव प्रेषित कर अनुगृहीत करेगा ऐसी मेरी हार्दिक अभिलाषा है।

धन्यवाद

शास्त्री नगर,
जोधपुर
संवत् २०३५
दिपावली

सीताराम लालस

संकेत और चिन्ह

साकेतिक रूप	पूर्ण नाम	साकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अ०	अंग्रेजी भाषा	भू० का०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्रा०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म० वा० रू०	कर्मवाच्य रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमानकाल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	स०	संस्कृत
गो० रा०	गोरादि	स० उ०	संज्ञा उभयलिंग
ची०	चीनी भाषा	स० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	स० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डिं०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
प०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त्त०	पुर्त्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गौ खिड़ियौ
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फ्रा०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भा० वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान	प्रयोजन
❀	शब्द के आगे	यह शब्द कविता मे ही प्रयोग होता है।
'	शब्द के अक्षरो के बीच मे सिर पर	यह ध्वनि-लोपक चिन्ह है, जहाँ 'ह' की ध्वनि लोप होती है वहा आता है।
—	शब्द के नीचे	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'...'	शब्द के दोनो ओर सिरो पर	व्यक्ति वाचक सज्ञा का सूचक (इनवर्टेड कॉमाज)

संदर्भ ग्रंथ-सूची

सक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोश	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधान माळा	उदयराम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमरकाव्य	ऊमरदान लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नाम माळा	वीरभाण रतनू, उदयराम बारहठ
ऐ० जै० का० सं०	ऐतिहासिक जैन काव्य सग्रह	सपा अगरचन्द बारहठ
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयराम बारहठ
कां० दे० प्र०	कान्हडदे प्रबन्ध	पद्मनाभ
गी० रा०	गीत रामायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० व०	गुण रूपक वध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाडखाँ आढी
चितराम	राजस्थानी सस्कृति रा चितराम	जहूरखा मेहर
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं० ना० मा०	डिंगल नाम माला	हरराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
जा० वि० सं० सा०	जाभोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य	डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
जा० स०	जाभोजी को सबदवाणी	डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
द० दा०	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि०	देवियाण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्रं०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	सपा० अगरचन्द नाहटा
ना० मा०	नाम माला	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगल कोश	नागराज पिंगल
ना० द०	नागदमण	साइया झूला
नी० प्र०	नीति प्रकाश	सगरामसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
प० प० च०	पच पडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियौ
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकाश	हमीरदान रतनू
पी० ग०	पीरदान ग्रन्थावळि	पीरदान लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदान गाडण
बां० दा०	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां० दा० ख्यात	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिक्खु०,	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
भि० द्र०	,,	,,
मा० का० प्र०	माधवानल काम कदला प्रबध	कवि गणपति

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
मा० म०	मारवाड मर्दु मशुमारी रिपोर्ट	मुशी देवीप्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरा	मीरा बाई	मीरा
मे० म०	मेहाई महिमा	हिंगळाजदान कवियौ
र० ज० प्र०	रघुवर जसप्रकाश	किसनौ आढौ
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मछाराम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोतरी वचनिका	जग्गौ खिडियौ
र० हमीर	रतनाहमीर री वारता	महाराजा मानसिंह
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी री रासौ	अज्ञात
रा० जै० छद	राउ जैतसी रौ छद	बीठू सूजौ नगराजोत
रा० रा०	राम रासौ	माधोदास दधवाडियौ
रा० रू०	राज रूपक	वीर भाण रतनू
रा० व० वि०	राठौड वस री विगत	अज्ञात
रा० सा० स०	राजस्थानी साहित्य सग्रह I	सम्पादक स्वामी नरोतमदास
ल० पि०	लखपत पिंगल	हमीरदान रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपालदान कवियौ
लो० गी०	राजस्थानी लोक गीत	अज्ञात
व० भा०	वश भास्कर	सूर्यमल मिसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	सपादक भोगीलाल साडेसरा
वि० कु०	विनयकुमार कृति कुसुमाजलि	कविवर विनयचन्द्र
वि० स०	विडद सिणगार	कविराजा करणीदान कवियौ
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मिसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदान वारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
बृस्त०	बृहत्स्तवनावली	सग्रह
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० व०	शिखर वशोत्पति	गोपालदान कवियौ
शि० सु० रू०	शिवदान सुजस रूपक	लालदान वारहठ
स० कु०	समयसूदर कृति कुसुमाजलि	महाकवि समयसुदर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश I, II, III	कविराजा करणीदान
ह० ना० मा०	हमीर नाम माला	हमीरदान रतनू
ह० पु० वा०	स्रीहरिपुरुष की वाणी	श्री हरिपुरुपजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास वारहठ
हा० भा०	हाला भाला रा कुडळिया	ईसरदास वारहठ

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(तृतीय जिल्द)

स

स-स पु [सं] नागरी या सस्कृत वर्णमाला का बत्तीसवा व्यञ्जन जिसका उच्चारण-स्थान दन्त होने के कारण दन्त्य कहा जाता है।
वि० वि०—सस्कृत एव हिन्दी भाषा मे यह वर्ण उच्चारण भेद से तालव्य, मूर्धन्य एव दन्त्य तीन प्रकार का माना गया है, जिनके रूप क्रमश 'श', 'ष' तथा 'स' है। परन्तु प्राकृत, अपभ्र श एव राजस्थानी भाषा की लिखावट मे दन्त्य 'स' का ही प्रयोग किया जाता है जो तीनो रूपो का प्रतिनिधित्व करता है। सस्कृत वैयाकरणो के मतानुसार इसका उच्चारण स्थान दन्त, आभ्यन्तर प्रयत्न ईषद्विवृत व बाह्य प्रयत्न महाप्राण, और अघोष हैं। आधुनिक वैयाकरणो के अनुसार यह वर्त्स्य सघर्षी अघोष ध्वनि है इसका उच्चारण जीभ की नोक से वर्त्स्य स्थान को रगड के साथ छू कर किया जाता है।

स-सं. पु. [स. श] १ सुख, आनन्द हर्ष। (एका)
२ कल्याण। (एका.)
उ०—सं काळिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया। ओह सोह अखया अभया, आई अजया विजया उमया।—देवि
३ वैराग्य। ४ शान्ति।
५ शिव, शकर। (एका)
६ विष्णु। ७ षड्ज।
[म स] ८ आकाश। ९ इन्द्रिय।
१० कारण। (एका)
११ धार। १२ पक्षी। १३ मधु।
१४ रक्षक। (एका)
१५ रोग। १६ शनिश्चर।
१७ शरण। (एका)
१८ शरीर। (एका)
१९ सर्प, साप। २० स्मरण।
२१ पवन, हवा। (एका)
२२ प्रकाश। (ना मा)
वि —१ शुभ। २ सर्वोत्तम।
३ रक्षक। (एका)
अव्य [स. सम्] समानता, सगति, उत्कृष्टता, निरन्तरता, औचित्य आदि सूचित करने का एक अव्यय या उपसर्ग।

सई—१ देखो 'सखी' (रू भे)
उ०—आयी रे आयी मारू सावणियै री तीज। राय सइया नै कसूबौ रे म्हारा गाढा मारू ओढियौ।—लो गी
२ देखो 'सामी' (रू भे)
उ०—मस्तक मेरै पाव धर, मदिर माही आव। संइयां सोवै सेज पर, दादू चपै पाव।—दादूवाणी
३ देखो 'साई (रू भे)

सईयार—देखो 'साईआर' (रू भे)

सक—देखो 'सका' (रू भे) (अ मा; ह ना. मा)
उ०—१ धणी सूपा सरण मरण सक धारिया, लाज मन धरै जैसाणगढ लारिया।—जसजी आढौ
उ०—२ सुर नर नाग नमै सह कोय, करै नह संक असक न कोय।—रामरासौ
उ०—३ नारायण देवा मही, ज्यू तारायण चद। कमळा पगचपी करै, 'वक' संक तज वद।—वा दा
उ०—४ औटहि वैठा पडिगनौ लै दाम उग्राही, मोटै खोदाळम तणी, मन सक न काही।—मालौ सादू

सकडाई—स स्त्री —देखो 'साकडीलौ' (रू भे)
उ०—१ कुसळौ तिलोक सकडाई मे चालवा लागा। अनै मन मैं जाणौ भीखणजी रा स्रावका नें फेरा। परुपणा साकडी करवा लागा—साधू ने तीजा पहर नी गोचरी करणी।—भि द्र
उ०—२ स्वामी भीखण जी बीलाडै पधारचा। गाम मे लोक लुगाई द्वेस घणौ करै। आहार पाणी री सकडाई।—भि द्र

संकड़ेलौ—देखो 'साकडीलौ' (रू भे)

सकड़ै—देखो 'साकडै' (रू भे)
उ०—भडा रूप चाढण घडा वेहडा भावसिंघ, कळह रा थभ न्याहै कहावै। सदालग चाड जोधा तणी संकडै, आवियौ जेम रिणमाल आवै।—राठौड भावसिंघ कूपावत रौ गीत

सकडौ—देखो 'साकडौ' (रू भे)
उ०—१ काम पताका काय, उदै जै अकडा। राजस तजि चित रोस क, सोक्या सकड़ा।—वा दा
उ०—२ अव्वल सकडी कोठरी, दूजी माझळ-रात। तीजा सकडौ ढोलियौ, मतवाळै कौ साथ।—लो गी
उ०—३ सुज दास टालण संकड़ा, लहरेक आपण लक। भूपाळ सिंध घन भूपती, रिझवार कीरत वड रती।—र ज प्र
क्रि प्र —करणौ, पडणौ, होणौ।
(स्त्री सकडी)

सकज—स स्त्री —केसर। (अ. मा)

सकट—स पु [स] १ दुख, मुसीबत।
उ०—करता माचा दै जाचा कूतरिया, उतरत्ता आसाढा मूढा ऊनरिया। सेणा सकट मे वकट सव राया, घाटा घुटियोडा घूघट घवराया।—ऊ का
२ पीडा, तकलीफ, कष्ट।
उ०—विना कळदार बुद्धि नहिं वसा, पुनि या विन नहिं होत प्रससा। सकट हरण भहु वेससा, येह नर नारि जक्त अवतसा।
—ऊ का.
३ बाधा, अडचन, रोड़ा।
उ०—रोम रोम आमय रहै, पग पग सकट पूर। दुनिया सू नजदीक दुख, दुनिया सूं सुख दूर।—वा दा.

४ आफत, विपत्ति, आपत्ति।
उ०—१ 'बाका' मेहासघू म बीसरै, संकट हरै साभळै साद। गडवाड़ा गढ ग्रौलै गाजै, मढ रै ग्रौळै गढा अजाद।—वा दा
उ०—२ नरेस कहियौ पहली मळ री फरमाण आयौ जरै ही म्हैं तौ जाणि लीधौ ग्रब साहरै म्हारा माथा सू काम पडियौ। ग्रर इण सकट सूं भी विसेस ग्रब किसौ काम रहियौ जिण री रीझ माथै वळा री देवी तेवडियौ।—व भा
क्रि. प्र—करणौ, देणौ, पडणौ, लागणौ, होणौ।
५ रोग, बीमारी। (ग्र मा)
क्रि प्र—लागणौ, होणौ।
५ चौसठ भैरवो मे से एक।
६ धर्म एव कुकुभ के पुत्रो मे से एक।
रू भे—सगट, सगठ।

संकटगीर—वि [स सकट+फा गीर] १ दु:खी, पीडित।
२ रोगी, बीमार।

सकटचौथ—स. स्त्री यौ [स सकट+चतुर्थी] १ प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि। (ज्योतिष)
२ माघ मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि।

सकटणौ, संकटबौ—क्रि ग्र—सकट मे पडना, पीडित होना, सकटयुक्त होना।
उ०—'चालक' नै मढ हूंता चाचर, झाझरियाळ सदोमत झूलर। काछ-पचाळ लगै छै डाकर, ग्राई ग्रावजै व्रन सकटियै ऊपर।
—प्रथ्वीराज राठौड
संकटणहार, हारौ (हारी), सकटणियौ—वि०।
संकटिग्रोडौ, संकटियोडौ, सकट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सकटीजणौ, सकटीजबौ—भाव वा०।
सगटणौ, सगटबौ, सगठणौ, संगठबौ—रू० भे०।

सकटहर—वि. यौ [सं सकट+हर] सकट को हरण करने वाला, नाश करने वाला या दूर करने वाला।
स पु—ईश्वर। (नां मा)

सकटा—स स्त्री. [स सङ्कटा] १ एक देवी विशेष जो सकटो को नाश करने वाली मानी जाती है और उसका मन्दिर काशी मे है।
२ ग्राठ योगनियो मे से एक योगिनी विशेष।
वि. वि—ज्योतिषानुसार ग्राठ योगनियो के नाम निम्नलिखित है:—
१ मगला, २ पिंगला, ३ धन्या, ४ भ्रमरी, ५ सकटा, ६ भद्रिका, ७ उल्का और ८ सिद्धि।

सकटियोड़ौ—भू का. कृ.—सकट मे पडा हुग्रा, पीडित हुवा हुग्रा, सकटयुक्त हुवा हुग्रा।
(स्त्री सकटियोड़ी)

संकणौ, सकबौ—क्रि ग्र [स शकनम्] १ शका होना, सन्देह होना।
उ०—मनि सकांणी मारुवी, खुणमउ राखइ कत। हसता प्री सू बीनवइ, साभळि, प्री थिरतत।—ढो. मा
२ डरना, भयभीत होना, घबराना।
उ०—मन माहि सकै सुभट, पदमणि दीधी राय। जो छूटै नहीं तौ रखै, दोन्यु स्वारथ जाय।—प. च. चौ
३ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना।
उ०—सकै जावै संग सू, ग्ररध निसा मैं ऊठ। नर मूरख तौ पिण न दै, पातरिया नु पूठ।—बा दा
उ०—२ घोळा खोसै, काच-नकचूटी हरदम हाथा मे ही राखै। देखणिया सूं सकतौ लकोवै है, पण ठोडी रै चिगदा घालतौ ही जावै है।
—दसदोख
सकणहार, हारौ (हारी) सकणियौ—वि०।
सकिग्रोड़ौ, सकियोडौ, सक्योडौ—भू० का० कृ०।
सकीजणौ सकीजबौ—भाव वा०।
सकाड़णौ सकाड़बौ, सकाणौ, सकाबौ, सकावणौ सकावबौ।
—रू० भे०

संकदजणणी—स स्त्री [स स्कदजननी] पार्वती।

सकपालिका—स स्त्री - एक प्रकार का ग्राभूषण विशेष। (व. स)

सकल्प—देखो 'सकल्प' (रू भे)
उ०—दोख लागै तिकौ च्यार परकार ना, धुर थकी नाम नैं ग्ररथ तै धारणा। किणही कारण वसै पाप जै कीजियै, प्रथम तै नाम सकप्प कहीजियै।—घ व ग्र.

सकमांन—स पु. [स शकमान] नागवशीय प्रवीर राजा का पुत्र, एक राजा।

सकर—सं पु [स शकर] १ शिव, महादेव। (डिं को; ना. डिं को)
उ०—पारस प्रासाद सेन सपेखै, जाणि मयक कि जळहरी। मेरु पाखती नखित्र माळा, ध्रू माळा सकर धरी।—वेलि.
२ शकराचार्य।
३ सूरज, सूर्य (ना डिं. को)
३ एक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे १६ व १० के विराम से २६ मात्राए होती हैं तथा ग्रन्त मे लघु होता है। (क कु बो)
३ सगीत मे मेघ राग का पुत्र एक राग विशेष।
५ भीमसेनी कपूर।
[स सकर] ६ भिन्न वर्ण के माता-पिता से उत्पन्न सन्तान, दोगला।
७ भिन्न वस्तुग्रो का मिश्रण।
८ एक ही ग्राश्रय से ग्रनेक ग्रभिप्राय देने वाली ध्वनि।
(साहित्य)
९ दो ग्रलकारो के इस प्रकार शामिल रहने की ग्रवस्था, कि वे दोनो ग्रलग २ नही किये जा सकते हो। (साहित्य)

[स शकर] १० पाण्डव देशाधिपति सुरुचि का पिता जिसने गलती से शाकल्प मुनि का पत्नी सहित वध कर डाला था।
११ कश्यप एव दनू का एक पुत्र, दानव।
१२ एक सनातन विश्वदेव। १३ एक शिव भक्त।
वि [स शकर] १ कल्याण करने वाला, कल्याणकारी।
२ आनन्ददायक, आनन्दकारी।
रू भे —सकरय।
अल्पा, —सकरियौ।

सकरग्रास–स पु [स शकर+ग्रासः] धनुष। (अ मा)

सकरखण–स पु [स सकर्षण] १ श्रीकृष्ण के भाई बलराम। (अ मा, ना. मा, ह ना. मा)
उ०—चढिया हरि सुणि संकरखण चढिया, कटवध नह घणा, किध। एक उजाथर कळहि एहवा, साथी सहु आखाढसिध।
—वेलि
२ श्रीकृष्ण। (अ मा)
३ अपनी ओर खीचने की क्रिया।
४ खेत में हलजो तने की क्रिया।
५ सघर्षण। (४) ग्यारह रुद्रो मे से एक। (७) एक वैष्णव सम्प्रदाय।

सकरघरणि, सकरघरणी–स स्त्री यौ [स शकर+गृहिणी] शिव की स्त्री पार्वती। (डि को)

सकरण–स. पु. [स.] मिश्रित होने की क्रिया या भाव।
वि. [स शकरण] शिव का, शिव से सम्बन्धित।
उ०—सघण री छटा किरि उपटा अणसरण, सकरण चुवडि पण धरण सोधौ। वधव रौ ग्रहण करि उग्रहण अणसरण, 'करण' तण नळ वरण भखण कीधौ।—पदमसिंघ राठौड री गीत

सकरणी–स स्त्री १ हरड, हरडै, हड। (ना मा)
२ दुर्गा, पार्वती, शिवा।

सकरजटा–स स्त्री. यौ. [सं शकरजटा] १ रुद्रजटा।
२ सागुदाना, सावूदाना।

सकरता–स स्त्री [स. संकर+ता प्रत्य.] १ मिश्रित होने की अवस्था या भाव।
२ दोगला होने की अवस्था या भाव, दोगलापन।

सकरताळ–स स्त्री. [स. शकर ताल] सगीत का एक ताल विशेष।

सकरतीरथ–स. पु यौ. [स शकरतीर्थ] एक तीर्थ स्थान। (पुराण)

सकरप्रिय–स. पु यौ. [स. शकरप्रिय] १ अर्क, आक।
२ भाग।
३ धतूरा।

सकरभास्य–स पु. यौ [स शकरभाष्य] शकराचार्य द्वारा की गई श्रीमद् भगवत् गीता की टीका।

सकरयं—देखो 'सकर' (रू भे)

संकरवांणी–स स्त्री यौ [स शकर वाणी] जो सदा सत्य होता है, ब्रह्मवाक्य।

संकरसेल–स पु यौ [स शकर शैल] कैलाश पर्वत जो महादेव का निवास-स्थान माना जाता है।

सकरस्वांमी – देखो 'सकराचारच'।
उ०—वैसाखा मे विळखा वामी, हुयगा सवळा जैन विरामी। आखातीजा घणी अमामी, सिद्ध जन्मियौ संकरस्वांमी।
—ऊ का.

सकरात, सकरांति, संकरांयत, सकरायति–स स्त्री [स सक्रान्ति] १ सूर्य अथवा किसी अन्य ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि मे जाने का समय।
२ सूर्य या अन्य ग्रहो का एक राशि से दूसरी राशि मे जाने की क्रिया।
३ वह दिन, जब सूर्य एक राशि से दूसरी राशि मे गमन करता है। इस दिन को प्राय· पवित्र माना जाता है एव लोग स्नान, दान, पूजा आदि करते हैं तथा उत्सव मनाते है।
४ उक्त दिन मनाया जाने वाला उत्सव।
५ मकर सक्रान्ति।
उ०—१ पद वनरावन पामियौ, दुरद दिखाळै दांत। सीह थयो वन साहिवौ, ठीगा री सकरांत।—बा. दा.
उ०—२ म्है तौ आ चार पाच दिना मैं आछी तरै पतयाणी कै लाठी जिणरी भैंस। लाठा री सकरायत है। पइसा री खीर है।
—फुलवाडी
वि० वि०—सक्रान्ति का अर्थ सूर्य का मकर राशि मे सक्रमण करने से है। अन्य ग्रहो के किसी राशि मे सक्रमण होने वाले समय को इतना महत्व तथा पुण्यकाल नही माना जाता है।
मुहा०—ठीगा री संकरात=बल के आधार पर जबरदस्ती कोई कार्य कर लेने वाले के प्रति।
रू भे —सक्रात, सक्राति, सक्रायत, सकरात, सकराति, सकरायत, सकरायति।

सकरा–स स्त्री. [स शकरा] १ पार्वती, भवानी।
२ मजीठ।
३ शमी वृक्ष।
४ शंकर नामक राग। (सगीत)
वि स्त्री —कल्याण करने वाली।

सकराचारज, संकराचारच, संकराचारिज, संकराचारी–स पु. [स. शकराचार्य] एक प्रसिद्ध शैव आचार्य जो अद्वैत मत के प्रतिपादक तथा प्रवर्त्तक थे।
उ०—वाम दखिण मति दुज वारिज, चवै प्रमाण सकराचारिज। उवै सास्त्र लखि दुज्ज उचारै, ध्यान धरेम अखडित धारै।
—सू प्र.

उ०—३ 'सादूळं' सकळ सहै, तोडै लाज ्जंजीर। स्रोण सलो-भौ चीतवै, गिणै निलो-भौ नीर।—गु रू. व.

सकळजथा-स स्त्री.—डिंगळ साहित्य मे गीत (छन्द) रचना का एक नियम विशेष जिसमे शृंखलाबद्ध विधानपूर्वक भावो का वर्णन किया जाता है।

मकलण-सं. पु. [स संकलन] १ सग्रह, ढेर।

२ एकत्रीकरण।

३ अनेक ग्र थो से अच्छे विषय चुनने की क्रिया।

सकळणौ, संकळबौ-क्रि स.—१ सकलित करना, सग्रह करना।

२ एकत्रीकरण करना।

३ विभिन्न ग्रथो मे से अच्छे विपयो को चुनना।

क्रि. अ —४ शस्त्रो से सुसज्जित होना।

उ०—माहौ माहि तै लसकर बै मिलिया, सनद्ध वद्ध सकळिया। टकारव लागे नवि टलिया, भड सहु कोई भिलिया रे।—वि. कु.

सकळणहार, हारौ (हारी), सकळणियौ—वि०।

सकळिग्रोडौ, संकळियोड़ौ, संकळ्योडौ —भू० का० कृ०।

सकळाडणौ संकळाड़वौ, संकळाणौ, संकळाबौ, सकळावणौ, संकळाववौ—प्रे० रू०।

सकळीजणौ, सकळीजबौ —कर्म वा०।

सकळप—देखो 'सकल्प' (रू भे.)

उ०—१ कमधजा छात जिग वात क्रत, लख विख्यात सकळप लियौ। रिखि वयण आद वासिस्ट ग्रग, कहिया तिम उद्यम कियौ —रा रू.

उ०—२ दो जणा सायरौ देय'र ऊभौ कियौ। परणावण री विधि वेगी-वेगी होवण लागी। चदू रौ हाथ पकड'र संकळप भरायौ। —वरसगाठ

सकळपणौ, संकळपवौ- क्रि स. [स. सकल्पन] १ किसी वात के लिए पक्का विचार करना, दृढ निश्चय करना।

उ०—'विहारी' दिन वकडै, वका सेर जुग्राण। रहिया गढ जाळोर सू, संकळपे ग्रापाण।—गु. रू व.

२ धार्मिक कार्य के निमित्त हाथ मे जल लेकर कुछ मत्र पढ कर दान करना।

उ०—तद गोगेजी नू बूडैजी री वेटी परणाई। ताहरा वाई रै दायजै री वखत किहि गाया सकळपी, किही क्यु ही सकळपियौ। ताहरा पावूजी कह्यौ—वाई! हू तोनूं दोदै सूंमरै री साढा रा वरग ग्राण देईस।—नैणसी

३ विचार करना, इरादा करना।

४ समर्पण करना।

सकळपणहार, हारौ (हारी), संकळपणियौ—वि०।

सकळपिग्रोडौ, संकळपियोड़ौ, सकळप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सकळपीजणौ, संकळपीजबौ —कर्म वा०।

सकळप्पणौ, संकळप्पवौ, सकल्पणौ, संकल्पवौ—रू० भे०

संकळपियोडौ—भू. का. कृ —१ किसी वात के लिए पक्का किया हुग्रा, दृढ निश्चय किया हुआ। २ धार्मिक निमित्त हाथ मे जल लेकर कुछ मत्र पढ कर दान किय ३ विचार किया हुग्रा, इरादा किया हुग्रा। ४ समर्पित (स्त्री सकळपियोडी)

सकळप्पणौ, संकळप्पवौ—देखो 'सकळपणौ, सकळपवौ' (रू भे

उ०—बळिवत जोध (वू) 'ढण' हरी, सूर धीर साकौ संकळप्पि प्राण जाळोर सूं, नीमै रहिया निज मरण —गु

संकळप्पणहार, हारौ (हारी), संकळप्पणियौ—वि०।

सकळप्पिग्रोडौ, संकळप्पियोडी, संकळप्प्योड़ौ—भू० का०

सकळप्पीजणौ, सकळप्पीजवौ—कर्म वा०।

सकळप्पियोड़ौ—देखो 'सकळपियोडौ' (रू. भे)

सकळि सकळिक, सकलिक—देखो 'साकळ' (रू भे.)

उ०—१ ……हेमजालक रत्नजालक मानक गोपुच्छक मगध वरणासर कदबपुस्प कललभगक अभ्रमेखक नुटक स्रवणपीठ स्रवणपाल वैस्टिक…… —व. स.

उ०—२ आखि ग्रोर इद्री छूटि २ पडिया। हाड सकळि —

संकळियोडौ-भू. का. कृ —१ सकलित किया हुग्रा, सग्रह किय २ एकत्रीकरण किया हुग्रा. ३ विभिन्न ग्र थो मे से अच्छे को चुना हुग्रा. ४ शस्त्रो से सुसज्जित हुवा हुग्रा। (स्त्री. संकळियोडी)

सकळौ—देखो 'साकळौ' (रू. भे.)

उ०—इण भात सूं कुवर मन मैं विचार नै पचास म सकळौ दियौ न वरजै राखी खवरदार, कठहि जाव काढजे —रिसालू

संकल्प-स. पु. [स. सकल्प] १ दृढ निश्चय या विचार।

उ०—चालुक्य राज भीम आप रा वाम भुज नूं इच्छणी र री पीठ करण री संकल्प तजियौ।—व भा.

उ०—२ जिकी वात प्राची रा अधीस दूजा कुमार सुजा उर मै न माई। अर अनामय पूछण री व्याज करि पिता भाई समेत मारि साह होण री सकल्प करि दिल्ली माथै चतुरग चमू चलाई।—व. भा

२ इच्छा, अभिलाषा।

उ०—अर कठीरव कन्नह चालुक्य राज रै विजय रौ वधावतौ निसक थकौ एक महूरत लड़ियौ।—वं. भा.

३ इरादा, विचार।

उ०—१ अर रामपुरै आपरौ सगपण हुवौ जिण रा विव दसोर रा फौजदार नू नीडै जाणि केही वार सकल्प पाछौ तुरका रा पेच मैं कैद होण री डर धारियौ।—वं.भा.

उ०—प्रलावदी प्रारंभ कीध सोनागर ऊपर, हुवो समर तलहटी जुडे चहुवाण मछर भर। सकतीपुर चो साम प्राण सुरताण सकायो, गाजे घड गज रूप चीत प्रालम चमकायो।—प्रग्यात

सकाणहार, हारो (हारी), सकाणियो—वि०।

संकायोड़ो—भू० का० कृ०।

सकाईजणो, सकाईजबो—कर्म वा०।

सकाड़णो, सकाड़बो, सकावणो, सकावबो—रू० भे०।

संकायोडो–भू. का कृ.—१ शकित कराया या किया हुम्रा, सन्देहशील कराया या किया हुम्रा।

२ भयभीत किया या कराया हुम्रा, डराया हुम्रा। ३ परवाह किया या कराया हुम्रा, ग्रौचित्यपूर्ण विचार रखा हुम्रा या रखाया हुम्रा। ४ लज्जित किया या कराया हुम्रा, शर्मिन्दा किया या कराया हुम्रा।

५ देखो 'सकियोडो (रू भे)

(स्त्री सकायोडी)

सकाळ, सकाळू–वि. [स. शका+म्रालुच्] १ शंकित करने वाला, भयभीत करने वाला।

उ०—चाळो बीर वाळो सारो, भूजाटा तुहाळे छाजे, कमधेस वाळो हाको, ग्ररिंदा संकाळ।—गुलाब सिंह महडू

२ शंकित होने वाला।

३ भयभीत होने वाला।

४ लज्जित होने वाला, शर्मिन्दा होने वाला।

रू. भे.—सकीलो।

संकावणो, सकावबो—१ देखो 'सकाणो, सकाबो' (रू. भे.)

उ०—ग्रादर देवण मीत, रक ना रच सकावे। परवत घण पोछाळ, प्रीतडी कही न जावे।—मेघ.

सकावणहार, हारो (हारी), सकावणियो—वि०।

संकाविम्रोडो, संकावियोडो, संकाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

सकावीजणो, संकावीजबो—कर्म वा०।

संकावियोड़ो—देखो 'संकायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. संकावियोडी)

सकित–वि. [स. शकित] १ भयभीत, खोफजदा।

उ०—वदे 'जसो' जिणवार, कवर ग्रगळ जोडे कर। मीणां ग्रधम गमार, घणा छक ग्रनड रहै घर। वीरां सम्मुह वेग, पूंछ पटके मडळ मित। एक खीची ग्राड सबळ, कीधा खळ सकित।
—व भा.

२ जिसके मन मे शका हुई हो।

सकिय, सकियदोस–स. पु.—जैनियो के ग्रनुसार साधु ग्रौर गृहस्थ को ग्राहार के विषय मे शका होने पर लगने वाला दोष।

संकियोडो–भू. का. कृ.—१ शकित हुवा हुग्रा, सन्देहशील हुवा हुग्रा।

२ भयभीत हुवा हुग्रा, डरा हुग्रा।

३ लज्जित हुवा हुग्रा, शर्मिन्दा हुवा हुग्रा।

(स्त्री सकियोडी)

सकीरण–वि. [सं. सकीर्ण] १ तग, संकुचित।

२ मिला हुता, मिश्रित।

३ नीच।

४ तुच्छ।

५ मदमस्त हाथी।

६ दो ग्रन्य रागो या रागनियो को मिलाने पर बनने वाली एक रागनी। (सगीत)

३ साहित्य मे एक प्रकार का मिश्रित गद्य।

सकीरणता–स. स्त्री. [स. सकीर्णता] १ सकीर्ण होने का भाव।

२ सकरापन।

३ नीचता।

४ क्षुद्रता, ग्रोछापन।

संकीरतन–स पु. [स. सकीर्तन] १ किसी की कीर्ति का वर्णन करने की क्रिया या भाव।

२ देवताग्रो की उपासना।

संकीळ–स. पु. [स. सकील] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

सकीलो–वि. (स्त्री. सकीली] १ किसी विषय या बात की सत्यता या ग्रसत्यता के बारे मे सशय या सन्देह करने वाला।

उ०—जद स्वामीजी बोल्या—ए पाली री चोथजी सकलेचो दरसन करवा ग्रायो। घणो संकीलो तो ग्रो छै पिण इण बात री सका तो उणरै ई न पडी। तो थारै ग्रा सका कठा सूं पडी।
—भि. द्र.

२ देखो 'संकाळू' (रू. भे.)

संकु–स. पु. [स शकु] १ कोई नुकीली वस्तु।

२ कील, मेख।

३ भाला, बरछा।

४ शंख (दस लाख कोटि के बराबर) नामक सख्या।

५ एक मछली।

६ कामदेव।

७ शिव, महादेव।

८ राक्षस, दैत्य।

९ हस, बगुला। (१०) लिंग। (११) नुकीली वस्तु की नोक।

१२ बारह ग्रगुल के बराबर का नाप या उक्त नाप की खूंटी।

१३ विष, जहर। (१४) एक प्रकार का वाद्य विशेष।

१५ घडी की सुई। (१६) जलजन्तु विशेष। (१७) वसिष्ठ एव ऊर्जा के पुत्रो मे से एक पुत्र जो स्वय ऋषि था।

१८ पाप, कलुष। (१९) हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम।

२० उग्रसेन का पुत्र एक यादव राजा। (२१) राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक।

२२ एक गंधर्व। (२३) कृष्ण व सत्या का एक पुत्र।

२४ द्रौपदी स्वयंवर में उपस्थित एक यादव।

रू. भे—सकू

संकुकरण-स. पु यौ [स. शकु+कर्ण] १ शंकु के समान नुकीले व लम्बे कान वाला, गधा। (ह. ना. मा.)

२ शिव का एक पार्षद। (३) स्वामी कार्तिकेय का पार्षद।

४ एक नाग का नाम। (५) अशोकवन में सीता के संरक्षणार्थ नियुक्त एक राक्षस। (६) दक्ष का अनुचर। (७) कश्यप व दनू के पुत्रों में से एक दानव। (८) जनमेजय व वपुष्टमा के पुत्रों में से एक राजा।

रू. भे.—सकूकरण।

सकुकरणेसर, सकुकरणेसुर, संकुकरणेस्वर-स पु [स. शङ्कुकर्णेश्वर] एक शिवमूर्त्ति जिसके पूजन से अश्वमेध यज्ञ का दसगुना फल प्राप्त होता है।

संकुड़ण—देखो 'सिकुड़ण' (रू भे.)

सकुडणौ, सकुडवौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडवौ' (रू भे.)

उ०—१ दिन जेही रिणी रिणाई दरसणि, क्रमि क्रमि लागा सकुटिणि। नीठि छुड़ै आकास पोस निसि, प्रौढा करखणि पगुरिणि।
—वेलि

उ०—२ सुरजवसी कमळ, तुरक हिंदू सकुडिया। गढ्ढ दुरग परमाद, तीह लै ताळा जडिया।—गु रू व.

सकुड़णहार, हारौ (हारी), सकुड़णियौ—वि०।

संकुड़िग्रोडौ, सकुडियोड़ौ सकुड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सकुड़ीजणौ, संकुड़ीजवौ—भाव वा०।

संकुड़ित-वि. [स. संकुचित] १ सिकुडा हुवा, संकुचित।

२ लज्जित, शर्मिन्दा।

उ०—सकुडित समसमा सध्या समये, रति वछित रुखमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पख पखिया, कमळ पत्र सूरिज किरणि।
—वेलि.

३ तग, संकडा।

सकुड़ियोडौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. सकुडियोडी)

सकुचण-स. स्त्री. [स सकुचन] सकुचित होने की क्रिया, अवस्था या भाव।

रू. भे.—सुकचण।

सकुचणि-स स्त्री.—सकोच, लज्जा।

उ०—आकरमण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सरपच। चितवणि हसणि लसणि गति संकुचणि, सुंदरी द्वारि देहरा सच।—वेलि.

वि. स्त्री—सकोच करने वाली, लजवन्ती, लज्जावान।

सकुचणौ, सकुचवौ-क्रि अ.—१ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

उ०—अग विस्फोटता कीयौ। जभाई आई पाछै क्यो थोड़ा थोडा चाल्या गति दिखाई। पाछै क्यो .एक सकुच्या। ए पांचो बाण सेना नें लागा।—वेलि टी

२ सिमटना, छोटा होना।

उ०—दिन तौ यै सें सकुचिवा लागौ जैसे रिणाई को देखें दाम कौ देणहार संकुचै। क्रमि क्रमि यो दिन संकुचै छै अर पोस कै विखै रात्रि छै सु आकास कौं निठि छोडै छै।—वेलि टी.

३ सिकुटना, सलवट पड़ना, झुरियां पडना।

४ बन्द होना। (पुष्प, पत्ता)

सकुचणहार, हारौ (हारी), सकुचणियौ—वि०।

सकुचिग्रोडौ, संकुचियोडौ सकुच्योडौ—भू० क ० कृ०।

संकुचीजणौ, संकुचीजवौ—भाव वा०।

सकुचाणौ, सकुचावौ, सकुचणौ, सकुचवौ सकुछणौ, सकुछवौ, सुकचाणौ, सुकचावौ, सुकजाणौ सुकजावौ—रू० भे०।

संकुचाणौ संकुचावौ—देखो 'सकुचणौ, संकुचवौ' (रू भे)

सकुचाणहार, हारौ (हारी), संकुचाणियौ—वि०।

सकुचायोडौ—भू० का० कृ०।

सकुचाईजणौ, संकुचाईजवौ—भाव वा०।

सकुचायोड़ौ— देखो सकुचियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सकुचायोडी)

संकुचित-वि.—१ सकुचन युक्त। (२) लज्जित, शर्मिन्दा। (३) बिना विस्तार का। (४) अव्यापक।

स स्त्री.—कली। (डि. को.)

सकुचियोडौ-भू का कृ —१ लज्जित हुवा हुआ, शर्मिन्दा हुवा हुआ। (२) सिमटा हुआ, छोटा हुवा हुआ. (३) सिकुडा हुआ, सलवट पडा हुआ, झुर्रियां पडा हुआ. (४) बन्द हुवा हुआ. (पुष्प, पत्ता) (स्त्री सकुचियोडी)

सकुडणौ, संकुटवौ—देखो 'सिकुडणौ सिकुडवौ' (रू भे.)

उ०—गोम डमर हुग्रै वोम गाहीजियै, अत रै वोम गरदोम आगा। सोनरा ऊघडै वोम रा संकुडै, गयण गजगाह दळ राह लागा।
—कल्याणदास महडू

सकुडणहार, हारौ (हारी) संकुडणियौ—वि०।

सकुडिग्रोडौ; सकुडियोडौ, संकुड्योडौ—भू० का० कृ०।

सकुडीजणौ, संकुडीजवौ – भाव वा०।

सकुडियोडौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू भे.) (स्त्री सकुडियोडी)

संकुद्वार-स. पु. [स शंकुद्वार] गुजरात के निकटस्थ छोटा टापू जहां नारायण की मूर्त्ति है।

संकुर-स. पु. [स शकुर] एक दानव। (पुराण)

संकुरथ-सं पु [स. शकुरथ] कश्यप व दनु के पुत्रों में से एक पुत्र, दानव।

सकुरोम, सकुरोमन–स. पु [सं. शंकुरोमन्] कश्यप एव कद्रू के पुत्रो मे से एक सहस्रशीर्ष नाग ।

सकुळ–वि [स सकुल] १ परिपूर्ण, भरा हुआ ।
उ०—ऊजळ मळ सकुळ पीठी उबटाणी, करडै लौ' साथै अँरण कूटाणी । कळिया कू'ला री कादै मे कळगी, विसहर सगत सूं पीपळिया वळगी ।—ऊ. का.
२ घना ।
२ पूर्ण, पूरा ।
४ अस्त-व्यस्त ।
स पु.—१ झुड, समूह ।
२ भीड ।
३ जनता ।
४ तुमुल युद्ध ।
उ०—सेल भववकं सकुळं प्रति धाव ढवक्के ।—व भा.
५ परस्पर विरोधी वाक्य ।

सकुळि, संकुळित–वि. [स. संकुलित] १ परिपूर्ण, भरा हुआ ।
उ०—१ उम्मेद भूपति अग मे, रस वीर सकुळि रग मे । वर वीर बारह से प्रवीरन चक्क लै चहुवाण ।—व. भा.
उ०—२ पान संकुळित डाळ, तावडो किसाण टाळै । बारै मासां सतत, जिनावर सरणौ भाळै ।—दसदेव
२ अस्त-व्यस्त । (३) एकत्रित इकट्ठा किया हुआ ।

सकुळी–स. स्त्री [स. सकुली] १ रीढ की हड्डी ।
उ०—फटी पन्नग सकुळी, फन पलटि फिराया । खुल्लै नैन महेस कैं, नव माळ लुभाया ।—व भा.
वि. [सकुलित] परिपूर्ण भरा हुआ ।

सकुळो, सकुलो–स. पु [स शकुला] १ सुपारी काटने का सरोता ।
२ एक प्रकार का नश्तर या छुरी ।
३ सरोते से काटा गया सुपारी का टुकडा ।

सकुसिरा–स. पु [स. शकुसिरा] कश्यप व दनु के ससर्ग से उत्पन्न ६१ दानवो मे से एक ।

सकू—देखो 'सकु' (रू भे.) (डिं ना मा)

सकूकरण—देखो 'सकुकरण' (रू. भे) (अ. मा.)

सकेत–स पु. [स सकेत:] १ घर, भवन । (अ मा, ह ना. मा.)
२ नाम । (अ. मा)
३ इशारा ।
४ चिन्ह, निशान ।
५ वह चीज जो किसी को किसी प्रकार की निशानी या पहचान के लिए दी जाय । (टोकन, अंगूठी)
६ ऐसी शारीरिक चेष्टा, जिससे किसी पर अपना उद्देश्य, भाव या विचार प्रकट किया जाय ।
७ किसी घटना, प्रसग आदि पर प्रकाश डालने वाली कोई बात ।
८ किसी प्रेमी एव प्रेमिका के मिलने हेतु पूर्व निश्चितस्थान ।
९ कोई शृंगारिक चेष्टा ।

संकोड़णौ, सकोड़बौ–क्रि. अ —१ सकुचित होना, लज्जित होना ।
उ०—गय गमणी गूजर धरा, आणा दखणी चीर । मन संकोडी माळवी, सोहइ तुझ सरीर ।—ढो मा.
२ भयभीत होना, डरना ।
उ०—सुर सुणंता उर सत्रा संकोड़ै, राजा खान नगारी रोडै । सुख अप करण धरा फिरि साजा, रूठै जम सारीखौ राजा ।
—रा रू.
३ सकुडित होना, वद होना ।
४ सलवट पडना, सिकुडना ।
क्रि स —५ सिकोडना, सकुचित करना ।
६ भयभीत करना, डराना, आतकित करना ।
उ०—अन अन्न देस धर गिर अवर सकोडौ ससार महि । चहुवाण विषम सूं चापडै 'गज्जणवै' सुरताण गहि ।—नैणसी
७ सकुचित करना, लज्जित करना ।
८ लिहाज की दृष्टि से दवाव डालना, दवाना ।
९ सलवट डालना, सिकोडना ।
सकोड़णहार, हारौ (हारी), सकोडणियौ—वि० ।
सकोडिओडौ, सकोडियोडौ, सकोड़्योडौ—भू० का० कृ० ।
सकोडीजणौ, सकोडीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।
सकोडणो, सकोडवौ—रू० भे० ।

सकोडियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ सकुचित हुवा हुआ/सकुचित किया हुआ, लज्जित हुवा हुआ/लज्जित किया हुआ. (२) भयभीत हुवा हुआ/भयभीत किया हुआ, डरा हुआ/डराया हुआ. (३) संकुड़ित हुवा हुआ/सकुडित किया हुआ, वन्द हुवा हुआ/वन्द किया हुआ (४) सलवट पडा हुआ/सलवट डाला हुआ, सिकुडा हुआ. (५) लिहाज की दृष्टि से दवाव डाला हुआ, दवाया हुआ ।
(स्त्री सकोडियोडी)

सकोच–स पु. [स. स सकोच:] १ वह मानसिक स्थिति जिसमे भय, लज्जा अथवा साहस के अभाव के कारण कुछ करने को जी नही चाहता ।
२ असमजस, झिझक, हिचकिचाहट ।
३ सिकुडने की क्रिया या भाव ।
४ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार ।
५ एक प्रकार की मछली ।
६ केसर । (ना मा; ह ना मा)
७ लिहाज, प्रभाव ।
उ०—आसव री उतार हुवा समुद्रसिंह नूं तो उण रा पुरोहित

मोतीसर प्रमुख सकोच रा लोका बीच मे भ्राइ पाछो मोड़ियो।
—व. भा.

८ शर्म, लज्जा। (डि. को)

क्रि. प्र.—भ्राणो, करणो, पडणो, होणो।

९ प्राचीनकालीन राक्षस जो पृथ्वी का शासक था।

रू. भे—सकोग, सकुच।

सकोचणो, संकोचवो–क्रि ग्र.—१ सकुचित होना, भयातुर होना।

उ०—माळवणी सिणगार मझि, भ्राई वालभ पास। मन संकोचो पदमिणी, प्रीतम देखि उदास।—ढो. मा.

२ असमजस, झिझक या हिचकिचाहट होना।

उ०—जो देसंतर ऊतरै, वाघीजै दळ संग। हर सकोचै मीरजा, तो सोचै 'ग्रवरंग'।—रा. रू.

३ कम होना, घटना।

उ०—पाछै रया सात वरस तिण मे दिन रा त्याग है। थारै लारै साढे तीन वरस रह्या तिका में पाचू तिथ्या रा थारै त्याग है। बाकी दोय वरस नै च्यार महीना भ्रामरै रह्या। इम संकोचतां संकोचता पोहर रौ लेखो करता पछै घड़ियां रै लेखै छै।
—भि. द्र.

४ लज्जित होना, शर्मिन्दा होना।

सकोचणहार, हारौ (हारी), सकोचणियो—वि०।

सकोचिग्रोडो, सकोचियोडो, सकोच्योडो—भू० का० कृ०।

सकोचीजणो, संकोचीजवो—भाव वा०।

सकोचित–वि. [स सकुचित] १ सिकुड़ा हुग्रा, तग।

२ सकोच-युक्त, जिसमे संकोच हो।

३ लज्जित, शर्मिन्दा।

४ जिसमे उदारता का अभाव हो, अनुदार।

संकोचियोडो–भू का. कृ.—१ सकुचित हुवा हुग्रा, भयातुर हुवा हुग्रा। २ असमजस, झिझक या हिचकिचाहट में पडा हुग्रा। ३ कम हुवा हुग्रा, घटा हुग्रा। ४ लज्जित हुवा हुग्रा, शर्मिन्दा हुवा हुग्रा।

(स्त्री. सकोचियोड़ी)

सकोचो–स. पु.—एक प्रकार का रेगिस्तानी जन्तु विशेष जिसके शरीर पर छोटे छोटे काटे या सूलें होती है। यह अपने शरीर को आवश्यकता पडने पर सिकोड़ कर गेंद के आकार का बना लेता है।
(डि को.)

सकोज—देखो 'संकोच' (रू. भे) (ग्र मा.)

उ०—रतनां मद में मत्त निसक हुई थी तिण रा सकोज हू रुकण लागी, लाज रै भार आखिया झुकण लागी।—र हमीर

संकोडणो सकोडवो—देखो 'सकोडणो, सकोडवो' (रू. भे)

उ०—तेज रोस तामंस, सत्त सूरातन छोडै। सवळ पणो मेल्हियो, नही लाह यळ संकोडै।—गु रू व

संकोडणहार, हारौ (हारी), सकोडणियो—वि०।

सकोडिग्रोडो, सकोडियोडो, सकोड्योड़ो—भू० का० कृ०।

सकोडीजणो, सकोडीजवो—भाव वा०।

सकोडियोडो—देखो 'सकोडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. सकोडियोडी)

सको–स पु. [स. शका] १ सन्देह, शका, भ्रम।

उ०—राजा कह्यो—बावळी, थनै इण मैं संको करण री काई बात ! ग्रपा रो कवर है, फोडा नी खावैला तो दूजो कुण खावैला थू बतावै जकी बात कर। थनै साजी सूरी देखूं उण दिन म्हारो जमारो सुफळ होवै।—फुलवाडी

२ भय, डर, आतंक।

उ०—१ लोक जठै रको नही, नह सको पर थाट। सोढा जस डंको घुरै, पाधर वको घाट।—बा दा.

उ०—२ ग्रर खागा घमसाण असको, समजतिया नाखण उर संको।—क कु. बो.

३ लज्जा, शर्म।

उ०—काली मासी उणनै घडी घडी पूछती कै जद कदैई ग्रटक पडै, मुळकणी हालै के ग्रण-भावण व्है तो सुभट बताय दे, मा सूं किण भात रो सको।—फुलवाडी

उ०—२ इत्ती बात सरू करदी तो अबै कैडी लाज। म्हारै माथै इत्तो भरोसो करनै भ्राया तो पछै बोलण मे काई सको।
—फुलवाडी

४ भेद-भाव, छिपाव।

उ०—नगर सेठ बोल्या—बतावो, बतावो, ग्रदाता सूं कैड़ो चोज, काई सको।—फुलवाडी

५ चिन्ता, खयाल।

उ०—टाट रो संलाण मिट जावै तो नवो जमारो मिळ्यो। थूं मन मे किणी बात रो सको मती राखजै, मूंडै माग्यो इनाम देवाला।—फुलवाडी

६ लिहाज, परवाह।

उ०—हू तो किण जोगो, पण म्हारै लायक कोई काम व्है तो आधी रा ई भुळावण में सको मत करज्यो।—फुलवाडी

क्रि प्र.—ग्राणो, करणो, लागणो, होणो।

रू. भे.—सांक।

सक्रदन–स पु [सं.] १ इन्द्र। (ग्र. मा.)

२ विदर्भ देशाधिपति वपुष्मान् का पिता।

३ श्रीकृष्ण का एक नाम।

४ भौत्य मनु का एक पुत्र। (पुराण)

सक्रति, सक्रती–स. पु. [सं. संकृती] १ यम। (ग्र. मा.)

२ महारथी जय जो ग्रनेन के वंशज जयसेन का पुत्र था।

३ रन्तिदेव के पिता एक प्राचीन नरेश।

सक्रम-सं पु [स सक्रम.] १ दुःख, कष्ट या कठिनाई से बढने की क्रिया ।
२ पुल, सेतु ।
३ ग्रह का किसी राशि से निकल कर दूसरी राशि मे प्रवेश करने की क्रिया ।
४ चलने या गमन करने का कार्य ।
५ अवस्था मे परिवर्तन ।
६ दुर्गम मार्ग, सकरा रास्ता ।
७ वस्तु प्राप्ति का साधन ।
८ स्कन्ददेव का एक पार्षद ।

सक्रमण-स पु [स.] १ गमन, चलने या आगे की ओर बढने की क्रिया या भाव ।
उ०—अण जाण विगत ऊपर अडाह । सक्रमण प्रवळ किय सोह-डाह ।—पा. प्र.
२ अतिक्रमण ।
३ सूर्य या किसी अन्य ग्रह का एक राशि से निकल कर दूसरी राशि मे प्रवेश करने की क्रिया या भाव ।
४ सूर्य के उत्तरायण या दक्षिणायन मे होने वाला दिन ।
५ घूमने या फिरने की क्रिया या भाव ।
६ परिवर्त्तन ।
रू. भे —सक्रामण ।

सक्रमणकाळ-स पु यौ. [सं सक्रमणकाल] १ एक रूप से बदल कर दूसरे रूप मे आने का समय ।
२ अतरण, हस्तातरण ।
३ सूर्य या अन्य किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश करने का समय ।

सक्रमणौ, सक्रमबौ-क्रि. अ.—१ गमन करना, जाना, आगे की ओर बढना ।
उ०—प्रफूलत थइ फूला चोसरा वणावे परी, घणं दिना जोसरा चोसठी गीत गात । भाला ओघ खवता सक्रम्यो भूरं लोक भेळो, भिडज्जा ताखडा हूता 'जसा' हरो भ्रात । —पाबूदान आसियो
२ अतिक्रमण करना ।
३ घूमना, फिरना ।
उ०—इम आवे इक ऊपरा, हाटी लोप हटक्क । सलभ मुआ सिर सक्रमे, कोडो जेम कटक ।—बा दा.
४ किटाणु, रोग आदि का फैलते हुए एक से दूसरे मे होना ।
५ प्रवेश करना, पहुँचना ।
उ०—धर थळी धीरा धूंधळा, खड तणा जाया खूर । साथ कोळ सीम मे, सक्रम्या ऊगा सूर । —पा प्र
६ सूर्य या किसी अन्य ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश करना ।
सक्रमणहार, हारो (हारी), सक्रमणियो—वि० ।
संक्रमिश्रोड़ो, सक्रमियोड़ो, सक्रम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सक्रमीजणो सक्रमीजबो—भाव वा० ।

सक्रमियोड़ो-भू. का कृ.—१ गमन किया हुआ, गया हुआ, आगे की ओर बढा हुआ. २ अतिक्रमण किया हुआ. ३ घूमा हुआ, फिरा हुआ. ४ प्रवेश किया हुआ, पहुंचा हुआ. ५ किटाणु, रोग आदि फैला हुआ. ६ सूर्य या अन्य किसी ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश किया हुआ ।

संक्रांत, सक्राति—देखो 'सकरात' (रू. भे.)
उ०—व्यतीपात वैध्रति वली, सूरिज नी संक्रांति । ब्राह्मण हुतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकाति । —मा का प्र.

सक्रांतिचक्र-स. पु [स.] मनुष्य के आकार का नक्षत्रो के राशि सचार से अकित एक प्रकार का चक्र जो मनुष्यो के शुभाशुभ फल जानने के लिए बनाया जाता है । (फलित ज्योतिष)

सक्रांतिव्रत-स पु. [स.] संक्राति के दिन किया जाने वाला व्रत विशेष ।
वि. वि —इस दिन स्नानादि करके अक्षत का अष्टकमलदल बना सूर्य की स्थापना कर पूजन किया जाता है । यह निराहार, साहार, अयाचित, नक्त या एकभुक्त किया जा सकता है ।

सक्रामक-वि. [स सक्रामक] ससर्ग या छूत से फैलने वाला ।
स. पु —संसर्ग या छूत से फैलने वाला रोग ।

सक्रांमण—देखो 'संक्रमण' (रू. भे.)
उ०—१ अे सक्रामण सुंदरी, वहितइ विलसइ वार । जिम्म तिम्म यौवन पछइ, लाभइ नही लगार ।—मा का. प्र.
उ०—सही अे सक्रांमण वहिउ, कइ माया अग जाळ । कइ समरू कइ सुन्य सर, इद्र जाळ कइ आळ ।—मा. का प्र

सक्रांमि, संक्रांमो-स पु [सं सक्रामिन्] सक्रमण कराने वाला ।

सक्रायत—देखो 'सकरात' (रू. भे)

सक्षिप्त-वि. [सं] १ जो छोटे रूप मे कहा या लिखा गया हो, मुख्तसर ।
२ लघु ।
३ जिसे घटा कर छोटा रूप दे दिया गया हो ।

सक्षिप्तता-स स्त्री —संक्षिप्त होने की अवस्था, भाव या स्थिति ।

सक्षिप्ता-स स्त्री [स.] बुधग्रह की सात प्रकार की गतियो मे से एक गति । (ज्योतिष)

सक्षेप-स. पु. [सं] १ कोई बात थोडे मे कहना या लिखना, मुख्तसर ।
उ०—सक्षेप माफक भाव ए कह्या, सूत्र अनुसार जोय ।
—जयवाणी
२ संकोचन ।
३ समास । ४ सार संग्रह ।
रू. भे.—सखेप, सखेव, सख्यप, सछेप ।

उ०—नह सख्या कुंजरा, न का सस्या केकाण। नह सख्या हिंदुवा, सख नह मुस्सळमाणा।—गु रू वं

रू भे—सखु।

अल्पा—सखियो, सखोलियो, साकलियो, साकळ्यो, साकल्यो, साकूळ्यो, साकूल्यो, साखूल्यो।

मह—सखो।

सखकार–स. पु. [सं. शखकार] विश्वकर्मा पिता व शूद्रा माता के ससर्ग से उत्पन्न एक जाति विशेष। (पुराण)

सखकूट–स. पु. [स. शखकूट] एक पर्वत। (पुराण)

सखचूड–स पु [स शखचूड] १ कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक राक्षस।

२ कुबेर का एक दूत और सखा।

३ एक यक्ष।

४ द्वारिका निवासी एक गृहस्थ। (पौराणिक)

५ एक प्रकार का भयकर विषेला सर्प, शखचूर।

उ०—वाडी काळा गोहिरा, सरळक अर संखचूड। परवा मे गैं'ळीजिया, लिट लिट ठडी घूड।—बादळी

६ राम सेना का एक वानर।

७ एक विष्णु-भक्त राक्षस जिसका, अत्याचारी हो जाने पर, शिव ने वध किया।

८ नागवशी क्षत्रियो की वशावली मे एक नाग का नाम।

उ०—दक्ष प्रजापति राजा तिण रै तेरह पुत्री हुई तिकै राजा कासिप नै परणाई तिण रो विस्तार कहै छै। ·· ···तीजी राणी कद्रु नामा तिण रा नव कुळी नाग हुवा। नागा रा नाम—तक्ष-नाग, पदमनाग, महापदम नाग, सखचूड नाग, पुलस्तनाग ··।
—रा व

९ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सखण–स पु [स शखण] इक्ष्वाकुवशीय खगण राजा का नामातर।

सखणी–स स्त्री [सं शखिनी] १ शिवलिंगी के समान फलो वाली एक वनौषधि।

२ कामशास्त्र के अनुसार स्त्रियो के चार भेदो मे से चौथे भेद की स्त्री।

उ०—हसि के माही कहै इसो, क्यूं वे खोजा खूब। हम महलै सब सखणी, नहिं पदमणि महबूब।—प च चौ

वि वि—यह न अधिक मोटी व न अधिक पतली होती है। इसका शिर व स्तन छोटे एव इसके पैर व बाहे लम्बी होती है। इसका स्वभाव कर्कश व चुगलखोर होता है। यह काम से अत्यधिक पीडित व परपुरुष-गमनी होती है।

३ गुदा द्वार की एक नस।

४ एक देवी।

५ एक अप्सरा।

६ मुंह की नाडी। ७ सीप।

८ कलहप्रिय नारी।

९ एक शक्ति जिसकी बौद्ध लोग पूजा करते हैं।

१० घोडे के दोनो नेत्रो के बीच मे होने वाली एक अशुभ भवरी। (चक्र)। (शा हो)

११ वह गाथा छन्द जिसमे सकार की बाहुल्यता हो। (पिंगल)

उ०—विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत। च्यार सकार हसतणी चावी, बहु सकार सखणी बतावी।
—र ज प्र.

रू भे—सखनी, सखिणी, सखिनी, सुंखणी, सुखनी, सुंखिणी, सुखिनी।

सखतीरथ–सं पु यौ [स शखतीर्थ] सरस्वती नदी के निकटस्थ का एक पुण्य तीर्थ।

सखद्राव–स पु [स शखद्राव] एक प्रकार का अर्क। (वैद्यक)

वि वि—इसका प्रयोग उदर रोग के उन्मूलनार्थ किया जाता है। यह इतना तेज होता है कि धातुओ को भी गला देता है अत इसे काच या चीनी मे रखा जाता है।

सखधर–स पु [स शखधर] १ शख को धारण करने वाला, विष्णु।

उ०—कठ पोत कपोत कि कहू नीळकठ, वडगिरि कालिंद्री वळी। समै भागि किरि सख सखधर, एकण ग्रहियो अगुली।—वेलि.

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ना मा)

रू भे—सखधार।

सखधार–स पु [स सखधारिन्] १ श्रीकृष्ण। (अ मा)

२ देखो 'संखधर' (रू भे).

सखन–स पु [स शखन] १ अयोध्यापति कल्मापपाद के पुत्र तथा सुदर्शन के पिता का नाम।

२ वज्रनाभ के पुत्र का नाम।

सखनख–स पु [स सखनख] एक नाग जो वरुण की सभा मे रहकर वरुण की उपासना करता था।

सखनाद–स पु यौ [स शख+नाद] शख ध्वनि।

सखनाभ–स. पु. [स. शखनाभ] जैनियो के ८८ ग्रहो मे से बीसवा ग्रह।

सखनारी–स स्त्री [स शख नारी] १ प्रत्येक पद मे दो यगण का एक छन्द विशेष।

म प्र—२ सोमराजी नामक एक वृक्ष का नाम।

सखनी—देखो 'सखणी' (रू भे)

उ०—पढै जैत देवी सवै देत नासै, भजै ककनी सखनी काळ फासै।
—ज्वाळामुखी री स्तुति

सखपद–स पु [स शखपद] १ स्वारोचिष मनु का पुत्र, एक राजा।

२ कर्दम प्रजापति एव श्रुति के पुत्रो मे से एक पुत्र, राजा।

सखपरवत–स पु [स शखपर्वत] मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

संखपाखांण—स पु [सं. शंखपाषाण] संखिया, सोमल ।
रू भे.—सखपाखाण ।

सखपांणि, सखपांणी—स पु यौ. [सं शंखपाणि] १ जिसके हाथ मे शंख हो, विष्णु ।
२ योद्धा ।
३ संन्यासी ।
४ विष्णु का पुजारी ।
वि —जिसके हाथ मे शंख हो ।

सखपाळ—स पु [सं शंखपाल] कर्दम ऋषि के पुत्र का नाम ।

सखपासांण—देखो 'सखपाखांण' (रू भे)

सखपिंड—स पु [सं शंखपिंड] कश्यप एवं कद्रू के पुत्रो में से एक पुत्र, नाग ।

सखपुस्पी—स स्त्री [सं शंख पुष्पी] १ सफेद अपराजिता । २ जुही ३ सखाहूली ।

सखप्रधांन—स पु यौ [सं शंख+प्रधान] किसी विशेष उद्देश्य से रखा हुआ शंख ।
उ०—तसु वयन भवभंजन, अजनपुंज समान । नमियइ नाथ स चेतनि, केतनि सखप्रधांन ।—जयसेखर सूरि

सखभ्रत—स पु [सं शंख भृत] विष्णु ।

संखमुख—सं पु [सं शंखमुख] एक नाग का नाम ।

सखमेखल—स. पु [सं शंखमेखल] सर्पदंश से मृत प्रमद्वरा को देखने हेतु स्थूलकेश के आश्रम मे उपस्थित ऋषियो में से एक ।

सखरोम—स पु [सं शंखरोमन्] कश्यप एव कद्रू के पुत्रों मे से एक पुत्र, नाग ।

सखवात—स पु [सं शंखवात] १ वैद्यक के अनुसार कनपटी मे दाह सहित लाल रग की एक गिलटी निकल आने का रोग, जिसमें शिर और गला जकड जाता है ।
२ शिर की पीडा । (अमरत)

संखसबदी सखसब्दी—स. पु यौ [सं शंख+शब्द+रा प्र ई] गधा । (अ. मा; ह ना मा)

संखसर, सखसिर—स पु [सं शंखशिर] वृत्रासुर का अनुचर एक राक्षस ।

सखा—देखो 'सख्या' (रू भे)
उ०—ब्रह्मपुरी राजन विचै, सोभा अधक अपार । ताकी सखा जाणियो, जोजन दस्स हजार ।—गज-उद्धार

सखाई—स स्त्री.—१ धूर्तता । २ कपट । ३ आडंबर ।

संखात—स. पु [सं सख्य] युद्ध । (अ मा)
रू भे —संखि ।

सखाळ—सं पु. [सं शंख+आलुच्] १ बडा सूअर या वाराह जिसके ऊपर के होठ पर मूछ के स्थान पर बडे शंखाकृति दात हो ।
२ विष्णु ।

सखावळी—स. स्त्री —देखो 'सखाहूळी' (रू. भे.)

सखासर, सखासुर—देखो 'संख' (७) (रू. भे)
उ०—मच्छ रूप हुय अवतरै, सखासुर सधार । वेद आण ब्रह्मा दिया, धरै सधर अवतार ।— गज-उद्धार

सखाहुळी, सखाहूळी, संखाहोळी—स. स्त्री —भूमि पर छितराने वाला एक पौधा, जो प्रायः ऊसर भूमि मे होता है । इसके पत्ते छोटे और धूसर रग के होते हैं फूल भेद से इसके तीन भेद होते हैं । सफेद, लाल और नीला । सफेद कोयल, शंखपुष्पी ।
उ०—१ कघाहूळी ऊजळी, संखाहूळी स्याम । आणइ अधारी सिसा, कामिनि करवा काम ।—मा का प्र.
उ०—२ सखाहूळी सतावरी, अस्थिवेलि नइ सोम । मावरि सारस सीगडी, पूरीसहू-परि रोम ।—मा. का प्र
रू. भे —सखावळी, साकाहूळी, साखाहूळी साखोहोळी ।

सखि—देखो 'सखात' (रू भे) (ह ना मा.)

सखिणी, सखिनी—देखो 'सखणी' (रू भे)
उ०—पदमिनी स्वेत सिंगारा, रक्त सिंगारा चित्रणी । हस्तिनी नील सिंगारा, क्रस्ण सिंगारा सखिणी ।—प. च चौ

सखिनीडकिणी—स स्त्री यौ [सं. शंखिनीडकिनी] एक प्रकार का उन्माद रोग ।

सखियो—स पु [सं शृ क] १ एक प्रकार की सफेद पत्थर जैसी उपधातु जो बहुत विषैली होती है, सोमल ।
उ०—१ बाप नैं तो राम-जाणैं काई सुमत सूझी जको जानियां सू तीन दिन पैं'ला मोत नैं निवत दी । सखियो घोटनैं पीयग्यो । तड़कै मूडा माथै माखिया भिणभिणावण लागी ।—फुलवाड़ी
उ०—२ दुखा रौ फंद कटण री आखरी आस मौत ही जकौई निरफळ गी । बेटी कानी सू आस्या फेर घरवाळी साम्ही देखतो बोल्यो—इत्तौ सखियो पीयो तो ई कार नी करची ।—फुलवाड़ी
२ उक्त उप-धातु की भस्म (मल्ल भस्म) ।
३ एक प्रकार का छोटा घोघा ।
४ देखो 'संख' (अल्पा, रू भे)
रू भे —सखोलियो, साकलियो, साकल्यौ साकुल्यो, साकूल्यौ, साखूल्यौ ।

सखी—स. पु [सं शंखिन्] १ विष्णु ।
२ समुद्र ।
३ शंख । (अ. मा)
सं स्त्री [सं शंखिनी] ४ शिवलिगी से मिलती-जुलती एक प्रकार की लता विशेष ।

सखु—देखो 'संख' (रू भे.)
उ०—रिसह लछणि धोरिउ उल्लसइ, सु भवपकि पड्या जन तारिसिइ । अवरु संखु वरइ रलियामणउ, ध्वनि करी सिवपंथि सुहामणउ ।—जयसेखर सूरि

सखेप, सखेव—देखो 'सक्षेप' (रू भे)

उ०—१ तिण समै जोधपुर राव मालदै राज करै छै। विस्तार आगै लिखीजसी। पिण सखेप थोडी सी लिखियै छै।—द वि

उ०—२ सकरमै वीहै तरतकरका सवाद। ऐसी विध रस आई। राजेस्वरू की भू जाई। कविराजू नै सखेप सी कही। सब कहिणौ मे ना आई।—सू. प्र.

उ० —३ सगळा वरत तणउ सखेव, निगारभ रहइ नितमेव। जा लगि अटकळ कीजइ जेह, दसमउ देसावगासिक तेह।—स कु.

सखेवि—क्रि वि [स सक्षेप] सक्षेप मे, संक्षेप से।

उ०—सेतुज वदिअ तीरथराज, गुरुया गणहर करउ पसाउ। वाग वाणि हउ सामरउ देवि, चिहुँ गति गमण कहउ सखेवि।

—वस्तिग

सखेसर, सखेसरउ, सखेस्वर—स पु [स शखेस्वर] १ पार्श्वनाथ का एक नाम विशेष।

उ०—१ सैरीसरउ संखेसरउ, पंचासरउ रे। फलोधी थभण पास, तीरथ तै नमुं रे।—स कु

उ०—२ महिमा मोटी त्रिभुवन माहै, आवै यात्रा जग उमाहै। कल्पतरु फलियौ हितकामी, सुखदायक सखेस्वर स्वामी।

—ध व ग्र

२ जैनियो के तीर्थस्थान का नाम।

उ०—सखेस्वर सहिजि जड, करतु कुरकुट ईस। आज वली उज्ज-तगिरि, सिधसारण नमि सीस।—मा का प्र

सखोढाळ—स पु—तावे के पात्र मे दूध, तिल, जौ आदि मिला जल सख मे लेकर की जाने वाली पितृतर्पण विधि।

सखोदक—सं पु यौ [स शख+उदक] विष्णु की सेवा के शख का जल जो सेवा निवृत्ति के उपरान्त उपस्थित जनो पर छिडका जाता है।

उ०—उठै लोकारी भीड, सौ ठाकुरद्वारै जाय सघीया नही भीतर। उभा रहा। इतरै आरती हुई, सखोदक फेर ने वाह्यौ। तद लोक सरव आपोआप गया।—ठाकुरै साह री वात

सखोद्धार, सखोधार—स पु यौ [स शख+उद्धार] १ नाथ सम्प्रदाय मे मृत्यु के पश्चात् मृतक की मोक्ष प्राप्ति के लिए किया जाने वाला योगमाया का पूजन।

२ द्वारिका के पास का एक प्रसिद्ध स्थान।

उ०—१ ईडर सखोधार ऊपरा, आण वधारै येती।-नवकोटी मार-वाट खग नर, सोहै लीध सहेती।—राव आसथान रौ गीत

उ०—२ सत्रु वाढि सीस पूजै सकत्ति, वाढेल कहाया इण विगत्ति। इम लीध मडळ ओखौ उदार, धर समद बीटि सखोधार।—सू प्र

३ द्वारिका के पास का एक तीर्थ स्थान। (जैन)

उ०—·········लक्षणावती दिली, नवकोटी मारू आदि, सघु सवालक्ष, ऊच मलतान हीदूस्थान, देवकू पाटण, चीण महाचीण भोट माहाभोट सखोद्धार, एतला संचिगत अह्मारा देसदेसाउर वरणवीता सोभइ, अहो सीआलक वोलि।—व स

[स शख+धारिन्] ३ विष्णु।

४ श्रीकृष्ण।

५ संन्यासी।

६ विष्णु का पुजारी।

सखोलियौ—१ देखो 'सख' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'सखियौ' (३) (रू भे)

संखौ—देखो 'सख' (मह, रू भे)

उ०—धारणौ गदा चक्रो, सखौ पदम पाणि सारगो। कमळा कंत कनौः, तस्मै नाराइण नमौ।—गु रू ब

सख्यप—देखो 'सक्षेप' (रू भे)

सख्या—स स्त्री [स] १ गणना, गिनती, तादाद।

उ०—औरगसाह छत्री सह आयौ, उर राव राण लगौ असहायौ। सख्या विण लीधा दळ साथै, मारग पडै पहाडा माथै।—रा रू

उ०—२ दूता आखी वत्तडी, आयौ तहवरखान। नर हैवर सख्या किसी, कोई गैवरा नग्यान।—रा रू

२ उपाय, युक्ति। ३ हेतु, कारण।

४ हिंदसा अंक।

५ समझ, बुद्धि।

६ विचार, खयाल।

७ ढग, तौर, तरीका।

रू भे—सख, सखा।

सख्यात—वि. [स] १ वह जिसकी सख्या की जाय, गिनती की जाय।

[स सख्यात] २ गिनती किया हुआ, गिना हुआ।

स पु [सं सख्यातम्] सख्या, अक।

उ०—पाच स्थावर तीन विकलेंद्रिय गयौ, सख्यात असख्यात काल रयौ।—जयवाणी

रू भे—सख्याता।

सख्याता—सं. स्त्री. [स.] १ पहेली विशेष।

२ देखो 'सख्यात' (रू. भे.)

उ०—१ तो पिण जीव न देखियौ, जब खडवा कीधा चार। आठ सोलै सख्याता किया, पिण जीव दीठौ न्यार।—जयवाणी

उ०—२ दस ठाणा अति दीपता रे जिनजी, गुण परयाय प्रयोग। पस्ति जेहनी वाचना रे जिनजी, सख्याता अनुयोग।—वि कु.

सख्याति—वि.—१ मूर्तिमान, साकार।

२ असख्य, अपार, असीम।

उ०—देवी मात जानेसुरी व्रन्न मेहा। देवी देव चामुड सख्याति देहा।—देवि

स. पु.—मुलाकात, भेट।

क्रि वि.—प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने।

सख्यालिपि—सं. स्त्री. [सं.] वर्णों के स्थान पर संख्या सूचक चिन्ह या अक लिखने की एक प्रकार की लेखन प्रणाली ।

संग—सं पु [सं.] १ संगम, मिलन, मेल ।

२ ससर्ग, स्नन।

उ०—जिण महाभक्त री अग सग होतां ही आपरां कोढ गमियो जाणि । —व. भा.

३ सगत, सोहबत ।

उ०—१ साम अढागी मिनख कै, कदे न काठै जाय । हरीया संग न कीजियै, जै कोई पारि बसाय ।—अनुभववाणी

उ०—२ ब्रज बनिता को संग छाडिकै, कुबज्या सग लाई । मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चरणा लिपट रही ।—मीरां

४ सयोग ।

५ सहवास ।

उ०—सोवै अळगी सायधण, सुपनै ही नह संग । गनका सूं रातै गुसट, रमिया तोनू रग ।—बा. दा.

६ आसक्ति, वासना ।

७ साथ ।

उ०—१ दस पांच माणस कुंवरजी कन्है रावो बाकी काम रा लोग सगळा संग हालो ।—गोपालदास गोड़ री वारता

उ०—२ हरणीमन हरियाळिया, टर हालिया उमग । तीन परब रंग त्यारिया, सावण लायो संग ।—बा. दा.

उ०—३ बूंदी ऊपर हल्लियो, हाडो दुरजणसल्ल । दुंद सजोड़ अगेड दळ, संग राठौड़ दुमल्ल ।—रा. रू.

उ०—४ कुण केली संसार में, जीव एकलो जाय । हरीया हरि बिन दूसरा, सग न कोई थाय ।—अनुभववाणी

उ०—५ देमरा 'माल' सग लियां चतुरंग दळ, धर हग नार तेणा ब्वारै । रणचंडी सहल जूंमा गहल राठवड़, सहल रमता पड़ै दहल सारै ।—कल्याणदास महडू

८ सहित ।

उ०—मणि कंकण अंगद, अमूल्य पद हाटक नूपर । नवळासी नवरंग, सग सुज वसी सुदर ।—रा. रू.

[फा.] ९ पत्थर, पाषाण ।

१० देखो 'संघ' (रू भे.)

११ देखो 'साग' (रू. भे.)

अल्पा;—सगडो, संगडो ।

संगअसव, संगअसम—देखो 'सगयसब' (रू. भे.)

उ०—१ मंहि जाव ज्वाव मतग, संगअसम सरवर सग । तै बीच सरवर तत्र, छजि तख्त जवहर छत्र ।—सू. प्र.

उ०—२ सगअसम सगमरवर कस्मीर बिलवर नूनै रूपै के सीरिया नूं जड़ाऊ के प्याले फिरतें हैं । जिस प्यालू के बीच ही अस्पार दाळ चीनी परतवाळो अगुरी गळे कुलाव ऐसी भांति भांति के फूल ऐराक भरतै हैं ।—सू. प्र.

संगअसवद—स. पु. [फा. अ. सगेअस्वद] वह काला पत्थर जो काबे की एक दीवार में लगा है और जिसे देखने के लिए मुसलमान मक्का जाते हैं, जिसे हज कहते हैं ।

संगइ—देखो 'संगति' (रू. भे.) (जैन)

सगखारो—सं. पु. [फा. संगिखारा] एक प्रकार का खुरदरा और लाली लिए हुए पत्थर जो बहुत कड़ा होता है ।

सगड़ो—देखो 'संग' (अल्पा; रू. भे.)

संगजराहत—सं. पु. [फा. अ. सगेजराहत] एक सफेद और कोमल पत्थर जो घाव भरने के काम आता है, सिघा ।

संगट—देखो 'संकट' (रू भे.) (ह ना. मा)

उ०—रुज उपताप व्यथा पीड़ा रुग आमय आंम मंद आतक । व्याध रोग अममावि अपाटव, सगट गद मेटण हरि संक ।

—ह. नां मा.

संगटग—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

संगटणो, सगटबो—देखो 'सकटणो, संकटबो' (रू भे.)

सगटणहार, हारो (हारी), संगटणियो—वि० ।

संगटिओडो, संगटियोडो, संगट्योड़ो—भू० का० कृ० ।

संगटीजणो, संगटीजबो—भाव वा० ।

संगटियोड़ो—देखो 'संकटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री सगटियोड़ी)

संगटीयो—वि —१ संकटापन्न ।

२ दु.खी, पीड़ित ।

संगट्टण—देखो 'संघटण' (रू. भे.)

उ० —सज्जो अेक संगट्टण, पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज दटो । मन में मिनखापण नैण सुरापण, खावै न्यांपण मेल कटो ।

—चेतमानखो

सगठ—१ देखो 'संकट' (रू. भे.)

उ०—१ सुपखाळ अमीणाय पीर सुणो, गढवाढा स संगठ आज घणों । पित 'धांधल' अंस रु देव प्रभा, यम आखत चाळ ग्रहे अोळमा ।   —पा प्र.

उ०—२ राम नाम है पतित उधारी, आयें सगठ लीयां उबारी । राम नांम भगतिन का सीरी, सो सिवरै ताही का सीरी ।

—अनुभववाणी

२ देखो 'सवटण' (रू. भे)

उ०—१ बडो जस खाटियो सगठ दाणव वहे, त्रिणावत ओडियो कम आवी कहै ।—पी. प्र.

उ०—२ साहिजादा अनै रायजादा सगठ, नाविया वळै दिखणाद वाळो । ऊजळो 'सुर्मो' अजमेर री आभरण, कामि आयो वडै काजि काळो ।—सुमराम गौड़ वल्लिरांमोत री गीत

संगठण—देखो 'सघटण' (रू. भे.)

सगठणौ, सगठबौ–क्रि. अ. [स सघटनम्] १ सगठित होना, किसी वर्ग का एकमत होना, सगठन बनाना।

२ देखो 'सकटणौ, सकटवौ' (रू भे.)

सगठणहार, हारौ (हारी), सगठणियौ—वि०।

सगठिग्रोडौ, सगठियोडौ, सगठ्योडौ—भू० का० कृ०।

सगठीजणौ संगठीजवौ—भाव वा०।

सगठासुर—देखो 'सकटासुर' (रू. भे.)

उ०—ग्वाळा विच ऊभौ ऊभौ गाज, सही सगठासुर बैठौ साभि। त्रणावत ओडि वछासुर वाहि, अहो अविगत तुहारी आहि।
—पी. ग्र.

सगठित–वि. [स. सघटित] भलि-भाति व्यवस्था करके विभिन्न इकाईयो का एक मे मिला हुआ।

सगठियोडौ–भू का. कृ—१ संगठित हुवा हुआ, किसी वर्ग का एक-मत हुवा हुआ, सगठन वनाया हुआ।

२ देखो 'सकटियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सगठियोडी)

सगडौ—देखो 'सग' (अल्पा, रू भे)

उ०—पहली पेम न चखीया, पीछै क्या पछताय। पे विना सी सगडौ, जनहरीया विख भाय। —अनुभववाणी

सगत–स. स्त्री [स] १ साथ, सोहबत।

उ०—१ साधा की सगत दुख भारी, मानौ वात हमारी। छापा तिलक गळ माळा उतारौ, पहिरौ हार हजारी।—मीरा

उ०—२ हरि भगति न की सगत करीयै, पलक घडी दिन पाव रे। जन हरि राम कहै निस दिन मैं, जपता वेर न लाव रे।
—अनुभववाणी

उ०—३ ऊजळ मळ सकुळ पीढी उबटाणी, करडै लो' साथै ग्रैरण कूटाणी। कळिया कूळा री कादै मे कळगी, विसहर सगत सू पीपळिया वळगी।—ऊ का.

मुहा०—(१) सगत करणी=साथ मे रहना, साधुओ की मडली मे वैठना। भक्तो को भोजन कराना।

(२) सगत जिसौ असर=जैसी सोहबत होती है वैसा ही प्रभाव पडता है।

(३) सगत जिसौ फळ=अच्छे या वुरे जैसो की सोहवत होती वैसा ही परिणाम निकलता है।

(४) सगत जेडी रगत=देखो 'सगत जिसौ असर'।

२ उपयुक्त या युक्तियुक्त कथन

३ सग रहने या होने का भाव, एक्य, मेल।

४ मैत्री, घनिष्ठता।

उ०—सिघणी रै भक्सण रा जादा पडण लागा। केई वेळा लाघण रै'जाता। अेकर तौ वा लगती तीन दिना ताई भूखी रै'गी। भूख आगै उणनै की चैनौ रह्यौ नी। नी धरम वैन रै गना री अर नी दिना री सगत री।—फुलवाडी

५ ऐसा लगाव या सम्बन्ध जो पास या साथ रहने से उत्पन्न होता है, ससर्ग।

उ०—मळियागिरा मझार, हर कौ तर चदण हुवै। सगत लियै सुधार, रूखा ई नै राजिया।—किरपाराम

६ साथ रहने वालो का दल या मंडली।

उ०—विदवाना अर धनमाना री संगत, साथै देस मेवा भी। मार'जा तौ सैः चीजा छोड'र हिरावडै पसुरी सौ लक्कड, गळै मे वैर वाध लियौ है।—दसदोख

७ सहवास, मैथुन, सभोग।

८ वेश्याओ या भाडो के साथ रहने वाला या तवला व सारगी आदि बजाने वाला पुरुष या पुरुषो का समूह।

९ हरि (ईश्वर) के भजन करते समय वाद्य बजाने वालो की मण्डली।

१० शालिशूक राजा का पिता एव सुयशयस् राजा का पुत्र एक मौर्यवशीय राजा।

११ हरिभजन मे सम्मिलित जनसमूह।

उ०—अेकर किणी गाव मैं अेक रमतौ सत चौमासौ करयौ। सिझ्या रा व्याळू करनै वस्ती रा लोग भळा व्है जाता। सत भगती व ग्यान री वाता सुणावतौ। गाव मैं अेक ही राईका रौ घर हौ। वौ घणा दिना ताई संगत मैं नी आयौ तौ वस्ती रा वूड-वडेरा उणनै ओळवौ दियो।—फुलवाडी

१२ उदासी व निर्मल साधुओ के रहने का मठ।

वि.—१ जुडा हुआ, लगा हुआ, मिला हुआ।

२ इकट्ठा किया या हुवा हुआ, एकत्रित।

३ उपयुक्त, उचित, मुनासिब।

४ अनैतिक सम्बन्धयुक्त हुवा हुआ।

५ सकुचि-, सिकुडा हुआ।

६ दाम्पत्य या वैवाहिक वन्धन मे वधा हुआ।

७ समान वर्ग या जाति का।

८ देखो 'सगति' (रू. भे)

रू. भे.—संगीति, सगीती।

सगतरास–सं. पु. यौ [फा सग+तराश] पत्थर काटने वाला।

सगति–स. स्त्री. १ ताल-मेल, सामजस्य।

२ सयोग, इत्तिफाकिया।

३ सगत होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

४ मेल-मिलाप।

५ ज्ञान।

६ ज्ञानप्राप्ति हेतु पूछे गये प्रश्न।

७ समाज।

८ देखो 'सगत' (रू. भे.)

उ०—१ स्याळां संगति पाय, करक छछेडै केहरो। हाय कुसंगति हाय, रीस न आवै राजिया।—किरपाराम

उ०—२ अयौ वैकूठ हुंता सु विमाण, अयौ सनकादिक ले अवसाण। चढै वैकुंठ विमाण चलाय, परी उधरी जिण संगति पाय।
—सू. प्र

उ०—३ जिण री संगति रै प्रभाव स्वरगलोक री मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक री निवास भाळियौ।—व. भा.

उ०—४ जन हरीया संगति करी, खळि सू नागर वेल। ता सेती निरफळ रही, अै कुसंगति खेल।—अनुभववाणी

रू. भे.—संगई, संगीति, संगीती।

संगतियौ—स. पु.—१ नाचने या गाने वाले के साथ रह कर तबला या सारंगी बजाने वाला, साजिंदा।

२ संगत करने वाला व्यक्ति।

संगन, संगना—देखो 'संग्या' (रू भे.) (अ. मा.)

संगम—स पु. [स.] १ दो पदार्थो के आपस मे मिलने की क्रिया या भाव, मिश्रण।

२ वह स्थान जहा पर दो नदिया, धाराये या रेखाऐ आकर आपस मे मिलती है।

३ मैथुन, संभोग, सुहवत।

४ संग, साथ।

५ संसर्ग, संस्पर्श।

उ०—दाळद्द पाप संताप दह, पारस संगम लोह पर। निज नाम नमो तौ नारियण, हस नमौ सिरताज हर।—ह. र.

६ सम्पर्क।

७ ज्योतिष मे ग्रहो का संयोग या उनका एक स्थान पर एकत्रित होने की क्रिया।

संगमरमर, संगमरवर—स पु [फा. संग+अ. मर्मर] एक प्रकार का प्रसिद्ध सफेद व चिकना पत्थर।

उ०—संगअसम संगमरवर कस्मीर बिलवर सूने रूपे के मोरिया नू जडाऊ के प्याले फिरते है।—सू प्र.

संगमूसौ—स. पु. [फा संगे+अ. मूसा] एक प्रकार का काले रंग का चिकना एव बहुमूल्य पत्थर।

संगयसब, संगयसम, संगयस्ब, संगयस्म—स पु [फा. संग+यशब] एक प्रकार का हरे नीले, सफेद आदि रंगो का पत्थर जो दवा मे काम आता है।

रू. भे.—संगअसब, संगअसम।

संगर—सं. पु. [स. सम्+गृ] १ युद्ध, समर, संग्राम। (डिं. को)

उ०—हाथ कटता ही निद्रा निवारि सस्त्रादिक संगर सामग्री मे सज्ज होइ।—व भा.

२ सौदा, व्यवहार। ३ भोजन, भक्षण। ४ विष, जहर।

[फा] ५ रक्षा के लिए सेना के चारो ओर बनाई हुई खाई या दीवार।

६ संगठन।

उ०—फिरि करचौ गाढ संगर लगाय, जो मारचौ चहत सो निकट जाय।—ला रा.

७ विपत्ति, आपत्ति, संकट।

८ प्रण, प्रतिज्ञा।

९ भे.—संगरि, संघर।

संगरण—देखो 'संग्रहण' (रू भे.)

संगरणबणौ, संगरणबवौ—देखो 'संघरणौ, संघरबो' (रू. भे.)

संगरणबणहार, हारौ (हारी), संगरणबणियौ—वि०।

संगरणविओडौ संगरणवियोडौ, संगरणव्योडौ—भू० का० कृ०।

संगरणवीजणौ, संगरणवीजबौ—कर्म वा०।

संगरणवियोड़ौ—देखो 'संघरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री संगरणवियोडी)

संगरणी—देखो 'संग्रहणी' (रू. भे)

संगरणौ, संगरबौ—१ देखो 'संघरणौ, संघरबौ' (रू भे.)

२ देखो 'संग्रहणौ, संग्रहबौ' (रू भे)

संगरणहार, हारौ (हारी), संगरणियौ—वि०।

संगरिओडौ, संगरियोडौ, संगरचोडौ—भू० का० कृ०।

संगरीजणौ, संगरीजबौ—कर्म वा०।

संगराम—देखो 'संग्राम' (रू. भे.)

संगरि—देखो 'संगर' (रू भे.)

उ०—धड पडइ धड ऊपरी नाचता, रडवडइ सिर संगरि झूझता। रथ भरी हथीयार समा भिड्या, त्रप सुसरम विराट वेऊ जड्या।
—सालिभद्रसूरि

संगरियोडौ—१ देखो 'संघरियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'संग्रहियोडौ' (रू भे)

(स्त्री संगरियोडी)

संगरोध—स पु [स] संक्रामक रोग को रोकने के लिए की गई व्यवस्था।

संगल—स पु [स] एक प्रकार का रेशम।

स स्त्री.—लोहे की शृंखला।

२ अपराधियो के पैरो मे डाली जाने वाली लोहशृंखला।

संगव—स पु. [स] प्रात काल का वह समय जब चरवाहा गायो का दूध निकाल कर उन्हे चराने के लिए ले जाता है।

संगवी—स. पु—१ साथ रहने वाला, संगी, साथी।

उ०—संगवी 'कान्हौ' घर पडियौ चित विकार। संगवी सहौ भागा तज संभार।—करणी रूपक

२ देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

संगसार—स पु. [स] प्राचीनकालीन दण्ड विशेष जिसमे अपराधी को दीवार मे चुनवा दिया जाता था।

संगसुरमा-सं. पु. [फा. सगे+अ. सुर्म] सुरमा बनाने की उपधातु।

संगसुलेमानी-स. पु. [फा. सग+अ. सुलेमानी] एक प्रकार के धारीदार या दुरंगे पत्थर के नग जिनकी माला बनाई जाती है।

सगह—देखो 'सग्रह' (रू. भे.) (जैन)

सगहसंपया-स. स्त्री.—ऐसी वस्तुओ का पहले से किया गया संग्रह जो कि साधुओ के उपयोगार्थ होती है। (जैन)

सगहिया-वि.—सग्रहित।

उ०—अजीवा जीव सगहिया, जीवा कम्म सगहिया तास। आठ बोल थित लोक नी, ठाणायग इम भास।—जयवाणी

सगांम—देखो 'संग्राम' (रू. भे.) (जैन)

सगा-वि. स्त्री.—साथ रहने वाली।

उ०—भवानी नमो स्वच्छ स गार अगा, भवानी नमो सु दरी सिभु सगा। भवानी नमो कासरिद्रारि हता, भवानी नमो आसि आभा अनता।—मे म

संगाति, सगाती-स. पु—१ वह जो साथ रहता हो, सगी, साथी।

उ०—१ नमि विनमी राजा विद्याधर, बि वि कोडि सगाति रे। फागुण सुदि दसमी दिन सीधा, तिण प्रणमू परभाति रे। —स. कु.

उ०—२ स गी सोई कीजियै सुख दुख का साथी। दादू जीवन मरण का, सो सदा सगाती।—दादूवाणी

उ०—३ पीहर बसूं न बसूं सास घर, सतगुरू सब्द सगाती। ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरा हरि रग राती।—मीरा

२ प्रेमी।

उ०—१ वैणा रा रसीला रैणा रा सवादी। रसराज सेणा रा संगाती प्राण सू प्यारा म्हारा राज।—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ ऊधोजी हमारै राम संगाती, उस लोभी ने भेजी है पाती। आप तो जाय वहा पर छाये, हमको भेजी जोग की पाती। —मीरा

३ वह जो सहायता करे, सहायक।

उ०—परदा अतर कर रहै, हम जीवैं किहि आधार। सदा सगाती प्रीतमा, अबकै लेहु उवार।—दादूवाणी

रू. भे.—सगाथी, संघ ति, सघाती।

सगाथी—देखो 'सगाती' (रू. भे.)

संग.र—देखो 'स्त्र गार' (रू. भे)

उ०—ससक्कै नगार वध लटक्कै नाग रा सीस, आग रा अगार तोपा भटक्कै अवाज। राखियो खगार दूजा खाग रा पाण सूं रघू, राण वाळो वाघ रा सगार जेम राज। —भीमसिंह चूडावत रो गीत

सगि—१ देखो 'सगी' (रू भे)

उ०—१ हुइ हरख घणी गिसुपाळ हालियो, अयै गायो जेणि गति। कुण जाणै सगि हुआ केतला, देस देस चा देसपति।—वेलि

उ०—२ सिशु वै मित्ती वित्ती, उदमो पोगड मड सिगारो। ज्यों व्र दारक तरय, प्रामै डाळ सगि पत्तेणम्।—रा. रू.

उ०—३ अण चपळ नैण लघु जोम अत्ति, सगि अहू विदिसि चेतन सकत्ति। दीपंत जुगळ कळ अमळ दत, सुन अरक पाणि लखि जाणि सत।—रा. रू.

२ देखो 'साग' (रू. भे.)

उ०—सुरतेस सीस हकिय स जोर, मानहु लखि जिलग मत्त मोर। इक जवण आणि इंहि विच उमाही, वेध्यौ प्रयाग सगि बाहि। —व. भा.

संगियौ—देखो 'सगी' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ जोगी तपै जिकाय, आगण विच आतो रहै। तोमे पडी तिकाय, जुडै न सगिया जेठवा।—जेठवा

उ०—२ गोत्य गुसाई व्है रहै, अब काहे न परकट होइ। राम सनेही सगिया, दूजा नाही कोइ।—दादूवाणी

सगी-स. पु [स. संग+राज प्र ई] (स्त्री सगिनी) १ वह जो सदा साथ रहता है, साथी।

उ०—१ आवो जी गिरधारी था सू मैं बोलै। थें तो म्हारा जनम जनम रा सगी, थारै लारा सग मे डोलै।—मीरा

उ०—मिमता माया मोह मन, समा सोग सरीर। हरीया जब सगी ईता, हरि सुख लहै न सीर।—अनुभववाणी

मुहा.—तगी मे कुण संगी=कठिनाई मे कोई साथ नही देता।

२ वह जो किसी का साथ करे, साथ चलने वाला।

उ०—१ हरीया छळ वळ ना रहै, रहै न किनकै जोर। मन का सगी सबळ है, पाचपचीस् चोर।—अनुभववाणी

उ०—२ समज मन सदा धरम एक सगी, तेरै कबहू न आवै तगी। जन्मैं जीव अकेलो जग मे, नित व्है काया नगी।—ऊ का.

३ सहायता करने वाला, सहायक।

उ०—१ दादू पारब्रह्म पैंडा दिया, सहज सुरति लै सार। मन का मारग माहि घर, संगी सिरजनहार।—दादूवाणी

उ०—२ हरीया संगी राम विन, या कलि माहि न कोय। काळ पकड़ि लै जावसी, ऊभा देखै लोय।—अनुभववाणी

४ साथ रहने से लगने वाला रोग।

५ साथ।

उ०—हिलै सप हैथाट, चलै वाना वहरगी। इळ जळनिध उल्लटै, जाण वडवानळ सगी।—रा रू

[स. सज्ञी] ६ वे जीव जिनके मन हो (जैन)

रू भे.—सगि।

अल्पा;—सगियो।

सगीत-स स्त्री [स. संगीत] १ गायन, वादन व नृत्य।

उ०—चवसठ मभि वावन चिरताळा, मदछकिया रमै मतवाळा। घड वह जठै ऊठि त्रत धारै, ऊघट सगीत सीस उचारै।—सू. प्र.

२ विशिष्ट नियमो व लयानुसार मधुर ध्वनियो व स्वरो का होने वाला प्रस्फुटन ।

वि वि —यह दो प्रकार का होता है—(१) कण्ठ्य सगीत और (२) वाद्य सगीत ।

३ वह गाना जो कई लोगो द्वारा मिल कर गाया जाय ।

४ गाने बजाने की कला ।

५ वह गान जो वाद्य यत्रो के साथ लय एव ताल से गाया जाय ।

उ०—घुघुकट धकट धकट धम धपमप, वाजा विविध वजाडै । थेई थेई अ ग अ ग अत थावत, गीत सगीत गवाडै ।—मे म.

संगीतविद्या–स. स्त्री. यौ. [स.] १ गाने बजाने की कला का विवेचन ।

२ गाने-वजाने की कला ।

सगीति सगीती–स स्त्री [स. सगीत] १ संगीत विद्या ।

उ०—लहलहती नाचै लता, पवन संगीती पाय । पखा बरदारी करै, रभ विचै वणराय ।—वा दा.

२ सगीतज्ञ, सगीत विद्या का पडित ।

उ०—ज्योतिसी वैद पौराणिक जोगी, सगीती तारकिक, सहि । चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकटा तौ अरथ कहि ।
—वेलि

३ देखो 'सगति' (रू. भे)

४ देखो 'सगत' (रू. भे.)

सगीन–स. स्त्री. [फा.] बन्दूक की नाल के सिरे पर लगाया जाने वाला एक तिपहला और तीखा शस्त्र ।

उ०—१ लखि तोपा सालुळी, पुळी पलटण्या पटैता । संगीनां सावळा, आभ छायौ अखडैता ।—मे. म.

उ०—२ ढळकती ढाल दध लामचोजर धकै, चमक सगीन वड सूर पोरस छकै । थरर उर कायरा होय ढीला थकै, वियौ 'वखतेस' धर कोप किरण सिरकै ।—पावूदान आसियौ

वि. [फा सग+प्र ई+न] १ पत्थर का बना हुआ ।

२ विकट, मजबूत ।

३ असाधारण ।

सग्यक–वि [स सज्ञक] संज्ञा वाला, जिसकी सज्ञा हो ।

सग्या–सं. स्त्री [स. सज्ञा] १ होश, सुधि, चेतना शक्ति ।

उ०—सहु सेना मूरछित हुई । देखता ही कहूँ ने सग्या रही नही ।
—वेलि टी.

२ अवस्था, दशा, हालत ।

उ०—१ बुढापै संग्या होवै बुरी, जग मे भूडो जीवणौ । हजारा माय औगुण हुवै, पण भी होको पीवणौ ।—ऊ का.

उ०—२ राजकवार नीमराणा की, बाघरवाडै व्याई । परतख होय पागळी पावा, थावर सग्या थाई ।—मे म.

३ वुद्धि, अक्ल ।

४ ध्यान । (अमरत)

५ नाम । (ह ना मा.)

उ०—सुरजन सुत बूदी सदन, सग्या दुरजणसाल । व्याहण हू वलभद्र नू, हुवौ सहायक हाल ।—व. भा.

६ किसी पदार्थ आदि का बोधक शब्द ।

७ विश्वकर्मा की कन्या व सूर्य की पत्नी इसके मनु व यम नामक पुत्र व यमी या यमुना नामक पुत्री थी । सज्ञा जब घर गई तो अपनी वहन छाया सूर्य की सेवा के लिए छोड गई । सूर्य यह नही जानते थे अतः छाया से शनैश्चर मनु, तपती नामक तीन सतान हुई । सज्ञा सूर्य-तेज को सह नही सकती थी अत. विश्वकर्मा ने सूर्य के कुछ तेज कणो को निकाल कर विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिशूल, कुवेर का पुष्पक विमान व स्कन्द देव की शक्ति बनाई ।

८ किसी यथार्थ या कल्पित वस्तु के बोध होने का व्याकरण विकारी शब्द ।

९ गायत्री मत्र ।

१० ज्ञान ।

रू भे —सगन, सगना, सिग्या ।

सग्याकरणरस–स. पु यौ [स. सज्ञाकरणरस] होश में लाने वाली एक औषधि विशेष । (वैद्यक)

सग्यापुतरी, सग्यापुत्री–स. स्त्री. यौ [स. सज्ञापुत्री] विश्वकर्मा की पुत्री और सूर्य की धर्म पत्नी के ससर्ग से उत्पन्न पुत्री का नाम ।

सग्यासुत–स. पु यौ [स सज्ञासुत] सूर्य एव सज्ञा के ससर्ग से उत्पन्न पुत्र, यम एव शनि ।

सग्याहीण–वि यौ [स. सज्ञाहीन] १ वेहोश, चेतना रहित ।

२ मैला, कुचेला, गदा ।

३ घृणित ।

४ मूर्ख ।

रू भे —सिग्याहीण ।

सग्येय–स पु [स सज्ञेय] सोमवशीय सहत राजा का नामातर ।

सग्रह–स. पु [स.] १ एकत्र करने की क्रिया या भाव ।

२ संग्रहीत वस्तुओ का ढेर ।

३ भोजन, पान, औषध खाने की क्रिया ।

४ वह मत्रबल जिसके द्वारा कोई फेंका हुआ अस्त्र वापिस प्राप्त किया जा सकता है ।

५ ग्रहण करने की क्रिया ।

६ समूह, जमघट ।

७ धारण करने की क्रिया ।

८ विवाह, शादी ।

९ मैथुन, सभोग ।

१० स्वागत, सम्मान ।

११ निग्रह, सयम ।

१२ रक्षा, हिफाजत।
१३ तालिका, सूची।
१४ योग, जोड।
१५ शिवजी का नाम।
१६ स्कन्द के पार्षद का नाम।
रू भे.—संगह, सघर।

संग्रहण-स. पु. [स.] १ ग्रहण करना, लेना।
२ प्राप्ति, लाभ।
३ गहनो मे नग आदि जडना।
४ अपहरण।
५ व्यभिचार।
६ मैथुन, सभोग।
७ सहार, नाश।
उ०—जद धर पर जोवती, देख मन माह डरती। गायत्री संग्रहण द्रस्ट नागोर धरंती। सुर तेतीसू कोट, श्राण नीरता चारी। नह खावत नह चरत, मनै करती हहकारी। कुभेण राण हणिया कलम, आजस उर डर उत्तरिय। तिण दीह द्वार संकर तणै, काम धेनु तडव करिय।—महाराणा कुभा री छप्पय
८ युद्ध।
रू भे.—सगरण सघरण।

सग्रहणि, सग्रहणी-सं. स्त्री [सं. संग्रहणी] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे पाचन क्रिया के विकार के कारण बराबर और बार बार पतले दस्त होते रहते है।
रू भे—सगरणी, स ग्रहाणि, स ग्रहाणी।

सग्रहणौ, सग्रहबौ-क्रि. स. [स. सग्रहणम्] १ स ग्रह करना, सचय करना, जमा करना।
उ०—१ 'सळखा' हरा तणा तिण समहर, थाटा विहु आचभ थियो। महादेव सग्रहि महि माथौ, किरि वरि हार सिंगार कियो।
—कचरा जसराजोत सळखावत री गीत
उ०—२ करणु दुजोहणु वेई मित्र, पचह पडव केरा सत्र। तसु दीधु मउयूयर राजो, सौ सग्रहीइ जिणि हुइ काजो।
—सालिभद्र सूरि
२ पकडना, लेना, ग्रहण करना।
उ०—१ विळकुळियौ बदन जेम वाकारचौ, सग्रहि धनुख पुणच सर सधि। क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि वधि।—वेलि
उ०—२ सुदरि चोरै सग्रही, सव लीया सिणगार। नक पूली मीधी नही, कहि मखि, कवण विचार।—ढो मा
उ०—३ पर उपकारी पुरस, श्री जुध बार न डोलै। माच वात संग्रहै, काल्ह पर नारि न बोलै।—सूरजमल मीसण
उ०—४ उद्धत सग्रहि कलाप हठि दत निकारै सु डादंडन मड सेरि ग्रहि रूप उतारै। सेकिम माळाकार सोम अति जोर उपारै, आघोरन घुम्मी अचेत कपि ज्यौ द्रुम कारै—व. भा.
३ धारण करना, पहिनना।
उ०—अग सनाहा सग्रहै, साभ दुवाहा सार। गज कुंभा रिण गजवा, चढ ऊभा तिणवार।—रा. रू.
४ हिफाजत या पालन करना।
५ रक्षा करना।
उ०—१ पण राखण दास गदापाणी, मभ सौ कथ जाहर भूमाणी। अपखी प्रहळाद जिसा आतुर, संग्रहिया निज हाथ सू।
—र ज प्र.
उ०—२ सूर सरम सग्रहै, भरम छडै कमधज्जा। मेळ कियौ मेछ सू, सूर सामत सकज्जा।—रा. रू.
६ स्थापित करना।
उ०—अम्ह कजि तुम्ह छडि अवर वर आणै, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगराम सूद्र ग्रहि सग्रहि, वेद मंत्र म्लेच्छा वदनि।
—वेलि
७ कैद करना।
उ०—सत्य न कौ वळ हत्थ कै, ना जीपै छळ मत्त। जै पामै रिप सग्रहै, तप हूता छत्रपत्त।—रा. रू
८ प्राप्त करना।
उ०—कीधी वहु पहिरावणी, राजवीया नै रग। रस राख्यौ जम सग्रह्यौ, वाध्यौ प्रेम अभग।—स्रीपालरास
९ युद्ध करना।
उ०—वैरिया काज पलाण बाजिद, काधोधर ग्रेही 'मोहोकमो'। वित घेरै मेरा बतळावै, सग्रहै रवि ऊगा समो।
—मोहकमसिंघ राठौड री गीत
१० रोकना, थामना, ठहराना।
उ०—सग्रहियौ रथ सूर, पेखण नभ समहर 'पता'। खोभ दळा खेडूर, कूत कनोजा भळकिया।—पावूदान आसियौ
११ धारण करना।
उ०—१ मच्छर ओर न सग्रहै, आ मछरीका आद। अडै कमधा अगळी, विचग्रा हूता वाद।—रा. रू
उ०—२ केइक पुण्यवत प्राणिया रे, चेत कियौ धरम सार। साधु स्रावक व्रत संग्रह्या, समकित सैंठो धार रे।—जयवाणी
सग्रहणहार, हारौ (हारी), संग्रहणियौ—वि०।
सग्रहिओडौ सग्रहियोडौ, सग्रह्योडौ - भू० का० कृ०।
सग्रहीजणौ सग्रहीजबौ—कम वा०।
सगरणौ सगरबौ सघरणौ, सघरबौ—रू० भे०।

सग्रहांणि, सग्रहाणी—देखो 'सग्रहणी' (रू भे)
उ०—ताप सन्निपात जाणौ ग्रनीसार सग्रहांणि, पीडौ विघ रास पाडु नाना मूल रोग है। हीयारोग खास गाम रगिर प्रवाह रूप,

सीस पीड रोग श्ररू जेते रोग नैन है ।—ध. व. ग्र

संग्रहियोडो–भू. का. कृ.—१ संग्रह किया हुआ, सचय किया हुआ, जमा किया हुआ. २ पकडा हुआ, लिया हुआ, ग्रहण किया हुआ. ३ धारण किया हुआ, पहिना हुआ. ४ हिफाजत या पालन किया हुआ. ५ रक्षा किया हुआ. ६ स्थापित किया हुआ. ७ कैद किया हुआ. ८ प्राप्त किया हुआ. ९ युद्ध किया हुआ. १० रोका हुआ, ठहराया हुआ. ११ धारण किया हुआ ।
(स्त्री संग्रहियोडी)

संग्रही–वि [स] संग्रह करने वाला, एकत्र करने वाला ।

संग्राम–स. पु [स. संग्राम] युद्ध, लडाई, समर । (अ. मा, डि. को; ह. ना. मा.)

उ०—१ वजत घाव जुसरा, निहाव छटुवेरिय । संग्राम पट फेर्यं, कि, खड वाण सेणिय ।—रा रू

उ०—२ उवरै वचणा हीरा टाळो देर हुयी श्रायी, गायो गारो मेळगो संग्राम हेके साथ । सोडी काज लपेटो भागाळै सतावी सूप्यी, विचारी सुरद्रा लोक वर्णी श्रा विन्यात ।

—बादरदान दधवाडियो

उ०—३ जद स्वामीजी बोल्या—रजपूत रो बेटो संग्राम करतां न्हास जावै तो सूर किम कहीवै । तिण नै राजा पटो किम रावा दै ।—भि. द्र.

उ०—४ सुजड वहता 'रयरा' समोभ्रम, श्रतर किम दीमै श्रकळ । कुळ छळ वाया हमैं केविया, छाडैवा संग्राम छळ ।

—महम्मदजी बारहठ

रू. भे.—सगराम, सगाम, सगराम ।

संग्रामजित–सं. पु. [स.] १ श्रीकृष्ण व भद्रा के ससर्ग से उत्पन्न दस पुत्रो मे से एक ।

२ कृष्ण व शैवकन्या सुदेवी का एक पुत्र ।

३ कर्ण का भाई जो श्रर्जुन द्वारा मारा गया था ।

४ युधिष्ठर की सभा का एक राजा ।

संग्रामसाही–स. पु.—महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय द्वारा चलाया हुआ मेवाड राज्य का एक सिक्का ।

संग्रामागण–स पु. [स संग्राम+श्रगण] युद्ध भूमि, रणक्षेत्र, रण–स्थल ।

उ०—संग्रामांगण नै विसै जीतो उत्तम राय । वीरसेन नै जीवतो, वाधि लियो तिण ठाय ।—वि कु.

संग्राह–स. पु [स] १ श्रौजार या हथियार का दस्ता या मूठ ।

२ ढाल पकडने का हत्था विशेष । (डि. को.)

३ मुक्का, मुष्ठिका । (डि. को.)

संग्राहक–वि [स.] संग्रह करने वाला ।

संग्राही–स. पु [स संग्राहिन्] १ कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थों को खीचने वाला पदार्थ ।

२ कब्ज करने वाली वस्तु ।

संघ–स पु [स.] १ लोगो का समुदाय या समूह ।

उ०—देवी सुभ निसु भ दस्याय दळिया, देवी देव सग नासिया देत दळिया । देवी सघ सुग तणा काज सीधा, देवी कोट तेतीस उच्छाह कीधा ।—देवि.

२ साधु साध्वी, श्रावक श्राविका का समुदाय ।

उ०—१ सुध मन सेव गुरुदेव री साचवै, सगर समनै सरस सूत्र सिद्धत । दियं बहु दान मन सुद्ध पात्रह दया, भणी जिन सघ गो कगो भगवत ।—ध. व. ग्र

उ०—२ सगत सतरै बरस वीसे मास सिणगार जाण ए । चद्रापुरी थी सघ साथो, सही आण प्रमाण ए ।—ध. व. ग्र.

३ समूह, झुण्ड ।

उ०—कबहु करै न श्रटक उत्तापन, साहु दाग न धरै ट्र सघ न । चव सुरप तोरन नग वज्जै, धज्ज श्रनुगहै सग न गज्जै ।

—व भा.

३ तीर्थाटन के लिए जाने वाला यात्री दल । (जैन)

उ०—सघ काढ वधामणा सा मोताइ रे । तीरथ नैण निहालि, नाल मन माहाइ रे —स. कु.

४ साधुश्रो का मठ ।

५ सगठित रहने या होने की व्यवस्था, भाव ।

६ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का लोकतन्त्रीय राज्य या शासन जिसकी व्यवस्था जनता के चुने हुए प्रतिनिधि करते थे, संघ-राज्य ।

७ राष्ट्रो का एक सगठन, जैसे राष्ट्र-सघ ।

८ देखो 'सिह' (रू भे.)

उ०—ए कागळ का समाचार रुकमणीजी वीनती करै छै । पुवळि वधण छडो पु सघ की बळि लै । सु स्याळ सासी । जो मुनै वीजो कोई परणरयै ।—वेलि टी.

९ देखो 'सग' (रू. भे.)

संघट–स. पु. [स.] १ समूह, समुदाय ।

उ०—सुग लाधे केलि स्याम स्यामा स ंगि, सणिए गनरलिए सघट । चौकि चौकि ऊपरि चित्रमाळी, हुए रळियो यहकहाट ।—वेलि

२ देखो 'सकट' (रू. भे)

उ०—वंधग्राह दरीयाव बीच, पड सघट फील पुकारिया । ईस कवाहण पाय श्राय, धर हत्थू सूड उधारिया ।—र. ज. प्र.

संघटण–सं पु. [स. संघटन] १ श्रपने हित रक्षार्थ किसी विशिष्ट वर्ग या कार्यक्षेत्र के लोगो का मिलकर धारण किया गया एक इकाई का रूप ।

२ बिखरी हुई शक्तियो को एक मे मिला कर उन्हे किसी काम के लिए तैयार करने की क्रिया ।

३ किसी विशेष उद्देश्य के लिए विखरी हुई शक्तियो को मिलाकर दिया गया रूप ।

४ इस उद्देश्य से वनाई गई सस्था ।

५ किसी वस्तु विशेष के विभिन्न अवयवो को जोडकर उसे प्रतिष्ठित करने या रचने का ढग या क्रिया ।

६ व्यक्तियो के मिल कर एक होने की क्रिया ।

७ स्वरो या शब्दो का सयोग ।

रू. भे —सगटण, सगट्टण, सगठ, सगठण, सघट्टण ।

संघटा–स. पु —ससर्ग, सम्पर्श ।

उ०—वुद्धि सू विचारचौ इण रौ सील भागौ दीसै छै, पछै तै मिल्यौ जद स्वामीजी पूछ्यौ—'थारौ सील घर री स्त्री सू भागौ कै ओर स्त्री सू भागो' । जद तै बोल्यौ—पर स्त्री सूं तौ न भागौ घर स्त्री सूं पिण सघटा रूप हुवौ ।—भि. द्र.

सघट्टचक्र–स. पु. [स.] फलित ज्योतिष के अन्तर्गत युद्ध-फल विचारने का नक्षत्रो का एक चक्र ।

संघट्टण—देखो 'सघटण' (रू. भे)

उ०—सज्जौ अेक संघट्टण पथ पलट्टण, राज उलट्टण आज वढौ । मन मे मिनखापण नैण सुरापण, खार्च खापण मेल कढौ ।

—चेतमानखौ

सघपत, सघपति–स. पु [सं. संघपति] किसी सघ या समूह का प्रधान, दलपति, नायक ।

उ०—१ सघपति सोम तणउ जस सगळइ, वरण अठारह करइ वखाण । मूयउ कहइ तिकै नर मूरिख, जीवइ जगि जोगी सुत जाण ।—स कु.

उ०—२ सघपति भरतेरु जात्रा करू रे । थाव्या प्रथम प्रासाद, जय जय गिरनार गिरै ।—स कु.

सघर—१ देखो 'सगर' (रू. भे)

उ०—१ सुजडा मुहि सघर लडिया लमकर, डिगमिग काइर कळह डरै । खारा पळ खडर कटि सिर कूपर, स्रोणी खप्पर सकति भरै ।—गु. रू व.

उ०—२ जुध राज तणा धारै जतन, सारै वज्जा साह सूं । केविया छेड सघर करा, औ निवेड निरवाह सू ।—रा. रू.

२ देखो 'सग्रह' (रू भे.)

उ०—कर नवल किसोरी सघर सोरी, मरियादा मेटदा है । विस-फळ वैरागी त्रिभवन त्यागी, भोगी भुज मेटदा है ।—ऊ. का.

सघरण–वि —१ सहार करने वाला, नाश करने वाला ।

उ०—कौसळ्या, सुख करण, नेत वध दसरथ नदण । व्रत खित्रवट निरवहण, दुमट ताड़का निकदण । रिण सुवाह सघरण, असुर मारीच उडावण । रज पै अहल्या तरण, संत जम त्रास छुडावण ।

—र ज प्र

२ देखो 'सग्रहण' (रू भे)

सघरणौ, संघरवौ–क्रि स.—१ सहार करना, मारना ।

उ०—१ विहित सुणै अत वाणि, एम चहुवाण उचारै । सको काळ सघरै, न को रहियौ वीसारै ।—रा. रू

उ०—२ वोलत सकति मो वळि हुई, सुभट असखा संघरै । स्रोण इक आज खप्पर भरसि, तई एक खप्पर भरै ।—गु रू व

उ०—३ सवळा सत्र सघरै, छळै सवळै पडि-गिरिया । जेथ भिडै दळि पडै, तेथ आडा भुज धरिया ।—गु रू व

२ युद्ध करना ।

३ देखो 'संग्रहणौ, सग्रहवौ' (रू भे)

सघरणहार, हारौ (हारी), संघरणियौ—वि० ।

सघरिओडौ, सघरियोडौ, सघरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सघरीजणौ, सघरीजवौ—कर्म वा० ।

सगरणवणौ, सगरणववो, सगरणौ, सगरवो, सहरणौ, सहरवौ

—रू० भे०

सघरस, सघरसण–स पु [स सघर्ष, सघर्पण] १ रगडने, घिसने या घोटने की क्रिया ।

२ किन्ही दो विरोधी दलो या पक्षो मे एक दूसरे को दवाने के लिए चलने वाला झगडा ।

३ किसी अभाव या कष्ट से वचने के लिए किया जाने वाला प्रयत्न ।

४ प्रतियोगिता, स्पर्धा ।

५ द्वेष, वैर ।

६ टक्कर, भिडत ।

७ डाट, ढक्कन ।

८ वाधा, रुकावट ।

सघरसी–वि [स सर्घषिन्] सघर्ष करने वाला, सघर्परत ।

सघरियोड़ौ–भू का कृ —१ सहार किया हुआ, नाश किया हुआ २ युद्ध किया हुआ ।

३ देखो 'संग्रहियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सघरियोडी)

संघल, सघलदीप, सघलद्वीप, सघलि, सघलिदीप, संघलिद्वीप, सघली, सघलीदीप, सघलीद्वीप—देखो 'सिंहलद्वीप' (रू. भे.)

उ०—धरि मछर सघलि साचरयउ, नेव जीत कन्या वरी । पदमनी ज आणि पयज करि, राय रत्नसेन अड्मी करी ।—प च चौ

सघवाहणी—देखो 'सिंहवाहणी' (रू भे)

उ०—मतीभोध दावा दुग्दाहणी अमतमाडा, संत चाडा आवै सम्रचाहणी सादेस । गुडती जेहाजा नद्य वाहणी अथाह वाहा, ठग्रा-हणी साहा सघवाहणी आदेस ।—हुकमीचद खिड़ियौ

सघवी—देखो 'सिंघवी' (रू भे.)

उ०—१ भरत तणइ पाटि आठमइ, दडवीरज थयउ रायौ जी । भरत तणी परि सघ कियउ, सेत्रुज सघवी कहायौ जी ।—स कु.

सचय-स. पु [स] १ समूह, झुण्ड ।
उ०—१ अत्रावळि अलगरद्ध रूप सचय संचारै । जळ नीली निभ सिचय जाळ इत तिरत अपारै ।—वं. भा.
उ०—२ जत्य जलौका जूहकी सु धमनी छवि धारै । गटक सचय अगुलीन, वनि चपळ विहारै ।—व भा.
२ चीजें इकट्ठी करने की क्रिया या भाव ।
३ जमा करना, सकलन ।
४ इकट्ठी की हुई चीजो व रुपयो आदि का ढेर या राशि । (ह ना मा)
उ० – १ वरस एक फौज घेरै रही भीतर नूं सचय खूटो ।
—गोपाळदास गौड री वारता
उ०—२ अर वूंदी रा ही अमल मे जैतौ कहै जिण ठाम सामग्री रा सचय करि वरात वुलावण धारी ।—व भा.
उ०—३ आढो रण गळियार उठार्यौ, लागि त्रजान अप्प पुर लायौ । करि उपचार अगद वपु कीधौ, दुलभ वित्त सचय त्रप दीधौ ।—व भा
५ अधिकता, वाहुल्य ।
रू भे —सच ।
[स. सचयन] ६ शव या मृत्य शरीर की भस्म बन जाने के पश्चात् अस्थि वीनने को क्रिया ।
रू भे.—सच, सचै ।
सचर-स पु [स] १ गमन, चलन ।
२ ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि मे गमन ।
३ मार्ग, पथ, रास्ता । (डि को)
४ शरीर, देह । (डि. को)
५ सचित कर्म ।
उ०—जन हरिदास हरि सुमरता, सचर रहै न सेस । कहा दिखावै और कू, उलटि आप कूं देख ।—ह पु. वा
६ संचार, प्रवेश मार्ग ।
उ०—मैं न्यारी घरि आव जागि, देखै नहिं लोई । अरस परस रस एक, और संचर नहिं कोई ।—ह पु. वा
७ देखो 'सचळ' (रू भे.)
सचरण-सं पु [स] १ सचार करने की क्रिया या भाव चलन गमन ।
२ पसरने, फैलने की क्रिया ।
३ कापने की क्रिया या भाव ।
४ मार्ग, रास्ता, पथ । (ह नां. मा)
५ पैर, चरण, पग । (ह. ना मा)
संचरणौ, संचरवौ-क्रि अ. [सं. सम्+चर] १ गमन करना, जाना ।
उ०—१ के सूरा घर कज्ज है, के सूरा पर कज्ज । सुरपुर दोहू संचरै, रूका व्है रज-रज्ज ।—वा दा.
उ०—२ धन देणी जिण घर नहै हेको पुरस न होय । सुपनै ही नहिं सचरै, लोभी मगण लोय ।—वा. दा.
उ०—३ गिरिजा पूजणजी मियाजी सचरी, कोई सुभग सहेल्या सग ।—गी रा
उ० —४ पय पणमीय निय ताय कुंती मद्री पय नमीय । मच्च वयण निरवाहु, करिवा काणणि सचरइ ।—सालिभद्र सूरि
२ घूमना, विचरण करना, परिभ्रमण करना ।
उ०—हायळ वळ निरभै हियौ, सरभर न को समत्थ । सीह अकेला सचरै, सीहा केहा सत्थ ।—वा दा
३ आना, आगमन करना ।
उ०—१ परवण पाग 'प्रतापसी' वहमंता वाहाळ । सम्मुख धारै संचरै, कवण जुहारै काळ ।—किसोरदान वारहठ
उ०—२ काका वावा भ्रात कवि, दूवै दूर रुख हेर । सत महत्त न सचरै, पातर रै पग फेर ।—वा दा
उ०—३ राय तणी तै सेवा करइ, राति दिवस तीरट सचरइ । राय तणइ मनि वसिउ अपार, निरलोभी नइ निर हकार ।
—हीराणंद सूरि
उ०—४ मही तिहा तै आवी कहिउ, मुहता नु मन अति गहग-हिउ । गढ वाहिरि देवी देहरइ राजा लोक तिहा संचरइ ।
—हीराणंद सूरि
४ अनुसरण करना ।
उ०—कइ तप तपुं हु वाणारसी, कइ जाय भैरव पडण पडास । कइ पडव पथ संचरू, कइ जाय सेवसूं गग दवार ।—वी दे
५ प्रविष्ट होना, पहुँचना ।
उ०—१ मारू महला संचरी, कनक वरण्णै ताम । पूंगळ माहै ऊपनी, नरवर हुई उजास ।—ढो मा.
उ०—२ पडू नरेस री मडवरि जाइ, हथिणाउरपुर सचरए । राइ दलै सरिसा कुयर लेउ, तारै सु निम चाढुलउ ए ।
—सालिभद्र सूरि
६ अकुरित होना, उभरना ।
उ०—मीगा पुळी न संचरी, पगा न ठेठर वध । दूध पियतै वाछडै, दियौ महाभड कंध ।—महाराजा मानसिंह
७ उत्पन्न होना, पैदा होना ।
उ०—१ माग मुरद्धर देस री, लियौ उरद्धर ज्यास । घाट अनेकन संचरै, एक प्रभू री आस ।—रा रू
उ०—जा मति पीछै सचरै, सो जै पहली होय । काज न विणसै आपणौ, दुरजण हसै न कोय ।—पचदंडी री वारता
८ भाग जाना, पलायन कर जाना ।
उ०—१ पुळिया पुंडरीक सुपह सचरिया, वागी हाक न कोय वळै । वाळा चद ऊठ अतुळी वळ, भोजराज गढ तूझ भळै ।
—भोजराज रूपावत रौ गीत

उ०—२ आयौ असमाना ऊतरियौ, घुरै दमाम क घणहर घुरियौ।
धारण धूम्र घडै मन धरियौ, सहजादौ विमुंह न सचरियौ।
—गु. रू ब.

९ फैलना, प्रसारित होना।
१० चल निकलना, व्यवहृत होना।
११ प्रस्थान करना, रवाना होना।
उ०—वेग करी नइं विलव न कीज्यौ, रामइ रथ जोतरिया।
हरि जोसी हाकेवा बइट्ठा, सीवेगइ संचरिया।—रुकमणी मगळ
१२ आक्रमण करना।
१३ होना।
उ०—रवि मकर रासि निवास राजत, उतर मगहर अनुसरै। दिन वधत अनुक्रम किरण दीपति, रैण लघुपण आदरै। मिळि अव साख प्रसाग्व रसमय, अमिति मजुर अजुरै। रसहीन अनिलर मरव रैणा, सीत छळ क्रति सचरै।—रा. रू
१४ उच्चरित होना, निकलना।
उ०—हरीया पछमि देस की, वाट विखम घर दूरि। सुरित सबद जाह सचरै, ताप त्रिगढ कु चूरि।—अनुभववाणी
१५ प्राप्त होना, मिलना।
सचरणहार, हारौ (हारी), सचरणियौ—वि०।
सचरिओड़ौ, सचरियोड़ौ, सचरयोडौ—भू० का० कृ०।
सचरीजणौ, सचरीजवौ—भाव वा०।
साचरणौ, साचरवौ—रू० भे०।

सचरलूण—स. पु.—एक प्रकार का नमक विशेष। (अमरत)

सचरियोडौ—भू का कृ—१ गमन किया हुआ, गया हुआ २ घूमा हुआ विचरण किया हुआ, परिभ्रमण किया हुआ ३ आया हुआ, आगमन किया हुआ ५ अनुसरण किया हुआ ५ प्रविष्ट हुवा हुआ, पहूचा हुआ ६ अकुरित हुवा हुआ उभरा हुआ ७ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ ८ भागा हुआ, पलायित हुवा हुआ ९ फैला हुआ, प्रसारित हुवा हुआ १० प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुवा हुआ ११ आक्रमण किया हुआ १२ चला हुआ, व्यवहृत हुवा हुआ १३ हुवा हुआ. १४ उच्चरित हुवा हुआ, निकला हुआ १५ प्राप्त हुवा हुआ।
(स्त्री सचरियोडी)

सचळ, सचल—स पु.—१ एक प्रकार का लवण। (डिं. को)
२ कपन, आहट।
उ०—वाघ आय निसरियौ, मिनख री सचळ देखनै गाजियौ।
—पचदडी री वारता
३ छूने की क्रिया, स्पर्श करने की क्रिया।
४ टटोलने की क्रिया।
उ०—अगुलि नो संचल कीध, टपोरै कपाट दीध।—धर्म प.

सचवणौ, सचववौ—क्रि. स—१ जडना, बन्द करना।
उ०—सरै न ताळौ सचव्यां, सति नू केम सताय। खळ जद लग ताळा खुळै, तौ ताळौ की ताय।—रैवतसिंह भाटी
२ देखो 'संचणौ, सचवौ' (रू. भे)
संचवणहार, हारौ (हारी), संचवणियौ—वि०।
सचविओडौ, सचवियोडौ, संचव्योडौ—भू० का० कृ०।
सचवीजणौ, सचवीजवौ—कर्म वा०।

संचवियोडौ—भू का. कृ—१ जडा हुआ, वन्द किया हुआ।
२ देखो 'स चियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सचवियोडी)

सचांण, सचाणौ—देखो 'सिचाण' (रू. भे.)
उ०—जस वाण सचांण संचाण सहवाचै, परदेस प्रवेस कीरत केती। नर नार उच्छाव करै व्हौ वारद ज्यू इधकार भत्तो।
—ऐ जै. का. स.

सचांन—देखो 'सिचान' (रू भे)

सचाडणौ, सचाडवौ देखो 'सचाणी, सचावौ' (रू भे)
सचाडणहार, हारौ (हारी), सचाडणियौ—वि०।
सचाडिओडौ, सचाडियोडौ सचाडयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सचाडीजणौ, सचाड़ीजवौ—कर्म वा०।

सचाडियोडौ—देखो 'संचायोडौ (रू भे.)
(स्त्री सचाडियोडी)

सचाणौ सचावौ—क्रि स.—१ सचय कराना, एकत्र कराना।
२ देखभाल कराना।
३ प्रवेश कराना।
४ तैयार करना/कराना।
५ कटिवद्ध करना/कराना।
६ चूर्णादि को हाथो से दवा कर पिंड रूप मे करना/कराना।
सचाणहार, हारौ (हारी), संचाणियौ—वि०।
सचायोडौ—भू० का० कृ०।
सचाईजणौ, सचाईजवौ—कर्म वा०।
सचाडणौ सचाडवौ, सचावणौ, सचाववौ—रू० भे०।

सचायोडौ—भू का कृ—१ संचय कराया हुआ, एकत्र कराया हुआ २ देखभाल कराया हुआ ३ प्रवेश कराया हुआ ४ तैयार किया/कराया हुआ, कटिवद्ध किया/कराया हुआ ५ पिंडरूप मे बाधा हुआ। (लड्डु)
(स्त्री सचायोडी)

सचार—स पु [स सचार] १ गमन, चलन।
उ०—कुळवती सूं क्रीत री, उळटौ है आचार। वा न तजै घर आपरौ, जग इण रौ सचार।—वा. दा
उ०—२ अर वौ वाळ कन्हैयौ भटियांणी नै मा अर काली मासी नै नानी-मा कैय बतळातौ जणा तीनूं लोका री हरख अर उछाव

वारै कांना मे गूंजतौ, रू-रूं मे इमरत रौ संचार व्है तौ।
—फुलवाडी

२ ग्रहो का एक राशि से दूसरी राशि में गमन करने की क्रिया या भाव।

३ ग्रावागमन।

४ मार्ग, पथ, रास्ता।

५ दुरूह मार्ग, कठिन मार्ग।

६ रास्ता दिखाने की क्रिया, मार्ग प्रदर्शन।

७ सांप के फन मे मिली हुई मणि।

रू. भे —सचारि।

संचारक-वि. [स्त्री. सचारिका] १ वह जो संचार करे।

२ नेता।

३ मुखिया, प्रधान।

४ चलाने वाला।

५ ग्रन्वेपक।

स पु.—स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक ग्रनुचर।

सचारणौ, संचारवौ-क्रि स —१ सचार करना।

२ फैलाना।

३ चलना।

उ०—ग्रत्रावळि ग्रलगरद्ध रूप सचय सचारै। जळ नीली निभ सिचय जाळ इत तिरत ग्रपारै।—व. भा.

सचारणहार, हारौ (हारी), सचारणियौ—वि०।

सचारिग्रोड़ौ, सचारियोड़ौ, सचारचोडौ—भू० का० कृ०।

सचारीजणौ संचारीजवौ—कर्म वा०।

सचारि—१ देखो 'सचार' (रू. भे)

उ०—पाडल परिमल पूजती, धूजती पवन संचारि। नव रगिइ वनि विकसती, ग्रसती जिम न विचारि।—जयसेखर सूरि

२ देखो 'सचारी' (रू भे.)

सचारिक—देखो सचारी' (रू भे)

उ०—वाह चदन सुगम सेव्यइ, भाव सचारिक वधइ। तेत्रीस ध्रति मति स्मरण लज्जा, सोक निद्रादिक सधइ।—वि. कु

सचारिका-स स्त्री.—१ दूती, कुटनी।

२ नाक।

३ बू, गंध।

सचारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सचार किया हुग्रा. २ फैलाया हुग्रा।

३ चला हुग्रा।

(स्त्री सचारियोडी)

सचारी-स पु [स. सचारिन्] १ साहित्य के ग्रन्तर्गत वह भाव जो रस का उपयोगी होकर उसमे सचार करता है।

वि वि —भरत नें सचारी भावो की सख्या ३३ मानी है उनके नाम निम्नलिखित है :—

(१) निर्वेद, (२) ग्रावेग, (३) दैन्य, (४) श्रम, (५) मद, (६) जडता, (७) ग्रौग्रय् (८) मोह, (९) विबोध, (१०) स्वप्न, (११) ग्रपस्मार, (१२) गर्व, (१३) मरण, (१४) ग्रलसता, (१५) ग्रमर्प, (१६) निद्रा, (१७) ग्रवहित्था, (१८) ग्रौत्सुक्य, (१९) उन्माद, (२०) शका, (२१) स्मृति, (२२) मति, (२३) व्याधि, (२४) सन्त्रास, (२५) लज्जा, (२६) हर्ष, (२७) ग्रसूया, (२८) विषाद, (२९) धृति, (३०) चपलता, (३१) ग्लानि, (३२) चिन्ता ग्रौर (३३) वितर्क।

उपर्युक्त सख्या शास्त्र-चर्चा सुविधा के कारण ही परिमित की गयी है। यदि ग्राठ स्थायी भावो को, जो सचारी भी होते हैं उनमें जोड़ दिया जाय तो इनकी परिमित सख्या को वढाना पडेगा। पर ग्राठ स्थायी भावो के उनमे जोड दिये जाने पर कुछ सचारी ग्रपने-ग्राप व्यर्थ हो जायेंगे। शोक के संचारी होने पर विषाद भय के सचारी होने पर त्रास, क्रोध के सचारी होने पर ग्रमर्ष को ३३ सचारियो मे से पृथक करना पडेगा। कभी २ तो ग्रनुभाव, नायिकाग्रो के २० ग्रलकार, भाव, हाव ग्रादि सात्विक भाव, ग्रलाद, ग्रादि, दस कामावस्थाएँ, सभी को सचारी के ग्रन्तर्गत गिना जाता हैं।

२ पद या गीत का तीसरा भाग। प्रायः यह मुख्य रूप में ध्रुपद मे होता है। इसमे ग्रस्थायी ग्रौर ग्रतरा के दोनो ही स्वरो का प्रयोग होता है।

३ हवा, वायु।

वि.—१ सचरण या सचार करने वाला।

२ ग्राया हुग्रा, ग्रागन्तुक।

उ०—तुलसी वन कुजन सचारी! गिरधरलाल नवल नटनागर, मीरा वळिहारी।—मीरा

रू. भे.—सचारि, सचारिक।

सचाळ, सचाल-स पु [स. सचलन्] १ कपन, कम्पकम्पाहट।

२ चलन, गमन।

संचालक-वि. [स.] सचालन करने वाला, परिचालक।

सचालण-स पु. [सं सचालन] १ चलाने की क्रिया या भाव, परिचालन।

२ व्यवस्था करने या नियत्रण रखने की क्रिया या भाव।

३ कार्य जारी रखने की क्रिया या भाव।

सचावणौ, सचाववौ—देखो सचाणौ, सचावौ' (रू. भे)

उ०—मीठै को मडको, ग्रळसी को तेल, वो थारी जच्चा राणी पथ लियो, राज। राय कदोई के ने वेग वुलाय, जच्चा राणी नें लाड्डा सचावो, जी राज।—लो गी

सचावणहार, हारौ (हारी), सचावणियौ—वि०।

सचाविग्रोड़ौ, सचावियोडौ, सचाव्योडौ—भू० का० कृ०।

संचावीजणौ, संचावीजवौ—कर्म वा० ।

सचावियोडो—देखो 'सचायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. सचावियोडी)

सचित-वि. [सं. सचित] १ सचय या एकत्रित किया हुआ ।

२ देखो 'सचितकरम'

उ०—कूडो किए नै रे ! आपूं अव ओळभौ, कोई उघडचा संचित पाप ।—मी रा

रू भे.—सचत, सचिद ।

सचितकरम-स पु यौ [स सचितकर्म] १ वैदिक युग मे यज्ञ की अग्नि सचित कर लेने पर किया जाने वाला एक विशिष्ट कर्म ।

२ आधुनिक मान्यतानुसार वे समस्त कर्म जो पूर्व जन्म मे किये गये थे, जिनका फल इस जन्म मे अथवा आने वाले जन्मो मे भोगना पडता है ।

रू भे —सचतकरम ।

सचिद—देखो 'सचित' (रू भे)

उ०—आस्चरय रघुनाथ भूप महद, त्वनाममुच्चारणम् । जन्म संचिद घोर घोर कळुस, नास तमेक-छिनम् ।—र. ज प्र

सचियार—देखो 'सचियार' (रू भे)

उ०—केसवदास आदमी वडौ सचियार थौ जलाल थौ, मरद मोटियार थौ ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

सचियोडौ-भू का कृ.—एकत्र किया हुआ, सचय किया हुआ ।

२ देख-भाल किया हुआ ।

(स्त्री सचियोडी)

सची—देखो 'साची' (रू. भे)

उ०—सारा-मार परक्खै सची, खान तहव्वर वागा खची । हेकरा दिस था सार हिलोळी, आहाडा कीधी दळ ओळी ।—रा. रू

सचीत-वि —चिंतित, दु:खी ।

उ०—आगै आवा रो दुख हुतौ हीज, ऊपरा भाई ए सचीत कियौ ।
—द वि.

सचीताई-स पु [स स+चिन्ता] चिन्ता, दुख ।

उ०—ताहरा कुवरी वोली —मुंहता रा वेटा राति च्यार पहर मारिग चालीया पिण बोलिया काहेर नही सु किसी सचीताई ।
—चौवोली

सचै - देखो 'सचय' (रू भे)

सचौ-स. पु —१ वह उपकरण जिसमे कोई तरल पदार्थ डाल कर अथवा गीली चीज रख कर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती हो, फरमा ।

ज्यू—ईंटा रो सचो, टाइप रो सचो ।

उ०—जिए सचै सोरठ घडी, घडियो राव खेंगार । कै तो सचौ गळ गयौ, कै लाद वुहा लव्हार ।—अज्ञात

२ सग्रह, सचय, जमा ।

उ०—१ तिण गढ माहे वावडी, कुआ, ताळाव, जळ, वहळ, धान, घ्रित, तेल, लूण, खड, ईंधण, अमल, कपडो घणौ अपार सचौ कियौ छै ।—रा. सा. स.

उ०—२ केई कहै छै, भीम दै, आदमी मेल कहाडियो—'गढ रौ संचौ तूटो छै, औ दूध दीठौ जिकौ भडसूरिया रौ छै, थे पाछा आय उतरो । दिन २ तथा ३ नै रावळ गढ रा किंवाड नाखसी ।
—नैणसी

३ तरह, प्रकार ।

उ०—राजा राणी रै हरख रौ पार नी । हिवड़ा रै हरख हरख रौ सचो न्यारो व्हिया करै । कोई हार देय राजी व्है तौ कोई हार पाय राजी व्है । जित्ता हिवडा उत्ताई हरख ।—फुलवाड़ी

रू भे —साचौ ।

संछरद्दण-स पु [स संछर्द्दन] ग्रहण मे एक प्रकार का मोक्ष जो शुभ माना जाता है । (फलित ज्योतिष)

सछेप—देखो सक्षेप' (रू भे.)

सज, स ज-स पु —१ एक देश का नाम ।

[फा] २ कासे की दो कटोरिया जो वजायी जाती है, झाझ, मजीरा ।

३ शिव, महादेव ।

४ व्रह्मा ।

५ वह मुख्य वस्तु, उपकरण या वाहन जिसपर उससे सम्वन्धित अन्य उपकरण, सामान या साधन सलग्न किये जाय ।

उ०—हरी संज साजता दला रै सहायक, वरावर खवा पर अगर वोली ।—कुभकरण सादू

यौ —सज-साज ।

६ देखो 'साज' (रू भे)

उ०—१ पकडौ पकडौ री हाक मचावता च्यारूं भाई विना संज ई घोडा माथै वैठा अर लारै रा लारै घोडा दाविया—वडगडा, वडगडा ।— फुलवाडी

उ०—२ हाळी भला भला सज सगळा, एक मतै व्है लागा । ब्रह्म साखि यू निपजी आई, घर का टोटा भागा ।—ह पृ वा

उ०—३ अठ दीह करार करै भड आया, माहमा संज मन्त्रिया फुरमाया । सू. प्र

उ०—४ दीवाण तौ खुद अैडाई आदेस री वाट न्हाळतौ हौ । उण री तौ मन जाणी व्ही । काळा घोडा, काळौ ई सज अर काळा गाभा देय चरवादार नै साम्ही भेज्यौ । सगळी वाता समझाय दी ।
—फुलवाडी

उ०—५ रूपाळी लुगाई रौ झालो विरथा गियौ तो वा अेक नवौ चाळो करचो । सायंड वणनै मारग मे चरण लागी । संज सजियोडी । पण माथै असवार नी । सातू वेली अठी-उठी भाळियो । कठैई ओठी निगै नी आयौ ।—फुलवाडी

रू भे —संक।

३ देखो 'संध्या' (रू. भे)

उ०—रवतारा सारा मिळै, दाखी संज सलाह। रही कमधा फौज पर नहीं अवच्चर माह।—रा रू

संजड़ी—देखो 'सुजडी' (रू भे.)

उ०—आगै सूर न काढिया, तुरगम काटी आय। जै मिस राणै सजडी, लेई रिणमल राय।—नैणसी

संजण—देखो 'सजण' (रू. भे)

उ०—जळद नीळ देह जेह तड़िया पट पीत तेह, गोव्यद सत कन गेह मीन नेह सजण। रावण मिथळेसराज लाखावात अघट लाज, करि प्रताप सबळ धरग भग्ग चाप भजण।—र. ज प्र.

संजणौ, संजबौ—क्रि अ.—१ सकुचाना, शर्माना।

२ ईर्ष्यायुक्त होना।

उ०—मोटा री भ्रम काम में, अधिको करै अदेस। दमारण री रिधि देखनै, गक सज्यो सुविसेस।—ध. व. ग्रं

३ प्रभावित होना।

४ देखो 'सजणो, सजबो' (रू भे.)

उ०—तीखा ना अग्राजा माहे सजिया न कोट किता, महागीर साजा माहे भजिया असाय। मारहठा रहै मैं गाजिया लाक पाजा माहे राजा माहे अगजी रजियो माहराव।

—महाराजा बहादरसिंघ किसनगढ री गीत

संजणहार, हारो (हारी), संजणियो—वि०।

संजिग्रोड़ो, संजियोड़ो, संज्योड़ो—भू० का० कृ०।

संजीजणो, संजीजबो—भाव वा०।

संजत—स पु —१ सामान, सामग्री।

२ सजावट।

३ प्रबन्ध, व्यवस्था।

उ०—री नु देराग री सुगाई कठी, परम जळ सु हाथ पग धुवाया, [illegible] लागी। सोमेसर अपणै घर री सजत देखनै राजी हुवो।—[illegible] नैगी बुद्धि री वात

४ देखो 'सजत' (रू भे)

उ०—[illegible] दीध, कथा नवरगी सिलह कीध। [illegible] मीर सजत [illegible]।—वि. स

५ देखो 'संयुक्त' (रू भे.)

संजति—स. स्त्री [सं [illegible]] प्रव्रज्या। (हि को.)

संजद—देखो 'सजादो' (रू भे)

उ०—[illegible], ममदा [illegible], [illegible], संजद, कुम्मेर [illegible] सुनटी, रूपहुरी भाणै [illegible]।—[illegible] री वात

संजम-वि.—१ घना।

उ०—१ टूक चावडो रावराज नै कवर वीज नामै राज करै छै। तिको राव राज तो आल्या संजम छै, पिण हीया रा नेत्र खुल्या छै। आल्या देखता सूं घणो सूझै।—जगदेव पंवार री वात

उ०—२ तद राणै वैणीदास रै एक बेटो, वरस पनरै माहे। सो रूप री ऐसो, जैसो प्रथी मे नही। सरग री परी, आभै री वीज, मांनसरोवर री हस, केळ री गरभ। सो रूपगुणाकर निपट अवल पण आख्या सजम मोतीयाबध।—कुंवरसी साखला री वारता

रू भे —सजमि, सजिमि।

२ देखो 'सयम' (रू. भे.)

उ०—१ सो पति मरत सद्धि दुख सजम। रहि सु पुस्कर गहन मनोहरम।—व. भा

उ०—२ सजम जप तप सावरत, अन जुत जोग विनाण। आख तरच्छी ईखता, जीता समधा जाग।—बा दा

उ०—३ भोग तणउ अतराइ इण परि बाधी सजम लेवि। निम्मल विपुल कीया तप गाढा, हिअडइ भाव धरेवि।—हीराणद सूरि

उ०—४ द्वद वाद किन हू नही करीयै, आपा सेतो अजराजरीयै। राग न वेस हरख नही धोखा, सीलादिक सजम सतोखा।

—अनुभववाणी

सजमणो—वि.—सयम धारण करने वाला।

सजमणौ, सजमबौ—क्रि स —सयम ग्रहण करना, सयम धारण करना।

उ०—असत्री पीहर नर सासरै, सजमीया सहवास। ओता होग्रै अळखामणा, जो माडै घर वास।—ढो मा.

सजमणहार, हारो (हारी), सजमणियो—वि०।

सजमिग्रोड़ो, सजमियोड़ो, सजम्योड़ो—भू० का० कृ०।

सजमीजणो, सजमीजबो—कर्म वा०।

सजमनी—स स्त्री [स. सयमनी] यमराज की नगरी का नाम।

(ना मा.)

संजमनीपत, संजमनीपति, संजमनीपती—स पु [सं सयमनीपति] यमराज, काल। (टि को, ना मा)

संजमभार—स स्त्री यौ [स सयम+राज भार] दीक्षा।

उ०—१ जोवन ऊलटयउ जाइ प्रियु विण क्यू रहाइ, जादव गयउ रिसाइ, अब कैसी आस रे। जगति राजुल नारि जाऊगी हूँ गिरनारि, लेउगी सजमभार सुंदर कहकै पास रे।—स कु

उ०—२ मात पिता नै, पूछनै, लेसू सजमभार। वलि तै मुनिवर इम कहै, म करो ढील लिगार।—जयवाणी

उ०—३ निरवद्य तरिसिइ तै सभार जै पुग लेसइ संजमभार। पच महाव्रत सूधा धरइ मुगति सिरी तै जाई नय वरइ।—वस्तिग

संजमि —१ देखो 'संयम' (रू. भे)

२ देखो 'सयमी' (रू भे)

३ देखो 'सयम' (रू भे)

उ०—गयणगणि वाणीरहीय, गमि दमि संजमि गरु। धरमपुतु

जगि ऊपनउ, सदयमोलि सुविवेक ।—मानिभद्र सूरि

संजमियोड़ो—भू. का. कृ.—संयम ग्रहण किया हुआ, संयम धारण किया हुआ ।
(स्त्री संजमियोड़ी)

संजमी—देखो 'संयमी' (रू. भे.) (अ मा.)
उ०—अरण मिळ तैं सै संजमी, तैं संसार अनेक । नागे मिळै जो संजमी, जाणहु कोइ एक ।—पंचदंडी री वारता

संजय—सं पु [सं] १ महाभारत के समय धृतराष्ट्र को युद्ध का वर्णन सुनाने वाला एक मंत्री ।
२ सौवीर देशीय राजकुमार जिसने युद्ध से पलायन किया था किन्तु माता विदुला के भर्त्सना एवं उत्तेजनायुक्त शब्दों से प्रभावित होकर वापिस युद्ध क्षेत्र में युद्धार्थ गया ।
३ पुरुरवा के वंशज प्रति के पुत्र का नाम ।
४ पुरुवंशीय भर्म्याश्व के पांचाल कहलाने वाले पुत्र ।
५ एक सूर्यवंशी राजा ।
उ०—तिण सुत संजय रघुकुळ तारण, सावय संजय सुत दुसह संघारण । सभ्रम सावय स्वधोद सकाजा, राजै जै सुत सायक राजा ।—सू. प्र
६ ब्रह्मा का नाम ।
७ शिव, महादेव ।
८ विदेह देशाधिपति सुपार्श्व का पुत्र, एक राजा ।
९ सिंधुनरेश वृद्धक्षत्र का पुत्र, जो अपने भाई जयद्रथ के द्वारा किये द्रौपदी हरण के समय अर्जुन द्वारा मारा गया था ।
१० धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।
११ एक व्यास का नाम ।
वि —सुसज्जित, तैयार ।

संजरामी—सं पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—नागवटा सारनाला खासटा सगिहिल कबीच संजरामा सदवी फूलसगरीया मारीवो निलवास गरद्भगुपू राजिउ वयराजीउ महिदवरउ तीतआगिउ कन्नोयउ पीठ ममुसी पीठ देवगिरू मदील हीसीउ तनवकाव नरम्म हरीफ प्रभृति वस्त्रजाति ।—व स

संजरी—सं. पु —संज देश का व्यक्ति ।
उ०—नानी रूपी संजरी, गोरी कासगरीह । ईरानी यमनी अहर, सीराजी रंग सोह ।—बा दा.

संजवारी—सं स्त्री —झाड़ू । (हि. को.)

संजाफ—सं स्त्री. [फा संजाफ] १ गोट, झालर, किनारा, हाशिया । (मा म)
२ देखो 'संजाफी' (रू भे)
रू भे.—संजाव ।

संजाफी—सं पु [सं संजाफ+रा. ई] वह घोड़ा जिसका रंग संजाफी (आधा लाल व आधा हरा) हो । (शा हो.)
रू भे —संजव, संजाफ, संजाव ।

संजाव—सं पु [फा.] १ चूहे के आकार का एक जन्तु जो प्रायः तुर्किस्तान में होता है ।
२ देखो 'संजाफ' (रू भे)
३ देखो 'संजाफी' (रू भे)
उ०—१ कुमैत नीला समदा सकदा सेली समद, भूवर बोर सोनेरी कागडा गंगाजळ नुकरा बेळा महवा सुमग हरिया लीला गुलनार पंचकल्याण पवन गुरड संजाव सदली सोहा पकवा अगनन सिराजी ।—रा. सा स
उ०—२ बहु अब्बरस सुसकी अर संजाव, बोरता केहरी पेसव ब । कामनी ताफता पंच-कल्याण, सूलहरी नवा पट सिनाण ।
—गु प्र

संजावणौ संजववौ—देखो 'संजोणौ, संजोवौ' (रू भे.)
उ०—आमा जी सामा दीवला संजावो साहिब जी रे, बिच रूमी रंभा राणी रे, हाजी रे रंभा राणी रा टोला वेगा रे पधारो रे ।
—लो. गी.
संजावणहार, हारौ (हारी), संजावणियौ—वि० ।
संजावियोड़ो, संजावियोड़ो, संजाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
संजावीजणौ, संजावीजवौ —कर्म वा० ।

संजावियोड़ो—देखो 'संजोयोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री संजावियोड़ी)

संजिगत—वि. [सं संयुक्त] सहित, संयुक्त ।
उ०— ...... नवकोटी मारू प्रादि, सपु सवालक्ष कच्छ मुलतान हींदूस्थान, देव कूं पाटण, चीण महाचीण भोट महाभोट मलोठार, एतला संजिगत अम्हारा देसदेसाउर वरणवीता सोभइ, अगे सीधा- लक बोलि ।—व. स.

संजिम—सं पु.—१ दीक्षा ।
उ०—चिन चिन श्रीवासपूज्य, फाग रमतउ सी कुमर, संजिम आदरइ ए, सिवरमणी वरइ ए ।—कल्याण
२ देखो 'संजम' (रू भे.)
३ देखो 'संयम' (रू भे.)

संजियोड़ो—भू. का कृ.—१ सकुचाया हुआ, सर्माया हुआ । २ ईर्ष्यायुक्त हुआ हुआ । ३ प्रभावित हुआ हुआ ।
४ देखो 'संजियोड़ो' (रू भे)
(स्त्री. संजियोड़ी)

संजीदगी—सं. स्त्री. [फा.] १ आचरण, विचार व्यवहार आदि की दृष्टि से गंभीर होने की अवस्था या भाव ।
२ संजीदा होने की अवस्था या भाव ।
३ स्वाभाविक शिष्टता तथा सौम्यता ।

संजीदौ—वि [फा. संजीदः] जिसके विचार व व्यवहार में गंभीरता हो ।

उ०—गोपाळदास वडो सरदार काम रो माणस सजीदो छै सो इहा नू हर भात कर राखणा।—गोपाळदास गौड री वारता

सजीरो-स. पु.—१ रसोई की सामग्री।

२ भोजन सामग्री।

३ रसोई की सामग्री को समेटने की क्रिया।

४ रसोई का कार्य।

सजीव-सं पु [स] १ मृतक को पुन. जीवन दान देने की क्रिया।

२ वह जो पुन. जीवनदान दे।

३ एक नरक का नाम। (बौद्धमत)

रू. भे.—सजीव।

संजीवण—देखो 'संजीवन' (रू. भे.)

उ०—तेथी वीजो कुटी निवासी मिळियो। इयै ग्रपणी सजीवणी-विद्या कर मदारवती नू जिवाडी। मदारवती सजीवण होय जी ऊठी छै।—वैताळ पच्चीसी

सजीवणविद्या—देखो 'सजीवनविद्या' (रू. भे.)

सजीवणी—देखो 'संजीवनी' (रू. भे.)

सजीवणीविद्या—देखो सजीवनविद्या' (रू भे)

उ०—तेथी वीजो कुटी निवासी मिळियो। इयै ग्रपणी सजवणी-विद्या कर मदारवती नू जिवाडी। मदारवती सजीवण होय जी ऊठी छै।—वैताळ पच्चीसी

सजीवणी वूटी—देखो सजीवनी'।

सजीवणीविद्या—देखो 'सजीवनविद्या' (रू. भे)

उ०—डाकण मूं वदळो नीं लेय वेलिया नै पाछा जीवता नी करै' जित्तै गाव माम्ही मूठी ईनी करूला। इत्ता वरसा में वो केई केई सजीवणीविद्यावा सीखी। केई मतर-जतर सीख्या। भूत-प्रेता री लीला सीखी। डाकणिरा री भासा सीखी।—फुनवाडी

संजीवन-स. पु [स] १ पुनर्जीवित करने की क्रिया, नया जीवन देने की क्रिया।

उ०—वेरा वेरागर सागर सम सोभा, रीती गागर लै नागर तिय रोभा। धावै द्रगधारा दारा मुख धोवै, जीवन सजीवन जीवन धन जोवै।—ऊ का.

२ एक प्रकार की जडी विशेष जिससे मृत व्यक्ति के जीवित हो जाने की मान्यता है।

उ०—वैद पतूसतूमू लका वस, सो ग्रावै धारक सुरत। जिको वतावै जडी संजीवन, तौ लिखमण ऊठै तुरत।—र. रू.

वि.—जीवित, जिन्दा।

रू भे—सजीवण, सजीवण, सजीवन, सजीवन्न, सरजीवन।

संजीवनवूंटी—देखो 'सजीवनी'।

संजीवनमणि, संजीवनमणी-स स्त्री [स सञ्जीवनमणि] सर्पश्रेष्ठ के सिर मे पाई जाने वाली एक प्रकार की मणि विशेष।

संजीवनमूळी—देखो सजीवनी'।

सजीवनविद्या-स. स्त्री वो—मृत प्राणी को जिलाने की एक विद्या।

उ०—तद फूलमती विचारी ग्रो कुवर रो ब्राह्मण पासै वो ढबै पासै सजीवनविद्या छै। सु जीवाडसी। तद फूलमती ऊठै कुवर नु सरनायत माहै घरट री रूप हुतो मैरे पाना माहै सदेस घर घरट रै रूप ऊपर राखीयो।—चौबोली

रू भे.—सजीवणविद्या, सजीवणीविद्या, सजीवणीविद्या, सजीवनिविद्या, सजीवनीविद्या।

सजीवनि, सजीवनी-स. स्त्री [स सजीवनी] १ पुन: जीवन देने वाली।

२ मृत प्राणी को जीवित करने वाली एक बूटी।

उ०—१ अपाळस वरस तिस जाम, फिरि अवर दह धातुस प्रकास। ग्रति सग जडाव सव साजि ग्रग, सजीवनि फिरि होण सग।—रा. रू.

उ०—२ सुरां भव ज्यो तरा ग्रव सोभै, सगै पारिजातो तजै सार सोभै। प्रभा सप सर्पै वळी जात पेखै, लजै भौण सजीवनी होण लेखै।—रा रू

३ वैद्यक के अनुसार एक ग्रौषधि का नाम, सजीवनी वटी।

४ एक मत्र विशेष।

रू भे.—सजीवणी।

सजीवनिविद्या, संजीवनीविद्या—देखो 'सजीवनविद्या' (रू भे)

सजुक्त—देखो 'सयुक्त' (रू भे)

उ०—ग्रर सुरतसिघजी नु मा'राज रायसिघजी फळोधी गाम ८४ सूं पटै दीनी ही जिण सू सुरतसिघजी सिरदार सजुक्त फळोधी विराजता ग्रर दळपतसिघजी ग्रागै सुगाळ्यो रो काम प्रोहित मान महेस करै है।—द दा.

संजुग-स पु [स सयुग:] युद्ध, लडाई। (ग्र मा; ह् ना. मा.)

सजुगत, सजुगता सजुगति, सजुगुत, सजुगुता-वि [स सयुक्ति] १ युक्तिपूर्वक।

उ०—पनि सुकवि कोइक पुछै प्रभास, किण ग्ररथ नाम सूरिज प्रकास। जिण जतन काजि नावो जवाव, सजुगत ग्ररथ दाखूं सताव।—सू प्र

२ देखो 'सयुक्त' (रू भे)

उ०—१ महुर्म्रे लगणा सजुगत सुकनीणी सब जाण। घरण तका कलियाण री, चत्र भासा चहुवाण।

—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

उ०—२ तिसी सभन्न कै वीच मे कनक सिघासन छत्र ग्रनंद गाव-तकियै। तकियौ सजुगत विराजमान कियै। मानू इद्र नूं जग कर जीत कै लियै।—सू प्र

उ०—३ काळी घड पावस कंवळय, वग पकति दीप दतूसळय। हिळिया भद्र जातिय हीडुळता, परवत्त क पखिय सजुगता।

—गु रू व.

उ०—४ प्राचीप करम सुभए पुरखा, पाडत उत्तमा महिला।

कुळ दीप पुत्र जिणयै, कुळघू विनै रूप सजुगता।—गु रू व

उ०—५ सप्त सुर तीन ग्राम इकवीस मूरछना अस्ट ताळ गुनचास कोटि तानूं सजुगति छ राग छतीस रागणी का भेदग जिनूंनै वखत प्रमाण उचार कियै।—सू प्र.

उ०—६ दीरघ मिटि वधिग्रा लुघू दोइ, जिणिहूत प्रघटिग्रा नाम जोइ। संजुगुत जगण एकणि सरूप, श्री गाहा कुळवती ग्रनूप।—ल पिं

सजुगम, सजुग्म–वि [स स+युग्म] सहित।

उ०—ग्ररोगि नै चळ कीजै छे। ऊपरा कपूर, पान, वीडा, सोपारी, केसरि, नाडा, लौंग, डोडा, काथा, चूना, सजुगम, मुखवास, मूह-छण दीजै छै।—रा सा स

सजुत–स पु [स सयुक्त] १ युद्ध, लडाई। (ह ना मा.)

वि —२ सुसज्जित।

उ०—सहनाय सुर विचि सोह, ग्रति ग्रछर लेत विमोह। सब सस्त्र सजुत सूर, पयदात भुंड सपूर।—रा. रू

रू भे—सजत, सजुति, सजुत्त, सजुत्ता, सजुत्तु, सजूत।

३ देखो 'सयुक्त' (रू. भे.)

उ०—१ स्याम नदी काठै सघण, तरवर स्याम तमाळ। सजुत स्यामा सायधण, साहव स्याम समाळ।—बा दा

उ०—२ कुवजा नारद विदर री, विवरा संजुत बात। हरि रा दासा ज्यूं हुए, दासा नू सुख दात।—बा दा

उ०—३ ग्रन्न हिम विध सुस्रत ग्रचवावै, पूरण हुय चूरण सुध पावै। सजुत वसत वाणरस सोखा, नागलता मघई पत्र नोखा।—सू प्र

सजुकत–स स्त्री [स. सयुक्तता] एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसमे प्रथम सगण, फिर दो जगण तथा ग्रत मे एक गुरु के ग्रनुसार कुल १० वर्ण होते हैं। (र ज प्र)

सजुता—१ देखो 'सयोगिता' (रू. भे.)

२ देखो सयुक्ता' (रू भे)

सजुति, संजुत्त, सजुत्ता, संजुत्तु, सजूत—१ देखो 'सजुत' (रू भे)

२ देखो 'सयुक्त' (रू भे)

उ०—१ ग्रावदार ऊजळ वडवार मुकताफळ मोव्रन लाल सजुति रूपवत स्रवणू वीच राजै। सौ कैसें, मानू च्यार नक्षत्र दोइ रूप-धरि मगळ वाळ-ग्रवस्था घरि व्रहस्पति की वाहू कुडळी कीला करत छाजै।—सू प्र

उ०—२ मनु सजुति लोकेस, कना रवि हूत प्रजापति। कै रघुवीर कुंवार, लिया ग्रवधेस प्रभाजुति।—रा रू.

उ०—३ तळा तळै राजस करै, मै दानव ग्रदभुत्त। महातळै वासग वसै, सह सरपा संजुत्त।—गज-उद्धार

उ०—४ सगण एक दुजगण सू, कुरु ग्रति डम गान। संजुत्ता ग्राखर दसै, मान चरण ग्रनमान।—पिं प्र.

उ०—५ वक्खाणियइ त परम तत्तु जिण पाउ पणासइ। ग्रारहियइ त 'वीरनाहु' कइ 'पल्हु' पयासइ। धम्मु तु दय संजुत्तु जेण वर-गइ पाविज्जइ, चाउ त ग्रणखडियउ जु वदिणु सलहिज्जइ।

—कविपल्ह

उ०—६ वूडै पावू रा विनै, देवळ ऊजळ दूत। कमधज सिंह करा-डिया, सोव्रन कळस सजूत।—पा. प्र.

सजोग—देखो 'सयोग' (रू भे)

उ०—१ सोधी दाता पलक मे, तिरै तिरावण जोग। दादू ऐसा परम गुरु, पाया किंहि सजोग।—दादूवाणी

उ०—२ कोइक पूरव भव सवध स रे ग्राइ मिल्यौ सजोग। भवि-तव्यता रइ जोग मिलइ इम्यौ रे, वणियौ एम वियोग।

—प. च चौ

उ०—३ पीजारौ इचरज सू कान देय पूरी वात सुणी। ग्रौ तौ नामी सजोग सजियौ। लाधोडी चीज वास्तै चोरी रौ वजो कीकर ग्राय सकै।—फुलवाडी

उ०—४ त्रिपदी लहि गणपति रचै, सूत्र ग्ररथ सजोग। ग्रक्षर रूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग।—वृस्त

उ०—५ जद स्वामीजी बोल्या—इस ससार ना सुख काचा। सजोग रौ विजोग पड जावै। सारीरिक मानसिक दुख ऊपजै।

—भि द्र

उ०—६ कामी तै कूकर भलौ, रूति विन रहै विजोग। कामी नर कै काम कौ, हरीया सदा सजोग।—ग्रनुभववाणी

उ०—७ राणी वणिया गरीब-गुरबा रौ भलौ करण सारू सजोग सजियौ हौ, पण म्हैं तौ उणरै ठोकर मारदी। परजा रौ भलौ करणौ तौ ग्रळगौ म्हैं तौ खुदनै दुखा रै, ग्रताळ-पताळ मैं थरका-यदी।—फुलवाडी

उ०—८ सरद हिमतह रिति सिसिर, की कीला सुख भोग। घूना मिंदर धोहरै, सिसि वदनी सजोग।—गु रू ब.

उ०—९ भाणजो री ग्राटी गूंथता मासी पूछ्यौ—म्है थनै ग्रेक साव मामूली बात पूछू, जिणरौ जवाव दीजे वेटी के जद ग्रापारै जलम ई सजोग सू व्है तौ पछै उणरी नीव माथै चिणियोडौ जीवण कीकर संजोग विना ग्रापरौ गुजारौ कर मकै।

—फुलवाडी

उ०—१० सवदा रै सजोग सूं ई वात वणै, सार ऊपनै।

—फुलवाडी

उ०—११ इणनै ग्राप पूरबभव रा संस्कार समझौ ग्रथवा कोई सजोग री वात के सूरज म्हारा सू थोडौ दवतौ जरूर हो।

—ग्रमर चूनडी

उ०—१२ विखम खीज जिण बार, 'जैत' भूपति उर जगी। सुरां घिरत सजोग, ज्वाळ जाणै जगमगी।—मे म

मजोगमंत्र—देखो 'सयोगमंत्र' (रू भे.)

मजोगि—देखो 'संयोगी' (रू भे.)

उ०—मकरव्वज वाहणि चढ्यौ ग्रहिमकर, उत्तर वाउ वाए ग्रउर। कमळ वाळि विरहिणी वदन किय, ग्रंब पाळि संजोगि उर।—वेलि

मजोगिता—देखो 'सयोगिता' (रू. भे.)

संजोगी—१ मिला हुआ, सयुक्त, दीर्घ।

उ०—गण संजोगी ग्राद गुरु, मजुत व्यदु गुरेण। गुरु फिर वक्र दुमत्त गणि, लघु सुद्ध एक कळेण।—र. ज. प्र

२ देखो 'संयोगी' (रू. भे.)

उ०—१ उत्तर ग्राज स उत्तरइ, वाजइ लहर ग्रमाधि। मजोगणि सोहामणइ, विजोगणि ग्रंग दाधि।—ढो मा.

उ०—२ सरद वीती पछै समि रुत ग्राई, मंजोगण्यां हरखी। उर ग्रहण्या थरराइ। मुग्धा नायका रै ऊररै जोवन की दमा ग्रावै ज्यू ज्यु कटि तो खीण होती जाय।—पना

उ०—३ मंजोगिणि चीर गई कैरव स्री, परहट ताळ भमर गोसोख। दिणयर ऊगि एतला दीवा, मोखिया वध वन्निया मोख —वेलि

उ०—४ निश वार कमळ था सु वाळि दसा कीया जु जिसो विरहणी को मुख। ग्राव था सु दसा किया जिसो मजोगणी को उरस्थल।—वेलि टी

३ देखो 'सयोग' (रू भे.)

उ०—राजा माहइ उछव हुवउ, ब्राह्मण दीयउ बहुत पसाव। जीवा मजोगी गुणावीयउ, सूणी वचन हरख्यो मनि राव।—वी दे.

(स्त्री सजोगण, सजोगणी, मजोगन. मजोगिणि, मजोगिणी, मजोगिनी)

मजोगे-क्रि वि.—सयोग से, देवयोग से।

उ०—१ पूगळि पिंगल राऊ, नळ राजा नरवरै नयरै। ग्रदिठा दूरिट्ठा यं, सगाई दईय संजोगं।—ढो. मा

उ०—२ भवसागर ममता थका जी, दीठा दुख ग्रनत। भाग मजोगे भेटिया जी, भय भजण भगवत।—स कु

संजोगो—१ देखो 'सयोग' (रू. भे.)

उ०—१ विरह मजोगा ग्यान का, सुधि बुधि गुणा गमीर। जन-हरीया ग्रग्यान कुं, काढि निकासै तीर।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ कुंवर महला सू उतरचो, विलसै ससार ना भोगो रे। पुन्य जोग ग्रावी मिल्यो, साय तणो संजोगो रे।—जयवाणी

२ देखो 'सयोगी' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—लुटै साथ जाणै ग्रमीद्वार लीग्रो, किणी वेणनाद मजीवन्न कीघो विजोगो मजोगो वर्जं वेणवायों, प्रभू ग्रापरो जाण ग्रंजन्न पायो।—ना. द

मंजोड़णो, संजोड़बो-क्रि. स.—१ मिलाना, सयुक्त करना। २ तैयार करना।

उ०—टूठिया हळ संजोड़िया, गळियाँ ग्रीखम गार। ग्राळसुंवा उद्गम कियो, ग्रायो सुर ग्रागाढ।—पा. प्र.

मंजोड़णहार, हारो (हारी), संजोड़णियो—वि०।

संजोड़िग्रोड़ो, सजोड़ियोड़ो, मंजोड़योड़ो—भू० का० कृ०।

मजोड़ीजणो, संजोड़ीजबो—कर्म वा०।

मजोड़ियोड़ो-भू का. कृ.—१ मिलाया हुआ, सयुक्त किया हुआ। २ तैयार किया हुआ।

(स्त्री मंजोड़ियोड़ी)

मजोणो, संजोबो-क्रि. स. [सं. सयोजनम्] १ जलाना, प्रज्वलित करना। (दीपक)

उ०—१ सुरत निरत का दिवला संजोलें, मनसा की कर लें बाती। प्रेम हटी का तेल मगालें, जग रह्या दिन ने राती।—मीरा

उ०—२ लिछमी घर मे दीवा संजोया। पूजन साम्ग्री कूं काढिया ग्रौर तो सायरण कनै हो-ई काई? इतै में ही हीर ग्रायो। लिछमी कयो—पूजन री सामगरी ल्याए है।—वरसगाठ

२ सजाना, सुसज्जित करना।

उ०—१ ग्रनर नीनंबर ग्रवळ ग्राभरण, ग्रगि ग्रगि नग नग उदित। जाणे स्दनि स्दनि संजोई स्दन दीपमाळा सुदित।—वेलि

उ०—२ पसरां हुग्रा पिलाण भूप 'सूरो' चढ मेलो, वग बाटै वागैल ठहै मग सारी ठेलो। वहे ढाल वीटिया जर्गं जामिण्या दीवा, दरखा नर दीवडा मोर भायडा संजोया।—पा. प्र

३ तैयार करना, बनाना।

उ०—तो कर लाडा उगठणो, थारा उगठणा मे बास घणी। थारी दादूघा संजोयो उगठणो, थारी माय मजोयो उगठणो।—लो गी

४ इकट्ठा करना, एकत्र करना।

उ०—राजा कनक सिखर सामग्री संजोय कन्या ग्राप री राजा विक्रमादित्य नू परणाई।—पचदडी री वारता

५ पिरोना।

उ०—मरी नोसरंहार मोती संजोया, पडे स्रेणता हीणता सुक पोया। परीगै मरीवठ में हीर पूरौ, नमै नूर ग्राकास जाणै ससूरो।—रा रू.

६ लगाना, करना।

उ०—जोगी कहै 'पतीवता' सुरीस हुइ नन्यत, ग्रोब यारी ग्राव्यो छइ मास बसत। माणिक मोती लै वळ्यो, वठि ने गोरी तीलक संजोई।—वी दे.

७ देखना, निहारना।

उ०—तडफड साकुर हिंडु तुंड, रडवड ऊड गडा जिम रुंड। हट-वड जोगण नेतल होय, नड़वड कायर पंथ संजोय।—गो रू

८ सजीवित करना, हरा-भरा करना पल्लवित करना।

उ०—सूखे काठ मंजोइयो, सुज माट मही सर। नीळी तर व्है

नेहडी, वणियौ गह डबर ।—ठाकुर जुंझारसिंह मेडतियौ

संजोणहार, हारौ (हारी) संजोणियौ वि० ।

सजोयोडौ—भू० का० कृ० ।

सजोईजणौ, संजोईजबौ – कर्म वा० ।

सजावणौ संजावबौ, संजोइणौ, सजोइबौ, सजोवणौ, सजोवबौ, सजोणौ, सजोबौ, सजोवणौ, सजोवबौ—रू० भे० ।

सजोत, संजोति-स स्त्री.—ज्योति, लौ ।

उ०—सती लै अरधगा सग जळेवा मे महासूर । जीव मारू राव मिळै, मोक्ष मे संजोत ।—अग्यात

२ चमक ।

उ०—नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ संजोति । अहिर विद्रम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति ।—रुकमणी मगळ

सजोयणादोस-स पु —भिक्षा लेने के उपरान्त स्वाद के लिए उसमे कुछ मिलाने पर लगाने वाला दोष । (जैन)

सजोयोडौ-भू. का कृ —१ जलाया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ २ तैयार किया हुआ. ३ सजाया हुआ, सुसज्जित किया हुआ. ४ इकट्ठा किया हुआ, एकत्र किया हुआ ५ पिरोया हुआ. ७ लगाया हुआ, किया हुआ ७ देखा हुआ, निहारा हुआ. ८ सजीवित किया हुआ, हरा-भरा किया हुआ, पल्लवित किया हुआ ।
(स्त्री सजोयोडी)

सजोवणौ, सजोवबो—देखो 'सजोणौ, सजोबौ' (रू. भे)

उ०—१ तिणरा झडिया पाख, पळकती किरणा सो'वै । उमा पूत रै कोड, कव्ळ ज्यू करण सजोवै ।—मेघ

उ०—२ गोखै गोखै दिवला संजोव राजिदा ढोला, दीया रै चानणियै ढाळू ढोलियौ ।—लो. गी

उ०—३ सखी संजोवै दीवला, पूजै लक्ष्मी मात । रळ-मिळ पोढै कामणी, लै प्रीतम नै साथ ।—लो गी.

सजोवणहार, हारौ (हारी), संजोवणियौ—वि० ।

सजोविओडौ, सजोवियोडौ, सजोय्योडौ—भू० का० कृ० ।

सजोवीजणौ सजोवीजबौ—कर्म वा० ।

सजोवियोडौ—देखो 'सजोयाडौ' (रू भे.)
(स्त्री सजोवियोडी)

सजोह-स पु [स. स+फा जोशन] १ कवच ।

उ०—ताहरा ओथि घोडा ठामिया । ओथि राघवदास सजोह पहिरियौ हुतौ अर अफीण खाधौ हुतौ ताहरा तलछर ऊपर छाल विहु हुई ।—द वि

२ कपडा बुनते समय जुलाहे द्वारा छत से लटकाया गया लकडी का चौखटा जिसमे राछ या कघी लटकी रहती है ।

सज्या—देखो 'सध्या' (रू भे)

उ०—सुवार सज्या अठै आवौ सौ करजै ।

—कुवरसी साखला री वारता

संज्वर-स पु. [स] १ तीव्र बुखार । २ क्रोध, आवेश ।

सझ—१ देखो 'साज' (रू भे.)

उ०—तरै रुपीया १०,०००) खरची नै रखत रा दीना । तिणा सू सझ कराय नै दिली नै चढिया ।—नैणसी

२ देखो 'संध्या' (रू. भे)

उ०—१ करहा काछी कालिया, चाली गइ किरणाह । सझ वळ-तइ दीवळइ, धण जागती जाह ।—ढो. मा

उ०—२ ओपै गज सामळा अनैसा, जपि गुण डोळ तिमगळ जेसा । अरुण अबाडी झूळ अरोहै, सावण सझ को अवुद सोहै ।

—रा रू.

उ०—३ वीती ग्रीखम एण विध, सिर लग्गै वरसात । सरस वरस गुणियासियौ, सोहै सझ प्रभात ।—रा रू

३ देखो 'सज' (रू भे)

संझया, संझा—देखो 'सध्या' (रू भे) (अ मा, डिं को)

उ०—१ माणस थिकि पखी भला, अळगा चूण चणति । तरुवर भमि संझा समइ, माळइ आवि मिळति ।—अग्यात

उ०—२ सउच न्हाण मुख साधि सव, राचै राजस राह । क्रम वैठौ सझा करण, 'दूदौ' कवर दुवाह ।—व. भा.

उ०—३ करि संझा जप आदि क्रम, पूजि इस्ट गोपाळ । स्वकरा करि भोजन सदा, करी निवेदण काळ ।—व भा

सझाडौ —देखो 'सभाडौ' (रू भे)

सझावळ-स. पु [स सध्यावल] राक्षस, निशाचर । (डि. को.)

सझारावउ-स. पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—······ मदव गजवडि, सुव्रणपडि, पचव्रणपडि क्रस्ण-पडि, माठउ, जादर, भातीगलु, जादरपोति, परेवउ, पटसउल, मेघाडवर, सझारावउ, रावेटउं कणवीर, सोवन्नच्छतेउ·· ·· ।

—व स.

सझि, सझ्या—देखो 'सध्या' (रू भे.) (अ मा; डिं को)

उ०—१ लगनि थकी पहिलइ इक मासि, माणस मूकेस्या तुम्हि पासि । छांनी वातविमासी बहू, सझि सहू को आविसी सहू ।

—ढो मा.

उ०—२ दौडिया साह दिस डाकदार, सझ्या सुं वरस आडी सवार ।—रा. रू.

उ०—३ सझ्या चलै उतावळा, बटाउ बनखड माहि । बरिया नाही ढलिकी, दादू वेगि घर जाहि ।—दादूबाणी

उ०—४ सझ्यां समै रावजी महिला पधारिया तरै अपछरा मुजरौ करै नै सीख मागी। अवै तौ साहिवजी मोनै लोका दीठी । राज पीण हकीगत कीही सो म्है तौ जावसु ।

—वीरमदै सोनगरा री वात

सठ—देखो 'सठ' (रू. भे.)

उ०—निनाद बध अध कै, दुकध ओटतै नदे । महान लंठ सठ कै,

कुकंठ घोटत मदे ।—ऊ का

संठणौ, संठवौ–क्रि अ —१ धनी होना, सम्पन्न होना, वैभवयुक्त होना ।

२ जुड़ना, संयुक्त होना ।

३ सम्थापित होना ।

संठणहार, हारौ (हारी), संठणियौ—वि० ।

संठिओड़ो, संठियोड़ो, संठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संठीजणौ, संठीजवौ—भाव वा० ।

संठवणो संठववौ—रू० भे० ।

संठवणौ, संठववौ—देखो 'संठणौ, संठवौ' (रू. भे.)

उ०—इणि परि ए गुरु आएसि, सुहगुरु पाटिहि संठविउ । तिहूयणि ए मंगलचारु, जय जयकार समुच्छलिउ ।

—कवि ग्यांन कलस

संठवणहार, हारौ (हारी), संठवणियौ—वि० ।

संठविओड़ो, संठवियोड़ो संठव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

संठवीजणो संठवीजवौ भाव वा० ।

संठवा—देखो 'संठाव' (रू. भे.)

संठवाड़ो–सं. पु —वह खेत जिसमें घास-फूस तथा छोटे-छोटे झाड़-झंखाड़ अधिक हों ।

२ खेत में होने वाला घास-फूस व झाड़-झंखाड़ ।

३ हल्की एवं नन्हीं-नन्हीं बूंदों की निरन्तर होने वाली वर्षा, वर्षा की झड़ी ।

संठवाणौ, संठवावौ—देखो 'संठाणौ, संठावौ' (रू. भे.)

संठवाणहार, हारौ (हारी), संठवाणियौ—वि० ।

संठवायोड़ो—भू० का० कृ० ।

संठवाईजणो संठवाईजवौ—कर्म वा० ।

संठवायोड़ो—देखो 'संठायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री संठवायोड़ी)

संठवियोड़ो—देखो 'संठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री संठियोड़ी)

संठाणौ संठावौ–क्रि स.—१ सम्थापित करना/कराना ।

२ जुड़ाना या जोड़ना ।

संठाणहार, हारौ (हारी), संठाणियौ—वि० ।

संठायोड़ो—भू० का० कृ० ।

संठाईजणौ, संठाईजवौ—कर्म वा० ।

संठवाणौ, संठवावौ संठावणौ, संठाववौ—रू० भे० ।

संठायोड़ो–भू. का. कृ.—१ सस्थापित किया हुआ/कराया हुआ ।

२ जुड़ाया हुआ, जोड़ा हुआ ।

(स्त्री संठायोड़ी)

संठाव–सं. पु —उर्वरा शक्ति प्राप्त करने हेतु दो-तीन वर्ष बिना जोते पड़ी रही भूमि, पड़त भूमि ।

रू. भे.—संठवा ।

संठावणौ, संठाववौ—देखो 'संठाणौ, संठावौ' (रू भे.)

संठावणहार, हारौ (हारी), संठावणियौ—वि० ।

संठाविओड़ो, संठावियोड़ो, संठाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

संठावीजणौ, संठावीजवौ—कर्म वा० ।

संठावियोड़ो—देखो 'संठायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. संठावियोड़ी)

संठियोड़ो–भू का कृ.—१ धनी हुवा हुआ, सम्पन्न हुवा हुआ, वैभवयुक्त हुवा हुआ. २ जुड़ा हुआ, संयुक्त हुवा हुआ ।

३ सम्थापित हुवा हुआ ।

(स्त्री. संठियोड़ी)

संठीर–वि —दृढ़, मजबूत ।

उ०—१ तूटियौ अथाप वेग होफरैल राताखियौ, साप पाखियौ क थाप डाकियौ संठीर । ताप खाई मैंगळा अळा हू अमाप तेज, कुमारा सिगार आप बूलायो कठीर ।—प्रतापसिंह राठौड़ री गीत

उ०—२ लागाळौ इण चाह, अणियाळा अलता जिहि । सड संठीर सनाह, जड़िया पिंजर जेठवा ।—जेठवा

संठी—देखो 'सांठौ' (रू भे.)

उ०—पदमणि पुरखारै पगरण सह पूरा, भूखा सूतोडा संगरणवै सूरा । रोजा निमवासर संठां में साजै, वैक्रति कंठां में अलगोजा वाजै ।—ऊ का

संड–सं. पु. [सं षंड या षंढ] १ नपुंसक, हिजड़ा ।

२ वह पुरुष जिसके सन्तान न हो ।

३ देखो 'सांड' (रू भे)

उ०—१ अभीति बीति कूड देय, चड-मुंड ज्यौं अरें । अकाळ चड चडिका, अखड संड ली तरें ।—ऊ का.

उ०—२ 'माडण' 'सीहो' वहै, संड गंजै 'सिवल' हर । अकबरि मागी कुंअरि, ताम मुख दीनो उत्तर ।—गु. रू. व.

उ०—३ हिंदूवें सुरताण तूं, तूं सुरतांणा संड । तूं सुरताणां चीतगर, तू सुरताणा चड ।—गु. रू व.

४ देखो सूंड' (रू भे)

उ०—खगां धार तूटै, तई संड तूटै । परा नाग जाए, जाणे वहू जाग ।—सू प्र.

संडजोनि—देखो 'संडयोनि' (रू. भे.)

संडता–सं स्त्री [सं षंडता] १ नपुंसकत्व, हिजड़ापन ।

२ मूर्खता, बेवकूफी ।

संडमुसंड, संडमुसंडी, संडमुस्टड, संडमुस्तड—देखो 'मुंडमुस्तंड' (रू भे)

संडजोनि–सं स्त्री. यौ. [सं षंड+योनि] पुरुष समागम के अयोग्य वह स्त्री जिसके मासिक धर्म न होता हो व जिसके स्तन न हों ।

रू भे—संडजोनि ।

संडसी—देखो 'संडासी' (रू भे.)

संडसो—देखो 'संडासो' (रू. भे.)

सडा–स पु [सं. शंडा] १ एक यक्ष का नाम।
२ दैत्यगुरु शुक्राचार्य के पुत्र का नाम।

सडाई–स स्त्री —१ मशक की तरह का भैंस आदि का वह हवा से भरा हुआ चमडा जो पानी मे तैरने के काम में लिया जाता है।
२ देखो 'साडाई' (रू भे)
३ देखो 'सडासी' (रू भे.)

सडावौ—देखो 'सडासौ' (रू. भे)

संडास–स. पु – पाखाना, शौच-कूप।

संडासी–स स्त्री —१ लोहारो व स्वर्णकारो का गर्म लोहे या सोने चादी को पकडने का एक औजार या उपकरण।
उ०—१ साजत समहर डाव सडासी, चख धिखता थहिया रग चोळ। ग्रहरण ग्रकस 'लाल' तिण ऊपर, घण त्रिजडा बाहै धमरोळ।—लालसिंह राठोड री गीत
उ०—२ जैसे लोहार लोहा घड़ै छै। जब आगि माहै लोह पकडि नै **संडासी** देई तब तौ बहुत तप ग्रावै। ग्ररु ढिग पाणी को वासण राखै छै। तिहि माहि दै सडासी ताढी करै।—वेलि टी.
२ लकडी का बना लम्बा उपकरण विशेष जो सर्प पकड़ने के काम आता है।
उ०—ग्रर भिल्या तो पछै इसा भिल्या के जाणै सडासी मे साप।
—ग्रमरचूनडी
३ रसोई मे काम आने वाला वह उपकरण जो चूल्हे, अगीठी आदि पर से चाय, सब्जी आदि के गर्म बर्तन उतारने के काम मे आता है।
रू. भे.—सडसी, सडाई।

सडासौ–स पु —सडासी के आकार का बडा औजार या उपकरण।
रू भे.—सडसौ, सडावौ।

सडिल, सडिल्ल–स पु.—आर्यों के एक जनपद का नाम।
उ०—मगधमंडल ग्रग वंग कलिंग कासी (कोसल कुरु) कुसट्ट पचाल जागल [सुरास्ट्र] बिदेह **संडिल्ल** मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग [वट्टा] कुणाल लाट केकयमडलारद्ध इत्यरद्ध पचविसति जनपदा ग्रारया।—व. स.

सडो—देखो 'सडयोनि'।

सडेव–स. पु —१ नदी।
उ०—महाराग छडेव छडेव व्है न दे न गूड, बजडेव डम्मरु चडेव हत्तीबीस। सडेव छडेव मेख पाथ बाण पाय साच, ठमडेव मंडेव तडेव नाच ईस।—बद्रीदास खिड़ियौ
२ वृषभ।

सडौ–स. पु —१ ग्रसुरो के पुरोहित शुक्राचार्य का एक पुत्र।
२ ऊट।
३ देखो 'ल्हास'।
४ देखो 'साडौ' (रू भे.)

संणकणौ, संणकबौ—१ देखो 'संणक्कणौ, संणक्कबौ' (रू. भे)
३ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू भे)
संणकणहार, हारौ (हारी), संणकणियौ—वि०।
संणकिग्रोडो, सणकियोडो, संक्रणयोडौ—भू० का० कृ०।
सणकीजणौ, संणकीजबौ—भाव वा०।

संणकियोडो—१ देखो 'सणक्कियोडो' (रू. भे)
२ देखो 'सिणकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सणकियोडी)

सणक्कणौ, सणक्कबौ–क्रि. ग्र. (ग्रनु.) तीर, गोली, तलवार ग्रादि के तेज गति से चलने से ध्वनि उत्पन्न होना।
उ०—रत्ता पी गणक्कै कै भणक्कै यै बीमाण रंभा, लोयणा भणक्क डड मणंक्का लेवाण। हुवै पखा झड़पका ग्रीवाण वीर है हणक्कै, कैमरा संणक्कै बाजै खडक्का केवाण।
—प्रभूदान मोतीसर
उ०—२ खोपरा खणंक्कै बाण विछूटै ग्रनेका खळा, संणक्कै ग्रग मैं सार बहता सधीर। तडच्छै द्रोयणा टूक घडच्छै भुजाटा तेगा, कडक्कै खीचिया माथै रडक्कै कठीर।—बादरदान दधवाडियौ
२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू भे.)
सणक्कणहार, हारौ (हारी), सणक्कणियौ—वि०।
सणक्किग्रोडो, सणक्कियोडौ, संणक्कयोडौ—भू० का० कृ०।
सणक्कीजणौ, सणक्कीजबौ—भाव वा०।
संणकणौ, संणकबौ, सणंकणौ, सणंकबौ, सणकणौ, सणकबौ, सनकणौ, सनकबौ, सनकणौ, सनकबौ—रू० भे०।

संणक्कियोड़ौ–भू. का कृ.—१ तीर, गोली, तलवार ग्रादि के तेज गति से चलने से तेज शब्द उत्पन्न हुवा हुग्रा।
२ देखो 'सिणकियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. संणक्कियोडी)

सणक्को, संणक्कौ–स. पु.—तीर, गोली, तलवार ग्रादि के तेज गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि।

संणगार—१ देखो 'सिणगार' (रू. भे.)
२ देखो 'स्त्र गार' (रू. भे)

संणगारणौ, संणगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ (रू. भे)
सणगारणहार, हारौ (हारी), संणगारणियौ—वि०।
सणगारिग्रोड़ौ, संणगारियोडौ, संणगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
सणगारीजणौ, संणगारीजबौ—कर्म वा०।

संणगारियोडौ—देखो 'सिणगारियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सणगारियोडी)

सणियौ—देखो 'सिणियौ' (रू. भे.)

सत–सं. पु [स. सत्] १ साधु, सन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष, महात्मा।
उ०—१ भावै कोई निंदौ ग्रावै कोई विंदौ, म्हैं तौ गुण गोविंदजी

संतरजण, संतरजन–स पु [सं. सतर्जन] कुमार कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर ।

सतरदण सतरदन–स पु [सं. सतर्दन] केकयदेशाधिपति धृष्टकेतु व श्रुतकीर्ति के पाच पुत्रो मे से एक ।

सतरदा—देखो 'सतरिदा' (रू. भे.) (अ मा.)

संतरपण–स पु. [सं. सतर्पण] १ अच्छी तरह तृप्त करने की क्रिया या भाव ।

२ तृप्त करने वाला व्यक्ति ।

सतरिदा–स. स्त्री. [स. शतह्रदा] विद्युत, बिजली । (ह. ना. मा)

रू. भे —सतरदा ।

संतरी–स. पु [अ. सेंटरी] पहरेदार, द्वारपाल, सिपाही । (अ. मा.)

उ०—'पाल' छाड जाय पागडो, राख कोट सम रात । सतरी पारधिया सेहत, 'चादो' 'ढेमो' साथ ।—पा. प्र

रू भे —सत्री ।

सतरो–स पु. [पुर्त्त. सगतरा] नारगी ।

सतान–स. पु. [स. संतान] १ वश । (डिं. को.)

२ सतति, औलाद । (डिं. को.)

उ०—भूप हुआ जिण कुळ भला, थिर अटेर मुख थान । भाखै सुकवि भदोडिया, सब जिणरा संतान ।—व. भा

[स. सतान] ३ कल्पवृक्ष । (अ. मा, डिं को, ना. मा)

उ०—कलपवृक्ष सतांन, पारिजाती हरिचदण । तर मदार दुवार, आण ऊगा सुख अप्पण ।—रा रू.

४ एक प्रकार का अस्त्र विशेष ।

संतांनक–स पु [स. सतानक] १ कल्पवृक्ष । (सभा)

२ ब्रह्मलोक से परे एक लोक । (पौराणिक)

सतांनगणपति–स. पु [स.] एक विशिष्ट गणपति जो सतान देने वाले कहे गये हैं ।

सतानाश्टमी, सतानाटम–स. स्त्री. [स. सतानाष्टमी] चैत्रकृष्णाष्टमी को होने वाला व्रत विशेष जिसमे श्रीकृष्ण व देवकी की पूजा की जाती है ।

सतानिका–स. स्त्री [स. सतानिका] १ फेन, झाग ।

२ मलाई ।

३ एक प्रकार का घास, मर्कटजाल ।

४ छुरी या तलवार की धार ।

५ कुमार कार्तिकेय की एक अनुचरी एव मातृका ।

सतांपाळ–स पु [स. सतपालक] परमेश्वर, ईश्वर । (ना मा)

सताड़णो, सताडबो—देखो 'सतापणो, सतापबो' (रू भे.)

उ०—मुझ सताडि हिवै नहिं, बीजी काइ टाप । तीजै घर घालि दीयो, तालो टाल सताप ।—ध. व. ग्र.

सताडणहार, हारो (हारी), सताड़णियो—वि० ।

संताड़ियोड़ो, सताड़ियोड़ो, सताडियोड़ो—भू० का० कृ० ।

संताडीजणो, संताडीजबो—कर्म वा० ।

संताडियोडो—देखो 'सतापियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. संताडियोडी)

संतारणो, संताबो—देखो 'संतापणो, सतापबो' (रू. भे.)

उ०—१ विरहा तूं सताय नां, मना दधावो धीर । हरीया साई कारणै, मैं दुख सहूँ सरीर ।—अनुभववाणी

उ०—२ चोरी करणी तो किणी लाठा धीग रो घर ई फाडणो खामी भली मता तो हाथ लागै । दूबळा नै संताया तो फगत हाय पानै पडै ।—फुलवाड़ी

संताणहार, हारो (हारी), सताणियो—वि० ।

संतायोड़ो—भू० का० कृ० ।

संताईजणो, सताईजबो—कर्म वा० ।

संताप–स. पु. [सं.] १ अग्नि, धूप आदि का तीव्र ताप या आच । (डिं. को.)

२ तीव्र मानसिक क्लेश या पीडा ।

उ०—१ कूडै मेळा वैस करि, जपै सकति को जाप । हरीया अतर ऊपजै, सासा सोग सताप ।—अनुभववाणी

उ०—२ सासा सोग संताप तज्य, आपा होय अबीह । सुन्य सहज मैं पाईया, हरीया अभिनासीह ।—अनुभववाणी

उ०—३ सभग्गिया संताप, वीसरिया न वीसरइ । काळेजा विचि काप, परहर तू फाटइ नही ।—ढो मा.

३ चिन्ता, दुःख ।

उ०—१ पोता रै जलमिया सेठ नै हरख नी होय अणूंतो संताप व्हियो । इत्ता दिन तो खावणिया दोय हा तो कमावणिया ई दोय हा । पण पोता रै जलमता ई खावणिया तीन व्हैगा अर कमावणिया फगत दोय रा दोय ।—फुलवाडी

उ०—२ व्याव रा घर मे उच्छव री ठौड संताप वापरग्यो । बेटी किण नै काई कैवती । माय री माय गोटीजती । उण रै आ वात समझ मे नी आवती कै जकी मा नौ महीना देह रो रगत पाय उदर मैं पोसण करचो, सोळै वरसा ताई घर मैं राखी, काइ वळै नी राख सकै ।—फुलवाडी

४ शरीर मे होने वाली दाह या जलन ।

५ पाप आदि बुरे कृत्य करने पर मन मे होने वाला अनुताप ।

६ दुःख, कष्ट ।

उ०—१ किम आविउ कहि रे चतुर, काई काइ सताप । माहरइ माधव वभ विण, अवर पुरुस तै वाप ।—मा. का. प्र.

उ०—२ किण रै हीयै वत्ती बळत ही, इणगे म्यानो खुद अन्तरजामी सू ई अछानो हो । हरचा-भरचा सपना बळै जणा अंडो ई विकट सताप हिया करै ।—फुलवाडी

उ०—३ व्है ठाढो गिर गिर पडै, मुख तै करै विलाप । राधा-वर किरपा करो, तो सह मिटै सताप ।—गज-उद्धार

उ०—२ जग नायक जिनवर पुहवी माहे प्रत्यक्ष, सोलम संतीसर सुखदायक कल्पव्रक्ष। जसु यात्र करे वा लोक मिले तिहा लक्ष, दरसण देखत ही आणद पावै अक्ष।—ध व ग्र

संतु-वि —१ अच्छा।

२ शान्त।

३ देखो 'सत' (रू भे.)

उ०—हथिणाउरि पुरि कुरनरिंद केरौ कुलमडणु। सहजिहिं सतु सुहागसीलु, हूउ नरवरु सतणु।—सालिभद्र सूरि

रू. भे —सतू।

सतुख-स स्त्री —१ सिंह के अगले स्कन्ध के पास की एक हड्डी, जिसे चाट कर वह भूख शान्त करता है।

उ०—तण दुख भूलै ताखडो, मुछ मरडै जद मूक। सतुख नू जिम चाट सिंघ, भगाय निज री भूक।—रैवतसिंह भाटी

२ देखो 'सतोस' (रू भे.)

सतुखित-स. पु [स. सतुषित] एक देव पुत्र का नाम।

सतुट्ठ – देखो 'सतुस्ट' (रू भे) (जैन)

सतुलन-स पु [स सन्तुलनम्] १ वह क्रिया जिससे तौल अच्छी तरह होता है।

२ तराजू के दोनो पलडो को बराबर या ठीक करने की क्रिया या भाव।

३ लाक्षणिक अर्थ मे सभी अगो या पक्षो के बराबर या यथास्थान होने की स्थिति।

सतुलित-वि —१ किसी का सतुलन हुवा हुआ होना।

२ दोनो पक्षो का बल या प्रभाव का समान होना।

सतुस्ट-वि [स. सतुष्ट] १ जिसे सन्तोष हो गया हो, सन्तुष्ट, तृप्त।

उ०—तरै राजा जिग आरंभ नै रिख तेडाया। तिका अठ्यासी हजार रखेस्वर आया, तेतीस कोडि देवता आया। राजा मनछा भोजन रखेस्वरा नै पोख्या, देवता नै सतुस्ट कीया।

—राठोडा री वसावळी

२ तुष्टमान, महरबान।

उ०—तठा पछै राणी नै बुलाय नै आवौ दीधौ नै कह्यौ - हे राणी! रातै स्रीगोरखनाथजी सतुस्ट हुवा। तै फळ दीधौ। औ थे फळ खावौ, ज्यू थारै पुत्र होवै।—रिसाळू री वात

३ जो राजी हो गया हो कोई बात मान गया हो, रजामद।

४ प्रसन्न, खुश।

रू- भे —सतुट्ठ सतुस्ठ।

सतुस्टि, सतुस्टी-स स्त्री —१ सतुष्ट होने की क्रिया या भाव।

२ सतोष।

३ प्रसन्नता।

सतुस्ठ —देखो 'सतुस्ट' (रू भे.)

सतू—१ देखो सत' (रू भे)

२ देखो 'सतु' (रू भे)

उ०—मिळिया मनमेळू माती मुमकाती, ठुमका भरतोडी आती ठुसकाती। सासू मकुळोणी सतू सुग मानी, ऊजळ दती नै उर मे उर लीनी।—ऊ का

सतोक, सतोख—देखो 'संतोस' (रू भे) (अ मा; डि को, ह ना मा.)

उ०—१ हरीया जव सीतळ भया, सव तैं एक सभाय। राग दोख अतर नही सुख सतोख समाय।—अनुभववांणी

उ०—२ किण सुख री आस मे लारै आई, किण अदीठ हरख अर सतोख रै भरोसै पराई ठोड री वासौ कवूल करयौ।—फुलवाडी

उ०—३ लालांचया सतोख ज्यू मन हीजडा मनोज। ऊमर मे नह ऊपजै, इम मावडिया मोज।—बां दा.

उ०—४ मैं राव कल्याणमल सू सतोख छै सु हू राव कल्याणमल नूं थाहरो अरदास करि आउ छू।—द वि.

उ०—५ माना कर मक्र लहै चक्र मोख, तिलत्तिल अग न जग सतोख। चटच्चट पत्र रगत्र चर्ठट्टि, समै अनुसार रमै चवसट्टि।

—मे म.

सतोखड़ौ —देखो 'सतोष' (अल्पा; रू भे)

उ०—साथै सील सतोखडौ, वेली ग्यान विग्यान। जनहरीया दलमा फिरी, नाव निरप की आन।—अनुभववाणी

सतोखणौ, सतोखबौ-क्रि स [स सतोषनम्] १ सतोष दिलाना, सन्तुष्ट करना।

उ०—तिण कामना जाचियौ तिसडी, जिण पामियौ सु इछा जिसडी। सतोखियौ भूप जग सारौ, जस भ्रम करि जीतौ जमवारौ।

—सू प्र.

उ०—३ काहे कौ दुख दीजियै, घट-घट आतम राम। दादू सब सतोखियै, यह साधू का काम।—दादूवाणी

उ०—३ जोसी नै राजा कहै रे, काइ परणै कुमरी मुझ रे। दिवस लगन करि रूवडो रे, काइ हु संतोखिस तुझ रे।—वि. कु.

उ०—४ बाजा बाजै अति भला, वरत्या मगल-माल। संतोखै याचक सुहासणी, हरख्या बाल गोपाल।—जयवाणी

२ राजी करना, खुश करना।

उ०—इतै विचवाळो मूर अपाळ मिणधर आयौ रावळ 'माल'। सतोखै वाता'वागा साथ, जुदा दळ कीधा वहू जाय।—गो. रू.

क्रि अ.—१ सतुष्ट होना।

२ राजी होना, खुश होना।

सतोखणहार, हारौ (हारी), सतोखणियौ – वि०।

सतोखिओडौ सतोखियोडौ, सतोख्योडौ—भू० का० कृ०।

सतोखीजणौ, सतोखीज्बौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सतोसणौ, सतोसबौ, सतोखणौ, सतोखबौ—रू० भे०।

सतोखियोड़ौ-भू. का कृ —१ सतोष दिलाया हुआ, सतुष्ट किया हुआ (२) राजी किया हुआ, खुश किया हुआ (३) सतुष्ट हुवा हुआ.

(४) राजी हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ।
(स्त्री सतोखियोडी)

सतोखौ—देखो 'सतोसी' (रू. भे.)
उ०—१ भाव भगति का खाणा पीणा, सील सतोखी पत रा। सुरति नरति की सेली सीगी, लीया लगोटा जत रा।
—अनुभववाणी
उ०—२ साध न आणै आपदा, सील सतोखी थाय। हरीया राग न धेखता, सब सु एक सभ य।—अनुभववाणी

सतोखौ—देखो 'सतोस' (रू. भे.)
उ०—१ चारित्र लै टालिस सरव दोखौ, तप करि करमा नै सोसौ जी। सीभ बूझ नै जासी मोखौ, सुणिया ही हुवै सतोखौ जी।
—जयवाणी
उ०—२ द्रुदवाद किन हू नही करीयै, आपा सेती अजरा जरीयै। राग न धेख हरख नही धोखा, सीलादिक सजम सतोखा।
—अनुभववाणी

सतोगुण—देखो 'सतोगुण' (रू भे.)

सतोपणौ, सतोपबौ—क्रि स — सतुष्ट करना।
उ०—परण कर कदी नही सतोप्या, जाय कर गढा पग रोप्या।
—लो गी.

सतोल—देखो 'सतोल' (रू भे.)
उ०—सोनजी सुनार, गाव रो सुनार, बीर्भ रो बेटो, आज कालै रौ आसांमी गोत री कडोळ, तोल मे सतोल।—दम्दोख

सतोस—सं. पु. [स. सन्तोष] १ वह मानसिक अवस्था जिसमे व्यक्ति प्राप्य वस्तु को यथेष्ट समझता है और इससे अधिक की कामना नही करता, सब्र तृप्ति।
उ०—कृपण सतोस करै नही, लालच आडै अक। सुपण बभीखण सूं मिळै, लिए अजा रे लक —बा. दा.
२ वह अवस्था जिसमे अभीष्ट कार्य होने या वांछित वस्तु के प्राप्त हो जाने पर क्षोभ मिट जाता है।
३ हर्ष, आनंद, प्रसन्नता, खुशी।
४ विश्वास, भरोसा।
५ धैर्य, शान्ति।
उ०—१ ओलभा दीजइ कुणइ रइ रे कुण हिं दीजइ दोस। हीराणद इम ऊचरइ रे कीजइ मन सतोस।—हीराणद सूरि
उ०—२ मील सतोस सूरता साग, तूटण लग दिवस मे तारा। तूटा नीर निवाणा खारा, चौपाया घर मिळै न चारा।—ऊ. का.
६ प्रेम, प्यार।
७ स्नेह।
पर्याय०—धीरज, धीरोज, घ्रती।
क्रि प्र.—आणौ, करणौ, धरणौ, राखणौ होणौ।
८ यज्ञ एव दक्षिणा के बारह पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

रू. भे.—संतुख, सतोक, सतोख।
अल्पा —सतोखडो।
मह.—सतोखौ।

सतोसणौ—वि.—१ सन्तुष्ट होने वाला।
२ सन्तुष्ट करने वाला।
उ०—जामणा जोय गोचर गिरह जाणिया, दिया रळिग्रामणा दरस देवी। नेस सतोसणा भूपत्या निवाजै, खोसणा ऊपरै रहै खीजी —मे म.

सतोसणौ, सतोसबौ—देखो 'सतोखणौ, सतोखबौ' (रू. भे.)
उ०—दीरगहे विलमता, दुजण जड काढण दावै। सतोसतां सँग, कविय मुख सुजस कहावै।—ध. व. ग्र.
सतोसणहार, हारौ (हा ी), संतोसणियौ—वि०।
सतोसिग्रोडौ, सतोसियोडौ, संतोस्योडौ—भू० का० कृ०।
सतोसीजणौ, सतोसीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सतोसन—सं. पु —संतोष, सतुष्टि, तृप्ति।

सतोसियोडौ—देखो 'सतोखियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. सतोसियोडी)

संतोसी—वि. पु (स्त्री. संतोसण) १ सतोष धारण करने वाला, सब्र करने वाला।
२ सतोष का, संतोष सबंधी।
रू भे.—सतोखी।

संतोसीमाता—सं. स्त्री —एक लोक देवी जिसकी पूजा मनोकामना की सिद्धि के लिए की जाती है।

सत्य—स. पु [स] अग्नि देवता का नाम।

संत्री—देखो 'संतरो' (रू. भे)

सथ—क्रि. वि [स सन्ति] हैं, हुए हैं।
उ०—सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा, सुकवि अनेक तै एक सथ। स्री वरणण पहिलौ कीजै तिणि, गूथियै जेणि सिंगार ग्रंथ।—वेलि

सथइ, संथउ—स पु [स. सीमन्तकः] स्त्रियो के पहनने का एक अलकार विशेष।
उ०—१ काजळि अजिवि नयणजुय, सिरि संथउ फाडेई। बोरियावडि काचुलिय पुण उर मडळि ताडेइ।—जिन् पद्म सूरि
उ०—२ केसर कुमकुम ऊगटि, उलटि करि सुविसाल। सिरि सथइ उद्योतीय, मोतीय तिलक झमाल।—प्राचीन फागु-सग्रह

संथगर—वि. [स. सस्त्यान] सग्रह करने वाला, सग्रहकर्त्ता।

सथणौ, सथबौ—क्रि स. [स. सस्त्यानम्] सचय करना, सग्रह करना।

संथर—देखो 'साथरौ' (रू. भे.)

सथरइ—स स्त्री.—१ बिछौना।
२ सोने की क्रिया।
उ०—पाप अठारइ परिहरै रे, चित धरइ सरणा च्यारि। डाभ सथारइ सथरइ रे, ध्यान धरइ सुविचारी रे।—स कु

संथरो—देखो 'साथरो' (रू. भे.)

सथव-स. पु [स सस्तव.] स्तुति, गुणगान । (जैन)

सथा-स स्त्री [स. सहिता, प्रा. सइता, सता, सथा] १ गुरु के द्वारा एक बार मे पढा या पढाया हुआ अश, सबक, पाठ ।

उ०—रमता रावळिया रळियारत रोधै धुन मे धुन लागी पुन मे सत सोधै । कमडळ कापरदा कवळ गळ कथा, खोखा बाहारी खुद सीखी **सथा** ।—ऊ का

२ विद्या, ज्ञान ।

उ०—१ तिण ठाम **सथा** दान रै समय गुरु छात्र रै । अतर एक गजराज अचाणक आय कढियो ।—व भा

उ०—२ **सथा** साच तताई पणा री गाई गवै सारै, अनमाई राई-तना जणाई ओसाप ।—पूरजी भादौ

३ वेदो का मत्र भाग ।

उ०—माता गणाधीस री पढावै वेद **सथा** मत्र, ईसुरी वढावै साता अनता अमाप मूझ ।—देवी री गीत

४ धर्म शास्त्र ।

५ शिक्षा, उपदेश ।

क्रि प्र.—लैणी, घोखणी ।

६ वह ग्रन्थ जिसमे पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो ।

७ ईश्वर, परमात्मा ।

८ इतिहास, हाल, इतिवृत ।

उ०—**सथा** अहु जुगा तणी सुण, कवियण सरव प्रकास करै । परै हुआ सोई रया पागतै, अब होसी सो तूझ ऊरै ।

—महादान महडू

सथार, सथारउ—देखो 'सथारो' (रू. भे)

उ०—१ वन-पालक नै इम कहे, जो आवै केसीकुमार । दीजै थांनक री आगन्या, पाट पाटला **संथार** ।—जयवाणी

उ०—२ नारी तजि नीचउ उतरयउ, सवेग मारग सूधउ धरयउ । सिला ऊपरि **संथारउ** करयउ, वेगइ सुरसुदरि नइ वरयउ ।

—स कु

उ०—३ पाप अठारइ परिहरै रे, चित धरइ सरणा चारि । डाभ **संथारइ** सथरइ रे, ध्यान धरइ सुविचारो रे ।—स कु

सथारड़उ—देखो 'सथारो' (अल्पा; रू भे.)

उ०—सेज तलाइ में परढतउ, वर पट कूल विछाइ रे । आज तउ भूमि **सथारड़उ**, बइठडा रयणी विहाइ रे ।—स. कु

संथारणो, सथारबो-क्रि. स.—बिछाना ।

सथारपयन्न-स पु [स. सस्तार प्रकीर्णक] वह ग्रन्थ विशेष जिसमे सथारा करने की विधि का विवेचन हो ।

उ०—देवेद थुय नवमो होइ, दाखो तिहा गाथा सय दोइ । दसम **सथारपयन्न** सवासो, दसै सतावीससै परकासो ।—ध. व ग्र

सथारियोडो-भू का कृ.—बिछाया हुआ ।

(स्त्री. संथारियोडी)

सथारो-स पु [स सस्तारक] १ जैनियो का शरीर त्यागने हेतु लिया जाने वाला व्रत विशेष जिसमे वे अन्न, जल आदि का त्याग कर देते है ।

उ०—१ बहु पडिवन्ना खोरेसी रे, वादइ देव उल्लास । **सथारा** गाथा सुणाइ रे, खामइ जीवनी रासी रे ।—स कु.

उ०—२ सीतळजी रा साधे **संथारो** करै त्यांनै काई सरधो ? जद बोल्यो —उणा री अकाम मरण ।—भि. द्र

उ०—३ सुध मन **संथारो** करी, करम खपाय गया मोखो रे । राय केसी डवोई आतमा, जामा लगाया दोखो रे ।—जयवाणी

क्रि. प्र —करणो, पचकणो, पचकाणो, लैणो ।

मुहा —सथारो सीजणो=सथारा व्रत मे शरीर त्यागना ।

[स. सस्तरः] २ डाभ, तृणादि का बिछौना । (जैन)

उ०—मन री जोस करी नै वेग सू रे, आयो पौसध-साला रै माय रे । जायगा पडि लेही लघु बडी नीत नी रे, डाभादिक **सथारो** दियो ठाय रे ।—जयवाणी

३ बिछौना बिछाने का कपडा ।

४ बिछाने हेतु लाया गया घास । (जैन)

५ सोने की क्रिया ।

रू भे.—सथार, सथारउ ।

सथियोडो-भू का कृ —सचय किया हुआ, सग्रह किया हुआ ।

(स्त्री सथियोडी)

सथुणणो, सथुणबो, संथूणणो, संथूणबो-क्रि स [स. सस्तुत] गुण-गान करना, स्तुति करना ।

उ०—१ इय स्रीजिनचद्रसूरि गुरु, **सथूणिउ** गुणि पुन्न । 'स्रीपुण्य-सागर' वीनवइ, सहगुरु होउ सुप्रसन्न ।—पुण्यसागर

उ०—२ जिनचद्रसूरि सुसिस्य पडित, सकलचद मुनीस ए । तसु सिस्य वाचक समयसुंदर, **संथुण्योसु** जगीस ए ।—स. कु.

सथुणियोडो, सथूणियोडो-भू. का कृ —गुणगान किया हुआ, स्तुति किया हुआ ।

(स्त्री. संथुणियोडी, संथूणियोडी)

संद-स. स्त्री [स स्यन्द] १ वरसात या वरसाती हवा से उत्पन्न नमी या आर्द्रता ।

२ धूलि, रेत । (अ. मा, ह. नां मा)

सदइ, संदउ-वि.—१ आर्द्र, नमीयुक्त ।

उ०—लहरी सायर सदिया, वूठउ **संदउ** वाव । वीछुडिया साजण मिळइ, वळि किउ ताढव ताव ।—ढो. मा.

२ देखो 'हदै' (रू भे.)

उ०—आडा डूगर दूरि घर वणइ न जाणइ मत्त । सज्जण **सदइ** कारणइ, हियउ हिलूसइ नित्त ।—ढो मा.

सदाधीजणौ मंदावीजबो—कर्म वा०।

सदावियोडौ—देखो 'सधायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सदावियोडी)

सदावेस–स. पु [सं सदेश] सन्देश, समाचार।

उ०—जिण धण कारण ऊमह्यउ, तिण धण सदावेस। तिण मारु रा तन खिस्या, पडर हुवा ज केस।—ढो मा

सदि—देखो 'स्यदन' (रू भे)

सदिग्ध–वि [स] १ सन्देहपूर्ण, जिसमे सन्देह हो, जिस पर सन्देह हो।

२ देखो 'सदग्ध' (रू भे)

सदिपति–स. पु यौ [स स्यन्दन+पति] रथ हाँकने वाला, रथी।

सदियोडौ–भू का कृ—१ पानी से किसी मकान, दीवार या वस्तु मे नमी, आर्द्रता या सीड बैठी हुई, समाई हुई।

२ देखो 'संधियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सदियोडी)

सदी—१ देखो 'हदी' (रू. भे.)

उ०—१ वाळउ वावा देसडउ, पाणी सदी ताति। पाणी केरइ कारणइ, प्री छंडइ अधराति।—ढो. मा

उ०—२ पीहर संदी हूमणी, 'ऊमर' हदइ सथ्थ। मारवणी नू तत मई, कहि समझावइ कथ्थ।—ढो मा.

२ देखो 'स्यदन' (रू भे)

सदीणौ, सदीणौ, संदीनौ–स पु [स सन्वान] शारीरिक पुष्टता वढाने के लिए खाया जाने वाला पौष्टिक खाद्य पदार्थ जो विशेषतया इसी उद्देश्य से तैयार किया जाता है।

रू. भे—सधाणौ, सधिणौ, सदाणौ, सदाणौ।

सदीपन–स. पु. [स. सदीपनः] १ श्रीकृष्ण के गुरु का नाम।

२ कामदेव के पाच वाणो मे से एक।

[स. सदीपन] ३ उद्दीपन या उत्तेजित करने की क्रिया या भाव।

वि—उद्दीप्त या उत्तेजित करने वाला।

रू. भे—सदीपनी।

सदीपनी–स. स्त्री—१ पचम स्वर की चार श्रुतियो मे से तीसरी। (सगीत)

२ देखो 'सदीपन' (रू भे)

सदूक–स स्त्री [अ. सदूक] कपडा, आभूषण, नकद आदि वस्तुएं रखने का लोहे, काठ या चमडे का आधान, वक्स, पेटी।

उ०—एक एक चीज दो-दो जगा मंडाय दीनी। माही मा केई विकणौं ही लागगी। चढी रा पिलाण, दुनाळी वदूका, कुड अर कडावा, सतोली सदूकां, लोग ऐकेक ले लग्या।—दसदोख

रू भे.—सदक, सदूख, सिंदूक, सुंदूक।

अल्पा—सदूकडियौ सदूकडी, सदूकडौ, सदूकची, सदूकचौ।

संदूकडियौ–स. पु—देखो 'सदूक' (अल्पा, रू भे.)

सदूकडी—देखो 'सदूक' (अल्पा; रू भे.)

सदूकडौ–स पु.—देखो 'सदूक' (अल्पा, रू. भे.)

सदूकची—देखो 'सदूक' (अल्पा, रू. भे.)

सदूकचौ–स. पु.—देखो 'सदूक' (अल्पा; रू भे.)

सदूख—देखो 'सदूक' (रू. भे)

सदूर—देखो 'सिंदूर' (रू. भे)

उ०—सिमरू देवी सारदा, गणपत्त गणेसर। एक रदन गजवदन ओप, सदूर वणी सिर।—ठा जूंझारसिंह मेडतियौ

सदूरतळका सदूरतिलका—देखो 'सिंदूरतिलका' (रू भे)

सदे'—देखो 'सदेह' (रू भे.)

उ०—सामा कहि 'केसिनी', सुणु, रूप तणु सदे' ज घणु। पासि रही परीक्षा करूं, भोजन नी सजाई धरु।—नळाख्यान

सदेडौ–स पु.—वहुत कम पत्तो वाला सदा हरा रहने वाला एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—जाडी जाळा मे सदेडा झुकिया, राखै वावीजो सगळा री रिखिया।—सादूळजी बोगसौ

सदेव–सं. पु [स] देवक के एक पुत्र का नाम।

सदेवा–स स्त्री.—वसुदेव की स्त्री देवकी का एक नाम, जो देवक की सात पुत्रियो मे से एक थी।

सदेस–सं पु. [स सन्देश] १ खवर, समाचार सूचना।

उ०—१ जव का बिछडया फेर न मिळिया, वहोरि न दियौ सदेस। या तन ऊपर भसम रमाऊ, खार करू सिर केस।—मीरा

उ०—२ मेरै चाकर तौ जिसा, 'दुरग' तुमारै देस। जतन हमारी सरम को, लिखियौ वेग संदेस।—रा रू

२ प्रेम।

उ०—गिणता गिणता घिस गई उगळी, घिस गई उंगळी की रेख। मैं वैरागण आद की थारै म्हारै कद कौ सदेस।—मीरा

रू. भे.—सदेसौ, सनेसौ, सन्नेसौ।

अल्पा.—सदेसउ, ससदेडउ, सदेसडौ, सनेसडौ, सनेसडौ।

सदेसउ, संदेसडउ, सदेसडौ—देखो 'सदेस' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ सीता जी मोकल्यउ रे, काइ मुंदरडी दे मूक्यउ हनुमत वीर रे। जइ नइ सदेसउ कहिज्यौ माहरड रे, तुम्है हियडइ हुइज्यौ साहस धीर रे।—स कु.

उ०—२ ढोला ढीली हर किया, मूक्या मनह विसारि। सदेसउ न पाठवइ, जीवा किसइ अधारि।—ढो मा.

उ०—३ पथी एक सदेसडउ, कहिज्यउ सात सलाम। जव थी हम तुम वीछडै, नयणै नीद हराम।—ढो मा.

उ०—४ पथी हाथ सदेसडइ, धण विललती देह। पग सूं काढइ लीहटी, उर आसुआ भरेह।—ढो. मा.

उ०—५ सदेसडै न जिवाय, जा नयणै हि न दीस। नेडौ तीर न तिस हरै, जा हियडै नहिं पीस।—पचदडी री वारता

क्रि स.—३ धारण करना, साधना।
उ०—पतसाह रहै गह पूरियौ, सुर निराहपण सधियौ। खित गई ठौड़ ठौडा खबर, बळ राठौडा बधियौ।—रा. रू.
४ ठानना, तय करना।
उ०—बोल नवाब सरस द्रढ बधै, सुत पितु हूंत महाछळ सधै। यू रिम सूरत प्रवधै, नेम लियौ विधि जेम निमधै।—रा. रू.
५ करना।
उ०—गुण कामणि छदौ वयण, नमि नमि संधै नेह। पी रौ कहियौ धण करै, धण रौ कामणि ग्रेह।—रा सा स.
६ देखो 'साधणौ, साधबौ' (रू भे)
उ०—१ ग सहिजादै आखियौ, सहित विनै हित सध। मेरै काज निवाह की, लाज कमंधा कध।—रा रू
उ०—२ जोधौ 'हरियद' 'मान' तण, साथै 'द्याल' सकाज। सधी प्रीत नरिंद कज, गढ ची बधी लाज।—रा. रू
उ०—३ बद इरादित वोल मैं, हैदुरकुळी नवाव। संधी प्रीत 'अजीत' सूं, बधी नीत सिताव।—रा. रू.
उ०—४ तालि चरती कुंजडी, सर सधियउ गमार। कोइक आखर मनि बस्यउ, ऊडी पख समार।—ढो. मा
उ०—५ विळकुळियौ वदन जेम वाकारचौ, सग्रहि धनुख पुणच सर संधि। क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बधि।—वेलि
सधणहार, हारौ (हारी), सधणियौ—वि०।
संधिओडौ, सधियोड़ौ, सध्योडौ—भू० का० कृ०।
सधीजणौ, सधीजबौ—कर्म वा०।
सदणौ, संदबौ—रू० भे०।
सधव, संधवौ-वि —सम्बन्ध रखने वाला, सम्बन्धी।
स पु—१ रिश्तेदार, भाई-बन्धु।
उ०—'पालह' पीरा पीर 'पाल' अण वधवा बधव। 'पाल' अमीरां मीर, 'पाल' पित मात संधव।—पा प्र.
२ देखो 'सिंधु' (रू. भे)
३ देखो 'सेंधव' (रू भे)
४ देखो 'सिंधुराग' (रू. भे)
उ०—डाढ धर सागि धण गारडू विखतौ, कहर काळौ असौ कोप कीयौ। अनड रण सधवा ऊपरै आवियौ, बाचवध जेम हदमाल वीयौ।—भीवसिंघ हरदावत रौ गीत
सधांण, संधांणु, संधांन-स पु. [सं. संधान] १ निशाना लगाने के लिए धनुष पर बाण चढाने की क्रिया, निशाना बैठाने की क्रिया।
उ०—१ पडै प्राण सधाण बाणौ बटक्कै, हुकै केइ हाथाल रोसै हटक्कै। झला झाल गोलेहु नालै भटक्कै, तुटै तुड मुडा प्रचडा तटक्कै। —ध व ग्र
उ०—२ आव्यउ मलिक सरोवरि देखइ, हीद् करइ सनान। फेरी वीटि ऊडव्या हाथी, कीधां बाण संधांण।—का. दे. प्र
उ०—३ सूयर देखी मेल्हिउ बाणु, अरजुन सिउ कुणु करइ सधांणु। तिणि खिणि मेल्हिउं वणचरि बाणु, ऊडिउ गयणि हूउ अप्रमाणु।—सालिभद्र सूरि
२ शरीर के जोड़, सन्धिस्थल।
उ०—१ ढोलउ चाल्यउ है सखी, वाज्या विरह निसाण। हाथै चूडी खिस पड़ी, ढीला हुवा संधांण।—ढो. मा.
उ०—२ हाड हाड संधाण हुआ जू जुआ जडालै। ढळतौ धड ऊपरा, सीस सकर उद्दाळै।—गु. रू. ब.
उ०—३ खळहळै रत्त परनाळ खाळ, डोलिया पडै धड जूह डाळ। करडकै कध संधांण घट्ट, फरडकै फीफरा आळ फट्ट।—गु. रू व
उ०—४ तिणि कीधुं ति किम कहुँ? सभळि, चतुर सुजाण। अबळा अग देखाडिउ, सधि सधि सधांण।—मा का प्र
३ चिकित्सा, उपचार।
उ०—राखउ करहउ डाभस्यउ, रे मूरखा अजाण। नरवर कउ जाणै नही, करहा तणु सधाण।—ढो. मा
४ अन्वेषण, खोज।
५ सीमा, हद।
६ सयोग, समिश्रण।
७ सधि, मैत्री।
८ एकाग्रता।
९ समर्थन।
१० मदिरा आदि मादक वस्तु।
११ व्यंजन जिससे प्यास बढे।
१२ मुरब्बा आदि बनाने की विधि।
१३ गाठ, जोड, सन्धिस्थल।
उ०—नैण नख नासिका दुरसि नीका वणी, सीस संधांण सुधि बुधि सारी। राम ही पढण कु रीझ रसना करी, निस दिन ध्यायलो, पुरख नारी।—अनुभववाणी
सधाणौ-स. पु—देखो 'सदीणौ (रू भे.)
उ०—सधांणौ लाडूडा बाधिया ओ राज, किसमिस घाल बिदाम।
—लो. गी
सधा-स स्त्री [स.] १ प्रतिज्ञा, प्रण।
उ०—१ मूछा कर देणहार नै मारण री कन्है पूरब काळ मे सधा लीधी तिकण नै इण रीति नम्रता सू कुमार प्रथ्वीराज कन्है रा लोयणा पट्टी लगाई।—व भा
उ०—२ आयौ बूंदी भाखि इम, सधा लडण समाहि। करण बिजै दूदै कवर, चुणिया भड अड चाहि।—व भा.
२ सीमा, हद, मर्यादा।
३ घनिष्ट सम्बन्ध।
४ दृढता, मजबूती।

५ स्वीकार, अंगीकार। (डिं. को)

६ देखो 'संधि' (रू. भे.)

उ०—मिळ थाट कमंधा दळ असमंधा, बंधक संधा छ्रवधा। अति वेध विरुद्धा परस उरद्धा खिलव दगंधां अबुकदा।—रा रू.

रू. भे.—सध।

संधाणौ, संधावौ—क्रि. स. [सं. संधानम्] १ धनुष पर बाण चढाना, निशाना साधना।

२ जोड़ना, संयुक्त करना।

उ०—खाती कूप बचायो अहि वण, तूटी लाव संधाणी। हाकड़िया री हेक चळू कर पीसी आवड़ पाणी।—रायवदास भादो

३ चिकित्सा करना, उपचार करना।

४ संयुक्त करना, मिलाना।

५ प्रतिज्ञा करना, प्रण करना।

६ करना, जोड़ना।

७ संधि करना।

८ धारण करना।

९ नमी लाना, आर्द्र करना।

संधाणहार, हारौ (हारी), संधाणियौ—वि०।

संधायोड़ौ—भू० का० कृ०।

संधाईजणौ, संधाईजबौ—कर्म वा०।

सदाणौ, संदावौ, संदावणौ, सदाववौ—रू० भे०।

सधाता—स. पु [सं.] भगवान् विष्णु।

संधायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ धनुष पर बाण चढाया हुआ, निशाना साधा हुआ (२) जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ. (३) चिकित्सा किया हुआ, उपचार किया हुआ. (४) संयुक्त किया हुआ, मिलाया हुआ (५) प्रतिज्ञा किया हुआ प्रण किया हुआ. (६) किया हुआ, जोड़ा हुआ. (७) संधि किया हुआ. (८) धारण किया हुआ. (९) नमी लाया हुआ, आर्द्र किया हुआ।

(स्त्री. संधायोड़ी)

सधारण—वि [सं.] १ धारण करने वाला।

उ०—सर्व रूप चौ रूप, सर्व ससार सधारण। सर्व सत चौ स्याय, सर्व देता सधारण।—ज. खि.

२ पार लगाने वाला।

३ सुधार करने वाला।

संधि—सं स्त्री. [सं.] १ दो वस्तुओं का मेल, संयोग, जोड़, मिलाप।

२ मिलने का स्थान, जोड़।

३ गाठ, जोड़।

४ शारीरिक संधि-स्थल।

उ०—तिणि कीधूं ति किम कहूं? संभलि, चतुर सुजाण! अबला अंग देवादिक, संधि संधि सधाण।—मा. का. प्र.

५ व्याकरणानुसार शब्दों का वह विकार जो पास-पास आने या मिलने से उत्पन्न होता है।

६ मनुष्य की दो अवस्थाओं का मध्यकाल, वयः संधि।

उ०—सैसव तनि मुनपति जोबन न जाग्रति, वेस संधि मुहिगा सु वरि। हिव पळ-पळ चढतो जि होइसै, प्रथम ग्यांन एहवी परि।—वेलि

७ दो राज्यो मे परस्पर होने वाला अहद, करार।

८ वह स्थिति जब दो विरोधी पक्ष परस्पर विरोध भाव छोड़कर मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करते हैं, मेल, सुलह, समझौता।

उ०—कळ बीछुड़ि एक वसै गिरि कदनि, मदिर माळक एक मरै। अहि त्याग करै धन एक गमाय रु, कै रिप आदरि संधि करै।—रा. रू

९ दोस्ती, मित्रता।

१० दिन और रात दोनो के मिलने का समय, कालसंधि।

उ०—दिवस न रयणी संधि त्रय, निधि न पर्वणि पंच। कांमिनि सिउं क्रीडा करइ, अहनिसि स्नेह प्रपच।—मा का प्र.

११ युगान्तकाल।

१२ कुशवंशीय राजा प्रसुश्रुत के पुत्र एव अमर्षण के पिता, एक राजा।

१३ देखो 'सुसंधि' (रू. भे.)

उ०—जै सुत हुवौ संधि हत दुजण, मरस्वण संधि सुतण कुळ मंडण। मरस्वण सुत सिहमान भूप मणि, भूप विस्वासा है तै सुत भणि।

—सू. प्र.

१४ देखो 'सेंध' (रू. भे.)

रू भे—संध, संधा, सधी।

संधिक—सं. पु. [सं.] एक प्रकार का वातरोग विशेष जिससे शारीरिक सन्धियों में दर्द होता है। (वैद्यक)

संधिचोर, सधिचोर—सं. पु.—वह व्यक्ति जो सेंध लगाकर चोरी करता हो।

संधिणी—स. स्त्री.—वह गाय या भैंस जिसका दूध न निकाला गया हो।

रू भे.—संधीणी, सेंधणी।

सधिणी—देखो 'संदीणी' (रू. भे.)

सधिपत्र—सं पु [सं.] वह पत्र जिस पर सन्धि होने पर आपसी शर्तें लिखी जाती हैं।

संधिभग्न—स पु [सं.] वह रोग जिसमें शारीरिक संधियों में दर्द होना है।

संधियास—देखो 'सध्या' (रू. भे.)

उ०—सिनांन वात सधि संधियास, उचरत मंत्र गायत्रि अभ्यास। आत्रम चत्र अरु चत्र वरण उदार, क्रन करत दान खोडस प्रकार।

—सू प्र.

संधियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ जुड़ा हुआ बंधा हुआ. (२) संयुक्त हुवा

हुआ, मिला हुआ. (३) किया हुआ. (४) धारण किया हुआ. (५) ठाना हुआ, तय किया हुआ.
६ देखो 'साधियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सधियोडी)

सधिरेहु, सधिरेहौ–स पु [स सधिलेखक] सधि लेखक।
उ०—कथाकथक पीठ मरदक जिहा, सधिरेहा दूत पालक तिहा। एहवी सभाई बइठु राव, नरवर लक्ष सेवइ तस पाय।
—नळदवदंती रास

सधिला–स. स्त्री [स.] १ शराव, मदिरा।
२ दीवार मे लगाई गई सेंध।
३ नदी।
४ सुरग।

सधिवात सधिवाय–स पु [सं सधिवात] शरीर की गाठो अर्थात् जोडो मे होने वाला एव वात विकार, गठिया-रोग।
उ०—जाफर नू सधिवाय रोग थौ सो हाल नही सकै थौ। बुरज रै झरोखै मे बैठियौ थौ। उठै वारी मूं रण नै कोट री खाई दीसै थी।—नी प्र

संधिविग्रहक, सधिविग्रहिक, संधिविग्रही–स. पु.–प्राचीन भारत का वह राजकीय अधिकारी जो दूसरे देशो के साथ युद्ध या सधि का निर्माण करता था।
उ०—१ ·········कोष्टाकारिक पारिग्रहिक प्रतिहार चतुद्वरिक कास्टिक राजद्वारिक सधिविग्रहिक भाडपति स्रेस्टि महाजनिक दूत··· ····· ।—व स.
उ०—२ ······ प्रमाणीक सेनापति मत्रि महामत्रि राणा स्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देवगरणा नायक दडनायक, अग्रलेखक भाडागारिक सधिविग्रही ········ ।—व. स.

सधिविच्छेद–स स्त्री [स] १ आपसी समझौते को तोडने की क्रिया।
२ व्याकरण में शब्द के संधि स्थान को तोड कर अलग-अलग करने की क्रिया।

सधिहार, सधिहारक–सं स्त्री. [सं] सेंध लगाने वाला।

सधी–देखो 'सधि' (रू भे)
उ०—खड देवडा भरै डड खधी, सगपण कर भाटी सनवधी। सारा मिळै तूझ सू सधी, वळ दाखै किण सिर 'गजवधी'।
—चतुरो मोतीसर

सधीणी—देखो 'सधिणी' (रू भे.)

सधु—देखो 'सिंध' (रू. भे)
उ०—अम्हारा देसदेसाउर वरणवु········जवुद्वीप, भरतखेत्र, कुमारिकाखेत्र, कासी, काती, ऊजेणी, अजोध्या, अमया, मथुरा, कनोज, मालवु, स्रीरग, गाजणु, लक्षणवती, दिली, नवकोटि, मारू आदि, सधु सवालक्ष,······ ।—व स

सधुर, संधूर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

संवेसरा–स पु —एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ० —सेवत्री सवेसरा, सूकडि सरकडि साय। सीमंतक सोहइ भला, सरव सदाफल खाय।—मा. का प्र.

सधोळियौ—देखो 'सधोळी' (अल्पा; रू भे)

सधोळी–स. स्त्री. [स. सधितूलिका] कपडा बुनने के ताने के धागो को मिलाने व पृथक करने वाला सरकडो की तूलियो का एक उपकरण। अल्पा —सधोळियौ।

सधोह—देखो 'सदोह' (रू. भे.)

संधौ—देखो 'साधौ' (रू भे)
उ०—तद नापै कही, नव पोढी नूरिया जमालिया पूछीजसै। राज खुससी पण माहे संधौ लागसै।—नापै साखलै री वारता

सध्या–स स्त्री [स.] १ दिन व रात का सधिकाल।
२ सूर्यास्त का समय, सायकाल, शाम। (अ. मा; डिं को)
उ०—१ सकुडित समसमा सध्या समयै, रति वाछिति रुखमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पख पंखिया, कमळ पत्र सूरिज किरणि।
—वेलि
उ०—२ अधुरा डसणा सू उदै, विमळ हास दुतिवत। सौ सध्या सूं चद्रिका, फैली जाण फवत। फैली जाण फवत, चकोरा चाहरी। उड्डी रज घणसार, अनत उछाहरी।—बा. दा
उ०—३ नमो सुक्र सध्या धणी स्रेस्ट सम्मी, नखित्रा तणौ पातिसा स्वाति नम्मौ। महा लक्षमी मात 'धापा' नमामी, नमौ मात रौ तात सामुद्रनामी।—मे म.
उ०—४ समतसर विक्रम छत्तीस कम बै सहस, मास आसाढ तिथि सुकल नोमी। वार सुक्रर नखत स्वाति सध्या वखत, भवानी ओतरया खुडद भोमी।—मे. म
पर्याय०—आसुरी, उत्तसूर, तमचरपाल, निसामुख, पित्रीप्रसू, प्रदोख।
३ प्रातः का समय।
४ तडका, भोर।
५ सन्ध्याकालीन मेघ जिसमे लाल आभा होती है।
मुहा —सध्या फूलणी=सध्या के समय लालिमायुक्त बादल आना।
५ मध्यान्ह और साय सन्ध्योपासन कृत्य।
७ एक नदी का नाम।
८ एक वर्षीय बालिका।
९ सन्ध्या स्वरूपिणी देवी।
१० ब्रह्मा की मानस कन्या अरुन्धति का पूर्व जन्म।
११ मेल, सन्धि, जोड।
१२ युग सन्धि।
१३ ब्राह्मण की पत्नी, ब्राह्मणी।
१४ सीमा, हद।

१५ ध्यान, विचार ।

१६ कौलकरार, इकरार ।

१७ लाल रक्त । * (डि. को)

१८ देखो 'सध्योपासन, सध्योपासना ।

रू भे.—सज, सज्या, सझ, सझया, सझा, सझि, सझ्या, सधियाग, साज, साजडली, साझ ।

सध्यापत, सध्यापति, सध्यापती-सं. पु [स. सध्यापति] शिव, महादेव । (अ. मा, ना. मा.)

संध्याभ्रत-सं. पु —१ शिव, महादेव । (अ. मा.)

२ एक देवजाति विशेष । (अ मा.)

सध्याराग-स. पु [स] १ सगीत मे श्याम कल्याण राग ।

२ सध्या के समय नभोमण्डल मे दिखाई देने वाली लालिमा ।

सध्योपासन, सध्योपासना-स. स्त्री. यौ. [स सन्ध्या+उपासना] भारतीय आर्यो की एक प्रसिद्ध उपासना जो प्रात:, मध्याह्न व सायकाल मे की जाती है, अत. इसे त्रिकालसन्ध्या भी कहते हैं ।

उ०—सध्योपासन तजि वाग साज, निस दिवस वुजू रोजा निवाज । सामरत्थ सिह हम नहि स गाळ, गौ मास नाम पै देत गाळि ।

—ऊ. का

सध्रीच-स पु. [स. सध्र्यञ्च, सध्र्यञ्च] १ सखा, मित्र । (अ मा)

२ पति, खाविंद ।

सनवध—देखो 'सवध' (रू. भे)

उ०—झूठै झामरझोळ मैं, ऊळझि रहे नर अध । साचौ सबद न मानियौ, वाधि विरै संनवध ।—अनुभववाणी

सनवधी—देखो 'सवधी' (रू भे)

सनाह, सनाहु—देखो 'सन्नाह' (रू. भे)

उ०—राइ सनाहु समोपीयउ, भीमिहि सु भिडेउ । गदापहारि हणीय जाध, मनि सालु सु फेडिउ ।—सालिभद्र सूरि

सनिचय-स. पु. [स | सग्रह ।

सनिधान-क्रि वि.—पास, निकट, नजदीक । (डि को.)

सनिपात—देखो 'सन्निपात' (रू भे.)

उ०—अग संनिपात ज्यही हुय आळस, आठू पहर रहे घर अदर । विरहा अगनि जळे चदवदनी, हुरमा कदे न आवै हाजर ।—सू. प्र

सनिवेस-स पु. [स. सन्निवेश:] निवास स्थान, रहने की जगह । (सभा)

उ०— ···· ·· ८४ लक्ष रथ, १४ सहस्र जल पथ, २१ सहस्र सनिवेस, २८ सहस्स देस, ५६ अतरद्वीप··········इति चक्रवरति रितु।—व स.

सनेसडौ—देखो 'सदेस' (अल्पा, रू भे.)

उ०—रतन करू नेवछावरी, लै आरती साजू हो । पिया का दिया सनेसडा, ताहि बहोत निवाजू हो ।—मीरा

सनेसौ—देखो 'सदेस' (रू भे.)

उ०—स्यान ध्यान मारा करि देख्या, सतगुर दीया सनेसा । एको राम कला गुण सेती, अतर भेट अनेसा ।—अनुभववाणी

सनेह—देखो सनेह' (रू भे)

उ०—१ विरह की मारी विरहनी, देह सु भई बदेह । जनहरीया किन स करै, माई बिना सनेह ।—अनुभववाणी

उ०—२ विरह भालि सु मरि गई, हियडै रही सटक । हरीया राम सनेह कु, जीवडो रह्यौ अटक ।—अनुभववाणी

उ०—३ तीन लोक फिर देखिया, पर नर ठाणी ठाम । हरीया राम सनेह विन, किहू नही विसराम ।—अनुभववाणी

सनेही—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—१ तू सरवर की माछळी, कौण पिना कुण माय । अलप सनेही कारणै, हाटो हाट विकाय ।—अनुभववाणी

उ०—२ हरिया धंना को मिळै, राम सनेही सत । अपना औगन दूरि करि, औरन का मेटत ।—अनुभववाणी

उ०—३ मात पिता सब कुनन साही, पावै उदर बसेरा । सकल कुटब सुत वारि सनेही, नदिया नाव मलेरा ।—अनुभववाणी

उ०—४ सैणा सेती रासणी, अगेगा सु गूझ । राम सनेही ना किया, औरा रह्या अळझ ।—अनुभववाणी

सन्नान—देखो 'स्नान' (रू. भे)

उ०—सिरी गग री नीर सन्नान सारू, दमत्तर सिदूर कप्पूर दारू । हुवै होम आसावरी धूप हमे, घणा नाघणा दीप सामीप घूमै ।

—मे म.

सन्नाह—देखो 'सन्नाह' (रू. भे)

सन्नाही-स. पु.—वीर योद्धा ।

उ०—निहू पागड़ चांभर टळइ, छत्र धरि अेकवीस संन्नाही सेवा करइ, राजकुळी छत्रीस ।—मा. का. प्र.

सन्यास-स. पु. [सं.] १ भारतीय आर्य धर्म मे आयु के अनुसार विभाजित चार आश्रमो मे से चौथा आश्रम ।

वि. वि.—इस आश्रम मे मनुष्य गृहस्थाश्रम का पूर्ण त्याग कर देता है और ससार से विरक्त हो कर सभी कार्य निष्काम भाव से करता है ।

उ०—रात रा सेठ मतै ई वात छेडी । कैवण लागा—अवै संन्यास लेलू तौ सावळ है । फगत थारौ ध्यान आया मन डिगमगै ।

—फुलवाडी

२ वैद्यक के अनुसार मूर्च्छा रोग का एक भेद जो बहुत भयानक होता है ।

रू भे.—सनीयास, सन्यास, सिनियास, सिन्यास ।

सन्यासी-स. पु [स.] १ सन्यास आश्रम का पालन करने वाला, त्यागी, वैरागी ।

उ०—१ सेवक रिख मुनि भगत सन्यासी, अरज करै हुय दीन उदासी । त्रिभवणनाथ जगत निसारण, धरम वेद कीजै धुधारण ।

—रा. रू.

२ फकीर सन्यासी।
उ०—१ जगत सूत मागध बदीजण, आसावत किया अप ऊरण।
जोगी जमत संन्यासी जेता, अनग्रत अमित लहै पुर एता।
—रा. रू.
उ०—२ संन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए, काइ इवडा हठ निग्रह किया। प्राणी भवसागर वेलि पढता, थिया पार तरि पारि थिया।—वेलि
२ साधुओ का एक पथ जिसके दडी और अवधूत दो भेद है।
वि. वि.—कहा जाता है कि सन्याम को मत या पथ रूप दत्तात्रेय ने उस समय दिया जब कि गोरखनाथ ने योगियो का पथ चलाया। गोरखनाथ को शिव का और दत्तात्रेय को नारायण का अवतार मानते है। दत्तात्रेय के अनुयायी दडी और गोरखनाथ के अनुयायी अवधूत कहलाते हैं। दडी सिर मुडाते है और हाथ मे दड धारण करते हैं तथा अवधून सिर पर जटा रखते हैं और हठ योग की क्रियाए करते हैं। शास्त्रोक्त सन्यास के दंडी सन्यासी अधिक नजदीक पडते हैं।
रू. भे.—सन्यासी, सनीयासी, सिनियासी, सिन्यासी।
सप-सं. पु —१ एकता, मेल, सगठन।
उ०—१ बडभागी दीना विविद, संपत हित सनमान। सप राखणो सीखियो, थिर चित राजसथान।—ऊ. का.
उ०—२ लोगा री राढ मैं बाणिया री लिछमी वास करै। लोग यू सप राखण लाग जावै तो बाणिया री सपत कीकर वधै।
—फुलवाडी
उ०—३ राखै सप जिका धन राखै, 'बाकौ' दाखै साच विध। न्याय नीमडै जित्तै नीमडै, राज चढै ज्या तणी रिध।—बा. दा
मुहा —सप राखणौ=एकता रखना।
२ स्नेह, प्रेम।
[स सर्प] ३ शेषनाग।
उ०—१ हिलै संप हैथाट, चलै वाना वहरगी, दळ जळनिध उलटै जाण बडवानळ मगी। गिर छीजै सुरताळ पहवि थळ सिखर पलट्टै, पडै अपथै पथ, अगाह तुट्टै सर खुट्टै।—रा रू.
उ०—२ हलीला हिलै सप फौजा हमत्ती, अथी सगि लागा केई देसपत्ती।—वचनिका
४ देखो 'सपा' (रू भे)
उ०—सिणगार सिरोमण माकुर रो, तस बीदिय रूप खुलै तुररो। करती नभ सी किर सप किया, वळती फुरणा व्रत वाळकिया।
—पा. प्र
५ देखो 'साप' (रू भे)
उ०—आका दतुण न कीजियै, सर्पा न खाजै माम। जला जेथ न जायजै, जेठा जद विनाम।—जलाल बूबना री वात
सपड-त्रि —१ सभव।
(विलो. 'असपड')
स पु —२ कोई प्राप्य वस्तु।
२ देखो 'सपाडौ' (रू. भे)
संपड़णौ, संपड़बौ-क्रि. अ [स सम्प्रापणम्] १ प्राप्त होना, मिलना।
उ०—पग पगा संपडै आख सपडै क अधै। भूखै भ्रख सपडै जेम लोभी द्रब लद्धै।—ज. खि.
२ सम्भव होना।
उ०—सेवग सधार असरण सरण, पार न कोई पुन्न रो। ससार असपड संपडै, 'जगा' नाम जगदीस रो।—ज. खि.
[स. समाप्लवनम् या सम्प्लवनम्] ३ स्नान करना, नहाना।
४ सम्भव करना।
सपडणहार, हारो (हारी), संपडणियो—वि०।
संपडिओड़ो, सपड़ियोड़ो, सपडयोडो—भू० का० कृ०।
सपडीजणो, सपडीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।
सपडणो, सपडबो, सापडणो, सांपडबो—रू० भे०।
सपडाणो, सपडाबो-क्रि. स. – स्नान कराना, नहलाना।
उ०—१ सहेलिया भेळी कर भेख उतरायो, सपडायो, बागो पहरायो।—पचदडी री वारता
उ०—२ मनजाणिया हथियार-पोमाख लीजै छै। फेर उजळै पाणी नहाइजै छै। घोडा दही कटोळा सू सपडाइजै छै।
—रा. सा सं.
सपडाणहार, हारो (हारी), सपडाणियो —वि०।
सपडायोडो—भू० का० कृ०।
संपडाईजणो, सपडाईजबो —कर्म वा०।
सपडावणो, सपडावबो, सपडाणो, संपडाबो, संपडावणो, सपडावबो, सपलाणो, संपलाबो, सपडाणो, सपडाबो, सपडावणो, सपडावबो, सांपडाणो, सांपडाबो, सांपडावणो, सांपडावबो—रू० भे०।
सपडायोडो-भू. का कृ.—स्नान कराया हुआ, नहलाया हुआ।
(स्त्री. सपडायोडी)
सपडावणो, सपडावबो—देखो 'सपडाणो, सपडाबो' (रू. भे)
उ०—१ चोर चुगल वाचाळ, ज्यारी मानीजै नही। संपडावै घसकाळ, रीती नाड्या राजिया।—किरपाराम
उ०—रात मैं भखभूर व्हिया दाळदनै डावडिया संपडावण लागी तद वौ वानै पालता कह्यौ—म्हैं आमग वायरो अर माडो कोनी, हाथा सीवनै मिनान करू ला। डील मू धुडिया विना म्हनै रखत नी व्है।
सपडावणहार, [illegible] सपडावणियो—वि०।
सपडाव्योड़ो—भू० का० कृ०।
सप [illegible] कर्म वा०।
संपड़ावियोडो [illegible] रू भे)

(स्त्री. सपड़ावियोड़ी)

सपड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ. (२) संभव हुवा हुआ (३) स्नान किया हुआ (४) सम्भव किया हुआ।

(स्त्री सपड़ियोड़ी)

संपचूट-स पु.—सर्प के फन के आकार का एक शस्त्र विशेष।

उ०—अरजुन सगति भूमता, संपचूट मानिद्ध। मागीउ आवी तुम्ह पय, पचइ विया सिद्ध।—मालिभद्र सूरि

सपजणो, संपजबो-क्रि. अ [स सपदनम्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना।

उ०— १ ज्यारी रिच्छ्या देवता, सेवा पीर प्रधान। त्या अणचीती संपजे, सुमकळ में आमान।—रा. रू

उ०—२ विण स्वभाव नवि सपजे जी, किमहु पदारथ कोय। अब न लागे नीव के जी वाग बसंते जोय।—वृ. स्ता

उ०—३ समण वरद सपजे, सबद तैमा वाजता। सुरा विरह मणिणा, इमा जे सद्द कवित्ता।—रा. रू.

उ०—४ वहू बधाळु अस घरि, कामू करइ विदेस। सगत सघळी सपजे, श्रे दिन कदी लेहस।—ढो मा

२ होना।

उ०—१ चिंतामणि पारस पोरसो, सुवा सगेवर कामणा। संपजे ताम सुत सपनै, ग्रह सुर धाम विरामणा।—रा. रू.

उ०—२ मुसरगजी सो वार, सयण घणाई सपजे। मिळे न दूजी वार, नाग नरीखो नाहलो।—नागजी नागवती री वात

३ सचित होना, एकत्रित होना।

उ०—जो लाखा धन सपजे, अधप तोई न धापि। हरीया दुक सतोस विन, मिमता किनी न मापि।—अनुभववाणी

४ प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ 'केहरिया 'करनेस' का, तौ हाथा वळि जाव। जिन्हा खेत न संपजे तिन्हा दीन्हा गाव।—कुभो माटू

उ०—२ नमणी खमणी, बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ। जे धण एही सपजइ, तउ किम ठल्लउ जाइ। ढो मा

सपजणहार, हारो (हारी), सपजणियो—वि०।

सपजिश्रोड़ो, सपजियोड़ो, सपज्योड़ो—भू० का० कृ०।

सपजीजणो, सपजीजबो—भाव वा०।

सापजणो, सापजबो रू० भे०।

सपजाडणो, सपजाड़बो—देखो 'सपजाणो, सपजाबो' (रू. भे)

सपजाडणहार, हारो (हारी), सपजाडणियो—वि०।

सपजाड़िश्रोड़ो, संपजाड़ियोड़ो, सपजाड़योड़ो—भू० का० कृ०।

सपजाड़ीजणो, सपजाड़ीजबो—भाव वा०।

सपजाणो सपजाबो-प्रे रू—१ उत्पन्न करना, कराना, पैदा करना, कराना।

२ सचित करना/कराना, एकत्रित करना/कराना।

३ प्राप्त करना/कराना।

४ करना/कराना।

सपजाणहार, हारो (हारी), संपजाणियो—वि०।

सपजायोड़ो—भू० का० कृ०।

सपजाईजणो, सपजाईजबो—भाव वा०।

सपजाड़णो, सपजाड़बो, संपजावणो, सपजावबो—रू० भे०।

संपजायोड़ो-भू० का० कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ/कराया हुआ, पैदा किया हुआ/करवाया हुआ. (२) सचित किया या कराया हुआ। (३) प्राप्त किया हुआ या करवाया हुआ, मिला या मिलाया हुआ। (४) किया या कराया हुआ।

(स्त्री. सपजायोड़ी)

सपजावणो, सपजावबो देखो 'सपजाणो, संपजाबो' (रू भे.)

सपजावणहार, हारो (हारी), सपजावणियो—वि०।

सपजाविश्रोड़ो, संपजावियोड़ो, सपजाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

संपजावीजणो, संपजावीजबो—भाव वा०।

सपजावियोड़ो—देखो 'सपजायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री सपजावियोड़ी)

संपजियोड़ो-भू. का. कृ—१ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ (२) प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. (३) सचित हुवा हुआ, एकत्रित हुवा हुआ (४) हुवा हुआ।

(स्त्री. सपजियोड़ी)

संपट-वि.—१ समाप्त, लुप्त।

उ०—संपट हुयगो थळ जळ साई, लपट हुयगा लोग लुगाई। कपत लीली डाळ सुकाई, चपत हुयगी सब चतुराई।—ऊ का.

२ मूर्ख, अज्ञानी।

स. पु [स सपुटक] १ अवसर, मौका।

२ सयोग, मिलन।

उ०—भिलमाभिल आधी रात। भोणी ठारी। सूनयाड पथ। तीजो कोई आदमी पाखती कोनी। अठै निरजण सुनी ठौड में अमेंघी लुगाई रै अणचीत्या सपट रो नसो कुजरवो घणो व्है।

—फुलवाड़ी

३ देखो 'संपुट' (रू. भे)

उ०—१ त्यारू पचखोहणी परवरि नड, सुहड निज भड टाळि। कर करीय करपट धरीय संपट, कठि टोटरमाळ।—रुकमणि मगळ

उ०—२ पडिदा में छिपियो रहै, सो साई नहि थाय। हरिया हरि निट लोक मैं, सपट माहि न माय।—अनुभववाणी

संपटपाट-स. पु—१ सीधा एव खुला मैदान।

२ बरबादी, नाश, ध्वस।

उ०—सवळा संपटपाट, करता नह राखे कसर। निवळा एक निराट राम तणो बळ राजिया।—किरपाराम

संपटणो, सपटबो—देखो 'सपड़णो, सपडबो' (रू. भे)

उ०—तिथि वार नखत्र उत्तम करण, पण महूरत अप चढै।

किल्याण हुवै सिध कामना, तामह् असड सपडै ।—गु. रू ब
संपडणहार, हारो (हारी), सपडणियो—वि० ।
सपडिओडो, सपडियोड़ो, संपड्योड़ो—भू० का० कृ० ।
सपडीजणो, संपडीजबो—भाव वा० ।
संपडाणो, सपडावो—देखो 'सपड़ाणो, सपडावो' (रू. भे)
सपडाणहार, हारो (हारी), सपडाणियो – वि० ।
संपाड्योड़ो—भू० का० कृ० ।
संपडाईजणो, सपडाईजबो—कर्म वा० ।
सपडायोडो—देखो 'सपडायोडो' (रू भे.)
(स्त्री. सपडायोडी)
सपडावणो, संपडाववो—देखो 'सपडाणो, सपडावो' (रू भे.)
सपडावणहार, हारो (हारी), सपडावणियो – वि० ।
सपडाविओडो, सपडावियोडो, संपडाव्योडो भू० का० कृ० ।
सपडावीजणो सपडावीजवो –कर्म वा० ।
सपडावियोड़ो—देखो 'सपडायोडो' (रू. भे)
(स्त्री. सपडावियोडी)
सपडियोड़ो—देखो 'सपडियोडो' (रू भे.)
(स्त्री सपडियोडी)
सपणो, सपबो-क्रि, स.—१ एकता रखना या करना, मेल रखना या करना ।
२ प्रेम करना, प्यार करना ।
३ देखो 'सूपणो, सूपवो' (रू. भे)
उ०—वणवीर आणि अर मुहतै अवळै नू अर नाई लखमण लाहोरी नू सपियो ।—द वि.
सपणहार, हारो (हारी), सपणियो –वि० ।
सपिओडो, सपियोड़ो, सप्योडो —भू० का० कृ० ।
सपीजणो, सपीजबो—कर्म वा० ।
सपत-स स्त्री [स सपद्] १ धन, दौलत ।
(अ मा, डिं को; ह ना मा.)
उ०—१ मियां-बीबी दोनूं ई मस्त । अपारं लाखां री संपत है, पण म्हनै तो वो अग विचै घणी सुखी लागै ।—फुलवाडी
उ० –२ लोगां री राड मे बाणियां री लिछमी वास करै । लोग यूं सप राखण लाग जावै तौ बाणियां री सपत कीकर वधै ।
—फुलवाडी
उ०—३ अर उठीनै मगरै ढळतां ई असवार रो मन विटळियो सोच्यो—कैडो अबूझपणो करियो । हाथै आयोडी सपत नै ठुकराय दी ।—फुलवाडी
उ०—४ वोहरा रो खेरो मिट्यो इज नी हो । तद कीकर ऊपरलो पानों आवतो । संपत रा नाव माथै इण राजपूत रै फगत बीस-पचीसे'क गायां, साठे'क बीघा करसणी जमी अर सो-एक काकरियो मगरो हाथै लागो ।—फुलवाडी
२ सपन्नता, समृद्धि, खुशहाली ।
उ०—१ च्यारा पासै धन घणो, बीजळ खिवै अकास । हरियाळी रुत तो भली, घर सपत पिव पास ।—अज्ञात
उ०—२ कूकर लाय जळे नही, जुडै न कायर जग । विदर न ठहरै विपत मे, सपत मे हिज सग ।—बा. दा.
३ ऐक्यता, मेल ।
उ०—आप पधारो तो आपरी इछा, पण इण घर मे सदा सपत बणी रेवै, म्हनै औ वरदान दिरावो । किणी भात घरवाळां री भेळप नी तूटै ।—फुलवाडी
मुहा.—सपत मे लिछमी रो वासो=ऐक्यता मे ही समृद्धि, वैभव का निवास होता है ।
४ प्रेम, स्नेह ।
उ०—पहली राज पधारजे, हूं भाळू कर हेत । वेगाह् वळजो वलहा, सपत लछी सहेत ।
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात
५ वैभव, ऐश्वर्य ।
उ०—१ वधै राज सुख विहद, वधै हित सपत वधायक । अवर वधै दिन इतो, वधै पल पल वरदायक ।—सू प्र.
उ०—२ बरखा रित सुख बोळवी, आवी सरद अनोप । नवकोटी नैपत निपट, ओपत सपत ओप ।—रा रू
६ लाभ, फायदा ।
सपतणो, सपतवो-क्रि अ. [सपदनम्] १ पहुँचना ।
२ उत्पन्न होना ।
३ सम्पन्न होना, सफलीभूत होना ।
सपतणहार, हारो (हारी), संपतणियो—वि० ।
संपतिओडो सपतियोडो, संपत्योडो—भू० का० कृ० ।
सपतीजणो, संपतीजवो—भाव वा० ।
सपत्तणो, सपत्तबो—रू० भे० ।
सपति, सपती-स स्त्री. [स सपत्ति] १ धन, दौलत ।
(अ मा; डिं. को, ना. मा, ह. ना. मा;)
उ०—१ अदतारा घर आय, जे क्रोडां संपति जुडै । मौज देण मन माय, रती न सूझै 'राजिया' ।—किरपाराम
उ०—२ आवैस धकै अमास, उडि जाय गढ असि हास । लूटत सपति लाख, सरदाण ह्वै घण साख ।—सू प्र.
उ०—३ घर घरणी पहती घरबारि, चिंता पडिउ सूथल थाइ । ईंधण तउणि तणीअ सपति, कारणि भमइ दीह् नइ राति ।
—वस्तिग
२ वैभव, ऐश्वर्य ।
उ०—१ वड विना क्रामति न को वीरति, विड हुई मत जाय मै इण भति घरी हिम्मति, पळो पर खिति रह्यो नर—
?. रू.

उ०—२ आसोज पूरण जगत आसा भोम अन अति भार ए। सोभतु जतु अनत सुखमय सुखद संपति सार ए।—रा. रू.

३ कोई ऐसी चीज जो महत्त्व की हो और स्वामी के लिए लाभ-दायक हो।

४ खुशहाली, सम्पन्नता।

उ०—१ अस्ट करम मल पक पयोधर, सेवक सुख संपति करण। सुर नर किन्नर कोटि निसेवित, समयसुदर प्रणमति चरण।

—स कु.

उ०—२ राडध्रह महावीर विराजै, भय सगला दूरे भाजै रे। सहु विधि सुख सपति साजै, नित सेवक काज निवाजै रे।

—ध. व. ग्र.

उ०—३ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख सपति, व्यापत नांहि विपत्ती।—मे म

५ लक्ष्मी।

उ०—साफल्य स्वप्न संपति समान, पानी मथन मे घ्रत प्रमान।

—क का.

६ लाभ, सिद्धि।

७ प्रेम, स्नेह।

७ ऐक्यता।

रू. भे —सपत्त, सपत्ति, सपत्ती।

सपतियोडौ-भू का कृ.—१ पहुँचा हुआ. २ उत्पन्न हुवा हुआ ३ सम्पन्न हुवा हुआ, सफलीभूत हुवा हुआ।

(स्त्री सपतियोडी)

सपत्त-वि. [स सप्राप्त] १ समस्त कर्मों को क्षय करके जो सिद्धि को प्राप्त हुआ हो।

२ देखो 'सपति' (रू. भे)

सपत्तणौ, सपत्तबौ—देखो 'सपतणौ, सपतबौ' (रू भे)

उ०—१ कोड प्रवाडा करै, सरग 'अमई' सपत्तो। रायसिंघ तिण पाट, अरक वदै ऊगतो।—मालो आसियो

उ०—२ सभनयरि सपत्तु तत्थ, गुरु वयणु सरेई। गच्छ सिवगु नियपट्ट, सिवरू आयरि याह देई।—ग्यानकलस

उ०—३ किसन तणो साम्हो क्रमै, चढतो वाकिम वीद। नीदवतै नवतै नरा, अणभग रहे अनीद। अभग अणनीद भुजि लाग आवा-हतो, पिसण घड पाडतो पूजवै सपत्तो।—हा झा

सपत्तणहार, हारौ (हारी), सपत्तणियौ—वि०।

सपत्तिओडौ, सपत्तियोडौ, सपत्त्योडौ—भू० का० कृ०।

सपत्तीजणौ, सपत्तीजबौ—भाव वा०।

सपत्ति, सपत्ती—देखो 'सपति' (रू. भे.)

उ०—१ इगुणहत्तरि सागर कोडाकोडि, मोहनी करम लाख नी जोडि। बोधिलाभ नी हुइ सपत्ति, स्रावक तणइ कुलि तउ उतपत्ति।

—वस्तिग

उ०—२ अगनि जहान सरन तकि आवत, चरन कमळ रजसीस चढ़ावत। पावत रिद्धि सिद्धि सपत्ती, गोकरनी जग जयति गात्ती।—मे. म

सपद,सपदा-स स्त्री. [स. सपद्] १ सुगाव। (डि. को.)

२ देखो 'संपत'।

उ०—१ उण दिनां मारग में चोर लुटेरां रो बडो उत्पात हो। धवळै दिन धाडा पडता अर हजारां री सपदा लोगीज जावती।

—रातवासो

उ०—२ बहूली सपद हुंती छांडि नइ रे, पहो लिया कीजइ वीर। स्त्रीजन रे, भोगा भोगवी रे, पछइ व्रत लेज्यो गुणे धीर।

—स. कु

उ०—३ राम नाम नहीं जाणीयो, कीया ग्रोर कलाप। हरीया जे घरि सपदा, होसी मोटा पाप।—अनुभववाणी

उ०—४ नेर धीडो लीधो जिका पूंनारी संपदा लूट, परणाधार नै कीधी लारा लारा फेर। तका नेखीयं ढेर हूवो न कीधी बजाट नाका, 'उदारा' 'पत्रा'री कोट दूसरी पामेर।—बा. दा

सपनणौ, सपनबौ-क्रि. अ. [स. सम्पन्न] १ जन्म लेना, उत्पन्न होना।

उ०—१ चिंतामणि पारस चोर सो, सुरपत सरोवर कामणा। सपजै तास सुत संपनै, ग्रह सुर छाम विरामणा।—रा. रू

उ०—२ मन तेण थियो मारीच मुनि, तणसो कासिप ऊपनो। धर नूर प्रकासी प्रीत धर, सूर तेण घर सपनो।—रा रू

२ प्राप्त होना।

उ०—वस उपरि हो मढ़या केवल न्यान कि, इसा पुत्र नइ ऊपनउ। ससार नउ हो नाटक निरखन कि, सवेग सहू नइ सपनउ।

—स. कु

३ पूर्ण होना, सिद्ध होना।

४ समृद्ध होना समृद्धिवान होना।

५ होना।

६ युक्त होना।

सपनणहार, हारौ (हारी) सपनणियौ—वि०।

सपनणिओडौ, सपनणियोडौ, सपन्योडौ—भू० का० कृ०।

सपनणीजणौ, सपनणीजबौ - भाव वा०, कर्म वा०।

सपन्नणौ, सपन्नबौ—रू० भे०।

सपनियोडौ-भू. का. कृ —१ जन्म लिया हुआ. २ प्राप्त हुवा हुआ, पाया हुआ. ३ पूर्ण हुवा हुआ. ४ युक्त हुवा हुआ. ५ समृद्ध हुवा हुआ, समृद्धिवान हुवा हुआ. ६ हुवा हुआ।

(स्त्री सपनियोडी)

सपन्न, सपन्नउ-वि —समृद्धिशाली, समृद्ध।

२ भरापूरा, परिपूर्ण।

३ पूर्ण, पूरा।

४ युक्त, सहित।

उ०—पहिउलउ वेटउ करमदोसि, वालप्पणि विवनउ। विचित्र-
विरघु बीजउ कुमारु, वहुगुण सपन्नउ।—सालिभद्र सूरि
५ पाया हुआ, प्राप्त।
६ हुवा हुआ।

सपन्नणो, सपन्नबो—देखो 'सपनणो, सपनबो' (रू भे)
सपन्नणहार, हारौ (हारी), सपन्नणियो—वि०।
सपन्निओड़ो, सपन्नियोडो, सपन्न्योड़ो—भू० का० कृ०।
सपन्नीजणो, सपन्नीजबो—भाव वा०।

सपन्नियोडो—देखो 'सपनियोडो' (रू भे)
(स्त्री संपन्नियोडी)

सपन्नो—वि—१ सपन्न होने वाला।
२ उत्पन्न होने वाला।

सपय—क्रि. वि [स. सप्रत्ति] अभी, इस समय।
उ०—जिणकुसल सूरि जिणपउम गुरु, जिणलद्धी जिणचद गुरु।
जिणउदय पट्टि जिणराजवर, सपय सिरि जिणभद्द गुरु।
—अभयतिलक यति

सपरदान—देखो 'सप्रदान' (रू. भे.)

सपरदाय—देखो 'सप्रदाय' (रू भे.)

सपराय—स. पु. [स. सपराय.] १ लडाई, युद्ध। (डि. को)
उ०—सरिता भो वह सपराय जळ सोनित धारै। बूंदी जैपुर तट विलद घट विकट किनारै। फुल्लि कुसेमय ह्लदय फाक छवि अतुळ अपारै। उतपल गन लोचन अनूप हुव विकच हजारै।—व भा.
२ सकट, आपत्ति।
३ भावी दशा।
४ पुत्र।

सपरायक—स पु. [स सपरायक] १ मुठभेड, २ लडाई, सग्राम, जग।
(अ मा, ह ना मा.)

सपहुतणो, सपहुतवो—देखो 'पहुँचणो, पहुँचवो' (रू. भे.)
उ०—सपहुता सज्जण मिल्या, हूता मुझ हीयाह। आजूणइ दिन ऊपरइ, वीजा वळि कियाह।—ढो. मा
सपहुतणहार, हारौ (हारी), सपहुतणियो—वि०।
सपहुतिओड़ो, संपहुतियोडो, सपहुत्योडो—भू० का० कृ०।
सपहुतीजणो, सपहुतीजबो—भाव वा०।

सपहुतियोड़ो—देखो 'पहुँचियोडो' (रू भे)
(स्त्री. सपहुतियोड़ी)

सपलाणो, सपलावो—देखो 'सपडाणो, सपडावो' (रू भे)
उ०—कळा जळा सपलाय, तेल आमळा चढावा। कळा जडै काटिया, कळा वाधिया कलावा।—सू. प्र.
सपलाणहार, हारो (हारी), सपलाणियो—वि०।
सपलायोडो—भू० का० कृ०।
संपलाईजणो, संपलाईजबो—कर्म वा०।

संपळायोडो—देखो 'सपडायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री सपलायोडी)

सपसुज—स पु [स संपसृज] युद्ध। (अ मा)

सपा—स स्त्री [स] बिजली, विद्युत। (अ मा, ना. मा, ह. ना. मा)
उ०—१ जठै स्याम धाराधर री लहर लेती संपा रा मळावा री सोभा चढण लागी।—व भा.
उ०—२ ऊपरी जानि सपा जळद, चुवत स्रोन रग चढ्ढियो। मानहु कुमरि जावक सहित, कर वातायन कढ्ढियो।—ला. रा
रू. भे—सप, सिपा।

सपाक—सं पु [स शम्पाक] भीष्म का गुरुतुल्य स्नेही एक हस्तिनापुर निवासी जीवनमुक्त त्यागी ब्राह्मण।

सपाडणो, संपाडवो—क्रि. स.—स्नान कराना।
सपाडणहार, हारौ (हारी), सपाड़णियो—वि०।
सपाड़िओडो, सपाडियोड़ो सपाड्योडो—भू० का० कृ०।
सपाडीजणो, सपाड़ीजबो—कर्म वा०।
सपाडणो, संपाडवो—रू० भे०।

सपाडियोडो—भू का कृ—स्नान कराया हुआ।
(स्त्री. सपाडियोडी)

सपाडो—स. पु [स सम्प्लावतम्] १ स्नान।
उ०—१ बोली: खबरदार, म्हारै हाथ लगायो तो, पाछो सपाडो करणो पडैला। सिवजी रा मिंदर मे अधराती बोलवा बोल्योडी। मोडो व्है, म्हनै जावण दो।—फुलवाडी
उ०—२ आपनै प्रथीराजजी सू रामराम कहायो। हू सपाडो करू छू, हुई दरवार में आवू छू।—द. दा.
उ०—३ आप सपाडै विराजिया, भीजै गढ री भीत। सोढा हदै देस मैं, पाग लेवण री रीत।—लो गी.
रू. भे.—सपड, सपाडो, सापाडो।

सपाट—स. पु—सहार, नाश।

सपाठ्य—स पु.—चौसठ कलाओ मे से एक।

सपाडणो, सपाडवो—देखो 'सपाडणो, सपाडवो' (रू. भे)
उ०—अम्रत सचारइ, देव पच धात्री वधारइ, यौवनि ज जोइइ त सपाडइ, सहू काज कीधउं जि दिरवाडइ।—व. स.

सपाडियोड़ो—देखो 'सपाडियोडो' (रू भे.)
(स्त्री सपाडियोडी)

संपाडो—देखो 'सपाडो' (रू. भे.)

सपात—स पु [स सम्पातः] १ एक साथ प्रहार, बौछार।
उ०—१ अर सस्त्रा रै सपात जीवा री यात्रा र माया रा व्यापार मडिया।—व भा
उ०—२ जठै दो ही फौजा रै दूजे ही दिवस काळ कोप तोपा री घोर घमसाण राचियो। अर बीच बीच वेडी रा वेहडा वज्रवेग वानैत वीरा रै सस्त्रा रो संपात माचियो।—व. भा

री नारेळ हुवै । सु पछै ही जतना सू राखीजै कोठार माही ।
—नैरगसी

४ गोद, अक ।

उ०—अवर स्त्री नी ओपमा तै, किस्रण ल्यावा साथी । पुत्र सपुट परइ मुक्यउ, चापीयौ वळिमात्र ।—रुकमरिग मगळ

५ औषद पकाने या रस बनाने के समय किसी पात्र को दिया जाने वाला वह रूप जिसका गीली मिट्टी से मुंह बद करके चारो तरफ मिट्टी लपेट देते हैं ।

उ०—भाग त्रगुरग पंकज पर भेळै, मघइ पान छगुरग रस मेळै । पाव भाग धरि लवग प्रमारगौ, आधै भाग अगाअक आरगै । इतरी वसत कनक घट आरगै, सपुट दियै कियै सहनारगै । वाळ जती पतिवरता वैवै, सपत निसा जाग्ररग करि सेवै ।—सू. प्र

६ अजलि ।

७ कपाल, खोपडी ।

८ खड्डा, गर्त ।

९ सन्दूक, पेटी ।

१० उधार पर दिया गया धन ।

रू भे —सपट ।

सपुटी–स. स्त्री [स सपुट] कोई छोटी कटोरी या तश्तरी ।

सपुत्त–वि. [स सम्प्राप्त] सम्प्राप्त, प्राप्त ।

सपूरग–वि. [स. सपूर्ण] १ समस्त, आदि से अन्त तक पूर्ण ।

उ०—१ कुजर ज्यू जै केहरी, तू लेतौ तालीम । कळ मैं रखवाळत कवण, सपूरण वन सीम ।—बा दा.

उ०—२ आसरग गूढ करू पग आमुर ज्याग विधुसै जावै । रिख्या वाट करै जो राघव थाट संपूरण थावै ।—र रू

२ खत्म, समाप्त ।

उ०—१ अेडौ नाच तौ आज पै'ली कदे ई नी देख्यौ । घूघरा री छमछम काना मे इमरत घोळती ही । नाच सपूरग व्हैता ई कवर जारगै नसा मे व्है ज्यू ई बोल्यौ—छौ व्ही कवूडी, म्है तौ इग मू ई व्याव करू ला ।—फुलवाडी

उ०—२ भाई री सीख संपूरण नी व्ही, उग पैला फुफकारा भरती नागरग आई । उगरै लारै टळवळ टळवळ करता अठोत्तर विविया अडथडता आवता हा ।—फुलवाडी

३ पूरा, पूर्ण ।

उ०—१ वा जिरग कांम नै आपरै हार्था भाल्यौ हौ, वौ समाध रै उचलै पगोतियै पुग्या विना सपूरण व्हैतौ ई नी ।—फुलवाडी

उ०—२ आरगद अर सुख सू चानरगी अर सूरज रा उजास मे दोना रा दिन घुळग लागा, जारगै वांरा सुख वास्तै ई चदरमा अर सूरज ऊगै । पग सुख-दुख, हरख-विसाद, अर सजोग-विजोग री अतूट साठौ । अेक दूजा विना कोई सपूरण नी ।—फुलवाडी

४ युक्त, सहित ।

उ०—सेवक को सेवक यह स्वामी, जग सबको है अतरजामी । सोळह कळा सपूरग सकामी, निकट निवास करहुँ घगनामी ।
—ऊ का.

५ व्यतीत, समाप्त ।

उ० – धगी रा अै बोल सुणिया सेठागी धकै कीकर बात चलावती । वात तौ अधूरी ई रैं'गी, पग रात नै तौ सपूरण व्हैणी इज ही । सेठागी वास्तै वा रात भाखर बणगी ।—फुलवाडी

स. पु.—१ विष्णु ।

२ विसर्जन ।

उ० – राज दरवार संपूरण व्हिया खवांसजी पाधरा आपरी गवाडी आया । व्ही जकी वात बादळ नै सगळी बतायदी ।—फुलवाड़ी

३ सात स्वरो का राग विशेष ।

रू भे —समपूरग, सपूरग ।

संपूरित, सपूरिय–वि [स. सपूरित] पूर्ण व भरा हुआ ।

उ०—त्रिलोचना कुमरी तिरगवार, दुख सपूरित हृदय मझार । दुखणी दुख भरि करै विलाप, प्रीय विरहागनि तन सताप ।
—वि. कु

उ०—धनदिहि सइ हथि थापिय, वापी अ वर आरामि । मणि कण धग सपूरिय, पूरिय द्वारका नामि ।—जयसेखर सूरि

सपेखणौ, सपेखवौ–क्रि. स. [स+प्र+ईक्षरग] १ देखना । (डिं को.)

उ०—१ अफल रूख अटकलै, परा उड जायै पखी । सर सूको सपेख, कोई न हुवै तरू कखी ।—ध. व ग्र.

उ०—२ जळै सहर पुर जास, निसा औजास निहारै । साह प्रळै सपेखि, सोच मद मोच सभारै ।—रा रू

उ०—३ बतीस लखग चौसट कळा, आवेरी उत्तम सहज । कूरम सपेखै मुख कमळ, सरद इद पावत लज ।—गु. रू. ब

२ विचारना, सोचना ।

उ०—१ लछीरूप सीता प्रभू रामलीला, कवीपुत्र दाखै नही जेण कीला । अगै वाळमीका जिसा गाय आया, गुणा तास सपेखि अदोख पाया ।—सू. प्र

उ०—२ आगम सपेखै अगद माया विसतारै । पीसोधरि अरि फेरि पूठि, सिल सभा सभारै ।—सू प्र

३ स्वागत करना, अगवानी करना (सम्मान करना) ।

उ०—इग दिस थी राजा 'अजन', सझ आवता सिताब । साम्ही पाय सपेखवा, मिळियौ आय नवाब ।—रा रू.

४ दर्शन करना ।

उ०—पेखियौ साह जोधाणपत, सब जग धगी सपेखियौ । वप आभ परख च्यारू वरण, लाभ नहग पग लेखियौ ।—रा. रू

५ समझना, जानना ।

उ०—१ सहू भीमरा भीच आखाड-सिध्व, मरग प्रब्ब सपेख मगळीक किद्ध ।—गु रू. व.

उ०—२ निरखै मग्राम सिव नच्चियौ, प्रळय जाम सपेखियौ।
वढ पडै तुरंगम नाथ सम, हत्था सात विसेखियौ।—रा. रू.
६ ढूढ़ना, खोजना।
क्रि. अ.—७ दिखाई देना, दिखना।
उ०—ग्राइस्यै जाइ साथि सु चढि चढि ग्राया, तुरी लोग लै ताकि तिम। सिलह माहि गरकाव सपेखी; जोध मुकुर प्रतिबिंब जिम।
—वेलि.

सपेखणहार, हारौ (हारी), सपेखणियौ—वि०।
सपेखिग्रोडो, सपेखियोड़ो, संपेख्योडो—भू० का० कृ०।
सपेखीजणौ, सपेखीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सपेखियोडो—भू का. कृ.—१ देखा हुग्रा. २ विचारा हुग्रा, सोचा हुग्रा. ३ स्वागत किया हुग्रा, सम्मान किया हुग्रा ४ दर्शन किया हुग्रा. ५ समझा हुग्रा. ६ ढूढा हुग्रा, खोजा हुग्रा ७ दिखाई दिया हुग्रा, दिखा हुग्रा।
(स्त्री. सपेखियोडी)

सप्रक्षाल—स पु. [स.] एक ऋषि जो प्रजापति के चरणोदक से उत्पन्न हुग्रा था।

सप्रत, सप्रति, सप्रती—देखो 'साप्रत' (रू. भे)
उ०—१ सिद्धपुरादिक ठिकाणां नेमीस्वर विहारादिक जिन मंदिर संप्रति कराया गजधर, ग्रस्वधर नरधर मडित।—वा. दा. ख्या
उ०—२ पह सेव देव हळचळ प्रवळ, ग्रति मंगळ ग्रमरावती। निस ग्रगनि चरित दीठौ निजर, पडै न भूठौ सप्रती।—रा रू.
उ०—३ सप्रति ए किना किना ए सुहिणो, ग्रायौ कि हूँ ग्रमरावती। जाइ पूछियौ तिणि इमि जपियौ, देव सु ग्रा दुग्रारामती।
—वेलि
उ०—४ कमनीय करै कूकू चौ निज करि, कळक धूम काढै वैकाट। संप्रति कियौ ग्राप मुख स्यामा, नेत्र तिलक हर तिलक निलाट।—वेलि
उ०—५ पयठा हुवइ पांडव ग्राज ग्राभइ, किमइ करी सप्रति सुद्धि लाभइ। तउ तेह नी ग्रोधि ज एह भाजइ, सुखिइ थिका कौरव राज छाजइ।—सालि सूरि
उ०—६ विमसिउ कटक कौरव केरउ, दैव चक्र किम कांइ फेरिउ। नारि सडरि सर संप्रति ग्रावइ, कइ ग्रगास पडता एउ भावइ।—सालि सूरि

संप्रदान—स पु [स. सम्प्रदान] १ दान देने की क्रिया या भाव।
२ उपहार, भेंट।
३ दीक्षा देने के ग्रवसर पर शिष्य को गुरु का मत्र देना।
४ किसी की वस्तु को उसे देना या उसके पास पहुँचाना।
५ व्याकरण मे एक कारक जिसकी विभक्ति 'को' तथा 'के लिए' है।
७ विवाह, शादी।
८ विवाह के पूर्व ग्रदा की जाने वाली एक प्रकार की रस्म।
वि. वि —उक्त रस्म मे वरात का, 'मामेळा', लेते समय वरात मे उपस्थित दुल्हे के पिता, चाचा, नाना ग्रादि के साथ वधु पक्ष के मुख्य व्यक्ति ग्रकमाल के रूप मे मिलते हैं एव मिलने के वाद ग्रपने सामर्थ्य के ग्रनुसार वधु पक्ष वाले वर पक्ष वालों को कुछ नकद देते हैं। इसी क्रिया को सप्रदान या पैमारा कहते हैं।
पुष्करणा ब्राह्मणो मे यह रस्म ग्रदा करने के लिए वधु पक्ष वाले दुल्हे के घर जाकर वर की पूजा करते हैं एव दोनो पक्षो के ननिहाल सहित गोत्रोचारण करने के वाद कन्या-पक्ष की ग्रोर मे शास्त्रोक्त रीति से कन्या का वाकदान सकल्प किया जाता है। इस ग्रवसर पर वर पक्ष के 'दादाणों', 'नानाणे' के मुखियाग्रो को मिलणी देते हैं।
रू भे —सपरदान।

सप्रदा—देखो 'सप्रदाय' (रू भे)
उ०—१ चार सप्रदा ठग चोरा री छार न छाणी रे। ऊमरदान ग्यान विन ऊमर, ग्रत उडाणी रे।—ऊ का
उ०—२ च्यार सप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यू भाभी पाली। महिला नीर भरण नें म्हाली, खारो जळ ऊडो तळ खाली।
—ऊ का.

सप्रदातन—स. [स] एक नरक का नाम।

सप्रदाय—वि. [स. सम्प्रदाय] देन वाला।
स पु.—१ किसी धर्म मे कोई विशिष्ट मत या सिद्धान्त।
२ उक्त प्रकार का मत या सिद्धान्त माननेवालो का वर्ग या समूह।
३ कोई विशिष्ट धार्मिक मत या सिद्धान्त।
४ परिपाटी, प्रथा।
रू. भे —सपरदाय, संप्रदा।

संप्रदायी—वि. [स सम्प्रदायिन्] १ देने वाला।
२ किसी धर्म, सम्प्रदाय का ग्रनुयायी।

संप्रहार—सं पु [सं. सम्प्रहारः] सग्राम, युद्ध। (ग्र. मा; ह. ना मा.)

संप्रापत, संप्राप्त—वि [स. सम्प्राप्त] प्राप्त किया हुग्रा।
उ०—सूरजमल सभ्रम राज सप्रापत, मडत ताखत मड ए। सिघासण वैस छत्र ताणे सिरि, दीपति कन्न (क) मडए।
—गु. रू. बं.

संप्रापति, सप्रापती, संप्राप्ती, सप्राप्ती—स. स्त्री. [स. सप्राप्ति] १ घटना ग्रादि का उपस्थित या घटित होने की क्रिया, भाव या ग्रवस्था।
२ उपस्थित होने की क्रिया।
उ०—१ तितरइ वात कहता वार लागइ। ग्रस्त्री जन सहस चाळीसकउ सघाट ग्राइ सप्राप्ती हुवउ छइ।—ग्र. वचनिका
उ०—२ इसी परि त्या लडता लागता मरता मारतां महा ग्रस्टमी भारथ जुध मातउ थउ, त्या दूसरी ग्रस्टमी ग्राइ संप्राप्ती हुयी।

जत्र-तत्र ग्रिद्ध ममाण करक की वाडि ।—ग्र. वचनिका

३ लगना ।

उ०—तठा उपराति राजान सिलामति रितिराज वसंत वैसाख मामरा मगळाचार विमाहरा सुख विलास करता सरद रित ग्राई छै। ग्रासोज मास ग्राइ सप्रापति हूग्रै छै।—रा सा स

४ उपलब्धि, प्राप्ति ।

सप्रिया–म. स्त्री [स] मगधराज की कन्या व विदूरथ राजा की पत्नी।

सप्रेक्षण–स. पु. [स.] १ ग्रनुसन्धान, खोज ।

२ ग्रन्वेपण ।

३ ग्रवलोकन ।

सप्रेसण–स पु. [स सम्प्रेषण] १ भेजने की क्रिया ।

२ सुरक्षित पहुँचाने की क्रिया ।

३ सेवाच्युत करने की क्रिया ।

सब, सबध–सं पु [स. सम्बन्ध] १ रिश्ता, नाता ।

उ०—१ तिका राणा री सभा मैं जाइ समता रा संबंध रा सूचक पत्र दिया ।—व भा.

उ०—२ परतु जैतो ग्रवही मो मीणा री चाल छोडि रजपूता री राह मैं रहण रो लेख करि सूपै तो यो संबध करण मैं ग्रावै ।
—व. भा

२ घनिष्ठ मित्रता, दोस्ती ।

३ विवाह, व्याह, शादी ।

४ लगाव, सम्पर्क ।

५ सगाई ।

उ०—१ राणौ समान वय रा विवाह रो नरम कीधो सुणि कुमार चूडै वडा प्रमभ रै प्रमाण पिता रो सबध करवाई ग्राप चीतोड री गादी छोडण रो लेख करि मारवाडा रै ग्रधीन कीधो। ग्रर तिको ही माग पिता नू परणाइ तटस्थ भाव धारि ग्रपूरब जस लीधो।
—व. भा

उ०—२ ग्रठी चीतोड रा ग्रधीस राणा लाखा रा पट्टपकुमार चूडा थी पुत्री रो सबध करण रै काज मडोउर रै नरेस राठोड रणमाल ग्रापरा पोळिपात्र भेजिया ।—व. भा.

६ व्याकरण के ग्रनुसार एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का सबध या लगाव सूचित होता है।

७ एक साथ बंधने या जुडने की क्रिया ।

८ विवरण, हवाला ।

रू भे—सनवध, समध, सनवध, सनमद, सनमध, मनमन, सनमुधि. सवध, समध, समघ ।

सबधी–वि.—१ सम्बन्ध रखने वाला, लगाव रखने वाला ।

स. पु—२ रिश्तेदार, नातेदार ।

उ०—१ जिण थी हाडां रा समग्र ही पाच नो सिपाहा तिका नू बाढण काज ग्राप री समस्त सेना पेलीजै तो विस्वभर विवाहिण विवाही विहू सबधियां री वचन निवाहै ।—व. भा

उ०—२ ग्रर ग्रापा रा सगोत्र गोळवाळ जसराज नू समता री सबंधी करण ढूका ।—व. भा.

उ०—३ देवसिंह री इसडी हुकम सुणता ही गवारा जाणियो कहिया जिका दहियादिका रा सबधिया जिम म्हानूं सबधी करण री राजकुमार रा मन मे निस्चय थियो तो म्है तो ग्राज ही सौं मीणा री राह छोडि ग्रधीम रा उपदेस मैं रहणौ ग्रगीकार कीधो ।—व. भा.

३ स्वजातीय बन्धु ।

उ०—साहूकार नें न मारू साहूकार रा वेटा, पोता, मगा, सबधा ने विण न मारू ।—भि द्र.

रू भे.—सनवधी, सनमधी, सामधी ।

सब–सं पु. [स. शम्ब] १ इन्द्र का वज्र । (ग्र मा, ना मा.)

उ०—भुलव ग्रव-खास कै प्रवंव वव की भरै, प्रलव लव थव पै प्रपत्त सव सी परै ।—ऊ का.

२ पाताललोक मे रहनेवाले द्वय राक्षसो मे से एक । चडिका देवी ने इसका वध किया ।

उ०—केवडु राज्य वासुदेव तणउ, जिहा समुद्र विजय प्रमुख दस दसार, परजुनप्रमुख ग्रउठ कोडि कुमार, संब प्रमुख एक सहस्र दुरदात कुमार ।—व. स

३ लोहे की नोक वाला दस्ता ।

रू भे.—सभू ।

४ कमर के चारो ग्रोर पहनी जाने वाली लोह श्रृंखला ।

सबच्छर—देखो 'सवत्सर' (रू. भे)

सबच्छरी—दखो 'सवत्सरी' (रू. भे.)

सवत—देखो 'सवत' (रू. भे) (डि. को)

उ०—१ सतियास वरस संवत सत्रास । महमत मरद ग्रासोज मास ।—वि. स

उ०—२ निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊ, परहर समय भय वुद्धी वर पाऊ । सवत छपनै री केवण मिरलोको, नोकिक लेवण नै साभळज्यो लोको ।—ऊ. का

सबतग्राद–स पु —मार्गशीर्षमास । (डि को.)

सवतसरी—देखो 'मवत्सरी' (रू. भे)

सवर–स पु [स शवर, शंवर] १ युद्ध, सग्राम ।

उ०—मेघाडवर ज्यू मचै, धूग्रा डवर धियाग । रस सवर 'पातल' रचै, खित ग्रविरळ झड़ खाग ।—जैतदान वारहठ

[स शवरम्] २ जल, पानी । (ग्र. मा.)

उ०—पोषा गेंडवर सवर त्रिण थाया । छपनै सूमा सा ग्राडवर ग्राया ।—ऊ का.

३ मेघ, बादल ।

उ०—१ धुरधर घमाढा संवर धर-ढ्रियो । घोरा टवर मैं संवर घर ढूरियो ।—ऊ का.

उ०—२ अवर संवर विण सवर अकुळावै, जळहर वळिया विन जळिग्ग जिय जावै।—ऊ का

४ एक प्रकार की बडी मछली।

५ मच्छी। (अ. मा; डिं को; ह ना. मा)

६ एक राक्षस जिसका शिव ने वध किया।

उ०—करि सारत अम दव्वि, ईख नरपत्ति आडवर। मिर सकर दोडियौ, जाण कोपे रिपु सवर।—रा. रू

७ एक राक्षस जो कृष्ण-पुत्र प्रद्युम्न द्वारा मारा गया था।

८ हिरण्याक्ष का पुत्र, एक दानव।

९ इद्र-बलि युद्ध मे बलि पक्षीय एक असुर।

१० मृग, हिरन।

११ अर्जुन नामक वृक्ष।

१२ एक पर्वत का नाम।

१३ दिवादास, कामदेव आदि का शत्रु, एक दैत्य जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक था तथा इद्र के द्वारा मारा गया था।

[स शबरारि] १४ कामदेव।

उ०—झवा खजरीटा अगा, संवर हतक सराह। जैनवार ज्यारा नयण, मरोम्हा सुथराह।—बा. दा.

१५ पशु चौपाया।

उ०—अवर सवर विण सवर अकुळावै, जळहर वळिया विन जळिया जिय जावै।—ऊ का

१६ एक पर्वत।

१७ देखो 'सावर' (रू भे)

उ०—१ गरदा घर अव्वर गूधळियौ, धमळागिर डूगर बूबुळियौ। कटका विच मीर सिकार करै, म्रिघ नाहर सवर रोझ मरै।

—गु. रू ब

उ०—२ सुअर संवर ससा सीआल. फिरइ आहेडी तीह ना काल। हरिण रोझ जइ दीठउ किमइ, आगलि मरण ति पामइ तिमइ।

—बस्तिग

सवरकंद-स. पु.—एक प्रकार का कद विशेष, गेंठी।

संवरत, सवरत्तक-स पु. [स सवर्त्त, सवर्त्तक] प्रलय। (डिं को)

संवरनास-स. पु. [स. शवरनाश] कामदेव।

उ०—ताळो लागी तिणि समइ, वनि ग्या वेदव्यास। आवाहन करी आणयउ, सहिजइ सवरनास।—मा का. प्र

संवरमाया-स. स्त्री [स. शबरमाया] १ इन्द्रजाल, जादू।

संवरसूदन-स पु [स. शबरसूदन] १ प्रद्युम्न की उपाधी विशेष।

२ कामदेव।

संवरा-स पु. [स. स्वयम्वर] स्वयम्वर।

उ०—सात जनम साथइ सामळिया, श्रीकम ताहरी तरुणी रे। संवरा मडप सुर देखता, सीता ल्याया परणी रे।—रुकमणि मगळ

संवरारि-सं पु यौ [स शबर+अरि] १ कामदेव।

(डिं. को; ह. ना. मा)

उ०—दरपक कदरप काम कुसुमायुध, सवरारि रति पनि तनुमार। समर मनोज अनग पचसर, मनमथ मदन मकरध्वज मार।

—वेलि

२ प्रद्युम्न की उपाधी विशेष।

रू. भे.—समरार।

सवरियौ, सवरी—देखो 'समरी' (रू. भे)

सवळ सवल-स पु [स. सबल] १ यात्रा मे जाते समय रास्ते के लिए साथ मे रखी जाने वाली खाद्यसामग्री।

उ०—१ सवि दिन सरिखा न नीगमीइ, रे हई आम्यू तू जोइ। संबल करि न तू हवइ, पुण्य पाप रे साथिइ होइ।

—नळदवदंती रास

उ०—२ इधन पाणी पकान्न सग्रहिया, खाडिया पोसिया सवळ सिद्ध ताडित —व स.

२ भोजन।

उ०—पथी एक सदेसडउ लग ढोलइ पैहुचवाड। सावज संवळ तोडस्यइ, वेसासणइ न जाइ।—ढो मा.

३ सहारा, आश्रय।

उ०—अलिय विघन सव दूर पुलायइ, दानइ दउलति होइ रे। इह भवि सुजस कीरति वाधइ, पर भवि संबल सोइ।—स. कु.

३ पूर्व की तेज हवा चलने से गेहूँ की फसल मे होने वाला रोग विशेष।

४ सेमल का वृक्ष।

वि —बलवान्, शक्तिशाली।

सवळी-वि.—१ बलवान्, शक्तिशाळी।

उ०—मत्र पेठा वनै मनै सक संवळी, दियै वरस डड ओकण दोय। अण गजियो नह रहियौ ओवी, कोट छत्र तो आगळ कोय।

—राव धूहड रो गीत

२ देखो 'संवळी' (रू भे)

उ०—अठै कतार खोसण नूं दौडिया नै इण असवारा पचीसा ही लै ईस्वर रो नाम संवळी गूद म थे पडै तिम तूट पडीया।

—वरसै तिलोकसी भाटी री वात

संबसादन-स पु [सं] केशरी नामक वानर के द्वारा मारा गया एक दैत्य।

सबाध-स. पु [स] १ बाधा, अडचन

२ भीड, समूह।

३ सघर्ष, झगडा।

४ भग, योनि।

५ कष्ट, पीडा।

६ नरक का मार्ग।

संवारणौ, सवारबो-१ स्मरण करना, याद करना।

२ भजन करना, स्तुति करना।
उ०—पकडनीतत अनीत परहर, एहै गीत उचार। रीत विरिया चीत राघव, सीतावर सवार।—र. ज प्र.
३ देखो 'सवारणौ, सवारबौ' (रू भे)
संबारणहार, हारौ (हारी), संबारणियौ—वि०।
संबारिग्रोडौ संबारियोड़ौ, सवारयोडौ—भू० का० कृ०।
संबारीजणौ, सवारीजबौ—कर्म वा०।
सबारियोडौ—भू का कृ—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ
२ भजन किया हुआ, स्तुति किया हुआ।
३ देखो 'सवारियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री सबारियोडी)
सबाहणौ, संबाहबौ—देखो 'सभाणौ, सभावौ' (रू भे.)
उ०—सू मोनू ऊट भेकिनै उतारै। ज्यू हूँ कपडौ लूगडौ सबाहू काजळ टीकी करू।—कावळै जोइयै नै तीडी खरळ री वात
उ०—२ जिसडै ही रामसिघ जी कुवरजी री कारी दीठी विपरीति तिसडै ही मूरछा आइ पडिया। तिसडै गोवलजी संबाह्या।
—द' वि.
उ०—३ इसडौ विलद संबाहे आजा, मोटौ भाग तूझ महाराजा।
—सू प्र
उ०—४ आगै मरद बैठौ दीठौ। तद कटारी हाथ मे थी सो सभाह भीतर आय हाथ झाल लीयौ। कह्यौ 'तू कुण छै ? सबाहि, म्हारौ चोर छै।'—कुवरसी साखला री वारता
सवाहणहार, हारौ (हारी), सवाहणियौ—वि०।
सवाहिग्रोडौ, सबाहियोडौ, सवाह्योडौ—भू० का० कृ०।
सबाहीजणौ, सबाहीजबौ—भाव वा० कर्म वा०।
सबाहियोडौ—देखो 'सभायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री सबाहियोडी)
सबी—स स्त्री [म. शिवा] फली। (डि को)
सबुक—स पु [स शबुकः] १ घोघा। (डि. को)
२ शख।
३ हाथी के सूड की नोक।
४ हाथी का कुभ।
५ एक तपस्वी जिसकी तपस्या से एक ब्राह्मण पुत्र मर गया था। इसी पाप के कारण श्रीराम ने इसका वध किया था।
६ स्कन्द का एक सैनिक।
७ एक शिवावतार का शिष्य।
८ कश्यप एव दिति के पुत्रो मे से एक पुत्र।
रू भे.—सबूक।
संबुकावरत—स पु [स शबुकावर्त्त] घोघे की भवरी के सदृश घूमा हुआ भगदर रोग का एक रूप।
संबुद्ध—वि [म] १ जागृत २ स पु—चेतन्य।
२ ज्ञानी।
३ गौतम बुद्ध।
४ जिनदेव। (जैन)
सबुद्धि—स स्त्री [स.] १ समझदारी, बुद्धिमता।
२ आह्वान, पुकार।
सबूक—देखो 'सबुक' (रू भे.) (डि को)
सवेसर—स पु [स शवेसरू] नीद, निद्रा, शयन। (डि. को)
संबोध—स पु [सं] १ पूर्ण बोध।
२ सात्वना, ढाढस।
३ पूरी और अच्छी जानकारी।
सबोधन—स पु [स] १ आह्वान करने या पुकारने की क्रिया।
२ ज्ञान कराने या जानकारी देने की क्रिया।
३ समझाने की क्रिया।
४ व्याकरण म एक कारक।
सबोधित—वि [स.] १ जिसको सबोधन किया गया हो।
२ जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो।
३ जिसको बोध कराया गया हो।
सब्बाहणौ, सब्बाहबौ—देखो 'सभाणौ, सभावौ' (रू भे)
उ०—ठहि महीभर कध, भार भनपण सब्बाहै। वेगड वामी वहण, प्रथी प्राझौ पतिस'हे —गु रू. ब
सब्बाहणहार, हारौ (हारी), सब्बाहणियौ—वि०।
सब्बाहिग्रोड़ौ, संब्बाहियोडौ, सब्बाह्योडौ—भू० का० कृ०।
सब्बाहीजणौ, सब्बाहीजबौ—कर्म वा०।
सब्बाहियोडौ—देखो 'सभायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री सब्बाहियोडी)
संभ—स पु [स शभ] १ प्रसन्न एव हसमुख पुरुष।
२ इन्द्र का वज्र।
३ शभासुर नामक एक दैत्य।
उ०—१ कना राम कट्टते रसा रामण सिर छाई, सभ सेन साळुळे कना माथै महामाई।—रा रू.
उ०—२ कंटभ मधु कुभ कवध कचरिया मख संभ सारीसै। खळ अवगाढ अनेका खाया, दाढ पीसतौ दीसै।—र ज. प्र
४ सृष्टि, ससार।
उ०—उतपति कुण लहइ तो ईसर, ए मानविया हुवइ अचभ। आद अनाद तणा तू आछई, संभनाथ नीसरइ संभ।
—महादेव पारवती री वेलि
वि—१ महान, जबरदस्त, प्रचड।
उ०—ऊगती मोसरा दहायक अभावा, सीतवर सियाण्क गात रा सभ। 'मान' रा वाळिया वचन वेडीमणा, खळा रा गाळिया गरब गजखंभ।—बारठ राजूराम
२ देखो 'सभु' (रू भे)

वभकै कारीगा सूकै ग्राम ।—भगतराम हाजा री गीत

उ०—३ मेक मास वाम्द हिंदु तुरकान हुचक्किय । हुनी फरि फिरि हरिल, देख भवलोक भर्चक्किय ।—ला रा

हुचक्कियोडौ—देखो 'हुचकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुचक्कियोडी)

हुचटौ—देखो 'हूचटौ' (रू भे)

हुचणौ, हुचबौ–क्रि स —१ खदेड़ना, ताड़ना, प्रताड़ना, भगा देना ।

२ भुरट नामक घास के पौधों व दानों की पीट कर बीज निकालना ।

हुचणहार, हारौ (हारी), हुचणियौ—वि० ।

हुचिग्रोडौ, हुचियोडौ, हुच्योडौ—भू० का० कृ० ।

हुचीजणौ, हुचीजबौ कर्म वा० ।

हूचणौ, हूचबौ, हुचणौ, हुचबौ, हुच्चणौ, हुच्चबौ—रू० भे० ।

हुचरियौ, हुचरचौ—देखो 'हुचियौ' (रू भे)

उ०—थू पज्या गिरा ग्रट्टारा, कैनो 'ग्री हुचरचौ भ्रटकै । पटकै वीस्यौ, इक्कीस्यै गिरगोर्यौ मूडै लटकै ।—ग्रोळू री ग्रोळखा

हुचियोडौ–भू का कृ —१ खदेड़ा हुग्रा, ताड़ा हुग्रा, प्रताड़ा हुग्रा, भगाया हुग्रा २ बीज निकाला हुग्रा ।

(स्त्री हुचियोडी)

हुचियौ, हुच्यौ–स पु —कुत्ते का छोटा बच्चा ।

रू भे —हुचरियौ, हुचरचौ ।

हुजदार–स पु —१ हाथी का महावत, फीलवान ।

उ०—१ वढै गजराज नि रग चडाय, करै उन्मत्त धनू मद पाय । चढै छलतै हुजदार कजाक, मनौ हनमत चढ्यौ मयनाक ।

—ला रा

उ०—२ भनकित भल्लिय कठनि सोर, मनौ बरखागम-बुल्लिय मोर । चलावत ग्रकुसतै हुजदार, मनौ गिरिकै सिर वज्र प्रहार ।

—ला रा

२ नौकर, ग्रनुचर, कर्मचारी ।

उ०—हुजदारा ग्रापरा वेग ताकीद करावौ । दक्खिण गुजराति दिसा, पेसखाना पधरावौ ।—सू प्र

३ पदाधिकारी, प्रमुख कर्मचारी ।

उ० —१ तरै वीरम रावळै भला माणस हाकम हुजदारा साभळता ग्रा कही—सौ हो ठाकुरै । ऐरा री माणस छै । इरा नू सूपै जाऊ छू ।—कल्याणसिंघ ग्राढेल नगराजोत री बात

उ०—२ पछै रामजी तिरवाडी, भगोतीदास पटणी हुजदार हुता सौ यानू कैद किया, ग्रापरी तरफ रा नव हुजदार खडा किया ।

—बा दा ख्यात

उ०—३ भोपत वासै नागौर रहियौ । सु वासै घोडा सजीनू सहु रावळै लेमी, ग्रर हुजदार बाधिसी, ग्रर काका नू साथि लै ग्रर पातिसाही कन्है जाइमी ।—द वि

उ०— ४ नै देरावर रा हुजदार तिण वखत सामान हुता, तिण भली भगो ओथ नै मारा रा मुहता नु गाढ़ळ सु भिड़ायौ ।

—नैणसी

४ शासन ।

उ० —तरै उमराजी गयौ—उण नां गायी री दोस कोई नहीं । ग्रो तेजसी री दोस । जैसारमा री धणी नाम दुवाली रै मार्नै गायी रा हुजदार थका सगीला नै मत्रु थोडै ? थाडी रात री मत नै ? माग थान घणी ।—रा मालदेव री बात

५ प्रतिनिधि ।

उ०—माणकीरी धीरम एर हुजदार रावळी सेवतै थोड़े रहैसी । तरै कोट पगसी ।—नैणसी

६ सेना में व्यवस्थापक ।

उ० - इम ग्रतार करि 'ग्रर्म' हुकम दीधा हुजदारा । ग्रो वेग तारीह, जग सार्जा ग्रोपारा ।—सू प्र

रू भे— हुज्दारौ ।

हुजदारी–स पु —१ हुजदार होने की ग्रवस्था या भाव ।

२ प्रमुख पद, ग्रोहदा, ग्रधिकार ।

उ०—हुजदारी रूपनाथ नू, सेम दियौ दीवाण । धरपत 'ग्रजन' वधारियौ दीपाड़ण प्रमाण ।—रा रू

३ देखो 'हुजदार' (रू भे)

उ०—कर हुवी हाकम हुजदारी रे, बलि दफतर खान लटारी रे । एतो चारा नै ग्रमीनी रे, हेतधर दरगी कीनी रे ।—जयवाणी

हुजूर–स पु [ग्र] १ बादशाह, सम्राट ।

२ हाकिम, न्यायाधीश ।

३ बादशाह, राजा या हाकिम का दरबार, कचहरी, सभा ।

४ ईश्वर, मालिक ।

५ सेवा, टहल, बदगी, नौकरी ।

६ उपस्थिति, हाजिरी ।

७ मौजूदगी, विद्यमानता ।

८ राज्य, शासन ।

९ बडे लोगो को सम्बोधन करने का एक ग्रादर सूचक शब्द ।

क्रि वि —१ सेवा मे, नौकरी मे, चाकरी मे, हाजिरी मे ।

२ सामने, समक्ष ।

३ दरबार मे, कचहरी मे ।

उ०—उज्जैण नगर महाराज वीर विक्रमादित्य राज करै । उण रै हुजूर एक कळावत ग्राइयी । ती कै साथ एक परम रूपवती स्त्री ग्रर एक पुरुस थौ ।—सिघासण बत्तीसी

रू. भे —हजुर, हजूर, हजूरिय, हजूरियौ, हजूरी, हिजूर ।

हुजूरण–स स्त्री —ग्रन्त पुर की खास दासी ।

उ०—बारै गायण वळै वळै, नव पडदा वेगरा । हाथळ वेरी उभै, उभै दौ जणी हुजूरण ।—रा रू

२ मस्त, मतवाला, मौजी।

उ०—तीरथ जात समस्त सकळ साधा मिळ सगा, रास तमासा रमैं हुळस नाचै हुडदगा।—ऊ का

३ हृष्ट-पुष्ट, मोटा- ताजा।

रू भे—हुटदग, हुरदगी।

हुडदाविगम, हुडदावेगण, हुडदावेगम, हुडदावेगम–स स्त्री [तु उर्दू + वेगम] १ मर्दानी पोशाख एव शस्त्रो से सुसज्जित वह स्त्री जो मुसलमानी वादशाहो के जनानाखानो की रक्षार्थ नियुक्त रहती थी।

२ शैतान या उद्दण्ड स्त्री।

हुडवौ–स पु—घाणी की लाठ को आगे सरकने से रोकने के लिये लगाई जाने वाली लकडी।

हुडियार–स पु [स हुड] नर मेष, भेडा।

हुडियौ—देखो 'हुड' (अल्पा, रू भे)

उ०—कुभौ वाहुडियौ, ताहरा वासै रजपूत हमरण लागा। 'जाणा छा कूभोजी नानाणै जाइ हुडिया रै माथै कटारी भाजसी।' आ कूमैं नू खबर हुई।—नैणसी

हुडी–स स्त्री—१ तेजगति, तीव्रता, दौड।

२ शीघ्रता, जल्दी।

उ०—वावल आता पेख, वालिया हुडी न करसी। वाला होडा होड फेर नी कडिया चडसी।—सक्तिदान कवियौ

३ आक्रमण, हमला।

उ०—तद इणा रै भला भला रजपूत वास हुता, तिकै आगै हुवा, कै पाछै हुवा, कै दोनू बाजुवा हुवा, गरट करनै हुडी कीवी, इणा नु लै नीमरिया।—नैणसी

४ देखो 'हुडी' (रू भे)

हुडौ—देखो 'होडौ' (रू भे)

हुचक—देखो 'हूचक' (रू भे)

हुचकरणौ, हुचकवौ–क्रि स [स उच्चकनम्] १ युद्ध करना, लडाई करना।

उ०—१ जोगणी ऊवकै जत्र हुवकै हराई जत्र, लोथ लचा घुवकै लटकै गजा लोथ। भटकै अकारो मोन वेडीगारो क्रोधा भाय, 'जोधा' हरी हुचकै 'अजा' रो माहा जोध।—पहाडखा आढौ

उ०—२ महांक्रोधगी गनीमा हूत हुचकै नरिंद 'माधौ' भू लोक भूचकै वाधौ चकै कोम भार। वोमगी अरावा झाळ वेताळ वभकै वकै, वाजत्रा 'वहादरेस' हकै तेण वार।—हुकमीचद खिडियौ

२ भिडना, टक्कर लेना।

उ०—रोक रोक तुरी भाण आराण विलोकै रीझै, विभ्र मोक त्रिलोक अवक धोक वाज। वेध वेध सोक झोक तोक वाण सेल खाग, सीसोद गनीमा तणा थोक हुचकै सकाज।

—वद्रीदास खिडियौ

३ वीरगति प्राप्त करना।

हुचकणहार, हारौ (हारी), हुचकणियौ—वि०।

हुचकिओडौ, हुचकियोड़ौ, हुचक्योडौ—भू० का० कृ०।

हुचकीजणौ, हुचकीजवौ—कर्म वा०।

हुचक्कणौ, हुचक्कवौ, हूंचकणौ, हुचकवौ, हूचकणौ, हूचकवौ —रू० भे०।

हुचकाणौ, हुचकावौ–क्रि स ['हुचकणौ' क्रिया का प्रे रू] १ युद्ध कराना, लडाई कराना।

२ भिडाना, टक्कर लिराना।

३ वीरगति प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना।

४ पीटना, मारना।

५ धक्का देना।

६ धमकाना, डराना।

हुचकाणहार, हारौ (हारी), हुचकाणियौ—वि०।

हुचकायोडौ—भू० का० कृ०।

हुचकाईणौ, हुचकाईजवौ—कर्म वा०।

हुचकायोडौ–भू का कृ—१ युद्ध या लडाई कराया हुआ २ भिडाया हुआ, टक्कर लिराया हुआ ३ वीरगति प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया हुआ ४ पीटा हुआ, मारा हुआ. ५ धक्का दिया हुआ. ६ धमकाया हुआ, डराया हुआ।

(स्त्री हुचकायोडी)

हुचकियोडौ–भू का कृ—१ युद्ध या लडाई किया हुआ २ भिडा हुआ, टक्कर लिया हुआ ३ वीरगति प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री हुचकियोडी)

हुचकौ–स पु—१ झटका, धक्का।

२ रोने का भाव, सुवकने की क्रिया।

३ रुक-रुक कर सास आने की क्रिया या भाव।

४ लकडी का एक उपकरण जिस पर पतग की डोर लपेटी जाती है, गिडगिडी।

५ आघात, चोट।

रू भे—हूचकौ।

हुचक्क–स स्त्री—१ चोट, आघात, प्रहार।

उ०—वोही सीस उठक्क हिचक्क उवासक, अथक्क केट हुचक्क उडै। कुकि जीह सकल्लर नारग झल्लर, रत्तर वासग जेम लडै।

—सू प्र

२ धक्का, झटका।

३ युद्ध, लडाई।

हुचक्कणौ, हुचक्कवौ—देखो 'हुचकणौ, हुचकवौ' (रू भे)

उ०—१ झुकै झूल वारणा थरक्कै गजा पीठ झटा। केहरी हुचक्कै जठै ऊवक्कै क्रोवार।—किरपाराम कवियौ

उ०—२ वाघळा हुचक्कै वै कजाका सेन वादी-वदा, तोपा झाळ

बभकै कारीमा सूकै नाम ।—भगतराम हाडा री गीत

उ०—३ मेक माम वारूद हिंदु तुरकान हुचक्किय । हल्लौ करि फिरि हल्लि, देख भवलोक भचक्किय ।—ला रा

हुचक्कियोडौ—देखो 'हुचकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुचक्कियोडी)

हुचटौ—देखो 'हूचटौ' (रू भे)

हुचणौ, हुचबौ—क्रि स.—१ खदेडना, ताडना, प्रताडना, भगा देना ।

२ मुरट नामक घास के पौधो व बालो को पीट कर बीज निकालना ।

हुचणहार, हारौ (हारी), हुचणियौ—वि० ।

हुचिग्रोडौ, हुचियोडौ, हुच्योडौ—भू० का० कृ० ।

हुचीजणौ, हुचीजबौ - कर्म वा० ।

हूचणौ, हूचबौ, हुचणौ, हुचबौ, हुछणौ, हूछबौ—रू० भे० ।

हुचरियौ, हुचरचौ—देखो 'हुचियौ' (रू भे)

उ०—थू पज्या गिण ग्रट्टाग, कैतौ 'ग्रौ हुचरचौ ग्रटकै । पटकै वीस्यौ, इक्कीस्यै खिरगोस्यौ मूडै लटकै ।—ग्रोळू री ग्रोळया

हुचियोडौ-भू का कृ—१ खदेडा हुग्रा, ताडा हुग्रा, प्रताडा हुग्रा, भगाया हुग्रा २ बीज निकाला हुग्रा ।

(स्त्री हुचियोडी)

हुचियौ, हुच्यौ—स पु—कुत्ते का छोटा बच्चा ।

रू भे—हुचरियौ, हुचरचौ ।

हुजदार-स पु—१ हाथी का महावत, फीलवान ।

उ०—१ चढै गजराज नि रग चढाय, करै उन्मत्त घनू मद पाय । चढै छलतै हुजदार कजाक, मनौ हनमत चढ्यौ मयनाक ।

—ला रा

उ०—२ भनकित भल्लिय कठनि गोर, मनौ बरखागम-घुल्लिय मोर । चलावत ग्रकुसतै हुजदार, मनौ गिरिकै सिर वज्र प्रहार ।

—ला रा

२ नौकर, ग्रनुचर, कर्मचारी ।

उ०—हुजदारा ग्रापरा वेग ताकीद करावौ । दखिण गुजराति दिसा, पेसखाना पधरावौ ।—सू प्र

३ पदाधिकारी, प्रमुख कर्मचारी ।

उ०—१ तरै वीरम रावळै भला माणस हाकम हुजदारा साभळता ग्रा कही—सी हो ठाकुरै । ऐण री माणस छै । इण नू सूपै जाऊ छू ।—कल्याणसिंघ बाढेल नगराजोत री वात

उ०—२ पछै रामजी तिरवाडी, भगोतीदास पटणी हुजदार हुता सौ यानू कैद किया, ग्रापरी तरफ रा नव हुजदार खडा किया ।

—वा दा ख्यात

उ०—३ भोपत वासै नागौर रहियौ । सु वासै घोडा खजीनू सहु रावळै लेसी, ग्रर हुजदार बाधिसी, ग्रर काका नू साथि लै ग्रर पातिसाही कन्है आदमी ।—द वि

उ०—४ नै देवराज रा हुजदार तिण वडा मांगणा हुता, तिण भगी गयी जोय नै मारा रा मुहता न ग्रावड न मिळगौ ।

—नैणसी

४ गामत ।

उ०—तरै जगचतर्जी कह्यौ-उण रो रावजी री दोस कोई नहीं । ग्री तेजसी री दोस । जैतारण री धणी नाम दुगाणौ है वास्तै रावजी रा हुजदार ग्रसा नगीना नै मनु गोकै ? याळी रात गी क्यू नै ? मारा वात कही ।—राव मालदेव री वात

५ प्रतिनिधि ।

उ०—मागळीयो वीरम एक हुजदार रावळौ मेडतै मांहे रहेसी । तरै कोट पडसी ।—नैणसी

६ सेना के व्यवस्थापक ।

उ०—उग सलाह करि 'ग्रभै' हुकम दीधा हुजदारां । करो वेग ताकीद, जग साजति जोधारा ।—सू प्र

रू भे—हजदारी ।

हुजदारौ—स पु—१ हुजदार होने की ग्रवस्था या भाव ।

२ प्रमुख पद, ग्रोहदा, ग्रधिकार ।

उ०—हुजदारौ रुघनाथ सू, नेम कियौ दीवाण । धरपत 'ग्रजन' वधारियौ दीघाहग प्रमाण ।—रा रू

३ देखो 'हुजदार' (रू भे)

उ०—कद हुवौ हाकम हुजदारौ रे, बलि दफतर खान नटारौ रे । गनी वाका नै ग्रमीनौ रे, हेनधर दरगौ कीनौ रे ।—जयवाणी

हुजूर-स पु [ग्र] १ बादशाह, सम्राट ।

२ हाकिम, न्यायाधीश ।

३ बादशाह, राजा या हाकिम का दरबार, कचहरी, सभा ।

४ ईश्वर, मालिक ।

५ सेवा, टहल, बदगी, नौकरी ।

६ उपस्थिति, हाजिरी ।

७ मौजूदगी, विद्यमानता ।

८ राज्य, शासन ।

९ बडे लोगो को सम्बोधन करने का एक ग्रादर सूचक शब्द ।

क्रि वि—१ सेवा मे, नौकरी मे, चाकरी मे, हाजिरी मे ।

२ सामने, समक्ष ।

३ दरबार मे, कचहरी मे ।

उ०—उज्जैण नगर महाराज वीर विक्रमादित्य राज करै । उण रै हुजूर एक कळावत ग्राइयौ । ती कै साथ एक परम रूपवती स्त्री ग्रर एक पुरुस थौ ।—सिघासण बत्तीसी

रू भे—हजुर, हजूर, हजूरिय, हजूरियौ, हजूरी, हिजूर ।

हुजूरण-स स्त्री—ग्रन्त पुर की खास दासी ।

उ०—वारै गायण वळै वळै, तव पडदा वेगण । हाथळ चेरी उभै, उभै दौ जणी हुजूरण ।—रा रू

हुजूरी–स स्त्री [अ] १ नौकरी, चाकरी, सेवा, टहल ।
२ किसी बडे आदमी का सामीप्य ।
३ किसी की हाजरी मे रहने की अवस्था या भाव ।
४ खुशामद ।
वि—१ हुजूर मे रहने वाला ।
२ खास सेवा मे रहने वाला ।
रू भे—हजूरी ।

हुजूरीवान–स पु—अर्दली, सेवक, चाकर ।
रू भे—हजूरीवान ।

हुज्जत–स स्त्री [अ] १ तर्क, प्रतिवाद, दलील ।
२ विवाद, वहस, वाद-विवाद, तकरार ।
३ प्रमाण, सबूत ।
४ कलह, झगडा, बखेडा ।
उ०—नफ्स गालिव, किब्र काविज, गुस्स मनी एस्त । हुई दरोग हिर्स हुज्जत, नाम नेकी नेस्त ।—दादूवाणी
५ तू-तू, मैं-मैं ।
६ जिद्द, हठधर्मी ।
रू भे—हूजत ।

हुज्जती–वि [अ] १ हुज्जत करने वाला, ।
२ वहस करने वाला, प्रतिवाद करने वाला ।
३ हर वात मे तकरार करने वाला, झगडालू ।
४ तर्क या दलील देने वाला ।
५ प्रमाण या सवूत पेश करने वाला ।

हुटकारणौ, हुटकारबौ–क्रि स—फटकारना, दुत्कारना ।
उ०—पण मुनीम रोव दिखाळै अर हुटकारै । कँवै—सेठा मू मिळो, म्हानै ठा' नी ।—दसदोख

हुटकारियोडौ–भू का कृ—फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ ।
(स्त्री हुटकारियोडी)

हुटणौ, हुटबौ–क्रि अ—१ रुकना, ठहरना ।
२ दम घुटना, घवराहट होना ।

हुटियोडौ–भू का कृ—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ ।
२ दम घुटा हुआ, घवराया हुआ ।
(स्त्री हुटियोडी)

हुडुहुडाट—देखो 'हडवडाट' (रू भे)
उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी, हुडुहुडाट हुउ हुडकी करी । कलकलइ जिम वारि निधि प्रलइ, किसिउ भूधर कोपि टलटलइ ।
—सालिसूरि

हुडवौ–स पु—गणेश, गजानन । (डि को)

हुडवेस–स पु [स हिडिवा+ईश] पाडुपुत्र भीम ।

हुड–स पु [म] (स्त्री हुडी) १ नर-मेष, मेढा, भेडा । (डि को)
२ ग्रामशूकर ।
३ एक प्रकार का अस्त्र ।
४ लोहे का डडा या गदा ।
५ लोहे का खम्भा या मेख जो चोरो से वचने के काम आती है ।
६ एक प्रकार का हाता ।
७ मूढ, मूर्ख ।
८ दैत्य, राक्षस ।
रू भे—हुड, हुड, हूड ।
अल्पा,—हुडियौ ।

हुडक, हुडकी–स स्त्री—शब्द, आवाज, शोरगुल ।
उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी, हुडुहुडाट हुउ हुडकी करी । कलकलइ जिम वारिनिधि प्रलइ, किसिउ भूधर कोपि टलटलइ ।
—सालिसूरि

हुडक्कणौ, हुडक्कवौ—देखो 'हुडकणौ, हुडक्वौ' (रू भे)

हुडक्कियोडौ—देखो 'हुडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हुडक्कियोडी)

हुडरकौ–स पु—चिंता, फिक्र ।
उ०—भ्रीवीरणी न्हायौ न्ही भ्रीकै मैं जप्यौ न तप (कीया) । कहि केसौ सुवीच्यारि करि हुडरकौ न करि रे हीया ।—वि स सा

हुडियार–स पु—नर-मेष, भेडा ।
उ०—ग्रौर मुसळमान सूअर खावौ । नाजै हुडियार नाजै ऐन खावौ तौ हुडियार कडाहि विचि वाहौ अर राधौ, जै हुडियार हुता सूअर होइ तौ हिंदू मुसळमान रळि खावौ ।—द वि

हुडी–स स्त्री—भेड, मेषी । (डि को)

हुडीजणौ, हुडीजवौ–क्रि अ—भेड का गर्भवती होना ।

हुडीजियोडी–वि स्त्री—गर्भवती । (भेड)

हुडुक, हुडुक्क–स पु [स हुडुक्क] १ एक विशेष प्रकार का ढोल ।
२ किवाडो मे लगी चटखनी ।
३ नशे मे चूर व्यक्ति ।
४ दात्यूह पक्षी ।

हुण–क्रि वि—अव ।
उ०—हुण दिल लागा हिकसा, मैं कू येहा तांति । दादू कम्म खुदाय कै, वैठा दीहै राति ।—दादूवाणी

हुणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)
उ०—१ दूहवण राय घरइ तिणिवार, व्याम भणइ नवि टलइ हुणहार । स्त्रीमालीनी चाडइ मूआ, देवलोकि तै राउत हूआ ।
—का दे प्र
उ०—२ माटी माहै मीटै मिल्या ए, मान महातम खोय । पछा-ताप तै अति करै ए, हुणहार जिम होय ।—घ व ग्र

हुणौ, हुवौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू भे)
उ०—१ हुई अप्रमाण अचाणक हल्ल । कु भी हय सैयद सेख कतल्ल ।—मे म

हुजूरी–स स्त्री [अ] १ नौकरी, चाकरी, सेवा, टहल ।
२ किसी बडे आदमी का सामीप्य ।
३ किसी की हाजरी मे रहने की अवस्था या भाव ।
४ खुशामद ।
वि—१ हुजूर मे रहने वाला ।
२ खास सेवा मे रहने वाला ।
रू भे—हजूरी ।
हुजूरीवान–स पु—अर्दली, सेवक, चाकर ।
रू भे—हजूरीवान ।
हुज्जत–स स्त्री [अ] १ तर्क, प्रतिवाद, दलील ।
२ विवाद, वहस, वाद-विवाद, तकरार ।
३ प्रमाण, सबूत ।
४ कलह, झगडा, वखेडा ।
उ०—नफ्स गालिव, किब्र काविज, गुस्स मनी एम्त । हुई दरोग हिर्स हुज्जत, नाम नेकी नेस्त ।—दादूवाणी
५ तू-तू, मैं-मैं ।
६ जिद्द, हठधर्मी ।
रू भे—हूजत ।
हुज्जती–वि [अ] १ हुज्जत करने वाला, ।
२ वहस करने वाला, प्रतिवाद करने वाला ।
३ हर वात मे तकरार करने वाला, झगडालू ।
४ तर्क या दलील देने वाला ।
५ प्रमाण या सबूत पेश करने वाला ।
हुटकारणौ, हुटकारबौ–क्रि स—फटकारना, दुत्कारना ।
उ०—पण मुनीम रोव दिखाळै अर हुटकारै । कंवै—सेठा सू मिळौ, म्हानै ठा' नी ।—दमदोख
हुटकारियोडौ–भू का कृ—फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ ।
(स्त्री हुटकारियोडी)
हुटणौ, हुटबौ–क्रि अ—१ रुकना, ठहरना ।
२ दम घुटना, घबराहट होना ।
हुटियोडौ–भू का कृ—१ रुका हुआ, ठहरा हुआ ।
२ दम घुटा हुआ, घबराया हुआ ।
(स्त्री हुटियोडी)
हुड्डहुडाट—देखो 'हडवडाट' (रू भे)
उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी, हुड्डहुडाट हुउ हुडकी करी । कलकलइ जिम वारि निधि प्रलइ, किसिउ भूधर कोपि टलटलइ ।
—सालिभूरि
हुडबौ–स पु—गणेश, गजानन । (डिं को)
हुडबेस–स पु [स हिडिंवा+ईश] पाडुपुत्र भीम ।
हुड–स पु [स] (स्त्री हुडी) १ नर-मेष, मेढा, भेडा । (डिं को)
२ ग्रामशूकर ।
३ एक प्रकार का अस्त्र ।
४ लोहे का डडा या गदा ।
५ लोहे का खम्भा या मेख जो चोरो से वचने के काम आती है ।
६ एक प्रकार का हाता ।
७ मूढ, मूर्ख ।
८ दैत्य, राक्षस ।
रू भे—हुड, हुड, हूड ।
अल्पा,—हुडियौ ।
हुडक, हुडकी–स स्त्री—शब्द, आवाज, शोरगुल ।
उ०—दडदडी द्रमकी द्रमक्या अरी, हुडुहुडाट हुउ हुडकी करी । कलकलइ जिम वारिनिधि प्रलइ, किसिउ भूधर कोपि टलटलइ ।
—सालिसूरि
हुडक्कणौ, हुडक्कबौ—देखो 'हुडकणौ, हुडक्बौ' (रू भे)
हुडक्कियोडौ—देखो 'हुडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हुडक्कियोडी)
हुडरकौ–स पु—चिंता, फिक्र ।
उ०—बीवीणी न्हायौ न्ही बीकै मैं जप्यौ न तप (कीया) । कहि केसौ सुवीच्यारि करि हुडरकौ न करि रे हीया ।—वि स सा
हुडियार–स पु—नर-मेष, भेडा ।
उ०—और मुसळमान सूअर खावौ । नाजै हुडियार नाजै ऐन खावौ तौ हुडियार कडाहि विचि वाहौ अर राधौ, जै हुडियार हुता सूअर होइ तौ हिंदू मुसळमान रळि खावौ ।—द वि
हुडी–स स्त्री—भेड, मेषी । (डिं को)
हुडीजणौ, हुडीजबौ–क्रि अ—भेड का गर्भवती होना ।
हुडीजियोडी–वि स्त्री—गर्भवती । (भेड)
हुड्डक, हुडुक्क–स पु [स हुडुक्क] १ एक विशेष प्रकार का ढोल ।
२ किवाडो मे लगी चटखनी ।
३ नशे मे चूर व्यक्ति ।
४ दात्यूह पक्षी ।
हुण–क्रि वि—अव ।
उ०—हुण दिल लागा हिकसा, मैं कू येहा तालि । दादू कम्म खुदाय कै, वैठा दीहै राति ।—दादूवाणी
हुणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)
उ०—१ दूहवण राय धरइ तिणिवार, व्यास भणइ नवि टलइ हुणहार । स्त्रीमालीनी चाडइ मूआ, देवलोकि तै राउत हूआ ।
—का दे प्र
उ०—२ माहौ माहै मीटै मिल्या ए, मान महातम खोय । पछा-ताप तै अति करै ए, हुणहार जिम होय ।—ध व ग्र
हुणौ, हुबौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू भे)
उ०—१ हुई अप्रमाण अचाणक हल्ल । कु भी हय सैयद मेख कतल्ल ।—मे म

उ०—रुहल्या पदचार सवार रया, हथियार छतीम प्रकार हथा,
हुवि रोस कईक चढ्या हवदा, रण कारण जोस वडा रवदा ।
—मे म

२ जोर से बोलना, जोश मे बोलना ।

३ युद्ध करना, लडाई करना ।

उ०—उड रहियो खागा गजर एम, जुधि फहर लक मभि गजर जेम । हुव करै विना धड धूहकार, धू विना करै धड पछट धार ।
—सू प्र

४ आवेश, भरना, जोश करना ।

उ०—हुवै वरि क्रोध गजा थट हत, करै हयवाह कूभाथळ कुत ।
पडै रुहिनाळ तणा परनाळ, खळक्कत जाणिक गैरव खाळ ।
—सू प्र

५ जलना, प्रज्वलित होना ।

उ०—कुण रागै तो विण करगा कार, मान सनार विचार मन ।
अवर धर दीसै आधतर, अव विचै हुवतौ आगगग ।
—प्रथ्वीराज राठौड

६ प्रकाशित होना, जगमगाना ।

७ मारना, वध करना ।

८ भिडना, टक्कर लेना ।

उ०—मोदी 'टीकम' 'पीथळ' माहे, सामि जतन आया खग साहे ।
पूरै व्रत आया पचोळी, हुविया दळा करण खग होळी ।—रा रू

९ कुढना, जलना ।

१० उत्साहित होना ।

हुवणहार, हारौ (हारी), हुवणियौ—वि० ।

हुविओडौ, हुवियोडौ, हुव्योडौ—भू० का० कृ० ।

हुवीजणौ, हुवीजवौ—कर्म वा० ।

हुव्वणौ, हुव्ववौ, हुवणौ, हुववौ—रू० भे० ।

हुवास—देखो 'होवास' (रू भे)

उ०—१ तारीफ जेण री जाग छेकरी वीजरी ताछ मान आचा चीज री चराई वारै मास । अदै वाथ करी छाती छीज री समापी ऐही, हजार हेक री भुरा रीज री हुवास ।—चमनजी गाढौ

उ०—२ समोभ्रम सावळ भौकि हुवास । दियै खग भाटक जीवणदास ।—सू प्र

हुवासि, हुवासी—देखो 'होवास' (रू भे)

उ०—तुरियग जिसा रथ आपताप, मुरधरा खेतरा वळ अमाप ।
राडद्रड अनै माहेव रासि, वह मोल रूप वळवत हुवासि ।
—सू प्र

हुवियोडौ—भू का —१ गुस्सा किया हुआ, क्रोधित २ जोश मे या जोर से बोला हुआ ३ युद्ध या लडाई किया हुआ ४ आवेश या जोश भरा हुआ ५ उत्साहित हुआ हुवा ६ जला हुआ, प्रज्वलित हुवा हुआ ७ प्रकाशित हुवा हुआ, जगमगाया हुआ ८ मारा हुआ, वध किया हुआ ९ भिडा हुआ, टक्कर लिया हुआ १० कुढा हुआ, जला हुआ ।

(स्त्री हुवियोडी)

हुवौहुव, हुवौहूव—देखो 'हूवहू' (रू भे)

हुव्वकणौ, हुव्वकवौ—देखो 'ऊवकणौ, ऊवकवौ' (रू भे)

उ०—पान गदा कै पुट्ठी फटकार फलाया । घाय हुव्वकै रग कै जळ जत चलाया ।—व भा

हुव्वकियोडौ—देखो 'ऊवकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुव्वकियोडी)

हुव्वणौ, हुव्ववौ—देखो 'हुवणौ, हुववौ' (रू भे,)

उ०—मरा मीर मगुर की दुग धारा तडी । ज्यों घ्रत दाग आगि मे हिय पावक हुव्वौ ।—ला रा

हुव्वियोडौ—देखो 'हुवियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुव्वियोडी)

हुमकणौ, हुमकवौ-क्रि स —१ उछलना, कूदना ।

२ पैरो से धक्के लगाना, ठेना मारना ।

३ जोर से दवाना, दवाव डालना ।

हुमकणहार, हारौ (हारी), हुमकणियौ—वि० ।

हुमकिओडौ, हुमकियोडौ, हुमक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हुमकीजणौ, हुमकीजवौ—कर्म वा० ।

हुमगणौ, हुमगवौ—रू० भे० ।

हुमकियोडौ–भू का —१ उछला हुआ, कूदा हुआ २ पैरो से धक्का लगाया हुआ, ठेना मारा हुआ ३ जोर से दवाव डाला हुआ ।

(स्त्री हुमकियोडी)

हुमगणौ, हुमगवौ—देखो 'हुमकणौ, हुमकवौ' (रू भे)

(स्त्री हुमगियोडी)

हुमणी–सर्व —अपनी, हमारी ।

उ०—नत व्याव उमग धरी तन री, वरदायक चीन रखौ मन री ।
त्रिजडा लाय जान हलै तुमणी, हव वावव वात सुणौ हुमणी ।
—पा प्र

हुमस—देखो 'उमस' (रू भे.)

हुमणौ—देखो 'हमणौ' (रू भे)

(स्त्री हुमणी)

हुमा–स स्त्री [फा] एक प्रकार का कल्पित पक्षी, जिसके वारे मे एक किवदती है कि जिस किसी व्यक्ति पर इसकी छाया पड जाय वह वादशाह वन जाता है ।

हुमाऊ, हुमायु, हुमायू–स पु [फा हुमायू] एक मुगल वादशाह जो वावर का पुत्र व अकवर महान का पिता था ।

उ०—राय राणा भू अरिजन साधी, वरतावी निज आण । वरवर वस हुमाऊ नदन, अकवर साहि सुजाण ।—ऐ जै का स

रू भे—हमाऊ, हमायू, हुमायु, हुमायू ।

उ०—वरापुर महसेर वेहू खेत नेतवध, वरावरि लागै सुजम रा वोल । काची वात महा पात मुखा हुती मता काढी, तिसा दीठा विसा कही विहु एकै तोल ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

३ होते हुऐ ।

उ०—समुद्र अजी मार्यादा न लोपइ, सूर्य अजी उदय वेलिइ उदयउ छइ, अजी मेघनी व्रस्टि हुती जोईइ, प्रथ्वी रसातलि नही जाइ ।—व स

हुतोज, हुतौ–क्रि वि —१ 'है' का भूत कालिक, था ।

उ०—१ 'जवौ' सीगरोत, सीगट जगराम, जगराम जवणसीओत । तिण 'जवै' वीदैजी नू नारेळ मेलियौ, वेटी परणाई । सु 'जवौ' मायाधारी ठाकुर हुतौ नै भाया सू वडो वैर । ताहरा राव वीदै नू परणायी ।—नैणसी

उ०—२ सपत पयाळ न सात समद, दसै द्रगपाळ न चद दुडिद । सुमेर न मेन पहरला मोज, हुतोज हुतोज हुतोज हुतोज ।—ह र

उ०—३ सीवळ राणा री चाकरी करतौ । चाकर थकौ नै कायलाणै वसतौ । सु नरवद राणा रा साखळा रै परणीयौ हुतौ । सु सुपीयारी नरसिंघ री वैर तिण री वहन नु नरवद परणीजै ।
—नैणसी

उ०—४ पिता री हुकम सुन चौगुणा पाळियौ, वजाया वरा लै खरा वाजा । हुतौ राजी तरै हेक राजा हुतौ, रीसीयौ साहतौ विनै राजा ।—द दा

हुत्कच–स पु [स] एक दैत्य का नाम ।

हुदहुद–स स्त्री [अ हुद्हुद] भारत व वर्मा मे प्राय सर्वत्र पाई जाने वाली एक कलगीदार चिड़िया ।

हुदावरत–स पु —एक प्रकार का अशुभ घोड़ा । (शा हो)

हुदौ, हुद्दौ—देखो 'हौदौ' (रू भे)

उ०—१ हरीया हसती कै हुदै, निरपत वैठै आय । दूजी दुनिया पग तळै, तैस मैस हुय जाय ।—अनुभववाणी

उ०—२ धाम गाम दे दे केता हुद्दा पर धरिया । चद भट्ट पौत्रवा नै जो पोळपत विल्लादार करिया ।—केहर प्रकास

हुनर–स पु [फा] १ कारीगरी, दस्तकारी, निर्माण-कला, फन ।

उ०—तद कारीगर कह्यौ—अदाता, म्हारौ हुनर अमोलक है, म्हैं उण री मोल नी कूतणी चावू । आप फरमायौ कै म्हारी कारीगरी तौ मूडै वोलै, सौ औ ढोलियौ मतै ई मूडै वोल आप रौ मोल वताय देवैला ।—फुलवाडी

२ विद्या, इल्म ।

उ०—१ उठै एक रोही हती तठै रोही माहे एक सूथार घर वासीदार रहै । सु उडण खटोलणी री हुनर जाणै ।—चौवोली

उ०—२ नाई नरमाई सू जवाव दियौ—धणिया नै राजी राखण सारू हुनर सीखणा पडै ।—फुलवाडी

३ हाथ की सफाई, कौशल ।

४ विशेषता, खूबी, गुण ।

उ०—पैदा कीया घाट घड, आपै आप उपाय । हिकमत हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाय ।—दादूवाणी

५ चालाकी, चतुराई ।

६ युक्ति, सूझ-बूझ ।

रू भे —हुन्नर, हूनर, हून्नर ।

हुनरवध, हुनरमद–वि [फा] १ किसी प्रकार का 'हुनर' जानने वाला, कारीगर, शिल्पी ।

२ चतुर, चालाक ।

रू भे —हुन्नरवव ।

हुन्नर—देखो 'हुनर' (रू भे)

उ०—१ आगमू कै जाणगर सव हुन्नर खवरदार, राजकाजू कै करत्ता इक हुकम कै इकतार ।—र रू

उ०—२ सिरै साह पररेज, रूमपति ग्रहे वहादर । गौहरि पारज ग्रेह, हठी फिरगी वहु हुन्नर ।—सू प्र

हुन्नरवव—देखो 'हुनरमद' (रू भे)

उ०—जिस वखत्त मैं और भी हुन्नरवधु नै सव हुन्नर का तमासा दिखाया ।—सू प्र

हुव–स पु [अ] १ प्रेम, स्नेह, मुहब्बत ।

२ मुसलमान ।

३ शोर, हल्ला ।

उ०—ऐ ती जणियास ऐकटी आई आपाणी, साहौ भुजवळ मामता, किम जैज कराणी । तुरगा चाढी तीजणिया हुव कूक होवाणी, साप्रत वेटी साह री, जगमालह जाणी ।—वी मा

हुवकणौ, हुवकवौ—देखो 'ऊवकणौ, ऊवकवौ' (रू भे)

उ०—ए मरद एकणी वाजी या रा हवा, एक गढ छाडिया पाण आयाण । हीयै राव माल रै ऊपरै हुवक, सवळ सल्या पखौ सिला सुरताण ।—ठाकुर जेतमी री वारता

हुवकियोडौ—देखो 'ऊवकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुवकियोडी)

हुवक्कणौ, हुवक्कवौ—देखो 'ऊवकणौ, ऊवकवौ' (रू भे)

उ०—१ जतन्नै घणै केइ वैसै जिहाजै, अयणगै जनै आइ कुव्वाइ वाजै । घटा टोप मेघा गडडुत गाजै, हुवक्कै तरगा विरगाहु वाजै ।
—घ व ग्र

उ०—२ जोगणी उवक्कै पत्र हुवक्कै हव्वाई जत्र, लोथि छक्कै धुवक्कै लटक्कै गजा लोथ । मुटक्कै अकारौ सेन वैढेगारौ क्रोधा भाय, जोधारौ हुचक्कै अजारौ महाजोध ।—वखतसिंघ रौ गीत

हुवक्कियोडौ—देखो 'ऊवकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुवक्कियोडी)

हुवचळ–स पु —समर, युद्ध ।

हुवणौ, हुववौ–क्रि स [स उभ्] १ क्रोधित होना, गुस्सा करना ।

हुळ, हुल-स पु [स] १ किसी पैने शस्त्र का प्रहार, आघात ।
उ०—गाळ भीमेण तणा दळ साधा, बीजळ हुळ वागळ करि वा। घडभडि झार घरा दिसि राठिया, बैगहर तुंडिया बागह ।
—वैरीसाल दाठा रा वणजा रा गीत
२ एक प्रकार की दुधारी छुरी ।
३ सीसोदिया क्षत्रिय वंश की एक शाखा तथा इस शाखा का व्यक्ति ।
उ०—१ हुल करण कीताउत्त वडी वेढ मैं काम आयौ ।
—बा दा ख्यात
उ०—२ जठै रहियौ रवि कौतक जोय, दिस मग भाट जठै हुल दोय । 'अजावत' साहिबसीव 'अनोप' उभै तरवार लडै भट ओप ।
—सू प्र
रू भे—हुल्ल, हूळ, हूल ।

हुळकी, हुलकी-स स्त्री—मन्द ज्वर, हल्का बुखार ।
वि स्त्री—हलकी, मन्द ।
उ०—पगा लागू, गुरु मा'राज ! ऊभा विराजौ । हुळकी, मीठी, मधरी बोली मैं पेमजी मुरळी दलाल नै कैयौ घर आप मूंढै आवै बैठ्यौ ।—दसदोख

हुलड—देखो 'हुल्लड' (रू भे)
उ०—हळा और भमूळा वर्णे, टोळी हुलड वाज मा । वग्गाळै बे'-रूपिया सा फोग खिपा सिर ताज मा ।—दसदेव

हुलणी—स स्त्री—सीसोदिया क्षत्रिय वंश की 'हुल' शाखा की स्त्री ।
उ०—राव छाडै गौ अनेवर गयौ वीरम हुलणी । तैरौ बेटौ तीडौ ।
—नैणसी

हुळणौ, हुळबौ-क्रि अ [स हुल्] १ उत्पन्न होना, पैदा होना ।
उ०—तै सौ लाख समापिया, रावळ लाखन छड । मागण मीचाणा जिसा, जेथ हुळै जलहड ।—बा दा
२ उमंगित होना, उत्साहित होना ।
उ०—ओळगुवा पण हुळनै गावै छै । न्यावच-मारुगी, टोन-मजरी वाजै छै । इसी ही कठ रो गावणौ छै ।—पलक दरियाव री बात
हुळणहार, हारौ (हारी), हुळणियौ—वि० ।
हुळिओडौ, हुळियोडौ, हुळ्योडौ—भू० का० कृ० ।
हुळीजणौ, हुळीजबौ—भाव वा० ।

हुलणौ, हुलबौ-क्रि अ—छोटे बच्चे का हुलराना ।
उ०—हुल रे नैन्या हुल रे, थू पालणिया मैं झुल रे ।
—अमरचूनडी
हुलणहार, हारौ (हारी), हुलणियौ—वि० ।
हुलिओडौ, हुलियोडौ, हुल्योडौ - भू० का० कृ० ।
हुलीजणौ, हुलीजबौ—भाव वा० ।

हुलवग-स स्त्री—चर्चा, खबर ।
उ०—चौवरचा थारा रपोट कर दी, पचा मुळजमा री परचौ कटा दियौ । [illegible] हुलवग [illegible] । [illegible]

हुळस, हुलस-स पु—[illegible] प्रकार का शीशा ।
उ०—[illegible] । [illegible] हुळस [illegible] ।—मे म

हुलरणौ, हुलरबौ-क्रि स [स उल्लालन] [illegible] ।
उ०—[illegible] ।—म म

हुलराणौ, हुलराबौ-क्रि स [स उल्लालन] १ बच्चों को [illegible] के लिये लोरी गाना ।
उ०—१ [illegible] हुलरावौ [illegible] ।
—नी गी
उ०—२ [illegible] हुलरावौ [illegible] ।
—[illegible]
उ०—३ [illegible] हुलराय । [illegible] ।—[illegible]
२ बच्चों को प्यार करना, स्नेह या ममत्व दिखाना ।
उ०—दीवै सू निज [illegible], [illegible] हुलराई [illegible] । [illegible] अळिजी-मुळी, घो अळियौ [illegible] ।—[illegible]
३ गायन करना, गाना ।
उ०—विधि एनि नचावै [illegible], अविनिस दिन दिन नचि भगन । हुलरावणौ फाग हुलरावै । [illegible] ।
—वेलि
४ बच्चे को पालने में भूला देना, झुलाना, झुलाते हुए लोरी गाना ।
५ झुलाना ।
६ रँगना ।
हुलराणहार, हारौ (हारी), हुलराणियौ—वि० ।
हुलरायोडौ—भू० का० कृ० ।
हुलराईजौ, हुलराईबौ—कर्म वा० ।
हिलराणौ, हिलराबौ, हुलरावणौ, हुलरावबौ, हुल्लराणौ, हुल्लराबौ
—रू० भे० ।

हुलरायोडौ-भू का कृ—१ बच्चे को सुलाने या रिझाने के लिये लोरी गाया हुआ २ बच्चे को प्यार किया हुआ, स्नेह या ममत्व दिखाया हुआ ३ गायन किया हुआ, गाया हुआ. ४ बच्चे को पालने मे भूला दिया हुआ, झुलाया हुआ, झुलाते हुए लोरी गाया हुआ ६ रँगा हुआ ।
(स्त्री हुलरायोडी)

हुलरावणौ, हुलरावबौ—'हुलराणौ, हुलराबौ' (रू भे)

हुमेल—देखो 'हमेल' (रू भे)
हुयोड़ौ–भू का कृ—जो हो चुका हो।
हुरम—देखो 'हरम' (रू भे)
उ०—तठै मुलतान मैं पातसाह पातसाही करै। तैरै एक हुरंम तिका हिंदवाणी, नाम गगा।—देपाळ धध री वात
हुरकणियौ–स पु—वेश्याओं का दलाल।
हुरकणी, हुरकनी–स स्त्री [स हुडुकिनी] हिन्दू वेश्याओं का एक वर्ग या इस वर्ग की वेश्या।
उ०—१ जूनी ख्याता मैं अलाउदीन आयौ ज़द चहुवाण सात त्रिकळस ग्राम वैठो हुरकणियां रौ नाच करायो हौ।
—वा दा ख्यात
उ०—२ दीठा भाव दिखावणा, हुरकणिया रा हाथ। हाथ नही मन किम हिचै, भेळै ग्रस भाराय।—वा दा
हुरकिया–स पु—गाने-बजाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति।
हुरकियौ–स पु—उक्त जाति का व्यक्ति।
हुरखणौ, हुरखबौ—देखो 'हरखणौ, हरखबौ' (रू भे)
उ०—लगै दिल्ली फळसा आठी द्वारका समद लग। दळा मनकारती धरा हुरखी। जोर बर जोय भरतार अगजीत तू, पत कणा तज एक पुरखी।—द्वारकादास दधवाडियौ
हुरखणहार, हारौ (हारी), हुरखणियौ—वि०।
हुरखिओड़ौ, हुरखियोड़ौ, हुरख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हुरखीजणौ, हुरखीजबौ—भाव वा०।
हुरखिओड़ौ—देखो 'हरखियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री हुरखियोडी)
हुरडा–स पु—चौहान क्षत्रियों की एक शाखा।
हुरडाई–स स्त्री—उत्कण्ठा, लालसा।
उ०—पछै कह्यौ—थारा सू मिळण रो कोडायौ हीया री हुरडाई सू म्हैं नींद इत्ती भाय ठिरडीजती आयौ।—फुलवाडी
हुरडी–स स्त्री—टक्कर, धक्का।
उ०—१ पछै क्यू पूछो! जाणै मौत रै स्यार लागी। दोनू ई काना होय हुरडिया देवता फौज नै फिरोळण लागा।—फुलवाडी
उ०—२ छाता माथै कोपरिया री ढिगलिया खिडकली। देखता ई वणावट बोलाजौ। ऐंडी नी व्है कै हुरडी देय रावळा मैं वड जावै।
—फुलवाडी
हुरदगौ—देखो 'हुरदगौ' (रू भे)
उ०—जीव आघौ हुवौ कदै वोली रे, आख मैं फूलो डबक डोलो रे। हुवौ वागो मुगो नै गूगो रे, कदै टवक डील हुरदगौ रे।—जयवाणी
हुरभुज–स पु—एक प्राचीन देश का नाम।
उ०—दीठौ सगळउ दक्षण देस, चतुर नारि तनि चचळ वेस। माळव नेइ काविल, मुकराण, कासमीर, हुरभुज खुरमाण।
—ढो मा

हुरम—देखो 'हरम' (रू भे)
उ०—१ हुरमा हाथिया चढी पछाडी नू खडी थी सो लूट लीवी चलता रहिया।—पदमसिह री वात
उ०—२ हुरम कबीला रिद्ध तर साथै मीर प्रचड। इण त्रासै कर चल्लियौ, आसा खड विखड।—रा रू
हुरमखानौ—देखो 'हरमखानौ' (रू भे)
उ०—फौज हजार असी मू, अरु विच मैं पातसाह आलमगीर है। तथा पछाडी हुरमखाना है।—द दा
हुरमटी–स स्त्री—गाय की छोटी वछिया।
हुरमत, हुरमति–स स्त्री [अ हुर्मत] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा।
उ०—विदग री हुरमत वाधारण, वेळा चढियौ ममद वरै। दुआ 'उम्मेद' तूझ विन दूजौ, कवियण नै कुण वथव करै।
—मानजी लाळस
२ ईमान, धर्म।
३ सतीत्व, इस्मत।
४ धार्मिक दृष्टि से किसी वस्तु के खान-पान या किसी कार्य की मनाही, निषेध, परहेज।
५ स्त्री, पत्नी।
उ०—१ मूमना विसेस समझदार नही छै, तिणसू आ वादसाह अगतमायची नू देवी। तिण रै तीन सौ साठ हुरमत छै, पण मोटी मगी छै।—जलाल वूवना री वात
उ०—२ जुरा पहुती जाण्य, माण घर छाडि पधारचौ। ताण तज्जौ तिणवार हेत हुरमती मह हारचौ।—देवौजी
हुररा, हुर्रै–स स्त्री [अ हुर्रा] १ एक प्रकार की हर्ष ध्वनि।
२ वेइज्जती, हसी।
हुरळ–स स्त्री—किसी पैनी वस्तु या शस्त्र द्वारा किया जाने वाला प्रहार या आघात।
उ०—हुरळा खहका ओझडी, झत्रक्का फट्ट। वीर वीरवर सूर धीर, रय चौरग चट्ट।—द दा
हुरळणौ, हुरळबौ–क्रि स—किसी पैनी वस्तु या शस्त्र से प्रहार करना, आघात करना।
हुरळियोड़ौ–भू का कृ—पैनी वस्तु या शस्त्र से प्रहार किया हुआ, आघात किया हुआ।
(स्त्री हुरळियोडी)
हुरहुर, हुरहुल—देखो 'हुलहुल' (रू भे)
हुरट्टर–स. पु—हाथी का अकुश।
हुरमयी–स स्त्री—एक प्रकार का नृत्य।
हुलव–वि—लम्बा-चौडा, विस्तृत।
उ०—हुलव काच तौ देह की माच तौ हदौ हद, साच तौ राग वागा सजीलौ। आज री वार सभ साल धन आच तौ, नाचतौ दीयौ गुलदार नीलौ।—महादान महडू

उ०—रिखराज ब्रह्म संभ सेस मोद भांण रेह, मेर तुरीवग यद दुडव मयक्क। पंड नूत रामचद कष्ण थळी जूह पाएं, तेईसा दीरघ साख चोईसा तिलक्क।—राव बखतसिंघ चुवाण री गीत

सभग्न–सं. पु [स] शिव, महादेव।

वि.—१ खडित, टूटा हुआ।

२ पराजित।

संभजीवत—देखो 'जीवतसंभ' (रू भे)

उ०—झाट नाराजिया व्हतां मेलतो, जोरवर 'बुधा' री वेळ जोपे। संभजीवत हुवो साजि खळ मेफळें, अवळ 'दोळी' कमळ लोह ओपे।—दौलतसिंघ हाडा री गीत

सभड-वि—नगण्य, तुच्छ।

उ०—करै न संका कोय, गाव धणी संभड गिणै। रैत बराबर होय, रोळदट्ट में राजिया।—किरपाराम

संभणौ, सभबौ–क्रि अ.—१ कटिबद्ध या तैयार होना, उद्यत होना।

उ०—१ सू राव सेतसी साथ आवतौ दीठौ तरै ढोल दिरायौ। तरै राव प्रथीराज अखैराज ही संभिया तितरै साथ उणांरी आगै पाछै आवतौ गयौ सू अै वेढ करता गया।—नैणसी

उ०—२ न्हाटता मिनख रा हाथ में नागी तरवार ही। लारौ करता मिनख साव ठाली हाथ हा। रुळियारगी करता हाथोहाथ अपहीजणौ तौ लोग उणनै कूटण संभिया। तद वो नागी तरवार लेय कायर री गळाइ भाग छूटौ।—फुलवाडी

२ छाना, उमडना। (बादल)

उ०—ढळतौ मास असाढ अजूणौ सावण संभियौ। धण रै जीवण लोभ यक्ष री हिवडौ भरियौ।—मेघ

३ सुसज्जित होना।

उ०—धारै ऊहड धाबला, साम तणै छळ सार। तेम्ह साखा सभ मिळै, लाखा गजणहार।—रा. रू.

४ देखो 'सभळणौ, सभळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाणियै इसौ ज्वान कियौ, सो वरस दो २ ताई तो राव गागोजी संभ ही नही सकियौ।—नैणसी

उ०—२ एक सेठा री चोखळा में चारी-तारौ। पीढिया सू घर संभियोड़ौ।—फुलवाडी

संभणहार, हारौ (हारी), संभणियौ—वि०।

सभिओड़ौ, सभियोड़ौ, सम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

संभीजणौ, संभीजबौ—भाव वा०।

संमहणौ, समह्बौ, संमुहणौ, संमुहबौ—रू० भे०।

संभनाथ—देखो 'सम्भूनाथ' (रू भे.)

उ०—उतपति कूण लहइ तो ईसर, ए मानविया हुवइ अचभ। आद अनाद तणउ तू आघइ, सभनाथ नीसरइ सभ।—महादेव पारवती री वेलि

सभम–सं पु—१ सतति, सन्तान।

उ०—तीणइ अवसरि मथुरापुरी, अवतरीउ कसारि। वसुदेव देवकी सभम, निरुपम देव मुरारि।—धनदेव गणि

२ देखो 'सभ्रम' (रू. भे)

संभर–स पु.—१ महादेव, शिव।

उ०—'इंदो' इद्र जिही पण आदर, सुर सुर धरम रहावण संभर।—रा. रू.

२ देखो 'साभर' (रू. भे)

उ०—१ आगेही वडे महाराज 'अजमाल' मे संभर के खेत हमारे बिरादर हसनखा गिरदगा हुसैनखा ने जग कर सच्चे दिल से सिर दिया।—सू. प्र.

उ०—२ आमथानोत किया वळ असमर, धर 'धूहड' करतै धक-चाळ। पोहे जैसाण मोतगर पहली, स्मै पेस कस सभर साळ।—राव धूहड री गीत

३ देखो 'सामरियौ' (रू भे)

उ०—पत्र पढता ही हड्डाधिराज रै पंचम अनुज सुहकमसिंह आपरा अधीस अग्रज रा आदेस रै अनुसार भावी रा भरोसा में भ्रम देखि प्राची रा पति सुजासाह नू तनि आपरै देस आइ अनुगत भाव दिखाइ सभर सिरोमणि सत्रु साल रै पगा में प्रणाम कीधो।—वं. भा.

सभरण–सं. पु.—पालन-पोषण।

२ सचय, परिग्रह।

३ तैयारी।

४ सामान।

संभरणौ, सभरबौ–क्रि. स—१ देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू भे)

उ०—१ स्रीहर परहर अवरनू, मत सभरे अयाण। तरु छडे लागी लता, पत्थर चै गळ जांण।—ह र.

उ०—२ सखिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिठा तोई। खिण खिण अतर सभरइ, नही विसारइ सोइ।—ढो मा.

उ०—३ कूभड़िया करळव कियउ, धरि पाछिलै वणेहि। सूती साजण सभरया द्रह भरिया नयणेहि।—ढो मा.

२ देखो सामळणौ, साभळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ श्री 'गोगो' लछुसर उतरियौ, स्रवणै सत्र नेडौय संभरियौ।—गो. रू.

उ०—३ राठौड विचारै ता परम, आप आप मत उच्चरै। 'सोनग' 'दुरग' अणमक सो, सक न काई सभरै—रा रू

सभरणहार, हारौ (हारी) संभरणियौ—वि०।

संभरिओड़ौ, संभरियोड़ौ, संभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सभरीजणौ, संभरीजबौ—कर्म वा०।

संभरथळ–सं. पु.—वह स्थान जहाँ विश्नोई सम्प्रदाय का प्रवर्त्तन जाभोजी द्वारा किया गया था।

उ०—संभरथळ रळि आवणौ, जित देव तणौ दीवाण। परगटियै

उ०—१ चन्नरण रा पालरणा में हुलरावती वेळा वा खरखरा सुर में कोड मू गावती-जसौदा हरि पालनै झुलावै ।—फुलवाडी

उ०—२ घरि घरि वसत राग हुलरावीजै छै । कामदेव री दुहाई देता फिरै छै। पचम राग गाईजै छै ।—रा सा म

उ०—३ सजन चल्या हे सखी हु दीना पूठ । हीया ऊपर हुलरावती कदै न कहती ऊठ ।—टी मा

उ०—४ काचवियै री जात कुजात, बाई जी म्हारा श्रो, काछवियै री जात कुजात। काछवियौ जूवा ज्यू हुलरावै, हुलरावै जी म्हा रा राज ।—लो गी

उ०—५ वधू वध्या ध्यावै हुलर हुलरावै हरखती। ग्रई 'इदू' ग्रवा जयति जगदबा भगवती ।—मे म

उ०—६ सोभागी सहु नइ तू वाल्हउ, हरखइमा हुलरावइ रे रिखभदेव तगा मन रगइ, समयसुदर गुरण गावइ रे ।—स कु

हुलरावरणहार, हारौ (हारी), हुलरावरिणयौ—वि० ।

हुलराविग्रोडौ, हुलरावियोडौ, हुलराय्योडौ—भू० का० कृ० ।

हुलरावीजरणौ, हुलरावीजवौ—कर्म वा० ।

हुलरावियोडौ—देखो 'हुलरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हुलरावियोडी)

हुलस—देखो 'हुलास' (रू भे)

उ०—पान तरणी ए महिमा जाणौ, तिणथी सूत्र लिखाणौ जी । उत्तम मन में हुलस ज आणौ, सका मूल न जाणौ जी ।—जयवाणी

हुळसरण, हुलसरण—स स्त्री [स उल्लास] हुलसने, प्रसन्न होने, उमगित या उत्साहित होने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ सयरण हुलसरण दुयरण सकुचरण । ग्रहरण मोखरण धरण मुरगरण । जपरण कविजरण सुजस जरणजरण, जैत गम ग्रगज ।
—र ज प्र

उ०—२ उरथरण हुळसरण हरख मन, रीझरण खीजरण रूप । लाज मुरगा लोयरणा, राजै ग्ररा ग्रनूप ।—ग्रग्यात

हुळसरणौ, हुळसवौ, हुलसरणौ, हुलसवौ—क्रि ग्र [स उत्लसनम्] १ हर्षित होना, प्रसन्न होना, आनन्दित होना, आल्हादित होना ।

उ०— मिलावै यू वाळा दिन रैंरण, हुलसता हिवडा नेह लगाय । भला कद होसी कह परभात, कळपती चकवी रै चित माय ।
—सा झ

२ उमगित होना, उत्साहित होना ।

उ०—१ वीर पतनी फौज देख नै पती नै कह रही है—हे पती ग्राप जुद्ध सारू झूटौ ही हाकौ सुण नै हुलसता हा सौ हे पती ग्राज हुईज वधाई पार हू तथा वधाईदार रै झूटै हाकै ही जुद्ध मारू हुळसता राजी होवता हा तौ ऊठौ ग्राज सिव महादेव साचौ कर दियौ है ।—वी स टी

३ उमड पडना, उमड कर ग्राना ।

उ०—१ वनी रौ जिरण दिमडी में देस, उरणी दिस हिवडौ हुलस्यौ जाय । फिरै वा ग्रारूया में वै रूख । ग्रचपळी ग्रोळू कर रह जाय ।
—सा झ

उ०—२ परण दीवारणजी रै ग्राया पैं'ली मूटौ उघाड्या जै ग्राखौ मानखौ ग्रडवड नै माथै हुलस गियौ तौ पछै किरणी रै बस री वात नी रैवैला ।—फुलवाडी

४ उत्कण्ठित होना, लालायित होना, उत्सुक होना ।

उ०—१ पूत तौ ग्रसक फौज में जुद्ध कर मररण नै जावै छै नै वहू वळरण (मतकररण) सारू हुळस रही छै ।—वी स टी

उ०—२ वहु वळैवा हुळसै, पूत मरैवा जाय ।—वी स

५ चमकना, दीप्तिमान होना, जगमगाना ।

६ मडराना, फैलना ।

उ०—वीद-वीदरणी रा रगमैल में एक नवौ ई ग्राभौ हुलसग्यौ हौ । नवाई तारा ग्रर नवौई चाद । कुदरत रा जुगा जूना ग्राभा सू ग्रो ग्राभौ इदक सुहावरणौ हौ ।—फुलवाडी

७ झुकना ।

उ०—नानी-मा रूख री वडचोडी डाळ ज्यू उरणरै माथै हुळसी दौ तीन वळा वादळ रौ नाव लेय जोर सू वतळायौ ।—फुलवाडी

८ उतावला होना, ग्राकुल होना ।

९ प्रवृत्त होना, झुकना ।

उ०—दीवारणजी री ग्रकल ग्रर वाग रुतवा माथै ग्रणू तौ भरोसौ हौ जकौ एक छिरण में लोप व्हैगौ । ग्रवै किरण रौ भरोसौ । निरास सामापत्तिया रौ मन भगवान माथै हुळसियौ । ठौड ठौड मिदरा री नीवा दिरीजरण लागी । जूना मिदरा में ग्रग्टपौ र पूजा होवरण लागी ।—फुलवाडी

१० टूट पडना, झपटना ।

उ०—केहर टळ जावै कठै, तन सू ग्रोलौ ताक । हाकै मामौ हुलसरणौ, है सूवर हुसनाक ।—ऊ का

हुळसरणहार, हारौ (हारी), हुळसरिणयौ— वि० ।

हुळसिग्रोडौ, हुळसियोडौ, हुळस्योडौ —भू० का० कृ० ।

हुळसीजरणौ, हुळसीजवौ—भाव वा० ।

हुळसाणौ, हुळसावौ —रू० भे० ।

हुळसाणौ, हुळसावौ, हुलसाणौ, हुलसावौ—क्रि स ['हुळसणौ' क्रि का प्रे रू] १ प्रसन्न करना, आनन्दित करना, हर्षित करना, आल्हादित करना । २ उमडाना, उमडा कर लाना ।

३ उत्कण्ठित करना, उत्कण्ठा, लालसा व उत्सुकता जाग्रत करना ।

४ चमकाना, दीतिमान करना ।

५ झुकाना ।

६ उत्साहित करना, उमगित करना ।

उ०—मै मद भागरण करम ग्रभागिरण, कीरत कैसे गाऊ ए माय । विरह-पिंजर की वाड सखी री, उठ कर जी हुलसाऊ ए माय ।
—मीरा

७ देखो 'हुळसाणो, हुळसबो' (रू भे)

उ०—१ एक सहेलीजी मिणाजी सू बीछडी, जोशा जिण राज-कुंवार। हिय हुळसाणो जी मिणाजी सू ऊभरै ।—मी ग

उ०—२ पैसा दुण रै खरच रा दीजै मन हुलसाय तीगु गरगी आप यह रूकमत हो घर जाय ।—मारवाड रा अमराबा री वारता

उ०—३ हुदा मभि चउ चढै हुलसाय, धण रस मृगळ पीन आघाय ।—सू प्र

हुळसाणहार, हारो (हारी), हुळसाणियो—वि० ।

हुळसायोडो—भू० का० कृ० ।

हुळसाईजणो, हुळसाईजबो—कर्म वा० ।

हुळसायोडो-भू का कृ —१ प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित व आह्लादित किया हुआ २ उत्साहित व उमगित किया हुआ ३ उमडाया हुआ ४ उत्कण्ठा, लालसा व उत्सुकता जाग्रत किया हुआ ५ चमकाया हुआ, दीप्तिमान किया हुआ ६ झुकाया हुआ ७ देखो 'हुळसियोडो' (रू भे)
(स्त्री हुळसायोडी)

हुळसियोडो-भू का कृ —१ हर्षित, प्रसन्न, आनन्दित व आह्लादित हुवा हुआ २ उमगित व उत्साहित हुवा हुआ ३ उमडा हुआ, उमड कर आया हुआ ४ उत्कण्ठित व लालायित हुवा हुआ चमका हुआ, दीप्तिमान हुवा हुआ ६ झुका हुआ ७ मडराया हुआ, फैलाया हुआ ८ उतावला हुवा हुआ, आकुल हुवा हुआ ९ प्रवृत्त हुवा हुआ, झुका हुआ १० टूट पडा हुआ, झपटा हुआ ।
(स्त्री हुळसियोडी)

हुळहुळ-स पु —१ एक छोटा बरसाती पौधा जिसकी पत्तियो का रस कान के दर्द मे लाभकारी होता है ।
२ देखो 'सुळसुळ' (रू भे)
रू भे —हुरहुर, हुरहुल ।

हुलाउ-स पु —शोर गुल, कोलाहल ।
उ०—किलवा सग्रामि विवनउ करग्र, थरहरिय मत्रै मरग्राटि थन्न । हइ कपि देस हूग्रउ हुलाउ, राठउड विवन्नउ कग्न राउ ।
—रा ज सी

हुलास-स पु [स उल्लास] १ हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द, आल्हाद ।
उ०—१ हुकम हुवौ तन सुख हुवा, हुवा नगारा सद्द कूच । हुवौ जैपुर दिसा, हुवौ हुलास विहद्द ।—रा रू
उ०—२ इसी जवाण उच्चरै, किलोळ कोकिला करै । प्रफुल्ल प्रकासय, हसत कै हुलासय ।—सू प्र
उ०—३ सादूळो वन सचरै, करण गयदा नाम । प्रवळ सोच भमरा पडै, हसा हुवै हुलास ।—बा दा
उ०—४ नैण निहारो म्हानै नेह सू हो । हाजी म्हारा हिवडा मैं भरोनी हुलास ।—गी रा
२ उत्साह, उमग ।
उ०—[illegible] हुलास । —रा रू
३ उत्कण्ठा, लालसा ।
४ रोमांच ।
५ प्रकाश, आभा, दीप्ति ।
६ एक प्रकार [illegible] गुण-दोष [illegible] गुण-दोष [illegible] है । इस के चार भेद माने गये है ।
७ किसी [illegible] आग, [illegible] या प्रकाश ।
८ एक छन्द जो चौपाई और त्रिभंगी के मेल से बनता है ।
रू भे —हुलास, हुल्लास ।

हुलासी-वि [स उल्लसित] १ प्रसन्नचित्त, आनन्दित, हर्षित, मुदित-मन ।
२ कान्तिमान, दीप्तिमान तेजस्वी ।
३ चमकदार, दमकदार ।
४ उत्साहित, उमगित ।
५ उत्कण्ठित, लालायित ।

हुळियार-स पु —होळी के अवसर पर रग खेलने वाला, होली खेलने वाला ।
उ०—[illegible] हुळियार [illegible] । [illegible] हुळियार [illegible] ।
—वि स

हुळियोडो-भू का कृ —१ उत्पन्न या पैदा हुवा हुआ २ उमगित उत्साहित ३ हुलसाया हुआ ।
(स्त्री हुळियोडी)

हुलियौ—देखो 'हूलियौ' (रू भे)

हुरल—देखो 'हूल' (रू भे.)

हुल्लड-स पु [स हुल हुल] १ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल ।
२ उपद्रव, दगा । ३ विद्रोह ।
४ हलचल ।
क्रि प्र —करणो, कराणो, मचणो, होणो ।
रू भे —हुलड ।

हुल्लराणो, हुल्लरावौ—देखो 'हुलराणो, हुलरावौ' (रू भे)
उ०—अराहे सराहे धणू अप्सनोकै, रची नाग लोका तणी राज लोकै । इसी भागणी कोण जो कूख जायो, हिंडोरो धनायो घरै हुल्लरायो ।—नागदमण

हुल्लरायोडो—देखो 'हुलरायोडो' (रू भे)
(स्त्री हुल्लरायोडी)

हुल्लास—देखो 'हुलास' (रू भे)

हुवणो, हुवबो—देखो 'होणो, होबो' (रू भे)
उ०—१ पान सुजस अखियात पयपै, दातव असमर वात दुवै । जग मैं राम तुहालै जोडै, हुवौ न कोइ फेर हुवै ।—र रू
उ०—२ फरण इक राह पतसाह खसियो फितो, अधी जोगणपुरी

दाखवै पाण । धरम खट वरन री जितौ हुवतौ वरा, करण सुव राहतौ माहि केवाण ।—द दा

उ०—३ दळा गहमह कीध उवर, चौमरा मिर हुवा चम्मर गाजता गजमेघ गाजा, वाजता मगळीक वाजा ।—सू प्र ।

हुवणहार—देखो 'होण हार' (रू भे)

उ०—वीजौ पण हुवणहार लार मारवाड री थी, वखतसिंघजी री ओडी कोई ठावौ सरदार काम आइयौ ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

हुवणौ—देखो 'होणौ' ।

हुवर—देखो 'हूर' (रू भे)

हुवा–वि—१ बस, काफी ।

२ अलभ्य, दुर्लभ्य ।

३ समाप्त, खतम ।

४ पर्याप्त ।

६ अधिक, बहुत ।

रू भे—हुआ ।

हुवारियौ–स पु—१ आवाज देने की क्रिया या भाव ।

२ लम्बी आवाज ।

वि वि.—देखो 'टहुकौ' ।

हुवाल—देखो 'हवाल' (रू भे)

उ०—पछै घडी दोय सू कनमदान कागद लै लिखण वैठी । मौ घणी मोज मनुहार लिखी । वचन लियौ थौ तैरी अरज लिखी । पछै आपरा हुवाल रा दूहा लिखिया ।

—कुवरसी सागला री वारता

हुवाले, हुवालै—देखो 'हवालै' (रू भे)

उ०—नोट अर नगदी कोट री जेव रै हुवालै करचा तया डागळै री पेडया सू हैठै उतरचा ।—दसदोख

हुवालौ—देखो 'हवालौ' (रू भे)

हुवास—देखो 'होवास' (रू भे)

उ०—छिलै छाकिया किया छछोहा छूटा छोगाळा छबीला छैल, आटैल सछोहा जिलै जाकिया अमीर । भातीला सुवासा मढै जोसेल ढाकिया म्वेहा, हुवासा अछैहा चढै हाकिया हमीर ।—र हमीर

हुविए, हुविऐ–क्रि वि—अब, अभी ।

हुवोडौ—देखो 'होयोडौ' (रू भे)

(स्त्री हुवोडी)

हुवौ–स पु—कुए से मोट खाली करते समय बोला जाने वाला शब्द ।

क्रि वि—बस, काफी, पर्याप्त ।

हुसड–वि—१ जो शरीर से मोटा-ताजा हो, प्रचण्ड शरीर वाला, हृष्ट-पुष्ट ।

उ०—बैगड देम रा कै वराम, हालता भाप भरता दुवास । पीडास चाक अरु तन प्रचड, हरटा सा वाज ताजी हुसड ।

—पे रू

२ शक्तिशाली, बलवान ।

उ०—हुसड हुकळै वाघळा प्रचड गज हिंडुळै, वळै दळ वाज त्रवाळ वाजा । गढपती पोकरण लीध लागै गढा, राज रौ ताप 'जस' राज राजा ।—महराजा जसवतसिंहजी री गीत

३ स्वस्थ ।

स पु—घोडा, अश्व ।

उ०—परचड हुसड किया तहि पक्खर, अवर सामा ऊछळता ।

—गु रू व

रू भे.—हुस्तड ।

हुस–अव्यय—किसी अनुचित बात या कार्य के निषेध मे प्रयुक्त होने वाला एक अव्यय जो कभी कभी प्रताडना मे काम आता हैं ।

रू भे—हुस्त ।

हुसन–स पु [अ हुस्न] १ सुन्दरता, खूबसूरती, सौंदर्य ।

उ०—प्यारी तेरै हुसन पर, म्है ही रह्या लवलीन । तुझ विन मैं ऐसा दुखी, जैमैं जळ विन मीन ।—लो गी

२ आभा, कान्ती, नूर, लावण्य ।

३ शोभा, छटा, रौनक ।

४ यौवन का उभार ।

५ सतीत्व ।

६ भलाई, अच्छाई ।

७ उत्तमता श्रेष्ठता ।

वि—१ उत्तम, श्रेष्ठ ।

२ अच्छा भला ।

उ०—पातिसाह मुहमद मुसतफाखान रा उमाराउ हुसन हुसेनखा अलीखान सारीखा गोरी ।—रा सा स

रू भे—हुस्न ।

हुसनाक, हुसनायक–वि—जिसमे हुस्न हो, सौंदर्य हो, खूबसूरत, सुन्दर ।

उ०—१ आलीजा अलवेलिया, हो हसा हुसनाक । मीनोटा रमिया भमर, छैल पियौ मद छाक ।—वा दा

उ०—२ तठा उपराति करि नै भोगिआ भमर लजा छयल हुसनाक । जुवान निजरवाज वाजार माहे ऊभा जोहा खाए छै ।

—रा सा स.

२ कान्तीमान, दीप्तिमान, ओजस्वी ।

३ प्रभावशाली, प्रतिभाशाली ।

उ०—आळौ दोळौ हाय रौ पोलौ । मूघा अर भोळा नै भरमावै है । स्याणा, चतरा अर हुसनाका रौ हीडौ-चाकरी तया गरज करतौ रैवै ।—दसदोख

४ अच्छा, भला ।

५ उत्तम श्रेष्ठ ।

६ साहसी, हिम्मतवर ।

७ गुण, स्वभाव ।

उ०—केहर टळ जावै कठै, तन सूं श्रोनी ताय । हार्यां नामी हुलमणी, है नूवर हुसनाक ।—ऊ का

८ चतुर, होशियार ।

स पु— शाहजादा ।

रू भे —होसनाइक, होसनाक, होसनायक, हौसनाइक, हौसनाक, हौसनायक ।

हुसमद—देखो 'होसमद' (रू भे)

उ०—हूरमा गार्यां अनरै, उछदावेगम दूर । हाजर सिजमत कारणै, मुख नाजर हुसमद ।—रा रू

हुसिम्रार—देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—इण विध 'मानै' अ लियो, गुणनां सगळै साथ । हुसिमारा मेळ् मळा, सो मारी भारथ ।—रा रू

हुसिक-स पु —१ हौसला, होंस ।

उ०—जरासी जारूं मैं हुसिक नहि राखूं जिय जरै । महावेरी मेरी घमड घन घेरी मन मरै ।—ऊ का

२ इच्छा, अभिलाषा, कामना ।

हुसियार—देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—१ नजीव फेरनै सागी लसकर भेळो करायनै आप लडनै वाडी घेरी । हाथाजोडी करी, नै कह्यौ—सको हुसियार हुजो । जिण माहि हुय जेमी जामी तिण नू हू मारीस ।—नैणसी

उ०—२ पीवै पिलावै राम रस, माता है हुसियार । दादू रस पीवै घणा, औरो को उपकार ।—दादूबाणी

हुसियारक-स पु —द्वारपाल, प्रतिहार, दरबान, छड़ीदार ।

(ह ना मा)

हुसियारगी, हुसियारी—देखो 'होसियारी' (रू भे)

उ०—सू इणारै बीच में मालदेजी री तरफ सू जैतसी ऊदावत नै नैसो ऊदावत मला करण आया । नै समचार सारा कीया । तद कूपै नै जैतै बडी हुसियारगी बतायी ।—द दा

हुसियारौ—देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—अला इह जुगि तीजै सोमिरा, होय चाली हुसियारौ । अला इह जुगि चौथै सोमिरा, अब जीवा की वारौ ।—दीन सुदरसी

हुसीयार—देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—१ घर घर लगी लावणी, घर घर घाह पुकार । जनहरीया घर आपणै, रखैलो हुसीयार ।—अनुभववाणी

उ०—२ भला तु आवियो मुझ मन भावीयो, दूत रजपूत मूकी कहायो । हू हिजै माहि हुसीयार हिवै जाह मत, भला मिघल थवी भाजि आयो ।—प च चौ

हुसीयारौ—देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—माहि कहै सुभटा भणी, होज्यो हिवै हुसीयारी रे । मरदानी मरदां तणी, श्रेणी उरां धारी रे ।—र ज. री

हुसैन-स पु [अ.] मोहम्मद साहब के दौहित्र तथा हजरत अली व फातिमा का छोटा पुत्र, जो करबला के युद्ध में मारे गये थे । ये शिया मुसलमानों के पूज्य हैं ।

वि० वि०—मुहम्मद साहब की वफात के पश्चात् उनके चार उत्तराधिकारी अमीर मुआविया खलीफा बने । उस समय किसी खलीफा का उत्तराधिकारी उसका पुत्र नहीं बनता था । खलीफा उसी को बनाया जाता था जिसकी सर्वाधिक पैरवी (धार्मिक मान्यता) होती थी । इसलिये मुहम्मद साहब के दौहित्र इमाम हसन को अमीर मुआविया का उत्तराधिकारी बनाना निश्चित हुआ, लेकिन अमीर मुआविया के पुत्र यजीद ने षड्यन्त्र करके इमाम हसन का कत्ल किया और जोर से खुद का खुद खलीफा बन बैठा । इमाम हसन की हत्या के बाद 'हुसैन' की बैत । मंजूर हो गई, तब यजीद ने हुसैन पर जुल्म करने शुरू कर दिये । कूफा के कुछ नगरवासियों की प्रार्थना पर 'हुसैन' अपने साथी एवं सम्बन्धियों के साथ करबला से कूफा के लिये रवाना हो गया । ७२ व्यक्तियों का यह काफिला जब इराक के गजरिया नामक गाव के निकट फरात नदी के किनारे डेरा डाले हुए था तब यजीद की ८६००० सिपाहियों की सेना ने आकर उन पर हमला कर दिया । 'हुसैन' सत्य के लिये लड़ता हुआ शहीद हो गया और सत्य पर असत्य की जीत हो गई ।

यह घटना ६१ वें हिजरी सवत के प्रथम मास की दस तारीख की है । मुसलमान प्रतिवर्ष इसी तारीख को इस दुखद घटना की याद मोहर्रम के रूप में करते हैं ।

अनुश्रुतियो में, ईसा की चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम उत्तार्द्ध में तैमूरलग के भारत पर आक्रमण के समय से ताजियों का प्रचलन माना जाता है । तैमूर ने करबला में इमाम हुसैन के रौजे पर प्रतिवर्ष जाकर मोहर्रम, पर जाने की मिन्नत मागी थी । लेकिन विस्तृत साम्राज्य व आवागमन के साधन सीमित होने तथा पीछे से राजधानी मे विद्रोह होने की सम्भावना के कारण प्रतिवर्ष जाना सभव नही हो सका । अत तैमूर ने रौजे की हूबहू नकल तैयार करवाई और मिन्नत माग कर उसी दिन नष्ट करवा दिया । सुल्तान तैमूर के अनुकरण मे जनता भी उसे वास्तविक रोजा समझ कर पूजने लगी और यह प्रचलन आज भी जारी है ।

ताजियो का निर्माण भारत, पाकिस्तान, बगलादेश, अफगानिस्तान और ईरान के अतिरिक्त अन्य देशो मे नही होता है ।

हुसैनी-वि —हुसैन का, हुसैन सम्बन्धी ।

स स्त्री —१ मुसलमानो की एक भाषा ।

२ यवन भाषा । (अ मा)

३ एक प्रकार की तलवार ।

हुसैनी-कान्हड़ा-स पु —सब शुद्ध स्वरो मे गाया जाने वाला एक राग ।

हुस्तड—हुसड' (रू भे)
उ०—च्यारू रेढा रा डील ई ऊमर परवांण अणू ता। हुस्तड व्हियोडा हा।—फुलवाडी
हुस्त—देखो 'हुम' (रू भे)
उ०—'मोटर-वाळा भागवाना! सात जीव भूखा है। कुई किरपा करावौ। हुस्त माग जावौ।'—वरसगाठ
हुस्न—देखो 'हुसन' (रू भे)
हुस्यार—देखो 'होसियार' (रू भे)
उ०—अरजन रा साथी उजडण नै त्यार, घर हाळा भगडण नै हुस्यार।—दसदोख
हुस्यारी—देखो 'होसियारी' (रू भे)
उ०—टावरा रा साच आगै वडेरा री हुस्यारी ढोळै वैठ जावै।
—फुलवाडी
हुहव-स पु—एक नरक का नाम।
हुहु, हुहू-स पु—१ देवता। २ एक गवर्व।
३ देखो 'हूहू' (रू भे)
हू-सर्व [स अहम्] मैं, मैंने, मुझे।
उ०—१ वदनारविंद गोविंद वीखियै, आलोचै आपौ आप सू। हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यै, हुअौ, कतारथ पहिलौ हू।—वेलि
उ०—२ ऐला चीत्तौड सहै घर आमी, हू थारा देखिया हरू। जणणी इसौ कहू नह जायौ, कहवै देवी धीज करू।—वारुजी मोदा
उ०—३ कायथ त्याग विचारै काया, केसरिसिंघ राम का जाया। इण विध अरज दई लिख आगै, भाखव हू तिण थी भ्रम भागै।
—रा रू
उ०—४ भारती भगवती एक मागू, चित्त पाडव तणै गुणि लागउ। आपि मू वचन तू रसवाणी, हू करउ जिसि प्राकृतवाणी।
—सालिसूरी
उ०—५ अजमेर आवता पेहली महाव्तखान पातसाह सु मालम कीयौ—जु राजा गजसिंघ म्हारौ माथौ वाढण रै वास्तै नागौर लियौ हुतौ सु हू पाऊ।—नैणसी
अव्यय (विभक्ति चिन्ह] १ से।
उ०—१ हरि हुए वराह हुए हरिणाकम, हू ऊधरी पताळ हू। कहौ तई करुणा मैं केसव, मीख दीव किण तुम्हा मू।—वेलि
उ०—२ उठा हू नागणेच्चा भमण आविया, लाविया सरव रणवास लारै। गती गजराज हसा गवण गामणी, इद्र पर कामणी लवण वारै।—मे म
उ०—३ कहियौ नृप सिघ हू जोडै कर, आयम हसै चौक किण ऊपर।—सू प्र
उ०—४ पनरह दिन हू जागती, प्रीसू प्रेम करत। एक दिवस निद्रा सवळ, सूती जाणि निचत।—ढो मा
२ से, द्वारा, मार्फत।
उ०—तठै आगवौ खाग हूं छाग तोडै, चडी कालिका मातरै स्रोण चोडै।—मे म
३ से, अपेक्षाकृत, तुलना मे।
उ०—आदीता हू ऊजळौ, मारवणी-मुख-ग्रन्न। भीणा कप्पड पहिरणई, जाणि भखड सोवन्न।—ढो मा
४ को।
उ०—चरखा गडि चक्र मगा मचलै, चर हूं थिर थाय पगा न चलै। जड हू करि जगम देत जिका, तन अद्र मतगज रग तिका।
—मे. म
५ के।
उ०—वागरवाळ विचारियउ, ए मति उत्तिम कीव। साल्ह महल हू ढूकडा, ढाढी डेरउ लीघ।—ढो. मा.
६ वर्तमान कालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष एक-वचन का रूप।
उ०—आरभ मैं कियौ जेणि उपायौ, गावण गुण निधि हूं निगुण। किरि कठ चीत्र पूतळी निज करि, चीत्रारै लागी चित्रण।—वेलि
७ स्वीकृति या समर्थन सूचक शब्द, 'हा'।
रू भे—हु।
हूकणी-स स्त्री—१ किसी जानवर की वोली, आवाज।
२ उमग, प्रवल इच्छा।
उ०—उणारा मन मैं इतौ गुमेज व्हियौ कै उणनै हूकणी छूटी। वौ जोर सू भूकियौ।—फुलवाडी
हूकणौ, हूकवौ-क्रि स—१ हुकार भरना, हुकारना।
२ गर्जना, गर्जन करना।
३ सिसकना, रोना।
४ वोलना, आवाज करना। (जानवर)
हूकणहार, हारौ (हारी), हूकणियौ—वि०।
हूकिओडौ, हूकियोडौ, हूक्योडौ—भू० का० कृ०।
हूकीजणौ, हूकीजवौ—कर्म वा०।
हूकर—देखो 'हुकार' (रू भे)
हूकळ- स [स उत्कललनह] १ कोलाहल, शोर-गुल।
उ०—१ हैदळ कळळ पायदळ हूकळ, सीसोदै खडतै सनद। गैहकै हो वीजागढ पतिया, गजै अगजी त्रिकुट गढ।
—महाराणा लाखा री गीत
उ०—२ रोज सिकारां खेलणी, देखै वाग तडाग। हूकळ दळ गज हैवरा, अमरख नरा अथाग।—ग रू
२ गर्जना, हुकार।
उ०—१ ऊठि अढगा वोलणा, कांमणि आगै कत। अै हल्ला ती उपरा, हूकळ कळळ हुवन।—हा भा
उ०—२ अर हूकळ मत ऊछळै, विग्रह वुरी वलाह। जोया पिव ती जावसी, ओयण चिपक इलाह।—रेवतसिंह भाटी
३ घोडो की हिनहिनाहट।

उ०—२ ए पिण वदणा झेलै नहीं, घर में माल विना हूडी सीकारनी आवै नही । अनै साधा नै वदना करै ।—भि द्र

हूडीवाळ—देखो 'हूंडीवाळ' (रू भे)

उ०—ऐ दलाल ऐ खुडदिया, हूडीवाळ वजाज । ऐहिज करै पसारटी, केवळ धन रै काज ।—वा दा

हूडौ–स पु—एक प्रकार की टलिया जो गोल छत्रडीनुमा होती है। यह पशुओ को चारा खिलाने के काम आती है ।

हूणहार—देखो होणहार' (रू भे)

उ०—लाखै घणौ पछतावौ कीयौ, जाणियौ, परमेस्वर आ किसी उपाव की, मोनू किसी कुबुध आई, हूंणहार जोर कौ नही ।

—नैणसी

हूणी—देखो 'होणी' (रू भे)

उ०—झड झड पत्ता झडता हा, ही पतझड री रीतु आई । वै एक एक पडता हा, हूणी री मनस्या आही ।—सकुतला

हूत-अव्य—१ तृतीया विभक्ति चिन्ह, 'से' ।

उ०—१ पाताळ लोक आतप पडै, अडै आभ भाला अणी । जा हूत भिडै 'जैतौ' जठै, तनै लाज सेहातणी ।—मे म

उ०—२ मोर आग मपरम्म, किना वडवाग अकारी । साग हूंत सामद्र, व्याग वरतण उर धारी ।—रा रू

उ०—३ रे अधम ममझ मुख नाम रट, सीत-वर समराथ कौ । कह जीह हूत 'किसना' कवी, निज प्रत जस रघुनाथ कौ ।

—र ज प्र

उ०—४ आजू हीलोहळ खू अटळ, देव धरम वाणारसी । पतसाह हूत चीतोडपत, राण मिळै किम राजसी ।—कम्मो नाई

२ तुलना मे, से ।

उ०—रच्यौ फेर प्रासाद वाहादरा रौ, वनौ भाग भू भाग भाठी धरा रौ । हुवौ ना इसौ थान आन हूणौ, दियै इदरा मदिरा हूत दूणू ।—मे म

३ सहित, समेत, युक्त, से ।

उ०—अरि चारौ जड हूत ऊपाडै, साकुर धौरि हाक सर । ल्हास करै फौजा वट लगर, क्रोध निनाणी हमल कर ।

—लालसिंह राठौड रौ गीत

४ का, के, की ।

उ०—सप्तपुरी सिरताज, कत अपवरग हूत समकारण । उत्तम धाम अजोध्या, ओपै नाम ग्राम पुर ऊपर ।—रा रू

५ द्वारा, मार्फत ।

उ०—पधरावियौ सुभ प्रात, छळ हूत सुरधर छात । दळ कमध साह दवार, अन रहै साम उवार ।—रा रू

६ होना क्रिया ।

रू भे—हुन, हुता, हुत, हुता, हूता, हूत, हूता, हुता ।

हूतउ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—१ आखि हूंतउ काजळ हरइ, केसि वाधी मल धरइ, वोलता मस्तकना केस ऊरद्ध थाइ, दावनी वेटी ॰ ॰ ।—व स

उ०—२ पोलइ हूतउ पोलीउ, राइ हकारिउ तेह । ए मदिर कहि रे किहि-तणा, किमिउं लीइ छइ ग्रेह ।—मा का प्र

हूतळ–क्रि वि—शामिल, साथ ।

उ०—चक्रवत कन्है वरा लख चाळौ, टाणौ तिण न दियै पळ टाळौ । तज साचोर 'पाल' हर तेजल, हिवपति काज रिणमलै हूतळ ।—रा रू

रू भे—हूतळ, हूतल ।

हूता, हूता—देखो 'हूत' (रू भे)

उ०—१ वडै प्रात स्रीमात सजीर वागै, जरा गात जभात जमात जागै । सुणीजै अलकार झकार छूता, हुवै नीद विक्षेप ताकीद हूता ।

—मे म

उ०—२ पूगळ हूता पुहकरड, ढाढी कीध प्रयाण । माळवणी का मागसा, आए मिळवा अजाण ।—ढो मा

उ०—३ धग्णी धर गिरधार वनौ, स्रीवर धू धारण । हाथी ग्रह निज हाथ, तोय हूता झट तारण ।—मीरा

उ०—४ जिण राणी चवदै सुत जाए, सौ पित हूता तेज सवाए । दक्खिण नीध जीपि मग दावै, कपाळिया भड तिकै कहावै ।

—सू प्र

उ०—५ सखि सखि सखीजण गुणजण स्यामा, मनसि विचारि ए कही महनि । कुसमथळी हूंता कुदणपुरि, किमन पधारचा लोक कहनि ।—वेलि

हूति, हूती-अव्यय—१ से ।

उ०—१ हमै दीध आसीस आणद हूती । अखै भाग सोभाग हौ पुत्रवती ।—सू प्र

उ०—२ अम्रत हूती किसिउ कालकूटच्छटा उच्छलइ, चद्रमडल हूता किसिउ अग्निस्फुलिंग उल्ललइ, ।—व स

२ की ।

उ०—नेमालीया तै देखी मूरख मूरख चट्ट कहनि । तिम निम तै मनि दूहवीड अतराय फल हूति ।—हीराणद सूरि

३ थी ।

उ०—१ सखिए साहिब आविया, जाहकी हूती चाड । हियडउ हेमागिर भयउ, तन-पजरै न माइ ।—ढो मा

उ०—२ हिमानी सखा साहरै एक हूती । अणहूत सौ उद्धरी भागवती ।—सू प्र

रू भे—हती, हनी, हुती, हूति, हूती ।

हूतू–सर्व—मैं व तू ।

उ०—क्रमन राखि हिव हूतू करतौ, धरणी धर ममता मन धरतौ ।

—ह र

हूतै–क्रि वि—१ से, द्वारा ।

उ०—काग पटकिया मरै, उनाळौ काळी काती', हिवडै हालै हूक, जळं किरसाणा छाती ।—दसदेव

४ करुणा भरी बात, शोक समाचार ।

उ०—ताहरा रजपूत कहियौ—थारौ सावतौ ही गयौ । हू तौ काम आईस । ताहरा ऊ रजपूत वासै जाय नै काम आयौ । हूक फूटी ।
—नैणसी

५ धडकन ।

६ पश्चाताप, दुख ।

उ०—समय न चूकै चतुर नर, कहत कविजन कूक । चतुरन कै खटकत हियै, समय चूक की हूक ।—अग्यात

रू भे—हुक ।

हूकणौ, हूकबौ—क्रि अ—१ छाती या सीने मे तीव्र पीडा होना, दर्द होना, २ हृदय मे रह रह कर कसक उठना, दिल मे दर्द होना, मानसिक पीडा होना, वेदना या दुख होना ।

३ कराहना, आहे भरना, तडफना ।

४ करुणा या दुख भरी बात होना, शोक समाचार आना ।

५ धडकना ।

६ पश्चाताप होना, दुख होना ।

हूकणहार, हारौ (हारी), हूकणियौ—वि० ।

हूकिओडौ, हूकियोडौ, हूक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हूकीजणौ, हूकीजबौ—भाव वा० ।

हूकळ, हूकल—देखो 'हूकळ' (रू भे)

उ०—१ वड जीव जळ थळ विकळ वळ, सध मेर सळसळ हुए सकळ । दुहु ओर हूकळ कळळ दळ, वध वहै वीजूजळ विमळ ।
—र रू

उ०—२ हुय हूक्ळ कळहळा, हलै दळ प्रघळ जळाहळ । धर सळकै अहि धुकै, मरट वजि कमठ कळम्मळ ।—सू प्र

उ०—३ वीजौ दिसि गजा चल्यौ, मारग छोडी जाम रा० । कोढी ब्रदै निरखीयौ, हूकल करता ताम रा० ।—स्रीपाळ राम

हूकळणौ, हूकळबौ—देखो 'हूकळणौ, हूकळबौ' (रू भे)

उ०—१ जागडिआरी जोडी आडिआर वाज झालिआ थका हूकळि नै रही छै ।—रा मा स

उ०—२ मन मोद अलकृत सू मढिया, सव साथ वणाव करै चढिया । रग पेज कुआ रखवा रुळता, हळ आगळ जागड हूकळता ।
—पा प्र

हूकळियोडौ—देखो 'हूकळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हूकळियोडी)

हूकलियौ—देखो 'होकौ' (अल्पा, रू भे)

हूकळौ—स स्त्री—फौज के चलने पर उत्पन्न ध्वनि, शोर, कोलाहल ।

हूकाधारी—देखौ 'होकाधारी' (रू भे)

उ०—नरक नै कमर बाधी निठुर, घिरै न किण रा घेरिया । अमलिया हूत इधका अपत, हूकाधारी हेरिया ।—ऊ का

हूकारौ—देखो 'हुकारौ' (रू भे)

हूकियोडौ—भू का कृ—१ छाती या सीने मे तीव्र पीडा हुवौ हुई, दर्द हुवा हुआ २ हृदय मे रह-रह कर दर्द या कसक उठा हुआ, मानसिक पीडा हुवा हुआ, वेदना युक्त ३ आहे भरा हुआ, तडफा हुआ, कराहा हुआ ४ धडका हुआ ५ पश्चाताप हुवा हुआ, दुख हुवा हुआ ।

(स्त्री हूकियोडी)

हूकौ—देखो 'होकौ' (रू भे)

उ०—१ हूकौ लेता हाथ मैं, चेतौ गयौ चुळाय । पडै धमाधम पदमणा, अवमाधम अकुळाय ।—ऊ का

उ०—२ ससार माहि अवगुण सरव, ज्यू हूकौ हि मामळ हालसी ।
—ऊ का

हूडौ—देखो 'होडौ' (रू भे)

हूचक—स पु [स उच्चकन] १ युद्ध, समर, लडाई ।

उ०—ऊठ्यौ दिली हू औरगसाह एक राह तणौ आटै, महावाह विहू गहा मेटवा अजाद । धका वका चका हूचका खडग्ग धारा, वीर हक्का हीदवा तुरक्का भिडै वाद ।—महाराणा जयसिंह रौ गीत

२ भिडत, टक्कर ।

३ वीरगति ।

४ प्रहार, टक्कर ।

उ०—हाथिया घड हूचक झूल अकज्झक रग तकत्तक हूर रहै । करि केयक कनक उझक अत्रक वीद विमाणक धारि वहै ।
—सू प्र

हूचकणौ, हूचकबौ—देखो 'हुचकणौ, हुचकबौ' (रू भे)

उ०—१ थै क्हो हौ कै म्है राजपूता नै पौरस चढाय दकाळण वाळा हा-तौ मार्य रहौ—भड हूचकै लडै तठै हत मरौ मारौ ।
—वी स टी

उ०—२ कपि कटक हूचक कटक दैतक, उरक वेधक मरक ऐतक ।
—सू प्र

उ०—३ जाण रिण गेग्यिा, डडौडह हाथै, मदू वीरम मढिया, मज आमा मामा । हाथो जाणक हूचकै, मदमत अमामा, दोनू तरफा रा दिमा, दिग पूर दमामा ।—वी मा

हूचकणहार, हारौ (हारी), हूचकणियौ—वि० ।

हूचकिओडौ, हूचकियोडौ, हूचक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हूचकीजणौ, हूचकीजबौ—कर्म वा० ।

हूचकियोडौ—देखो 'हुचकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हूचकियोडी)

हूचकौ—देखो 'हुचकौ' (रू भे)

उ०—वौ आती आय नै रोवण लागग्यौ । म्हू उण नं छाती रै चेप नै बुचकारण लागग्यौ तौ हूचकै भरीजग्यौ ।—अमरचूनडी

हूचटौ–स पु —१ झटका।
उ०—१ पेट री भूख री सूटा री गहडी मूं करार वत्तो हौ। खाली ठाए सूं कित्ताक दिन ताई भायी फोडती। हूचटौ देय गूटै बधी राहडी तोड न्हाकी।—फुलवाडी
उ०—२ दोनूं ई एकण सागै हूचटा देय ग्रापरा हाथ छुडाया।
—फुलवाडी
२ धक्का।
उ०—डोकरी डुस्किया भरती बोली—वौ भैंसा जैडौ मातो, म्हनै धारै भला ! ग्राप री नाव सुगना ई हूचटौ देय दौडग्यौ।
—फुलवाडी
रू भे —हुचटौ।
हूचणौ, हूचबौ—देखो 'हुचणौ, हुचबौ' (रू भे)
हूचियोडौ—देखो 'हुचियोडौ' (रू भे)
हूछणौ, हूछबौ—देखो 'हुचणौ, हुचबौ' (रू भे)
उ०—मारवणी तू मनी करि गुमान। भ्डी है गुरट थळिया ग मारुवणी हूछता जी।—मारवणी मेवाडी सवाद
हूछियोडौ—देखो 'हुचियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हूछियोडी)
हूजत—देखो 'हुज्जत' (रू भे)
हूड—देखो 'हुड' (रू भे)
उ०—प्रतिहारिइ पगला भरिया, कहिउ सदेसु एह। हूड सभा वभण कहइ, बाहरि वइठउ तेह।—मा का प्र
हूण–स पु —१ एक प्राचीन मगोल जाति (मनुष्य) जो पहले चीन की पूर्वी सीमा पर लूट-मार करती थी और कालान्तर म अत्यन्त क्रूर एव प्रवल हो गई तथा ऐशिया व योरुप के सभ्य देशों मे फैल गई। अब यह अन्य सभ्य जातियों मे मिल कर समाप्त प्राय हो चुकी है।
उ०—जोणग चीण हूण मरहट्टय कोकय डुविलय कुलखय सरमुख तुरगमुख सिंहमुख हयकरण्ण गजकरण्ण प्रभ्रति ग्रनारयदेस मनुष्य।
— व स
२ उक्त जाति का व्यक्ति।
३ एक राजवश।
उ०—सोलकी राठउड प्रमार जाणै झलहलमरल भूझार। वलवता वारड नइ हूण, तेह तणइ मुखि माडड कूण।
—का दे प्र
४ पवार राजपूत वश की एक शाखा।
५ देखो 'होणी' (रू भे)
हूणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)
उ०—१ राजा धीरज देन लागौ हूणहार मिटै नही। पूरा दिन हूवा। राजा रौ पेटौ फाटौ। टावर नीसरीयौ। राजा री म्रत्यु हुई।—चौबोली
उ०—२ तरै म्हैं कह्यौ—यू तौ मोनूं दोखण लागै, नै मोनूं इसडौ थको ही परगावो तो हूं इणनै हाथ लगावूं, मूवौ तो छै हीज, जो कदाच जीवै तो माहरो भाग, ज्यूं ही हूणहार छै, त्यूं ही हुसी।
—नैणसी
हूणौ, हूबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे)
उ०—१ गुणी पडी रगोहि, जोयउ रिसि जाता नर्गा। जर्गा हाथ मळेहि, फिनगी हूई वन्नहा।—ढो मा
उ०—२ माद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि धाते पाव। सवर्गा घाटा वडळिया, वडरिजु हूआ वाव।—ढो मा
उ०—३ वार री वात नानावकस विए है, हिए है माहि नरनीक हूगी। जरा हू याद पोहारगी जिम तगी जद पयासा हगी ज्यो उड पूगी।—मे म
उ०—४ हथिणाउरि पुरि कुरु नरिंद केरो कुल मडगु। सहजिहि सनु गुहागसीनु हूड नरवग मनगु।—मानिभद्रसूरी
हूत—देखो 'हूत' (रू भे)
हूतउ—देखो 'हूतौ' (रू भे)
उ०—घर हूतउ नवि ग्याहउ जाई, सघला कुटुब ऊभीठउ थाइ।
—वस्तिग
हूतद्रव्य–स. पु [स] वह पदार्थ जिसे होमा जाता है, हवन सामग्री।
उ०—प्रथम निसा ग्रजपा जपत, होम दीठ हूतद्रव्य। नरयण निम तुलसी तणा, जग्रनोड सव्यासव्य।—मा का प्र
हूतळ, हूतल—देखो 'हूतळ' (रू भे)
उ०—सादूळो किण ही समै, नटियो नाघणियोह। तो पिण नह ग्यावण तकै, हूतळ पर हणियोह।—बा दा
हूतां, हूता—देखो 'हूत' (रू भे)
उ०—ताहरा नरै रा वाणीया हता तिका उठ कपडै ग भरवा पार नू चालीया हूता।—जैतमाल पमार री वात
हूति, हूती—देखो 'हूती' (रू भे)
हूतौ—देखो 'हूतौ' (रू भे)
हूनर, हून्नर—देखो 'हुनर' (रू भे)
उ०—कलाबुतू का हूनर साईवानू का काम। जरकस जै वगीनै लगै ठाम ठाम।—सू प्र
हूपडौ–स पु —बैलगाडी के थाटे के आगे लगा हुआ वह त्रिभुजाकार तख्ता जिस पर गाडीवान बैठकर गाडी हाकता है।
हूवकणौ, हूवकबौ— देखो 'ऊवकणौ, ऊवकबौ' (रू भे)
उ०—१ उवक्कै अरावा आग, हूबकै जोधार अग। (जठै) ताता जगा पमगा मेलिया निराताळ।—बुधसिह सिंढायच
उ०—२ केता सह केकाण अटै रत ऊवकै। घट अतर कट घाव हजारां हूवकै।—किसोरदान वारहठ
उ०—३ आरबा वाजिया अनत मिळ एकठा। एखता छाडिया पाण आयाण। हिये राव माल रै ऊपरै हूबकी। सवळ असमाण ज्यू सिला सुलताण।—द दा

पगडो हुवो, निस अधियारी भाण ।—वील्हौजी

रू भे —सभराथळ ।

सभरथळसामी–स. पु —जाभाजी के लिए उनके भक्तो द्वारा प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।

रू भे.—सभराथळमामी ।

संभरपुर–स पु.—साभर नगर ।

उ०—इम ईस्वर दुलही उभय, आयो परणि उदार । सभरपुर कीधा सतत, वितरण रण मख वार ।—व भा

सभरराज–स पु —चौहान वशी क्षत्रिय ।

सभरवाळ–स पु —साभर नगर का, चौहान राजपूत ।

उ०—विडै चहुआण जठै विकराळ, उजाळत सभर सभरवाळ ।
—सू. प्र.

सभरा–स. पु —१ चौहान क्षत्रिय ।

उ०—गौरा धू करेगो मेघाडमरा पड रै घाव, पाटाराणी गूमरा हरेगो पैलै पार । चम्मरा ढुळता हाडो गल्ला उवरेगो चगी, साजोत सभरा खेती तरेगो ससार ।—जसो आढो

स स्त्री —२ शाकभरी देवी ।

उ०—तुही सिध आसापुरा रूप तापै, तुही अबिका मात अंबात आपै । तुही अरबुदा अद्र आवू अग्राजे, तुही वैचरा संभरा मात बाजै ।—मे. म

समराणिव्रत–स. पु. यौ.—एक व्रत विशेष ।

उ०—मनुस्य तणी छइ घणी तो जाति, पाप करइ इकु दीह नइ राति सभराणीव्रत मिम धाइ, पाछइ वली निगोदह माहि ।
—वस्तिग

सभराथळ—देखो 'सभरथळ' (रू. भे)

उ०—खोडो ऊट भिरै जगळ मैं, सरण आयो संभराथळ कै । हिम्मतराय हरी गुण गावत, कट गयो पाप रजा करकै ।
—हिम्मतराय

सभराथळसामी—देखो 'सभरथळसामी' (रू भे)

उ०—आयो गुर 'जभ' अचभ अजोनी, धरम धुराक दाखवियो । सभरायळसांमी अतरजामी, वोहनामी हरि खेत कियो ।
—गोकळजी

सभरिय, सभरियौ, सभरी, सभरीक, सभरीनरेस–स. पु.—चौहान वश के क्षत्रिय (राजपूत) के लिए प्रयुक्त विशेषण शब्द ।

उ०—१ चहू छत्रधारी सुण वाखाणिया रायथाना, हका वका फटै सका उजक्कै हठेल । लेवा आयो छाक जकै पाछो माग लागो, ऊभो जेत-खभ हुआ समरी अठेल ।—रावत जोधसिंह री गीत

उ०—२ भखियो ज लूण भूपाळ रो, घणा रिजक साभल घणो । कहि सभरीक ऊजळ करा, तिको लूण साभर तणो ।—सू प्र

उ०—राजै सुरा मे सुरेस रूप खगा मे खगेस राजा, समाजै द्वीजेस गणा मुन्या मे मुनेस । ग्रहा मे ग्रहेस छाजै वसू मे गोलोक नामी, नरा मे विराजै असो संभरीनरेस ।

—महाराजा भगतराम हाडा री गीत

वि. वि.—साभर प्रान्त पर प्राचीन काल से चौहानो का आधिपत्य रहने के कारण इनको सभरीनरेश तथा सभरीराव आदि नामो से सम्बोधित किया जाता है । इनका जातीय विरुद भी 'सभरीराव' ही है । इनकी कुलदेवी शाकबरी देवी है जिनका प्राचीन मदिर आज भी साभर के पास विद्यमान है ।

रू भे —सइभरि, सवरियो, सबरी ।

सभळणौ, सभळबौ–कि. अ —१ सचेत होना, सावधान होना ।

उ०—१ नर मूढ सभळै नही, खित पर ठोकर खाय । भुगतै दुख निसदिन भमै, इण में ससय नाय ।—नारायणसिंह सादू

उ०—२ सभळ सभळ पग दीज्यो साधा अै मारग अवधूता रा ।
—अग्यात

उ०—३ जिण वरत रै सहारै वो वेरा मे उतरियोडो हो, उणनै किया वाढतो । म्हैं थोडो संभळनै कह्यो ।—अमर चूनडी

२ ठीक स्थिति मे आना, हालत सुधरना ।

३ देखो 'साभळणौ, साभळबौ' (रू भे.)

उ०—राम सजीवण-मत्र रट, वयणा राम बिचार । स्रवणा हर गुण सभळै, नैणा राम निहार ।—ह र.

उ०—२ घण घणा थाट भाजण घडण, बिस्व-ईस सभळ वयण । 'ईसरो' कहै असरण सरण, नमो नाथ तो नारियण ।—ह र.

उ०—३ सभळत धवळ सर साहुळि सभळि, आळूदा ठाकुर अलळ । पिड बहुरूप कि भेख पालटे, केसरिया ठाहे किगल ।—वेलि

उ०—४ पडव तणउ चरीतु जो पढए जो गुणइ सभळए । पाप तणउ विणासु तसु रहइ ए हेला होइसि ए ।—सालिभद्र सूरि

सभळणहार, हारो (हारी), सभळणियौ—वि० ।

सभळिओडो, सभळियोडो, सभळ्योडो—भू० का० कृ० ।

सभळीजणौ, संभळीजबौ—भाव वा० ।

सभळामणी—१ देखो 'सुणावणी' ।

२ देखो 'भोळावण' ।

सभळाणौ, सभळाबौ–क्रि स —१ सौपना, देना ।

उ०—१ नाच री नसो उतरता ई इदर-भगवान सोच्यो के इत्ता मे ई लार छूटी । अजेज जून्यो-सरप सभळाय वीदणी री माग पूरी ।—फुलवाडी

उ०—२ म्हैं थनै ठाया-पताया बताय देवू थू बेवतो आ पोटळी उठै सभळाय जाजै ।—फुलवाडी

उ०—३ तीन दिन अर तीन रात ताई वै उठै ई ढबिया । धणी आवै तो सायड सभळाय दै । कठै ई ऊजड ढळगी तो बापडो बिरथा डाफा खावैला । देखा मेळा मे कोई धणी-धोरी आवै तो उठै ई हाथो हाथ सूंप दै आ सोच वै सायड नै साथै लै ली ।
—फुलवाडी

२ प्राप्त कराना ।

उ०—जीव उहा पिंजर इहा, हिवडै हूला-हूल । रे परदेमी वरलहा, वेल विहूणा फूल ।—जलाल बूबना री बात

हूलियौ—स पु —[अ हुलिय] १ आकृति, शक्ल, चेहरा ।

२ रूपरग, बनावट ।

३ किसी मनुष्य की शक्ल सूरत का व्योरा ।

रू भे—हुलियौ, होलियौ ।

हूवणौ, हूवबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे)

उ०—१ दीपामर देहासर करनीसर कूवा, मा करनीसर कूवा । कदम कपरद कमडळ हरिहर, विधि हूवा, जयमात करनी ।

—मे म

उ०—२ आख का गोमा मिध कै जैसा, मन का गगाजळ, सुकनीणी ज्यू छदा ऊजळ, ऐसा हजार घोडै राव आण हाजर हूवा छै ।—रा मा स

उ०—३ हित पत धरम कैद वस हूवौ, दियौ साह पूछण कौ दूवौ ।—रा रू

हूवियोडौ—देखो 'होयोडौ' (रू भे)

(स्त्री हूवियोडी)

हूवेली—देखो 'हवेली' (रू भे)

हूस वि —१ अशिष्ट ।

उ०—प्राग्व्व प्रतिग्या द्रढ प्रतीत, पुरुसारथ प्रग्या परम प्रीत । रनवका ध्वज धज धुर रहत, है कौन हूस रट्ठौर हत ।—ऊ का

२ अशिष्ट, असभ्य ।

३ बेहूदा, उज्जड, मूर्ख ।

हूसनाइक, हूसनायक—देखो 'हुसनाक' (रू भे)

उ०—तठा उपरात करि नै राजान मिलामति जिकै छोगाळा छयळ छबीला जुआन हूसनाइक फूला रा छोगा नाखीआ थका फूला रा चोसर पेहरीआ थका ।—रा मा स

हू-हल्लौ—स पु —शोरगुल, कोलाहल ।

उ०—भेळा मिनखा में मदा मू हू-हल्लौ हुतौ आयौ है, पण कदी तौ आज में धान्या नी रडकै । —दमदोख

हूहू—स पु [स] १ गन्धर्व विशेष । (अ मा)

२ देवता ।

३ अग्नि के जलने का शब्द, धू-धू धाय-धाय ।

रू भे—हुहु, हूह ।

हॅकडी—देखो 'हेकडी' (रू भे)

हॅकडीबाज—देखो 'हेकडीबाज' (रू भे)

उ०—पण की नी राज रै खातर रै लालच अर की नटणै मू धाणी पिलीजण रै डर मू हा करदी । राज रौ हाथ माथै रैवैला-इज सो अगदू रै हेकडीबाज हा जिणा माळा री आतडिया काड नाखता, पामळिया रा भचका बोलायदाला ।—चिनराम

हॅड—स पु [अ.] १ हाथ, हस्त ।

२ किसी विशेष स्थिति या गुण वाला व्यक्ति ।

उ०—कानजी मिलट्री री रिटायर हॅड एक साधारण घर धणी आदमी हौ ।—अमरचूनडी

हेवर—देखो 'हयवर' (रू भे)

उ०—सोवन-जडित सिगार बहु मारुवणी मुकलाइ । गय, हेवर दासी बहुत दीन्ही पिंगळ राइ ।—ढो मा

हेस, हेसौ—देखो 'हिस्सौ' (रू भे)

उ०—दत्त राव स्री जोधाजी रौ । वाहरेट रेप चाहैडोत रोहडीया नु । पछै रेपा री हेस गळी । तेमा चाहडोत री हेस रा हमैं बारैट चूडौ अखावत छै ।—नैणसी

उ०—२ गाव रौ खेडौ विणजारै फूल रौ वसायौ छै । देहरौ १ कुवौ १ फूल रौ करायौ छै । सु फुलाज कहीजै । सु मेर सुवरत वस बुरड वसै, हेसा दो छै ।—नैणसी

उ०—३ वाहळी १ गाव नजीक छै, तिण रै वेरीया पीवै । हेसौ ४ मेरा रौ छै ।—नैणसी

हेहे—स [अनु]—धीरे धीरे हसी की आवाज, शब्द ।

हे—अव्यय [स] १ सम्बोधनात्मक अव्यय जो किसी को सम्बोधन करते समय या पुकारते समय उसके नाम के पहले बोला जाता है, अरे, ओ ।

उ०—१ हे किरतार किसिउ कीउ, अतिहिं असभव एह । अण विमासिउ अचीतविउ, कीचउ काई जेह ।—हीराणद सूरि

उ०—२ हे मेहाई तोनै आई री दुहाई वेगी आव ।—मे म

२ दर्प, ईर्ष्या, द्वेष या शत्रुता द्योतक अव्यय ।

३ देखो 'है' (रू भे)

उ०—तरै मीया बुढण कयौ—ऐसा तुमारा भाइ हे तौ हमारी साडीया लेवेगा ? तरै महेची कयौ—हमारा भाइ ऐसा ही हे सौ तुमारी साडीया लेवेगा ।—रा सा स

रू भे—हैय ।

हेआर—स पु —हय, घोडा, अश्व ।

उ०—पडै आर पार जुधाण जुवार । हकालै हेआर, पीउसै पयार ।

—कल्याणसिह वाढेल नगराजोत री वात

हेउ—देखो 'हेतु' (रू भे)

हेककार—वि —समान, एक समान, तुल्य, बराबर ।

हेकखण, हेकखियौ—वि —विमूढ, अवाक् ।

हेकड—वि —जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—मेलै ऊपरै माखिया, गणणाटा लै गैल । हेकड कठीनै हालिया, डवी खलीगण डैल ।—ऊ का

हेकपणौ, हेकपबौ—क्रि अ —१ कपायमान होना, कापना, थर्राना, धूजना ।

२ भयभीत होना, डरना ।

उ०—यहा तौ नर दीमै छै कोई, सती तहा हेकपै होई । राखै सील

हूवकणहार, हारौ (हारी), हूवकणियौ—वि०।
हूवकिग्रोडौ, हूवकियोड़ौ, हूवक्योडौ—भू० का० कृ०।
हूवकीजणौ, हूवकीजवौ—कर्म वा०।
हूवकियोडौ—देखो 'ऊवकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हूवकियोडी)
हूवणौ, हूववौ—देखो 'हुवणौ, हुववौ' (रू भे)
उ०—१ हुवै हींदू घटामेन हूवै हुवै, मूझ उपकठ सगराम मातौ। घणौ सीसोदियै वहै खाई घडा, रुधर घण मिळै तण नीर रातौ।
—महाराणा रायमल्ल रौ गीत
उ०—२ धनि धनि सुत चद वाहता धजवड, हूवता ग्ररि मारै उर हूत। ऊकसता रसता ग्रोल्हमता, कमता विकमता कूत।
—मालौ सादू
उ०—३ हुवै चम्मरा झाटका जोति हूवै। मदा ऊतरै ग्रारती साझ सूवै।—मे म
हूवणहार, हारौ (हारी), हूवणियौ—वि०।
हूविग्रोडौ, हूवियोडौ, हूव्योडौ—भू० का० कृ०।
हूवीजणौ, हूवीजवौ—कर्म वा०।
हूवहू-वि [फा] १ बिल्कुल एक सा, समान, सदृश, एक जैसा।
२ बराबर, तुल्य।
३ ज्यो का त्यो, जैसा का जैसा।
रू भे—हूवौहुव, हुवौहुव, हूवोहूव, हूवौहूव।
हूवियोडौ—देखो 'हुवियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हूवियोडी)
हूवी-स स्त्री—ऊट के तालू मे होने वाला एक ग्रन्थि-रोग। (शेखावाटी)
हूवोहूव, हूवौहूव—देखो 'हूवहू' (रू भे)
उ०—वौ ग्रापरी घरवाळी नै केई वळा कैवतौ कै विरमाजी नै एकर डण दुनिया रा जीव जिनावर, पछै ग्रर मिनख घडता देखलू तौ वौ दूजै दिन ई वारौ हूवौहूव साचौ उतार दै।—फुलवाडी
हूमस—देखो 'ऊमस' (रू भे)
हूयोडौ—देखो 'होयोडौ' (रू भे)
हूर-स स्त्री—१ मुसलमानो के वहिश्त की परी।
उ०—१ लोठी थकी कोसि नह लेम्यौ, दाखै हूरा ग्रछर दिसी। माथै मिरा न काना मोती, कहौ कमळ विण खबर किसी।
—हठीसिंघ राठौड रौ गीत
उ०—२ हूरा कह तुरक ग्रछर कह हिंदू, वरण काज दोय वरग वढै। हठीसिंघ ऊपरि लागौ हठ, चौकस होय न रथा चढै।
—हठीसिंघ राठौड रौ गीत
उ०—३ खित हूर ग्रपच्छर वीद खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै। —रा रू
उ०—४ ग्रछरा स गार धरि ऊमही, हूरा हरखि उचारियौ। महि गयण सग वेळा मिळै, ग्रागम जग विसारियौ।—रा रू
२ स्वर्ग की ग्रप्सरा, परी।
उ०—१ भडा धड सागि छटै ग्रद्भूत, धताधत भागि नटै ग्रव-धूत। हथा वरमाळ उमाहत हूर, सूरा हथवाह सराहत सूर।
—मे म
उ०—२ सामठा लडै धड पडै सूर, हरखत वरै वह रभ हूर।
—सू प्र
उ०—३ निरत करवै मैं हूर जग जगू मै गगीत सालोतरू मैं पूर चामीकर की मागत।—र रू
३ वेश्या, रडी, नगर वधू।
४ सुन्दर स्त्री।
हूरळ-स पु—१ पैने शस्त्र द्वारा जोर से किया जाने वाला प्रहार, ग्राघात।
२ शूल, हूक।
हूरव-स पु [स हूरव] शृगाल, गीदड।
हूरवर, हूरावर-स पु—युद्ध मे वीरगति प्राप्त करने वाला योद्धा। ऐसी किवदन्ती है कि ऐसे योद्धा को स्वर्ग की ग्रप्सरा वरण करती है।
उ०—धिन धिन रवि उचरै धाड धाड, राठौड मुगळ डम करत राड। वर ग्रचर विसै वर जैण वार, हूरावर वरिया मर हजार।
—वि स
हूरीचद, हूरीचदक—देखो 'हरीचद' (रू भे)
हूळ, हूल-स स्त्री [स शूल] १ प्रहार, ग्राघात, वार।
उ०—१ मावळा हूला हू ग्रणी कैवरा मू मदगरा, वीजळा ऊजळा धारा चौळ गोळा ब्र न्न। ऊमै रांम पातसाही हाथि ग्रायी नही, ग्रालम चै 'राम' कामि ग्राया ग्रायी दूसरै 'रतन्न'।
—रामसिंघ रौ गीत
उ०—२ तीर सूळ हूळ भर खफर रग्त। तइ पीद सगत गडगडा तत।—रामदान लाळस
२ भय, त्रास।
उ०—पयोवर पार पय ऊतरै ग्रवध पन, पाजवध चारसै कोस पैरा। हूल ग्रसुराड पड भूल सुध माण हट, फिरै चित्त डूल जिम चाक फेरा।—र रू
३ कोई भयकर पीडा, दर्द।
४ दुख, कसक, वेदना।
स पु—५ चौदहवी वार उलटाकर बनाया हुग्रा शराव।
उ०—सौ किण भाति रौ दारू, उलटै रौ पलटै, पलटै रौ ग्रैराक, ग्रैराक रौ वैराक, वैराक रौ सदली, सदली रौ मोद, मोद रौ कमोद, कमोद रौ हूल।—रा सा स
६ देखो 'हुल' (रू भे)
हूलाहूल-स पु—वेदना, पीडा या कसक जो निरन्तर उठती रहती हो।

दिन गहर दीधी मरण हिन दन, लहर हेकण लक ।—र ज प्र

उ०—४ मर ग्रोजर बूठौ घणमारा । हटकै हेकण पांच हजारा ।
—सू प्र

हेकणजमैं—वि —इकट्ठा, एकत्रित ।

उ०—जुडै मुमायव मान नृप कीया हेकणजमैं, भै पडै ग्रनेका काळ नेका भर्म । नग्ग खीची मरण जाण ग्राना नमै, ऊरसरी तेग भाटी रवण ग्रागमैं ।—जमजी ग्राटी

हेकणि, हेकणी—देखो 'एकण' (रू भे)

उ०—१ हेकणि हाथ ग्रछर हथळेवौ । करि हिक खग वाहू धर देवौ ।—सू प्र

उ०—२ वेदोगत धरम विचारि वेदविद, कपिन चित्त लागा कहण । हेकणि मुत्री मग्गि किम होवै, पुनह पुनह पाणि ग्रहण ।
—वेलि

उ०—३ केहरी मन्न कळाइया, लहिरज रत्तडियाह । हेकणि हाथळ गैहणै, दत दुहत्था ज्गाह् ।—हा झा

हेकमन—स पु —१ मन मिलने की ग्रवस्था या भाव ।

२ एक मत, एक राय, मतैक्य, सहमत ।

३ एक मन, ऐक्य ।

४ एकाग्रता ।

उ०—म म करिगि टील हिव हुए हेकमन, जाइ जादवा इद्र जत्र । माहरै मुख हुता नाहरै मुखि, पग वदण करि देइ पत्र ।—वेलि

५ प्रेम, प्यार, स्नेह, ग्रनुराग । (ग्र मा, ह ना मा)

हेकमहेक—देखो 'एकमेक' (रू भे)

हेकर—देखो 'एकर' (रू भे)

हेकरसा, हेकरसूं, हेकरसे, हेकरसै—देखो 'एकरसूं' (रू भे)

उ०—१ ताहरा दरवारी फेर ग्राय ग्रर कही, 'माहाराज, चारण कहै छै, हेकरसा मानू हजूर ग्रावण देवौ ।
—मूळवै सागावत री वात

उ०—२ ताहरा मागमराव ऊठ ग्रर नगारी करायौ । मागमराव कूटळ ऊपर चढियौ । ताहरा भाईया कह्यौ—'जी, हेकरसूं तौ वैर री वैर लेग्रौ ।—नेणसी

उ०—३ नद हेकरसै दिन च्यार हुइ गया सौ वळ री ढग नही वैठो नद कही—रे ग्रो इसौ दरिद्र री भाटी छै, सौ परौ काढौ ।
—मुदरदास भाटी बीकूपुरी री वारता

उ०—४ नद कुवरसी वहो फेर बुलाय्यौ जद हाजर छा पण ईव हेकरसै मीख दिरायजै ।—कुवरसी सासला री वारता

हेकल—देखो 'एकल' (रू भे)

उ०—१ सुदरि विना न मानवै, निसदिन करतै नेह । मै जगळ मैं धीरा, हरीया, हेकल देह ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ सिता तै वार विगै कल्पन, ग्राधी लै त्रग ग प्रवी वळवत । हनायी रेना वार हमान, मदै महराणव हेकल मल्ल ।—ह र

उ०—३ कूभेण दसमिर ग्रामती, पह भज हेकल रघुपती । रिण कुभ सुरघण मार रावण, कठण खळ जण कीध कण कण ।
—र ज प्र

उ०—४ गयणाग नीस छिवतै गरूर, सझ फतै ग्रावियौ वियौ 'सूर' । गवा वचाय थट मुगळ गाय, मारै गिड हेकल दिली माय ।
—वि म

हेकलगिड—देखो 'एकलगिड' (रू भे)

हेकलि हेकली—वि स्त्री —ग्रकेली ।

उ०—ग्रवही मेली हेकली, करही करइ कळाप । कहियउ लोपा मामि-कउ, सुदरि, लहा सराप ।—ढो मा

हेकले, हेकलै—वि —ग्रकेले ।

हेकलौ, हेकल्लौ—देखो 'एकलौ' (रू भे)

उ०—१ घाव घण थटा ग्रत पिसण दळ घालणौ । पाच सै पाखरचा हेकलौ पालणौ ।—हा झा

उ०—२ पछिम दिस भिडाणा वाप बेटा पछिम, भिडै पूरव दिसा विन्हे भाई । हेकलौ वळा री दिखण चढियौ हठी, कठै वाटी नही कुळ कमाई ।—सुभराम गौड री गीत

(स्त्री हेकली, हेकल्ली)

हेकहेकोज—वि —एक ही, ग्रकेला ही, कईयो मे एक ।

उ०—नारी गाठियौ सूठ दूजी न खायौ, जनूनी तुही हेकहेकोज जायौ । ग्रायौ नाग सू झूझ लेवा ग्रतागै, ग्रडीला हुग्रा ग्राज पाछा न ग्रागै ।—ना द

हेकहेकौ—वि —ग्रकेला, केवल ग्रकेला ।

उ०—नाजीम पाय कहियौ तिका, वाह विनोधिन वाहुजा । लाख हू हेकहेकौ लडण, भुजडाळक झाली भुजा ।—मे म

हेकाणी—वि —१ एक ।

२ ग्रकेला ।

३ एक बार ।

हेकाणवइ—वि —नव्वे तथा एक, इक्याणवे, इकराणवे ।

उ०—तड पतिसाह तणेह पायाणउ पारभ सुणी । हळहळिया हेकाणवइ गटपति गमै-गमेह ।—ग्र वचनिका

स स्त्री —इक्याणवे की सख्या व उक्त सख्या का ग्रक ९१ ।

हेका—वि —१ एक ही ।

उ०—प्रमेसर साभळ देव पुकार, विडेवा सज्ज हुवौ तिण वार । विहा सू हेका नीग्री वाथ, नरोवर साझ कियौ जुध नाथ ।—ह र

२ ग्रकेला ।

क्रि वि —१ एक ग्रोर, एक तरफ ।

उ०—धुनि वेद सुणति कहु सुणति सस धुनि, नद झलरि नीसाण नद । हेका कह हेका हीलोहळ, मायर नयर सरीख मद ।—वेलि

२ इधर-उधर ।

३ देखो 'एका' (रू भे)

भागेला भोई, हेठी वैठी ग्रग गुपोई ।—जयवाणी

३ आश्चर्यचकित होना ।

हेकपियोडौ–भू का कृ—१ कपायमान हुवा हुआ, कापा हुआ, थर्राया हुआ, धूजा हुआ २ भयभीत हुवा हुआ, डग हुआ ३ आश्चर्य-चकित हुवा हुआ ।

(स्त्री हेकपियोडी)

हेक–वि [स एक]—१ एक, एक मात्र ।

उ०—१ हरीया करता हेक है, दूजा करता नाहिं । सोई करता सिसट का, न्यारा घट घट माहि ।—अनुभववाणी

उ०—२ गुरु गेहि गयौ गुरु चूक जाणि गुरु, नाम लियौ दमघोख नर । हेक वडी हित हुवै पुरोहित, वरै मुसा सिसुपाळ वर ।

—वेलि

उ०—३ अवै वीनती हेक हिंगोळ वाळी, जिका ध्यान दै कान कीजै धजाळी । लहैरी महैराण भूपाळ 'लच्छौ', 'अखौ' दूसरौ रीझ खीजाळ अच्छौ ।—मे म

उ०—४ हेक वकी चौडै हुवा, अममर कराग्रा देन । डेरा डेरा वत्ताडी, डेरा डेरा जोस ।—रा रू

२ करीवन, अदाजिया, अनुमानित ।

उ०—१ पूरव गयौ देवजी क पासि, चहचौ सनेसौ करि अरदासि । हेक ऊठ कीता हेक दाम, देव देस्यौ तौ रहिसी माम ।

—वि स सा

उ०—२ बीजा ही मगडि दपेसै समेत सहि लावा भला आदमी साठि हेक उठा खडि अर राजडवाळै आइ ऊतरिया ।—द वि

स स्त्री—एक की संख्या । (डिं को)

उ०—१ पूरव गयौ देवजी क पासि, कहचौ सनेसौ करि अरदासि । हेक ऊठ कीता हेक दाम, देव देस्यौ तौ रहिसी माम ।

—वि स सा

उ०—२ सीगाळौ अवखल्लणौ, जिण कुळ हेक न थाय । जास पुराणी वाड जिम, जिण जिण मत्थै पाय ।—हा भा

क्रि वि—१ एक तरफ, एक ओर, एक तो ।

उ०—हेक पराया जव चरौ, हालौ ऊगा सूर । दाढाळा भडण भणै, भागौ भाखर दूर ।—हा भा

२ कई, कुछ ।

उ०—जळ जाळ स्रवति जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल । आधौ फरै मेघ ऊधसता, महाराज राजै महल ।—वेलि

हेकड–वि [म हल्कटु] १ एक ।

उ०—सय हेकड सीरावणी, हूकौ वीजै हात । माथा ऊपर मीगणा, (ऐ) लाखवगीम लमात ।—किसोरसिंह वारहस्पत्य

२ अडियल, उद्दण्ड ।

३ देखो 'एकड' ।

हेकडी–स स्त्री—१ उद्दण्डता, अडियलपना ।

२ वल प्रयोग से किया जाने वाला कार्य, जवरदस्ती, जोरावरी, वलात् ।

३ शेखी, शान, अकड ।

उ०—फूलचदजी रौ एक पोतौ गोरधन भाई, डूगर कालेज सू फैल हुय'र आयौ । देस सू भाज्यौ, दिसावर रौ काम सभाळचौ । खाता पत्तर खोल्या, हेकडी छाटी ।—दसदोख

४ गर्व, अभिमान, मान ।

उ०—१ लुगाई रौ जमारौ पाय थू जापा री पीड नी भुगती तौ वाकी सगळा सुख झूठा है । थोथी हेकडी रौ भरम छोड अर इणी पगा पाधरी-पाधरी बीकाणै ढळजा ।—फुलवाडी

उ०—२ पण घणा दिना तक कोसिस करता थकाई हाजरिया नै रभा री हेकडी तोडण रौ मोकौ नही मिळचौ ।—रातवासौ

५ हठ ।

उ०—औ खागौ अवियाट, तुरका ही नू तेवडै । झाला ही नू झाट, हाला ही नू हेकडी ।—नैणसी

रू भे—हेंकडी ।

हेकडीवाज–वि—१ शेखी मारने वाला ।

२ गर्वीला, घमण्डी ।

३ शक्तिशाली, वलवान ।

रू भे—हेंकडीवाज ।

हेकडौ–वि—अकेला ।

उ०—रूक वहादर राड मैं भुज आभ लगाई, हिंद विलायत हेकडौ तू वीर कहाई । एकै 'पानल' ऊजळा छत्रपत साराई, एकै चदै ऊजळा नव लाख लखाई ।—मोडजी आसियौ

हेकठ, हेकठा, हेकडा–क्रि वि—१ इकट्ठा, एकत्र ।

उ०—घर न गम पछी पाटौ घर, हेकठ जुग युग घणा हुआ । दळ फळ डाळा पछी दूखावै, द्रमुग म खावै रतन दुवा ।

—छत्तरसिंघ हाडा रौ गीत

२ एक साथ, साथ-साथ ।

उ०—१ वीकममी रावळ वदै, करदै जौ करतार । हू जेमळगिर हेकठा, वाळै प्रधानै वार ।—नैणसी

उ०—२ सवद वतावै हेकडा तव होय कल्याणा ।

—केसोदास गाडण

३ मिल-जुल कर, सम्मिलित होकर ।

४ एक ही जगह, एक ही स्थान पर ।

हेकण—देखो 'एकण' (रू भे)

उ०—१ चरख्या चटीठ अगीठ चख, पीठ समोवड पालणा । पाकेट सज्या सौ कोम पय, हेकण चाटी हालणा ।—मे म

उ०—२ मूवौ न कोई मीर छल, च्यार खूट कानै चडी । हैरान आठ हेकण समै, हुआ ज मुरधर वापडी ।—वि स सा

उ०—३ आलम हाथ रौ रघुनाथ अचरिज, अवध भूप असक ।

हेडरणहार, हारौ (हारी), हेडणियौ—वि० ।

हेडिग्रोडौ, हेडियोडौ, हेड्योडौ—भू० का० कृ० ।

हेडीजरणौ, हेडीजबौ—कर्म वा० ।

हेडवरणौ, हेडववौ, हेड्वरणौ, हेड्ववौ—रू० भे० ।

हेडवरणौ, हेडववौ—देखो 'हेडरणौ, हेडवौ' (रू भे)

हेडवरीस–वि —घोडो के समूह का दान करने वाला दानी ।

उ०—धुर दाता येम कहै गोरधन, हेडवरीस कल्याण हरी । सिग सिगार हुवै तन कीधा, कीरति तरणौ सिगार करौ ।

—गोरधन कल्याणोत री गीत

हेड रौ सिगार–वि —किसी भीड, समूह या वर्ग में जो सर्वश्रेष्ठ हो ।

हेडव—देखो 'हेडाऊ' (रू भे)

हेडवरणौ, हेडववौ—१ देखो 'हेररणौ, हेरवौ' (रू भे)

उ०—इनरै नगाद रै कनै नाळेर पेड में हेडव देखनै वाली हसी हसरण री कारण नणद नै पती री भगेनी है जुद्ध में मारीस री तद म्हनै सत कररणौ है ।—वी स टी

२ देखो 'हेडरणौ, हेडवौ' (रू भे)

उ०—१ मेडतियौ सूरौ पण समरथ, हेडवण दुयण सास्त्र हरथ ।

—रा रू

उ०—२ धरियौ ग्रगी सुहरि गिरधारी, हेवै दळ हेडवण हजारी ।

—वचनिका

उ०—३ नगरथा सथा हेडवै सग चापा, करै हाथिया हाथ भाराथ कूपा । करन्नौत कूता अगी नाग काळा, हटावै धुजै मिध जेहा हठाळा ।—रा रू

हेडवणहार, हारौ (हारी), हेडवणियौ—वि० ।

हेडविग्रोडौ, हेडवियोडौ, हेडव्योडौ—भू० का० कृ० ।

हेडवीजरणौ, हेडवीजवौ—कर्म वा० ।

हेडवियोडौ—१ देखो 'हेडियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'हेरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हेडवियोडी)

हेडवियौ, हेडवीयौ–वि —१ 'हेडने' वाला ।

२ वीर ।

उ०—पाळा ऊपर पात, वाद भलै वीजूभळा । हेडविया खड हाथ, धुरजाळा धोरा धकै ।—पा प्र

हेडाउ, हेडाऊ–स पु [स हेडावुक्क] १ घोडो का व्यापारी सौदागर ।

उ०—१ श्री ऊनड लाखा अहिनाणी, वमुह उवारण वारा । घोडा दे धमडोह घातिया, हेडाऊ हेकारा ।—नैंमणी

उ०—२ हेडाऊ का तुरीय ज्यू । तुयै दिन दिन हाथ फेरनड सौ वार ।—वी दे

२ पशुओ का व्यापारी ।

३ पशुओ को घेरने वाला, ढूढने या तलाश करने वाला ग्वाला ।

वि —जाने वाला ।

उ०—नरै गवळ रहौ—गुण थानै ? थारी नौ नरगा हेडाऊ आ, तोनू दिलगीरी मन में वधू आई ?—नैणसी

रू भे —हीदाऊ, हीदाऊ, हेडव, हेडाउ, हेडाऊ ।

हेडि–वि —१ 'हेडने' वाला ।

२ तलाश करने वाला, खोजने वाला ।

३ देखो 'हेड' (रू भे)

हेडियोडौ–भू का कृ —१ हांका गया, भेजाया हुआ, [illegible] हुआ

२ एकत्रित किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ, घेरे मे लिया हुआ

३ भगाया हुआ, पीछा किया हुआ, उगाया हुआ ४ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ ५ उत्साहित किया हुआ, प्रोत्साहन दिया हुआ ६ नचाया हुआ, फेंका हुआ. ७ लगा हुआ, लाया हुआ, पटका हुआ ८ छोडा हुआ ।

९ देखो 'हेरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हेडियोडी)

हेडी—१ देखो 'हेडि' (रू भे)

उ०—खोटर्य तोड्यो पीजरो, रै गन्यो काटी वडी । हाथ पाव बायर राखी, कोई वौ वधवा को हेडी ।

—डूगजी जवारजी री रुगवली

२ देखो 'हेड' (रू भे)

हेडौ–स पु —वह बडा भोज जिसमे हर जाति के, हर प्रान्त व हर आगन्तुक व्यक्ति को भोजन कराया जाता है और किसी के लिय कोई प्रतिबन्ध नही होता ।

हेच–वि [फा] १ तुच्छ, नाचीज, छोटा ।

२ व्यर्थ, बेकार ।

हेचरणौ, हेचवौ—देखो 'हिचरणौ, हिचवौ' (रू भे)

उ०—हेचै दळ सोभा हरी, जूटौ जोगीदास । कुमळायन उजवाळ कुळ, वसियौ सुरपुर वास ।—रा रू

हेचणहार, हारौ (हारी), हेचणियौ—वि० ।

हेचिग्रोडौ, हेचियोडौ, हेच्योडौ—भू० का० कृ० ।

हेचीजरणौ, हेचीजवौ—कर्म वा० ।

हेचियोडौ—देखो 'हिचियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हेचियोडी)

हेज स पु [स हृदयज, प्रा हियज] १ दाम्पत्य प्रेम, प्यार ।

उ०—भावरण तुरत जवाब दियौ—इण मैं विचार करै जैडी काई वात, धणी-लुगाया रै हेज तौ व्हैणौ ई चाहीजै, विरखा लडरणा मैं काई सार ।—फुलवाडी

२ मन, दिल, चित्त ।

उ०—सेजा आवै सुदरी, जद सोभा दै सेज । तौ विन सेज विरगिया, कही न लागै हेज ।—कुवरसी साखला री वारता

३ इश्क, लगाव ।

उ०—हरिद्रा तरणउ रग, पाणी तरणउ तरग, दासि तरणउ हेज,

हेकार—देखो 'हकार' (रू भे)

हेकारु, हेकारू—देखो 'एकारू' (रू भे)

हेकाहेक, हेकाहेकी—देखो 'एकाएक' (रू भे)

उ०—१ खडन मडन मूरत सेवा, आपी आपी अलख अभेवा। मात पिता सुत भात न कोई, हेकाहेक निरजन होई।

—अनुभववाणी

उ०—२ ताहरा राव रिणमलजी हेकाहेक पगटाटी चढिया। वासै फौज चढी। ताहरा मीहणी री वह वरावर गया।—नैणसी

हेके, हेकै—देखो 'एकै' (रू भे)

उ०—१ सूगो सोई साम विन, गहै न दूजी ओट। हरीया हेकै चोट सू, मारै मन का खोट।—अनुभववाणी

उ०—२ ताहरा हेकै रजपूत नू सुवाळा हू भालि भोकि करि नीचौ नाखियौ।—द वि

हेकोहिक, हेकोहेक—क्रि वि—एक-एक करके, वारी-वारी से।

उ०—पत्रा भरि रत्र हेकोहिक पाण। आणं कर कठ कढावत आण।—मे म

हेकौ—स पु—१ एक की सख्या का अक, '१'।

क्रि वि—एक वार।

उ०—हमाऊ परा नोकरा छाह हेकौ, न कौ पार ओतार थारा अनेकौ।—मे म

२ देखो 'एकौ' (रू भे)

उ०—१ सीहणि हेकौ सीह जणि, छायर मडै आळि। दूध विटाळण कापुरस, वौहळा जणै सियाळि।—हा भा

उ०—२ जती वोलियौ वालिनू राम जारै। महावाह हेकौ वहै वाण मारै।—सू प्र

उ०—३ हरीया सीप समद मे, हेकौ वूद सनेह। पतिवरता सौ पीव विन, करै नि किन सू नेह।—अनुभववाणी

हेखारव—स पु [स ह्रस या ह्रेष] शब्द या आवाज।

उ०—पछै वाणी फारक तणी पद्धति, ततौ हस्तीघटा सीत्कार करती, पाखरीयानी श्रेणी हेखारव सेल्हती, पत्र सब्द तणा निरघोस जमला उच्छलइ।—व स

हेखि—स पु [स हर्ष] खुशी, प्रसन्नता, हर्ष।

उ०—भूभता नृप सवै जउ वारउ, जइ किमइ नृप सुयोधन मारउ। तउ युधिष्टिर पराभव पेखी, काइ वात करसिइ अति हेखि।

—सालिसूरि

हेग्रिव, हेग्रीव—देखो 'हयग्रीव' (रू भे)

उ०—देवी रूप हेग्रीव रै निगम सूख्या, देवी हेग्रिव रूप हेग्रीव धूस्या। देवी राहु रै रूप तै अमी हरिया, देवी विस्णु रै रूप तै चक्र फरिया।—देवि

हेड—स स्त्री—१ चौपाये जानवरो की भीड, समूह, वर्ग।

उ०—पावस हुया व्यतीत, टिकै ना टीव ठिकाणौ। द्रुत-गत भागा दौट, हेड रमवा हल माणौ।—दसदेव

२ भीड, समूह।

उ०—लोगा री हेड आवती देवी नौ सेठ हळफळाया होय पाछा नाडी मै वडग्या।—फुलवाडी

३ जानवर या मनुष्य जाति के किसी एक ही वर्ग के समवयस्क प्राणियो का समूह, टोली, वर्ग।

उ०—दीवाण रै सागै राजाजी ध्यान देय एक-एक उणियारा री छाणवीण करता हा। आपी हेड माय सू फगत पाच लुगाया टाळणी।—फुलवाडी

रू भे—हेडि, हेडी।

हेडणौ, हेडवौ—क्रि स—१ हाक कर ले जाना, हाकना।

उ०—१ 'हैमत्त' सत्र हेडतौ, अठी भेडनियौ आयौ। असुरा दळ ऊपर, सार वाजियौ सवायौ।—रा रू

उ०—२ तेडिया वाराह लोह छोडिया भमग तिमा, खेडिया अजाणि जाणै राम सखा छद। हेडिया पिनाकी वाच गणा रा समूह हलै, तेडिया सुभट्टा राखै 'भगनेस' नद।

—सतमानसिंघ हाडा री गीत

उ०—३ धडछतौ कूरमा गजा देतौ धका, हेडतौ रिमापति समौ हाथै।—वीरभाण रतनू

२ एकत्रित करना, इकट्ठा करना, घेरे मे लाना।

उ०—हैदळ गैदळ प्रवळ हेडतै नीजोडतै किता नर नाह। समरथ कही न सकू सूरावत, गुण म्हारा थारा 'गजगाह'।

—केसोदास गाडण

३ भगाना, पीछा मोडना, डराना।

उ०—चातुरगी वरोळणा याटकै आवळा चसु, सुकाजवा वळा खळा दाटकै भनेव। आराण छेडीया चखा भाटकै अजाग आग, भा-कै वचाळै अत्रा हेडीया जनेव।—जवानजी आढौ

४ ललकारना, चुनौती देना।

५ उत्साहित करना, प्रोत्साहन देना।

६ छोडना, वधन मुक्त करना।

उ०—आयौ उरेडियौ जोम रौ पटेल माथै धारै आट, रवत्तेस दूर हू तेडियौ कार्य रात। साकळा हू लावणीक हेडियौ वीहतौ सेग, पूछ चाप सूतौ फेर छेडियौ पैनाग।—वद्रीदास खिडियौ

७ चलाना, फैकना।

उ०—पथ खतग हेडवौ यद समत्र पाछटा, त्रखग परि खेडवौ सगळसिग तेम।—सहसमल राठौड रै भाला री गीत

८ रखना, डालना, पटकना।

९ खदेडना।

१० देखो 'हेरणौ, हेरवौ' (रू भे)

री पटी । पातसाही माहे हेट री जैतवार हुवौ ।—नैणसी

२ तुच्छ, हीन, नाचीज ।

रू भे—हेट ।

३ देखो 'हेटै' (रू भे)

उ०—१ पड़िया राणी री फेट, सदक महला हेट । गुणीमन गाध, एसौ हुतौ, मुज वधवौ ए ।—जयवाणी

उ०—२ मन जाणै सीरस हुआ, वीटै घान वहन । वीभौ टाळै ढोलियौ, पासै हेट रहत ।—अग्यात

हेटडी—देखो 'हाट' (अल्पा, रू भे)

उ०—हरि हीरा तन हेटड़ी, निज मन परखणहार । जन हरीया जव जाणसी, तोल मोल की सार ।—अनुभववाणी

हेटणौ, हेटवौ—क्रि स—नीचा दिखाना, निस्तेज करना ।

उ०—खगाटा झाट वैडाक तीखा खडे, मगज करता जिकै घणू मन मैं । 'जसा' धजरेल हूता सूमर जेठिया, दोय तट हेटिया हेक दिन मैं ।—जसवतसिंह चूडावत री गीत

हेटलौ—वि (स्त्री हेटली) नीचे का, नीचे वाला ।

उ०—१ देवीसिंहजी वगरै पकड़िया ज्यानूं रस्सी सूं वाध भोजन-साळा हेटली ओरिया ज्या मैं घालिया ।—बा दा ख्यात

उ०—२ सेठाणी री हेटलौ सास हेटै अर ऊपरलौ सास ऊपर । हळफळाई होय बोली—थू मा रै साथै ई धोखौ करैता कांई ।

—फुलवाडी

उ०—३ मिदरा रा हेटला पगोतिया माथै एक कोढण वैठी माखिया उडावती ही ।—फुलवाडी

रू भे—हेठलौ, हेठिलौ ।

हेटवाळियौ—वि (स्त्री हेटवाळण) १ मातहत, अधीनस्थ ।

२ नीचे का, नीचे वाला ।

३ जो दवता हो, दवाव मे आकर रहने वाला, अपमान सहन करने वाला ।

हेटा—क्रि वि—नीचे, नीचे की ओर ।

उ०—डाढा (दातडी) सू सूरवीरा नै ओझाडिया झटकी दै हेटा न्हाकिया ।—वी स टी

वि—नीचा, निम्न, न्यून ।

रू भे—हेठा ।

हेटि, हेटी—क्रि वि—१ नीचे जमीन पर ।

उ०—भागा चढी चरी वेटी रै हाथा हेटी पडगी ।

—फुलवाडी

२ नीचे की ओर, अव्यवस्थित, नीचे स्थित ।

३ नीचे ।

४ देखो 'हेठी' (रू भे)

रू भे—हेठि ।

हेटिया—क्रि वि—नीचे से । (गगानगर)

रू भे—हेठिया ।

हेटे, हेटै—क्रि वि—१ नीचे की ओर, नीचे, ऊचाई से नीचे की ओर ।

उ०—१ काळा गोरै रा कुचाळिया मकान री पगोतिया हेटै उतरण लागी ।—फुलवाडी

उ०—२ आगै कोई जोगी नगार नै सिरो । हेटै उतर आगै लोगा म्है मार उपाड रा, उणरा रोगो नो सुख देवा ।

—फुलवाडी

उ०—३ टाकरणा पोळ सू हेटै उतर वेटा नै मनाळियो नो खा नाखी ।—फुलवाडी

२ जमीन पर, आधार पर ।

उ०—१ पण काम्या रानी सू राव रही ई [illegible] तो उण रै हीयै सन्न नाखी । हेटै सुराग देट री मारड़ जान रखी ।

—फुलवाडी

उ०—२ मामी री आगै ई कैवनी री कै उणरा पग मे सूळ गुडगी । उठै ई हेटै बैठ सूळ काढण लागी ।—फुलवाडी

३ किसी के नीचे, अधीन, अधिकार मे ।

उ०—१ जूजनू रा भोजगजोत ज्या हेटै नव री गाव है ।

—बा दा ख्यात

४ तल मे, दावने मे ।

उ०—१ दनी हिडोळै भगोला हेटै सुमाळा झाटका देता ।

—माधोसिंह सिसोदिया री गीत

उ०—२ ठोड-ठोड कचरा रा ढिगला, आगणा रा नीवडा हेटै खीटा रा थोकड़ा, एँठवाडा वासण, उघाटी पगा री अर भरणाट करती माखिया । सगळा घर मा ई एक अजाणी उदासी एक अण बोली छिया ।—अमरचूनडी

८ नीचे ।

उ०—१ वानजी माथै नी जाणै विजळी पडगी । पगा हेटै सू धरती खिसकगी ।—अमरचूनडी

उ०—२ सूळी चाढणी, सिंघ रा पीजरा मैं न्हाकणी, हाथी रा पग हेटै किचरावणी, माथै वाद बघाय मारणी ।—फुलवाडी

उ०—३ उडता विमाण री पायौ झाल हेटै टिरगी ।—फुलवाडी

५ ऊचाई से नीचे ।

उ०—१ कै डत्ता मैं पुटियौ हेटै उतरतौ कैवण लागी—

—फुलवाडी

उ०—२ अेक दिन सोनल-वरणी कवराणी भिरोखा मैं वैठी सोना री काघसी सू केस सुळझावती ही । तूटयोडा केसा री कोयौ हेटै फैंकयौ तो अेक उडती चील उणनै झाप लियौ ।—फुलवाडी

६ अधोभाग मे ।

उ०—लोवा-पोळ हेटै गोळ री घाटी कानी भुरजा ३ कराई । तिकै अदूरी रही ।—मारवाड री ख्यात

हेटौ—वि (स्त्री हेटी) १ नीचा, निम्न, निम्न स्तर का ।

आवा तरणउ मउर कालालनउ लेखउ ।—व म
४ स्नेह, ममता, प्रेम, लाड, दुलार ।
उ०—१ जिण कुवर सू राजा रै हेज, वलै 'केसी' नाम भाणेज ।
—जयवाणी
उ०—२ मही अरीया-नइ मानीइ, भली परि भाणेज । आसा पूगइ वहिनिनी, हरखि आणइ हेज ।—मा का प्र
५ वात्सल्य प्रेम ।
६ दोस्ती की भावना, दोस्ती, प्रेम, हेत ।
उ०—गगा पाखइ जळ नही, वधु पाखइ बळ नही । मित्र पाखइ हेज नही, रवि पाखइ तेज नही ।—रा मा स
७ मेल-मिलाप ।
उ०—फूस नी आग, जमाइ नौ भाग, कस्त्री ताग पाणी नौ साग । दीवा नौ तेज, दुरजन नौ हेज, उधारा नो वैपार राड नौ सिणगार ।
—रा सा स
८ श्रद्धा ।
उ०—सहज सुरगा हो चगा जिनजी माभलौ, विनय तरण ज वयण । हु तुझ चरणे हो आयौ ध्यायौ हेज सु, साचौ जाणी सइण ।—वि. कु
९ आदर, सम्मान ।
उ०—डाटाळी की पडूतर देवै उण पै'ला चीरहरा हेज छळकावता कैवण लागा—जलम देय पगा आपो मभळाया पछै आप दोना री फरजन तौ पूरी व्हियौ । — फुलवाडी
१० स्वाद रस ।
उ०—अनइ द्वितीय रीत्या, मेघ पाखइ जळ नही, वाह पाखइ वल नही, अन्न पाखइ हेज नही चक्षु पाखइ तेज नही ।—व स
रू भे —हेजि, हैज ।

हेजइ—क्रि. वि —'हेज' से प्रेम से, प्यार से ।
उ०—चद चकोर नणी परइ, निरखता मुख थाय । हीयडु हेजइ उल्हसइ, आणद अगि न माय ।—स कु

हेजणौ, हेजवौ—क्रि स —१ प्रेम करना, प्यार करना, मुहब्बत करना ।
उ०—यै चारो पद पलिग कै, साई की मुख सेज । दादू इन पर वैस कर, साई सेती हेज ।—दादूवाणी
२ लाड करना, दुलारना या दुलराना ।
३ वात्सल्य भाव से द्रवित होना ।
उ०—वा कुत्ती म्हारै सू तौ लाख गुणा वत्ती वड भागण है । कूकरिया नै हेज, वोवा तौ चुंघाया ।—फुलवाडी
४ उल्लसित होना, उमगित होना ।
उ०—हस गमणि हेजइ हीइ, राति दिवस सुख सग । राणी लीण हुई तुरत, जिम चदन तरुहि भुजग ।—प च चौ
५ दोस्ती या मित्रता करना ।
६ मेलमिलाप करना ।
७ श्रद्धा होना, आदर करना ।
८ रस लेना, स्वाद लेना ।
९ इश्क या लगाव होना ।
हेजणहार, हारौ (हारी), हेजणियौ—वि० ।
हेजिओडौ, हेजियोडौ, हेज्योडौ—भू० का० कृ० ।
हेजीजणौ, हेजीजवौ—कर्म वा० ।

हेजम—देखो 'हैजम' (रू भे)

हेजाळु, हेजाळू, हेजालू—वि —१ जिसके मन मे प्रेम हो, स्नेह हो, प्रेमी, स्नेही ।
उ०—आज हो हेजइ रे हेजालू हियडै हरखियइजी ।—वि कु
२ जिसमे वात्सल्य हो ।

हेजि—क्रि वि —१ 'हेज' से, प्रेम से, प्यार से ।
उ०—सवल पणइ सघली अवल, ऊजाइ अमि वेगि । जोड माधव आवतु, हरखइ हीयडा-हेजि ।—मा का प्र
२ देखो 'हेज' (रू भे)
ऊ०—इम जाणी अति अलवइ, आपइ रति फन सार । कपट-हेजि हलती करइ, लोभ न गणइ लगार ।—मा का प्र

हेजियोडौ—भू का कृ —१ प्रेम, प्यार या मुहब्बत किया हुआ ।
२ लाड किया हुआ, दुलारा हुआ, ममत्व युक्त ३ उल्लसित या उमगित हुवा हुआ ४ दोस्ती या मित्रता किया हुआ ५ मेल मिलाप किया हुआ ६ आदर किया हुआ, श्रद्धा युक्त ७ रस या स्वाद लिया हुआ ८ इश्क या लगाव हुवा हुआ ९ वात्सल्ययुक्त ।
(स्त्री हेजियोडी)

हेजी-मोगर—स पु —आग पर पकाई हुई निम्न जलाशीय चने की दाल, 'फरकी' चने की दाल ।
उ०—अमल खावै, चूटियौ चूरमौ चाटै । ऊपर मू **हेजीमोगर** अर प्याज पापडा रा साग लहसण रै लाल भोळ मैं फलका री मोळ मेटण जीमै है ।—दसदोख

हेजे, हेजै, हेजै—क्रि वि —प्रेम मे, प्यार से, श्रद्धा मे ।
उ०—१ (विद्या) पद्मणी सेजै पोढु नही रे, हेजै न करु रे, सग । पद्मणी ऊपरि कीजै उवारणा रे, राज रमणी सरवग ।
—प च चौ
उ०—२ आज रा मीत वहुला इमा, कोई गिणै नही हित कियौ । कहौ इसै मित्र धरमसीह कहै, हेजै किम विकमै हियौ ।
—ध व ग्र
उ०—३ दादू तौ पिव पाइयै, भावै प्रीति लगाइ । हेजै हरी बुलाइयै, मोहन मदिर आइ ।—दादूवाणी

हेजौ—देखो 'हैजौ' (रू भे)

हेट—वि —१ निम्न स्तर का, नीचा ।
उ०—पछै स १६५२ राजा सूरजसिंघ लवेरा वासै गाव २५ दिया, तठा पछै परधानगी दी । पछै स १६६३ लवेरा रै पटै ऊपर आसोप

हेड-स पु [अ] १ मस्तक, शिर।
२ प्रधान, मुख्य।
३ उच्चाधिकारी।
रू भे—हेड।

हेडक्वारटर-स पु [अ] १ मुख्य कार्यालय, प्रधान कार्यालय।
२ सेना का सदर मुकाम।
३ वह कार्यालय जहा तैनाती हो, जहा [illegible] हो।

हेडणौ, हेडबौ—देखो 'हेडणौ, हेडबौ' (रू भे)
उ०—मुळनाणी [illegible] मन वसी, [illegible] नइ [illegible]। [illegible], हसि नइ कहइ, आणउ हेडि तुखार।—ढो मा.
हेडणहार, हारौ (हारी), हेडणियौ—वि०।
हेडिओडौ, हेडियोडौ, हेड्योडौ—भू० का० कृ०।
हेडीजणौ, हेडीजबौ—कर्म वा०।

हेडवणौ, हेडवबौ-क्रि स—देखो 'हेडणौ, हेडबौ' (रू भे)
उ०—धरिया मुहरि अणि गिरधारी। हेवै दळ हेडवण हजारी।
—वचनिका
हेडवणहार, हारौ, (हारी), हेडवणियौ—वि०।
हेडविओडौ, हेडवियोडौ, हेडव्योडौ—भू० का० कृ०।
हेडवीजणौ, हेडवीजबौ—कर्म वा०।

हेडवियोडौ—देखो 'हेडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हेडवियोडी)

हेडाउ, हेडाऊ—देखो 'हेडाऊ' (रू भे)
उ०—जिम हेडाऊ तुरगम पालइ, जिम वणिक हथेली नउ फोडउ पालइ, जिम तबोली पान सभालइ, तीणइ परि पुन पालइ।
—व स

हेडिंग-स पु [अ] शीर्षक।

हेडियोडौ—देखो 'हेडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हेडियोडी)

हेडी-स स्त्री—सेही नामक जतु विशेष। (डि को)

हेडोकी, हेडोकै, हेडौकै-क्रि वि—इण वार, अब की वार।
उ०—१ पेहलोकै तौ म्हारी ऊपर सोळकीया कयी छै। हेडोकी वाजी था सारू छै।—राजा नरसिंघ री वात
उ०—२ थाहरै कहीया भाखरसी, राणी लागै तौ हेडोकै नीसरौ।
—राजा नरसिंघ री वात
उ०—३ बीजै फेरै हमीर बाप नू सलाम कर कहै छै, हेडोकै म्हारा हाथ देखौ।—अरजन हमीर भीमोत री वात

हेणा, हेणा—देखो 'हणा' (रू भे)
उ०—१ ताहरा नरसघ कहीयौ, अजमेर आवै तद सासरै जासू, हेणा तौ सासरै जावू नही।—राजा नरसिंघ री वात
उ०—२ हेणा भा भाई करम छै। विद्या खेल अर रावळै मानीयौ छै। आठ पोहर हजूर रहे।—ठाकुरै साह री वात

हेत-स पु—१ प्रेम, प्रीति, स्नेह, प्यार। (अ मा)
उ०—१ [illegible] गो हेत [illegible] आणियौ [illegible] धाया।
—गोपाळ दास गौड री वारता
उ०—२ [illegible] हेत [illegible], [illegible] सदतार सीध।
—रि स
उ०—३ [illegible] हेत 'गोरख' [illegible], [illegible]।
—ग र
उ०—४ अण [illegible], [illegible] बदर [illegible]। [illegible] आया नही, [illegible] हेत न [illegible]।—अनुभववाणी
२ वात्सल्य, ममता, लाड, दुलार।
उ०—१ दस माम उदरि धरि [illegible], [illegible] जिवडौ। पूत हेत [illegible] प्रति, [illegible] मान [illegible]।
—वेलि
उ०—२ [illegible] भला, [illegible] भला, हेत [illegible] भला, घात [illegible] भला, [illegible] भला, [illegible] भला,'।
—ग मा स
३ लगाव, मोह।
उ०—१ मान भर्यौ अर मद पीयै, भाणि [illegible] हेत। [illegible] जावर्सी, ज्यु मूळै रा रेत।—अनुभववाणी
उ०—२ हरीया मागी मन मुखी, माया माही हेत। मयुरैक गाउं रेत मैं, घोर बीयाजू देत।—अनुभववाणी
४ श्रद्धा, भक्ति।
उ०—१ ज्यू या कुगुरा रै जोग मू खोटा मत मैं पडयौ हो। तिण नै उत्तम पुरखा चोखौ मारग पमायौ। अनै तै बनी गुरु नू हेत राखै तौ बडौ मूरख।—भि द्र
उ०—२ ऊचा कुळ नीचा करमन का, भगति बिना भाडा भरमन का। हेत प्रीत अजन तै राखै, नाव निरजन का नही दाखै।
—अनुभववाणी
उ०—३ लोचा गौरा और मागौ, पूल्ह वचन विचार। ऊदो अननी हेत सेती, झूलै जस दवार।—वि स सा
५ मेल-मिलाप, सम्पर्क।
६ इश्क, मोहब्बत, यौन सम्बन्ध।
७ आनन्द, हर्ष।
उ०—मधु प्यार पगतिया लै लीन्या, पायलिया झणकै जगा जगा। नैण मगलिया झुबळक झुबळक, हा हेत सिडावै मगा मगा।
—सकुतला
८ देखो हेतु' (रू भे)
उ०—१ तिण राव दुरगै कसबौ नवौ वसायौ नै स्री रामचद्रजी रै नाम सू रामपुरौ ठाकुरा रै हेत नाम दियौ।—नैणसी
उ०—२ तिका हिज हेत रगी नह तोप, रही वजि रीठ बिहू वळ रोप। जिका सणणकि भणकिय जेह, सुवा भड भुम्मि हुवा धड

उ०—गया पाप परदेस, पहौम जित धुरतै बेठा । गग चढी ब्रह्मड, अटचा हर करता हेटा ।—ह पु वा

२ नीच, तुच्छ, हीन ।

३ जिसकी ऊचाई कम हो ।

४ नीचा, नीचे ।

५ शान्त ।

उ०—विगर मदत नरमी रै क्रोध किणी बादसाह री हेटौ न वैठै । —नी प्र

रू भे—हेठौ, हेटौ ।

हेट्ठिम, हेट्ठिम—वि [स अधोवर्ती] जघन्य सयमधारी, केवल वेषधारी, 'अधोवर्ती' (जैन)

हेठ—वि—१ नीचा ।

२ कम, घटकर ।

रू भे—हैठ ।

३ देखो 'हेटै' (रू भे)

उ०—१ दिन येता रही वरै नह दूजौ, जुध केना बीता जम जाळ । साही चाल अछर तिय महति, वाही उत्तरि हेठ वरमाळ । —उदैभाण राठौड री गीत

उ०—२ यादव कुळ ना सेठ नै, जेठ कही समझाय । नाणी द्रेठ नै हेठ तै, सौ मैं कवण अन्याय ।—ह पु वा

उ०—३ सुर नर मुनिवर वस किये, ब्रह्मा विस्नु महेस । सकळ लोक के सिर खडी, साधू के पग हेठ ।—दादूबाणी

हेठलौ—देखो 'हेटलौ' (रू भे)

उ०—१ एक उसीसइ तडफटइ, पागनि पडीया एक । मिज्या हेठलि साथरइ, सूता रहइ अनेक ।—मा का प्र

उ०—२ सरप कही–म्हारै छाती हेठली मूठी दोय धूळ लेय जा । तोनू जिकौ विरोध भाव जोवै तिका ऊपर एक चुटकी धूळ गेरजै सौ भसम होय जासै ।—माई री पलक मैं खलक री बात

उ०—२ गळा हेठला केस, कक्षादिक गुह्य प्रदेस । तै सवारै नही ए विरेचन लेवै नही ए ।—जयवाणी

(स्त्री हेठली)

हेठा—देखो 'हेटा' (रू भे)

हेठि—१ देखो 'हेटि' (रू भे)

उ०—१ कान हेठि कर करिउ जु सूतउ तउ अम्हि कहीयइ करग निरुत्तउ, इसीय वात मन भीतरि जाणी गूझू न कहीउ कूती राणी ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ एक परवत ऊपरि चढइ, एक ऊतरइ हेठि । काम क्रोध मद मारतु, जिम राउ रमइ आखेटि ।—मा का प्र

२ देखो 'हेठौ' (रू भे)

हेठिया—देखो 'हेटिया' (रू भे)

हेठिलौ—देखो 'हेटलौ' (रू भे)

उ०—विसहर ! तू निरविस जरी, खरी न आवइ खति । ससिहर सिर ऊपरि रहइ, नू हेठिली हीचति ।—मा का प्र

(स्त्री हेठिली)

हेठी—स स्त्री—१ अप्रतिष्ठा, अपकीर्त्ति ।

२ वेइज्जती, अपमान ।

३ हीनता, न्यूनता, तुच्छता ।

रू भे—हेठि ।

४ देखो 'हेटी' (रू भे)

५ देखो 'हेटै' (रू भे)

उ०—१ मुलताण उतरति, कुरवाण रहति, वारै वारै वरस दरिआवा माहे जेहाजा हेठी चली आवी ।—रा सा स

उ०—२ इहा तौ नर दीसै छै कोई, सती तिहा हेकपै होई । रावै मील भागेला मोई, हेठी वेठी अग गुपोई ।—जयवाणी

उ०—३ मोनै सूप्यौ कवण जजाल ए । फरमी दीधी हेठी राल ए । —जयवाणी

हेठे, हेठै—देखो 'हेटै' (रू भे)

उ०—१ वरसै नू रायपाल कह्यौ—'तू घरै जा । सावण री तीज छै ।' ताहरा वरसै कह्यौ—'आपणी जावणी तरवारिया हेठै छै । —वरसै तिलोकसी री वात

उ०—२ दिनै ऊचा रहै । रात्रि हेठे दुकान मै वखाण देवै, परखदा घणी होवै ।—भि द्र

उ०—३ देवळी रा तळाव वासै वाहळौ छै । तिण परै खेडौ छै । मी० दुरगा री वसायौ । खेत देवळीया सै खडीजै छै, नै लाडपुरा हेठे खेत आया छै ।—नैणसी

उ०—४ गाव जोधै धरती लेनै कुवर वीदै न् दीवी हुती । सु आज धरती वीदैजी रा पोत्रा वीदावता हेठै छै ।—नैणसी

उ०—५ दखिण मैं माह रै तथा इण रा तीजा कुपुत्र रै साय केही जुद्ध जीति केही पुर, दुरग दाबि पचहत्तरि लाख ७५००००० री मुलक दिल्ली हेठै पटकियौ ।—व भा

उ०—६ आय नै उतरियौ हो ढोला अखीवड रै हेठै । मेहडलौ वूठौ हो म्हारा गाढा मारू हीरा मोतीया रे ।—लो गी

हेठौ—देखो 'हेटौ' (रू भे)

उ०—१ सौ जाणै आपरी त्रोटि मैं पनग नू पोय पखा री प्रसार करतौ गरुड री बाळक आकास मारग सू हेठौ थियौ ।—व भा

उ०—२ ताहरा इया ठाकुरा वीरमदे नू पकड वाह अर गढ सू हेठौ उतारियौ, नै गार्ग नू टीकी दियौ ।—नैणसी

उ०—३ सखी री जल सीतल पीजै जेठौ, पीउ नायौ अजहू वेठौ । जाण्यौ कुण करिहै वेठौ, नाणी मुझ नजरा हेठौ हो लाल । —ध व ग्र

उ०—४ पछै गजराज मस्तक सगेत दाहिमौं वाहण त्रिहूण हेठौ आय पडियौ ।—व भा

उ०—डाढाळी की पडुत्तर देवै उरण पं'ला ई चील्हरा हेज छळ-कावता कंवरण लागा—जलम देय पगां आपी सभळायां पछै आप दोना री फरजन तौ पूरौ व्हियौ।—फुलवाड़ी

३ सुनाना।

४ कहना।

५ चोट या हानि से बचाव कराना।

६ हालत सुधारना।

७ काम का भार उठाना।

८ बतलाना, समझाना।

उ०—ब्याव रै खरचा री सगळी हिसाब सभळाय म्हनै तीज रै से दिन दिसावर विणज सारू सिधावरणौ है।—फुलवाडी

सभळाणहार, हारौ (हारी), सभळाणियौ—वि०।

सभळायोडौ—भू० का० कृ०।

सभळाईजणौ संभळाईजवौ—कर्म वा०।

सभळावणौ सभळाववौ—रू० भे०।

सभळावण, संभळावणि, सभळावणी-स. स्त्री —१ देखो 'भोळावण, भोळावणी'।

उ०—हरसा समरथ मोमी रे बाई री सभळावण दीनी सूंप। म्हारा समरथ मोमी बाई रे सिर पर छाया रे राखियौ।

—जीणमाता री गीत

२ देखो 'सुणावणी'।

सभळावणौ, सभावबौ—देखो 'सभळाणौ, सभळावौ' (रू. भे.)

उ०—१ घडणी दियौ हो जकारौ पाछौ येरचो नही, मढणी लियौ जकारौ ओठौ मोडयौ नही। ई हाथ लियौ वी हाथ डकारचौ सभळावण री सार नही जाणी।—दसदोख

उ०—२ सउदतार पेखी पेखी सुख लहइ मारू नइ सभळावी कहइ।—ढो. मा

सभळावणहार, हारौ (हारी), सभळावणियौ—वि०।

सभळाविओडौ, सभळावियोडौ, सभळाव्योडौ—भू० का० कृ०।

सभळावीजणौ, सभळावीजवौ —कर्म वा०।

समळि—देखो 'सवळी' (रू. भे.)

उ०—१ काव्यौ तुरका कंद सू. सेपारी कर साय। सभळि वाळौ रूप सज, पूगळ दीध पूगाय।—पदमजी बारहठ

उ०—मेसौ लाई कंद सू सभळि रूप सजाय। मेहाई कीधी मया, अवखी विरिया आय।—पदमजी बारहठ

उ०—३ जुलम ग्रह माहि रै जकड जादम जुटै, लै कवण अमन जळ तणौ लेखौ। संभळो साजकर सिंधु पुगा सकत, सभाळै भकत निज राव मेखौ।—वालावक्स बारहठ

संभळियोडौ-भू का. कृ.—१ सचेत हुवा हुआ, सावधान हुवा हुआ.

२ ठीक स्थिति मे आया हुआ, हालत सुधरा हुआ।

३ देखो 'सामळियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. सभळियोडी)

संभळी—देखो सवळी' (रू भे.)

संभव-स. पु [स.] १ उत्पत्ति, आविर्भाव।

उ०—१ सिव अवन कन्या हूत सभव अगनि जोति अनोप ए। सुभ द्रस्ट भूप निहारी प्रज सहि अघट किरि सुख ओपए।

—रा. रू

उ०—२ सीहा कै कुळ सभव सदीव, जीवका हेत हसि देत जीव।

—ऊ का.

२ मुमकिन।

उ०—रचना ईस्वररी ईस्वरता रोचै, समदम स्रद्धा विण सभव नहि सोचै।—ऊ का.

३ सयोग।

४ प्रमाण।

उ०—जठै और कोई गति न जाणियां चालुक वस री तेवीस ही पीढिया मैं घणा रै अंकस्थ पुत्र हुवा होई इसडा ही संभव रा विचार थी खटावै।—व भा

५ स्त्री प्रसग, सहवास, मैथुन।

६ कारण, हेतु।

उ०—१ जिण थी स्वतत्र सभव मैं एक आपरा आलय हू काढि देण री उपकार करि जिकण रा सीलरा मे सहियौ न जाइ इसडा अनेक अनरथ कुमाइ मनमत्तै बहे तिकण री अत इसडौही खटावै।

—व. भा.

उ०—२ सातवाहन रा चरित्र नू आदि लेर असियपाळ वीसळदेव वल्लभाचारय रा चरित्र परयत इसा ही प्रमाणिका रै लिखियौ कही गई तथा कही जावसी तिण कारण करि कोई उदत रा संभव मैं सदेह ही दीसै तथापि समरथा री लेख बलात्कार ही खटावसी।

—व. भा.

७ किसी काम या बात के घटित होने की अवस्था।

८ सर्व राजा का पुत्र, एक राजा।

९ शंकर का पुत्र, गजानन।

उ०—सिव सभव सिव रूप सुरेसर सिव गुण दियण प्रणाम कथै सुर।—रा. रू.

वि —१ जो किये जा सकने के योग्य हो।

२ जिसकी सभावना हो, सभावित।

संभवणौ, संभवबौ-कि स.—संभव होना।

उ०—१ सीहा विपत न सभवै, ठाळी जाय न ठाळ। हाथळ सूं पल हेक मे, सीहा हुवै सुगाळ।—वा दा

उ०—२ वकचूलीया मैं कह्यौ सवत अठारै तेपनै पछै धरम री उद्योत होसी। इण वचन रै लेखै तौ तेपना पहिली साध नही इम सभवै।—मि. द्र.

संभवनाथ-स. पु —जैन धर्म के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे

सेह ।—मे म

उ०—३ सर्वेपं तें सकल ग्रथन् लई केटलू हेत । कहीस कथा हू नल राजा नी थोडा माहे सकेत ।—नळास्यान

उ०—४ सिख गुर कु मिर धरत है, हरीया हरि कै हेत । विण वूझ्या गुर ग्यान कु, सौ काहे कु देत ।—ग्रनुभववाणी

उ०—५ वूपिया धकै चिटका धिरत वकधकै, वारूनी डकडकै तरफ वामी । वकवकै वीर जोगण छकै दौ वखत, भकभकै हुतासण हेत भामी ।—मे म

११ देखो 'हित' (रू भे)

रू, भे—हेता, हेतौ, हेतौ ।

हेतइ—देखो 'हेतु' (रू भे)

उ०—तिण हेतइ भाखी मुभ कि, गुभ हिरदै तणी रे । कीजै तमु उपरि काज कि, विचारी ग्रापणी रे ।—प च चौ

हेतभाव–स पु—प्रेमभाव ।

उ०—हा, हा री हसी विखरै ही, जाणै मस्ती रौ रग उडै । जगळ री हिंसा थमगी ही, ग्रौ हेतभाव विखरचौ सगळै ।—मकुतला

हेतव–स पु—१ चारण कवि । (डिं को)

उ०—द्रव न्याय नीर करखत दुरस, वरखन दुरस उदार वळ । कळाधर कमुद ग्रविकाम कर, किय विकाम हेतव कमळ ।

—केहर प्रकाम

२ कवि ।

उ०—रतन पव स्रवत उमड सत्रवट रिग्र, जळ कळा सघन ध्रुव वरद उजवाळ । हम रज प्रिया रिखपाळ जग हेतवा, ग्रतर ममि मेर यद वियौ 'छाताळ' ।—सनमानमिघ हाडा री गीत

३ देखो 'हितु' (रू भे)

उ०—तेज भूप देख ताम, निमै पाय मीम नाम । हेतवा मपर हाम, वरमाळ लिया नाम ।—र रू

हेता—देखो 'हेत' (रू भे)

उ०—दुतीया दुख मुख भुगतै केता, गाम नाम मु नाही हेता । नाव मनेह न जानै कोई, मैं सतन कहि थाका मोई ।

—ग्रनुभववाणी

हेतारथ—देखो 'हितारथ' (रू भे)

उ०—१ ग्रौसर ग्रायै वोलिवौ, हरीया हरि कै हेत । हरि हेतारथ वाहिरौ, ता मुग्व पडमी रेत ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ वाच्या गूभ भोज जै ग्राव्या, कुग्ररी ना लेख । हेत सकेन हेत हेतारथ, माहइ घणा विमेख ।—रुखमणी मगळ

हेताळ, हेताळु, हेताळू–वि—१ हित चाहने वाला, हितैषी ।

उ०—१ माडधग सैं ऊन मगाई, ताजी कराई तयार । चार गजा कै फेर मैं हुती ग्रोढ लेनौ ग्रवमार । जिका गोघी 'रेंवतें' मीन्ही जी कारीगर कीमियै कीन्ही जी, हेताळू हेत सू दीन्ही जी ।—ग्रग्यात

उ०—२ गताधम मैं दिन काढता ग्रेकर ग्रापौ ग्राप नै राजस्थानी री हेताळु वतावणियै ग्रेक भलै मिनख नै कैवता सुणियौ कै राजस्थानी तौ कोरी सामती भामा ई रैई । भलै मिनखा नै कुण समभावै, पाच वटेरा रा नाव जीमा सू सुणिया जिका तौ ऊट खटता कै मुत्तरमवार हा । पछै म्हारै घर मैं ग्रा धरनी कीकर दियौ ।—चितराम

२ प्रेमी, स्नेही ।

उ०—१ पवारौ घण हेताळ साहिवा, ऊभी जोऊ वाटडली ।

—लो गी

उ०—२ चोटी चौथै मास, गूथी गुणा सजाय नै । हेताळू री गाठ, जाभै दुख मैं नी खुलै ।—ग्रग्यात

३ मित्र, दोस्त ।

हेति–स स्त्री [स] १ ग्रस्त्र, हथियार ।

२ वज्र ।

३ भाला ।

४ ग्राघात, चोट, प्रहार ।

५ प्रकाश, चमक ।

६ शोला, ग्रगारा ।

उ०—धुगीन तोप की ग्रलात, घोर सोग पै धरै । प्रदीपमान हेति ग्रच्छ, स्वच्छ ग्रच्छ मैं परै ।—ऊ का

७ मधु माम या चैत्र मास मे सूर्य के रथ पर रहने वाला प्रथम राक्षस राजा ।

वि० वि०—यह प्रहेति नामक ग्रसुर का भाई था, इमकी पत्नी का नाम कालकन्या भया था । इमके विद्युत्केश नामक पुत्र तथा सुकेशी नामक कन्या थी ।

हेतिकरण—देखो 'हितकारी' (रू भे)

उ०—सोहै दिनकर कुभ मिर, पच्छिम पवन प्रकाम । हेतिकरण वणिगी हुवा, ग्राया फागण मास ।—रा रू

हेती—१ देखो 'हेत' (रू भे)

उ०—१ तन मन करि हेती, रसना मेनी, रामोराम रटदा है ।

—ग्रनुभववाणी

उ०—२ ग्रहिनिम राम नाम ग्रवगाहै, ऐकै तन मन हेती । जन हरिराम तिरै मोई तारै, ग्रापा मेवग मेती ।—ग्रनुभववाणी

२ देखो हेतु' (रू भे)

हेतु–स पु [स] १ कारण, वजह, मवव, उद्देश्य ।

उ०—१ वभण मिमि वदै हेतु सु वीजो, कही स्ववणि मभळी कथ । लिखमी ग्राप नमै पाइ लागी, ग्रचरिज ग्री लाधै ग्ररथ ।

—वेलि

उ०—२ इत्यादिक प्रस्नोत्तर करता, हेतु जुगति हिया माहि धरता । परदेमी राजा प्रति वोध्यउ, केमी गुरु स्रावक कियौ सूधउ ।

—स कु

उ०—३ माहो माहि वाता कर हेतु युक्ति गीख सुमति ग्राछी नरै

दरसन देई पाछा कटालियै पधार जाता ।—भि द्र
२ उद्भव स्थल, निकास, उत्पत्ति ।
३ साधन, जरिया ।
४ अभिप्राय, उद्देश्य कारक या उत्पादक विषय ।
५ वह व्यक्ति या वस्तु जिसके होने से कोई बात हो, प्रमाणित करने वाली बात ।
६ ज्ञापक विषय ।
७ तर्क विज्ञान व न्याय दर्शन मे वर्णित प्रमाणो मे से कोई प्रमाण ।
८ एक अलकार विशेष, जिसमे कारण का कार्य सहित वर्णन होता है ।
उ०—हेतु अलकृत जब हुवै, कारज कारण सग । जो कारज कारण जवै, वसत एक ही अग ।—र्वि सि
क्रि वि —१ लिये, वास्ते, निमित्त ।
२ देखो 'हितु' (रू भे)
उ०—पलका मिचिया पछै हेतु टळ-टळ नै जावै ।
—अरजुनजी बारहठ
रू भे —हित, हेउ, हेत, हेतड, हेती, हेतू, हेतै ।

हेतुभेद–स पु [स] ज्योतिष मे ग्रह-युद्ध का एक भेद ।

हेतुमान–वि [स हेतुमत्] जिसका कुछ कारण हो, हेतु हो ।

हेतुवाद–स पु [स] १ तर्क विद्या, तर्क शास्त्र ।
२ कुतर्क ।
३ नास्तिकता ।

हेतुवादी–वि [स] १ 'हेतुवाद' के सिद्धान्त को मानने वाला ।
२ तार्किक ।
३ नास्तिक ।

हेतुविद्या–स स्त्री [स] तर्कशास्त्र ।

हेतुहेतुमद्भाव–स पु [स] कारण और कार्य का सम्बन्ध ।

हेतुहेतुमद्भूतकाल–स पु [स] क्रिया के भूतकाल का एक भेद । (व्याकरण)

हेतू—१ देखो 'हितु' (रू भे)
उ०—१ पिंड मैं घणौ ज प्यार, मिळता मन हरखित मिळै । वै हेतू लखवार, मिळजौ दिन मैं मोतिया ।—रायसिंह सादू
उ०—२ दीपचद मुणोत मन मै धरौ देई आपरा हेतू मित्रा नै कह्यौ —भीखणजी रौ वचन इसौ निकल्यौ सौ पाटा-पाटी समेटतौ दीसै हे ।—भि द्र
२ देखो 'हेतु' (रू भे)

हेतै—देखो 'हेतु' (रू भे)
उ०—तिण हेतै लसकर तुमै, विदा करावौ साहि । सहस पच राखौ नखै, जौ डर आणौ मन माहि ।—प च चौ

हेतौ–वि —१ हतप्रभ, निराश, हतोत्साह ।
उ०—चक्र खपर धारिया आप कर श्री चडी, हारिया मित्र दळ होय हेता । मीर धण पीर सामै धकै मारिया, जारिया जननयट जुडै जेता ।—बालावक्ष बारहठ
२ देखो 'हेत' (रू भे)
उ०—भाया भाया माही माहि मैं, थोडी होडी हेतौ रे । घणी लडाई नै ईगकी, बधगी उग भरत सेती रे ।—जयवाणी

हेनाळ–स स्त्री —घोडे के सुम की नाल, सुरताण ।

हेप, हेफ—देखो 'हैफ' (रू भे.)

हेमकू–स पु —हिमालय पर्वत ।
उ०—पत्रा विहगेस वाळी मदार हेमकू पव्वै, धोम पाळकूट मेघधारा गगधार । धूप दान कीत राम साह बाह मोटा धणी, तीनू वाना तूझ नगी मोखरी दातार ।—र रू

हेमग–स पु [स] १ विष्णु ।
२ ब्रह्मा ।
३ गरुड ।
४ शेर, सिंह ।
५ सुमेरु पर्वत ।
६ हिमालय पर्वत ।
७ बर्फ, हिम ।
उ०—१ जळै व्रख नीला वहै विरख झाळा, वहन्नै महस्स वव व्योम व्याळा । वडा स्रग सीतग हेमग वाळा, जरी फूल आगै भरै ट्रक फाळा ।—ना द
उ०—२ कसै पाखरा चम्मरा जूह काळा, वणै जाणि पाहाड हेमग वाळा । धजा फावि नेजा गजा सीस ढल्ल, माथै उड्डिअ जाणि गुड्डी महल्ल ।—वचनिका
८ स्वर्ण, सोना, कचन ।
९ चपक वृक्ष ।
वि —१ सुनहला ।
२ ठडा, शीतल ।
रू भे —हेमाग ।

हेमत, हेमतरित, हेमतरितु–स स्त्री [स हेमन्त, हेमन्त-ऋतु] १ षट् ऋतुओ मे से एक ऋतु जिसमे मार्गशीर्ष व पोष मास आते हैं । मतान्तर से इसमे पोष व माघ मास भी माने गये है ।
उ०—१ रितु हेमत पोस नै माह । फागुण चैत वसत आराह ।
—जयवाणी
उ०—२ हेमतरित लागी । सिसिर रित जागी । रूक रहिल वागी । काइरा नू ठडि लागी । हाथ पग धूजै धड धड ।—वचनिका
उ०—३ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति उणि हेमतरित माहै वाळी मूध सुहव गोरी सया तना रौ रस छाती रौ रस अधरा रौ सवाद अम्रत सरिखौ लागै छै ।—रा सा स
२ शीतकाल ।

उ०—हेमत जु महा सीत तें कै डरि कोई निसि कहता राति कै पैंडै नहीं चालै छै।—वेलि टी

३ एक छन्द विशेष।

उ०—अतेय दो दिव आदि दुवेज कार। हेमत सेम कथीयौ क्वि कठ हार।—पिं मि

रू भे—हिमत, हेमता, हेमति, हेमतु, हेवत, हैमत।

हेमता—देखो 'हेमत' (रू भे)

हेमति, हेमतु—देखो 'हेमत' (रू भे)

उ०—१ भजति सुग्रह हेमति सीत मैं, मिळि निसि तु न कोई वहै मगि। कोई कोमळ वसत्रैं कोइ कवळि, जण भारियौ रहति जगि।
—वेलि

उ०—२ अति वसतु आवियौ रितु हेमतु। जिहा सीय ना भर, सेवइ, निरवात घर।—रा सा स

हेमसु, हेमसू—देखो 'हिमासु' (रू भे) (अ मा)

हेम-स पु [स हेमिन] १ स्वर्ण, सोना, कचन।
(अ मा, ह ना मा)

उ०—१ किहा ऐरावण किहा अजा ? किहा पीतल किहा हेम। अवर सहू अै अधीउ, माधव जोता तेम।—मा का प्र

उ०—२ गौ-कोटि-दान ग्रहणँ तु कासी, मकरै प्रयागै निज कल्प-वासी। सुमेरु तुल्य दें हेम दान, नहिं तुल्य नहिं तुल्य गोविंद नाम।
—ह र

उ०—३ साहताम समसेर, जडत जवहरा जमधर। मुलक वधारै समपि, हेम तौडा गज हैंमर।—सू प्र

२ वह वस्त्र जिस पर सोने का कार्य किया हुआ हो।

उ०—१ कनक काया घट कूकू लोल, कटीण पयोहर हेम कचोळ।
—वी दे

उ०—२ सुचि कीजै स्नान सपाडा, सहु पहिरै नवि नवि साडा। हीर चीर पाटवर हेम, पहिरी सहु भूखण प्रेम।
—ध व ग्र

३ हेमत ऋतु।

उ०—१ हेम मिसर रित मेडतै, रहियौ कमधा राव। मझ विहाणै ऊगणै, दिन दिन दूणौ चाव।—रा रू

उ०—२ सरद हेम नै मिसर रित, रिति वसत ग्रीखम्म। वरखा दान वखाणि तू, ए खट रित ओपम्म।—रा सा स

उ०—३ रवि वैठौ कळमि थियौ पालट रितु, ठरंजु डहकियौ हेम ठठ। ऊडण पख समारि रहै अलि, कठ समारि रहै कळकठ।
—वेलि

४ सुमेरु पर्वत।

५ पानी, जल।

६ धतुरा।

७ केसर का फूल।

८ गौतम बुद्ध का नाम।

९ बादामी रग का घोडा। (शा हो)

वि—१ शीतल, ठण्डा।

उ०—१ प्रीतम री मुख पेखता, हिवडौ हावै हेम। नूआ पण रोकै मिळण, भलो निभावै नेम।—लू

उ०—२ माग साल मळियागरी, वळि नाळेर विदाम। सोपारी खिरणी सरस, हेम हवा तिहि ठाम।—गज-उद्धार

२ श्वेत, सफेद। ❀ (डि को)

३ पीत, पीला। ❀ (डि को)

४ देखो 'हिम' (रू भे)

उ०—१ उदधि सुजळ ऊफळै, हेम प्रघळै जळ हल्लै। दडत लाग नर देव, दमै द्रगपाळ दहल्लै।—सू प्र

उ०—२ हुवइ घटि नदी हेम हेमाळै, विमळ स्रग लागा वावण। जोवनागमि कटि कस थायै जिम, थायै थूळ नितव थण।—वेलि

उ०—३ मागु तुझनइ मागमिर, जउ मुझ आणि प्रेमि। हृदय कमनि रामा रही, त्राह म पाडिसि हेम।—मा का प्र

उ०—४ असाराण राजेस कमठाण कीधा अकळ, क्रोड जुग लगा जस कळिया। पाळ जोय हेम रा गरव टळिया पहळ, टाळ जोय ममद रा गरव टळिया।—जोगीदास कवियौ

उ०—५ अव विवर तन, सीत सुनौ सव तीरथ न्हावै। कासी छाड देह, हेम वसि हाड गमावै।—ह पु वा

उ०—६ मैं तौ दासी राज री, दुख दै कीनी नेस। अव तौ गळणा हेम मैं, आइ घर री रेस।—स्त्री हरिरामजी महाराज

हेमअद्र—स पु [स हेम-अद्रि] १ हिमालय पर्वत।

उ०—गरव सत्रा गजणा, रमा सुचित रजणा। भुजा मजोर मजणा, चढाय सिंभ चाप। गळै दुनेम गाव रा, मधीर जै सभाव रा। अमग हेमअद्र सा, अडोळ नग आप।—र ज प्र

२ सुमेरु पर्वत।

हेमअनड—स पु—१ सुमेरु पर्वत।

२ हिमालय पर्वत।

उ०—कहर करामत 'जसा' हींदवाण चा सहसकर, जुझ कुण छातधर अवर झालै। तेज मुजडा तणै ताप मत्र 'गजण' तण, हेमअनडा जुई गळै हालै।—नाथौ माडू

हेमअरि—स पु [स] स्वर्ण का शत्रु, सीसा।

हेमकार—स पु [स] १ स्वर्णकार, सुनार।

उ०—सरवगि सीस मुडिन विहाल, मग लोपि जात वामाग व्याल। धत पात्र रोम चरमा निहार, श्रम हीन रजक द्विज हेमकार।
—ला रा

२ सोना, स्वर्ण।

हेमकूट—स पु [स] हिमालय के उत्तर मे स्थित एक पर्वत।
(पौराणिक)

हेमकेस—स पु [स हेमकेश] शिव या महादेव का एक नामान्तर।
हेमगढ—स पु [स] १ सोने का गढ।
२ लका।
उ०—ओद्रकै हेमगढ ग्रही दध ग्रोद्रकै, साकै सुरामाण छत्र खउ सारै। सुतन 'जसराज' अवतार खट तीस वस, थाटयभ नमै ग्राय पाव थारै।—ईसरदास बारहठ
हेमगर, हेमगिर, हेमगिरि—स पु [स हेमगिरि] १ सुमेरु पर्वत जो सोने का माना जाता है। (डि को)
उ०—हेमगिर भाण दध चद स्रव अहम, हू निज जना पाळगर अधिक रघुनाथ।—र ज. प्र
२ हिमालय पर्वत।
उ०—नदि दीह वधै सर नीर घटै निसि, गाढ धरा द्रव हेमगिरि। सुतरु छाह तदि दीघ जगत सिरि, सूर राह किय जगत सिरि।
—वेलि
रू भे—हेमागिर, हेमगिरि, हेमागिर, हेमागिरि।
हेमचद, हेमचदर, हेमचद्र—स पु [स हेमचद्र] १ इक्ष्वाकुवशीय एक राजा जो विशाल राजा का पुत्र था।
२ कलिकाल सर्वज्ञ के नाम से प्रसिद्ध एक जैनाचार्य जो सन् १०६६ व ११७३ मे हुए थे। इन्होने व्याकरण एव अन्य कई ग्रन्थ लिखे थे।
हेमजा—स स्त्री [स हिमजा] १ हरीतकी, हड।
२ पार्वती, उमा।
हेमजाळ, हेमजालक—स पु—एक आभूषण विशेष।
उ०—दस मुद्रिका अगुलीयक अगूयला हेमजालक मणिजालक रत्न-जालक भानक —व स
हेमता—वि—सोने का।
उ०—कनक थार भारिया गडई कटोरी भारीया। रुपाय हेमता चरु रसोईदार मरखरु।—वि स सा
हेमतुला—स० स्त्री [स] १ सोने का तुलादान, तराजू।
२ वह तराजू या तुला जिसमे सोना तोला जाता है।
हेमदता—स स्त्री [स] एक अप्सरा विशेष।
हेमदिस, हेमदिसा, हेमदिसि—स स्त्री [स हिम = हिमालय + दिशा] उत्तर दिशा का नाम।
उ०—आकुळ थ्या लोक केहवौ अचिरज, वछित छाया ए विहित। सरण हेमदिसि लीवौ सूरिज, सूरिज ही त्रिख आसरित।—वेलि
हेमपथ, हेमपथ—स पु [सं हेम-पथ] १ हिमालय पर्वत।
उ०—कळु माय हेमपथ डोहता स भद्रकाळी, मेहाळी सोहता नेत्र जाळी खळा माम।—नवलजी लाळस
२ उत्तर दिशा का मार्ग।
हेमपरवत—स पु [स हेमपर्वत] १ सुमेरु पर्वत।
२ स्वर्ण की वह राशि जो दान मे दी जाय। (महादान)
३ हिमालय पर्वत।
हेमपुसप, हेमपुस्प स पु [स. हेम पुष्प] १ चपा का पुष्प। (डि को)
२ गुलाब का पुष्प विशेष।
हेमफूल, हेमफूलिका—स स्त्री—सोनजुही का पौधा (डि को)
हेममाळ, हेममाळा—स पु [स हेममालिन्] १ सूर्य, रवि।
२ खर की सेना का सेनापति एक राक्षस।
हेमर—स पु—देखो 'हयवर' (रू भे) (अ मा)
उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति अमवाग री वाग ऊपाडी किलकिला ज्यौ ऊपाडि ऊपाडि हेमरा नाचीजै छै। भूमण ऊपरै बरछी चमकिनै रही छै।—रा सा स
हेमलव—स पु—विष्णुवीसी का ग्यारहवा वर्ष। (ज्योतिष)
हेमळ—स पु [स हेमल] १ स्वर्णकार, सुनार।
२ कसौटी।
३ गिरगिट।
हेमवत—स पु—हिमालय पर्वत।
उ०—नैमसारण्य वमेख कुरुह जागळग कहीजै। अरबुद हेमवत निमख जो वास लहीजै।—गज-उद्धार
हेमवती, हेमवती—स स्त्री [स हेमवती] १ पार्वती, गौरी।
(अ मा)
२ गगा नदी। (अ मा, ह ना मा)
३ हरितकी, हर्रे, हड। (अ मा, ह ना मा)
रू भे—हैमवती।
हेमवरण—वि—१ कनक वर्ण, स्वर्णमय, स्वर्णिम।
उ०—देही पाच सै धनुस तणी, हेमवरण उपमा घणी। सहस आठ लक्षण नामी, सुमरौ स्रीसीमधर स्वामी।—जयवाणी
२ पीला। ※ (डि को)
३ श्वेत, सफेद। ※ (डि को)
स पु—१ पीला रग।
२ सफेद रग।
हेमवळ—स पु [स हेमवल] मुक्ता, मोती।
हेमसुता—स स्त्री [स] १ पार्वती, गिरिजा।
२ दुर्गा।
हेम हेडाऊ—स पु यौ [स हेम + हेडाबुक्क] १ एक चारण जो घोडो का प्रसिद्ध व्यापारी था व महान दातार था।
२ इसके नाम पर गाया जाने वाला एक लोक गीत।
हेमाग—देखो 'हेमग' (रू भे)
हेमागद—स पु [स हेम-अगद] सोने का बाजूबध।
हेमागिर, हेमागिरि—देखो 'हेमगर' (रू भे)
उ०—सखिए साहिब आविया, जाहकी हूती चाइ। हियडउ हेमागिर भयउ, तन पजरै न माइ।—ढो मा
हेमाणि, हेमाणी—स स्त्री [स हेम-खानी] १ स्वर्ण का खजाना।

उ०—थारै माय सास अटक्योडी है तौ थू नी जावै जित्तै डोकरडी जीवती तौ रैवैला । अबै रोवै तौ पैला मादी छोड नानेरै क्यू उखलियौ । उठै काई हेमाणी गड्योडी ही ?—फुलवाडी

२ धन, दौलत, लक्ष्मी ।

३ प्राचीन काल की रुपये-पैसे रखने की एक थैली विशेष ।

रू भे —हिमाणी, हिमानी ।

हेमा—स स्त्री [स] १ पृथ्वी, धरती ।

२ मदोदरी की माता एक अप्सरा ।

हेमागिर, हेमागिरि—देखो 'हेमगिरि' (रू भे)

उ०—१ अहल्या पद रज तरै, पडव हेमागर चाढै । भारत भीखम मरै, जठै मिलडी जीवाडै ।—अरजुणजी बारहठ

उ०—२ हेमागिरि थी हाथिणी, आवइ पवन पराणि । ऊमाडी ऊपरि चढी, मारइ मन्मथ-बाण ।—मा का प्र

हेमाचळ, हेमाचल, हेमाछळ—देखो 'हिमाचळ' (रू भे)

उ० – १ चढिया 'दमतय' ऊपरा हेमाचळ हाकी । बैसाहर पाखर रवद थरहर धर थाकी ।—मालो सादू

उ०—२ नदी अर दिन वधण लागा, तळावा री पाणी अर राति घटण लागी । धण कहता प्रिथी गाढ पकडची, कठोर हुई । हेमाचळ परवत परघळचौ ।—वेलि टी

उ०—३ फौजा ऊपरा ऊजळा भाला रा डवर भळलाट करि जगाजोति जागी । जाणै वरफ रा टूक हेमाचळ पहाड माथै विराजमान हुआ ।—वचनिका

हेमाजळ—देखो 'हिमाचळ' (रू भे)

हेमाद्रि, हेमाद्री—देखो 'हिमाद्रि' (रू भे)

हेमायत—देखो 'हिमायत' (रू भे)

उ० – केइ भूप पखायत वधकणी । घुर मुज्ज हेमायत 'पाल' धणी ।

—पा प्र

हेमाळ, हेमाळइ, हेमाळई, हेमाळय—वि [स हेमन्] स्वर्णिम, सुनहरा ।

स पु —१ दीपक का पुत्र एक राग । (सगीत)

२ देखो 'हिमाळय' (रू भे)

उ०– सिधामाळ सु बीटीयौ ज हेमाळ सदा लहै सौभा, वहै चद्रभाळ तारा बीटीयौ वखाण । बीटियौ अमरा माळ मेर वदै, रहै पाता माळ सु बीटीयौ 'भीमौ' राण ।

—कविराजा बाकीदास

हेमाळे, हेमाळै—देखो 'हिमाळय' (रू भे)

उ०—१ ढोला सायधण माणजै, झीणी पामरियाह । कइ लाभै हर पूजिया, हेमाळै गळियाह ।—ढो मा

उ०—२ हुवइ घटि नदी हेम हेमाळै, विमळ स्रिग लागा वधण । जीवनागमि कटि ग्रस थायै जिम, थायै थूळ नितब थण ।—वेलि

हेमाळौ—देखो 'हिमाळय' (रू भे)

उ०—१ पाया री फिळो आडो काई ऊभो ही, जाणै हेमाळौ भाखर आडो ऊभौ है । घर वाळा साम्नै औ हेमाळौ लाघणौ दूभर व्हैगौ ।—फुलवाडी

उ०—२ वा खुद जलम मू ई पागळी है तौ पछै उणरा अतस मैं वसियोडी साच कीकर दुखा री हेमाळौ लाघैला ।—फुलवाडी

हेय—वि, [स] १ त्यागने या छोडने योग्य, त्याज्य ।

२ निकृष्ट, घृणित, बुरा ।

रू भे —हैय ।

हेरब, हेरबौ, हेरभ [स हेरम्ब] गजानन । (ह ना मा)

उ०—पाण रा करन्न महा आराण रा गदापाणी, नागरी पूडाण रा प्रम्माण रा निवान । सामान रा इद्र लोका जाणरा हेरबौ मदा, माण रा दुजोण झोका 'गुमान' रा 'मान' ।

—उमेदसिघ मादू

२ हाथी, गज ।

उ०—निका अग्ग हेरब कै छैलै तूटै । छकाया मुग री थरै गेल छूटै ।—व भा

३ भैसा ।

उ०—चक्की-पीवणी पाय भाई बचायौ, क्षुधाळी हुणै हेक हेरब खायौ ।—मे म

४ शेखीबाज वीर ।

रू भे —हेरम, हेरम, हैरव ।

हेरभ-माता—म स्त्री [स हेरब+माता] गणेश की माता, पार्वती, दुर्गा ।

उ०—भवानी नमौ सत्य आलाप वाला, भवानी नमौ ब्र द विद्या विमाला । भवानी नमौ देव हेरभ-माता, भवानी नमौ तन्नमौ मन राता ।—मे म

हेरम—देखो 'हेरब' (रू भे,)

हेरमकारी, हेरमा—म पु —घोडे की एक जाति या इस जाति का घोडा ।

उ०—अरब छइ जै घोडा, हेरमा हरीअडा नील नीलडा काळूआ काजला किहाडा कोमीग अहिठाणा पइठाणा ऊजला जहिटा सीहतग टारतेजी तोखार तोरका हेरमकारी गगाजला खुरमाणी सीधूआ कासमीर कुकणा ऊदिरा, अनेक वानि नव नवा, नीला काला स्वेत राता पीला एहवा एक अस्व पागगि सोभता छइ ।—व म

हेर—म स्त्री —१ छानबीन, खोज या पीछा करने की क्रिया या भाव ।

२ छानबीन, तलाश, खोज ।

उ०—उण ठाम आय अवसाण पाय, आतुर अनीत तिण हरी मीत । वन जिकण वेर हम करन हेर, वनकै विहार अजन कवार ।

—र रू

३ गश्त, फेरी ।

उ०—मरदा मैं थू मरद आगळौ, हेरघा थू लाट । रामगढ़ की हेर लगादे, जद जाणू तोय जाट ।—डूगजी जवारजी री छावनी

वि —हैरान, व्याकुल ।

उ०—हरि हरि उचार नर सुर हुए, हेर वार निगमी नहीं । उग वार, रथी नृप ऊपडै, आप सुगासण भाखी ।—रा रू

हेरई-स पु —एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा । (शा हो)

हेरउ—देखो 'हेरो' (रू भे)

उ०—नारद हेरउ करउ, नव खडि फिरउ, कलह यम नागरउ करइ, इसिउ रावण नरेस्वर ।—व स

हेरण-स स्त्री —१ हेरने, ढूढने या तलाश करने की क्रिया ।

२ तलाश, खोज, छानबीन ।

रू भे —हेरन ।

हेरणौ, हेरबौ-क्रि स —१ ढूढना, तलाश करना, खोजना ।

उ०—१ सो म्होकमसिंघ तो बठी धव अर तलास मे लाग रह्यो छै। झाड-झाड पहाड-पहाड हेरता थका रात दिन एक नी सोच मे जाग रह्यो छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ राज री कोजी सू कोजी लुगाया हेर-हेर मगावै अर वारै साथै प्रीत करै ।—फुलवाड़ी

उ०—३ हरीया हेरत हेरतौ, हेरन ही रह्यौ हेर । बुंद समांणी समद मैं, हेरी जाहि न फेर ।—अनुभववाणी

उ०—४ उण राज री धारी कै परकोटा रै माय घणी रात थका जकौ ई मिनख अणचीत्यौ वडै उणनै राजगर बणाय देणौ । अंडा सग अर नाच बोलणिया मिनख सूरज हेरै तौ ई नी लाधै ।
—फुलवाड़ी

२ पता लगाना, सुराग लगाना, जासूसी करना, खबर करना, जाच पडताल करना ।

उ०—१ गोगादेजी दत्तौ मार बैठा हुता । इतरै हेरौ आयौ । कह्यौ—जी, 'दलौ' हेरियौ छै, घोरदै हेरियौ छै ।—नैणसी

उ०—२ सु मूळवै चारण वेसवटै नू राजा बीमलदै रै मेलीयौ अर कहै, 'जु राजा रै घोडी कौडीधज छै । सु हेर आनजो ।
—मूळवै सागावत री वात

उ०—३ पछै गोगाजी तौ हलाणौ लेनै आपरै ठिकाणै गया । वामै पाबूजी हरियै धोरी नू कही-रे हरिया दोदै री माटिया हेर आव, ज्यु बाई नू साढिया आण देवा ।—नैणसी

३ पीछा करना ।

४ फेरी लगाना, चक्कर लगाना, गश्त लगाना ।

५ देखना, अवलोकन करना ।

उ०—१ नमि आगै तिहा थी नमिनाथ, इकवीसम आपै सिव आथि । हाली जीव जयणाए हेर, वदो जिनवर वीकानेर ।—ध व ग्र

उ०—२ छिन छिन वाट हेरता छाया, होय कळळ घोडा हीसाया । अणचीत्या वैरी खड आया, ऊठी पीव पाहुणा आया ।—बरजूबाई

उ०—३ एक एक तारा नै हेर लियौ पण उणरी चापळियोडी नीद रौ पतौ नी पड्यौ ।—फुलवाडी

६ गौर से देखना, टकटकी लगाना, ताकना ।

७ विचार करना, पुनरावलोकन करना ।

हेरणहार, हारो (हारौ), हेरणियौ - वि० ।

हेरिग्रोडो, हेरियोडौ, हेरयोड़ौ—भू० का० कृ०

हेरीजणौ, हेरीजबौ - कर्म वा० ।

हीरणौ, हीरबौ, हेरणौ हेरबौ, हेरवणौ, हेरवबौ —रू भे ।

हेरन —१ देखो 'हिरण' (रू भे) (ह ना मा.)

२ देखो 'हेरण' (रू भे)

हेरफेर-स पु —१ इधर-उधर करने की क्रिया या भाव ।

२ परिवर्तन, फेर-बदल ।

३ अदल-बदल, विनिमय ।

४ हस्तान्तरण, स्थानान्तरण ।

५ घुमाव, चक्कर ।

६ आडम्बर, जञ्जाल ।

७ कुटिल युक्ति, दाव पेच, चाल ।

८ अन्तर, फर्क ।

९ घट-बढ ।

रू भे —हेराफेरी ।

हेरम—देखो 'हेरब' (रू, भे)

हेरा क्रि वि.—जासूसी करने के लिये, गुप्तचरी के लिये ।

उ०—नाहरा नरसिंघ री नाई हेरा ऊभी हुतो, नै गाढ़ रै महनाण लियौ ।— नैणसी

हेरान—देखो 'हैरान' (रू भे)

हेराउ, हेराऊ-वि —१ तलाश करने वाला, ढूढने वाला, खोज करने वाला ।

२ जासूसी करने वाला, जासूस ।

३ पीछा करने वाला ।

४ देखने वाला ।

५ सदेश वाहक, दूत, चर ।

रू भे —हेरू, हेरुग्र, हेरु, हेरुग्र ।

हेराफेरी—देखो 'हेरफेर' (रू भे)

हेरायत-स पु —१ गुप्तचर, जासूस ।

उ०—तद रायमल हेरा लगाया कै राव धोळहरै राव गागै री वरसी छै । सू आज गोठा करसी पण गागोजी घरै जावै तद मनै खबर देज्यौ ।" पीछै हेरायत धोळहरै गया नै जाय ग्राम पास हेरौ लगायौ ।—द दा

२ सदेश वाहक, दूत ।

वि —१ खोजने वाला, ढूढने वाला, तलाश करने वाला ।

२ जासूसी करने वाला ।

३ पीछा करने वाला ।

४ देखने वाला ।

रू भे—हरायत।

हेरिक-स पु [स] १ गुप्तचर, जासूस।

२ सदेश वाहक, दूत, चर।

हेरियोड़ौ-भू का कृ—ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ, खोजा हुआ २ पता लगाया हुआ, सूराख लगाया हुआ, जासूसी किया हुआ, खबर किया हुआ, जाच-पडताल किया हुआ ३ पीछा किया हुआ ४ फेरी लगाया हुआ, चक्कर लगाया हुआ, गश्त लगाया हुआ ५ देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ ६ गौर से देखा हुआ, टकटकी लगाया हुआ, ताका हुआ ७ विचार किया हुआ, पुनरावलोकन किया हुआ।

(स्त्री हेरियोडी)

हेरु, हेरुअ—देखो 'हेराउ' (रू भे)

उ०—१ सौ कागद वाचनै रामदासजी तिण हीज वीरीया हेरु मेलिया, अनै कयौ अन तौ साढीया लीया वमा।—रा सा स

उ०—२ अखजै धन हेरुअ फेर अठै। कहौ तेण वतायोय 'पाल' कठै।—पा प्र

हेरुक-स पु [स] १ गणेश, गजानन।

२ महाकाल शिव का एक गण।

हेरू, हेरूअ—देखो 'हेराउ' (रू भे)

उ०—१ नरी पोकरण लेण री मन घणी हर रागै छै। सु नरा रा हेरू पोकरण नु लाग रह्या छै।—नैणसी

उ०—२ तरै अरडकमल हेरू मेलिया, नै आप २०० सू चढ खडिया। वीच नाहरा ४ चार री सवण हुवौ।—नैणसी

उ०—३ त्रीजा हेरू आव्या राति, मारवणी जीवी ए वात। ढोलउ लियै जाइ एकलौ, हिव धाडउ कीजइ तउ भलउ।—ढो मा

हेरौ-स पु—१ खोजने, ढूंढने या तलाश करने की क्रिया या भाव।

२ खोज, तलाश, छान-बीन, जाच-पडताल, खबर, पता।

उ०—१ ताहरा दूदौ डकरियौ-भोज नू मारू। पातामाह रै दरबार विचै मारू। ताहरा वासै मू दूदौ ही सीकरी फतैहपुर गयौ। जायनै हेरौ करायौ।—नैणसी

उ०—२ वरजाग सुचतौ हुवौ, सु ओरही वेगी छै। ईण राव नु कह्यौ—हू कटक री हेरौ करण जाऊ छू मुगळा रौ डेरौ कुसाणा हुवौ छै।—नैणसी

३ पीछा।

उ०—वेटौ ऊमरकोट परणीजण मेलियौ थौ सु साथ सोह वेटा साथै मेलियौ थौ। आप छडवडै हीज साथ थौ, सु रावळ हेरौ करायौ।—नैणसी

४ गुप्तचरी, जासूसी।

उ०—ताहरा नरै आपरै प्रोहित नू कह्यौ—तू जौ एक बात करै तौ आपा पोकरण ल्या। ताहरा प्रोहित कहियौ—हू हेरौ करीस।

—नैणसी

५ खबर, सन्देशा।

उ०—हिव सूमर हेरा हुवइ, मारू भूवरणहार। पिंगळ वोळावा दिया, सोहड सौ असवार।—ढो मा

६ जासूस, गुप्तचर, भेदिया।

उ०—१ रावत भीवौ बीजा ही असवार ४०० भेळा हुई आया। कटक नु हेरा लगाया। हेरै कहायौ घात छै।—नैणसी

उ०—२ अठै एक कतार रेसम सौ भरी आय घाटी उतरीया, च्यार पहर रात खडीया थाका आय उतरीया। सु सोढा री हेरौ वासै आवै छै।—वरसै तिलोकसी री वात

उ०—३ अठै पठाण री हेरौ आयौ हतौ, तिकौ पाछौ गयौ। जाय कहीयौ -'दिन उगता ताई साथ कोई नही। आदमी २०० तथा ३०० छै।—राजा नरसिंघ री वात

७ दूत, सदेश वाहक।

उ०—नै रात पोहर एक गई तद नकोदर हेरै नू मळकी खनै मेलियौ जू तनै लेण नू आया है। पीछै हेरै जाय मळकी नू कयौ।

—द दा

८ ढूंढने वाला, खोजने या तलाश करने वाला।

उ०—साह तणा हेरा सगळाई, ऊपर रयण जरा मिळ आई। दिस दिक्खण 'दुरगौ' वरदाई, कमध खडता सोध न काई।

—रा रू

रू भे—हेरउ।

हेळ, हेल-स पु [स हेलन] १ क्रीडा, खेल, तमाशा।

उ०—दिली तखत दइवाण, हेल माही करि हिम्मति। ऊथळ पथळ अनेक, पान जिम किया अमप्पति।—सू प्र

२ खलवली, हलचल।

उ०—खेडधणी सिरि खीजिया, हुई मुगल्ला हेल। ज्यौं गज वारि विहारता, वीचै वारिज वेल।—रा रू

३ अपराध, गल्ती, भूल।

उ०—गाली कदै न जाणीयै, आपा ऊपरि खेल। हरीया आपा वाहिरौ' जोयज होसी हेल।—अनुभववाणी।

४ अनिष्ठ, बुरा।

उ०—हरीया पैडा भगति का, अवर इणी का खेल। उलटि पडै ती ऊवरै, नही तौ होसी हेल।—अनुभववाणी

५ उमग, उत्साह, जोश।

उ०—समु ग्यान मैं गहीर रौ प्रमाद भाग पायौ मला, जहानवी नीर रौ क सापडैवौ जहान। टोरौ व्रज कुज कासमीर रौ क आज दीठौ, वीरमदै हेळ मैं हमीर रौ वदन।—साहिवौ सुरताणियौ

६ लहर, तरग, हिलौर।

उ०—हेळा अगस्त मघ ज्यु हेकै हात हूत हीलोळीया, धीम खगा हेकै ज्यू वोळीया नाग धीग। सुरापती हेकै वज्र रोळीया पाहाड सारा, सारा खळा हेकै ऊनीळीया चाद सीग।—हुकमीचद खिडियौ

७ समुद्र, सागर।

८ अत्यधिक ठण्डी हवा, वायु।

९ आक्रमण, हमला, लडाई।

उ०—याद घणा दिन आवसी, आपा वाळी हेल। भागा तीनो भूपति, माल खजानो मेल।—अग्यात

उ०—खाथी डग मारग खडौ, हरि हाथी री हेल। जी मेहाई थारा बाईमा री करीजै उवेल।—मे म

१० मेल-जोल, घनिष्ठता।

११ वार, दफा, मरतबा।

उ०—जद जागू तद एकली, जब मोऊ तब बल। सोहणा, थै मनै छेतरी, बीजी तीजी हेल।—ढो मा

वि १ समान, तुल्य, बराबर।

उ०—हमा चहुवाण अलावद हेल। खागी-वध 'जैत' रच्यौ खग खेल।—मे म

२ सहज, आसान।

उ०—१ सुभ देह नीरद सुदर, साधार सेवग स्रीवर। रघुनाथ नाथ अनाथ रहै, हेल अघ हरण।—र ज प्र

उ०—२ 'जगा' तण राज सामुद जग जाणियौ, वयण वाखाणियौ येह वारू। 'करन' हर तमासै हेल माटै कियौ, सूरापत बिमासै वेल सारू।—महाराणा राजसिंह री गीत

उ०—३ स्रुत सम्रत छद खट पच नव सपूरण, भेदगर च्यार दस बोध भाळी। अरथ जुत बोलवौ हेळ बीजा 'अजा', वेळ अम्रत तणा उदधवाळी।—र ज प्र

३ किंचित, थोडा।

४ नगण्य।

उ०—हू करू हू करू करै गाढा टेढा काय हालौ, निमेख मैं गाटा टेढा करै दीनानाथ। मेदनी आकास बीच काळ तणा डाढा माहै, हेळ मात्र गदी काया साढै तीन हाथ।—ओपो आढो

५ जिसमे तरगे हो, लहरदार।

६ देखो 'हील' (रू भे)

हेलइ, हेलउ—देखो 'हेलौ' (रू भे)

उ०—१ अवसर आयइ नवि सभारइ, केम भवोदधि हेलइ वारइ।
—वि कु

उ०—२ सज्जणिया वउळाइ कइ, मदिर वइठी आइ। मदिर काळउ नाग जिउ, हेलउ दै दै खाइ।—ढो मा

हेळणौ, हेळवौ—१ देखो 'हिळणौ, हिळवौ' (रू भे)

उ०—काची कळी न हेळियौ, गुणै न रीझवियोह। हेली थारो करहलौ, गहमाती गमियोह।—जलाल बूबना री वात

२ देखो 'हिळाणौ, हिळावौ' (रू भे)

हेनन—स पु—१ दोष, अपराध, कसूर, भूल।

२ पाप।

हेळमेळ—स पु १ मित्रता, दोस्ती।

२ घनिष्ठता।

हेळवणौ, हेळववौ—देखो 'हिळाणौ, हिळावौ' (रू भे)

उ०—१ मार्थं हेळवौ दवणी दळ माहै, मुगळा दळा मझारी। अरिया उग्रसि विचै वसि आधी, कूपळ चरै कटारी।
—नाहरसिंह आसियौ

उ०—२ पाटवी हेळवी वेग मैं पैलकै, तै नमै गिनकै नीप टाळा। पागती 'दलौ' नै 'रतन' परणीजतै, वाट जोतौ रही 'गजन' वाळा।
—नरहरदास बारहठ

उ०—३ हेळवी 'अमर' री करती हरख। 'जगा' अपछर रही वाट जोती।—नरहरदास बारहठ

२ देखो 'हिळणौ, हिळवौ' (रू भे)

हेळवियोडौ—१ देखो 'हिळायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'हिळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हेळवियोडी)

हेळहमीर, हेळाहमीर—वि—बहुत बडा दानी, दातार।

उ०—१ तग धीर वडौ लसलूट, खिति खगिति आगि अखूट। निज वासि चडावण नीर, हद वेहद हेलहमीर।—ल पि

उ०—२ मुरधर रूप सिरै रिडमाला, गज टाला टाहण हमगीर। आपण 'वखू' 'दुरग' जिम आथा, हाथा 'चिमनौ' हेलहमीर।
—बुधजी आसियौ

हेळा, हेला—स स्त्री [स इला, हेला] १ पृथ्वी, धरती, भूमि।(ना मा)

उ०—१ सवळ दळ आस्ट्रिया विलोमा साझता, वाजता त्रावगळ कहर वेळा। 'पतौ' ईडरपती ढिलीवै पखायत, हुवौ दळ छत्रिया छत्र हेळा।—जुगतीदान देथौ

उ०—२ सवल दान बहुमान कणय कव्वाहि समप्पइ, हेळा हयवर कोडि जोडि मग्गण थिर थप्पइ।—व स

२ तरग, लहर, उमग।

उ०—१ हेळा 'अगथी' सिध ज्यू एकै आच हूत हीलोळिया, धीस खगा एकै ज्यू वौळिया नाग धीग। सुरापत्ती एकै वज्र रौळिया पहाड सारा, सारा खळा ऊतौळिया एकै चादसीग।
—हुकमीचद खिडियौ

उ०—२ हेळा उदार अगज हुवौ, रुद्रदत्त सिवदत्त रै।—व भा

३ क्रीडा, खेल।

उ०—राज तिहा परिपालए, टालए वयर विवाद। हेला परदल नामए पामए रणि जयवाद।—प्राचीन फागु-सग्रह

४ नायक से मिलते समय नायिका की विनोद सूचक प्रेमपूर्ण क्रीडा की मुद्रा।

५ दुख।

उ०—सूकी सेवण री हेळा उरहाई, मैंदी देवण री बेळा मुरझाई। खावण रुणै धन ऊणौ मन खूणै, धामण तामण बिन जामण सिर

घूणी ।—ऊ का
६ चिल्लाहट, हल्ला ।
७ चढाई ।
८ धावा, हमला, आक्रमण ।
९ डाट-फटकार ।
१० कठिनाई ।
११ हीन भावना, तिरस्कार, अपमान ।
१२ सरलता, भोलापन ।
उ०—हेला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रग्या ब्रह्मपति तणी, प्रतिग्या फरसराम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दान वलि तणउ, अवस्टभ मेरुतणउ ।—व स
क्रि वि —सरलता से, सुगमता से, आसानी से, सहज ही ।
उ०—१ सारग चाप चडाविय डाविय वाहु नइ प्राणि । हरि हेला ही टोलिय तोलिय तसु वलु प्राणि ।—जयसेखर सूरि
उ०—२ तुरगमि चडिउ, लोकि तरवरिउ, सत्तरि सहस्स गुजरातनु धणी, जुनुगढ चापानेर प्रमुख विसमगढ लीधा, मन वछित काज हेला सीधा, सघला राजा आण मनाव्या ।—व स
वि —१ दानी, दातार ।
उ०—१ देवाग्त लिछमण जग दाता, हेळा 'करण' खिताव हुवौ । भिडजा भडा चारणा भाटा, मुहगा वग्तणहार मुवौ ।—वा दा
उ०—२ हेला भगवान भोज क्रन हाता, दान करण कव हरण दुख । छत्रधर कवर आन नह छाजै, राज कवार जवान रुख ।
—जवानजी माढौ
२ काम का पावन्द ।
३ मैला उठाने वाला ।
हेलारिया—देखो 'हिलारिया' (रू भे)
हेलि—देखो 'हेली' (रू भे)
उ०—१ भारि अढारै वन भरिउ, साभलि नागरवेलि । अलगी रहि अेरडि तु, चपि चटी दिइ हेलि ।—मा का प्र
उ०—२ हेलि भणि सुणि रे हण्या, माहरू कीधउ जोई । कलि चपावउ जै समइ, सुद्धि न जाणइ कोई ।—मा का प्र
उ०—३ कालि मेलावसि कामिनी हीइ म हारिसि हेलि । तू तनया अम्ह आज थी, माधव माहरी वेनि ।—मा का प्र
उ०—४ हेलि ववावइ हीचका, सुरतर केरी म ख । माधव साथि हीचसिउ, लीला लटकइ लाख ।—मा का प्र
हेळियोडौ—१ देखो 'हिळियोडौ' (रू भे)
२ देखो 'हिळायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री हेळियोडी)
हेली—स स्त्री [स सहकेलि] १ सखी, सहेली ।
उ०—१ सखी अमीणी साहिवौ, सूर धीर समरत्थ । जुध मे वामण ज्यड जिम, हेली वाधै हत्थ ।—वा दा
उ०—२ हे हेली पती रा प्राक्रम री इचरज जैडी वात हूँ थनै काही कहू हू तौ ओ पौरस देख वलिहारी जाऊ ।—वी स टी
उ०—३ हेली थारौ करहलौ, मोही विलगौ वार । कै काटा री वाड कर, कै घर वाघौ चार ।—अग्यात
२ देखो 'हवेली' (रू भे)
उ०—१ अगरवाला आपरी हेली मैं मा'रजा री वेटी री जाननै एक जीमणवार देवणरौ जोस देखाळचौ ।—दसदोख
उ०—२ अवकै तौ वै लूटी कतारा, अव लूटैगौ हेली । आसामी ठम पडगी, होगी रुपिया की थेली ।—डूगजी जवारजी री छावली
रू भे—हेलि ।
हेलु, हेलू—देखो 'हेलौ' (रू भे)
उ०—दूतै कठ झेळू, थयौ दुहेळू, अज्जा मेळू, अत वेळू । करतै पुत्र हेलू नाम कहेलू, सव क्रमठेलू, छू टेलू ।—भगतमाळ
हेलूर—स पु —घोडो का समूह ।
हेलूसणौ, हेलूसवौ—देखो 'हुलसणौ, हुलसवौ' (रू भे)
उ० —सात मैं पाताळ वासग नागरै माथै टपूकडा खाइ नै रहिया छै ' त्यारी सौरभ री वास्तै तेत्रीस कोडि देवता सरग सू हेलूस नै उतरै छै देवासुरा रा विवाण हिलोरव खाइ नै रहिआ छै ।
—रा सा स.
हेलूसियोडौ—देखो 'हुलसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हेलूसियोडी)
हेलौ—स पु —१ सहायतार्थ किसी को बुलाने के लिये दी जाने वाली आवाज, दर्द भरी पुकार, आर्त्त-पुकार ।
उ०—१ वीस भुजाळ स्यायक पता वळ, हुवै हाजर सुण हेलौ ।
—जसकरण जी लाळस
उ०—२ लाठापै पागडै लागा, खोस खोस पैला धन खाय । हू कगाळ करू तौ हेलौ, दुरवळ भगत न आऊ दाय ।—टीकमदास
उ०—३ धरणीतळ व्याकुळ छेलौ सिर धुणियौ, सरणागत वच्छळ हेलौ नह सुणियौ । लिछमी वर छानू कानू लै लीनू, दीनन वधू हुय दीनन दुख दीनू ।—ऊ का
२ किसी को कुछ कहने या सम्वोधन करने के लिये दी जाने वाली आवाज, पुकार, सम्वोधन ।
उ०—१ तिण सगत सीहजी मार राणाजी नै हेलौ पाड कह्यौ घोडो तीना पगा है तद देव जीण उतारता ही घोडौ छूटौ राणैजी महा विलाप कियौ ।—वी स टी
उ०—२ मा रै मूडै ओ नाव म्हारै काना इमरत ज्यू लागतौ । हेलौ मारता उणरौ गळौ माखण सू भरचौ ज्यू लवावतौ ।
—फुलवाडी
उ०—३ जद स्वामीजी वोल्या रे मूरख हेलौ पाडचा पिण पाछौ वोलै नही । वेणीरामजी स्वामी नरमाइ करनै वोल्या महाराज मैं सुणियौ नही ।—भि द्र

३ जोर की लम्बी आवाज या शब्द, चिल्लाहट, हल्ला ।

उ०—१ खिलै महाकाळी दै दै ताळी नचै वीर सेला, हेला मुडमाळी पढै सचै हार हेत । इखा जन-पाणा वचै वाहा वाणा वाहा ईसो, खागा खळा 'सुभाणी' विरच्चै वीर गेत ।

—प्रभूदान मोतीसर

उ०—२ सरीरै दाध ज्वर इसडो ऊपनो रे, वलू वलू हुई छै देह रे । हेलो हाको मुख सू ना कियो रे, राजा देही सू नाण्यो नेह रे ।

—जयवाणी

४ घोषणा, ढिंढोरा ।

उ०—वीज चद सी वकडी, अटी मुहारा ऊत्र । टणकापण रा तखतसी, (थारी) मारै हेला मूछ ।—अग्यात

५ माग ।

उ०—समै रै हेलै माथै हालर लिखारा चौपड-पासा, सिकार, भिमरियोडै हाथिया री लडाया, रथ-दौड, घुड-दौड, पाडा, मैसा, मीडा अर मिनखा ताई री लडाया रा वखाण तो घणाई करिया है ।—चितराम

६ डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम पद मे १६, दो पदो मे १४-१४ मात्राएँ तथा अन्त मे चौकल सहित तुकात मिलता है । तीसरे पद मे १० मात्रा और अन्त मे गुरु लघु होकर तुकान्त मिलाया जाता है ।

उ०—कळ चवदै चवदै दुपद, साकळ अत चौकल आणियै । पद त्रतिय दसकळ दीह लघु पढ, ठीक मोरा ठाणियै । इण भात फिर पद तीन उचरै, पूर द्वालै पाइयै । कळ सोळ धुरपद प्रभू गुण कर, गीत हेला गाइयै ।—रा रू

रू भे —हेलइ, हेलउ, हेलु, हेलू ।

हेल्थ—स स्त्री [अ] तन्दुरुस्ती, स्वास्थ्य ।

हेवत—देखो 'हेमत' (रू भे)

हेव—क्रि वि [स एव] १ अव, वस्तुत ।

उ०—१ जगपति हउ जि मनाविसु भाव सुहावउ हेव । सभलि स्वामीय देवर देव स्वइ तुज्झ सेव ।—जयसेखर सूरि

उ०—२ मूक्या नव नव परि सालणा, मूक्या सरहा घी अति घणा । मूकी माडी मुरकी सेव, मूकी खीर खाड घ्रित हेव ।

—हीराणद सूरि

उ०—३ हाथ रतन आयो छै हेव रे, काच तजो पाच गहौ परखेव रे ।—ध व ग्र

२ स्वीकृति, सूचक शब्द, हाँ ।

हेवन—वि अति, वहुत ?

उ०—जमानो उण वरस चोखो पाक्योडो हो । गाम सू उगमणा आयोडा डूगर नीला हेवन व्हैग्या हा अरवारै ढाळ मैं आयोडा कोसा लावा खेत, इसा लागाता हा जाणै हरियल जाजम विछि-योडी व्है ।—अमरचूनडी

हेवा—वि अभ्यस्त, आदी, किसी पर निर्भर ।

उ०—१ म्हारी दुख तो म्हैं ज्यू-त्यू भुगत लियो । म्हैं तो तिरस्या रै हेवा व्हैगी । सुख री तो नाव ई म्हारै हीयै भरै कोनी ।

– फुलवाडी

उ०—२ डोकरी कह्यो—राम मारथा पूरी अन्न नी सुण, अठी री उठी भिडावण रै हेवा है, नी व्है नी राजाजी नै ई अठै भेज दीजै ।

—फुलवाडी

उ०—३ हिंदी अग्रेजी सिखीजै तो परी पण सूंठी राजस्थानी रै हेवा पडियोडी । करना-करावना ठैठ हमैं जावना होट अग्रेजी हिंदी मासू फरा फरा हिलण रै हेवा पडिया ।—जहरग्या गेहर

स स्त्री —आदत, स्वभाव ।

उ०—माथो ऊचो करनै बोल्यो—आपनै की उजर नी व्है नी म्है चाटलू । आ खाज इण इज हेवा पडगी नी पछै दूजो काई इलाज ।

—फुलवाडी

हेवै—स पु [स हय-पति, प्रा हयवई] १ वादशाह, सम्राट

उ०—१ 'ईदा' 'जैता' भोजराज, चोज कमधा काज । हीण करण हेवै दळा, जीण भिड्ज्जा साज ।—रा रू

उ०—२ हेवै दळा अमगळ हुवो, मुवो सेख मिरजो पण मूवो । आमू वद वारस दिन आसुर, मौन अचिन गया कर सभर ।

—रा रू

उ०—३ प्रमगुर कहै पधारो 'पात्तल' प्राभा करण प्रवाडा । हेवै सरस अमलिया हीदू, मौसू मिळ मेवाडा ।—दुरसो आढो

२ मुसलमान ।

उ०— ऊठी वाग दवाग अनल्लै, हेवै मार लियो हरवल्लै ।

—रा रू

२ मुर्गी द्वारा प्रजनन हेतु रखे अण्डो पर बैठने की क्रिया ।

३ अभ्यस्त होने की क्रिया, आदी होने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

कि वि —अव ।

उ०—पछै भाटिया कनै कोहेक मैहराज रो चाकर राव दियो रजपूत गयो, तिण कह्यो—'ह मैराज नू मराइस हेवै कटक खाविियो ।—नैणसी

रू भे — हेव, हैवे, हैवै ।

हेवैपत, हेवैपति—स पु वादशाह, सम्राट

उ०—१ जतन कियो सहिजावतो, अवदुल्ला खा आय । हेवैपत आया हुवै, तै मनुहार सवाय ।—रा रू

उ०—२ बै भाई विरदाळ, औरगसाह मुराद इम । हेवैपति भेळा हुवा, जुध मडण जमजाळ ।—वचनिका

रू भे —हैवेपत, हैवेपति, हैवैपत, हैवैपति ।

हेवैपुर—स पु —दिल्ली नगर का नाम ।

उ०—समनाथ साय भागो सुणै' दिल्लीनाथ दहल्लियो । करि एम

तीर्थंकर।

उ०—समय सुदर कहै ते तीर्थंकर, संभवनाथ अनाथ को पीहर।

—स. कु.

सभा–स स्त्री —शिवा, पार्वती।

समाऊ–सं पु —१ भाटी वश की एक शाखा। (वा दा ख्यात)

२ इस शाखा का व्यक्ति।

वि —स्वाभाविक।

उ०—किसनू रै घर मे भूवाजी फिरियोडी ही। लाई लाई-खाई करती ही। भाग सू सभाऊ आख्या दूखणी आयी।—वरसगाठ

संभाखण—देखो 'सभासरण' (रू भे)

उ०—भरथ री कवसल्या जी सू संभाखण।—र. रू.

संभाग संभागि–स पु [सं. सम्भाग] दान।

उ०—गय भवि भगतिइं अनि सभागि मइ मुनि वहिराव्या। साहमीयवच्छल सघ सहित मइ गुरु पहिराव्या।—नळदवदती रास

सभागियौ, **सभागी**—देखो 'सभागियौ' (रू भे.)

उ०—भाटा तूं संभागियौ, पीछोळा री टग्ग। गुललंजा पानी भरै, ऊपर दै दै पग्ग।—अग्यात

समाणौ, **सभावौ**–क्रि स —१ कर्त्तव्य, उत्तरदायित्व, कार्य भार आदि अपने ऊपर लेकर उसका ठीक तरह से निर्वाह करना, पालन करना।

उ०—राव मडळीक तो गैहलो हुवौ। तरै 'जेसौ' मडळीक री लोहडी भाई, तिण सारी धरती री भार समायौ। धरती रा सारा राजपूत लेनै भाखरै पैठो।—नैणसी

२ लेना, उठाना।

उ०—च्यारू ठकराणिया पूरी सावचेत होय ऊभी ही। सिंध रा डाकिया माथै निजर पडता ई हाथा मे कोपरिया संभाया। जोसी री वात तो साव साची निकळी।—फुलवाडी

३ सम्भालना।

उ०—मोती-माणक भाली नु दीया, सो समाय उचा राख्या। आप सिनान कर जीमण जीमीयौ। रात खीवसीजी पोढण पधारीया, खुम्याळ रहा।—कुवरसी साखला री वारता

३ धारण करना।

उ०—हरीया कळि मे आयकै, मामीपणौ समाय। ग्यान गरीबी ना गही, आपा अहू उठाय।—अनुभववाणी

४ पडते या गिरते हुए को बीच मे रोकना।

५ सुसज्जित करना।

६ सन्नद्ध करना, तैयार करना।

७ युद्धार्थ गढ या किले को सजाना, तैयार करना।

उ०—इण दिम 'अजन' लिया दळ आयौ, साभर वालै कोट सभायौ। पयौ मुहमेळ प्रथम दिन कीधौ, लुड मुड गयौ कोट निठ लीधौ।

—रा रू.

सभाणहार, हारौ (हारी), संभाणियौ—वि०।

सभायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सभाईजणौ, सभाईजवौ—कर्म वा०।

सवाहणौ, सवाहवौ, सव्वाहणौ, संव्वाहवौ, संभावणौ, संभाववौ, समाणौ, समावौ, समावणौ, समाववौ, संमाहणौ, संमाहवौ,

—रू० भे०।

संभायोडौ–भू का. कृ —१ उत्तरदायित्व निभाया हुआ. २ लिया हुआ, उठाया हुआ. ३ धारण किया हुआ. ४ सुसज्जित किया हुआ ५ तैयार किया हुआ. ६ युद्धार्थ किले आदि को सजाया हुआ, तैयार किया हुआ. ७ सम्भाला हुआ।

(स्त्री. सभायोड़ी)

संभार–सं. पु. [स.] १ भार, वजन।

उ०—आ सुणता ही अणहिलपुर रौ अधीस सेना रा सभार सूं मही रै मचोळा देतौ गजनवी री वेग झेलण रै काज जवनेस री राह रोकि साझति सहर आडौ आय पडियौ।—व. भा.

२ पालन-पोषण।

३ सचय, सग्रह।

४ सामग्री, सामान।

५ धन, सम्पति।

६ अधिकता, वाहुल्यता।

७ समूह, ढेर।

८ देखो 'संभळ' (रू भे.)

उ०—१ रामनाम निज मूळ है, और सकळ विसतार। जन हरीया फळ मुगति कू, लीजै सार संभार।—अनुभववाणी

उ०—२ 'हा है तो ही वो नहिं भूलणहार। हा है हरि सबरी करण सभार।—अग्यात

सभारणौ, **सभारवौ**–क्रि. स.—१ मूदना, पलक वद करना या झप-काना।

उ०—सारद गणेश नारद सनक भूला पलक सभारणै। रह व्योम अलह आहट रथा, कळह सपेखण कारणै।—रा. रू

२ देखो 'समरणौ, समरवौ' (रू. भे)

उ०—१ आय नपति पूछी विध एही, सावधान हुय धरम सनेही। विखै अग्यान धरम वीसारी, सूरजकुळचौ धरम सभारौ।—सू प्र.

उ०—२ गउखै वइठा एकठा, माळवणी नइ ढोलउ अवर दीठउ ऊनयउ, तिम संभारयउ बोल।—ढो. मा.

उ०—३ संभरियां सताप, वीसारिया न वीसरइ। काळेजा विचि काप, परहर तू फाटइ नही।—ढो मा

उ०—४ मरण जनम चौ सळ मिटण सौ सलभ व्है संभार। जम यौ सळ भजै जिसौ, कोसळ राज कवार।—र. ज प्र.

३ देखो 'सभाळणौ, सभाळवौ' (रू भे)

उ०—१ सज्जणिया सावण हुया, धडि उलटी भडार। विरह–

रू भे—हड्कप, हैकप, हेकपण ।

हैकपणौ, हैकपवौ–क्रि अ—डरना, भयभीत होना, घबराना, आतंकित होना ।

उ०—१ हैकपै ढूंढाडो राजा करी ज्यू विहाल होता । आयो मारवाडो राजा हरि ज्यू उवेल ।—हुकमीचद खिडियौ

उ०—२ दडौदडी तूट माथा कमधा पावडा देवे, रिमा सीम खाथा सार वजावै आराण । हेकपै कायरा प्राण छूटगा वीराण हासै, भैचक्के भूलोक रत्था यभायौ सु भाण ।

—बादरदान दधवाडियौ

कपायमान होना, थर्राना

उ०—कडकडै तिजड घडियाळ किर, प्रळै काळ रौद्रा प्रवळ । हलहलै जवन हैकपिया, जाणि पवन्नै सिंधु जळ ।—रा रू

हैकपियोडौ—भू का कृ १ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ, घबराया हुआ, आतंकित हुवा हुआ २ कपायमान हुवा हुआ, थर्राया हुआ । (स्त्री हैकपियोडी)

हैकपण—देखो 'हेकप' (रू भे)

उ०—हण हाक हेकपण, उलट गढ कियौ उदगळ । ओदरै मदोवरि तास भै, सपनतर आया महम ।—वि स सा

हैकळ, हैकल–स पु—घोडे के गले मे पहनाया जाने वाला एक गहना ।

वि—तोल मे कुछ ज्यादा, अधिक ।

हैकार–स पु—हाहाकार ।

उ०—सहसा दौ हूत हेक साफळियौ, त्रिहू लोकै हैकार तवै । वीता पहर च्यारि खग वहत्ता, रावत पडै न खडै रिवै ।

—जगतसिंह सगतावत

हैगारव–स पु—शब्द, आवाज ।

उ०—आगेवाणी मीगडिया तणी स्रेणी, पछै वाणी फारक तणी पद्धति । तठौ हस्ती घट सीत्कार करती, पाखरियानी स्रेणी हैंखारव मेल्हती । पच सव्द तणा निरघोस, जमला उच्छलइ रणतूरी वाजइ ।—रा सा स

हैगळ, हैगाम–स पु—घोडो का समूह, अश्वदल, घुडसेना ।

उ०—हणणक हीस हेगाम हय जय कणणकै वदिजण ।—व भा

हैग्रीव—देखो 'हयग्रीव' (रू भे)

उ०—ब्रखभ कपिळ हैग्रीव विसभर, दत्तात्रेय हस दामोदर । राव वैकुठ धनतर रिखभ, गरुडारूढ विसन प्रसणीग्रभ ।—ह र

हैडौ–सर्व—ऐसा ।

उ०—हैडौ सैर सीकरि मैं सुथा रौ नाम कीना । हाथू हाथि सावक नै रुपैया भरि दीना ।—शि व

हैज–स पु [अ] १ स्त्री का मासिक धर्म ।

उ०—खाग कठी कू देख कै, धड धडी खावै । औरत कै हैज कै लोही सू तमाळ आवै ।—दुरगादत्त वाहरठ

२ देखो 'हेज' (रू भे)

हैजम–स. पु—१ सैन्य दल, सेना, फौज ।

उ०—१ कहि यम हैजम करै, विग्रम रूपी विकराळा । चढि मदभर चालियौ, तूर वाजता नवाळा ।—सू प्र.

उ०—२ चाळीस कोस हैजम चलाय । जाळीम धरत वाली न जाय

—वि म

२ अश्व घोडा । (डि को)

३ दल, समूह ।

४ तलवार । (डि को)

रू भे—हेजम, हैजम, हैंज्जम, हैज्जम ।

हैजमप, हैजमपत, हैजमपति–स पु—सेनापति, सेनानायक ।

हैजो–स पु [अ हैज] प्राय गर्मी की मौसम मे होने वाला एक धातक रोग जिसके कारण रोगी को कै व दस्त अत्यधिक मात्रा मे होने लगते है । यह अत्यन्त धातक एव सक्रामक रोग होता है, विसूचिका ।

उ०—मुलक मे हैजा रौ ऐडौ कोप व्हियौ कै मिनख माखिया री गळाई दटाक दटाक मरण लागा ।—फुलवाडी

हैज्जम—देखो 'हैजम' (रू, भे)

हैट–स पु [अ] १ एक छज्जेदार अग्रेजी टोप ।

२ देखो 'हेट' (रू भे)

हैटलौ–वि [स्त्री हेटली] नीचे वाला ।

१ निम्न, दबा हुआ, शोपित ।

उ०—पला कुजकोई री कोई गिनार ई कौ करतोनी । समाज रै हैटलै तवकै रै मिनखा रै मन विलमास री रम्मता किमी ही अर कीकर रमीजती इण मायै कुण गिनार करै ।—चिनराम

२ देखो 'हेटौ' (रू भे)

३ देखो 'हेटलौ' (रू भे)

हैठ—देखो 'हेट' (रू भे)

हैठे, हैठै—देखो 'हेटै' (रू भे)

उ०—१ ईण विध सू राजा डूगर सू उत्तर नै आवा हैठै आयौ नै छडी रो दैनै आवा लेनै आपरी फौज मै आयौ ।

—बगसीराम प्रोहित री वात

उ०—२ नोट अर नगदी कोट री जेब रै हवालै करचा तथा टागळै री पैडचा सू हैठै ऊतरचा ।—दमदोख

उ०—३ अरसिंह देव भी साथ ही हेठै आय खडग सेल्ह मचाय महा-प्रळय री महानट री आभा धरी ।—व भा

हैड—देखो 'हेड' (रू भे)

हैडइ, हैडई—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—पावस वरसइ पणनडै, नयणै वाली नीक । हैडइ गाढइ हु दीऊ, ढीलू करवा ढीक ।—मा का प्र

हैडउ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—क्षणु राता क्षणु पीअला, क्षणु नीला क्षणु सेत । चोली

फतै पहली कुवर, हेवैपुर सिर हल्लियौ ।—रा रू
रू भे —हैवेपुर ।
हेसमी–स पु —एक प्रकार का व्यजन विशेष ।
उ०—दहीवरा तिलमाकली फीणा वरमोला, माकरीग्रा चणा, कोहलायाक, दूधपाक, सेलडीपाक, खरगा पाजा, जलेवी हेसमी वारू पडसूधी तणा ग्राछा माडा ।—व स
हेसा–स स्त्री—हिनहिनाने की ध्वनि, ग्रावाज, हीम ।
हेसारी–वि —हिसार प्रदेश का ।
उ०—गुजराती, मुरती, खभाइची, मुजनगरी, हेसारी, उज्जीरण रा, वणिया धर्णा सीमूरा, पीतल लोह दान रा जडिया ।—रा मा म
हेसियत—देखो 'हैसियत' (रू भे)
हेहेकार—देखो 'हाहाकार' (रू भे)
उ०—हेहेकार पुकार हुइ, राम राम भणि राम । धणू कहर वीतो घडी, जहर लहर विधि जाम ।—वचनिका
हैं–ग्रव्यय—१ एक ग्रव्यय शब्द जो ग्राश्चर्य, भय, हतप्रभ होने की दशा मे मुह से ग्रनायाम ही उच्चरित होता है ।
२ किसी वात पर ग्रसहमति या इन्कारी सूचक ग्रव्यय ।
३ 'होना' क्रिया का वर्त्तमान कालिक वहुवचनीय रूप ।
हैंकप—देखो 'हैकप' (रू भे)
उ०—हैंकप हूग्रा नाग वासिक ईम ब्रह्मा रूप । मुख करै ऊचौ वेलि रै मिस देखि डरइ ग्रकूप ।—प च चौ
हैंजम, हैंज्जम—देखो 'हैजम' (रू भे)
उ०—लै वनवास हराय महाल्छ, कप हैंज्जम ग्रणपार कस । काटा हिव झालै किरमाळा, दम सिगाळा सीसदळा ।—र रू
हैंडवेग–स पु [ग्र] सफर या यात्रा मे सामान डाल कर ले जाने का थैला, हाथ मे रखने का थैला ।
हैंडल, हैंडिल–स पु [ग्र] १ साईकिल, मोटर ग्रादि वाहनो या मशीनो को चलाने या सचालन करने का हत्था ।
२ किसी उपकरण का मुठिया या दस्ता ।
हैंदू—देखो 'हिंदू' (रू भे)
उ०—हरीया ग्रपनै व्हाल मैं, खलक फिरै खुसियाळ । होमी खालिक वाहिरौ, हैंदू तुरक वेहाळ ।—ग्रनुभववाणी
हैंवर, हैंवर—देखो 'हयवर' (रू भे)
उ०—१ सक चोवनउ सौ सोम, हाकि सका विण हैंवर । पाणी पथ लग पूगी, धणी वणियौ ग्रारज धर ।—व मा
उ०—२ दिग्रा वधारा देस दै, हैंवर द्रव्व हसत्ति । पतिमाही था ऊपरा, यू कहिग्रौ ग्रसपत्ति ।—वचनिका
उ०—३ मच धामधूम सर सेल मार, पड त्रास त्रास ग्राठू पुकार । दिन लाग घटै हैंवर दरक्क, जवनान पडै निम दिवम जक्क ।
—रा रू
हैंसत—देखो 'हैसियत' (रू भे)
उ०—छोटू मारजा एक मामूली हैंसत री नौकरियौ मिनख ग्रापरी ग्राघौ धिकावै ।—दसदोख
हैंसु, हैंसू—देखो 'हीसू' (रू भे)
हैंसौ—देखो 'हिस्सौ' (रू भे)
उ०—१ हाम काम लोचणी उलाळी ग्राकास जावै । चावळ री चौथौ हैंसौ खावै ।—रा मा स
उ०—२ रावजी री चाकर कोई विगर हुकम न राखै । माहाजन पाछौ ग्रावै तिण री धान गडीयौ छै, तिण री हैंसौ ३ रावळै हैंसौ १ धान री धणीया री छै ।—नैणसी
उ०—३ टकमाळ व्याज मे हैंसौ ४, मुदत उप्रत हुवा हैंसौ ८ तिण रा रु० २०००) री ठोड ।—नैणसी
है–स पु —जल, पानी । (ना डि को)
क्रि –१ 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एक वचन रूप ।
उ०—१ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कै पाव । सयणै घाटा वडळिया, वइरि जु हूवा वाव ।—ढो मा
उ०—२ सूरा सकजा सापरसि, कलि मैं होय ग्रनेक । हरीया मन इद्री जिता, जुग मैं है कोई एक ।—ग्रनुभववाणी
२ देखो 'हय, (रू भे) (डि को)
उ०—१ ग्रारुहियौ ईखवा माह दरगह सकवधी । है गै दळ हल्लिया, मिळै ग्रणकळ ग्रनिमधी ।—रा रू
उ०—२ है थाटा विच हीडळै हाथी, छत्रपत जिसा चालिया चढै । 'गज-वध' तणा ग्रावता गढवा, गज-पत जडै किंवाड गढै ।
—किसनौ ग्राढौ
३ देखो 'है' (रू भे)
उ०—ग्राहवी वेला कुहुनि न पडि मानुखनि भवि ग्रावी । है रे विधाता इम का पीडि उत्तम देहडी लावी ।—नळाख्यान
रू भे —हइ, हई ।
हैकड–स पु —१ योद्धा, वीर । २ शक्तिशाली, वलवान
३ दीर्घकाय, मोटा-ताजा ।
४ वडा ग्रफीमची ।
५ ग्रश्व, घोडा ।
रू भे —हकड ।
हैकप–स पु —भय, डर, त्रास, ग्रातक ।
उ०—१ कसि वाक वाळा काढि वैराइया सिर वाढि । हैकप भौ महलार, त्या दीध द्रव्य तोखार ।—रा रू
उ०—२ धर सारी पडि धाक, पुरतुर गिर कीजै पहट । हैकप उर नागिंद्र हुग्र, चक च्यारू चढि चाक ।—वचनिका
वि —भयातुर, कपित, ग्रातकित ।
उ०—वावै तूझ पवग 'लूणावत', घड ग्ररि भाजतौ घणा घाय । धमस तैणा हैंकप थए धरती, निमध कध थरहरै निहाय ।
—गेहौ मीसण

चरणा पालटइ, हैडउ पूछी हेत ।—मा का प्र

हैडर–स पु —सुरक्षित घास का मैदान ।

उ०—वीकमपुर कनै लूडी री हैडर कहीजै है । ऊ विक्रमादित्य गाया, मैसा, साढा, छालिया मू भिळायी ।—वा दा रयात

हैडु, हैडौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—१ नीसामइ नीठइ नहीं, सामतणउ ऊमास । फादक नही फिटकारीउ, हैडु धरतू आस ।—मा का प्र

उ०—२ तीव्र स्वर तिमरी करड, भरइ वाहुला वाद । स्त्रावण तउ पणि माहरड, हैडा भीतरि दाह ।—मा का प्र

हैणौ, हैवौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू भे)

हैतारत, हैतारथ—देखो 'हितारथ' (रू भे)

उ०—आप मरत मरण न दहैं, हर हैतारत पडै सही । एह धरम विस्णोइया तणी, विस्ण भक्त 'उधौ' कही ।—वि म सा

हैताळ–स स्त्री—१ घोडे के सुमो की ठोकर ।

उ०—मेवास तूटगा मगज मेट । फूटगा गिरद हैताळ फेट ।

—वि स

२ देखो 'हेताळु' (रू भे)

हैयड, हेयट, हैयट्ट, हैयाट–स पु —१ अश्व दल, अश्वारोही-दल, घुडसेना ।

उ०—१ वेलहती गजा हैयाट लागा अटल, रीठ वागा खगा दुवै राहा । जोध 'जसराज' पूगी भली जूजवौ, सेल रोळै दुहू पातिसाहा ।

—महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—२ हिलै सप हैयाट, चलै वाना वहरगी, डळ जळनिध उल्लटै, जाण वडवानळ मगी ।—रा रू

उ०—३ हैयाटा वीच हीडळै हाथी, चक्रवत जिम चालिया चढै । 'गजवध' तणा आवता गढवा, गढपत जडै किवाड गढै ।

—किसनौ आढौ

२ सेना, फौज । (ह ना मा)

हैदर–स पु —दीवारो मे लगाये जाने वाले बडे व भारी पत्थर ।

हेदरा-वादी-सिवी–स पु —एक प्रकार का मुसलमानी सैनिक दल जो रुपयो के लोभ से युद्ध करता था । यह दल मीरखा पीडारी के पास था ।

हैदळ—देखो 'हयदल' (रू भे)

उ०—१ त्रेपन तुड कछवाह, साख साखरा सुमट्टा । हैदळ पैदल मिळै, यवन हिंदु गज थट्टा ।—ला रा

उ०—२ हैदळ कळळ पायदळ हूकळ, मीसीदै खडतै सनढ । गहकै ही बीजागढ पतिया, गजै अगजी त्रिकूट गढ ।

—महाराणा लाखा री रीत

हैप, हैफ–स पु [अ] १ आश्चर्य, विस्मय, ताअज्जुब ।

उ०—१ 'पातल' वरख पिचतरा, सतरा न्रपत 'सुमेर' । जुडिया जाता जरमणा, हैप हुवै वळ हेर ।—किसोरदान वारहठ

उ०—२ जोधै हठमल जेम, करै कुण नेम करग्गे । सिर पडिया साझियाँ, खेफ विळ हैफ खडग्गै ।—रा रू

२ अफसोस, खेद ।

रू भे—हेप, हेफ ।

हैवर, हैवर—देखो 'हयवर' (रू भे) (डि को)

हैवौ -स पु —हल्ला, शोर ।

उ०—तरै आप नै पोरस हुवौ । आप हकारिआ । सव्वरा राजपूत नू वाडिओ । तरै महा हैवौ हुओ । महा वेढ हुई ।

—कल्याणसिंघ वाढेल नगरराजोत री वात

हैमत–स पु —१ घोडे द्वारा पानी मे मुख रखकर नासिका से किया जाने वाला शब्द ।

२ देखो 'हेमत' (रू भे)

हैमर—देखो 'हयवर' (रू भे,) (ह ना मा)

उ०—उमै सहस अठमठ घुज ऊतग, वीस सहस हैमर घुज वैछग ।

—सू प्र

उ०—२ होमिया नाग 'अजा' नर हैमर, गढपतीयै होमिया गयद । 'करण' तणा जेम होम न कीधा, कूटा चहूएँ तणा कुरद ।

— राणा जगतसिंह री गीत

हैमवत–वि [स हेमवत्] १ वर्फ के समान, हिम जैसा ।

२ हिमालय जैसा, हिमालय के समान ।

३ हिमालय का, हिमालय, सम्वन्धी ।

४ हिमालय पर होने वाला ।

५ देखो 'हिमवत' (रू भे)

हैमवती—देखो 'हेमवती' (रू भे)

हैमार—देखो 'हमार' (रू भे)

उ०—कतराक दीहाडा गिऐ सेणा हुआ । तरै वचारिओज हैमार एहडौ सतुक नही जो आटौ लीजै । पण कमाय खाणौं, पछै रामजी भली करसी ।—कल्याणसिंह वाढेल नगराजोत री वात

हैमाळै, हैमाळौ— देखो 'हिमाळय' (रू भे)

हैमुख–स पु]स हयमुख[१ वडवानल का एक नाम । यह और्व ऋषि का कोध रूपी तेज जो वडवानल के रूप मे समुद्र मे स्थिति माना गया है ।

२ हयग्रीव ।

उ०— हरणकस्यप हैमुख हरणायख, खाधा कै फिर खासी । तौ पण भूख न गी निण तावौ, वावौ खाय उवामी ।—र ज प्र

हैय—१ देखो 'है' (रू भे)

उ०—१ हेय देवह हैय दैवह, दुटु परिणामु । पिय पचह पेखता, द्रुपद धीय कडिचीर कड्ढीय ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ हैय देव कुण दुरमति दीवी । एउ ओलग अह्मँ काईं लीवी ।—साळिसूरि

हैये, हैयै—१ देखो 'हैहय' (रू भे)

हैसलौ, हैसल्लौ—देखो 'होसलौ' (रू भे)
उ०—है गै रथ पायक हैसल्ला, मिळिया दळ जोधा रिडमल्ला। महि मेडतै मभाळै मारू, मभि खडिया दिल्लीपुर सारू।
—रा रू

हैसाव, हैसाव-वि—१ उचित, ठीक।
उ०—ताहरा वीरमदै कहै—जोधपुर रा आवा वाढीस। ताहरा लोकै कह्यौ—आ आपनू हैसाव नही। ताहरा छुरी लेनै कावडी वास्तै आवारी एक डाहळी वाढी।—नैणसी
२ देखो 'हिसाव' (रू भे)

हैसियत-स स्त्री [अ] १ शक्ति, सामर्थ्य, हौसला।
२ दशा, अवस्था, स्थिति, ढग।
३ आर्थिक स्थिति, वित्तीय अवस्था।
४ योग्यता, पात्रता।
५ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।
६ मूल्य, कीमत।
७ श्रेणी, दर्जा।
रू भे—हेसियत, हैसत।

हैसूडौ—देखो 'हीसू' (रू भे)

हैसौ—देखो 'हिस्सौ' (रू भे)
उ०—चौकीदारा अटकळीयौ नही। (उण दीठी) भली वात हुई। उपरा तौ उतरीयौ। म्हाहरौ हैसौ होसी।—चौवोली

हैहय-स पु [स] १ यदु से उत्पन्न एक क्षत्रिय वश।
२ सहस्त्र बाहु का एक नाम। (डि को)
रू भे—हैये, हैयै,

हैहयराज, हैहयाधिराज-स पु—हैहय वश मे उत्पन्न कार्तवीर्य सहस्रार्जुन।

है, है-अव्यय—खेद, शोक, दुख आदि की अवस्था मे मुह मे उच्चरित होने वाला एक अव्यय शब्द, हाय।

हैहैकार—देखो 'हाहाकार' (रू भे)
उ०—राजा नु खबरि हुई। एकण महर का च्यारे सह भेळा हूवा। सारै ही हैहैकार हूवौ। राजा अन खाड नही।—चौवोली

हैहैवोल-स पु—वीर ध्वनि।

हो-अव्यय—१ 'होना' क्रिया का सभाव्य रूप, होना।
२ देखो 'हौ' (रू भे)
रू भे—हवा।

होपरडीह, होफरडीह—देखो 'होफरडीह' (रू भे)

होस—१ देखो 'हूस' (रू भे)
उ०—१ जाणै साहिजादै रा ताडत, वभूत लगायोडा जोगीसा छै। तिणा री होस माणजै छै। मवरी-मवरी स्याचजै छै।
—ग सा म
उ०—२ दादू जैसा नाम था, तैसा लीया नाय। कानी करम्या गेत ज्यू, होस रही मन माय।——दादूवाणी
२ देखो 'होम' (रू भे)
उ०—वडारण घणी धीरज दीवी और छोकरिया पवन करणै लागी होस करायौ। कुवरसी साखला री वारता

होसलौ—देखो 'हौसलौ' (रू भे)
उ०—एक तौ उणा कन्है फौज हजार वीस छै फेर मुलक जीन होसलौ वढ गयौ छै सौ लडिया पार पडै नही।
—गोपाळदास गौड री वारता

होसियौ-वि—कायर, डरपोक।
उ०—भूडण-चीलहरा सू मुकावलौ हुवौ। आदमी दस-पद्रह मारिया। आदमी साठ-सत्तर घायल हुआ। घोडा वीस तीस घायल हुआ। होसियौ लोग थौ सौ नाठौ आयौ। सहर माही खवर हुई।—डाढाळा सूर री वात

होसौ-स पु—अशुभ माना जाने वाला एक प्रकार का वैल।
उ०—होसौ वोरी हळ वैवै, कवळी दूजै गाय। कथ कहै रे वाळका, जडा मूळ सू जाय।—अग्यात

हो-स पु [स] पुकारने या सबोधन करने का शब्द।
उ०—१ वेगि वाहि रथ हो ब्रहन्नडा, कउण सैन्य फिरड कौरव वापुडा। ताम हस्ति मदिमातउ गाजइ, जाम केसरि निनाद न वाजइ।—सालिसूरि
उ०—२ वाप वाप हो। थारा आरभ पारभ लागि गढ लेयण हार, किना वाप वाप हो। थारा सत तेज अहकार, राइ दुग रावण हार।—अ वचनिका
अव्यय—१ हे, अरे, ओ।
उ०—तुझ रणागणि कारणि कउण हउ, नृपति तेडी आगलि हू रहिउ। कहि कि द्रोण कि भीस्म कि करण कइ, समरि हो हिव तेडउ कइ सवइ।—सालिसूरि
२ देखो 'हौ' (रू भे)

होक-स स्त्री—१ सिंह की क्रोधपूर्ण दहाड।
२ हुक्का।
उ०—कूडी कुतको होक चीपियो कमरकस उठ वूवौ रे। झोळी झडा और पीजरो, जिण माही एक सूवौ रे।—वि स ना

होकडौ—देखो 'होकौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—रीछलै तमाखू दामदै रोकडा। हैकट भडा लगै हाथ मैं होकडा।—ऊ का

होकबौ-स पु—उत्सव, जळसा, समारोह, आयोजन।
उ०—१ असा चढण आमेट होकवा गोठ हगामा। प्रात नीत कथ पढण करण इसाफ सकामा।—केहर प्रकास
उ०—२ हगामा होकवा राग रग रा हमेस हुवै। अठी जानवाळी सोभा वणावै आजान।—वादरदान दघवाडियौ
वि—वाहुल्य, अधिक, प्राचुर्य।

रू भे—होड़, होउ, होट ।

होड़हाक-स स्त्री—वीर ध्वनि ।

होटहोड—देखो 'होडाहोड' (रू भे)

उ०—टग-टग पग वाज्या, जिगनजी हमीजग नें वात मुजान मजा विराज्या । दताग ऊभै ही परिन्द हा । जो'या । होड्होड जिमवणी ही कोंणी सू माळा मोडणा ।—दगवोत

होडावादी—देखो 'होडाहोड' ।

होडाहोड-क्रि वि—१ होडाहोडी, दूसरे को बढ़ते देखकर ।

उ०—१ हाट हवेली मेहडा रै कीना होडाहोड । जमा पाप नू मचनें रे प्राणी, जाय पलक मैं छोड । -जयवाणी

उ०—२ हरीवा होडाहोड करि, हंटि पति मनी न रोप । मद्दन राम मुग पाईवैं, भाव भजन गुन होय ।—अनुभरवाणी

२ प्रतिस्पर्द्धा से, जिद्दाजिदी के कारण ।

३ ईर्ष्या या द्वेष वश ।

४ बराबरी मे, समता मे, तुलना मे ।

५ शर्त लगाकर, बाजी लेकर ।

६ मुकाबले मे, सामने ।

रू भे—होडाहोडा, होडाहोडी, होडाहोड ।

होडाहोडा, होडाहोडी—देखो 'होडाहोड' (रू भे)

उ०—१ घणा मोला ऊचा धोरा, हर हींनें होडाहोडा । तेजी ऊछले नाटता, उचाग भगी आपडता ।—प व ग्र

उ०—२ नैणा वरसै सेज पर, श्रावण वरसै मेह । होडाहोडी झड लगी, उत मावण उत नेह ।—अज्ञात

होडि—देखो 'होड' (रू भे)

उ०—केइ जगि देवल देवा कोडि, हुयै नही कोई इयै री होडि । नमैं नर नारी सकौ नितमेव, दियै सुग वछित स्त्रिगदेव ।

—प व ग्र

होण-क्रि वि—१ होने के लिये ।

उ०—धड चील्हा ग्रीधण्या, कमळ मकर उपकार । हुग परघा पति होण, श्रोण चडी पग गारु ।—मे म

२ देखो 'होणी' (रू भे)

उ०—हू म्हारी मजूरी कर दिन काढ्यू । पछै होण होय सो ही हुवौ । मोनू था राजी होय सीख देवौ ।—गाह रामदत्त री वारता

होणपदारथ—देखो 'होणहार' ।

उ०—सगती देवळ मारती, था सरग्नौ परधान । ढालेती देवै जिसौ, होणपदारथ जान ।—पा प्र

होणहार, होणहारी, होणार-स स्त्री—ऐसी घटना या वात जो होकर ही रहे, जिसे टाला नही जा सके, होनहार, भवितव्यता, भावी ।

उ०—१ होणहार अहडी हुती, मारवाड री ग्राज । बखतसिंह रै पक्ष री, कोई न आयौ काज ।—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ तद वीवी कही होणहार होय सो मिटै नही—होकर ही [illegible]

उ०—[illegible] होणहार [illegible] ।—[illegible]

उ०—[illegible] होणहारी [illegible] ।—[illegible]

[illegible]

उ०—१ [illegible] होणहार [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] होणहार [illegible] ।—[illegible]

रू भे—[illegible], हुणहार, होणहार [illegible] ।

होणी-स स्त्री—होणहार, भवितव्यता, भावी ।

उ०—१ होणी [illegible], [illegible] । [illegible] भवितव्यता, [illegible] ।—पनरी री वारता

उ०—२ [illegible] होणी [illegible] ।—[illegible]

रू भे—हुणगा, हुणी, [illegible], होणी ।

होणेहार—देखो 'होणहार' (रू भे)

उ०—सूरी [illegible] वीर प्रति, [illegible] । [illegible] मनमरा, हुवा न होणेहार ।—सूरै [illegible] री वात

होणो, होवो-क्रि अ [स भू, प्रा होइ] १ स्वयमेव युद्ध घटित होना, युद्ध होना, हो जाना, होना ।

उ०—१ तठा उपरान्ति कन्नै गगन मिलावति जिण भात लैणायत दीठां देणायत घटै तिम निण भांति दिन दिन निम दीठैं सूरज री तेज घटण लागो नैं सूरज री तेज घटियो रनि मोटी होण लागी । वटाई पार्ट ।—रा ना म

उ०—२ सुपनड प्रीतम मुझ मिळ्या, हू लागि गळि रोइ । उरपत पलक न खोलही, मति हि विछोहउ होइ ।—ढो मा

२ अस्तित्व रखना, अस्तित्व मे रहना ।

उ०—तिण काळै नैं तिण समैजी, 'जंबू' द्वीप मझार । 'भरत क्षेत्र 'स्वेतात्रिका' जी, नयरी होती विस्तार हौ ।—जयवाणी

३ उपस्थित रहना, मौजूद रहना, हाजर रहना ।

उ०—द्रुपदी रहइ ओलग कीजइ, तू कन्हइ द्विव दीह गमीजइ ।

२ वह मानसिक दशा जिसमे अत्यन्त घबराहट होती है और प्राणी कुछ कहने, अपने भाव प्रगट करने मे असमर्थ रहता है। मानसिक अस्थिरता की दशा। कई बार ऐसा वात विकार के कारण भी होता है।

उ०—बारणै ऊभा मा, बेटा दोनू डुसुड डुसुड रोवता हा। थोडी ताळ तौ सेठजी ई भेळमभेळ रोवता रह्या। रोवणा सू मन खासौ हळकौ व्हियौ। काळजा री होडौ मिट्यौ।—फुलवाडी

३ सहारा, रोक।

रू भे—हुडौ, हूडौ।

होट—स पु [स ओष्ठ] प्राणियो के मुख विवर का वह किनारा जिसमे दात ढके रहते हैं और मुह को खोला व बन्द किया जाता है, ओष्ठ, दन्तच्छद।

उ०—१ पण पेटा री वात होटा कदै ई नी आवती, क्यू कै ठिकाणा मैं जरवा रौ सराजाम माकूल हौ।—फुलवाडी

उ०—२ जळ मतीरा अम्रत जठै, मानै मेवा मद। होटा सू पीवै हरख, कैर कुसुम मकरद।—थळवट बत्तीसी

उ०—३ काकवत स्वर, मार्जार नेत्र, उस्ट्रवत् लब होट, मुखक-वत् लघु करण्ण, मुक रा दरसनिरगर त त बहिट। —व स

मुहा०—१ होट खावणा=होठो को दातो मे पकडना २ होट खुलणा=कुछ कहने का प्रयास करना, कहना, बोलना, बात प्रगट करना ३ होट चावणा=देखो 'होट खावणा' ४ होट ढोकळा होणा=किसी कारण से होठ सूज जाना ५ होट फरूकणा= गुस्से के कारण होठो मे फडकन होना ६ होट सूकणा=परेशानी या घबराहट के कारण होठो पर शुष्की आना ७ होट हिलणा= कुछ कहने की क्रिया होना ८ होटा आयोडी बात=ऐसी दशा जब कोई बात मुह से प्रगट होने को ही हो ९ होटा ई होटा मैं= अत्यन्त धीरे बोलने की क्रिया, जिसमे स्पष्ट आवाज सुनना सभव न हो १० होटा नी निकाळणी - भेद की बात प्रगट न करना, अपनी बात प्रगट न करना ११ होटा लागणी=चश्का लगना, आदत पडना १२ होटा सू हरफ नी काटणी=कुछ न बोलना।

रू भे—होठ, हौठ।

अल्पा,—होटडौ, होठडलौ, होठटौ।

होटडौ—देखो 'होट' (अल्पा, रू भे)

उ०—चुगली करता चुगग रा, जुग होटडा जुडत। मळ नाखण जाणै मिळै, दोय ठीकरा दत।—बा दा

होटल—स पु [अ] १ वह दुकान, मकान या स्थान जहाँ मूल्य चुका कर भोजन किया जाता हो, भोजनालय, ढाबा।

उ०—पढै फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ मैं मिळ जावै। अ गरेजी पढ अवल, होटला मैं हिळ जावै।—ऊ. का

वि वि—कहीं कहीं ऐसी जगह कुछ दिन ठहरने की व्यवस्था होती है।

२ वह दुकान जहा पर बैठ कर मीठाई, नमकीन, चाट व चाय-पानी आदि खाया पीया जाता हो, रेस्टोरेण्ट।

उ०—चिलम-बीडी चौसै, चमडा चूचावै है। मास-मिट्टी खावै अर होटला मैं जावै है।—दसदोख

होठ—देखो 'होट' (रू भे)

उ०—१ उपरलौ होठ नाक री सोय तणियोडौ अर हेटलौ ठोडी कानी लुळियोडौ। दात बिना हसिया ई दीखै। होठ धुराधुर सावळा।—फुलवाटी

उ०—२ नवहथी भोकरा, वाथि मैं कवरा, छत्र धारी माथै रा, कोरि मैं कान रा, माइमैं वानरा, तजिमैं होठा रा, कमतूरिआ पटारा।—रा सा स

होठडलौ होठडौ—देखो 'होट' (अल्पा, रू भे)

उ०—होठडला सूमल रा रेसमीयै रग तार ज्यौ हाजी र दानडला ऊजळ दती रा दाडम बीज ज्यू।—लो गी

होड—स स्त्री. (स होड्) १ बराबरी, समानता।

उ०—१ पारखी होड त् म करि रे प्राणिया, पुण्य पासइ म करि हूसि खोटी। बापडा जीव बाबी तइजउ बाजरी, कहि किम तुणिसि तु मालि मोटी।—स कु

उ०—२ पण सेठ (फूलच द जी)! थारळै कामारी होड कदेही नही हुवै। बेटा पोतां रै पग्लै भूख नी, अमर जस नाव है।

—दसदोख

उ०—३ चौधरी माथौ धूणतौ कैवण लागौ—नीं अ दाता नी, एडी कमाई राम टाळै। म्हैं जिनावर आप बड भागिया री होड कीकर कर सका।—फुलवाडी

२ प्रतिस्पर्द्धा, स्पर्धा।

उ०—१ मिणगार करै मन कीधौ स्यामा, देवि तणा देहरा दिसि। होड छंढि चरणै लागा हस, मोती लागि पाणही मिसि।—वेलि

उ०—२ आज सखी हम यु सुण्यौ, पी फाटन पिय गौण। पी अर हिवडै होड है, पहली फाटै कौण।—अग्यात

३ शर्त, बाजी।

उ०—१ चोट री रीभ पर गाठ री होड लगावै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ ताहरा सीरोहीयौ बोलीयौ, 'होड मारू', 'अना' री आवै तौ। तु निचीत। हू 'अरै' नु हु पालीस।

—कावळा जोइया नै नीडी खरळ री वात

उ०—३ माहोमाह होड आया कै जीतणियो हारचोडा री वैन परणीजैला। राजकवर नै आपरी जीत माथै अटिग विस्वास हो इज। पछै होड करणा मैं क्यू पाछौ सिरकनो।—फुलवाडी

४ ईर्ष्या, द्वेष।

५ मुकाबला, सामना।

क्रि प्र—करणी, मारणी, लगाणी।

जा न राज सह् पाडव होइ, मू हरइ अवर ठाम न कोई ।
—सालिसूरि

४ निर्मित होना, बनना ।
उ०—यह तन जारी मसि करू, धूआ जाहि सरग्गि । मुझ प्रिय वद्दळ होइ करि, बरसि बुझावइ अग्गि ।—ढो मा
उ०—२ झूला मसतूळ जमा जळ झाग, पगप्पग होत उद्योत प्रयाग । मदाकरण भारण-नदा वह मद, वहै मरसुत्ति प्रवाह वलद ।—मे म
५ काम निकलना, कार्य सिद्धि होना ।
ऊ०—१ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती । प्रापत होत भोत सुख सपत्ति, व्यापत नाहि विपत्ती ।—मे म
उ०—२ प्रेमिका सू मिळणौ रा मीठा मनसूबा बाधै अर मतर सीधा होणौ री अवधी नै आरया फाड्या अडीकै है ।—दमदोव
६ कार्य का पूर्णता की स्थिति मे आना, पूर्ण या पूरा होना ।
७ निवृत्ति की अवस्था मे आना ।
८ वीतना, गुजरना ।
९ परिणाम या नतीजा निकलना ।
१० असर दिखाई देना, प्रभाव पडना ।
उ०—बाबा, बाळू देसडउ, जिहा डूगर नहिं कोइ । तिणि चढि मूकउ धाहडी, हीयउ उरळउ होइ ।—ढो मा
११ हानि या क्षति पहुचना ।
१२ भुगतना, वहन करना ।
१३ उचित क्रम या नियम से चलते रहना ।
उ०—प्रति दिन होत वेद विधि पूजन, धुरियत तत आनद्द सिमर घन । धूप दीप नैवेद पुस्प फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ ।
— मे म

१४ परिवर्तित अवस्था मे पहुचना ।
ज्यू—छोरी जवान होगी है ।
उ०—१ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस मधि सुहिणा सु वरि । हिव पळ पळ चढती जि होइत्तै, प्रथम ग्यान ग्हवी परि ।
—वेलि

उ०—२ मो किण भाति री मेलवणी, लवग, डोडा, जायफळ, जावत्री, नागकेसर, तज, तमालपत्र सीगीमुहरा, धतूरो, भूटटी एक ग्यान, इहमदावादी खान, हाथा छूटी गयागण मैं पडै तौ सात सात टुकडा होइ जावै इण भाति रौ बत्रीसी काढीजै छै ।
—रा सा स.

१५ जन्म, उत्पत्ति या सृजन के कारण सामने आना, प्रगट होना, देखने मे आना, दीखना, जन्मना ।
उ० पैंत्रीसै रा चैत वद, चउथ अनै बुधवार । पुत्र हुवौ जसराज रै, भाजण दुख ससार ।—रा रू
१६ कोई विशेष अवस्था या स्थिति प्राप्त होना ।
उ०—१ था सूता म्हे चालिस्या, एह निचिती होइ । रइबारी ढोलउ कहइ, करहउ आछउ जोड —ढो मा
उ०—२ धरती री इदु होअे तिण भाति जग छेत कर नै धणौ मोनै रूपै री मेह होइ नै तूठो छै ।—रा मा म
उ०—३ पाणी सू धुड्ड होयनै वा एक बडला री छीया मे बैठ मस्ताई सू वागोलण लागी ।—फुलवाडी
१७ आना, जाना, पहुचना ।
उ०—१ राजा कउ जण पाठवइ, ढोलइ निरति न होइ । माळवणी मारइ तियउ पूगळ पथ जिकोइ ।—ढो मा
उ०—२ सूरा जमदाढ लई उण सग, लई रवि रेवत माड मलग । हुवौ अमताचळ ओट अहेस, सक्यौ नह देख कतूहळ सेस ।—मे म
१८ चमकना, प्रकाशित होना ।
उ०—१ भयकर मोर मित्रा अग्रभाग, चोळे मुख होत उदोत चराग । जिका जगि जोति छिवा छिपजात । दगा मग भोत सपस्ट दिखात ।—मे म
उ०—२ रातिज बादळ सघण घण, वीज-चमकउ होइ । इण समईयइ हे सखी, साल्ह जगाई मोइ ।—ढो मा
१९ मिलना, प्राप्त होना ।
उ०—देस मुहावउ जळ सजळ, मीठा-बोला लोइ । मारू कामण मुइ दखिण, जइ हरि दियइ त होइ ।—ढो मा
२० व्यापना, आना, छाना ।
उ०—जिण दीहे पावस झरइ, समनेहा सुख होइ । तिणि दिन वयरी वल्लहा, सेज न मुक्कइ कोइ ।—ढो मा.
२१ किसी रोग, व्याधि या प्रेत बाधा आदि का आना फैलना ।
२२ निकलना, प्रगट होना ।
उ०—एकउ बोल हुवै आपाणी, जुध मेवाड जुदौ मत जाणौ ।
—रा रू

२३ मिलना, भेटना ।
उ०—पिडत-पिडत अर साधू-माधू, सागै हुवै जद सागीडा लडै-झगडै ।—दमदोख
२४ अवतरित होना ।
उ०—१ धर हरि अस हुवै धरपत्ती । मस्त्रवध सामरथ सकती ।
—रा रू

उ०—२ सामड रै माल्हिया, नाव आवड नै आई । आई रौ अवतार, हुवा करनळ मेहाई ।—मे म.
२५ विकार सूचक क्रिया किया जाना ।
२६ गरज सरना, काम चलना ।
२७ नाते, रिश्ते या मोह-ममता मे बधना, निकटवर्ती या घनिष्ठ बनना ।
उ०—जगागम मोह दहू बळ जोत । हुरा गठ जोड दहू बळ होत ।
—मे म

महारस ऊमटइ के ताकहू सभार ।—ढो मा

उ०—२ दिस दिक्खण बेढिया, पीठ उतराध विचारै । सकत वाम सुरराय, सोम दाहिणौ सभारै ।—रा. रू

सभारणहार, हारौ (हारो), सभारणियौ —वि० ।

सभारिग्रोडौ संभारियोडौ, संभारयोडौ—भू० का० कृ० ।

सभारीजणौ, सभारीजवौ - कर्म वा० ।

सभारियोडो—भू. का कृ —१ मूदा हुआ, पलक वन्द किया हुआ ।

२ देखो 'समग्यियोडौ' (रू. भे)

३ देखो सभाळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री सभारियोडी)

सभाळ—स स्त्री —१ विशेष अवसरो पर अपने सवधियो एव रिश्तेदारो को भेट या उपहार स्वरूप भेजी जाने वाली खाद्य सामग्री ।

उ०—१ सेवट वानै माडाणी वहीर करिया । साथै कोई सभाळ घाली नी कोई वीदडी । आया ज्यू ई पाछा नगडिया । कोई जूतौ ई मूठ बाई सू मिळण नै नी आयौ ।—फुलवाडी

उ०—२ सावण री तीज अर राखी माथै छवू बवा रै पीवर सू भात भात री सभाळां आवती । ओढणा, खोपरा, नाळेर, मगद, अर सातू इत्याद । पण छोटकी वीदणी रै कोई व्है तो भेजे —फुलवाडी

उ०—३ वो आदमी डरतौ डरतौ जवाव दियो के कटोरदान मै पडूदी अर साकळिया है। सामरै सभाळ लै जावै। तद साप आखतो होय वोल्यौ—आ सभाळ खेसला रै पल्लै वावलै । —फुलवाडी

२ हिफाजत देखभाल।

उ०—१ वणनै इण भात रोवता देखने ठाकरसा री मन ई अजेज चळ-विचळ व्हैगौ। पूछ्यौ—चौधरी, वात काई व्ही। म्हारी भीपरी कुत्ती तो राजी खुसी है। म्हारै विना वणरी सभाळ कुण करतो व्हैला ।—फुलवाडी

उ० —२ सह घर री सभाळ दूजा रै हाथा दिवै। भला भला भोपाळ, रुळता दीठा राजिया ।—किरपाराम

३ सुपुर्दगी ।

४ निरीक्षण, परीक्षण, जाच ।

उ०—आखी वनराय जाणै पालणै भूलण लागी। पान-पान अर कूपळ-कूपळ री सावळ सभाळ व्हैगी। मोटा पछिया रै झपीड लागण लागा। छोटा पछी डाळा सू चापळ नै बैठग्या। —फुलवाडी

रू. भे —संमार, समाळ ।

सभाळणो, सभाळवो—क्रि. स —१ हिफाजत करना, देखरेख करना ।

उ०—१ आपरै हाथ सू कतरै, रग लगावै । टाकर चौपडै, धूवो देवै तथा धुवाणी सूकाइनै, पूरी सभाळै है। एवड र लाड-कोड सू ही राजी रै'वै अर धाप र खावै ।—दसदोख

उ०—२ दोनू राजकवर कह्यौ—रमण-खेलण रा दिन है, जको धूळ में रमा। म्हारी मसा तो मूडी है कोनी। अर गादी री मूप्यौ राज तो कैडा गेला-गूगा सभाळ लेवै। नवो राज थरपा तो मरदाई। - फुलवाडी

उ०—३ पण राजकवर तो वरजता वरजता वहीर व्हैगी। वाप इण भात मादगी में तळीजै अर वो राज-काज संभाळण री वात सोचै तो इण सोचणा में धूड है।— फुलवाडी

उ०—४ वाधउ वड री छाहडी, नीव नागर वेल। डाभ सभाळू करहला, चोपीड सू चपेल।—ढो. मा.

२ वनाये रखना, विद्यमान रखना ।

उ०—घर में घणी माल-मता नी नही, पण वडेरा रै जमानै सू चाली आवती इज्जत आवरू नै विया, जिया-किया संभाळ राखी ही ।—दसदोख

३ सुपर्दगी लेना ।

उ०—१ ऊमर मे कदै ई माया री परम नी करयौ जको थारै गिया पछै हाथ लगाय भिस्ट व्हैणो पडयौ । अवै वा ई जोखम संभाळ लै । फुलवाडी

उ०—२ नीतर म्है तो मुगनचिडी वणनै आ काकड मे उडी। सभाळो थारो डडकमडळ। पछै थामै फोडा पडिया तो म्हैं नी जाणू ।—फुलवाडी

४ लेना, रखना।

उ०—सेठाणी थूं आज सू ई ऐ कूचिया सभाळ। जरुरत वाळा वास्तै सगळा भवारा उघाड दै।—फुलवाडी

५ देखना, सुधि लेना।

उ०—१ ऊपर आया तरै गागै ठाकुरा री पालखी सभाळी तरै पालखी नही तरै पाछा वळिया ।—नैणसी

उ०—२ ठडा होणै री थोडो-घणो ही भो नी है, वेटी नै घडी-घडी संभाळै, मूढो ढकै हैं।—दसदोख

उ०—३ मेलो कोटण रै तळाव गयो । प्रभात हुवो ताहरा पोतो सभाळियो। देखै तो पोतो नी।—ऊदै ऊगमणावत री वात

उ०—४ जीवण वचावण नै कोई कोठा कोठिया मे वळियो, कोई घास री वागर में घुस्यौ तो कोई राली गूदडा में वड्यौ । किणी ई रैवारिया रै वाडा री सरण लीवी, किणी ई भीला रा झूपा संभाळ्या तो कोई रा पग थेट खेता री वाजरिया में जावता ठभिया ।—अमर चुनडी

उ०—५ स्याणा पडित आवै झाडाला काजी जावै । पडित जाप करै पूजारी माळा फेरै। जोतकी टीपणै मे गिरै-गोचर संभाळै जोतकी धूप खेवता थका जोत करै ।—दसदोख

६ जाच पडताल करना, निरीक्षण करना, परखना ।

उ०—१ बादसाह कही ऐसा कोई आदमी नही में सब सभाळिया। —आमेर रा धणी री वारता

होफरणौ, होफरबौ–क्रि स —१ गर्जना, दहाडना ।
२ जोशपूर्ण आवाज करना, जोश मे बोलना ।
३ क्रोध करना, रोष करना ।
होफरणहार, हारौ (हारी), होफरणियौ—वि० ।
होफरिग्रोडौ, होफरियोडौ, होफरयोडौ—भू० का० कृ० ।
होफरीजणौ, होफरीजबौ—कर्म वा० ।
हौफरणौ, हौफरबौ—रू० भे० ।

होफरियोडौ–भू का कृ —१ दहाडा हुआ, गर्जा हुआ २ जोशपूर्ण आवाज किया हुआ ३ क्रोध किया हुआ, रोष किया हुआ । (स्त्री होफरियोडी)

होफरैळ–स पु —सिंह, शेर ।
उ०—पैण धारा खरै सौ जरै सौ काळकूट प्याला, आकास वास री हूस धरै सौ अघात । बना आई मरै सौ फरै सौ कल्ला दोळा वैरी, होफरैळ काठळै करै सौ आधा हात ।—महादान महडू

होवड–स स्त्री —१ ठोडी, हिचकी ।
२ मुह, मुख ।
३ ओष्ठ, अधर, होठ ।
४ देखो 'थोवटौ' ।

होवरडौ–स पु —वात-विकार या किसी अन्य कारण से जी मे घबराहट होने के कारण आने वाली खाली उबकाई । इसमे कै नही होती पर कै होने जैसी चेष्टाएं होती है, उबकाई ।
उ०—१ पाचवै महीनै टाबर पेट मैं ढळवळण लागौ । माय हुरडिया देवतौ सौ लखायौ । जच्चा राणी नै होवरडा हालण लागा ।—फुलवाडी
उ०—२ डाकण नै ओळचा सू होवरड़ा आवण ढूका । गुलगुला वाळा छोरा नै नी खावै जित्तै काळजा री वळत नी मिटैला ।
—फुलवाडी

होवास—देखो 'होवास' (रू भे)

होम–स पु [स] १ हवन, यज्ञ । (अ मा)
वि वि —देखो 'हवन'
उ०—माह की वातै सुणै त्यौं त्यौ उमग प्रकासै । घिरत का कुभ सीचै होम ज्या उजासै ।—रा रू
उ०—२ हण ताडका निज ठाहरा, जिग माड आरभ जाहरा । उत होम धूम विलोक आया, निडर राकस नीच । जिग अर सुबाहू जाणनै, तन हतै सायक ताणनै, सर पवन परसी चार कोसा रह्यौ थभ मरीच ।—र रू
२ यज्ञ मे आहुति देने की क्रिया ।
रू भे —हौम ।

होमआटम, होमआठम—देखो 'होमास्टमी' (रू भे)

होमकाट, होमकाठ–स पु [स होम+काष्ठ] १ यज्ञ की लकडिया, समीधा ।
२ देखो 'होमकास्ठी' (रू भे)

होमकास्ठी–स स्त्री [स होम+काष्ठी] यज्ञ की अग्नि दहकाने की फूकनी ।
रू भे —होमकाठ ।

होमकुड–स पु [स] वह गड्ढा या कुड जिसमे अग्नि जला कर यज्ञ किया जाता है, हवन-कुण्ड ।

होमछाळणा–स स्त्री —बिश्नोई जाति की एक रस्म विशेष जिसके अन्तर्गत कोई झगडा या वाद तय किया जाता है । इसके अन्तर्गत कोई एक पक्ष जाभोजी की कसम खाता है । कसम खिलाने वाला घी लेकर आता है और कसम खाने वाला हवन करता है ।

होमणौ–वि (स्त्री होमणी) १ होमने वाला, आहुति देने वाला ।
उ०—सावत्री सरसत्ती, गवरि गगा गोमत्ती । मिळ सतिया धरि महरि, करै इण परि कीरत्ती । त्रिहुए पख तारणी, सोभ जुग च्यार सुवाणी, पाच तत्त होमणी, रीत मोटी खट राणी । बिन मात पिता कुळ जात बिन, मत अवदात महासती । साहाय थकी निज सामि सग, वसी आय अमरावती ।—रा रू
२ नष्ट करने वाला, बरबाद करने वाला ।
३ बलिदान करने वाला ।

होमणौ, होमबौ–क्रि स [स होमम्] १ हवन करना, यज्ञ करना ।
उ०—चामरियाळ धडा चूडाकम, अधपति काठ जळै अहकार । हरराजउत अत्र होमता, 'पैजमाउत' पौहतौ पार ।
—प्रथीराज राठौड री गीत
२ यज्ञ की अग्नि मे किसी वस्तु की आहुति देना, होमना ।
उ०—१ होमिया नाग अजा नर हैमर, गढपतीयै होमिया गयद । 'करण' तणा जेम होम न कीधा, कूटा चहुएं तणा कुरद ।
—राणा जगतसिंह री गीत
उ०—२ देवा कीध न कीधा दाणव, सारै जै निरमै सुकर । हसत ज्याग जग प्रसध होमता, हुवा विधाता हेक हर ।
—महाराणा सागा री गीत
उ०—३ कास्टमयौ ततकाळ अगनि काढी छै सु अगनि । लाकडी अगर की छै । आहुति देण नै घी अर कपूर घणौ होमज्यै छै ।
३ बलिदान करना ।
उ०—१ चित्तौडगढ नाव रै इण अमर रा कारण वै हजारा लाखा भिडमल है जिणा गीत-पात री रूखाळ मारू बिना नाक मे सळ घाल्या घाटकिया दै काढी अर आपोआप नै होम दिया ।
—जहरवा मेहर
उ०—२ मध्यकाल रै राजस्थान रै इतिहास री अणू ती मालदारी नै सगळाई इतिहास लिखारा अगेजै । मावड भोम री रुखाळ खातर नै की मुळकता होम देणौ इण सेतर रै इतिहास री घणौ महताउ बान गिणीजै ।—चितराम
४ जलाना ।

उ०—सारी पाणी ववटा, दिस दिस वजउ भोम। उजड्या मा वसिया जठै, मिनखा नै मत होम।—व्रृ
५ नष्ट करना, वरवाद करना, समाप्त करना।
६ अर्पित करना।
होमणहार, हारी (हारी), होमणियौ—वि०।
होमिय्रोडौ, होमियोडौ, होम्योडौ—भू० का० कृ०।
होमीजणौ, होमीजवौ—कर्म वा०।
हूमणौ, हूमवौ—रू० भे०।
होमदूध—स पु—आहुति दिया जाने वाला दूध।
होमपाठ—स पु—हवन करते समय या हवन के लिये पढा जाने वाला मत्र या किसी मत्र का जाप।
उ०—परचड चड कर होम पाठ, अवठाय दिया पतसाह आठ।
—वि स
होमास्टमी, होमास्ठमी—स स्त्री [स होमाष्टमी] चैत्र व आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी जिस दिन देवी के निमित्त हवन किया जाता हे।
रू भे—होमआटम होमआठम।
होमि—स पु, [स] १ अग्नि।
२ घी, घृत।
होमियोडौ—भू का कृ—१ हवन किया हुआ, यज्ञ किया हुआ २ अर्पण किया हुआ ३ आहुति दिया हुआ, होमा हुआ ४ वलिदान दिया हुआ ५ जलाया हुआ ६ नष्ट किया हुआ, वरवाद किया हुआ।
(स्त्री होमियोडी)
होमियोपैथिक—वि [अ] होमियोपैथी चिकित्सा का, होमियोपैथी चिकित्सा के अनुसार।
होमियोपैथी—स पु [अ] पाश्चात्य चिकित्सा का एक सिद्धान्त विशेष या चिकित्सा विधि जिसके अन्तर्गत विषो की अल्प से अल्प मात्रा द्वारा रोग-निदान किया जाता है।
होमीजणौ, होमीजवौ—क्रि अ—१ अत्यन्त गर्मी या उमस के कारण त्रसित होना, कष्ट पाना, वेचैन होना।
२ दुखी होना, परेशान होना।
३ नष्ट होना या किया जाना, वरवाद होना या किया जाना।
४ आहुति दिया जाना, होमा जाना।
५ अर्पित होना। ६ वलिदान किया जाना।
होमीजियोडौ—भू का कृ—१ अत्यधिक गर्मी या उमस से त्रसित हुवा हुआ, कष्ट पाया हुआ, वेचैन हुवा हुआ २ अर्पित हुवा हुआ ३ दुखी, परेशान हुवा हुआ ४ वलिदान हुवा हुआ ५ नष्ट या वरवाद हुवा हुआ ६ आहुति दिया हुआ, होमा हुआ।
(स्त्री होमीजियोडी)
होयोडौ—भू का कृ—१ स्वयमेव कुछ घटित हुवा हुआ कुछ हुवा हुआ २ अस्तित्व रखता हुआ, अस्तित्व मे रहा हुआ ३ उपस्थित, मौजूद व हाजर रहा हुआ. ४ निर्मित या वना हुआ ५ काम निकला हुआ, कार्य सिद्ध हुवा हुआ ६ पूर्णता की स्थिति मे आया हुआ, पूर्ण या पूरा हुवा हुआ (कार्य) ७ निवृत्ति की अवस्था मे आया हुआ ८ वीता हुआ गुजरा हुआ ९ परिणाम या नतीजा निकला हुआ १० असर या प्रभाव पडा हुआ ११ हानि या क्षति पहुचा हुआ १२ भुगता हुआ वहन किया हुआ १३ उचित क्रम या नियम से चला हुआ १४ परिवर्तित अवस्था मे पहुचा हुआ १५ जन्म, उत्पत्ति या सृजन के कारण सामने आया हुआ, प्रगट हुवा हुआ, देखने मे आया हुआ, जन्मा हुआ १६ कोई विशेष अवस्था या स्थिति प्राप्त किया हुआ १७ आया हुआ, गया हुआ, पहुचा हुआ १८ चमका हुआ, प्रकाशित हुवा हुआ १९ मिला हुआ, प्राप्त हुवा हुआ २० व्याप्त या छाया हुआ २१ निकला हुआ प्रकट हुवा हुआ २२ मिला हुआ, भेंटा हुआ २३ अवतरित २४ विकार सूचक किया किया हुआ २५ गरज सरा हुआ, काम चला हुआ २६ नाते-रिश्ते या मोह-ममता मे वधा हुआ, निकट-वर्ती या घनिष्ठ वना हुआ।
(स्त्री होयोडी)
होर—स स्त्री—इच्छा, अभिलाषा।
होरा—स्त्री [स] १ राशि का उदय।
२ राशि का आधा भाग।
होरी—देखो 'होली' (रू भे)
उ—सत गुरु ऐसी होरी खेलाई। होरी खेलाई मेरै मन भाई। जाण लिया हर राई।—हरिरामजी महाराज
होरीलौ—वि (स्त्री होरीली) हठ करने वाला, हठी। (वालक)
होरौ—स पु—१ हठ, जिद्द।
२ वालक का हठ, वाल-हठ।
होल—स स्त्री—१ आवड देवी की वहिन, एक देवी।
उ०—सिंघाळी तुही सीमिका होल सैणी, अदाळी तुही गूगिका नाग वैणी। वगाळी तुही विव्वडा चरखडाई, मुद्राळी तुही आवडा मामडाई।—मे म
२ चित, मन, दिल।
उ०—मूळी री हियो फूटण लागग्यो, उफळ ग्यो, होल उपडग्यो अर चित्त भग्म हुयग्यो।—दसदोख
होळका—१ देखो 'होलास्टक'।
२ देखो 'होळी' (रू, भे)।
होलड़—स स्त्री—छोटी पडुकी।
होळा—क्रि वि.—धीरे, आहिस्ता।
उ०—आप तुरत ऊठ महल भीतर नू पधारिया, भुजाई वाळा नू होळा सी कह गयौ। जै पहर रात पाछली सू उठ कर भुजाई तइयार करज्यौ।—कुवरसी साखला री वारता

होळा-स पु [व व]—गेहू या चने के कच्चे दाने जिनको पौवो सहित आग मे भूनकर खाया जाता है ।

होला-स स्त्री —गप्प ।

होलात—देखो 'हवालात' (रू भे)

उ०—लूगाडा टापरी चाटग्या, च्यारू बेटा होलात मैं दाटग्या । जमानत देवणियौ ही कोई लाधै नही ।—दसदोख

होळावौ-स पु—एक शिकारी पक्षी विशेष ।

होळास्टक, होलास्टक-स पु [स होलाष्टक] १ फाल्गुन शुक्ला अष्टमी से होलिका पर्यन्त की अवधि ।

२ उक्त अवधि मे लगने वाला नक्षत्र विशेष जिसके कारण इस अवधि मे शुभकार्य वर्जित माने जाते है ।

होलाहडी-स पु—एक प्रकार का घोडा विशेष । (शा हो)

होळि—१ जलाशय का वह भाग जहा नावें व जहाजे बधी रहती है ?

उ०—ऊपरि वडा नै पीपळा री घटा वधिजिनै रही छै । नै तळाव नै तै छाया री हास तरस माणण नू हजार असवार' सू राज नै आइ पागडा छाडिया छै । होळि मैं जिहाजा पाथरीजै छै । —रा सा स

२ देखो 'होळी' (रू भे)

होळिका, होलिका—देखो 'होळी' (रू भे)

उ०—पकवानै पानै फळै सुपुहमै, सुरगै वसत्रै दरव स्रव । पूजियै कसटि भगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रव ।—वेलि

उ०—२ तठा उपरांत करिनै राजान सिलामति होळिका प्रव पूजिजै छै । आगै वखाणिया तिण भातिरा अमळ माणीजै छै । हमैं ग्रीखम रित रा वणाव कीजै छै ।—रा सा स

उ०—३ वणि होळिका थभ जुध वेरा, सिर पर वह झेलू सम-सेरा । धार विहार अणी घट धौरग, चुख-चुख होय पडू रिण चौरग ।—सू प्र

उ०—४ अव होळिका नर नारि पूजित माघ पून्यण मगळी । जोधाण प्रतपै छात जोधा, 'अभौ' कीरति ऊजळी ।—रा रू

होळिय—देखो 'होळी' (रू भे)

उ०—सिल्है घट वेधत वाहत सेल । खेलै जिम होळिय फागण खेल ।—सू प्र

होळियार-स पु—१ होली के त्यौहार पर चरचरी नृत्य करने वाला ।

उ०—१ करै न्रप वीर जय जय कार, हका, करि जाणि रमै होळियार ।—सू प्र

उ०—२ 'अमर' रौ 'मोहकम' रा अमूरा, वह हणै धड वेहडा । खग झाट जुधि होळियार खेलै, हरखि जाणि डडेहडा ।—सू प्र

२ होली के अवसर पर रग खेलने वाला, होली खेलने वाला ।

होलियौ—देखो 'हूलियौ' (रू भे

होलीदौ-स पु—ज्वार का लवा डठल जिसके सिरे को दीपावली के दिन जलाते हैं ।

होळी-स स्त्री [स होली] १ फाल्गुन की पूर्णिमा (कभी कभी चतुर्दशी) को मनाया जाने वाला हिंदुओ का एक वडा त्यौहार या पर्व ।

उ०—१ होळी अर दीवाळीया, घर घर दीपग माहि । हरीया दीपग और दिन, कोई क द्यै कोई नाहि ।—अनुभववाणी

उ०—२ जवडउ अतर वहिन नइ साली, जेवडउ अतर दीवाली [नइ होली], जेवडउ अतर पुण्यवत नइ हाली ।—व म

२ उक्त त्यौहार के दिन मुहल्ले के चौक या किसी स्थान विशेष पर छोटा गड्ढा खोद कर रोपी जाने वाली झाडी की डाली—जिसे घास-फूस व ऊपले डाल कर रात मे जलाया जाता है। इसे ही होली कहते है ।

उ०—१ करि ढाला झट ओट कजाका । होळी थभ जेम करि हाका । जरद धरा ऊडळ वध जकडै, पह रुद्रसेन जीवतौ पकडै । —सू प्र

उ०—२ फागुण मास वसत रुत्त, आयउ जइ न सुणेसि । चाच-रिकइ मिस खेलती, होळी झपावेसी ।—ढो मा

३ उक्त त्यौहार के दूसरे दिन (रामा-सामा के दिन) खेला जाने वाला रग का खेल—जिसमे समवयस्क स्त्री-पुरुष एक दूसरे पर रग गुलाल, अवीर आदि डालकर खूब मनोविनोद, आनन्द, उत्साह करते हैं, इसे फाग खेलना भी कहते हैं ।

उ०—१ होळी खेल प्यारी पिय घर आयै, सोइ प्यारी पिय प्यार रे । मीरा कै प्रभु गिरधर नागर, चरण कमळ वळिहार रे । —मीरा

उ०—२ लज्जा जोजन लक्ष करि, तनि मनि ताळी देसि । अनहत चग सुणी सु णी, हू होळी खेलेसि ।—मा का प्र

४ फाल्गुन मास व होली के आसपास के दिनो मे गाये जाने वाले शृ गार-रस प्रधान गीत, फाग । ये गीत अधिकतर चग (डप) पर गाये जाते है ।

५ लाक्षणिक अर्थ मे अग्नि, आग ।

उ०—एक धाक अर धक पळी, एक मिनख री राख करी । वैरीडा छळ-कपट सू ठगै, काळज्या होळी जगै है । अरजन रा साथी उज-डणनै त्यार, घर हाळा झगडणनै हुस्यार ।—दसदोख

६ आग की लपट, लौ ।

७ चिंगारी ।

उ०—छेड हुई काठायता, आया खेड अपार । झड लागौ सर गोळिया, हुय होळिया दुवार ।—रा रू

८ फाख्ता नामक पक्षी ।

[स होलिका] ९ एक प्रसिद्ध राक्षसी जो हिरण्यकशिपु की वहन व भक्त प्रह्लाद की वूवा थी ।

वि स्त्री —अशक्त, कमजोर, कम प्रभावशाली, हल्की ।

उ०—मारवाड रा भला भला सिरदार काम आया जिण सू

मालदेजी री सायबी पतळी पडी। गू आपा काम आगा तौ वळै जोवपुर री सायवी होळी हुमी।—द दा

रू भे —होरी, होळका, होळि, होळिका, होळिय, होळीका, होळी।

होलीउ-स पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—राजिउ वयराजीउ महिदउरउ तीताग्रागिउ कचीयउ पीट समुसी पीठ देवगिरु मदील होलीउ तलपकाउ नरम्म हरीफ प्रभृति वस्त्र जाति।—व स

होळीका—देखो 'होळी' (रू भे)

होळीझझाटी-स स्त्री —एक राग विशेष।

होलेडी—देखो 'होळी' (अल्पा, रू भे)

उ०—बाजत बाजत वौ गयौ, कोई-गयी होलेडी रै थान ए, रगीलो चग बाजणु।—लो गी

होळेसीक—देखो 'होळैसीक' (रू. भे)

होळै-क्रि वि —१ धीरे, धीमे, आहिस्ता।

उ०—१ एकै घाट उजरता एक चौकीदार कही जै चूकू नही तौ इनमें सिवा है। होळै सी वेली नू कही।

—जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

उ०—२ किसनजी कसीज्या, पण करै तौ कै करै। आगै ऊवौ लारै साढ। अवळौ आयौ घाट' र काढचौ। होळै सै हुकारौ भरचौ।—दमदोस

२ मद गति मे।

उ०—वहि मत जावै छाकियै मत जावै तौ सीधी म्हारै डैरा आयै बादळी होळै मत वरसै ठडा मत वरसै सीतो मत आयै। काठी भरलायै।—लो गी

रू भे —होलु होळे, होळै।

होळैसीक, होळैसै-क्रि वि — धीरे मे, आहिस्ता से।

उ०—१ नाव सुणनै आडी विना बोल्या डावडी वमरा मैं आई। होळैसीक बोली—नगर सेठजी पधारया।—फुलवाडी

उ०—२ एक दिन आधी ढळिया रै पछै कुमारी आपरा धणी नै जगायौ। होळैसीक उणरा कान मैं कैवण लागी।—फुलवाडी

२ चुपके-चुपके।

उ०—घर म्हारै ही मटाया अर गै'णौ आय'र होळैसै मेल जाया।

—दमदोस

रू भे —होळेसीक।

होळीहळ—देखो 'हिलोहळ' (रू भे)

होल्डर-स पु [अ] १ किसी धातु, लकडी या प्लास्टिक का बना कलम जिसके मुह मे निव फसा रहता है और स्याहि मे डुबोकर लिखा जाता है, कलम।

२ पीतल, लोहे आदि का बना एक उपकरण जिसमे बिजली का बल्व फिट किया जाता है।

३ धारक।

होवण—देखो 'होणौ' (रू भे)

होवणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)

उ०—१ राम सिकार उपाए, होवणहार बात पर हरखै। आगा वार न पार, तिरौ निस ज्यान थयौ परवस्सै।—रा रू

उ०—२ बडा वीर बाका बड़, राजपूत सरदार। सका हूवर जाणै अजब, है यह होवणहार।—ठाकुर जैतसी री वारता

होवणौ, होयबौ—देखो 'होणौ, होबौ' (रू भे)

उ०—१ जोरा गाव नाथ एक जोसरा, हलवळ हका सका सिर होवण।—रा रू

उ०—२ रंगीया कलि रा बगना, रग्ग करै सिरमान। वानौ होवै सावणी, गैवै मना मगान।—अनुभववाणी

उ०—३ गाम कुवारियां होवण सू गाम बाळा नै फगत कूण मोट नेवणौ पडै।—अमरचूनडी

उ०—४ नाथूराम राज दरबार रौ इतौ बडौ मिनख चौधरी होवता थका भी भूत-पलीत, डोरा-डांडा, देई-देवता, अर जावता स्यारी नै करै ही कुछ नी बतावै।—दमदोस

होवणहार, हारौ (हारी), होवणियौ—वि०।

होविग्रोडौ, होवियोडौ, होव्योडौ—भू० का० कृ०।

होवीजणौ, होवीजबौ—भाव वा०।

होवनगार—देखो 'होणहार' (रू भे)

उ०—छोटू मा'रजा रै तीन बेट्या, जका मैं सू वडोडी री सगाई डूगरगढ रै एक पावर हाउस रै मिस्तरी रै दूसरी पास वेटै सू मडगी है। टावर होवनगार है।—दमदोस

होवास-स पु —घोडा, अश्व। (डिं को)

रू भे —हुवास, हुवासि, हुवासी, हुवास, होवास।

होवियोडौ—देखो 'हुयोडौ' (रू भे)

(स्त्री होवियोडी)

होस-स पु [फा होश] १ बोध, ज्ञान की वृत्ति, बुद्धि समझ, अक्ल।

२ सज्ञा, चेतना, होश।

उ०—१ कूजडी नो एक घडी पछै होस मे आयौ। सेठ कह्यौ—ऐ तौ घघा है। ए पै'ना ठेका मैं ई कोई गुडग्या।—फुलवाडी

उ०—२ केसर, केवडाजळ सू सपाडौ करायौ। अतर फुलेल री सौरम सू राजगर होस मैं आया। पलका उघाडी तौ साम्ही वा उणियारा रा झावळा दीसण लागा।—फुलवाडी

३ विवेक।

४ शिष्टता, तमीज।

५ सावधानी, सतर्कता।

६ किसी प्रकार के नशे या बीमारी आदि के कारण होने वाली मानसिक अचेतनतायुक्त सामान्य अवस्था।

उ०—वेटा रै पाखती आया कैवती—देख वेटा अवै थारा भायजी नै चेतौ व्हियौ है। ऐ होस मैं सातरी वाता करै।—फुलवाडी

७ स्मरण शक्ति, याददाश्त।

८ मौज, मस्ती।

उ०—मिझार सरव एक ठोकर रहकला ऊठा ऊपर घातजै छै। होस माणण तळाव आया छै।—रा सा स

९ किसी प्रकार का उत्तरदायित्व सम्भालने की अवस्था, परिपक्वावस्था।

१० इच्छा, कामना।

उ०—मास रभ तैगी खसबोय फूटनै रही छै। त्यारी खसबोय लेवण नू तैतीस कोड देवतागण गधर्व होसा खाय रह्या छै।
—रा सा स

११ उत्साह, उमग।

रू भे—होंस, हौंस, हौस।

होसनाइक, होसनाक, होसनायक—देखो 'हुमनाक' (रू भे)

उ०—१ इण भात रा मूग हाथा सू रळकायजै छै। चुण-वीण काकरा काढजै छै। सू मूग होसनाक वणावै छै।—रा सा स

उ०—२ इण भात री भाग काढ तयार कीजै छै, कमूवा नू होसनाक पवन करै छै।—रा सा स

उ०—३ तठै भला भला भोगी भवर होसनाक खसवोई लेणनै ऊभा रहे। तठै रूप सुगधाई काळी भैरू जाडेची रै महल हमेसा आवै।—जगदेव पवार री वात

उ०—४ जिम वखत विहार सूरति पाक होसनायका नै नजर गुजराए।—मू प्र

होसमद, होसलामद—वि—१ होश वाला, सावधान।

२ समझदार, बुद्धिमान।

रू भे—हुसमद, हौसलामद।

होसलौ—स पु [अ हौसल] १ किसी कार्य के लिये होने वाली सामर्थ्य शक्ति।

२ साहस, उत्साह, हिम्मत।

३ सहन शक्ति।

४ जरूरत, आवश्यकता।

५ धृष्टता, ढीठाई।

६ उत्तरदायित्व सभालने या कष्ट सहन करने की अवस्था।

रू भे—हैसलौ, हैसल्लौ, होसलौ, हौसलौ।

होसियार—वि [फा होशियार] १ चतुर, निपुण, दक्ष, कुशल।

२ समझदार, बुद्धिमान, व्यवहारकुशल।

३ सचेत, सावधान, सतर्क, खबरदार।

४ धूर्त्त, चालाक, ठग, छलिया।

रू भे—हुसियार, हुस्यार, हुस्वार, हुसिआर, हुसियार, हुसीयार, हुस्यार।

अल्पा,—हुसियारौ, हुसीयारौ।

होसियारी—स स्त्री [फा होशियारी] १ चतुरता, निपुणता, दक्षता, कौशल।

२ समझदारी, बुद्धिमानी, व्यवहार कुशलता।

३ सतर्कता, सावधानी।

४ चालाकी, धूर्त्तता, छल, ठगी।

रू भे—हुसियारी, हुस्यारी, हुसियारगी, हुसियारगी, हुस्यारी।

होस्टल, होस्टेल—स स्त्री [अ] छात्रावास, बोर्डिंग हाऊस।

उ०—वीं वळदेव रै लारै लारै उणरै होस्टल ताई गयौ अर पोटाय-पुटूयनै उणनै घरै चालणनै राजी कर लियौ।—अमरचूनडी

होहा—स स्त्री—१ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल।

उ०—नागहारी मोहा सच्चै, वेताल समोहा नच्चै। महाकाळ होहा तच्चै, कोहा मच्चै मीच।—हुकमीचद खिड़ियौ

२ हाहाकार।

होहौ—स पु [अनु] पशुओं को ठहराने के लिये कहा जाने वाला एक सकेतात्मक शब्द।

होहोकार—स स्त्री—हाहाकार।

उ०—हारै वीर नाच केई होहोकार करै हाका, वेढ वाका 'लाडाणी' न थाका वाका वीर।—सुखदान कवियौ

हौं—सर्व—मैं, हम।

उ०—१ सखिया मिळि दुइचारी, बावरी मी भई न्यारी। हौं तौ वाकी नीकै जानौ, कुज कौ विहारी हैं।—मीरा

उ०—२ घुमाय लट्टु अट्टु जाम हौं फिरौं घमा घमा।—ऊ का

रू भे—हो।

हौंकार—देखो 'हौकार' (रू भे)

हौंण—देखो 'होणी' (रू भे)

उ०—हौंण मतै सौ हौंण दै, राखि एक मन ठाय। दाणा पाणी जेथ का, हरीया जासी गाय।—अनुभववाणी

हौंणी, हौंवौ—देखो 'होणी, होवौ' (रू भे)

उ०—हौंण मतै सौ हौंण दै, राखि एक मन ठाय। दाणा पाणी जेथ का, हरीया जासी गाय।—अनुभववाणी

हौंस—देखो 'होस' (रू भे)

उ०—१ राजा नू दैत्य दमनी री हौंस हुई छै।
—पचदडी री वारता

उ०—२ दादू जैसा नाम था, तैसा लीया नाहि। हौंस रही यहु जीव मैं, पछितावा मन माहि।—दादूवाणी

उ०—३ सुनि बाता सखीयन खिनै, करत कुवारी हौंस। हरीया पीव विन परसीया, होय नियारी रौस।—अनुभववाणी

हौ—भू का कृ—१ था।

उ०—१ राजा खुद तौ ग्यानी नी हौ, पण ग्यानिया री आदर अवस करतौ।—फुलवाडी

उ०—२ पण जोगी हुणै अडिग हौ वौ अतर जगत रमै हौ। इकलग नग्तन रमणी रौ, पग पग कठैहि न थमै हौ।—सकुनला

२ देखो 'हो' (रू भे)
उ०—३ मास्तर मलूकदास तीसरी पास अर चौथी फैल हो। बाप नैनपण मैं इज मरग्यौ अर मा अगू नी लाड गरयौ जिण सू पूत परवारग्या।—श्रमरचूनड़ी

हौश्रा—देखो 'हौवा' (रू भे)

हौक-स स्त्री—१ ध्वनि, श्रावाज, शब्द।
२ भय, श्रातक।

हौकवौ—देखो 'होकवौ' (रू भे)
उ०—१ हौकवा राग सिंधू, हुवा दर्गं तोप भाळ दारुवा। अम्र सम्हा रीठ गोला उडै, मारु वर काज मारवा।—सू प्र
उ०—२ हुना राग हौकवा, बहु आए छत्रपती। ताम गजा ऊनरै, पौहमि हित चढै प्रभत्ती।—सू. प्र

हौकर—देखो 'हौकार' (रू भे)
उ०—प्यादा री उणी रै विचै ती सावतराय घोडै असवार हुवौ हौकर करै है।—द दा

हौकरणौ, हौंकरवौ–कि स—जोशपूर्ण आवाज करना, क्रोधपूर्ण आवाज करना, दहाडना, गरजना।
हौकरणहार, हारौ (हारी), हौंकरणियौ—वि०।
हौंकरिश्रोडौ, हौकरियोडौ, होकरयोडौ—भू० का० कृ०।
हौंकरीजणौ, हौकरीजवौ—कर्म वा०।
होकरणौ, होकरवौ—रू० भे०।

हौकरियोडौ-भू का कृ—जोशपूर्ण आवाज किया हुआ, क्रोधपूर्ण आवाज किया हुआ, दहाडा हुआ, गरजा हुआ।
(स्त्री हौकरियोडी)

हौकार-स स्त्री—१ दहाड, गर्जना।
उ०—१ पण वेटी रा माथा मैं जाणै अणगिण सिंघ हौकारा भरण लागा।—फुलवाडी
उ०—२ सिंघ री हौकार सुणाता ई हिरणा रा च्यारू पग है जठै ई चिप जावै।—फुलवाडी
२ जोशपूर्ण आवाज।
उ०—सूरज री किरण रै समचै दैतराज हौकारा भरतौ टापू माथै आयौ। वास जैडी ई पतळी अर दोय वाम लावौ।
—फुलवाडी
२ जोर की आवाज, जोर का शब्द, हल्ला, शोर।
उ०—हळवळ हौकारा रै सागै फौज आगै वधती गी।—फुलवाडी
३ चुनौती, ललकार।
४ पुकार, आवाज।
रू भे—होकर, होकार, हौंकार, हौकर।

हौकारौ—१ देखो 'होकारौ' (रू भे)
२ देखो 'हुकारौ' (रू भे)

हौड—देखो 'होड' (रू भे)

हौज-स पु [अ] पानी जमा रखने के लिये बनाया हुआ कुंड, पानी का कुंड, कोठा।
उ०—१ दादू हौज हजूरि दिल ही भीतर, गुसल हमारा सार। उजू साजि अलह कै आगै, तहा नमाज गुजार।—दादूवाणी
उ०—२ चादर हौज फुहार नीर चलि, असन नदी प्राय रिर ऊझळि।—सू प्र
उ०—३ नालो अगम कै दैन गाळ देसन ररै। (उरा) भरा प्रेम का हौज, हस केळा करै।—मीरा
उ०—४ गुन कचन रस नै लगै, वणी न लागा मौन। पाप महळ कुंदन पळन, वर्णी फुहारा हौज।—गज-उद्धार
रू भे—हवद, हवद, हौद, हौद।

हौठ—देखो 'होट' (रू भे)

हौड—देखो 'होड' (रू भे)
उ०—१ नमी नृप आलम सकति 'दुरग' अनडा नरग, रिमा दै झाट अमाट रोडै। हौड करना जिकै नरगा हावू कियौ, जिकै हाजर खडा हाथ जोडै।—दुरगादास राठौड री गीत
उ०—२ भारत अरियाण रण भूलेसर, हारा नहीं रण तै हर हौड। आच कियौ उमापति आगै, हर मैं कर दीधी हर कौड।
—मोहवन वारहठ

हौडाहौड—देखो 'होडाहोड' (रू भे)
उ०—केसरिया पहर मौड माथै कस, हसै वहसिया हौडाहौड। कीरा भला देहुरा कारण, कावै अनै भायीजै कौड।
— गुजारसिंघ नै भवानीसिंघ मेरावत री गीत

हौद—देखो 'हौज' (रू भे)
उ०—चटि मूटि घणा रत हौद विचि, उटि पडै पडि ऊछळै। जनमेज जाग जाणै भुजग, अगनि कुड मसि आकुळै।—सू प्र
२ देखो 'हौदौ' (रू भे)
उ०—मगम्मर हौद जगिया मझार। घुर चढै अरव हथिनाळ धार।
—सू प्र

हौदळ-स पु—गले का एक आभूषण विशेष।

हौदौ-स पु [अ हौदज] १ हाथी पर सवारी करने के लिये उसकी पीठ पर रख कर कसा जाने वाला एक आसन विशेष जो आगे से खुला तथा ऊपर-नीचे तीनो ओर से बन्द रहता है। अदर बैठने व पीठ टिकाने की गद्दी बनी होती है, अमारी, अम्मारी।
उ०—१ जडि कपोळ जमदाट, ठीक जिण कर ठहरायै। दतूनळा पग दियै, जगी हौदा चढि जाए।—सू प्र
उ०—२ हरीया हौदै ऊपरै रावत वाई रीठ। मारयौ राजा मोह कु, पडयौ तळफै पीठ।—अनुभववाणी
उ०—३ हौदा कसिया हाथिया, नीधसिया नीसाण। लारै रभ रसिया लिया, ऊससिया अप्रमाण।—सिववक्स पाल्हावत
२ तागे मे आगे और पीछे की ओर बना हुआ वह स्थान जहा

चालक व सवारी के पाव रहते हे ।

३ मकान के अग्रभाग मे बना वह भाग जो दीवारो मे बाहर निकला रहता है, बालकॉनी ।

४ देखो 'हौज' (रू भे)

उ०—भरिया हौदा बहुत क गहर गुलाला सौं, होवै सहद हगाम खूब इण ख्याल मौं ।—सिववक्स पाल्हावत

रू भे —हवद, हवदौ, हवद्द, हवद्दौ, हुदौ, हुद्दौ, होद, होदी ।

हौप, हौफ, हौफर—देखो 'होफ' (रू भे)

उ०—हुय बीतकारा, हौफरा वर अवर घरहर धरधरा ।—सू प्र

हौफरणौ, हौफरवौ—देखो 'होफरणौ, होफरवौ' (रू भे)

उ०—मेला हिया दुमार, लोह वाहै लालरता । वीसरता वावरा अगुट फाटा हौफरता ।—सू प्र

हौफरिहोडौ—देखो 'होफरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हौफरियोडी)

हौम—देखो 'होम' (रू भे)

हौर–स पु—१ भय, त्रास, आतक ।

उ०—हिय मैं न मावै हौर, कावली कुरानिन कै । त्रसित तुरानिन कै थड थहरत है ।—किसोरदान बारहठ

२ इच्छा, अभिलाषा, कामना ।

हौल–स पु [अ] १ भय, त्रास, आतक, धाक ।

उ०—१ सूतौ थाहर नीद सुख, साद्दूळो वळवत । वन काठै मारग वहै, पग पग हौल पडत ।—वा दा

उ०—२ दळ गयद टाळा दियँ, वाघ तणी वघवाह । हौल पडै प्रसरण हियँ, गहन 'पतौ' गजगाह ।—किसोरदान बारहठ

२ गड्ढा, खड्डा, खाडा ।

उ०—१ वैरिया रौ फौज रै म्हारी पती जावता ही दुसमणा री छाती मै हौल खाडा पडण ढूक जावै ।—वी स टी

उ०—२ तोपा री अवाज री तौ धरती ऊपरै दरजा हौल पडै पहाटा रा सिर टूक गोळा री झाट सू तूट तूट पडै ।—वी स टी

३ बेचैनी, घबराहट ।

हौलदिल–स पु—१ दिल धडकने का रोग विशेष ।

२ उन्माद रोग ।

३ देखो 'हौलदिलौ' (रू भे)

हौलदिलौ–वि—१ बुजदिल, डरपोक, कायर ।

२ डरा हुआ, घबराया हुआ, भयातुर ।

रू भे —हौलदिल ।

हौळी—देखो 'होळी' (रू भे)

उ०—हौळी फागा जेम खागा उनगी 'पीथळै' हाडै, हिलौळी फिरगी मेना पँतीस हजार ।—जसौ आढौ

हौळू—देखो 'होळै' (रू भे)

हौळे, हौळै—देखो 'होळै' (रू)भे

हौळै—देखो 'होळै' (रू भे)

उ०—१ असवार लार एक री जोडि करि तुरा जुदा-जुदा कीधा नै कह्यौ, कोई बूझै तौ कहिज्यौ, अनतराय साखला रा चाकर छा, भाई-भतीजा रा छा । इसी वहिनी करि हौळै-हौळै कोई कठी कोई कठी होय जेहाजा वैस नै कोई सोवत रौ मिस करि चारण होयनै वेगा आय भेळा होज्यौ ।—कहवाट सरवहियै री वात

उ०—२ पण मा आघी ऊभी-ई आगली फेरी, जकैनै देख'र सैरा-सै चुप हुयग्या अर हौळै-हौळै एक-बीजै-नै मैन-म् कैयो—मा देखै है भला, मा देखै है भला ।—वरसगाठ

हौळोळणौ, हौलोळवौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडवौ' (रू भे)

उ०—तठै महावेळ खाडी रै कनारै जळ रौ हौलोळियौ मदरै लेख महावीर मोटौ मछ आय पडियौ ।

—कल्याणसिंघ वाटेल नगराजोत री वात

हौवणौ, हौववौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू भे)

उ०—कहीया माया सपजै, मन सु जाण्या ब्रह्म । हरीया हौवै मुख तै, उदग्या सेती भ्रम ।—अनुभववाणी

हौवणहार, हारौ (हारी), हौवणियौ—वि० ।

हौविओडौ, हौवियोडौ, हौव्योडौ—भू० का० कृ० ।

हौवीजणौ, हौवीजवौ—भाव वा० ।

हौवा–स स्त्री—१ वह पहली स्त्री जो पृथ्वी पर आदम (आदिमानव) के साथ उत्पन्न की गई, जो मनुष्य जाति की आदि माता मानी जाती है । (मुसलमान)

स पु—२ एक काल्पनिक भयकर जतु जिसका उल्लेख बच्चो को डराने-धमकाने व नियन्त्रण मे लाने के लिया जाता है ।

रू भे —हौआ ।

हौस—देखो 'होस' (रू भे)

उ०—उण दिन साची वात कह्या राज रा काई हवाल व्हैता अर काई नी व्हैता, पण मोळै बरसा पछै आ वात सुण्या राजाजी रा तौ हौस उडग्या ।—फुलवाडी

हौसनाइक हौसनाक, हौसनायक—देखो 'हुसनाक' (रू भे)

उ०—जोध नोख गुलजार, कलाबूता वणि कम्मळ । तरह काम तारीफ, हौसनायक झाळाहळ ।—सू प्र

हौसलामद—देखो 'हौसमद' (रू भे)

हौसलौ—देखो 'होसलौ' (रू भे)

उ०—पण धनवती सेठ-साहूकारा रा तौ उण परवाना पछै हौसला इज गुम व्हैगा हा ।—फुलवाडी

ह्या–अव्यय—यहा, यहा पर ।

उ०—तुम ह्या ही रहौ राम रसिया, थारी सुरति (मैं) मन वसिया ।—मीरा

ह्याकी–सर्व—१ मेरी । (अमरत)

२ इनकी ।

वि —३ यहा की ।
ह्यौ-स पु —हृदय ।
सर्व —यह ।
ह्रद-स पु [स] १ गहरी या बडी झील ।
२ सरोवर, तालाब, ताल ।
३ गहरी गुफा ।
४ किरण ।
५ दाह, जलन । (डि को)
[स हृदय] ६ हृदय, दिल, मन ।
उ०—सुज भ्रात जेठी सेसरा, दइवाण वन दनेसरा । ह्रद कज भखुण महेसरा, मन महण रूप समाय ।—र ज प्र
ह्रदय, ह्रदै, ह्रदौ—देखो 'हिरदौ (रू भे)
(डि को, ह ना मा)
उ०—सोई खुडद आज दिन साप्रत, स्रीदुरगा सकळाई । सूरत अद्रुल भेस मरदानू, सूरत ह्रदय समाई ।—मे म
ह्रस्व-वि [स] १ छोटा, लघु । (डि को)
२ तुच्छ, थोडा ।
३ बौना, वामन ।
स पु —वह स्वर या मात्रा जिसके उच्चारण मे कम जोर लगे ।
रू भे —हृस्स ।
ह्राद-स पु [स ह्राद] १ शब्द, ध्वनि । (डि को)
२ शोरगुल, हल्ला ।
ह्रादनी, ह्रादिनी-स स्त्री [स ह्रादिनी] १ बिजली, विद्युत ।
२ इन्द्र का वज्र, वज्र । (अ मा, ह ना मा)
३ शल्लकी नामक वृक्ष ।
४ नदी, सरिता ।
रू भे —ह्लादिणी, ह्लादिनी ।
ह्रास-स पु [स] १ क्षय, कमी, घटत ।
२ विनाश, ध्वस ।
उ०—परतु मीणा रै ठाकुरपणौ रहिया तौ रजोगुण रा छक को ह्रास ऊपजियौ ।—व भा
३ क्षीणता ।
४ छोटी सख्या ।
५ घाटा ।
६ शब्द, ध्वनि ।
७ शोर, हल्ला ।
रू भे —हरास ।
ह्रित-स पु [स] राजा हरिश्चन्द्र के पौत्र व रोहिताश्व के पुत्र एक सूर्यवशी राजा ।

उ०— रोहिताश तणौ ह्रित तनुराव । तप सुत सुदेव तपभाग ताय ।—सू प्र
ह्रिदय, ह्रिदै, ह्रिदौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)
उ०—१ हे सरस्वती मै म्हारा ह्रिदय मे मन री जाणी ठकी लायो हू ' ।—री स टी
उ०—२ राम कहता रे ह्रिदा, सहजा होय सयाग । जै न गुण जाणै नही, पूछत्र वेद पुराण ।—ह र
उ०—३ गिरराज अया ह्रिदै अगिमान, सर्व मारे जाणे जिके अभिमान ।—वचनिका
ह्रींकार-स पु [स] बीजाक्षर ।
उ०— जिम अक्षर माहि उकार, मत्रमाहि ह्रींकार, सधन माहि तुवर उमाहि मेघाडबर ''' ।—व स
ह्री-स स्त्री [स] १ लज्जा, लाज, शर्म ।
२ नम्रता, शिष्टता ।
३ मदिरा, शराब । (अ मा)
४ दक्ष प्रजापति की कन्या व धर्म की पत्नी ।
ह्रीयेर-वि —नेत्रवाला । (डि को)
ह्रीहत, ह्रीह्रत-वि —[स ह्रीहत] निर्लज्ज, बेशर्म ।
उ०—हे सविता कविनाम्रत ह्रीहत, सूमनपै अन ज्यू मुरझायो ।
—ऊ का
ह्लादिणी, ह्लादिनी-वि स्त्री (स ह्लादिन्) १ प्रसन्नकारक, हर्षप्रद ।
२ देखो 'ह्रादनी' (रू भे)
ह्वा-अव्यय—वहा ।
ह्वाल—देखो 'हवाल' (रू भे)
उ०—हरीया अपने ह्वाल मे, सनक फिरै सुनीयाल । दोनो मालिक बाहिरो, हेदू तुरक बेहाल ।—अनुभववाणी
ह्वैसणियापान-स पु —समुद्र देश का एक पान विशेष ।
ह्वै-अव्यय—१ स्वीकृतिसूचक अव्यय, हा ।
२ है ।
ह्वैणौ, ह्वैबौ—देखो 'होणौ, होवौ' (रू भे)
उ०—१ नवौ जन्म लै कुड कठोर न्हावे, महासुद्ध ह्वै सुद्ध मा नू नमावै ।—मे म
उ०—२ तवै मच्छ कवि ह्वै तिकै दवावैत विध दोय । एक सुद्ध वध होत है, एक गद्दवध होय ।—रा रू
उ०—३ सुणसी पछै हकीकत सारी । ह्वै है पति वदगी हमारी ।
—रा रू
ह्वैयौडौ—देखो 'होयोडौ' (रू भे)
(स्त्री ह्वैयोडी)

उ०—१ तद सागैजी राव जैतसी जी सू मदत री वीनती करी। तरा राव जैतसी जी कही, 'बाबा, म्हारै घर मे जमीयत है सो थारीज है, आवेर जिसी जागा है सू सभावौ।—द दा

उ०—२ तरै कूभैजी कह्यौ—नानाजी! वैसण नै तो ठौड नही नै राजि म्हारी वाह सभावौ चीतोड वैसाणौ तो वैसू, नही तो धरती झाल्यौ आकास नाख्यौ।—राव रिणमल री वात

उ०—३ अर सेज विछावण सभावण री खिदमत मोनू दीजै इतरी इनायत करौ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—४ आह मनमाहि नरिंदो पारधि सभावइ। सइ दलि रमलि करतउ गगातडि आवइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—५ अनु कठि कुसुमह माल किरि, सु मयणि आपणि आवीइ। कोइ इदु चदु नरिंदु सइवरि, पहुतु इम सभावियइ।

—सालिभद्र सूरि

सभावणहार, हारौ (हारी), सभावणियौ—वि०।

सभाविओडौ, सभावियोड़ौ, सभाव्योडौ—भू० का० कृ०।

सभावीजणौ, सभावीजवौ—कर्म वा०।

सभावन–स स्त्री. [स सभावन] १ कल्पना, अनुमान।

२ आदर, सम्मान।

३ मुमकिन।

सभावना–स स्त्री. [स. सभावना] १ विचार, मनन।

२ कल्पना।

३ आशा।

४ सम्मान, प्रतिष्ठा।

५ मुमकिन।

६ सन्देह।

७ साहित्य मे प्रयुक्त वह अलकार जिसमें इस बात का उल्लेख होता हे कि अमुक बात हो जाय तो अमुक बात हो सकती है।

सभावित–वि [स.] १ कल्पित।

२ अनुमानित।

३ पूजित।

४ सभव, मुमकिन।

सभावियोडौ—देखो 'सभायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सभावियोडी)

संभास, सभासण–स. पु [स. सम्भाषण] १ वातचीत, सभापण।

२ कथन, वार्तालाप।

उ०—सुणि भूडण कही—मोनू आज वारह वरस तपस्या करता हुआ, आज तक मरद सू सभासण नही कियौ।

—डाढाळा सूर री बात

रू भे—सभाखण।

सभासुर–स. पु—एक दैत्य का नाम जो दुर्गा द्वारा मारा गया था।

उ०—वध्या चडी चडासुर महिख मुडासुर वळी, वनाई निर वीजा अचि रकत वीजासुर-अली। क्रुधाग्नी निस्सभासुर भमम सभासुर कती, थई इद्र अन्ना जयति जगदवा भगवती।—मे म.

संभाहणौ, सभाहवौ—देखो 'सभाणौ, सभावौ' (रू भे)

उ०—१ सूदालम जपै तू खुरम, सुकरि खग्ग संभाहियौ। भर भार भळावै भोम छळि, पिता पूत पडिगाहियौ।—गु रू ब.

उ०—२ कह्यौ—'मा! म्हैं हथियार यु ही बाधा? डड जाट-गूजरा दाई भरा! ताहरा मा वोली—'वेटा! हथियार नाख ना, हथियार सभाहि।—नैणसी

सभियोडौ–भू का. कृ—१ सुसज्जित हुवा हुआ. २ छाया हुआ, उमडा हुआ ३ कटिवद्ध हुवा हुआ, तैयार हुवा हुआ, उद्यत हुवा हुआ ६ देखो 'समळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. सभियोडी)

संभु–स पु [स. शभु] १ शिव, महादेव। (ना डि. को, डि. को)

उ०—गळ मुंडमाळ मसाण ग्रह, सग पिसाच समाज। पावन तूझ प्रभावसू, सभु अपावन साज।—वा दा.

२ एक रुद्र का नाम।

३ भैरव। (डि. को.)

४ एक दैत्य। (रामायण)

५ ब्रह्मा, विधाता। (डि को)

६ सिद्ध एव पुज्य पुरुष।

७ ऋषि, मुनि।

८ अवरीख महाराजा के पुत्र का नाम।

९ कश्यप एव सुरभि का एक पुत्र।

१० तप नामक अग्नि के पुत्र का नाम।

११ कृष्ण एव रुखमणी के पुत्रो मे से एक।

१२ विष्वकसेन का मित्र, ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर का इन्द्र।

१३ शुक एव पीवरी के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

१४ श्रीराम को श्राद्धविधि, शिव पूजाविधि आदि वताने वाला ऋषि।

१५ सुख देवो मे से एक।

१६ सत्यदेवो मे से एक।

१७ राजाज का पिता एव सह्लाद राक्षस का पुत्र एक राक्षस।

१८ विरोचन दैत्य का पुत्र।

१९ सगण तगण यगण भगण और सात गुरु वर्ण के क्रम से प्रत्येक चरण मे १९ वर्ण वाले एक वृत्त का नाम।

वि—१ आनन्ददायी, हर्पकारी।

२ श्वेत। * (डि को)

३ पीला। * (डि. को)

रू. भे—सभ, संभू, सिंभु, सिंभु, सिंभौ।

सभुगिरि–स पु यौ. [स शभु+गिरि] कैलाश पर्वत।

सभुतेज–स पु [स. शभु+तेज] पारद, पारा।

उ०—२ ठाकरसा घोडा सू हेटै उतर बेटा नै संभाळियौ तौ वा माटी। ठाकरसा नै रीस अणू तौ आई, दुख ई अणू तौ व्हियौ। अेकाअेक कवर इण भात घोखौ देय जावैला, अेडी बात तौ सपना मैं ई नी जाणी ही।—फुलवाडी

७ प्रबंध करना, व्यवस्था करना।

८ पालन-पोषण करना।

९ ढूढना, तलाश करना।

उ०—बेऊ फोजा जुद्ध सौ धापिनै उवै उवै कानी ऊभी छै। वीरमदे घायल आपरा सभाळै छै।—नैणसी

१० गिरते हुए को बीच मे रोकना, थामना।

११ आश्रय देना।

उ०—जामण रा रे जाया, अबर तो पटकी नै धरती संभाळी।
—जीणमाता रौ गीत

१२ उत्तरदायित्व लेना या वहन करना।

१३ संचालन करना, चलाना।

उ०—सीत मैं केडी-केडी काली बाता करै। आ नै तौ की चेतोई कोनी. बेटा थारा भाय जी अवै ससार मे नी रैवैला। सगळौ धधौ थनै सभाळणौ है।—फुलवाडी

उ०—२ पछै टावर मोट्यार व्हिया घर रौ धधौ सभाळै जद वौ बामे खोडा काढै, बानै बात बात माथै टोकै।—फुलवाडी

१४ वृद्धि प्राप्त करना।

उ०—भला खात अर पाणी बिनाई खेत मे कद साख आपो सभाळै।—फुलवाडी

१५ यह देखना कि कोई चीज जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी है या नही।

उ०—अपनी रिद्ध सभाळ सब, करै दरक्का पीठ। आवध वधै उठिया, आकारीठ गरीठ।—ग. रू

१६ अधिकार करना, कब्जा करना।

उ०—सुलै हुई मुख भनो, भागी दळा दुबाळि। सीमा नोमा गढ मुलक, सगळै लिया सभाळि।—गु रू ब

१७ सामाजिक व्यवहार आदि मे परपरा सबध आदि का निर्वाह या पालन करना। बिगडने न देना।

उ०—सेवट वा तौ सुभट कै दियौ—थारा घर विचै म्हनै म्हारो गै'णौ घणौ वाल्हौ लागै। थे सगळा साख ने सभाळौ अर म्हानै तौ न्यारा कर दो।—फुलवाडी

१८ रोकना, थामना।

१९ ठीक ठाक करना, ठीक करना।

उ०—चौथे प्रहरै रैण के, कूकड मेल्ही राळि। धण सभाळै कचुवौ, प्री मूछा रा बाळि।

२० देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू. भे)

उ०—१ दादू रावत राजा रामका, कदे न विसारी नाव। आतम राम संभाळियै, तोसु वस काया गाव।—दादू बाणी

उ०—२ ए वाडी, ए वावडी, ए सर केरी पाळ। वै साजण वे दीहडा, रही सभाळ सभाळ।—ढो. मा.

सभाळणहार, हारौ (हारी), सभाळणियौ—वि०।

सभाळिओडौ, संभाळियोडौ, सभाळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सभाळीजणौ सभाळीजबौ—कर्म वा०।

संभारणौ, सभारबौ समारणौ, संमारबौ, सम्ह'ळणौ, सम्हाळबौ
—रू भे।

संभळाय-स. स्त्री.—नदी। (ह. ना मा)

सभाळियोडौ-भू. का कृ —१ हिफाजत या देखरेख किया हुआ. २ सुपुर्दगी लिया हुआ ३ रखा हुआ, लिया हुआ ४ देखा हुआ, सुधि लिया हुआ ५ जाच-पडताल किया हुआ, परखा हुआ ६ प्रबध किया हुआ, व्यवस्था किया हुआ. ७ पालन-पोषण किया हुआ ८ ढूढा हुआ, तलाश किया हुआ. ९ गिरते हुए को बीच मे रोका हुआ, थामा हुआ १० उत्तरदायित्व लिया हुआ, वहन किया हुआ ११ आश्रय दिया हुआ १२ अधिकार या कब्जा किया हुआ १३ वयता को प्राप्त हुवा हुआ, वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ. १४ यह देखा हुआ कि कोई वस्तु जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी है या नही १५ रोका हुआ, थामा हुआ १६ सामाजिक व्यवहार आदि मे परपरा सबध आदि का निर्वाह या पालन किया हुआ १७ ठीक ठाक किया हुआ, ठीक किया हुआ १८ सचालन किया हुआ, चलाया हुआ १९ बनाये रखा हुआ, विद्यमान रखा हुआ।

२० देखो 'समरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. संभाळियोडी)

सभाळौ-स पु [स सभालन, सभाल] १ सभालने की क्रिया या भाव।

२ चैतन्यता।

३ तलाशी, खोज।

४ जाच-पडताल।

क्रि प्र —देणौ, लेणौ।

सभाव-स पु.—चिन्ह, निशान।

उ०—प्रभात हुवौ सु गूंदळ राव रै पगा री जोडौ उठै रह्यौ सु प्रथीराज दीठौ नै बीजा पण माळिया रा सभाव अटकळिया। तरै सुहवदे नू प्रथीराज कह्यौ औ जूतौ किण रौ छै।—नैणसी

संभावण, सभावणौ-वि —१ सभालने वाला, धारण करने वाला।

उ०—मारू रायामालहर सारू खळा अगड्डु। मोटा चीन संभावण, जे नवकोटा चड्डु।—रा रू

२ सहायता करने वाला, सहायक।

३ तैयार करने वाला, उद्यत करने वाला।

संभावणौ, सभावबौ—देखो 'सभाणौ, संभाबौ' (रू भे.)

जनकपुर सुर असुर मानव, पडे संभ्रत पेख ।—र. रू.

सभ्रम-सं. पु [स. सम+भ्रम] १ पुत्र, लडका ।

उ०—१ खगा भट वाहत रौद्रव सूर, गर्भै जुध 'भारथ' 'संभ्रम' 'मूर । हुई दळ मूगळ चाढत हीक, महाबळ राड करै मछरीक ।

—सू प्र.

उ०—२ 'वाघ' 'सुत' 'गोपाळ' खेत 'चापा' हर ओपम । लखमण सभ्रम 'प्राग' 'माल' 'सुरताण' समोभ्रम ।—गु. रू व

२ पौत्र, पोता ।

३ युद्ध, सग्राम ।

उ०—मुतन 'मुजाण' 'अनौ' प्रिय सभ्रम, 'अखौ' विन्है आया जम ओपम । 'अनै' तणौ करि कोप अकारौ, 'गजन' आवियौ चाळागारौ ।—रा रू.

४ आतुरता, घबराहट ।

५ गलती, भूल । ६ मान, आदर, सम्मान ।

७ चारो ओर घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया ।

८ भ्रम, भ्राति ।

उ०—सोभा अति सागर तणी, जो नही वरणी जात । देखि भरयौ मजार दधि, पय भोळै पी जाय । पय भोळै पी जाय, भलौ इण भात सू । हुसा सभ्रम होय, क्षीरसिंधु ग्यान सू । वगियौ ताळ विहद, 'वखत' अप वार रौ । उण पर अधिक आराम, 'वखत' अप वार रौ ।—सिववख्स पाल्हावत

८ एक शिवगण का नाम ।

वि.—१ भ्रमित ।

उ०—उपवन मुनि मेरहे सिख इतरै, जवन सक्रोध आविया जितरै । सभ्रम दिल आस्रमा सिकारा, पीडत मुनि कीधा अणपारा ।

—सू प्र.

२ प्रतिष्ठित, सम्मानित ।

उ०—देसपति सभ्रम धणी दौलति प्रकति मति प्रघल नखत्रैत जोध निरेहण वड खत्री सारिख वेहण एकल्ल मल्ल दुझल्ल आकल कहि कनहि अक्कल ।—ल पि.

३ तुल्य, समान, बराबर ।

रू. भे —सभम, समोभ्रम, सभ्रमी, सभ्रम, समभ्रम, समोभरम, समोभ्रम समोभ्रमी ।

सभ्रमणौ, सभ्रमबौ-क्रि स.—१ आश्चर्य करना, अचम्भा करना ।

२ गलती करना, भूल करना ।

३ भ्रम करना, शका करना ।

४ युद्ध करना, सग्राम करना ।

क्रि. अ.—५ आश्चर्यान्वित होना, अचम्भित होना ।

उ०—कह कारखाना गिणत कुण कुण, सभ्रमे तिहुलोक सुण सुण । विमद जग उजवाळ विरदा, सत्रा साभ्रण सूर ।—र. रू

६ गलती होना, भूल होना ।

७ भ्रमित होना, शकित होना ।

उ०—लोहा लोट बोट जल लागै, सूर आवरत्त सभ्रमिया । काळै थाट तणा कालमायण, काळै वार आहार किया ।—नाथौ साटू

८ युद्ध होना, सग्राम होना ।

९ आतुर होना, घबराना ।

सभ्रमणहार, हारौ (हारी), सभ्रमणियौ – वि० ।

सभ्रमिओड़ौ, सभ्रमियोडौ संभ्रम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सभ्रमीजणौ, सभ्रमीजबौ —कर्म वा०; भाव वा० ।

सभ्रमियोडौ-भू का. कृ.—१ आश्चर्य किया हुआ, अचभा किया हुआ २ गलती किया हुआ, भूल किया हुआ. ३ भ्रम किया हुआ, शका किया हुआ. ४ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ. ५ अचभित हुवा हुआ, आश्चर्यान्वित हुवा हुआ ६ गलती हुवा हुआ भूल हुवा हुआ. ७ भ्रमित हुवा हुआ, शकित हुवा हुआ. ८ युद्ध हुवा हुआ, सग्राम हुवा हुआ ९ आतुर हुवा हुआ, घबराया हुआ ।

(स्त्री. सभ्रमियोडी)

सभ्रमी—देखो 'सभ्रम' (रू भे.)

उ०—१ सेतराम संभ्रमी इळा ऊठियै कनूजा । जगत जात रिणछोड, कीध वेदोगत पूजा ।—गु. रू. ब

उ०—२ वाघ नेत रिण खेत मंद अल्ली मेंहमूदह । हैफखान सभ्रमी पडै पोरस्स मयदह ।—गु. रू बं

सभ्राणी-स स्त्री —१ घोडे की एक जाति विशेष ।

सं. पु.—२ उक्त जाति का घोडा ।

सभ्रात-वि. [स सम्भ्रान्त] चारो ओर घुमाया हुआ ।

२ क्षुब्ध ।

३ सम्मानित, प्रतिष्ठित ।

सभ्रांति-स. स्त्री.—१ सभ्रान्त होने की अवस्था या भाव ।

२ आतुरता, घबराहट ।

संमंद—देखो 'समुद्र' (रू. भे)

समध – देखो 'सवध' (रू. भे)

सम—देखो 'सम' (रू भे.)

उ०—रचना ईस्वर री ईस्वरता रोचै, सम दम स्रद्धा विण सभव नही सोचै ।—ऊ. का.

समत, समति, समत्त—१ देखो 'सवत' (रू भे)

उ०—१ सतरै समत पोस पैंत्रीसैं, दसमी वार ब्रहस्पत दीसैं । सुरघर छत्र जिसौ महाराजा, सुरपुर गयौ लिया ब्रद साजा ।—रा रू

उ०—२ इति श्री राजरूपक मैं रूपसी कुंभकरणोत काम आयौ । समत १७ सैं ३६ छतीस चतुरथ प्रकास ।—रा रू

२ देखो 'समिति' (रू. भे.) (अ. मा)

३ देखो 'सम्मत' (रू भे)

संमद-स. स्त्री [सम्मदः] १ खुशी, प्रसन्नता । (डिं. को.)

सभुनाथ—देखो 'सभूनाथ' (रू. भे.)
सभुबीज-स. पु. [स. शभुबीज] पारद, पारा।
संभुभूसरग-स. पु. [सं. शभुभूषण] १ शिव का आभूषण।
२ सर्प।
३ चद्रमा।
सभुमनु, सभुमुनी, सभूमन, सभूमूनी—देखो 'स्वयंभुव' (रू भे)
सभुलोक-स पु. [स. शंभुलोक] कैलाश पर्वत।
संभुवा-स स्त्री [स शंभुवा] गधारराज सुबल की कन्या, धृतराष्ट्र की पत्नी व गाधारी की वहन।
सभुसुत-सं. पु [स. शभुसुत] १ स्कन्द देव।
२ गजानन, गणेश।
सभू-स पु.—देखो 'संभु' (रू भे) (डिं. को, डिं ना मा.)
उ०—चूका वयण मदार चाढता, सुर नर साहो मान असत्त। भोळे भाव आवियो भूरो, भोळा सभू तणो भत्त।
—चतुरो मोतीसर
सभूत-वि. (स्त्री सभूता) १ एक साथ उत्पन्न।
२ उत्पन्न।
उ०—स्वक्रोधा सुसुक्षा धगधगित दक्षाधिपप-सुता, सिलोचै संभूता धजर अवधूता अदभुता। भुलानी भीलानी प्रगट न पिछानी पसुपती, अई इदू अबा जयति जगदबा भगवती।—मे म.
३ पुराणो के अनुसार राजा पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदृस्यु के पुत्र का नाम।
उ०—पुरुकुसीमान सुत वस रूप। पुरकुत्समु तणै सभूत भूप।
—सू प्र
सभूति, सभूती-स स्त्री. [स सम्भूति] १ अगवशीय विजय की माता व जयद्रथ की पत्नी।
२ पौर्णमास की माता एवं ब्रह्म पुत्र मरीचि की पत्नी का नाम।
३ वैराज की पत्नी व चाक्षुष मन्वन्तर के अजित, नामक अवतार की माता।
स पु —वसुदा का पुत्र।
सभूनाथ-स पु. [स शभुनाथ] शिव, महादेव।
उ०—आवा लोमच दधीच दावा उभावा विरच अेम, सभूनाथ सुभावा सहावा जेम सेस। जग जीतबा धावा दनेस तेज तावा जेम, बेदा सामवेद गावा रावा 'वखतेस'।—राव बगतसिंघ रो गीत
रू भे.—सभनाथ, सभुनाथ।
सभूभेख, सभूभेस-स पु [स शभुभेष] दशनामी सन्यासियो द्वारा मृतक के पीछे किया जाने वाला वृहद भोज जिसमे दशनामियो के अतिरिक्त नाथ, जोगी साधु, फकीर व ब्राह्मण भी आते है।
(मा म)
सभूम-स. पु.—एक चक्रवर्ती राजा।
उ०—जोयउ चक्रवर्ती आठमउ, सभूम तउ जीव। सातमियर नरकइ गयउ, करतउ मुख रीव।—स. कु.
सभूमन, संभूमनु—देखो 'स्वयभुव' (रू. भे.)
उ०—सभूमन त्रप दसरथ्थ समथ्थी, कोसल्या सतरूपा कथ्थी।
—रामरासो
संभेदतीरथ-स पु. [स. सभेदतीर्थ] तिलोदकी व सरयू नदी के सगम पर स्थित एक तीर्थ।
सभेदन-स पु.—जुटाने, भिडाने, मिलाने की क्रिया।
सभेरी-सं पु.—एक राजा का नाम।
उ०—सिवभूत राजा ४ रो सभेरी राजा जिण साभर बसायो।
—रा व वि.
संभेळो—देखो 'साभेळो' (रू. भे.)
उ०—उजणीपुर आविया, सभेळो सिणगार बे। बाह पासावै सहु मिल्या, सगळी धरी मनवार वै।—रिसाळू री बात
सभोग-स. पु [स. सम्भोग] १ किसी वस्तु का भली भाति किया जाने वाला उपयोग।
२ रति-क्रीडा, मैथुन।
उ०—वात न कहुं प्रगट करै, सभोगे अनुकूल। जन्म न ऐडा पुरस रो, प्रिया न विसरै मूळ।—वैताल पच्चीसी
३ साहित्य मे श्रृगार-रस का एक भेद, सयोग श्रृंगार।
४ वह पुरुष जो गुदा मैथुन का आदि हो गया हो।
५ व्यवहार।
उ०—पन्ना ने दीक्षा देवा री आग्या नही। अनें जो दीक्षा दीधी तो आपा रे आहार पाणी री संभोग भेळो नही।—भि. द्र.
वि वि —जैन साधुओ के आपस मे वारह प्रकार के व्यवहार (वर्ताव) होते है। उनमे मे एक साथ वैठकर भोजन पान करने का भी व्यवहार होता है। सो यदि 'पन्ना' के बिना आज्ञा दिक्षा दे दी गई हो तो एक साथ वैठकर भोजन करने का व्यवहार शामिल न होगा।
६ हाथी के कुम्भस्थल या मस्तिक का एक भाग।
सभोगी-वि. [स. सभोगिन्] १ सभोग करने वाला।
२ उपभोग करने वाला।
सभोग्य-वि —१ जो उपयोग या उपभोग के लिए हो।
२ जो सभोग किये जाने के लिए योग्य हो।
सभोज-स पु. [स] १ भोजन, खाना।
२ खाद्य सामग्री।
सभोजक-वि [स.] भोजन करने वाला एव खाने वाला।
संभोजन-स पु [स] १ भोज, दावत।
२ भोजन की सामग्री।
सभोज्य-वि [स.] खाने योग्य, खाने की।
संभ्रत-वि. [स] आश्चर्यान्वित, अचभित।
उ०—व्रत सदन पीत पताक फरकत वरण चहु सुखवेख। मघ

२ देखो 'सभाळ' (रू भे)

समारजणी, समारजनी-स. स्त्री. [स समार्जनी] झाडू, बुहारी । (डिं को)

रू भे.—समारजणी, समारजनी।

समारणौ, संमारवौ—१ देखो 'सवारणौ, सवारवौ' (रू भे)

उ०—तालि चरती कुझड़ी, सर सधियउ गमार। कोइक ग्रावर मनि बस्यउ, ऊडी पख समार।—ढो मा

२ देखो 'सभाळणौ, संभाळवौ' (रू भे.)

उ०—ऊडै जळ मे लै चल्यौ, गज कू विकटौ ग्राह। तब ततकार समारियौ, राधा नागर नाह।—गज-उद्धार

समारणहार, हारौ (हारी), समारणियौ —वि०।

समारिग्रोड़ौ, समारियोड़ौ, समारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

समारीजणौ, समारीजवौ—कर्म वा०।

संमारियोडो—१ देखो 'सवारियोडो' (रू भे)

२ देखो 'सभाळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री समारियोडी)

समाळ—देखो 'संभाळ' (रू भे.)

समावणौ समावबौ—देखो 'सभावणौ, सभाववौ' (रू भे)

२ देखो 'समाणौ, समावौ'।

समावणहार, हारौ (हारी), समावणियौ —वि०।

समाविग्रोडौ, समावियोडौ, संमाव्योडौ—भू० का० कृ०।

समावीजणौ, समावीजवौ—भाव वा०।

समावियोडो—१ देखो 'सभावियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'समावियोडो' (रू भे)

(स्त्री समावियोडी)

समित-स पु. [स] मरुतो के छठे गण का मरुत।

समिति-स. पु [स.] उत्तम मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक ऋषि।

समिरणौ, समिरवौ-क्रि अ —१ परस्पर टकराना, भिडना।

उ०—दिन राति न जाणइ दूसरी, नीद भूख त्रिस वीसरी। खड-दाळि खीची खगे, सेन विन्है इम समिरी —ग्र. वचनिका

२ देखो 'समरणौ, समरवौ' (रू भे)

समिरणहार, हारौ (हारी), समिरणियौ —वि०।

समिरिग्रोडौ, समिरियोडौ, समिरयोडौ—भू० का० कृ०।

समिरीजणौ, समिरीजवौ—कर्म वा , भाव वा०।

समिरियोडौ-भू का. कृ —१ परस्पर टकराया हुआ।

२ देखो 'समरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. समिरियोडी)

संमिळणौ, समिळवौ-कि अ —१ शामिल होना, सम्मिलित होना, मिलना।

उ०—१ दळा मिळण मुख ग्राखै दूग्रौ, होळी खेल नगारौ हूग्रौ। सुण डेरा वारै भड सारा, ग्रति बळ दळ समिळै ग्रपारा। —रा रू.

उ०—२ रुधिर धर रळतळी, वहु नाचइ कमध महावळी ग्राळू-झइ ग्रात्रावळी। ग्रालम ग्रचळेसरि ग्रड्या सेन विन्है इस समिळी। —ग्र. वचनिका

२ मिलाप होना।

३ सम्मिश्रण होना।

समिळणहार, हारौ (हारी), समिळणियौ—वि०।

समिळिग्रोडौ, समिळयोडौ, समिळ्योडौ—भू० का० कृ०।

समिळीजणौ, संमिळीजवौ—भाव वा०।

समिळियोडौ-भू का कृ—१ शामिल हुवा हुग्रा, सम्मिलित हुवा हुग्रा, मिला हुग्रा. २ मिला हुवा हुग्रा. ३ सम्मिश्रण हुवा हुग्रा। (स्त्री. समिळियोडी)

संमी—देखो 'समी' (रू भे)

समीपत्य—देखो 'सामीपत्य' (रू भे)

उ०—हरि कौ भै उर धारि कै, भगति भंजन कर सोय। सालोक साजज सारूप, सोई समीपत्य होय।—परमानद वणियाळ

समुखी-स पु [स सम्मुखिन्] शीशा, दर्पण। (डिं को.)

समुखीन-वि [स सम्मुखीन] १ सामने का, सम्मुख का। (डिं. को)

२ ग्रामने-सामने।

क्रि वि —सामने, सम्मुख।

समुद्र—देखो 'समुद्र' (रू भे)

समुद्राव-स पु [स.] १ युद्ध मे भागने की क्रिया। (डिं. को)

समुह, संमुहउ—देखो 'समूह' (रू भे)

उ०—जउ पहिलाउ वेटी जाई, माई वाप काल मुहा थाई, जसु घरि वेटी ग्रावी, पूठि लागि चिता ग्रावी, वेटी घर समुहउ पाउ चालइ दारिद्र वाट देखावइ।—व स

समुहणौ, समुहवौ—देखो 'सभणौ, सभवो (रू. भे.)

समुहा—देखो 'समुहा' (रू भे)

उ०—ज्यू ए डूगर समुहा, त्यू जड सज्जण हुति। चपावडी भमर ज्यउ, नयण लगाइ रहति।—ढो मा

समूह—देखो 'समूह' (रू. भे)

उ०—समूह सेन ग्रसख सफा, ग्रिरग मुज्झै मभळी। मल्हपति फौजा मुहरि मैगळ, सूड डोहै सिघळी।—गु रू व

समेहळौ—देखो 'सामेळौ' (रू भे)

उ०—सुरति करि ग्रारती निरत नेता लीया, साम संमेहळै मिळै सारा। व्रह्म वर वीदणी खैरवटी खरी, इद ज्यू ग्रोवडै इमी धारा।—ग्रनुभववाणी

संमोभ्रम—देखो 'सभ्रम' (रू भे)

संमोय-स. पु —सयम।

उ०—काया निरमळ जल्य माजणौ, वाचा त्रमळ सति वोलणौ। मन निरमळौ ग्यान मू होय, पाचू इद्री रहै समोय।—वीलहौजी

उ०—'दूदा' सुणि मानै अदेल, समद तो मो साखि। मारै नह मिळिया मुगळ, राज धरा धन राखि।—वं. भा.

२ देखो 'समुद्र' (रू भे)

ऊ०—परणावौ जद फेर मनै नोतहार बोलाया। ज्युं क्यु ई बाई नु वेस-वागौ मेल्हा। अर माणक दोय, मोती च्यार दीया। सो देय समद घरा गयौ।—कुवरसी साखला री वारता

समधणौ, समधवौ—देखो 'समभणौ, समभवौ' (रू भे)

उ०—सतरि वरस लग समधौ नाही, अस्सिया विसन न ध्यायो। चलण थक्या अब जीभ चलावै, नीवे कही दाय न आयो।

—परमानद वणियाळ

संमधणहार, हारौ (हारी), समधणियौ—वि०।

समधिग्रोडौ, समधियोडौ, संमध्योडौ—भू० का० कृ०।

समधीजणौ, समधीजवौ—भाव वा०।

संमधि-वि—१ सम्बन्धित।

उ०—हरिया सवद समधि का, कह्या सुण्या क्या होय। जब नैणा नही देखियौ, अतर मिटै न दोय।—अनुभववाणी

२ देखो 'समधी' (रू. भे)

समधियोडौ—देखो 'समभियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री समधियोडी)

समपणौ, समपवौ—देखो 'समपणौ, समपवौ' (रू भे.)

उ०—एक सहै दुख भूख, एक उपगार परपै। एक चढै सुखपाल, एक सिर भार समपै।—सुरज्नदास पूनियौ

समपणहार, हारौ (हारी), समपणियौ—वि०।

समपिग्रोडौ, समपियोडौ, समप्योडौ—भू० का० कृ०।

समपीजणौ, समपीजवौ—कर्म वा०।

समपियोडौ—देखो 'समपियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री समपियोडी)

समपूरण—देखो 'सपूरण' (रू भे.)

उ०—जैपोळ रै कोट रो कमठो अदुरो थो सो संमपूरण करायो। पोळ रै पठै ऊपर साळा ग्राटम्या रै रैवण नै कराई।

—मारवाड री ख्यात

समर—देखो 'समर' (रू. भे)

उ०—हेवै दळा अमगळ हूवौ, मुवौ सेख मिरजो पण मूवौ। ग्रासू वद वारसै दिन ग्रासुर, मौत अचित गया कर संमर।—रा रू.

समरणौ, समरवौ—देखो 'समरणौ, समरवौ' (रू भे.)

समरणहार, हारौ (हारी), समरणियौ—वि०।

समरिग्रोडौ, समरियोडौ, समरघोड़ौ—भू० का० कृ०।

संमरीजणौ, समरीजवौ—कर्म वा०।

संमरदण, समरदन—स. पु [सं. सम्मर्दन] वसुदेव व देवकी के एक पुत्र का नाम।

समरियोडौ—देखो 'समरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री समरियोडी)

संमळ—देखो 'समळ (रू. भे)

उ०—ग्रातसू कै धमकै वागूकी चोट, संमळ चीतळ पाठै केतै लोट-पोट। ऐमी ग्राखेट करि नौवत बाजतू ग्राए। दुसमणां कूं दाह साजणां के मन भाए।—सू. प्र

३ देखो 'सवळो' (मह, रू. भे)

उ०—१ ग्रीध हळवळ संमळ गळगळ पळ गळ गरा। त्रिसळ सळ वळोवळ कळळ हूकळ तुरा।—जैतसिंघ वदनोर रा धणी री वात

उ०—२ हुग्रा ग्रीध समभाण वाढ करिका कूवूग्रळ, नय हय गय पळ खीण। मत्त पळ जवू समळ।—गु रू. व.

४ देखो 'सिवल' (रू भे)

५ देखो 'सावळो' (रू. भे)

संमळी-स स्त्री.—देखो 'सवळी' (रू भे.)

उ०—ईयै ऊपरि समळी छाया कीधी। नाग ग्राय माथै छत्र करीयौ।—देवजी वगडावत री वात

समळो—१ देखो सवळी (रू. भे)

२ देखो 'सावळो' (रू भे)

समहणौ, समहवौ—देखो 'सभणौ सभवौ' (रू. भे)

उ०—पाल्हणसी पुहविहि रह्यउ ग्रनि समहया सरगिग। तिणि वेळा होया भरी, राइ राइ रोवण लगिग।—अ वचनिका

समहणहार, हारौ (हारी), समहणियौ—वि०।

संमहिग्रोडौ, समहियोडौ, समह्योडौ—भू० का० कृ०।

समहीजणौ, समहीजवौ—भाव वा०।

समहियोड़ौ—देखो 'सभियोडौ' (रू भे)

(स्त्री समहियोडी)

संमाद—देखो 'समाधि' (रू भे)

उ०—१ ग्रायसजी देवनाथ जी रै ऊपर समाद कराई।

—मारवाड री ख्यात

संमाणौ, समावौ—देखो समाणौ, समावौ' (रू भे)

समाणहार, हारौ (हारी), समाणियौ—वि०।

संमायोडौ—भू० का० कृ०।

समाईजणौ, समाईजवौ—भाव।

समायोड़ौ—देखो 'समायोडौ' (रू भे)

(स्त्री समायोडी)

समापित, समापिता, संमापीत, समापीता—देखो 'समापत' (रू. भे.)

उ०—स्रीविसनजी रा ग्रथ ग्यान सासत्र पुसगत नाम पोथो सपूरण समापीता लीखतु परयागद सत।—अग्यात

संमार—देखो 'सवार'(रू. भे.)

ऊ०—ताहरा भुंजाई मोहिल सारै कीवी छै। ताहरा मोहिल पाच सेर घिरत भुंजाई लागै छै। रावजी सूं कह्यो—म्हूं थांहरै वडी समार कीवी छै।—नैणसी

२ अनुचित या बुरी बातों व कार्यों से मन को रोकने की क्रिया।
३ आत्म निग्रह।
४ शृंगार मे एक प्रकार का आसन।
५ दुर्योधन पक्षीय एक राजा।

संयमनी, सयिमनी—स. स्त्री [स. सयमिनी] यमपुरी।
उ०—क्षिणि क्षिणि दक्षिण पवन ! तू, अगि म करइ आक्रूत।
सयिमनी थई सचरिया, जाणे करि जिम-दूत।—मा का प्र.

सयमी—वि [स संयमिन्] सयम से रहने वाला, मन को वश मे रखने वाला।
उ०—भय ध्वन सयमी वक्र प्रसमा भारी। मुख आगे छिपते फिरते मासाहारी।—ऊ का.
स पु—१ तपस्वी।
२ ऋषि।
३ साधु।
वि—जिसने इन्द्रियो को वश मे कर लिया हो, जितेंद्रिय।
रू. भे.—सजमि, सजमी।

संयाति, संयाती—स. पु. [स. सयाति] १ आयु के वंशज नहुष के छ पुत्रों मे से एक जो ययाति का भाई था।
२ पुरुवंशीय अहंयाति का पिता एव प्राचिष्कन का पुत्र जो दृषद्वान की पुत्री वरागी का पति था।

संयार, संयारडी—सं स्त्री—वढई के काम आने वाला एक औजार विशेष जो लकडी के छेद करने के काम आता है।

सयु—स पु. [स शयु] १ वृहस्पति-पुत्र एक अग्नि जो धर्मदेव की पुत्री सत्या का पति था।
२ यज्ञ की विशिष्ट पद्धति के ज्ञाता एक आचार्य।

सयुक्त—स पु. [स] १ सहित।
उ०—१ लखण बत्रीस संयुक्त बाललीला माहै राजकुआरि दूलडिया रमै छइ।—वेलि. टी
उ०—१ वाणारसी नगरी भणी नाम चार प्रिया सयुक्त प्रकाम।
—वि. कु
२ वरावर।
३ सम्मिलित, शामिल।
४ जुडा हुआ, सलग्न।
५ जिसका विघटन न हुआ हो।
६ साथ मिल कर काम करने वाले।
रू भे.—सजत, सजुक्त, सजुगत, सजुगता, सजुगति, सजुगुत, सजुगुता, संजुत, सजुति, सजुत्त, संजुत्ता, संजुत्तु, सजूत, सयुगत, सयुत।

सयुक्ता—स. स्त्री. [सं.] प्रत्येक चरण मे स, ज, ज, ग वाला एक प्रकार का छन्द विशेष।
रू. भे.—सजुता।

संयुग—सं पु. [स] १ मिलाप, संयोग।
२ भिडन्त, टक्कर।
३ युद्ध, लडाई।

संयुगत, सयुत—देखो 'सयुक्त' (रू भे.)
उ०—मणि माणिक हीर पन्ने सोव्रन सयुगत मीने के काम पाघ पर जवहरी किलगी धरी।—सू प्र.

सयुप—स पु. [सं] सूर राजा का एक पुत्र यादव।

सयोग—स पु [स] १ मिलन, मेल।
उ०—१ गुण गध ग्रहित गिळि गरळ कगळिन, पवण वाद ए उभय पख। स्रीखड सेळ संयोग सयोगिणि, भणि विरहिणी भुयंग भख।—वेलि
उ०—२ दूसम काले दोहिलउ जी, सूधउ गुरु संयोग। परमारथ प्रीछइ नही जी, गडर प्रवाही लोग।—स कु.
उ०—३ प्रगट करेवा पुरुखनइ राइ तेडि योग। कुण तूं ? कुण कारणि दुखि ? मरसिइ किम सयोग ?—मा का प्र.
२ समागम।
३ वैशेषिक दर्शन के चौबीस गुणों मे से एक गुण।
४ बराबर, समान।
५ समान उद्देश्यार्थ की गई सन्धि।
६ प्रेमी और प्रेमिका का मिलन।
७ व्याकरण मे व्यञ्जनो का मेल।
८ रति क्रीडा, मैथुन।
९ दो ग्रहो का समागम।
१० आकस्मिक रूप मे आने वाली वह स्थिति जिसमे एक घटना के साथ ही कोई दूसरी घटना भी घटित हो, इत्तफाक।
११ शिव, महादेव।
१२ मिलावट, मिश्रण।
१३ वैवाहिक सम्बन्ध।
१४ योग, जोड।
रू. भे—सजोग, सजोगी।

संयोगमत्र—स पु [स] वह वेद मत्र जो विवाह के समय पढा जाय।
रू. भे.—सजोगमत्र।

सयोगविरुद्ध—स. पु. [स] कुछ पदार्थ विशेष जो परस्पर मिल जाने पर यदि खाये जाय तो रोग उत्पन्न कर देते हैं।

संयोगिता—सं स्त्री.—राजा जयचंद की पुत्री तथा हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज चौहान की पत्नी का नाम।
रू भे.—संजुता, सजोगिता।

संयोगी—वि. [स.] (स्त्री सयोगण, संयोगणी, संयोगन संयोगिण, सयोगिणि, सयोगिणी, संयोगिन, संयोगिनी) जिसका मिलन या मिलाप हो चुका हो।
उ०—१ सयोगिनी को वेस देस्पउ, तब उवेरयउ कंत। स्रंगार

समोवणौ, समोववौ —१ देखो 'सवारणौ, सवारबौ' ।
२ देखो 'समोहणौ, समोहबौ' (रू भे.)
समोवणहार, हारौ (हारी), समोवणियौ—वि० ।
समोविग्रोडौ, समोवियोडौ, संमोव्योडौ—भू० का० कृ० ।
संमोवीजणौ, समोवीजबौ —कर्म वा० ।
समोवियोडौ—१ देखो सवारियोडौ' ।
२ देखो 'समोहियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री समोवियोडी)
संमोहण—स पु [स सम्मोहनः] १ कामदेव के पाच बाणो मे से एक ।
[सम्मोहन] २ मोहित करने की क्रिया, वशीकरण ।
समोहणौ, समोहबौ—क्रि अ —१ आकर्षित होना, मोहित होना ।
क्रि स —२ आकर्षित करना, मोहित करना ।
समोहणहार, हारौ (हारी), समोहणियौ—वि० ।
समोहिग्रोडौ, समोहियोडौ, समोह्योडौ—भू० का० कृ० ।
ससोहीजणौ, संमोहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।
समोवणौ, समोवबौ, समोवणौ, समोववौ, समोहणौ, समोहबौ, सम्मोहणौ, सम्मोहबौ —रू० भे० ।
समोहियोडौ—भू का कृ.—१ आकर्षित हुवा हुआ, मोहित हुवा हुआ
२ आकर्षित किया हुआ, मोहित किया हुआ ।
(स्त्री समोहियोडी)
संमौ—देखो 'समौ' (रू भे)
संम्य—देखो 'सम' (रू भे)
उ०—दिसा विमम्य सम्य हा अगम्य गम्य है नही । रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नही ।—ऊ. का
सम्रत—वि —१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ ।
२ देखो स्म्रति' (रू भे)
उ०—१ तिणदी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सब कच्चा है । बोलै स्रुत सम्रत स्यभ अज वायक, सीतानायक सच्चा है ।—र ज. प्र
उ०—२ सम्रत पुरान वेद आगम अनेक पढैं, विरद तिहारो नाथ तारन तरन को । मछ कवि कहै पुन सरन सधार व्रिद याही तैं सरन लयो रावरे चरन को ।—र. रू.
३ देखो 'समरथ' (रू भे)
सम्रति, सम्रती सम्रित—देखो 'स्म्रति' (रू. भे)
उ०—१ जगत प्रमिध जैंसाह, रचे बीमाह सुरगम । स्रुति सम्रति व्रत सार, ग्रथ पूछे निगमागम ।—रा रू
उ०—२ सम्रित साख पुरान कु, सीख'रि भया सुजान । हरीया अछर हेक विन, चतुराई सैं मान ।—अनुभववाणी
सम्रथ—देखो 'समरथ' (रू भे)
उ०—तू मेरे सम्रथ धणी, ग्रैसी करि धणियाप । तें करता क्या न हुवैं, जळ मैं थळ नइयाप ।—अनुभववाणी
सम्हा—स स्त्री [स. समहा] अग्नि-ज्वाला । (डि को.)
सयत—वि. [स.] १ कैद या वद किया हुआ । (डि. को.)
२ वंधा या जकड़ा हुआ ।
२ रोका हुआ ।
४ मर्यादित ।
५ व्यवस्थित, नियमबद्ध ।
६ हद या सीमा मे रखा हुआ ।
७ वह जिसने पचेन्द्रियो पर काबू पा लिया हो ।
स. पु.—१ कैद ।
२ युद्ध, सग्राम ।
३ योगी, सन्यासी ।
४ शिव, महादेव ।
सयद्वसी—स. स्त्री. [स] सूर्य की सात किरणो मे से एक किरण का नाम ।
सयम—स पु [स. सयम] १ रोक, दमन ।
उ०—सरीर सरोवर राम जळ, माही सयम सार । दादू सहजे सव गये, मन के मेल विकार ।—दादूवाणी
२ चित्त को अनुचित वृतियो का निरोध, इद्रिय-निग्रह ।
उ०—सयम सहाय, अल अतराय । परहरहु पीर, तुरीयाब्धि तीर । त्रहु ताप तोर, घननाद घोर । आस्चर्य एह, दुधवि विदेह ।
—ऊ का
३ क्रोधादि मे न आने की क्रिया, शान्त रहने की क्रिया या भाव ।
४ धार्मिक व्रत ।
उ०—१ घडै चीकणौं छाट, रवैं ना तिसळै नीचैं । घट काचैं पट रचैं, जचैं रग सोणौ सीचैं । बाळक पण री पाठ सकळ उपदेसा साचौ । पढ लिख सीखो सयम, बाळका थे घट काचौ ।—दसदेव
उ०—२ पइसौ पाणी मे मेल्या डूबैं अनैं उण ही पइसा ने ताप लगाय कूट-कूट नैं वाटकी कीधी ते तिरैं । उण वाटकी मे पइसी मेलैं तो पइसौ पण तिरैं । तिम जीव तप, सयम आदि करि आतमा हळकी कीधा तिरैं ।—भि. द्र
५ स्वास्थ्य की दृष्टि से शरीर को हानिकारक कार्यों या वातो से वचते हुए अलग या दूर रहने की क्रिया या भाव, परहेज ।
६ अनुचित कार्यों या वातो से अपने आपको रोकना ।
७ धूम्राक्ष का एक पुत्र ।
८ मन की एकाग्रता एव योग के धारणा, ध्यान व समाधि ।
९ व्यवस्थित रूप से वाधने या वद करने की क्रिया या भाव ।
१० महाराजा अम्बरीख के सेनापति सुदेव द्वारा मारा गया एक शतमृग नामक राक्षस ।
११ राजर्पि कृशाश्व के पिता ।
रू. भे —सजम, संजमि, सजिम ।
सयमन—स पु —१ सयम करने की क्रिया या भाव ।

सोभित सहल अगइ, महल दीप दीपत ।—वि कु

उ०—२ गुण गध ग्रहित गिळि ऊगळित, पवण वाद ए उभय पख । स्रीखड सैल सयोग संयोगिणि, भणि विरहणी भुयग भख ।
—वेलि

२ विवाहित ।

३ जो सयोग के फलस्वरूप हुआ हो ।

रू भे.—सजोगि, सजोगी ।

अल्पा; —सजोगी

सयोजक–स पु. [स] मिलाने वाला, सयोजन करने वाला ।

सयोजन–स. पु. [स] १ मेल-मिलाप ।

२ सम्मिश्रण ।

३ मैथुन, रतिक्रीडा ।

४ कार्य-व्यवस्था ।

सयोजित–वि. [स] जिसका सयोजन किया गया हो ।

सयोधकटक–स पु [स] कुबेर के एक अनुचर का नाम ।

सरभ–स. पु [स] १ क्रोध, गुस्सा ।

२ आरभ, शुरुआत ।

३ उत्पात, हगामा ।

४ गर्व, घमण्ड ।

५ उत्साह, उमग ।

सरक्षक–स पु [स] १ आश्रय दाता ।

२ पालन-पोषण करने वाला ।

३ रक्षक ।

४ अभिभावक ।

सरक्षण–स पु [स] १ देख-रेख, निगरानी ।

२ अधिकार, कब्जा ।

३ हिफाजत ।

संरक्षी–वि [स. सरक्षिन्] देख रेख करने वाला ।

संराधन–स. पु [स] १ जय जयकार ।

२ ध्यान, मग्नता ।

३ पूजा, अर्चना ।

सरुढ–वि [स] १ अच्छी तरह चढा हुआ या जमा हुआ ।

२ साथ-साथ उत्पन्न हुवा हुआ ।

३ वृष्ट ।

सरोध–स. पु [स] १ रोक, रुकावट ।

२ बाधा, अडचन ।

३ नाकेबंधी ।

४ घेरा ।

सलग्न–वि [स.] १ सटा हुआ, जुडा हुआ, निकटस्थ ।

२ भिडा हुआ ।

३ लीन, मग्न ।

संलपन–स. पु —प्रलाप ।

२ गपशप, बातचीत ।

सलय–स पु [स.] १ नीद, निद्रा । (डिं को)

२ घुलाव, लीनता ।

संलाप–स. पु [सं.] बातचीत वार्तालाप ।

उ०—जिणरा वीरपण हूँ रीझिये थके रणमस्त खान भी उग हू लगाई हितरो संलाप घडियाँ ।—व भा

सलापक–स. पु. [स. सलापकः] १ नाटक मे एक प्रकार का सवाद ।

२ एक प्रकार का उपरूपक ।

वि.—वार्तालाप करने वाला ।

सलिप्त–वि. [स.] १ लीन, लगा हुआ ।

२ घुला-मिला हुआ ।

सलीण, सलीन–वि. [स] १ आच्छादित, ढका हुआ ।

२ अच्छी तरह लगा या सटा हुआ ।

३ सकुचित, सिकुडित ।

सलीणया–स स्त्री.—पचेंद्रियो को वश मे करके मन, वचन, काया आदि के अशुभ योगो को रोकने की क्रिया ।

संलीयणाव्रत–सं. पु.—एक प्रकार का व्रत विशेष जिसमे पचेंद्रियो को वश में करके मन, वचन, काया आदि के अशुभ योगो को रोका जाता है ।

सलेखणा, सलेहण, सलेहणा—१ संथारा के पूर्व अनशन करने की क्रिया ।

उ०—सलेहण पचखाण पादपोपगमनताजी, स्वरगगमन सुभकुल उतपत्ति प्रधान हो ।—वि कु

२ एक प्रकार की तपस्चर्या विशेष । (जैन)

३ शरीर को आगमोक्त विधि से पतला, दुर्बल व क्षीण बनाने की क्रिया ।

वि. वि.—आगमोक्त विधि मे तीन तरह से शरीर को पतला व दुर्बल बनाया जाता है :—

१ जघन्य—यह ६ माह तक किया जाता है ।

२ मध्यम—यह एक वर्ष तक किया जाता है ।

३ उत्कृष्ट—यह १२ वर्ष तक किया जाता है ।

उक्त १२ वर्षो मे प्रथम ४ वर्षों मे घी, तेल, मिठाई आदि का त्याग कर देते हैं । दूसरे ४ वर्षों मे विचित्र तप करते हैं। फिर दो वर्षों तक एकान्तर उपवास किया जाता है । फिर ६ माह तक अतिविकृष्ट तप आदि किये जाते हैं । फिर ६ माह तक बेला, तेला आदि उपवास किये जाते हैं । इस तरह बढाते-बढाते १२ वर्ष तक उपवास किया जाता है एव अन्तिम महिने या दो महीनो तक अनशन किया जाता हैं ।

रू. भे.—सल्लेहणा ।

सलोडण—१ झकझोरना, हिलाना ।

उ०—सवळ सिरावण सह करी, मुकळावइ ऊमा देवडी । सपरिवार मिल्या सह कोइ, करहउ वळे पलाण्यउ सोइ ।—ढो. मा

सवळी–स. स्त्री.—१ चील पक्षी ।

उ०—कोई वीर पुरख री वीर स्त्री रा वचन है—सवळी प्रतै आपरी पती जुद्ध मे मारीज नें पहियो और आप अत री मर्म पती रा दरसण करण नें गई है तठै पती रा सव उपरै संवळी नें वैठी देख कहै है ।—वी. स. टी.

रू भे —समळी, सावळी ।

२ देखो 'सवळौ' (पु)

३ देखो 'सावळौ' (पु)

रू. भे.—सवळी, सभळि, मभळी, समळ, संमळी, समळी, सवली, सामळी, सावळी ।

संवळौ–स. पु —श्याम रंग का कौए से वडा मासाहारी पक्षी ।

वि. (स्त्री. सवळी) १ अनुकूल पक्ष मे ।

उ०—नारायण भज रे नरा, अतरजामी एक । साई जो संवळौ हुवै, अवळा हुवौ अनेक ।—ह. र.

३ सीधा, सरल ।

४ उत्तम, श्रेष्ठ, वढिया ।

उ०—किन्या नें वर मिळ जाय अर पिंडतजी नें गामो-भलो धन मिळ जाय अैडो हथळेवो जोडणो हो । रवडता-रवडता पग मे पाणी पडग्यो, पण अैडो सवळौ जोग नी सजियो ।—फुलवाडी

५ सम्मुख, सामने ।

उ०—माथौ सवौ हुतौ सो फिरनें अपूठौ हुवो, तरै साहजादी पूरब जनम री वात कही, तरै माथौ अपूठौ हुतौ सु फिरने संवळौ हुवौ । —नैणसी

रू भे —समळौ, समळो, संवळो ।

मह —समळ ।

६ देखो 'सावळौ' (रू भे)

संवह–स पु [स] १ एक वायुमार्ग ।

२ देवताओ के विमानो का चालक वायु ।

३ अग्नि देव की जिह्वा का नाम ।

सवाद–स पु [स] १ वार्तालाप, वात-चीत ।

उ०—दोनू मा-वेटिया रा संवाद वादळ सुण्या तो अवम पण वानै समझ्यो कोनी ।—फुलवाडी

२ खवर, समाचार ।

उ०—क्षेत्रपाल जी वोल्या कुसल सवाद छै पण राजा विक्रम गाढो सचितो छै ।—पचदडी री वारता

३ प्रसग ।

४ सहमति, अनुमति ।

५ वहस, वाद-विवाद ।

रू. भे —सवादो, समवाद, समवाद ।

सवादक–वि [स] १ सवाद करने वाला, बातचीत करने वाला ।

२ समाचार देने वाला ।

संवादन–सं पु [स] १ भाषण ।

२ वातचीत, संवाद ।

संवादी–वि. [स.] १ सहमत होने वाला ।

२ वातचीत करने वाला ।

३ वरावर, सदृश ।

४ समान, वरावर ।

उ०—तुम पातसाहा के सवादी सूर तें सूर । तुमारी सिवाय आवै मेरे मुख नूर ।—रा. रू.

स. पु.—जो स्वर राग के वादी स्वर का निर्वाह करे । (सगीत)

रू भे —समवादी ।

सवादो–सं. पु —१ लघु काव्य ।

२ देखो 'सवाद' (रू भे.)

सवार–सं. स्त्री —१ कृषि योग्य भूमि को समतल करने तथा मिट्टी के ढेलो को तोडने के लिए लकडी का बना एक उपकरण विशेष, भूमि समतल करने का पाटा, हेंगा ।

[स.] ३ प्रातः काल, सुबह ।

उ०—१ कवेसरा मुखे वाणी कहाणी रहाणी ओत, सहेनाणी जेणी साची वाखाणीजे सवार ।—नाथौ वारहठ

४ सवारने की क्रिया या भाव ।

५ वचत ।

मुहा.—घर हुवै संवार तो कउ मारो गवार=घर मे लाभ होता हो तो अन्य लोगो की वदनामी से नही डरना चाहिए ।

६ हजामत ।

रू भे.—सुवार, सुमार, सुवार ।

सवारण–स. स्त्री.—१ हटाने या दूर करने की क्रिया या भाव ।

२ निषेध करने का भाव ।

३ सवारने की क्रिया या भाव ।

वि.—सुधारने वाला ।

उ०—हरि पावक पावक पल जारण पारब्रह्म अघ मेटण कारण । जळ थळ वास अरि ग्रास निवारण, नाव निरूप घट घाट सवारण — ह. पु वा.

रू. भे.—सुवारण ।

सवारणौ, सवारबौ–क्रि. स —१ अलकृत करना, सजाना ।

उ०—१ वयानै तो रामजी घोडा सिणगारो वयानै पाखर कसिया । चुण चुण कळिया सेज सवारूं ऊपर गादी तकिया ।—मीरा

उ०—२ गाल वजावै गोलणा, गोल सवारै गात । सदा नवीता सचरै, सदा सुहागण मात ।—वा. दा

उ०—३ जतन जतन कर पंथ निहारूं, पिव भावै त्यो आप सवारू । अव सुख दीजै जाउ वलिहारी, कहै दादू सुन विपति

इसके विशेष भेद सत्तावन है जो निम्न प्रकार हैं :—

पाच समिति, तीन गुप्ति, बाईस परीखह, दस यतिधर्म वारह भावना और पाच चरित्र।

[म सवर] १ दुराव छिपाव।

२ सहनशील होने की अवस्था।

३ जल, पानी।

[स. सवरः] ४ सिकुडन।

५ पुल, सेतु।

६ एक प्रकार का हरिन।

७ एक दैत्य का नाम।

८ देखो 'सवर' (रू. भे)

सवरण-स. पु [स] कुरुक्षेत्र के पिता एव भारतवशीय राजा ऋक्ष के पुत्र जो सूर्य पुत्री तपती के पति थे।

सवरत-स. पु [स. सवर्त्त] १ वर्ष।

२ अगिरा ऋषि के आठ पुत्रो मे से एक।

३ ससार का नैमित्तिक प्रलय।

४ धर्मशास्त्र के लेखक का नाम।

सवरतक-स. पु [स सवर्त्तक] १ प्रलयाग्नि।

२ प्रलयकालीन वादल।

३ कश्यप एव कद्रू का पुत्र एक नाग।

४ बलराम का नाम।

५ बलराम के हल का नाम।

६ महर्षि अगीरा के पुत्र का नाम।

७ माल्यवान पर्वत पर के अग्निदेव जो सदैव प्रज्वलित रहते है।

८ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के पुत्रो मे से एक।

संवरत्तकास्य-स. पु.—एक शास्त्र विशेष। (व स.)

सवरद्धन-स पु [स. सवर्द्धन] १ वढने की क्रिया या अवस्था, वढोतरी।

२ वढाना या उन्नत करने का कार्य।

संवरद्धित-वि [स सवर्द्धित] १ वढाया हुआ।

२ पाला-पोपा हुआ।

सवरनाथ-सं पु —भविष्यत् काल के अट्ठारवें तीर्थंकर का नाम।

सवरणी सवरबो-क्रि अ.—१ सवारा जाना।

२ देखो सवराणी, सवरावी' (रू. भे.)

उ०—पछै पातमाह जी आपरी अगरह यी तठै ठौड संवराई। —नैणसी

३ देखो 'समरणी, समरवी' (रू भे.)

उ०—साइ सारदा मनि संवरि वाधउ ग्रय अपार। सूरति रासउ प्रचल-फउ, खउदालिम्म सिकार। —अचलदास खीची री वचनिका

सबरणहार, हारी (हारी), सवरणियो - वि०।

सवरिओडो, सवरियोडो, सवरचोडो—भू० का० कृ०।

सवरीजणी, संवरीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सुवरणी, सुवरबो—रू० भे०।

सवराणो, सवरावो-क्रि. स.—१ जीर्णोद्धार कराना, मरम्मत कराना।

उ०—१ जोधपुर गढ ऊपर राव जोधाजी रै करायोडो कोट संवरायो।—नैणसी

उ०—२ पछै वळै महाजनै महेसरीया भूतडै फेर सवरायो छै। —नैणसी

उ०—३ श्री वाराहजी री देहुरी पोकर माथै सगर सवरायो। —नैणसी

२ साफ कराना, समतल कराना।

३ सजाना, अलकृत कराना।

उ०—इतरी धरती हुई-पाट स्रीजोधपुर गढ। सोह राव मालदे संवरायो। पहली गढ सहल थो।—राव मालदे री वात

४ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह सुदर जान पडे।

५ सुचारु रूप से कोई कार्य सम्पन्न कराना।

सवराणहार, हारौ (हारी), सवराणियो—वि०।

सवरायोडो—भू० का० कृ०।

सवराईजणो, संवराईजवौ—कर्म वा०।

सवरणी, संवरवो, सवरावणी, सवरावबो, समराणो, समरावो, सवराणी सवरावो सुवराडणी, सुवराडबो, सुवराणी, सुवरावो, सुवरावणी, सुवरावबो—रू० भे०।

सवरायोडो-भू० का० कृ०—१ जीर्णोद्धार कराया हुआ, मरम्मत कराया हुआ. २ साफ कराया हुआ. ३ सजाया हुआ ४ ठीक ठाक कराया हुआ ५ सुचारू रूप से सम्पन्न कराया हुआ। (स्त्री सवरायोडी)

सवरावणी, सवरावबो—देखो 'सवराणी, संवरावो' (रू. भे)

संवरावणहार, हारो (हारी), सवरावणियो—वि०।

सवराविओडो, संवरावियोडो, सवराव्योडो—भू० का० कृ०।

सवरावीजणी, संवरावीजवो— कर्म वा०।

सवरावियोडो—देखो 'सवरायोडो' (रू भे)
(स्त्री सवरावियोडी)

सवरियोडो-भू. का कृ.—१ सवारा गया।

२ देखो 'समरियोडो' (रू भे)

३ देखो 'सवरायोडो' (रू भे)

(स्त्री संवरियोडी)

सवळ-स स्त्री —एक प्रकार की मछली विशेष जिसमे काटे नहीं होते है।

२ देखो 'मावळो' (रू भे)

३ देखो 'सिवळ' (रू भे)

४ देखो 'सवळ' (रू भे.)

संवास-सं. पु [सं.] १ साथ बसना या रहना ।
२ पारस्परिक सम्बन्ध ।
३ सभा, समाज ।
४ घर, मकान ।
५ जन-साधारण के उपयोग के लिए नियत खुला स्थान ।
६ स्त्री सभोग, मैथुन ।
सवाहक-वि. [स.] १ ले जाने वाला।
२ पहुँचाने वाला ।
सवाहन-वि [स] १ चलाने की क्रिया, परिचालन ।
२ ढोना, उठाकर ले चलने की क्रिया ।
संविग्य-वि. [स. सविज्ञ] पूरी तरह से जानकार ।
सविग्यान-स. [स. सविज्ञान] १ पूर्ण ज्ञान ।
२ सहमत, समर्थन ।
३ मजूरी, स्वीकृति ।
सवित-स. स्त्री [स सविद्] अगीकार, स्वीकृत । (हि. को)
संवीतपत्र-स पु —वह पत्र जिसमें दो ग्रामो या प्रदेशो के बीच किसी बात के लिए प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो ।
सवी—देखो 'समी' (रू. भे)
उ०—माथै नाळी ऊंचौ राख संवी आवळ धर दी । गुळ खोपरा अर आखा रैं भेळी आवळ नै बूर दी ।—फुलवाडी
उ०—२ जे आप संवी सिझ्या थकै वहीर व्हिया तौ म्हे अेक ई टुकडो नी तोडाला ।—फुलवाडी
उ०—३ तरै कह्यौ—आवारी आवली हुवौ । सुवचन कहता संवी आवा री आवली हुई, सु आवली अजेस छै ।—नैणसी
उ०—४ मनसा भोजन मन सवी, हरि दीदार मिलाय । फुनी हळवी पाटी कुवळी, बीजक इधक खिवाय ।—बील्होजी
उ०—५ संवी सिझ्या फौज कूच कीधौ । खंख रा गोट इण विध आभै चढ्या के टळतौ गुलाबी उजास मगसौ पड़ग्यौ ।—फुलवाडी
सवेग-सं पु [सं सवेग] १ पूर्ण वेग, गति की तीव्रता, तेजी ।
२ उत्तेजना, क्षोभ ।
३ मोक्ष की अभिलाषा, इच्छा ।
उ०—सवेग सुधारस नीर सबल सरवर भरघा रे, पच महाव्रत मित्र सजोगइ सचर्या रे ।—ऐ जै. का सं.
३ विषय वासनाओ का त्याग, निवृत्ति, सयम ।
उ०—१ वाद भणी विद्या भगीजी पर रजण उपदेस । मन संवेग धरचउ नही, किम समार तरेस ।—स. कु.
४ वैराग्य भाव ।
उ०—१ धन्नउ सालिभद्र बेउ, भगवत आदेस ले जी हो । संवेग सुद्ध धरेउ, वैभार गिरि ऊपरि चढ्या जी हो ।—स. कु.
उ०—२ नारी तजि नीवउ ततरचउ सवेग मारग सूधउ धरचउ । सिला ऊपरि सथारउ करचउ वेगइ सुरसुदरि नइ वरचउ ।
—स. कु
५ सम्यकत्व के पाच अगो मे से एक अग । (जैन)
संवेगी-वि —१ वे जैनी साधु जो प्रायः पीली धोती व पीली चादर धारण करते हैं एवं २७ दिनो से अधिक किसी एक स्थान पर नहीं ठहरते, जैनी । (मा. म.)
२ सम्यकत्व को धारण करने वाला । (जैन)
उ०—जस नामी 'सिवचद' जी, चावू चिहु खड नाम । सवेगी सिर सेहरौ, कीधा उत्तम काम ।—ऐ. जै. का स
२ चरित्रवान, निष्ठावान ।
३ वैरागी ।
४ त्यागी ।
उ०—छोडी रिद्ध छती ए सवेगी सुद्ध यती ए । पाप न लगावै रती ए ।—जयवाणी
रू. भे.—समेगी
सवेटणौ, सवेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू भे.)
उ०—जद स्वामीजी बोल्या—थारै बाप हूळ्यां लीखी, थारै दादै हूंळ्यां लिखी, पाटा पाटी थेई सवेट्या कोइ नहीं ।—भि. द्र.
संवेटणहार, हारौ (हारी), सवेटणियौ—वि० ।
सवेटिओड़ौ, संवेटियोड़ौ, संवेट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सवेटीजणौ, सवेटीजबौ—कर्म वा० ।
संवेटियोडौ—देखो 'समेटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री सवेटियोडी)
सवेद-स पु. [स.] १ सुख दुःख का बोध ।
२ ज्ञान ।
संवेदन-स. पु [सं.] १ सुख दु ख आदि का बोध, अनुभव ।
२ प्रकट करने की क्रिया ।
सवेदित-वि. [स] अनुभव या बोध कराया हुआ, बताया हुआ ।
सवेद्य-वि. [स] १ अनुभव करने योग्य ।
२ बताने योग्य ।
स. पु —एक पुण्य स्थल ।
संवेस-स. पु [स. सवेश] १ पहुँचने की क्रिया ।
२ प्रवेश करने या घुसने की क्रिया ।
३ बैठने की क्रिया ।
४ एक प्रकार का रतिबध ।
५ निद्रा, नीद ।
६ स्वप्न ।
सवेसक-स पुं वि [स सवेशक] चीजो को क्रम मे रखने वाला ।
संवेसण-स. स्त्री [स. संवेशन] शय्या । (अ. मा)
संवेस्टण-सं. स्त्री [स. सवेष्टन] १ घेरने या लपेटने की क्रिया ।
२ ढांकने की क्रिया ।
सवौ—देखो 'ससौ' (रू. भे.)

हमारी।—दादूवाणी

उ०—४ काजळ तो भरियो ए जच्चा राणी रै कूपलौ ए वहू सण-गार दे नैण सवारै।—लो. गी.

२ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह सुदर जान पडे।

उ०—सारडि खीर समद दुरग संवारिया। धारा फेण कलिंद तनूजा धारिया।—बा. दा

३ रचना, बनाना।

उ०—स्यामा पातळ दसण दमकणा अधरे विंत्रा। झुकती पीण कुचा धण चालै धीर नितबा। नाभि उडाळी छीण कटि चळ मिरगा नैणी। विधना रूप-गुमेज सवारी पेल सेलाणी।—मेघ

४ व्यवस्थित या ठीक रूप देना।

उ०—सील की वाड सवार चहुं दिस, पेम की फासी डारै रे। जनहरिराम मारि मन मिरघा, सव ही काम सुधारै रे।

—अनुभववाणी

५ तैयार करना, सजाना।

उ०—सोधन पीवजी साज सवारी, अव वेगि मिळौ तन जाइ वनवारी। साज स्रगार कीया मनमाही अजहू पीव पतीजं नाही।

—दादुवाणी

६ संभालना, ठीक करना।

उ०—१ डिग मती रे सरवरा लावी छौळ न देय। आपै ही उड जावसा, पख सवारण देय।—अग्यात

उ०—२ पाख सवारै पव करै, डाळा रग भरेह। उडण वाळो हसलो, वन वन डोय करेह।—अग्यात

७ सुधारना।

उ०—१ हुसगसाह री सीख मे कही छै रैयत व सिपाही रा काम सवारण मे उतावळ अन्याय छै।—नी प्र

उ०—२ जापै मे चाहै सूठ यौ साग सवारै जीरो। सेजा मे चाहै यै भोळी भावज म्हारौ वीरौ।—लो गी.

उ०—३ जिको काम वणै सो बुद्धि रा जोर सू सवारै।

—नी. प्र

उ०—४ आपम सूरति चल्लण, नह माणा ससारै। ओको अचळ दुरगमा, वह काम सवारै।—मालो साद्

८ साफ करना, बुहारना।

उ०—वधिया सील पोथी कथा, सुपह पथ संवारियौ। सीझत आठ साका किया, वीलह वैकुंठ सिधारियौ।—वील्होजी

९ अन्त स्पर्श करना, अन्तिम रूप देना।

उ०—म्हारै गळाई टागडा छीदा करनै जद वै कूद माथै मूळेट घरनै पाउट लेवण लागा, पाउट लिया पछै सवारण लागा अर सवारिया पछै न्यारा न्यारा भेला मे वासण धरिया तो म्हनै ओडो लखायौ के बिरमाजी म्हारी नकल काढै है।—फुलवाडी

१० तेज करना, तीक्ष्ण करना।

उ०—१ खुदा तालारी कृपा सू बीरवळ मोनू मिळियो हौ। म्हारा दिल माहली वात बाहर आणतौ दारू ज्यू। म्हारा सुखनवाण सवारण नूं खुरासाण हुतौ।—बा दा. ख्यात

उ०—२ दुजड वाण जमदाढ, सेल दे वाढ सवारचा। अणिया धार उपेत, नेतवध 'जेत' निहारचा।—मे म.

११ ठीक करना, जीर्णोद्धार करना।

उ०—जैमल कोट फेर संवरायौ सहर रो मडाण निपट सग्वरो छै।

—नैणसी

१२ सुचारू रूप से किसी कार्य को करना।

१३ ठीक करना।

सवारणहार, हारौ (हारी), सवारणियौ—वि०।

सवारिग्रोडौ, सवारियोडौ, संवारचोडौ—भू० का० कृ०।

सवारीजणौ, संवारीजबौ—कर्म वा०।

समारणौ, संमारबौ, सबारणौ, सवारबौ, समारणौ, समारबौ, सवारणौ, सवारबौ, सुंवारणौ, सुवारबौ—रू० भे०।

सवारियोडौ—भू का कृ—१ सजाया हुआ. २ किसी चीज को ऐसा रूप दिया हुआ कि उससे वह सुदर व अच्छी जान पडे. ३ रचाया हुआ, वनाया हुआ. ४ व्यवस्थित या ठीक रूप दिया हुआ ५ सभाला हुआ, तैयार किया हुआ, ठीक किया हुआ ६ सुधार किया हुआ ७ साफ किया हुआ, बुहारा हुआ ८ अन्तस्पर्श किया हुआ, अन्तिम रूप दिया हुआ. ९ तेज या तीक्ष्ण किया हुआ १० जीर्णो-द्धार किया हुआ, ठीक किया हुआ. ११ सुचारू रूप से कार्य सम्पन्न किया हुआ।

(स्त्री सवारियोडी)

संवारै—अव्य [स श्व.] १ आने वाला दिन।

उ०—तरै सवळसिंघ कहाडीयो-संवारै हू जायनै परो काढीस।

—नैणसी

उ०—२ आथण रौ वळै मूळराज सीहाजी रै डेरै आयौ, वीनती घणी कीवी। सवारै मुकाम कीजै। म्हारो घर पवीत्र कीजै।

—नैणसी

उ०—३ आथणी वीसमी किसो अब अवरजौ, समी घर मेख रै बणी सादी। सिंध मुलताण री सुध लै सिधाया, दूध तू सवारै पियै दादी।—गोपीनाथ गाडण

२ प्रात काल, तडके।

उ०—१ चतुर होय कोई चेला चेली, ऊठ संवारै आवै। दरसण कर साधा रै दडकै, पावा मे पड जावै।—ऊ. का

उ०—२ भली आकृति भाळ, घणी वणिया थुथकारै। राखै घणी विणाय, पेट भर साझ संवारै।—दसदेव

रू भे.—सुंवारै, सुंवारो।

सवाळौ—देखो 'सुवाळौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सवाळी)

३ अनिश्चयात्मक ज्ञान ।
४ दुविधा ।
५ खतरा, सकट ।
रू. भे.—समै ।

ससयात्मक–वि. [स. मशयात्मक] १ जिसमे सदेह हो, संदिग्ध ।
२ अनिश्चित ।

ससयात्मा–स. स्त्री. [स सशयात्मा] सदेहवादी ।

संसरग–स पु. [स. ससर्ग॰] १ सम्पर्क, लगाव ।
२ मेल, मिलाप ।
३ मैथुन, सभोग ।
४ सहवास ।
५ निकटतम सबध ।

ससरगदोस–स पु [स ससर्गदोष] किसी के साथ रहने से उत्पन्न होने वाला दोष, बुराई ।

समरगी–वि [स. ससर्गिन्] सम्पर्क, ससर्ग या लगाव रखने वाला ।

ससरण, ससरणी–स पु [स. ससरण] सासारिक ।
उ०—वध गिणइ ससरण सुख, चरण करण गुण लीण । अति-सय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण सुप्रवीण ।—वि कु
२ राजपथ, राज्यमार्ग । (डि को.)
३ नगर के समीपस्थ धर्मशाला ।
४ एक जन्म से दूसरा जन्म, पुनर्जन्म ।

संसरप–स. पु [स ससर्प॰] ज्योतिष मे चन्द्र-गणना के अनुसार वह अधिक भाग जो किसी क्षय मास वाले वर्ष मे पडता है, अधिक मास ।

ससलभ–स. पु.—छप्पय छद का ३१ वा भेद जिसमे ४० गुरु ७२ लघु से ११२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है । इसे सरभ भी कहते है ।

ससाक्रित—देखो 'सस्क्रत' (रू भे)
उ०—अध्यातम परम विसतार वावन अखर, ससाक्रित प्राक्रति विगति सूझै । पाडगति गीत संगीत समझण पौहचि, बहतर कळा खट भास बूझै —ल पि

ससाधक–वि [स] १ सम्पन्न करने वाला ।
२ जीतने वाला ।

ससाघन–स पु —१ कार्य की तैयारी, आयोजन ।
२ दमन, जीतना, दवाना ।

संसाधिनी–स. स्त्री —एक प्रकार की विद्या विशेष ।
उ०—सगरूपिणी तमोरूपणी विघातकारिणी गिरिदारणी गरुड-वाहिनी ससाधिनी ।—व स.

ससार–स पु. [स] १ वह जगत या दुनिया, जिसमे प्राणी आते-जाते रहते हैं, मृत्युलोक (डि को)
उ०—१ जनहरीया संसार में, देख-पाखि मत भूल । तेरा सजन को नही, राम नाम मे तूल ।—अनुभववाणी
उ०—२ ससार मे वाणिया ही पैलातर विगाडणिया वडा माडा माणस है । बोरा वाणिया तो खोटा कलम कसाई हुवै है ।
—दसदोख
उ०—३ म्है भगवान रा गुण बताया छा । ससार नै मोक्ष रो मारग बतावा छा ।—भि. द्र.
२ सासारिक झझट, प्रपच ।
उ०—१ जग अवतार नमौ जगदीसर, अनत रूप घारण तन ईसर । तवा ज हरि अवतार तुहारा, सदगत प्रामै छूटै संसारा ।
—ह. र.
उ०—२ जन हरीया संसार की, सगति करै न कोय । या संगति सु उपजै, कळह कलपना दोय ।—अनुभववाणी
३ माया जाल ।
उ०—सनेही ससार को, हरि जन सेती नाहि । हरीया मकडी जाळ ज्यूं, मन विंध्या ता माहि ।—अनुभववाणी
४ सृष्टि, रचना ।
उ०—घरै इक पाप धरै इक ध्रम्म, करै इक जीव करै इक क्रम्म सरज्जै आप त्रिधा संसार, हुवौ मझ आप हो रम्मणहा८ ।
—ह र.
५ आवागमन, भव-चक्र, पुनर्जन्म ।
६ मार्ग, रास्ता ।
७ घर-गृहस्थी और उसका जीवन ।
उ०—ओऊकार ऊपरै, काठ चाढू जळ कमळ । धरू विसन रो घ्यान, लेऊ परवाह गग जळ । वसू जाय वनवास, हाड गाळू हेमाळै । तापू धूमर ताप, अगन झाळा ऊनाळै । परवार सहित छोडू परौ, सारो नेह ससार रो । यण देह मिळै मोनू अभग, सेर-सीग 'सरदार' रो ।—पहाडखा आढो
मुहा०—१ ससार छोडणो=सन्यासी होना, मर जाना ।
२ ससार री हवा खाणी=सासारिक व्यवहार मे अनुभव प्राप्त करना ।
३ ससार री हवा लागणी=सासारिक रग चढ जाना, व्यवहार मे चतुर होना, छली या धूर्त होना ।
४ संसार सूं अजळ ऊठणो=मर जाना ।
५ ससार सू ऊठणो=मर जाना, समाप्त होना ।
६ ससार सू नातो तोडणो=वैराग्य धारण करना ।
७ ससारी व्हैणो=गृहस्थ होना ।
रू भे —सिसार, सैसार ।
अल्पा;—ससारो ।

ससारगुर, ससारगुरू–स पु. [स ससार-गुरु] १ जगद्गुरू ।
२ कामदेव ।

ससारचकर, संसारचक्र–सं पु यो [स. ससारचक्र] १ सासारिक झझट, प्रपच ।

उ०—१ सु मायौ सवौ हुतो सो फिरनै अपूठौ हुवौ तरै साहजादी पूरब जनम री वात कही।—नैणसी

उ०—२ रावण सवौ न राजवी लका सवौ न थान। कही पराई जे सुणै, जा सिर नाही कान।—मेहोजी गोदारो

सव्रत-स. पु.—१ वरुण का एक नाम। (त्रि. को.)

२ कश्यप कुल मे उत्पन्न एक काद्रवेयय नाग का नाम।

३ भगवान श्रीविष्णु का नाम।

सव्रति-स स्त्री. [सं. सवृत्ति] ब्रह्मा की सभा मे रहने वाली उनकी उपासिका एक देवी।

सस-स पु. [स. सशय] १ आशका, शक।

२ शपथ।

उ०—पुनह राग्रै सव पसु अखै, सरेह केम वन मस। कही तेम जिम हम करै, सो सलुक सोइ संस।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

ससकार—देखो 'सस्कार' (रू. भे)

उ०—१ ससकार स्तुतिवाण सुणि, कूरम कै सवकार। परणावै पधरावियौ, महलै राजकवार।—रा रू.

उ०—२ सरीर ससकार सार नीर छीर से मनै। विध्वस वेरि वस को प्रससनीय तै बनै।—ऊ. का.

उ०—३ राजा जैसाह कन्यावळ को सकळप लियौ। सो वेदोकति ससकार, करि पार कियौ।—रा. रू.

संसकिरत, ससक्रत—१ देखो 'सस्क्रत' (रू भे.) (अ मा, ना. मा)

उ०—१ काना नै सवद न भावै स्तुत कटु, सवदन सुधगत ससकिरत। अप्रयुक्त सुध सदन आध्यौ, अरथ कहण असमरथ अत।

—बा दा.

उ०—२ पढ खट भाख संसक्रत पिगळ, सुकवि वगौ समझ गुण साम। प्राणी राम नाम विण पढिया, निज पढ पमु धरायौ नाम।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'ससक्रित' (रू भे)

उ०—मदिरन्तरि किया खिणन्तरि मिळिवा विचित्रे सखिए समाव्रत। कीधै तिणि वीवाह ससक्रित करण सु तणु रति ससक्रत।

—वेलि

ससक्रती-स पु [स सस्कृत] १ सस्कृत भाषा का पडित।

उ०—डिंगळिया मिळिया करै, पिंगळ तणौ प्रकास। संसक्रती व्है कपट सज, पिंगळ पढिया पास।—वा दा

२ देखो 'सस्क्रति' (रू भे)

ससक्रित-स पु —सस्कार-विधि।

उ०—मदिरंतरि किया खिणतरि मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत। कीधै तिणि वीवाह ससक्रित, करण सु तणु रति ससक्रत।

—वेलि

२ देखो 'सस्क्रत' (रू भे)

उ०—किमू व्याकरण अवर भाखा अनै पराक्रत, ससक्रित तणौ क्यू फिरै सागै। लाखरा ठाकरा तणा माथा लुळै। आम्बरा तणा गजबोह आगै।—नवलजी लाळस

ससत—१ समाज।

२ देखो 'ससद' (रू. भे)

ससतउ-स पु.—शिथिल आचार।

उ०—विहुँ भेद कह्यउ संसतउ सुभ असुभ प्रकृति मपतउ।

—वि. कु.

ससतन-स. पु. [स संस्तवन] यज्ञ, हवन। (अ मा.)

संसतर-स. पु. [सं. सस्तरः] यज्ञ, हवन। (अ मा, ह ना मा)

ससति, ससती-स. स्त्री [स संशति] पवमान नामक अग्नि की पत्नी जो सभ्य एव आवसथ्य की माता थी।

संसद-स. स्त्री [स.] राजसभा, सभा।

उ०—स्वामी संसद सुवरन समान, जालम न कोह पै लोह जान।

—ऊ का

२ लोक सभा।

३ मडली।

रू. भे —समत।

ससप्त-वि [स. सशप्त] १ शापग्रस्त।

२ वचनवद्ध।

ससप्तक-स पु [स संशप्तक] १ वह योद्धा जिसने विजय प्राप्त किए विना रणक्षेत्र छोडने की शपथ ले रखी हो।

२ वह योद्ध जिसने विपक्षी या शत्रु को मारे विना युद्धक्षेत्र से हटने की प्रतिज्ञा ली हो।

३ षड्यन्त्रकारी जिसने किसी का हनन करने का बीडा उठाया हो।

४ चुना हुआ योद्धा।

संसफोट—देखो 'सस्फोट' (रू भे) (अ मा)

ससमन-स. पु [स सशमन] १ शात करने की क्रिया।

२ नष्ट करने की क्रिया।

३ दोषो को विना घटाये-बढाये शोधन करने वाली औषधि।

संसय-स. पु [स सशय] १ सदेह, शक। (डि को)

उ०—१ सो भूमि भड साथरी, कहियै कारण कूण। यह मत, ससय हरौ, क्रपा करौ सुख भूण।—गोविंदरामजी

उ०—२ मुकुदसिंघ, मोहणसिंघ, कन्हीराम, जूझारसिंघ च्यारि ही भाई पैला नू जय ससय जणाइ मागा रा खेल्ह मैं खडविहड होइ विमाण वैठा नारिया रै माथ गलबाह कीधा सुरलोक पूगा।

—व. भा.

२ भ्रम।

उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊ, परहर ससय भय बुद्धी वर पाऊ।—ऊ. का.

५ धार्मिक दृष्टि से पवित्र करने की क्रिया।

६ जन्म से लेकर मृत्यु तक द्विजातियो मे होने वाले आवश्यक कृत्य।

७ मृतक की क्रिया।

८ इन्द्रियो के विषयो के ग्रहण से मन पर जमने वाला प्रभाव।

९ धार्मिक अनुष्ठान।

रू भे —समकार, सहसकार, संसकार।

संस्कारक–वि [स] सस्कार करने वाला, शुद्ध करने वाला।

सस्कारहीण–वि यौ [स. सस्कारहीन] वह व्यक्ति जिसका धर्म-शास्त्र के अनुसार सस्कार न हुआ हो।

संस्कृत–स स्त्री [स सस्कृत] १ आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा, देववाणी।

२ पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक।

वि. [सस्कृत] १ सस्कार किया हुआ, परिमार्जित, परीष्कृत।

२ जो धो माज कर शुद्ध किया गया हो, निखारा हुआ।

३ सुधारा हुआ ठीक किया हुआ, दुरुस्त किया हुआ।

४ विवाहित।

रू भे.—ससकिरत, ससक्रत, संसक्रत।

सस्क्रतजल्प–स स्त्री —स्त्रियो की ६४ कलाओ मे से एक कला विशेष। (व. स)

सस्क्रति, सस्क्रती–स पु [स सस्कृति] १ सस्कार करने या सस्कृत रूप देने की क्रिया या भाव।

२ वे सब सामाजिक बातें जिनके द्वारा मानव जीवन तथा व्यक्तित्व को मापा जा सकता है।

वि वि —इसमे चिन्तन तथा कलात्मक सर्जन की वे क्रियाएँ भी सम्मिलित हैं जो मानव व्यक्तित्व व जीवन के लिए साक्षात् उपयोगी न होते हुए भी उसे समृद्ध बनाने वाली है अर्थात शास्त्र, दर्शन आदि मे होने वाले चिन्तन, साहित्य, चित्राकन, एव परहित साधन आदि नैतिक आदर्श ही सस्कृति है।

३ जयसेन राजा का पुत्र, एक राजा।

रू भे —सस्क्रती।

सस्तव–स पु [स] १ प्रशसा, तारीफ।

२ स्तुति, गुणगान।

३ परिचय, पहचान।

सस्तवणौ सस्तवबौ–क्रि स [स सस्तव] गुणगान करना, कीर्तिगान करना, स्तुति करना।

उ०—१ तीरथकर रे चोवीसे मैं सस्तव्या रे, हा रे रिखभादिक जिनराय, टलि परि वीनव्या रे।—स कु

उ०—२ प्रकरण सिद्धान गुरु परपर, सुणी सहू अधिकार ए। सस्तव्यौ साम जिगद पाठक, धम्म वरधन धार ए।—वृ. स्त

सस्तवणहार, हारौ (हारी) सस्तवणियौ—वि०।

सस्तविओड़ौ, सस्तवियोडौ, सस्तव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सस्तवीजणौ, सस्तवीजबौ—कर्म वा०।

सस्तवियोडौ–भू. का कृ —गुणगान किया हुआ, कीर्तिगान किया हुआ, स्तुति किया हुआ।

(स्त्री. सस्तावियोडी)

सस्तूत–स पु —स्तुति, गुणगान।

उ० —सुणनै हेठौ ऊतरी, करी वदना सस्तूत। रथ बेसी वदन गयौ, देवरा मुक्ति रा सूत।—जयवाणी

सस्थान–स. पु. [स सम्थान] १ ठहरने की क्रिया या भाव।

२ ठहरने का स्थान।

३ किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से बना हुआ मडल।

४ सभा।

सस्था–स. स्त्री [स] १ ठहरने की क्रिया या भाव।

२ सभा, मडल।

३ व्यवस्था, मर्यादा।

४ विधि, तरीका।

सस्थापक–वि [स.] १ स्थापित करने वाला।

२ आरम्भ करने वाला, शुरूआत करने वाला।

संस्थापन–स. पु. [स] १ स्थापना करने का कार्य।

२ निर्माण, बैठाने या जमाने की क्रिया।

सस्थापित–वि [सं] १ जमाया हुआ, स्थापित।

२ शुरू या जारी किया हुआ।

सस्थाप्य–वि. [स] जो सस्थापन के योग्य हो।

सस्परद्धा–स. स्त्री [स सस्पर्द्धा] १ ईर्ष्या, द्वेप।

२ किसी के बराबर या समान होने की इच्छा।

संस्परस–स पु. [स. सस्पर्श] १ अच्छी तरह स्पर्श होने का भाव।

२ संगम, सयोग।

३ ससर्ग, मैथुन।

संस्थल–स. पु.—एक प्रकार का शस्त्र। (व. स)

सस्फोट, सस्फोट–स पु [स सस्फोट] युद्ध, समर। (ह ना मा.)

रू भे.—ससफोट।

सस्मरण–स पु [स] १ अच्छी तरह या पूरी तरह याद, स्मरण।

२ सस्कारजन्य ज्ञान।

सस्रत, सस्रति–स स्त्री. [स समृति] १ जन्म। (अ. मा)

२ आवागमन, भवचक्र।

३ आने जाने का मार्ग।

उ०—सस्रति सत्तम मान, पोळ दरवाजा दुकाना। मेडी मोडा मैं'ल मनोहर वडा मुकाना।—दसदेव

४ संसार जगत।

उ०—कायर सग सेटक रुस्या, वर्ण न सुहड सुभाव। सुण्यौ न सस्रति सोभती, गधी परै गजगाव।—रैवतसिंह भाटी

२ सासारिक परिवर्तन ।

३ आवागमन का चक्र, भवचक्र ।

संसारजन, संसारजुन—देखो 'सहस्रारजुन' (रू. भे.) (अनेका)

ससारि, संसारी–वि. [सं. ससारिन्] १ ससार मे आकर बार-बार जन्म लेने और मरने वाला ।

उ०—काया कोट दमू दरवाजा, ताक भरम का भारी। काम करम की भोगळ मारी, खसि खसि ग्या संसारी ।—अनुभववाणी

२ दुनियादार, गृहस्थी ।

उ०—१ संसारी सगळा मोसू गया, म्हारौ कियौ हू भोगती थी, पण तू कठै आयी ।—पचदडी री वारता

उ०—२ लख चौरासी बाळिद केरौ, नायक अगम अपारी । वाकी गम विरळा जन जाणै, क्या जाणत ससारी ।—अनुभववाणी

स. पु —जीवधारी, जीवात्मा ।

स स्त्री.—दुनियादारी ।

रू. भे —सैसारी ।

ससारिक, ससारी, ससारीक—देखो 'सासारिक' (रू. भे)

उ०—भामणि सेती भोगवै होजी, जै सुख ससारिक । अवसर आपणी, सुत कारण सहु, अवगिणी होजी माणै लछि अलीक ।

—वि कु.

ससारौ—देखो 'ससार' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ भाई मारि भूडउ कियउ, हुयउ हाहाकारौ जी । सील राखण नारी सती सील वडउ ससारौ जी ।—स. कु.

उ०—२ जस फेल्यौ सहू ससारौ सुध दान थकी खेवौ पारौ।

—जयवाणी

उ०—३ जेसलगिर चाढ ससारौ जाणै, सोहड तुरगम करे सज उदयासीह भला ओहटिया, रिम गढ कटका तणी रज ।

—महाराणा उदयसिंह रौ गीत

ससालण–स. स्त्री—कढी से मिलता-जुलता तरल खाद्य पदार्थ ।

उ०—भागा वदन ससालणे, सालणै बाधी पालि । पीजइ पाणी परिमल निरमल वहुल विचालि ।—जयसेखर सूरि

ससि–वि. [स. शसि] घोषणाकर्त्ता ।

ससिद्ध. ससिद्धि, ससिध ससिधि–स स्त्री [स ससिद्धि] १ स्वभाव ।

(अ. म , डिं को, ह ना. मा)

२ लक्षण ।

३ प्रकृति ।

४ मदमस्त स्त्री ।

५ सम्यकपूर्ति, मोक्ष, मुक्ति ।

वि. [स. ससिद्धि] १ पूर्णतया सम्पन्न ।

२ योगसिद्ध ।

ससीत–स. पु.—ठड से जमा, ठंडा ।

ससुत–स पु. [स मसुत] विश्वामित्र का एक पुत्र ।

संसुद्ध–वि [स. सशुद्ध] प्रायश्चित के द्वारा सशोधित ।

संसै—देखो 'ससय' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—पत्र लिखावै प्रीतसू, आप धरम ची आण । डर संसै यूं छेदियौ, कर कर बीच कुराण ।—रा. रू.

संसोधक–वि [स संशोधक] १ सुधार करने वाला, ठीक करने वाला ।

२ सस्कार करने वाला ।

३ दायित्वो को चुकाने वाला ।

संसोधण, संसोधन–स. पु [स. संशोधन] १ त्रुटि, दोष आदि हटाने की क्रिया या भाव ।

२ सुधारने की क्रिया या भाव ।

३ शुद्ध एवं साफ करना ।

४ दायित्वो को चुकाने की क्रिया या भाव ।

ससोधनीय–वि [स. संशोधनीय] १ जो सशोधन करने के लिए हो ।

२ जो सशोधन के योग्य हो ।

ससोधित–वि. [स सशोधित] जिसमे सशोधन किया गया हो ।

ससोधी–वि [स. सशोधी] सशोधन करने वाला, सुधारने वाला ।

ससोभित–वि.—सुशोभित ।

उ०—दुरग चित्तोड ससोभित ठाई, ततखीण राय पहुतौ जाई ।

—वी. दे.

ससोसण–स पु. [स सशोषण] सोखने या शोषण करने की क्रिया ।

ससौ—देखो 'सासौ' (रू भे.)

उ०—१ सका छऊ अणगार नी मुझ मन उपनी सोय । नेम जिणद नै पूछ नै संसौ भाजु मोय ।—जयवाणी

उ०—जाण मती वय संसौ राजिद, तात कहूं विध तोनूं ।

—र रू.

उ०—३ घाट सुरंगौ गोरिया, आदू कहवत ऐह । पदमणिया हमरोट है, राख म ससौ रेह ।—बा दा

उ०—४ लाजाळू वागा मही, कायर कटका माहि । परसै नरक रौ पवन, सकुचौ संसौ नाहि ।—बा दा

उ०—५ ससा रोग'र दोख, जीप गुर गम सू । हरिहा दास कहै हरिराम, राज मुंहकम सु ।—अनुभववाणी

उ०—६ निरधन कै चित्या जौ धन की, धनवत फिरत अघाया । या दोऊ का मिटै न ससा, जब सतोस न आया ।—अनुभववाणी

उ०—७ दादू ससा जीव का, सिख साखा का साल । दोनौं कौ भारी पडै, होगा कौन हवाल ।—दादूवाणी

सस्करण–स पु [स] १ दुरुस्त या ठीक करने की क्रिया ।

२ सस्कार करने की क्रिया या भाव ।

३ पुस्तक, पत्रिका आदि की एक बार की छपाई ।

संस्कार–सं पु [सं] १ सुधार, दुरुस्ती ।

२ शुद्धि, सशोधन ।

३ सगत, शिक्षा, उपदेश आदि से मन पर पडा प्रभाव ।

४ पूर्व जन्म की वासना ।

संहारिओड़ो, सहारियोड़ो, संहारयोड़ो—भू० का० कृ०।
संहारीजणो, सहारीजबो—कर्म वा०।
संघारणो, संघारबो—रू० भे०।

सहारभैरव–स. पु [सं.] १ भैरव के आठ रूपों में से एक रूप, काल रूप, काल भैरव।
२ चौसठ भैरव के अन्तर्गत एक भैरव।
रू. भे.—सघारभैरव।

संहारियोड़ो–भू. का. कृ.—१ संहार किया हुआ, मारा हुआ. २ नाश किया हुआ, ध्वंस किया हुआ।
(स्त्री सहारियोड़ी)

सहारू–वि —देखो 'सहार' (रू. भे.)
उ०—थलचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाझइं पुण तं सवि वार।
पग जाति जीव न लाभइ पार, अनवस्तु तीह नउ हूइ संहारू।
—जयसेखर सूरि

सहित—देखो 'सहित' (रू भे)

सहिता–सं स्त्री [सं.] १ वह प्राचीन धार्मिक ग्रन्थ जिसका पाठ प्राचीन काल से चला आ रहा हो।
२ राजकीय अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत किया हुआ नियमों, विधियों आदि का सग्रह जैसे—भारतीय दंड संहिता।
३ वेदों का वह मंत्र (ब्राह्मण नामक भाग से भिन्न) जिसके पद, पाठ आदि निश्चित हैं।
४ धृतराष्ट्र की पत्नी जो सुबल राजा की कन्या थी।

सहिताकल्प–स पु [स.] अथर्ववेद का एक संहिता विभाग।

सहितासव, सहितास्व–स. पु. [सं. संहितादव] जमदग्नि महर्षि की पत्नी रेणुका का पिता एक भृगुवंशीय राजा।

सह्लाद–स. पु. [सं] १ हिरण्यकशिपु व कयाधु के पुत्रों में से एक।
२ सुमालि एवं कतुमती के पुत्रों में से एक पुत्र, राक्षस।

स–स पु [स श] १ भोजन, खाना। (एका)
[स. श:] २ शिव, महादेव। („)
३ हिमालय पर्वत। („)
४ रग। („)
५ सदेह, शक। („)
६ कल्याण-मगल। („)
७ तालाब, सरोवर। („)
८ तीर, बाण। („)
९ सूर्य, सूरज। („)
१० पैर, पद। („)
स. पु. [सं. ष] १२ नाश, संहार।
१३ मोक्ष, मुक्ति।
१३ शेष, बाकी।
१४ अवसान।
१५ आकाश, नभ। (एका)
१६ विष्णु का नाम। („)
१७ इंद्र। (ना. मा)
[सं. स] १८ सर्प, साप। (एका)
१९ पक्षी। (एका.)
२० पवन, वायु। („)
२१ छन्द शास्त्र में सगण गण का सूचक शब्द।
स. स्त्री.—२२ पार्वती, दुर्गा। (एका)
२३ सरस्वती नदी। („)
२४ लक्ष्मी। („)
२५ शिक्षा।
२६ शिवा। („)
२७ वाणी। („)
२८ आवाज, ध्वनि। („)
२९ दीप्ति, चमक। („)
३० जीवात्मा।
सर्व.—१ उस।
२ सब।
३ वह।
उ०—१ जउ साहिब तू आवियउ, मेहा पहलउ पूर। बिचड वहेमी वाहळा, दूर स दूरैं दूर।—ढो मा
उ०—२ इम भणी गुटि दिढ सारदामत्र पच्छउ स परिणिवा चालीउ ए। सुहतानंदन परिरीय वेस सयणह मदिरि मदिरि आवीउ ए।—हीरणाद सूरि
उ०—३ स मणइ मुणिन प्रयोजन भोजन लीहीसइ लोक। तुजस उत्सवि ईट आंमिख स्वामि ग्वपइ तउ सोक
—जयसेखर सूरि
वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम।
२ अदृष्ट।
अव्यय—१ एक निरर्थक अव्यय जो जोर देने के लिए या पाद-पूर्ति के अर्थ में प्रयोग होता है। गाने वाले कभी कभी छद के बीच में इसे जोड देते हैं।
उ०—१ उत्तर आज स उत्तरइ, पड़सी वाहळियाह। ओलैं प्री गलियड, सूधा काहळियाह।—ढो मा
उ०—२ जेठ महीनों लागियो स ढोला।—लो. गी.
उ०—३ मारू नू आव्यड सखी, आज स काइ उदास। कांम चित्राम जु दिट्ठ मइ, रूप न भूलइ तास।—ढो. मा.
उ०—४ हरीया बंदा क्या करै, साईं करै स होय। जीव जिंद जिन सिरजीया, तिन्ह का कीया जोय।—अनुभववाणी
२ तक, पर्यन्त।
उ०—पिंगळ पूगळ आवियउ, देसैं थयउ सुगाळ। तेणि न रासी

५ याददाश्त।
सस्रय-स पु [स. सश्रय] १ शरण, आश्रय।
उ०—सवळा सस्रय पायकर, आणे मूढ अनीत। हिरणाकुस लका-पति, भवन किया भयभीत।—नारायणसिंह सादू
२ अभिसधि, मेल, सुलह।
३ शरणस्थल, घर।
सस्रस्ठ-स. पु [सं. ससृष्ट] एक पर्वत का नाम। (पुराण)
सस्रस्टि-स स्त्री. [स. ससृष्टि] १ मिलावट, मिश्रण।
२ परस्पर सम्बन्ध, लगाव।
३ घनिष्ठता।
४ एक से अधिक काव्यालकारो का ऐसा समन्वय (मेल) जिसमे सब परस्पर स्वतत्र हो, एक दूसरे के आश्रित न हो।
सस्रुत-वि [स. मश्रुत] स्वीकृत, अगीकृत। (डि को)
सस्रुत्य-स पु. [स सश्रुत्य] विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्रो मे से एक।
सहस—देखो 'सहस्र' (रू भे)
सहसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे)
उ०—कळामेर सामद्र लोपै न उगै सहसकर, घू चळै प्रळै व्है जाय धरनी। सुमरिया जेज किम थाय छै सुदरी, जाय छै विरद कर साय जननी।—भोपाळदान सादू
सहसदोयचख-स पु [स द्विसहस्रचक्षु] शेषनाग। (डि को)
सहसदोयस्रवण-स पु. यौ. [स. द्विसहस्रश्रवण:] शेषनाग। (डि को)
सहट-स पु [स. सघट प्रा० सहड] वैठक।
उ०—कामालय अट्ठमी तणी, साभइ सहट भणेवि। राजकुअरि नीय घरि, गई ऊलट अग धरेवि।—हीराणद सूरि
सहतागद-स पु. [स] ऐरावत कुलोत्पन्न एक नाग।
सहतापन-म. पु [स] जनमेजय के सर्पसत्र मे जलमरा एक ऐरावत कुलीन नाग।
सहतासव, सहतास्व-स. पु [स. सहताश्व] इक्ष्वाकुवशीय वर्हणाश्व राजा।
सहति-स पु [स] समूह। (डि. को)
सहन, सहनन-स पु. [न] मनस्यु व सौवीरी के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, पुरुवशीय एक राजा।
सहरण-स पु [न] १ पूर्णता।
उ०—मोह तिमिर भर संहरण भा मडल प्रभु पूठि। झर-झत्र तेज-कइ छत्रकनउए, जिम रवि जलधर वूठि।—स कु
२ एकत्र करना, सग्रह करना।
३ नाश, सहार।
संहरणो सहरवो—देखो 'सघरणो, सघरवो' (रू भे)
उ०—इह घरि अछइ मत्रु लाख तणउ छइ धवलहरो। माहि पउ-ढाडउ सत्र एकसरा, सवि सहरउ।—सालिभद्र सूरि
सहरणहार हारो (हारी), सहरणियो—वि०।
संहरिओडो, सहरियोडो, सहरयोडो—भू० का० कृ०।
सहरीजणो, सहरीजवो—कर्म वा०।
सहरत्ता-वि. [स. सहर्त्ता] नाश करने वाला, सहारकर्त्ता।
उ०—देवी जगत करतार भरता संहरता देवी चराचर जगग सव मे विचरता।—देवि.
संहरस-स पु [स सहर्ष] १ रोमाञ्च, पुलक।
२ प्रतिस्पर्धा।
३ रगड, मसलन।
४ हर्ष, आनन्द।
संहसपात-स पु [स सहस्र+पत्र] कमल। (डि. को)
सहसफण-स पु. [स सहस्र+फन] शेषनाग।
सहार-स. पु [स.] १ नाश, ध्वस।
२ प्रलय। (डि. को.)
३ सहार करने या मारने की क्रिया।
उ०—आकासे वार किता तै आय, विधूसे त्रिपुरा, अम्रत पाय। वेदा री वाहर केती वार, सभे जुध कीध दईत सहार।—ह र.
४ सचय, सग्रह।
५ एक नरक का नाम।
६ एक भैरव का नाम।
वि.—१ नाश करने वाला, विध्वसक।
उ०—नमो कुभेण तणा भूज काळ, नमो कुळ राकस वस खैगाळ। नमो मकराख्य इन्द्रजीत मार, नमो सब राकस वस-सहार।
—ह. र
रू भे —सघार, सिंहार, सहारु।
सहारक, सहारकारी-वि. [स.] विध्वस करने वाला, सहार करने वाला, नाशक।
रू. भे.—सघारक।
सहारण-स पु [स] सिंह, शेर। (ना डि को)
संहारकाळ-स पु [स. सहारकाल] सृष्टि के विनाश का समय, प्रलय-काल।
संहारणो, सहारवो-क्रि स. [स. सहारण] १ मारना, सहार करना।
उ०—१ सत्रा दळ मूगळ सैचद सेख, वणै ग्रह बाज कबूतर वेख। सरा अप्रमाण पठाण सहारि, लिया कर सेल, नरा ललकारि।
—मे. म
उ०—२ धरमी नर ऊपर कोमळ कर धारै, पापी पुरसा नें सदव्रत संहारै। तदऽनुग्रह बिन हा ग्रह ग्रह तूती, जिण तिण विग्रह मे निग्रह दी जूती।—ऊ. का.
उ०—३ लोयण धूम्र लुळाय, सुभ निसुभ सहारचा। रकत वीज आरोगि, मुड चडारिक मारचा।—मे. म.
२ नाश करना, ध्वस करना।
सहारणहार, हारो (हारी), संहारणियो—वि०।

घोवणि अधम जाति मालणि सग टालैं ।—नळदवदती रास

२ देखो 'सैंण' (रू. भे)

सइयद, सइयद्द—देखो 'सैयद' (रू भे)

उ०—१ सिंध मे लकारी सइयदा री मानता विसेस है।

—बा. दा. ख्यात

उ०—२ अबदुल्ला आरत हियैं, पीडाणो सइयद्द । महाराजा 'अजमाल' नूं, दाखैं वेध दरद्द ।—रा. रू.

उ०—३ भोपत जी पातिसाह जी रैं साथि । राजि साथि सइयद हासिम कासिम नू जोधपुर दे अर राजि साथि विदा किया ।

—द वि.

सइयर—देखो 'सखी' (रू भे)

उ०—राई वेगइ चढि आवौ विलम न करौ वार । सोल सइयर रूकमणी सरीखी लेज्यौ साथ ।—रूकमणी मगळ

सइर, सइरि, सइरू—देखो 'सरीर' (रू. भे.)

उ०—१ कूटियइ ए अणाह पुरिद्री, उवली सिथिल सइर सलिद्री। विप्र भूपति सभा परि दिठी, देवि कीचक तणा कुळ रूठी ।

—रुकमणी मगळ

उ०—२ किमइ निगोदह जीव नीसरइ, ववहार रासि तै जाई नय वरइ । असख सइर तणउ करइ सहार, जीवइ जीव करइ आहार।

—वस्तिग

उ०—३ सघण सूकडि सइरि सु सीचीइ, पवण पूरिहिं वीजण वीजीइ । कमल नैं दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ मिलीउ जरसिंघु जायववइरि, सह लगउ एस हूइ सइरि । दुरयोधनु अति मत्सरि चडीउ, जाई जरासिंध पाए पडीउ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—५ सोसइ सइरू महातपि, आतपि रहइ गभीर । मोह तणा जगबधव वध वछोडइ धीरू ।—जयसेखर सूरि

सइलोट—देखो 'सैंलोट' (रू भे.)

सइस—देखो 'सईस' (रू भे.) (डिं को)

सई—१ देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—१ अब मीरा मान लीज्यौ म्हारी हाजी थानैं सइयां बरजै सारी ।—मीरा

उ०—२ सइया म्हारी ए हरियाळौ बरसाईजै, अज बरसाइजै कल बरसाइजै, इयू म्हारा साजन इघू ।—लो गी.

उ०—३ वनडो उतरचो बाग मे ए सइयां मोरी, कै मिस निरखण जाम्या ।—लो गी.

२ देखो 'सती' (रू. भे)

सईक-वि.—सौ के लगभग ।

स. स्त्री.—सौ की सख्या ।

सईकड़ो—देखो 'सैंकडो' (अल्पा, रू भे.)

सईकौ-स. पु.—सौवा वर्ष ।

उ०—हरीया समत मतर से वरस सईकै जान । तिय तेरस आसाढ वदि सतगुर परी पिछान ।—अनुभववाणी

रू भे —सइको, सैंकौ ।

सईड—देखो 'सडड' (रू भे)

सईद, सईयत, सईयद-सं. पु —१ चाकर, टहलुआ ।

उ०—दरबार री सईयत तुरक था तिण री डाढी सुवरावता, काना मे मोती घालता ।—पदमसिंहजी री वात

२ देखो 'सैयद' (रू. भे.)

उ०—ऐसै सवूंका सिरपोस सईद आवद अलीखान सो आवधअलीखान कैसा । दिलावर खान का फरजन दिलावर खान जैसा ।

—सू प्र.

सईल—देखो 'सैल' (रू. भे.) (अनेका.)

सईस-स. पु. [अ. साईस] घोडे की देखभाल व सेवा करने वाला व्यक्ति जो घोडे को घास दाना आदि देता है ।

उ०—भाणू रावळै आप सईस नै उण घोडी री पूरी पूरी भुळावण दे दी । बारै महीना मू घोडी ठाण दियौ तौ भाणू रैं सिवाय किणी नैं जाच कोनी ही कैं वछेरी सूरजमुखी है । वौ उण री आपरा जीव विचै ई घणौ वत्तौ ध्यान राखतौ ।—फुलवाडी

रू. भे.—सईस, सहीस, साईस ।

सईह—देखो सही' (रू भे.)

उ०—रच सदन चित्र सरूप, अति रग रग अनूप । जस वाणि वदण जीह, उचरत विरद सईह ।—रा. रू.

सउं, सउ-सर्व —१ वह ।

उ०—१ मारू नू आखइ सखी, एह हमारी बुज्झ । साल्हकुवर सुहिणइ मिल्यउ सुदरि सउ वर तुज्झ ।—ढो मा.

उ०—२ जळ मांहि वसइ कमोदणी, चदउ वसइ अगासि । जउ ज्याही कइ मन वसइ, सउ त्याही कइ पासि । —ढो मा.

२ देखो 'सहित' (रू. भे)

उ०—१ पडीउ चचलि नयणि निरखइ वयणु बोलइ सउ सही । पंच पडव सहित पहुतु तउ पडु नरवरू हइ सही ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ आणीए सभामिसेण पडव पचइ राह सउ ए । कूडिहिं ए दीजइ मान वयरिहिं माडइ जूवटउ ए ।—सालिभद्र सूरि

३ देखो 'सौ' (रू भे.)

उ०—१ इहा तउ सुयक्खध एक अति भलउ रे, एक सउ एक अध्ययन उदार रे ।—वि. कु

उ०—२ सिंधु परइ सउ जोयणा, खिविया विजळियाह । ढोलउ नरवर सेरिया, धण पुगळ-गळियाह ।—ढो मा.

४ देखो 'सरब' (रू. भे)

उ०—१ ते रसीया मन वसीया विनयचद्र नइ जी, सउ माहि मिलइ जोया एक कय दोय हो ।—वि. कु

उ०—२ नाभिराय मरुदेवी नदन युगलाधरम निवारण हार । सउ

सासरइ, अजे स मारू वाळ ।—ढो. मा.

उ०—२ रीसाविउ तै मेल्हइ भाल, सिर घूणइ मुखि पडइ लाल। खूणइ पाडिउ खूखु करइ, अजी स डोकर कहीअ मरइ ।—वस्तिग

३ शब्दो के आरभ मे कुछ विशिष्ट या सहित का अर्थ उत्पन्न करने के लिए आने वाला एक उपसर्ग जैसे सकाम, सवेग, सजीव सस्नेह आदि ।

सइ–स पु [स. शत] निन्यानवे के बाद आने वाली सख्या, सौ ।

उ०—१ वाहण जेहने पाचसै, वलीय पाच सइ हाट। घर गोकुल विण पाच सै, तितला सकट सुघाट ।—वि कु.

उ०—२ तुरीय सहइस पचास दोय सइ महगळ मता। राजकुली छत्तीस सोहड भड सेव करता ।—प. च. चौ.

सर्व —१ सब, समस्त ।

उ०—१ इण भाति सइ सखि आयउ वरखाकाल, सउ तउ वरनत कवि सुविसाल ।—वि कु

उ०—२ विरह सइ पीरी अति अधीरी, डरत विरहनि जोर। उल्लसित हीयरौ करि पपीयरौ, करत प्रियु प्रियु जोर ।—वि कु.

२ स्वय, खुद ।

उ०—१ आडवर मोटइ करी, राजा लीधी दीख, मुनिवर। स्नीवीर सइ हथि दीखियउ सूधी पालइ सीख, मुनिवर।—स कु

उ०—२ साभळि सामी अम्ह घरसूत्तो तुम्ह घरि अछइ गगापूत्तो। मइ बेटी जउ तुम्ह देवी, तउ सइ हथि दूख भरेवी ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ धनदिहि सइ हथि थापिय, वापी अ वर आरामि। मणि कण धण सपूरिय, पूरिय द्वारका नामि ।—जयसेखर सूरि

उ०—४ गाइ तै तिहा कचण लही, तै लिपि मानी साची सही। विद्याविलास कीउ परधान, राजा सइ हथि दिइ बहु मान।

—हीराणद सूरि

रू. भे —सइ।

सइण—देखो 'सैण' (रू भे)

उ० —सहज सुरगा हो चगा जिनजी, साभली विनय तणा जै वयण । हू तुझ चरणे हो आयो ध्यायो, हेज सु साचो जाणी सइण।

—वि कु

सइंधु–स पु.—सिर का आभूषण विशेष ।

उ०—सइधु सिरि सिंदूरिउ, बाधिउ मणि बत्रीस। वयठा जाणे सूर ससि, सहस फूल छइ सीस।—मा का प्र

सइफळउ—देखो 'सैफळौ' (रू भे.)

सइभरि—१ देखो 'सभरी' (रू भे.)

२ देखो साभर' (रू भे.)

उ०—गोल्हण भणइ पातिसाह सुणउ, मानइ नही बोल आपणउ। साम दाम विधि च्यारि उपाय मइ साभल्यउ सइंभरि नउराय।

—का दे प्र

सइवर, सइंवरि—देखो 'स्वयवर' (रू भे)

उ०—१ पडु नरेसरो सइवरि जाइ हथिणाउपुर सचरए। राइ दलै सरिसा कूयर लेउ तारै सु जिम चादुलउ ए ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ अनु कठि कुसुमह माल किरि सु मयणि आपणि आवीइ। कोइ इदु चदु नरिंदु सइवरि पहुतु इम सभावीयइ।

—सालिभद्र सूरि

सइंवल–स. पु.—एक प्रकार का वृक्ष विशेष ।

उ०—अतर सइवल कुसुम कमल दल अमृत वेल विख बेली। ईवडो अतर हरि सिसिपालइ, भणइ पदमीयो तेली।

—रुकमणी मगळ

सइहणौ, सइहवौ—देखो 'सहणी, सहवौ' (रू. भे.)

उ०—सूनी सेज विदेस पीव, दोई दुख 'नल्ह' क्यु सइहणां जाई।

—वी दे

सइ—१ देखो 'सइ' (रू भे)

उ०—१ सिद्धि जेहि सइ वर वरिय त तित्थयर नमेवी, फागुवधी पहुनेमिजिणगुण गाएसउ केवी ।—राजसेखर सूरि

उ०—२ तसु पुत्री ऊमा देवडी जाणि विधाता सइ हथि घडी।

—ढो मा.

उ०—३ बीजा दिवसइ दिणयर उदइ, ध्यान प्रभावि आव्या सइ। अछइ सोवन्नीकावज हाथि, एकु पुरुखु आविउ छइ साथि।

—सालिभद्र सूरि

उ०—४ द्रुपदीवसन ना सइ काढ्या, माहरा मद तणा वन वाढ्या। पाधरै नृप तणे घरि कीधउ, कीम मूं पुरुख नाम ज दीधउ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—५ मारूवणी सइ मुखि कह्या, दूहा मिसि सदेस। मन मारू मेळावा करइ, पधारउ उणि देसि ।—ढो मा

२ देखो 'सती' (रू. भे)

उ०—गत प्रभाथियो ससि रयणि गळती, वर मदा सइ वदन वरि। दीपक परजळतौ इ न दीपै, नासफरिम सू रतनि नरि ।—वेलि

सइकौ–स. पु —देखो 'सईकौ' (रू. भे.)

उ०—सत्तासै सइकै समे नर दाण काजै सिर दीयो। मुकती पहुतो कह केसो, ससारि वड साको कियो।—केसो कवि

सइड–स पु —१ साड।

२ बैल।

३ प्रहार, चोट ।

रू भे —सईड।

सइण—देखो मैण' (रू. भे)

सइद —देखो 'सैयद (रू भे.)

सइमुक्ख सइमुखि—क्रि. वि.—सम्मुख, सामने।

सइयण, सइयणि–स स्त्री.—१ दर्जी जाति की स्त्री, दरजन ।

उ०—भणइ भीम, 'दवदती' वछि नलमिउ नेह पाले। सइयणि

उ०—सत्रहसैं सतियास सक, ध्रुव ग्रहमदपुर धाम। वर कवि करण वखाणियौ, सुभटातणौ संग्राम।—वि. स.

६ वीर, योद्धा।

उ०—१ साथै भाटी सूरमा, 'सवळै' जिसा सहास। 'सवळै' जोट भतीज सक, 'तेजौ' नारायणदास।—रा. रू.

उ०—२ 'केहर' साहा भजणा, सक राखण कथ्था। विहु वावळ खागा ग्रडै, भुज डंड समथ्था।—द दा

७ देवता।

उ०—सक कोडि तेतीस चरण राखै उर उपरि। लिखमी चाहै चरण परम रीजै इहिंडी परि।—पी ग्र.

८ तातार देश का पुराना नाम।

९ तातार देश की एक प्राचीन जाति।

१० मुसलमान, यवन।

उ०—विण त्रीट रीठ रडु विखम, हुम तम उधम हैमरा। सक फौज कीध सका सहित, जाण क लंका वदरा।—रा. रू.

११ भय, डर।

[ग्र शक] १२ संदेह, भ्रम।

वि.—१ समर्थ सामर्थ्यवान।

उ०—१ जग जनक धनक हर हरण करण जय, चत नरमळ नहचळ चरण। ग्रकरण करण ममरण ग्रघ ग्रणघट, सक रघुवर ग्रसरण सरण।—र ज. प्र

उ०—२ सक मागळियौ 'तेजसी', ग्रन 'माहवौ' ग्रवीह। सकळ निवड भड ग्राठ सौ, धावड ठाकुर सीह।—रा रू

२ साफ, निर्मल।

सर्व —१ सब, समस्त।

उ०—१ सक भड वचन सुणेह, काहुळियौ वीरम कमध। सयद तणौं सिर सेह, ग्रावै जाण ग्रग्राजियौ।—गो रू.

उ०—२ पूरब पछम धरा दध पारू, दिखण तणौ खूटौ वळ दारू। सक उतराध धरा तौ सारू, सछर धरै किण उपर मारू।

—चतुरौ मोतीसर

रू भे —सक्क।

सकड-वि —जवरदस्त, शक्तिशाली। (ना डिं को)

सकज—देखो 'सकज्ज' (रू. भे)

उ०—१ कुग्रर किरणाळ सुपह सखाल विरद उजुग्राळ सकज कमध।—ले. पि

उ०—२ साथै मेडतिया सकज, 'ग्रखई' गोकळदास। पूराणौ हर-नाथ पिड, पूरे साथ प्रकास।—रा रू

उ०—३ सकज वाहतौ सेल ग्रणठेल नव साहसौ, खेलियै खेल खत्रवाट रौ खूब। छोह लागे 'जसै' ग्रोरियौ छत्रपति, मोकळा लोहरै वोह 'महबूब'।—महेसदास ग्राढौ

उ०—४ तोपा रणताळ रै, सकज भूपाळ सवारी। खै ग्रकाळ वाटणी, काळ वाटणी कटारी।—मे. म.

उ०—५ रै रेणारी रावता, कोटिक रहो सकज। पही करै विजो-यण, सो धण मेरहै भ्रज।—बो. मा

सकजापण, सकजापणौ-स पु.—शक्ति, पराक्रम, शौर्य।

उ०—भारथ पारथ ज्यूं भिड़ै, सकजापण री सीम। गुमर न दूजा चो गिणै, एहो स्याम प्रजीम।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

सकजौ—देखो 'सकज्ज'।

उ०—घोरा कु सकजा गिनै, ग्रापा होय निकज्ज। हरीया हरिजन जाणियै, जिमी राह की रज्ज।—ग्रनुभववाणी

सकज्ज-स पु —हाथी, गज।

वि —१ समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—गोपाळी सिवराम री, साथै जोध सकज्ज। एै सीची ऊची धरण, करण जतन कमधज्ज।—रा. रू.

२ कार्यकर्ता।

उ०—१ हाथाळौ ऊहड 'हरी', गळ गज हदी लज्ज। 'इंदौ' भोज महाबळी, 'मामौ' 'देद' सकज्ज।—रा. रू.

३ कुशल कार्यकर्ता।

उ०—१ कमधज्ज सकज्जां कारणा, वळा भुजा मार्थे कवण। विचित्राण घणी इम विग्रहै, गहियौ किर पडतौ गयण।—रा. रू.

उ०—२ 'रूपौ' कुंभकरन्न री, कुडाग्रह कमधज्ज। रहै गुढौ कर सद्धरौ, 'ऊदा'हरौ सकज्ज।—रा. रू.

४ काम का।

उ०—लघुवेसा 'देवौ' 'दलौ' सुत जसकरण सकज्ज। ग्राप भळा'ण नेम' नैं, नेम लियौ धर कज्ज।—रा रू

५ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—ग्रचळ ज्ळधर ध्यान उर कर गज दान सकज्ज। मीठा साचा वयण मुख, लाडू लोयण लज्ज।—वा. दा

६ वीर, बहादुर।

उ०—सुत 'कुंपळ' ऊद' हरवळ सकज्ज। 'ग्रमरेस' ताम कीधौ ग्ररज्ज।—सू. प्र

क्रि वि —लिए, हेतु।

उ०—१ सीहै जाइ मैंदेस, कथन कहियौ कमधज्जा। मार लियौ मारका, किसा पूरदीप सकज्जा।—गु रू ब.

उ०—२ धनवत कोडियधज्ज, सुजि दीप लाख सकज्ज। दुतिवत दौलतिदार, पौसाक तास ग्रपार।—सू प्र

उ०—३ बहे दहुवै वळ पेस कज्ज, संग्राम दहू वळ स्याम सकज्ज। दहू वळु रट्टत राम खुदाय, पलट्टत ग्रात दहू वळ पाय।—मे म

रू. भे.—सकज, सकजौ, सकाज, सकाजौ।

सकज्जाई—बहादुरी, वीरता।

उ०—धानक-धारी वळाकारी मालहारी मद्द ए। सूरा सिपाई तुग ताई सकज्जाई हद्द ए।—गु रू ब.

वेटा नै राज सौंप करि, श्राप लियौ सयम व्रत धार ।—स कु.

उ०—३ लाधा लाख तुरीय सहिस, गयमर मदिमाता। मणि माणिक सोवन्न असख्य, सउ गाम वसता ।—नळदवदती रास

उ०—४ वलि करी राज सौ श्रापीऊ ए, नलराजनइ भार सउ थापीउ ए। देइ सीखामण निरवद्य तात, 'वत्स' वीसस्या नर वर मकरी घात ।—नळदवदती रास

सउकि, सउकी—देखो 'सौक' (रू. भे.)

उ०—१ कोइलि तुं काली बली, बालि म-बलतु अग। भूडी तू भाखि भणुं, सउकि-सरिसा भग ।—मा. का. प्र.

उ०—२ रूक्मिणी नइ सत्यभामा राणी, सउकी नउ सबल सताप जी। खमत खामणा किया खरै मन, व्रत लेवा प्रस्ताव जी।

—स कु.

सउच—देखो 'सौच' (रू भे.)

उ०—१ सउच न्हाण मुख साधि सव, राचै राजस राह। क्रम बैठो संभ्या करण, दूदा कवर दुबाह ।—व. भा.

उ०—२ सउच करो दतधावन, स्नान की तयारी। वस्त्र श्रोर पुस्पमाळ, तुलसी श्रति प्यारी ।—मीरा

सउण—देखो 'सुगन' (रू. भे.)

उ०—चवदस वरत करई भूपाळ, सामही छीक हुणंइ कपाल। चउरास्या सहू बोलाय, सउण विचारै वीसलराय ।—बी. दे

सउणी—देखो 'सुगनी' (रू भे.)

सउत—देखो 'सौत' (रू. भे.)

सउतेलौ—देखो 'सौतेलौ' (रू भे.)

सउथउ-सं. पु.—स्वस्तिक ।

उ०—श्रगार तणी वेटी दाहज्वर तणी बहिनि, साप माथइ सउथउ फाडइ, जिसी केवलिहि हालाहलि विखि जडी हुइ, इसी ढढ स्त्री।

—व. स

सउदागर—देखो 'सौदागर' (रू भे.)

उ०—पिंगळ राजा नू मिल्यउ, सउदागर तिणि वार। राज दुवारइ तेडियउ, श्रादर करै श्रपार ।—ढो. मा

सउरी-स. पु [स शौरी, सौरी] यमराज। (श्र. मा.)

सउलिय-स पु.—एक देश का नाम। (व. स.)

सउवाणी—देखो 'साउवाणी' (रू. भे.)

सउहाणौ, सउहावौ-क्रि. श्र —देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू भे)

उ०—पहिरनु चोळी नवरगी, बावन चन्दन श्रग सउहाई।

—बी. दे.

सउहायोडौ-भू का. कृ.—देखो 'सुहायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. सउहायोडी)

सऊ—देखो 'साऊ' (रू. भे.)

उ०—काधमल्लही सऊ जोध रिणमल तणै घरि। पिडि श्रचल्ल श्रणचल्ल श्रणपल्ल ठल्ल गज ढाहण तणी परि ।—गु. रू ब.

सऊकार—देखो 'साहूकार' (रू. भे.)

उ०—तद इतरा सिरदार वा कामदार वा हजूरी सागै हुश्रा। त्यारी याद—काका काधल जी, काका रूपो जी, काका माडणजी, काका मंडळी जी,.........कामदारा मे वैदलाली लाखणसी कोठारी चौथमल वछावत वरसंघ प्रोहित विक्रमसी सऊकार राठी सातो जी ।—द. दा.

सऊर-स पु. [श्र शऊर] १ योग्यता।

२ ढंग, शिष्टता।

३ बुद्धि, श्रक्ल।

उ०—पण सऊर वाळी इसी ही कै कदे-ई मेली गिन्दी को दीखती ही नी ।—वरसगाठ

रू भे —सहुर, सहूर।

सऊरदार-वि.—१ योग्यता वाला।

२ शिष्टता वाला।

रू. भे.—सहूरदार।

सऊवाणी—देखो 'साउवाणी' (रू. भे.)

सश्रोध, सश्रोधौ-वि. १—कुलीन, उच्च कुल वाला, कुलवान।

उ०—१ श्रवर सकौ खीची रुह श्रगै, जुध कमधा श्रागळ छळ जगै। जोध सश्रोध वस जोगावत, राजी देख हुवै मन रावत।

—रा. रू

उ०—२ त्या डोळी त्यारी कियौ, करै श्रगाऊ वात। बीद सश्रोधा चीतियौ, जोधा हृदौ छात ।—रा रू

२ खानदानी।

उ०—इंद्रभाण दळ रूप सश्रोधां, 'जोध' तणौ श्रागळ छळ जोधा 'रूपै' जिसौ इसौ रिण वेळा, भुज किर मिळै गयण चै भेळा।

—रा. रू

३ पद के श्रनुसार।

उ०—मारू जोधा रिणमला, भळे सश्रोधां भार। जाण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार ।—रा रू.

सकंद—देखो 'स्कंद' (रू. भे.) (श्र मा; ना. मा, ह ना. मा.)

सकंदछट—देखो 'स्कदसस्ठी' (रू भे.)

सकदमाता—देखो 'स्कदमाता' (रू भे.)

सकंदवार, सकदावार, सकधवार, सकधावार—देखो 'स्कधावार' (रू. भे) (श्र मा; ह. ना मा)

सक-स पु [स. शक] १ एक प्राचीन राजवश।

२ एक प्राचीन राजा शालिवाहन का नाम।

३ शालिवाहन द्वारा चलाया गया शक सवत।

४ सवत।

उ०—गज नव बारह श्रब्द गत, सक विक्रम सवध। दिन नवमी श्रासाढ वदि, मीणा तेडि मदध ।—व. भा.

५ वर्ष।

उ०—५ कूडै भेळा बैस करि जपै सकति को जाप। हरीया अतर ऊपजै, सासा सोग सताप।—अनुभववाणी

उ०—६ सिधव सरळ साभि सीरोही, सकति सभू चौ करिवा रोव। अरि लोही ओभडा वतबग, देखै हेत कमध हरदेव।

—प्रतापसिंघ सत्रुसालोत रौ गीत

उ०—सुख प्रगट्यौ तूठा सकति, भड नवकोटा भाग। दिल पाता जागी दसा, असहा लागी आग।—रा रू

उ०—८ सिव नै सिसहर निलै, सकति नै सीह चडन्नी। बामण अनियै वळै वाच बळ राजा दीनी। रामचद नै भीच हणु मुह आगळ कीधौ। थावर नै बारमौ, अघड नै अम्रत पीधौ।

—गु रू व.

उ०—९ जरख रीछ वडुाख, सिवा सत लस्स मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।—गु रू ब.

उ०—१० सिव सकत्ती सम मुगती सिव मभि सकति सकति सिव मभै। आतम सकति सकति सिद्धी, सिव सकति पिंड ब्रहमडी।

—गु. रू व

उ०—११ तउ आठमइ दिवसि कन्हु मन माहि विमासइ मेल्हीउ सिल्लहिं सकति कुंअरु उत्तरु रणु पाडीउ। ताम तिखडीय तणीय बुद्धि तब कान्हि दिखाडीउ।—सालिभद्र सूरि

सकतिपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू भे.)

सकतिपुरौ—देखो 'सक्तिपुरौ' (रू भे)

सकतिभू—स पु. यौ [स शक्ति+भू] कार्त्तिकेय, षडानन। (ना मा)
रू. भे —सकतीभू।

सकतिवत—वि —शक्तिशाली, बलवान।

उ०—उलभाय तन मन आप आपमैं, विहत सीत रुखमणी वरि। वाणि अरथ जिम सकति सकतिवत पुहप गद गुणगुणी परि।

—वेलि

सकतिहथौ—वि.—हाथ मे शक्ति (साग) नामक अस्त्र रखने वाला।

उ०—'पातल' तणौ 'जसौ' पूत्राळो, 'भाखर' रिदै' तणौ भुरजाळो। 'मान' सुजाव सवाई' मारु, सकतिहथौ जवना पति सारु।

—रा. रू

सकती—१ देखो 'सक्ति' (रू भे) (अ मा, डिं. को)

उ०—१ अघ जीव री आख ओळखण सकती आया। लख पनग मणि लाभ, पाख गति पछो पाया।—मुरारीदान

उ०—२ सकत्या लावौ साथ मै, भाफ भूल भमेल। करि साजा ईंदर कवरि, खुडद रचावौ खेल।—मे म

उ०—३ सागर सघू इदरा सकती, जननी धापू जाई। उगणीसै चोसट्टा वाली, विपरा साल बताई।—मे. म

२ देखो 'सख्त' (रू भे)

उ०—सकती वाघै वीटुली, ढीली मेल्है लज्ज। सरढी पेट न लेटियउ, मूध व मेळउ अज्ज।—ढो. मा.

सकतीधरण, सकतीधारण, सकतीधारी—स. पु. [स. शक्तिधारिन्] गरुड। (अ मा.)

सकतीपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

उ०—भर सकतीपुर चै साम प्राण सुरताण सकायौ। गाजै घड गज रूप चीत आलम चमकायौ।—नैणसी

सकतीपुरौ—देखो 'सक्तिपुरौ' (रू. भे)

उ०—१ सकत अभागै तोलिया, सकतीपुरा 'मुरार'। बीज भडदी सारखा, कै सिवहदी रार।—रा रू.

उ०—२ चतुर कहै सकतीपुरौ सुधरै तौ बळ स्याम ऊखेळौ वाघ इळा, भेळौ लियै सग्राम।—रा रू

सकतीभू—देखो 'सकतिभू' (रू. भे.)

सकत्त—१ देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—गावै जस नित्त सकत्त गणेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह र

२ देखो 'सख्त'।

सकत्ति सकत्ती—देखो 'सक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ बुझै कुण नाथ तुहाळा वग सकत्ति रुद्र न मूरत्ति न लिंग।

—ह. र.

उ०—२ माया सारी सावटी आपै आपण, सग रहौ अंकौ सकत्ति जोगमाया जाण।—गज-उद्धार

उ०—३ मद मदिरा रस मत्ती, रत्ति आपाण अग अहरत्ती। करत विलास सकत्ती चालराय रूढ चालकना।—किरपाराम

उ०—४ रगत पिद्ध वळि लिद्ध, जपै जैकार सकत्ती। कियौ सकर सिंगार, रूडमाळा गळ गत्ती।—गु रू. व.

उ०—५ मत्र सकत्ती मत्र सू, ज्यौ तोडी लै जाय। अभग दुबाह दूरग यू, लेगौ साह धकाय।—रा रू.

उ० —६ 'रूप' तणौ जोडै 'रघुपत्ती', समहरि भीरी जेण सकत्ती।

—रा. रू.

सकन—देखो 'सुगन' (रू. भे)

उ०—अह्मारू सकन वरणवु पणि किस्या छइ जे सकन। डावी देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा।—व स

सकना—स स्त्री —मुसलमानो की एक जाति विशेष जो साचौर तहसील मे आबाद है।

सकनकूर—स. पु [अ. सकन्कूर] गोह की तरह का एक जन्तु जिसका रग लाल या पीला होता है। इसका मास खारा और फीका होता है, पर बहुत बलवर्द्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या रेग माही भी कहते है।

उ०—जघ अलोम अनूप जुग, नाजुकपणौ निघात। केळि करी कर कळभ कै, सकनकूर साखात।—बा दा

सकपकाणौ, सकपकाबौ—क्रि अ.—१ आश्चर्यान्वित होना।
२ हिचकिचाना।

सकट–सं पु. [स. शकट] १ गाडी, छकडा। (डि. को)

उ०—१ कोयक सकट कुसागडी, भार विसेस भरंत। धवळ पढ–प्पण आपरै, खाव लें निवहत।—वा. दा.

उ०—२ कवी कहे छे—जिण दिन सू धवळा धोरी रूपी वो वीर पुरस मारीजियौ उणहीज दिन सू अठारी आ धरती सूनी होय गई अनै सकट (गाडी) कीतरा बोझ रौ भरियोडी तथा वीरता री दातारगीरी.........।—वी स. टी.

उ०—३ घर भार अरावा अरण-धज, बेलां हमला वारणां। धुर भार सकट कट्ठ धमळ, भार वाण भारथ रणा।—सू. प्र.

२ रथ। (डि. ना. मा.)

उ०—१ अठी वीरमदेव नू जवना री मारिया जाणि ग्राम सेत्रावा हू चलाइ राठोड गोगै वीरमदेवोत आपरा वापरा वाढणहार नू बिसारि ग्निांही अपराध भाजड़ मैं भीत सकट रै हेठै सपत्नीक सूता जोइया दला नू जाइ हणियौ।—व. भा.

उ०—२ करनी मुख सूं यू कह्यौ, रख करड सकट पर। करड कियौ गिर मेर कह, ब्रह्मण्ड समोभर।

—ठाकुर जुझारसिंह मेड़तियौ

३ शकटासुर दैत्य का नाम जिसका श्रीकृष्ण ने वध किया था।

४ एक प्रकार का सैनिक व्यूह।

५ एक तौल विशेष।

रू भे—सकट्ठ, सगट, सग्गड।

सकटव्यूह–स. पु. [सं] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना विशेष।

सकटभेद–स पु [सं.] जन्म स्थान से छठे आठवें स्थान के पापग्रहो से सम्बंधित लग्नेश होता है तो जन्मपत्री मे सकटभेद कहलाता है। यह अशुभ माना जाता है।

सकटहा–स. पु. [स शकटहा] शकटासुर को मारने वाले श्रीकृष्ण।

सकटार–सं पु. [स. शकटार] नद वश के राजा महानंद का प्रधानमंत्री जिसने चाणक्य के साथ मिलकर नद वश का नाश किया।

(ऐतिहासिक)

सकटारि–वि [स. शकटारि] शकटासुर को मारने वाले श्रीकृष्ण।

सकटासुर–सं. पु [स शकटासुर] श्रीकृष्ण द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य।

रू. भे.—सगठासुर।

सकटिका, सकटी–स. स्त्री [स शकटिका] १ छोटी गाडी।

२ बग्घी।

३ गाडी। (डि. को.)

सकट्ठ—देखो 'सकट' (रू. भे.)

उ०—१ अगै अप्रवाणी वजै खग्गवांणी, कवाडी सकट्ठां कटै जाण कट्ठा।—रा. रू

उ०—२ कमाळा लदै स्रब्ब त्या द्रब्ब कोडी, सकट्ठां लठा भार ज्यों टाम जोडी।—रा रू

सकठस्थ–वि. [स.] रथ या गाडी मे बैठा हुआ।

सकणौ, सकबौ–क्रि अ.—कोई कार्य करने मे योग्य होना या समर्थ होना।

उ०—१ पातसाह राखै प्रसन, 'जेहा' तो घण जाण। मकै मदीनै मारगा, ताठ सकै कुण ताण।—वा दा.

उ०—२ तथापि रहै न हू सकू, वकू तिण त्रिया अनै प्रेम आतुरी। राजदूरि द्वारिका विराजो, दिन नेहड आडयौ दूरी। —वेलि

उ०—३ गोडा छाती मैं लिया थोडी निवास वापरी तौ उणे पग पाछा लाबा कर लिया। वो सोचण लाग्यो—इण दीवाली री'ज बात, टावरा रै नूवा कपडा ई नी आय सक्या।—अमरचूनड़ी

सकणहार, हारौ (हारी), सकणियौ—वि०।

सकिओडौ, सकियोडौ, सक्योडौ—भू० का० कृ०।

सकीजणौ, सकीजबौ—भाव वा०।

सक्कणौ, सक्कबौ, सगणौ, सगबौ, सघणौ, सघबौ—रू. भे

सकत—१ देखो 'सक्ति' (रू भे.) (ह ना मा)

उ०—१ समहर हिंदू दोय सौ, मेछ पडै सत च्यार। सकत गरज्जी रीझ सू, या वज्जी तरवार।—रा. रू.

उ०—२ जोहरी परखै जिण विध जुहार, दस चार परख विध्या उदार। वस सकत पाय ताळाविलद, 'अग्रजीत' सुतन नरलोक इद।

—वि. स

उ०—३ दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै। सकत वाम सुरराय, सोम दाहिणं सभारे।—रा. रू

२ देखो 'सख्त' (रू भे)

उ०—प्रीतकर पूरहूत ऊपर, उठै रघुबर आप। सहस भग किय चसम सहसा, सकत मेटै स्राप।—र रू.

सकतपुर - देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे)

सकतपुरी - देखो 'सक्तिपुरी' (रू. भे)

सकतमंत्र—देखो सक्तिमत्र' (रू भे)

उ०—वूझ व्यास प्रोहिता समर सूरा गुर सिक्षा। सकतमत्र सिव-कवच, विष्णु-पजर हरि-रक्षा।—रा रू

सकति—देखो 'सक्ति' (रू. भे) (अ मा)

उ०—१ अनत सकति कउ निवास, अनत मुक्ति सुख विलास। अनत वीरज अनत धीरज, अनत सुकल ध्यान री।—स कु

उ०—२ असि खडग सकति तोरण उदार, आकुसा सख चक्र सुभ अपार।—सू प्र.

उ०—३ भाणन्नदीप विगत सुण भारी विधवत सकति पूजि विस–तारी।—सू. प्र

उ०—४ साई छोडि सकति का हूवा, इन कु नही भगति का दूवा। चाडै जीभ उतारै सीसा, या सु अलग रह्या जगदीसा।

—अनुभववाणी

ग्राकृति का एक ग्राभूपण विशेष।

४ रूईदार कपडे पर की जाने वाली विशेष प्रकार की सिलाई।

सकरमक-वि. [स. सकर्मक] कर्मकर्त्ता, कर्म करने वाला।

सकरमक क्रिया-स. स्त्री यौ.—व्याकरण की दो प्रकार की क्रियाग्रो मे से एक जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता है।

सकरवाळ-स स्त्री.—राजपूत वंश की एक शाखा।

सकरांणी—१ शक्कर मिला भात।

२ देखो 'सुकराणी' (रू. भे)

सकरांत, सकराति—देखो 'सकरात' (रू. भे.)

सकराणौ, सकरावौ–क्रि. स.—१ भुनवाना (चैक, ड्राफ्ट, विल, ग्रादि विपत्र)।

२ स्वीकृत कराना।

सकराणहार, हारौ (हारी), सकराणियौ—वि०।

सकरायोडौ—भू० का० कृ०।

सकराईजणौ, सकराईजवौ—कर्म वा०।

सकरायत—देखो 'सकरात' (रू. भे.)

सकरायमाता-स स्त्री—एक देवी विशेष।

सकरायोडौ-भू का. कृ—१ भुनाया हुग्रा. २ स्वीकृत कराया हुग्रा। (स्त्री. सकरायोडी)

सकरियोडौ-भू. का कृ.—१ स्वीकृत हुवा हुग्रा, मंजूर हुवा हुग्रा २ भुना हुग्रा, भुगतान हुवा हुग्रा।

(स्त्री सकरियोडी)

सकरियौ-स पु—१ स्वर्णकारो का नक्काशी करने का लोहे का एक कीला विशेष।

२ देखो 'सकरकद' (ग्रल्पा, रू भे.)

सकरोडौ—देखो 'सखरौ' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—खूब तो पीयौ हो कवर जी सकरोडौ दारू ग्रौ ग्रालीजा।
—लो. गी.

(स्त्री सकरोडी)

सकरौ—१ देखो 'सखरौ' (रू भे.)

(स्त्री सकरी)

२ देखो 'सिकरौ' (रू भे.)

सकळक, सकलक, सकलकी–स पु [स. सकलकिन्] चद्रमा, चाद।
(ग्र मा; डि को; ना मा, ह ना मा)

वि—वह जिसके कलक हो।

सकलकित-वि—कलक सहित, कलकित।

उ०—पिण सकलकित चद्र कहावइ ग्रकलकित मुझ स्वामी। तै तउ ग्रम्रत रस नइ धारइ प्रभू ग्रनुभव रस धामी।—वि कु

सकळ-स. पु. [स सकल] १ निर्गुण ब्रह्म।

उ०—सब धरीया धारै मरै, सरै न एकौ काम। हरीया धरीयै ग्रधर कू, एक सकळ विसराम।—ग्रनुभववाणी

२ प्रकृति।

३ घास या तृण।

[स. शकलः] ४ खंड, टुकडा।

[स. सकलः] ५ सेना, फौज। (ग्र. मा.)

वि—सब, समस्त ग्रौर सम्पूर्ण। (डि. को.)

उ०—१ भुजा खत्रीवट प्रगट 'चद' सुत झळहळै, तुराटा चढै गढ विकट तोडै। सतर घट सरप सम हुवै चळवळ सकळ, जनेवा गुरड री झपट जोडै।—राव देवीसिंघ री गीत

उ०—२ कहै मानवी देव ग्रणभेव चिरता सकळ, जाण कुण सकै गोपाळ जीकौ। ऊधरै मत महिमा करै ऊजळी, निंदा कर तिरै सिसपाळ नीकौ।—ब्रह्मदास दादूपथी

उ०—३ जन लज रखण जरूरह दसरथ सुत सकळ सुजन मुखदायक। निरदल घायक समहर सत वायक, राम सरमत सुभ।
—र. ज. प्र.

उ०—४ मुड चड महिसासुर मारै, सुभ निसुंभ सकळ सहारै। जनमै रक्तबीज तन ज्यौं ज्यौं, तै निरबीज कियै हनि त्यौं त्यौ।
—मे. म.

क्रि. वि.—सर्वत्र, सब जगह।

उ०—मोटा धणी ग्रचभौ मोटौ, घट सूरापण निपट घणोह। ठावौ सकळ सकळ रौ ठाकर, तू चाकर चाकरा तणोह।
—ब्रह्मदास दादूपथी

रू भे.—सक्कळ, सिकळ।

सकल-स. स्त्री. [फा शक्ल] चेहरे की बनावट, ग्राकृति।

मुहा.—१ सकल बणाणी=चित्र बनाना, रूप बनाना।

२ सकल बिगाडणी=सूरत खराब करना, ग्रत्यधिक पीटाई करना।

३ सकल उतारणी=उदास होना।

रू भे—सिकल।

सकळग्रातमा-स. पु. यौ [स. सकल=ग्रात्मा] कामदेव। (ग्र मा.)

सकळकळ-वि.—सोलह कला युक्त। (चन्द्रमा)

सकळजगपाळक-स पु. [स सकलजगपालक] ईश्वर, परमेश्वर।
(ह ना मा.)

सकळजणणी, सकळजननी-स स्त्री—१ प्रकृति।

२ देवी, दुर्गा, जगदम्बा।

सकळा, सकला-वि.—कला सहित कलायुक्त।

उ०—दीरघा लघु वपु द्रढा, सबेही रूप विरुपा। वकला सकळा ग्रजा, उपावण ग्राप ग्रापुपा।—देवि.

सकळाई-स. स्त्री.—१ चमत्कार, करामात।

उ०—१ एक पीर ग्राडौ नहिं ग्रायौ, कछु नही सकळाई है। ग्रला खैर सू प्राण ऊबरै पिछनी पुन्याई है।
—हिंगलाजदान जागावत

उ०—२ चलतौ ऊट तूटता खाती, बोल्यौ ग्रारत बाणी। करणी

३ शरमाना।

४ प्रेम, लज्जा या शका के कारण उत्पन्न होने वाली चेष्टा करना।

सकपकाणहार, हारौ (हारी), सकपकाणियौ—वि०।

सकपकायोडौ—भू० का० कृ०।

सकपकाईजणौ, सकपकाईजवौ—भाव वा०।

सकपकायोडौ-भू. का कृ.—१ आश्चर्यान्वित हुवा हुआ २ हिच-किचाया हुआ ३ शरमाया हुआ. ४ प्रेम, लज्जा या शका के कारण उत्पन्न होने वाली चेष्टा किया हुआ।

(स्त्री सकपकायोडी)

सकपकाहट-स स्त्री—सकपकाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

सकबध, सकबधी—देखो 'साकावध' (रू भे.)

उ०—१ विविध धामपुर ग्राम वसाहै, मांझी राजस पूरव माहै। सेतराम सकबध नरेसर, इळ (ण) लग राजस पूरव अतर।

—रा रू.

उ०—२ सितर खान सकबध, कटक अनमध छिलेकर। असपत, हद सामद, कीध ऊवध प्रमेसर।—रा रू

उ०—३ 'सूर' हर सूर सकबध साहण, समद तधि सामद्र असमाण तोलै। अतग अणरेण अणभग ऊचासिरौ, वहळ खळ सार मैं छौळ वोळै।—अमरसिंघ रौ गीत

उ०—४ सुरसुन मुछळि दिल्लेम सकबध सह, तेज वधि दळा हू पैज ताणी। खाग झल खोद वळ छाडि खिसिया खळै वधै जैकार सुर अखिल वाणी।—नरहरदास वारहठ

उ०—५ रिण घोधर 'वेणौ' प्रथीराज, भाटिया भुजै भाराथ लाज। अजमेर मुग्रौ 'गोडद' तात, सकबधी जाणै दीव सात।

—गु. रू व

उ०—६ आरुहियौ ईखवा साह दरगह सकबधी। है गै दळ हल्लिया मिळै अणकळ अनमधी।—रा. रू

उ०—७ 'सावळ' आद खान सकवधी, अै ऊदा मिळिया अनमधी।

—रा रू

सकमळकर-स पु यौ [सं सकमल+कर] विष्णु।

उ०—धराधीस धानख गिरधारी, कमळ कत सकमळकर।

—र ज प्र

सकर—१ देखो 'सक्र' (रू भे)

उ०—१ आकुलत व्याकुलता चलत नह आवणं पीव किण भात आराम पामै। सुकरदै सकर चा नेण मूदै सची, नागणी नाग सिर घडा नामै।—महाराणा राजसिंह रौ गीत

उ०—२ कळह कराळौ अजन-सर सकर वज्र अकाळौ, उडण अह पखाळौ अगनि झळ ओप। सेल रौ उलाळौ सहसमल, काळ चाळौ किना जटाधर कोप।—सहसमल राठौड रौ गीत

२ देखो 'सक्कर' (रू भे.)

उ०—वायक लवग मसाला वाटै, जीभ सकर मीठम जेम। सौहडा कज कीडा 'परसा' सुत, आखर तणौ रामरस अेम।

—आईदान गाडण रौ गीत

स पु—सहार, नाश।

सकरकद-स पु [स शर्करा+कद] एक प्रकार का प्रसिद्ध कद जो खाने व सब्जी बनाने मे काम आता है।

अल्प ;—सकरकदी, सकरियौ।

सकरकदी—देखो 'सकरकद' (अल्पा; रू भे)

सकरड-वि.—बलवान, शक्तिशाली, यौद्धा।

उ०—खीज चक्ख चरड नख वरड अघकाव खग, भडा हडवड ऊरड घाव भाराथ। भुजग झोकायता मुरड सकरड भजण, पुगीयौ गुरड नमवड प्रथीनाथ।—सायपुरै अमरसिंह जी रौ गीत

सकरडौ—देखो 'सोकरडौ' (रू भे)

उ०—रण जोर अलेख लहै जोरावर, भिडै कायम ग्वा छळि भरै। सेहम अेक दस लिया सकरड़ै, कूरम तौ न सतोख धरै।

—सादूळसिंघ सेखावत रौ गीत

सकरण-स पु—सहार, नाश।

वि [स. सकर्ण] १ जिसके कान हो।

२ जो सुनने मे समर्थ हो।

सकरणौ, सकरबौ-क्रि. अ—१ मजूर होना, स्वीकृत होना।

२ भुनना, भुगतान होना।

सकरणहार, हारौ (हारी), सकरणियौ—वि०।

सकरिओडौ, सकरियोडौ, सकरयोडौ—भू० का० कृ०।

सकरीजणौ, सकरीजवौ—भाव वा०।

सकरपारौ-स. पु [स शर्करा+पार] १ एक प्रकार का व्यजन विशेष।

उ०—१ वली सी सी वस्तु प्रीमाइ ? सकरपारा साकरीआ चिणा दूधपाक कोहलापाक सेलडीपाक ··· ।—व स

उ०—२ सेव झीणी फगफगती फीणी, ब्रह्मनती घारी, स्वादप्यु आहारी, साकरस्यु रूली, इसी प्रीसी तिलसाकुली, सकरपारा माडी, कोइ न सकइ छाडी।—व स

वि वि.—यह पकवान मीठा तथा नमकीन दोनो प्रकार का होता है। इसे बनाने के लिए पहले आटे को मोयन देकर दूध मे सान लेते हैं और सानते समय यथारुचि मीठा या नमक मिला देते हैं। फिर मोटी रोटी बेलकर उसे छोटे चौकोर तिकोन लबे खडो या टुकडो के रूप मे काट कर तेल या घी मे सान लेते हैं। कोई कोई इसे सादे बनाकर चीनी मे पाग लेते हैं।

२ एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बडा होता है। इसका वृक्ष नीबू के वृक्ष के समान होता है, पर पत्ते नीबू से कुछ बडे होते हैं। फूल लाल रग के होते हैं। फल सुगधित और खट्टा मीठा होता है।

३ स्त्रियो के सिर पर धारण किया जाने वाला इस शकरपारा के

उ०—२ सूर छतीसी साभळै, सूरा तणौ सकाज। 'वाका' रा वायक सुणे, कायरडा किण काज।—बा. दा.

उ०—३ अमर प्रवाडा एण विध, कहिया सुकवि सकाज। इण आगळि वरणन अथग, राज तेज 'जसराज'।—सू. प्र.

उ०—४ विकट विहारी वकडौ, जाळधर 'गढराज'। सो राठौडा घेरियौ, जोडै सेन सकाज।—रा. रू.

उ०—५ महाराजा 'अजमाल' रै, नगर वधाई आज। नरपति मन भायौ थयौ, जायौ पुत्र सकाज।—रा. रू.

सकाजौ—देखो 'सकज' (रू. भे.)

उ०—१ आठ मिसल उमराव, सूर आविया सकाजा। दुज मत्री कवि दुझळ, मिळै दरगह 'महाराजा।—सू. प्र.

उ०—२ सुणी भडा 'अजमाल' रा, आयौ राव चलाय। भडा सकाजा मारका, वणी गरजा आय।—रा. रू.

सकाब्द—स पु [स शकाब्द] शालिवाहन द्वारा चलाया हुआ सवत्, शक सवत्।

सकार—स पु—१ 'स' अक्षर।

२ 'स' वर्ण के समान ध्वनि।

[स. शकार] ३ पत्नी का भाई, साला।

उ०—उज्जइणीपुर उण समय, प्रतपै रेणु प्रमार। तिणरौ दूजौ नाम जग, आखै करण उदार। तिण री एक सकार तदि, जामिप धन वय जोर। रूपाजीवा रूपरी, सुणियौ जिण अति सोर।

—व. भा.

वि वि.—यह रखेल या बिना ब्याही स्त्री का भाई भी हो सकता है।

[रा] ४ स्वार्थ, प्रयोजन।

स स्त्री—५ सार्थकता।

उ०—म्हारा जीवणा मैं सकार कोई नही पिण म्हारौ जीव च्यार वाता मैं अटक्यौ छै।—जैतसी ऊदावत री वात

६ देखो 'सिकार' (रू भे.)

उ०—नेहनी जाल नाखी अपार, खेलै ए खातिस्यू तै सकार। अग जिम पडै तिम राग वाह्यौ, मूढ जन माननी रस उमाह्यौ।

—व्रिद्धि विजय

रू. भे.—सक्कार।

सकारि—स पु [स.] १ विक्रमादित्य की उपाधि।

रू भे—सकारी

सकारियोड़ौ—भू का कृ.—१ भुनाया हुआ २ स्वीकार किया हुआ। (स्त्री सकारियोडी)

सकारी—१ देखो 'सिकारी' (रू भे)

उ०—साभळी वात वीदै सकारी, थापि का जाति नियाती थारी।

—वि स. सा

२ देखो 'सकारि' (रू. भे)

सकारै—क्रि. वि [स. सकाल] प्रातः काल, सवेरे।

उ०—चरणाम्रित री नेम सकारै, नित उठ दरसण जास्या।

—मीरा

सकाळ, सकालि—क्रि. वि. [स सकाल] प्रातः काल, तडके।

उ०—नवभवनेहि ऊमाहिय नाहिय कुमर सकालि। सिरवरि सोवन वालिय जालिय तिलक निलाडि।—जयसेखर सूरि

सकियक—देखो 'सकैक' (रू. भे.)

उ०—भीकै भड धाराळ जग, भजै पिसणा भूर। सकियक सीम-सबंध हुत, समर्फै निजरा सूर।—रैवतसिंह भाटी

सकी—वि [फा शकी] सदेह करने वाला, सदेहशील।

रू. भे—सक्की।

सकीयारथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू भे)

सकुच—वि.—सकुचित।

सकुंत—स. पु. [स. शकुत] १ विश्वामित्र ऋषि के ब्रह्मवादी पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

२ एक प्रकार का पक्षी।

३ एक प्रकार का कीडा।

सकुतक—स पु [स] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

सकुतला—स. स्त्री [स. शकुतला] कण्व ऋषि के आश्रम मे पली हुई राजा दुष्यत की पत्नी तथा मेनका के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र की पुत्री का नाम।

उ०—ई उमरै रूप वसंती मैं, ही फिरै सकुंतळा वणी ठणी। काना मैं फूल झूमरिया हा, छाती पर आगी तणी तणी।

—करणीदान बारहठ

सकुच—देखो 'सकोच' (रू भे)

सकुचण—स. स्त्री.—लज्जा, शर्म। (डि. को.)

सकुचणौ, सकुचबौ—देखो 'सकुचणौ, सकुचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कोकन सिर खडिया कटक, तै सिधराव अभग। दिन सकुचीजै कोकनद, कोक न कोकी सग।—बा. दा.

उ०—२ सिध हसियौ नप चख सकुचाणे। आतमघात वात चित आणे।—सू प्र.

उ०—३ करै घुघट पिण तिण च्यारै, सकुचै पिण नही किण हिक वारै रे।—घ. व. ग्र.

उ०—४ साधौं की सगत छोडदै रे, सखिया सब सकुचात।

—मीर

उ०—५ सिध इम देखि नपति सकुचाणे। औ गुटकौ दीधौ नप आणे।—सू. प्र.

सकुचणहार, हारौ (हारी), सकुचणियौ—वि०।

सकुचिओड़ौ, सकुचियोड़ौ, सकुच्योडौ—भू० का० कृ०।

सकुचीजणौ, सकुचीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सकुचन—देखो 'सकुचण' (रू. भे)

काठ तणौ पग कीधौ, जग सकळाई जाणी ।—मे म.

उ०—३ खूब जातरी आवै-जावै है । परचा उडै कोढियारा कलक झडै है । दुनिया उलट पडी है । सकळाई हुवै तो इसी हुवै ।

—दसदोख

२ बल, शक्ति ।

उ०—सोई खुडद आज दिन साप्रत, स्रीदुरगा सकळाई । मूरत अदुल भेख मरदानौ, सूरत हृदय समाई ।—मे म.

३ सिद्धि ।

सकळात, सकलात–स. पु.—१ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—अदाण करमदाण कतराइणी गजकरणी पइठाणी सलहिती वारवती फरोदस्नी चूडाभाति सकलात पोतु ।—व. स.

२ देखो 'सकळायत' (रू. भे.)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति अतरा माहे तरक-सारा कुहटाऊ वीडिया छै । सौ किण भाति रा तरकस कदील, जिर्के मुखमली ठाठी, प्रतिकाली सकलात, मेण कपड री खोली सू काढी, कलावूत नीसरी साठी, गिरमरी नीपनी, कात्रडै गजबल रा भल, ... ।—रा सा. स

सकलाय–वि —कलापूर्ण, कलायुक्त ।

उ०—सदा सामलउ रूप सकलाय सोहइ, मुख देखता माहरू मन मोहइ ।—स कु

सकळायत–स पु.—१ एक प्रकार का वढिया लोह ।

उ०—चीतेवाण नै हुकम हुवौ छै । चीता साथ लीजै छै, घोडा री पूठ तखता ऊपर बैठा छै । आख्या आडी कुल्है छै । सकळायत रा पटा, रूपैरी भवर कडी, रेसम री डोर ।—रा सा. स

२ देखो सकळाई' (रू. भे.)

रू भे.—सकलात ।

सकळी–स स्त्री —१ पूर्णमासी ।

[स शकलिन] २ मछली ।

सकळीघर, सकलीगर – देखो 'सिकळीघर' (रू भे)

उ०—धोबी सवणीगर न्यारा रे नाई नीलगर पीनारा, सकलीगर गाछा नै घोसी रे कल्लाल तरमा मोची ।—जयवाणी

सकलीण, सकलीणौ, सकलीन—देखो 'सुकुलीण' (रू. भे)

सकळीव्रत–स. पु. [स. सकली+व्रत] चद्रमा, चाद । (ना डि को.)

सकव, सकवि, सकवी—देखो 'सुकवि' (रू भे)

उ०—१ मेंगळ तणी समापण मौजा, सकवा रयौ नही ससार ।

—महाराजा पदमसिंह जी री गीत

उ०—२ कवि तद बोलै 'केहरी', सकवी सूर सुभट्ट । बोध समप्पण धूहडा कुळ रोहडा मुगट्ट ।—रा रू

सकस–स पु —१ वीर पुरुष ।

उ०—१ सकसै का जैतवार अकसै का वाई । अरिदळ समुद्र आए कुभज के भाई ।—रा रू

उ०—२ वीर तन छोह छकडाळ कस वीछडै, रूक सू भिडै असपति सारीस । सीस देवळ तणौ डिगण न दियै सकस, 'स्याम' तण भुजा ऊपजतै सीस ।—सुजाणसिंघ भोजराजोत री गीत

२ पति ।

उ०—दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी । स्रियजीत पति गुण परखि चखि सुख सकस पखि जिम सुदरी ।

—रा. रू.

३ देखो 'सखस' (रू भे.)

उ०—हजूर अमीर खडे नामदार सकस । कमरदोखान दोरा नुर-राबाज बगस ।—रा. रू.

सकसस्त्र–स पु [सं शक्यशस्त्र] लोहा । (अ. मा)

सकसेना–स स्त्री —कायस्थ जाति की बारह शाखाओ मे मे एक ।

सकस्सा–वि.—मजबूत, दृढ ।

सकस्सी–स स्त्री.—एक प्रकार का हथियार विशेष ।

सकाम–वि. [स सकाम] १ सफल-मनोरथ ।

उ०—आ बात कवर चूडेजी साभळि मन मे विचार करि, उमरावा सु मिसलत पूछी ज्यौ नाळेर आयौ सो स्रीदीवाण नै किसी तरैहीज दै तौ वडो सकाम हुवै ।—राव रिणमल री बात

२ कामनायुक्त ।

उ०—अब चढहु जेज नह होय ताम, सुण उभग सकळ आसुर सकाम ।—रा रू

३ मैथुन की इच्छा रखने वाला व्यक्ति, कामी ।

४ स्वार्थ, स्वहित भावना ।

उ०—लख चौरासी जोनि मे मातौ मोह सकाम । हरीया अैमै जीव कु, कहा नही विसराम ।—अनुभववाणी

५ इच्छित, अभीष्ट ।

अल्पा;—सकामौ

सकामी–स. पु [स सकामिन्] १ विषयी व्यक्ति ।

२ देखो 'सकाम' ।

सकामौ—देखो 'सकाम' (अल्पा, रू भे)

उ०—सरस रजवाट तप अघट 'सूजा' सुतन, सार झट रचै तीरथ सकामौ । करावै भगत अगभावति केविया, साख खट तीस रौ महत 'स्यामौ' ।—स्यामसिंघ सेखावत रौ गीत

सका–स पु [स शका] १ एक देश का नाम ।

२ एक जाति विशेष ।

सकाकुळ–स. पु —१ शतावर जाति का एक कद विशेष ।

स स्त्री —२ एक प्रकार की मछली विशेष ।

सकाकोल–सं पु [स सकाकोलः] एक नरक का नाम । (मनु)

सकाज —देखो 'सकज्ज' (रू. भे)

उ०—१ चापा भुजवळ अग्गळा, कुळ अग्गळा सकाज । छत्रपति छळ अग्गळा, लिया धरत्ती लाज ।—रा रू

उ०—२ तद लालमण वीचारी जो सकंक तो केरडा अणी वावडी माहे पाणी पीवानै पैठा सो अठै अणी माहे अलोप हुवा ।
—लालमण कुवर री वात

रू भे.—मकियक ।

सकोई–वि —सब, समस्त, सब कोई ।

उ०—१ पडै धाक देवड़ा, वाक फाटै सीरोई । दे दे द्रव डीकरी, पगा लागीया सकोई । —जग्गो खिडियो

उ०—२ मु लसकर रा सिपाइया सगळा कवाण दीठी पिण किण ही था कवाण चढावण री आसग पडै नही । सकोई कवाण सूं खसखम परा गया ।—नैणसी

उ०—३ नदी किनारै आया रथी, लात मू ढाय नाखी रतनमजरी नू लेयनै ऊभी रहियो सकोई वधाई वधाई जय जयकार कियो ।
—पचदडी री वारता

उ०—४ सकति गणेस नवै ग्रह सोई, सुर तेतीस महाय सकोई ।
—रा रू

रू भे.—सकोय

सकोडो—वि.—१ उत्साह सहित, उमगयुक्त ।

उ०—'सबळो' 'हैवत' सकत सवाया, आद सबै जोधा सह आया । कुसळसिंघ 'कलियाण' सकोडै, उर 'जूझार' विजो' पण ओडै ।
—रा रू

२ प्रसन्नता सहित ।

सकोतरी—देखो 'सिकोतरी' (रू. भे)

सकोप–स पु —क्रोध, कोप ।

वि —क्रोध सहित, क्रोधित ।

उ०—१ राजा दूजो 'मूळरज', दिखणाता दळ लोप । अडर मळै-गिर आवियो, सुरपत जेम सकोप ।—वा दा.

उ०—२ पटाळा हठाळा महागात पूरा, सुरगा सगाहा सकोपा सनूर ।—रा. रू.

सकोमळ, सकोमल–वि —१ कोमल, मुलायम ।

उ०—हिंडोळाट सुघाट हद, कचन मणि को काम । सेज सकोमळ सू जुगत, फूल रहै मव ठाम ।—गज-उद्धार

२ विनम्र ।

उ०—साध सकोमळ सुख करन, दद निवारन दूर । हरीया असै साधको, नित भेटीजै नूर ।—अनुभववाणी

सकोय—देखो सकोई' (रू भे.)

उ०—हुवै प्रफुल्लत गात हद, साभळ वात सकोय । गरक घटा उमटी गरज, हरख मिखडी होय ।—रा रू

सकोरणो, सकोरबो —देखो 'सिकोडणो, सिकोडबो' ।

सकोरो—देखो 'सिकोरो' (रू. भे)

सक्को–स. पु —पानी भरने वाला भिस्ती । (मा. म)

वि.—सब, समस्त ।

उ०—१ कपी देव असी सक्को काय कांपो, जिसो हूं तिसो आपरो पाण जापो ।—सू प्र

उ०—२ हरी मेल धानख धानख हाथ, सक्को पाण खेचै लियो हेक साथै ।—सू प्र

उ०—३ साहजादै पाराथिया, सक्को कमधा साथ । सूर तरस्सै बोलिया, मूछ परस्सै हाथ ।—रा. रू.

उ०—४ आड गोळा पडै रीठ तरवारिया, लड़तै हाथ इण भात लाया । पांचमैं महीनैं काम आया पछै, आपरै ठीकाणै सक्को आया ।—जालमसिंघ मेडतिया री गीत

सर्व —१ वही, वह ।

उ०—१ साग मूड सहसी सक्को, समजस जहर सवाद । भड़ पीथल जीतो भला, वैण तुरक सू वाद ।—महाराणा प्रताप

उ०—२ विलूध्यो निधी नीर स्त्रीहाथ वामै, पुरी मैं सक्को सीर हन्नोज पामै । सजा हू छुडायो आई राव सेखो, लाई पुत्र पित्रेस रो लोप लेखो ।—मे. म

उ०—३ सक्को हिज आज अनेक सरूप, विधूसत फोज सहायक भूप । तिका अग्र मो भड कीट पतग, जिका जुड़ि जीत सकै नेह जग ।—मे म.

२ उसे, उसको ।

उ०—माथै सटै महीप, सक्को मत जांणै सूंगी । मोल अस लीधी मूगी ।—वखतावर मोतीसर

रू. भे —सक्कौ ।

सक्क–स पु.—१ देखो 'सक्र' (रू. भे.)

उ०—अवीस पएं नख कोटि अरक्क, सम्रत्य सिरज्जण भाजण सक्क ।—ह र.

२ देखो 'सक' (रू भे)

उ०—धाधल्ल भिडत वाहंत धक्क । सामरै कांम सग्राम सक्क ।
—गु. रू. व.

सक्कणी—देखो 'साकणी' (रू भे.)

उ०—१ सीकोतरी सक्कणी, प्रेत डक्कणी अपारा । विवध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारा ।—रा रू

उ०—२ हुय रौद्र हक्क ग्रेह लक्क जै किलक्क जोगणी । वका गरज्जै खडग वज्जै सक्ति रज्जै सक्कणी ।—रा रू.

सक्कणो, सक्कबो—देखो 'सकणो, सकबो' (रू. भे.)

उ०—१ वोल्लि न सक्कू वीहतउ, हेकज वात हुई । राजि अपूठा वाहडउ, माळवणी मुई ।—ढो मा

उ०—२ आठ मिसल दिस आठ, धजा मुह कीजै धक्कै । राह वाह रुधियै, साह उकसे न सक्कै ।—रा रू

सक्कणहार, हारो (हारी), सक्कणियो—वि० ।

सक्किओडो, सक्कियोडो, सक्कयोडो—भू० का० कृ० ।

सक्कीजणो, सक्कीजबो—भाव वा० ।

सक्कर–स स्त्री. [स शर्करा] चीनी, खांड, बूरा, शक्कर ।

उ०—काळी घणी करूप, कसतूरी काटा तुलै । सक्कर वडी सरूप,

सकुचाई-स स्त्री.—१ संकुचित होने का भाव, सकोच।
सकुचाणौ, सकुचावौ—देखो 'सकुचणौ, सकुचवौ' (रू भे)
सकुचाणहार, हारौ (हारी), सकुचाणियौ —वि०।
सकुचायोड़ौ —भू० का० कृ०।
सकुचाईजणौ, सकुचाईजबौ —भाव वा०।
सकुचायोडौ—देखो 'संकुचियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री सकुचायोडी)
सकुचियोडौ—देखो सकुचियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री सकुचियोडी)
सकुटब—परिवार सहित।
उ०—अन्न दिवसि वभणु सकुटंब रल जिम विलवइ पाडइ बुव।
पूछइ भीमु करी एकतु 'आविउ दूखु किसु अचितु।
—सालिभद्र सूरि
सकुन-स पु [स शकुन] १ पक्षी। (डि को.)
२ हिरण्यकशिपु का अनुचर, एक दानव।
३ पृथक देशो मे से एक।
४ देखो 'सकुनि' (१२) (रू. भे)
उ०—मिथुन लगन सोभन मिळ जोगं, सकुन करण दुख हरण सजोगं।—रा. रू.
५ देखो 'सुगन' (रू भे)
उ०—गाम जाता सकुन लेवै गधा तीतर बोलावै ज्यू सुणौ तै तो वात और अनै निरजरा हेतै सुणौ तौ वात और।—भि. द्र.
सकुनग्य—देखो 'सुगनग्य' (रू भे.)
सकुनचिडी—देखो 'सुगनचिडी' (रू भे)
सकुनद्वार-स पु [सं. शकुनद्वार] शुभ व अशुभ दोनो प्रकार के एक साथ होने वाले शकुन जो यात्रा आदि के लिए शुभ माने जाते है।
सकुनभेंट—देखो 'सुकुनभेंट' (रू भे)
सकुनसार-स. पु.—स्त्रियो की ६४ कलाओ मे से एक।
सकुनसासतर, सकुनसास्त्र-स. पु [स शकुनशास्त्र] वह शास्त्र जिसमे शकुनो के शुभ-अशुभ फलो का विवेचन हो।
सकुनसुद्धि-प पु [स शुकनशुद्धि] पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक।
सकुनावळ, सकुनावळी-स पु.—शकुनशास्त्र की पुस्तक।
उ०—सावळ सुर साधक सुख सू नह सोया, सकुनी सकुनावळ रावळ बळरोया।—ऊ. का.
सकुनि-स पु [स. शकुनि] १ वृक का पिता तथा हिरण्याक्ष का पुत्र एक दैत्य।
२ गधारी का भाई अर्थात् कौरवो का मामा तथा दुर्योधन का मत्री जो सुवल राजा का पुत्र था।
३ पक्षी।
४ गिद्ध पक्षी।
५ चील पक्षी।
६ मुर्गा।
७ एक नाग का नाम।
८ इक्ष्वाकु राजा के सौ पुत्रो मे से एक।
९ दुष्यत के पुत्र भरतवशीय राजा भीमरथ का पुत्र।
१० एक महर्षि।
११ सुतद्वाज राजा का पुत्र एव स्वागत राजा का पिता एक राजा।
१२ वव आदि ग्यारह करणो मे से आठवा करण।
(फलित ज्योतिष)
१३ यदुवशीय राजा दशरथ के पुत्र एव करभि के पिता।
१४ निर्माष्ट व दुःसह के ससर्ग से उत्पन्न आठ पुत्रो में से एक।
१५ सूर्यवशी राजा विकुक्षि का पुत्र।
१६ दखो 'सुगनी' (रू. भ.)
रू भे —सकुन, सकुनिज, सकुनी, सुकनी, सुकुनि, सुकुनी।
सकुनिका-स. स्त्री [स. शकुनिका] कार्तिकेय की एक मातृका।
सकुनिग्रह-स पु. [स शकुनिग्रह] कार्तिकेय का एक अनुचर।
सकुनिमित्र-स पु. [स. शकुनिमित्र] विपश्चित पाराशर्य ऋषि का नामान्तर।
सकुनी—१ देखो 'सकूनि' (रू. भे.)
२ देखो 'सुगनी' (रू भे)
सकुल-स पु [स.] अच्छा कुल, ऊचा कुल।
सकुली-स स्त्री [स] एक नदी का नाम। (पुराण)
सकुलीण, सकुलीणौ, सकुलीन—देखो 'सुकुलीण' (रू भे)
उ०—सासू सकुलीणी सतू सुर सानी, ऊजळ दती नै उर मे उर लीनी।—ऊ का.
(स्त्री सकुलीणी, सकुलीनी)।
सकुसळ—क्रि वि.—कुशलतापूर्वक, राजी-खुशी।
उ०—सकुसळ सबळ सदळ सिरिसामळ पुहप बूद लागी पडण।
—वेलि
सकूनत-स स्त्री [अ. शकूनत] निवास स्थान।
सकूल—देखो 'स्कूल' (रू भे)
उ०—थारी पो, सकूल अर धरमसाळ जठै ताई खडी रैसी, खडी ही नही पड भी जासी, एक भाठौ ढगळियौ तथा एक काकरौ ही रैसी वठै ताई थारै नाव री आदर हुसी।—दमदोख
सकेलणी-स स्त्री —तलवार की एक जाति।
उ०—प्रहार मेल पिंजरै, उभेल खग पेलनी। मिळाव वेग जाण मेघ, दामणी सकेलणी।—रा रू.
सकेलौ-स पु —अच्छी किस्म का लोहा।
रू भे. - साकेळौ, साकेलौ।
सकंक-क्रि. वि.—सभवत, शायद।
उ०—१ कुसुम मोड केसर वसण, नेह न देह लसाय। भाभी कत सकंक तो, ल्योडी सोक बमाय।—वी स.

दिये। उक्त टुकड़े जहां-जहां गिरे वहां-वहां पर एक-एक शक्ति एव एक-एक भैरव के रूप मे अवतीर्ण हुए। यही स्थान आगे चल कर शक्ति पीठ बन गये। 'तंत्रचूडामणि' मे प्राप्त ५२ शक्ति-पीठो, उक्त शक्तिपीठो मे स्थित 'शक्तियो' तथा वहा गिरे हुए अगो या आभूपणो के नाम निम्नलिखित हैं:—

शक्तिपीठ	शक्ति	अग या आभूपण
१ अट्टहास	फुल्लरा	अधरोष्ठ
२ उज्जयिनी	मागल्यचडिका	कूर्पर
३ करतोयातट	अपर्णा	वामतल्प
४ कन्याकाश्रम	सर्वाणी	पृष्ठ
५ करवीर	महिपमर्दिनी	तीनो नेत्र
६ कर्णाट	जयदुर्गा	दोनो कर्ण
७ कश्मीर	महामाया	कठ
८ काची	देवगर्भा	अस्थि
९ कालमाधव	काली	वामनितव
१० कामगिरि	कामाख्या	योनि
११ कालीपीठ	कालिका	पादागुलि
१२ कुरुक्षेत्र	सावित्री	दक्षिणगुल्फ
१३ गण्डकी	गण्डकी	दक्षिण गण्ड
१४ किरीट	विमला	किरीट
१५ गोदावरीतट	विश्वेशी	वामगण्ड
१६ चट्टल	भवानी	दक्षिण वाहु
१७ जनस्थान	भ्रामरी	चिवुक
१८ जयती	जयती	वामजघ
१९ जालधर	त्रिपुरमालिनी	वामस्तन
२० ज्वालामुखी	सिद्धिदा	जिव्हा
२१ त्रिपुरा	त्रिपुरसुदरी	दक्षिणपाद
२२ त्रिस्रोता	भ्रामरी	वामपाद
२३ नलहाटी	कालिका	उदरनलिका
२४ नन्दिपुर	नंदिनी	कठहार
२५ नेपाल	महामाया	जानु
२६ पचसागर	वाराही	अधोदतपक्ति
२७ प्रभास	चंद्रभागा	उदर
२८ प्रयाग	ललिता	हस्तागुलि
२९ भैरवपर्वत	अवन्ती	ऊर्ध्वोष्ठ
३० मगध	सर्वानंदकरी	दक्षिणजघ
३१ मणिवेदिका	गायत्री	मणिबंध
३२ मानस	दाक्षायणी	दक्षिणपाणि
३३ मिथिला	उमा	वामस्कध
३४ युगाद्या	भूतधात्री	दक्षिणपदागुष्ठ
३५ यशोर	यशोरेश्वरी	वामपाणि
३६ रामगिरि	शिवानी	दक्षिणस्तन
३७ रत्नावली	कुमारी	दक्षिणस्कध
३८ वहुला	वहुला	वामवाहु
३९ लका	इद्राक्षी	नूपुर
४० वक्रेश्वर	महिषमर्दिनी	मन
४१ वाराणसी	विशालाक्षी	कर्णकुडल
४२ वैद्यनाथ	जयदुर्गा	हृदय
४३ विभाष	कपालिनी	वामगुल्फ
४४ विराट	अविका	वामपदागुष्ठ
४५ विरजाक्षेत्र	विमला	नाभि
४६ वृदावन	उमा	केशकलाप
४७ श्रीपर्वत	श्रीसुदरी	दक्षिणतल्प
४८ श्रीशैल	महालक्ष्मी	ग्रीवा
४९ शुचि	नारायणी	ऊर्ध्वदतपक्ति
५० शोण	शोणाक्षी	दक्षिणनितव
५१ सुगधा	सुनदा	नासिका
५२ हिंगुला	कोटरी	ब्रह्मरध्र

११ लक्ष्मी।

१२ वरछी या साग नामक अस्त्र।

१३ तलवार, खड्ग।

१४ स्त्री की योनि।

१५ कोई वडा और शक्तिशाली राज्य।

१६ शाक्तो की किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी। (तत्र)

१७ किसी देवता का वल पराक्रम।

१८ शब्दो का अर्थ वताने वाली शक्ति।

उ०—रूढ प्रयोजन सक्ति बिनारच, लछ अरथ नै यारथ लेख।
क्रत विरुद्ध मति विरूद्ध मति क्रत, आरोपक-आरोप असेख।

—वा. दा

१९ तान्त्रिको के मतानुसार वह सुदर रूपवती एव सौभाग्यवती युवती जो नटी, कपालिका, वेश्या, धोविन, नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन या मालिन हो।

२० किसी पदार्थ और उसका वोध कराने वाले शब्द के वीच सम्वध। (न्याय)

२१ प्रभाव डालने वाला वल, शक्ति।

२२ शत्रुओ पर विजय प्राप्त करने के लिए राज्यो के योद्धिक आदि साधन।

रोड़ा तुलै रै राजिया ।—किरपाराम

पर्याय —खांड, चीणी, मधुधूळ ।

यौ.—सक्करकद, सक्करखोरौ, सक्करपारौ ।

रू भे —सकर, साकर ।

सक्करखोर, सक्करखोरौ—स. पु.—एक काल्पनिक कीटाणु ।

वि.—शक्कर खाने का शौकीन ।

रू भे —सकरखोर, सकरखोरौ, साकरखोर, साकरखोरौ ।

सक्करपारौ—देखो 'सकरपारौ' (रू भे.)

उ०—अेकर वै खासी अळगी भाय अेक मेळा मैं जावण री मतौ करयौ । साकळिया, सक्करपारा रौ कढीयौ कढाय, निसंवार भातौ वधाय नै पाळा ई मेळै वहीर व्हिया । —फुलवाडी

सक्कळ—देखो 'सकळ' (रू भे.)

उ०—हुवै दक सक्कळ हूक हमल्ल, ढहै ढैवाळ सहेता ढल्ल ।

—गु. रू. व.

सक्कळा—देखो 'सकळा' (रू भे.)

उ०—देवी गौर रूपा अरवा नळ निद्धि, देवी सक्कळा अक्कळा सव्व सिद्धि ।—देवि.

सक्कवै—स. पु —१ स्वर्ग, देवलोक ।

उ०—दिन आया चक्कवै, गया सक्कवै समाए । दिन आया हरचद, गयौ वारौ वरताय ।—रा रू.

२ समर्थ, सामर्थ्यवान व्यक्ति ।

उ०—जुग पाणिग्रहण हुइ वार जिण, सोम महूरत सक्कवै । दुलही सजोड लीधा दुलह, च्यारूं फेरा चक्कवै ।—रा रू.

सक्कस—वि. [फा. सरकश] १ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—बद इरादत साथै बगस, संग जैमिघ कूरमै सक्कस ।

—रा रू

२ घमण्डी ।

३ देखो 'सकौ' ।

सक्कार—देखो 'सरकार' (रू. भे.)

उ०—मसकार स्रुतिवाण सुणि, कूरम कै सक्कार । परणावै पधरावियौ, महलै राजकवार ।—रा रू.

२ देखो 'सकार' (रू. भे)

सक्काळ - देखो 'सुकाल' (रू भे.)

सक्कियोडौ —देखो 'सकियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सक्कियोडी)

सक्की —देखो 'सकी' (रू भे.)

सक्को—देखो 'सकौ' (रू भे.)

सक्ख —देखो 'साख' (रू भे)

उ०—वल्लाळ सहै बिहूँ वाह लक्ख, राठौड रूप तेरहा सक्ख ।

—गु रू. व.

सक्खि—स. स्त्री —मित्रता, दोस्ती ।

उ०—इक्क महिली पच जण तीह मिलिउ तु पक्खि । ए उग्रहाणउ सच्चुकिउ 'कूडउ कूडा सक्खि ।—मानिभद्र सूरि

सक्खर, सक्खरौ—देखो 'सक्करौ' (रू भे.)

उ०—सुभट्ट सरख सक्खर लसग लक्ख पक्खर, धरा अडोल डुल्लय गजू निसान खुल्लयं ।—ला. रा.

सक्त—स पु [स. शक्त] पुरुवशीय मनस्वी के पुत्र, इसकी माता का नाम सौवीरी था ।

वि. [स आसक्त] १ आसक्त ।

उ०—तब चद्रमा किसौ दीसै छै । जिसौ भरतार असमाध्या थका सती कौ मुख देखिजै । जब पिउ वै माहे सक्त छै ।—वेलि टी.

२ देखो 'सख्त' (रू. भे.)

सक्ति—स. पु.—१ वशिष्ठ के सौ पुत्रो में से ज्येष्ठ ।

२ सुब्रह्मण्य का आयुध ।

३ पराशर ऋषि के पिता एक प्रसिद्ध ऋषि ।

४ एक शिवावतार का पिता ।

स. स्त्री. [स शक्ति] ५ बल, ताकत, जोर ।

उ०—१ अदभूत रूप सक्ति अकळ, प्रेत दूत पाळतिय । गहगहै वार डमरू डहक, महमाया आवतिय ।—देवि.

उ०—२ सिघि गुलिक वेग पर सक्ति पाव, धजराज मुकट खग-राज धाव ।—रा. रू

६ दुर्गा, भवानी ।

उ०—देवी धरम रै रूप सिव सक्ति जाया, देवी मिव सक्ति रूपै सत्त माया ।—देवि.

७ सरस्वती ।

८ गिरिजा, पार्वती ।

९ देवताओ की विभिन्न शक्तियो मे से कोई एक शक्ति ।

वि. वि.—ये शक्तिया भिन्न-भिन्न देवताओ की भिन्न-भिन्न होती है । जैसे—विष्णु की काति, कीर्ति, तुष्टि, प्रीति, शांति आदि, रुद्र की खेचरी, गुणोदरी, गोमुखी, ज्वालामुखी, भजरी, लवोदरी, देवी की इद्राणी, कौमारी, ब्रह्माणी, माहेश्वरी, वाराही, वैष्णवी आदि ।

१० दक्षकन्या सती का नाम, जो देवी पार्वती का अवतार मानी जाती है ।

वि. वि.—पुराणो मे शक्तियो की सख्या इक्कावन बतायी गयी है तथा इनके विभिन्न स्थानो को शक्तिपीठ कहा है । रुद्र-शिव एव पार्वती के कथा का निर्देश उत्तरकालीन 'देवीभागवत' एवं 'कालिकापुराण' मे पाया जाता है । इस कथा के अनुसार, दक्षयज्ञ मे अपमानित होकर सती ने यज्ञकुड मे अपने प्राणो की आहुति दे दी । इस मृत शरीर को शोकित रुद्र-शिव अपने कधे पर लेकर तीनो लोको मे नृत्य करता हुआ घूमने लगा । यह देख कर विष्णु ने अपने चक्र मे सती के मृत शरीर के टुकडे-टुकडे कर

सक्क्रतू—स. पु [स शक्र] इन्द्र, पुरदर]। (ह. ना मा)
सक्रदिस, सक्रदिसा—स स्त्री. [स शक्रदिश] पूर्व दिशा जिसके स्वामी इन्द्र माने जाते हैं।
सक्रदेव—स. पु [स. शक्रदेव] १ देवराज इन्द्र।
२ महाभारत युद्ध मे कौरवपक्षीय कलिंग राजा जो भीम द्वारा मारा गया था।
सक्रदेवत—स. पु [स शक्रदैवत] ज्येष्ठा नक्षत्र।
सक्रद्रुम—स. पु. [सं. शक्रद्रुम] देवदारु।
सक्रधनख, सक्रधनु, सक्रधनुख, सक्रधनुस—स. पु. [सं. शक्रधनुस्] इन्द्र-धनुष।
सक्रधुज, सक्रध्वज—स पु. [स. शक्रध्वज] इन्द्रोत्सव मे इन्द्र के सम्मान मे स्थापित ध्वज।
सक्रनद, सक्रनदण, सक्रनंदन—स पु. [स शक्रनद] १ अर्जुन।
(अ. मा; ह. ना. मा.)
२ जयत।
सक्रनदा, सक्रन्नदा—स. स्त्री. [सं.] एक प्राचीन नदी का नाम।
सक्रपत, सक्रपति, सक्रपती—स पु. [स. शक्रपति] विष्णु।
सक्रपुर, सक्रपुरी, सक्रपुरो—स पु [स शक्रपुर] अमरावती।
सक्रप्रस्थ—स. पु. [स शक्रप्रस्थ] पाडवो द्वारा वसाया गया नगर, इद्रप्रस्थ।
सक्रप्रिया—स. स्त्री [स. शक्र+प्रिया] इद्राणी, शची। (अ मा.)
सक्रमात, सक्रमाता—स स्त्री [स. शक्र+मातृ] इद्र की माता अदिति।
सक्रमित्र—स. पु [स. शक्रमित्र] माधातृ राजा का कनिष्ठ पुत्र, एक राजा।
सक्रय—स. स्त्री —इन्द्राणी।
उ०—आनूप रूप दुति सक्रय अस, हालत मधुर जिम थकित हस।
—सू प्र.
सक्रवापी—स. पु. [स. शक्रवापी] एक नाग, जो गौतम ऋषि के आश्रम के पास रहता था।
सक्रवाह, सक्रवाहण, सक्रवाहन—स. पु. [सं. शक्रवाहन] १ इन्द्र का हाथी। (ना मा.)
२ हाथी, गज। (ना डि को.)
३ बादल।
सक्रसरोवर—स. पु [स शक्र+सरोवर] व्रज मे स्थित इन्द्रकुड नामक स्थान।
सक्रसारथि—स. पु [स. शक्र+सारथि] इद्र के रथ को हांकने वाला सारथि, मातलि।
सक्रसाळा—स पु [स. शक्रशाला] इन्द्र के उद्देश्य से वलि दिये जाने का यज्ञ स्थान।
सक्रसुत—स पु [सं शक्रसुत] १ इन्द्र का पुत्र अर्जुन। (डि को)
२ जयत।
३ वालि।
सक्रहोम—सं. पु. [सं. शक्रहोम] यज्ञहोत्र का पुत्र एक राजा।
सक्रांयत—देखो 'सकरात' (रू भे.)
सक्रारि, सक्रारी—स. पु [स शक्र+अरि] मेघनाद।
उ०—देवी सक्रारी रूप हनमत ढाळी, देवी रूप हनमत लका प्रजाळी।—देवि.
सक्रावरत—स. पु. [स. शक्रावर्त्त] एक प्राचीन तीर्थ स्थान।
सक्रासण, सक्रासन—स. पु [सं. शक्रासन] इन्द्रासन।
सक्रीत—वि —कीर्ति सहित।
उ०—पधराय जोड़ सप्रीत किय पाणिग्रहण सक्रीत। जित पवित्र पडित चार, अणपार वेद उचार।—रा रू
सक्रुद्ध, सक्रोध—वि —क्रोधपूर्ण, क्रोधयुक्त।
उ०—१ जुरसिंध भीम तजि बाहु जुद्ध, फिर सेन वधि जूटा सक्रुद्ध।—रा रू
उ०—२ उच्चरै फतै जय पाठ अति, मारू आठ मसल्लरा। वीधौ सक्रोध आसर विकट, महा जोध 'अभमाल' रा।—रा रू.
रू. भे —सुक्रोध।
सक्रुनिज—देखो 'सकुनि' (रू भे.)
उ०—सुत विकुख सक्रुनिज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद।—सू प्र.
सखडी—देखो 'सिखडी' (रू भे)
सख—सं पु [स सखि] १ मित्र, सखा।
[स शिष्य] २ शिष्य, चेला।
३ देखो 'साखा' (रू भे)
उ०—१ अभपती जती गोरख्ख एम, तैरै सख वारह पथ तेम।
—वि. सं.
उ०—२ पूज तणा तेरह सुत दिब पख, सुजि त्या हून कमध तेरह सख।—सू प्र
उ०—३ दीपदा 'अभमळ' दुइद तूं सख तेरदा। तैंडी नाल गुर्माईया, सब आलम ददा।—सू प्र
सखणी, सखवौ—क्रि स.—साक्षी देना, कहना।
उ०—१ जो रघुवर गावै सब सुख पावै, निभय जिका जम ताप नहे। सर गिरवर तारै पदम अठारै, सेन उतारै जगत सखै।
—र. ज. प्र
उ० —२ आद वार अट्टार द्रुतीय अख, सुज तिय वार बीस चौथे सख।—र ज. प्र
उ०—३ वधर व्यथ सम अरुण, समह भुज नागरोज सख। सिन्न समान उर समर, अथध सम स्यध उदर अख।—र ज प्र
सखणहार, हारौ (हारी), सखणियौ —वि०।
सखिओडो, सखियोडो, सख्योडो—भू० का० कृ०।
सखीजणौ, सखीजवौ—भाव वा०।

२३ शक्ति नामक शस्त्र के आकार का हथेली मे होने वाला निशान, सामुद्रिक चिह्न विशेष।
२४ एक प्रकार का शस्त्र विशेष।
२५ सामर्थ्य।
२६ ५२ की सख्या। ❋
२७ देखो 'सत्ती' (रू. भे.)
रू. भे.—सकत, सकति, सकती, सकत्त, सकत्ति, सकत्ती, सक्ती, सखती, सगत, सगति, सगती, सगत्त, सगत्ति, सगत्ती।

सक्तिग्रह–स. पु. [स. शक्तिग्रह] १ शिव, महादेव।
२ कार्तिकेय।
वि —१ शक्ति को ग्रहण करने वाला।
२ भालाधारी।

सक्तिधर, सक्तिधरण, सक्तिधारी–स. पु [सं. शक्तिधर] १ स्वामी कार्तिकेय।
२ शिव, महादेव।
३ गरुड। (ना. मा.)
रू. भे.—सक्तीधर

सक्तिपुर–स. पु —१ दिल्ली का एक नाम।
२ सिरोही नगर का एक नाम।
रू. भे.—सकतपुर, सकतिपुर, सकतीपुर, सगतपुर, सगतीपुर।

सक्तिपुरौ–स. पु —१ चौहान।
२ दिल्ली का बादशाह।
३ मुसलमान।
४ दिल्ली व सिरोही का निवासी।
रू. भे.—सकतपुरौ, सकतिपुरौ, सकतीपुरौ, सगतपुरौ, सगतिपुरौ, सगतीपुरौ।

सक्तिपूजक–स पु [सं. शक्तिपूजक] शक्ति उपासक, शाक्त।
सक्तिपूजा–स स्त्री [स. शक्तिपूजा] शक्तिपूजन।
सक्तिबाण–स पु —एक प्रकार का बाण विशेष। (रामकथा)
सक्तिबोध–स. पु [स शक्तिबोध] शब्द शक्ति का बोध व ज्ञान।
सक्तिमत्र–स पु [स. शक्तिमत्र] युद्ध मे विजय प्राप्ति हेतु शक्ति की आराधना के लिए पढा जाने वाला मत्र।
रू भे.—सकतमत्र।
सक्तिमत्ता–सं. स्त्री.—शक्तिवान होने का भाव।
सक्तिमांन–वि [स शक्तिमन्] १ पराक्रमी, शक्तिशाली।
उ०—सरवग्य सेस आव्रति असेस, सव सक्तिमांन पूरन प्रधान।
—ऊ का
२ सामर्थ्यवान।
सक्तिवन–स पु [स. शक्तिवन] एक वन जो तीर्थ स्थान माना जाता है। (पुराण)
सक्तिवादी–स पु —शक्ति की उपासना करने वाला।
सक्तिवीर–सं. पु.—वाममार्गी, शाक्त।
सक्तिहसत, सक्तिहसति, सक्तिहस्त, सक्तिहस्ति–सं. पु [सं. शक्तिहस्त]
१ जयत के द्वारा मारा गया एक राक्षस।
२ देखो 'सक्तिहथौ' (रू भे.)
सक्तिहीन–स. पु. [स. शक्तिहीन] १ निर्बल, कमजोर।
२ नामर्द।
३ असमर्थ।
सत्ती–सं पु.—१ एक मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे १८ मात्राएं होती हैं।
२ देखो 'सक्ति' (रू. भे.)
सत्तीधर—देखो 'सक्तिधर' (रू. भे.)
सक्थी—देखो 'सत्थी'
सक्रतिमेख, सक्रतिमेखि, सक्रतिमेखी—देखो 'मेखसंक्राति'
उ०—मधि त्रेताजुग चैत्रमास सक्रतिमेखि सरि।—सू प्र.
सक्रंदन–स. पु. [सं. सक्रंदन] १ इन्द्र। (अ. मा, ना. मा, ह ना. मा)
२ श्रीकृष्ण।
सक्र–स. पु [स. शक्र] १ इन्द्र।
(अ. मा; डिं. को; ना. मा, ह. ना मा.)
२ अर्जुन वृक्ष।
३ टगण के चौथे भेद की सज्ञा (ऽ।।ऽ)।
३ ज्येष्ठा नक्षत्र।
४ उल्लू।
६ चौदह की सख्या। ❋
७ एक आदित्य का नाम।
[स. शुक्र] ७ वीर्य।
रू भे.—सकर, सक्क, सुक।
सक्रउत्सव–स. पु [सं. शक्र+उत्सव] भाद्र शुक्ला द्वादशी को मनाया जाने वाला उत्सव।
सक्रक्रीडाचळ–स. पु [स शक्रक्रीडाचल] सुमेरु पर्वत।
सक्रकेत, सक्रकेतु–स पु [स. शक्र+केतु] इन्द्रध्वज।
सक्रकोस, सक्रकोसाधिक्स–स पु. [सं. शक्रकोशाधिक्ष] कुबेर।
(अ. मा; ना मा.)
सक्रगोप–स पु [स शक्रगोप] वीरबहूटी नामक कीडा।
सक्रघण–सं पु [शक्र+घण] इन्द्र का वज्र। (डिं. को)
सक्रचाप–स. पु. [स. शक्रचाप] इन्द्रधनुष।
सक्रजांन, सक्रजानु–स. पु [स. शक्रजानु] रामपक्षीय एक वन्दर का नाम।
सक्रजित–स. पु. [स. शक्रजित] इन्द्र को जीतने वाला, मेघनाद।
सक्रज्योत, सक्रज्योति–स पु [स. शक्रज्योति] मरुतो के एक गण का नाम।
सक्रतकर, सक्रतकरज–स पु [स शक्रतकरि] वछडा, गौ-वत्स।
(अ. मा, ह ना मा.)

व्हैगी। सिंघणी रा पेट मैं जाय वामो लियो। भूखी सिंघणी नै धरम वैंन री माम अगू तो ई सखरो लागो।—फुलवाड़ी

उ०—४ हाचळ मुळमुळावता ई वाळक रै होठा अर मूंडा सू अेड़ी ठा पडती के उणनै मासी विचै मा री दूध तो अवस सखरो लागतो।—फुलवाडी

रू. भे.—मकरो, सुक्खर, सुक्खरो, सुखरु, मख्खर, सखरो।

अल्पा —मकरोडो।

मह —सखर, सखरउ।

सखस—देखो 'सख्स' (रू भे)

उ०—१ मूता सखस जात है, जाणै सो जागै रे। जनहरिदास आछै मतै, हरि सुमिरण लागै रे।—ह पु वा.

सखा—स. पु. [स. सखिन्] मित्र, साथी। (डि. को; ह ना मा)

उ०—सुरभिया चरावो मग लाखो सखा, छैल आवो कदम तणी छाही। पोख हित वेल गावो चरित पेमरा, मुरळिका सुणावो घोख माही।—वा दा

सखाइ—स. पु—एक प्रकार का घोडा। (शा. हो)

सखाकृस्न—स. पु. [स कृष्णसखा] अर्जुन।

सखायो—स. पु. (स्त्री सखायण) विवाह के अवसर पर दूल्हे के साथ रहने वाला सखा, मित्र।

सखावत—स. स्त्री. [अ] उदारता, दानशीलता।

उ०—१ वेळावळ समी सिंध मे वडो दातार हुवो। समा रै जिसी सखावत किण मे ही न हुयी।—वा. दा ख्यात

उ०—२ सखावत नै अहसान सो सखावत दातारी यस निमित्त देणी।—नी प्र.

सखाव्रख—स पु. [स शाखा+वृक्ष] बरगद, वट वृक्ष। (ह. ना. मा.)

सखासमीर—स. स्त्री.—अग्नि, आग। (अ. मा.)

सखाहर—सं. पु [स हरिसखा] इंद्र। (अ. मा.)

सखि, सखिए, सखी, सखीय—सं स्त्री.—१ सहेली, सहचरी। (अ मा; डि को.)

उ०—१ सखी भरोसो नाह रो, सूनो सदन म जाण। फूल सुगंधी फौज मै, आमी भवर उडाण।—वी स.

उ०—२ सखीय सहित तिहि राजकुआरि आवी ऊलटि आपणइ ए। नाथि आणीआ तुरगम त्रिण्णि आणी कोडि कचण तणी ए। —हीराणद सूरि

उ०—३ सगै घटियाळ अगोहित मेर, सख्या सवनाहळ माळ सुमेर। त्रिया मरजीवत तेडि कवध, व्रखै पितु मात कुमी धजवध। —मे म

उ०—४ मोदरंगीर त्रिया खिणतरि मिळिवा, विचित्रै सखिए समाव्रत। कीवै तिणि वीवाह संसक्रित, करण सु तणु रति संसक्रत।—वेलि.

पर्याय.—आली, वयसा, सचैत, सध्रीची, सयण, सहचरी, सहेली, सुखदा, सुवछक, हितू।

२ किसी नायिका के साथ रहने वाली स्त्री जिसमे नायिका कोई वात न छुपावे। (साहित्य)

३ प्रत्येक चरण मे १४ मात्राऐं व अंत मे एक मगण या एक यगण का छंद।

[सं. शिखिन्] ४ अग्नि, आग। (डि को)

वि [फा] ५ दानी, दातार, उदार।

रू. भे.—सइ, सइयर, सई, सयी, सहि, सहियर, सही।

सखीभाव—स पु.—१ भक्ति मे एक प्रकार का भेद जिसमे भक्त अपने आपको इष्ट देव की पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना करते हैं।

२ वदान्यता।

उ०—'देवा' आप सूं सेवागीर यूं निसाफ दखी, सखीभाव धारै घणा देख देख सूब। रखी बाजी क्रीत री भू चाहे आयसा रूप, लखी घोड़ो कीजै अखी करै लावलूंब।—नवलजी लाळस

सखेद—स पु.—कष्ट, पीडा।

वि.—दु ख व खेद सहित।

सख्ख—देखो 'साखा' (रू. भे)

उ०—सुभट्ट सख्ख सक्खर लसग लक्ख पक्खर। धरा अडोल डुल्लय गजू निसान खुल्लय।—ला. रा

२ देखो 'साक्षी' (रू भे.)

उ०—झगडउ भागउ गोरिया, ढोलइ पूरी सख्ख। मारू रळियाइत हूई, पामी प्रीय परख्ख।—ढो मा

सख्खर, सख्खरो—१ देखो 'सखरो' (रू भे)

उ०—दै सुरसत मो दान चोजीला अख्खरा, वाखाणूं वरहास सजीला सख्खरा।—पे रू.

२ देखो 'सिखर' (रू भे)

उ०—देवी देव जळंधरी सप्त दीपै, देवी कदरै सख्खरै वाव कूपै। —देवि

सख्त—वि [फा] १ कठोर, कडा, मजबूत।

२ कठिन, मुश्किल।

३ दया ममता से रहित।

४ दृढ, पक्का।

रू. भे—सकत, सकती, सकत्त, सक्त, सखत।

सख्ती—सं स्त्री. [फा] १ कडापन, ज्यादती।

उ०—सगळा समाचार कहिया जै आज महाराजा सूं असी सख्ती हुई खरा उदास छै।—जयसिंघ आमेर रा धणी री वारता

२ कठोरता, कडाई।

सखत—देखो 'सख्त' (रू. भे)
सखती—१ देखो 'सख्ती' (रू. भे.)
२ देखो 'सक्ति' (रू. भे)
उ०—पछै दिली सु भडारी खीवसी जी ने वेलौ पातसाही नाहर खा आया। तरै नाहरखान सखती रा जाव किया।—रा व वि.
सखमदरा-स. पु [सं. मदारसखा] मदार का सखा, आम। (अ मा)
सखर, सुखरउ—१ देखो 'सखरौ' (मह, रू भे.)
उ०—१ कृपा अमूलिक काचली रे, नेमिजी तउ सखर महाव्रत साडी रे।—स. कु.
उ०—२ भण्या नइ हुयइ भलउ विहरावणउ, सुखर वस्त्र पहिरण ओढणउ।—स कु
उ०—३ सूध मन सेव गुरू देव री साचवै सखर समझै अरथ सूत्र सिद्धत। दियै बहुदान मन सुद्ध पालइ दया, भलौ नित सघ रौ करौ भगवत।—ध व. ग्र.
उ०—४ स्री धरमसी कहै सुजस सगलै सखर जतीसर जतीसर जतीसर।—ध. व. ग्र
उ०—५ सखै कीधउ पोसौ सुखरउ, पक्खुलि कीधी तात जी। मिच्छामि दुक्कड स्री महावीरै, दिवरायौ परभात जी।—स कु
२ देखो 'सिखर' (रू. भे.)
उ०—आज धरा दिस ऊनम्यउ, काळी धड सखरांह। उवा धण देसी ओळवा, कर कर लाबी बाह।—ढो. मा.
सखरण—देखो 'सिखरण' (रू भे.)
सखराळौ—देखो सिखराळौ' (रू भे.)
उ०—१ साळे दीधा सेहुरा वणि सखराळा विद।—रामरासौ
उ०—२ वीज सळाव मता वरसाळा, सर भरीया हरीया सखराळा। मद प्याला पीवण मतवाळा, वळण करौ भीमाजळ वाळा।
—किसनजी आढौ
सखरी—१ देखो 'सखरौ' (पु.) (रू. भे)
उ०—१ छापर द्रोणपुर अै रजपूत आया। आ ठोड सखरी दीठी। अर सहल हीज दीठी।—नैणसी
उ०—२ थोडा दिना पछै राणी की जुगत विचार अेक दिन वळै कवर नै कह्यौ—वेटा, थारी वहू नाचै तौ घणी सखरी, पण हाथा री खामचण कैडी है, आ तौ वता।—फुलवाडी
उ०—३ अेक दिन लाचार होय राजा वडोडी राणी नैं बुलाय कह्यौ कै वा नानेरा सू वडोडा राजकवर नै बुलाय लावै तौ सुखरी वात।—फुलवाडी
उ०—४ थें भला माणस छौ तौ च्यारि दिन थाहरै घरै आय रहियौ। थे राखियौ तौ सखरी कीवी। हमें सागेई माईत पहोता क्योंकर छोडसी।—पलक दरियाव री वात
२ देखो 'सिखरी' (रू भे) (डि को)
सखरु—देखो 'सखरौ' (रू. भे)
सुखरौ—वि (स्त्री. सखरी) १ सुन्दर, मनोहर। (डि. को)
उ०—१ रावळिया रामत समै, मावड़िया लौ माग। तौ रतना पतर तणू, सुखरौ लावे साग।—बा. दा
उ०—२ तद काया हुय जोगी हुवा। मुद्रा घाती। गुजरात गया। अै प्रोहित दीदारू सुखरा पण। अर वीण आछी वजावै।
—नैणसी
२ बलवान, वीर, बहादुर।
उ०—१ सो दीवाण तौ छत्रपति छै। पण उणरा घर माहै वी सुखरा सखरा रजपूत छै जिकै उणनै अकेलौ पैठ अर अगो-अग मारै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
उ०—२ जाहरा बाळसाद हुवै ताहरा तू उठिनै उरहौ लेई। तू पाळै थारौ वेटौ हुसी। सुखरौ हुसी। वैर लेसी।
—देवजी वगडावत री वात
३ उपजाऊ।
उ०—१ जैतारण था कोस ४, बडौ गाव। सीरवी बाणीया वामण चारण वसै धरती हळवा २५० बरसाळी खेत सखरा।—नैणसी
उ०—२ सीव घणो हळवा ३०० खेत सेवज हुवै। निपट सुखरा खेत छै। अरट १० ढीबडा १२ चाच २० हुवै।—नैणसी
४ अच्छा, बढिया।
उ०—१ फरसराम तू फाबियौ, सखरौ कियौ सग्राम। हसराम अवतार हरि, तू वामण बिसराम।—पी ग्रं
उ०—२ बारठ ईसर बोलिया, निकळक साहिब नाम। किलग दईत ना कूटता, कीधौ सखरौ काम।—पी ग्र
५ उत्तम, श्रेष्ठ।
उ०—१ साई तू सिरदारडौ, सखरौ थारौ साथ। तू देवा रौ दीवलौ, नव नाथा रौ नाथ।—पी. ग्र.
उ०—२ अवै रावजी रजपूता रौ साथ तेडीयौ। असवार हजार सु चढीया। साथै सामान लीयौ सखरौ महुरत साझ चालीया।
—राव रिणमल री वात
उ०—३ वैकुठ सूं सखरा लिखमीवर, पाव प्रवीत घणौ परमेसर। पगा सरिस सनकादिक पूजै, धरणीधर सू पातक धूजै।—पी. ग्र.
६ अनुकूलतम, पक्षीय।
७ स्वादिष्ट, जायकेदार।
उ०—१ पाका आबानी कातली खाडसिऊ वादली, पाका केळा खाड सु कीधा भेळा सखरा करणा, ते वली पीला वरणा।
—व स.
उ०—२ हिवइ दहीना घोळघोळ आवइ तै केहवा? गायना दही भइसिना दही सुथरा दही काठा जाम्या दही, मधुरा दही सुखरा सजीराला सलवणा जाडा दही ना घोळ।—व स.
उ०—३ गाय रै तौ मरता मरता ई समझ मैं नी आई कै आ काई वात व्ही। डोळा भवाय, तडाचा वावती वा तौ प्राण मुगत

सगतीपुरी—देखो 'सक्तिपुरी' (रू भे)

उ०—नग हीर कनक निछरावळा, ओपै पग पग आरती। पायौ सज्यास सगतीपुरां, परणायौ जोधापती।—रा. रू.

सगत्त, सगत्ति, सगत्ती—देखो 'सक्ति' (रू भे.)

उ०—१ बाहू चळी निरम्मळी, चख बीभळी सुरत्त। आजै करनल अक्कळी, सवळी रूप सगत्त।—राव सेखो

उ०—२ समरौ प्रथम गुणेस सगत्ती, पाछै गुण गावा छत्रपत्ती। —रा रू.

सगन—देखो 'सघण' (रू भे)

उ०—पावस री सगन छोळा पडै छै।—पना

सगपण–स पु—१ सम्बध, रिश्ता, नाता।

उ०—१ लोपै हिंदू लाज, सगपण रोपै तुरक सू। आरज कुळ री आज, पूजी राण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

उ०—२ भाई बेटउ वाप पणि, सगपण माई न मित्र। राजसभा नवि धीरीइ, लिखी चितारइ चित्र।—मा. का प्र

उ०—३ चौथै दिन जान नै सीख दिरीजैला। अपा कनैतौ दौ टक री ई सरतन कोनी। अै गाया नी व्है तौ भूखा मरा। नी तौ इत्ता जानिया री सरवरा व्है अर नी औ सगपण वेठै।—फुलवाडी

२ सम्वन्ध, लगाव।

उ०—नेम न कोई नित सा, अलख समा नही खेल। सगपण ना कोई सवद सा, एक समी नही वेल।—अनुभववाणी

३ विवाह, व्याह।

उ०—१ गढ बीकाण चीतगढ सगपण, 'कलौ' उदैसिघ इळ आकास। 'जसमा' नार रायसिंघ जोडी, पमग पाच सै हसत पचास।—महाराजा रायसिंह री गीत

उ०—२ वेटी इचरज भरचा सुर मैं बोली-विरथा! म्हारै ई सगपण री वात सू म्हारौ कीकर वास्तौ कोनी मा! म्है अै विरथा दपूचा लेवू! मा रा कान वेटी रा अै वोल सुणण सारू नी हा। वा आमनौ जतळावती तिडकनै कह्यौ—हा विरथा, साव विरथा! थनै व्याव सू तौ वास्तौ है, पण व्याव री चरचा सू की तल्लौ मल्लौ नी।—फुलवाडी

४ देखो 'सगाई'।

उ०—१ अर रामपुरै आपरी सगपण हुवौ जिण रा विवाहणा मै दसोर रा फौजदार नू नीडै जाणि केही बार सकळप पाछौ पाडि तुरका रा पेच मे कैद होवण रौ डर धारियौ।—व भा

उ०—२ खड देवडा भरै डड खधी, सगपण कर भाटी सनवधी सारा मिळै तूझ सु सधी, वळ दाखै किण सिर 'गजवधी'। —चतुरौ मोतीसर

उ०—३ तद सेठ तडकनै कह्यौ—था लुगाया रै तौ व्याव, सगपण मुकळावा, अर वाळूडा सिवाय दुनिया मैं दूजी की वाता है ई कोनी, पण म्हारै तौ अलेखूं काम है।—फुलवाडी

रू. भे.—सग्गपण।

सगवग–वि (अनु.) १ सरावोर, लथपथ।

२ भरा हुआ, परिपूर्ण।

क्रि. वि.—१ तेजी से, फुर्ति से।

२ झटपट, तुरन्त।

सगर–वि.—सब, समस्त।

उ०—गोमाय सगर पळचर गहणि, सार मेय नाहर समळ। अग अग भखै पळ आसुरा, कद पद धर तडळ कमळ।—रा रू.

स. पु. [स.] १ सूर्यवशी राजा वाहुक के पुत्र जिनके साठ हजार पुत्र कपिल मुनि के शाप से भस्म हो गये थे। इन्ही के वंश मे भगीरथ हुआ था।

उ०—१ राजा सगर नामना राखण, जिगन करण पाताळ इसमेद जग। अस मेल्हियउ करै ताइ आरभ, सरग नइ अत्य पाताळ लग।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ रायधण करण अनै वळराजा, प्रीछत 'धारु' 'जगड' पवार। 'भीमौ' 'नाहर' सगर भागीरत, सै नर अमर हुवा ससार। —गोरधन खीची

वि वि—शत्रुओ द्वारा राज्य के छिन जाने पर अपनी पत्नी के साथ ये वन मे चले गये और वही इनकी मृत्यु हो गई। इनकी सती व गर्भवती पत्नी को और्व ऋषि ने सती होने से रोका। ईर्ष्यावश सपत्नियो ने इसे गर (विष) पिलाया और गर पिलाने से वच्चे का जन्म हुआ। अत वच्चे का नाम सगर रखा। जिसने अपने शत्रुओ को पराजित कर उन्हे विकलाग किया। इसको सुमती नामक पत्नी से साठ हजार व कोशिनी नामक पत्नी से एक पुत्र असमजस प्राप्त हुआ। अश्वमेधीय यज्ञ के घोडे के खोजाने पर इसके साठ हजार पुत्रो ने पृथ्वी को खोदा व पाताल मे कपिल ऋषि के पास घोडे को देख कर समाधिस्थ कपिल ऋषि को मारने लगे। किन्तु कपिल ऋषि के द्वारा आख खोलते ही ये सभी भस्म हो गये। भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर लाकर इन सबका उद्धार किया।

२ एक चद्रवशी राजा।

३ राठौडो की उपशाखा।

रू भे.—सग्गर, सग्र, सागर।

सगरव, सगरभ–वि [स. सगर्भ] १ सहोदर, सगाभाई। (अ मा; ह ना मा)

२ देखो 'सगरभा' (रू भे)

उ०—जाण सगरभ अवर दुख जाणै अटकण सकत नकं मन आणै।—रा रू

३ देखो 'सगरव (रू भे)

सगरभा–स स्त्री [स. सगर्भा] गर्भवती स्त्री।

रू. भे.—सगरभ।

३ क्रूरता।

रू भे.—सक्ति, सखती।

सख्य-स. पु. [स शख्य] १ मित्रता, दोस्ती।

[शख्य्] २ मित्र, दोस्त।

उ०—हाट तै जै वस्तवत, वचन तै जै सत्यवत, सख्य तै जै विनय-वत।—व. स.

सख्यात—देखो 'साक्षात' (रू. भे.)

उ०—दधि कहता समुद्र सु समुद्र सोधि। अर जु मोती लीयौ थौ। जु वणतौ देख्यौ सख्यात।—वेलि टी

सख्स-म पु. [अ शख्श] १ व्यक्ति, आदमी।

२ वीर, बहादुर।

रू. भे —सकस, सखस, सगस।

सगध-वि —१ गध युक्त।

२ देखो 'सुगध' (रू भे)

सग-स पु [फा.] कुत्ता। (डूगरपुर)

सगग-स पु [अनु] ध्वनि विशेष।

उ०—आ सोच उणरी आख्या साम्ही सगळी हरियाळी सगग सगग सिळगण लागी।—फुलवाडी

सगगणौ, सगगवौ—क्रि. स —पानी या किसी तरल पदार्थ का ध्वनि करते हुए वेग से बहना।

सगगाट-स पु [अनु] १ एक साथ पक्षियो के उडने से होने वाली ध्वनि।

२ तरल पदार्थ के उमडने की ध्वनि।

३ शरीर मे कपन की अवस्था।

सगजवान-सं पु [फा.] कुत्ते के समान पतली और लम्बी जीभ वाला घोडा। (शा हो)

सगट—देखो ,सकट' (रू भे.)

उ०—कोळू तणौ कणवारियै, देवड वतायौ बोल। डेरै मे चौडै सगट, द्रढ गोळूया दीढौ गोळ।—पा. प्र

सगडी—देखो 'सिगडी' (रू भे)

उ०—१ धगधगती सगडी भरी, आणउ अति अगार। माहि मूकउ मानिनी, सटक देई सिणगार।—मा का प्र

उ०—२ सगडी मन माहरा माहि, भटकै बळती भालि। आवउ सही समाणीउ, टाढिकि जाउ टालि।—मा का. प्र.

उ०—३ बावन चदन वालि करि, सोविन सगडी आणि। ससि-वयणी सज्जण तणा, सेवाकड पय पाणि।—मा का प्र

सगण-स पु —प्रथम दो लघु और अत मे एक गुरु अक्षर का छदशास्त्र मे एक गण विशेष। (IIS)

सगणौ, सगबौ—देखो 'सकणौ, सकवौ' (रू भे)

उ०—१ पछै हासार रै फोजदार सारगखान रौ जोर आकरौ हुवौ ताहरा उठै ठहर सगिया नही।—नैणसी

उ०—२ इणारा परसगी आया तिका उठै हीज कुवै ऊपर दाग दियौ। वोल कोई सगीयौ नही।—कुवरसी साखला री वारता

सगत—देखो 'सक्ति' (रू भे.) (डि को; डि ना मा)

उ०—१ सवर राख कुसमै समै, कासू खवर करीस। खिण खिण लै जगची खबर, जवर सगत जगदीस।—बा. दा

उ०—२ कुडळ वाळी करनला, सगत वडाळी सेव। सदा रूखाळी सेवगा, डाढी वाळी सेव।—चैनकरण सादु

उ०—३ खतम अवसाण खैंपाणरहिया थकत, रीझियौ भाण दइवाण राजी। सिव सगत सवाडा अखाडा सेल रा, गवाडै प्रवाडा सुतन 'गाजी'।—नाथौ सादू

उ०—४ सारसा 'दूद' सत्रसाल परत्रह सहत, जोध रा जोध अण-पाल जुडिया। सूर पड ऊपडै सरै आन म सगत, मुग्गळा थाट दह-वाट मुडिया।—पातौ बारहठ

उ०—५ सुतन 'गजसाह' गज-गाह वधै समर, सगत बळ जळ हळै तेग साथै। गाजवा खळा जस करण वाका गढा, हीदवा छात रै फतै हाथै।—महाराजा जसवतसिंघ रौ गीत

सगतपण, सगतपणौ-सं. पु.—शक्ति, सामर्थ्य।

उ०—सिर धड भेळा साधनै, सगतपणा तत साच। देहूए कर लोवडी ऊपर दीधी आच।—पा प्र.

सगतपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू भे)

उ०—समर सगतपुर मडोवर छतर धर समोसर, तकर कर वजर वर धजर ताजौ। उसर नगतर ऊअर वीरमासर अतर,'गग' हर कळोधर रकहर गाजौ।—नाथौ सादू

सगतपुरौ—देखो 'सक्तिपुरौ' (रू भे)

सगतभूत, सगतभ्रति-स. पु [स शक्तिभृत] स्वामी कार्तिकेय।

रू. भे —सगतिभूत, सगतिभ्रति।

सगतसिंघोत-स स्त्री —भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सगताणी, सगतावत-स पु —सीसोदिया वश की एक उपशाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

सगति—देखो 'सक्ति' (रू भे)

उ०—हस मीन कूरम हरी, निरझर नदी निहार। काय व्यूह निज सगति कर, तौ सेवै इकतार।—वा दा

सगतिभूत सगतिभ्रति—देखो 'सगतभूत' (रू भे)

सगतिविलद-स पु —अर्जुन। (अ मा)

सगती—देखो 'सक्ति' (रू भे) (डि. को)

उ०—१ लिछमण कै वाण लग्यौ सगती, जौ कोइ ऐसौ होवै जो लिछमण कौ जीवावै।—लो गी.

उ०—२ चाद विना किणरी सगती जकौ रात रा अधारा नै उजाळै।—फुलवाडी

सगतीपुर—देखो 'सक्तिपुर' (रू. भे.)

२ वीर, बहादुर।

सगातरौ-वि.—निकट, समीप।

सगातेडौ-सं. पु.—मृत्युपरात मृतक के पीछे किया जाने वाला एक भोज जिसमे केवल सम्बंधीजन को ही बुलाया जाता है।

सगापण, सगापणौ-स. पु.—सम्बधी होने का भाव, आत्मीयता।

उ०—चढ जाय वूढौ चंचळा, मनरख सगापण मेळ। दारुआं अमला दोपटा, खीचिया कमधा खेल।—पा. प्र

सगार—देखो 'सागार' (रू भे)

सगारत, सगारथ-स. पु—सगा होने का भाव।

२ रिश्तेदारी, सम्बन्ध, रिश्ता।

उ०—१ जोधपुर और आमेर रै घर सू तुम्हारै सगारथ किस तरह।—गोपाळदास गौड री वारता

उ०—२ दोनू पख ऊजळो है अनै मलेछ मुसळमाना री चाकर नही मुसळमाना नूं सगारथ नही, जिणतरै महाराणा प्रतापसींहजी भूंपडा मैं वस नै हिंदू धरम राख दीधौ।—वी स. टी.

३ सम्बधी।

सगाळौ-सं पु.—निकटतम रिश्तेदार, सम्बधी।

सगावट-सं. पु—सम्बंध, रिश्ता, नाता।

सगावळ-स पु—सम्बध, रिश्ता।

उ०—राव जी कह्यौ—पातिसाह दीन दुनीरा छौ, हूं पावरियौ घर री धणी रजपूत छूं। पातिसाहा सगावळ करौ रोम सूम रा धणी छै।—वीरमदे सोनगरा री वात

सगाविध-स. पु—१ रिश्तेदार, सम्बधी।

उ०—रावजी कह्यौ। कांनड दे जी पिण आया। जरै पातसाह जी रावजी ने घणौ आदर सूं सगाविध सू वतलावण कीधी।

—वीरमदे सोनगरा री वात

२ आत्मीयता।

सगाह, सगाहौ-वि—१ मजबूत, दृढ।

उ०—१ मेडतिया मोहकमसिंघ हिम्मत सगाह, जोधा रदैभाण माण सिधु सा अथाह—रा. रू

उ०—२ राम 'दूरगै' अखियौ, सुणता कमंध सगाह। धरती रा जतना करू, पर तीरा पतसाह।—रा. रू

उ०—३ 'दीनौ' 'गोयद' हरा दुवाहौ, सुत जैसिंघ विवाद सगाहौ।

—रा रू

२ जबरदस्त, बलवान।

उ०—१ हैंचाळ ढला ढाहण सगाह, भड सिहर जोध आजान-बाह। चाचरै जिकै चाडत देग, तेजरी तीह तूटत तेग।

—गु रु वं

उ०—२ धरपति सम्रधीर हेल हमीर, वावन वीर दुवाह। निरमळ मुख नूर पहगह पूर, साम्रत सूर सगाह।—ल पि

३ गर्व सहित, सगर्व।

उ०—१ साह सुणै विग्र सोचियौ, गह मोचियौ सगाह। मन ठहराइ मेळ री, साह 'अजीत' सलाह।—रा. रू.

उ०—२ वोलै साह सगाह महावळ, मेना तोछ तपस्या सव्वळ। सुणै चलायौ पूत सप्रांणौ, अकवर गंजसि कौ आपाणौ।—रा. रू.

४ आदर पूर्वक, प्रतिष्ठा पूर्वक।

उ०—मास वळै आसोज में, आपण मोज अथाह। कवर सगाह बुलावियौ, फरकसाह पतसाह।—रा. रू.

५ क्रोध पूर्वक, सक्रोध।

रू. भे.—सगस, सगह, सग्गह।

सगुड—कवचधारी (हाथी)।

उ०—सगुड हात्थीया लूडइ, रयावली ऊधालवइ मउडघा माकड जिम खेलावइ।—व. स

सगुण-सं. पु.—१ परमात्मा का वह रूप जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणो से युक्त हो।

२ ईश्वर, परमात्मा। (ना. मा.)

३ एक सम्प्रदाय विशेष जिसने ईश्वर का सगुण साकार रूप मान कर पूजा की जाती है।

४ अच्छे गुण, श्रेष्ठ गुण।

५ धार्मिक साधु।

६ डोरी चढा हुआ धनुष।

वि. (स्त्री. सगुणी) १ गुणवान, चतुर।

उ०—१ सारसडी मोती चुणइ, चुणइ त कुरळइ काइ। सगुण पियारा जउ मिळइ, मिळइ त विछुडइ काइ।—ढो. मा

उ०—२ आवै हित आवै अवसि, परत न खोवै प्रीत। हौं जाणूं सो ज्यौ हुसी, सो सगुणी री मीत।—र. हमीर

उ०—३ सूहा, सगुण ज पखिया, म्हाकउ कहयउ करै ज। नव मण चंदण, मण अगर, माळवणी दागै ज।—ढो मा.

उ०—४ माळव देस विखोड़िया, मारू किया वखाण। मारू सोहा-गिण थई, सुदरि सगुण सुजाण।—ढो. मा.

२ परोपकारी।

उ०—१ दादू सगुणा गुण करै, निगुणा मानै नाहि। निगुणा मर निस्फल गया, सुगुणा साहिव माहि।—दादूवाणी

उ०—२ सगुणा गुण केतै करै निगुणा न मानै नीच। दादू साधू सव कहै, निगुणा के सिर मीच।—दादूवाणी

३ कृतज्ञ।

उ०—१ दादू सगुणा लीजियै, निगुणा दीजै डार। सगुणा सन्मुख राखियै, निगुणा नेह निवार।—दादूवाणी

उ०—२ सगुणा गुण केतै करै, निगुणा न मानै एक। दादू साधू सव कहै, निगुणा नरक अनेक।—दादूवाणी

४ अच्छी आदत वाला, अच्छे व्यवहार वाला।

५ सामारिक।

वि. स्त्री.—सहोदरा। (डिं. को.)

सगरव-वि. [स. सगर्व] १ गर्वयुक्त, गर्वीला।

२ देखो 'सगरभ' (रू. भे.) (अ. मा.)

सगरांम—देखो 'संग्राम' (रू. भे.)

उ०—१ सगराम वंब वागा सुणे, अवर भुज लागा अड़ण। उभल्या समर काळा उछब, भाला खग ढाला भिडण।—मे म.

उ०—२ वामी वध बाघळा, सूर सगरांम सधीरा। तेज जेठ तावड़ा आखि धावडा अगीरा।—मे. म

सगरि-स. पु—राजा सगर के पुत्र।

उ०—सगरि हिं खणीय सुरग, विदुरि दिवारीय दूर लगइ। हु अगारउ अग, ईण ऊपाड पडवह।—सालिभद्र सूरि

सगळाई-क्रि. वि.—सभी, सारे ही।

उ०—ओलै बैठी एकली, करै सगलाइ कामो रे। राती रस भीनी रहै, छोडे नही निज ठामो रे।—ध. व ग्र.

सगळीगर—देखो 'सिकळीगर' (रू भे.) (डिं को.)

सगळै-क्रि. वि.—सर्वत्र, सब जगह।

उ०—मुरधर देस मझार, सयळ धणधान सयिद्धौ। नामै पूगळ नयर, पुहवि सगळै परसिद्धौ।—ढो मा

उ०—२ सगळैइ काम व्हाला है, चाम व्हाला कठैई कोनी। पण थोडो घणौ कांम तौ जेठाणी जी नै ई करणौ चाहीजै।

—अमर चूनडी

वि. [सं सकल] सब, समस्त।

ऊ०—कृत करण अकरण अन्नथा करण, सगळै ही थोकै ससमत्थ। हालिया जाइ लगाया हूता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ।—वेलि

रू. भे.—सिगळै।

सगळो-वि [स सकल] (स्त्री सगळी) सब, समस्त। (डिं को)

उ०—१ खाता न लागै खाण, पाणी न लागै पीवता। सयणा विण समसाण, जग सगळौ दीसै 'जमा'।—जसराज

उ०—२ तद जलाल कही—सात सौ घोडा कधारी इकमोला हजारी तिकी सुनहरी रूपहरी साखत दिरायजै अौर खजाना सू रोकडा दिराज्जै। बीजौ साथ सामान सगळौ म्हारौ छै हीज।

—जलाल बूबना री वात

उ०—३ गजवधी तेडावियौ, सगळौ साऊ सत्थ। इळि नवकोटी मुरधरा, कुण कुण सुहड समत्थ।—गु रू व

उ०—४ कोटवाळ कामातुर हुग्रो। पछै हकीकत पूछी नै रजपूताणी काणा री सगळी हकीकत कही।—काणा रजपूत री वात

रू भे.—सघळउ, सघळू, सघळौ, सिगळउ, सिगळौ।

सगस-स पु—१ भूत-प्रेत। (डिं को)

२ देखो 'सगाह' (रू. भे)

उ०—रायसीह जसवन रण, जाणै तजि कढि जाण। ले दारा फ़मिया लगस, फोजा सगस उफाण।—व भा

३ देखो 'सहस' (रू भे.)

सगह-स पु—१ सिंह, शेर। (अ. मा.)

२ देखो 'सगाह' (रू भे)

उ०—१ रिमसेन सगह वहिया जुध रासै, रूका पाण कनोजै राय। पळ भखती राती पिड पखण, तगसती राता गिर ताय।

—धोळूजी वीठू

उ०—२ तूवर पाटण मेलिया, अभै करै 'अभसाह'। साभरि सिर आयौ सगह, नरपति विरुद निवाह।—रा. रू

उ०—३ विघन वार गिरधर सधर वाधियै वीररस, पह सुछळि सगह आलम सपेखै। मरणमगळ जिसौ जाणियौ मोट मन, लाख खळ सबळ तिलमात लेखै।—गिरधरदास रौ गीत

उ०—४ विखम नवल वाजता, गयद गाजता गरूरां। असि धमसता अनेक, सगह वहसता सूरा।—सू प्र.

सगान-वि—१ गायन सहित।

उ०—१ रजै मलार सारग, रितग रग मारग। रमाल ताल सोरठी, सगान तान सामठी।—रा. रू.

उ०—२ कवि नव नव कायवकथै, गायव तान सगांन। वाजित्रा लोभै अमर, नर सोभै दीवान।—रा. रू.

सगा-वि. [व व] स्वय के, खुद के।

ज्यू—सगा हाथा सू, सगा मूडा सू।

सगाई-स स्त्री.—१ सम्बध, रिश्ता।

उ०—१ सवळ सगाई ना गिणै, ना सवळा मे सीर। खुरम अठारै मारिया, कै काका कै वीर।—अग्यात

उ०—२ स्याग सगाई कुछ नही, राम सगाई साच। दादू नाता नामका, दूजै अग न राच।—दादूवाणी

उ०—३ आगै 'कमो' वधै आभाळा, चौडै मार लियौ कळचाळा। सामधरम लेखवै सगाई, भिळियौ खळा न लेखै भाई।—रा रू

२ विवाह के पूर्व की वह रस्म या प्रथा जिसके अनुसार पुत्र और कन्या का सम्बध निश्चित होता है, मगनी।

उ०—१ वैर अमल सू वढै, सगाई अमला सावै। अमल गळीजै अवस, व्याह मे तोरण वाधै।—ऊ का

उ०—२ राजवीया नै ग्वाळा किसी ग्याति। कुण जाति कुण पाति। राजवीया री सगाई तो राजवीया सू वूझै छै।—वेलि टी

३ सम्बन्धी या रिश्तेदार होने की अवस्था या भाव।

४ विधवा व पुरुप का सम्बन्ध जो कई जातियो मे विवाह ही समझा जाता है।

सगाचार-स पु—१ बेटे या बेटी के ससुराल वाले, सम्बधी।

२ रिश्ता, सम्बध।

सगाढो-वि.—१ मजबूत, दृढ।

उ०—गिरधर रतन दळा विच गाढा, सकजा भुज 'धनरूप' सगाढा।

—रा रू.

आव धूरी। कारण भूत पा नग घपा कुसम, पियँ रत दियँ आसीस पूरी।—नाथौ रोहड़ियौ

सघट–वि.—दृढ, मजबूत।

उ०—जै अणहलपुर पाटण ? सघट घाटँ गी विषम विश्रामे करी अभिराम, महागहोछरै भला आराम।—व. स

सघण–स. पु —१ पहाड, पर्वत। (अ. मा.)

२ वर्षा।

उ०—वजि थाल सकल वाजिंत्र वजे कुगम मघण सुरघट किया। वेलिया हीज आवै वर्षां, उण दिन तणौ अजोधिया।—सू प्र.

३ मेघ, वादल। (ना मा)

उ०—१ रिडँ जाण आहज्ज, अगन घडहडती ऊपरि। मघण गाज साभळै, जाण सादूळै केहरि।—गु रू. व

उ०—२ सघण नीर सीतळ सु करत त्रिज्जण समीर कर। वदभिज भार-अढार, पुहुव घर पग्गिळ ऊपर।—ह. र

३ समूह, झुण्ड। (अ. मा)

उ०—सुहड सघण सुर-छभा, सुकवि जण किता सुधाकर।

—गु रू. व

४ घनघटा, मेघघटा।

उ०—१ सम्मूह चडै सुरताणरा कटक वध फौमण सघण। जाणियौ ताम तावी नदी, दे अण-मान आयौ महण।—गु रू. व

उ०—२ प्रगट्यौ वरस पंचोतरौ, नावण सघण मराय। साह करउव पगि पर, दुमुखि रहै चव लाय —रा रू.

वि —१ अधिक, वहुत।

उ०—१ भरै अन्न भडार, मालि गोधूम सघण घण। घ्रित तेल गुळ लूंण, लगै अहिफेहण सावण।—गु. रू. वं

उ०—२ गर्जसिघज गैमर गोडिया, सीह कलेवर पजरा। नावज सीह ब्याया सघण, रहि मोळै गिर कदरा।—गु रू. वं.

उ०—३ जिण समँ गहरौ मुधरौ मुधरौ गाजै है, पवन सीतल मद वाजै है. नोघण मेहगी सघण छोटा परताळा पडती जिके जमी नीठ खमै है। वीज आभँ न मावै है।—र. हमीर

२ घना, गहरा।

उ०—१ राति ज वादळ सघण घण, वीज-चमकउ होइ। उण समईयइ हे सखी, साल्ह जगाई मोइ।—ढो मा.

उ०—२ निगरभर तरुवर सघण छाह निसि. पुहपित प्रति दीपगर पळास। मौरित अव रीझ रोमचिन, हरखि विकास कमळ कृत हास।

—वेलि

उ०—३ उपवन सघण वहार अनूठी, छित हरियाळी छागी। अग मरोड सग तरुवर व्है, लूम लता लहरायी।—लो गी.

उ०—४ स्याम नदी काठै सघण, तरवर स्याम तमाळ। सजुत स्यामा सायधण, साहव स्याम समाळ।—वा दा.

३ स्थूल, मोटा।

उ०—सघण मूकदि सदरि सु सीसीद, सघणप्रहिरि सीअण सीसीद। कमल नै दलि साथर पाथरिउ, सरद सीभर सम्मद थाकरिउ।

—मानिसूरि

रू भे —सघन।

सघणगाज–स. पु —भीम। (अ मा.)

सघणवाह–स. पु.—इन्द्र। (अ. मा.)

(मि. मेघवाहन)

सघणापो–स. पु.—१ अधिकता, बाहुल्य।

२ घना होने की अवस्था या भाव।

सघणो, सघवो —देखो 'सघणो, सघवो' (रू. भे)

उ०—१ सवद मारगी मारियो, रोवँ साग उगाग। हमीरा बाहिर वोसिर्यं, काढि न सघं साग।—अनुभववाणी

उ०—२ हमीरा गयो जाइ सघो, मुख मनोवर सीर। पाड़ी कोय न पी सघ मो हुसो पीवँ नीर।—अनुभववाणी

सघन—देखो 'सघन' (रू भे)

उ०—आळ जांगडो-रू स सघन मायदमत माडो।—दमदेव

सघरौ–वि.—सपरिवार, कुटुम्ब सहित।

उ०—तठै एक ब्राह्मण रो घर। तठै ब्राह्मण सघरो ही रहै।

—पीवोनी

सघळउ, सघलउ, सघळू, सघवू सघळौ. सघलौ—देखो 'सगळौ'

(रू भे.)

उ०—१ कहीउ सघलउ तै गवरात, महुनी हरखी निसुणी वात। सघीव पाहि वीनवीउ नरिंद, निसुणी राय हूउ आणंद।

—हीराणंद सूरि

उ०—२ वगतर ताम लीवा ऊदाळी परघउ गजानद हाथ। तरकस तीर नीर हथियारह. लूसइ सघळउ साथ।—का. दे प्र

उ०—३ जण जण प्रति सघलूं कहइ, जारि जीव म हरि। कठिनपणइ तं काढयू, वाहु घरीनइ बाहरि।—मा का. प्र.

उ०—४ सघळी रावलह (नह) लहलै, गाधन पोवती मोती की माळ।—वी. दे.

(स्त्री सघळी)

सघाळो—देखो 'तिघाळो' (रू. भे)

उ०—१ गुडै पाच गजराज, गुडै घजराज सघाळा। केताइ गुडै कमाल, गुडै रावत रवताळा।

— कल्याणसिंघ नगराजोत वाटेल री वात

उ०—२ चाळा लाग कुरदा ठेलती नाणै नदी चाली, सघाळा ठकाणा सोभा मेलती सुथान। भुरावाळा हता मुठ कम्मेनती भली भाई, जाणै मेघमाळा आइ रेलती जेहान।—महादान महडू

सडग–स. पु. [स. षडग] वेद मे छः अग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष।

रू भे —सडग।

६ देखो 'सुगन' (रू. भे.)

रू. भे —सगुन, सरगुण ।

सगुणता–स स्त्री —सगुण होने की अवस्था या भाव ।

सगुन—१ देखो 'सुगन' (रू भे)

२ देखो 'सगुण' (रू. भे.)

सगुनियौ—देखो 'सुगनी' (अल्पा, रू भे)

सगुर–वि. [सं. सगुरु] महान, जबरदस्त ।

उ० —खुरसाणी रहमान अखूनी, सीदी हब्स राफसी सूनी । मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुन जसथानी ताई ।—रा. रू

सगोड़ौ—देखो 'सगौ' (अल्पा; रू भे.)

सगोडौ, सगोढौ—[स सम्+गोत्र] (स्त्री. सगोडी, सगोढी) १ निकटतम रिश्तेदार।

२ घनिष्ठ मित्र ।

सगोत, सगोतरी, सगोती, सगोत्र, सगोत्री–वि. [स. सगोत्रः]१ एक ही जाति का, सजातीय ।

उ०—सगोत्री कन्या मीणा नू देण मे लग्न री विचार किसडौ कहावै ।—व भा.

२ अपने वश का, कुल का ।

उ०—१ कुमार कहियो मीणा तौ ठाकुर कहावणौ सहज री जाणि अब तौ रजपूता री पुत्रिया नू बरण ढूका । अर आपारा सगोत्र गोळवाळ जसराज नू समता री सवधी करण ढूका ।—व भा

उ०—२ ब्राह्मण पत्नी जोय जी, गरभवती पै जाय । गिणै न सगी सगोतरी, घोर नरक सौ पाय ।—वैताळ पच्चीसी

३ सम्बधी ।

४ कुल, वश ।

५ उस वंश के जिसके साथ श्राद्ध और तर्पण का सम्बध हो, दूर का नातेदार ।

सगौ–स. पु. (स्त्री. सगी) १ बेटी या बेटे के ससुराल का व्यक्ति ।

उ०—१ कहै सगा भोळप करी, दीधी डावडियाह । राव सरीखै रग हुवै, मूंहडै मावडियाह ।—बा. दा

उ०—२ जै डर न होइ जाणौ जनक, प्रणत काल्हि लागूं पगा । सौ जै न होइ दोजै सहज, सुत अपजस असगा सगां ।—व भा.

उ०—३ भाया रा नाम लै कुसल पूछिग्रा । कहै चहुआणा रा हीज सगा हुआ हो ।—कल्याणमिघ नगराजोत वाढेल री वात

मुहा —सगौ सगा री जड व्है=समधी समधी का सहायक व रक्षक होता है ।

२ सम्बधी, रिश्तेदार।

उ०—कोडी बिन कीमत नही, सगा न राखै साथ । हाजर नाणौ हाथमे, वैरी बूजै बात ।—ऊ का.

३ एक माँ के उदर से उत्पन्न, सहोदर ।

उ०—१ दोनू मास्याई भाइया मैं हेत अणूतौ । साथै रमै, कूदै, मछरा करै । अेक दूजा बिना छिण ई आवडै नी । सगा भाइयां विचै ई गाढौ हेत ।—फुलवाडी

उ०—२ पछै दोनू जणा हेटै आय पूछताछ करी । निरी ताळ ताई हाथा-जोडी रै उपरात वा रोवती रोवती ई बतायौ कै देतराज उण रौ सगौ भाई हौ ।—फुलवाडी

४ निकटतम सम्बंधी या रिश्तेदार ।

५ पिता, पितामह, मातामह (नाना) के वश का कोई सदस्य या व्यक्ति ।

ज्यूं=सगौ भाई, सगौ भतीजौ, सगौ काकौ, सगौ भाणजौ, सगी मासी, सगी भूवा ।

६ प्यारा, दुलारा ।

रू. भे.—सग्गौ ।

अल्पा;—सगोडौ ।

सग्ग—देखो 'सुक' (रू भे.)

उ०—इखै नासिका सग्ग दीपक्क एरी, कळी चप जाणै लळी लप केरी ।—ना. द.

२ देखो 'स्वर्ग' (रू. भे.)

उ०—त्रिणि त्रिणि चिहु दिसि दीपइ, जीपइ वारइ सग्ग । मडप ऊचपणि घणइ गयणगणिहिं विलग्ग ।—अग्यात

सग्गड—देखो 'सकट' (रू. भे.)

सग्गपण—देखो 'सगपण' (रू भे.)

उ०—वयणै वदवादन कायवली, टल सिद्ध सग्गपण मामटली ।

—पा. प्र

सग्गर—१ देखो 'सागर' (रू भे.)

उ०—हिलोळ जाण हूकळक सद्द नद्द सग्गरं ।—गु रू. व.

२ देखो 'सगर' (रू. भे)

सग्गह—देखो 'सगाह' (रू भे)

उ०—ऐसौ पातिसाह कौ परगाह सग्गहा ते अगाह ।—रा. रू

सग्गौ—देखो 'सगौ' (रू. भे)

सग्यान–स. पु [स. सज्ञान] १ ज्ञानी व्यक्ति ।

२ बुद्धिमान पुरुष ।

३ प्रौढ, वयस्क व्यक्ति ।

वि.—१ चतुर ।

२ सावधान, होशियार ।

सग्र—देखो 'सगर' (रू भे)

उ०—नमौ कपिलेसुर दिस्ट करूर, नमौ सुत सग्र जळावण सूर ।

—ह. र.

सग्रांम—देखो 'सग्राम' (रू. भे)

उ०—१ आव्रत हुऔ एकै घडी, हुआ सुभट्टा सत्यरा । सग्रांम चक्र वूहा सत्रा, सूरसिंघ चक्रव्रत्तरा ।—गु. रू वं.

उ०—२ अजसिया 'माल' सग्रांम 'ठदा' उभै, धमळ 'गजबंध' रौ

सडविंदुतेल-स पु [स पड्विंदुतैल] सिर के दर्द दूर करने व आंख तथा दांत को लाभ पहुँचाने वाला वैद्यक का एक तेल ।

रू. भे —सडविंदुतेल ।

सडविकार-स. पु [स पडविकार] १ प्राणी मे होने वाले छः विकार उत्पत्ति, शरीर वृद्धि, बालपन, प्रौढता, वृद्धत्व और मृत्यु ।

२ काम-क्रोध आदि छः प्रकार के विकार ।

रू भे.—सडविकार ।

सडवो-स पु —फसल की रक्षा के लिए पशु-पक्षियो को डराने हेतु खेत मे बनाया जाने वाला मानव आकृति का पुतला या उपकरण ।

उ०—मोह वास मडवै, विघन सड़वा विसनारं, कर हाका हाकत जुरा कुत्ती हलकारं ।—ज खि.

रू भे.—सडवौ ।

सडसठ —१ देखो 'सतसठ' (रू भे.)

२ देखो 'छासठ' (रू. भे)

सडसठमों, सडसठवों —देखो 'सतसठमों' (रू भे)

सडाण, सड़ाध-स. स्त्री.—१ सडने की क्रिया या भाव ।

२ दुर्गन्ध, बदबू ।

क्रि. प्र —आणी, उठणी, मारणी, होणी ।

सडाक-स पु [अनु] कोडे या चाबुक के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि ।

क्रि वि.—शीघ्र, जल्दी ।

सडाको-स. पु. [अनु] कोडे या चाबुक के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि ।

सडागनी-स स्त्री [स. पडग्नि] कर्मकाडियो द्वारा मानी जाने वाली छः प्रकार की अग्निया यथा—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि ।

रू भे —सडागनी ।

सडाणण —देखो 'सडानन' (रू भे.)

सड़ाणो, सडावो—क्रि स.—किसी वस्तु को सडने मे प्रवृत्त करना ।

सडाणहार, हारो (हारी), सडाणियो —वि० ।

सडायोडो — भू० का० कृ० ।

सडाईजणो, सडाईजवो —कर्म वा० ।

सडानन-स पु [सं पडानन] १ कार्तिकेय ।

२ सगीत के स्वर साधन की एक प्रणाली विशेष ।

रू. भे.—सडाणण, सडानन ।

सडायध-स स्त्री.— सडी हुई वस्तु से निकलने वाली दूषित गध ।

सडाव-स पु —सडने की क्रिया या भाव ।

सडासड़-क्रि वि [अनु] १ सड-सड शब्द से उत्पन्न ध्वनि ।

२ शीघ्र, तेज गति मे ।

उ०—सडासड पीजण ढूकी जको ढबी ई नी ।—फुलवाडी

३ बिना रुके लगातार बहुत सी बातें कहते जाना, झडी ।

उ०—प्यालो भर स्याराम जी खनै आई, मुजरा दी सडासड लगाइ ।—दरजी मयाराम री वात

क्रि प्र.—लगाणी, वाधणी ।

सडिद, सड़िदो-स. पु. [अनु.] १ छडी, चाबुक आदि के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि ।

२ प्रहार, चोट ।

उ०—सडिदै रै सडिदै उणरै काळजा री दाभ टरती ही ।

—फुलवाडी

सड़ियल-वि.—१ सडा हुआ ।

२ रद्दी, निकम्मा ।

३ नीच, पतित ।

सडियोडो-भू का कृ —१ किसी पदार्थ, प्राणी आदि मे विकार उत्पन्न हुआ हो, जिससे उसके सयोजक तत्व अलग हो गये हो तो उसमे दुर्गन्ध आने लगी हो, विकार युक्त हुवा हुआ, खराब हुवा हुआ, बिगडा हुआ. २ हीनावस्था मे पडा हुवा हुआ. ३ द्रव्य पदार्थों में खमीर उठा हुआ ४ कष्टमय व बुरी दशा बिताया हुआ ।

(स्त्री सडियोडी)

सडियो-स पु —१ घास-फूस की बुनी मोटी रस्सी ।

२ ऊंट के अगले पैर बाधने का चमडे का बधन विशेष ।

(मि लडियो)

सडी, सडी-स स्त्री —भैस के चमडे की रस्सी ।

सडो, सडो-स पु.—१ वह बडा चौक जिसके चारो तरफ काटो की बाड हो ।

उ०—१ बडा भील बडा सडा माहे वैसाणिया आदमी ४०० चाकर वागर बीजा सडा माहे वैसाणिया ।—नैणसी

उ० २ कूपो जी तुरत चढीया सु रात थका असवार पाचसो सु पोहर दोय कुंभलमेर आया । राणा जी रा कटक आडो सडो कियो थो, तिको कूपो जी दीठो ।—राव मालदे री वात

२ कुए के पास बनी कच्ची झोपडी जो बैलो को सर्दी से बचाने के लिए बनाई जाती है ।

३ मूली की परिपक्वावस्था की जड जो बेकार हो जाती है ।

४ देखो 'सडवो' (रू भे.)

रू. भे —सडो, सड्डो ।

सचग —देखो 'सुचग' (रू भे.)

उ०—इण वर्ण रूप उमंग, नमियान जरिय सचग । बह कासमीर बिलोर अनि रंग छवि धर और ।—सू प्र.

सच —देखो 'सत्य' ।

उ०—मधु बोल सच बोलणा, करणो पर उपकार । नर जीवन पायो नरा, समझो कछु भव सार ।—नारायणसिंह सादू

सचकार —देखो 'सचकार' (रू. भे)

सचकित-वि [स] १ भडका हुआ ।

२ डरपोक, कायर ।

३ कापता हुआ ।

सचणो, सचवो—देखो 'सचणो, सचबो' (रू. भे)

सड–क्रि वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—साम्हा ल्हसकर मेलिया जाळधर 'अगजीत'। सड़ आयो इवराम खा, मिळण जवन सज मीत।—रा रू.

२ छ।

सडक–स स्त्री —१ यातायात के लिए बना मार्ग, राज्यपथ।

उ०—सहरा सुदर लगै, वगीचा री वण सोभा। सडक चालता मिनख, लेवता लोयण लोभा।—दसदेव

२ बोने से होने वाला नाज। (त्रिलो अडक)

वि —नशे मे पूर्ण तृप्त।

उ०—सरावा बोतला पिया छक छक सड़क किया निधडक हिया हरावळ कोप।—कविराजा वाकीदास

२ असली, वास्तविक।

क्रि. वि.—सपाट से।

उ०—कधडक दडक वडक कडी सिधुडक सड़क वहै सुजडी।
—गो रू.

सडकाणौ, सडकाबौ–क्रि. स —चाबुक या छडी से मारना, पीटना।

उ०—१ है आली तोडी कामडी जी सड़कायो दो'यर च्यार जाजो मरवो लै।—लो. गी

उ०—२ राजा खुद घोडै चढ्यो साप्रत आपरी निजरा राजकवरा रौ निसटापणो देख्यौ तो जाणै ओर नै तिणग वताइ। चार पाचेक कावडिया सड़काई। गाळिया काढी। राजकवर न्हास गिया।
—फुलवाडी

सडकाणहार, हारौ (हारी), सडकाणियो— वि०।

सडकायोडो—भू० का० कृ०।

सडकाईजणो, सड़काईजवौ—कर्म वा०।

सडकावणो, सडकाववौ—रू० भे०।

सडकायोडो–भू. का. कृ —छडी या चाबुक से मारा हुआ, पीटा हुआ। (स्त्री, सडकायोडी)

सडकावणौ, सडकाववौ—देखो 'सडकाणौ, सडकावौ' (रू भे)

सडकावणहार, हारौ (हारी), सडकावणियो—वि०।

सडकाविप्रोडो, सडकावियोडौ, सडकाव्योडौ—भू० का० कृ०।

सडकावीजणो, सडकावीजवौ कर्म वा०।

सडकावियोडो—देखो 'सडकायोडो' (रू भे.)
(स्त्री सडकावियोडी)

सडगुण–स. पु [स षड्गुण] १ छ. गुणो का समूह।

२ राजनीति की छः बातें—सधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधी-भाव और सश्रय।

रू. भे.—सडगुण

सडज–स. पु. [स. षड्ज] सगीत के छ सप्तस्वरो मे प्रथम स्वर।

रू. भे —खडज, खडज, सडज।

सडण–स स्त्री —सडने की क्रिया या भाव।

वि.—सडने वाला।

सड़णो, सडबौ–क्रि अ —१ किसी खाद्य पदार्थ एव शरीर मे विकार उत्पन्न होना जिससे उसके सयोजक तत्त्व अलग-अलग हो जाते हैं तथा उससे दुर्गंध आने लगती है। विकारयुक्त होना, विगड जाना, खराब हो जाना।

उ०—१ रसिया री तन रोगसू, सड़ जावै नह सोच। हेम रजत खातर हुवै, पातर लोचपलोच।—वा दा

उ०—२ मुडदा मडहट मे पडिया नह मावै, सडिया वासै सब, बिकरद बभकावै। आडा खाडा मे भोडक अडवडता, सता आस्रम जिम तूंबा तडभडता।—ऊ. का.

उ०—३ पनग लडी कीडा पड़ो, सडौ भडौ दुख सग। जग चुगला री जीभडी, वायस भखो विहग।—वा.दा

२ हीनावस्था मे पडे रहना।

३ द्रव्य पदार्थो मे खमीर उठना।

४ बहुत ही कष्टमय व बुरी दशा विताना।

५ व्यर्थ पडा रहना, अनुपयोगी होना।

सडणहार, हारौ (हारी), सडणियौ—वि०।

सडिओडो, सडियोडो, सड़योड़ो—भू० का० कृ०।

सड़ीजणो, सडीजवौ—भाव वा०।

सडणो, सडवौ, सिड़णौ, सिडवौ—रू० भे०।

सडदरसण—देखो 'खटदरसन' (रू. भे)

सडबौ—देखो 'सडवौ (रू भे)

उ०—हिरणा नह मावै हियै, सडवौ दीठा स्वास। वाघ घणा मिळ वीटिया, तौ पिण तिल नह त्रास।—वा दा.

रू भे —सडौ

सड़रस—देखो 'खटरस' (रू भे)

सडवडणो, सडवडवौ–क्रि अ.—१ तेज गति से चलना।

उ०—'हाकडा' तणी सुण सुण हकाल, सडवड़ै सत्र उर पडै साल।
—पे रू

२ भागना, दौडना।

उ० — हडवड जोगण खेतल होय, सडवड कायर पथ सजोय।
—गो रू.

सड़वडियो–स पु —१ कायर।

२ गरीब, दीन।

सडवदन–स. पु [स षडवदनः] कार्तिकेय।

रू. भे —सडवदन।

सड़वरग–स. पु [स. षडवर्ग] १ छ वस्तुओ का समूह या वर्ग।

२ ज्योतिष के अन्तर्गत क्षेत्र, होरा, द्रेष्काण, नवमाश, द्वादशाश और त्रिशाश का समूह।

३ काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर इन छ का समूह।

रू. भे.—सडवरग

सचाडणौ, सचाडवौ–क्रि स.—सहायता लेना।
उ०—आया दूत खबर सह आई, विचित्र फौज लख दोय बताई। चडियौ 'अजन' अेख मन चाडै, साम्हौ सुहडै भडै सचाडै।
—रा रू.
सचायौ—देखो 'साचौ' (रू भे.)
सचाळ—देखो 'सचाळौ' (रू भे)
उ०—बाघ चाळा चोतरफा रोकियौ बाहरा बीच, चडै दूद्र अटा हू विलोकियौ सचाळ। भीम नाद आग्राजतौ तोकियौ सैणाग भुजा, लागै खेटे रायजादौ कोकियौ लकाळ।—प्रतापसिंघ राठौड री गीत
सचाळी–वि —क्रीडा करने वाली। (देवी)
उ०—१ चोळ रुधर मद पियै सचाळी, विकट करै नाटक विकराळी।—सू प्र.
उ०—२ स्रवणै साह सुणै सचाळी, ताय मिळी मुख हेकण ताळी। 'पीथल' बाहर काछ पचाळी, धावजै चारणि घारळियाळी।
—प्रथीराज राठौड
सचाळौ–वि (स्त्री सचाळी) १ वीर, योद्धा।
उ०—१ सूरा सीम 'दुजौ' 'मवळावत', राजा घसि लगायौ रावत। वधव जोड 'फतौ' बाहाळी, साथै मुहकमसिंघ सचाळौ।—रा रू.
उ०—२ हरि गयण रत्थ ताण हत्थ, वाघि कत्थ वेणिय। वाजै सचाळौ कुभवाळौ, रखवाळौ रैणय।—रा. रू
उ०—३ डेरै हालोहळ हुई, हुआ सचाळा सत्थ। आज विहाणै रहुवड, करिसी कौ भारत्थ।—गु रू. व
उ०—४ मारु भड चटिया मछर, करवा भारत्थ कत्थ। राग वडाळा वजिया, सकौ सचाळा सत्थ।—वचनिका
२ तेजस्वी।
उ०—पह निज हुकम प्रमाण, दीहू नवमै विरदाळा। सराजाम करि समर, सकौ भड मिळै सचाळा।—सू. प्र.
३ गतिमान, चलने वाला।
उ०—दीर्यं खमूठाणा मचौळा अचाळा झाट सूटाडडा, पै सचाळा देही आळा गिरदा प्रमाण। यू आवळा-झूळ गजा टोळा प्रवीनाथ आळा, मेघमाळा इदवाळा वादळा मडाण।—चैनकरण साद्
५ खुशी व उमग सहित।
उ०—चना वोलिया सचाळा मोर वीजा खिवै चहुवळा। सालुळै वादळा दळा आवियौ सुरेस।—महाराजा वखतसिंघ रौ गीत
स. पु —युद्ध, सग्राम।
सचावट–स. स्त्री.—सच्चापन, सत्यता।
सचाह–वि —इच्छा सहित, इच्छुक।
उ०—जाणक कीर जरूर महारस जाणियौ, वदन निहारै नाह सचाह वखाणियौ।—वा दा.
सचित–वि.—१ जिसे चिंता हो, चिन्तातुर।
उ०—इसौ कहि महिला सचितौ गयौ। तिसै गहलोतणी महेला छै। तिणरै गनतराय फंकौ लागै छै।
—कहवाट सरवहिया री बात
२ देखो 'सचीत' (रू भे.)
सचि–स. पु. [स] १ मित्र, दोस्त।
२ मित्रता, दोस्ती।
३ देखो 'सत्य' (रू. भे) (ह. ना मा)
४ देखो 'सची' (रू भे.)
उ०—कूरमी कमधज्ज सूं, ओपै वासै अग। रवि राना समि रोहणी, सुरपति सचि फिर सग।—रा. रू
सचिक्कण–वि. [स] अत्यन्त चिकना, स्निग्ध।
उ०—पतसाह सचिक्कण कुभ पर, सघण बूद वाणी सुजण। दुरगध सान रहियौ सदढ, कान न कीधौ वयण कण।—रा रू.
सचित–वि. [स सचित्] जिसे ज्ञान हो या चेतना हो।
सचितानद—देखो 'सच्चिदानद' (रू. भे.)
उ०—रामक्रिसन हर नारियण, सचितानद गोविंद। वासुदेव वीठळ विसन, नरहर गोकुळचद।—ह. र.
सचित्त–स स्त्री. [स.] १ लगन वाला।
२ बुद्धिमान, होशियार।
सचित्राळी–स स्त्री.—देवी, दुर्गा।
सचियाई सचियाय–स. स्त्री.—१ चारण कुलोत्पन्न एक देवी।
२ ओसिया (जोधपुर) मे स्थित एक देवी, जिसकी पूजा शाकद्वीपीय ब्राह्मण करते हैं।
सचियार–स पु [स सत्य] १ सच्चा, सत्य।
उ०—साई सचा सचियार कुडियारी दगै, वीर विचखण मेवडा, सै माया कु ठगै।—केसौदास गाडण
रू. भे—सचियार, सचियार, सचियारौ, सचीयार, सचीयारौ।
सचियोडौ—देखो 'सचियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सचियोडी)
सचिव–स पु. [स.] १ मंत्री, वजीर। (डिं को; डिं ना. मा)
उ०—१ सदगुरू प्रणाम 'किसोर', सचिव 'अमरेस' सवाई। करै पिता जिमि क्रपा, तिकण गुण समझ बताई।—र रू
उ०—२ सुणि नृप सचिव मेल्हिया साचा।—सू प्र
२ मित्र दोस्त।
३ मददगार, सहायक।
४ किसी विभाग या संस्था के सचालको द्वारा नियुक्त व्यक्ति जो सचालको के आदेशानुसार कार्य करवाता है।
रू भे.—सचव, सचव।
सचिवता–सं. स्त्री. मंत्री होने का भाव।
सचिवाळ–सं. पु. [स. सचिव+रा प्र. आळ] १ मंत्री, सचिव।
(हिं. ना. मा.)
२ मित्र, दोस्त।

उ०—खित हूर अपच्छर वीद खटै, किरमाळ वहै वर-माळ कटै।
निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगे सिर-माळ सचै।
—रा. रू.

सचणहार, हारौ (हारी), सचणियौ—वि०।

सचिग्रोड़ौ, सचियोड़ौ, सच्योडौ—भू० का० कृ०।

सचीजणौ, सचीजवौ—कर्म वा०।

सचतानंद, सचदानद—देखो सच्चिदानद' (रू. भे)

सचवोलो—वि. (स्त्री सचबोली) सत्यवादी, सत्य वोलने वाला।

उ०—जिको सामधरजी रजपूत काछ वाच निकळंक सत्यवाळो सचवोलौ जुध रे माहे विना माथै तरवार वाहने सत्रुवा रा दळ नै वाढण वाळो ग्रौर धणी री करज उतारनै जुध मे पोढै।
—वी. स. टी

सचमुच—देखो 'साचमाच' (रू भे)

सचराचर, सचराचरि, सचराचरी—वि. [स सचराचर] स्थावर ग्रौर जगम (सभी)।

उ०—१ सुरत-तणा सुख समवडि, मीडवि जोईइ जेह। सचराचरि सरजू नही, सरजणहारइ तेह।—मा. का. प्र.

उ०—२ साहु कही नइ गयणि पहूतउ, पडु नराहिक हूयउ सयतउ। अइहवि दीजइ मगलचार, जगि सचराचरि जयजयकार।
—सालिभद्र सूरि

स. पु.—चौसठ भैरवो मे मे एक भैरव।

सचळ—वि.—१ चलायमान, ग्रस्थाई।

२ गतिशील।

३ ग्रटल, पक्का।

उ०—निज सचळ सल्हा मजकूर नर नाहरा, धर ग्रचळ थाहरा नूर धरतै। राज रजपूत ग्रावेर दोइ राहरा, वचन मुख ताहरा सूत वरतै।—स्यामसिंघ रौ गीत

सचळियो—देखो 'सचळौ' (रू. भे)

उ०—ग्राम रै पाखती ग्रेक खेजडी ही। उण माथै पखेरूवा री हड-वड सुणीजी। वख्रराजसिंघ सचळियौ नी रह्यौ। यू ईं उण दिस साम्ही खाचनै तीर वायौ। ग्रेक जगी गिरज लडीड करतौ हेटै पड्यौ।—फुलवाडी

सचळौ, सचळचौ—स. पु. (स्त्री. सचळी) १ नटखट ग्रौर चचल।

२ चुप, शात।

उ०—१ म्हैं सोच्यौ के गिया पछै ग्राप लोगा नै मतै ईं ठा' पड जावैला। पछै पै'ला केवणा मे काई सार। पण मासी री जीभ सचळी नी रैवै।—फुलवाडी

उ०—२ ग्रदाता धुराधुर इण पोहरा सू काठा ग्राती ग्रायग्या। इण वास्तै म्हारी जीभ उण वेळा सचळी नी री, ग्राप थोडौ-घणौ ई कोप करचौ तौ म्हैं ग्रपाघात करनै मर जावूला।—फुलवाड़ी

ग्रल्पा;—सचळियौ।

सचव—देखो 'सचिव' (रू भे)

उ०—ग्रप मेळै ग्राया नगर, दोड वधाई दार। कहि विगत विध विध करै, ग्रानद भरै ग्रपार। ग्रानद भरै ग्रपार, ग्रतेवर ग्रायनै, सुभट सचव जग साथ, सु वैण सुणायनै।—र रू.

सचवाणौ, सचवावौ—क्रि. स.—जड़ना, लगाना।

उ०—हाट रै ताळा सचवाय नै घर रै वास्तै रवाना हुग्रा।
—पलक दरियाव री वात

२ जाच करना।

सचवाणहार, हारौ (हारी), सचवाणियौ—वि०।

सचवायोडौ—भू० का० कृ०।

सचवाईजणौ, सचवाईजवौ—कर्म वा०।

सचवादी—देखो 'सत्यवादी' (रू भे.)

उ०—हे निरलज राड! करलै पर-पुरस सू वात, वणजा सचवादी। गैणौ म्हारौ है कै थारै वाप री।—वरसगाठ

सचवायोड़ौ—भू. का कृ.—१ जडा हुग्रा, लगाया हुग्रा. २ जाच कराया हुग्रा।

(स्त्री सचवायोडी)

सचवायौ—देखो 'सत्यवादी' (रू. भे.)

उ०—१ साम्ही सेठ री माजनौ पाडयौ कै वापडौ चोर घडी-घडी साची वात कही तौ ई वानै भरोसौ क्यू नी व्हियौ। ग्रैडा सचवाया चोर नै तौ की न की वगसीस मिळणी चाहीजै।
—फुलवाडी

उ०—२ गरू री ग्रा वात सुण राणी वत्ती राजी व्ही। दीवाणजी रै साम्ही देख कह्यौ—इण सचवाया चोर माथै वत्ती म्हैं जाणू जित्ती राजी व्ही। ग्रै पाचू मोती इणनै वगसीस मे दे दो।
—फुलवाडी

उ०—३ राणी कह्यौ—ग्राज ग्रापरी वाता सुण इत्ती राजी व्ही कै किणी नै उणरौ लेखौ वताया ई समझ मे नी ग्रावै। ग्राप जैड़ा सचवाया मिनख नै सजा देवण सू वत्तौ की ग्रन्याव नी।
—फुलवाड़ी

सचाण, सचान—१ देखो 'साचौ' (रू भे)

उ०—ग्रवखै सूर कमधौ, सचांणै सोई सूर सापुरसो, जो लद्धै ग्रवसाण, झल्लै खग्ग मग्ग रजवट्ट।—रा रू.

२ देखो 'सिचाण' (रू भे.)

सचाणी—देखो 'साचाणी' (रू भे.)

उ०—ग्रसौ हुवै माथा उपहारौ, माथै लिया सचांणी मौत। रिम ग्राया भीता नह रहियौ, गीता विच रहियौ गहलोत।
—विहारीदास गहलौत रौ गीत

सचाई—सं स्त्री.—सत्यता, सच्चापन।

सचाड़ौ—वि —१ श्रेष्ठ।

२ जवरदस्त।

उ०—३ ओर हजारा ही खेत सोधण रै समय सचेत अचेत प्राण-धारी पाया तिकै सरब ही 'ओरग' रा आदेस रूप अनळ मैं दहिया ।
—व. भा.

उ०—४ वेस्या जाणी पडिउ कोइ, ओळखीउ ए महतउ होइ । घरि आणी जाणी सकेत, मणिज़ल पाई कीउ सचेत ।
—हीराणद सूरि

[स. सचेतस्] ३ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष ।

उ०—साचौ मित्र सचेत, कह्यौ काम न करै कसौ । हरि अरजण रै हेत, रथ कर हाक्यौ राजिया ।—किरपाराम

४ सवेदनापूर्ण, दयालु ,

रू. भे.—सचेति, सचेती ।

सचेतन, सचेतनि–स. पु [स. सचेतन्] चेतनायुक्त, विवेकयुक्त प्राणी ।

उ०—तसु बधव भवभजन अंजनपुज समान, नमियइ नाथ सचेतनि केतनि सख प्रधान ।—जयसेखर सूरि

वि.—१ चैतन्य ।

२ सतर्क, सावधान ।

३ समझदार, बुद्धिमान ।

सचेति, सचेती–स स्त्री.—१ सावधानी समझदारी ।

२ चेतना ।

३ बुद्धिमानी, समझदारी ।

४ देखो 'सचेत' (रू भे)

उ०—छाटी पाणी कुमकुमइ, वीझण वीझ्या वाइ । हुई सचेती माळवी, प्री आगळि विलळाइ ।—ढो. मा

सचेळ, सचेळौ–वि —१ शक्तिशाली, वलवान ।

उ०—१ चमू अकब्बर लोक सचेळौ, भिळियौ खान तहव्वर भेळौ। ओपै जाण प्रळै अहनाणै, एकठ महण थया दोय आणै ।—रा रू.

उ०—२ मगरै 'राजड' 'जगड' समेळा, सामळ नाहरखान सचेळा । वेली जोधाहरा महावळ, 'भीम' 'सिवौ' रिण थया भुजागळ ।
—रा रू.

२ गाभीर्यपूर्ण, गभीर ।

उ०—सझि बतीस नव सात, मिळै सुकिया जुथ मेळा । वाणि कोकिल विमळ, चवै चदवदन सचेळा ।—सू प्र.

३ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—१ भडा प्रीत भारियौ, बिट हरि क्रीत सचेळौ । गुण मुक-तेसर गग, मिळै फिर कातिक मेळौ ।—रा रू

उ०—२ चिलतह झिलम चढाय, ससत्र अग कसै सचेळा । चढि रैवत पसाव 'वखत' आयौ जिण वेळा ।—सू प्र.

४ समर्थ, सामर्थ्यवान ।

उ०—विढवा प्रथम अणी रसवाया, औ मछरीक वणी कळ आया। 'चूडौ' 'मुकन' सुजाव सचेळौ, भूप तणै छळि 'केहर' भेळौ ।
—रा रू

५ अद्‌भुत, अनोखा ।

उ०—चमतकार जण हुवौ सचेळौ, भाण हुवौ जाणै जळ भेळौ । छत्रपत लियै काकण इम छाजै, बडवानळ रवि चद्र विराजै ।
—सू. प्र

६ सख्या की दृष्टि से अधिक वडा ।

उ०—आरभे अजमेर, सेन असपत्त सचेळा, खुरासाण खट खंड मिळै नव खड समेळा ।—रा. रू.

७ खुश, प्रसन्न ।

८ गुणो की दृष्टि से वडा, महान ।

उ०—भ्रम आखेट न बाण अभ्यासी, व्रत सगीत न राग निवासी । मत्री सुभट थडत नह मेळा, चवै न नव रस सुकवि सचेळा ।
—सू. प्र

९ वस्त्र धारण किए हुए ।

उ०—मगळीक नदि महा, वजै नौवति जिण वेळा । मगळ करै चद्रमुखी चित्र अवछाड सचेळा ।—सू प्र.

सचेस्ट–वि [स सचेष्ट] चेष्टा वान ।

उ०—वना गतीज व्योमसी रुसीत हेतु हीनसौ, सदा गति सचेस्ट है रु ताप है दिनेस सौ ।—पा प्र.

सचैत–स स्त्री.—१ सखी, सहेली ।

२ प्रयत्नशील ।

स. पु —आम का वृक्ष ।

सचोक–स. पु. [स सत्योक] सत्य । (ह. ना. मा)

सचोज–वि.—उत्साही, उत्साहयुक्त ।

उ०—मन भ्रमर मनोरथ विरथ मोज, चपक वत चापावत सचोज ।
—ऊ. का.

सचोप—१ वस्त्र विशेष ।

उ०—दरीयाखाना कतनी झूना प्रताप सचोप पटणी कथीवु फिरगी कथीवु सानुबाफ जग्वाफ खीबाफ ।—व. स

२ देखो 'सचूप' (रू. भे)

उ०—असि आरुहियौ वस उजागर, किरि रजनी प्रगटौ भासकर । सोभै दुलह रूप सचोपै, इम सब जान परम छवि ओपै ।—रा. रू

सचोपकाजी–स पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—सावपट्ट पट्टहीर सूहवी चोपाच्छुडहु सवाडी चपावती स्वेत सिलाहट्टी सचोपकाजी मूलवटणी ।—व स.

सचोळ–स पु —१ झोका ।

२ तरग, लहर ।

वि —लाल ।

उ०—१ चख मुख अरुण सचोळ, बिलकुलतौ बाकारतौ । धीव झडा धमरोळ, अरि दळ ढाहै हरिदउत ।
—प्रतापसिघ म्होकमसिघ री बात

उ०—२ वणिया नेण सचोळ, बोळ रग तै रगाण ।—गज-उद्धार

सचिवालय-स. पु. [स] मन्त्रालय ।

सचींत-स. स्त्री —१ चिंता, क्लेश ।

उ०—या महाराणी उच्चरै, सुहडा तजो सचींत । परवाहो खग धारदै, जमणा धार प्रवीत ।—रा रू.

२ देखो 'सचिंत' (रू भे.)

उ०—इसो कहि महिला सचितो गयो । तिसै गहलोतणी मैहला छै । तिणरै अनतराय फूफी लागै छै । तिका हजूर आई, पिण ऊगो नही । रूसै ठासणी ढाल री दीधा बैठो घणो सचींत दीठो ।

—कहवाट सरवहिया री वात

रू भे.—सचीत ।

सची-स. स्त्री [स शची] १ देवराज इन्द्र की पत्नी तथा दानवराज पुलोमा की पुत्री, इन्द्राणी । (अ. मा.)

उ०—१ मदोमत्त गौखा चढी हस मोहै, सची इदरा मिंदरा जाण सोहै ।—सू. प्र.

उ०—२ सझि आवत पदमणि झूल संग, उरवसी सची रति लजत अग ।—सू. प्र

उ०—३ गाणा गीत साखी वेद ऊचारै गैणाग गाजै, राजै रूप भागणै इन्द्र सो सची रूप । सोळाही कळा सू सोम ऊगियो प्रकास सारै, वळोवळी ऊचारै न आयो इसो भूप ।—पावू राठौड री गीत

२ अप्सरा ।

रू. भे.—सचि, सच्ची ।

सचीत—देखो 'सचींत' (रू. भे)

उ०—जतन 'अजीत' भळाय सब, उतन सचीत मिटाय । एम 'दुरगाह' मारवा, किया सुरगे चाय ।—रा. रू

सचीतीरथ-स. पु [स. सत्यतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

सचीतो-वि —१ चिंताग्रस्त, चिंतातुर ।

उ०—१ अरहरा घमोडा पाड घर अचीतो, वडम भुज रचीतो वरद बांनो । सेल थारै कमध दखणपत सचीतो, महाबळ नचीतो भूप 'मानो' ।—जोधसिह राठौड रो गीत

उ०—२ ज्वाळ झळ जेम अस गाव अरि जाळवा, खागजुध जहर हू कहर खारो । 'करण' भय सचीतो न्याय 'ओरग' कहै, 'सिंघ' बळ नचीतो देस सारो ।—महाराजा करणसिंघ जी रो गीत

उ०—३ भीवो जी घरे आया, पिण घणा सचीता होयनै एकण तूटा सा ढोलिया ऊपर सूता ।—जखडा मुखडा भाटी री वात

२ सतर्क, सावधान ।

सचीपत, सचीपति, सचीपती-स पु यो. [स. शची+पति] १ इन्द्र । (ना. डि. को; ना. मा; ह. ना मा.)

२ अश्विनी कुमार ।

सचीयार, सचीयारो—देखो 'सचियार' (रू भे.)

उ०—१ सपत चिरंजी रिख सपत सो भी सचीयारा ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ हरीया असा को मिळै, साहिब का सचीयार । झूठ न वाकै कपट को, रंच नही वौहवार ।—अनुभववाणी

सचीराट-सं. पु यो. [स. शची+राट्] इन्द्र । (ना डि. को.)

सचीस-स पु. [स. शचीश] इन्द्र, देवराज इन्द्र ।

उ०—अज सभ्रम दसरथ अवधि ईस, सिरताज राज सोभा सचीस ।

—सू. प्र

सचीसुखदायक-स पु.—इन्द्र । (डि. को.)

सचीसुत-स. पु.[स. शचीसुत] १ शची का पुत्र, जयन्त ।

२ चैतन्यदेव ।

सचीस्यांम-स. पु. [स. शचीस्वामी] इन्द्र । (अ. मा.)

सचूप-—वि —१ चतुराई पूर्वक ।

उ०—तिल तिल जुध हुवो खगा मुह तूटो, चूण न सकै दहू करा सचूप । रावत कपळ काज सिव रचियो, सहसाअरजुन तणो सरूप ।—रावत जगरामसिंह रो गीत

२ सुदर ।

उ०—१ कट तट ओप निखग कोट छिब काम की, रूप अनूप सचूप यसी दुति राम की ।—र. ज प्र.

उ०—२ सज्जत सोल सिंगार, आभरण दूण अढार । नव जरी वेलि अनूप, चिग नोख गोख सचूप ।—सू. प्र

३ कुशल, चतुर ।

४ हास्यरस युक्त ।

स. स्त्री —सुदरता । (मि चूप)

रू भे —सचोप ।

सचूपो-वि (स्त्री सचूपी) १ कुशल, निपुण ।

२ सुदर, मनोहर ।

सचूप—देखो 'सचूंप' (रू. भे)

सचूपो—देखो 'सचूपो' (रू भे.)

सचेत-वि [सं सचेतन] (स्त्री. सचेती) १ सावधान, सतर्क ।

उ०—१ जगजामी 'जसवत' रो, हुयो बडोदै हेत । प्रीत वधावण परसपर, सुपहा किया सचेत ।—ऊ का.

उ०—२ चुगली विसतारत चुगल, साप्रत होय सचेत । सो मुरदार सरीर री, लट मुख माझत लेत ।—वा दा.

उ०—३ वडारण धीरज बधाय सचेत कराई ।

—कुवरसी साखला री वारता

२ मूर्छा रहित, सचेतन ।

उ०—१ सो लोहा रो मैड आवै जणा तो वेचेत हुइ जावै और सचेत हुवै जद कहै हा हा मेडतै मैं वड जावो ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ इतरै मैं राजा आयो । राणी वात पूछी । राजा वात कही । राणी धरि ढाहि पडी । सहेलिया सचेत की । विलाप करणै लागी । राजा धीरज देन लागो हुणकार मिटै नही ।—चौबोली

अचलेसर तणउ, अउ जउहर जगदीस ।—अ. वचनिका

उ०—२ सदा भाइ सजगीस कहि कहि अचलेसर कहइ । वड पह मूझ वखाणिम्यै सुणिया वंस छतीस ।—अ. वचनिका

सजड़–वि.—सुदृढ, मजबूत ।

उ०—१ ताळा सजड जडेह, कूची लै कानै थयो । ऊघडसी आयेह, जडिया रहमी जेठवा ।—जेठवा

उ०—२ टग टग महलां जी ऊमादै राणी ऊतरी, जडिया है सजड़ किंवाड ।—लो गी.

उ०—३ ढकियो तो फळसो खोल देख रामूडा कोई खोलो सजड़ किंवाड आगळ खोलो जी क बीजळ सारकी ओ जी ।—लो. गी.

२ घना, सघन ।

३ जड़ युक्त, जड सहित ।

रू. भे.—सज्झड ।

सजडी—देखो 'सुजडी' (रू भे)

उ०—कधडक्क कडक्क कडक्क कडी, सजडक्क जडक्क वहे सजडी ।
—गो रू.

सजण–स पु—१ सेना की चढाई ।

२ सजने की क्रिया या भाव । (डिं को.)

३ देखो 'सज्जण' (रू भे)

उ०—१ सूप सजण घर आवियो, दीजै नाही पूठ । आगा हुय मिळजो अवस, आदर दीजै ऊठ ।—अग्यात

उ०—२ अहनिसि आनदइ सरइ, अगि न आवइ रोग । सजण तणी सख्या नहीं, भवि भवि पामइ भोग ।—मा का. प्र.

(स्त्री सजणी)

सजणो, सजवो–क्रि अ, स.—१ मिलना, प्राप्त होना ।

उ०—१ पछै ओ भरम काई तो मूडो अर काई भलो । थारै जीवण मे जको सजोग सजियो उणनै गाजा-बाजा रै साथ वधाव ।
—फुलवाडी

उ०—२ लोगा नै कवर रै मानण री इत्ती वेगी आस नी ही । वानै तो जाणै साप्रत भगवांन ई मिळग्या । जोग सजै जद यू सजिया करै । ओ तो बाई रै करमा रो परताप है ।—फुलवाडी

उ०—३ आ सोचनै कै अबै कदै ई अेडो अणचीत्यो जोग सजियो तो वो अैडी कालाई नी करैला ।—फुलवाडो

२ सभव होना, बन पडना ।

उ०—१ दुनिया थपिया पछै ई चेला-गुरु रो ओ नातो तो आज पैं'ली कठै ई नी जुडियो व्हैला, अै नाता तो आपारै जैडा काला मिनखा सू सज आवै ।—फुलवाडी

उ०—२ भलाई सोना री ठौड रुपा रो ई टको दै । जै रुपा रो ई सज नी आवै तो तावा री ई दो ।—फुलवाडी

३ तैयार होना ।

उ०—१ कवर रो आदेस व्हैताई हाकरता सिकार रो सगळो सराजाम सरतन सजण ढूको । हाथी घोडा माथै साज कसीजिया ।
—फुलवाडी

४ असर होना ।

उ०—१ राजाजी रा दरबार मे तो उणरी अकल री कोई पार ई नी हौ, पण इण डोकरी री गवाडी मे तो उण री अकल सू हीग री गरज ई नी सजी ।—फुलवाडी

५ होना ।

उ०—१ पण इण सू काई व्हे ! कवर रै हाथा तोरण रो जोग सजणो आ इज तो सबसू लाठी सुमी री बात है ।—फुलवाडी

उ०—२ ओ तो साचाणी दूध ई निकळियो । जै कोइ लफगो व्हैतो तो कैडोक माहेरो सजतो । आज तो भगवांन नामी विळू रह्यो । दीयती रा भाग हा ।—फुलवाडी

उ०—३ निजराणा रो ओ संजोग नी सजतो तो म्हैं भला परणी-जण री बात कद मानती ! म्हारी ओ इज खण कै परणीजूंला तो इण दाळद नाव रा मोट्यार ई नै, नीतरअकन कवारी जूण पूरी करूंला ।—फुलवाड़ी

६ चलना, निभना ।

उ०—फैवण लागा—यू अनाप-सनाप खरचो करिया आ माया कित्ता दिन सजैला ।—फुलवाडी

ज्यू—घी बिना मज जावै पण अन्न बिना नी सजै ।

७ पर्याप्त होना, चलना, उपयुक्त होना ।

ज्यूं—म्हारै दो मण बाजरी छः महीना सजै ।

८ कटिवद्ध होना, सुसज्जित होना ।

उ०—१ सुण मेछ खत्री जुध काज सजै, रस वद्रम हासक वीर रजै ।—रा रू

उ०—२ वलम्बी हिलगी वावरी, रूसी तूमी रोद । अै ले अकबर आवियो, सज ऊभा सीसोद ।—वा दा.

उ०—३ तद वीकैजी रै साथ रा मानी नही । तिण पर कल करग साथ सारै सू सज कवर वीकोजी पर आयो । अर कवर वीकोजी साथ सारै सू सज सामा गया ।—द. दा.

९ तेज करना, तीक्ष्ण करना ।

उ०—अणियाळा नयण बाण अणियाळ', सजि कुडळ खुरसाण सिरि । वळै वाढ दै मिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियो किरि ।
—वेलि

१० प्रत्यचा पर तीर चढाना ।

११ प्रयोग करना, काम मे लेना ।

उ०—सगपण ची सनस रुखमणि सन्निधि अण मारिवा तणौ आलोजि । ए अखियात जु आउधि आउध सजै रुकम हरि छेदै मोजि ।—वेलि

१२ चारजामा व अबारी कसना (हाथी, घोडा, ऊट) ।

उ०—१ सज साकुर जर साज, कमरबध जान कससी । हुय उतावळ हल्ल, आया जिण पथ उससी ।—बख्तावर जी मोतीसर

सचोळौ-स पु.—सुसज्जित योद्धा।

वि —प्रसन्नचित्त।

उ०—लोभाणी नवोढा नेह नसारा कचोळा लेती भ्यासँ अग अचोळा सचोळा लेती भाव। करा मक्रकेत रैं लचोळा लेती तूजी-किना, नक्र रैं मचोळा लेती नाव।—र. हमीर

सचौ—देखो 'साचौ' (रू भे)

उ०—१ सचा साई याद करि, या विन दूजा धध। जनहरिया साचै मतै, झूठ निवारौ फध।—अनुभववाणी

उ०—२ तिण वार वीरा रस सगम, ग्रीध चील्ह नभ छाए विह-गम। कळह का आगम सौ विखमारिख, सारका काटा सचा पारिख।—रा रू.

सच्च—देखो 'सत्य' (रू. भे)

उ०—१ सच्च पियारा साइया, साई सच्च सिवाय। सच्चा अगन न जाळही, सच्चा सरप न खाय। ह र.

उ०—२ सुणि सुंदरि सच्चउ चवा, भाजइ मन चीभ्राति। मो मारु मिळवा तणी, खरी विलग्गी खति।—ढो. मा.

उ०—सच्च कज्जिहि सच्च कज्जिहि अन्न दीहमि, उल्लछिउ गुरु-वयणु इदपुत्तु वनवासि चल्लई।—सालिभद्र सूरि

सच्चरित, सच्चरितर, सच्चरित्र-वि [स सच्चरित्र] १ जिसका चरित्र अच्छा हो।

२ सदाचारी।

सच्चव—देखो 'सचिव' (रू भे.)

उ०—सब सूर सुभट सच्चव सवध, कर सिलह चढै पमगा कमध। चापा कँ कूंपा वडँ चीत, जोधा सवध मिळ समर जीत।—प्रे. रू

सच्चवई—देखो 'सत्यवती' (रू भे.)

उ०—सच्चवई पिय माय अवा अवाली अंबिका कुती मुद्री जाई वउलावेवा नदणह।—सालिभद्र सूरि

सच्चाई-स स्त्री —सत्यता, वास्तविकता, हकीकत।

उ०—वीरता सच्चाई अर डिढता तौ इणरै आगै पाणी भरै।

—फुलवाडी

सच्चित-स पु. [स] सत् और चित् से युक्त, ब्रह्म।

सच्चितानद, सच्चिदानद-स. पु [स] परमेश्वर।

उ०—१ दाता वरन मोद री विराजै जिका महादेवी, 'माला' कविंद री सेवी भदोरै हमेस। आनद री चखा वाळा सच्चिदानंद री इच्छा, आनदी कवारी वाळा सुदरी आदेस।—कुभकरण साढू

उ०—२ सच्चिदानद व्यापक सरव, इच्छा तिण मे ऊपजै। जग-दव सकति त्रिसकति जिका, ब्रह्म प्रकृति माया वजै।—मे म

उ०—३ जगत ब्रह्म परब्रह्म माई एसैं, जैसैं पेंप सुगन्धा रे। सच्चिदानद आनद अनता, नहिं वधण निरबधा रे।

—सुखराम जी महाराज

रू भे —सचतानद, सचदानद, सचितानद।

सच्ची—देखो 'सची' (रू. भे)

उ०—१ साम रै काम नै धसै रिण सामहा, केवियां पछाडै फतै करणँ। जीवता रहै तौ सुजस काना सुणै, प्राण छुटै तिकै सच्ची परणैं।—वीर री गीत

उ०—२ सारधु सिखर महि-क्रन्न सुभ्र, रूप अनोपम वेरावळ रची। चहुवाण इद्र कमधज्जरैं, साचौरी सुदर सच्ची।

—गु. रू व.

२ देखो 'साची' (रू भे)

उ०—दिइ दान जिवणइ करइ, साहिब्ब सेव सच्ची करइ। कुराण न्याइ पेखि चल्लइ, सौ मुसलमान भस्त जि वरइ।—व म

सच्चु—देखो 'सत्य' (रू. भे)

उ०—१ वद्धावइ जणु सयलु, जीवनदानु तइ देव दिद्धऊ। केव-लिवयणु जु सच्चु किउ, त्रिहु भुयणि जसवाउ लिद्धउ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ करणु भणइ सच्चु कहउ पुणु छइ एकुवि नाणु। दुरयो-धन रहिं आपणा मइ कल्पा छइ प्राण।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'साचौ' (रू भे)

सच्चौ—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—सच्च पियारा साइया, साई सच्च सिवाय। सच्चा अगन जाळही, सच्चा सरप न खाय।—ह र

सच्छंद—देखो 'स्वच्छद' (रू भे.)

सजतौ-वि.—सुरक्षित।

सजकौ-वि पु. (स्त्री. सजकी) १ सावधान, सतर्क।

उ०—रात दिन मामला किया सजकौ रहै, दोयणा जळा भज इळाडाटी।—महादान मेहडू

२ चचल, चचलता युक्त।

३ सुरक्षित।

उ०—समापण दवाली वध गजकासरा हुअँ तजका सत्रा सोस 'सागण'हरा। पमगा ऊडता झुकै कळा रजका परा, धणी अजका तणी रहै सजकी धरा।—महादान मेहडू

सजग-वि —१ सचेत, जाग्रत, चेतनायुक्त।

उ०—इणी भात आत्मा सजग रैवै जितै करम-अकरम रौ ग्यान रैवै। आत्मा मर्‌‌या पछै मिनख नै भूडा-भला रो चेतौ को रैवै नी।—फुलवाडी

२ सतर्क, सावधान।

३ शीघ्र जागने वाला।

४ चालाक, होशियार।

रू भे —सुजग।

सजगीर-वि —बलवान, शक्तिशाली।

सजगीस-वि —देखो 'जगीस' (रू भे)

उ०—१ सुकलत ते सजगीस अनइ सुवर अेका खमो। तपियउ

६ इज्जतदार।
७ देखो 'सुजळ' (रू. भे)
८ देखो 'सज्जळ' (रू भे)
अल्पा, रू भे.—सजळो।

सजळाई–सं स्त्री [स स+जलम्=रा. प्र. आई] १ नमी, आर्द्रता।
२ जल की प्रचुरता।
उ०—जिण नखै 'चद्रसरोवर' है तिणरी सजळाई हूं इण मैं घणां साघणा गुलम तरोवर है।—र हमीर

सजळो - देखो 'सजळ' (अल्पा; रू भे)

सजव–वि [स. सजव] १ वेगवाले, गतिमान, तीव्रगति वाले।
उ०—१ मणि वाहण साहण मुकटि, रीत सजव नव रूप। किया साज महाराज कजि ऐसा वाज अनूप।—रा. रू.
उ०—२ जह दुसह पाळ जन सामरथ, रथ खगेस मारुत सजव। सज सख सिहाय भजण सुभुतज, भज रघुवर तर उदध भव।—र. ज. प्र.
स पु.—१ गरुड पक्षी। (अ. मा.)
२ पक्षी। (अ. मा.)
३ देखो 'सजीव' (रू भे) (ह ना. मा)

सजवना–स. स्त्री.—सजने की क्रिया या भाव, तैयारी।

सजवाई–स स्त्री —सुसज्जित करने की क्रिया।

सजवाणो, सजवाबो—देखो 'सजाणो, सजाबो' (रू. भे.)
सजवाणहार, हारो (हारी), सजवाणियो—वि०।
सजवायोडो—भू० का० कृ०।
सजवाईजणो, सजवाईजबो—कर्म वा०।

सजवायोडो—देखो 'सजायोडो' (रू. भे)
(स्त्री सजवायोडी)

सजाण, सजांन–वि. [स. स+फा. जान] १ जिसमे प्राण हो, प्राणयुक्त।
२ देखो सुजान' (रू भे.)

सजा–सं. स्त्री. [फा. सजा] १ किसी अपराध के कारण दिया जाने वाला दड।
उ०—१ डावडी री वात सुणता ई राजा तो हाक्यो-वाक्यो रैग्यो। राणी री सजा दूजा जीव नै क्यू मिळै।—फुलवाडी
उ०—२ बळिभद्र जी कृस्ण जी नै कहै छै। जु या अयोग्य वात करी। तिहि नै इसी सजा दीनी।—वेलि
२ कारावास, कैद।
उ०—विलूव्यो निधी नीर त्रीहाय वासैं, पुरी मैं सको सीर हृन्नोज पासैं। सजा हू छुडायो आई राव नेखो, लाई पुत्र पित्रेस रो लोप लेखो।—मे. म.
क्रि. प्र.—करणी, दैणी, पाणी, भुगतणी, मिळणी, सुणाणी, होणी।
रू भे —सज्जा, सज्या, सझ्या।

सजाई–स. स्त्री.—१ सामग्री।
उ०—इम चित माही विचार नै सज सोळै सिणगार। जिण वादण जावा भली, करै सजाई त्यार।—जयवाणी
२ तैयारी।
उ०—१ जइतळदे भावळदे ऊमादे नइ कमळादे राणी। जमहर तणी करी सजाई, वात हीया माहि आणी।—का. दे प्र
उ०—२ अनेकि परि जे पूजा करइ, मुगति जावा नी सजाई घरइ। राम भास सामी गुण गायति, पचमगति निस्चय पामति।—वस्तिग
उ०—३ लेख लिखाणा आयम दीधा, फिरइ दिसि ऊपह्लाणा। करी सजाई पुहर पाछिलइ, तेड्या राउत राणा।—का दे. प्र.
३ चारजामा कसने की क्रिया।
उ०—मोटा मालिक सवै तेडाव्या, साहण करउ सजाई। सोन-गिगसू विग्रह माडउ, मारुआडि माहि जाई।—का. दे प्र.
४ हाथी, घोडा आदि के चारजामा के उपकरण।
उ०—तेरा वीसी री तेलियो जाखोडो, नव वीसी सजाई। म्हारो गोर वघ लूवाळो।—लो गी.
वि.—सुसज्जित।
रू भे.—सझाई।

सजाडो—देखो 'सझाडो' (रू भे.)

सजाणो, सजाबो–क्रि स.—१ किसी चीज या वस्तु को इस प्रकार लगाना या रखना की वह दिखने मे सुदर जान पडे।
उ०—फाजल कोटडी बुहारी, गाभा सजाया अर सगळा वरतण भाडा भगाया।—दसदोख
२ रक्षार्थ धारण करना।
उ०—नाई भोळो बणनै पूछ्यो—तो बापजी अेकण सागै इत्ता सस्तर क्यू सजाया। मेळा मे वेचण पधारो काई।—फुलवाडी
३ व्यवस्थित करना, यथाक्रम करना।
४ सुसज्जित करना।
५ तैयार करना।
उ०—१ लिगन्ना नारेळ लेर देर मावो नक्की लीधो, सजायै ठीकाणा वेहू व्याव का सामान।—बादरदान दधवाडियो
उ०—२ दिन उग्यो, सिनान पाणी करघा अर बीन-बीनणी रै मौड बाध्या। हाजरिया-हवालदार एका तागा तथा बैल्या री कतार सजाई।—दसदोख
६ सवारना।
७ ऊट, घोडे आदि का चारजामा कसना।
सजाणहार, हारो (हारी), सजाणियो—वि०।
सजायोड़ो—भू० का० कृ०।
सजाईजणो, सजाईजबो—कर्म वा०।

उ०—२ चोधरी श्रास्या पाछी मोचलो। उणी देख्यौ—एक वरात जाय री है। एक सज्योड़ै ऊंठ पर श्रागै बींद श्रर लारै पूनमो नाई बेठो है।—रातवासो

उ०—३ रूपाळी लुगाई रो भालो बिरथा गियो तो वा श्रेक नवो चाळो करयो। सायड वणनै मारग मैं चरणा लागी। सज सजि-योडी। पण माथै श्रसवार नी।—फुलवाडी

१३ धारण करना, पहनना।

उ०—१ सज्या सिणगार उतारसूं, करसू भगवा भेस। थारै कारण वन वन डोलू, कर जोगण रो भेस।—मीरा

उ०—२ विजै तू श्रजै श्राहवा वाह वीसा, सजै तू हियै हार भूभार सीसा। तुही हाथ लै सूल सादूळ हक्कै, भणा माथ तू सुक्र रा छात्र तक्कै।—मे. म.

१४ एक शरीर को विद्यमान रखते हुए वैसे ही अधिक शरीर बनाना या धारण करना।

उ०—जिण दाणव जीतिया, महा दारुण रण मझ्या। सजि नोकोड़ सरीर, वीर रणधीर विहझ्या।—मे. म.

१५ अन्य प्राणियो के रूप धारण करना, रूप परिवर्तित करना।

उ०—काढ्यो तुरका कँद सूं सेणा री कर साय। सभळि वाळो रूप सज, पूगळ दीधो पुगाय।—अग्यात

१६ रक्षार्थ धारण करना।

१७ करना।

उ०—१ परगट धर सधर मानसर ऊपर, सगत सकळ मिल रास सजै। जिय सगत सकळ मिळ रास सजै।—अग्यात

उ०—२ छजत भूपति छमा सलाम भूपति सजै। कपूर पान दान करू रागि भूपति रजै।—सू. प्र

१८ युद्धार्थ किले को सजाना, तैयार करना।

उ०—१ नरै ही कोट नु पोळ रै कीवाड कराया गढ नु सजियो नै नरो गाव सातल रै खोळै थो सु सातल रै नावै सातळमेर नवो गढ उठै वसायो छै।—नैणसी

उ०—२ पछै पातसा कनै सीख माग किलाणदास जी सीवाणै श्राया नै किलाणदास जी किलो सजीयो।—नैणसी

१९ वश चलना।

२० सफल होना।

२१ शोभित होना।

उ०—चरणे चामीकर तणा चदागणि, सजनूपुर घूघरा सजि। पीळा भमर किणा पहराइत, कमळ तणा मकरंद कजि।—वेलि

२२ पूरा होना, पूर्ण होना।

ज्यू—काम सजणो, हाजरी सजणी।

२३ जाना, गमन करना।

२४ देखो 'साजणो, साजवो' (रू भे)

उ० —कहू वाह थू मत करै, सजियो म्हे श्रो सूर। वाह हुवा सू विगडसी, 'जीदा' श्राज जरूर।—पा प्र.

सजणहार, हारो (हारी), सजणियो—वि०।

सजिश्रोड़ो सजियोडो, सज्योडो—भू० का० कृ०।

सजीजणो, सजीजबो—कर्म, भाव वा०।

संजणो, संजबो, सज्जणो, सज्जबो, सज्भणो, सज्भबो, सभणो, सभबो—रू० भे०।

सजतनो—वि [स. स+यत्न] सुरक्षित।

(स्त्री सजतनी)

सजधज—स स्त्री.—सुसज्जित होने का भाव सजावट।

सजन—देखो 'सज्जण' (रू भे) (अनेका; डि को)

उ०—१ पैलो कीन्ही प्रीत भूल गयो वाल्हा सजन। मनमैं म्हारै मीत, जीव वसै थू जेठवा।—जेठवा

उ०—२ सत्यवाह मोकलावीय मनरगि धनसागर पुर जोइ। सजन विहूणउ सहूइ सूनउ सुद्धि न पूछइ कोइ।—हीराणद सूरि

उ०—३ चारा मिणतोडी सजनी चित चावै, तारा गिणतोडी रजनी वितवावै।—ऊ का

(स्त्री. सजनी)

सजनता—स स्त्री —सज्जन होने की अवस्था या भाव।

उ०—१ गाळी ही मे ग्यान है, जो टुक अग समाय। हरीया दुर-जन को नही, सब सजनता थाय।—अनुभववाणी

उ०—२ ऊजळ घर श्राछापणो, श्ररु सजनता संग। इण सू श्राढा श्रापनै, रयण 'सेत' घण रग।—नारायणसिह सादू

रू भे.—सज्जनता।

सजनी—स स्त्री. [स] सखी, सहेली।

सजप्पणो, सजप्पबो—देखो 'जपणो, जपबो' (रू भे)

उ०—नाग राग पेरियो, प्राण पैला वसि थप्पै, दास हुकम पेरियो, जास पति धरै सजप्पै।—रा रू.

सजरा (रो)—स पु [अ शजर] १ वश वृक्ष।

२ वृक्ष, पेड।

३ पटवारी के खेतो का नक्शा।

सजळ, सजल—वि [स. स+ज्वलनम्] १ प्रकाशयुक्त, ज्योतियुक्त।

उ०—घर नीगुल दीवउ सजळ, छाजइ पूणग न माइ। मारू सूनी नींद्र भरि, साल्ह जगाई श्राइ।—ढो. मा

२ जाज्वल्यमान, तेजपूर्ण।

उ०—सुर नवाब दर मज्भि, जाव बोलिया श्रतारा। कळा प्राण कावली, जाण सजळा श्रगारा।—रा रू.

[स सजल] ३ जलयुक्त।

४ श्रासुश्रो से युक्त।

५ तरलता युक्त।

उ०—देस निवाणू सजळ जळ, मीठा बोला लोइ। मारू कामण दिखणि धर, हरि दीयइ तउ होइ।—ढो मा.

६ सुन्दर, आकर्षक।

उ०—स्वस्ति श्री चद्रगढ सुभ स्थान अनेक ओपमा लाइक ब्राजमान प्यारी सजीली, लजीली, फबीली, छबीली, नसीली, रसीली चकीली ककीली, अगीली, रगीली........।—र. हमीर

सजीव-वि [स] १ जिसमें जीव हो, जीवयुक्त।

२ फुर्तीला चचल।

३ ओजस्वी।

४ पुनर्जीवित।

उ०—१ इण रीति राजा वडाह रा अग री समस्त पळ खाय तिण नूं पाछो सजीव करि भगवति वर लेण री हुकम दीधो।

—वं. भा

उ०—२ कळिजुग रा समय में प्राण कढिया पछै सजीव होवा रो सुभचित का मत में तौ असभव ही आवै। - व भा.

स. पु.—१ प्राणी, जीवधारी व्यक्ति।

[सं सजव] २ घोडा, अश्व। (अ. मा)

रू भे.—सजव, सुजीव।

३ देखो 'सजीव' (रू. भे.)

रू. भे.—सरजीव, सरजीवन।

सजीवण-वि —जीवित, प्राणयुक्त।

उ०—१ जद थू जांणै वाली माटी, चीर काळजो सूंपै। प्राण सजीवण करै सिसख रा, फुक-फुक पगल्या चूंपै।—चेतमानखो

उ०—२ अमर लोक सूं अम्रत लाया सतगुरु पाय दीया। भया सजीवण समय सागा, अतक जीव गीया।

— स्री हरिराम जी महाराज

सं. पु.—देखो 'सजीवन' (रू. भे.)

रू. भे —सजीवन, सरजीवण।

सजीवणमंत्र-स पु. [सं. संजीवन+मंत्र] १ मृत मनुष्य को जिलाने वाला एक मंत्र।

२ मोक्ष देने वाला मंत्र।

उ०—राम सजीवणमत्र रट, बयणा राम विचार। स्रवणा हर गुण सामळै, नेणा राम निहार। — ह. र.

रू. भे —सजीवनमत्र।

सजीवित-वि —जीवित।

उ०—कथ सुण दुजन गिणै तिल काचो, सूर धरम जांणै सप साचो। वात सजीवत करण वताए, आप करग सनमुधि कजि आए। — सू प्र

सजीवता-स स्त्री —सजीव होने की अवस्था या भाव।

सजीवन-वि —१ नहीं मरने वाला, अमर।

२ जीवित करने वाला।

उ०—पाहाडै 'माट्ठळ' माजि चढियो भिडवायो। चीतोडो चतुरंग, 'भीम' दळ सेनै आयो। वाळि वोनै मीसोद, सूछ वळ घाळै मच्छरि। अर्भ-दान आवियो, आव पैलालि विनो करि। सोभाग सजीवन ओखधी, तिण कारण तुहि वरय मरि। अजमेर उपाहिस काड अनड पर्व द्रोण हणमत परि।—गु रू. व.

सं. पु.—१ मुक्ति, मोक्ष।

२ जीवित, जिन्दा।

उ०—दादू नाम निमित्त रामहि भजै, भक्ति निमित्त भज सोड। सेवा निमित्त साई भजै, सदा सजीवन होई।—दादूवाणी

३ देखो 'सजीवन' (रू. भे) (अ. मा.)

४ देखो 'सजीवण' (रू. भे.)

सजीवनबूटी, सजीवन-मूळ, सजीवनी—देखो सजीवणी' (३) (अ. मा.)

सजीवन मंत्र—देखो 'सजीवणमत्र' (रू भ.)

सजीवन्न—देखो 'सजीवन' (रू भे.)

उ०—लुटै साथ जाणै अमीद्वार लीधो, किणी वेणनाद सजीवन्न कीधो।—ना. द

सजुजो, सजूझो-वि. [स स+युद्ध] १ लड़ने वाला, जूझने वाला।

उ०—१ खाग सजूंझा 'प्राग' जी, 'अमरो' नाहरखान। दिन दिन खर्में साह दळ, भुज थर्भ असमान।—रा रू.

उ०—२ कळि वणिया 'मुकनो' कचरावत, रिण रावना सजुझो रावत।—रा. रू

२ वीर, योद्धा।

उ०—१ हाम धणी हरदास रै जोडै रांम' दुभल्ल। 'हरी' सजूंझा माड पह, दूजा दुरजणसल्ल।—रा. रू.

उ०—२ पिड जुडवा भड पाच सो, रहिया अडिग अरेस। कमध सजूझा काम छळ, दूजा आया देस।—रा. रू.

सजूटणौ सजूटवौ—देखो 'जूटणौ' जूटवौ' (रू. भे.)

उ०—उमगे रढाळा छूटै सोहडा काकुस्थवाळा, अताळा सजूटै तेण सामहा अडील।—र. रू.

सजूटणहार, हारो हारी), सजूटणियो—वि०।

सजूटिओड़ो, सजूटियोड़ो, सजूट्योड़ो—भू० का० कृ०।

सजूटीजणौ, सजूटीजवौ—भाव वा०।

सजूटिओडो —देखो जूटियोडो' (रू. भे)

(स्त्री सजूटियोडी)

सजूद-सं. स्त्री पु [फा] विनय, प्रार्थना।

उ०—मोजूद खबर माबूद खबर अरवाह खबर वजूद। मकांम चं चीज हस्त दादनी सजूद।—दादूवांणी

सजेत-वि.—१ जीवित।

उ०—सिध महत सकल सिधी समेत, सामद्र माह न्हाखू सजेत।

—सि. सु. रू

२ विजयपूर्वक।

सजोड़, सजोड़ो-वि —१ सदृश, समान।

उ०—१ सुत जैदेव सजोड़ खळा रिणछोड़ अभायो। अग स्रोण

सजवाणो, सजवावो, सजावणो, सजाववो, सभाणो, सभावो —रू० भे० ।

सजाती, सजातीय–वि. [स सजाति, सजातीय] एक ही गोत्र या जाति का।

उ०—१ चपल चपक कोरक चोर कहउ जि न चीति, तउ परिहरियइ छटपदि सपदि सजाती प्रीति ।—जयसेखर सूरि

उ०—२ पैली तीर आपरा सजातीय नू जळ पीवतो देख तिण ऊपर चालियो ।—व. भा

२ एक ही किस्म का ।

३ एक ही जाति के माता-पिता से उत्पन्न ।

सजायाफतो, सजायापतो–स पु [फा. सजायाफ्त] वह जो सजा भुगत चुका हो ।

सजायाब–वि. [फा. सजायाब] १ दंडनीय ।

२ जिसे कानून के अनुसार सजा मिल चुकी हो ।

सजायोडो–भू. का. कृ —१ सजाया हुआ, सुसज्जित किया हुआ. २ सवारा हुआ ३ तैयार किया हुआ. ४ व्यवस्थित किया हुआ. ५ ऊँट घोडे आदि का चारजामा कसा हुआ ६ रक्षार्थ धारण किया हुआ ।

(स्त्री सजायोडी)

सजाव, सजावट–सं. स्त्री —१ सजाने की क्रिया या भाव ।

२ शृंगार ।

उ०—नोटारी गड्डी गैणा अर गिन्नी गाभारै नीचै सदूक मे विराया । सजावट री चीजा सिणगार पेटी अर तेल सावण जिसी सामगरी रो एक मोटो बकसो भरायो ।—दसदोख

३ तैयारी ।

४ सजा हुआ होने की अवस्था या भाव ।

रू. भे —सभावट ।

सजावणो, सजाववो—देखो 'सजाणो, सजावो' (रू भे)

उ०—जाळ गळिया गच, जचावा उछ्रव सावा । जन्मारटमी परव सिंहासण सह्य सजावा ।—दसदेव

सजावणहार, हारो (हारी) सजावणियो—वि० ।

सजाविओडो, सजावियोडो, सजाव्योडो—भू० का० कृ० ।

सजावीजणो, सजावीजवो—कर्म वा० ।

सजावन–स पु.—सजाने या सुरक्षित करने की क्रिया या भाव ।

सजावार–वि.—दडनीय, दड का भागी ।

उ०—१ तठै प्रथीराज जी मालम करी जो हजरत आप नू वेमुख है, सु सजावार करणे जोग्य है ।—द दा.

उ०—२ तद कुवर रायसिंह जी नू कोटवाळी दे दोन्हो कही जै, कोई अनीति करै तीनू सजावार करि दै ।—द. दा.

रू. भे.—सभावार, सभैवार ।

सजावियोडो—देखो 'सजायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. सजावियोडी)

सजियोड़ो–भू. का कृ.—१ मिला हुआ, प्राप्त हुवा हुआ. २ सम्पन्न हुआ हुआ, बन पडा हुआ. ३ तैयार हुवा हुआ ४ प्रसन्न हुवा हुआ ५ हुआ हुआ. ६ चला हुआ, निभा हुआ. ७ पर्याप्त हुवा हुआ, चला हुआ, उपयुक्त हुवा हुआ. ८ कटिबद्ध हुवा हुआ, सुसज्जित हुवा हुआ ९ तेज किया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ १० प्रत्यचा पर तीर चढाया हुआ ११ प्रयोग मे लिया हुआ, काम मे लिया हुआ. १२ हाथी, घोडे, ऊट आदि पर चारजामा कसा हुआ. १३ शोभार्थ धारण किया हुआ. १४ धारण किया हुआ, पहना हुआ १५ एक रूप को विद्यमान रखते हुए वैसे ही अनेक रूप बनाया हुआ, या धारण किया हुआ १६ अन्य प्राणियो के रूप धारण किया हुआ, रूप परिवर्तित किया हुआ. १७ रक्षार्थ धारण किया हुआ. १८ किया हुआ. १९ युद्धार्थ कोट को तैयार किया हुआ, सजाया हुआ. २० वम चला हुआ २१ सफल हुआ हुवा. २२ शोभित हुवा हुआ. २३ पूरा हुवा हुआ , पूर्ण हुवा हुआ ।

२४ देखो 'साजियोडो' (रू. भे)

सजीत–वि —विजय सहित. जीत युक्त, सविजय ।

उ०—आया वसिया आपणी, ग्रीष्म थई वतीत । गुणचाळो लागो वरस, चाळो सरस सजीत ।—रा. रू

सजीप, सजीपो–वि.—१ जीतने वाला, विजयी ।

उ०—१ आपकरन्न 'पिराग' तण, पडियो त्याग वजाड । सुतन सजीपं 'भोज' सम, जळ भाटीपं चाड ।—रा. रू

उ०—२ मुहतो बळ लीधा दळ समीप, जोधाण हुत जीतण सजीप ।—रा. रू

उ०—३ टमकि तबल्ल नफेरिय टीप, जुभाऊ अवक वाज सजीप ।

—रा. रू.

सजीलो–वि. (स्त्री. सजीली) १ चचल, फुर्तीला ।

उ०—१ सजीला भडा प्राण जोडे सुहावै, वहे भार गोदा करान वुहावै । त्यगा जीतणा धावसे दाव मेल्हे, सनगे तटा साकडा पीठ मेल्हे । - व भा.

उ०—२ हळर काचतो देहको माचतो हदोहद, मातो रातदाता सजीलो । आज री वार 'सभमान' घन आनतो, नाचतो रियो दिलदार नीलो ।—महादान मेहडू

२ विलास प्रिय, कामुक ।

उ०—परम सजीलो पीव नै, निपट रसीली नार । रसिया सराहै साथ की, सो जोडी किरतार ।—अज्ञात

३ सुंदर, सुडौल ।

४ धारण करने वाला ।

उ०—मील सजीलो रूप रसीलो छैल छबीलो साथै सीम उरस तन कटा निगलो, राम, लख श्याम सजायै है ।—गी. रा.

५ छैल छबीला, रसिक ।

उ०—सीसोद कमधज सज्जगीस, आराण चडै फिरि त्रिपुर ईस ।
—गु. रू. व.

सज्ज–वि. [स.] १ तैयार ।
२ सम्भाला हुआ ।
३ सवारा हुआ ।
४ हथियार आदि से लैस ।

सज्जण–सं. पु [स सज्जन] १ भला व शरीफ मनुष्य, सज्जन ।
२ कुलीन वर्ग का व्यक्ति ।
३ स्वजन, बंधु ।
उ०—१ तप तेज परख हिंदू तुरक, सदा हरक मन सज्जणां ।
कोमळ किसोर तौ ही कमध, दुति कठोर उर दुज्जणा ।—रा रू
उ०—२ तर मजर फळ माळा तोरण, सोहै द्वार मेळ अत सज्जण ।
—रा. रू.
उ०—३ जुरा भप जोवन खिसै, घटै ज नवली नेह । अेक दिहाडै सज्जणां, जम करसी जुध अेह ।—अग्यात
उ०—४ वाल्हू दुरजण ऊपरा, सौ सज्जण की भेंट । रजनी रा मेळा किया, विधि का अच्छर मेट ।—प्रथ्वीराज राठौड
४ पति, प्रियतम ।
उ०—१ हू बळिहारी सज्जणां, सज्जण मो बळिहार । हू सज्जण पग पानही, सज्जण मो गळहार ।—ढो. मा.
उ०—२ जिण दिस सज्जण थै वसौ, सोही वाजै वाव । या लागा मुझ लागसी, सोही लाखपसाव ।—ढो मा.
५ प्रिय प्रेमी ।
६ मित्र, दोस्त ।
७ हितैषी, शुभचिंतक ।
८ उत्तम, श्रेष्ठ ।
९ देखो 'सजण' (रू भे.) (डिं को)
रू भे —मजण, सजन, सज्जन, माजण, साजन, मुजन ।
अल्पा, रू. भे.—सज्जणियौ, साजणियौ, साजनियौ

सज्जणियौ –देखो 'सज्जण' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—सज्जणिया वउळाइ कइ, मदिर वइठी आइ । मदिर काळउ नाग जिउ, हेलउ दे दे खाइ ।—ढो मा

सज्जणौ, सज्जवौ—१ देखो 'सजणौ, सजवौ' (रू भे.)
उ०—१ हाथ कढता ही निद्रा निवारी मस्त्रादिक सगर री सामग्री मे सज्ज हो ।—व भा.
उ०—२ निज आखै कवि किसन' निरूपण, सुणौ गाहा गुण दोस सुलछण । सात चतुरकळ अत गुरु सज्ज, देह छठे थळ जगण तथा दुज ।—र ज प्र
उ०—३ ज्यारा सोवन थाल भलाई वज्जिया । 'पातल जनम पर्जंत, सुमोरत सज्जिया ।—प्र प्र.
उ०—४ पुव्वहु सुरजन लगै पठावन, रतन भूप न गयँ रढरावन । करि वळ सज्ज मरन स्वीक्रत किय, अटक गमन तन मन करि उज्झिय ।—व. भा.
उ०—५ भगै माळ सिंदूर ज्यौं उशाळ झाळा, मुद्राळी गळै हिंदुळै मुडमाळा । फुजा भामणा काणा सज्ज कीधा, नरौ मूळ देह सलग्गप्र लीधा ।—मे म
उ०—६ कवहु करै न अटक उल्लघन, माह दाग न धरैं हय सघन । वव मुग्य तोरन लग वज्जे, अज्ज अनुगहै सग न सज्जे ।
—व. भा.
उ०—७ दुदुत्तणि टोहनक कृइ कलहि जण कुमि गज्जइ । पुरुस वेनि गढवरि चडई मुहड जेम मनि समक सज्जइ ।
—सालिभद्र सूरि
उ०—८ रावदेव रै गुरुमाण सैन री अति वेग वाजी सुणियौ जिसटौ ही तुरग सज्ज कराइ कुमार सकल ही असवार आसेट री व्याज करि...... .. ।—व भा.
२ देखो 'साजणौ, साजवौ' (रू. भे.)
सज्जणहार, हारौ (हारी), सज्जणियौ—वि० ।
सज्जिओडौ, सज्जियोडौ, सज्ज्योडौ—भू० का० कृ० ।
सज्जीजणौ सज्जीजवौ —भाव वा०, कर्म वा० ।

सज्जन —देखो 'सज्जण' (रू. भे) (डिं. को)
उ०—१ गाळ न रूठै गूमडौ, ऊठै झाळ अकत्थ । जिण नू सज्जन वेंण जळ, सात करण समरत्थ ।—बा दा
उ०—२ बीठू सज्जन मन वस्या, जह सू लाग्यौ चित्त । सो ही घडी सुकारथी, जाय मिळै जै मित्त ।—कुंवरसी साखला री वारता
उ०—३ तद उण कही वात साची पण आपा सज्जन तौ आज हुवा पर घर में आइयो जणा किण री विस्वास भरोसौ ।
—कुंवरसी साखला री वारता
उ०—४ हा हा दुखदाई छपना हतियारा, सज्जन सुखदाई सावळ सथियारा ।—ऊ का.

सज्जनता, सज्जनताई—देखो 'सजनता' (रू. भे)

सज्जनी–स पु.—किसी नायक या सरदार के चढने का हाथी ।

सज्जळ–स पु.—१ हाथी, हस्ती ।
उ०—कत्था घण सज्जळ छज्जळ कोन, सिरगिर कज्जळ कूट समान । ससूदिन साथ समाकत मुड, दतूसळ मूसळ रूप दुग्ड ।
—मे म.
२ देखो 'सजळ' (रू भे.)

सज्जा—१ देखो 'सय्या' (रू भे)
२ देखो 'सजा' (रू भे.)

सज्जादानसीन–स पु [स सज्जादा+फा नशीन] वह जो किसी पीर या फकीर की गद्दी पर बैठा हो ।

सज्जादी सज्जादौ–स. पु [अ सज्जाद] १ मुसलमानो द्वारा नमाज पढते समय बिछाने का कपडा, मुसल्ला ।

द्रोण किर भारथ आयौ।—रा रू.

उ०—२ जैतहथा 'जैता' हरा, साम्हा 'जैत' सजोड़। पूगा हाथी खान रे, देता कुत धमोड़।—रा रू.

२ प्रबल।

उ०—बूंदी ऊपर हल्लियौ, हाडौ दुरजणसल्ल। दुद सजोड अरोड दळ, सग राठोड दुफल्ल।—रा. रू.

३ साथ, पास।

उ०—भुग्र सजोड़ै दीपै, वाकडी कवाण नै जीपै हो। माहो माहि न छीपै, ते भाल विसाल समीपै हो।—वि कु.

४ जोडे सहित।

उ०—घणा भीला अमल कीयौ छै। तिसै सजोड़ै जखडौ आवतौ दीठौ।—जखडा मुखडा भाटी री वात

उ०—२ हिवै वेहू सजोड़ै निरभै थका घोडा खडिया जायै छै। तरै चावडी नै कह्यौ, डावी जीमणी घास माहै निजर राखता जावौ।—जगदेव पवार री वात

५ हमउम्र, समवयस्क।

उ०—पुरी अवध परवेस सजोडा साथिया। चमर करै चोफेर हलै हाथिया।—र रू

स. पु—दम्पत्ति।

उ०—परगत इम आत चहु परणीजै, माण किता चा मारिया। डाणा हूत सजोडा डेरा, पाछा वीद पधारिया।—र रू.

सजोडणौ, सजोडबौ—देखो 'जोडणौ, जोडबौ' (रू. भे.)

उ०—करि सलाम सजोड़ि कर, इम वोलिया स वजीर। हुकम माफक होवसी, वरियाम हित चित वीर।—सू प्र.

सजोड़णहार, हारौ (हारी), सजोडणियौ—वि०।

सजोडिग्रोडौ, सजोडियोडौ, सजोड्योडौ—भू० का० कृ०।

सजोडीजणौ सजोडीजबौ—कर्म वा०।

सजोडियोडौ—देखो 'जोडियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सजोडियोडी)

सजोणौ, सजोबौ—देखो 'सजोणौ, सजोवौ' (रू. भे)

उ०—करणी रफड-रफड मल-मल न्हायौ-धोयौ अर मिळणै खातर मन री दीयौ सजोयौ।—दसदोख

सजोणहार, हारौ (हारी), सजोणियौ—वि०।

सजोयोडौ—भू० का० कृ०।

सजोईजणौ, सजोईजबौ—कर्म वा०।

सजोत—स स्त्री—देखो 'साजोत' (रू भे) (अ. मा)

सजोम—वि—जोशपूर्ण, जाशयुक्त।

उ०—१ अडै भुग्र बोम सजोम अपार, खडै भड धोम चखासु तुसार।—पे रू

उ०—२ अडै सिर बोम सजोम अरोड, रिमा सू आपडियौ राठोड। —गो रू

रू. भे.—साजोम।

सजोयोडौ—देखो 'सजोयोडौ' (रू. भे)

(स्त्री सजोयोडी)

सजोर सजोरौ—वि. (स्त्री सजोरी) १ बलवान, शक्तिशाली।

उ०—१ पडदल खा असुर गह पूरै, गयौ सिवाणै साथ गरूरै। और वळै नाहर उतपाती, महा सजोर खगै मेवाती।—रा रू.

उ०—२ 'जूझावत' 'सगराम' सजोरौ, तिसडोई 'भगवान' सतोरौ। 'तेजौ' 'मुकन' महाबळ तैसा, अरि दळ भाजण प्राण अनैसा। —रा रू.

२ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—१ हवै कि हाक हक्कय, तवै क्रतंत तक्किय। धडै अनत धारय सजोर घाव सारिय।—रा रू.

उ०—२ जाजळी फौज मुगळी सजोर, कर दिली सिली दस्तूर कोर। इम हले खेत सनमुख असाध, विख नदी उज्जली हूत वाध।—वि. स

३ असर डालने वाली, प्रभावशाली।

ज्यू—छद सजोरा है, कविता सजोरी है।

सजोवणौ सजोवबौ—देखो 'सजोवणौ, सजोवबौ' (रू. भे.)

सजोवणहार, हारौ (हारी), सजोवणियौ—वि०।

सजोविग्रोडौ, सजोवियोडौ, सजोव्योडौ—भू० का० कृ०।

सजोवीजणौ, सजोवीजबौ—कर्म वा०।

सजोवियोडौ—देखो 'सजोयोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सजोवियोडी)

सजोस—वि.—जोशयुक्त, जोशीला।

उ०—१ समडै मुडै मुडै समडावै, असुर सजोस रोस उफणावै। —रा. रू.

उ०—२ जिण पेख जवन सज्जोस, सुज गयौ तजि गढ सोम। —रा रू.

उ०—३ जिण जिण सथान फौजा सजोस, सुण खबर थया पण विण सरोस।—रा रू.

रू. भे—सजोसौ।

सजोसणियौ—वि—कवचधारी।

उ०—आगै मिरजै रा असवार सजोसणिया होइ अर ऊभा रहिया छै।—द. वि

सजोसौ—देखो 'सजोस' (रू भे.)

उ०—१ ऊहड भड गढ ऊपरा, जोड 'हरी' वड जाण। मानि सजोसौ मेलियौ, 'अभै' भरोसो आण।—रा रू

उ०—२ जीवण हरनाथौत सजोसौ, आसुर व्याधि हरण किर ओसौ।—रा. रू.

सज्जगीस—देखो 'जग्गीस' (रू. भे.)

उ०—सोमसी साखलै सारी सभाई कीधी।
—वीरमदे सोनगरा री वात

सभाड़ौ-वि.—१ वह स्थान जहां घने वृक्ष हो।
उ०—भाखर निपट सभाडो छै। थोहर बोर गूदी गागडी लोकस गूगळ निपट सभाडो छै।—वा दा. ख्यात
२ घना, गहरा।
३ अधिक, बहुत।
रू. भे —सभाडो, सजाडो।

सभाणो, सभावौ—देखो 'सजाणो, सजावौ' (रू. भे.)
उ०—१ चढै लोक चल्लै मसीता महल्लैं, झरोखो सभायो उठी साह आयो।—रा. रू.
उ०—२ सील सनाह सरीर सभायो दयानद सुभदाई।—ऊ. का
सभाणहार, हारो (हारी), सभाणियो—वि०।
सभायोडो—भू० का० कृ०।
सभाईजणो, सभाईजवो—कर्म वा०।

सभाय-स. स्त्री [स स्वाध्याय] १ पढे हुए पाठ का पुनरपि चिन्तन व पठन करने की क्रिया।
उ०—जद स्वामी जी पाछो फुरमायो पूजनै सूणे ऊभा रहो। इण रीते उत्तराध्ययन री सभाय अनेक वार कीधी।—भि. द्र.
२ स्वाध्याय।
रू भे —सज्जाय।

सभायोडो—देखो 'सजायोडो' (रू. भे)
(स्त्री. सभायोडी)

सभावट—देखो 'सजावट' (रू भे)
उ०—सभिया पखराळ सभावट का नखरा कुलटा की वटा नटका।
—मे म

सभावार, सभैवार—देखो 'सजावार' (रू. भे)
उ०—१ तद मुकनराम अरज करी जो मा'राज भाटी हजार तीन आदमी जबरदस्त छै जिणनूं फौज लै जाय सभावार जरूर करसू पण खरच री बदोबस्त कियो चाहीजै।—द. दा.
उ०—२ मू इण दोनू भाया मनसोभो कियो जो राजा अनूपसिंघ जी अरु दलेल खा वेडो उठायर आया है, तिण मू आपा इणा ऊपर हालो, सू इणा नू सभैवार किया विना अपणा इस जिलै मे अमल हुवै नही।—द दा

सभोळो-वि —बहुत, अधिक।
उ०—लायो जाय रोगहर लागो, पिलग सहतो सुण प्रबळ। देखे जाग रीछ कपि दोळा, दुसह सभोळा राम दळ।—र. रू

सझ्भडा—देखो 'सजड' (रू भे.)
उ०—वाजिया वेगडा व्रिखख भाजै यडा, ऊजडै सझ्भडा धूज प्रिथ्वी पुडा।—गु. रू व

सझ्या—१ देखो 'सजा' (रू. भे)
उ०—तद महाराज विचारियो कै इणनूं ज्यान सू मारा पण पातसाह जी रो मुमरो छै, मू क्यूंईक सझ्या तो जरूर देणी।—द. दा.
२ देखो 'सय्या' (रू भे.)

सट-स. पु. [अ. शट] १ यात्रादि मे भोजन साथ ले जाने के लिए धातु का बना कई खानो का डिब्बा विशेष।
[स. षट] २ छः की सख्या।
३ खाडव जाति की एक राग। (सगीत)
४ जटा।
वि.—मूर्ख।
उ०—कम पोचा कायरा, ठहै सट ठीगा ठोळी। मैला घटा जवान, तठै जिण सूरा टोळी।—पा. प्र
क्रि वि —शीघ्र, जल्दी।
उ०—जिण धाम नाम जजाळ जै, सट मिट जाय समाग्रा। तिण पर पाजा वधिया, अै निण नामातार रा।—डि. ना. मा.
२ देखो 'सटा' (रू. भे.)

सटक-स. स्त्री.—१ सटकने की क्रिया या भाव।
२ पतली छडी, कोडा।
[सं. षटक] ३ छ की सख्या।
४ छः वस्तुओ का समूह।
क्रि वि —शीघ्र, फौरन, तुरन्त।
उ०—१ वाज रग भटक वेहुवै वटक विचाळा, विखम घटफूट सिर सटक वहीया। लोय हुता पडै तूट माथा लटक, रटक वज दहूं दळ अटक रहीया।—गिरवरदान साढू
उ०—२ धगधगती सगडी भरी, प्राणउ अति अगार। माहि मूंकउ मानिनी सटक देई सिणगार।—मा. का प्र
उ०—३ परणी ने परहरै गेर सुत गोदी धारै। जोवन मद मे जोर सटक सुरलोक सिधारै।—ऊ का.

सटकणो, सटकवो-क्रि अ —१ खिसक जाना, चपत होना, हटना।
उ०—सुध मति के सब कोई साथी विरत परै सब सटकै।
—मीरा
२ कायरता दिखा कर भाग जाना।
उ०—भळकीयो सावळा वीर वागा भिळै, जेण त्रिगिया घरा वळण जोवै। कामणी नही वा कहू कुकामणी, सटकीया कथ रै कनै सोवै।—कायर रो गीत
सटकणहार हारो (हारी), सटकणियो - वि०।
सटकिओडो, सटकियोडो, सटक्योडो—भू० का० कृ०।
सटकीजणो, सटकीजवो—भाव वा०।

सटकरम—देखो 'खटकरम' (रू. भे.)

सटकरमो-स पु. [स षटकर्मा] यजन याजन आदि नियत कर्मो को करने वाला ब्राह्मण, कर्मनिष्ठ ब्राह्मण।

सटकळ-स पु.—एक पतला व छोटा सर्प जो उछल-उछल कर चलता

२ किसी पीर या फकीर की गद्दी।

सज्जाय—देखो 'सझाय' (रू. भे.)

सज्जित–स. पु.—युद्ध के लिए सजा हाथी। (डिं. को.)

वि.—१ सुशोभित।

२ आवश्यक वस्तुओं से युक्त।

३ तैयारी।

४ कटिबद्ध।

५ अलकृत।

सज्जियोडौ—१ देखो 'सजियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'साजियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सज्जियोडी)

सज्जीखार–स. पु —सफेदी लिए भूरे रग का एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार, सज्जी।

सज्जीभूत–वि. [स.] कटिवद्ध, तैयार।

उ०—१ अठी सू म्हैं आवा जरै ही उठी सूं थै सज्जिभूत होय साभळि आवौ। —व. भा

उ०—२ राउत चडीया सनाह लीधा किस्या किस्या सनाह जहर–जीण जीवणसाल जीवरखी अगरखी करागी वज्रागी लोहवद्ध लुडि समस्त सनाह लीधा सज्जीभूत हुआ। —का दे. प्र.

सज्झणौ, सज्झबौ—१ देखो 'सजणौ, सजवौ' (रू भे.)

उ०—१ साह वइठा मोहिया सभा मसदी सज्झ। चद दिपदा वेखिया, जाण नखत्रा मज्झ। —गु. रू. ब.

उ०—२ 'सूरउत' सुकर करिमाळ सज्झि, मुळकियौ मछरि घण रोस मज्झि। —गु रू. ब.

२ देखो 'साजणौ, साजवौ' (रू भे.)

सज्झणहार, हारौ (हारी), सज्झणियौ—वि०।

सज्झिअोडौ, सज्झियोडौ, सज्झ्योडौ—भू० का० कृ०।

सज्झीजणौ, सज्झीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सज्झियोडौ—१ देखो 'सजियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'साजियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. सज्झियोडी)

सज्य–वि —सह्य, सहनीय।

उ०—सहियौ नह जैसिंघ दै, सज्य असज्य प्रताप। सवळा दळ रोकन सकै, दै फोकन तज दाप। —वा दा

सज्या—१ देखो 'सय्या' (रू भे) (अ. मा.)

उ०—१ गोपाळ गोव्यद खगेस-गामी, नागेस सज्या कृत सैन नामी। —र. ज प्र.

उ०—२ अति साच पतसाह अछानै, खिण सज्या खिण तारत खानै। —रा. रू

२ देखो 'सजा' (रू भे)

उ०—समझ जाय तौ भलाई, नही तौ सज्या तौ पावै ही पावै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघोत री वात

सज्यास–स पु.—विश्वास, भरोसा।

उ०—१ महाराजा 'अजमाल', मेल कूरमा दिलासा। थया दाह मेटिया, आदि 'जैसाह' सज्यासा। —रा. रू.

उ०—२ नग हीर कनक निछरावळा ओपै पग जग आरती। पायौ सज्यास सगतीपुरा, परणायौ जोधापती। —रा रू.

सज्यासेसू–स पु [सं शेष+शय्या] १ ईश्वर, परमेश्वर। (ना मा.)

२ विष्णु।

सझड–स. पु.—समूह, झुड।

सझ–वि —सज्जिभूत, कटिवद्ध। (डिं. को.)

सझण–स स्त्री. [स. सज्ज] सेना को तैयार करने की क्रिया। (डिं. को)

सझणौ, सझबौ—१ देखो 'सजणौ, सजवौ' (रू. भे)

उ०—१ दुसमण फौज ऊपरै सझतौ देख वीर स्त्री पती ने सरावै है। —वी स. टी

उ०—२ जगत छत्रदिस लिखै जवावा, सझौ विमाह कि समर सतावा। —सू. प्र.

उ०—३ ऊगता भाण 'अगजीत' रा, वेढक भड अरिघड बना। सामुहा अया भारथ सझण, एक उतन रा ऊपना। —सू प्र.

उ०—४ कोई वीर वाळक आपरै पिता री वैर लेण सारू सझियौ सौ उण बाळक वीर ने समझावै। —वी. स. टी.

उ०—५ सुदरि दीठ सिणगार सोळ सझि, मुरछा आय पडे उपवन मझि। —सू प्र

उ०—६ दोनु ठौड एकण जायगा हुवै तौ परगनौ सझ आवै। —नैणसी

उ०—७ ताहरा ईयै राजा सहर तौ उजाड कियौ अर कोट सझियौ। —नैणसी

उ०—८ सझिया पखराळ सझेवट का, नखरा कुलटा कि वटा नटका। तरछी गति दीठ कटाक्ष तिया, मरमार वहादुर पीठ मिया। —मे. म.

२ देखो 'साजणौ, साजवौ' (रू भे)

उ०—१ तठै सवळावत सूरतसीघ, सझै खळै दगल मोहणसिंघ। —सू प्र.

उ०—२ कंवर सझण थित दिल्ली केरी, फुरमायौ सुज वात न फेरी। —रा. रू

सझा—देखो 'सजा' (रू. भे)

उ०—१ अैसै चरित अनत कै, को कह सकै अनंत। दुसटन कु दीवी सझा, साहि करेवा सत। —गज-उद्धार

उ०—२ पहिली राजाजी कन्हा सझा दिराडी अर लोक देखता वीच की छुडायौ। —द. वि

सझाई—देखो 'सजाई' (रू भे.)

मोह, मद, मत्सर ।

सटवटियौ–वि —१ निर्लज्ज, वेशर्म ।

२ कायर ।

सटसास्त्र–स. पु. [स. षट्शास्त्र] हिन्दुओ के छ. दर्शन—साख्य, योग, न्याय, वंशेपिक, पूर्व मीमासा और उत्तरमीमासा ।

सटसास्त्री–वि. [स. षट्शास्त्री] हिन्दुओ के छः शास्त्रो का ज्ञाता, पडित ।

सटामण, सटावण–स पु —रोटी वेलते समय लोई पर लपेटने का वह सूखा आटा जिससे वेलन द्वारा रोटी फैलाने पर वह लोई या चकले पर न चिपके ।

सटा–स. स्त्री [स शटा] १ शेर या घोडे के गर्दन के वाल, अयाल ।

उ०—१ सटा न मावै वाथ मे, फलग अटा गरकाव । पेख छटा सूकै पटा, सिवुर घटा मताव ।—वा. दा

उ०—२ जाजुळी धाराळ नारसिंघ री सटा रौ जायौ, प्रळै काळ घटा री छटा रौ जायौ पूत । रिमाघू उथाळौ चडी रीस री रटा रौ जायौ, भालौ किना ईस री जटा रौ जायौ भूत ।

—सूरजमल मीमरण

२ माधु-सन्यासियो के शिर के वाल । (डिं. को)

३ वालो की चोटी ।

४ देखो 'छटा' (रू. भे)

उ०—लटा लूंव दुम वन लता, कुस सटा चहुकोर । उदीपण भूखण अटा, घटा मोर घण घोर ।—क कु वो.

रू. भे.—सट ।

सटाक–क्रि वि. [अनु] शीघ्र, जल्दी ।

स. पु.—छडी या चावुक से उत्पन्न शब्द या ध्वनि ।

सटाणौ, सटावौ–क्रि स.—१ दो वस्तुओ को इस प्रकार मिलाना जिससे वह आपस मे परस्पर मिल जाय, मिलाना, चिपकाना ।

३ मार-पीट कराना ।

४ चिपकाना, लगाना ।

सटाणहार, हारौ (हारी), सटाणियौ—वि० ।

सटायोडौ—भू० का० कृ० ।

सटाईजणौ, सटाईजवौ—कर्म वा० ।

सटायोडौ–भू का. कृ.—१ चिपकाया हुआ, लगाया हुआ २ मैथुन कराया हुआ ३ मारपीट कराया हुआ ४ दो वस्तुओ का इस प्रकार मिलाया हुआ होना कि वे आपस मे मिल गई हो, मिलाया हुआ, चिपकाया हुआ ।

(स्त्री सटायोडी)

सटियोडौ–भू. का. कृ.—१ दो वस्तुओ का इस प्रकार मिली हुई होना कि उनके पार्श्व आपस मे मिल गये हो, चिपका हुआ, सटा हुआ ।

२ चिपका हुआ, लगा हुआ ३ मैथुन या सभोग किया हुआ. ४ मारपीट हूवी हुई ।

(स्त्री. सटियोडी)

सटीक–वि —व्याख्या या टीका सहित ।

सटीड़, सटीडौ–स. पु. [अनु] १ चोट, प्रहार ।

उ०—किणी भाव नी मान्या तो म्हैं गोफण रा सटीड उडाया । दो असवारा रै ढिगली व्हिया पछै अे राणे आया ।—फुलवाडी

२ प्रहार करते समय होने वाली ध्वनि विशेष ।

सटै–क्रि वि —देखो 'साटै' (रू. भे.)

उ०—१ तेण दिन गाळियौ खगा वळ तोलियौ, वोलियौ साच ऊजवाळ वा वोल । पाळवा वचन सिर अमर राखै प्रथी, काळवी सटै वित वाळवा कोल ।—गिरवरदान सादू

उ०—२ प्राण सटै ही प्रीत, जुडती जो दीसै जसा । आदरि म्हि रीत, मति छोडै मतवत तू ।—जसराज

उ०—३ ओथै तेरस ऊजळी, माह ऊजाळै पक्ख । ईदावत ईजत सटै, गो वामटै, परक्ख ।—रा. रू.

सट्टैवाज–स पु.—जो सट्टा और भाव की तेजी मदी के हिसाव से मौखिक व्यापार करता है ।

सटोरियौ–स. पु.—वह जो सट्टा खेलता हो और जो सट्टा खेलने का शौकीन हो ।

सटौ, सट्टौ–स. पु —१ किसी कार्य या शर्तें पूरी करने के लिए दो पक्षो मे हुआ अनुवन्ध विशेष ।

२ एक प्रकार का कल्पित क्रय-विक्रय जिसमे लाभ-हानि निश्चित भाव के उतार-चढाव से होता है ।

३ सौदा ।

सट्ठ, सठ–वि. [स. षठ] १ मूर्ख, वेवकूफ ।

(अ. मा; डिं. को; ह. ना. मा)

उ०—१ सठ सनेह जीरण वसन, जतन करता जाय । चतर प्रीत रेसम लछा, घुळत घुळत घुळ जाय ।—अग्यात

उ०—२ सट्ठ सभा मैं वैठना, पत पडित री जाय । एकण वाड़ै किम वडै, रोझ गधेडो गाय ।—अग्यात

उ०—३ हरीया दुरमति सठ की, पिंड प्राण लग होय । भावै स्याणा वोह मिळो, सठ न समझै कोय ।—अनुभववाणी

२ पागल ।

३ आलसी ।

४ धूर्त, चालाक । (डिं. को.)

५ कपटी । (डिं को.)

६ लुच्चा, वदमाश ।

७ दुष्ट ।

स. पु.—१ साहित्य के पांच प्रकार के नायको मे से एक जो अपना अपराध छिपाने मे चतुर हो ।

२ वसुदेव व रोहिणी का एक पुत्र ।

३ कश्यप व दनु के सौ पुत्रो मे से एक ।

४ एक राक्षस जिसके घर पर हनुमान ने लकादहन के समय

है। (शेखावाटी)

(मि. पिपोडी परड)

सटकळा-स. स्त्री. [स पटकला] सगीत के ब्रह्मताल के चार भेदो मे से एक।

सटक सपत्ति-सं. स्त्री —छः प्रकार के कर्म—शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान।

सटकाणौ, सटकावौ-क्रि. अ —१ सट-सट शब्द करते हुए छडी या कोडे से मारा जाना।

२ छडी, कोडे आदि से पीटते समय सट-सट की ध्वनि उत्पन्न होना।

सटकाणहार, हारौ (हारी), सटकाणियौ – वि०।

सटकायोडौ—भू० का० कृ०।

सटकाईजणौ, सटकाईजवौ – भाव वा०।

सटकारणौ, सटकारवौ— रू० भे०।

सटकायोडौ-भू का. कृ.—१ सट-सट शब्द करते हुए कोडे या छडी से मारा हुआ. २ छडी, कोडे आदि से मारते वक्त सट-सट की ध्वनि उत्पन्न हुवी हुई।

(स्त्री. सटकायोडी)

सटकार—स. पु.—१ सटकाने से उत्पन्न ध्वनि।

२ सटकाने की क्रिया।

सटकारणौ, सटकारवौ—देखो 'सटकाणौ, सटकावौ' (रू. भे.)

सटकारणहार, हारौ (हारी), सटकारणियौ—वि०।

सटकारिओडौ, सटकारियोडौ, सटकारचोडौ—भू० का० कृ०।

सटकारीजणौ, सटकारीजवौ – भाव वा०।

सटकारियोडौ—देखो 'सटकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सटकारियोडी)

सटकियोडौ-भू का. कृ.—१ खिसका हुआ, चपत हुवा हुआ, हटा हुआ. २ डर कर भागा हुआ।

(स्त्री सटकियोडी)

सटकै, सटक्कै, सटकै-क्रि. वि —१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—१ माच क्रोध सटकै मुख मोडै, पटकै आच पसार। पुण गुण नाच कुवाच प्रकासै नटकौ काच निहार।—ऊ का.

उ०—२ एक बोलै करडा बोल ए, खेद उपजाय सटकै दै खोल ए। —जयवाणी

उ०—३ असवारै असवार अटक्कै, लल वल लुवि लटक्कै। सभावै सममेर सटक्कै, तोडै तुड तटक्कै हो।—वि. कु.

सटकोण—स पु [स. षटकोण] वह जिसके छ: कोने हो।

सटकौ—स. पु —१ कुर्त्ता, कमीज आदि मे बटनो की जगह सोने की जजीर मे लगाये जाने वाले 'स्वर्ण बटन'।

२ हुक्के की निगाली के स्थान पर लगाई जाने वाली लम्बी नलिका।

३ अवसर, मौका।

सटचक्र-सं. पु. [स षटचक्र] कुडलिनी के ऊपर पड़ने वाले छः चक्र (योग) अनाहत, आज्ञाचक्र, ब्रह्मरंध्र, मणिपुर, मूलाधार और स्वाधिस्ठान।

२ षड्यत्र।

सटचरण—स पु. [स.] भौरा।

सटणौ, सटबौ—क्रि. अ.—१ दो वस्तुओ का इस प्रकार मिलना जिससे उसके पार्श्व आपस मे लग जाय, चिपकना, सटना।

२ चिपकना, लगना।

३ मारपीट होना।

४ मैथुन करना।

सटणहार, हारौ (हारी), सटणियौ —वि०।

सटिओडौ, सटियोडौ, सट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सटीजणौ, सटीवजौ—भाव वा०।

सटताळ—स. स्त्री [स. षटताल] आठ मात्राओ का मृदग की ताल विशेष। (सगीत)

सटतिलाइगियारस, सटतिलाइग्यारस, सटतिलाएकादस, सटतिलाएकादसी—स स्त्री —माघ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

रू. भे.—सठतिलाइगियारस, सठतिलाइग्यारस, सठतिलाएकादस, सठतिलाएकादसी।

सटपट—स स्त्री —१ गुप्त मत्रणा।

२ कान के समीप कही जाने वाली बात, कानाफूसी।

३ प्रसंग, सहवास।

क्रि वि.—शीघ्र, जल्दी।

सटपटाणौ, सटपटावौ—देखो 'सिटपिटाणौ, सिटपिटावौ' (रू. भे)

सटपटाणहार, हारौ (हारी), सटपटाणियौ—वि०।

सटपटायोडौ—भू० का० कृ०।

सटपटाईजणौ, सटपटाईजवौ—भाव वा०।

सटपटायोडौ—देखो 'सिटपिटायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. सटपटायोडी)

सटपदप्रिय—स पु. यौ [स. षट्पदप्रिय] १ कमल।

२ नाग केसर का पौधा।

सटपितापुत्रक—स पु. [स. षट्पितापुत्रक] सगीत के १२ मात्राओ के ताल का एक भेद।

सटमुख—स. पु. [स. षट्मुख] कार्तिकेय।

वि —जिसके छः मुख हो, छः मुखो वाला।

सटरस—स पु [सं. षट्रस] १ छः प्रकार के स्वाद या रस।

२ देखो 'सडज'।

सटराग—स. पु —सगीतशास्त्र के मुख्य छ राग—भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक।

सटरिपु—सं पु. [स. षड्रिपु] मनुष्य के छः विकार—काम, क्रोध, लोभ,

छलाग मारी थी ।
५ राम की सेना के एक वदर का नाम ।
६ श्वान, कुत्ता । (अ. मा.)
७ निस्तब्धता, मौन, शाति ।
८ पच, मध्यस्थ ।
९ कलई, रागा । (डि को.)
रू. भे.—सठ ।

सठता—स स्त्री.—१ धूर्तता, चालाकी ।
२ वदमाशी, लुच्चाई ।
३ मूर्खता, वेवकूफी ।
वि.—१ दुखद । * (डि. को.)
उ०—सठता धूरतता सहित छद रचै मद छाय । निपट लिया निरलजता, कुकवी जिको कहाय ।—वा दा.
४ पागलपन ।
५ आलसीपन ।

सठतिलाइगियारस, सठतिलाइग्यारस, सठतिलाएकादस, सठतिलाएकादसी देखो 'सटतिलाएकादसी' (रू. भे.)

सठमठ—वि —कृपरा, कजूस ।
उ०—चुरु आतसू के झळपट जगे अथाह, दूसरे सठमठ राजूकै हियै परदाह ।—सू. प्र.

सठवा—म. स्त्री —एक प्रकार की सोठ, जिसमे तन्तु अधिक होते हैं ।

सठि—देखो 'साठ' (रू. भे.)

सठिक—देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे)
उ०—सठिक अकूरा कर चह न सम्म, पै उरघ-रेख जळहळ पदम्म ।—सू प्र.

सठियाणौ, सठियावौ—कि. अ.—१ '६० वर्ष की उम्र प्राप्त होना ।'
२. ६० वर्ष की उम्र के वाद वुद्धि का ह्रास होना ।
उ०—१ साठ वरसा पैली ई म्हनै थारी अकल तो सठियाईजगी दीसै ।—फुलवाडी
उ०—२ साठां पछै आरी अकल अगेई सठियायगी दीसै ।
—फुलवाडी
सठियाणहार, हारौ (हारी), सठियाणियौ—वि० ।
सठियायोडौ—भू० का० कृ० ।
सठियाईजणौ, सठियाईजवौ—भाव वा० ।

सठियायोडौ—भू. का. कृ —१ ६० वर्ष की उम्र प्राप्त हुवा हुआ. २. ६० वर्ष की उम्र के वाद वुद्धि का ह्रास हुवा हुआ ।
(स्त्री सठियायोडी)

सठौ—देखो सेठौ' (रू. भे)
उ०—नानकडी नीमड़ली सठी डार, अति ऊचा चढणै री ठोड न सापजी ।—किसोरसिह
(स्त्री सठी)

सडग—देखो 'सड़ग' (रू. भे.)

सडबर—देखो 'डंबर' (रू. भे)
उ०—१ असमाण वाण आर्च लिया, सेन सडबर सालळै । कोटाण कोटि कोअण कटक, आया दळ वद्दळ मिळै ।—गु. रू. व.
उ०—२ सर सरिता बहु वाग सडबर, मझि तिण सिगी काम चित्र मदिर ।—सू. प्र.
उ०—३ रुड़ा अति रमणीक, भला हित वाहिक भमर । काइम अनै कपूर, सहित सिणगार सडंबर ।—ल. पि

सडगुण—देखो 'सड़गुण' (रू. भे)

सडज—देखो 'सडज' (रू. भे.)

सडणौ, सडवौ—देखो 'सडणौ, सडवौ' (रू. भे.)
उ०—आकास धडहडड, खोलड खडहडड, पखि तडफडड, वडा माणस अडवडड, कास्टखंड सडड ।—व. स.
सडणहार हारौ (हारी), सडणियौ—वि० ।
सडिओडौ, सडियोडौ, सड्योडौ—भू० का० कृ० ।
सडीजणौ, सडीजवौ—भाव वा० ।

सडदरसन—देखो 'खटदरसण' (रू. भे)

सडरस—देखो 'खटरस' (रू भे)

सडवदन—देखो 'सडवदन' (रू भे.)

सडवरग—देखो 'सडवरग' (रू भे.)

सडविवुतेल—देखो 'सडविदुतेल' (रू. भे)

सडविकार—देखो सडविकार' (रू भे.)

सडागनी—देखो 'सड़ागनी' (रू. भे)

सडानन—देखो 'सडानन' (रू. भे.)

सडुक—सं पु.—श्वान, कुत्ता । (ह. ना. मा)

सड्डौ—देखो 'सढौ' (रू. भे)

सढाण—सन्नद्ध, कटिवद्ध, तैयार ।
उ०—काहल कलयल ढवक वूक त्रवक नीसाणा । तउ मेल्हीउ भगदत्ति राइ गजु करीउ सढांणा ।—सालिभद्र सूरि

सढौ, सढौ—स पु.—ऊंट । (डि को.)
रू भे —सड्डौ, सढ्ढौ ।
अल्पा;—साढियौ ।
२ देखो 'सड़ौ' (रू भे.)
उ०—कूंभौ घोडै चढि नाठौ । पाछै चाचौ मेर चढियौ नै कह्यौ जाण न पावै । आगै गूजरी रौ एक तिण रै सढौ सवलौ ।
—राव रिणमल री बात

सढ्ढौ—१ देखो 'सढौ' (रू. भे.) (डि को)
२ देखो 'सडौ' (रू. भे.)

सणंक—वि.—१ साफ, स्पष्ट ।
२ निश्चित ।
स स्त्री —एक प्रकार की ध्वनि विशेष ।

उ०—२ सेठ उठा सू वहीर व्हैती वगत अेक डक भळै मारियो—थारी सीता सतवती रै सत री भरम जित्ता दिन वणियी रैवै उत्तोई सावळ है।—फुलवाडी

उ०—३ वी री वो रंग-रूप। वा री वा निजर। वा री वा बोली। तुरत समझणी कै धणी उणरै सत री परख करणी चावै।

—फुलवाडी

उ०—४ भतीजी कह्यो—अै तो परतख फूफोजी। आपरा सत रा जोर सू फुफकारोई नी करै। साप री जूण मिळी सो वारै हाथ री वात कोनी।—फुलवाडी

क्रि प्र.—गमणौ, जाणौ, टूटणौ, राखणौ लूटणौ।

मुहा —(१) सत छोडणौ=सतीत्व छोडना।

(२) सत राखणौ=सतीत्व रखना।

(३) सत लूटणौ=सतीत्व लूटना।

४ सती होने के कारण आने वाला जोश, उमग व बल।

उ०—१ सूरातन सूरा चढै, सत सतिया सम होय। आडी धारा ऊतरै, गिण अनळ नू तोय।—वा दा

उ०—२ इण तरह कहि भूडण अरवद सू उतरी और विनारी—जै मोनू तो डाढाळै रो साथ वार-वार मिळै नही, तीसू इव ही हाल वीरो साथ करणी छै। जाती वेळा तो च्यार घडी लागी थी, पण इव सत चढी अेक ही घडी माही आय पहुचो। उठै सारा साथ रा रावजी रै पातै वैठा छै। तद रजपूता कही—रावजी भूडण आई। रावजी कही—सावधान रहो, देखा भूडण कासू करै। तुरत घाव मता घालो। इतरै मैं भूंडण चाली सो जठै डाढाळा नू दाग दियो तो ठाव आई। पाखती सूरजकुड आई, स्नान कियो, सूरजनारायण नू प्रणाम करि, आय उण चिता दोळी च्यार प्रदक्षिणा कर सूरजजी नू मुख ऊचो कर अरघ देय कही—वार-वार डाढाळो पति पाऊ। इतरो कहि चिता माही गरक हुई। रावजी देखनै घणी प्रसमा करणै लागिया।

—डाढाळा सूर री वात

क्रि प्र—आणौ, चढणौ।

५ स्त्री द्वारा पति या पुत्र की लाश लेकर चितारूढ होने की क्रिया या भाव, उसके साथ सती होने की क्रिया या भाव।

उ०—१ हे सखी देख म्हारै विना एकली हीज रिण मे सूतो है पण सेझ री रीत नही छोडै छै सो अठै ही सेझ री रीत नही भूलो और ग्रीघा सू काम लियो तो सायत सुरग मैं अपछरा वरली तो म्हारै सोक होय जायला सो चाल सीस लै ताकीद सत कर हाजरी मे जाऊ।—वी म टी

उ०—२ ताहरा भोज लारै सेढू सती होवण आई। सत कियो हुतो।—देवजी वगडावत री वात

क्रि प्र.—करणौ, होणौ।

६ वात्सल्य, स्नेह।

उ०—थारी काली मासी रा अंतस मे हालताई इत्तो सत है कै किणी मरियोडा टावर नै खोळा मे लेय मूडै हाचळ लगावै तो वो उणी सायत पाछो जीवतो व्है जावै।—फुलवाडी

७ उदारता, दयालुता।

उ०—१ जस री गत अदभूत जका, सत धारिया सुहाय। नर जीवै नरलोक मे, जस अमरापुर जाय।—वा. दा

उ०—२ पीवता अमल तीजै पोहर, विरखा रित तीजै वरस। सत हीण घणा देखिस सुपह, सेरसिंघ जद समरिस।—पहाडखा आढो

९ धैर्य, साहस, हिम्मत।

उ०—राणा डूगर सी गढ झालीयो। मास ८ गढ घेरियो। पछै डूगरसी रो सत छूटो।—नैणसी

क्रि प्र—छूटणौ, राखणौ।

मुहा—सत राखणौ=हिम्मत रखना।

सत छोडणौ=साहस छोडना।

१० किसी पदार्थ का सार तत्त्व। (अनेका)

क्रि. प्र—काढणौ, निकाळणौ।

११ नदी।

१२ धर्म। (अ. मा.)

१३ सतयुग।

१४ मार्ग, रास्ता। (ह ना मा)

१५ तीन गुणो मे से एक गुण, सतोगुण।

उ०—सत रज तम रस पाच रहत रम, ता रस नू मन लागा।

—ह पु. वा

१६ जोश, उमग।

१७ वल, शक्ति।

उ०—१ सत पराक्रम सूरमा, मन्न य हुआ उदमाद। रोस फुणिंदा रढ त्रिया, हम्मीरा हठ वाद।—गु. रू व

उ०—२ जा 'अगजीत' आणीकै जो सत तेज लहै हम। पीठ पूठ ना फिरै, मेर मायै मडै तम।—अ वचनिका

उ०—३ पण साहरा पग घरा नै वहै नही साह रा सत खोळा होय गया। घरै आय सूतो पण नीद नही आवै।

—पलक दरियाव री वात

१८ परब्रह्म।

उ०—अतिमय अगाध, ईस्वर अराध, सत सिवर सद्य, अपवरग अद्य। मतव्य मान, गतव्य ग्यान, वेदक विधान, धर देय ध्यान।

—ऊ का

१९ किसी विशिष्ट गणनाक्रम वाली काल-गणना, सवत्।

उ०—ऊमर सत उगणीस मैं, वरस छनीसै वीच। फागण अथवा फरवरी, निरख्या सतगुरु नीच।—ऊ. का

२० शौर्य, पराक्रम।

२१ वीरता, वहादुरी।

२ वेश्याओ का मुहल्ला।

सणगारियोडौ—देखो 'सिणगारियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सणगारियोडी)

सणणकणौ, सणणकवौ–क्रि अ [अनु] सम सन की ध्वनि उत्पन्न होना।

उ०—१ सणणंकै खुरसाण, खाग धारा खणणकै। रणणकै रणराग, भलम पाक्खर भणणकै।—वं भा.

उ०—२ जिका सणणकि भणणक्कि जेह, सुवा भडभुम्मि हुआ घड सेह।—मे म.

सणणंकणहार, हारौ (हारी), सणणंकणियौ—वि०।

सणणकिओडौ, सणणकियोडौ सणणक्योडौ—भू० का० कृ०।

सणणंकीजणौ, सणणकीजवौ—भाव वा०।

सणणकियोडौ–भू. का कृ —सन-सन की ध्वनि उत्पन्न हुवी हुई।

(स्त्री सणणकियोडी)

सणण–स. स्त्री [अनु] हवा आदि के तेज चलने से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—१ सौ राजकंवर नै पूछ्या-ताछ्या विनाई वा उडण-खटोळौ सीखण सारू भूवा रै अडौ-अड पाखती वैठगी। भूवा तौ विना पाखा अर विना उडण खटोळै उडण वाळी दूती ही, सौ उडण खटोळा मैं वैठ्या पछै काई ढील। वा तौ सणण सणण करती ऊची चडगी।—फुलवाडी

उ०—२ पण आख्या खुलता ई जकौ रासौ वौ आपरी निजरा देख्यौ तौ उणरी पूतळिया ओकण ठौड ई चिपगी। साम ही जठै ई ठमग्यौ। सणण करता रूगता ऊभा व्हैगा। पाखती रा वेली नै सायड ऊभी वगळ वगळ मठोठै।—फुलवाडी

सणणाटौ–स. पु.—देखो 'सन्नाटौ' (रू भे.)

उ०—गोटमगोट दियौ गणणाटौ सणणाटौ समसाणै।—ऊ का

सणणाट—देखो 'सणणाहट' (रू भे)

सणणाणौ सणणावौ–क्रि अ [अनु] १ ध्वनि विशेष होना।

२ सनसनाना।

सणणाहट–स स्त्री [अनु.] ध्वनि विशेष।

उ०—कोतक हारा कळळ अवर सुणजै नह आहट। सणणाहट चरखिया, वीर घटा ठणणाहट।—सू. प्र

रू. भे —सणणाट।

सणपद–स पु.—पञ्जे वाले जानवर, जैसे—सिंह, चीता, वन्दर, विल्ली इत्यादि।

सणफ–स. स्त्री.—वात विकार का दर्द विशेष।

सणमणौ–स पु —१ रुग्ण, वीमार।

२ शून्य, जडवत्।

सणमाण—देखो 'सनमान' (रू. भे)

उ०—जोग्या-जत्या ज्यू निरमोही, कीरोही गुण-गाळ नी, पण जगती तौ इसी त्याग अर उदारता रौ उळटी सणमाण आखै।

—दसदोख

सणसणाणौ, सणसणावौ–क्रि अ.—ध्वनि उत्पन्न होना।

सणसणाणहार, हारौ (हारी), सणसणाणियौ—वि०।

सणसणायोडौ—भू० का० कृ०।

सणसणाईजणौ, सणसणाईजवौ—भाव वा०।

सणसणायोडौ–भू का. कृ.—ध्वनि उत्पन्न हुवी हुई।

(स्त्री सणसणायोडी)

सणसर–स. स्त्री.—कानाफूसी।

उ०—कम तणेइ घरि ऋस्ण चतुरभुज चालणहार। सणसर साभळी सामानइ रामानइ करइ विचार।—चतुरभुज

सणसूत्र–स पु [स शणसूत्र] श्राद्ध, तर्पण आदि कृत्यो के समय कनिष्ठिका की वगल वाली अगुली मे पहनने की कुश की वनी हुई पवित्री।

सणाइ, सणांई—देखो 'सहनाई' (रू. भे)

उ०—जागी ढोल अणइ सणाई, रिण काहल रिण तूर। वाजा वाजइ अवर गाजइ, खुर रजि छायौ सूर।—रुकमणी मगळ

सणियौ—१ देखो 'सीणौ' (अल्पा; रू. भे.)

२ देखो 'सिणतरौ' (रू भे.)

उ०—सणिया काट भरूंटा काट्या दोरौ दोरौ खेत निनाण्यौ। टीडी उड जी ए खेत परायौ।—लो गी

सणीओ–स. पु —१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हुवइ राजा परिवार वस्त्र आपइ, गुडीअ।सणीआं कस्तूरीआ, प्रतापीआ, कुसभीआ मोलीआ।-व स

२ देखो 'सिणतरौ' (अल्पा, रू भे)

सणु–स पु. [स] एक भारतीय जनपद।

सतंग–स पु —शरीर के सात अग।

उ०—लोडा तो लाग्या पण गोडा टूटग्या। सूना हुयग्या, सित्या निसरगी अर सतग टूटग्या।—दसदोख

सत–स पु. [स सत्] १ ब्रह्मा, विरचि।

उ०—सत सनदन सुक सनक, नारद अवर असेस। ब्रह्म मारग जं ब्रह्मनु, तुथी लहइ लवलेस।—मा का. प्र

२ सत्य। (अ. मा, डि को)

उ०—१ सत हरिचद समान, प्रगट दरियाव अथघपण। सुर तर आस सपूर, जाण पारस सेवक जण।—र. ज. प्र.

उ०—२ समंद हूत किरि सोम सोम हूता सिद्धाणह। सत हूंत किरि धरम, ध्रम्म हूता किल्याणह।—गु. रू. व.

उ०—३ चोट लगी सत सवद की, खूल्हा ब्रह्म कपाट। मेवा सा सव जीत कै, वस्या नगर वैराट।—अनुभववाणी

३ सतीत्व, पातिव्रत्य।

उ०—१ सत छोडै सीता सती, जत लिछमण सू जावै। महा-जोध हणमत, कळा वळ हीण कहावै।—चौथौ वीठू

सनकोट, सतकोटि, सतकोटी–स पु [स. शतकोटिः] १ इन्द्र का वज्र। (अ मा, नां. मा.)

उ०—छटा सतकोट कचोट छडाल, विसारत चेतन नेत विडाल।
चढै अग फूटि अणी रगचोळ, विलोकत जञ्जक जीह तबोळ।
—मे म

स. स्त्री.—२ सौ करोड की सख्या।

वि [स शतकोटि] १ सौ धार वाला, जिसके सौ धार हो।

२ सो करोड।

सतक्रत–स पु [स सत्कृतम्] १ श्रेष्ठ कार्य, उत्तम कार्य।

२ आदर, सत्कार।

[स शत+क्रतुः] ३ देवराज इन्द्र। (ना. मा.)

४ ध्वजा, पताका। (अ. मा)

५ धर्म, पुण्य। (अ. मा.)

[स. सत्कृत] ६ शिव, महादेव।

वि [स. सत्कृत] १ सम्मान या आदर दिया हुआ।

२ स्वागत किया हुआ।

३ देखो 'सतक्रति' (रू भे)

रू भे—सतक्रित।

सतक्रतचहन–स. स्त्री—ध्वजा, पताका।

सतक्रति, सतक्रती–स पु [स सत+क्रत] १ ऋषि, मुनि। (अ मा)

२ यम, धर्मराज। (अ मा)

३ देखो 'सतक्रत' (रू भे) (ह ना मा)

सतक्रतु–स पु [स शतक्रतु] सौ अस्वमेघ यज्ञ करने वाला, इन्द्र।

सतक्रित—देखो सतक्रत' (ह ना मा.)

सतक्रिया–स स्त्री [स] १ पुण्य कार्य, धर्म का कार्य।

२ सम्मान करने की क्रिया।

३ नमस्कार, प्रणाम।

४ अन्त्येष्टि क्रिया।

५ प्रायश्चित का कार्य।

सतखड–स पु. [स. शतखड] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

२ सोने की बनी हुई कोई वस्तु।

३ सो खड, टुकडे।

उ०—एकि ना रथ हुआ सतखड वेलि वाढो रहिया वलवड। एकि ना रथ तणा हय त्राठा, तीह ना मिसु एकि नाठा।—सालिसूरि

सतखडियो, सतखंडो–वि—सात खण्डो या सात मजिल वाला।

उ०—१ थारै वाई रो रोग है सो सतखडिया महिल थी पड्या थारी वाई मिटै।—भि. द्र

उ०—२ मिदर रै साम्हो-साम ग्यासी भाय माथै अेक वेंडो ई टापू। उण माथै सोना रो सतखडियो महल। सूरज री किरणा रो परस पाय पळक-पळक करै।—फुलवाडी

उ०—३ डावडिया दौडी दौडी जाय सतखंडियै मे'ल पूगी। कव-राणी नूं वधाई माग्या विना ई वधाई री वात सुणायदी।
—फुलवाडी

सतखणियो सतखणो–वि—१ सतखडा, सात खंडो या मजिल वाला।

२ देखो 'सतखडियो'

उ०—भोजन कर राजा नगर माहे गयो छै। सो वेरै माहे सतखणिया रेवास छै। पन्ना माणक जडया छै।—पचदडी री वारता

स पु—डिंगल का एक गीत (छद) विशेष, जिसके आरभ मे जागडा (मतातर से छोटा साणोर) गीत के द्वाले होते हैं। इसके ऊपर आठ मात्राओ का पद होता है जिसके आरभ मे संबोधनवाची शब्द कहा जाता है। इस पद को दुहराया जाता है। इसके बाद नौ मात्राओ का पद और होता है।

रू. भे.—सातखणो।

सतगामि, सतगामी–स. पु. [सं शतगामिन्] जटायु के एक पुत्र का नाम।

सतगु वि [स शत+गु] सौ गायें रखने वाला।

सतगुण–स. पु [स. शतगुण] १ कश्यप व क्रोधा के पुत्रो मे से एक।

२ देखो 'सतोगुण' (रू. भे.)

सतगुणो–वि. [स. शत+गुणित] (स्त्री. सतगुणी) १ सौगुना।

उ०—से इण प्रीत कर जाच्या सू सतगुणी लक्ष्मी दीवी सू इणां रो नाम स्त्रीपरमेस्वर री वखत आवै।—द दा.

२ सातगुना।

सतगुर, सतगुरु–स पु. [स. सद्+गुरु] १ सद्गुरु, श्रेष्ठ गुरु।

उ०—तौ सतगुरु ताया अरथ न आया, गरथ ही व्यरथ गमदा है। पीछै पिछताया ठीक ठगाया, भाया भूरि भमदा है।
—ऊ. का.

२ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ हरीया जौ सतगुर मिळै, जो चाहे सो देत। सिवरण सौदा सहज का, विण समझ्या नही लेत।—अनुभववाणी

उ०—२ पराब्रह्म सतगुर प्रणम्य, पुन्य सब सत समो। हरिरामा मुर भवन मैं, या पद समो न को।—अनुभववाणी

सतग्रीव–स. पु [स. शतग्रीव] कश्यप व दनु के पुत्रो मे से एक पुत्र, दानव।

सतघटा–स स्त्री. [सं. शतघटा] स्वामिकार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

सतघ्नी–स. स्त्री [स. शतघ्नी] १ प्राचीन काल का एक शस्त्र विशेष।

२ गले मे होने वाला रोग विशेष।

सतचद्र–स. पु [स. शतचद्र] १ महाविष्णु का एक कवच।

१ भीमसेन द्वारा मारा गया एक कौरव-पक्षीय राजा, जो शकुनि का भाई था।

सतजित–स. पु [स शतजित] १ भरतवशीय एक राजा जो विरज व विपूचि के सौ पुत्रो मे से एक।

२२ ब्रह्म।
२३ धर्मात्मा पुरुष।
वि —१ ठीक, सही, उचित, सच।
उ०—तद पातसाह जी हस नै फुरमायौ—जौ तुम अरज करी सौ सत है पण तुम दोय सकस कू दीन मे लियै सं हमारा दीन क्या वडा होयगा।—द दा.
२ सज्जन, साधु।
३ दृढ, मजबूत।
उ०—वहरी अमख हित पख वळ, गहे कुलक असक गत। 'सोनंग' 'दुरग' अकवर सहित, सभौ एम धर नेम सत।—रा रू
४ विद्यमान, उपस्थित।
५ असली, सत्य।
६ प्रतिष्ठित, सम्माननीय।
७ मनोहर, सुन्दर।
८ श्रेष्ठ, उत्तम।
उ०—सत कूर सनातन दोय सही, सत पथ वहै सौ महत सही।
—ऊ का
९ अमिट, स्थायी।
उ०—सत कूर सनातन दोय सही। सत पथ वहै सौ महत सही।
—ऊ. का.
१० विद्वान, पडित।
११ बुद्धिमान, चतुर।
१२ धीर, धैर्यवान।
१३ अटल, स्थिर।
१४ पवित्र, निष्पाप।
उ० —कटि तक पाणी जा कूद पडी, ढळतै सूरज री किरण जोव। कर पदम लिया देवै अरपण, सत भावा रो मूरत पिरोय।
—सकुतला
[स. शत्] १५ सौ।
उ०—सिधु परइ सत जोअणाँ, खिवियां बीजळियांह। सुरहउ लोद्र महक्किया, भीनी ठोवडियाह।—ढो मा.
[स. सप्त] १६ सात, सप्त। (डिं को.)
उ०—सत वार जरासध आगळ स्रीरग, विमहा टीकम दीध वग। मेलि घात मारै मधुसूदन, असुर घात नाखै अळग।
—राणा सागा री गीत
१७ पुण्यात्मा, धर्मात्मा।
उ०—मिटै दान सनमान, उरड रीझा आडबर। मिटै लाड मागणा, करम धरम सत क्यावर।—पहाडखा आढौ
१८ संख्या की दृष्टि से बडा, अधिक।
१९ देखो 'सत्रु' (रू भे)
उ०—धमक धमचक मचे सोर गोळा धमक, वीर डक त्रंक वक तेण वेळा। साकुरा घमक सुरताण तण सतां, सिर चमक आकास अक कहूक चपळा।—अग्यात
२० देखो 'सत्य' (रू भे) (डिं. को.)
रू. भे.—सत्त।

सतअगौ—स पु [स. शत+अग] १ रथ। (डिं. ना. मा.)
२ युद्ध का रथ।

सतअक्षी—स स्त्री [सं. शताक्षी] १ देवी, दुर्गा।
२ रात्रि, रात।

सतक—स पु [स. शतक] १ सौ का समूह, शतक।
२ शताब्दी।
३ सौ श्लोको का सग्रह।
वि.—सौ वाला।

सतकरम—स. पु [स सत्कर्म] श्रेष्ठ कार्य, पुण्य कार्य।

सतकरमी—वि [स सत्कर्मिन्] श्रेष्ठ और पुण्य कर्म करने वाला।

सतकार—देखो 'सत्कार' (रू. भे.)
उ०—१ भाव सहित तुमनै वहरावसी असनादिक चार आहार ही। वस्त्र पात्र वदना भाव सू, करसी पूजा सतकार ही।
—जयवाणी
उ०—२ दिल्लीस भी राजा, नवाब रहिया तिका नू बुलावण रा फुरमाण दिया। अर बडा सतकार रै साथ बुलाइ सारा ही आगरै एकत्र किया।—वं. भा

सतकारणौ, सतकारबौ—क्रि. स. [स. सत्कारणम्] १ आदर करना।
उ०—तै सवि हरि सतकारिय धारिय जिम धूमत। ताइ त्रोडिय कमलिनी रयलि नीसक भ्रमत।—जयसेखर सूरि
२ स्वीकार करना, मजूर करना।
उ०—जद उवै कहै जी थारी वदना म्है सतकारी थानै वदणा रौ धरम होय चूकौ। कोई कहै जी कहिणौ कठै चाल्यौ है।
—भि द्र
४ इज्जत करना।
उ०— पिता पितामह थी प्रगत, लिखि सलेम जयलाह। कलह जई सतकारिया, पटा दिवाइ सिपाह।—व. भा.

सतकाळी—देखो 'सातकाळी' (रू भे)

सतकुभ—स पु [स. शत+कुम्भ] १ एक पर्वत विशेष जहाँ सोना पाया जाता है।
[स शतकुम्भम्] २ स्वर्ण, सोना।

सतकुभा—स स्त्री. [स शतकुभा] एक पुण्य नदी का नाम।

सतकेतु—स पु [स. शतक्रतु] देवराज इन्द्र।
उ०—सुत वीस हुआ जिण रै प्रसिद्ध अनुजात गुणा सतकेतु इद्ध।
—व. भा.

सतकेसर—स. पु [सं. शतकेसर] शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम।

४ सत्ताधारी।

५ सुशील, शीलवान, सच्चरित्र।

उ०—सुदर सब नर-नारी हारै, वै तौ सीलवत सतधारी रै रामैया रा राज मैं।—गी. रा.

स. पु. [स. शतधार] इन्द्र।

सतध्रत—स पु. [स. शतध्रति] १ इन्द्र। (डि को.)

२ ब्रह्मा। (डि को.)

३ वह जो सत्य को धारण करे।

४ ब्राह्मण।

५ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

रू. भे —सतध्रति, सतध्रती।

सतध्रतसुत—स. पु. यौ [स शतध्रति+सुत] १ नारद मुनि। (डि. को)

२ जयत।

सतध्रति, सतध्रती—देखो 'सतध्रत' (रू. भे.)

सतध्रम—देखो 'सतधरम' (रू. भे.)

सतन—स. पु. [स. स्तन्य] १ दुग्ध, दूध। (अ. मा; ह. ना मा.)

[म स्तन] २ कुच, स्तन। (अ. मा, ह. ना. मा.)

सतनहावण, सतनहावणौ—सं पु.—माथुर कायस्थो मे मृत्यु के पश्चात् सातवें दिन किया जाने वाला स्नान। (मा. म.)

सतनारायण—देखो 'सत्यनारायण' (रू. भे)

सतनी—स पु [सं स+स्तन्य] स्तन मे उत्पन्न होने वाला पदार्थ, दूध। (ह ना. मा.)

सतप—स पु. [स] १ गर्मी, उष्णता।

२ तीक्ष्ण प्रकाश।

उ०—'पूना' हरी मुवौदळ पलटै, दीपावै जागळ वो देस। सुर-गिर सथिर कार वध सायर, सूरज सतप भार भ्रल सेस।

—कल्याणमळौत रौ गीत

वि.—१ तापवाला, उष्णता वाला।

२ प्रकाशमान, तेजपुज।

सतपण—स पु.—सतीत्व, सत्यव्रत।

उ०—जो मैं माहरौ सतपण राख्यौ अरु ठाकुरा री वेटी गुवाळचा नैं परणाई छै।—गाव रा धणी री वान

सतपत, सतपत्र—स पु. [स. शतपत्र] १ कमल। (अ मा; डि. को; ह ना मा.)

उ०—छत्र छाह् सतपत्र वदन छवि, करत ध्यान हिंगळाज दान कवि। मैं तव पुत्र मात तू मेरी, त्राहि त्राहि सरनागत तेरी।

—मे म

२ सेवनी।

३ मोर पक्षी।

४ सारस पक्षी।

५ तोता।

रू. भे — सतपात।

सतपत्रक—स. पु [स शतपत्रक] पुराणानुसार एक ग्रंथ का नाम।

सतपत्रवन—स. पु. [स. शतपत्रवन] द्वारका के पश्चिम मे सुकक्ष पर्वत के चारो ओर स्थित एक वन।

सतपथ—स. पु [सं. सत्+पथ] १ अच्छा मार्ग।

२ कर्तव्य पालन का मार्ग, सच्चाई का मार्ग।

३ उत्तम सम्प्रदाय।

सतपथब्राह्मण—स. पु.—यजुर्वेद का एक ब्राह्मण जिसके कर्त्ता याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

सतपद—स. पु [स शतपद] १ कनखजूरा।

२ चिउटी।

सतपदचक्र—स पु [स शतपद चक्र] सौ कोठोवाला एक प्रकार का चक्र। (ज्योतिष)

सतपदी—देखो 'सप्तपदी' (रू भे)

सतपदम—स. पु [स शत+पद्म] एक प्रकार का सफेद कमल विशेष।

सतपरव—स पु [स. शतपर्वन्] वांस। (अ. मा; ह ना. मा)

रू भे —सतपरव, सतपरवा।

सतपरवीका—स. स्त्री. [स. शतपरविका] दूब, दूर्वा। (डि. को.)

सतपरव, सतपरवा —१ गन्ना।

२ दूव। ३ आश्विन मास की पूर्णिमा।

४ शुक्राचार्य की एक पत्नी का नाम।

५ देखो 'सतपरव' (रू भे.) (अ. मा; डि. को; ह. ना. मा)

सतपात—देखो 'सतपात्र' (रू भे.)

सतपुडौ—स. पु.—१ एक पर्वत का नाम।

२ हथेली या तलुवे मे होने वाला एक फोडा विशेष।

३ वृक्षो मे रस विकार के फलस्वरूप निकलने वाला कोमल पुष्प जैसा एक पदार्थ विशेष। (क्षेत्रीय)

उ०—अमल सुपारी सतपड़ां रस, अमर गोळिया ग्रेवडा। खेजडां री खपत हुया है, वीर सती अर खेंवडा।—दसदेव

४ एक प्रकार का व्यजन। (रा सा स)

सतपुठौ—स पु —छकड़े के नीचे लगे मोटी लकडी का मजबूत डडा।

सतपुतर, सतपुत्र—स. पु. [स. सतपुत्र] सपूत, सुपात्र वेटा।

सतपुरस—स पु [स. सत्पुरुष] १ सज्जन व्यक्ति।

२ धर्मात्मा या पुण्यात्मा व्यक्ति।

३ महान्, श्रेष्ठ।

उ०—सतपुरसां की साख सुनि सीखत ग्यानी होय। हरीया गुर का सबद विन, ग्यानी भया न कोय।—अनुभववांणी

४ सुशील व्यक्ति।

रू. भे.—सतपुरुस, सत्पुरस, सत्पुरुस।

सतपुरी—स. स्त्री —पति के साथ सती होने वाली स्त्रियो को प्राप्त होने

२ एक प्रकार का यज्ञ।
३ श्रीकृष्ण व जाम्बवती के एक पुत्र का नाम।
४ विष्णु का नामान्तर।
५ यदुवंशीय सहस्त्रजित के पुत्र का नाम।
६ आश्विन माह मे सूर्य के साथ भ्रमणकर्त्ता एक यक्ष।

सतजिव्ह, सतजिन्हा, सतजिह, सतजिहा–स पु [सं सप्तजिह्वा] १ शिव, महादेव।
स. स्त्री.—आग, अग्नि।
उ०—मिण हेडण अहि मत्थ हुतै, करसण सिंह कनमूळ। सतजिह सुलगण सोरमे, भड तू तळणो भूल।—रेवतसिंह भाटी

सतजुग–स. पु. [स सत्ययुग] १ पौराणिक गणना के अनुसार चार युगो मे से पहला युग जो १७२८००० वर्ष का माना गया है।
उ०—१ 'मुकनावत' कुळजुग नै मूकै, सतजुग तेथ गयौ ततसार। पूरब पचम उदध न परसै, अनड परसियो जको उदार।—वा दा.
उ० –२ भूप कहे धनि धनि भाई, कलजुग मभ सतजुग अधिकाई।
—सू प्र
२ श्वेत, सफेद। (डि को)
रू. भे.—सत्यजुग, सत्ययुग।

सत्यज्योति–स पु. [स शतज्योति] शतज्योति के एक लाख पुत्रो मे से एक।

सतजुगी–वि. [सं सतयुगी] १ सत्य युगका, सत्ययुग सम्बन्धी।
२ सज्जन, भला।
उ०—निरधनिया धनवान सरिसा, राखै मदर वारणा। समता सार भाव सतजुगी, नीति न्याव है खाणरा।—दसदेव

सतणधय–स पु [स. स्तनधय] दूध पीता बच्चा। (ह. ना. मा)

सततत्री–स पु [स शततत्री] १ सौ तारो वाला वीणा।
२ कुरुक्षेत्र मे स्थित एक तीर्थ का नाम।

सतत–स पु [स] कुशल क्षेम। (ह ना मा)
वि [सं.] सदा, सर्वदा, हमेशा, निरतर।
उ०—पान संकुलित डाळ, तावडो किसाण टाळै। बारै मासा सतत, जिनावर सरणो भाळै।—दसदेव
२ सदैव, हमेशा।
उ०—करि उपचार अगद वपु कीधो, दुलभ वित्त सचय भ्रप दीधो, पौळि प्राति 'दुरसै' जिण पाई, वढी सतत 'सुरताण' वडाई।
—व भा

सततगति–स. स्त्री [स] हवा, पवन।

सततरूप–स पु—स्वभाव, आदत। (अ. मा, ह ना मा)

सततज्वर–स पु [स] लगातार बना रहने वाला ज्वर।

सततारका–स. पु. [स शत+तारका] सत्ताईस नक्षत्रो मे से चौबीसवा नक्षत्र विशेष।
२ सोम की सत्ताईस पत्नियो मे से एक।

सततौ–वि.—तेज, शीघ्रगामी।

सतदळ–स. पु.—कमल। (डि. को)

सतदला–स. स्त्री. [स शत+दला] सफेद गुलाब। (डि को.)

सतदुदुभि–स. पु. [स शतदुदुभि] जभासुर के पुत्रो मे से एक।

सतदेव–स. पु [स. सत्यदेव] सूर्य, सूरज।

सतद्युमन, सतद्युम्न–स. पु [स. शतद्युम्न] जनकवशीय भनुमान का पुत्र व शचि के पिता का नाम।

सतद्रस्ट्र–स पु. [सं शतद्रष्ट्र] कश्यप एव खशा के पुत्रो मे से एक राक्षस।

सतद्रु–स स्त्री [स शतद्रु] १ सतलज नदी का नाम।
२ गगा नदी का नाम।

सतधरम–स पु —कर्तव्य परायणता, स्वामिभक्ति।
रू भे —सतध्रम।

सतधांमा–स पु [स शतधामा] भगवान श्रीविष्णु का नाम।

सतधा–क्रि वि [सं शतधा] १ सौ प्रकार से।
२ सौ हिस्सो मे।
वि —१ सौ गुना।
२ सौ तरह का।

सतधन्वा–सं. पु. [सं. शतधन्वा] १ श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया एक योद्धा जिसने श्रीकृष्ण के श्वसुर सत्राजित् को मारा था।
२ एक प्राचीन ऋषि।
३ शैव्या नाम की स्त्री का पति, एक विष्णु भक्त राजा।
४ मौर्यवशी राजा।

सतधार–स पु [स. शतधार] १ वज्र।
२ इन्द्र का वज्र।
वि —सौ धारो वाला।

सतधारवन–स पु. [स शतधारवन] एक तीर्थ का नाम।

सतधारी–वि [स सत्त्वधारी] १ वीर, बहादुर, शक्तिशाली।
उ०—तरै महेची कयौ—रामदास वेरावत माहरै भाई छै, बडो रजपूत छै, तिणनै चौरासी आखडी छै, उगणीस विरद छै, बडो सतधारी रजपूत छै।—रा. सा. स.
उ०—२ सतधारी 'करनेस' का ऊवाणै खग्गं, जूटो वहता गैमरा जनु केहर जग्गं।—लूणकरण कवियो
२ उदार, दातार।
उ०—जस री गत अद्भुत जिका, सतधारिया सुहाय। नर जीवै नरलोक मे, जस अमरापुर जाय।—बा दा.
३ सत्य का पालन करने वाला, सत्य को धारण करने वाला।
उ०—पचइद्री कू जीत न मानत पाखड साध मुनिंद बडा सतधारी।—भि द्र
रू भे.—सतिधारी।

अधिकांश विद्वान यह मानते हैं कि शतरंज का प्रारम्भ सर्व प्रथम भारत से ही हुआ तथा इसकी उत्पत्ति स्थान भारत को स्वीकार करते हैं। यहां से यह खेल फारस गया, फारस से अरब और अरब से यह खेल यूरोपीय देशो मे पहुँचा। फारसी मे इसे शत्रज कहते हैं पर अरबवासी इसे शातरज, शतरज आदि नामो से पुकारने लगे। फारस मे ऐसा प्रवाद है कि यह नौशेरवां के समय मे हिन्दुस्तान से फारस को गया और इसका निकालने वाला राहिर का बेटा कोई सस्सा नामक व्यक्ति था। ये दोनो नाम किसी भारतीय नाम से अपभ्रंश हैं। इसके आविष्कार का कारण फारसी पुस्तको मे यह लिखा है कि भारत का कोई युद्ध प्रिय सम्राट नौशेरवा का समकालीन था वह किसी रोग से अशक्त हो गया था उसके मन बहलाव के लिए मनोरजनार्थ सस्सा नामक व्यक्ति ने चतुरग नामक खेल का अविष्कार किया। यह प्रवाद भारतीय प्रवादो से मिलता जुलता है। कुछ विद्वानो के मतानुसार यह खेल मदोदरी ने अपने पति को बहुत युद्धरत देखकर निकाला। इस प्रकार यह निःसदेह कहा जा सकता है कि भारत मे इस खेल का प्रचार नौशेरवां से बहुत पहले हो चुका था।

चतुरग के सस्कृत मे विभिन्न अर्थ मिलते हैं। चतुरग पर सस्कृत मे अनेक ग्रन्थ मिलते हैं, जिनमे चतुरग केरली, चतुरग क्रीडन, चतुरग प्रकाश और चतुरंग विनोद मुख्य हैं। करीब सात सौ वर्ष हुए त्रिभगाचार्य नामक एक दक्षिणी विद्वान इस खेल मे बडा निपुण एव दक्ष था। उसके अनेक उपदेश इस क्रीडा के सम्बन्ध मे हैं। इस खेल मे चार रगो का व्यवहार होता था। हाथी, घोड़ा, नौका और बट्टे (पैदल)। छठी शताब्दी मे जब यह खेल फारस मे पहुँचा और वहां से अरब गया तब से ऊंट और वजीर आदि बढ गये हैं। तथा खेल पद्धति मे भी काफी फेर बदल हुआ है। 'तिथि तत्त्व' नामक ग्रन्थ मे वेदव्यास ने युधिष्ठिर को इस खेल का जो परिचयात्मक विवरण दिया वह इस प्रकार है—चार व्यक्ति मिल कर यह खेल खेलते थे। इसका चित्रपट (बिसात) ६४ घरो का होता था जिसके चारो तरफ खेलने वाले बैठते थे। पूर्व और पश्चिम मे बैठने वाले एक दल मे तथा उत्तर-दक्षिण में बैठने वाले दूसरे दल मे होते थे। प्रत्येक खिलाडी के पास एक राजा, एक हाथी, एक घोडा, एक नौका और एक बट्टे या पैदल होते थे। पूर्व के ओर की गोटियां लाल, पश्चिम की पीली, दक्षिण की हरी, उत्तर की काली होती थी। खेल पद्धति प्रायः आजकल जैसी ही थी। राजा चारो तरफ एक घर चल सकता था। बट्टा या पैदल यो तो एक घर सीधे चल सकता था पर दूसरी गोट मारने पर एक घर आगे तिरछे भी जा सकते थे। हाथी चारो ओर (तिरछे नही) चल सकते थे। घोडा तीन घर तिरछे जा सकता था। नौका दो घर तिरछे जा सकती थी। मोहरें आदि बनाने का काम वैसा ही था जैसा आजकल है। हार जीत कई प्रकार की होती थी जैसे—सिहासन चतुराजी, नृपाकृस्ट, षटपद, वृन्नाक आदि।

सतरजबाज—स. पु [फा. शत्रजबाज] शतरज का खिलाडी।
२ शतरज का शौकीन।
३ शतरज का अच्छा खिलाडी।

सतरंजबाजी—स. पु. [फा. शत्रंज+बाज+ई] शतरंज का खेल खेलने का कार्य या व्यसन।

सतरंजी—स. स्त्री —१ विभिन्न रगो से बुनी बिछाने की दरी।
२ शतरज खेलने की बिसात।

सतर—सं. स्त्री [अ. सत्र] १ पंक्ति, कतार।
२ रेखा, लकीर।
३ देखो 'सतरन' (रू. भे.)
४ देखो 'सत्रु' (रू. भे)
उ०—'जेतहर' आभरण सतर घड, जीपणा, वरै कुण घणां दिवराय वाजा।—दुरसौ आढौ
५ देखो 'सतरै' (रू. भे.)
उ०—१ भाव भलै भगवत री, पूजा सतर प्रकार। परसिद्ध कीधी द्रोपदी, अग छठै अधिकार।—ध. व. ग्र.
उ०—२ वार भेद तप तपइ गति पामइ जी, संजम सतर प्रकार देवगति पामइ जी।—स कु.
६ देखो 'सितर' (रू भे)

सतरक—वि [स. सतर्क] १ सावधान, सचेत।
२ तर्कशील।

सतरकता—स स्त्री. [स सतर्कता] सावधानी, होशियारी।

सतरथ—सं पु. [स. शतरथ] यम की सभा मे रहकर यम की उपासना करने वाला एक राजा।

सतरदा—देखो 'सतद्रुदा' (रू भे.) (अ. मा)

सतरन—स पु —गुजरात प्रदेश का एक नाम।
उ०—दुजड चूर दुरवेस, देस अपणावै सतरन। रवी सेस अवनेस, वधु 'वखतेस' सरोतर।—रा. रू
रू. भे.—सतर, सतरि।

सतरमाळियौ—सं. पु —आकस्मिक मृत्यु अथवा युद्ध मे वीरगति प्राप्त व्यक्ति का श्राद्ध जो आश्विन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को किया जाता है।

सतरमीं—स. स्त्री.—१ प्रायः साधुओ मे प्रचलित किसी की मृत्यु के उद्देश्य से सत्रहवें दिन किया जाने वाला एक सस्कार विशेष। (रामस्नेही)
२ इस सस्कार के अवसर पर किया जाने वाला भोज।
रू भे —सतरवी।

सतरमौं—वि.—जो क्रम से सोलह के बाद हो।
रू. भे —सतरवौ, सत्तरमौ।

सतरवीं—देखो 'सतरमी' (रू. भे.)

वाला लोक।

उ०—सुरलोक सतपुरी ग्रता धामिका धरा ग्रति। इंद्रपुरी सुख ग्रधिक, उमा उमला विमला रति।—सू प्र.

सतपुरुस—देखो 'सतपुरस' (रू भे)

सतपोतक–स पु.—भगदर रोग का एक भेद विशेष। (ग्रमरत)

सतफेरा—देखो 'सप्तपदी' (रू. भे.)

सतबळ, सतवलि, सतबळी–स पु [स शतवलि] राम की सेना का एक बदर। (रामकथा)

उ०—जामवत क्रुध झल जलहळी, सुक्खेण मयदह सतबळी।
—सू प्र

वि —मात जगह से मुडी हुई, बल खाई हुवी।

सतवाहु, सतबाहु–स. पु [स. शतबाहु] एक ग्रसुर का नाम।

सतभइयौ–स पु —जिसके सात भाई हो।

सतभाम, सतभांमा–स स्त्री [स सत्यभामा] कृष्ण की ग्राठ पटरानियो मे से एक।

उ०—राधा रुकमण ग्रर सतभांमा, पगल्या चापै जी हर मिंदर मे।
—लो. गी

रू भे.—सत्यभामा।

सतभाव–स. पु [स. सद्भाव] १ सद्‌विचार, ग्रच्छे विचार।

उ०—साई सू साचा रहौ, वदा सू सतभाव। भावै लावा केस रख, भावै घोट मुडाव।—ग्रग्यात

२ विद्यमानता।

३ ग्रच्छा भाव।

सतभिख, सतभिखा, सतभिस, सतभिसा, सतभीखा–स. स्त्री [स. शतभिषा] सत्ताईस नक्षत्रो मे से चोवीसवां नक्षत्र।
(ग्र. मा; ना मा.)

सतभूमियौ, सतभोमियौ–स पु —सात मजिल का।

उ०—१ इण भात देखता देखता राज भूवन मे गया। तठै सत-भूमियै ग्रवासै चढीया।—रीसाळू री बात

उ०—२ नगर मै गाछी रा घरा कन्है ग्रायो, ऊचा महल दीठा सतभूमिया ग्रवास छै।—पचदडी री वारता

उ०—३ रात ग्राधी रा पातसाह पिण सतभोमिया हेटै ग्रायौ। हिरण पातसाहनै देख नै छिप बेठो नै पातसाह जोवै छै।
—रीसाळू री बात

सतमजली–स स्त्री —देखो 'सतमजलौ' (ग्रल्पा, रू भे)

सतमजलौ–स. पु [स शप्त+ग्र मजिल] सात मजिल का, सात खण्डो का। (भवन)

उ०—गळी हुडवळी, गडा, गुडकै, वैर भाव सो वीसरै। खाण छोड सतमजला सजै, काण धडै मे नीसरै।—दसदेव

ग्रल्पा,—सतमजली।

सतम–स. पु [फा. सितम] गजब, ग्रनर्थ।

सतमख–स पु [स. शतमख] १ वह व्यक्ति जिसने सौ यज्ञ किये हो।

२ देवराज, इन्द्र।

३ उल्लू।

४ कौशिक।

सतमत–स. पु —सती होने का भाव।

उ०—सती सतमत साहिकै, जळी मडै कै साथि। हरीया मन मूवा बिना, कछु न ग्रावै हाथि।—ग्रनुभववाणी

सतमन, सतमनू सतमन्यु–स. पु [स शतमन्यु] १ इन्द्र।
(ना मा, ना. डिं. को)

२ उल्लू।

सतमयुख–स पु [स शतमयूख] चद्रमा, चाँद।

सतमाय–स. स्त्री —सोतेली माँ।

सतमा'यौ, सतमासियौ, सतमाहियौ–स पु —वह नवजाव शिशु जो गर्भधारण के नौ मास की बजाय सात मास बाद ही जन्मा हो।

सतमिण–स. स्त्री —१ वेश्या, रडी।

उ०—साई सू दिल दूसरा, सो सतमिण सी नारि। हरीया उर इकतार विन, वाकु ठाकुर मारि।—ग्रनुभववाणी

२ व्यभिचारिणी, वदचलन स्त्री।

सतमुख–वि [स. शत्+मुख] १ सौ मुखो वाला।

२ सौ द्वारो वाला।

स. पु —एक ग्रसुर का नाम।

सतमेव – निश्चय ही, जरूर ही।

उ०—सरै छै काम तिया सतमेव, दीयै सुख वछित रिखभदेव।
—ध व ग्र

सतयुग—देखो 'सतजुग' (रू. भे)

सतरग–स पु [स सप्तरग] ग्राकाश, गगन। (ना. डिं. को.)

वि —जिसमे सात रंग हो।

सतरगी–स स्त्री [स. श्वेतरगी] यश, कीर्ति।

वि.—सात रगो वाला, सप्तरगी।

उ०—भेळी ग्रवकै वीज पुरदर री परी, सतरंगी पोसाक जगमग हे जरी।—लो. गी

उ०—२ हवेली सू कडाजूड होय नै ग्राया ई हा। कडप दियोडी सतरगी मोळियो। लाबो छिणगो।—फुलवाडी

सतरज–स स्त्री [फा. शत्रज] प्रसिद्ध भारतीय खेल जो चौमठ खानो की बिसात पर खेला जाता है, चतुरग।

उ०—नानेरै सगळाई उण रा लाड राखता। कवड्डी, भुरणी, ग्वत्ता दडी, सोळै सारी, सतरज, चौपड-पासा रो वाजिदो खिलाडी। तिरणा मे ई साईना-साथिया नै लारै राखतो।—फुलवाडी

वि वि.–इस खेल के उत्पत्ति स्थान को लेकर विद्वानो मे विभिन्न मत हैं। कोई इसे चीन देश मे निकला हुग्रा वतलाते है कोई मिश्र देश से ग्रौर कुछ के मतानुसार यह यूनान की देन है। परन्तु

सतवत्सल-स पु [स. शतवत्सल] एक वटवृक्ष जो कुमुद पर्वत पर स्थित है।

वि. वि.—इसकी सौ शाखाएं हैं जिनसे दूध, दही, शहद, गुड, घी, अन्न आदि पदार्थों की नदिया, अम्बर, शय्या, आसन, आभूषण आदि कुमुद पर्वत पर गिरते हैं, जो उक्त पर्वत के उत्तर मे स्थित इलव्रत वासियो के लिए लाभदायक है। (पुराण)

सतवन—देखो 'स्तवन' (रू भे.) (डि को)

सतवर—देखो 'सत्वर' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

सतवाडौ-स. पु [स. सप्त=वाटक] १ सप्ताह।

उ०—दोसती-मितराई मोटी चाल, कितौ ही तुलावौ चावै मडी सू माल मारजारौ मन सतवाड़ै हरियौ हुयग्यौ।—दसदोख

२ प्रसव के सातवे दिन प्रसूता स्त्री को विधिवत करवाया जाने वाला स्नान, सतौला।

क्रि. प्र —पूजणौ।

सतवाची-वि.—सत्य बोलने वाला, सत्यभाषी।

स पु —युधिष्ठिर। (अ मा)

सतवादि, सतवादी—देखो 'सत्यवादी' (रू. भे.)

उ०—१ अभमानव जुद्ध भीमैंण इसा, सतवादि जुधिस्टर द्रोण जिसा।—शि. सु. रू.

उ०—२ राव वीकोजी वडौ राज वाधियौ अरु वडी जमीयत रा धणी हुवा नै वडा तपस्त्री हुआ। वडा दातार, वडा तरवारिया हुवा। वडा सतवादी सिरदार हुवा।—द दा.

उ०—३ सतवादी हरिचद सै राजा, नीच घर नीर भरै। पाच पाडू अरु कुती, द्रोपदी, हाड हिमाळै गरै।—लो गी

सतवार—देखो 'सत्वर' (रू. भे.)

उ०—विकसो भाता लै भतवारा वाली, चगी चोधरण्या सतवारां चाली।—ऊ. का

सतवाळ-स स्त्री.—चौहान वश की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सतवी-सं स्त्री.—सूठ। (अ. मा.)

सतवेघ-स. पु [स. शतवेधिन्] १ अमलवेंत।

२ चूका या चुक्रि नामक सब्जी।

सतव्रत—देखो 'सत्यव्रत' (रू भे.)

उ०—१ जनहरीया जाह जाइयै, जा घरि सतव्रत होय। अधरम असती अगनै, हरिजन जाय न कोय।—अनुभववाणी

उ०—२ त्रिधनासुत त्रिघ्यारुण तपीस, सतव्रत हुवौ जिणसूं प्रयीस।—सू प्र

सतसंग, सतसंगत, सतसगति—देखो 'सत्सग' (रू. भे)

उ०—१ मुणौ पढै नह सासतर, सेवै नह सतसग। सुखदायक किम सापजै, डर सतोस अभग।—बा. दा.

उ०—२ गात-नै वै सगळघा नै रामायण री कथा सुणाती। चोखा-चोखा पद गाती। गळी-मे चोखी सतसंग हुवण लागगी।—वरसगाठ

उ०—३ कनक दान कुरखेत, विरधि गुणि वासुर वासुर। सुबुध वधै सतसंग, ग्यान गुर वाणि उजागर।—रा रू.

उ०—४ सफल जिनादा जीवीया सदा साध सु सग। हरीया सतसंगति बिना, करि करि मूवा कुसग।—अनुभववांणी

सतसंगी—देखो 'सत्सगी' (रू. भे)

सतसध-वि. [स सत्यसध] सत्यप्रतिज्ञ, अपने वचन को पूरा करने वाला।

स पु —१ रामचद्र।

२ जनमेजय।

३ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक।

सतसई-स स्त्री. [स सप्तशती] वह ग्रन्थ जिसमे सात सौ पद्य हो।

सतसठ-वि —सात और साठ का योग।

रू भे.—सडसठ।

सतसठमौं, सतसठवौं-वि.—जो क्रम मे छासठ के बाद हो।

रू भे —सडसठमौ, सडसठवौ।

सतसठे'क-वि —सडसठ के लगभग।

सतसठौ-स. पु.—सड़सठ की सख्या का वर्ष।

उ०—स्रावण आगम सतसठै, आयौ पुर 'अगजीत'। मुरधर थया वधामणा, सत्रहर थया सभीत।—रा रू

सतसत, सतसत्त-स. पु [स. शतसप्त (ततु)] इन्द्र।

उ०—ज्यौ जभासुर जग पै सतसत्त सुहाया। कै द्रोणाचळ लैनै कौ कपिराज कसाया।—व. भा

सतसहस्त्र-स. पु [स. शतसहस्त्र] कुरुक्षेत्र के एक पुण्य स्थान का नाम।

सतसाद-स [शतशाद] कश्यप व दनु के पुत्रो मे से एक, दानव।

सतसीरस, सतसीरसा-स पु [स शतशीर्ष, शतशीर्षा] १ मंत्र बल से चलाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

२ भगवान् श्रीविष्णु।

स स्त्री —३ नागराज वासु की पत्नी।

सतस्रंग-सं पु [स. शतश्रृग] १ पाण्डुग्रो का जन्मस्थान एक पर्वत।

२ पाण्डु को शाप देने वाला एक मुनि।

३ एक राक्षस का नाम।

सतह-स स्त्री. [फा] किसी वस्तु का ऊपरी भाग, तल।

सतहत्तर—देखो 'सितहत्तर' (रू. भे)

सतहय-स पु [स शतहय] तामसमनु के पुत्रो मे से एक।

सतहर-सं. पु [स. शत्रु+हर] शत्रु का वशज।

उ०—भारथ भीम भुजाळ, भयकर इन भडा। सतहर सारि सधारि, उपाडण अन्नडा।—महाराजा करणसिंघ रौ गीत

सतहीण, सतहीणौ-वि.—दुर्बल, कमजोर।

सतरवों – देखो 'सतरमौ' (रू. भे)

सतरांम–स. पु.—१ शव को श्मशान भूमि मे ले जाते समय की जाने वाली ध्वनि ।

२ दादू मतावलबियो द्वारा परस्पर मिलने पर किया जाने वाला अभिवादन ।

उ०—छूटौ नीर चखा सतराम ऊचरता छेला, सरूपदास री छाती उभेला समद । जामी ग्राज म्हानै छोड अकेला कठीनै जावौ, कोयला विरगा हेला दे रही कमध ।—महात्मा सरूपदास

सतरात्र, सत्ररात्रि–स पु [स. शतरात्रि] एक प्रकार का यज्ञ विशेष, जो सौ रातो मे पूरा होता है ।

सतरि—१ देखो 'सित्तर' (रू भे)

उ०—सतरि खान बहुत्तर उमराव हजूर तेड लिया ।—रा. रू.

२ देखो सतरन' (रू. भे)

उ०—१ नरइद 'ग्रभौ' नवकोट नाथ सरि करण सतरि धरवर समाथ । ग्रहमद नगर खाटरा ग्रनूप, रसवीर प्रगट घट विकट रूप ।

—रा. रू

उ०—२ महि लियरा सतरि ग्ररिमळरा मारा, सज्जै पयारा गज्जै निसारा ।—रा रू

सतरिदा— देखो 'सतद्रुदा' (रू. भे)

सतरुद्र–स पु [स शतरुद्र] १ एक तपस्वी मुनि जो इच्छित रूप ले सकते थे । (रामकथा)

२ सौ मुह वाला रुद्र का एक रूप ।

३ एक शक्ति ।

४ वेद का शतरुद्रिय प्रकरण जिसमे रुद्रदेव के १०० नामो का उल्लेख है ।

सतरुघ्न—देखो 'सत्रुघरा' (रू भे.)

सतरूप–स पु [स शनरूप] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

२ शिवावतार का एक शिष्य ।

सतरूपा–सं. स्त्री [स. शतरूपा] ब्रह्मा की मानस कन्या तथा स्वायभुव मनु की पत्नी का नाम ।

उ०—सभूमन त्रप दसरथ्थ समथ्थी, कोसळया सतरूपा कथ्थी ।

—र ज. प्र

वि. वि —मतान्तर से ब्रह्मा से ही इसे स्वायभुवमनु आदि सात पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

रू भे —सत्रूपा ।

सतरे'क–वि —सत्रह के लगभग, सत्रह के करीब ।

रू भे —सत्तरे'क ।

सतरै–वि. [स. सप्तदशन् प्रा. सत्तरस अप. सत्तरह] सोलह और एक का योग, सत्रह ।

स. पु —सतरह की सख्या या ग्रक ।

रू भे —सतर, सत्तर, सत्रह ।

सतरौ–स पु —सत्रह की सख्या का वर्ष या साल ।

उ०—१ पाचौ ग्राठौ दस पनरौ खूगडिया, सतरै वीसै हय खतरै मे पड़िया ।—ऊ का

उ०—२ खळ इतरा पड़िया खगे, रिरा नाडूल तरस्स । सैतीसै सतरै ममत, ग्रासु सुद चवदस्स ।—रा रू

रू. भे —सतरी ।

सतलडी–स स्त्री.—एक प्रकार का सात लडो का ग्राभूषरा विशेष ।

सतलडौ–वि. (स्त्री सतलडी) १ सात तह का, सात परत का ।

२ सात लडो का ।

स. पु.—एक प्रकार का हार ।

सतळज, सतळज्ज–स. स्त्री.—पजाब की पाँच नदियो मे से एक ।

उ०—देवी कावेरी तापी क्रस्ना कपीला । देवी सोरा सतळज्ज भीमा सुसीला ।—देवि.

सतलस, सतलस्स–स. पु.—एक हिंसक जानवर ।

उ०—जरख रीछ वड्डाख, सिवा सतलस्स मलक्का । साकरिए डायरिए सकति, काळ भैरव काळक्का ।—गु रू. व.

सतलुंदी–स स्त्री.—सतलज नदी का एक नाम । (द दा.)

सतलोक—१ देखो 'सतीलोक' (रू. भे.)

उ०—१ मुह लखि सीस तजेवा सुर-मुख, सती हुवै सतलोक लहा सुख ।—सू प्र.

उ०—२ पातरा पाच नाजर उभै, भल वाइ मीतभाइयौ । सिघवत पुरस 'ग्रजन' सतीया सहत, यू सतलोक सीधाइयौ ।—रा. व. वि.

उ०—३ हथळेवौ नरलोक, पइसारौ परलोक मे, सुख विलसरा सतलोक, जान सहीता जावस्या ।—रामनाथ कवियौ

२ देखो 'सत्यलोक' (रू. भे)

उ०—चढ विमारा चलाविया, सको कमवज सिरदारै । सूरलोक सतलोक, जाइ 'ग्रमरेस' जुहारै ।—सू प्र

सतलोचण, सतलोचन–स. पु. [स शतलोचन] १ स्कन्द का एक सैनिक ग्रनुचर ।

२ एक ग्रसुर । (पुराण)

सतवंती–वि. स्त्री.—पतिव्रता, सतीत्व वाली ।

उ०—१ कह्यौ—भूवाजी ग्राप जैडी सीता सतवती तौ दुनिया थपिया पछै ई नी जलमी व्हैला ।—फुलवाडी

उ०—२ कै तो जीवावै सीता सतवंती, कै'स जीवावै हड़मान जती ।—लो गी.

उ०—३ परावती पारणी सीळवती सतवंती, ग्रति मुगती हालियौ, किया साथै कुळवती ।—रा. रू.

उ०—४ सो ग्रापरी सतवती लुगाई रो ग्रादेस मान वामरा वेटिया रै सगपरा सारू ग्रापरी टपरी ग्रर गाव छोड वहीर व्हियौ ।

—फुलवाड़ी

स स्त्री.—जानकी, सीता । (डिं. को.)

सताईजणौ, सताईजवौ—कर्म वा० ।
सतानद-स्र. पु. [स. शतानद.] १ ब्रह्मा । (डि. को.)
२ विष्णु ।
३ कृष्ण का नाम ।
४ जनक के पुरोहित का नाम जो गौतम के पुत्र थे ।
५ विष्णु के रथ का नाम ।
६ गौतम ऋषि ।
७ सावर्णि मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक ।
रू. भे.—सत्यानद ।
सतानदा-स. स्त्री [स शतानदा] १ एक पौराणिक नदी का नाम ।
२ कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम ।
सतानन-स पु [स शतानन] शिव का एक नाम ।
सतानना-स. स्त्री. [स] एक देवी का नाम ।
सतानीक-स. पु [स] १ द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न नकुल का पुत्र जिसे अश्वथामा ने मारा था ।
२ ययातिवशीय वृहद्रथ के पुत्र व दुर्भद के पिता का नाम ।
३ एक असुर का नाम ।
४ कुरुवशीय राजर्षि का नाम ।
५ राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय का पुत्र ।
६ सुदास राजा के पुत्र का नाम ।
७ मत्स्यनरेश विराट का भाई एव सेनापति ।
[स शतानीक] ८ बुढा व्यक्ति ।
९ ब्रह्मसावर्णि के मनु के पुत्रो मे से एक ।
सताव, सतावी—१ देखो 'सिताब' (रू भे)
उ०—१ आप सताव सवार हुइजै । तमामी तो देखौ है काहू चापडै खेत चलाय देवा ।—मारवाड रा अमरावा री वारता
उ०—२ पत्र जेण लिख्यौ इण विध प्रियोग, भेजौ सताव खुरसाण भोग ।—सू प्र
उ०—३ सभि वाळक सिरपोस, नाम किताब निबावा । साह वाल दळ सवळ, मझै भेजत सतावा ।—सू प्र.
उ०—४ दुजन सतावी देरया निमक धीर घर नाय । कवरी ज दुलण त्यार कर, मेलो चवरचा माय ।—वख्तावर मोतीसर
उ०—५ हाथी तुरग सर्व लै हालौ, साह हिजूर सतावी चालौ ।
—रा रू
उ०—६ दूत सतावी दोडिया, लिया बधाई हाथ । सुणियौ सुर वदै जिसौ, मुरधर हदै माथ ।—रा रू
उ०—७ पण सूरोजी खडा रहिया कहियौ - सतावी करो पाघ वेगी बाधो ।—सूरे खीवै काधलोत री वात
उ०—८ असि धावक आविया, सस्त्र माजिया सतावी । सागा चढिया सुक्र, फून झडिया हद फावी ।—मे. म.
सताब्द-स पु—शताब्दी, सौ वर्ष ।
वि. [स. शताब्द] सौ वर्ष का ।
सताब्दी-स स्त्री [स शताब्दी] सौ साल की अवधि की सूचक सज्ञा ।
उ०—अठारवी सताब्दी री बात । सियाळा रो मोसम । प्रभात री वेळा ।—अमर चूनडी
सताभिधान-वि [स. शतावधान] सौ बातो को एक साथ याद रखकर ज्यो का त्यो वापिस उत्तर देकर बताने वाला, यथार्थ उत्तर देने वाला ।
उ०—सुधा समाज ताज सै बुधा विराजतै नही । सताभिधान स्राव्य कै सुकाव्य साजतै नही ।—ऊ. का
रू. भे.—सतावधान ।
सतायु, सतायुस-वि. [स शतायुस्] सौ वर्ष का ।
उ०—दफ्तर सब दहयू इसौ, कियौ सतायु सिताव । आयौ पाछौ वणक इक, जमपुर सू कर जाब ।—बा. दा.
स पु—१ पुरुरवा व उर्वशी के पुत्रो मे से एक ।
२ बुध व इला के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।
सतायोडौ—देखो 'सतावियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री सतायोडी)
सतार-स. पु. [स] १ ग्यारहवा स्वर्ग । (जैन)
२ देखो 'सितार' (रू भे)
सतारथ-वि. [स सत्यार्थ] १ सत्य, यथार्थ ।
उ०—अकुटवध तिण गीत नै, कहै सरब कवियाण । राघव जस जिण मझ रटै, वळै सतारथ वाण ।—र. ज. प्र
२ देखो 'सत्यारथ' (रू. भे)
सतारा, सतारा-स पु (ब. व) सात सितारे जो उत्तर दिशा मे उदय होते है, सप्तऋषि ।
पहेली—सात सतारा नवलख तारा, इण धरती मे दो विणजारा ।
सतारौ-स. पु —१ एक प्रकार का सुषिर वाद्य यत्र ।
वि० वि०—वह वाद्य जिसमे दो बासुरिया होती है । किन्तु जो अलगोझे से भिन्न प्रकार से बजाया जाता है । इस वाद्य मे एक बाँसुरी के छ पैरवे या छेदो पर छहो अगुलियाँ रहती है । दूसरी बाँसुरी को केवल श्रुति स्वर अथवा आधार स्वर के रूप मे बजाया जाता हे । होठो के बीच मे दोनो बाँसुरियो के मुह रहते है जिनमे से एक केवल श्रुति स्वर देता रहता है जो फूक द्वारा निरन्तर बजाया जाता है । दूसरी बाँसुरी को गीत अथवा गत के अनुसार विभिन्न फूको से बजाया जाता है । इस वाद्य मे एक विशिष्टता यह है कि स्वरो की मूर्च्छनाओ के बदलन के लिए आधार स्वर देने वाली बाँसुरी के छेदो को मोम से बद करते रहते हैं, जिससे एक ही प्रकार से अंगुलियाँ चलाने से भी विभिन्न स्वरावलिया मिल जाती हैं । यह वाद्य मुख्यतया जैसलमेर की एक चरवाहे जाति—जतो द्वारा बजाया जाता है । इस जाति के पीछे इसका नाम 'जतारा' भी है । यो अन्य चरवाहो का कार्य करने वालो ने भी इस वाद्य को अपना लिया है ।

उ०—किण सरणं जाऊ रे, दीन भाख सुणाउ रे। सत हीण न थाउ मन कीज्यै खरौ रे।—प च. चौ.

सतह्लद-स. पु. [स. शतह्लद] १ एक प्राचीन ऋषि का नाम।
२ कश्यप व दनु के पुत्रो मे से एक।

सतह्लदा-स. स्त्री. [स. शतह्लदा] १ विराध नामक राक्षस की माता व जय की पत्नी का नाम।
२ दक्ष की एक कन्या जो बाहुपुत्र को व्याही थी।
३ बिजली, विद्युत।
स पु —४ इन्द्र का वज्र।
रू. भे.—सतरदा।

सतागत, सतागति, सतांगती-स. स्त्री [स सतागति] सत्पुरुषो को प्राप्य स्थान, मोक्ष।

सताणमौं, सताणवौं-स पु —सन्तानवे की सख्या का वर्ष।
वि.—जो क्रम मे छियानवे के वाद पडता है।
रू भे —सताणूमौ, सताणूवौ, सिताणमौ, सिताणवौ।

सताणू-वि —नब्बे और सात का योग।
रू. भे. —सिताणू।

सताणूक-वि.—सत्तानवे के लगभग।

सताणूमौं, सताणूवौं-वि —देखो 'सताणमौ' (रू भे.)

सताम—देखो 'सिताव' (रू भे.)
उ०—तौ वेग लिखि फुरमाण तेडौ, सूर जोध सकाज। व रि त्रिण सलाम सताम कहियौ जो हुकम महाराज।—सू. प्र

सतास-स. पु [स. शताश] सौवा हिस्सा।

सता-स पु.—१ सत्य।
२ कला।
३ भक्ति।
४ चमत्कारपूर्ण कृत्य, सिद्धि।
उ०—करामात री वात साखात कैई। सता मातरी चद्र कूपादि सैई।—मे म
५ प्रकृति।
६ माया, लीला।
७ अस्तित्व।
उ०—१ ज्यूं नभ माथै रवी अरु रजनी, आवै अरु जावैरी। तम प्रकास दोनू दिखलावै, यू सम सता रहैरी।
—स्रीसुखराम जी महाराज
उ०—२ ज्यू दरपण के अतर, बाहिर मुखा भास विचारी। अतर सूक्ष्म वाहिर स्थूला, ता मध सता हमारी।
—स्रीसुखराम जी महाराज
८ वास्तविक अस्तित्व।
९ सयोग, इत्तफाक।
उ०—जे सता थारी कैणी मान जातौ तौ तिजोरी रै मूडागै दोनूं चोरा री ढिगली कीकर व्हैती।—फुलवाडी
१० बल, शक्ति।
११ भगवान् श्रीविष्णु।
१२ देखो 'सत्ता (रू. भे.)

सताईस-वि. [सं. सप्तविंशति, प्रा. सत्तवीस, अप सत्तावीस] बीस और सात का योग।
रू. भे.—सतावीस, सत्ताईस।

सताईसमौं, सताईसवौं-वि.—जो क्रम मे छाईस के बाद आता हो।
रू भे —सत्ताईसमौ, सत्ताईसवौ।

सताईसे'क-वि.—सत्ताईस के लगभग।
रू भे —सत्ताईसेक।

सताईसौ-स पु.—सताईस की संख्या का वर्ष या साल।
रू भे —सताईसौ।
२ दो हजार सातसौ की सख्या, २७००।

सताउर, सताउरी —देखो 'सतावर' (रू. भे.)
उ०—सखाहूली सताउरी, स्रस्टिवेलि नइ सोम। साथरि सारस सींगडी, पूरीसह परि रोम।—मा. का प्र

सताक्ष-सं पु [स शताक्ष] एक दानव। (पुराण)

सताक्षी-स. स्त्री [स. शत+अक्षी] १ रात, रात्रि।
२ सौंफ।
३ दुर्गा देवी।
४ पार्वती।

सताड़णौ, सताडवौ—देखो 'संतापणौ, सतापबौ' (रू. भे.)
उ०—थरकै कोट सहत पुर थाणा, भार सताडै पडै भगाणा।
—रा. रू.
सताडणहार, हारौ (हारी), सताडणियौ—वि०।
सताडिओडौ, सताडियोडौ, सताड्योडौ—भू० का० कृ०।
सताड़ीजणौ, सताड़ीजवौ—कर्म वा०।

सताड़ियोडौ—देखो 'सतापियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सताडियोडी)

सताजोग—इत्तफाक।
उ०—१ सताजोग री वात के आपरी वोरगत उगावण सारू बामण रौ वेटौ उणीज गाव मे आयोडौ हौ।—फुलवाडी
उ०—२ सताजोग री बात के उणी इज खेजडी मे अेक भूत रौ वासौ।—फुलवाडी

सताणौ, सतावौ—देखो 'सतापणौ, सतापवौ' (रू भे.)
उ०—गुळवाड गोहू जव चिणारौ, जुवार रौ चरणहार छै। मयमत छै सू चर चर फरणिया आया छै। माछुरा रा सताया।
—रा. सा स.
सताणहार, हारौ (हारी), सताणियौ—वि०।
सतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

[स क्षिति] ६ पृथ्वी, भूमि ।
उ०—ससि सूर पवन पाणी सती, मुगती की अजामण मरण । त्रैलोकनाथ 'जगियो' तवै, सरण राख असरण सरण ।—ज. खि
[स. सती] वह स्त्री जो पातिव्रत्य का पूर्ण पालन करती हो । पतिव्रता, साध्वी । (अ मा; डिं. को)
उ०—१ सत छोडै सीता सती, जत लिछमण नूं जावै । महा जोध हणमत, कळा बळ हीण कहावै ।—चोथो वीठू
उ०—२ आप जैडी सती रै जोग आ वात है । आपरा सत आगै तौ म्हारी अकल कह्यौ इ नी करै ।—फुलवाडी
उ०—३ जननी तुझ हस्त मस्तक जिह, त्रिदसालय सुख वसत निलय तिह । अस्ट सिद्धि नव निद्धि अखंडित, परम सती जुवती, सुत पडित ।—मे. म.
१२ वह स्त्री जो अपने मृतक पति या पुत्र की लाश के साथ चितारूढ हो भस्म होती है ।
उ०—सती बळै जूझै सुभट, करै ग्रंथ कविराज । दाता माया ऊधमै, नाम ऊवारण काज ।—बा दा
उ०—२ सूर सती जब जाणीयै, आपा ऊपर खेल । हरीया सूरा लड़ मरै, सती अगि तन मेल ।—अनुभववाणी
उ०—३ मुह लखि सीस तजेवा सुर-मुख, सती हुवै सतलोक लहा सुख ।—सू प्र
उ०—४ सूरातन सूरा चढै, सत सतियां सम दोय । आडी-धारा ऊतरै, गिणै अनळ नूं तोय ।—बा. दा.
१३ स्त्री, महिला, औरत । (अ. मा.)
१४ जैन साध्वी स्त्री ।
वि. [स. सत्] १ सत्य, यथार्थ । (ह. ना. मा.)
२ सत्य पर अटल रहने वाला, सत्यवादी ।
३ वीर, बहादुर । (मि. 'असती' (३))
उ०—हूं कंकाळी भट्ट, सती, असती नर पेखू । मरग मरत्य पाताळ देव, नर नाग परेखू ।—जगदेव पवार री वात
मुहा —सौ सती नै एक जती=एक जितेन्द्रिय व्यक्ति सौ बहादुरो के बराबर होना है ।
४ दातार, दानी ।
उ०—१ पाखडी वह नग्न पंथ पर, वूमै लेकर घोटा । सती मरद होवै जो सच्चा, लाव भरादै लोटा ।—ऊ का
उ०—२ भलौ समौ जोयनै धाररा मुहता नू रावळ सू मिळायो । वात एकत मिळ सकौ कीवी । आगला राजा सती हुता । अचडा बोल उवारण री घणी वात मन मा राखता । तरै देवराज कामदारा नूं कह्यौ—औ वडौ मुहतौ वडै दरवार रौ परधान इतरा राईतन छोडनै मोनू जांणनै इतरी भूय आयो, तौ इणरो जरूर अरथ सारणो । तरै हाथी सो दिया । मुहता नू घोड़ो सिरपाव दे सीख दी ।—नैणसी
मुहा —एक सती नै नगर सारौ=एक दातार व्यक्ति सारे नगर के लोगो से अच्छा होता है ।
५ निश्चल, दृढ । * (डिं. को.)
रू. भे.—सइ, सई, सति, सतीय, सत्ती ।
सतीअमावस, सतीअमावस्या-स. स्त्री. [स. सतीअमावस्या] ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या का एक नाम । इसी दिन सावित्री व्रत भी किया जाता है ।
सतीक्षण, सतीखण-वि [सं. सतीक्ष्ण] १ तीक्ष्ण, तेज ।
२ नुकीला ।
उ०—व्रति कान सतीखण अणिय वक, फिर कलम जुगल नभ करत अक ।—रा. रू.
रू. भे.—सतीखौ ।
सतीखौ—१ विशेष, अधिक ।
उ०—भट चारण गुण भणै, तिका रीझणो सतीखौ । माया ऊगमणै सघण वरसणै सरीखौ ।—सू. प्र.
२ देखो 'सतीखण' (रू. भे.)
सतीचौरौ-स पु.—सती स्त्री के सती होने की जगह पर बनाया जाने वाला चबूतरा ।
सतीतफौ—देखो 'इस्तिफौ' (रू. भे.)
उ०—अंब नयर उथपतां थाट 'जैमाह' थपाए । देह सतीतफा दिली जेण जेजियो छुडाए ।—सू. प्र.
सतीत्व-स. पु [स.] सती होने की अवस्था या भाव ।
सतीपुर—देखो 'सतीलोक' (रू. भे)
उ०—'हरा' रौ सती संग सतीपुर हालियो, माल्हियो 'सेर' प्रम जोत माहि ।—पहाड़खा आढो
सतीमाता-स. स्त्री.—१ पति या पुत्र की लाश के साथ जलने वाली वह स्त्री जो लोक देवी के रूप मे पूजी जाती हो ।
सतीय—देखो 'सती' (रू. भे.)
उ०—सतीय वेठ छुइ क मगि रही, इद्रह आइसु तु तम्ह कही । मेल्हउ पडव वडइ वछेदि, विणु हथियारह वाधा भेदि ।
—सालिभद्र सूरि
सतीर —देखो 'सहतीर' (रू भे.)
सतीरांणी-स. स्त्री —एक प्रसिद्ध मारवाडी लोक गीत ।
सतीलोक-स पु —सती स्त्रियो के मृत्यु उपरात मिलने वाला लोक, स्वर्ग ।
रू. भे.—सतलोक ।
सतीवरि-स. पु [स. सीता+वर] सीतापति श्रीरामचद्र ।
सतीवांम-स. स्त्री [सतीवामा] सीता, जानकी । (अ. मा)
सतुआसंकरांत, सतुआसकरांति, सतुआसकरायत, सतुआसकरायति, सतुआसक्रांति-स स्त्री [सं. सक्तुकसक्राति] वैशाख मास मे होने वाली मेष सक्राति ।

२ देखो 'सितारौ' (रू. भे.)

सतालंक-स पु [स. शताऽऽलक] बलराम। (ह ना मा.)

सतावणौ-वि (स्त्री सतावणी) सताने वाला, कष्ट देनेवाला।

उ०—खरै अराति खेत चेत हेत कौ खतावणौ, सदा अबोध बोध बोध सोध कौ सतावणौ।—ऊ का

सतावणौ, सतावबौ—देखो 'संतापणौ, सतापबौ' (रू भे.)

उ०—गोतम सुता तास सुत नागर धीरज सुचिता ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरौ रिपु प्राणी, ताहू न कदै सतावै।—र. रू.

सतावणहार, हारौ (हारी), सतावणियौ—वि०।

सताविप्रोडौ, सतावियोडौ, सताव्योडौ—भू० का० कृ०।

सतावीजणौ, सतावीजबौ—कर्म वा०।

सतावत-सं पु.—राठौडो की एक उप शाखा या इस उपशाखा का व्यक्ति।

सतावधान—देखो 'सताभिधाम' (रू. भे.)

सतावधानी-वि. [स शतावधान] शतावधान की क्रिया को साधने वाला।

सतावन-वि [स सप्तपञ्चाशत, प्रा. सत्तावण्ण, अप सत्तावन] पचास और सात का योग।

रू भे—सत्तावन।

सतावने'क-वि—सत्तावन के आसपास, लगभग।

रू. भे.—सत्तावने'क।

सतावनौ-स. पु.—सत्तावन की सख्या का वर्ष या साल।

रू भे.—सत्तावनौ।

वि—जो क्रम मे छप्पन के बाद पडता हो।

सतावर, सतावरी-स. स्त्री. [स. शतावरी] १ एक प्रकार की झाडनुमा लता जिसके बीज व जड औषधि के काम आते हैं। शतमूली, सफेद मूसली।

वि. वि.—सतावर शीतल, कडवी, मधुर, पित्तनाशक और रसायन कर्म मे श्रेष्ठ है।

२ इन्द्राणी।

रू. भे—सताउर, सतावरि।

सतावियोडौ—देखो 'सतापियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री सतावियोडी)

सतावौ—देखो 'सिताव' (रू. भे)

उ०—साहब लिखै सुजात सू, करै सतावी काज। हुकम धरू सिर साम रौ, मैं फिर करू' इलाज।—रा. रू.

सतावरत-स पु [स शतावर्त] १ एक पवित्र वन का नाम।

२ शकर, महादेव।

सतावीस—देखो 'सताईस' (रू भे)

उ०—गाव माहे सतावीस वीमाह, रजपूत जाट वाणिया रै हुता सु नाना आवती छी।—नैणसी

सतावौ-स. पु.—प्रथमवार प्रसव देने वाली गाय के गर्भ के सातवें मास मे स्तनो मे होने वाला उभार।

क्रि. प्र—करणौ, होणौ।

सति-क्रि.—१ अस्ति, है।

उ०—घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊच छिछ ऊछळै अति। पिडि नीपनो कि खेत्र प्रवाली मिरा हस मीमरै सति।—वेलि

२ देखो 'सती' (रू. भे)

उ०—१ सिध रीझै इम वयण कहे सति, मझि गगा करि धार महीपति।—सू प्र

उ० —२ अकल वधै मत्रिया धरा सति वधै सामध्रम। मरस वधै अरिन सोख, पाण भड वधै पराक्रम।—सू. प्र

उ०—३ मुदै एह खट महल सहल म्रत गिणै सुपावन। पडदायत हित प्रिया अघट सति मिळै अठावन।—रा रू.

उ०—४ वडै बोल सति वाणि, एम चहुवाण उचारै। आज चाड आपणी, घणी सूरलोक मिधारै।—रा. रू

सतिक्ख—अति तीक्ष्ण।

उ०—वदै राम हू राम वायक विक्ख, तिकै राम रा वाण जाणै सतिक्ख।—सू प्र

सतिधारी—देखो 'सतधारी' (रू भे.)

उ०—अगन वरण जै सुत आचारी, सीघ्र नपति जिण सुत सतिधारी।—सू प्र

सतियास, सतियासी—१ देखो 'सितियामियौ' (रू. भे)

उ०—१ जग तोप झाल असमान जाय उठता भमग धर पडै आय। सतियास वरस सवत सत्रास, महमत सरद आसोज मास।—वि स

उ०—२ सत्रहरस सतियास सक, धूव अहमदपुर धाम। वर कवि 'करण' वखाण कर, सुभटा तणौ सग्राम।—वि स.

२ देखो 'सितियासी' (रू भे.)

सतियौ-स पु.—देखो 'स्वस्तिक' (रू भे)

सती-स पु—१ कुवेर। (ह ना मा)

[स शतिन्] २ सौ का समूह।

स स्त्री. [सं.] ३ दक्ष प्रजापति की पुत्री जो भगवान शकर को व्याही गई थी।

उ०—छती तू सती भूपति दच्छछोणी, गती मत्त मातग तू हसगोणी। तुही चद्रमा तुड चामुड चडी, अपरणा अजा ईस्वरी तू अखडी।—मे म

४ अगिरस ऋषि की पत्नी।

५ गिरिजा, पार्वती। (अ. मा; डिं. को.)

६ विश्वामित्र ऋषि की पत्नियो में मे एक।

७ सीता। (ना. मा; अ मा)

८ द्रौपदी। (अ. मा)

सात गोलाकार चपटे टुकडो (सतोळिये) को गिराने का प्रयास करता है और ऐसा करने के लिए उसे तीन मौके दिए जाते हैं। अगर वह तीनो वार सतोळियो को नही गिरा सकता है या सतोळिया नही वना सकता है तो वह आउट घोषित कर दिया जाता है। जब वह सतोळिये गिरा देता है और सतोळिया बना देता है तो उसे फिर तीन मौके मिलते है और इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है। खिलाडी जब सतोळिये को गिराने का प्रयास करता है तब प्रतिपक्ष का एक खिलाडी जो सतोळियो के पीछे और गेंद फेंकने वाले खिलाडी के सामने खडा रहता है, वह अगर गेंद लपक लेता है तो वह खिलाडी आउट हो जाता है। अगर वह एक हाथ से गेंद लपक लेता है तो गेंद फेंकने वाले खिलाडी का पूरा दल आउट घोषित हो जाता है।

अगर गेंद फेंकने वाला खिलाडी गेंद फेंक कर सतोळिये को गिराने मे सफल हो जाता है और गेंद लपकी नही जाती है, तब प्रति पक्षी खिलाडी गेंद लेकर खेलने वाले दल के खिलाडियो को मारने का प्रयास करते हैं। खेलने वाला दल एक तरफ तो गेंद से वचने का प्रयास करता है और दूसरी तरफ गिरे हुए सतोळियो को वापस जमाने का भी, अगर वे सतोळियो को जमा कर 'सतोळियो' की आवाज कर देते हैं तो उनका एक सतोळिया वन जाता है अगर इस बीच उनके गेंद लग जाती है या उनके पक्ष का कोई खिलाडी बीच मे ही सतोळिया बोल देता या सतोळिया जमाने के बाद या सतोळिया बोलने के बाद वह वापस गिर जाता है तो वह खिलाडी जिसने सतोळिया बनाने के लिए गेंद फेंकी थी, आउट घोषित कर दिया जाता है। अगर कोई खिलाडी सात सतोळिये एक साथ बना लेता है तो उसे अपना पिट्ठू (किसी खिलाडी के रूप मे या खुद पिट्ठू की जगह खेल सकता हैं।) बनाने का अधिकार हो जाता है। पिट्ठू जितने भी चाहे बना सकते है। यह खेल बच्चो का है। कही २ सतोळिया पत्थर का एक ही थोडा बडा टुकडे का होता है जो जमीन पर सीधा टिका रह सके।

२ देखो 'भडभोल्यौ'

सत्करता–वि. [स सत्कर्त्ता] १ सत्कर्म करने वाला।

२ आदर सत्कार करने वाला।

सत्करम–स पु [स सत्कर्म] १ अच्छा कार्य, पुण्य कार्य।

२ अच्छा संस्कार।

३ अनुवंशीय अधिरथ का पिता व धृतव्रत का पुत्र एक राजा।

सत्कार–स. पु [स] आदर, सम्मान।

उ०—अधिस आमार राज सलख सूं सत्कार पायो अर आपरी ममता उपेम भीम री लिखाई प्रससा पूरवक वरणदूत रौ समस्त व्रतात कहियौ।—व. भा.

रू. भे —सक्कार, सतकार।

सत्कीरत्ति–स स्त्री. [स सत्कीर्त्ति] उत्तम कीर्ति, यश।

सत्कृत–स. पु.—१ आदर, सत्कार।

२ सत्कर्म।

वि [स. सत्कृत] १ अच्छी तरह किया हुआ।

२ जिसका आदर सत्कार किया गया हो।

सत्कृति–स पु. [स सत्कृति] १ भगवान विष्णु का नामान्तर।

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

सत्त–स पु. [स सत्व] १ किसी पदार्थ का सार तत्त्व।

२ देखो 'सत' (रू भे)

उ०—१ सीळ सत्त साहस अस निज वस उजाळौ, उर विहसी उल्लसी हसी मू हत्थौ ताळी।—रा. रू.

उ०—२ जत्त सत्त गरू-अत्त, तजै पौरस आपांणौ। अडप छाडि अहकार, हुए बळ-हीण निमाणौ।—गु. रू व.

उ०—३ तेज रोस तामस सत्त मूरातन छोडै, सबळ-पणौ मेल्हियौ नही लाह थळ संकोडै।—गु. रू. व.

३ देखो 'साथ' (रू भे)

उ०—आया जेथ प्रसन्न ह्वै, वधै घटै नह वत्त। प्रभू राखै उण पाघडी, सदा अमीणौ सत्त।—बा. दा.

४ देखो 'सात' (रू. भे.)

उ०—भलहलीय सायर सत्त सुरगिरि, म गु स गि खडखडी। खणु एकु असरणु हूउ तिहूयणु, राय सयल वि धरहडी।

—सालिभद्र सूरि

५ देखो 'सत्य' (रू. भे)

उ०—देवी सत्त रै रूप हरचद सिद्धी।—देवि.

६ देखो 'सत्रू' (रू भे)

उ०—खेतसी खाग खेळत खत्त, 'गोपाळ' सुत्त गोडत सत्त।

—गु रू. व.

सत्तम–वि —१ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—सत्पति सत्तम मान, पोळ दरवाजा दुकाना। मेडी, मोडा, मैं'ल, मनोहर वडा मकाना।—दमदेव

२ देखो सप्तम' (रू भे.)

उ०—सत्तम प्रहर दिवस कं, घण जु वाडिया जाइ। आणे द्राख-विजोरिया, घण छोलइ प्रिउ खाइ।—ढो मा.

सत्तमी—देखो सप्तमी' (रू. भे.)

सत्तर—१ देखो 'छित्तर' (रू भे.)

२ देखो 'सतरै' (रू भे)

सत्तरमौ—१ देखो 'सित्तरमौ' (रू भे)

२ देखो 'सतरमौ' (रू. भे.)

सत्तरह—देखो 'सतरै' (रू. भे)

सत्तरि—देखो 'सितर' (रू भे)

सत्तरै'क—१ देखो सतरै'क' (रू भे.)

२ देखो 'सित्तरै'क' (रू. भे)

सतुआसूठ, सतुआसोठ–स. स्त्री —एक प्रकार की सोंठ जिसके अन्दर रेसे निकलते हैं।

सतुक–स. पु.—अवसर, मौका।

उ०—तरै वचारिग्रो ज हैमार ग्रेहडौ सतुक नही जौ ग्राटो लीजै।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

सतुतकीरत–स. स्त्री.—श्रुतकीर्ति जो शत्रुघ्न को व्याही गई थी। (रामकथा)

सतुर—देखो 'सत्वर' (रू भे) (ग्र मा)

सतुरमुरग—देखो 'सुतरमुरग' (रू. भे)

सतुळो–स. पु —एक प्रकार का जांघिया, जो प्राय घुटनो तक होता था। (प्राचीन)

सतूआरा–स. पु —वढई, सुथार।

उ०—१ मोची गाछा नइ सतूआरा साथइ चालइ माळी। दरजी बावर ऊड चालीया, च्यार सहस तवोळी।—का. दे. प्र

उ०—२ छीपा परियटा सूई ताई तेली मोची सतूआरा वधारा चीतारा नूतारा कोली पचोली।—व स

सतूति, सतूती—देखो 'स्तुति' (रू. भे)

उ०—हिरणाखी हसहाली चरचा उचारै मा चरचा उचारै। सेवक पढत सतूती देवळ निज द्वारै।—मे. म

सतूरण–स. स्त्री.—शीघ्रता। (ह ना मा)

क्रि वि. [स. सत्वरण] शीघ्र, तुरत।

सतेज, सतेजौ–स पु —१ वेग। (ग्र. मा)

२ आग, अग्नि। (ग्र मा.)

क्रि वि —१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—सुणिया साद सतेज, ग्राई ग्रागळ ग्रावता। जगदव ग्रवर्क जेज, करी इती तै करनला।—ग्रग्यात

वि —२ वेगपूर्ण, तेजपूर्ण।

उ०—१ ग्रत सतेज ग्रोरियौ, मधी ग्रण जेज मृगह्ला। सेल्ह भोक सायक्क, तेग सावळ कर तडळा।—रा. रू

उ०—२ छट सुदर वीख सतेज घणा, तन ग्रोप वधै गढ रूप तणा।—रा रू

३ शक्तिशाली, वलवान।

उ०—ऊनै राव सेखा को सतेजौ लोग ग्रायो।—शि व.

(स्त्री सतेजी)

सतोखणौ, सतोखवौ—देखो 'सतोखणौ, सतोखवौ' (रू भे)

सतोखणहार, हारौ (हारी), सतोखणियौ—वि०।

सतोखिग्रोडौ, सतोखियोडौ, सतोख्योडौ—भू० का० कृ०।

सतोखीजणौ, सतोखीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सतोखियोडौ—देखो 'सतोखियोडौ' (रू भे)

सतोगुण–स पु [स सत्त्वगुण] तीन गुणो मे से प्रथम गुण जो मनुष्य को सुकर्म की ग्रोर प्रेरित करने वाला माना जाता है, सत्वगुण।

उ०—१ ग्रग जळ नीर सीग समियै का, ज्यू वझ्या का ग्रारा। दुख सुख जरा मरण सुपना मैं, यूं सतोगुण वरतारा।
—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ चमाळौ चाळै गयो, पैताळौ इण भात। खान सुजायत कागला, लिखै सतोगुण स्वात।—रा. रू

वि —श्वेत सफेद। ※ (डि. को)

रू भे.—सतोगुण, सत्वगुण।

सतोगुणी—देखो 'सत्वगुणी' (रू भे.)

सतोतरौ–स. पु.—सितहत्तर की सख्या का वर्ष।

उ०—सवत ग्रठारै सतोतरै रै वदि तेरस ग्रासाढ।—जयवाणी

सतोदर–स. पु [स शतोदर, शातोदर] १ शिव का एक नाम।

२ शिव का एक गण।

३ रामायण के ग्रनुसार एक ग्रस्त्र का नाम।

४ देखो 'सितोदर' (रू. भे)

सतोदरी–स स्त्री [स शतोदरी] कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

सतोम, सतोमी—देखो 'स्तोम' (रू भे.) (ग्र मा.)

सतोरौ–वि. (स्त्री सतोरी) पराक्रमी, वलशाली, शक्तिशाली।

उ०—'जूभावत' 'सगराम' सजोरौ, तिसडोई 'भगवान' सतोरौ।
—रा रू

सतोल–वि (स्त्री सतोली) १ ग्रसर करने वाला, प्रभावशाली।

उ०—सुणिया वचन सतोल, तौ मुख नीसरिया तिकै। वीठू तै विन मोल, मोल लियौ 'वाका' म्हनै।—भोपाळदान सादू

२ दृढ, पक्का।

उ०—मूवा गाढै हुवै, दीनौ वचन सतोल। क्यू पाळीस कमालदी वधव, तणारा वोल।—नैणसी

३ भारी, वजनदार।

उ०—१ चढीरी पिलाण दुन्नाली वदूका कुड ग्रर कडावा सतोली सदूका लोग, लोग ऐकेक लेग्या।—दसदोख

उ०—२ व्याह री तलडी री पैली कडी सोनै-चादी ग्रर मोहरा सू सतोल हुणी चाहीजै।—दसदोख

४ वहुत, खूव, अधिक।

उ०—हरियौ भरियौ धान, ऊतरै सदा सतोलौ। ढिगला लगै ललाम, धोर धन देवण पोलौ।—दसदेव

५ वरावर, समान।

रू भे.—मतोल, सत्तोल।

सतोळियो, सतोलियो, सतोळ्यो, सतोल्यो–स. पु.—एक देशी खेल।

वि० वि०—इस खेल मे एक गेद व सात पत्थर के गोलाकार चपटे टुकडे होते है, जो क्रमश. (ढाल उतार) रखे जाते है। इसे खेलने के लिए खिलाडी दो दलो मे विभक्त हो जाते है। जव एक दल खेलता है तो दूसरा दल क्षेत्र-रक्षण करता है। पारी २ मे यह क्रम चलता रहता है। इसमे खिलाडी एक निश्चित दूरी से उन

खुरम मत्थै दै बीडो कीध फुरमाण ।—गु. रू ब

उ०—४ मीर ग्रमीर सतरि धरि मत्थै, सभि बावीस चढो इम सत्थै ।—रा. रू.

सत्पथ–स. पु —१ सदाचार ।

२ उत्तम सम्प्रदाय ।

३ उत्तम सिद्धान्त ।

४ उत्तम मार्ग, सही रास्ता ।

सत्पुरस, सत्पुरुस—देखो 'सतपुरस' (रू भे)

सत्यभरा–स. स्त्री [स सत्यम्भरा] प्लक्षद्वीप की एक नदी का नाम ।

सत्यभूति–स. पु [स] भगवान् विष्णु ।

सत्य–वि [म] १ ठीक, यथार्थ, वास्तविक ।

उ०—जो रचना जगपत्ती, लोतै ग्राळ भ्रमै त्रयलोक । सोई सत्य सद्रढ, रेखा सार ग्रक रजपत्ती ।—रा रू.

२ ग्रसली, शुद्ध, खरा ।

३ ईमानदार, सच्चा ।

४ पुण्यात्मा, धर्मात्मा ।

५ सत् का, सत् मे सम्बन्धित ।

६ जो झूठ या मिथ्या मे परे हो ।

७ दृढ, पक्का, ग्रटल ।

८ नही मिटने वाला, ग्रमिट ।

९ छल-कपट से रहित, निष्कपट ।

१० ग्रजर-ग्रमर ।

उ०—भवानी नमो सत्य ग्रालाप वाळा । भवानी नमो व्रद विद्या विसाळा । भवानी नमो देव हेरभ माता । भवानी नमो तन्नमो सत त्राता ।—मे म.

[म शत्य] १ सौ से बना हुग्रा ।

२ सौ से सम्बन्धित ।

३ सौ के हिसाब से व्याज, टेक्स ग्रादि देने वाला ।

४ सौ का सूचक ।

स पु [म. सत्य] १ वास्तविक वात, यथार्थ तत्व । (ह. ना मा.)

२ उचित पक्ष, न्याय व धर्म का पक्ष ।

३ सात लोको मे से सबसे ऊपर का लोक । (पुराण)

४ भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

५ भगवान् रामचन्द्र का नाम ।

६ पारमार्थिक सत्ता जो सदा ग्रविकारी रहती है ।

७ एक विश्वदेव का नाम ।

८ बल, शक्ति ।

९ एक ऋषि जो युधिष्ठिर की सभा मे उपस्थित थे ।

१० निश्च्यवन नामक ग्रग्नि के एक पुत्र का नाम, एक प्रकार की ग्रग्नि जो निष्पाप व कुलधर्म के प्रवर्त्तक हैं ।

११ तीसरे व उत्तम मन्वन्तर के एक देव विशेष ।

१२ नन्दीमुख श्राद्ध के ग्रधिष्ठाता का नाम ।

१३ पृथुवशीय हविर्धान व हविर्धानी के पुत्रो मे से एक पुत्र, राजा ।

१४ वीतहव्यवशीय एक राजा जो वितत्य राजा का पुत्र व सत का पिता था ।

१५ विदर्भदेश के एक तपस्वी का नाम ।

१६ भीम द्वारा मारा गया कलिग देश का एक योद्धा ।

१७ ग्रगिरस एव सुरूपा के पुत्रो मे से एक पुत्र देव ।

१८ ब्रह्मसावर्णि के सप्तर्षियो मे से एक ।

१९ दक्षसावर्णि के सप्तर्षियो मे मे एक ।

२० सत्या के एक पुत्र का नाम जो ग्रवतार माना जाता है ।

२१ ग्रट्ठाईस व्यासो मे से एक व्यास का नाम ।

२२ सुधामन्, ग्रमिताभ, ग्राभूतरजस्, तामसमन्वन्तर ग्रादि देवो मे से प्रत्येक का एक-एक देव का नाम ।

२३ सच्चाई ।

२४ भलाई ।

२५ शपथ ।

२६ जल, पानी ।

२७ चार युगो मे से प्रथम युग, स्वर्णयुग ।

रू. भे.—सच, सच्च, सच्चु, सत, साच, साच ।

सत्यक–स. पु [स] १ यदुवशीय एक राजा जो शिनि का पुत्र व सत्यकि का पिता था ।

वि. वि —इसका विवाह काशिराज की कन्या से हुग्रा था जिससे इसे ककुद, भजमान, शमी एव कबल वर्हिप नामक पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

२ कृष्ण व भद्रा के ससर्ग से उत्पन्न पुत्रो मे से एक ।

३ तामस मन्वन्तर का एक देव ।

४ रैवत मनु के पुत्रो मे से एक ।

रू. भे.—सत्यकु ।

सत्यकरमा–सं पु. [स सत्यकर्मन्, सत्यकर्मा] १ धृतव्रत राजा का पुत्र एव ग्रतिरथ या ग्रनुरथ राजा का पिता ।

२ त्रिगर्त्त राजा सुशर्मा का भाई जो ग्रर्जुन के द्वारा मारा गया था ।

सत्यकाम–सं. पु [स. सत्यकाम] एक श्रेष्ठ महर्षि जो जाबाला के पुत्र थे ।

वि वि —इनके पिता का नाम व गोत्र इनसे ग्रौर इनकी माता से गुप्त था । ये गौतम गोत्रीय महर्षि हारिद्रुम के शिष्य थे । एक बार ये गुरु की ग्राज्ञा से चार सौ गायें लेकर वन मे गये ग्रौर सकल्प किया कि जब तक ये गायें एक हजार नहीं हो जाएगी वापिस नही लौटूगा । जब ये गायो के एक हजार हो जाने पर वापिस लौट रहे थे तब इन्हे ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हुई ।

सत्यकामा–स स्त्री [स. सत्यकामा] श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम

सत्तरौ—देखो 'सतरौ' (रू. भे)
सत्तवती—देखो 'सत्यवती' (रू भे) (डिं को.)
सत्तसाहिब—स पु —कबीर पथियो द्वारा किया जाने वाला अभिवादन। (मा. म.)
सत्ता—स. स्त्री —१ वह आधिपत्य या शासन-शक्ति जो शासन चलाती है, राज-सत्ता।
२ सर्वोपरि अधिकार जो कानूनो द्वारा नियन्त्रित नही होता, प्रभु-सत्ता।
३ देखो 'सता' (रू भे)
उ०—जौ उपज्या सौ माया विनासी, सत सत्ता अविनासी। योई है अनुभव ग्यान हमारा, नाम रूप नहिं पासी।
—स्री सुखराम जी महाराज
सत्ताईस—देखो 'सताईस' (रू. भे)
सत्ताईसमौं सत्ताईसवौं—देखो 'सताईसमौ' (रू भे.)
सत्ताईसे'क—देखो 'सताईसे'क' (रू. भे)
सत्ताईसौ—देखो 'सताईसौ' (रू भे)
सत्ताधारी—स. पु. [स सत्ताधारिन्] १ शासक वर्ग।
२ अधिकारी, अफसर।
सत्तावत—स पु —राठौडो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
सत्तावन—देखो 'सतावन' (रू भे.)
सत्तावने'क—देखो 'सतावने'क' (रू भे.)
सत्तावनौ—देखो 'सतावनौ' (रू. भे)
सत्तासी—देखो 'सित्तियासी' (रू. भे)
सत्ती—स. स्त्री.—१ सात बूटियो वाला ताश का पत्ता।
२ देखो 'सती' (रू. भे)
सत्तु, सत्तू—१ देखो 'सातु' (रू भे.)
२ देखो 'सत्रु (रू भे.)
उ०—सेण हुवै सहु सत्तु, फिरै जायै मन फट्टै। सुणे सेंण धरमसीख, राखिजे रीस दवट्टै।—ध. व ग्र
सत्तुकार, सत्तूकार—स पु. [स सक्तु व+अगार] वह स्थान जहाँ नि शुल्क भोजन व विश्राम मिलता हो।
उ०—गढ गढ मदिर पोलि पगार, थानकि थानकि सत्तूकार।
—हीराणद सूरि
सत्तौ—स पु —१ स्त्री के शव के साथ जल कर भस्म होने वाला पुरुष।
२ स्त्री की मृत्यु के पश्चात उसके विरह मे मरने वाला व्यक्ति।
सत्तोल—देखो 'सतोल' (रू भे)
उ०—सत्तोल बोल मुक्खं दक्खे, खेलेवा खत्र-धोड। साहिजादै माथै विहा हुआै, हिंदू पत्ती राठौड।—गु. रू व.
सत्थ—देखो 'साथ' (रू. भे)
उ०—१ सत्थ नको बळ हत्थ के, ना जीपे छळ मत्त। जै पामै रिप सग्रहे, जप हूता छत्रपत्त।—रा रू
उ०—२ अत्थ जिका दी आपणी, हरक गरीवा हत्थ। गवरीजै जस गीतडा, तात तणका सत्थ।—बा दा.
उ०—३ जमडड्ढा तरवारिया, सेल्ह वदूका सत्थ। आगै धूप उखेविया, पाछै झाली हत्थ।—रा. रू.
उ०—४ डेरै हाळीहळ हुई, हुआ सचाळा सत्थ। आज विहाणै रट्ठवड, करिसी कौ भारत्थ।—गु रू व.
उ०—५ राजा काम भळावियौ, राखै विकळी सत्थ। कह्यौ वजीरा 'गजपती', तेडौ साउ सत्थ।—गु रू. व
सत्थर—स पु —सुरग जिसमे बारूद बिछा हुआ हो।
उ०—सोर उड्यौ लग सत्थरा, उडिया सूर अनेक। झुळस पडया पिण झीकवा, कण हूत मड्या केक।—रैवतसिंह भाटी
उ०—२ लगि सोर सत्थर भू थरत्थर टूट पत्थर वित्थुरै।
—सूरयमल्ल मिस्रण
२ देखो 'साथरवाडौ' (रू भे)
उ०—सत्थरां सोय सारा सुखी चवरी ढुलता चोसरा। तन लगन तीसरा री तिका, मगत ध्यान मन मोसरा।—ऊ का
सत्थरौ—देखो 'साथरौ' (रू भे.)
उ०—आव्रत्त हुओ एकं घडी, हुआ सुभट्टा सत्थरां। सग्राम चक्र वूहा सत्रा, सूरसिंघ चक्रवत्तरा।—गु रू ब
सत्थळ, सत्थल—स पु —१ शस्त्र विशेष। (व स.)
२ देखो 'साथळ' (रू भे.)
उ०—रगावळि सत्थळ हत्थै हत्थळ, झूलरियाळा धू टोप। जडिया लै जूसण वधै कस्सण, सिद्धक जाणै सक्कोप।—गु रू वं.
सत्थवाह, सत्थवाहौ—देखो 'सारथवाह' (रू भे)
उ०—१ सत्थवाह जय सायर दीठउ चालतउ तिणि वार। तिहि जाई ते पूछिउ तीणइ पहिलउ करीय जुहार।—हीराणद सूरि
उ०—२ वली धन राईसर माडव जाव कौटुवी सत्थवाहौ रे।
—जयवाणी
सत्थि, सत्थी—१ देखो 'साथ' (रू भे)
उ०—भडा दुवाहा वकडा, हुई सनाहा सत्थि। सेध निवाहा सूरमा, राहा वेध अरत्थि।—रा. रू.
२ देखो 'साथळ' (रू भे)
उ०—कटि जघा सत्थी कटै हत्थी हवि हक्कै।—व भा
३ देखो 'साथी' (रू भे)
सत्थु, सत्थै, सथ्थ, सथ्थी—देखो 'साथ' (रू भे)
उ०—१ इसु सुणी नइ धायउ पत्थु, झूझड भीम मिलिउ भड सत्थु।—मालिभद्र सूरि
उ०—२ अजमेर आयौ माहजादौ. कारन' सत्थै आणए। परवता पासै लाल पडर, गयण गूडरा ताण ए।—गु. रू व.
उ०—३ 'पररेज' साह सत्थै दै, कमधज लज भूडंडे। मुरताण

२ प्रतिज्ञा, प्रण ।

सत्यवत–स पु [स.] १ सावित्री के पति का नाम ।

२ यादववशीय सत्यक राजा का नाम ।

३ ऋतभर राजा का पुत्र, एक राजा ।

सत्यवती–वि स्त्री. —१ पतिव्रता, सती ।

२ सत्य का आचरण और पालन करने वाली ।

स. स्त्री —१ शातनु राजा की पत्नी जो चित्रागद एव विचित्र-वीर्य की माता थी । वेदव्यास इसी के पुत्र थे । इसे काली, मत्स्य-गधा, गधवती, योजनगधा, गधकाली आदि नामो मे पुकारते हैं ।

उ०—१ इसीय वाच गयणह पडी, तउ गइ लिद्ध कुमारि । सत्यवती नामि हूसिए, सतणघर नारि ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ सत्यवती छइ अवर नारि तसु नदण दुन्नि । नवे नल-वखण रूपवत अनु कचणवन्नि ।—सालिभद्र सूरि

२ गाधि राजा की कन्या एव जमदग्नि ऋषि की माता जो विश्वामित्र की वहिन थी ।

३ अगस्त्य पत्नी लोपामुद्रा का नामातर ।

४ सुबाहु राजा की पत्नी ।

५ त्रिशकु की पत्नी व हरिश्चन्द्र की माता केकय राजकुमारी ।

६ एक प्राचीन नदी का नाम ।

रू भे.—सच्चवई, सत्तवती ।

सत्यवरमा–स. पु. [स सत्यवर्मा] अर्जुन के द्वारा मारा गया त्रिगर्तनरेश का भाई ।

सत्यवसु–स. पु [स] दक्ष प्रजापति की कन्या विश्वा व धर्म के योग से उत्पन्न दस पुत्रो मे से एक ।

सत्यवान–स. पु [स. सत्यवन्] १ सती सावित्री के पति का नाम, जो साल्वदेशाधिपति द्युमत्सेन का पुत्र था ।

२ चाक्षुष मनु और नड्वला के पुत्र का नाम ।

वि पु. [स सत्यवत्] सत्य वोलने वाला, सत्यवक्ता ।

सत्यवाक–स. पु. [स] गन्धर्व जो कश्यप एव मनु के पुत्रो मे से एक था ।

सत्यवाच–स. पु. [स सत्यवाच्] १ प्रतिज्ञा, वादा ।

२ सत्यवचन, सत्यकथन ।

३ रैवत मनु के पुत्रो मे से एक ।

४ सावर्णि मनु के पुत्रो मे से एक ।

५ सत्यवत नामक राजा का नामान्तर ।

६ कश्यप एव मुनि के पुत्रो मे से एक ।

सत्यवादिणी, सत्यवादिनी–स स्त्री [स. सत्यवादिनी] १ वोधिद्रुम की एक देवी का नाम ।

वि स्त्री —सत्य वोलने वाली ।

सत्यवादी–वि. [स सत्यवादिन्] (स्त्री. सत्यवादण, सत्यवादिणी, सत्यवादिनी) १ सत्य कहने वाला ।

उ०—आदर पर उपगार सत्यवादी सतोगी, न करे निंदा नेट, चले निज कुलवट चोगी ।—ध व ग

२ धर्म या प्रतिज्ञा पर दृढ रहने वाला ।

रू. भे —सचवादी, सतवायो, सतवादि, सतवादो ।

सत्यव्रत–स पु —१ सूर्यवश के राजा त्रिवन्धन के पुत्र जो त्रिशंकु के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

२ सातवें मनु का नाम ।

३ त्रिगर्त्तराजा सुशर्मा के भाई का नाम ।

४ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक महारथी पुत्र, सत्यसध का नाम ।

५ एक चन्द्रवशी राजा का नाम ।

६ एक महर्षि का नाम जो कोसल देश के देवदत्त ब्राह्मण के पुत्र थे ।

७ एक देवगण ।

८ सत्य वोलने का नियम या प्रतिज्ञा ।

वि.—सत्य का पालन करने वाला ।

रू भे —सतव्रत ।

सत्यव्रता–स स्त्री. [स.] गाधारराज सुवल की कन्या जो धृतराष्ट्र को व्याही गई थी और जो गाधारी की छोटी वहन थी ।

सत्यसध–स पु [स.] १ श्री रामचद्र का नाम । (रामायण)

२ भरत का एक नाम ।

३ राजा जनमेजय का एक नाम ।

४ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम ।

५ धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम जो अर्जुन के द्वारा, मतान्तर से भीम के द्वारा, मारा गया था ।

६ विदर्भ नरेश सत्यरथ का नामान्तर ।

७ सत्य प्रतिज्ञा पर अटल रहने वाला ।

उ०—मर जीवण री आन हूं तो मरणीक हुवा, सत्यसंध अगज रै साथ जावण री न धारो ।—वं भा

सत्यसधा–स. स्त्री [स] १ द्रौपदी का एक नाम ।

२ देवी का विशेषण ।

सत्यसिधु–स. पु [स] ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—राज के विहीन सत्यसिंधु तै रह्यो, भाजके अधीन दीनवन्धु के भयो ।—ऊ का.

सत्यसेन–स पु. [स.] १ अगराज कर्ण के एक पुत्र का नाम जो नकुल द्वारा मारा गया था ।

२ अर्जुन द्वारा मारा गया त्रिगर्त देशाधिपति सुशर्मा के भाई का नाम ।

३ तीसरे मन्वन्तर मे धर्मदेव व सुनृता के पुत्र का नाम जिन्हे विष्णु का अवतार मानते हैं ।

४ धृतराष्ट्र के १०० पुत्रो मे से एक जो भीम द्वारा मारा गया था ।

जो भगकार राजा की पुत्री थी।

सत्यकीरति, सत्यकीरती–स. पु. [स सत्यकीर्त्ति] १ मत्र बल से चलाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

२ देखो 'सत्यक्रता' (रू. भे.)

सत्यकु—देखो 'सत्यक' (रू. भे.)

उ०—सत्यकु छेदिउ वलिहि सीसु तसु दिणि चऊदमइ। रातिहि झूझइ विसम झूझि गुरु पडइ कीमइ।—सालिभद्र सूरि

सत्यकेतु–स. पु [स] १ उग्रसेन राजा की पत्नी पद्मावती का हरण–कर्त्ता एक यक्ष।

२ कृष्ण के चाचा अक्रूर के गादिनी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

३ पुरूरवा के वश मे उत्पन्न धर्मकेतु के पुत्र तथा विमु के पिता एक राजा।

सत्यजित–स पु.—१ द्रोणाचार्य द्वारा मारा गया पाचाल के राजा द्रुपद का भाई। (पौराणिक)

२ सत्यभामा के पिता जो कृष्ण के श्वसुर थे।

३ तीसरे मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

४ कश्यप एव कद्रू के पुत्रो मे से एक पुत्र, नाग।

५ एक यक्ष जो कार्तिक माह मे विष्णु के साथ भ्रमण करता है।

६ क्षेम के पिता व सुनीथ के पुत्र एक ययातिवशीय राजा का पुत्र।

७ एक यादव राजा जो आनक एव कका का पुत्र था।

रू भे.—सत्राजित।

सत्यजुग—देखो 'सतजुग' (रू भे)

सत्यतप–सं. पु [स.] १ एक ऋषि जिसने अपने तप भग करने के लिए आई हुई अप्सरा को वेर का वृक्ष बनने का शाप दिया था।

२ एक कृष्णभक्त ऋषि।

सत्यता–स स्त्री [स.] १ सत्य होने की अवस्था या भाव।

२ वास्तविकता, यथार्थता।

सत्यदेव–स पु. [स] भारतीय युद्ध मे भीम द्वारा मारा गया कलिंग देश का योद्धा।

सत्यदेवी–स. स्त्री [स.] वसुदेव की सात पत्नियो मे से एक पत्नी का नाम।

सत्यद्युमन, सत्यद्युम्न–स. पु. [स सत्यद्युम्न] १ जनकवशीय समर्थ के पुत्र एव उपगुर के पिता एक राजा।

२ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई।

३ विदर्भनरेश का नाम।

सत्यधज—देखो 'सत्यध्वज' (रू भे.)

सत्यधरम, सत्यधरमा–स. पु. [स. सत्यधर्मा] १ चद्रवशी राजा का नाम।

२ भगवान् विष्णु का नामान्तर।

३ त्रिगर्तराजा सुशर्मा का भाई।

सत्यधुज—देखो 'सत्यध्वज' (रू भे)

सत्यध्रत, सत्यध्रति–स. पु. [स सत्यधृति] १ पुरुवशीय एक राजा जो कीर्तिमान का पुत्र था।

२ गौतम पुत्र शतानन्द के एक पुत्र का नाम जो धनुर्वेद विशारद थे।

३ पाण्डव-पक्षीय एक राजा जो द्रोणाचार्य द्वारा मारा गया था।

४ बलराज के एक पुत्र का नाम।

५ सत्यधृ राजा का नामान्तर।

सत्यध्वज–स. पु. [स] ऊर्जवह राजा का पुत्र एवं शकुनि का पिता, विदेह देशाधिपति।

सत्यनामी–स पु [स सत्यनामी] वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा या इस शाखा का अनुयायी।

सत्यनारायण–स पु [स] परमेश्वर, ईश्वर।

रू भे.—सतनारायण।

सत्यनेत, सत्यनेतर, सत्यनेत्र–स पु. [स सत्यनेत्र] वैवस्त मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक।

सत्यपद–स पु [स] एक प्रमुख तीर्थ स्थान।

सत्यपाल–स पु. [स.] युधिष्ठिर की सभा मे उपस्थित एक ऋषि।

सत्यभामा—देखो 'सतभामा' (रू भे)

उ०—रुक्मिणी नइ सत्यभामा राणी, सउकी नउ सबल सताप जी। खमत खामणा किया खरै मन, व्रत लेवा प्रस्ताव जी।

—स कु

सत्ययुग—देखो 'सतजुग' (रू भे)

सत्यरता–स. स्त्री. [सं.] अयोध्या के सत्यव्रत त्रिशकु की पत्नी का नाम जो केकय-राजकन्या थी।

सत्यरथ–स पु [स] १ जनकवशीय समर्थ के पुत्र एव उपगुर के पिता एक राजा।

२ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई।

३ चित्ररथ राजा का पुत्र, एक राजा।

४ विदर्भनरेश का नाम, सत्यसध।

५ सत्यव्रत राजा का पुत्र।

सत्यरूपा–स स्त्री. [स] एक देवी का नाम।

सत्यलोक–स. पु. [स] सात लोको मे से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा निवास करते है।

रू. भे—सतलोक।

सत्यलोकईस, सत्यलोकेस–स पु. यौ [स. सत्यलोक+ईश] ब्रह्मा। (डिं. को)

सत्यवत–वि [स.] सत्य को धारण करने वाला।

उ०—क्षमावत सत्यवत छै रे, चवदै पूरवधार। चउनाणी गुरु साथै मुनिवर पखरथा रे, पच सया अणगार।—जयवाणी

सत्यवचन–स. पु—१ यथार्थ कथन।

उ०—अर दैव रै परतत्र प्रतापसिंघ अरिसिंघ दो ही गइदा रै बीच आया—एक तरफ तट दुरगम एक तरफ द्रह अगाध देखि दोही वीरा मूछा रा अग्र भुहारा री कोटि लिया अर अस्वमेघ सत्र रा फळ देणहार दो'ही गजा रै साम्है पेंड दिया।—वं. भा.

२ घर, मकान।

उ०—विग्रह सीस विलुवियो, सूरा गह समसीर। ओ न सत्र जणि रो अठै, खावण वटिया खीर।—रैवतसिंह भाटी

३ वह स्थान जहां असहाय व गरीबो को मुफ्त भोजन दिया जाता हो।

४ पुण्य, धर्म।

५ सोम यज्ञ का काल जो १३ से १०० दिनो मे पूरा होता है।

६ भेंट, नैवेद्य।

७ पर्दा, चादर।

८ सम्पत्ति, धन, दौलत।

९ आश्रय स्थान।

१० धर्मशाला।

११ जगल, वन।

१२ विष्णु भगवान्।

१३ देखो 'सत्रु' (रू. भे) (अ मा; डि को; ह. ना. मा)

उ०—१ ग्रीभरिण काइ उतावळी, हय पलाणत धीर। काय वेमाणू सत्र सिर, काय आपणों सरीर।—हा. झा.

उ०—२ सत्रा दळ ऊपर धोम सरूप, रचै जुध 'पोम' तणो धन-रूप।—सू. प्र.

उ०—३ सवळा सत्र संघरै, छळै सवळै पडि-गिरिया। जेथ भिडै दळि पडै, तेथ आडा भुज धरिया।—गु. रू. व

उ०—४ सत्रा दळ मूगळ सैयद सेख वर्णं ग्रह वाज कबूतर वेख। सरा अप्रमाण पठाण सहारि, लिया कर सेल नरा ललकारि।

—मे म.

सत्रअजात—देखो 'अजातसत्रु'।

सत्रकार—१ देखो 'सत्रूकार (रू भे)

२ देखो 'सत्राकार' (रू भे)

सत्रघण, सत्रघन, सत्रघन्न, सत्रघ्न सत्रघ्नु—देखो 'सत्रुघण' (रू भे)

उ०—धन्य सत्रघण धन्य लखण भरथ धनि जै हर भाई। धन त्रेतायुग सुधनि वाणि वालमीक वणाई।—सू. प्र.

सत्रडो—देखो 'सत्रु' (अल्पा; रू भे)

सत्रव, सत्रव—देखो 'सात्रव'(रू भे)

उ०—जठै आपरो अकटक अमल जमाइ नरेस भी वुदी आइ विजय री सुजस सत्रवां समेत दिसा दिसा डुसायो।—व भा

सत्रह—देखो 'सतरै' (रू भे.)

सत्रहरस-वि —सत्रह मो।

उ०—सत्रहरस मतियास सक, धुव अहमदपुर धाम। वर कवि, 'करण' वखाण कर, सुभटा तणो सग्राम।—वि. स.

सत्रांजीत-स पु [सं. शत्रुजीत] भीम। (अ मा.)

वि.—शत्रुओ को जीतने वाला।

सत्राण—देखो 'सत्रु' (रू भे.)

उ०—१ सत्रांण सू भूसर क्रोध चितै, परगेह जूत भुरय कोट प्रितै।

—पा प्र.

उ०—२ सह सुभट्ट अविघट्ट बधि रिणवट्ट सत्राणा। लोह मरट्ट विकट, दियै, किरच... ......कधाणा।—गु. रू. व.

सत्राम—देखो 'सुत्रामा' (रू भे.) (ना डि. को; ना मा.)

सत्रासधार-स पु —लोह। (ह ना मा.)

सत्राकार, सत्रागार-स. पु. [स. सत्र=पुण्य, धर्म, यज्ञ+करण आगार] गरीबो व असहायो को मुफ्त भोजन देने का स्थान।

उ०—१........साकटिक तणा सवाद लोकतणा प्रवाद सुविसाल पथिक्रमाल। निरुपवाद प्रामाद नानाप्रकार सत्राकार तिरस्कृतत्रि-विस्टप.. .... ।—व स

उ०—२ कीजइ खट दरसन विचार परमारथि आतमग्यान अधि-कार। चिहूँ दिसि च्यारि प्रतोलीद्वार, अनिवार सत्रागार।—सभा

उ०—३....... देवकरण सभा पडिनसभा लेखकसभा भाडागा-रिक कोस्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामंडप देसमडप त्रिक चतुस्क चत्वर...... .. ।—व. स.

उ०—४ तालाव आराम गढ देहरा विहार सत्रागार कोस्टागार भाडागार।—सभा

रू भे.—सत्रुकार, सत्रूकार।

सत्राजित, सत्राजिति, सत्राजिती—देखो 'सत्यजित' (रू. भे)

सत्राट—देखो 'सत्रु' (मह; रू. भे.) (डि. को)

उ०—१ पाथ थाटा जग रुपी कुवाणा नवाई पाणां, सत्राटां वेढियो थाटा सवाई सोभाग।—सूरजमल्ल मिस्रण

उ०—२ सत्राटा देवाळो दाह ओज मे उजाळो सूर, लडता काळ री चाळो पैला अन लाग। पखाळो भुयंग काळो धणी री वजाळो फतै राव वाळो दीसै डसो छडाळो प्रजाग।—सूरजमल्ल मिस्रण

सत्राटाकरणीसरद-स स्त्री यौ.—तलवार। (डि. को)

सत्राटो—देखो 'सत्रु' (रू भे.)

सत्राव—देखो 'सत्रु' (रू भे.)

सत्रास-वि. [स.] भयभीत, सकटपूर्ण, दुखी।

उ०—१ त्रइलोक कीध रामण सत्रास, सहाय करो हरि जग निवास।—सू प्र.

उ०—२ तद समर गयो आसुर सत्रास, जुध जैंत जैंत कह 'ऊभो' जास।—शि. सु रू.

सत्रि, सत्री-स पु [स. सत्रि] १ राजदूत।

२ हाथी, हस्ती।

वि [स. सत्रिन] यज्ञ करने वाला।

सत्यसेना–स स्त्री. [स] धृतराष्ट्र-पत्नी सत्यवृता का नामान्तर, जो गाधारी की कनिष्ठ बहन थी।

सत्यस्रवस–सं. पु. [स. सत्यश्रवस्] १ वीतिहोत्र राजा का पुत्र एव उरुश्रवस् का पिता, एक राजा।

२ अभिमन्यु द्वारा मारा गया कौरव पक्षीय एक योद्धा।

३ मार्कडेय ऋषि का पुत्र, एक आचार्य।

सत्यहित–स पु [स] १ पुरुवशीय राजा ऋषयक के पुत्र एवं पुष्प-वान के पिता का नाम।

२ ब्रहद्रथ वशोत्पन्न एक चंद्रवशीय राजा का नाम, जो जरासध का परदादा था।

३ ऋक्षवशीय सत्यधृत राजा का नाम।

४ सत्यश्वस आचार्य का पुत्र।

सत्या–स. स्त्री [स.] १ दुर्गा का एक नाम।

२ सीता का नामान्तर।

३ द्रौपदी का एक नाम।

४ सत्यभामा।

५ भारद्वाज की माता का नाम, आयु नामक अग्नि का नाम।

६ व्यासजी की माता का नाम।

७ मगध देश के ब्रहद्रथ राजा की पत्नी, जो जरासध की माता थी।

८ कोसल देश के नग्नजित राजा की कन्या, जो कृष्ण की पट-रानी थी।

९ भरतवशीय राजा मन्यु की पत्नी जिसका पुत्र यौवन था।

सत्याग्रह–स. पु. [स.] १ किसी सत्य के लिए किया जाने वाला आग्रह।

२ किसी शासन सत्ता के निर्णय व्यवहार आदि के प्रति अपना असतोष, विरोध आदि प्रकट करने के लिए किया जाने वाला अहिंसात्मक आन्दोलन या कार्यवाही।

सत्याग्रही–वि. [स] सत्य के पालन के लिए आग्रह करने वाला।

स पु.—वह व्यक्ति जो सत्याग्रह करता है।

सत्यानद—देखो 'सतानद' (रू भे.)

उ०—सत्यानंद नालेर दीधा समत्थ, हुकम्म पिता धारिया राम हत्थ।— सू प्र.

सत्यानास–स. पु.—ध्वम, मटियामेट, तहस-नहस।

उ०—घर मे बडग्या तो घर रो सत्यानास कर देवेला। छाता माथै कोपरिया री ढिगलिया खिडकलो। देखता ई वणावट बोलाजो। अैडी नी व्है के हुरडी देय रावळा मे वड जावै।—फुलवाडी

२ सर्वनाश।

उ०—सिवहरै सिवहरै सत्यानास जाएला उण हरामी रो, कोढ उघड ने रू रू मे कीडा पडैला उण दुस्टी रै।—अमरचूनडी

क्रि. प्र.—करणो, जाणो, व्हैणो।

मुहा०—सत्यानास जाणो=सर्वनाश की कामना करना। (गाली)

रू. भे —सत्यानासी, सित्यामास।

सत्यानासी–सं. स्त्री.—१ पीले रग के फूलो वाला एक कटीला पौधा जो प्रायः खडहरो और उजाड स्थान पर होता है। इसके बीज काले रग के होते है जिनसे तेल निकाला जाता है। वैद्यक मे इसका तेल चर्म रोगो को मिटाने वाला माना गया है।

२ देखो 'सत्यानास' (रू. भे)

उ०—१ सोचै बोरा सिर भरियोडा रीसा, सत्यानासी री देता दुरसीसा।—ऊ. का.

उ०—२ वासी नरका रा बिदर, ग्यासी रा गैसोत। सत्यानासी रा सुगुन, दासी रा दैसोत।—ऊ. का

रू. भे — सित्यानासी।

सत्यायु–स. पु. [स] पुरुरवा व उर्वशी के पुत्र, श्रुतजय के पिता।

सत्यारथ, सत्यारथप्रकास–स पु [स सत्यार्थप्रकाश] १ स्वामी दयानद द्वारा रचित एक ग्रन्थ। (आर्यसमाजी)

उ०—भगळ भागवत पेट भरण री, कुटिल कहाणी रे। सत्यारथ सुणिया विन साप्रत होसी हाणी रे।—ऊ का.

२ वास्तविक अर्थ, सत्य अर्थ।

सत्यासियौ —देखो 'सितियासियौ' (रू भे.)

उ०—जाळधर जोधापुरौ, नृप रहियौ सुभ नीत। सिर आयौ सत्यासियौ, ग्रीखम थई वितीत।—रा. रू.

सत्यासी—देखो 'सितियासी' (रू. भे.)

सत्यासीक—देखो 'सितियासीक' (रू भे.)

सत्यासीमौ—देखो 'सितियासीमौ' (रू. भे)

सत्यासीयौ—देखो 'सितियासियौ' (रू भे)

उ०—खलक लोक सहु खलभल्या, जीवइ किम जलबहिरा। 'समयसुदर' कहइ सत्यासीया तै 'क्रतूत' सहू ताहरा।—स कु.

सत्येयु–सं पु [स] पुरुवशीय राजा रौद्राश्व और धृताची के पुत्रो मे से एक।

सत्योत्तर, सत्योत्तरइ—१ देखो 'सिततरौ' (रू भे)

उ०—१ सवत बार सत्योतरइ, पहिलो सेत्रुञ्ज जात्र। कीधी सवल पड़ूर सु, तै कहियइ लव मात्र।—स. कु

उ०—२ सद्गुरु जिनचद सूरि जी, सघलै गुण देखि सुघाट। सुभ महोरत सत्योत्तरै, पाटण मे दीधी पाट।—ध. व. ग्र

२ देखो 'सिततर'।

सत्योपपावन–स. पु. [स] एक प्रकार का पेड, जो शरदडा नदी के पास पाया जाता है।

सत्रघण—देखो 'सत्रघण' (रू. भे.)

उ०—भरत्थ सत्रघणा सेस सुभेवै, त्रिए है भ्रात नालेर वदै सत्रेवै।
—सू प्र.

सत्र–स. पु [सं. सत्त्र, सत्र] १ यज्ञ, हवन। (डि. को; ह ना. मा.)

सत्रोट—देखो 'सत्रुट' (रू भे)
सत्रौ—देखो 'सत्रु' (रू. भे)
उ०—पहिलु सरमइ घरमह पूत्री, जेह रहइ नवि कोई सत्री।
—सालिभद्र सूरि
सत्व-स. पु—१ सत्ता।
२ सार, मूल, तत्व।
३ वास्तविकता।
४ चित्त की प्रवृति।
५ प्रकृति के तीन गुणो मे से एक। (सान्य)
६ प्रकृति।
७ जीवन-शक्ति।
८ मन, ज्ञान।
९ अधूरा गर्भ।
१० भूत-प्रेत।
११ सात्विक भाव।
१२ धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम।
१३ सात्वत राजा का पिता एक यादव राजा।
१४ रैवत मनु के एक पुत्र का नाम।
सत्वगुण—देखो 'सतोगुण' (रू. भे.)
उ०—१ सील सतोख दया सत भक्ती स्वधरम ग्यान वैरागी। सत्वगुण का पायक सब साथै, गुरु वचना का पागी।
—स्रीसुखराम जी महाराज
उ०—२ रज तम गुण का वेग प्रचडा सत्वगुण ग्यान नसाया। मोह लोभ सायक रज तम कै, नगर अग्यान वसाया।
—स्रीसुखराम जी महाराज
सत्वगुणी-वि [स सत्वगुणिन्] जिसमे सतोगुण हो।
३ साधु, विवेकी।
रू. भे—सतोगुणी।
सत्वदत-सं. पु. [म.] वसुदेव एव भद्रा के पुत्रो मे से एक, यादव राज-कुमार।
सत्वधाम-स. पु [स. सत्त्वधाम] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।
सत्वर-क्रि. वि.—शीघ्र, जल्दी।
उ०—साथ करै सिवदत्त री, धन चंदरा सुरधाम। गुण सीता सत्वर गई, लै गळवाह ललाम।—व. भा.
रू. भे.—सतवर, सतावर, सतुर।
सत्वसील-वि. [स सत्वशील] १ सदाचारी।
२ सात्विक प्रकृति का।
३ धर्मात्मा, पुण्यात्मा।
सत्वाधिक-वि.—बढकर, श्रेष्ठ।
उ०—तद राजा री रूप देख नायिका मोहित हुई। हाथ जोड कही—महाराज! आग्या देय सो करू। राजा कही—ई राजपूत नै वर, नायिका कही—म्हारी प्रीत तो याग् छै। राजा कही—म्हारो मन राजी रागै तो इयै नू वर। तद राजा री आग्या मेती वरियो। राजपूत नूं परणाय, महल आय, राजपूत रो मांन वदाय प्रसन्न करियो। वैताळ कही—राजा! इयां दोनू माहै कुण सत्वाधिक हुवो?—वैताळ पचीसी
सत्संग, सत्संगति-स. स्त्री. [सं] १ अच्छा साथ, अच्छी सोहबत।
उ०—सद्गुरु चदन बावना, लागै रहै भुवंग। दादू विस छाडै नही, कहा करै सत्सग।—दादूबाणी
२ सत जनो के साथ धार्मिक चर्चा।
३ वह जनसमूह जिसमे धार्मिक चर्चा, व्याख्यान या राम-नाम का जप या पाठ होता हो।
क्रि प्र.—करणी, व्हेणी, होणी।
रू. भे—सतसग, सतसगत, सतसगति,।
सत्संगी-वि.—१ अच्छा साथ या अच्छी सोहबत करने वाला।
२ सतजनों के साथ धार्मिक चर्चा करने वाला।
रू. भे.—सतसगी।
सथ-स पु—देखो 'साथ' (रू. भे)
उ०—१ सथ ऊठ नकीया गरळ सह, नवि उदय आद सन्निया रवह।—रा. रू
उ०—२ इतरै अस गाड आविया, सथ बावनू सताव। अवर कहियो आवतै, वहियो साह निवाव।—रा. रू.
उ०—३ चाहत जोबन अधिक चित्त, मदन भई उनमत्त। हीरा डोलत हुंगगत, सुघड सहेली सथ।—बगसीरांम प्रोहित री बात
उ०—४ 'खेम' तणै सथ दूसरो, कायथ 'चद' 'गुलाल'। वाकै पत्र लिखिया इता, साचा जिता सवाल।—रा. रू
सथप्पणौ, सथप्पबौ—क्रि स.—१ नियुक्त करना।
उ०—सिसु उथापि इक माह, साह सिसु अवर सथप्पै। सिसु सुभटा हित समझ, पटै गढ देस समप्पै।—सू. प्र
२ स्थापित करना।
सथप्पणहार, हारो (हारी), सथप्पणियो—वि०।
सथप्पिओडो, सथप्पियोडो, सथप्प्योडो—भू० का० कृ०।
सथप्पीजणो, सथप्पीजबो—कर्म वा०।
सथप्पियोडो-भू. का. कृ.—१ नियुक्त किया हुआ. २ स्थापित किया हुआ।
(स्त्री सथप्पियोडी)
सयर-स स्त्री. [स स्थरा] पृथ्वी, भूमि। (डि. को)
२ देखो 'स्थिर' (रू. भे.)
उ०—१ परम अवतंस घन वस 'कूपावतो', दळ सुद्रढ भुजावळ गुमर दाखै। रेण थर राख राजा सयर राखीयो, राज जस साम-ध्रम भलां राखै।—जादूराम आढो
उ०—२ थपै दास कर सयर, रघुवर किता अरोड। बिरद पीत

सत्रुजय–स पु [सं शत्रुजय] १ काठियावाड का एक पर्वत जो जैनो का तीर्थ स्थल माना जाता है। (डिं. को.)
२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक जो भीम के द्वारा मारा गया था।
३ हाथी, हस्ती।
४ कौरवपक्षीय एक योद्धा जो कर्ण का भाई था, जिसे अर्जुन ने मारा था।
५ परमेश्वर।
६ द्रुपद राजा का पुत्र जो अश्वथामा के द्वारा मारा गया था।
७ श्रीविष्णु।
८ कौरवपक्षीय योद्धा जो अभिमन्यु के द्वारा मारा गया था।
वि —शत्रु को जीतने वाला।

सत्रुजया–स. स्त्री. [स. शत्रुजया] स्वामी कार्त्तिकेय की एक अनुचरी का नाम।

सत्रु–स पु. [स शत्रु] १ वैरी, दुश्मन। (अ. मा, ह. ना. मा.)
उ०—१ थिरा आवडा नाम विख्यात थायौ, छिपा सत्रु सौ तेमडै छत्र छायौ। सको सोखियौ हाकडौ नाम सिंधू, वहतौ थको रोकियौ लोकवधू।—मे. म.
उ०—२ लखीजै असी भाति आकास लागौ, भवानी खडा पाण लीधा त्रभागौ। हमेसा रहै सत्रु री सीस हाथै, मुर्खे रत्र रौतासळो छत्र माथै।—मे. म.
पर्याय —अचित, अणवछक, अणवछकी, अवजात, अभभाती, अभमानी, अभीत, अमत्र, अयार, अरद, अरहर, अराती, अरिंद, अरि, अरियण, अवजीत, असहन, असुहर, अहिति, कुरख, कुवादी-वाट, केवी, खळ, घातक, घातू, दसू, दुखदायक, दुजण, दुनड, दुयण, दुरत, दुरहित, दुरी, दुसह, दुसमण, दुस्ट, दोखी, दोयण, धेखी, पथकपथक, पर, पिसण, प्रतपखी, प्रसण, बियौ, वैरी, रिपु, रिम, रिसाघाती, विखम, विघनकरण, विड, विपख, विरोधी, वेधी, वैरहर, वैरी, सत्र, सत्राट, सपतन, हाणक।
२ राजनैतिक प्रतिद्वन्दी।
३ नाशकर्त्ता, सहारकर्त्ता।
४ विजयी।
रू भे —सत्तर, सत, सत्त, सत्तु, सत्तू, मत्र, सत्राण, सत्राव, सत्रू, सत्रौ।
मह —सत्राट, सत्राटौ।
अल्पा;—सत्रडौ।

सत्रुघण–स पु [स शत्रुघ्न] राजा दशरथ के सबसे छोटे पुत्र का नाम, शत्रुघ्न।
रू. भे.—सत्रघण, सत्रघन, सत्रघन्न, सत्रुघ्न, सत्रुहण।

सत्रुघाती स. पु. [स शत्रुघाती] शत्रुघ्न के पुत्र का नाम।
वि.—शत्रु का नाश करने वाला।

सत्रुघ्न—देखो 'सत्रुघण' (रू भे.)

सत्रुजित, सत्रुजीत–स. पु [स. शत्रुजित] १ भगवान् श्रीविष्णु।
२ द्रुपद-पुत्र जिसे अश्वथामा ने मारा था।
३ कौरवपक्षीय एक योद्धा जो सौवीरदेशीय था।
४ ध्रुवसन्धि व लीलावती के एक पुत्र का नाम।
५ पुरुरवावशीय दिवोदास के पुत्र द्युमन का नाम।
६ प्रतर्दन राजा का नामान्तर।
७ कुवलयाश्व राजा का नामान्तर।

सत्रुट–वि —थोडा, कम, अल्प।
उ०—यदि सरस्वती सदेह न भजयति तदा को भंजयति यदि लक्ष्मी भाडागारै द्रव्य सत्रुट करोति तदा को पूरयिस्मति।—व. स.
रू. भे.—सत्रोट।

सत्रुतपन–स पु [सं. शत्रुतपन] कश्यप ऋषि व कद्रू के पुत्रो मे से एक।

सत्रुता, सत्रुताई–स स्त्री. [स. शत्रुता, शत्रुता+ई प्र] वैरभाव, शत्रुता।
उ०—म्हारा कंवरा नूं तेडौ जठै सत्रुता री सका हुवै इण कारण आपरा वारहठ हरसूर नू प्रतिभू करि अठै भेजि……।
—व भा

सत्रुदमण, सत्रुदमन–वि. [स. शत्रुदमन] शत्रुओ के नाशकर्त्ता।

सत्रुमरदण, सत्रुमरदन–वि. [सं शत्रुमर्दन] शत्रुओ का नाश करने वाला।

सत्रुहण—देखो 'सत्रुघण' (रू. भे.) (डिं को.)

सत्रू—देखो 'सत्रु' (रू. भे.) (डिं. को)

सत्रूकार–वि.—१ सदाव्रत बाटने वाला।
उ०—दया धरम रा राखणहार देह-साभनारा करणहार वैठा तपै करै छै। अनेक सत्रूकार सत धरम रा राखणहार खैराइतारा करणहार……।—रा सा सं.
२ देखो 'सत्राकार' (रू भे)
उ०—१ तै नगरीमाहि सत्रूकार कण केरा बहुला कोठार चउवीस प्रकारिइ मिलइ तिहा धान्य परिपरिना अपूरवपान।
—नळदवदती रास
उ०—२ राजसभाथी ऊठीउ रे, जाइ नगर मझारि। चिंत्तिइ चिंता अति घणी रे, आविउ जिहा सत्रूकार।—नळदवदती रास
रू भे.—सत्रकार।

सत्रूपा—देखो 'सतरूपा' (रू भे)
उ०—सत्रूपा नार स्वयभू भूप, रहिस्स विचार न दीठौ रूप।
—ह. र.

सत्रेख–क्रि. वि —तीक्ष्णता के साथ, तीक्ष्णता से।
उ०—वोलै भोज महाबळी वधव जेत सत्रेख। ईदा आदू री, करा निवाह विसेख।—रा. रू

१२ रुकावट, बाधा ।

उ०—हफत हजारी हफत, सभै हक सद जे सायत । आय हफत ईसफा मिळो, हफतम सभि हिम्मत ।—सू. प्र

वि — १ ताजा ।

उ०—१ महीला सुरगी जाळीया, मारू हद मजेज । रस चादर कस ढोलडी, सद फूला री सेज ।—पना

उ०—२ पाणी सद पाताळ का, हरीया पीयो आणि । वासी पाणी विख सा, पीयै'स परळै जाणि ।—अनुभववाणी

२ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया ।

उ०—१ सद विद्या बिन राह न सूझै, उर अतर मे जीव अमूजै । बीजा नें फिर फिर मग बूजै, दुजा घाले मारग दूजै ।—ऊ. का.

उ०—२ गिणजै सद ज्यारी जिदगाणी, उभै विरद धरिया अग्गत । आरभै दौलत पुन पाणा, पुर्ण सुवाणा सीतपत ।—र. रू.

३ कल्याणकारी, शुभ, मगलमय ।

उ०—वेद धरम सद सुकन बतायो, अमल नयो वेदात अचायो ।
—ऊ. का.

४ सही, सत्य या पूर्ण ।

उ०—१ हुआ दळ राजथाना दकत रायहर, जठै प्रोछन वखत वहै जाणो । त्रीहता लिखत लखीया जिकै सद करै, रद करै नाज पत भगत राणो ।—जवानजी आढो

उ०—२ वायक सतगुर वेद री, घणी करै हित घोम । रे इण लालच रोग री, सद ओखद सतोस ।—बा दा

५ ठडा, शीतल ।

उ०—आ वूढली सामड यू कहै, म्हानै सद पाणीडो पाव ववडिया सरवणती ।—लो गी

६ मनोहर, सुन्दर ।

७ न मिटने वाला, अमिट ।

८ देखो 'साद' (रू भे)

उ०—१ धुरत सद नगारा नभै हिक साथ घण, सेहरो वाधि वे वर सनेही । चाव करि कुनणपुर एम चवरी चढै, 'जगा' री किसनगढ जोध जेही ।—महाराणा राजसिंह री गीत

उ०—२ असि भीम चडै, अममान अडै । दम्माम सदं, नीसांण नद ।—गु रू. व

उ०—३ वळवळ प्रथी सुजस सद बोलत, सूरज तड दामरथी सूरज ।—र. ज. प्र

११ देखो 'सदा' (रू. भे)

उ०—आ घरती सद उनमती, फिरती करनी फैल । भाला वळ राखी भिरड 'वळवत' छैल वकैल ।—अग्यात

सदक—स पु.—पानी, जल । (अ मा)

सदको—स. पु [अ. सदक] १ दान, खेरात ।

उ०—१ सुकर घणा खजाना जवाहिर रो-सदका रोजीना दान ठोट जोग करणो ।—नी. प्र.

उ०—२ सदका सिरजनहार का, केता आवै जाइ । दादू धन सचय नहीं, वैठ घुलावै खाइ ।—दादूवाणी

२ न्योछावर, बलिहारी ।

उ०—१ भर-भर प्याला प्रेम रस, अपनै हाथ पिलाइ । सदगुरु कै सदकै किया, दादू वळि-वळि जाइ ।—दादूवाणी

उ०—२ जिकै हूवेंगे सु पातिसाह रै सिर सदकै अर जिकै तिर निकळसी सु पातिसाह जी कै वखत तै निकळेंगे ।—द वि.

उ०—३ तुम हो तैसी कीजियै, तो छूटैगे जीव । हम है ऐसी जनि करो, मैं सदकै जाऊ पीव ।—दादूवाणी

क्रि. प्र —देवणा, राखणा ।

३ खुशामद, चापलूसी ।

४ मान, प्रतिष्ठा ।

वि.—उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—आपा मार मरै जो सदका, बिन आपै मूवा सो रदका ।
—अनुभववाणी

सदगत—स. स्त्री. [स. सद्गति] मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—१ सारा सुभावा मे वडो सुभाव माता पिता नै राजी राखणो ही वडो गुण छै, जिण नूं ई लोक में जस, परलोक मे सदगत होय ।
—नी. प्र.

उ०—२ यह गुण अत अदभुत वण्यो, आ सम अवर न कोय । पढै सुणै चित लायकै, ताकी सदगत होय ।—गज-उद्धार

उ०—३ तवा ज हरि अवतार तुहारा, सदगत प्रामै छूटै समारा ।
—ह. र.

रू भे.—सदगति, सदोगति ।

सदगतनाय-स. पु —१ विष्णु । (डि. को)

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

सदगति—देखो 'सदगत' (रू. भे)

सदगुटको—देखो 'सिद्धगुटको' (रू भे)

उ०—चटपट समट वरत नट चाकत, ऊनट पलट झट हाकत ईख । वहवै दुपट नभ वटका, साकुर सदगुटका सारीख ।
— देवोजी घधवाडियो

सदगुण-स. पु. यौ —१ ईश्वर, परमेश्वर । (ना मा)

२ अच्छे गुण ।

उ०—निरगुण अणविद्या छाई जग जिण्णू, विद्या विसरगो सदगुन वस विष्णु ।—ऊ. का.

२ उत्तम लक्षण ।

सदगुणी-वि.—१ अच्छे गुणो वाला ।

२ उत्तम लक्षणो वाला ।

सदगुरु-स पु —१ उत्तम आचार्य, गुरु या शिक्षक ।

उ०—सदगुरु प्रणम 'किसोर' सचिव 'अमरेस' सवाई । करै पिता

'सागर' बियै, मीत तणौ कुळ मोड ।—र. ज. प्र.

सथळ-स स्त्री.—१ रोमावलि । (अ. मा.)

२ देखो 'साथळ' (रू भे)

सथान—देखो 'स्यान' (रू भे.)

उ०—१ इण कजि मूफ नवौ पुर आपौ, सिव सथांन मौ राजस थापौ ।—सू प्र

उ०—२ रनवा सहित सिकार रमाणौं, नकट सथांन गयौ नानाणौं ।—सू. प्र.

सथानक, सथांनिक—देखो 'सुथानक' (रू भे)

उ०—पोह निज रगमहल पधराए, ऊप्रमि वीर सथांनक आए ।—सू. प्र.

सथाप-स स्त्री —तमाचा, थप्पड, चाटा ।

उ०—अवा मिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि स्त्र ग प्लवंगम तेम । थावै गज कायल खाय सथाप, भुकै घट घायल आय भुवाफ ।—मे. म

सथापणौ, सथापवौ—देखो 'स्थापणौ, स्थापवौ' (रू भे.)

उ०—थळवट थान सथाप्यौ कुळवट किनियाणी मा कुळवट किनियाणी । धर जगळ धिनियाणी, जग सारौ जाणी, जय मात करनी, जय करनी अंवै मा जय करनी अवै ।—मे. म.

सथापणहार, हारौ (हारी), सथापणियौ—वि० ।

सथापिओडौ, सथापियोडौ, सथाप्योडौ—भू० का० कृ ।

सथापीजणौ, सथापीजवौ—कर्म वा० ।

सथापियोड़ौ—देखो 'स्थापियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सथापियोडी)

सथिति-स. स्त्री [सं. स्थिति] १ धरती, भूमि, पृथ्वी । (ह. ना मा)

२ देखो 'स्थिति' (रू. भे.)

सथियारौ-वि —साथ रहने वाला ।

उ०—हा हा दुखदाई छपना हृतियारा, सज्जन सुखदाई सावल सथियारा ।—ऊ का.

२ कुटुव का, कुटुव से सम्बन्धित, कुटुंबी ।

सथियौ—देखो 'स्वस्तिक' (रू भे)

उ०—ढोला वाईजी ने वेग वुलावौ, म्हारी चत्रसाला सथिया दिरावौ ।—लो गी.

सथिर-स पु —१ हाथी । (ना डिं को.)

२ देखो 'स्थिर' (रू. भे)

उ०—१ पुत्रवती सोहागवति, पतिवरता पिण सोय । स्त्रीराणी चूडौ सथिर, वाणी भणौ सकोय ।—रा रू

उ०—२ धन्य धन्य वह जगळ धरनी, किल्ला जहा वनायौ करनी । सथिर नीव पाताल सपरसत, घन भुरजाळ धुजा नभ घरसत ।—मे म

सथी—१ देखो 'साथ' (रू भे.)

उ०—सथी करि मेछ घणा समराथ, भटी भडताम पडै भाराथ ।—सू प्र.

२ देखो 'साथी' (रू भे)

सथूळ—देखो 'स्थूल' (रू भे.)

उ०—भडप्फड पखरिण सावज भूळ, गुडत गयाघण गात्र सथूळ ।—गु रू व.

सथ्थ—देखो 'साथ' (रू. भे)

उ०—१ पथ असेदै पूगणौ, अळगौ घणौ अकथ्थ । व्हे विण जाण्यौ हालणौ, सवल (जा) विण सथ्थ ।—वा. दा.

उ०—२ कहि सूवा किम आवियउ किहीक कारण कथ्थ । तु माळवणी मेल्हियउ, किना अम्हीणइ सथ्थ ।—ढो. मा

सथ्थल-क्रि वि —साथ मे ।

उ०—पूरया हे सखी पूरचा हे सथ्थल जीहाज, बैठा हे सखी वैठा दोन्यूं राजा रंगस्यु जी ।—प. च. चौ.

२ देखो 'साथळ' (रू भे.)

सथ्थी—१ देखो साथी' (रू भे.)

२ देखो 'साथ' (रू भे)

उ०—भवानी नमौ जोगनी जुथ्थ सथ्थी, भवानी नमौ भेखी बीस हथ्थी ।—मे म.

सदका-वि —सरल, आसान ।

सदंत-वि. [स. स+दत] दातयुक्त दातो वाला ।

उ०—वरस तणौ वाळक हुओ, ओ अरि हर[illegible]दत । तद नांनी कड तेडनै सुत लै गई सदत ।—पा प्र.

सदभ-वि. [स] कपटपूर्वक ।

उ०—करा जोड रूपकीस, साम पाय नाम सीस, वाघ चाल महा-वीर, कूदियौ किसीस । निसाचरा काळनेम पतीलंक तणौ पेम, माग वीच वणै रह्यौ सदभा मुनीस ।—र. रू

सद-स पु. [स. सदस्] १ सभा । (डिं को)

२ चद्रमा, चाद । (अ मा, डिं. को)

३ दान, पुण्य ।

उ०—देख तमासा डरपिया, कई माध सयाणा, सूरापूरा सद किया दिल ताक खुलाणा, जो दीना सो उवरीया, ओ आदु अवखाणा ।—केसवदास गाडण

४ परमेश्वर ।

५ ज्ञानी ।

६ ब्रह्म ।

७ साधु, सत ।

८ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो में से एक ।

९ अगिरा एव सुरूपा के पुत्रो मे से एक ।

१० सत्य, सच । (ह. नां मा.)

स. स्त्री.—११ प्रकृति ।

वि० वि०—यह मुख्य सदर होता था। उसे तीन प्रकार के कार्य सम्पन्न करने पड़ते थे—(१) सम्राट के धार्मिक सलाहकार के रूप मे, (२) विभिन्न व्यक्तियों व संस्थाओं मे शाही दान-पुण्य के वितरक के रूप मे, एवं (३) साम्राज्य के प्रधान न्यायाधीश के रूप मे। अकबर के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों मे उसे व्यापक अधिकार व यथेष्ट मान-प्रतिष्ठा प्राप्त थी। प्रमुख धार्मिक सलाहकार होने के नाते 'शरा' के परस्पर विरोधी निष्कर्षों पर उसे अपनी अधिकारपूर्ण आज्ञा देनी पड़ती थी। उसे यह भी देखना पड़ता था कि सम्राट व सरकार कुरान की आज्ञा-आदेशों के विरुद्ध तो आचरण नहीं कर रहे हैं और क्या इस्लाम के गौरव की रक्षा कर रहे हैं। इसका महत्वपूर्ण कर्तव्य इस्लामी विद्याओं को प्रोत्साहित करना था। उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु वह विद्वान-मुसलमानों से सम्पर्क रखता था तथा उन्हें वजीफे आदि देकर प्रोत्साहित करता था। प्रमुख काजी की हैसियत मे इसका सम्राट के बाद न्याय-सत्ता मे दूसरा दर्जा था। यह प्रान्तों, जिलों व शहरों के लिए काजियों की नियुक्ति के लिए उम्मीदवारों की सिफारिश करता था। अकबर के द्वारा अपना शासन-प्रबंध पुनर्संगठित कर लिए जाने से इसके पास सामान्य अधिकार ही रह गये थे। अब वृत्तियाँ प्राप्त करने के लिए अधिकारी-विद्वानों, भले आदमियों और जरूरतमंदों की केवल सिफारिश कर सकता था, इस सम्बन्ध मे अन्तिम निर्णय सम्राट का होता था।

रू भे.—सद्रसदर, सद्रससुदूर, सद्रस्सदर, सद्रस्ससदर, सद्रस्ससुदर, सद्रस्ससुदूर, सद्रस्सुदर, सद्रस्सुदूर।

सदरूप—देखो 'संदरूप' (रू भे.)

उ०—सदमोस जूह महाबळी, सदरूप मेघक सिघळी।—गु रू व.

सदळ, सदल—स. पु. [स. सदल] १ वृक्ष, पेड। (अ मा)

वि.—१ दलदार, मोटा, पुष्ट।

उ०—१ नीपना सतपुडा खाजा तुरत कीधा ताजा सदला ने माजा मोटा जाणं प्रासाद ना छाजा।—व स.

उ०—२ मोहती मन मोहती पुहुचउ सदल सुरग। अगुली मूगुनी फळी समस्त तीखा नख सुरग।—रुकमणी मगळ

२ सेना सहित।

उ०—धवळहरे धवळ दिये जस धवळिन, घण नागर देखे सघण। सकुसळ सबळ सदळ सिरि सामळ, पुहप बूंद लागी पडण।

—वेलि

३ अत्यधिक, बहुत ज्यादा।

उ०—१ झळकति कठळ गोदरी, लहरीआ मोती मार। माणिक मयण तं सदळ सोहइ, ऊरि एकावळ हार।—रुकमणी मगळ

उ०—२ 'जसं' पाडिया खेत भड नेत-बधा जिके, लगे परमळ सदळ लोह लागे। सबळ पत्र भरे रत्र पी न सकै सकति, अलिअळा तणा गुजार आगे।—नाथो रोहडियो

रू भे.—सदळ।

सदवरत, सदव्रत—स. पु [स सदव्रत] १ श्रेष्ठ आचरण वाला व्यक्ति।

उ०—घरणी नर ऊपर कोमल कर धारे, पापी पुरसा नैं सदव्रत सारै।—ऊ. का.

२ देखो 'सदावरत' (रू भे.)

उ०—सदव्रत रखतोड़ी वरणाश्रम सेवा, साटै मरतोड़ी रैया तट केवा।—ऊ का.

सदस्य—स पु. [स.] सभासद, मेम्बर।

उ०—मा'रजा, मेवा साईबेरी रा मिन्नी, सनातन धरम रा सभापति, ग्राम सेवा सघ रा उपाध्यक्ष अर धारसभा समाज रा सदा सू सदस्य है।—दसदोख

सदांणी, सदोणी—देखो 'सदीणो' (रू भे)

सदांनो—देखो 'सादियानो' (रू. भे.)

उ०—चादर हौज फुहार, छ्ळा भरि अतर सजाना। रवि विण पडदा जगी, सरव बज्जवं सदाना।—सू प्र.

सदाम—देखो 'सुदामो' (रू भे.)

सदामापुरी—देखो 'सुदामापुरी' (रू भे.)

सदामो—देखो 'सुदामो' (रू भे.)

उ०—तं सुर कमळ सदांमा सदळ पाला बिलकुळ भरे पुणी। विदुर तणी भगती हित बाधा, साधा केळा श्रोर सुणी।

—र ज. प्र.

सदा—क्रि वि. [सं] १ सदैव, नित्य हमेशा। (डि. को.)

उ०—१ आज गुरुजी काळी सवारी गाल है, पाछे रो घणो जोर है। सदा सूं पें'ला घरां पधारो। दसदोख

उ०—२ हुवे चम्मरा झाटका जोनि हुवे, सदा ऊतरे आरती माल सूवं। तके भादवी माह ऊपात तिरवी, पडै मायरे पाय प्रत्यीप प्रत्वी।—मे म.

उ०—३ धनो धन्य मा बावडा धाड धाडा अखीजै किमी जीह थारा अखाडा। सदा तू रमै रास नो कोड साथै, महामोड तू कोड़ तेतीस माथै।—मे म

मुहा०—सदा दिवाळी सत रै आठू पहर आणद=सत सदा खुश रहते हैं।

२ हर समय, हर वक्त।

उ०—१ खखवट सरम सदा था खोळे, श्रो हिंदवाण वचावो श्रोळे।

—रा. रू.

उ०—२ उठै झाड कहीर पाहाड अेडा, वणं मयरा हालणो पथ बेडा। नळवकै सदा नीझरा नीर खोळा, छळै कुड अल्लील सल्लील छोळा।—मे म

उ०—३ दिनीवै कहर पतसाह रा भाज दळा, सोहिया दळा विच वीर साजा। सदा जोरावरा तणा नव-साहसी, राह सिर ऊपरै हुआ राजा।—देवराज रतनू

जिमि क्रिया, तिकण गुण समझ बताई।—र रू

२ धर्म गुरु।

रू भे —सद्गुरु

सदग्रथ–स. पु —उत्तम ग्र थ।

सदघटा–स स्त्री —सभा। (ह ना मा.)

सदणौ, सदबौ–क्रि. अ. —१ अनुकूल होना, मुआफिक होना।

उ०—न जानामी नामी विहस वर वामी बळ वदै। अनादी स्रस्टी यैं मुगम यह व्रस्टी कम सदै।—ऊ. का.

२ शब्द होना, ध्वनि होना।

उ०—सिर ढाल कडक्कड रूक सदै, जिम वाग डडेहड फाग जदै।
—रा रू.

४ जिम्मेवार होना, उत्तरदायित्व लेना।

४ सहन होना या करना।

ज्यू—अचपळा टावर नै कह्यौ सदै कोनी।

सदणहार, हारौ (हारी), सदणियौ—वि०।

सदिग्रोडौ, सदियोडौ, सदयोडौ—भू० का० कृ०।

सदीजणौ, सदीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सधणौ, सधबौ—रू० भे०।

सदन–स. पु [स.] १ घर, मकान। (अ मा; डि को; ह. ना मा.)

उ०—१ मन मूरति मूरति मदन, सुभ गुण सदन सिंगार। अस-वारी कजि आणियौ, ऊपरि लूण उतार।—रा रू

उ०—२ सदन सवारचौ सानरौ, नर उद्यम कर नेक। खित पर सोभा 'खेतसी', आखै मिनख अनेक।—नारायणसिंह सादू

उ०—३ गाडा भरिया गोलणा, सूनी सदन सुरग। कथ घणा ही कायरा, जाणी जे इम जग।—वा, दा.

२ राशि, समूह।

उ०—चहुवाण इण मीणा रे प्रधान हुतौ। तिकण रे दोइ दुहिता रूप री सदन जाणि जैता रे पुत्र विग्रह राज ······विवाहण री विचारी। —व भा.

३ जल, पानी।

४ यज्ञमण्डप।

५ यमराज का आवास-स्थान।

६ रहने का स्थान।

७ खान।

सदनामी–स. स्त्री —यश, कीर्ति।

उ०—सरती सदनामी चाहत नहि चोरी, डरती बदनामी गावत नहि डोरी।—ऊ का

सदम–स. पु [स सद्म] घर, मकान।
(अ मा, डि को; ह ना. मा)

सदमौ–स पु [अ. सद्म] १ मानसिक आघात।

२ धक्का, आघात, चोट।

३ हानि, नुकसान।

सदय–वि. [स] दयायुक्त, दयालु।

उ०—थियौ सदय सुण निज थुई, टीटभ हूत कसान। उण रा वाळ ख्वारिया, महामत्र जस मान।—वा दा

रू भे.—सद्दय।

सदर–वि [अ. सद्र] १ मुख्य, खास।

उ०—दरगाह सदर दोलत दराज, ताळा बुलद इस्लाम ताज।
—ऊ. का

२ वडा, महान।

३ भययुक्त और डरा हुआ।

स. पु [अ सद्र] १ छाती, वक्ष स्थल, सीना।

२ सभापति, अध्यक्ष।

३ प्रधान सभापति के बैठने का स्थान।

४ किसी उच्च पदाधिकारी का मुख्य कार्यालय।

५ केन्द्रीय स्थान।

६ मुगलकालीन शासन-व्यस्था मे एक पदाधिकारी विशेष।

वि० वि०—यह पदाधिकारी प्रान्त और केन्द्र मे अलग-अलग होता था। प्रान्तीय सदर का कर्त्तव्य था कि वह केन्द्रिय सदर को उन व्यक्तियो के नाम भेजे जो वजीफे व जागीर प्राप्त करने के अधि-कारी है। प्रायः काजी और सदर दोनो पदो के लिए एक ही अधिकारी नियुक्त कर दिया जाता था। अत. इसे काजी के अधि-कार भी मिल जाते थे। काजी प्रान्तीय न्याय विभाग का अध्यक्ष होता था। एव न्याय करता था। वह जिलो व कस्वो के काजियो के कार्य का निरीक्षण करता था।

[अ सदर] ७ आँखो की धुन्ध।

८ देखो 'सधर' (रू भे)

उ०—जैनगर लिखावै सदर कागज जिता, सिखावै तुहिज अव-साण 'स्यामा'।—स्यामसिंघ सेखावत री गीत

रू भे.—सद्र।

सदरआला–स पु [अ. सद्र आला] अदालत मे जज के नीचे का हाकिम, छोटा जज।

सदरबाजार–स पु यौ. [अ फा. सद्र+बाजार] १ खास बाजार, मुख्य बाजार।

२ छावनी के पास का बाजार।

सदरी–स. स्त्री. [अ] १ कमीज या चोले के ऊपर पहना जाने वाला बिना आस्तीन का वस्त्र विशेष जो रूई से भरा होता है।

उ०—पछै सेठाणी कानी देखनै बोल्या—मजूस माय सू सदरी अर बगतरी काढ दो।—फुलवाडी

सदरुससदर, सदरुससुदर, सदरुस्ससदर, सदरुस्ससुदर–स पु. [अ. सद्रुस्सुदूर] १ शाही हरमसरा का सरक्षक, अत पुरिक।

२ मुख्य न्यायाधिपति।

३ मुगलकालीन शासन व्यवस्था मे एक विशिष्ट मत्री।

सदामरस-स पु. [स. सदामर्ष] भगवान् श्रीविष्णु ।
सदाय—देखो 'सदा' (रू भे)
सदायोडो-भू. का क्र —उत्तरदायी या जिम्मेवार बनाया हुआ।
(स्त्री सदायोडी)
सदावत —देखो 'सदामद' ।
उ० —बावो मोबी बेटा नै गोगा रा जीमण सारू पूछ्यो तो वो कह्यो कै इण बात सारू इत्ता गोता खावण री काई जरूरत । सदावत जीमण वणै ज्यू वणाय देवणो हो । —फुलवाडी
सदावणो, सदाववो—देखो सदाणो, सदावो' (रू भे)
सदावणहार, हारो (हारी), सदावणियो —वि० ।
सदाविग्रोडो, सदावियोडो, सदाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
सदावीजणो, सदावीजदो—भाव वा० ।
सदावयच-स. पु.—दोस्त, मित्र । (अ मा)
सदावरत-स पु. [स सदाव्रत] १ हमेशा भूखो और गरीबो को भोजन देने का कार्य ।
उ०—उठै फूलमनी सदावरत माडियो जिकोई आवै तैनु सीधो दीजै ।—चोवोली
२ नित्य गरीबो को नि:शुल्क बाटा जाने वाला अन्न, भोजन ।
उ०—ध्रम सासत्र मारग दिढ धारे, सदावरत समपै जग सारै ।
—सू. प्र
३ दान ।
रू. भे —सदव्रत, सदव्रत, सदावरत, सदाव्रत ।
सदावरती-वि.—सदाव्रत देने वाला ।
सदावियोड़ो—देखो 'सदायोडो' (रू भे)
(स्त्री. सदावियोडी)
सदाव्रत—देखो 'सदावरत' (रू भे)
उ०—१ दत मो पछै अर्भ त्रप दोजे, कासीवास सदाव्रत कीजै ।
—सू. प्र.
उ०—२ भिखुक अरज भूपति मन भाए, पुर हरवास सदाव्रत पाए।—सू. प्र.
उ०—३ चतुरा चद्रायण चरइ, करइ सदाव्रत नेम। परमेस्वर परि-परि जपइ, माधव ऊपरि प्रेम ।—मा. का. प्र.
सदासवागण—देखो 'सदासुवागण' (रू भे)
सदासिव-स. पु [स सदाशिव] शिव, महादेव । (अ मा)
उ०—ईसपुरी ईसान मैं, राजत अतह अनूप । गिरजा सम गोरी सवै, पुरख सदासिव रूप ।—भोपाळदान सादू
सदासुख-स. पु —एक प्रकार का घोडा । (शा हो)
सदासुखी-स. स्त्री —जाति विशेष ।
सदासुवागण, सदासुहागण-स स्त्री.—वेश्या, रडी ।
वि —जिसका सुहाग अमर हो ।
रू. भे. —सदासवागण ।
सदि—१ देखो 'सवद' (रू भे)
२ देखो 'सदी' (रू भे.)
३ देखो 'साद' (रू भे.)
सदियै, सुदियै-स. पु.—१ सूर्यास्त के पूर्व का सायंकालीन समय ।
उ०—वो सिझ्या रा सदियै-सदियै व्याळू करनै डेचा माथै सूतो-सूतो होको गुडगुड़ावतो हो कै घरवाळी पगातियै ऊभी कवण लागी—पूरी इक्कीस राता उपरात कालै ई तो पाछा बावडिया अर भाभरकै ई चौधरी-बावा रै बेटा री जान मैं जावण रो हूकारो भर लियो ।—फुलवाडी
२ प्रात काल ।
वि [स सद्य] शीघ्र, जल्दी ।
रू भे —सधियै ।
सदियोड़ो-भू. का. कृ —१ अनुकूल हुवा हुआ, मुआफिक हुवा हुआ. २ शब्द हुवा हुआ, ध्वनि हुवी हुई. ३ जिम्मेवार हुवा हुआ, उत्तरदायित्व लिया हुआ. ४ सहन हुवा या किया हुआ ।
(स्त्री. सदियोडी)
सदी-स. स्त्री —१ शताब्दी ।
उ०—१ उगणीसवी सदी रै पैला मिनख सू मिनख रा कठ नै आपरा साचेला रूप मैं वोली रै सैंदरूप अळगो करण री जुगत नी वणी ही फगत लिखावट रा आखरा रै जरियै उणरो कठ सगळा देस मैं घूमतो फिरतो ।—फुलवाडी
उ०—२ पण सेठ (फूळचंदजी) ! थारलै कामा री होड ,कदैही नही हुवै । वेटा-पोता रै पल्लै भूख नी, अमर जस नाव है । पीढ्या वीतसी, सदी लद जासी पण लोग थारो नावो सदा लेता रैसी ।
—दसदोख
२ सो वर्षो का समूह ।
३ सो की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०० ।
वि —१ अच्छा ।
उ०—वद सदी वदी नेकी निहार, देखेगै दोजख वस्ति द्वार ।
—ऊ का.
२ सो ।
उ० —१ हाडो कानीराम तीन सदी साठ असवार ।—नैणसी
उ०—२ सतावीस दी कवण सभारै, सदी स कवण वधै सग्राम । पच हजारी किता पडिया, किता हजारी आया काम ।—नैणसी
उ०—३ सवत १६४२ असाढ वद १० अकबर पातसाह टीको सात सदी रो मुनसव जोधपुर, मोजत सीवाणो दीधो ।
—महाराज सूरसिंहजी रै राज री बात
रू. भे.—सदि ।
सदीठ-स स्त्री [स. सुदृष्टि] सुदृष्टि, अच्छी नजर ।
सदीनो-वि —सैंकडो वर्षो का।
उ०—मूगी छम लोवडिया लिया, विच विच चुन्नी चीवटा । खोढ

उ०—४ रातौ रहै सदा विख रस मैं, पेम भगति नही भाय। लोक लाज काज कुळ माही, हरि पूज्यौ न सुहाय।—अनुभववाणी

३ निरन्तर, लगातार।

रू भे.—सद, सदाई, सदाय।

सदाई—देखो 'सदा' (रू. भे)

उ०—१ रावत जी नु आवणौ छै तौ वेगा कीजै असवारी। भली भात मनवार करस्या। अठै तौ सदाई रहे छै जिण सू गोठ री तयारी।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ काम करै नही काज करै कछु सीरौ चरै सदाई।
—ऊ का.

उ०—३ राव उदैसिंघ जी महाराज सूं कयौ—जोधपुर सदाई थारै नही रहसी।—द. दा

सदागत, सदागति-स पु. [स. सदागति] १ पवन, हवा।
(अ मा, ह. ना. मा)

२ ब्रह्म।

३ सूरज, सूर्य।

सदाचरण—देखो 'सदाचार' (रू भे.)

उ०—पेट सू ई री पति, साधसी सुमत्ति ल्यावै, सदाचरण री सरण सतती उत्तम पावै।—नानूराम

सदाचार-स पु [स] १ भलमनसाहतता।

२ धर्म नीति आदि की दृष्टि से किया जाने वाला शुभ और उत्तम व्यवहार।

उ०—१ आई उमड अविद्या आंधी, च्यार वरण चडगी चक चाधी। विरचा धजा तूटगी वाधी, सदाचार री सधं न साधी।
—ऊ का.

उ०—२ एक रस रहवौ कठिन, कठिन सज्जनता पारन। सदाचार अति कठिन, कठिन कामदिक जारन।—स्वामी ईस्वराचद गिरि

३ शिष्ट व्यवहार।

रू. भे.—सदाचरण।

सदाचारि, सदाचारी-वि. [स. सदाचारिन्] सदाचार धारण करने वाला, सदाचार से रहने वाला।

उ०—ससाक नी दीधति दिव्य वस्त्र, सदा सदाचारि करी पवित्र। सुवरणवेदी अहिनाणि जाणि, सरद्वतीसूनु कृपाणपाणि।
—सालि सूरि

सदाजित-स पु [स] भरतवशीय एक राजा जो कुन्ति का पुत्र एवं माहिष्मान का पिता था।

सदाणौ, सदाबौ—क्रि स.—उत्तरदायी या जिम्मेवार बनाना।

सदाणहार, हारौ (हारी), सदाणियौ—वि०।

सदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सदाईजणौ, सदाईजबौ—कर्म वा०।

सदावणौ, सदावबौ—रू० भे०।

सदादान-स. पु. [सं. सदादान] १ ऐसा हाथी जिसका मद हमेशा बहता रहता है।

२ ऐरावत।

३ गणेशजी।

सदानंद-स पु [स] १ शिव, महादेव।

२ श्रीविष्णु।

३ ईश्वर, परमात्मा।

सदानीरा-स स्त्री.—१ करतोया नदी का नाम जिसे कर्मनाशा भी कहते है। (डि. को)

उ०—देवी नरमदा सारजू सदानीरा, देवी गल्लका तुगभद्रा गभीरा।
—देवि.

२ वह नदी जिसमे हर वक्त पानी रहता है।

सदापुसप, सदापुस्प-स पु [स. सदापुष्प] १ आक, मदार।

२ कपास।

३ रोहितक वृक्ष।

सदाफळ-स पु [स. सदाफल] १ नारियल। (अ. मा)

उ०—वलि सतोख सदाफळ सदली, करुणा रूप सुकोमल कदली। नारगी तै प्रभू निरागइ, जभीरी युगतै करि जागइ।—वि. कु

२ एक प्रकार का नीबू।

उ०—उतग विहुरै ओपमा सइहइति अधिक अपार। सदाफळ जबोर नारगि, बीलफळ उणिहार।—रुकमणी मगळ

३ बेल का वृक्ष।

४ गूलर का वृक्ष।

उ०—सदाफळाणि निंबुआणि राइणी महूअडा। कल्हार जवई नारग-रग वाग रूअडा।—गु रू व

५ वटवृक्ष।

वि.—सदा फलने वाला।

सदावरत—देखो 'सदावरत' (रू. भे.)

उ०—और सदावरत भूखा निमित्त अन्न काचौ पाकौ देय तौ तिण सू प्रताप वधै।—नी प्र

सदामंद, सदामद—क्रि वि.—१ परम्परागत, परम्परा से।

उ०—१ अमरावा नू दीवान मुत्सद्दिया नू सदामद सिरोपाव हुवता सो हूवा।—राजसिंघ कूपावत री वारता

उ०—२ तरै कान्हडदे जी कह्यौ—एक वार जेसलमेर पोहचावणी सदामद रीत छै।—वीरमदे सोनगरा री वात

२ पहले से, हमेशा से।

उ०—जाट थका पुकारै छै पुकारू आया छै माहारै सदामद लेता सू लं छै।—नैणसी

३ सदैव के माफिक, हमेशा के अनुसार।

उ०—डावडी गाय दुही तद सदामद जितरौ दूध हुवौ।—नी प्र.

सद्दहणा - देखो 'सद्धा' (रू भे.)

उ०—१ सुत सुणता अति दोहिलो, राखैं तिण मा चित्त। सद्दहण वलि साचवो, सयम धरि सुपवित्त।—वि. कु.

उ०—२ मुझ आधार छद एतलउ जी, सद्दहणा छइ सुद्ध। जिन ध्रम मीठउ मनगमइ जी, जिम साकार नइ दूध।—स कु

उ०—३ पारस्वनाथ हो तुझ प्रसाद थी सद्दहणा मुझ एह। भव भव हो जो हो समयसुदर कहइ, जिन प्रतिमा सु नेह। —स. कु.

सद्दा-स पु. [अ. शद्दः] १ मुहर्रम से तीन दिन पहले मनाया जाने वाला पर्व।

२ उक्त पर्व का दिन।

सद्दियोडौ-भू का. कृ.—१ गरजा हुआ, दहाडा हुआ।

२ देखो 'सदियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री सद्दियोडी)

सद्दूळ - देखो 'सारदूळ' (रू. भे.)

उ०—विकिव मत्तगज थूळ के सद्दूळ चलाया।—व. भा.

सद्दोमत—देखो 'सदोमत' (रू. भे)

उ०—सज्जोड घोडा तेजी तत्ता, सद्दोमता सूंडाळं। सज्जाना ग्याना लक्खा कोडी, आणं दीना अच्चाळ।—गु. रू. व.

सद्धर—१ देखो 'सधर' (रू. भे)

उ०—१ ईस सीस सगहे रुड-माळा किउ सद्धर, असस ग्रीध उग्रजे भूत वैताळ निसाचर।—गु. रू. व

उ०—२ भाटी 'रुघपत' साथ भयकर, सग कायथ 'केहर' मत सद्धर।—रा. रू

उ०—३ सामळ 'विजो' सामपण सद्धर, 'नरहर 'आणद' तणो निर्भै-नर।—रा रू

उ०—४ फौज तहव्वर खान री, आवी ऊगं सूर। वखत तणो रिण सद्धरा, नरा खरा मुख नूर।—रा. रू

उ०—५ उल्लसे जोस सुणता उवरि, सगह दरग्गह सद्धरा। कवि वाण असह बरडी किता, करडी लगं कायरा।—रा रू

सद्धरो—देखो 'सधरो' (रू भे.)

उ०—'रूपो' कुभकरन्न रो, कुडाग्रह कमधज्ज। रह गुढो कर सद्धरो, 'ऊदा' हरो सकज्ज।—रा. रू

सद्धा—देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)

सद्धेसर, सद्धेसवर, सद्धेसुर, सद्धेस्वर—देखो 'सिद्धेस्वर' (रू. भे.)

सद्म-स पु. [स. सद्मन्] १ घर, मकान।

२ स्थान, जगह।

उ०—देवी प्रेत आरूढ पद्म, देवीसागर सुमेरू गूढ सद्म।—देवि.

२ युद्ध।

रू. भे.—सदम।

सद्मिनी-स स्त्री. [स.] १ वडा मकान।

२ प्रासाद, महल।

सद्य-क्रि. वि. [स. सद्यस्] १ आज ही, अब ही।

२ तुरन्त, शीघ्र।

उ०—अतिसय अगाध, ईस्वर अराध। सत मित्र सद्य, अपवग्ग अद्य।—ऊ. का

सद्योजात-सं पु. [स] भगवान शकर का अवतार जो श्वेत लोहित-कल्प मे हुआ था।

सद्र—देखो 'सदर' (रू. भे.)

सद्रढ, सद्रढौ, सद्रट, सद्रढौ-वि. [सं. सुदृढ] १ मुदृढ, मजबूत।

उ०—१ रात्री धार सद्रढो तै गुणसागर वाण कवि ईदो। दर्प गाढ सद्रढो अर्प बोध वाढ विसतार।—रा रू.

उ०—२ गाव सहेर निकट नवगढा, दुजड तणं छक वणं सद्रढा। —रा. रू

२ अविचल, अटल, स्थिर।

उ०—१ जो रचना जगपत्ती, लोतं थाळ भ्रमे अयतोक। मोइ सत्य सद्रढ, रेखा सार अर रजपत्ती।—रा. रू.

उ०—२ पतसाह सवित्रकण कुभ पर, मयण वृद वाणी सुजण। दुरबोध मान रहियो सद्रढ, कान न कीधो कवण कण।—रा रू

सद्रव-स. पु. [स. सद्रव्य] १ धनाढ्य व्यक्ति, पूंजीपति।

उ०—मोटि विचि नूरजं तापिजे निगछिए, सवल सी माहि पिए सद्रव मोरा। एतिण वार में पाणनी ओजगी, दोजगी भरै निस-दिस दोरा।—ध व ग्र

२ द्रव्य, दौलत, धन। (अनेका)

सद्रस-वि [स सदृश] समान, तुल्य, बराबर।

उ०—१ परम्मळ कम्मळ सद्रस पग्ग, निधान परम्म निवारण नग्ग।—ह र.

उ०—२ सो समं गई सुपना सद्रस, सोवाई सब नुकविया। बिण सवरी रग दै-दै अथा, कतल करो मत कुकविया।—ऊ का.

सद्रससदर, सद्रससुदूर, सद्रस्सदर, सद्रससतदर, सद्रससुदर, सद्रस्ससुदूर, सद्रस्सुदर, सद्रससुदूर—देखो 'सदरुससदर' (रू. भे.)

सद्रि, सद्री-स पु. [स शद्रि] १ हाथी, हस्ती।

२ बादल, मेघ।

३ अर्जुन का नाम।

४ विजली।

सद्रीची—देखो 'सध्रीची' (रू. भे.) (अ. मा.)

सद्वती-स. स्त्री [स.] पुलस्त्य ऋषि की एक पुत्री का नाम जो अग्नि-देव को व्याही गई थी।

सधण-वि.—पत्नी-सहित, सपत्नीक।

उ०—धवळ हरे धवळ दियं जस धवळित, धण नागर देखं सधण। सकुसळ सवळ सदळ सिरि सामळ, पुहप वूद लागी पडण।—वेलि

सधणौ, सधबौ—कि अ—१ सिद्ध होना।

उ०—१ वपु दस गुणं जोर अप वधियो, सो गुण अनत पराक्रम

मदीना खडा माहै, सकड सदीनां मीवटा ।—दसदेव

सदीव, सदीवत—देखो 'सदैव' (रू भे.)

उ०—१ भिलै सिंघ गिर भगरा, सौ एकलो सदीव । रच टोळा फिरता रहै; जठै तठै वन जीव ।—बा दा.

उ०—२ सीहा कै कुल सभव सदीव, जीवका हेत हुसि देत जीव ।
—ऊ का

सदुपदेस—सं. पु. [स सदुपदेश] १ उत्तम उपदेश ।

२ अच्छी सलाह ।

सदू—देखो 'सधू' (रू भे)

उ०—माणक सदू 'महप' हर माता सती देवडी सूरज साख । पनरै समत पोह वद पाचम, पोहती परव छ्याळै पाख ।—रा रू

सदूर—क्रि वि —जो नजदीक न हो, दूर ।

उ०—वाकी भूठो अखियो, दक्खण गयौ सदूर । आप वडाई आपरी, आपी साह हजूर ।—रा रू.

सदेव, सदेवत—वि.—देव तुल्य देवसमान ।

उ०—मुण सुत समय सदेवत सूरह, पावू समर वीर रस पूरह । दूजा देव कळू प्रत दूरह, है धाधळ हाजर रा हजूरह ।—पा. प्र

२ देखो 'सदैव' (रू. भे)

उ०—चवदस खेलै चानणी, सुखिया लोग सदेव । हूँ तो ऊमण दूमणी, सिवरू साजन देव ।—अग्यात

सदेह—वि. [स] शरीर सहित।

सदै—देखो 'सबद' (रू भे)

उ०—सिर ढाल कडक्कड रूक सदै, जिम वाग डडेहड फाग जदै ।
—रा. रू.

सदैव—१ नित्य, हमेशा, सर्वदा ।

२ निरन्तर, लगातार।

रू भे —सदीव, सदीवत, सदेव, सदेवत ।

सदोख—वि. [स. सदोष] दोष पूर्ण, दोष युक्त ।

उ०—१ मन दुमह दुहूँ विध माहरै, असह वार लगै इसी । मुख लिया कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिसी ।
—रा. रू

उ० —२ हरिजस रस साहस करै हालिया, मौ पडिता वीनती मोख । अम्हीणा तम्हीणं आया तवण, तीरथं वयण सदोख ।—वेलि

सदोगति—देखो 'सदगत' (रू भे)

सदोमत, सदोमत्त—वि. —१ प्रसन्नचित्त ।

उ०—चालक नै मढ हूता चाचर, भाभरियाळ सदोमत भूलर । काछ पचाळ लगै छै डाकर, आई आवजे व्रन संकटियै ऊपर ।
—राजबाई रो गीत

२ उन्मत्त, मस्त ।

उ०—मद गळन जूह मेंगळ मसत्त, सिणगार खडा किय सदोमत्त ।
—गु. रू व.

रू. भे —सद्दोमत ।

सदोरो—वि.—मदोन्मत्त, मदमस्त, नशे मे उन्मत्त ।

उ०—१ घणी महिमानी करी, भाग, अमल, दारू, गाढा सदोरा किया । साहा री वेळा हुई ।—नैणसी

उ०—२ सहेलिया दोय बैठी पगा हाथ देवै छै अमला मैं सदोरा छै ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ दूजै दिन गोठ ठहराई । राव जी जोधा जी नै अमला दारू मे घणा सदोरा किया ।—राव रिडमल री वात

सद्द—देखो 'सबद' (रू भे)

उ०—१ खेतासर रवि ऊगता, छायो व्योम गरद्द । वाना देठाळै भया, थया नगारै सद्द ।—रा. रू

उ०—२ त्रिया आकुळै सभलै राम सद्दं । जती धाय वेगो कहै सीत जद्द ।—सू प्र

उ०—३ रोडि द्रुमति ढोल रवद, सहनाई भेर सद्द, निफेरी भेरी निनद नीसाण धुवै । पंचसद दमाम पूर, रूडै डूड रिणतूर, प्रमाण मेघ पड्डर हेरान हुवै ।—गु. रू. व.

२ देखो 'सद' (रू भे.)

उ०—रिति वरखा सरद्द हैमत सैसर हद, वसत ग्रीखम सद्द सुख सगळै ।—गु रू व.

३ देखो 'स्वाद' (रू भे.)

उ०—हसा कहै रे डेडरा, सायर लिया न सद्द । ओछै जळ मैं रेविया, ओछी होवै बुद्ध ।—अग्यात

४ देखो 'माद' (रू. भे)

सद्दणो, सद्दबो—क्रि अ.—१ बोलना, दहाडना, गर्जन करना ।

उ०—१ वडे क्रोध विसतार, रीछ सावर घर रोणा । जठै सिंघ सद्दता, तठै गरजत त्रिलोणा ।—रा रू

उ०—२ सद्दै मेघ क पच सवद्दा, भेर दमाम क भाहर सद्दा ।
—गु. रू. वं.

२ देखो 'सदणो, सदबो' (रू भे)

उ०—लग्गो सायत चाव, धाव वग्गो निसाणा । फिर सधोर सद्दियो, खीर सामद मथाणा ।—रा रू

सद्दणहार, हारो (हारी), सद्दणियो—वि० ।

सद्दिओडो, सद्दियोडो, सद्दयोड़ो—भू० का० कृ० ।

सद्दीजणो, सद्दीजबो—भाव वा० ।

सद्दय —देखो 'सदय' (रू. भे) (डि को.)

२ देखो 'सबद' (रू भे)

उ०—उर कोप आणै अप्रमाणै, सिद्ध जाणै सद्दयं । ओपै असाडै गै वडाडै, रूक भाडै रद्दय ।—रा रू.

सद्दळ—देखो 'सदळ' (रू भे)

उ०—आरुहै गयद अवदल अली, नैद महाबळ सद्दळा । हाहूलि असंख मिळि हल्लिया, जाणक वावळ वद्दळा ।—रा रू.

उ०—कस कमर वडफर गहर कर, धर धजर आवध सधर धर।
चढ चले रथ पर ढुर चमर, भड अवर निसचर रिण भवर।
—र. रू.

१६ आधार व सहारे सहित।
स पु —१ वाद्य।
उ०—गढ के पलट गाहटै गिरवर, धूपटिया धकधूण धर। 'रामै' तणा सुजसरा रूडिया, समियाणै ऊपर सधर।—रामसिंह रो गीत
२ ऊपर का होठ। ३ धीरज, धैर्य।
४ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे पहले तीन यगण और फिर एक जगण होता है। (ल पि.)
रू. भे.—सदर, सद्धर, सध्धर।

सधरम–वि. [स सधर्म] १ समान धर्म का।
२ समान गुणो वाला।
३ समान जाति या सम्प्रदाय का।
४ समान, तुल्य।

सधराव—देखो 'सिद्धराज' (रू भे)

सधरो–वि (स्त्री सधरी) १ अटल, अडिग।
२ दृढ, मजबूत।
३ वीर, बहादुर।
४ आधार सहित, सहारे सहित।
रू भे—सद्धरो।

सधव, सधवा–स स्त्री [स सधवा] सुहागिन औरत।
उ०—१ कोतिल घोडा आगलि करघा रे, सधव धरघा सिर कूंभ। इण परि राय मिल्यौ निज सुत भणी रे चित थी टलीयौ दंभ।
—वि कु
उ०—२ काजल टीको बिन फीकी द्रग कोरा, सधवा विधवा विच विवरी नही मोरा।—ऊ का.
रू भे—सिधवा।

सधवाद–सं पु [स साधुवाद] १ यश कीर्ति। (ह ना मा)
२ शाबाशी, धन्यवादी।

सधाणौ, सधावौ–क्रि स—१ निभाना वनाये रखना।
उ०—किम कटै पाप दुख सुख किया, सावं ज्यूंहिज सधायलू इण भवर हूत अवदे अलख, विधवापणू वधायलू।—ऊ का.
२ देखो 'सिधाणौ, सिधावौ' (रू भे)
उ०—अहाका अखावु हुवै वेढाक वाजता तवि रूकै रथा भाण थभी भ्रमी-गैण राह। पाथजेम लूथवत्था सधायौ 'हरा' रा परा, 'मदा' रो अधायौ राडि आयौ सेरसाह।
—कुसळसिंह चापावत मेडतिया अर सेरसिंघ रो गीत
सधाणहार, हारो (हारी), सधाणियौ—वि०।
सधायोडौ—भू० का० कृ०।
सधाईजणौ, सधाईजवौ—भाव वा०।

सधार–स पु—१ आधार, आश्रय।
उ०—१ पूरण पुरग पुराण प्रमेसर, सुकवि सधार वार अगेस्वर।
—रा. रू.
उ०—२ मत सूरित सहत सेवा प्रथमी सिरि, जित देणां अठारह वरग। जगत सधार राजि राजा रा, रिण कटका आडा कग्ग।
—राव सिवसिंघ सेखावत रो गीत
२ सहायता, मदद।
३ भरोसा, विश्वास।
[स. सद्वार] ४ घी, घृत। (अ. मा)
५ देखो 'साधार' (रू भे.)
उ०—१ स्री कस्ण जेम गिरवर सधार, असमान टिग तोरै अधार।—वि. स.
उ०—२ 'जगदू' जग जीवाडियौ, साजै भै सैकार। कीधो जे नैकार अन, वाणौ राय सधार।—बा. दा
उ०—३ औघट घाटी चूरि करि, पाया पीतम यार। हरीया जामण मरण का, सासा मेट सधार।—अनुभववाणी

सधारण–वि—उद्धार करने वाला।
उ०—१ पहतउ किलास तणइ जाउ परदन, माता कन्हा आणिया माग। तप विण ऊहिज तीरथ, जगत सधारण ऊहिज जाग।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ नायक है जग राम नरेसर, ते कर लायक देवतरेसर। गीत तणो पत नत सधारण, चाह करे भज तू धिन चारण।
—र ज. प्र

सधारणौ, सधारवौ - देखो 'सिधारणौ, सिधारबौ' (रू. भे)
उ०—मेरे पास साह फुरमाणौ, जोधापत हाजर जोधाणौ। सब घर हुवै तुमारो माणौ, एक वेर अजमेर सधारौ।—रा. रू.
२ देखो 'धारणौ, धारवौ' (रू भे.)
उ०—प्रभू पद वादे जोट पाण, अग्र मुकट अधारै। स्रीपति वभीखणह सिर, सो मुगट सधारै।—सू प्र.

सधवार–स स्त्री—गर्भवती स्त्री को सातवें महीने मे दिया जाने वाला उपहार।

सधायोडौ–भू का. कृ.—१ निभाया हुआ, बनाये रखा हुआ।
२ देखो 'सिधायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री सधायोडी)

सधारियोडौ—१ देखो 'सिधायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'धारियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री सधारियोडी)

सधियै, सधियै देखो 'सदियै' (रू भे.)
उ०—पछै अणछक जाणै काई सोचने वोल्यौ—म्है गाव रै टावरा भेळो रमण नै जावूला। सधियै सधियै पाछौ नी आवू तो थारी दाय पडै ज्यू करज्यै।—फुलवाडी

सधियौ। आगा हूत खुधा ओखण अति, भोजन करै दसगुणौ भूपति।—सू. प्र.

उ०—२ सूरावण मसलत वळ सधतौ, 'विलद' निजाम हूत पणि वधतौ।—सू. प्र

२ सफल होना।

उ०—१ सब विधि को सेवा सधी, आदर भयौ अमाप। मानवीय गुरु मानियौ, परतापी 'परताप'।—ऊ. का.

उ०—२ इतरी धीरज सू अरथ सधियौ।—नी प्र.

३ काम चलना।

४ अभ्यस्त होना, मँजना।

५ निशाना ठीक होना।

६ पूर्ण होना।

७ पालन होना।

उ०—जिण थी म्हारा भाई काका भीम रा पुत्र नू भेजीजै तौ सुजस रै साथ हुकम सधसी।—व. भा

सवणहार, हारौ (हारी), सधणियौ—वि०।

सधिग्रोडौ, सधियोडौ, सध्योडौ—भू० का० कृ०।

सधीजणौ, सधीजवौ—भाव वा०।

सधप-वि—तृप्त।

उ०—तमासा सिंध पइखै समर मारतुड, उमापत सधप तोडै कमळ आप। वड वडा सत्रा अणिया सधप विहडतौ, 'मान' तण तणौ खग अधप अणमाप।—राघवदास झाला रौ गीत

सधर-वि.—१ श्रेष्ठ, बढिया, उत्तम।

उ०—१ जैचंद हूग्रौ दळ पागुळौ, असि लक्ख साहण सधर। छत्तीस वस राजा कुळी, वडौ वस राठौड हर।—गु रू व.

उ०—२ सधर जोड हथिआर सार समरगणि सज्जिय, पचसवद वाजित्र घाइ नीसाणं व्रज्जिअ।—व स.

२ मजबूत।

उ०—१ गढ कैलास जिम ऊचउ, गरूई पौलि, सधर कपाट, लोह मय भोगल।—व. स

उ०—२ जोधपुर भीड पडिया थका जोधरै, लडण भुज नीम उरस लागौ। रूक हथ राव 'सूजै' सधर राखियौ, भिडै दूजौ 'बीकम' राव भागौ।—मालौ सादू

३ प्रबल, सशक्त।

उ०—माह तणा सोबा सधर, जोधाणै अजमेर। फौजा जोडै रात दिन, दोडै वेर अवेर।—रा रू

४ दयालु, कृपालु।

उ०—लछवर सधर अमर नर रख लज, महपत समरत हरत मळ। छजत वयण पथ सरस मण्ण छव, कमळ नयण रव तरण कळ।

—र. ज प्र

५ दृढ, मजबूत।

उ०—रंग देऊ वा नरा सधर छाती रा सूरा, रग देऊ वा नरा प्रगट वाता रा पूरा।—ऊ का.

६ आश्रय देने वाला, शरण देने वाला।

उ०—अह मत तज भज ईसर, करुणाकर सधर सुतन दसरथ को, यक छिन तन ऊधारण, रत कर चित्त चरण रघुबर रे।

—र ज. प्र.

७ सख्त, कठोर।

उ०—धरधर स्रग सधर सुपीन पयोधर, घणी खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि तरणि परि, त्रिवळि त्रिवेणी त्रोणि तट।

—वेलि

८ जबरदस्त, शक्तिशाली, बलवान।

उ०—१ जीती जीतीय पवाडा कोडि किहाइ न आणी खोडि, सेव करइ कर जोडि भूपत भरौ। गज तुरिय न लाभइ पार, सधर सुहड सार, छाजाति अवनिसार तुज्झ करो।—व स

उ०—२ खत्रिया खत्रो तिलक खेडेचौ, सह दन विधि असिमर सधर। सु करै विरद धारिया सवळा, हरै 'दूद' जिम रामहर।

—गोरधन चादावत रौ गीत

९ प्रभावशाली, गहरा।

उ०—चलता चेत वाम मग चाल्यौ, घाव सधर वेदा पर घाल्यौ। अस्वालव गवालव आल्यौ, झटकै गधौ सीतळा झाल्यौ।—ऊ का

१० तेज और जोशपूर्ण।

उ०—फर्वै दळ कुजरा सीस झडा फरक, तुरगा हाफरड सधर त्रवक त्रहक। थयौ रज तिमर दिगपाळ पवै थरक, रीस री झाळ किण माथ कमधा अरक।—विसनदान बारहठ

११ धैर्यवान, धैर्यशाली।

उ०—१ कायर किरकिरइ, सधर धारमिक हीइ धरमध्यान धरई.......।—व स

उ०—२ मनसिउ तिरइ पवनमिउ चालइ। कीरति विस्तरइ, परनारी सहोदर सग्राम सधर।—का. दे. प्र.

१२ अटल, स्थिर।

उ०—१........ गिरि सिखर खडहडइ लागा, सधर धरा पातालि प्रवेस करइ लगी, मत्स्यगिलागिलि हुइ लागी, आपोपरि थाइ लगी, असमजस काई नीपजइ लगु, इसउ प्रलय समान होई प्रस्थानउ करइ।—व स

उ०—२ मझी तहा मयण वसत महीपति, सिला सिंघासण सधर। माथै अव छत्र मडाणा, चलि वाइ मंजरि ढलि चमर।—वेलि

१३ अटल, अडिग।

उ०—प्रवाडा जीत साकौ कर मानपुर, सधर गिरमेर दीठौ सवाही।

—दळपतसिंघ सेखावत रौ गीत

१४ तैयार।

१५ सावधान।

कठ पळकै वसेस । चळकै अगेस चाळा भभूत मोहणी चढी, सरीर मोहणी कथा रळकै सघेस ।—जळधर नाथजी री गीत

२ महादेव, शिव, शकर ।

सध्धर—देखो 'सधर' (रू. भे.)

उ०—उडि वैसन्नर मामठा सध्धर, सुभटा भूनर फौज घामाहर ।
—गु. रू. व.

सध्रीच-स पु [स.] मित्र, दोस्त (अ मा)

सध्रीची-स स्त्री [स सध्रीची] सखी, सहेली । (डि. को.)

रू भे.—सद्रीची ।

सनकणौ, सनकबौ—१ देखो 'सणक्कणौ, सणक्कबौ' (रू भे.)

उ०—गजघट ठनकिय भेरि भनकीय रग रनकीय कोचकरी । पखरान झनकीय वान सनकिय चाप तनकिय ताप परी ।
—सूरजमल मिश्रण

उ०—२ खग वार सनक्किय तीर छनक्किय, प्रोय सनकिय होफ हय इम घट ठनक्किय नद्द रनक्किय भेरि भनक्किय सद्द भय ।—ला. रा

२ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे)

सनकणहार, हारो (हारी), सनकणियौ—वि० ।

सनकिओड़ौ, सनकियोडो, सनक्योडो—भू० का० कृ० ।

सनंकीजणौ, सनकीजबौ—कर्म वा० ।

सनकियोडो—१ देखो 'सणक्कियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'सिणकियोडो' (रू भे)

(स्त्री सनकियोडी)

सनद, सनदण, सनदन-स पु [स सनदन] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक ।

उ०—सत सनदन सुक सनक, नारद अवर अमेस । ब्रह्म मारग जे ब्रह्मनु, तुथी लहइ लवलेस ।—मा का. प्र

सन-स पु [अ. सन्] सवत् ।

उ०—सन उन्नीसो चाळीस छोह छक छायौ, इत जेठ महीनै जेठ तिमर हर आयौ ।—ऊ. का

२ एक पौधा विशेष जिसके रेशो से रस्सी बनाई जाती है ।

अव्यय.—१ तृतीया और पचमी विभक्ति का चिह्न, से ।

उ०—वरात चलूगी प्यारे नई दुलही कैमी लावोगे, वेसक व्याहो मितवा मे राजी, मोहि सन मिलकै सिधावोगे ।
—रसीले राज रा गीत

२ देखो 'सनि' (रू. भे)

उ०—१ राजभवन दसमै सन राजै, छित इक छत्र करै सुख छाजै ।
—रा. रू.

उ०—२ माह मगळ जेठ रवि, भादरवै सन होय । डक कहै हे भडुली, विरळै जीवै कोय ।—वर्षा विज्ञान

सनक-स. पु. [स. शनक] १ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक मानस पुत्र ।

उ०—१ सत सनदन सुक सनक, नारद अवर अमेस । ब्रह्म मारग जे ब्रह्मनु, तुथी लहइ लवलेस ।—मा. का प्र.

२ शकर के एक पुत्र का नाम ।

३ देखो 'सणक' (रू भे.)

सनकणौ, सनकबौ—१ देखो 'सिणकणौ, सिणकबौ' (रू. भे)

२ देखो 'सणक्कणौ, सणक्कबौ' (रू भे.)

सनकणहार, हारो (हारी), सनकणियौ—वि० ।

सनकिओडौ, सनकियोडो, सनक्योडो—भू० का० कृ० ।

सनकीजणौ, सनकीजबौ—कर्म वा० ।

सनकादक, सनकादि सनकादिक-स पु —१ ब्रह्मा के सनक आदि चार मानस पुत्र —सनक, सनदन, सनातन और सनत्कुमार । (अ मा)

उ०—१ गिरै दता अवसाणु, वहत सो वाधि सगावळ । अय अरथ नै जाय, आय सनकादिक कजळ ।—पू, प्र

उ०—२ कयौ वैकूठ हना सु विमाण, अदो सनकादिक नै अप्रमाण ।—सू प्र.

उ०—३ सुक सनकादिक तेडो जळ किनर नै न्हावो रे । देव दाणव सहु तेडो सरुप भीतर आवो रे । —रुकमणी मगळ

सनकारणौ, सनकारबौ—देखो 'सणकारणौ सणकारबौ' (रू भे)

सनकारणहार हारो (हारी), सनकारणियौ—वि० ।

सनकारिओडौ, सनकारियोडो, सनकारयोड़ो—भू० का० कृ० ।

सनकारीजणौ, सनकारीजबौ—कर्म वा० ।

सनकारियोडो—देखो 'सणकारियोडो' (रू भे)

(स्त्री सनकारियोडी)

सनकारी—देखो सणकारी' (रू भे)

उ०—कूडै मन आदर करै, तेह सजाई लीध । दासी नै सनकारी सिखावी, सगलो सिधो दीध ।—ध व ग्र

सनकियोडो—१ देखो 'सणक्कियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'सिणकियोडो' (रू भे)

(स्त्री सनकियोडी)

सनकी—देखो सणकी' (रू भे.)

सनडोरयौ-स पु.—वह रस्सी जिससे चरस की 'सूड' और 'पजाली' बधी रहती है ।

सनढ-वि.—१ वीर, योद्धा, बहादुर ।

उ०—१ जोधपुर तखत पर रायसिंघ जोवता, समरढ व्है सारीख सनढ । गढ गढ समा पातिया गढरत गढपत गात प्रमाण गढ ।
—महाराजा रायसिंघ री गीत

उ०—२ सग्राम लोह वाहै सनढ, विपरीत घाउ ऊखळा वढ ।
—गु रू. व.

उ०—३ कह वात सनढ भीडै कडाह, हयग्रीव रूप कीनो हुडाह ।
—पा प्र.

२ सुसज्जित, कटिवद्ध, तैयार ।

सधियोड़ो–भू. का. कृ —१ सिद्ध हुवा हुग्रा. २ सफल हुवा हुग्रा ३ काम चला हुग्रा ४ ग्रभ्यस्त हुवा हुग्रा, मजा हुग्रा. ५ निशाना ठीक हुवा हुग्रा. ६ पूर्ण हुवा हुग्रा. ७ पालन हुवा हुग्रा। (स्त्री सधियोडी)

सधींग–वि —१ प्रबल, जबरदस्त।

उ०—तनै झोक लागै जागा छटी पराई सुधारा काजै, सभावा ग्राथगा भार धीरदा सधींग। पथा ग्राचार रै सारा महीप न लागै पलै, भुरा थारा रकैबा वीजा भीमसिंग।

—राणा भीमसिंग रो गीत

२ वीर, साहसी।

सधीर–स पु —१ सिंह, शेर। (ग्र मा)

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. ना. मा)

३ पृथ्वी, भूमि। (ग्र मा)

४ घोडा ग्रश्व। (ह ना. मा)

५ लक्ष्मण। (ग्र मा)

वि —१ वीर, बहादुर।

उ०—१ सुज तेज देखि सधीर, ग्रडियौ न कोय ग्रमीर। सझि ताम 'ग्रजण' सलाह, सा' थियौ दोलासाह।—सू. प्र.

उ०—२ विवाणा ग्रच्छरा सोक वाजी हाक टाक वीरा, वीटियौ सधीरा घणा धारिया विसन। पाणी ग्रडै पाथरै कुवाण वाणा रीठ पडै, केवाणा वागौ जुवाणा किसन।

—किसनसिंघ राठोड रो गीत

उ०—३ खोपरा खणक्कं वाण विछूटै ग्रनेका खळा, सणक्कै ग्रंग मैं सार वहता सधीर। तडच्छै द्रोयणा टूक धडच्छै भुजाटा तेगा, कडक्कै खोचिया माथै रडक्कै कठीर।—वादरदान दधवाडियो

२ जिसकी थाह न मिले, गभीर, गहरा।

उ०—पुत्र दोय 'गजपति' रै, सूर दातार सधीर। वडो 'ग्रमर' लहुडो 'जसौ', वडो नरवर नरवीर।—सू. प्र

३ धैर्ययुक्त, धैर्यवान।

उ०—१ रहो सधीरा राजवण, नैण न नाखो नीर। रगौं मत इण रंग मै, चगो भीजै चीर।—ग्रग्यात

उ०—२ धाधळा ग्राचार धरै पधारै सरूप धारै, धारै मना घोडी काज वीचारै सधीर। ग्रासती सगती थारै ग्रोपमा वछेरी ग्राछी, झामती सामळा साथै ग्रावियो कठीर।—वादरदान दधवडियो

उ०—३ वामी वध वाघला, सूर सगराम सधीरा। तेज जेठ तावडा, ग्राखि धावडा ग्रगीरा।—मे. म

४ ग्रटल, स्थिर।

उ०—डिग मती रे तरवरा, मन मैं रहै सधीर। पाव पलक रो वैठणो, घडी पलक रो सीर।—ग्रग्यात

५ व्यग्र, उतावला।

उ०—१ सजै साकुरा पाखरा नरा कामरा साथै, वाजता नगारा वधै वीराधमै वीर। मारका हजारा सीस धावियौ ग्रठेल मारू, 'सूर' रो ग्राखरा वेल ग्रावियो सधीर।

—किसनसिंघ राठोड़ रो गीत

उ०—२ वाकडा कमध वीर, साकडा ग्राया सधीर। ताम सोढि देखि ताव, पालटै कुरंग पाव।—सू प्र

उ०—३ वाजता त्रवाळ वीर, सामुहो ग्रायो सधीर। वीर तै त्रंबाळ वाज, गोम धोम बोम गाज।—सू. प्र

६ सुन्दर, मनोहर।

उ०—हट ग्रटा हेम नग जटित हीर, धज कोटि कोटि ऊपर सधीर। हिम हीर गोरव जाळी हजार, दमकत जोति ग्रति जिलहदार।

—सू. प्र.

७ दक्ष, चतुर।

उ०—सास्त्र सिलप सजोय, सिलावट्टा स सधीरा। सीस ग्रसम समेल, नीम परठी मझि नीरा।—सू प्र

८ उत्तम, श्रेष्ठ।

९ निरोग स्वस्थ।

उ०—ग्रालिगन देई करी पूछै कुसल सरीर, माता तुझ परसाद थी, हू थयौ ग्राज सधीर।—स्रीपाल रास

१० दान देने वाला, दातार।

उ०—जिण लखै ग्रवनि वह थाट जीत, कोडेस वगसि वहु लीध क्रीत। सलिता सिणगारी जे सधीर, वाहर सूरह री चढै वीर।

—सू. प्र

सधीरासधीर–वि. यौ.—महावीर।

उ०—सोवा खरीदै ग्रपारु वाधो वखाणै जीहान सारी, धीनो 'ग्रना' छत्रधारी सधीरासधीर। वाता कै ग्रख्याता थारी न थावै मयद वीजा, भारी गुणा ग्राद चाळा वीलाळा सुवीर।

—जसकरण खिडियौ

सधु–स. स्त्री —पुत्री, वेटी।

रू भे —सदू, सधू, सिधु।

सधुरधर–स पु.—वैल। (ह ना मा.)

सधू—देखो 'सधु' (रू भे.)

उ०—१ देवी थारी दाय, राजी व्है ज्यू राखजै। मोटौ सरणो माय, म्हैं लीधौ 'मेहा' सधू।—ग्रग्यात

उ०—२ 'सागर' सधू 'इदरा' सकती, जननी धापू जाई। उगणीसै चोसट्टा वाळी, विपरा साल बताई।—मे म

उ०—३ 'चद्रभाण' सधू चद्रा वदनि, चद्रावत सीसोदणी। रूपक चडावण राम-पुरी, इधक रूप चद्रायणी।—गु रू व

सधूमवरणा–स. स्त्री. [स. सधूमवर्णा] ग्रग्नि की सात जिह्वाग्रो मे से एक।

सधेस–स पु —१ सिद्ध महात्मा।

उ०—मुखा भळकै सहम भाण समीप रळकै मुद्रा, वाण मे मेखळी

उ०—१ सदा करै सनमान, मीठा बोलै हम मिळै। दिए घरा धन दान, जस खाटै ठाकर जिकै।—वा दा

उ०—२ वडभागी दीना विवध, सपत हित सनमांन। सप रासणौ सीखियौ, थिर चित राजस्थान।—ऊ का.

उ०—३ चित दै वाता चुगल री, सुणजै कर सनमान। ऊमर में नह ऊपजै, वीडा री दुख कान।—वा दा

उ०—४ तेण तेडावी सेठि धनावह, आव्यु राजदूआरि। राजा ऊठी आलिंगन दीधउ, सनमानउ सुविचार।—हीराणद सूरि

२ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—१ साह मिळै 'अभसाह' सू, सिरै दियो सनमांन। छान नचीतो लेख छति, जाणै वात जहान।—रा रू.

उ०—२ वावळ आगै बीफणौ, की पावै सनमान। तूफ गोफ आगै तिसौ, 'देवा' जग चौ दान।—वा. दा

उ०—३ पजू नै निपै घणौ आदर सनमांन देनै बीजै दिन चढीया सो लग्न रै दिन जालोर आया।—वीरमदे सोनगरा री वात

रू भे.—सणमाण सन्माण, सन्मान।

सनमानणौ, सनमांनबौ—क्रि स.—सम्मान करना, आदर करना।

उ०—१ खत्रीवट प्रगट करि जेत चाढी खवा, कुळ तिलक काढियो कोट लियौ। सपूताचार पतिमाह सनमानियौ, वाळतै पोकरण अक वळियौ।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ साह कहियौ म्हारा अतामय रौ उद्देस करि आवै तिका नू साम्है जाइ हूँ ही समझाइ पाछा मोडि आऊ। तिको भी तान रौ निदेम सनमानि दारा कहियौ पिता रा पधारण में हूं भी पाट रौ पुत्र प्रतिस्ठा नू पाऊ।—व भा.

सनमांनणहार, हारौ (हारी), सनमांनणियौ—वि।

सनमानिग्रोडौ, सनमानियोडौ, सनमान्योडौ—भू० का० कृ०।

सनमांनीजणौ, सनमानीजबौ—कर्म वा०।

सनमांनियोड़ौ—भू का कृ—सम्मान किया हुआ, आदर किया हुआ। (स्त्री. सनमानियोडी)

सनमुक्ख, सनमुख—क्रि. वि [स. सम्मुख] सम्मुख, सामने।

उ०—१ पै हिण सिल फेरै प्रचड, सनमुक्ख सभारै। रहिया यक अग साच राण, मिटिया माया रै।—सू. प्र

उ०—२ निरखत सत सनमुख निजर, करण पुनीत सु प्रीत कर। गुण मान दान चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान अो ध्यान कर।

—रा रू.

उ०—३ सनमुख अत मीठा सवद, मेह समै री मोर। उगळै विख परपूठ अौ, चुगल दई रौ चोर।—वा दा.

उ०—४ गजगमणि सोल सिंगार, क्रतकास रूप्र प्रकार। अति रग उच्छव गाइ, 'अभमाल' सनमुख आइ।—सू प्र.

वि वि.—सम्मुख शब्द के रू. भे को तरह सन्मुख का प्रयोग अशुद्ध है। पुरानी कविताओ मे 'सनमुख' मिलने के कारण ही इसका प्रचलन हो गया है। शुद्ध रूप 'सम्मुख' है तथा 'सन्मुख' से इसका कोई अर्थ साम्य एव सम्बन्ध नहीं है।

रू. भे.—सनमुख, सैंमुख, सैमुख, सैमुखि, सैमुखौ।

सनमुख-भाला-सहण—स. पु - १ वीर योद्धा।

२ सिंह, शेर। (ना. डि को)

सनमुखि—देखो 'संमुख' (रू भे)

उ०—वात मजीवत करण वताए, आप करण सनमुखि सजि आए।

—सू प्र.

सनवार—देखो 'सनिवार' (रू. भे)

उ०—१ अठतीसै आसोज में, तिथ सातम सनवार। गौ 'सोनगिर' धाम हरि, नाम करै नमार।—रा. रू

उ०—२ तिथ चतुरदसी सनवार तय, तब रयण पहर बीता अरध। अजीत' गेह जनम्यो अर्भो', वाण वेद हरखै विबुध।

—रा. रू.

सनस—स. पु.—१ लिहाज, ख्याल, ध्यान।

उ०—१ सगपण चौ सनस ढकमणी सम्प्रिछौ, अण मारिया तणौ आलोजि। ए अणियात जु मारधि आयुध, मर्जे रुकम हरि छेदै मोजि।—वेलि

उ०—२ वरजै सनस ठामि व्यापार, चालै अपणै कुल आचार। माइता री आण म गटै, मोटा सेती हठ न मडै।—ध. व. ग्र.

२ इज्जत, मर्यादा।

उ०—वल परहरै वना वध वोलै, सनम प्रमा रालै घरसूत। गाए तुहाली पोळ रायमल, राजधणी सेवै रजपूत।

—महाराणा रायमल्ल रौ गीत

३ चीज, वस्तु।

४ शका, लज्जा।

उ०—हमें चोपड मेलै है प्रेममगन हूवा कठी री कठी सारि गोट मेलै है। बाजी बुलावै है, सनस भुलावै है प्यारी री लालडी प्रीतम रो हीरो, प्यारी री चूदडी प्रीतम रो चीरो।—र हमीर

५ मनद, साक्षी।

६ कीर्ति, यश।

उ०—घाट पालट करै नाट रावत घणा, मेळि ऊभा रहै क मेळा। ऊजळी सनस संसार सोहौ ऊपरै, चालियौ भोज खत्रीवाट चेळा।

—राव भोज हाडा रौ गीत

वि—समान, तुल्य।

उ०—भडा किमाड निरव है भुवब्बळि, सार सु दनि 'ऊदा' सनस। जुध आचारि अभनिमा 'जसवत', जग दीपै ऊजळो जस।

—राठौड प्रथ्वीराज भीमोत रौ गीत

सनसनी—स. स्त्री —१ सन्नाटा, स्तब्धता।

२ घबराहट, खलबली।

सनसणौ, सनसबौ—क्रि अ.—जोशयुक्त होना।

उ०—हैदळ कळळ पायदळ हूकळ, सीसोदै खडतै सनढ। गहकै हो बीजा गढपतिया, गजै अगजी त्रिकूट-गढ।

—महाराणा लाखा री गीत

३ दृढ, मजबूत।

उ०—१ बनै सबळ भुज अकळ सहस बळ, खळ दळ खेरू करण-खग। 'गजपत' सुतन सनढ गढ ढाहण, कोय न तोय सरीखौ करग।—सादूळौ खिडियौ

उ०—२ भिडणि जेम भगवान असमान अडियै भ्रिगुट, भार धरि भुजै गढ सनढ भेळै। वळा रा तिकै रखपाळ न्याइ दाखिजै, महरि वधि भडा हूं सार भेळै।—भगवानदास राठोड री गीत

४ बलवान, शक्तिशाली।

उ०—मोटा जळ चाढण मडोवरि, समहरि गज गूडण सनढ। 'ऊदै' खळ सौं आफळतौ, गढपति होवै फतै गढ।

—प्रथ्वीराज राठोड री गीत

५ शुभ, मगलमय।

उ०—पनरेसै समत पनरोतडै, सुदी जेठ ग्यारस सनढ। अवगाढ जोध रचियो इसौ, गाढपूर जोधाण गढ।—सू. प्र.

रू. भे.—सन्नद्ध।

सनणौ, सनबौ—क्रि अ—१ लथपथ होना, युक्त होना।

उ०—सरीर ससकार सार नीर छीर सै सनै, विध्वंस वेरि वस कौ प्रससनीय तै वनै।—ऊ का.

२ भीगना, तरबतर होना।

उ०—राजा पाडवा भी आसमेधी धारि लीना, लोही की सन्योडी भूमिका मैं पिंड दीना।—शि. व

सनणहार, हारौ (हारी), सनणियौ—वि०।

सनिओडौ, सनियोडौ, सन्योडौ—भू० का० कृ०।

सनीजणौ सनीजबौ—भाव वा०।

सनत—स पु. [स सनत्] ब्रह्मा। (डिं. को.)

सनतक, सनतकुमार, सनत्कुमार—स. पु. [स सनत्कुमार] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक।

सनत्सुजात, सनत्सुजान—स पु—ब्रह्मा के सात मानस पुत्रो मे से एक।

सनद—स. स्त्री [अ.] १ प्रमाण, सावूत।

२ विश्वास।

३ प्रमाण-पत्र।

रू. भे.—सनद्द, सनध, सनध्ध, सिधन।

सनदयापता—वि [अ. सनद+याफ्तः] जिसे प्रमाण-पत्र मिला हो।

सनद्द—वि.—१ ध्वनि सहित।

उ०—तुरही सुर भेर भणकत ही (ई), जद सद्द सनद्द दमाम जई।

—रा. रू

२ देखो 'सनद' (रू भे.)

सनद्वाज—स. पु [स.] शुचि राजा के पुत्र एव ऊर्ध्वकेतु राजा के पिता का नाम।

सनध, सनध्ध—देखो 'सनद' (रू. भे.)

उ०—इसी विचार आलमगीर करणसिंघ जी नू बुलाय कर कयो, 'तुम औरगाबाद रै सूबै जावो' अरु करणपुरो पनवाडी री सनधा कर दीनी।—द. दा.

वि. [स. सन्नद्ध] तैयार, सन्नद्ध।

सनधुज, सनध्वज—स. पु. [स सनध्वज] जनकवशीय शुचि राजा का पुत्र एव ऊर्ध्वकेतु राजा के पिता का नाम।

सनबंध, सनमंद, सनमध—देखो 'सबध' (रू. भे)

उ०—१ राम सहोदर राम गुर, राम पिता सनबध। जिण दिन राम न जम्पियो, वौ दिन अधोधुध।—ह र.

उ०—२ तरै केल्हण कहाडियौ—'इसडी बात कदै न हुई सू क्यू कीजै। सबारै ससार माहे सगा सोई सकौ हसै। पछै कोई आपा सू सनमंध करै नही, नै राव रै बेटौ को न छै।'—नैणसी

उ०—३ सनमध साच ससार सुख, पलट आज अणथाह पर। वरण-खट तणौ तुटी वरत, 'सेर' आज पडियौ समर।

—पहाडखा आढौ

उ०—४ कुण माता कुण पिता, कमण त्रिय कुण कुण भाई। कमण पुत्र परवार, कमण सनमध सगाई।—ज खि

सनबधी, सनमधी—देखो 'सबधी' (रू. भे)

उ०—१ खड देवडा भरै डड खधी, सगपण कर भाटी सनबधी। सारा मिळै तूझ सू मधी, वळ दाखे किण सिर गजबधी'।

—चतुरौ मोतीसर

उ०—२ 'मान' सुत अनै 'किसनेस' सुत मारका, मारका कोट अरगेज सारा। थापिया अेक छत्र अेक उथापिया धापिया सनमधी फूल-धारा।—रामसिंघ हाडा नै राजसिंघ राठोड री गीत

सनम—स. स्त्री.—१ इज्जत, मर्यादा,।

उ०—जद रजपूत कही सेवास थारी मात-पिता सौ तै मारी पाग री सनम राखो।—कारौ राजपूत री वात

२ प्रेमपात्र। ३ लज्जा।

सनमन, सनमन—देखो 'सबध' (रू. भे)

उ०—१ दूजौ कह्यौ—वाई री तौ राड ई है अर थे वाई रै साथै सनमन री बात करौ।—फुलवाडी

उ०—२ घरवाळी थोडी ताल सोच-विचारनै कह्यौ—मावौ तौ भेजणौ ई है। औ सनमन नी छोडा। गाया, मगरो वेचाला, वळै वोहरो कराला, भाईया सू मदत मागाला।—फुलवाडी

उ०—३ बोली—आपारै जोड री गवाडी सूं सनमन व्हिया आज औ दिन क्यू देखणौ पडतो।—फुलवाडी

उ०—४ थै निरात सू सोवो म्हैं इण सनमन मै की राखौ नी पटकूला।—फुलवाडी

सनमान, सनमांनउ—स पु [स सम्मान] १ आदर सत्कार।

उ०—२ माह ऊजळी सपतमी, वेढ सनीसरवार—रा. रू.

सनूरौ-वि (स्त्री सनूरी) १ सुंदर, खूबसूरत।

उ०—१ पटाळा हठाळा महागात पूरा, सुरंगा सगाहा सकोपा सनूरा। —रा. रू

उ०—२ नव नव ग्रह ग्रह चित्र सनूरा, पुर सुर धाम जिसा सुख पूरा।—रा. रू

२ अधिक, बहुत।

उ०—मचि केसर कुमकुमं कीच अवर कसतूरी, सुभ चदरण घरण सार नीर सोरंभ सनूरी।—रा. रू

३ प्रकाशपूर्ण, ज्योति सहित।

उ०—परीखं सरीकठ मैं हीर पूरौ, सुभं सूर आकास जाणं सनूरौ।
—रा. रू.

४ तेजस्वी, कांतिमान।

उ०—१ अठी सं अछाया उठी खेप आया, नगारा निहस्सं सनूरा तरस्सं।—रा रू

उ०—२ तुरग भल पाखरचा सस्त्र हाथै घरचा, नाचता माचता रण सनूरा।—स्रीपाल रास

५ जोश व उमगपूर्ण।

रू. भे.—ससनूर, ससनूरौ।

सनेगद-स. पु. [स. स्निग्ध] मित्र, दोस्त। (ह ना. मा)

सनेपत-स पु.—वह खेत जिसमे फसल खडी हो।

उ०—आप ऊभी रहचौ। कनारै एक बाजरी सनेपत खेत हूतौ तीयं माहि जाइ पेठौ।—कावळौ जोइयौ नै तीडी खरळ री बात

सनेपातवाय-स. पु —घोडे का एक रोग विशेष जिसके कारण घोडे के पेट पर सूजन आ जाती है। (शा. हो)

सनेपी-वि.—हितैपी, शुभचिंतक।

उ०—मुरधर ओखद मूळ, सनेपी साचौ सारौ। ऊपर खारौ खूब, माय मू मीठौ न्यारौ।—दसदेव

सनेम—देखो 'सनीम' (रू. भे.)

उ०—नरनाथ रमणि सनेम, परखत कमधज प्रेम।—रा रू

सनेयक-स. पु [स.] भद्राश्व राजा का पुत्र, एक राजा।

सनेस, सनेसडौ—१ देखो 'सदेस' (अल्पा; रू. भे)

उ०—दुख सुख कै कागज लिखूं, माहै बोत सनेस। थें तौ मन मानी नहीं, करसू भगवा भेस।—स्रीहरिरामजी महाराज

२ देखो 'स्नेह' (अल्पा; रू. भे)

उ०—तेल तिला सू ऊतरचा खळ मूं काई सनेस।—अग्यात

सनेसर—स पु [स. शनैस्+चर] १ शनि ग्रह।

२ शनिवार।

रू. भे.—सनिचर, सनिसर, सनिम्चर, सनीचर, सनीसर।

सनेसरियौ—स पु.—शनिश्चर की पूजा करके उनके नाम से दान लेने वाली जाति विशेष का व्यक्ति।

रू. भे.—सनिचरियौ, सनिसरियौ, सनीचरियौ, सनीचरौ, सनीसरयौ, सनीसरियौ, सनीसरचौ।

सनेसी—देखो 'सनेही' (रू. भे.)

उ०—राम सनेसी एक राम है, मेरै मन भाया हो। और सनेसी छोडकै, वासू मन लाया हो।—स्रीहरिरामजी महाराज

सनेसौ—देखो 'सदेस' (रू भे.)

उ०—मेरै प्रीतम प्यारै राम नै, लिख भेजू री पाती। स्याम सनेसौ कबहु न दीनौ, जाण बुझ गुझ बाती।—मीरा

उ० —२ सुण सनेसा गुरुदेव का, निज मारग पावै हो। खांणी वाणी पलटकै उण देस समावौ हो।—स्रीहरिरामजी महाराज

सनेह—स. पु [स. स्नेह] १ प्रेम, प्यार। (डि. को.)

उ०—१ बीजळिया अबर चढी, महीज वूठा मेह। बोलण लागा दादरा, मालण लगौ सनेह।—अग्यात

उ०—२ साध समागम ना कीया, नाव न किया सनेह। हरीया मरि मरि ओतरै, लख चोरासी देह।—अनुभववाणी

२ आस्था, श्रद्धा।

उ०—कोई ·· ··· नै छोडनै साची स्रद्धा लीधी। गुरु कीधा। पिण उणा री परचौ छूटै नही वार २ जावै। जद स्वामी जी पूछचौ थारौ परचौ क्यू राखै। जद तै बोल्यौ—म्हारौ आगलो सनेह है।—भि द्र

३ दर्शन।

४ कृपा, दया।

५ देखो 'स्नेह' (रू. भे)

रू. भे —नेह, सनेह, सन्नेह।

अल्पा —नेहडली, नेहडलौ, नेहलड, नेहलु, नेहलौ, नेहू, नेहौ, सनेहडौ, सनेहौ।

६ देखो 'सनेही' (रू भे.)

उ०—तैं विरहणि किम जीवसै, ज्यारा दूर सनेह।—ढो मा

सनेहडौ—देखो 'सनेह' (रू. भे.)

उ०—हरीया सहज सनेहडौ, जन कोई जाणत। दुनीया लोकाचार मैं, वहि वहि बीच मरत।—अनुभववाणी

सनेही—स. पु [स स्नेहिन्] १ मित्र, दोस्त, साथी। (डि को)

२ भक्त।

३ चित्रकार।

४ लेप आदि करने वाला चिकित्सक।

५ प्रेमी, प्रिय।

उ०—सुरति सुहागनी सुदरी, दुलहौ सबद सुजान। सदा सनेही ऊपरै, वारूं मन अर प्राण।—अनुभववाणी

वि.—१ प्रेम करने वाला, प्रिय।

उ०—प्राण छडतै तन छंडै, तन छाडतै जीव। जन हरीया मत छाडिजै, परम सनेही पीव।—अनुभववाणी

सनसणहार, हारौ (हारी), सनसणियौ—वि० ।
सनसिम्रोडौ, सनसियोडौ, सनस्योडौ—भू० का० कृ० ।
सनसीजणौ, सनसीजवौ—भाव वा० ।

सनसियोडौ—भू. का कृ.—जोशयुक्त हुवा हुग्रा ।
(स्त्री सनसियोडी)

सनस्सणौ, सनस्सबौ—देखो 'सनसणौ, सनसबौ' (रू भे)
उ०—वीरम्मं वेताळ, खिळे खेतपाळ । कटक्का कसस्सं, सुभट्ट सनस्सं ।—गु रू ब
सनस्सणहार, हारौ (हारी), सनस्सणियौ—वि० ।
सनस्सिम्रोडौ, सनस्सियोडौ, सनस्स्योडौ—भू० का० कृ० ।
सनस्सीजणौ, सनस्सीजवौ—भाव वा० ।

सनस्सियोडौ—देखो 'सनसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सनस्सियोडी)

सनाण—१ देखो 'सेनाण' (रू भे)
उ०—सोमेस्वर ब्राह्मण घणा छै पण थाहरै किसा सोमेस्वर सूं काम छै सो तिण री सनाण कहौ ।—पचदडी री वारता
२ देखो 'स्नान' (रू भे)

सनान—देखो 'स्नान' (रू भे) (डिं. को)
उ०—१ सनान कै खत्री सभ्रत तै करत तरपण, दुजस दान गाय दान ग्राय देत ग्ररपण ।—सू प्र.
उ०—२ जात पात सपनं सम जाणू, पाप पुण्य नहिं एक पिछाणू । वपू तो म्यान समान वखाणू, सार सनान जीव सेनाणू ।
—ऊ का.

सनानघर—देखो 'स्नानघर' (रू. भे)

सनानजात्रा, सनानयात्रा—देखो 'स्नानयात्रा' (रू भे)

सनानी—देखो 'सिनानी' (रू. भे.)

सनाकत सनाखत, सनागत—देखो 'सिनाख्त' (रू. भे)
उ०—१ बादसाह ग्रोरगजेब सनाखत हुवौ । महाराजा ग्रनूपसिंघ जी वीकानेर रा राजा हुवा ।—महाराजा पदमसिंह री वात
उ०—२ नाई कह्यौ—हा ग्रदाता, जिणरौ ई तौ नाम ग्रेलम । गाव वाला सनागत नी कर सकेला कै म्हारै टाट ही ।—फुलवाडी

सनाढ—१ देखो 'सनद' (रू. भ.)
उ०—ग्रतुळी बळ ग्रमर न सहियौ ग्रोकर, साहि ग्रालम ग्रागळै सनाढ । मुगळ कुवोल वोलियो मोडौ, जडियौ तै वेगो जमढाढ ।
—केसोदास गाडण
२ देखो 'सनाढ्य' (रू. भे.)

सनाढ्य—स. पु—गौडों के ग्रन्तर्गत कही जाने वाली ब्राह्मणों की एक शाखा ।
रू. भे.—सनाढ ।

सनातन—स पु. [स] प्राचीन काल ।
२ परम्परा ।
३ धार्मिक परम्परा ।
४ सम्बन्ध, रिश्ता ।
ज्यूं—थारै न म्हारै पीढिया रो सनातन है ।
[स सनातन] ५ ब्रह्मा ।
६ विष्णु ।
७ शिव, महादेव ।
८ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।
९ सनकादि ऋषियो मे से एक ।
वि —१ ग्रादि काल का, प्राचीन ।
उ०—१ वप घणस्याम नेत्र दुति वारज, क्रत ग्रवतार सुरांचै कारज । ग्रत ग्रप उग्र सनातन धारै, वेद ग्रजाद धरम विसतारै ।
—सू प्र.
उ०—२ सत बात कहै जग मैं सुकवी, कथ कूर कथै ठग सो कुकवी । सत कूर सनातन दोय सही, सत पथ वहै सो महत मही ।
—ऊ का.
२ निरन्तर, बरावर ।
३ स्थाई, दृढ ।
४ दृढ, निश्चित ।
५ ग्रनादि, ग्रनत ।
६ नित्य, शाश्वत ।
७ परम्परागत ।
उ०—मारि सकळ इम पाइ मधु, राखि सनातन राह । धकि लीधी वूदी धरा, 'देवै' कवर दुवाह ।—व भा
८ परम्परानिष्ठ ।
रू भे.—सुनातन ।

सनातनधरम—स. पु [स सनातनधर्म] १ ग्रनादि या प्राचीन धर्म ।
२ परम्परागत धर्म ।
उ०—१ रीत सनातनधरम, किया ध्रम करै ग्रणकल । राजतिलक सिर धारि, तखत वैठो ग्रतुळीवळ ।—सू प्र
उ०—२ कुमार कहियो जे प्रजा नूं पीडित करै तिका री पूठि लागणी तौ क्षत्रिया रौ ही सनातनधरम जाणीजै ।—व भा.
३ हिन्दू धर्म ।
वि० वि०—इसके मुख्य ग्रग हैं—बहुत से देवी-देवताग्रो की उपासना, मूर्त्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, श्राद्ध, तर्पण ग्रादि ।
रू भे —सुनातनधर्म ।

सनातनपुरस, सनातनपुरुस—स. पु [स. सनातनपुरुष] विष्णु ।

सनातनी—वि [स] १ सनातन धर्म का, सनातन धर्म से सम्बन्धित ।
२ जो बहुत प्राचीन काल से चला ग्रा रहा हो ।
स. पु.—१ सनातन धर्म का ग्रनुयायी ।
स स्त्री.—२ दुर्गा, पार्वती ।
३ सरस्वती ।

सन्नाटो–स. पु.—१ निस्तब्धता, नीरवता ।
२ भय या आश्चर्य के कारण व्याप्त मौन या चुप्पी ।
उ०—राजाजी री बात सुण आखा दरबार में सन्नाटौ छायगौ ।
—फुलवाडी
२ निर्जनता ।
रू भे.—सणणाटौ ।
सन्नादन–स पु —राम की सेना का एक बदर । (रामकथा)
सन्नादी–स पु. [स] स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, व्यजन ।
सन्नाह–स. पु.—१ जिरह, कवच, बख्तर ।
उ०—१ सिणगारी सन्नाह सू, बिस कामणि वरियाम । वरि आई हाला वरण, करण महा जुध काम ।—हा भा.
उ०—२ लीया वरियामै 'अवर' आमै सूरै पूरै सन्नाह ।
—गु. रू व
उ०—३ तूटै सन्नाहै तलवार उडइ तिणगा अगन सुझाळ ।
—प च. चौ
२ अस्त्र-शस्त्र ।
३ वीर, योद्धा ।
४ मालिक, स्वामी ।
५ अस्त्र-शस्त्र से सज्जित होने की क्रिया ।
६ युद्ध मे जाने हेतु की गई तैयारी ।
वि.—१ सहायक, मददगार ।
२ बचाने वाला, रक्षा करने वाला, रक्षक ।
३ कवच धारण किया हुआ ।
उ०—सन्नाहै भड सुहड जिकै, असवार अचग्गळ । परि पध्धर पाइक्क सेत, बाबळ पाए दळ ।—गु रू व.
रू भे —सनाह, सनाहु, सन्नाह, सनाह, सन्ना ।
सन्नि—देखो 'सनि' (रू. भे)
उ०—अधपत्ती इनि आसना, महिपति द्रोहै मन्नि । निजर दियै नव साहसी, किरि बारहमौ सन्नि ।—गु रू. व
सन्निद्धि, सन्निधि–क्रि वि. [स सन्निधिः] समीप, निकट, पास ।
उ०—१ सन्निद्धि सुभट समरन समीक, इक्क तै इक्क उद्धत अनीक । दुरयोधनपुर देसक दरोळ, हे दुरगदास वेसक हरोळ ।—ऊ का
उ०—२ सगपण ची सनस रुखमणि सन्निधि, अण मारिवा तणौ अलोजि । ए अखियात जु आउधि आउध, सजै रुकम हरि छेदै सोजि ।—वेलि
रू भे —सनिद्धि, सनिध ।
सन्निनांण–म. स्त्री. [स सज्ञिज्ञान] पूर्वजन्म की स्मृति । (जैन)
सन्निपात–स पु [स सन्निपात] १ कफ वात और पित के एक साथ बिगडने पर उत्पन्न होने वाली अवस्था जिसमे रोगी का चित्त भ्रात हो जाता है, वह बकने लगता है तथा उछलता-कूदता है । आयुर्वेद के अनुसार यह तेरह प्रकार का होता है ।
२ कफ, वात, पित तीनो का एक साथ बिगडना, त्रिदोष ।
३ प्रहार, चोट ।
उ०—अर कहियौ नरसिह देवरा सम्भा रा सन्निपात हू प्राण हीण होय पडता ।—व भा.
४ देखो 'सन्निपातज्वर' ।
उ०—ताप सन्निपात जाणी अतिसार सग्रहाणि, फीहौ विध राल पाडु गोला सूल खैण है ।—ध. व ग्रं.
रू भे —सनिपात, सनीपात ।
सन्निपातजुर, सन्निपातजुवर, सन्निपातज्वर–स पु [स सन्निपात + ज्वर·] त्रिदोपज ज्वर ।
सन्निवास–सं. पु [स] भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।
सन्निहीत–स. पु. [स] मनु-पुत्र एक अग्नि का नाम ।
सन्नी–वि. [स सज्ञी] भविष्य के हित-अहित को समझने वाला, पचेद्रिय ।
उ०—जद स्वामीजी कह्यौ थें सन्नी कै असन्नी । तै बोल्यौ हू सन्नी ।—भि. द्र
सन्नेस –देखो 'सदेस' (रू. भे.)
उ०—म्हारा बिछडया फेर न मिळिया, भेज्या ना एक सन्नेस ।
—मीरा
सन्नेह—देखो 'सनेह' (रू. भे.)
उ०—लाज सीळ सन्नेह, लाज पतिवरत न मूकै । लाज माण रक्खणी, लाज अवसाण न चूकै ।—रा रू
सन्माण, सन्मांन—देखो 'सनमान' (रू. भे)
उ०—१ दायजै जिसी पुराणी कमीणी प्रथावा री विनासकारी चुगली चेस्टावा करतौ आवै । जकैसू कसबै मैं घणौ सन्मान पावै ।
—दसदोख
उ०—२ निरधणिया रै आगै हो परौ'र नाजम-तहसीलदार नै ही ललकार नाखे । जका वास्तै गाव रा मिनख लाधू री सन्मान राखै । राम-रमी राखै ।—दसदोख
सन्मुख—देखो 'सनमुख' (रू भे)
उ०—१ दादू जिसका साहिब जागणा, सेवक सदा सचेत । सावधान सन्मुख रहै, गिर गिर पडै अचेत ।—दादूबाणी
उ०—२ पीछै कवर बीकोजी साथ कर सिहाणा जोइयै मिलक ऊपर गया, तद मिलक सन्मुख आय स्रीबीकै जी री पायनामी हुवौ ।
—द दा.
सन्यास—देखो 'सन्यास' (रू भे)
सन्यासास्रम–स पु [सं सन्यासाश्रम] मनुष्य-जीवन को चार भागो मे विभाजित करने वाले चार आश्रमो मे से अन्तिमाश्रम ।
सन्यासी—देखो 'सन्यासी' (रू भे.)
उ०—१ तरै कह्यौ बेटी इतरी मोटी हुई, नै इण रै वर री

उ०—१ ईखं सुपन त्रिया छिब एही, सुपह दाखियो वचन सनेही।
—सू. प्र
उ०—२ कपा-धाम नव कज नयरा, अभिराम सनेही। रूचि कपोळ ग्रीवा त्रिरेख, छवि वेस अछेही।—रा रू.
उ०—३ सुपह भडा कथ कहै सनेही, उतन करा राजस धर एही।
—सू प्र
रू. भे.—नेही, सनेही, सनेह, सनेही, सनैई, ससनेही, स्नेही।
अल्पा; —नेहो, सनेहो।
सनेहौ—१ प्यारा, प्रिय।
उ०—जोड़ं कुवर अनो पित जेहो, सत्रा अनेहो दळा सनेहों।
—रा. रू
२ सावधान, सतर्क।
३ देखो 'सदेस' (रू भे)
उ०—सिघल सौ कीधी सनेहो रे, मान दई मूक्या तेहो रे। समारी सहू राघव वातौ रे, जिम तिम वणी आवै धातौ रे।—प. च चौ
४ देखो 'सनेह' (रू. भे)
उ०—उत्तम कुल तं पामिस्यइ, पणि नही करइ सनेहो रे।
—स कु
५ देखो 'सनेही' (अल्पा, रू भे.)
उ०—ईदा आद लगं पण एहो, साम धरम नित रहै सनेहो। भोज महाबल आगळ भारथ, परब परब जाणं जुध पारथ।—रा रू.
सनै—क्रि वि [स शनैः] १ धीरे-धीरे।
उ०—१ मिळ पर नार नजारा मारण, मपत हरण सनै सनै। करतब हीण विपत रा कारण, कव चारण किम रहे कनै।
— ऊमरदान लाळस
उ०—२ रोळ विगाडै राजनूं, मोल विगाडै माल। सनै सनै सिरदार री, चुगल विगाडै चाल।—बा दा
उ०—३ सुणो निरदई माहिबा, काहै कु दुख देह। थोडै घणो सुवाद छै, सनै सनै रस लेह।—कुंवरसो साखला री वारता
२ थोडा-थोडा।
३ सिलसिलेवार, क्रमश।
सनैई—देखो 'सनेही' (रू भे)
उ०—तठै आवै वीछडता आपरा सनैई कुवरजी नै कहै छै।
—रीसालू री बात
सनैचरी—देखो 'सनीचरी' (रू भे.)
सनैवार, सनैसरवार, सनैस्चरवार—देखो 'सनिवार' (रू भे.)
उ०—माह सुदि १३ सनैस्चरवार दीक्षा रौ मुहुरत ठहरायौ।
—भि. द्र.
सन्न—देखो 'सुन्न' (रू. भे)
सन्नक—देखो 'सनकादिक' (रू भे)
उ०—सेवै पग सन्नक जन्नक सूर, अरज्जुण उद्धव श्री अकरूर।
—ह. र.
सन्नद्ध, सन्नद्ध—देखो 'सनढ' (रू भे.)
उ०—खडा खुरसाणी तेगा पाणी, सीगी नेजा सन्नद्ध।
—गु. रू. ब.
सन्नत-स. पु.—राम की सेना का एक बदर। (रामकथा)
वि.—१ उदास, खिन्नचित्त।
२ सिकुडा हुआ।
३ झुका हुआ।
सन्नति, सन्नती-स पु. [स] १ एक प्रकार का यज्ञ विशेष।
२ सुनीथ का पिता तथा प्रतर्दन व मदालसा के पुत्र अलर्क के पुत्र का नाम।
स. स्त्री.—३ पुलह मुनि के पुत्र ऋतु की पत्नी एव बालखिल्व की माता का नाम जो दक्ष की कन्या थी।
४ विनम्रता।
सन्नतेयु-स. पु [स.] १ कुशवशीय रौद्राश्व एव घृताची के पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।
२ पुरुवशीय रौद्राश्व एवं मित्रकेशी के पुत्रो मे से एक।
सन्नद्ध-वि [सं] १ तैयार, कटिबद्ध।
उ०—सोहो स्वीकार करि प्रामार केमास रा मत्र रै अनुसार सन्नद्ध होय नागौर रहियौ।—व भा.
२ कवच धारण किया हुआ।
३ किसी वस्तु या गुण से परिपूर्ण।
४ व्याप्त।
सन्नद्धबद्ध-वि [स.] १ अस्त्र-शस्त्रो मे सुसज्जित।
उ० ... न जाणिअ आत्मदल न जाणीअ परदल न जाणीअ भूतल न जाणीअ भोमडल, न जाणिअ रात्रि न जाणीअ दीम, न जाणीअ पूरव न जाणीअ पस्चिम, सहू एकाकार हुइ, इसिइ समय पर दलइ वरतमानि राजा सन्नद्धबद्ध लोह चूरणा हुइ सुहुउ सुहडइ, सगुड हाथीया लूडइ, रथावली ऊथलावइ .. .. ।
—व स
२ वीर, बहादुर।
उ०—सोमाडा सत्रै वस कीधा, सवै गढ लीधा, गढवइ सवि निरद्धाटिया, दुरग सव आपणा कीधा, समुद्र लगि आपणी आण फेरि, निस्कटक राज्य प्रतिपालता सग्राम विखय कदाचित उपजइ, त्रि पखा ब्रहत्पुरुषा साचरिया, क्षेत्र मुडाविउ, बिहु गमी सन्नद्धबद्ध नीसना, ... ।—व स.
३ कवच धारण किया हुआ।
सन्नान—देखो 'स्नान' (रू. भे)
उ०—दुतिवत करै सन्नान दान, विध राज रीत सासत्र विधान।
—सू. प्र.
सन्ना—देखो 'सन्नाह' (रू भे)

उ०—सुदर सुकलीणी झीणी साडी मैं, जुलफा सपणीं जिम अपणी आडी मैं ।—ऊ का

२ पीठ या गरदन पर होने वाली रोमों की लबी भौरी । (अशुभ)

सपणौ—देखो 'सपनौ' (रू भे.)

उ०—ससारी दा मगळ मेल जाणुं जिम सपणा —र. ज. प्र

सपतग-स पु.—१ राज्य के सात अग ।

उ०—मिळै सगराम सगराम जुध मसळियौ, अजट वळ गान सधार तूटो । ग्राम भडार सपतग लै सरबगळ, छोडिया साह महमद छूटो ।—महाराणा सग्रामसिंह रो गीत

२ इज्जत, प्रतिष्ठा, कीर्ति, प्रसिद्धी ।

उ०—सो मरणो जीवणो तो परमेसर जी रै हाथ छै । नाळेर फेरीया म्हारो सपतग जासी । मुलक मैं फजीत होऊ ।

—कुवरसी सांखला री वारता

सपत—देखो 'सप्त' (रू. भे.) (डि. को)

उ०—१ सपत कोस कनवज हूँ सोहत, मदन विनोद वाग मन मोहत ।—सू प्र

उ०—२ सपत दसह भोजन व्रत सनिगध, साग छतीसा वान वान सघ ।—सू प्र.

उ०—३ राम धाम 'जमराज', गयो हिंदू ध्रम आगळ । नाम सपत 'अजमाल', मात अभ वाम महावळ ।—रा रू

२ देखो 'सपथ' (रू. भे) (डि को)

३ देखो सपदी' (रू भे) (ह ना मा)

सपततंतू—देखो 'सप्ततंतु' (रू भे.) (डि. को.)

सपततुरग—देखो 'सपतास' ।

उ०—विभ्रम विमोह चित्त, सपततुरग तामिय सविता । वासर विसाळ लहिय चक-वाणं मगळ भवण ।—गु रू व

सपतदीप—देखो 'सप्तदीप' (रू. भे.)

उ०—गुरु गोविंद वताइया जी, जिम वरप्या ब्रह्मड । तीन लोक चोदह भवन जी, सपतदीप नव खड ।—रुकमणि मगळ

सपतन-स पु [स. सपत्न:] शत्रु । (अ मा, ह ना. मा)

सपतपुरी—देखो 'सप्तपुरी' (रू. भे.) (अ मा.)

सपतम—देखो 'सप्तम' (रू भे)

उ०—लख छठो 'खेम' धधवाड लहि, राण जगत्त सेवा रहण । धधवाड लाख सपतम धरै, स्यामदास 'माधव' सुतण ।—सू प्र

सपतमी—देखो 'सप्तमी' (रू भे)

उ०—१ सपतमी फ्रस्ण नवकोट साम, गढ घेर दिया डेरा सग्राम ।

—रा रू

उ०—२ पडिया आसुर पाच सौ, घायल हुवा हजार । माह उजाळी सपतमी, वेढ सनीसर वार ।—रा रू

सपतमों—वि (स्त्री. सपतमी) जो क्रम मे छः के बाद आता हो, सातवा ।

उ०—समत दह सपतमैं सरस पचसठै समछर ।—रा रू.

रू. भे.—सपतवौ, सपतो ।

सपतम्मी - देखो 'सप्तमी' (रू भे)

उ० —पिळियो मकरगान' नूं, आठ उजळ सपतम्मी ।—रा. रू.

सपतरिख, सपतरिखी, सपतरिखौ—देखो 'सप्तरिखी' (रू. भे)

उ०—लाग उगारै जोजना, ताम झूलो घोर । ताहू रहै आनद नू, सपतरिखन की ठौर ।—गज-उद्धार

सपतवौ—देखो 'सातमौ' (रू भे)

उ०—दध मद्योदक सप्तमौ, मान बतीस वखान । सुधोदक रहै सपतवौ, चालठ लाख प्रमान । गज-उद्धार

सपतसपती-स. पु [स. सप्त+सप्ती.] सूर्य, भानु । (डि. को)

सपतसुर—देखो 'सप्तस्वर' (रू भे.)

उ०—१ आगै हुवत नट थोगर, सगीत सपतसुर ।—गु. रू वं.

उ०—२ गीत सगीत सपतसुर गाए, आकळि पात्र नचाडे दाए ।

—गु. रू. व.

सपतहर सपतहरि-स. पु [स. सप्त+हरि=अश्व] सूर्य, भानु ।

(ना डि. को)

सपतारचि, सपतारची –स. स्त्री. [स. सप्तार्चि:] अग्नि, आग ।

(ह. ना मा.)

सपतारिख—देखो 'सप्तरिखी'

सपताळू-स. पु —एक प्रकार का रग विशेष ।

उ०—१ जरद कसूबल नारग्या सपताळू सोहत ।—पना

उ०—२ तठा उपरान्त सगेर नीवावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाग्या करै छै । रमूमत केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया नारगिया सपेत ।—रा. सा. सं.

रू भे —सताळू, सपताळू ।

सपतास, सपतासव—देखो 'सप्ताश्व' (रू. भे)

उ०—१ चिढै जुध 'धाधिल' श्रोरि अहास, पेखै हय वाग रथै सपतास ।—सू प्र

उ०—२ सपतास नहीं इण सारिखो, जोय सूर इम जाणियौ । सूरजपसाव साकति सजै, इण विध हाजर आणियौ ।—सू. प्र.

उ०—३ अस सपतास आलगा ऊपर, गळ दळ राकस वाहे जग । कमधा धर ऊजळो कळहण, जगचख जिम पेलियौ जग ।

—नावंडदान बारहठ

उ०—४ छाजा मेर स्रग रूप वाजा सपतास छतो, पाजा सेतवंध वाजा दुदभी प्रमाण ।—वखतसिंघ चुवांण री गीत

उ०—५ तिलमातर भीत न बीत तणी, थमि हालत अग्रकिया हथणी । कुममालय लेत सुवास कटा, झकझकैं सपतास करा झपटा ।

—मे. म.

सपती, सुपती-स स्त्री.—१ आग, अग्नि । (अ मा.)

[सं. सप्ति] २ घोडा, अश्व । (अ मा; ह ना. मा)

रू. भे —सप्ती ।

खबर ही नही। न जाणा मुवौ, किना कठी ही जोगी सन्यासी हुय गयौ।—नैणसी

उ०—२ उदर ब्रामणी अवतरयौ, पद सन्यासी पाय। चतुर नरा चित मैं चढ्यौ, दयानद गुर दाय।—ऊ. का.

सन्नत—स. पु. [स. ऋत] सत्य। (ह. ना मा)

सन्हद्द—[स. सन्नद्ध] बन्धा हुआ। (घोडे या ऊट गधे की पीठ पर)

उ०—दुहू दिस सद्द सन्हद्द दमाम, उडै कळ जत्र अनत अमाम।
—रा रू

सपखरौ—देखो 'सुपखरौ' (रू. भे)

सपंदण, सपदन—देखो 'स्पदन' (रू भे.)

सपपाट—वि —नष्ट-भ्रष्ट, तहस-नहस।

सप—स. स्त्री. [अनु] १ शपथ, दुहाई। (डि. को)

२ तेज या तीव्र गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि वि —शीघ्र, जल्दी।

सपक—क्रि वि —झट, शीघ्र।

उ०—छिणिया तो छिणमिण चलै, सपक हथोडा साथ। एक घडी मे काढ्या 'लोटियै', वधव पूरा साठ।
—डूगजी जवारजी री छावली

ज्यू—सपक सपक हालणौ।

सपक्खर—वि.—१ कवच सहित।

उ०—सिलह-पोस लख असी, पमंग असवार सपक्खर। कोडि तीन पायक्क, घोम घानंख फरसधर।—सू प्र

२ (युद्ध मे रक्षार्थ हाथी या घोडे पर डाली जाने वाली) लोहे की झूल सहित।

उ०—पडै जोध जरदैत, पडै बरहास सपक्खर। पडै वाण एक लक्ख सीस 'जिहगीर' लसक्कर।—गु रू. ब.

रू. भे.—सपखर (रू. भे.)

सपखाळ, सपखाळो—वि. [स स्व+पक्ष] १ अपने पक्ष वाला, तरफदार।

उ०—'सुदर' ने 'माहेस' सिधाळा, खूमाणा सगळा सपखाळा।
—रा. रू

२ वीर बहादुर।

३ श्रेष्ठ एव कुलीन।

उ०—मन मोट गाहडि कोट माझी, चाल पह कलिचाल। सपखाळ विरद विसाळ मालिम, भडा किमाड भुजाळ।—ल पि

सपखर—देखो 'सपक्खर' (रू. भे)

उ०—करि जीण सपखर बाज कटै, दहोडै खळ एम तुरी दवटै।
—सू प्र.

सपगाई—स. स्त्री.—सावधानी व सतर्कता।

उ०—१ सपगाई सब वाता मैं चाहियै काम सवारण मैं वैरी मारण मैं।—नी. प्र

उ०—२ गप्प मारै दावा करै तिण री भरोसी न करौ इतरै उण नू धीरज सू परखौ सपगाई सू परखौ।—नी प्र.

सपगौ, सपग्गौ—वि. (स्त्री सपगी) १ अटल व अडिग।

उ०—१ साहजादौ मुहसन साह वेस तरवारिया छै जिण री सारै धाक छै। खेत मैं पहाड री ज्यूं सपगा छै।—नी. प्र.

उ०—२ सरम सामध्रम हूत सपग्गौ, अधरम हूत रहै अळग्गौ।
—रा. रू.

२ दृढ, मजबूत।

उ०—१ जिको वादसाहा मैं सूरौ मनगरौ होय घणी भीड पडिया पगा सपगौ रहै तिको प्रथ्वी वेगी जीतै।—नी. प्र.

उ०—२ मरद सपगौ ऊ छै राह रीत आपसी सू किणी रा भय उस्वास सूं फिरै नही।—नी प्र.

३ विश्वासपात्र।

क्रि वि.—होश मे, चेतनावस्था मे।

उ०—तिसै दूजौ प्यालौ चावडी वळै भरियौ जाणियौ गोली अजै सपगा छै।—जगदेव पवार री बात

सपडाणौ, सपडावौ—देखो 'सपडावौ, संपडावौ' (रू. भे)

उ०—१ रावत झाटक रजा, गजा म्हावत गरडाया। सपडाया जळ सीच, वळै चितराम वणाया।—मे म.

उ०—२ ढोला जी रै राहै का तेडावै ढोला जी सपडासी मोकलावौ।—लो गी

सपडाणहार, हारौ (हारी) सपडाणियौ—वि०।

सपडायोडौ—भू० का० कृ०।

सपडाईजणौ सपडाईजवौ—कर्म वा०।

सपडायोडौ—देखो 'सपडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सपडायोडी)

सपड़ावणौ, सपडाववौ—देखो 'सपडाणौ, सपडावौ' (रू. भे)

सपडावणहार, हारौ (हारी), सपडावणियौ—वि०।

सपडाविओडौ, सपडावियोडौ, सपड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सपडावीजणौ, सपडावीजवौ—कर्म वा०।

सपड़ावियोडौ—देखो 'सपडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सपडावियोडी)

सपट—स स्त्री.—अवसर, मौका।

ज्यू—आयोडी सपट चूकणी।

२ झपट, टक्कर।

ज्यू वतूळिया री सपट सू पाया कण कण री व्हैगी।

३ नाश, ध्वस।

उ०—रळिया चढता मेघ, उचक्कै पवन हिंडोळै। सपट करै चित्राम, फुहारा रग उजोळै।—मेघदूत

सपणि, सपणि, सपणी, सपणी—स. स्त्री [स. सर्पिणी] १ नागिन, साँपिन। (डि. को.)

बिन्दु को स्पर्श करती हुई खींची जाने वाली गणित मे सीधी रेखा।

सपरसियोड़ो–भू. का. कृ.—छूवा हुआ, स्पर्श किया हुआ ।
(स्त्री. सपरसियोडी)

सपरस्स—देखो 'स्परस' (रू. भे.)
उ०—सोर आग सपरस्स, किना वडवाग अकारी । मांग हूत सामद्र, ध्याग वरतण उर धारी ।—रा रू.

सपराणी–सं. स्त्री [सं स्पर्शनम्] लेप करना ।
उ०—मोगरेल माथइ वली, मरदन अगि अपार । सपरांणी खीखड खलि, सोइ ऊतारइ सार ।—मा. कां प्र

सपरांणु—देखो 'सपराणो' (रू. भे)
उ०—नलरायनी हू छउ सुदरी, भीमराय तर्मे जाणु । तेह तणी वेटी दवदती, माहरु पति सपरांणु ।—नळदवदती रास

सपराणो–वि [सं. सप्राण+क] वीर, योद्धा ।
उ०—सपरांणा सीगिणि गुण गाजइ, तीन्हा नीर विछूटइ । जर-हजीण आगा विधिनइ, अगि सूसरा फूटइ ।—का दे. प्र.
२ वलवान, शक्तिशाली ।
उ०—१ आवि पाद्रि सइफलउ माल्यउ, लीधा चउपट घाउ । सोर-ठिया राउत सपरांणा, न दीइ पाछा पाउ ।—का. दे प्र.
उ०—२ पाच पाडव रह्या इम नासो, द्रूपदी रही थाईय दासी । देव दाणव न राय न राणउ, दैव आगलि न कोइ सपरांणउ ।
—सालिसूरि
उ०—३ राज करइ जगनीक नरेसर, न्यायवंत सुविचार । सूर वीर नइ अति सपराणउ, अरि दल गजणहार ।—हीराणद मूरि
रू. भे —सपराणु ।

सपरि–वि.—१ शुभ, मागलिक ।
उ०—मालणि आपि मोगरा, तबोली दिइ पान । सपरि समप्पिउ सूडलै, साहमु आवइ धान ।—मा. का प्र.
२ देखो 'सिपर' (रू. भे.)
उ०—सझि अलीवध सिलहट सपरि, धिख चख गिडकध धाखिया । पाघडावध ओळा प्रचड, अध जेम उपडाखिया ।—सू प्र

सपलांणियौ, सपलाणौ–वि —चारजामा कसा हुआ । (सवारी का ऊट या घोडा)
उ०—१ चरवादार प्रत कहै, करो तुरग तइयार । हुकम सुणी आण्यो तुरी, सपलांणो तिण वार ।—स्रीपालरास
उ०—२ पाघळ करो सपलाणियौ, दो मुझ हाथ वदूक । अरि अवनी पर आवता, कर देसूं दो टूक ।—नारायणसिंह सादू

सपलाणो, सपलावो–क्रि. स. [स. सप्लावनम्] १ स्नान करना, नहाना।
२ देखो 'सपडाणो, सपडावो' (रू. भे)
सपलाणहार, हारो (हारी), सपलाणियो—वि० ।
सपलायोडो—भू० का० कृ० ।
सपलाईजणो, सपलाईजबो—कर्म वा० ।

सपलायोडो–भू का. कृ.—१ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ ।
२ देखो 'सपडायोडो' (रू भे.)
(स्त्री सपलायोडी)

सपलावणो, सपलाववो—देखो 'सपडाणो, सपडावो' (रू. भे.)
सपलावणहार, हारो (हारी), सपलावणियो—वि० ।
सपलाविओडो, सपलावियोडो, सपलाव्योडो—भू० का० कृ० ।
सपलावीजणो, सपलावीजवो—कर्म वा० ।

सपलावियोडो—देखो 'सपडायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. सपलावियोडी)

सपळोटियो–स. पु —१ छोटा सर्प ।
उ०—डील तो राती व्है जेडो तागतूळी रै उनमान हो, पण कुबद सू हाथी नै ई मात गुळाचा गवाटै जैडो अटकळा आल व्है जैडा तीखा अर मोटा मैं गडवटती । फूल्योडी आटीनी नसा आवा डील गै सपळोटिया रै उनमान पळेटीजियोडी ही ।—फुलवाडी
२ सप का वच्चा।
उ०—सपळोटियां नै कुण डसणो सिखावै अर कागला नै कुण दूव मारणो । करणी रा फळ भुगतणा ई पटैला ।—फुलवाडी
वि.—सर्प के आकार का ।

सपसप–स. स्त्री. [अनु.] १ गुपचुप, कानाफूसी ।
ज्यू—आजकलं इण वात री गाव मे सपसप सुणीजै ।
२ चलने से होने वाली ध्वनि विशेष ।

सपस्ट–वि. [स. स्पष्ट] १ विलकुल साफ, स्पष्ट ।
उ०—उण वेळा रावता रा पग सरवै डिगण टूक जावै हळवळ न्हामण री आगत लाग जावै नै धणा जणा वरडै कायरता सूं कहै मारै रै मारै गळवळ वोल मूंडा माय सपस्ट वाणी नही नीमरै गळवळ वोल निकळै ।—वी. स. टी.
२ साफ दिखाई देने वाला ।
उ०—जिका जगि जोति छिपा छिप जात, द्रगा मग भोत सपस्ट दिखात ।—मे. म

सपस्टक्रिया–स स्त्री यो. [स स्पष्ट क्रिया] ज्योतिष के अन्तर्गत किसी विशिष्ट समय मे गहो के किसी राशि, अश, कला, विकला आदि मे अवस्थान जानने की क्रिया ।

सपस्टता–स. स्त्री. [स. स्पष्टता] स्पष्ट होने की क्रिया या भाव ।

सपस्टवकता, सपस्टवक्ता–स. पु. [स स्पष्टवक्ता] साफ-साफ एव सत्य वात कहने वाला ।

सपस्टवादी–वि. [स. स्पष्टवादिन्] साफ-साफ कहने वाला, स्पष्टवक्ता ।

सपस्टीकरण–स. पु. [स. स्पष्टीकरण] किसी वात को स्पष्ट व्यक्त करने की क्रिया ।

सपाण, सपाणो–वि —१ सबल, शक्तिशाली ।
उ०—१ सहस तीस दळ देख सपांणं, रळी करै मन जैसिंघ राणं ।
—रा. रू.

सपतौ, सपतो-सं. पु. [स. सप्ताह] १ सात दिनो का समूह।
२ सात दिन का समय।
३ सात दिन तक बांची जाने वाली कथा।
क्रि. प्र.—बंचणा, बाचणा, बैंठणा, बैठाणा।

सपत्त—देखो 'सप्त' (रू. भे)
उ०—१ सपत्त मैं खणा आमास ओपि असमाण ए।—गु. रू. बं.
उ०—२ पडिहार भीम भुज दान भत्त, प्रिथमी दीप जाणै सपत्त। —गु. रू. बं.

सपत्ती—देखो 'सपती' (रू. भे.)
उ०—छक वढियो अणछेह, पमग चढियो भुवपत्ती। जाण चढयो जेठ री, सुरज सपतास सपत्ती।—मे. म

सपत्तौ-वि —कामयाव, सफल।
उ०—हसनअली सइयद्, छत्र थापे मद छायो, इण दुख ईरानिया, तपत तन मन मुख तायो। वात घात वेखता, दाव देखता सपत्तौ, संद चूक कर समर, मार लीधो गहमत्तो। विसतरी वात दिस दिस विदिस, क्रित अभूत पखा किया। जोधपुर दूत जैसिंघ रा, आणी खबर अचितिया।—रा रू.
२ देखो 'सप्ताह'

सपत्नजित-स. पु [स] श्रीकृष्ण व सुदत्ता के पुत्रो मे से एक।

सपत्नी-स. स्त्री. [सं] सौत, सौतिन।

सपथ-स पु [स शपथ] १ कसम, सौगन्ध। (डिं. को.)
उ०—पैला रण जिण छूटि पग, पुळियो डेरा पाइ। जरै कहाइ जनक ह्, दूरै सपथ दिवाइ।—व. भा.
पर्याय०—आण, सप, समो, सोगन।
२ वचन, कौल।
उ०—पाणि जोड़ि दै घण सपथ, पुणियो तदि रोपाल।—व. भा.
रू. भे.—सपत।

सपथतंतू—देखो 'सप्ततंतु' (रू भे.) (ह. ना. मा)

सपद, सपदि-क्रि वि. [स सपदि] शीघ्र। (अ मा; ह ना मा.)

सपनंतर-स पु —स्वप्न। क्रि. वि.—स्वप्न मे।
उ०—१ नाजर राखै 'नथू' प्रगट सपनंतर पायो, नारद ईंद कुवेर हेत दाखवै सवायो।—रा रू.
उ०—२ आज सखी सपनतर दीठ, राग चूरै राजा पलगै वईठ। —वी. दे.

सपनाअवस्था, सपनावस्था-स. स्त्री. [स. स्वप्नावस्था] १ वह निद्रावस्था जिसमे स्वप्न दिखाई देते है।
२ सासारिक जीवन की अवस्था जो स्वप्न के समान अवास्तविक व निस्सार मानी गई है।

सपनौ, सपनो—देखो 'स्वप्न' (रू भे.)
उ०—१ सूता सपनै लूटसी, जागता संदेह। जनहरीया तिह लोक मे, नारी जाण न देह।—अनुभववाणी
उ०—२ कुचमादी वाळी बात अेक सपनो हो सपनौ, आयो ज्यूं ई पाछो मिटग्यो।—फुलवाडी
उ०—३ सूती सपनै ओदकी, वोली अटपट बैन। जनहरीया घरि आगनै, सही पधारै सैन।—अनुभववाणी
उ०—४ जै तू सपना साच है, साचा सैन मिळाय। जब नही देखू नैन भरी, तव कैसे पतिआय।—अनुभववाणी
उ०—५ आप दोना माथै सपनां मैं ई वजो नी आवैला। आप किणी बात री चिंता मत करो।—फुलवाडो
उ०—६ भटियांणी अर काली मासी रै जलम-जलम री सपनो जागती आख्या सूरज रै चानणै वधतो-वधतो पाच वरस रौ व्हैगो। —फुलवाड़ी
उ०—७ कुमार मोदीज नै कैवण लागो—पछै बिरमा जी रै माथै किसो छोगो बाधोड़ो है। थू जाणै कै म्हारी सपनो कदै ई कूड़ो नी व्है।—फुलवाडी
उ०—८ जगत भोग सपनां सम जोऊं, हमही गाय सिंघ मैं होऊं। —ऊ. का.
उ०—९ सत भाव कहू जग या सपनां, अघि अतर दाव करै अपना।—ऊ का

सपनदोख, सपनदोस—देखो 'स्वप्नदोस' (रू भे.)

सपमपाट—१ समतल, सपाट।
२ नाश, सहार।

सपरदांन—देखो 'सप्रदान' (रू भे.)

सपरस—देखो 'स्परस' (रू. भे)
उ०—१ नभत्राणी सपरस पवन, अगन रूप रस आप। —जेतदान बारहठ
उ०—२ अरस लगि पडि निहस अधस, सूर अदरस धूम सपरस। —रा. रू.

सपरसणो, सपरसबो-क्रि. स.—छूना, स्पर्श करना।
उ०—धन्य धन्य वह जंगळ धरनी, किल्ला जहा वणायो करनी। सथिर नीव पाताळ सपरसत, धन भूरजाळ धुजा नभ धरजत। —मे. म.
सपरसणहार, हारो (हारी), सपरसणियो—वि०।
सपरसिओड़ो, सपरसियोड़ो, सपरस्योड़ो—भू० का० कृ०।
सपरसीजणो, सपरसीजबो—कर्म वा०।

सपरसदिसा-स स्त्री [स. स्पर्श+दिशा] वह दिशा जिस ओर से (सूर्य या चद्र) ग्रहण लगना आरम्भ हुआ हो।

सपरसन-स. पु. [स स्पर्शन] वायु, हवा। (ह ना मा.)
रू भे—सुपरसन।

सपरसमणि-स. स्त्री [स. स्पर्श+मणि] पारस नामक कल्पित पत्थर, जिसके स्पर्श मात्र से लोहा भी सोना बन जाता है।

सपरसरेखा स. स्त्री. [स स्पर्श+रेखा] वृत्त की परिधि के किसी एक

करै ? वेटो न रहै । टीकायत वेटो सपूत ।—नैणसी
उ०—पूत सपूत हो तो क्यूं धन संचै ।
पूत कपूत हो तो क्यूं धन संचै । —अग्यात
२ पुत्र के साथ, पुत्र सहित।
रू. भे.—सुपूत ।
सपूतपण, सपूतपणो–स पु —सपुत्र या आज्ञाकारी होने का भाव ।
सपूताचार–स. पु —श्रेष्ठ कर्तव्य ।
उ०—१ खत्रीवट प्रगट करि जेत चाढी खवा, कुळ तिलक काढियो कोट लियो । सपूताचार पतिसाह सनमानियो, वाळनै पोकरन अक वळियो ।—नरहरदास बारहठ
उ० —२ बारठ केसरसिंघ सू, अवखी 'मोनग साह' । खत्रि सपूताचार रो, था हूता निरवाह ।—रा. रू.
उ०—३ लाख वारी सीसोद करगा थारा झोक लागै, सपूताचार री विद्या अपारा साजद्र । छाजै भारी दूजा मारा सत्रा वंदूक छोगो, राजै तीरदाजा छोगो सरा रा राजद्र ।
—महाराजाधिराज माधोसिंह जी रो गीत
सपूती–स स्त्री.—१ सपूत होने की अवस्था या भाव ।
उ०—१ मात पिछाणै उदर मझ, 'पता' सपूती पाय । पिता पिछांणै पाळणै, इण सुत अजस आय ।—जेतदान वारहठ
उ०—२ इण ग्रंथ मैं छट्ठो रासि पहली निरमाण हुवो जिकण मैं भी प्रसग पाइ कुमार चूडा री सपूती विसेस जणाई ।—व. भा.
उ०—३ अर निदाघ काळ रा पवन रै प्रमाण सपूती री सुजस चौतरफ ही चलायो ।—व. भा
उ०—४ लेवती ठेकाण वाजी सै घू पयाळ लावी, वेंनतेय खसै वेग वणै न विचार । क्रामती सपूती लीधा कोळूमड क्रीत काज, ओपै करा परापरी बुध रो आचार । —वादरदान दधवाडियो
२ वह स्त्री जिसके पुत्र सपूत हों ।
उ०—१ गोरी ऐ सुसरैजी लगाया म्हारा पेड, सासू सपूती म्हानै सींचियो ।—लो गी
उ०—२ पीळो तो ओढ म्हारी जच्चा महला पधारी जी, तो कोई है सपूती नीजर लगाई गाढा मारुजी ।—लों. गी
रू भे.—सुपूती ।
सपूतीचार—देखो 'सपूताचार' (रू. भे)
उ०—अडियो बहै असमान सूं, इण ही भांत अभंग । 'तेज' सपूतीचार रो, आडो ई वळगो अग ।—तेजसिंह सादू
सपूर–क्रि. वि.—वलपूर्वक ।
उ०—सुण हुकम दौडिया महासूर, पाच दस वीस भीळगा सपूर ।
—सू प्र.
वि.—पूर्ण, पूरा, समस्त ।
उ०—सहनाय सुर विचि सोह, व्रति अच्छर लेत विमोह । सव सस्त्र संजुत सूर, पयदात भुड सपूर ।—रा. रू.

सपूरण—देखो 'सपूरण' (रू. भे.)
उ०—जिग हुवै सपूरण एम जाव, प्रतेस्ट वधै अति अप प्रताप ।
—सू. प्र.
सपेखणो, सपेखवो—देखो 'सप्रेखणो, सप्रेखवो' (रू. भे.)
सपेखणहार, हारो (हारी), सपेखणियो—वि० ।
सपेखिओड़ो, सपेखियोडो, सपेख्योडो—भू० का० कृ० ।
सपेखीजणो, सपेखीजवो—कर्म वा० ।
सपेखियोडो—देखो 'सप्रेखियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. सपेखियोडी)
सपेत—देखो 'सफेद' (रू. भे.)
उ०—१ मारू मजलसिया भला, घोटा भला कमेत । नारी तो निवळी भली, कपडो भलो सपेत ।—लो. गी.
उ०—२ उतग चग भीत चीत, मड चट मदरं । कळी सपेत जाणि नेत धार धम्मळागिर ।--गु. रू. व.
उ०—३ सुंदर वेल वणै सीगाळो, काळो तुरग सपेत करै ।
—भगतमाळ
उ०—४ झाली रो मुह उनर सपेत हुइ गयो । सो दूर जाय ऊभी रही ।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—५ तठा उपरायत गगेव नीवावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखा करै छै । कनूमल केसरिया हरी सवज सपताळू सोसनिया, नारगिया सपेत ।—रा. सा. स.
सपेती –देखो 'सफेदी' (रू. भे)
उ०—१ आपड़ै दाव मत देर ओट, चापडै आव समसेर चोट । वर हूर गरक कर जग वाज, आवती सपेती रग आज ।—वि. स.
उ०—२ जिकै सूग्वा अजरायल था, त्यारो तो रग लाल हुवण लागो । अर जिकै स्याणा काचा था, त्यारो रंग सपेती पकडण लागो ।—कुवरसी साखला री वारता
सपेतो—देखो 'सफेदो' (रू भे.)
उ०—म्हानी सी एक टोपसी, माहैं घाल्यो सपेतो । जतन घणा कर राखजो, नही तो पडैला रेतो ।—भि. द्र
सपेद—देखो 'सफेद' (रू. भे)
सपेरो–सं पु.—सर्प पकडने या पालने वाला, सपेरा ।
सपेलड़ो–वि (स्त्री. सपेलडी) सवमे पहले वाला, सर्वप्रथम ।
सपैलो–वि. (स्त्री. सपैली) सर्वप्रथम, सवसे पहला ।
सपोतरो–स. पु —१ सुपुत्र ।
२ वशज ।
उ०—सुजाणसिंघ रो पोतो राजसिंघ जिण सपोतरां रा ठिकाणा जूनिया महरू वगैरा केकड़ी री चमोळी सीमैं सुजाणसिंघोत जोधा ज्यारा मुहडा आगै आद खाप रा राठोड़ है ।—बा दा. ख्यात
सपोसय–वि.—पुष्ट ।
उ०—सरी सरी सपोसयं सुताळ मालकोसय । मिठास आस मजरो,

उ०—२ मुहकमसिंघ वळै मा'रांणौ, साह तणौ दळ थयौ सपांणौ। —रा. रू.

२ देखो 'पांण'।

सपाक-क्रि. वि.—जल्दी, शीघ्रता से।

उ०—पाधरौ मूठ माथै हाथ पड़यौ। चिणा मे खसोलियोड़ी नागी तरवार सपाक वारै निकाळी।—फुलवाड़ी

सं. स्त्री.—तेज़ी से प्रहार करने पर उत्पन्न ध्वनि।

उ०—पाधरौ हाथ मूठ माथै गियौ। सपाक करती वाढाली वारै काढी।—फुलवाड़ी

सपाकौ-स पु.—१ झटका।

उ०—१ अेक सपाका मैं बीनणी री माथौ कलम कर दियौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ कै इत्ता मैं थोरी नागी तरवार लेय हप्प करती री मांय वड़यौ। अेक ही सपाका मैं पिलग माथै पोढ्या वीदराजा री माथौ वाढ न्हाकियौ।—फुलवाड़ी

२ तरवार के प्रहार से उत्पन्न ध्वनि।

३ लाभप्रद, लाभदायक।

क्रि. प्र.—साझणौ।

सपाट-वि.—जो ऊबड़-खाबड़ न हो, जिसकी सतह पर कोई चीज उभरी, खड़ी या जमी हुई न हो समतल, बराबर।

उ०—खारी लालाणा सूं लगाय नै राखी तक पांच कोस री भुइ मैं फैल्योड़ी है। बिल्कुल सपाट तालर उडण खटली रै मैदान ज्हे जिसौ।—रातवासौ

सपाटौ-स पु. [स. सर्पण] १ चलने, उड़ने, दौड़ने आदि का वेग।

२ मस्त चाल या उससे उत्पन्न ध्वनि।

सपात-वि —पत्र सहित।

उ०—साह तणौ दळ दूत सपातां, विचित्र हुए मिळ वातोवाता। —रा. रू.

२ सुपात्र।

सपातौ-वि.—१ अधिकारी व्यक्ति।

उ०—प्राग तणौ कुळ लाज सपातौ, तुलछीदास अगन सम तातौ। —रा. रू.

२ रक्षा करने वाला, रक्षक।

सपापौ-वि.—पापी, दोषी।

सपाल्य, सपाल्यौ-वि [स. स+पालन्] १ सुरक्षा सहित, सुरक्षित।

२ बेरोकटोक, स्वतंत्र।

उ०—..... कोटि ध्वज लहलहइ जसु तणइ रूपइ कौ लूबहड सोना नौ मयूर ऊडइ, सा नवै फुलै राति विहाइ, सपाल्य सोना पहिरियइ .... ।—व. स.

सपाह-सं. पु. [सं. सुप्रभु] राजा, नृप।

उ०—सेखराव नूं मुळताण सपाहां, लडियौ साकळ जाळौ। पाछौ जिकौ आणियौ पूगळ, देवी थै दाढाळी।—बां. दा.

सपिंड-स. पु.—धर्म-शास्त्र के अनुसार वह व्यक्ति जो एक ही कुल का हो तथा एक ही पितरो को पिण्डदान करता हो।

सपिंडी-सं. स्त्री —किसी मृतक के सबंध मे किया जाने वाला वह कर्म जिसमे वह परिवारो के मृत प्राणियो के साथ पिण्डदान द्वारा मिलाया जाता है।

सपिंडीकरण-सं. पु. [स.] मृत रिश्तेदार के उद्देश्य के लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

सपिंडीस्राद्ध-स पु. [सं सपिंडीश्राद्ध] पिंडदान करते हुए श्राद्ध का एक प्रकार जिससे प्रेत पितृ योनि मे प्रवेश पाता है।

सपीड़, सपीड़ौ-स. पु. [अनु.] १ दौड़ने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

२ पीटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

क्रि. प्र —उडणौ।

वि — दर्द सहित, दर्दपूर्ण।

सपीटी, सपीठी-वि —चिकनी, मुलायम।

उ०—जाघडली मूमल री देवलियै रै थभ ज्यौं हाजी रे, साथड़ली सपीटी पीडी पातळी रगभीनी ए मूमल।—लो. गी.

२ मासल।

सपीठ-वि.—१ मजबूत

उ०—नाळ-काय सिर भूण, खूडिया भुज दौ भारी। पूठी-पेट सपीठ, नीम चक नाडा सारी।—दसदेव

२ समतल।

अल्पा,—सपीठी।

सपीठौ—देखो 'सपीठ' (अल्पा, रू. भे.)

सपुत, सपुतर, सपुत्र, सपूत-स. पु. [सं. सुपुत्र] १ वह पुत्र जो आज्ञाकारी हो।

उ०—१ पछै कह्यौ—'भाटी च्यार बूढा म्हा कनै मेलौ, राज थै भोगवौ। हू तौ इण वात गाढौ राजी छू। म्हारै थै सपूत छौ। लूणकरण करमसी वै कपूत छै, सु परा गया। वळाय चूकी।—नैणसी

उ०—२ सपूत हुवै सो तो पिण माता रा यत्न करै अनै कपूत हुवै तै ऊधा अंवला बोलै।—मि. द्र.

२ भला, सरीफ।

उ०—पटवारी सपूत स्यांणौ, ओसथ्या ही ठीक-ठीक सुणा'र किसन जी आखा देई देवता नै धोक मारी।—दसदोख

३ वीर, योद्धा।

उ०—'अजब' सुजाव गुणा अदभूतां, समहर 'नाथौ' धुजा सपूतां। वदौ दनावत वावै सूरा, हेवै दळै वरावण हूरां।—रा. रू.

त्रि.—१ योग्य, बुद्धिमान, समझदार।

उ०—'राव जी सूं कहौ, भूडा दीसस्यौ। राठोड़ां सूं वीहता कितराइक दिन रहस्यौ? हूं मोहिल परणीस। ताहरां राव कासूं

उ०—सप्तपुरी सिरताजं, कन अपवरग हूत समकारण । उत्तम धाम अजोध्या, ओपै नाम ग्राम पुर ऊपर ।—रा. रू.

रू. भे.—पुरसपत, पुरीसपत, सपतपुरी, सातपुरी ।

सप्तभुवन—देखो 'सातलोक'

सप्तभोमियौ–वि.—सात मंजिल वाला, सप्तखंड का ।

उ०—सप्तभोमिया वणिया आवास, नारी मिली तरुणी बहु तास । —जयवांणी

सप्तम–वि —सातवां ।

उ०—पहली लाखैरी सहर रै समीप गोबघरै निमित्त ववावदा थी चलाइ दिल्ली रा अधीस सप्तम पातसाह नासुरुद्दीन महमूद रा भडा नू भाजि चमूरा मालिक मुम्तुफाअली नू मारि आपरा पिता मह रो पितामह हड्डाधिराज कोल्हण खेत पडियो ।—व भा.

रू. भे.—सत्तम, सपतम ।

सप्तमात्रका, सप्तमात्रिका–स स्त्री —१ देखो 'मात्रका'

२ देखो 'माया'

सप्तमी–स स्त्री. [स] मास के किसी पक्ष की सातवी तिथि ।

उ०—देवी सप्तमी अस्टमी नोम नूजा, देवी चौथ चौदस्स पूनम पूजा ।—देवि.

रू. भे.—सत्तमी, सपतमी, सपतम्मी ।

सप्तमुख–स पु. [स] यज्ञ, हवन । (अ मा.)

सप्तमौं–वि (स्त्री. सप्तमी) जो क्रम मे छ के बाद आता हो, सातवा ।

सप्तरथा–स स्त्री. [स] कैकयवशीय कन्या जो सत्यवादी हरिश्चन्द्र की माता व सूर्यवशीय राजा सत्यव्रत की पत्नी थी ।

सप्तरसि, सप्तरसी–स. पु. [स. सप्तर्षि] १ सात ऋषियो का समूह—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि । महाभारत मे इनके नाम इस प्रकार मिलते हैं—मरिचि, अत्रि, अगिरा पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वशिष्ठ ।

२ उत्तरी ध्रुव के सात तारो के समूह का नाम ।

रू. भे —सपतरिख, सपतरिखी, सपतरिसी, सप्तरिसी ।

सप्तरसिकुंड–स. पु [सं सप्तर्षिकुण्ड] कुरुक्षेत्र मे स्थित एक कुण्ड ।

सप्तराव–स पु [स] गरुड की प्रमुख सन्तानो मे से एक ।

सप्तरिसी—देखो 'सप्तरसि' (रू भे.)

सप्तवध्रि–स. पु [स. सप्तवधृ] प्रसिद्ध ऋषि का नाम ।

सप्तवाहण, सप्तवाहन–स पु [स. सप्तवाहन] सात घोडो वाले या सातमुखो के घोडे वाले भगवान् सूर्य ।

सप्तसती–स. स्त्री. [स. सप्तशती] सात सौ पदो का समूह ।

सप्तसप्तमी–स स्त्री. [स.] वार आदि के योग से माघ शुक्ला सप्तमी के भेद—जया, विजया, महाजया, जयती, अपराजिता, नदा व भद्रा ।

सप्तसागरदान–स. पु. [स. सप्तसागरदान] सात पात्रो मे घी, दूध, मधु, दही आदि रखकर ब्राह्मणो को देने का एक दान ।

सप्तसिंधु–स. स्त्री. [स.] सात नदियो का समूह जो शिव जटा मे गिरते ही गगा के सात भागो से बनी थी ।

सप्तसूरय–सं. पु [स. सप्तसूर्य] सात ग्रहो का एक समूह विशेष ।

सप्तसुर, सप्तस्वर–स पु. [स सप्तस्वर] सगीत के सात स्वर—सा, रे ग, म, प, ध, नि ।

उ०—१ सप्तसुरन मुरली बजी, कहू कालिंदी के तीर । स्रवण सुणत सुध ना रही, मेरी कित गागर कित चीर ।—मीरा

उ०—२ जिस वगत वेगाहवाज गुणी जगू ने मुह का अलाप किया । सप्तसुर तीन ग्राम इकवीस मूरछना अस्ट ताल गुनचास कोटि तानू सजुगति छ राग छतीस रागणी का भेदग जिनूं ने वगत प्रमाण उचार कियै । —सू. प्र.

रू भे.—सपतसुर ।

सप्तात्मा–स. पु. [स.] ब्रह्मा का नामान्तर ।

सप्ताळू —देखो 'सपताळू' (रू भे)

सप्तास, सप्तासव, सप्तास्व–स. पु. [सं. सप्ताश्वः] १ सूर्य, सूरज ।

२ रैवत मन्वन्तर के एक सप्तर्षि का नाम ।

३ सूर्य के रथ के सात घोडो का समूह, मतान्तर से सूर्य भगवान् का सात मुखो वाला घोडा ।

रू भे —सपतास, सपतासव ।

सप्ताह–स. पु. [स. सप्त+अहन्] १ सात दिनो की अवधि, हफ्ता ।

२ कोई एसा कृत्य या अनुष्ठान जो सात दिन तक चलता रहे ।

क्रि प्र.—उठणो, चालणो, बैठणो, व्हैणो ।

सप्तैधा–सं पु [स.] भगवान् विष्णु का नाम ।

सप्पणी—देखो 'सरपणी' (रू भे)

उ०—चलण सहाई धर्म्म, थिर सढाण अधम्म, अवगाहै पूरण गलणं नभ पुग्गळ धम्म । समया वलिय महुत्त दीह वख मास नें साल, पल्योपम सागर उम्सप्पणी सप्पणी काल ।—वृ स्त.

सप्पनपाट, सप्पमपाट–वि.—१ साफ, समतल ।

२ नाश, सहार ।

३ दरिद्र, निर्धन ।

४ मूर्ख, अज्ञानी ।

सप्रद–स. पु. [स 'क्षिप्र] वेग । (अ मा)

क्रि. वि —शीघ्र, जल्दी ।

सप्रवीत–स पु —एक वर्णिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे प्रथम तीन रगण पश्चात् गुरु लघु होता है । (ल पि)

वि —१ पवित्र, उत्तम ।

२ श्रेष्ठ ।

सप्रस–स. पु.—सूर्य, सूरज । (अ. मा, ना. मा)

सप्रसन–वि.—खुश, प्रसन्न ।

सप्राण, सप्राणो–वि. [स सप्राण] बलवान, शक्तिशालो ।

उ०—१ साम धरम्मी साम भुज, साम सनाह सप्राण । साथी

गरी गरी सगुज्जरी ।—रा. रू.

सपोड़ो–स. पु.—१ घोडा, अश्व ।

२ गधा ।

३ खच्चर, टट्टू ।

सपोचो–वि. (स्त्री. सपोची) १ शक्तिशाली ।

२ साहसी ।

३ हिम्मत वाला, सामर्थ्यवान ।

सप्त–वि. [सं.] सात ।

उ०—देवी जाळधरी सप्त दीपं, देवी कदरं सखरं वाव कूपं ।
—देवि

रू. भे.—सपत, सपत्त ।

सप्तक–स. पु. [स] १ सगीत के अन्तर्गत सात स्वरो का समूह ।

२ सात वस्तुओ का समूह ।

सप्तकी–सं. स्त्री. [स.] १ स्त्री की करधनी ।

२ सात लडो वाली करधनी ।

सप्तकेतु–स पु. [सं.] सप्तर्षियो मे से एक सप्तर्षि का नाम ।

सप्तकोसी–स. स्त्री. [सं. सप्तकोशी] नैपाल की एक नदी जो हिमालय पर्वत की एवरेस्ट चोटी के पश्चिम से निकलती है ।

वि. वि.—इसमे सात नदियो का समूह है यथा—मिलमूची, भोटे-कोशी, ताबाकोशी, लिखू, दूधकोशी, अरुण और तमोर या तोमर । उक्त सातो नदियो के संगम से बनने के कारण इसका नाम सप्त-कोशी पडा है ।

सप्तगंगा–सं. स्त्री. [स.] एक पुण्यस्थल का नाम जहाँ स्वर्ग प्राप्ति हेतु देवताओ आदि की पूजा की जाती है ।

सप्तगोदावर–स. पु. [स.] एक पुण्यस्थल का नाम ।

सप्तजनाश्रम–सं. पु. [स. सप्तजनाश्रम] वह पुण्य स्थल जहाँ सप्तजन नामक सात ऋषियो ने पानी के अन्दर शीर्षासन पर तपस्या कर स्वर्ग प्राप्त किया था ।

सप्तजित–सं. पु. [स.] कश्यप एवं दनु के पुत्रो मे से एक पुत्र, दानव ।

सप्तजिह्व, सप्तजिह्वा–स स्त्री. [स] १ अग्नि की सात जिह्वाएँ ।

वि. वि.—सातो जिह्वाओ के नाम निम्न हैं ।—
काली कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगनी और विश्वरुचि ।

२ उक्त सात जिह्वाओ वाली अग्नि ।

सप्ततंतु–स. पु. [स सप्ततंतुः] यज्ञ, हवन । (अ. मा.)

रू भे.—सपततंतु, सपथतंतु ।

सप्ततंत्री–सं स्त्री. [सं.] सात तारो वाला वीणा ।

सप्तदीप–स. पु.—पृथ्वी के सात बडे व मुख्य विभाग । (पौराणिक)

उक्त सात विभागो के नाम व विवरण निम्नलिखित हैं—

(१) जबूद्वीप—यह आठ लाख मील चौडा है तथा इतने ही चौड़े क्षीरसागर से घिरा हुआ है । भारत इसी द्वीप में स्थित है ।

(२) प्लक्षद्वीप—यह सोलह लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौडे इक्षुरस से वेष्टित है ।

(३) शालभक्तिद्वीप—यह बत्तीस लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही सुरोद से घिरा हुआ ।

(४) कुसद्वीप—यह चौसठ लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौड़े घृतसागर से घिरा हुआ है ।

(५) क्रौंचद्वीप—यह एक करोड़ अट्ठाइस लाख मील चौड़ा है व इतने ही चौडे क्षीरसागर से घिरा हुआ है ।

(६) शाकद्वीप—यह दो करोड छप्पन लाख मील चौड़ा है तथा इतने ही चौडे दधिमण्डोद से घिरा हुआ है ।

(७) पुष्करद्वीप—यह पाँच करोड़ बारह लाख मील चौडा है व इतने ही चौडे शुद्ध जलोद से घिरा हुआ है ।

उपर्युक्त प्रत्येक द्वीप के अधिपति ने अपने पुत्रो के नाम पर द्वीप को अलग-अलग खण्डो या देशो मे विभाजित किया ।

रू भे.—सपतदीप ।

सप्तद्वीपा–स. स्त्री. [स.] पृथ्वी का नाम ।

सप्तधातु–स. पु —१ शरीर के सात सयोजक द्रव्य—रक्त, पित्त, माँस, वसा, मज्जा, अस्थि और वीर्य ।

२ सात प्रकार के खनिज पदार्थ—सोना, चाँदी, ताबा, लोहा, सीसा, वग और जस्ता ।

सप्तधान्य–स. पु [स.] सात-नाज जो पूजा के काम आता है ।

सप्तनाग–स. पु. [स.] सात नागो के समूह का नाम ।

वि. वि.—उक्त समूह मे अनत, कर्क, महापद्म, पदम, शंख एवं कुलिक नाग सम्मिलित हैं ।

सप्तनाडीचक्र–स. पु —वर्षा के आगमन की सूचना देने वाला वह सात टेढी रेखाओ का चक्र जिसमे सब नक्षत्रो के नाम भरे रहते हैं ।
(ज्योतिष)

सप्तपदी–स स्त्री. [स] हिंदुओ के विवाह मे वर व वधू के द्वारा अग्नि के सात परिकमा देने की रीति या रश्म तथा उसी समय वर वधू द्वारा परस्पर प्रतिज्ञा के पढे जाने वाले सात पद ।

उ०—अर सप्तपदी रं अनंतर दान री उदक जामाता पाणि मैं लेर पिसाच राज रै काज स्वरग रो द्वार खुलायो ।—व. भा.

रू भे —सतपदी, सतफेरा ।

सप्तपदीपूजन, सप्तपदीपूजा–स. पु.—विवाह के अवसर पर होने वाला एक पूजन विशेष ।

स. पु.—वास । (ना मा.)

सप्तपरव, सप्तपाव–स. पु [स. सप्तपर्वन्] बास । (नां. मा.)

सप्तपाताळ–सं पु.—पृथ्वी के नीचे के सात लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल ।

सप्तपुरी–स. स्त्री.—सात पवित्र तीर्थ स्थान—अयोध्या, मथुरा, हरि-द्वार, काशी, काची, उज्जैन और द्वारिका ।

२ उत्तीर्ण ।
३ पूर्ण ।
४ फलयुक्त, फलवाला ।
उ०—तरवर नमे तिकोज, साखि फल फूलै सफळ ।—ध व. ग्र
५ फलने वाला, बढने वाला ।
६ धारदार, नुकीला (छुरी, तलवार आदि) ।
७ आनद पूर्वक ।
उ०—न मरी सु प्रबळ सबसो नियति, दिन किताक अतर दिया । सह विप्र वळै विलसै सफळ, कांम वयस जुव्वन किया ।—वं. भा
रू. भे.—सुफळ ।

सफळणो, सफळबो—देखो 'सफलणो, सफलबो' (रू. भे.)
सफळणहार, हारो (हारी), सफळणियो—वि० ।
सफळिश्रोडो, सफळियोडो, सफळ्योडो —भू० का० कृ० ।
सफळीजणो सफळीजबो—भाव वा० ।

सफलणो, सफलबो–क्रि. अ —सफल होना, सफलीभूत होना ।
उ०—राणी हे सखि राणी हे अति रंढाल, घरणी हे सखि घरणी मनहरणी वरी जी । मननी हे सखि मननी हे पूगी आस, सफली हे सखि सफली परतग्या करीजी ।—प. च. चौ.
सफलणहार, हारो (हारी), सफलणियो—वि० ।
सफलिश्रोडो, सफलियोडो, सफल्योड़ो —भू० का० कृ० ।
सफलीजणो, सफलीजबो—भाव वा० ।

सफळता–स. स्त्री —१ सफल होने की अवस्था या भाव ।
२ पूर्णता ।

सफळाइग्यारस, सफळाएकादसी–स. स्त्री. [स. सफलाएकादशी] पोप मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

सफळियोडो, सफलियोड़ो–भू. का. कृ —सफल या सफलीभूत हुवा हुआ ।
(स्त्री सफळियोड़ी, सफलियोडी)

सफळी, सफळीभूत–वि.—जिसने सफलता हासिल की हो, सफलीभूत ।

सफळौ, सफलो —देखो 'सफळ' (रू. भे)
उ०—१ खोडउहउं तउ डाभिज्यउ, वंधियउ भूख मरूह । जाउ ढोला रइ सासरइ, सफळा मूग चरूंह ।—ढो. मा.
उ०—२ वधव भव सफलो कियो रे, तोडया मोह ना फंद । हू पापण किम छूट सूं रे, इम बेनड करै आक्रदो रे ।—जयवाणी
उ०—३ स्रीयुग प्रधान यतीस्वरु, देखता ही हुवै सफलो दीह । नित विजयहरख वछित दीयै, धरि आवै हो गावै धरमसीह ।
—ध. व ग्र.

सफा–वि.—बिलकुल ।
उ०—१ सफा कूड बोलै नकटा, वै थनै यूं ई चिडावै ।
—अमरचूनडी
उ०—२ ए मा ! मास्तर रै तो डाढी मूछ ई कोनी सफा टाबर दृज दीसै ।—अमरचूंनडी
उ०—३ बाई हाल मादी है भाई, वा सफा ठीक नी व्है जितरै उणनै सफाखांना सूं छुट्टी मिळै कोनी ।—अमरचूनडी
२ पवित्र, निर्मल ।
३ साफ, स्पष्ट ।
४ साफ, स्वच्छ ।
५ चिकना, बराबर ।
६ खाली, रिक्त ।
७ स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती ।

सफाई–स. स्त्री.—१ स्वच्छता, निर्मलता ।
उ०—म्हैं कह्यो देग भारू, यू सफाई सू रैवणो, जिणनू बाई थारो घणो लाड रातैला ।—अमर चूनडी
२ बिलकुल, कतई ।
३ मैल या कूडा-करकट हटाने की क्रिया ।
४ कपट या कुटिलता का अभाव ।
५ स्पष्टता ।
६ माफ होने की अवस्था या भाव ।

सफाखांनो, सफाखानो–सं. पु. [अ. शफा + फा. खाना] चिकित्सालय, अस्पताल ।
उ०—१ बाई हाल मादी है भाई, वा सफा ठीक नी व्है जितरै उणनै सफाखांना सू छुट्टी मिळै कोनी ।—अमर चूनडी
उ०—२ सफाखांनै गियां जोग री बात अैडी बणी कै म्हनै खासो मोडो व्हैगो । – फुलवाडी

सफाचट–वि.—१ एकदम स्वच्छ, बिलकुल साफ ।
उ० – आभो सफाचट टाटिया री माथो व्है जिसो ।—रातवासो
२ बिलकुल, खाली ।
३ स्निग्ध, चिकना ।
४ समतल, सपाट ।
५ जिसका कुछ भी अश शेष न रहा हो ।
क्रि प्र.—करणो, व्हेणो, होणो ।

सफायो–स. पु.—१ नाश, सहार ।
उ० —हनुमत दुसटा रो करदै सफायो रे, म्हारो हित करवा नै ।
—गी. रा.
२ खतम समाप्त ।

सफीट, सफीठ–वि —साफ, चिकना ।
उ० – १ थूक गिटता पूछयो—तो पै'ला थारो माथो साव चायलो हो । हथाळी रै उनमान सफीट ।—फुलवाडी
उ०—२ आछी खुटाई । मीडका अर ऊंदरा कुदावण री सफीट ठोड रो जवरो पोलाळो करवायो । – फुलवाडी
उ०—३ मिन्नी वानै समभाइस करी । आ अेक चपटी चीज व्है। बिलकुल सफीट, गजब री सफीट, कमाल री सफीट ।—फुलवाडी

सुभटा सीम सुज, भीम तणौ इंद्रभाण ।—रा. रू.

उ०—२ सुणौं चलायौ पूत सप्रांणौ, अकबर गजसि कौ आपांणौ ।
—रा. रू.

सप्रीत-वि.—१ सस्नेह, प्रेमसहित, सप्रेम ।

उ०—सात हजारी साम तो, जाको नाम 'अजीत । दाखो फेर विरादरी, सह आदरी सप्रीत ।—रा. रू

२ हर्ष, आनद, खुशी ।

उ०—सीयाळै पाधारिया, गढ महाराज 'अजीत' । अवतारी मिळियौ 'अभौ', सूरज तेज सप्रीत ।—रा. रू.

सप्रेखणौ, सप्रेखबौ—क्रि. स [स. सप्रेक्षणम्] देखना ।

उ०—मिळ कूरम सामुहै, पेख सुख लहै अपपर । पधरायौ तोरण सप्रेख, दुति जेम दिनकर ।—रा. रू.

२ निरीक्षण करना ।

सप्रेखणहार, हारौ (हारी), सप्रेखणियौ—वि० ।

सप्रेखिग्रोड़ौ, सप्रेखियोड़ौ, सप्रेख्योडौ—भू० का० कृ० ।

सप्रेखीजणौ, सप्रेखीजबौ—कर्म वा० ।

सपेखणौ, सपेखबौ—रू० भे० ।

सप्रेखियोडौ-भू का. कृ.—१ देखा हुआ. २ निरीक्षण किया हुआ । (स्त्री. सप्रेखियोडी)

सफ-स पु.—पक्ति, कतार ।

उ०—समूह सेन असख सफा, त्रिग मुज्झ मंझली । मल्हपति फौजा मुहर मेंगल, सूड डोहे सिंघळी ।—गु रू. बं.

[स. सफः] खुर, टाप । (डि. को.)

उ०—हय सफ वज्र हरगिर खिज्ज, खिवै खुरतार मनो घन विज्ज ।
—ला. रा.

सफक-स. स्त्री. [अ. शफक] सूर्योदय एव सूर्यास्त काल मे क्षितिज पर दृष्टिगोचर होने वाली लाली ।

सफकत-स स्त्री [अ शफकत] १ अनुग्रह, मेहरवानी ।

२ प्रेम, मुहव्वत ।

सफटिक, सफटीक—देखो 'स्फटिक' (रू भे)

सफताळू—देखो 'सपताळू' (रू भे.)

सफर-वि.—भयंकर, घोर ।

सं. पु. [अ.] १ इस्लामी दूसरा महीना ।

स. स्त्री.—२ यात्रा, प्रस्थान ।

३ देखो 'सफरी' (रू भे) (अ. मा; ह. ना. मा.)

उ०—सफर चक्र भमर सावळ धजर वेल सज, पमग जुध मेळ घर उमग पसरा । अभनमौ 'गजण' खळ खहण घण ऊभळै, 'अजण' तण महण रण वहण असुरा ।—पीथौ सादू

सफरजग-स पु.—१ भयकर युद्ध, घोर सग्राम ।

उ०—१ आप रखी रा वरदायक हुता । सो मछ री दया वास्तै घणा सेहर रा लोक मछ ऊपरा तरवारिया वाढिआ । सारा ही नै लोह पाण हारविआ । महा सफरजंग कीधौ । आप रै पण घणा लोह लागा । पण फतै पाई ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ तकण ऊपरा हेकण दीहाडे सिधराय जैसिंघ रौ केडायत सोलकी अजवसीह खडै ऊपर आयौ । तेण दीहाड़ै अजबसिंह रा आगड़िआ मारिआ हुता । तकण रै आटै, तदी महा सफरजग हुआ । नगराज काम आयौ ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ मुगल वादशाहो के समय मे प्रचलित होने वाला शतरज से मिलता-जुलता खेल विशेष ।

वि. वि.—शतरज में जहां प्रत्येक पक्ति मे ८-८ घर के हिसाब से कुल ६४ घर होते हैं, वहा पर सफरजग मे १६-१६ के हिसाब से कुल २५६ घर होते हैं । शतरंज मे वादशाह, वजीर, हाथी, घोडे ऊट और पैदल रुपे होते हैं, वहां सफरजग मे उपरोक्त रुपो के अतिरिक्त हुडदग और हुडदगी दो प्रकार के रुपे विशेष होते हैं ।

सफरनांमौ-स. पु.—वह पुस्तक जिसमे किसी यात्रा के सस्मरणो का वर्णन हो ।

सफरा—देखो 'सिप्रा' (रू. भे) (अ. मा.)

उ०—पिंड री होती प्रतीत, साखधडै जाणी सरव । इण घर आई-ज रीत, 'दुरगौ' ई सफरा दागियौ ।—ठाकुर करणसिंघ

सफरारौ-स पु —खिला-पिला कर वलि के निमित्त मोटा ताजा किया हुआ वलि का वकरा ।

उ०—धर लेवण वीरम घरै, बकवाद वधारा । खाधा खोसै खाजरू, साऊ सफरारा ।—वी. मा

रू भे.—सफरौ ।

सफरिम-सं पु —वीर, वहादुर ।

उ०—सेन सनाह वीटियौ सफरिम, सयल सपेखै करै सराह । भाण जिसौ गज फौज भयकर, नरपाळ दे जिसौ नरनाह ।

—चत्रभुज नरहरदासौत री गीत

सफरी-स स्त्री. [अ. शफरी] मछली । (अ मा, ह. ना मा.)

उ०—सफरी पकडण रो सातरौ, वैठो ढव वुगलाह । कथा वुरी करवा तणौ, चोखौ ढब चुगलाह ।—बा. दा.

रू भे.—सफर, सुफर ।

सफरीपति-सं. पु.—मगरमच्छ ।

सफरौ—देखो 'सफरारौ' (रू भे.)

सफळ, सफल-स. पु.—शस्त्र ।

वि [स. सफल] १ सार्थक, कामयाव ।

उ०—१ देव हरी हर दिखण मैं, पूजे परम प्रवीत । कीधौ आछौ 'करन' रा, जनम सफळ जगजीत ।—बा. दा.

उ०—२ सिव सकति तणी वेलि वरणविसु, सफळ जनम करिवा ससार ।—महादेव पारवती री वेलि

सबकणो, सबकवो-क्रि. अ —धूप या गर्म जगह पर बंधा रहने से पशु का रोग ग्रस्त होना।

सबकणहार, हारो (हारी), सबकणियो —वि०।

सबकिग्रोडो, सबकियोडो, सबक्योड़ो—भू० का० कृ०।

सबकीजणो, सबकीजवो—भाव वा०।

सबकियोडो-भू. का. कृ.—किसी गर्म स्थान या धूप में बंधा रहने से रोगग्रस्त हुवा हुग्रा। (पशु)

(स्त्री. सबकियोडी)

सबळो, सबरो,-वि —१ सरल, आसान।

२ छोटा।

३ उपयुक्त, अनुकूल।

४ सुगम।

५ ग्राचरणशील।

६ समझदार, बुद्धिमान।

सबड़, सबड, सबड़क, सुबड़क, सबड़को, सुबड़को-स. पु. [अनु] १ किसी गाढे तरल पदार्थ को हाथ से खाने या चाटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष।

ज्यू—राब रोटी सू सबड सबड ग्रोसले।

उ०—खदबद बोलै खीचड़ो, सबड़क बोलै राबड़ी।—लो गी.

२ हाथ से किसी गाढे तरल पदार्थ को एक ही बार में खाई जा सकने वाली मात्रा।

उ०—१ ग्रोरा नैं दही री सबड़को, कोई म्हानै दोय र च्यार। ग्रोरा नैं छाछ री टोकसी, कोई म्हानै टोकण च्यार।—लो गी.

उ०—२ ताती ताती खिचड़ी, ऊपर गावो घी। एक सबड़को ऐड़ो लियो, जाणै म्हारो जी।—लो गी.

उ०—३ खीर री एक सबड़को लेयनैं जडाव मासी ग्रौगणिया मार्थ चिड़ती थकी बोली।—फुलवाडी

३ किसी गाढे तरल पदार्थ को हाथ से खाने या चाटने की क्रिया।

उ०—१ जद म्है थाळ लगाय, खीर ग्रक पुरसी सा जी पुरसी सा। थनें लियो सबड़को मार, राब ग्रा मीठी सा जी मीठी सा।

—लो. गी

उ०—२ सुद तो घी रा सबड़का मारै ग्रर म्हारै सामी लूखी खीचड़ी सिरकाय दी।—फुलवाडी

सबछी-स. स्त्री. [स स+वत्सा] वह गाय जिसके साथ बछिया हो, बछडे सहित।

उ०—दीधो सोनो सोलहो, दीधी सुरह सबछी गाई।—बी. दे

सबज-वि [फा सब्ज] १ हरा। (डि को.)

उ०—१ फौजा डेरा फाविया, दीसै हद्द विहद्द। सबज वरना स्याह ग्रन, लाल सपेत जरद्द।—गु. रू. ब.

उ०—२ सेत सूग्रा, सबज सूग्रा, सारों मैना कोइल खातुर'''''।

—रा सा स

उ०—१ [illegible] सबज [illegible] मारणिया [illegible]।—रा. सा. स.

२ [illegible]।

स. पु.—१ एक प्रकार के रंग विशेष का घोडा।

उ०—[illegible] सुरंग [illegible], [illegible] कुमैत। [illegible] सबज [illegible]।—द. व.

सं. स्त्री.—२ भांग, भंग।

रू. भे.—सबजो, सबज, सब्ज।

सबजी—देखो 'सब्जी' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सबजी [illegible]। [illegible]।—बां. दा.

सबजीमंडी—देखो 'सब्जीमंडी' (रू. भे.)

सबजो—देखो 'सबज' (रू. भे.)

सबज्ज—देखो 'सबज' (रू. भे.)

उ०—[illegible] सबज्ज [illegible]।

—गु. रू. ब.

सबजीगर—देखो 'सब्जीगर' (रू. भे.)

सबति सबती—देखो 'सवती' (रू. भे.) (ध. मा.)

सबद-स.पु. [स. शब्द] किसी पदार्थ पर आघात करने या दोनों छोर खींच कर बांधी हुई रस्सी आदि को बीच में से पकड़ कर एक दम खींच छोडने से या किसी पदार्थ के टूटने फूटने से उत्पन्न ध्वनि, तरंग या कम्पन जो हमारे कान व श्रवणेन्द्रिय तक पहुंचती है, ग्रावाज। (ग्र. मा; डि. को, ह. नां. मा.)

उ०—१ धूधरा नगा भणणाट हुय धमाधम, धोंस रा नंद गड़-गड़ाट बाजै। नवीयां बीण झणणाट हुय नौबता, ग्रवण धर सबद गणणाट गाजै।—मेघराज बारहठ

उ०—२ गहद रवै दमगम नवगद वद निवारियो। हुग्रा ग्रतुल गुण सबद कै, गगमद जग गदगद।—वां. दा.

उ०—३ दम दम ढोल घूघरा दम दम, क्रम क्रम कदम कमाई। भांझर सबद पजन पद झम झम, रमझम रास रचाई।

—मे. म.

२ पशु-पक्षियों की बोली, ग्रावाज।

उ०—१ ऊबक सबद नचीत कर, डर कर तूं मत भाज। सादूळो खीजै सुणे, जळहर हुदो गाज।—बां. दा.

उ०—२ सिखर गिरा मोरा सबद नाच सरसाविया, पाविया जळ तरा मला पाली। भाविया उमड घणस्याम बोलि ग्रवध, ग्राविया नही घणस्याम ग्राली।—वां दा.

३ एक या ग्रधिक वर्णों के सयोग से कठ ग्रौर तालू ग्रादि के द्वारा उत्पन्न होने वाली स्वतंत्र व्यक्त ग्रौर सार्थक ध्वनि।

उ०—१ यो एक सबद ई नी बोल्यो, चुपचाप म्हारै लारै ग्रायग्यो।

सफील–स स्त्री —परकोटा, प्राचीर ।
उ०—१ जाडी किलै सफील, माय ज नर निबळा वसै । ढूंढौ ढहता ढील, रति न लागै राजिया ।—किरपाराम
उ०—२ केहक लथोब्रथ हुवा थका कटारिया सु सफीलां उपरा लोटरण कबूतर री नाई लोटता नजर आवै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
उ०—३ केहक गिरेबाज कबूतर री नाई गिरह खाता नै पळचर पखिया ज्यूं फडफडाता सफीलां सु धरती पडता पहली दोय दोय तीन तीन कटारिया लगावै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
२ दीवार ।

सफुब्बी–स स्त्री —बादशाह की लडकी, शाहजादी ।

सफूरति, सफूरती—देखो 'स्फूरति' (रू भे)
२ चचलपन ।

सफेत—देखो 'सफेद' (रू भे)
उ०—विरछा-वढ किरकाट विराजै, स्याह सफेत लाल रग साजै ।
—वर्षा विज्ञान

सफेद–वि [फा. सफेद] १ श्वेत ।
पर्याय.—अरजुरण, अवदात, गोर, धवल, धोळ, पाडुर, पाडू, बिसद, सित, सुकळ, सुचि, सेत ।
उ०—मोटी-मोटी आख्या सफेद-सफेद कोया मे नैनी-नैनी कीकिया गाला माथै आसूवा रा टेरा सूखोडा ।—अमर चूनडी
२ साफ, स्पष्ट ।
३ निष्प्रभ, कान्तिहीन, निस्तेज ।
४ जिस पर कुछ लिखा न हो, कोरा ।
५ साफ, स्वच्छ ।
रू. भे.—सपेत, सपेद, सफेत, सुपेत, सुपेद ।

सफेदअंजनी–स. पु —एक प्रकार का घोडा जिसके सम्पूर्ण शरीर पर एकरग होता है किन्तु बीच बीच मे सफेद धब्बे होते है ।

सफेदचदन–स. पु. [स. श्वेतचदन] श्वेत चदन । (अमरत)
रू. भे.—सुपेतचदन ।

सफेदपोस–वि [फा सफेद-पोश] स्वच्छ कपडे पहनने वाला ।

सफेदहाथी–सं. पु —भद्र जाति का हाथी जो पवित्र समझा जाता है ।

सफेदाई–स. स्त्री.—श्वेतता, सफेदी ।
रू भे.—सुपेदाई ।

सफेदी–स स्त्री —१ वृद्धावस्था, बुढापा ।
२ श्वेतता, धवलता ।
३ भय, आतक आदि के कारण रग के द्वारा पाण्डुरता पकडने की क्रिया ।
४ कान्तिहीनता, निष्तेजता ।
५ दीवार छत आदि को चूने के घोल से सफेद पोतने की क्रिया ।
रू. भे —सपेती, सुपेती, सुपेदी ।

सफेदौ–स. पु.—१ लोह, लकडी आदि पर रगाई के काम आने वाला जस्ते का चूर्ण । यह दवाईयो मे भी काम आता है ।
२ चप्पल जूते आदि बनाने के काम आने वाला सफेद चमडा ।
३ मकान की पुताई मे काम आने वाली सफेद मिट्टी ।
४ श्वेतप्रदर नामक स्त्री रोग मे योनि मार्ग से बहने वाला श्वेत रग का स्राव ।
५ जस्ते का चूर्ण या भस्म जो गुलाब जल मे घोट कर आँख मे आजते है, आँख की दवा विशेष ।
रू. भे —सपेतौ, सुपेदौ ।

सफै—१ आसूदगी, सम्पन्नता, वृद्धि ।
उ०—घररा राजस करै हा । कमाई मे सफै अर बरकत ही ।
—दसदोख
२ तन्दुरुस्ती ।

सफफळियौ–स पु.—हिंदवानी नामक फल का छोटा खड जिसका अवशिष्ट सार भाग दाँतो से खाते हैं ।

सबंगह—देखो 'सरवंगी' (रू. भे)
उ०—असरण-सरण अभग, व्रहम मुरारि सबगह । सकर पवन सकत्ति, अवनि भ्रम लच्छि अनगह ।—ह र.

सबध—देखो 'सबध' (रू भे.)
उ०—नही तौ जारण पिछारण जमार, नही तौ साख सबध ससार ।
—ह. र

सब–वि —१ समस्त, कुल ।
उ०—१ अखिल जगत मैं सकति अखारै, तै सब है अवतार तिहारै । चारत तूझ चरन कै चेरै, तिन मैं जन्म लियै बहु तेरै ।
—मे म.
उ०—२ अस्वीन चैत्र मास पख ऊजळ, थित सब सकति होत मडळ थळ । तान गान ततकार बजअन, ध्वान सिसर ततधन आनद्धन ।—मे. म.
उ० —३ पण सब सू छोटकी राणी रै हाल जापौ नी व्हियौ हो । उण वास्तै उण नै वारै राखी ।—फुलवाडी
२ अवधि, मात्रा, विस्तार आदि के विचार से जितना है वह कुल, सर्व ।
उ०—कागा केरी चाच ज्यू, चुगला केरी जीह । विसटा ज्यू परची बुरी, चूथै सब ही दीह ।—बा. दा.
स स्त्री. [फा शब] रात, रात्रि ।
रू भे.—सबै, सब्ब, सब्बा, सब्बी, सब्बै, सब्भ, सब्भै, सभ, सभी, सम्भ, सवि, सवै ।

सबक–स. पु. [फा] १ वह अश जो एक बार मे पढाया जा सके, पाठ ।
२ शिक्षा, नसीहत ।
क्रि प्र.—सीखणौ, देणौ, मिळणौ ।

रामा वदन वखाणै रामा, हाथ वखाणै वैर-हर।
—प्रथीराज राठौड

उ०—३ तोय न विरचै पछिया तरवर, डहै डील पर भजै डाळ।
सेवग राचै वाचै सबदी, पाळग किम विरचै 'विजपाळ'।
—ग्रासौ वारठ

२ यश, कीर्ति।

३ निर्गुण आराधकों का गेय पद, भजन।

उ०—१ साखी सबदी सीख कर, गावै सारी रात। आत्म तौ परच्या नही, करै विराणी वात।—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ ओउ सोउं सबदी की, तीन लोक लग सोय। एक सबद ररकार का, हरीया पार न कोय।—अनुभववाणी

४ राजस्थानी भाषा का गेयात्मक छद विशेष।

सबद्द—देखो 'सबद (रू भे.)

उ०—१ अभाए सबद्द बजै अप्रमाण, कळा सोर प्राण सवाण कवाण।—रा. रू.

उ०—२ घूघरी रोळ घटा सबद्द, मोखत्त पटै तळ जोड मद्द।
—गु रू. ब.

सबनीगर—वि —वह जो साबुन बनाता है, साबुन बनाने वाला।

उ०—ककट टोपा कट्टि कै, कटि जात अधाया। ज्यौ सबनीगर सब्बु मै, चहि तत्र चलाया।—व भा.

रू भे.—सबणीगर, सवणीगर।

सबब—स पु. [अ.] १ कारण, वजह, हेतु।

उ०—१ जद या बोली हू फलाणा गाम रा धणी री बेंन छू अर एक सबब सौ हौ।—गाम रा धणी री वात

उ०—२ सो कोई सबब सूं चुगला रा चित्त मैं खात पडी।
—नी. प्र

२ द्वार।

३ साधन।

सबबरात—स. स्त्री. [अ.] मुसलमानो का एक पवित्र त्योहार। इस दिन मुसलमान अपने पूर्वजो के उद्देश्य से गरीबो को भोजन, वस्त्र आदि दान मे देते हैं तथा दीपक जलाकर उत्सव मनाते हैं।

सबय—स. पु [स स+वयस] १ मित्र, दोस्त, सखा। (डि को.)

२ शिव।

३ हाथ।

४ जल।

५ मीमांसा शास्त्र के भाष्यकार।

६ पतिव्रता, सौभाग्यवती।

७ एक मलेच्छ जाति जो वशिष्ठ ऋषि की गाय के मल-मूत्र से उत्पन्न हुई थी। (डि को.)

सबर—देखो 'सब्र' (रू. भे.)

उ०—१ सिध साधक राखै सबर, सबर तजै मत मंद। सबर काज सुधरै सहू, साई सबर पसंद।—वा. दा.

उ०—२ छबर छबर आसू धर छिडकी, उर मैं सबर न आई। जबर पयाणै गौ जगपाळक, पाछी खबर न पाई।—ऊ. का.

उ०—३ सबर राख कुसमै समै, कासूं धवर करीस। खिण खिण लै जगची खबर, जबर सगत जगदीस।—वा दा.

सबरित—सं. पु. [स सर्वरत] श्रीकृष्ण, गोपाल। (अ. मा)

सबरी—सं. स्त्री. [स शबरी] श्रवणा नामक शबर जाति की स्त्री जो रामभक्त थी। (रामकथा)

२ शबर जाति की स्त्री।

रू. भे —सवरी।

सबळ—स. पु. [स. शबल] १ सुमेरू पर्वत। (ह. ना. मा.)

२ वायु, पवन। (अ. मा.)

३ घोडा, अश्व। (ना डि. को.)

४ बलराम, बलभद्र। (मि. बळवत)

५ भीम, वृकोदर। (मि किरमीर) (ह. ना मा)

६ भौत्य मनु के एक पुत्र का नाम।

७ कश्यप द्वारा कद्रू के गर्भ से उत्पन्न एक नाग का नाम।

८ दक्ष एव पाचजन्य की कन्या असिक्नी के हजार पुत्रो मे से एक।

९ घी, घृत। (ह ना. मा)

१० एक श्वान जो सरमा का पुत्र एवं यम वैवस्त्र का अनुचर था।

११ सप्तर्षियो मे से एक का नाम।

वि. (स्त्री. सबळा, सबळी) १ बलवान, शक्तिशाली। (डि. को)

उ०—१ विघन वार गिरधर सघर वाधियौ वीरारस, पह सुछळि सगह आलम सपेखै। मरण मगळ जिसौ जाणियौ मोट मनि, लाख दळ सबळ तिलमात लेखै।—गिरधरदास केसोदासोत रौ गीत

उ०—२ सबळ लूविया आणि दळ साहिपुर सावठा, वळोबळ वीर-रस भडा वसियौ। चळविचळ हुवै मत दुरग 'मोबत' चवै, कमळ मणि नाग जिम कमळ कसियौ।—महोबतसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—३ सुत 'जैत' अथाह लडै सबळां, खग वाह करै 'सुभसाह' खळा। धज सोभ विहारियदास धजा, गहतत हणै असवार गजा।
—सू. प्र.

२ पराक्रमी, वीर।

उ०—१ झळ क्रोध 'लखावत' क्रोध झळा, सबळा चमराळ हणै सबळा। भिड काज सुधारत भूप तणो, तदि 'जोध' लडै 'जगरूप' तणौ।—सू प्र.

उ०—२ सुत 'राम खत्रीवट काम सचै, रघुनाथ समाथ भराथ रचै। सुत सामत' मेछ हणै सबळा, कमधज्ज 'जवान' भयान कळा।
—सू. प्र.

उ०—३ हदडै खगि मेछ हका दखतौ, वधि सामळ 'ऊत' लडै 'वखतौ'। सुत 'जोग' भयाण हणै सबळां, खग झाट 'गुमान' अमान खळा।—सू प्र.

—अमरचूनडी

उ०—२ ससार मैं 'मा' सबद काई इतरो हल्को व्हैग्यो है के उणारा यू अपमान कियो जावै।—अमरचूंनडी

उ०—३ सोफी सबद सुणाय, चोर रंग देत विगाडै। बैरागी नै जगत, जगत नै भेख बिगाडै।—ऊ. का.

उ०—४ राजगरू तो काना मैं सबद पडणा री ई छूत पाळता। उण दिन चिंता रै कारण वे अजाण ई चेतो विसरग्या कह्यो—थैं ओछी जात वाळा आ मोटी बाता मैं नी समझो।—फुलवाडी

४ लिखा जाने वाला वर्ण जो किसी बात या भाव का बोधक हो, लफ्ज।

५ वचन।

उ०—जादमण आद करि भेट भणिया जठै, आपरा अठै परताप आछा। ऊगिया मदा सुप्रसन्न सबदा इसा, पूगिया भवण विसराम पाछा।—मे. म

पर्याय—आरव, आवाज, कुण, कुणत, कुणद, घुकार, घोख, घोर, घोस, टेर, धुनि, ध्रवान, ध्वान, नद, नाद, निनद, निनाद, निरावर, निसिमान, निहकुण, निहघोख, निरह्राद, पुकार, बिराव, रव, राव, रुत, रूण, सुर, सुनि, सोर, स्त्रवसार, स्वान ह्राद।

६ उपदेश।

उ०—१ हरीया पासो हाथ को, तोई न अपनै हाथि। सतगुर केरै सबद विन, मन किन कै नही हाथि।—अनुभववाणी

उ०—२ सतगुर वाह्या सबद-सर, सनमुख लगा आय। हरीया सुगरा चेतसी, निगुरा गम न काय।—अनुभववाणी

७ सुयश, कीर्ति।

८ निर्गुण सम्प्रदाय के साधु महात्माओ द्वारा रचित पद आदि।

उ०—प्रेमामगन रामरस पूरण, सागे सबद सुणावै। सनमुख हुय सरधा सूं सुमरण, सासो सास समावै।—ऊ. का.

९ छप्पय छद का ७१ वा भेद जिसमे १५२ लघु वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। इसका दूसरा नाम 'मुनी' भी हैं।

१० दो लघु के सगण के दूसरे भेद का नाम। (डि को)

रू. भे.—सद, सदि, सदै, सद्द, सद्य, सबद्द सब्द, सब्द्द, सवद, साद।

सबदगुर, सबदगुरु—स. पु. [स. शब्दगुरु] वह गुरु जिसके उपदेश से प्रभावित होकर व्यक्ति उसका शिष्य वन जाय (मा म.)

रू भे.—सब्दगुर, सब्दगुरु।

सबदग्रह—स. पु [स शब्दग्रह] शब्दो को ग्रहण करने वाला, कान। (डि. को.)

रू भे.—सब्दग्रह।

सबदबेध—देखो 'सबदवेधी' (रू भे.) (अ मा)

सबदबोध—सं. पु [स. शब्द+बोध] १ अक्षर-ज्ञान।

२ जबानी गवाही से प्राप्त होने वाला ज्ञान।

रू. भे —सब्दबोध।

सबदब्रह्म—स. पु. [स. शब्द+ब्रह्म] १ वेद।

२ सृष्टि की रचना करने वाला, ब्रह्म।

३ ओकार, प्रणव।

४ कुडलिनी से ऊपर उठने वाले नाद का वह रूप जो निरुपाधि दशा मे रहता है। (योगसाधना)

रू. भे.—सब्दब्रम।

सबदभेदी—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे)

सबदमहेसर, सबदमहेस्वर—सं पु. [स. शब्द+महेश्वर] शिव, महादेव।

रू. भे.—सब्दमहेसर, सब्दमहेस्वर।

सबदवेध, सबदवेधी—स. पु. [स. शब्दवेधी] १ अर्जुन। (अ. मा.)

२ दशरथ।

३ पृथ्वीराज चोहान।

वि.—शब्द की ध्वनि सुनकर निशाना मारने वाला।

रू भे.—सबदवेध, सबदभेदी, सबेदी, सब्दभेदी, सब्दवेधी, सब्द-वेधी।

सबदसकत, सबदसकति, सबदसकती, सबदसक्ति, सबदसगत, सबद-सगति, सबदसगती—स स्त्री. [स. सब्द+शक्ति] शब्द की वह शक्ति जो उसका अर्थ उद्घाटित करती है। यह तीन प्रकार की मानी गई है अभिधा, लक्षणा और व्यजना।

रू. भे —सब्दसक्ति।

सबदसाधन—सं. पु. [सं. शब्द+साधन] व्याकरण का वह अग जिसमे शब्दो की व्युत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदि का विवेचन किया गया हो।

रू. भे.—सब्दसाधन।

सबदसासतर, सबदसास्त्र—स पु. [सं. शब्दशास्त्र] वह शास्त्र जिसमे भाषा के विभिन्न अगो व रूपो का विवेचन किया जाता हो, व्याकरण।

रू. भे.—सब्दसासतर, सदब्सास्त्र।

सबदाडबर—स पु [सं शब्दाडवर] साधारण बात कहने के लिए जटिल एव क्लिष्ट शब्दो का प्रयोग, शब्द-जाल, शब्दो का आडम्बर।

रू. भे.—सब्दाडबर।

सबदालकार—स. पु. [स शब्दालकार] अलकारो के दो मुख्य भेदो मे से एक जिसमे शब्द व वर्णों का चमत्कार प्रधान होता है।

रू भे,—सब्दालंकार।

सबदावेधी—देखो 'सबदवेधी'

सबदी—स. पु.—१ कवि।

उ०—१ 'चूडा' हरा तुहारा चेला, बस छत्तीस वधतै वान। सुरा गुर गाढा गुर सबदी, महाराजा राया गुर मान।

—महाराजा मानसिंह

उ०—२ सरणाई सरण वखाणे सबदी, मनजोगी जीहा अमर

उ०—६ राव जोधाजी 'अजीत' नूं मार पाछा वळिया। मंडोवर पधारिया। बाई राजा 'अजीत' वासै सती हुई। हमैं राठौड़ां नैं मोहिलां माहोमाही सवळौ वैर पडियौ।—नैणसी

उ०—७ राठौड़ सवळा, मोहिलां री ठकुराई सवळी, पण भाई-वधै मेळ घणौ कांई नहीं।—नैणसी

उ०—८ पछै राणी भाणमती नैं राजा भोज पूछी आज तौ म्हारै एक सवळौ झगड़ौ आयौ है जणी री थें न्याव करौ।

—साहूकार री वात

उ०—९ वैसाख वदि १५ डेरौ वालरवैं। इण डेरै असवार २०० पाळा छै, नैं मेह सवळौ वूठौ तळाव मैं पाणी मास ८ री आयौ।

—नैणसी

उ०—१० देवगिरि 'अन्नै' जोगणिपुरा, सवळौ भारथ सूत्रियौ। महिराण महिक्कर मत्थता, च्यार मास विग्रह कियौ।—गु. रू. व.

उ०—११ पछै आपरी परधान हुतौ तिण सूं कहियौ—'एक तौ सवळौ सोच हुवौ।' तरै प्रधान बोलिया जो कासूं सोच सोच हुवौ।

—गु रू व.

(स्त्री सवळी)

सवाब-स. पु. [अ. सवाब] १ सत्कर्म करने पर परलोक मे मिलने वाला पुण्यफल।

उ०—१ ऊख गिरी घर ऊपरैं, यळ खाडामय आव। तूवा मीठम होय तौ, सूवा होय सवाव।—बां. दा

उ०—२ नीत रीत सूमां नहीं, सूमां नहीं सवाब। सूमां घरै सुगाळ मे, रधै रसोड़ै राव।—बां दा.

उ०—३ तद बादसाह फरमाइयौ जे आ न वणै तौ किण भात सवाब हज मक्का री मात्रा रौ पाऊ।—नी. प्र

[अ असबाब] १ सामान, सामग्री।

उ०—सारौ खोय सवाब, पछि फीटौ पावा पडयौ। निहुरा खाय नवाब, नारि छुडाई निठुसैं।—ला. रा

३ युद्ध सामग्री।

उ०—करहु वंध चतुरगनी, सीसा सोर सवाब। कल वनास उत-रहि कटक, यम दिय हुकम नवाब।—ला रा.

[अ. शबाव] ४ युवावस्था।

५ चढती जवानी।

६ युवावस्था का सौंदर्य।

७ सौन्दर्य।

८ वास्तविकता, हकीकत।

वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम।

२ पवित्र।

३ सुन्दर।

४ यथार्थ, सत्य।

५ वास्तविक।

६ दुरुस्त, ठीक।

रू. भे.—सवाब, सव्वाव, सबाव।

सवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे.)

सवाव—१ देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—हाथी घण घरा हीडळसी, 'सूर' हरा इसा सवाव। दूण पटा वदारा देसी, आप जिसा करसी अमराव।—केसरीसिंह बारहठ

२ देखो 'सवाब' (रू भे.)

उ०—सब मीरखान मम सुणउ जाव, हुय हुम्यार रह मिळ सवाव।

—शि. सु. रू.

सवासन-स. पु —डिंगल का एक छद विशेष जिसमें चार लघु एवं भगण या फिर क्रम से नगण जगण और लघु होते हैं।

सवाहुत्र-स पु. [स.] भुजा का कवच।

उ०—सजे ओपरा टोप सोभा सिंघाळी, जिकै भीडिया दस नागोद जाळी। सबाहुत्र ऊरुत्र जंघात्र संगी, चहै वस चौल्हा रहै एक रंगी।

—व भा.

सविका – देखो 'सिविका' (रू. भे.)

उ०—सजाई कीधी घणी, सविका करि वाहन। सैन्य साथि अति घणी, तैं चालवी राजन।—नलाख्यान

सवी—स. स्त्री. [अ. तसवीह] १ माला, हार।

उ०— सुत परताप टुक जोडै सिर, सुकरा गूंथी अजब सवी। रूण्ड-माळ उर ऊपर रुद्रचैं, फूलमाळ अद्भूत फवी।

—पत्तौ चूडावत री गीत

२ शक्ल, आकृति।

उ०—१ तरै छानैं छै विडा माहे दीठी, बाइजी रै वररी सवी दीसै छै, नाकरी डाडी, आख्या, निलाड डील रोमछर देखि सही कवर जी ही छै।—जगदेव पवार री वात

उ०—२ चाकर झाली नै आय नै कह्यौ, चारण नैं बाटी करनैं आपज्यो। तिसैं झाली मुखडा री सवी देख रोवण लागी। तरै मुखड़ै पूछियौ वेदल क्यूं हुवै।—जखडा मुखड़ा भाटी री वात

३ शोभा, सुन्दरता।

४ वक्षस्थल पर धारण करने का आभूषण विशेष।

५ तस्वीर, मूर्ति।

उ०—अर पछै आपरी सवी मगाय दीवी, जो इण री दरसण कर-ज्यो जतरै हू आऊ छूं।—कुवरसी साखला री वारता

६ देखो 'सिवि' (रू. भे.)

रू. भे.—सिव्र, सिवि।

सवीता—देखो 'सविता' (रू. भे)

सवील—स. स्त्री. —प्यासो को धमार्थ जल पिलाने का स्थान, प्याऊ।

सबुज्ज—स स्त्री.—बुर्जों सहित।

उ०—भिरै अभित्ति भित्ति की सबुज्ज के भवावनी। विना प्रस्वेद वित्तकी कुरोर हा कमावनी।—ऊ. का.

३ बडा, विशाल ।

उ०—१ कळळ माच दळ अकळ काठळ सबळ कूजरा, चचळ उछळ सरळ धसळ चाळौ । जवन दळ ऊपरा खिमै बिजळ ज्यंही, 'अभा' साबळ भळळ तूझ वाळौ ।—बखतौ खिड़ियौ

उ०—२ 'अभमल' जयचंद अोम, सबळ दळ लिया सकाजा । सहर नदी उपरास, मडे डेरा महाराजा ।—सू प्र.

४ भयंकर, भीषण ।

उ०—१ महाराज 'जैमाह' भारथ सबळ माडतै, जुड किया गज कमळ उलट जोया । निमख री ठौड सहर विचाळै निरतर, हमरकै जवाहर ढेर होया ।—दळपत सादू

उ०—२ ऐ ठाकुर भागेसर रै थांणौ झूंबिया । घणा मुगळ मारिया । सबळी वेढ हुई ।—राव मालदै री वात

५ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—१ साह तणा खूनी सबळ, आय वचै इण ठौड । ओ सातू अकलीम मे, चावौ गढ चितौड ।—बा दा

उ०—२ किलम उतराध दिखणाध दळ क्रोधता, छत्र धरण रोधता माण छीजा । कहर खूनी सबळ साल राखै कवण, वीर तौ बिना रायसाल बीजा ।—हुकमीचद खिड़ियौ

६ प्रचड ।

उ०—बस उजवाळ भुज भारी सारी बसू, भिडै ज्या अतुळ अन चमू भिरडै । तेज धर सबळ पहळाद रा तात सम, अगासुर खळा चा कध मुरडै ।—नरसिंघदास सेखावत रौ गीत

७ गहरा, घना ।

उ०—पनरै दिन हू जागती, प्री सू प्रेम करत । एक दिवस निद्रा सबळ, सूती जाण निचत ।—ढो. मा.

८ सब, समस्त ।

उ०—१ बळिहारी तूझ तणइ बहुनामी, महि पालिग ताइ अचळ महि । वाक सबळ टाळियउ विसभरि, सुर नर सुख भोगवइ सहि ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वैसाखा मे बिलखा वामी, हुयगा सबळा जैन बिरामी । आखातीजा धणी अमामी, सिद्ध जन्मियौ सकर स्वामी ।
—ऊ. का.

९ महान, बडा ।

उ०—पड गाहै पट्टण आप वळ, दोमझि भजै व च्छ दळ । पूरब्ब हूत आवै पछिम, सीह प्रवाडौ किय सबळ ।—गु रू. व.

१० गूढ, जटिल, दुरुह ।

११ चितकबरा । (डिं को.)

१२ बल सहित ।

१३ ज्यादा, अत्यधिक ।

उ०—विभाडै जादवा-कोट धर कीध वस, सबळ अद खाटिया भवा सारू । तप-वळी अभनमा 'माल' 'गगेव' तौ, समारक पोकरण राव मारू ।—महाराजा जसवंतसिंह री गीत

१४ कठिन, टेढा और मुश्किल ।

१५ दृढ, मजबूत ।

१६ तेज प्रकाश युक्त ।

उ०—भडज वादळ सबळ बीज सावळ भळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा । वार 'सुरताण' दळ अकळ खूटा वरस, 'माल' हर सीस सुर-गरद-माळा ।—अजबौ बारहठ

१७ अच्छा, बढिया ।

रू. भे —सब्बळ ।

अल्पा. — सबळौ, सब्बळौ ।

सबळदळगाहणौ—स पु —योद्धा, सिपाही । (डिं ना मा.)

सबळवाय—स. पु.—नेत्रो का रोग विशेष । (अमरत)

सबलाक्ष—स पु [स. शबलाक्ष] एक प्राचीन ऋषि ।

सबलास्व—स. पु. [स शबलाश्व] १ पचजन्य कन्या दक्ष की पत्नी असिक्नी के गर्भ से उत्पन्न १०० पुत्रो का नाम ।

२ अविक्षित के पुत्र व कुरु के पौत्र का नाम ।

सबला, सबळि, सबळी—स स्त्री [स. शवली, सवलिः] १ सध्या, सायकाल । (डिं को)

२ कामधेनु ।

३ चितकबरी गाय ।

उ०—बुरी सीणी सुर झीणी बतलावै, माडी काजळ लख प्राजळ मतळावै । अवळी सवळी नै सबळी उर आणै, गोरी गुणवंती गोरी गुण गावै ।—ऊ का.

२ देखो 'सबळ' (रू. भे)

उ०—१ राठौड सबळा, मोहिला री ठकुराई सबळी पण भाई वधै मेळ घणौ काई नही ।—नैणसी

उ०—२ कळहेवा जिका वडा कुदरत मे, हाम सबळि खळ वहण हियै । त्रिजडा मुहि जिकै वरै त्रिविधि घड, देखै जम मुहि पूठ दियै ।
—गु. रू. व

उ०—३ पछै या विचारियौ म्हासू धरती छूटी । सबळी ठौड़ आणी ।—नैणसी

सबळौ—देखो 'सबळ' (अल्पा, रू भे) (ह. ना. मा)

उ०—१ कै डेराधारी सुकव, सबळै तोल सहास । समहर सारा आगली, कै सिरदारा पास ।—रा रू

उ०—२ सबळौ ताळौ दीधौ सरब रहीमन हूस ।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ ताहरा अरजण जी कह्यौ-राज ! म्हारै पटौ सबळौ छै हूँ ऊभौ रहीस ।—नैणसी

उ०—४ जौ पातसाह जी री वदगी करा तौ घणी आछी वात है । अरु पातसाहजी री वदगी विना राज सबळौ होय नही ।—द. दा.

उ०—५ सबळा सत्र सघरै, छळै सबळै पडि-गिरिया । जेथ भिडै दळ पडै, तेथ आडा भुज धरिया ।—गु. रू. व ।

—सूरतसिंघ चहुवाण रौ गीत

सब्ज—देखो 'सबज' (रू. भे)

सब्जी-स. स्त्री. [फा.] १ हरियाली ।

२ हरी वनस्पति या तरकारी जो खाने के काम आती है ।

३ पकाया हुआ शाक ।

रू भे.—सबजी ।

सब्जीमंडी-स. स्त्री —सब्जी के क्रय-विक्रय का स्थान ।

रू. भे.—सबजीमंडी ।

सब्द—देखो 'सबद' (रू भे)

उ०—१ देख सरप व्है दादुरा, सब्द कळा कर सून । पुरख असेंदो पेख व्है, मावडिया मुख मून ।—बा. दा.

उ०—२ वीराण सब्द सुणिया विहद्द, नीसाण तूर अनहद्द नद्द । जोयणा सरीरा जोत जाग, लोयणा पार रा ध्यान लाग ।

—वि स.

सब्दगुर, सब्दगुरु—देखो 'सबदगुरु' (रू. भे.)

सब्दग्रह—देखो 'सबदग्रह' (रू. भे)

सब्दबोध—देखो 'सबदबोध' (रू. भे.)

सब्दब्रह्म—देखो 'सबदब्रह्म' (रू भे.)

सब्दभेदी—देखो 'सबदवेधी' (रू भे)

सब्दमहेसर, सब्दमहेस्वर—देखो 'सबदमहेसर' (रू. भे.)

सब्दलक्खण, सब्दलक्षण, सब्दलखण, सब्दलख्खण-सं. स्त्री. [स. शब्द-लक्षण] ७२ कलाओं मे से एक । (व स.)

सब्दवेधी, सब्दवेधी, सब्वदावेध—देखो 'सबदवेधी' (रू. भे)

उ०—चढे सब्वदावेध लूघा सिघाण, चढे तुणमैं घातिआ भूल बाण । चडे पच हज्जारिया पंच सद्दी, चडे मल्ल पायक्क वगसी अहद्दी ।—गु. रू व.

सब्दसक्ति—देखो 'सबदसक्ति' (रू भे)

सब्दसाधन—देखो 'सबदसाधन' (रू. भे.)

सब्दसासतर, सब्दसास्त्र—देखो 'सबदसासतर' (रू भे.)

सब्दाडंबर—देखो 'सबदाडंबर' (रू. भे.)

सब्दारथ-सं. पु. [स शब्दार्थ] शब्द का अर्थ ।

उ०—दूभर द्वीहायन श्रीयाहन दोरी, सूभर चतुरब्दा सब्दारथ सोरी । इक नहि आक्राता आतातुर आडी, डाई अवतोका सोकाकुल डाडी ।—ऊ. का

सब्दालंकार—देखो 'सबदालंकार' (रू. भे.)

सब्दु—देखो 'सबद' (रू. भ) (उ. र.)

सब्ब—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—१ अहनिस भज तैनूं, आव संसार थोडी । छ-दरस यम पावै, जै बिना सब्ब दोडी ।—र. ज. प्र.

उ०—२ मारत एक सब्ब घात केळवै रसायण । अगाध वैदराज राज घोवदी विचारण ।—गु. रू बं.

सब्बदयं—देखो 'सबद' (रू. भे.)

उ०—आमना चत्र वेद ब्रहंमाणय विप्रयं, रुघ जुज्जर साम अथर वणय जपय । वेदी धुनि जै जै सब्दयं वणय, गुंजार रव भेर पडं-सदय घणय ।—गु. रू. ब.

सब्बळ—देखो 'सबळ' (रू. भे)

उ०—१ आप आय अजमेर, मिळै दळ सब्बळ महाबळ । कागद भेजे सकळ, आय मिळळै दळ दळ सब्बळ ।—सू प्र.

उ०—२ पाड़ सब्बळ देत पाड्यौ करण अद्भुत कत्थ, तो समरत्थ जी समरत्थ सारी बात हर समरत्थ ।—भगतमाळ

उ०—३ बोलै साह सगाह महाबळ, सेन तोछ तपस्या सब्बळ । सुणै चलायौ पूत सप्राणौ, अकबर गजसि कौ आपांणौ ।—रा. रू.

उ०—४ जोड अरोड वळै 'भीमाजळ,, सुत रुघनाथ पाथ जिम सब्बळ । ईसरौत 'रामौ' अतुळीबळ, करवा गढा 'बिजावत' कदळ'।

—रा. रू.

उ०—५ निडर भूप नागौर, समर झोकै दळ सब्बळ । क्रोध धूप काळकळै, तूप सीचै किर मगळ ।—सू. प्र.

सब्बळौ—देखो 'सबळ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—१ देवी मंगळा बीजळा रूप मघ्घं, देवी अब्बळा सब्बळा वोम अघ्घं ।—देवि.

उ०—२ गिगन्न गोम गूघळा, गिरद मेर मेखळा । बहौत सेत बवळा, समूळ सब्बळा दळा ।—गु. रू ब.

उ०—३ ओपियै वैरका कुंजरा ऊपरै, गुड्डिय उड्डियं जाण पब्बै गिरै । सामठौ हल्लकौ मैंगळा सब्बळौ, वाट ऊभी वहै जाण आडो वळौ ।—गु रू. वं

(स्त्री. सबळी)

सब्बा—देखो 'सब' (रू भे.)

उ०—१ सुहडा करि जुहार सब्बा ही, राज महेल राज धू आही । राजा पधारै रळियाही, मुख हसतै राव लगन माही ।—गु. रू व.

उ०—२ देवी जम्मघटा वदीजे जडवा, देवी साकणी डाकणी रूठ सब्बा ।—देवि.

सब्बाब—देखो 'सबाब' (रू. भे)

उ०—सवै छाडि सब्बाळ नब्बाव भग्गै, सुभट्ट फतैसिंह कै लैर लग्गै ।—ला. रा.

सब्बाल—देखो 'सव्वाल' (रू. भे.)

सब्बी—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—कै तुम किल्लै तोरियौ, कै मरियौ सब्बी । देखौ नब्बी क्या करै, कर नाख तसब्बी । —ला रा.

सब्बु, सब्बुन—देखो 'साबुन' (रू. भे.)

उ०—१ ककट टोपा कट्टि कै, कढि जात अघाया । ज्यौ सबनीगर सब्बु मैं, चहि तन्न चलाया ।—व. भा

उ०—२ अज्ज धरम रच्छक इतै रु जवनिस्ट तै, घाट हलदी रन

सबुध-वि.-वि.—बुद्धिमान, विद्वान् ।
उ०—ससिसुत भवन पचमें सोहै, महा सबुध लख जगत विमोहै ।
—रा. रू.
सबूत-स. पु [अ सुबूत] प्रमाण ।
उ०—सेठ कह्यौ—पाळियोड़ी मिन्नी रौ काई सबूत ।—फुलवाडी
वि.—अखंड, पूरा ।
रू. भे —साबूत ।
सबूब, सबूबो-वि.—सुन्दर, श्रेष्ठ ।
उ०—कीमखाप तकिया कसमदा खूब है, सजीवण की जडी क जोत सबूब है ।—बगसीराम प्रोहित री वात
सबूरी—देखो 'सब्र' (रू. भे)
उ०—१ सील संतोस सति दया सबूरी, घण अवसर यम कीजै । जन हरिदास सति मनसा वाचा, रसना राम रटीजै ।—ह. पु वा.
उ०—२ सिदक सबूरी बाहिरौ, हरीया साच न एह । मुला बाग पुकारिया, साई साद न देह ।—अनुभववाणी
उ०—३ बधाई री भूखी धणी नै लुकाय पैला आई जकी तौ सखरी वात पण अवै जल्दी उणरौ उणियारौ बतावै जकी बात कर । म्हारा सू सबूरी नी व्है ।—फुलवाडी
उ०—४ दो चूघै जित्तै च्यारू ई लारला चू चू करै । धणौ ई मन तरसै पण जोर काई करू । ओळियाकडा थोडी घणी ई सबूरी नी रासै ।—फुलवाडी
सबूरो-स. पु.—काठ या चमडे का वह लम्बा खड या टुकडा जिससे विधवा या पतिहीना स्त्रिया प्राय अपनी कामवासना तृप्त करती हैं । (मुसलमान)
सबै—देखो 'सब' (रू. भे.)
उ०—१ तठै आगवो खाग हू छाग तोडै, चंडी कालिका मातरै त्रोण चोडै । लगावै सबै सेस विंदी ललाटा, करै फेर विस्राम पाखै कपाटा ।—मे म
उ०—२ सबै मनोरथ पूरिया, सब्बै पूरी आस । जाण कमोदणि सिस उदै, तन मन हुआ विकास ।—गु रू ब
उ०—३ सबै छाडि सव्वाव, नव्वाव भग्गै, सुभट्ट फतैसिंह कै लैर लग्गै ।—ला रा.
सबैदी - देखो 'सबदवेधी' (रू. भे)
सबोडणौ, सबोडबो-क्रि स. [स. सपुटनम्] १ किसी गाढे द्रव्य पदार्थ को इस प्रकार खाना या चाटना कि सबड-सबड की ध्वनि उत्पन्न हो ।
उ०—म्है हाथा ई चोकी माथै बोरी बिछायली । सावळ जमनै माथै बेठ्यो जित्तै जडाव मासी सगळी खीर सबोड़ली । तवरा नै आगळिया सू पूरौ चाटनै माज्यो ।—फुलवाडी
२ खाना ।
उ०—२ असी नंडा लिया है, दस वारै सोगरा तो राव भर ऊनी छा मैं चूरनै आज ई सबोड जाऊ ।—फुलवाडी
२ जिह्वा पान करना, चाटना ।
उ०—रणकारा रै समचै ई सगळा बिचिया दौडया आवता । लपो-लप पराता मायली दूध सबोड़ जाता । मन व्हैतौ जणा दूध रै माय किलोळा करता ।—फुलवाडी
सबोडणहार, हारौ (हारी), सबोडणियौ—वि० ।
सबोडिओडौ, सबोडियोडौ, सबौडयोडौ—भू० का० कृ० ।
सबोडीजणौ, सबोडीजवौ—कर्म वा० ।
सबोडियोडौ-भू. का कृ —१ किसी गाढे द्रव्य पदार्थ को इस प्रकार खाया हुआ या चाटा हुआ कि उससे सबड-सबड की ध्वनि उत्पन्न हुई हो २ खाया हुआ, जिव्हा पान किया हुआ ।
(स्त्री सबोडियोडी)
सबोभ, सबोभो-वि.—गौरवयुक्त ।
उ०—अै भाटी दळ आगळा, खळ गजण दळ ढाल । मिमल सबोभा मेळ सू, या हूता रिणमाल ।—रा रू
सबोध-वि. [स] जानकारी युक्त ।
स. पु.—१ उत्तम ज्ञान, बुद्धि ।
२ ज्ञान, बुद्धि ।
३ जानकारी ।
सबोधो-वि —१ ज्ञानी, बुद्धिमान ।
२ जानकारी रखने वाला ।
सबोल-स पु.—बोलबाला, दबदबा ।
उ०—लाखेरी रा राजाराम जी, तिणरी प्रोहित हरदेव जी छै, बाई सारू सवागो ल्याण छै । तिण ऊपरा थानै माहे लेमी नै अठै थारौ सबोल होय तौ म्हारौ फूटरौ दीसै ।
—जैतसी ऊदावत री वात
सबोळो-वि (स्त्री सबोळी) १ खुश, प्रसन्न ।
उ०—करता त्याग सबोळा कीधा, सुज पाता ससार सुधार । जावै नही बोल जुग जाता, डेरा तूज तणा दातार ।
—भगूंन सिंघ री गीत
२ बहुत, अधिक, ज्यादा ।
उ०—घणी आछी रगरळी सू राजस कीवी । लोग सगळो खुसहाल सबोळो राखियो ।—कुवरसी साखला री वारता
३ सराबोर, गरक ।
उ०—अमित गुलाला अरगजा, केसर अतर फुलेल । हुवै सबोळी मडळी, होळी हदा खेल ।—रा रू
४ महान, श्रेष्ठ ।
५ जबरदस्त, पराक्रमी ।
६ नही मिटने वाला, अमिट ।
उ०—आई फौज चाल तो ऊपर, रे जमबोल सबोळा रहसी । माहे दळा मछरीक हूमै मम, गाहे दळा खग चोट गहसी ।

२ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—डावडी बोली—व्यास जी, मौत आया विना कोई नी मरै । पण ऐडी सभागी मौत री थारै जोग कठै ।—फुलवाडी

रू. भे —सभागियौ, सभागी ।

सभाघर–स. पु. [स. सभागृह] किसी सभा समिति के बैठने या अधिवेशन बुलाने का स्थान ।

सभापति–स पु [स.] १ किसी सभा का मुखिया, प्रधान ।

उ०—मा'राजा सेवा लाईबेरी रा मिन्त्री, सनातन धरम रा सभापति, ग्रामसेवा सघ रा उपाध्यक्ष अर आरघ-समाज रा सदा सू सदस्य है ।—दसदोख

२ कौरवपक्षीय योद्धा जो कृष्ण द्वारा मारा गया था ।

सभामडप–स पु. [स.] १ निज मंदिर के सम्मुख देवदर्शनार्थियो के देव दर्शन हेतु बैठने का स्थान ।

२ वह स्थान जहाँ पर सभा की जाती है, सभाभवन ।

उ०—१ हमार दफ्तर है जठै सभामंडप रो महल करायो, गढ मे । वाडी रा महल कराया जठै हमार जनानी दोढी है । जठी मायँ है नै वाडी कराई थी जिण सू वाडी रा महल बाजता था ।

—मारवाड री ख्यात

उ०—२ सभामडप ऊपर कछवाई जी रो मैल करायो । लोवा-पोळ हेटै गोळ री घाटी कानी भुरजा तीन कराई । तिकै अदूरी रही । तिको कमठो मा'राज तखतसिघजी सरू करायो सो पार पडियो नही ।—मारवाड री ख्यात

मभाय—देखो 'स्वभाव' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया जब सीतळ भया, सब तै एक सभाय । राग दोख अतर नही, सुख सतोस सभाय ।—अनुभववाणी

उ०—२ साध न आणै आपदा, सील सतोखी थाय । हरीया राग न वेसता, सब कु एक सभाय ।—अनुभववाणी

सभाव——१ चिह्न, खोज ।

उ०—परभात हुवो, सू गूंदळराव रै पगा रो जोडो उठै रह्यो सु प्रथीराज दीठो, नै बीजा पण माळियारा सभाव अटकळिया ।

—नैणसी

२ देखो 'स्वभाव' (रू भे)

उ०—१ दीनदयाळ छेह नहि देता, सदा अछेह सभावां । पण तज देह अवेह पधारो, एह अनेह अभावा ।—ऊ का.

उ०—२ ज्यारा पडया सभाव, जासी जीवसू । नीम न मीठा होय, सीचो गुळ घीव सू ।—अग्यात

उ०—३ बावहिया नै विरहणी, या विउ हेक सभाव । जब ही बरसै घन घणो, तबहि कहै पिव आव ।—अग्यात

उ०—४ दिसि दिसि सीकिरि, डामर चामर ढलइ सभावि । वाजइ तूर अनाहत नाह तणइ अनुभावि ।—जयसेखर सूरि

सभावाळा–स पु.—सभा का सदस्य, सभासद । (डिं. को.)

सभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू भे.)

सभासद–सं. पु [स] किसी सभा मे सम्मानित होने वाला सदस्य, पार्षद ।

२ किसी सभा मे भाग लेने वाला व्यक्ति ।

सभासरवण–स. पु. [सं. सभाशिरोमणि] उदयपुर राज्यभवन अन्तर्गत वह स्थान जहाँ पर जन्मोत्सव व राज्याभिषेक के समय दरबार लगाया जाता था ।

सभिन्न–वि.—भीगा हुआ ।

उ०—सबळ जळ सभिन्न सुगध भेट सजि, डिगमिगि पाउ वाउ क्रोध डर हालियो मळयाचळ हूंत हिमाचळ, काम दूत हर प्रसन्न कर ।—वेलि

सभी —देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—गिरधारी आया चाव वळराव का पूत, साहै वेघ चाह साह्यो राज रजपूत । 'कमा' 'जैता' सामी कामी कूंन जाणै, जम की सहाय वकै सभी पहचाणै ।—रा रू.

सभीड़ो–वि —१ दुष्कर, कठिन ।

उ०—१ राजा वीडो आपियो, काम सभीडो पेख । ज्वाळ गुवाळा क्रिसन ज्यू, दीनो आयो देख ।—रा रू

उ०—ततखिण 'अजण' 'अभौ' तेडायो, बीजै 'गजण' हजूर बुलायो । विकट समै वीडो न्रप वेखै, दीन्हो काज सभीडो देखै ।

—रा रू.

स. पु —२ समूह, झुण्ड, भीड ।

उ०—जै वडा सिरदारा सू अरडै रो जाबतो राखजो, मुहो झालिया रहो, लोग सभीडो देख फेर आण पडसी ।—डाढाळा सूअर री वात

३ दृढ, मजबूत । (कपाट के लिए)

सभीत–वि.—भयभीत, भययुक्त ।

उ०—उर आसुर ताया सवद अभाया, उभकै पाया असुहाया । सत्रु वारस बीता उवरि सभीता, वाचै गीता दिन बीता ।—रा. रू

सभूमौ, सभोमौ–वि. (स्त्री. सभूमी, सभोमी) कार्यकुशल, होशियार । (विलो अभोमौ)

सभोभरम, सभोभ्रम—देखो 'सभ्रम' (रू. भे.)

उ०—१ सभोभ्रम 'पाळ' ज नदण, जोर महा त्रस आत्रस जाणै । 'कान' उभै अह कालग केवी, येह अरी दळ खेवर आणै ।

—राव कनपाळ रो गीत

उ०—२ सुजड वहता 'रयण' सभोभ्रम, अतर किम दासै अकळ । कुळ छळ थाया हमै केविया, छाडवा सग्राम छळ ।

—महम्मदजी बारहठ

सभौ–वि.—भययुक्त, डर सहित । (डर के, भय के)

उ०—असपति सोच मेटण उवरि दीसै और दूसरो । दिल्लेस सभो आडो दियण, एक 'अभो' 'अजयल्ल' रो ।—रा. रू.

सम्भ—देखो 'सब' (रू भे.)

अमावँ भट भालौं कौं। वीर दोरदडन उदग्ग मच्छ लग्गनतैं, सब्बुन ज्यौं ताति चीर देत गजढालौ कौं।—वालावक्स वारहठ

सब्बू–स. पु —रजनीगधा नामक पौधा या उसका फूल।

उ०—तिस बगीचू कै दरम्यान वरणं जेतं फलफुलू का विस्तार। सब्बू कै सिरपोस अनारू का अधिकार।—सू. प्र.

सब्बै—देखो 'सब' (रू. भे.)

उ०—सवँ मनोरथ पूरिया, सब्बैं पूरी आस। जाण कमोदणी सिस उदँ, तन मन हुआ विकास।—गु. रू. व

सब्भ, सब्भै—देखो सब' (रू भे.)

उ०—सभै अभै थभ दं, सब्भैं ही खत्र-धोड। सब्भा ही दिन पद्धरो, सभ वका राठोड।—गु रू. वं.

उ०—२ सहइ कुण सब्भ री, अेक अेकप्परी। लागि लागइ खरी, ठाइ नह ठाठरी।—अ. वचनिका

सब्र–स. स्त्री. [अ] १ धैर्य, धीरज।

उ०—इस्क अजब अवदाळ है, दरदवद दरवेस। दादू सिक्का सब्र है, अक्ल पीर उपदेस।—दादूबाणी

२ सन्तोष।

मुहा.—सब्र रा फळ मीठा व्है—धैर्य रखना श्रेष्ठ है।

रू भे.—सबर, सबूरी।

सभ—देखो 'सभ्य' (रू. भे)

उ०—प्रधाना वात सुहाणी प्रभ, सु वैस्याराइ बुलाया सभ।

—रामरासो

२ देखो 'सब' (रू. भे)

उ०—अेक इसिइ आविउ तिहा ऊजेणीनु वभ। मिळया माहामाहा बिन्है, सभया काज सुलभ।—मा का प्र

सभद्र–स पु.—१ एक प्रकार का शुभ रंग का घोडा। (शा. हो)

२ देखो 'सुभद्रा' (रू. भे.)

समर–वि —१ भारी।

२ अत्यधिक।

उ०—आब अमोलक ऊजळा, समर गुणा ततसार। न्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मझार।—बा. दा.

३ श्रेष्ठ, बढ़िया।

सभानर–स. पु [स. सभानर] ययाति वशीय अनु के पुत्र का नाम।

सभा–स स्त्री [सं] १ वह स्थान जहाँ पर बहुत से लोग बैठते हो, परिषद, समिति, मजलिस। (उ. र) (डिं को.)

पर्याय.—आसता, आसथान, गोठि, परखद, परसत, ससत, सद, सदघटा, समाज, समिजा, समिति।

२ दरबार।

उ०—१ सभा वरणन, राय राणा मडलीक आखडलीक सामत महासामत लघुमामत, स्रीगरणा वयगरणा धरम्माधिगरणा अमात्य महामात्य सुहासोला उचितबोला.........। —व स.

उ०—२ महुतउ वेग सभा आविउ, राजा रंगइ बोलावीउ। डाहा भूलइ केती वार, तुह्म सरिखा नु किसिउ विचार।—हीराणद सूरि

३ धर्मशाला।

उ०—१ एहवूं कहीनि नीसरया एकि वस्त्रि लग्न, सभा सुदर आगली आवी ऊतरया थई मग्न।—नळाख्यान

उ०—२ थाका भूख्या रज-भरया एकि वस्त्रि वेह। सभा आवि धरातलि तव सूता दुरबल देह।—नळाख्यान

४ किसी एक विषय पर विचार करने के लिए बहुत से व्यक्तियो के एकत्र होने का स्थान।

५ उक्त स्थान पर एकत्रित हुए व्यक्तियो का समूह।

६ अथाइ।

७ कोई विशिष्ट कार्यार्थ नियुक्त व्यक्तियो का समूह।

८ द्यूत गृह, जुआडखाना।

९ न्यायालय।

१० घर, मकान।

सभाइ—देखो 'स्वभाव'

उ०—लुध सतावीस वैसी लखाइ, सहि सेख लेख सुद्रणि सभाइ।

—ल पिं.

सभाकार–वि. [सं.] १ सभा करने वाला।

२ सभा-सदस्य।

सभाग—देखो सौभाग्य' (रू· भे.)

उ०—१ दोळी चौकी साह री, विच दळ अकळ सभाग। सोहै किर सामुद्र मैं, ज्वाळवती बडभाग।—रा. रू.

उ०—२ दोना री निजर कालिंदर माथै पडी तौ ई वैं नी डरी अर नी चिमकी। काई आस, आकरसण कै हरख वाकी बच्यो जकै वैं मोत सू डरै। वारा अंडा सभाग कठै कै मोत आ जावै।

—फुलवाडी

सभागियो, सभागी, सभागो–स. पु. [स. सभाग्य] १ भाग्यशाली व्यक्ति।

उ०—वीहू वारैं अप्पणं, सभागियो करीर। उर चपै नखवीणवै, चपै सौ सरीर।—कुवरसी साखला री वारता

२ सम्पन्न, धनवान व्यक्ति।

मुहा —सभागिया री जीभ नैं अभागिया रा पग=सम्पन्न व्यक्तियो की आज्ञानुसार गरीब कार्य करते हैं।

वि.—१ भाग्यशाली, खुश-किस्मत।

उ०—१ कुरवक अच्छा बाड, माधवी कुज सुरागी। लूवँ लाल असोक, भूमैं बकुळ सभागी।—मेघदूत

उ०—२ क्षमावत सबका हितकारी, कोमळ वचन अलागी। कह सुखराम साधू लछ ऐसा वरतैं सत सभागी।

—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ औ बीद कितरो सभागियो! कितरो सुखी! भूत रा रू रू मैं जाणै सूळा सूवण लागी।—फुलवाड़ी

—फुलवाडी

उ०—३ वेटी ग्रामनी जतळावती रीस खाय बोली—भख हाथैं नी ग्रायो तो दूजा ग्रोळावा वयूं लेवो। म्हनै खाय पूरी करौ तो जिद छूटै। नित री देरा तो मिटै समदर मैं मच्छिया ई नी छोडी, जको ग्रठै मिनख रो तो साढो ई काई।—फुलवाडी

समंदरी-स स्त्री —१ नैऋत्य कोरा से ग्राने वाली वायु।

(मि ऊनाळू)

२ एक विशेप रग का घोडा।

ग्रल्पा, रू भे —समदरियो।

समदव्यूह—देखो 'समुद्रव्यूह' (रू भे.)

उ०—जारौं कळिपत काळरो समद उलटीग्रो छै। तिरा भातिरी समदव्यूह सेन्या कीग्रा चाली ग्रावै छै। काही जळजात व्यूह सेन्या कीधी छै। —रा. मा स.

समदसुत, समंदसुनन-स. पु. [स. समुद्र+सुत] १ चद्रमा, चाद। (ह. ना. मा)

२ ग्रमृत। (ह. ना. मा)

३ समुद्र से निकाले गये चौदह रत्नो मे से कोई एक।

रू. भे.—समुद्रासुतक, समुद्रासुतन।

समदहुलास-स पु —हर्प, ग्रानद।

समदो, समद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ धारा तीरथ समदो स्रोणी, सलिल सुरभ भरए। परि पहुत्ता सुरो, वैसै ग्रीध उडीय हसा।—गु रू व

उ०—२ सरा परा समवाद, नदनदन ग्रहि नारी। समद्र पार ससार, होय गोपद ग्रनुहारी।—ना. द

समंध—देखो 'सवध' (रू. भे.)

समवाद—देखो 'सवाद' (रू भे.)

उ०—१ रस्समै समर्थ कह्यो सन्नमख्खैं, समवाद गाता ग्रहे पारस रख्खै। समवाद काळी तरणो एह सारो, चवै दास दासान सामो चितारो।—ना द.

उ०—२ धरणी रो ऊजाळो लूरा ग्राऊग्रा ग्रामोप धरणी, वरणीवार ज्यासु कुरा पुजै समवाद। साज ग्ररणी सरीरा ग्रग्राजै वेहु माहासूर, मारू भुजा छाजै धरणी घरा री ग्रजाद।—जवान जी ग्राढो

समसरणो, समसबो-क्रि ग्र.—१ चिंता करना।

२ पश्चाताप करना।

सम-वि.—समान, सदृश।

उ०—१ सुदर तन स्याम स्याम वारद सम, कोटक भा रद काम सकाम। नायक सिया दासरथ नदरा, विमळ पाय सुरराजा वदरा, रीभ वजै महराजा राम।—र ज. प्र.

उ०—२ सुदर भाळ विसाळ, ग्रलक सम माळ ग्रनोपम। हित प्रकास ग्रदु हास, ग्ररुरा वारिज मुख ग्रोपम।—रा. रू.

२ वरावर, तुल्य। (डि. को)

उ०—१ सूरातन सूरा चढै, सत सतिया सम दोय। ग्राडी धारा ऊतरै, गरा ग्रनळ नूं तोय।—वा. दा.

उ०—२ नारायरा तो सम को नाही, मुर ही भवरा हुकम चै माही।—ह र

३ वरावर, समान।

उ०—१ सम वय रा सुहडा सहित, वोळै कूकुम वास। पग रण-लगर पहरिया, भूखरा उडुगरा भास।—व भा.

उ०—२ दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि ग्रनुक्रमि सर-वरी। त्रिय जीत पति गुरा परखि चखि सुख, सकस पखि जिम सुदरी।—रा. रू.

४ जिसका तल समतल हो।

५ जो शुरु से ग्रन्त तक एकसा चले, उतार-चढाव रहित, तेजी-मन्दी रहित।

उ०—विजय रा लोभी रजपूत चाहै किरा समय ग्राड सम विसम जुद्ध करै। ग्रर जनकादिक गुरुजना नू टाळि तिका रै साम्है तो ग्रनुगत भाव धरै —व. भा.

स. पु. [स शम] १ शाति।

२ मोक्ष।

३ शमन, निवृत्ति।

उ०—सिव रमरणी वरी ए, छकाय रक्षा करी ए। खम दम सम धरी ए। —जयवाणी

४ वह सख्या जो समसंख्या (२, ४, ६, ८) पर पडे या जिसमें दो का भाग पूरा-पूरा जावे।

४ तीन प्रकार की वयरासगाई (वर्णमैत्री) मे से एक।

६ वर्गमूल निकालने के सकेत स्वरूप किसी ग्रक के ऊपर दी जाने वाली सीधी रेखा। (गरिगत)

७ ताल के ग्रनुसार सगीत मे वह निश्चित स्थान जहाँ वजाने वाले का सिर या हाथ ग्रपने ग्राप हिल जाता है। सगीत मे ताल की निश्चित ग्रावृत्ति का प्रथम माप।

८ हाथ मे रखी जाने वाली छडी व हाथी के दातो की शोभा वृद्धि के लिए लगाया जाने वाला छल्ला।

उ०—जरै सब पीतर तै सम दत, बसी हिम के मनु भोन वसत। —ला. रा.

६ वर्ष, साल। (डि. को.)

१० धर्म प्रजापति के पुत्र एवं प्राप्ति के पति, एक राजा।

११ ग्रहः नामक वसु का एक पुत्र।

१२ ग्रायु राजा के एक पुत्र का नाम।

१३ ग्रभिताभ देवो मे से एक।

१४ भीमसेन के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र-पुत्र।

१५ हसध्वज राजा का पुत्र जो चपक नगरी का राजा था।

१६ धर्मसूत्र राजा का पुत्र व द्युमत्सेन राजा के पिता का नाम।

उ०—१ तेता मारू माहि गुण, जेता तारा अम्भ। उच्चळचिता साजणा, कहि क्यउं दाखउं सम्भ।—ढो. मा.

उ०—२ लव्वा थी तुम्ह तुम्हा थी सम्म।—ह. र.

सम्य-वि. [स.] १ सभा से सम्वन्धित, सभा का।

२ उत्तम आचार-विचार वाला, सुसस्कृत।

उ०—सुसील सम्य साच्छर स्तुति प्रमान सोहनै।—ऊ का.

स पु—१ पवमान अग्नि एव सशसि के पुत्रो मे से एक पुत्र अग्नि।

२ सभासद।

उ०—सिक्ख भई वलि सव भट सम्य न, भनिय साह सुभ विधि विनु लभ्यन। तव सहाय वुदीपति तावहु, अप्प सिविर दारा लेजावहु।—व. भा.

सम्यता-स. स्त्री. [स] सभ्य होने का भाव, शिष्टता।

सभ्रम—देखो 'सभ्रम' (रू. भे.)

उ०—'गजसाह' वडै 'गजसाह' छळि, अगनि वाण आतस सहै। पडिहार एक पाचा सभ्रम, रायसिंघ रिण भूइ रहै।—गु. रू. व.

समंक-स. पु—१ चन्द्रमा, सोम।

उ०—माया वादळ बीजळी, मारै चमक चमंक। हरीया हरिजन ऊवरै, राता रैण समक।—अनुभववाणी

१ आकडो का समूह।

समंगा-स. स्त्री. [सं.] एक पुण्य नदी जिसमे स्नान करने से अष्टावक्र ऋषि की वक्रता चली गई थी।

समचार—देखो 'समाचार' (रू भे.)

उ०—१ वौ सिङ्घा रा वडोडी वेटी रै घरै गियो। उणारा माथा माथै हाथ फेर, सुख सायत रा समचार पूछ्या।—फुलवाडी

उ०—२ पछै वीरमदे समचार कहाडिया मालदेव जी नू। ताहरा राव मालदेवजी रै मन मैं हुई। खवर कराई, सु अमरावा रै डेरै सवाया रुपिया हुआ।—नैणसी

समछर—देखो 'सवत्सर' (रू भे.)

उ०—समत दह सपतमं, सरस पचसठै समछर। स्रावण रित घण सुखद, अयन रवि दक्खण अतर।—रा रू.

समजण-स. पु.—१ नहाने की क्रिया, स्नान।

समंजणौ, समजवौ-क्रि स [स. समार्जनम्] १ स्नान करना, नहाना।

उ०—वाणी सुण चहुवाण, आण ऊभी रायअगण। सखी हूत नव सपत, मागि सुख आदि समजण।—रा रू.

२ देखो 'समभणौ, समभवौ' (रू भे.)

समजणहार, हारौ (हारी), समजणियौ—वि०।

समजिओड़ौ, समंजियोडौ, समंज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समजीजणौ, समंजीजवौ—कर्म वा०।

समजर-वि.—मजरी सहित, मजरीयुक्त।

उ०—कै घरि दभ सुलभ्भ, अभ्भ आछादि रहै घर। तर तमाळ वन तरळ, मिळै किर डाळ समंजर।—रा. रू.

समंजियोडौ-भू. का. कृ.—१ स्नान किया हुआ, नहाया हुआ।

२ देखो 'समभियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. समजियोडी)

समंडळ-सं पु. [सं. समण्डल] सूर्य, भानु। (ना डि. को.)

समत—देखो 'सामत' (रू भे.)

उ०—रथा परी जथामाळ अवरी समतां राळै, लुथवथा हुवै ईस मथा सूर लेण। भाग्ता राखवा कथा पथा जेम वाग भूरी, स्री हथा आछटै खाग दूजो चद्रसेण।—पहाड खा आढो

समतपंचक-सं पु—कुरुक्षेत्र का एक नाम।

समंतर-सं. पु. [स.] १ एक प्राचीन देश का नाम।

२ उक्त देश का निवासी।

समंद-सं. पु.—१ एक प्रकार का फूल। (अ मा)

[स संमद, सम्मद] २ हर्ष, आनंद (अ. मा)

३ घोडा, अश्व।

४ वढिया घोडा।

५ वादामी रग का घोडा जिसका अयाल, दुम, पुट्ठे आदि काले रग के होते हैं।

६ देखो 'समुद्र' (रू भे.) (डि. को; ना डि को.)

उ०—१ फिर रघु हुकम मतै विकराळै, अगद समद मफि गिरद उछाळै। कवचधार गौडव जुध केका, ऊडावै पखरैत अनेका।

—सू. प्र.

उ०—२ हरीया सीप समद मैं, यु साधु जुग माहि। सीपा मोती नीपजै, साध साध विन नाहि।—अनुभववाणी

उ०—३ तू पारस तू कळपतर, चिंतामण घण चाव। 'सामा' इद समद तू, 'भारहमाल' सुजाव।—वा दा.

उ०—४ थिडै थिडव थट्ट ऐं, समद जांण फट्ट ऐं। ढलक्कि ढाल गैमरा, पुऊर रोळ पक्खरा।—गु रू वं.

समदकण-स. पु [स समुद्र+कण] मोती, मुक्ता।

उ०—कैम कळक लागै कुळ निकळक, जालम तूफ तणा रव जेम। कदवाळा न हुवै समदकण, हुवै न दागल अग हेम।

—चतुरभुज बारहठ

समदफेण—देखो 'समुद्रफेण' (रू भे.)

समदमेखळा-सं स्त्री [स समुद्रमेखला] पृथ्वी, भूमि।

(अ. मा, ना मा; ह. ना मा.)

समदर—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—१ हो म्हारा सुखडा रा समंदर हो, हो म्हारा दया रा दिसावर हो।—मी रा.

उ०—२ सगळी वाता सुण्या सेठाणी रै अतस मैं जाणै हरख रो समदर थावा मारण लागो। वोली—पिंडतजी थै म्हारै कहै इत्ता फोडा भुगतिया। थारो औ ओसाण जीवू जित्ते नी भूलू।

समड़णो, समडवो–क्रि. स —चलना।
उ०—१ वरखा छूर गोळिया वाळै, वणियो मेघ जाण वरसाळै।
समडै मुडै मुडै समडावै, असुर सजोस रोस उफणावै।—रा. रू.
उ०—२ सिर गुजर करवा समर, 'अभौ' हुवौ असवार। फिर धू ऊपरि गुज्हिका, समड़ै करण सिघार।—रा. रू
समडणहार, हारौ (हारी), समडियोड़ौ—वि०।
समडिग्रोडौ, समड़ियोडौ, समडघोड़ौ—भू० का० कृ०।
समडीजणौ, समडीजवौ—कर्म वा०।
समड़ाणौ, समडावौ–क्रि स —चलाना।
समडाणहार, हारौ (हारी), समड़ायोडौ—वि०।
समडायोडौ—भू० का० कृ०।
समड़ाईजणौ, समडाईजवौ —कर्म वा०।
समडावणौ, समडाववौ—रू० भे०।
समड़ायोडौ–भू का. कृ.—चलाया हुआ।
(स्त्री समडायोडी)
समड़ावणौ, समडाववौ—देखो 'समडाणौ, समडावौ' (रू भे)
उ०—वरखा छूर गोळिया वाळै, वणियो मेघ जाण वरसाळै।
समडै मुडै मुडै समडावै, असुर सजोस रोस उफणावै।—रा. रू.
समड़ावणहार, हारौ (हारी). समड़ावणियौ—वि०।
समडाविग्रोडौ, समड़ावियोडौ, समड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
समडावीजणौ, समडावीजवौ—कर्म वा०।
समड़ावियोडौ—देखो समडायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. समडावियोडी)
समड़ियोडौ–भू का कृ.—चला हुआ।
(स्त्री समडियोडी)
समचइ—देखो 'समचेई' (रू. भे.)
उ०—ताल कई समचइ घूघरी, माहिली माड़ली छीदा होइ।
—वी. दे.
समचार—देखो 'समाचार' (रू भे.) (डि को.)
उ०—१ सुणि वेगम समचार, वेग पतसाह बुलायौ। खान ग्राम-खास हू, उठि अंत.पुर आयौ।—मे. म
उ०—२ कठव्यौ घमसाण प्रमाण किसा, दहळ्यौ हिंदवाण दिसा विदिसा। त्रिदशालय चाव चळ्या तरुण्या, समचार थळी छत्रधार सुण्या।—मे. म.
समचेइ, समचै–वि —सब, समस्त।
उ०—१ दूर कराई दाढिया, मौहरा दे दे हाथ। माळा कंठी मौळवी, समचै एकण साथ।—रा रू
उ०—२ मिरजा दोनू मेडतै, मिळिया वध समाथ। उण दिस यां 'वाले' 'अखै', समचै कीधौ साथ।—रा रू.
क्रि वि.—१ ठीक उसी समय, तत्काल।
उ०—१ तद मूणसिंघ जी कह्यौ—भाभा हथवाहौ जीवतो जावै है। तारा समचेइ इणरै लारै उतरिया सू तरवार वहती रै साठै हाथ पग भेळा कर कूद गयौ।—द. दा.
उ०—२ जठै अेक दिमणी मा'राज रै वरावर हुय माथै मे तरवार वाही सू काना ताई घाव हुवौ। अर समचै मा'राज वाह करी सू उणरा दोय घड हुवा।—द. दा.
उ०—३ जिसै नवाव री तरवार केसरीसिंघ जी ऊपर वूही। सू ढाल सू टाली। समचै केसरीसिंघ जी वाही।—द दा.
२ एक साथ, एक ही साथ।
३ साथ।
उ०—१ हेना समचै आवता मा अब वयू करो अबेर।
—आसकरण सादू
उ०—२ पछै साहारै दिन वारैमो १२०० असवार जीनसाळिया करि ऊपरि ढीला वागा पैहर कैसरिया करनै वागै वींद.'रै माथै मोड वाघनै वारै' जान करनै एकण समचै वारा ही प्रोळि माही पैठा।
—नैणसी
उ०—३ मुळक रै समचै मासी रै वोला मूडा नूं जाणै सूरज भळकियौ। मुळकती मुळकती ई वोली इत्ता दिन तौ लोगा रै मूडै सुख रौ फगत नाव ई सुण्यो हौ।—फुलवाडी
उ०—४ पण आ वोला रै समचै काली मासी रा रूं रू मे जाणै सिंघ गरजण लागा। दाई नै धक्को देय उण री ठोड वैठगी। वा तीन चार कस्टियोडी लुगाया रा जापा देख्योडी ही।—फुलवाडी
उ०—५ तीर विंधणा रै समचै ई हिवडा विस री पोटाळी फूटगी ही।—फुलवाड़ी
४ होते ही।
उ०—१ पण दीया रै चानणै अधारा नै विणसता कोई जेज थोडी ई लागै। चानणा रै समचै ई अंधारौ विणस जावै।—फुलवाडी
उ०—२ नाहरसिंघ तौ वात रै समचै ई म्यान सूं पळपळाती तर-वार काढी। घमधम वावडी री नाळ उतरघो। वाढाळी नै सात वळा पाणी मैं खोळी। देंत रै आवण री निसक वाट जोवण लागो।—फुलवाडी
उ०—३ राजकवरी कागला री वोली रै समचै ई थरथर धूजती। मेहदी लगावती वेळा वौ छाजा माथै वैठ काव काव करतौ वोल्यौ–मेहदी लगावौ तो भलाई राजकवरी है तौ म्हारी।—फुलवाडी
उ०—४ अधारा री ओरडी सू वारै आवताई वौ सूरज तौ कै कै करनै रोयौ। उण वाळ-साद रै समचै ई गिगन मैं नवा अणगिण तारा जुड़ग्या।—फुलवाड़ी
रू. भे.—समचइ।
समचोरस–वि. [स. समचतुरस्त्र] जिसकी चारो भुजाए समान हो, चौकोर।
समचौ—१ सूचना, संदेश, खबर।
उ०—१ मासी कित्ती वरजनै आई के उणरौ समचौ मिळिया बिना

१७ भगवान् विष्णु का नाम ।

रू भे.—सम, सम्य, समी, समै ।

समअर—देखो 'समर' (रू. भे.)

उ०—इण भात लड़ै समअर अभंग, राठोडव खीची रुद्र रग ।
—पा प्र.

समइ, समइयै, समइयौ, समईयइ, समईयौ—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ बीकानेर वळै राव कल्याणमल आइ राज विराजण लागो । इण समइयै पातिसाह सेरसाह वरस आठ दिली राज करि अर कालिंजर गयौ हतौ ।—द वि.

उ०—२ दादुरा डहिडहै, सावण आवण री सिव कहै, इसो समइयौ वण रह्यौ छै ।—रा. सा. सं.

उ०—३ जेठ मास माहे प्रोहित पण हैरौ करण आयौ, इसै समइयै आवली पण फळी हुती ।—नैणसी

समउण-स पु [स समन] ब्रह्मा । (ह ना. मा)

समकणौ, समकबौ—देखो 'चमकणौ, चमकवौ' (रू भे)

उ०—वीजुळिया जाळउ मिळ्या, ढोला हू न सहेसि । जउ आसाढि न आवियउ, सावण समकि मरेसि ।—ढो मा

समकणहार, हारौ (हारी), समकणियौ—वि० ।

समकिओडौ, समकियोडौ, समक्योडौ—भू० का० कृ० ।

समकीजणौ, समकीजबौ—भाव वा० ।

समकत—देखो 'सम्यकत्व' (रू भे)

उ०—सावद्यदान मैं पुन सरधै तिणसूं समकत चारित्र एक ही नही ।—भि द्र.

समकारणौ, समकारबौ-क्रि स —वजाना ।

उ०—घूघरा तणी घमकार कर गहर सी, डाक डमकार समकार डेरू ।तावरौ साधियौ केहरौ तवै छै, भाव रौ साधियौ आव भेरू ।
—केसरी

समकारणहार, हारौ (हारी), समकारणियौ - वि० ।

समकारिओड़ौ, समकारियोडौ, समकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

समकारीजणौ, समकारीजवौ—कर्म वा० ।

समकारियोड़ौ-भू. का कृ.—वजाया हुआ ।

(स्त्री समकारियोडी)

समकालीन-वि. [स] १ एक ही समय से सम्बन्धित ।

२ उत्पत्ति आदि के हिसाव से एक ही समय मे होने वाला ।

समकित—देखो 'सम्यकत्व' (रू. भे)

उ०—१ आगार नै अणगारनो जी, धरम तणा दोय भेद । समकित सहित व्रत आदरो जी, राखो मुगति उम्मेद ।—जयवाणी

उ०—२ तिम ए धोवण उन्हो पाणी पीवै पिण समकित चरित्र रहित तिण सू वणी वणाइ ब्राह्मणी रा साथी है ।—भि. द्र.

उ०—३ तीरथकर आवै तिहा, त्रिगडी करै तयार । समकित करणी साचवै, एह कहु अधिकार ।—वृस्त

उ०—४ परभाग रग अदग गूजइ, सत्व ताल विसाल ए । समकित तत्री तत भणकइ, सुमति सुमनस भाल ए ।—वि. कु.

समकिती-वि.—श्रद्धान की क्रिया करने वाला, सम्यकत्व का पालन करने वाला ।

उ०—१ सनत्कुमार ए समकिती इत्यादिक पावै वोल हो ।
—जयवाणी

उ०—२ करै प्रससा समकिती, मिथ्यात्वी होवै मूक । सूरज देखै हरखै सह, घणं अधारै घूक ।—वृस्त.

समकियोडौ—देखो चमकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. समकियोडी)

समकोस-स. पु. [सं. समकोष] एक प्राचीन देश का नाम ।

समकोर-वि.—एक समान, बरावर ।

उ०—करी समकौर करीन की पति, उठो बरखा मनु ग्रीखम अति ।
—ला रा.

समखणौ, समखवौ—देखो 'चमकणौ, चमकवो' (रू भे)

समखणहार, हारौ (हारी), समखणियौ—वि० ।

समखिओडौ, समखियोडौ, समख्योडौ—भू० का० कृ० ।

समखीजणौ, समखीजबौ—भाव वा० ।

समखियोडौ—देखो 'चमकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. समखियोडी)

समखी-स स्त्री —बात, तर्क-वितर्क ।

उ०—कीजो कोडी समखियां, सुखइ इण जोड न अव्व । दीनो गोरखदान नूं ऊठण तणो कुरव्व ।—रा रू.

समग—देखो समिग' (रू. भे.) (अ. मा)

समगत—देखो 'सम्यकत्व' (रू. भे.)

उ०—सैंठी नही समगत री नीव, नही सरधै छहकाय जीव ।
—जयवाणी

उ०—२ जद तै पाछो आय नै वोल्यौ—थारी समगत पाछी उरही ल्यौ ।—भि. द्र.

समगना-स. स्त्री. [स समज्ञा] यश, कीर्ति । (ह ना. मा.)

समगि-स पु. [स. सम्यक] सत्य, साँच । (ह ना मा.)

समगिना-स स्त्री [स. समज्ञा] यश, कीर्ति । (ह. ना मा.)

समग्ग, समग्र, समग्रि-वि. [स समग्र] तमाम, सव, समूचा, सम्पूर्ण ।

उ०—१ उडै तुरग तै रजी, समग्ग धावती अटै । छकै छकान छावती, छिता विछावती छटै ।—ऊ का

उ०—२ जिण थी हाडा रा समग्र ही पाच सै सिपाहा तिकानू वाढण काज आपरी समस्त ही सेना पेलीजै तो विस्वभर विवाहिणि बिवाही वेहू सवधिया रो बचन निवाहै ।—व. भा.

उ०—३ समग्रि भार धर गुणा सवाया, ओडै कध धमळ थळ आया ।—रा. रू.

समड—देखो 'समवड' (रू भे)

उ०—४ पढै कवियण वयण बडपण, ओप गिण सम करण। अरि जण स्रवण कुवयण तजै, समझण दियण लघुपण दाव।
—रा. रू

स पु.—२ बुद्धिमान, समझदार व्यक्ति।
उ०—समझण हुवै तै देखै देणी मिट्यौ। पछै ई देण पडता तौ पँ'लाइ टटो मिट्यौ।—भि द्र.
३ होश-हवाश।
उ०—म्हैं म्हारी समझ समझाया पछै ई ग्रेडी बात नी सूणी।
—फुलवाडी

४ बुद्धिमानी।
उ०—पातिया पडती देख अणपार री, लूट मे बीजैसिघ उरी लीदी। समझ रै साथ निज धणी री सक सूं, दवारै हरी रै चाढ दीदौ।—ऊमरदान लाळस
रू. भे —समज, समझि, समझ्झ।

समझणदार—देखो 'समझदार' (रू. भे)
उ०—ग्राखर थे विण समझणदार सनेहा, नवि दाखविस्यो छेहा हो।—वि. कु.

समझणियौ–वि.—समझने वाला, मानने वाला, जानने वाला।
उ०—सगळी बात सुण्या राजकवरी तो हाक-बाक व्हैगी। कांई ग्रैडा अमोलक हीरा-मोत्या नै ई गिळगिचिया रै, उनमांन नाकुछ समझणिया मिनख ई इण धरती माथै वसै! सुण्याई विस्वास नी व्है जैडी बात।—फुलवाडी

समझणौ–वि.—१ (स्त्री समझणी) बुद्धिमान, समझदार।
उ०—१ पीयै तंमाखू कापुरस, सापुरसा हिय साल। सालै निस दिन समझणां, चालै चाल कुचाल।—ऊ का.
उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या—इसा ससझणा ग्रागैइ हुवैला। डेरो मिल्या किसौ ग्यान ग्राय जावै।—भि द्र
उ०—३ लाड मोह ग्रर प्रीत मैं ग्रबूझ नादान छोटौ टावर जित्तो समझ, उत्तो स्याणी समझणी ग्रर लांठो मोट्यार ई नी समझै।
—फुलवाडी

२ शरीफ, सयाना।
उ०—उणरै गिया पछै सासू वीनणी नै पूछ्यौ—ग्रारौ काइ नाव है, ग्रादमी तो ग्रणूतो भलो ग्रर समझणौ लागै।—फुलवाडी
रू. भे.—समजणौ, समज्जणौ।

समझणौ, समझबौ–क्रि स.—१ जानना।
उ०—१ मारण मारण समझै मूरख, तारण लखै न ताई नै। रात दिवस हिंसा सू राजी, कर दै मात कसाई नै।—ऊ का.
उ०—२ वेटा जी म्हनै काई डोका चरावो, म्हे थारी सै चाला समझू हू। थारा लखण तो है जैडा है, पण काई करू, थारी मा री काण मानू।—फुलवाडी
उ०—३ राजा तुरत समझग्यौ। उणरी ग्राख्या सै लारली वाता री चानणी व्हैगी। पण ग्रवै समझ्या काई फारी लागै।
—फुलवाडी

उ०—४ भोळी ठाकर समझ्यौ कै धणी रै जोखा री वात सुणनै सुलखणी नार सुध-बुध पातरगी। पण वा तो काळिदर री सुणा-वणी सू वेचेत व्ही।—फुलवाडी
२ ध्यान मे लाना।
३ सीखना।
समझणहार, हारौ (हारी), समझणियौ—वि०।
समझिग्रोडौ, समझियोडौ, समझ्योडौ—भू० का० कृ०।
समझीजणौ, समझीजबौ—भाव वा०।
समधणौ, समधवौ, समजणौ, समंजबौ, समजणौ, समजवौ, सम-ज्जणौ, समज्जवौ, समधणौ, समधवौ, समुझणौ, समुझवौ
—रू० भे०।

समझदार–वि —बुद्धिमान, ग्रक्लमद।
उ०—१ ग्रमल री ग्रास माही उळज, समझदार निस दिन सिडो। ग्रा बात ग्रजब उलटी ग्रकल, बिन बिगड्या क्यूं बीगड़ो।
—ऊ. का.

उ०—२ सेठ कह्यो—'थूं तो खुद डोढ समझदार है, थोडा मे समझण वाळो है।—फुलवाडी
उ०—३ प्रोहित निपट राजी हुवौ। साथ रै लोक नु कहण लागौ, 'जो वीहा कुवरजी रै ग्रागै ही घणा छे पिण समझदार दातार तो लाडीजी सारखो कोई नही। वडी मिरदार जाणियो विसेख।
—कुवरसी साखला री वारता

समझदारी–स. स्त्री —१ समझदार होने के गुण या भाव, बुद्धिमता।
उ०—१ उण नै ढावण सारू दूजोड़ो चोर एक समझदारी री बात करी।—फुलवाडी
उ०—२ उणरै देखादेखी उणसू दो वरस मोटो पप्पू ई जोर सू रोवण लाग्यो ग्रर घर मैं जाणै महाभारत मचग्यो। म्हैं कह्यौ—ए भलो मिनख टाबर नै यू मारै? ग्रा कठारी समझदारी है?
—ग्रमर चूनडी

समझवांन समझवार–वि.—१ बुद्धिमान, ग्रक्लमद।
उ०—१ राजाजी चिपता ई पूछ्यौ—दीवाण जी थै इत्ता समझ-वांन हो तो म्हनै एक वात री तो जवाब दो कै लुगाया सारू जात-पात रा धादा नी व्हैना तो कैडी उम्दा काम रैवतो —फुलवाडी
उ०—२ ग्रो नैनो पुटियो तो ग्रणूतो समझवांन है। कदैई वगत मिळै तो म्हारै गोडै वतळ करण नै निसक ग्राया कर।—फुलवाडी
उ०—३ ग्रपछरा उणनै मारण री घणी ई ग्रटकळा रची पण उण री दाळ नी गळी। कवर ग्रणूतो समझवांन, निडर ग्रर हीमतवार हो। मौको मिळता ई वो नवी राणी नै चिडावतो।
—फुलवाडी

२ कुशल, चतुर।

समचार ई किणी रै साथै पूगता नी करै।—फुलवाडी

उ०—२ जे कालै ई समचो आयग्यो तो काई जबाब देवाला। महाराणी जी नै जावण सारू ओडो देवै तो गिरै', अर ओडो नी देवै तो उण सू ई वत्ती गिरै'।—फुलवाडी

उ०—३ थू तो गूजरो रै घरै जाय म्हारै पूगण री समचो देदै। म्हे रथ मे बैठ घडी आध घडी पछै आवू।—फुलवाडी

उ०—४ दिन मैं सात सात वेळा अमूभणी आवण लागगी। उण समचा रै सागै ई नीद तो पांखा लगाय राम जाणै किण दिस साम्ही उडी सो पाछी उठीनै हर ई नी करी।—फुलवाडी

अवसर, मौका, समय।

उ०—इण री काकी भाइया मे मिळण सारू गयो छै इसा समचा मे दुसमण ऊपर चढ आया।—वी. स. टी.

समज—देखो 'समझ' (रू. भे)

उ०—समज रै साथ निज धणी री सक सू, दवारै हरी रै चाढ दीनो।—ऊमरदान लाळस

समजण-स पु—समझना, मानना। (डि को.)

समजणौ, समजबौ—देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे)

उ०—१ समज तमाकू सूगली, कुत्तो न खावै काग। ऊट टाट खावै न आ, अपणो जाण अभाग।—ऊ. का.

उ०—२ जब लोक कहै—भीखण जी जगू जी समजतां बीजा नै इ दोरो लागो पिण खेतसीजी लुणावत नै तो दोरो घणो इज लागो। —भि. द्र.

समजणहार, हारौ (हारी), समजणियौ—वि०।

समजिओडौ, समजियोड़ौ, समज्योडौ—भू० का० कृ०।

समजीजणौ समजीजबौ—भाव वा०।

समजत, समजतियौ, समजती, समजत्ती-वि.—समान शक्ति या बल वाला।

उ०—आण आण घुरताळ ओडविया, समजत ओछडिया सकळ। जूना धमळ ओड भुज भूसर, वोहळिया छाडियो वळ। —चतुरभुज वारहठ

२ जो वैभव तथा बल मे समान हो, समानता वाला।

उ०—चडियो 'गजन' हरी चक्रवत्ती, सकै देस जिता समजत्ती। 'केहर' गौड हरख उर कीधो, दिन जिग लगन तणो लिख दीधो। —रा रू.

उ०—२ ज्या आगै कर जोड रहै ऊभा समजत्ती। ज्या आगै गडि पडै महा मैमत हसती।—ज खि.

उ०—३ सुतन जगनाथ कहै समजतियां, उर भीडी वाली कर बाथ। हालै साथ खरचिया हाथा, सचिया किणी न चाली साथ। —गोरधन खीची

३ पंडित, विद्वान।

४ उदार, दातार।

समजथा-सं. स्त्री.—डिंगल गीतो की रचना का एक नियम विशेष जिसमे जिसका प्रसंग चल रहा हो उसमे रूपक अलकार लाया जाता है।

समजाणौ, समजाबौ—देखो 'समझाणौ, समझाबौ' (रू. भे.)

उ०—सो केवली थया पछै राज किम करै। आ वात बांचण वाला मैं तो सम्यक्त्व प्रत्यक्ष न दीसै। पिण था सुणवा वाला री पिण सका पडै है। इम कहै समजाय दिया।—भि. द्र.

समजाणहार, हारौ (हारी), समजाणियौ—वि०।

समजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

समजाईजणौ, समजाईजबौ—कर्म वा०।

समजायता-[स. समज्या। सभा। (अ. मा.)

समजायस—देखो 'समझायस' (रू. भे)

समजायोड़ौ—देखो 'समझायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समजायोडी)

समजियोड़ौ—देखो 'समझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समजियोडी)

समजोत-स. स्त्री. [स. सज्योति] पाच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति। (अ. मा.)

समज्जणौ—देखो 'समझणौ' (रू. भे)

समज्जणौ, समज्जबौ—देखो 'समझणौ, समझबौ' (रू. भे.)

उ०—कुळ देवा जात्रा करण, मात दरस्सण कज्जि। अरज हुई 'अजमाल' सू, मानी भूप समज्जि।—ज खि.

समज्जणहार, हारौ (हारी), समज्जणियौ—वि०।

समज्जिओड़ौ, समज्जियोड़ौ, समज्जयोड़ौ—भू० का० कृ०।

समज्जीजणौ, समज्जीजबौ—भाव वा०।

समज्जि, समज्या—देखो 'समिजा' (रू. भे.)

उ०—गुणपती आग्या साहणी, अस्व अरोहण कज्जि। वाजि किया साजा विविध सिधि करण समज्जि।—रा. रू.

समज्जियोड़ौ—देखो 'समझियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समज्जियोडी)

समझ, समझण-स. स्त्री. [स सबुद्धि] १ अक्ल, बुद्धि, विवेक। (अ. मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ म्हारी समझ मैं थारी वेटी दूध दही मैं'लां पुगाय दे तो सावळ रैवैला। मा तडकनै जवाब दियो—भाया, थारी इण समझ नै राजमै'ला मैं ई काम लिया कर म्हारो गवाडो थारी समझ काम नी देवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ आ समझ नी हाट-बजारा विकै, नी खेता मे ऊगै अर नी वाग-वगेच्या फळै। म्हारी समझ कम है तो म्हे आपरी पगरखिया री ठोड वैठू।—फुलवाडी

उ०—३ सहज चाल सगत समझ, वाणी सिकल वणाव। इता प्रकारा अवस है, गोला तणो जणाव।—वा. दा.

समझौतौ-सं. पु.—१ राजीनामा, सुलह।
२ संधि।
समझ्झ—देखो 'समझ' (रू. भे.)
उ०—कहण सुणण हय चढ क्रमण, साहस धरण समझ्झ। 'पता' छिहतर वरस पण, हेकण नको हरज्ज।—जैतदान बारहठ
समटणौ, समटवौ—१ देखो 'सिमटणौ, सिमटवौ' (रू. भे.)
उ०—१ अधर कळी मैं वंस करि, भंवरौ रह्यौ लपटि। जन हरीया जब जीवको, सासौ गयौ समटि।—अनुभववाणी
२ देखो 'समेटणौ, समेटवौ' (रू भे.)
समटणहार, हारौ (हारी), समटणियौ—वि०।
समटिग्रोड़ौ, समटियोड़ौ, समट्योड़ौ—भू० का० कृ०।
समटीजणौ, समटीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।
समटांणी, समटावणी—देखो 'समठावणी' (रू. भे.)
समठांणी, समठावणी, समठुणी, समठूणी-स. स्त्री. [स. समुत्थानम्] दहेज।
उ०—१ तीसरे दिन समठुणी कर जान नै विदा कीनी छै। हीरा नै रथ मैं बैठाण केसरी वडारण नै साथ दीनी छै। जान अहमदाबाद आई छै। कपूरचद घण हेत सु बधाई छै।
—बगसीराम प्रोहित री बात
उ०—२ चवरी माहे देखियौ, धावा रा सहनाण। या समठूणी मेलियौ, पांणपखौ पाखाण।—नाथूसिंह महियारियौ
रू. भे.—समटाणी, समटावणी।
समडी-स स्त्री.—शमी वृक्ष।
उ०—पुहविं समडी पीपली, परणावइ परि कोडि। महिला मनसिधि माधवड, वर मागइ कर जोडि।—मा. कां प्र.
समण-स. पु. [सं श्रमण] १ जोश, उत्साह उमग।
उ०—समण वरद सपजै सबद तैसा वाजतां। मुख विरद मगिणा इसा जै सद्द कवित्ता।—रा रू
२ श्रद्धा या भक्ति भाव से किसी को दान देना। (ह् ना. मा.)
वि. [स. सहमन] १ समान, बराबर।
उ०—मगण वित्तद सरण, मरण सरणद सरणागत। सुणि सेवक फत सुपहु, गदी गद समण जाणि गत।—व भा.
२ देखो 'सुमन' (रू. भे)
उ०—तीकम पाळगर जन देवतरौ सौ शत दिना मुख नाम ररौ सौ। समण त्रास कीनास सरौ सौ, भारी राघवतणौ भगेसौ।
—र. ज प्र.
समणउ, समणौ—देखो 'सपनौ' (रू. भे.)
उ०—१ अेक वार उलट भरि, मा-सिउ कीधौ राव। काई कूड न राखोइ, कहिउ समणां ना।—मा. का. प्र
उ०—२ वलतु वचन माधव कहइ, अे तु अेम न होइ। सिउ समणउ सचेल लहिउ, जाण न जागिउ कोइ।—मा का. प्र
समत-स. स्त्री [स. सम्मति] राय, सम्मति, सलाह।
वि. [स. सम्मत] समर्थित, अनुकूल।
उ०—मेलिह अचेत सचेत करै मन। वेद समत 'हमीर' भजै हरि।
—पिं. प्र.
२ देखो 'सवत' (रू. भे.)
समतळ-वि.—जिसकी सतह बराबर हो, समतल।
समतसर—देखो 'सवत्सर' (रू. भे)
उ०—समतसर विक्रम छतीस कम वै सहस, मास आसाढ तिथि सुकल नोमी। वार सुक्कर नखत स्वाति संध्या बखत, भवानी ओतरया खुडद भोमी।—मे म
समता-स स्त्री. [स] १ समानता, बराबरी, तुल्यता।
उ०—१ तिका राणा री सभा मैं जादू समता रा सबध रा सूचक पत्र दिया।—व भा.
उ०—२ चाचक देव री सूचना नूं प्रामाररा पराक्रम री समता मैं सिराहि मुहम्मद साह जाइ खेत सम्हाळियौ।—वं. भा.
२ उतथ्य ऋषि की पत्नी का नाम।
समति-सं. स्त्री. [स. समिति] १ सभा। (ना. मा.)
२ देखो 'सम्मति' (रू. भे.)
समतुळ-वि. [स समतुल्य] समकक्ष, समान, बराबर।
उ०—१ हत्यौ महराबण तेण हकारि, बध्यौ महिखासुर बीर वकारि। घणा करि दाणव पत्र वधूळ, तक्या चड मुंड त्रणा समतुळ।—मे. म.
उ०—२ फेर पिण गुलाब री खुलतौ सौ फूल, हुवै तौ हुवै इण रै समतुळ। काई पीळी नै काई राती इण री छाती नू ओपमा दै इसी किण री छाती।—र. हमीर
उ०—३ वाघळी विकट सादूळ वाहण वणौं, डाखियौ सीस समतुळ डाले। अरोहै मूळ दुस्टा तणा उखाडण, झाडक्या रुखाळण सूळ झालै।—मे म
समत्थ—देखो 'समरथ' (रू भे)
उ०—१ वेह समत्थ वणावियौ, वाघ डाच जम वत्थ। जिण माझल लग जाड़िया, माय जाय गज मत्थ।—बा दा.
उ०—२ कहू भटा समत्थ कै दया समत्थ सत्थ दे, समत्थ अत्थ साधनै समत्थ मैं समत्थ जे।—ऊ का.
उ०—३ जगमाल महेवै जैतहत्थ, 'माले' तिलक रावळ समत्थं। 'दूदा' सु-नद दूसरौ 'मेघ', राठौड वहै अतत्याग तेग।
—गु रू. ब.
उ०—४ हाथळ वळ निरभै हियौ, सरभर न को समत्थ। सीह अकेला सचरै, सीहा केहा सत्थ।—वा. दा.
उ०—५ तन प्रथक नरा गण तुरग तुड, मट जेम फुटै गज किता मुड। रह थरकि रह्यौ थकि अरक रत्थ, सपेख धेक कदळ समत्थ।
—रा रू

उ०—१ सेठ बोल्या—श्रां वरदाना मैं म्है तौ समझू कोनी। म्हारी बीनणी श्रणू तौ गुणवती श्रर समझवांन है।—फुलवाडी

उ०—२ सगपण जोग व्हेता ई सेठ श्रेक गरीब वाणिया री समझवान बेटी सू उणरौ व्याव कर दियौ।—फुलवाडी

३ विवेकशील।

समझाण—स स्त्री.—१ जानकारी।

२ सकेत, इशारा।

वि.—बुद्धिमान।

समझाइस—देखो 'समझायस' (रू. भे.)

उ०—१ दीवाण तौ राजकवरा री वाता सुण सुणनै इचरज करतौ रह्यौ। राजकवर तौ इत्ती समझाइस करि पछै ई कुबाण छोडी नी। दिन ऊगता पाण राजमैं'ल सू ढळग्या।—फुलवाडी

उ०—२ धणी समझाइस करी कै वा वयू विरथा कळपै, सेवट तौ हाथा री कमाई काम श्रावैला। बाप री लेणी ई तौ बेटा उतारचा करै।—फुलवाडी

उ०—३ वाड्यौ नाग घणी ई समझाइस करी, पण नागण नी मानी। तद वौ मूडौ लेय हमेसा रै वास्तै बारै जावण री बात करी तौ उणनै माडाणी माठ झेलणी पडी।—फुलवाडी

समझाणौ, समझावौ—क्रि स.—१ शिक्षा देना, उपदेश देना।

उ०—१ इम समझायनै चोरी ना त्याग कराया।—भि. द्र.

उ०—२ जनहरीया समझाय कै, गरू वताया भेव। राम नाम तुल्य दूमरा, देव न कोई सेव।—श्रनुभववाणी

२ सिखाना, वताना।

उ०—१ हरीया हम कु श्रायकै, गुझि कहै समझाय। श्रैसा बदा राम का, जा सु चित्त लगाय।—श्रनुभववाणी

उ०—२ विना ग्यान गुन बूझिवौ, बिना सीख समझाय। बिना दिस्ट जाह देखवौ, हरीया घ्यान लगाय।—श्रनुभववाणी

उ०—३ राजा खुद नो ग्यानी नी हौ, पण ग्यानिया रौ श्रादर श्रवस करतौ। समझायां ग्यान री बात समझ मे श्राय जाती।
—फुलवाडी

३ बोध कराना, ज्ञान कराना।

उ०—या श्रपती ससार कु, वार वार समझाय। हरीया हेक न श्रादरै, दूजी घरै उठाय।—श्रनुभववाणी

४ कोई बात किसी के मन मे वैठाना।

उ०—१ श्राडी रै श्ररथ री तिथ छोड ठाकर तौ कौल री झाटी श्रपडली। श्राखी परधं समझाय समझाय हार थाकी पण ठाकर श्रजळ नी लियौ।—फुलवाडी

उ०—२ बीदणी ज्यू त्यू श्राप रा मन नै समझाय धणी री सेवा बंदगी करण लागी। गिरस्ती रौ श्ररटियौ गणण गणण घूमण लागौ।—फुलवाडी

समझाणहार, हारौ (हारी), समझाणियौ—वि०।

समझायोडौ—भू० का० कृ०।

समझाईजणौ, समझाईजवौ—कर्म वा०।

समजाणौ, समजावौ, समझावणौ, समझाववौ, समुझाणौ, समुझावौ, समुझावणौ, समुझाववौ—रू० भे०।

समझायत, समझायस—स. स्त्री.—१ बुद्धी।

२ समझाने की क्रिया या भाव।

रू. भे—समजायस, समझाइस, समझास।

समझायोडौ—भू का कृ.—१ शिक्षा या उपदेश दिया हुश्रा. २ सिखाया हुश्रा, वताया हुश्रा. ३ बोध कराया हुश्रा ४ कोई बात किसी के मन मे वैठाई हुई।

(स्त्री समझायोडी)

समझावणौ, समझाववौ—देखो 'समझाणौ, समझावौ' (रू. भे.)

उ०—१ नैणसिंह जी कह्यौ महाराज यानै समझावौ। जद स्वामी जी समझावा लागा।—भि. द्र.

उ०—२ श्राता ई बीदणी नैं सीख री श्रमोलक वाता समझावण लागौ कै वा घर री इज्जत रौ सावळ जाब्तौ राखै।—फुलवाडी

उ०—३ सतगुरु सैनी मे समझावै—ऊ का

उ०—४ खासा दिनां ताई सेठ री बीणती साव श्रैळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड श्रापरा मन नै समझावणौ ई सावळ जाणियौ।—फुलवाडी

उ०—५ बीदणी सानी सूं की समझावै उण पैं'ला ई कामेती रै सागै श्राठ-दसेक श्रादमी उणनै माडाणी हाका-धाका रथी माथै थरकाय दी।—फुलवाडी

उ०—६ बेटा, म्हैं तौ पैं'ला ई श्रै परवाणा जाणतौ हौ। पण थारौ मन राखण सारू श्रोडौ नी दियौ। बापडी बीदणी रौ चूक व्है तौ उणनैं समझावू ई।—फुलवाडी

समझावणहार, हारौ (हारी), समझावणियौ—वि०।

समझाविश्रोडौ, समझावियोडौ, समझाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समझावीजणौ, समझावीजवौ—कर्म वा०।

समझावियोडौ—देखो 'समझायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री समझावियोड़ी)

समझास—देखो 'समझायस' (रू भे.)

उ०—श्रेक कोई सूरवीर री स्त्री श्रापरै पती नै समझास करण सारू कोई पथी ने पूछै है।—वी स टी.

समझि—देखो समझ' (रू भे) (ना. मा.)

समझियोड़ौ—भू का कृ.—१ सीखा हुश्रा, जाना हुश्रा. २ समझा हुश्रा।

(स्त्री समझियोडी)

समझीयाण, समझू—वि.—१. बुद्धिमान।

२ समझदार।

समझोतरी—स. स्त्री.—इशारा, सकेत। (मा म.)

जिनोई। मुहकम रुख चख जाण कमाळी, सिर चलतै केवाण सभाळी।—रा. रू.

उ०—४ ताहरा पीठवा समधो, ऐ तो मोतीसर नही। ताहरा पीठवै कह्यौ, यै कुण छै ? यै कह्यौ।—पीठवै चारण री वात

उ०—५ तद राणो समधो। सताव चवरी भीतर वधाय जान बुलाई। सो साथ रो घूमरो कुवरसी दोळो कीया ग्रावै छै। वीच कुवरसी मोड वाध्या ग्रावै छै।—कुवरसी साखला री वारता

समधणहार, हारौ (हारी), समधणियौ—वि०।

समधिग्रोड़ौ, समधियोडौ, समध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समधीजणौ समधीजबौ—भाव वा०।

समधरणौ, समधरबौ—क्रि स.—१ मानना।

उ०—सीह वयण समधरै खडग ऊपाडै हत्थळ। सीहैरा सीचळी सीह ऊठिया सहस वळ।—गु रू वं.

२ धारण करना।

उ०—जं नितु रोजु करइ, नितह निम्माज गूजारइ। पच वखत समधरइ धणी जं एक सभारइ।—व स.

समधरणहार, हारौ (हारी), समधरणियौ—वि०।

समधरिग्रोड़ौ, समधरियोडौ, समधरयोडौ—भू० का० कृ०।

समधरीजणौ; समधरीजबौ—कर्म वा०।

समधरियोडौ—भू. का. कृ.—१ माना हुग्रा. २ धारण किया हुग्रा।

(स्त्री. समधरियोडी)

समधियोडौ—देखो 'समझियोडौ' (रू भे)

(स्त्री समधियोडी)

समधी—स स्त्री. [सं समिध्] १ ग्राग जलाने की लकडी, ईंधन।

उ०—चुण राखी चिता, काठ मळियागर करै। पीपळ समधी प्रघळ, निच ग्रगन घनेरै।—बी. दे

स पु—२ लडके या लड़की के ससुराल वाले, सगे।

रू भे—समधि।

समधौ—वि—१ साधारण, मामूली।

उ०—तद वीरमदे जी कयो—रायसल रै तो घाव समधा सा लागा है, सू हमैं ग्राछी तरह है।—द. दा.

२ सरल, ग्रासान।

उ०—संजम जप तप सापरत, व्रत जुत जोग विनांण। ग्राख तरच्छी इखता, जीता समधा जाण।—वा. दा.

समन—स. पु [स शमन] १ शाति, शमन।

२ दमन।

३ काल, मृत्यु।

४ यमराज।

५ सावर्णि मनु-पुत्र।

६ दाम, कीमत।

७ चमेली का फूल।

८ यज्ञ हेतु पशु की वलि।

वि.—१ शात।

२ जितेन्द्रिय। (हि. को.)

उ०—तन घण वरण घरण दसरथ तण, सदय समन गरवत सहज।—र. ज. प्र.

३ देखो 'सुमन' (रू. भे.)

उ०—सुभ दिवस समन समोह, मिट रयण सघ विमोह। रवि किरण ग्रनुक्रम रेख, वाधत तेज विसेख।—रा. रू.

समनौ—वि.—१ उत्साह वाला, जोशीला।

उ०—रिण क्रेड उठी समना रवद्द, सूरमा ग्रठी वड छड सवद्द। गामत रूप सामतसीह, ग्रजमाल सुछळ चापो ग्रबीह।—रा. रू

२ ग्रनुकूल, पक्षधर।

उ०—फळ नावै नेडो कह 'किमन', ग्राव घरु सुग्व ग्रामत ग्राय। दख नावै जैरै दन ग्रदना, नाथ थया समना रघुनाथ —र. ज. प्र.

समपण, समपणौ—स पु.—दान। (ह. ना. मा)

वि—१ दानी उदार। (ग्र. मा)

२ देने वाला, समर्पित करने वाला।

उ०—सूडाळा मुख समपण उर मैं करण उजास। मद ग्यान मेटै सदा, परमनद रख पास।—नारायणसिंह माटू

रू. भे.—समप्पण, समाप, समापण।

समपणौ, समपबौ—क्रि. स.—१ प्रदान करना देना।

उ०—१ जामण मरण मरण फिर जामण जग नट गोटो जाणो। सो दुख मेट ग्रखै पद समपण, केसव नाम कहाणो।—र ज. प्र.

उ०—२ नवनाथ ग्रनत मिधाणवै, भैरव ग्रट्ठ मभरै। सुर वळ सु जोग क्रम समपिया, इस्ट नाम ग्राविह करै।—गु रू. वं

२ ग्रर्पित करना।

३ सौंपना।

४ दान देना। (हि को)

समपणहार, हारौ (हारी), समपणियौ—वि०।

समपिग्रोडौ, समपियोडौ, समप्योडौ—भू० का० कृ०।

समपीजणौ, समपीजबौ—कर्म वा०।

समपणौ, समपबौ, समप्पणौ, समप्पबौ, समापणौ, समापबौ, समोपणौ, समोपबौ—रू० भे०।

समपियोडौ—भू का. कृ.—१ प्रदान किया हुग्रा, दिया हुग्रा. २ ग्रर्पित किया हुग्रा. ३. सौंपा हुग्रा. ४ दान दिया हुग्रा।

(स्त्री समपियोडी)

समप्पण—देखो 'समपण' (रू भे.)

उ०—नमो विध वेद समप्पण विद्ध, नमो सुर काज करै हर सिद्ध।
—ह. र.

२ देखो 'समरपण' (रू. भे.)

समप्पणौ, समप्पबौ—देखो 'समपणौ, समपबौ' (रू भे.)

२ देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—१ विसाद तोप साद मैं वहै न हथ्थि हत्थ तै। इसे समत्थ काम देय हथ्थि को स्व हत्थ तै।—ऊ. का.

उ०—२ हठ बादसाह नहिं परहिं हत्थ, मरुधराधीस रनवास मत्थ। सो असंभावना है समत्थ, वद काड भरत ब्रह्माड वत्थ।
—ऊ का.

समत्सर—देखो 'सवत्सर' (रू भे.)

उ०—आसाढाऊ सुद नवमि, गुण आगै रिख लेख। जिकै समत्सर जोधपुर, समहर थयो विसेख।—रा रू.

समथ, समथ्थ—१ देखो 'समरथ' (रू भे)

उ०—१ मथ रिण उदध माण दसमाथका, आपण सरण अभीखण अथक। सोव्रन गढ जस ओप समथ का, क्रपा कोप आखै दसरथ का।—र. ज. प्र.

उ०—२ रवि कुळ रूपरा रे, समथ सरूप रा, प्रगट अनूपरा रे, भुज रघु भूप।—र ज. प्र.

उ०—३ जोगिण जोगी सू कहइ, सामळि नाथ समथ्थ। का जीवाडउ मारूवी, हू पिण इणहिज सथ्थ।—ढो. मा.

२ देखो 'समस्त' (रू. भे.)

उ०—पय मिथुला पथ्थ साभ समथ्थं, हण धनु हथ्थं पह पाणं। सिय परण सिधायं दुजपत आयं, गरब गमायं जग जाणं।
—र. ज. प्र.

समद—देखो 'समुद्र' (रू भे)

उ०—१ है थट समद जाण हिल्लोळ, पमगा हमस पक्खर रोळ।
—गु रू व.

उ०—२ सात समद मरजाद, नहिं गिरि भार अठारा। चौरासी लख जाति, नहिं जद मडळ तारा।—ह. पु. वा

उ०—३ चीटी कै मुख मेर समाना, मूसै गिली मजारी। दादुर सरप समद मैं डारया, लौंकी परि असवारी।—ह. पु वा.

समदकप, समदकफ—स. पु.—फेन, झाग। (डि. को.)

समदडा—स. पु.—भाटी वश की एक शाखा।

समदडो—स पु.—भाटी वश की समदडा नामक शाखा का व्यक्ति।

समदम—स. पु [सं शमदम] ऋषि। (अ मा)

समदर—देखो 'समुद्र' (रू. भे.) (डि को.)

उ०—१ कूवो तो हुवै तो ढोला डाक लू जी, कोई समदर डाक्यो ना जाय।—लो गी.

उ०—२ डूबत नाव तारि डाढाली, उदधि किराणं आणी। समदर नीर सीर देसाणं, सहर अजै सहनाणी।—मे. म

समदरसी—वि. [सं समदर्शिन्] सब को समान देखने या समझने वाला, समदर्शी।

उ०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जाण्या, दुतियं कास्ट दागी। जीवन मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी वीतरागी।
—स्रीसुखरामजी महाराज

समदरसुत, समदरसुतन—स पु. [स समुद्रसुत] १ चद्रमा, चांद।
(ह. ना. मा.)

२ मद्य, शराब (डि. को.)

रू. भे —समदसुत, समदसुतन।

समदरियो—स पु —१ स्त्रियो के ओढने की लहरदार ओढनी तथा पुरुषो के सिर की पाग विशेष।

२ देखो 'समुद्र' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हरसा वीर म्हारा रै मन री वाघ्योडी धीरज ना वधै उफळै छै समदरियै री पाळ।—जीणमाता री गीत

३ देखो 'समदरी' (अल्पा; रू. भे.)

समदरी—देखो 'समदरी' (रू. भे.)

समदसुत, समदसुतन—देखो 'समदरसुत' (रू. भे.) (ह नां मा.)

समदाभवर—स पु.—एक प्रकार के रग विशेष का घोडा।

समदाय—देखो 'समुदाय' (रू भे.)

समदाव—स. पु.—समृद्धि, वैभवता।

उ०—खोहण कटक मिळै 'खेतावत', साकुर सुभट इसै समदाव। लागणहार होय तो लेवै, राकस रध मेवाडो, राव।
—महाराणा लाखा रो गीत

समदिस्टि, समद्रसटी, समद्रस्टी—वि. [स. समदृष्टिन्] १ सब पर समान निगाह रखने वाला, समदृष्टा।

उ०—समदिस्टि ज्यू सूर पवन ज्यू लिपै न लोई। वसुधा ज्यू मनधीर परम सगी गुर सोई।—ह. पु. वा

सं. स्त्री. [स. समदृष्टि] ऐसी दृष्टि जो सब को देखने मे समान हो।

उ०—समद्रसटी सारा पर राखै क्या मित्र क्या द्रोही, मन रे ऐसा सतगरु जोई।—ह पु वा.

समद्द, समद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे.)

उ०—चतुरग सेन असख्या चल्लै हेमाचळ परबत किरि हल्लै। दम दमगै सेन रवद्द, किरि ऊलटिया सात समद्द।—गु रू. व.

उ०—२ सुरताण दळ मेघाण वद्दळ, सपत समद्र पाणिय सयळ। उडियण रयणी गयण, कुण सख्या मानव करए।—गु रू व

समध—देखो 'सवध' (रू भे)

उ०—कुंअर उभै कुसधज री, सत्रधन भरत समध। सधु जनक सिरहर सुवर, लखमण राघव सघ।-रामरासो

समधणो, समधवो—देखो सम्भणो, समझवो' (रू भे.)

उ०—१ पावूजी कह्यो—रे! थे कहता साढ खाधो। ताहरा थोरिया कह्यो—राज समधा म्हानू राज परचो दिखायो।—नैणसी

उ०—२ तितरै पहसोनै वागै वेसूर फळसै मैं पेसतां दीठो। ताहरा समघडो समधो, जु डाइण भलो नही। समघडो ऊठि नै साम्हो गयो।—पीठवै चारण री वात

उ०—३ सत्र सारत समधा सब कोई, जडलग वह गई सग

समरकूप–स स्त्री. [स. स्मरकूप] योनि, भग।

समरट–वि —योद्धा, वीर।

उ०—पड़ै घट कटि उलट पालट गरट समरट, पहट गाहट विचत्र खड खट तणा दहवट।—ल. पि

समरण—देखो 'स्मरण' (रू. भे.) (डिं. को)

उ०—१ सासो सास सम्हाता समरण, तन मन खूब तपावै। लोह लुहार तणी गत लागे, मारोमार मचावै।—ऊ का.

उ०—२ माधौ राधौ केसौ ऐहो, समरण कर छिन छिन सुख मूळ। जाडा पापा दाहै जेही, तिलकण दहण ग्रगण-मल तूळ।

—र. ज. प्र

उ०—३ हरि समरण रस समझण हुरिणाखी, चाग्रण खळ खगि खेत्र चढि। वैसै सभा पारकी वोलण, प्राणी वछइ त वेलि पढि।

—वेलि

समरणा, समरणी-सं. स्त्री. [स. स्मरण] जपमाला, माला।

उ०—१ नायक री डवी नायक नै देवौ। हरडै १। सेर, समरणा एकमुखी रुद्राक्ष री छै, सौ हरडै तो कारखानै रखायजो समरणा देपाळ नै देजो।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ काया सोहइ कचण वरणी, सोहइ हाथै सखर समरणी।

—ऐ जै. का. स.

समरणौ, समरबौ-क्रि. स [स. स्मरणम्] १ स्मरण करना, याद करना।

उ०—१ साह दरगाह वूझियै, भळै सकळ भर भार। 'केहर' ज्यू पत छळ करै, समरै तिका ससार।—रा. रू.

उ०—२ गाड पडतै गजपती, पूठी जोध अडूर। तू साह ग्रालम समरियौ, छीक ग्रमूझी सूर।—गु. रू व.

उ०—३ सज्जण ज्यू ज्यू सभरइ, देस्या ग्राहीठाण। झुरि झुरि नइ पजर हुई, समर समर सहिनाण।—ढो. मा.

२ भजन करना।

उ०—तास कटक मेलै दसरथ तणा, लोपि समद लीधौ गढ लक। मम करि ढील म धरि मन माया, समरि समरि स्त्रीराम निसक।

—ह. ना. मा

२ युद्ध करना, सग्राम करना।

समरणहार, हारौ (हारी), समरणियौ—वि०।

समरिग्रोडौ, समरियोडौ, समरघोडौ—भू० का० कृ०।

समरीजणौ, समरीजबौ—कर्म वा०।

सभरणौ, सभरबौ, सभारणौ, सभारबौ, समरणौ, समरबौ, समिरणौ, समिरबौ, संवरणौ, संवरबौ, सिंवरणौ, सिंवरबौ, सिमरणौ, सिमरबौ, सिवरणौ, सिवरबौ, सुमरणौ, सुमरबौ, सुंवरणौ, सुंवरबौ—रू० भे०।

समरत्त–स. पु.—१ एक प्रकार का रतिवध। (कामशास्त्र)

२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)

समरति—देखो 'स्मृति' (रू. भे.)

समरतिकार—देखो स्मृतिकार' (रू. भे)

समरती—देखो 'स्मृति' (रू. भे.)

उ०—भ्रम्ति समरती जग की जांनी, सत ब्रह्म चित थाइ। जीवन मुक्ती ऐसी जुगती, दोऊ ग्यान दिखाई।—स्री सुखरामजी महाराज

समरत्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ सामी ग्रमीणौ साहिबौ, सूर धीर समरत्थ। जुध मैं वामण उड जिम, हेली वाधै हत्थ।—बा. दा.

उ०—२ गजपत्ती दातार गुर, सहि कामै समरत्थ। रिण डोहण रिणमल जिसौ, जोध किमौ कढिमत्थ।—गु. रू. व.

उ०—३ नांम गोत सुण्या लाभ घणौ कह्यौ रे, तिरण तारण समरत्थ।—जयवाणी

उ०—४ माग काम समरत्थ, हत्थ दन वत्थ सवाई। ग्ररि समत्थ गजवा, पत्थ जैसौ वरदाई।—रा रू.

उ०—५ नाम राख नव खट, प्रसिध पाडै दहु पक्खै। साथि सामि समरत्थ, रयै बैठी कथ रक्खै।—रा. रू.

उ०—६ प्रसग हूय प्रहळाद ऊपर, हर दिखायै हत्थ। पाड खळ दैत्य पाड्यौ, करण ग्रदभुत कत्थ। तौ समरत्थ जौ समरत्थ, सारी वात हर समरत्थ।—भगतमाळ

समरथभ–वि. [स. समरस्तम्भ] योद्धा, वीर।

समरथ–स. पु.—१ शिव, महादेव।

२ क्षेमधि राजा का पुत्र, एक राजा।

३ मत्स्यराज विराट के एक भाई का नाम।

वि, [स. समर्थ] १ आर्थिक, मानसिक या शारीरिक वल पर कुछ कर सकने की योग्यता वाला, योग्य, समर्थ।

२ वलवान, शक्तिशाली।

उ०—१ समरथ सरण तुम्हारी साइया, सरव सुधारण काज। भव सागर ससार ग्रपरवळ, जामै तुम्ही जहाज।—मीरा

उ०—२ हैदल पैदल प्रवळ हैडतौ, नीजोड़तौ किता नर नाह। समरथ कही न सकू 'सूरावत'' गुण म्हारा थारा गजगाह।

—केसोदास गाडण

३ योग्य, सक्षम।

उ०—थारे लेखै नरक जावणहार थारा गुरु ठहरघा। जब घणी कस्ट हुवौ। जाव देवा समरथ नही।—भि. द्र

४ योग्य, ठीक, उचित।

५ गूढार्थ प्रकाशक।

६ जबरदस्त, जोरदार।

७ दृढ, मजवूत।

८ वीर, वहादुर।

९ निष्णात, योग्यता-सम्पन्न।

१० समृद्ध, धनाढ्य।

उ०—१ कवि तद बोलै 'केहरी' सकवी सूर सुभट्ट। बोध समप्पण धूहडा, कुळ रोहडा मुगट्ट।—रा. रू.

उ०—२ वाण अनै केवाण री, वेळ समप्पण काज। करण सनेहा सूर कुळ, तौ जेहा कवराज।—रा. रू.

समप्पणहार, हारौ (हारी), समप्पणियौ—वि०।

समप्पिओड़ौ, समप्पियोड़ौ, समप्प्योड़ौ—भू० का० कृ०।

समप्पीजणौ, समप्पीजबौ—कर्म वा०।

समप्पियोड़ौ—देखो 'समपियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समप्पियोडी)

समवरती, समब्रती, समब्रत्री–स. पु [स. समवर्ती] यमराज, धर्मराज। (अ. मा; डि. को, ना. मा.)

समभ्रम—देखो 'सभ्रम' (रू. भे)

समय–स पु [स] १ वक्त, काल (ह ना. मा.)

उ०—१ कमनैत तीरन तानिकैं पखरैत वेवत पानि के 'बुध' तनय हित जय प्रणय नय वय छपय रन सुभ अभय अतिसय विसय चय भुव वलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय अतिरय अजय खयकर अखय जय अय उमट सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।—वं. भा.

उ०—२ मास आसाढ सकल पख माही, तिथि नोमी वरताई। स्वात नखत्र समय सव्वारी, महर करी महमाई।—मे म

२ अवसर, मौका।

उ०—सुणौ ठाकुरा सिरदारा, आय वणी महासूरा की वारा। औ तौ अप्रवळ थळ पायो, वस कै घमळ तकौ समय आयौ।
—रा रू

३ फुर्सत।

४ मान, गर्व, अभिमान। (अ. मा; ह ना मा)

५ रैवत मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक सप्तर्षि का नाम।

६ अजित देवो मे से एक।

७ हृदयाकाश मे चको का ध्यान।

रू. भे.—समइ, समइयं, समइयौ, समईयइ, समईयौ, समयौ, समा, समा, समिअं, समिय, समियं, समियौ, समीयौ, समैं, समे, समैं, समैवौ, सम्मै।

समयति, समयती–वि. स्त्री [स] १ देखते ही मन मे समा जाने वाली, मनमोहक, सुन्दर।

उ०—... .. ..रूपपात्र गुणपात्र प्रसिद्धपात्र सौभाग्यवती प्रसन्नति–प्रमाण लोचन विकसित मुखकमल, निरलोम एणी जघ, समऊर युग्म कूरमोन्नतचरण अल्पमाम निरलोम दाक्षिण्यपर दयापर मया–पर क्षमापर साचाबोली हितबोली मितबोली ऊपजावकि लावकि द्रावकि समयती मानयती सतीमिती अनुरक्ती सक्ती.........।
—व. स.

२ साध्वी स्त्री।

समया–वि.—कृपालु, दयालु।

उ०—स कालिका सारदा समया, त्रिपुरा तारणि तारा त्रनया। ओह सोह अखया अभया, आइ अजया विजया उमया।—देवि.

स स्त्री.—एक देवी का नाम।

समयानद–स. पु [स.] भैरव की एक मूर्ति।

समयौ—१ देखो 'समय' (रू. भे.)

२ देखो 'समौ' (रू भे.)

उ०—कुरु पिड वेध वसुधा, अपण मझेण भुज्झयौ उभए। कुरखेत जुद्ध समयौ, विणसिण काळ वुद्ध विपरीतौ।—गु रू व

समरंगण, समरंगणि—देखो 'समरागण' (रू. भे)

उ०—कुच मरदन कप्पइ अधर, लीइ चुरासी लाग। सुहड यथा समरगणि, भडता कोइ न भाग।—मा. का. प्र

समर–स. पु. [स. समर] १ युद्ध, सग्राम।
(अ मा, डि. को; ह. ना मा)

उ०—१ सुतण दासरथ रूप लसवान कौटक समर, समर जसवान अप सियासामी।—र. ज. प्र

उ०—२ सूर न पूछै टीपणौ, सुकन न देखै सूर। मरणा नू मगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।—बा दा.

उ०—३ सामंता मौ'र चौधार यर साजतौ, समर वागौ विनै पातसाही। मारवै राव तोखार वद मेलियौ, मार सारा गजा भार माही।—नाथौ सादू

३ लोहारशाला।

४ वेहडा। (अ. मा; डि. को.)

५ युद्ध-स्थल, रणभूमि।

उ०—सनमध साच ससार सुख, पलट आज अणथाह पर। बरन खट तणी तूटी वरत, सेर आज पडियो समर।—पहाडखा आढो

६ भरतवशीय राजा पृथुसैन के सौ पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

७ वल, शक्ति, सामर्थ्य।

८ वैभव, धन-दौलत।

[अ] ९ कथा, कहानी, किस्सा।

१० फल, मेवा।

११ बदला, प्रतिकार।

१२ परिणाम, नतीजा।

१३ देखो 'स्मर' (रू भे.) (अ मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ अलक डोर तिल चडस वौ, निरमळ चिबुक निवाण। सीचै नित माळी समर, प्रेम बाग पहचाण।—बा. दा.

उ०—२ सुतण दासरथ रूप लसवान कौटक समर, समर जसवान अप सियासामी।—र. ज प्र.

समरअभगी–सं. पु—वलराम। (ना. मा.)

समरइ—देखो 'स्म्रति' (रू. भे) (उ. र.)

समरक—देखो 'समर' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

समरस, समरसि–वि.—समान रस वाला।

सं. पु. [स समरस] शान्तिपूर्ण मनोभाव।

उ०—जिणि जगि जीतउ समरसि, अमर सिरोमणि कामु। विलसइ सिद्ध सयवर, सवरगुणि अभिरामु।—जयसेखर सूरि

समरांगण–स. पु. [स. समर+अंगण] १ युद्ध, लडाई।

२ युद्धस्थल, रणक्षेत्र।

उ०—१ करसण सेही स्याळ विन, गिरःप्रिय वाभण गाय। समरांगण मह साधणा, चाहै चित्त चलाय।—बा. दा

उ०—२ पडै हुवै मन सभ्रम पेख हवाल, समरागण हेकल 'पाल'।

—पा. प्र.

रू. भे.—समरगण, समरगणि।

समराट—१ वीर, पराक्रमी।

उ०—खगा भाट समराट लोहलाट भाजण खळा, तीख सत्रवाट घर वाट तोरा। जणाती नह रजवाट वट 'जोधडा', गणाता जमी नरवीज गोरा।—जोधसिंह रावत रो गीत

२ अनाज।

३ राजा, नृप।

उ०—सुख देग्यो समराट, तोटो रोटी रो न तो। आठा पौर उचाट, जावै नह जिय री 'जसा'।—ऊ. का.

४ देखो 'सम्राट' (रू भे.)

उ०—१ अकवर हियै उचाट, रात दिवस लागो रहै। रजवट वट समराट, पाटप राण प्रतापसी।—दुरसो आढो

उ०—२ समराटां उछळ अडतो 'सोदा', तू विग्रहा मडतो रण ताळ। गाढा आरख भडा गई छी, पारख तो सातमें पयाळ।

—उम्मेद जी बारहठ रो गीत

समराणौ, समरावौ—देखो 'संवराणौ, सवरावौ' (रू. भे)

उ०—१ पाचा दिना पछै महला माह दाढी समराइ अर बाहिर पधारिया।—द. वि.

उ०—२ ताहरा लोकं सगळा दाढी समराई।—द वि.

समराणहार, हारौ (हारी), समराणियौ—वि०।

समरायोडौ—भू० का० कृ०।

समराईजणौ, समराईजवौ—कर्म वा०।

समराथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीमहिपति 'मान' रीजवै गुणस्रज, कवि समराथ इसो नहि, कोय। 'मान' समापै लाख मागणा, 'जसा' 'गजन' रा विरदा जोय।—वा. दा.

उ०—२ मेछा आगळ माथ, निवै नही नर नाथ रो। सो करतब समराथ, पाळै राण 'प्रतापसी'।—दुरसो आढो

उ०—३ हयकोडो ऊचौ हुवै, सुपह चिरमियाँ साथ। त्रप 'जसवत' नीचौ निमै, सोनै ज्यू समराथ।—ऊ. का

उ०—४ वेचै सुकवि बडा व्योपारी, दरसण जिहाज भरे समराथ। किमति करि असा वायक कण, नितप्रत लिअै दूसरो आथ।

—महाराज छत्रसिंघ रो गीत

उ०—५ सर्भ खग वाह मळा समराथ, नग मिणगार 'अजावत' 'नाथ'। रिमा सिर आछट खाग रगेस, मडै जुध सूर' तणो 'मुकदेस'।—सू प्र.

समरायोडौ—देखो 'सवरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. समरायोडी)

समरार—देखो 'सवरारि' (रू भे.) (अ मा.)

समरारि–स. पु. [सं. स्मरारि] शिव, महादेव (ना. मा.)

समरियोडौ–भू का कृ.—१ स्मरण किया हुआ, याद किया हुआ. २ भजन किया हुआ. ३ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ।

(स्त्री समरियोडी)

समरिव—देखो 'समरव' (रू भे) (ह ना. मा.)

समरूप–वि.—१ समान, तुल्य।

उ०—साहजादा समरूप, 'भोपत' सुत चढतो भरण। रावजादा रो रूप, सारग दे कवरा सिरै।—पा प्र.

२ समान रूप या समान चेहरे वाला।

समळ–स पु [स श्यामलः] १ कृष्ण हरिण।

[स शमल] २ मल, विष्टा। (हि. को.)

वि [स समल] १ खराव, गन्दा, मैला, अपवित्र।

उ०—समळ हुवा कपडा सकळ, भमळ हुवो घट भग। कमळ वदन कुम्हलायगो, अमल न्हायगो अग।—ऊ का.

२ पापी, दुष्ट।

३ दोषपूर्ण।

उ०—सुपनं ही माभाय, न्यायव्रत चाय न चूकै। राज काज चित राग, माग अनि समळ प्रमूकै।—रा. रू.

४ देखो 'मिवळ' (रू भे)

५ देखो 'सामिळ' (रू. भे.)

उ०—साकणि डाकणी सकति, सकति चवसठी समोसरि। समळ महासिध सकति, सकति वायणी सिकोतरि।—सू. प्र.

६ देखो 'सावळौ' (रू. भे.)

७ देखो 'सवळौ' (रू. भे)

उ०—१ आपड़ नोहरा अत सूरां, घड़ ऊडै समळ। सोहै गुड्डी डोर मू, छुट्टी जाण अनत।—रा. रू

उ०—२ सग्राम पडै ग्रीधण समळ रगत पूज रैणा चडै। 'जसवंत' समोभ्रम खाट जस, प्रियीराज भाटी पडै।—गु. रू. ब.

उ०—३ वैताल वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आमंख मक्ख, जवक्क रीछ वड्डाक जक्ख।

—गु. रू बं.

रू. भे.—समळ।

समळा—देखो 'सम्मळा' (रू भे.)

११ वडा, विशाल।

१२ सामर्थ्यवान, सक्षम।

उ०—समरथ सह बात करेवा सरखौ, मोटी देव देवता मोड।
सकट मौ पडिया नवसहसा, राज तणौ ऊपर राठोड।

—बखतौ आसियौ

सं. पु —शक्ति, वल।

रू. भे.—सम्रत, सम्रथ, समत्थ, समथ, समथ्थ, समरत, समरत्थ, समरथीक, समरथ्थ, समराथ, समाथ, समारथ, सम्रत्थ, सम्रथ, ससमत्थ, ससमाथ, सामरत्थ, सामरथ, सामरथि, सामरथीक, सामरथ्थ, सामाथ, सिमरथ, सिमरथ्थ, सुसमाथ।

समरथक-वि. [सं. समर्थक] समर्थन करने वाला, जो समर्थन करे।

समरथन-स. पु [सं. समर्थन] किसी के मत का अनुमोदन करने की क्रिया।

उ०—साची झूठी सुणा अर सहवा, पडै समरथन करणौ पूर।

—चडीदान सादू

समरथा—देखो 'सामरथ्य'।

उ०—वासै थोरी सौ पण पाणी रै विना तिसाया मरतौ हालै पोहचण री समरथा नही।—साह रामदत्त री वारता

उ०—२ हरीया साई एक है, सबै समरथा जान। ऊ जळ माही थळ करै, थळ ताह नदी निवान।—अनुभववाणी

उ०—३ दुनीया दुसट बुधिता होसी, मनमुख ग्यान समरथा।
धरता कु करता करि जाणै, अरथु करै अनरथा।—अनुभववाणी

समरथीक—देखो 'समरथ' (रू भे)

उ०—अम्है छा बाळा भोळा राज छौ सबै बात सयाणा, सबै बात पयाणा, सबै बात समरथीक।—अ. वचनिका

समरथ्थ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

उ०—पैदला हैदला हतय प्राण, गैदला उडावै आममान। त्रास पड असुरदळ भगय ताम, समरथ्थ सिवौ रणजीत साम।

—शि सु. रू.

समरद-स. पु —१ राठौड़ वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

[स. समर्द] २ युद्ध। (अ. मा.)

समरधुका-स. स्त्री. [स. समर्धिका] बेटी, पुत्री। (डि. को.)

समरपण-स. पु [स. समर्पण] १ श्रद्धापूर्वक अर्पित करने की क्रिया या भाव।

२ आदरपूर्वक भेंट या नजर करने की क्रिया या भाव।

३ युद्ध आदि मे अपने आप को विपक्षी के हाथो सौंपने की क्रिया भाव या अवस्था, हार स्वीकार करने की क्रिया।

४ अपना अधिकार, स्वामित्व आदि की अन्य को सौंपने की क्रिया या भाव।

५ भगवान् के विग्रह के समक्ष खडा करके भक्त को आचारवान् वैष्णव बनाने की क्रिया। (वैष्णव)

रू. भे.—समप्पण।

समरपणमंत्र-सं. पु. [स. समर्पणमंत्र] गोकुलिया गोसाईं सम्प्रदाय का प्रमुख गुरुमत्र जो कुछ विशेष व्यक्तियो को ही सुनाया जाता है एव जिसके अनुसार शिष्य अत्यधिक पवित्रता से अपना जीवन व्यतीत करता है।

समरपणी-वि.—गोकुलिया गोसाईं सम्प्रदाय का 'समरपणमत्र' सुनने वाला।

उ०—सो कासू तारीफ की जावै वडो धरमात्मा गुसाईं जी रौ सिस्य समरपणी हुवौ।—मारवाड़ रा अमरावा री वारता

समरपित—१ दिया हुआ।

२ धारण किया हुआ।

उ०—स्यामा कटि कटि मेखला समरपित, क्रिसा अग मापित करळ। भावी सूचक थिया कि भेळा, सिघरासि ग्रहगण सकळ।

—वेलि

३ देवता को अर्पित किया हुआ।

४ समर्पण किया हुआ।

समरपणौ, समरपवौ—क्रि स.—१ श्रद्धापूर्वक अर्पित करना।

२ आदरपूर्वक भेंट या नजर करना।

३ युद्ध आदि मे अपने आप को विपक्षी के हाथो सौंपना, हार स्वीकार करना।

४ अपना अधिकार, स्वामित्व आदि अन्य को सौंपना।

५ भगवान के विग्रह के समक्ष खडा करके भक्त को आचारवान् वैष्णव वनाना।

समरपणहार, हारौ (हारी), समरपणियौ—वि०।

समरपिओडौ, समरपियोडौ, समरप्योडौ—भू० का० कृ०।

समरपीजणौ, समरपीजवौ—कर्म वा०।

समरपियोडौ-भू का. कृ —१ श्रद्धापूर्वक अर्पित किया हुआ. २ आदरपूर्वक भेंट या नजर किया हुआ. ३ युद्ध आदि मे अपने आप को विपक्षी के हाथो सौपा हुआ या हार स्वीकार किया हुआ ४ अपना अधिकार, स्वामित्व आदि अन्य को सौंपा हुआ ५ भगवान के विग्रह के समक्ष खडा कर भक्त को आचारवान् वैष्णव वनाया हुआ।

(स्त्री. समरपियोडी)

समरभूमि-स. स्त्री. [स.] युद्धस्थल।

समरम-सं. पु [स सम+रमण] समान रूप से क्रीडा करने का भाव।

उ०—सेस कूरम जिर्त समरम, इळा सुर भ्रम निगम आगम।
सुखि तपोभ्रण भरम प्रभ सम, मरम निध जिम माल।—रा. रू.

समरव, समरवी-स स्त्री [स. रव+सम] विजली।

(ना. मा, ह. ना मा.)

रू. भे.—समरिव।

भुवनपतियों की देवियां, एकादश वाणव्यतर देव की देवियां और बारह ज्योतिषी देवो की देवियां बैठती हैं। इस प्रकार १२ जाति की परिषदा भराती है उसे समवसरण कहते हैं।

रू भे.—समोसरण।

समवाद—देखो 'सवाद' (रू. भे)

उ०—समवाद रिखीकेस पाधरो संभारियो क, सिवा देण गाथ गे उचारियो सरस्स। बीछडेवो नाथ रो प्रमाद भू विचारियो क, दूजा गोपीनाथ रो जुहारियो दरस्स।—साहिवो सुरताणियो

समवादी—देखो 'सवादी' (रू. भे.)

उ०—१ दिन दिन जोर वधै वळ दाखै, श्राण 'अजीत' तणी मुख आखै। वादै सो हारै समवादी, सोवै सोवै वधै फिसादी।

—रा. रू.

उ०—२ गह धरती रिणमल जिण गादी, विग्रहिया लागै समवादी।—रा. रू.

उ०—३ रज रुधा रिव खेत में, मुरलडै समवादि।

—अनुभववाणी

समवायग, समवायांग—स. पु.—जैन धर्म के ३२ सूत्रो मे से चौथे सूत्र का नाम।

उ०—१ सूत्र समवायग माहे निचोडए, तिण अनुसारै रिख 'जयमलजी' कीनी जोड ए।—जयवाणी

उ०—२ चउथउ समवायाग सुणौ स्रोता गुणी हो लाल।

—ध व. प्र.

समवायु—स. पु. [स. समवाय.] १ समूह, समुदाय। (उ र)

२ घनिष्ठ सम्बन्ध।

समवेग—स. पु.—श्रीकृष्ण के एक घोडे का नाम।

उ०—सुग्रीवसेन नै मेघपुहप समवेग बळाहक इसै वहन्ति।—वेलि

समवेत—वि —१ अटूट सम्बन्ध युक्त।

उ०—ढोल रो धम्मीडो डाडिया रो कडाको अर चूडिया री खणाक समवेत सुर सु एक अनोखो रस पैदा कर री ही।—रातवासो

२ बहुसंख्यक।

३ एक साथ मिला हुआ, एकत्र।

उ०—लुगाया रा समवेत सुर मैं ई सुसीला री तीखो सुर छानो नी रह्यो। वो कान लगाय नै सुणण लाग्यो हो।—अमरचूंनडी

समसत, समसत्त, समसथ—देखो 'समस्त' (रू. भे)

उ०—१ आखी आजमसाह सू, साह विरत्तै वत्त। प्रथम अकब्बर वधिया, पाछै ए समसत्त।—रा रू

उ०—२ जाय धरै हळवद्द सूं, राज लोग समसत्त। नाथदवारै परमदा, आवी धार वरत्त।—रा रू.

समसमा समसमी—वि.—बराबर, समान।

उ०—१ सकुडित समसमा सव्या समयै रति वाछिति रुकमणि रमणि। पथिक वधू द्रिठि पख पखिया, कमळ पत्र सूरिज किरणि।

—वेलि.

उ०—२ राति विढियो इसी भाति नरवै रयण, सममसी मार देनौ सवाही। तेण उदमादियो चद कमधा तिलक, मात मादो थियो सूर माही।—किसनो आढो

समसर, समसरि—स. पु.—महादेव, शिव। (अ मा)

वि.—बराबर, तुल्य।

उ०—१ सोभन श्रवास सोभा सुमेर, कोटक भंडार समसर कुमेर।

—सू. प्र.

उ०—२ धरि जै सुत प्रतव्योम धुरधर, सुत प्रतव्योम भाण राजेस्वर। भाण सु जादव दिवा (क) तेज भर, सुत महदेव हुवो इद्र समसर।—सू. प्र

उ०—३ वे हरि हर भजे भताम बोलै, मैं अव भागीरथी स त्। एक देस वाहणी न आणा, सुरसरि समसरि सू।—वेलि

समसाण—स. पु. [स. श्मशान] १ वह स्थान जहां मृत शव की अत्येष्टि क्रिया की जाती है। (डि. को)

उ०—१ रुन घ्रति चदण कपूर, गर्कै समसांण सभाई। विविध अमित सुचि वसत, चैहरिन नियमि चलाई।—रा रू.

उ०—२ हुआ ग्रीध समसांण, वाढ करिकां कूद्रमळ। नर हय गय पळ खीण, मत्त पळ जबू सभळ।—गु रू बं.

२ कब्रिस्तान।

रू. भे —स्मसाण।

समसाणकाळिका—स. स्त्री. [सं. श्मशानकालिका] एक देवी जिसका पूजन उपासक मांस-मछली खाकर, मद्य पीकर और नग्न होकर श्मशान मे करता है। (तान्त्रिक)

रू भे.—स्मसाणकाळिका।

समसांणपति—स पु. यौ [स. श्मशानपति] शिव, महादेव।

रू. भे.—स्मसाणपति।

समसाणपाळ—स. पु यौ [स. श्मशानपाल] श्मशान का रक्षक, चांडाल।

रू भे —स्मसाणपाळ।

समसाणभैरवी—सं. स्त्री. [स. श्मशानभैरवी] श्मशान में रहने वाली देवी। (तान्त्रिक)

रू भे.—स्मसाणभैरवी।

समसाणवासणी, समसाणवासिणी [स. श्मशानवासिनी] काली।

रू. भे —स्मसाणवासणी।

समसांणवासी—स. पु. [स श्मशान+वासी] २ शिव, महादेव।

२ चाडाल।

रू. भे —स्मसाणवासी।

समसिउ—सं पु —समस्या।

उ०—किहा घटइ पारथ रहिया ति नासी, गगेउ बोलइ समसिउ विमासी।—सालिसूरि

समसेर—स स्त्री [फा शमशेर] तलवार, खड्ग।

समळी—देखो 'सवळी' (रू भे) (डिं. को.)

उ०—१ ग्रीभणि दीयँ दुडवडी, समळी चपँ सीस। पख झपेटा पिउ सुवै, हूं वळिहारी थईस।—हा. झा.

उ०—२ सीचाण समळी वळी, ग्रीधणि गयणि भयति। सारसडी सायर-परि, क्षिणि क्षिणि जाइ रवति।—मा का प्र

समळो—१ देखो 'सवळो' (रू. भे.)

उ०—१ मोती का ग्राखा किया, कू कूं चदन पाका पान। ग्रमळी समळी ग्रारती, जाइ वधेरइ दियौ मिळाण।—वी दे.

उ०—२ उडै रजी ग्रपार, ग्रीभण समळा ग्रहग्रहै। सामँ छतीसह सार, दळ हालै 'गोगा' दिसो।—गो. रू

उ०—३ खळदळा ककळ सवळ खड, वीर तडै भुजवळी। सुज गळा समर्य ग्रीध समळां, पळा भोजन परघळी।—र ज प्र.

२ देखो 'सावळो' (रू भे)

(स्त्री. समळी)

समवता-वि —समान, वरावर, तुल्य।

उ०—हरख सोक दुख सुख तहा, नाहिं सुसुति समवता। द्रस्य ग्रद्रस्य लीन हिरदा मैं, प्राग्य जीव सायता।

—स्रीसुखरामजी महाराज

समवड़-वि. [स. समवृति] १ समान, वरावर। (डिं. को.)

उ०—१ राजा रीत न छाडिजे, समवड करौ सनेह। समवड सू सुख पायजे, नीवा केही नेह।—जसमा ग्रोडणी री वात

उ०—२ वूर पडि जवूर विहु घड, भुरज वीछडि पडै खडभड। विढण घरि ग्रड मुहड, समवड वडवडै पिड चार।—रा. रू.

स स्त्री —१ समानता, वरावरी। (डिं को)

२ देखो 'समोवडियौ' (रू. भे)

रू. भे—समड, समवडि, समवडी, समवड, समवडी, समवण, समवळ, समावड, समीवड, समीवड, समं वड, समोवडियौ, समोभर, समोवड, समोवण, समोवर।

समवडणौ, समवडवौ-क्रि. स —सामना करना, मुकावला करना।

उ०—ढहै ढीचाळ रत खाळ खळकै धरा, जुडै धड पडै भडदड जडाले। 'सता' विण ग्रवर कुण साह सू समवड़ै, पाघरै पेज मैदान पाळै।—भरमौ ग्राढौ

समवडणहार, हारौ (हारी), समवडणियौ—वि।

समवडिग्रोडौ, समवडियोडौ, समवडयोडौ—भू० का० कृ०।

समवडीजणौ, समवडीजवौ—कर्म वा०।

समवडि—देखो 'समवड' (रू भे.)

उ०—वदता वछित होइ ग्रहनिसि, देखता चित हीस ए। स्रीपूज्य जिनचद सूरि, समवडि ग्रवर कोइ न दीस ए।—ऐ. जै. का स.

समवडियोडौ-भू का कृ —सामना किया हुग्रा, मुकावला किया हुग्रा।

(स्त्री. समवडियोडी)

समवडियौ-वि —वरावर का, वरावर वाला। (डिं. को.)

समवड़ी—देखो 'समवड' (रू. भे.)

समवड, समवडी—देखो 'समवड' (रू भे.)

उ०—१ ग्रकळ तुहिज कै कोइ ग्रवर, वोहौनामी वूझव्व। लिखमीवर लेखै नही, समवड प्राणी सव्व।—ह. र.

उ०—२ राठौड कुग्रर पक्खर रवद, कवण (क) समवड करै। जमदाढ छोड विज्जै लई, कना राउ ग्ररवद्द रै।—गु. रू. वं.

उ०—३ जोधार ग्रहोनिस जाळवै, जीण-साल डीलै जडी। तिण वार हुवौ हिंदू तूरक, कोई गर्जासघ समवडी।—गु रू. वं.

उ०—४ संजम सिरि उर हार सोहइ, पूरव रिसि समवडी धरइ।

—ऐ जै का. स.

समवण—देखो 'समवड' (रू भे.)

उ०—है नह को हिंदवाण मैं, समवण तो समराथ। पाळग सजन प्रताप सौ, पणधर साचौ पाथ।—ठा मेहरदान

समवती-स. स्त्री.—वह घोडी जिसके मूछो के स्थान पर कुछ वाल उगे हुए हो। (शा. हो.)

समवरती—देखो 'समवरती' (रू भे) (ह ना मा.)

समवळ—देखो 'समवड' (रू. भे)

उ०—वधि जोर सेर विलद दळ, साह समवळ दुद। मन जोस लग व्रहमड, खग दावि गुजर खड।—रा रू.

समवसरण, समवसरन-स. पु —जैन तीर्थंकर जिनेश्वर के उपदेश देने का स्थान, उपदेशशाला।

उ०—१ प्रभू तेरै वयण सुवियारै, सरस सुधा हु तै सारै। समवसरण मधि सुणि मधुर, ध्वनि वूझति परसद वारै।—ध व. ग्र

उ०—२ समवसरण मा वइसी नइ, जिनवर नी वाणी। साभलसु साचै मनइ, परमारथ जाणी।—स कु

उ०—३ ग्राप ग्ररिहत भलै ग्रावियाजी, गावै ग्रपछरह गधरव्व। समवसरण रचै सुरवरा जी, सखेपै तै कहु सरव।—वृस्त.

वि० वि०—उक्त उपदेशशाला सौधर्म इन्द्र की ग्राज्ञानुसार कोषाध्यक्ष कुवेर ने वनवाया था। जैनमतावलवियो के ग्रनुसार जिनेश्वर उपदेशशाला का प्रथम कोट चांदी का वना ग्रौर कगूरे स्वर्ण निर्मित हो। उसके भीतर १३० धनुप (४ हाथ का एक धनुप माना जाता है) की दूरी छोड कर दूसरा दुर्ग स्वर्णनिर्मित तथा कगूरे रत्नजडित हो। इसके ग्रन्दर १३० धनुप का फासला छोड़ कर तीसरा किला रत्नो का बनाकर कगूरे मणि-माणिक्य के वने हो। ऐसे सुन्दर दुर्ग के मध्य भाग मे ऊची तीन कटनी वाली वेदिका (गधकुटी) पर तीर्थंकर भगवान ग्रष्ट प्रतिहार्य युक्त विराजते हैं। उक्त वेदिका के चारो ग्रोर १२ विशाल कक्ष वने हैं। तीर्थंकर के ईशानकूण मे १ श्रावक ग्रोर दो श्राविका तथा तीन वैमानिक देव वैठते हैं। ग्रग्निकूण मे चार साधु ग्रौर पाच साध्वियो तथा छः वैमानिक देव की देविया वैठती है। वायुकूण मे सात भुवनपति देव ग्रौर वाणव्यतर देव तथा नौ ज्योतिपी देव वैठते हैं। नैऋत्यकूण मे दस

—मे. म.

२ देखो 'सम्मान' (रू भे)

समाणी–स. स्त्री. वि —१ हमउम्र, समवयस्का।

उ०—१ सही समाणी साथि करि, मंदिरकू मल्हवत। सउदागर नेडी वहइ, सुणिवा प्रीतम-वत्त।—ढो. मा.

उ०—२ दीधा मणि मंदिरे कातिग दीपक, सुत्री समाणियां माहि सुख। भीतर थका बाहिर इम भाखे, मनि लाजती सुहाग मुख।

—वेलि

उ०—३ रमा सारखी हे सखी धन्य रेखा, ग्रहीमड वाळा लहै कोण लेखा। सहस्सा लखी सोळ एरे समाणी, पचास ग्रभेचत्र दो पट्ट-राणी।—ना. द.

उ०—४ सग सखी सोळ कुळ वेस समाणी, पेखि कळी पदिमणी परि। राजीत राजकुअरि रायअगण, उडीयण वीरज ग्रव हरि।

—वेलि

२ समान, बराबर, तुल्य।

उ०—मेहा मोटी खोड, माणसने मरवा तणी। बीजी छै लख कोड, ग्रे समाणी ग्रेको नही।—ढो मा.

३ पूरा, सम्पूर्ण।

रू. भे —सामिण, सामिणी।

समान–स पु [स समान] नाभिस्थित शरीर के ग्रन्तर्गत दश वायुग्रो मे से एक जो नाभि के पास रहती है।

वि. [स. समान] १ बराबर, तुल्य। (डिं को)

उ०—१ कोई काहू पावही, देही काहू दान। सुणिया ऊनड सूध कवि, सुकवि उदार समान।—वा. दा.

उ०—२ साहिब चुगल समांन है, सो इज बुरी सुणत। स्रोता वकता होत सम, भणिया लोक भणत।—वा दा

उ०—३ सूरा ताहि न मारियै, मूवा मिटी समान। जनहरिया मन मारियै, ग्रतर भरघा गुमान।—ग्रनुभववाणी

उ०—४ हाथ जोड'र वीन रै बाप सू बोल्यो—सगा मिनख री दिन दसा है, सै दिन समांन नी हुवै।—दसदोख

उ०—५ मसक समांन कान्ह कू मारघो, उदनवान जळजान उवा-रघो। निरभय किय वीकाण नरेसुर, पुनि देसाण वसायो निजपुर।

—मे. म

२ ग्रनुसार, मुताबिक।

उ०—ग्रठी दूजै साहजादै सुजासाह भी पहली री सूचना समांन दिल्ली रै ग्रभिमुख प्रयाण कीधो।—व. भा

३ जैसा, समान, ग्रनुरूप।

उ०—१ द्वितीय पुत्र महाराजकुंवार स्रीचिरजीवो धू ग्रायु र बळ ग्ररि मूळ उपाडण गरीब निवाज प्रतापीक स्रीसूरघ समान कुवर स्रीदळपत जी रो जनम हुवो।—द. वि

उ०—२ कटघा घण सजळ छजळ कान, सिरगिर कज्जळ कूट समान। ससूदित साप समाक्रत सुंड, दतूसळ मूसळ रूप दुरड।

—मे. म

क्रि. वि.—१ ही।

उ०—इतरा माही सारा री नजर काळ-रूप दीठो। देखता समांन कायरा रा प्राण घुटणे लागिया।—डाढाळा सूर री वात

२ देखो 'सम्मान' (रू भे.)

३ देखो 'सामान' (रू. भे)

उ०—मारग मैं वात करी, पूजा री समांन डूमां रो सन्माण ग्रर कळस भळे इक्कीस तथा इग्यारै घालसी।—दसदोख

रू. भे.—समाण।

समानता–स स्त्री. [सं. समानता] समान होने का भाव, समानता।

समानाधिकरण–स. पु [स. समानाधिकरण] किसी वाक्याश मे किसी समानार्थी शब्द को स्पष्ट करने के लिए ग्राने वाला शब्द।

(व्याकरण)

समानासन–स. पु.—योग के चौरासी ग्रासनो मे से एक ग्रासन विशेष, जिसमे स्वस्तिकासन की तरह बैठ कर दोनो हाथो की तर्जनी ग्रौर ग्रगूठे के बीच मे प्रदेश से कटि को दबाना होता है ग्रौर तर्जनियो के ग्रग्र भाग मे नाभिप्रदेश को जोर से दबाना पडता है। इससे समानवायु बलवान होता है।

समानिका–स स्त्री —एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे एक रगण, एक जगण तथा ग्रन्त मे एक गुरु होता है।

समानोदरज–स पु. [सं समानः+उदर्यः] सगा भ्राता, सहोदर।

(ग्र. मा, ह. ना. मा)

समाम–स. स्त्री. [ग्र. शमाम] सुगध, महक।

समामी–स. स्त्री. [स सामान्य] वैभव, एश्वर्य।

उ०—जोइयो दूलजी लक्खी जगळ मैं रहै। सारी वस्ती कन्है रहै वडी समांमी रो सरदार।—दूलजी जोइया री वारता

समांमो–वि. (स्त्री. समामी) १ वीर, बहादुर।

उ०—नरा नाह पतसाह छोडाड सकियो नही, समांमो कमध जोय निमामी सिध। ग्रापरा वडेरा खाटिया ग्रखाडा, 'करण' ग्यो प्रवाडा बाधिया कध।—करणसिंघजी रो गीत

२ बढिया, उत्तम।

उ०—१ सभै समांमा सूर वै, साज बाज सग्राम। ग्रापो मेटै हरि भजै, हरीया भेटै राम।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ सुत 'जगरूप' ग्रजागि समाम, रिमा खग फाग रमै भड 'रांम'। वधै हरिनाथ समोभ्रम 'वान', खळा खग भाटत साहिब-खान।—सू प्र.

३ ग्रनुकूल, पक्षीय।

उ०—वादि वादि फुरमाण, सिलह पाखर करि सामा। ग्राय सबै उमराव, सूर वह मिळे समामा।—सू. प्र

४ मिलनसार।

(डिं को; ना डिं. को.)

उ०—१ समसेर वाण छूटै समर, श्रा ओपम इण नाचनै। परियाण जांण छूटै पनग, जावै चदण बावनै।—सू प्र.

उ०—२ सोढा ऊमरकोटरा, सिर कटिया समसेर। वाहै हणिया वैरहर, 'वांका' भारथ वेर।—बा दा

उ०—३ सुभट्ट विढत वहै समसेर, भराळ वढीवै सूळा भेर।
—गु. रू. ब

रू. भे.—समम्ससेर, सम्मसेर।

[illegible]—स पु—खड्गधारी।

उ०—हुवस तिलगा मरहटा, सूरा समसेरी। कोकनडा भडखड, खग लग छेडा फेरी।—द. दा

[illegible] स्त्री [सं. समष्टी] सबका समूह, एक साथ।

उ०—निकाई छाई ते प्रकट प्रभूताई सिख नखा। समस्टी व्यस्टी तें सजन दिव द्रस्टी रिसी।—ऊ का

[illegible]—वि [स.] १ सब, कुल, समग्र।

उ०—१ तीरथ जात समस्त, सकळ साधा मिळ सगा। रास तमासा रमै, हुळस नाचै हुडदगा।—ऊ. का

उ०—२ मुहकम री अनुज लालसिंह मद्रदेस मैं श्राप री अमल जमाय महीस हुवौ जिणरी सतति समस्त माद्रेचा चहुवांण कहीजै।
—व. भा

२ समास द्वारा मिलाया गया, संयुक्त।

रू. भे—समरथ, समथ, समथ्थ, समसत, समसत्त, समसथ।

[illegible]—स. स्त्री. [स. शमश्रु] मूछ।

उ०—भ्रमैं प्रत्यूह व्यूह पै, समस्सु भ्रुह लौ भिरी। क्रमै प्रत्यूह ओपमा, दुरूह दत ली किरी।—ऊ का

[illegible] स्त्री. [स.] १ सलाह, मशविरा, विचार।

उ०—१ ताहरा थोरिया आ समस्या कीवी जु 'ओ छोकरो ऊभो छै, आपा आ साढ लै जावा, तो आपा आजरी वळ करा।'
—नैणसी

उ०—२ औ समचार सुण ठाकुरसी जी साथ सारै सू चढिया। सू तेली रे घर दिसा आया नै समस्या करी।—द दा

२ कठिन व विकट प्रसग, उलझन।

उ०—बीता पहर कवर विग्रहियौ, करि बह रुदन हेक भ्रत कहियो। धरपति सुणि तिल सोच न धारै, विध करि पाण समस्या वारै।
—सू प्र

३ छद बनाने के लिए दिया जाने वाला एक पद जिसके आधार पर पूरे छद का निर्माण किया जाता है।

४ सकेत, इशारा।

उ०—१ राक्षस ग्रद्रस्ट हुवौ आयौ सेवा माहे वैठौ तहा राजकुवरि राजा नू समस्या कीवी।—पचदडी री वारता

उ०—२ थै राजा रै पाइगह रा घोडा २ जय विजय नाम छै सु लै मरदानो वागो पहर खरची लै नै बाग मैं आयौ। मुरिगै नू मेल्हि समस्या कराविज्यो।—चौबोली

उ०—३ तहा कुळ की मरजादा छोडि लाज सौ बाहर होय, मीळ किनारै घर, समस्या कर सकेत स्थान कहियौ।—वैताळ पचीसी

उ०—४ प्रधान रा पुत्र नू कहियो—तै दीठी? उवै कहियौ—दीठी पण यासू कै समस्या कर गई। राजपुत्र कही—अेक कमळ हाथ हतौ सु माथै लगाइ, कानै लगाय, दातै लगाइ, पगै लगाय फेर हियै थापियो।—वैताळ पचीसी

समस्सेर—देखो 'समसेर' (रू. भे)

उ०—लुग्घा सिघाणी काळ वाणी पख वाणी बोल ए। परवत्त मेर जुध पेर समस्सेरं तोल ए।—गु रू. वं.

समहदी—वि—सीमा का, शरहद का।

उ०—हुरम्मजि केची मुकराणी, खधार हरेबी खुरसाणी। आरब्बी रूमी उजबक्का, समहदी सभर-कदक्का।—गु रू. ब.

समहर, समहरि—स. पु.—१ तलवार। (ना डिं. को)

उ०—केई बार निकल्यो कवारी घडामैं काढि। समहर भडा सूं वढि।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ देखो 'समर' (रू भे.) (अ. मा, डिं को.)

उ०—१ खत्रवट सरम सदा था खोळै, श्री हिंदवाण वचावी ओळै समहर मौ दळ लियौ समेळा, 'भीम' सहत खुमाणा भेळा।
—रा रू.

उ०—२ राम प्रधानो राजिरो, रामण नह धारै, समहर माडो सूरिमा, इम वयण उचारै।—सू प्र.

समहो—देखो 'साम्हो' (रू. भे)

उ०—असुर कहै मिळवा नह आवा, पडै आप समहो निज पावा।
—सू प्र.

समां—देखो 'समय' (रू भे.)

उ०—आयौ घणौ ऊताळ, सरियादै हेला समां। वणे ठा हेकम वाळ, मिनडी जाया मोतिया।—रायसिंह साटू

२ देखो 'समो' (रू. भे)

समाजोग—देखो 'समाजोग' (रू भे)

समाण—१ देखो 'समान' (रू भे)

उ०—१ 'जगपत्ती' उण जोस मैं, रत्ती आग समाण। वनसपत्ती खळ जाळवा, कर तत्ती केवाण।—रा. रू.

उ०—२ सेजा मैं घर घर सखी, आणै धजर अजाण। धारा मैं राखै धजर, सौ कुण कत समाण।—वी म.

उ०—३ धर जगळ ऊपर फौज धिकी, जमरांण जमात समाण जिकी। असमाणक मेह घटा उनड, दधि जाणक छोड अजाद दई।
—मे म

उ०—४ हद डाण म्रगा अभिमाण हरै, प्रळची कुरवाण उटाण परै। घट सुंदर ग्रीव कपाण घटी, पवमाण विमाण समाण पटी।

उ०—३ कुंडणपुर हुन्ता वसा कूंदणपुरि, कागळ दीधो एम कहि। राज लगं मेल्हियो रुखमणी, समाचार इण माहि महि।—वेलि

२ सामान्य बात। (हि. को.)

३ हाल, ब्यौरा।

उ०—चोर पिण घणो राजी हुवो। माहजी म्हा मूं घणो उपकार कीधो। पछै चोर पोता रै ठिकाणै ग्राय चोरा रै न्यातिला में समाचार कह्या। तै सुणनै हेप चल्या।—भि. द्र.

रू भे.—समचार, समचार, समिचार, सामाचार।

समाचारपत्र-सं. पु [स.] वह पत्र जिसमें समाचार प्रकाशित होते हों। अखबार।

समाज, समाजि-स. पु. [सं समाजः] १ बहुत से लोगों का समूह या झुण्ड। (अ मा.)

उ०—विना सुधार मानव समाज मैं टयं सूं कोई नहीं बच सकैलो। आज हमा तौ काल तमा।—दसदोख

२ एक जगह रहकर एक प्रकार का कार्य करने वाले लोगों का वर्ग, दल या समुदाय।

उ०—चित चाह उछाह पथा चुणियै, सब संत समाज कथा सुणियै।—ऊ. का.

३ समूह, दल।

उ०—१ गलमुडमाळ मसाण-ग्रह, संग पिसाच समाज। पावन तुम्ह प्रभावस्, सभू अपावन साज।—वां. दा.

उ०—२ मोहै अगिया ओट, हरी रग माज में। दुढिया चकवा दोय, सिवाल समाज में।—बां. दा.

उ०—३ दिती सुन सुंभ निसुंभ विदारि, कई रतबीज गई अह-कारि। सुणी जिण कीरत पीर समाज, रजा जिण सीम धरी जमराज।—मे. म.

३ साथी, सगी।

उ०—आहूंदे आराण बीच गहतोल उमंदा अठी, वाग्वांग धावना दूणा पैतीस विचार। पावू साथ तेरा-बीसी प्रतीक समाज पायी, सूर चद मही जिनै कीरत्ती समार।—बादरदान दधवाडियो

४ हस्ती, हाथी। (डि. ना. मा.)

उ०—जुग जुग भीर हरी भक्तन की, दीनी मोक्ष समाज। मीरा सरण गही चरनन की, पैज रखी महाराज।—मीरा

५ सभा। (अ. मा; हि. को, ह. नां. मा.)

६ सामान, सामग्री।

उ०—प्रमानै सवार होय माडिया ठिकाणै पूगी, पायो मोढा घरै सारी बात री प्रमाण। सांमळी प्रभत्ती काना टीका री समाज साज्यो, ओपै कोळपट पावू अगजी दीवाण।

—बादरदान दधवाडियो

७ परिग्रह।

उ०—अट तर सूर 'बनेस' विमल अनि वितमियो, करि गुणवांना कदर हियै घण हुलसियो। मपत राज समाज विसेस वधावियो, अलवर गढ आमेर जिसै छक छावियो।—सिववक्स पाल्हावत

रू. भे.—सांमाज।

समाजोग-सं. पु.—१ मेल, मिलाप।

२ संसर्ग, सम्बन्ध।

३ शुभ योग।

४ कोई आकस्मिक घटना।

५ किसी कार्य के लिए कुछ लोगो का होने वाला मेल-मिलाप।

६ समय का ऐसा योग जिसमें कोई एक या एक से अधिक घटना साथ-साथ घटित हो, संयोग, इत्तिफाक।

उ०—१ इण भात छमरक छमरक भमरक भमरक टोकरी रा डिन सुख सूं रळकता हा कै समाजोगरी बात अैडी वणी कै अेक दिन अेक राजकवर डोकरी री उण टपरी रै गळाकर सिकार करण सारू निकळियो तौ टपरी रै माय किणी नै बोलती सुण वो अणछक हव्यो।—फुलवाडी

उ०—२ डोकरी नै मारग काटणो भारी व्हैगो। विसाई खावती खावती टुळक टुळक पग ठिरडती चालती ही। समाजोग री बात कै अेक असवार घोडै चढ्या उण इज मारग वकै निकळियो।

—फुलवाडी

उ०—३ इकदा समाजोग रै विर्खै एक गाया रै एवाळो आयनै पुकार घाली—जो माहार गाया चरावा जावा, जिण रोही मैं सूर एक हाल्यो छै, सू गायां नै दुख देवै छै, तीण री जावतो कीजो, ज्यू गायान सुख होवै।—रीसालू री वात

७ भीड, जनसमूह।

८ दैवयोग।

उ०—अेक दिन समाजोग री बात अैडी बणी कै आधी ढळिया चार वावरी वा टज सेठा री हवेली चोरी करण सारू आया।

—फुलवाडी

९ दोस्ती, मैत्री।

१० कारण, हेतु।

११ सम्भावना।

१२ अवसर, मौका।

उ०—१ हिवै हिरण इकदा समाजोग अगलो नै कुंवरजी वाता करता अगलो बोलियो—स्रीमहाराजकुवार! म्हारा जतन आप घणा करो छो, माण दाणा री कूंमी काई न छै।

—रीसालू री वात

उ०—२ ताहरा एक दिन री समाजोग छै। राव चवंडो माय कर नै नागोर माहै जाय पैठो। रोज आवतो। अपरचो कोई न हुतो। जायनै खोखर नूं मारियो।—नैणसी

उ०—३ यु रहतां थका, एक दिन री समाजोग। सावत सहायच चारण थटै रै पातसाह रै घोडै दरियाई ऊपर चरवादार हुतो। एक दिन सांवत घोडो लेनै नीसरियो।—नैणसी

उ०—घणै हरख खुस्याली सु सोका सु इसो सुख लीया हालै सु कोई इव न जाणै जो ऊचा बोलजै। जो कही री छोकरी-सहेली क्यु टुरटुराटो करै तो आप डेरै जाय ललोपत्तो मुनहारा कर आवै। मन-खात कही सु पड न देवै। ऐसी स्याणी समामी सो सारो राहणो राजो।—कुवरसी साखला री वारता

४ अनुरूप, समान।

उ०—जामो दोयसै हाथरो अगा सो हाथरो पायजामो, समामो त्रिखग पेटो लपेटो सकाज। आफाळियो राळियो साकडै तुरी सदा न चालै, उजाळियो वाकडै वाकडापणो आज।—करणीदान कवियो

५ समान प्रतिष्ठा वाला।

उ०—दहूवै दळा वाजिया दमामा, सूर समामा वे सुभट। रामा'रा माथै सरिस रण, 'परसा' रा माथै प्रगट।

—मदनसिंघ ने सूरसिंघ रो गीत

समा-स. स्त्री [फा शमा] १ मोमवत्ती।

२ लहगा जाति की एक शाखा जो पहले यादववशीय क्षत्रिय थे। प्राचीन समय मे इनका राज्य जामनगर, भुज आदि प्रदेशो मे था।

३ यादववश (भाटीवश) की एक शाखा।

स पु [अ] ४ आकाश, गगन।

५ दृश्य, नजारा।

क्रि वि—१ ही।

उ०—१ समाचार सुणता समा, उर अति जोस अमीर। दिया नगारा सामुहा, सफै अकारा मीर।—रा. रू

उ०—२ चडतां घ्रपति समा भडचडिया, जोपै रूप सनाहा जडिया। खह रूकि गरद वधै अस खडिया, नीरधवध जाणि नीमडिया।

—रा. रू

२ देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—समा विगडसी सेंग, नीत विगडसी न्यारी। देस विगडसी, दसा, क्यारी सू पीगी क्यारी।—ऊ का

समाइ, समाई-वि [स समाधि] समाधिस्थ, ध्यानमग्न। (जैन)

सं. स्त्री [स सामायिक] १ समाधिस्थ या ध्यानमग्न होने की क्रिया।

२ वह क्रिया जिसके द्वारा आत्मा मे सम भाव रखा जाय।

उ०—१ एक गोचरी महाजना री करावै। सो स्वामीजी गोचरी ऊठ्या पिण लोका रै बदोवस्ती, भीखणजी नै एक रोटी देवै तो इग्यारै समाइ दड री। जठै जाय जठै आहार पाणी री जोगवाइ पूछ्या कहै म्हे तो थानक माह समाइ करा।—भि. द्र

उ०—२ सो स्वामीजी गोचरी ऊठ्या पिण लोका रै बदोवस्ती, भीखणजी नै एक रोटी देवै तो इग्यारै समाइ दड री। जठै जाय जठै आहार पाणी री जोगवाइ पूछ्या कहै म्हे तो थानक माहे समाइ करा।—भि द्र

३ क्षमा करने की क्रिया।

उ०—दादू बहुत वुरा किया, तुम्हे न करना रोख। साहिब समाई का धनी, बदै को सब दोख।—दादूवाणी

रू भे—समाही।

समाक-स. पु [अ] वह अत्यन्त कठोर पत्थर जिसकी खरल बनाई जाती है।

समाकृत-वि. [स. समाकृति] १ समान आकृति का।

उ०—कट्या घण सज्जळ छज्जळ कान, सिरीगिर कज्जळ कूट समान। ससूदित साप समाकृत सूड, दतूसळ मूसळ रूप दुरड।—मे. म.

२ एक समान, अनुरूप।

समागम-स. पु [स.] १ आगमन, मिलन।

२ मुठभेड, भिडंत।

उ०—गढ जगम जग समागम का, जुलमी अतिकाय धका जमका। सुघटा घट घाट घटा सरसै, रसतारव डाण पटा वरसै।—मे. म.

३ मैथुन, सभोग।

उ०—१ तहा भुइ गोरी छै। कहां ठै पाणी झलकै छै। जैसै प्रथम समागम कै विखै। नाइका का वस्त्र उतारि लिया हुइ।—वेलि

उ०—२ निहसै वूठो घण विणु नीळाणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ। प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीघे किरि ग्रहणा लसइ।

—वेलि

उ०—३ छेहडै री राति गाठि छूटी छै। सु जाणै मन री गाठि छूटी छै। राजान कुमार घणै हरख सूं आणद सू उछाह सू नवल रग, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख सेझ री वात उहा हीज जाणी पिण बीजी उण सुख उण वाता कुण जाणै।—रा सा. स.

३ अवसर, सयोग।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति वीमाह रै समागम प्रथम दूलह दूलहणी मिळण रो कोड रगरळी बधामणा कीजै छै। रग महलै धवळहरै पधरावीजै छै।—रा सा सं.

४ मिलन।

५ सत्सगत।

६ बहुत से लोगो के एकत्र होने की क्रिया।

समाचरण, समाचार-स. पु. [स. समचरण, समाचार] १ भली भाति आचरण करना।

२ सदेश, खबर। (डिं. को.)

उ०—१ पण नदलाल गै'णो गळा लेणैरो समाचार खुदो खुद सुणा देवै, जद सेठा रै जी मै जी आवै है अर केवै—वाणिया रै वेटा री आ ही वात।—दसदोख

उ०—२ तै किम भैस व्याया एक महिना ताइ दूध, दही, वावर देवै पिण विलोवै नही। तै देवी रै टाणै पधारज्यो। जद स्वामीजी कह्यो—थारै कद भैस व्यावै नै कद देवी हुवै। म्हानै कद समाचार हुवै नै म्हें आवा।—भि द्र.

उ०—दादू सुरतै सुरति समाइ रहु, अरु वैंनहु सौं वैंन। मन ही सौं मन लाइ रहु, अरु नैंनहु सौं नैंन।—दादूवाणी

१८ निवास होना।

१९ प्रविष्ट होना।

उ०—सोई खुडद आज दिन साप्रत, स्रीदुरगा सकळाई। मूरत अदुल भेख मरदानू, सूरत ह्रदय समाई।—मे म

२० होना।

उ०—पाणी मैं जिण भात निवास अर ठडक समायोडी रैवै उणी भात सासरा रा नाता-रिस्ता मैं उमग, कोड अर हरख अेक-मेख समायोड़ा रैवै।—फुलवाडी

२१ अनुरक्त होना।

उ०—१ गुगी री वेटी खासी मोडी सूती ही। दो-तीन घडी दिन चढ्यो जितै ई ऊठी नी। जित्तै वादळ रा मन माथै उणरै उणियारा रो चित्राम कुरयो। माचा माथै सूती जकी बाळ-अपछरा उणरै हिवडा मैं समायगी।—फुलवाडी

उ०—२ सोना रा कचोळा मैं केसर घोळ्योडो दूध पावती। खुद उणरै अेंठवाडो दूध पीवती। सिझ्या रो अंधारो व्हैताईं उण मोट्यार रा हिवडा मैं समाय जाती।—फुलवाडी

२२ देखो 'सभाणौ, सभावौ' (रू भे)

२३ देखो 'मावणौ, माववौ' (रू भे)

उ०—१ हू हेली अचरज कहू, घर मैं वाघ समाय। हाको सुणता हूलसै, मरणौ कोच न माय।—वी. स.

उ०—२ प्यारा वै दिन वोत था, विच न समातौ हार। अवतौ मिळवौ कठण है, पडै ज वीच पहार।—अग्यात

उ०—३ वरसतै दडड नड वाजिया, सवण गाजियौ गुहिर सदि। जळनिधि ही सामाइ नही जळ, जळवाळा न समाइ जळदि।

—वेलि

समाणहार, हारौ (हारी), समाणियौ—वि०।

समायोड़ौ—भू० का० कृ०।

समाईजणौ, समाईजवौ—भाव वा०।

समाणौ, समावौ, समावणौ, संमाववौ, समावणौ, समाववौ

—रू० भे०।

समातार-स पु.—सदस्य, सभासद। (डि. को.)

समाथ-वि.—१ ऊपर किये हुए, उठाए हुए।

उ०—खागा सेला टोरिया वीरता मत्ता वीर खेत, माभी दत्ता जानकू अजार जाणी मीच। उर्भ मेक मला हू समाथ हाथ किया आयो, माराथ रो पाथ राव अेका अेक भीच।

—ऊमेदसिंघ हाडा रो गीत

२ देखो 'समरथ' (रू भे)

उ०—१ मोज भुजा वळ थभणा, मुडता गयण समाथ। साम नगबत सीम वळ, जोड़ै भीम कि पाथ।—रा. रू.

उ०—२ कळह घणा ही कटक नू, सुछम गिणै समाथ। नवहत्था वाळी नरा, है छाती सौ हाथ।—बा. दा.

उ०—३ दीना पाळगर धन मुनन दसरथ, मकज सूर समाथ। रिणखेत भजण सकुळ रावण, नेतवध रघुनाथ।—र ज. प्र.

उ०—४ चपा चौरग अगळा, कांन्ह अनै हरनाथ। सोजत ऊपर हल्लिया, वाधै फौज समाथ।—रा रू.

उ०—५ नरइद अभो नवकोट नाथ, सरि करण सतरि धरवर समाथ। अहमद नगर खाटण अनूप, रस वीर प्रगट घट विकट रूप।—रा. रू

उ०—६ मानसिंघ कमधज्ज, मऊ सीतापति साथै। चद्रावत गोपाळ, राव भड लियै समाथै।—रा. रू.

समाद—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—देवी चांवड रै थान आगै जरव छै सु राजा सूरसिंघजी री वार मैं सोनारै खिणाई। तिण ऊपर चोतरो छै समाद रो सनी-यासी परसाद गिरी रो पचोळी नैंना रा घर आगै सं १६९० करायो।—मारवाड री ख्यात

समादान-स पु [फा शमादान] १ प्रायः धातु या शीशे का वह पात्र जिसमे मोमवत्ती जलाई जाती है।

[स. शमऽऽदान] २ जैनियो का आह्निक कृत्य विशेष। (जैन)

३ क्षमादान।

समादियौ—देखो 'समाधियौ' (रू. भे)

उ०—ताहरा लिखमी निसासो मूकियो। ताहरा नरो वोलियो—मा! निसासो क्यूं मूकियो? थाहरै वाघै नरै सरीखा वेटा, अर रावजी पण समादिया। था राणीपदो पायो।—नैणसी

समाध-वि —स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

उ०—उठै कवर गजसिंघ नूं सीतळा नीसरी। कंवरजी रो डील रुडो नही, तरै भाटी गोयददास मोहणदास नू कवरजी ऊपर वारियो। कवरजी रै डील समाध हुई, मोहणदास राम कह्यो।

—नैणसी

स स्त्री —१ तन्दुरुस्ती, स्वस्थता।

२ देखो 'समाधियौ' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'समाधि' (रू भे.)

उ०—१ साठा पाव देतौ आयौ वावरैल डाळासयौ, जाठौ भू समाध लेतौ जगायौ जोगंद। दुवारै जमायौ प्यालौ जवानी जोसैल दौला, माटीपणै वातळायौ गेमैल मयद।—दौलतसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ भूवा रै सामी धरनै कैवण लागी—कारीगर किसा अेक सारीखा व्है। फगत अेक जीव री खामी है। फूफोजी तौ अैडा लागै कै जाणै अतुट समाध मैं विराजिया।—फुलवाडी

उ०—३ जलमता बाळक री रोवणी दुनिया री सगळी हसी रौ सार, उणरो वीज रूप। हाथ मायला टावर री कें कें सुणता ई मासी री समाध तूटी।—फुलवाडी

सुर कहै वेस करै सधुग्रारा, साधु समाधि करू तुझ सारा।
—ध. व. ग्रं.

११ शांति, ग्राराम।
उ०—वहु राजवैद्य बोलाविया, कीधला कोडि उपाय। बावना चदन लावीया, पणि तउ रे समाधि न थाय।—स. कु

वि.—स्वस्थ, ठीक।
उ०—१ पणि क्याल तेजसी वडो वैद छै, ग्राज धनतर छै, तिण कन्हा मूग हेक हेक जीवडा राखा च्यारि दिराडीजै तो समाधि हुवै।—द. वि.

उ०—२ पाणी मत्री नइ छाटियउ रे काइ, कुमरी थईय समाधि रे। उठै रे ग्रालस मोडि नै रे काइ, दूर गई सहु व्याधि रे।
—वि कु

११ देखो 'समाधिजिन'। (जैन)
रू. भे.—समाद, समाधि, समाद, समाध, समाधी।

समाधिक्षेत्र–स. पु. [स] १ वह स्थान जहाँ योगी, साधु, सन्यासी ग्रादि के शव को जलाया या दफनाया जाता है एव जिम पर चबूतरा वना दिया जाता है।
२ उक्त स्थान पर वनाया गया चबूतरा।

समाधिजिन–सं. पु [स.] जैनधर्मानुसार भविष्यकाल मे होने वाले सतर हवें तीरथकर का नाम, श्रीसमाधि।

समाधिदसा–स. स्त्री. [सं समाधिदशा] समाधिस्थ होने की दशा।

समाधियो–वि —१ सम्वन्धि, रिश्तेदार।
उ०—क्षेत्रपाल जी नूं घणो ग्रादर सनमान दीनू कहियो थे सदा रा समाधिया छो।—पंच दडी री वारता
२ स्वस्थ, तन्दुरुस्त।
उ०—१ पणि केसवराय जी रख्या करि समाधिया हीज रहिया।
—द वि.

उ०—२ कहै थे हालो जाहरा भोपतिजी समाधियो होइसी ताहरा पधारसी।—द. वि.
३ ग्रन्तरङ्गित।
रू. भे.—समादियो, समाधायो।

समाधी—देखो 'समाधि' (रू. भे.)
उ०—१ सुरत निरत सू पाव धरोरी, पल पल हिरदा माही। ग्ररध उरध विच प्रेम भरत है, रोम रोम छक जाई समाधी ग्रखड लगाई।—स्रीहरिरामजी महाराज
उ०—२ ग्रठी साह रे समाधी हुवा केडै दारासाह नै ग्रधिकार रो काम भी छोडि दीधो।—व. भा.
उ०—३ देवी गाजता दैत ता वस गमिया, देवी नवै खड त्रिभुवन तुझ नमिया। देवी वन्न मैं समाधी सुरथ ग्रन्नी, देवी पूजतै ग्रासपूरणा प्रसन्नी,—देवि.

समानोदरज–स. पु [समानः+उदर्य] सगाभाई, भ्राता, सहोदर।

(ग्र. मा; ह. ना. मा.)

समाप–स. पु. [स. समर्पण] १ उत्सर्ग, दान। (डि. को.)
२ समर्पण।

समापक–वि. [स] (स्त्री. समापिका) १ समाप्त करने वाला।
२ पूर्ण करने वाला।
३ समर्पण करने वाला।

समापण—१ देखो 'समपण, समपणो' (रू. भे.)
उ०—१ मन रा महराण समापण मोजां, कापण दीना तणा कुरद। दीजै किसो समोवड दूजो, पेखै चक्रत रहै पुरद।
—र. रू.

उ०—२ वीत समापण क्रीत तणो वर, ढाहण फौज ग्ररी दळ ढुको। 'नाथ' तणो 'सुरतेम' ग्रभै-नर, चीन नथी ठकरीत न चुको।
—सुरताण सिंघ चवाण

समापणो, समापवो—१ देखो 'समपणो, समपवो' (रू भे)
उ०—१ जरीतारा जरीवाफा नीलका जडाव मामा, दामा पार पावै नको देतो चित्त दत्ति। कहा खोटी वार विचै मोटी रीझा 'सेवो' करै, सामणा मोग्रन्ना कडा समापै हसत्ति।—नाथो बारहठ
उ०—२ कूच थयो पाछै ततकाळै, साभर फिर मारोठ सभाळै। थाणा दहूँ ठिकाणा थापै, सीख देस दिस विया समापै।—रा. रू.
उ०—२ उगत सुरराय मो समापो ईसरी, गुण परमेस्वरी सुजस गावै। भदोरै विराजै भुजाई बीसरी, ग्राप ग्रादेसरी मढ ग्रावै।
—वस्तीराम

उ०—४ महाराज नू राज रीझै समाप्यो, थिरु राज रो राज देसाण थाप्यो। जठै झाडिया खंड स्रीखड जैंडी, नगा पुजरी मजरी रूप नैडी।—मे म
समापणहार, हारो (हारी), समापणियो—वि०।
समापिग्रोडो, समापियोडो, समाप्योड़ो—नु० का० कृ०।
समापीजणो, समापीजवो—कर्म वा०।

समापत–वि [स समाप्त] जो सम्पूर्ण हो गया हो, खतम हो गया हो।
उ०—नियम मगळाचरण नह, काव्य समापत काज। काव्य उचारण कुकवि सूं, करै महाकवराज।—वा. दा.
क्रि प्र.—करणो, होणो।
रू भे—समापित, समापीत, समापित, समाप्त।

समापिका–स. स्त्री.—व्याकरण की दो प्रकार की क्रियाग्रो मे से एक जो कार्य के समाप्त हो जाने को सूचित करती है।

समापित—देखो 'समापत' (रू. भे)
उ०—दस मास समापित गरभ दीध रितु, मन व्याकुळ मधुकर मुणगति। कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपती प्रसवती वमति।—वेलि

समास—देखो 'समापत' (रू भे.)

समाप्ति–स. स्त्री.—किसी कार्य के समाप्न होने की क्रिया या भाव।

समाधान–स पु [स समाधान] १ चित्त को एकाग्र कर ब्रह्म मे लगाने की क्रिया या भाव । (डि. को.)

२ किसी प्रश्नकर्त्ता को ऐसा उत्तर देने की क्रिया जिससे उसकी जिज्ञासा पूर्ण रूप से हल हो सके ।

३ वह युक्ति जिससे किसी समस्या को हल किया जा सके ।

४ सतोष, धैर्य ।

उ०—अर गुजरात छूटा केडै सोलखिया री केही पीढी अजमेरा मैं रहिया पछै उणा रै पाटवी गोइदराज इण ही समय रै समीप टोडा रा अधीस गोळवाळ चहुवाण सातू पातू दो ही भाइया नू मारि टोडा रौ राजा हुवौ ।

जिकण नू मीणा रा मारण री निस्चय जणाइ उणरो बडौ पुत्र कुभराज तिणहू छोटो कन्हड या दो ही वधवा नू वडी वरात रै साथ बरण नू बुलाई मीणा रै मावण जिसडो एक बाडो जुदौ ही बणायौ ।

गोईंदराज कहाई म्है गोळवाळा नूं मारि टोडो लीधो अर आप गोळवाळ री पुत्रिया नू विवाहण रै काज म्हारा कवरा नू तेडो जठै सत्रुता री सका हुवै इण कारण आपरा वारहठ हरसूर नूं प्रतिभू करि अठै भेजि उण रा धरम रो वचन दिवाइ आपरी पुत्रिया करि विवाही जरै वरात आवै ।

सोही स्वीकार करि कुभराज, कन्हड दो ही कुमरा नू बुलाया जाणि जसराज भी याही अरज कीधी जठै कुमार कहियो मीणा ही प्रसभ पूरबक वळ ही सौ वर बणता जिण बीच टोडा रा राजा समता रा सवधी सोलखी रा सुत सत्रु भी उचित खटावै । इसडी कहि अत्यजा रै उचित बाडा मे बारूद विछाइ जिकण मैं वरात हू एक प्रहर पहली सवधिया समेत समग्र ही मीणा नू बुलाइ आसव मैं अति मत्त कीधा ।

अर वरात न पूगै जिण पहली बारूद मैं दमग देर उडाइ दीधा ।

वरात रा समाधान पर आपरा सुभट सचिव राखि तत्काळ ही बूंदी आइ अमल कीधो ।

जठै आपरो थाणो राखि पाछौ ऊमर थूणे जाइ आसाढ कृस्ण नवमी कुज वार रा लग्न पर गोळवाळ री दो ही पुत्रिया रो विवाह चालुकराज रा दो ही कवरा रै साथै कर दीधौ ।—व भा.

५ सयोग ।

उ०—१ सातल जोधावत जोधपुर रहै । एक दिन रो समाधान छै, सातल मडोहर रीया वाडीया गयौ । तठै माळी कह्यो, 'राज, अजाण वाडी माहे मता वडो । औरा वाडीया जावो ।

—सातल जोधावत री वात

उ०—२ एक दिन रो समाधान छै । चेजो कर दोनै पाछिया आवै छै । वीच पाणी रो वाहळो छै । सु नाहरी तो डाक मार पार हुई । अगी जिजकाय अर उभी रही ।

—नाहरी हरणी धरमैकै सावता री वात

समाधायो—देखो 'समाधियो' (रू. भे.)

उ०—तितरै दिन ऊगो । लाखोजी बैठा छै । मनभोळियै आइ आसीस दीधी । लाखोजी कहै, 'मनभोळिया', समाधायो छै रे ? कह्यो, 'जो जीवै लाखो लाखवरीस ।—लाखो फुलाणो री वात

समाधि–स. पु.—१ देवि भक्त एक वैश्य का नाम ।

स स्त्री [स. समाधि] २ योग के आठ अगो मे से एक मुख्य अग जो योग का चरम फल माना जाता है । इसके चार भेद माने गये हैं—सप्रज्ञात, सुवितर्क, सविचार और सानन्द ।

उ०—सुतण सुरथ अव सुमित्र सरूपति, तपसी हुवो राज तजि भूपति । आसणि गलिता तीर अधारै, ध्यान समाधि जोगमय धारै ।—सू प्र

३ वह स्थान जहाँ शव या अस्थियाँ दफनाई गई हो ।

४ साधु-सन्यासियो को दफनाने की क्रिया विशेष ।

५ किसी साधु विशेष का जीवितावस्था मे ध्यानावस्थित होकर भूमिगत होने की क्रिया ।

क्रि प्र.—लेवणी ।

६ चित्त को एकाग्र करने की क्रिया ।

उ०–१ पूरव अर पछिम मिळै, मिळै उत्तर दिखणाधि । हरीया इन ऊपर मिळै, जीव सीव समाधि ।—अनुभववाणी

उ०—२ हु छु अपराधी, मइ सेव लाधी तुम्ह तणी । करउ सहज समाधि, कीरति वाधी अति घणी ।—वि. कु

७ कुशलक्षेम पूछने की क्रिया ।

उ०—१ कथाकार मैं आण्यो एहवो रे, रखै जीवेलो करी उपाय रे । सुख समाधि पूछण नै मिसै राजा नै गलै टूपो दीधो जायरे ।

—जयवाणी

उ०—२ आप कहियो—आवो नही रीडा । कहियो रावजी समाधि पूछावै कहो । कहियो गाढा सहोराहा ।

—प्रतापमल देवडा री वात

उ०—३ अर सीपो मुहतो तिणहीज आधुणि जीमि, वागो पहिर मोचडी अर कुवरजी री समाधि पूछण आवै हुतौ ।—द वि.

८ पूर्णता ।

उ०—विहडियो सिवर मगरूर वाधि, ससि नाम आदि अतरिख समाधि । जुडि करै नास मेवास जग, ईडरगढ लीधो इम अभग ।

—सू प्र.

९ ध्यान ।

उ०—१ सिरि वदि पगतळि धरिउ, सेठ समाधि म चूक । पाडउ अै पदमिनि-तणउ, धन आपी तिहा ढूक ।—मा. का. प्र.

उ०—२ चढि आभ छडाल चमक चुभी, खुरताळ धमक पताळ खुभी । वढि हाक त्रमागळ डाक वजी, त्रिपुरासुर सत्रु समाधि तजी ।—मे म.

१० श्रुत चारित्र रूप धर्म । (जैन)

उ०—सातसै वरसै सह्या असातारा इद्र वखाण्यो वळै दृढ आचारा ।

उ०—४ अर साच छै, जो महीना छह ताई छाना राखिया, नही तो लुगाई रै पेट मैं इतरी वात समावै ? पहलै दिन जाहर कर सिर चढावै।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—५ जरै चढीयो, सु राव मालदे री छाती माहे मेडतो पारकै घर समावै नही। राव मालदे धाव घणो ही करै पिण राव जैता कूपा राव जसो राव खीवो इण वात माहे आवै नही।—नैणसी

उ०—६ सु समुद्र माहे पाणी समावै नही। इतरा जळ हुआ छै। बीजुळी सहरा माहे समावै नही छै। सहरा वाहरि झब झबाट करि रही छै।—वेलि टी.

उ०—७ ज्या हदा क्रत जोय, दोजग नह वासो दियो। तै न्हावै तुय तोय, जोत समावै जहानमी।—बा. दा

२ देखो 'सभाणो, सभावो' (रू. भे.)

उ०—क्यु रजपूती छै तो तरवार समावो। आ वात सुणताइ कवर वीरमदे नै इसो जोस चढ्यो जाणै दारु रा गज मैं आग रो दूग पडयो।—पना

समावणहार, हारो (हारी), समावणियो—वि०।

समाविओडो, समावियोडो, समाव्योडो—भू० का० कृ०।

समावीजणो, समावीजवो—भाव वा०।

समावरत—देखो 'समाव्रत' (रू भे.)

समावियोडो—१ देखो 'मावियोडो' (रू भे)

२ देखो 'समायोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'समायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. समाविग्रोडी)

समावेस–स. पु. [स. समावेश] एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अन्तर्गत होना, समाविष्ट होना।

समाव्रत–स. पु [स समावर्त] भगवान् विष्णु का नामान्तर।

वि —आवृत्त, घिरा हुआ, आवेष्टित।

उ०—मदिरतरि किया खिणतरि मिळिवा, विचित्रे सखिए समाव्रत। कीवै तिणि वीवाह ससक्रित, करण सु तणु रति संस-क्रत।—वेलि

समास–स. पु [स समास] १ धैर्य।

उ०—१ असपत बीडो अप्पियौ, उर थप्पियो समास। विदा कियो वरसात मैं, प्रगटी वात प्रकास।—रा रू

२ कम या थोडा होने का भाव।

उ०—एको समद इसो ओल्हरियो, सात समद जण हुवा समास। देसी तो आसीस घणा दिन, सूरज देव तणो सपतास।

—महाराणा राजसिंह रो गीत

[स समाऽश] ३ वर्षाकाल।

उ०—साहजादा तो पाउसकाळ माळव मे ही कीधो तिका समास रै अतर थोहडा थोहडा कूच करि आप आपरा अनीका नू आगै आवण रो आदेस दीधो।—व भा.

४ सक्षिप्त। (हि. को.)

उ०—रनिवहे आरभी रचना नहि, वन समास पुनरात विचार। सपूरण कर फेर सराहै अरधातरै कवचक उचार।—वां. दा.

५ व्याकरण के कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार शब्दो का आपस मे मिल कर एक होना, दो या अधिक शब्दो का योग।

[स. समाश्वन] ६ सात्वना, तसल्ली।

उ०—भूप हुकम 'भगवान' तण, मुहतो जीवणदास। दिल्ली रहियो साह दळ, साहा करण समास।—रा. रू.

समासम–वि.—१ समान, बराबर का।

उ०—समासम मेल धमाधम मेल, अनानम आतम ठेल उठेन।

—गु रू.

समास्रित–वि. [स. समाश्रित] जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय ग्रहण किया हो, भली प्रकार आश्रित।

उ०—ऊभी सहु सखिए प्रससिता प्रति, कितारथी प्री मिळण क्रत। अटत सेज द्वार विचि आहुटि, स्त्रुति देहरि घरि समास्रित।

—वेलि

समाहणो, समाहवो—देखो 'सभाणो, सभावो' (रू. भे)

उ०—जोध वळै 'राजान' रो भळै खवां कुळ भार। आभ समाहै ऊडळै, दीठै दळै करार।—रा. रू

समाहार–सं पु [स] १ सग्रह।

२ समूह, राशि।

३ मिलाप, मिलन।

समाहित–वि [स.] १ समाधिस्थ।

२ स्थिर, अटल।

३ शात।

उ०—अर जम नियम आसण प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान सातूं ही अगा रो जप करि असटम अग समाहित भाव मे निस्चळ होय आप ही रो रूप धार लीधो।—व. भा.

४ सावधान, निरूपाधिक ध्येय।

समाही—देखो 'समाई' (रू. भे.)

समाह्वा–स. स्त्री.—एक प्रकार की घास जिसे वनगोभी कहते है।

समिम्रै—देखो 'समय' (रू. भे)

उ०—तकण समिम्रै तरवार वूही।—मारवाड री ख्यात

समिउ–वि.—शान्त। (उ. र)

समिग–वि [सं सम्यक्] सत्य, असल। (ह. ना मा.)

रू. भे —समग।

समिचार—देखो 'समाचार' (रू भे)

समिज्या–स. स्त्री. [स. समज्या] सभा। (ह. ना मा)

रू भे.—समज्जि, समज्या।

समित–स पु. [स समित्] युद्ध, लडाई। (ह ना मा.)

समितिजय–स. पु. [सं.] १ कृपाचार्य का शिष्य जो धनुर्वेदाचार्य, वीर

समायोग—देखो 'समाजोग' (रू. भे.)

उ०—एक दिन री समायोग छै। वलसीसर तळाव सिखरै उगमणावत गोठ कीवी छै। —उदै उगमणावत री वात

समायोडौ–भू. का. कृ.—१ अवसान हुवा हुआ, मृत हुवा हुआ. २ व्याप्त हुवा हुआ, विद्यमान हुवा हुआ. ३ व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ. ४ फैला हुआ, विस्तीर्ण हुवा हुआ. ५ एकरूप हुवा हुआ. ६ मिला हुआ, विलीन हुवा हुआ. ७ विलीन हुवा हुआ. ८ समाहित हुवा हुआ. ९ घसा हुआ, गढा हुआ. १० मिला हुआ हुआ. ११ अदृश्य हुवा हुआ, ओझल हुवा हुआ, लुप्त हुवा हुआ १२ लीन हुवा हुआ. १३ समाधिस्थ हुवा हुआ, अन्तर्ध्यान हुवा हुआ. १४ स्थित हुवा हुआ १५ धारण किया हुआ. १६ मिटा हुआ, अन्त हुवा हुआ. १७ स्थिर हुवा हुआ. १८ निवास हुवा हुआ. १९ प्रविष्ट हुवा हुआ. २० हुवा हुआ. २१ अनुरक्त हुवा हुआ।

२२ देखो 'सभायोडो' (रू. भे.)

२३ देखो 'मावियोडो' (रू. भे)

(स्त्री समायोड़ी)

समार–स. पु.—१ अधिकार, कब्जा।

उ०—जाळोर रै काकड़ मीवै गाव सीरोही रा डोढीयाळा रै पडगनै रा पाच-दस गाव राव तीडै री फौज राव तीडो आय पडियौ। सु इतरा गाव समार कीधा। सो वन मोर उडीयौ। कटके-कटक धाया। —तीडै छाड़ावत री वात

वि —२ घावो से परिपूर्ण।

उ०—घावा वडो घरम छै और म्हारो सरीर सूं समार छै। काल्ह पगपसार थै-म्है मरीस तो अगत जायसां, मौने अगत होयसी, थानूं बडी महणो होसी।—डाढाळा सूर री वात

समारक—देखो 'स्मारक' (रू भे.)

समारजणी, समारजनी—देखो 'समारजनी' (रू भे)

समारणौ, समारवौ—देखो 'संवारणौ, संवारवौ' (रू भे)

उ०—१ दुख भंजन तूं दाखि मुझ, नही तरि छडमि देह। अगि कि अवला अेह घरि, सेजि समारइ वेह।—मा का. प्र.

उ०—२ तीरा गोळीया रै मारक पडतै जिमावर पाख समारण न पावै छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ उतमग किरि अवर आधौ, अधि माग समारि कुआर मग। —वेलि

उ०—४ ऊडण पख समारि रहे, अलि कठ समारि रहे कळकठ। —वेलि

उ०—५ पार पखै असवार पाइदळ, पख समारिक चल्लै मेहळ। —गु रू व.

उ०—६ सोळा सोहिता घाघुसी पुलाब चकतालो जळचर मास, थळचर मास, उडण पखिआ रा मास, भाति भाति रा जुदा जुदा समार समार नै वणाया छै। प्याला माहि परुसीजै छै। हाजर कीजै छै।—रा. सा. स.

उ०—७ इण भात नख-सिख सूधा सोळै सिणगार किया बारै आभूखण विराजिया छै। जाणै इदलोक री अपछरा, रूपरी रभा, आसमान सू ऊतर पडी। चित्राम री पूतळी, विधाता हाथ सूं समारी।—रा सा. स.

समारणहार, हारौ (हारी), समारणियौ—वि०।

समारिओड़ो, समारियोडो, समारयोडो—भू० का० कृ०।

समारीजणो, समारीजवो—कर्म वा०।

समारत–स. पु [सं. स्मार्त] स्मृतियो मे लिखे अनुसार कार्य करने वाला व्यक्ति।

समारथ—देखो 'समरथ' (रू. भे.)

समारियोडौ—देखो 'सवारियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. समारियोडी)

समारोह–स. पु —कोई ऐसा शुभ आयोजन जिसमे चहल-पहल तथा धूमधाम हो, उत्सव।

समाळिया–स स्त्री.—राठौड वश की एक उपशाखा।

समाळियौ–सं. पु —राठौड वश की समाळिया उपशाखा का व्यक्ति।

समालोचक–सं. पु.— समालोचना करने वाला व्यक्ति।

समालोचना–स स्त्री. [स.] १ अच्छी तरह देखना, परखना।

२ किसी कृति के गुण-दोपो का किया जाने वाला विवेचन।

३ साहित्य मे किसी कृति के गुण-दोपो के सम्बन्ध मे किसीने अपने विचार प्रकट किए हो।

४ साहित्यिक कृतियो के गुण-दोष विवेचन करने की कला या विद्या।

समालोची—देखो 'समालोचक' (रू. भे.)

समावत–वि. [स. समा+वत] समयानुसार या ठीक समय पर होने वाले।

उ०—साभळउ —वन तै वणवीइ जै व्रक्षवत, नदी तै जे नीरवत, कटक तै जै वीरवत, सरोवर तै जै कमळवत, मेघ तै जै समावत, महात्मा तै जै क्षमावत, प्रसाद तै जे धजावत, धरमी तै जै दयावत आदि।—रा. सा स

समावड़—देखो 'समवड' (रू. भे.) (डिं. को)

समावण–स पु.—१ मृत्यु, नाश। (डिं. को.)

२ मृत्युसदेश। (डिं. को)

समावणौ, समाववौ—१ देखो 'समाणौ, समावौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुण सनेसा गुरुदेव का, निज मारग पावै हौ। खाणी पाणी पलटकै, उण देस समावै हौ।—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ मागइ मात व धामणी, धव धव धाया लोक। ताहरू माधव आवीउ, आज समावित सोक।—मा. का. प्र

उ०—३ वरखारितु लागी, विरहणी जागी। आभा झरहरै, वीजा आवास करै। नदी डेवा खावै, समुद्रं न समावै।—रा. सा. स

२ पास, सम्मुख ।

उ०—मुख वचन बहु मनुहार, कहि भात भात प्रकार। मेल्हिया 'जसै' महीप, प्राविया 'अजरण' समीप ।—सू. प्र

३ पास ।

उ०—अर जवनेस रा आगम रै निमित्त प्रथ्वीराज कुमार पिता सूं प्रच्छन्न आपरो परिकर कैमासरै समीप भेजि खुरसाण री फौजा विरोळण रौ निदेस कहियौ ।—व. भा.

पर्याय.—अवदूर, उप, ढिग, तट, नजीक, निकट, नेडो, पारसव, पास ।

रू भे —समीपि, समीपी, सामीप ।

समीपता-स स्त्री.—समीप होने का भाव, निकटता ।

समीपमुक्त्ति—देखो 'सामीपमुक्त्ति' (रू. भे)

उ०—वदै पग लच्छि सहेत विसन्न । समीपमुक्त्ति ज 'देव' सुतन्न। अखै प्रथमी जस एम अथाग । भूरा धनि तूझ तणौ अत भाग ।
—सू. प्र.

समीपि, समीपी-स पु [स समीप+ई] १ निकटवर्ती, नजदीकी ।

उ०—१ पद मैं बैठो कै निघात बाज कीना । मुरतज्जा खान का समीपी मार लीना ।—शि व

उ०—२ सीमा रा समीपी नरेसा हूँ उपहार लेर तिकानू आपरै अधीन बणाइ सूबादारी रौ अनादर करि पातसाही पद नूं बहण ढूका ।
—व. भा

वि —२ समीपवर्ती, निकट का, समीप का ।

३ देखो 'समीप' (रू भे)

समीम-स पु [अ शमीम] सुगन्धित पदार्थ ।

समीयांण, समीयांणौ—१ देखो 'समियाणौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सामियानौ' (रू. भे.)

समीयै, समीयौ—देखो 'समय' (रू. भे.)

उ०—१ एक समीयै विजै मनमै जाणियौ जू नाडूल वडी जायगा अर नाडूल कदे चोरी न की ।—चौबोली

उ०—२ एकै समीयै दरियाव गाज्यो। तरै अनतराय भाया-भतीजा रै विचै दरबार बैठौ ।—कहवाट सरवहिया री बात

उ०—३ तिको रात आधी रो समीयौ थौ, तिसै चौकीदार चौकी देता आय निकळिया ।—जगदेव पवार री बात

समीर, समीरण, समीरल-स. पु [स समीरः, समीरण] १ वायु, हवा । (अ. मा; डिं. को; ह ना. मा)

उ०—१ वन थाहर नाहर वसै, वाहर थाट विडार । तरवर गुलम समीर विण, नको नमावणहार ।—वा दा

उ०—२ मल्हपै किर गिर चढि हेमाळै, चद्रकुमार खेल्ह नह चाळै। तिण उपवनि झोलै नदि तीरा, सीतळ मद सुगध समीरां।
—सू प्र

उ०—३ काळ तणइ कालिजि वसी, गरळ तणा गुण लेय । स्वामि समीरण स्या-थिकी, डीनि अम्हारइ देय ।—मा. का. प्र.

उ०—४ वात समीरण चालवै, सुरभि सीतल नै मद । गगन वस्त्र जास कहियै, तजै तिमिरनी फद ।—वि. कु

२ भगवान् विष्णु ।

रू भे.—सामीर ।

समीवड, समीवड—देखो 'समवड' (रू भे)

उ०—१ इद्र प्रभत इंद्रह विभौ, इद्र छभा अनेनाण । इद्र समीवड रट्ठवड, हिंदूवै सुरताण ।—गु. रू व

उ०—२ दड-द्दड सीस पडंत दडाक, बडीयण बध असध बडाक । समीवड आहुडिया सुरताण, खुटै खर-हड तणा खुरसाण ।
—गु. रू वं.

समीसर-स. स्त्री.—बराबरी, समानता ।

उ०—लीण हीण ज्या सौ गज लागै, ए कोइ वळ सादूळै आगै । सेवै छत्रपति छोड समीसर, ओपै धजा जगत चै ऊपर ।—रा रू

वि.—समान, तुल्य ।

उ०—रवि समान खद्योत सेस जळ साप समीसर ।—पा प्र.

रू भे —समोसर, समोसरि ।

समीह-स. स्त्री [स. समीहा] श्रेष्ठ अभिलाषा, सुकामना ।

उ०—जीतै रण पै'ला जरै, सुरपुर वसण समीह । किम सेवा वणणी कहो, दासी बिण चउ दीह ।—व भा.

समुद, समुदर, समुंद्र—देखो 'समुद्र' (रू भे.)

उ०—१ दिनकर वाहण देह, पाहण फूटै पोड सू । 'जेहल' साहण जेह, साहण समुद समपिया ।—बा. दा.

उ०—२ सेवै तो पाव समुंदर सात, निरजन गात नमो निरगात ।
—ह र

उ०—३ पथी एक सदेसडउ, लग ढोलइ पौहच्याइ । जोबन खीर समुंद्र हुइ, रतन ज काढइ आइ ।—ढो. मा

समुदौ—पूरा, समस्त ।

उ०—बसी समुदौ रजपूत वाणीया वसै ।—नैणसी

समु—देखो 'समौ' (रू भे.) (उ. र)

समुक्ख, समुख, समुखी-क्रि वि—१ सामने, सम्मुख ।

उ०—१ हुय हवक किलवक समुक्ख हला, भयकार घडी वण वार भला । सिर ढाल कडक्कड रूक सदै, जिम वाग डडैहड फाग जदै ।—रा रू.

उ०—२ अर प्रामारा रा बैर माथै अब चहुवाणा रौ चक्र अरबुदा-चळ री सरणी रै समुख पाधरो ही धकावै छै ।—व. भा

स. स्त्री —२ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे दो लघु और तीन सगण अथवा एक नगण दो जगण और लघु गुरु का क्रम होता हे ।

समुचित-वि [स.] १ वाजिव, उचित ।

उ०—पिंड दहण जिण थी प्रिया, भावी प्रथम भलो न । है समुचित भावी हुवा, सही विफळ व्है सो न ।—व. भा.

था।

२ युद्ध मे विजयी व्यक्ति।

समिति–स स्त्री. [स] १ सभा। (ह. ना. मा)

२ मजलिस।

३ युद्ध, समर।

रू. भे.—समत।

समिद्धउ, समिद्धह, समिद्धौ–वि. [स समृद्ध] समृद्धिशाली, ऐश्वर्यशाली।

उ०—मरुधर देस मझार, सयळ धण धान समिद्धौ। नामै पूगळ नयर, पुहवि सगळै परसिद्धौ।—ढो मा

समिध, समिधा, समिधि–स. स्त्री. [सं समिध्] १ यज्ञकुंड मे जलाने की लकडी। (डि. को)

[स समीधः] २ आग, अग्नि।

समिय—देखो 'समय' (रू. भे.)

समियाण, समियाणौ, समियांन, समियानौ–स. पु—मारवाड के सिवाना नामक कस्बे का किला।

रू. भे—समीयाण, समीयाणौ।

२ देखो 'सामियाणौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिसडै समियाणो उठायो। ताहरा समियाणै री झालरि नदरि पडी।—द वि.

उ०—२ सजै इसी सुख रास जिलह अरु जालिया, कचन कळस पताक महल अरू मालिया। समियान साइवान क वेस बिछायत्या, गदरा गज गिलम्म माझ महलायत्या।—सिवबक्स पाल्हावत

समियौ—१ देखो 'समय' (रू भे.)

२ देखो 'समौ' (अल्पा; रू भे)

उ०—गोल तणौ कहियौ गुणी, संपूरण समियौ।—पा. प्र

समींक–स. पु. [स समिक] १ भाला, बरछा, बल्लम।

उ०—मत्रिद्धि सुभट ममरन समींक, डक्कतं डक्क उद्धत अनीक। दुरयोधन देसक दरोळ, हैं दुरगदास वेसक हरोळ।—ऊ का.

२ देखो 'समीक' (रू भे.)

समी–स स्त्री. [स. शमि, शमी] १ राजस्थान, गुजरात और पजाब मे प्रायः सर्वत्र पाया जाने वाला वृक्ष विशेष। इसके पत्ते ऊंट, भेड, बकरियो आदि पशुओ को चराने के काम आते हैं।

उ०—वट तमाळ पीपळ विरख, अरजन समी अपार। ईढ तजै पत्र एक री, सुरत पाचेई सार।—रा. रू.

[सं. शमी, शमि] २ फली। (डि. को)

क्रि वि.—१ होते ही।

उ०—विवाहादिक सुख री रात्रि छोटी लखावै अनै समी साझ मनुख मूया तै दुख री रात्रि घणी मोटी लखावै।—भि द्र.

२ ही।

उ०—सवखडा सिन्धू कातो चवै, जेण सुजस छायो जमी। विरवडी यैं पाता वळा, सूरज ऊगता समी।—कानूजी

३ देखो 'सम' (रू. भे.) (डि को.)

उ०—राजा तूझ समी अन राजा, होड किया अप विया हसै। पाणी-हड पहरै दोहु पासा, नासा नार जिहुइ नकसै।

—साइयो झूलो

४ देखो 'समोवडियौ' (डि को.)

५ देखो 'समौ' (रू भे)

रू. भे.—समी, संवी।

समीक–स पु [स. शमीक] १ एक प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ और दयालु ऋषि।

२ शूर राजा एव मारिषा के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो सुदामिनी का पति एव प्रतिक्षत्र राजा का पिता था।

३ कौरव पक्षीय एक यादव जो द्रौपदी के स्वयवर मे शामिल था।

४ एक ऋषि जो शक्र-सभा मे उपस्थित था।

[स समीक] ५ युद्ध, सग्राम। (अ मा; ह ना. मा)

रू. भे.—समीक।

समीकरण–स. पु [स] १ दर्शन शास्त्र की साख्य पद्धति।

२ असम को सम करना।

३ बीज गणित मे अनजानी सख्याओ को जानने के लिए प्रक्रिया विशेष।

समीक्षक–वि. [सं] समीक्षा करने वाला, समालोचक।

उ०—मत वक्ता सद्धासील समीक्षक सूगै, पुरुसारथ पूरण प्रेम प्रतिज्ञा पूरौ। दुरव्यसन दुराग्रह दूसण सौं द्रढ दूरौ, अनभग उतंग उमग न अग अधूरौ।—ऊ का.

समीक्षा–स स्त्री. [स] १ समालोचना।

२ दर्शन शास्त्र की मीमासा पद्धति।

समीगरभ, समीग्रव, समीग्रभ समीग्रभव, समीग्रभवा–स स्त्री [स शमीगर्भः] १ अग्नि, आग। (अ मा, डि को; ना डि को, ह. ना मा.)

२ अग्निहोत्री ब्राह्मण।

समीची–स स्त्री. [स.] वर्गा नामक अप्सरा की सखी, यम सभा की एक अप्सरा।

समीचीन–वि [स समीचीनः]१ उचित, ठीक। (ह. ना. मा)

२ न्यायसगत।

स पु. [स समीचीनम्] ३ सत्य, सच्ची।

(अ. मा, डि को; ह ना मा.)

समील–सं पु. [स समित] १ युद्ध, दगल। (ह ना मा.)

२ सभा, गोष्ठी।

समीप–क्रि. वि [स.] १ निकट, नजदीक, आस-पास।

(अ. मा, डि. को)

उ०—मिळि पधराय सवाय हित, डेरा दिया समीप। छत्रपति छाजे ऊधरै, राजै जोड महीप।—रा रू.

३ मोती, मौक्तिक ।

रू भे —समदमुत, समदमूतन ।

समुद्रसेण, समुद्रसेन–स पु [सं समुद्रसेन] १ पाडवपक्षीय एक राजा जो चद्रसेन नामक राजा का पिता था ।

२ कौरव पक्षीय एक राजा जो कालेय नामक दैत्य का वशज था ।

समुद्रस्थळी–स. पु. [स समुद्रस्थली] समुद्रतट पर स्थित एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

समुद्राभिसारणी, समुद्राभिसारिणी–सं. स्त्री [स समुद्राभिसारिणी] समुद्र की सहचरी एक देवबाला ।

समुद्राव—[स. समुद्राव] युद्ध से पलायन, लडाई मे भागने का भाव या क्रिया । (डि को.)

समुद्रोमादन–स. पु. [स.] स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर ।

समुल्ललन–स. पु. [स.] सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाओ से उल्लास प्रकट करने की क्रिया, अवस्था या भाव ।

उ०—लीन श्रमण समुल्ललन त्रिपदी आस्फालन वाहुसस्फोट गलि गरजित साहसिक, रणरसिक ससरभ सोच्छेक ।—व. स

समुह, समुहा, समुहै–क्रि वि. [स. सम्मुख] १ सामने, सम्मुख । (डि. को)

उ०—१ लसकर खा हइयात खा, नौरगखान पठाण । एता समुहा आविया, चिसती आद जवाण ।—रा. रू.

उ०—२ कठठी वे घटा करे, काळाहरिण समुहे आमहो मामुहे । जोगिणि आवी आडग जाणे, वरसे रत वेपुडी वहे ।—वेलि

२ देखो समूह' (रू भे)

समूचो, समूंघो-वि (स्त्री समूची, समूघी) १ पूरा, समस्त, कुल ।

उ०—१ अरण भाजू गज गिळूं, समूचो वो लुवार । घोडो पाडू पाखरचो, मू वरछी असवार ।—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ रायासाल राजा के समूचा पूत वारा, ना ओलाद रैगा पाच साता का पसारा ।—शि व.

उ०—३ मरै न्याय साभलरै मूरख, सह तो वाला लखण समूचा । धा अन हिमैं जेज नह थावे, कठठ खडी आवै दर कूचा ।—र रू

उ०—४ सूवा वादिमाही का समूंचा भोमि दीनी । दोनू दीन राया साल दीनी मो न लीनी ।—शि. व.

उ०—५ सरव गैहणा तोडै चावडा पिण दीधा । सो महाराजा विणनै समूघा दीधा नै म्हारा वेटा नै एक ही रीझ दीधी नही । —जगदेव पवार री वात

समूह—देखो 'समूह' (रू भे)

समूतनी–स. स्त्री [स. सीमन्तिनी] स्त्री । (अ मा)

समूरत, समूरतो, समूरथ, समूरथो–स. पु. [स स+मुहूर्त+रा प्र ओ] श्रेष्ठ मुहूर्त, अच्छा समय ।

उ०—१ तिण दिन ढोलो जी रे चढण री समूरतो तो टळगयो तद कंवरजी महल पधारिया ।—ढो मा.

उ०—२ विरध वधाई नाव, समूरथ नाख नगाई । व्याह विनायक वेळ, महोछव मेळ विदाई ।—दसदेव

समूळ, समूल–वि. [स. समूल] १ सब, समस्त ।

उ०—१ सूरज किरणा चाव मे, फूटी कळी समूळ । लूआ दीसी सामनै, लागी हिवडै सूळ ।—लू

उ०—२ बावरैल बाजूबुरी सोनेगी मादूळ, (और) केसरी ऊठिया मिस्र पटैत (समूळ) ।—अ मा

२ पूरा, अखंड ।

वि.—१ जड़ सहित, जडमूल सहित ।

उ०—१ अद् भू मद् समूळ उपाडता, भद्रजाती गुडै सूड भमाडता । —गु. रू. वं

उ०—२ जिह घर निंदा साधकी, सो 'घर गयें' समूळ । तिनकी नीव न पाइयें, नाम न ठाव न धूळ ।—दादूवाणी

उ०—३ कावलीए आताळीया अनगै अैराको, अख समूळा ऊपडै कुछ रहै न बाकी ।—मालो सादू

२ कारण सहित ।

३ सब का, सभी का ।

रू. भे.—सम्मूळ ।

मह,—समूळो ।

समूळो—देखो 'समूळ' (मह, रू. भे)

उ०—१ आ वात कैय सेठ वळे जोर सूं हसिया । जाणै इण वोखा मूडा रै पाण तो समूळा सूरज नै ई गपाक करता गिट जावैला । —फुलवाडी

उ०—२ भूम चाळ दिसा भाळ, महावणी दीपमाळ, समूलो उठाय वह्यो, औसधी समेत ।—र रू.

उ० – ३ रूंख समूळो काटीयो, काट कियो निरलंग । हरीया इन अपराधीयें, कसक न आनी अग ।—अनुभववाणी

उ०—४ पछै थोडो आपो सभाळ वा आपरै पगा मैं लुटता बाळ कन्हैया नै देख्यो तो दुनिया री वो समूळो सुख अर हरख काना री सरणी छोड, आख्या रै सरणै आयो ।—फुलवाडी

उ० – ५ चौमासा रो भरपूर आडंग । जाणै समूळी धरती किणी लाठी भट्टी माथै उकळै ।—फुलवाडी

उ० – ६ भूड तो अजगर रै आटा री गळाई उणरी समूळी देह माथै पळैटीजग्यो ।—फुलवाडी

उ०—७ दाळद घणो ई नट्यो पण राजा नी मान्यो सो नी मान्यो । कह्यो कै अैडी राजकवरी रै हथळेवै समूळो राज सूपै तो ई थोडो । —फुलवाडी

(स्त्री. समूळी)

समूह, समूहु–स. पु [सं. समूह] १ सेना, फौज, दल । (अ. मा; ह. ना मा.)

उ०—१ समूहं सुभट्ट गुडै गज्ज थट्ट, दळाकार दौडं तुरा वाज

२ उपयुक्त, योग्य ।

समुच्चय-स. पु [स.] १ समूह, राशि, ढेर। (डिं. को.)

२ साहित्य का एक अलंकार विशेष जहाँ अनेक पदार्थों का समूह एक समय मे एक साथ होना वर्णित हो।

समुच्चयबोधक-स पु —व्याकरण के अन्तर्गत अव्यय का एक भेद जो दो शब्दो या उपवाक्यो को जोडता है ।

समुझणी, समुझबौ—देखो 'समझणी, समझबौ' (रू. भे.)

उ०—किता हुआ दिग्गज कवि, समुझणहार सु असेस ।
—अग्यात

समुझणहार, हारौ (हारी), समुझणियौ – वि० ।

समुझिओड़ौ, समुझियोडौ, समुझ्योडौ – भू० का० कृ० ।

समुझीजणौ, समुझीजबौ—कर्म वा० ।

समुझाणौ, समुझावौ—देखो 'समझाणौ, समझावौ' (रू. भे.)

उ०—फेर आहीज स्त्री आपरै पती नै समुझाय नै कहै छै ।
—वी स टी.

समुझाणहार हारौ (हारी), समुझाणियौ—वि० ।

समुझायोडौ—भू० का० कृ० ।

समुझाईजणौ, समुझाईजबौ—कर्म वा० ।

समुझायोडौ—देखो 'समझायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री समुझायोडी)

समुझावणौ, समुझावबौ —देखो 'समझाणौ, समझावौ' (रू भे.)

उ०—प्राची मै पुत्र नू भेजि आवाची कूं आवता दो ही पुत्रा नं समुझावण साम्है जावता पातमाह नू पेलि तिण रौ वडौ पुत्र साहस रै सहाय पहली कहिया कटक रै साथ दरकूचा दक्खिण रै अभिमुख चलायो ।—व भा

समुझावणहार, हारौ (हारी), समुझावणियौ—वि० ।

समुझाविओडौ, समुझावियोडौ, समुझाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

समुझावीजणौ, समुझावीजबौ —कर्म वा० ।

समुझावियोडौ—देखो 'समझायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. समुझावियोडी)

समुझियोडौ—देखो 'समझियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. समुझियोडी)

समुदय, समुदाय-स पु [स समुदयः, समुदाय.] १ समूह, झुंड ।
(अ मा; ह ना मा.)

उ०—१ गया स्राद्ध तीरथ ग्रहण, सरव परव समुदाय । है सारा इण हाथ मै, हलं तौ हाथ हलाय ।—ऊ का.

उ०—२ जग मैं बाछै जीवणौ, सब प्राणी समुदाय । हर कर नर उणनू हरै, जुलम कह्यौ नही जाय ।—बा दा

२ युद्ध, संग्राम । (ह ना. मा.)

समुद्द, समुद्र-स. पु. [स. समुद्र.] १ पृथ्वी पर स्थल भाग को घेरने वाली विशाल जल राशि, समुद्र, सागर । (उ. र)

उ०—१ सजण गुणं समुद्द तूं, तर तर थकी तेण, अवगुण एक न साभरइ, रहू विलबी जेण ।—ढो. मा.

उ०—२ अकबर समुद्र पर आवियो, माह सहसा आठ सिर । जीपणौ पाण जगपत्तरै, और माण मोई अथिर ।—रा. रू.

उ०—३ मणुयजनमि सावयकुल सार, भव समुद्द जिणि लाभइ पार ।—जयसेखर सूरि

पर्याय०—अब, अबधि, अबहर, अकुपार, अचळ, अणथाग, अणथाह, अतहर, अतेरुद्रववण, अतीर, अथग, अमोघ, अरणव, अळियळ, अलील, अहिलोळ, आच, उदधि, उधारण,कमळ, खीरदधि, गंभीर, गोडीरव, चडवत, जळधि, जळनिधि, जळपति, जळराट जादपति, दरियाव, नदीईसवर, निधूवर, नीरोवर, पतिजळ, पदमापित, पदमालय, पयध, पयोधर, पयोनध, पाथोद, पारावार, बानरधी, वारध, वारहर, वोहत, मकराकर, मगरघर, मछपति, मथण, महण, महराण, महासर, महोदर, रतनकर, रतनागर, रेणायर, लखमीतात, लवणोद, लहरीरव, वारनिधि, वेळावळ, व्याकुळ, सफरीभडार, सर, सरतअधीस, सरवर, सरसवान, सरितापति, सागर, सिंधु, स्रोतपत, हीलोहळ ।

रू. भे.—समद, समद, समुद्र, समद, समदर, समदो, समद्र, समद, समदर, समद्ध, समद्र, समुद, समुद्र, समुदर, समुद्र, सम्मद, सामद, सामद्र ।

अल्पा.—समदरियौ, समुदरियौ ।

२ शुभ रग का घोडा ।

समुद्रक-स पु —शृंगार मे एक आसन विशेष ।

समुद्रकाता-स स्त्री. [स] नदी, सरिता ।

समुद्रचुलुक-स. पु [सं] अगस्त्य ऋषि का नाम ।

समुद्रजा-स. स्त्री [स] लक्ष्मी ।

समुद्रजात्रा-स. स्त्री. [स समुद्रयात्रा] समुद्र मार्ग से जहाज द्वारा किया जाने वाला आवागमन।

समुद्रनेमि-स स्त्री [स] पृथ्वी ।

समुद्रफीण, समुद्रफेण, समुद्रफेन-स पु.—समुद्र की लहरो का भाग जो औपधि मे काम लाया जाता है । (अमरत)

रू. भे.—समदफेण ।

समुद्रमथन-स पु [स] एक दानव का नाम। (पुराण)

समुद्रमेखळा-स. स्त्री [स यौ समुद्रमेखला] पृथ्वी, भूमि ।

समुद्रलवण-स पु.—समुद्र के जल से तैयार किया जाने वाला करकच नामक लवण ।

समुद्रवेग-स. पु [स.] स्वामी कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर ।

समुद्रव्यूह-स. पु.—सेना का एक प्रकार का व्यूह ।

रू भे —समदव्यूह ।

समुद्रसुत, समुद्रसुतन-स पु [स.] १ चद्रमा, चाँद ।

२ अमृत।

तिण ततखरा लिया रासावत, धूणैं सायर ग्रमर घर ।
—महाराजा करणसिंघ

२ एकत्रित, इकट्ठा ।
उ०—इम पतसाह सुणैं ग्रकुळायौ, ग्रहि जाणैं जूवळ तळ ग्रायौ ।
भिळिया जाण सुरा विख भेळा, सोर ग्रगन किर थया समेळा ।
—रा. रू.

३ मेल रखने वाला, मित्रता रखने वाला ।
उ०—१ है उमत्त गज मत्त सुभट पण रत्त समेळा, देस देस देसोत साथ कमधज्ज सचेळा ।—रा. रू.
उ०—२ वडी लाज धाधल्ल संग्राम वेळा, महाराज रै काज खीची समेळा । हुग्रा राड ग्रागै वधै पाडिहार, वधारै सभारै घणी वार वार ।—रा. रू.
उ०—३ भाटी पिण ग्राया दळ भेळा, माण घणैं चहुवाण समेळा । सरसो जोर हुवौ पतसाही, मद विखौ पडियौ घर माहै ।—रा रू
४ युक्त, सहित ।
उ०—नसतर घर नायका, मिळै पायका समेळा । मेवा जेसळ मिळै, कर रूपा सचेळा ।—सू. प्र.
५ बराबर, तुल्य ।
६ देखो 'सामेळौ' (रू भे)

समै—देखो 'समय' (रू. भे)
उ०—१ तिण समै पवारै गाया लीवी । तरै पडिहार गोहिल भेळा हुय वाहर चढिया ।—नैंणसी
उ०—२ सीगडिया ऊगण समै, वाछडुवा री वक । खवर पडै धुर खेंचसी, ग्रौ तौ ग्राडै ग्रंक ।— बा. दा.
उ०—३ ग्राधी रात री समै हुती ।—नैंणसी
उ०—५ सध्या समै रावजी महिला पधारिया तरै ग्रपछरा मुजरो करनै सीख मागी ।—वीरमदे सोनगरा री वात
उ०—५ मनछा परब्रह्म हिंगोळ माता, समै सात पोरा रमैं दीप साता । जवू दीप मैं जाम एको जिकारौ, दिसा पच्छमी दूर प्रासाद द्वारौ ।—मे म
२ देखो 'सम' (रू भे)
उ०—कठ पोत कपोत कि कहुं नीळकठ, वडगिरि कालिंद्री वळी । समै भाग किरि सख सखधर, एकणि ग्रहियौ ग्रगुळी ।—वेलि

समैकत—वि – एकत्रित ।
उ०—विध विध सहेली बाडिया छाजै छे । ग्रावा, खजूरि, केळा नारेल राजै छे । पिसता छूहारा दाख बिदामा समैकत की छे ।
—बगसीराम प्रोहित री वात

समैयौ—देखो 'समय' (रू. भे.)
उ०—ह्वालो म्हारी सहिया ए जाभोजी रा मेळा मैं । ग्राज री समैयौ म्हारा जमेसर री मेळे चालो ।—लो. गी.

समोद—वि.—गर्व सहित ।
रू भे.—सम्मोद ।

समोदनी—स स्त्री [स समुदायिनी] सेना, फौज (ह ना. मा.)

समोपणौ, समोपबौ—१ देखो समपणो समपबौ' (रू भे)
उ०—१ एक स्याल विसाल वाटुली मीप कच्चोला भ्रंगारादिक भाजन सरवै समोपइ ..... . ।—व. स
उ०—२ पूत्ति भतारिहिं देवी ग्रति घणु मनावी, पूत्तु समोपीउ सय ग्रापणि नवि ग्रावी ।—सालिभद्र सूरि
उ०—३ हारू समोपीउ नरवरह्र सतीय रेसि ग्रनु कमलु लिद्धऊ ।
—सालिभद्र सूरि
समोपणहार, हारौ (हारी), समोपणियौ—वि० ।
समोपिग्रोडौ, समोपियोडौ समोप्योडौ—भू० का० कृ० ।
समोपीजणौ, समोपीजबौ—कर्म वा० ।

समोपियोड़ो—देखो 'समपियोडो' (रू. भे)
(स्त्री. समोपियोडी)

समोवड, समोवड़यो, समोभर—१ देखो 'समवड' (रू भे.) (डि. को)
उ०—मन महराण समापण मोजा, कापण दीनां चा कुरद । दीजै किसो समोवड दूजा पेखै चकत रहै पुरद ।—र. रू.
२ देखो 'समोवडियौ' (रू भे)
उ०—करनी मुख मू थू कह्यौ, रख करड सकट पर । करड कियौ गिर मेरू कह ब्रह्माड समोभर ।—जुझारसिंह मेडतियौ

समोभरम समोभ्रम, समोभ्रमी – देखो सभ्रम' (रू भे)
उ०—१ 'खेम' समोभ्रम 'थानसी', भडारी 'विजराज' । सकत-सिंघ 'चापा'हरौ, कमधज मुदै सकाज ।—रा. रू
उ०—२ मानसिंघ धिन धिन मेवाडा, ग्रत प्रब्र भीम तणौ ग्रव-साण । जोळा हुवै घणा नर जीवा, भेळी हुवौ समोभ्रम 'भाण' ।
—दुरसौ ग्राढौ
उ०—३ धारू जळ 'जोध' समोभ्रम धींग, सूरा खळ चूर करै रायसींघ ।—सू. प्र.
उ०—४ दानै लख कोडी दियण, जुडि जीपण रिण जग । सूरज-सिंघ समोभ्रमी, दूजौ 'गग' ग्रभग ।—गु. रू. बं
उ०—५ मरद पवसाख भूमण कडा मूंदडी, कंठ डोरो मुरति लवग काना । तेमडा समोभ्रम खुडद गेढा तणौ थान जाहर थयो राज थाना ।—मे म

समोयोडौ—देखो समोहियोडौ' (रू भे)
(स्त्री ममोयोडी)

समोवड—देखो 'ममवड' (रू भे) (डि को.)
उ०—१ ता मैं एक गयद है, मेर समोवड गात । रिण वेळा रावत विहद, गिणैं ग्ररि तिलमात ।—गज-उद्धार
उ०—२ सूर समोवड सूर री, सकै न कर ससार । तू न कटै समहर तिया, लगन परजळै लार ।—रैवतसिंह भाटी
२ देखो 'समोवडियौ' (रू. भे.)

पोड ।—गु. रू. ब.

उ०—२ जिकी सुणि साखलै वीरमदेव आपरा स्वामी नू पयादी जाणि चामुडराज सिंहदेव प्रमुख सामता री समूह रोकण रै काज आडौ आय बाजी रो वेग री चक्रवाळ ताणियौ ।—व. भा.

२ ढेर, राशि । (अ. मा; ह. ना मा)

उ०—अरै अरबुद रा दुरग रै माथै संगर री सामग्री रौ समूह चाढियौ ।—व. भा

३ झुंड । (अ. मा; उ. र; डि. को.)

उ०—तुरा उखरब, उडत दिडब, अधार उघोळ, धारा घमरोळ । कटक्क काधार, समूह सेलार, पयाण करत, मेल्हाण दियत ।
—गु. रू. व

४ बाहुल्य, आधिक्य ।

उ०—लखमी जु रुखमणी जी स्रीक्रस्ण जी का हरख आणद का समूह माहै मगन होय रहै छै ।—वेलि टी

५ सनातन विश्वदेव का नाम ।

पर्याय.—अनत, अपार, ओघ, कदळ, कटक, कंदव, कनिचय, कलाप, कुरभ, कुल, गण, ग्राम, घणा, चक्र, चय, जाळ, जूथ, जूह, झुड, झूळ, झूल, तोम, थाट, थोक, निकरब, निकर, पटळ, पटल, पुग, पूर, प्रकर, प्रकार, फतूह, बहु, बहू, बौहळ व्रज, विध, व्यूह, व्रज, सघात, संचय, सदोह, सहति, सघण, समाज, समुदय ।

रू. भे.—संमुह, समूह, समुह, समुहै, समुहौ, समूह सम्मूह ।

समें, समे—देखो 'समय' (रू भे.)

उ०—१ तिण कालै नै तिण समें रे पारस्व सतानिया साध।
—जयवाणी

उ०—२ तैण समै सोक घणा आदर सुंनमान सू मळै, साछा सा समीचार पूछिआ ।—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

समेगी—देखो 'सवेगी' (रू. भे)

समेजोग—देखो 'समाजोग' (रू. भे.)

उ०—एक दिन रै समेजोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पडित पुराणिक आयौ बडा बडा ग्रथा री समुद्र सौ पार दरसायौ ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

समेटणौ, समेटबौ—क्रि स.—१ मारना, सहार करना ।

उ०—आयौ गढ हूता अमर, सत्र हर करै सिंघार । सात हजार समेटिया, घायल आठ हजार ।—रा. रू.

२ कम करना, थोडा करना ।

उ०—लखि अचरज्जै कोप त्रप, वरण कुबेर सुरिंद । लाज समेटै सोर की, आज मुरद्धर इद ।—रा. रू.

३ बिखरी हुई चीजो को इकट्ठा करना । (उ. र.)

४ क्रम या तरतीब से लगाना ।

५ काम पूरा या समाप्त करना ।

समेटणहार, हारौ (हारी), समेटणियौ—वि० ।

समेटिओड़ौ, समेटियोड़ौ, समेट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

समेटीजणौ, समेटीजबौ—कर्म वा० ।

सवटणौ, संवटबौ, सवेटणौ, सवेटबौ, समटणौ, समटबौ, सांमटणौ, सांमटबौ, सांवटणौ, सांवटबौ, सिमटणौ, सिमटबौ—रू० भे० ।

समेटियोडौ—भू का कृ.—१ मारा हुआ, सहार किया हुआ. २ कम किया हुआ, थोडा किया हुआ. ३ बिखरी हुई चीजो को इकट्ठा किया हुआ ४ क्रम या तरतीब से लगाया हुआ. ५ काम पूरा या समाप्त किया हुआ ।

(स्त्री. समेटियोडी) .

समेडी—स स्त्री.—स्कद की अनुचरी एक मातृका का नाम ।

समेत, समेति, समेती—स पु. [स. समेत] एक पर्वत का नाम । (पुराण)

वि.—१ सयुक्त ।

२ साथ, सहित ।

उ०—१ सेठा सू तौ पाछौ नुस्कारौ ई नी व्हियौ । लप बिछा-वणा समेत गाठडी करनै खाडावूच कर दियौ ।—फुलवाडी

उ०—२ होय कै निकासी बनौ बंधवा समेत हल्यौ, ऊभल्यौ सामुद्र सेना हलीतौ उदार ।—बादरदान दधवाडियौ

उ०—३ टूंक समेती भूमि गढ लूटन का दाया, करि समझासि नवाब को सबनै समझाया ।—ला. रा

उ०—४ सो उठारै अधीस दलै नामै जोइयै आपरा वैभव समेत आधी अवंनी दै ।—व. भा

उ०—५ अर अनामय पूछण री व्याज करि पिता नू बडा भाई दो समेत मारि साह होण री संकल्प करि दिल्ली माथै आपरी चतुरग चमू चलाई ।—व. भा.

समेध—स. पु [स] मेरु पर्वत का एक भाग ।

समेर—देखो सुमेर' (रू. भे.)

उ०—रसविलास का यद, वचन का हरचद, समेर का भार, कुमेर का भंडार ।—बगसीराम प्रोहित री वात

समेळ—वि.—१ मिश्रित ।

२ युक्त, सहित ।

उ०—जवना समेळ दळ तुरग जुग, तिण वार मिळै नह टळै तुग ।
—रा रू.

३ साथ ।

४ एकत्रित ।

५ देखो 'सिवळ' (रू. भे)

समेळण—देखो 'सम्मेलन' (रू भे.)

समेळौ—वि.—१ साथ, शामिल ।

उ०—१ मगरै 'राजड' 'जगड' समेळा 'सामळ' नाहरखान सचेळा ।—रा: रू

उ०—२ साख साख सुर असुर समेळा, अवधगिर साहै अडर ।

३ समय ।
४ यादव (भाटी) वंश की समा शाखा का व्यक्ति ।
५ अवसर, मौका ।
उ०—तरै आपरी वात माड कही । नै देवराज रा हुजदार विण वडा माणस हुता तिण भलो समो जोय नै घार रा मुहता नूं रावळ सू मिळायो ।—नैणसी
वि (स्त्री समी) १ समान, तुल्य, बराबर ।
उ०—१ मोती समो न ऊजळो, चनण समो न काठ । देवी समो न देवता, गीता समो न पाठ । —अग्यात
उ०—२ पय-तलि पद्म-प्रभा करि, रत्न कमल परि रग । नख निरमल पाहुनी समी, अगुली औ सम सग ।—मा का. प्र.
उ०—३ जग मैं वस उग्र गुण जोई, कृत रवि वस समो नह कोई ।
—रा. रू
२ सीधा, सरल ।
उ०—सीख द्यो लाख न हुवै समा, खोटी जड रा खुढीया । पारकी निंद करता पगट, धरमी किहा थी ढूंढिया ।—घ. व ग्र
३ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल ।
उ०—अई लघु वेस आदेस तो आगळी, मन समी कया अप राखवै मेळा ।—द्वारकादास दधवाडियो
४ जैसा ।
उ०—सरव जगत रा जीव मारघा एक समो ससार वधै नही । सरव जीव नी दया पाल्या एक समो ससार घटै नही ।—भि. द्र.
५ जिसमे फेर या घुमाव न हो, अवक्र, सीधा ।
उ०—सहज मिटै न सदीव, टेव थी जाइ न टलीयै । स्वान पूछ न व्है समी, नित भरि राखो नलीयै ।—घ. व. ग्र.
क्रि. वि —१ होते ही ।
उ०—१ कर हाक रीठ देतो कहर, वीर डाक वगा समो । अण-सक जोम रवहियो अनड, कूद बीच पडियो 'कमो' ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ वूठो क असण रुठो सकर, सीह विछूटो हक समो । फूटो क सिंधु तुटो गयण, कोट कूद जूटो 'कमो' ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
२ ऊपर, पर ।
उ०—ताहरा रामचद ईंदै कहियो—तू म्हारै माथै समी है तूं भलाई नूं आव ।—नैणसी
३ ही, पर ।
उ०—१ अकबर सू मिळना समो कहियो तहवर खान । आज न को जग आरभै, 'सोनग' 'दुरग' समान ।—रा. रू
उ०—२ इतरै माहे तीतर उपर करो वोलीयो, सु आकरो वोलीयो । बोलतां समो कह्यो, 'कायजो मता ढाळो । तीतर कठै बोलीयो छै खबर करो ।'—भाटी वरसै तिलोकसी री वात
उ०—३ मनमान प्रथम मिळना समो, और गिरै कुण अप्पियो । असपती गात परखै अभो', सत्र गुजरात समप्पियो ।—रा. रू
उ०—४ इम कहना समो रायपाल कह्यो, 'ठाकुरै अमल करो' ।
—भाटी वरसै तिलोकसी री वात
४ तक, पर्यन्त ।
उ०—ऊ खेजडो मरद री ताळ समो छै ।—नैणसी
५ सामने, सम्मुख ।
उ०—जदूनाथ काळी समी वाथ जोडै, धणी भोम पाली चडी वात घोडै ।—ना. द
६ ज्यों ही ।
उ०—मिळै चोट सामो समी दोट माथै, हुइ दुद्ध मल्ला तणी हेल हाथै ।—ना द
७ देखो 'समय' (रू. भे.)
उ०—१ इणी समै तिको रात आधी रो समो छै तिको राजा रै कान सुर पडचो । - जगदेव पवार री वात
उ०—२ प्रळै समो किर अंतक पायो । वाघ अचित किणहि वत-ळायो ।—रा. रू.
रू. भे.—समौ, सवो, समा, समु, सुवो ।
अल्पा —समयो, समियो ।

सम्म-वि [सं. श्याम] काला, श्याम ।
उ०—त्रिनै जडाव वाजुवध, सम्म पाट सोहिया । त्रिखंड साखि जाणि सप्प, मैण धार मोहिया ।—सू प्र.

सम्मत-स पु [स सम्मत] १ इकरारनामा, कौल, करार ।
२ राय, सम्मति ।
उ०—१ स्वामी रा सम्मत विहूण भी जोईय। तिकण नूं मारण चहै ।—व भा.
उ०—२ सो स्वामी रै सम्मत हुवा तो इसडो कवण सो मोनू जाति रै बहिरगत करै इण कारण एक आपरो ही आतक- आणि डरू ।—व भा
३ विचार ।
उ०—इसडो सम्मत करि काळ रा खैंचिया प्रेतपति री पुरी रा पाहुणा होइ हुकम रै प्रमाण तत्काळ ही लेख करि भिलाई दीधो ।
—व भा.

सम्मति-स स्त्री —१ सलाह, राय ।
२ अनुमति ।
३ अभिप्राय ।
रू भे —समति ।

सम्मद-स पु. [स] १ एक बहुत बडा मत्स्य रत्न जो अपने विशाल परिवार सहित जल मे रहता था । इसी पारिवारिक सुख को देख कर सोभरि ऋषी विवाह करने के लिए उत्सुक हुए थे ।
२ देखो 'समुद्र' (रू भे)

समोवडियौ–वि —१ समानता वाला बराबर का। (डि. को.)

२ देखो 'समवड' (रू भे)

रू. भे.—समोवडियौ, समवड।

समोवण, समोवर—देखो 'समवड' (रू भे.)

उ०—१ कोड तेतीस सुर आय केळा करै, अमिरा मारमें भुल आणंद। सोहियौ गाज करतौ असौ राजसर, समोवण हुआ जण सात सामद।—जोगीदास कवारियौ

उ०—२ इद्र समोवर जाणीयै, रिद्धि करी राजानौ रे। गुनह खमै निज प्रजा तणौ, दिन दिन वधतै वानौ रे।—वि. कु.

समोवणौ, समोववौ—देखो 'संमोहणौ, संमोहवौ' (रू. भे.)

समोवणहार, हारौ (हारी), समोवणियौ—वि०।

समोविओडौ, समोवियोडौ, समोव्योडौ—भू० का० कृ०।

समोवीजणौ, समोवीजवौ—कर्म वा०।

समोवियोडौ—देखो 'समोहियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. समोवियोडी)

समोवसरण—देखो 'समवसरण' (रू. भे.)

उ०—धन कृतारथ तै नर नारि, जे वरतइ जिणधरम मझारि। समोवसरणि प्रभ करइ वखाण, तीह नी प्रसंसा महाविदे जाण।

—वस्तिग

समोसर, समोसरि–स. पु.—१ श्रेष्ठ अवसर, मागलिक अवसर।

उ०—सुंडादड अहेस राग रीझेस समोसर। वणि सिंदूर चित्रवेस, धार मदवेस पडै धर।—सू प्र.

२ देखो 'समीसर' (रू भे)

उ०—१ अयो रथ वैसि समोसर इद, वसै सुरधाम अपच्छर वीद।

—सू प्र.

उ०—२ चापावत 'राम' 'हरी' घर चोख, समोसर नाहरखान सरोख।—रा रू

उ०—३ सहस तेर असवार, सीह सादूळ समोसर। बीस गयद वेछाड, निहस पावस गिर नीझर।—सू. प्र.

उ०—४ साकणी डाकणी सकति, सकति चवसठी समोसरि। समळ महासिध सकति, सकति वायणी सिकोतरि।—सू. प्र.

समोसरणौ, समोसरवौ–क्रि अ —आना, पधारना।

उ०—१ 'वीत-भय' पाटण समोसरै, भगवत स्रीमहावीर। भाव सहित सेवा करू, रहू जिणा रै तीर।—जयवाणी

उ०—२ नेमि जिणिंद समोसरया, वादिवौ गयउ वासुदेवौ जी। दढण कुमर साथि गयउ, सहुवादी करइ सेवौ जी।—स. कु.

उ०—३ समोसरया स्वामी सेत्रुज गिरि, जिनवर पूरव निवाणु वार। समयसुदर कहै प्रथम तीरथकर, आदि नाथ सेवौ सुखकार।

—स. कु.

उ०—४ इण प्रस्तावै समोसरया केवलधार मुणिद।—वि कु.

उ०—५ नगर नै समीपै वन में समोसरया रे, हो माधु सहित भरपूर।—वि. कु.

समोसरणहार, हारौ (हारी), समोसरणियौ—वि०।

समोसरिओडौ, समोसरियोडौ, समोसरयोडौ—भू० का० कृ०।

समोसरीजणौ, समोसरीजवौ—भाव वा०।

समोसरियोडौ–भू. का. कृ.—आया हुआ, पधारा हुआ।

(स्त्री. समोसरियोडी)

समोसी–स स्त्री.—वलवती।

उ०—जपै जनम गुण पूरण जोमी, सुर पुजा हव थई समोसी।

—रा रू.

समोसौ–स पु.—१ मैदे की रोटी छुने हुए मास के छोटे टुकडो को मसालो के साथ डालकर तेल मे तल कर वनाया जाने वाला मांस जो नमकीन एव स्वादिष्ट होता है।

उ०—१ सावडदी समोसा मास सूळा भाति न्यारी, दारू पीय वैठा थाळ आवा की तयारी।—शि व.

उ०—२ नान्हो छुनियौ मास मदी आच कढाई मैं तळजै छै। वेसवार मसाला घात उहा माडा मैं घातजै छै। तठा पछै माडा गूथ समोसा वणाय तळजै छै।—रा. सा स.

२ मैदे की छोटी पतली रोटी मे मसालो के साथ प्याज आलू आदि डाल कर वनाया जाने वाला त्रिकोणात्मक नमकीन खाद्य पदार्थ।

समोह–स पु. [स] युद्ध, सग्राम।

वि.—१ मोहित।

२ मूर्छित,।

उ०—घडी बिच्यारी घणउ दल, थोभ्यउ वीर वावरइ लोह। तुरक वचा मूगल कर कटीया, ऊपर पड्या समोह।—का. दे. प्र

रू भे —सम्मोह।

समोहणौ समोहवौ—देखो 'समोहणौ, संमोहवौ' (रू. भे)

समोहणहार, हारौ (हारी), समोहणियौ—वि०।

समोहिओडौ, समोहियोडौ, समोह्योडौ—भू० का० कृ०।

समोहीजणौ, समोहीजवौ—कर्म वा०।

समोहा–स पु.—एक वर्णिक व्रत विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे पांच गुरु वर्ण होते हैं।

समोहियोडौ—देखो 'समोहियोडौ' (रू भे)

(स्त्री समोहियोडी)

समो–स. पु [स. समा] १ वर्ष, साल।

उ०—१ नमो देस मारू धरा कोट नोवा, नमो द्रग गेढा कला मुरद दोवा। प्रणम्मो समो च्यार छै नौ पहोमी, नमो माम आसाढ री सुक्ल नोमि।—मे म.

उ०—२ सक चन्दह सत्र हू समा, लागो इम जय लेर। मारि सळा लीधी महू, दळा पराभव देर।—व. भा.

२ अध्याय, प्रकरण।

२ यथार्थ, विशुद्ध ।

उ०—मूलतें सात मिटात है घातक श्रावत सम्यक भाव भलेगें ।
—ध. व. ग्रं.

सम्यकचरित्र-स पु. यौ. [स.] अत्यन्त शुद्धतापूर्वक व धर्म के अनुसार आचरण । (जैन)

सम्यकग्यान-स. पु. यौ. [स. सम्यकज्ञान] जैनियों के धर्मतत्व में से एक । (जैन)

सम्यकदरसण, सम्यकदरसन-स पु. यौ [स सम्यग्दर्शन] सातों तत्वों एव आत्मा आदि में पूरी पूरी श्रद्धा होना । (जैन)

सम्यकदरसी-स. पु यौ. [स. सम्यग्दर्शिन] वह व्यक्ति जिसे 'सम्यक-दर्शन' प्राप्त हो । (जैन)

सम्यकसबुद्ध-स पु [स. सम्यकसबुद्ध] १ वह व्यक्ति जिसे सब बातों का ठीक व पूरा ज्ञान प्राप्त हो गया हो । (जैन)

२ गौतमबुद्ध का एक नाम ।

सम्यकत्व-स. पु [स.] १ नव तत्व और छः द्रव्यों में दृढ श्रद्धा होने का भाव । (जैन)

उ०—१ किसिउ धर्म., अहिंसालक्षण, सत्याधिष्ठित, स्तेनरहित ब्रह्मचर्य गुप्त, सतोषपरम एव विध, अथवा यथाशक्ति दान दीजिइ, शील पालीयई, तप तपियइ, भावना भवियइ, सम्यक्त्व परिपालिय देव पूजियइ........। —व. स.

उ०—२ जब स्वामीजी अखर बताय दिया अने बोल्या : गुमानमलजी थारै सम्यकत्व रहणी कठिण है आसता कची तिण नु । —भि. द्र

उ०—३ कीडी नें कीडी सरधे सो सम्यकत्व के कीडो सम्यकत्व जद तें बोल्यो : कीडी नें कीडी सरधे तें सम्यकत्व ।—भि. द्र.

रू भे —समकत, समकित, समगत ।

सम्यौ—देखो 'समय' (रू भे.)

उ०—अर आटो ल्याय रोटा कीधा गोल ल्याया घरत ल्यायो । अर रात रो सम्यौ थो । जो ओगळी माहे ठड मू कर साप आय बैठो ।
—पनमार री बात

सम्रत—१ देखो 'स्म्रति' (रू. भे.)

उ०—भाखै वेद पुराण भग, अरु सम्रत की साग । पावै हरिगुण पार कुण, पच पच हारै लाग ।—गज-उद्धार

२ देखो 'समरथ' ।

सम्रतवेता—देखो 'स्म्रतिवेता' (रू. भे.)

उ०—कीधा माजी न्याव किल, जग मामल जेताह । काजी सुण धिन धिन कहे विप्र सम्रतवेताह ।—वा. दा.

सम्रति—देखो 'स्म्रति' (रू भे.)

सम्रतीयद-स पु.—कवि । (अ मा)

सम्रतिवेता, सम्रतीवेता—देखो 'स्म्रतिवेता' (रू. भे)

सम्रत्थ, सम्रथ—देखो 'समरथ' (रू भे.)

उ०—१ अधीस पएं नख कोटि अरक्क, सम्रत्थ सिरज्जण भाजण मह ।—ह. र

उ०—२ मही पत्र नाम धरै फरमाए, मछै कर सम्रथ गौग सगाज ।—पा. प्र.

उ०—३ रंगीला गुर सम्रथ मिलै, सो मिल ही सम्रथ होय । नाम गहै सु सुखिया, आखि न आवै कोय ।—अनुभववाणी

सम्रद्ध-सं. पु. [स. समुद्र] मर्यादा में रहा गुरुराड़ के पुत्र से उत्पन्न एक नाग ।

वि.—सम्पन्न, वैभवशाली ।

सम्रद्धि, सम्रधी-स स्त्री. [स समृद्धि] पारथिव सम्पन्नता ।

उ०—वैरागग्रदि गुण धज सम्रद्धि, निरमल निशान निरधन निधान ।—क मा,

सम्रधीक-वि —समृद्धिशाली, वैभवशाली ।

उ०—श्राति प्रभापि रका पमीधार नाग्री पड़े, गौर मेर आर पना चीर चोप धारीन । रामा चौरीस देस रथी महनाल सही, सिध गोण सम्रधीक कुबेर मारीन ।—ल गाम हाडा री गीत

सम्राणी, सम्राग्यी-स. स्त्री [स. सम्राज्ञी] सम्राट की पत्नी ।

सम्राज-स पु. [स.] १ चक्रवर्ति राजा की उपाधि या चक्रवर्ति राजा ।

२ जिनरथ एव कर्णी के पुत्र एक राजा जो मरीची का पिता व वराल्पा का पति था ।

सम्राट-स. पु [स. सम्राट्] १ वह बहुत बडा राजा जिसके अधीन कई छोटे बड़े राजा-महाराजा हों ।

२ भरतवशीय राजा चित्ररथ एवं ऊर्णा का पुत्र, उत्कला का पति एव मरीचि के पिता का नाम ।

रू भे.—समराट, सामराट ।

सम्रिति—देखो स्मृति' (रू भे)

सम्रारमुद्रा-क्रि वि. [स. समुद्रमुद्रा] मृत्यु की मुद्रा के साथ, मृत्यु की निशानी सहित ।

उ०—दमिड किमासी मति पारथ निद्रा, सेनि नरेंद्र सु सम्रन्य-मुद्रा । निद्रा नि पूंगइ हथियार छाडइ, कोई तिलो सिठ नवि कुम माडइ ।—सालि सूरि

सम्न-स. पु [स सम्न] १ गंधनदान ।

२ सूरज, सूर्य ।

सम्हाळणो, सम्हाळबो—देखो 'सभाळणो, सभाळबो' (रू. भे.)

उ०—१ महाराजा सूरसीघ री दरगाह में जाणो तथा महाराज कुमार गजसिंघ रो नासण भार सम्हाळणो ।—गु रू बं.

उ०—२ मगसर ठड बहोनी पडै, मोहि बेग सम्हाळो हो ।
—मीरा

उ०—३ बूंदी आइ सम्हाळि बळ, सावधान करि सरब । दूदो मुहि रह्यो दुसह, पावण रण जस परब ।—व. भा

सयकळ—देखो 'साकळ' (रू. भे.)

उ०—गरज्जुत नाग फिरै गयणाग । सयकळ तोड करै तळ-जोड ।
—गु रू ब.

उ०—पिरथल इम आयौ परणि सम्मद पायौ सोम।—रा. रू

सम्मन-स. पु [अ समन] एक प्रलेख जिसमे न्यायालय किसी व्यक्ति के नाम आदेश जारी करता है कि वह न्यायालय मे उपस्थित हो।

क्रि प्र—आणौ, भेजणौ, मिळणौ।

रू भे.—समन।

सम्मर-स पु.—१ वैभव, ऐश्वर्य।

उ०—वप सोच कप सम्मर विरह, करै सकोच फकीर रौ। कारण अथाह वरणं कमण, उर दुख दाह अमीर रौ।—रा रू

२ देखो 'समर' (रू भे)

उ०—१ असुरा दिस लिख एम, करै दळ सवळ भयकर। पवग पूर पाखरा, सूर सिलह्हा वळ सम्मर।—सू. प्र.

उ०—२ देवौ सेवै सकति दिनकर, सामि कामि चाहता सम्मर।
—रा. रू

३ देखो 'स्मर' (रू. भे.)

सम्मरदण, सम्मरदन-स पु. [सं सम्मर्दन] वसुदेव व देवकी के पुत्रो मे से एक।

सम्मळा-स स्त्री.—देवी विशेष।

उ०—देवी कालिका कूबजा काम कामा, देवी रेणुका सम्मळा राम रामा।—देवि

२ चील।

उ०—जवक जख प्रघळ मिळिया सम्मळ, होऊ हूकळ रत हिळै। डाइणि भख डळ डळ चूपै चळवळ, पळ भैरव वळ वळ भूत भिळै।
—गु. रू बं.

३ यमुना।

वि—श्यामवर्ण का।

रू. भे—समळा।

सम्मवणौ, सम्मववौ—देखो 'समाणौ, समाबौ' (रू भे.)

उ०—काळउ कोटा कारणइ, विढिवा वीरति वाइ। ससमथ जरदि न सम्मवइ, असुराइ थट्टि न माइ।—रा ज. सी.

सम्मसेर—देखो 'समसेर' (रू भे)

उ०—वहै सम्मसेर, झरै झट्ट झेर। कटै आच ओण, रडै रत्त सोण।—गु. रू. व

सम्माण, सम्मान-स. पु. [स सम्मान] आदर, प्रतिष्ठा।

रू भे—समाण, समान।

सम्मा-वि—१ समान, तुल्य।

उ०—देवी सावित्री गायत्री ब्रम्म ब्रम्मा, देवी साच तणा मेळिया जोग सम्मा।—देवि.

२ देखो 'समा' (रू भे)

सम्मास-वि. [अ शम्मास] सूर्य के पुजारी, सूर्य-पूजक।

सम्मुख, सम्मुह-वि. [स. सम्मुख] सम्मुख, समक्ष।

उ०—१ बीरा सम्मुह वेग, पूछ्र पटकै मडळ मित। एकण आइ सवळ, कीधा खळ सकित।—व. भा.

उ०—२ वधव विजौ पलटि खळ वणियौ, अकवरदळ, सम्मुह ऊफणियौ। सो 'सुरताण' हणं फौजा सह, अव्वू विदित कियौ रण आग्रह।—व भा.

सम्मूढ-वि [स] १ मोह युक्त।

२ टूटा हुआ, भग्न।

३ ढेर लगा हुआ।

सम्मूळ—देखो 'समूळ' (रू भे.)

उ०—हुवै हैमरा हूह सम्मूळ हल्लै, चली फौज गै-जूह पाहाड चल्लै।
—गु. रू ब.

सम्मूह—देखो 'समूह' (रू. भे.)

उ०—वाराह धडक्कै दाढ खडक्कै, कंध कडक्कै कूरम्म। सम्मूह सळक्कै कूंत वळक्कै, खेंग खळक्कै कंजम्म।—गु रू व

सम्मेटणौ, सम्मेटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू भे)

उ०—दियौ कत वेगौ हवै वेण दीधौ, काळी नागरि नारि उच्छाह कीधौ। आगै नागणी भेट सम्मेट आणं, जदूनाथ लीजै जकौ राज जाणं।—ना द

सम्मेलन-स पु. [सं] १ किसी विशेष उद्देश्य से अथवा किसी विशेष विषय पर विचार करने हेतु एकत्र होने वाला मनुष्यो का समूह।

२ मिलाप, सगम।

३ जमाव, जमघट।

४ कोई बहुत बडी सस्था।

ज्यूं—हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

सम्मै—देखो 'समय' (रू भे)

उ०—बडा अमीर बुलाय, साह भेजै तिण सम्मै। 'अजा' 'जसा' दिस असुर, मुहम नह को आगम्मै।—सू प्र

सम्मोद—देखो 'समोद' (रू. भे.)

सम्मोह—देखो 'समोह' (रू. भे)

सम्मोहणौ, सम्मोहबौ—देखो 'समोहणौ, समोहबौ' (रू भे)

सम्मोहणहार, हारौ (हारी), सम्मोहणियौ—वि०।

सम्मोहिग्रोडौ, सम्मोहियोडौ, सम्मोह्योडौ—भू० का० कृ०।

सम्मोहीजणौ, सम्मोहीजबौ—कर्म वा०।

सम्मोहियोडौ—देखो 'समोहणौ' (रू भे.)

(स्त्री सम्मोहियोडी)

सम्मोहण, सम्मोहन-स पु. [स. सम्मोहन] कामदेव के पांच बाणो मे से एक।

सम्मौ—देखो 'समौ' (रू भे)

उ०—नमौ सुक्र सध्या घणौ स्रेस्ट सम्मौ, नखित्रा तणौ पातिसा स्वाति नम्मौ। महालक्ष्मी मात धापा नमामी, नमौ मात रौ तात सामुद्र नामी।—मे. म.

सम्यक-वि. [स सम्यक्] १ पूरा, समस्त।

सयगार—देखो 'सिरणगार' (रू. भे)

उ०—तीजे घरि घरि मगळचार, चहु दिसी कामनी करई हो सय-
गार।—वी. दे

सयंतउ-वि. [स. सचिंतक] उतावला, उत्तेजक, व्याकुल।

उ०—एहु न कोईय करउ विचार, द्रूपदराणीय पच भतार। साहु
कही नइ गयणि पहूतउ, पडु नराहिवु हूयउ सयंतउ।
—सालिभद्र सूरि

सयद-स. पु —१ स्वर्ण, सोना।

२ शयन।

सयबर, सयंबर, सयवरु—देखो 'स्वयवर' (रू. भे.)

उ०—१ घरियौ परा जनक इसी मन धारै, धनक पिनाक चढाय
घरै। महपत आय सयबर माहैं, वसुदा कुमरी तिको वरै।
—र. रू.

उ०—२ सयवर मडप मडाउ, सहु देसाधिप तेडाउ। इण सरिखौ
जो वर पाउ तो वेटी ने परणाउ हो लाल।—स्रीपालरास

उ०—३ परिणावेवा तीह वाल सयवरु मडाविउ। गगानदणु
चडीउ रोसि अणतेडिउ आव्यौ।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'स्वेतावर' (रू भे.)

उ०—जिणि जांग जीतउ समरसि अमर सिरोमणि कासु। विलसइ
सिद्ध मयवर सवरगुणि अभिरामु।—जयसेखर सूरि

सयंमी-वि. [स सयमिन्] १ मन और इन्द्रियो को वश मे रखने वाला,
जितेन्द्रिय।

स. पु —२ बुरी व हानिकारक वस्तुओ से परहेज रखने वाला,
साधु, सन्यासी।

सयमू—देखो 'स्वयभू (रू. भे.)

सय-स पु [स. शयः] १ हाथ। (डि. को)

उ०—१ यो मद्दल भुजवध सो सय सज्ज सुहाया।—व भा.

उ०—२ कमनैत तीरन तानिकै पखरैत वेधत पानि कै बुधतनय हित
जय प्रणय नय वय छपय रन सुम अभय अतिसय विसय चय भुव
वलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय
अतिरघ अजय खयकर अखय जय अग्र उमय सय पय हृदय अप-
चय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।—व भा.

२ निद्रा, नीद।

३ शय्या, सेज, खाट।

४ साप विशेष।

वि.—१ सव, समस्त।

२ देखो 'सौ' (रू भे)

उ०—१ पनरम घरम तयालीम गणि चौसठ हजार। साहु साहुणी
बासठ महस अनै सय चार।—ध व ग्र.

उ०—२ चउथउ हूइ एक कोडाकोडि, वइतालीस वरस नी ओटि।
पच सय धनुम देह परिमाण, दूव कोडि आउखउ जाणि।
—वस्तिग

३ देखो 'सैं' (रू. भे.)

४ देखो 'स्वयं' (रू. भे.)

उ०—१ पाचमइ दूसमि वरती आण वरिस तैं एकवीस जाणि।
सात हाथ देह सुकुमाल सय वरिस माहि पहचइ काल।—वस्तिग

उ०—२ थानकि थ्या सामी नितु ध्याइ, सहस पल्योपम करम खजी
जाइ। जं नर नारि अभिग्रह लिति, सय गुण पापकरम खिपति।
—वस्तिग

सयगहीदोस—ग्रहस्थी के घर से अपने आप उठाकर आहार लेने से होने
वाला पाप। (जैन)

सयण-स. स्त्री.—१ सखी, सहेली। (अ. मा.)

२ देखो 'सयन' (रू भे.)

उ०—वणि वगळा बहु केल्या, कुसुम लता कितान। मानहु मदन
महीप रा, तणिया सयण वितान।—सिववखस पाल्हावत

३ देखो 'सैंण' (रू भे.)

उ०—१ पर भोम पचायण सयणां रौ सेहरौ, दुसमणा रौ नाट-
साळ, वडौ भोकाइत।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—२ छोटी वीख न आपडा, लाबी लाज मरेह। सयण वटाऊ
वाळरै, लब्रउ साद करेह।—ढो मा.

उ०—३ धिन दीहाडौ धिन घडी, धिन वेळा धिन वास। नयणे
सयण निहाळिया, पुरी मन री आस।—अग्यात

उ०—४ मान गहेली माननी, विरुअउ वोल्यौ वयण। विण
आदर न रहे कदे, सिंह सूर नै सयण।—प. च चौ.

उ०—५ साचा रा सयण हुवै घणा ए, साचा रै न वधै वैर कै।
छल छिद्र नही हुवै ए, साच सू उतरै जहर कै।—जयवाणी

उ०—६ मनडौ आज उमाहियो, देख घटा घनघोर। सयणां साई
दे-मिळू, अलजो जसा' सजोर।—जसराज

सयणआरती—देखो 'सयनआरती' (रू. भे)

सयणबोधिनी—देखो 'सयनबोधिनी' (रू भे)

सयणमदिर—देखो 'सयनमदिर' (रू. भे.)

सयणाचार-स पु [स. स्वजनाचार] १ अपनो का सा व्यवहार।
(उ र)

२ भला व शिष्ट व्यवहार।

सयणी—देखो 'सैणी' (रू भे)

सयद—देखो 'सैयद' (रू. भे)

उ०—सयद पठाणा सिरै पमग भोकू पखराळो।—सू प्र.

सयधण—देखो 'सायधण' (रू. भे)

सयन-स. पु. [सं. सयन] विश्वामित्र के पुत्र तथा गाधि के पौत्र का
नाम।

सं. स्त्री [स. शयन] ३ निद्रा, नीद। (डि. को.)

२ शय्या, सेज। (अ मा; डि को.)

पाता साढा सातवीसी पौनाया पाकेट ।
—मूळसिंघ करममोत रो गीत

११ तालाव, जलाशय । (अ. मा, डि. को; ह. ना मा)
उ०—१ घूघट खोलदी नही, बोलदी पिक वैण । गजपत जावै गोरिया, लावै सर जळ लेण ।—बा. दा.
उ०—२ लावै सर पाणी भरै, गोरी गात अनूप । ज्या आगै पाणी भरै, रभ अलौकिक रूप ।—बा. दा.
१२ पानी, जल । (ह. ना. मा.)
१३ कूप, कुआ ।
उ०—वेहू घर सवर ऊडा सर थागै, आरै माळागर मूंघा रै आगै । सारी कीमत है करियोडा सारै, हीमत भरियोडा हीमत नह हारै ।
—ऊ. का.

१४ सात की सख्या । * (डि. को.)
१५ जलप्रपात, झरना ।
१६ वह नीची भूमि जहाँ वर्षा का जल इकट्ठा हो जाता हो व सूखने पर ऐसी भूमि पर प्राय गेहू, ज्वार, चने आदि बोये जाते हो।
उ०—इण तरफ गाव केरिया, एक माव, खेती-बाजरी री, मूंग, मोठ, तिल । कूवै पाणी पुरसं २० मीठो । बीजी तरफ कुछ दिसा, धरती कालार, तठै सर भरीजै, तठै ज्वार, गोहू ।—नैणसी
१७ पक्ष । (मि. पखो)
१८ सरपत की जाति का एक पौधा विशेष जिसमे गाठ वाली छडी होती हैं, सरकंडा । (डि. को.)
१९ दो मात्रा के दो लघु का नाम । (डि को)
२० छप्पय छद का २५ वा भेद जिसमे ३६ गुरु और ८० लघु मे ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं ।
२१ प्रशसात्मक काव्य । (सर काव्य)
[फा. सर] २२ सिर, मस्तक । (डि को)
उ०—१ एतलइ सुसरमा ढलि ढोल वाजइ, जाणे आमाढू किरि मेहू गाजइ । हीया घ्रूसूकइ सर सेस सूकइ, भय बीहता कायर जीव मूकइ ।—सालिसूरि
उ०—२ भरम करम इनका हैं सगी, जै कोई दूरि विडारै रे । निसदिन नाव करत रुखवाळी, ग्यान ध्यान सर धारे रे ।
—अनुभववाणी
उ०—३ सूतळ नाथा सर नासा सणकारी, फुरणी दूघाता रामा फणकारी । भूसर घाया गळ आवढ कठ झाखै, नम नम मावढ नै नाया कण नाखै ।—ऊ का.
२३-एक प्रकार अस्त्र विशेष ।
२४ हिमपात, पाला ।
उ०—पीतल पग्कर पर चीतळ कर परसै, वेहद महितळ मिर सीतळ सर वरसै । खळ भळ खावण नै अगसिर खळ खेधै, वावळ बरफारी तरफा सूं वेधै ।—ऊ का

२५ ताश के खेल मे ऐसे रग का पत्ता जो श्रेष्ठ माना जाता हो ।
स स्त्री.—२६ उक्त खेल मे जीती जाने वाली बाजी ।
ज्यू—म्हारी सात सरा वणी (बणया) है ।
२७ रस्सी, डोरी ।
२८ जीत, विजय ।
उ०—१ तरै रावळ वजीर नाटक नू कह्यो—वीरू तो सर पावां नहीं, तूं बूढो पण हुवो छै । तूं मरण लेवड नै सगार नू मारै नो पोहचा ।
—नैणसी
उ०—२ जद जलाल कही—सरंजाम फकत सो सर कर आग मुजरो करूं के कागदा में ही लपेटियो आऊ ।
—जलाल बूबना री बात
[अ] २९ ब्रिटिश सरकार की एक सम्मानित उपाधि । महाशय, महोदय ।
ज्यू—सर प्रताप ।
वि —१ दबाया हुआ ।
उ०—कपट कोठाडिया तणा इम विताई, जिके सारा कया नही जावै । इणानै सर करै जिसा जग आज दिन, बाप विन और नह निजर आवै ।—ऊमरदान लाळस
२ हराया हुआ, पराजित ।
उ०—काळै मार वडै कारीगर ओजरिया रण जुवा जुवा । पर लोहार किया सर पाधर, हानै मायव जेर हुवा ।—नेतसी माडू
३ जीता हुआ, विजित ।
४ विजय प्राप्त किया हुआ, जीता हुआ ।
५ प्रमुख, प्रधान ।
६ उत्तम, श्रेष्ठ ।
उ०—बाल अवस्था बुध कछु नाई, नवळ अति मतीना । सारासर सेर मोसर न जांणै, पराधीन बळहीना ।—स्रीसुखराम महाराज
७ तीक्ष्ण, तीखा । * (हि को)
८ समाप्त किया हुआ ।
प्रत्यय—१ एक प्रकार का प्रत्यय जो कुछ शब्दो के अन्त मे लगकर अनुसार, मुताबिक, पर, ऊपर, सा, से अर्थ प्रकट करता है ।
उ०—मारण वाळै दुस्टी टावर रै सरीर मायं सूं तीव री तीव उनार लीवी ही । कायदेसर पुलिस नै इतला देवणी पडी । लास रो पोस्ट-मारटम हुयो अर तीजै दिन जावता लास नै दाग पड्यो ।
—अमरचूनडी
ज्यू—घधसेर, कामसर, नौकरीसर, वगतसर, ढंगसर, ठीकसर ।
२ पूर्व कालिक क्रिया के साथ जुडने वाला शब्द ।
उ०—तद बाकरखा भडाकदेसर घोडे सू उतर आप रै बेटै रो हाथ झालि पकड घोडे ऊपर चढियो ।—ठाकुर जैतसी री वारता
३ देखो 'स्वर' (रू भे.)
उ०—१ डीभू लक, मराळि गय, पिक-सर एही वाणि । ढोला,

हूं रीत सदारी, पाडुर पीत प्रतीत ।—ऊ. का.

३ चतुर, होशियार ।

उ०—१ सखी सयांणी मोरी हसत है, हंस हस देवै ताळी ओ माय ।
—लो. गी.

उ०—२ सो एक दिन बादसाह रै दादी पोती वेगम थी सो पण सयांणी थी बादसाह री महरवानगी थी ।
—जयसिंह आमेर रा धणी री बात

४ सरल स्वभाव वाला, सीधा ।

उ०—इतरै मे सेखावत करणसिंह महाराज रै चाकर थो भलो सयांणोठाकुर सो हजूर मैं बैठो थो ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

५ कपटी, धूर्त ।

६ पूर्णयुवा, वयस्क ।

उ०—बादसाह दोना री बात सुणी थी तीसू कही—छोटी हमारै होवै तो आछो । तरै काजी अरज करी—जलाल सुघड छैल छै नै बूबना पण सयाणी छै ।—जलाल बूबना री बात

७ जानकार, विज्ञ ।

उ०—जोधपुर रै धणी रो वडो बेटो, फेर आप बाता सयांणो सो आछी तरह सू रहै । नकदी खरची पावै ।
—राठौड अमरसिंह गजसिंहोत री बात

८ जादू टोने जानने वाला ।

९ चिकित्सक, वैद्य ।

१० वृद्ध, बूढा ।

रू. भे.—सयाण, सयाणउ, सयानौ, स्यांणौ ।

सयानक-सं. पु.—गिरगिट । (डि. को.)

सयांनप—देखो 'सैणप' (रू. भे)

उ०—दादू एक सू लै लीन होना, सबै सयांनप येह । सद्गुरु साधू कहत है, परम तत्व जप लेह ।—दादूबांणी

सयांनो—देखो 'सयाणो' (रू भे)

सयो—देखो 'सखी' (रू. भे.)

उ०—उवो कोई सैण मिलावै सयां जो मारूडी देवै मिळाय ।
—रसीलैराज

सय्या-सं. स्त्री [स शय्या] १ पलग पर बिछा हुआ बिछौना
(डि. को)

२ पलग, चारपाई ।

रू. भे.—सइया, सज्जा, सज्या, सझ्या, सयण, सयन, सिज्या, सिजिया, सेइया, सेज, सेझ ।

सय्यातर-स. पु. [स] वह व्यक्ति जो जैन महात्माओ व मुनियो को अपने यहां ठहरने का स्थान देता है ।

रू भे.—सिज्यातर, सिज्यातरी, सेज्यातर ।

सय्यातर-पिंड-सं पु [सं.] वह आहार जो जैन मुनियो को अपने यहां ठहराने वाला व्यक्ति ही उन्हे भोजन-रूप में देता है जो कि मुनियो के लेने योग्य नही है । (जैन)

उ०—सय्यातरपिंड न खाय, माचदिक नही वेसाय घर ग्रही तणे ए, वैसै नही सुपनै ए ।—जयवाणी

सय्यापाळ-स. पु. [स शय्यापाल] राजा के शयनागर का प्रबन्धक ।

सरगो—१ देखो 'सुरगो' (रू. भे.)

उ०—गुलजार बोज अवलवल गात, सिंदळी अनै सरगा सुभात ।
—सू प्र.

२ देखो 'सारग' (रू. भे)

सरजांम—देखो 'सराजांम' (रू भे)

उ०—अरु पातसाह जी गुनामाफ कर फेर मुनसब दियो । तथा मुहीम का हुकम दिया सू सरजाम हुवो नही ।—द. दा.

सरंभर-वि.—सराबोर, तरवतर ।

सर-स. पु [स शरः, सर] १ बाण, तीर ।
(अ. मा; डि. को; ह. ना मा.)

उ०—१ ताळ चरती कूझडी, सर सधियउ गमार । कोइक आखर मनि बस्यउ, उडी पख समार ।—ढो. मा

उ०—२ पछै कुवर स्री दळपतजी आपरै हाथ सर मारिया । ताहरा कुवर स्रीबाळक हुता तिण सर अगुळ च्यार मार की ।
—द वि

उ०—३ अरजुनु पूठि सिखडडीयाह वइसी सर मूकइ, पडीउ पीयामहु समर माहि किम अरजुनु चूकइ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ चिहु पखे अरजन बाण छूटइ, सन्नाह माहिइ सर सीध्र फूटइ ।—सालिसूरि

२ दुग्ध, दूध । (डि. को.)

३ दूध की मलाई ।

४ पांच की सख्या । * (डि. को.)

५ लडियो वाला हार, माला, कठी ।

उ०—चपा केरी पाखडी, गूंथूं नव सर हार । जउ गळ पहरू पीव विन, तउ लागै अगार ।—ढो. मा.

६ गति, गमन ।

७ जुलाब लगाने वाला पदार्थ ।

८ सिरा, छोर ।

९ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार व्यक्ति की हथेली मे होने वाला तीर का सा निशान जो शुभ फल का सूचक होता है ।

[स. शरं, सर] १० समुद्र, सागर । (डि को.)

उ०—१ सर गिरवर तारै पदम अठारै, सेन उतारै जगत सखै । भिड़ रावण भजै गढहिम गजै, अमरा रंजै ब्रह्म अखै ।
—र. ज. प्र.

उ०—२ आथा भरै वाथा हाथा भोज ज्यू लुटावै दळा, ठाभी सरा साताइ कीरती थटा थेट । बाता ओ न जावै वाघो घरै बैठा

सरकायोडौ—देखो 'सिरकायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री सरकायोडी)
सरकार-स स्त्री [फा.] १ राज्यसत्ता, शासनसत्ता।
२ राज्यसभा, दरबार।
३ रियासत।
स. पु.—४ ईश्वर, प्रभु।
५ मालिक, स्वामी।
६ बडे व प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए सबोधन का आदर सूचक शब्द।
रू भे.—सिरकार।
सरकारी-स स्त्री —१ शासन सम्बन्धी, राजकीय।
२ सरकार सम्बन्धी।
सरकावणौ, सरकावबौ—देखो 'सिरकाणौ, सिरकावौ' (रू. भे.)
सरकावणहार, हारौ (हारी), सरकावणियौ—वि०।
सरकावियोड़ौ—भू० का० कृ०।
सरकावीजणौ, सरकावीजबौ—कर्म वा०।
सरकियोडौ—देखो 'सिरकियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरकियोडी)
सरकिल-स पु [अ.] कई गांव कस्बो आदि का क्षेत्र।
ज्यू—जोधपुर सरकिल।
सरकेल-वि —१ खिसकने वाला।
२ डरपोक, कायर।
३ सनकी।
४ जिद्दी, हठी।
५ उद्दड।
सरकौ-स पु —लज्जित होने की बात।
उ०—प्रथम मुवौ भरतार सुत एक मरगौ पछै, सक तज चोज गी करै सरका। वोज री ठौड विदरा कनै लाजविम, जोजरी हमेसा लियै जरका।—बाकीदास ग्रासियौ
सरक्कणौ, सरक्कबौ—देखो 'सिरकणौ, सिरकबौ' (रू. भे.)
उ०—१ वीस कोस दिस वाम, वीस दाहणै तरक्कै। जाळघर सामहो करै वेमुहीं सरक्कै।—रा रू
उ०—२ ऊडै लोहा बूर मल, सूर न जाय सरक्क। चढै गजा दातू सळा, रण रीझवै अरक्क।—वा दा.
सरक्कणहार, हारौ (हारी), सरक्कणियौ—वि०।
सरक्किग्रोड़ौ, सरक्कियोडौ सरक्कयोडौ—भू० का० कृ०।
सरक्कीजणौ, सरक्कीजबौ—भाव वा०।
सरक्कियोडौ—देखो 'सिरकियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री सरक्कियोडी)
सरक्यूलर-स. पु [अ] सब जगह घुमाया जाने वाला प्रपत्र।
सरख, सरखउ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे.)
उ०—आप परायउ सरखउ गिणइ, साचु थोडु गमतू भणइ।
—ग कृ.
सरखत-क्रि वि.—सामने सम्मुख।
उ०—तीन गुण नाग मन वचन निरदोस रहि, गाम मु सरखत सत मार्ग।—अनुभववाणी
सरखौ—देखो 'सारीखौ' (रू भे.)
उ०—१ जइ सभा सरखी सोलह नारि आपु आणो भनै सिणगारि तु हु जि राउ जिमाडेसु रगि नव नव भोजन नव नव भगि।
—हीराणद सूरि
उ०—२ जिनै सबळ भुज धपळ सहस बळ, सळ दळ रोक करण सग। 'गजपत' सुतन सनट सह साहण, कोय न तौ सरखौ करग।—सादूळजी निढियौ
सरग-स पु [सं सर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति। (ग्र. मा, द ना. मा.)
२ किसी ग्रथ का अध्याय, सर्ग।
३ शिव का एक नाम।
४ बाण, तीर। (अनेका)
५ देखो 'स्वरग' (रू. भे.) (हि. को)
उ०—१ नो रूप री एगी, जेमी ग्रयी मैं नहीं सरग री परी, ग्रानै री बीज, मानसरोवर रो हस।—कुवरसी सांखला री वारता
उ०—२ जा घड मती माता जोवियो, हरजी मू हेत लग्यौ। बाया! सरग नेडौ घर दूर, हरजी मू हेत लग्यौ।—लो. गी.
उ०—३ मुनि पालै नव जोग बळ, सरग कपाटा हत्य। वेही कृपण कपाट नू ऊघाडण असमत्थ।—बा. दा.
सरगट-स. पु —घूघट।
उ०—फरगट मारै फटग, रर नू सरगट काढ। सठ दासै भाळो सरस, गिनका वाळो गाढ।—बा. दा.
सरगणौ-स पु. [फा सर्गन] १ सरदार, अगुआ। (डूगरपुर)
२ डीग हांकना, शेखी बघारना।
सरगतरगण-स. स्त्री [स. स्वर्ग+तरगणी] गगा। (अ मा)
सरगदुवार, सरगदुवारौ-स पु —स्वर्ग-द्वार, वैकुण्ठ का रास्ता।
सरगनदी—देखो 'स्वरगनदी' (रू. भे.)
सरगपत, सरगपति, सरगपती—देखो 'स्वरगपति' (रू. भे.)
उ०—सिघासणौ वा इद्रासणौ वा, प्रिथीपती वा सरगपती वा।
—गु रू ब.
सरगपुर, सरगपुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू भे)
सरगपूज-स पु. [स. स्वर्गपूज्य] बृहस्पति। (अ मा.)
सरगम-स. पु. [सं] १ सगीत मे सात स्वरो का एक समूह, थाट जो प्रत्येक राग के लिए अलग अलग होता है। इसमे षडज मे निषाद तक के स्वर होते है।
२ वह प्रणाली जिससे उक्त स्वरो को साधा जाता है।
३ गीत, तान या राग मे लगने वाले स्वरो का क्रमिक गायन।
रू. भे.—सरगगम।

एही मारुई, जेहा हृभ निवाणि ।—ढो मा.

उ०—२ वग रिखि राजान सु पावसि वैठा, सुर सूता थिर मोर सर । चातक रटै वलाहकि चचळ, हरि सिणगारै अवहर ।
—वेलि

सरअगना—स स्त्री —द्रौपदी । (अ. मा)

सरअजीत—सं पु.—अर्जुन । (अ मा)

सरक—सं. पु —१ सरकडा ।

उ०—टोटै सरका भीतडा, घातै ऊपर घास । वारीजै भड झूपडा अधपतिया आवास ।—वी स.

२ शराब की प्याली, चुसकी । (डि. को)

३ युद्ध के समय योद्धाओ के मस्तक पर पहने जाने वाले टोप का ऊपरी व नुकीला भाग ।

उ०—दतादति, मुस्टामुस्टि, एक अगी लोहमइ आगी करी, मस्तकि सरक करी हुआ युद्धोद्यत ।—व स

सरकड—सं पु [स. शर+काण्ड] १ नरकुल ।

२ वाण की लकडी । (उ. र.)

सरकडि—स. स्त्री.—सरकडा ।

उ०—सेवत्री सवेसरा सूकडि सरकडि साय । सीमतक सोहइ भला सरव सदाफल खाय ।—मा. का. प्र.

सरकणौ, सरकबौ—देखो 'सिरकणौ, सिरकबौ' (रू भे.)

उ०—१ बस्ती पात रोही सुहामणी लागै कुदरत रा सिणगार नै आख्या फाड-फाड नै देखताइज जाओ पण जीव तिरपत नी व्है । मन ठाली भूली धापै दूज नी । उठा सू सरकण री मसा ई नी व्है ।
—अमरचूनडी

उ०—२ कर सू ऐन दियौ किलौ, ऊभा पगा अभग । किलौ लियौ विणहू कठै, सरकू लसकर सग ।—वा दा

उ०—३ उण छिण पछै दिन नोठ धकै सरकिया, जाणै किणी अदीठ खूटै पेंखडीजग्या व्है ।—फुलवाडी

उ०—४ मरिया पछै जचै ज्यू व्हो पण हाल तौ दो च्यार नै मार नै मरू ला । इण बोल रै सागै वारौ हाथ चाल्यौ अर साम्हा ऊभा टणकचद आगा सरकग्या ।—अमरचूनडी

उ०—५ लागी रहती लोयणा, करता काज अकाज । सरकी समर समाज मैं, लाज न राखी लाज ।—र हमीर

उ०—६ इम सुण वावेचा तौ सरक गया ।—भि द्र.

उ०—७ नाम लिया थी मानवा सरकै कलुस विसाळ । मह जैसे मेटै तिमिर, रसम परस किरमाळ ।—र रू

सरकणहार, हारौ (हारी), सरकणियौ—वि० ।

सरकिओडौ, सरकियोडौ, सरक्योडौ—भू० का० कृ० ।

सरकीजणौ, सरकीजबौ—भाव वा० ।

सरकर—स स्त्री [स शर्करा] १ वालू रेत । (अ. मा; ह. ना. मा)

उ०—पडती पुल पुल पर भुल भुल भरभूजै, सरकर सर सोखत गिरवर दर गूजै ।—ऊ का.

२ शक्कर ।

३ सूर्य, भानु । (अ. मा, ना. मा.)

सरकरा—स. स्त्री.—शक्कर ।

सरकराचळ—स पु [स शर्कराचल] दान करने के लिए बनाया जाने वाला शक्कर का पहाडनुमा टेर जिसका पुराणो मे महत्व माना जाता है ।

सरकराचूरण—स पु. [स शर्कराचूर्ण] आयुर्वेदिक औषधि विशेष ।

सरकराधेनु—स. स्त्री. [स शर्कराधेनु] दान के लिए वनाई जाने वाली शक्कर की गाय । (पौराणिक)

सरकराप्रभात—स पु [स. शर्कराप्रभा] जैन मतानुसार एक नरक का नाम ।

सरकराप्रमेह—स. पु. [स. शर्कराप्रमेह] एक प्रकार का प्रमेह रोग जिसमे मूत्र के साथ शक्कर आने लगती है, मधुमेह ।

सरकरासप्तमी—स स्त्री. [स. शर्करासप्तमी] वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी ।

सरकस—स पु [अ सर्कस] वह खेल या तमाशा जिसमे तरह तरह की कलावाजियाँ और जानवरो के करतव दिखाये जाते है ।

२ मनुष्यो की वह मण्डली जो जानवरो के साथ साहसपूर्ण कलावाजियो का प्रदर्शन करते हैं ।

३ वह स्थान जहाँ जानवरो व मनुष्यो की नाना प्रकार की कलावाजियो का प्रदर्शन किया जाता है ।

[फा. सरकश] ४ वागी, डाकू ।

वि. —१ विद्रोही ।

२ अशिष्ट ।

३ स्वेच्छाचारी ।

४ खुदराय ।

५ अवज्ञाकारी ।

६ मुहफट ।

७ देखो 'सिरकस' (रू भे)

सरकसी—स स्त्री [फा. सरकशी] १ उद्दडता ।

२ वागी होने का भाव ।

सरकाणौ, सरकावौ—देखो 'सिरकाणौ, सिरकावौ' (रू. भे)

सरकाणहार, हारौ (हारी), सरकाणियौ—वि० ।

सरकायोडौ—भू० का० कृ० ।

सरकाईजणौ, सरकाईजबौ—कर्म वा० ।

सरकायल—वि.—आवारा घूमने वाला, निठल्ला ।

उ०—कैणी मानै ना सीख सुवावै, ज्या'री नीची-नीची निजू निगै करै अर खुली फिरै है । सीगायल तथा सरकायल, सौ सौ जागा रचै है, वाजेगारी अर तेराताली नौ नौ ताल नाचै है । वाप नै मोकळौ सोचै लागै, मूळी रै वर रौ कठै भाग जागै है ।—दसदोख

४ पतली बेंत से पीटने पर उत्पन्न ध्वनि।

सरडाट, सरडाटो–सं. पु —१ तेजी से दौड़ने या गतिमान होने से उत्पन्न ध्वनि।

उ०—१ लारा मूं एक मोटर सरड़ाट करती आई अर चौधरी रा कपडा लथपथ कर चालती वणी।—रातवासो

उ०—२ अकरमी अर अन्याई राजा सूं वदळौ लेवण सारू अर विरखा सूं मिळण री उमायौ वादळ अेक ई सरडाटै घोडा माथै वैठो उडियो जावतो हो।—फुलवाडी

२ मुख या नाक से वायु को अन्दर खेंचने की क्रिया।

उ०—किरियो तौ सौरम रा चार सरडाटा खाचिया अर मस्त व्हैगौ।—फुलवाड़ी

३ मुख या नाक से वायु को अन्दर खेंचने से उत्पन्न ध्वनि।

सरचणौ, सरचवौ–क्रि. अ.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए राजी होना, सौदा पटना।

२ जंचना।

क्रि स —३ पीटना, मजा देना।

सरचणहार, हारौ (हारी), सरचणियौ—वि०।

सरचिओडौ, सरचियोड़ौ, सरच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सरचीजणौ, सरचीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सरचाणौ, सरचावौ–क्रि स —१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत करना, सौदा पटाना।

२ जंचाना, निपटाना।

उ०—पूगळ रा गावा रा वट करणसिंघ जी कराय सरचाया।

—द. दा.

३ पीटाना, सजा दिलाना।

सरचाणहार, हारौ (हारी), सरचाणियौ—वि०।

सरचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सरचाईजणौ, सरचाईजवौ—कर्म वा०।

सरचायोडो–भू. का कृ.—१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत किया हुआ, सौदा पटाया हुआ २ जचाया हुआ, निपटाया हुआ. ३ पीटा हुआ, सजा दिलाया हुआ।

(स्त्री. सरचायोडी)

सरचियोडो–भू का. कृ —१ किसी मूल्य पर विक्रय के लिए सहमत हुवा हुआ, सौदा पटाया हुआ. २ जचा हुआ. ३ पीटा हुआ, सजा दिलाया हुआ।

(स्त्री सरचियोड़ी)

सरच्चद्र, सरच्चद्रमा–स पु [स शरच्चन्द्र, शरच्चन्द्रमा] शरद ऋतु का या शरत् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा।

सरज–स पु —१ एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

[स. सर्ज] २ मक्खन नवनीत। (डिं. को, ह. ना. मा.)

३ धाल नामक वृक्ष।

म. स्त्री.—४ माला।

वि.—सृजन करने वाला।

सरजक–स. पु [सं. सर्जक] मठा डाल कर फाडा हुआ दूध।

सरजण–स पु [स सृजण] १ सृष्टि, रचना. निर्माण।

[अ. सर्जन] २ ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति के अतर्गत शल्य चिकित्सा करने वाला व्यक्ति, जर्राह।

स स्त्री.—३ सृष्टि करने की क्रिया, रचना करने की क्रिया।

रू. भे.—सिरजण, सिरज्जण।

सरजणहार–वि [स. सृजणम्] १ सृजन करने वाला।

२ ईश्वर, विधाता।

उ०—१ खीचौ खीचणहार, मन धोखौ राखौ मती। समर्थ सरजणहार, सही वजाजी मावरो।—रामनाथ कवियो

उ०—२ सोहड सहु भेळा किया, तिण वेळा तिण वार। नर नारी सहु विलविलइ हय हय सरजणहार।—ढो मा.

रू. भे.—सिरजणहार, सिरजणहारो, सिरजनहार।

सरजणौ, सरजवौ–क्रि स. [स. सृज] १ सृष्टि करना, सृजन करना। (उ. र.)

उ०—१ जिण हर सरजत नर जनम, सुजदी रसण समाय। कर झटपट कवियण 'किसन', नितप्रत रट रघुनाथ।—र. ज. प्र.

उ०—२ देव किसी उपमा देऊं, तैं सिरज्या सहकोय। तूं सरीखो तुहिं ज तूं, अवर न दूजो कोय।—ह. र.

२ तय करना, निश्चित करना।

उ०—वीच वजारा वांणिया, भाजै सरजै भाव। पावा रा लेखा करै दावा रा दरयाव।—वा दा.

३ वनाना, निर्मित करना।

उ०—पग पग लगै सरीखी पायल, हाथ हाथ प्रत ककण होय। सरज्या नही अमनमा 'सलखा', दो पासा नासा नग दोय।

—सायो झूलो

सरजणहार, हारौ (हारी), सरजणियौ—वि०।

सरजिओड़ौ, सरजियोडौ, सरज्योडौ—भू० का० कृ०।

सरजीजणौ, सरजीजवौ—कर्म वा०।

सरज्जणौ, सरज्जवौ, सिरजणौ, सिरजबौ, सिरज्जणौ, सिरज्जवौ, स्रजणौ, स्रजबौ—रू० भे०।

सरजथा–सं स्त्री.—डिंगल का एक अलकार विशेष जिसमे यथा संख्यालकार का युक्ति मे शृखलायुक्त वर्णन किया जाता है।

सरजनमा, सरजन्म–स. पु. [स. सरजन्म] १ कमल। (अ. मा; ह. ना मा.)

[स शरजन्मन्] २ कार्तिकेय, स्कन्द।

सरजळ–सं पु.—१ तीरो का जाल।

२ माया जाल।

३ देखो 'सजळ' (रू भे)

सरगरा-स स्त्री.—एक अनुसूचित जाति विशेष ।

सरगराजांन-स पु [स स्वर्ग+राज] स्वर्ग का राजा, इन्द्र । (ह. ना मा)

सरगरो-स. पु (स्त्री सरगरी) सरगरा जाति का व्यक्ति ।

सरगळ-वि —तरबतर, शराबोर ।

उ०—हाथा रै राच्योडी मैंदी हीगळू री टीकी, गज गज लावा वासवाळी सू सरगळ वाल ।—दसदोख

सरगलोक—देखो 'स्वर्गलोक' (रू. भे.)

उ०—१ प्रिथु वेलि कि पविध प्रमिध प्रणाली, आगम निगम कजि अखिळ । मुगति तणी नीसरणी मडी, सरगलोक सोपान इळ ।—वेलि

उ०—२ राउ पहुतउ सरगलोकि गगेय कुमारि, तउ लघु बधवु ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि ।—सालिभद्र सूरि

सरगवट-स. पु. यौ. [स स्वर्ग+वाट:] स्वर्ग का मार्ग, वैकुण्ठ का मार्ग ।

सरगवास—देखो 'स्वर्गवास' (रू भे.)

सरगाजळ-स. पु —स्वर्ग ।

सरगापर, सरगापुर, सरगापुरि, सरगापुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू. भे)

उ०—१ आभपरै थी उछल्या, जळ मा दीधौ झोक । सरगापर नै चोक, भेळा थासु भागना ।—जेठवा

उ०—२ मिटसी न धोखोय जूझ मुऐं, जावसां सरगापुर पथ जुऐं ।—पा. प्र.

उ०—३ जयजयकार हूउ सरगापुरि वडसी गयउ विमानि ।—का. दे प्र

उ०—४ धरमी कू बैठै तहा, धरमराज दरसाय । धरै देह कीधौ धरम, सो सरगापुर जाय ।—गज-उद्धार

सरगि—देखो 'स्वरग' (रू. भे)

उ०—१ सुत नेह पंडु पहुतै सरगि, पिंड राखै लालचपणै । रिध काज साथ कूता रहिय, जिण हूता धिक जीवणै ।—रा. रू.

उ०—२ चहुवांण न ओसर चूकता, ऐं जुगवौ जगि थयौ । बालोत 'पचाइण' 'सोनगिरि' चढै सरगि ऊनरि गयौ ।—गु रू. व.

उ०—३ सुख जिकै इद्र भुगतै सरगि, जिकै सुक्ख सब भोगवै ।—गु. रू. व

उ०—४ प्रीय पामि पहुचउ मद मेल्ही, जाइसिइ सरगि मइ पगि ठेली । प्रीय आगलि किमेइ जइ जाऊ, माहरा प्रीय तउ हुउ सुहाऊ ।—सालिसूरि

सरगिका-सं. स्त्री.—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, भगण और सगण के क्रम से कुल नौ वर्ण होते हैं ।

सरगुजस्त, सरगुजस्थ-स स्त्री. [फा. सर+गुजश्त] १ स्वय पर बीती हुई बात ।

२ जीवन-चरित्र ।

३ वर्णन ।

सरगुण—देखो 'सगुण' (रू. भे.)

उ०—निरगुण थी सरगुण हुआ क्या जाणै रडा ।—कैसोदास गाडण

सरगुणियौ-वि.—सगुण ब्रह्म-उपासक ।

सरगुणौ - १ देखो 'सगुण' (रू. भे)

२ देखो 'सगणौ' (रू. भे.)

सरगुलम, सरगुलम्-सं. पु [सं. शरगुल्म] राम-रावण युद्ध मे राम की सेना का एक सेनानायक बन्दर ।

सरगूडौ-स पु.—एक वृक्ष विशेष जिसके पत्ते पीपल के पत्तो से मिलते-जुलते होते हैं । यह प्राय: तीन प्रकार का पाया जाता है—कडुआ, खारा और मीठा । इसका उपयोग औषधियो मे किया जाता है ।

सरगोसी-स स्त्री [फा सरगोशी] १ कान मे बात करने की क्रिया, कानाफूसी ।

उ०—सेजा जाय निसक पत सोसी, जो निज रूप नीजर भर जोसी । गात भीड उर मैं सरगोसी, हेली वो मोसर कद होसी ।—अज्ञात

२ पीठ पीछे शिकायत या आलोचना करने की क्रिया ।

सरगौ-स. पु.—शुभ रग का घोडा । (शा हो)

सरग्ग—देखो 'स्वरग' (रू. भे.) (ना मा.)

उ०—यह तन जारी मसि करूं, धूआ जाहि सरग्गि । मुझ प्रिय वद्दल होइ करि वरसि बुझावइ अग्गि ।—ढो मा

सरग्गम—देखो 'सरगम' (रू भे)

उ०—अछै पग छांह जिसा कुळ सात, प्रणम्मै पग्ग सरग्गम सात ।—ह र

सरग्गौ—देखो 'स्वरग' (रू. भे.)

सरग्रह, सरघर-स पु यौ [स सर+गृह] १ जल, पानी । (अ मा.)

[स. शर+गृह] २ तूणीर, तरकस ।

सरघा-स. स्त्री [स] १ मधुमक्खी । (डि को)

२ भौरा ।

सरघात-स. पु. [स शर+घात.] तीरदाजी ।

सरड-स. स्त्री —पतली बेंत से पीटने पर उत्पन्न ध्वनि, आवाज ।

क्रि वि—शीघ्र, झट ।

रू भे.—सुरड ।

सरड़कौ-स. पु.—१ किन्ही दो वस्तुओ, अगो या अग पर किसी वस्तु का होने वाला घर्षण, स्पर्श ।

२ उक्त घर्षण से पडने वाला निशान, चिन्ह ।

३ ऊट की चाल विशेष ।

उ०—सो दो पोहर दिन पाछलै थका ऊठा सु नीसरिया सो ऊंचै सरड़कै ऊठ नू उडाया वहै छै ।—कुंवरसी साखला री वारता

अवधि के भीतर खरीदा हुआ माल वापिस दिया जा सकता है।

३ निशाना, लक्ष्य।

रू. भे.—सरट।

सरठवदियौ, सरठबधियौ–वि.—१ राज्य सरकार द्वारा निश्चित भाव पर विकने वाला सामान।

२ 'कंट्रोल रेट' से क्रय-विक्रय होने वाली वस्तुएँ।

सरडौ, सरढौ–स. पु (स्त्री सरडी, सरढी) ऊंट। (अ. मा)

उ०—सुणि ढोला करहउ कहइ, सामि तणउ मो काज। सरढी पेट न लेटियइ, मूध न मेळू आज।—ढो. मा.

सरण–स. स्त्री. [स. शरण] १ आश्रय, पनाह।

उ०—१ सिव सभव सिव रूप सुरेसुर, सिव गुण दिसण प्रणम कथै सुर। अति लघु तिको सरण तक आवै, पात्र गुणैं सुज वडपण पावै।—रा. रू

उ०—२ त्रिभुवण माहि न तोसू तोळै, सरण राख मो 'ईसर' बोलै।—ह. र

उ०—३ किणीई रैबारिया रै वाडा री सरण लीवी, किणीई भीला रा झूपा सभाळ्या तौ कोई रा पग थेट खेता री बाजरिया मैं जावता ठमिया।—अमर चूनडी

२ ओट, आड।

उ०—वालभ दीपक पवन भय, अंचळ-सरण पयट्ठ। कर हीणउ घूणइ कमळ, जाण पयोहर दिट्ठ।—ढो मा

३ सहारा।

४ वात-विकार के कारण शरीर मे विशेषतः हाथो-पैरो मे होने वाला रोग विशेष।

उ०—१ पीडिया मे सरणां चालै, सीयाळै पाहळिया मे चटीडा ऊठै।—फुलवाडी

उ०—२ कडिया चीस, पगा सरणां मतवाय ऊबका, उच्छाटा, रूं रू तूटणी अर हाडका रौ कुळणौ।—फुलवाडी

५ घर, मकान। (अ. मा.)

६ रास्ता, पथ।

७ आश्रयस्थल, बचावस्थान।

८ विश्रामस्थान।

९ कोठरी, कमरा।

१० भगवान् विष्णु का नाम।

[स. सरण] ११ आगे गमन करने की क्रिया।

१२ लोहे का जग।

वि —१ शरण मे आया हुआ, शरणागत।

उ०—१ धणी सूपा सरण मरण सक धारिया, लाज मन धरै 'जेसाण' गढ लारिया।—जसौ आढौ

उ०—२ सेरसाह दिल्ली तखत, बैठौ बळ निज बाह। उमराणै जद आवियौ, सरण हुमाऊ साह।—बा. दा.

२ गमन करने वाला, गतिशील।

रू. भे.—सरणि, सरणी, सरन, सरिण।

सरणईसाधार—देखो 'सरणायासाधार' (रू. भे.)

सरणमंत्र–स. पु.—गोकुलियां गोसाई सप्रदाय का गुरु मंत्र जो प्राय. सर्व साधारण को भी सुनाया जा सकता है।

सरणसधार, सरणसाधार—देखो 'सरणायासाधार' (रू. भे.)

उ०—१ जनपाळ खीदयाळ सुलख जियगत जामी, सरणसधार बिरदधार हणूमान सामी।—र. ज. प्र.

उ०—२ विध त्रिपुरार रिख पाय वंद, सरणसधार करण समंद। कह गुण माथ 'किसन' किवद, नाथ अनाथ दसरथनद।—र. ज. प्र.

उ०—३ धनुस धरण अवगुण नंह धारै, सरणसधार कहै जग सारै।—र. रू.

उ०—४ आदि लगि सरणसाधार लाखा हिमै, भलौ सतसाल इम भला भावा। मागि पातसाह मा माग मुध मीरजा, आव मैदान मैदान आवा।—जांम सत्ता रौ गीत

सरणांट—देखो 'सरणाट' (रू. भे.)

उ०—खमैं सरणांट तुपका सरा है खुरा, वीजड भडै ऊपाटा पाट वूठौ। पाव विमुहा खडै धड़हड़ै असुर पिंड, राव अहराव रै भाव रूठौ।—भीमसिंघ हाडा रौ गीत

सरणाई–वि.—१ शरणागत, शरण मे आने वाला।

उ०—१ केहरि केस भमग मणि, सरणाई सुहडाह। सती पयोहर कृपण धन, पडसी हाथ मुवांह।—हा झा

उ०—२ थान सवाई थापिवा, मान अरज महाराज। चढियौ कज सरणाइया, सझि दळ प्रबळ समाज।—रा. रू.

उ०—३ वस्यौ लिलाट राह विग्रहतै, संकर मयंक न राखि सकेह। सरणाई 'खेता' सीसोदा, 'लाल' केणी नह कीयौ लेह।—लाला हाडा रौ गीत

२ देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

उ०—अलब नेजा, माहामरातप ढोल, ददामा नीसाण सरणाई रणतूर रणकाहल नफेरी तवल।—व. स.

सरणाईराय–वि.—राजा, महाराजाओ को शरण देने वाला।

उ०—सरणाई साधार सरणाईराय विजै पजर रूपका अनग आजानबाह। खटव्रन सुरतर हिंदूसथान का पातिसाह।—सू. प्र

सरणाईसधार, सरणाईसधीर, सरणाईसाधार, सरणाईसोहड, सरणाईसोहड—देखो 'सरणायासाधार' (रू भे.)

उ०—१ बीराधि बीर, आजानबाह, सरणाईसधीर नरा रौ नाह।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ दूदौ कवर सरणाईसाधार सुणता ही सहाइ देर लार हुवौ। जिकण आपरा अनादर रै आटै अकबर जिसडा पातसाह थी तोडी तिण रौ प्रतीकार दिखावण रै काज केवल वीरभाव रौ जस

सरजळाइग्यारस—स स्त्री.—आषाढ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।
रू भे—सिरजळाइग्यारस।

सरजस, सरजसका—सं. स्त्री. [स. सरजस्, सरजस्का] रजस्वला स्त्री।

सरजाम—देखो 'सराजाम' (रू भे.)
उ०—घर मैं जाय'र देखतौ पाच सेर आटै रौ सरजाम नहीं।
—दसदोख

सरजा-सं. पु. [फा. शरजाह] १ श्रेष्ठ व्यक्ति।
२ सरदार।
३ सिंह शेर।
स स्त्री [स] ४ ऋतुमती स्त्री।

सरजित, सरजित्त, सरजीत—वि.—१ सरस, हराभरा।
२ आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न, खुश।
उ०—डील ऊकळै वभकी उठै, मरद अवाळा आ गिरै। जाळ झालौ देय बुलावै, सुखद छाय सरजित करै।—दसदेव
३ सजीवित।
उ०—१ पहुर हुवउ, ज पधारिया मो चाहती चित्त। डेडरिया खिण-मइ हुमइ, घण वूठइ सरजित्त।—ढो. मा
उ०—२ गुडियत जूह गडाड ए, सरजीत जाणि पहाड ए।
—गु रू व
उ०—३ मो साथै वडा वडा गढपति छत्रपति कामि आया। हाडा मुकुर्दसिंह सारीखा। गौड अरजन सारीखा सीसोदिया सुजाणसिंघ सारीखा। झाला दळथभ सारीखा। और ही छत्रीस वस हिंदू सरजीत कीजै।—र वचनिका
४ रचित।
उ०—वाणि अनादह फुड वयण, सुभ भाखा सरजित्त। गाहा करई वर रसाउला, दूहा छद कवित्त।—गु. रू. व
५ विजयी।
उ०—'केसव' अजीत सरजीत कोट, 'वाघउत' वरण अरि घड अबोट।—गु रू व.
६ सचेतन।
उ०—ताहरा जमलै कह्यौ 'ठाकुरै जै कही रै वडकुमार वेटी हवै तौ भेळी सुत्राणो ऊवैरी बाफ सू सरजीत हवै।
—लाखे फूलाणी री बात
रू भे—सिरजीत।

सरजीव—देखो 'सजीव' (रू. भे)
उ०—१ थळ कज्जळ सरजीव, कना अमताचळ अग्रज। कना सेव कारणै देव सुत, आया दिग्गज। -रा. रू
उ०—२ सूर धरम परखण ब्रह साखै, इक सरजीव करण नह आखे।—सू प्र

सरजीवण—देखो 'सजीवण' (रू. भे.)
उ०—तैंहीज कीधा सात दीप, नवखड प्रथमी। तैंहीज कीधा विविध विख, सरजीवण आमी।—गज-उद्धार

सरजीवत—देखो 'सजीव' (रू. भे.)
उ०—१ सात वीस सावला करू पाछा सरजीवत। तोनू केसर चाढ देवू रिध सिध दोनू दत।—पा प्र.
उ०—२ सिरी घटियाल अरोहित सेर, सख्या मवताहल माळ सुमेर। किया सरजीवत तेडि कवध, वूझै पितु मात कुसी धजवध।
—मे. म.

सरजीवन—देखो 'सजीवन' (रू. भे.)

सरजु, सरजू, सरज्यु—देखो 'सरयू' (रू. भे.) (अ मा.)
उ०—अिय कोटि कोटि इम सरजु तीर, नग झटित भरत घट हेम नीर। चत्र वर बजार चित्रकाम चार, दुतिवत वेलि गुल-रगदार।
—सू. प्र.

सरजोड, सरजोर—देखो 'सिरजोर' (रू. भे)
उ०—१ राजा जोधपुर का साथि सावल राठोड। ऊनै बस कूरम की फोज सरजोड़।—शि व
उ०—२ साकुरा मेळसी इसौ सरजोर रौ, नजर आवै इसौ नाथ बदनोर।—महादान मेहडू

सरजोरी—देखो 'सिरजोरी' (रू. भे.)

सरज्जणौ, सरज्जवौ—देखो 'सरजणौ, सरजवौ' (रू. भे.) (उ र)
उ०—सरज्जे आप त्रिधा संतार, हुवौ मझ आप ही रम्मणहार।
—ह र.
सरज्जणहार, हारौ (हारी), सरज्जणियौ—वि०।
सरज्जिओडौ, सरज्जियोडौ, सरज्ज्योडौ—भू० का० कृ०।
सरज्जीजणौ, सरज्जीजवौ—कर्म वा०।

सरज्जियोडौ—देखो 'सरजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सरज्जियोडी)

सरट—स पु [स. शरट] १ गिरगिट। (डिं. को)
२ कुसुम।
स स्त्री.—३ निशाना लगाने की क्रिया या भाव।
४ वायु, पवन।
५ धागा।
६ देखो 'सरठ' (रू. भे)

सरटि, सरटी—स. पु [स सरटि] १ पवन, हवा।
२ वादल, मेघ।
३ छिपकली।
स स्त्री—४ लाजवती स्त्री।

सरटिफिकेट—स पु. [अं] प्रमाण-पत्र, सनद।

सरठ—स पु. यौ.—१ अनाज का सरकार द्वारा निश्चित किया हुआ भाव।
२ माल क्रय या विक्रय की निश्चित अवधि का वह नियम जिसके अनुसार अगर माल ग्राहक को पसन्द न आया तो उस निश्चित

विखै सरणायत ज्यारै।—पा. प्र.

२ देखो 'सहनाई' (रू. भे.)

उ०—सरणाय-साद नीसाण सर, कूपियै ढोला रव किया। भूटनी रात हरमम-नर्णां, जगमाल जगाविया।—जगमाल री गीत

सरणायांसाधार, सरणायांसोहड, सरणायांसोहड–वि–शरणागत वत्सल, शरणागत की रक्षा करने वाला।

उ०—१ किरतसिंघ कूंपाहरो, सरणायांसाधार। कर आदर सरणौ लियौ, अभै कियौ तिण वार।—रा. रू.

उ०—२ यण प्रकार राणौ भीम, कीरति को कीम, मौजताळा बिद, चित को ममद, आचार को ईद, सरणायांसाधार, हींदुपति पातस्याह, यकलक को अवतार महिमा अपार।

—वगसीराम प्रोहित री वात

रू. भे.—सरणाईसाधार, सरणसधार, सरणसाधार, सरणाईसधार, सरणाईसधीर, सरणाईसाधार, सरणाईसोहड, सरणाईसोहड, सरणासधार।

सरणारथी–वि. [सं. शरणार्थिन्] जो किसी का आश्रय या शरण चाहता हो या जो किसी की शरण में हो।

सरणासधार—देखो 'सरणायांसाधार' (रू भे.)

उ०—दसरथ कुमार धनुपाण धार, जुध असुर जार सरणासधार।

—र. ज. प्र.

सरणि, सरणी–वि.—शरणार्थी।

उ०—गरभ तणां दुक्ख नही कोइ सरणि, अहूठ कोडि सउ कीजइ आगिवरण।—वस्तिग

२ शरण देने वाला।

उ०—छाली बोकड गाडर जति, स्याटकी नै भइ छइ कांपंति। आरडता तै पामड मरण, नींह बापडा नही कोइ सरणि।

—वस्तिग

सं. स्त्री [सं. सरणि, सरणी] १ दो पर्वत श्रेणियों के बीच का तग संकरा मार्ग, घाटी।

उ०—अर प्रामारां रा वैर माथै अब चहूवांणा रो चक्र अरबुदाचळ री सरणी रैं समुन्न पाधरो ही धकावै छै।—व. भा.

२ मार्ग, रास्ता। (डिं को; ह ना. मा)

उ०—१ वेद पुराण कायवां वरणी, अघ हरणी जरणी अजर। सेवक जो चाहै सुख सरणी, करणी करणी याद कर।

—वगतावर मोतीसर

उ०—२ सकळ राजधांनी सरम उदार भार भलाई। कहिग्रो कुळ सरणी कवर, चलणी नम न चलाड।—व भा.

३ सीधी रेखा।

४ गले का रोग विशेष।

५ ढग, तौर, तरीका।

६ भूमि, जमीन।

७ देखो 'सरण' (रू. भे.)

उ०—१ यौं मासरि माहा 'अजन', काण न राखै काय। बेटो चूडामणि तणो, आयो सरणि चलाय।—रा. रू

उ०—२ जेती भुइ गाम्रो तेती तू सरणि, मुझ मनु ना इम दूसट जीवह मरणि।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ हू युधिस्ठर विप्र, तू युधिस्ठर नरेस्वर मित्र। पांच पाटव वनावरि नाठा, ताहरइ सरणि तु अम्हे पयठा।—सालिसूरि

सरणौ–स पु—आश्रय, शरण।

उ०—दांमोदर दीनै सनो, कायर काठै वाम। सरणै रखै सूर रै तेथ न व्यापै आम।—बा. दा.

उ०—२ छूटा सरणैं पीर रै, मीर सवै तिण वार। मेल दियौ परचड पण, उड दियौ अणपार।—रा रू

उ०—३ सेत मैं पग दियौ तो थे यांरी जाणो। म्हारै खेत मैं सरणैं आया सूवर रै सामी करडी निजर सू ई जोयी तौ आव्या रा कोया फोड न्हाकूंला।—फुलवाडी

उ०—४ कह्यौ—म्हारी सुगनी अबै आपरै हाथ है। म्हारैं हीयै अणचीत्यौ वैराग री गोटो ऊठियो—अबै आपरै सरणैं हू।

—फुलवाडी

रू. भे.—सरनौ।

सरणौदेवी–स स्त्री.—वागडिया शाखा के चौहानों की कुलदेवी का नाम।

सरणो, सरबो, सरणौ, सरबौ–क्रि. अ.—१ सिद्ध होना, सफल होना। (उ र)

उ०—१ साहिब आया हे सखी, कज्जा सहु सरियाह। पूनिम केरै चद ज्यू, दिसि च्यारै फळियाह।—ढो. मा.

उ०—२ सात दीप नवखड फिरै, कारिज सरै न कोय। जनहरीया कारज सरै, उलटि आप मैं होय।—अनुभववाणी

२ बनना पूर्ण होना।

उ०—१ गोला सू न सरै गरज, गोला जात जबून। ऊबाणी सायद भरै, सौ गोला घर सून।—बा. दा.

उ०—२ थू म्हारो मायो गूथ दे तो वाता रै साथै औ काम ई सर जावै। नीतर म्हनै घरै जाणो पडैला।—फुलवाडी

३ पार पडना।

उ०—१ अमीरा रै तो काई कोनी, पण गरीबा रो जीवणो हराम व्है जावैला। बस्ती सू टळिया नी सरै। चित्तौई माया री ठरको व्हो, खाधिया भाडै नी आवैला।—फुलवाडी

उ०—२ लिया दिया विना कैडा ई मोटा सेठ रै सरै कोनी। सगळा ई लोग उणरी आदत जाणता हा। चौखळा मैं उण रै नाम री साख ही।—फुलवाडी

उ०—३ मा रै लारै दौड़ वळै पूछ्यौ—काई, लुगाई रै वास्तै ब्याव करणौ जरूरी है। जै ब्याव करिया विना सर जावै तो।

चाहियो ।—व. भा.

उ०—३ सरणाईसाधार सरणाईराय विजै पजर रूप का अनग आजानवाह खटव्रन सुरतर हिंदुसथान का पातिसाह ।—सू प्र.

उ०—४ पाचमो परनारी सहोदर । छठो चहुचुगाळ । सातमो सुखी । आठमो सरणाईसोहड । नवमो विरद अणभग ।

—रा. सा. स.

सरणागत-स. पु. [स. शरणागत] शरण मे आया हुआ जीव या व्यक्ति ।

उ०—१ अवधि नगर रै ईसरा, एहा हाथ उदार । यण सरणागत वासतै, दीध लक सुदतार ।—र. ज. प्र.

उ०—२ समै कुसमैं सुर सारत सार, पुकारत आरत वत पुकार । सुखी करियै अति आप समान, दुखी सरणागत ऊमरदान ।

—ऊ. का.

उ०—३ सरणागत सुख करन कुं, तुमरो विडद विराज । अपनो ही जन जान कै, क्रपा करो महाराज ।—परमानद वणियाळ

रू. भे.—सरणागति, सरणागती, सरणाय, सरणायत, सरनागत ।

सरणागति, सरणागती-स. स्त्री. [स. शरणागति] १ शरणागत होने का भाव ।

२ देखो 'सरणागत' (रू. भे.)

उ०—चित रहै जा मन रहै कहर, कहर हाथि वोह माण करि । एकळा विसण लागू अवर, हूँ सरणागति नाव हरि ।

—सुरजनदास पूनियो

सरणाट-स. पु.—फूंक वाद्यो (शुषिर) से उत्पन्न ध्वनि, आवाज ।

२ तीव्र गति से उत्पन्न ध्वनि, सनसनाहट ।

३ बेंत, कामडी आदि लचीली छडी के प्रहार और आघात से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—बेंता रा सरणाट उडै सडद सडद ।—रातवासो

४ अस्त्रो के तीव्र वेग से चलने व छूटने पर होने वाली ध्वनि ।

उ०—गोफणिया रा सरणाट उडै । सूतमी चामडपोस गोफण गोळ गोळ एक माप रा गोफणिया अर चौधरी रै बाहुडां री करार ।

—अमर चूनडी

५ पक्षियो के तेज उडने से होने वाली ध्वनि ।

क्रि. वि.—तीव्रता से, वेग से ।

उ०—१ पाचू साथी माय जावण सारू त्यार व्हिया इज हा कै वारै माथाकर सूसाड करतो गोफणियो सरणाट नीसरियो ।

—फुलवाडी

उ०—२ पही सरणाट वहना रथा पूर रथ, गिरद गरणाट पड साद गाजै । निहग छणणाट बाजै पगा नूपरा, विमाणां घाट झणणाट वाजै ।—भोपाळदान सादू

रू. भे.—सरणाट ।

सरणाटै-क्रि वि —तेजी से, वेग से ।

उ० —घाटी तो सरणाटै बधती ई गो । जाणै आभा सू तारो तूटो ।—फुलवाडी

सरणाटो-स पु [स. सनष्ट] १ निस्तब्धता, सुनसान व शान्त वातावरण, सन्नाटा ।

उ०—१ अधारी रा सरणाटा मैं जिण वेळा दुनिया सुख री नीद सोवै, नाथू किसन जी रै घर रै च्यारू मेर आटा देवतो ।

—अमरचूंनडी

उ०—२ सोपो पडयो सरणाटो छायो । वत्ती काटी, लोटियो बुझायो ।—दसदोख

उ०—३ राजकवर कमेडी री घाटी मरोडी तो देंतराज है जठै ई लाबो व्हैगो । थोडी ताळ ताई लटपट करनै मरग्यो । उणरै मरता ई समदर रो तूफान मिटग्यो । सरणाटो छायग्यो ।—फुलवाडी

२ पवनाघात ।

उ०—१ कवर सूरज-मुखी घोडा माथै पवन सू होड़ लेतो उडियो घडीक तो जाणै आकास मैं उड जावू घडीक जाणै पाताळ मैं वड जावू । सरणाटा रा थपीड सू आंख्या मैं फुहारा छूटण लागा ।

—फुलवाडी

उ०—२ ए सगळी आवाजा आधी रा सरणाटा मैं सुणीजै ज्यूं गाम रा इण खूणा सूं उण खूणा ताई एक सरीखो सुणीजै ।

—अमर चूनडी

२ मानसिक उत्तेजना या चित्त के क्षोभ के कारण होने वाली व्यग्रता या उत्कठा का भाव, जोश ।

उ०—१ दो घडी दिन चढ्या हणहणाट करतो घोड़ो हीसियो । मा रा आखा डील मैं सरणाटो दौडग्यो । दुवारी छोड भचकै ऊभी व्ही ।—फुलवाडी

उ०—२ वेटी री नस नस मैं सरणाटो दौडग्यो । डील ठाडो हेम पडग्यो । ठाडा धूजता सुर मे बोली—मा, वा बात याद नी दिरावो तो सावळ ! याद करता ई अबार वेचेतै व्हू जेडी बात है ।—फुलवाडी

३ तेज वायु की ध्वनि ।

उ०—नीचो नैणा सू धोवा जळ धावै, ऊचो ईखण रो अभलेखो आवै । गाढी गयणागण रज लै गरणाटा, सम्वण सूकोगो देतो सरणाटा ।—ऊ. का.

सरणाणो, सरणाबो-क्रि स.—तेज ध्वनि व आवाज करना ।

उ०—कवर रो अेक साथी घोडा रै अेडी लगाय खेत री माठ लाघी ई ही कै हवा रा रेसा चीर सरणातो अेक गोफणियो उणरै साम्ही लिलाड वटीड करतो उडियो ।—फुलवाडी

सरणाय, सरणायत—देखो 'सरणागत' (रू भे)

उ० —१ जुडहाथ माथ नमाय जपै, गुणा 'किमनो' गाय । सरणाय लक समाथ समपण, निमो स्रीरघुनाथ ।—र ज. प्र.

उ०—२ दाम काचा न दे पाल मगवै परिया रे । वालै छूटा उतन

५ यमराज, धर्मराज ।
६ आग, अग्नि ।
७ जल, पानी ।
स स्त्री —८ सूर्य-पत्नी का नाम ।

सरतग, सरतत—देखो 'सरतन' (रू भे.)
उ०—१ सूत रूनयँ री सेर वेचँ, पाघा वणावँ, 'जसी' वारीक कातँ घर मैं आछी सरतंग ।—जैसी खाय तैसी बुद्धी उपजै री वात
उ०—२ सो राजा खरच रो सरतत करै माणस एक लारै दक्षिणी कन्है मेल्हियो थो सो उणरी वाट जोवँ ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता
उ०—३ महाराज स्रीगजसिंह जी बीकानेर पधार खरच बरच री सरतत कियो ।—मारवाड रा अमरावा री वारता
उ०—४ तद कही—थँ जावो, गावा रो उतारो कर सताब मेलज्यो, तिण माफिक लोगा नू पटो मेल देस्या, सो सारो सरतत कर दियो । आछी जमीरत कीवी ।—अमरसिंह गजसिहोत री वात

सरत—स. पु. [स शरद] १ सवत्, वर्ष, साल । (डिं. को.)
[स. शर] २ तीर, बाण ।
उ०—सुर सरत धर सिर भरत सत, पळ चरत फळचर अघत अत । मिळ अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत रत ।
—र. रू
३ सरोवर, तालाब ।
उ०—तरत भरत सूकत सरत दादर मरत दुरत । प्रीतम घर नन पेखता, वैरण बणी वसत ।—अग्यात
सं. स्त्री —४ किसी काम या बात की सिद्धी के लिए अपेक्षित बातें, शर्तें ।
उ०—कह्यो—जु, धरती दीवी । अर सरत री वेढ करो । आ वात दीवाण रा परधाना कबूल कीवी ।—नैणसी
५ दाव-पेंच, बाजी ।
६ किसी बात, घटना आदि की सत्यता, असत्यता आदि के सम्बन्ध मे दो पक्षो द्वारा दाव पर लगाया जाने वाला धन ।
७ कर्त्तव्य ।
उ०—चाक पहल चाढिया, जुडण चोगान जमीरा । अवै कोट लँ ओट, अेह नह सरत अमीरा ।—सू. प्र.
८ देखो 'सरिता' (रू भे.) (अ. मा, डिं. को; ह ना मा)
उ०—उर सेल घमोडै वेळ एम, जरदैत ढहै तर सरत जेम । ऊछळै खळै तज तुरग एक, वासूळै पूळा सू विसेख ।—रा रू.

सरतअधीस—स. पु. यो [स. सरिता+अधीश] समुद्र । (डिं. को.)

सरतकाळ—देखो 'सरदकाळ' (रू. भे.) (उ र.)

सरतचद, सरतचद्र—स. पु. [स शरत्चद्र] शरत्कालीन चन्द्र जो सुदर व शीतल होता है ।

सरतज—देखो 'सरताज' (रू. भे.)

सरतन, सरतन—सं. पु.—१ इंतजाम, बदोवस्त, प्रबन्ध ।
उ०—१ राड रो अो जलम तो बिगडियो जको बिगडियो ई, धकलो बिगाडण रो ई सगळो सरतन कर लियो ।—फुलवाडी
उ०—२ दोनू एक ई मारग वहीर व्हैगा तो रोट्या रो सरतन दोरो सजैला ।—फुलवाडी
उ०— ३ अबै भूख लागी है खाणं-पीणं रो सरतन करो ।
—वरसगांठ
२ सामान, सामग्री ।
उ०— कवर रो आदेस व्हैता ईं हांकरता सिकार रो सगळो सर-जाम सरतन सजण ढूको ।—फुलवाडी
३ साधन, उपाय ।
उ०—१ घैड बीस पचीस हाथ ऊडो । गोळगट्ट । कोडी रो जात चिकणो, माखी पितळै । चढण रो तो की सरतन नी ।—फुलवाडी
उ०—२ ठिकाणा री रया उणरी जवराई आगै कळकळै चढगी तो ई ठाया रो खूंटो छोडतै जावै तो ई कठै ! उण ठिकाणं जीवण री दारू मोत सू ईं वत्ती ही । मरिया बिना दुख, संताप अर विखा रो फद काटण गे की सरतन नी हो ।—फुलवाडी
४ वैभव, आर्थिक स्थिति ।
ज्यू—चोधरी रै घर रो सरतन ठीक हो ।
५ ऐसा आचरण, वर्ताव या व्यवहार जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए उपयुक्त बनता हो, तालमेल ।
उ०—म्हैं जात रो नाग, देख्या डरै, खाधा मरै । अर थूं जात री लुगाई । घरवास रो की सरतन ई तो नी जुडै ।—फुलवाडी
रू भे—सरतग, सरतत ।

सरतनाह, सरतपत, सरसपति, सरसपती—सं. पु. यो. [स. सरिता+नाथ, सरिता+पति] समुद्र, सागर ।
उ०—१ सथ ऊऊ नकीवा सरळ सद्द, रवि उदय आद सक्रिया रवद्द । आयुद्ध वाध आलम्मसाह, नव क्रत फिर पूनम सरतनाह ।
—रा. रू
उ०—३ बस्र माम कादम मचै, प्रसत परवत वर्णं, रुधिर मिळ सरतपत हुओ रातो । अजोध्यानाथ दस-माथ रावण अडग, महा बेह ओर भाराथ मातो ।—र रू

सरतपूनम, सरतपुरणिमा—देखो 'सरदपुरणिमा' (रू भे.)

सरतर—सं. पु यो. [सं सुरतरु] १ कल्पवृक्ष । (अ. मा; नां. मा.)
[स] २ सरोवर, तालाब ।
उ०—तरवर वन सिखर जोवता सरतर, कर सारंग तुम्बीर कर ।
—र रू

सरतवरा—देखो 'सरितवरा' (रू भे.) (ह ना. मा.)

सरतापत, सरतापति, सरतापती—देखो 'सरतपति' (रू भे)

सरता—स पु [सं. सर्तृ] १ घोडा, अश्व । (डिं को.)
स स्त्री [स शरता] २ बाण-विद्या ।

—फुलवाडी

उ०—४ बोल्यौ—श्रा ई कदै व्है कै म्हैं ग्रावू कोनी। राजाजी नै खोटी करिया सरै भला ! सात समंदरा परली पचायती निवेडनै सीधौ ग्रायौ हूं।—फुलवाडी

४ शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार होना।

ज्यू—म्हाऊ सरै जित्ती चदौ म्हैं ई देवू।

५ कार्य आदि का निर्वाह होना, पूरा होना।

ज्यूं—हजार रिपिया सू व्याव री काम तौ सरगौ, ग्रागै फेर देखा।

उ०—वारी भोळप ग्रर काली वाता सू केई स्वारथी लोगा री मतलब सरतौ हौ। घर वाळा ग्रापरै नाता रै कारण साथै रेवणौ चावता ग्रर कुलालची ग्रापरै लालच सारू।—फुलवाडी

६ लक्ष्य सिद्ध होना।

ज्यू—दोय झगडै जणै तीजा रौ कारज सरै।

उ०—ग्रा तौ ग्रबारू देखता देखता वहीर व्है जावैला। पछै नी लाग्या सरै ग्रर नी छोड्या मन पतीजै। ग्रेडी तौ कदैई नी पजी। तौ काई वीद नै लाग जावूं।—फुलवाडी

७ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना।

८ पर्याप्त होना, काफी होना।

उ०—कह्यौ जी, माहरै तो नव कोड चाहीजे ग्रेकै कोड न सरै।

—सयणी देवी री बात

ज्यू—दस रिपिया सू म्हारौ घर कोनी सरै।

९ सभव होना।

१० होना।

उ०—पावासर री पाज, हसा हेरण हालिया। कोई न सरियौ काज, जागा सूनी जेठवा।—जेठवा

११ आकार-प्रकार, रूप रग, गुणादि मे शिशु संतान का किसी के अनुरूप या अनुसार होना।

१२ चलना, निभना, निभाव होना।

उ०—मा रै गळा सू मतै ई वोल रळक पडचा—नी सरै, वेटी, नी सरै। भगतण रा जमारा विचै ई ग्रण व्याही लुगाई रौ जमारौ कावळ है।—फुलवाडी

उ०—२ पण तौ ई ग्रा दूजी बात ई इण सू कम साची नी है कै मिनख विना लुगाई रौ जमारौ साव ग्रकारथ ग्रर विरथा है। नी मिनख रै लुगाई बिना ग्रेक पल ई सरै ग्ररनी लुगाई रै मिनख बिना ग्रेक पल ई सरै।—फुलवाडी

उ०—३ थाकी जसा सरीखी उठै लाखा परणा, माकी सोभा मैं काइ वरणा, मानै तौ ग्रनेका न्यौरा करै छै मारे यण विन काई नही सरै छै।—मणराम दरजी री वात

१३ घूमना-फिरना, विचरित होना।

उ०—माधव ! मनि मा हारि तू, जे नर जाणइ तोलि तै। नर तिम सघलइ सरइ, वम ! म बाली बोलि।—मा. का. प्र.

१४ व्यतीत होना, बीतना।

उ०—तौ ई थारै जचगी है तौ इण नाकुछ वात सारू क्यू वेराजी करू। थू कोई फूटरौ नाव वताय देजे। राख लूला। पच्चीस बरस तौ 'लट्टूरा' नाव सू सरग्या धकला वरस दूजा नाव सू धकाय लूला।—फुलवाडी

१५ पडना, विवश होना।

उ०—१ हथळेवा वाळी छळ-छद ग्रवै जावता सुभट व्हियौ। सुभट व्हिया घणी वत्ती ग्रळूझगी। इण भात कपट रचण री काई जरूरत ही। ग्रवै तौ झूठ नै साच ग्रर साच नै झूठ मान्या सरैला।

—फुलवाडी

उ०—२ म्हनै कह्यौ ग्रर भाटा नै कह्यौ बिरोबर है। पण पिरसूं म्हनै ठा नी पडी तौ ग्रापनै बताया ई सरैला, पैला कै दूं।

—फुलवाडी

१६ रहना, पडना।

उ०—१ बाप ग्राघा ग्रचभा ग्रर ग्राधी रीस मैं कह्यौ—डीकरी थूं कठैई त्रिकाळ काली नी व्हैगी। झूरै ग्राया भाग रै ठोकर मारै। जोडी री रूपाळी वर है। लाखा मैं टाळकौ। फेर बीकाणै रौ राजकवर। ग्रेकर सीताजी नै ई ईसकौ व्हिया सरै। थू हाल टावर है।—फुलवाडी

उ०—२ हाथ माथै हाथ धरनै बैठ जावौ, करमा मैं कमाई लिखी है जकौ तौ व्हिया सरैला। पछै क्यूं माया जोडण सारू कूड-साच करौ।—फुलवाडी

उ०—३ सगळा ग्रेक दूजा रै मूडा साम्ही देखता रह्या ग्रर महाराणी धम-धम करती मेडी चढगी। इण घर री लाज तौ ग्रवै भावी रै हाथा हैं। लिखी है जकी तौ व्हिया ई सरैला।

—फुलवाड़ी

सरणहार, हारौ (हारी), सरणियौ—वि०।

सरिग्रोडौ, सरियोडौ, सरयोडौ—भू० का० कृ०।

सरीजणौ, सरीजबौ—भाव वा०।

सरण्य—वि. [स] १ शरणागत की रक्षा करने करने वाला।

२ जिसके भाग्य खराब हो, ग्रभागा।

स. पु [स. शरण्य] १ आश्रयस्थल, आश्रयस्थान।

२ रक्षा करने वाला व्यक्ति।

३ रक्षा, सुरक्षा।

४ अनिष्ट, अपकार।

[सं. शरण्य] ६ शिव, महादेव।

सरण्या—स. स्त्री. [स. शरण्या] दुर्गा देवी का नाम।

सरण्यु—स पु. [स. शरण्यु, सरण्यु] १ रक्षा करने वाला व्यक्ति।

२ बादल, मेघ।

३ पवन, हवा।

४ वसन्त ऋतु।

सरदवा, सरदवाई—स. स्त्री.—१ एक प्रकार का वात रोग ।
२ हाथी का एक रोग विशेष जिसमे उसके पैर जकड़ जाते हैं ।

सरदा—स. स्त्री. [सं.] १ शरद ऋतु ।
२ वर्ष, साल ।
३ देखो 'सरधा' (रू. भे.)
उ०—विप सिंघज वीन थियौ वरधा, सगता पिड मुज्ज नथी सरदा ।—पा. प्र

सरदाइ, सरदाई—स स्त्री.—१ शीतलता, ठडक ।
उ०—अत तपिग्रै तन अर्वान दियै परजन सरदाई । सुधा पाय ससि करै, जेम वरणराय सवाई ।—रा. रू.
२ आर्द्रता, नमी ।
उ०—मैं सूती पिया अपने म्हेल मैं, सालूडा में आई सरदाई । मीरा के प्रभू गिरधर नागर, हरख निरख गुण गाई ।—मीरा

सरदाबौ—स पु. [स. सर्दाबः] १ ठडे जल से किया जाने वाला स्नान ।
२ तहखाना ।
३ समाधिस्थल ।

सरदार—वि.—उदार, दातार, दयालु ।
स. पु. [फा] १ किसी मडली का मुखिया, नायक ।
२ अमीर, उमराव ।
३ पति ।
४ प्रेमी, प्रियतम ।
५ सिक्ख जाति का व्यक्ति ।
७ वीर, योद्धा ।
८ राजपूत जाति का व्यक्ति ।
८ मालिक, स्वामी ।
रू भे —सिरदार ।
अल्पा.—सरदारडौ, सिरदारडौ ।

सरदारडौ—देखो 'सरदार' (अल्पा; रू. भे.)

सरदारी—स. स्त्री. [फा.] १ अध्यक्षता, स्वामित्व ।
उ०—१ सरदारी नू निवळाई सियासत सूं बेखबर होय ।
—नी. प्र.
उ०—२ जिको जीव नू प्यारौ राखै छै तिण नू सरदारी देस पतियत सू काई काम छै ।—नी. प्र.
२ सरदार होने का भाव ।
रू भे.—सिरदारि, सिरदारी ।

सरदिंदमुखी—स स्त्री. [स. शरदिंदुमुखी] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष । (सगीत)

सरदि—देखो 'सरदी' (रू भे)

सरदियोडौ—भू का कृ.—१ आर्द्रता या नमी युक्त हुवा हुआ ।
२ देखो 'सरधियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. सरदियोडी)

सरदी—सं. स्त्री. [फा. सर्दी] १ शरद ऋतु ।
२ ठडक ।
उ०—१ पौ मिगसर पाळौ पडै, सूखै तरू तमाम । मूता ऊडी साळ मैं, सरदी लागै स्याम ।—नारायणसिंह सादू
उ०—२ सरदी मैं सह सूकगा, आक धतूरा नीम ।—अज्ञात
३ जुकाम नामक रोग ।
रू. भे.—सरदि ।

सरदू, सरदौ—स पु. [फा. सर्दः] १ एक जलचर पक्षी विशेष ।
उ०—कमळा री घणी साघणी मेळ है । तठै राजहस कळहस री इधकी केळ है । वतक सरदा घरट हजा मुरगा पया भट्टिया तरै है । सारसा रा टोळ जकै भगोर करै है ।—र हमीर
२ एक प्रकार का लम्बोतरा खरबूजा जो काबुल में अधिक होता है ।
उ०—अजीरू के दरखत नागलता के वेरेलि । अगूर सरदू संफळी अनेक वेलि ।—सू प्र.
३ राजपूत एव चारण जाति में स्त्रियो द्वारा अपने पति को किया जाने वाला सम्मानसूचक अभिवादन ।
उ०—१ स्री स्री १०५ स्री कवर जी साहिब रसिया वालम चद्रगढ सू सदा हकमी खिजमतदार वादी रौ सरदौ मालम आलीजा अलवेला अगा रा उदार आपरै डीला सारै मुदार ।
—र. हमीर
उ०—२ चाचा लिख दौ ओळवा पाखा सरदौ जवार । कागद अनवी राजा नै लिख भेजौ राज ।—लो. गी.
४ नमस्कार, प्रणाम ।
रू. भे.—सिरदौ ।

सरद्द—स. पु —१ एक वृक्ष विशेष । (सभा)
२ देखो 'सरद' (रू भे)
३ देखो 'सरहद' (रू भे)

सरद्दहणा—देखो 'सरधणा' (रू. भे.)
उ०—मिथ्यात नी मति दूर निवारी, साची सरद्दहणा मन धारी । हिंसा दुरगति ना दुख खाणी, जीव दया साची करि जाणी ।
—स कु.

सरद्वत—स पु. [स. शरद्वत] १ सेतु राजा का पुत्र एक राजा ।
२ सावर्णि मन्वन्तर मे सप्तर्षियो मे से एक ।
३ गौतम ऋषि का नामान्तर ।

सरद्वतसुनु, सरद्वतिसुनु, सरद्वतिसूनु, सरद्वतीसूनु—स पु [स. शरद्वत्सूनु] शरद्वत का पुत्र, कृप ।
उ०—ससाक नी दीघति दिव्य वस्त्र, सदा सदाचारि करी पवित्र । सुवरणवेदी अहिनाणि जाणि, सरद्वतीसूनु कृपाणपाणि ।
—सालिसूरि

सरद्वांन—स. पु. [स शरद्वान] गौतम पुत्र एक मुनि जिन्होने तपस्या कर

३ देखो 'सरिता' (रू. भे.) (डिं. को.)

सरताज—वि. [फा. सर+अ. ताज] १ श्रेष्ठ, शिरोमणि।

उ०—१ सुहडा लिग्रा सकाज, दळ 'खुसाल' दरयाव तट। सोनगरी सरताज, आयौ वध अहेड़ी अभग।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ ततौ झालिया वेग खगराज वाळी तरह, घाव माठा नरा आज घालै। कवर सरताज जग चदनामौ कीयो, लियौ जस दियौ गगराज लालै।—जवानजी आढौ

२ मुकुट, छत्र।

रू. भे.—सरतज, सिरताज।

सरति—देखो 'सरिता' (रू. भे.)

उ०—राम समान न कोई राजा, सरति न काइ सुरसरी समान। सती न काइ समोवड सीता, गीता समोवड न को गिनान।

—ह. ना. मा

सरतिया—क्रि. वि [स. शर्तिया] अवश्य ही।

सरतिवरा—देखो 'सरिविवरा' (रू. भे) (अ. मा)

सरती—देखो 'सरिता' (रू भे)

सरत्काळ—देखो 'सरदकाळ' (रू भे.) (उ. र.)

सरत्पूनम, सरत्पूरणिमा—देखो 'सरदपूरणिमा' (रू. भे)

सरथ—स. पु. [स] एक ही रथ पर सवार योद्धा।

सरदंड—स. पु [स. शरदड] १ चाबुक।

२ सरकडा।

सरद—स. स्त्री [स शरद] १ शरद ऋतु, शरद का मौसम। (डिं को)

उ०—१ सरद घटा जिम ऊजळी, दिस दिस अटा विलद। नगर थटा रुख निरखिया, स्वरग छटा व्है मद।—वा दा

उ०—२ ग्रीखम पावस सरद गहाई, ए च्यारूं कळियुग मैं आई।

—ऊ. का.

२ तरवार। (डिं. को.)

स पु—३ तालाब, जलाशय।

४ वर्ष, साल।

[स. सरद] ५ पवन, वायु।

६ बादल, मेघ।

७ छिपकली।

८ मधुमक्खी।

वि.—१ आधीन, विजित, अधिकार मे।

उ०—१ 'सूरसाह' माहाराज घर 'करनेस' कहाया। सोळै सै इठियासियै, पुन टीका पाया। सरव जमी कीनी सरद इक हुकम मनाया।—महेसदास सादू

उ०—२ कुसल हरराज रै कावळया तणै कज, अरज कर फिर तलबा उठाई। स्यामगढ चाग चीतार खेडै सहत, तिण कियौ सरद मेवाड तांई।—जोधजी सादू

२ शीतल, ठंडा।

उ०—सोनै रा, रूपैरा, विदरी, खाखोळ ठाढा पाणी सू भरिजै छै। नीचै सुथरा विछायजै छै। ऊपर हुका मेल्हजै छै। नमचा सरद कीजै छै।—रा सा. स.

३ नपुसक, नामर्द।

४ धीमा, मद।

५ सुस्त।

६ छोटा खेमा ?

उ०—ताण सरद चवतरफ, करै तजवीज कनाता। कनक झळाहळ कळस, वणै बगळा वनाता।—सू. प्र.

५ देखो 'सरहद' (रू. भे.)

उ०—विग्रह चाळा वधै, खसै खुरसाणह धायौ। दखण दमंगळ करै, सरद साहिजादौ आयौ।—गु. रू ब

रू भे.—सरद्द।

सरदकामी—स पु. [स. शरद्+कामिन्] कुत्ता, श्वान।

सरदकाळ—स. पु [स. शरद्+काल] शरद ऋतु, शरतकालीन वातावरण।

उ०—जु इह आकास छै, कि चद्रमा छै। सरदकाळ की इसी रात्रि उजळ छै।—वेलि. टी.

रू. भे.—सरतकाळ, सरत्काळ।

सरदणौ, सरदबौ—क्रि अ.—१ सर्दी, नमी या आर्द्रतायुक्त होना।

२ देखो 'सरधणौ, सरधबौ' (रू. भे.)

उ०—वाणी सुण सतगुरु तणी, कुमर जोडया दोनूं हाथ। वचन तुम्हारा सरदह्या, रूडा कह्या कृपानाथ।—जयवाणी

सरदणहार, हारौ (हारी), सरदणियौ—वि०।

सरदिग्रोड़ौ, सरदियोड़ौ, सरदयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सरदीजणौ, सरदीजबौ—कर्म वा०।

सरदपदम, सरदपद्म—सं. पु [स. शरद्+पद्म] सफेद कमल।

सरदपूनम, सरदपूरणिमा—स. स्त्री. [सं शरदपूर्णिमा] आश्विन मास की पूर्णिमा।

उ०—सरदपूनम री रात चादणी चांदणी चादौ उगौ वाल्होजी।

—लो. गी.

रू. भे—सरतपूनम, सरतपूरणिमा, सरत्पूनम, सरत्पूरणिमा।

सरदमिजाज—वि. [स सर्दमिजाज] १ शील, सकोच रहित।

२ ठडे स्वभाव का।

सरदरित, सरदरितु—सं. स्त्री [स. शरदऋतु] आश्विन व कार्तिक महीनो की ऋतु।

उ०—पूनम थावर वार सरदरित है पालट्टी। वीर खेत पुरब्ब, रित्त हेमत प्रघट्टी।—गु. रू. बं.

सरदळ, सरदल—सं. पु.—मकान के दरवाजे के ऊपर आड़ा लगा हुआ पत्थर। (ढूढाड़)

गुण ठाणावाला री श्रद्धा सूं फरक पड़्या चौथा गुणठाणा रो पहलै गुणठाणै श्राय जावै।—भि. द्र.

रू. भे.—सरदा।

सरधाहीण—१ शक्तिहीन, बलहीन, अशक्त।

उ०—प्याऊ तक आता-आतां सेठाणी सरधाहीण व्हैगी ही।

—फुलवाडी

सरधि-स. पु. [स शरधि] भाथा, तरकस। (हि. को.)

सरधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ माना हुआ, स्वीकार किया हुआ. २ विश्वास किया हुआ. ३ पूजा किया हुआ, आराधना किया हुआ. ४ मान्यता दिया हुआ।

(स्त्री. सरधियोडी)

सरध्धर—देखो 'सरधर' (रू. भे.)

उ०—पेख वरणै जिण वाह परध्धर, धीग भुजां निज चाप सरध्धर।

—र. ज प्र.

सरनद-स. पु. [स.] कमल। (अ. मा.)

सरन—देखो 'सरण' (रू. भे.)

सरनागत—देखो 'सरणागत' (रू. भे.)

उ०—मैं तव पुत्र मात तू मेरी, त्राहि त्राहि सरनागत तेरी।

—मे. म.

सरनांम, सरनामौ-वि.—१ प्रसिद्ध, विख्यात।

२ श्रेष्ठ, मुख्य।

स. पु.—पत्र के ऊपरी भाग का लेख, शीर्षक, पता।

रू. भे—सिरनामौ।

सरनौ—देखो 'सरणौ' (रू. भे.)

सरपंख, सरपंखौ-स. पु [स. शरपुंखा] एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसके पत्ते, फूल आदि ओषधियो के प्रयोग में लाये जाते हैं, शरपुंखा। (अमरत)

रू. भे.—सरपूंखा।

सरपच-स. पु. [स शर+पच] कामदेव। (अ. मा)

२ पचायत का सभापति।

उ०—कुटवपाळ सरपंच आपरा पारका गिणै। गाव मैं पूरो भेद भाव पाळै।—दसदोख

रू. भे.—सिरपच, सिरैपच।

सरप-स पु. [स. सर्प] १ साप, नाग। (अ. मा, डि. को; ह. ना. मा)

२ शेषनाग।

उ०—रिडमल हरा राळतै रैवत, साम्रव घडा विदुर स जगीस। पवगा तणै धरा चळे पावा, सरप पयाळ थरहरै सीस।

—गेहो मीसण

उ०—२ तद चोथोडी पागी पटूतर दियी कै इण डावी पगरखी मैं हूमी सरप चापळ नै गूंचळी मार बैठो हो।—फुलवाड़ी

उ०—३ कवराणी रै माथा मैं अणगिण सरप फुफकारा भरण लागा। राजकवर सूं तो सपना मैं ई मिळण रा फोडा पडैला।

—फुलवाड़ी

३ ज्योतिष मे एक बुरा व अशुभ योग।

४ ग्यारह रुद्रो मे से एक रुद्र का नाम।

५ नागकेसर।

६ त्वष्टा के एक पुत्र का नाम।

७ कश्यप व सुरभि के पुत्रो में से एक।

८ अर्बुद काद्रवेय नामक ऋषि।

९ वह्नधान-पुत्र एक राक्षस।

१० पृथ्वी, भूमि। (अ. मा.)

११ पक्षी।

१२ मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम ऽ।ऽ। (डि को,)

१३ देखो 'सरपि' (रू भे.) (अ. मा)

रू. भे —सरपक, सरपौ, सरप्पौ, स्रप, स्रप्प।

अल्पा,—सरपड़ौ।

सरपअरि-सं पु यौ. [सं. सर्प+अरि] १ गरुड। (अ. मा)

२ मयूर, मोर।

३ नेवला, न्योला।

सरपक—देखो 'सरप' (रू. भे.)

उ०—डोहत मूटाडड ए, स्रीखड सरपक हिंदए।—गु. रू. ब.

सरपकाळ, सरपकाल-स पु यौ [स. सर्प+काल] १ गरुड।

२ मोर, मयूर।

४ नेवला, न्योला।

सरपख (ह)—देखो 'सरपिख' (रू. भे)

सरपगंधा-स. स्त्री [स सर्पगधा] नागदवन नामक एक जड़ी।

(वैद्यक)

सरपगत, सरपगति, सरपगती-स. स्त्री. [स. सर्पगति] १ सांप के समान चाल, कपट की चाल।

२ कुटिल प्रकृति।

वि.—१ उक्त प्रकार की चाल चलने वाला।

२ कुटिल प्रकृति का।

सरपडौ—देखो 'सरप' (अल्पा; रू. भे)

उ०—आड आरती करै, वतख विडदावळ वाचै। भैंस भजन गुण फूक, सरपटा स्रोता राचै।—दसदेव

सरपजग, सरपजग्य, सरपजिग – देखो 'सरपयग्य' (रू भे.)

सरपजीह-स. स्त्री [सं. सर्पजिह्वा] १ एक प्रकार की कटार।

(डि. ना. मा.)

२ कटार।

सरपट-सं. स्त्री.—अगले दोनो पैरो को साथ साथ आगे फेंकने की घोडे की एक बहुत तेज चाल।

उ०—सरपट आवता घोडा नै देख नै सूर तारा री गळाई साम्ही

अनेक दिव्यास्त्र प्राप्त किये थे। इनकी तपस्या जानपति या जानपदी नामक अप्सरा ने भंग की। इससे कृप और कृपी का जन्म हुआ।

सरध-स. पु [स. शर्ध] १ दल, समूह।
२ बल, ताकत।
३ अपानवायु का त्याग।

सरधणा-स. पु [स श्रद्धान्] मान्यता, दृष्टिकोण।
उ०—इण लेखै **सरधणा** तो एक। अनै चोथा पाचमा वाला हिंसा करै है अनै साधु रै हिंसा रा त्याग है। ए फरसणा जुदी है। पिण सरधणा जुदी नही।—भि द्र
रू. भे.—सरद्दणा।

सरधणौ, सरधबौ-क्रि स —१ मानना, स्वीकार करना।
उ०—१ हिवै स्वामीजी गुलाब रिसी नै पूछ्यो—सीतल जी रा टोळा रा साधा नै साध **सरधो** के असाध? जद तै बोल्यौ असाध सरधू छूं।—भि. द्र.
उ०—२ साभल चित हरख्यो घणो, **सरध्या** तुमरा बेण। भवि जीवा ना तारका, थे साचा मिलिया सेण।—जयवाणी
उ०—३ थे म्हारा वचन सरधिया प्रतीतिया रुचिया जिण सूं त्याग करौ हो का म्हानै भाडवा नै त्याग करौ हो।—भि. द्र.
२ विश्वास करना।
उ०—१ जद बोहत जी कह्यो—उणा मैं तो किहा थी हूतो मो मेई न **सरधू**।—भि द्र
उ०—२ ज्यूं सूत्र रो वचन साधा रो वचन **सरध्यां**, मिथ्यात्व रूप रोग जाय। पिण सरध्या बिना कोरो सुणीया न जाय।—भि द्र.
३ पूजना, आराधना करना।
४ मान्यता देना।
उ०—जीव खवाया पुन सरधै। सावद्यदान मैं पुन सरधै तिण सू समकत चारित्र एक ही नहीं।—भि द्र.
सरधणहार, हारौ (हारी), सरधणियौ—वि०।
सरधिओड़ो, सरधियोड़ौ, सरध्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सरधीजणौ, सरधीजबौ—कर्म वा०।
सरदणौ सरदबौ—रू० भे०।

सरधनुधार, सरधनुधारी-स. पु [स. शर+धनुष+धारी] अर्जुन। (अ. मा.)

सरधर-वि.—१ धनुर्धारी।
२ अर्जुन।
३ तरकस।
४ देखो 'सिरधर' (रू. भे.)
रू. भे.—सरध्धर।

सरधा-स. स्त्री.—१ कोई कार्य सम्पादित करने की योग्यता, शक्ति, सामर्थ्य, यथाशक्ति।
उ०—ढोली ढोल घुरावण लागो। **सरधा** जोग भूपा मैं व्याव री त्यारिया होवण लागी।—फुलवाडी
२ बल, शक्ति।
उ०—१ **सरधा** वाकी सूं झाकी सुखसेरी, ढूढी ढूढाहड हाडोती हेरी। जाणी जीवण नै जिण तिण मिस जुळिया, पाणी पीवन नै पूरब दिस पुळिया।—ऊ. का
उ०—२ **सरधा** घटगी सँग, वेग विरधापण वळियो। निकळण रो रथ नही, कळण ऊंडी मैं कळियो।—ऊ. का.
उ०—३ बोल गळा मैं फसग्या व्है ज्यू कँवण लागी—राणी, म्हारी तौ मिंदर ताई पूगण जित्ती **सरधा** कोनी। अर पूग्या सार ई काई।—फुलवाड़ी
३ हैसियत, औकात, बिसात।
उ०—१ पण सरधा सू ऊपर-कर काम तो नही करणो जोयीजै।
—वरसगाठ
उ०—२ कोई तो देवै रामजी! साल-दुसाला, मेरी **सरधा** अेक गोछाळी। म्हानै रामजी मिल्या वनरावन मैं, म्हानै किसनजी मिल्या वनरावन मैं।—लो. गी
उ०—३ अपनी **सरधा** सम अवर, दान देत सुदतार। इळ ऊपर होवै अमर, साख भरे ससार।—ऊ. का.
उ०—४ बापडो दूध री आस करै तो मन मैं क्यूं राखा। दूजो की भलो करण जोग वारी **सरधा** ई नी ही। दूध री काइ, जाणै अेक गाय पावसी ई नी।—फुलवाडी
ज्यू—सरधा मुजब काम करणो चाहीजै।
४ हिम्मत, साहस।
उ०—१ हरीया पखी पख बिन, पडै रसातळि आय। ऊडण की **सरधा** नही, जीवत म्रितग थाय।—अनुभववाणी
उ० —२ हरीया बोलण वकण की, **सरधा** नही लगार।
—अनुभववाणी
मुहा.—सरधा सारू भगती=यथा शक्ति।
सं. पु.—५ प्रियव्रतवंशीय बिंदुमत राजा का नाम।
६ देखो 'स्रद्धा' (रू. भे.)
उ०—१ प्रेमामगन रामरस पूरण, सागै सबद सुणावै। सनमुख हुय **सरधा** सू सुमरण, सासो सास समावै।—ऊ. का.
उ०—२ **सरधा** इण री छै इसी जुदा मानै जीव नै काया रे।
—जयवाणी
उ०—३ स्वामी जी कह्यो—जेसो सिरोइना रावनो पालखो जिसो या नवो साधपणो पचख्यो है। पिण **सरधा** खोटी। जीव खवाया पुन सरदो।—भि द्र.
उ०—४ भेखधारी चरचा करता आचार **सरधा** री न्याय री चरचा छोडनै जीव बचावा रो बेदो घालै।—भि. द्र.
उ०—५ चोथा तेरमा गुणठाणावाली री **सरधा** एक छै। तेरमा

३ मितव्ययता।

सरवंग–स पु. [स. सर्वांग] १ सब देह, सब अंग।

उ०—१ सरवंग उदर उर वर सरूप, चन्द्रवदन रचै किर परम चूप।—रा रू.

उ०—२ सुधा वाघ सरवग, आरखै चित्राम अंग। अतरिख वहै ओळ, अभ गळै घातै गोळ।—गु रू व

२ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे मगण जगण और ह्रस्व गुरु सहित आठ वर्ण होते हैं। (ल. पि)

३ संगमरमर या काले पत्थर का बना घोटा जो दवाईयो को बाँटने या घोटने के काम आता है।

४ एक प्रकार का पत्थर विशेष जिससे उक्त घोटा बनाया जाता है।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति तजारं री वाडी री नीपनी, नीली घणू पाकी, पुराणी, आगं वखाणी तिण भाति री भागि घणी एलची, मिरचा, पान, जांवत्री रैं मेळ सू पाखाण री कूडीआ सरवग रा घोटा सूं ऊजळा प्राचा री धमोडी घणं ऊजळै मिसरी रैं भेळ ऊजळा गरणा सूं झारीजै छै।—रा सा स.

क्रि. वि—१ सर्वथा, पूर्ण रूप से।

२ देखो 'सरभग' (रू भे)

सरवंगी–वि.—साम, दाम, दण्ड, भेद नीति के सब अंगो को जानने वाला।

उ०—मेळ तणी कज मेलियौ, व्रत रज गत बुधिवान। सरवंगी सेलो सुमति, चेलौ नाहरखान।—रा. रू.

२ देखो 'सरभगी' (रू. भे)

उ०—एको आतिम जाणिया, सै सरबगी साध। हरीया आतिम राम विन, सोई आन उपाध।—अनुभववाणी

सरवद, सरवध–स. पु [स शरबंध] १ सिर पर बाधा जाने वाला वस्त्र विशेष, साफा, पगडी।

उ०—तनुवध, सरवध कमरवंध मगवुना कमलवना।—व. स.

२ सिर पर धारण करने का स्त्रियो का एक आभूषण।

रू भे.—सिरवद, सिरवध।

सरव—१ देखो 'सरभ' (रू भे.) (अ मा, ह. ना. मा)

२ देखो 'सरव' (रू. भे) (डि को, ह ना. मा.)

उ०—१ थट औ सरब तूझ कजि थटियौ, राजा आव वीर इम रटियौ।—सू प्र.

उ०—२ कुळ सरब बळ बै काम, रखवाळ सीताराम।—रा. रू

उ०—३ उणारी तो रग रग मैं कदैई नी बुझण वाळी लाय लाग्योडी ही। बोल्यौ—जै माया मैं ई मिनख रा सरब सुख बसै तो घर मैं इतो माया व्हैता थका ई म्हारा मन मैं सुख उपजियौ तो कोनी।—फुलवाडी

उ०—४ मिंदर वाळी डूगरी माथै कवर तीजोडी पाख फेरी तो सरव डूगर सोना री बणग्यो। संकर भगवान रो मिंदर ई सोना रो बणग्यो।—फुलवाडी

सरवगळ–वि.—१ सब को हजम करने वाला।

२ सब को स्वाहा करने वाला।

३ देखो 'सरवग्रास'।

उ०—हठी रणखेत सगराम 'कुंभा' हरै, घड़ा दांणव तणी सर्भ रण घाय। घणी तो सूर ससि ग्रहण ह्वै दुयघडी, पग उभै सरवगळ कीध पतसाय।—महाराणा सग्रामसिहजी वडा रो गीत

सरवग्यांनी, सरबजांण—देखो 'सरवग्यानी' (रू. भे.)

उ०—मा बोली—आ थारी भोळप है जको म्हनै सरवग्यांनी मानै।—फुलवाडी

उ०—२ तरै भीवै आपरी तरवार काढिनै मेली नै कह्यो आप सरवजांण छौ।—जखडा मुखडा भाटी री वात

सरवजीत–वि. [सं. सर्वजित्] सब को जीतने वाला, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

सं पु—१ काल या मृत्यु जो सबको जीत लेती है।

२ २१ वा सवत्सर।

३ एक प्रकार का यज्ञ।

सरवजीव–स. पु [स. सर्वजीव] ब्रह्मा का एक नाम।

सरबत–स. पु [अ शर्बत] १ गाढा रस जो चीनी आदि से पका कर तैयार किया गया होता है।

उ०—भरि कोठा परठा करि भारी, संभ्रम बिहारी जुडण नसीग। सांम्हा अमल तिजारा सरबत, सत दळ मोकळिया गजसीग।

—गजसिंघ नाथावत कछवाहा रो गीत

२ उक्त रस पानी मे मिला कर बनाया गया पेय पदार्थ।

३ वह पेय पदार्थ जो चीनी या फलो का रस मिला कर बनाया गया हो।

४ मुसलमानो मे सगाई की एक रस्म विशेष जिसमे विवाहोपरात कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष वालों को शर्बत पिलाई जाती है।

५ उक्त अवसर पर वर पक्ष वालो को कन्या पक्ष वालो की ओर से दिया जाने वाला धन।

सरबती–स. पु—१ पीलापन लिए लालरंग का एक नगीना।

२ एक प्रकार का कपडा विशेष।

३ एक प्रकार का नीबू, जबीरी नीबू।

४ एक प्रकार का आम।

५ एक प्रकार का बढिया कपडा।

वि.—१ शरबत सम्बन्धी।

२ साधारण ललाई लिए हल्के पीले रग का।

सरबतीनींबू, सरबतीनीबू–स. पु—जबीरी नीबू, मीठा नीबू।

सरबया—देखो 'सरवया' (रू. भे.)

उ०—अर ऊणा रा बिवाहण रा लोभी अरथजां नू एकठा बुलाइ सरबया ही मारूं।—वं. भा.

तूटी ।—अमर चूंनड़ी

क्रि. वि.—बहुत तेज, शीघ्रता से (केवल चलने या दौडने के लिए)।

उ०—लापो देवण री जेज के अेक कांळिदर पवन रै वेग सरपट दौडतो आयौ नै चिता मे बडग्यौ।—फुलवाडी

सरपणी—स. स्त्री [स. सर्पिणी] नागिन, सांपिन। (डिं. को.)

रू. भे.—सपणी, सप्पणी, सरपिणि।

सरपदस्ट्र—स. पु. [स सर्पदंष्ट्र] १ सांप का विष दत।

२ उक्त दांत से लगने वाला घाव।

सरपदेवी—स पु [स सर्पदेवी] कुरुक्षेत्र मे स्थित एक तीर्थ स्थान का नाम।

सरपपति—स. पु. [सं. सर्प+पति] शेषनाग। (डिं को.)

सरपप्रिय—सं. पु. [स. सर्प+प्रिय] चदन। (डिं को.)

सरपमाळी—स. पु. [स. सर्पमालिन्] १ शिव, महादेव। (ना. मा.)

२ एक महर्षि।

रू भे.—सरपिमाळी।

सरपबगड़ूतेज—स. पु.—चिपटे नाक का घोडा जो अशुभ माना जाता है। (शा हो)

सरपभुज—स पु. [सं. सर्प+भुज] १ मयूर, मोर।

२ सारस।

३ बड़ा सर्प।

सरपयग्य—स पु. [स. सर्पयज्ञ] जनमेजय द्वारा सर्पो के नाश हेतु किया गया यज्ञ।

रू भे—सरपजग, सरपजग्य, सरपजिग।

सरपराज—स. पु [स सर्पराज] १ शेषनाग।

२ वासुकी। (डिं. को.)

सरपविद्या—स स्त्री [स. सर्पविद्या] सर्प को वश में करने या पकडने की विद्या।

सरपव्यूह—स पु. [स. सर्पव्यूह] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना।

सरपाकसी, सरपाक्षी, सरपाखी—स. स्त्री. [स. सर्पाक्षी] गधनाकुली, सरहटी, श्वेत अपराजिता। (अमरत)

सरपारि, सरपारी—स. पु [स सर्पारि] १ गरुड।

२ मोर, मयूर।

३ नेवला।

सरपाव—देखो 'सिरपाव' (रू. भे.)

उ०—अर म्होकमसिंघ सुण नै पहरिया वैठो थो सो सरपाव अर घोडौ घणो धन खवरदार नू दीधौ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सरपासण, सरपासन—स. पु [स सर्प+आशन्] १ गरुड।

२ मोर, मयूर।

३ नेवला।

[स. सर्प+आशन] विष्णु भगवान्।

सरपासय, सरपास्य—स. पु [स. सर्पास्य] खर राक्षस का सेनापति जो भगवान् श्रीराम के द्वारा मारा गया था।

सरपाहार—स. पु. [स सर्प+आहार] १ नेवला। (डिं को.)

२ मयूर, मोर।

३ गरुड।

[स सर्पाहार] ४ शिव, महादेव (डिं. को.)

सरपि, सरपिख, सरपिखि, सरपिखी—सं पु [स सर्पिष] घी, घृत। (ह. ना. मा)

रू. भे—सरप, सरपख(ह)।

सरपिणी—देखो 'सरपणी' (रू. भे)

सरपिमाळी—देखो 'सरपमाळी' (रू. भे)

सरपुंख—देखो सरपख' (रू. भे.)

सरपेच—देखो 'सिरपेच' (रू. भे)

उ०—सुभ खिल्लत पच वसन सुरगी, असि खंजर सरपेच किलंगी।

—रा. रू.

सरपोस—स पु. [फा. सर+पोश] थाल आदि ढकने का कपडा।

सरपौ, सरप्प—देखो 'सरप' (रू भे.)

उ०—१ अरधंगि हेम पुत्री. सरपौ कठेहिए वाहणी साडौ। सिखा नेत भाल चदौः तस्मै रुद्राय नमौ।—गु. रू व

उ०—२ करत एक राग रग, मोहिए सरप्प ए।—गु रू व.

सरफ—सं. पु [अ. शरफ] १ वडाई।

२ सौभाग्य।

३ महत्व।

४ कपडे धोने का एक प्रकार का पाउडर विशेष।

सरफणौ, सरफबौ—क्रि, अ.—हवा मे फहराना, वायु मे इधर उधर हिलना।

उ०—जरदोजनि हेम ध्वजा सरफै, तडिता धन बीच मनौ तरफै।

—ला. रा

सरफणहार, हारौ (हारी), सरफणियौ - वि०।

सरफिओडौ, सरफियोडौ, सरफयोडौ—भू० का० कृ०।

सरफीजणौ, सरफीजबौ—भाव वा०।

सरफल—स. पु. [स शर+फल] तीर की पैनी नोक जहां नुकीला लोहा लगा होता है।

सरफास—स. स्त्री—घासफूस तथा डंठल आदि का महीनतम नोकदार तीक्ष्ण भाग। (शेखावाटी)

सरफियोड़ौ—भू का कृ.—हवा में फहराया हुआ, वायु मे इधर उधर हिला हुआ।

(स्त्री सरफियोडी)

सरफौ—स. पु—१ औषधि के प्रयोग मे आने वाला एक छोटा पौधा।

[सं सर्फ] २ खर्च, व्यय।

२ एक परिगणित जाति विशेष।
[स सरभग] ३ अघोर पथ का नाम।
रू भे — सरवग।
रभगासरम, सरभगाश्रम–स पु. [शरभगाश्रम] शरभग ऋषि का आश्रम।
रभंगी–वि [सं. सरभगी] अघोर पथ का, अघोर पथ से सम्बन्धित।
स. पु —अघोर पथ का व्यक्ति।
रू भे.—सरवगी।
रभ–स पु [स. शरभ] १ राम की सेना का एक वन्दर।
(रामकथा)
२ कश्यप एवं दनु के ससर्ग से उत्पन्न एक दानव।
३ चेदी नरेश धृष्टकेतु के एक भाई का नाम।
४ दनुज के एक पुत्र का नाम।
५ शिव की क्रोधमूर्ति, वीरभद्र।
६ कृष्ण-रुक्मिणी के एक पुत्र का नाम।
७ यम के पांच पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।
८ ऐरावत कुलोत्पन्न एक नाग।
९ गान्धारराज सुवल के एक पुत्र का नाम।
१० भगवान् श्रीविष्णु का नाम।
११ हाथी का बच्चा। (हि. को.)
१२ ऊट।
१३ एक विशेष प्रकार का मृग।
उ०—गाज सुणता पाण, सरभ थट फाळा आवै। भागै डील अकज्ज, लाघवा जोर जतावै।—मेघ
१४ सिंह, शेर। (ह ना. मा)
१५ आठ पैरो वाला एक प्रकार का जन्तु विशेष, जो शेर से वढ कर वलवान् व शक्तिशाली होता है। (हि को)
उ०—१ सीह किसी साराह सरभ रव सुणै सळवकै, एकळ की ओपमा लडै भागै थह लुक्कै। सूर स्याग सग्रहै सुवपि संनाह सुधारै, अग्र ढाल ओढवै पीठ वेलिया पचारै।—रा रू.
उ०—२ जै जै सद् उचार डाक डमरू कर वाजै, मोर हस अग-राज चडी खगराज गरज्जै। एक हस्ति आरुही व्रखभ अस उस्ट्र विगत्ती, सरभ चील सादूळ रीछ वदर तर रत्ती। अदभूत रूप आकृत अगम, किरलक्क हुक्क रसणा करै। अण जैत कहे मुख भासुरा, जैत कमंधा उच्चरै।—रा. रू
१६ टिड्डी।
१७ पतगा, शलभ।
१८ एक प्रकार का वृत्त (वार्णिक छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण होता है।
१९ बीस गुरु और आठ लघु मात्राओ के दोहे का एक भेद विशेष।
२० आर्यागीति या सघाण (स्कधक) नामक गाथा या गाहा का भेद विशेष।
२१ छप्पय छद का ३१ वा भेद विशेष जिसमे ४० गुरु और ७२ लघु से ११२ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। (र ज. प्र)
२२ पीत, पीला। ✽ (हि. को)
रू. भे.—सरव।
सरभजडौ–स. पु.—अघोरी, औघड।
सरभर–स. स्त्री.—वरावरी, समानता।
उ०—हायळ वळ निरभै हियौ, सरभर नको समत्थ। सीह अकेला सचरै, सीहा केहा सत्थ।—वा. दा
वि —समान, तुल्य, वरावर। (हि. को.)
उ०—१ कायथ 'लाल' विसाल कुळ, सरभर वालकिसन्न। अै वधिया तीखै अणी, पेखै घणी प्रसन्न।—रा. रू.
उ०—२ अग सकोमळ पेम सरभर, चूंप सभै चतरंग चितारी। साध सती जत राग रसायन, सूर सिम्या कवि दास दतारी।
—अनुभववाणी
उ०—३ कज सरभर समुख कोमळ, कान भळमळ हरि कुडळ।
—र. ज. प्र.
उ०—४ म्हारी सास सपूती सं म्है सरभर रहस्या, जीभ कै गुण आगला। म्हारी देराण्या जेठाण्या वरोवर रहस्या, काम कै गुण आगला।—लो. गी
सरभरा—देखो 'सरवरा' (रू. भे)
उ० —तद सरभरा करण नूं वाघोड 'तेजै' नूं मेलियौ।—द. दा.
सरभरि, सरभरी—१ देखो 'सरवरा' (रू. भे)
उ०—चाडमल्ल मेघड छोडाया, मान भग करी कढवाया। तपला कहइ सरभरि कीजइ दुरि (इ) भेरि हुकम इन्ह दीजइ।
—ऐ. जे का स.
२ देखो 'सरवरी' (रू भे.)
सरभि—देखो सुरभि' (रू. भे)
उ०—सरभि समीरण वायइ वाग्र, पाडल फूल खिरइ जलमाहि। तीरइ तीरइ मारग फिरइ, सरोवर पाणी इह काकरइ।
—प्राचीन फागु-सग्रह
सरभू–स. पु [स. शरभू] स्वामी कार्तिकेय।
(अ मा; ना. मा; ह. ना. मा)
सरभेस, सरभेसर, सरभेस्वर–स पु. [स. शरभेस्वर] एक शिव लिंग का नाम।
सरमदगी–स स्त्री [फा. शर्मदगी] १ लज्जा, शर्म।
उ०— घणा काचा कपणा नै तौ न उपजै चाव। उलटी पडै सर-मंदगी रै डाव।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
२ पश्चाताप, पछतावा।
सरमदौ–वि —लज्जित, शर्मिदा।

उ०—२ हू आखू साची हमैं, तिण मैं झूठ न तार। सूर नहीं है सरबथा, अपत उठै काय नार।—पा. प्र.

सरबदा—देखो 'सरवदा' (रू भे) (डिं को.)

उ०—हथळेवै भेळी हुई, नह होसी न्यारीह। सोढी रहसी सरबदा, साथै सुपियारीह।—पा प्र.

सरबनास—देखो 'सरवनास' (रू भे)

सरबमंगळा—स स्त्री [स सर्वमंगला] तान्त्रिको की एक देवी का नाम।

उ०—बीरबळ पूछी—तू कुण छै, कीसू दुखी थकी रोवै छै? उवा बोली—इ सुद्रसेण राजा री राजलक्ष्मी छू। मैं राजा रै आसरै बहुत दिन विस्राम लियौ अब इयै रौ राज भग हुसी। इयै रै घर सू विजोग थाय जासू, तींसू रोवू छू। तठै बीरबळ कहियौ किणी प्रकार राज भग न हुवै जी सू थारौ रहणौ होय। तद लक्ष्मी कही—अेक बात बडी कठिण छै। तू आपरा पुत्र री भगवती सरबमगळा नै बळि दे दै तौ राज थिर रहै।

—वैताळ पच्चीसी

सरबमुख—देखो 'सरवमुख' (रू. भे.) (ह ना. मा)

सरबय्या—स स्त्री.—यादव वश के अन्तर्गत एक शाखा।

सरबर—देखो 'सरोवर' (रू. भे) (डिं को)

२ देखो 'सरोवर' (रू. भे) (डिं को)

सरबरस—स पु. [स सर्व+रस] ज्ञान।

वि [सं. सर्व+रस] खारा। (डिं. को)

रू भे.—सरवरस।

सरबरा, सरबराह—स. स्त्री [फा. सरबराह] १ खातिर, आवभगत।

उ०—१ म्हारी बेटी नै घरै आयोडा री सरबरा री ध्यान है इज घणौ।—फुलवाडी

उ०—२ इण राफा मैं सेठजी जान सारू नी तौ की जीमण वणायौ अर नी की दूजी ई सरबरा करी। कोई मिस लाध्या चूकण री रात वै जलमिया ई कोनी हा।—फुलवाडी

उ०—३ बाड्यौ वीर मूडा सू इमरत वरसावतौ बोल्यौ—बाई री थोडा दिना ताई सरबरा करूंला। डरण री जरूरत कोनी, म्हारै लारै री लारै निसक बाबी में वड जाजे।—फुलवाडी

२ आवभगत करने की सामग्री।

उ०—सौ राणी वाच सुण खुस्याळ हुवौ। तुरत ओठी नु पाछो सीख दीवी, कागद लिख दियौ—जौ थै कुवर नु हर भात टिकावज्यौ। म्है सारी सरबरा लेय आवा छा।

—कुवरसी साखला री वारता

३ प्रबन्ध, इन्तजाम।

उ०—उण दिन सारी सरबरा कराय वखतसिंहजी महाराज गजसिंहजी रा डेरा पाछलै पहर पधारिया।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

४ सजा, दण्ड आदि देने का भाव।

वि.—१ प्रबन्धक, व्यवस्थापक।

२ आवभगत करने वाला।

३ मजदूरो आदि का सरदार, मुखिया।

रू. भे —सरभरा, सरभरि, सरभरी, सरवरा।

सरबराकार—स. पु. [फा. सरबराह] व्यवस्थापक, प्रबधकर्त्ता।

सरबरित—स. पु [स. सर्वरत.] १ शिव, महादेव। (अ. मा; ना. मा.)

२ श्रीकृष्ण। (अ. मा)

३ ईश्वर। (ना. मा)

रू भे.—सरवरत, सरवरित।

सरबरी—देखो 'सरवरी' (रू भे.) (डिं. को.)

सरबलील—वि —सब पदार्थ खाने वाला, सर्वभक्षी। (मा म.)

सरबस—देखो 'सरवस्व' (रू. भे.)

उ०—१ दाता जग मातापिता, दाता साप्रत देव। दाता सरबस दान दै, ऊत्तर एक अदेह।—बा. दा.

उ०—२ सूता सरबस जात है, जागि 'र करो बिचार। हरि परम सनेही परमसुख, अगमवार नही पार।—ह. पु. वा.

सरबसहा—देखो 'सरवसहा' (रू. भे.) (अ मा; ह ना. मा.)

सरबसुख—स. पु. यौ [स सर्व+सुख] १ पानी, जल। (ह. नां. मा.)

सरबसुहागण—स. स्त्री —सधवा, सौभाग्यवती।

उ०—एक भरयौ ऐ वतूळौ आवौ, विनायक विणजारा कै वैल ज्यू। एक माड्यौ चूड्यौ आवौ, सरबसुहागण कै सीस ज्यू।

—लो. गी.

सरबस्व—देखो 'सरवस्व' (रू. भे)

उ०—बळी दीनवधू घरै बसवाना, अकूपार गभीर रोळै अराना। दियै मेय राधेय सरबस्व दानी, महाकस्ट भी मागवै भूप मानी।

—व. भा.

सरबाणी—देखो 'सरवाणी' (रू भे) (डिं को.)

सरबूद—स पु —खेमा, तम्बू।

उ०—ताणियौ आज सरबूद ताय जाणियौ आज अरबूद जाय। कदमा लग निजर सलाम कीध, डमडोळ राव 'ऊमेद' दीध।

—वि. सं.

सरबेण, सरबेत—वि [म. सर्व] सब, सम्पूर्ण, समस्त।

सरबेस, सरबेसर, सरबेस्वर—देखो 'सरवेस्वर' (रू. भे.)

सरबोर—देखो 'सरावोर' (रू भे.)

सरब्ब—देखो 'सरव' (रू. भे.)

उ०—अघकारी असुरा तणा, सुव धूजिया सरब्ब। अप चौ सोच निवारियौ, उर धारियौ गरब्ब।—रा. रू.

सरभग—स. पु. [स. शरभग] १ श्रीरामचन्द्र के अनन्य भक्त एक महर्षि जिन्हे इन्द्र ने ब्रह्मलोक ले जाना चाहा मगर वे श्रीराम के दर्शनाकांक्षी होने के कारण उस समय ब्रह्मलोक न जाकर दर्शनोपरान्त गये थे।

उ०—३ आ तो सुरगा नै सरमावै, इण पर देव रमण नै आवै। इण रौ जस नर नारी गावै, धरती धोरा री........।—अज्ञात

उ०—४ की सरमावै फिर लुक ज्यावै, पग थाम पट साम जप ज्यावै। जै दिख ज्यावै तो हस ज्यावै, जद विपन गुदगुदी बिख-रावै।—करणीदान बारहठ

सरमावणहार, हारौ (हारी), सरमावणियौ—वि०।

सरमाविओडौ, सरमावियोडौ, सरयाव्योडौ—भू० का० कृ०।

सरमावीजणौ, सरमावीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सरमावियोडौ—देखो 'सरमायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सरमावियोडी)

सरमासरमी-स. स्त्री.—परस्पर लज्जा करने का भाव।

सरमाहणौ, सरमाहवौ—देखो 'सरमाणौ, सरमाणौ' (रू भे.)

उ०—आवी खवर लिखी अणचाहे, मगन नवाब सोच सरमाहे। फौधी फौज वळे कमधज्जा, सूधर सोधण प्राण सकज्जा।

—रा. रू.

सरमाहणहार, हारौ (हारी), सरमाहणियौ—वि०।

सरमाहिओडौ, सरमाहियोडौ, सरमाह्योडौ—भू० का० कृ०।

सरमाहीजणौ, सरमाहीजवौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सरमाहियोडौ—देखो 'सरमायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री सरमाहियोडी)

सरमिंदगी-स. स्त्री—१ निंदा, बदनामी।

उ०—जिकी काम गरमी हळकाई सू आदरै तो सहीआ छै। अरथ नही सुधरै आगलै दुख रौ कारण होय ससार सू सरमिंदगी होय।

—नी प्र.

२ लज्जा, शर्म।

उ०—फेर कदै ही उवौ रसोईदार इण सरमिंदगी रै कारण सू कोई गलती नही कीवी।—नी. प्र

सरमिंदौ-वि —जिसे शर्म आती हो, लज्जित।

उ०—सु माथ रै ठाकुरै नीठ यू कर नै पाछा आणिया। सु प्रिथीराज जी तो घणा सरमिंदा हुआ।—राव म लदे री वात

रू भे.—सरम्मिदौ।

सरमियोडौ-भू का. कृ.—१ युद्ध किया हुआ, झगडा किया हुआ. २ प्रतियोगिता किया हुआ. ३ बहस किया हुआ ४ प्रयत्न किया हुआ, कोशिश किया हुआ।

(स्त्री सरमियोडी)

सरमिस्टा-सं स्त्री. [स शर्मिष्ठा] असुरराज वृषपर्वा की पुत्री जो ययाति की पत्नी एव शुक्राचार्य की कन्या देवयानी की सखी थी।

वि वि — एक बार देवयानी और शर्मिष्ठा मे साधारण सी बात पर झगडा हो गया और शर्मिष्ठा ने देवयानि को कुए मे ढकेल दिया। राजा ययाति ने देवयानि को कुए से बाहर निकाला तथा उसी के साथ विवाह भी कर लिया। वृषपर्वा ने देवयानि के साथ शर्मिष्ठा को दासी बना कर साथ भेज दी। ययाति से शर्मिष्ठा का सम्बन्ध हो गया और उससे द्रुह्यु, अनु व पुरु तीन पुत्र हुए। शर्मिष्ठा से सम्बन्ध कर लेने के कारण शुक्राचार्य ने क्रुद्ध होकर ययाति को शीघ्र बूढा होने का शाप दिया।

सरमीलौ-वि.—लज्जालु, लज्जावान।

सरमु-स. पु. [स श्रम] १ युद्ध।

उ०—केवि दिगाडइ गाढा सरमु, केवि तुरगम जाणइ मरमु। चक्र छुरी किवि सावल भालइ, किवि हथीयार पडता झालइ।

—मालिभद्र सूरि

२ वाद वहस।

३ प्रतियोगिता।

४ प्रयत्न, कोशिश।

सरम्म—देखो 'सरम' (रू. भे)

उ०—१ मारू काम अडोल मन, सारू माम धरम्म। इही सहणा चूप कर, एवा गही सरम्म।—रा. रू

उ०—२ रग न फेरै धुर वहै, धवळा राह धरम्म। राघव ज्यारी राखही, सीगा तणी सरम्म।—बा दा.

सरम्मिदौ—देखो 'सरमिंदौ' (रू भे)

सरया-स स्त्री. [स. शर्या] १ रात्रि, रात।

२ अगुली।

सरयणात-स पु [स. शर्यणायत्] एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

सरयाति-स पु. [स शर्याति] १ वैवस्वतमनु एव श्रद्धा के ससर्ग से उत्पन्न दस पुत्रो मे से एक जो च्यवन महर्षि की पत्नी सुकन्या के पिता थे।

२ प्राचीन्वत् राजा का पुत्र व अहयति राजा का पिता एक पुरु-वशीय राजा का नाम।

सरयु, सरयू-स स्त्री [स सरयु, सरयू] १ एक प्रसिद्ध नदी जिसके तट पर अयोध्या नगरी बसी है।

[स. सरयु] २ पवन, वायु हवा।

३ वीर नामक अग्नि की पत्नी का नाम जिसके गर्भ से सिद्धी नामक पुत्र का जन्म हुआ था।

रू भे.—सरजु, सरजू, सारजू।

सरर-स स्त्री —१ ध्वनि विशेष।

स. पु.—२ जुलाहो द्वारा ताना ठीक करने हेतु लगाई जाने वाली वांस की छडी, सथिया।

सरराज-स. पु. [स] समुद्र, सागर।

उ०—बाजराज अत वेव, करै नटराज तणी कळ। गजा राज घण गरज, गाज सरराज मदग्गळ।—सू. प्र.

सरराटो-स पु—हवा, मनुष्यादि के तेज गति से चलने से उत्पन्न ध्वनि।

सररागो, सररावौ-क्रि अ—वायु के तेज वहने या तीर, गोली,

उ०—जाण्या हम जैमा, कहियै कैसा, कुछीयक मन सरमदा।
—अनुभववाणी

सरम-सं. स्त्री. [फा. शर्म] १ लज्जा, शर्म। (डिं. को)

उ०—१ क्रम कहै अमर नर काया, पुळबा कारिण हुवा पोहौ। मोह बाधिया न जायै मरणि, सरम वाधिया मरै सोहौ।
—सुजाणसिंघ जगन्नाथोत री गीत

उ०—२ रजस्वला नारीह, कथा गोप किण सू कहू। समझी हरि सारीह, सरम मरम री सावरा।—रामनाथ कवियौ

उ०—३ खाड अर घी मागता सरम को आवै नी! घर मैं कमावू तो थारै जैडौ मोल्यौ भरतार है। घी खांड सूं मूणा भरी है।
—फुलवाडी

२ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—१ खत्रवट सरम सदा था खोळै, श्री हिंदवाण बचावौ ग्रोलै। समहर मो दळ लियौ समेळा, भीम सह खूमाणा भेळा।
—रा. रू.

उ०—२ जाणी किसौ अजाण, तीन लोक तारण तरण। होवै द्रोपद हाण, सरम धरम री सावरा।—रामनाथ कवियौ

उ०—२ सूर सरम सग्रहै, भरम छडै कमधज्जा। मेळ कियौ मेछ सूं, सूर सामत सकज्जा।—रा. रू

उ०—३ किया सनाह किसन कूभावत, वधै हरख जिण कळह विसावत। आया निजर धणी चै एहा, सामि धरम कुळ सरम सनेहा।—रा. रू.

३ सकोच।

[स. शर्मन्] ४ हर्ष, आनन्द। (डिं को)

५ घर, मकान।

६ सुख।

७ विष्णु।

८ देखो 'स्रम' (रू. भे.)

रू. भे.—सरम्म।

सरमणौ, सरमबौ-क्रि. स.—१ युद्ध करना, झगडा करना।

२ प्रतियोगिता करना।

३ बहस करना।

४ प्रयत्न करना, कोशिश करना।

उ०—पहिलु सरमई धरमह पुत्रो, जेह रहई नवि कोई सत्री। ऊठिउ भीमु गदा फेरतउ, तउ दुरयोधन भिडइ तुरतउ।
—सालिभद्र सूरि

सरमणहार, हारौ (हारी), सरमणियौ—वि०।

सरमिग्रोड़ौ, सरमियोडौ, सरम्योडौ—भू० का० कृ०।

सरमोजणौ सरमीजबौ—कर्म वा०।

सरमधारी-वि.- शर्म को धारण करने वाला, शर्मीला।

उ०—देसपति सभ्रम दमण ऊदम, अगम गम हीदुग्रा ग्रोपम। सरमधारी करण सुधरम, ब्रहम वाचा दानि विक्रम।—ल. पि.

सरमर-स. पु [स. शर्मरः] एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

सरमल्ल-स. पु. [सं. शरमल्लः] १ शारिका पक्षी, मैना।

२ तीर चलाने मे दक्ष व्यक्ति, धनुर्धर।

सरमसार-वि. [फा] १ लज्जाशील, लज्जावान।

२ लज्जित, शर्मिन्दा।

सरमांण-सं. पु. [स शरमाण] हिरण्यकशिपु का भतीजा एक सैंहिकेय असुर।

सरमांन—देखो 'मानसरोवर'।

उ०—जाणै हम मलपीयौ, सरमांन मझारा। हाथी जाण क हालीयौ, मद पीध वजारा।—मयाराम दरजी री बात

सरमा-सं. स्त्री. [स] १ देवताओ की एक कुतिया।

२ कुतिया।

३ दक्ष की एक कन्या व कश्यप ऋषी की पत्नी का नाम।

४ विभीषण की एक पत्नी।

स. पु [स. शर्मन्] ब्राह्मणो की एक उपाधि।

सरमाणौ, सरमाबौ-क्रि. अ., स.—१ लज्जित होना, शरमाना।

उ०—साकडै मारगियै सरमाय, घूघटै ग्रोळूडी अटकाय। गई धण सरवरियै री तीर, झुकी झट काळी लट छिटकाय।—साझ

२ सकोच करना।

उ०—ग्रौरा कै पिया परदेस वसत हैं, लिख लिख भेजै पाती। मेरा पिया मेरै निकट बसत है, कहू न सकूं सरमाती।—मीरा

३ खिसियाना।

उ०—मामण भरमाया गुरु गरमाया, सरमाया सिरकदा है। चेली रा चेला अजक अकेला, वेला वास बसदा है।—ऊ का.

४ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना।

सरमाणहार, हारौ (हारी), सरमाणियौ—वि०।

सरमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सरमाईजणौ, सरमाईजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

सरमावणौ, सरमाववौ, सरमाहणौ, सरमाह्वौ—रू० भे०।

सरमायोडौ-भू. का कृ—१ शरमाया हुआ, लज्जित हुवा हुआ. २ सकोच किया हुआ. ३ खिसियाया हुआ. ४ शर्मिन्दा किया हुआ, लज्जित किया हुआ।

(स्त्री. सरमायोडी)

सरमाळू, सरमालू-वि.—लज्जा व शर्म रखने वाला।

सरमावणौ, सरमाववौ—देखो 'सरमाणौ, सरमावौ' (रू. भे)

उ०—१ जीमण नै थे निति जावौ, विघवावा घर वारियां। साघ होय मन नह सरमावौ, जग मैं करि करि जारियां।
—ऊ का.

उ०—२ मतवाळौ उठ मोद सू, लप गोदी मे लीन। सरमावै धण सेज मैं, खिन खिन चित व्है खीन।—नारायणसिंह सांदू

क्रि वि —हर समय, सर्वदा, सदैव ।

सरवगध–स. पु. [स. सर्वगंध] १ इलायची ।

२ कपूर ।

३ केशर ।

४ दालचीनी ।

५ अगर ।

६ नागकेसर ।

७ शिलारस ।

८ लौग ।

सरवग–वि.—जिसकी गति सब जगह हो ।

स. पु. [स. सर्वग] १ भीमसेन के एक पुत्र का नाम ।

२ धर्मसावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम ।

३ देखो 'सरवग्य' (रू भे)

सरवगति–वि.—जो सब को शरण व आश्रय देता हो, परमेश्वर ।

सरवगळ–स. पु —१ खग्रास ।

वि.—२ पूर्ण रूप से ग्रस्त ।

उ०—मिळै सगरांम सगराम जुध मसळियौ, अजड बळ खान खधार तूटौ । ग्रास भंडार सपतग लै सरवगळ, छोडिया साह महमद छूटौ ।—महाराणा सग्रामसिंह रौ गीत

सरवग्य–वि [स सर्वज्ञ] सर्वज्ञ ।

उ०—१ वाता विसतारै वणै, सठ आगै सरवग्य (सरवज्ञ) । मून ग्रहै छाडै मछर, तीखौ मिळिया तग्य (तज्ञ) ।—बा. दा.

उ०—२ अनइच्छा सोई ब्रम्ह स्वरूपी, सरवग्य सकल पसारा । पाप पुण्य दुख सुख नही दरसै, नही कोई जीतण हारा ।

—साधु जगदीसराम

स पु —१ ईश्वर ।

२ शिव, महादेव ।

३ चौसठ भैरवो के अन्तर्गत एक भैरव ।

४ देवता ।

रू. भे —सरवग ।

सरवग्यता–स स्त्री [स सर्वज्ञता] सर्वज्ञ होने का भाव या अवस्था ।

सरवग्यानी–स. पु. [स. सर्वज्ञानी] सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञाता ।

रू भे.—सरबग्यानी, सरवजाण ।

सरवग्याता–स. पु. [स सर्वज्ञाता] १ सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञाता ।

२ ईश्वर ।

३ शिव, महादेव ।

सरवग्यात्मा–स पु यौ. [स सर्वज्ञ+आत्मा] ईश्वर ।

उ०—नमामी सरवेसा विलख लय सेसाक्षर नमौ । नमी सरवग्यात्मा परम परमात्मा वर नमौ ।—ऊ का.

सरवजांण—देखो 'सरवग्यानी' (रू भे.)

सरवग्रास–स पु [स. सर्वग्रास] वह ग्रहण जिसमे सूर्य या चंद्र मडल पूर्ण रूप से छिप जाता है ।

सरवढिया–स पु.—पवार वश की एक शाखा । (व भा.)

सरवडियौ–स. पु.—पवार वश की सरवढिया शाखा का व्यक्ति ।

सरवड़ौ–वि.—मूसलाधार ।

उ०—१ स्रावण वरसइ सरवड़ै, मयन न खचइ धार । तिणइ तणाउ ताग-विण, स्वामी सि न करि सार ।—मा. का. प्र.

उ०—२ स्रावण वरसइ सरवडै, वडै वडेरै बूद । वपु-पजर माधव गुणै, वेधी करिउ छछूंद ।—मा. का. प्र

सरवचारी–वि. [स. सर्वचारिन्] सब मे विचरण करने वाला या रमने वाला ।

स. पु.—शिव, महादेव ।

सरवचूड–स पु [स. सर्वचूड] महादेव का चूड, चंद्रमा ।

उ०—रच्या राम रा दोय चित्रांम रुडा, वखा सरव एकौ वियौ सरवचूडा ।—मे म.

सरवजित–स. पु. [स. सर्वजित] १. २१ वा संवत्सर का नाम ।

२ कश्यप मुनि के एक पुत्र का नाम ।

सरवण–स पु. [स. शरवण] १ एक वन जहाँ स्कन्ददेव का जन्म हुआ था ।

२ एक प्रकार की घास ।

३ देखो 'स्रवण' (रू भे) (डि. को.)

उ०—१ सोधाखाना वेल सजि, वटा कहार वहाय । कावड सरवण धारि कध, जाणै तीरथ जाय ।—सू. प्र.

उ०—२ सरवण न हुवै हियौ सिळावण, हियौ जळावण कस हुवै । योयं काम कूटीजै थाळी, फळजुग राळी भाग हुवै ।

—हिंगळाजदान कवियौ

उ०—३ सरवणां री और ओपमा न वणसी, सीपमा नू स्वाति वूद मेली छै । जकौ मोती जणसी ।—पना

उ०—४ सरवण नैणि जिह नासिका, सीख करि सैणा सयै । धात हुई निरधात, वात हुई विड हयै ।—सुरजनदास पूनियौ

सरवणति–स स्त्री —वह स्त्री जो अपने सास श्वसुर की खूब सेवा करती हो ।

उ०—म्हारी अै ववडिया सरवणती, आ सासड रै हुकमा मैं हालै ववडिया सरणवती ।—लो. गी

सरवणौ, सरवबौ–क्रि अ [सं. श्रवति] १ टपकना, चूवना ।

(उ. र.)

उ०—कामधेनु करतार है, अम्रत सरवै सोय । दादू बछरा दूध कौं, पीवै तो सुख होय ।—दादूवाणी

२ तेजगति से दौडना, भागना ।

उ०—इतरै माहै प्रयागदास अैराकी चढियौ थकौ आयौ । घोडौ सरवरता थकौ हीज 'जैमलजी' नू सलाम कीधी ।—नैणसी

३ शाप देना ।

पत्थर आदि के तीव्र गति से छूटने से ध्वनि उत्पन्न होना ।

रळ, सरल-स पु. [स सरल] १ बाल, केस । (अ मा, ह ना. मा.)

उ०—१ सरळ सच्चिकरण स्याम कच, मुकता मग्ग मझार। तरणि तनुजा मधि तसि, धसी सुरसरी धार ।

—सिववक्स पाल्हावत

उ० —२ अग झळकै आरसी, सरळ करळ सारसी ।—पना

उ०—३ ससि वदनी ती सिर सरळ, मेचक केम म जाण । हिय काम पावक हुवै, जास धुम्रा मन जाण ।—वा. दा

२ चीड का वृक्ष ।

३ एक प्रकार का पक्षी ।

४ आग, अग्नि ।

५ भाला ।

उ०—मेलियौ 'जसै' वळ दिली-दळ मचकतां, प्रवळ भुज वळ सरळ नरळ पुगौ धुव्वै मुगळ अकळ काठळा सरल धर, अरळ सावळ भरळ करळ ऊगौ ।—नाथौ सादू

६ बिजली, विद्युत ।

वि.—१ जा टेढा या वक्र न हो, सीधा ।

२ तेज तीव्र ।

उ०—१ सथ ऊठ नकीवा सरळ सद्ध, रवि उदय आद सझिया रवद्ध ।—रा रू

उ०—२ नीमरयौ पटम मारै कुटम, करै साद सरळा तरणि । रुघनाथ साथ वासै रह्यौ, अनाथनाथ असरणि सरणि ।

—सुरजनदास पूनियौ

३ सहज, आसान ।

उ०—सुपह छतीसी दूहड़ा सुपहा तणा छतीस । सरळ बणाया समझचित, 'बांकै' विसवावीस ।—वा दा.

४ छल, कपट आदि से रहित सीधा, भला ।

उ०—१ सरळ तन सहज दन मुकत दायक सुमत, गजगमणी जानकी भाम गुण ग्राम है ।—र. ज प्र

उ०—परठीसि हवि पाचमा, अग तणउ अधिकार । सरस अनइ सरला वचन, सारप आपै सार ।—मा का. प्र

५ ईमानदार ।

सरलउ-वि.—१ दीर्घ । (उ र)

२ प्रलम्ब । (उ र.)

सरळक-स पु —१ एक प्रकार का सर्प विशेष ।

[स शरलक] २ जल, पानी ।

सरलगतजथा-स. स्त्री —डिंगल गीतो की रचना का वह नियम जिसमे दृष्टांत अलकार युक्त मालोपमा होता है ।

सरळता, सरलता-स स्त्री —१ टेढा न होने की अवस्था, गुण या भाव, सीधापन ।

२ निष्कपटता, भलाई ।

३ सुगमता, सरलता ।

४ ईमानदारी, सच्चाई।

सरळधर, सरलधर-स. पु [सं सरलधर] बादल ।

उ०—मेलियौ 'जसै' वळ दिली-दळ मचकता, प्रबळ भूजवळ सरळ तरळ पुगौ । धुव्वै मुगळ अकळ काठळा सरळधर, अरळ सावळ भरळ करळ ऊगौ ।—नाथौ सादू

सरळा, सरला-स स्त्री [स सरला] १ काली तुलसी ।

२ चीड का वृक्ष ।

३ घोडो की एक नस्ल ।

वि —१ एक-दम सीधा ।

उ०—तरु ताल पत्र ऊचा तडि तरळा, सरळा परसता सरगि ।

—वेलि

२ सहज एव सुगम ।

३ छल कपट रहित, निष्कपट, निष्छल ।

सरली-स स्त्री —एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

सरलोक—देखो 'स्लोक' (रू. भे.)

उ०—खत गीता तै सरलोक खात, भागवत सलोकी चतुर भात ।

—वि. स.

सरलोकौ—देखो 'सिलोकौ' (रू भे.)

सरलोमा-स पु —एक प्राचीन ऋषि ।

सरव-स पु [स शर्व., सर्व.] १ शिव, महादेव।

१ विष्णु ।

२ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

४ ग्यारह रुद्रो मे से एक ।

वि [स. सर्व] सब, समस्त ।

रू भे.—सउ. सब, सरव, सरव्व, सव, स्रब, स्रब्व, स्रव ।

सरवइया-स. स्त्री.—यादव वश की एक शाखा ।

रू भे —सरवहिया ।

सरवइयौ-स. पु.—यादवो की सरवइया शाखा का व्यक्ति।

रू भे —सरवहियौ ।

सरवकरणी-स स्त्री.—पुरुषो की बहत्तर कलाओ मे से एक ।

सरवकरता-स. पु. [स. सर्वकर्त्ता] ब्रह्मा । (ना. मा.)

सरवकरमा-स. पु —१ एक सूर्य-वशी राजा का नाम ।

उ०—सनुदासतास पुत्र तप सधेज, तै पुत्र सरवकरमा सतेज ।

—सू. प्र.

२ कल्मापपाद के पुत्र का नाम जो अनरण्य का पिता था ।

सरवकाम-स. पु. [स. सर्वकाम] सूर्यवशीय ऋतुपर्ण के पुत्र एवं सुदास के पिता का नाम ।

सरवकामद-स. पु [स. सर्वकामद] भगवान् विष्णु ।

सरवकामदुका-सं. स्त्री. [स. सर्वकामदुका] कामधेनु ।

सरवकाळ-सं.पु. [स. सर्वकाल] यमराज ।

२ पार्वती ।

सरवपरवत-स पु [स शर्वपर्वत] कैलाश पर्वत ।

सरवपरि-अव्यय. [स सर्वथा] १ सब तरह से ।

२ बिल्कुल ।

३ सम्पूर्णत ।

४ सर्वत्र, सब जगह । (उ र.)

सरवपा-स स्त्री [स सर्वपा] बलि की पत्नी का नाम ।

सरवपितरीअमावस-स स्त्री —आश्विनी मास की अमावस्या ।

सरवपित्रीसराध-स पु यौ —आश्विन मास की अमावस्या को किया जाने वाला श्राद्ध ।

सरवप्रिय-वि [स. सर्वप्रिय] जो सबको प्रिय लगता हो ।

सरवभक्षा, सरवभखा-स. स्त्री. [स. सर्वभक्षा] १ बकरी ।

२ अग्नि, आग ।

सरवभूतहृदय-स पु [स सर्वभूतहृदय] चौसठ भैरवो मे से एक ।

सरवमगळा-स स्त्री [स सर्वमगला] १ चौसठ योगनियो मे से एक योगिनी ।

२ पार्वती ।

३ देखो 'सरवमंगळा' ।

वि.—सब का कल्याण करने वाली ।

सरवमुख-स पु [स. सर्वतोमुखम्] पानी, जल । (ह ना मा.)

रू भे —सरवमुख ।

सरवर-स. पु. [स शर्वर] १ अधकार, अधियारा ।

[स. शर्वर] २ कामदेव, मनोज ।

३ देखो 'सरोवर' (रू भे.) (अ. मा, डि को)

उ०—१ टणको सिव मदिर तठै, निरमळ नीर निराट । भादळपुर सरवर भलो, घणा मनोहर घाट ।—धनदान लाळस

उ०—२ आवड रूप पधारचा अवा, वणि मामड रा बाई । सरवर सोख रोकियौ सूरज, माल कियौ निजभाई ।—मे म

सरवरत—देखो 'सरवरित' (रू. भे)

सरवरस—देखो 'सरवरस' (रू. भे)

सरवरा—देखो 'सरवरा' (रू. भे.)

सरवस—देखो 'सरवस्व' (रू. भे)

सरवरि—१ देखो 'सरवरी' (रू. भे.) (अ मा, ह ना. मा.)

उ०—वधिया तनि सरवरि वेस वधतो, जोवण तणौ तणी जळ जोर । कामणि करग सु वाण काम रा, दोर सु वरुण तणा किरि दोर ।—वेलि

२ देखो 'सरोवर' (रू. भे)

उ०—वनि नयरि घराघरि तरि तरि सरवरि पुरुख नारि नासिका पथि ।—वेलि.

सरवरित—देखो 'सरवरित' (रू. भे.)

सरवरियौ—देखो 'सरोवर' (अल्पा; रू भे)

उ०—डीगी रै सरवरिया थारी पाळ । पाळ चढ़ू नै पाछी उतरू ।

—लो गी.

सरवरी-सं. स्त्री [स. शर्वरी] १ रात्रि, निशा ।

(अ. मा, ह ना. मा)

उ०—दिन रात मग तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी । त्रिय जीत पति गुण परखि चरित सुप, सकस परखि जिम सुंदरी ।

—रा. रू.

२ दोप नामक वसु की पत्नी ।

३ वृहस्पति के साठ सवत्सरो मे से चौतीसवा सवत्सर ।

४ हल्दी ।

५ स्त्री, औरत ।

रू. भे.—सरवरी, सरवरि, सरव्वरी, सव्वरिय, सव्वरी ।

सरवरीकर-स. पु [सं. शर्वरीकर] विष्णु ।

सरवरीदीप, सरवरीदीपक-स. पु [स शर्वरीदीपक] चन्द्रमा, चांद ।

सरवरीपत, सरवरीपति, सरवरीपती-सं. पु. [स. शर्वरीपति] १ शिव, महादेव ।

२ चन्द्रमा, चांद ।

सरवरीस-स. पु [स शर्वरीश] चन्द्रमा, चांद ।

सरवरूप-वि. [स सर्वरूप] सर्वस्वरूप ।

सरवलोकेस-स पु. [स. सर्वलोकेश] १ ब्रह्मा ।

२ शिव ।

३ विष्णु ।

४ कृष्ण ।

सरवलोह-सं. पु [स सर्वलोह] तावा, ताम्र ।

सरववरति-स. स्त्री.— हिंसा आदि का सम्पूर्ण त्याग । (जैन)

सरववलभा, सरववल्लभा-स. स्त्री. [स सर्ववल्लभा] १ वेश्या ।

२ कुलटानारी ।

सरवविद-स. पु. [सं. सर्व+विद्] १ शिव, महादेव ।

२ बुद्धदेव ।

वि —सर्वज्ञ, सब जानने वाला ।

सरवव्यापक-वि. [स सर्वव्यापक] सर्वव्यापी, परब्रह्म ।

सरवव्यापी-स पु [स. सर्वव्यापिन्] १ ईश्वर, परमेश्वर ।

२ शिव, महादेव, शकर ।

३ विष्णु ।

वि.—जो हरेक मे एव हर जगह व्याप्त हो ।

रू. भे.—सव्ववियापी ।

सरवसंहार-स पु. यौ [स सर्व+संहार] काल, मृत्यु ।

सरवस—देखो 'सरवस्व' (रू भे)

उ०—१ दै सरवस आसान न दिल मैं ।—चण्डीदान सादू

उ०—२ ऊजेणी नउ जीजी राजा लेई सरवस राज । इण विर बाप तणा हूँ सारिसु, मनवछित सवि काज ।—हीराणद सूरि

उ०—इम करि ककरण फोडए, ग्रोडए नवसर हार । ग्रंगि निरतर सरवती करवती जिम जल धार।—जयसेखर सूरि

सरवणहार, हारौ (हारी), सरवणियौ—वि०।

सरविग्रोडौ, सरवियोडौ, सरब्योडौ—भू० का० कृ० ।

सरवीजणौ, सरवीजवौ—भाव वा० ।

सरवतापन-स. पु. [स सर्वतापन] १ सूर्य, सूरज ।

२ कामदेव ।

सरवतेज-प. पु [स. सर्वतेजस्] व्युष्ट व पुष्करिणी के पुत्र एव चाक्षुप मनु के पिता का नाम ।

सरवतोभद्र-स. पु [स. सर्वतोभद्र] १ विष्णु के रथ का नाम ।

२ चारो ग्रोर से खुला प्रासाद या भवन जिसकी परिक्रमा की जा जा सकती हो।

३ युद्ध में एक प्रकार का व्यूह ।

४ योग के अनुसार एक ग्रासन या मुद्रा ।

५ चित्रकाव्य का एक प्रकार ।

६ नीम का पेड ।

७ बाँस ।

८ जल के अधिष्ठाता वरुण का निवास स्थान ।

सरवतोमुख-स स्त्री. [स सर्वतोमुख] एक प्रकार की व्यूह रचना ।

स पु.—१ शिव, महादेव ।

२ अग्नि, ग्राग ।

३ जल, पानी ।

४ ब्रह्मा ।

५ स्वर्ग ।

६ ग्राकाश ।

सरवत्र-क्रि वि [सं सर्वत्र] १ हर जगह, सब जगह, हर स्थान पर ।

उ०—वरिखा ज्यौ सरवत्र वरसै । भर चात्रिग मैं न चाहे त्या वगत रै विखै कोई भूख्यौ तिस्यौ न रहै छै ।—वेलि टी.

२ हर समय ।

सरवत्रग-स पु [स. सर्वत्रग] १ वायु, पवन ।

२ एक मनु-पुत्र का नाम ।

३ भीम व बलधारा के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

सरवत्रगामी-स. पु. [स सर्वत्रगामी] वायु, पवन ।

सरवथा-क्रि वि. [स. सर्वथा] १ सब प्रकार से, हर तरह से ।

२ बिलकुल, निरा ।

३ सर्वत्र ।

रू. भे.—सरवथा ।

सरवदमन-स. पु [स सर्वदमन] दुष्यत व शकुन्तला के ससर्ग से उत्पन्न भरत का बचपन का नाम ।

सरवदेवमयरथ-स पु. [स. सर्वदेवमयरथ] विश्वकर्मा द्वारा बनाया गया एक सुवर्णरथ विशेष जिसे त्रिपुरनाश करने के समय शिव ने बनवाया था ।

वि. वि.—इस रथ के दाहिने चक्र मे सूर्य ग्रौर वामचक्र मे चन्द्रमा तथा २७ नक्षत्र विराजते थे । दाहिने पहिये मे १२ ग्ररे थे जिनमे बारहो सूर्य तथा वामचक्र मे १६ ग्ररे थे जिनमे चन्द्रमा की सोलहो कलाएँ थी । छहो ऋतुएँ दोनों पहियो की नेमि, अन्तरिक्ष रथ का अग्र भाग बना ग्रौर मदराचल ने रथ की बैठक का स्थान लिया । ग्रस्ताचल ग्रौर उदयाचल रथ के कूबर, महामेरु अधिष्ठान ग्रौर शाल्मावपवत ग्राश्रय स्थान बने । संवत्सर रथ का वेग, उत्तरायण ग्रौर दक्षिणायन दोनो लोहधारक, मुहूर्त वन्धुर (रस्सा) ग्रौर चौसठ कलाएं कीलें हुई । काष्ठाएँ रथ के नासिकारूप अग्र-भाग, क्षण ग्रक्षदण्ड, निमेष अनुकर्ष (नीचे का काठ) ग्रौर लव ईषादण्ड, हुए । द्युलोक इस रथ का वरूथ (ऊपरी पर्दा), स्वर्ग ग्रौर मोक्ष ध्वजाएँ । ऐरावत की पत्नी ग्रभ्रमु तथा कामधेनु जुए के ग्रन्तिम छोर पर स्थापित की गयी । अव्यक्त (प्रकृति) ईषादण्ड बुद्धि नड्वल, अहकार कोना ग्रौर पचमहाभूत उसका बल । इद्रिया उसे चारो ग्रौर से विभूषित कर रही थी ग्रौर श्रद्धा रथ की चाल थी । वेद मे छहो अग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द-शास्त्र ग्रौर ज्योतिष) उसके भूषण । पुराण, न्याय, मिमासा ग्रौर धर्मशास्त्र उपभूषण हुए । शेषनाग बन्धनरज्जु दिशाएँ ग्रौर उप-दिशाएं रथ के पाद बनी । तीर्थों ने पताका का स्थान लिया ग्रौर समुद्र ग्राच्छादन वस्त्र बने । गंगादि नदिया उपचारिका, सातो वायु सोपान बने, मानस ग्रादि सरोवर बाहरी विषम स्थान हुए । ब्रह्मा सारथि, ऊंकार चाबुक, अकार छत्र, हिमालय धनुष, शेषनाग प्रत्यचा, सरस्वती देवी धनुष की घटा, विष्णु बाण, अग्नि उस बाण की नोक । चारो वेद रथ के चार घोडे, वायु बाजा बजाने वाला ग्रादि-ग्रादि ससार की सब वस्तुए उस रथ मे थी । (मत्स्य १३३ १५-४६)

सरवदेवेस-स. पु.—१ चौसठ भैरवो मे से एक ।

सरवधारी-स. पु. [स. सर्वधारी] १ शिव, महादेव ।

२ साठ संवत्सरो मे बाइसवा संवत्सर ।

सरवनाम-स. पु [सं. सर्वनाम] सज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला व्याकरण का शब्द ।

सरवनास-स. पु. [स. सर्वनाश] विध्वस, सत्यानाश ।

सरवनासक-वि. [स. सर्वनाशक] सर्वनाश करने वाला ।

सरवनासी-वि. [स. सर्वनाशी] विध्वसकारी, सर्वनाश करने वाला ।

सरवनियता-वि. [स. सर्वनियन्तृ] सब को वश मे करने वाला ।

सरवप-स. [स. सर्वपः] १ राई ।

२ सरसो ।

३ एक तोल विशेष ।

४ एक प्रकार का विष विशेष ।

सरवपत्नी-स. स्त्री. [स. शर्वपत्नी] १ लक्ष्मी ।

सरवारण–स स्त्री [स. शरवारण] वह ढाल जिससे तीरो की बौछार रोकी जाती हो।

सरवारतिहरव्रत–स पु. [स सर्वार्तिहरव्रत] फाल्गुन शुक्ला चतुर्दशी को किया जाने वाला व्रत। इस दिन शुद्धमन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक करबद्ध सूर्य के सम्मुख खडा रहा जाता है व सूर्यास्त होने के बाद भगवान का पूजन निराहार रखा जाता है व दूसरे दिन भोजन किया जाता है।

सरवारथ–स पु [सं. सर्वार्थ] १ एक प्रकार का मुहूर्त। (ज्योतिष)

२ पदार्थ व योग के विषय।

सरवारथसिद्धि–स पु [स. सर्वार्थसिद्धि] सबसे उपर का लोक, सर्वोच्च देवस्थान। (जैन)

उ०—ध्यानमाहि केवल ध्यान, विमानमाहि सरवारथसिद्धि रिद्धि माहि मालिभद्रनी रिद्धि, गुरु आमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन ... . ..।—व स

२ गौतम बुद्ध।

३ समस्त अर्थों की सिद्धि।

४ तत्वार्थ सूत्र की टीका का नाम।

सरवारा, सरवारी–स. स्त्री.—हरड़ै, हरीतकी।

(अ मा; ना मा, ह. ना. मा.)

सरवालि–स पु —बाण, तीर।

सरवाळै, सरवानै–क्रि वि —अत मे, आखिर मे।

सरवावसु–स पु [स सर्वावसु] सूर्य की एक किरण का नाम।

सरविद्या–स स्त्री.—धनुर्विद्या।

सरवियोडौ–भू का कृ.—१ टपका हुआ, चूवा हुआ. २ तेज गति मे दौडा हुआ, भागा हुआ. ३ शाप दिया हुआ।

(स्त्री सरवियोडी)

सरविस, सरवीस–स. स्त्री [अ] १ नौकरी, सेवा।

२ मरम्मत।

सरवेत–वि. [स सर्व] १ सब, समस्त।

२ सर्वस्व।

सरवेस, सरवेस्वर–स. पु [स. सर्वेश, सर्वेश्वर] १ ब्रह्मा। (ना. मा.)

२ ईश्वर।

३ शिव, महादेव।

४ विष्णु।

५ जो सबका स्वामी हो।

उ०—सूरज तेज पुज सरवेस्वर, जोति सरुप नेत्र जगदीस्वर। जग रखवाळ जगत चौ जामी, सुर नर इस्ट व्रस्ट चौ सामी।—रा रू

रू भे.—सरवेस, सरवेसर, सरवेस्वर।

सरवे-सरवा–वि. [स. सर्वेसर्वा] जिसे सब कुछ करने का अधिकार हो।

सरवोडौ–सं पु —आवाज वापस देने वाला।

उ०—पुड़ी पुराणी नाळ, खारियै पाणी खोलै। व्रजै वेडियौ बब, सुणै सरवोडौ बोलै।—दसदेव

सरवोपरि–वि [स. सर्वोपरि] सर्वोच्च। (उ. र)

सरवो–सं. पु. [स स्रुवा] १ लकडी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी करछी जिसे हवनादि मे घी की आहुती देने के लिए प्रयोग किया जाता है।

२ मटकी से पानी लेने के लिए पीतल, तावे आदि का बना पात्र।

वि [स्त्री सरवी] शीघ्र सुनने वाला।

सरव्य–स पु [स. शरव्य] १ लक्ष्य, निशाना।

२ तीरदाज।

सरव्वर—देखो 'सरोवर' (रू भे.)

सरव्वरी—देखो 'सरवरी' (रू. भे)

उ०—ढैचाळा सिर ढल्ल ढळक्कै ढूहरी। खेहा मज्झि दुडिद क चद सरव्वरी।—गु. रू व

सरस–सं पु [स] १ तालाव, जलाशय।

२ सिरस का वृक्ष विशेष।

[रा.] ३ रीति, रस्म।

४ छप्पय छंद का ३५ वा भेद जिसमे ३६ गुरु ८० लघु कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएं होती है।

५ एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश· तीन सगण एव लघु गुरु सहित ११ वर्ण होते हैं।

६ एक मात्रिक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ होती है एव सात मात्राओ पर विश्राम होता है। इसे मोहणी भी कहते हैं।

वि.—१ रसपूर्ण, रसीला।

उ०—परढीसि हवि पाचमा, अग-तणउ अधिकार। सरस अनइ सरला वचन सारद आपै सार।—मा का प्र.

२ समान, तुल्य।

उ०—१ सिध सरस रायसिंघ रै, रहियौ भूझै राम। आडौ सर-वहियौ अछै, कळह तणौ धरि कांम।—हा. झा.

उ०—२ इद्र हू सरस राजस अमास, प्रिय जूथ सात सै मुर पचास।—सू प्र

उ०—३ श्रीकम सरस लगावण ताळी, एकण ध्यान रहउ पग एक। रहण इमा जोगेन्द्र रहता, आछी जुग वउळिया अनेक।

—महादेव पारवती री वेलि

३ जोशपूर्ण, जोशीला।

उ०—१ आया वसिया आपणी, ग्रीखम थई वतीत। गुणचाळौ लागौ वरस, चाळौ सरस सजीत।—रा रू.

उ०—२ सरस आप खग, तप सरसाणं। 'मुदफर' दळ भाग मुगलाणं।—सू प्र.

४ प्रीति सहित, प्रेमपूर्ण।

उ०—बोल नवाब सरस द्रढ वधै, सुत पितु हूत महा छळ सधै।

२ देखो 'सरवसहा' (रू भे.) (ना मा)
सरवसक्तिमांन–स पु. [स सर्वशक्तिमान] १ ईश्वर।
वि.—२ जिसमे सब कुछ करने की सामर्थ्य हो।
सरवसह, सरवसहा–स स्त्री. [स सर्वसह, सर्वसहा] भूमि, धरा। (डि. ना मा)
रू. भे.—सरवसहा।
सरवसाक्षी, सरवसाखी–स पु [स सर्वसाक्षिन्] १ ईश्वर, परमात्मा।
२ अग्नि, आग।
३ वायु, पवन, हवा।
सरवसाधन–स पु. [सं सर्वसाधन] १ सोना, स्वर्ण।
२ शिव, महादेव।
३ धन-दौलत।
सरवसारग–स पु. [स सर्वसारग] धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग का नाम।
सरवसिद्धा–स स्त्री [स सर्वसिद्धा] ये तीन तिथिया—चतुर्थी, नवमी, और चतुर्दशी। मतातर से ये तीन तिथिया भी मानी जाती है—तृतीया, नवमी और त्रयोदशी।
सरवसिद्धि–स. स्त्री [स सर्वसिद्धि] सब इच्छाओ एव कार्यों के पूरा होने की अवस्था या भाव।
सरवसेन–स पु [स सर्वसेन] ब्रह्मदत्त राजा का पुत्र एव भरत-पत्नी सुनदा का पिता एक काशीनरेश।
सरवसौग्य–स पु. [स. सर्वसौज्ञ] ग्यारह रुद्रो मे से एक।
सरवस्री–स पु. [स. सर्वश्री] एक आदरसूचक विशेषण। जब अनेक व्यक्तियो का नामोल्लेख किया जाए तब सब के आगे श्री न लगा कर पहले व्यक्ति के आगे यह लगा दिया जाता है।
सरवस्रेस्ठ–वि [स. सर्वश्रेष्ठ] सबमे उत्तम।
सरवस्व–स पु [स सर्वस्व] १ सब कुछ।
२ किसी की दृष्टि मे वह सारी सम्पत्ति जिसका वह स्वामी हो।
ज्यू—लडके री पढाई मे उण सर्वस्व गँवा दियो।
३ अमूल्य तथा महत्वपूर्ण पदार्थ जैसे—ओही लडको बुढिया रो सर्वस्व हो।
रू भे.—सरवस, सरवस्व, सरवस।
सरवस्वी–स. पु. [स. सर्वस्वी] (स्त्री सर्विस्वनी) गोप माता-पिता की संतान।
सरवहर–वि. [स. सर्वहर] सर्वस्व हर लेने वाला।
स. पु.—१ शिव, महादेव।
२ अग्नि, आग।
३ काल, मृत्यु।
४ धर्मराज, यमराज
सरवहार–स पु.—एक प्रकार का आभूषण विशेष।
उ०—हस्तकलिका पादसकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक सरवहार मध्यनायक कृष्णनायक नीलनायक........।—व. स.
सरवहिया—देखो 'सरवेइया' (रू. भे.)
सरवहियौ—देखो 'सरवेइयौ' (रू भे)
सरवांग–स पु. [स सर्वांग] १ सम्पूर्ण शरीर, सब अवयव।
२ शिव, महादेव।
सरवांगासन–सं पु. [स. सर्वाङ्गासन] योग के चौरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन जिसमे सर्वप्रथम शवासन की तरह सोना चाहिए, फिर दोनो हाथो की कोहनियो को भूमि पर टिका कर हाथो के पजो के आधार से पीठ को ऊपर करना और दोनो पैरो को आकाश की तरफ सीधा ऊँचा करके स्कध और गरदन पर बोझ डाला जाता है।
हलासन नामक आसन इसका एक अवातर भेद है।
सरवांगीण–वि [स सर्वांगीण] १ सम्पूर्ण, पूरा।
२ जो सभी अगो से युक्त हो।
३ सभी अगो से सम्बन्ध रखने या उनमें व्याप्त रहने वाला।
सरवाणी–स पु [सं शर+वाणि] १ तीर का सिरा।
२ धनुर्धर, तीरदाज।
३ तीर बनाने वाला।
४ पैदल सिपाही।
स स्त्री. [स. शर्वाणी] ५ पार्वती उमा। (अ मा; ह. ना मा)
६ दुर्गा, देवी।
रू भे—सरवाणी।
सरवाक–स. पु. [स शरावक] १ प्याला।
२ दीपक।
सरवाक्ष–स पु [स शर्वाक्ष] १ रुद्राक्ष। २ शिव।
सरवातीत–वि [स. सर्व+अतीत] सबसे परे, बाहर, दूर।
उ०—कहा ब्रह्म कहा ईस है, कहा जीव ससार। सरवातीत निरवाण मे, निरमाया सुखसार।—स्रीसुखरामजी महाराज
सरवात्मा–स. पु [स सर्वात्मा] १ शिव का एक नाम।
२ सब की आत्मा।
३ ईश्वर, परमात्मा।
सरवाधिक–वि. [स सर्वाधिक] सबसे अधिक।
सरवाधिकार–स पु. [सं सर्वाधिकार] १ सब कुछ करने का अधिकार।
२ समस्त अधिकार।
सरवाधिकारी–वि. [स सर्वाधिकारी] १ जिसे सब कुछ करने का अधिकार हो।
२ सर्वाधिकार रखने वाला।
सरवानुभूति–स. पु —भूतकाल के छठे तीर्थंकर का नाम। (जैन)
सरवानुवाद–स. पु. [स. सर्वानुवाद] सम्पूर्ण अनुवाद।
उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद अरथानुवाद सरवानुवाद पचावयवि दसावयवि वादीसिउ वाद लिइ।—व. स

उ०—६ देवी सप्तमी अष्टमी नोम नूजा, देवी चोथ चोदस पूनम पूजा। देवी सरसती लछमी महाकाळी, देवी कन्त विस्णु ब्रह्मा कमाळी।—देवि

सरसतीसयन–स. पु.—आश्विन माह के शुरू मे मूल नक्षत्र स्रवण नक्षत्र के पर्यन्त की अवधि, समय।

सरसयण, सरसयन–स स्त्री. [स. शरनयन] भीष्म द्वारा कुरुक्षेत्र मे शरशय्या पर लेटने की क्रिया।

सरसया, सरसय्या—देखो 'सरसज्या' (रू. भे.)

सरसर, सरसराट–स पु [अनु] १ वायु के मदगति से चलने पर उत्पन्न ध्वनि।

२ सप छिपकली आदि जतुओ के चलन से उत्पन्न ध्वनि।

क्रि. वि.—धीरे-धीरे।

उ०—छिण छिण सोहै छाटडल्या री छोळ, सूरज किरणां सरसर उतरै।—लो. गी.

रू. भे.—सरसराहट।

सरसराणौ, सरसराबौ–क्रि. अ —१ सर-सर की ध्वनि होना।

२ सनसनाना।

सरसराहट—देखो 'सरसराट' (रू. भे.)

सरसरी–क्रि. वि [फा. सरासरी] १ जल्दी।

२ साधारण ढग से, मोटे तौर पर।

स. स्त्री. [स सुरसरी] गगा।

सरसव, सरसवि—देखो 'सरसू' (रू. भे.)

उ०—१ किहा मुत्ताहल गुज किहा, किहा सरसव किहा मेर। माधव जोता मानिनी, महीयति अंतु फेर।—मा. का प्र.

उ०—२ फल मैं पडियौ फेर, मेर सरसव जिम मोटौ। स्वाति विंदु सीप मैं, आई पडचौ अण चोटौ।—ध व. ग्र

सरसवणौ, सरसवबौ—देखो 'सरसणौ, सरसबौ' (रू भे)

उ०—जोरावर अरजुण जिसो, सत्रा उर उर साल। सुपह प्रथू ज्यों सरसवै, इंतजाम इक़बाल।—सिववक्स पाल्हावत

सरसवणहार, हारौ (हारी), सरसवणियौ—वि०।

सरसविग्रोडौ, सररवियोडौ, सरसव्योडौ—भू० का० कृ०।

सरसवीजणौ, सरसवीजबौ—भाव वा०।

सरसवांन–स. पु.—समुद्र, सागर। (अ मा; ह ना. मा.)

सरसवियोडौ—देखो 'सरसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सरसवियोडी)

सरसवेल–स. पु [सं. सर्षपतैलम्] सरसो का तेल। (उ. र)

सरसांणौ—देखो 'सरसावणौ' (रू भे)

उ०—मगमें मिळै सग सग डोलै, वचन रचै सरसाणा रे। हिय हरसै परसै पद पकज, हरि रै हाथ विकाणा रे।—गी. रा

सरसा–वि.—१ स्वादिष्ट, रसपूर्ण।

उ०—पनरह सत पकवान, पाक अडतीस प्रमाणै। सरसा साग बतीस, जिया सख्या बहु जाणै।—सू. प्र.

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—सिवदान 'अजन' सामतसीह इळ भए भूप सरसा अवीह।
—रा रू.

सरसाणौ, सरसाबौ–क्रि अ.—१ हराभरा होना।

उ०—पवन फिरै छूटै परवाई, ऊठै घटा घटा चढि आई। घर घोळा गिरमेर घपाई, मगळा नाज हुवै सरसाई।—वर्षा विज्ञान

२ शोभित होना।

उ०—१ अस्त्र गुलाब अबीर उडायौ, सस्त्र पिचरका छिन्न सरसायौ। वीर नाद सोइ चग बजायौ, रग फाग मम जग रचायौ।
—ऊ. का.

उ०—२ दुनिया दातारा जूझारा देवै, लिपळा लोकां नै लेवै कुण लेवै। दत्तब करतब मैं दोढा दरसाता, सारी प्रथ्वी मिर मोटा सरसाता।—ऊ का

३ मालूम होना, प्रतीत होना।

उ०—साम् सियाळो साकी सरसायौ, वाकी बचिया नी डाकी दरसायौ।—ऊ. का.

४ खुश होना, प्रफुल्लित होना।

उ०—१ तहक नीसाण गिरवाण हरखाण तन, चितां सरसांण रभगाण चाळै। निडर रिखराण गणपाण बीणा नचै, भाण रथ-तांण घमसाण भाळै।—र रू.

उ०—२ निज नारचा अनुकूल नर, सदा रहै सरसाय। इण पण-घट पर आविया, ज्यारी पणघट जाय।—सिववक्स पाल्हावत

५ बढना, फैलना।

उ०—सूजावेग उतारौ पायौ, इळ अजमेर मफीवा आयौ। सेंताळै चाळौ सरसांणौ, सत्रा अमावौ हियै सिवाणौ —रा. रू

६ होना।

उ०—१ सुर झालर घटा सरसाया, महजीता सुरवाग मिटाया। सिव हरि सकत सेव सरसाई। मीर पीर त्या पूज मिटाई।
—रा. रू

उ०—३ दारा दुरद्दिन दुति दुगणित दरसाई, सावण आवण मैं गावण सरसाई। निकसी तीजणिया बणिया घडन्हाळी, उपमा घड टाळी बरछी छडवाळी।—ऊ का

क्रि स —७ फैलाना, बढाना।

उ०—१ अंत असाढ दयानद आयौ, छोणी ग्यान घुमड घण छायौ। सावण हरि कर सुख सरसायौ, भादो अम्म्रत झड बर-सायौ।—ऊ का

उ०—२ अग लाजती उमगती, चलती चसम चुराय। नेह भरी यू निरखती, रही रग सरसाय।—अग्यात

८ दिखाना, प्रकट करना, बतलाना।

उ०—पख रवि तेज अरक सम प्रामै, नर नखत्र अनमी त्या नामै।

—रा. रू.

५ पल्लवित, हरा-भरा।

उ०—पतळी केळू कामडी है, सरस सुवाणी डाळिया। छाट छोल लँ'रा लपेटा, करड पटीली बाळिया।—दसदेव

६ किसी की तुलना मे अपेक्षाकृत अच्छा, बढकर।

उ०—१ ऊमसै कमध लागै उरसि, राजा चढियौ वीररस। उण वार लोह मुहगो हुवौ, सोना ही हूँता सरस।—सू प्र

उ०—२ असिवर कै तेज पुज 'मधकर' कै पोतै, प्राण तै सरस पायौ अवसाण जोतै।—रा रू.

७ सुदर, मनोहर।

उ०—पतिव्रता नेह अपार, सझि सोल सरस सिंगार। वह कळा लछण बतीस, सझि आभरण खटतीस।—सू. प्र

८ गीला, सजल।

९ स्वादिष्ट, जायकेदार।

उ०—१ बीडा दीजइ वलि वलि, सुविमल सरस कपूरि। करइ जि आलस तै सवि, केसवि कीजइ दूरि।—जयसेखर सूरि

उ०—२ वडबोरा रा बोर, जूनोडा जामफळ है। छोटकिया छिव-जोर, सरस ज्यू इमीफळ है।—दसदेव

९ उत्तम, पवित्र।

उ०—सरस पुराणा बीच सुणी थी, किसन सुदामा तणी कथ। दतदेतै साख्यात दिखावी, सौ विध नवसहसा समथ।—बा. दा.

१० ताजा।

११ मधुर, मीठा।

उ०—धोळी सुघड बत्तीसी, जाणै पळकता मोती ई खराद उत-रया। सरस सुहाणी बोली, जाणै गळा सू बोला रै वदळै फूल निसर निसर नै विकसै।—फुलवाडी

१२ भावपूर्ण।

१३ श्रेष्ठ, उत्कृष्ट।

१४ गुणदायक, लाभप्रद।

उ०—धनि ओह गुर साचै गुर कू धनि, जीणि बूटी सरस वताई रे। वा बूटी जा सता साधी, अगि भई सितळाई रे।—वील्होजी

१५ आनन्दपूर्वक, प्रेमसहित।

उ०—हुआ धमळमगळ हरिख, वधिया नेह नवल्ल। सूर 'रतन' सतिआ सरस, मिळिया जाइ महल्ल।—र. वचनिका

१६ आनन्ददायक।

उ०—१ चोथ चिहूँ दिस ऊनम्यौ, मेह रह्यौ झड लाय। प्रीतम प्यारी रग रमै, सेझा सरस बणाय।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ मरवर खेलै कामणी, बादळ खेलै बीज। प्यारी खेली पीव सग, सरस सावण री तीज।—कुवरसी साखला री वारता

१७ बहुत अधिक, अत्यधिक।

उ०—१ ताव अलाजा तरस, सरम रण चाव सलाजा। बणै न राजा बहिर, गहिर तोपा घण गाजा।—व. भा.

उ०—२ लखि वेणी नागणि लजी, धुकि धर माहि धसंत। सखी अग सोभा सरस, विलखी देख वसत।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ सात्यु सरस सनेह सूं, मोहल बुलाई पीव। कर पकडै सेझा लई, कापण लागौ जीव।—कुवरसी साखला री वारता

१८ देखो 'सरस्वती' (रू भे.)

उ०—रमता जगदीसर तणौ रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महे। सरसै रुखमणी तणी सहचरी, कहिया थू मैं तेम कहे।

—वेलि

रू भे —सरस्स।

सरसइ, सरसई—देखो 'सरस्वती' (रू भे)

उ०—पणमिय पासजिणद पय, अनु सरसइ समरेवी। थूलिभद्द मुणिवइ भणिसु, फागुवधि गुण केवी।—जिनपद्मसूरि

सरसउ—देखो 'सरस्वती' (रू भे) (उ. र)

सरसज्या-सं स्त्री [सं. शर+शय्या] तीरो की शय्या, सेज।

रू भे.—सरसया, सरसय्या, सरसेज्या, सरसैजा।

सरसणौ, सरसबौ-क्रि अ—१ होना।

२ हराभरा होना।

३ रसपूर्ण होना, रसयुक्त होना।

४ प्रवाहित होना।

५ बरसना।

६ आनन्दित होना, प्रफुल्लित होना।

७ गुणदायक होना, लाभदायक होना।

उ०—पता समझ हिम्मत पखै, जस कह थकै जीह। इधकै सू सरसै इधक, दरसै दीहो दीह।—जेतदान बारहठ

सरसणहार, हारौ (हारी), सरसणियौ—वि०।

सरसिओडौ, सरसियोडौ, सरस्योडौ—भू० का० कृ०।

सरसीजणौ, सरसीजबौ—भाव वा०।

सरसवणौ, सरसववौ—रू० भे०।

सरसत, सरसति, सरसती, सरसत्ति, सरसत्ती—देखो 'सरस्वती'

(रू भे) (अ. मा; उ. र.)

उ०—१ आज दान ऊमणौ, आज सरसत दुचत्ती। आज तजै, अहवात, हार काकण कीरत्ती।—पहाडखा आढौ

उ०—२ हिवडौ साचै ढाळियौ, सायर उदर गभीर। केहरि लकी कामणी, मन की सरसत नीर।—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ कोप करण नू काळका, सरसत करण सलाह। पूरण अन अनपूरणा, भाखै लोक भलाह।—बा. दा.

उ०—४ परमेसर प्रणवि प्रणवि सरसति पुणि, सदगुरु प्रणवि त्रणे ततसार।—वेलि

उ०—५ सरसति जमना गग त्रवेणी, अहुवै उलटी वदै त्रिवेणी।

—सू प्र.

उ०—१ वणि काठळ वेख मतंग वहै, लगी सग पसग मलग लहै। तन चचळ चाल तिका तरसी, सुख पालक आड तरै सरसी।
—मे. म.

उ०—२ दवि दाझति वनलता, हिमदग्ध जिसी कमलिनी सूकती। निसी सरसी, यूथ भ्रस्ट जिसी हरणी........।—व. स

उ०—३ वेड खेलइ सरसी तलि, सीतलि लाखारामि। नीरगु नेमि न भीजइ खीजइ नारी नामि।—जयसेखर सूरि

उ०—४ फल पुण तर तर त्रोडए मोडइ ए तरुवर डालि। उज्जवल निरमल सरसीअ, सरसीय लेयइ वाल।—जयसेखर सूरि

वि.—समान, बराबर।

उ०—१ अरजुन सरसी भेडि न कीजइ, नियकुल मानि गरवु वहीजइ। इम आपणपु घणु वखाण, वोलिन नीयकुल तणु प्रमाणु।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ भोजनु आणइ मारगि वहइ करइ भगति सरसी दुक्ख सहइ। नवउ अवासु करीजइ रमइ, पचह पउव सरसी भमइ।
—सालिभद्र सूरि

सरसीय–वि —१ समान, सदृश्य।

उ०—अम्हि किम ए जाणिसुं तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए। पडव ए लियइ वणवासु सरसीय छट्ठीय द्रूपदीय।—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'सरसिज' (रू भे)

उ०—फल पुण तर तर त्रोडए मोडइ ए तरुवर डालि। उज्जवल निरमल सरसीअ, सरसीय लेयइ वाल।—जयसेखर सूरि

सरसीरह, सरसीरुह–स पु [स सरसीरुह] १ कमल।
(अ मा; डिं को; ह ना मा)

२ कर्नाटकी पद्धति का राग। (संगीत)

सरसुति, सरसुती, सरसुत्ति, सरसुत्ती—देखो 'सरस्वती' (रू भे)
(अ. मा)

उ०—१ मत्र वमीकर मानजै, वाणी रस वरसत। सरसुति वीणा प्रगट सुर, कोयल लाज करत। वा. दा

उ०—२ मदाकण-भाण-नदा वह मद, बहै सरसुति प्रवाह वलद।
—मे म

सरसू–स स्त्री [सं. सर्षप] १ एक प्रकार का छोटा गोल बीजों वाला तिलहन। (डिं. को)

रू. भे —सरसव, सरसवि, सरसिव, सरसौं, सरस्यूं, सरिसव, सिरसू, सिरस्यूं।

सरसूयण—देखो 'सूंथण' (नं २)

उ०—सरसूयण पगा मोजा हथयार सरव वाधा छै। माथै घूघी टोप छै।—सातळ जोधावत री वात

सरसेज्या, सरसैंजा—देखो 'सरसज्या' (रू भे)

उ०—प्रथी तणा सुणज्यो रजपुतां, जुध रै रथ धोरी होय जूतो। आस्रम चौथो परव अछूतो, सरसैंजा भीसम जिम सूतो।
—वरजू वाई

सरसेरौ–वि —अधिक, ज्यादा।

उ०—१ सेर हजारा जोडै सेरौ, सिरदारौ ति कोपि सरसेरौ। जुध वधव सूरजमल जोडै, अचळ जिही वळ लाखा ओडै।
—रा. रू.

उ०—२ सुण पतसाह कोप सरसेरौ, अजन मिलण चढियौ आवेरौ। हूत नगीनै अजमल हालै, चतुरगी सेन्या सग चालै।
—रा रू

सरसै–वि.—समान, तुल्य, सदृश्य।

उ०—हाकी भड ऊठाडइ आगला ति पाडइ, सरसै जपत ढाडइ राउत रुसाडइ। वेटउ रुहु करंतउ जाणी, तात्क्षणि आवी गगा-राणी।—सालिभद्र सूरि

सरसैयौ–स पु —ऊट।

सरसौं—देखो 'सरसू' (रू. भे)

सरसो–वि [स. सदृश] (स्त्री. सरसी) समान; तुल्य।

सरस्तव–सं. पु. [स शरस्तव] एक प्राचीन तीर्थस्थान का नाम।

सरस्यू—देखो 'सरसूं' (रू भे.)

सरस्वत–वि [सं सरस्वत्] १ रसदार, रसीला।

२ सुन्दर, मनोहर।

३ भावपूर्ण।

स पु —१ समुद्र, सागर।

२ झील।

३ नदी सरिता।

४ वायु पवन।

सरस्वती–स स्त्री [स] १ सत्वगुणो से सम्पन्न, वाणी एव ज्ञान की अधिष्ठात्री, एक देवी जो ब्रह्मा के मुह से निकली थी।
(ह ना मा)

उ०—१ उर भरम छेर लैणौ अगम, असकत उद्यम उक्कती। कर भाव पार गुण सर करण, साचौ नाम सरस्वती।—रा रू

उ०—२ '' '''' विस्वकरम्मा स्रगार करावइं, तेंतीस कोडि देव अस्थानिउ लगइ, गगा यमुना चमर ढालइ, तुंबर गाइ, नारद नाद करइ, सरस्वती वीणा वाइ, रभा नाचइ, ब्रहस्पति पुस्तक वाचइ, इद्र माली, ब्रह्मा पुरोहित''' '''''।—व. स.

उ०—३ सालि किसिउ खाडीइ, चोल किसिउ रगीइ, गगा किमिउ पवित्रीइ, मयूर किसिउ चित्रीइ, सरस्वती किसिउ पाढीइ, अम्रत किसिउ कढीइ स किसिउ धउलीइ ''''''''।—व. स.

उ०—४ सारदा सरस्वती वरणवू पणि कसी एक छइ जै सारदा सरस्वती? कमल भू ब्रह्मा तणी वेटी, कमलमुखी, राजहसवाहिनी, अनेक वेद वेदाक सास्त्र धरती, आयुरवेद धनुरवेद सामवेद अथरविणवेद विद्या अलकार छद जोतिकसास्त्र,''''''''।—व. स

पर्याय०—उजळ, कसमीरी, गिरा, गी, गौ, धवळागिरी, निधवाणी,

सनि गुण श्राव तणी सरसाई, थिति वस रहै लहै सरसाई।
—रा. रू.

६ वजाना, ध्वनि करना।

उ०—सुर झालर घटा सरसाया, महजीता सुरबाग मिटाया। सिव हरि सकत सेव सरसाई, मीर पीर त्या पुज मिटाई।—रा रू.

सरसाणहार, हारौ (हारी), सरसाणियौ—वि०।

सरसायोडौ—भू० का० कृ०।

सरसाईजणौ सरसाईजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सरसावणौ, सरसाववौ—रू० भे०।

सरसायन-स पु—भक्तिरस।

सरसायोडौ-भू. का. कृ.—१ हरा-भरा हुवा हुश्रा २ शोभित हुवा हुश्रा ३ मालुम हुवा हुश्रा, प्रतीत हुवा हुश्रा ४. बढा हुश्रा, फैला हुश्रा ५ हुवा हुश्रा. ६ खुश हुवा हुश्रा, प्रफुल्लित हुवा हुश्रा. ७ फैलाया हुश्रा, बढाया हुश्रा ८ दिखाया हुश्रा ९ वजाया हुश्रा, ध्वनि किया हुश्रा।

(स्त्री सरसायोडी)

सरसाळ-वि—१ महत्वपूर्ण, महत्व की।

उ०—तात हूत इधकी परतिग्या, साभळ वात कहू सरसाळ। तन मन धार भाल दसरथ तण, मैं गळ राळ दई वरमाळ।—र. रू.

२ फायदे की, फायदेमन्द, लाभप्रद।

३ रसपूर्ण, रसयुक्त।

४ श्रानन्ददायक।

सरसावणौ-वि (स्त्री. सरसावणी) १ रसिक, रसीला।

उ०—सरव त्रिया सुहामणी, सरसावणी सदाह। है रसिका दिलरी हरण, वा क्यूही श्रौर श्रदाह।—र. हमीर

२ प्रकटित।

३ शोभित।

४ श्रानन्दा यव।

५ मधुर, मीठा।

६ प्रकट करने वाला।

उ०—श्राय सावणी तीज, श्रव सरसावणी सनेह। ऊठि घटा उतराध सू, छूटि घटा श्रणछेह।—सिववक्स पाल्हावत

रू. भे—सरसाणौ।

सरसावणौ, सरसाववौ—देखो 'सरसाणौ, सरसावौ' रू. भे)

उ०—१ श्रवसाण श्राए छत्री पोरस सरसावै, यह लोक जीप परलोक मोख पावै।—रा रू

उ०—२ श्रभरी थावै श्राथ सूं, चित सरसावै चाव। जावै दाता द्वार जै, पावै पाच पसाव।—वा. दा.

उ०—३ महावीर महासुर तेज सरसावै. मडण ज्या जोस वस मडण कहावै।—रा रू.

उ०—४ सिखर गिरा मोरा सबद नाच सरसाविया, पाविया जळ तरा त्रखा पाली। श्राविया उमड घणस्याम बीती श्रवध, श्राविया नही घणस्याम श्राली।—वा दा.

उ०—५ इम लिखे साह दिस ऊतरा, सुणि भूपति सरसाविया। 'श्रमरेस' मिळण कागद दिया, उदियापुर दिस श्राविया।—सू. प्र.

उ०—६ रामानुज रिद गुपत रखावै, सिडियौ नीर वास सरसावै।
—ऊ का.

उ०—७ श्रापणौ श्रापणौ जोस सरसावै, पातसाह की निजर सेर सै श्रावै।—रा. रू.

सरसावणहार, हारौ (हारी), सरसावणियौ—वि०।

सरसाविश्रोडौ सरसावियोडौ, सरसाव्योडौ—भू० का० कृ०।

सरसावीजणौ, सरसावीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सरसावियोडौ—देखो 'सरसायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सरसावियोडी)

सरसि-वि—मीठा, मधुर, रसपूर्ण।

उ०—खडग रिखभ गधार, मद्धि पंचहम निखादह। सरसि कठ सुर-सपत, गीत सगीत श्रलापह।—गु रू व.

२ सुसज्जित।

उ०—जुध सराजाम सझि सझि व्रजागि। लोह मैं सरसि भुज उरसि लाग।—सू प्र.

सरसिज-वि—१ ललाई लिए श्वेत रंग का।

२ जो ताल मे होता हो।

३ काला, श्याम। * (डि को)

४ रक्त, लाल। * (डि को)

स. पु—कमल।

रू भे.—सरसीय, सिरजिस।

सरसिजजोनि-स पु यौ [स सरसिजयोनि] कमल से उत्पन्न होने वाले व्रह्मा।

रू भे.—सरसिजयोनि।

सरसिजयोनि—देखो 'सरसिजजोनि' (रू भे)

सरसियोडौ-भू का कृ—१ हुवा हुश्रा. २ हरा भरा हुवा हुश्रा ३ रसपूर्ण हुवा हुश्रा. ४ प्रवाहित हुवा हुश्रा ५ वरसा हुश्रा. ६ श्रानन्दित हुवा हुश्रा, प्रफुल्लित हुवा हुश्रा. ७ गुणदायक हुवा हुश्रा, लाभदायक हुवा हुश्रा।

(स्त्री सरसियोडी)

सरसिव—देखो 'सरसू' (रू भे.)

उ०—१ जेवडउ श्रतर नेऊ श्रनइ सरसिव, जेवडउ श्रतरयाम श्रनइ परिभव।—व. स

उ०—२ किहा सरसिव किहा मेरुगिरि, किहा खर किहा केकाण। किहा जादर, किहा खासरू, किहा मूरख किहा जाण।
—हीराणद सूरि

सरसी, सरसीऊ-स. स्त्री. [स. सरसी] तालाव, जलाशय।
(श्र. मा; डि. को; ह ना मा.)

उ०—कथ इम सासत्र कहै, उलट लहिजै पूरव दत। आज दोय अधिकार, मध्धि सरस्वति द्वारामति।—सू. प्र

९ गो, गाय।

१० स्वामी शकर के शिष्य पृथ्वीधर के अनुयायी दशमानी सन्यासियो की एक शाखा।

११ उक्त शाखा का कोई व्यक्ति।

१२ चौसठ योगनियो के अन्तर्गत चालीसवी योगिनी।

१३ हठयोग मे सुपुम्ना नाडी।

१४ सोमलता।

१५ दुर्गादेवी का नाम।

१६ नदी, सरिता।

१७ उत्तमा स्त्री।

१८ वौद्धो की एक देवी।

१९ पुरुवशीय अतीनार राजा की पत्नी का नाम।

२० दधीचि ऋपि की पत्नी व सारस्वत की माता का नाम।

२१ रन्ति राजा की पत्नी।

२२ आदित्य की पत्नी व दनु एव दिति की माता का नाम।

२३ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत)

२४ एक प्रकार की सकर रागिनी विशेप। (सगीत)

रू भे.—सरस, सरसइ, सरसत, सरसति, सरसती, सरसत्त, सरसत्ति, सरसत्ती, सरसुत, सरसुति, सरसुती, सरसुत्त, सरसुत्ति, सरसुत्ती, सरस्वत्या, सुरसत, सुरसति, सुरसती, सुरसत्त, सुरसत्ति, सुरसत्ती।

सरस्वतीकठाभरण–स. पु [स] १ ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक।

२ वस्तुपाल का एक विरुद।

३ एक प्रसिद्ध प्राचीन पाठशाला जो धारनरेश भोज द्वारा स्थापित की हुई थी।

सरस्वतीपाचम—देखो 'वसतपचमी'।

सरस्वतीपूजा–स. स्त्री [स.] १ प्राय: वसतपचमी के दिन मनाया जाने वाला उत्सव। कुछ लोग इसे आश्विन मास में मनाते हैं।

२ सरस्वती-पूजन का दिन, वसतपचमी।

३ सरस्वती-पूजन।

सरस्वतीसंगम–सं पु [सं] एक पुण्य तीर्थ-स्यान।

वि वि—यहाँ ब्रह्मा आदि देवता, महर्पि व पुण्यात्मा-भक्त भगवान केशव की पूजा करते हैं। चैत्र शुक्ला चतुर्दशी को यहाँ के लिए की जाने वाली यात्रा विशेप महत्व की मानी जाती है।

सरस्वतीसयनसपतमी, सरस्वतीसयनसप्तमी–स स्त्री यौ [स सरस्वती-शयनसप्तमी] आश्विन शुक्ला ७ से ९ तक का समय जिसमे सरस्वती का शयनव्रत करते हैं।

वि वि—आश्विन शुक्ला सप्तमी को पुस्तक आदि का पूजन कर सरस्वती को शयन कराते हैं तथा इसी दिन से पठन-पाठन वद रखते है तथा फिर दशमी को पूजन करते हैं।

सरस्वतीसागरसगम–स. पु यौ [स.] एक तीर्थ-स्थल।

वि वि—यहाँ सरस्वती सागर सगम हुआ था। यही पर रह कर चन्द्रमा ने महादेवजी की आराधना करके अपनी खोई हुई काति पुन प्राप्त की थी।

सरस्वत्या—देखो 'सरस्वती' (रू. भे)

सरस्स—देखो 'सरस' (रू भे)

उ०—१ सजी तूटतै वूव ए ही सरस्स, पहाडा सुणी घोर वद्दी परस्स।—सू प्र.

उ०—२ 'इद्रभाण' 'मुकनेस' रो, ग्रह केवाण तरस्स। आसमान छिव आखियो, भाई, 'भाण' सरस्स।—रा. रू.

उ०—३ आयो जाळधर 'अजो', सुख ऊपनो सरस्स। सुज तिण ऊपर सपनो, पचावनो वरस्स।—रा. रू.

सरहंग–स. पु. [फा.] १ सेनापति।

२ पैदल सिपाही।

३ चौवदार।

४ कोतवाल।

५ पहलवान, मल्ल।

सरह–स स्त्री [अ शरह] १ किसी वात या वर्णन को स्पष्ट करने के लिए की जाने वाली टीका, व्याख्या।

२ दर, भाव।

३ ऋतु विशेष मे उत्पन्न फलो का रसास्वादन।

मि. सरा (२)।

४ मौसम, समय।

ज्यू—अवार होळा री सरह है।

५ स्थिर, अचल।

उ०—कौण स विनसै कौण सरह है, कौण अस्थान मस उलटा जाय।—ह पु वा.

६ देखो 'सरभ' (रू. भे.)

७ देखो 'सरेव' (रू भे)

८ देखो 'सरहद' (रू. भे.)

उ०—उगवण नुं खेत कवळा उनवडी री सरह हळवा ५० धरती आछी, मोठ-वाजरी रा खेत छै।—नैणसी

९ देखो 'सुरभि' (रू भे.)

उ०—मूक्या नव नव परि सालणा मूक्या सरहा घी अति घणा। मूकी माडी मुरकी सेव, मूकी खीर खाड घ्रत हेव।

—हीराणद सूरि

रू. भे—सरै।

सरहद–स स्त्री. [अ] १ किसी देश, राज्य आदि की सीमा।

उ०—हू सावो साधू नै सरहद वाधू।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

बच, बचन, वाणी, वाकबाणी, वागेसुरी, बुधदा बेधाधी, ब्रहम-सुता, ब्रह्माणी, ब्राह्मी, भाखा, भारती, मयूरासणी, रगी, रूप-उदार वरदात, वरदायणी, वच वाणी, वाक, सारदा, सिंहवाहिनी, सुब्राणी, सुरमाया, हसवाहणी, हसवाहनी, हसासणी ।

वि० वि०—इसे ब्रह्मा की पुत्री एव पत्नी दोनो ही मानते हैं। मतान्तर से यह स्वायभूव मनु की माता थी। कही-कही इसे प्रजापति की पुत्री भी मानते हैं।

इसके हाथ मे वीणा व पुस्तक होती है। इसका वाहन हस है। मतान्तर से इसका वाहन मयूर या बकरा है। बौद्ध इसे सिंहवाहिनी मानते हैं।

अन्य मतानुमार यह विष्णु की पत्नी है। इसमे व लक्ष्मी मे सौतो का जगत्प्रसिद्ध वैर है। एक-दूसरी के उपासको पर इन दोनो की कृपा नही होती है।

इसकी उपासना वैदिक धर्मावलम्वी हिन्दुओ के अतिरिक्त जैन, बौद्ध, चीनी आदि भी करते है। सत्यलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, राजलक्ष्मी, मोक्षलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी व सौभाग्यलक्ष्मी ये नौ लक्ष्मिया इसकी सहचरिया है।

इसे शिवमहोदरी भी माना गया है।

२ वाणी, गिरा -

उ०—पाछै मूं वडाह भी उठै ही पूगी जठै आकास सरस्वती कहियौ, अवती रै अधीस विक्रम विभाकर थारौ दुख निरस्त कीधौ।
—व. भा

३ भाषा।

उ०—जिम लवणहीण रसवती, व्याकरणरहित सरस्वति, गधरहित चदन, घ्रतरहित भोजन, खाडरहित पकवान, मानरहित दान, छद-रहित कवित, तेजरहित रवि, विवेकरहित मनुस्य, वेदरहित ब्राह्मण... .. . ।—व. स

४ भारत मे बहने वाली एक प्रसिद्ध व प्राचीन नदी जो बिन्दुसर या ब्रह्मसर से निकल कर पश्चिम के समुद्र मे जाकर गिरती थी। (उ. र)

उ०—१ जै इम किम यै राणियां, इम किम आव्यौ न जाय। आडी ए राणिया आडा तौ गगा जमना सरस्वती।—लो गी

उ०—२ मुगतफळ माणिकू की कठी सोभै माळा का विसतार। सो कैसं, मानू मिळ चली सरस्वती गगा की धार। और भी भाति भाति कै सासत्र गाए जैसं राजू का वणाव। जोति कै जहूर दिन-कर का दरसाव।—सू प्र.

वि. वि —नदी के रूप मे सरस्वती की पहचान विवादास्पद वन गयी है। प्राचीन साहित्य मे बिखरे विवरणो से प्रतीत होता है कि यह हिमालय मे बिन्दुसर या ब्रह्मसर से निकल कर ब्रह्मावर्त और कुरुक्षेत्र आदि प्रदेशो को सींचती हुई विनशन नामक स्थान पर समुद्र मे मिलती थी तथा वैदिककाल की प्रसिद्ध पाँच अथवा सात नदियो मे एक थी। शतपथ (१/४/१/१०-१७) तथा पुराणो मे सरस्वती के सोतो को नष्ट होने अथवा अदृष्ट हो जाने के विवरण मिलते हैं, यद्यपि महाभारत काल मे इसका उल्लेख वनयात्रा के समय, श्रीकृष्ण के उसके तट पर किये गये यज्ञानुष्ठान दधीची ऋषि के आश्रम का तटवर्ती होना एव श्रीकृष्ण की १६,००० पत्नियो द्वारा इसमें डूब कर प्राणत्याग करना, आदि का विवरण मिलता है। उस समय की प्रसिद्ध सरस्वती का पर्यवसन पश्चिमी समुद्र मे ही होता था।
(शल्य पर्व ३६-३३) जहा सोमनाथ और प्रभास क्षेत्र अवस्थित हैं (शल्य० ३५-७७)। यो तो ऐरेकोसिमा प्रान्त की एक नदी 'हैल्मद' अथवा अवेस्ता मे वर्णित अफगानिस्तान की 'हरकैती' या हरह्वैती नदी के भी सरस्वती के पर्याय होने के अनुमान विद्वानो ने लगाए हैं तथापि उक्त नदियो के विवरणो से सरस्वती क ासाम्य न होने से ये मत मान्य नही हो सकते।

इसी प्रकार 'सरस्वती' शब्द को केवल सूर्य-किरणो का वाचक मात्र मान लेना भी अनुपयुक्त ही माना जा सकता है क्योंकि उस नाम वाली नदी के तट पर सम्पन्न, यज्ञयागादि एव सत्रो का विपुल वर्णन साहित्य मे सुरक्षित है।

हाँ, यह भौगोलिक सत्य अवश्य है कि भारत उपमहाद्वीप मे अनेक भूवैज्ञानिक रूपान्तरण होते रहे हैं। फलस्वरूप प्राग्-ऐतिहासिक युग मे पश्चिमी समुद्र की स्थिति तथा सरस्वती का प्रवाह प्रदेश का अभी सही-सही निर्णय किया जाना सभव नही हो सका है। फिर भी इतना तो उक्त विवरणो से स्पष्ट हो ही जाता है कि वर्तमान प्रयाग की त्रिवेणी की कल्पना मे गगा और यमुना के साथ सरस्वती की भौतिक विद्यमानता को स्वीकारना असगत है। सम्भवत. घग्घर नदी भी सरस्वती का अवशिष्ट मार्ग नही है। प्राचीन काल का विपुल महिमामण्डित वर्णन सरस्वती के स्वरूप की भावुक उपकल्पना के प्रयासो के कारण ही प्रतीत होता है कि भारत मे तथा सभवत भारतेतर प्रांतो मे अनेक सरिताओ अथवा सरोवरो मे स्वय सरस्वती के अथवा उसके सम्बन्धो के होने की मान्यता की गई है। फलत. अनेक स्थल भ्रामक रूप से 'सारस्वत' हो गए और मूल सरस्वती इतिहास और भूगोल की एक उलझी और जटिल प्रहेलिका बन कर रह गयी।

५ एक नदी जो गुजरात मे अंबाभवानी के समीप कोटेश्वर के पर्वत से निकल कर कच्छ की खाडी मे गिरती है।

६ एक नदी जो सौराष्ट्र प्रदेश मे गिरनार के जगलो से निकल कर सोमनाथ या प्रभास क्षेत्र मे गिरती है।

७ लूनी नदी के पूर्वोत्तर नदी का नाम जो नाग पहाड से निकल कर गोविन्दगढ के पास सागरमति से सगम करके मारवाड मे लूनी के नाम से बहती हुई कच्छ की खाडी मे गिरती है।

८ साबरमती नदी का नाम।

उ०—३ किरण भोम सुखूल कळ हूता, घटै आवटै लोह घणो।
सगती सू पयाळियो सराणै, तेण राह रिडमलोत तणो।

—चापा राठौड री गीत

कहा.—सराई खीचडी दाता रै चिपै=अधिक तारीफ करने से व्यक्ति विगड जाता है।

२ सम्पादित करना। (पिंड, श्राद्ध आदि)

३ भोजन करना।

४ तीर्थ स्थानो मे अस्थि विसर्जन करना।

सराणहार, हारो (हारी), सराणियो—वि०।

सरायोडो—भू० का० कृ०।

सराईजणो, सराईजबो—कर्म वा०।

सरावणो, सराववो, सराहणो, सराहवो, सिराणो, सिरावो

—रू० भे०।

सराद—देखो 'स्राद्ध' (रू भे)

सरादपक्ष, सरादपख - देखो 'स्राद्धपक्ष' (रू भे)

सरादपूनम—देखो 'स्राद्धपूनम' (रू भे)

सराध—देखो 'स्राद्ध' (रू भे)

उ०—वाणिया री धरम वधावै अर विरमपुरी सराध खावै।

—दसदोख

सराधपक्ष, सराधपख—देखो 'स्राद्धपक्ष' (रू. भे.)

सरापंज—स पु—तीरो से बनने वाला घेरा, शरकोटा। (वितान)

उ०—पूर सोक पखाळ अरस छायो आधतरि। सरापंज किर पथ जाण खडी-वन ऊपरि।—गु. रू वं

सराप—स पु. [स शापः] १ अहित कामनासूचक शब्द, शाप, बददुआ।

उ०—तेरै सोभल दौड दड दवायो कह्यौ—थारी आ कुण जायगा आवण री। हू सराप देउ, तेनु बाळ देईस।—नैणसी

उ०—२ अवही मेली हेकली, करही करइ कळाप। कहियउ लोपा सामि-कउ, सुदरी लहा सराप।—ढो. मा

२ शपथ।

३ गाली।

४ निंदा, भर्त्सना।

५ दोष, कलक।

उ०—मरणो लाजम मामलै, धार अणी चड धाप। पडणो साकळ पीजरै, मिहा वडो सराप।—वा दा.

६ देखो 'सराफ' (रू भे)

उ०—पग्गिपूर लच्छि प्रताप, सुजि लुटत हाट सराप।—सू प्र.

रू. भे—सरापु, साप, स्राप।

सरापणो, सरापबो—क्रि अ.—१ शाप देना, बद्दुआ देना।

२ धिक्कारना, निन्दा या भर्त्सना करना।

सरापणहार, हारो (हारी), सरापणियो—वि०।

सरापिओडो, सरापियोडो, सराप्योडो—भू० का० कृ०।

सरापीजणो, सरापीजवो—भाव वा०।

स्रापणो, स्रापवो—रू० भे०।

सरापावजार—देखो 'सराफावजार' (रू. भे)

सरापियोड़ो—भू का कृ.—१ शाप दिया हुआ, वददुआ दिया हुआ।

(स्त्री. सरापियोडी)

सरापु—देखो 'सराप' (रू. भे.)

उ०—इम भणी ए दियइ सरापु, रु हुजे तु कुलि सऊ ए, कुपीउ ए काढवी चीरु अट्ठोत्तर सउ साडीय ए।—सालिभद्र सूरि

सराफ—स पु [अ सर्राफ] वह व्यक्ति जो सोना-चादी या सोना-चाँदी के बने आभूषणो का व्यापार करता हो।

उ०—खोटो दियै सराफा हाथि, करै ठगाई साहा साथि। पढिया ठगण मत गिवार, फिटा फिटा हुवै खुवार।—ध व ग्र.

रू भे—सराप, सराफी।

सराफत—स स्त्री [अ. शराफत] १ कुलीन होने की अवस्था या भाव, कुलीनता।

२ सुशील होने की अवस्था या भाव।

३ सज्जनोचित्त व्यवहार।

४ शरीफ होने की अवस्था या भाव।

सराफा—स पु.—१ सोने-चादी का व्यापार।

२ वह स्थान जहाँ इस प्रकार का व्यापार होता हो।

सराफावाजार—स पु.—वह स्थान जहाँ पर सोने-चाँदी के व्यापारियो की दुकानें अधिक हो।

रू. भे.—सरापावजार।

सराफी—वि—१ सोना-चाँदी या सोना-चाँदी के गहनो का क्रय-विक्रय करने का व्यवसाय।

उ०—काची परख सराफी खोटी, तातै परदुख सहसीवै। रामनाम निज भेद न जाण्यो काळ चटा तै गहसीवै।—ह. पु. वा.

२ देखो 'सराफ' (रू भे)

उ०—१ वजाज हुवो सराफी रे, दुव्यहारै पूजी आपी रे।

—जयवाणी

उ०—२ हीरा परखै जूंहरी, सुरति निज ही होय। सुधि सराफी बाहरयो, पारिख लहै न कोय।—वील्होजी

सराव—स पु. [अ शराब] १ मदिरा, मद्य।

उ०—दसबीस सहस जुध भाज दीध, प्याले खग पान सराव पीध।

—वि. स.

सरावखानो—स पु—वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो, मदखाना।

सरावखार—देखो 'सरावख्वार' (रू भे)

सरावखोरी—स स्त्री [फा. शराबखोरी] शराब पीने का व्यसन।

सरावखोरो—स पु—वह व्यक्ति जो शराबी हो, शराब पीने का व्यसनी हो।

सरावख्वार—स. पु. [फा शराबख्वार] मदिरा पीने वाला, शराबी।

२ उक्त सीमा के समीपस्थ प्रदेश ।

रू. भे.—सरद, सरद्ध, सरह ।

सरहदी–वि. [अ] १ सीमा का, सीमा सम्बन्धी ।

२ सीमा पर रहने वाला, सीमा रक्षक ।

रू. भे —सलद्धी ।

सरहर, सरहरउ —देखो 'सिरहर' (रू. भे.)

उ०—गति गगा मति सरसती, सीता सीळ सुभाइ । महिला सरहर मारूई, अवर न दूजी काइ ।—ढो मा.

सरहरति, सरहरी–वि. स्त्री.—लगातार समान व सीधी बहने वाली ।

उ०—१ वाखड़ी गाय नो गिरत, सरहरति धार, सतोखियै जीमण हार ।—व. स.

उ०—२ सरहरी धार, प्रीणइ जिमणहार, सौभाग्य अजेय नासा-पट्ट पेठ ।—व. स

सरहौ–स. पु —एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १४ लघु और अन्त मे एक गुरु कुल १५ वर्ण होते हैं ।

सराई–स स्त्री —विवाह मे काम आने वाला मिट्टी का पात्र जो 'ढीबसियै' से बडा होता है ।

सरांणौ—देखो 'सिरहाणौ' (रू भे)

सरापती–स पु. [स सर+पति] १ समुद्र, सागर । (डि. को)

२ तालाव ।

सराराज–स. पु —महासागर ।

उ०—सरांराज मार्थं ररा अक सारै, तरा पत्र जेही गिरा जुत्थ तारै ।—सू प्र

सरा–स. स्त्री.—१ प्रशसा, आनन्द ।

२ किसी विशेष फल-फूल या फसलो का मौसम अथवा इस मौसम मे उत्पन्न फल-फूलो आदि का रसास्वादन ।

३ भू-भाग ।

ज्यूं—काले एवड उतरादी सरा मे जावैला ।

४ किला, दुर्ग ।

५ महल, प्रासाद ।

६ सराय ।

सराइ, सराई–स. स्त्री —१ वलोच कौम के अन्तर्गत एक मुसलमान जाति जिसके व्यक्ति प्राय. मारवाड मे प्राचीन काल मे लूट-मार किया करते थे ।

२ देखो 'सराय' (रू भे)

उ०—एक चलै एक आवही ससार सराइ ।—केसोदास गाडण

सराग, सरागी–वि.—१ राग सहित ।

२ मधुर आवाज ।

उ०—अत परमळ पसर पसरिया आवा, सुक पिक बोलै सुखद सराग । रतिपति ताणै धनुस जठै रुच, वरसाणै देखण ज्यू वाग ।—बां. दा.

३ रसपूर्ण, प्रेमसहित, सप्रेम ।

उ०—कहइ सराग कथा कदै नही, स्त्री सुं एकात रे । बीजी वाड़ ए एम बोली, मानइ लोक महात रे ।—स. कु

४ स्नेह करने वाला, प्रेमी ।

उ०—थयौ परम सरागी मिलिवा मनि जागी, ऊठाड़ौ नै आपणै मदिर लियौ ।—वि. कु

सराड़, सराड़ौ–स. पु —१ तेज गति से भागने की क्रिया या भाव ।

उ०—दत्त सराडा दोय, कीरत रा किना 'कमै' । हमै न दूसर होय माग न भेलै 'मूळियौ' ।—अग्यात

२ तेज दौड ।

३ घोडे के तेज भागने की क्रिया ।

४ तेज गति मे दौडने पर उत्पन्न ध्वनि विशेष ।

रू भे.—सिराडौ ।

सराजाम–सं. पु [फा. सरंजाम] १ व्यवस्था, वदोवस्त ।

उ०—ताहरा रावजी कह्यौ—दूदा जा मत, हू सराजांम करि देस्यू । यूं आगै मेधौ सीधल छै ।—दूदै जोधावत री वात

२ तैयारी ।

उ०—१ पह निज हुकम प्रमाण, दीह नवमै विरदाळा । सराजांम करि समर, सको भड मिळै सचाळा ।—सू प्र.

उ०—२ जुध सराजांम सभि सभि व्रजागि, लोह मै सरसि भुज उरसि लागि ।—सू. प्र

३ सामान, सामग्री ।

उ०—१ जगू कै साज छत्तीस कारखानू के हवालगीरू नै सव जगूका सराजांम हाजर किया ।—सू प्र

उ०—२ हमै तौ ताकीदी करता रात पड जासी । हमार सारौ सराजाम तयार कर छोडसा ।—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ परभात उठि निछरावळ सारी भेळी कर ब्राह्मणा नूं भोजन री सराजांम करायौ । बीजौ कारखानै सू देय रुपीयौ एक दिखणा दिराई ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—४ देस सूवा लिख दियौ, कथन स्रीमुखा कहै इम । सराजांम जग सर्फ. किला, राखौ दहूं कायम ।—सू. प्र.

४ वैभव ।

उ०—हिवै मीया बुढण जालोर राज करै, पाच हजारी रौ मनसोवौ छै । साथ सराजांम बीजौ घणौ छै ।—रा. सा. स

रू भे.—सरजाम, सरजाम ।

सरांणिया–स स्त्री —एक जाति विशेप ।

सराणौ, सरावौ–क्रि. स.—१ प्रशसा करना, सराहना करना ।

उ०—१ ज्यू बीजा जसवत री, चुण चुण चित सू चाय । लोभी जस तज लै गयौ, 'सज्जन' राण सराय ।—ऊ. का.

उ०—२ कौसल्या दसरथ नी काता महिमा घर राम तणी माता ससार सराई सीलवती ।—जयवाणी

सराह–सं. स्त्री —१ प्रशंसा, सराहना, तारीफ।

उ०—१ एकलिंग आयौ, 'अजन' मिळै राण जयसाह। हुई रीत मनुहार री, सुर तिण करै सराह।—रा. रू

उ०—२ सेन सनाह वीटियौ सफरिम, सयल सपेखे करै सराह। 'भाण' जिसौ गज फौज भयंकर, नगपाळदै जिसौ नरनाह।

—चत्रभुज चापावत री गीत

२ कीर्ति, यश।

२ सराय, धर्मशाला।

रू भे —साराह, सिराह।

सराहणौ, सराहबौ—देखो 'सराणौ, सराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ समोभ्रम 'नाथ' लडै समराथ, हुवै जुध भाण सराहत हाथ।—सू प्र

उ०—२ लगी गाव में लाय, तकै तोई डूम तिवारी। साध सराहै सती, निरथक व्है विधवा नारी।—ऊ का

उ०—३ कोटै सोहै कागरा, भींतै सोहै चीत। रावळ देवळ टाल्य कै, काय सराही सीत।—मेहोजी गोदारौ थापन

सराहणहार, हारौ (हारी), सराहणियौ - वि०।

सराहिअोडौ, सराहियोडौ सराह्योडौ—भू० का० कृ०।

सराहीजणौ, सराहीजबौ—कर्म वा०।

सराहियोडौ—देखो 'सरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सराहियोडी)

सरि–स. पु —१ आर्यागीति या खधाण (स्कधक) नामक गाहा का भेद विशेष। (पिं प्र)

२ ललाट पर सिंदूर, कुकुमादि से की जाने वाली सीधी खडी रेखा, तिलक।

उ०—नलवटि करइ सरि सींदूर, ऊगटि केसर नइ कपूर। करणी वेलि अवोडा भरइ, भमर गूजारव सरवर करइ।

| प्राचीन-फागु सग्रह

स स्त्री, [स. सरि] २ नदी, सरिता।

उ०—१ सरि-धारा वहणा सकौ, नहचै नरका जाय। चढ धारा चद्रहास री, सूरा सरग सिधाय।—रैवतसिंह भाटी

उ०—२ त्रिगवी सरु रहात्रियउ, सरि गगा प्राणी। कउतिगु दाखौ न कउरवाह, पीउ पायु पाणी।—सालिभद्र सूरि

वि —१ समान, तुल्य।

उ०—१ ईखै पित मात एरिसा अवयव, विमळ विचार करै वीवाह। सुन्दर सूर सीळ कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह।—वेलि

उ०—२ मावीत्र अजाद मेटि वोलै मुखि, सुवरन को सिसुपाळ सरि। प्रति अवु कोपि कुवर ऊफणियौ, वरसाळू वाहळा वरि।

—वेलि

२ देखो 'सरीर' (रू भे.)

उ०—मुरधर थया वधामणा, गौ सरि खार विकार। खटरस भोजन वामणा, घर घर मंगळाचार।—रा. रू.

३ देखो 'सर' (रू भे.)

उ०—१ खुपु भराविउ जाइ कुसमि कसतूरी सारी, सीमतइ सिंदूररेह मोती सरि सारि।—राजसेखर सूरि

उ०—२ तउ कुमर निच्छयं जणणि जाणेवि, ढणहण नयणि नीर झरती। करिन त वच्छ ज तुज्झ मण भावए, अज्झए गदगद सरि भणती।—ए जै. का. सं.

उ०—३ राति सखि इणि ताल मइं, काइज कुरळी पंखि। उवै सरि हू घटि आपणइ, बिहू न मेळी अंखि।—ढो मा.

उ०—४ हारणाखी कठ अतरिख हुती, बिब रूप प्रगटी बहिरि। कळ मोतिया सु सरि हरि कीरति, कठ सरी सरसती किरि।

—वेलि

उ०—५ नरइद 'अभौ' नवकोट नाथ, सरि करण सतरि धरवर समाथ। अहमद नयर खाटण अनूप, रस वीर प्रगट घट विकट रूप।—रा रू

रू भे.—सरी, सरीस।

सरिका–स. स्त्री [स] १ मुक्ता, मोती।

२ मोतियो की माला।

३ रत्न।

४ ताल-तलैया।

सरिखउ, सरिखु, सरिखौ—देखो 'सारीसौ' (रू. भे)

उ०—१ निंदक सरिखउ पापीयउ, मइ उकोइ न दीठ। वलि चडाल समउ कह्यउ नदक मुख अदीठ।—स. कु.

उ०—२ सरिखां सूं बळभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विरुधि। भला भली सति ताइज भजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि।—वेलि

सरिग—१ देखो 'सरग' (रू भे)

२ देखो 'स्वरग' (रू भे)

सरिण—देखो 'सरण' (रू भे)

उ०—आयुत पराक्रम आपरै, सतपुरखां राखि सरिण। माणी न मल्ल उभै मयण, सुर मुरधर वरत रिण।—राव मालदेव री बात

सरित –देखो 'सरिता' (रू भे) (डिं. को; ह. ना मा)

उ०—१ नाजुक नवस निराट, उभै दिसि ओपवै। करण दरस त्रप काज लाज कुळ लोपवै। लखि छबि जो ललचात, चकोरी चद ज्यों। रही उमग लखि रूप क, सरित समद ज्यों।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—२ किना वियो कैलास, अनड इण भात रा। बारह मास बणाव, बणै बरसात रा। पाहण पाहण पूर, भरै गिर नीझरा। खोह खोह खरळाट, सरित पूगै सरा।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ सर सरित निरमळ नीर सुंदर, अमळ अबर ओपय। किरि सुबुधि वधि सतसग कारण, लुबुध होत विलोपय।

—रा रू.

रू भे.—सरावखार।

सराबी–वि.—शराब पीने वाला, मद्यप।

सराबोर–वि.—१ तरबतर, लथपथ।

२ व्याप्त।

उ०—लुगाई री श्रो रूप तो दीवाणजी माथै श्रंडो कामण करयौ कै वारो रू-रूं नसा मैं सराबोर व्हैगो।—फुलवाडी

रू. भे.—सरबोर।

सराय–स. स्त्री. [फा] १ मुसाफिरो के ठहरने का स्थान, धर्मशाला, मुसाफिरखाना।

उ०—राति वसै दिन ऊठि चलै, यौ ससार सराय —ह. पु. वा

२ ठहरने का स्थान।

रू भे —सराइ, सराई।

सरायचौ—देखो 'सिरायचौ' (रू. भे)

उ०—सो कुवरसी रौ साथ चढियौ। सो सर दिन एक मेहला श्रायौ। श्रर भरमल डेरौ करै जठै रथ सरायचा भीतर राखै।

—कुवरसी साखला री वारता

सरायत–स पु —मुखिया, प्रधान।

[श्र] प्रवेश करने, घुसने की क्रिया।

रू. भे – सिरायत।

सरायोडौ–भू का. कृ.—१ प्रशसा किया हुश्रा, सराहना किया हुश्रा २ सम्पादित किया हुश्रा (पिंड, श्राद्ध श्रादि) ३ भोजन किया हुश्रा. ४ तीर्थ स्थानो मे श्रस्थि विसर्जन किया हुश्रा।

(स्त्री. सरायोडी)

सरारत–स. स्त्री [श्र शरारत] १ दुष्टता, पाजीपन।

२ वदमाशी।

सरारती–वि.—शरारत करने वाला।

सरारि, सरारी–सं. पु.—१ राम की सेना का एक यूथपति वदर।

२ टिटहरी नामक पक्षी।

सरारोप–स पु —धनुप, कमान।

सरारौ–वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम। (डिं को.)

२ वराबर, समान।

सरालउ–वि —पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण।

उ०—इ कु श्ररजुनु श्रागलऊ, श्रनइ करणु हीयइ हरालउ। गुरकूवइ विणयह,लगइ घणुहवेदु दीधउ सरालउ।—सालिभद्र सूरि

सराव–स पु. [स. शराव] १ मिट्टी का वना एक प्रकार का मद्यपात्र।

२ कटोरा।

३ दीपक।

श्रल्पा; रू भे.—सरावौ।

सरावगी–स. पु [सं. श्रावक] १ जैन धर्म के श्रन्तर्गत एक जाति विशेप।

२ इस जाति का व्यक्ति।

सरावणौ, सराववौ—देखो 'सराणौ, सरावौ' (रू भे)

उ०—१ साध सरावै मो सती, जती जोखता जाण। 'रज्जव' साचे सूरका, वैरी करै वखाण।—रज्जव

उ०—२ साथणिया,उणरा भाग नै सरावती थाकती ई नी। साथै दायजा मे चालण सारु ई ताखडा तोडती ही।—फुलवाड़ी

उ० —३ जद धीरजी कह्यौ— न करावौ तो उण नै सरावौ क्यूं।

—भि. द्र.

उ०—४ खोपर ढकणी खिडा, वीर वनडौ वन ज्यावै। माटी मगळकार, निरतर काज सरावै।—दसदेव

सरावणहार, हारौ (हारी), सरावणियौ—वि०।

सराविश्रोडौ, सरावियोडौ, सराव्योडौ—भू० का० कृ०।

सरावीजणौ, सरावीजवौ —कर्म वा०।

सरावती–स. स्त्री [स. शरावती] १ भारतवर्ष की एक प्राचीन नदी का नाम।

२ लव की राजधानी का नाम।

सरावर, सरावरण–स पु [स. शरावर] १ ढाल।

२ कवच। (डिं को)

सरावसपुट–स पु [स. शराव+सपुट] मिट्टी के दो सकोरो का मुह मिला कर वनाया हुश्रा एक वर्तन जो रसौपध-फूकने के काम श्राता है।

रू. भे.—सरावासपुट।

सरावाप–स स्त्री. [स. शर+श्रावाप=थावला] धनुप, कमान।

सरावौ—देखो 'सराव' (श्रल्पा; रू. भे.)

सरास, सरासण, सरासन–स पु. [स. शरासन] १ धनुप, कमान।

(श्र. मा, डिं. को, ह. ना. मा.)

उ०—१ तरै वाण वादै गयौ देखि तास, सुराराज झलै न हल्लै सरासं।—सू. प्र

उ०—२ श्रतुळ सरासण भंग लख, वधै श्रत उमग उर। गहर दिन मुहूरत सतानद पूछ गुर।—र रू

२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

रू. भे —सारासण, सारासन, सारासुन।

सरासर–श्रव्यय [फा] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक, सर्वत्र।

२ पूर्णतया, विल्कुल।

उ०—श्रदालता सू होय श्रागती, पिरजा रोय पुकारी रे। सूक दुकाना मंडी सरासर, धोळै दिवस श्रधारी रे।—ऊ का.

३ साक्षात, प्रत्यक्ष।

रू. भे.—सरासरी।

सरासरी–स स्त्री.—१ शीघ्रता, तीव्रता।

२ स्थूलरूप से, श्रनुमानतः।

३ देखो 'सरासर' (रू. भे)

सरासुन—देखो 'सरासन' (रू भे.)

उ०—१ कुडल सरिसउ लाधउ बालौ, रकु लहइ जिम रयण झमालौ ।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ प्रळै काळ रणताळ, वडो इक आव्रत वूहो । सीसोदा सैफळा सरिस राठोडा हूग्रो ।—गु रू ब.

उ०—३ सारग वाणी सरिस बोलई नही तोलई कोई । करणेनि सोवन झाल झबकइ अवधि रभा होई ।—रुकमणि मगळ

सरिसव—देखो 'सरसू' (रू भे. (उ. र.)

सरिसु, सरिसौ—देखो 'सारिखौ' (रू भे.)

उ०—१ ऊपरि एकाउलि हार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणा तणु झमकार ।—व. स

उ०—२ तेह सरिसु हट नवि माडीइ बीजइ मेळ वेढि छाडीइ । एहवू वचन कहिऊ सुरताणि, मइ समीयाणउ लीधउ प्राणि ।
—का दे प्र.

उ०—३ सरसति न सूझै ताई तूं सोझै, वाउवा हुवौ कि वाउळौ । मन सरिसौ धावतौ मूढ मन, पहि किम पूजै पागुळौ ।—वेलि

उ०—४ तेहवा माहि ताहरी, वेस्या सरिसी बात । कपट लिखता कोडि करि, सायर सूकइ सात ।—मा. का प्र

सरिस्ता-स पु [फा.] किसी कार्यालय का विभाग, महकमा ।

सरिस्तेदार-स पु. [फा.] १ शासन के किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी।

२ अदालतो मे वह व्यक्ति या कर्मचारी जो देशी भाषा मे मिसलें लिखता है ।

सरी-स स्त्री —१ पानी की वह नाली जिससे एक तरफ से क्यारियो मे सिंचाई होती है । (कृषि)

२ एक अव्यय जो विशिष्ट प्रसगो मे वाक्य के अन्त मे आकर ये अर्थ देते हैं —

अधिक नही तो इतना अवश्य ।

ज्यूं—आप जोधपुर पधारो तौ सरी, आप पधारजो तौ सरी, थोडी खाई पर ख ई तौ सरी ।

३ कुछ असभावित बात होने पर कुछ जोर देते हुए आश्चर्य प्रकट करना ।

ज्यू—तोई थू वठै गयौ तौ सरी ।

४ देखो 'स्री' (रू भे)

५ देखो 'सरि' (रू भे.)

उ०—१ देवी सरसती जम्मना सरी सिद्धा, देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी ताप रुद्धा ।—देवि

उ०—२ भणत स्री विनोदय, कल्याण केक मोदय । खभायची पटगय, वर्ग सरी विहगय ।—रा. रू.

उ०—३ सरी नौसरं हार मोती सजोया । पडै सेणता हीणता सूक्र पोया ।—रा. रू.

उ०—४ देवी सरसती जम्मना सरी सिद्धा । देवी त्रिवेणी त्रिस्थळी ताप रुद्धा ।—देवि

५ देखो 'सिरी' (रू. भे.)

उ०—साम हुड तणी मारग सरी एवा जो तोनं अपं । जद काम हुवोडो जाणजे जह सिद्ध गोरख जपं ।—पा. प्र.

रू. भे —सरु, सरीस, सिरि ।

सरीअत—देखो 'सरियत' (रू. भे)

सरीकठ-स. पु. [स श्रीकठ] गले का आभूषण, कठी ।

उ०—परीखं सरीकठ मैं हीर पूरो, सुभै सुर आकास जाणै सनूरो ।
—रा. रू

सरीक-स पु. [अ. शरीक] १ हिस्सेदार, साझीदार ।

२ साथी, दोस्त, सगो ।

३ सहायक, मददगार ।

वि.—१ शामिल, सम्मिलित ।

उ०—कीधौ विदा थिराट सू, पुर पुगो मछरीक । कमध खगं चाकर किया, ठाकुर जिता सरीक ।—रा रू

२ देखो 'सारीखौ' (रू. भे)

उ०—१ तद वीठू जाय कुंवर नू कही "जो महाराज फुरमावै छै, अौ नाळेर पाछौ देवौ. बीजा वीहा स् जोव छै नौ एक दोय करो ।" तद कुवर कह्यौ "वीठू तू अरज करै जो म्हारै तो पण छै सरीक रौ नाळेर आयौ पाछौ न फेरूं ।
—कुवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सौ रूप गुणाकर निराट अवल पण आख्या सजम मोनीयावध । सौ कुवारी बेटी घर माहे । तिण सु सरीक तौ कोई लेवं नही अर बीजं नुं देवै नही । सौ राणं नु खरौ फिकर ।
—कुवरसी साखला री वारता

रू. भे —सरीख ।

सरीकत, सरीक्ता-स स्त्री [अ शरीकत] १ शरीक होने का भाव ।

उ०—माघ वडै हालियौ सुणि मितर, सूधौ गुवण वितावौ सति । विच माहे न लियौ विसरामू, गिणियौ नही सरीकत गति ।
—सूरजनदास पूनियौ

२ साझा, हिस्सा ।

रू. भे — सरीखत, सरीगत ।

सरीकौ-वि.—१ साथ रहने वाला, साथी ।

उ०—१ तीजौ खलक सू पण अहकार आपरा सरीकियां सू छै ।
—नी. प्र.

उ०—२ प्रथम अहकार वादसाहा नूं आपरै सरीकियां सू ।
—नी. प्र.

२ रिश्तेदार, सम्बन्धी ।

सरीकौ—देखो 'सारीखौ' (रू भे.)

सरीख—देखो 'सारीखौ' (रू भे)

सरितपत, सरितपति, सरितपती–स. पु [स सरित्+पति] सागर, समुद्र।

रू. भे.—सरतापत, सरतापति, सरतापती, सरितापति, सरितापत, सरितापति, सरितापती, सरित्पत, सरित्पति, सरित्वती।

सरितवरा, सरित्वरा—देखो 'सरितिवरा' (रू. भे.) (अ. मा; डिं. को.)

सरिता–सं स्त्री [स सरित्] नदी, धारा।

उ०—१ धुरधर असाढा अवर धरहरीयौ, घोरा डबर मैं सवर धरहरियौ। साई सर सरिता आई इकरारा, धोळा जळधर सू धाई जळ धारा।—ऊ का

उ०—२ हे सरिता रा हमला थें महर करौ, सीता नैं वेग बताय औ उपकार करौ।—गी. रा.

रू. भे.—सरत, सरता, सरति, सरती, सरित, सरिति, सलत, सळत, सलता, सलिता, सलीता।

सरितापति, सरितापत, सरितापति, सरितापती—देखो 'सरितपति' (रू. भे) (डिं. ना. मा.)

सरिति—देखो 'सरिता' (रू भे.)

उ०—मरजाद सर सर सरिति अनुमिति, छुटि जात अछेहय। पडि खाळ थळ थळ ताळ पूरति, खह सरूप असेहय।—रा. रू

सरितिवरा–स. स्त्री [स सरतवरा, सरितावरा] गगा नदी। (ह ना मा)

रू. भे —सरतवरा, सरतिवरा, सरितवरा, सरित्वरा।

सरित्पत, सरित्पति, सरित्पती—देखो 'सरितपति' (रू भे.)

सरित्सुत–स पु [स] भीष्म, गागेय।

सरिदिही–स स्त्री [फा] राजा महाराजाओ को दिया जाने वाला नजराना।

सरिद्वरा–स स्त्री [स] पवित्र नदी, गगा।

सरियद–स पु [स सुरेन्द्र] इद्र, सुरेश।

सरियउ—देखो 'सरियौ' (रू. भे)

उ०—अरणी नउ सरियउ घसि लाकडइ अगनि पाडी तत्काली जी।—स कु

सरियत, सरियत्त–स पु. [अ] १ ईश्वरीय नियम, धार्मिक कानून।

उ०—१ सो वा रीत सरियत छै तिण रीत री स्थापना प्रभू री आग्या सू होय।—नी प्र.

उ०—२ सरियत अवल री आछै जै सक्ति भर देव प्रकृति नू जोर पकडावै।—नी प्र

२ धर्मशास्त्र। (मुस्लिम)

उ०—एक साइया कै एह, दिल अवर न धरी देह। सरियत्त निमख सिपाह, सो गिणी नह पतसाह।—सू. प्र.

३ मार्ग, रास्ता।

उ०—जंग झोकि जगमा, असह खग वरग उडावा। तै सरियत्त कुळ तणी, करै कुळ विरद कहावा।—सू. प्र.

४ एवज, बदौलत।

उ०—जिल दिलावरखान नै कल्हकै रोज दक्षन कै दरम्यान निजामन मुलकसेती जग किया। च्यार हजार दुसमन कू मार समसेरू की धारसेती जंग किया निमककी सरियत पर दिया।—सू प्र.

५ वफादारी, स्वामीधर्म।

६ चौडा रास्ता, राज-मार्ग।

रू. भे.—सरीअत, सरीत, सरीती, सरीयत।

सरियाई–स स्त्री.—राम की अनन्य भक्त कुम्हारी।

सरियोडो–भू का कृ —१ सिद्ध हुवा हुआ, सफल हुवा हुआ. २ बना हुआ, पूर्ण हुवा हुआ. ३ पार पडा हुआ. ४ शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार हुवा हुआ. ५ कार्यादि का निर्वाह हुवा हुआ, पूरा हुवा हुआ ६ लक्ष्य सिद्ध हुवा हुआ. ७ परिपूर्ण हुवा हुआ, पूर्ण हुवा हुआ. ८ पर्याप्त हुवा हुआ, काफी हुवा हुआ. ९ सम्भव हुवा हुआ १० अनिवार्य या निश्चित रूप से हुवा हुआ. ११ आकार-प्रकार रूप-रग गुणादि मे शिशु सतान का किसी के अनुरूप या अनुसार हुवा हुआ १२ चला हुआ, निभा हुआ, निभाव हुवा हुआ १३ पूर्ण रूप से हुवा हुआ १४ घूमा हुआ, फिरा हुआ, विचरित हुवा हुआ १५ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ. १६ पडा हुआ, विवश हुवा हुआ।

(स्त्री सरियोडी)

सरियौ–स पु —१ सरकडे का पुआल जिसे कूट कूट कर मूज बनाई जाती है एव ये झोपडी आदि छाजने के काम आते है।

२ लोहे की बनी लम्बी छड।

३ देखो 'सर' (अल्पा; रू भे.)

उ०—दर न जुडावौ भुरज दर, दुय री गळै न दाळ। भिद सरिया तन भातडा, भाभी लीज्यौ भाळ।—रेवतसिंह भाटी

रू. भे —सरियउ, सिरियौ।

सरिवरि–स स्त्री.—१ समानता, बराबरी।

२ पक्ष, विपक्ष।

ज्यू—फलाणो आपरो काम करै कोई री सरिवरि मैं कोनी।

सरिस, सरिसउ, सरिसि–क्रि वि —साथ मे, साथ।

उ०—१ वेदोगत धरम विचारि वेदविद, कपित चित लागा कहण। हेरुणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पाणिग्रहण।—वेलि

उ०—२ जुद करि पट्टाणा सरिसि गढ जाळधर लीय। 'गजपति' आयौ जोधपुर, मगळ धमळ हरीय।—गु. रू व.

उ०—३ अतरी वात कुण आगमइ, काउण जन्म सरिसउ जुडइ। —अ वचनिका

उ०—४ गुरु ऊठाडइ अरजुनु कुमरो, करणिहिं सरिसउ माडइ वयरो।—सालिभद्र

२ देखो 'सारिखौ' (रू भे.)

वपु, वरखम, सचर।
२ शव, मुर्दा शरीर।
३ शारीरिक शक्ति।
मुहा —सरीर छूटणौ=मरना।
रू भे —सइर, सइरि, सइरू, सयर, सयरू, सरि।

सरीरक-स. पु [स शरीरक] १ देह, शरीर।
२ छोटा शरीर।
[स. शरीरक] ३ जीवात्मा।

सरीरज-स पु. [स. शरीरज] १ कामदेव, मनोज।
२ रोग, वीमारी।
३ पुत्र, वेटा।
सं स्त्री.—४ विषयवासना, कामुकता।

सरीरभ्रत-स पु [स शरीरभृत] १ विष्णु भगवान् का नाम।
२ जो शरीर धारण किये हुए हो, जीवात्मा।

सरीररक्षक-वि. [स. शरीररक्षक] वह जो शरीर की रक्षा करता हो, अगरक्षक।

सरीरव्रति, -स. स्त्री. [स शरीरवृत्ति] जीवन-यापन करने की वृत्ति, जीविका।

सरीरसास्त्र-स पु यौ. [स शरीरशास्त्र] वह शास्त्र जो शरीर के अवयवो, नाडियो आदि का विवेचन करता हो।

सरीरसोधन-स. पु. यौ [स. शरीरशोधन] कुपित मल पित्त तथा कफ को हटाकर उर्ध्व व अधोमार्ग से निकालने वाली औषधि।

सरीरसंस्कार-सं. पु. यौ [स. शरीरसस्कार] १ गर्भाधान से लगा कर शरीर की अत्येष्टि तक के वेद विहित सोलह सस्कार।
२ शरीर को स्वच्छ करने की क्रिया।

सरीरांत-स. पु. यौ [स. शरीरात] १ शरीर का अत, मृत्यु, देहात।

सरीस —१ देखो 'सरेस' (रू भे.)
उ०—१ लागा कुसुम सरीस वप, ज्यारै पडै खरोट। हद नाजक हिरणखिया, है माफल हमरोट।—वा. दा.
उ०—२ खरवूजा सहजग जायरै, सौ असोक अमर सदै। संमल सरीस तज आम सुण, दाख रामफळ सेव दै।—र. ज. प्र
२ देखो 'सरी' (रू. भे)
उ०—सरीस मोतिया सधार, कोर भाल केसरी। कला तमस वीच कीध, चद जाणि चदरी।—सू. प्र.
३ देखो 'लीकठ' (रू. भे.)
४ देखो 'सारीखो' (रू. भे)
उ०—१ सफि किया इद्र धानख सरीस, सिंदूर जगाळा तिलक सीस।—सू प्र.
उ०—२ तिहा थी आया थावै मानवी रे, सुख दुख पुण्य सरीस।
—ध. व ग्रं.
५ देखो 'सरि' (रू भे.)
उ०—प्रमाण सोनिगरा कर ऊधरा सरीस। आद पमारा साम छळ, आया वस छतीस।—रा. रू.

सरीसप-स. पु [स. सरीसृप] सर्प, सांप। (ह. ना. मा.)

सरी-सरी—संगीत के सात स्वरो के आलाप का अनुकरण।
उ०—सरी-सरी सपोसय, सुताळ मालकोसय। मिठास आस मंजरी, गरीगरी स गुज्जरी।—रा रू.

सरीसो—देखो 'सारीखो' (रू. भे)
उ०—१ काळी काठळ सारसो, चपळ दामनी जेम। मेर सरीसो गात मैं, कहो बगाणूं केम।—गज-उद्धार
उ०—२ रमै पग-छाह मधूकर रिख। तवै पग नाग सरीसा तख।—ह र.
उ०—३ देवर जी सरीसो डीघो पातळो ऐ म्हारा मासुजी, नणदल वाईसा रै उणियार वाला जी।—लो गी.
उ०—४ भीम भाण सारीख, करन सिवदास सरीसा। जोधा छळ जोधाण, वोल दळ वेळ वरीसा।—रा रू

सरु-क्रि. वि. [अ. शुरूअ] आरम्भ, शुरू, प्रारम्भ।
उ०—१ विना मिरच मुसाला रै ई वात सरु करु, घनै मुसाला घणा ई लगावणा आवै।—फुलवाडी
उ०—२ सोवनलाल सावण री तीज सू पैली ही सासरै आ वैठ्यो मालम पडयो जद घर मैं गीत सरु हुआ।—दसदोख
उ०—३ सुणि एम कीध नौवत सरु इम जवाव लिखिया उतर।
—सु प्र.
उ०—४ हाकरता दौड सरु व्हैगी।—अमरचूनडी
सं. पु. [स. शरु] १ वज्र।
२ तीर, बांण।
३ अस्त्र, शस्त्र।
४ क्रोध, गुस्सा।
५ एक देव गधर्व का नाम।
स स्त्री. [स. शरुः] ६ तलवार की मूठ।
वि —१ वास्तविक, यथार्थ, सही।
उ०—महाराज अभै मडोवरै, सकळ लाज परखै सरु। हठ वात नेम लखि रविखयो, खूद थान 'नेमगरु'।—रा. रू.
२ देखो 'सरी' (रू. भे)
उ०—'पदमसिंघजी' मा'राज तो दातार है कोऊ निरधन जाय हाथ माडै तिणनूं निहाल करै जो तूं जातो सरु।—द दा
३ देखो 'सारु' (रू. भे.)
उ०—१ मुदै 'अमर' 'सेमगरु', जिकण सरु सब ज्यास। वात करण सुरताण सू अरि घरि करण अज्यास।—रा. रू
उ०—२ इसडा पचवीस किरोड अढगा, भुफ सरु रीता जीतसा।
—र. रू

रू. भे.—सिरु, सुरु, सुरू।

उ०—तं सुतन सीह दन खाग तीख, साभाव सुपह जैचद सरीख ।
—सू प्र

२ देखो 'सरीक' (रू भे.)

उ०—१ तु रहिजे इण थानकै, मुझ नै दे हिव सीख । तदनतर कुमरी वदै, हु छु तुझ सरीख ।—वि कु

उ०—२ तै गिण स्रेणिक राय नइ, तइ कीधा स्वामी आप सरीख ।—स. कु

सरीखइ, सरीखउ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे)

उ०—१ करहा देस सुहामणउ, जै मू सासरवाडि । आव सरीखउ आक गिण, जाळि करीरा झाडि ।—ढो मा.

उ०—२ भयण सरीखइ माघवइ, चिंति लगाडी चाख । वली विटबन तू करइ, वारु भई वैसाख ।—मा. का प्र

सरीखत—देखो 'सरीकत' (रू भे)

सरीखु, सरीखौ—देखो 'सारीखौ' (रू भे) (उ र)

उ०—१ राम बिना किस काम का, नहि कौडी का जीव । साई सरीखा व्है गया, दादू परसै पीव ।—दादूवाणी

उ०—२ चादी रा ठाव डोकरी रै घर्क करतौ बोल्यौ—जद सगळा मिनख एक सरीखा नी व्है तौ थे सगळा नै एक सरीखा दूध सू कीकर सल्टावौ ।—फुलवाडी

उ०—३ साई सरीखा सुमरिण कीजै, साई सरीखा गावै । साई सरीखी सेवा कीजै, तब सेवक सुख पावै ।—दादूवाणी

उ०—४ सातू भेंस्या रै एक सरीखी रूपाळी पाडिया । कुत्ता जाणै सिंघणिया रा इज बिचिया । भिडता ई ऊभनाळिया आवै । सगळा अेक इ साचै ढळियोडा । सरीखा डीगा, सरीखा लावा, सरीखै उणियारा ।—फुलवाडी

उ०—५ जद स्वामीजी बोल्या—थारै लेखै थारी मा नै वेस्या सरीखी गिणी काई ।—भि द्र

उ०—६ पग पग लगै सरीखी पायल, हाथ हाथ प्रत काकण होय । सरज्या नही अभनमा 'सलखा', दौ पासा नासा नग दोय ।
—साइयौ-झूलौ

उ०—७ थिर मूरती सूर रै नूरथाई, तिका स्वप्न रै माहि पिंडा वताई । सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा, तियौ आक भ्रू बाकडा नेत तीखा ।—मे म

(स्त्री सरीखी)

सरीगत—देखो 'सरीकत' (रू भे.)

उ०—१ काकिया जनमिया जिका चाळा किया, टूट रजवट तिका हूत टाखी । अबरकै रचै रणजीत फोजा धणी, रजकरी सरीगत धणी राखी ।—वा. दा

उ०—२ करै सरव नजर रसद चालै किलै, धार सिर पर धणी माण धूनो । लूणरी सरीगत वहै फुलवट लियां, जूदो न होवसी कमध जूनो ।—महेसदास कूंपावत रौ गीत

सरीगतनामौ—स. पु —वह पत्र जिस पर साझे आदि की शर्तें लिखी जाय, शिर्कतनामा ।

सरीत, सरीती—क्रि. वि.—१ नियमानुसार, रीति से ।

उ०—पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जुटै रण सरीत ।
—वि. स.

२ देखो 'सरीयत' (रू भे.)

उ०—१ ज्यूं कोई बुराई आपरी स्त्रियां रै नरमी करै सो अक्ल मैं सरीत मैं भूडी छै । मुरीत मैं पण भली नही ।—नी प्र.

उ०—२ 'हाजरघा' नै आपा दिखलाया, गलब के साथ बाहर को आया । हाजरघा ने जान झोका, आफताव नै विमान रोका । निमक की सरीतो पै सिर दिया, हूर के विमान बैठि आसमान को गया ।—ला. रा.

उ०—३ आवियौ खान नाहर अडर, साझण दाव सरीत नू । मगरूर सरा दरवार मझि, जाय मिळै 'अगजीत' नू ।—सू प्र.

उ०—४ गजा नेजा टूट तेण ताप सू अयास गाज, जनेबा सरीत बाज वीती घोर जाम । 'हरा' वाळै राह भाण रामसिंघ अह्यौ हूतौ, सेरसिंघ माथा साटै उग्राह्यौ सग्राम ।—करणीदान कवियौ

सरीपाळ—स पु [स. सरीसृप+पाल] चदन । (अ. मा.)

सरीफ—स. पु. [अ. शरीफ] १ भला आदमी, शिष्ट व्यक्ति ।

२ कुलीन आदमी ।

वि.—पवित्र, उत्तम ।

(यौ. कुरानसरीफ, मिजाजसरीफ)

सरीफौ—स. पु.—एक वृक्ष विशेष जिसके फल खाने के काम आते हैं । इस वृक्ष की लकड़ी कुछ मटमैलापन लिए सफेद रग की होती है । तथा छाल पतली व खाकी रग की होती है ।

सरीयत—देखो 'सरियत' (रू. भे.)

उ०—१ तद आलमगीर केसरीसिंघ जी वगैरै हाडा नूं और साराई नू कयो—हमारा स्याम धरम अरु लूणरी सरीयत रखते हो तो या वखत है ।—द. दा.

उ०—२ खावंद के हुकम पर जयसेती जग करै । निमख की सरीयत पर ज्यान कुरबान करै ।—सू प्र.

उ०—३ तमाम न्याय री रीति मैं विसेस फरयादी रा वचन सुणनै री सरीयत छै ।—नी. प्र.

सरीर—स. पु. [स. शरीर] १ किसी प्राणी के समस्त अंगो का समूह, देह, काया । (अ. मा; डि. को.)

उ०—१ ओछै पाणी मछली, किसी जिंद की आस । हरीया सास सरीर मैं, वसै किता दिन वास ।—अनुभववांणी

उ०—२ नमो सनकादिक स्याम सरीर, नमो बय-पच अखै चत्र-वीर ।—ह. र

पर्याय.—अग, अगी, आतमजा, आतमा, करण, कलेवर, काया, गात, घट, डील तनु देह, देही, घूघर, पयगुण, पिंजर, पिंड, पीजरौ, पुदगल, पुर, बाध, वप, बिग्रह, बेर, मड, मूरत, मूरति,

उ०—जिन प्रतिमा जिन हीज सरूपी पीतें जिनज प्ररुपी। सेवें तै सुद्ध समकित रूपी, अग्यानी ए उथूजी।—ध. व. ग्र

सरूपोत–क्रि. वि.—१ प्रारम्भ मे।

उ०—१ नाई मन में सोचण लागी कै इण भात रा सरूपोत ई श्रैडा माडणा उघडिया तो पछै अत मैं राम जाणै काई व्हैला। —फुलवाडी

उ०—२ सरूपोत नी बोलण रै कारण म्हे आ समभण री भूल करी कै थूं पिछतावौ करै है।—फुलवाडी

२ पहलेपहल, सर्वप्रथम।

उ०—१ जुग री जाणकारी राखतो थकी आपरै गवाड मैं माडी रीत रिवाजा मिटावण नैं जुवाना रौ सगठण करै है अर करडा विचार लिया आपरै घर सू ही तोडण री सरूपोत मतो करै है। —फुलवाडी

उ०—२ सरूपोत दूध-दही रै मिस उठै बुलावण रो जाळ रचियो, सगळा दूध री साई करण री दातारी दरसाई।—फुलवाडी

३ पहल, शुरुआत।

ज्यू—ई काम री सरूपोत तो म्हू ई करूला।

रू भे.—सरूपात, सरूपात, सरूवात, सिरैपोत, सुरुपात, सुरूवात।

सरूपौ–स पु.—१ नजारा, आश्चर्यजनक बात।

उ०—घोखें पडियो घर धणी, सोचें केहो सरूपौ रे। नर-नारी कुण नीकल्या, अदभुत रूप अनूपौ रे।—ध. व. ग्र.

२ देखो 'सरूप' (रू भे.)

सरूभौ—देखो 'सलूभौ' (रू. भे)

उ०—प्रळै दैण दुसहां पयण पैण तीरा पडै, स्यामरख वैण बीरा सरूभो। निसा कोतक लगो रैण जुध निरखवा, अैण रथ रोक चद्र गैण उभो।—हुकमीचद खिडियौ

सरूवात—देखो 'सरूपोत' (रू. भे.)

सरेखडौ–स पु—एक प्रकार का घोडा (शा हो)

सरेज–वि—श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—हलकार भडा ललकार हुवैं, चगथा मुख तेज सरेज चुवैं। —रा. रू

स. पु [स शरेज] स्वामी कार्तिकेय।

सरेवजार—देखो 'सिरैवाजार' (रू भे)

सरेव–स स्त्री—प्रथा, रीति-रिवाज।

रू भे.—सरह।

सरेस–स पु. [स. शिरीष] १ एक वृक्ष विशेष।

२ एक लसदार पदार्थ जो लकडी चिपकाने के काम आता है।

रू. भे—सरीम, सिरम।

सरै—१ देखो 'सिरै' (रू भे)

उ०—दीन्हा कर गोरख दहू, तोर वडै कुल तास। सह सतिया पेमा सरै, वसै अमरपुर वास।—पा प्र.

२ देखो 'सरह' (रू भे.)

उ०—असवार पचास कन्है रहै सो रिपियो आधो घोडै री सरै पावै।—अमरसिंघ गर्जासघोत री वात

सरैवजार, सरैवाजार—देखो 'सिरैवाजार' (रू. भे)

सरोकार–स पु. [फा.] १ लगाव, मतलव।

२ परस्पर का सम्वन्ध।

सरोकारी–वि [फा] १ सरोकार रखने वाला।

२ जिससे सरोकार रखा जाय।

सरोख—देखो 'सरोस' (रू भे)

उ०—१ चाहता जादम रिण चाळो, दुयणा तणो हुयो देठाळो। असुर सरोख डाखिया आया, आगै जादम राड अघाया। —रा. रू

उ०—२ जगि सुमति आपत जाणि गुरजण रटत वयण सरोख। —रा रू

उ०—३ चापावत 'राम' 'हरी' धर चोख, समोसर नाहरखान सरोख।—रा. रू.

सरोगय–स पु—एक असुर जिसने भीमसेन को भी परास्त कर दिया था।

सरोड़–वि—सीधा-सादा, भला।

उ०—मा'रजा सूधो भोळो सरोड अर स्याणो माणस, काम वेगी ढेढ-थोरी नै ही नटै नी।—दसदोख

सरोज–स. पु [स] १ कमल। (अ. मा, डिं को; ह ना. मा.)

उ०—स्रीपत चरण सरोज रो, गगाजळ मकरद। अळियळ ज्यू कर पान अब, अधिकावण आणद।—बा. दा.

२ श्वेत, सफेद। * (डिं को)

३ लाल रक्त। * (डिं. को)

सरोजमुखौ–वि [सं] कमल के समान मुख वाला।

सरोजिनी–स स्त्री. [स] वह तालाव जिसमे कमल हो।

वि [स] कमल का, कमल से सम्वन्धित।

स पु—१ ब्रह्मा।

२ गौतम बुद्ध।

सरोत—देखो स्रोत' (रू. भे)

सरोतर, सरोतरि, सरोतरी–वि—समान, बराबर।

उ०—१ राह भवन धन धन सुख राखै। दुनो कुवेर सरोतर दाखै।—रा रू

उ०—२ रवि सेस अवनेस अघु 'वखतेस' सरोतर।—रा रू.

उ०—३ सुलताण सरोतरि विलद सेर, जिण भाण हरण जुडि करण जेर।—रा रू

सरोतौ–सं पु—१ सुपारी व केरी (कच्चा आम) काटने का एक उपकरण विशेष।

वि. वि.—सुपारी काटने का सरोता आकार मे केरी काटने के

सरूठ-वि.—क्रोधपूर्ण, सक्रोध।

उ०—मद पूठ सरूठ नवाब महा, क्रत कोपित काळिय नाग कहा।
—रा. रू.

सरूप-स. पु [स. स्वरूप] १ नाथ सम्प्रदाय के जोगियो द्वारा कानो मे पहिना जाने वाला कुडल नामक आभूषण विशेष।

२ हाल, वृतान्त।

उ०—पणि ए ग्रह छै केहनौ, केण करायौ कूर। वलि तू ब्रह्मा कवण छै, तै सहु दाखि सरूप।—वि. कु.

३ तरह, प्रकार, भाति।

उ०—भूपाळ वीया सेवाळ तणी भत, कळिया सह ससार कहै। माया जळ कळजुग छै माही, राजा कमळ सरूप रहै।
—जगन्नाथ सादू

वि.—१ सुन्दर, मनोहर। (अ. मा, ह. ना. मा.)

उ०—१ इसडी वा कन्या छै सु काठ भखण करै छै, सरूप छै, गुणवती छै।—पचदडी री वारता

उ०—२ घाटा रूप मैं सरूप जिकै बाटा सूवा सीध घालै, थाटा घणा बीच सोभा विरच्ची अथाह। दळा री दुवाह जोध नरा नाह 'सेवौ' दाखा, पाकेटा पमंगा चगा माडियौ प्रवाह।—नाथौ बारहठ

२ समान, तुल्य।

उ०—१ झाळा घोम तेज झळहळियौ, अगन सरूप पनग ऊछ-ळियौ। जझकै नही भयाणक जाणै, पनग जिकौ ग्रहियौ अप पाणै।—सू प्र.

उ०—२ माया आगि सरूप है, जोग जुगति सु राखि। नही तौ तन जोखा घणा, हरीया हरिजन आखि।—अनुभववाणी

उ०—३ केस कळप तजियौ सकळ, भजियौ कजियौ भूप। वजियौ इण गुण व्रद्धवय, सजियौ तरुण सरूप।—व. भा.

उ०—४ सखिया रै साथ इसी सोवै, ज्यू चिरम्या मैं मोती अनूप। होठा पर हास इसौ मोहै, ज्यू तारा री जोती सरूप।
—करणीदान बारहठ

३ एक ही रूप का, समान शक्ल का।

४ देखो 'स्वरूप' (रू भे.)

(अ. मा, डि को, ना मा; ह. ना. मा.)

उ०—१ किलनू कळ कलनू कळ कहै, रिख रूप री रूप। बिगडै कुकवि रसण बस सबदा तणौ सरूप।—वा दा

उ०—२ उणनै पोता री वौ फोटू याद आयौ जिकौ उणै व्याव रै दूजी साल धणी-लुगाई दोन्यू भेळा ऊभ नै खेंचायौ हो। उण वखत सुसीला रौ किसोक फूटरौ सरूप हो।—अमरचूनडी

उ०—३ इह सरूप जगळ घर आई, मह्वा सकति दुरगा मेहाई। मसक समान 'कान्ह' कू मारची, उदनवान जळजान उबारचौ।
—मे. म

उ०—४ गजा प्राहार हाथळा सिंह छूटौ 'कुसळेस' गाज, कायरा पराजै बोल भांहरै करूप। अमामौ जोधार खेत उछाह रै साजि आयौ, सूर रामसिंघ सामौ राह रै सरूप।—करणीदान कवियौ

उ०—५ मरजाद सर सर सरिति अनुमिति, छूटि जात अछेहय। पड़ि खाळ थाळ थळ थळ ताळ पूरति, खह सरूप अखेहय।
—रा. रू.

उ०—६ सीसडलौ मूमल रौ सरूप नारेळ ज्यू, हा जी रे केसडला माडेंची रा वासग नाग ज्यू, म्हाजी जुग वाल्ही मूमल! हालै नी ऐ अमराणै रै देस।—लो. गी.

रू. भे.—सरूपी, सारूप।

सरूपमान, सरूपवान—देखो 'स्वरूपवान' (रू. भे)

उ०—१ अैडौ सरूपवान मोट्यार इण भात विडरूप कीकर बणग्यौ। देखणवाळा लोगा री आख्या काळजा रै माय वडगी।
—फुलवाडी

उ०—२ वीदणी तौ जांणै कोई सपनौ देखै। ज्यू कह्यौ—त्यूं करचौ। सातवी टीकी देवताई धरती धूजी, वीजळिया किडकी, आभौ हिलियौ। देखता देखता काळिदर तौ पच्चीस बरसा रौ सरूपवान मोट्यार बणग्यौ।—फुलवाडी

उ०—३ फगत एक भवारौ वाकी वच्यौ। वै हीमत करनै माय वडी। उठै एक अजब ई नजारौ निगै आयौ। सूळा री सेज माथै एक सरूपवांन मोट्यार सूतौ।—फुलवाडी

सरूपसाही-स. पु.—महाराणा सरूपसिंह द्वारा चलाया हुआ मेवाड़ का एक सिक्का विशेष जो चादी और स्वर्ण दोनो का अलग-अलग होता था।

सरूपसी-स. पु.—१ भाटी वंश की एक शाखा।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति।

सरूपांत, सरूपात—देखो 'सरूपोत' (रू. भे.)

उ०—सरूपात मैं ठाकर दारू नै पियौ बीच मैं दारू दारू नै पीयौ, अर अबै दारू ठाकर नै पीवतौ हौ।—रातवासौ

सरूपा-स. स्त्री.—भूत ऋषी की पत्नी जो असख्य रुद्रो की माता मानी जाती है।

सरूपाचारय-स पु [स स्वरूपाचार्य] शकर स्वामी का एक शिष्य जिन्होने पश्चिम मे शारदा मठ की स्थापना की थी।

सरूपियौ—देखो 'सरूप' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हिवइ रितिराउ कहता वसत रिति सरूपियौ जोवन सु आपणा नाना प्रकार गुणगतिमति सहित यौ परिग्रह लै आयौ।
—वेलि

सरूपी—देखो 'स्वरूपी' (रू. भे)

उ०—१ अकल सरूपी तू गुरु जीयउ एह अचभौ थाई।—स. कु.

उ०—२ जनहरीया चढी ग्यान गज, जाजम अधर बिछाय। जगत सरूपी कूकरा, भूसलि मरौ भसि जाय।—अनुभववाणी

२ देखो 'सरूप' (रू. भे)

असतोष, आवेग, क्रोध आदि के कारण भी पड जाते हैं। शिकन, सिलवट, सिकुडन।

उ०—१ वागो मगाइयो सो वडारण आण दियो सो वयूंक मैलो थो मेह सू गीलो थो सळा मैं भरीज गयो थो।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ झाड वोरा जैंडी छोटी आस्या, लिलाड माथै सातेक आडा सळ, मूडा माथै खत री ठौड कानी कानी तुगिया ऊगोडी।

—फुलवाडी

उ०—३ मूडो चढ्योडो लिलाड मैं सळ पडियोडा, अर पागडी रा आटा ढीला पडियोडा।—अमरचूनडी

उ०—४ अेक वर देवर ! सेजा मैं लै चाल, वैरो तो पाडा ओ देवरिया ! नारी मरद रो। नारी होय तो फूल जावै मुरझाय, मरद मूछाळा री सेजा ओ देवरिया ! सळ ना पडै।—लो. गी

उ०—५ सूरज खाखळ रतन सळ, पोहमी रिण जळ पक। कायर कटक कळक इम, कुकवी सभा कलक।—वां दा.

२ प्रपच, वधन।

उ०—मरण जनमचो सळ मिटण सो सलभ व्है सभार। जम यो सळ भजै जिसो, कौसल राजकवार।—र. ज. प्र

३ खलिहान मे पडे गेहू की कटी फसल का ढेर।

४ नाश, सहार।

उ०—कहै ओरि केकांण सेल असुराण करू सळ। वीसहथी हथवीस ओक पाऊ रत उजळ।—सू. प्र.

५ दुश्मनी, शत्रुता।

[स. शल] ६ ऊंट। (डि. को)

७ भाला, वर्छी।

८ कस का एक अमात्य एवं मल्ल का नाम जो कृष्ण व वलराम से मल्लयुद्ध करते हुए मारा गया था।

९ धृतराष्ट्र के १०० पुत्रो मे से एक।

१० वासुकी कुलोत्पन्न एक नाग।

११ विप्रचित्ति एवं सिंहिका के पुत्रो मे से एक असुर जो परशुराम द्वारा मारा गया था।

[सं. शल्य] १२ मद्र देश का राजा जो नकुल सहदेव का मामा था। यह महाभारत के युद्ध मे अर्जुन द्वारा मारा गया।

१३ भृगी नामक शिव गण।

१४ कष्ट, शल्य, पीड़ा।

[स शल] १५ ब्रह्मा।

वि.—१ सीधा, सरल।

२ नोकदार, नुकीला, तीखा।

३ मारने वाला, वध करने वाला।

रू. भे —सल्य, सल्ल।

सळइ—स. पु [स शल्लकी] शल्लकी नामक वृक्ष।

सळकणौ, सळकबौ—क्रि. अ.—१ खिसकना, भागना, चुपके से भाग जाना।

उ०—१ छळ न वळै सो अकसो छोडै, ईरानी नह फो वळ ओडै। अरज 'अजीत' हृत गुदराई, सळक गयो जैसीघ सवाई।—रा. रू

उ०—२ सळकिया कळह मझ झाट देखें सको, लोहटां नह कीधो लोह भिळतो। एक 'माहेस' जिम हुता ऊमरा, भूप री पदै नह देस भिळतो।—महेसदास कूंपावत रो गीत

उ०—३ जीम्यो अणन्हायो जरै, गमरी करी न सेवा रे। सिव पारवती सळकिया, दोमू हरतिम देवो रे।—ध व. ग्रं

२ चमकना, दमकना। (विजली आदि)

३ हिलना, चल-विचल होना।

उ०—१ दल दस देस तणा मिळि, घडीयालइ टमकारो। सळक्यो मेर समुद्र झळहळियो, अहि डोल्यो महि भारो।—रुकमणि मगळ

उ०—२ सळकै सेंस न ऊगै सूर।—अग्यात

४ वल खाते हुए चलना, वक्रगति से चलना।

सळकणहार, हारो (हारी), सळकणियो—वि०।

सळकिओडो, सळकियोडो, सळक्योडो—भू० का० कृ०।

सळकीजणो, सळकीजवो—भाव वा०।

सळक्कणो, सळक्कवो, सिळकणो, सिळकबो—रू० भे०।

सलकर—स. पु [स. शलकर] तक्षक कुलोत्पन्न एक नाग।

सळकियोडो—भू. का. कृ.—१ खिसका हुआ, भागा हुआ, चला गया हुआ. २ चमका हुआ, दमका हुआ (विजली आदि). ३ हिला हुआ, चल-विचल हुवा हुआ ४ वल खाते हुए चला हुआ, वक्रगति से चला हुआ।

(स्त्री. सळकियोडी)

सळकी, सळकीजा—स. स्त्री —मछली। (अ. मा; डि को, ह ना मा.)

सळक्कणो, सळक्कवो—देखो 'सळकणो, सळकवो' (रू. भे)

उ०—आखियो हुकम ऊखेळ रो, असपत मेळ अटक्कियो। घर दिखण सीस ओछाह घर, साह सगाह सळक्कियो।—रा. रू.

सळक्षण, सलक्षण—देखो सुलक्षण' (रू. भे) (ह ना. मा)

सलखणोत—सं. स्त्री.—१ गहलोत क्षत्रियो की एक शाखा।

२ उक्त शाखा का एक व्यक्ति।

सलखणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू. भे.)

(स्त्री सलखणी)

सळगणौ, सळगवौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगवौ' (रू. भे.)

सळगणहार, हारो (हारी), सळगणियो—वि०।

सळगिओड़ो, सळगियोडो, सळग्योडो—भू० का० कृ०।

सळगीजणो, सळगीजवो—भाव वा०।

सळगाणौ, सळगाबौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू. भे.)

उ०—नारद होय वहीर, रति नगरी मैं आया। जैसैं खेल बजार, गोड माबा सळगाया।—अरजुणजी बारहठ

सरोते से छोटा होता है एव केरी काटने के सरोते मे नीचे लकडी का मोटा तख्ता लगा होता है।

वि.—समान, बराबर।

रू. भे.—सरोतो।

सरोद-वि.—१ एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

२ देखो 'सरोदो' (मह; रू भे)

उ०—सिखति केक भेदसोण साधन सरोद रा। महामत्रेस अगम, मही अभ्यास मोद रा।—सू. प्र.

सरोदो, सरोधो-स पु. [सं. स्वरोदय] दायिने और वाएं नथुने से निकलते हुए श्वासो को देखकर शुभ और अशुभ फल की भविष्यवाणी करने की विद्या।

उ०—१ मनवा देव वसै हिरदा मैं, नाभि कमळ पग देला रे। चद्र सूर रा लिया सरोदा, सुखमण सीर चडेला रे।

—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ आन को उपास नाह, सरोधा अभ्यास नाह। परम को ग्यान नाह न जानू पचतत कू।—ऊदोजी अडीग

रू भे.—सरोद।

सरोबर, सरोवार-वि —१ तरबतर।

२ समान, सदृश।

३ देखो 'सरोवर' (रू. भे.)

रू भे.—सरवर।

सरोभर-वि.—समान, तुल्य।

उ०—१ राज द्वार उद्धार, इद्र आगार सरोभर।—ला रा

उ०—२ उजा विड आकाय घर भुजा पौरस अफर, वीरवर निडर चित धीर वाधै। हेरता निजर भर मुरद्धर कूपहर, सरोभर अवर नर कवण साधै।—जैतदान बारहठ

सरोमण, सरोमणि, सरोमणी—देखो 'सिरोमणी' (रू भे)

सरोरुह-स. पु [स. सरोरुह] कमल।

उ०—पतपच्छी जुग पाण, सरोरुह पल्लवा। नगजुत वलय अमोल दिया जै निध नवा।—वा. दा

सरोवर-स पु. [सं. सर+वर] १ सागर, समुद्र। (उ र.)

२ तालाव, जलाशय। (डि को)

उ०—१ 'सेर' भूला माळवो, 'सेर' प्यासियो सरोवर।

—पहाडखा आढो

उ०—२ मोवन मिरघ सरोवरां, सती फिरंतो दीठ। असडा मिरघ न मारही, लखण कमावै भूठ।—मेहोजी गोदारो थापन

३ झील।

वि —समान, तुल्य, बराबर।

उ०—फटारचा सरालग सेल खजर करद, अग कट जरद पडिया मथांहा। जोध सुर असुर वे सरोवर जूटिया, बरोबर करै सरीख बाहा।—र रू

क्रि वि.—साथ-साथ, परस्पर।

रू. भे.—सरबर, सरवर, सरवरि, सरव्वर, सरोबर।

अल्पा.—सरवरियो।

सरोस-स पु.—१ जोश, उमग।

उ०—जिण जिण सथान फौजा सजोस। मुण खबर थया पण, विण सरोस।—रा. रू

२ आवेग।

उ०—वडै सरोस जोस मैं भरोस अत्थनं वहै। रसा अरोस कोसलौ भरोस और कै रहै।—ऊ. का.

३ तेज।

उ०—अत कोप मुखा चख रोस अडै, भळ आग लगी फिर दूग भडै। जपतै रसणा रूख वाण जुई, हित वादळ वीज सरोस हुई।

—रा. रू

वि.—४ जोशपूर्ण।

उ०—तोलै आभ भुजा वळी वोलै सूर सरोस।—रा. रू.

५ नाराज।

६ गुस्से से युक्त, क्रोधित।

रू भे —सरोख।

सरोसरि, सरोसरो-वि.—एक समान, बराबर।

उ०—पीठ प्रिथी सिरि सुन्दर जैपुर, रग वजार हजार बराबरि। सोभत चोपड बध सरोसरि, गौरव अटा महला घड कंगरि।

—जैपुर नगर रो वरणन

सरौ, सुरौ-स पु.—१ कृषि उपकरण दताली का वह अग्र भाग जिसमें कघे के आकार के दाते लगे होते हैं।

२ प्रथा, परिपाटी।

उ०—पग तोकर हाकल माड पग, विण छोत मिटै नह सूर वग। सुप्रवीत महाजत सूर सरो, कमधेम पडै अप्रवीत करो।—पा. प्र.

वि —३ सही, सत्य।

उ०—पहलोक अवेरो प्रिथमी, साहा राहा भागो सरो। 'सुरजन' सुमत गुण ऊचरै, घरै नही वड राजा गजसाह रो।

—सुरजनदास पूनियो

सरौतौ—देखो 'सरोतो' (रू भे)

सरौवर—देखो 'सरोवर' (रू. भे)

उ०—आया पोहकर नेमलै, 'मधकर' हर कुळमोड। देवळ लीधाराह रै, मुगत सरौवर ठौड।—रा रू.

सलझ-स पु.—शामियाना खडा करने का खम्भा।

उ०—भूडा भोज न जाणज्यै, मंदोवरि रा मझ। सुदरि सोहै आगणै, लंबी जिसि सलंभ।—मेहोजी गोदारो

सळ, सल, सळ-स पु —१ किसी समतल तथा कोमल तल या पदार्थ के मुडने, दबने, सूखने या पिचकने के कारण उसमे उभरने वाली रेखाए जो उसकी समतलता नष्ट करती है। यह वृद्धावस्था,

सलटावणी, सलटाववौ—रू० भे० ।

सलटायोडो–भू. का कृ.—१ निपटाया हुआ. २ सुलझाया हुआ. ३ सुधारा हुआ. ४ किया हुआ, निकाला हुआ. (काम) ५ मुक्ति दिलाया हुआ, छुटकारा दिलाया हुआ ।
(स्त्री सलटायोडी)

सलटावणौ, सलटाववौ—देखो 'सलटाणौ, सलटावौ' (रू भे)
उ०—१ वखाण सारू फेर खपज्यो, घणी काई भुळावण देवूं। अबै थे जावौ, म्हनै केई जरूरी काम सलटावणा है ।—फुलवाडी
उ०—२ पछी तौ आसू ढुळकावता वा इण बात करी—अदाता वौ तौ सात समदरा पार पचायती सलटावण नै गियौ है। आतौ ई व्हैला । थोडी ताळ खटाव राखौ ।—फुलवाडी
उ०—३ थारा चोखळा री तौ आछी पाखी परवारी । कोई दुयणी रौ जायौ औ न्याव सलटावणियौ लाधौ ई नी । हचा हचा पाधरा राजाजी रै गोडै वहीर व्हैगा ।—फुलवाडी
सलटावणहार, हारौ (हारी), सलटावणियौ—वि० ।
सलटाविओडौ, सलटावियोडौ, सलटाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
सलटावीजणौ, सलटावीजवौ—कर्म वा० ।

सलटावियोडौ—देखो 'सलटायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री सलटावियोडी)

सलटियोडौ–भू का. कृ —१ समस्या की जटिलता, पेचीदगी आदि का हल निकला हुआ. २ निपटा हुआ ३ हुवा हुआ, निकला हुआ. ४ सुधरा हुआ. ५ छुटकारा पाया हुआ, मुक्त हुवा हुआ ।
(स्त्री सलटियोडी)

सळणौ, सळवौ—देखो 'सुळणौ, सुळवौ' (रू. भे)
सळणहार, हारौ (हारी), सळणियौ—वि० ।
सळिओड़ौ, सळियोडौ, सळ्योडौ—भू० का० कृ० ।
सळीजणौ, सळीजवौ—भाव वा० ।

सळत—देखो 'सरिता' (रू भे)

सलतनत–स स्त्री. [अ.] १ सुलतान के अधीन रहने वाला राज्य, बादशाहत ।
२ शासन, हुकुमत ।
रू भे.—सलनतत ।

सलता—देखो 'सरिता' (रू भे)
उ०—भगति भाव भादू नदी, सभी उठी घहराय । सळता सोई जाणियै, जेठ मास ठहराय ।—अग्यात

सळताळ–स स्त्री —चमक-दमक ।
उ०—लखि एत घडू सळताळ पटा, घण जोर वरै थळ सीस घटा ।
—पा प्र.

सळदी, सळद्दी—देखो 'सरहदी' (रू भे)
उ०—तरियन खान पठाण, सेख अलियार सलद्दी । मिळै सेख मुअदाह, मुगळ आगा मुतसद्दी ।—सू प्र.

सलप–वि.—अल्प, थोडा ।

सळपळाट, मळपळाट, सळपळाहट, सळपळाहट, सळफळाट, सळफळाट, सळफळाहट, सळफळाहट–स. पु.—१ पौधो के समूह पर हवा के झोको से उत्पन्न गति, ध्वनि, कम्पन ।
उ०—मेत पौन मू मिल-मिलै गेरै, रात दिन रूखाळी मागै मेरै । धान धूजै, सळपळाट करै तथा वेळा, चिया-फूला नागै भूना झूलै है ।—दमदोम
२ छिन्नचित्त होने की अवस्था या भाव ।

सलवै–क्रि वि.—पास, निकट ।
उ०—१ मिनख री रूप धारया आ मौत तौ साव सलवै आयगी दीसै ।—फुलवाडी
उ०—२ इण भात हरियळ धरती अर जच्चा-राणी रै वधावा रा मीठा गीत सुणती सुणती काली मासी गाव रै सलवै पूगगी ।
—फुलवाडी
उ०—३ खेत रै सलवै पूगता ई सगळा भाचरिया उणरै ओळा-दोळा व्हैगा ।—फुलवाडी

सलवौ–वि. (स्त्री. सलवी) पास, करीब ।
उ०—सलवी आयर सायधण, चित पिय लीनो चोर । लोयण लागा निरखवा, (ज्यू) चदा दिसै चकोर ।—नारायणसिंह भाटी
रू. भे.—सलभौ,

सलभौ–वि.—१ लाभान्वित, लाभ प्राप्त ।
उ०—आवै केइक चीतिया, अणचीतिया अनेक । वळै सलभा होय सब उर अदतारा छेक ।—बा. दा.
२ देखो 'सलवौ' (रू. भे.)

सलभ–स पु. [स. शलभ] १ टिड्डी । (हिं. को)
उ०—इम आवै इक ऊपरा, हाटी लोप हटक्क । सलभ मुआ सिर सत्रमैं, कीडी जेम कटक्क ।—बा दा
२ पतगा । (हि. को.)
उ०—प्रासाढ मनहु वरखा समय, समुख आनि सलभा गिरत ।
—ला. रा
३ कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक ।
४ पाण्डवपक्षीय योद्धा जो कर्ण द्वारा मारा गया ।
५ छप्पय का एक भेद जिसमे ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण १५२ मात्राएँ होती है ।
६ देखो 'सुलभ' (रू. भे.)
उ०—ससार माहि छइ सहू सलभ, जिण सासण एक छइ दुर-लभ ।—वस्तिग

सलभा–स स्त्री [स शलभा] अत्रि ऋषि की पत्नी का नाम ।

सलभासन–स. पु —योग के चौरासी आसनो मे से एक आसन जिसमे औंधा सोकर दोनो हाथो की हथेली छाती के नीचे दबाकर मुख को पृथ्वी से ऊचा रखना होता है ।

सळगणहार, हारौ, (हारी), सळगणियौ—वि० ।
सळगायोडौ—भू० का० कृ० ।
सळगाईजणौ, सळगाईजबौ—कर्म वा० ।
सळग्गणौ, सळग्गबौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगबौ' (रू. भे.)
उ०—उर लग्गी ज्वाळा विरह, जाण सळग्गी लाय । भोम निहारै गयण तजि, वयण उचारै हाय ।—रा. रू.
सळग्गणहार, हारौ (हारी), सळग्गणियौ—वि० ।
सळग्गिओडौ, सळग्गियोडौ, सळग्योडौ—भू० का० कृ० ।
सळग्गीजणौ, सळग्गीजबौ—भाव वा० ।
सलज–वि. [सं. सलज्ज] लज्जाशील, सुशील ।
रू. भे.—सलज्ज ।
सलजणौ, सलजबौ–क्रि. अ.—१ लज्जित होना, शर्माना ।
२ संकुचित होना, नीचा देखना ।
सलजणहार, हारौ (हारी), सलजणियौ—वि० ।
सलजिओड़ौ, सलजियोडौ, सलज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सलजीजणौ, सलजीजबौ—भाव वा० ।
सलज्जणौ, सलज्जबौ—रू० भे० ।
सलजम–स. पु [फा. शलजम] प्राय' सारे भारत मे सर्दी के दिनो मे होने वाला एक प्रकार का कदमूल विशेष ।
सलजियोडौ–भू का कृ.—१ लज्जित हुवा हुआ, शर्माया हुआ २ नीचा देखा हुआ, संकुचित हुवा हुआ ।
(स्त्री सलजियोडी)
सलज्ज—देखो 'सलज' (रू. भे.)
उ०—कन्या कमधा रावरी, सूरज कवर सलज्ज । सेवा तौ इसरी करौ, कीजै आदर कज्ज ।—रा रू.
सलज्जणौ, सलज्जबौ—देखो 'सलजणौ, सलजबौ' (रू भे)
उ०—भोग्य चित भजै, ग्रीधणी गरज्जै । नीर धार निजै, सौहडै सलज्जै —रा रू.
सलज्जियोडौ—देखो 'सलजियोडौ' (रू भे.)
सलटणौ, सलटबौ–क्रि अ —१ समस्या की जटिलता पेंचीदगी आदि का दूर होना, सुलझना, हल होना ।
उ०—१ तद राव 'सूजैजी' आपरी माजी नू कयौ, 'माजी थे वार्भजी वीकैजी खनै जावौ नै था गया वात सलटसी ।—द दा
उ०—२ केई जणा गादी रौ हक जमायौ । सेवट राझौ किणी भांत नी सलटियौ तौ सगळा दीवाण मिळनै अेक सला विचारी ।
—फुलवाडी
उ०—३ पण अकल री ठौड अकल इज काम आवै । अकल री बाता रंघडपणा सूं नी सलटै ।—फुलवाडी
उ०—४ वात तौ कराड़ा वारै व्हैगी । अबै कीकर सलटणी आवै । कुण जाणै कुण दाव-घाव करघो ।—फुलवाड़ी
२ निपटना ।
उ०—१ दूजा गाव मैं किसा ठाकर नी है काई । अबै तौ वाणिया वाळी अकल सू ई सलटणी पडैला ।—फुलवाडी
उ०—२ आखा ठिकाणा री रया नै एक साथ सलटण री जोरावरी व्हैता थका ई खुदोखुद कवरसा सू कीकर सलटीजै ।
—फुलवाडी
उ०—३ थूक उछाळना कैवण लागा—म्हारै घर री वात है, मतै ई सलट लेस्या । वस्ती वाळा क्यू पचायती करै ।—फुलवाडी
उ०—४ घणकरी डड जूता रै पाण ई सलट जातौ । वात वात मैं जूता अर पावडै पावडै जरबा । जूनी ई उण ठिकाणै सिरै कानून अर जूतौ ई सिरै न्याव हौ ।—फुलवाडी
३ होना, निकलना ।
उ०—१ मादा मिनख नै तौ बतावै सो ई ओखद जचै । पछै अेक राजा रै तौ हुकम सू सगळा काम सलटै, उणनै हुकम देवता काई जोर पडै ।—फुलवाडी
उ०—२ कदै ई कदै ई छोटा मिनख जको काम सार सकै, वो मोटा मिनखा सू नी सलटै ।—फुलवाडी
उ०—३ पण पुटिया विना उठै पचायती सलटै कोनी काई ।
—फुलवाडी
४ छुटकारा पाना, मुक्त होना ।
उ०—सगण करता रूगता ऊभा व्हैगा । पाखती रा वेली नै सायड ऊभी बगळ बगळ मठोठै । फगत माथौ माथौ बच्यौ । करै तौ काई करै । इण अणचीती माया सूं कीकर सलटणी आवै ।
—फुलवाडी
सलटणहार, हारौ (हारी), सलटणियौ—वि० ।
सलटिओडौ, सलटियोडौ, सलट्योडौ—भू० का० कृ० ।
सलटीजणौ, सलटीजबौ—भाव वा० ।
सलटाणौ, सलटाबौ–क्रि. स.—१ निपटाना ।
उ०—१ फूलचदजी वेगराजजी रै घर री पूरी खोज खबर लीनी । मागतोडा नै आख दिखाळी । आघै-परघै नै सलटाया ।—दसदोख
उ०—२ मासी अेकली ई गवाडी री काम कणा सलटाय देती, जिणरी की पतौ ई नी पडतौ ।—फुलवाडी
उ०—३ जापा रै पाच महीना पछै भटियाणी नै काम करण री ना तौ नी ही, पण मासी घणकरौ काम खुद ई सलटाय देती ।
—फुलवाडी
२ सुलझाना ।
३ सुधारना ।
४ करना, निकालना । (काम)
५ मुक्ति दिलाना, छुटकारा दिलाना ।
सलटाणहार, हारौ, (हारी), सलटाणियौ—वि० ।
सलटायोडौ—भू० का० कृ० ।
सलटाईजणौ, सलटाईजबौ—कर्म वा० ।

सलवी-स स्त्री—वह भेड जिसकी ऊन काटी नही गई हो।

सळवौ-स पु —१ संशय, शक, सदेह।

२ कपट, धोखा।

उ०—जन हरिदास गोविंद विमुख, तिन सिरि जम का हाथ। बाहरि मूंडत देखियै, भीतरि सलवा साथ।—ह पु. वा

३ देखो 'सलवौ' (रू. भे.)

उ०—सिधराव जैसिंघ वाता सुणै छै। तिसा सळवा वैठा छै।
—जगदेव पवार री वात

सळसळणौ, सळसळवौ, सलसलणौ, सलसलवौ-क्रि अ —१ हिलना-डुलना, हरकत करना।

उ०—१ झावकि पइठी झाळि, सुदरी कांइ न सळसळइ। बोलाइ नही जा बाळ, धण धधूणी जोइयउ।—ढो मा

उ०—२ सळसळिया आपौ सहज, तम नीद मिटांण। मन मैं मनवा ऊपनी, मडण मडाण।—गज-उद्धार

२ लचकना, डोलना।

उ०—१ सळसळै कमठ पीठ फण लचक सेसरा, दहल पड कक हकव कंदसूं देस रा। पाण तज सक अनमी भरै पेसरा........ किण सीस वध कमर 'सगतेस'रा।—रामलाल बारहठ

उ०—२ हयदळ गयदल पयदल मिलियौ, चालता अहिपति सल-सलियौ। सात सायर नो जल झलफलीयौ, जायै किण ही नही वल कलीयौ।—श्रीपालरास

३ तरंगित होना।

उ०—असख्य साहणि चालतै हूतै समुद्र सलिल सलसल्यां घाट घमघमी घाघरयाल वाजी।—व. स.

४ ढीला होना, खोखला होना।

उ०—जलचर जीव आवी प्रहवणि वाजइ, सुकाणना वध सलसल्या पवनउ पूर, कुआथभउ डोलइ।—व स.

सळसळणहार, हारौ (हारी), सळसळणियौ—वि०।

सळसळिओड़ौ, सळसळियोड़ौ सळसळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साळसळीजणौ, सळसळीजवौ—भाव वा०।

सळसळियोड़ौ, सलसलियोडौ-भू का कृ—१ हिला डुला हुआ, हरकत किया हुआ. २ लचका हुआ, डोला हुआ ३ तरंगित हुवा हुआ ४ ढीला हुवा हुआ, खोखला हुवा हुआ।

(स्त्री सळसळियोडी, सलसलियोडी)

सलसूत्र-स पु.—सलाह-सूत।

उ०—व्यवसाय व्यवहारिए वचन प्रतिष्ठासिउ कीजइ, दाणीसिउं पाठि सलसूत्र साचवीइ.........।—व स.

सलह—देखो सिलह' (रू भे.)

उ०—१ सलह सोहउ सज अस पलाणै, 'जालण' जोगद्र कीध जुआणै। आप तणै पहला धन माणै, वांका ढोवा थाट विनाणै।
—राव जलणसी री गीत

उ०—२ महवेचा वगो करता 'मधकर', मछर तणा गढ अवली माण। सोहडा गळै न ऊतरै सलहा, पमगा नह ऊतरै पलांण।
—माधोसिंह महेचा री गीत

उ०—३ धग-पग धमळ धीर धारण, निहग तो डर केळ वारण। दुखळ-पखी गुरड दारण, सलह खाग सधीर।
—महाराजा गजसिंह री गीत

सलहटी—देखो 'सिलहटी' (रू भे.)

उ०—पीतल लोह दातरा जडिया लाल सलहटी गदरा बिछाया थका।—रा. गा. म.

सलहदार—देखो 'सिलहदार' (रू भे.)

सलहपुर, सलहपूर—देखो 'सिलहपूर' (रू भे)

सलहिदार, सलहीदार—देखो 'सिलहदार' (रू भे)

उ०—सलहिदार हथियार लेइ आगई अवधारीय। सभालै सवि सेन माहि भेजे चित धारीय।—प. च. चौ.

सलांम-स पु. [अ सलाम] १ वदना, नमस्कार, अभिवादन।

उ०—१ एवड छेवड ओलमा मरै बिच सात सलांम।—लो. गी.

उ०—२ पथी एक सदेसडउ, कहिज्यउ मात सलांम। जब थी हम तुम बीछड़े; नयणे नीद हराम।—ढो. मा

क्रि प्र.—करणी, लेणी।

मुहा—१ सलाम सट्टै मियांजी नै नाराज क्यूं करणा=छोटी-मोटी साधारण बातो से ही अगर कोई खुश रहता हो तो उसे नाराज क्यो किया जाय।

२ सलांम करणी=नमस्कार करना।

रू. भे. सिलाम, सीलाम

सलांम कराई-स स्त्री—कन्या-पक्ष द्वारा वर पक्ष के लोगो को मिलन के समय दिया जाने वाला धन। (मुसलमान)

सलांमडी—देखो 'सलाम' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—अरक तेल छोडिया छोला, हरख नीम दै चामडी। मुरधर दानी देव थानै, वरसा सात सलामडी।—दसदेव

सलामत-वि—१ मागलिक सम्बोधन।

उ०—१ पातसाह सलांमत! मोनू नदी माहे सूं बूडती नू एकै सिसोदियै राणा रै भाई काढी छै।—नैणसी

उ०—२ तद नापै अरज करी—दीवाण सलांमत, राठोडा रै वैर रौ मामलो खरौ जोरावर छै। अर वळै वैर ही राव रिणमल रौ।—नैणसी

२ जो कुशल पूर्वक हो।

३ सुरक्षित।

४ जीवित, जिन्दा।

उ०—मात सलामत पित मुआ, आवै नह आपाण। धाम धूम मिजनू घटा, जं मावडिया जाण।—बा. दा

५ पूर्ण, पूरा।

सलभी-स. स्त्री. [सं. शलभी] कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

सलभौ—देखो 'सलवौ' (रू. भे)
(स्त्री. सलभी)

सलमलदीप-स पु. [स. शाल्मलिद्वीप] १ पुराणानुसार पृथ्वी के सात खण्डो मे से एक खण्ड।

सलमो-स. पु.—टोपी, साडी आदि मे वेल-वूटे बनाने के काम आने वाला सोने या चादी का तार।

सलल—देखो 'सलिल' (रू. भे) (डिं को)
उ०—सिंघ अजा सामल सलल, पीवै इक थाळा। तसकर दवे उलूक ज्यू, ऊगा किरणाला।—र. रू.

सलळणौ, सलळबौ, सललणौ, सललवौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळवौ' (रू भे)
उ०—विहु छेह वाणावळी, सर पुडंग सळळी। अणी अणी अतुळी, खग खग्गा खळी।—अ. वचनिका
सललणहार, हारी (हारी), सललणियौ—वि०।
सललिओडौ, सललियोड़ौ, सलल्योडौ—भू० का० कृ०।
सललीजणौ, सललीजवौ—भाव वा०।

सलळियोडौ, सललियोडौ—देखो 'सालुळियोडौ' (रू. भे,)

सळवट-स. स्त्री —१ शिकन, सिकुडन, सिलवट।
उ०—नारी होय तौ फूल जावै मुरझाय मरद मुंछाळै री सेजा री देवरिया सळवट् ना पडै।—लो गी.
२ चावुक, कोडा।
रू भे.—सिलवट।

सळवळ-स स्त्री —१ रेगने वाले जीवो के चलने की क्रिया या चलने पर शरीर की वनावट।
उ०—ग्रेडी लखावै कै म्हारा माथा मैं दस-वीस कानसळाव अठी-उठी सळवळ सळवळ करै है।—फुलवाडी
२ आहट, ध्वनि।
उ०—भीडी डाकनै चोरा रै आवण री सळवळ सुणी तौ दोनू ई जाणा जित्ता डरिया।—फुलवाडी
३ जनरव, कोलाहल।
उ०—खोडा रै ओळू-दोळू अडथडिया मिनख राजाजी रै पधारण री सळवळ सुणता ई असवाडै पसवाडै ऊभग्या।—फूलवाडी
४ अफवाह।
५ स्फुरन, हलचल।
उ०—रूप री कोरी हाकौ इज तौ नी हो। निजरा देख्यां सावळ जाच व्है। राजाजी रा मन मैं ई थोडी सळवळ माची।
—फुलवाडी
६ खातर, वदगी, सेवा।
उ०—ऊभा पगा अनेक, केता नर सळवळ करै। पडिया पूठी पेख, पत तू राखै 'पातला'।—ऊकजी वोगसौ

सळवळणौ, सळवळवौ, सळवळणौ, सळवळवौ-क्रि अ —१ रेंगना।
उ०—१ सळवळता कालिदर नै ठाकर री आ वात खारी लागी।
—फुलवाडी
उ०—२ काळिदर रै ई आ जुगत दाय आई। वौ सळवळतौ पिलग सू हेटै उतरचौ।—फुलवाडी
२ पैदा होना, उत्पन्न होना।
उ०—१ मूडा मैं राम-नाम रै वदळै लाळा सळवळण लागी। ठाकुरजी रौ औ परसाद तौ दैणौ सता रै हाथ हौ।—फुलवाडी
उ०—२ अघोरी-वावा रै मूडै वानै खावण सारू लाळा सळवळण लागी ई ही कै कवर खूजिया माय सू कागद काढनै साम्ही करचौ।
—फुलवाडी
३ गतिमान होना, हिलना-डुलना।
उ०—आज ई वौ उण चितराम रौ अणछक आणद लूटतौ हौ कै माचा रै नीचै काई सळवळाट व्हियौ।—अमरचूंनडी
४ कम्पायमान होना।
उ०—धर धसकीय सलवलीय, सेस गिरिवर टलटलीया।
—सालिभद्र सूरि
सळवळणहार, हारौ (हारी), सळवळणियौ—वि०।
सळवळिओडौ, सळवळियोडौ, सळवळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सळवळीजणौ, सळवळीजवौ—भाव वा०।

सळवळाट-स. पु —१ ध्वनि, आवाज।
उ०—आज ई वौ उण चितराम री अणछक आणद लूटतौ हौ कै माचा रै नीचै काई सळवळाट व्हियौ।—अमरचूनडी
२ रेंगने का ढग।
३ विद्युत चमक।
(मि. सिळाव)

सळवळियोडौ-भू. का कृ —१ रेंगा हुआ. २ पैदा हुवा हुआ, उत्पन्न हुवा हुआ. ३ गतिमान हुवा हुआ, हिला-डुला हुआ ४ कम्पायमान हुवा हुआ।
(स्त्री सळवळियोडी)

सळवाट—देखो 'सिलावट' (रू भे)
उ०—लख समपै जु तै माडिया लासा, घाट सुकवि सळवाट घडै प्रसिध तणा प्रासाद न पड्ही, पाखाणिवा प्रसाद पडै।
—लाखा फूलाणी री गीत

सलवार, सलवार-सं स्त्री —१ पाजामे की तरह पहना जाने वाला एक वस्त्र, जिसके नीचे का हिस्सा वहुत सकरा होता है तथा कमर का हिस्सा वहुत वडा होता है। पहनने पर इसमे वहुत सिलवटें रहती है।
२ वह मादा ऊँट जिसके साथ उसका छोटा वच्चा भी होता है।
ज्यूं—आ सायड सलवार है।

सलाट, सलाटु, सलाट्ट-सं पु. [सं. शिलाघटक] १ दफन या जलाये जाने के स्थान पर बनाया जाने वाला चबूतरा या कोई इमारत।
२ सिलावट। (डूगरपुर) (उ. र.)
उ०—टकारा कडीया वली, साथि घणा सलाट। आहीरा प्रतिघण मिल्या, गोहिलवाडा गाट।—मा का. प्र.
३ बीस तुला के वजन का नाम। (डिं को)
४ कच्चा फल। (डिं को)

सलात-स स्त्री.—बिजली की चमक।

सलायल-स पु [स शालायल] एक प्राचीन ऋषी।

सलावत—देखो 'सलामत' (रू भे)

सलावति, सलावती—१ देखो 'सलामत' (रू. भे.)
उ०—तद गयो साह तजि छत्र तखत, इम दहू राह उचारियो। असपती सलावति मझि ऊमर, मीर सलावत मारियो।—सू प्र.
२ देखो सलामति' (रू भे)

सला'वाज—देखो 'सलाहवाज' (रू. भे.)

सला'वाजी—देखो 'सलाहवाजी' (रू भे)

सलाभोलि-स. पु [स. शलाभोलि] ऊंट। (डिं को)

सळायली—देखो साळाहेली' (रू. भे.)

सलाव—देखो 'सिळाव' (रू भे.)
उ०—१ आभ विलूबै धरण सू. बीज सळावा लेह। कचो कंकट हुय रह्यो, घण वरसतै मेह।—अग्यात
उ०—२ जठै स्याम धाराधर री लहर लेती सपा रा सळावां री सोभा चढण लागी।—वं भा.
उ०—३ पळापळ करती बीजळियां सळावा मारण लागी।
—फुलवाडी

सलासूत-म. पु. यौ.—१ राय, सलाह।
उ०—१ परधै रा आदमी भेळा वैठ माहोमाह सलासूत विचारण लागा।—फुलवाडी
उ०—२ तठा उपरायत मरजी रा खास खवास सूं सलासूत विचारनै राजाजी दरवार मे आया।—फुलवाडी
उ०—३ अेक दिन चौखळा रा वाणिया भेळा होय सला-सूत विचारी।—फुलवाडी
२ विचार-विमर्श।
रू भे.—सलाहसूत।

सलाह-सं. स्त्री [अ.] १ राय, सम्मति।
उ०—१ सारी साथ लेय वहता राड करो सो आपरी सलाह कासूं छै।—मारवाड रा अमरावा री वारता
न०—२ जै आवै तो दूणो रिजक देऊ नही तो सलाह लेय फौज ऊपर पडनै मारू।—जयसिंह आमेर रा धणी री वात
उ०—३ सेठजी सेवट काठा घापनै म्हारी सलाह सू उणनै कोलेज छुडाय दी।—अमरचूनडी
क्रि प्र.—देणी, देवणी, पूछणी, बताणी।
२ विचार-विमर्श।
उ०—मयाणा ज होय सो सलाह करै छै।—नी. प्र.
[सं. श्लाघा] ३ प्रशंसा, सराहना। (उ. र.)
४ आत्माभिमान। (उ. र)
५ चापलूसी। (उ. र.)
६ कामना, अभिलाषा। (उ. र.)
७ सेवा, परिचर्या। (उ. र.)
वि.—१ लाज सहित, सलाज।
उ०—१ सानाणी गढै सहस वळ साधो, साधो ओ अब साज सलाह। साधन पडै छवियां रेहर, साय किसो नांइ किसो सलाह।
—राव कल्याण री गीत
उ०—२ सो दिसनी दूजो 'गजन', 'अजन' हुकम 'अभसाह'। उच्छव सुखघर कारजै, सब पुर हुए सलाह।—रा. रू.
२ सुन्दर, अच्छा।
रू भे.—सला', सल्ला'।

सलाहकार-सं. पु. [अ सलाह+फा. कार] परामर्शदाता, सलाह देने वाला।

सलाहवाज-सं. पु.—सलाहकार, परामर्शदाता।
रू भे.—सला'वाज।

सलाहवाजी-स. स्त्री —सलाह देने का कार्य, परामर्श।
रू भे —सला'वाजी।

सलाहसूत—देखो 'सलासूत' (रू. भे.)
उ०—किसा रै मायनै सलाहसूत व्ही। तै व्हियो कै एक माथो वहैला ज्यू तीन ई भेळा वहैला, कांइ फरक पडै सो तीनू नै ई आवण दो। तीनू जणां किसा रै मायनै पूग्या।—अमरचूनडी

सलिता—देखो 'सरिता' (रू भे.)
उ०—१ सुरग पतालि समद सलिता रो, सिंघ तो हुकम माहि जळ मारो।—सू. प्र.
उ०—२ सलिता सिणगारी जे सधीर, वाहर सूरज री चढै वीर।
—सू. प्र

सलिताकत-म पु. यौ—समुद्र।
उ०—सायर गुण गहीरं लहरि सुत ललत उजलै नीरं। मझि जळ जीय अनत नमो, नमो सलिताकतं।—ऊमरदान लाळस

सलिमुस—देखो 'सिलीमुख' (रू भे)

सळियळ-वि.—१ सम्पूर्ण, पूर्णरूपेण।
उ०—कळियळ कूपळ सारसी, नाजुक अळियळ नार। ऊभी फळियळ अब तळि, सळियळ अग सवार।—पना
२ देखो 'सलिल' (रू भे)
उ०—ऐसै वगीचू कै बीच मैं सळियळ सरोवर कैसै। महाराजा वसत की, फौज कै नीसाण जैसै।—सू. प्र.

६ स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।

स. स्त्री —७ मौजूदगी, उपस्थिति ।

रू भे.—सलामति, सलावत, सलावति, सलावती, सिलांमति, सिलामती ।

सलांमति-सं. स्त्री.—१ सलामत होने की अवस्था या भाव ।

२ अच्छी तन्दुरुस्ती, उत्तम स्वास्थ्य ।

३ देखो 'सलामत' (रू. भे)

उ०—१ बीजै ठाकुरे वात विचारि अर राव भोज मेलियौ । कहाडियौ जु राजि पातिसाह जी सलामति रावळौ साथ आइ आपडियौ छै । पर पहैंचण दीजै ।—द. वि

उ०—२ इण नू ज्यू कपडा पहिरावा त्यू चहवचै माहे गिरि पडै । ताहरा इण रौ मामू कहै रमण दियौ इण नूं । हमारा दोस नही । पातिसाही सलामति मामू आवण दिए नही ।—द वि.

रू भे.—सलावति, सलावती, सिलामति ।

सलांमी-स स्त्री [अ. सलम+ई] १ प्रणाम या नमस्कार करने की क्रिया ।

उ०—अठाहू असवार हुआ सौ विचमैं जिकै भोमिया हुता सरव सलांमी करी ।—नैणसी

२ सैनिक प्रणाली से अस्त्र-शस्त्रो से अभिवादन करने की क्रिया ।

३ नित्य सेवा-चाकरी करने वाला ।

४ किसी बडे माननीय व्यक्ति के आगमन पर बंदूकें या तोपें दागने की क्रिया या भाव ।

रू. भे. सिलामी

सला'—देखो 'सलाह' (रू भे.)

उ०—१ इण वात सारू नी तौ की सला' लेवणी अर नी इण माथै की विचार करणौ ।—फुलवाडी

उ०—२ दीवाण जी तो पोहरै चव्या, किण सू सला' लेवै ।

—फुलवाडी

सलाई, सळाई-स स्त्री [स शलाका] १ किसी धातु की बनी हुई कोई पतली छड ।

२ कपडा जरसी आदि बुनने का उपकरण ।

३ दियासलाई की तीली ।

४ सालने की मजदूरी ।

५ पत्नी की बहिन, साली ।

उ०—लम्रा गला री डावडी ढोला पडी जाजम रै मांय । ग्यान हो तो ग्यान करो ढोला नही तौ सलाइयां नैं करो सलाम ।

—लो. गी.

६ स्वर्णकारो का लोहे का बना औजार जिससे सोने के आभूषणो पर छनने का काम होता है ।

रू. भे —सिलाई ।

सळाउत-स पु —१ पवार वश की एक शाखा ।

२ उक्त शाखा का कोई व्यक्ति ।

सळाक, सलाक-स. पु [फा. सलाख] १ बाण, तीर ।

२ सर्प की गति के समान बिजली की चमक ।

उ०—१ सळाकां बीज मंगळा भळा सारिखौ, कहर जोगणिपुरा पडै कूटो । वूकडा मजर हस काळिजा वेहरतो, फोडि कुंवर पजर सेल फूटो ।—करण महेचा रो गीत

उ०—२ भडै सनाहां भडाला भाण उगा व्है भळाका भाला । तसा वीजूजळाका सळांका बीज तेम ।

— रावत हिम्मतसिंह रौ गीत

३ मास लगी वह हड्डी का टुकड़ा जो मास के साथ ही पकाया जाता है । (रा सा स)

४ सुरमा डालने की सलाई ।

५ तिनका, तृण ।

६ रेखा, लकीर ।

रू. भे —सलाख, सिळाक, सिलाक ।

सलाकौ-स पु [सं. शलाका] १ लोहे की या लकडी की सलाई ।

२ सुरमा लगाने की सीसे की सलाई ।

३ तीर, वाण ।

३ वर्छी, भाला ।

५ छाता की तीली ।

६ नली की हड्डी ।

७ कोयल ।

८ दांत साफ करने की कूंची ।

९ जूआ खेलने का पासा ।

सलाख—देखो 'सलाक' (रू. भे)

सलाड़णौ, सलाडवौ-क्रि. स.—१ मारना, पीटना ।

२ देखो 'सिलाडणौ, सिलाडवौ' (रू. भे.)

सलाड़णहार, हारौ (हारी), सलाड़णियौ—वि० ।

सलाडिओडो, सलाडियोडो, सलाड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

सलाडीजणौ, सलाडीजवौ—कर्म वा० ।

सलाड़ियोडो-भू का. कृ.—१ मारा पीटा हुआ ।

२ देखो 'सिलाडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. सलाडियोडी)

सलाज-वि —लज्जावान, लजालु ।

उ०—१ पाजा छलि ढळ प्रघळ, सघळ वरसाल समाजा । ताव अलाजा तरस, सरस रण चाव सलाजा ।—व. भा.

उ०—२ वार वार ईम पूछता, कुमारी थई सलाज । मुख मुलकी कहै तातनै, पूछण सु स्यो काज ।—श्रीपालरास

सलाजीत—देखो 'सिलाजीत' (रू. भे.)

उ०—तेल साहव लगावै, वग सलाजीत खावै अर गोटा पीवै है तो ही वुढापो-वैरी लुक्यो नी चावै ।—दसदोख

२ लकडी का बडा शहतीर।

३ रेल की पटरियो के नीचे बिछाया जाने वाला लकडी का लम्बा तख्ता।

सलीम–वि. [अ] १ शात, गम्भीर।

२ शातीप्रिय, सहनशील।

सलीमकोट–स. पु —वह स्थान जहाँ प्रतिष्ठित सामतो को नजरबन्द रखा जाता था। (जोधपुर)

रू. भे.—कोटसलम, कोटसलीम, सलेमकोट।

सलीमुख—देखो 'सिलीमुख' (रू. भे.)

सळीयळ—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

सलील–वि [स] १ खिलाडी।

२ लपट, कामुक।

सलुक—देखो 'सलूक' (रू. भे)

उ०—पुनह राग्रै सव पसु अरवै, सरेह केम वन-मस। कहो तेम जिम हम करै, सौ सलुक सोइ सस।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

सलुणौ—देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)

उ०—बिना वचन सुनि वोलै वैना, गुझि सलुणै अपनै सैना।

—अनुभववांणी

सलुळणौ, सलुळवौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळवौ' (रू. भे.)

सलुळणहार, हारौ (हारी), सलुळणियौ—वि०।

सलुळिग्रोड़ौ, सलुळियोड़ौ, सलुळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सलुळीजणौ, सलुळीजबौ—भाव वा०।

सलुळियोड़ौ—देखो 'सालुळियोडौ' (रू. भे.)

सलूभणौ, सलूभबौ–क्रि, अ —१ लूमना, लटकना।

उ०—पडै विकट धकै चापा सुदि पळ गया, भडा थट छेक अडवा सलूभै।—मोतीराम आसियो

सलूंभणहार, हारौ (हारी), सलूंभणियौ—वि०।

सलभिग्रोडौ, सलूभियोडौ, सलूम्योडौ—भू० का० कृ०।

सलूंभीजणौ, सलूभीजबौ—भाव वा०।

सलूभियोड़ौ–भू का. कृ —लूमा हुग्रा, लटका हुग्रा।

(स्त्री. सलूभियोडी)

सलूंभौ–वि —लाभयुक्त, सलाभ।

उ०—'जसवत' मरण 'तेजसी' जुटै, लूटै बोल सलूंभौ। बाजी 'मोहकम' तणी डुबोई, 'अजन' धणी कर 'ऊभौ'।

—नवलजी लाळस

सळू–स पु.—१ गेहूँ, जौ आदि की बालि के ऊपर होने वाले तीक्ष्ण तिनके, बाल।

२ कोई नुकीले घास का तिनका।

३ काटा।

उ०—बाळ बाळ लग बचन व्रव, प्रजळ पीव दू प्राण। मा जाई करजै मती, साळू सळू समाण।—रेवतसिंह भाटी

४ देखो 'साळू' (रू भे.)

सलूक–सं. पु. [अ.] १ लोगो के साथ रखा जाने वाला मेल-मिलाप।

उ०—बाका राखै बाणियौ, सारा हूत सलूक। कदियक खीजै तो करै, वयण विलोणै थूक।—बा दा.

२ व्यवहार, बर्ताव।

उ०—१ म्हारो काम बैरी सूं लडाई रो बणै तो किण भात सलूक करूं। किण तरह अमल कर लडणै री करूं।—नी. प्र.

उ०—२ तहकीक मोनू मित्र प्रकट आव सै तो इणा सू काई सलूक करू।—नी. प्र.

३ शिष्टता, सभ्यता, अदब।

उ०—तदै जगदेव दरबार आयो तिको वो सटुक रो बागो पहिरणै छै रूपीया १) री पाघ माथै छै काना हाथा माहे कडा सु इसै सलूक सू मुजरो कियो।—जगदेव पवार री वात

४ विचार।

उ०—चाचल्य चित्त सिद्धात चूक, सब सेखसली के है सलूक।

—ऊ का.

५ निभने या पार पडने का ढग।

उ०—तरै जैतसी जी नीसासो मेल नै कह्यो—बहूजी साहिब काको सेखोजी काम आया तरै राजा सूंडा रो बैर पहिरियो थो। सो दसराहो पिण दिन २० मे आयो नै बोलरो सलूक दीसै नही छै। भाया मैं हासो होसी।—जैतसी ऊदावत री बात

६ प्रबन्ध, व्यवस्था।

उ०—धरती री वडो सलूक कियो। आपरी जमीयत खरी कीधी।

—नैणसी

७ ढग, तौर-तरीका।

रू. भे.—सलुक।

सळूझणौ, सळूझबौ—देखो 'सुळझणौ, सुळझबौ' (रू भे.)

उ०—पाप क पाच एक रस रोकै, गोरख झडी सळूझै। जरणा झडी जोग जत, जाणै, सो या अरथ ही बूझै।—ह. पु. वा

सळूझणहार, हारौ (हारी), सळूझणियौ—वि०।

सळूझिग्रोडौ सळूझियोडौ, सळूझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सळूझीजणौ, सळूझीजबौ—भाव वा०।

सळूझाड—देखो 'सुळझाड' (रू भे.)

सळूझाडौ—देखो 'सुळझाडौ' (रू. भे)

सळूझाणौ, सळूझावौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझावौ' (रू भे)

सळूझाणहार, हारो (हारी), सळूझाणियौ—वि०।

सळूझायोडौ—भू० का० कृ०।

सळूझाईजणौ, सळूझाईजबौ—कर्म वा०।

सळूझायोड़ौ—देखो 'सुळझायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री सळूझायोडी)

सळियोडो—देखो 'सुळियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. सळियोडी)
सळियो, सळियो (स्त्री सळी) १ घास फूस ककर-पत्थर आदि से साफ किया हुआ।
२ सीधा, सरल।
सलिल-स. पु. [सं.] जल, पानी। (अ मा; ह. ना. मा.)
उ०—धारा तीरथ समदो, स्रोणी सलिल सुरभ भरए।
—गु रू व
रू. भे —सलल, सल्लील, सळियळ, सलिल, सळीयळ, सिलल।
सलिलचर-स पु [स] जल मे विचरण करने वाले प्राणी, जलचर।
सलिलज-स. पु [स] कमल।
सलिलजन्मा-स पु यौ [स सलिलजन्मन्] १ कमल, जलज।
२ जलचर।
३ कीचड।
४ सिंघोडा।
सलिलनिध, सलिलनिधि-स. पु. [सं. सलिलनिधि] समुद्र, सागर।
उ०—उलट धरि द्वै तैं तजै, सलिलनिधि ससार।—वि. कु
सलिलपत, सलिलपति, सलिलपती, सलिलराज-स. पु [स सलिलपति] १ समुद्र, सागर।
२ जल के देवता वरुण।
सलिलस्थलचर-स. पु. यौ [स.] जल व स्थल पर विचरण करने वाले जन्तु।
सलिलि—देखो 'सलिल' (रू भे)
सलिलहृद, सलिलहृदय-स पु [स सलिलहृद] एक पुण्य तीर्थस्थान का नाम।
सलिलेंदर, सलिलेंद्र-सं. पु. [स. सलिल+इन्द्र] १ जल के देवता, वरुण।
सलिलेस, सलिलेसर, सलिलेसुर, सलिलेस्वर-स पु [स. सलिल+ईश या ईश्वर] १ जल के देवता, वरुण।
२ समुद्र, सागर।
सलिवण-स. स्त्री—एक प्रकार का पौधा जो डलिया बनाने के काम मे अधिक प्रयुक्त होता है।
सळी, सळी-स. स्त्री —१ साही नामक जन्तु जिसके शरीर पर कांटे होते है।
२ घास, बास अदि की नुकीली फास।
उ०—सारा डेरा मैं भुरट रा कांटा खिडता तिण सू गुरज-बरदार दोरा होवता। सळी लागती सौ पाकती तिणसूं दुखी होय तुरक विदा होवता।—महाराजा पदम सिंह री बात
३ देखो 'सिळी' (रू भे.)
उ०—सार की सळिया दो सूवा पीजरो बणाऊ रे। पीजरा मैं आव सुवा हाथ सू खिलाऊ रे।—लो गी
४ देखो 'सळो' (पु.)
ज्यू—आ बाजरी सळी है।
सलीकाबद, सलीकामद-वि.—शिष्ट, सभ्य।
सळीको-स पु —सहसा तथा रह-रहकर उठने वाली वह पीडा जो शरीर का भीतरी भाग चीरती हुई सी जान पडे, टीस, चीस।
उ०—१ जच्चा रै पेट मैं सळीका हालता हा।—फुलवाडी
उ०—२ सळवळता काळिंदर नै ठाकर री आ बात खारी लागी देह रै माय सळीको उठ्यो।—फुलवाड़ी
उ०—३ उणरा बोल जाणै विस बुझ्या तीर। सुणता ई काळजा मैं सळीका ऊठण लाग जाता। छवू राणिया उणरी छीया देख्याई थर-थर धूजती।—फुलवाडी
सलीको-स. पु. [अ सलीक] १ शिष्टता, सभ्यता।
२ हुनर, लियाकत।
३ प्रबध, व्यवस्था।
४ सधि, सुलह, समझौता।
५ आचरण, व्यवहार।
६ शऊर, तमीज।
सलीचो—देखो 'सल्लीचो' (रू. भे.)
सळींटो, सळीटो-स पु —रेंग कर चलने वाला जन्तु विशेष।
उ०—१ सूर, खचर, खर, स्याळ, टोळ कुवा टट्टूडा। काग, कोचरी कुरझ, गिरझ, गुरसा गग्घूडा। चील, चिडी, चमचेड, ऊदरा, साप सळीटा। चक चूदरिया चुळक, पियै जळ चचळ चीटा।
—दसदेव
उ०—२ रात्री प्रचुर आरोग्य परिमळ, सोया पुळसू पावणी। साप सळीटा बिच्छु काटा, माछर डकी न आवणी।—दसदेव
सलीण-वि.—मुग्ध, मोहित।
उ०—वीण अलापी देख ससि, रयणी नाद सलीण। ससहर-अग-रथ मोहियो, तिम हस मेल्ही वीण।—ढो मा
सलीता—देखो 'सरिता' (रू. भे.)
उ०—सम माई क्रिया सब थाकी, ज्यू सलीता सिंधु समाई।
—सुखरामजी महाराज
सलीतो-स पु —ऊंट पर सामान लादने के लिए जूट का बना लम्बा बडा थैला।
उ०—१ सलीतां कन्है झेंकवै प्राण साहै, लिया हाथ लट्ठी समा सेल ठाहै।—रा रू
उ०—२ सिल्हैखानो सारो गाठा कर सलीता मैं घात लीयो। सो खैलता करता सत्तासर आया।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—३ सलीतै चढ़ै, लदै ऊट चलाए गिढ़ै। लारोलार कतारा हल्ली, काती जाण कुरज्झा चल्ली।—गु रू. व
सलीपर-स. पु [अ स्लीपर] १ वह हल्के चप्पल जिनसे केवल पजा ढका रहता है व ऐडी खुली रहती है।

२ देखो 'सुलह' (रू भे.)

उ०—सलै' हुई सुख ऊपनौ, भागी दळा दवाळि। सीमा नीमा गढ मुलक, सगळं लिया सभाळि।—गु रू ब.

सलोक—देखो 'स्लोक' (रू भे) (ग्र मा)

सलोकता—स स्त्री [स] पाच प्रकार के मोक्षो मे से एक।

सलोकी—वि—श्लोक युक्त, श्लोक सम्बन्धी।

उ०—खत गीता तै सरलोक खांत, भागवत सलोकी चतुर भात।
—वि. स.

सलोचौ—वि.—१ कोमल, लचीला।

२ लोचदार।

उ०—भळ भात छीरै बाग लीधा श्राग नाळा भडै, घुरै धडै कछी रै ऊपना खेवै धूप। मडै रान लागां पाव वैवै बुरछी रै माथै, सलोचा तळफै मागा मछी रै सरूप।—महादान मेहडू

३ सुन्दर, मनोहर।

स पु,—घोडे के चारजामे का एक उपकरण।

सलोणौ, सलोनौ—स पु—१ श्रावण की पूर्णिमा को होने वाला पर्व, रक्षाबधन।

२ देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)

उ०—इसी पिव जाण न दीजो है। स्याम सलोणां लोयणा, मुख देख्या जीजो है।—मीरा

सलोतर—सं. पु. [शालिहोत्री] घोडो की चिकित्सा करने वाला चिकित्सक, शालिहोत्री।

सलोभौ—वि.—१ लालच करने वाला, लालची।

२ इच्छुक, लालायित, इच्छावाला।

उ०—१ लहै जोत सोभा भडा मैं सलोभा, सदा खेत प्रामै गैहल्लोत सोभा। सबै मत्री व्यास प्रोहित साथै; हकारै कवी वाहता खाग हाथै।—रा. रू

उ०—२ लड खाटण रण विरुद सलोभा, सोभावत श्राया दळ सोभा। 'दलौ' भलौ रिण वियौ 'दयालो', बाघै रिण 'रैणायर' कालो।—रा. रू

३ सरल, सुलभ।

उ०—नाम सुतीरथ नाम व्रत, नाम सलोभौ काम। एको श्रक्खर ततफळ, जप जीहा स्रीराम।—ह. र.

सलोमधि—स पु. [स] चद्रविज्ञ राजा का पुत्र, एक राजा।

सल्क, सल्कल—स पु. [स. शल्क, शल्कल] १ मछली का काटा।

२ छाल।

३ भाग, हिस्सा।

सल्तनत—देखो 'सलतनत' (रू भे)

उ०—स्वति स्रीदिल्लीपुर सुथान, सल्तनत मुगल कुळ सावधान। दरगाह सदर दोलत दराज, ताळा बुलद इस्लाम ताज।—ऊ. का.

सल्य—स पु [स शल्य] १ मद्रदेश का एक राजा जो माद्री का भाई व नकुल का मामा था। (महाभारत)

२ कटीली झाडी।

३ शस्त्रचिकित्सा।

४ सीमा।

५ एक प्रकार की मछली विशेष।

[सं. शल्य] ६ काटा।

७ कील, खूटी।

८ हड्डी, अस्थि।

९ संकट, विपत्ती।

१० पाप, जुर्म।

११ जहर, विष।

१२ छप्पय छद का ५८ वा भेद जिसमें १३ गुरु श्रौर १२६ लघु से १३९ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है, मतान्तर से।

१३ छप्पय छंद का ५६ वा भेद जिसमे १५ गुरु श्रौर १२२ लघु श्रर्थात् १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है।

१४ देखो, 'सल' (रू भे.)

सल्यश्ररी—स. पु. यौ. [स. शल्य+श्ररि] १ युधिष्ठिर। (डिं. को.)

२ भीम। (डिं. को.)

सल्यकार—वि. [स. शल्यकार] १ शल्य चिकित्सा का अच्छा जानकार।

२ शल्य चिकित्सा करने वाला।

सल्यकी—स. स्त्री.—वृक्ष लतादि। (सभा)

सल्यसुद्धि—स. स्त्री.—पुरुषो की ७२ कलाश्रो मे से एक।

उ०—जलतरण देहकरण सल्यसुद्धि सकुनसुद्धि रसायनचदना कालवंचना।—व. स.

सल्ल—स. पु.—१ घाव, जख्म।

२ चोट, प्रहार।

उ०—सेल घमोडा सल्ल, पडै मल्ला प्रति मल्ला। भल्ला भल्ला भणै, ऊगता भडा श्रमल्ला।—ऊ का.

३ फोडे-फुन्सी या घाव श्रादि के ठीक होकर सूखने पर जमने वाली पपडी, खुरट।

उ०—सिंधु परइ सउ जोश्रणै, नीची खिवइ निहल्ल। उर भेदती सज्जणा, ऊचेडती सल्ल।—ढो. मा.

४ दुर्विचार, दुष्ट विचार।

उ०—मल्लि जिनेसर तु महामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल। चिंता तणी विण चिंता पल्ल, सगला दूर किया श्ररि सल्ल।
—ध. व. ग्र.

५ छप्पय छद का ५६ वा भेद जिसमे १५ गुरु १२२ लघु कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है।

६ एक प्रकार का तीर।

७ पीडा, कसक, दुख।

८ छाल।

सळूझावणौ, सळूझाववौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझाबौ' (रू. भे.)
सळूझावणहार, हारौ (हारी), सळूझावणियौ—वि० ।
सळूझाविश्रोड़ौ, सळूझावियोड़ौ, सळूझाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सळूझावीजणौ, सळूझावीजवौ—कर्म वा० ।
सळूझावियोडौ—देखो 'सुळझायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. सळूझावियोडी)
सळूझियोडौ—देखो सुळझियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. सळूझियोडी)
सलूणउ, सलूणडौ—देखो 'सलूणौ' (रू भे.)
उ०—१ पंचसद हुइ पेखणा ए, नाचइ नाटिक पात्र। गीत सगीत सलूणडा ए, सुणीइ स्वर सात ।—का. दे. प्र.
उ०—२ नयण सलूणउ लडसडतु जउ वीवाह मनावित ।
—राजसेखर सूरि
सलूणपण, सलूणपणौ–स पु —सुदर होने का भाव, मनोहरता, लावण्यता ।
सलूणौ–वि. (स्त्री सलूणी) १ नमक सहित ।
उ०—हू बलिहारी राणिया, जाया वंस छतीस। चून सलूणौ सेर लै, मोल समर्घ सीस ।—वी. स
२ सुन्दर, मनोहर, सलोना ।
उ०—१ ऐक ऐक तै आगळी, निपट सलूणी नार। उदयापुर मैं सब यमी, अपच्छर की उणियार ।—बगसीराम प्रोहित री वात
उ०—२ गळ वैजतीमाळ, पीतावर कट काछनी। हाथ लकुटिया लाल, साम सलूणा सावरा ।—ऊदोजी अडीग
उ०—३ जनहरिराम सलूंणा साजन, देखु दिल भीतर दीदारो ।
—अनुभववाणी
३ अधिक, ज्यादा ।
उ०—कमधज कछवाहा घरे, आयौ अप 'अभसाह'। कोड सलूणा कूरमै, उर दूणा ओछाह ।—रा. रू.
४ कान्तिमय, आभायुक्त ।
उ०—खेतसीयोत 'विजो' जुध खार्ग, सूर सामळो दीठां सार्ग। 'लूणा' हर मुख जोस सलूणै, देवावत 'अमरो' बळ दूणै।—रा रू.
५ स्वादिष्ट, जायकेदार ।
६ प्रेमपूर्ण, प्यारयुक्त ।
उ०—की न्हे आगा किया, हेत विहूणा हात। नैण सलूणा न मिळै, बाळ अलूणी वात ।—अग्यात
७ मोहित करने वाला, मोहक ।
उ०—१ राम वनूं छै रूपाळौ नैण सलूणा झाकत ड्योढो, विच काजळ अणियाळौ। वय किसोर सब भात सुहावै, सहज सलूणौ काळौ ।—समान बाई
उ०—२ लाग्यौ थारै नैणा रै सलूंणौ, रग लाग्यौ महाराज ।
—मीरां
८ आसक्त, लीन ।
९ सम्पूर्ण, समस्त, पूरा ।
उ०—भद्रसाल लक्षण करि राजतउ भेटया भव दुख जाय सलूणा।
—वि. कु.
१० पवित्र ।
उ०—सोवन वरणइ रे दीपइ देहडी सुमनस सेवित पाय सलूणा ।
—वि. कु.
रू भे.—सलुणौ सलूणउ, सलूणडौ, सलूनौ, सलोणौ, सलोनौ ।
सलूधणौ, सलूधबौ–क्रि. अ.—समझना ।
उ०—बाबा सिख मिलै बाथा सू, थळ जाता स हरख थुवौ। सिख वाता सूं नही सलूधा, हाथा सू परमोद हुवौ ।—बांकीदास वीठू
सलूधणहार, हारौ (हारी) सलूधणियौ—वि० ।
सलूधिओड़ौ, सलूधियोड़ौ, सलूध्योडौ—भू० का० कृ० ।
सलूधीजणौ, सलूधीजवौ—भाव वा० ।
सलूधियोडौ—भू. का कृ —समझा हुआ ।
(स्त्री सलूधियोडी)
सलूधौ–वि —समझवान, ज्ञानी ।
उ०—लागा चित सू कोई साध सलूधा ।—केसोदास गाडण
सलूनौ—देखो 'सलूणौ' (रू. भे.)
सलूभौ–वि.—लालायित, इच्छुक ।
उ०—खागीवंध खळ गयद खुराकी, नाकी नह मेल्ही नहराळ। सीह लडाकी लडण सलूभौ, डाकी दह ऊभो डाढाळ ।
—महादान मेहडू
रू. भे.—सरूभौ ।
सलूर–स. पु. [सं सालूर] मेंढक ।
उ०—जलासय नाद सलूरन जोर, मही पर गावत नाचत मोर।
—हिंगलाजदान
सलेक–स. पु. [स.] एक आदित्य ।
सलेदार—देखो 'सिलहदार' (रू. भे)
उ०—खान खोजा मलिक मीरू वरा मलाणा सहणा सलेदार तेहि करी सेवायमान ।—व स.
सलेमकोट—देखो 'सलीमकोट' (रू. भे.)
सलेस–सं. पु. [स. श्लेष] १ साहित्य का शब्दालकार जिसमे ऐसे शब्दो की रचना होती है जिनके अर्थ एक से अधिक होते हैं।
२ मिलन, आलिंगन ।
सलेसमा–स. पु [स. श्लेष्मा] शरीर का कफ नामक विकार जो शरीर की तीन धातुओ मे से एक माना गया है ।
सलेसी–स. स्त्री.—एक प्रकार की घास ।
सलै'—१ देखो 'सिलह' (रू भे.)
उ०—तिण काज आज बाहर तिका, साजै घासाहर सलै'। गैमरा खुलै झडा गयण, घोडा पर पाखर घलै ।—मे. म

[स. शव] ३ कफन ।
[स. शत्] ४ क्रमशः निन्नानवे के बाद आने वाली सख्या, सौ ।
उ०—१ सु एकै समचै ४०० बदूक ४ सब ही कमाण गोळी १ जणा माह नीसरी ।—राजा नरसिंघ री वात
उ०—२ तद राजा रुपिया पाच सव खरच—रै पगा उवै रै हाथा मेल्हिया । कह्यौ खरच सखरौ करज्यो ।
—राजा भोज अर खापरे चोर री वात
[स सव] ५ फूल का शहद ।
[स. सव] ६ यज्ञ, हवन । (अ. मा; डिं. को)
७ चन्द्रमा, चाँद ।
८ जल, पानी ।
९ सूर्य, सूरज ।
१० नैवेद्य, भेट ।
११ सन्तान, औलाद ।
वि. [स. शत] १ सौ, शत ।
उ०—सुहिणा हूं तइ दाहवी, तौ नइ दहियउ अग्गि । सव जोयण साजण वसइ, सूती थी गळि लग्गि ।—ढो मा.
२ निर्मल, स्वच्छ ।
उ०—आवी सव रत आमळी, त्रिया करइ सिणगार । जिरा हिया न फाटही, दूर गया भरतार ।—ढो मा.
३ देखो 'सरव' (रू. भे)
उ०—१ ......केइ गोतहरि तडफडइ, केइ लोहउँ खडइ, केइ दाति अगुठि लेइ अलगइ केइ स्कधि कोठार घाती उलगइ कि वहुना जेण्णि सीमाडा सव वसि कीधा, गढ सवे ढालिया रिपु सवे निरद्धाटिया...... ।—व स
उ०—२ वाहन विसी आपणि, साचरि सव आकास । इद्र केहि ठाला पडि, अप्सरा करसि हास ।—नळाख्यान
उ०—३ तद सौदागर तौ उवै सवै ही सोने री ईटा ले वळै वयौ ले अर रसाल लै नै ठकुरै रै बेटै रै घरै गयौ ।
—ठकुरै साह री वात
उ०—४ सेवति नवै प्रति नवा सवेसुख, जग चा मिसि वासी जगति । रुखमिणि रमण तणा जु सरद रितु, भुगति रासि निसि दिन भगति ।—वेलि
रू भे.—सवि ।
सवइवार, सवईवार–क्रि वि —सदैव सर्वदा, हमेशा । (उ र.)
सवकरण–स. पु —शिवकरण नाम वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।
सवक्क—टेढी, वक्र ।
उ०—वध वीर किलक्क हवकोहक्क, धूप सवक्क धमचक्क वण वार असक बाधा रक रूक भटक्कं रह चक्क ।—रा रू.
सवचक–स पु [स. सूचिक] दरजी । (डिं को.)
सवज—देखो 'सावक' (रू. भे)
सवण—१ देखो 'सुगन' (रू भे.)
उ०—१ आप असवार २०० गू चढ खड़िया । बीच नाहग ४ चार रौ सवण हुवौ ।—नैणसी
उ०—२ ताहरा पावूजी कह्यौ—सवण किसा लेस्या ।—नैणसी
उ०—३ तद मारग में जावता नू सवण हुवा ।—नैणसी
२ देखो 'लवण' (रू. भे)
सवणी—देखो 'सुगनी' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरा सवणिया कह्यौ—जु या था बुरी कीधी, ओळ खणी ।—नैणसी
उ०—२ तिसै जेसलमेर री धणी भाटी राव लाखणसी एक दिन गोखै बेठौ थौ । तिसै सवणी बोलियौ ।
—वीरमदे सोनगरा री वात
उ०—३ तरै नीचै सवणी नू पूछियौ तरै सवणी कह्यौ—औ सवण यूं कहे छै ।—नैणसी
सवणीगर—देखो 'सवनीगर' (रू भे.)
उ०—धोबी सवणीगर न्यारारे नाई नीलगर पीनारा ।—जयवाणी
सवणौ, सववौ–क्रि स —जन्म देना, उत्पन्न करना ।
सवती–स. स्त्री.—माता, जननी ।
रू भे.—सवती ।
सवत्स–वि —बच्चे वाली, जिसके साथ बच्चा हो ।
उ०—जिमणी भइरव कलकलइ, टावी दुरगा होइ । गौ सवत्स साहमी मिलइ, मुहवि जाती सोइ ।—मा का प्र
सवद—देखो 'सबद' (रू. भे)
उ०—ग्यान सवद सति अरथ विचारै, मावस मन का भेन उतारै । सुरति सवाहि वसै निरदावै, साच न भ्राटै भूठ न भावै ।
—ह पु वा
सवन–स. पु [स] १ स्वायम्भुव मनु के पुत्र प्रियव्रत व बर्हिष्मती के एक पुत्र का नाम ।
२ भृगु के सात पुत्रो मे से एक ।
३ वशिष्ठ ऋषि के एक पुत्र का नाम ।
४ अग्निदेव का नाम ।
५ रोहित मनवन्तर के सप्तर्षियो मे से एक ।
६ सूर्य, सूरज ।
७ दक्ष सावर्णि मनवन्तर के सप्तर्षियो मे से एक ।
सवपुरी—देखो 'सिवपुरी' (रू भे.)
सवमंदिर–स पु यौ [स शव+मदिर] १ श्मशान घाट ।
२ समाधि ।
३ देखो 'सिवमदिर' (रू भे.)
सवय–स पु [स. सवयस्] साथी, मित्र । (अ. मा; डिं को)
वि —समान उम्र का ।
सवयती–स. स्त्री. [स सवित्री] माता, जननी । (अ मा)

६ मेढक।

वि —१ क्षत-विक्षत।

उ०—मत्ता जूझ लरथौ बरया धारा धोम गोम मच्चै, धीर बाज खच्चै बीम नच्चै रुद्र धाड। धाय सल्ला होदा व्है छडाळा हूत वीर घूमै, रायसल्ला रौदा व्है हमल्ला हल्ला राड।

—हुकमीचद खिडियो

२ देखो 'सल' (रू भे.)

उ०—१ नमो मुर-मेघ मरद्दण मल्ल, कसासुर काळ सखासुर सल्ल।—ह. र

उ०—२ ढोलइ चलता परिठव्यउ, अगणि मोजा सल्ल। ढोलउ गयउ न वाहुडइ, सुया मनावण चल्ल।—ढो मा.

उ०—३ सुदतारा भावै सदा, सुदतारा री गल्ल। अदतारा भावै नही, सुणिया व्है उर सल्ल।—बा दा.

उ०—४ दुद सुणै मगरै दिसा, सैद तणो अन सल्ल। नूरमली जोधाण सूं. चढियो भीड कगल्ल।—रा. रू.

सल्लकी-स. पु. [स.] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

सल्लणौ, सल्लबौ-क्रि अ.—१ क्षत-विक्षत होना।

२देखो 'सल्लळणौ, सल्लळबौ' (रू. भे)

उ०—१ कुझडिया कळिअळ कियउ, सरवर पइलइ तीर। निस भर सज्जण सल्लिया, नयणे वूहा नीर।—ढो. मा.

उ०—२ दुरजणसाल नाम ही, ज्या दुरजन कू सल्लै। भाटी वीर अखाडै मैं, मुरातै सै भल्लै।—रा. रू.

सल्लणहार, हारौ (हारी), सल्लणियौ—वि०।

सल्लिअोडौ, सल्लियोडौ, सल्ल्योडौ—भू० का० कृ०।

सल्लीजणौ, सल्लीजबौ—भाव वा०।

सल्लळणौ, सल्लळबौ-क्रि. अ.—१ सालना, खटकना, दर्द होना, कसकना।

२ निकलना।

उ०—हुई दौड हेमरा नरा ऊपरा करारा, सेख ज्वाळ सल्लळी मना सिव चक्ख विकारा।—रा रू.

३ लूटना, उजाडना।

उ०—सहस ग्राम सल्लळै, जळै परजळै प्रलै जिम। घूम व्योम धूधळौ, तरणि भ्रम तोम सोम तिम।—रा. रू.

४ चलना, प्रस्थान करना।

उ०—१ आया पाय 'अजीत' री, लग्गा सूर धियागि। सिरि डेरा दळ सल्लळै जळै प्रळै किरि आगि।—रा. रू.

उ०—२ मेडतिया महाराज दळ, किया मुदै करतार। दुद अमदी सल्लळै, ज्यां हुदी तरवार।—रा. रू.

५ फैलना, व्याप्त होना।

उ०—वगा भड मेवाड रा, सीसोद्या ग्रह सार। आठू दिस कळ सल्लळी, चळाचळी ससार।—रा रू.

६ छाना, मडराना।

उ०—गुडै गयद भल्ल ए, पहाड जाण चल्ल ऐं। हसत्त जूथ हीडळै क मेघ माळ सल्लळै।—गु. रू. व

सल्लळणहार, हारौ (हारी), सल्लळणियौ—वि०।

सल्लळिअोडौ, सल्लळियोडौ, सल्लळ्योडौ—भू० का० कृ०।

सल्लळीजणौ, सल्लळीजबौ—भाव वा०।

सल्लणौ, सल्लबौ, सल्हिणौ, सल्हिवौ—रू० भे०।

सल्लय-स पु—वृक्ष विशेष। (सभा)

सल्लळियोडौ-भू का कृ.—१ साला हुआ, खटका हुआ, दर्द हुवा हुआ, कसका हुआ. २ प्रवृत हुवा हुआ, निकला हुआ. ३ लूटा हुआ उजाडा हुआ ४ चला हुआ, प्रस्थान किया हुआ ५ फैला हुआ, व्याप्त हुवा हुआ. ६ छाया हुआ, मडराया हुआ।

(स्त्री सल्लळियोडी)

सल्ला'—देखो 'सलाह' (रू. भे)

उ०—सल्ला स्याम जाया नै, दोनी वलराम। कासली खडेलो भूमि, काकड पै गाम।—शि. व.

सल्लियोडौ-भू. का. कृ—१ क्षत-विक्षत हुवा हुआ।

२ देखो 'सल्लळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री सल्लियोडी)

सल्लीचौ-सं. पु—सैनिक, घुडसवार।

उ०—पवै वज्रपात जेम पोढियो गैमरा पाच, सल्लीचौ हजार पोढै हेमरा समाथ। सतारा उमीरा सात हजार पोढाय सत्रा, 'भाराथ' री वीरभोम पोढियो भाराथ।—हुकमीचद खिडियो

रू. भे.—सलीचौ।

सल्लील—देखो 'सलिल' (रू. भे.)

उ०—खळक्कै सदा नीझरा नीर खोळा, छळै कुड अल्लील सल्लील छोळा।—मे म

सल्लै'—देखो 'सिलह' (रू. भे)

सल्लेहणा—देखो 'सलेखणा' (रू भे)

सल्व-सं. पु. [स. शल्व] शाल्व देश का नाम।

सल्हिणौ, सल्हिवौ—देखो 'सल्लळणौ, सल्लळबौ' (रू भे.)

उ०—कूझडिया कुरळाइया, ओलइ वईस करीर। सारहली जिउ सल्हिया, सज्जण मझ सरीर।—ढो. मा.

सवं—देखो 'स्वय' (रू. भे)

सवकति-वि—वक्रतायुक्त, टेढी।

उ०—अतिकध सवंकति माल अग, सिव त्रिपुर मृतकि धनु व्याळ सग।—रा. रू

सव-स. पु [स. सव] १ धन, द्रव्य। (अ मा; ह ना मा)

[स शव] २ लाश, मृतदेह।

उ०—आप अत री समै पति रा दरसण करण नै गई है तठै पति रा सव ऊपरै सवळी नै बैठी देख कहै है।—वी. स. टी.

सू जोवण लागा । जटा डोन सूं ईं सवाई लावी । जमी माथै टिरै ।
—फुलवाडी

उ०—२ लियौ न देही फेरि लिखावै, सोरि दूणी सवाई । वाही कदै न भाजै भूख, दाळद की वोह मुकळाई ।—ऊदो नैण

२ बढकर, विशेष ।

उ०—१ सीकोतरि गण हूत सवाई, हुवै जिया हयभाल हवाई ।
—सू प्र

उ०—२ नगर सेठ मन ईं मन माळा फेरण लागा कै दीवाण जी मैं वा सूं ई सवाई वीतै ।—फुलवाडी

उ०—३ राणी अेक कठी देखनैं दूजी देखै —अेक अेक सू सवाई । इचरज अर हरख रो छेह नी रह्यो ।—फुलवाडी

उ० —४ जिकण नाम जैसीव सवाई सोहियौ, निज द्विज रूप नराण देव जोतिख दियौ । पाळक प्रजा प्रथीप जनमताई जाणियौ, अप रुपिया नव लाख करज माफी कियौ ।—सिववक्स पाल्हावत

३ अधिक, विशेष ।

उ०—१ बावळिया रै सोनल वरणा पीळा फूला सू गवाडी री छिब सवाई वधगी ही ।—फुलवाडी

उ०—२ आसकरण घडै माझी नखत ऊधरै, सागडो चैन वाजी सवाई । कलोडा कपूता तणा थट केवटै, भलोडा सपूता तणा भाई ।—चैनकरण सादू री गीत

रू. भे —सिवाई ।

सवाए—देखो 'सवायो' (रू भे)

उ०—१ जिण राणी चवदै सुत जाए, सो पित हूंत तेज सवाए ।
—सू प्र

उ० —२ उरजनोत उरजन से अरि दळ के आए । सूरसिंघ महासूर सिंघ तें सवाए ।—रा रू.

सवाकीन—स पु —परद्वीप नाम । (सभा)

सवाग सवाग—देखो 'सुहाग' (रू भे)

सवागण, सवागण—देखो 'सुहागण' (रू. भे)

उ०—थैं तौ ओढौ नी सवागण भागण नार लायो छू बोरंग चूदडी ।—लो गी

सवागथाळ, सुवागथाळ —देखो 'सुहागथाळ' (रू भे)

सवागो, सवागो—देखो 'सुहागो' (रू. भे)

उ०—१ तरै म्हानैं सामदान कह्यो—थै वाई सूं विगर मिळिया जावो मती, वयु सवागा रो सामान मेलियो छै ।—जैतसी री वात

उ०—२ आस्या नूं सिरपाव सवागा दे नै राजलोक विदा कीधी ।
—स्यामसुदर री वात

सवाड, सवाड—देखो 'सुवावड' (रू भे.)

सवाडो, सवाडउ, सवाडो—वि [स सानुकूल] १ अनुकूल । (उ र.)

उ०— १ हुवै सवाडा साइया सब होय सलाह ।—केसोदास गाडण

उ०—२ अस्ट-सिद्ध नव निध हुआ ग्रह नवैइ सवाडा । मैं भाजैपरठि, सदा साजा दोहाडा ।—गु रू. वं.

२ देखो 'सवायो' (अल्पा, रू. भे)

उ०—१ उथापै दलो ऊमेद थापै यळा सवाडा पवाडा भाग साथै । आगि बूंदी धरा लियता ऊपडी, मुराडा झडै आमेर माथै ।
—दुरजणसाल हाडा रो गीत

उ०—२ गजा ढाल पाडै जुडै गवाडै सवाड़ा गीत, रुकडा विभाडै रोदा अखाडै ।—सारगदेव रो गीत

उ०—३ खतम अवमाण खेंपाण रहिया पकत, रीझियो भाण दइवाण राजी । सिव सगत सवाडा अखाडा सेल रा, गवाडै प्रवाडा सुतन 'गाजी' ।—नाथो मादू

सवाणी—सं. स्त्री —स्वर्णकारो का उपकरण विशेष ।

रू. भे —सवाणी ।

सवाणो, सवाणो —देखो 'सुहाणो, सुहावो' (रू भे.)

उ०—वा'ला लागै हो जवाई म्हानैं घणाई सवावै हो । औ म्हारी कवर वाई सा रा स्याम जवाई म्हानैं प्यारा लागो मा ।—लो. गी.

सवाणहार, हारो (हारी) सवाणियो - वि० ।

सवायोडो —भू० का० कृ० ।

सवाईजणो, सवाईजवो —भाव वा० ।

सवाद—देखो 'स्वाद (रू भे.) (अ. मा, ह ना मा)

उ०—१ हिंसा न करणी जीव री, तजवो अखा-वाद । अणदीधी वस्तु लेवै नही, तजणा सरस सवाद ।—जयवाणी

उ०—२ मुग्की नैं लाडू भला, पइडा सखर सवाद । खाजा ताजा देखता, हरड क्षुधित विखवाद ।—वि. कु

उ०—३ वित जिम बाटै तिम वधै है रीन अनाद । कूवा हूं जळ काढिया, सीरा वधै सवाद ।—वा दा

उ०—४ तरै राणी पण दीठो वात माहे सवाद को नही । तरै राणी कह्यो—भली वात म्हारै वैर वाळण सू होज काम हूतो ।
—नैणसी

उ०—५ की कहणो अात ऊधरा करगा समझण रूपग गुण सवाद । ओठमजग 'वळवत' आपरो, प्रघळो जस कोतै प्रथमाद ।
—महाराजा वळवन्तसिंह रो गीत

उ०—६ बावहियउ पिउ पिउ करइ, कोयल सुरगइ साद । प्रिय तिण रुति आळिग रह्या, ताह सू किसउ सवाद ।—ढो मा

उ० —७ थानैं दोसण नी दू । औ सेजा रो सवाद अैडो ई व्हिया करै । म्है ई इण सारू कळप् अर इण खातर ई थारा पग पाछा पाछा पडै ।—फुलवाडी

उ०—८ कलग परज कन्हडा, सुरा सवाद सुघडा । निवास सात नाळिय, त्रिग्राम मूळ ताळिय ।—रा रू

उ०—९ काम कै घुघर जैसे जत्र कै तार । पिनाक का परवेज स्त्री मडळूका का सवाद । रग की वरखा अलगोजू की नाद ।
—सू प्र

सवयस, सवयस्क, सवयस्य–सं. पु. [स सवयस्] १ सखा, मित्र। (ग्र. मा)

२ सहयोगी।

वि.—एक ही उम्र का, हमउम्र।

सवयांन सं पु [स. शवयान] शव ले जाने वाली ग्ररथी, टिकटी।

सवर–स. पु. [स.] १ दानवीर राजा शिवि।

२ पडिहार वश की एक शाखा।

३ धन, दौलत।

[स. सवर] ४ शिव, महादेव।

५ जल, पानी।

६ देखो 'सबर' (रू भे.) (डिं. को)

सवरण–वि [स. सवर्ण] १ समान वर्ण या जाति का।

२ समान रग का।

३ समान रूप का।

४ देखो 'स्वरण' (रू. भे.)

सवरणा–स. स्त्री —१ सूर्य की पत्नी का नाम।

२ सागर एव वेला के ससर्ग से उत्पन्न कन्या का नाम जो 'पचेतस' की माता थी।

३ इन्द्रिय योगो ग्रादि की ग्रशुभ प्रवृत्तियो से ग्राते हुए कर्मो को रोकने की क्रिया।

उ०—त्रूटी नाडि न को काज सरणा, करि सकइ तउ करि पहिली सवरणा। मरण तणा मत ग्राणे डरणा, ए जायइ देखि लघु व्रद्ध तरणा।—स फु.

सवरणौ, सवराबौ—देखो 'सवराणौ, सवराबौ' (रू भे)

सवराणहार, हारौ (हारी), सवराणियौ—वि०।

सवरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सवराईजणौ, सवराईजबौ—कर्म वा०।

सवरायोडौ—देखो 'सवरायोडौ' (रू भे.) (स्त्री सवरायोडी)

सवरी–स पु [सं. सौरि] १ शनैश्चर। (ग्र मा)

२ देखो 'सबरी' (रू भे.)

सवळ–स. पु [स श्यामल] ग्रधेरा, ग्रन्धकार। (ग्र. मा)

वि.—१ सबल, जबरदस्त, जोरदार।

२ भयकर।

उ०—सुरताण प्रिथीराज ग्रमरो ए भेळा हुसी। भाटी मडळो ही रामसिंघ जी साथि भेळो हुसी। ताहरा वेढ सवळ होसी। —द वि

३ बहुत, ग्रधिक।

सवळो—देखो 'सवळी' (रू. भे.)

उ०—बाहू चळी निरम्मळी, चख बीभळी सुरत्त। ग्राजै फरनल ग्रवकळी, सवळी रूप सगत।—राव सेखौ

सवळी–वि. (स्त्री. सवळी) १ पूरा, पूर्ण, समस्त।

उ०—कोस तीन बीच पाणी सूं भरीजै, तद दस पनरै वास पाणी चढै। पाणी निकळणरी ठौड को नही। सवळो भरीजै तद हासळ इजाफा हुवै।—नैणसी

२ देखो 'सवळो' (रू. भे.)

सवसांन–सं. पु. [स शवसान] १ यात्री, पथिक।

२ मार्ग, रास्ता।

[सं. शवसान] ३ श्मशान।

सवसाची—देखो 'सव्यसाची' (रू भे) (ग्र मा.)

सवसाधन–स पु. [स शवसाधन] श्मशान मे किसी व्यक्ति के शव पर बैठकर ग्रथवा उसे सामने रखकर किया जाने वाला साधन। (तान्त्रिक)

सवहेक–वि.—सौ के करीब, लगभग सौ।

उ०—१ दस दिना रो पीलू ग्रासरो छै। ग्रर खरळा रा कुवर ग्रसवार सवहेक घरा सूं चढीया।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ घोडो जिको ४०० सीरो छै, तिकैरा माडै ४० छै। हजार रो छै तेरो सवहेक माडै छै।—नैणसी

सवांण–स स्त्री.—वह गाय या भैंस जिसका दूध बिना कठिनाई के प्रत्येक व्यक्ति निकाल सके। (विलो कुठार)

वि.—भला, सीधा।

उ०—हाट वसै भूवो हसै, हाथ धरै कण हाण। कमर कसै जर केवटण, नह तर सैंज सवांण।—बा. दा

सवांणी—१ देखो 'सवासणी' (रू. भे)

२ देखो 'सवाणी' (रू भे)

सवा–स पु —१ डिंगल का एक गीत विशेष। (क कु बो)

२ सम्पूर्ण ग्रौर एक के चतुर्थांश का योग।

वि.—सम्पूर्ण ग्रौर एक का चतुर्थांश।

उ० —१ टावर-टोळी सवा रूपियो रोकडो ग्रर नाळेर लेय-लेय नै हाजर व्हिया।—ग्रमर चूनडी

उ०—२ जेठ ग्रर देवर मिळ नै म्हारा सवा पुरस लाबा केस उपाडिया तौ ई म्है नाव रो भेद परगट नी करियो।—फुलवाडी

सवाई–स पु —१ पुत्र, बेटा।

उ०—'दूदा' हरो 'विसन' वरदाई, समहर 'सूरजमाल' सवाई। चापै सकतावत कळि चाळा, 'ग्रभै' जतन ग्राया ग्राभाळा।—रा रू.

२ जयपुर महाराजाग्रो की उपाधि विशेष।

३ किसानो को बुवाई के लिए ग्रनाज देने की वह रीति या प्रथा जिसमे फसल पकने पर सवाया ग्रनाज वापिस कर के रूप मे देते है, ऊप।

वि.—१ एक ग्रौर चतुर्थांश के योग के समान, सवाया।

उ०—१ ग्रघोरी बाबा रो ग्रनूठो गसको देख दोनू जणा इचरज

सवारणौ, सवारबौ—देखो 'सवारणौ, संवारबौ' (रू. भे.)

उ०—चुण्या सवारया ढह पडै, ढहिया सवारै ।—केसोदास गाडण

सवारणहार हारौ (हारी), सवारणियौ —वि० ।

सवारिओड़ौ, सवारियोड़ौ, सवारयोड़ौ —भू० का० कृ० ।

सवारीजणौ, सवारीजबौ—कर्म वा० ।

सवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू. भे)

उ०—१ लाज बिहूणा लोम्ए, नीच निगुण निसनेह। आप सवारथ साधिनै, निस्चय दीधौ छेह ।—वि कु.

उ०—२ परमारथ की सब किया, आप सवारथ मांहि । परमेस्वर परमारथी, कै साधू कलि माहि ।—दादूबाणी

सवारथी—देखो 'स्वारथी' (रू. भे)

उ०—राता विखै विकार सू, आप सवारथी पर हुती । 'थील्ह' कहै एक वीनती, विसन टाळि वेदाती ।—वील्होजी

सवारियोड़ौ—देखो 'सवारियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. सवारियोडी)

सवारी-सं. स्त्री.—१ सवार होने का साधन या पशु ।

२ उक्त साधन पर सवार होने वाला व्यक्ति ।

३ सवार होने की अवस्था या भाव ।

४ यात्री, मुसाफिर ।

५ ऐसा जुलूस जिसमे प्रतिष्ठित व्यक्ति कोई धर्मग्रन्थ या देवता की मूर्ति किसी यान पर कही ले जाई जाती हो ।

क्रि प्र —आवणी, करणी काढणौ, निकळणी, होणी ।

५ कुश्ती मे विपक्षी को गिरा कर उसकी पीठ पर बैठने की क्रिया या दाव ।

६ मैथुन के लिए स्त्री पर चढना । (बाजारू)

७ देखो 'सवारै' (रू भे)

उ०—च्यार घडी कै तडकै मैं उठी ग्रै, पीस्यौ घडी दोय चून । सासड आय विसराइयौ, बहुवड ! ग्रो काई पीस्यौ चून । ऊठ सवारी दळियौ दळै, सासू सूधली लडै, फोग ग्रालडो बळै ।

—लो. गी

सवारै, सवारै-क्रि वि. [स. श्व] १ ग्राज के बाद ग्राने वाला दिन ।

उ०—१ तितरै सहसा रै खबर ग्राई कह्यौ—सवारै दिन ऊगता पेहली वीरमदे था ऊपर ग्रावै छै ।—राव मालदे री वात

उ०—२ तद खीवसी जी कह्यौ—जो सवारै ग्रायौ, था मोनै बोलायौ, तौ बात साची छै। नही तो थाहरा लुगाया रा चिरत छै ।—कुंवरसी साखला री वारता

२ सवेरे, प्रात ।

रू. भे —सवारी, सवेरै ।

सवारौ, सवारौ—देखो सवेरौ' (रू. भे.)

उ०—१ भयौ हौ सवारौ वीसलराय, भोज कुंवर हइ चित्त लगाय।—बी. दे.

उ०—२ दध पाजा टळी कना छिळियौ दळ, ताजा भड साजा है तत । राजा ग्राज सवारा रुडिया, बाजा कै ऊपर 'जसवत' ।

—रुघो मुहतौ

सवाल-स. पु [ग्र] १ वह जो कुछ पूछा जाय, प्रश्न ।

उ०—१ ग्रेंडा नाढ सवाल पूछणिया नै पाछा इण भात कई सवाल करू तौ वै जबाब दै सकै काई ।—फुलवाडी

उ०—२ नाई वळै सवाल करयौ—तौ बाप जी, ग्राप रात रा इत्ता सस्तर पाती सजाय सिघ पधारता ।—फुलवाडी

उ०—३ कवर ही जकी बात वताय दी । पण वो तपसी तौ खोद खोदनै सवालां माथै सवाल पूछण लागौ कै राजा इण राणी सू कद परणीजियौ, कैडी है ।—फुलवाडी

२ पूछने की क्रिया ।

३ दरखास्त, माग ।

६ निवेदन, प्रार्थना ।

५ हल करने के लिए दिया गया गणितीय प्रश्न ।

रू. भे —सुग्राल, स्वाल ।

सवाळक, सवालख, सवाळख-स पु [सं. सपादलक्ष] १ एक प्रदेश का नाम ।

वि वि —प्राचीन समय मे वह प्रदेश जो चौहान वशी क्षत्रियो के अधिकार मे था । इसके अन्तर्गत नागौर का प्रदेश, जयपुर का शेखावटी से लगाकर रणथम्भोर से कुछ दक्षिण तक का प्रदेश जिसमे कोटा विभाग का उत्तरी भाग भी है, मेवाड का माडलगढ से लगाकर सारा पूर्वी हिस्सा, बूदी जिले का पश्चिमी ग्रश किशनगढ का राज्य तथा ग्रजमेर का सारा प्रदेश था । ग्राधुनिक समय मे प्रायः नागौर प्रदेश को ही सवाळख कहते है ।

२ नागौर प्रदेश ।

उ०—१ लडवा चाव कमधजा लागौ, भूप सवाळख चौडै भागौ ।

—रा रू

उ०—२ ग्रति हित बोलायौ 'ग्रभौ', तुरत ग्रनुज 'बखतेस' । कमधा पति ग्रादर कियौ, दियौ सवाळख देस ।—रा. रू.

२ सवालाख की सख्या ।

उ०—ग्रपणी खाटी सपति जगत कू खुलावै, लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावै ।—सू प्र

रू. भे —सवालाख, सुवाळख, स्वाळक ।

सवाळख-पट्टी-सं. स्त्री [स सपादलक्षपाटक] प्राचीन काल का प्रसिद्ध चौहान राज्य ।

२ ग्रर्वाचीन नागौर प्रदेश का नाम ।

रू. भे.—सुवाळखपट्टी, स्वाळकपट्टी, स्वाळखपट्टी ।

सवाल-जबाब, सवाल-जवाब-स. पु [ग्र] विवाद, बहस, तर्क-वितर्क ।

सवालाख—देखो 'सवालख' (रू. भे)

उ०—म्हारी सवालाख री लूब गम गई ईढाणी । इण ईढाणी रै

सवादक-स पु. [स स्वादक] १ दूध। (ह ना. मा)
२ अमृत। (ह. ना मा)
वि —१ वह जो स्वाद लेता हो।
२ स्वादपूर्ण।
रू भे —स्वादक।

सवादी—देखो 'स्वादो' (रू भे)
उ०—१ सुणी कीरती छाकवाळै सवादी, विना नारि हालै नथी कील वादि।—व भा.
उ०—२ मस्त महीनौ आवियौ रे जला, अब तौ खबर म्हारी लेह। तौ बिन घडिय न आवडै रे छेला जीव उठै इत देह। जलौ म्हारी जोड रौ सेजा रौ सवादी रे।—लो गी.
उ०—३ पाचू भोजन जूजवा चाहै, पाच पाच सवादी। निळजी नारी कह्यो न मानै, अवरति आप मुरादी।—वील्होजी

सवादौ—देखो 'स्वाद' (रू भे)
उ०—विढता घणी लगाई वेळा, समहर सूर सवादा। सुरभीया साद करै सागावत, रथी आवौ रायजादा।
—जैसिंघ नरूका रौ गीत

सवाब—देखो 'सवाव' (रू भे)
उ०—ससार मैं आवणौ जावणौ रौ वारणौ पडचौ छै सही सवाब हज री उण सू मोल लै लेवौ।—नी प्र.

सवामोतीदाम-स पु —एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे पाच जगण होते हैं। (ल. पि)

सवाय—१ देखो 'सवायौ' (रू भे.)
उ०—१ दळ मारू मेवाड दळ, ज्वाळा सेस सवाय। खबर तहव्वर खान नू, दी हलकारै जाय।—रा. रू
उ०—२ म्हारी मोहरा गी, म्हारौ मोबी वेटौ गियौ अर म्है भूठी बाजी जकौ सवाय मैं।—फुलवाडी
उ०—३ वस्तौ अर काकड मैं वौ आपरै हाथा हजारू रूंखडा लगाय दिया। थाणा बणाय वगत माथै सगळा रूखा नै पाणी पावणौ मामूली बात नी ही। रूख रूख रौ जाब्तौ अर रूखाळी सवाय मैं।—फुलवाडी
२ देखो 'सिवाय' (रू भे)

सवायक-स पु —सखा, मित्र। (अ मा)
वि —अधिक, बढकर।
उ०—वियौ सत्रघण सुजस सवायक, दीरघवाह वडो वरदायक।
—र. रू

सवायोडो—देखो 'सुहायोडो' (रू भे.)
(स्त्री. सवायोडी)

सवायौ-वि —१ अधिक, विशेष।
उ०—१ सखी री अब मिगसर महीनौ आयौ, सबही कौ नेह सवायौ।—घ व ग्र.
उ०—२ सभै अचडा दळ सवायौ इण विध जेसाण आयौ। सभै तोरण चित्र साजा, जैत आगम महाराजा।—सू प्र
उ०—३ दोना री आख्या तारा तारा रौ उजास सवायौ वधग्यौ।
—फुलवाडी
२ एक और चतुर्थांश के योग के बराबर।
उ०—नगरी को राजा हामल लेसी, कर गयौ कूंत सवायौ। टीडी! उडज्या ए खेत परायौ।—लो गी
३ विशेष, बढकर।
उ०—१ वा लुगाई भिरोखा रै साम्ही मूडौ करनै ऊभी तौ राजाजी री आख्या चूंधीजगी। वीजळी सू ई सवायौ पळकौ पडचौ। पछै राजाजी सूं उठै बैठणी नी आयौ।—फुलवाडी
उ०—२ अर उठी जान रै डेरै अर माडा मैं खुसिया री घमरोळ माची ही। जैडी बीदणी वैडौ ई बीद। दोनू अेक दूजा सूं सवाया रूपाळा।—फुलवाडी
सं पु.—१ सवाये का पहाडा। (गणित)
२ एक एवं चतुर्थांश का योग।
रू भे —सवाए, सवाय।
अल्पा;—सवाडौ, सवाडो।

सवार-स पु.—१ वह व्यक्ति जो सवारी करने मे दक्ष हो।
२ वचत।
उ०—महला भुजाई घी मण १२ लागतौ मोहिलणी घी सै २ तथा ३ मैं भुजाई आणी। एक दिन राव नु कह्यौ—म्हैं थाहरै इतरी सवार कीधी।—राव रिणमल री बात
३ सैनिक, घुडसवार।
उ०—१ जोय कटक अप जैत, सहर दैसाण सिधायौ। साथ पचीस सवार, ईस्वरी कदमा आयौ।—मे. म
उ०—२ पडचा रण जूझि सवार पचीस। वेळा उण आभ अडघा भुज वीस।—मे. म
४ वह जो किसी वस्तु पर बैठा हो।
[स श्व] ५ प्रात, सुवह।
उ०—१ सुथार रौ वेटौ सूगी दुकानदारी रै अलावा अेक काम वळै करतौ कै सवार सिंझ्या दुकान रौ सगळौ फूस वाईदौ भेळौ करनै मूणा मैं घाल माथै खाम देय देतौ।—फुलवाडी
उ०—२ सवार सिंझ्या उणरी आरती करै।—फुलवाडी
उ०—३ बीजै दिन बेपोहर ताइ वेढ हुई। तिण दिन सवार रा वाजिया थासु दिन घडी ४ रह्यौ तोही पाछा न वळै।—नैणसी
उ०—४ सवार हुवौ तरै रावळ आपरौ साथ हलकनै तूट पडियौ।
—नैणसी
६ डिंगल का एक गीत (छद) जिसके प्रत्येक चरण मे आठ सगण होते हैं।
७ हेगा, पटेला। (मि चावर)

२ गौ, गाय।

स पु [स. सवितृ] ३ सूर्य, सूरज।

४ शिव, महादेव।

५ इन्द्रदेव।

६ अर्क, मदार।

सवित्रीतनय-स पु [स सवितृतनय] सूर्य-पुत्र हरिण्यपाणिका का नाम।

सवित्रीदैवरा-सं. पु [स सवितृदैवरा] जिसका स्वामी सूर्य है, हस्त नक्षत्र।

सविध-वि [स.] १ पास, समीप। (डिं को.)

२ एक ही प्रकार का, एक ही तरह का।

सविभास-स पु [स] सूर्य, सूरज।

सवियोडी-वि स्त्री —जिसने बच्चे को जन्म दिया हो।

सविवार, सविवारु-क्रि वि [स सर्व+वार] हर दिन, हर समय।

उ०—१ जलचर जीव वसइ जल माहि, तै नवि छूटइ धीवर पाइ। थलचर नी कुण करिसइ सार, दवि दाभइ पुण तै सविवार।

उ०—२ घाचण घोलण सहइ अपारू, अगिण परि करम खिपइ सविवार। दस द्रस्टात वयण विचारि, आवइ कि नाखउं मनुस्य मभारि।—वस्तिग

उ०—३ चरित्र भणीइ खडगह धारू, पुण्यवंत पालइ सविवारू। महाव्रत नउ न धरइ मार, वारव्रत नउ करउ अंगीकार।

—वस्तिग

सवियाण-स पु.—सिवाने का प्रदेश जो आजकल बाडमेर जिले के अन्तर्गत है। (ऐतिहासिक)

सविसाची—देखो 'सव्यसाची' (रू. भे.)

सविस्तर, सविस्तार-क्रि वि. [स. सविस्तार] विस्तारपूर्वक, विस्तार से।

उ०—समाचार सविस्तर कह्या, पिंगळराय हीय गह गह्या। छाना नितु पुहचइ परधान, रळियात थ्या चिति परधान।—ढो. मा

सविहु-अव्यय. [स सर्वतस्] १ सब ओर से, सब तरफ से। (उ. र.)

२ सर्वत्र, चारो ओर। (उ. र.)

३ सम्पूर्णत.। (उ. र.)

सवीर—देखो 'वीर' (४७)

उ०—वाणा वाण वाजै गोळा चोसठा सवीर वकै, वाहा हरा भील भाजै छाजै पखा बोल। जठी जठी भार पडै मीरजां ओहटै जठी, तठी-तठी राजा आडो ओडजै सतोल।—अमरदास बारठ

सवेगौ-वि —१ जल्दी, शीघ्र।

वि. वि.—इसका प्रयोग प्राय शत्रु से बदला लेने के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है।

उ०—१ वेर सवेगौ वाळियौ, कमधज जेज न कीन। खेड अपत वळ खागरै, चादो चारण कीन।—पा. प्र

उ०—२ चावर करी सवेगा चालो।—रामरासो

२ तेज गति वाला, स्फूर्ती वाला।

उ०—तुरगा सवेगा नरा जोस तेगो, जगै नाग रुठै प्रळै आगि जैसो।—रा रू.

क्रि. वि.—शीघ्रता से, जल्दी से, शीघ्रतापूर्वक।

उ०—पेग इसो अवसर पदमसिंह वर माधारै। इसा सवेगा उडिया मनु आसमान उभारै।—गोरधन चारण

सवेध—देखो 'सुवेध' (रू. भे)

उ०—रसीया रसि वेध्या रहि, भमर भमी रस लेइ। रसक सवेध न जाणता, ते नर जीवइ काई।—प्राचीन फागु-सग्रह

सवेर, सवेर-अव्य —प्रात. काल, सवेरे।

उ०—१ आगं देवलियै तणी, थी ग्रहियो नाळेर। परणैवा जोधा-पति, मागी सीख सवेर।—रा. रू.

उ०—२ सफ आयो दर कूच मृ, असपत्ती अजमेर। गज गाजै नौबत गहर, वाजै नभ सवेर।—रा. रू.

सवेरियां-क्रि वि.—१ ठीक समय पर, समय पर।

उ०—पिसण पुहता आय इमकू, कीजै चित सवेरियां। काम रूप कुलछमी, पीव तोड साथ ज तेरिया।—वाजिदजी

२ प्रात· होते ही, सवेरा होते ही।

उ०—वेह पुराणा छोडि अयाणां, वाळदि लादि सवेरियां। जमकै आए पकडि चलाए, वारी पूगी तेरिया।—रैदास घतरवाळ

सवेरी-स. स्त्री. [स. स्वयवृता] वह स्त्री जो पति की जीवितावस्था मे किसी के फुसलाने या बहकाने से किसी अन्य पुरुष के साथ चली जाय।

सवेरै-क्रि. वि —१ प्रात काल।

२ देखो 'सवारै' (रू भे.)

सवेरोराग-सं. पु [सं सवीरोराग] १ सिंधु राग।

उ०—ईख नरा नीदवा बचायो जीव दुहु ओरा, वारगा बीदवा घोरा बचायो बीराण। राटणी तबल्ला सोरा रचायो सवेरोराग, पाटणी हिंदवा गोरा मचायो पीठाण।—दुरगादत्त बारहठ

सवेरौ-स. पु —१ प्रातः काल, सवेरा।

उ०—१ अमल री विक लागी अटल, सुख लूटै वै सुलखणा। सवेरा साझ दोनुं समै काझकझनै कुलखणा।—ऊ. का.

उ०—२ निरखण री मोहे चाव घणौं री, कब मुख देखू तेरा। पिया मिळण कूं हुई हू उदासी, मिळवू मित सवेरा।—मीरा

२ ऊषाकाल।

रू भे —सवारौ, सवेर, सवेळू, सवेळौ।

सवेळू, सवेळौ-वि.—१ ठीक समय पर आने वाला।

२ देखो 'सवेरौ' (रू, भे.)

उ०—तुरग सवेळा तडियो, हू जाण्यो जळ-हेत। पुणग न छूतां परखियो, सुणियो बब सचेत।—रैवतसिंह भाटी

कारणै म्हारो जेठ कूटै पेट, गम गई ईढांणी । — लो. गी.

सवावड़—देखो 'सुवावड' (रू भे)

उ०—सवावड़ तणी झूठी सरस, कूडी आळ न कीजियै । कर जोड अरज थासू करा, लेखा बिना न लीजियै ।—रमण प्रकाश

सवास–वि —१ सिर से पाव तक, सिरोपाव । (वस्त्र)

उ०—सौ हजार द्रब थेलिया, मोती कडा सवास । गाम सवायौ सासणी, पायो गोरखदास ।—रा. रू.

२ देखो 'सुवास' (रू. भे)

उ०—सुगध गधसार एणसार मेघसार ए । सवास अबरै लुबान डबरै निसार ए ।—रा रू

सवासक–स. पु.—एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे चार लघु और एक भगण सहित कुल सात वर्ण होते हैं । (र. ज प्र.)

सवासण, सवासन–स पु. [सं. शवासन] योग के चौरासी आसनो मे से एक आसन जिसमे दोनो हाथो को सीधे पावो से सटाकर सीधे आकाश की तरफ मुह करके सोना होता है । इसका दूसरा नाम मृतासन भी है । इससे श्रम दूर होकर विश्राति प्राप्त होती है ।

सवासणी–स. स्त्री. [सं. सुवासनी, स्व+वासिनी] १ अपने पिता के घर रहने वाली विवाहिता या अविवाहिता स्त्री ।

उ०—जठै वडा नै वडाई देसी दूणो सौ मान सवासण्या । जठै कुळ बहुवा नै आदर देसी, सासू नणद गुण मानसी ।—लो. गी

२ वह अविवाहित लडकी जिसकी उम्र १०-११ वर्ष से कम हो ।

वि वि —राजस्थान मे ये अत्यन्त पवित्र एव आदरणीय मानी जाती हैं तथा कई मागलिक कार्यों पर इनकी उपस्थिति शुभ एव मगलदायक समझी जाती है ।

उ०—१ आरती होवै । आरती री मोहर सवासणी नू दीजै । पछै सगळा माणसां नु पगा लगावे ।—नैणसी

उ०—२ पछै सीनागणेचीयाजी रै पाय लागै, आरती री मौर १ अेक सवासणी नै दीजै ।—नैणसी

३ पुत्री, बेटी ।

४ पुत्री की पुत्री, नवासी ।

५ बडे भाई की लडकी, भतीजी ।

६ बहन की लडकी, भाणजी ।

मुहा.—यू किसी दूबळी सवासणी है=अत्यन्त दुर्बल एव निर्धन ।

रू. भे.—सव्वासणी, सवाणी, साउवाणी, सुआसणि, सुआसणी, सुआसिण, सुआसिणी, सुवासणी, सुवासिणी, स्वासणी ।

सवासणो–सं पु. (स्त्री. सवासणी) बहन-बेटी का पति या पुत्र ।

रू. भे —सुआसणो ।

सवासो–स. पु.—गणित में एक सौ पच्चीस की सख्या ।

उ० —नंदलाल जै गैणा वेच नाखतो तो सौ-सवासो रै लालच मैं दोनवा री इज्जत जावती ।—दसदोख

सवि—देखो 'सब' (रू भे)

उ०—१ भाद्रवडइ सवि सर भरिया, अेक निरतर नीर । अह निसि अेकडली डरू, धीर न दीइ को धरि ।—मा. का. प्र.

उ०—२ सुर नर पन्नग पणि वलो, लक्ष चउरासी लोय । ब्रह्मा हरि हर कुसुम-सरि, जिणि जीत्या सवि कोय ।—मा का प्र.

उ०—३ मत्र तत्र मणि ओखधि, देव धरम गुरु सेव । भाव बिना तैं सवि वृथा, भाव फलइ नित मेव ।—स. कु.

२ देखो 'सव' (४) (रू भे.) (ह ना. मा.)

सविकल्प–स. पु.—१ किसी आलबन की सहायता से की जाने वाली एक प्रकार की समाधि ।

२ ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान । (वेदान्त)

वि.—१ ऐच्छिक, पसद का ।

२ सदिग्ध ।

३ वैकल्पिक ।

सविकार–वि. [स स+विकार] विकार सहित, दोषपूर्ण ।

उ०—ऐ ससार अनित्य, आदि सविकार उचारै, काळ अत वस करै, धीर बळवत न धारै ।—रा. रू

सविचार–वि.—विचारपूर्वक, विचार सहित ।

उ०—वंदन अग उपासकै, वलि ठाणाग मझार अख्यानी । रायपसेणी मई कह्यउ, सूरीयाम सविचार अख्यानी । –वि. कु.

सवित—देखो 'सविता' (रू भे.)

उ०—सामत सहस सहस किरण, तेज पुज्ज पौरसि प्रभित । गजसिंघ तेथ तत्तो थयो, जेथ थाय सीतळ सवित ।—गु रू. ब.

सविता, सविताब, सवित्ता–स. पु [स सवितृ] १ सूर्य, सूरज ।

उ०—१ विभ्रम विमोह वित्तं, सपत तुरग ताणिय सविता । वासर विसाळ लहिय, चक-वाणै मगळ भवण ।—गु रू. ब

उ०—२ वैरागवृद्धि, सुख बळ सम्रद्धि, निरभय निसान, निरधन निधान । देवादिदेव, सुर असुर सैव, राजाधिराज, सविता समाज ।

—ऊ का.

२ बारह की सख्या । * (डिं. को.)

३ पिता । (अ मा, ह ना मा)

४ विष्णु-भगवान् ।

५ बारह आदित्यो मे से एक ।

स. स्त्री.—६ पृश्नि की पत्नी का नाम ।

वि.—उत्पन्न करने वाला, पैदा करने वाला, उत्पादक ।

सवितापुत, सवितापुतर, सवितापुत्र–स पु [स. सवितापुत्र] सूर्य-पुत्र शनिश्चर, यमराज एव राजा कर्ण ।

सवितासुत–स. पु [स] सूर्य-पुत्र शनिश्चर, यमराज, एव राजा कर्ण ।

सवित्रि, सवित्री–स. स्त्री [स सवित्री] १ मा, माता ।

उ०—ब्रह्म हत्या रा विलसणहार आपरा पुत्र नू केडै करि म्हारा तौ मत मै स्वामी री सवित्री री ही सासन समस्त रै मीस प्रमांणीजै ।

—व. भा

७ छः की संख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—६।

वि—१ अनुकूल, पक्षीय, पक्ष का।

उ०—इण तरह जवाब सवाल घणा हुवा सो सगळा मुत्सद्दिया बैठा सुणी पण सस रुख किण री न कीवी, सारा डेरा आइया।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

२ छः।

३ देखो 'सस्य' (रू. भे.)

उ०—धणि-सस जणि-यण धण वलय, हणै सुहड कर हाम। चौरंग मैं चद्रहास रो, विरथ होय वदनाम।—रेवतसिंह भाटी

४ देखो 'ससि' (रू भे) (डि. को)

उ०—१ जै अतरजामी वार नमामी, स्वामी जय साधार। जोडी चिरजीव पतनी पीय, सुज सस दीवं मार।—र. ज. प्र.

उ०—२ वर्णं डसण तेज ब्रह्माणं, आतस नेत्र वर्णं सस भाणं। मज्या तेज मुहारा सोहै, मारुत तेज स्रवण मन मोहै।
—मा. वचनिका

५ देखो 'सीसो'

उ०—रव रथ पोहर थकत होय रहियो, नमो नमो चतरंग नरेस। जुग न जाय नाम सस जडियो, पडियो तो चडियो पडवेस।
—महाराणा वडा अडसी रै गीत

ससइ-सं स्त्री. [सं. श्वसिति] १ सास लेने की क्रिया। (उ र.)

२ आह भरने की क्रिया। (उ. र.)

ससक-स पु [स शशक] खरगोश।

ससकणौ-वि. [स. श्वासक्रांत] (स्त्री. ससकणी) श्वास रोग से पीडित।

ससकणौ, ससकबौ-क्रि अ [स श्वासक्रान्त] १ तेजगति से सास लेना, हाफना।

उ०—वे तरफ भड़ वेढिंग रा, जूटा हगामी जगरा। धम ससक धरणी कसक कूरम, ससक नासा सेस।—र रू

२ तरसना, आह भरना।

३ असह्य वेदना या पीडा के कारण मुह से आह निकलना, कराहना।

उ०—१ दादू तळफै पीड सौं, विरही जन तेरा। ससकै साई कारणै, मिळ साहिव मेरा।—दादूबाणी

उ०—२ आगै आई देखै तो घोडा कायजै किया फिरै छै अर असवार नही। जणा जणा ससकता लाधा।—नैणसी

उ०—३ सेखौ जी खेत मे ससकै छै।—नैणसी

४ श्वास रोग के कारण तेज श्वास लेना।

५ गहरी धूप के कारण जानवरो द्वारा जल्दी-जल्दी सास लेना, हाफना।

६ विरहावस्था मे सिसकना।

७ आनन्द या रति-क्रिडा के समय मुह से सास खीचना।

ससकणहार, हारौ (हारी), ससकणियौ—वि०।

ससकिओडौ, ससकियोडौ, ससक्योडौ—भू० का० कृ०।

ससकीजणौ, ससकीजबौ—भाव वा०।

ससक्कणौ, ससक्कबौ, सिसकणौ, सिसकबौ—रू० भे०।

ससकारौ—देखो 'सिसकारौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—दस दस पास खवासी दासी, चंगै वदन ओढिया चीर। ससवदनी नाखै ससकारा, मीरा कहा हमारा मीर।—सुंदरदास बिट्ठ

ससक्कणौ, ससक्कबौ—देखो 'ससकणौ, ससकबौ' (रू. भे.)

उ०—ससक्कै नगारबध लटक्कै नागरा सीस, आंगरा अगार तोपा भटक्कै अवाज।—भीमसिंघ चूडावत रौ गीत

ससक्कियोडौ—देखो 'ससकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री ससक्कियोडी)

ससगांणी-स पु. [फा शश] चांदी का एक सिक्का जो फिरोजशाह के समय मे प्रचलित था।

ससगोत, ससगोति, ससगोती, ससगोतौ—देखो 'समिगोति' (रू. भे)
(अ. मा.)

उ०—गज केकाण वहा ससगोती, रिध सामग्र वगसै भुजराज।
—क. कु. बो

ससटम, ससटमौं-वि [स षष्ठम] छठा।

उ०—काळ पचमो जान, वटै ससटमों वखाणं। नुरो सपत मैं थान, असट काळजर जाणं।—गज-उद्धार

ससणौ-स पु [सं. श्वासक्रात] (स्त्री. ससणी) श्वास रोग से पीडित।

उ०—हासी वांमी सी सूकी हिय हारै, ससणी लसणी लग दै दसणी सारै।—ऊ. का.

ससणौ, ससबौ-क्रि. अ. [स श्वसिति] १ श्वास लेना। (उ. र.)

२ आह भरना। (उ. र.)

ससणहार, हारौ (हारी), ससणियौ—वि०।

ससिओडौ, ससियोडौ, सस्योडौ—भू० का० कृ०।

ससीजणौ, ससीजबौ—भाव वा०।

ससत-क्रि वि—१ नि.संदेह, सत्य ही।

उ०—दधि विणि लियौ जाइ वणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससत। नासा अग्रि मुताहळ निहसति, मजति किंसुक मुख भागवत।—वेलि

२ कुशल, खैरियत। (हृ. ना. मा.)

ससतर—देखो 'सस्त्र' (रू. भे.) (डि. को)

उ०—१ पछै रावळजी ससतर सभ्र आदमी हजार पाच सूं गाव राजोवाई राव जी स्त्रीलूणकरण जी रा डेरा पर आया।—द. दा.

उ०—२ थांनै माहरी दुआइती है सो थारा ससतर भलाई वाहलो अनै औ हूं एकलौ थारै सामनै आयनै खडो हूं।—वी स टी

ससतरपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू भे.)

ससतौ—देखो 'सस्तौ (रू. भे.)

उ०—१ मारवाड मलाणी मगरै, खोखौ चोखो मेवडो। सूकौ

सवेव–क्रि. वि —वेग सहित, तेजी से ।
उ०—सिव त्रिपुर समर प्रगटै सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव ।
—रा. व. वि

सवै–देखो 'सब' (रू. भे.)
उ०—दुरग सवै आपणा कीधा, समुद्रलीग आपणी आण फेरि ।
—व. स.

सवैइयौ, सवैयौ–स पु.—१ एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे इकतीस मात्राए होती है। चरण के अन्त मे भगण होता है।
२ डिंगल का एक गीत जिसमे दो-दो सगण के चार पद होते है तथा पाचवां पद सोलह मात्राओ का होता है। तुक पाचो पदो (चरण) मे मिलती है।
३ एक प्रकार का पिंगल या व्रज भाषा का वर्णिक छंद विशेष ।
४ गणित मे सवाया का पहाडा ।

सवोळी–वि.—श्रेष्ठ, उत्तम ।
उ०—सोभै मुरधर वार सवोळी हुवौ वसत जोधपुर होळी ।
—रा. रू.

सव्य–स. पु [सं.] १ चद्रग्रहण या सूर्यग्रहण का एक प्रकार का ग्रास ।
२ बाया ।
३ अगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि ।
[स सव्य] ४ बाए कधे पर रखा हुआ यज्ञोपवीत ।
५ विष्णु ।
वि.—१ बाया ।
२ दक्षिणी, दक्षिण का ।
३ उलटा, विपरीत ।

सव्यचारी–स पु [स] अर्जुन का एक नाम ।

सव्यभिचार–स. पु. [स सव्यभिचार] न्यायदर्शन के पाच प्रकार के हेत्वाभासो मे से एक ।

सव्यसाची–स पु. [स सव्यसाचिन्] अर्जुन का एक नाम ।
(ह. ना. मा.)
वि. वि.—दोनो हाथो से समान रूप से बाण चलाने के कारण अर्जुन का यह नाम पडा ।
रू. भे.—सवसाची, सविसाची ।

सव्यसिव्य–सं. पु. [स] विप्रचित्ति एव सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न एक सैंहिकेय राक्षस ।

सव्याज–वि [स] चालाक, धूर्त ।

सव्यासव्य–वि.—बाये-दाये ।

सव्येस्ट–स. पु. [सं. सव्येष्ट] सारथी ।

सव्व–देखो 'सरव' (रू. भे.)
उ०—१ सव्वे भला मासडा, पण वइसाह न तुल्ल । जे दवि दाधा रूंखडा, तीह माथइ फुल्ल ।—वाग्विलास
उ०—२ अनूप भूप चुप धारि आइ पाइ लग्गए । पहू बहू सुकित्ति नित्त सव्व, सोभा लायक ।—ध. व ग्र.

सव्वरिय सव्वरी–देखो 'सरवरी' (रू. भे.)
उ०—रयणि रमन रमणि पवेसु न्हवणु नहु निसहि । जिणेसर न दिन दोसा समय बलि न सव्वरिय विसरूहं ।—ए. जै का. स.

सव्वाल–स पु. [स शव्वाल] १ अरबी महीनो मे दसवां महीना ।
२ देखो 'सवाल' (रू भे)
रू. भे —सव्वाल ।

सव्वासणी–देखो 'सवासणी' (रू. भे.)

सव्वोसही, सव्वोसहीलब्धि, सव्वोसहीलब्धी–स स्त्री. [स. सर्व] वह शक्ति जिसके धारणकर्ता के समस्त अगोपाग ओपधि-स्वरूप होकर ससारोपयोगी हो जाते है ।
उ०—केसनखरोम सहु अग फरसै सही, रहै नही रोग सव्वोसही तै कही ।—वृस्त

ससंक–स. पु.—रोग, बिमारी । (अ. मा.)
वि. [स सशक] १ भयकारी ।
२ भयावह, डरावना ।
३ देखो 'ससाक' (रू. भे) (ह ना. मा)

ससकणौ, ससंकबौ–क्रि. अ.—शकित होना, भयभीत होना, डरना ।
ससकणहार, हारौ (हारी), ससंकणियौ—वि० ।
ससकिओडौ, ससकियोडौ, ससक्योडौ—भू० का० कृ० ।
ससकीजणौ, ससकीजबौ—भाव वा० ।

ससकियोडौ–भू का कृ.—शकित हुवा हुआ, भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ ।
(स्त्री ससकियोडी)

सस, ससउ–स पु. [स शश] १ खरगोश । (डिं. को)
उ०—१ सस सिकार तीतर सुभट, कुरजां चिडी कबूतरा । भाया सु नित उठ भिडै, परम धरम रजपूत रा ।—ऊ का.
उ०—२ दव तो लागो छै राजाजी वन मधै, हिरण ससादिक बलै माय । ऊला माला रो हो पखी देखनै, मन माहै हरसित थाय ।—जयवाणी
उ०—३ आडै फट वट पडै अपारा, आगै पाछै पार न आरा । अग मूझै साभर सस माहै, सिघ न जाय सकै वळ साहै ।
—रा. रू
रू. भे.—ससौ, सस्सौ ।
अल्पा,—ससलौ, ससियौ, ससिलउ, सुसकल्यौ, सुसलौ, सुसल्यौ, सुसियौ ।
२ कामशास्त्र के अनुसार मनुष्य के चार भेदो मे से एक भेद ।
३ कुशलक्षेम । (ह ना मा.)
४ चन्द्रकलक ।
५ लोध्र वृक्ष ।
६ गन्धरस ।

ससवौ, ससवौं–वि.—१ स्वस्थ, निरोग ।
२ वैभवशाली ।
ससराजा–स पु —चन्द्रमा, शशि । (डि. को)
(मि ससाक)
ससिसखर—देखो 'ससिसेखर' (रू. भे.) (ग्र. मा.)
ससुर–सं पु —जीव, प्राण । (ग्रनेका)
ससस्यली–स. स्त्री [स शशः+स्थली] गगा ग्रौर यमुना के मध्य का प्रदेश ।
ससहर—१ देखो 'ससिधर' (रू भे.)
उ०—रवि ससहर लग नाम रहावँ, उद्र सभा मझ वैठो ग्रावँ ।
—लो गी.
२ देखो 'ससधर' (रू भे.) (ग्र मा)
उ०—हस गवण कदळी सुजध, कटि केहर सम खीण । मुग्व ससहर खजन नयण, कुच श्रीफळ कठ वीण ।—ग्रग्यात
ससाक–स पु [स शशाक] १ चन्द्रमा ।
उ०—भय कर करत निरास चित, लालच करन प्रवेस । ग्रासुर जीव ससांक ज्यों, वढ घटि होत हमेस ।—ला. रा.
२ कपूर ।
रू भे.—ससक ।
ससाकज–स पु. [स शशाकुज] चन्द्रमा का पुत्र, बुध ।
ससाकसेखर–स. पु [स. शशाक शेखर] शिव, महादेव ।
ससांकसुत–स पु [स शशाकसुत] चन्द्रमा का पुत्र, बुध ।
ससानीडाढी, ससानीदाढी—देखो 'सासीदाढी' (रू भे.)
ससाम्हौ–क्रि वि.—सम्मुख, सामने ।
उ०—केई तौ ग्रापरा वेटा नू कहै—दारिया कपूत ग्रजू ससाम्हा नही ग्रावता, इयू नही जागता गोठै गया छै ।
—प्रतापमल देवडा री वात
ससा–स. स्त्री [स. स्वसा] वहिन, भगिनि ।
उ०—रावण ससा दिग्गज रूप दडकवन रमै, निरलज सुपनखा तिण नाम गरक ग्रनग मै ।—र रू.
रू भे —सिस ।
ससात–स पु —दुग्ध, दूध । (ग्र मा.)
ससाद–स पु [स शश+ग्रद] १ श्येन पक्षी, बाज । (डि. को)
२ इक्ष्वाकु के ज्येष्ठ पुत्र का नाम ।
ससि–स. पु. [स शशिन्] १ चन्द्रमा, चांद ।
(ग्र मा; ना मा, डि को)
उ०—१ विरह वियाणी रैणभर, प्रीतम विन तण खीण । वीण ग्रलापि देख ससि, किस गुण मेल्ही वीण ।—ग्रग्यात
उ०—२ ग्रगमद वीदी भाळ मझ जाय कही छवि जोन । निस ग्रस्टम ससि री नखत, भयौ उदै ससि भोन ।
—सिववक्स पाल्हावत
२ कपूर ।
३ टगण की छ मात्रा के दसवे भेद का नाम ।।ऽ। (डि को)
४ टगण के छः मात्रा के दूसरे भेद का नाम ।ऽऽ (पिंगल)
५ ग्रार्यागीति या खधाण (स्कध) गाहा का भेद ।
६ झरना, श्रोत । (डि. को)
७ पंथी, राही । (ग्रनेका)
८ मोती ।
९ छप्पय का ५६ वा भेद जिसमे १५ गुरु १२२ लघु से १३७ वर्ण या १५२ मात्राए होती हैं । (र. ज प्र.)
१० छप्पय छद का ५४ वा भेद जिसमे १७ गुरु ग्रौर ११८ लघु ग्रर्थात कुल १३५ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं ।
११ एक की सख्या सूचक शब्द । * (डि को)
१२ शीतल, ठडा । * (डि. को.)
१३ यादववशीय शुची राजा का नाम ।
१४ देखो सिसु' (रू भे)
उ०—वीता इम केइक वरस, ग्रति ग्राणद ग्रववेस । ऊगमणं रवि रूप ग्रंग, वर्ण कुवर ससि वेस ।—सू प्र.
१५ देखो 'सस' (रू भे)
उ०—वधन देख ससि ग्रग मूकर सोक रसत ।—जयसेखर सूरि
रू भे —सस, ससी, सिसि ।
ससिकत–स. पु —देखो 'ससिकांत' (रू. भे.)
उ०—सोम सरीखौ कथ थूं, हम ससिकत समान । गिरा लाग्या विऊ ससि, हस नैं मूकी माण ।—ग्रग्यात
ससिकर–स पु [स. शशिकर] १ चन्द्रमा, चांद ।
उ०—वाणक दुळै चमरा, वस इम वाखाणजै । जगमग सूर नीस जरूर ससिकर जाणजै ।—वा दा
२ चन्द्रमा की किरण ।
ससिकळा–स स्त्री [स. शशिकला] १ चन्द्रमा की कला ।
२ ग्रयोध्यानरेश सुदर्शन की पत्नी एव काशिराज सुवाहू की कन्या का नाम ।
३ एक प्रकार का वर्ण वृत विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण ग्रौर एक सगण होता हे ।
ससिकात–स. पु. [स शशिकात] चन्द्रकातमणि ।
रू भे —ससिकत ।
ससिकुळ–स. पु [स शशिकुल] चन्द्रवश ।
ससिखंड–स पु [स शशिखड] १ चन्द्रमा की किरण ।
२ शिव, महादेव ।
ससिगोत, ससिगोति, ससिगोती–स. पु [स. शशिगोत्रिन्] मोती, मुक्तक । (ना. मा; ह ना. मा.)
रू. भे —ससगोत, ससगोति, ससगोती, ससगोतौ, सिसगोत, सिसगोति, सिसगोती, सिसिगोत, सिसिगोति, सिसिगोती ।

ससतो देवै सदा, मुरधर खेजड़ देवडो ।—दसदेव

उ०—२ ससती मिळै पुनसूं पडै, देव वितरण करावणा । चिर-याचित अभिमत प्रसादी, मुरधर बाळक ल्यावणा ।—दसदेव

(स्त्र. ससती)

ससत्र—देखो 'सस्त्र' (रू भे) (डिं को; ह ना. मा)

उ०—१ सालुळै विदळ कदळ ससत्र, रगसेल खगे न मिटै रगत्र ।
—रा. रू.

उ०—२ स्रगार साजि मगै ससत्र महाराज मडोवरै ।—रा रू.

उ०—३ चतुरविध वेद प्रणीत चिकित्सा, ससत्र उखध मत्र तत्र सुवि । काया कजि उपचार करता, हुए वेलि जपती हुवि ।
—वेलि

ससत्रप्रतोल—स. पु.—वज्र । (अ. मा.)

ससत्रक—देखो 'सस्त्रक' (रू. भे.) (ह ना. मा.)

ससत्तरपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू. भे)

ससदळ—स पु —अर्द्ध चंद्रमा ।

उ०—चदवदण अगलोयणी, भीसुर ससदळ भाळ । नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभ सुकमाळ ।—ढो मा

वि. वि.—प्राय इसकी उपमा ललाट से दी जाती है ।

ससधर—स. पु. [स. शशधर] १ चंद्रमा, चांद । (डि. को)

२ कपूर । (डि को.)

रू भे—ससहर, ससियर, ससियळ, ससिहर, ससीहर, सिसहर, सिसहरि, सस्सिहर ।

ससनूर, ससनूरो—देखो 'सनूरो' (रू भे.)

उ०—१ प्रभूना गुण प्रबल पडूर रे कहे विनय चद्र ससनूरि ।
—वि. कु.

उ०—२ योगि ध्यावै युक्ति सू, भक्ति कर भरपूर । सपै तेहनै व्यक्ति गुण, सक्ति सहित ससनूर ।—वि कु

ससनेह—वि —स्नेह-पूर्वक, प्रेमपूर्वक ।

उ०—१ तै सुख विलसै दपती, विविध परै ससनेह । मास घडी सम लेखवै, जिम दोगधक देह ।—वि कु

उ०—२ हिव तास प्रसगइ जेह, तै पिण कहीयइ ससनेह । उसन्नउ दुविध प्रकार, तसु अत पणइ व्यभचार ।—वि. कु

ससनेही—देखो 'सनेही' (रू भे)

उ०—१ ससनेही समदा परै, बसत जु हियै मभार । कुसनेही घर आगणै, जाण समदा पार ।—अग्यात

उ०—२ ससनेही सज्जण मिल्या, रयण रहै रस लाइ । विहु पहरे चटकउ कियउ, वैरण गई बिहाइ ।—अग्यात

ससपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे)

ससप्रिया—देखो 'ससिप्रिया' (रू भे.) (अ मा)

ससबिंद, ससबिंदु—स. पु [सं. शशबिन्दु] १ भगवान् विष्णु ।

२ यदुवशीय राजा चित्ररथ के पुत्र का नाम जिनके पास दस हजार पत्निया व चौदह अमूल्य रत्न थे । इनकी पुत्री बिंदुमती से अयोध्यापति माधाता का विवाह हुआ था ।

ससभ्रत—स पु. [स शशभ्रत] १ चन्द्रमा, चांद ।

२ कपूर ।

ससमत्य, ससमाथ—१ देखो 'ससिमाथ' (रू. भे.) (अ. मा, डिं. को.)

२ देखो 'समरथ' (रू. भे)

उ०—१ क्रत करण अकरण अन्नथा करण, सगळै ही थोकै सस-मत्य । हालिया जाइ लगाया हूँता, हरि सालै सिरि थापै हत्य ।
—वेलि.

उ०—२ मिळ 'जोधा' 'ऊदा' कमध, मेडतिया ससमाथ । 'करनोता' चापा कनै भल कूपा भाराथ ।—रा. रू.

उ०—३ मुग्गल तुग चढ़ै ससमाथां, सेन हुडब्वड एकण साथा ।
—रा. रू

उ०—४ सुदर तणो साहिबो साथै, मागळियो आगळ ससमाथै ।
—रा रू.

ससमाद, ससमादचक, ससमादचकर, ससमादचक्र, ससमाधचक, सस-माधचकर, ससमाधचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू भे.)

ससमो—वि (स्त्री ससमी) १ कटिबद्ध, सन्नद्ध या तैयार ।

उ०—१ कह्यो—अठा आगै नही जावा । फोज सू लडाई करस्या ताहरा साथ अपूठो घिरियो । राजपूत ससमा हुआ ।—नैणसी

उ०—२ सुत नाथ समाथ धुजा ससमा, करगा बळ 'ऊदळ' रूप कमा ।—रा रू

२ सहानुभूति ।

३ देखो चसमो' (रू. भे)

ससमौलि—स. पु. [सं शशिमौलि] शिव, महादेव ।

ससरंग—स पु —डिंगल का एक गीत (छंद) जिसके प्रत्येक चरण मे चार भगण होते हैं । (क कु बो)

ससर, ससरत, ससरित—१ देखो 'सिसिर' (रू भे) (डिं को)

उ०—अजर जरण रण असह दन जद ससर सम वडरह । लख दन समपण लहर, कहर चत अघट अथघ कह ।—र ज प्र

२ देखो 'ससि' (रू भे) (अनेका.)

ससरम, ससरमा—देखो 'सुसरमा' (रू. भे.)

ससरो—देखो 'ससुर' (रू. भे)

ससलो—देखो 'सस' (अल्पा, रू. भे.)

ससवापण, ससवापणो, ससवापणौ—सं. पु.—१ कान्ति, ओज, आभा ।

उ०—धीरै-धीरै हळकी ललाई भर ससवापणो पाछो उणियारै ऊपर आयो ।—वरसगाठ

२ स्वस्थता ।

३ वैभवता ।

ससबिंद, ससबिंदु—स. पु. [स शश+बिन्दुः] १ चन्द्रमा, चांद ।

२ विष्णु ।

होते है। (र ज. प्र)

२ एक वृत विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे एक यगण होता है।

३ देखो 'ससि' (रू भे.) (अ मा.)

ससीकर-स स्त्री [स शशिकर] चन्द्रकिरण।

ससीप्रिया – देखो 'ससिप्रिया' (रू. भे)

ससीवार, ससीवार-स. पु. [स. शशिवार] सोमवार।

उ०—समत १६०० रा आसोज वद तीज ससीवार। फरसरामजी तन त्यागियो भेट्या विसन दवार।—सतवांणी

ससीयसी-स. स्त्री [स. शशीयसी] तरस राजा की पत्नी का नाम।

ससीस-स. पु [स. शशीश] १ शिव, महादेव।

२ स्वामी कार्तिकेय।

ससीहर—१ देखो 'ससधर' (रू भे.) (डि. को)

२ देखो 'ससिधर' (रू. भे) (हि को.)

ससुर-स पु. [स श्वसुर] १ पति या पत्नी का पिता।

उ०—ससुर नही कोइ सास, अध समा अप अधरी। होणहार उपहास, देखो भीखम द्रोण री।—रामनाथ कवियो

रू भे —ससरी, समुरी, सुसरी।

२ देखो 'सुसिर' (रू. भे.)

उ०—वाजय ससुर वधावा वाजै, नरपत मगण जगा निवाजै।

—रा. रू.

ससुराळ, ससुराल—देखो 'सासरी' (रू. भे)

ससुरी—देखो 'ससुर' (रू. भे)

ससुवाद-वि.—स्वादिष्ट, मीठा।

उ०—कूप तिहा तै निरखि नै रे, जल पूरत ससुवाद सजन जी।

—वि कु.

ससूक, ससूग-वि [स. सशूक] तीक्ष्णता सहित, तीक्ष्ण। (उ र.)

ससूत-वि.—अत्यधिक, बहुत अधिक।

उ०—कहि सखि साची वात मो, भरमल रूप अनूप। देखै मुख कै चहन सव, मो मन हरख ससूत।—कुवरसी सांखला री वारता

ससूदित-वि —१ मारा हुआ।

२ काटा हुआ।

उ०—कट्या घण सज्जळ छज्जळ कान, सिरगिर कज्जळ कूट समान। ससूदित साप समाक्रत सुड, दतूसळ मूसळ रूप दुरड।

—मे म.

ससोकित-वि.—शोकाकुल, शोकपूर्ण।

उ०—सोच महमद साह नू, मोच थयो मन मद्ध। प्रात ससोकित ज्यू दिपह, राति अनद रवद्ध।—रा. रू

ससोभ-वि —शोभापूर्वक, शोभासहित।

उ०—१ ससोभ भूखण स्तुत, वर्ण जडाव वामरा। विराजमान जाणि वीर, कार वाधि कामरा।—सू प्र

उ०—२ सजत कै चिकन्न साज, मुदरा ससोभ रा। करत कै मुकेस काम, भार कार चोभरा।—सू. प्र.

रू भे.—ससोह।

ससोभित—देखो 'सुसोभित' (रू. भे) (ह. ना. मा.)

ससोलूकमुखी-स स्त्री. [स. शशोलूकमुखी] कुमार कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

ससोह—देखो 'ससोभ' (रू. भे)

उ०—वणी राग गंभायची, जणी जैसर बोह। अ दावन वैरागर पर, सोहै जांन ससोह।—रा रू.

सस्सो-स पु.—१ 'स' वर्ण।

२ देखो 'सस' (रू भे)

उ०—१ ट्पांकि कै सुन जाणि, निघ वन माही मारग्या। महदी करै मलार, ससै फिर स्वान ससारग्या।—र. पु. वा

उ०—२ सुघर सबर ससा सोभान, फिरइ चाहैशी तीहूना कान।

—वन्निन

उ०—३ घेरै सिकार माहि ससा लूकटी सीहू रोक स्याळ गैंडा अनेक हिरण आदि देखर भेळा हुआ छै।—द. वि.

सस्कुली-स स्त्री [स शष्कुली] १ कान का छेद।

२ पूरी, पकवान आदि।

३ कान का रोग।

सस्ट, सस्ठ, सस्ठम-वि. [सं. षष्ठ] जो क्रम में पांचवे के बाद आता हो छठा।

उ०—पचम क्रोच स जाणियो, सस्टम नक वखाण। नाम स सप्तम दीप को, पुस्कर जाण प्रमाण।—गज-उद्धार

सस्त-वि [स शस्त] १ प्रशसित, सराहा हुआ।

२ मंगलकारी।

३ घायल।

स पु. [स शस्तं] १ प्रसन्नता, खुशी।

२ शरीर।

सस्तर—देखो 'सस्त्र' (रू भे)

उ०—१ घर मे सस्तर रै नाम पर फगत एक तरवार री खापटो ही। वै चुपचाप तरवार नै'र निकळना ईज हा कै उणा री वैन देख लिया।—रातवासो

उ०—२ अनै थे कही कै थू वाह कर तो म्हारो सस्तर लागा पछै दूजी वेळा पाछो वार करण री विवेक थानै होसी नही।

—वी स टी.

सस्तरपाटी, सस्तरपाती-स स्त्री —१ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—जमदूत ठाकर रै विलकुल सामनै ऊभा हा—सस्तरपाटी सू लैस-मूढारै बुकानी दियोडा अर हाथा मैं नागी तरवारा लियोडा।

—रातवासो

२ काम करने के उपकरण, औजार।

उ०— काम करता-करता वो छत बणी। मजूरा आप रा सस्त-

ससिज-स पु. [सं. शशिन्+ज] बुधग्रह ।

ससितिथ, ससितिथि-स स्त्री. [स शशितिथि] पूर्णमासी ।

ससिदेव-स पु [स शशिदेव] मृगशिरा नक्षत्र ।

ससिधर-स पु [स.] १ शिव, महादेव ।

रू भे.—ससहर, ससिहर, ससीहर, सिसहर, सिसहरि, सिस्सिहर ।

२ देखो 'ससधर' (रू. भे)

उ०—तेजै करि जाणे सूर ससिधर परि सीतल पूर ।—वि कु

ससिनदण-स. पु [स शशिनंद] बुध ।

उ०—निरखै छठै रिपु ग्रह ससिनदण, कुळ मातुळ मुख अरीनिकदण ।—रा रू.

ससिनांम-स. पु.—यश, कीर्ति ।

उ०—विहडियौ सिवर मगन्र वाधि । ससिनांम आदि अतरिख समाधि ।—सू प्र

ससिपख-स पु [स शशि+पक्ष] शुक्ल पक्ष ।

ससिपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू. भे.)

ससिसुत ससिपुतर, ससिपुत्र-स पु [स शशि+पुत्र] बुध ।

ससिपोसक-स. पु. यौ. [स शशिपोषक] चन्द्रमा का पोषण करने वाला, शुक्ल पक्ष ।

ससिप्रकासी-स. स्त्री [स शशिप्रकाशी] एक प्रकार की रागिनी विशेष । (सगीत)

ससिप्रभ-स पु [स. शशिप्रभ] १ जिसकी प्रभा चन्द्र के समान हो, मोती, मुक्ता ।

२ कुमुद ।

ससिप्रभा-स स्त्री [स. शशिप्रभा] चांदनी, ज्योत्सना ।

ससिप्रिय-सं पु. [स शशिप्रिय] मोती ।

ससिप्रिया-स स्त्री [स शशिप्रिया] रात्रि, निशा ।

रू भे —ससप्रिया, ससीप्रिया, सिसप्रिया ।

ससिबाम-स॰ स्त्री [स. शशिवाम] निशा, रात्रि । (डिं को)

रू. भे.—ससिवाम ।

ससिभाळ-स. पु [स शशि-भाळ] शिव, महादेव । (डिं. को)

ससिभूसण-स. पु. [स शशिभूषण] १ शिव, महादेव ।

२ चौसठ भैरवों मे से एक ।

ससिभ्रत-स. पु [स शशिभ्रत] शिव महादेव ।

ससिमडळ-सं. पु. [स शशिमडल] चन्द्रमा का घेरा, चन्द्रमंडल ।

ससिमण, ससिमणि, ससिमणी-स स्त्री [स शशिमणि] चन्द्रकातमणि ।

ससिमत्थ, ससिमथ, ससिमाथ-स पु [स शशि+मस्तक] महादेव, शिव ।

उ०—प्रथा जतिया लखमण गीता, मुनि विहंगा तारक ससिमाथ । सतिया नाम राम सूं सीता, नरपतिया ओपम रघुनाथ ।—र रू.

रू. भे —ससमत्थ, ससमाथ, सिसमत्थ, सिसमथ, सिसमाथ ।

ससिमारचक, ससिमादचकर, ससिमारचक्र, ससिमारचकर, ससिमारचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू. भे)

ससियर, ससियळ-स. पु —चन्द्रमा ।

उ०—पावै ससियर पीड, नभमडळ तारा न को । सुख दुख हुवै सरीर, मोटा पुरखा मोतिया ।—रायसिंह सादू

ससियौ, ससिलउ—देखो 'सस' (अल्पा; रू भे.)

उ०—१ नही हुवै पग नागरै, हिरण न थिरता होत । ससिया रै नही सीग ज्यू, गोला रै नह गोत ।—बा दा.

उ०—२ गज भव ससिलउ राखियउ, करुणा कीधी सार श्रेणिक नइ घरि अवतरयउ, अगज मेघकुमार । - स कु.

ससिर—देखो 'सिसिर' (रू भे)

उ०—१ सैसव जु बालकपणौ सोई तो ससिर रिति हुई ।

—वेलि टी.

उ०—२ हमैं ससिर रितरा वणाव कीजै छै ।—रा सा. स.

ससिरस-सं पु [स. शशिरस] अमृत ।

ससिरेखा, ससिलेखा-स स्त्री [स. शशिरेखा, शशिलेखा] चन्द्रमा की एक कला का नाम ।

ससिवदना-स स्त्री —१ एक वर्णिक वृत जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण और एक मगण होता है ।

२ चन्द्रमा के समान मुखवाली स्त्री ।

ससिवदनी-वि [स. शशिवदनी] चन्द्रमुखी ।

रू भे.—सिसिवदनी, सिसुवदनी ।

ससिवाम—देखो 'ससिबाम' (रू भे)

ससिवेस-स पु [स शिशुवयस्] बाल्यावस्था ।

उ०—१ ताप वधियौ 'अमल' तणौ, इल ससिवेस अभग । तपधर मुगलाणा तणौ, आथमियौ 'अवरग' ।—स प्र

उ०—२ वणि ससिवेस रमै माफल वन वै वलहनी वेल स्रोवन ।

—सू प्र.

ससिसुत-स पु [स. शशिसुत] बुध । (अनेका)

उ०—ससिसुत भवन पचमै सोहै, महा सबुध लख जगत विमोहै ।

—रा रू

ससिसेखर-स पु [स शशिशेखर] शिव, महादेव ।

उ०—करता हरता स्रो हीकारी, काळी काळयण कौमारी । ससिसेखरा सिधेसर नारी, जग नीमण जयौ जड धारी ।—देवि

रू भे.—सससिखर ।

ससिसोसक-स. पु [स शशिशोषक] चन्द्रमा को क्षीण करने वाला कृष्ण पक्ष ।

ससिहर—१ देखो 'ससधर' (रू भे) (ना. डिं को)

उ०—वीण अलापी देखि ससि, रयणी नाद सलीण । ससिहर अग रथ मोहिया, तिण हसि मेल्ही वीण ।—अग्यात

२ देखो 'ससिधर' (रू भे)

ससी-स. पु.—१ एक वृत विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे दो यगण

सस्म–स. पु —रथ । (डिं. ना. मा)
सस्यकी, सस्यगी–स पु —लोहा । (अ. मा)
सस्य–स पु [स. सस्य] १ सद्गुण ।
२ अनाज ।
३ किसी वृक्ष का फल ।
४ शस्त्र, हथियार ।
५ नई घास, कोमल तृण ।
उ०—फागण फोगा महक, केवडा मरवा वाळी । वरसाळै वगाळ, सस्य स्यामळ हरियाळी ।—दसदेव
रू भे —सस ।
सस्यक–वि [स.] १ सद्गुणी ।
२ सम्पन्न ।
[स सस्यक] १ एक प्रकार का रत्न विशेष ।
२ हथियार ।
३ तलवार ।
सस्वत–अव्य. [स. शश्वत्] १ सदैव, हमेशा ।
२ लगातार, बारम्बार ।
सस्वेदा–स. स्त्री. [स] वह लडकी जिसका कौमार्य हाल ही मे नष्ट किया गया हो ।
सस्स—देखो 'देखो स्वास' (रू. भे)
उ०—गयौ कुमर तज गुमर, समर छोडै इक सस्सै । लियौ प्राण गुण सहरि, कियौ लसकर परवस्सै ।—रा रू.
रू भे.—सस ।
सस्सु, सस्सू—देखो 'सासु' (रू. भे)
उ०—वाल्हा वीरा कह सस्सू वतळाती, असूपाती हा छाती भरि आती ।—ऊ. का
सस्सो–स. पु.—१ 'स' वर्ण ।
२ देखो 'सस' (रू. भे)
सहंकारी—देखो 'सहकारी' (रू भे)
सहटो, सहठो—देखो ,संठो' (रू भे)
उ०—साई मन सहटौ करौ, करहौ मूफ निसक ।—गज-उद्धार
सहंडुक–स. पु —एक प्रकार के मास का शोरवा ।
सहदो—देखो सेंदो' (रू भे)
सहंस—देखो 'सहस्र' (रू भे)
उ०—१ अकवर लक्खा ऊवरा, कीधा साथ कमध । साह सहसा आठ सू, नीम अथाह निमध ।—रा रू.
उ०—२ ऊपर वीम सहम आखाडै, पाच सहंस हू वाग उपाडै ।
—सू. प्र
सहंसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे) (डिं को.)
उ०—कळामेर सामद लोपै न उगै सहसकर, धू चळै प्रळै व्है जाय धरनी । सुमरिया जेज किम थाय छै सुदरी, जाय छै विरद कर साय जननी ।—मोपाळदान सांदू
सहंसकरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे)
सहसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)
उ०—कमधजा वस मझि सहंमकिर, निडर भूप अनुमानमौ । 'अजमल' ग्रेह जनमै 'अभौ', पह अवतार पचीसमौ ।—सू. प्र.
सहमकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)
उ०—मिणधरफण कीधा चित मोहै, सहसकिरण वारह घण मोहै ।—सू प्र.
सहसकार—देखो 'सस्कार' (रू. भे)
उ०—चतुर सखी छै त्या मिळिकै विवाह रौ सहंसकार समस्त पूरण कीयौ ।—वेलि टी.
सहसपतर, सहसपत्र, सहसपात—देखो 'सहस्रपत्र' (रू भे) (डिं को)
सहंसफण, सहसफुण—देखो 'सहस्त्रफण' (रू. भे.)
उ०—मिणधर छत्रधर अवर गेल मन, ताइधर रजधर 'सीध'तण । पूगी दळ पतसाह पेरता, फेरै कमळ न सहंसफण ।
—महाराणा प्रतापसिंह रो गीत
सहंसवळ, सहसवळी–वि.—वलवान, पराक्रमी ।
उ०—१ त्रिय सहस तावीन, दीध महाराज पायदळ । उभै सहम उमराव, वंधव जत्तनेत सहसवळ ।—सू प्र
उ०—२ निमो साहिव खेड नरेस, आसति मति आदेस, पर राठा हूत पेस, मेल्है मडळी । गढ जोधाण इसो गहन, कुअर दूसरो करन, सूरजिमाल सुतन सहंसवळी ।—गु. रू व
सहसा—देखो 'साहसाह (रू. भे)
सहंसादस—देखो 'दससहस' (रू भे.)
उ०—रज रज हुवौ 'जगौ' भरियौ रज, मिळवा मुकत जाणियौ भेव । सहसादस वाळा घू मारू, दस सत करग वाधिया देव ।
—महादान मेंहडू
सहंसाह —देखो 'साहसाह' (रू. भे)
सहसाही—देखो 'साहसाही' (रू भे.)
सह–वि —१ सव, समस्त ।
उ०—१ सह वोलिया सकाज मतौ करै, विहुवै मिसल । मेन वाछित महाराज, ऐ मोहमदीय असपती ।—सू प्र
उ०—२ भूपती सकल नमै डड भरे, कुळ खट त्रीस सेव सह करै ।
—सू प्र
उ०—३ करै सह संक असक न कोय ।—रामरासौ
२ पूर्वक, सहित ।
उ०—१ कवि कौं असन कराइ, हल्लु अविलय सह सपथ । जुद्ध मरहिं कै जाइ, कै मडोउर निज करहिं ।—वं भा
उ०—२ आदर सह डेरा तिन्ह दिवाइ, प्राघुन सनमानै मोद पाइ । वनि सुनि सता हु सगपन विचार, करि विजन मत्र सगत कुमार ।
—व. भा.

रपाती साभणा सरू किया ।—वरसगांठ

रू. भे —ससतरपाती, ससत्तरपाती, सस्त्रपाती।

सस्तीवाडो-स पु.—१ सस्तापन ।

२ वह समय जब वस्तुएँ सस्ती मिलती हो ।

सस्तै-वि —समान, तुल्य ।

उ०—१ वै तौ इणनै खेल सस्तै ई जाण्यौ । खाधै तीर कवाण लटकाय पागडै पग देय टप घोडा माथै वैठगा ।—फुलवाडी

उ०—२ अैडौ अेकई मोती सात पीढी री दळिद्दर बुहार दै । इणरी भखारी मैं काकरा सस्तै पडचा । साचाणी आरौ मोल नी जाण्या तौ ऐ काकरा सस्तै काकरा ई है ।—फुलवाडी

क्रि वि.—लिए, तरफ से ।

ज्यू—रामौ तुळछै नै कह्यौ कै थारै सस्तै तौ खेत सूनौ इज है ।

सस्तौ-वि. [स्त्री. सस्ती] १ जो महगा न हो।

मुहा.—सस्तौ भाडौ पोकर जात=कम पैसो मे उत्तम या अधिक काम, कम परिश्रम अधिक लाभ ।

२ जिसका भाव, मूल्य कम हो गया हो।

मुहा.—सस्तौ छूटणौ, सस्तौ निवडणौ=जिस काम मे अधिक व्यय और परिश्रम न हो, आसानी से छूट जाना ।

३ सहज मे प्राप्त होने वाला ।

४ साधारण, घटिया ।

मुहा.—मूगो रोवै एक वार, सस्तौ रोवै बार बार=सस्तापन देख कर घटिया वस्तु खरीदने की अपेक्षा बढिया वस्तु अधिक पैसे देकर खरीदना अच्छा है ।

रू. भे.—ससतौ ।

सस्त्र-स. पु [स शस्त्र] १ हाथ से चलाया जाने वाला हथियार, शस्त्र ।

उ०—सस्त्र बाध हरि सुमर, देह धर प्रीत अदावै । समै तेण साहस, जेण मापियौ न जावै ।—रा रू

पर्याय —आयुध, आवध, प्रहरण, लोह, ससत्र, हथियार ।

२ लोहा ।

३ फौलाद ।

४ शल्य-चिकित्सा ।

रू भे —ससतर, ससत्र, सस्तर ।

सस्त्रअज-स पु —तीर, वाण । (अ. मा)

सस्त्रक-स पु [स. शस्त्रक] १ लोहा ।

२ इस्पात ।

रू. भे —ससत्रक ।

सस्त्रघर-स पु यौ. [स. शस्त्रगृह] १ जहाँ शस्त्र आदि रखे जाते है, सिलहखाना ।

२ तलवार की म्यान । (डि को.)

सस्त्रधर, सस्त्रधारी-स पु यौ [स. शस्त्रधर] १ शस्त्र धारण करने वाला, योद्धा, वीर ।

२ सिपाही ।

सस्त्रपाती—देखो 'सस्तरपाती' (रू भे)

सस्त्रबध—१ शस्त्रो से सुसज्जित ।

उ०—बळ दाख दुहु दिस सस्त्रबध, किलवाण पेख वळिया कमध ।
—रा रू

२ योद्धा, वीर ।

उ०—१ सस्त्रबध अनिवध सगाहा, सूरा पूरा धरी सनाहो ।
—रा. रू.

उ०—२ धर हरि अस हुवै धरपत्ती, सस्त्रबध सामर्थ सकत्ती ।
—रा. रू.

सस्त्रभ्रत-स पु. [स. शस्त्रभृत] १ शस्त्र धारण करने वाला, शस्त्रधारी ।

२ हथियारबध ।

सस्त्रविद्या-स. स्त्री [स. शस्त्रविद्या] शस्त्र या हथियार चलाने की विद्या ।

उ०—सस्त्रविद्या के आचारज, जळ रूप क्षत्रिया के वारज ।
—रा रू

सस्त्रव्रति, सस्त्रव्रत्ति-स स्त्री यौ [स. शस्त्र+वृत्ति] शस्त्रो पर किया जाने वाला जीवन निर्वाह, सैनिक वृत्ति ।

स पु —शस्त्र चलाकर निर्वाह करने वाला, योद्धा, वीर ।

सस्त्रसाळा, सस्त्रसाला-स स्त्री [स शस्त्रशाला] वह स्थान जहाँ शस्त्र रखे जाते हो, शस्त्रागार ।

सस्त्रसास्तर सस्त्रसास्त्र-स पु [स शस्त्रशास्त्र] १ हथियार चलाने आदि के विवेचन या निरूपण का एक शास्त्र विशेष ।

२ शस्त्र चलाने की विद्या ।

सस्त्रहतचतुरदसी, सस्त्रहतचौथ-स. स्त्री [स शस्त्रहत+चतुर्दशी] कार्तिक मास व आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी । इस दिन शस्त्र द्वारा मारे गये व्यक्ति का श्राद्ध किया जाता है ।

सस्त्रागार-स पु [स शस्त्रागार] १ वह स्थान जहाँ शस्त्रादि रखे जाते हैं, शस्त्रशाला, सिलहखाना ।

२ वह स्थान जहाँ शस्त्रादि प्रदर्शित किये जाते हैं।

सस्त्राजीव-स पु [स. शस्त्राजीव] योद्धा, सैनिक ।

सस्त्रायस-स. पु [स शस्त्रायस] शस्त्र बनाने का लोहा ।

सस्त्रालय-स पु [स शस्त्रालय] वह स्थान जहाँ शस्त्रादि सुरक्षित रखे या प्रदर्शित किये जाते है ।

सस्त्री-स पु [स. शस्त्री] छोटा शस्त्र ।

वि.—१ शस्त्रादि चलाने का जानकार।

२ शस्त्रधारी ।

सस्त्रीकरण-स पु. [स शस्त्रीकरण] सुरक्षा की दृष्टि से शस्त्रादि से सुसज्जित करना या होना ।

सनमुख निजर कीधौ, ल्खै छत्रपति वाद लीधौ।—सू प्र.

सहचरी, सहच्चरी—स. स्त्री.—१ सखी, सहेली। (अ. मा.)

उ०—१ सहचरी चतुर सबोह, मिळ रचत उच्छव मोह। वरत करत चौक वणाव, करि कुमकुमा छिडकाव।—सू प्र.

उ०—२ करत कै किलोहळ, महा उछाह मगळ। सर्भ इसी सहच्चरी, उरवसी न अच्छरी।—सू. प्र

२ पत्नी, भार्या।

रू. भे.—सहचर।

सहचार—स. पु [स] १ सहचारी होने की अवस्था या भाव, साहचर्य।

२ अनुकूल होने की अवस्था या भाव अनुकूलता।

सहज—स. पु. [स] १ भाई, भ्राता, सहोदर। (ह. ना मा.)

२ प्रकृति, स्वभाव। (डि को, ह ना मा.)

उ०—१ सहज पच्चउ मुझ आकरउ जी, न गमइ भूडी वात। परनिंदा करता थका जी, जायइ दिन नइ रात।—स कु

उ०—२ साहिब दिस्ट न मुस्ट मैं, रूप न रेखा नाहि। हरीया साई सहज मैं, देख पाखि दिल माहि।—अनुभववाणी

३ फलित ज्योतिष मे, जन्म लग्न से तृतीय स्थान जिसमे भाइयो, बहनो, मित्रो आदि का विचार किया जाता है।

४ तत्व।

५ ज्ञान।

उ०—१ हरीया जाणै सहज कु, सहजा सब कुछि होय। सहजा साई पाईयै, सहजा विखिया खोय।—अनुभववाणी

उ०—२ सहजा सुधि बुधि उपनी, हीरो चडियो हाथि। हरियो मगै कौन कु, घट मैं पाई आथि।—अनुभववाणी

उ०—३ काछ वाच निकळक, भेख की लज्या राखै। सहज सील संतोख, जाणि मुख असत न भाखै।—सुरजनदास पूनियौ

उ०—४ सहजा ताळा खूल्ही, सहजा कूची लाय। हरिया अैसै सहज कु, सहजां विना न पाय।—अनुभववाणी

६ ब्रह्मतत्व।

उ०—सहजा ताळा खूल्ही, सहजा कूची लाय। हरीया अैसै सहज कु, सहजा विना न पाय।—अनुभववाणी

७ स्मरण, याद।

उ०—सहजा ताळा खूल्ही, सहजां कूची लाय। हरीया अैसे सहज कु, सहजा विना न पाय।—अनुभववाणी

८ परब्रह्म, ब्रह्म।

उ०—१ नमो साहिब नमो सहजा, नमो काळ निकदन। दास हरिया नमो दाता, नमो तम निरदवन।—अनुभववाणी

उ०—२ हरिया अैसा को मिळै, सहजा रहै समाय। बाहरि वाजा वचन बोह, चित न विलगै जाय।—अनुभववाणी

उ०—३ अति उतिम सिवरन सहज, नाभ कवळ असथान। रोम रोम ररंकार हुय, भाग वडै का डान।—अनुभववाणी

९ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ हरीया हक पिछाणीयै, अनहक सु कया काम। जो कुछि सहजां देत है रिजक रोटिया राम।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया सहज सनेहडो, जन कोई जाणत। दुनिया लोकाचार मैं, वहि वहि बीच मरत।—अनुभववाणी

उ०—३ सहज विना कोई सरै न काजा, राम नाम की वधो पाजा। एक नाव तै पाहन तिरिया, एक नाव तै गज ऊवरिया।

—अनुभववाणी

१० अनहदनाद।

उ०—१ ममकार का पाट मुख, उर अतर ररकार। हरीया सहज उचारता, नाम भयै निरकार।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया सहजा राम रटि, रसना चटपट माहि। घट छूटतै प्राण लग, हटकि राखियै नाहि।—अनुभववाणी

उ०—३ ढोल वजाया वजई, विण वाया अटकन। हरीया रसना सवद कुं, सहजाई सिवरत।—अनुभववाणी

११ ब्रह्मसुख।

उ०—रोम रोम ररंकार की, महमा कही न जाय। जनहरीया सुख सहज कु, भाग विना नही पाय।—अनुभववाणी

१२ अजपाजाप।

उ० —हठ पचि मरणा जोगिया, यु तौ जोग न होय। हरीया सहजां सवद बिन, पारि न पहुचै कोय।—अनुभववाणी

१३ स्वर्गलोक, वैकुंठ।

उ०—१ सहजा सुख दे वस्य कीया, मन मोहादिक काम। जनहरीया गोरख जती, सहज कीया विसराम।—अनुभववाणी

उ०—२ सहजा मारग सहज का, सहज कीया विसराम। हरीया जीव'र सीव का, भया एक ही ठाम।—अनुभववाणी

१४ मोक्ष, मुक्ति।

उ०—१ इला पिंगला बीच मैं, सुखमणि हदा घाट। हरीया ब्रह्म समाधि की, सहजा पाई वाट।—अनुभववाणी

उ०—२ धिज धरखत विरकत दसा, ध्यान अधर का लाव। जनहरीया उन रूख का, जब सहजां फळ पाय।—अनुभववाणी

१५ कैवल्यज्ञान।

उ०—सो मैं केवल सहजा पाया, जब ही तै तन मन पतिआया। केवल कीया न केवल यारा, वेद कतेब सकल सु न्यारा।

—अनुभववाणी

१६ ध्यानावस्था, समाधि।

उ०—महारस मीठा पीजियै, अवगत अलख अनत। दादू निरमळ देखियै, सहजै सदा झरत।—दादूवांणी

१७ वास्तविकता।

उ०—जनहरीया सुख सहज मैं, लोक दिखावा नाहि। पचपच कीया न पाईयै, साई सहजां माहि।—अनुभववाणी

३ पूर्ण, पूरा।
४ सहित, युक्त।
उ०—सौ कहियत धारहु स्रवन, सभ्भन सह नरनाह। जिहिं रत प्रभुकुळ मूळ जिम, लहिय सता दिवलाह।—व. भा.
स. पु. [स. सह] १ मार्गशीर्ष का महीना। (डिं. को)
उ०—प्रथी ग्रह पद्रह साल पंवार, बदी सह चौथ सनीसरवार।
—मे. म.
२ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम।
३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
४ भाई। (अ मा)
५ धन।
उ०—अधिप कही जदि हालि अब, सुत तू म्हारै साथ। मिळि पाछी लै मह महर, अकबर सू सह साथ।—व भा.
६ [फा] शतरज के खेल में कोई मोहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात मे पडता हो।
क्रि प्र — दैणी, पडणी।
७ ताकत, शक्ति।
८ गुप्त रूप से भडकाने का भाव, उत्तेजित करने की क्रिया।
क्रि. प्र.—देवणी, राखणी।
९ पतग आदि को ढील देकर धीरे-धीरे आगे बढाने की क्रिया।
१० धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक।
११ कृष्ण व लक्ष्मणा के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र का नाम।
१२ एक अग्नि जो समुद्र मे छिप गया था।
१३ उत्तम मनु के पुत्रो मे से एक।
१४ स्वायभुवमनु के पुत्रो मे से एक।
क्रि वि —१ साथ।
उ०—१ किंकहिसु तासु जासु अहि थाकौ कहि, नारायण निरगुण निरलेप। कहि रुखमिणि प्रदुमन अनिरुध का, सह सहचरिए नाम सपेख।—वेलि
उ०—२ हूँ जेर वळै सह हालिहू, कपट विलब न खिण करू। नरनाह टाळिजै इम नही, तोतौ दळ नड्डो तरू।—व. भा.
२ देखो 'साह' (रू भे)
रू. भे.—से, से', सँ।
सहकार—स पु —१ आम। (अ मा; डिं को)
२ आम का वृक्ष।
उ०—१ जिम मधुकर नइ केतकी, जिम कोइल सहकार। मारवणी मन हरखियउ, तिम ढोलइ भरतार।—ढो मा.
उ०—२ केळो कदब करना असोक, सहकार बकुल लाख मिटत सोक। जातीफळ जाबू नाळ केर, वट पीपर महि व्है हरत हेर।
—मयाराम दरजी री बात
३ सहयोग।
४ गाने का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।
रू. भे.—सहिकार।
सहकारी—वि [स. सहकारिन्] १ साथ कार्य करने वाला, सहयोगी।
२ सहायक, मददगार।
स. पु —मित्र, दोस्त। (ह. ना. मा.)
सहकृतव—स. पु. [स सहकृत्वन्] सखा, मित्र। (अ. मा; ह. ना. मा.)
सहक्रमण, सहगति—स पु.—सहगमन।
उ०—१ अमरलोक पुगो अठी, सभर न्रप सग्राम। कीधो राधा सहक्रमण, नव खडा करि नाम।—व भा.
उ०—२ पाय समय तजियो प्रथित, ईस्वर न्रप निज अंग। नवनदा रुचिरा निपुण, सहगति कीधो सग।—व. भा.
सहगमण, सहगमन—स. पु. [स. सहगमन] १ साथ पलायन करने की क्रिया।
२ पति के शव के साथ पत्नी के सती होने की क्रिया, अवस्था या भाव।
उ०—कत कहता सहगमण, कीधा रहवो साथ। छोडो अच्छर छेहडो, सो घण झालै हाथ।—वी. स.
३ सभोग, मैथुन।
उ०—ईसतणी अणहाल विजोगण सेज सुवती, पूरब दिस री चद्र किरण सी खीण हुवती। सहगमणं ढळती रात पला मैं कोढ करता, आज कटै जुग मान कपोळा नीर ढळता।—मेघ
सहगामणी, सहगामिणी—स. स्त्री.—१ पति के साथ सती होने वाली स्त्री, सहगमन करने वाली।
२ सहचरी, साथिन।
सहगामी—स. पु —१ जो साथ चले, साथी।
२ अनुयायी।
सहगुरु, सहगुरू—देखो 'सदगुरु' (रू भे)
उ०—धन नगरी नइ धन देस, जहा सहगुरु करै निवेस।
—वि. कु
सहड—स. पु —१ हाथी। (ना डिं. को)
२ देखो 'सुभट' (रू भे.)
उ०—सहडा तन पोरस सालुळिया, विढगा दिस जोण लग वळिया।—पा प्र
सहचर—स पु —१ मित्र, दोस्त। (अ मा; ह. ना मा)
२ सहायता करने वाला, सहायक।
३ सेवक, नौकर।
४ सलाह देने वाला।
वि. [स्त्री सहचरी] १ साथ-साथ चलने वाला।
२ हर समय साथ रहने वाला, साथी।
३ देखो 'सहचरी' (रू भे.)
उ०—एम गढ निज प्रौळ आवै, गान सहचर भूल गावै। कूम

४ सरलता से, आसानी से।

उ०—१ सब अछर सहजा पढ़ै, पढि पढि मिथ्या सनेह। एक सबद रकार हुय, हरिया अगम अछेह।—अनुभववाणी

उ०—२ आगै आवता एक खाळ बारह हाथ की चौडी घणौं ऊडी आडै आयौ जठै कुमार दूदौ तौ सहज मैं सावळिया नैं भ्राइ खाळ रै वार आइ भालौ ऊबाइ साम्हौ खडौ रहियौ।—वं भा.

उ०—३ जै डर न होइ जाणौ जनक, प्रणत कालिह लागू पगा। सो जै न होइ दीजै सहज, सुत अपजस असगा सगा।—व भा

५ निरन्तर, लगातार।

उ०—सहजां साईं सिंवरियै, आलस ऊघ न आनि। जनहरिया तन पेखणौ, ज्यु जळ पडर जानि।—अनुभववाणी

रू भे—सहिज, सहेज, सेज, सेझ, सेहज, सैहज, सैज, सैझ।

सहजणौ—स. पु.—एक प्रकार का मध्य आकार का वृक्ष विशेष, सहिजन।

सहजन्य—सं. पु. [स.] एक यक्ष का नाम जो आषाढ मास मे सूर्य के साथ भ्रमण करता है।

सहजन्या—स. स्त्री [स.] विख्यात दस अप्सराओ मे से एक जिसने अर्जुन के जन्मोत्सव पर गायन किया था।

सहजपंथ, सहजपथ—स. पु. [सं] १ आसान रास्ता, सुगम रास्ता।

२ आसान तरीका।

स पु—वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा।

रू भे.—सेजपथ, सेजपथ।

सहजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू भे)

(स्त्री सहजादी)

सहजिन्यु—स. स्त्री—हिरण्यकशिपु की प्रिय अप्सराओ मे से एक।

सहटौ—१ देखो 'सैठौ' (रू. भे)

उ०—१ आसल खडै आय सूरणसर सहटा एकै पासै भीमसेन। एकै केवाम सहटा दोना री फोजा देख चद भाट कह्यौ।

—हाहुल हमीर री वात

उ०—२ नट कछनी करि निहग, धरै अगरखा बहादर। जमदाढक गज वाग, कसै सहटी कर कम्मर।—सू. प्र.

२ देखो 'साठौ' (रू भे)

(स्त्री. सहटी)

सहट्टणौ, सहट्टबौ-क्रि अ.—सम्मिलित, सहित।

उ०—इम दिल्ली उतपात, वात विपरीत प्रगट्टै। आई खवर अचीत, मैंद दळ प्रवळ सहट्टै।—रा रू

सहड—स. पु—हाथी। (ना. डिं को)

सहण—स पु—१ मिट्टी का बना भोजन पात्र।

(मि सिहनक)

२ एक प्रकार का शस्त्र, परशु। (डिं. ना. मा)

३ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—परिंद न सकै पहुच, अनड इण भात रौ, रहियौ भुकि जिण रीत बदळ बरसात रौ। सहण पूरण सामान गुमर रिम गज रौ, अलख मदन आसेर प्रभू चो पजरौ।—सिववक्स पाल्हावत

४ सहनशीलता।

उ०—वळि दाहकता पावक वसै, साधु जण सोहै सहण। ईसरो भणै त्यू ही अवसि, मौ मन वसियौ महमहण।—ह र.

५ देखो 'सहन' (रू. भे.)

उ०—डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय। मायड खाय दिखाय थण, धण पण वलय बताय।—वी. स

६ देखो 'सैण' (रू. भे)

उ०—पछै बादसाह आपरै हजूरी सहणा सूं सलाह पूछी।

—नी प्र.

सहणक—देखो 'सहनक' (रू. भे)

सहणी—स. स्त्री—१ सहन करने की क्रिया, सहन करने की शक्ति।

उ०—१ रहणी मैं जोगेस्वर वहणी मैं जगदीस, ग्रहणी मैं सिव-नेत्र सहणी मैं अहीस।—वी. स

उ०—२ सहणी सवरी हू सखी, दो उर उलटी दाह। दूध लजाणौ पूत सम, वलय लजाणौ नाह।—वी स

२ सहन करने वाली।

वि—सहनीय।

सहणौ—वि. [स्त्री सहणी] १ सहन करने वाला, सहनशील।

२ सहनीय।

सहणौ, सहबौ—क्रि. स—१ बरदाश्त करना, सहन करना। (उ. र.)

उ०—१ मादूळौ आपा समो व्रियो न कोय गिणंत। हाक बिडाणी किम सहै, घण गाजियै मरत—हा भा

उ०—२ तद बूबना कही—जो हजरत सलामत मेरा बहनोई है। बहन को दुख होयगा सो मुझ सै क्यो सहा जायगा।

—जलाल बूबना री वात

उ०—३ जावौ हमे तकसीर माफ करी, खूब काम किया, सिपाही इसी नही सह सकै।—जलाल बूबना री वात

उ०—४ उद्धम री आसा करै, सहै नही घणराव। घात करै गैंवर घडा, सीहा जात सभाव।—वा. दा

उ०—५ जरै स्वामी रा सम्मत विहूणा भी जोइया जिकण नू मारण चलाया जठै जठै ही दलै उण रौ उपकार चीताइ रोकिया। केडै आपरो जामात मारि लीधौ तौ भी समस्त हू सहणी री भाखी।—व भा.

२ परिणाम भोगना, फल भोगना।

३ भुगतना।

४ झेलना।

५ किसी उत्तरदायित्व का निर्वाह वहन करना।

६ सज्जीभूत होना, सजना, तैयारी करना।

सर्व.—अपने-आप, स्वत ।
उ०—१ रसना रग रग वीच मैं, सहजा सिवरन होय । जनहरीया सव जीव का, ससा रह्या न कोय ।—अनुभववाणी
उ०—२ हरीया माया जो भली, वाटै राम निवंत । आवै जावै सहज सु, रहै निरासावत ।—अनुभववाणी
उ०—३ मन इद्री कु मारनै, मतै करो वेखास । हरीया सहजां होत है, काम कलपना नास ।—अनुभववाणी
वि.—१ अखण्ड ।
उ०—हरीया लिव तूटै नही, सहज रहो घर छाय । जाह सहजा साई रहै, लिव ता माहि समाय ।—अनुभववाणी
२ स्वत सिद्ध ।
उ०—मोटा पह सहज रावमारू, रुद्र दूहरथो करै फिर रीभ । अम लोगा ऊपरा न रावै, खूदाळमा हिलाई खीज ।—चतुरो मोतीसर
३ सरल, सुगम, आसान ।
उ०—१ परउपगारी गुर मिल्या, भगति वताया भेव । यौ ही सिवरन हरि कथा, यौ ही सहजां सेव ।—अनुभववाणी
उ०—२ जै कोई चीन्है सहज कुं, सहजा आतम राम । जनहरीया सहजा भया, मन इद्री विसराम ।—अनुभववाणी
उ०—३ दादू सदगुरु सहज मैं, किया वहुत उपकार । निरधन धनवत कर लिया, गुरु मिळिया दातार ।—दादूवाणी
उ०—४ कुमार कहियो मीणा तो ठाकुर कहावणो सहज रो जाणि अव तो रजपूता री पुत्रिया नू वरण ढूका । अर आपारा सगोत्र गोळवाळ जसराज नू समता रो सवधो करण ढूका ।—व भा
४ परिपूर्ण ।
उ०—हरीया लिव तूटै नही, सहज रही घर छाय । जाह सहजां साई रहै, लिव ता माहि समाय ।—अनुभववाणी
५ अव्यक्त, अस्पष्ट ।
उ०—ओउ सोउ सवद की, सहजां सुणी अवाज । जनहरीया इन ऊपरै, ररकार का राज ।—अनुभववाणी
६ वास्तविक ।
७ अनोखा, अद्भुत ।
उ०—अगम काटि गम कीयहु, हो रमैया राम । सहज कियहु वैपार, हो रमैया राम ।—कवीरवीजक
८ व्यर्थ, वेकार ।
उ०—सहज विचारै मूळ गवाई, लाभ तै हानि होय रे भाई ।
—कवीरवीजक
९ सरल, सीधा ।
उ०—सुन्न सहज मन सुमिरतै, प्रगट भई एक जोति । ताहिपुर वलिहारि मैं, निरालव जो होत ।—कवीरवीजक
१० विना यत्न, विना परिश्रम ।
उ०—हरीया पूरा गुर मिळै, अगम दाखवै ग्यान । पढिया गुणिया वाहिरो, सहज धराया ध्यान ।—अनुभववाणी
११ प्राकृतिक, स्वाभाविक ।
उ०—१ सहज ललाई सापरत, प्रीतम प्यारी पाय । निरखै भरमै नायणी, जावक दै मिळ जाय ।—अग्यात
उ०—२ दादू सव्द अनाहत हम सुन्या, नख सिख सकल सरीर । सव घट हरि हरि होत है, सहजै ही मन थीर ।—दादूवाणी
उ०—३ सहज चाल सगत समभ, वाणी मिकल वणाव । इता प्रकारा अवस है, गोला तणों जणाव ।—वा दा
१२ जो हर दृष्टी से ठीक और आदर्शमय हो ।
उ०—रभ वरु सराहै हाथ रवि, अर पग सारा है उरगि । जोगेम कठण पावै जिको, सहज तिको पाऊ सरगि ।—सू. प्र
१३ यथार्थ, सत्य ।
उ०—१ मन पवना मिळ एकठा, सुरित सवद सू लाय । हरीया ब्रह्म समाधि का, जव सहजां घर पाय ।—अनुभववाणी
उ०—२ हरीया ब्रह्म समाधि को, सहजां सुख अनत । काम कठण सुधि जाणिवो, विध विरळा वूझत ।—अनुभववाणी
१४ जन्म से प्रकृति के साथ उत्पन्न होने वाला ।
उ०—१ लोयण चचळ स्रवण लग, लावा वेणी डड । महकै सहज सुवास वप, फिर लायो स्रीखड ।—वा दा.
उ०—२ औ सवद गुरु सुरत चेला, पाच तत्वर मैं है अकेला । सहजै जोगी सुन वास, पाच तत्त मैं लियो प्रकास ।—वि. म. सा.
१५ मामूली, साधारण ।
१६ परम्परागत, पुश्तैनी ।
क्रि वि —१ धीरे-धीरे ।
उ०—१ वै गुर परसादि पीवाहि, हीडोळै पणि वैसि कै । सहज सहज हिंडाय, 'ऊदो' वोलै वीनती, आवा गुवणि चुकाय ।
—ऊदो नैण
उ०—२ हरीया जाणं सहज कु, सहजा सव कुछि होय । सहजा साई पाईयै, सहजा विखिया खोय ।—अनुभववाणी
२ स्वभावत ।
उ०—हरीया जाणं सहज कु, सहजा सव कुछि होय । सहजा साई पाईयै, सहजा विखिया खोय ।—अनुभववाणी
३ अनायास, शीघ्र ।
उ०—१ 'सुदर' सतगुरु यू कहै, मुक्ति सहज ही होई ।
—सुदरदास
उ०—२ दादू सदगुरु सू सहजै मिल्या, लीया कठ लगाइ । दया भई दयाळ की, तव दीपक दिया जगाइ ।—दादूवाणी
उ०—३ साचा सहजै लै मिळै, सव्द गुरु का ग्यान । दादू हमकू लै चल्या, जह प्रीतम का स्थान ।—दादूवाणी
उ०—४ दादू भक्ति निरजन राम की, अविचळ अविनासी । सदा सजीवन आतमा, सहजै परकासी ।—दादूवाणी

२ सब्र, सन्तोष।

रू भे.—सैंनसीलता।

सहनाण—देखो 'सैनाण' (रू. भे) (डिं. को)

उ०—१ म्है कुंवरजी सू मिळ वाता करि, ठावा समाचार लाया छा, सहनांण लाया छा।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ यू कहि गुर चेलो रमिया नै कह्यो—'तू वात मानैस नहीं, पण तिण वात री ओ सहनाण छै।—नैणसी

उ०—३ नख चख सगळा निरखिया, विद्य सू करै वखाण। लक नगर मा उण कह्या, राणी सती तणा सहनांण।—मेहोजी गोदारो

उ०—४ कुपह कुमारग वरजि करि, सुपह साच करणि कहै। सहनाण सुगुर तणा सुरता सुणो, प्रमन की प्रगट कहै।—वील्होजी

सहनाणी—देखो 'सैनाणी' (रू भे)

उ०—तद्दा राजा मृत्यु लोक मैं जाय नै उठै चोपड रमता वै नू सहनाणी दिखालै।—पचदडी

सहनाइन, सहनाई, सहनाय–स स्त्री. [फा शहनाई] एक प्रकार का वाद्य, नफीरी वाजा।

उ०—१ सवद उग्र करनाळ सवाई, सुर वरघू तुरही सहनाई। द्वार सुरेम नरेस दिनाई, वाधै साजै दीह वधाई।—रा रू.

उ०—२ क्रमती सहनाय वजै कुरजी, खित वोलत मोर घणू खुरजी।—पा. प्र

उ०—३ सहनायची सहनाया माहै सारंग वणायो छै।

—रा. सा. स

रू भे.—सणाइ, सणाई, सनाय, सरणाई, सरणाय, सुरणा, सुरणाइ, सुरणाई, सुरणाय, सुरणी।

सहनायची–स. पु—शहनाई बजाने वाला।

उ०—सहनायची सहनाया माहै सारग वणायो छै।—रा सा. स

रू भे.—सेनायची।

सहपाठी–वि—जो साथ पढा हो।

रू भे—सैंपाठी।

सहवास—१ देखो 'सहवास' (रू भे)

उ०—तिणम् दो ही राजावा रै ऊची आवै इसा प्रपच सू तो घणा ग्रामा रा घर धूकारा रा धूरसाळा रो ही सहवास है।—व भा

२ देखो 'सावास' (रू. भे)

सहभोज, सहभोजन–स पु—एक साथ भोजन करने की क्रिया।

सहभोजी–वि.—साथ बैठ कर भोजन करने वाला।

सहम–स पु—१ दण्ड, सजा।

उ०—राज पोपळै आदरिय, करवा सर धर काज। सहम दियण मेवासिया, मुहम हुकम महाराज।—रा रू

[फा सहम्] २ परशु नामक शस्त्र। (डिं. ना मा)

३ तीर, वाण।

४ डर, भय।

उ०—औदरै मदोवरि तास भैं, सपनंतर आया सहम। कोपिया राम रामण नरिस, दलै मलिस गमिस्यै दहम।—अरजूजी कवियो

सहमणो, सहमवो–क्रि. अ [फा. सहम+रा. प्र. णो] १ भयभीत होना, डरना।

२ चौकना।

सहमणहार, हारो (हारी), सहमणियो—वि०।

सहमिओडो, सहमियोडो, सहम्योड़ो—भू० का० कृ०।

सहमीजणो सहमीजवो—भाव वा०।

सहमत-वि [स] जिसका मत दूसरे से मिलता हो, एकमत।

सहमति-स. स्त्री. [स] सहमत होने की अवस्था या भाव।

सहमरण–स. पु—पति के साथ मरने या जलने की क्रिया, सती होने की क्रिया।

सहमियोड़ो–भू. का. कृ.—१ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ. २ चौका हुआ।

(स्त्री. सहमियोडी)

सहयोग–स पु.—१ साथ, सग।

२ सहायता, मदद।

रू. भे—संयोग।

सहयोगी–स पु—१ मददगार, सहायक।

२ साथी।

रू भे.—संयोगी।

वि—समकालीन।

सहर–स पु. [अ शहर] १ मनुष्यो की वह बडी वस्ती जो कस्बे से बडी हो तथा जहाँ पक्की इमारतें और बडा बाजार हो, नगर।

(डिं को, ह ना मा.)

उ०—१ सहर अजैपुर जोधपुर, सोवै राख जवन्न। पूठ अकब्बर वाहरा थयो विखधर मन्न।—रा. रू.

उ०—२ हुकळै तुरा धैंधिगरा हारहर, सहर पाधर करण काज साका। पाखरा घरर 'गजवध' रा पाटपत, थरर गढपत गढा पाण थाका।—खेतसी लाळस

रू भे—सहैर, सैर, सैं'र।

अल्पा,—सेरडो।

[अ] २ प्रातःकाल, प्रभात।

३ देखो 'सेहर' (रू भे)

उ०—करै राड अधीयामणी 'अभै' जोगी किया, जकै नह सामणी तीज जाणै। दमकती दामणी देख सहरा दिसा, याद कर कामणी सोच आणै।—वखतो खिडियो

सहरकोट—देखो 'सहरपनाह'

सहरपना', सहरपनाह–स. पु.—शहर की रक्षार्थ शहर के चारो ओर बनी दीवार।

वि—शहर की रक्षा करने वाला।

उ०—अर तिको भी यो बिसाळापुरी रो कजियो जीति आगरा माथै आवण रा आरभ मैं सहियो ।—व भा.

सहणहार, हारो (हारी), सहणियो—वि० ।

सहिओडो, सहियोडो, सह्योडो—भू० का० कृ० ।

सहीजणो, सहीजबो—कर्म वा० ।

सइहणो, सइहबो, सहिणो, सहिबो, सेवणो, सेवबो, सैवणो, सैवबो, सै'णो, सै'बो—रू० भे० ।

सहत—१ देखो 'सहित' (रू भे.)

उ०-१ सहत नगारै मीरखा, सौ घोडा नीसाण । मारु राव 'तेजल' 'मुकन', वाघो रवळ बळवाण ।—रा. रू

उ०—२ सोहै नीलाबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमाण । चपकला हरत चित्त, जुत भमरावळि जाण ।—अग्यात

उ०—३ अकबर लेख प्रमाणं, तहवर सहत राज लोभाणं । आवी चित अचीती, विणसण गा(का)ळ बुद्धि विपरीति ।—रा. रू

२ देखो 'सहद' (रू. भे) (डिं. को)

सहतखांनो—देखो 'सेतखानो' (रू. भे)

सहता-स. स्त्री. [स.] एक होने का भाव, एकता, मेलजोल ।

सहतार-स. पु —एक प्रकार का तारवाद्य विशेष ।

उ०—१ छत्रधारी उर छोग वधै तिण वार मै, गहकै सारंग गान तान सहतार मैं । मधुर सुर मिरदग क बीणा बाजवै, इंद्र अखाडै अछर लखैं छबि लाजवै ।—सिववक्स पाल्हावत

उ०—२ गोरघा करवै गोठ वाग निज निज विचै, सहनाइया सहतार मलारा हद मचै ।—सिवबक्स पाल्हावत

सहति, सहती—१ देखो 'सहित' (रू. भे)

२ देखो 'सहद' (रू भे)

सहतीर-स. पु. [फा. शहतीर] १ लकडी का वडा लम्बा लट्ठा ।

२ प्राय छत के नीचे लगाया जाने वाला पत्थर, लोहे या लकडी का शहतीर ।

रू भे —सतीर, सेंतीर, स`तीर, सेंहतीर, सैतीर, स`तीर. सेंहतीर ।

सहतूत-स पु [फा. शहतूत] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल लबी लट के समान होता है । इस वृक्ष के पत्तो पर रेशम के कीडे पाले जाते हैं । (अ मा.)

२ उक्त पेड का फल ।

३ देववृक्ष । (अ मा)

रू. भे.—सेतूत, सेहतूत, सैतूत ।

सहतो—देखो 'सहित' (रू भे)

उ०—वूकडा वटक गूधा गटक लिए वळ, सह कटक आचमैं गजा सहतो ।—अग्यात

सहद-सं. पु [अ शहद] विशेषत मधुमक्खियो के छत्तो मे पाया जाने वाला मीठा एव गाढा तरल पदार्थ ।

पर्याय —मधु ।

रू. भे —सहत, सहति, सहती, सहेद, सेत, से'त, सैत, सैद ।

सहदार-वि [स.] १ पत्नी सहित ।

२ विवाहित ।

सहदेई-सं. स्त्री. [स. सहदेवा] पहाडी भूमि मे अधिक उपजने वाली क्षुप जाति की एक वनौषधि ।

रू भे.—सहदेवा, सहदेवी, सहदोई ।

सहदेव-स. पु [स] १ माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारो के सयोग से उत्पन्न पाडु के पाच पुत्रो मे से सबसे छोटा पुत्र । (डिं को)

उ०—सीळ गगेव, दुरजोधन अहमेव, जुजठळ ज्यू साच, दुरवासा वाच, ग्यान रौ गोरख, सहदेव ज्यू सारी वात समरथ, अरजुन ज्यू बाण, करण ज्यू दान,.. .. ... ।—रा. सा. स

२ ऐसा महात्मा जिसके वचनो मे सिद्धि हो ।

३ पुररवावशीय हर्यंधन के पुत्र का नाम ।

४ इक्ष्वाकुवशीय दिवाकर के पुत्र व बृहदस्व के पिता का नाम ।

५ जरासघ के एक पुत्र का नाम ।

६ सुदास राजा का पुत्र व सोम का पिता एक राजा ।

७ वसुदेव व ताम्रा के पुत्रो मे से एक ।

वि —भविष्यवक्ता ।

रू भे —सेदेव, से'देव, स`देव, संदेव, सैं'देव, स`देव ।

सहदेवा, सहदेवी, सहदोई-स स्त्री.—१ वसुदेव की पत्नी तथा देवक राजा की कन्या ।

२ देखो 'सहदेई' (रू भे)

सहन-स पु —१ क्षमा ।

२ शाति ।

३ आज्ञा पालन करने की क्रिया ।

४ बरदास्त करने की क्रिया, सहिष्णुता ।

५ देखो 'सहनक' (रू भे.)

रू. भे —सहण ।

सहनक-स. पु —मिट्टी की बनी एक प्रकार की छिछली रकाबी । (मुसलमान)

उ०—सहनक तणा सुजाण, पारीसा पातल तणा । तै राहवियां राण, एकण हूता ऊदवत' ।—सूरायच टापरघो

रू. भे —सहणक ।

सहनता-स स्त्री —सहनशीलता ।

उ०—इणनै सहनता कहै—सो डाकी ठाकुर तो सहनता कर रजपूता रा माथा लेवै । वा प्राण लेवै ।—वी स टी

सहनसील-वि [स. सहनशील] १ सहिष्णु, बरदास्त करने वाला ।

२ सब्र करने वाला, सतोपी ।

रू भे – सैं'नसील ।

सहनसीलता-स स्त्री [स सहनशीलता] १ सहनशील होने की अवस्था या भाव ।

सहलोट—देखो 'सेलोट' (रू. भे.)

उ०—सौ बीकाण धरा चै सांधै, वळ भेटियो जु हुता बांधै।
केताई गाव थाणायत कोटा, लूटै देस किया सहलोटा।—रा. रू.

सहल्ल—देखो 'सहल' (रू. भे.)

उ०—आप प्रबद्धर साथ लै, मिण दुरपथ महल्ल। साथ लिया वळ आगळा, रकहथा रिणमल्ल।—रा. रू.

सहल्लै–क्रि वि.—आसानी से, सरलता से।

उ०—चलै राजकुमार पिताको, सातण पाय सहल्लै। रावण महा घणा मळ राकस, दारुण दैन दहल्लै।—र. रू.

सहवयच, सहवयस–सं. पु. [सं. सहवयस्] सगा, मित्र। (श्र मा.)

सहवर–स पु —१ वीर, योद्धा।

उ०—सेन सुरताण रा साथ सहवर सयळ, सुभट विमना मुनह चीतवी सांव।—राव चन्द्रसेण रौ गीत

२ सगा भाई।

उ०—दळ मेळै जगमाल पीठ हमीर पहारै, विह लिखियो घर वेध ताम सहवर सधारै।—मानो आसियो

सहवात–स पु —सौभाग्य, सुहाग।

उ०—ए साथण आज रौ वाहर रो ढोल सुहावणो है—पण म्हारा सहवात नै दाह देणवाळो छै।—वी स. टी.

सहवाद–स. पु.—वाद-विवाद, तर्क-वितर्क।

सहवास–स. पु.—१ एक साथ रहने की क्रिया।

२ संभोग, मैथुन।

उ०—असत्री पीहर नर सासरै, सजमीया सहवास। एता होए अलखांमणा, जो माडै घरवास।—ढो मा.

३ मित्र, दोस्त। (श्र मा, ह ना मा.)

रू. भे —सवास, सहवास।

सहवासी–वि.—साथ रहने वाला।

सहव्रता–स स्त्री [स] पत्नी, भार्या।

सहस–स. पु [स सहस्] १ मार्गशीर्ष मास।

२ शरद् ऋतु।

३ शक्ति, ताकत।

४ प्रचण्डता, उग्रता।

५ विजय, जीत।

६ चमक, कांति।

७ देखो 'सहस्र' (रू भे) (ड. र.)

उ०—१ सहस इसा भड लीधा साथै, मेळ करार भार रयां माथै।
—रा रू.

उ०—२ लेता नाम विदाम न लागै, विगत जिका नह व्यापै।
आछी त्रिया देव अवरा री, सहसां माल समपै।—र रू.

उ०—३ समर उजेण रचै नव सहसो, सूर सहस भेदै नव थान।
[illegible] पाकर [illegible], धरक रयां भेदै घमसान।
—[illegible]

८ देखो 'सहस्र' (रू भे.) (श मा)

सहसकर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)
(श. मा, ना मा, डि को, ह. ना. मा)

उ०—[illegible] 'जमा' [illegible] सहसकर, [illegible] धाय भावै। [illegible] 'गजाम' [illegible], [illegible] ज्यूं ही [illegible]।—महाराजा [illegible] रो गीत

सहसकरण देखो सहस्रकिरण' (रू. भे)

सहसकार—देखो 'सहस्रार' (रू भे.)

उ०—[illegible] सहसकार [illegible] किया। [illegible] तहां बैठाहि मद विधि कीधि।—वेलि टी.

सहसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

सहसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.) (ना डि. को; ना मा)

उ०—सहसकिरण सर सुधि करि, [illegible] दाहि। [illegible] नही सूर [illegible] दाहि।—[illegible]

सहसक्कर, सहसक्किर—देखो 'सहस्रकर' (रू. भे.)

उ०—[illegible] 'अभैमाल' [illegible] दिन, [illegible] सहसक्किर।
—सू प्र

सहसचख, सहसचखु, सहसचख–स. पु यौ. [स. सहस्र+चक्षु] देवराज इन्द्र। (ना. डि को)

सहसजीभ–स. पु यौ. [स सहस्र+जिह्वा] शेषनाग।

सहसदळ–स. पु. यौ. [स सहस्र+दल] कमल। (ह. नां. मा)

सहसदुजीह–स. पु [स सहस्र+द्विजिह्व] शेषनाग।

उ०—फण सहस सेस नाग सहसदुजीह जोग सोभाग।—सू र प्र

सहसद्रग–स. पु यौ [स सहस्र+दृग] देवराज इन्द्र। (ध. मा)

सहसनयण–स पु. यौ [स. सहस्र+नयन] इन्द्र।

सहसनाम–स पु यौ [स सहस्रनाम] वह स्तोत्र जिसमे किसी देवता के हजार नाम हों।

रू भे.—सहस्रनाम।

सहसनामी–स. पु यौ [स सहस्रनामिन्] वह जिसके हजार नाम हो, विष्णु, शिव आदि।

रू भे —सहस्रनामी।

सहसनेत, सहसनेत्र–स. पु यौ. [स. सहस्र+नेत्र] इन्द्र।
(ना मा, ह ना मा)

सहसनैण–स पु. यौ. [स सहस्र+नयन] इन्द्र, देवराज। (ना. मा)

सहसपत्र—देखो 'सहस्रपत्र' (रू. भे) (अ. मा, ह नां. मा)

सहसफण, सहसफणि, सहसफणी–सं पु. यौ [स. सहस्रफण] शेषनाग।
(अ. मा, ह ना. मा.)

उ०—१ मणिधर छणधर अवर डुळै मन, ताई धर रज धर 'धीन'

उ०—गढ द्रढ परकोटी गहर, परखा सहरपनाह। सुख रासी वासी सरव, सुद्रब सचेला साही।—सिववक्स पाल्हावत

रू भे—सैरपनाह सैरपना', सैरपनौ'।

सहरवाद-स पु —कैदी।

उ०—गागो वरजागोत। कूपाजी रै वास थो। पछै सूर पातसाह कनै परधान कूंपैजी मेलियो। पछै पातसाह सहरवांद थको हीज आप कनै राखियो थो।—नैणसी

सहरि, सहरी-वि —१ शहर का, शहर सम्बन्धी।

२ सदृश, समान।

उ०—ज्यू सहरी भ्रूग नयण भ्रग जूता, विसहर रासि कि अलक वक्र। वेलि

३ देखो 'सरग्रही'।

रू भे.—सैरियो, सैरी।

सहरुण-स पु [स] चन्द्रमा के एक घोडे का नाम।

सहरौ-वि (स्त्री सहरी) शीघ्र सुनने वाला।

उ०—कहरी सुण कूक ऊघाडै कोयण, नहरी जूनी बात नइ। सुदर मात हुती तू सहरी, हमकै बहरी केम हुइ।

—देवी सुदरबाई री गीत

सहल-स पु —१ घूमने-फिरने की क्रिया या भाव, परिभ्रमण।

उ०—१ हालिया फेर गजनेर करबा सहल, देखिया कोठिया महल देवी। भालि दोनू सहर आय पूठा भलै, सहर देसाण दीवाण सेवी।—मे म

उ०—२ छिलती सलित न्याव नह छूटै, जेठी गयद कुरग नह जूटै। मझि जळ क्रीड न सहल विमोहै, अस सिवका गज रथ न अरोहै।

—सू. प्र

२ क्रीडा, खेल।

उ०—दूसरा 'माल' सग लिया चतुरग दळ, यर हरा मार सेणा ऊबारै। रण-चडा सहल जूझा गहल राठवड, सहल रमता पडै दहल सारै।—कल्याणदास महडू

३ आनन्द, मस्ती, मौज।

उ०—रगधण कहैज राठवड, मान पिया मनवार। सहल करीजै सासरै, चहरी चित दिन चार।—बख्तावर मोतीसर

४ काम, क्रीडा।

उ०—रसियौ नित सहला रमै, महला मारै मौज। छवी अनूप छत्र धार री, मानहु रूप मनोज।—सिववक्स पाल्हावत

५ काठ की मोगरी जो ऊपर से पतली तथा नीचे से मोटी होती है जिससे चूडे के पातो का बल निकाला जाता है।

वि.—१ सरल, आसान, सुगम, सहज, सीधा।

उ०—१ खडगधार पर काम, चालै तो चलबौ सहल। मुसकल जग रे माय, नेह निभावण नागजी।—नागजी नगवती री वात

उ०—२ अै जठा ताई जैसळमेर री धरती मै छै. तितरै म्हानू धरती री आस काई नही। तरै जगमाल कह्यौ—'इणा नू मारण सहल छै, पण इणा सू रावळजी मया करै छै। तरै घडसी दिलगीर हुवौ।—नैणसी

उ०—३ दूसरा 'माल' सग लिया चतुरग दळ, गर हरा मार सेणा ऊबारै। रण-चडा सहल जूझा गहल राठवड, सहल रमता पडै दहल सारै।—कल्याणदास महडू

२ साधारण, मामूली।

उ०—वदै महल छतीस राजवस, कमध नगारा त्रहळ कियै। दहल पडै अवरा देसोता, थारै सहल सिकार थियै।—रुघौ मुहतौ

३ साक्षात, प्रत्यक्ष।

उ०—लुगाई नै कूख मडिया पै'ली टाबर रै जलम री जित्तौ कोड नेह हरख मोद अर उछाव व्है उत्तौ टाबर व्हिया नी व्है। वा उण वेळा हरख अर उछाव री इज सहल पूतळी बण जावै।—फुलवाडी

रू भे.—सहल्ल, सैल।

अल्पा;—सहलडी।

सहलडी—१ देखो 'सेलडी' (रू भे)

उ०—आगै अठै कुवौ थो, तठै गाव थौ, बाग थौ, नरा री छत्र उठै छै। सहलडी हुवै। आवा आगै था।—नैणसी

२ देखो 'सहल' (अल्पा; रू. भे)

सहलणौ, सहलवौ—क्रि स.—१ सहलाना।

उ०—भोग किया मौ हाथ, सहलता जिण जघा नै। कदळी रूख समाण, फडकसी था पूगा नै।—मेघ

२ परिभ्रमण, सहल करना, घूमना।

३ देखो 'सेलणौ, सेलबौ' (रू भे.)

४ देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू भे)

सहलसौ-वि.—साधारण, मामूली।

उ०—राव राजसिंघ देवडौ भैरवदास समरावत नु डूगरोत नू सहलसौ पटौ दे इणरै हीज आटै राखियौ हुतौ।—नैणमी

सहलाणी—देखो 'सैनाणी' (रू भे.)

उ०—आ भाइजी रा हाथ री सहलाणी है। जद लोगा जांण्यौ औ पूरौ मूरख है।—भि द्र

सहलाणौ, सहलाबौ—क्रि. स —१ सहलाना।

२ परिभ्रमण कराना, घूमाना।

सहलियोडौ-भू का कृ —१ सहलाया हुआ. २ परिभ्रमण किया हुआ।

३ देखो 'सेलियोडौ' (रू. भे.)

४ देखो 'सालियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. सहलियोडी)

सहलौ-वि —आसान, सरल।

(स्त्री सहली)

सहळौ—देखो 'सैळौ' (रू. भे.)

तण। पगीधर पतसाह पैरता, फिरै कमळ तन सहसफण।
—राणा प्रतापसिंघ री गीत

उ०—२ माडि रहै चद्रवा तणीमिसि, फण सहसेई सहसफणि।
—वेलि

रू भे.—फणसहस फुणसहस, सहसफण, सहसफुण, सहसफिण, सहस्रफण सहस्रफुण।

सहसफणधर, सहसफणधार, सहसफणधारी–स पु [स सहस्रफनधारिन्] शेषनाग।

रू. भे.—फणसहसधार, सहसफिणधर, सहसफिणधार, सहसफिण-धारि, सहसफिणधारी।

सहसफिण—देखो 'सहसफण' (रू भे)।

सहसफिणधार, सहसफिणधारि, सहसफिणधारी—देखो सहसफणधारी' (रू भे)

सहसफूल—देखो 'सीसफूल' (रू. भे)

उ०–बहिइ बाध्या बहिरखा, करि मुद्रडी झलकति। सहसफूल नइ चुकडा, पदकडी चाक भजति।—नळदवदति रास

सहसबदन–स. पु. यौ. [स. सहस्रवदन] वह जिसके हजार मुख हो, शेषनाग।

रू. भे.—सहसवदन।

सहसबळ–स. पु [स. सहस्रबल[१ जिसमें हजार व्यक्तियो का बल हो।

२ सूर्य, सूरज।

सहसबवणि–स. पु [स सहस्राभ्रवन] वह स्थान जहां पर नेमिनाथजी ने दीक्षा ली थी।

उ०—अरे रेवइया गिरि सहसबवणि जात न लागइ वार।
—समुधर

सहसबाह, सहसवाहु—देखो 'सहस्रबाहु' रू भे)

सहसभग–स पु—इन्द्र।

सहसभाव–स स्त्री—१ सहिष्णुता।

२ क्षमा।

सहसमालोत—राठौडो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सहसमुख–वि. [स सहस्र+मुख] वह जिसके हजार मुह हो, हजार मुह वाला।

स. पु—शेषनाग।

रू भे—सहसमुखो।

सहसमुखी–स स्त्री. [स सहस्रमुखा] १ गगा। (ह. ना. मा)

२ एक प्रकार का कद विशेष।

उ०–सिगमडी सीदूरिया, तिहा तूंविणि पालि। सहसमुखी सजीवनी, बच्छनाग वेच्छाळ।—मा. का प्र

सहसमुखो—देखो 'सहसमुख' (रू भे)

सहसमौं–वि [स सहस्रतम] क्रम मे हजारवां, क्रम मे ९९९ के ठीक बाद आने वाला।

रू. भे—सहसवौ।

सहसवदन—देखो 'सहसबदन' (रू. भे)

सहसवौं—देखो 'सहसमौं' (रू भे.)

सहसान–स पु. [स सहसान] १ मोर, मयूर।

२ नैवेद्य, भेंट।

३ यज्ञ, हवन।

सहसा–अव्यय [स] १ अकस्मात, अचानक। (ह ना. मा)

उ०—किलम गयद चढियौ हलकारै, अठी 'जगड़' भड धीर उचारै। खागा डळै पडै हुय खेडा, अकस धसै सहसां ऊरेडा।—रा. रू

२ बलपूर्वक, जबरदस्ती।

३ अविचारता पूर्वक।

रू भे.—सहस, सहसी।

सहसाअ्रजण, सहसाअ्रजणि, सहसाअ्ररजण, सहसाअ्ररजन, सहसाअ्ररजुण, सहसाअ्ररजुन—देखो 'सहस्रारजुन' (रू. भे)

उ०—१ इक बाधौ सहसाअ्रजणि, जळक्रीड मझारै। वामणि गदा विहडियौ, दूजो बळि द्वारै।—सू प्र

उ०—२ तिल तिल जुध हुओ खगा मुह तूटौ, चूण न सकै दह करा सचूप। रावत कमळ काज सिव रचियौ, सहसाअ्ररजुन तणौ सरूप।—महादान महडू

सहसात—देखो 'साक्षात' (रू भे)

सहसातकार–अव्यय—१ सम्मुख, सामने, समक्ष।

उ०—१ वचन तणा दूखण दसे जी, जाणउ एणि प्रकार। कुवचन बोलइ लोकनइ जी, थइ दोस सहसातकार।—स. कु

उ०—२ सहसातकार कलक थइ, वलि आप छदइ बोल ए। सखेप सूत्र कहइ आलावउ, करइ कलह निटोल ए।—स कु

२ देखो 'साक्षात्कार' (रू भे)

सहसाबाहु—देखो 'सहस्रबाहु' (रू. भे)

सहसाह–स. पु.—परशुराम के सारथि का नाम।

सहसी—देखो 'सहसा' (रू भे.) (ह. ना. मा)

सहसेई–स पु.—शेषनाग।

सहस्य–स पु. [स सहस्य] पोष मास का नाम। (डिं. को)

सहस्र–स पु [स] १ एक हजार की सख्या।

२ उक्त सख्या का अक जो इस प्रकार लिखा जाता है १०००।

वि.—हजार।

उ०—देवी सहस्र लख कोटीक साथै, देवी मडणी जुध मेवास माथै।—देवि

रू भे.—सहस, सहस, सहस, सहस्स, सेंस, सैंस, सैंहस।

सहस्रकर, सहस्रकिर–स पु [स. सहस्रकर] १ सूरज, सूर्य।

२ सहस्र हाथो वाला, सहस्रार्जुन।

३ बाणासुर।

उ०—१ सकौ हिज आज अनेक सरूप, विधूसत फौज सहायक भूप।—मे. म.

उ०—२ मेडतिया 'मधकर' हर मेडतै सहायक, साहस कै सादूळ वंस कै नायक।—रा रू.

उ०—३ मुरजन सुत वुदी सदन, सम्या दुरजणसाल। व्याहण हू वळभद्र नू, हुवौ सहायक हाल।—व. भा.

२ मित्र, दोस्त। (अ. मा)

३ रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—१ घण माण वधताय भीड घणी, तनभाण सहायक प्राण तणी।—रा. रू.

उ०—२ च्यारु आकर जंतु चराचर, एक अनेक सहायक ईस्वर।
—रा. रू

उ०—३ सरण सहायक विरुदसिर, पहली ही कुळपाण। अकबर हू मुडियौ अवे, अस्त करूं तुरकाण।—वं भा.

४ अनुयायी।

५ चाकर, नौकर।

६ शिव, महादेव।

रू भे—सहायत, सायक, सिहायक।

सहायत—देखो 'सहायक' (रू भे)

उ०—१ समहर गजवीळ रौळिअै सावळ, वंसर वंसर तोलतौ वळ। दिली सहायत 'अचळ' दूसरी, 'दूद' विरोळै दिखण दळ।
—दूदा नगराजोत रौ गीत

उ०—२ रायाराय साथि रुघपत्ती, भडारी मति सागर भत्ती। मुहता मैं गोपाळ मुदायत, सुत कल्याण सव भडा सहायत।
—रा. रू

सहायता—स स्त्री—कोई कार्य सम्पादन मे किसी को शारीरिक, आर्थिक या मानसिक किसी प्रकार का दिया जाने वाला योग, मदद।

रू. भे.—सायता।

सहारण—वि.—१ सहायता करने वाला।

२ उद्धार करने वाला।

उ०—कव रामचद हरि नाव लीजै अंत चित रही जीय। जीवडै सहारण विस्ण मिळियौ, मूंधि धीरज कीजीय।—वि स सा.

सहारौ—स. पु—१ मदद, सहायता।

उ०—अब कळदार लियौ अवतारा, सव कळजुग को देण सहारा। तुरत रेल अर तार उतारा, एक करन सबकौ आचारा।—ऊ का.

क्रि प्र.—मिळणौ, दैणौ, लगाणौ।

२ आश्रय, अवलम्ब।

उ०—ग्राह ग्रह्यौ गजराज उवारयौ, वूड न दियौ छै जान। मीरा दासी अरज करत है, नहिं जी सहारौ आंन।—मीरा

रू. भे—साहरौ, सैंयारौ।

सहालग—स. पु—१ हिन्दु ज्योतिषियो के अनुसार शुभ माना जाने वाला वर्ष।

२ वे दिन या मास जब व्याह-शादी के मुहूर्त अधिक हो।

सहाव—स पु. [स. स्वभाव प्रा. सहाव रा. सभाव] आदत, स्वभाव।

उ०—बाबहियउ नइ विरहिणी, दुहुवां एक सहाव। जब ही वरसइ घण घणउ, तब कहई प्री प्राव।—ढो. मा.

वि.—१ समान, तुल्य।

उ०—हरराज हुवौ अरजुन सहाव, कळिजुग जिण कीरति थिर कहाव।—वं भा.

२ देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—अरजण अर दुरजोधन सहाव मागिव कै काजि स्रीक्रसण कन्है आया।—वेलि टी.

सहावणौ, सहावबौ—क्रि. स.—पकडाना।

उ०—झालै मेलै झालिया, हाथै गहै दवाव। (नवौ) झलाया मेलिया, साहै (फेर) सहाव।—डि को

सहावणहार, हारौ (हारी), सहावणियौ—वि०।

सहाविओडौ, सहावियोडौ, सहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सहावीजणौ, सहावीजबौ—कर्म वा०।

सहावळ—देखो 'स्यावळ' (रू. भे.)

सहावियोड़ौ—भू वा. कृ—पकडाया हुआ।

(स्त्री सहावियोड़ी)

सहावौ—वि.—१ धारण करने वाला या सहन करने वाला।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावा विरच जाणै, धूरजटी तावा ऊच भावा मेर धींग। आवा लोभ रिखी रांम तम्मी ज्यूं दधीच हाड ऊच, सामवेद वेदागा वीरावी संभूसिंग।
—रावत संभूसिंघ गोगावत रौ गीत

२ देखो 'सावौ' (रू. भे)

सहास—वि.—साहसपूर्वक।

उ०—१ के डेराधारी सुकव, सवळै तोल सहास। समहर सारा आगळी, कै सिरदारा पास।—रा रू.

उ०—२ चारण कारण अग्गळा, सादू जोगीदास। मीसण 'सूरा भारमल, 'आसल' 'धना' सहास।—रा. रू

क्रि. वि—१ खुशी से, हंस कर, हर्षपूर्वक।

उ०—१ खगवाहो रिण खेतसी, भाटी जीवणदास। दुजडा हथ हरदास ज्यो, साथै हुवा सहास।—रा. रू

उ०—२ मचायो सोण रौ कीच द्रोण सौ दिखायौ मानू, तेगा सूं रचायो ख्याल अनोखौ तमाम। छकै छाक लोहा पूर आरवा विमाणा छायो, हैकम्पै भूलोक आयौ मुनिंद्रा सहास।
—बादरदान दधवाडियौ

२ देखो 'साहस' (रू भे.)

सहासवंत—देखो 'साहसवंत' (रू. भे)

सहि—वि.—सब, समस्त।

रावण को भी युद्ध मे पराजित कर कैद किया था। एक बार इसने जमदग्नि के आश्रम से कामधेनु को लेना चाहा इसलिए परशुराम-जी ने इसका वध किया।

रू. भे.—संसारजुण, ससारजुन, सहसाअजरिण, सहसाअरजण, सहसाअरजन, सहसाअरजुण, सहसाअरजुन, सहस्राजुण, सहस्रा-जुन।

सहस्त्रिन-वि [स सहस्त्रिन] १ हजारपती, हजार वाला।

२ हजार के करीब।

सं पु—१ हजार आदमियो का समूह।

२ हजारो का अफसर, हजारी।

सहस्स—देखो 'सहस्र' (रू भे)

उ०—हाडो आडो हल्लणो, बूदी हून अकस्स। सो आयो राठोड तक, घोडा जोड सहस्स।—रा रू

सहस्सकर, सहस्सकिर—देखो 'सहस्त्रकर' (रू भे.)

उ०—कामित सपय करण, तम भर हरण सहस्सकर विरण। —ध व. ग्र.

सहाणा-स पु—फरोदस्त और कान्हडा को मिलाकर बनाया गया सम्पूर्ण जाति का राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

सहांणी—देखो 'साहणी' (रू. भे)

उ०—१ तरै दरबार आया। आगै ठावा लायक सहांणी घोडा री पायगा विचै बैठा छै। तिण सू राम राम कीधी। —जगदेव पवार री बात

उ०—२ हिचै असि और खगा पडिहार, सहांणिय रामति मडत सार।—सू प्र

सहा-स स्त्री. [स] १ पृथ्वी, भूमि।

२ मेहदी।

३ अगहन मास।

४ हेमन्त ऋतु।

५ सर्पिणी।

६ ग्वारपाठा।

७ सत्यनाशी।

८ अर्जुन के स्वागतोत्सव मे इन्द्र-भवन मे नृत्य करने वाली एक अप्सरा का नाम।

सहाइ, सहाई—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ कवर सरणाई साधार सुणता ही सहाई देर लार हुवो। —व. भा.

उ०—२ जिणि दीहे पाळव पडइ, टापर तुरी सहाइ। तिणि रिति बुढी ही भुरइ, तरुणी केम रहाइ।—ढो. मा

उ०—३ अरजुन पगा की तरफ आइ बैठो। जागता ही पहिलै द्रस्टि पडियो। तब अरजुन का सहाइ हुआ।—वेलि टी.

उ०—४ गिरवाणा सहाई मनोज धेनु ग्यानगोभा, नाराज वरीस सोभा इसी प्रथीनाथ।—र रू

उ०—५ तपस्या ठकुराई छीन थाई मिट दुहाई देम ए। चाकर दुजाई पाप माई सुद्ध आई वेस ए। करुणा बढाई पुनि बुलाई जन सहाई आज ए।—करुणासागर

सहाज—देखो 'साज' (रू. भे.)

उ०—साजो हुवो जद खेत काट्यो। सहाज देणवाला नै विण पाप लागो।—भि. द्र.

सहाजादो—देखो 'साहजादो' (रू. भे)

सहादत-स स्त्री. [अ शहादत] गवाह, साक्षी।

सहानदी-स. पु. [स.] मगधनरेश महानदी का नामान्तर।

सहानुभूति-स. स्त्री [स.] हमदर्दी।

सहाब-स पु [फा शहाब] १ एक प्रकार का गहरा लाल रग।

२ किसी व्यक्ति के लिए आदरसूचक सम्बोधन।

३ देखो 'साहिब' (रू भे.)

सहाबी-वि. [स. शहाबी] लाल रग का।

सहाय-स पु [स सहाय] १ सेना, फौज।

उ०—आपरा घायला रा जीवण रा जतन कराइ दक्खिन रा सहाय सहित दो ही साहजादा अवती रै उपकठ ही मुकाम किया। —वं. भा.

२ रक्षा।

उ०—केतै सत निवाजियै, कही न मोपै जाय। मोहि छुटावो ग्राह सू, वेगी करो सहाय।—गज-उद्धार

३ सहायता, मदद।

उ०—१ जिको दुस्कर देखि परै ही रुकियै थकै जवन नाम पूछियो जरै कुमार भी आपरा सहाय देण रो सारो ही उदत अभिधान सहित कहियो।—व. भा

उ०—२ सोढ सारगदेव देवडै देव वाढेल वीरदेव प्रामारसिंह देव गाजी त्रसिंह इत्यादिक वीरा भी आय सहाय दियो।—व. भा

४ बल, शक्ति।

उ०—प्राची मैं पुत्र नू भेजि आवाची कू आवता दो ही पुत्रा नू समुझावण साम्है जावता पातसाह नू पेलि तिण रो वडो पुत्र साहस रै सहाय पहिली कहिया कटक रै साथ दरकूचा दक्खिण रै अभिमुख चलायो।—व भा.

वि—१ सहायता करने वाला, मददगार।

उ०—१ दातार सूर सील कै निवास, दीन कै सहाय द्विज गऊ कै दास।—सू प्र.

उ०—२ तनि दरसाणी सीतळा, जुगराणी जगमाय। सरम ग्रही देवासुरा, सुख काज धरम सहाय।—रा. रू

२ रक्षक।

रू भे.—सहाइ, सहाई, सहाव, साय, सिहाय, स्याय।

सहायक-वि. [स] १ मददगार, सहायक।

उ०—सत कूर सनातन दोय सही, सत पथ वहै सो महत सही ।
—ऊ. का.

३ सत्य, सच ।

उ०—१ सत कूर सनातन दोय सही, सत पथ वहै सी महत सही ।
—ऊ का.

उ०—२ बस केवल नाम सही है, वो मोटो राम सही है । जित्तो तप मैं तपस्या, वित्तो ही काम सही है ।—करणीदान वारहठ

४ सब, समस्त ।

उ०—१ सरकै जुड भाभर मेछ सही, जुध मैं घुजरेण पलाल जही ।—रा. रू.

उ०—२ हिय मा करइ वधामणा, सही त सीघा काज । जे सुपनंतर दीखता, नयणे मिळिया आज ।—ढो मा.

स. पु —१ किसी बात वचन की सत्यता एवं यथार्थता के लिए साक्षी के रूप मे किये जाने वाले हस्ताक्षर ।

२ प्रामाणिकता एव मान्यता सूचक शब्द ।

ज्यू—खैर की कोनी थैं मानो ज्यूं ई सही ।

क्रि वि —१ अवश्य ही, निश्चय ही ।

उ०—१ सत्र हरा नारि नह नीद भरि सोवसी, हल चला सही हाला घरे होवसी ।—हा. झा.

उ०—२ हीया फूट हठ न करो हूरा, नर हिंदू छै तुरक नही । बामीवध केसरिये बागे, सूर सुहुड राठौड सही ।
—हठीसिंघ जोगावत रौ गीत

उ०—३ उत्तर आज म उत्तरड, सही पडेसी सीह । बालभ घरि किम छडियइ, जा नित चंगा दीह ।—ढो. मा

२ वास्तव मे ।

उ०—नाक री डाडी, आंख्या, निलाट डील रोमछर देखि सही कवरजी ही छै ।—जगदेव पवार री वात

३ देखो 'सखी' (रू भे.)

उ०—१ सही समाणी साथि करि, मदिर कू मल्हापत । सउदागर नेडी वहइ, सुणिया प्रीतम वत्त ।—ढो मा

उ०—२ सही भणइ सुणि सामिणी ए किम होइ गमार । माय बाप विछोव, अदोह करइ अपार ।—हीराणंद सूरि

अव्यय—१ एक अव्यय जो विशिष्ट प्रसगो मे वाक्यो के अन्त मे आकर ये अर्थ देता है ।

(क) अधिक नही तो इतना अवश्य ।

ज्यू—आप अठै पधारजो तो सही ।

(ख) कोई असम्भावित बात होने पर कुछ जोर देते हुए आश्चर्य प्रकट करना ।

ज्यू—तोई थू वठै गयो तो सही ।

रू. भे.—सइ, सईह, सहि ।

सहीग्रड-स स्त्री.—सहेली या सखी मानने की क्रिया ।

उ०—सारसडी सोहइ नहीं, खीजडी वईठी सेव । ईम तिजीनड को करइ, सहीग्रड केरी सेव ।—मा का. प्र.

सहीक-अव्यय—अवश्य ही, निश्चय ही ।

उ०—घुडला रुधिर झिकोळिया, ढीला हुआ सनाह । रावतिया मुख झावणा, सहीक मिळियो नाह ।—हा झा.

सहीत, सहीतौ—देखो 'सहित' (रू. भे)

उ०—१ महादिय मान करी गुह गीत, तारै मह कौर कुटंब सहीत ।—ह. र

उ०—२ उनमन नेजा फहरै, अनहदै घुरै नीसाण । सहीत भोम्या उपरै, चढियो सबद दीवाण ।—वि स. मा.

उ०—३ हथळेवौ नरलोक, पइमारो परलोक में । सुखविलसण मतलोक, जान सहीता जावस्या ।—रामनाथ कवियो

सहीतोडोतरो-स. पु.—एक प्रकार का कर विशेष ।

उ०—समत १७०८ राजा जसवतसिंघजी सहीतोटोतरा छूट किया, बाकी सहीतोडोतरा वाजै रकमा खरडा री साख वहै गांव ।
—नैणसी

सहीद-स पु [अ शहीद] वह व्यक्ति जो देश, धर्म या किसी लोकहित के लिए बलिदान होता हो ।

सहीदी-वि.—जो शहीद होने के लिए तैयार हो ।

सं पु —शहीद का पद, कार्य ।

उ०—मोत सू कोई इलाज नही छै । पण चाहीजै जीव म्हारो किणी काम लागतो तो सहीदी पावतो ।—नी. प्र.

सहीनाण—देखो 'सैनाण' (रू भे)

उ०—तठै कुवरजी आपरा हाथ री सवालाख री मूंदडी सहीनांण वासतै रीझ दीवी ।—रीसालू री वारता

सहीप—देखो सही' (रू भे)

उ०—अडोवडी आग बूठा धकावै वीराण आघा, महावीर क्रोध चाळै लागा तो महीप । किरीठी कराळो रीस जैद्रथो मिटावा कोप्यो, सत्रवा भुजाटा करी भीम ज्यू सहीप ।—पावूजी रौ गीत

सहीली—देखो 'सहेली' (रू भे)

उ०—सहीली तेडीनि आवी, नूति करूं प्रणाम । कर जोडी करि वीनती, आग्या द्यु सू काम ।—नळाख्यान

सहीस—देखो 'सईस' (रू. भे.)

सहीसलामत-वि —१ स्वस्थ, भला चगा ।

२ दोष रहित ।

३ अनुरुप ।

सहुगो-वि.—१ सस्तो ।

२ बिना या कम परिश्रम का ।

सहु, सहुआ, सहुए-वि.—सब, समस्त, सभी ।

उ०—१ सती दीयै आसीस सहु परवार सुहावै । तो उभै गढ धणी कमण वळ बीयो कहावै ।—अ. वचनिका

उ०—१ बीजा लोक सहि आइ मिळिया । —द. वि.

उ०—२ ताहरा अठै बीजा ठाकुरा माहा बीकानेर कोई न हुतो । सहि सिमाणी हुता । अठै कुवर स्रीदलपतजी बीकानेर हुता ।

—द वि.

स. स्त्री —१ देखो 'सखी' (रू. भे)

२ देखो 'सही' (रू भे.)

उ०—वसुदेव देवकी सू ब्राहमणी, कही परसपर एम कहि । हुए हरण हथळेवौ हुओ, संस ससकार हुवइ सहि ।—वेलि

सहिउ–वि [स. सोढ] सहन किया हुआ । (उ र)

सहिकार—देखो 'सहकार' (रू. भे.)

उ०—नालिकेर नीला भला, हाथी हरेवी द्राख । कदळी-फल सहिकार नी, करी कातळी लाख ।—मा का. प्र.

सहिज—देखो 'सहज' (रू भे)

उ०—तव एक अदभुत भए तमासा, आत्म जोत हो गई अकासा । बहुरि क्रस्ण कै माहि समाई, साजोत-मुक्त सहिज तिन पाई ।

—हरचद डोहोक्रियो

सहिजन–स. पु [स शोभाजन] भारत के प्रायः सभी प्रान्तो मे पाया जाने वाला एक प्रकार का वडा वृक्ष ।

सहिजादो—देखो 'साहजादो' (रू भे.)

उ०—एकाज टूस आडी नदी नेडो सहिजादो खुरम । अणकियै जुद्ध आपा अप्रिय, महाजुद्ध कीयौ धरम ।—गु रू व.

सहिणो, सहिबो—देखो 'सहणो, सहवो' (रू. भे)

उ०—तैं कस्ट सहिण री समरथाई नही, तिण सूं वस्त्रादिक पडिलेहीण भोगवै छै ।—भि द्र.

सहिणहार हारो (हारी), सहिणियो—वि० ।

सहिओडो, सहियोडो, सह्योडो—भू० का० कृ० ।

सहीजणो, सहीजवो—कर्म वा० ।

सहित–स पु [स] जैनियो के ८८ ग्रहो मे से तेरहवां ग्रह ।

अव्यय —साथ, युक्त, समेत ।

उ०—१ सठता धूरतता सहित, छद रचै मद छाय । निपट लिया निरलज्जता, कुकवी जिको कहाय ।—वा. दा.

उ०—२ बाजे नृप तिण वार सजे सुर राज राज सो, सुभट दुजि सचिव समाज सो । भरिया हौदा बहुत क गहर गुलाल सो, होवै सहद हगाम खूब इण ख्याल सो ।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—३ मारु-घुघटि दिट्ठ मइं, एता सहित पुणिंद । कीर भमर कोकिल कमळ, चद मयंद गयद ।—ढो मा

क्रि. वि —साथ-साथ, साथ मे ।

रू भे.—सहित, सउ, सउ, सहत, सहति, सहती, सहतो, सहथहि, सहीत, सहीतो, सहेत, सहेती, सहेतो ।

सहिनाण—देखो 'सैनाण' (रू. भे)

उ०—१ सज्जण ज्यू ज्यू सभरइ, देख्या आहीठाण । झुरि झुरि नइ पजर हुई, समर समर सहिनाण ।—ढो. मा.

उ०—२ हू तेडाऊ ताहरा आवै, तीरा री सहिनाण मेल्हीस, तीन भळका मेल्हू ताहरा डयै सहिनाण आयै, भीवो कोटडियो मेल्हीस ।

—ऊमादे भटियाणी री वात

सहियर—देखो 'सखी' (रू भे)

उ०—१ सहियर चाली साथइ करी, मारुवणी आघी सचरी । पखी हुवइ तौ उडी मिळइ, मारुवणी प्रीतम सभरइ ।—ढो. मा.

उ०—२ सहियर हे सहियर आवो मिलो है उतावली सुदर करि सिणगार ।—ध व. ग्र.

सहियोडो–भू. का कृ—१ बरदास्त किया हुआ, सहन किया हुआ. २ परिणाम भोगा हुआ, फल भोगा हुआ ३ भुगता हुआ ४ सज्जीभूत हुवा हुआ, सजा हुआ, तैयारी किया हुआ ।

(स्त्री. सहियोडी)

सहिलाळी—देखो 'सोलाळी' (रू भे) (डि. ना. मा.)

सहिसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू. भे.)

उ०—सहिसकिरण सिर सचरइ, सहू सरया सर जेम । रानिल्लवर रुडु नही, अवळा पीडइ अेम ।—मा का प्र.

सहिसभुज, सहिसभुजा—देखो 'सहस्रबाहु' ।

सहिस्णु–वि. [स. सहिष्णु] सह लेने वाला, बरदाश्त कर लेने वाला, सहनशील ।

स पु —१ विष्णु ।

२ प्रजापति पुलह व गति के एक पुत्र का नाम ।

सहिस्णुता, सहिस्णुत्व–स. स्त्री. [स. सहिष्णुता, सहिष्णुत्व] १ सहन करने की शक्ति ।

२ सहन करने की क्रिया ।

३ सब्र, धैर्य ।

सहिस्रभुज, सहिस्रभुजा, सहिस्राभुज—देखो 'सहस्रबाहु' ।

उ०—किधौ सहिस्राभुज पै दुजराम, किधौ हनमत अमोक अगाम ।

—ला. रा

सही–वि [अ. सहीह] १ जिसमे त्रुटि, दोष या भूल न हो, बिल्कुल ठीक ।

उ०—१ वो दरबारिया नै नवा नवा सवाल पूछतो । सही जवाब मिळिया मूडै माग्यो इनाम देवतो । सोचण सारू मोलगत देवतो । अर मोलगत पछै सही जबाब नी मिळिया पूजतो डड देतो ।

—फुलवाडी

उ०—२ करता करै स तु सही, मेरा किया न तूझ ।

—अनुभववाणी

उ०—३ कोई ऊचै घराणा रो आदमी हिंदुस्तान देखण नै आयो दीसै । मेठ री अदाज सोळू आना सही निकळ्यो ।—अमर-चूनडी

२ यथार्थ, वास्तविक ।

सहोकति, सहोक्ति-सं स्त्री [सं. सहोक्ति] 'सह', 'सग', 'साथ' आदि शब्दो को व्यवहार मे लाने का एक प्रकार का काव्यालकार विशेष।

सहोढ-स. पु [स] अविवाहित कन्या के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।

सहोदर-वि. [स.] (स्त्री. सहोदरा) जो एक ही माता के उदर से उत्पन्न हुआ हो।

स पु —सगा भाई, भाई। (डि को, ह. ना. मा)

उ०—१ मुहक्करमा नै आपरा छट्टा सहोदर नू जाळोर रो दुरग दीधो। जठै खधावार जमाय मौक्तिराज नै पुरुरवा प्रियव्रत रै समान राज कीधौ।—व. भा

उ०—२ जाकै नथै माता नथै पिता, नथै कुटव सहोदरं। जै नर करै ताकी सेवा, ताका पाप दोख स्यौ जायतै।—वि. स. सा.

रू भे.—सोदर, सोदरज।

सहोदरलखण, सहोदरलखन, सहोदरलखमण-स. पु [स. सहोदर+लक्ष्मण] १ श्रीराम भगवान।

२ ईश्वर, परमेश्वर। (ह. ना मा)

सहोधौ-वि —१ कुलीन, अच्छे कुल का।

उ०—धणी करै वाखाण सत्त करै मंगळ धमळ, सहूवर साथ अणवर सहोधा। माडवै परणजै कमध गोपाळमल, जानिया साथ रिणमाल जोधा।—दुरसौ आढौ

२ ओहदेधारी, पदाधिकारी।

सहोर-वि. [स.] श्रेष्ठ, उत्तम।

स. पु. [स सहोरा] ऋषि, मुनि।

सह्य-वि. [स] १ सहन करने योग्य, सहनीय।

२ मजबूत, ताकतवर।

स. पु. [स. सह्य] १ तदुरुस्ती, स्वास्थ्य।

२ सहायता, मदद।

३ योग्यता।

[स सह्य] ४ सह्याद्रि नामक पर्वत।

सह्यालु-स. पु.—श्याम रग के तने का एक पौधा विशेष जिसकी जड को निरगूडी कहते हैं।

सह्याद्रि--स. पु —बम्बई प्रान्त का एक प्रसिद्ध पर्वत।

सहृदय-वि [स. सहृदय] १ कृपालु, दयालु, सुहृदय।

२ सच्चा।

वि. [स सहृदय] १ विद्वान।

२ गुणग्राही।

३ सज्जन।

४ रसिक।

सां-स. स्त्री —शपथ, सौगन्ध।

सर्व —क्यो।

उ०—राक सा कर रिव परी केरी, भूभवातइ मेल्ही फेरी। तीणि वात मनि हुउ लाजउ, सैन्य कौरव तणउं नवि भाजउं।

—सालिभूरि

अव्यय—सम्बन्धसूचक अव्यय, से।

उ०—१ ग्यान ग्रभीर गभीर सो, उरळो कोडि अनेक। पावक सा उन्हो प्रघळ, कोडि थोक प्रभ एक।—पी. ग्र.

उ०—२ हरि मिळिया वह हेत सां, सतगुरु नामै सीस। उरा पधारो एथियै, आवै वारह ईस।—पी. ग्र.

उ०—३ धरणीधर मोटौ धिणी, मोटा सा मोटोह। तू नान्हा सां नान्हडो, दै दईता दोटोह।—पी. ग्र.

साइंड—देखो 'साढ' (रू. भे)

साइणियौ-वि. [सं. शाकुनिक] शकुनशास्त्र का जानकार, शकुन बताने वाला।

स. पु —१ शकुन बताने वाला व्यक्ति।

२ शकुन बताने वाला पक्षी।

सांइणौ, सांइणौ, सांइनौ, सांइनौ-वि. [स. सहायन] (स्त्री. साइणी) १ समवयस्क, हमउम्र।

उ०—१ कुवरसी नाव दियौ। सो मोटौ हुवौ। वडो सिरदार, कुवरपदो करै। लोक आप साइना तावै कर दिया। सो उहा नूं कपडै पाडै पोसाख आछी राखै।—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ धनै सेठ वै नू कहियौ तूं इण वात रै खयाल मत पड़। परणीजै तो थारो साइणौ देख परण।—पचदंडी री वारता

२ साथी, दोस्त, मित्र।

उ०—१ म्हारा मदवा मारू आया वै, रंग रा उनीदा म्हारै महेला। सग साईनां रै सिकारा रमता, वन वन करता सैलां।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ साजन आया हे सखी, सग साइणां लेर। पाई नवनिध नार अब, नगर वधाई फेर।—अग्यात

३ बुद्धिमान, चतुर, दक्ष।

रू भे —साइणौ, साइणौ, साईनौ, सामीणौ, सामीनौ, सायीनौ, सायीनौ, सांइनौ, साइनौ।

सांइ, सांई-स स्त्री. [स. स्वागतम्] १ मिलने-भेटने की क्रिया।

उ०—१ निरमल साधु तणा मन सरीखूं, सीतल सुत नू साई। जल जोई राजा मनि कल्पि, नवी ओपम काई।—नळाख्यान

उ०—२ अजिउ व्याघ्रिसिउ क्रीडा कीजइ, अजिउ सरप्पसिउ सांई दीजइ, अजिउ हालाहल पीजइ, अजिउ महाविखनउ कवल लीजइ, अजिउ अग्निमध्य प्रवेस कीजइ, अजीउ सत्रुसिउ वसीइ, पुण प्रमाद न कीजइ।—व. स

स पु. [स स्वामी] २ मुसलमान फकीर। (सूफी) (मा म)

उ०—स्याम ताज कफनी कमडळ मैं नीर, डाढी सुपेत सेख सुवरण सरीर। मोकळ राव आतौ देखि माथा कौ नवायौ, साई स्यौ भुरानी सेखनामी पंथ पायौ।—शि व.

उ०—२ तारण तरण नहीं को तो सारीखो, पुहवि सहु सोभि नै ए लह्यौ पारिखो ।—ध. व ग्र

उ०—३ फिरियौ पछि वाउ ऊनर फरहरियौ, सहुण सूहव उर सरग ।—वेलि

रू भे —सहू ।

सहुण—देखो 'सुगन' (रू भे)

सहुर —देखो 'सऊर' (रू भे)

उ०—झाली वडी ठकुराणी, जिसौ ही रूप, जिसौ ही सहुर, जिसी ही सारी बात मैं सुघड । सो खीवसी घणौ राजी ।

—कुवरसो साखला री वारता

सहू—देखो 'सहु' (रू भे)

उ०—१ छरा भयकर छोह चख, डाढ भयंकर डाच । दीसै नाहर देखिया, सहू प्रवाडा साच ।—वा. दा.

उ०—२ राजा तुम्ह रुडु हुजो, इम माहरी ग्रासीस । परिकर सहू परिवार-मिउ जीवै कोडि वरीस ।—मा का. प्र

सहूर—देखो 'सऊर' (रू भे)

उ०—तरै ग्रग तमायची वादसाह महरबान होय मनसब दियो । पण जलाल क्यूं ही सहूर मैं निजर ग्रव्वल ग्राइयौ ।

—जलाल बूबना री वात

सहूरदार—देखो 'सऊरदार' (रू भे)

उ०—तद ऊदै जी घणा राजी हुवा कही—छै तो वाळक सहूरदार ।

—सूरै खीवै काधलोत री वात

सहूलियत—स स्त्री. [फा.] १ ग्रासानी, सुगमता ।

२ कायदा, ग्रदव ।

३ सुविधा ।

सहूवर—देखो 'सहवर' (रू. भे)

उ०—धणी करै वाखाण सत्त करै मगळ धमळ, सहूवर साथ ग्रणवर सहोधा । माडवै परणजै कमध गोपाळमल, जानिया साथ रिडमाल जोधा ।—दुरसो ग्राढो

सहेज—देखो 'सहज' (रू. भे.)

उ०—तिहि गग हिलोलैह जाय, सतगुर चीन्हे सहेजै न्हाय ।

—वि स सा

सहेट—स स्त्री —सकेत-स्थल ।

उ०—पूजा रै मिसि ग्रबिका रै देहरै नगर वाहिरि हू ग्रावु छू । इतनी सहेट वताई ।—वेलि टी.

सहेत, सहेतो, सहेतौ —देखो 'सहित' (रू भे.)

उ०—१ नमो हैग्रीव निगम्म सहेत, नमो खळ मार हयानन खेत ।

—ह र.

उ०—२ सतिया ग्रान सहेत, दाग वेदोगति दीधा । केसरिया कमधजा, करै ग्रत उछव कीधा ।—सू प्र.

उ०—३ कुटवा सहेता हुती नाव कीर, वळै पाय रेणा तरी रघु-वीर ।—सू प्र.

सहेद—देखो 'सहद' (रू. भे.)

सहेरउ, सहेरौ – देखो 'सेवरौ' (रू भे.)

उ०—तसु वधव डूगरसी ते पण दीपतउ रे भागचद कुलभाण । विनयवत गुजवत सुभागी सहेरउ रे वडदाता गुण जाण ।

—प च. चौ

सहेल—स पु —चौक ।

(मि चोवटौ)

सहेलडी, सहेली—स स्त्री.—१ सखी, सगिनी । (ग्र मा)

उ० —१ सात सहेल्या, रै झूलरै ग्रै पणिहारी ग्रै लो, पाणीडै नै चाली रे तळाव वाला जो ।—लो गी

उ० —२ नणद भोजाई सरवर न्है गयी, सात सहेली म्हारै साथ ।

—लो. गी.

उ०—३ संग री सहेली म्हारी रचणी लगावै, कइया लगाऊ सायेबा ! थारै रे विना ? तीजा ग्रायी ढोली नही ग्रायो, पल पल झूरू मेरा सायेबा ! थारै रे विना ।—लो गी

उ०—४ दोळी फिरी दसेक कुसुम कर कामठी, जोवत गहळी जीव सहेली सामठी । निज निज मुख सा नाम कहावत कथ रौ, वढि इम हास विलास मदन महमत रौ ।—सिववरस पाल्हावत

उ०—५ सावण री वड तीज, रुखमण झूलण चाली ग्रो । ग्रौर सहेल्या झूलै इरा-तीरा रुखमण बीच पधारी ग्रो ।—लो गी

उ०—६ विदर सहेल्या वीच मैं, हस हस मारै होड । चेली सू चूकै नही, मौको लागा मोड । – ऊ का

२ ग्रनुचरी, दासी ।

उ०—साखला कही, वैहल छोड देवो, ग्रापै चली ग्रासी । तर खरळा वहलवान नु उतार रथ ऊपर सहेली नू चाढि वहीर कीवी वहला भारवरदारी सारी रथ रै पेढै लगाय दीया । ऊभा देखण लागा ।—कुवरसी साखला री वारता

रू. भे —सहीली ।

सहेलौ—देखो 'सहल' (रू. भे)

उ०—माल्हनौ घरि ग्रागणै, सखी सहेलौ कामि । जो जांण् पिय माल्हणौ, जै मल्है सग्रामि ।—हा. झा

सहैभर—देखो 'साभर' (रू भे.)

उ०—पछै राव मालदै दिन-दिन जोर चढतो गयौ । ग्रजमेर राठौड महेस घडसीहोत नु पटै दियौ । डीडवाणौ लीयौ । डीडवाणौ राठौड कूपै महैराजोत नु पटै दीयौ । सहैंभर लीवी । राव रा कामदार ग्राय-ग्राय साभर वैठा ।—नैणसी

सहैर—देखो 'सहर' (रू भे.)

उ०—मेडतौ गाव सोह पडायौ, रावळा घरा रा खेत कीया । सहैर नाडी दीराणी कन्है वासवाणो कीयौ थौ कहै छै वईक ढुढा हुवा था । सहैर रौ नाव नवौ नगर दीयौ थौ । —नैणसी

२ संकुचित किया हुआ, संकीर्ण किया हुआ। ३ बन्द किया हुआ (दरवाजा) ४ आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ।
(स्त्री साकडियोडी)

साकडीलौ, साकडीलौ-स पु —१ सकरापन, तंगी, स्थानाभाव।
२ कमी, अभाव।
३ संकट, आपत्ति।
४ दबाव, प्रभाव।
५ लिहाज।
रू. भे —सकडाई, साकडाई, साकडेलौ।

सांकडै-क्रि वि.—१ संकट मे, आपत्ति मे।
उ०—१ प्रिथमी की रत्ती सारी प्रजा तो अनेका पेतै, देतै देस देसा मैं प्रदेसा सायै देस। करै रोग प्रेत-चाळो साकडै ऊवेल करै, पेतै व्याध टाळो इसी दूसरो न पेख।—बादरदान दधवाडियौ
उ०—२ वडावडी सासणा की सांकडै उवेल करै, सेस मुखा कीरती तो गावै सेमराज। थानथाना 'पद्म' कहै सदा दिपै जोत धारी, मात धिनो छत्रधारी मेहाई म्हाराज।—पदमजी बारहठ
मुहा.—साकडै घालणौ, साकडै लेणौ=मुसीबत या संकट में फसाना या डालना।
२ अचानक, अकस्मात।
उ०—अणचीतिया पाहुणा साकडै ही आय पूगा।—व भा.
३ पास मे, नजदीक, समीप।
उ०—१ दो ही वीर साकडै मिळिया दाव करता वनता हाडोनी कै मारग वहिया आवै। अर ओर भी दो ही तरफ रा प्रवीर जुदा-जुदा जुद्ध करता या दो ही महावीरा रै पाछै रहिया आवै।
—व भा.
उ०—२ ज्यू ज्यू दिन सांकडै आया मासी री काळजौ धुक धुक करण लागौ। जै की अणहोणी कै अजोगती बात व्हैगी तो......। उण सारू तो आभा सू सूरज टूटनै गिर जावैला।—फुलवाडी
उ०—३ कोट घेरियौ पैला कटका, अधिक साकडै आयौ। कै वेळा माता तै करनी, बीकानेर बचायौ।—बा दा
रू भे.—सकडै।

साकडैल-वि.—जबरदस्त, जोरदार, शक्तिशाली, बलवान्।
उ०—भडाया ओभाडा भाड काकडैल पर्व भूळा, साकडैल भडा मूळा अडाया सधीर। बीफरैल गुसैल कदेई तोल न आ वीजा, केई दातडैल जई गुडाया कठीर।—करणौ महियारियौ

साकडौ-वि. [स संकट] (स्त्री साकडी) १ निकट, पास, समीप।
उ०—कत घणी ही साकडौ, घेरौ घर रै दोळ। बाभी देवण हूलसै, सेला री घमरोळ।—वी स.
२ सकरा, तग, समीप।
उ०—१ खातोडा रै अमल गिवार जोडी जोरावर छोटयौ सांकडौ।
—लो. गी
उ०—२ किस विध साकडा मेरी मां की जाई जामण की जाई। हम घर सडी सांकडी राज बुलाऊ रे बीरा नेजारो बुलाऊ।
—लो गी
३ संकुचित।
उ०—१ संजोग सू ई अेक साकडा दायरा मैं आपानै जीवण जीवणौ पडै। आपारै जीवण री अदीठ मैं जका लोग वसै आप आपरो जीवण गाळरै, साग सू मिळाप नी व्हैणौ—आ ई तो संजोग री बात है।—फुलवाडी
उ०—२ थारी मामी री ध्यान साव ई साकडौ है बेटी! म्हारी सीख मानै तो अेकर इण अण नै ठौ पार पटकणौ इ है। आ अण पूगी व्हिया ई थारै म्हारै वदळा री बात री जोग सजैला।
—फुलवाडी
उ०—३ गुमानजी रो साध पेमजी, हेमजी स्वामी नै बोल्यौ—हेमजी तीन तूबडा वधना हुता तै सूत्र फोड न्हाख्या। जद हेमजी स्वामी कह्यौ—इणा साहि थी नीकलनै नवो साधपणो पचख्या नै तो घना दिन थया, अनै तीन तूबडा वधना पटक्या कहो नै किण कारण? जद पेमजी कह्यो—ढीला पडया पा सो साकडा हुँता हुँता हुम्या। पछै हेमजी स्वामी भीखणजी स्वामी नै कह्यौ—महाराज! आज पेमजी इसी बात कही—ढीला पड्या सो साकडा हुँता हुँता हुम्या। जद स्वामीजी बोल्या—थे यू क्यू नही कह्यौ। किणही जावजीव सीत आदरयो। इम महिना पछै बोल्यौ—एक स्त्री म्है आज छोडी। जद किण ही कह्यौ—थे आदरया नै तो घणा महिना थया है नी! जद नै बोल्यौ—ढीला पड्या हा सो साकडा हुँता हुँता हुम्या।—भि. द्र
४ कठिन, दुष्कर।
उ०—१ किणही पूछयो थारो इसो साकडो मारग किता बरस चालतो दीसै है।—भि द्र.
५ भयभीत, डरयुक्त।
उ०—मासी रै मूडा री वात सुणनै व्हियां गैली ई छव् चीनरा न्यारा न्यारा होय भीड रै लारै मनावता गिया परा। लोग मतै ई साकडा होय बोला बोला डरता धूजता गळियारा मांग्ही वहीर होवण लागा।—फुलवाडी
६ विकट, विषम।
उ०—ऊपडी जरद्दा कडी मडी चडी नेत ईसै, रथा चडी भडी भडी वरै सूरा रभ। साकडी बणता घडी बाकडी बजावै सार, खळा वडी वडी कीधी भालै अडीखभ।—रायसिंह भाला री गीत
७ संक्षिप्त, छोटा।
उ०—कुसलौ तिलोक सकडाइ मैं चालवा लागा। अनै मन मैं जाणै भीखणजी रा स्रावका नै फेरा। परपणा साकडी करवा लागा।—भि. द्र
८ कमी और अभाव युक्त।

३ सिन्धियों के लिए आदरसूचक सम्बोधन।
४ सिन्धियों के लिए आदरपूर्ण सम्बोधनसूचक शब्द।
५ देखो 'सामी' (रू. भे.)
उ०—१ दादू तौ पिव पाइयै, कर सांई की सेव। काया माहि लखाइसी, घट ही भीतर देव।—दादूवाणी
उ०—२ समझाऊं सौ वार, समज रौ घाटौ साई। जगत कमावण जाय, मुरड बैठै घर माई।—ऊ का.
उ० -३ घू ग्रह ग्रास बालपण धारै, साई त्यां ततकाळ सभारै।
—र. रू
उ०—४ रति छह मेह ग्रणछेह दूजौ 'रयण', तेह राखण जुगा चार ताई। घरा वर दीयौ वग मिलयौ हुवै धरती, सुरपति जिसौ ग्रघपती साई।—छतरसिंघ हाडा रौ गीत
उ० —५ साई सू दिल दूसरा, सौ सतमिण सी नारि। हरिया उर इकतार बिन, वाकु ठाकुर मारि।—अनुभववाणी
उ० — ६ कवळी सगळा साथ, नही करडौ किण ताई। वरसा मैं वण मौन, समाधी लेवै सांई।—दसदेव
उ०—७ साई एहा भीचडा, मोलि महूगं वासि। ज्यां आछता दूरि भौ दूरि थरा भौ पासि।—हा झा.
रू भे.— साइ।

साईग्रार, सांईग्रार–स पु—१ वधिया, खसी। (वैन)
२ वधिया करने की क्रिया।
रू भे - सईयार, साईयार, साईयार, साईवार, साईवार, साईसार, सायार।

सांईणौ, सांईणौ, साईनौ—देखो 'साइणौ' (रू भे.)
उ०—१ चैत महीनौ चैन रौ, हुवा ज हालणहार। तग खेंची तुरिया तणा, साईणां सिरदार।—ग्रग्यात
उ०—२ तेज पुज ग्रव सुतण, हुवौ जस वेम झळाहळ। साईना सावियां, मिळ खेलै मझि मडळ।—सू. प्र
उ० —३ पुत्र रौ नाम जीमूतवाहन धरयियौ। जीमूतवाहन नू देख प्रजा खुस हुई। वडौ साईणौ रिसी रौ पुत्र मधुकर तियै रै साथ खेलता रमता घोडै चढि मलयाचळ गया।—वैताळ पच्चीसी
उ०—४ सादर साईनी आदर उमगाई, उडसी परिया सी बरिया घर आई। गोरी गज गामणि हसा गति हालै, चपा डाळी सी राळी भुजचाळै —ऊ का.
(स्त्री साईनी, साईणी, साईनी)

साईयार, साईयार साईवार, साईवार, सांईसार—देखो 'साईग्रार' (रू. भे)

सांऊ–स पु [स. श्यामक] कगनी या चने की जाति का एक प्रकार का घटिया अन्न। (डिं को)

साक—देखो 'सका' (रू भे)
उ०—१ साठि सहस्र वलि जेहनै, राक्षस पूरड पूठि। साक न राखै केहनौ, दूरि किया जिण दूठि।—वि कु.
उ०—२ पुण्य क्रतूत किया अति परिघल, सुरपति सबल पडी मन साक। पहुतउ सोम इद्र परिचावा, वरस्यू मुगति नही तुझ वाक।
—स. कु
२ देखो 'सकौ' (रू भे)
उ०—१ छात ढलतै जसू हुइ नाका छित्री। सांक तज साह सू करै साका। दाव पाका कीया सुजस ढाका दिया, जोध बाका करै नाम जाका।—ध व ग्र
उ०—२ सेल जमदाढ खाग वेवै धारी वाही सही, सजै झै दाई हरा रौ ग्रजारै खाई सांक। ग्रमी रेल ग्रमीराई पाई सौ दिखाई ग्राछी, ग्रडी राई धीठाई वळियौ ग्राडै ग्राक।
—करणीदान कवियौ
उ० — ३ गुण तीन दास पतिसाह गाइ, वेचिया प्रभु थारा विकाह। राजिया केई दीवाण राक, सुर कोडि तीस मुर करै साक।
—पी ग्र.

साकड–स पु [स सक्ट] सकट, विपदा।
वि.—१ सकीर्ण, तग।
२ कष्टमय, दुखमय।

सांकडणौ, साकडवौ–क्रि ग्र.—१ सकीर्ण होना, सकुचित होना।
क्रि स.—२ सकुचित करना, संकीर्ण करना।
३ बंद करना। (दरवाजा)
४ आक्रमण करना, हमला करना।
साकडणहार, हारौ (हारी), सांकड़णियौ—वि०।
सांकडिग्रोड़ौ, सांकडियोड़ौ, सांकड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांकडीजणौ, सांकड़ीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

साकडभीड, सांकडभीडौ–स. पु—सकरापन, तगी।
उ०—गुडिया ढाहे मदधगज, ताता चाळ तुरंग। साकडमीड़ौ सुरग व्है, जिकौ कहीजै जग।—वा दा.

साकडाई—देखो 'साकडीलौ' (रू भे.)

साकडाणौ, सांकडावौ–क्रि स—१ सकुचित करवाना, सकीर्ण करवाना।
२ बन्द करवाना। (दरवाजा)
३ आक्रमण करवाना, हमला करवाना।
साकडाणहार, हारौ (हारी), साकडाणियौ—वि०।
साकडायोडौ—भू० का० कृ०।
साकडाईजणौ, साकडाईजवौ—कर्म वा०।

साकडायोडौ–भू का कृ—१ सकुचित करवाया हुग्रा, सकीर्ण करवाया हुग्रा. २ वन्द करवाया हुग्रा (दरवाजा) ३ आक्रमण करवाया हुग्रा, हमला करवाया हुग्रा।
(स्त्री साकडायोडी)

सांकडियोडौ–भू का. कृ—१ सकीर्ण हुवा हुग्रा, सकुचित हुवा हुग्रा.

वाधती है ।

उ०—लाडू पेडा री सभाळ रिपिया-खोपरा री मनुवार ! साळचा नै वीटी छल्ला अर साळैत्या नै सूत साकळी, ढाढी-ढोल्या नै साफा अर पाग, नाया-भाया नै दस-दस रा वध्या नोट ।—दसदोख

३ हाथ मे पहनने का एक प्रकार का ग्राभूपरण विशेप ।

उ०—१ कोस्या कर ग्रही ग्रारसी, ग्रगमद तिलक वणावइ रे । हार्थ साक्ळी ए जानु कामि, कइ ग्राग मनावइ रे । – मालदेव

उ०—२ नथ री काळी डोरी सदा तणयोडी रैवती अर काजळ री कूपली चादी री साकळी मैं पोयोडी डावा खाधा पर सू छाती पर हरदम लटकती रैवती ।—रातवासौ

४ पैर मे पहनने का एक प्रकार का ग्राभूपरण विशेप ।

उ०—पछइ तली मुकट तिलक कुडल हार दोर वीरविलय ग्रगद वहिरखा नवग्रहा मुद्रडी हथसाक्ली पगनी साकली प्रमुख पहिराया ।
—व स

५ हिन्दु स्त्रियो द्वारा कार्तिक मास मे किया जाने वाला व्रत विशेप ।

वि वि.—यह दो प्रकार का होता है—(१) कृष्ण साकली और (२) राम साकली । इस व्रत मे महिलाएँ पहले दिन निराहार उपवास तदन्तर दो दिन तक एक समय भोजन करती है। इसी क्रम से चतुर्दशी तक करती हैं एव पूर्णिमा स्नान की समाप्ति पर निराहार उपवास करती है ।

६ [स सकलिका] सग्रह ।

७ जोड, योग । (उ र.)

८ देखो 'साक्ळ' (रू. भे)

उ०—तठा उपरायत पताखा सू बादळा छोडजै छै। सू किण भात रा बादळा छै ? हळवदरा, मोरवी रा, अजार रा, भरवछरा, हालोर रा छै। रूपै री टूंटी साक्ळी लागी छै ।—रा सा सं

९ देखो 'साकळी' (रू भे)

उ०—धरती उपरि धाम सडि, साकळिया री सोक । जुगति पखौ जागर करै, मुख ता बोलै फोक ।—वोल्होजी

साकळौ–स पु —१ पैरो मे पहिनने का एक ग्राभूपरण विशेप ।

२ कठ मे धारण करने का एक ग्राभूपरण विशेप ।

३ बडा व मजबूत शृखल ।

रू भे —सकळो, साकळउ, साकलउ ।

साकरयौ —१ देखो 'सख' (अल्पा, रू भे.)

२ देखो 'सखियौ' (रू भे)

साकास्य–स. पु [स साकाश्य] १ यम की सभा मे रहने वाला यम का उपासक एक राजा।

२ देखो 'साकास्या' (रू भे)

सांकास्या–स स्त्री —जनक के भाई कुशध्वज की राजधानी ।

रू भे —साकास्य ।

साकाहुळी, साकाहुली—देखो 'साखाहुळी' (रू भे.)

साकियोडौ —देखो 'सकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री साकियोडी)

सांकीधर–स पु.—विपपेयी, शिव ।

उ०—साकीधर सहमकर वभीग्रर साभळो, राव कमध भाजतै माथ रहियौ। दइत दळ ग्राप दळ नकी हर तर दाखियौ, करदै पडवै नको कहियौ ।—दुरसौ ग्राढौ

साकुडणौ, साकुडबौ—देखो 'सकुडणौ, सकुडबौ' (रू. भे.)

साकुडणहार, हारौ (हारी), साकुडणियौ –वि० ।

साकुडिग्रोडौ साकुडियोडौ, साकुडयोडौ—भू० का० कृ० ।

साकुडीजणौ, साकुडीजबौ —भाव वा० ।

साकुडियोडौ —देखो 'सकुडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री साकुडियोडी)

साकुडणौ, साकुडबौ —देखो 'सकुडणौ, संकुडबौ' (रू भे)

उ०—१ कपोलविच्छाया नायका निम्पास मेल्हइ, नेत्र साकुड्या, नयन सजल हुग्रा, ग्रोस्ठ मिलाणा, चित्त चचल हुउ, चद्रमानी कला जिसी राहुइ ग्रसी हुइ, व्याघ्राकाता ग्रगी हुइ जिसी, दवि दाझती वनलता.. . ... ।—व स

उ०—२ .....प्रलयकाल तउ नीरनी हुई, वीछीना ग्राकडानी परि वाकुडी, कूड कपट करी सांकुडी, कुलक्षण तणी ग्रांकुडी, इमि सरवाधम स्त्रीजाति जाणवी, ग्रावरत ससयानामविनय ।
—व. स

उ०—३ . . .. दारिद्री लोक सीतइ कापड, सकल लोक ग्रगीठै तापयइ, टाढि हडवा खडइ राति मरि जिम साकुडइं स्वाननी परि कुणइ, हाथ पाय ग्रागुली चणमणइ, हेमतै दधिदुग्ध-सरपिरसना । –व स.

साकुडणहार हारौ (हारी), साकुडणियौ –वि० ।

साकुडिग्रोडौ, साकुडियोडौ, साकुड्योडौ —भू० का० कृ० ।

साकुडीजणौ, साकुडीजबौ —भाव वा० ।

साकुडियोडौ—देखो 'सकुडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री साकुडियोडी)

साकुल्यौ साकुल्यौ, साकूल्यौ, साकूल्यौ —१ देखो 'सख' (अल्पा; रू भे)

मुहा —गया तो गगाजी पर लाया साकूल्यौ=उपयुक्त स्थान पर जाकर भी उपयोगी वस्तु नही लाना ।

२ देखो 'सखियौ' (रू भे)

साकेतिक–वि [स.] सकेत या इशारे से सम्बन्धित ।

साकेळौ, साकेलौ —देखो 'सकेळौ' (रू भे)

उ०—अस चालव धमण जागवी ग्रहरण, साजन कर असमर कर साप । सात्रव लोह ताप साकेलौ, तै काटिया सू हेकण ताप ।
—तेजसी सादू

उ०—जद रुघनाथजी बोल्या—म्है तौ साध हा। म्हारै कठै कहणौ है रे? म्हारै तौ मून है। जद रामचंद बोल्यौ—थारै नहिं कहणौ तौ उवै किम कहसी? था विचै तौ उवै साकडा चालै। मोटा हौयनै काइ लोका नै लगावौ हौ। चरचा करणी ह्वै तौ न्याव री चरचा करौ।—भि. द्र

स. पु.—१ कष्ट, संकट, आपत्ति।

उ०—१ कमर बाधिया तूण सारंग गहिश्रा करा, सुकर खग दान जेहान ऊचासरा। सुचित थका जना निवारण साकडा, वाह रघुनाथ लका लियण वाकडा।—र ज. प्र

उ०—२ असपत इंद्र अवनि आहुडिया, घारा भडिया सहै धका। घण पडिया साकडिया घडिया, ना धीहडिया पढी नका।

—दुरसौ आढौ

२ सकट, भय।

रू. भे—सकडौ, सकडौ।

सांकडउ, साकडौ—देखो 'साकडौ' (रू भे) (उ र)

साकणौ, साकवौ—देखो 'सकणौ, सकवौ' (रू. भे.)

उ०—१ साकिया राज राणा सकळ, अकळ पाण छिलियौ असुर। लहरीस जाण वारी लहै, गरज निवारी सीम गुर।—रा रू.

उ०—२ हणियौ तै जमदाढ हय, रौद सलावत रेस। साहजहा री साकियौ, आवखास 'अमरेस'।—वा. दा.

उ०—३ सूरा रण साकै नही, हुवै न काटल हेम। टूक करै तन आपणौ, काच कटोरा जेम।—वा दा

उ०—४ डावा कर ऊपर दुसट, कर जीमणौ करत। सौ लगाय मुख साकतौ, मावडियौ कुचरत।—वा दा.

उ०—५ वधियौ व्याज, सच साकियौ, खुरासाण हुता खडौ। तेत्रीस कोड चाडौ तुरै, चचळ सेत ऊपर चडौ।—पी. ग्र.

सांकणहार, हारौ (हारी), सांकणियौ—वि०।

साकिओडौ, साकियोडौ, साक्योडौ—भू० का० कृ०।

साकीजणौ, साकीजवौ—भाव वा०।

साकर-वि. [स शाकर] १ शकर से सम्बन्धित।

२ शकराचार्य से सम्बन्धित।

सांकरि, साकरी-स पु [स. शाकरि] १ शिव के पुत्र गणेश।

२ स्वामी कार्त्तिकेय।

३ अग्नि, आग।

४ एक मुनि।

५ शमीवृक्ष।

[स. शाकरी] ६ शिव द्वारा निर्धारित अक्षरो का क्रम, शिवसूत्र।

साकरच-स स्त्री. [स साकर्य] मिश्रण, मिलावट।

साकळ, साकळ, साकल-स. स्त्री. [स. शृखला] १ जजीर, शृखला। (डि. को)

उ०—१ मारियौ घणा मिळ सीह मडोवरौ, लाज साकळ सबळ पाय लागा। हाल सौ (ह) दिली उमराव आकल हुआ, ऊगरै राव जम राव आगा।—नरहरदास बारहठ

उ०—२ जाणै वल्लभ जीवणौ, कायर नाणै कोह। लोपै साकळ लोह री, लख रण नागो लोह।—बा दा.

उ०—३ अथ मदावर लोह नी साकल त्रोडि, आलानस्तभ मोडि, हस्तिसाल भाजि, पउतार गाजइ, कमाड फाडइ, मठ मदिर पाडइ हस्तिनी यूथ स्मरइ, व्यध्य मनमाहि धरइ, वन माहि साचरइ।

—व. स.

२ शरीर की हड्डियो का ढांचा, अस्थिपजर।

३ दरवाजे मे लगाने की सिकडी।

४ एक प्रकार का आभूषण विशेष।

वि वि—यह कठ, पैर और हाथ मे धारण करने का विभिन्न प्रकार की बनावट का होता है।

५ फोग की गठीली लकडी।

उ०—१ निकळै मिरडा लार, गटेली सूकी साकळ। धर कोटा रै ध्येय, पडी लद लकडचा वाखळ।—दसदेव

६ छप्पय का एक प्रकार का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे किसी शब्द की तीन बार आवृत्ति होती है।

रू भे.—सकळ, सकळि, सकलिक, सकली, सयकळ, साकळी, साकळी, सिंकुल।

साकळउ, साकलउ—देखो 'साकळौ' (रू भे) (उ र.)

साकळणौ, साकलवौ-क्रि स [स. शृखलनम्] साकल से बाधना।

उ०—१ गुडळियौ तोई गग जळ, खाम्बळियौ तोई दीह। खरौ विखायत 'खीमडौ', साकळियौ तोई सीह।

—आवळ खीमजी री वात

उ०—२ जो नथियौ तोई नाग, लियौ दरसण तोइ सकर। सांकळियौ तोइ सीह, वाघ पीजरै भयकर।—मालो आसियौ

उ०—३ तद फौजदार क्ही सगळा थारा साकळिया छै, सौ तू मन मनाय।—ठाकुर जैतसी री वारता

साकळणहार, हारौ (हारी), साकळणियौ—वि०।

साकळिओडौ, साकळियोडौ, साकळ्योडौ—भू० का० कृ०।

साकळीजणौ साकळीजवौ—कर्म वा०।

साकळियोडौ-भू का. कृ.—साकल मे बाधा हुआ।

(स्त्री. साकळियोडी)

साकळियौ-स पु—१ वह दोहा जिसकी तुकवन्दी प्रथम चरण से अन्तिम चरण मे मिलती है। इसका दूसरा नाम 'अंतमेल' है।

२ देखो 'सख' (अल्पा, रू. भे)

३ देखो 'सखियौ' (रू भे.)

साकळी, साकळी साकली-स. स्त्री.—१ कान मे पहनने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

२ वह आभूषण जो स्त्रिया 'बोरले' के नीचे तथा कनपटी के ऊपर

मुहा.—१ साग करना=फितूर करना, पाखड करना।
२ साग बणाणौ=रूप बनाना, मजाक उडाना।
३ साग लावणौ=१ धोखा देने के लिए कोई रूप धारण करना।
२ मनोरजन हेतु किसी की नकल करना।
रू. भे —सग, सगि, सागि, सागी।

सागडी-स स्त्री —वडे पत्थर उठाने वाले चवालियो का डडा।

सागडौ-स पु —१ लकडी का वह मजबूत डडा जिसके बल वैलगाडी या छकडे को खडा करके उसकी धुरी मे घी तेल या अन्य स्निग्ध पदार्थ लगाया जाता है।
२ देखो 'साग' (अल्पा, रू. भे)
उ०—जागडा झडा सत्र वीर सर गवीजै, ताप पड कागडा लक ताई। यर गढा सागडा दयण आयौ उछज, नागध्रह लागडा वीर नाई।—वदरीदास खिडियौ

सागणी-स स्त्री —तिलहन के पौधो की फली।
रू भे —सुघणी, सुघनी, सूघणी, सूघनी।

सागणौ-स. पु (स्त्री. सागणी) १ शकुन शास्त्रानुसार तितर आदि पक्षियो का दाहिनी ओर वोलना एव हिरण आदि जानवरो का दाहिनी तरफ होना।
२ दाहिनी ओर।
उ०—दासिया दौड आगू दखै, साथ बिराजौ सागणै। कणडोर छोड पूजा करण, पाल पधारौ आगणै।—पा प्र
३ देखो 'साघणौ' (रू भे)

सागतिक-वि [स] १ सगति का, सगति सम्बन्धी।
२ समाज का, सामाजिक।
स. पु [स. सागतिक] १ अतिथि, महमान।
२ अजनवी।

सागम—देखो सगम' रू भे)

सागर-स पु —१ शमी वृक्ष।
२ देखो 'सागरी' (मह, रू भे)

सागरी-स. स्त्री [स. सगर] शमी वृक्ष की फली जिसे उबाल कर प्रायः शाक बनाया जाता है।
उ०—१ चेत मैं कमनीय सागरी, लोग लगै कोडायता। ओथणा, अचार ओलवै, रळै रगीला रायता।—दसदेव
उ०—२ सूनी काकड। सूनी निंदरोही। जाडी खेजडी। जाडी छीया भूलती सागरिया। कठै वीदणी? कठै उण रा डाबर नैण? कठै उण रो रुपाळो उणियारो? कठै उण रा गुलाबी होठ?
—फुलवाडी
मह, रू. भे —सागर।

सागळणौ, सागळबौ-क्रि अ [स साकरयम्] १ जख्म का भरना, ठीक होना।
२ कुए मे 'सीर' द्वारा पानी का आगमन होना।
३ रुपये-पैसो की आमदनी होना।
सागळणहार, हारौ (हारी), सागळणियौ—वि०।
सागळिओडौ, सागळियोडौ, सागळ्योडौ—भू० का० कृ०।
सागळीजणौ, सागळीजबौ—भाव वा०।

सांगळियोडौ-भू का. कृ.—१ जख्म या घाव ठीक हुवा हुआ २ कुए मे 'सीर' द्वारा पानी का आगमन हुवा हुआ. ३ रुपये-पैसो की आमदनी हुई हुई।
(स्त्री. सागळियोडी)

सागवणौ—देखो 'सागणौ' (रू भे)
उ०—जीमणा हाथ कानी मू डावा हाथ कानी आवै सावठू नै सागवणौ कहीजै इण तरह सावठू ऊत्रेडा सागवणा मालाळा जाणीजै।—रा. व वि

सागवौ-स. पु —रथ, तागा आदि सवारी पर रखी जाने वाली मसनद को गुडकने व पडने से रोकने के लिए लगाया जाने वाला उपकरण।
उ०—चरखा पीढा सागवा भल पेई पिलाण पाचरा। हलवै भरचा कडाव हालै, ओग भूर री आचरा।—दसदेव

सागि, सागी-वि.—१ स्वाग लाने वाला, स्वागी।
२ ढोग व पाखण्ड रचने वाला, ढोगी, पाखण्डी।
उ०—जनहरीया सागी घणा, छाप तिल सिर केस। मसतग मूछा मूडीया, तन बदलाया वेस।—अनुभववाणी
३ वैलगाडी, रथ, तागा आदि मे वह छीका जिसमे छोटी-छोटी वस्तुए रखी जाती है।
४ वैलगाडी, रथ, तागा आदि मे गाडीवान के बैठने का स्थान।
५ देखो 'साग' (रू भे)
उ०—परठइ सागि लागि लोहडानी, प्राण करेवा लागइ। हलहल करि बिहु पखि विलगई, मोटी मूरति नागइ।—का. दे प्र.

सागीआई—देखो 'सागीयाई' (रू. भे.)

सागीत—देखो 'सगीत' (रू भे)
उ०—रजा ब्रह्म री रूप अन्नेक रम्मै, घणा वाजणा घूघरा घम्मै घम्मै। घटा भद्द ज्यौ नद्ध आनद्ध घोरै, धुबै ताळ कसाळ सागीत घोरै।—मे म

सागीयाई-स स्त्री —१ भाटियो द्वारा गले मे धारण की जाने वाली सोने या चाँदी की मूर्ति जो उनकी ईष्टदेवी की छ बहिनो व एक भाई सहित है।
२ आवड माता का नाम।
वि. वि —यह भाटियो की ईष्टदेवी है। भाटी आवड माता की, छ बहिनो व एक भाई सहित, सोने या चादी की मूर्ति गले में धारण करते है।
काठियावाड के वल्लभीपुर नामक नगर के साउवा शाखा के

सांकौ—देखो 'संकौ' (रू. भे.)

उ०—पछै राणौ कूंभौ, रिणमलजी माडवगढ ऊपर आया। ताहरा भीतरला पण सांकौ राखियौ। ताहरा महिपै पमार नूं वा कह्यौ—हमैं म्हा सू राखियौ न जावै।—नैणसी

सांकृति, सांकृती—सं. पु [स सांकृति] १ यम सभा मे उपस्थित यम का एक उपासक।

२ अत्रिवंशीय एक ऋषि जिन्होने अपने शिष्यो को निर्गुण ब्रह्म का उपदेश दिया था।

३ विश्वामित्र-ऋषि की पत्नी का नाम।

सांखडि, सांखडी—वि. [सं संस्कृतिः] परिमार्जित, शुद्ध, साफ। (उ. र.)

सांखला—स. स्त्री—पवार वंश की एक शाखा।

सांखलौ—स. पु—पवार वंश की सांखला शाखा का व्यक्ति।

सांखहडौ—स. पु.—चौहटा। (सभा)

सांखायन—सं पु, [स. शांखायन] एक प्रसिद्ध आचार्य जिसने सांखायन ब्राह्मण की रचना की थी।

रू भे—सांख्यायन।

सांखाहुली, सांखाहोळी—देखो 'संखाहुळी' (रू. भे.)

सांखिक—वि [स शांखिक] १ शंख सम्बन्धी।

२ शंख का बना हुआ।

३ शंख बजाने वाला।

४ शंख बेचने वाला।

सांखूल्यौ, सांखूल्यौ—१ देखो 'संख' (अल्पा; रू. भे) (डिं. को)

२ देखो 'संखियौ' (रू भे)

सांखोटा—१ देखो 'संख'।

२ देखो 'संखियौ'।

सांखौ—स. पु—चारपाई की बनावट मे वान की लडियो का वह समूह जिसके मध्य मे होकर बुनावट के लिए लडी को खींचा जाता है।

उ०—घरा जाय लुगाई नै कहि, अजैगाळ गोटा च्यार-पाच लेय खाधा। झाफरकै झड लागो सू मांचै मांहैं ही ज मैंदाना वैठो सांखौ फाड राखियौ।—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

सांख्य—स पु. [स] १ महर्षि कपिल द्वारा प्रतिपादित हिन्दुओ के छः दर्शनो मे से एक। इसमे प्रकृति को ही जगत का मूल कारण माना गया है।

उ०—कूवौ दरसण ग्यान, योग भक्ति है वारी। सांख्य नाळ गभीर, निरीस्वर सस्वेस्वर भारी।—दसदेव

२ अत्रि नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का एक नाम।

३ सख्याए आदि गिनने की क्रिया।

वि.—१ सख्याओ से सम्बन्धित।

२ शंख सम्बन्धी, शंख का।

सांख्यजोग, सांख्ययोग—स. पु. [स. सांख्ययोग] ऐसा सांख्य जो अच्छी तरह चित्त शुद्ध करके और पूरा ज्ञान प्राप्त करके सच्चे त्याग के आधार पर ग्रहण किया जाय।

उ०—सांख्यजोग निज ग्यान कहीजै, सार असार विछांणे। मिथ्या त्याग सत्त की सग्रह, औ विहग राह निरवांणे।

—श्रीहरिरामजी महाराज

सांख्यायन—स पु. [स.] १ सनत्कुमार ऋषि का शिष्य व पाराशर व वृहस्पति के गुरु का नाम।

२ गायत्री नामक वैदिक सूक्त द्रष्टा का पूर्वज एक ऋषि।

३ देखो 'सांखायान' (रू भे.)

सांख्यिक—वि. [सं.] सख्या या गिनती से सम्बन्धित।

सांख्यिकी—स. स्त्री [स.] १ एकत्रित सख्याओ के आधार पर निष्कर्ष निकालने की विद्या।

२ उक्त प्रकार का शास्त्र।

३ एकत्रित सख्याएं।

सांग—वि. [स.] १ अगो व अवयवो सहित।

२ परिपूर्ण।

स. पु.—१ हविर्धानि वंशीय गय नरेश का एक नाम।

स. स्त्री. [सं शक्ति] २ भाले से मिलता-जुलता एक प्रकार का शस्त्र विशेष जो फेंक कर काम मे लाया जाता है, शक्ति।

(ना. डिं. को.)

३ एक प्रकार का भाला विशेष जो ६ फुट ४ इच लबा होता है यह जोड रहित शुद्ध फौलाद का बना होता है। इसके ऊपरी भाग का नुकीला हिस्सा ९ इच लम्बा व $1\frac{1}{2}$ इच चौडा होता है।

(डिं को)

उ०—१ औरा रा कर औरठै, पडिया पाडै वाग। जीव पखै ऊभा जठै, सखी घणी री सांग।—वी. स.

उ०—२ इतरै इको घोडौ हजार पाच सु चढीयो आयौ। हाथ मे सांग मण एकरी लीया थका आण पोहतौ।—रा सा. स.

४ लोहे की मोटी छड जो भार उठाने या पत्थर की भारी पट्टी को उथलने के काम आती है।

उ०—सांग हूंत सरकाय नर, भाटी सौ मण भार। हस्ती किम नह डोलणौ, सांग लेय सिरदार।—रैंवतसिंह भाटी

५ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। (अ मा.)

६ देखो स्वांग' (रू. भे)

उ०—१ रावळिया रामत रामत समैं, मावडियौ लै सांग। तौ रतना पातर तणौ, सखरौ लावै सांग।—बा. दा.

उ०—२ जिकै अलवेला ठाकुर जुवान तिकै केसरिया वागा पहिरै बैठा था त्याह वेगिदै सघळा ही वगतर पहिरया। ताकौ द्रस्टात जैसै बहुरूपिया सांग बदळै। त्यूं सैं सांग बदळि गया।

—वेलि टी

अल्पा, रू. भे.—सांगडौ।

क्रि प्र—करणौ, बणणौ, सजणौ।

छै।—पचदडी री वारता

उ०—२ मिळ दुस्टी आज, पाळ अनादी पालटै। लाजै कुळरी लाज, सांच रखाज्यौ सावरा।—रामनाथ कवियो

उ०—३ वडा गुणा मानी गई थू, सबळ सक्ति सिरमोड है। नमा खमा आच बळिहारी, नारी साच निचोड है।—नानूराम सस्करता

साचभूठकर, साचभूठकर–स पु यौ.—व्यापार, वाणिज्य।
(डि को)

साचणौ, साचबौ–क्रि स —१ सचे बनाना।

२ सचे से कोई वस्तु ढालना।

३ देखो 'सचणौ, सचबौ' (रू भे)

उ०—... . परीक्षासुद्ध रत्नजाति लीजइ, परदेसी वस्तुना आथ पूछीइ, वाणुत्रना लेखना टीपणा सभालीइ, प्रदेसकारिणी वासण साचीइ, लेख लिखीइ,. . .।—व स.

साचणहार, हारौ (हारी), साचणियौ —वि०।

साचिओडौ, साचियोडौ, साच्योडौ —भू० का० कृ०।

साचीजणौ, साचीजबौ—कर्म वा०।

साचरणौ, साचरबौ—देखो 'सचरणौ, सचरबौ' (रू भे)

उ०—१ वप लोहा अपछर हम वरियो, सिवमाळा खेचरि रत सरियौ। 'आमा'हरौ सुरा आचरियौ, सुज हरि जोत मुगति साचरियौ।—गोकुल राठौड री गीत

उ०—२ चादा थारी निरमळ रात सइयां म्हारी हो, चांदा थारी निरमळ रात नणदल नै भोजाइ सैला सांचरी।—लो. गी

उ०—३ काळा निरजीव अर भुरगा कोयला मैं वासदी रो परस पाता ई जिण भात जीवण सांचरै, वै जगामग करण लागै, उणी भात काली मासी इण बाळ कन्हैया रै जलम पछै जगमग जगमग करण लागी।—फुलवाडी

उ०—४ थारी देह री रगत पीय, नौ महीना कूख मैं लुटियौ, उण सारू अेकर ई दया कै नेह नी साचरियौ। थू इत्ती निरमोही कीकर व्हैगी।—फुलवाडी

उ०—५ सूरज रो पंथ उजाळण सारू आखी दुनिया मैं मधरौ मधरौ उजास साचरियौ अर बादळ री पथ उजासण उगूण दिसा सू परजळतो सूरज ऊगियौ।—फुलवाडी

साचलौ—देखो 'साचौ' (रू भे.)

उ०—वा सापरत नी आती तो ई ठीक रैवतो। इण सांचली बाथा माय आवण सूं तौ म्हारा सदेसडला ई चोखा हा।
—तिरसकू

साचव, साचवट–स स्त्री —सच्चाई, सत्यता।

उ०—तद वा देखनै कहियौ। गोळी री तो न देणी। इण लोड री भी मजबूती देखणी। साचवट सू अगौ-अग बाकार नै मारणी।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

साचाणी—देखो 'साचाणी' (रू. भे.)

उ०—१ साथणिया खिलखिलाहट सू चावटा नै भर दियो अर वा साचांणी भेंपगी। एक साथण हसती हसती बोली— किण नै पाछो भेजियो अै धापू।—रातवासौ

उ०—२ सेसनाग री बेटी बीनणी री वात सुण नै अणूतौ राजी व्हियौ। कह्यौ—बीनणी री समझ तौ साचाणी दुनिया मैं बखाणं जैडी ई है।—फुलवाडी

साचाई—देखो 'सत्यता' (रू भे.)

उ०—निस्कपटता स्रद्धा, सरलता अर साचाई। विनयी सात सुभाव, धीर वर अध्यवसाई।—टाबर सईकडी

साचारिक, साचारी–वि. [स साचारिक] १ सचार सम्बन्धी।

२ सचार करने वाला।

साचियोडौ–भू. का कृ —१ सचे बनाया हुआ. २ सचे मे ढाल कर कोई वस्तु बनाया हुआ. ३ देखो 'सचियोडौ' (रू. भे.)।

(स्त्री साचियोडी)

साचियौ–स पु.—१ साचे बनाने वाला कारीगर।

२ साचे मे ढालकर वस्तुए बनाने वाला कारीगर।

साचिलौ—देखो 'साचौ' (रू भे)

साचेलौ—देखो 'साचौ' (रू भे.)

उ०—१ सेठ इण वरदान री साचेलौ सार नी समझ सक्यौ तौ ई सेसनाग रै बेटा रा मूडा सू आ बात सुणनै वै मनाग्याना विचार करियौ कै म्हनै इण मैं जोखौ ई काई।—फुलवाडी

उ०—२ दलाल कैवौ—हा जागती जाणसी कै साचेलौ मोवत अर हिरदै री हेत इसौ हुवै। आप अबै न्हावी-धोवौ करल्यौ। फुरती सू तेल-फुलेल लगायल्यौ। गैणा-गाभा पैरल्यौ अर वेगा सा नीचा पधारौ।—दसदोख

उ०—३ साचेलौ गुरु घणी, दूसरा ठग पाखडी। साधू महत फकीर, वेस धर घाप घमडी।—नारी सईकडी

(स्त्री साचेली)

साचोडौ—देखो 'साचौ' (अल्पा, रू. भे)

(स्त्री साचोडी)

साचोट–स. स्त्री.—सच्चाई, सत्यता।

उ०—घणी भाजा-दोडी करी, पण मामलै री जीत तो भुगाने री साचोट मे रैयी।—दसदोख

साचोरा–स पु —१ एक जाति विशेष जो अधिकतर साचोर मे निवास करती है तथा अपने को पचद्राविड के अन्तर्गत ब्राह्मण कहती है।

२ चौहान वश की एक शाखा।

साचोरी—देखो 'साचोरी' (रू. भे)

साचोरौ–स. पु —साचोरा जाति का व्यक्ति।

साचौ—देखो 'साचो' (रू भे.)

उ०—१ तक लीधी सोना तिसौ, पातरवाळो प्रेम। ज्या साचौ कर जाणियौ, कहो न दे धन केम।—बा. दा

चारण मादा के पुत्र मम्मट (मामड) की यह पुत्री थी। इसकी छः छोटी बहनों के नाम निम्नलिखित है—

इच्छा (आछी), चर्चिका (चाची), हुली (होल), रेव्वली (रेपली), गुली (गहली) और लछी (लागी या खोडियार)।

सिन्ध के अन्तिम राजा ऊमर सूमरा के अत्याचारी, धर्मभ्रष्ट व दुराचारी होने के कारण उसके वध हेतु आवड माता ने जाम लखियार की सेना के आगे साग (शक्ति) लेकर युद्ध किया था। अत: इसका नाम 'सागीयाई' पडा।

रू. भे—सांगीआई।

सांगुस्ट, सांगुस्ठ–स. पु [सं. सांगुष्ठ] अंगूठे सहित हाथ का पूरा पंजा।

उ०—आगळै प्रिया प्री चौथै आरंभि, फेरा त्रिण्हि इण भांति फिरि। कर सांगुस्ट ग्रहण कर सू करि, करि कमळ चापियौ किरि।
—वेलि.

सांगूणौ—१ देखो 'सागणौ' (रू भे.)

उ०—बाहर पधारता नेकाल घणी सखरी मनमानी माल्हाळी हुई। ऊपरां तुरत लाभ री सागूणी हुई। पहलै डेरै सुई-साझ ठावा बोलिया। झाझरकै निवासी बोलिया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'साघणौ' (रू. भे)

(स्त्री. सागूणी)

सागेळ, सागेळौ–स. पु [स साकल्यम्] बाहुल्यता, आधिक्य।

सांगोपांग–वि. [स साङ्गोपाङ्ग] १ सभी अंगों और उपांगों सहित, पूर्ण, पूरा।

उ०—सांगोपांग हि स्वर सहित, अक्षर सुद्ध उचार। स्रोत स्मारत सुधार कियै, आरयावरत उधार।—ऊ. का.

२ सुन्दर, मनोहर।

उ०—उदरि थिकी उतपति करी, सांगोपांग सरीर। उदरि थिका पायू अमी, आदि ऊपायु सीर।—मा का. प्र.

३ उत्तम, श्रेष्ठ।

४ भीड-भडाके सहित।

उ०—सेवट झोड-झपाट करता करता मोची ई सार्थे टुळग्यौ। बादळ तौ सांगोपांग मेळा रै सार्थे राज-दरबार में जावणौ चावतो हो। उणरै तौ भरै पडती इज गी।—फुलवाडी

क्रि वि.—भली प्रकार से अच्छी तरह से।

उ०—सावळ गढ रै ज्वांनगों में सेठ-साहुकारा री माल-मता रौ सत्ता सरूप सांगोपांग ठा'पड रैयो हो। हाट बजार री अर सुनारा री हटडै री सोभा देख'र बगना री आंग्या खुली री खुली रैवै ही।—दसदोख

सांगौ—देखो 'सांगो' (रू. भे)

उ०—झटपट छोड जगत का धामा, लटपट चरणा लागौ। सिर पर हीर लांघियौ चावो, तौ कर सतगुर जी रौ सांगौ।

—श्रीहरिरामजी महाराज

साघणी—देखो 'सागणी' (रू. भे)

उ०—ठाकरा सेर तिन रा ज्यावौ काई ? तौ के साघण्या समेत कै कोरा।—अग्यात

साघणौ–वि. [स. सघन] (स्त्री साघणी) १ सघन, घना, गहरा।

उ०—इसी साघणी वनसपती मिळनै रही छै। जाणै दूसरी घटा छै। दरखता ऊपर मोर कुहक रह्या छै। सुवा केळ करै छै। तूती बोल रही छै लाल हाक मार रह्या छै।—रा. सा. स.

२ समीप, पास।

उ०—जका लोथियां रा पगथिया कर कर घणा हेतू भाई भतीजा बाप बेटा उपरा पग धरता अर घणौ हरख करता कोट में पहुण नु धावै छै। त्या ऊपरा आछरा रा विमाण घणा साघणा अड-वडै छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ अधिक, ज्यादा।

उ०—१ भड पूतारै आपरा, धारै सामधरम्म। 'भाण' तणौ अम भेळिया, दळ साघणौ दुगम्म।—रा. रू

उ०—२ दळा बिच हुवौ होळी खळा निरदळै, सीस भाजै वहै साघणा सार। तेणि जुधिठार झूझार दूजण' तणो, भड़ अपह सौहियौ आवरै भार।—सेवा दुरजणसालोत रो गीत

४ एक साथ, इकट्ठा।

उ०—१ साथ घणं साघणं, अणी जीमणं जवन्ना। उतमातो भाराथ, जाणि पाराथ करन्ना।—रा. रू.

उ०—२ सिरी गंग रौ नीर सनान साहू, दसतूर सिंदूर कप्पूर दारू। हुवै होम आमावरी धूप हूवै, घणा सायणा दीप सामीप धूमै।—मे. म

५ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—१ इसै जोम अणभंग दुहु तरफा दईवाणा। सजै मार सांघणी, वाहि असमरा उडाणा।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ अणी फूल ऊपरा, झोकि कडड भळाहळ। मझगट साघणी, वाहि साबल बोजूजळ।—सू. प्र.

क्रि. वि.—६ आदरपूर्वक, सम्मान के साथ।

ज्यू—अठै तौ रामौ सावळ बोलै पण घरै गया साघणौ नीं मिळियौ।

७ देखो 'सागणौ' (रू. भे)

रू भे.—सांगूणौ, साघुलौ, साघणौ।

साघुलौ—१ देखो 'सावणौ' (रू भे)

उ०—मोटइ सत महि माहि अचलेसर आयइ हुवड। मीरण हरि हुइ सावुली, बहुवा नि करि विवाहि।—अ. वचनिका

२ देखो 'सांगणौ' (रू. भे.)

साच देखो 'सत्य' (रू. भे) (अ मा, हि को)

उ०—१ तिण नू मुवा री उगाव छै। तद्दा गुरु कहियौ सो साच

हरीया मन मरि रह्यौ, हस गयौ सर हालि ।—अनुभववाणी

२ खान ।

उ०—हरि हीरा मन जौहरी, हरीया हिरदौ गाठि । गाहक मिळीया सू मिळै, हरि हीरा की साठि ।—अनुभववाणी

३ सधि ।

उ०—है जाळधरवध मैं मन पवना की गाठि । हरीया मिळै उतान मैं, सुरति सबद की साठि ।—अनुभववाणी

साठौ, साठौं–स पु. [स साष्टिक] १ ईख, गन्ना ।

उ०—अेक रात गेहूआ रा खेत अोर साठा री वाड मै रहियौ ।

—डाढाला सूर री वात

२ ज्वार के पौधे का डंठल ।

३ ईख का डठल ।

मुहा.—साठै ताई चावणौ—अन्तिम स्थिति तक अनुभव करना ।

४ देखो 'सेंठौ' (रू. भे.)

रू. भे —सहटौ, साटौ, सेंटौ, सेंठौ ।

साड–स पु. [स पण्ड] १ वह बछडा जो नस्ल सुधार करने के उद्देश्य से बिना खसी रखा गया हो । (उ र.)

उ०—वाह वाह वारठजी भली कही । मन री लही । हुकम किग्रा । जागडिग्रे वडा राग माहे दूहा दिग्रा । परिजाऊ दूहा । वेगडा साड धवळ रा दूहा । अेकलगिड वाराह रा दूहा ।

—र. वचनिका

२ वह बछडा जो हिंदुग्रो मे किसी मृतक की स्मृति मे गुरुड पुराण की समाप्ति पर दाग (चिन्हित) कर यो ही छोड दिया जाता है । वृषोत्सर्ग वाला बैल ।

उ०—समुद्रखारउ, वादल कंटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन वोलणउ, सुणह भसणउ, ससउ नासणउ, राणउ लेणउ, स्त्रीस्वभाव लाडणउ, साड ग्राडणउ, कुमित्र फाडणउ, दुरजन दुस्ट, स्वजन सिस्ट, ग्रागि गाती, धाहु राती ।—व म

पर्याय.—ग्राकल, जेगडौ, तरण, नोपत, मदक ।

मुहा —१ साड सौ कोस जाय तोई ग्राक धणी रौ=मालिक की वस्तु मालिक से कितनी ही दूर क्यो न हो उसका सम्बन्ध नही मिटता है ।

२ साड किसा गोरा मैं रेवै=शूरवीर छिपे नही रहते ।

३ साडा री लडाई मैं वाटा रा खोगाळ=शक्तिशाली या समर्थ व्यक्तियो के झगडो में गरीबो का नुकशान होता है ।

४ ताडूकी क्यू कै साड हा, पोठा क्यू करौ कै गउ रा जाया हा=थोथी डींगें हाकने वालो के प्रति व्यंगात्मक कथन ।

३ वह घोडा जो नस्ल-सुधार के लिए रखा जाता है ।

वि —१ हृष्टपुष्ट, मोटाताजा ।

उ०—साडा ज्यू ग्रै साधडा, भाडा ज्यू कर भेस । राडा मैं रोता फिरै, लाज न ग्रावै लेस ।—ऊ का.

२ वीर, बहादुर ।

उ०—साड सोमाड जग जेठ ऊचासिरो, ग्रावळै थाटि 'दूदा' उजाळो । वळा सौ ऊजळा वेध वीठळ' हारै, करै ऊगै समा मेळ काळो ।—वनमालीदास रौ गीत

३ उन्मत्त, पागल ।

उ०—वेद न सुणियौ विमळ, भेद पाई तन भोयौ । सांड हुय रह्यौ सदा, राड राड हि कर रोयौ । न्याय न जाणं निठुर, निलज जाणी नहि नीती । निज नारी व्रत नेम, रूगड ग्राणी नहि रीती ।

—ऊ का.

४ बलवान, शक्तिशाली । (डि को)

५ शिव-वाहन, नदी ।

६ देखो 'साढ' (रू भे.)

उ०—साड्या रै भाई जलदी सांड पिलाण वेग पधारा राणी सीकरी रे देसमें जी म्हारा राज ।—लो गी

७ देखो 'साडौ' (मह, रू भे)

रू. भे —सड ।

ग्रल्पा,—साडियौ, साढियौ, साढीउ, सांढीयौ ।

सा'ड—देखो 'साढ' (रू भे)

साडइकीसी–स स्त्री —लडकी को दहेज मे दिया जाने वाला एक साड सहित बीस गायो का समूह ।

सांडघेरौ–स. पु —गेहूं, बाजरी, ज्वार ग्रादि की फसल का वह भाग जो साड के लिए खेत के मध्य मे फसल काटते समय छोड दिया जाता है ।

साडणी—देखो साढ' (रू. भे)

साडसउ–स. पु. [स सन्दश, सन्दशकः] १ चिमटा, सडासी ।

(उ र.)

२ जर्राही का एक ग्रौजार ।

३ एक नरक का नाम ।

साडाई–स. स्त्री.—ग्रक्खडपन, जबरदस्ती, जोरावरी ।

उ०—भुगानै री सगळी साडाई उतरगी । ग्राखी ग्रकड़ाई निकळगी । सीधौ गजबरगौ हुयग्यौ ग्रर मिनख नै मिनख सौ जाणण लागग्यौ । बीस पावडा ग्रातरै सू राम-राम करै ।—दसदोख

रू. भे.—सडाई ।

साडियौ–स. पु —१ सदेशवाहक, हरकारा ।

२ मादा ऊट की सवारी करने वाला ।

३ देखो 'साड' (ग्रल्पा, रू भे,)

रू भे.—साड्यौ, साढियौ, साढीउ, साढीयौ ।

सांडिल—देखो 'साडिल्य' (रू भे)

साडिली–स. स्त्री. [स शाडिली] १ दक्ष प्रजापति की पुत्री जो धर्म ऋषि की पत्नी व ग्रग्नि की माता थी ।

२ कौशिक ऋषि की पत्नी दीर्धिका का एक नाम ।

उ०—२ गाहै सोदै ग्राहका, ढाहै जै गज ढल्ल। लाहो लोटै वाणियो, आ है साची गल्ल।—बा. दा

(स्त्री. साची)

२ देखो 'सचौ' (रू. भे)

उ०—वेलण वेली बाह, लाल होठा रग भीनो। साचै ढळियो हीव, कवळ चुण कर मैं लीनो।—नारी सईकडो

साज, साजड़ली—देखो 'सध्या' (रू. भे)

उ०—१ दळ बादळ विच चमकै जी तारा साम पडै पिव लागै प्यारा। काई रे जवाव करू रसिया काई रे मिजाज करू रसिया।
—लो गी.

उ०—२ दिन दिन लेखण हाय म्हारी सुदर गोरी रे, साजड़ली पडी रे रोकड सारता हो राज।—लो. गी

साजउ–वि —सयत। (उ र)

साजणी–स. स्त्री. [स साग्रही, सयवनिता] वह गाय या भैंस जो दूध देती हो किन्तु किसी कारणवश उसका दूध न निकाला गया हो।

रू. भे —साझणी, सादणी, साघणी, संनणी।

साजत, साजति, साजती—देखो 'साजत' (रू भे)

उ०—१ अस चालव धमण जागवी अहरण, साजत कर असमर कर साप। सात्रव लोह ताण साकेलो, तैं काटिया सू हैकण ताप।
—तेजसी साद्

उ०—२ साजत समहर डाव सडासी, चख धिखता थहिया रग चौळ। अहरण अकस 'लाल' तिण ऊपर, घण त्रिजड़ा बाहै घमरोळ।—लालसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—३ ताहरा दरबार आगै रूख वाढण लागा, बुहरावण लागा। बिछावणा मोकळा मेल्हि मडना देखी कुवरजी गुमान कियो। इतरी डेरा री साजति घणी सी वधू।—द वि.

साजवण–स स्त्री. [स सयवन] १ परिवार, कुटुम्ब।

(वि वि देखो 'कबीलो')

२ रसोईघर।

साझ—देखो 'सध्या' (रू भे) (प्र. मा; उ. र, डिं को.)

उ०—१ अमल री पिक लागी अटल, सुख लूटै वै सुलखणा। सवेरा साझ दोनू समै, काझकझ नै कुलखणा।—ऊ. का.

उ०—२ हुवै चम्मरा झाटका जोति हूवै, सदा ऊतरै आरती साझ सूवै।—मे म

साझडली, साझड़ी—देखो 'सध्या' (अल्पा, रू भे.)

साझणी—देखो 'साजणी' (रू भे.)

साझनट–स पु [स. सध्यानाटी] शिव, महादेव।

सांझि, साझी–सं. स्त्री.—१ विवाह के अवसर पर घी पिलाने की रस्म से लेकर विनायक पूजा की रस्म तक नित्य सध्याकाल में गाये जाने वाले विवाह के गीत।

उ०—जैन धाम मचिया वडजोरा, गहरै सुर आई गिणगोरा। छित पर मिळमिळ छोरया छोरा, करदी साझी च्यारू कोरा।—ऊ. का.

क्रि. प्र.—लेणी।

२ मागलिक पर्व के कुछ दिन पूर्व नित्य सध्या के समय गाये जाने वाले मागलिक गीत।

उ०—साझी रे गाई साझी रे, म्हारी साझी हुया रगरेल रे। सघ सहु को हरखियउ, वाल्ह दीधा नवल तबोल रे।—स कु

३ देखो 'सध्या' (रू. भे.)

उ०—घरलीली घण पुडरी, घरि गहु गहई गमार। मारू देस सुहामणउ, सावणी साझी बार।—ढो मा.

४ देखो 'साझी' (रू. भे)

साझेदार—देखो 'साझेदार' (रू भे)

साझेदारी—देखो साझेदारी' (रू. भे.)

साझै—देखो संध्या' (रू भे)

उ०—साझै भूखा सोई, करै परभात वळोवळ। हाथऊ कूत उपाडि, मार ढाहै मोताहळ।—राव रिणमल री वात

साझौ—देखो 'साझौ' (रू भे)

उ०—दुख-सुख साझौ राख, साख साची भखावै। विमळ बुवारा वणी, धणी री धाक लखावै।—नारी सईकडो

साट—देखो 'साट' (रू. भे.)

उ०—जनहरीया कैसे मिळै, राम नाम की साट। गह धनाली बाहिरी, होय न सोदो हाट।—अनुभववाणी

साटगाठ—देखो 'साठगाठ' (रू भे)

साटै—देखो 'साटै' (रू भे)

उ०—१ पाचू ही प्रमारा सीस रै साटै दुरग दीधो।—व. भा

उ०—२ साम रै साथ सत्कार हू मिळायो थको सीस रै साटै स्वामी रो ही सासण प्रमाणै।—व. भा.

साटौ—१ देखो साठौ' (रू भे)

२ देखो 'साटौ' (रू. भे)

साठ—देखो 'साट' (रू भे)

साठगाठ–स स्त्री.—गुप्त एव दूषित सम्बन्ध युक्त षडयन्त्रकारी मेल मिलाप।

मुहा.—साठगाठ करणी=गुप्त एव गूढ उद्देश्यपूर्ण मेल जोल करना।

रू भे.—साटगाठ।

साठि, साठी–स. स्त्री.—१ तीर की डडी जहाँ तीर लगा रहता है।

उ०—१ सुअर घणा तीर बरछिया सू पूर हुवो। बरछिया रा फळ माहै टूट रहिया। तीरा री साठी टूटी, भाला री गास माही रही सो लोहा सूं पूर हुवो थको पार होय जा बरडी ऊपर खडो रहियो।—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ हरीया साठी सूरति की, सबद भळका सघ। खक धीरज करि ताणीयै, ताह मूकै मनवध।—अनुभववाणी

उ०—३ मारयो बाण सरीर मैं, बिण साठी बिव भालि। जन–

गद, गोवरधन ऊधरण कमळ लोचन नदन नद ।—ज. खि.
[स शाण] ४ सन का बना मोटा कपडा ।
[स शाण] ५ कसौटी का पत्थर।
६ आरा।
७ चार माशे के बराबर तोल विशेष ।
स स्त्री [स शान] ८ शस्त्रो को धार पैनी करने का एक प्रकार का उपकरण विशेष ।
उ०—असि धावक आविया, सस्त्र माजिया सताबी । सांणा चढिया सुक्र, फूल जडिया हद फाबी ।—मे. म
९ उत्तेजित करने वाले शब्द ।
उ०—अर च्यारि ही भाया समेत 'माधाणी' हाडो मुकुदसिंह, गोड अरजुनसिंघ, राठोड रतनसिंघ जिसडा जोधार काली रा कळस रणगळियार होइ हाथिया रै माथै हाथ करता साथिया रै साण लगावता साहजादा रै समीप हालिया ।—व. भा.
मुहा.—साण लगावणी=उत्तेजित करना, जोशयुक्त करना ।
१० गर्जन, ध्वनि।
उ०—पग पहरी सकत वाजणी पायल, नै प्राचइ आगळी नद ।
गोडीरव भाद्रवइ तणी गति, सेहरा ऊपरि साण सद ।
—महादेव पारवती री वेलि
११ देखो 'सान' (रू. भे.)
साणग्रह, साणघर—स पु. [स. शान+गृह] १ वह स्थान जहां शस्त्रो की धार पैनी की जाती है।
२ देखो 'स्नानघर (रू भे.)
सांणजी, साणजीव—स. पु [स. शान+जीव] सिकलीघर। (डि. को.)
सांणत—देखो 'सोणित' (रू भे.)
साणि—स. पु. [स शाणि] सन या पटसन ।
साणी, सां'णी—स पु [स. साधनिक] १ घोडो की देख-रेख करने वाला, तबेले का अध्यक्ष ।
उ०—इतरी कहायनै माहै आयौ, सो आगै साणी था हीज, तिसै घोडा पिलाण माड तयार हुवा । राजा मुहनौ दोनू असवार हुवा ।
—द दा
मुहा —माण्या रा वगस्या किसा घोडा बगसीजै=कोई अधिकार मे वाहर चीज कैसे दे सकता है या अनधिकृत व्यक्ति कार्य नही कर सकता ।
२ घोडो को शिक्षित करने वाला ।
उ०— ......सपतास कै सहोदर, लडा लूंबा मैं अथाग, तिल-वागू कै लीनै त्यावै पवनू की पाय, सांणियां नै भली विध सोरै खान कै पुलग साज तिण निजरू गुजराय, धजराजू कै समाज अत जातू कै अनेक सज .... .. ।—र रू
स स्त्री. [स. शाणी] १ कसौटी ।
२ पटसन का वस्त्र ।
३ छोटी कनात या तम्बू ।
४ फटा कपडा ।
५ शान का पत्थर ।
रू. भे.—साहणी, साहणी, साहाणी, सोणी ।
साणोर—स. पु.—डिंगल का एक मात्रिक (छद) गीत विशेष ।
वि. वि.—उक्त गीत के कई प्रकार के भेद होते हैं । जिनमे से मुख्य निम्नलिखित हैं .—वडो साणोर, छोटो साणोर, शुद्ध साणोर, प्रहास साणोर, वेलियो साणोर, खुडद साणोर आदि।
उक्त सभी प्रकार के गीतो से सम्बन्धित विस्तृत विवरण यथा-स्थान वर्णानुक्रम मे देखें ।
साणो, साणो—स पु.—१ नाज की कोठी से नाज निकालने का छेद, मोरी ।
२ उक्त मुह को वद करने का उपकरण ।
सात—वि. [स. शात[१ जो दवा दिया गया हो, दवाया हुआ ।
२ मरा हुआ ।
३ जिसका पूर्णतः अन्त हो चुका हो ।
मुहा.—शात होणी=मृत्यु को प्राप्त होना ।
४ सन्तुष्ट, अघाया हुआ ।
५ जिसमे जोश या क्रोधादि वेग न रह गया हो, स्थिर ।
उ०—१ सीख सात, कात सुर मीठी, मायड री मन भावणी ।
हसी अर असलील आदता, टाबर टग अणखावणी ।
—नारी सईकडो
उ०—२ निस्कपटता श्रद्धा, सरलता अर सांचाई । विनयी सांत सुभाव, धीर वर अध्यवसाई ।—टावर सईकड़ो
६ कोई मानसिक आवेग, रोग आदि का मिटना ।
उ०—गाळ न ऊठै गूमडो, ऊठै भाळ अकत्थ । जिणनू सज्जन वैण जळ, सात करण समरत्थ ।—वा दा
७ शिथिल, ढीला ।
८ अप्रभावित।
९ शुभ, मगलकारी ।
१० जिसने इन्द्रियो को वश मे कर लिया हो, जितेन्द्रिय ।
(डि. को)
११ चुप, मौन।
१२ उत्साह, उमगादि से रहित ।
१३ निस्तब्ध, निरव ।
उ०—दरवाजो ओढाळगो । होस्टल रा लाबा बरामदा माय सू जाण-बूझ'र निकळ्यो । सगळा कमरा सात पड्या हा ।
—तिरसकू
[स. श्रान्त] १४ थका हुआ, श्रान्त ।
१५ सोम्य, गम्भीर ।
उ०—अदभुत अमद सोभा समद, स्तुति सकल सार वरजित विकार ।

३ शाडिल्य ऋषि की स्वयप्रभा नामक तपस्विनी कन्या।

वि वि.—एक बार इसके आश्रम मे अतिथि स्वरूप गालव ऋषि एव पक्षिराज गरुड आये। इसने उनका यथोचित आदर सत्कार किया। सोते समय गरुड ने मन मे विचार किया कि इस तपस्विनी को अपने पखो पर बिठा कर विष्णुलोक ले जाना अति उत्तम रहेगा। इसी विचार के कारण एक ही रात मे गरुड के पख गिर गये। तत्पश्चात दोनो इसकी शरण मे आये तो इसने अनेक वर दिये।

साडिल्य-स पु [स शाडिल्य] १ एक देश का नाम।

२ शाडिल्य ऋषि के वशज।

३ बिल्ववृक्ष, बिल्वपत्र।

४ अग्नि का एक नाम।

५ एक ऋषि जिन्होने भक्ति एव विधि शास्त्र को बनाया था।

६ कश्यपवशीय महर्षि देवल के पुत्र एक ऋषि जो अग्नि के पिता थे।

७ एक ऋषि जिसे अवैदिक मार्ग से विष्णु की उपासना करने के कारण नर्कवास की शिक्षा भुगतनी पडी थी।

८ अग्नि का ज्येष्ठ पुत्र एव कश्यप का ज्येष्ठ भ्राता।

९ ब्रह्मदेव के सारथि का नाम।

१० एक शिव भक्त राजा जो युवावस्था प्राप्ति के पश्चात् काम-वासना मे लिप्त हो कर अनेक स्त्रियो के साथ अत्याचार करने लगा था अत शिव ने इसे एक हजार वर्ष तक कछुआ बनने का शाप दिया था।

रू भे.—साडिल।

सांडो-स. पु [स शाडिक, प्रा साडिअ] १ गोधा की आकृति का एक जगली जतु जिसका मास पौष्टिक एव स्वादिष्ट माना जाता है। इसकी चर्बी औषधियो मे काम आती है। इसका तेल भी निकाला जाता है।

उ०—१ धरती खारी जे'र निजर पूगै जितरै कठैई झाड-झोटकै नै घास-फूस रो नाम ई नी। इण धरती मैं साडा अर पीपूडी परडा घणी मिळै। बरसात रा दिना मे अठै पाणी भरीज जावै।
—रातवासो

उ०—२ राम नाम नही जाणियो, कीया और कळाप। हरीया जै घरि सपदा, होसी साडा आप।—अनुभववाणी

२ सग, साथ।

३ फसल की कटाई, बुवाई आदि के समय सामूहिक रूप से कार्य सलग्न व्यक्तियो को मजदूरी के साथ खिलाया जाने वाला भोजन।

४ देखो 'साड' (रू भे)

उ०—अरधगी हेम-पुत्री, सरपो कठेणि वाहणो साडो। सिता-नेत भाल चदो, तस्मै रुद्राय नमो।—गु रू ब

रू. भे.—सडो, साढो।

साड्यौ—देखो साडियौ' (रू. भे)

उ०—साड्या रै भाई जलदी साड पिलाण वेग पधारा, राणी सीकरी रै देस मैं जी म्हारा राज।—लो गी

साढ, साढ, साढि–स स्त्री —मादा ऊंट ऊटनी।

उ०—१ रावजी सलामत सवा पोहर दिन चढिया सोनिगरा कान्हडदे नै विस होसी। इसो साभलै नै राव लाखणसी कागद लिखनै वीरा राइका नै कह्यो। बोनाई साढ ताती छै। तिण चढनै जालोर जा। सवा पोहर दिन चढिया मोहर जाए। तोनै साबास देसा।—वीरमदे सोनिगरा री वात

उ०—२ सो इहा रै गाय भैस साढा रा वरग घणा। सो साढा रै लारै रैवारी रहै। सो अति अटावरा रहै, अपजोरा हालै। कही नु खातर मै न आणै।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ दिन दस-वीस आडा घात सैल-सिकार री नाव लै सत्ता-सर आया, असवार हजार-एक सूहडा सूं। हेरा दोय मेलिया, जो खवर ल्यावौ वरग सांढा रो कठै छै?
—कुवरसी साखला री वारता

उ०—४ एथ अमरै कल्याणमलोत पातसाही साढि ली हुती। ताहरा कुवर स्री दळपतजी नं राजाजी कहाडि मेल्हियौ जु अै साढि घेराए।—द. वि.

रू भे.—सढ, साइड, साड, साडणी, सा'ढ, सायढ, सायढ।

साढियौ, साढीउ, साढीयौ—१ देखो 'सढौ' (अल्पा, रू. भे) (डि को)

२ देखो 'साड' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'साडियो' (रू भे)

उ०—१ तरा साढियै उपरणी रो फररी कीया आवतो विरमदेजी री नीजर आयो। तरै कह्यो। ठाकुरै कोई ओठी ताती साढ खडिया आवै छै। तिमै साढीयौ पिण आय पोहतौ।
—वीरमदे सोनिगरा री वात

उ०—२ नितु नितु नवला साढिया, नितु नितु नवला साजि। पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेडण काजि।—ढो मा.

साढौ साढौ—देखो 'साडौ' (रू भे)

उ०—आणद अर सुख सू चानणी अर सूरज रा उजास मैं दोना रा दिन घुळण लागा, जाणै वारा सुख वास्तै ई चदरमा अर सूरज ऊगै। पण सुख-दुख, हरख-विसाद अर सजोग-विजोग रो अटूट साढौ। अेक दूजा विना कोई सपूरण नी।—फुलवाडी

साण-वि [स शाण] सन या पटसन का।

स पु [स. शाण, माडी, काजं] १ भोजन। (अ मा)

२ कमल।

३ धनुप।

उ०—मोर मुगट सिर जास कान केरढी कुडळ, वसन पीत तन स्याम गळै माळा गुजाहळ। भुज मुरळी चत्रभुज सख साण चक्र-

री काई करा। आपरी आट अर धत आगै किणी री सातरी बात ई मानै कोनी।—फुलवाड़ी

७ उपयुक्त, बढ़िया।

उ०—सफरी पकड़ण सातरौ, बैठो ढब बुगलाह। कथा बुरी करवा तणी, चोखौ ढब चुगलाह।—बा. दा.

८ तेज, तीक्ष्ण।

उ०—खीवरा हाथ बाणम खाम, बहुनीक जाण रोकी बनास। सातरा अती धाराक मेल, तारका भळभळै इणह तेल।—वि स.

९ ठीक, व्यवस्थित।

उ०—घोडा मारा नूं रातब दियौ। ताजा करौ। हथियार सारा सातरा करण लागा। बगतर, झिलम, जिरह-मूथण, जिरै जूता घोटा री पाखरा काढजै छै, सुवारजै छै।

—कूंवरसी सांखला री वारता

१० सुन्दर, खूबसूरत।

ज्यू—थारै हाथ री हथफूल कितौ सातरौ लागै।

साता-सं स्त्री. [स. शाता] १ राजा दशरथ की कन्या जो महर्षि ऋष्यशृंग को व्याही गयी थी।

२ रेणुका।

३ शमी।

४ एक श्रुति। (संगीत)

५ दूब, दुर्वा।

६ देवी का नाम।

७ भारद्वाज ऋषि की माता का नाम।

रू भे —साश्रता।

साताकारी-वि [स शातिकारिन, शातिकारी] शाति प्रदान करने वाला।

उ०—नमौ साताकारी अमर अघहारी हरी नमौ।—ऊ. का

सांति-स स्त्री. [स. शान्ति] १ वेग, क्षोभ, चिन्ता, दुख आदि से रहित अवस्था, शान्त होने की अवस्था।

उ०—दान योग यम दम, ध्यान, स्वाध्याय सरळता। सत्य अहिंसा त्याग, साति अति, खमा अदुलता।—टावर मईकदौ

२ स्थिरता, अपरिवर्तनशीलता।

३ आराम, चैन।

४ वह सामाजिक अवस्था जिसमे मार-पीट, लड़ाई-झगड़ा, उत्पात आदि का अभाव हो।

५ नीरवता, निस्तब्धता।

६ मृत्यु, मौत।

७ धीरज, धैर्य।

८ निष्कलक होने की अवस्था।

९ वासनाओं से मुक्ति, विराग।

१० सौभाग्य।

११ बचाव।

१२ अनिष्ट या अशुभ का निवारण।

१३ पीड़ा, रोग आदि से मुक्ति।

१४ युद्ध की समाप्ती।

१५ मेल, मिलाप।

१६ अघाने की अवस्था, सन्तुष्टी।

१७ दुर्गा देवी का नाम।

१८ दक्ष प्रजापति की कन्या व धर्म ऋषि की पत्नी का नाम।

१९ कर्दम प्रजापति एव देवहूति के ससर्ग से उत्पन्न पुत्रियो मे से एक, जो अथर्वन ऋषि की पत्नी थी।

स पु.—२० श्रीकृष्ण और कालिन्दी के ससर्ग से उत्पन्न पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

२१ वारुणि आंगिरस ऋषि के एक पुत्र का नाम।

२२ शिविवंशीय राजा अजमीढ के पौत्र का नाम जो सुशान्ति का पिता था।

२३ तामस मनु के एक पुत्र का नाम।

२४ ब्रह्मसावर्णि के इन्द्र का नाम।

२५ भगवान् यज्ञ एव दक्षिणा के पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

रू भे.—सति, सती, साती, सायत, सायति।

सातिक-वि [स शान्तिक] शान्ति से सम्बन्धित।

स पु.—शान्ति के कारण होने वाला परिणाम।

सांतिकर-वि. [स शातिकर] शाति करने वाला।

सातिकरम-स. पु [स शातिकर्म] प्रेत-बाधा, पाप, बुरे ग्रह आदि द्वारा अनिष्ट या अमगल की सभावना के निवारण का उपचार।

सातिकुंभ—देखो 'सातकुंभ' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

सांतिगह, सांतिग्रह, सातिघर-स. पु. [स शातिगृह] वह स्नानागार जहाँ यज्ञ के अन्त में पाप तथा अशुभ आदि की शाति के लिए स्नान किया जाय।

सांतिजिन-स पु.—वर्तमान काल के सोलहवे जैन तीर्थंकर, श्री शाति-जिन।

सांतिद, सांतिदाता सातिदायक, सातिदायी-वि [स. शातिदातृ] १ शाति देने वाला।

२ विष्णु भगवान्।

सांतिदेवा, सातिदेवी-स. स्त्री. [स शातिदेवा, शातिदेवी] देवक राजा की कन्या का नाम जो वसुदेव की पत्नी थी।

सातिनाथ—देखो 'सातिजिन'।

सातिपचमी-स स्त्री [स शातिपचमी] आश्विन शुक्ला पचमी।

वि. वि —इस दिन इद्राणी व कुश के बने १२ नागो की पूजा की जाती है। इससे नागो का भय जाता रहता है।

रू. भे.—सातिपाचम।

सांतिपरव-स पु [स. शातिपर्व] महाभारत का बारहवा पर्व जो सत्र

अज अमर ईस सब लोक सीस, सुभ सांत सुद्र पालक प्रबुद्ध ।
—ऊ का

१६ जिसका ताप व उष्णता नष्ट हो चुकी हो ।

स. पु [स] १ सुख, आनन्द, हर्ष । (डि. को)

२ आप नामक वसु के चार पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम ।

३ प्लक्षद्वीप का एक वर्ष ।

४ उक्त वर्ष पर शासक एक राजा जो प्रियव्रतपुत्र इध्मजिह्व राजा का पुत्र था ।

५ आयु राजा के एक पुत्र का नाम ।

६ तामस मनु के एक पुत्र का नाम ।

७ दुर्दम राजा की पत्नी सुभद्रा का पिता, एक राजा ।

८ काव्य के नौ रसो मे से एक रस, जिसका स्थायी भाव निर्वेद अर्थात् काम, क्रोध आदि वेगो का शमन माना गया है ।
(डि को)

वि. वि —चूकि नाटक मे केवल अभिनय ही प्रमुख है अत शान्त रस को जिसमे क्रिया, मनोविकार आदि की शाति रहती है, नाटक मे स्थान नही दिया गया है । अत नाटक मे केवल आठ रस ही माने जाते है ।

सातकरण, सातकरणि–स पु [स. शान्तकर्ण] शातकर्णि नामक एक राजा ।

सातकुभ—देखो 'सातकुभ' (रू भे) (ह ना मा)

सातनव–स पु [म शातनव] शातनु के पुत्र भीष्म का नाम ।
(डि को)

सातनु–स पु [स शान्तनु] चन्द्रवशीय इक्कीसवा राजा, जो प्रतीप एव सुनन्दा के ससर्ग से उत्पन्न हुआ था ।

वि वि —भागवत के अनुसार इनके हस्तस्पर्श मात्र से वृद्ध व्यक्ति यौवनावस्था को प्राप्त करता था । इनकी पत्नी गगा से भीष्म नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था । वसुराज नामक धीवर की सत्यवती (मत्स्यगधा) नामक कन्या इनकी दूसरी पत्नी थी । इसी विवाह हेतु भीष्मपितामह ने आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा की थी । दूसरी पत्नी सत्यवती के गर्भ से चित्रागद व विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र हुए थे ।

रू भे —सतग्, सतगु, सतन, सतनु ।

सातनुसुत–स पु. [स. शातनु+सुत] १ भीष्मपितामह ।

२ शातनु के पुत्रो का नाम ।

रू. भे —सतनसुत, सतनुसुतन ।

सातपन–वि. [सं] दो दिन मे पूरा होने वाला ।

स. पु —१ एक प्रकार का उपवास जो छ रात्रि तक किया जाता है ।

२ पहले दिन सिर्फ पंचगव्य पीकर दूसरे दिन किया जाने वाला उपवास ।

सातपनकच्छ, सातपनकृछ–स. पु [स. सातपनकृच्छ्र] एक प्रकार का व्रत विशेष ।

वि. वि.—इस व्रत मे पहले दिन कुछ पीया जाता है व दूसरे दिन उपवास किया जाता है । इसमे पहले दिन गोमूत्र पीकर दूसरे दिन उपवास, फिर पहले दिन गोमय पीकर दूसरे दिन उपवास इसी क्रम मे दूध, दही, घी, कुशोदक आदि पीकर प्रत्येक के दूसरे दिन उपवास किया जाता है ।

सातर, सातर–स स्त्री —सामग्री, सामान ।

उ०—हीलाकर हिएके ईला हुय आधा, लीला भगवत री लीला नहिं लाधा । ढाला ढालातर सातर ढळियोडा, बैठा नीगतर आतर वळियोडा ।—ऊ. का.

वि. —जिसमे बीच मे अवकाश हो ।

सातरज–स पु [सं शान्तरज] एक काशीनरेश का नाम ।

सातरय–स पु [म शान्तरय] पुरुरवा वशीय धर्मसारथि के पुत्र का नाम ।

सांतरस—देखो 'सात' (८) (रू. भे)

उ०—नव रस कहि दिखाइ । सरस वीरे वीररस किया । रौद्रै रौद्ररस किया । अपछरा सिगारस किया । नारद हासरस किया । काइ रै भैरस वीभच्छरस किया । सुरै सातरस अदभुतरस किया ।
—र. वचनिका

सातरौ सातरौ–वि [स सत्तरम्] (स्त्री सातरी) १ उत्तम, श्रेष्ठ, बढिया ।

उ०—१ रे जाया इण में मत कर ढील, पडै मत आतरौ के हा । रे जाया राम सिया जी रो सग, सारा सू ही सातरौ के हा ।
—गी रा

उ०—२ पण माया तो दिन दूणी रात चौगणी वध्योडी इज घणी आछी । वाणिया रौ सिरै धरम विराज व्योपार । हाल तौ माया घणी वधावणी है । ओडी सातरौ मौरत टाळणौ कीकर पोसावै ।—फुलवाडी

२ अच्छा, ठीक ।

उ०—१ थनै छोड कोई उपाव सोधणा चिचै तो इण मारग री सोय नी व्हैणी ई सातरी है ।—फुलवाडी

उ०—२ कदे ई तो आ बात सातरी लागै अर कदे ई वा बात आछी लागै ।—फुलवाडी

३ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

४ स्वस्थ, रोगमुक्त ।

उ०—किणही खेत वायो । नैन पाको इनलै घणी रै वाळो दुपणी आयो । जद किणही ओखद देइ सातरौ कीधौ ।—भि द्र

५ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

६ उचित, वाजिब, उपयुक्त ।

उ०—उणनै सावळ समभावता कैवण लागा—मा थनै मा भाईजी

मुग सुगुर, साहि आलम सू साध ।—नैणसी

उ०—३ सूर धीर साखैत मीर तें सोहै, कायर नर कपै साध कू विमोहै। स्री महाराज को रूप असौ निजर आयौ, जाणै रोहिणी को सग विरोचन पायो ।—रा रू.

सांधण-स स्त्री. [स. सधि] जोड, योग। (डि को)

साधणी—देखो 'साजणी' (रू. भे)

साधणौ साधबौ—क्रि स [स साधन] १ निशाना लगाना, सधान करना, तीर प्रत्यचा पर चढाना।

उ०—१ लखमण बाणज साधयौ गैणा भमर गुडाया ।
—केसोदास गाडण

उ०—२ आसाराव नाहूळ सिकार रमनो हुतौ सु वडो दूठ राजवी हुवो, तिणनू देवी बीहाडण लागी सु आसराव बीहै नही नै बाण हिरण नू साधियौ हुतो सु बाह्यो, तरै देवी खुस हुई।—नैणसी

उ०—३ काया कबज कमान कर, सार सबद कर तीर। दादू यह सर साध कर, मारै मोटै मीर। —दादूवाणी

२ कपडो आदि मे जोड या टाका लगाना।

३ मेल करना, जोडना।

उ०—१ मिळ चाप कीधो मुदै, 'ऊदो' धीर' सुनन्न। बाधी फोज कमद्धजा, साधो प्रीत 'अजन्न'। – रा रू

उ०—२ हरि चलिणि हुति गगा हुई, साचा सा हिति साधतौ। तू आप आप बाधो त्रिगुण, बळिराजा ना बाधतौ।—पी ग्र

उ०—३ जाणै तोड जहान सू, साध न जाणै सीह। निज बळ सू जुध नीमजे, ऊगै सूर अबीह।—बा दा

४ सधि करना, समझौता करना।

उ०—सबळा खळ सू साधिया, निबळ जाय खळ नास। मूसो मेळ मजार कर, वचियौ विपत विलास। – बा दा.

५ चूर्ण आदि को हाथो मे दबाकर पिण्ड के रूप मे करना।

उ०—गूद रै सागै पूगती विदामा न्हाक अेकण साचै ढळिया लाडू साध्या, धाणा रै सागै कायफळ, कमरकस, काचा गोळा, काळी मिरचा रळाय लाडू वाध्या।—फुलवाडी

६ जोडना।

उ०—१ छिण मैं पीड छटाय, हाड टूटोडा साधै। टूटो बाळक वर्णै, रोर जच्चा नै राधै।—दसदेव

उ०—२ आई उमड अविद्या आधी, च्यार वरण चडगी चख चाधी। विरचा धजा तूटगी बाधी, सदाचार री सधै न साधी।
—ऊ का

७ टूटी हुई रस्मी, मूर्ति आदि को जोडना।

८ शामिल करना, विलय करना।

उ०—दूसरा मान छळि लाडखा दूसरै, सार रै जोर दोइ धरा साधी। बाहातरि लेय आवेरि गळ वधाणी, बाहातरि गळै मेवात बाधी।—राव राजा फतैसिघ नरूका री गीत

९ तैयार करना।

उ०—सुन राम रूप निज दळ सनाह, गोरधन तणौ न हर दुगाह। मुख एता 'ऊदा' महावाह, साधिया वेग्र सू पातसाह।—रा. रू

१० बनाना, करना (बात कहावत आदि)।

उ०—पीसणिया पीसै, राधणिया राधै, बखतसर न्हावो-धोवो अर सिड्या सीखरी वाता साधै।—दसदोख

११ पौष्टिक पदार्थ तैयार करना, बनाना।

उ०—पछै काली मासी तो अगूती उमाई होय आपरा हाथ सू सुवावड साधी।—फुलवाडी

१२ देखो 'साधणौ, साधबौ' (रू भे)

साधणहार, हारौ (हारी), साधणियौ—वि०।

साधिओडौ, साधियोडौ, सांध्योडौ—भू० का० कृ०।

साधीजणौ, साधीजबौ—भाव वा०।

सधणौ, सधबौ –रू० भे०।

साधाखानौ—देखो 'सौधाखानौ' (रू. भे)

उ०—बागा रा बणाव कीजै छै। साधाखानै सू आणी साधा हाजर कीजै छै। भाति भाति रा साधा लगाडीजै छै। सभा मजलिम कीजै छै।—रा सा स.

साधांणी—स. स्त्री —कपडा बुनते समय ताने के धागो के टूटने पर जोडने की विधि, क्रिया।

साधि—देखो 'सधि' (रू. भे)

साधिक—वि [स सान्धिक] १ शराब बनाने वाला।

२ सधि कराने वाला।

साधिकै, साधिकौ—१ सधि स्थान।

२ सीध।

साधै—स पु —सधि स्थान, जोड।

उ०—१ सोजत था कोस ९ दिखण खरक रै साधै। सीरवी जाट बाणीया वसै।—नैणसी

उ०—२ सोजत था कोस १० उगोण ईसान रै साधै। मेर वसै।
—नैणसी

साधौ—स पु —१ आपस मे होने वाला किसी प्रकार का लगाव, वास्ता ससर्ग व सम्पर्क।

उ०—उवा रितुमती हुई। स्नान करणै घर ऊपर चढी। एक ब्राह्मण जवान दीठो। सो मा नू बुलाय दिखाइयो अर मा नू कही— इयै सू म्हारो मन छै। तू इयै सू साधौ जोड।—बैताळ पच्चीसी

२ जोड, सधि।

उ०—जच्चा-राणी रै हळद तेल गुज्जी रै आटा री पीठी करनै आखो डील मसळियौ। बाटा उतारी। हाडका लुळाया। साधौ साधो दबायो।—फुलवाडी

मुहा.—१ साधौ साधो तूटणौ=प्रत्येक अग मे दर्द होना।

२ साधौ साधौ खुलणौ=प्रत्येक अग टूट जाना।

पर्वों मे सबसे बडा है। इसमे युधिष्ठिर के चित्त की शाति के लिए बहुत से उपदेश व ज्ञान चर्चा लिखी गई है।

सातिपाचम—देखो 'सातिपचमी' (रू भे.)

सातिपात, सातिपातर, सातिपात्र–स. पु [स. शातिपात्र] ग्रह, पाप ग्रादि की शाति के लिए जल रखने का पात्र।

सातिप्रद–वि [स शातिप्रद] शाति देने वाला।

सातिवाचन–सं. पु [स शातिवाचन] वह मत्र पाठ जो प्रेत बाधा पाप ग्रादि के ग्रमगल को दूर करने के लिए किया जाय।

साती—देखो 'साति' (रू भे)

उ०—प्रभू ग्राग्या दीनी ग्रहन कर लीनी स्तुति पढी, विखै साती साती कब उमर साती हिय्रै वढी। नभै सोती जागी लगन धुन लागी जक नही, स्वयभू घ्याऊ मैं परमपद पाऊ सक नही।
—ऊ का.

सातीर—देखो 'सहतीर' (रू. भे)

उ०—निकमाळै री रुता, कमनीय किरवा काढा। साळ तिवारा सफा, माथ सातीरा चाढा।—दसदेव

सातोम, सातोमि—देखो 'स्तोम' (रू भे) (ह. ना. मा)

सातौ, सातौं–स पु—चोरी के उद्देश्य से दीवार मे लगाई जाने वाली सेंध।

उ०—सातौ देवता घर री धणी जागै तो चोर उणनै मन ई मन गाळिया काढै। चोर, ठग, धाडवी, ठाकर, साहूकार ग्रर राजा ग्रा सगळा री सुख दूजा रै दुख ग्रर सताप मै।—फुलवाडी

२ मोट की सिंचाई के सब उपकरणो का समूह।

रू भे—साथौ।

साथर, साथरउ—देखो 'साथरौ' (रू भे)

साथरवाडौ—देखो 'साथरवाडौ' (रू. भे)

उ०—सायरवाडै सी वाडै मैं सोनी, ग्रानन ग्रभोरू रभोरू रोनी। दोळै दूधाळू गळियोडी गेरी, ढोळै ढळियोडी रतना री ढेरी।
—ऊ का

सांथरौ—देखो 'साथरौ' (रू भे)

उ०—१ भाग ललना प्र॰गीराज ग्रायौ, सिंह कै साथरै स्याळ व्यायौ।—ग्रग्यात

उ०—२ सुभट ग्रणगिणत सूना घणा साथरै, भगा खळ तज विया सेन भाराथ रै। मना नहचै लखी धरण दसमाथ रै, निज मरण ग्राविया हाथ रघुनाथ रै।—र रू

साथळ—देखो सायळ' (रू भे)

उ०—गोळा दोय चंनसिंह रै लागिया सो एक तो साथळ रा पेडू रै साधै लागियौ।—मारवाड रा ग्रमरावा री वारता

साथी–स स्त्री—१ ताने के तारो को ठीक रखने हेतु करघे के ऊपर लगी लकडी।

२ बुनाई के समय ताने के सूतो के नीचे गिरने व ऊपर उठने की क्रिया।

सांथूग्रौ–स पु.—चौहटे का नाम। (सभा)

साथौ—देखो 'सातौ' (रू भे)

उ०—धाडो पाडण सघुणा वैगा, ताकि जलावै ताद। साथौ देता रात सरावै, चोर बुरावै चाद।—ऊ का.

साथ्यौ–सं पु—स्वस्तिक।

उ०—कुहाडि ग्रढढ स्त्री बोलंती छउड ऊतारइ, द्रष्टि देखती मनुष्य मारइ, सरप माथइ साथ्या फाडइ, चालती चुड्हि फाटइ, नवधाया तिर पाडइ, वालि वाधि ग्राहणइ, ग्राकास ग्रहुता पखिया गणइ,.... . . ।—व. स.

सादणी—देखो 'साजणी' (रू भे.)

सादीपन, सादीपनि, सादीपनी—स. पु. [स सान्दीपनि] श्री कृष्ण एव बलराम के गुरु एक प्रसिद्ध ऋषि जो धनुर्विद्या मे प्रवीण एवं सकल शास्त्रो के ज्ञाता थे।

वि. वि—इनका ग्राश्रम उज्जयिनी मे था। यहा सुदामा ने भी शिक्षा प्राप्त की थी। यहा केवल ६४ दिनो मे श्री कृष्ण व बलराम ने ग्रस्त्रमत्रोपनिषत्, ग्रस्त्र-प्रयोग सहित सम्पूर्ण धनुर्वेद ग्रादि विद्याऐ सीख ली थी। शिक्षा प्राप्ति के बाद इसने श्रीकृष्ण बलराम से गुरुदक्षिणा-स्वरूप ग्रपने मृत पुत्र को मागा। पचजन ग्रसुर ऋषि के पुत्र को चुराकर पाताल मे ले गया था। ग्रत श्रीकृष्ण ने पाताल मे जाकर उक्त ग्रसुर को मारकर गुरु को पुत्र ला दिया व राक्षस की हड्डियो से कृष्ण का 'पचजन्य' नामक शख बनाया गया था।

सादौ—१ देखो 'साधौ' (रू भे)

२ देखो 'सौधौ' (रू भे)

साद्र–वि [स] १ गभीर, गहरा।

२ घना, घोर।

३ स्निग्ध, चिकना।

३ मृदु, मधुर।

५ मनोहर, सुन्दर।

६ विपुल, ग्रत्यधिक।

स पु.—गुच्छा।

साद्रता–स पु—साद्र होने की ग्रवस्था या भाव।

साद्रप्रसाद–स पु. [स] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे मूत्र का कुछ ग्रस गाढा व कुछ ग्रश पतला निकलता है।

साध—१ देखो 'साधौ' (रू भे)

२ देखो 'सधि' (रू भे)

उ०—१ हमैं बरसा रित माहे माका नै भाद्रवै री साध वरसा रित मडी। देह बीजा भड लायी। डाल-डाल ग्रवर चमकिग्री छै। सेहरा पातर पडी।—रा. सा म

उ०—२ वीक विदेसज चालियौ, विजइ हुवी बळ साध। मूळै तोडी

सानुज-स. पु [स सहानुज] स्वभाव, आदत, प्रकृति। (अ मा)
रू भे —सानिज।
सांनुमान, सानूमान-स पु. [स. सानुमत्] पर्वत, पहाड़।
(डिं. को; ह. ना. मा)
रू. भे —सानमान।
सानू—देखो 'सानु' (रू. भे) (डिं. को)
सानूवाळ-स पु [स सानु+आलुच्] पर्वत, पहाड़। (डिं को)
साप—देखो 'साप' (रू. भे.) (डिं. को)
उ०—भूखी पडी आख्या काढै, तिरमिरावै अर तारा गिणै। घडी घडी उठै अर नाडा छोड करै है। नैणा मैं वट नी पडै। साप मरै लाठी नी टूटै जिसी दाव अर उपाव सोचै है।—दसदोख
सांपड-स. पु.—१ स्नान, मज्जन।
२ कच्चे मकान (झोंपडियो आदि) की लकड़ियो को मजबूत करने के लिए लगाया जाने वाला पतली लकडियो का बन्ध।
सांपडणौ, सांपडबौ—देखो 'सपडणौ, सपडबौ' (रू भे)
उ०—छाट सू छाट टकरीजण लागी। परनाळा पाणी ओसरियो कुदरत सांपड़ै। उण री रू रू धुपग्यो। नाळा-खाळा पाणी वहण लागो। जळबब ई जळबब।—फुलवाडी
सांपडणहारा हारौ (हारी), सांपडणियौ—वि०।
सापडिओडौ, सांपडियोडौ, सांपड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सापडीजणौ सापडीजबौ—कर्म वा०।
सांपडाणौ, सापडाबौ—देखो 'सपडाणौ, सपडावौ' (रू. भे.)
सांपडाणहार, हारौ (हारी), सापड़ाणियौ—वि०।
सांपडायोडौ—भू० का० कृ०।
सांपडाईजणौ, सांपडाईजबौ—कर्म वा०।
सांपडायौडौ - देखो 'सपडायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. सापडायोडी)
सापडावणौ, सापडावबौ—देखो 'सपडाणौ, सपडाबौ' (रू. भे)
सांपडावणहार, हारौ (हारी), सांपडावणियौ - वि०।
सांपडाविओडौ, सांपडावियोडौ, सांपडाव्योडौ—भू० का० कृ०।
सांपडावीजणौ, सांपडावीजबौ—कर्म वा०।
सापडावियोडौ—देखो 'सपडायोडी' (रू भे.)
(स्त्री सापडावियोडी)
सांपडियोडौ-भू का कृ—१ पृथक किया हुआ, अलग किया हुआ।
२ देखो 'सपडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सापडियोडी)
सापजणौ, सापजबौ—देखो 'सपजणौ, सपजबौ' (रू. भे)
उ०—स्रम थोडै वोह नफौ सांपजै, बीसर मती अनोखी बात। रहै प्रसन्न ऐ आयस रीघै, छात सिधा नरपतिया छात।
—बां दा
उ०—२ सुणै पढै नह सासतर, सेवै नह सतसग। सुखदायक किम सांपजै उर सतोख अभंग।—बा. दा.
सांपजणहार हारौ (हारी), सापजणियौ—वि०।
सापजिओडौ, सापजियोडौ, सांपज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सापजीजणौ, सापजीजबौ—भाव वा०।
सांपजियोडौ—देखो 'संपजियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. सांपजियोडी)
सांपण, सांपणी—देखो 'सापणी' (रू. भे)
सांपणौ, सांपबौ—देखो 'सूंपणौ, सूंपबौ' (रू. भे.)
उ०—१ उण राजा हूंन नै मो मित्राई हुती, सु मोनु तीम चह मोहरा रा भरिया सापिया छै।—नैणसी
उ०—२ पातिसाह फतै करि नै किलचखान नू सूरति सांपिनै मोकरी फतेपुर नू कूच कियौ।—द. वि
सापणहार, हारौ (हारी), सापणियौ—वि०।
सांपिओडौ, सापियोडौ, सांप्योडौ—भू० का० कृ०।
सापीजणौ, सापीजबौ—कर्म वा०।
सापनणौ, सापनबौ-क्रि अ [स सपदनम् या सम्प्रापण] १ प्राप्त होना, मिलना।
उ०—१ 'पदम' 'कुमळ' अवसाण सापनै, हिचियौ सागा खड्ग हथ। कामण सदा जिका कथ कहनौ, कीध जिका हिज साच कथ।
—कुसळसिंघ कछवाह रौ गीत
उ०—२ जिम जैमाल अभिनमो जैमल, हालियै दलिदळ थम हुवौ। कोढणं जळ चाढै नवकोटै, मोटै अवि सापनै मुवौ।
—अरजुनसिंह गोपाळदासोत रौ गीत
उ०—३ विसरि गडगडै तूर सूरा चढै वीर रसि, अछर वरिवा करै चित उमेखा। सांमि छळ देस छळ वेस छळ सामठा, सांपना ताहरै भागि मेखा।—सेवा दुरजनसालोत पातावत रौ गीत
२ उत्पन्न होना, पैदा होना।
३ पूरा होना, सम्पन्न होना।
उ०—सैदा उच्छव सांपना, मुगळा वदन मलीण। दिल्ली अति चाळौ दरस, पुर सोचिया प्रवीण।—रा. रू.
सांपनणहार, हारौ (हारी), सांपनणियौ—वि०।
सापनिओडौ, सापनियोडौ, सापन्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सांपनीजणौ, सापनीजबौ—भाव वा०।
सापन्नणौ, सांपन्नबौ—रू० भे०।
सांपनियोडौ-भू का. कृ.—१ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. २ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ ३ पूरा हुवा हुआ, सम्पन्न हुवा हुआ।
(स्त्री सापनियोडी)
सांपन्नणौ, सापन्नबौ—देखो 'सापनणौ, सापनबौ' (रू भे.)
सापन्नणहार, हारौ (हारी), सांपन्नणियौ—वि०।
सापन्निओडौ सांपन्नियोड़ौ, सापन्नयोडौ—भू० का० कृ०।
सापन्नीजणौ, सांपन्नीजबौ—भाव वा०।

३ वश, उपाय।

उ०—१ अबै खुद री कडिया भाग्या रै पछै कळभळ करिया अर कूकणा सू काई सांधौ लागै।—फुलवाडी

उ०—२ अर जे बाई रा भाग मैं ई वर रो जोग ई नीं है तो पछै अस्टपोर तरळा तोडचा ई की सांधौ लागैला नी।—फुलवाडी

४ सहारा।

उ०—सेवट तो वारी कमाई सू ई पार पडैला, किणी रै दिया लिया सू की साधौ नी लागै।—फुलवाडी

५ देखो 'सौंधौ' (रू भे)

उ०—१ उवै कामणी घणै किसनागर कस्तूरी अवर अतर साध सू गरकाव हुई थकी उवा राजा रा मलूकजादा रा मन राखती थकी लोटपोट हुई रही छै।—रा. सा. स

उ०—२ हमामै गरम पाणी मूं नाहीजै छै। अगोछी कीजै छै। वागा रा वणाव कीजै छै। साधाखानै सू आणी साधा हाजर कीजै छै। भाति भाति रा साधा लगाडीजै छै।—रा. सा स

रू. भे.—सधौ, सादौ।

सांन-स स्त्री [अ शान] १ इज्जत, प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा।

उ०—१ म्हानै तो विस्वास नी व्है कै इत्ती सांन गमिया पछै अै लोग निसडा री गळाई जीवता बैठा।—फुलवाडी

उ०—२ दात काढनै कैवण लागा—जै सान रा साचाणी ई टका व्हैता व्है तो चाहीजै ई काई।—फुलवाडी

४ ठाट-बाट, तडक-भडक।

उ०—भीड रै विचाळै राजाजी रो घोडो सांन सू चालतो हो। परधै ग मौतबिर लारै खाका पिदावता खुचखुचियै चालता हा।
—फुलवाडी

५ वात रोग, लकवा।

उ०—पछै उठा थी छाडियौ। को दिन सीधलै जाय कवळै रह्यौ। सान गो भोलो हुवौ।—नैणसी

[स सज्ञा] ६ पागलपन वावलापन। (उ र)

उ०—पहिली तो दारू पीवो अर पछै सानांया करो अर नास जावौ।—बूढो ठग राजा री वात

७ निदान, झगडा।

८ बुद्धि।

उ०—तेणि दिन बहुधन हारयू, गई रानी सान। वागी न सकि कामिनी, तु अवरि किन परधान।—नळाख्यान

९ सन के रेशे से बना हुआ वस्त्र।

वि—१ तीक्ष्ण, तेज। (अनेका)

२ देखो 'सांण' (रू. भे)

उ०—भई वाहिर गड्डिकै, धुत्र डड झुकाया। फूत झराया सान पै, गसि वाढ चिराया।—व. भा.

रू भे.—स्यान।

सानणौ, सानवौ-क्रि स—१ भिगोना गीला करना।

उ०—घायल असाद्धि डोलै न घुम्मि, सानीन स्रोण तै रग भूम्मि।
—ला रा

२ पागलपन करना, वावलापन करना।

सांनदार-वि. [अ. शान+फा. दार] १ ठाट-बाट वाला।

२ प्रतिष्ठित, प्रतिष्ठावान।

३ सुदर, मनमोहक, मनोहर।

४ चमकदार, तेज।

सानपद, सानपाद-सं पु [म. शानपाद] चदन घिसने का पत्थर।

सांनवाफ-स पु.—एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष।

सानमान—देखो 'मानुमान' (रू. भे) (ग मा, डिं को, ना मा)

सानसौकत-स पु. [अ शानशौकत] ठाट-बाट, सजावट।

सानिज—देखो 'सानुज' (रू भे) (ह ना मा)

सानिद्ध, सानिध, सानिधि, सांनिध्य-स पु [म. सानिध्य] १ सामीप्य।

उ०—१ अधिकै भावै यात्री आवै, गुण जिनवर ना गावै। रागै बहु विधि पूज रचावै, प्रभु सानिध सुख पावै।—ध व ग्र

उ०—२ हसि हू वाही, हो वाहला, कही तह्मारी प्रीति। वैस्वांनर सानिधि जै बोल्यू का वीसारयू स्वामीति।—नळाख्यान

२ मगल, अमन-चैन।

उ०—१ प्रसिद्ध जिण चद पाटै खरतर, गुरु सोभा खाटै हो। सानिध करण सदाई, वड नामी गुरु वरदाई हो।—ध. व ग्र.

उ०—२ सुलसा सखरी स्राविका, निदै पूरव करम निदान कि। सीलै सुर सानिध करै, सुपै आणि जीवत सतान कि।—ध व. ग्र

सानियोडौ-भू. का कृ—१ भीगोया हुआ, गीला किया हुआ २ पागलपन किया हुआ, वावलापन किया हुआ।
(स्त्री. सानियोडी)

सानियौ-वि.—१ पागल, वावला।

२ चित्तभ्रम।

उ०—तू गहलो तू सानियौ, तू भोळो भवराळ। मूळ मघा मैं तू हुयौ, तातै सरम लवाळ।—गज-उद्धार

सांनी, सानी-स स्त्री.—इशारा, सकेत।

उ०—दूजा नू सानी दियै, एक तणै वस अक। किण किण नह दीधा कदम पातर रै परजक।—वा दा

वि [अ शानी] समान, तुल्य।

उ०—जपै सुकर जबानी, कुदरत कौन दी, बहु परवर सानी सीता साइया।—र. ज. प्र

सानु-सं. पु [स.] १ पर्वत की चोटी, शिखर।

२ जगल, वन।

३ पर्वत के ऊपर की चौरस भूमि।

रू भे.—सानू।

नेह सांप्रति किम नीसरै जी, जेहनौ जीवन प्राय।—वि कु

उ०—३ सुच्छम रोमावळि सुखद, बरणी उकति विचार। सांप्रति रस सिणगार री, वेल कीयौ विसतार।—वा दा.

साम्प्रदायिक-वि [सं.] सम्प्रदाय का, सम्प्रदाय सम्बन्धी।

साम्प्रदायिकता-स स्त्री [सं.] साम्प्रदायिक होने की अवस्था या भाव।

सांफळ-स. पु.—युद्ध, लडाई, झगडा।

उ०—१ ताहरा दूदौ कहै—मेघा जी ! आपा परत री वेढ करस्या, रजपूता नू क्यू मारू ? का दूदौ मेघै, का मेघौ दूदै। आपा हीज सांफळ हुसी।—नैणसी

उ०—२ वागी अखगा काहुळा नाग करतका सांफळै वहौ, गुडै सिंधू काहुळा जुझाऊ कै गाराज। लडै बहादरेस धूत मूहडा गैणाग लागी, नत्रीठा वेकटी बागी खळा धू नाराज।—प्रभुदान मोतीसर

सांफळउ—देखो 'सांफळौ' (रू भे)

उ०—भिड्या कटक रिण काहल वाजइ, वाहइ खाडाधार। सात-लसीहि सांफळउ जीतू, मारिया म्लेच्छ अपार।—का दे. प्र

सांफळणौ, सांफळवौ—क्रि स.—१ युद्ध करना, लडाई करना, सग्राम करना।

उ०—१ सहमा दौ हूत हेक सांफळियौ, त्रिहू लोकै हैकार तवै। बीता पहर च्यारि खग बहता, रावत पडै न खडै रिवै।

—जगतसिंघ सगतावत री गीत

उ०—२ साहिजादा जिण दिन सांफळिया, आफळिया तिण दिन आगाहि। गौडा धणी तणा त्रब गुडिया, गौडा बिहु तणै गज-गाहि।—मदनसिंघ नै सूरसिंघ गौड री गीत

२ टक्कर लेना, भिडना।

उ०—झाळा नाळा भळहळै, रिडै वहाळा रत्त। समहर जुडै 'सुमेर' रा, भड खाटण प्रभत्त। भड खाटण प्रभत्त, सकोहा सांफळै। लै जरमन परलोक रहच्चै राफळै।—किसोरदान बारहठ

सांफळणहार, हारौ (हारी), सांफळणियौ—वि०।

सांफळिओडौ, सांफळियोडौ, सांफळ्योडौ—भू० का० कृ०।

सांफळीजणौ, सांफळीजवौ—कर्म वा०।

सांफळियोडौ—भू का. कृ—१ युद्ध किया हुआ, लडाई किया हुआ, सग्राम किया हुआ. २ टक्कर लिया हुआ, भिडा हुआ।

(स्त्री सांफळियोडी)

सांफळौ—स पु.—१ युद्ध, लडाई, सग्राम।

उ०—तिसै रथ रै लारै साथ चढीयौ। आगै असवार दीठा। सात वीस असवारा सू सांफळौ वागौ। राजडीयौ खवास वाजनै काम आयौ।—वीरमदे सोनगरा री वात

२ मोर्चा।

उ०—एक बादसाह अरब मैं थौ सौ उणरै वैरी सू लडाई वणी। जद दोनू लसकरा सांफळा बाधियौ।—नी. प्र

३ टक्कर, मुठभेड, झपट।

उ०—१ आसकरण चढियौ हुतौ, जु नरबद जी अजूब आया। सु आसकरण सौ सीधळा सांफळौ हुवौ।—नैणसी

उ०—२ औ दूहौ कह्यौ। ताहरा मळ उपाड नै मूळवै सौ सांफळौ हुवौ। ताहरा मूळवै घोडौ तातौ कर नै वरछी री वूटी सौ मल न मार राखीयौ।—मूळवै सागावत री वात

वि.—१ कटिबद्ध, तैयार।

२ अस्त्र-शस्त्र सहित।

उ०—इम वात कहता वार लागै, आय सांफळा हीज वाजीया। ताहरा वरसै रायपाल नू कह्यौ, 'ओठी १ घरै मेलौ, घरै खबर देवै।'—वरसै तिलोकसी भाटी री वात

रू. भे.—सांफळउ।

साब-स पु. [सं.] १ शिव का नामान्तर।

२ जाम्बवती एव कृष्ण के ससर्ग से उत्पन्न दस पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

वि. वि.—मतान्तर से यह कृष्ण एव रुक्मणी के ससर्ग से उत्पन्न हुआ था। यह अत्यन्त पराक्रमी था। इसने कई युद्ध किए थे। दुर्योधन-कन्या लक्ष्मणा व अजनाभ-कन्या प्रभावती का इसने हरण किया था। श्वफलक कन्या वसुन्धरा भी इसकी पत्नी थी। इसी के पेट से उत्पन्न लोहे के मूसल से ही समस्त यादवो का सहार हुआ था। यह अत्यन्त सुन्दर था अत. कृष्ण की कई पत्निया इस पर अनुरक्त थी। इसकी सूचना कृष्ण को मिलने पर कृष्ण ने इसे कुष्ट रोगी होने का व पत्नियो को उनका चोरो द्वारा अपहरण किये जाने का शाप दिया। नारद की सलाह से इसने सूर्योपासना की। इससे यह कुष्ट रोग से मुक्त हुआ।

३ चक्रपाणि राजा के प्रधान का नाम।

[म. शाव] ४ आप नामक वसु के एक पुत्र का नाम।

५ देखो 'साम' (११) (रू भे.)

उ०— . .. .. खुरसाण रा उतारिया माठीरा तिलारिया, ऊपर रूपै रा साबां छै, पीतळ ताबै रा छला छै, दात री चौकडी छै, तिलीर रा पसारा छै, दात रा सुफाळा छै। सोन्हैरी हळ लिखी छै, नचमूठ रा तीर छै।—रा. सा. स

साबण—देखो 'साबण' (रू भे)

उ०—भरै अन्न भडार, सालि गोधूम सघण घण। घ्रित तेल गुळ लूण, लगै अहि फेणइ साबण।—गु रू. ब.

साबपुर-स पु [स साम्बीपुर] आधुनिक मुल्तान (पजाब) नगर का प्राचीन नाम। इसे श्रीकृष्ण के पुत्र साब ने बसाया था।

सांबपुराण-स पु [स साम्बपुराण] एक उपपुराण का नाम।

साबर—देखो 'साभर' (रू भे.)

उ०—साबर सूर वाघ दरसाणा, बहसै तिया सघारै बाणा। प्रेतालुध माया झळ पेखै, लखि आतसबाजी सम लेखै।—सू. प्र

सावरडी—देखो 'सावरी (अल्पा, रू भे)

सापन्नियोडौ—देखो 'सापनियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. सापन्नियोडी)

सापरत, सांपरत—देखो 'साप्रत' (रू भे.)

उ०—१ सहज ललाई सापरत, प्रीतम प्यारी पाय। निरखै भरमै नायणी, जावक दै मिळ जाय।—ग्रग्यात

उ०—२ चद ढेभै जिसा परत मन धारै चगा सापरत गिरौं तन काच सीसी। ग्रावळाफूल पटै रण ग्राविढा, वढै सग सावळा सात वीसी।—गिरवरदान सादू

उ०—३ वाता गई विलाय, सुपनो होकै सापरत। कैता कई न जाय, जिय री जिय जाणै 'जसा'।—ऊ. का.

उ०—४ सजम जप तप सांपरत, व्रत जुत जोग विनाण। ग्रावि तरच्छो ईलता, जीता समघा जाण।—वा. दा

सापरतक, सापरतैक, सापरथ—देखो 'साप्रत' (रू भे.)

उ०—१ कई करो रे उस्तादा! सापरतैक ग्रास्या मीच'र ग्रधारी किया तो मत बैठा रैवो।—वरसगाठ

उ०—२ तद माणस बोली थे मोनै सापरतक कह्यो थो सो तू ठाकरां नै तेडं लै ग्रावा।—राजा रा गुर रा वेटा री वात

सापराय-सं. पु. [स साम्पराय, साम्परायः] युद्ध। (ह ना. मा.)

सापरायक, सापरायिक, सापरायिकी-वि [स.] १ युद्ध में काम ग्राने वाला।

२ परलोक सम्बन्धी, पारलौकिक।

३ विपत्तिजनक।

स. पु. [स सापरायिक] १ युद्ध, समर। (ह ना. मा)

[स सापरायिक'] २ युद्ध का रथ।

सापरीछतरी-सं. स्त्री —प्राय वर्षा ऋतु मे उत्पन्न होने वाला एक पौधा जिसके डठल के ऊपर छतरी सी होती है।

साप री मासी-स पु —एक जतु विशेष।

उ०—जिण दिन लीली जळै जवासी, मांडै राड साप री मासी। वादळ रहै रात रा वासी, यू जाणै चौकस मेह ग्रासी।

—वर्षा विज्ञान

सापाडौ—देखो 'संपाडौ' (रू. भे.)

उ०—१ दोनू दिसा गया। पाछा घरै ग्राया। दांतण कर सापाडौ कर साह ठाकुर द्वारै जाय साथै दरसण किया।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ तद भरमल उठ मुजरो कर हुकम माथै चाढ लीयो। सो हमैं सापाडै रै वखत वडारण दूध लै जाय ग्रारोगायै।

—कुवरसी साखला री वारता

सापियोड़ौ—देखो 'सूपियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. सापियोडी)

सापोळौ-स पु —नशे मे मस्त होकर झूमने या डगमगाने की क्रिया।

उ०—जठै ग्रवकाई भीला रो झूल लीया त्यू हीज बैठो छै। ग्रमल गलणीयै वढियो छै। कसूभा वत्तीसा नीकळै छै। कैइक भाई ग्रमला री झोका खायनै रह्या छै। कैइक सापोळा करै छै। क्या इक ग्रमल चिमठिए चढियो छै।—जखडै मुखडै भाटी री वात

सापौ, सापौ-स. पु.—गायो का समूह, झुण्ड।

साप्रत, साप्रत-ग्रव्यय.—प्रत्यक्ष, सम्मुख। (उ र)

उ०—१ वीदणी रै काळजै तो वीद रो चित्राम हूबोहूब कुरग्यो। ग्रास्या मीचनै ई वा साप्रत धणी रो उणियारो निरख सकती।

—फुलवाडी

उ०—२ जीव-जिनावर धोज्या जगळ रो वासो करै, पण सांप्रत मौत रो धीजो किणनै व्है।—फुलवाडी

उ०—३ कुकडा रो गुण काम, काक गुण भक्षण कीन्ही। जुध करण रो जोध, स्वान गुण साप्रत लीन्हो।—ऊ. का

२ साक्षात, हूबहू।

उ०—१ सोई खुडद ग्राज दिन साप्रत, स्रीदुरगा सकळाई। मूरत ग्रदुल भेख मरदानू, सूरत हृदय समाई।—मे म

उ०—२ ग्रेक दिन पाडोसण यू ई वाता-वाता मैं गींगली रै रूप री प्रस्तावू वात करी कै सेठा री गींगली तो सांप्रत चांद रै उणियार है।—फुलवाडी

उ०—३ वापजी, कदै ई म्हारै घरै जीमण री मया करो तो म्हे जाणू ला कै साप्रत भगवान म्हारै घरै पधारिया।—फुलवाडी

३ सचमुच।

उ०—चुगली विसतारत चुगल, साप्रत होय सचेत। सो मुरदार सरीर री, लट मुख माझल लेत।—वा दा

४ इस समय, ग्रभी।

५ फिर, पुन।

६ उचित, उपयुक्त।

७ वास्तव मे, हकीकत मे।

उ०—१ उणनै तो विस्वास ई नी व्हियो कै साचाणी ग्रो किणी लुगाई री परतख साप्रत उणियारो है।—फुलवाडी

उ०—२ साप्रत कुवाण छोडै न सठ, पात कुलक्षण पालसी। ससार माहि ग्रवगुण सरब, होफो ही सामळ हालसी।—ऊ का

८ उस समय।

उ०—वैरण रसणा वस ग्रसणा तन ताई, ग्राभा ग्रागण री ग्रन मागण ग्राई। साप्रत पूछी नह किण ही कुसळाता, ग्रन ग्रन कर-तोडी मरगी ग्रनदाता।— ऊ का.

रू भे.—सप्रत, सप्रति, सप्रती, सापरत, सापरत, सापरतक, सापरतैक, सापरथ, साप्रति, साप्रती, सैप्रत, सैप्रत्त।

साप्रति, साप्रती—देखो 'साप्रत' (रू. भे)

उ०—१ हु तुझ नै कहती सदा जी, विगडन हारी बात। तै सांप्रति साची थई जी, दुरजण खेली छात।—वि. कु.

उ०—२ नितर नो नेह जिण सू हुवै जी, वीछड्या दुख न खमाय।

(स्त्री. साभरियोडी)

सांभरियौ, साभरौ-स. पु —१ साभर झील का नमक ।

२ चौहान शाखा का व्यक्ति ।

उ०—राज नीमराणौ रजत, सामरियौ समराथ । सौ सामतां साख रा, सूर सुभड लै साथ ।—केहर प्रकास

वि.—साभर का, साभर वाला ।

रू. भे —सभर, साभरचौ, सामरियौ सांमरचौ, सँभर, सँभरियौ, सँभरी ।

सांभरीलूण-स पु. यौ —साभर झील का नमक । (ग्रमरत)

सांभरचौ—देखो 'साभरियौ' (रू. भे)

सामळण-सं. पु.—कान, श्रवण । (ग्र. मा, ह. ना. मा.)

साभळणौ, साभळवौ-क्रि स —१ सुनना । (उ र)

उ०—१ वाका मेहासधू म वीसरै, सकट हरै साभळै साद । गढ-वाडा गढ ग्रोलै गाजै, मढरै ग्रोलै गढा ग्रजाद ।—वा दा.

उ०—२ कह्यो –जु भाई ! कोई घोडिया मे हुवै तो सांभळज्यो । घोडी नू थटै रै पातसाह री दरियाई घोडो लागो छै ।—नैणसी

उ०—३ साभळि ग्रनुराग थयौ मनि स्यामा, वर प्रापति वछती वर । हरि गुण भणि ऊपनी जिका हर, हर तिणि वदै गवरि हर ।—वेलि

२ ध्यान देना ।

उ०—१ जोगीण जोगी सू कहइं, सांभळी नाथ समथ्थ । का जीवाडउ मारुवी, हू विण इण हिज सथ्थ ।—ढो मा.

३ समझना, जानना ।

उ०—सारग सिळीमुख साथि सारथि, प्रोहित जाणणहार पथ । कागळ चौ ततकाळ क्रपानिधि, रथ वैठा साभळि ग्ररथ ।—वेलि

सांभळणहार, हारौ (हारी), साभळणियौ—वि० ।

साभळिग्रोडौ, सांभळियोडौ, सांभळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

सांभळीजणौ, साभळीजवौ—कर्म वा० ।

संमरणौ, सभरवौ, सभळणौ, सभळवौ, सांवळणौ, सावळवौ, साभरणौ, सामरवौ साम्हळणौ, साम्हळवौ, साम्हळणौ, साम्हळवौ —रू० भे० ।

साभळियोडौ-भू. का. कृ.—१ सुना हुग्रा. २ ध्यान दिया हुग्रा. ३ समझा हुग्रा, जाना हुग्रा ।

(स्त्री साभळियोडी)

सांभव-वि [स शाभव] शिव का, शिव से सम्वन्धित ।

सं पु. [स. शाभव] १ देवदारू वृक्ष ।

[स. शाभवः] २ शिव-भक्त, शिव-उपासक ।

३ कपूर ।

४ शिव पुत्र ।

५ विष, जहर ।

सांभवी-सं. स्त्री. [स शाभवी] १ पार्वती, दुर्गा ।

२ दूब ।

साभियोडौ—देखो 'संभायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. साभियोडी)

साभेळौ—देखो 'सामेळौ' (रू भे.)

साम्हळणौ, सांम्हळवौ—देखो 'साभळणौ, सामळवौ' (रू. भे.)

साम्हळणहार, हारौ (हारी) साम्हळणियौ—वि० ।

साम्हळिग्रोडौ, सांम्हळियोडौ, साम्हळ्योडौ—भू० का० कृ० ।

सांम्हळीजणौ, साम्हळीजवौ—कर्म वा० ।

साम्हळियोडौ—देखो 'साभळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री साम्हळियोडी)

सामत-सं पु. [स सामत] १ योद्धा । (डिं. ना. मा.)

उ०—पखरैतां ध्वज पूर, सिलह ससत्रा रिण साजा । ग्रर्नै सहस ग्रापरा, साथ सामंत सकाजा ।—सू. प्र

२ वडा सरदार, वडा ग्रमीर ।

उ०—१ ग्रठी दूजा साहजादा नू ग्रापरै ऊपर चलायो जाणि तिकण नू पाछो फेरण रै काज कुमार दारासाह री कुमार सलेम-साह विदा कियो । तिकण रै साथ कछवाह जयसिह, गौड ग्रनि-रुद्धसिह, नवाव दलेलखा तीन ही मुख्य सामत देर ग्राप री उद्धत ग्रनीक दियो ।—व. भा.

उ०—२ जिकै रजपूत कैसा, जग मैं मजवूत, प्रथीराज का सामत जैसा, ग्राकाम की वीज, कना जमराज की खीज, ग्रापका सीस पर खेलै, पडता ग्रासमान कू झेलै ।—वगसीराम प्रोहित री वात

३ छोटा राजा जो कर देता है ।

उ०—घोख मद-घोख जस तणा वादित्र घुरै, जोध सामंत मैं घाट जोपै । चमर ढळतै न्रिगति ग्रभिनमो 'चौंडरज', 'ग्रमर' मेघाडवर सीस ग्रोपै ।—केसोदास गाडण

४ वीर, वहादुर । (डिं को.)

५ देवराज इन्द्र । (नां. डिं को)

६ समीपवर्ती, पडोसी ।

७ सार्वजनिक ।

८ पडोसी राजा ।

९ पंवार वश की एक शाखा ।

१० उक्त शाखा का व्यक्ति ।

११ पडोस ।

१२ देखो 'सवत' (रू भे.)

उ०—उतर दिखण पूरव पछिम, कोई पाण न दखवै । सामत एक एकाणवै, वापी समो न चक्कवै ।—नैणसी

रू. भे.—समत, साव, सावत, सावत ।

सामंतभारती-स स्त्री [स सामतभारती] एक प्रकार का राग विशेप जो कि मल्लार व सारग के मेल से बनता है । (सगीत)

सामद-स. पु.—१ वैलो की जोडी । (मेवाड)

उ०—जमदाढ वामै अग भीड जडी, सुज ऊपर पेटीय सावरडी। घण वजर काळ लुहार घडी, जगजीत वामै अग रूक जड़ी।—गो रू.

सावरणी-स स्त्री,—अधिकार, कब्जा।

सावरथ—देखो 'समरथ' (रू भे)

सावरी-स स्त्री. [स शाम्बरी] १ माया, इंद्रजाल, बाजीगरी। (डिं. को)

[स. शावरी, शावरिन्] २ मायाविनी।

३ मूषाकानी नामक लता।

४ एक प्रकार का चदन।

५ देखो सावरो' (पु.) (रू. भे.)

उ०—वरस दीहा को सेवलो, घी घणो खाज्यो पगाह पराण। पायै पाणही सांवरी, चउघड्या माह दीई-मिलाण।—वी. दे.

सावरोट-स पु —साभर प्रदेश का भू भाग या भूमि।

उ०—सावरोट घर दाब, प्राण जळ खाग पखाळै। गूगा गैंहला गाळ, वचन देवळ रा वाळै।—पा. प्र.

सावरो-वि —१ साभर नामक पशु का।

२ साभर नामक पशु के चमडे का।

उ० .. घणी पीतळ नै घणी दात माहै गरकाव हुआ थका, रेसमी पटाटा, सावरा उकटा, तगै अग भीडिआ थका, इण भाति रा सौ ऊटा ऊपर सौ पलाणा मडिआ छै।—रा सा स

अल्पा,—सावरडी, सावरी।

सावळ, सावळउ—देखो 'सावळो' (रू भे.) (उ र)

सांवळणौ, सांवळवौ—देखो 'साभळणौ, साभळवौ' (रू. भे)

सावळणहार, हारौ (हारी), साबळणियौ—वि०।

सावळिओडौ, सावळियोडौ, सावळ्योडौ—भू० का० कृ०।

सांवळीजणौ, सावळीजवौ—कर्म वा०।

सांवळियोडौ—देखो 'साभळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. सावळियोडी)

सावविक-स पु [स. शाम्बविक] शख बेचने वाला व्यक्ति।

सावहणौ, सावहवौ—देखो 'सभाणौ, सभावौ' (रू. भे)

उ०—धन सवरी रो धरम, प्रभु महाराज पधारै। वाळि वाण सावहे, साध सुग्रीव सुधारै।—पी ग्र.

सावहणहार, हारौ (हारी), सावहणियौ—वि०।

सावहिओड़ौ सावहियोडौ, सावह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सावहीजणौ, सावहीजवौ—कर्म वा०।

सांवहियोडौ—देखो 'सभायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सावहियोडी)

सावियोडौ—देखो 'सभायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सावियोडी)

साबीलौ-स पु. [स शबल] १ धानादि कूटने का एक प्रकार का उपकरण, मूसल।

२ एक प्रकार का हथियार विशेष।

साभणौ, सांभवौ—देखो 'सभाणौ, सभावौ' (रू भे.)

उ०—जामण रा रे जाया, अबर तो पटकी धरती साम ली।—लो गी.

साभणहार, हारौ (हारी), सामणियौ—वि०।

सामिओडौ, साभियोडौ, साम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सामीजणौ, सामीजवौ—कर्म वा०।

सांभर-स. पु —१ एक झील का नाम जिसके पानी से नमक बनाया जाता है।

२ राजस्थान का एक कस्बा जो प्राचीन समय मे सपादलक्ष कहलाता था। इसमे साभर नामक झील होने के कारण इसे भी साभर कहने लगे।

मुहा०—१ साभर मैं लूण रौ टोटो=किसी वस्तु के विशाल भण्डार के स्थान पर भी उस वस्तु की कमी अनुभव करना।

२ साभर मैं जाय अलूणो खाय=किसी स्थान या वस्तु की उपयोगिता की आवश्यकता पडने पर भी उपयोग न करना।

(मि —तालाव री तीर तिरसो रै'णो)

३ साभर मैं पडै सो लूण=सगत से भला भी बुरा हो जाता है।

३ उक्त झील के पानी से बनाया गया नमक।

४ साभर का सीग।

५ भारतीय मृग की एक जाति विशेष।

६ उक्त जाति का मृग, बारहसिंघा।

रू भे.—सबर, स बर, सभर, स भर, सइभरि, सहैभर, साबर, सामर, सामरू, सामरी, संभर।

साभरणौ, साभरवौ—१ देखो 'समरणौ, समरवौ' (रू. भे.) (उ र)

उ०—हसा सर साभरियाह रे, तै जन धरै मुगति नी चाह रे। तिहा दीसइ रतन घणाह रे, जाणै नवल ममोला वाह रे।—स. कु.

२ देखो 'साभळणौ, साभळवौ, (रू. भे.)

उ०—सज्जण सुणै समुद्द तू, तर तर थकी तेण। अवगुण अेक न सामरइ, रहू विलूबी जेण।—ढो मा

साभरणहार, हारौ (हारी), सांभरणियौ—वि०।

साभरिओडौ, साभरियोडौ, साभरयोडौ—भू० का० कृ०।

साभरीजणौ, साभरीजवौ—कर्म वा०।

साभरमति, साभरमती—देखो 'सावरमती' (रू भे)

उ०—झाली मारग मैं आवती विचारियो जै खावद परमेस्वर समान छै। सौ पण आछी छै। तौ हू अे कामण लै जाय माथै करम क्यू बाधू। तद कामण री गाठ थी सौ नदी सामरमती मैं नाख दी।—कुवरसी साखला री वारता

साभरियोडौ—देखो 'समरियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'साभळियोडौ' (रू. भे)

उ०—सहि बाजी सांमटै, ग्रमर नर नाग उवेडै । हुवै ग्राप हेकलो, फूंक सा ग्रवर फोडै ।—पी. प्र.

सामटणहार, हारौ (हारी), सामटणियौ—वि० ।

सांमटिग्रोडौ सामटियोडौ, सांमट्योडौ—भू० का० कृ० ।

सांमटीजणौ, सामटीजबौ—कर्म वा० ।

सामटियोडौ—देखो 'समेटियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री सामटियोडी)

सामठौ—देखो 'सावठौ' (रू भे)

उ०—१ सांमठा लडै घड पटै सूर, हुरसत वरै वह रभ हूर । पटि पेमकवज खरडक ग्रपार, करहक्क खाग भरळक कटार ।—सू प्र

उ०—२ 'ग्रभमाल' दमा वणि दुभ्भन्न इम, जगचख मुखि मुखि जोपिया । सांमठा सिंघ नरसिंघ रै, ग्रागळ जाणै ग्रोपिया ।

—सू. प्र.

उ०—३ थई बलिहारी भूभीरि, रोळण घटां । सेन रायसिंघ रा, सामठा सुभटा ।—हा भा.

उ०—४ विमरि गड़गडै तूर सूरा चढै वीर रमि, ग्रहर वरिवा करै चित उमेवा । सामि छळ देस छळ वेस छळ सांमठा. मांपना ताहरै भागि सेवा ।—सेवा दुरजनमालोत पातावत री गीत

सांमण-स स्त्री.—१ देवी का एक नाम ।

२ दशनामी सन्यासियो की वह स्त्री जो गृहस्थी हो ।

३ स्वामिनी, मालकिन ।

उ०—सरसति सांमण वीनवूं, मागू एकज सार । एक जीभै हू किम कहु, एहना तप नो नहीं पार ।—स. कु.

४ देखो 'सावण' (रू भे.)

उ०—जमिया कसियक छै, ग्रापनै भी उधारै जसियक छै । पातियामी को कमळ, गगा सी विमळ । भूभलिया नैणा की, ग्रमरत सा वैणा की । मेह को ममोलो, बादळा की बीज, होळी की भाळ सांमण की तीज ।—मयाराम दरजी री वात

सांमणी-स. स्त्री. [स. स्वामिनी] १ स्वामिनी, मालकिन ।

उ०—१ सरसति सांमणी तूं जग जीण, हस चढी लटकावै वीण । हरि कमळा भमरा भमइ, कासमीरा मुख मडणी माइ ।—वी. दे.

२ श्रावण मास की तृतीया ।

उ०—या पण महावीर वचखण, ग्रेक करता सामणी री दीहाडो ग्राविग्रो । तरै ग्रनूकी मूंक-पाक दे राणिया नूं राजी कीधी । तरै राणिग्रा राजा रा बीड़ा झेलिया नहीं । कहाई—सो राज रै तो वडो ग्रंधारखातो छै । वडी रजपूताणी नू वरस ग्रेक हुग्रो छै । रजपूत दरीखानो मुग्रे छै ।—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

३ फकीरन, सन्यासन ।

उ०—-विडरी हिरणी सी फिरणी बिजकाती, मुखडो मुसकाती जोरो जतळाती । ग्रोळै सक ग्राटा कोळै जिम कुयिगी, हावर सामणिया सांमणियां हुयगी ।—ऊ का

वि.—१ श्रावण मास की, श्रावण मास से सम्बन्धित ।

उ०—करै राह प्रथीपामणी 'ग्रभै' जोगी किया, जकै नह सांमणी तीज जांणै । दमकती दामणी देस मरहट दिना, ग्राद कर सामणी सोन ग्राणै ।—प्रथीराज राठौड़

२ भयकर, विनाशकारी, नाश करने वाला ।

उ०—दामणी मेह प्रगटै दखा, ग्रधिक देठ घघिसांमणी । सामणी कोट किना मसी, गैवर दिरवा गांमणी ।—मे. म

रू. भे —सामिण, सामिणी, सामिनी, स्यामणी ।

सांमणूं, सांमणू—देखो 'सावणू' (रू भे.)

सामतगी-स स्त्री —१ भाटीवश की एक शाखा ।

स पु.—२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सांमद्र—देखो 'समुद्र' (रू. भे)

सामद्रोह—देखो 'स्वामीद्रोह' (रू भे.)

उ०—ग्रमरनी गीत 'ग्रवरग' तणी ग्रादगी, चित्रगढ तणी घाढू तजी चाढ । सामद्रोहा हुग्रा रागवाळा सुरह, राण पातदियौ बियो रिढमाल ।—दुरगादास राठौड़ री गीत

सांमद्रोही—देखो 'स्वामीद्रोही' (रू भे)

सामधरम, सामधरमाई—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे)

उ०—१ ग्रागै कमो वरै ग्रामाळा, चोडै मार लियौ कळवाळा । सामधरम लेखवै सगाई, भिळियो गळा न गेवै भाई ।—रा. रू.

उ०—२ थारूं ब फुरमायो तू वधारणै नायक छै । स्वावास थारी सांमधरमाई नूं पछै उण नू वधार मोटो कियो ।—नी प्र.

उ०— ३ जोगणिया हम हम बोली, वरस ४८ रै राज री वर दैनै सीख दीधी । जगदे चाह नूं घरै पधारिया । राजा श्री सत सामधरमाई देखि नै निपट राजी हुवौ । महिन ग्राया, पोढिया । धन्य जगदेव ४८ वरस रो राज दिरायो ।—जगदेव पवार री वात

उ०—४ इण मै प्रयोजन ग्रै छै घणी रो तो वीरपणो बिना सिर (कबध) होय लडणो, घोटा री सामधरमी रजपूता नै उपदेस पमू चारो खाण वाळै ही सामधरम पाळियो ।—वी स टी.

सामधरमी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू. भे.)

उ०—सु कारी न हिंदुस्तान न खुरासाण माहे सुणी न दीठी । संटी रै पाखेडि कारी की । जिनरा सांमधरमी हुता तिया रा जीव दोहरा हुवै हुता । ग्रर हरामखोरे पूरी कारी की । ग्रापरो मन मनायो ।

—द. वि.

उ०—२ जिको ग्रादमी दुरगादास जिसा सांमधरमी नें ई देसनिकाळो देय सकै, उणनै मुकनसिंह रो माथो वढावता काई जेज लागै । दोनूं जणा ग्रापसरी मैं सलाह कीवी । खास भरोसा रा ग्रादमी साथै लिया । ग्रर रथ जोताय नै रातूरात पाली कानी रवानै व्हिया ।—ग्रमरचूनडी

सांमधरमी—१ देखो स्वामीधरम' (रू भे.)

उ०—इण मैं प्रयोजन ग्रै छै, घणी रो तो वीरपणो विना सिर

२ देखो 'समुद्र' (रू. भे) (ना. डिं को; ह. ना. मा)

उ०—१ सु बस राखि मुलक न सामद, दळ सामद मोडै दरबार। 'अभमळ' उभळ दळा सझि आयौ, नर सिणगार जोगणी नगर।
—सू प्र

उ०—२ असा वस छत्रीस दरगह उवरा, सांमद चद दडिदक आरिख इंद रा। जोधा रा विवि जोध विराजै ज्यारका, परिहा खागीवध कमध मधाउत मारका।—र वचनिका

सामदर, सामद्र—देखो 'समुद्र' (रू भे) (अ. मा, ह ना. मा.)

उ०—१ इता देस पुर ज तू दबावै, इतै मरी दुरभख नह आवै। इम वर पाय सभै दळ अेहा, जळ सामद्र ऊभळिया जेहा।
—सू. प्र

उ०—२ हय रत्थ गैजूह पायक्क हल्लै, इळा जाणी सामद्र सातै उभल्लै। जिकै वार स्रीराम री जान जोई, कहै ओपमा पार पावै न कोई।—सू. प्र.

सांम-स पु. [स सामन्] १ प्राचीन काल मे यज्ञ आदि के समय गाये जाने वाले वेद मत्र।

२ चार वेदो मे से तीसरा वेद, सामवेद। (डिं को.)

उ०—पढत जोतकी पुराण, तारकेस कै तवै। रघुस साम जुभ अथ, च्यार वेद कै चवै।—सू प्र

३ राजनीति के चार अगो मे से एक।

उ०—साम दाम दड भेद आदि नू साम रै साथ आइ मिळण मैं अनेक लाभ जणाया।—व. भा

४ प्रशंसात्मक गान या छन्द।

५ कोमलता, मृदुता।

६ मैत्री, दोस्ती।

[फा शाम] ७ सायकाल, सध्या।

उ०—स्रीनारायणजी प्रतिग्या राखौ। हमैं कासू होसी? आपकी राखी प्रतिग्या रहसी। वहोत अजीज करुणा कीवी। इण तरह साम हुई।—पलक दरियाव री वात

८ हाथ मे रखने की लकडियो या हथियारो के मध्य भाग या दस्ते मे लगाया जाने वाला धातु का बध विशेष।

[फा साम] ९ मृत्यु, मरण, मौत।

१० दर्द, पीडा।

११ देखो 'सामी' (रू भे)

उ०—१ मवळ भीड सभळी, झूझ ग्रहियौ झूझारै। साम काम हणमत, कमध कुळ मग सभारै।—गु रू व.

उ०—२ नमसकार सूरा नरा, विरद नरेस वरम्म। रिजक उजाळै साम री, पाळै सामधरम्म।—बा दा

उ०—३ मेरै साम सुहाग का, छाना रहै न नूर। विलखै वदन दुहागिनी, हरिया अगं सूर।—अनुभववाणी

उ०—४ होतब सा जोनब नही, अरथु सा न गरथ। वन न को वेहद सा' साम सा न समरथ।—अनुभववाणी

उ०—५ सेणा सेती रोसणी, असेणा सू गूझ। साम सनेही ना किया, ओरा रह्या अळूझ।—अनुभववाणी

१२ देखो 'स्याम' (रू. भे.)

उ०—अट्ठारसौ अठतरौ, चैत बीज पख साम। 'बाकै' ग्रथ वणा-वियौ, नीत मजरी नाम।—बा. दा

१३ देखो 'स्यामक' (रू. भे) (उ. र.)

रू भे.—साव, ।

सामक-वि. [स सामक] सामवेद सम्बन्धी।

स. पु.—सामवेद का अच्छा ज्ञाता।

सामकरण—देखो 'स्यामकरण' (रू. भे.)

सामख-वि.—१ पूरा, सम्पूर्ण।

उ०—आ सामख रात अर आ अेकली लिखमी! कणै श्री वापडी पग दावती तो कणै श्री सरीर देखती कै ताव कितो'क है।
—वरसगाठ

२ लम्बा, बडा।

सामखोर, सामखोरौ-वि.—१ स्वामी भक्त।

२ स्वामी के प्रति धर्म।

सामग-स पु [स सामन्+ग] १ वह ब्राह्मण जो सामवेद का गान कर सके।

२ भगवान् विष्णु का नाम।

सामगरी, सामगिरी, सामग्री-स. स्त्री. [स. सामग्री] १ किसी कार्य मे सामूहिक रूप से प्रयोग मे आने वाली चीजें।

उ०—१ कयौ—मा, मा! तू मा होय'र पखपात क्रिया करण लागगी। कठै ई सामगरी रौ ठाठ अर कठै ई सासौ निराठ।
—वरसगाठ

उ०—२ सामगरी अग्र धरै सुचारा, साजै सव साधन सेवा रा। हर पूजिया पछै त्रप चित हित, खडग पात्र जळ पूर धरै खित।
—सू. प्र.

उ०—३ म्हारै पण कन्या नही जिण थी म्हारौ धन लगाई भाई जसराज री पुत्रिया रा कन्यादान रौ फळ लेण री म्है हीज विचारी। अर बूदी रा ही अमल मैं ज्रैतो कहै जिण ठाम सामग्री रा मचय करि वरात बुलावण री धारी।—व. भा

उ०—५ आपरी पुत्रिया रै समान धन भूषण वस्त्र दास दासी गज वाजि सिविका रथ प्रमुख सामग्री देर चौथै दिन वरात नू विदा करि फेर बूदी आयौ।—व भा.

२ घर-गृहस्थी का सामान।

३ सामान, साधन।

४ सामान, असबाव।

सामज—देखो 'स्यामज' (रू भे) (डिं को; ह. ना. मा)

सामटणौ, सामटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे.)

सांमरी–स स्त्री.—फूल व पत्तो से रहित एक प्रकार की वेल विशेष। (अमरत)

सांमरू—देखो 'साभर' (रू भे)

उ०—एसै भयाणख एकलगिड वराह ढाए, एतै मैं केतेक खिरगोस ग्रिग सामरू के जूथ आए। तिस पर चित्रु कूतूका धाव। सीह-गोमू के दाव। ऊछट झपट से मिळते हैं। मोहरा जडाव करते हैं।—सू प्र

सामरोट–स. पु —ऊमरकोट के दक्षिण की ओर की भूमि जहा पर प्राचीन काल मे समा यादवो का राज्य था। (पा. प्र)

सांमरो—देखो 'साभर' (रू भे)

उ०—सिह व्याघ्र अग रीछ वानरा, सुहरा सामरा घोर रे। आहेडी को अत्यज आवि, म्लेच्छ भयकर चोर रे।—नळाख्यान

सांमरचो—देखो 'साभरियो' (रू भे)

उ०—गरब करि ऊभो छइ सामरचो राव, मो सरीखा नही ऊर भुवाल। म्हा घरि साभर उगहइ, चिहु दिस थाण जेसलमेर। लाख तुरी पाखर पडइ, राजिकउ थानिक गढ अजमेर।—बी दे

सांमळ, सांमल–स पु —१ सूर्य, सूरज। (ना. डि को)

२ देखो 'सावळो' (रू. भे) (उ र, डि. को, ह ना मा)

उ०—१ गह गजे रै गह गजे, भिड जग वडा खळ भजे। गीधा सामळ दीध पळागळ, मेंगळ खागति मजे।—र ज प्र.

उ०—२ अलेख सलाम सलाम अलेख, सतगुर सेज वलिभद्र मेख। देवापति सामळ देव दुगम, अईयो अनरज मकज अगम।—पी ग्र

उ०—३ प्रणमति नाग अनेक पीर, साहिबी नमो सामळ सरीर। डर करै दंत तूसा दईव, जोनिया दियै इनेक जीव।—पी. ग्र.

३ देखो 'सामिळ' (रू. भे.)

उ०—१ एकण री वळ घणो एका री थोडो ओ थोडा वळ वाळा रै सामळ सो इण मैं भागणो तथा छळ कर घणा वळ वाळा सू मिळ जाणो इणमै फायदो पण स्यामधरम और वीरपणो नही। —वी स टी

उ०—२ तरै पडिहारै कह्यो—थारै वेटी पदमणी वूट छै, तिका परणावौ तौ था सामळ हुवा।—नैणसी

उ०—३ सवाई जयसिंहजी जोधपुर ऊपर आया जद मै पण उणा रै सांमल था। —मारवाड रा अमरावा री वारता

सामलात, सांमलाति, सांमलाती–वि —शामिल, सम्मिलित।

उ०—१ फोजा की तयारी साथि मेखा सीस आयो, सामू राव मेखो चद्रसेणो के चलायो। मोजावादि कानी सू नरू का फोज ल्याया, सो भी राव सेखो सांमलाती फेरि आया।—शि वं

उ०—२ हौता गाव भूमि सावका नै जो वताया, भेरूंसिंघ सारा सांमलाती यौं रखाया।—शि व.

रू भे —सामिलात।

सांमळियो—देखो 'सावळो' (अल्पा, रू. भे)

उ०—१ समरै न जिकै नर सांमळियो, कतअन जिका मिर काहुळियो। अनअत करै की काटूळियो, समरत जिकै नर साम-ळियो।—र ज. प्र.

उ०—२ गाफिल आळ जंजाळ न गावै, भुज सांमळियो सरम भळावै। 'किसन' कहै जमहूत म कपै, जपै रे मन राघव जपै।—र ज प्र

सामळो—देखो सवळो' (रू भे.)

उ०—सडफ्फै वीजू जळा हाम मोहा वटफ्फै सूर, गीमहार भडफ्फै पडवग्गे नथी सभ। ओधणी हुटफ्फै पळा सामळो हडफ्फै गूद तड कई अटफ्फै पडफ्फै वरा रभ।—वडीदान निडियो

सांमळू, सांमळौ—देखो 'सावळो' (रू भे)

उ०—१ मायद मोर पीछनी धडी, कानै लोळि रतन सू जडी। देव तणउ सामळू सरीर, कटि मेखळा सवद गभीर।—रा दे प्र.

उ०—२ विराजै नगा ओप सू रूप वीठो, दळा नाथ श्रीनाथ रो रूप दीठो। वणी सामळै गात फोरी वसन्नं, तिमो सूरजं जोत मोनी रतन्नं।—रा. रू

उ०—३ ओपै गज सांमळा अनैसा, जपि गुण डोळ निमगळ जेसा। अग्ण अवाडी भूळ अरोहै, सावण कि अबुद सोहै।—रा. रू

उ०—४ भरै माग सिंदूर, मारग भाळै, वहै सामळो व्रज मेरी विचाळै।—ना. द.

उ०—५ ऐसै वराहू के ऊपर वीजूजळा का घाव। सो कैसै सामळै वदळू पर वीजूजळा का मिलाव।—सू. प्र.

उ०—६ किसन अनै लखमण कहै, करा महा जुध काम। सीता वाहर सामळो, गेस घणी मा राम।—पी. ग

उ०—७ जगदीस जनक रै ज्याग मा, आयो उतामळो। भांजियो धनख रुघनाथ भीड, सीत परणियो सामळो।—पी ग्र.

सामलो–वि (स्त्री सामली) १ आगे का, सामने का।

उ०—१ असवार कह्यो—म्हे तो इण सांमला मगरा सू ई दूजे मारग टळ जावूला। अठै ई जरूरी काम है। अबै तो ओ थारो भार थनै ई उखणणो पडसी।—फुलवाडी

उ०—२ जरै गोहरी अरज कीधी, कह्यो—रावजी सलामत! मोरचा तो भुरज भुरज टणका छै। तिण मै सामलो भुरज दीसै तिका नाहरी भुरज कहीजै छै। तठै नाहरी वाघी रहै छै। —राव रिणमल री वात

२ प्रतिद्वन्द्वी, प्रतियोगी।

३ आने वाला।

उ०—कदेही म्हैं भी आ दाह भागवानी मैं टोरा अर टिल्ला लगा-वतो। सामलै परमगी नै टेटवै कर लेतो अर टको व्याज कढा-वतो। पण मैणी पर मरचो। अम्मीणी सू डरचो। जैर पीयो अर वेर लियो—दसदोख

ज्यू—सामली गाडी वणाक आवैली।

(कवच) होय लडणौ, घोडा रा सामधरमी रजपूता नै उपदेस पसू चारौ खाणवाळै ही सामधरम पाळियौ ।—वी. स. टी
२ देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे.)
सामधरम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे.)
उ०—नमसकार सूरा नरा, बिरद नरेस वरम्म । रिजक उजाळै साम रौ, पाळै सामधरम्म ।—बा दा.
सामधरम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)
उ०—१ बोलै 'भाग' 'मुकन्न' तरा, जोधौ भडा समेत । सांमधरम्मी जूझ मैं, कमी न राखी खेत ।—रा रू.
उ०—२ सामधरम्मी साम छळ, दळ गजै तुडताण । गो 'रंगायर' जोतहर, कर दिल्ली घमसाण ।—रा. रू
सांमधी—देखो 'सबधी' (रू भे.)
उ०—पुर पाटण थी चाल्यौ राव, वीसलपुर जाई दियौ मीलाण । कोटी कोटी कोठी सामधी, पाली परिगह अत न पार ।—बी दे.
सामध्रम, सामध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे.)
उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, निरभै काळौ नाग । सिर राखै मिण सामध्रम, रीझै सिंधू राग ।—बा दा
उ०—२ घोडा वीरत प्यार घण, साच प्यार इनसाफ । प्यार सामध्रम धरण पुन, प्यार सुजस 'परताप' ।—जैतदान बारहठ
सामध्रमी, सामध्रम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)
उ०—छळै ऊबरा विहुवै कुत वाण हु केवाण छौळा, ठहै तोप दोळा चोळा दळा वै ताठोड । घरा थभ मुरधरा बरापूर सामध्रमी, राडिगारा भलै उभै अनमी राठौड ।
—कुसळसिघ चापावत अर सेरसिघ मेडतिया रौ गीत
सामनै-क्रि. वि.—१ सम्मुख, अगाडी ।
२ प्रत्यक्ष ।
३ विरुद्ध ।
सांमनौ, सामनौ-स. पु —१ मुकाबला, भिडत ।
उ०—१ धाडेनी आ वात आछी तरै सूं जाणै हा कै गाव मै लारै रह्योडा मिनख थोडा है अर इणा मैं सू कोई उणा रौ सामनौ करण नै नही आवैला ।—रातवासौ
उ०—२ कुचमादी रै घडी घडी दौडण सू राजाजी री हीमत वधी । है तौ साव डरकण सुभाव रौ । सूरवीर व्हैतौ तौ सामनौ करतौ । राजाजी लारौ वरै अर वौ चापळ जावै । राजाजी री हूस माय री माय उथाला खावण लागी ।—फुलवाडी
२ किसी के विरुद्ध या विपक्ष मे खडे होने की अवस्था या भाव ।
३ किसी पदार्थ के आगे का भाग ।
४ भेंट, मुलाकात ।
५ प्रतियोगिता ।
सांमपण, सामपणौ-स. पु —स्वामित्व ।
उ०—धाधळ उदैकरण हित धारै, करतौ गयद मतै करारै । सामळ 'विजो' सामपण सद्धर, 'नरहर' 'आणद' तणै निभै नर ।
—रा. रू.
सांमवेद—देखो 'साम' (२) (रू भे)
सामर—देखो 'साभर' (रू. भे)
सांमरत, सांमरत्य, सामरथ, सामरथि—१ देखो 'सामरथ्य' (रू भे) (डिं. को)
उ०—तू म्हनै म्हारी जात कोनी पूछी । तूं म्हारी समाज माय किण तरिया री हालत है अर रुपिया-पीसा री सामरथ किसीक है औ बाता भी नई पूछी ।—तिरसकू
२ देखो 'समरथ' (रू. भे.)
उ०—१ सध्योपासन तजि बाग साज, निस दिवस बुजू रोजा निवाज । सामरत्य सिंह हम नहिं स्रगाळ, गौ मास नाम पै देत गाळ ।—ऊ का.
उ०—२ हजूर आप वडा हो, सामरथ हौ, इणनै कियाई वचाय दौ, म्हारौ एका एक छोरौ है । म्हू आपरी हर तरै सू सेवा करण नै तैयार हू । अबै मरण वाळौ तौ मरग्यो, वौ तौ पाछौ आवै नी अर एक हत्या फेर व्है जाएला ।—अमरचूनडी
सामरथीक—देखो 'समरथ' (रू. भे)
उ०—रूप लखण गुण तणा रुखमिणी, कहिवा सामरथीक कुण । जाइ जाणिया तिसा मैं जपिया, गोविंद राणी तणा गुण ।—वेलि.
सामरथ्य—१ देखो 'सामरथ्य' (रू. भे)
२ देखो 'समरथ' (रू भे)
सामरथ्य-स. पु. [सं सामर्थ्य] १ समर्थ होने की अवस्था या भाव ।
२ किसी कार्य को सम्पादित करने की शक्ति या योग्यता ।
३ शब्द की व्यजना शक्ति । (साहित्य)
४ शब्दो का पारस्परिक सम्बन्ध ।
५ धन, दौलत ।
६ शक्ति, बल ।
रू भे —सामरत, सामरत्य, सामरथ, सामरथि, सामरथ्य, साम्रत, साम्रथ ।
सामराट—देखो 'सम्राट' (रू. भे.)
उ०—वाढ फोजा डमरा कटाणौ हटै सीगवाळौ, सामराटा नाम रटाणौ गुमरा सवाय । सोभाग रटाणौ जमी चमरा ढुळता सीस, मारु राव थटाणौ अमरा लोक माय ।—जवानजी आढौ
सामरात-स पु —युद्ध, सग्राम । (डिं. को.)
सामराथ—देखो 'समरथ' (रू भे)
उ०—१ नरेस अनाथ नाथ, अनाथिया घरै आथ । करै तू सुधारै काथ, रटा सामराथ ।—र. ज प्र
उ०—२ दुनि पाळ इद्र ढाळ, विरदाळ जै दयाळ । गुणी साथ सामराथ, रटै क्रीत गाथ ।—र. ज प्र
सामरियौ—देखो 'साभरियौ' (रू भे.)

इसके अन्तर्गत आते है। यथा—सदा सत्य बोलो, दूसरो की भलाई करो इत्यादि। किन्तु यदि यह कहा जाय कि यज्ञ मे हिंसा की जा सकती है, किसी की प्राण रक्षा के लिए झूठ बोल सकते हो, तो इस तरह की विधि विशेष विधि होगी। यह सामान्य विधि की अपेक्षा अधिक मान्य होती है।

सामान्या-स. स्त्री [स सामान्या] १ सर्वसाधारण को उपलब्ध स्त्री।
२ धन लेकर किसी से प्रेम करने वाली नायिका। (साहित्य)

सामा-स. स्त्री.—१ विवाह के दिन होने वाली प्रात कालीन एक रस्म विशेष जिसमे जनवासे मे वर के सजधज के बैठने पर वधू-पक्षीय जन पुरोहित सहित आकर तिलक आदि लगाते है। (श्रीमाली)
२ भाटी एवं यादव वशीय क्षत्रियो की एक शाखा।

सांमाइक, सामाई—देखो 'सांमयिक' (रू. भे) (उ र)
उ०— .... . सम्यकत्व परिपालिय, देव पूजियइ, गुरु परयुपस्ति कीजइ, सिद्वात साभलियइ, तत्व अभ्यसीइ, विचार पूछियइ, पोसधसाला जाइई, चदन कीजइ, सांमाइक लीजइ, पूरवाधीत सास्त्र गुणियइ, ...।—व. स

सांमाचार, सामाचारी—देखो 'समाचार' (रू भे.)
उ०— . ...विखय रूपिया सरप्प तेह प्रति गुरुड प्राय, ससार समुद्र प्रति प्रवहग प्राय, जिन प्रवनालकार, उग्रविहार, पचविधाचारपाल नैक पचानन, दसविध चक्रवाल सामाचारी प्रगल्भ......।
—व. स.

सांमाज—१ देखो 'समाज' (रू. भे.)
२ देखो 'स्यामज' (रू भे)
उ०—सार भरमार गुळजार पळ गूद सत्र, अलल गुजार गोळा अलीजै। साज धर जरद सामाज धर सातरा, राजधर नरेसुर सुतन रीझै।—महाराजा बहादरसिंघ रो गीत

सांमाजिक-स. पु [सं सामाजिक] १ सभा का सदस्य, सभासद।
(डिं को.)
२ वह व्यक्ति जो तरह तरह के तमाशे करके धनोपार्जन से जीविका निर्वाह करता हो।
३ उक्त तमाशो को देखने हेतु एकत्रित जनसमूह।
४ काव्य एव सगीत का अच्छा ज्ञाता। (साहित्य)
वि [स सामाजिक] १ समाज का, समाज सम्बन्धी।
उ०—डागो सामाजिक नाटका-चेटका मैं ही धपाऊ भाग लेवै अर आप सागी धणी, पारट करै। काळू री नाटकसाळा रो तो जनक जाणीजै।—दसदोख
२ सुहृदय।

सामाजिका-स पु—१ समाज मे रहने वाले सदस्य। (डिं को)
२ सभा के सदस्य, सभासद।

सामाथ—देखो 'समरथ' (रू. भे)
उ०—१ अवध रा धणी रिण सीह भजण असह, लीह सता तणी निकू लोपै, भणै किव भेद मैं। तई सामाथ प्रभ वधु दीना तणा, अनाथा नाथ भुज बिरद ओपै, वणै कथ वेद मैं।—र. ज. प्र.
उ०—२ सामाथ तूं सुरनाथ तू, रिमघात तू रघुनाथ। रघुनाथ तू दसमाथ रामण, भाजवा भाराथ।—र. ज प्र

सामाधि, सामांधी—देखो 'समाधि' (रू. भे.)
उ०—सहज का आसण सहज आसा, सहज मैं खेलणा सहज पासा। सहज सब जानना खूब भाई, सहज सामाधि सहजै मिळाई।
—अनुभववाणी

सामायक, सांमायिक-स. स्त्री.—जैन मतानुसार वह एक घडी का समय जब समस्त सासारिक क्रिया-कलापो को छोड कर प्रभु-स्मरण करते हैं।
उ०—१ दिवस प्रतै कोई दियइ सुजाण, सोना री कडी लाख प्रयाण। तेहनउ पुण्य जेतलउ, सांमायक लीधै तेतलउ।—स. कु.
उ०—२ ढूढार मैं एक भाया रै बीरभाणजी री सका पडी। पछै स्वामीजी कनै आयो। सामायक नौ उपदेस दियो। जद तै बोल्यो—सामायक तो न करू कदायच सामायक मैं थानै स्वामीजी महाराज कहिणी आय जावै तो मोनै दोख लागै।—भि. द्र.
उ०—३ सामायिक पोखह करै, वलै पडिकमणो विसेखो रे। पाचू पद खमावता, सिद्ध 'उदाई' सू देखो रे।—जयवाणी

सामि—देखो 'सामी' (रू. भे.)
उ०—१ ऊहड बळ दूणो 'अभो', दळ 'भीमोत' दुरग। मागळिया 'ऊदो' 'रतन', सामि कमध अभग।—रा रू
उ०—२ एक अचभ्रम परखणौ, अति छति उकति अजेव। ज्यो मनि आवि कै सामि कै, पाय दिखावै वेव।—रा. रू.
उ०—३ अवसाण मरण खगधारा, सामि कामि भजियै देहा। सोचत चित नित नित्त, प्रामीजै पुन्नरेहा ई।—र वचनिका
उ०—४ नाम लियता नाम, सांमि सूझै सहि सूझै। राम तणै रस माहि, सेस बूझै सिवि बूझै।—पी ग्र
उ०—५ सामि रै रुक्म साळा काळा काळा जिकै कान्ह, सघारै सिंघाळा भाई कसवाळा सेख। दीसता दीनदयाळ चिरिताळा निमो देव, अकरूर आळा भिळै तमासा अलेख।—पी. ग्र

सामिण, सामिणी—१ देखो 'साइणो' (पु.)
उ०—समेळै सघण सहर नर साहण, सामिण सहुवर चाढि सभीत। आरंभ कर अजमेर आवियो, वरसाळ किना विक्रमादीत।
—विक्रमादीत राठौड री गीत
२ देखो 'सामणी' (रू भे)
उ०—सकळ सुरासुर सांमिणी, सुण माता सरसत्त। विनय करै नै विनवू, मुझ दो अवरळ मत्त।—ढो. मा
३ देखो 'समांणी' (रू भे)

सामिधरम, सामिधरम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे.)
उ०—मुहता जोडे मेर अजादा, जुध जुध ईढगरा सूं ज्यादा।

सांमला वरात किसीक लावेला ।

रू. भे.—सामहनौ, सामहौ, साम्हलौ ।

सांमवेद—देखो साम (२) (रू भे)

सामहणौ, सामहवौ—देखो 'सभणौ, सभवौ' (रू भे.)

उ० —१ वीरम्रदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रह-त्रहतै त्रवक तणै त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरि भुगल तणै भूभूयाटि भूंफिइ भिलकि फाटी, काहल तणै कोलाहलि कान कमकम्या, ...।—व स.

उ०—२ ....कातर डहडहइ, चिंध लहलहइ, मयराल गुड्या, तुरगम पाखरचा, सूरा सांमहह्या, लगि वाजइ, हस्ति माचइ, कवध नाचइ, प्रहरण भलहलइ, वीर खलभलइ, प्रहारि उरज्जर कुजर पडइ, सूनासणा तुरगस तडफडइ, रथ धडहडइ ।—व. स

सामहणहार, हारौ (हारी), सामहणियौ वि० ।

सांमहिग्रोडौ, सामहियोड़ौ, सांमह्योडौ—भू० का० कृ० ।

सामहीजणौ, सांमहीजवौ—भाव वा० ।

सामहलौ—देखो 'सामलौ' (रू भे.)

उ० —साभी वेळा सामहलि, कठळि थई अगासि । ढोलइ करइ कवाइयउ, आयउ पूगळ पासि ।—ढो मा

(स्त्री सामहली)

सामहियोडौ—देखो 'सभियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सामहियोडी)

सामहौ—देखो 'सामलौ' (रू. भे)

२ देखो 'साम्हौ' (रू. भे.)

उ०—१ अमराव अमीरळ वळ अथाह, सामहा मेलिया पातसाह । जिण करै सलामा दास जेम, आदाब वजायै साह एम ।—वि स.

उ०—२ वदन तेज कळपत रौ वयळ वाडव वणै, ऊफणै क्रोध पौरस अमामौ । मडाणौ हेक राजा घणै मछर सू, साहजादा दुह तणै सामहौ ।—रूघौ मुहतौ

उ०—३ दोत घरि आव्यौ वीसलराई, राई भतीजो सामहौ जाई । तुरीय पलाराय राव का, चाल्या चौरास्यौ अरु परधान ।—वी दे.

उ०—४ दाखा तूभ ना निमौ नरसिंघ देह, निमौ ताहरौ कोप लिखमी सनेह । किसन तूभना साद पहिळाद कीधौ, दीनानाथ तै सामहौ साद दीधौ ।—पी ग्र.

(स्त्री सामही)

सामहु—देखो 'साम्हौ' (रू. भे) (उ र)

सामान—स. पु. [फा. सामान] १ कार्य-साधन की आवश्यक वस्तुए,

उ०—१ वैसाख वदि ६ डेरो सलावास हुवौ सु जीमनै आथण रा जोधपुर जाय रह्या । दिन ४ मु नैणसी जोधपुर रह्यौ, नै सुल सामान कटक रौ कीयौ । चारू तरफ साथ नु छडो चढीयौ वैसाख वदि १३ डेरौ नैणसी चैनपुरै कीयौ ।—नैणसी

२ प्रवन्ध, व्यवस्था ।

३ वस्तुएं सामग्री ।

उ०—लिगन्ना नारेळ लेर देर सावौ नकौ लीधौ, सजायै ठीकाणा वेहू व्याव का सामांन । हगामा होकवा राग रग रा हमेस हुवै, अठी जानवाळी सोभा वणावै आजान ।—बादरदान दधवाडियौ

४ युद्ध-सामग्री, युद्ध का सामान।

उ० —१ तरै रावजी मेवाड रा अमरावा नै कागद परवाना स्त्रीदीवाण रा नाम मोहर सु मेलिया । जिण मैं लिखियौ—जिण ही नै कुभा रा आटा रा पटा री चाहि होवै तिको वेगौ आइ भेळौ होज्यौ तिकौ चाचा मेरा रा आटा री चाह करै तिकौ घरा वैठा रहज्यौ तथा चाचा कनै जावज्यौ, म्है पिण चाचा सु मिळण आवा हीज छा । तरै मोटा मोटा मेवाड मैं उमराव था तिकै आप आपणौ सामान साथ लै नै कुभाजी रै पगै लागा ।—राव रिडमल री वात

उ०—२ तरै उमरावा नै घोडा, हाथी, सिरपाव दे दे नै कह्यौ—थाहरै खोळै धरती नै कुभौ छै । चाचौ मेरौ ढाकणीयै गढ सामांन करनै वैठौ छै । आपरा साथ सु स्रीदीवाण तौ चीतौड नै सिधाया, मेवाड मै कुभा री आण फेरी ।—राव रिणमल री वात

५ गृहस्थी की उपयोगिता की वस्तुए ।

७ धन, द्रव्य, दौलत ।

उ०—स्याम सुतन अभिनवा सवाई, दिन दिन पढियौ हैक ददै । गुण सामान मिळवै गढवा सूं, किलौ भिळै नह हुला कदै ।

—राणा कुसळसिंघ स्यामसिंघोत री गीत

रू भे.—समान, सेमान ।

सामान्य—वि. [स सामान्य] १ साधारण, मामूली ।

२ सार्वजनिक, आम ।

३ सब या बहुतो से सम्बन्धित ।

वि —समान होने की अवस्था या भाव ।

सामांन्यतया—क्रि. वि [सं सामान्यतया] सामान्य रूप से, सामान्यतः ।

सामांन्यता—स स्त्री [स सामान्यता] सामान्य होने की अवस्था या भाव ।

सामान्यभविस्यत—स पु. यौ. [स सामान्य भविष्यत्] एक प्रकार का भविष्यकाल विशेष जिससे भविष्य की घटनाओ का पता चलता है । (व्याकरण)

सामान्यभूत—स. पु. यौ [स सामान्य भूत] एक प्रकार की भूतकालिक क्रिया, जिसमे किसी बीती हुई घटना का उल्लेख मात्र होता है । (व्याकरण)

सामान्यवरतमाण, सामान्यवरतमान—स पु. यौ. [स. सामान्य वर्तमान] वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमे कर्त्ता का उसी समय कोई करते रहना सूचित होता है । (व्याकरण)

सामान्यविध, सामान्यविधि—स स्त्री यौ [स सामान्य विधि] साधारण आज्ञा, आम हुक्म ।

वि वि —सर्व साधारण के लिए सामान्य रूप से दिये गये आदेश

इसके अन्तर्गत आते है। यथा—सदा सत्य बोलो, दूसरो की भलाई करो इत्यादि। किन्तु यदि यह कहा जाय कि यज्ञ मे हिंसा की जा सकती है, किसी की प्राण रक्षा के लिए झूठ बोल सकते हो, तो इस तरह की विधि विशेष विधि होगी। यह सामान्य विधि की अपेक्षा अधिक मान्य होती है।

सामान्या-स. स्त्री. [स सामान्या] १ सर्वसाधारण की उपलब्ध स्त्री।

२ धन लेकर किसी से प्रेम करने वाली नायिका। (साहित्य)

सांमा-स. स्त्री.—१ विवाह के दिन होने वाली प्रातः कालीन एक रस्म विशेष जिसमे जनवासे मे वर के सजधज के बैठने पर वधू-पक्षीय जन पुरोहित सहित आकर तिलक आदि लगाते है। (श्रीमाली)

२ भाटी एवं यादव वंशीय क्षत्रियो की एक शाखा।

सांमाइक, सामाई—देखो 'सांमयिक' (रू. भे) (उ र)

उ०—.........सम्यकत्व परिपालिय, देव पूजियइ, गुरु परयुपस्ति कीजइ, सिद्धात साभलियइ, तत्व अभ्यसीइ, विचार पूछियइ, पोसधसाला जाइई, चदन कीजइ, सामाइक लीजइ, पूरवाधीत सास्त्र गुणियइ, ...।—व. स.

सामाचार, सामाचारी—देखो 'समाचार' (रू भे)

उ०—. ....विखय रूपिया सरप्प तेह प्रति गुरुड प्राय, ससार समुद्र प्रति प्रवहण प्राय, जिन प्रवनालकार, उग्रविहार, पचविधा-चारपाल नैक पचानन, दसविध चक्रवाल सामाचारी प्रगल्भ..... .।
—व. स.

सांमाज—१ देखो 'समाज' (रू. भे.)

२ देखो 'स्यामज' (रू भे)

उ०—सार भरमार गुळजार पळ गूद सत्र, अलल गुजार गोळा अलीजै। साज धर जरद सामाज धर सातरा, राजधर नरेसुर सुतन रीझै।—महाराजा बहादरसिंघ रौ गीत

सामाजिक-स. पु [स सामाजिक] १ सभा का सदस्य, सभासद। (डि को)

२ वह व्यक्ति जो तरह तरह के तमाशे करके धनोपार्जन से जीविका निर्वाह करता हो।

३ उक्त तमाशो को देखने हेतु एकत्रित जनसमूह।

४ काव्य एव सगीत का अच्छा ज्ञाता। (साहित्य)

वि [स सामाजिक] १ समाज का, समाज सम्बन्धी।

उ०—डागो सांमाजिक नाटका-चेटका में ही घणाऊ भाग लेवै अर आपे सागी धणी, पारट करै। काळू री नाटकसाळा री तौ जनक जाणीजै।—दसदोख

२ सुहृदय।

सांमाजिका-स. पु—१ समाज मे रहने वाले सदस्य। (डि को)

२ सभा के सदस्य, सभासद।

सामाथ—देखो 'समरथ' (रू. भे)

उ०—१ अवध रा घणी रिण सीह भजण असह, लीह सता तणी निकू लोपै, भणै किव भेद मैं। तई सांमाथ प्रभ वधु दीना तणा, अनाथा नाथ भुज विरद ओपै, वणै कथ वेद मैं।—र. ज. प्र.

उ०—२ सांमाथ तूं सुरनाथ तू, रिमघात तू रघुनाथ। रघुनाथ तू दसमाथ रामण, भाजवा भाराथ।—र. ज. प्र.

सांमाधि, सामांधी—देखो 'समाधि' (रू. भे.)

उ०—सहज का आसण सहज आसा, महज मैं मेलणा सहज पासा। सहज सब जानना सूत्र भाई, सहज सांमाधि सहजे मिळाई।
—अनुभववाणी

सामायक, सामायिक-स. स्त्री.—जैन मतानुसार वह एक घडी का समय जब समस्त सासारिक क्रिया-कलापो को छोड कर प्रभु-स्मरण करते है।

उ०—१ दिवस प्रतै कोई दियइ सुजाण, सोना री कडी लाख प्रयाण। तेहनउ पुण्य जेतलउ, सामायक लीधै तेतलउ।—स. कु.

उ०—२ ढूढार मैं एक भाया रै वीरभाणजी री सका पडी। पछै स्वामीजी कनै आयौ। सामायक नौं उपदेस दियौ। जद तै बोल्यौ—सामायक तौ न करू कदायच सामायक मैं थानै स्वामीजी महाराज कहिणी आय जावै तौ मोनै दोख लागै।—भि. द्र.

उ०—३ सामायिक पोखह करै, वलै पड़िकमणौ विसेखौ रे। पाचू पद खमावता, सिद्ध 'उदाई' सू देखौ रे।—जयवाणी

सामि—देखो 'सामी' (रू. भे.)

उ०—१ ऊहड वळ दूणौ 'अभौ', दळ 'भीमोत' दुरंग। मागळिया 'ऊदौ' 'रतन', सांमि कमध अभग।—रा रू

उ०—२ एक अचभ्रम परखणौ, अति छति उकति अजेव। ज्यौ मनि आवि कै सामि कै, पाय दिखावै वेव।—रा. रू.

उ०—३ अवसाण मरण खगधारा, सांमि कामि भजियै देहा। सोचत चित नित नित्त, प्रामीजै पुत्ररेहा ई।—र वचनिका

उ०—४ नाम लियता नाम, सांमि सूझै सहि सूझै। राम तणै रस माहि, सेस बूझै सिवि बूझै।—पी ग्र

उ०—५ सामि रै रुखम साळा काळा काळा जिकै कान्ह, सधारै सिघाळा भाई कसवाळा सेख। दीसता दीनदयाळ। चिरिताळा निमौ देव, अकरूर आळा भिळै तमासा अलेख।—पी. ग्र

सामिण, सामिणी—१ देखो 'साइणी' (पु.)

उ० – समेळै सघण सहर नर साहण, सांमिण सहुवर चाढि सभीत। आरभ कर अजमेर आवियौ, वरसाळ किना विक्रमादीत।
—विक्रमादीत राठौड रौ गीत

२ देखो 'सामणी' (रू भे)

उ०—सकळ सुरासुर सांमिणी, सुण माता सरसत्त। विनय करै नै विनवू, मुझ दौ अवरळ मत्त।—ढो. मा

३ देखो 'समांणी' (रू. भे.)

सामिधरम, सामिधरम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

उ०—मुहता जोडे मेर मजादा, जुध जुध ईढगरा सूं ज्यादा।

गोकळ सामिधरम पण ग्राहै, मुदर सुत ग्रायो व्रत साहै ।—रा. रू

सामिधरमी, सामिधरम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू. भे)

उ०—सामिधरम्मी साम तरण, सुणि परण गुरणं सपूत । मिळिया तं ग्रायोमरणा, राव तरणा रजपूत ।—रा रू.

सामिधेनी-स. स्त्री [सं सामिधेनी] १ होम की ग्रग्नि प्रज्वलित करते समय या ग्रग्नि मे समिधाएं छोडते समय बोला जाने वाला ऋग्मत्र ।

२ समिधा, ईंधन।

सामिध्रम, सामिध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे)

उ०—१ चद सूर लग नाम चढावै, करि जस सभदा तरणं कडै । सूरा मरण सांमिध्रम साटै, वसुधा दीन्ही भ्रिगुट वडै ।

—महेस सांगला री गीत

उ०—२ तिरिण वेळा नौबति नीसांरण तोग झडा सामिध्रम सोभा हिंदूस्थान री मरम भुजं ग्राई । तिरिण वेळा रा ग्राइयो काळा पहाड सोभा वरणी न जाई ।—र. वचनिका

सामिनी—१ देखो 'साइणी' (पु) (रू भे)

२ देखो 'सामणी' (रू. भे.)

सांमिप्य—देखो 'सामीप्य' (रू. भे)

सामिय—देखो 'सामी' (रू भे)

उ०—जदूकुळ-नायक सामिय जग्ग, पदम्म-पताक ग्रलकृत पग्ग ।

—ह र

सामियाणौ, सामियानौ-स. पु [फा शामियान] एक प्रकार का तम्बू जिसमे ऊपर का कपडा बासो पर रस्सियो की महायता से तना रहता है ।

रू. भे —समियाणौ, समियाण, समियाणो, समीयाण, समीयाणौ, साइवान, साईवान, सायीवान ।

सामियौ—देखो 'सामी' (रू भे.)

उ०—दोट् कितराइ लडियो निमो देवता, सबळ हरिणाख जिसा किसै भव सेवता । भगत रा सांमियं ग्रसुर कद रा भगत, राकसा न मारत घणौ तुना रगत ।—पी ग्र

सामिळ, सामिल-वि [फा शामित] १ साथ, शामिल, सम्मिलित ।

उ०—फौज सांमिल हुवो मुदायत फौज रा, प्राण तन जुदायत ठीक पूगो । भाग सुध तणौ सिरायत मेडतै, ग्रचड कथ उदायत भाण ऊगो ।—महेसदास कूपावत रो गीत

रू भे —समळ, सामळ, सामिळि ।

सामिलात, सामिलाति, सामिलायत, सामिलायती—देखो 'सामलात' (रू भे.)

सामिलि—देखो 'सामिल' (रू. भे)

उ०—ग्रसि वर वाद ग्रनाद ग्रकापा, चूरण खळ ग्राया सामिलि चापा । सकतसिघ निज दळा सहाई, दान सुजान भुजा वरदाई ।

—रा रू

सामी, सांमी-स. पु [स. स्वामी] १ ईश्वर, परमात्मा, भगवान ।

उ०—१ निरकार निरद्वार दईता सघार निमो, ग्रादेस ग्रपार पार ग्रवतार ग्रम । साधुग्रा सुधार सामी ग्राविस्यै निजारसाह, काइयो नदकुग्रार कस मार कस ।—पी ग्र.

उ०—२ सास सासि विसं थारी जस वास करा सामी, तनाई न जाणं जास तिका थारी तास । ग्रभवास टाळै परा जमवाळा ग्राम ग्यान, ग्रापरा पगा री राखं पीरदास ग्रास ।—पी. ग

२ भगवान विष्णु । (डिं को)

३ शिव, महादेव । (ह. ना. मा.)

४ स्वामिकार्त्तिकेय ।

५ पक्षिराज गरुड ।

६ राजा, नृप । (ह ना. मा)

७ स्वामी, मालिक ।

उ०—१ सूरज तेज पुज सरवेस्वर, जोति सरूप नेत्र जगदीस्वर । जग रखवाळ जगत चो जामी, सुर नर इस्ट ग्रस्ट चो सामी ।

—रा. रू.

उ०—२ महदीप छद तेरहै दस मत पय जाणौ, यण जोड़ सुजस राम ग्रत उर नम्भ ग्राणौ । जनपाळ स्रीदयाळ सुलख जियगत जामी । सरण सधार विरदधार हणूमान सामी ।—र ज प्र

८ पति, स्वामी ।

९ घर का प्रधान व्यक्ति ।

१० सेनानायक, सेनापति ।

११ श्याम देश का निवासी ।

उ०—सामी रूमी सजरी, गोरी कासगरीह । ईरानी, यमनी ग्रडर, सीराजी रण सीह ।—वा दा

१२ स्वामी शकर के ग्रनुयायी, दशनामी ।

उ०—१ सामी मडी मडाय कै, मन विखिया कै माहि । मिल साखा धन बौहत की, खुधिया भाजं नाहि ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ सामी सेवग वारणं, कथा सुणावै नित । ग्ररथ दिखावै ग्रौर कु, ग्राप ठगाई चित ।—ग्रनुभववाणी

१३ नाथ सम्प्रदाय के ग्रनुयायी ।

१४ साधु, सन्यासी ।

उ०—तद कुंवरसी कह्यौ—'जो मोनू फेर वरजियो तौ हू पेट मैं मार कटारी मरीस, का राव घात सामी हुय जाईस ।

—कुंवरसी साखला री वारता

मुहा—१ सामी कीसा साड मारै=साधु किसी को तकलीफ या हानि नही पहूँचाते ।

२ सामीजी ससार कैडो कै दिल जाणं जेडो=ग्रपने व्यवहार के ग्रनुसार दूसरो का व्यवहार होगा । (मि.—ग्राप भलौ तो जुग भलौ ।)

३ सामीजी वाळा तिलक है, मूवा ऊगटै=चरित्र सम्बन्धी जानकारी का पता बाद में चलता है।

४ सैदो सामी सूठ रो गाठियो=अति परिचय से प्रतिष्ठा नहीं रहती।

(मि. अति परिचय मे होत है अरुचि अनादर भाय)

५ बावाजी बाछडा वाळज्यो, कै बाछडा वाळता तो सामी क्यूं व्हैता=साधु परिश्रम नही करते, अगर कार्य करने की क्षमता या इच्छा होती तो साधु क्यो होते।

१५ देखो 'साम्ही' (रू भे)

उ०—१ अवै थे खेती करो जो खेती सामी आई तो आपी धान वेच घोडो लागा।—पचमार री वात

उ०—२ गोवर लीप्यौ-ढोळयौ आगणौ, सूरज सामी पोळी जी। पोळ्या माय सुमरोजी वैठ्या, घाल चौघर री चौकी जी।

—लो गी.

उ०—३ पूता री यू पूछ, कमाई सामी सूझै। आखी वाता आड, धीवड्या नै कुण वूझै।—नारी सईकडौ

उ०—४ घणकरा वहादुरा नै हर देस मांय, दुस्मण रै सामीं समरपण करणै रै पाछै भी, उण देस रा सब सू ऊंचा मान सनमान रा पदक मिलै है। समरपण सूं साहस अर वहादरी री कहाणी खतम नी समझी जा सकै।—तिरसंकू

उ०—५ घणै सनेह सू गदगद होय'र म्हैं कयो—तू महान है सैल, म्हैं थारै सामीं वहोत छोटो जीव हू। तूं अठै निस्चित हो नै रात भर आराम कर।—तिरसकू

१६ देखो 'साम' (रू भे)

रू. भे —सई, साइ, माई, सामि, सामिय, साम्य, मायी, माइ, साई, साहमी, सुआमी, स्याम, स्यामी, स्वामि स्वामी।

अल्पा.—सामियो, सामीडो, सामीड़ो, स्यामीडो।

सामीकवाव—स. पु यौ.—एक प्रकार का कवाव विशेष।

सामीकारतिक, सामीकारतिकेय, सामीकारतीक, सामीकारतीकेय—देखो 'स्वामीकार्तिकेय' (रू भे)

सामीडो, सामीडौ—देखो 'सामी' (अल्पा, रू भे)

सामीद्रोह—देखो 'स्वामीद्रोह' (रू. भे)

सामीद्रोही—देखो 'स्वामीद्रोही' (रू भे.)

सामीधरम, सामीधरम्म, सामीध्रम, सामीध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे)

सामीनो—देखो 'साइणी' (रू. भे)

उ०—रोजीना मारगैई छाती कूटो झाडू-वुहारू, पाणी-लूणी, पीसणो-पोवणो, दोवणो-विलोवणो अर धोवणो-धावणो। सरीखी सामीनी मायणिया मिळै तौ घडी-पलक मन राजी व्है जाए।

—अमर चूनडी

(स्त्री. सामीनी)

सामीप—१ देखो 'समीप' (रू भे.)

उ०—१ सिरी गग री नीर सनान सारू, दसतूर सिंदूर कप्पूर दारू। हुवै होम आमावरी धूप हूमै, घणा साधणा दीप सामीप घूमै।—मे. म

ऊ०—२ गयद वहतौ खत्री जाट जड तोडगौ, चद्रसिखर जोड सामीप चहतौ। गरव पण छोड जडुवार सहतौ गयो, कथा रिण छोड रिण छोड कहतौ —हुकमीचद खिडियौ

२ देखो 'सामीप्य' (रू भे) (अ. मा)

उ०—१ मुकत ही पाच प्रकार की, सालोक ही सामीप। सारूप हूंमा जाणियै, को पौहचै सब जीप।—गज-उद्धार

उ०—२ वरै न रहियो अपछरै, निज सूर मडळ नीसरै। सामीप प्रामै समसरै, भरपूर मुकति ज भरै।—मानसिंघ सगतावत रो गीत

सामीपत्य, सामीपमुकति, सामीपमुक्त्ति, सामीपमुक्ति, सामीप्य, सामीप्यमुक्ति—स स्त्री [सं सामीप्य, सामीप्य] १ मुक्ति के पांच भेदो मे से एक मुक्ति का नाम, जिसमे मुक्तात्मा ईश्वर के सामीप्य का अनुभव करता है। (अ मा.)

उ०—सालोक्य सगति रहै, सामीप्य सन्मुख सोई। सारूप्य सारीखा भया, सायुज्य एकै होई।—दादूवाणी

रू भे —समीपत्य, समीपमुकत्ति, सामिप्य, सामीप।

२ निकटता, समीपता।

सामीर—देखो 'समीर' (रू भे) (डिं को)

सामीरजायौ—स. पु —१ पवनसुत, हनुमान।

उ०—सझै सोड मैडाण ऊडाण सारां, पयोधार हूता न को होय पारा। पुणै तांम अज्जै कपी भेद पाया, जतू काय बोलै न सामीर-जाया।—सू प्र.

२ भीम, वृकोदर।

सामीवच्छल, सामीवछळ—स पु. [स साधर्म्यवात्सल्य, प्रा साहम्मिवच्छळ] जैन सम्प्रदाय मे समान धर्मियो का भोजनादि द्वारा किया जाने वाला आदर-सत्कार।

सामुद, सामुदर, सामुद्र—वि [स सामुद्र] १ समुद्र मे उत्पन्न।

२ समुद्र का, समुद्र से सम्बन्धी।

स पु.—१ समुद्री नमक।

२ समुद्री फेन।

३ शारीरिक दाग या चिन्ह।

४ आनन्द, हर्ष। (ह ना. मा)

५ देखो 'समुद्र' (रू. भे)

सामुद्रक, सामुद्रिक—स. पु [स सामुद्रिक] १ मनुष्य के शरीर के चिन्ह जिनके द्वारा शुभाशुभ फल बताये जाते हैं।

२ मनुष्य के शरीर के चिन्हो या लक्षणों आदि के शुभाशुभ फलो के विवेचन का ग्रन्थ। (फलित ज्योतिष)

३ मनुष्य के शरीर के चिन्ह या लक्षणो द्वारा शुभाशुभ फल बताने

गोकळ सामिधरम पण ग्राहै, सुंदर सुत आयौ व्रत साहै ।—रा. रू.

सामिधरमी, सामिधरम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू. भे)

उ०—सामिधरम्मी साम तणा, सुणि पण गुणां सपूत । मिळिया तै आथोमणा, राव तणा रजपूत ।—रा रू.

सांमिधेनी—सं. स्त्री [स सामिधेनी] १ होम की अग्नि प्रज्वलित करते समय या अग्नि मे समिधाएँ छोडते समय बोला जाने वाला ऋचमंत्र ।

२ समिधा, ईंधन ।

सामिध्रम, सामिध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू. भे)

उ०—१ चद सूर लग नांम चढावै, करि जस सभदा तणां कडै । सूरा मरण सांमिध्रम साटौ, वसुधा दीन्ही भ्रिगुट वडै ।

—महेस साम्पला रौ गीत

उ०—२ तिणि वेळा नौवति नीसाण तोग झडा सामिध्रम सोवा हिंदूस्थान री मरम भुजे आई । तिणि वेळा रा आइयौ काळा पहाड सोभा वरणी न जाई ।—र. वचनिका

सामिनी—१ देखो 'साइणी' (पु.) (रू. भे.)

२ देखो 'सामणी' (रू. भे.)

सांमिप्य—देखो 'सामीप्य' (रू भे)

सामिय—देखो 'सामी' (रू भे)

उ०—जदूकुळ-नायक सांमिय जग्ग, पदम्म-पताक अलक्रत पग्ग ।

—ह र.

सामियाणौ, सामियानौ-स. पु [फा. शामियान.] एक प्रकार का तम्बू जिसमे ऊपर का कपडा बासो पर रस्सियो की सहायता से तना रहता है ।

रू. भे.—समियाणौ, समियाण, समियाणौ, समीयाण, समीयाणौ, साइवान, साईवान, सायीवान ।

सांमियौ—देखो 'सामी' (रू. भे.)

उ०—दीह कितराइ लडियौ निमौ देवता, सबळ हरिणाख जिसा किसै भव सेवता । भगत रा सांमियै असुर कद रा भगत, राकसा न मारत घणौ तुना रगत ।—पी ग्र.

सामिळ, सामिल-वि [फा शामिल] १ साथ, शामिल, सम्मिलित ।

उ०—फौज सामिल हुवौ मुदायत फौज रा, प्राण तन जुदायत ठीक पुगौ । भाग सुध तणौ सिरायत मेडतै, अचड कथ उदायत भाण ऊगौ ।—महेसदास कूपावत रौ गीत

रू भे —समळ, सामळ, सामिळि ।

सामिलात, सामिलाति, सांमिलायत, सामिलायती—देखो 'सामलात' (रू भे.)

सामिलि—देखो 'सामिल' (रू. भे)

उ०—असि वर वाद अनाद अकापा, चूरण खळ आया सामिलि चापा । सकतसिघ निज दळा सहाई, दान सुजान भुजा वरदाई ।

—रा. रू

सांमी, सामी—स पु [स. स्वामी] १ ईश्वर, परमात्मा, भगवान ।

उ०—१ निरकार निरद्धार दईला सधार निमौ, आदेस अपार पार अवतार अम । साधुआ सुधार सांमी आविस्यै निजारसाह, काइयौ नदकुआर कस मार कस ।—पी ग्र.

उ०—२ सास सासि विखै थारौ जस वास करा सामी, तनाई न जाणै जास तिका थारी तास । अभवास टाळै परा जमवाळा प्राम थ्यान, आपरा पगा री राखै पीरदास आस ।—पी. ग्र

२ भगवान विष्णु । (डि को)

३ शिव, महादेव । (ह. ना. मा.)

४ स्वामिकार्त्तिकेय ।

५ पक्षिराज गरुड ।

६ राजा, नृप । (ह ना. मा.)

७ स्वामी, मालिक ।

उ०—१ सूरज तेज पुज सरवेस्वर, जोति सरूप नेत्र जगदीस्वर । जग रखवाळ जगत चौ जामी, सुर नर इस्ट समस्ट चौ सामी ।

—रा. रू.

उ०—२ महदीप छद तेरहै दस मत पय जाणौ, यण जोड सुजस राम भरत उर नझ्झ आणौ । जनपाळ स्रीदयाळ सुलख जियगत जामी । सरण सधार विरदधार हणूमान सामी ।—र. ज प्र

८ पति, स्वामी ।

९ घर का प्रधान व्यक्ति ।

१० सेनानायक, सेनापति ।

११ श्याम देश का निवासी ।

उ०—सामी रूमी सजरी, गोरी कासगरीह । ईरानी, यमनी अडर, सीराजी रण सीह ।—वा दा

१२ स्वामी शकर के अनुयायी, दशनामी ।

उ०—१ सामी मडी मडाय कै, मन विखिया कै माहि । मिल साखा घन बौहत की, खुधिया भाजै नाहि ।—अनुभववाणी

उ०—२ सामी सेवग वारणै, कथा सुणावै नित । अरथ दिखावै और कु, आप ठगाई चित ।—अनुभववाणी

१३ नाथ सम्प्रदाय के अनुयायी ।

१४ साधु, सन्यासी ।

उ०—तद कुंवरसी कह्यौ—'जो मोनूं फेर वरजियौ तौ हूं पेट मैं मार कटारी मरीस, का राव घात सांमी हुय जाईस ।

—कुवरसी साखला री वारता

मुहा.—१ सामी कीसा साड मारै=साधु किसी को तकलीफ या हानि नही पहुँचाते ।

२ सामीजी ससार कैडौ कै दिल जाणै जैडौ=अपने व्यवहार के अनुसार दूसरो का व्यवहार होगा । (मि.—आप भलौ तो जुग भलौ ।)

आख खुल पडी । सौ सारा सामौ जोय कुंवरसी सामौ दीठौ ।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ ताहरा ऊदै अर काळै कह्यौ—म्हे सिखरै रै साथै नही जावा, भाडसी । हालौ, अपूठा जावा । जितरै पूनौ उठै सामौ आयौ ।—नैणसी

(स्त्री सामी)

सामौसाम—देखो 'साम्हौसाम' (रू. भे)

उ०—ऊपरला होठ रै पसवाडै मूछ्यां रा मामूनी सेनाण । गळा रै सामौसाम लाठी मेद । लिलाड रै माथै आधी हथाळी जित्तौ वोरिया रौ सेनाण । काना री दोनू लोळा फाट्योडी ।—फुलवाडी

सांम्मुखी-स स्त्री. [स साम्मुखी] वह तिथि जो सायकाल तक रहती हो ।

साम्य-स पु [स साम्य] १ समानता ।

२ देखो 'स्याम' (रू भे.)

उ०—१ मधकर अवज सुवारै तू सुकरत पाखडिया । सोई दरसण म्हारै सांम्य कौ, देखू आखडिया ।—आलमजी

उ०—२ कै मुवौ कै मारियौ, कै सुपनै आयौ साम्य । स्त्री राम रौ मूदडौ, कुण रन या ल्यायौ राम ।—मेहोजी गोदारौ

३ देखो 'सामी' (रू. भे.)

साम्यवाद-स पु [स साम्यवाद] कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित एवं लेनिन से सम्बन्धित एक विचारधारा ।

वि. वि —इसका उद्देश्य व्यक्ति के वदले सार्वजनिक उत्पादन, प्रबध व उपयोग के सिद्धान्त पर समाज-व्यवस्था स्थिर करना एव हर सभव प्रयासो से शोषित वर्ग को मजबूत बनाना है ।

साम्यावस्था-स. स्त्री [स साम्यावस्था] किसी प्रकार के विकार या वैषम्य से रहित वह अवस्था जिसमे सत्व, रज और तम तीनो गुण वरावर हो, प्रकृति ।

साम्रत, साम्रथ—१ देखो समरथ' (रू. भे)

उ०—१ साम्रथ यहै ससार मैं ,करणीगर सब विध करण । महाराज 'अजण' विनती करै, तूं केसव असरणसरण ।

—गज-उद्धार

उ०—२ सुत 'सारग' साम्रथ वात सहूं, दखजै सिर गोरख हाथ दहू ।—पा प्र.

२ देखो 'सामरथ्य' (रू भे)

साम्राज्य-स. पु [स. साम्राज्य] एक ही शासनसत्ता द्वारा शासित अनेक राज्य, प्रदेश या राष्ट्र, सल्तनत ।

साम्राज्यवाद-स पु [स साम्राज्यवाद] वह सिद्धान्त जिसके अनुसार अपने अधिकृत क्षेत्रो की रक्षा के साथ-साथ वृद्धि की जाती है ।

सांम्राज्यवादी-वि [सं साम्राज्यवादी] साम्राज्यवाद के सिद्धान्त का अनुयायी एव अन्य सम्बन्धित तथ्य ।

साम्हउ—देखो 'साम्हौ' (रू. भे.) (उ. र)

सांम्हनै—देखो 'सामनै' (रू भे)

उ०—पाण खग 'अजा' रै साम्हनै पर्मेला, तो नसेना पतग पड दीव म्हाळै ।—रामलाल ग्रासियौ

साम्हळणौ सांम्हळबौ—देखो 'साभळणौ, सामळबौ' (रू. भे.)

उ०—महाराज वखतसिंह जी रा डेरा लाडपुरै हुवा रा समाचार साम्हळ महाराज भी ताकीद सू कूच कियौ ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

साम्हळणहार, हारौ (हारी), साम्हळणियौ—वि० ।

साम्हळिग्रोडौ, साम्हळियोडौ, साम्हळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

साम्हळीजणौ, सांम्हळीजबौ—कर्म वा० ।

साम्हळियोडौ—देखो 'साभळियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री साम्हळियोडी)

सांम्हलौ—देखो 'सामलौ' (रू भे.)

उ०—साम्हली सीट माथै एक वावू सा'ब विराज्या हा । करडा लट्ठ विहयोडा वदूक री खोळी व्है जिसौ काठी मोरी रौ पेंट, ऊचौ-ऊचौ बुसरट, दिलिपकट वाल अर तलवारकट मूछ्या ।

—अमरचूनडी

(स्त्री साम्हली)

सांम्ही-क्रि वि.—१ सामने, सम्मुख ।

उ०—१ ताहरा गागै नू जोसियै कह्यौ—राज मवारै तो जोगणी आपा नू साम्ही छै उवानू पूठ छै ।—नैणसी

उ०—२ इणनै आप पूरव भव रा सस्कार समझौ अथवा कोई सजोग री वात कै सूरज म्हारा सू थोडौ दवतौ जरूर हौ । उणरी कतरणी री गळाई चालण वाळी जीभ म्हारै साम्ही आयनै थोडी रुक जावती ।—अमरचूनडी

उ०—३ कवर रै साम्ही वद वद नै प्रण करियौ जको तौ पार पटकणौ ई है । साचाणी किणी राणी री कूख सू जलम लेवणौ तौ सराप है । इण जलम मे तौ औ सराप नी फळियौ ।

—फुलवाडी

२ उलटा, विपरीत ।

उ०—१ नाई री तौ औ दाव ई खाली गियौ । भूठ मूठ डरावण री वात तौ साम्ही गळै वधगी । पाछौ वदळणौ ई सारै वात नी री ।—फुलवाडी

उ०—२ नाई वोल्यौ-अन्नदाता, आपरै धारण करणा सू तौ मुगट अर नौलखा हार री छिव ई निखरगी । साम्ही अै घणा फूठरा दीसै ।—फुलवाडी

३ सामने ।

उ०—१ कोई रै मोटर मे वेठनै आगै जावणौ व्हैला तौ कोई किणा रै ई सांम्ही आयौ व्हैला ।—अमरचूनडी

वाला व्यक्ति।

वि.—१ समुद्र का, समुद्र से सम्बन्धी।

२ समुद्र मे उत्पन्न।

सामुद्रिकतीरथ-स पु [स सामुद्रिकतीर्थं] अक्षयवटके समीपस्त एक पवित्र तीर्थ का नाम।

वि वि —इस तीर्थ में स्नान कर तीन रात तक ब्रह्मचर्यपालन पूर्वक उपवास करने से अश्वमेध यज्ञ एव सहस्र गौदान का फल प्राप्त होता है।

सांमुह, सामुहउ, सामुह्, सांमुहौ, सामू—देखो 'साम्हौ' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पडिमी रीठ। दोहागिण घट सामुहउ, सोहागिण री पीठ।—ढो मा.

उ०—२ मूक्या लिखि 'दाराव' उतामळ 'खानाम्वान' सामुहा कागळ। हुवा कटक्कै दखणी हाऊ, ब्राहनपुर आया वाहाऊ।

—गु रू व.

उ०—३ सहिजादा विऊ सामुहौ, अेक 'जसौ' अणभग। माडण असपति माडिओ, जोध कळोधर जंग।—र. वचनिका

उ०—४ गुज्जर तण गरूर, ताइ मिळै दिखणी तणा। सेंन उजेणी सामुहा, सालुळिया दळसूर।—र. वचनिका

उ०—५ काठी कुरळाता काती निस काळी, होळी हीयें मं दाता दीवाळी। सामुं सीयाळी साकी सरसायौ, बाकी वचिया नै डाकी दरसायौ।—ऊ. का

उ०—६ फौजा की तयारी साथि सेखा सीस आयौ, सांमू राव सेखौ चद्रसेण चलायौ।—शि. व

(स्त्री सांमुही)

सामूळ—देखो 'समूळ' (रू भे.)

सांमूसाम—देखो 'साम्हौसाम' (रू भे.)

उ०—सोनै रौ पीजरौ, मखमल री खोळी, रतन बाटका मै दाडम 'र दाख, सिखावै सूवटै नै बोल मिट्ठू राधेस्याम। सांमूसाम गळी मैं बैठौ भूलौ सूरदास छोड दिया विराण रट रट'र नाम।

—लीलटास

सांमेजा-स. पु —घाटी सिंघियो का एक भेद जो पहिले भाटी राजपूत थे।

सामेळौ-स स्त्री [स मामेयी] १ कन्या पक्ष वालो द्वारा नगर या गाव के प्रागण अथवा सीमा पर दुल्हे एव वारातियो का किया जाने वाला स्वागत, अगुवानी।

उ०—१ उमराव केसरिया वागा वणाया। मडोवर परणीजण ने पधारिया तरै वारह कोस साम्है आया। घणी जलूस सामेळा री देख मेवाडा हैरान रह्या।—राव रिणमल री वात

उ०—२ तारा नाळेर झालिया। परधान नै सीख दीधी। लगन जोयनै जान चढी। तरा सोढी कहियौ। सामेळौ सोढा री वखाणज्यौ: हथळेवौ सोढी री वखाणज्यौ।

—वीरमदै सोनिगरा री वात

उ०—३ गाव री लोक तमासगीर देखण नु गयो। प्रोहित नु खरळा मेल्हियौ, 'जो ऊतरौ, कुवारी भात भेळा, आरोगौ। जितरै सामेळौ आसी। वीहा री तयारी छै।

—कुवरसी साखला री वारता

मुहा.—सामेळा में ई गधा=श्री गणेश ही अशुभ।

(मि. सिधरी में ई खोट=सर्वप्रथम अपशकुन।)

२ सौभाग्यवती स्त्रियो या कन्याओ द्वारा सिर पर कलश तथा उसमे नीम की टहनिया लगाकर राजा, दुल्हा, एव अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियो का किया जाने वाला आदर, सत्कार।

रू भे —सभेळौ, समेहळौ समेळौ, सामेळौ, सामेहळौ, साम्हेळौ, साम्हेलौ।

सामेव-स. पु [स सायुज्य] अभेद के साथ मिलकर एक हो जाना, मुक्ति के पाच भेदों मे से वह भेद जब जीव या आत्मा ब्रह्म या परमात्मा से मिलकर एक हो जाता है।

सामेहळौ—देखो 'सामेळौ' (रू भे)

उ०—सामेहळौ पिण आयौ साम्हा। इतरै मैं जेळू पिण दीठौ। भोज वावळी घोडी चढियौ दीठो। ईया साथ दीठो ताहरा जेळू कहै। हु भोजै नु परणीजीस।—देवजी बगडावता री वात

सामै—देखो 'साम्है (रू भे)

उ०—१ दाधी दुखडं री फिरतोडी दोरी, गोरै मुखडै री गिरतोडी गोरी। चामीकर धामै कामो कर चोडै, जामी जामो कर सामै कर जोडै।—ऊ का

उ०—२ आडौ अवळौ क्यू फिरै, धवळौ बापूकार। ओहिज पार उतारही, थळ सामै औ भार।—बा. दा

सामैरी-स स्त्री.—एक प्रकार की रागिणी विशेष जो दिन के तीसरे प्रहर मे गाया जाता है।

उ०—ब्रह्म-मूहुरत समै लाखो फूलाणी गवीजै। दोय घडी दिन चढिया धनासरी मैं वाघौ कोटडियौ, तीसरे पोर सामैरी मैं रिडमल, रात रौ सोढौ महदरौ गीत गवीजै।—बा दा ख्यात

सामोद-वि—हर्ष एव प्रसन्नता युक्त।

सामोर-स स्त्री —१ पडिहार वशीय एक शाखा।

स पु.—२ उक्त शाखा का व्यक्ति।

सामौ सामौ-देखो साम्हौ' (रू भे.)

उ०—१ 'गोगौ' मोगौ होय 'गोरधा' गिरियौ, 'तेजौ' मोळौ पडि नेजौ लै तिरियौ। पीरा पतधीरा पेली घर धायौ, उण दिन 'रामौ' डर सामौ नहि आयौ।—ऊ का.

उ०—२ इसा मैं परमेस्वरजी री असी आग्या हुई, जो भरमल री आख्या रा पडळ दूर हुय गया। जिसी निरधूम दीया हुवै, जिसी

४ अनुकूल, पक्ष में।
रू. भे.—सामैं।

सांम्हौ–वि (स्त्री. साम्ही) १ सामने, सम्मुख।
उ०—१ पाच हजारो पाच, घडा जडि हुग्रं जमधर। मुख साम्हा 'अमर' रै, नको आवै नर-नाहर।—सू. प्र
उ०—२ उठै रावजी नागोर रो कोट छोडनै बाहिर आया। भाटिया री फौज आई—ताहरा रावजी सांम्हा जायनै लडिया। रावजी काम आया।—नैणसी
उ०—३ सीधा मुहडा भाया री राड छै सो भली तरह साम्हा आवो।—मारवाड रा अमरावा री वारता
उ०—४ पछै जसवतजी केइक दिन उठै रह्या। पछै ईडर रै राव घणो आदर कर तेडाया। रावळ साम्हौ आयनै लै गयो। चोवीस गाव सु वडो पटो दीयो।—राव मालदेव री वात
मुहा०—१. साम्हौ आणौ=आगे आना, मदद करना, ध्यान मे आना, स्वागत करना या अगवानी हेतु सामने आना। २ साम्हौ जाणौ=सम्मान के लिए सामने जाना। ३. साम्हौ देखणौ (जोवणौ)=दया करना, ध्यान देना। ४. साम्हौ घिरणौ, फुरणौ=मुकाबला करना। ५ साम्हौ वोलणौ=झगडा करना, जिद्द, हठ आदि करना, सामने बोलना।
२ तरफ, ओर।
उ०—१ अेक रात गेहुआ रा खेत ओर साठां री वाड मैं रहियो। घणा दिना री भूख काढ धाप नै अरवद सांम्हौ हालियो। तीसरै दिन अरवद जा पहुचियो।—डाढाळा सूर री वात
उ०—२ इतरो कहि आप खिड़की रै मारग हुयो वजार माहि करि नै नैकाळ सहर सू होई, तळाव रो मारग लियो। आगै राजा री साथ पण मारग साम्हौ जोय रह्यो थो, जितरै आवतो नजर पडियो।—पलक दरियाव री वात
३ उल्टा, विपरीत।
उ०—१ व्यासजी कही—दिन कोई नही जावै-साम्हौ आपा पाच मांणस आपरा करस्या, वयू वादसाह कन्है मदत लेस्या।
—अमरसिंह राठौड गजसिंघोत री वात
उ०—२ ताहरा अो राजा अठै लडियो सु वरस दो अथवा तीन लडियो पण कोट भिळै नही। ताहरा राजा सेतरामजी नूं कही—कोट तो भिळै नही अर साम्हौं लोक री ज्यान हुवै छै।—नैणसी
४ अनुकूल, पक्ष मे।
रू भे—समहो, सामहु, सामहो, सामुहउ, सामुहु, सामुहो, सामू, सामो, सामो, साम्हउ, साम्हु, साहमो, साहमू, साहमो, साहामो, साहामो।

सांम्हौसाम–क्रि वि —विलकुल मामने, आमने-सामने।
उ०—१ मिंदर रै साम्हौसाम खासी भाय माथै अेक वैंडो ई टापू। उण माथै मोना रो सतखंडियो महल। सूरज री किरणा री परस पाय पळक पळक करै।—फुलवाडी
उ०—२ भटियाणी वाय भरचा चोपटा रा पूळा लेय नीरण नै जावती ही कै मासी माम्ही धकी। टळण री मतो करचो तो मासी आडी फिरनै साम्हौसाम अडोग्रड ऊभगी।—फुलवाडी
रू. भे.—सामूमाम, सामोसाम।

सांयकाळ—देखो 'सायकाळ' (रू. भे)
उ०—पाछा आवता राजा रा काका सारगदेव रा वडा पुत्र प्रताप सिंह अरिसिंह दो ही सहोदर एक नदी रै तीर उचित जळ देखि सायकाळ रो विधेयकरम करण पाछा ही चलाया।—व भा.

सायड, सायढ, सांयंड, सायढ—देखो 'सांढ' (रू. भे)
उ०—१ सायड भेरावै मेढा रै सारू, वेरै वेढाकर हेरै हथवारू। भेंस्या रिडकै रिड गाया रंभावै, प्राणी तिरखातुर पाणी कुण पावै।—ऊ का
उ०—२ दिन वधग्यो तो वै मारग मे ई रातवासो लियो। सांयढ नै नागर वेल रो चारो चारचो।—फुलवाडी

साय–स. स्त्री.—१ तीर, गोली आदि के चलने से या उडते समय पक्षियो के पखो से उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की ध्वनि विशेष।
उ०—झरणं री तळाई रै च्यारू मेर चमगादडा हमलो वोल दियो अर उणा री चामडी री वडी पाखा सूं साय सांय री डरावणी आवाज सगळी घाटी माय फैलगी।—तिरसंकू
२ सुनसान जगह मे वायु से या तेज वायु से उत्पन्न ध्वनि।
उ०—म्हनै लखायो कै उण काळी रात मैं काळी ऊची-ऊची डूगरचा रै बीच सांय माय करतै सूनै जगळ मैं उणनै किण री ईज डर कोनी हो। उण रै अग-अग माय मतवाळै जोवन री उमग नाच रयी ही।—तिरसकू

सायकाळ—देखो 'सायकाळ' (रू. भे)

सांयत–स. स्त्री —१ समय, वक्त।
उ०—फेर अवाज हुई जै आ भगवान री वात किणी नै कही तो विण सायत थाहरी देह छूटसी, तै सू खबरदार रहे। इनरो सुण देवीदास दोपहरा रा घरै आइयो।—पलक दरियाव री वात
२ देखो 'साति' (रू. भे.)
उ०—१ आत्या री पीड रै कारण राजा रो डील तरतर छीजतो रह्यो। नी तो मोत आवै अर नी अेक छिण सायत ई मिळै। राजकाज मैं अेकदम रुळियारो मचग्यो।—फुलवाडी
उ०—२ पण वेटी, वगत आया आ सोजन ई मिट जावैला। म्हारा जीव नै तो कठैई सायत कोनी।—फुलवाडी
रू भे.—साइत, सायत।

सांयति, सायती—देखो 'साति' (रू भे.)
उ०—होस्टल रै च्यारू मेर घूम्यो, वठै कोई भी कोनी हो। मन रै माय सुरग री सायती ज्यू भरगी। पुलिस नै सेल री काई खबर कोनी लागी है। किसीक साहमी है आ सैल। अबार खाणो

उ०—२ दीवाण तो खुद ग्रेडाई ग्रादेस री बाट न्हाळतो हो। काळा घोडा, काळोई सज ग्रर काळा गाभा देय चरवादार नै साम्ही भेज्यो। सगळी वाता समझाय दी।—फुलवाडी

उ०—३ सासरा री मगरी ढळता ई उरानै मड़ो साम्ही धकियो। सुगन तो भला व्हिया। वेल सूं हेटै उतर वा मुडदा नै हाथ जोडिया। ग्रेक खाधिया नै होळै सीक पूछ्यो—वीरा कुण चलियो।

—फुलवाडी

उ०—४ वीदणी री रथ कोट रै गळाकर निकळियौ तो साम्ही झिरोखा मैं बैठा कवरसा माथै उण री ग्रणछक मीट पडी। नस नस मैं सरणाटो दौड़ग्यो।—फुलवाडी

४ ग्रोर, तरफ।

उ०—१ थोडी भाय गिया उरानै ग्रेक मिनख ग्रापरै साम्ही न्हाटतो निगै ग्रायो। ग्राठ दसेक ग्रादमी उरारी लारो करता हा।

—फुलवाडी

उ०—२ नाच री वेळा टळचा इदर भगवान ग्रणूतो कोप करैला। पैला ई नीठ मान्या। ग्रबै तो त्रितलोक साम्ही भाकरण ई नी देवैला। भूडी कळा पजी।—फुलवाडी

उ०—३ पण ग्रबकै पुजारी री रट सुणनै दो ग्रेक ग्राधडक लुगाया एक दूजी रै साम्ही देखनै हसण लागी। वा सूं पुजारी रो चरित्तर ई छानो कोनी हो।—ग्रमरचूंनडी

५ ग्रनुकूल, पक्ष मे।

६ तुलना मे, ग्रपेक्षाकृत।

उ०—१ नाचती-नाचती ई बोली—देवण री ग्रंडो ई गुमेज है तो म्हनै जन्यो-सरप बगसावो। उरारै साम्ही ग्रापरो इदरलोक ई म्हनै फुनरका जित्तो लागै।—फुलवाडी

उ०—२ मुळकनै बोल्या—थू काई गुमेज मैं ग्राटो-ग्राटो चालै, म्हारी वीदणी री ग्राटी थारा सूं वत्ती लाबी ग्रर वत्ती चीकणी। थारो सावळो रग तो उरारी ग्राटी साम्ही साव मगसो लागै।

—फूलवाडी

७ समक्ष, ग्रगाडी।

उ०—१ ग्रे दोनू चीजा पिडतजी रै साम्ही धरनै बोली—दारू, मास ग्ररोग्या ग्रापनै ग्रे पच्चीस मोहरा सीख मैं मिलैला।

—फुलवाडी

उ०—२ सेठ राजी व्हैगा तो सेठाणी ई ग्रणूती राजी व्हैगी। ग्रेका ग्रेक बेटो ग्राख्यां रै साम्ही रैवैला। ग्रर कमाई री ठोड कमाई रो जुगाड ई व्हैगो।—फुलवाडी

८ देखो 'सामी' (रू भे)

९ प्रतिकूल होना।

मुहा.—साम्ही होणौ=(१) गाय, भैंस ग्रादि का गर्भ धारण करना। (२) ग्रनुकूल होना। (३) परिपक्वावस्था मे होना।

(खेती, फसल)

साम्हु—देखो 'साम्हो' (रू. भे) (ग्र. र)

साम्हेई-सं. स्त्री.—एक देवी का नाम।

उ०—सुमराज करै तना सुर सामिणी, ताहरै नाम साम्हेई तरा। जयो निमो तुना जग जामिणी, कतियाणी ग्रादेस करा।—पी. ग्रं.

साम्हेळौ—देखो 'सामेळौ' (रू. भे)

उ०—१ कनक रतन तोरण सुभकारी, सुदर चित्र पौळि सिणगारी। सुभ छवि माडइ नयर सचेळी, सुर व्रति मिळण थयौ साम्हेळौ।—रा. रू.

उ०—२ तद पदमावती परणीज नु तयार हुई। बैठी झरोखै माहै देखै छै। दतरी जान री साम्हेळी कर वीद नू तोरण लै ग्राया। तद पदमावती वर देख राजी हुई।—ठकुरै साह री वात

उ०—३ सूनम रै परभात ग्राभै मैं सोना रौ सूरज ऊगियौ ग्रर धरती माथै उण गाव रै गोरवै जान सू साम्हेळी व्हियौ।

—फुलवाडी

साम्हेलौ—देखो 'सामलो' (रू. भे)

साम्है-क्रि वि—१ सामने, सम्मुख।

उ०—१ गोळा नाळ गुणजीन गावै, लसकर ऊमर जानिया लार। 'माडण' हरौ दिपतो मिळियौ, साम्है लै बीडो घणसार।

—बलू चापावत री गीत

उ०—२ भीतर पधारिया जठै सू महाराज नजर पडिया। तठै सू कुवर तसलीम करतो-करतो जाजम रै छेहडै गयो। ताहरा राजा साम्है ग्रायो। कुवर जाय पावा मैं सिर दियो।

—पलक दरियाव री वात

उ०—३ जठा हूं दोइ हजार ग्रसवारा सुरथपुर ग्राइ कुमार वेढियो। ग्रर दूदै भी ग्रवारा ग्ररचन रै ग्रनतर ग्रापरा साथिया समेत साम्है ग्राइ घोर घमसाण कियो।—व. भा

उ०—४ ग्रर दिल्लीस भी घणा साहस थी ग्रापरा जावण मैं ग्राडो होइ चलायो। इसड़ा बडा कुमार दारा नूं साम्है पूगण री निदेस देर विदा कीधो। जतरै तापी नू लाघि नरमदा नदी रै नजीक ग्राया।—व भा.

क्रि. प्र.—ग्राणौ, करणौ, बोलणौ, हालणौ, होणौ।

मुहा.—(१) साम्है ग्राणौ=ग्रागे ग्राना, प्रकट होना, ग्रवरोध डालना, मदद करना, सकटकालीन परिस्थिति मे सहायता या स्वागतार्थ ग्रागे ग्राना, नजरो मे ग्राना। (२) साम्है करणौ=हवरू करना, ग्रागे करना, चुनाव, झगडा ग्रादि मे विरुद्ध खडा करना। (३) साम्है खडौ होणौ=चुनाव, झगडा ग्रादि मे विरोध मे खडा होना। (४) साम्है बोलणौ=विरोध मे बोलना, ग्रवज्ञा करना।

२ ग्रोर, तरफ।

उ०—इमडी समय बादसाह मारवाड रा ग्रमरावा साम्है देख फरमाई।—गजसिंह री वारता

३ उल्टा, विपरीत।

इण मारवण रै यै नैडा चाल जो, ज्यू मारग सूजगी जाय।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ घरा नै पधारो जिदेसीडा, छोटी सी नाजक धण रा पीव।
यो सावणियो उमड रह्यो छै, हरि नै सोहै छै दिस दिस सीव।
—रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'सुगनी' (रू. भे)

सांवणी—स पु.—वे वस्त्र या खाद्य पदार्थ जो सावन मास मे वर पक्ष से वधु के यहां भेजे जाते हैं।

वि [सं. श्रावणी] १ श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी।

२ देखो 'सुगनी' (रू. भे)

उ०—तरा सावणिया सावण वेच्या नै कह्यो या सावणा मूगचद री राजा तो हाथ चढै नै श्रापां माहे कुमळ वरतै नै वेढ री मामलो छै।—जैतसी ऊदावत री वात

३ देखो 'स्रावणी' (रू भे)

रू भे—सावणि, सावणिक।

सांवणीतीज—स. पु. यौ.—१ श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया जिस दिन कई सुहागिन स्त्रियां व्रत रखती हैं।

२ उक्त तिथि को स्त्रियो द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव।

सावणीपूनम—स. स्त्री.—श्रावण मास की पूर्णिमा, इसी दिन रक्षावधन का प्रसिद्ध त्योंहार होता है।

सांवणू, सांवणू—स. स्त्री—खरीफ की फसल।

वि.—श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी।

रू. भे.—सामणू, सामणू, सावणू।

सांवणूवाव—स पु—खरीफ की फसल पर प्रजा से लिया जाने वाला कर।

सावणूसाण—स. पु—खरीफ की फसल पर किसानो से लिया जाने वाला एक प्रकार का कर।

सांवत—स स्त्री—१ एक प्रकार की मुसलमान वेश्या, रडी।
(मा. म.)

२ देखो 'सामत' (रू भे.) (डि को.)

उ०—१ मोम्या सू मालम हुई। जो फलाणा रै एक रजपूत आयो छै। जो वडो सावत छै।—पचमार री वात

उ०—२ कमधेस दई वडक्रामतनै, सगता री भोळावण सावत नै।—पा. प्र.

सांवतदे—स पु—एक लोकगीत विशेष।

सांवन—स पु.—१ एक प्रकार की राग विशेष। (सगीत)

२ देखो 'सावण' (रू भे)

सांवनकल्यांण—स. पु यौ.—एक प्रकार की राग विशेष। (सगीत)

सावरणौ, सांवरवौ—देखो 'सवारणौ, सवारवौ' (रू. भे)

उ०—......वाढि वडइ, जेहै दीठै दुरजन नै हीए त्रासक पडइ, छाडइघाट, घोडा तणा कान सोरामाहि साट, सांवरिश्रा दीसइ, परसैन्य पइसइ, भाजै ताडइ, मेर पाडइ, मुहि मारइ, गरत पचारइ,... ।—व स.

सांवरणहार, हारो (हारी), सांवरणियो—वि०।

सावरिओडौ, सावरियोडौ, सावरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सावरीजणौ, सावरीजवौ—कर्म वा०।

सांवरियोडौ—देखो 'सवारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सावरियोडी)

सावरियौ—देखो 'सावळौ' (अल्पा; रू भे.)

उ०—काई रेल रेल करै है बेटी रा बाप। अबकै सावरियै राजी-खुसी राख्या तो भादवा में जरूर रामदे बावा रै जावणो है।
—रातवासो

सावरौ—देखो 'सावळौ' (रू भे)

उ०—१ धरती पड्यो दिगास, अबर सूं अंबर अडयो। श्रायो पूरण श्रास, सही वजाजी सावरो।—रामनाथ कवियो

उ०—२ सांवरो वसै मेरो परदेस, सयो होरी का सग खेलूं।
विरह विथा जोवन की कथा की, सब दुख तन पर झेलूं।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—३ सावरो छोड चल्यो मोरै राम, रसराज आगै तो बाहिर मैं जाणती, अब तो जाणत मैं अतर को वो स्याम।
—रसीलै राज रा गीत

सांवळ—देखो 'सावळो' (रू भे) (डि. को)

उ०—सावळ वरण सरीर विराजै, एक सहस आठ लक्षण छाजै।
दिन दिन अधिकी ज्योत विराजै, दरसन दीठा दारिद्रय भाजै।
—जयवांणी

सावळड़ौ—देखो 'सावळो' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ सावळडा री सोगन म्हे देख्या, सखियां पूछै मिळ कर सात। कह्यो नै रसराज राधिकै, काई काई हुवै छी वात।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ गोरै गात कसूबो अगिया, सांवळडो सिर सारी। निपट छबीली थारी तय्यारी, अलवेलिया री रिझवारी।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—३ आजो म्हारै सांवळडा थे मिजमान आज।
—रसीलै राज रा गीत

उ०—४ कै गोरी वामण वाप को, कै सावळडौ सरीर।
—लो गी

सांवळताई—स. स्त्री—श्यामवर्ण होने का भाव, श्यामलता।

सावळपक्ख, सावळपख, सावलपख—स. पु यौ [स श्यामल+पक्ष] मास का वह पक्ष जिसमे चन्द्रमा की कलाए क्रमश. घटती जाती हो, कृष्णपक्ष।

उ०—१ आया वरस चहोतरै, सावण सावळपक्ख। आयो घर मारु 'अजो', गुज्जर थाणा रक्ख।—रा. रू

खवाता उण सू 'क्रातिदळ' रै कारयक्रम री वाता पूछूंला।
—तिरसकू

सांयरो-स पु—किसी रास्ते को रोकने के लिए कांटेदार झाडी का बनाया जाने वाला अवरोध।

सायार—देखो 'साईग्रार' (रू भे.)

सायी—१ देखो 'सामी' (रू भे.) (डिं को)
२ देखो 'साई' (रू. भे)

सायीनौ, सायीनौ—देखो 'साइणौ' (रू. भे)
उ०—भीनौ रग जळ भीजता, सायीनौ सिरदार। तैं लीनौ धन मन तिया, वस कीनौ इण वार।—वा. दा.
(स्त्री सायीनी, सायीनी)

सांरंग—देखो 'सारग' (रू. भे.)

सांर, सांर-सं पु—गाय, बैल, भैंस आदि पशु।

साव—देखो 'सामत' (रू भे)
उ०—हाथ आवाहतौ सिंधु रागा थिया, सहै झूझा थया वळि 'जसा'रा साथिया। साथि 'जसवत' रै सांव वहु सम चडी, गाविजै नेतडै रोहडै गागडी।—हा. झा

सांवटणौ, सावटबौ—देखो 'समेटणौ, समेटबौ' (रू. भे)
उ०—१ उणरै पगा कनै अेक कागद उडतौ आयौ तौ वौ सुथराई सूं सांवट नै पोत्या रा आटा मैं खसोल लियौ।—फुलवाडी
उ०—२ पछै थोडा दिना मैं परवार गयौ। पाटा पाटी सांवट लिया।—भि द्र
सांवटणहार, हारौ (हारी), सावटणियौ—वि०।
सावटिग्रोडौ, सावटियोडौ, सावट्योडौ—भू० का० कृ०।
सांवटीजणौ, सावटीजवौ—कर्म वा०।

सांवटियोडौ—देखो 'समेटियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. सावटियोडी)

सांवडौ, सावटौ, सावठौ, सांवठौ-स. पु.—ऊचा स्थान, चबूतरा।
उ०—१ घुघ्रीदार चकमौ उढीयौ छै। सांवठै उपर आप उभी छै। दूध रा कळस भरीया मुहडै आगै पडीया छै। निजर आपरी कुवरसी रै मारग साम्ही छै।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—२ अर भरमल सांवठै सूं उतर वडारण नु साथ लै साम्ही कतरी, सो चोकी रै नीचै जाय मुजरौ कियौ। एक दोय लटका जमी सौं हाथ लगाय कीया।—कुवरसी साखला री वारता
वि (स्त्री. सावठी) १ अधिक, बहुत।
उ०—१ जीहो यादव नारी सांवटी लाला आवै गावै गीत। जीहो चोक पुराणै माडणा लाला साचवियै सुमरीत।—जयवाणी
उ०—२ सू महिनाबा पचास सव सावठी ही लागी छै। जाणै जेठ रो दोपहरो खुलियो छै। इण भात रै चादणै मैं जीमण ही होस माणजै छै।—रा सा स.
उ०—३ गेहूँ बाजर मोठ मुग, तुवर मटर चिणेह। साळ नीपजै सांवठी, ग्रोरूं मसूर अछेह।—गज-उद्धार
२ जबरदस्त, शक्तिशाली।
उ०—पगि पगि पडलि पडलि हिस्ती की गजघटा, ती ऊपरि सात सात सइ धनक धर सांवठा।—अ वचनिका
रू भे—सामठौ।

सांवण-स पु [स श्रावण] १ हिन्दी वर्ष का पांचवा मास जो आषाढ मास के बाद तथा भाद्रपद के पहले आता है। (डिं को.)
उ०—१ सांवण आयौ सायवा, बाघौ पाग सुरग। घर बैठा राजस करौ घास चरैला तुरग।—अग्यात
उ०—२ सावण आयो सायवा, लुळ लुळ वरसै लूर। गोख उडी-कै गोरडी, जोबन मैं भरपूर।—नारायणसिंह सादू
मुहा—सावण रा आधा नै हरचौ ई हरचौ सूझै=सावन में अधे हुए व्यक्ति को सदा हरा ही हरा दिखाई देता है। (मूर्ख एव अनुभवहीन व्यक्तियो के लिए)
२ एक प्रसिद्ध लोकगीत।
३ वर्षा ऋतु मे गाये जाने वाले लोकगीत।
उ०—'जसवत' नै गिणगोर ज्यू, मेलै तीरथ मझार। आया सांवण गावता, साभरिया सिरदार।—दलो महडू
रू भे.—सवण, सामण, सावणि, सावन, सावण, सांमण, स्रावण, स्रावण।
अल्पा,—सावणियौ, सावणियो।
४ देखो 'सुगन' (रू भे.)
उ०—१ आथण रौ पोहर १ दिन लै चालीया भुहरी कनै आवता सांवण री पाल हुई। जेठ सुद ७ सोमवार जोधपुर आय स्रीकंवर-जी रै पावै लागा।—नैणसी
उ०—२ चौविस तौ आपरा राजपूत, पचवीसमौं राघवदे नै छवीसमा आप चढिया। तिकै आछा सावण मांग्या। तरै हिरण मालाळा हुग्रा।—जैतसी ऊदावत री वात
उ०—३ रजपूता कह्यौ, वाह वाह, निपट मोटी विचारी, सांवण सखरा लेनै पधारौ नै स्रीमाताजी करै तो पठाणा नैं भूडा दिखाय नै घोडिया ल्यावा नै खुरी करा।—जखडै मुखडै भाटी री वात

सांवणडाढ, सावणदाढ-स पु—भाला। (डिं. को)

सांवण री डोकरी-सं. स्त्री.—वर्षा ऋतु मे होने वाला गहरे मखमली लालरग का एक प्रकार का कीडा, बीरवहूटी।
वि वि—देखो ममोलियौ'।

सांवणि, सांवणिक—१ देखो 'सावणी' (रू. भे)
२ देखो 'सावण' (रू भे)
उ०—धर नीली घण पुडरी, घरि गहगहइ गमार। मारू देस सुहामणउ, सावणि साझी वार।—ढो मा.

सांवणियौ—१ देखो 'सावण' (अल्पा, रू भे.)
उ०—१ सांवणियां री रैण अघेरी, चदौ बी छिप्यौ मुरझाय।

उ०—१ घोडो दरयाई हुतो सु सावत चीत्रोड रै राणै नूं लै जायनै निजर कियो। ताहरा राणै सावतसी नै गाम १ सांसण दियो।
—नैणसी

उ०—२ कोड-पसाव आगाहट कूजर, हेतवा धन दै दाळद हरै। राजा सिरै तो कलावत राजा, सांसणां माय सासण सिरै।
—मालो सादू

उ०—३ दरक सताईस देर भार खजानै भरीयो। नागफणी फर हेक, हेक सासण ढाढरीयो।—मालो सादू

२ देखो 'सासी (पु.)

सासणी, सासणीक–स पु.—१ वह व्यक्ति जिसको शासन की ओर से दान की भूमि मिली हुई हो।

स. स्त्री.—२ भाट जाति की एक शाखा विशेष। (मा. म.)

रू. भे —सासनी।

सांसणौ–स. पु —१ दमा रोग से पीडित पशु।

२ देखो 'सासन' (मह, रू. भे.)

उ०—सो हजार द्रब थेलिया, मोती कडा सवास। गांम सवायो सासणो, पायो गोरखदास।—रा रू.

सांसणौ, सासबौ–क्रि. स.—१ अभिलाषा करना, इच्छा करना।

२ शासन करना, हुकूमत करना।

क्रि अ —३ तरसना, बिलखना।

उ०—बाळक बरळावे आखा अभिलाखै, भू-भू वू-वू बिन भाखा नहिं भाखै। सूपै सीरावण व्याळू लै वासै, वेळा व्याळू री सीरावण सांसै।—ऊ का.

४ सहना, सहा जाना।

उ०—समद सा न तु सासही, निमणि करै नवनाथ। इदि उतारै आरती, सकति हुई ससमाथ।—पी ग्रं

५ ठहरना, रुकना।

उ०—थई सासता माता परति, दमयति कहि वाणी। जु जांणु जे पुत्री जीवि, प्रीउ सोधावु जाणी।—नळाख्यान

सासणहार, हारौ (हारी), सांसणियौ—वि०।

सासिओडौ, सासियोडौ सास्योडौ—भू० का० कृ०।

सासीजणौ, सासीजबौ —कर्म वा०, भाव वा०।

सासहणौ सासहबौ—रू० भे०।

सांसर–स पु —पशुधन।

उ०—१ बौ एवड रै आगै घर-बार, लुगाई-टाबर अर दूजै धन सासर नै सफा ही भूल बैठ्यो। रात पडतै ही गाव सूं बारै ऊचै धोरै माथै एवड बैठाय'र सारै आप ही बैठ जावै। एवड सू अळगो होणै रो बीरो जी ही नी करै।—दसदोख

उ०—२ ऊट-डागरा अडाणै अडूल हुया, गाय-खोला चोराणै चढ्या अर एवड बोपारयां नै बेचणो ही पडयो। मिनखा बिना धन-सासर नै कुण सभाळै पीमै बिना सून रा मामला किया दवै।
—दमदोख

सांसारिक, सांसारी–वि. [स. सासारिक] १ जिसका सम्बन्ध इस ससार के क्रिया-कलापो से हो, लौकिक।

२ जिसका सम्बन्ध जीवन सम्बन्धी आवश्यकताओं, विषय-भोगो आदि से हो।

रू. भे —ससारिक, समारीक।

सांसियोडौ–भू. का कृ.—१ अभिलाषा किया हुआ, इच्छा किया हुआ. २ शासन किया हुआ, हुकुमत किया हुआ. ३ तरसा हुआ, बिलखा हुआ ४ सहा हुआ, सहा गया।

(स्त्री. सासियोडी)

सांसि, सांसी–स पु. (स्त्री. मासण) १ सदा इधर-उधर घूमने वाली राजस्थान की एक घुमक्कड जाति या उक्त जाति का व्यक्ति।
(मा. म)

उ०—१ न्यात मेतरा मिळ निपुण, पामर सांसी परखिया। अमलिया देस भारी अधम, होका धाी हरखिया।—ऊ का.

उ०—२ दूजगी बात सब देस री, खूब असुभगुण खाटियो। पांन रो ध्यान धरिया पछै, सांसी गिणै न साटियो।—ऊ का.

वि० वि०—ये अक्सर घूमते रहते हैं। हरिजन लोग इन्हे नीच समझते हैं और इनको छूते भी नही है। हरिजन इनके जजमान है। इनके झगडे आदि भी हरिजन ही सुलझाते हैं। ये धोबी को अपने से नीचा समझते हैं।

२ देखो 'सचय' (रू भे.)

उ०—वचन सुणी नल चिता पाम्यु हईडा सू विमासि। सू. भै, साचूं कै ए जूठूं, राजा पडियु सांसि।—नळाख्यान

रू. भे —सैसी।

सासु—१ देखो 'सासू' (रू भे)

२ देखो 'सास' (रू भे)

उ०—काम की जो दखिण दिसा हुनी त्रिविध पवन सीतमंद सुगध प्रगटै छै। त्यौं चतुर को नाम दक्षण कहावै छै। तो रुखमणीजी छै सु चतुर छै। तिन रउ जु ऊरध सासु उहै पवन हुवो।
—वेलि टी

३ देखो 'ससय' (रू भे)

सांसौ–स पु [स सशय] १ सदेह, शक, भ्रम। (डि को)

उ०—१ बाजारै विच विच थई, रथ पवन वेग चलाय। राणी सांसौ भाजवा नेम जिणद पै जाय।—जयवाणी

उ०—२ स्रगार मजरी कहियो राजा, थाहरा मन मैं सांसौ रहियो छै।—पचदडी री वारता

उ०—३ काम न काई कलपना, सांसा गया नसाय। नेह लग्या रहमान सू, दिल-और न आवै दाय।—अनुभववाणी

उ०—४ सो आप कहो हू काम आवू नही जद म्हारो बळण

उ०—२ नरहर डूगरसीह रै, खळ भागा बळ दक्ख । चाळीसै वैसाख मैं, पाचम सावळपक्ख ।—रा. रू.

सांवळियौ—देखो 'सावळौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ दरद की मारी बन बन डोलू, वेद मिळया नहिं कोय । मीरा की प्रभू पीड मिटेगी, वैद सावळियौ होय ।—मीरां

उ०—२ जाती तौ आवै थारै दूर का, सांवळिया मोत्यार । बाबा बजरगजी को बगळौ हद बण्यौ ।—लो गी.

उ०—३ सिधा तीन लोका सावळियौ, सूर कुळा छोगो सावळियौ । साहे चाप राम सांवळियौ, सीतावर सामी सावळियौ ।—र. ज. प्र.

उ०—४ कान्ह कवर सो वीरो मागा, राई सी भोजाई । सावळियौ बहनोई मागा, सुभद्रा सी बहनड मागा ।—लो. गी.

उ०—५ लाबौजी डीघौ सावळियौ सिरदार ।—लो. गी.

सांवळी—देखो 'सवळी' (रू. भे.) (डि को.)

उ०—१ सावळी हुय देवळ आप चढी, महि ऊड रजी पुड गैण मढी ।—पा प्र.

उ०—२ उवै बिन्हे सावळ्या हुई नै उडीया । उडत्या उडत्या ऊवै गाम आया जेथ स्यामसुदर परणीज नै रह्यौ तौ, तेथ तियै घर ऊपरि आय वैठ्या ।—स्यामसुदर री वात

सांवळीसाडी—स. स्त्री.—देव मन्दिर जाने पर दुल्हा व दुल्हन को गाया जाने वाला एक लोकगीत ।

सांवळौ, सावलौ—स. पु [स. श्यामल] १ श्री कृष्ण ।

२ अर्जुन ।

३ श्रीराम ।

उ०—१ हद भाळ सुसबद भळहळा, निज कदम समहर नहचला । साधार सेवग सांवळा, अपराज दसरथ नद ।—र ज. प्र

उ०—२ अग धार आरख ऊजळा, करतार चित चढती कळा । विसतार जस चहूवै वळा, साधार सेवग सांवळा ।—र ज. प्र.

४ परमेश्वर, ईश्वर ।

५ विष्णु भगवान् । (डि. को)

उ०—त्याह न आवै ताप, हरजी चो दरसण हुवो । जनम जनम रा पाप, साथै मेटै सांवळौ ।—गज-उद्धार

६ बादल, मेघ ।

७ काला रग ।

८ एक मासाहारी पक्षी ।

उ०—रमत जोम सावळा, भ्रमत भूल रातडा । भराय नै कसाय कठ, पीठ सोर भातडा ।—पा. प्र.

९ शिकार करने वाला, शिकारी । (डि. को)

१० भील ।

उ०—चद ढांमै जिसा परत मन धारै चगा सांपरत गिणै तन काच सीसी । भावळा भूक पडै रण भाविढा, बढै सग सांवळा सातबीसी ।

—गिरवरदांन सांदू

११ श्याम रग का हिरण, कृष्ण मृग ।

१२ अफीम, अमल । (डि. को.)

वि (स्त्री. सावळी) १ श्याम रग का, कृष्ण, काला ।

उ०—सावण री महीनौ सो बाजरी निनाण आयोडी । नीली कच, सावळी भवर, डाफळ पानी । खेत जाणै उफण आयोडो । सूरियौ वायरी पूगी बजावै अर बाजरी लै'रा लेवै ।—रातवासौ

२ नीला, काला । * (डि. को.)

रू भे —समळ, समळौ, सवळ, संवळौ, समळ, समळौ, साबळ, सामळ, सामल, सामळू, सामळौ, सावरौ, सावळ, ।

अल्पा,—सामळियौ, सावरियौ, सावळडौ, सावळियौ ।

सावीणौ—देखो 'साईणौ' (रू. भे.)

उ०—सांवीणा जोडी सारीखी, वरदळ रउ न्यात रौ विचार । हूसत लगन मेलियउ हथळेवउ, अवर करण लागा आचार ।

—महादेव पारवती री वेलि

(स्त्री. सावीणी)

सांवौ, सावौ—स पु. [स श्यामक] १ प्राय. सारे भारत मे बोये जाने वाले चने की जाति का अनाज विशेष जो चावल की भाति उबाल-कर खाया जाता है ।

उ०—मकी जवारी कोदरा, सांवौ उडद कपास । चवळा तिल चीणौ घणौ, अन सह निपजे जास ।—गज-उद्धार

२ घुटनो तक लम्बा घास जो जल मे अधिक होता है ।

३ देखो 'सवौ' (रू. भे.)

उ०—खोडा रै पाखती राजाजी री घोडौ आवता ईं अेक असवार नै हाथ री सानी करी तौ वौ कुचमादी रै माथै ओढायोडी कांबळौ झटको देय आगी ली । ऊधो पडयो कुचमादी नै थाल देय सांवौ करयौ तौ वौ जोर सूं टसकियौ ।—फुलवाडी

सांस—१ देखो 'सास' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ सास छतै जीवै सकळ, ऊमर रै आधार । जस सू जीवै जगत मैं, सांस पछै सुदतार ।—बा. दा.

उ०—२ साजन फूल गुलाब रो, म्है फूलन की वास । साजन म्हारा काळजा, म्हैं साजन री सास ।—अग्यात

२ देखो 'सूस' (रू भे.)

उ०—तद सारा कही आहीज वात छै तौ सांस करौ तद सारां मिळ सांस कवल किया ।—गजसिंह कूपावत री वारता

सांसउ—१ देखो 'सासौ' (रू भे)

उ०—१ तुझ मुरति हो देखता प्राय की, समोवसरण मुझ साभ-रइ । जिन प्रतिमा हो जिन सारिखी जाणकी, पूरखि जै सांसउ वरइ ।—स. कु.

उ०—२ अतेउर परिजालज्यो जी, स्रेणिक दियउ रे आदेस । भग-वत सांसउ भागियउजी, घमकयउ चित्त नरेस ।—स कु.

सांसण—१ देखो 'सासन' (रू भे.) (डि को)

उठै बखतै सांहणी री मारफत बखतसिंहजी सू वात उठराई ।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—३ तरै पिउसघी घोडो सांहणी कना सू मगाय पिलाण करि वागो पहिर हथियार बाधि नै सिंध नै चलाया । तिकै दिन ऊगतै पहली पोळ जाय ऊभी रही ।—जखडै मुखडै री बात

उ०—४ . ..सीहलो गुजराती फरासखानो करतो ईसर साहणी इतरा भोपतजी रा आदमी भोपतजी कन्है राखिया ।—द वि.

सांहणो—१ देखो 'सागणो' (रू. भे)
२ देखो साहणो' (रू. भे)

साहणो, साहवो—देखो 'साहणो, साहवो' (रू. भे)
उ०—परभोम घूसै जिकै आप प्राण, वडा जुद्ध रा वध जाणै विनाण । हणै मारि पाडै पखी वोम हूता, सांहे चाळि सू जागवै काळ सूता ।—वचनिका
साहणहार, हारो (हारी), सांहणियो—वि० ।
साहिओडो, साहियोडो, साह्योडो—भू० का० कृ० ।
साहीजणो, साहीजवो—कर्म वा० ।

सांहमों—देखो 'साम्हो' (रू. भे.)
(स्त्री साहमी)

साहस—देखो 'साहस' (रू भे.)
उ०—मेड़तिया 'मधकर' हर मेडतै सहायक, सांहस कै सादूळ वस कै नायक । जाकी रीत कौ प्रमाण द्वापुर दरसावै, कहनै मैं विसमैसी देखै वन आवै ।—रा रू.

सांहसी, साहसीक—देखो 'साहसी' (रू भे)

सांहस्स—देखो 'साहस' (रू भे.)
उ०—ऊपर लाखा आवता, सुण साखा त्रयदस्स । खोड खळा दळ अप्पवा, कोड जिसो सांहस्स ।—रा. रू.

सांहांमो—देखो 'साम्हो' (रू. भे)
उ०—पछइ वली मुकट तिलक कुडल हार दोर वीर विलय अगद बहिरखा नवग्रहा मुंद्रडी कदोरु हयसाकली पग नी साकली, प्रमुख पहिराया । एहवी कुटब सांहामी ग्यातिनी भगति कीधी सिद्धारथ राजाग्रहे ।—व स.
(स्त्री साहामी)

साहियोडो—देखो 'साहियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री साहियोडी)

सा, सा'—सं पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर ।
२ मित्र, दोस्त ।
३ वर्ष, साल । (एका.)
४ स्वाद, जायका ।
५ सगीत मे षडज स्वर का सूचक शब्द या सक्षिप्त रूप ।
ज्यू—सा, रे, ग, म, प ।
स स्त्री.—६ स्त्री, औरत । (एका.)
७ रज, धूल । (एका.)
८ साली । (,,)
९ लक्ष्मी, रमा । (,,)
१० गुफा । (,,)
११ टिड्डी । (,,)
१२ रेखा, पंक्ति । (,,)
१३ पार्वती । (,,)

वि —१ समान, तुल्य ।
उ०—१ गरु गारडु कोय मिळावै, मेरै तन की तपति बुझावै । सतगुर सा समृथ नही कोई, विसीया लहरि मिटावै सोई ।
—अनुभववाणी

उ०—२ सतगुरु सोई जाणीयै, कहै कहावै राम । हरीया गुरु गोविंद सा, और न को विसराम ।—अनुभववाणी

उ०—३ अइयो मोज जका नु आपै, माघा नै कव्रिळास समापै । अनत भगत तू सा उधरिया; तुझ तणै ऊपरि सा तरिया ।
—पी. ग्रं.

२ अच्छा, भला ।
उ०—सा पुरसा सतोखिया, खाणा जवहर खाण । वेला चित्रा वेलडी, पारस सयल पखाण ।—वा. दा.

३ साथ ।

सर्व. स्त्री —वह ।
उ०—१ ढाढी एक सदेसडउ, प्रीतम कहिया जाइ । सा धण बळि कुइळा भई, भसम ढढोळिसि आइ ।—ढो. मा.

उ०—२ पुनरपि पधरावी कन्है प्राणपति, सहित लाज भय प्रीति सा । मुगतकेस त्रूटी मुगतावळि, कस छूटी छुद्रघटिका ।—वेलि

उ०—३ सा धण झुझि बचाह ज्यउ, लवो थई तु कध । चीतारती सज्जणा, नीहाळती मग्ग ।—ढो. मा

अव्यय—एक सम्बन्ध-सूचक अव्यय जिसका प्रयोग कही क्रिया विशेषण की तरह और कही विशेषण की तरह नीचे लिखे आशय या भाव सूचित करने के लिए होता है :—
१ समान, तुल्य, सदृश ।
२ समान होने पर भी किसी प्रकार की थोडी न्यूनता या हीनता का भाव सूचित करने के लिए ।
उ०—परभात बाहर आया सो उदास सा रह्या । झाली तो नां दातण, ना सिनान कीवी, न जीमी । रात घडी च्यार गया समुद्र आयो । तद झाली खीवसीजी नु बोलाया ।
—कुवरसी साखला री वारता

ज्यू—वो मेला सा कपडा पेरचा ऊभो हो ।
बाळदिया कन्है तो मडा सा बळद है ।
३ किसी अनिश्चित मात्रा या मान पर जोर देने के लिए ।
ज्यू—थोडा सा वोर दीज्यो, थोडा सा आदमी आया ।

वळणौ सजी होवणौ एकलो सूं कीकर वर्णं श्रो जीव मैं ससय सासौ छै।—वी. स. टी.

२ सोच, फिक्र, चिन्ता।

उ०—१ सांसा मत कर मूरखा, सिर पर है करतार। वौ ही सारै जगत का, सांसा मेटणहार।—श्रग्यात

उ०—२ श्राण मिळ्यौ श्रनुरागी जोगियौ, श्राण मिळ्यौ श्रनुरागी। सांसौ सोच श्रंग नहिं श्रब तौ तिस्ना दुवध्या त्यागी।—मीरां

उ०—३ साभळ श्रात मतीकर सांसौ जोवत हुयग्या श्रसुर जुवा। हेकण घाव विट्टक सदा हुवै, श्रेकण घाव छट्टक हुश्रा।

—पदमसिंघ री गीत

उ०—४ नागौ ग्यौ निरधार, तागौ रह्यौ न तेण रै। लेगौ वीसल लार, माया सासौ मोतिया।—रायसिंह सादू

३ दुःख।

उ०—१ राजा मन मैं चितवै, एहवौ खून न कोय। साध मरण मन ऊपनो, ए सांसौ छै मोय।—जयवाणी

उ०—२ श्राका-वाका भूलग्या, श्राफत मैं भूलग्या। सिपाईडा ज्यूं ही रायफला मैं रीझ्या, भुगानै रा एकला भाई त्यू ही सांसै मैं सागीडा सिक्या श्रर सीझ्या। हथकडी देखता ही श्राकळ-वाकळ हुयग्या।—दसदोख

उ०—३ करी केसव श्ररज हुता, ज्यू गत म्हारी होय। सरग वसू सुचितौ थकौ, रहै न सांसौ कोय।—गज-उद्धार

४ डर, भय।

उ०—१ मन सांसौ जिण मरण रौ, सूण गिणै सौ स्याम। मानै रण मरणौ मगळ, वोहि वीर वरियाम।—रैवतसिंह भाटी

उ०—२ जिकै जपै हरि जाप, जिकै वैकूठ सिधावै। जिकै जपै हरि जाप, उदर फिर कदै न श्रावै। जिकै जपै हरि जाप, जिया मन सासौ भागै। जिकै जपै हरि जाप, जिण मन लत्त न लग्गै। क्रमबध पाप जावै कटै, उर परम धरता श्रगा। ऐतौ प्रताप हरि जाप रौ, जाय जनि भूलै 'जगा'।—ज. खि.

उ०—३ धन सू श्रावै मोद, विसै सूं विपता श्रावै। मोटा सू वोहार, घणा दिन नहीं खटावै। मौत वचै कद मिनख, मगता नै कुण चावै। दुसटा रै सैवास, दुखा री सांसौ छावै।

—नारी सईकडौ

उ०—४ करण मुरडियौ कहै पतसा का सू करस, समर चित धारियौ विना सासै। सरम मौ खत्र-ध्रम खाग श्रागै सदा, वीकपुर 'श्रना' रै भुजा वासै।—करणसिंघ री गीत

५ सम्भावना, श्राशका।

६ चक्कर।

उ०—श्रोघट घाटि चूरि करि, पाया पीतम यार। हरीया जनम मरण का, सांसा मेट सधार।—श्रनुभववाणी

७ कमी, श्रभाव।

उ०—१ गोधळूक वेळा हुई। हीरू लिखमीजी री पूजन करण वेठी। कयो—मा, मा! तू मा हो'र पखपात कियां करण लागगी? कठै ई सामगरी री ठाठ श्रर कठै ई सांसौ निराठ?—वरसगाठ

उ०—२ रामजी घण देवाळ है। वाजरी-मिसी भावती नी जकानै भगर रा ही सांसा पडग्या।—वरसगाठ

उ०—३ चूला पाछै रीती हाडी श्रन रा जी पड़ रया सासा, हो भगवान! थारी माया। दूध दही तौ घणा वुहेला, छाछिया नै तरसाया, हो भगवान! थारी माया।—लो. गी.

८ रीब, श्रातक।

उ०—तदि हुवौ 'मानहर' श्रडिग 'माह्व' तणौ, साह सेना तदि पडै सांसौ। कछव कछवाह वासै पलट करै किम, वसुह चौ माड बिहू भडा वासै।—पूरी महियारियौ

९ धारणा।

उ०—सोची मन मैं श्रा जोगी, श्रौ कूडौ जग रौ वासौ। पडस्या पत्ता ज्यू जग मैं, श्रौ झूठौ सुख रौ सासौ।—करणीदान बारहठ

१० सकट, विपत्ति।

उ०—१ तड उभै वदै 'नीबा' हरा श्रिभैतण, मवळ खळ घातिया भला सांसै। दुनिपत तणै वासै बहै सही दुनी, वहै दुनियाण पति तूझ वासै।—दुरगादास राठौड री गीत

उ०—२ धोबा धोबा धूड वगावौ श्रमला बासै, मती लगावौ मैल सैल मन धरौ न सांसै। मिळै कटै मनवार किनारौ झेलौ काठौ, श्रौ तौ महा श्रभाग भाग मैं लौ मत भाटौ।—ऊ का

११ झझट, उलझन।

उ०—सुलटा कू सांसा घणा, पेम न ऊपजै प्यास। श्रदर चालै उलटि कै, हरीया हरी का दास।—श्रनुभववाणी

रू भे.—ससौ, सासउ।

सांहगणौ, साहगणौ—१ श्रनुकूल।

२ देखो 'सागणौ' (रू. भे.)

उ०—जोवै वाटा जोय, साठा कोमा सांहगणा। देखण रा श्रंग दोय, मन चित एकौ मोतिया।—रायसिंह सादू

सांहण—देखो 'साहण' (रू. भे.)

उ०—१ कमधज्ज कहै केविया काळ, सांहणी श्राण साहण उजाळ। सर वेग जग सरवेग चग, तेगागळ चचळ 'जै' तुरग।

—गु. रू. व.

उ०—२ सांहण सख न कौ सूडाळै, नेजै सख न कौ नेजाळै। खुरम प्रगट्टौ जहण जडाळै, श्राग न दब्बी रहै पराळै।—गु रू. व.

साहणी—देखो 'सा'णी' (रू भे.)

उ०—१ स्रीगगाजळ सरसि श्रादि मंजण श्रोपावै, पट श्रगुछि घट परखि, वेद भट वदन वचावै। श्रगर धूप ऊखेवि। जत्र रक्षा गळि धारै। साजि करै सांहणी, लूण ऊपरि ऊतारै।—रा. रू.

उ०—२ रामसिंहजी रा डेरा सोढावास जोधपुर श्राडा श्राय हुइया,

ग्रोर वातें व डींगें ग्रधिक हाँकता हो उसके लिए प्रयुक्त कथन. २. साई दे दे रोणौ=खूब रोना, धाड मार कर रोना. ३. साई खाई होणौ=सौदा भग होने पर पेशगी रकम वापिस प्राप्त करने का ग्रधिकार खत्म होना ।

२ रुदन, चीत्कार भरी ग्रावाज ।

उ०—साई दे दे सज्जना, रातइ इणि परि रून । उरि ऊपरि ग्रार ढळइ, जाणि प्रवाळी चून ।—ढो मा.

३ साक्षी ।

उ०—घुरघुर ग्रसाढा ग्रंवर घर हरीयौ, घोरा डवर मैं सवर घर हरियौ । साई सर सरिता ग्राई इकरारा, धोळा जळधर सू धाई जळ धारा ।—ऊ का.

४ इशारा, सकेत ।

उ०—१ मनडौ ग्राज उमाहियौ, देखि घटा घनघोर । सयणा साई दे मिळू, ग्रलजा 'जसा' जसोर ।—जसराज

उ०—२ सूडा सुगुण ज पखिया, म्हाकउ कह्याउ करेह । साई देज्यौ सज्जणा, म्हा साम्हा जोएह ।—ढो मा.

५ देखो 'सामी' (रू. भे.)

उ०—गोपाळ व्रिजरा वाळ गोवाळ गति, छोगाळ छत्राळ साई प्रतिपाळ साच । जादवा उजाळ नमौ विरुदा विसाळ जूना, डाग थारी काळ माथै ससिपाळ डाच ।—पी ग्र.

साईजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे)
(स्त्री. साईजादी)

साईदार, साईदार–स पु.—साक्षी, गवाही ।

वि —१ साक्षी देने वाला ।

उ०—जद साहूकार हुवै तै तो पेतो वतावै साईदार भरावै ग्रम-कडियै बजाज कने लीधी ग्रमकडियै रगरेज कनै रगाई । ग्रने चोर नै ल्यायौ हुवै तिण सू पेतौ बतावणौ ग्रावै नही थोडा मैं ग्रटक जावै ।—भि. द्र.

२ पेशगी देने वाला ।

रू भे.—साइदार ।

साईनौ, साईनौ—देखो 'साइणौ' (रू भे.)
(स्त्री साईनी)

साईवांण, साईवांन—१ 'छज्जा, छाजन ।

उ०—१ साईवांन चिग्गा जरी तार सोहै, मडे झालरी मोतियां हस मोहै । जडी हीरपन्ना नगा हेम जाळी, सझे चित्र कारीगरा चित्रसाळी ।—सू प्र.

उ०—२ तावदान के जळूस ग्रस्टपदी का भाव । ग्रस्मू की ग्राव जैं महतावू का ताव । जाळियू के वीच मैं प्रवाळियू कै जाव । कलावुतू का हूनर साईवांनू का काम, जरकस कै वगीचै लगै ठाम ठांम ।—सू. प्र.

२ देखो 'सामियानौ' (रू. भे.)

रू. भे.—साइवाण, साइवान ।

साईस—देखो 'सईस' (रू. भे)

साउ–स. पु —१ स्वाद, जायका ।

२ देखो 'साऊ' (रू. भे)

साउचेती—देखो 'सावचेती' (रू भे.)

उ०—ग्रौर सारी तरै मजवूती जो वणाई, साउचेती राखण नै या छप्पाई जो सुणाई ।—केहर प्रकास

साउळ साउल–सं. पु.—१ वढई का एक प्रकार का ग्रौजार विशेष ।

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—चीर दुरयोधन खाचीया, पाचाली सु करीय उपाय कि । सो ग्रट्ठोतर साउला प्रगट्या, नवभव सील पसाय कि ।—ध. व. ग्रं.

३ एक प्रकार की साडी ।

४ देखो 'सावळ' (रू. भे.)

साउवाणी–स स्त्री,—१ महारानी, रानी ।

उ०—सो सवत १६१६ कातीवद १२ रावजी दिली माहै काळ कीयौ । सती हुई तिण री विगत, ६ साउवाणी १० खवास पात्रा ४ डावडिया ३ छोकरिया सरव २३ हुई ।—रा. व वि.

२ ठकुरानी, सामत की पत्नी ।

३ वेटी, पुत्री ।

उ०—इतरी लारै सती हुई—भटियाणी धनराजोत ग्रजवदे जैसल-मेरी सिणगारदे, विकूपुर री कोडमदे, मलणवासी मनसुख दे...... तवर साहव दे सरुपसिंघ केसोदासोत री साउवांणी ।—द. दा.

४ देखो 'सवासणी' (रू भे.)

रू भे.—सउवाणी, सऊवांणी, साऊवाणी, साहुणि, साहुणी, साहूवाणी ।

साऊ–स पु.—सुभट, सामत, योद्धा ।

उ०—१ राजा काम भोळावियौ, राखै विकळी करथ । कह्यौ वजीरा 'गजपति', तेडौ साऊ सत्थ ।—गु रू. ब.

वि —१ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—सिरी सीस कुभा मणी हेम साऊ, जथा नारि वक्षोज चोळी जडाऊ । उभै घट भासा दुपासा ग्ररोहै, ससी सूर रै बीच ज्यू मेरु सोहै ।—व. भा.

२ उत्तम, ठीक ।

रू भे.—साउ ।

साऊ—देखो सासु' (रू. भे.)

साऊजम–वि.—कार्यरत, उद्यमशील ।

उ०—सुणि ग्रागम नगर सहू साऊजम, रुखमिणि क्रसन वधावण रेसि । लहरिउ लियै जाणि लहरीरव, राका दिन दरसण राकेसि ।
—वेलि

साऊवाणी—देखो 'साउवाणी' (रू भे.)

उ०—ग्रकळ थाट ग्रासमग्न ग्रर ऊपरै ग्राणिया, दूहरी कुजरै ढाळ

४ देखो 'साहिब' (रू. भे)
५ देखो 'साह' (रू. भे.)
उ०—सुज तेज देखि सधीर, अडियो न कोय अमीर। सभि ताम अजण सलाह, सा' थियो दौलासाह।—सू प्र.
रू भे—स्या।

सा—१ देखो 'सास' (रू. भे.)
२ देखो 'हा' (४) (रू भे)

साअंता—देखो 'साता' (रू. भे)
उ०—साअता कुमरि मागि समय, दई रिखो आणि सघ दसरथ। —रामरासौ

साइ-सर्व. स्त्री—१ वह।
२ देखो 'साई' (रू. भे)
३ देखो 'सामी' (रू. भे)
उ०—साइ सारदा मनि सवरि, वाधउ ग्रथ अपार। सूरति राखउ 'अचळ' कव, खउदालिम्म सिकार।—अ. वचनिका

साइक—१ देखो 'सायक' (रू भे)
उ०—१ लघु लघु धानख साइक लघु।—रामरासौ
उ०—२ वाळे घाव जागिया कुराण वाच लगा बोम, रोस भीना दोवडा चळळा ऊडै रीठ। साइकां छडाळा धारा कटारा जवना सेती, ताखा मडा वापूकारै मेलिया नतीठ।—बगतौ खिडियौ
२ देखो 'सहायक' (रू भे.)

साइकल, साइकिल-स स्त्री [अ. साइकिल] दो पहियो वाली गाडी जो पैरो से चलाई जाती है, बाइसिकल।
उ०—चारेक खेतवा ताई तौ मामूली छाटा छिडका व्हिया पण पछै तौ हरडाट माचग्यो। म्हैं बरसात मैं ई साइकल दावतौ रह्यौ। —फुनवाडी

साइवक—देखो 'सायक' (रू. भे)

साइजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू. भे.)
(स्त्री साइजादी)

साइणि, साइणी—१ देखो 'साकणी' (रू. भे)
उ०—बावन वीर किये अपनै वस, चौसट्टि योगिनी पाय लगाइ डाइण साइणि व्यतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ। —ध. व. ग्र.
२ देखो 'साइणो' (पु)

साइत—१ देखो 'सायंत' (रू. भे)
२ देखो 'सायत' (रू भे.)
उ०—जै कोई बुद्धी उपाय सू जलाल नूं मारणो। सो उण साइत मजकूर करि नै कहियो—वडो डेरो हमारै झरोखे साम्हो खड़ो करो और तणाव ढीलो राखो।—जलाल बूबना री वात
३ देखो 'सायद' (रू. भे)

साइदार—देखो 'साईदार' (रू भे.)
उ०—ब्राह्मण नै साइदार थाप्यौ। तै पिण बोल्यो फाक जांणी पछै रुघनाथ जी आचारग काढ्यो। जद खति विजय रुघनाथजी कनै सू पानो खोस नै फाड न्हाख्यो।—भि. द्र.

साइधण—देखो 'सायधण' (रू भे)
उ०—१ मारू देस उपन्निया, नड जिम नीसरियाह। साइधण ढोला एहवी, सरि जिम मच्छारियाह।—ढो. मा
उ०—२ साइधण हल्लण साभळइ, ऊभी आगण छेह। काजळ जळ भेळा करी, नाखी नाग्व भरेह।—ढो मा.

साइनौ, साइनौ—देखो 'साइणौ' (रू भे.)
उ०—१ कठोडै कहीजै कलाळी री पोळ ओ साइना सिरदारा, काई रे ऐनाणा कलाळी रो आंगणो, हो म्हारा राज।—लो. गी
उ०—२ परणी-पाती साईनी साथणिया नै ब्याव धणी अर सासरा री केई वाता पूछी, जको वा माईता सू नी पूछ सकै। सहेलिया री वाता सुणनै उणरो कोड तर-तर परसण लागो।—फुनवाडी
(स्त्री साइनी, साइनी)

साइर—१ देखो 'सागर' (रू भे.)
उ०—१ हठि चल्यउ सुरताण, खणवि धरणि तलि पिल्लउ। वेगि ल्यावी पदमिणी, सेन सवि साइर धल्लउं।—प च. चौ.
उ०—२ पातिसाह राघव, आय ऊभा तटि साइर। करउ मत्र चेतन्न, कटक लघीइ रिणायर।—प. च चौ
२ देखो 'सायर' (रू भे)

साइवाण, साइवान—१ देखो 'सामियानौ' (रू. भे)
उ०—अवाडी गज्जा धज्जा नेजा, घोडै घत्ते पल्लाण। कोठारं भार ऊठा पूठी, डेरा तबू साइवांण।—गु, रू. बं.
२ देखो 'साईवान' (रू भे.)
उ०—हिम हीर गोख जाळी हजार, दमकत जोति प्रति जिलह-दार। जर तार चिगा साइवांन जास, परगटै जाण बहु रवि प्रकास।—सू. प्र

साइस्तगी-स. स्त्री. [फा शाइस्तगी] शिष्टता, सभ्यता।

साई, साई-स स्त्री.—१ कीमत की रकम का वह अंश जो किसी वस्तु की खरीद के पहले सौदा तय करते समय वस्तु को सुरक्षित रखने हेतु लिया या दिया या जाय, पेशगी।
उ०—सल्पोत दूध दही रै मिस उठै बुलावण री जाळ रचियो, सगळा दूध री साई करण री दातारी दरसाई, पछै भेंम्या देवण रै मिस अठै आवण री जुगत विचारी।—फुनवाडी
वि० वि०—यह रकम पूरी रकम देते समय विक्रय मूल्य मे से कम कर दी जाती है। यह रकम देने से सौदा तय हो जाता है। निश्चित समय मे क्रेता द्वारा वस्तु नही खरीदी जाने पर पर यह रकम क्रेता वापिस प्राप्त करने का अधिकारी नही होता है।
क्रि. प्र—करणी, देणी, लेणी।
मुहा०—१. सतरा साया नै तेरै वधाया—जो काम कम करता है

जो क्षीर-समुद्र से चारो ओर से घिरा हुआ है। यहाँ सुकुमारी व अनुतप्ता नामक सात नदियाँ हैं।

२ ईरान और तुर्किस्तान के बीच पडने वाला प्रदेश।

रू भे—साकद्वीप।

साकदीपी, साकदीपीय-सं. पु. [स शाकद्वीपीय] १ शाक द्वीप का निवासी।

२ ब्राह्मणो का एक भेद।

वि.—शाकद्वीप का, शाकद्वीप से सम्बन्धित।

रू. भे.—साकद्वीपी।

साकद्वीप—देखो 'साकदीप' (रू. भे)

साकद्वीपी, साकद्वीपीय—देखो 'साकदीपीय' (रू. भे)

साकर—१ देखो 'सक्कर' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ अेक सीह नइ पाखरयउ, सूर सिहाइति आवरयउ, पचाम्रत अमी परगरयउ, महादान आछइ घड़इ दूध माहि साकर पड़ई।
—अ. वचनिका

उ०—२ जेहनउ रूप अनुरुप निहाली, सुरनर सगला मोहइ। तिण सू मो मन मिलियउ राज, साकर दूध तणी परइ।—वि. कु.

२ देखो 'साकार' (रू. भे)

उ०—अनाकर साकर आखर अत, भलो भव भाग भजै भगवत। भजै नहि मूरख जै भगवान, सही नर सूकर स्वान समान।
—ऊ का

३ देखो 'साकुर' (रू भे) (ना डि को.)

साकरखोर, साकरखोरो—देखो 'सक्करखोरो' (रू भे.)

उ०—खग इण साकरखोर रै, सग न साकर गूण। सब दिन पूरै साइया, चाच दई सो चूण।—बा. दा

साकरलिगा-स. पु—शक्कर या मिश्री से बनी लिंगाकार व कुंजाकार वस्तु।

उ०—बीज अखोड बदामना, पस्ता तणु न पार। चारुली नइ चारबी, साकरलिगा सार।—मा का प्र

साकरियो-स पु. [स.] १ घोडे का एक प्रकार का रोग विशेष जिसके कारण घोडे के गले या जबडे के नीचे ग्रंथियाँ हो जाती है तथा सास मुश्किल से आता है। (शा हो)

२ दानेदार शक्कर।

साकरियो डोरो-स पु—मजबूत-धागा।

उ०—हुकम ओढावै अर घर रो काम करावै है। पाली हाळा पेम, तन्नै नेकारै रो नेम। साकरियै डोरै री नाक मैं नाथ घालली। कद टुटै अर कद पेमजी रो पिंड छूटै।—दसदोख

साकळ साखा-स. स्त्री [स शाकलशाखा] शाकल्य ऋषि के गोत्रो मे चलने वाली ऋग्वेद की एक शाखा या सहिता।

साकली-स. स्त्री [स. शाकली] १ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

वि० वि०—यह प्रायः होली या शीतलाष्टमी पर बनाया जाता है। यह मीठा व नमकीन दोनो तरह का होता है। मीठा पदार्थ आटे व गुड के पानी के मिश्रण से पूडी के आकार का बनाकर तेल मे तल कर बनाया जाता है एव नमकीन पदार्थ बेसन मे नमक मिर्च, हलदी, धाणा, जीरा आदि मिला कर पानी से गूद कर पुडी के आकार का तेल मे तलकर बनाया जाता है।

२ देखो 'साकळी' (रू भे)

साकळै-अव्यय. [स सुकल्य] सुबह, प्रात काल।

उ०—म्हारै दुवारी री वेळा टळै, दो घडी दिन चढ्या वहीर होवाला। आपनै की पूछताछ करणी है तो घकै आखी रात पडी है। म्है तो साकळै दो घडी दिन चढ्यां वहीर होवाला।
—फुलवाड़ी

साकल्य-स. पु. [स शाकल्य] १ ऋग्वेद की एक शाखा के प्रचारक प्रसिद्ध ऋषि।

२ एक प्राचीनकालीन वैयाकरण।

(मि. साकलसाखा)

साकवक्त्र-स. पु [स शाकवक्त्र] कुमार कार्तिकेय के एक सैनिक अनुचर का नाम।

साकवर-स पु [स. शाक्कर] वैल, वृषभ। (डि को.)

साकसप्तमी-स. पु. [सं. शाकसप्तमी] एक प्रकार का व्रत विशेष जो कि कार्तिक शुक्ला सप्तमी को किया जाता है।

साकाबद, साकाबध, साकाबंधी-स. पु.—१ युद्ध के इच्छुक, सुभट योद्धा।

उ०—१ धनि आखै सारी धरा, मनि कापै महमद। साकावध कमध रा, वाका हद्दि समदी।—रा. रू.

उ०—२ नित कहतो सुज बोल निवाहे, लोह चढै जस घणो लियो। साकाबध कामण साभळियो, कथ सुरा विच वास कियो।
—महाराजा पदमसिंघजी री वात

२ यशस्वी, प्रतापी।

३ ऐतिहासिक।

उ०—सु तीसरो सज महाभारत आगम कहता उजेणि खेत। अगनि सोर गाजसी। पवन वाजसी, गजबध छत्रबध गजराज गडसी। हिंदू असुराइण लड़सी। तिकातो वात साकाबंध आइ सिरै पढी।—र. वचनिका

रू. भे—सकबध, सकबधी।

साकामिस-स. पु—कई प्रकार के शाक-सब्जियो का एक साथ सम्मिश्रण। (मेवाड़)

साकायत-वि—१ युद्ध करने वाला।

२ प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला।

३ भयावह, डरावना।

साकायन, साकायनि-स. पु. [स शाकायन] १ वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

ढळकाणिया। मिखर भुरजा चढी सखी साऊवाणिया, रायसिंघ सपेखें नदगिर राणिया।—रायसिंह,री गीत

साकप-वि.—कम्पनसहित, कम्पनयुक्त।

उ०—१ जसवत विना जहान, पान चळ जाणै पवनै। कना केतु साकप यथामन हिद सयानै।—रा रू.

उ०—२ मिट आग तप मिट जाय, साकप सीत सवाय। द्रढ पोत खेवट दाम, तट धरी गुदरी ताम —रा रू.

साकब, साकबरी, साकभ, साकभरी-स स्त्री. [स शाकभरी] १ दुर्गा देवी का नाम।

२ अपने शरीर से उत्पन्न शाको से समस्त ससार का भरण-पोषण करने वाली एक देवी का नाम। (पुराण)

३ चौसठ योगिनियो के अतर्गत तीसरी योगिनी का नाम।

४ साभर झील के आस-पास का प्रदेश।

५ इस प्रदेश मे स्थित दुर्गा की एक मूर्ति।

६ साभर का एक नाम।

साकबरीपूनम-स स्त्री.—पोह सुद पूर्णिमा।

साक-स. पु [स. शाक] १ एक वृक्ष जो शाकद्वीप पर पाया जाता है। इसी पेड के कारण उक्त द्वीप शाकद्वीप के नाम से पुकारा जाने लगा।

२ देखो 'साग' (रू. भे)

उ०—तीन दिना सू साक मिळै तोई धोको हियै न धारो।

—ऊ. का.

३ देखो 'सक' (३) (रू. भे)

उ०—सोलसै साक चववीस तास, मधि हिमरित वद अघण मास। सनि चतुरदसी वद पख सकाज, सिधजोग प्रगट उच्छव समाज।

—सू प्र.

साकट-स. पु [स. शाक्त] १ शाक्त मत को मानने वाला, शाक्त मत का अनुयायी।

२ रथ, शकट।

[स. शाकट] ३ बैल।

उ०—साकट कह कह बेसमझ, दीन हटावै दूर। साकट बेहिज समझणा, सीग विना बेसूर।—ऊ का.

वि—१ दुष्ट, पाजी।

उ०—१ हरीया कबू न कीजियै, साकट केरो सग। एता मिळ बैसै नही, गाय गदहडो अग।—अनुभववाणी

उ०—२ जन हरीया साकट सभा, साध न बैसै जाण।

—अनुभववाणी

२ विधर्मी।

उ०—सतगुरु विन सौदा किया, जनहरिया बेकाम। साकट ज्यूई सूकरा, हांढै घर घर जाम।—अनुभववाणी

३ मूर्ख, नासमझ।

रू. भे.—साकत, साकति, साकत्ति, साखत, सागट।

साकटायण, साकटायन-स. पु. [स शाकटायन] एक प्राचीन व्याकरण रचयिता मुनि, एक प्राचीन वैयाकरण।

साकणि साकणी-स स्त्री. [स. शाकिनी] १ दुर्गादेवी की एक सहचरी का नाम।

२ युद्धप्रिय चडी।

उ०—१ वैताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आमख भक्ख, जक्खख रीछ वडुाक जक्ख।

—गु रू ब.

उ०—२ जरख रीछ वडुाख, सिवा सत लख्ख मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।—गु रू ब

३ ६४ योगिनियो मे से ४५ वी योगिनी का नाम।

उ०—१ देवी चद्रघटा महम्माय चडी, देवी वीहळा अन्नळा वहु वड्डी। देवी जम्मघटा वदीजै जडवा, देवी साकणी डाकणी रूद्र सव्वा।—देवि.

उ०—२ वीरै डाक वाया, विमाणै वोम छाया। साकणी डाकणी मिळि मगळ गाया। नोबति नीसाण रिणतूर वागा। देवासुर देखवा लागा।—र. वचनिका

४ पिशाचिनी।

उ०—तुही अज्जया अम्भया अव्विलवा, तुही अज्जरा अम्मरा अख्खिलवा। तुही साकणी डाकणी बाकसाळी, तुही भूचरी खेचरी भद्रकाळी।—मे म.

५ प्रेतिनी।

उ०—सुभगा सिवा जया स्री अबा, परिया परवार पालबा। पिसाचणि साकणि प्रतिबबा, अथ आराधिजै अवलबा।—देवि.

रू. भे.—सक्कणी, साइणि, साइणी, साकिणी।

साकत, साकति, साकत्ति—१ देखो 'साखत' (रू. भे)

उ०—१ बिलाला लीलो लावजै, वधियो न राखै टार। साकत माडै सोवनी, राव हुवै असवार।—लो गी

उ०—२ सपताख नही इण सारिखो, जोध सूर इम जाणियो। सूरजपसाव साकति सजै, इण विध हाजर आणियो।—सू प्र.

उ०—३ सिणगारै सरब हैम मैं साकति, गळै गज्जगाह वध ए। वेगागळ वाजराज वाहण, या दीवत सरल कध ए।—गु. रू. ब.

२ देखो 'साकट' (रू. भे)

उ०—१ दादू सभा सत की, सुमति उपजै आय। साकत की सभा बैसता, ग्यान काया मैं जाय।—दादूबाणी

उ०—२ दादू माया दासी सत की, साकत की सिरताज। साकत सेती भाड नी, सतो सेती लाज।—दादूबाणी

साकतिक-स. पु. [स शाक्तिक] शाक्त मत का व्यक्ति या अनुयायी, शाक्त।-(मा. म)

साकदीप-सं. पु [स. शाकद्वीप] १ पुराणानुसार सात द्वीपो मे से एक

४ महान कार्य जिससे कर्त्ता की कीर्ति हो।

५ सवत्, शाका।

६ धाक, रोब।

साक्त–स. पु. [स. शाक्त] शक्ति का उपासक, शाक्त मत का अनुयायी।

वि.—१ शक्ति सम्बन्धी, बल सम्बन्धी।

२ दुर्गा सम्बन्धी।

सात्तिक–वि [स. शाक्तिक] १ शाक्त मत को मानने वाला, शाक्त मत का अनुयायी।

२ भाला धारी।

साक्तेय–वि [स. शाक्तेय] शक्ति का उपासक, शाक्त मत का अनुयायी।

साक्य–स. पु [स. शाक्य] १ नेपाल की तराई मे बसने वाली एक प्राचीन जाति। (ऐतिहासिक)

२ इक्ष्वाकुवशीय एक राजा जो सञ्जय राजा का पुत्र एवं शुद्धोद राजा का पिता था।

साक्यमुनि–स पु [स. शाक्यमुनि] १ गौतम बुद्ध का नाम।

२ एक सूर्यवशी राजा का नाम।

उ०—तिण सुत सजय रघुकुल तारण, साक्य सजय सुत दुसह सधारण। सभ्रम साक्य स्वधोद सकाजा, राजै जै सुते लायक राजा।—सू. प्र.

साक्र–वि. [स शाक्र] इन्द्र का, इन्द्र सम्बन्धी।

स. पु —ज्येष्ठा नक्षत्र।

साक्री–स स्त्री [स. शाक्री] १ शची, इन्द्राणी।

२ दुर्गादेवी।

साक्वर–स पु [स शाक्वर] १ इन्द्र, देवराज।

२ इन्द्र का वज्र।

३ साड, बैल।

साक्षर–वि —१—जिसे अक्षर-बोध हो, शिक्षित।

२ पडित, ज्ञाता।

रू. भे —साखर।

साक्षात–वि.—साकार, मूर्तिमान।

अव्यय.—१ सामने, प्रत्यक्ष।

उ०—एक भायो चरणो लोढतो तिण रा हाथ सू आहार वहिरघो। आगै रुघनाथजी बोल्या—भीखणजी मंका पड़ी। जद स्वामीजी बोल्या—साक्षात अमूजतो ईज वहिरयो। इण मैं फेर सका काई।—भि. द्र

२ हूबहू।

उ०—१ अब विवाह को आरभ भयो। ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आणि बैठा छै जिसा साक्षात मूरतिवतवेद। वेदी छै सु रतन जड़ित छै। नीला वांस छै।—वेलि टी.

उ०—२ इण साक्षात सती रूपी धण रा कपड़ा रगता था मासत परण नै पोसाल मणावसी जद म्हारा ठाकुर गमाय देसी।

—बी. स. टी.

रू. भे.—सख्यात, सह्यात, साखात, साखियात, साखियात, साख्यात।

साक्षातकार—देखो 'साक्षात्कार' (रू. भे.)

साक्षातकारी–स पु. [स. साक्षात्कारिन्] भेंट या मुलाकात करने वाला।

साक्षात्कार–स. पु. [स.] १ भेंट, मुलाकात।

२ इन्द्रियों द्वारा होने वाला पदार्थों का ज्ञान।

रू भे.—सहयातकार, साक्षातकार।

साक्षि, साक्षी–सं. पु. [स. साक्षिन्] वह व्यक्ति जिसने कोई घटना अपनी आंखो से देखी हो, चश्मदीद गवाह।

रू. भे.—सख्ख, साखि, साखियात, साखियात, साखी।

अल्पा;—साखियो।

साख–स. स्त्री —१ साक्षी, गवाही।

उ०—१ इण सुत मांहि तो जिसा, केई साखै साख। सूर न जांणै कूड तूं, सूरज पख्खो साख।—गज-उद्धार

उ०—२ जो कोई सूत हुवै सुत अदर, तौ दू साख भराई। विण कहो जुग में न्याय करै कुण, जो हुवै साच अन्याई।—ऊमरदान

क्रि प्र.—घालणी, देणी, भरणी।

मुहा.—स्याळ री साख लाखो भरै=बदमाश या अपराधी की गवाही अपराधी ही देता है।

२ बाजार मे वह प्रतिष्ठा जिसके कारण उसका लेन देन तथा व्यापार कार्य अच्छा चलता हो, व्यापारिक ख्याति, प्रसिद्धि।

उ०—चौगळा मैं उण रै नाव री साख ही। हजारू रिपिया उणनै बिना लाता रै मिळ जाता पर वो गुड तो किणी नै लिखा-पढी री बात रिपिया देवती वगत करतो ई नी हो।—फुलवाड़ी

३ इज्जत, प्रतिष्ठा।

उ०—२ बात सुणनै सेठ बोल्यो—सैं'णो तो उणनै सूंपणो ई पहैला सात पीढिया री साख जावै। आपनै सावळ समझा। यू भोळप री बाता करियां पर री साख कोकर रेवैला।—फुलवाड़ी

४ आदर, सम्मान।

५ कीर्ति, यश।

उ०—वण जौहर री राख, साख रासी जग ऊचै। रजपूती भगती, वधी कद कुळ रै पूंचै।—नारी सईकडौ

६ भाग, हिम्मत।

७ रश्मी, किरण।

उ०—१ धोरी रै ग्वाळा बीरा धीरज नू लेय, सूरज री साखां मैं जास्यूं, रग री कोटड़ी।—लो गी.

उ०—२ जै बींदणिया रै सत चढ्यो है तो आप सती करावो। रोळो न हुवै। यो काम आप रै जिम्मै है। सगळी-बीदणियां री

२ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार का नाम।

साकार-वि —१ जिसका कोई आकार हो, स्थूल।

२ ईश्वर का आकारयुक्त रूप।

साकारणौ, साकारबौ-क्रि स —दाह-सस्कार करना।

उ०—ताहरा ऊदो बोलियो, कह्यो—ठाकुरा ! आ मेळाजी री पाघ छै, मेळोजी काम आया। सिखरैजी रै हाथ रा घावा ठाकुर काम आयो छै. साकारिया छै म्हा।—नैणसी

साकारणहार, हारौ (हारी) साकारणियौ—वि०।

साकारिओडौ, साकारियोडौ, साकारयोडौ—भू० का० कृ०।

साकारीजणौ, साकारीजबौ—कर्म वा०।

साकारता-स स्त्री —साकार होने का भाव।

साकारियोडो-भू का कृ —दाह-सस्कार किया हुआ, जलाया हुआ। (स्त्री साकारियोडी)

साकारी—देखो 'साकाहारी' (रू. भे)

साकारोपासना-स. स्त्री.—ईश्वर का आकार या मूर्ति मानकर की जाने वाली उपासना।

साकास्टका-स स्त्री [स शाकाष्टका] फाल्गुनकृष्णा अष्टमी, जिस दिन पितरो के लिए शाकदान किया जाता है।

साकाहार-स पु [स शाकाहार] मास-रहित भोजन, अन्न या फल-फूलादि का भोजन।

साकाहारी-वि [स शाकाहारिन्] शाकाहार खाने वाला, मास न खाने वाला निरामिषभोजी।

साकिणि, साकिणी—देखो 'साकणी' (रू भे.)

उ०—मणि मत्र तत्र बळ जत्र अमगळ, थळि जळि नभसि न कोइ छलति। डाकिणी साकिणी भूत प्रेत डर, मार्जे उपद्रव वेलि भणति।—वेलि

साकिन-वि [अ] १ निवासी, रहने वाला।

२ जिसमे हरकत न हो, स्थिर।

साकिनी-स. स्त्री. [स शाकिनी] १ दुर्गादेवी की परिचारिका का एक नाम।

२ शाक-सब्जी का खेत।

३ देखो 'साकणी' (रू. भे)

साकी-स. पु [अ] १ शराब पिलाने वाला।

२ जिसके साथ प्रेम किया जाय, माशूक, प्रेमी।

३ शिकायत करने वाला।

४ चुगली करने वाला, चुगलखोर।

५ शत्रु, दुश्मन।

उ०—काठी कुरळाता काती निस काळी, होळी होयै मैं दाता दीवाळी। सामू सीयाळो साकी सरसायो, वाको वचिया नै डाको दरसायो।—ऊ.का.

साकुतल-स पु. [सं. शाकुतल] १ अभिज्ञान शकुन्तला नामक नाटक जो कि कालीदास द्वारा रचित है।

[स. शाकुतल] २ शकुन्तला-पुत्र भरत।

साकुन-वि [सं. शाकुन] १ शकुन सम्बन्धी।

२ शुभ।

३ देखो 'सुगन' (रू भे.)

साकुनि, साकुनी-स पु [स. शाकुनि] १ मधुवनवासी एक ऋषि जो नौ पुत्रो का पिता था।

वि. वि —नौ पुत्रो के नाम हैं—ध्रुव, शील, बुध, तार, ज्योतिष्मत्, निर्मोह, जितकाम, ध्यानकेश एवं गुणाधीक। इनमे से पहले पाच गृहस्थाश्रमी व अग्निहोत्री थे तथा दूसरे चार विरक्त एवं सन्यस्त प्रवृत्ति के थे।

२ देखो 'सकुनि' (रू भे)

साकुर-स पु —घोडा, अश्व। (डि को)

उ०—१ छळ मारू वाधं बळ छीजं, लीजं झडप किता लूटीजं। मीरा गयो डहोळी माहे, साकुर पगा तणो बळ साहे।—रा रू.

उ०—२ दाखं ताम 'कुसळजी' दूजो सिरदारोत महाभड़ 'सूजो'। साकुर पहल ओरकू, सारा धमरोळू हरवळ चौधारा।—सू. प्र

रू भे —साकर।

साकुळी, साकुली-स स्त्री. [स. शष्कुली] पूरी, पकवान आदि। (उ र.)

उ०—. ....फगफगा फीणा, दुग्धवरण्ण दहीथरा घ्रतवरण्ण घारी, सुकुमाल साकुली, सेव साकुली, परीसणहारि नही आकुली अखंड माडी, __।—व स

साकूतरो, साकूतौ-स पु. (स्त्री. साकूतरी, साकूती) सपत्नी-पुत्र।

रू भे.—सौकूतरौ, सौकूतौ।

साकेत-स पु —अयोध्या नगरी का एक नाम। (डि. को)

उ०—साकेत नगर सुखकद रे, सहदेवी माता नद रे। गढ माहे कीधउ फदरे सुकोसलउ बाल नरिंद रे।—स कु.

साकेती-वि —अयोध्या से सम्बन्धी।

स. पु —अयोध्यावासी।

साकौ-स. पु.—१ महायुद्ध।

उ०—१ 'दळथभ' हरो थयो दुमासण, गहण अरिदा मारगह। मोटापण वाळो महाराजा, मोटो साको कियो मह।

—केसरीसिंघ सेखावत रो गीत

उ०—२ दुममणा री फौज गढ घेरियो तठै गढ रो धणी साको कर मरण री विचारी।—वी. स टी.

२ यश, कीर्ति, प्रसिद्धि।

उ०—१ पर भोम लई समदा लगै, राठोडा साका रहै। गळहत्थ वस गोहिला तणी, वंड खडग ग्रहि सग्रहै।—गु रू. ब

उ०—२ पाको भत्तो परठियो, काको पासि कंठीर। साको रावण जग सिरै, वर्णं वीर भद्र वीर।—विनयरासो

३ अवसर, मोका।

३ शिक्षा देना, उपदेश देना ।

४ नाता या रिश्ता करना ।

साखणहार, हारौ (हारी), साखणियौ—वि० ।

साखिग्रोडौ, साखियोडौ, साख्योडौ—भू० का० कृ० ।

साखीजणौ, साखीजबौ—कर्म वा० ।

साखत, साखति, साखती–स. स्त्री —१ घोडे का चारजामा व उसकी सजावट की सामग्री ।

उ०—१ आखत पग ऊठता, पूठ साखत पखराळी । काच हूळम कोमाच, नाच पातर नखराळी ।—मे. म.

उ०—२ फेर ही अनेक रग रा घोडा तयार कीजै छै । साखत जीण काढीजै छै । तिकै जीण किण भात रा छै—गुजराती, कसमीरी, कसूरी, मारवाडी, दखणी, मिरजाई, भटनेरी.........।

—रा. सा. स.

२ वह घोडा जो पूर्ण सजाया हुआ हो, सजावटयुक्त ।

३ चाबुक ।

उ०—साखत राढु मूज की, भीनी करै मरोड । हरीया गुर विन वहि गया, केता लाख करोड ।—अनुभववाणी

४ शिष्य वर्ग ।

उ०—एक आध घर साध को, और साखती लोग । जनहरीया धिन गावडो, भाव भगती को जोग ।—अनुभववाणी

वि.—१ सजावटयुक्त, सजावटसहित ।

उ०—पछै साखत रा घोडा चार और वागा देय विदा किया ।

—ठाकुर जेतसिंह री वारता

२ बढिया, बहुमूल्य ।

उ०—हरिजन कै सिर कवळी, काळी कुटल कुरग । हरीया तुलै न दूसरा, साखत चीर सुरग ।—अनुभववाणी

स. पु.—सजावट ।

उ०—मँडी मिंदर माळिया, साखत कर घरबार । हरीया हरि की भगति बिन, बसती नभ्रडबार ।—अनुभववाणी

रू. भे.—साकत, साकति, साकती, साखित, सागत ।

साखदार–वि [फा. शाखदार] १ जिसकी अनेक शाखाऐं हो ।

२ साक्षी, गवाह ।

३ श्रेष्ठ वश का, कुलीन ।

उ०—तरै बादसाहजी हुक्म नै फुरमान कियौ—हपतहजारी मनसब रिपिया लाख रो छै । तरै जलाल जागीर मैं आदमी भेज्या । भला सिपाही, साखदार खाप-खाप रा राखिया । हमेसा सुधा मे गरकाब रहै ।—जलाल बूबना री बात

साखमिरग, साखमिरघ साखम्रग—देखो 'साखाम्रग' (रू भे.)

साखर—देखो 'साक्षर' (रू भे)

उ०—विजय हरस वाचवक, सिस्य धरमवरद्धन साखर । कीधा बावन कवित्त, आदि दे बावन आखर ।—ध व ग्र.

साखसिणगार–सं. पु. यौ —वश में श्रेष्ठ, कुलश्रेष्ठ ।

साखसीर–स पु यौ.—रिश्ता, सम्बन्ध ।

उ०—निवाव लाचार हुवण मैं कमी रासी नही । अर बीदावत उदैकरण रै नै सेखावत रायमल रै साखसीर हो तिणा सू उदैकरण रायमल सू जाय मिळियौ ।—द. दा

साखा–स. स्त्री. [सं शाखा] १ वृक्ष की टहनी, डाल-डाली ।

(डि को)

उ०—मु गोरता ऊपरि स्यामता किसी सोभै छै । जैस्यै मणी मैं हीडोळै मन धरि हीडै छै । मणि को हीडोळो बाध्यो छै । मणिधर सरप हीडै छै । अर स्रीखड चदन की साखा हीडोळो बाध्यो छै ।

—वेलि टी.

२ बाह, बाजू ।

३ विभाग ।

४ हाथ-पैर ।

५ हाथ-पैरो की अगुलियां ।

६ वश, कुल ।

उ०—साखा वियो 'मयक' पह सुभ्रम, मन अणवक्षत तूफ मण । कलम कुराण पाण तज कूंभा, वाचण लागा हर वयण ।

—महाराणा कुंभा री गीत

७ वटवृक्ष की भ्रखडा जड, शाखाशिफा ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति दारू री तुगा लागी सू ओछाडिग्रा घणी ठडै ठाणी छाटि छाटि नै वडा री साखा सू नागली थकी झूलै छै । पवन री हवा सू टिप्पा खाइ नै रही छै ।

—रा. सा. स.

८ किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद, हिस्से ।

९ किसी शास्त्र विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद ।

१० ऋषियो द्वारा अपने गोत्र या शिष्य परम्परा मे चलाये गये वेद की सहिताओ के पाठ और क्रम भेद ।

११ किसी विषय या सिद्धान्त के बारे मे एक ही तरह के विचार या मत रखने वाले लोग, सम्प्रदाय, अनुयायी ।

उ०—१ ऊच नीच फिर मगै अगवा, सग लीया रहै अपनी साखा । माग भीख अर बधै पोटा, खालिक दिसीया खाया खोटा ।

—अनुभववाणी

उ०—२ सामी मडी मडाय कै, मन विलीया कै माहि । सिख साखा धन बौहत की, खुधीया भाजै नाहि ।—अनुभववाणी

रू भे.—सक्ख, सख, सख्ख, साख ।

साखात – देखो 'साक्षात' (रू भे.)

उ०—१ जघ अलोम अनूप जुग, नाजुक पणै निधात । केळि करीकर कलभ कै, सकनकूर साखात ।—बा. दा.

उ०—२ मोनू सुगध सोनू मिल्या, बळिहारी इण बातरी । साखात सकति 'इन्दर' सुणै, महिमा करनल मातरी ।—मे म

मन राखौ। सूरज री साख सती करायचौ।—नैणसी री साकौ
८ नाता, सम्बन्ध, रिश्ता।
उ०—अर गढ री जोम होवै तौ फेर सामान करौ। म्हारी फौज आवै छै। जिण सू हाथ जोडज्यौ। अबरकै तौ छोडिया छै। जमीदारा की साख सू हर अवरकै चूकस्यौ तौ मार हीज नाखस्यू।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ जाटा माथै मे'र, रोटी-बेटी री साख पाळै, रूखाळी करै। जाटणी रै जायै नै हेल नी आणदयै। हर वखत हिमरा घडतौ फिरै। लूंठा नै लोढै पर गरीवा रै मोढै लाग्यौ रेवै।
—दसदोख
मुहा.—(१) साख धोया थोडा ई धुपै=रिश्ता मिटाने से नही मिटता है। (२) समझै ज्यारी साख नीतर की न काई=माने उसके लिए सम्बन्ध अन्यथा कुछ नही। (३) समझणा सू साख सगळा काढै=बुद्धिमान और समझदार व्यक्तियो से प्राय. सभी रिश्ता जतलाने के इच्छुक होते हैं एव रिश्ता निकाल लेते है।
९ शिक्षा, उपदेश।
उ०—सतपुरसा री साख सुण, सीखत ग्यानी होय। हरीया गुर सबद बिन, ध्यानी भया न कोय।—अनुभववाणी
१० फसल, उपज, पैदावार।
उ०—१ दावौ पडयोडी कै झोलौ लाग्योडी साख लुगथुकी पडै ज्यूं 'बादळ' रौ डील लूखौ पडग्यौ। दीप दीप करतौ उणियारौ साव मगसौ पडग्यौ।—फुलवाडी
उ०—२ झुकै घर हैमर सूर भूंझार, भयै किर साख तिडा दळ भार। इसी सरसौक नयू अटकाय, आयौ 'अभपत्तिय' बाज उडाय।
—सू. प्र.
११ विवाह, शादी।
१२ सगाई, मगनी।
उ०—छोटू मारजा रै तीन बेट्या, जका मैं सू बडोडी री साख डूंगरगढ रै एक पावर हाउस रै मिस्तरी रै दसवी पास बेटै सू मड्यौ है।—दसदोख
उ०—कैयौ—थारै घराणै री नामून सुण'र आपरी बाई री साख करण नै पधारया है। थानै कुवरजी वणावणा चावै है। मैरवानी करावौ।—दसदोख
१३ पैढी।
उ०—अवार छोडू तौ पचास रिपिया तौ म्हारी दुकान री साख रा ई आ जावै।—फुलवाडी
वि वि.—देखो 'पेढी' (२)
[स. शाखा] १४ वश, गोत्र, शाखा।
उ०—१ मालदे नू मुवा थोडा दिन हुवा था सु चद्रसेन कन्है साख साख रा सवळा रजपूत था।—राव चद्रसेण री वात
उ०—२ भ्रमर सुजस दत खगि अधिकाई, साख 'पदम' री वधै सवाई।—सू. प्र
उ०—३ तुरक घडा नव तेरही, तेरह साख कमध। इळ धूकळ कळि ऊपजै, ज्या कवि दळ दसकध।—रा रू.
१५ दरवाजे मे कपाट के दोनो किनारो पर लगाई जाने वाली सीधी (खडी) लकडी।
१६ एक साल की आयु वाला बैल।
१७ किसी बडी जलधारा से निकली छोटी जलधारा।
१८ अग्निशिखा।
उ०—सपेख अगनग साख सी, रत रोस मारग राखसी। तिह नाक पाण विछेद ताडै, वाण इक रघुबीर।—र रू.
१९ घोडे के चारजामे का एक भाग।
उ०—घोडा लोह चाव रह्या छै, जीणा री साखां जनाखा ऊंची नाखीजै छै। तग खोळा कीजै छै।—रा सा. स.
२० प्रमाण, सबूत।
उ०—१ कठै साख इण विध कही, सुणि इम कहै सुजाण। माडै कायब माघ मधी, पडित माघ प्रमाण।—सू. प्र.
उ०—२ ऐसी भाति से खटि भाखा कहि वताई। चातुरी कळा की भाति भाति चतुराई। जिसकी साख प्रथम भाखा ससक्रत सो तौ अनुभूति क्रत्य सारस्वत सो पाई।—सू प्र
२१ स्वामी कार्तिकेय।
२२ अनलवसु का पुत्र जो कार्तिकेय का छोटा भाई था।
२३ देखो 'साखा' (रू. भे.) (डिं. को)
उ०—तुही भारती भाखणी सख भाखा, तुही सरव दातार मदार साखा। हमाऊ परा तोकरा छाह हेकौ, नकौ पार ओतार थारा अनेकौ।—मे म.
रू भे—साक, साखि।
अल्पा,—साखडी।
साखइत—वि—उच्च कुल का, कुलीन।
उ०—हेमाचळ नारद नू हसिया, कुवरी आविया गोद कियइ। वर कोइ एक साखइत वतावउ, दही जियइ रइ भ्रगुटि दियइ।
—महादेव पारवती री वेलि
साखडी—देखो 'साख' (अल्पा, रू भे)
उ०—आगी बाबौ फूटरा है, भळै लगाया राखडी। पावस रुत कूवौ सेवता, उजडै उणरी साखडी।—दसदेव
साखणौ, साखबौ—क्रि स—१ साक्षी देना, गवाही देना।
उ०—१ छत्रपत अनी माण छडै, खत्र रख हर चाप खडै, जानकी-वर जेण। रायहर पण जनक राखै, सूर ससि रिख देव साखै, मुणै जस प्रथमेण।—र ज प्र
उ०—२ कहियौ सकति जेम दुज कहियौ, प्रति रीझै छत्रपति ऊमहियौ। सूर धरम परखण ग्रा साखै, इक सरजीव करण नह आखै।—सू प्र
२ प्रमाण देना, सबूत देना।

च्चार] १ विवाह के समय वर एव वधू के वश, गोत्रादि का ऊची आवाज मे पुरोहित द्वारा दिया जाने वाला परिचय।
२ पूर्वजो के नाम ले-ले कर उन पर कलक लगाने की क्रिया। (व्यंग)

साखोट–स पु—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। (अमरत)

साख्यात—देखो साक्षात' (रू. भे)
उ०—१ हीरा के वचन सुरण केसरी ध्याई, बगसीराम की असवारी कं नजीक आई। प्रोहित नं देख्यो साख्यात कामदेव पेख्यो।
—बगसीराम प्रोहित री वात
उ०—२ साख्यात देवागना पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गगा सरसती रो अवतार वारहे आभूसण विराजमान हुआ छै।—रा सा. स

साग–स पु [स. शाक] १ वह पौधा जिसकी पत्ती, जड डठल, फल-फूल आदि पका कर भोजन के साथ खाने के काम ली जाती हो, सब्जी, शाक। (उ. र)
उ०—१ रसोडा मैं धापू एकली बैठी साग वनारती ही, उण नैं पूछ्यो तो जाण पडी, खनला कमरा मैं सूतो व्हैला।
—अमरचूनडी
उ०—२ सपत दसह भोजन अन सनिगध, साग छतीसा वान वान सध।—सू प्र
२ आग पर भून या पकाकर भोजन के साथ खाने योग्य बनाई हुई वडी, पापड, दाल आदि सूखी सब्जी।
उ०—ऊपर सू हैजी-मोगर अर प्याज पापडा रा साग लहसण रै लाल झोळ मैं फलका री मोळ मेटण जीमैं है।—दसदोख
३ सागवान का पेड। (अ मा)
उ०—रिक्ष तेडो व्रक्ष आणो, सयल भार अढार। प्रथम पीपळ साग सीसमइ, आमली अधिकार।—रुकमणी मगळ
४ देववृक्ष। (अ मा)
रू भे—साक।

सागउटी–स पु.—वनस्पति, पत्तो आदि से मण्डप, कुटीया आदि बनाने वाला व्यक्ति।
उ०—अथ नगर, प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर राजमारगि गांधिकापण क्णहट्ट सूपकारहट्ट फोफलहट्ट तांबूलिकहट्ट माली लहूयार सोवरणिक माणिकहट्ट कसारा सागउटी चरम्मकार..... ।—व स

सागडद—देखो 'सागिरद' (रू भे)
उ०—२ राजा कह्यौ—डबा कठाऊ हाथ आया। खाफरै कही—महाराज रात चोरी रा सागडद था तिकै भेळा किया सू पग हाथ आयो। पछै अमकडी डूगरी मैं जाय लाभा सूं लै आयो छू।
—राजा भोज अर खाफरै चोर री वात

सागडदपैंसो—देखो 'सागिरदपैंसो' (रू. भे)
उ०—१ तिण रै एक सो एक भाई-भतीजा छै। तिका भेळा गढ माहे रहै। हुकमी थका चाकरी करै। त्या कनै असवारी नै घोडो एक नै खवास एक नै सागडदपैंसा रा आदमी च्यार कनै रहै।
—वहवाट सरवहियै री वात
उ०—२ स्रीमहाराजाजी नै स्रीराणीजी बीजी हिसा रो मेहल खवासिया माणस उमराव खवास पासवान कामदार सागडदपैंसो वणाव करै, नै इतरो स्रीजी री तरफ सू पावै-बागो चूनड सूधी आवै। वणाव नु वागा दो।—मारवाड री ख्यात

सागडी–स. पु [स शाकटिक, प्रा सागडिय] १ गाडी, रथ, हल आदि को हांकने वाला, चलाने वाला व्यक्ति।
उ०—१ चतुर वेसाण्यो सागड़ी, ए ग्रहस्थ नो आचार। लीधी साथैं सहेलिया, राणी चाली मज्झ बाजार।—जयवाणी
उ०—२ वडकै ओधण वधिया, पैसै पई पताळ। सोच करै नह सागडी, धवळ तणी दिस भाळ।—वा दा
उ०—३ जो घण दीहो सागडी, हूं विरदावणहार। सीगाळो वळ सोगुणो, जाणावै जिण वार।—बा दा.
२ कृषक के पास कृषि सम्बन्धी कार्य करने वाला नौकर।
३ पति, स्वामी। (किसान)
रू. भे.—सागडी।

सागडो–स पु—वह हल जिसके केवल एक ही फाल हो।

सागट—देखो 'साकट' (रू भे)

सागडी—देखो 'सागडी' (रू भे) (उ. र)

सागण–वि—१ वास्तविक, असली।
उ०—तो वोली—काइ ती रे बीरा, मन जाणैं यूं ई किया ई व्हैग्यी। सोच्यो थू रोज वीरो गवावै पण कुण जाणैं, सागण काम पडसी जद म्हू रैस्यू कै नी।—अमरचूनडी
२ वही।
उ०—१ ओ तो सागण उण दिन खेत मैं आयो जिको इज आदमी। चौधरी रा घं छिलग्या। भवळ सी आवण लागी।
—अमरचूंनडी
उ०—२ उणरै हाथ मैं आ सागण छुरी ही, जिकण सू नरपत री खून करणो चावै हो। भाठा सू भाठो आफळै ज्यू टक्कर हुई अर छुरी ठेट डाडा ताई सूर रै पेट मे घुसगी।—अमरचूनडी
३ पच भौतिक।
४ उपर्युक्त, ऊपरवर्णित।
५ अपरिवर्तित।
क्रि वि—एक ही।
उ०—बरस दोय-तीन बितीत हुवा ओर जाग, वेरसी लोठा हुवा। आपरै मतै घोडा चढणं लागिया। सागण वार मैं सिकार खेलै। रीझ बक्सीस करै।—सूरै खीवै काधळोत री बात

सागत—देखो 'साखत' (रू. भे.)

साखाम्रग, साखाम्रिग–सं. पु यौ. [स. शाखामृग] बंदर, वानर। (डिं. को, ना मा; ह ना. मा.)

उ०—१ राखस भ्रख सूतौ नर रक, साखाम्रग रावण कै ही सक।—रामरासौ

उ०—२ किंघू प्रेत वक्करचौ ताप मत्रादिक तच्यौ। परचौ प्रपचय हृत्य मनहु साखाम्रिग नच्यौ।—ला. रा.

रू भे—साखमिरघ, साखम्रिग।

साखावात–स पु यौ [स शाखावात] हाथ-पैर मे होने वाला एक प्रकार का वात रोग विशेष।

साखाव्रक्ख, साखाव्रख, साखाव्रख्ख—देखो 'साखीव्रख' (रू. भे.)

साखासिफा–स पु. यौ. [स शाखाशिफा] किसी वृक्ष की वह टहनी जो नीचे की ओर झुक कर पृथ्वी मे जड पकडले तथा एक अलग वृक्ष के तने के रूप मे हो जाय।

साखि—१ देखो 'साक्षी' (रू. भे.)

उ०—पोह जिण साख नाम प्रगटाए, कमध अहरहू अहर कहाए। इणची साखि रीत धरि आदव, जदु ग्रप हुं वाग्गा जिम जादव। —सू प्र

२ देखो 'साख' (रू. भे.)

साखिग्रात, साखियात—१ देखो 'साक्षात' (रू. भे.)

उ०—१ सुरनाथ व्रतासुर साखियात, प्रगटै कि सस्त्र सरब वज्र-पात। सिव त्रिपुर समर प्रगटै सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव। —रा. रू

उ०—२ दधि वीणि लियौ जाइ वणतौ दीठौ, साखियात गुण मैं ससन। नासा अग्रि मुताहळ निहसति, भजति कि सुक मुख भाग-वत।—वेलि

२ देखो 'साक्षी' (रू. भे.)

साखित—देखो 'साखत' (रू. भे)

उ०—प्रेम प्रीत का पागडा, लिव की कस लगाम। हरीया साखित सूरति की, कीया कीरत मुकाम।—अनुभववाणी

साखियोडौ–भू का कृ—१ साक्षी दिया हुआ, गवाह दिया हुआ २ शिक्षा दिया हुआ, उपदेश दिया हुआ ३ प्रमाण दिया हुआ, सबूत दिया हुआ ४ नाता या रिश्ता किया हुआ।

(स्त्री. साखियोडी)

साखियौ—१ देखो 'स्वस्तिक' (रू. भे)

उ०—राती घोळी लीक, वारणा कूट कूटाळी। पोळ साखिया गोळ, विजोरा जाना जाळी।—दसदेव

२ देखो 'साक्षी' (रू. भे)

उ०—१ ताइ सामता मुहर आडै तण भुज वळ तियै साखियौ भाण। पाखर रवद बळाउत पर भइ, पतसाहे पूजिजै प्रमाण। —प्रथ्वीराज राठौड

उ०—२ कूरमा लाज उज्जळ करू सूर करू व्रत साखियौ। सुजि-लाज न भूलू आज सति, इम सेखावत आखियौ।—रा. रू.

साखी–स पु [स. शाखिन्] १ वृक्ष, पेड। (अ. मा; डिं. को; ह नां. मा.)

२ वेद।

स स्त्री. [स. साक्षिन्] ३ महात्माओं द्वारा रचित भक्ति एव ज्ञान सम्बन्धी दोहे या पद।

उ०—साखी सबदी सीख कर, गावै सारी रात। आतम तौ परच्या नही, करै विराणी वात।—स्रीहरिरामजी महाराज

वि.—१ शाखाओं सहित।

२ शाखा से सम्बन्धित।

३ देखो 'साक्षी' (रू भे.) (ऊ. र.)

उ०—१ आखी मुख राजा 'अजन', साखी तिण ससार। अव-तरियौ म्हारै 'अभौ', भौ भजण अवतार।—रा. रू.

उ०—२ बीज उजाळी कारतिक, अडतीसै कुज वार। अचळ कथा राखी 'अजै', साखी कियौ ससार।—रा. रू.

साखीगोपाळ–स. पु—एक तीर्थ स्थान का नाम।

साखीचर–स. पु [स. शाखिन+चर्] वन्दर, वानर। (अ मा, ना. मा.)

साखीजणौ, साखीजबौ–क्रि. अ—गाय द्वारा गर्भ धारण किया जाना।

साखीजियोडी–वि. स्त्री.—गर्भवती गाय।

साखीणौ–स पु (स्त्री साखीणी) सम्बन्धी, रिश्तेदार।

उ०—सासा नोळी मैं अटकाया सासै, बाळक झोळी मैं लटकाया वासै। माथै ओडी घर साखीणा माडै, छपनै लाखीणा अपणा घर छाडै।—ऊ का.

मुहा.—टका देय साखीणी क्यू लाणी=रुपये खर्च करके अपयश का भागी न बनना।

साखीय–वि. [स. शाखीय] शाखा का, शाखा सम्बन्धी।

साखीव्रख, साखीव्रखी–स. पु. [स. शाखीवृक्ष] वटवृक्ष। (अ. मा; ना. मा.)

रू भे.—साखाव्रक्ख, साखाव्रख, साखाव्रख्ख।

साखेत, साखेतौ, साखैतौ–वि—कुलीन, श्रेष्ठ वश का।

उ०—१ चढि आया सामहा, सुहड साखेत भुजाळा। कियौ सनमुख जुहार, आप आपै अकमाळा।—गु रू व.

उ०—२ चढै रावतां राउला राव राणा, चढै सुहड साखेत जोधा जुवाणा। चढै मीरजा-मीर मौया किलक्कं, चढै खान निव्वाब खाडा खाइक्क।—गु रू. व

उ०—३ सात अठी पडिया साखैता, मारु जुध जीता नामेता। लूटै गाम वित्त धन लीधा, दिस च्यारु पासरणा दीधा। —रा. रू

स. पु.—घोडा, अश्व।

साखोचार, साखोचारन, साखोच्चार, साखोच्चारन–स. पु. [स. शाखो-

लिपै नहीं समार सूं जी, मोटा है ज्वाज्वल्य मान ।—जयवाणी

सागरोदक—स. पु. [स.] समुद्र-जल ।

सागरोपम—स पु.—दस क्रोडाक्रोडी पल्योपम काल का प्रमाण ।

उ०—१ मातें नरगें एग आचार, वरतइ तीह पग अभिनव सारु ।
पल्योपम सागरोपम जाइ, ईगा परि जीवडा दुक्ख सहाई ।
—वस्तिग

वि वि —देखो पल्योपम' ।

रू. भे.—सागर ।

सागवान—स पु —एक प्रसिद्ध वृक्ष का नाम जिसकी लकडी सुन्दर व मजबूत होती है ।

वि वि —यह वृक्ष हिमालय पर्वत पर सतलज से आसाम तक, मध्यभारत के पूर्वी प्रान्त, पश्चिमी बंगाल की पहाडियो पर व छोटा नागपुर के जगलो मे पाया जाता है । इसकी लकडी का इमारती उपकरण बनाने मे अधिक प्रयोग होता है ।

सागार—स पु [स शाकाहार] उपवास के दिन अन्न एव नमक रहित किया जाने वाला अल्पाहार ।

सागारवयगादोख, सागारवयंगादोस—स. पु यो —जैन साधु द्वारा गृहस्थ को काम करने का वचन देकर आहार आदि भोजन सामग्री लेने पर साधु को लगने वाला दोष । (जैन)

सागारीयनिस्सीयादोख, सागारीयनिस्सीयादोस—स. पु —जैन साधु द्वारा गृहस्थी के साह्रय मे आहार, पानी आदि प्राप्त करने पर लगने वाला दोष । (जैन)

सागारी संथारौ—स पु —छूट सहित सथारा, रियायती सथारा ।

उ०—जद साधु बोल्या—सागारीसथारा कर दें । इण उपसरग सू बच्यौ जद तौ वात न्यारी, जही तौ च्यारू इ आहार न त्याग । इम सागारी संथारौ कराय नवकार सिवायो च्यारू सरणा दीधा परिणाम चोखा रखाया ।—भि. द्र

सागि—देखो 'सागें' (रू. भे.)

उ०—दिल्लीनाथ बोल्यो, एम दोनूं साथि जावौ । पीरू मिश्रमेणी फौज, सागि लेर आवौ ।—शि व

सागिरद—स पु [फा. शागिर्द] १ कोई कला या विद्या सीखने वाला शिष्य, विद्यार्थी ।

उ०—१ खाजाजी रै चौरासी सागिरद ज्यां माहे तारकीनजी गिणीजै मारा सू छोटा ।—वा दा. ख्यात

उ०—२ ओ भेद पाय ख्वाजेजी सुलतान तारकीन नू कह्यो—तुम हमको ठगें सो हमकू आपका सागिरद न किया तो आप हमारें सागिरद होय ।—वा. दा ख्यात

रू भे —सागडद, सागरद ।

सागिरदपेसौ—स पु. [फा शागिर्दपेश.] सेवक, टहलुआ ।

उ०—१ सिपाहिया री हिसाब कर, सागिरदपेसा री हिसाब करा, टका देय, फारगती लिखाई । पछै दीवाण वकसिया री हिसाब कर, टका देय उणसू फारगती लिखाई ।—महाराजा पदमसिंघ की वात

उ०—२ दूसरैं महीना माही राव बीसळदे महला सू बाहर आयौ । अमरावां, हजूरिया, कामदारा, सागिरदपेसे सगळा आए मुजरौ कियो । घोडा, हाथी, हवालदारा आंण नजर गुदराया ।
—डाढाळै सूर गे वात

सागिरदी—स स्त्री. [स शागिर्दी] शागिर्द होने की अवस्था या भाव ।

सागी—देखो सागैं' (रू. भे.)

उ०—१ झाली नु कही, 'ओ कासु विरतात ?' तद झाली डर मारी वात सागी खीवसीजी नूं कहि दीवी—जिण तरैं मा कामण कराया, इण नदी मैं नाखिया, सौ सरब मालम कीवी ।
—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ कुसलसिंह कही था सरीखा भाई राजपूत उणरै ही घणा छै । तिका सारा ही नू छोड सागी आपही जै मोनू बतळायौ तिण सू मोनूं ही जै जावणो छै ।—मारवाड रै अमरावा री वारता

उ०—३ पण जवाई तो पिलाण ही हेठौ नी उतारैं, सागी पगा ही पाछौ मुडणौ चावै है । वेटी आसूडा ढळकावै, मानै कळाति देख'र कुढै है ।—दसदोख

उ०—४ हु गुणरागी हो सागी सेवक ताहरउ, साहिव सुगुण सुपास । भेद न राखइ हो भाखइ कवियण भावसु,- 'विनयचद' सुविलास ।—वि. कु.

उ०—५ सातिनाथ सोभागी हो लाल, सोलम जिन सागी हो । विनयचद्र रागी हो लाल, जयौ तु वडभागी हो ।—वि कु

उ०—६ पति रा पती है वडा, सास सुसरा दिक सारा । सागी सेवा पूज, धणी वाळी ही धारा ।—नारी सईकडो

उ०—७ चौथो रेढौ फिरियो सो इसौ आकरौ आय फौज सू भिळियो सो सागी कुअर कन्हा गयो । घोडो सवारी मैं छै तिण रै तूड री दीवी सौ उलट कर सवार घोडै समेत गिरियौ ।
—डाढाळै सूर री वात

उ०—८ ऊट जिका नह ढूकता, पाणी पर दिन च्यार । सागी लूआ राज मैं, तीनां बखता त्यार ।—लू

उ०—९ तम तो भवर वास वन वन का, मैं कीडा मद भागी । तो सु लाग भया म्हैं तमसा, अब सागी का सागी । - अनुभववाणी

उ०—१० रात पडची जद आतरौ, भूल्यौ सारा दोम । पीळापण मुख री गयी, सूरज सागी रोस ।—लू

सागीडौ—देखो 'सागेडौ' (रू भे)

उ०—१ पिडत पिडत अर साधू साधू हुवै जद सागीडा लडै झगडै । पण कैदी भाई जेळ मैं कदे ही नी रडभडे ।—दसदोख

उ०—२ मनसा पूरण होगी जद तौ केणौ ही कै ? ठाकर सागीडा आळादोळा है, मन मायली काढसी । रिपिया काकरै अर कूंवै दाई कर देसी ।—दसदोख

उ०—३ वेमारी मैं वैद्य, हुवौ सागीड़ी नारी । ओखद अर परहेज,

उ०—जिकै घोडा सोनै री सागत रा। रूपै री साजा मै मडिया छै। श्रावळा पेच नाखिया थका। वावळा असवार चढिया छै। चोगान मैं घोडा दोडै छै।—पना

सागमडी-स स्त्री. [स शाक+राज. मडी] वह स्थान जहाँ पर शाक व हरी तरकारी का क्रय-विक्रय होता है।

सागर-स पु [स सागर.] १ समुद्र, सरोवर।

(अ. मा; डि को, ना डि को, ह ना मा)

उ०—१ गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण। बेळ निजर विदुसा, असह कवि भ्रमर अकारण।—रा रू.

उ०—२ इक कहत मोद अथाह, गिण मच्छ कच्छप ग्राह। जळ गहर सागर जोर, तिण बीच थाह न तोर।—रा रू

२ झील, जलाशय। (अ मा, डि को)

३ एक प्रकार का मृग विशेष।

४ पंवार वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

५ दशनामी सन्यासियो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

६ अतीतकाल के तृतीय तीर्थंकर का नाम। (जैन)

७ शालि नामक ऋषि का पैतृक नाम।

८ डिंगल मे एक प्रकार का गीत (छन्द) विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे प्रथम तीन सगण तथा फिर दो गुरु होते है।

(क कु बो)

९ चार की सख्या। * (डिं. को.)

१० सात की सख्या। * (डि. को)

११ देखो 'सगर' (रू. भे)

१२ देखो 'सागरी' (रू. भे.)

उ०—रैबारिया री वासणी। कसबै माहै रनिया'कुवा तीरै सोभत था कोम २ कोहर सागर छै। माळी कलाळ खेत खडै।—नैणसी

१३ देखो 'सागरोपम' (रू भे)

उ०—१ सूसम सूसम आरउ विचारि, कोडाकोडि सागर हुइ च्यारि। त्रिणि गाऊ पणि ऊचड देह, त्रिहु पल्योपमि आउखा छेह।—वस्तिग

उ०—२ बीजउ आरउ सूसम जोइ, त्रिणि कोडाकोडि सागर होइ। ग्ररध जोयण देह ऊचउ जाणि, बिहु पल्योपमि आउग्वाहाणि।

—वस्तिग

रू भे—सगर, साइर, सागरु सायर।

सागरअवेर—देखो 'सागरावरा' (रू भे) (डि ना. मा)

सागरक-स पु.—सागर जनपद का एक राजा जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे भेंट सहित उपस्थित हुआ था।

सागरगामिरा, सागरगामिणी, सागरगामिन, सागरगामिनी-स स्त्री— [स सागरगामिनी] १ गगा नदी।

२ नदी, सरिता।

सागरगा-स. स्त्री.—१ गगा नदी।

२ नदी, सरिता।

सागरद—देखो 'सागिरद' (रू. भे)

उ०—तठै पाटण माहै पातरा रा पाचसै घर छै। तिण माहै एक जाववती पात्र छै। तिण रै सागरद सहेली घणी छै। छोकरी छोकरा घणा छै। माल री धणियाणी छै। तिण रै कोटवाळ रो बेटो आवै। तिण री सागरद सू रमै।—जगदेव पवार री वात

सागरदपेसौ—देखो 'सागिरदपेसौ' (रू. भे.)

सागरधज, सागरधुज, सागरध्वज-स पु [स. सागरध्वज] पाड्यनरेश का नाम जो अस्त्र विद्या मैं परशुराम, भीष्मादि का शिष्य था।

वि. वि—इसके पिता व भाई को कृष्ण ने मारा था। महाभारत युद्ध मे यह पाडव-पक्ष मे था।

सागरनीमी सागरनेमि, सागरनेमी-स. स्त्री [स. सागरनेमि] धरती, पृथ्वी। (अ. मा, ना मा; ह ना. मा)

सागरमति, सागरमती-स स्त्री [स. सागरमती] एक नदी का नाम जो अजमेर की परिक्रमा करती हुई गोविंदगढ के निकट सरस्वती से सगम करती हुई मारवाड मे लूनी नाम से प्रख्यात होकर कच्छ की खाडी मे गिरती है।

सागरमुदरा सागरमुद्रा-स स्त्री. यौ [स सागरमुद्रा] ध्यान लगाने या आराधना के समय धारण की जाने वाली एक प्रकार की मुद्रा।

सागरमेखळा-स. स्त्री [स सागरमेखला] भूमि, पृथ्वी।

सागरवासी-वि [स सागरवासिन्] समुद्र मे या समुद्र के किनारे रहने वाला।

स. पु.—१ भगवान् विष्णु।

२ जलचर।

३ वरुणदेव।

सागरावरा-स स्त्री. [स.] पृथ्वी, भूमि, धरती।

रू. भे.—सागरअवेर।

सागरालय-स पु. [स] वरुणदेव का नामान्तर।

सागरी-स. पु [स. सागर] बहुत गहरा कुआ।

उ०—१ सगर खिणायो सागरी, पय वधायो पाल। वित्त पायो सरवेगडै, देवळ तणो दुभ्काल।—पा. प्र.

उ०—२ सोभत था कोस २ दिखण माहे, रनीया कुवा कनै। कसबा माहै खडीजै। कोहर सागरी छै। माळी कलाळ खेत खडै।

—नैणसी

वि वि—कहा जाता है कि राजा सगर के साठ हजार पुत्र नित्य नया कुआ खोद कर पिता के पास जल पहुचाया करते थे। ऐसा कुआ बहुत गहरा होता था तथा पानी भी खूब होता था। इसलिए गहरे कुए को भी प्राय: इसी नाम से पुकारते हैं।

सागरु, सागरू—देखो 'सागर' (रू. भे)

उ०—करुण दया तणा सागरजी, दियो रे छ काया नै अभयदांन।

घर खराब कर दियौ। आ मरै तौ इण घर री साड निकळै।

—अमरचूंनडी

साडव–स पु [सं षाडव] एक प्रकार का राग विशेष जिसमे छ' स्वर लगते है।

साडियौ, साड़ियौ–स. पु —१ जाट, विश्नोई, कुम्हार आदि जातियो मे विवाह के अवसर पर 'बरी' के साथ दिया जाने वाला मोटे कपडे का लहगा जो विवाहित लडकी शादी के बाद साधारण दिनो मे पहनती है। कुवारी कन्याए यह परिधान नही पहनती।

(बीकानेर)

२ देखो 'साडौ' (अल्पा, रू. भे)

साडी, साड़ी–स स्त्री [स शाटिका] १ स्त्रियो के पहनने-ओढने की धोती।

उ०—१ होसी जग मैं हास, द्रोपद नागी देखता। साडी पहला सास, सटकै लै लै सावरा।—रामनाथ कवियौ

उ०—२ मौ मन पडियौ मोच, आव किया आयौ नही। साड़ी रो नह सोच, सोच विडद रो सावरा।—रामनाथ कवियौ

२ स्त्रियो के ओढने का वस्त्र विशेष।

३ ताकले (सलाको) के मध्य भाग मैं लपेटे हुए सूत के धागे।

(बुनकर)

४ शासको द्वारा विवाह के समय प्रजा से लिया जाने वाला एक लगान विशेष।

(मि साडीचवरी)

[स सघाटिका] ५ जैन साध्वियो के पहनने का वस्त्र विशेष, सघाटिका।

६ देखो 'साडौ' (अल्पा, रू भे.)

साडौ, साड़ौ–स. पु —१ प्राय जाट, कुम्हार आदि जातियो की स्त्रियो द्वारा लहगे के स्थान पर पहनने का सूती या ऊनी घाघरा विशेष।

उ०—लोई ओढण नै साडौ लूमाळौ, फूटर लटकतौ नाडौ फूंदाळौ। पावा पचडोरी पगरखिया पैरै, सूरत मिंघण सी बन जगळ बैरै।

—ऊ का.

२ पुकार, आवाज।

अल्पा; रू भे.—साडियौ, साडी, साडलौ।

साच, साचइ–स. पु —सारवान या पौष्टिक वस्तु।

क्रि वि.—१ सचमुच।

उ०—कर जोडै भाऊ कवर, नटियौ साच निराट। साहै हठ तोभी 'सतै', पाणै धरियौ पाट।—व भा.

२ देखो 'सत्य' (रू. भे)

उ०—१ थारै कैणा मुजब कलम री बात तौ व्हैगी साच अर जबान अर हाथ री बात व्हैगी झूठ। किणी दूजा रै मूडागै अैडी बिलळी बात करज्यो मती, लोग हसैला।—फुलवाडी

उ०—२ अला बाप मेघा घरै मोड वाध्यौ, अला परी कालीग सा वेढ प्राधौ। अला लाछिवर पहिलडौ साच लीधौ, अला किसौ सिरै कोप कीधौ।—पी. ग्र.

मुहा.—१. साच कहणौ सुखी रहणौ=सत्य बोलने वाला हमेशा सुखी रहता है। २. साच नै आच कोनी=सत्यभाषी को कोई डर नही होता है। ३ साच कैवै जणै मा ई माथै मे देवै=खरी एव सही कहने पर सभी नाराज होते हैं। ४ साच कूड मै चार आगळ रो फरक है=आखो से देखी हुई बात सत्य एव कानो से सुनी हुई बात प्रायः झूठी हो सकती है।

साचउ—देखो 'सानौ' (रू भे.)

उ०—घणी भलामण तेहनइ कही, तूं साचउ मित्र माहरउ सही।

—ढो मा

साचक—विवाह की एक रश्म या प्रथा जिसके अनुसार वर पक्ष द्वारा कन्या पक्ष के यहां मेहदी, मेवे फल आदि भेजे जाते है।

(मुसलमान)

साचण–स पु —सत्य।

साचमई–वि स्त्री —सत्यमयी।

उ०—जय जय राघव दैत जई, महरत मूरत साचमई। हरण अनेक विघन हरी, कमळ कर प्रतपाळ करी।—र. ज. प्र.

साचमाच–क्रि वि – सचमुच मे, वास्तव मे।

रू. भे —सचमुच।

साचरी–स स्त्री.—भैरव राग की पत्नी एक रागिनी। (सगीत)

साचलौ, साचल्लौ – देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—तो उण सुख सू थारी आख्या वद क्यू होयगी। साचल्लौ सुख जद सापरत थारी बाध्यां माय परस रो आनद देय रयौ हो तौ थारो मन किण नै ढूढ रयौ हो।—तिरसकू

(स्त्री. साचली, साचल्ली)

साचवणौ, साचवबौ–क्रि. स —१ मारना, पीटना, प्रहार करना।

उ०—१ जमडाढा साचवै हकालै बळा जोध, नीहसै बांणसा बाढ गाजियौ निहाव। अघायौ उमेद रोळै गाढ थभ रहै ऊभौ, रोळै धाप हालियौ गाढै मारू राव।—हरदान भादो

उ०—२ वह छूटै कैवर सोक नलीसर, सीधणि सघर साचविय। धुबि जाण धराहर सालुळि, सेहर मेघ महाभर माचविय।

—गु रू व.

२ धारण करना।

उ०—१ इक नीरोगी अग, वळै गुण वुद्धि बखाणौ। वळि साच-विजै विनय, अधिक गुण उद्यम आणौ।—ध व. ग्र.

उ०—२ . .... इसी परि जलमारग स्थलमारग तलपद त्रिहु स्थानकि नाव्या व्यवसाय व्यवहारिए वचन प्रतिस्ठासिउ कीजइ, दाणीसिउ पाठि सलसूत्र साचवीइ, पाठ वणीया पाठवी आयतरा साझीइ।—व स.

३ सुरक्षित रखना।

चिकित्सा कर परवारी ।—नारी सईकडो

(स्त्री. सागीडी)

सागुटिश्रा, सागुटिया, सागुटीश्रा–स स्त्री.—एक जाति विशेष ।

सागुटियो, सागुटीश्रो, सागुटीयो–स पु —सागुटिया जाति का व्यक्ति ।

उ०—चूनीवेचा चूडघर, श्रागरिया गमार । सागुटीश्रा सत्या नही, कदोई कुण पार ।—मा. का प्र

सागेडो, सागेडौ–वि (स्त्री. सागेडी) १ उत्तम, श्रेष्ठ ।

२ श्रपार, श्रत्यधिक ।

उ०—दीवाणजी सोच्यौ कै श्रबै खोडा वाळी बात री घादो मेट श्रजेज मन री रळी पूरा तौ श्राज रै पोहरा रौ सागेडौ श्राणद श्रावै । वै दूजी वेळा फेर खोडा मैं पग घाल्यौ ।—फुलवाडी

३ श्रच्छा, वढिया, ठाटदार ।

उ०—सेठाणी त्रिचाळै ई बोली—वा, सागेडौ उज्ज्वळ मनीजग्यौ । थूको थारा मूडा सू । जेडौ फूटरौ डोळ व्हैडी ई वात करी ।

—फुलवाडी

४ रोचक, मनोरजक ।

उ०—सिनोमा ? सिनोमा फेर काई व्है ? श्रचूभा सू चौधरण बोली । हाथ सू कुचमाद करतौ चौधरी वोल्यौ - सिनोमा तौ सागेडौ घणो व्है है श्रै गेली ।—रातवासौ

५ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

उयू—दाळ सागेडी वणी है ।

६ लाभप्रद, हितकर ।

उयू—वेदराजजी री दवा सागेडी देवै है ।

७ मजबूत ।

उ०—घर सू सागेडौ नोडियौ काढनै चौधरी घडी दिन चढ्या वहीर व्हियौ । श्रणू तौ खाथौ खाथौ हालियौ । सिझ्या रा कडकडाट करती भूख लागी ।—फुलवाडी

८ सुन्दर, श्राकर्षक ।

९ खूब, श्रच्छी तरह ।

उ०—१ कोई श्राध घडी रै उपरात नाड देखतौ देखतौ वेदराज डोकरिया रा माथा मैं श्रवेस लिग्तरा री जतराई । पछै हाथ मायला चिटिया सू सागेडौ भाग्यौ ।—फुलवाडी

उ०—२ कारण कै चोवटियौ तौ दो-तीन वार गाम मैं वाड कूदतौ पकडीजग्यौ जद कानजी इण नै भ्काल नै सागेडौ वजायौ हौ श्रर पुजारीजी महाराज ई कई वार लपेटा मैं श्राया हा श्रर दाता तिरणा लेय नै छूटा हा ।—श्रमरचूनडी

रू. भे.—सागीडौ, सागोडौ ।

सागेजा–स स्त्री —भाटी वश की एक शाखा । (वा दा ख्यात)

सागेजो–स पु —भाटी वश की 'सागेजा' शाखा का व्यक्ति ।

सागेस्वर–स. पु [स सागेश्वर] एक तीर्थस्थान का नाम ।

सागै–वि (स्त्री सागण) १ वास्तविक, श्रसली ।

उ०—प्रेमागमन रामरस पूरण, सागै सवद सुणावै । सनमुख हुय सरधा सू सुमरण, सासोसास समावै ।—ऊ का

२ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—साम्रत मिळ्या मिळै सुख सागै, धुनि मैं ध्यान धरावै । कुलवै लगै गुरा की कूची, खट ताळा खुल जावै ।—ऊ. का.

३ पूर्ववत् वही ।

४ साक्षात, हूबहू ।

५ साथ ।

उ०—१ वौ घोड़ा रै पाखती श्रायौ तौ च्यारू सिरदार श्रेकण सागै भाला घकै करचा । बोल्या—श्रागै श्रेक पावडौ ई दियौ तौ भाला मैं पोय न्हाकाला ।—फुलवाडी

उ०—२ चादणी रै सागै चाद ठारी वरसावणी चालू कर दी । मटकिया मैं पाणी जम जातौ । पाना माथै पडी श्रोस री कथीरियौ वण जातौ ।—फुलवाडी

सर्व —वही, उसी ।

क्रि. वि —१ साथ मे, सग मे ।

उ०—१ भोगै सागै भाम, श्रम्रत लागै ऊमरा । श्रकबर तळ श्राराम, पेखै जहर 'प्रतापसी' ।—दुरसौ श्राढौ

उ०—२ वा रूस'र कमरै माय चली गई । सागै खाणौ भी कोनी खायौ । खाणौ तौ पछै छोटा ठाकुर कुवराणी श्रापरै सागै खायौ हो ।—तिरसकू

२ साक्षात, वास्तव मे ।

३ मार्फत ।

उ०—म्हारै सागै श्रौ भरोसौ भी दिरवायौ कै श्रब लीना वैजू रै सागै सुच्छद घूम-फिर सकै है ।—तिरसकू

रू. भे —सागि, सागी ।

सागौ–स पु – साथ, सग ।

उ०—श्रौ तौ थै चार सरदार कजियौ हाथ सभाळ खडा रह्यौ छै । तिण सू था सामळ ऊभौ रहस्यू नही तौ पण मोसू इण खाविंद रौ सागौ छूटै ।—श्रमरसिंह री बात

रू भे —सागौ ।

सागोन–स. पु —शालवृक्ष या उक्त वृक्ष की लकडी जो बहुत मजबूत व सुन्दर होती है ।

सागोसाग–वि – वास्तविक, हूबहू ।

साघणौ —देखो 'साधणौ' (रू. भे.)

उ०—तिसै भीवैजी राम राम कहि नै कह्यो, म्हा चाकर ऊपरै इतरी इतराजी फुरमाई, हूँ तौ निपट ऊडौ, साघणौ जमारीक भेळा रहण रौ प्यार करण मतू छू, मोनै चाकर करौ ।

—जखडा मुखडा भाटी री बात

साड–स पु —सडा हुश्रा पदार्थ या गन्दगी ।

उ०—रात दिन पडी-पडी खल्लू-खल्लू करै । थूक-थूक नै सगळौ

७ जिसमे कोई कपट या छल न हो, निष्कपट, पवित्र ।

उ०—१ इण री तौ की लेखौ ई कोनी, पण गूजरी री प्रीत होये आज साचरिया पछै म्हनै ग्रेडी लखायो कै म्हैं ग्रैडी साची प्रीत आज पै'ली किणी सू नी करी ।—फुलवाडी

उ०—२ हरिया गुर का सत सबद, साचै मन सु धारि । भवसागर मैं डूबता, लेसी पार उतारि ।—ग्रनुभववाणी

८ खूब, ग्रधिक ।

ज्यू—जे थू नी पढ्यौ तौ साचौ ठोकूला ।

९ तेज, तीव्र ।

ज्यू—ठाकर री घोडी दौड मैं साची दौडी ।

१० बढिया, श्रेष्ठ, सुन्दर ।

ज्यू—ग्रा चीज तौ साची है ।

११ पक्का, शुद्ध, खरा, ग्रसली ।

उ०—कोई वाळचा तौ घडावौ साचौड़ा हेम री म्हारा लोटण करवा ।—लो गी

१२ दृढ, मजबूत ।

ज्यू—साचौ किलौ ।

१३ कुशल, निपुण, दक्ष ।

१४ सही, ठीक ।

उ०—जनम न हूतौ जोधपुर, 'पातल' समर उछाह । ग्रब साचौ कुण समझतौ, रजपूती री राह ।—कविराजा मुरारीदान

१५ साक्षात ।

उ०—है नह को हिंदवाण मैं, समवण तौ समराथ । पाळग सजन 'प्रतापसी', पणधर साचौ पाथ ।—मेहरदान

१६ सत्य बोलने वाला, सत्यभाषी ।

रू. भे.—सचाण, सचान, सचायौ, सच्चौ, साचलौ, साचिलौ, साचेलौ, साचोडौ, साचौ, साचउ, साच्चलौ, साचल्लौ, साचू, साचेलौ, साचोडौ ।

साचौट-स स्त्री.—दक्षता, निपुणता ।

उ०—तरा पछै पठाणा रै वेटा साथै तिरदाजी सीखै । खाकदाज माहै हाथ री साचौट सफाई सीखै, सौ कागडौ तीर सूं पाच सै पावडा रै ग्रातरै ग्रादमी जिनावर उठाय लेतौ नै पिडसधी हजार पावडा ऊपर चोट करै, तिका जाणीजै पावडा दस सू कीधी ।

—जखडा मुखडा भाटी री वात

साचौरा—देखो 'साचोरा' (रू भे)

उ०—महाराज रा मनोरथ स्रीमहाराज पूरै । ग्रखिग्राति ऊबरै । महाराज रा मुहडा ग्रागै लडा । टूक टूक हुइ पडा । इतरा माहै साचौरा मछरीक । —र वचनिका

साचौरौ—देखो 'साचोरौ' (रू. भे.)

(स्त्री. साचौरी)

साच्छर, साछर—देखो 'साक्षर' (रू. भे.)

उ०—सुसील सभ्य साच्छर स्रुति प्रमान सोहनै ।—ऊ. का.

साज, साज-स [फा. साज] १ उपकरण, सामान ।

उ०—साज लोहा रा सातरा, ताळा कर तयार । किसबी सारा काम रौ, लीजै इसौ लवार ।—रमणप्रकास

ज्यू—हळ रा साज, कुळी रा साज, लडाई रा साज, संगीत रा साज ग्रादि ।

२ वह साधन, सामग्री या उपकरण जिन्हे किसी वस्तु को पूर्णता देने के लिए उससे सम्बद्ध किये जाते हैं ।

उ०—१ जवह(र) कै साज सू जमदढ खग कसी । बुलगारु की उदागर चौतरफ कू वसी ।—सू. प्र.

उ०—२ घणी सोनै रूपै मैं जडी थकी, घणी बुलगार रै साज मैं लपेटी थकी उण हीज ढाला रा गडगद्रा मैं वेलजै छै ।

—रा सा स.

उ०—३ भीड समत्र भळहळा, साज बुलगार सकाजा । ग्राए वाहर ग्रभग, मसत गज महाराजा ।—सू प्र.

३ सामान, सामग्री, साधन ।

उ०—१ साचा सदगुरु जे मिळै, सब साज सवारै । दादू नाव चढाय कर, लै पार उतारै । —दादूवाणी

उ०—२ गळ मुडमाळ मसाण ग्रह, सग पिसाच समाज । पावन तूझ प्रभाव सू, सभू ग्रपावन साज ।—वा दा

उ०—३ लाजै पीहर सासरौ, ग्रौर लाजै म्हारौ साज । गोपीचदण तुलसी की माळा, भीख मागण रौ साज ।—मीरा

उ०—४ इसा इसा ग्रघविसवासा रा काड देख-देख'र म्हारै तौ डील रा रुंकोटा खडा हुय ज्यावै है कै—जकी मायड़ जात ग्रापरै तप त्याग रै वळ वूतै माथै फूसरै झूडै मैं सुरग रा साज सजा देवै है ।—दसदोख

५ हाथी की ग्रवारी तथा घोडे व ऊट के चारजामे का सामान ।

उ०—१ तदि वणं साज गयदा तुरा वीर ग्रवाळा ग्रीह वजि । सुरताण साह मुदफर दिसी, सूर चढै दळ पूरि सजि ।—सू. प्र.

उ०—२ भळहळ साजा गज भिडज, मफा इका सुखपाळ । घोड-वहळ खासा घणा, दरगह मुहर दुझाळ ।—सू प्र

उ०—३ करि पौसाक ससत्र कसि, साजां तुरग सिगार । इम चढि चढि भड ग्राविया, दळ वह राजदुवार ।—सू प्र

उ०—४ इव ग्रठै खरळ तौ तयारी करण लागा ग्रर ग्रठै कुवरसी घोडा रा साज सभाळ नवा कराया । घोडा सारां नु रातब कर दीयौ, ताजा करी । हथियार सारा सातरा करण लागा ।

—कुवरसी साखला री वारता

६ ग्रस्त्र-शस्त्र ।

उ०—१ जकडि छुरा खजरा, कसै वह साज वदूका । ढळक ग्रलो-वध ढाल, ग्ररण मुख वणिक ग्रचूका ।—सू. प्र

उ०—२ बुगलार भीड वाढौ वहसि, जमदढ खग साजां जकडि ।

उ०—वाहुक वलतु वाणी वदि, गद गद कठ दुख अति रदि। सती साचवि सील सुजात, कस्ट पडि करि सी वात।—नळाख्यान

४ करना।

उ०—सुध मन सेव गुरुदेव री साचवै, सखर समझै अरथ सूत्र सिद्धत। दियै बहुदान मन सुद्ध पालइ दया, भलौ नित सघ री करौ भगवत।—ध. व ग्र.

५ पालन करना, मानना।

उ०—१ ध्यान जिनवर तणौ मन धरै जी, साचवै जे खट करम। ईति उपद्रव दहवटै जी, जेम छाया घन करम।—वि. कु

उ०—२ दिली रा भर भारथ भुजे दिग्रा। कमधज मुर्द किग्रा। वेद सासत्र वताया सु अवसाण ग्राया। उजेणि खेतधारा तीरथ धणी रौ काम खित्री रौ धरम साचवीजै।—र वचनिका

साचवणहार, हारौ (हारी), साचवणियौ—वि०।

साचविग्रोडौ, साचवियोडौ, साचव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साचवीजणौ, साचवीजवौ—कर्म वा०।

साचवियोड़ौ—भू का कृ.—१ मारा हुआ, पीटा हुआ, प्रहार किया हुआ. २ धारण किया हुआ. ३ सुरक्षित रखा हुआ. ४ किया हुआ ५ पालन किया हुआ, माना हुआ।

(स्त्री साचवियोडी)

साचांणी, साचाणी—क्रि. वि.—सचमुच मे, वास्तव मे।

उ०—१ क्यू के भागणौ आपरी सुहावै नही जो आप कहौ साचांणी कायर वणू तौ वै दिन दोय दिन म्हनै पीहर मेल दौ।

—वी स टी

उ०—२ चाकरी पर जावती वखत सोढी मोटी-मोटी आख्या मैं आसूडा भर'र कह्यो हो पाछा वेगा पधारज्यो। अर ठाकर साचाणी पनरवै दिन ईंज चाकरी छोड'र घरा आयग्यो हो।—फुलवाडी

रू. भे —सचाणी, साचाणी।

साची, साची—वि स्त्री.—१ शुद्ध, विशुद्ध।

ज्यू—साची चीज।

२ पवित्र, निष्कपट।

ज्यू—साची सेवा।

३ पतिव्रता, निष्कलक।

४ बढिया, श्रेष्ठ।

ज्यू—साची किताब।

रू भे.—सच्ची।

साचू—देखो 'साचौ' (रू. भे.)

उ०—प्रसन्न करीनि मन आपणू, सुणो युधिस्ठिर साचू। सुख दुख देहि साथि सरज्या छि, चित न कीजि काचू।—नळाख्यान

साचेलौ, साचेलौ—देखो 'साचौ' (रू भे)

उ०—१ अवूझ आदमी आपरी बै-अकली रै कारण दुख अर चिंता री बात नै ई साचेलौ सुख जाणै।—फुलवाडी

उ०—२ कोई वाळलिया तो घडीजै भुरजाळा रै साचैला हेमरी म्हारा राज।—लो गी

उ०—३ जलमणा मैं तौ दौ वरसा री लोड-वडाई, पण मरिया साथै। साचेला हित्यारा झूठ बोल नै आज दिन ताई मौज माणै है। वेटा रै मरिया पछै नित अेक वेळा तौ म्हनै आ बात सुणाणी ई पडै।—फुलवाडी

(स्त्री. साचेली, साचेली)

साचोडौ—देखो 'साचौ' (रू भे)

उ०—सीसडौ मूमल रौ लूबडियो नारेळ, हाजी रे वेणी तौ मूमल री वासग नाग ज्यूं म्हारी साचोड़ी ए मूमल हालो नी अमराणै रै देस।—लो गी

(स्त्री. साचोडी)

साचोरा—सं पु —१ ब्राह्मणो की एक जाति।

२ राजपूतो मे चौहान वश की एक शाखा।

रू भे —साचौरा।

साचोरी—सं स्त्री.—गायो की एक नस्ल जो राजस्थान के साचोर इलाके मे होती है।

वि —साचोर का, साचोर सम्बन्धी।

साचोरौ—स पु (स्त्री साचोरी) १ साचोरा जाति का ब्राह्मण।

२ चौहानवशीय साचोरी शाखा का व्यक्ति।

रू भे —साचौरौ।

साचौ, साचौ—वि. [स सत्य] (स्त्री साची) १ सत्य, सच्च, यथार्थ।

२ कर्त्तव्यपरायण।

उ०—ना कीजो सैणा नरां, काचौ बीजौ काम। राखै लाजा सत री, राजा साचौ राम।—र ज प्र.

३ सत्यवादी।

उ०—साचा हरचद अवरीख गा उतरै पारा।—केसोदास गाडण

४ दृढ, पक्का, अटल।

उ०—धड सीस पग धरि खग धरै, कमधज्ज साचौ पण करै। तन पडै दु हुवै खळ तठै, जळ दीध मोकल नू जठै।—सू. प्र

५ सही, वास्तविक।

उ०—१ सौ सवद सतगुर कह्या, सोई साची वाच। जनहरिग लीजै नही, कचन बदळै काच।—अनुभववाणी

उ०—२ लक्खी विणजारौ तो वा गिळगिचिया रो साचौ मोल जाणतौ हौ। दाळद नै पोटावण मे की जोर पडघो नी। जवार री सौ गूणतिया साटै काव्योडा सगळा गिळगिचिया, वच्योडा मतीरा अर सगळी काकडिया लक्खी विणजारा नै राजी-राजी सभळाय दी।—फुलवाडी

६ घनिष्ठ।

उ०—साचौ मित सचेत, कयौ काम न करै किसो। हरि अरजन रै हेत, रथ कर हाक्यौ राजिया।—किरपाराम

उ०—मोतीलालजी सगळा रै हिडक्या रै हाथ लगाता फिरै पण रुपिया कुण साजै। सगाई सू पैला तो नातै-गिन्नै वाळा कैता हा म्हासू वणसी जकै मैं म्है किसा न्यारा हा। पण मोकै ऊपर सगळै नाकौ काढ ग्या।—वरसगाठ

६ देना।

उ०—दुरविध घमडी दै सणकारी साजी, भारी भमडीलै घर मैं भूवाजी। चिलमी अमली के जुलमी चितचाया, दासी वेस्या रा मदवा रै दावा।—ऊ का

७ निकालना।

उ०—आधी ढळया वछराजसिंघ सतैई जाग्यो। पोहरा री वागी साजण सारू। देत री मौत अर उणारा रगत सू विरथा ओवया नी वैठ जावै, इण वास्तै नाहरसिंह तडकै सगळी वात दतावण री सोची।—फुलवाडी

८ करना।

उ०—१ अभग 'पदम' वोलियौ, अगन पौरस ऊघाडै। साजूं जुध सहदेव, एम कुरखेत अखाडै।—सू. प्र.

उ०—२ राणी आपरा अेकाअेक कवर रै साथै न्यारी रैवण लागी। उणरी हाजरी साजण सारू फगत अेक डावडी ही।—फुलवाडी

मुहा०—हाजरी साजणी= सेवा करना, कार्य करना।

९ विचार करना, विचार बनाना।

१० मारना, पीटना।

ज्यू—जै छागलाया करै तो दो-तीनेक थप्पड साज दीज्यै।

११ सजा देना, दण्डित करना।

१२ प्राप्त करना।

उ०—विलगि महारिण पौढियौ, काळौ भला कहाय। जस जोवण साजै 'जसो', मणिमथ फौज मल्हाय।—हा झा

१३ बदला लेना, प्रतिशोध लेना।

उ०—वेर साज निज वापरै, जवर लियो जस जीत।

—नारायणसिंह सादू

मुहा —आटौ साजणौ=बदला लेना, प्रतिशोध लेना।

१४ दम या सास रोकने का अभ्यास रकना।

ज्यू—दम साजणौ=सास को रोकने का प्रयास करना।

१५ योग साधना करना।

१६ बनाना, निकालना।

ज्यू—म्है थारा घणा अडिया काम साज्या है।

१७ साधना, लगाना।

उ०—यू नित वोछरडाया पछै अेक दिन वानै नवी ई कुवद सूझी। पिणघट सू पाछी वळती पिणियारचा रा घडां माथै ताक-ताक नै गिलोला रा निसाणा साजता।—फुलवाडी

१८ तैयार करना।

उ०—तातारी दळ अतुळ, साजि रमजान कुतुव सह। सुर्गळ साह तैमूर, आइ दिल्ली जय आग्रह।—व भा

क्रि अ —१९ उपस्थित होना, हाजिर होना।

उ०—भगतां री भाजी संगत साजी, वावाजी वोलदा है। रथ मैं सू गाळी वेवण वाळी, हाळी रथ हाकंदा है।—ऊ. का.

ज्यूं—म्हनै घणा व्याव साजणा है।

मुहा.—मौरत साजणौ—अवसर पर उपस्थित होना।

२० होना।

२१ सुसज्जित होना।

साजणहार, हारो (हारी), साजणियौ—वि०।

साजिओडौ, साजियोडौ, साज्योडौ—भू० का० कृ०।

साजीजणौ, साजीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

सजणौ, सजवौ, सज्जणौ, सज्जवौ, सझणौ, सझवौ, साजवणौ, साजववौ, साझणौ, साझवौ—रू० भे०।

साजत साजति, साजति—स स्त्री.—१ सजावट, सज्जा।

उ०—तिसै दासी फूल लेती लेती असवार दीठौ। घोडौ रुपया हजार दो-तीन रै मोल रो दीसै छै। पिलाण साजत ऊची दीठी।

—जगदेव पवार री वात

२ तैयारी।

उ०—१ तूजिया जेव कीजै तई, घानखी चिल्ला धरै। इण भात थटा 'अभमाल' रा, कुळ छतीस साजत करै।—सू प्र.

उ०—२ यह कामेतया जी हुकम सह कारखाना होय, अवर जनेतिया जी साजत कीजियौ सहकोय।—र. रू.

रू. भे.—साजत, साजति, साजती।

साजन—देखो 'सज्जण' (रू भे.) (डिं. को)

उ०—१ साजन साजन हू करूं, साजन जीव जडीह। साजन लिखलू चुडलै, निरखूं घडी घडीह।—अग्यात

उ०—२ साजन सेरी साकडी, साम्हा मिळिया सेण। वतळाया वोल्या नही, नीचा करग्या नेण।—अग्यात

साजनियौ—देखो 'सज्जण' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ साजनिया थासू लगी या चटकीली आख। निस दिन पथ निहारता, रही झरोखै झाख।—अग्यात

उ०—२ आ नित दीसै साजना, रीस रखू की रोक। साजनिया मालै नही सालै ल्होडी सोक।—अग्यात

साजबाज—स पु यौ—१ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—१ सझै समामा सूरवै, साजबाज सग्राम। आपौ मेटै हरि भजै, हरीया भेटै राम।—अनुभववाणी

उ०—२ रागरग हुवै छै, छडवडा खिलवत रा साथ सु वैठा छै तिण समै चाचो मेर आपरो साथ लै साजबाज सु चढीया।

—राव रिणमल री वात

२ सगीत के वाद्ययत्र।

३ सजावट की सामग्री।

भूयाण कसै भुह मंछ भिडि, पाण ताण साकळ पकडि ।—सू. प्र
७ युद्ध सामग्री ।
उ०—पखरैता ध्वज पूर, सिलह ससत्रा रिण साजा । उभै सहंस आपरा, साथि सामत सकाजा ।—सू प्र.
८ घोडे की काठी, जीन ।
उ०—१ लोह डाच धरि लीण, मळै हाथळ दुसमाळा । फिरग साज झडफियौ, पडव छोडिया अपाला ।—सू. प्र.
उ०—२ तहदार गादिया धरै ताम, जग जोतिम दाखल जूळ जाम । कळवूत रजत सोव्रन सकाज, सिकळात मुखम्मल फिरग साज ।
—सू प्र
९ सजावट, सजाने के उपकरण ।
उ०—१ इम निसि सुकळ वाग त्रप आए, विमळ चद्रका साज वणाए ।—सू प्र
उ०—२ सझै तोरण चित्र साजा, जेत आगम महाराजा ।
—सू. प्र.
१० शृगार के उपकरण ।
उ०—आठम हुआ ज आठ दिन, पिव बिन सूना साज । आण हुवै जै पाहुँणा, नजर कळेजो आज ।—अग्यात
११ वेशभूषा, पहनावा ।
उ०—१ लाजै मीरा पीहर सासरो, और लाजै म्हारी साज । गोपीचदण तुलसी की माळा, भीख मागण रो साज ।—मीरा
उ०—२ तुररौस धारि ओह तुरग, हुई सेल खागा हुणं । सुमराज करूं महाराज सूं, वीर साज इण विध वणं ।—सू प्र
१२ आभूषण, गहने । (डिं. को)
१३ चमडा, चर्म ।
१४ वाद्य यन्त्र, वाजा ।
उ०—गीत, सगीत, ताळवध, म्रदग, वीणा, सारगी, तवूरा रा साज लागि नै रहिआ छै । इण भाति री आखाडै रभा पात्र निरत कारणि सोलै सिणगार किआ थका कान रा झाझर वाजि नै रहिआ छै ।—रा. सा स.
१५ व्यवस्था, प्रवन्ध ।
१६ आधार, अवलव ।
उ०—रावळि होय कै किन रै जाऊ, तुम हो हिवडा को साज । मीरा कै प्रभू ओर न कोई, राखो अब की लाज ।—मीरा
१७ कार्य, काम ।
उ०—पडती साझ दिवलो सजोयो, सह कर राख्या छै साज । रसीलाराज जोरी जुगळ किसोर की, लिखी छै विधाता लिलाट ।
—रसीलै राज रा गीत
१८ तैयारी ।
उ०—तेड्या प्रथ्वीपति तै घणा, आव्या साज करी आपणा । राजि राजानी मडली, मुख जाणै उडुमाला म्यळी ।—नळाख्यान

वि —वनाने वाला, ठीक करने वाला ।
ज्यू—घडीसाज, जिल्दसाज ।
(यौ. साजवाज)
रू भे.—सज, सझ, सहाज, साजि, साझ ।

साजज —देखो 'सायुज्य' (रू भे)
उ०—हरि कौ भै उर धारि कै, भगती भजन कर सोय । सालोक साजज सारूप, सोई समीपत्य होय ।—परमानद वणियाळ

साजण —देखो 'सज्जण' (रू. भे)
उ०—१ तेता मारू माही गुण, जेता तारा अभ्भ । उज्जळ चित्ता साजणा, कहि क्यउ दाखउ सभ्भ ।—ढो मा.
उ०—२ कूझडिया करवळ कियउ, धरि पाछिलै वणेहि । सूती साजण सभरया, द्रह भरिया नयणेहि ।—ढो. मा.

साजणियौ—देखो 'सज्जण' (अल्पा, रू भे.)
उ०—काळी पीळी वादळी, वरसत भीज्यो गात । ताजणिया लागा तिका, साजणिया बिन साथ ।—अग्यात

साजणी–स. स्त्री.—१ वढई का एक औजार जिससे वह लकडी की समतलता देखता है ।
२ दीवार वनाते समय उसकी सीधाई तथा समानता देखने का एक उपकरण विशेष ।
रू. भे —साधनी ।

साजणौ —देखो 'साझणौ' (रू भे.)

साजणौ, साजवौ–क्रि. स —१ मारना, सहार करना ।
उ०—१ कीधी तै कोप साजियौ 'कानो', रिडमल नै दीधौ तै राज । चारणवाडा तणी चारणी, लोक मही तू राखै लाज ।
—वा. दा.
उ०—२ सैद मुगळ साजता, अमी महमद वचाए । राण मत्री कर अरज दरस वड प्राग कराए ।—सू प्र
२ तैयार करना, सवारना ।
३ परिवर्तित करना ।
उ०—बिरछा चढ किरकाट विराजै, स्याह सफेद लाल रग साजै । विजनस वाव सूरियो वाजै, घडी पलक माय मेहा गाजै ।
—वर्षा विज्ञान
४ धारण करना ।
उ०—सो थिर राखण काज, क भूसण साजिया । जड़िया रच्छया जत्र, मनोज मुनी दिया ।—वा दा.
५ अस्त्र-शस्त्र धारण करना ।
उ०—१ सादूळ सीह गाजइ, कायर ना हिया भाजई । सूरा हथियार साजइ, उद्द ड वाय वाजइ ।—सभा
उ०—२ साजै सार छत्रीस सिपाई, त्यार हुया रण मडण ताई । पाखर तुरा गयदा पाखर, भूम परा सम जाणै भाखर ।—रा. रू.
६ व्यवस्था करना, देना । (रुपये)

पदार्थ ।

उ०—.. .... मेथीनी भाजी, फागीनी भाजी, अडदनी भाजी, कली पापड, लागना पापड, मगना पापड, चोखानी पापडी, जारिनी पापडी, मालनी पापडी, तेहना साजीग्रा ।—व. स.

साजुज्य, साजोजमुकत साजोजमुकति, साजोजमुक्त, साजोजमुक्ति, साजोजमुगत, साजोजमुगति—देखो 'सायुज्य' (रू भे.)

उ०—१ तब एक अद्भुत भए तमासा, आतम जोत हो गई प्रकासा। बहुरि कस्ण कै माहि समाई, साजोजमुक्त सहिग तिन पाई।

—हरचद डोहोकियो

उ०—२ साजोजमुगत, इण जुगत, प्रभु मेलै पावदा है। गण गध्रप आवै, हरि गुण गावै, वीणा अदग वजदा है।—गज-उद्धार

साजोत, साजोति, साजोती–वि [सं. स+ज्योति] ज्योति सहित, देदीप्यमान ।

उ०—१ मिळै छत्र छत्रा घसै भीड माचै, रैणा हीर मोती झडै रूप राचै। ओपै जोति नौलाख हूता अपारा, तिकै जाण साजोत रै भोमि तारा।—सू प्र.

उ०—२ छोगा पाघ जवाहर छाजै, रवि सिर किर सानोति विराजै।—सू. प्र.

स. पु—१ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—अवध्र पनरोतडै समत पनरै इळा, वाघ पढणोत रै वेद वरनी। गेह वड भाग किनिया तणै गोतरै, कळा साजोत रै रूप करनी।—खेतसी वारहठ

२ परब्रह्म, ब्रह्म। (मोक्ष)

उ०—१ गीरा धू करेगो मेघाडमरा पड रै घाव, पाट राणी गूमरा हरेगो पेलै पार। चम्मरा ढुळना हाडो गल्ला उबरेगो चगी साजोत 'सभरा' खेती तरेगो ससार।—जसो आढो

उ०—२ नाराजा कै झडै सूर अच्छरा लगावै नेह, छेह पेलै केही सूर आभडै न छोत। देह त्यागै केही सूर जीरणा वसत्रा दाय, सदेह वेमाणा वैठै जावै कै साजोत।—बद्रीदास खिडियो

३ पाच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति विशेष।

रू. भे.—सजोत ।

साजोम—देखो 'सजोम' (रू भे.)

उ०—साजोम कमधा सूरमा, पूछिस भोम परायणा। अणसोम गुणा कोपै अभो', करण माम किलवायणा।—रा रू

साजो–वि (स्त्री. साजी) १ स्वस्थ, निरोग।

उ०—१ विया नू मार्नसिघजी कहियो—आग्रो जु इण नू जोवा। जै घावै साजो हुवै तो घाव वाघो।—द वि.

उ०—२ जद किणही ओखद देइ सातरो कीधो। साजो हुवो जद खेत काव्यो। सहाज देवण वाळा नै पिण पाप लागो। ज्यू पापी रै साता कीधा धरम कठा सूं।—भि द्र.

२ पक्का, दृढ।

उ०—वेमण नाहि बुलावणी, नही वचन री साजो रे। माहरी आया की राखो नही, हू दीन दुखी को राजो रे।—जयवाणी

३ अच्छा, श्रेष्ठ।

उ०—आव्यो माम वसत रै रसीयां रो राजा, सुख दै साजा तरु होई ताजा। जेहनै तूठा रै मोज लहीजियै रे, अधिकपण ओपत रे, मदन तणो रै मित्र कहीजियै रे।—वि. कु.

४ अनुकूल, लाभदायक।

उ०—प्रमेसर वाधिसै पाजा, लोपसै दधि तणी लाजा। साधुआ रा दीह, साजा वजाडो वाजा।—पी. ग्र.

उ०—२ 'अजन' विराजै जोधपुर, दिन साजै कमधज्ज। अन राजा लाजै अकस, धू सम राजै धज्ज।—रा. रू.

५ ठीक, कुशल, अच्छा।

६ साधारण, सामान्य।

७ पूर्ण, अखण्ड, बिना टूटा हुआ।

उ०—१ ....एकी अगि वाई, ऊरि गुलरेख लाई, जिमा अम्रत तणा, पुणि टलवाडइ घणा रूपोज्वल, काविलउ घाट, जिसउ ढाकइ आट, इसा साजा सातपुडा खाजा, वरनारि परीसइ, जइ लीला विलास तूसइ।—व स.

८ प्रवल, शक्तिशाली।

उ०—सुनन 'भीम' 'पातल' पति साथै, भीम 'अजन' जामल भाराथै। 'राजड' 'किसन तणो सग राजै, साझण सवळ लियै दळ साजै।—रा रू

९ स्वादिष्ट, जायकेदार।

साझ—देखो 'साज' (रू. भे)

साझणौ–वि—१ मारने वाला, सहार करने वाला।

उ०—अरि परदेसा साझणौ अतरपणौ अपार। विण चापा विण भाटिया, भुज कुण झेलै भार।—रा. रू.

२ देने वाला प्रदान करने वाला।

रू. भे—साजणौ, साजवणौ।

साझणौ, साझवौ—देखो 'साजणो, साजवो' (रू. भे.)

उ०—१ सारो कुटव सधीर, दाखै तोनू नित 'दळा'। वळै प्रग्राजै वीर, सकज जवाई साझियौ।—गो रू

उ०—२ ऊठै वै दळ जोध अकारा, साझ सरीर तणा ध्रम सारा। कहि गगा तन मजन कीधा, दान विनान मान करि दीधा।

—रा रू

उ०—३ तठा उपरात करि नै राजान सिलामति देवळा री पाखती धरमसाळा, दानसाळा मडीजै छै। माहै जोगेसर पवन रा साझणहार त्रिकुटी रा चडावणहार धूम्र पानरा करणहार उरधबाहु ठाडेसरी दिगवर सेतवर निरजनी आकास मुनी।—रा सा. सं.

उ०—४ जडभरत अतीत समरस रा छाकिआ रामरस प्याले रा पीअणहार दया धरम रा पाळणहार करमजाळ रा भोडणहार

४ हाथी की अवारी तथा घोडे, ऊंट आदि के चारजामे के उप-करण।

५ ठाट-वाट, वैभव।

साजवणो—देखो 'सामणो' (रू. भे)

साजवणो, साजववो—देखो 'साजणो, साजवो' (रू भे)

साजवणहार, हारो (हारी), साजवणियो—वि०।

साजविश्रोडो, साजवियोडो, साजव्योडो—भू० का० कृ०।

साजवीजणो, साजवीजवो—कर्म वा०।

साजवियोडो—देखो 'साजियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. साजवियोडी)

साजस—देखो 'साजिस' (रू. भे)

उ०—१ जे खोजो नाजर देख लेसी तो बादसाह नूं कर देसी तो फिसाद होयसी। बादसाहा रा माणस देखीजै छै इसी साजस कीवी।—जलाल बूबना री बात

उ०—२ पछै पताई रावळ रै साळो सइयो वाकलियो निकै रो वडो मामलो वडो इतवार गढ री कूंची वस तद पातसाह मूं साजस कीवी जू मनैं मगळा ऊपर करो कूंची देवो।

—पताइ रावळ री वात

उ०—३ बेटो मनोहरदास रै न थो। तरै राजलोग सूं साजस करनै, कै भाटी पण भीर करनै एक वार टीको लियो। सु सीहड रघनाथ भाणोत तिण वेळा हाजर न हुतो।—नैणसी

उ०—४ सामधरम्मी सेव मैं, कै मेवाना प्राण। केता साजस माह सू, राजस राणी राण।—रा रू.

साजसींग-स. पु. यौ.—बदूक चलाने के काम आने वाली सामग्री, उप-करण।

साजा-स. पु—चन्द्र, चांद। (डिं. को)

साजाणी, सा'जांणी, साजांनी-स. पु.—बादशाह द्वारा चलाया गया एक तोल विशेष।

रू. भे.—साहजानी।

साजादो सा'जादो—देखो 'साहजादो' (रू. भे.)

उ०—पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूटै रण सरीत। सूरमा लडै चवडै सभाळ, वेगना घतै पहदै विचाळ।—वि. स.

साजाबोल-स पु यौ—अपने वचन का सच्चा, सत्यवादी।

उ०—किसनसिंघ नाथावत पोकर की राड, 'राजड' सूं आगै वगा नगी खाग झाड। चद कै गरब राखै सूर चद साखी, राजा छळ काम आया साजाबोल साखी।—रा. रू.

साजारी-स स्त्री.—रहट के पानी को फैलने या छितर जाने से रोकने के लिए लकडी या पत्थर की आड।

साजि—देखो 'साज' (रू भे)

उ०—नितु नितु नवला साढिया, नितु नितु नवला साजि। पिंगळ राजा पाठवइ, ढोला तेडण काजि।—ढो. मा.

साजियोडो-भू का कृ.—१ मारा हुआ, सहार किया हुआ २ तैयार किया हुआ, सवारा हुआ. ३ धारण किया हुआ। ४ अस्त्र-शस्त्र धारण किया हुआ ५ व्यवस्था किया हुआ. ६ दिया हुआ. ७ निकाला हुआ ८ किया हुआ. ९ विचार किया हुआ, विचार बनाया हुआ. १० मारा हुआ, पीटा हुआ ११ सजा दिया हुआ, दण्डित किया हुआ १२ प्राप्त किया हुआ १३ बदला लिया हुआ, प्रतिशोध लिया हुआ. १४ दम या सास रोकने का प्रयास किया हुआ. १५ योगसाधना किया हुआ. १६ बनाया हुआ, निकाला हुआ. १७ साधा हुआ, लगाया हुआ १८ तैयार किया हुआ. १९ उप-स्थित हुवा हुआ, हाजर हुवा हुआ. २० हुवा हुआ. २१ सुसज्जित हुवा हुआ।

(स्त्री साजियोडी)

साजिस-स. स्त्री. [फा साजिश] १ षडयन्त्र, कुचक्र।

२ विचार-विमर्श।

३ मेल-मिलाप।

रू. भे.—साजस, स्याजस।

साजी, साजी-सं. स्त्री. [स सर्जिका] १ जवासे से मिलता-जुलता कुछ बडा और बिना काटों का क्षुप या पौधा विशेष।

उ०—जिको यं किसा नही जाणी हो फोग है जिती धरती थारी है, अर साजी वा लई है जिती धरती म्हारी है, तथा इण सोतर री धरती मैं आगै हुवा है तिणरा नाम कह्या।—द दा.

२ एक प्रकार का क्षार विशेष जो अधिकतर पापड बनाने के काम आता है एव यह औषधि मे भी काम आता है।

वि वि—इसका एक क्षुप होता है जिसकी टहनिया कोमल होती है, पत्ते छोटे छोटे और तिकोने होते है। इसी क्षुप के डठलो व पत्तो को एक खड्डे मे जला कर दबा दिया जाता है इससे जो कोयले बनते हैं वह सज्जी या साजी होती है। इस सज्जी को जमीन मे बनी किसी कुडी या पात्र मे डाल कर गर्म किया जाता है। इससे सफेद रसनुमा एक तरल पदार्थ तैयार हो जाता है जिसे उक्त कुडी या पात्र मे सूराख करके किसी दूसरे पात्र मे ले लिया जाता है तदन्तर जम कर जो क्षार तैयार होता है उसे चौवा साजी कहते हैं। इसको पापड बनाने के काम मे लिया जाता है। यह साजी कपडे धोने या साबुन बनाने के काम भी आती है।

मतान्तर से—शालिग्राम निघटु मे साजी तैयार करने की अन्य विधि बताई है उसके अनुसार—मालाबार प्रान्त मे वृक्षो के पचागो के टुकडे करके एक बडी खाई मे भर दिये जाते है और फिर उसमे आग लगादी जाती है। बाद मे वह जलकर स्वत जम जाते है और साजी या खारी तैयार हो जाती है।

साजीखार-स. पु. यौ. [स. सज्जीक्षार] सज्जी के पौधे से निकला खार।

साजीश्रो, साजीयो-सं पु.—साजी मिला कर बनाया हुआ खाद्य

उ०—माया मोटै मानवी, भेता मोहरे साट । हरीया हरि मोटै तणी, ताहि न जांणै साट ।—अनुभववांणी

१५ खेती, कृषि ।

उ०—जनहरीया हरि नाम को, वणी कमाई साट । मूठै ऊपरि कवळी, लेता कितीयेक साट ।—अनुभववांणी

१६ अभाव, कमी ।

उ०—गुदा री नह घाट, साट नह है मूर्मा रो । पोतो मेळो घरे, डार भेळो डूमा रो ।—अनुभववांणी

१७ बिक्री, विक्रय ।

१८ व्यापार ।

१९ देखो 'साटो' (रू. भे.)

रू. भे —साट ।

साटई–क्रि वि —बदले मे, एवज में ।

साटक–स. पु.—१ एक प्रकार का छद विशेष ।

२ पुरुषो की बहत्तर कलाओं में से एक ।

३ भूसी, छिलका ।

४ प्राकृत मे रचा एक छोटा नाटक, रूपक । (व स)

साटकी–स. स्त्री.—छड़ी, बेंत ।

उ०—१ देवरियो छिनगारो तोहं सोवन साटकी जी राज ।

—लो गी.

उ०—२ सायणिया साटकयां वावे छै हुर नाव सोराबै छै । हीडै चढी जिको बोली थे कवावो छो पीरा में हि मवावस्यां साटकी मति वावो ।—पना

साटको–सं पु.—१ चाबुक ।

२ एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे ३० मात्राएं होती हैं आदि व अन्त मे गुरु होता है तथा प्रत्येक चरण मे १९ वर्ण होते हैं और क्रमश ११, ७, ७, व ५ मात्रा पर यति होती है।

३ प्रहार, चोट ।

क्रि. वि.—चलाणो, वावणो ।

साटण–स. स्त्री —१ एक प्रकार का बढिया रेशमी वस्त्र विशेष ।

२ साटिया जाति की औरत ।

३ आक्रमण, हमला ।

उ०—तत अमरसिंघ जी कयो के अे सिरदार जोधपुर री ढमेद ऊपर सचिया हा सू पैहली साटण मारणा गया ।—द. दा.

साटमार–स. पु बो.—वे आदमी जो हाथो मे भाले लिए हुए मस्त हाथी के चारो तरफ चलते हैं।

वि —१ चाबुक मारने वाला ।

२ चाबुकधारी ।

साटवणो, साटवबो–क्रि स —१ विनिमय करना।

२ खरीदना, क्रय करना ।

उ०—सहसे लाखे साटविसु, परिघळ आंणा वेसि । घरि बइठा ही आंगणा, पटोळा पहिरेसि ।—ढो. मा.

साटमलहार, हागो (हाली), साटवणियो—वि० ।

साटविणोड़ो, साटविणोड़ो, साटयोड़ो—भू० का० कृ० ।

साटीजणो, साटीजबो—कर्म वा० ।

साटविणोड़ो–भू. का. कृ.—१ विनिमय किया हुआ. २ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ ।

(स्त्री साटविणोड़ी)

साटिका–स स्त्री. [स] साड़ी । (डि. को)

साटिया–स स्त्री —राजस्थान की अनुसूचित जाति जो ढोलो का मोढा करती है ।

साटियो–सं. पु. (स्त्री. साटण) साटिया जाति का व्यक्ति ।

साटो साटी–सं स्त्री —१ जमीन पर फैलने वाला एक विशेष इसके चार भेद होते है ।

वि वि.—इसकी चार जातियां होती है, कृष्ण लाल, सफेद आदि भिन्न भिन्न रंग के होते है । इनमें श्वेत रंग के पुष्प वाले को विषखपरा कहते है और लाल रंग के पुष्प वाले को गदहपूर्णा कहते है । यह औषधियो मे प्रयुक्त होती है ।

२ एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसका तना सफेद और पत्ते गोल एव छोटे होते हैं । फूल इसके फलीनुमा होते हैं जो इसके बड़ा करने के लिए काम मे लिए जाते हैं ।

साटूक–स पु —एक प्रकार का लम्बा मोटा कपड़ा ।

उ०—नदै जगदेव दरबार आयो, जिको तो साटूक रो बागो पहिरयां छै, रसीदा १) री पाग माथै छै, कानां हाथां गहै पड़ा । सु दुसै सदूर सु मुजरो कियो ।—जगदेव पंवार री बात

साटै–क्रि वि.—१ बदले मे, एवज मे ।

उ०—१ इणा नो मेटणिया नही छै जै वातो साटै पोढै कनां बैठ रहै ।—मारवाड़ रा परगनां री विगत

उ०—२ देवराज नाममाद इणरो जु मरो आज मुहता बाहे काजै रै तो करमी सिण कहू सो, सो हाथी वाता साटै दिया जाय नहीं ।

—नैणसी

२ साथ ।

उ०—सुणतां ही बूबना रो जीव हुकारे साटै निसर गयो । ऊभी री ऊभी रह गई । नेना साथण नै चोजी सारी सखियां सहेलियां रोवण लागी ।—जलाल बूबना री बात

रू भे —सटै, साटै ।

साटो–स पु —१ पुनर्नवा से मिलता-जुलता एक प्रकार का क्षुप जो जमीन पर फैलता है ।

२ सुगधित सफेद फूलो वाला पौधा जो बगीचो मे लगाया जाता है ।

३ अदला-बदली ।

उ०—पछै दूजी रांमत बळे मांडी तठै राजा अगरजीत बोलीयो—

तापस अस्टाग जोग रा साझणहार सातरस माहे गलतारा होइ नै रहिया छै।—रा. सा. म

उ०—५ मैं कब लुघ दीरघता जानि, का मुझि मान वडाई ठानि। मैं कब साझै असट जोग, मैं कब नाना करत भोग।

—अनुभववाणी

उ०—६ 'करनाजळ' काकळ पेखि करा, प्रगटौ रिख ग्रामिय सिंघु परा। करनौत 'अभो' तिरा वार किसौ, जवनादळ साझरा काळ जिसौ।—रा रू

उ०—७ पति इरा सत्रु (पाहुंरा) री पात फौज में पहसरा करायोड़ो है पात फौज में सी दुभात सू भूलै नही अरथात किरा विना लोहा रहरा दै नही अरथात सारा नै साझ लेसी।

—वी. स टी.

उ०—८ गहकत इसौ 'लाखौ' गरूर, सीहौ इज साझै महासूर। जाम्रा सझि दारण जिपै जग, आवियौ नयर कनवज अभग।

—सू प्र.

उ०—९ भेत गुरा गाय भेव, आभडै न अहमेव। ईदसा सुरा अजेव, साझ तास सेव।—र ज. प्र

उ—१० उरस छिवै रस वीर उछाहा, साझरा काज दिलौ पतिसाहा। तपत वारा कीधौ हर ताणिक, वामीबघ एरसै वाणिक।

—सू प्र

उ०—११ प्रजळै उर पतिसाह दाह औ रिस अति दाझै। मनै न हुकम अमीर साह मनसूबा साझै।—सू. प्र

उ०—१२ हुय विदा सझै दळ हालियौ, साझण कज सुरतारा रौ। जोधारा अयौ जोधारापति, जगै भाग जोधारा रौ।—सू प्र

उ०—१३ सु दुदै तिलोकसी रै साको करण री मन मैं हुती जिरा सू दूदै तिलोकसी गढ साझियौ।—नैणसी

साझणहार, हारौ (हारी), साझणियौ—वि०।

साझिओड़ौ, साझियोड़ौ, साझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

साझीजणौ साझीजबौ—कर्म वा०।

साझियोड़ौ—देखो 'साजियोडौ' (रू भे)

(स्त्री साझियोडी)

साझी-स. पु—हिस्सेदार, साझेदार।

रू भे—साझि, साझौ।

साझेदार-स पु—हिस्सेदार, साझी।

रू भे—साभेदार।

साझेदारी-स स्त्री.—साझेदार होने की अवस्था या भाव, हिस्सेदारी।

रू भे—साभेदारी।

साझौ-स. पु.—१ हिस्सा, भाग।

२ साझे के लिए हुआ समझौता।

३ हिस्सेदारी, भागीदारी।

मुहा.—१. साझौ तौ बाद रौ ई खोटौ—साझे का व्यापार अच्छा नही होता। २ साझै री हाडी चौराए फूटै—सामुहिक उत्तरदायित्व मे कोई भी उत्तरदायी नही होता।

रू. भे—साभौ।

साट-स स्त्री.—१ सूअर की चर्बी जिसे पका कर खाने के काम मे लेते है।

उ०—दासी फिरै उतावळी, साटां लेवणहार। गोखा वैठी गोरडी, बाटै सिल वेसवार।—ढाढाळा सूर री बात

२ सोने या चादी के तारो का गूंथा हुआ स्त्री के पैर का आभूषण विशेष। (मा. म.)

उ०—बाजूबद मूंदडी अगुली, नखसिख गहणौ साटा। पहर कूबडी न्हावण चाली, जब जमुना कै घाटा।—मीरा

३ चाबुक।

उ०—१ पुहिली तुरक तणी ऊठवणी, रणि वाउला विछूटा। घोडै साट देई हीदूनी, फोज माहि जई फूटा।—का. दे प्र.

उ०—२ तेजवत नवि मानइ साट, वाहर चालइ ऊभट वाट। दल दीपता घणा असवार, पायदळ तणउ न जाणउ पार।

—का. दे. प्र

४ छिलका, भूसी।

स पु.—५ स्वर्ण या रौप्य की चपटी पत्ती पर वेल की खुदाई करने का एक औजार।

६ झूड, समूह।

७ खेत मे चिडियो को उडाने का रस्सा विशेष जिसे घुमा कर शब्द उत्पन्न किया जा सकता है। (शेखावाटी)

८ इस प्रकार से चिडियो को उडाने की क्रिया। (मि ताट)

९ अपेक्षा, वास्ता।

उ०—निज थाट खोय फीटा निलज, साट न बूजै सार री। आट बाट भागै अकल, चाट लगै विभचार री।—ऊ का

१० एवज, वदला।

उ०—चटडा हाट हाट चुगलाला, साटै खडग ताय सोचरिया। वहियौ नही वै न तत वहिया, अनत कह्यौ तै ऊगरिया।

—महाराणा कुभा रौ गीत

१२ घोडे के कान मे वालो की वनी आकृति जो पैर मे पहनने के गहने के आकार की होती है।

उ०— . . जेहै दीठै दुरजन नै हीए त्रासक पडइ, छाडइ घाट, घोडा तणा कानसोरा माहि साट सावरिया दीसइ, परसैन्य पइसइ, भाले ताडइ सेर पाडइ, मुहि मारइ, राउत पचारइ . . .।

—व स.

१३ सम्बन्ध।

उ०—ऐसी सगती साधकी, ज्यु वौपारी हाट। जनहरीया जब गाहकु, सबद मिळावै साट।—अनुभववाणी

१४ ज्ञान, व्यवहार।

उ०—सेखोजी उठै हीज ऊभा रह्या। साढ करनै उग्रसेन रा साथ सू कह्यौ—म्हैं म्हारा धणी रौ मारण हारौ मारियौ छै।

३ देखो साढी' (२) (रू. भे.)

उ०—मोती किसिउ ओपीइ, सख किसिउ धउलीइ, प्रवाला किसिउ रगीइं, साढ सोलउं सोनउ किसिउ सोधीइ, दूधि किसी चोपडाई कीजइ, इक्षुरसि किसिउ माधुरच कीजसिइ, सुमाणस किसउ सीख-वीसइ ?—व स.

साढसती, साढसाती-सं. स्त्री.—१ शनि ग्रह की साढे सात वर्ष, साढे सात मास या साढे सात दिन की दशा विशेष जिसका फल बहुत बुरा या शुभ होता है। (फलित ज्योतिष)

वि. वि.—देखो 'पनोती'।

रू. भे —साढासाती।

साढा-स स्त्री —१ पवार राजपूतो की एक शाखा।

२ देखो 'साढी' (२) (रू भे.)

उ०—तनु तोलता टाक कौ, गुण-मणि गणित न थाइ। साढा पन्नर वरमनी, सोल समीपि जाइ।—मा. का. प्र,

साढाचिमोतर, साढाचोतर, साढाचोमोतर, साढाचोहत्तर, साढाचोहोत्तर-देखो 'साढैचोमोत्तर' (रू. भे)

उ०—ताहरा कागळ एक लै नै लिखियौ। कागज सावटि नै माथै साढाचोहत्तर दे नै कागळ सावटि दियौ।

—सत री वाघी लिखमी री वात

साढाळी-सं. स्त्री.—देवी।

वि० वि०—साडी (लोवडी) नामक ऊन का श्याम वस्त्र ओढने के कारण इनका यह नाम पड गया है।

साढासाती—देखो 'साढसती' (रू भे.)

साढी-स स्त्री.—१ दूध के ऊपर जमने वाली मलाई।

२ तीन और तीन से अधिक समस्त सख्यावाची शब्दो के आगे लगने वाला शब्द जिसका अर्थ आधा होता है।

रू भे —साडा, साडी, साडै, साढ, साढा, स ढे।

साढू-स. पु [सं सह+ऊढ, श्याली+ऊढा] पत्नी की वहिन का पति साली का पति।

साढै—देखो 'साढी'(२) (रू. भे)

साढैचो तर, साढैचोमोतर, साढैचोहतर-स पु —विशेप अर्थ प्रकट करने वाले अक।

वि० वि०—किसी गुप्त पत्र या आलेख पर लगाया जाने वाला ७४॥ का अक जिसका अर्थ है कि यह गुप्त है। अनधिकृत व्यक्ति द्वारा पढे जाने पर पढने वाले को पाप लगेगा। ऐसी जनश्रुति है कि अल्लाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध चित्तौड युद्ध मे इतने हिन्दू मारे गये थे कि उनकी जनेऊ का तौल ७४॥ मन हुआ। इसी आधार पर इस संख्या का विशिष्ट अर्थ हो गया जिसके अनुसार अनधिकृत व्यक्ति द्वारा पढे जाने पर इन ७४॥ मन जनेऊ वालो की हत्या के वरावर पाप उसे लगेगा।

रू. भे.—साढाचिमोतर, साढाचोतर, साढाचोमोतर, साढाचोहोतर।

साढौ-सं. पु —१ सत्तर पाजेमूत के धागो का समूह (एक पाजा पाच धागो का होता है), वुनकर।

२ देखो 'साढौ' (रू भे.)

उ० —तठै राजा साह री वेटी पूछियौ, कही, 'थारो सपेत साढौ परणी थी, तिको मगाय।' तद भी साढौ मगाय देसै तौ कासू ? ओ दूहौ माडियौ छै।—ठकुरै साह री वात

सात-स. पु [स. सप्त] १ पाच और दो का योग।

२ पाच और दो के योग की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७

उ०—दोय प्रकार का काव्य रूप च्यार प्रकार की वाणी। सात प्रकार का सर च्यार सू लेकै चढावै। आठमै सरको झट पर वै चोरासी वध रूपको कै सरिजणहार।—सू. प्र.

वि.—१ पाच और दो के योग के समान।

२ सत्य, सच।

उ०—धरण एक धारणा, पार परमोद अपंपर। सात वाच सजमी, वाहन करै भागलपर।—पा प्र

रू. भे —सत्त।

सातकाळी-स. स्त्री. यौ —वे सात वर्ष जिसमे निरंतर दुर्भिक्ष रहा हो।

रू. भे.—सतकाळी।

सातकुभ-स. पु. यौ [स. शात+कुभ] स्वर्ण, सोना। (अ. मा)

रू. भे.—सातकुंभ, सातिकुभ।

सातकुळ-स. पु. यौ.—पर्वतो के सात कुल जो निम्न माने जाते हैं—(१) हिमालय, (२) विषध या पार्श्वनाथ, (३) विध्याचल, (४) माल्यवान (पूर्वीघाट), (५) परियात्रिक (अरावली), (७) गधमादन (पश्चिमी घाट) और (७) हेमकूट (सतपुडा)।

सातखणौ—देखो 'सतखणौ' (रू भे.)

सातणौ, सातबौ-क्रि स.—१ स्वीकार करना, लेना।

उ०—१..........जउ मुक्ताफल तणी मोट वाधी तु चिणउठी किसिउ कीजसिइ लाधी, इद्रनीलमणि पामइ तु काच कवण सातइ, जइ अम्रतपान पीजइ तु काजीइ किसिउं कीजइ, जउ द्राक्षाफल दीसइ तउ महू कवण नउ वीसरइ ?—व. स.

उ०—...... ..गौरी सण कातइ, लाछि वस्तु सातइ, नारद हेरउ करइ, नव खडि फिरइ, धनद यक्ष भडारउ करइं, इसिउ रावण नरेस्वर।—व. स

२ आदर करना, सत्कार करना।

सातणहार, हारौ (हारी), सातणियौ—वि०।

सातिओडौ, सातियोडौ, सात्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सातीजणौ, सातीजबौ—कर्म वा०।

तठै सीरपाव री साटौ कीयौ। तठै वळै कुवरजी हारीया।

—रीसाळू री बात

४ वह वैवाहिक व्यवस्था जिसमे पुत्र के लिए वधू प्राप्त करने हेतु बदले मे वधू पक्ष वालो के पुत्र के लिए कन्या देने की व्यवस्था हो।

रू भे—सटौ, सट्टौ, साट।

साठ, साठ–वि [स षष्ठि, प्रा. सट्ठि] पचास व दस के योग के समान।

स पु—१ पचास व दस का योग।

२ उक्त की सूचक सख्या।

उ०—पहिरण ओढण कवळा, साठै पुरसै नीर। आपण लोक उभाखरा, गाडर छाळी खीर।—ढो मा.

३ इस प्रकार लिखी जाने वाली सख्या—६०।

रू. भे—सठि, साटौ।

साठमौं, साठवौं–वि—जो क्रम मे ६० वें स्थान पर आता हो या ६० वें स्थान पर हो।

साठि साठी, साठी–स. पु.—१ चावलो की एक प्रकार की किस्म विशेष।

२ साठ की सख्या।

उ०—साठि वरस वावरता पुहुचइ, धान तणा कोठार। समीयाणौं 'सातल' सपराणउ, माहि भला भूभार।—का. दे प्र

३ साठ वर्ष की आयु का व्यक्ति।

साठि'क, साठिहेक—देखो 'साठेक' (रू. भे.)

उ०—..... बीदौ, भानौ, सादूळियौ, बीठलौ, दूदौ धावड, पालिहयौ थोरी बीजा ही सगदिदपेसं समेत सहि लावा भला आदमी साठिहेक उठा खडि अर राजडवाळै आइ ऊतरिया।—द. वि.

साठीक, साठीकड–वि—साठ वर्ष की आयु का।

वि—साठ पुरुष गहरा।

साठीकौ, साठीकौ–स पु—साठ पुरुष गहरा कुआ।

उ०—१ लूआ था लारो लियौ, छाणी सा घर आय। सीतळता लीधी सरण, साठीका मैं जाय।—लू

उ०—२— .....कूटा काढिआं, भूखै मयद ज्यौ हूकार करता, मद वहता, हाथी ज्यौ जोहा खाता भाद्रवै री गाज ज्यौ आवाज करता, साठीक रै भमण ज्यू चसळका करता, भागै गाडे ज्यौ वठठाट करता,... ..इण भाति रा सो ऊठा ऊपर सी पलाणा मडिआ छै।

—रा सा स.

मुहा०—साठीकौ किसौ चाख नै खोदै=किसी कार्य का परिणाम पहले मालुम थोडे ही होता है।

साठेक, साठे'क, साठेक–वि.—साठ के लगभग, करीब साठ के योग के बराबर।

रू भे.—साठि'क, साठिहेक।

साठै, साठौ–स. पु—१ साठवां वर्ष।

२ साठ की सख्या।

वि.—१ साठवा।

२ साठ गुना।

उ०—सवळौ भरीजै तद हासल इजाफा हुवै। काठा गेहू मण १५००० बीज वावै तिकै साठा निपजै।—नैणसी

साड–स. स्त्री.—१ शब्द, ध्वनि, आवाज।

उ०—गढ लियत गहलोत प्राणपुर, साइयै सोगत पख सह। वाया वळण अवळणा वाया, गोविंद गोविंद साड गह।

—महाराणा कुभा री गीत

२ देखो 'आसाढ' (रू भे.)

उ०—साड उतरियौ रै सावण लाग्यो, काळी काळी घटा उमड़ आयी। रुत आयी रै पपइया, तेरै बोलण की रुत आयी।

—लो गी.

साडलउ, साडलौ—देखो 'साडी' (मह, रू भे.)

उ०—चीर दुरयोधन खाचिया, पाचाली सु करीय उपाय कि। सौ अट्ठोत्तर साडला, प्रगट्या नवनव सीस पसाय कि।—ध. व. ग्र.

२ देखो 'साडौ' (अल्पा, रू. भे)

उ०..... . माकुण माचा भिरिया, जु भरिया गोदडा, कान मिलि भरिया, रालडा फुहडा, पग भरिउ साडलउ, घरसाला भरिउ घुटण, हाथि पाणी नही, पग पाणी नही, मलमलिन सरीर, दोठइ ओकारा आवइ, इसी फुहडी सुगामणी घरनारि कालिकालि घणी।

—व. स

साडा—देखो 'साढौ'(२) (रू भे.)

साडी–स स्त्री.—१ रवि की फसल।

२ देखो 'साडी' (रू. भे.)

३ देखो 'साढी' (रू भे)

साडू—देखो 'साढू' (रू भे)

साडै—देखो 'साढौ'(२) (रू. भे)

उ०—मैंनेजर घणौ मोटौ मूंडौ करनै बोल्यौ—'तीन, साडै छै, अर साडै नौ वज्या रा सो माय बिना नागा करघा आवणौ पडैलो।

—तिरसकू

साडौ—देखो 'साडौ' (रू भे)

उ०—टोकणी, लोटी, थाळी, वाटली सरव वासण मगाया। सीधौ मगायौ। साडौ मगायौ। आप सनान करि साडौ पहिर रसोई वणाई। पाक तयार हुवौ आप जीमी। भव्रा नु, छोकरी नु जीमाया।—स्यामसुदर री वात

साढ—देखो 'आसाढ' (रू. भे)

उ०—१ जेठ न आवै साढ न आवै सावण अलवत आई रे, सूरचा वीर वदळौ ल्याइ रे।—लो. गी.

उ०—२ जेठ उतरियौ साढ उतरियौ तौ सावण उतरियौ, मारुजी रै खेजा जावौ वदळौ।—लो गी

२ देखो 'साद' (रू भे.)

उ०—१ घण सात्रव दळ घेरि दुमह आघात दबाया ।—व भा.
उ०—२ मोदन इम सादूळ री पूरण राज बळ पूर । राज भदा-वह जिण रचै सात्रव दळ दळि सूर ।—व भा
उ०—घण अहिरण घण घाउ, साम्हे चाचरि सात्रवा । वाहै माहै 'बीठलो', खाडो खाटेराउ ।—र वचनिका

सात्राजित-स पु [स] सात्राजित् के वशज राजा शतानीक का नाम ।
सात्राजिती-स पु. [स] सात्राजित्-पुत्री सत्यभामा का एक नामान्तर ।
सात्रुत, सात्रुहर—देखो 'सात्रव' ।
उ०—सकै वका सात्रुहर, सूर पराक्रम सेर । 'प्रथरग' माह अवलिया, जग मह कीधो जेर ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
सात्वक—१ देखो 'सात्विक' (रू. भे)
२ देखो 'सात्यकि' (रू. भे.)
सात्वत-स. पु. [सं.] १ भगवान् विष्णु का एक पार्षद ।
२ यादवकुलोत्पन्न एक राजा जो सत्व राजा का पुत्र था ।
३ भगवान् श्रीकृष्ण का नाम ।
४ बलराम, बलभद्र ।
सात्वति, सात्वती-स स्त्री. [स सात्वती] १ शिशुपाल की माता का नाम जो वसुदेव की बहन थी ।
२ बलभद्र की सहोदरा सुभद्रा का नाम जो कि पाण्डव-पुत्र अर्जुन की पत्नी थी ।
सात्त्विक, सात्विक-वि [स सात्त्विक] १ सतोगुणी, सत्वगुणी ।
उ०—दादू राजस कर उत्पत्ति करै, सात्विक कर प्रतिपाल । तामस कर परळै करै निर्गुण कौतिक हार ।—दादूवाणी
२ सत्वगुण से सम्बन्ध रखने वाला ।
३ प्राकृतिक, वास्तविक ।
स पु—१ सात्त्विक भावो को प्रदर्शित करने के चार प्रकार के अभिनयो मे से एक ।
२ विष्णु भगवान् । ३ ब्रह्मा ।
रू भे.—सातिग, सात्वक ।
सात्विकभाव-स पु.—१ तीन लघु के ढगण के तृतीय भेद का नाम । (डिं. को)
२ शुद्ध एवं पवित्र भाव ।
साथ-स पु.—१ सग रहने का भाव, सगत, सहचार । (डिं को)
उ०—तोहि हू जोती हीडू छू, वन वन परवत ठाम । मन थिर राखु, हू छू दुखिणी साथ तणा तह्यो स्वामि ।—नळ ख्यान
क्रि. प्र.—करणो, राखणो, व्हैणो ।
मुहा०—१ साथ छूटणो=अलग होना, जुदा होना । २ साथ देणो=मदद करना, सहायता करना । ३ साथ मावणो=सभाग करना ।
२ सग रहने वाला, साथी ।
उ०—साथ तो छत्र्या उतरीयो छै । कवर वीरमदे मरजीदान खवास नै नै पना कै म्हैल आयो ।—पना
३ परिग्रह ।
उ०—१ साथ कुरै 'जसवत' सह, दुनी अनाथ दयाळ । हाथ न आवै हे हरी, कमधा नाथ कृपाळ ।—क का.
उ०—२ आइ'नै राणाजी री मुजरो कियो । सु ईयै भात आया सु राणा री साथ छिप गयो नजर आवै नही ।
—देवजी बगडावत री वात
४ सेना, फौज । (अ. मा, ह ना. मा.)
उ० – १ हाडा अर्जुनराज समेत अल्प साथ सू राजा भीम रै माथै प्रस्थान कियो ।—व भा
उ०—२ रा. राजसिंघ सुरजमलोत मु. नैणसी रा सबळसिंघ प्रागदासोत नू पोकरण री मदत वासतै घणां साथ सूं विदा किया ।
—नैणसी
उ०—३ जामरा घोड़ा हजार १०००० आजमखान करै निपट सखरो साथ ।—नैणसी
उ०—४ उठै सारग खान नू मारियो ओर ही सारग खान रो घणो साथ मारियो ।—नैणसी
५ समूह, झुण्ड ।
उ०—१ रीधो साथा रैणवा, जस गाथा जेहत्त । भाराणी वाथा भरै, आथा दिए अवत्त ।—बां. दा.
उ०—२ सुचि नामि विणजारो बोलि, चेदि रायनि देस । साथ सहू ए विणजि जामि, सुबाहु याहा नरेस ।—नळाख्यान
६ सग, साथ ।
उ०—१ आठ हजार फौज साथ लीन्ही भलो चुणावो साथ सागै लियो ।—मारवाड रा अमरावा री वारता
उ०—२ लूवा झड नदिया लहर, बक पगत भर बाथ । मोरा सोर ममोळिया, सावण लायो साथ ।—बा दा
७ सरक्षकता, मदद ।
उ०—विस रो प्यालो राणाजी भेज्यो, दोज्यो मेड़तणी रै हाथ । कर चरणाम्रत पी गई, म्हारै सबळ धणी रो साथ ।—मीरा
८ घनिष्ठता, मेल-मिलाप ।
९ वश, जाति ।
वि —१ सहित, पूर्वक ।
उ०—१ नवाब कासिमखान, करीमखान प्रमुख आपरा मुख्य सामत सहायक करि बडा बरूथ रै साथ जूझण रा साहसी कुमार दारा साह नू ओरग, मुराद रै साम्हो विदा कीधो ।—व. भा
उ० —२ भाटी समुद्रसिंह आपरी सीमा मैं वसी रा लोका सहित सीसणा नू गोळ दिवाड गिनायता नूं आदर रै साथ राखिया ।
—व भा
२ शामिल, सम्मिलित, शरीक ।
उ०—मुहम्मदसाह बादसाह पठाण साम्हो चढियो कमरुद्दीन खा

पाटी डालने हेतु छेद किया हुआ ४ तपा हुआ. ५ आकर्षित किया हुआ ।

(स्त्री. सालियोडी)

साळियो, साळियो, सालियो–स. पु.—१ बैलगाडी के अग्रभाग को पृथ्वी से ऊपर रखने के लिये बैलगाडी के अग्रभाग मे बाधे जाने वाले लकडी के डडो मे से एक ।

(मि डाया)

२ देखो 'सगाळ' (रू भे.)

सालिवाहण, सालिवाहन–स पु [स. शालिवाहन] शक सवत् को चलाने वाला शक जाति का एक प्रसिद्ध राजा ।

सालिसिरा–स पु [स शालिशिरा] कश्यप एव उनकी पत्नी मुनि के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र देवगन्धर्व ।

सालिसूरज, सालिसूरघ–स. पु [स. शालिसूर्य] कुरुक्षेत्र का एक पुण्य-स्थल जहा शालिहोत्र ऋषि का आश्रम था ।

सालिहोतर, सालिहोत्र–स पु. [स. शालिहोत्र] १ प्राचीन ऋषि का नाम, जिसने शालिहोत्र नामक ग्रन्थ (शास्त्र) की रचना की थी ।

२ वह शास्त्र जिसमे विशेषत घोडों की चिकित्सा एव उनके शुभाशुभ लक्षणो का ही वर्णन होता है ।

३ घोडा, अश्व ।

रू. भे.—सालहोतर, सालहोत्र, सालिहोनरी, सालिहोत्रि, सालिहोत्री, सालोतर, साहलोतर ।

सालिहोतरी, सालिहोत्रि, सालीहोत्री–स पु [स. शालिहोत्री] १ घोडे के शुभ-अशुभ लक्षणो एव उनकी तथा अन्य पशुओ की चिकित्सा के सम्बन्ध में पूरी तरह जानकार व्यक्ति ।

२ देखो 'सालिहोत्र' (रू. भे.)

उ०—खेत्र खुरासाणी । बाहडदेसना बोरीया । लहिहुया । गगेटिया । हस जादर । ऊडणभमर । उग्रस्या फोरणा । चपल चरण विस्तीरण । सालिहोत्रि प्रतिस्टा सिद्धा । विसेम गति करइ । मनस्यू चालइ ।—का. दे प्र

रू. भे.—सालोतरी, साहलोतरी ।

साळी, साळी, साली–स स्त्री [सं. श्याली] १ पत्नी की बहिन ।

उ०—१ वाचइ गीत साळिया वाता, करता मगळ तइ गीत कहइ । गवरी नाह करइ रायअगण, हसत पगा तळ गंग वहइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ साळचा हदो साथ, अरज करै छै आपनै । हथळेवा रो हाथ, जचियो पर रचियो नही ।—रामनाथ कवियो

मुहा.—साळी नै छोड सासू सू ममखरी करणी—उचित व्यक्ति से मजाक न करके ऐसे व्यक्ति से मजाक करना जिसके साथ मजाक करना अनुचित समझा जाता हो ।

[स शालि] २ चावल ।

रू. भे.—साल, साळि, सालि ।

सालीणो–वि. (स्त्री. सालीणी) शापित ।

सालुळणो, सालुळबो–क्रि. स —१ विनय करना, प्रार्थना करना, स्तुति-गान करना ।

उ०—नेम धारियो नरेस, पहा न को चढै पेस, देस पडै सको देस मसो बोज गयो रेस । मदै बेग उत्तो लेस, तांण मूछ करै तेस, सालुळै प्रगेस मेस, राघवेस रावरेस ।—र. रू.

२ युद्धार्थ प्रस्थान करना गमन करना ।

उ०—१ लगि लोग सालुळो, कुळी चलटण्यां चढैना । मगीना मावळा, धाम ढाचो धणरैना ।—मे म.

उ०—२ गुज्जर नगा गम्बर, ताद मिळै दिल्ली तणा । मेन उजेणी सामुहा, सालुळिया दळपूर ।—र. वचनिका

३ आक्रमण करना हमला करना ।

उ०—धाढ़ै पुरार चढ साखि धाड, रवि उदय अस्त लगवन राढ । सालुळै विदळ वरळ ममत्र, रत सेत खगै न मिटै रगत्र ।—रा रू

क्रि अ —४ प्रारम्भ होना, शुरू होना ।

उ०—१ चळ नहूरै चळ सालुळी, चळ चळ धुर हुननन्न । घावा बार निदान रो, बीस हजार मुगल्ल ।—रा रू.

उ०—२ राडो सालुळै सरचगा वध वधै मोटा रावजादा, सनारा उछाजा जूह उमटै मजीत । घोर वेला प्रथम्मी आपाणा सूत हेक घाटै, आसमान फाटै थभ लगायो 'मजीत' ।

—अजीतसिंह चूंडावत रो गीत

५ चलना ।

उ०—१ समर वाजिया लाग फौजा उमर सालुळी, घोर सर गुमर घोरम धमामी । उरड पडियो अविधि घटा ऊपर अनर, मार धारा बिचै भमर नामी ।—चादसिंघ रो गीत

उ०—२ दानमन्ना मावळा दमर, नगर लाज चळहळै लार । सालुळ अस लख गळा मपारै, पटहथ जेहा विरद पगार ।

—ऊको बोगसो

उ०—३ मेडतिया महाराज दळ, फिदा मुदै करनार । दुद अमदी सालुळै, त्या हदी तरवार ।—रा. रू

६ उमडना ।

उ०—१ लका लेवण लगरी, कप फौजा इधकात । प्रळै करण जाणै प्रथी, सालुळिया दध सात ।—र रू

उ०—२ आण तै नीर पाताळ उवेडिया, कमठ वाराह चा माण वळिया । सेस जळिया गुमर गगजळ सालुळै, महण परवाह परवाह मिळिया ।—जोगीदास कवियो

७ प्रज्वलित होना, जलना ।

उ०—है फरहास खुदाय हमारै, धान राम जिम धूहड़ धारै । सुणै वचन धिक वीर सिघाळा, जाणै जेठ सालुळी ज्वाळा ।—गो रू

८ झुकना ।

सालाळी-स. स्त्री.—कटार, कटारी। (ना. डि. को)

सालावती-स स्त्री [स. शालावती] विश्वमित्र मुनि की एक पुत्री का नाम।

साळाव्रक, साळाव्रख-स पु. [स. शालावृक] १ कुत्ता, श्वान। (अ. मा; ह. नां. मा)

२ भेडिया।

३ शृगाल।

४ बदर।

५ बिल्ली।

रू. भे.—सालाव्रक, सूळाव्रक, सूळाव्रख।

साळासेली, साळाहेली-स. स्त्री.—पत्नी के भाई की पत्नी, साले की पत्नी।

उ॰—१ आप भवरजी करवा पलाणिया मिरगानैणी नै वैल जुपाय। साळाहेळी वगड बुहारती, नणदोई नै लटक जुहार।
—लो. गी.

उ॰—२ रथ ऊनर ऊभा राय अगण, हरि ग्रहियइ हरि रइ ताइ हाथ। साळाहेली अनइ सासवा, निरखइ नयण अनाथानाथ।
—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—सळायली, साळायली।

साळि, सालि—देखो 'साळी' (रू. भे.)

उ॰—१ उडिद पीस आटा किया, चावल की भई दाळि। हरिया रुचि कर जीमिया, सब तै मीठी साळि।—अनुभववाणी

उ॰—२ सालि दालि घ्रत घोलसु, भला पेट काठा भरघा। 'समयसुदर' कहइ अव्यासिया, साध तव अजै न साभरघा।
—स. कु.

उ॰—३ करपूरवासो वि आगुली सालि, मडोर तणा मग तणी दालि, मोना तणइ स्यालि, सालणा तणी पालि, सुरहा घी तणी नालि, वि पहर तणइ कालि, परीसइ आखडियालि, इसिउ पुण्य विणु न प्रामीयइ।—व स

२ देखो 'साळ' (रू भे)

उ॰—आज सापडता भखेरो आयो थो ज्यू आयो। जरै आप। दौडि सालि मैं गई, नै हूं रजी स् भराणी।
—वीरमदे सोनगरा री बात

सालिक—देखो 'स्यालक' (रू भे)

उ॰—डावी देव जिमणी भइरव, डावु खइर डावु राजा, डावा लाली जिमणी मलाली, तदल भरु भाण, नीर भरि वहिढू सवछी गाइ, सपलाणु घोडु रासु धोगी। एतनि प्रकारै करी अम्हारा मकन वरणवीता सोभइ, अहो सालिक वोलि।— व स.

सालिकर-स. पु.—छदशास्त्र मे टगण के तेरहवें भेद का नाम। (डि को)

सालिगराम, सालिग्रान— देखो 'साळगराम' (रू भे)

उ॰—१ अम्ह कजि तुम्ह छडि अवर वर आणै, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगराम सूद्र अहि सग्रहि, वेद मत्र म्लेच्छा वदनि।
—वेलि

उ॰—२ हुओ हेक-मीनू महाजुद्ध हाम, गळमाळ तुळछी अनै साळिग्राम। सहू भीमरा भीच आखाडसिध्ध, मरण प्रव्व सपेख मगळीक किद्ध।—गु. रू व.

सालिणी, सालिनी-स. स्त्री [सं. शालिनी] १ ग्यारह अक्षरो का एक वृत्त विशेष जिसमे क्रमश. एक मगण, दो तगण और अत मे दो गुरु होते हैं। मतान्तर से इसमे क्रमश चार गुरु, दो रगण एव एक गुरु होता है।

२ वार्षिक।

सालिपिंड-स. पु [स शालिपिण्ड] कश्यप एव कद्रू के गर्भ से उत्पन्न एक काद्रवेण नाग का नाम।

सालिभद्र-स पु —१ एक राजा का नाम। (जैन)

२ महावीर स्वामी के समय का एक धनाढ्य सेठ जिसके ३२ पत्नियां थी।

वि. वि.—एक बार कोई दुपट्टे (साल) वेचने वाला आया। उसके साल इतने महगे थे कि उस देश का राजा भी नही खरीद सका। उन्ही दुपट्टो को इसने खरीदे एव खरीदने के एक दिन बाद ही अपने लायक न समझ कर बाहर फेक दिये जिन्हे ओढ कर हरिजनो की स्त्रिया राजमहल मे सफाई हेतु गई। वहा रानी ने देखा और पूछने पर पता चला कि अमुख सेठ के घर से ये प्राप्त हुए है। तब राजा ऐसे सेठ से मिलने आया। उस समय यह अपनी रानियो के पास था। इसकी मा ने कहलवाया कि बेटा स्वामी मिलने आये हैं। तब इसने सोचा कि क्या मेरा भी कोई स्वामी है? यह विचार आते ही इसे ससार से विरक्ति हो गई और इसने प्रतिदिन अपनी एक पत्नी को छोड़ना शुरु कर दिया तब इसके साले ने आकर इसे कायर बताया और कहा कि सयम ही धारण करना है तो एक साथ सभी पत्नियो को छोडो। तब इसने अपनी ३२ पत्नियो को एव साले ने अपनी आठो पत्नियो को छोड कर सयम धारण कर लिया।

साळिम, सालिम-वि [अ] १ पूर्ण, पूरा।

२ स्वस्थ, निरोग।

३ निरापद, सज्जन।

उ॰—सुयण लाखो सदा सालिम, जगत जाणै वडो जालिम। लहण भेदा गुणा लाइक, निवड दाता नरा नाइक।—ल पि

रू. भे —सालम।

सालियांणो, सालियानो-स पु —गौड वश के अन्तर्गत एक क्षत्रिय वश।

वि —वार्षिक, सालाना।

सालियोडो-भू. का कृ —१ खटका हुआ, कसका हुआ २ दुखदाई हुवा हुआ, दर्दयुक्त हुवा हुआ. ३ पलग, खाट आदि के पाये मे

उ०—वह छूटै कँवर सोक नलीसर सीघणि सघर साचविय। घुवि जाए धराहर सालुळि सेहर मेघ महाभर माचविय।—गु. रू. व.

९ वाद्य यंत्रो का बजना।

उ०—केई ढोल कसाळ, धरा ब्रहमड धडक्कै। सुरणायं सालुळै, राग सीधूश्रो रड़क्कै।—पी. ग्र

१० उलटना। (डि. को.)

११ होना।

उ०—गाज अवाळ पड रोल गेंणाइया, सालुळै सिंधुयें राग सरणाइया। कूद ग्या कायरा वाजती काहली, वीर श्राकासमा सूग्मा वलकुली।—रुखमणी हरण

१२ गाया जाना।

सालुळणहार, हारौ (हारी), सालुळणियौ—वि०।

सालुळिश्रोडौ, सालुळियोडौ, सालुळघोडौ—भू० का० कृ०।

सालुळीजणौ, सालुळाजबौ—कर्म वा; भाव वा०।

सलळणौ, सलळबौ, सललणौ, सललबौ, सलुळणौ, सलुळबौ, सालळणौ, सालळबौ, सालूळणौ सालूळबौ—रू० भे०।

सालुळियोडौ-भू. का कृ.—१ विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ, स्तुतिगान किया हुआ. २ युद्धार्थ प्रस्थान किया हुआ, गमन किया हुआ. ३ आक्रमण किया हुआ, हमला किया हुआ ४ प्रारम्भ हुवा हुआ, शुरू हुवा हुआ. ५ चला हुआ. ६ उमडा हुआ. ७ प्रज्वलित हुवा हुआ, जला हुआ. ८ फुका हुआ. ९ वाद्य यन्त्र वजा हुआ. १० उलटा हुआ ११ हुवा हुआ. १२ गाया हुआ।

(स्त्री सालुळियोडी)

साळू-सं. पु —१ मागलिक कार्यों पर काम में लाया जाने वाला लाल कपडा।

२ सधवा स्त्रियो के श्रोढने का सुदर एव कीमती वस्त्र, साडी। (डि. को)

उ०—१ वाळ बाळ लख बचन श्रव, प्रजळ जीव दूं प्राण। मा जाई करजे मती, साळू सळू समाण।—रेंवतसिंह भाटी

उ०—२ पाग सुरंगी पीव री, साळू त्रिया सुरग। केसर भीना कुमकुमै पुसवा भरचा पिलग।—अग्यात

उ०—३ सिर साळू रग चूनडीवर, भल दिखणी री चीर है। अल्लै-पल्लै मोर पपिया, विच मैं चादो कीर है।—नारी सईकडो

३ विवाह के समय मे श्रोढाई जाने वाली लाज श्रोढनी। (मा. म)

४ किसान स्त्रियो के श्रोढने का लाल रग का वस्त्र विशेष।

उ०—डोरा डिगमगता श्राटी खुल डुळनी, तिरछी झाकणिया वरछी सी तुळती। दुग्वळ लाजाळू साळू मैं दीसै, भामण भूखाळू व्याळू विन बीखै।—ऊ का

५ रहट के उस लट्ठ का सिरा जो खडे चक्र श्रौर पानी लाने वाली माळ को ऊपर लाने मे सहारा देने वाले घेरे से जुडा रहता है।

६ शीतकाल मे मस्ती मे श्राए हुए ऊट के मुंह से बाहर निकलने वाली गलसूंडी।

(मि. गुल्ली)

रू भे.—सळू, सिळू।

अल्पा;—साळूडी।

सालूकिनी-स. पु. [स. शालूकिनी] कुरुक्षेत्र मे स्थित एक तीर्थस्थान।

साळूडौ—देखो 'साळू' (रू. भे.)

उ०—नौसर तोडचौ नवलखौ, वेसर घाल्यौ वक। साळूडौ सकुचायगौ, निरख्यौ इसो निसक।—अग्यात

सालूर-स पु [सं. शालूर] १ मेढक।

उ०—१ जिम सालूरा सरवरा, जिम धरणी श्रर मेह। चपावरणी वालहा, इम पाळीजइ नेह।—ढो. मा

उ०—२ श्रव तर्जे नहि कोइला, सरवर सालूराह। राज हिवइ मा पांतरउ, श्रा धण धड अवराह।—ढो. मा.

२ डिंगल का एक मात्रिक (छन्द) गीत विशेष जिसके विषम पद मे १६ तथा सम पद मे १२ मात्राएँ होती है किन्तु श्रादि के पदो मे १८ मात्राएँ होती हैं। प्रथम एव तीसरे तथा दूसरे व चौथे चरण का तुक मिलता है। (र ज. प्र)

३ डिंगल का एक वर्णिक छद जिसके प्रत्येक पद मे प्रथम दो गुरु तथा २४ लघु श्रौर श्रन्त मे एक सगण होता है। मतान्तर से इसके प्रत्येक पद मे क्रमशः तगण, श्राठ नगण एव लघु गुरु होते हैं। इसे सालूर गीत भी कहते है। (र ज. प्र.)

सालूळणौ, सालूळबौ—देखो 'सालुळणौ, सालुळबौ' (रू. भे)

सालूळणहार, हारौ (हारी), सालूळणियौ—वि०।

सालूळिश्रोडौ, सालूळियोडौ, सालूळघोडौ—भू० का० कृ०।

सालूळीजणौ, सालूळीजबौ—भाव वा०।

सालूळियोडौ—देखो 'सालुळियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सालूळियोडी)

साळेवडौ, सालेवडौ, साळेवडौ-स. पु —चावल के श्राटे का बना एव पापड की तरह तल कर खाया जाने वाला पदार्थ विशेष।

उ०—प्रीसइ नारि पातली, ललकती ज वेणी, खलखती ज चूडी, लहिकतइ ज हाथि, खाड प्रीसती ज वादइ, जगु सहू को सवादि, भलभला भावता भीना वडा, सालणि सालेवडा, ...।—व. स.

साळै, सालै-क्रि. वि —पास, निकट, समीप।

साळैडी, सालैडी-स स्त्री.—साले की पत्नी, पत्नी की भाभी।

सालोक, सालोक्य-स. पु [स सालोक्य] १ पाच प्रकार की मुक्तियो मे से एक प्रकार की मुक्ति विशेष, जिसमे जीवात्मा भगवान के साथ अथवा उसके अन्य श्राराध्यदेव के साथ एक ही लोक मे वास करता है।

उ०—१ मुकत ही पाच प्रकार की, सालोक ही सामीप। सारूप

अो धन रैवणी दूभर है ।—फुलवाडी

उ०—२ अबार तांई म्हारी आख्या मे लूकही रै वास्तै मोरचो वाध्या, बारा-बोर री दुनाळी वदूक लिया, छै फुटो लावो-चौटो वैजू अर उण री सावचेतगी घूम रही ही ।—तिरमकू

रू. भे.—साउचेती ।

सावज-स. पु —१ सिंह, शेर ।

उ०—आगै मारग रै मे विचै नाहरी वैठी छै । पीछै पांवडा १०० ऊपरा नाहर वैठ्यो छै, तिको चावडी रै निजर आयो । तरै कह्यो, महाराज कवरजी, सावज वैठ्यो छै ।—जगदेव पवार री वात

२ वाघ, वघेरा । (ना. डि को.)

उ०—घेरै सिकार माहि ससा, लुवडी, सीह, रोभ, स्याळ, रीछ अनेक हिरण आदि देग्रर भेळा हुया छै । नान्हा जीवा पडेरा माहै आइ आइ पडे छै । अर सीह, सावज, रोभ कोसा ३ तिहु रै आतर हुता ।— द. वि

३ शेर का वच्चा ।

उ०—आपणे रवायद री फौजू कै लोहै की ढाल, सेरू की सावजू चित्रू की मिसाल । जमकेसं फिरसतै लगै असमाण जिनू कै देखैसै सूकै मदमसत फीलू कै डाण ।—सू प्र

४ खरगोश, हिरण आदि वन्य पशु जिनका शिकार किया जाता है ।

उ०—सादूळो हण सावजा खाट कमाई खाय । टुकडा साटै टेगडा; हुख हुख पूछ हिलाय ।— रेवतसिंह भाटी

५ मासाहारी पक्षी ।

उ०— मडीयउ भाजि मरगमड मूड, रडव्वड रैण करडक रूड । भडप्फड पखणि सावज भूळ, गुडत गयाघण गात्र सथूळ ।

—गु रू व.

६ योद्धा, वीर ।

उ०—अथग अचळ धिन 'जोध' अभनमा, सावज कुळ पैतीस सिरै । हरि मेलियो मथै हीलोहळ, गाजियो रावण मेर-गिरै ।

—किसनो आढी

७ देखो 'स्यामज' (रू. भे) (ना डि को)

रू. भे —सवज, स्यावज ।

सावजन-वि [स. सावज्ञ] घृणित, निंद्य, तिरस्करणीय ।

उ०—तह नहिं तमाम, घन सोत धाम, फळ फूल फार, अध्वग उदार । नहिं पहुँच नीच, मारज्जरि मीच, सावजन सक, निद्रा-निसक ।—ऊ का.

सावजळ-सं. पु.—माला । (ना डि को)

रू भे —सावभळ ।

सावभडो-स. पु.—डिंगल का एक गीत (छन्द) जिसके प्रथम द्वाले के प्रथम चरण मे २३ मात्राएँ होती हैं तथा अन्य तीन चरणो मे २०, २० मात्राएँ होती हैं एव चारो चरणो में तुकात मिलते है ।

(र रू.)

सावभळ—देखो 'सावजळ' (रू. भे.)

सावट्ट-स पु.—१ सूर्योदय के समय भेड़िये द्वारा राह पर बायी ओर से आकर दाहिनी ओर जाने की क्रिया । (अपशकुन)

उ०—'पाल' तणो परधांन तू, तू नायक वोहजाण । सूरज ऊगं सावट्ट, सो किसडो चंद्रभाण ।—पा. प्र.

२ श्रेष्ठ कपडो की पोशाक ।

उ०—१ राणै उदयसिंघ री पुत्री परणि, घणो उच्छव करि, मगित जणा री घणी आसीस लै करि, करह केकाण सोना सावट्ट महुरा घणी दे चित्रोड रो मेघ कहाई ।—द. वि.

उ०—२ चोयलई फेरइ डाईचो, पल्यंग सावट्ट सोडि । कुमरि कर मेल्हावणई, दीया भाव भूखण कोडि ।—रुकमणी मगळ

उ०—३ सावलोह भाला नइ सागि, लोह हथियार सवै मनरगि । नया सावट्ट ठेमइ पाय, उलगीइ कान्हडदे राय ।—का. दे प्र

३ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—१ अलूमानि जूजूआ दिवारघा, तेह सविहुनइ अनाम । सोना रूपा अनइ सावट्ट तीरी आप्या द्राम ।—का. दे. प्र.

उ०—२ सोना कळत्र सावट्ट साकुर, गिण देपहत न मनि ग्रहिया । पुगै दोह नगार प्रिथी-पुट, कहतै हरि चारण कहिया ।

—सगार सोढा रो गीत

४ तोता, सुग्गा ।

वि —१ नया, नवीन ।

२ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू भे —सावड्ड ।

सावडदी-स. पु —एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।

उ०—खाटो खीच फलका मास, दाळ वाटी न्यारी । सावडदी समोसा मूग, चावळ की तयारी ।—शि. व.

सावड्ड—देखो 'सावट्ट' (रू. भे)

उ०—जीमणा हाथ कानी सू डावा हाथ कानी आवै सावड्ड नै सागवणो कहीजै इण तरह सावड्ड उवेडा मागवणा मालाळा जाणीजै ।

—शकुन शास्त्र

सावढ-स. स्त्री.—१ कृपि की अधिष्ठात्री एक देवी जिसे कृषक हल जोतने व वीज वोने से पहले नमस्कार करते हैं ।

उ०—सूतल नाथा सर नासा सणकारी, फुरणी घूंघाता रासा फणकारी । भूसर धाया गल आवढ कढ भाखै, नम नम सावढ नै नाया, कण नाखै ।—ऊ का.

२ फसल काटने के पश्चात साड आदि के लिए छोडी जाने वाली कुछ फसल ।

३ मातृभूमि ।

रू भे.—सावड, सेवढ, सेवड, स्यावड ।

सावढमाता—देखो 'सावढ' (१) ।

सावण—देखो 'सावण' (रू. भे.)

उ०—१ सेठ कह्यौ—अै बाता साव कूडी । आ माया माडै नी रळीचीजै । धकला ज्यू कह्यौ त्यू करण सारू त्यार । वत्ता गच-ळका भवै ई नी काढूं ।—फुलवाडी

उ०—२ तद जुम्मा नै झूठ कैवणौ पडचो कै वा खुद आपरै हाथा कंवरसा साथै घात करची । इण कूडी बात नै कामेती साव साची मानली । तठा उपरात वौ जुम्मा रै साथै उणरै घर ताई गियौ ।—फुलवाडी

२ देखो 'स्वाद' (रू भे.)

उ०—१ मन दुख दाधा डोल मत, साधा जग तज साव । मानव भव भीता मिटण, गुण सीतावर गाव ।—र ज प्र.

उ०—२ पर घर रीझण करहला, नीघरिया घर आव । बीजा अेक झबूकड़ा, वेला अेको साव ।—जलाल-बूबना री बात

सावक–स. पु. [स शावक] १ बच्चा, बालक ।

उ०—बहुरि दूसरी द्रस्टात । कि इह तेज करि रतन हइ । बीजो द्रस्टात । कि तार कहता रूपौ हइ । किना इह तारा छै । कइ हरि-हस कहता सूरच कै ताक कै ससि कहता चद्रमा । सावक कहता बचा छै । कै ए हीरा छै ।—वेलि टी.

२ हस ।

उ०—'गजबधी' हस अभिनमै 'गांगै', सुज निज हेत खेध करि साथ । जळ जिम खळ मूको साहिजादो, भीम दूध भखियौ भाराथ । सावक सूरजसिघ समोभ्रम, अेम वरजाणै सु प्रमाण । नीर टाळि जहगीर सुनदन, खीर जही भखियौ खुमाण ।—गजसिह राठौड रो गीत

३ देखो स्रावक' (रू. भे)

रू. भे —सावज, सावग ।

सावकअडळ, सावकअडल–स पु —डिंगल का एक छन्द (गीत) जिसके प्रत्येक चरण मे, अन्त मे, चौकल सहित सोलह मात्राऐं होती हैं एव जो शब्द प्रथम चरण के अन्त मे आता है वही चारो चरणो के अत मे भी आता है । (र. रू)

उ०—लै बहु पद साणोर लख, विखम तिकण मैं वीर । इक सबदो चोकल अगर, सावकअडल सधीर ।—र रू.

वि. वि —इसके द्वितीय भेद मे प्रत्येक चरण मे, अन्त मे, त्रिकल सहित पन्द्रह मात्राऐं होती है । इसमे भी जो शब्द प्रथम चरण के अन्त मे आता हे वही चारो चरणो के अन्त मे भी आता है ।

इसके द्वितीय भेद मे चार ढाले होते हैं । यदि इसका एक ही ढाला रखा जाय तो यही 'गाहा चोसर' गीत हो जाता है ।

सावकरण–स पु. [स. श्यामकर्ण] १ घोड़ा, अश्व । (डि ना. मा.)

२ देखो 'स्यामकरण' (रू भे)

सावकी, सावको–सं स्त्री.—सौतेली ।

उ०—कै है रे सासू थारै सावकी ए पणिहारी ऐ लो, कै थारो पीवरियो परदेस वा'ला जो ।—लो गी.

सावकु, सावकुत, सावकौ, सावकौ–स. पु (स्त्री. सावकी) सौतेला ।

उ०—१ पसायत गाढण री वेटी नाम मेली आढा नूं परणायी, मेली री सावकुत वेटौ ही जिणनु मार पसायत रा वेटा आढा री जमी अपणाय गाडणा वसायी वाय कनै ।—वां. दा. ख्यात

उ०—२ अर राज रै सावका वेटा-वेटिया री राजा खुद जिम्मौ सभाळियौ । डूडी पिटायदी कै कोई दुमात सावका टाबरा नै दुख दियौ तो जीवता दाग दिरीजैला ।—फुलवाडी

सावग—१ देखो 'स्रावक' (रू भे)

२ देखो 'सावक' (रू. भे.)

सावगी—१ देखो स्रावगी' (रू. भे.)

२ देखो 'सावकी' (रू भे)

सावड—देखो 'सावढ' (रू. भे.)

२ देखो 'सावळ' (रू. भे)

सावचेत, सावचेत–वि.—१ सतर्क, सावधान ।

उ०—१ राजकवर तो खुद तल्लै-मल्लै सावचेत हो । कमेडी री अेक टाग तोडनै अळगी वगाई तौ देंतराज री टाग साथळ माय सू तूटनै खिरगी ।—फुलवाडी

उ०—२ कामेती री आख्या मैं अेक दिन रगत री झाई देखी तौ बीदणी कवरसा नै सावचेत करचा कै ओ दुस्टी अवस घात करैला —फुलवाडी

२ होश में लाने की किया, सचेत, सजग ।

उ०—१ अरु वूदी रा राव राजा छत्रसाल जी घावा पूर हुवा पड़िया है जिसै आलमगीर गया । सू मूहडै ऊपर हाथ फेरियौ । अरु पाणी पायौ सावचेत कर अमल दियौ ।—द दा.

उ०—२ इतरी सुण भरमल अति उदास हुई । विरह सु डील पसीज गयौ । नैणा माह परवाह छूट पडिया । सो नीठ जीव नु थामियौ । वडारण घणी धीरज दीनी । छोकरचा पवन करण लागी । सावचेत करी ।—कुंवरसी साखला री वारता

३ होशियार ।

रू. भे.—सावचेत ।

सावचेतगी, सावचेती सावचेती–स स्त्री —१ चतुराई, होशियारी ।

उ०—१ तौ ई पूछणौ छोको । सावचेती आपरी है किणी रै वाप री कोनी ।—फुलवाडी

उ०—२ वा भला मिनखा सारू म्हनै अेक पोथी लिखणी पडै जका कै आपरा छळ कपट नै सावचेती सू दरसावै ।—फुलवाडी

उ०—३ मासी तुरत समझगी कै वातडी खासी निवाई है । खिखरा मे टाळै जैडी कोनी । बोली—थू भली-भात जाणै कै आ सावचेती तौ म्है नीद रै माय ई नी पातरू ।—फुलवाडी

२ सावधानी, सतर्कता ।

उ०—१ लोग जीवण वास्तै सौ भात रा कळाप करैला, पण अपानै अपा री घर तौ रूखाळणौ ई पडै । सावचेती नी वरता तौ

२ झाड़ू।

[स सावर्णि] ३ विवस्वान व छाया का पुत्र, आठवा मनु।

४ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

सावरत, सावरत्त–वि.—लाल, रक्तवर्ण, रक्तरंजित। (अ मा)

उ०—१ खित कारण करे नित खळवट, खेटै कटक तणा खुरसाण। असणा सोण अहोनस 'पातल', खग सावरत रहै खूमाण।
—प्रथीराज राठौड

उ०—२ गोवरधन रटुवड पडै पिंड लोहे पूरै। किय कूंत सावरत, दळा चतुरगा चूरै।—गु रू. वं.

उ०—३ केसव भिडत कुदरत्त गत्त, रायसिंघ सुत्त खग सावरत्त। 'नाहरो' भाण सभ्रम निराट, घण घाइ घडे अरिहरा घाट।
—गु रू व

स पु —कम्बु, शख। (अ मा; ह ना मा)

क्रि. वि.—दोनो ओर, दोनो तरफ। (डिं को.)

सावरमंत्र, सावरीमत्र—देखो 'सावरमत्र' (रू. भे.)

सावळ, सावळ, सावल–स. स्त्री —१ दुख या सकट के समय की जाने वाली देवी-देवताओ व ईश्वर की प्रार्थना।

उ०—१ सावळ सत तणी सुण सामी, ढळवळ सहज न धारै ढील। वचन उसीला तणौ वसीलो, वड दरवारा तणौ वकील।
—ओपौ आढौ

उ०—२ वसु पूगळपती रोकियौ बावळा, दियै लप चावळा त्रास देखै। आप जद पावडा दीध ऊतावळा, सावळां करी जद राव सेखै।—खेतसी वारहठ

२ कहारो (कीर नामक) की जाति के अनुसार वह वस्तु जो खेत मे सबसे पहले तोड कर किसी बहन या वेटी को दी जाय।
(मा. म.)

३ शिल्पकारो का एक औजार विशेष जो सीधाई मापने के काम आता है।

वि.—१ उचित, ठीक।

उ०—१ खासा दिना ताई सेठ री वीणती साव अंळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड आपरा मन नै समझावणी ई सावळ जाणियौ।—फुलवाडी

उ०—२ म्हैं तौ इत्ती सी बात जाणू कै रावळै रूप रा दरसण व्हिया पै'ली घडी दौ घडी वास्तै निजर जावती परी तौ सावळ ही। किणी निजर वाळा नै आज पै'ली दीठ सारू अंडौ दुख नी व्हियौ व्हैला।—फुलवाडी

२ पूर्ण, पूरा।

उ०—पिंडतजी नै इत्ती ताळ मैं ई सावळ जाच पडगी कै बापजी री अतस ई डील रा रग सू कम काळौ नी है। अर अठी कामेती सूं ई आ बात छानी नी री, के पिंडतजी लखणा रा पूरा पारवाड है।—फुलवाडी

३ ध्यानपूर्वक।

उ०—सावळ मोती री मोती बुहारनै भवारा मैं भर दै। सावळ सावचेती सूं, अैडी नी व्है कै अेक ई मोती लारै रै जावै। सो पचास मोती तो म्हैं ई गिट जावू।—फुलवाडी

४ स्पष्ट, साफ।

उ०—१ मगतौ वकाई खावतौ भप्प भप्प की बोल्यौ तौ उणनै सावळ जाच नी पडै। दूजी वार वळै पूछ्यौ। अवै नाव सुभट सुणीजियौ—घनियौ।—फुलवाडी

उ०—२ नाई राजाजी री सुभाव आछी तरै जाणतौ हौ। हाथ जोड बोल्यौ—अदाता, सूरज रा उजास मैं चांद रै ऊगण री सावळ जाच नी पडै। म्हैं रात रा मतै ई पिछाण करनै वधाई दे दूंला।
—फुलवाडी

५ अच्छा, अनुकूल।

उ०—पण भाग सावळ था तीसूं पचास सवार रहिया। वाकी रा अगल-वगल आगै गया। खीवौ पाघ वाधणै रुकियौ थौ। तीमू खान री फतह हुई छै। प्रवाडो हाथ आयौ।
—सूरै खीवै काघलोत री वात

६ बढकर, बहतर।

उ०—बीदणी तो ई नी मानी—थारै जेंडा दुस्ट री मूंडौ देखणा विचै तौ आडा दियोडा ई सावळ है। इण अकरम री बदळौ लिया छाडूला।—फुलवाडी

ज्यू—तू म्हारै विचै तौ सावळ है।

७ लाभप्रद, हितकर।

उ०—भोळा वामण रै हीयै मतै ई आ समझ वापरगी कै साची बात बताया वळै राड़ वधैला, इण वास्तै घरवाळी सू चोज राखणौ ई सावळ।—फुलवाडी

ज्यू—रोगीला मिनख नै दिनूगा दूध पायोडौ सावळ व्है।

८ स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

उ०—१ महीना दोय डाढाळो भूडण चीलहरा सूवा जव गुळवाडी चरता नू हुवा सो मोटा-ताजा, बळपूर मस्त हुवा। तरह-तरह री जडी-वूटी खाधी थी तिण सू जखम सावळ हुआ।
—डाढाळा सूर री वात

उ०—२ देख थू तौ समझणी है नी भांगू। वाई कितरा दिन घरै मांदी पडी री, अवै दवा नी करावै तौ सावळ कीकर व्है बता? ठीक व्हैताई म्हू उणनै लेयनै आवूला।—अमरचूनडी

९ सीधा।

उ०—इक चलै सूंड अदोळना, अध ऊरध सावळ अविळ। तम सुभट विछोहो जाणि तिम, दिवस वहै करि डग वळि।—रा. रू

ज्यू—सावळ बैठौ।

क्रि वि.—१ अच्छी तरह, भली प्रकार से।

उ०—१ थानै आज वळै कैवू, सावळ याद राखजो कै औ देवाळौ

सावणिक-सं. पु. [स. श्रावणिकः] श्रावण मास। (डिं को)
वि. [स. श्रावणिक] श्रावण मास का, श्रावण मास सम्बन्धी।
सावणियौ—देखो 'सांवण' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ सावणियै रा दिनडा च्यार, जवाईडो लै जासी जी लै जासी। वा उडसी पांख पसार, सूवटियौ लै जासी जी लै जासी।
—लो. गी.
उ०—२ सोढो राणो सावणियै रो मेह, मूमल आभा बीजळी। वरसण लाग्यो मेह, झबूकण लागी बीजळी।—लो गी.
सावणू—देखो 'सावणू' (रू. भे.)
सावतरी—देखो 'साविन्नि' (रू. भे)
उ०—१ जड धारिन जाणी प्रचळ पुराणी, अधिकि हुई किमि करि इतरी। पारबती निमो हेमरी पुतरी, सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी।—पी. ग्र.
उ०—२ आखा पाछै आप खावै, त्याग राग जग जाणनी। सीता सावतरी, दमयती, द्रौपत दाय पिछाणनी।—नारी सईकडो
उ०—३ सावतरी रै साच, मरचोडो पति जियाळो। सकुतळा री साध, वीर बाळक वेताळो।—नारी सईकडो
सावतौ—देखो 'साबतौ' (रू भे)
उ०—आवणा जु वेली कहता साथी या ताहनै बळिभद्रजी पचारया। कहीयौ जु देखा अर्जेलग सत्रा री साम सावतो ऊभो छै। वूठै उपरि वाह देण री इहै वेळा छै। सेई जीपसी जु हाथ वाहसी।
—वेलि टी.
सावत्री देखो 'साविन्नि' (रू. भे)
उ०—१ सावत्री सरसती गवरी गगा गोमत्ती, मिळ सतिया घरि महरि करै इण पर कीरत्ति।—रा रू.
उ०—२ इम्या लेसै उवारण, तू आतिम आधार। सावत्री साराहियौ, श्रौ निकळक अवतार।—पी ग्र
सावत्रीईस, सावत्रीईसर, सावत्रीईसुर, सावत्रीईस्वर-स पु यौ [स. सावित्री+ईश, सावित्री+ईश्वर] ब्रह्मा, विरचि। (डिं को)
सावद्य-स पु [स.] योग में एक प्रकार की सिद्धि का नाम।
वि वि.—योग मे तीन प्रकार की सिद्धिया होती हैं। यथा—सावद्य, निवद्य और सूक्ष्म।
वि—जिसमें किसी प्रकार का पाप या दोष हो, पाप या दोषयुक्त।
यौ.—सावद्यअनुकपा, सावद्यक्रिया, सावद्यदया, सावद्यदान।
सावद्यअनुकपा-स. स्त्री. यौ.—पापयुक्त दया।
उ०—बखाण वाणी देवै सूत्र सिद्धात बाचै छेहडै जीव खुवाया पुन्य मिस्र परूपै सावद्यअनुकपा मैं धरम कहै।—भि द्र.
सावद्यक्रिया-स स्त्री यौ—पापयुक्त क्रिया।
उ०—जद स्वामीजी कह्यो—है बाई थारी करम बधवा री सावद्यक्रिया ही तू नहि छोडै तो रोटी रै वासतै म्हारी साची क्रिया हूं किम छोडू।—भि द्र

सावद्यदया-स. स्त्री. यौ.—पापयुक्त दया।
उ०—बाया रात्रि मैं ससार लेखै चोखा चोखा गीत गावै अनै छेहडै जाता मोरचो मारू गावै। ज्यू........पहिला तो वखाण मैं अनेक बाता कहै पिण छेहडै सावद्यदया सावद्यदान मैं पुण्य मिस्र परूपै।—भि. द्र
सावद्यदान-स. पु. यौ—पापयुक्त दान।
उ०—१ जीव खवाया पुन सरधै। सावद्यदान मैं पुन सरधै तिणसू समकत चरित्र एक ही नही।—भि. द्र
उ०—२ केइ कहै सावद्यदान मैं भगवान मूक कही है सो वरतमान काल विना विण मून राखणी। पुण्य पाप न कहिणो।—भि द्र.
सावधान-वि.—१ खबरदार, चौकन्ना।
उ०—१ सो कुवर रग देख कहण लागो—जो थै इतरा असवार तो अठै रहो अर इतरा म्हैं आगै-आगै जावा छा। कजियै री काम छै। कदास केई उरै ही आण फेरै तो थै अठै सावधान रहज्यो। घणी खबरदारी राखज्यो।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—२ लूकडी नै देख नै वारा-वोर री वदूक सम्हाळ लेवण आळी सावधान मन। जै अवार वो पाछो आवै तो मनै सरवर रै कनै देखनै काई कंवेलो।—तिरसकू
२ सचेत, सतर्क, होशियार।
उ०—१ बुदी आइ सम्हाळि वळ, सावधान करि सरब। दूदो मुडि रहियौ दुसह, पावण जस रण परब।—व भा.
उ०—२ वरधमान नद इद्र अगजीत का मत्री, सरब सावधान जैसे थान थान जत्री। रायाचद दीपावत दीप सा उजाळा, जाकी बुध अरि पतग जाळवै कू ज्वाळा।—रा. रू.
३ चतुर, बुद्धिमान।
४ जागरूक, सचेत।
उ०—आय अति पूछी विध एही, सावधान हुय धरम सनेही। विखै भयान धरम वीसारो, सूरज कुळ चो धरम सभारो।
—सू प्र.
सावधानी-स स्त्री—सावधान होने की अवस्था या भाव, होशियारी, सतर्कता, जागरूकता, चतुराई।
उ०—जैकी सावधानी सव लोगा जाणि लीनी, जेपुर की अजंटी सू लिखावटि भेजि दीनी।—शि. व
सावन—देखो 'सावण' (रू. भे)
सावर-स पु. [स शावर] १ तावा, ताम्र। (अ मा, ह. नां मा.)
स स्त्री. [स. सा+वर] २ सुन्दर स्त्री।
उ०—ढोला ढीली हर मुझ, दीठउ घणे जरोह। चोळ वरन्नै कप्पडे, सावर धन अंगेह।—ढो मा.
३ देखो 'सावरमत्र' (रू भे.)
सावरणि, साधरणी-स स्त्री [स. सम्मार्जनी] १ जैन यतियो द्वारा सदैव साथ रखा जाने वाला एक प्रकार का झाडू।

अपारी अणगिण माया बचावैला। अलेखू मण नेपै अपारै कोठा-कोठां लाय भरैला।—फुलवाडी

उ०—२ फूदी व्है ज्यू फँर-फँर उडती फिरी। थोडी ताळ मैं राता-चुट्ट ढालुवा सू खोळो भरनै पाछी आयगी। वुगती रा पांणी सू वानै सावळ धोया। ठारया।—फुलवाडी

२ आराम से, चैन से।

उ०—१ सेठाणी बोली—लायो लागै इण गैणा गाठा रै। सावळ सूवण ई नी दो। औ धन सुख रै वास्तै है कै कोई दुख रै वास्तै।—फुलवाडी

उ०—२ कँवण लागी—देखौ थारी सिग्या परवारी है। हाल तो थारी ऊमर ई काई व्ही। चाळीस रै माय हो, पण साठ वरसा रा व्है ज्यू दीसौ। रात रा सावळ नींद आवै नी।—फुलवाड़ी

३ सीधे तरीके से, शिष्ट व्यवहार से।

ज्यूं—सावळ कँवणा सू वो रिविया नी देवैला।

रू. भे.—साउळ, साउल, सावड, स्यावळ, स्यावल।

सावळायार—देखो 'सावळियार' (रू भे.)

सावळयारी—देखो 'सावळियारी' (रू. भे)

सावळियार-वि.—१ भला, सज्जन।

२ सीधा, सयाना।

रू भे.—सावळयार।

सावळियारी-स स्त्री —१ भलमानसता, शराफत।

२ सज्जनता।

रू. भे —सावळयारी।

सावसादी अमावस-स स्त्री यौ —आश्विन मास की अमावस्या, सर्व-पितृ अमावस्या।

वि वि —श्राद्ध पक्ष मे अगर किसी का श्राद्ध किसी कारणवश न हुआ हो तो इस दिन उसका श्राद्ध किया जा सकता है।

सावस्त-स. पु [स शावस्त] इक्ष्वाकुवशीय युवनाश्व (द्वितीय) का पुत्र एक राजा का नाम।

सावित्र-स पु [सं सावित्र.] १ शिव, महादेव।

२ सूरज, सूरघ।

३ यज्ञोपवीत सस्कार।

४ एकादश रुद्रो मे से एक रुद्र का नाम।

५ आठ वसुओ मे से एक।

६ सुमेरु पर्वत के एक शिखर का नाम।

७ कर्ण का नामान्तर।

८ गर्भ।

[स. सावित्र] ९ यज्ञसूत्र, यज्ञोपवीत।

सावित्री-स स्त्री [सं.] १ ब्रह्मा की स्त्री जो सूर्य की पुत्री थी।

उ०—भला वधाई आज कुंता वधायौ, भला सावित्री गौरिजया गीत गायौ। भला सावित्री सूरज्या सती सीता, भला ग्यान आदेस उणिहारि गीता।—पी. ग्र.

२ सूर्य की किरण।

३ ऋग्वेद का स्वनाम ख्यात मत्र विशेष, गायत्री मत्र।

उ०—सावित्री जप इक सहँस रस भक्ति रचाया।—व. भा

४ उपनयन के समय का एक सस्कार विशेष।

६ सल्व देशाधिपति सत्यवान की पत्नी व मद्र देशाधिपति अश्वपति की पुत्री का नाम जो पतिव्रताओ में शिरोमणि मानी जाती है।

७ पार्वती, उमा।

८ सरस्वती।

९ सरस्वती नदी।

१० पुष्कर तीर्थ की अधिष्ठात्री देवी।

११ यमुना।

१२ सधवा स्त्री।

१३ प्लक्षद्वीप की एक नदी।

१४ धर्म की पत्नी का नाम जो दक्ष प्रजापति की एक कन्या थी।

१५ चौसठ योगिनियो के अन्तर्गत चौदहवी योगिनी।

रू भे —सावतरी, सावत्री, सावतरी, सावत्री।

सावित्रीतीरथ-स. पु. यौ. [स सावित्री+तीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ।

सावित्रीवरत, सावित्रीव्रत-स. पु. यौ [स. सावित्री+व्रत] पति की दीर्घायु की कामना हेतु ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी या अमावस्या के दिन स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक व्रत।

सावित्रीसूत्र-स. पु यौ. [स] १ गायत्री मत्र की दीक्षा के समय धारण किया जाने वाला यज्ञोपवीत।

२ यज्ञोपवीत।

सावु-स. पु —१ एक प्रकार का घास विशेष।

वि. वि.—अकालावस्था या अत्यन्त गरीबी की अवस्था में लोग प्राय. इसकी रोटी बनाकर खाते हैं।

२ देखो 'सावौ' (रू. भे)

सावौ-स पु.—१ विवाह का शुभ मुहूर्त्त।

उ०—१ इतरै मैं रावळ अखैसिहजी रा माणस व्याह रै पगा आड्या जद आप फरमायौ थै तयारी करौ माह मैं सावौ सखरौ छै।—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ भगवान उणरी ई खोळौ भर दियौ होवतौ तौ किसोक नामी रैवतौ। गाम मैं उणरै सावै जितरी ई छोरियां परणीजी सैंगा रै ई खोळा मैं नैंना टावर है।—अमरचूनड़ी

२ पाणिग्रहण सस्कार की तिथि निश्चित करने की सूचना पत्रिका, जो कि वधू पक्ष वालो की ओर से वर पक्ष वालो को भेजी जाती है।

उ०—१ अणछक इण हवेली रौ नाळेर आयौ। म्हारा वडभाग कै माईत सावौ कबूल कर लियौ। आ हवेली नी होय कोई दूजी

सासनभ-स स्त्री [स नभश्वास] वायु, हवा। (ह ना. मा)

सासनसिल, सासनसिला-स. स्त्री [स. शासनशिला] वह पत्थर जिस पर किसी शासक की घोषणा, लेख आदि अंकित हो।

सासना-स. स्त्री [स शासना] सजा, दड।

उ०—अनुज ए उचित अग्रज इम आखै, दुमट सासना भली दई। वहिनि जासु पासँ बैसारी, भलो काम किउ भला भई।—वेलि

सासनी—देखो 'सासणी' (रू. भे)

सासनीय-वि. [स. शासनीय] १ जो शासन करने योग्य हो।
२ जिस पर शासन करना उचित हो या जिस पर शासन किया जा सके।

सासय—देखो 'सासत' (रू. भे)

उ०—१ निवद्ध निकाचित जे सासय कह्या, जिन पन्नता रे भाव। भाखी रे सुदर एह परूवणा, चरण करण नो रे जाय।—वि कु.

उ०—२ दो सासय पडिया, महियलि जिन चोवीस। त्रिभुवन माहि प्रससिय, नाम जपू निसदीस।—स कु

सासर, सासरउ, सासरवाड सासरवासौ—देखो 'सासरौ' (रू भे)

उ०—१ सासर वासो सजी नै बैठी, हवै नथी कई काचू रे। मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, हरि नै चरणे जाचु रे।—मीरा

उ० —२ पिंगळ पूगळ आवियउ, देसँ थयउ सुगाळ। तेणि न राखी सासरइ, अजे स मारू बाळ।—ढो. मा.

उ०—३ तैं देखि तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि। किह पीहर किह सासरउ, विगतइ कहइ विचारि।—ढो मा.

उ०—४ करहा देस सुहामणउ, जै मूं सासरवाड़ि। आव सरीखउ आक गिणि, जाळि करीरा झाडि।—ढो. मा.

उ०—५ सासरवासौ करि भलो, बोलावी फरी गेह।—वि कु

सासरियौ-स पु.—१ ससुराल का निवासी, ससुराल वाला।

उ०—१ पाबूजी हरियै थोरी नूं कही—रे हरिया! दोदै री साढिया हेर आव, ज्यु बाई नू साढिया आण देवा। बाई रा सासरिया हससी।—नैणसी

उ०—२ मा तो मास खाय, हे ज्ठै ई गुडगी। आघी रा वेटी नै जगाय कह्यो कै तडकै उण रा सासरिया आवैला।—फुलवाडी
२ देखो 'सासरौ' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ वीणा नारद सी कोयलसी वाणी, कुरळै केकीसी काया कुम्हलाणी। अपणै आसरियै अतळो दिन ऊगो, पीहर सासरियै पतळो पुनि पूगो।—ऊ का

उ०—२ ऊभी आगणियै बोलूडी आवै, गद गद मुरळी सुर ओलूडी गावै। बालम ब्रीडा री पीडा कुण पालै, पीहर प्यारी नै सासरियौ सालै।—ऊ का

सासरौ-स. पु [स श्वसुरालय] श्वसुर का घर, ससुराल।

उ०—१ सुख पेखण चप सासरौ, 'अभो' थयौ असवार। आगै अतर केसरा, सुरा खंभायच सार।—रा. रू

उ०—२ सगळा मिनख अर बस्ती रो तूमार जोया पछै ई म्हैं फगत धन माथै आस गडाय राखी ही। वेटी! विधवा री सासरो, पीवर, माईत अर भगवान फगत धन इज है।—फुलवाडी

मुहा —१ गैलो सासरै जावै नी अर जे जावै तो पाछो आवै नी=ऐसे व्यक्ति के प्रति उक्ति जो किसी कार्य को करता ही नही, अगर करता है तो उसे वापस छोडता ही नही. २ सासरो सुख वासरो=ससुराल सुख का स्थान है. ३ सासरै जावतो नै छिनाळ कुण केवै=अच्छी जगह जाने वाले को बुरा कोई नही कहता है।

रू. भे.—ससराळ, ससुराळ, सा'रो, सासर, सासरइ, सासरउ, सासरवाड, सासरवासो, सासुरो, सुसराळ।

अल्पा;—सासरियो।

सासाहिवि, सासाहिवी-स पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—सिरीसाफ भैरव चोतार कसबो महमूदी फूलगार तनजेब सासाहिवी तरै-तरै रै कपडै रा वागा छै सू उतार-उतार उणा हौज दरखता री साखा ऊपर उरळा कीजै छै।—रा. सा स

सासित्र, सासित्रि, सासित्री—देखो 'सास्त्र' (रू. भे)

उ०—साभळि अरथ पराक्रत सासित्रि, अकलि प्रमाणै कियो उचार।—ह ना. मा.

सासिव-सं. पु [स. साशिव] एक देश का नाम जिसे अर्जुन ने जीता था।

सासीडाढी, सासीदाढी-सं. स्त्री —जवानी मे मूछो व दाढी के निकलते हुए घने व मुलायम बाल।

उ०—सू रवारी ऊठा जावै छै। किण भात रा रवारी छै। डीघा लावा जुवान दीसता राजान, वाकी मूछा, राता नैण, सासीडाढी, मोटा वैण, जाडा पुहचा लावा हाथ, भूखं सिघ नै घातै वाथ।
—रा सा. स.

सासु, सासु-स. स्त्री [स. श्वश्रु] पति या पत्नी की मा, सास।

उ०—वच्छे! सासुरा तणी इसी स्थिति जाणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठाणी कुसइ, देरा-राणी हसइ, नणद नरतरावइ, सासु काम करावइ।—व. स

मुहा —१ जवाई रै घरै घोडो नै सासु सरणाट करै=किसी सवधी के धन-वैभव पर अन्य द्वारा गर्व किया जाना २ सासु आगली वहू व्हैणी=किसी के मातहती मे रहना. ३ साळी नै छोड सासु सू मसखरी=किसी उचित व्यक्ति को छोड कर ऐसे व्यक्ति से मजाक करना जिसके साथ मजाक करना अनुचित हो ४ सासु सू वैर नै पाडोसण सू नातो=अपने से विरोध व परायो से प्रेम करना।

रू भे —सस्सु सस्सू, सास, सास, साऊ, सासु, सासू।

अल्पा,—सासड, सासडी, सासूडी।

सासुरौ—देखो 'सासरौ' (रू. भे)

उ०—१ वच्छे! सासुरा तणी इसी स्थिति जाणवी, सुसरउ उवे-

सासतर-सं. पु [स शास्त्र] १ रश्म, रीति ।
उ०—तरै राणागदे री वेर कह्यौ—परचारी री सासतर करो । तरै राव केल्हण कह्यौ—आज तौ रावाई रा सासतर री मोहरत छै, सवारै वीजौ सासतर करस्या । सु पहलै दिन बाजोट माडनै रावाई री टीकौ कढायौ, सासतर कियौ ।—नैणसी
२ देखो 'सास्त्र' (रू भे.)
उ०—१ आळीणौ हरनाम, जाण अजाण जपै जो जीहा । सासतर वेद पुराण, सरव मही तत्-अक्खर सारम् ।—ह र
उ०—२ सुरह दुजदेव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तलक तुळसी नरंजण जाप । राह हिंदूध्रम तणै सावत रहै, प्रगट मुरधर धणी तणौ परताप ।—महाराजा जसवतसिंह प्रथम

सासतराथ, सासतरारथ—देखो 'सास्त्रारथ' (रू भे)

सासती-वि. स्त्री —आवश्यकतानुसार, जरुरतमुताबिक ।
उ०—उवै दिली राठौड आदभाव घणो कीयौ । भली भात वसत सासती दी । इण वेसास पकडियौ । साथ थौ तिण नु सीख दी ।
—नैणसी

सासतीक, सासतीकौ-वि (स्त्री सासतीकी) १ शास्त्र का, शास्त्र सम्बन्धी ।
२ स्थायी ।
उ०—साढा तीन हजार री मुनसब तौ सासतीक, पाच सौ कच्छी सौ इतरा परगना सासतीक रहिता—सरसौ, भटनेर, वाहणीवाळ, पुनिय सिवराण, तोसाम, फतियाबाद, अहिवौ, रतियौ अे सारा गाव ठाकुर लोगा नू पट्टै मैं दिया था ।
—महाराजा पदमसिंघ री वात
रू भे —सास्त्रीक, सास्तिक ।

सासतौ-क्रि वि (स्त्री सासती) १ नित्य, हमेश ।
उ०—१ आणी मन सूधो आसता, देव जुहारू सासता । पारस्वनाथ मुझ वछित पूरि, चितामणि म्हारी चिंता चूरि ।—स कु.
उ०—२ नै खाडाळ माहै विजैराव रहै सु भाटिया री साथ वरिहा हा रा सासता विगाड करै, सु इणा नु जोर खारा लागै तरै दीठौ वीजौ तौ पौहचा नही, नै दाव करा ।—नैणसी
उ०—३ अठै साखला री वैरा पाणी नै जाय सु दहिया रा कवर ४० तथा ५० भेळा हुवा फिरै छै । तिकै वेहडा नू गिलोला वाहै छै सासता वेहडा फोडै छै ।—नैणसी
२ निरन्तर, लगातार ।
उ०—१ राव मालदे रा सासता कागळ पत्र देवीदास नू आवै छै थै तौ आपरौ नाव करौ छौ, माहा री ठाकुराई खोवौ छौ ।
—नैणसी
उ०—२ मेठा रै डीकरा रै काळजै जाणै स्यार रा सासता तावोडा लाग्या । थैडी वाता वो कदै सोची ई नी ही । सोचण री मोको ई कद मिळयो हो । आज मोको ई मिळयो तो इण टाणै ।
—फुलवाड़ी
वि.—१ स्थायी ।
उ०—१ साता दीजो साधा भणी ए, तन मन चित्त उल्लास । आग्या मतो उथापज्यो ए, ज्यू पामो सासतो वास ।—जयवाणी
उ०—२ ससार सार परतिख सर्मं, सिद्धि रिद्धि दायक सासता । धरि ग्यान ध्यान धरमसीह धुरे, अधिक इणरी आसता ।
—ध. व. ग्र.
२ अक्षय, अटल ।
उ०—करम कठिन दल चूरता जी, पूरता जगत नी आस । जिनवर देव इहा भासता जी, सासता अरथ सुविलास ।—वि. कु.
रू. भे.—सायतौ, सास्तौ ।

सासत्र—देखो 'सास्त्र' (रू. भे)
उ०—१ वेद सासत्र वताया सु अवसाण आया । उजेणि खेत धारा तीरथ धणी री काम खित्री री धरम साचवीजै । लोहां रा बोह सेला रा धमका लीजै ।—र. वचनिका
उ०—२ अराध वीर मत्र एक, साधन सघीत रा । सिखंत भेद कोक सार, सासत्र सगीत रा ।—सू प्र

सासत्रीक—देखो 'सासतीक' (रू भे.)
उ०—अर कठै ही म्हाभारत भी वाच रह्या छै । केई केईक सासत्रीक विधान अवसाण समैया रै ऊपरै तिरकुरा हुआ थका विह्व सिव इस्ट अरचा करै छै ।—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात

सासद—देखो 'ससद' (रू भे.)

सासन-स पु [स. शासन] १ आज्ञा, आदेश ।
(अ. मा; ह. ना. मा.)
२ राजा द्वारा दान या पुरुष्कार मे दी हुई भूमि या जागीर ।
३ लिखित प्रतिज्ञा पट्टा ।
४ किसी देश प्रान्त या स्थान आदि की हुकूमत ।
५ वह परवाना या फरमान जिसके द्वारा किसी को अधिकार दिया गया हो ।
५ प्रबलता ।
उ०—परिस्थिति जठै इसडी सुणि विहत्तर वरस रा वय मे हाडा नरेस हालू रा विवाहण री वात समय रा सासन करि अत्यंत ही असभव जाणि ।—व भा
रू भे —सासण, सासण ।
मह,—सासणौ ।

सासनधर-स पु. [स शासनधर] १ शासक ।
२ राजदूत ।

सासनपतर, सासनपत्र-स. पु. [सं. शासनपत्र] १ वह ताम्रपत्र या शिला, जिस पर कोई राज्यादेश जारी किया गया हो ।
रू भे —सासणपत्र ।

४ स्वर्ग, वैकुंठ।

५ शिव, महादेव।

६ वेदव्यास।

सास्वती-स स्त्री [स शाश्वती] १ सनातन देवी।

२ पृथ्वी, भूमि।

सास्वादन-स पु [स] निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओ मे से एक। (जैन)

उ०—प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो। बीजो सास्वादन मन आणो। तीजो मिस्र वखाणु। चोथो अविरतिनाम कहाणो। देस विरति पचम परमाणो। छठो प्रमत्त पिछाणु।—वृस्न.

सास्वादन गुण स्थान-स पु.—१४ गुणस्थानो मे से दूसरा गुणस्थान। (जैन)

साहंस—देखो 'साहस' (रू. भे.)

उ०—१ धन्य कह्यो सत्र ऊपरा, साहस देव प्रचड। हुवा सुग्गा बाण सुण, भुज लागा ब्रहमड।—रा. रू

उ०—२ खग्गा सीस निवेडिया, साहंस परख अथाह। जोधहरा मिळ जमण मैं, कीधी मात प्रवाह।—रा रू

साहंसाह-स. पु [फा शाहशाह] सम्राट, बादशाह।

रू. भे.—सहसा, सहसाह, साहनसाह, साहसाह।

साहंसाही-स स्त्री. [फा शाहशाही] १ शाहंशाह का कार्य या पद।

२ बादशाही, शाही।

वि —१ शाहशाह सम्बन्धी।

२ शाहशाह का सा, शाहशाह जैसा।

रू. भे —सहसाही, साहजानी, साहनसाही।

साहंसी, साहसीक—देखो 'साहसी' (रू भे)

उ०—१ भडा जोधा तैसरा नुक्टा मणी बाघ भूरा, पूगो गला खतगो रीधु रा मिघा पार। साहंसीक जाडै भाग जागियो जिहान सिभू, आडै अक मारू चपै आणियो आचार।—आऊवा री गीत

उ०—२ खवा ठोर सुरत्ताणा दाखणी उघाडै खाडै, ऊदाणी' अटकरा बोल आखणो अबीह। चाह हेक सामध्रमी हठाळी बिलद चीत, साहंसीक जोधाणै वखनवाळी सीह।—किरपाराम कवियो

साह-स. पु [फा शाह] १ बादशाह, सम्राट। (डि को)

उ०—१ मालपुर टूक अजमेर घर मालसी, दिली लग पौंहचसी हला दहला। एमदाबाद सू खजाना आवसी साह उर मानसी रसण सहला।—विजयकरण सादू

उ०—२ आलमसा उत्तर धरा, भिसत गयो निज भोम। सारै जाया साह रा, जुध आया जम जोम।—रा रू

(स्त्री साहणी) २ सेठ, साहुकार। (डि. को)

उ०—१ जिका आवडा देस जेसाण जिल्लै, करन्नी तिका द्रग देसाण किल्लै। मयदी वणी कान' रै थाप मारी, तरी साह तोफान रै माह तारी।—मे म

उ०—२ कहा फागण की बूद, चुगल सूं किसी भलाई। किसो चोर सू सग, साह सू किसी ठगाई।—सुरजनदास पूनियो

३ राजा, नृप।

उ०—पडै जागियां अखमी रोळ विसमी नीहाव पडै, रैण घोम लागी बोम रुकै पख राह। तेडै रथ गिरमा रा रभा रा लडग तूटै, साहा वेहू सीस जूटै बळाबध साह।

—सत्रसाल हाडा रो गीत

४ 'शाहजादा।

उ०—१ पाडै धजा चम्मरा सु पक्खरा थडमा पाडै, नरां गिरा पाडै करा ऊघडा निराट। पाडै धूळ वगाळा अडाळा दळा भून पाडै, साहा वेहूं सीस पाडै भीड फाडै वाट।

—सत्रसाल हाडा रो गीत

उ०—२ गमागम आतस गडड साह दोय गाजिया, टळण गिणतूर लै केहीक टाळो। 'कमो' दै रीठ काळो सत्रा कोवियो, 'कमा' माथै पडै रीठ काळो।—कमा पडियार रो गीत

५ मुसलमान फकीर की एक उपाधि।

६ धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति।

[फा. स्याह] ७ काले रग का घोडा।

उ०—लाखीरी सुरग अजूब लैल, किममी साह ज्यानू कुमैत। तेलिया मुहा सदली तुरग, सोसनी गवज हुमा सुरग।—सू प्र.

८ बादशाह राजा आदि द्वारा वनियो को दी जाने वाली उपाधि।

वि.—१ सज्जन, भला।

२ उदार दानी।

३ महान, श्रेष्ठ।

रू. भे —सह, सा', साय, साहि, माह, माहू।

साहइणो, साहइबो—देखो 'साहणो, साहबो' (रू भे.)

उ०—ढोलउ मन चळपत थयउ, ऊभइ साहइ लाज। साम्हउ वीसू अ.वियउ, आइ कियउ सुभराज।—ढो मा

साहजानी—१ देखो 'साहसाही' (रू भे.)

२ देखो 'सा'जानी' (रू. भे.)

उ०—१ सात ताखड़ी साहजानी तोल री खून भूंडण रै डील माही रहियो। उठा पाछै सारी ही साथ ओलस वैठ रहियो।

—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ तीन पहर राड हुई। साढै सात मण साहजानी पक्के तोल री लोह डाढाळै रै डील माही रहियो। महाभारत जीत सूअर खडो रहियो।—डाढाळा सूर री वात

साहजादो—स. पु [फा शाहजादा] (स्त्री साहजादी) बादशाह का लडका, राजकुमार।

उ०—१ साहजादो खुरम दिखण नु जातो हुतो।—नैणसी

उ०—२ नयरि योगिनि मुसळमान, जे साहजादा मोटा खान।

खइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुरा लडइ, देवर नडइ, जेठाणी कुसइ, देग्रराणी हसइ, नणद नरनरावइ, सासु काम करावइ ।—व. स

उ०—२ सीतकालि दिवसिइ गोधूमवृद्धि थाइ, वेटी ग्रापणें सासुरें जायइ पास रग मुहगा थाइ, कवलि जोइ, तीन लाभइ घरें फलसा वापरइं, तपोधन विहारकरम करइ, स्रीमत घरमाहि पइसी सूयइ,—— ।—व स

सासू—देखो 'सासु' (रू. भे)

उ०—१ जैं सासू जणतीह सुमरा रै एकज सुतन । तौ मूछा तण-तीह, साडी न तणती सावरा ।—हिंगळाजदान कवियौ

उ०—२ सासू मत्र ज साज, पूत जण्या सह पारका । इण री पारख ग्राज, साची पडगी सावरा ।—हिंगळाजदान कवियौ

सासूडी—देखो 'सासु' (ग्रल्पा, रू भे.)

सासूछावडौ, सासूवाडौ-स पु यौ —१ दहेज के समय कन्या पक्ष की ग्रोर से कन्या की सास के लिए दिया जाने वाला पहनावा, पोशाक ।

२ वह छवडा जिसमे उक्त पहनावा रखा होता है ।

रू भे —सासूसाडौ ।

सासूसळी, सासूसली, सासूसुळी-स. पु.—एक प्रकार का ग्राभूषण विशेष ।

उ०—सासूसली ग्रापु सोवनकेरी, हवडा नही लीजइ बीजी ग्रनेरी वं करी जोडी वरराज मागइ, सासूसली ग्रापता वार न लागइ, ग्रहो सीग्रालक वोलि ।—व स

सासूसाडौ—देखो 'सासूछावडौ' (रू. भे)

सास्टाग-वि [म साष्टाग] हाथ, चरण, घुटने, वक्षस्थल, शिर, नेत्र, मन व वाणी, उक्त ग्राठो ग्रगो सहित ।

स पु —उक्त ग्राठो ग्रगो सहित किया गया प्रणाम ।

सास्तर—देखो 'सास्त्र' (रू भे)

उ०—१ जग सास्तर कहिया जिता, सुभ सुभ चहन ससार । राम सभि 'ग्रभमल' रमैं, कमधज राजकुमार ।—सू प्र

उ०—२ राजगरू सागै दिन सू ईं सास्तरा रा पाना फिरोळण लागौ । मोटा-मोटा ग्र थ वाचण लागौ । मिळतौ जका नैं ईं इण सवाल रौ म्यानौ पूछतौ । यूं छाणवीण करता करता पूरौ पखवाडौ वीतग्यौ पण सही पडूत्तर हाथ नी लागौ ।—फुलवाडी

सास्तिक—देखो 'सासतीक' (रू. भे)

उ०—ग्रास्तिक विन इदुक नास्तिक निंदुक, सास्तिक मत सोखदा है। तज धरम त्रिदडी ग्रधिक ग्रफडी, पाखडी पोखदा है ।—ऊ का.

सास्तौ—देखो 'सासतौ' (रू. भे)

उ०—१ पण इण लोक रौ काईं सास्ता परलोक रा मैंदान मुलक लेण नू मनसा करणी ।—नी प्र

उ०—२ सो दान चलतो मसीत वदगी री ठौड नैं फकीरा री उतरणैं री ठौड सारा-ही मारग मैं होय कुवा पुल तिण रौ सास्तौ पुण्य छै सो करणैं वाळा रा जीव सू पहोचैं ।—नी प्र.

सास्त्र-स पु [स शास्त्र] १ लोगो द्वारा पवित्र माना जाने वाला ऐसा धार्मिक ग्रन्थ जिसमे ग्राचार, नीति ग्रादि के नियमो का विधान किया गया हो ।

२ नियमानुसार ग्राचरणादि करने हेतु दिये गये ग्रादेश, निर्देश ।

३ किसी विशिष्ट विषय या पदार्थ के सम्बन्ध मे समस्त ज्ञान ।

४ वह विवेचनात्मक ग्रन्थ जिसमे किसी कला, विद्या या विशिष्ट विषय से सम्बन्धित ग्रगो, उपागो ग्रादि का विश्लेषण हो ।

५ वे सब बातें जिनका ज्ञान पढ या सीख कर प्राप्त किया जा सके ।

६ किसी गम्भीर विषय के सम्बन्ध मे प्रतिपादित सिद्धान्त ।

७ पुस्तक ।

रू. भे —सासत, सासतर, सासत्र, सासित्र, सासित्रि, सास्तर ।

सास्त्रकार-स पु यौ. [स. शास्त्रकार] जिसने शास्त्रो की रचना की हो, ऋषि, मुनि ।

सास्त्रग, सास्त्रग्य-स पु यौ [स शास्त्रज्ञ] १ शास्त्रो का जानकार ।

२ धर्म शास्त्रो के ग्राचार्य ।

सास्त्रवकता, सास्त्रवक्ता-स पु यौ [स. शास्त्र+वक्ता] शास्त्रो का उपदेश देने वाला ।

सास्त्रसारा-स स्त्री यौ [स शास्त्र+सारा] शास्त्रो की साररूपा देवी ।

सास्त्रारथ-स पु [स शास्त्रार्थ] १ किसी सिद्धान्त या विषय का सार व तथ्य निकालने हेतु शास्त्रो की युक्ति व दलीलो द्वारा की जाने वाली वहस ।

२ शास्त्र का ग्रर्थ ।

३ तात्विक वाद-विवाद ।

रू भे —सासतरारथ ।

सास्त्री-स पु [स शास्त्री] १ शास्त्रो का ज्ञाता ।

२ धर्मशास्त्र का ज्ञाता ।

३ कुछ विश्वविद्यालयो मे इसी नाम की परीक्षा मे उत्तीर्ण होने पर दी जाने वाली उपाधि ।

[स शास्तृ] ४ कश्यप एव सुरभि के पुत्रो मे से एक ।

सास्त्रोक्त-वि [स शास्त्रोक्त] जो शास्त्र मे लिखी या कही गई हो ।

सास्व-स पु [स शाश्व] यम का उपासक एक नरेश का नाम ।

सास्वत-वि [स शाश्वत] १ नित्य, ग्रमिट ।

उ०—१ नम सच्चिदानद भक्तवत्सल भयहरता । सास्वत ग्रसरण सरण करण कारण जगकरता ।—ऊ का

उ०—२ जठै भगवान मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है । उठै मुखा रौ कदेई विरहो पडै ईज नही ।—भिक्खु

स. पु.—२ सनातन ।

३ विदेह नरेश श्रुत राजा का नाम ।

५ थामना, रोकना।

उ०—१ सत्रां गाहतौ गैंजूहा ढाहतौ वाहतौ सार, महाचंडी भूवळा साहतौ आसमाण। चत्रवाहा आरोहतौ चाहतौ अचूडा चोज, ऊ आयौ जवानीसिंघ थाहतौ आराण।

—जवानीसिंघ पालडी री गीत

उ०—२ समत्था इसा ऊडळा आभ साहै, गजा दंत तोड़ै रिमा थाट गाहै।—अ. वचनिका

६ उद्धार करना, मोक्ष करना।

उ०—अजामेळ सा घोर अधम्मी, नारी गणिका भील निकम्मी। असरण दीन अनाथ अथाहे, साहे रे माधव कर साहै।

—र. ज. प्र.

७ धरना, रखना।

उ०—निरवळा नेका कीध केका, साहि हाथ सुनाथ। गुण 'किसन' गावै प्रसिध पावै, अमर ईजत आथ।—र ज. प्र.

८ सभालना।

उ०—सूरा सिंहू काटि खग साही, वदै पहन चूडामणि वाही। लागण न दी ढाल परि लीधी, दूजी भाण झाट खग दीधी।

—सू प्र

९ मारना, वध करना।

उ०—१ धज विलद वोरिया स्यामध्रम धारियां, कूरमा तणा दळ बीच अहकारिया। वाहता साहता वोसरा वारिया, अखाडै वुढापो वूर तरवारिया।—उदयसिंह, नरसिंह और लखधीर री गीत

उ०—२ घण अहिरण घण घाउ, साम्है चाचरि सात्रवा। वाहै साहै वीठलो, खाडो खाडेराउ।—अ. वचनिका

१० लेना।

उ०—रथ छाडि राजन उतरघा, रुखमण्यो साहिउ वथ। दड दोट वाजइ कोट भाजइ, वेग वाळघा हथ।—रुखमणी मगळ

११ सहन करना।

उ०—हाथी तरवरखान रौ, गौ सो धानख भज्ज। धकौ न साहै मीरजा, वाहै सार गरज्ज।—रा. रू

१२ धारण करना, झेलना।

उ०—१ भागीरथ भजि रै भोळी चक्रवरत्त, आगा लगइ जोवता अथाह। सकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गंगा तणा प्रवाह।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ माडिया उतवग जियइ द्रू माथइ, नाम जपत एक निमख। सकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गगा तणा झट पंख।

—महादेव पारवती री वेलि

१३ रक्षा करना।

उ०—१ असख सेन साई सहू ग्रासिया अेकठा, साथ विरळा सुहड चीत सूधै। चद गढ़ साहता निमौ अहकार चित, राखता निमौ नेठाह रुधै।—राव चंद्रसेण री गीत

उ०—२ गत पथ तारक गाह रे, सुज सपत दिन जिग साह रे हरणखड कीध सुबाह रे, मारीच नख दध माह रे।—र. ज. प्र.

१४ संधान करना, चढाना।

उ०—मन कू मारै ताकि करि, साहि सबद का बाण। जनहरिया चूकै नही, साम काम अवसाण।—अनुभववाणी

१५ युद्ध करना।

उ०—सारिंगा मू वलभद्र लोह साहियै, वडफरि उद्धजतै विरुधि। भला भली सनि तोईज मजिया, जरासेन सिसुगाळ जुधि।—वेलि

साहणहार, हारौ (हारी), साहणियौ—वि०।

साहिओडौ, साहियोडौ, साह्योडौ—भू० का० कृ०।

साहीजणौ, साहीजबौ—कर्म वा०।

साहणौ, साहबौ—रू० भे०।

साहनसाह—देखो 'साहमाह' (रू भे)

साहनसाही—देखो 'साहमाही' (रू. भे.)

साहनिजार-स पु—एक महा मा का नाम, निजारशाह।

उ०—जीवा री पति जोमिसै, करिजो वेग कसार। मेघ तणौ घर मातिहसै, निरखौ स हनिजार।—पी ग्रं

साहपण, साहपणौ-स पु—१ 'शाह' की उपाधि।

२ साहूकार होने का भाव।

साहव—देखो 'साहिव' (रू भे.)

उ०—१ साहव नाम समारता क्या लागै नाण।

—केसोदास गाडण

उ०—२ एतं पर दूत बोलं साहव सुन लीजं, पातस्याही सेना को प्रमाण कौन कीजे।—रा रू.

उ०—३ भामणिया सुकमार भुज, साहव गळै सुहाय। जाण नाळ जळ जातरा, काम पताका जाय।—वा दा.

उ०—४ सबळा सूं वाद न कीजं साहव, है सारीखा वाद सही। कह्यो म्हारो जो मानं कता, 'राजड' सूं डरपतो रही।

—राजसिंघ भाखरोत कछवाहा री गीत

उ०—५ वाजियो भलो भरतपुर वाळो, गाजे गजर घजरनभ गोम। पहला सिर साहव री पडियो, भड ऊभा नह दीधो भोम।

—कविराजा वाकीदास

साहवजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू भे)

उ०—जिण दिना मैं जिहानगीरजी रो साहवजादो खुर्रम विराजी हुयनै दिली सू नीसरियो। सू कितांईक दिना सू दिखण मैं जाहर हुवो। वा मुलक मैं दगो करण लागो।—द दा.

साहवाज-सं. पु [फा. शाहबाज] एक प्रकार का शिकारी पक्षी जिसका रग सफेद होता है।

साहवियो—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू. भे.)

साहवी—देखो 'साहिवी' (रू भे.)

ताहरइ चिति गमइ वर जेह, करउ वीवाह भणावउं तेह ।
—का. दे. प्र.

उ०—३ गोड अरजुनसिंघ राठोड रतनसिंह जिसडा जोधार काली रा कळस रणगळियार होइ हाथिया रै माथै हाथ करता साथिया रै सूरता रो साण लगावता साहजादां रै समीप हालिया ।
—द भा.

रू. भे.—सहाजादो, साहिजादो, सा'जादो, साइजादो, साईजादो, सायजद्दो, सायजादो, सायज्यादो, साहबजादो, साहिजादो, साहिबजादो, स्याहजादो ।

साहण-वि.—सहार करने वाला, नाश करने वाला ।

स पु [सं. साधन] १ घोडा, अश्व ।

उ०—१ कुदना उडता कूदना, ओद्रकता वप आप । जेहो तोखं जाचणा, साहण इसा समाप ।—वां दा.

उ०—२ मणि वाहण साहण मुकुटि, रीत सजत्र नव रूप । किया साज महाराज कजि, ऐसा वाज अनूप ।—रा. रू.

२ सेना, फौज ।

उ०—१ आउळं थाटि साहण समद्र आठमो, करै गरकाब खळ दळां कोपं । चमर चौमर ढळै सेत पासं चहू आतपत्र प्रिथीपति सिरिह ओपं ।—रूपसिंह राठौड री गीत

उ०—२ सुनन कलियाण साहण दध समचडै, उरमिया थाट खेहार वण ऊपडै । कटक अरवद तणे आय चढिया कडै, दहूं दिस त्रास कीधा मडै देवडै ।—महाराजा रायसिंह बीकानेर री गीत

उ०—३ सतिरि सहस साहणवइ साहण, गई अरदास पासि सुरताणह । कणगु कोस लीध हरि हिंदू, तु रणमल्ल इक्क नह बदू ।
—रणमल्ल छद

३ साथी, सगी ।

४ देखो 'साधन' (रू भे)

उ०—१ इसी ताइ देवी । धन साहण पूत परिवार, उदउ उछाह देवणहार । तास गुण नमो चलणाइ ।—अ वचनिका

उ०—२ परिवार पून पोत्रं, अरु साहण भडार इम । जण रुखमिणि हरि वेलि जपता, जग पुडि वाधै वेलि जिम ।—वेलि

रू भे —साहण ।

साहणवइ-स पु.—सेनापति ।

उ०—सतिरि सहस साहणवइ साहण, गई अरदास पासि सुरताणह । कणगुरु कोस लीध हरि हिंदू, तू रणमल्ल इक्क नह बदू ।
—रणमल्ल छद

साहणी-स स्त्री —१ साहू की स्त्री, सेठानी ।

उ०—मु देखनै साह साहणी साम्हो जोयो । साहणी साह साम्हो जोयो । जोयनै किवाड खोल्या ।—चोबोली

२ देखो 'सा'णी' (रू. भे)

उ०—१ सु भाटी देईदास नै साहणी लालो मेहावत काम आया । नै उरजन ऊहड नै भीवो साहणी किसनसिंघजी नूं लें नीसरिया ।
—नैणसी

उ०—२ गुणपति आग्या साहणी, अस्व अरोहण कज्जि । वाजि किया साजा विविध, सिधि रण करण समज्जि ।—रा. रू.

रू. भे —सहाणी ।

साहणो-वि. (स्त्री साहणी) धारण करने वाला ।

उ०—१ सुज व्रद साहणो रे, निवळ निबाहणो । चित दिस चाहणो रे, गज थट गाहणो ।—र. ज. प्र.

उ०—२ वदत सुज कथ वेद वाणा सधर पाणा साहणो, सारंग बाणा, जुग सभाणो पण मुडाणा पूठ ।—र ज. प्र.

रू. भे.—साहणो ।

साहणौ, साहवौ-क्रि. स —१ पकडना, ग्रहण करना, झेलना ।
(डिं को.)

उ०—१ दुर्बीवंन भू वदरा रध्र देखं, पखी उड्डना चक्कवा हस पेखं । सुरगी घसे हाथ हू हाथ साहै, महा हेमरा धाम आराम माहै ।—सू प्र

उ०—२ किता अग्र पाछं किता चक्र कुडै, तरक्कै किता साहता वाह तुंडै । भिदै सार सेलं कटारी झनक्कै, हिलोळा कि सामुद्र वेळा हलक्कै ।—रा रू.

उ०—३ बळिवध समरथि रथ लं बैसारी, स्यामा कर साहै सु करि । वाहर रे वाहर कोइ छै'वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि ।

१ धारण करना ।

उ०—१ महाबळ धवळ रा साहि वरमाळ तू, सबळ घड कड़तळां घणा सन्नाह सूं ।—हा. झा.

उ०—२ सती सतमत साहकै, जळै मडै कै साथि । हरीया मन मूंवा विना, कछु न आवै हाथि ।—अनुभववाणी

उ०—३ हरीया कहसी राम कु, विसीया मेट विकार । सूरा तन कू साहि कै, झूझै विन हथियार ।—अनुभववाणी

३ शस्त्र आदि का उठाना, लेना ।

उ०—१ पहल मिळै वण पूछियो, किण कीधा किण हत्य । बीजइ साहै बोलियो, इण डाकण भू अत्थ ।—वी स.

उ०—२ खळा भाजतो माण कंवाण साहै खवा, सुहाणं आपरै माण सेतो । आवियो करण' अवसान छित्रतो अफर, दिली दीवाण मभ डाण देतो —महाराजा करणसिंघ बीकानेर री गीत

उ०—३ सिण तिण वार पनाग साहियइ, वगाळी दाखवइ वळ । उण वेळा सिव रइ मुह आगळ, दूजा कुण नेठवइ वळ ।
—महादेव पारवती री वेलि

४ सहन करना, झेलना ।

उ०—समद फाळ कूदं हणूं जहर जारै सकर, सेस ही भुजां धर भार साहै । 'करण' रै 'पदम' जिम साहरै कटेडं, बदू जो कोई तरवार वाहै ।—द्वारकादास दधवाड़ियो

वरजिया, मंडे साहस मूळ ।—ल. भा.

३ जबरदस्ती, बरजोरी।

४ बेरहमी, नृशंसता।

५ जोश, उमंग।

उ०—१ तिणि वार त्रिया 'रतनेस' तणी, विधि साहस सोळ सिंगार बणी। पग हाथ मलूक पकज्ज, गुणि छत्रिम्र गात बिन्है गजयं।
—र. वचनिका

उ०—२ धरमी करै धरम, सती नै साहस दीकै। मन राखीजे भाव, मुकयो सुवचन बोनीजै।—वील्होजी

६ देखो 'साहसी' (रू भे)

उ०—'ग्रजन' साथि भड साहस ऐसा, तोलै आभ एक भुज तेजा।
—रा रू.

रू भे.—सहास, साहम, सांहस्स।

साहसणौ, साहसबौ–क्रि. स—साहस करना, हिम्मत करना।

उ०—सिधा-सुत गग अणभग साहसियां, सुज 'ग्रजन' सिधा वर नसिया साथ। हर दियै आव थट सिधा साहसिया, निपट रवि-वसिया आव रघुनाथ।—र ज. प्र

साहसणहार, हारौ, (हारी), साहसणियौ—वि०।

साहसिग्रोडौ, साहसियोडौ, साहस्यं.डौ—भू० का० कृ०।

साहसीजणौ, साहसीजबौ—कम वा०।

साहसवद—देखो 'साहसी'।

उ०—बीठू 'बान्है' सारखा, नेम ग्रद्यांनं सध। साथ हुवा देता छळा, एता साहसवंध।—रा. रू

साहसवंत–वि.—हिम्मतवर, पराक्रमी।

उ०—सार तरस्सै सूरमां, सारा साहसवत। सुजडं लार्ध सांम छळ, वाधै तेज ग्रनत।—रा रू

रू भे—सहासवत।

साहसि, साहसिक—देखो 'साहसी' (रू. भे.)

साहसियोडौ–भू का. कृ.—साहस किया हुआ, हिम्मत किया हुआ।
(स्त्री साहसियोडी)

साहसी, साहसीक–स. पु.—बालि का पुत्र जो शाप के कारण गधा हो गया था।

वि [स. साहसिन्, साहसिक, साहसिक] १ साहस सम्बन्धी, साहस का।

२ निडर, निर्भीक।

उ०—पैली मुलाकात में म्हैं पवन मैं अडियल अर घमंडी समझ्यो, पण लीना थारी परख साची निकळी। पवन सुसील, निस्वारथ अर साहसी है—तिरसकू

३ हिम्मतवर, पराक्रमी।

उ०—१ मुगल महाभड साहसी, मूकै दोव दोय बांणा रे। लाल-चद पतिसाह स्यु पूजै, केहो किम पाणा रे।—प. च. चौ.

उ०—२ बडा वख्त रै साथ जूझण रा साहसी कुमार दारासाह नूं ओरग ग्रोर मुराद रै सांम्हो विदा कीधो।—व. भा.

उ०—३ रीछ तणा समुदाय, घरू तणां घाट, साहसीक तणा हृदय कपट, कातर कोट उभट न रहट।—सभा.

रू. भे—साहसी, सांहसीक, साहसी, साहसीक, साहसि, साहसिक।

साहसक–स. पु. [स.] कुरुक्षेत्र में स्थित एक तीर्थ स्थान।

साहांणी—देखो 'सांणी' (रू. भे)

उ०—पीछे बीकमसी पाछो आयो, तद कवर श्रीबीकैजी देस मैं खेडे सारू ग्रोठी मेलिया। सू ठोट-ठोट ताकीदी हुई है, अर साहांणी वेलजी नू विहांग मिलके जोड़यै सनै मेलिया।—द. दा.

साहाणौ–वि [फा] शाजसी, शाही।

साहांमू, साहांमो—देखो 'सांम्हो' (रू. भे.)

उ०—१ साहामू तै कूड नहीं, आव्या नगर ना लोक। दरसन करवा कारणि, मनि पामता ग्रति मोर।—नळाख्यांन

उ०—२ भेलयइ नगर रहण गढ घोमी, साहांमा तीर विछूटइ। माधव भणइ करण जा नामी, कांई भरइ ग्रगूटइ।—कां दे. प्र

उ०—६ एक जि ऊर्ध्व जो घटै, जोता जोता जाइ। साहांमा साहमैं सीगडइ, भड़मा तगइ मराइ।—मा. का. प्र

साहांसाह—देखो 'साहसाह' (रू. भे.)

उ०—जठै ग्रक्ब्बर जनमियो, जांणै दुहूंवै राह। हुवौ हिंद अग-लीम मैं, साहिब साहांसाह।—वा दा.

साहाय—देखो 'सहाय' (रू भे)

उ०—१ धिन मात पिता कुळ जात धिन, मत अवदात महामती। साहाय थकी निज सामि सग, वसी ग्राय ग्रमरावती।—रा रू

उ०—२ ग्रमि गयंद ग्रज्या नरमेद ग्रपूरब, सुण्या हुवा जग चहू साहाय। नुवो जिगन जिम करै नरावत, राणा किणहि न होमिया राय।—राव सूरजमल हाडा रो गीत

उ०—३ विध वयण क्रोध विचारियो, मिळ रांण मोकळ मारियो। थट सहित 'कूभो' थरहरै, साहाय मांमो समरै।—सू प्र

साहायक—देखो 'सहायक' (रू. भे)

साहि—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—ऐसै चरित अनंत कै, को कह सकै अनत। दुसटन कू दीनी सजा, साहि करेवा सत।—गज-उद्धार

उ०—२ मैं दुरबळ बळहीन मैं, निरधन निपट निकाज। ग्राह लियै मो जात है, साहि करो महाराज।—गज-उद्धार

२ देखो 'साह' (रू. भे.)

उ०—१ छळि साहि तणै ग्रहि खाग छरा, घूसै चढि लीध बलक्क धरा। सनमान करै सुरिताण सई, जाळोर पटै गढ दीध जई।
—र. वचनिका

उ०—२ 'जसौ' हालिमो ग्रागरा हूंति ज्यारा, लिया साहि रा उबरां सव्व खारां। कमधां वडा कूरिमा साथि कीधा, लजाधम

उ०—१ वगा विचाळै काढिया हुड जिम पग मल्लै, ऊभी मेल्ही साहबौ गढ गोख महल्लै।—केसोदास गाडण

उ०—२ रावळ नू मार्म काठिया कह्यौ जु-लाखे री तौ अकल गई, ओर हमीर थाहरै घरै आयो, परौ कूट मारौ, डावडा नाना छै, उड जासी काछ री साहबौ परमेसर थानू दी।—नैणसी

उ०—३ तरै हाला नू कहाडियौ—घोघा री मदत काई करो ? हू छू तो आपणै घरै साहबौ छै। थे धरती दाबी छै सु थाहरी, ने म्हा हेठै छै सु माहरी छै, इण वात री सील-काल करो।

—नैणसी

उ०—४ इणा नूं मारिया सुणो, तरै थे साथ करनै जाजो थाहरै वासै माहरा हाथ छै। साहबौ आसान हाथ आवसी। थां आगै कोई टिकसी नही।—नैणसी

उ०—५ रिणधीर भली भान साहबौ चलावै छै।—नैणसी

उ०—६ साहबौ वधी।—नैणसी

साहबौ—देखो 'साहिब' (अल्पा; रू भे.)

उ०—निसचर ! अमरत म्हारौ साहबौ, रावण ! तू हळाहळ जेर। निसचर ! सूरज म्हारौ साहबौ रावण ! तू तौ घोर अधार।

—गी रा

साहमणि, साहमणी—देखो 'समठावणी'।

उ०—रग हे सखि रगै घाल वरमाळ, घालै हे सखि घालै है जयमुत उचरै जी। सिघल हे सखि सिघल भूप सनह, रूडी हे सखि रूडी है साहमणि करै जी।—प च. चौ

साहमी-वि —१ समान धर्म वाला, स्वधर्मी।

उ०—१ गौतम नामइ नाणु मुकीयइ रे, सम्यग ग्यान उदय होइ जेम रे। कीजइ साधु तथा साहमी तणी रे, भगति जुगति मन आणी प्रेम रे।—वि. कु

उ०—२ नीरस आहारै किया, तप आविल मन लाय। साहमी नै सतोखिया, पडिलाभ्या मुनिराय।—वि कु

२ देखो 'सामी' (रू भे.)

३ देखो 'साम्ही' (रू भे)

उ०—जव साहमी ऊठी कूयरी, ततखिण आडी परीयछ धरी। बोलइ वात कूंयरी घणी, बोती छइ जमारा तणी।—का दे प्र

साहमीवच्छळ, साहमीवच्छल, साहमीवछल—देखो 'सामीवच्छळ' (रू. भे.)

साहमू, साहमो—देखो साम्हौ' (रू भे.)

उ०—१ सो आपे घोडा चढणो पछै किसा दिन मारू मीखिया घोडा चढ साहमां हाल जुद्ध करण सारू घोडा री वागा उठावौ जुद्ध करसा वैरी निदव नै न जास सकै।—वी स टी.

उ०—२ घणी गौ-घ्रत नै कपूर री आहूति दीजै छै। वेद ध्वनि कीजै छै। दूलह नै दूलहणी सेहरा वाधिया पूरव साहमा वेमाणिया छै। सेहरा दीजै छै। चार फेरा फेरीजै छै। वीमाह कीजै छै।

—रा. सा. स.

उ०—३ तुरक चडी गढ साहमा, आवइ ऊठवणी असवार। साम्हा सीगिणि तीर विछूटइ, निरता वहइ नलीयार।—का. दे. प्र.

(स्त्री. साहमी)

साहय—देखो सहाय' (रू. भे.)

उ०—कलियुग द्वापर परति वदि, क्रोध न जाइ माहारि रिदि। तूं साहय माहारै आवेस, पासा मधि करै प्रवेस।—नळाख्यान

साहरिय, साहरियदोख, साहरियदोस-सं. पु. [सं सहृत] एपणा समिति के ४७ दोपो मे से ३७ वा दोप। (जैन)

साहरू—१ देखो 'साहू' (रू भे.)

उ०—जाहरू वात मन री सरव जाणगर, देख म्रद माहरू मदत देगी। सीह आरोहणी काज तव साहरू, वाहरू वरन री आव वेगी।

—वालावरुस वारहठ

२ देखो 'सारौ' (रू. भे)

साहरौ—१ देखो 'सहारौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सारौ' (रू. भे)

साहल-स पु—१ सिंह, शेर। (ना. डि. को.)

स स्त्री.—२ देवी-देवताओ को की जाने वाली आर्त्त पुकार, विनय।

उ०—स्रवणं साहल सुणा सचाळी, ताय मिळी मुझ हेकण ताळी। 'पीथळ' वाहर काछ पचाळी, धावजे चारण धावळवाळी।

—प्रथीराज राठौड वीकानेर

रू भे—साहूळि, साहूलि।

साहलोतर—देखो सालिहोत्र' (रू. भे.)

साहलोतरी—देखो 'सालिहोत्री' (रू. भे.)

साहवौ—देखो 'सावौ' (रू. भे.)

उ० —माघ सुदी १५ पछै हेमजी स्वामी रै छ काया हणवारा त्याग हुता अनै त्यातिला कह्यौ फागुण वदि दूज रै साहवै बहिन नै परणाय दीक्षा दीज्यो।—भि. द्र

साहस-स. पु [स] १ हिम्मत, जुरत।

उ०—१ हरि जस रस साहस करै हालिया, मौ पडिता वीनती मोख। अम्हीणा तम्हीणै आया, स्रवण तीरथै वयण सदोख।

—वेलि

उ०—२ सुणी कमधा ऊपरा, उत मेवाडा वत्त। माथै साहस भलियौ, घातै हाथ परत्त।—रा. रू.

उ०—३ तपिया तप वारह वरस लग तिण, निर आहार रहाव विण नीर। भखियउ पवन गुभारह भीतर, सत साहस जोववा सधीर।—महादेव पारवती री वेलि

२ हठ, आग्रह।

उ०—बय बीरा सह बोळिया, केसर कूह दुकूळ। मळे तरुण मद

पण जोगिया री सेवा घणी करीजै, ज्यू घणा दिन राज रहै।
—नैणसी

२ वैभव, ठाट-बाट, ऐश्वर्य।
उ०—१ अठै रिणमल जी रै तीन वार भूजाई होवै। कडाह थाट रहै। अठ-पोहर सिवार खेलै। वडी साहिबी।—नैणसी
उ०—२ ताहरा मालदेजी नू खबर हुई। कह्यो—वीरमदेजी रै अधिकी साहिबी हुई। ताहरा वळै फोजा विदा कीवी वीरमदेजी ऊपर।—नैणसी
३ दरबार।
उ०—हिवै वसत की साहिबी वरणं छै। बसत महीपति कहतां राजा हुग्रो। कामदेव मन्त्री प्रधान हुग्रो। परवता की सिला ग्राछी सुदर रहि गई छै। यही सिघासण हुग्रो। ग्राव जाह की बराबरि साखा मिळी छै। छत्राकारि जु हुइ रह्या छै। एही मानों माथै छत्र घरै है। वाउका झकोळघा। ग्राबा का मजर गिरि गिरि पडै छै। एही मानू चमर हुग्रा।—वेलि टी
४ राज्य।
उ०—दोयसै गावा री साहिबी। वडा तरवारिया, वडा दातार। सो खरळ वेणीदास राज करै। वडा भोमीया। सो इहां रो लोक सारो ग्राप मुगदो वहै।—कुवरसी सांखला री वारता
५ दल, साथ।
उ०—तद रैबारिया कही—साहिबी कुवरसी साखलै री छै। तिण कही, म्हारो रजपूत था पल्लू मैं मारियो। तेरै वैर मैं लै जावा छा ग्रर थानु मारा छा।—कुवरसी सांखला री वारता
६ साहब होने का भाव।
७ ग्रानन्द हर्ष, मौज।
रू. भे.—सायबी, साहबी, साहिबि, साहेबी।

साहिबो—देखो 'साहिब' (ग्रल्पा; रू भे)
उ०—१ सखी ग्रमीणो साहिबो, बोह जूझो बळवड। सो थाभै भुजडंड सू, खडहडतो ब्रहमड।—बा दा.
उ०—२ सादूळो वन साहिबो, खाटै पग पग खून। कायरडा इण काम नू, जवक कहै जबून।—बा. दा
उ०—३ दुलही बनडो देखता, ऊलही उर बिच ग्राग। सगम देखो साहिबो, कीनो हस र काग।—बगसीराम प्रोहित री बात
उ०—४ ग्राठम ग्राज सहेलिया, ग्रो पख ग्रेळो जाय। हियै खटूकै साहिबो, वाटो ग्रेडी माय।—ग्रग्यात
उ०—५ साहिबा रै सीह थारो सारो, वडा घिणी जम ग्रासै वारो। खोटी वात सबारोइ खारो, ग्रातिमा मुंना पारि उतारो।
—पी ग्रं.

साहिब्ब—देखो 'साहिब' (रू भे)
उ०—दिन दान जिमणइ करइ, साहिब्ब सेव सच्चो करइ। कुराण न्याइ पेखि चल्लइ, सो मुसलमान भस्त जि वरइ।—व. स.

साहियोडी—भू का. कृ.—१ पकड़ा हुग्रा, ग्रहण किया हुग्रा, झेला हुग्रा. २ धारण किया हुग्रा. ३ शस्त्रादि उठाया हुग्रा, लिया हुग्रा ४ सहन किया हुग्रा, झेला हुग्रा ५ थामा हुग्रा, रोका हुग्रा ६ उद्धार किया हुग्रा, मोक्ष किया हुग्रा. ७ धरा हुग्रा, रखा हुग्रा ८ सभाला हुग्रा. ९ मारा हुग्रा, वध किया हुग्रा १० लिया हुग्रा. ११ सहन किया हुग्रा. १२ धारण किया हुग्रा, झेला हुग्रा. १३ रक्षा किया हुग्रा. १४ सधान किया हुग्रा, चढाया हुग्रा।
(स्त्री साहियोडी)

साहिय, साहियो—देखो 'साह'।
उ०—साहिया लोक वम नइ बालक, नागी वरण ग्रढार। ग्रालै ग्रावै हालरा कीधा, वान न लाभइ पार।—का. दे. प्र

साही—स स्त्री. [फा शाही] १ बादशाह का शासन या राज्यकाल।
२ किसी प्रकार का ग्रधिकारिक प्रकार, व्यवहार।
ज्यू—तानासाही, नादिरसाही, नौकरसाही, हिटलरसाही।
वि.—१ राजसी, बादशाही।
२ शाह का, शाह सम्बन्धी।
३ शाही जैसा।
४ देखो 'सेही' (रू भे.)
रू. भे.—साहि।

साहीवांन—स पु—शामियाना, तम्बू।

साहु—१ देखो 'साह' (रू भे.)
२ देखो 'साहू' (रू भे)
उ०—१ जुध धिणी जगत केणि भाति जीतो, विळै खाफर जिसो दइत वीतो। ग्रला साहु लै सिधि वाळै सुणीजै, ग्रला कलकी तणो ग्रवतार कीजै।—पी ग्र
उ०—२ हिव सभव जिन तीजो होय, गणधर एकसो नै वलि दोय। दुइ लख साहु साहुणी सार, तीन लाख छतीस हजार।
—ध व ग्र
(स्त्री साहुणी)

साहुकार—देखो 'साहूकार' (रू. भे)
उ०—किण ही मेलो नी हाटै साधु उतरचा। रात्रै चोर ग्राया। हाट खोली। साधू बोल्या—थे कुण हो जब तै बोल्या—म्हैं चोर छा। साहुकार हजार रुपइयां री थेली माहे मेली है सो म्हैं परही लै जाम्या।—भि द्र.

साहुणि, साहुणी—१ देखो 'साधवी' (रू भे)
उ०—हिव सभव जिन तीजो होय, गणधर एकसो नै वलि दोय। दुइ लख साहु साहुणी सार, तीन लाख छतीस हजार।
—ध व ग्रं.
२ देखो 'साउवाणी' (रू. भे)

साहुळि, साहुलि—देखो 'साहल' (रू. भे.)
उ०—१ ढोल सती करिजो घणी, वैगा सावळियाह। बारठ

सीसोदिया लारि लीधा।—र वचनिका

३ देखो 'साही' (रू भे.)

उ०—हाथ धोय वैठा साहि नैं, साराइ खोइ सनेही। होय अनूप राख हुयगी वा, दोय घडी मैं देही।—ऊ का.

साहिक—देखो 'सहायक' (रू. भे.)

उ०—खल खायक साहिक जना, दीनबंधु देवाधि। थाल बाळ सरणागती, तुमसैं पति हम व्याधि।—करुणासागर

साहिजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू भे)

उ०—१ चलना इसा मीर तीर चलावै, पखी जीवता म्रिग जाण न पावै। माथै साहिजादा बिन्हा राउ माल्ह, सम्है चालिओ ग्रेम उज्जेणि साल्ह।—र वचनिका

उ०—२ तिण समय दिली पातिसाह स्रोसेरसाह राज करै छै। तिण रै पुत्र सलेमसाह साहिजादौ वडो अदली हुयो। तिण समै जोधपुर राव मालदे राज करै छै।—द वि.

साहित—देखो 'साहित्य' (रू भे)

उ०—१ मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित बीदग सारनैं। कहि मद्ध भला रूपक करो, एं दस दोस निवारनैं।—र. रू

उ०—२ राजस्थान रै रजवाडा'र राजवसा री छत्तर-छीया मैं कळा अर साहित नैं आसरौ मिळियौ।—चितराम

साहितकार—देखो 'साहित्यकार' (रू. भे)

उ०—अेक जोधाबाई माथै अणूतौ सिप्पौ होण सूं बापडा माथै काई काई नी बीती। साहितकारां अर सिनेमावाळां रै पाण आज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी। काळजौ कळपै है अर बिखा रा भारा लीया फिरै।—चितराम

साहितिक—देखो 'साहित्यिक' (रू भे.)

उ०—राज समाज साहितिक सभा, माग जाण जुग लेवणी। निस नम भाज यान गुप्तचर, सर निर उपवण भेवणी।—नारी सईकहो

साहित्य-सं पु [स.] १ शब्द और अर्थ का यथावत् सहभाव सार्थक शब्द मात्र।

२ ज्ञान राशि का सचित कोश।

३ गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रथों का समूह जिनमें सार्वजनिक हित सम्बन्धी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं, वाङ्मय।

रू. भे.—साहित।

साहित्यकार-वि. [स] साहित्य-सृजन करने वाला।

रू भे —साहितकार।

साहित्यिक-वि.—साहित्य सम्बन्धी, साहित्य का।

रू. भे.—साहितिक।

साहिव-स पु. [फा] १ भगवान, ईश्वर।

उ०—१ वेरै बैस न भरकियै, मन मैं रही सधीर। हरीया साहिब सा धणी, पारि उतारै तीर।—अनुभववाणी

उ०—२ साहिब सब सू गुपत है, जे कोई परगट जाण। हरीया दीसै दिस्ट मैं, ताहि न जाणि पिछाण।—अनुभववाणी

२ स्वामी, मालिक।

उ०—१ साहिब चुगल समान हूं, सौ इज बुरी सुणंत। स्रोता वकता होत सम, भणिया लोक भणंत।—बा. दा

उ०—२ लाखा सठ दे लीजिए, पडित गुण भरपूर। कायर लाखां वेच कर, साहिब लीजै सूर।—बा. दा.

उ०—३ जनम जनम को साहिब मेरो, वाही सो लो लागी। आंण मिल्यौ अनुरागी जोगी, आण मिल्यौ अनुरागी।—मीरां

३ पति, खाविंद। (डि. को.)

उ०—१ आज हुआ बिछ्छाण सह, आज हसदा मुख्ख। आप पधारै आगणै, साहिब दीना सुख्ख।—गु रू बं

उ०—२ ताहरा भरमल जाणियौ, जो कुवरजी छै। तद बोली—जो साहिब, आघा पधारीजै। अठै दूजो कोई नही। हूं रावळी चाकर खड़ी वाट जोऊं छु।—कुवरसी साखला री वारता

४ प्रेमी, यार।

५ नाम के साथ व्यवहार में प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मानसूचक शब्द।

६ उच्च अधिकारी या कर्मचारी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

७ अंग्रेजो के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

उ०—अमावड़ वना मैं हुई लोथा अनत, चढै घोड़ां बात दिगत चाली। सायरा दिराणा हजारा साहिवां, खुरमिया हजारा हुई खाली।—कविराजा बांकीदास

रू भे.—महाब, सा, साब, सा'ब, सायब, साहब, साहिब्ब, साहेब।

अल्पा,—सायबियौ सायबौ, साहबियौ, साहबौ, साहिबियौ, साहिबौ।

साहिबजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू भे)

उ०—विघ्र रावण सिर विलद, चहिज चित धरै इरादौ। जुडै पहल इद्रजीत, जेण विघ्र साहिबजादौ।—सू प्र.

साहिबि—देखो 'साहिबी' (रू भे)

साहिबियौ—देखो 'साहब' (अल्पा, रू भे)

उ०—राजुल कहै सजनी सुनो रे लाल, रजनी केम विहाय है सहेली। अरज करो आंणी इहा रे लाल, साहिबियौ समझाव हे सहेली।—ध. व ग्रं.

साहिबी-स स्त्री [फा] १ हुकूमत, शासन।

उ०—१ तरै गुर भीम री थाळी माहे सूं उरौ लियौ, लेनैं आपरा पत्तर माहे घालियौ, पांणी भेळौ नाई नै पी गयो। नैं भीव नूं कह्यौ—खीच तैं खाधौ हुतौ तौ तू अमर हुवतौ म्हैं तोनूं इण धरती री साहिबी दी।—नैणसी

उ०—२ माथै हाथ दियौ। कह्यौ—काछ री साहिबी म्हे तोनूं दी,

उ०—परघर पग नहीं मेलणो, बिना मान मनवार। इजत आवत देख कर, सिंगल री सतकार।—अग्यात

२ देखो 'सिंहल' (रू. भे.)

उ०—मलय सिंगल कोसल नइ अध्य, स्रीपरवत द्राविड नइ वध्य। वैरोट तापी लाजी धार, स्रीबंदरभ पाटल अतिसार।

—नळदवदती रास

रू. भे.—सींघल।

सिंगलदीप, सिंगलद्वीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे.)

सिंगसट, सिंगसठ, सिंगसत, सिंगसत्थ, सिंगसथ—स. पु. [सं. सिंहस्थ] सिंह राशि स्थित गुरु का समय जो १३ मास का होता है। इस अवधि में विवाह संस्कार निषिद्ध माना गया है।

उ०—माह एक पछै सिंगसत लागसी सो महिना तेरह रहसी।

—व. भा.

रू. भे.—सिंहसत, सिंहसत, सीघसट, सीघसठ, सीघसत, सीघसथ।

सिंगाड़ी, सिंगाडो—देखो 'सिंगोटी' (रू. भे.)

उ०—सुगट सिंगाडी साकवर।—व. भा.

सिंगार—स. पु.—१ एक प्रकार का घोडा। (शा. हो.)

२ देखो 'स्रंगार' (रू. भे.)

उ०—१ रगत पिद्ध बळि लिद्ध, जपै जेकार सकत्ती। कियौ सकर सिंगार, रुंडमाळा गळ घत्ती।—गु. रू. बं.

उ०—२ मागणहारा सीख दै, ढोलइ तिण हिज ताळ। सोवन जडित सिंगार दे, नाग्यउ दळिद उलाळ।—ढो. मा.

उ०—३ स्री वरणण पहिलो कीजो तिणि, गूंथियो जेणि सिंगार ग्रथ।—वेलि

सिंगारक—स. पु. [सं. श्रृंगारक] कामदेव, मदन। (अ. मा.)

सिंगारचौकी—देखो 'सिणगारचौकी' (रू. भे.)

उ०—आवियौ वादि तोरण 'अजौ', पह सिंगारचौकी परै। तदि मिळै लोक मुरधर तणा, कोड दरब निजरा करै।—सू. प्र.

सिंगारणौ, सिंगारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ घर बुगलाण तेज छत्रधारी, समँ हेक चंद्रिका सिंगारी।

—सू. प्र.

उ०—२ रजधानी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमांण। सूचै महल सिंगारिया, सोरभी लहराण।—रा. रू.

उ०—३ तळिया तोरण बाधा हाट सिंगारी पोळि सिंगारी घरि घरि गूडी ऊछळी।—द. वि.

सिंगारणहार, हारौ (हारी), सिंगारणियौ—वि०।

सिंगारिअोडौ, सिंगारियोडौ सिंगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिंगारीजणौ, सिंगारीजबौ—कर्म वा०।

सिंगारियोडौ—देखो 'सिणगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री सिंगारियोडी)

सिंगासण—देखो 'सिंहासण' (रू. भे.)

उ०—असिया रह्या पग आफळता, मदझर खळहळता मैमत। बहळौ घणी सिंगासण वाळो, पाळो होय हालियो पंथ।

—प्रथीराज राठोड़

सिंगियो—स. पु. [सं. श्रृंगिक] एक प्रकार का स्थावर विष।

वि. वि.—इसको गाय के सींग के बांध देने पर गाय का दूध लाल उतरने लगता है। इसका पौधा हल्दी या अदरक के समान होता है, जड सींग के आकार की होती है।

सिंगी—स. स्त्री. [सं. श्रृंगी] १ तुरही नामक बाजा।

उ०—सर सरिता बहु बाग सहवर, मांझ तिण सिंगी काम चित्र मांदर।—सू. प्र.

२ योगियो द्वारा फूंक कर बजाने का सींग का बाजा।

३ घोडो का एक अशुभ लक्षण।

रू. भे.—सींघी।

४ देखो 'स्रंगी' (रू. भे.)

५ देखो 'सिंघवी' (रू. भे.)

सिंगीमलकाछवौ—सं. पु.—एक प्रकार का कछुआ।

उ०—ओसीसा गीडवा कैसा विराजै छै। जांणै सिंगीमलकाछवौ समुद्र मे केळ करै छै।—रा. सा. स.

सिंगीमूरौ, सिंगीमूहरौ, सिंगीमोहरौ—स. पु.—एक प्रकार का पत्थर विशेष।

रू. भे.—सींगीमुहरौ।

सिंगीय, सिंगीया—सं. स्त्री. [सं. श्रृंगिका, प्रा. सिंगिय] पिचकारी।

उ०—अरे काहडु अन्नइ नेमिजिणु. खड्डोखलि मिलि जाइ। अरे सिंगीय जलभरे छांटियइ, एसिय रमलि कराइ।—समुद्रर

सिंगोडौ—देखो 'सिंघोडो' (रू. भे.)

सिंगोटी—स. स्त्री.—१ बैलो के सींगो पर पहनाया जाने वाला एक प्रकार का आभूषण।

२ सींगो की आकृति या बनावट।

३ एक मध्ययुगीन सरकारी टैक्स।

रू. भे.—सिंगाडी, सिंगाडो, सींगाडी, सींगोटी।

सिंगो—स. पु. [सं. श्रृंग] १ फूंक कर बजाया जाने वाला एक बाजा विशेष, नरसिंहा।

२ देखो 'सींगी' (रू. भे.)

३ देखो 'सींग' (रू. भे.)

सिंग्या—देखो 'संग्या' (रू. भे.)

सिंग्याहीण—देखो 'संग्याहीण' (रू. भे.)

उ०—टापू माथै सिंग्याहीण खत बध्योडो, अेक काळो मिनख तांगिया खावतो अठी ऊठी भवतो हो।—फुलवाडी

सिंघ—स. पु. [सं. सिंह] (स्त्री. सिंघण, सिंघणी) १ सिंह, शेर।

(डिं. को., ना. मा; ना. डिं. को; ह. ना. मा.)

वाहुडियौ वहत, साहुलि सामळियाह ।—पी. ग्र.

उ०—२ समझत धवळ सर साहुळि संभळि, आळूदा ठाकुर अलल ।
पिंड वहुरूप कि भेख पालटै, केसरिया ठाहे किगल ।—वेलि

साहुवांणि, साहुवांणी—देखो 'साउवाणी' (रू. भे.)

साहू-स. पु.—१ साधु, मुनि ।

उ०—अजितनाथ बीजो मन आणु, प्रणमीजै गणधर पचाणु ।
साहू इकलख वदो भविया, त्रिण लख वीस सहस साधवीया ।
—ध व. ग्रं

२ देखो 'साह' (रू. भे.)

रू. भे.—साहु ।

साहूकार-स पु.—१ कोई वडा व्यापारी, महाजन, सेठ, वैश्य ।
(डि. को)

उ०—१ कितरा एक दिन हूवा, उवै चोर गुजरात गया । ताहरा गुजरात मैं साहूकार रो वेटो परणीज नै परदेस व्यापार गयो हूतो, सू वरसै १० आयौ ।—स्यामसुंदर री वात

उ०—२ अंक चोर कह्यौ—कुदरत बणावणिया भगवान नैं ई चोरा री जात ईवैं कोनी । ओ ई साहूकारां रै पखैं वध्योडो । अेडी काई जरूरत ही उणनैं रेत अर चाद वणावण री ।—फुलवाडो

२ वह व्यक्ति जो रुपयो के लेन-देन का कार्य करता हो ।

उ०—सतगुर साहूकार है, सिख सौदागर जानि । जनहरीया राखै नहीं, काय न अतर कानि ।—अनुभववाणी

वि.—ईमानदार ।

उ०—रुघनाथजी कैयो—चोर जको चोर अर साहूकार है जको सोळह आना साहूकार । राज तेज मैं मोकळी पूछ-ताछ रैवती ।
—दसदोख

रू भे.—साऊकार, माहूकार ।

साहूकारी-स स्त्री.—१ साहूकार होने की अवस्था या भाव ।

२ ईमानदारी ।

साहूकारौ-स. पु.—१ रुपयो के लेन-देन का कार्य या भाव ।

२ ईमानदारी ।

साहूवांणी—देखो 'साउवाणी' (रू. भे.)

साहेत—देखो 'सहित' (रू भे.)

उ०—सको राकसा एकणी हाथ साहे, मेलु लक साहेत पाताळ माहे । जपै वैण ऐहा हणू मान ज्यारा, तेड़ै मात वभीखणा भ्रात त्यारा ।—सू प्र.

साहेव—देखो 'साहिब' (रू. भे.)

साहेवी—देखो 'साहिबी' (रू भे.)

उ०—साखलो खीवसो 'चहमुकाळ' जागळ राज करै । वडो साहेवी वडो सिरदार । सो खीवसो हळोद भालै परणीया । वडो विहा हुवो ।—कुवरसी साखला री वारता

साहेली—देखो 'सहेली' (रू. भे.)

उ०—जडाऊ नगां मिंदरा हेम जाळी, सभै सेज साहेलियां चित्र साळी । वणी ऊजळी सेज एही विराजै, लखै खीर सांमदरा फेर लाजै ।—सू प्र.

साहोगम-स. पु.—ब्रह्मा, विधाता । (डि. नां. मा.)

साहौ—देखो 'सावौ' (रू. भे.)

उ०—१ निरखै ततकाळ त्रिकाळ निदरसो, करि निरणै लाग कहण । सगळै दोख विवरजित साहौ, हूतो जई हूऔ हरण ।
—वेलि

उ०—२ तरै आपरै नांवै 'तो विजैराव न झालियो नै देवराज वरसै ५ मैं वेटो हुतो, तिण रै नावै नाळेर झालियो नै साहो थापियो ।—नैणसी

उ०—३ ताहरा चारण कह्यौ—फोफाणंदजी परणीजै तो पर णावा । ताहरा कह्यौ जी आज रौ साहो दयौ तौ परणीजा ।
—फोफाणद री वात

सिकुल—देखो 'साकळ' (रू. भे.)

उ०—हम जियत ही हनुमतसी पर, हत्थ म्लेच्छन को परयौ । यह वत्त हुव अनरत्थ मी, सादूळ सिकुल तैं जरयौ ।—ला. रा.

सिख्या—देखो 'सख्या' (रू. भे.)

उ०—पाहीवाळ री अतरी भैस घोडी उठ हाथ आवै तिकां री सिख्या काई नही ।—खीवर छाडावत री वात

सिग-स पु [स शृग] १ शिखर, चोटी ।

२ देखो 'सग' (रू. भे.)

उ०—राजान अनेक तीयइ सिग रमतउ, धरियइ गिर चिटी आधार । मुरळी अधर झालियइ माहव, आया गरुड़ तणा असवार ।—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'सीग' (रू भे.)

सिगडी—देखो 'सीग' (अल्पा, रू भे.)

सिगणी—देखो 'सीगणी' (रू. भे.)

उ०—सौ किण भात री कवाणा, थेट विलाती, सीगरी सिंगणी तूंजी हळकी, अठारै टाक चिलै री खाऊणहार ।—रा. सा. स.

सिगरफ-स पु [फा शिंगरफ] ईंगुर, हिंगुल ।

सिगरफी-वि. [फा. शिंगरफी] १ हिंगुल के समान रंग का, हिंगुल जैसा ।

२ लाल ।

सिगराज-स पु [देश] एक प्रकार का चिकना सफेद पत्थर जिसे पीसकर चूने के साथ मिलाया जाता है । (क्षेत्रीय)

(मि. माखणियौ-माटौ)

सिगरौर-स पु [स शृगवेर] प्रयाग के पश्चिमोत्तर कोण में स्थित एक तीर्थ जहां निषादराज गुह की राजधानी होना मानी गई है ।

सिगल-स. पु. [अ] १ रेल की पटरी के किनारे ऊंचे खंभे पर लगी लोह की वह पट्टी जो रेल के आने व जाने की सूचना देती है ।

रू भे.—संगवी, सघवी, सिंगी, सिंघी ।

सिंघसादूळ—देखो 'सारदूळ' (रू. भे)

सिंघसेन—स पु. [स. सिंह-सेन] एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—तदा नाभिकमळ थैं ब्रह्मा नीपनौ । ब्रह्मा रौ अत्री । अत्रि रौ कस्यप, कस्यप रौ सूरज तिण वंस उतपन्न राजा सिंघसेन ।
—द वि

सिंघार—देखो 'सहार' (रू. भे.)

उ०—१ सिंघार हुवै असवार सूर, हर हार करै वर रंभ हूर । गळ भार लियं पळचार ग्रीध, पत भार सगत भर रुधर पीध ।
—वि. स

उ०—सोहै तू डाहुल दंत सिंघार, निमो नरकासुर खोसण नार ।
—पी. ग्र

२ देखो 'सस्त्र' (रू भे)

उ०—असटग विभूत सनाह उपावै, सोह छतीस सिंघार निय । सिध बारह पथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रूप किय ।
—गु. रू. व.

सिंघारणौ, सिंघारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू भे)

२ देखो 'सहारणौ, सहारबौ' (रू भे.)

उ०—धनुधारै रे धनुधारै, सर एका वाळ सिंघारै । महाराजधिराज सुग्रीव मना रा, सारा कारज सारै ।—र. रू.

सिंघारियोडौ—देखो 'सिणगारियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'सहारियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सिंघारियोडी)

सिंघाळ—देखो 'सिंघाळौ' (रू भे.)

उ०—१ चहवाण 'दाळ' चम्मर बबाळ, सूरमौ सीह सामंत सिंघाळ ।—गु रू. व.

उ०—२ करता कूक कराळ, आया फरियादू असुर । सुणजे 'दला' सिंघाळ, वीरम फरास वढावियौ ।—गो रू

उ०—३ सेखावत वाहत खाग सिंघाळ, चाढै जळपूर चवद्दह चाळ ।—सू प्र.

२ देखो 'सिंघळी' (रू भे)

उ०—बाजै जसवास वीरघट बळवळ, सिर आकुस प्रम लीया सिंघाळ । खग पोगर खळ रूख उखाळै छावौ मद आयौ 'छाताळ' ।—महाराज छत्रसिंघ रौ गीत

सिंघाळी—स. स्त्री.—जो सिंह की सवारी करे, दुर्गा ।

उ०—सिंघाळी तुहीं सीमिका होल सैणी, त्रिदाळी तुहीं गूंगिका नाग वैणी । खगाळी तुहीं बिब्बडा चरखडाई, मुद्राळी तुहीं आवडा मामडाइ ।—मे. म

सिंघाळौ—वि.—१ योद्धा ।

उ०—१ 'सावळ' तणा ऊरर जे सारा, घूमै 'अवरग' साह घड़ । काळै मरण सिंघाळै कीधौ, उदयापुर वाळ अनड ।
—उगरसिंह राठौड़ रौ गीत

२ पराक्रमी, बलवान ।

उ०—सुणै वचन धिक वीर सिंघाळा, जाणै जेठ सालुळी ज्वाळा ।
—गो. रू.

३ सींगो वाला ।

उ०—मोडला माण पण मेलिया, सिंघाळा वळ कर समथ । निरवाह तुही नव साहसा, रेण कळता राज रथ ।—अनोपसिंह सादू

४ श्रेष्ठ, अग्रणी ।

स पु.—हाथी, गज ।

रू. भे —सघाळौ, सघाळो, सिंघाळौ, सींगाळौ, सींवाळौ ।

सिंघावलोकण, सिंघाविलोकण—देखो 'सिंहावलोकन' (रू भे.)

उ०—कह प्रहास साणोर क्रिव, अत विसम सम आद । तुक सिंघाविलोकण तिय, मुकताग्रह मुरजाद ।—र. ज प्र.

सिंघासण—देखो 'सिंहासन' (रू भे.)

उ० —१ सूरजपोळ मूं बारै जको ई पैलौ मानखौ मिळै, वौ ई उजीण रै सिंघासण रौ धणी ।—फुलवाडी

उ०—२ मत्री तहा मयण वमत महिपति, सिळा सिंघासण ग्रर सघर ।—वेलि

सिंघासणचक्र—देखो 'सिंहासनचक्र' (रू भे)

सिंघी—१ देखो 'सिंगी' (रू भे)

२ देखो 'सिंघवी' (रू भे.)

३ देखो 'सिंही' (रू भे.)

४ देखो 'सिंगियौ' ।

उ० वीछडता ही सज्जणा, क्याही कहण न लद्ध । तिण वेळा कठ रोकियउ, जाणक सिंघी खद्ध ।—अज्ञात

५ देखो 'सिंघवी' (रू भे)

सिंघेस्वरी—स स्त्री [स सिंहेश्वरी] १ दुर्गा ।

२ पार्वती ।

सिंघोडौ—सं पु —१ तालाब के पानी के ऊपर फैलने वाली लता के लगने वाला एक तिकोना फल । (अमरत)

२ तिकोनी सिलाई या वेल-बूटे जो सिंघाडे के आकार के होते हैं।

३ सिंघाडे के समान तिकोना समोसा नामक एक नमकीन पकवान ।

४ एक प्रकार की आतिशबाजी ।

५ ऊट के चारजामा के नीचे लगाई जाने वाली गद्दी ।

रू भे —सीघोडौ ।

सिंघोदरी—वि. स्त्री. [स सिंहोदरी] १ जिसका उदर सिंह के समान हो ।

२ सिंह के समान पतली कमर वाली ।

सिंचणियौ—देखो सींचणियौ' (रू भे.)

सिंचणौ, सिंचबौ—देखो 'सींचणौ, सींचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अेक विकराळ नीहरयो सिंघणी रै कारण जंगळ में सून्याड व्हैगी ही।—फुलवाडी

उ०—२ सिंघ सरस रायसिंघ रै, रहियौ भूभै राम। ग्राडौ सरवहियौ अछै, कळह तणौ घरि काम।—हा. झा.

उ०—३ वाघ सिंघ चितर घणा, भुइ बीहती चालइ रे। चालइ नइ सालइ वरसा रत घणु ए।—नळदवदनी रास

पर्याय.—ग्रभग, ग्रमल, ग्रस्टपाद, ग्रावद्धनख, एकवळा, ककाळ, कठीर, कठीरव, करछिप, करीमार, काळ, केसरी, खिणकर, गजराज-ग्ररि, गजरिपु, गहपूर, ग्रह, ग्रीठ, चोळचख, छटाधाव, जगो, जीवजच्छ, डारण, ढुढराव, दाढाळह, दीरघछळ, दुगम दुछर, नखआवध, नखी, नहराळ, नाहर, पचमुख, पचसिख, पचायण, पळपक्ष, पारद, वनराज, बाघ, भुभारव, भूपवन, मग, मजारछळ, मतगरिपु, मयद, मरगराज, महाताव, महानाद, म्रगपत, मग्रमरद, म्रगमारण, म्रगयद, म्रगराज, म्रगेस, लकाळ, लोहलाठ, वनपती, वाण, विकराळ, सहारण, सघीर, सरभ, सादूल, सारग, साहल, सिघळी, सूर, सूरसेत, हर, हरि, हरीजख।

२ वीरता या श्रेष्ठता सूचक शब्द जो प्रत्यय रूप मे किसी के नाम के पीछे लगता है।

३ वास्तुविद्या मे प्रासाद का एक भेद।

४ एक राग का नाम।

५ ज्योतिष मे बारह राशियो मे से पाँचवी राशि। (ना. मा)

६ छप्पय छन्द का १६ वा भेद जिसमे ५५ गुरु, ४२ लघु कुल ९७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

रू भे —सघ, सिंह, सीह, सोह।

सिघण–स पु —पवार राजपूत वश की एक शाखा।

सिघनाद—देखो सिंहनाद' (रू. भे.)

उ०—१ वीरारस हेक न मेल्है वाद, निहर्स हेक करै सिंघनाद।
—गु. रू व.

उ०—२ गर्जसिंघ कियो गज केसरी, सिंघनाद मेवाड सिरि।
—गु. रू व.

सिंघपोळ–स पु —वह मुख्य द्वार जिस पर सिंह की मूर्ति स्थापित हो।

सिंघरास, सिंघरासी—देखो 'सिंहरासी' (रू भे) (ग्र मा; ना मा)

सिंघळ, सिंघळद्वीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे)

उ०—की कठियाणी कायथण, पुगळ प्रसू प्रथीप। ग्रमराणी घर ऊपनी, दूजै सिंघळदीप।—पा प्र.

सिंघळी–स. पु —१ हाथी। (ग्र मा, ह ना. मा)

उ०—डोहत सूंड सिंघळी घटा विराज सामळी।—गु रू व

२ सिंह।

उ०—तठा उपरात करि नै राजान सिलामति वडा सिकारी सिंघळी सादूळ पटाला केहरी नवहथा कठीरीग्रा। ..।
—रा. सा. स.

३ पुत्र, लडका, ग्रौलाद।

उ०—सिवा रा सिंघळी मुरधरा सहायक, कूप रा पोतरा उग्रकारी। ग्रंजसै गोत रा ग्रापसू ग्राज दिन, धजावंध चिरजी छत्रधारी।—ग्रासोप ठाकुर चैनसिंह रौ गीत

वि —१ वीर, बहादुर।

उ०—१ मुहर भूप वित मुहर, गुमर घर कुंवर 'गुमानौ'। 'सादूळौ' सिंघळी, एम बोलियौ 'ग्रमानौ'।—सू प्र

उ०—२ केई वारा तोखारा हरौळा ग्रोरै फतै किधी। केई फौजा मार दीधी सिंघळी कमध।—किरपाराम

२ वशज।

३ जबरदस्त।

रू. भे.—सीगळी, सीघळी।

सिंघवाळ–स पु —१ घोडे का एक रोग जिससे घोडे के पेट मे पीले रंग के कीड उत्पन्न हो जाते हैं। (शा हो)

२ सिंह के शरीर से उत्पन्न होने वाली गन्ध।

सिंघवाहणी, सिंघवाहनी–स. स्त्री [स. सिंह+वाहिनी] १ गिरिजा, पार्वती। (ग्र मा, ह. ना मा)

२ दुर्गा, भवानी।

३ रणचडी।

रू भे.—सघवाहणी, सिंहवाहणी।

सिंघविलोक—देखो सिंहावलोकन' (रू. भे)

सिंघवी–स पु —ग्रोसवालो की एक प्रमुख शाखा व इस शाखा का व्यक्ति जो सघी या संघवी के नाम मे पुकारे जाते हैं।

वि वि —पहले नन्दवाणा वोहरा (ब्राह्मण) जाति मे देवजी नामक प्रतापी पुरुष के पुत्र को साप ने काट लिया जिसे एक जैन मुनि ने जीवित कर दिया था। उसी समय से इनका इस्ट पुण्डरिक नागदेव हुग्रा। लगभग २३ पीढियो तक ये नदवाणा वोहरा ही रहे। तत्पश्चात् वोहरावशीय ग्रामानन्दजी के पुत्र विजयानन्दजी ने सुप्रख्यात जैनाचार्य जिनवल्लभ सूरि के उपदेश से जैन धर्म को स्वीकार किया। इन विजयानन्दजी से कुछ पीढियो के बाद श्रीधरजी के पुत्र सोनपालजी ने शत्रुञ्जय का बडा भारी सघ निकाला। इनके बाद भी इनके वशजो ने बाद के कई सघो का नेतृत्व करते रहे। ग्रत. ये सघी या सघवी कहलाये।

मतान्तर स ग्रोसवालो की एक शाखा विशेष जो सिंघी या सिंघवी नाम से पुकारी जाती है। सिंघी या सिंघवी शब्द की व्युत्पत्ति सिंह शब्द से मानी जाती है। इनके पूर्वज देशी राज्यो मे दीवान, प्रधान, मन्त्री, सेनापति, फौजबख्शी व ग्रन्य सैनिक तथा प्रशासनिक पदो पर कार्य करते रहे ग्रौर इसीलिए इनके नामो के साथ सिंह (सिंघ) व सिंहवी (उच्चारण—सिंघवी, ग्रर्थ—सिंहो मे प्रमुख या श्रेष्ठ) का प्रयोग होता रहा है। ये जैनी होने के नाते जैन धर्म व विशेष रूप से सनातन धर्म को मानते हैं।

श्री, तिका म्हाराज वखतसिंघजी मकराणा री नवी कराई।
—मारवाड री ख्यात

सिणगारणी—स स्त्री —श्रृगार की सामग्री।
वि. स्त्री.—श्रृगार करवाने वाली।
उ०—ताह बडारण सहेलिया आगै ४ पात्रा सिणगारणी खवास्या रहै छै। १ गुणमाळा, २ फूलमाळा, ३ विजैमाळा, ४ दीपमाळा।
—रा. सा. स

सिणगारणौ, सिणगारवौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू. भे)

सिणगारियोडौ—देखो 'सिणगारियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री सिणगारियोडी)

सिणतरौ, सितरौ—देखो 'सिणियौ' (रू भे)

सिंदडी—देखो 'सीदडी' (रू भे)
उ०—कहै दास सगराम, जितै साजी है जिदडी। करो भजन दिन रात, काच री है या सिंदडी।—सगरामदास

सिंदण, सिंदन—१ देखो 'स्यदन' (रू. भे)
उ०—खाडैत्या खोलिया, खिडक खासा रथखाना। सिणगारचा सिंदणा, मिळण सामा मिजमाना।—मे म
२ देखो 'संधव' (रू. भे)
३ देखो 'सिंधी' (स्त्री)

सिंदळी—स. पु —शुभ रग का घोडा।
उ०—१ गुलजार बोज अबलख गात, सिंदळी अनै सम्गा सुभात।
—सू प्र
उ०—२ ढाल सिंदळी ऊपर छै सो आगै 'होय कटारी माहे छुरी थी सो काढी।—कुंवरसी साखला री वारता

सिंदवी—स स्त्री —एक रागिनी विशेष।
उ०—उण वेळा कवर कनै सिंदवी आसावरी गाइजै। रस रा डका लगत।—पना

सिंदारौ—देखो 'सिंझारौ' (रू भे.)

सिंदिया—स. पु —१ सिंधिया।
२ देखो 'सध्या' (रू भे.)

सिंदुरिया—वि.—सिंदूर के रग जैसा।

सिंदुरियौ—स पु —सिंदूरी रग का पौधा।
वि.—सिंदूर के रग का, सिंदूर रंग सम्बन्धी।
रू भे —सीदूरियौ।

सिंदूक—देखो 'सदूक' (रू भे)

सिंदूर—स पु [स] १ सौभाग्यवती स्त्रियो के माग मे भरने का एक लाल रग का चूर्ण जो ईंगुर को पीस कर तैयार किया जाता है।
(डि. को)
वि. वि.—हनुमान, गणेश आदि देवताओ की मूर्तियो पर यह घी या तेल मिला कर चढाया जाता है।
उ०—१ दाढी रग उज्जळ भाळ सिंदूर, प्याला मतवाळ नसौ भरपूर।—मे म
उ०—२ जिका काट माजिया, छाट उजळ जळ छोळां। रचि सिंदूर चितराम, चरचि आनन रग चोळा।—मे. म.
२ देखो 'सिंधुर' (रू. भे) (ना. डि को.)
रू. भे —संदूर, सीदूर, स्यदूर।

सिंदूरतिलक, सिंदूरतिलका—स पु.—१ हाथी।
स स्त्री.—२ सधवा स्त्री।
रू भे.—सदूरतलका, सदूरतिलका।

सिंदूरदान—स. पु. [स सिंदूर+फा. दान] विवाह मे वर द्वारा कन्या के माग मे सिंदूर डालने की एक रश्म।

सिंदूरिया, सिंदूरी—स स्त्री —सिंदूर रखने की डिबिया।
वि —सिंदूर के रग का।
रू. भे.—सीदूरियौ।

सिंदूवार—स. पु.—१ वृक्ष विशेष। (सभा)

सिंध—स. पु. [स. सिंधुः] १ पाकिस्तान के दक्षिण पश्चिम का एक प्रदेश।
२ पश्चिमी पाकिस्तान की प्रमुख नदी।
३ मालवा की एक नदी।
४ देखो 'सिंधु' (रू भे.)
उ०—१ मागी सीख नरिंद सू, दीन्ही वीख कुंवार। जाणै वध पलट्टियौ, सिंध प्रळै री वार।—रा रू
उ०—२ आतस बाजी गाडिया, आरावा अनमध। गडडै गोळी नाळियां, किरि लहरी रव सिंध।—गु रू. व.
उ०—३ नर नाग सुरासुर जोड नथी, कथ वेद पुराण दुजाण कथी मुर वीट मधु हण सिंध मथी, रट रे मन राघवदासरथी।
—र ज प्र

सिंधक—स पु [स सध्यक] पुष्प, फूल। (अ मा)

सिंधचारी, सिंधचीरौ—देखो 'सिंधुचरी' (रू. भे)
((अ. मा; ह. ना. मा.)

सिंधण—देखो सिंधी' (स्त्री.)

सिंधन—१ देखो 'सनद' (रू भे)
उ०—चडाळा थारी वात री की सिंधन व्है तौ थे भूत क्यू बाजौ।
—फुलवाडी
२ देखो 'सिंधी' (स्त्री.)

सिंधपीण—स. पु. [स. सिंधु+रा. पीणौ] अगस्त्य मुनि।
वि वि —ये ऋग्वेद की कई ऋचाओ के रचयिता थे। देवासुर सग्राम मे जब दानव सागर में जाकर छिप गये और खुद सागर ने भी इन्हे क्षुब्ध कर दिया था, तो ये सागर को ही पी गये और इसी कारण समुद्रचुलुक या सिंधपीण कहलाये।

सिंधभैरव—स. स्त्री —एक राग विशेष।

उ०—लाधइ सार सुधा रसिका रसि तें सिंचति। अग धरीयै अगलोचना लोच ना रग चूकति।—जयसेखर सूरि
सिंचणहार, हारौ (हारी), सिंचणियौ—वि०।
सिंचिग्रोडौ, सिंचियोडौ, सिंच्योडौ—भू० का० कृ०।
सिंचीजणौ, सिंचीजवौ—कर्म वा०।
सिंचन-स. स्त्री —सिंचाई करने की क्रिया या भाव, सिंचाई।
सिंचय-स पु [सं] १ वस्त्र, कपडा। (डिं को.)
उ०—ग्रग्रावळि ग्रलगरद्ध रूप सचय सचारै। जळनिधि निभ सिंचय जाळ इत तिरत ग्रपारै।—व. भा
२ ग्रावरण।
३ देखो 'सचय' (रू भे)
सिंचाण, सिंचाणौ-स. पु —१ एक शिकारी पक्षी जो बाज की अपेक्षा छोटा होता है।
उ०—१ पाए पवग पोडए, धरा धमस घोड ए। हमरस ग्रसी हुए ए, सिंचाण जाण पख ए।—गु रू. ब
उ०—२ साई नाव सभाळि लै, क्या सोवै नर नीद। काळ सिंचाणौ सिर खडौ, ज्यौं तोरण ग्रायौ बीद।
—परमानद वणियाळ
२ दोहा नामक छन्द का चतुर्थ भेद, जिसमे १९ गुरु ग्रौर १० लघु होते हैं।
रू. भे.—सचाण, सचाणौ, सचान, मचाण, सचान, सिचाण, सिच्चान, मीचाण, सीचाणौ।
सिंचाई-सं. स्त्री —१ सिंचाई करने की क्रिया या भाव।
२ सिंचाई का कर या लगान।
३ सिंचाई का पारिश्रमिक या मजदूरी।
सिंचाणौ, सिंचावौ—देखो 'सींचाणौ, सींचावौ' (रू भे.)
सिंचाणहार, हारौ (हारी), सिंचाणियौ—वि०।
सिंचायोडौ—भू० का० कृ०।
सिंचाईजणौ सिंचाईजवौ—कर्म वा०।
सिंचायोडौ—देखो 'सींचायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सिंचायोडी)
सिंचावणौ सिंचाववौ—देखो 'सींचाणौ, सींचावौ' (रू भे)
उ०—क्या रे वधावा नीमडलो री पाळ हजारी ढोला। क्या रे सिंचावा ए हरियै रूख नै जी म्हारा राज।—लो गी.
सिंचावणहार, हारौ हारी), सिंचावणियौ—वि०।
सिंचाविग्रोडौ, सिंचावियोडौ सिंचाव्योडौ—भू० का० कृ०।
सिंचावीजणौ, सिंचावीजवौ—कर्म वा०।
सिंचावियोडौ—देखो 'सींचायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सिंचावियोडी)
सिंचियोडौ—देखो 'सींचियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री सिंचियोड़ी)
सिंजनी-स. स्त्री [स. शिञ्जनी] पैरो का ग्राभूषण, पायजेब, पैंजनी।
उ०—धिमिद्ध मिद्ध ऊव्वनी न सिंजनी सुनी नही।—ऊ का.
२ धनुष की डोर, प्रत्यचा।
३ कटि मेखला के नूपुर, घुघुरु।
सिंजारौ, सिंज़ारौ—देखो 'सिंझारौ' (रू भे)
सिंज्या, सिंज़्या—देखो 'सध्या' (रू. भे.)
सिंज्यारौ, सिंज़्यारौ—१ देखो 'सिंझारौ' (रू भे.)
२ देखो 'सजीरौ' (रू. भे)
सिंझ, सिंझया, सिंझा, सिंझ्य, सिंझ्या—देखो 'सध्या' (रू. भे.)
उ०—१ ग्राजक काल्है राम राय सिंझ सवेरै। तुम्हि निरास मुम्हि ग्रास नवेरै।—ग्रनुभववाणी
उ०—२ चीखड ग्राथूणियै राजस्थान री घणी चावी रम्मत है। सिंझ्या पडचा मोटियार रम्मण ठोड भेळा व्है जावै। चीखड़ रम्मण री ठोड़ थोडी मोकळास ग्राळी व्है।—चितराम
सिंझारौ-स पु.—१ गौर व सावण मास की कृष्ण तृतीया को कन्या व वधु के लिए उसके पीहर व ससुराल वालो द्वारा भेजी जाने वाली सामग्री।
वि. वि —उक्त सामग्री मे मिठाई, फल, मेवा, वस्त्र एव शृगारिक वस्तुए सम्मिलित होती हैं। यह सामग्री, जब कन्या ससुराल होती है तब उसके पीहर वालो द्वारा व जब वह पीहर होती है तब ससुराल वालो द्वारा भेजी जाती है।
२ वह दिन जिस दिन उक्त सामग्री भेजी जाने की प्रथा है।
रू भे.—सिंजारौ, सिंज्यारौ, सिंज्यारौ, सिंदारौ।
सिंझ्भा, सिंझ्या—देखो 'संध्या' (रू. भे)
उ०—१ दूजै दिन सिंझ्या री वेळा दौड़तौ दौडतौ घोडौ ग्रणछक ढब्यौ, जाणै च्यारू पगा नै कोई ग्रपड लिया व्है।—फुलवाडी
उ०—२ सिंझ्या रा ठाकर रंगमै'ल मे पधारचा उण वगत वौ ई साप रै रस वाळौ दीवौ भुप्योडौ हो।—फुलवाडी
सिण—देखो 'सण' (रू. भे.)
सिणगार—देखो 'स्रगार' (रू भे.)
उ०—१ राजान कुमार सौळै सिणगार विराजमान हुग्रा छै। सु प्रथम मरदरा सौळै सिणगार तिकै किण भाति रा कहीजै।
—रा. सा. स.
उ०—२ सजि सिणगार पधारत ग्रवा, गाव खुडद गढवाडै।
—मे. म.
उ०—३ हास हसता रह्या धोळहर, सुदर सझनी रही सिणगार। लाखा धणी पयाणं लावै, जाता ही न कियौ जुहार।
—प्रथ्वीराज राठोड
सिणगारचौकी—देखो 'सिणगारचौकी' (रू. भे)
उ०—सिणगारचौकी ग्रागै सूरसिघजी कराई तिका सादै माटै री

उ०—अर सिंधुदेस रा सूबादार जवन करीमखान जिसा अनेक।
—व. भा.

सिंधुदेसभव-स पु. [स. सिंधुदेशभव] सेंधानमक। (डि. को)
सिंधुप-स. पु [स] अगस्त्य ऋषि का एक नाम।
सिंधुपुत्र, सिंधुप्रसूत—देखो 'सिंधुजात' (अ. मा.)
सिंधुर-स. पु. [स] १ हाथी, गज।
(अ मा; डि को, ना. डि. को, ह. ना मा)
उ०—१ तिण समय अरसिंघ गदा रौ आघात देर दूजा सिंधुर रौ सीम चौफाडि करि पटकियौ।—व भा
उ०—२ वेउ वधव बळ वधुर, सिंधुर जिम वनतीरि। खेलइ विपुल खडोखली, ओवली पाडती नीरि।—जयसेखर सूरि
सं स्त्री.—२ नदी।
उ०—भाई वै भेळा हुवा, असुर नदी सिर आय। सिंधुर घोडै मूकडी, मेल न मापी जाय।—रा. रू.
३ आठ की सख्या। * (डि. को.)
रू भे—सधुर, सधूर, सिंदुर, सींदुर।
सिंधुरवर-स पु—श्रेष्ठ नर।
उ०—सिंधुरवर बाबर भूडण कर साथै, बामा बीजळ नै थाबर गळ बार्वं।—ऊ का.
सिंधुरमणि-स पु यौ [स] गज-मुक्ता।
सिंधुरवदन-स पु यौ [स.] गणेश, गजानन।
सिंधुराग-स पु—वीररस पूर्ण राग।
उ०—गढवी गागौ गावीजै, स्याम न मेलै साथ। ओढण अनिवारा नरा, हाला रा पण हाथ। हाथ आवाहतौ सिंधुरागां थिया, सहै भूझा थया वळि 'जसा' रा सांथिया।—हा झा.
(मि सिंधु (८)
रू भे—सधव, सधवौ, सिंधवराग, सिंधूराग।
सिंधुवौ-स. पु—युद्ध का वाद्य, वीररस का वाद्य।
उ०—उण दिसिया अजमेर सूं, आयौ तहवरखान। इण दिसि वग्गा सिंधुवा, भुज लग्गा असमान।—रा रू.
सिंधुसुत-स पु यौ. [स] १ चौदह रत्नो मे से कोई एक।
२ चन्द्रमा।
३ शिव द्वारा मारा जाने वाला जलधर नामक एक राक्षस।
सिंधुसुता-स स्त्री यौ—१ लक्ष्मी।
उ०—लोक माता सिंधुसुता स्री लिखमी पदमा पदमालया प्रमा।
—वेलि
२ सीप।
सिंधू—देखो 'सिंधु' (रू भे) (डि ना. मा)
उ०—१ 'सकौ सोखियौ हाकडौ नाम सिंधू, वहतौ थकौ रोकियौ लोकवधू।—मे म.
उ०—२ भोपाळा भामी नेक नामी, सेव पाय सुरेस। सुज दया सिंधू दीनवधू, अखै कीत अहेम।—र ज प्र.
सिंधूप्रसूत—देखो 'सिंधुजात' (अ मा.)
सिंधूभव-स. पु [स. सिंधुभव] १ सेंधा नमक। (डि. को.)
२ समुद्र से उत्पन्न होने वाले चौदह रत्नो में से एक।
सिंधूराग—देखो 'सिंधुराग' (रू भे)
उ०—गत व्रत करि सिंधूराग वडाळा, लथवथ भारत घणा लोह।
—महादेव पारवती री वेलि
सिंधूरी-स पु.—हिंडोल राग की पुत्रवधू माने जाने वाली एक रागिनी।
(सगीत)
सिंधूसुवन-स पु. [स सिंधु+सूनु] १ चन्द्रमा, चाद। (अ. मा)
२ समुद्र से उत्पन्न होने वाले चौदह रत्नो मे से कोई एक।
सिंध्या—देखो 'संध्या' (रू भे.)
उ०—कवरजी स्री बीकोजी जोधपुर सूं विदा हुआ सु सिंध्या रा मडोवर आया।—द दा
सिंनेह—देखो 'सनेह' (रू. भे)
उ०—मसार एह असगौ मगौ, दईवि आप वासौ दियौ। कलिमाहि दुख सिंनेह वया, कूड कूड साचौ कियौ।—पी ग्र.
सिंन्यास—देखो 'सन्यास' (रू. भे.)
उ०—वया मैं करत सिंन्यास क्रम, का कुळ मारग लोक क्रम।
—अनुभववाणी

सिंपा—देखो 'सपा' (रू भे)
उ०—नूखमनू से मुलायम वरवागूं कै साचै पखराउ सी धाव खुरतालु कै झमकै सत सिंपा कौ सिलाव. .. ...।—र रू.
सिंबन-स स्त्री.—फली।
उ०—परड अरणी अगथीउ अखोड ताड असोख। खजूरि नारिक कूडी सालर, सिंबन सडवल मोख।—रुकमणी मगळ
सिंबी-स स्त्री [सं शिम्बा या शिम्बिका] फली। (डि को)
सिंबेण—देखो 'सभु' (रू भे.)
सिंभ—देखो 'सभु' (रू. भे)
उ०—१ भुजा सजोर भजणा, चढाय सिंभ चाप।—र ज प्र.
उ०—२ उभै साचा अखर कहै रिख सिंभ अज। हरिभज हरिभज हरिभज हरिभज।—र. ज प्र.
सिंभजियत, सिंभजीत, सिंभजीवत—देखो 'जीवतसभ' (रू. भे)
उ०—१ 'केहर' जसावत कहै, घणा मुगळा खग घाऊ। काय आऊ जुध काम, कियै सिंभजियत कहाऊ।—सू प्र.
उ०—२ व्हा अमर काय सिंभजीत व्हा, विखम 'विलद' फौजा विहरि।—सू. प्र
उ०—३ वर अपछर जग कीत वधाऊ, का सिंभजीवत विरद कहाऊं।—सू प्र.
सिंभरि-स. पु.—साभर।
उ०—कइ अम्ह आवी करइ सिलाम, कइ प्राणइ छडाविसु ठाम।

सिंघळ-स पु —राठौड क्षत्रियो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—वालीमा नइ सीसोदिया, सोढा नइ सिंघल आवीया । तै पचास सहस असवार, राउल भेटी करयउ जुहार ।—का. दे प्र.

सिंघलावटी, सिंघळावटी-स स्त्री —वह प्रदेश जहाँ सिंघल शाखा के राठौडो का आधिपत्य रहा था ।

सिंधव —१ देखो 'संधव' (रू भे) (अ. मा; ह. ना मा.)

२ देखो 'सिंधु' (रू भे)

उ०—घण बाण कोहक बाणा गहक, दुगम धार सिंधव डका । कमघजा खाग ऊनग करै, वाग ऊगाडी वेढका । —सू. प्र

सिंघवराग, सिंघवा—देखो सिंधुराग' (रू. भे)

उ०—रुडै दळ वेहूँय सिंघवराग, धजावध वेहु लाग घियाग ।

—गो रू.

सिंघवी-स स्त्री.—आभारी और आमावरी के मेल से वनने वाली एक रागिनी विशेष ।

वि.—सागर का, समुद्र सम्बन्धी ।

सिंघवीराग—देखो 'सिंधुराग' (रू. भे)

उ०—लागा सिंघवीराग रा पाना साकुरा भडाळा लीधा, अभागा छडाळा आभ छवतो ताठौड ।—विसनसिंह राठौड रो गीत

सिंघसागरी-स पु.—एक प्रकार का घोडा विशेष ।

सिंधी-स. पु (स्त्री सिंधण) १ सिन्ध प्रदेश का निवासी ।

२ सिन्ध प्रदेश के निवासी जो अब भारत मे यत्र-तत्र बस गये ।

३ मुसलमानो की एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

४ सिन्ध प्रदश का घोडा जो अपनी मजबूती के लिए प्रसिद्ध है ।

स स्त्री —४ सिंध प्रदेश की भाषा या बोली ।

६ शीतकाल मे पश्चिमोत्तर से चलने वाली हवा जो रबी की फसल के लिए हानिकारक होती है ।

(मि सूरियौ)

७ एक प्रकार की वन्दूक ।

८ एक प्रकार की तलवार की मूठ विशेष ।

सिंधु-स. पु. [स. सिंधु] १ समुद्र, सागर ।

उ०—सम माई क्रिया सब थाकी, ज्यू सलीता सिंधु समाई । पाच पचीस लीन कर सब ही, साक्षी स्वरूप रहाई ।

—सुखरामजी महाराज

२ सिंधुनद जो पजाव के पश्चिम से होता हुआ सिंध देश के समुद्र मे मिलता है ।

३ उक्त नद के आसपास का प्रदेश ।

५ हाथी के सूड से निकला हुआ पानी ।

६ हाथी का मद ।

७ हाथी ।

८ ऊट ।

उ०—मजबून थूंम डाचा मगर, जिया पूछ करवत जिसा । झोखिया सिंधु नुखता झटकि, अघ कध राकस इसा ।—सू. प्र

९ वरुण देवता ।

१० गंधर्वों के राजा का नाम ।

११ पुराण प्रसिद्ध एक देश, जिसका राजा जयद्रथ था ।

१२ एक सम्पूर्ण जाति का वीररस पूर्ण राग । (सगीत) (डि को.)

उ०—भाभी जागड आपणी, छिपै न लाखा गान । सूनै घर सिंधु थयो, आपा रा मिजमान ।—वी. स

१३ अतिकुल श्वेत सुहागा ।

स स्त्री —१४ बडी नदी, नद ।

१५ नदी, सरिता । (अ मा; ह. ना मा)

उ०—चित प्रथम चेत, उल्लू अचेत । यह तन अग्यान, न स्थिर निदान । बचि है न वीर, तरु सिंधु तीर । इक दिवस यार, है गिरन हार ।—ऊ. का

१६ सात की मख्या । ″ (डि को)

वि —सुन्दर । (ह ना मा)

रू. भे —सध, सधव, सधवो, सधु, सिंध, सीधु, सीधू, सींधू, स्यध । अल्पा, —सिंधुडक, सिंधुडो ।

सिंधुओ-स पु —१ सिंधुदेशोत्पन्न घोडा । (का दे प्र)

२ देखो 'सिंधु' (अल्पा, रू, भे)

सिंधुकन्या-स स्त्री. [स] लक्ष्मी ।

सिंधुकुला, सिंधुकुल्या-स स्त्री [स सिंधुकुल्या] नदी । (अ मा)

सिंधुडक, सिंधुडो —१ देखो 'सिंधु' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'सिंधी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—मालाणी रै सिंधुडै गोरवध गूथ्यो । वीकाणै रै राइकै पोयो, म्हारो गोरवद लूबाळो ।—लो गी.

सिंधुचरी-स स्त्री [स.] मछली । (अ मा)

रू भे.—सिंधचारी, सिंधचीरी ।

सिंधुज, सिंधुजन्मो-स पु. [स सिंधुज, सिंधुजन्मा] १ चद्रमा शशि ।

२ सेंधा नमक ।

वि —१ समुद्र से उत्पन्न ।

२ नदी से उत्पन्न ।

३ सिंधु देश से उत्पन्न ।

सिंधुजा-स पु [स.] लक्ष्मी ।

सिंधुजात-स पु. [स.] १ घोडा, अश्व । (डि. को, डि ना मा)

२ सागर मथन से उत्पन्न चौदह रत्नो मे से कोई एक रत्न ।

३ शराब, मदिरा ।

सिंधुदीप-स पु [स सिंधुद्वीप] १ राजा भगीरथ के वशज एक राजा ।

२ अबरीप के पुत्र का नाम ।

सिंधुदेस—देखो 'सिंधु' (रू. भे.)

उ०—सिंहगुहा पइसी कवण थाइ नि:सक, सरप खाधि घालिउ कवण थाइ निरवधान।—व स

सिंहगोस-स पु —एक प्रकार का छोटा जानवर विशेष जिसकी उपमा घोडे के कान को दी जाती है।

उ० - सिंहगोस जिसा वेहू कान सही, पग पीड पघा सुद्रिढ पही।
—मा वचनिका

सिंहचद्र-स पु [स] पाचाल देश का एक राजा जो युधिष्ठिर का मित्र एव समर्थक था।

सिंहचलीनिसाणी-स स्त्री.—निसाणी छन्द का एक भेद जिसमे 'प्रौढ-गीत' का सिंहावलोकन किया गया हो।

वि वि —देखो 'प्रौढगीत'।

सिंहचलो, सिंहचालो-स पु.—डिंगल का एक गीत जिसके प्रथम चरण मे १६, दूसरे मे १३ तीसरे मे १६ और चतुर्थ चरण मे १३ मात्रा व तुकात मे रगण होता है।

सिंहड—देखो सिंहड' (रू भे) (ह ना मा)

सिंहणी-स स्त्री —१ आर्या या गाहा छंद का एक भेद जिसके चारो चरणो में ३ गुरु व ५१ लघु मात्रा से कुल ५७ मात्राएँ होती है।

२ सिंह या शेर की मादा।

रू भे —सिंही।

सिंहदवार, सिंहदुवार, सिंहद्वार-स. पु [स. सिंहद्वार] मुख्य द्वार, तोरण द्वार।

रू भे —सीहद्वार, सीहद्वारो।

सिंहनखो—देखो 'वाघनखो'।

सिंहनाद-स स्त्री [स] १ सिंह की दहाड, सिंह की गर्जना।

उ०—अळियळ आज करत नह, गयद कपोळा गान। सिंहनाद मद सूकियो, औ कीजै अनुमान।—बा दा

२ वीरो की हुकार।

स पु.—३ रावण का एक पुत्र। (रामायण)

रू भे —सिघनाद।

सिंहनिकीलिऊ-स. स्त्री.—एक प्रकार की तपस्या या प्रायश्चित।

उ०—मुकतावलि तपु साह चउ थऊ ए सिंहनिकीलिऊ ए। पाचमु आंबिल वरध मानु तपु तपी ए अणुत्तर सत्रि गिया ए।
—सालिभद्र सूरि

सिंहफलग-स. पु —डिंगल का एक गीत विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते है।

सिंहरासि, सिंहरासी-स स्त्री [स सिंहराशि] ज्योतिष में बारह राशियो के अन्तर्गत एक राशि विशेष।

सिंहल, सिंहलदिव, सिंहलदीप, सिंहलद्वीप-स पु.—भारत के दक्षिण मे स्थित एक प्राचीन जनपद या द्वीप जो मतान्तर से आधुनिक लका ही माना जाता है।

उ०—१ सिंहलदिव उ हार, वावर कूलनी गजवडि . .।
—व. स.

उ०—२ सिंहल देस मैं गाधरव सेन नाव रो राजा हो। गाधरवसेन री फूटरी फररी कवरी पदमणी रै हीरामण नाव रो मिठ्ठू हो जिको अेक र उड गयो।—चितराम

रू भे —सघल, सघलदीप, सघलद्वीप, सघलि, सघलिदीप, सघलिद्वीप, सघली, सघलीदीप, सघलीद्वीप, सिंगल, सिंगलदीप, सिंगलद्वीप, सिंघलदीप, स्यघल, स्यघलदीप, स्यघलद्वीप।

सिंहळी-स पु —शृगाल।

उ०—सादूळउ एक अनेक सिंहळी, घूमर ज्यिइ फेरतउ घम।
— महादेव पारवती री वेलि

सिंहलोक-स पु सिंह समुदाय।

उ० - त्रिग मणाधर की मणाल मीढता, सिंहलोक ओपमा किसी। अगछर त्रिसु सकत रह आगइ, जग अचरिज जोवता जिसी।
—महादेव पारवती री वेलि

सिंहवाहणी --देखो सिंघवाहणी' (रू भे.) (डि. को)

सिंहविक्रम, सिंहविक्रमाक-स पु. [स. सिंहविक्रम] घोडा, अश्व।
(हि. को.)

सिंहविक्रांत-१ सिंह की चाल।

२ घोडा।

सिंहसत, सिंहस्थ—देखो 'सिंगसट' (रू भे)

उ०—ताहरा पुरोहित अरज कीवी—मास अेक पछै सिंहसत लागसी सो महिना तेरह रहसी तो पछै साहो करस्या।
—पलक दरियाव री वात

सिंहसेन-स पु —पाडव पक्ष का एक योद्धा जिसका वध द्रोणाचार्य के हाथो से हुआ था।

सिंहांण—देखो 'सिंह' (मह, रू भे)

उ०—सिंहाण चढै करवी सहाय, राखजै पीढ नागाण राय।
—पा प्र.

सिंहार—देखो 'संहार' (रू भे) (डि. को)

सिंहारणो, सिंहारबो—देखो 'संहारणो, संहारबो' (रू भे.)

उ० - बे कर जोडी करी वीनती आसापुरी अवधारि। सातल भणइ भाजि तू सकट, असुर सवै सिंहारि।—का. दे प्र

सिंहारियोड़ो – देखो 'संहारियोडो' (रू भे)

(स्त्री. सिंहारियोडी)

सिंहालय-स पु यौ [स. सिंह+आलय] सिंह की माद, सिंह की गुफा।

उ०—तुरकन कै आगम तदन, कर गहि ऐचै काळ। आयै जुत्थ पै जुत्थ मनु, सिंहालय सगाळ।—ला रा

सिंहावलोकण, सिंहावलोकन-स. पु —१ सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढना।

ग्या प्रधान सिरि घरीय पसाउ, जई भेटिउ सिभरि नउ राउ।
—का. दे. प्र.

सिभु, सिभू, सिभौ—देखो 'सभु' (रू भे) (अ मा; ना. मा.)
उ०—१ थया अ द नाखत्र, के चद्र सार्थ, कना सोभियौ, सिभु जीखेस मार्थ।—रा. रू.
उ०—२ सुगधा कर सुंदर फूल सोहै, महाघम सोरभ सिभू विमोहै।—रा रू.
२ देखो 'सत्र' (रू भे) (अ. मा.)

सिम्रत—१ देखो 'समरथ' (रू भे)
२ देखो 'स्म्रति' (रू भे.)

सिम्रित—देखो 'स्म्रति' (रू. भे)
उ०—राम वखानै वेद, राम कु दाखि पुरानै। राम साख सिम्रित, राम सासत्र सु जानै।—अनुभववाणी

सियातर-स स्त्री.—कृषको की इष्ट देवी।
(मि सावढ)

सियारो-स पु.—लोहे की मोटी लम्बी नुकीली छड।
(मि. सरियो)

सियाळ-स. पु.—क्यारी के उस ओर की मेढ जिधर से पानी भरा नही जाता अपितु रोका जाता है। (कृषि)
२ देखो 'स्रगाल' (रू. भे)

सिवटणौ, सिवटबौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटबौ' (रू भे)
उ०—तडकै धडाधड आडो भचेडया दोना री सुधबुध वापरी। दीवा रो उजास बाटा में सिवटग्यो हो। फूला हळफळाई होय आडो खोलै जित्तै जित्तै माईत खथावळ करता चूळियो उतार मेडी रै माय वडता इज निगै आया।—फुलवाडी
सिवटणहार, हारौ (हारी), सिवटणियौ—वि०।
सिवटिओडौ, सिवटियोडौ, सिवट्योडौ—भू० का० कृ०।
सिवटीजणौ, सिवटीजबौ—भाव वा०।

सिवटियोडौ—देखो सिमटियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. सिवटियोडी)

सिवरणौ, सिवरबौ—देखो 'सुमरणौ, सुमरवौ' (रू. भे.)
उ०—१ सेवट हीमतहार अेक दिन पै'लीवार वां रामजी नै सिवरया कै किणी जीव जीनावर रो ई बिसराम दै।—फुलवाडी
उ०—२ आ देवी देवतावा रे भरोसै राज रो खजानो ई खाली कर दियो, सिवरता सिवरता म्हारी तो जीभ ई घिसगी।
—फुलवाडी

सिवरियोडौ—देखो मुमरियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री सिवरियोडी)

सिवरी-स. स्त्री.—झडवेरी के कांटो का उतना गोलाकार ढेर जितना एक बैलगाडी मे समा सके।
रू. भे.—सिमरी।

सिवल-स. स्त्री.—१ लकडी की वह खूटी या गुल्ली, जो जुए के कधावर भाग के छोर पर लगी रहती है। इसी से जोत की रस्सी बाँधी जाती है।
रू भे—समळ, सवळ, समळ, समेळ, सिमल।

सिवसगिया-सं. स्त्री.—घोड़े के गर्दन के दाहिनी ओर की (मतातर से पीठ पर की) भौरी जो शुभ मानी जाती है। (शा हो)

सिवाई-स. स्त्री.—१ कपडे सीने की क्रिया या इस कार्य की मजदूरी, सिलाई।
२ कपडे आदि की सिलाई का व्यवसाय या कार्य।

सिवाड, सिवाडौ—देखो 'सीमाडौ' (रू भे)
उ०—पाड पतसाह घड सिवाड़ा पौढियौ, देव मडळ सरी नको दूजो।—सुजाणसिघ कछवाहा रौ गीत

सिवाळ-स. पु. [स शैवाल] १ बालो के लच्छो की तरह पानी पर पसरने, फैलने वाला एक घास।
उ०—सोहै अगिया ओट, हरी रग साज मैं। दुडिया चकवा दोय सिवाळ समाज मैं।—बा. दा.
२ फफूदी।
रू. भे—सिवाळ, सींवाळ।

सिसपो-सं पु [स शिशपा] १ शीशम का वृक्ष।
२ अशोक वृक्ष।

सिसार—देखो 'ससार' (रू. भे.)
उ०—राजन मैं राजा वडौ, इद्र तणौ अवतार। तिण ऊपर रज नाखियै, साराहै न सिसार।—पचदडी री वारता

सिसुमा-[स. शिशुमा] श्रीकृष्ण की रानी सुकेशी का एक नामान्तर।

सिसुमार-सं. पु [स. शिशुमार] एक प्रकार का जल जतु जिसे सूस भी कहते हैं।

सिहड—देखो 'सिहड' (रू भे) (ह ना मा.)

सिह-स. पु [स] १ राजा। (डि. ना. मा)
२ हवा, पवन। (ना डि को)
३ सिह, शेर, बाघ।
वि—१ योद्धा, वीर। (डि. ना मा.)
२ श्वेत। ❋ (डि को.)
३ श्याम। ❋ (डि. को)
४ धुधला। ❋ (डि. को.)
५ देखो 'सिघ' (रू. भे.)
रू. भे—सीह, स्यघ।
मह.—सिहाण।

सिहकेतु-स पु [स] चेदि देश का एक राजकुमार जो महाभारत मे कर्ण द्वारा मारा गया था।

सिहकेसर-स. पु.—सिह की गर्दन के [illegible]

सिहगुहा-स. [illegible] सिह की गुफा।

हो, अर ममदर मिजामी लेयर मघरी'पटग्यो।

—एक बीनणी दो बीन

सिक—देखो 'सिख' (रू. भे.)

उ०—नानग सरवर भरियो नीरो, झुकै लोग पीवण दै झीको।
ठगबाजी यादी री ठीको, फेर सिकां कर दीनो फीको।—ऊ. का.

सिकटासुर—देखो 'सकटासुर' (रू. भे)

उ०—ताड ब्रक्ष अमूल्या कान्हड, सिकटासुर सघारघा। नड कूबड नड भयण उराघ्या, खड मड लवक मारघा।—रुकमणी मगळ

सिकणौ, सिकबौ—क्रि अ.—१ रोटी आदि खाद्य पदार्थ का अगारे या ताप पर पकना।

उ०—बापडै मा'व गी कसूर को हो नी सोगरो व्है ई अँडो खीरा माथै सिक्योडो कै मा'व जै उण नै पलेट समझ गिया तो उण गो घणो कसूर को हो नी।—चितराम

ज्यूं—रोटी सिकणी, चीणा सिकणा।

२ घी, तेल आदि डाल कर किसी पदार्थ का आच पर भुनना।

ज्यूं—मैंनळ सिकणौ, आटी सिकणौ।

३ तेज धूप, आग या अत्यन्त गर्म वातावरण मे गरमी पाना, तपना।

उ०—१ चमकंता डागल गोटा चिक चिकता, जतू जळ रिकता सिकता मैं सिकता।—ऊ का

उ०—२ बिरखा री घणी ओळू आवती नो घोडा माथै बैठ बिना मतलब कागड मैं कुदडका मारतो। रजी सू भखभूर व्हैतो। तावडा मैं सिकतो।—फुलवाडी

४ तपना, गर्म होना।

उ०—सिकती सिकता सेकळै, मार अनोखी मार। तेल छिडक ताती तवण, तणिक न धरम तयार।—रैवतसिंह भाटी

सिकणहार, हारो (हारी), सिकणियौ—वि०।

सिक्योडौ, सिक्योडो, सिक्योडो—भू० का० कृ०।

सिकीजणौ, सिकीजबौ—भाव वा०।

सिकता—स. स्त्री. [सं] १ बालू रेत धूलि।

(अ. मा, डि. को; ह ना मा)

उ०—१ चमकंता टागळ गोटा चिक चिकता, जतू जळ रिकता सिकता मैं सिकता।—ऊ का.

उ०—२ सिकती सिकता सेरळै, मार अनोखी मार। तेल छिडक तातो तजण, तणिक न धरम तयार।—रैवतसिंह भाटी

२ रेतीली भूमि।

सिकताव—स. पु.—शरीर के किसी रुग्ण अंग पर गर्म वस्तु, गर्म पानी या बिजली द्वारा किया जाने वाला सेक।

उ०—दूग रा सिकताव सू लोई बिखरतो नी दीस्यो तो नेगड रा पान एक छूट कर बारो सेक करघो।—फुलवाडी

सिकदार—सं. पु [फा सिकदार] १ किसी क्षेत्र विशेष का पदाधिकारी।

वि. वि.—मुगलकाल मे सिकदार, परगने के चार अधिकारियो मे मे एक प्रमुख अधिकारी होता था। वह परगने मे सामान्य प्रशासन के लिए उत्तरदायी होता था। परगने मे शान्ति एव सुव्यवस्था बनाये रखने के अतिरिक्त काश्तकारो द्वारा लायी गयी मालगुजारी की रकम का भी ध्यान रखता था। खजाने के कर्मचारियो की निगरानी रखने के साथ साथ वह फोजदारी के मामले भी निपटाया करता था। किन्तु मजिस्ट्रेट के रूप में उसके अधिकार बहुत ही सीमित थे।

२ राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके पास राज्य की मुद्रा या मोहर रहती हो, टकसाल का अधिकारी।

३ कोतवाल।

उ०—१ गोयद भगवानो फतो, अै घाघल्ल उदार। रैणायर प्रोहित रिघू, चालदास सिकदार।—रा रू.

उ०—२ पाच पचीसु ग्रोळीया, छठो मन सिकदार। जनहरीया मुल्य सहर का, चेतन चोकीदार।—अनुभववाणी

रू भे —सिकादार, सीकदार।

सिकदारी—स. स्त्री.—१ सिकदार का पद व कार्य।

उ०—घट मैं अजपा जाप जपेसां, धरिस्या ध्यान सदारी। प्याला भरि भरि पीया रामरस, घरि आई सिकदारी —अनुभववाणी

२ एक प्रकार का कर विशेष।

रू. भे.—सीकदारी।

सिकम—स पु [फा. शिकम] उदर, पेट। (बां दा. ख्यात)

सिकमी—वि —१ पेट सम्बन्धी।

२ जन्म सम्बन्धी, पैदाईशी।

३ भीतरी, आन्तरिक।

सिकमीकास्तकार—सं पु. यौ. [फा. शिकमीकाश्तकार] अन्य काश्तकार का खेत जोतने वाला कृषक।

सिकर—देखो 'सिखर' (रू भे)

सिकरवार—स पु —क्षत्रियो की एक शाखा।

सिकरौ—स पु [फा. शिकरा] एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

उ०—कुनो मिन्निया नै मारता बिचार करै नी, मिन्निया ऊंदरा नै मारता बिचार करै नी, बाज अर सिकरा पंखिया नै मारता बिचार करै नी।—फुलवाडी

रू. भे —सकरो।

सिकल—देखो 'सकल' (रू भे)

उ०—१ रांम सूं बिमुख जोवण रमा, धूम्रपांन मुख मैं धरै। तूं देख सिकल होकै तणी, बधूरि अकल हाणी करै।—ऊ का

उ०—२ सहज चाल मगत समझ, वाणी सिकल वणाव। इता प्रकारा अवस है, गोला तणो जणाव।—बा दा.

सिकलात—स पु.—बहुमूल्य ऊनी वस्त्र की बनी बनात।

उ०—१ लाल हरी सिकलात जिलह जाळिया अजोवां। रसा कसै

२ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे चार सगण होते हैं। (पिं. प्र)

३ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे चार चौकल सहित अन्त में सगण होता है। (र. ज. प्र.)

रू. भे —सिंघविलोक ।

सिंहासण, सिंहासन—स पु. [स. सिंहासन] एक विशेष प्रकार का आसन जो राजाओ, महाराजाओ एव बादशाहो के बैठने या देवमूर्तियो की स्थापना के लिए चौकी के आकार का बना होता है, जो बहुमूल्य रत्न, मणिको आदि से सुशोभित होता है एवं इसके दोनो तरफ सिंह के मुख की आकृति बनी होती है।

उ०—१ आवियौ सिंहासरा राज इद्र, आजियौ सिंघासण क्रीत बीद।—सू प्र

उ०—२ देव सेज्जा सिंहासण जाणौ रे, ज्योत ऊगा दह दिस भाणौ रे।—जयवाणी

उ०—३ राजरिद्धि दीठी निरमली, राय तणू सिंहासन वली।
—का दे प्र

२ योग के चौरासी आसनो मे से एक, जिसमे वृषण के नीचे सीवनी के दाये भाग मे बाये पैर की एडी रखना होता है। तत्पश्चात जाघ के ऊपर दोनो हाथो के पंजे की अगुलिया फैलाकर छाती निकालकर, मुह फाड, जिह्वा को अच्छी प्रकार से बाहर निकाल कर नासिका के अग्रभाग को देखता हुआ स्थिर होकर बैठा रहना पडता है। इससे शरीर मे बल की वृद्धि होती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

३ काम-शास्त्र मे सोलह प्रकार के रतिबधो मे से एक।

४ देखो 'सिंहासनचक्र'।

रू भे.—सघासण, सिंगासण, सिंघासण, सींगासण, सींघासण, स्यंगासण, स्यंगासन, स्यंघासण, स्यंघासन।

सिंहासनचक्र स पु —मनुष्य के आकार का सत्ताइस कोठो का एक चक्र जिसमे नक्षत्रो के नाम भरे रहते हैं। (फलित ज्योतिष)

सिंहिका—स स्त्री —राहु की माता जो लका के समीप समुद्र में रहती थी। लका जाते समय हनुमान ने इसे मारा था।

रू. भे — सिंघका।

सिंही—१ आर्या (गाथा) छंद का एक भेद विशेष जिसमें तीन गुरु ५१ लघु से कुल ५४ अक्षर तथा ५७ मात्राए होती हैं। (र ज. प्र.)

२ देखो 'सिंहणी' (रू. भे)

सि—स. पु. [स शि] १ शिव, महादेव। २ शिखर, चोटी।

३ सुक, तोता।

४ सुख। (एका.)

५ शुभ।

६ सौभाग्य।

७ शील।

स. स्त्री.—८ शिखा।

९ अग्नि।

१० आशीष।

११ स्वस्थता।

१२ शान्ति।

वि.—हितैषी, शुभचिंतक।

सिआर—देखो 'स्याळ' (रू. भे)

सिआल, सिआलक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू भे.)

सिआळौ—देखो सियाळौ' (रू भे)

उ०—१ तोही तद रिणमला रै घरै इसडी वडावड हुती। लआ-यचो सिआळै जैताजी री मेलीयौ पहरता।—राव मालदेव री बात

उ०—२ ऊनाळौ आछो नही बरसाळौ महमंत। सिआळै भव सचरौ, कामण बरजै कंत।—अज्ञात

सिउ—देखो 'स्यू' (रू भे)

उ०—१ वणि रुलता अम्ह रहइ अजीय सत्र सिउं सिउ करेसिइ। राजरिद्धि अम्ह तणी लईय जेण हिव सिउ हरेसिउ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ कूडउ बोलइ धरमपुतु, हथीयार छडावइ। छेदिउ मस्तकु द्रस्टद्युमनि, क्रमु सिउ न करावइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—३ आज जीवी कहु सिउ कीजइ। ताहरइ नयरि गौ हरि लीजइ।—सालि सूरि

उ०—४ महासती सिउं कुणि हास्य कीजइ। तु जीविवा कीचक नीर दीजइ।—मानिसूरि

सिकजौ—स पु. [फा. शिकज] १ किसी वस्तु को कसकर दबाने का एक यत्र विशेष।

२ जिल्दसाजी का एक छोटा यत्र जिसमें किताब या कागजो को दबाकर किनारे काटे जाते हैं या गोलाई निकाली जाती है।

३ प्राचीन काल का एक काष्ठ का यत्र जिसमें अपराधियो के पैर कस कर यत्रणा दी जाती थी।

४ वह तागा जिससे जुलाहे घुमावदार वद बनाते हैं।

५ रूई की गाठ बाधते समय दबाव देने का यत्र, पेच।

६ ऊख, तेल आदि पेरने का कोल्हू।

सिकंदर—स पु. [फा] विश्व प्रसिद्ध एक यूनानी सम्राट जो मकदूनिया के राजा फैलकूस का बेटा था और अरस्तू का शिष्य था।

उ०—कलाकार नीतज्ञ पडित, वृद्ध सिकदर तापडा। माटी रा अवतार मारा, विड खपेडै जापडा।—दसदेव

वि —१ तीव्र, तेज।

२ महान्।

३ अच्छा, श्रेष्ठ।

उ०—मुसाफरा फेर इस्टदेवा री सिवरण करयो, पण आज मित्र-रण अवयारथ लगावण लागग्यो, फेर भी हाल तगदीर सिकदर

आग मे गर्मी पाया हुआ, तपा हुआ. ४ तपा हुआ, गर्म हुवा हुआ।

(स्त्री सिकियोड़ी)

सिकिरि—देखो 'सिक्र' (रू भे)

उ०—चमर चिंध सिकिरि झमालु, गयणंगणु छायउ। सिविदिदि नदन्तु दमगन्तु दस दिसि जणु धायउ।—जयसिंह सूरि

सिकुड़ण-स स्त्री —१ संकोच, आकुचन।

२ खिन्न-चित्त या उदास होने की क्रिया या भाव।

३ कम होने या घटने की क्रिया या भाव, सकुचन।

४ शिकन, सिलवट।

५ एकत्रीकरण।

रू. भे.—सकुडण।

सिकुड़णौ, सिकुड़बौ-क्रि अ.—१ संकुचित होना, तग होना, छोटा होना।

२ कम होना, घटना।

३ सकोचयुक्त होना, शर्माना।

४ खिन्न-चित्त या उदास होना।

५ शिकन पड़ना सिलवट पड़ना।

६ एकत्र होना।

७ सिमटना।

सिकुड़णहार, हारौ (हारी), सिकुड़णियौ—वि०।

सिकुड़िग्रोड़ौ, सिकुड़ियोड़ौ, सिकुड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिकुड़ीजणौ, सिकुड़ीजबौ—भाव वा०।

सकुड़णौ, सकुड़बौ, सकुडणौ, सकुडबौ, सुकड़णौ सुकड़बौ, सुकुड़णौ, सुकुड़बौ—रू० भे०।

सिकुड़ियोड़ौ-भू का कृ —१ सकुचित हुवा हुआ, तग हुवा हुआ २ कम हुवा हुआ, घटा हुआ ३ सकुचित या शर्माया हुआ ४ खिन्न या उदास. ५ शिकन या सिलवट पड़ा हुआ. ६ एकत्र हुवा हुआ. ७ सिमटा हुआ।

(स्त्री. सिकुड़ियोड़ी)

सिकोड़णौ, सिकोड़बौ-क्रि स —१ सकुचित करना, तग करना, छोटा करना।

२ कम करना, घटाना।

३ सकोच कराना, शर्म कराना।

४ खिन्न या उदास करना।

५ शिकन या सिलवट पटकना।

६ एकत्र करना।

७ समेटना।

सिकोड़णहार, हारौ (हारी), सिकोड़णियौ—वि०।

सिकोड़िग्रोड़ौ सिकोड़ियोड़ौ सिकोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिकोड़ीजणौ, सिकोड़ीजबौ—कर्म वा०।

सिकोड़ियोड़ौ-भू. का कृ —१ सकुचित किया हुआ, तग किया हुआ, छोटा किया हुआ. २ कम किया हुआ, घटाया हुआ ३ संकोच कराया हुआ ४ खिन्न या उदास किया हुआ ५ शिकन या सिलवट पटका हुआ ६ एकत्र किया हुआ. ७ समेटा हुआ।

(स्त्री. सिकोडियोडी)

सिकोतरी-स. स्त्री —१ पिशाचिनी, चुडैल।

उ०—सूर वीरा रा काळजा वास्तै डाकणी सिकोतरी आवै छै। जिकै राजहस हुवै हुवै रिझावै छै।—पना

२ दूती।

३ दुर्गा का एक नामान्तर।

उ०—जिकै ठौड सू कूदियौ हुतौ, तिकण ठौड रौ नाम पाखड कहीजै छै। पछै गयौ। पछै महीपै नू सिकोतरी रौ वर हुग्रौ। —नैणसी

सिकोरौ-स पु.—मिट्टी का बना कटोरानुमा पात्र विशेष।

उ०—पछौ जळ पय पियै, ठीगळा ठडी कोरा। वासै वाडी विकै, दूध अर साग सिकोरा।—दसदेव

सिकौ-स पु.—[अ सक्का] १ मश्क मे पानी भरने का व्यवसाय करने वाला मुसलमान, भिहिस्ती।

उ०—१ तरै गुढा रा लोग महाजन, छोकरी, हीडागर, घाची, मोची, सिकौ मेहेस जी सै गिलौ करै जै बीजो साथ रावजी रा तौ घाची हीडागर कस करै।—राव चद्रसेन री वात

उ०—२ हमै मूळवौ रोजीना पाणी पावै सिकौ हुय, रोज रौ काढण रौ इलाज करै पण दाव लागै नही।

—मूळवै सागावत री वात

२ देखो 'सिक्को' (रू भे)

उ०—एक सिकौ इक साल कौ, घडीयौ एकण घाट। हरीया कहि ग्रै पारखु, जैसौ पेट'र थाट।—अनुभववाणी

३ देखो 'सकौ' (रू भे)

उ०—सुर जेठ अनै सकर सिकौ, अहि अमर मानव डरा। परमेस निमौ थारी पहचि, परा परा सिगळा परा।—पी. ग्र

सिक्कादवात-स स्त्री.—राजाओ द्वारा महत्वपूर्ण पट्टो, परवानो आदि पर लगाई जाने वाली मुहर, मुद्रा।

सिक्कौ-स पु [अ सिक्क.] १ निर्दिष्ट मूल्य की कोई धातु मुद्रा जो वस्तुओ के क्रय-विक्रय या लेन देन मे विनिमय के साधन के रूप मे काम आती हो।

२ किसी व्यक्ति का रौब या प्रभाव।

मुहा —सिक्को जमणौ=प्रभ व जमना, असर होना, रौब पडना।

३ मुहर, छाप।

४ देखो 'सिकौ' (रू भे)

उ०—पनाळा भरै जम्म जैसी मग्राजै, सुरा राव तिक्कौ छिड्क्काव माजै।—सू. प्र

रेसमा, हेम रूपी हरि हौदा ।—सू प्र.

उ०—ज्या मसि तखत नयद जमाता, सवज जिया ऊपरि सिकलाता ।—सू प्र.

उ०—३ इण आगद निद्रा तदि आवै, अरुण मीण सिकलाति उठावै ।—सू प्र.

सिकळी—स स्त्री [अ सैकल] धारदार हथियारों को माजने और उन पर सान चढाने की क्रिया ।

सिकळीगर, सिकळीघर—स पु —१ वह व्यक्ति जो धारदार हथियार को माजने और उन पर सान चढाने का कार्य करता है ।

उ०—१ इयन् साथ लेय सिकळीगर और मणियार वसै जठै जावो अो माटी होसी तो हतियार लावसी वैर हुवै तो मणिहारी वस्तुवा जोयसी या परीक्षा छै ।—रायघण री बात

उ०—२ काया लागो काट, सिकळीघर सुधरै नही । निरमळ होय निराट, भेट्या तुझ भागीरथी ।—प्रथ्वीराज राठौड

२ हिन्दु लुहारो का एक भेद विशेष । (मा म)

(मि. खेरणिया)

रू. भे —सकळीगर, सकळीघर ।

सिकसा—देखो 'सिक्षा' (रू भे) (डि को)

सिकस्त—स स्त्री [फा शिकस्त] हार, पराजय ।

उ०—१ तठै वेढ हुई, तिण मैं पठाणा री फौज सिकस्त पाय भाज नीसरी ।—द दा

उ०—२ मेर मीणा नै सिकस्त देना ही पछै सू प्रथ्वी री पुड झुकावनो वडै वेग आयो ।—व भा.

सिकादार—देखो 'सिकदार' (रू भे.)

सिकायत—स. स्त्री [अ शिकायत] १ अपराधपूर्ण या अनियमित कार्यो की रोकथाम हेतु सम्बन्धित विभाग या अधिकारी के पास भेजी जाने वाली सूचना, कम्पलेण्ट, रिपोर्ट ।

उ०—राजा कान रा काचा हुवै है । वै सिकायत री तह मैं कदै ई कोनी जावै ।—नैणसी री सावी

२ उद्दण्ड, अन्याय या शरारत के विरुद्ध उठाई जाने वाली आवाज आपत्ति, असतोष ।

उ०—कोई पण बात री हद व्हिया करै । सेन्ट सूरज री सिकायत प्रिंसीपल खनै अर उण रा बाप खनै पूगी । प्रिंसीपल री तरफ सू उणनै टवक मिळी अर सेठजी कानो सू म्हनै रागज मिळ्यो ।

—अमर चूनडी

३ चुगली ।

उ०—आप नी उणनै दीवाना बणायो है अर वो जिण हाडी मैं खावै उणनै इज फोडै । मारवाड सू नित रोज आपरी साची झूठी सिकायता दिल्ली पुगावै ।—अमर चनडी

४ निंदा, बुराई ।

५ उपालभ, उलाहना ।

६ शरीर मे उत्पन्न होने वाली कोई बीमारी या उसका कष्ट ।

सिकार—सं. पु. [फा. शिकार] १ किसी पशु-पक्षी आदि को मारने का कार्य, आखेट ।

उ०—१ समाजोग री वात कै एक दिन उठारो राजा सिकार नै निकळ्यो । आरूंणा भाखर री टाळ मैं झाडी आयोडी ।

—अमरचूनड़ी

उ०—२ लावा तीतर लार, कर हाका मारै किता । जिण तणी सिकार, रमणी मुसकल राजिया ।—किरपाराम

उ०—३ म्हारी मारूडी रमै छै सिकार ।—रसोलै राज री गीत

पर्याय.—आखेट, आछोटण, पापकरण, अगया ।

क्रि प्र.—आणो, करणो, खेलणो, फसणो, रमणो, होणो ।

२ उक्त प्रकार से मारा हुआ जानवर या पक्षी ।

३ मासाहार ।

मुहा —सिकार व्हैणो—अधिकार में होना, प्रेम में फसना ।

रू भे —सकार ।

सिकारखांनो—सं. पु —देशी राज्यों का वह विभाग जो शिकार किये जाने वाले जानवरों की रक्षा एव देख-भाल का कार्य करता था ।

सिकारगाह—स स्त्री —वह स्थान जहाँ शिकार किया या खेला जाता है ।

सिकारणो, सिकारबो—क्रि स —स्वीकार करना । (हूँढी)

सिकारपुरी—स पु —१ घोड़ो की एक जाति विशेष ।

२ इस जाति या नस्ल का घोडा ।

सिकारबद—स. पु [फा शिकारबद] घोडे की दुम के पास चारजामे के पीछे शिकार लटकाने या आवश्यक सामान बाधने के लिए लगाया जाने वाला तसमा ।

सिकारियोडो—भू. का. कृ —स्वीकारा हुआ ।

(स्त्री. सिकारियोडी)

सिकारी—वि. [फा शिकारी] शिकार करने वाला, आहेरी, आखेटक ।

उ०—एक दो सिकारी कुत्ता हिम्मत करनै झाडी रै मायनै घुसिया तो घुमता पाण डाकी वानै कागद रै ज्यू चरड़ करता चीर नै थूंड सू बारै उछाळ दिया ।—अमर चूनडी

उ०—२ नाहर 'करन' तणो नर नाहर, सबना गजा सिकारी जाहर ।—रा रू

सं पु —१ वधिक, बहेलिया ।

२ शिकार करने वाला व्यक्ति ।

स स्त्री —३ एक प्रकार की तलवार विशेष ।

रू भे.—सकारी ।

सिकाल—स पु —एक प्रकार का अशुभ घोडा जिसका अगला दाहिना तथा पिछला बाया पैर सफेद होता है ।

सिकियोड़ो—भू का कृ —१ अगारे या ताप पर पका हुआ । (रोटी-चना) २ घी, तेल आदि डाल कर भुना हुआ ३. तेज धूप या

चसम । सुमराळ चाल उर हाल सम, पलग चाल सुरमल पसम ।

—सू प्र

६ देखो 'सीख' (रू. भे)

उ०—सिख दियँ मुनिराया जी ।—धरम पत्र

७ देखो 'सिक्ख' (रू भे.)

उ०—कपट न माडै जगति मैं, यु आखिन मैं तुम । हरीया सिख सतगुरु बिना इन्नी बिन अरुम ।—अनुभववाणी

सिखचडी–स पु —एक जाति विशेष का घोड़ा । (शा हो)

सिखजनम–स. पु. यौ [स. शिखा-जन्म] १ दीपक । (अ. मा)

२ ज्योति, प्रकाश ।

सिखदीपन–स पु यौ —केसर । (ह ना मा)

सिखनख—देखो 'नखसिख' ।

उ०—भामणि स्री व्रजराज घणा हित सूं भजै । सिखनख वरणूं जाम क बुद्धि समापजै ।—बा दा

सिखर–स. पु [स. शिखर] १ पहाड की चोटी या सब से ऊपरी भाग, शृंग । (हि. को)

उ०—कळा तिमगळ किना वरण गुण दोस विचारक । पर्वं सिखर सम सुजन, जिता गुण ओगुण कारक ।—रा. रू

पर्याय —कूट, सानु, शृंग ।

२ ऊपरी भाग, ऊचा स्थान ।

उ०—दिस मारू सुरमाण तणा दळ, वाधै जाण प्रळै चा बद्दळ । अरा, नर, पळा, सिखर सुर तूटै, फौजा घणा परव्वत फूटै ।

—रा रू

३ किसी प्रासाद या मंदिर आदि का सब से ऊचा भाग, गुम्बद या कलस ।

उ०—मदिरै सौम सु पदमराग मैं, सिखर सिखि रमै मदिर सिर ।

—वेलि

४ मण्डप, गुम्बद ।

५ कगूरा, कलस ।

६ वृक्ष की फुनगी ।

७ चुटिया, शिखा ।

८ तलवार की धार, बाढ ।

९ सिरा, अग्रभाग, नोक ।

१० बगल ।

११ गोनाथ ।

१२ चुन्नी की तरह का एक रत्न ।

१३ राजा का छत्र ।

१४ प्राचीन काल का एक अस्त्र ।

१५ [illegible] का प्रसिद्ध तीर्थ ।

१६ तांत्रिक पूजन में बनाई जाने वाली अंगुलियों की एक मुद्रा ।

१७ [illegible] । (अनेका.)

वि.—शिर पर्यन्त, ऊचा, ऊपर ।

उ०—मन पौणा मिळ लियौ लाटो, सिखर आई साख । ग्यान की भरि गूण गांठी, लदै वाळद लाख ।—अनुभववाणी

रू भे —सखर, सखरउ, सहर, सिकर ।

सिखरण, सिखरणी–स. स्त्री [स शिखरिणी] १ दही व चीनी के योग से बनाया हुआ एक गाढा पेय पदार्थ जिसमे केसर, कपूर, मेवे आदि भी डाले जाते हैं । मतान्तर से —भैंस या गाय के दही को मथ कर उसमे मिश्री इलायची, काली मिर्च और भीमसेनी कपूर मिलाकर बनाया जाने वाला पेय पदार्थ । (अमरत सागर)

उ०—१ तठा पछै सिखरण रै पगा दही बाधो थो तेरी गळणी खुलै छै । माहे बूरो घात, अवोतरै रूमाल सू छाणजै छै, मसाला माहे तांग इलायची मिरच घातजै छै । इण भांत रो सिखरण कर माटकी भरीजै छै ।—रा ना स.

उ०—२ जीमण सिखरण भाय जिमावै, मेवा नूंत अनेक मिळावै ।

—सू प्र.

उ०—३ बदामी साबूनी सरेसं जुडी, भाति भाति सिखरणी भाति भाति पुडी ।—सू प्र.

२ देखो 'सिखरिणी' (रू भे.)

रू भे —सखरण ।

सिखरबद, सिखरबंध–स पु [स शिखरबद्ध] वह मन्दिर या देवालय जिसके ऊपर शिखर बना हुआ हो ।

उ०—बोहरै सतन १ देहुरो सिखरबध स्रीठाकुरा रो करायो नै बावडी १ बधाई छै ।—नैणसी

वि —शिखर वाला, शिखरदार ।

सिखरवासणी, सिखरवासिणी–स. स्त्री. [स. शिखरवासिनी] पर्वत पर निवास करने वाली दुर्गा या पार्वती ।

वि स्त्री —पर्वत वासिनी ।

सिखरा–स. स्त्री [स. शिखरा] १ मरोड़ फली ।

२ विश्वामित्र द्वारा दी हुई राम की एक गदा विशेष ।

सिखराळ, सिखराळो–वि. [स. शिखरिन् या शिखर+आलुच्] १ शिखर वाला, शृंगवाला, चोटी वाला ।

उ०—प्रळै काळ का पावस, आतम् का तक भुरजाळ । सिखराळ दुरग के भड, भिडज भूक काळ ।—सू. प्र

२ शिखा वाला, किलगीदार ।

३ नुकीला, तीक्ष्ण ।

४ अग्रगण्य, अग्रणी ।

उ०—सो जगराम विजावत सारै, मार लियौ पुर सहर मझारै । सावण वद चवदस सिखराळै, गह जतना भागो गुणचाळै ।

—रा रू

५ शिरोमणि, श्रेष्ठ ।

६ वीर, बहादुर ।

रू. भे —सिको।

६ सत्यनामी साधुप्रो मे एक साथ पक्तिबद्ध करने के बाद उठने का सम्बोधन।

सिक्ख—१ देखो 'सिख' (रू भे)

२ देखो 'सिस्य' (रू भे)

उ०—तिण अवसर तिण कालौ जी, वड सिक्ख विसालौ जी।
—जयवाणी

३ देखो 'सीख' (रू भे)

उ०—दुज्जोहण घर घरणि सामि सिक्ख रडतीय मग्गइ। धम्मपुत्र वयरोण पुण इदपुत्तु तिणि मग्गि लग्गई।—सालिभद्र सूरि

सिक्षक—स. पु [स शिक्षक] १ शिक्षा देने वाला, पढाने का कार्य करने वाला, गुरु, अध्यापक।

उ०—सामरथ स्रेस्ठ, जग सकळ जेन्ठ। आ उदय अस्त, सिक्षक समस्त।—ऊ का

२ कुमार कार्त्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

सिक्षण—स स्त्री. [स शिक्षण] शिक्षा देने का कार्य, तालीम।

सिक्षा—स स्त्री [स शिक्षा] १ किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया।

२ गुरु के पास विद्याभ्यास या विद्याध्ययन।

उ०—म्हने गुनीस करोड भूखा-नागा मिनख सतावण लागग्या, जिका बिना रोटी रोजी, बिना घरबार, बिना सिक्षा रोज दिनुग्या उठै अर रात नै भूखै पेट सोवण रो जतन करै है।—तिरसकू

३ उपदेश, सलाह।

क्रि प्र —दैणी, लैणी, मिळणी, पावणी।

४ छ वेदागो मे से एक जिसमे वेदो के वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण या विवेचन है।

५ किसी अनुचित कार्य का बुरा नतीजा, दण्ड, सबक।

रू. भे —सिकस, सिख्या, सिच्छा, सिच्छा।

सिक्षागुरु—स. पु यौ. [स. शिक्षागुरु] विद्या पढाने वाला गुरु।

सिक्षापद—स पु [स शिक्षापद] १ उपदेश।

२ विनयपिटक का एक प्रकरण (बौद्ध)।

सिक्षारथी—स पु [स शिक्षार्थिन्] शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति, विद्यार्थी।

सिक्षालय—[स शिक्षालय] वह स्थान जहाँ शिक्षा दी जाती हो, विद्यालय।

सिक्षाविभाग—स पु यौ [स शिक्षाविभाग] विद्यालयो तथा अन्य शैक्षणिक कार्यों की व्यवस्था एव नियत्रण रखने वाला सरकारी विभाग।

सिक्षित—वि [स. शिक्षित] १ विद्वान, पडित।

२ चतुर, दक्ष।

३ साक्षर।

रू. भे —सिच्छित।

सिखड—स पु [स. शिखड] १ मोर की पूछ।

२ चोटी, शिखा।

३ मुकुट।

उ०—अखड ब्रह्मचरज कै सिखड खड अज्ज कै। मधीर ही हमीर सै गभीर भीर गज्जतै।—ऊ का

४ देखो सिखडी' (रू भे)

सिखडणी, सिखडनी सिखडिनी—देखो 'सिखडी' (रू. भे)

सिखडी—स. पु [स शिखडिन्] १ मोर, मयूर।
(अ मा, डि को, ह ना मा)

२ मुर्गा।

३ बाण, तीर।

४ पाचाल देश के राजा द्रुपद का पुत्र जो पहले 'शिखडिनी' नामक कन्या के रूप मे उत्पन्न हुआ था, तत्पश्चात शिवजी की कृपा से उसे पुरुषत्व प्राप्त हुआ।

उ०—सीसु सिखडी तणउ तामु छेदीउ छलु साधीउ। पाय पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ।—सालिभद्र सूरि

वि वि —देखो 'अबा'।

५ विष्णु का एक नामान्तर।

६ शिव।

७ एक शिवावतार जो हिमालय पर्वत के शिखडिन् नामक शिखर पर हुआ था।

८ कृष्ण का एक नामान्तर।

९ यतीश्वर।

१० स्वामि कार्त्तिकेय। (ह ना. मा)

११ राम की सेना का एक बदर।

स स्त्री —१२ मयूर की पुच्छ।

१३ पीली जुही।

वि.—१ शिखा वाला, किलगीदार।

२ नपुंसक।

३ कायर, डरपोक।

सिख—स पु [स. शिष्य] १ गुरु नानक व गोविन्दसिह आदि दश गुरुओ का सम्प्रदाय एव इस सम्प्रदाय का अनुयायी, पंजाबी-सरदार।

[स. शिखिन्] २ मस्तक, सिर।

३ शेर, सिह। (ना डि को)

स स्त्री —४ पतग। (अनका)

५ देखो 'सिखा' (रू भे) (ह. ना. मा)

उ०—१ मुख सिख सधि तिलक रतन मै मडित, गयौ जु हुतौ पूठि गळि।—वेलि

उ०—२ सिख दीप स्रवण मुख बीज ससि, नूर स्याम मूरति

चोटी गूथना ।

सिखावळ-स पु. [स शिखावल.] मोर, मयूर । (ह. ना. मा.)

रू भे.—सिखावळी ।

सिखामांण-स. पु —विरोचन । (अनेका)

सिखामण-स स्त्री —शिक्षा, उपदेश ।

उ०—१ केमी समण आया पछै, इण नें किसी सिखामण दीध रे लाल ।—जयवाणी

उ०—२ साधु देवै सखरी सिखामण तव तू तिण सूं खीजे रे ।
—जयवाणी

रू भे —सिखावण, सिखावन ।

सिखायोडो-भू का कृ.—१ सिखाया हुआ, शिक्षित किया हुआ, प्रशिक्षित. २ कठस्थ कराया हुआ, रटाया हुआ, याद कराया हुआ. ३ नियमित अभ्यास कराया हुआ ४ समझाया हुआ, समझा कर तैयार किया हुआ ।

(स्त्री. सिखायोडी)

सिखावण—देखो 'सिखामण' (रू भे)

उ०—१ वा राणिया री वळिहारी भ्रूण (गरभ) मैं हीज वा बाळका नै काई तरै सिखावण दवै है सो दाई रा हाथ री नाळो री छुरी नै साव (जनमतो) हीज बाळक झपटै ।—वी स. टी

उ०—२ हिवै राणी सिखावण दें इसी, घणो पराक्रम फोड तप कीजो रे ।—जयवाणी

सिखावणो, सिखावबो—देखो 'सिखाणो, सिखाबो' (रू भे)

उ०—राम-लखण, प्रह्लाद ध्रू री, सवण, वृद्ध मा'वीर री । वर प्रताप सिवा गाधी गुण, सीख सिखावो धीर री ।—टाबर-सईकडो

सिखावत-स. स्त्री [स शिखावत] १ आग, अग्नि । (ह ना मा)

२ देखो 'सिखामण' (रू भे.)

सिखावळी—देखो 'सिखावळ' (रू भे.) (अ मा; ना. मा)

सिखावान-स. स्त्री [स शिखिन्] १ आग, अग्नि ।
(अ मा; ह नां मा)

२ द्रोपदी । (अ मा)

स पु —३ युधिष्ठिर की सभा मे विराजने वाले एक ऋषि ।

वि —जिसके शिखा हो, शिखा वाला ।

सिखि-स पु [स शिखिन्] १ मोर, मयूर । (अनेका)

उ०—मदिरै गौख सु पदमराग मैं, मिखरि सिखि रमै मदिर सिर ।—वेलि

२ अग्नि ।

३ कामदेव ।

४ तीन की सख्या ।

रू भे —सीखी ।

सिखिध्वज-स पु [स शिखिध्वज.] १ धुआं, धोम ।

२ कार्तिकेय ।

३ वह जिस पर अग्नि या मोर का चिन्ह बना हो ।

४ मयूरध्वज राजा का एक नामान्तर ।

५ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

सिखिर, सिखिरि, सिखिरी-सं पु. [स. शिखरिन्] पर्वत, पहाड ।
(हि ना. मा.)

सिखिवाह, सिखिवाहण(न)-स पु. [स. शिखिवाहन] स्वामि कार्तिकेय । (डि. को)

सिखी-स. पु [स शिखिन्] १ घोडा, अश्व ।

२ मुर्गा ।

३ दीपक ।

४ पर्वत ।

५ वृक्ष ।

६ ब्राह्मण ।

७ बाण ।

८ जटाधारी साधु ।

९ आग, अग्नि ।

१० मोर, मयूर । (अ. मा, डि. को; नां. मा, ह. ना मा.)

उ०—कीध वैरि वढ कत री, सह हसमा सेलोट । तूल झुड जिम सिखी तुर, दपट उडावै दोट ।—रैवतसिह भाटी

रू. भे —सीखी ।

सिख्खर—देखो 'सिखर' (रू. भे.)

उ०—सूवो सिख्खर दिन आवै जद कठै ही जेळ मैं पूरो सूरज दीखै ।—दसदोख

सिख्या—देखो 'सिक्षा' (रू भे)

उ०—१ कीरत कुळ कालेज, देज आयूणी सिख्या । लीला तितली रूप, ओखदा मागै भिख्या ।—नारी-सईकडो

उ०—२ नारदु पहुतउ सिख्या देवि, पडव बइठा ध्यानु धरेवि ।
—सालिभद्र सूरि

सिग-सं. पु [स शिखर] १ किसी पात्र में कोई वस्तु किनारो से ऊपर उठाकर शिखर के आकार की भरने की क्रिया या ढग ।

मुहा —सिग चाढणो=पूर्ण करना, ऊपर उठाना ।

२ उक्त प्रकार का भराव ।

३ ऊपर उठने की क्रिया ।

उ०—सूवा रे दिवलो बळे नै लोळा सिग चढै । मोतीडा री लागी लडाझूम, सैया ए उखरडी बधावो म्हारै आवियो ।—लो गी

४ शिखर ।

उ०—परणेत हुया सिग चढ तीयइ प्रव, आंगी सद गूजीया जग । ईसर किया कवीसुर ईसर, उमयावर दइ तइ उदग ।
—महादेव पारवती री वेलि

वि.—पूर्ण भरा हुआ ।

रू भे —सिग्ग ।

७ दीर्घ, बड़ा। (अ. मा)
सं. पु—१ गढ, दुर्ग।
२ पहाड़, पर्वत।
३ वृक्ष, पेड़।
४ शिखरी नामक पक्षी।
५ मुर्गा।
६ मोर, मयूर।
रू भे.—सखराळी।
सिखरावत-स पु—गहलोत वंशीय क्षत्रियो की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।
सिखरिणी-स स्त्री [स शिखरिणी] १ उत्तम स्त्री।
२ रोमावली।
३ सत्रह अक्षरो का एक वर्ण वृत्त जिसके छठे व ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है।
सिखरी-स पु [सं. शिखरिन्] १ पर्वत, पहाड़।
(अ मा; डि. को, ना. मा.)
२ वृक्ष, पेड़। (अ मा; ना मा; ह. ना मा)
३ दुर्ग, किला।
स स्त्री.—४ एक राग विशेष। (का दे. प्र)
रू भे.—सखरी।
सिखरीस-सं पु. यौ. [सं शिखर+ईश] पर्वत, पहाड़। (ह. ना. मा)
सिखवान-स स्त्री [स शिखावती] १ द्रोपदी। (अ मा)
[स शिखावत्] २ अग्नि, आग। (अ मा, ह ना मा)
सिखवाळ-स पु—ब्राह्मणो का एक वर्ग विशेष। (मा. म)
सिखसार-स. स्त्री [स. शिखासार] अग्नि, आग। (अ. मा)
सिखा-स स्त्री [स शिखा] १ दीपक की लौ, ज्योति।
२ प्रकाश की किरण।
३ अग्नि, आग। (अ मा)
४ सिर की चोटी, शिखा।
५ मोर, मुर्गा आदि पक्षियो के सिर की किलगी।
६ वेणी।
७ डाली, टहनी, शाखा। (डि को)
८ शस्त्र की धार या बाढ़।
९ वस्त्र की किनार।
१० केसर (अ मा)
११ तुलसी।
१२ मूर्वा, मरोड़ फली।
१३ जटामासी।
१४ बाल छड़।
१५ वच।
१६ शिफा
सं पु—१७ दीपक। (ना मा.)
१८ मोर, मयूर। (ह. ना मा.)
१९ शिखर, शृंग।
२० मित्र, दोस्त। (अनेका.)
२१ अंगारा।
२२ किसी वस्तु का नुकीला सिरा या छोर।
२३ चूड़ाकर्ण के समय मस्तक के बीच मे छोड़ा जाने वाला केशो का गुच्छा, जो हिन्दुओ का जातीय व धार्मिक चिन्ह माना जाता है।
२४ एक वर्ण वृत्त जिसके विषम पदों में २८ लघु मात्राएँ और अंत मे एक गुरु होता है तथा सम पदो मे ३० लघु मात्राएँ और अंत मे एक गुरु होता है।
वि—१ प्रधान, मुख्य।
२ रक्त वर्ण, लाल। * (डि. को)
रू भे.—सिख, सीखा।
सिखाई-स स्त्री.—१ शिक्षा देने की क्रिया या भाव।
२ शिक्षक का पारिश्रमिक।
सिखाओजस-सं पु [शिखा+उज्ज्वल] दीपक। (ह ना मा)
सिखाजोत-स स्त्री [स. शिखाज्योति] १ दीपक। (अ. मा)
२ ज्योति, ज्वाला की लौ।
सिखाणौ, सिखाबौ-क्रि. स ['सीखणौ' क्रि का प्रे. रू] १ किसी प्रकार की विद्या, शिक्षा, कला या कार्य के लिए शिक्षित करना, प्रशिक्षित करना, सिखाना।
उ०—इम कही नै समझाय स्वामीजी नै माही लै जाय नै वहिरायो ए कला पिण भाया नै स्वामीजी सिखाई दिसै।—भि द्र.
२ नियमित अभ्यास कराना।
३ कंठस्थ कराना, याद कराना, रटाना।
उ०—डावडी नै तो जवाब सिखायोड़ौ इज हो।—फुलवाड़ी
ज्यू—औ गीत मैं सेनजी नै एक दिन मैं सिखायौ।
४ किसी को अपने उद्देश्य साधन के लिये अपने पक्ष की बात समझा कर तैयार करना।
उ०—राजा री सिखायौ कसाई वानै पटाया।—फुलवाड़ी
सिखाणहार, हारौ (हारी), सिखाणियौ—वि०।
सिखायोड़ो—भू० का० कृ०।
सिखाईजणौ, सिखाईजबौ—कर्म वा०।
सिखावणौ, सिखावबौ—रू० भे०।
सिखाधर-स पु यौ [स शिखाधर] १ मयूर, मोर।
२ हिन्दू।
३ ब्राह्मण।
३ मुर्गा।
सिखाबंधण-सं पु. यौ—सिर के बालों को मिलाकर बांधने की क्रिया,

सिड़मटौ—देखो 'सिड़मटौ' (रू. भे.)

सिड़ियोड़ौ, सिड़ियौ—देखो 'सड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री सिड़ियोड़ी)

सिड़ौ-वि.—१ सनकी।

२ पागल।

३ दीवाना।

४ देखो 'सिरड़ौ' (रू. भे.)

सिचांण, सिचान—देखो 'सिचाण' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—दागिया बाण किना सिचाण री नांई तूटा।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सिचाणौ, सिचावौ—देखो 'सिचाणौ, सिचावौ' (रू. भे.)

सिचाणहार, हारौ (हारी), सिचाणियौ—वि०।

सिचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिचाईजणौ, सिचाईजवौ—कर्म वा०।

सिच्चियामाता-स. स्त्री. यौ.—पवारों की इष्टदेवी। (मा. म.)

सिच्चांन—देखो 'सिचाण' (रू. भे.)

सिच्छ, सिच्छा—देखो 'सिक्षा' (रू. भे.)

उ०—स्वइच्छ सिच्छ सूर वैं अनिच्छ ऊवतैं नहीं। मरैं न तैं कुमोति तैं सुमोनि सूधनैं नहीं।—ऊ. का.

सिच्छित—देखो 'सिक्षित' (रू. भे.) (डिं. को.)

सिजदा-स. स्त्री. [अ. सिज्दः] १ ईश्वर के लिए शिर झुकाना, नमाज पढ़ते वक्त जमीन पर सिर झुकाना या रखना।

२ उक्त प्रकार से शिर झुका कर की जाने वाली प्रार्थना।

उ०—रियला सिजदा करै, किलम उच्चरै कुराणी। जाणि प्रेत जागिया, महारिण काळ समाणी।—सू. प्र.

सिजळज—देखो 'सजळज' (रू. भे.) (ह. दा.)

सिजवाळौ—देखो 'सेजवाळौ' (रू. भे.)

उ०—श्रायौ घोड़ा सिजवाळा छोकरयां घणौ दायजो दै श्रर हुलाया।—चौबोली

सिजाणौ, सिजावौ—देखो 'सीझाणौ, सीझावौ' (रू. भे.)

सिजाणहार, हारौ (हारी), सिजाणियौ—वि०।

सिजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिजाईजणौ, सिजाईजवौ—कर्म वा०।

सिजायोड़ौ—देखो 'सीझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिजायोड़ी)

सिजावणौ, सिजावबौ—देखो 'सीझाणौ, सीझावौ' (रू. भे.)

उ०—सीप्र नवेड़ौ खोद पीळनी माटी लावौ। गोबर रै गुण मान, ठीकळै पोढ सिजावौ।—दसदोस

सिजावणहार हारौ (हारी), सिजावणियौ—वि०।

सिजाविग्रोड़ौ, सिजावियोड़ौ, सिजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिजावीजणौ सिजावीजवौ—कर्म वा०।

सिजावियोड़ौ—देखो 'सीझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिजावियोड़ी)

सिजिया—देखो 'सय्या' (रू. भे.)

उ०—विजय सेठ नारी विजया जिणै सील पाल्यौ एकण सिजिया।

—जयवाणी

सिज्झणौ, सिज्झवौ—देखो 'सजणौ, सजवौ' (रू. भे.)

उ०—राउ भणइ ता खमउ मुझ वयणु जा श्रवधि पुज्जई। पचाली रोसवसि श्रवसि श्रनि श्रम्ह काज सिज्झई।—सालिभद्र सूरि

सिज्झणहार हारौ (हारी), सिज्झणियौ—वि०।

सिज्झिग्रोड़ौ सिज्झियोड़ौ, सिज्झ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिज्झीजणौ, सिज्झीजवौ—भाव वा०।

सिज्झाय-स पु. [स. स्वाध्याय] स्वाध्याय। (जैन)

उ०—पाठक हरस निधानजी सहेली हे ग्यान तिलक सुपसाय कि। 'विनयचद्र' कहइ मइ करि सहेली हे श्रंग इग्यार सिज्झाय।

—वि. कु.

सिज्झियोड़ौ—देखो 'सजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिज्झियोड़ी)

सिज्या—देखो 'सय्या' (रू. भे.)

उ०—ऐसै द्वारि श्रर सज विचि पधारिबौ करै छै। वार वार फिरै छै। कब जु सिज्या श्राय बैसै छै।—वेलि

सिज्यातर, सिज्यातरी—देखो 'सय्यातर' (रू. भे.)

उ०—रुघनाथजी सिज्यातर नै घणोई कह्यौ—थै जागा क्यू दीधी।

—भि. द्र.

सिटणौ, सिटबौ-क्रि. श्र.—१ निर्बल होना, कमजोर होना।

उ०—पीहर पतळा रा सैणा रा प्यारा, तारक तूटा रा नैणा रा तारा। सीरी सिड़ियां रा सूल्हा रा सारा, मीडी भूखा रा फूला रा मारा।—ऊ. का.

२ पस्तहिम्मत होना।

उ०—भीखम मात श्रभाव, मात गंग कीकर मनै। सो पखहीण सभाव, सेवट सिटग्यौ सावरा।—रामनाथ कवियौ

२ लज्जित होना।

सिटणहार, हारौ (हारी), सिटणियौ—वि०।

सिटिग्रोड़ौ, सिटियोड़ौ, सिट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सिटीजणौ, सिटीजवौ—भाव वा०।

सिटाणौ, सिटावौ—रू० भे०।

सिटपिटाणौ, सिटपिटावौ-क्रि. श्र.—१ किंकर्त्तव्यविमूढ होना।

२ असमजस मे पडना।

३ दब जाना।

४ घबरा जाना।

सिगड़ि, सिगडी-स. स्त्री [स. शकटी] १ भोजनादि बनाने के लिए मिट्टी या लोहे का बना चूल्हा, अगीठी। (डिं को)
उ०—दारु री फैल घणी सुहायो, गेसनी आतसबाजी री नूर, जहूर निजर आयो। सूळा री गजक प्याला री छल पायवी, सिगडी री तप फुलेल री मुसलायबी।—पना
रू भे—सगडी।

सिगरत, सिगरी-वि [स सकल] १ सब, समस्त।
उ०—म्हैं थानै कागद ओ गाढा मारू मोकळया आज्यो सावणिया री तीज। कवर बाई रा ढोला नै कह्ज्यो जी सुमरा जी रै आवै सिगरत पावणा।—लो. गी
२ सकुटुम्ब, सपरिवार।

सिगरेट-स स्त्री—तम्बाकू के बुरादे को कागज की छोटी नलिका मे भर कर तैयार की गई धूम्र-दण्डिका।

सिगळइ, सिगळई, सिगळउ, सिगलउ-क्रि वि—सर्वत्र, सब जगह।
२ देखो 'सगळी' (रू भे)
उ०—१ सेवक नइ समरथउ छइ सादा, जग सिगलउ जपइ जस-वादा।—स कु
उ०—२ कहइ सती प्रभू रूप प्रगट करि, सिगळउ ही देखइ ससार।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ हेमाचळ खेलता हसता, हसत दियउ मिना रइ हाथ। टूक कोइ आवी टूका, सिगळइ लिवइ अतेवर साथ।
—महादेव पारवती री वेलि

सिगळै सिगळैय—देखो 'सगळै' (रू भे)
उ०—१ इण भात रु १५०००) रजपूत मुसलमान खालसै रा सिगळै देस रा आवै।—नैणसी
उ०—२ विजमल तुझ दीठै वीसरिया, सयळ तणा भूपति सिग-ळैय।—ईसरदास बारहठ
उ०—३ ताहरा बीजाणद ईडर वागड, चापानेर कछ सिगळै ही फिरियो।—सयणी री वात

सिगळो—देखो 'सगळो' (रू भे)
उ०—१ ताहरा राजा कहै—खबर करो जु कुण मरद हुतो। ताहरा सिगळां नु खबर हुती जु सीह एक हरराम चहवाण मारीयो हुतो।—देवजी बगडावत री वात
उ०—२ राव केल्हण पुगळ विकूपुर वरसलपुर मीटासर हापासर सिगळी आ धरती भोगवतो। पछै राव सेखो हुवो तिण रै पेट धरती इण भात वटाणी।—नैणसी
उ०—३ देव कहे सिगळा दियो, ईसाणद आसीस। किलग न जीतो कापिरिस, जुध जीतो जगदीस।—पी ग्र
(स्त्री सिगळी)

सिगाळो—देखो सिघाळो' (रू भे)

सिग्ग—देखो 'सिग' (रू भे)
उ०—पटवारी जी री व्याह सिग्ग चल्यो, मूळी पटवारण बणी।
—दसदोख

सिघर—देखो 'सीघ्र' (रू. भे)
उ०—महाराज तणी चिंता मिटै, विध इण आज विचारिया। सुभ काज वार रहसी सिघर, राजकवर पाधारिया।—रा रू

सिघळो—देखो सगळो' (रू भे)
उ०—सिघळी ही सेना सहित। इसा स्रीक्रस्णजी आया देखि ऊपरि पुहप व्रस्टि होय छै।—वेलि टी
(स्त्री. सिघळी)

सिघाळ, सिघाळो—देखो सिंघाळो' (रू. भे)
उ०—१ भाटी जोधा मुहर भुजाळो, 'सकतो' 'भगवानोत' सिघाळो।—रा रू
उ०—२ सूर 'उरजण' हरा सिघाळो, पिड़ सूजो जादम प्रचाळो।
—रा. रू.
उ०—३ चापा करण मुदै कळ चाळा, साथ वळै राठोड सिघाळा।
—रा. रू

सिघ्र—देखो 'सीघ्र'।

सिघ्रधाव-स. पु—हरिन। (अ मा)
वि—तेज धावक, तीव्र गति वाला।

सिड-स स्त्री.—१ सनक, पागलपन।
२ धुन।
३ सडने की क्रिया या भाव, सडाध।

सिड़णो, सिडवो—देखो 'सडणो, सडबो' (रू. भे.)
उ०—१ सोग हटावण सघो, सोग में पडिया सिडस्यो। लोक रीत सू लघो, लोक सू चिडस्यो लहस्यो।—ऊ का
उ०—२ अमल री आस माही उळझ, समझदार निसदिन सिड़ो। आ बात अजब उलटी अकल, बिन बिगड्या क्यू बीगड़ो।
—ऊ का
उ०—३ म्हारै आ इत्ती माया भेळी व्हियोडी सिड़ै है अर पाडो-सिया, रै पेट भरणा रा ई जादा पडै।—फुलवाडी

सिड़सट-वि [स. सप्तषष्टि, प्रा सत्तसट्ठि] साठ और सात के योग के बराबर, सडसठ।
रू. भे.—सिडसठ।

सिडसटमों-वि.—जो क्रम से छियासठ के बाद पडता हो।
रू भे.—सिडसठमों।

सिडसटेक-वि.—सडसठ के लगभग।
रू. भे—सिडसठेक।

सिडसटो-स. पु—६७ की सख्या का वर्ष।
रू. भे—सिडसठो।

सिडसठ—देखो सिडसट' (रू भे)

सिड़सठमों—देखो 'सिडसटमों' (रू. भे)

सिडसठेक—देखो 'सिडसटेक' (रू. भे.)

देवळ देवळ हार दीपावै, कासी मिव सिणगार किया ।

—जिसनौ ग्राढौ

उ०—३ वाता तो फगत जीभ री बणाव । होठा री सिणगार । लाली री झिकाळ । पण मन री तो भेद ई अगम । अगोचर ।

—फुलवाडी

उ०—४ वस्ती पात रोही सुहागणी लागै कुदरत रा सिणगार नै आल्या फाट फाड नै देखता इज जाग्रो पण जीव तिरपत नी व्है ।

—ग्रमरचूंनडी

उ०—५ छोड चल्या छा भवरजी वाछडी जी, हा जी ढोला होय गई सुरही गाय । दूध पीवण री रुत चाल्या चाकरी जी, हा जी म्हारा सेजा रा सिणगार । मत ना सिधावौ पूरब री चाकरी ।

—लो. गी

सिणगारचौकी—स. स्त्री.—१ प्राय राजभवनो, किलो, गढो आदि के अन्दर की वह चौकी जहाँ पर राज्याभिषेक के समय राजा शृगार कर सिंहासन पर बैठता था ।

२ राजप्रासाद मे वह स्थान जहाँ राजदरबार के समय राजा बैठता था । ३ शृगार करने का स्थान ।

रू भे —सिंगारचौकी, सिणगारचौकी ।

सिणगारण—वि —शृगार करने वाली ।

सिणगारणौ, सिणगारबौ—क्रि स [स. शृगारणम्] १ सुशोभित करना, सजाना ।

उ०—१ आगै सहर रा घर वाट, बजार-हाट भली प्रकार सिणगारिया । गुवाड-गुवाड घर-घर ऊपर लुगाया वधाई रा वधावा मागळीक गावै छै ।—पलक दरियाव री वात

उ०—२ खाडेत्या खोलिया, सिडक खासा रथ खाना । सिणगारचा सिदणा, मिळण सामा मिजमाना ।—मे. म

उ०—३ कनक रतन तोरण सुभकारी, सुंदर चित्र पोळि सिणगारी ।—रा. रू.

२ अस्त्र-शस्त्र युक्त करना, शस्त्रो से सुसज्जित करना ।

उ०—१ तरै लालाजी नू बाह दीन्ही । देनै पछै घणो साथ लेनै फौज सिणगारी नै रजपूत सिणगारी नै केसर गुलाब सूधा माहै गरकाब हुय नै जान करै नै चढिया ।—लाली मेवाडी री बात

उ०—२ सिणगारी सन्नाह सू, विस कामणी वरियाम । चरि आई हाला वरण, करण महाजुध काम ।—हा. झा

३ शृगार करना शृंगारना ।

सिणगारणहार, हारौ (हारी), सिणगारणियौ—वि० ।

सिणगारिग्रोडौ, सिणगारियोडौ, सिणगारचोडौ—भू० का० कृ० ।

सिणगारीजणौ, सिणगारीजबौ—कर्म वा० ।

सणगारणौ, संणगारबौ, सणगारणौ, सणगारबौ, सिणगारणौ, सिणगारबौ, स्रंगारणौ, स्रगारबौ—रू० भे० ।

सिणगारदे—स स्त्री [स शृगारदेवी] लोकगीत मे सुहागिन स्त्री के लिए प्रयुक्त सम्मान सूचक शब्द ।

उ०—ए जठै नै बहू सिणगारदे पोढिया, ऐ बारी दामी ढोलै चै वाव । ए म्हानै घणी ए सुहावै तचचा पीपळी ।—लो गी.

रू. भे —सणगारदे ।

सिणगारपटी—स स्त्री. [सं. शृगारपट्टिका] सिर का आभूषण विशेष ।

सिणगारियोडौ—भू. का कृ.—१ सुशोभित किया हुआ, सजाया हुआ. २ अस्त्र-शस्त्र से सज्जित किया हुआ. ३ शृगारा हुआ ।

(स्त्री. सिणगारियोडी)

सिणतर सिणतरी—स स्त्री —धरती पर छितरने वाली एक घास विशेष जिसके फूल सफेद होते हैं ।

सिणतरौ—स. पु -राजस्थान में पाया जाने वाला ततुदार जंगली क्षुप, जो छप्पर, झोपडी आदि की छाजन में काम आता है । इसकी रस्सी भी बनाई जाती है ।

उ०—१ चालता रेत माथै खोज नी उघटै इण जाव्ता माथै चोग रै पगा सिणतरा बाधोडा हा ।—फुलवाडी

उ०—२ मु रवारी जुवान सिणतरा री डोळ कीवी छै । उठै मीड सो काठी कसी छै । नाजीया काठा हाथ छै ।

—मातल जोधावत री वात

रू. भे — सणियौ, सणिग्रौ, सणियौ, सिणियौ ।

सिणफिण—स. स्त्री — अविरल गति मे धीरे धीरे होने वाली वर्षा ।

उ०—चादणी चवदस री दिन छै । सनि आदित्यवार री मघ छै । ऊपर झड मडियौ छै । सिणफिण मेह वरसै छै ।—नैणसी

सिणमिणौ, सिणमिणौ—वि (स्त्री सिणमिणी) उदास, खिन्न चित्त ।

उ०—१ घरे धणी नै सिणमणौ देख जोधाबाई धुदावण ढूकी कै वतावौ तो खरी आपरै होयै किमी दोराई है ।—चितराम

उ०—२ उठै महाराजा रामसिहजी अगूनी खातरी करी, अर अव्वल खमा करता । पण 'सर' री जोव तो मारवाड में ग्रटकियोडौ । 'सर' नै सिणमिणौ देख रामसिहजी सिकार री मनादी उठवाय अग्रेज पावणा नै सिकार करावण री काम 'सर' रै खावै नाख दियौ ।

—जहूरखा मेहर

सिणियौ—देखो 'सिणतरौ' (रू. भे)

सित—देखो 'सित' (रू. भे.) (ना मा.)

सितग—स पु.—पागलपन ।

सितगियौ—वि.—पागल, मूर्ख ।

उ०—अठै री राजा अर अठै रा लोग तो म्हनै साव सितगिया ई दीस्या । काला मिनखा रै माथै छोगा बधियोडा तो नी व्है ।

—फुलवाडी

२ सनकी ।

उ०—पछै वो सितगियौ राजकवर भाई री बाथ छुडाय डोकरी नै मारण साख ताचकियौ ।—फुलवाडी

रू भे —सीतगियौ ।

सिटपिटाणहार, हारौ (हारी), सिटपिटाणियौ—वि० ।
सिटपिटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिटपिटाईजणौ, सिटपिटाईजवौ—भाव वा० ।
सटपटाणौ सटपटावौ—रू० भे० ।

सिटळ सिटळौ—वि. (स्त्री सिटळी) १ पथभ्रष्ट, पतित ।
उ०—रुळया खुळधा रजपूत, विरामण मिळगा विटळा । वैस्य मिळग्या विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा ।—ऊ का.
२ अविश्वनीय ।
३ निर्लज्ज ।
४ अपनी वात पर कायम न रहने वाला ।

सिटाणौ, सिटावौ—क्रि स —१ पराजित करना ।
२ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना ।
३ दवाव डालना दवाना ।
४ देखो 'सिटणौ सिटवौ' (रू भे.)
उ०—लेतां तिरिया लाज, पति वोदो ई आडो पडै । ऐं नर वैठा आज, सिध सिटाया स्याळ सा ।—रामनाथ कवियौ
५ देखो 'सटाणो, सटावौ' (रू भे)
सिटाणहार हारौ (हारी), सिटाणियौ—वि० ।
सिटायोडौ—भू० का० कृ० ।
सिटाईजणौ, सिटाईजवौ —कर्म वा० ।

सिटायोडौ—भू का कृ —१ लज्जित किया हुआ २ पराजित किया हुआ ३ दवाया हुआ ।
४ देखो 'सिटियोडौ' (रू भे.)
५ देखो 'सटायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री सिटायोडी)

सिटावणौ, सिटाववौ—देखो 'सिटाणौ, सिटावौ' (रू भे.)
उ०—इसा रग भू डगरा अट्ट ऊचा, सिटावै जिका हेट पखी समूचा ।—वं भा.
सिटावणहार, हारौ (हारी), सिटावणियौ—वि० ।
सिटाविओडौ, सिटावियोडौ, सिटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
सिटावीजणौ, सिटावीजवौ—कर्म वा० ।

सिटियोडौ—भू. का. कृ.—१ पराजित हुवा हुआ २ लज्जित हुवा हुआ. ३ हिम्मतपस्त हुवा हुआ ४ दवा हुआ ।
(स्त्री सिटियोडी)

सिटी—१ देखो 'सीटी' (रू. भे.)
२ देखो 'सिटौ' (अल्पा; रू भे)
उ०—'ला' री वेळा जिण अपणायत सू सगळा गाव वाळा नाठ-नाठ अर 'ला' करण वाळै रै सूड, निनाण, सिटियां चूंटण मैं अर लाटै री वेळा विना किणी लालच रै काम करावै, देखण जोग व्है ।—चितराम

सिटेवाज—वि —१ धोखेबाज, कपटी ।
२ बढ-चढ कर व्यर्थ की बातें करने वाला ।

सिटौ, सिट्टौ—स. पु [स. पट्टिक] १ बाजरी, ज्वार आदि का भुट्टा ।
उ०—१ सावण सेनी भवरजी थे करीजै हाजी ढोला भादुडै करज्यो जी नीनाण । सिटा री रुत छाया भवरजी परदेस मैं जी, ओ जी म्हारा घण कमाऊ ।—लो गी.
उ०—२ फळी फळीजै मोठ, पडै घड सिट्टा मोवै । ग्वारफळ्या रा गोट, तिला मत फूली मोवै ।—दसदेव
रू भे —सिरटौ ।
अल्पा,—सिटी, सिरटी ।
२ धोखा, झांसा ।

सिडवाणी—स स्त्री.—लकडी का वह डडा जिसके वल वैलगाडी या छकडे को खडा करके उसकी धुरी मे तेल या अन्य स्निग्ध पदार्थ लगाया जाता है ।

सिणकणौ, सिणंकणौ—देखो 'सिणकणौ, सिणकवौ' (रू भे)
सिणकणहार, हारौ (हारी), सिणकणियौ—वि० ।
सिणकिओडौ, सिणंकियोडौ, सिणक्योडौ—भू० का० कृ० ।
सिणकीजणौ, सिणकीजवौ—कर्म वा० ।

सिणकियोडौ—देखो 'सिणक्योडौ' (रू भे)
(स्त्री. सिणकियोडी)

सिणकणौ, सिणकवौ—क्रि स —नाक साफ करने के लिए नाक मे से दवाव के साथ वायु निकालना जिससे नाक का मल निकल जाय ।
सिणकणहार, हारौ (हारी), सिणकणियौ—वि० ।
सिणकिओडौ, सिणकियोडौ, सिणक्योडौ—भू० का० कृ० ।
सिणकीजणौ, सिणकीजवौ—कर्म वा० ।
संणकणौ, संणकवौ, संणक्कणौ, सणक्कवौ, सणकणौ, सणकवौ, सणकणौ, सणकवौ, सनकणौ, सनंकवौ, सनकणौ, सनकवौ, सिणकणौ, सिणकवौ—रू० भे० ।

सिणकियोडौ—भू का. कृ.—नाक साफ करने के लिए नाक मे से तेज गति व दवाव के साथ वायु निकाला हुआ ।
(स्त्री सिणकियोडी)

सिण—स स्त्री —एक प्रकार की घास ।

सिणगार—स पु. [स शृगार] १ वस्त्र, कपडा । (ह ना मा)
२ आभूषण, गहना । (अ. मा)
३ एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे तीन तगण और अन्त मे दो दीर्घ वर्ण होते हैं ।
४ देखो 'सगार' (रू. भे)
उ०—माया पास रही मुळकंती, सजि सुंदरि कीधा सिणगार । वहु परिवार कुटंब चो बाधो, हरि विण गयो जमारो हार ।
—प्रथ्वीराज राठौड़
उ०—२ गगा तट कमळ मळा गज-वधी, थाहर थाह राज थिया ।

रू. भे.—सतार।

सितारवाज, सितारवादक-वि.—१ वह जो सितार बजाता हो।
२ सितार बजाने में निपुण।

सितारपेसांणी-सं. पु [फा सितारःपेशानी] वह घोड़ा जिसके माथे पर सफेद छोटा चिन्ह हो। यह अशुभ माना जाता है।

सितारियौ-स पु —वह व्यक्ति जो सितार बजाता हो।

सितारेहिंद-स. पु. यौ. [फा] ब्रिटिशकाल में अंग्रेजी सरकार की ओर से सम्मानार्थ दी जाने वाली एक उपाधि।

सितारौ-स. पु [फा सितारः] १ तारा।
२ नक्षत्र।
३ भाग्य, किस्मत।
उ०—थाणा में नवो थाणादार आवतो जरै करैई एक रो पलडो भारी रैवतो तो करैई दूजा रो। अबार फौगा रो सितारो तेज हो। वो थाणादार री मूछ रो बाळ बण्योडो हो।
—अमरचूंनडी
रू. भे.—सतारो।

सितावड़ी-सं. स्त्री.—एक प्रकार का पौधा विशेष।

सितासित-स. पु. [स सित+असित] बलराम। (अ. मा, ना. मा) (मि. निलाबर)
रू. भे.—सीतासित।

सितास्व-सं. पु. [स. सिताश्व] १ अर्जुन का एक नाम।
२ चन्द्रमा।

सिति—देखो 'सित' (रू. भे) (ह. ना. मा.)

सितिकठ—देखो 'सितकठ' (रू भे.)

सितियासिमौं-वि.—जो क्रम से छियासी के बाद आता हो।
रू. भे —सत्यासीमौं, सित्यासिमौं।

सितियासियौ-सं. पु.—सत्तासी की सख्या का वर्ष या साल।
रू. भे.—सतियास, सतियासियौ, सतियासी, सत्यासियौ, सत्यासीयौ, सित्यासियौ।

सितियासी, सितियासी-वि. [सं. सप्ताशीति, प्रा. सत्तासइ, अ सत्तासी] अस्सी और सात के योग के समान।
रू. भे —सतियास, सतियासी, सत्यासी।

सितियासीक-वि.—सत्तासी के लगभग।
रू. भे —सत्यासीक।

सितिरि—देखो 'सत्तर' (रू. भे.)
उ०—साभरमती तणू नीर, सितिरि स्नान, बुहुतिरि ऊवरा अनि मीर।—व स

सितोदर-स. पु —कुबेर का एक नाम। (हि को; ह ना. मा)
वि.—जिसका पेट सफेद हो।
रू. भे.—सतोदर।

सितोपळा-स. स्त्री [स सितोपला] मिश्री।

सित्तर, सित्तर-वि. [स. सप्तति, प्रा. सत्तरि] साठ और दस के योग के समान, सत्तर।
रू भे.—सतरि, सत्तर, सत्तरि, सितर, सितिरि।

सित्तरमौं-वि.—जो क्रम से उनसित्तर के बाद पडता हो, ७० वा।
रू भे —सत्तरमौं, सितरमौं।
सं पु —७० वां वर्ष।

सित्तरेक-वि —सत्तर के लगभग।
रू. भे.—सितरे'क, सितरेक।

सित्तरौ-स. पु —सत्तर की सख्या का वर्ष।
रू भे.—सितरौ।

सित्या-स. स्त्री.—१ बल, शक्ति।
उ०—लोडा तौ लाग्या पण गोडा टूटग्या। सूना हुयग्या, सित्या निसरगी अर सतगा टूटग्या।—दसदोख
२ बुद्धि, अक्ल।
उ०—हसी ढबिया हाथा रा लटका करतो कैवण लागी—देखो राख उडिया री कैडी सित्या निकळी जको अेडी कुलळी डूडी रो आदेस करियो।—फुलवाडी

सित्यानास—देखो 'सत्यानास' (रू. भे.)
उ०—१ टाबरा रा पग बढग्या, गवाडो मूंघो मारीजग्यो, सित्यानास हुयग्यो। एक भाई होलात में आयो, दूजो बेटो जेळ गयो।
—दसदोख
उ०—२ रोवती रोवती बोली—बापजी, म्हारी सगळी दाळ लेयग्यो। सित्यानास जावै इण रो।—फुलवाडी

सित्यानासी—देखो 'सत्यानासी' (रू. भे.)
उ०—सब सित्यानासी ऊठ उदासी हासी मुख हिलकदा है।
—ऊ. का.

सित्यासिमौ—देखो 'सितियासिमौं' (रू भे.)

सित्यासियौ—देखो सितियासियौ' (रू. भे.)

सित्यासी—देखो 'सितियासी' (रू. भे)

सित्यासीमौं—देखो 'सितियासीमौं' (रू. भे)

सियर—देखो 'स्थिर' (रू. भे)
उ०—ससार को न रहसी सियर, सभा वहण रिण सार री। जावसी नही जाता जुगा, ऐ वाता ईण वार री।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सियळ, सियल-सं. पु [स. शिथिल] राजा वाल का पुत्र, एक राजा।
उ०—वाल सुतन न्रप सियल उववर, वज्रनाभ्र जिण सुतण भुप वर।—सू प्र.
वि.—१ जिसमें खिचाव न हो, ढीला।
उ०—सळ पडियोडा सियळ, गोळ भुज है गळियोडा। गळियोडा छिक गुमर, गिरै हूगा गळियोडा।—ऊ का.
२ मद, धीमा।

सितंतर-वि. [स. सप्तसप्तति, पा. सत्तसत्तरि; प्रा. सत्तहुत्तरि, अप. सत्तत्तरि] सत्तर और सात के योग के बराबर या समान।
सं पु —सत्तर व सात के योग से बनने वाली सख्या, ७७।
रू. भे.—सत्योत्तर, सत्योतरइ, सितहुतर।

सिततरमों-वि.—जो क्रम मे छिहत्तर के बाद पडता हो।

सितंतरे'क-वि.—जो सतहत्तर के लगभग हो।

सिततरौ-स पु —सितहत्तर की सख्या का वर्ष।

सितबर-स पु. [अ.] ईस्वी सन् का नौवा मास जो तीस दिन का होता है।

सित-वि [स सित] १ श्वेत, सफेद। (डिं. को, ना. मा)
उ०—सित कुसुमा गूथी सुखद, वेणी सहिया अद। नागणि जाणे नीसरी, सांपड खीर समद।—बा दा.
२ निर्मल, स्वच्छ।
उ०—चुरासी चहुटानी हटस्रेणी, माहइ वस्त सपूरण वरतइ सित द्रव्य, सहिस्र द्रव्य..... ...।—व स.
३ वधा हुआ। (डि को.)
४ सम्पूर्ण, पूर्ण।
[सं. शित] ५ तीक्ष्ण, तेज।
उ०—तिक्ख कडच्छा सज्ज यों सित भल्ल सजाया।—व. भा.
स. पु [स. सित] १ शुक्ल पक्ष।
उ०—अठतीसौ आसोज में, सित सातम सनवार। गौ 'सोनागिर' धाम हरि, नाम करै ससार।—रा. रू.
[स. सित] २ शुक्रग्रह।
३ शुक्राचार्य।
४ वासुकी।
५ किरण।
६ रजत, चादी। (अ. मा, ना मा)
७ पडित। (ह ना मा.)
रू भे —सिति।

सितकठ-स पु [स शितिकठ] शिव, महादेव।
वि.—सफेद कठ या गर्दन वाला।
रू भे.—सितिकठ।

सितछद-स पु [स सितच्छद] हस। (डिं को.)

सिततुरंग-स. पु यौ [स श्वेततुरग] अर्जुन।

सितपक्ख, सितपक्खि, सितपक्ष, सितपख-स पु यौ. [स सितपक्ष] शुक्लपक्ष।
उ०—सतरै समत छयासियै, चैत दसमि सितपक्खि। गुज्जर सिर दूजौ 'गजन', आसहियौ अमरक्खि।—रा. रू

सितपत्र-स. पु [स. श्वेतपत्र] श्वेत कमल। (डि. को)

सितम-वि. [फा.] जोरदार, गजब, अद्‌भुत।
उ०—की करै जोर लाचार कवि, आदत तर्ज न आलसी। सोधी मिसाल लाधी सितम, खतम दुतरफ खिलालसी।—ऊ. का.
स पु—१ अत्याचार, जुल्म।
२ अनीति।

सितमगर-स. पु [फा] जालिम, अत्याचारी।

सितमणि-स. स्त्री. [स.] स्फटिक मणी, बिल्लौर।

सितरंग-स. स्त्री.—रामवेलि नामक वेल। (अ. मा)

सितर, सितर—देखो 'सित्तर' (रू. भे.)
उ०—सेना सितर हजार सूं, विचित्र अमित्र वळवान। कियो विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वर खान।—रा रू.

सितरमौं—देखो 'सित्तरमौं' (रू. भे.)

सितरे'क—देखो 'सित्तरे'क' (रू. भे.)

सितरौ—देखो 'सित्तरौ' (रू भे.)

सितवादी—देखो 'सतवादी' (रू. भे.)

सितहुतर—देखो 'सिततर' (रू. भे.)

सितांणमौं, सितांणवौ—देखो 'सताणमौ' (रू भे.)

सितांणू—देखो 'सताणू' (रू भे)

सितावर—देखो 'स्वेतावर' (रू भे.)

सितावरी—देखो 'स्वेतावरी' (रू. भे.)

सितांसु-स. पु [सं. सिताशु] १ चन्द्रमा।
२ कपूर।
रू. भे.—सीतअसु, सीतसु, सीतसू, सीतासु।

सिता-स. स्त्री. [स.] १ मिस्त्री। (डिं. को)
२ चीनी, शक्कर।
३ शराव, मदिरा।
४ सफेद दूब।
५ रोशनी, प्रकाश।
६ जुन्हाई।
७ सुन्दरी, स्त्री।

सिताव, सितावी-वि.—तीव्र, तेज।
क्रि वि. [फा शिताब] शीघ्र, जल्दी।
उ०—१ हुइ साद नकीब सिताव हला, इम होदाय जीण वणे अलला।—रा रू
उ०—२ इण दिस थी राजा 'अजन', सभ आवता सिताव। साम्हौ पाय सपेखवा, मिळियौ आय नवाव।—रा. रू
उ०—३ वहत सितावी राडवर, दूत दरक्का खेडि। गया वुलावण जतन गढ, त्या सू बूझी तेड़ि।—रा. रू.
रू. भे.—सताम, सताव, सतावी, सतावी।

सितार-सं. पु [फा सेहतार] तारो को उगुलियो से झनकारने से बजने वाला एक प्रसिद्ध तार वाद्य।

१२ फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक योग।
(ज्योतिष बालाश्रवबोध)
१३ एक युद्धप्रिय देवता।
उ०—भूत प्रेत पेमाच, वहत चेडा वह वेंतर। वीर सिद्ध वेंताळ, निसाचर भूचर खेचर।—गु रू व
१४ शिव, महादेव।
उ०—खुलै सिद्धा ताण्डिया रूप रा नाच वीर खेळा, रचै गान चाळिया धूप रा रखाराज। चमक्कै भालिया वीच भूप रा हाथिया चली, नाळिया ऊपरा प्रळय काळियां नाराज।—दुरगादत्त बारहठ
१५ वह पुरुष जिसका वचन सत्य हो।
१६ पूजनीय व्यक्ति, महापुरुष।
१७ जसनाथ द्वारा प्रवर्तित जाटो का एक सम्प्रदाय एवं इस सम्प्रदाय का व्यक्ति।
१८ एक देवगण जो हिमालय के समीप वदरिकाश्रम के समीप निवास करता था।
१९ कश्यप एव प्राधा के पुत्रो मे से एक।
२० एक मुनि जिसने कश्यप ऋषि से चर्चा की थी।
२१ सार्थकता।
२२ सूचना, सन्देश।
२३ आर्या-गीति या खधाण (स्कधक) का भेद विशेष।
२४ छप्पय छन्द का २३ वा भेद जिसमे २८ गुरु व ९६ लघु सहित १२४ वर्ण या १५२ मात्रायें होती है। (र ज प्र.)
वि.—१ जो साधना द्वारा सफल कर लिया गया हो, जिसकी साधना पूरी हो चुकी हो, साधा हुआ।
उ०—इण ही तरह देवी रा निदेस सू जाचका सूं देण काज राजा बडाहरै सदा ही सुवरण रासि सिद्ध कीधो।—व. भा
२ सफल, पूर्ण।
उ०—१ नर नाथ जाण राखै निजर, बाण बखाणा विसतरै। व्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै।—रा रू
उ०—२ दहू बाह जोरै कहू बुद्धि दीजै। कृपाळी कवी लालसा सिद्ध कीजै।—मे. म.
३ प्राप्त, उपलब्ध।
४ जो पूर्णतया सम्पादित हो गया हो।
५ स्थापित, बसा हुआ।
६ दृढ, पक्का।
७ सत्य माना हुआ, प्रमाणित।
८ निर्णीत, निर्धारित।
९ पकाया हुआ।
उ०—१ सो लै जावण सदन, पुणै मीसण वाटी प्रति। वठै सिद्ध पळ अम्ह, मगि जीमण चहियै मति—व भा.
उ०—२ अरु उचित आमा रो सिद्ध पळ चडिका नूं चखाय प्रसन्न कीधी।—व. भा.
१० अदा किया हुआ, चुकाया हुआ।
११ वशीभूत किया हुआ।
१२ निपुण, दक्ष।
१३ तैयार किया हुआ।
१४ दमन किया हुआ।
१५ प्रायश्चित द्वारा पवित्र किया हुआ।
१६ अधीनता से मुक्त किया हुआ, मुक्त।
१७ अलौकिक शक्ति सम्पन्न।
१८ पवित्र, शुद्ध, निष्पाप।
उ०—जिको धोकबा काज जावै जमाता, अपा पाप थायै वजै सिद्ध आता।—मे. म.
१९ ठीक, उचित।
२० मुक्ति या निर्वाण प्राप्त।
२१ दैविक।
२२ अनादि, अविनाशी, सनातन।
२३ प्रसिद्ध, प्रख्यात।
२४ चमकीला, प्रकाशमान।
२५ स्थापित, बसा हुआ।
२६ मीठा। (ना मा.)
२७ जो सर्व कर्मो का क्षय करके ससार से मुक्त हो चुका हो।
(जैन)

रू भे—सिध, सिध्ध।

सिद्धआपगा—सं स्त्री [स] गगा नदी। (डिं. को)

सिद्धकणेरी—स. पु—नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध नव नाथो मे से एक, कृष्णपाद।

सिद्धकामेस्वरी—स स्त्री [स सिद्धकामेश्वरी] दुर्गा की पच मूर्तियो मे से प्रथम, कामरया।

सिद्धकारी—वि [स सिद्धकारिन्] १ जो धर्मशास्त्र का अनुसरण करता हो।
२ सिद्ध करने वाला।

सिद्धकूप—सं. पु [स.] कार्तिकेय की शक्ति द्वारा प्रलब दैत्य के वध के समय किया गया पृथ्वी का छेद, जो बाद मे पाताल गगा के पानी से भर गया।

सिद्धगुटको—स. पु.—एक काल्पनिक मत्र-सिद्ध गुटकी जिसे मुह मे रखने से अदृश्य होने की शक्ति आ जाती है।
रू भे—सदगुटको, सिधगुटको।

सिद्धक्षेत्र—स पु—दण्डक वन का एक भाग।
उ०—चउवीस जिणालउ अस्टापदनउ, सिद्धक्षेत्र विमलगिरिनउ सास्त्र विरचना हरि भद्रसूरिनी.. .. . .।—व स.

उ०—१ तपसी रो रूप धरै अततार्इ, अडग कुटी गह सीत उठाई।
सिथळ पुकारी साद सुणीजै, कीजै ही हरि वाहर कीजै।
—र. रू.

उ०—२ तळप परहर अतुर चढ तुक, चकरधर मग सधर सचर।
सिथळ पर घर जाण ईसर, छाड नगधर धरण दूछर।
—र. ज. प्र.

३ सुस्त, थकित, आलसी।
४ कमजोर, निर्बल।
५ जिसका पालन कडाई से न हो। (काम या बात)
रू. भे.—सिथिळ।

सिथिर—देखो 'सिथर' (रू. भे.)

सिथिळ—देखो 'सिथळ' (रू. भे.)
उ०—तेह पुरुस जरजर हुवौ जी, सिथिळ पडी छै जी काय। लीलरी पडै सरीर मैं जी, चामडी हाड विटाय।—जयवाणी

सिथिळता-स. स्त्री [स. शिथिलता] १ आलस्य, सुस्ती।
२ ढीलापन।
३ थकावट।
४ मदता, धीमापन।
५ कमजोरी, निर्बलता।

सिदक-स. स्त्री [अ सिद्क] १ सच्चाई, सत्यता।
उ०—ज्यो तुम भावै त्यौं खुसी, हम राजी उस बात। दादू के दिल सिदक सो, भावै दिन को रात।—दादूवाणी
२ निश्छलता।
उ०—दादू सिदक सबूरी साच गह, साबित राख यकीन। साहिब सो दिल लाइ रहु, मुरदा व्है मिस्कीन।—दादूवाणी
२ शुद्धता, निर्मलता।
उ०—हरीया हरिजन जाणीयै, अंतर गरवा तन। दास बिदगी दीनता, सिदक सबूरी मन।—अनुभववाणी
४ वास्तविकता, यथार्थता।
वि —सच्चा, वास्तविक।
रू. भे —सिदिक।

सिदरी-स स्त्री [फा. सेहदरी] तीन ओर से खुला हुआ या तीन दरवाजो वाला कक्ष, बरामदा।

सिदाई—१ देखो 'सीधाई' (रू. भे.)
२ देखो 'सिधाई' (रू भे)

सिदिक—देखो 'सिदक' (रू भे.)

सिदुर—देखो 'सिधुर' (रू भे)

सिदौ—देखो 'सिद्धो' (रू भे.)

सिद्धत—देखो 'सिद्धात' (रू भे.)
उ०—१ अनभय कथणी रहिणी करणी अति आठुइ करम जीपै अधिकारी। गुणवत अनत सिद्धंत कला गुण प्राक्रम पौंहोच विद्या पुण भारी।—मि. द्र.
उ०—२ साधवा मुक्ति का वास वदा सहु भिक्खम स्वाम सिद्धंत है भारी।—मि. द्र

सिद्ध-सं. पु. [सं.] १ वायु पुराणानुसार एक प्रकार के देवता गण जिनकी सख्या ८८००० मानी गई है। सूर्य के उत्तर तथा सप्तर्षियो के दक्षिण अन्तरिक्ष (भुवर्लोक) में इनका वास लिखा है। ये एक कल्प भर के लिये अमर माने गये हैं।
उ०—१ धरत घ्यान चारन विद्याधर, करत गान गुन अप्छर किन्नर। गुह्यक यक्ष रक्ष गधरबह, सिद्ध पिसाच भजत तव सरवह।
—मे. म.
उ०—२ आचारजे सुर जक्ष, किन्नर अछराणि सिद्ध गधरव। गण वेताळ मुनिंद्रो, कितं चवसट्टि पत्र पारोय।—रा. रू.
उ०—३ सदेही स्रग गयौ, रायराया उथपै। अतरीख ले अन्नत, सिद्ध विण आघो कीन्हो।—नैणसी
२ तपस्या, त्याग व योग साधना द्वारा प्राप्त किसी अलौकिक शक्ति से सम्पन्न कोई ऋषि, तपस्वी, महात्मा पुरुष, दैवी शक्ति सिद्ध किया हुआ कोई करामाती साधु।
उ०—१ द्रढ वर्ष 'सोनग' 'दुरग' तेरह साख कमध। या मैं साहस अधियो, ज्या तट कुभज सिद्ध।—रा रू.
उ०—२ सीत वात आतप सहीयइ एकत्र सदैव न रहियइ, यथावस्थितै धरम कहियइ, एतदरथस्य करम, धरमक हिवइ सुक्ल धान धरिउं, अनतर मरिउ, मुक्ति पयसारिउ इणि परि सिद्ध होयइ।
—व. स.
उ०—३ सिद्धा सिद्धाई धरणी मैं धसगी, भोपा भोपाई फाफा मैं फसगी। भूठा जोतसिया जोतिस की भूठी, करसा कलपाया बरसा नह वूठी।—ऊ का
३ वेद, पुराण आदि शास्त्रो का मर्मज्ञ एव आध्यात्मिक दृष्टि से उच्च माना जाने वाला ऋषि, मुनि, महात्मा।
उ०—आखा तीजा धणी अमामी, सिद्ध जनमियौ सकर स्वामी।
—ऊ. का.
४ नाथ सम्प्रदाय के योगी जिनकी संख्या ८४ मानी गई है।
ज्यूं—नौ नाथ अर सिद्ध चौरासी।
५ नाथ सम्प्रदाय एव हिन्दू योगियो से बौद्धयोगी।
६ देवदूत, फरिश्ता।
७ ऐन्द्रजालिक, जादूगर।
८ अभियोग, मुकद्दमा।
९ गुड। (ना. मा.)
१० समुद्री नमक।
११ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगो मे से एक।

उ०—२ चउपरवी पोसउ कह्यउ जी, सूत्र सिद्धांत मझारि। हरि-भद्र सूरि विवरउ कीयौ जी, बावीस सहस्त्री सार।—स. कु.

उ०—३ बखाण वाणी देवै सूत्र सिद्धात वाचै छेहडै जीव खुवाया पुन्य मिस्र परूपै सावद्य अनुकपा मैं धरम कहै तिण उपर स्वांमीजी द्रस्टात दियौ।—भि. द्र

६ बहत्तर प्रकार की पुरुषो की कलाओ मे से एक।

रू. भे.—सिद्धंत, सिधात।

सिद्धांती-वि. [स सिद्धान्तिक] १ शास्त्र के तत्व का ज्ञाता।

२ अपने सिद्धान्तो के अनुसार आचरण करने वाला।

३ तार्किक।

४ सिद्धान्त का, सिद्धान्त सम्बन्धी।

सिद्धा-स स्त्री.—आर्या छद का एक भेद जिसमें १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं।

सिद्धाई-स. स्त्री.—१ सिद्ध होने की अवस्था या भाव, सिद्धि।

२ चतुराई।

उ०—सिद्धाई वाळा री वण आयी। जागा जागा ठगाई रा तप्पड विछा'र ठगारौ जमाया बैठा।—वरसगाठ

३ पाडित्य, विद्वता।

४ सिद्ध करने की शक्ति।

५ सिद्धत्व।

उ०—सिद्धा सिद्धाई धरणी मैं धसगी, भोपा भोपाई फाफा मैं फसगी।—ऊ. का

६ विशेषता, खासियत।

रू. भे —सिधाई।

सिद्धाचळ, सिद्धाचल-स. पु. [स. सिद्धाचल'] काठियावाड़ में स्थित जैनियो का एक तीर्थ स्थान।

उ०—१ सिद्धाचल सीमै जी यात्रा करि जीमै। निस्चय इन नीमैजी भमय न भव भीमइ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ करम आठ मेटै कियौ, पचम गुण परवेस। थिर सिद्धा-चळ थापना, आदीस्वर आदेस।—बा. दा.

सिद्धारथ-स. पु. [स. सिद्धार्थ] १ गौतम बुद्ध का नाम।

उ०—एहवी कुटब साहामी ग्यातिनी भगति कीवी सिद्धारथ राजा-ग्रहे।—व. स.

२ दशरथ के एक मत्री का नाम। (रामायण)

३ कार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर।

४ रुद्रबीसी का चौदहवा वर्ष। (ज्योतिष)

सिद्धासण-स. पु.—१ योग के चौरासी आसनो मे से एक जिसमें, बाये पाव की ऐडी को सीवनी मे रखकर दक्षिण पैर की ऐडी को लिंग पर रखा जाता है। फिर गरदन नीची करके ठुड्डी को हृदय के समीप अर्थात हृदय के ऊपर चार अगुल ऊची रखते हुए दृष्टि को त्रिकुटी के (भ्रूमध्य में) स्थिर करके नेत्रो को अर्धउन्मिलित रख के नाभि के पास बाये हाथ की हथेली मे दाहिने हाथ को सीधा रखना होता है। इसके तीन भेद होते हैं—(१) वज्रासण(न)—इसमे दाहिने पैर की ऐडी को सीवनी एव बाये पैर की ऐडी को लिंग पर रख कर पूर्ववत बैठा जाता है।

(२) मुक्तासण(न)—इसमे बाये पैर की ऐडी को सीवनी एवं दाहिने पैर की ऐडी को लिंग पर रख कर पूर्ववत बैठा जाता है।

(३) गुप्तासण(न)—बाये पैर की ऐडी लिंग पर रख कर उसी पैर के पजे पर दाहिने पैर की ऐडी को जमाकर पूर्ववत बैठा जाता है।

यह आसन प्राणवाही नाडियो के सर्व मलो को दूर करता है तथा सहज में उन्मनीकला को उत्पन्न करता है और तीन प्रकार के जो बध है इनको अनायास सिद्ध करता है।

सिद्धि-स. स्त्री. [स.] १ अलौकिक शक्तियो से युक्त आठ प्रकार की सिद्धियो में से एक।

उ०—अस्ट सिद्धि नव निद्धि अखंडित, परम सती जुवती सुत पडित।—मे म.

वि. वि.—आठ प्रकार की सिद्धियो का विवरण:—अजन, गुटका पादुका, धातुभेद, वेताल, वज्र, रसायन और योगिनी। योग की आठ सिद्धिया इस प्रकार से हैं:—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।

२ ऐन्द्रजालिक विद्या द्वारा किसी चमत्कारिक शक्ति की प्राप्ति।

३ किसी प्रकार की साधना या तपस्या की पूर्णता, इससे मिलने वाली सफलता।

४ परिश्रम का फल या सफलता।

५ मुक्ति, मोक्ष।

६ निपुणता, दक्षता, प्रवीणता।

७ सस्थापना, प्रतिष्ठा।

८ शुद्धता, पवित्रता।

९ वास्तविकता, सच्चाई।

१० खाद्य पदार्थ की पकने की अवस्था, पकावट।

११ तत्परता, सावधानी।

१२ बुद्धि।

१३ अन्तर्ध्यान होने की क्रिया।

१४ समृद्धि, सुख।

१५ विजय, सफलता।

उ०—समरथ सूर तोगा वदिरसुत, अहिमद आणादि मिलई। दुत्थिय दुक्ख आरति टलइ, सयल सिद्धि वछित फलई।—व स

१६ विजिया, भाग।

१७ दुर्गा का एक नाम।

१८ दक्ष प्रजापति की पुत्री व धर्मदेव की पत्नी का नाम।

१९ गणेश की दो पत्नियो मे से एक का नाम जो 'क्षेम' की माता थी।

सिद्धजोग—देखो 'सिद्धयोग' (रू. भे.)

उ०—१ सिद्धजोग रवि जोग, सुद्ध दिनमान सहू सिसि। दिसा सूळ थयौ पूठि, वळै जोगणि वामी दिसि।—गु रू वं

उ०—२ एकम छट्ट इग्यार, वार सुकर वरतीजै। वारस सातम वीज, लेर वुद्ध मौरत लीजै। तेरस आठम तीज, होवै मगळ सुभकारी। चौथ नवमी चवदस्स, वळै सनि विघनविडारी। पचमी दसम अरु पूरणमा, आवै जो सुरगुर प्रवळ। सुभ होय धरा भल चालियै, सिद्धजोग रु कारज सफळ।—अग्यात

सिद्धजोगी-सं पु. यौ [स. सिद्धयोगी] १ शिव, महादेव।

२ कोई सिद्ध पुरुष, योगी, महात्मा।

सिद्धता-स स्त्री.—१ सिद्धि प्राप्त कर लेने की अवस्था, क्रिया या भाव, सिद्धि, सिद्धत्व।

२ तपस्या व साधना से प्राप्त की हुई अलौकिक शक्ति।

३ सफलता, पूर्णता।

४ दृढता।

५ प्रसिद्धि।

६ मुक्ति।

सिद्धदेव, सिद्धनाथ-सं पु. [सं.] शिव, महादेव।

सिद्धपक्ख, सिद्धपक्ष, सिद्धपख-स. पु. [स. सिद्धपक्ष] प्रमाणित वात।

सिद्धपुर-स पु —१ एक कल्पित नगर जिसे कोई पृथ्वी के उत्तरी छोर मे वताते हैं और मतान्तर से पाताल मे भी। (ज्योतिष)

२ गुजरात का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर।

रू भे —सिधपुर।

सिद्धमात्रका-स स्त्री यौ [सं सिद्धमातृका] एक प्रकार की लिपि।

सिद्धयोग-स पु. [स] मुहूर्त्त का एक शुभ योग जिसमे निर्दिष्ट तिथि तथा वारो मे शुभ कार्य का समारम्भ किया जाना श्रेष्ठ माना जाता है।

वि वि —निम्नलिखित तिथियो व वारो के योग से वनने वाला योग शुभ व सिद्धिदायक माना जाता है—शुक्रवार को नन्दा अर्थात प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी, वुधवार को भद्रा अर्थात् द्वितीया, सप्तमी एव द्वादशी, मगलवार को जया अर्थात् तृतीया, अष्टमी व त्रयोदशी, शनिश्चरवार को रिक्ता अर्थात चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी और गुरुवार को पूर्णा अर्थात पञ्चमी, दशमी और पूर्णिमा तिथि।

रू भे —सिद्धजोग।

सिद्धयोगनी-स स्त्री [म सिद्धयोगिनी] एक योगिनी का नाम।

सिद्धर-स पु [स] एक ब्राह्मण का नाम जो मथुरापति कस की आज्ञानुसार श्रीकृष्ण को मारने गया था पर असफल रहा।

सिद्धरसायण-स. पु यौ. [स सिद्धरसायन] दीर्घ जीवन और प्रभुत्व शक्ति प्राप्त कराने की एक रसौषध विशेष।

सिद्धराज, सिद्धराव-स. पु. [स. सिद्धराज] १ शिव, महादेव।

२ गोरखनाथ।

रू. भे.—सधराय, सिधराज, सिधराव।

सिद्धविचारनाथ-स. पु.—राजा भर्तृहरि का उस समय का नाम जव उसने सन्यास ले लिया था। (मा. म.)

सिद्धसाधक-स. पु.—१ सव इच्छाए पूर्ण करने वाला।

२ सिद्ध व उसका साधक।

सिद्धस्री-स. स्त्री. [सं. सिद्ध+श्री] १ शुभारम्भ।

मुहा.—सिद्धस्री मैं ही खोट=आरम्भ मे ही त्रुटि।

(मि —सामेळा मे ही गधा)

२ पत्र आदि लिखते समय सर्वप्रथम लिखा जाने वाला शब्द।

उ०—सिद्धस्री सूरजगढ सुभ स्थान सरव ओपमा साधक महा स्रेस्ठ उपमा लाइक ब्राजमान—सिर रा सेहरा हियारा हार आल्या रा अजण आतम रा आधार, गुणा रा गभीर उकत्या रा आगर वहत्तर कळायें विचित्र सुवुध रा सागर. .. ... ।

—र. हमीर

रू भे.—सिधसिरी।

सिद्धस्थाली-सं स्त्री. [म] एक वटलोई (धातु का वना पात्र) विशेष, जो वनवास के समय व्यासजी से द्रौपदी को मिली थी। इसमें से इच्छानुकूल भोजन निकाला जा सकता था।

सिद्धहस्त-वि. [स.] कार्यकुशल, निपुण, दक्ष।

सिद्धांजन-सं. पु [स] एक कल्पित अजन जिसे आँख मे लगा देने मे भूमिगत वस्तुए भी स्पष्ट दिखाई देती है।

सिद्धात-स पु. [स] १ कला, विज्ञान, शास्त्र आदि के सम्वन्ध में कोई मूल वात या मत जो किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जो अन्य लोगो द्वारा मान्य हो। (Theory)

उ०—१ जिण रा सिद्धात प्रमाणिक पडिता रा रचिया प्रवंध मैं इण रीति पुणीजै जिको पण वळाविध रा अधीस राम भूपाळ अंगउपाग सहित सुणीजै।—व भा.

उ०—२ गुरु परचु पास्ति कीजइ, सिद्धांत साभलियइ, तत्त्व अभ्यसीइ, विचार पूछियइ।—व स

२ भलीभात सोच विचार कर स्थिर किया हुआ मत, उसूल।

(Aim Object)

उ०—१ वा बोली—पवन स्वारथ रै वस मे होय'र 'हत्या' करीजै सिद्धात नै कायम राखण रै वास्तै वध।—तिरसकू

उ०—२ घर घरणि गालि गाटो करे, पुन्य धरम नह पाळणू। अमलिया तणौ सिद्धात औ, गळै जठा लग गाळणू।—ऊ का.

३ किसी वात या विषय का साराश, तत्व की वात।

४ वह वात जो विद्वानो द्वारा सत्य मानी जाती हो।

५ शास्त्र।

उ०—१ सिव सक्ति सीम, अनुभव असीम। सिद्धात सार, नित निराकार।—ऊ. का

संस्कृत —

सिद्धो वर्णसमाम्नाय । सिद्ध खलु वर्णानां समाम्नायो वेदितव्य ते के । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ । क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । इति ।

तत्रादौ चतुर्दश स्वरा । तस्मिन् वर्णसमाम्नाये आदौ ये चतुर्दशवर्णा ते के । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ ।

दश समाना. । तस्मिन् वर्ण समाम्नाये आदौ ये दश वर्णास्ते समानसज्ञा भवन्ति । ते के । अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ इति ।

तेषा द्वौ द्वावन्योन्यस्य सवर्णौ । तेषा समानाना मध्ये द्वौ द्वौ वर्णौ अन्योन्यस्य परस्परं सवर्णं सज्ञौ भवत. । अ आ । इ ई । उ ऊ । ऋ ॠ । ऌ ॡ ।

पूर्वो ह्रस्व. । तयो सवर्ण सज्ञयोर्मध्ये पूर्वो वर्णो ह्रस्वसज्ञो भवति । अ इ उ ऋ ऌ ।

परो दीर्घ. । तयोः सवर्णयोर्मध्ये परो वर्णो दीर्घ सज्ञो भवति । आ ई ऊ ॠ ॡ ।

स्वरोऽवर्णवर्जो नामि । अवर्ण वर्जः स्वरो नामि सज्ञो भवति । इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ ।

एकारादीनि सध्यक्षराणि । एकारादीनि स्वरनामानि सध्यक्षरसज्ञानि भवन्ति । तानि कानि । ऐ ऐ ओ औ ।

कादीनि व्यजनानि । ककारादीनि हकारपर्यन्तान्यक्षराणि व्यजनसज्ञानि भवन्ति ।

ते वर्गाः पञ्च पञ्च पञ्च । ते ककारादयो मावसाना वर्णाः पञ्च पञ्च भूत्वा पञ्चैव वर्ग सज्ञा भवन्ति ।

वर्गाणा प्रथमद्वितीय शषसाश्चाघोषा । कख चछ टठ तथ पफ श ष स एते अघोषाः ।

घोषवन्तोऽन्ये । अघोषेभ्योऽन्ये तृतीय चतुर्थ पचमवर्णा य र ल व हाश्च घोषतत्संज्ञा भवन्ति । ग घ ङ । ज झ ञ । ड ढ ण । द ध न । ब भ म । य र ल व ह—इमे घोषाः ।

अनुनासिका ङ ञ ण न माः ।

अन्तस्था य र ल वा. ।

ऊष्माण श ष स ह ।

अ इति विसर्जनीय ।

क $\overset{\vee}{\wedge}$ इति जिव्हामूलीय ।

प $\overset{\vee}{\wedge}$ इत्युपध्मानीय ।

अ इत्यनुस्वार ।

हिन्दी —

वर्णों के समूह को सिद्ध समझना चाहिये । वर्ण ऊपर देखिये । ऊपर दिये हुए वर्णों मे से पहले १४ वर्णों की स्वर सज्ञा है । ये १४ वर्ण संस्कृत रूप के साथ दिये गये हैं । १४ स्वरो मे से पहले १० वर्णों की समान सज्ञा है । समान स्वरो में से दो दो की परस्पर सवर्ण सज्ञा है । यथा—अ आ परस्पर सवर्ण कहलाते हैं . इसी प्रकार इ ई, उ ऊ, ऌ ॡ के लिये समझिये । सवर्ण स्वरों में पहला वर्ण ह्रस्व कहलाता है अर्थात् अ इ उ ऋ और ऌ ह्रस्व वर्ण हैं । आगे का वर्ण दीर्घ होता है । यथा—आ ई ऊ ॠ ॡ दीर्घ स्वर हैं । अ वर्ण को छोड कर स्वरो की 'नामि' सज्ञा है । ए ऐ ओ औ—सध्यक्षर कहलाते हैं ।

'क' से लेकर 'ह' तक के वर्ण व्यजन कहलाते हैं । 'क' से 'म' तक के २५ वर्ण २५ वर्गो मे विभक्त हैं । यथा—क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग । इन वर्गों के प्रथम दो अक्षर तथा श ष स अघोष कहलाते हैं तथा वर्गों के शेष तीन तीन वर्ण तथा य र ल व ह घोष वर्ण हैं।

'ङ, ञ, ण, न, म' अनुनासिक हैं।

य र ल व अन्तस्थ हैं । 'श ष स ह' ऊष्म कहलाते हैं । अ विसर्जनीय है ।

क $\overset{\vee}{\wedge}$ जिव्हामूलीय है । 'अ' अनुस्वार है ।

प $\overset{\vee}{\wedge}$ इत्युपध्मानीय है ।

निम्नलिखित अपभ्रंश स्फुट रूप से और भी हैं ।

पूरबौ फल्यो रथो रथो
पातारु पद पद ।
विणज्यो नामी सरु वरु वरणानेतु
नेत कर मैया राम साल की जेतू ।
लपो(खो) पचा ईड़ा दुर्गण सधि ।
एती संती सूत्रता ।
प्रथमी पाटी शुभ करती ।

ये कातन्त्र व्याकरण पर आधारित है ।

२ देखो 'सीधो' (रू भे)

रू भे —सिदो, सिधो, सीदो।

सिधत-स. पु.—१ यमराज । (अनेका)

२ देखो 'सिद्धात' (रू. भे.)

सिध-स स्त्री.—१ सफलता विजय ।

उ०—आहव छोड फतैखा आसुर, परम दुवार गयो छोडै धर । पूर लुटियौ वडो सिध पाई, संभिया सुज मारिया सिपाई ।

—रा रू

२ सकेत ।

३ लक्षण, चिन्ह ।

उ०—मोर सोर मडै, इद्र धार न खडै । आभो गाजै, सारग वाजै, द्वादस मेघ नै दुवो हुवो, सू दुखियारी री आख हुवो । झड लागो, प्रथी री दळद्र भागो । दादुरा डहिडहै, सावण आणवै री सिध कहै ।—रा सा स

वि —१ उपयुक्त ।

उ०—सुव भाया प्रजस सयण, आयां सिध अवसाण । पितु मनसा

उ०—नव नेनन मैं नव निद्धि बहै। सब हाजर रिद्धिय सिद्धि रहै।
—ऊ. का.

२० एक देवी का नाम जो कुन्ती के रूप में प्रगट हुई।

२१ जनक की पुत्रवधु व लक्ष्मीनिधि की पत्नी का नाम। (रामायण)

सं. पु —२२ वीर नामक अग्नि के पुत्र नाम, इस की माता का नाम सरयू था।

२३ सुफल, अच्छा फल।

२४ निवास, आवास।

२५ निर्विवाद परिणाम, निर्णय।

२६ निर्णय, निश्चय।

२७ फैसला, निपटारा।

२८ भुगतान, चुकारा।

२९ प्रभाव।

३० वार व नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगो में से उन्नीसवां योग। (ज्योतिष)

३१ आर्या या गाहा छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारों चरणों में कुल मिलाकर १३ गुरु और ३१ लघु सहित ५७ मात्राएँ होती हैं। (ल. पिं; र ज. प्र.)

३२ देखो 'सुधि' (रू भे)

उ०—एह कस्ट भोगवी अहीइ रहू न लही कतनी सिद्धि। तं मन मोहन जु मझ मिलइ, तु एतलइ नव निधि।—नलदवदती रास

रू भे—सिद्धी, सिध, सिधि, सिध्धि।

सिद्धिदाता-सं पु—गणेश, गजानन।
वि.—सिद्धि प्रदान करने वाला।

सिद्धदातिथि-स स्त्री.—फलित ज्योतिष के अनुसार वार एव तिथि सम्बन्धी बनने वाले योगो में से प्रथम योग।

सिद्धिदात्री-स स्त्री —नवदुर्गा के अन्तर्गत एक दुर्गा जो सिद्धि प्रदान करने वाली मानी जाती है।

सिद्धिनायक-स पु [स] गजानन, गणेश। (ह नां मा)

सिद्धिप्रद-वि —सिद्धि देने योग्य।

सिद्धिभू, सिद्धिभूमि-सं स्त्री —वह स्थान जहां योग या तप शीघ्र सिद्ध होता है।

सिद्धी—देखो 'सिद्धि' (रू. भे)

सिद्धेस्वर-स पु यौ [स सिद्धेश्वर] १ कोई बडा योगी, सिद्ध।
उ०—साथ धारै सदा, 'पाल' नव ही जोगेस्वर। साथ धारै सदा, चार असी सिद्धेस्वर।—पा. प्र

२ जालधरनाथ का एक नाम। (मा. म)

३ शिव, महादेव।

रू भे—सद्धेसर, सद्धेसुर, सद्धेस्वर, सिधेसर, सिधेसुर।

सिद्धोदक-सं. पु. [स] १ एक समुद्र विशेष।
२ एक प्राचीन तीर्थ स्थान।

सिद्धो-स. पु [सं. सिद्धः] १ वर्णों का अभ्यास कराने की प्राचीन पद्धति, जो व्याकरण युक्त होती थी।

अपभ्रंश—

सिद्धो वरणा। समामनाया।
चत्रू चत्रू दासा। दऊ सवारा।
दसे समाना। दुव्यावरणो।
न सीस वरणो। पुरवो हसवा।
पारो दिरगा। सारो वरणा।
विणज्यो नामी। इकरादेणी।
सध कराणी। कादी नाऊ।
विणज्यो नामी। तै विरधा पचा पचा।
विरधानाऊ प्रथम द्वितिया।
मपोसाइचा। घोपा घोप वितोरणी।
अनुनारा नासिक। निनाणुनामा।
अनता सता। जं रै लवा।
रुक्मण सखोसामा।
आयती विसारजुनिया।
कायती जिह्वामूलिया।
पायती पदमानीया।
आयो आयो रतन सवारो।

मतान्तर से—

सिधो वरण समामनाया,
त्रै त्रै चतुरक दसिया
दों सवेरा, दर्श समाना,
तेरनु दुधवा, वरणो
वरणो, नाणि सवरणो,
पुरवो रसवा, पारो दरघा,
सारो वरणो, विणजे नामि,
इकरादेणी, मध्यकराणि,
कादी नाउ विणजे नामी
तै वरगा पचो पचिम्रा,
वरगा णाउ, प्रथम दिवटिआ
श्री शखो साराशिया,
गोरवा गोरव, वतोरणं,
अनुसार शशा, निनाणिनम,
अथा सथा, जेगे लव्वा,
उर वमण संखोपाहा।

सिधाईजणौ, सिधाईजवौ—भाव वा० ।

सधाणौ सधावौ, सधारणौ, सधारबौ, सिधारणौ, सिधारबौ, सिधावणौ, सिधाववौ—रू० भे० ।

सिधायोडौ–भू का कृ.—गया हुआ, प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुवा हुआ ।

(स्त्री. सिधायोडी)

सिधार–स पु.—प्रस्थान या गमन करने का भाव । (डिं को)

सिधारणौ सिधारबौ—देखो 'सिधाणौ, सिधावौ' (रू भे)

उ०—१ मामो बैठा भाणेज सुरग सिधार जावै आ अणहूँणी बात गिणीजै सो 'धनजी' दरवाजो तोडण नैं तैयार व्हियो ।
—अमरचनडी

उ०—२ वधिया सील पोथी कथा, सुपह पथ सवारियो । सीभन आठ साका किया, वील्ह वैकुंठ सिधारियो ।—वील्होजी

सिधारणहार, हारौ (हारी), सिधारणियौ—वि०।

सिधारिश्रोडौ, सिधारियोडौ, सिधारयोडौ—भू० का० कृ० ।

सिधारीजणौ, सिधारीजवौ—भाव वा० ।

सिधारियोडौ—देखो 'सिधायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सिधारियोडी)

सिधारू–क्रि वि —कहाँ, किधर ।

उ०—गोपाळजी सिधारू जावै ।

सिधावणौ, सिधाववौ—देखो 'सिधाणौ, सिधावौ' (रू. भे)

उ०—१ पातरा पाच नाजर उभै, भल भाई अन भावियौ । 'जसवंत' सुतन सतिया सहित, यौं स्वरलोक सिधावियौ—रा. रू.

उ०—२ ठाकर चाकरी सिधावण सारू आखता व्हिया । गोडां रळकती काळी भवर आटी रो फटकारो देय ठकराणी भचकै आडी फिरी ।—फुलवाडी

सिधावणहार, हारौ (हारी), सिधावणियौ—वि० ।

सिधाविश्रोडौ, सिधावियोडौ सिधाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिधावीजणौ, सिधावीजवौ—भाव वा० ।

सिधावियोडौ—देखो 'सिधायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. सिधावियोडी)

सिधासण—देखो 'सिद्धासण' (रू भे)

सिधि, सिधी—देखो 'सिद्धि' (रू. भे.)

उ०—१ गुणपति आग्या साहणी, अस्व अरोहण कज्जि । वाजि किया साजा विविध, सिधि रण करण समज्जि ।—रा रू.

उ०—२ रिधि सिधि, सवही दासी, जोड़ै हाथ खडी । इनकै रग राचै नहिं कवहू, आतम जाण जुडी ।—सुखरामजी महाराज

उ०—३ एतला आद दळ मिळ अथाह, वुध अडर करण सिधि महावाह ।—रा रू

सिधु—देखो 'मधु' (रू भे)

सिधेसर—देखो 'सिद्धेस्वर' (रू. भे) (अ. मा.)

सिधेसरनारी–सं पु. यौ. [स सिद्धेश्वर+नारी] पार्वती, उमा ।

सिधेसुर, सिधेस्वर—देखो 'सिद्धेस्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

सिधोश्रंजन—देखो 'सिद्धांजन' (रू. भे)

सिधोरौ—देखो 'सीधोरौ' (रू. भे)

सिधौ—१ देखो 'सिद्धौ' (रू. भे)

२ देखो 'सीधौ' (रू भे.)

उ०—दासी नै सनकारि सिखावी, सगळो सिधो दीध । भोजन पान सजाई, करता वेला कीध ।—ध. व ग्र.

सिद्ध—देखो 'सिद्ध' (रू. भे)

उ०—किसुं न हुइ गुर भगति लगइ, माटि नउ गुरु किद्ध । अह-निसि गुरु आराधतउ, एकलव्यु हूउ सिद्ध ।—सालिभद्र सूरि

सिध्ध—देखो 'सिद्ध' (रू. भे)

उ०—चिंता वंध्यउ सयळ जग, चिंता किणहि न वध्ध । जे नर चिंता वस करइ, तै माणस नहि सिध्ध ।—ढो मा.

सिध्धसिला–स स्त्री [स. सिद्ध+शिला] १ स्थान या लोक विशेष जहाँ मृत्युपरान्त मोक्ष प्राप्त आत्माएँ अपने वास्तविक स्वरूप में रहती हैं । (जैन)

उ०—चऊद राज ऊपरि विस्तारि, सिध्धसिला छइ छत्राकारि । अनेक सुख छइ सिद्ध विलसत, सुखह तणउ तैं पार न लहति ।
—वस्तिग

२ पृथ्वी विशेष । (जैन)

सिध्धि—देखो 'सिद्धि' (रू. भे)

सिध्म–स. पु [सं सिध्म] १ एक प्रकार का कुष्ठ रोग विशेष ।
(अमरत)

२ कोढ का दाग ।

सिन–स. पु —जाळ नामक वृक्ष का फल, पीलू । (डिं. को.)

सिनक—देखो सणक' (रू भे.)

सिनकी—देखो 'सणकी' (रू भे)

सिनकादिक—देखो 'सनकादिक' (रू भे.)

उ०—दै नारद उपदेस, नाव सिनकादिक जांण्यो, गुर तै जनक वदेह, पीव उर माहि पिछाण्यो ।—अनुभववाणी

सिनगारपट्टी - देखो 'सिणगारपटी' (रू. भे.)

सिनांण–स पु —१ मस्तक, सिर ।

उ०—धमै तोपा जिमूं अहिराट रा सिनाण धूजे, रोक जगा ले खोहो ओघाट रा रकत थैं मुदेत थाट रा फडाथा भुजा आभ थाभै, लाट रा लिखाया मैंदपाट रा लिखत ।—राधोदास सादू

२ देखो 'स्नान' (रू भे)

सिनांन—देखो 'स्नान' (रू भे)

उ०—१ करि सिनान वदन करि, ध्यान चित्त धरै चक्रधर । सिलह कर्मं कसि सस्त्र, पमग साखति सभि पक्खर ।—सू प्र.

उ०—२ विदा हुए पाधारियो, पुहकर मुरधर पत्त । दान सिनांन

पूराविया, ज्यां जाया धिन जाण ।—जैतदान बारहठ

२ सफल ।

उ०—आया सिवपुरी हुम्रो कारिज सिध, परम पुरु चा ग्रहिया पगि । माहोमाहि करइ वाता मिळि, जनम सूकियारथ हुवौ जगि ।
—महादेव पारवती री वेलि

३ देवी शक्ति वाली, चमत्कारपूर्ण, चमत्कारिक ।

उ०—जाळानळ जळेत मरइ मारियो, घणोज दीन्हउ खडग सिध । भट ग्रन जीए जुडता भारथ, वाहइ ग्राविधि किसी विध ।
—महादेव पारवती री वेलि

ग्रव्यय—१ कहाँ, किधर ।

उ०—लोगां पूछ्यौ—सेठां इत्ता दिन देख्या कोनीं, सिध गिया ।
—फुलवाडी

वि. वि.—राजस्थान में 'थूं कठै जावै' ऐसा कहना ग्रशुभ मानते हैं । इसलिए 'थूं कठै जावै' न कह कर 'थू सिध जावै' या 'थू सिधारू जावै' कहेंगे, यद्यपि दोनो का ग्रर्थ एक ही है ।

२ देखो 'सीध' (रू. भे.)

उ०—कुंवरसी बोल री सिध हालियो ग्रावै छै ।
—कुंवरसी साखला री वारता

३ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.) (ना मा.)

उ०—१ हरीया कडवी वेल का, कडवाई फळ किध । जव वेली तें वीछडै, होय नाव की सिध ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ सिधां सावता सहेतो ग्राखाडे सोहियो, राग सिंघू बजे खाग रीठी । समर भूपाळ ग्रादेस करता सहू, दळा माहेस माहेस दीठी ।—राव महेसदास राठोड री गीत

उ०—३ सिध साधक राखै सबर, सबर तजै मतमद । सब्र काज सुधरै सहू, साई सबर पसद ।—वा दा

उ०—४ सुरा सिधा मैं महेस जेम बाणावळी पाथ सिध, माण मैं द्रजोण सिधा वदा महाबाहु । दान मैं करण सिध धरापती सको दाखा, रूका सिधां बाघ नै वखाणां दहू राह ।—पदमो खिडियो

४ देखो 'सिद्धि' (रू भे)

उ०—१ परम सनेही पेम रस, सो इतनो निरवाहि । हरीया रिध सिध मुगति की, ग्रोर सकल कु चाहि ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ हरीया रिध सिध क्या करै. राम नाम धन पास । लाहा तोटा जीव का, गया दूरि दिस नासि ।—ग्रनुभववाणी

सिधक–स पु —सिद्ध पुरुष ।

सिधकर–स. पु.—एक देव जाति । (ग्र. मा)

सिधकांम–स पु.—मित्र । (ग्र मा)

सिधगुटको—देखो 'सिद्धगुटको' (रू भे)

उ०—पवन रा कुटबी वेग पाण, उड्‌ड सिधगुटका जिम उडाण ।
—सू. प्र

सिधजोग—देखो 'सिद्धजोग' (रू. भे.)

उ०—सनि चतुरदसी वद पख सकाज, सिधजोग प्रमट उच्छब समाज ।—सू प्र

सिधदेव–सं. पु.—प्रतिज्ञावीर पाबू राठोड का एक नाम । (पा. प्र.)

सिधनायक–वि. [सं. सिद्धिनायक] सिद्धि प्रदान करने वाला ।

स पु —गजानन, गणेश ।

सिधपुर—देखो 'सिद्धपुर' (रू. भे.)

उ०—हैनाळ पहट गिर तर हुवा, चढै गटा रज परचडं । सरसती नदी तट सिधपुर, महिपती डेरा मडै ।—सू. प्र.

सिधमल, सिधमल्ल–सं. पु.—महादेव, शिव ।

उ०—ग्रग वरग ऊछळै; किलम विहरग खग कमळ । सुरम रथ सापडै, जाण सिधमल्ल गग जळ ।—सू. प्र.

सिधराज—देखो 'सिद्धराज' (रू. भे)

उ०—माकडा भाड ग्राखाडमल चाढया मसती चालिया । सिधराज जाण माजम मसत, हिंगळाज मग हालिया ।—मे. म.

सिधव—देखो 'सेंधव' (रू. भे.)

सिधवा—देखो 'सधवा' (रू. भे.)

उ०—सिधवा लख धीरज सैं निकसै, विधवा लख वारज सै विकसै ।
—ऊ का.

२ देखो 'सिद्ध' (रू. भे.)

उ०—सब काज भया जग मैं सधवा, बड भागण तूज भई विधवा ।
—ऊ. का.

सिधवाह–स पु —वह शस्त्र जो ग्रपने लक्ष्य से चूकता न हो, ग्रचूक शस्त्र ।

सिधवुधवायक–स. पु. यौ. [सं. सिद्धि+बुध+वाक्य] गणेश, गजानन ।
(ग्र. मा.)

सिधसिरी—देखो 'सिद्धस्री' (रू. भे)

सिधांत—देखो 'सिद्धांत' (रू. भे.)

उ०—चिलमिया करण चित चाव सू, टळणहार नहीं टाळणी । ग्रमलियां तणा सिधांत एह, बळै जठा लग बाळणी —ऊ. का.

सिधाई–स स्त्री —१ सरलता, सीधापन ।

२ देखो 'सिद्धाई' (रू भे.)

उ०—जद स्वामीजी बोल्या—दिल्ली ग्रागरा मैं तो गायां कटै । इण बात मैं कांई सिधाई । सूत्र भण्या हवै तो कहो ।—भि द्र.

सिधाणौ, सिधाबौ–क्रि ग्र [सं. सिद्ध] प्रस्थान करना, गमन करना, जाना, रवाना होना । (शुभ)

उ०—१ राजरै सिधायां ग्रै नवलख तारा म्हारा रू रू मैं भाला री ग्रणिया ज्यू खुबै ।—फुलवाडी

उ०—२ सिव ब्रहम विसन निज पुर सिधाय, प्रिय भूप जिगन व्रत मगि पाय ।—सू. प्र.

उ०—३ राव जैतसिंघ युद्ध करि वैकुंठ सिधायो ।—द. वि.

उ०—४ जोय कटक नृप जेत, सहर देसांण सिधायो । साथ पचीस सवार, ईस्वरी कदमा ग्रायो ।—मे म.

सिधाणहार, हारो (हारी), सिधाणियो — वि० ।

सिधायोडो — भू० का० कृ० ।

पर्याय —आवधवाळो, आवधी ।

२ पुलिस का सबसे नीचे का कर्मचारी जो पहरे आदि का कार्य करता है, कासटेबुल ।

उ०—सिपाहिया नीचो उतार दियो । थाणादार नेडै आवता ई उणरै मूडा माथै एक ठोकर जमाई ।—अमरचूनडी

रू. भे.—सिपाई ।

अल्पा;—सिफाईडो ।

सिपाहीगिरी, सिपाहीगीरी—देखो 'सिपाईगिरी' (रू. भे.)

उ०—बहराम गोरी अरब देस मैं नामीन मजर कन्है आपरै बापरी आग्या सू सिपाहीगिरी सीखै थो ।—नी. प्र.

सिप्पाह—देखो 'सिपाह' (रू. भे.)

उ०—सिप्पाह वसै कमध वावीस हसती बध । निज नारनोतह नाम, धुर तेग-वंदा धाम ।—सू. प्र

सिप्पो–स. पु —१ निशान, चिन्ह ।

२ रोब, प्रभाव ।

उ०—अेक जोधाबाई माथै अणूंतो सिप्पो होण सु बापडा माथै काई काई नी बीती । साहितकारा अर सिनेमा आळा रै पाण आज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी ।—चितराम

सिप्रा–स. स्त्री —उज्जैन के पास बहने वाली एक नदी ।

रू. भे.—सफरा, सिपरा, सिफरा, सीप्रा ।

सिफत–स स्त्री. [अ. सिफत] हस्त लाघवता, निपुणता ।

उ०—राघव सिफत वखाणी सच्चै सायरा, आफताव दुनियाणी दीद नगाहए ।—र ज प्र

२ कोई विशिष्ट गुण, विशेषता ।

३ उत्तमता, उम्दगी ।

४ प्रशसा, तारीफ ।

रू भे —सिपत ।

सिफर–स. पु [अ. साइफर] १ शून्य, बिन्दी ।

२ देखो 'सिपर' (रू भे)

उ०—सूजमाळा खजर सिफर किलंगी केवाणा, माही तोग मुरातवा नोवत नीसाणा ।—अनोपसिंह साद्

सिफा–स स्त्री. [स. शिफा] १ जड । (डिं. को)

२ वृक्ष विशेष की रेशेदार जड जिससे प्राचीन काल में कोडे बनाये जाते थे ।

सिफाईडो—देखो सिपाही' (अल्पा, रू भे)

उ०—सिफाईडा ज्यू ही रायफला मैं रीझ्या, भुगानै रा एकला भाई त्यू ही सासै मैं सागीडा सिक्या अर सीझ्या ।—दसदोख

सिफारस —देखो 'सिफारिस' (रू भे.)

उ०—पिंडलिया गुराजी नै सागै लेर'र डिपटी कनै गैया अर आपरी सिफारस सही करवाई ।—दसदोख

सिफारसी–वि [फा सिफारिशी] जिसकी सिफारिश की गई हो ।

रू. भे.—सिपारसी, सुपारसी ।

सिफारिस–स. स्त्री [फा सिफारिश] १ किसी से कही जाने वाली ऐसी बात जिससे अपना या दूसरो का भला होता हो ।

२ कोई ऐसी बात जो किसी का अपराध माफ कराने के लिए किसी अधिकारी से कही जाय ।

३ नौकरी दिलवाने के लिए कही जाने वाली प्रशसा या बात ।

४ प्रशसा, तारीफ ।

यौ.—सिफारसी टट्टू ।

रू. भे.—सपारस, सफारस, सिपारस, सिफारस, सुपारस, सुपारिस, सुफारस ।

सिव—१ देखो 'सवी' (रू भे.)

२ देखो 'सिवी' (रू. भे)

सिवका, सिविका—देखो सिविका' (रू भे.)

उ०—आपरी पुत्रिया रै समान धन भूसण वस्त्र दास दासी गज वाजि सिविका रथ प्रमुख सामगी दे'र चोथै दिन वरात नू बिदा करि फेर वूदी आयो ।—वं. भा.

सिबिर—देखो 'सिविर' (रू. भे)

उ०—मडप रा प्राघुणका प्रामारराज री तरफ सूं वरात रै सिबिर जाय दुल्लह नू मारीच चढाय........तोरण पधरावियो ।

—व भा.

सिवी–स. स्त्री [स शिवा] १ मूग आदि की फली ।

उ०—उव सिवी अगुली वह्न मेकि वटक्कै, खाजै पुरी खल्लकै ताजै करि तक्कै ।—व भा.

२ देखो 'सवी' (रू. भे.)

उ०—ज्यू अपूठो दीठो ज्यू वीजाणद री सिवी दीठी । ताहरां कह्यो—तू वीजाणद चारण हुवै ।—सयणी री वात

रू. भे.—सिव ।

सिमट—देखो 'सीमेंट' (रू भे)

उ०—मोटोडो वेटो मिडल फेल हो, वो जिला मैं एक सेठ री हिस्सादारी मैं सिमट रो होल-सेल डीलर बणग्यो ।—अमरचूंनडी

सिमक–स स्त्री —ऊँट का एक रोग जिसमे उसका पिछला पैर पतला पड जाता है तथा वह लगडा हो जाता है ।

सिमटणो, सिमटबो–क्रि. अ.—१ दूर तक बिखरी या फैली चीजों का खिचकर थोडे स्थान मे आना, समेटा जाना, सीमित होना ।

उ०—दूर ऊगुणा परवता री रीहरावळ रै लारै सू परभात रो गैरो कसूमल पल्लो अबार ताई अधारै माय सिमट्यो पड्यो हो ।

—तिरसकू

२ इकट्ठा होना, एकत्र होना ।

३ क्रम या तरतीब से लगना ।

४ काम पूरा होना, समाप्त होना ।

५ फैली हुई चीज या तल में सिलवट पडना, सिकुडना ।

विद्यांन दिन, पुनि मनि इंद्र प्रक्रत्त ।—रा रू.

सिनांनघर—देखो 'स्नानघर' (रू. भे.)

उ०—सिनांनघर मांय घुसग्यो। न्हाय-धोय नै नुवौ पजामौ-कुड़तौ पैर'र जाणै नुवी ताजगी श्रायगी ।—तिरसकू

सिनांनी—स पु.—१ विश्नोई जाति का आदर सूचक सम्बोधन ।

२ विश्नोई जाति का व्यक्ति।

उ०—सातिळ सनमुखि श्राय, सुचील जित हुवौ सिनानी। साग राण सुणि सीख, जका गुर कही स जानी ।—वील्होजी

वि.—नित्य स्नान करने वाला, नित्य स्नान का नियम रखने वाला ।

रू भे.—सनानी ।

सिनाख्त—स स्त्री. [फा. शिनाख्त] १ पहचान ।

२ पहचान का चिन्ह ।

रू भे —सनाकत, सनाखत, सनागत ।

सिनावडी—स स्त्री —छितराने वाला घास जो वर्षा ऋतु में होता है।

सिनि—स. पु. [स शिनि] १ गर्ग ऋषि का एक पुत्र ।

२ एक यादव वीर का नाम जिसने देवकी हरण के समय सोमदत्त से भयंकर युद्ध किया था ।

सिनिवाहु—स पु [स शिनिवाहु] वायु पुराण के अनुसार एक नदी ।

सिनिया—देखो 'सेना' (रू भे) (अ मा.)

सिनियास—देखो 'सन्यास' (रू भे)

सिनियासी—देखो 'सन्यासी' (रू भे.)

उ०—सजै जमात नवा सिनियासी, करवा जुध आया कहर। 'बाघ' हरा वाळौ दाटक विख, लागो ज्यू बागी लहर ।

—ऊकौ बोगसौ

सिनिमाघर, सिनेमाघर, सिनेमाघर—स पु —जिसमे चलचित्र दिखाए जाए ।

उ०—म्हे नई जाणती ही कै तूं इतरौ डरपोक लडको होसी। सिनेमाघर माथै तौ तूं घणौ साहस अर बहादरी रौ काम कर नै आयौ है ।—तिरसकू

सिनीमो, सिनेमो, सिनेमौ—स पु [अं सिनेमा] १ चलचित्र ।

उ०—१ साळा अस्पताळा भूंडी, नारी पर क्यू रीस कर। कथा कीरत थान तीरथा, खेल सिनेमा दोस नर।—नारी सईकडो

उ०—२ अेक जोधाबाई माथै घणूतौ सिप्पौ होणा सूं बापडा माथै काई काई नी बीती। साहितकारा अर सिनेमा आळा रै पाण आज ई लाई रै जीव मैं सोराई कोयनी ।—जहूरखा मेहर

२ वह स्थान जहां चलचित्र दिखाए जाते हैं ।

सिनेह—देखो 'स्नेह' (रू. भे.)

सिन्नांन—देखो 'स्नान' (रू. भे)

उ०—१ सिन्नान घात मधि सधियास, उचरत मंत्र गायत्रि अभ्यास ।—सू. प्र.

उ०—२ राजलोक रिख दूण, बीस पडदायत प्यारी। सग सहेली च्यार, अगन सिन्नान उचारी ।—रा. रू.

सिन्यास—देखो 'सन्यास' (रू. भे)

सिन्यासी—देखो 'सन्यासी' (रू. भे.)

उ०—सिन्यासी कहीयां क्या होई, जब तै अपना करम न खोई ।

—अनुभववांणी

सिपत—देखो 'सिफत' (रू. भे.)

उ०—अरजी लिखी सौ बादसाह सुण नै घणौ ही रजावद हुयौ। जलाल री सिपत तारीफ वहोत-वहोत करी ।

—जलाल बूबना री बात

सिपर—स स्त्री [फा] १ ढाल ।

२ कवच ।

रू भे —सपरि, सिफर ।

सिपरा—देखो 'सिप्रा' (रू. भे)

सिपहसालार—सं पु —सेनापति, सेनानायक ।

उ०—सिपहसालार श्रो खिताब खानाखान नै अकबर दियो ।

—बा. दा ख्यात

सिपाई—देखो 'सिपाही' (रू भे)

उ०—१ साह द्वार सकबंध गयो 'गजबध' सवाई। हरखवंत सुण हुवा, सको सामत सिपाई ।—रा रू

उ०—२ लाखा सूं त्रघडै लडाई, सार प्रथम साझिया सिपाई ।

—रा रू

सिपाईगिरी, सिपागारी—स स्त्री —सिपाही का कार्य या पेशा ।

उ०—जरै पातिसाहजी पूठि थापली नै कह्यौ—तुम्ह सेर जुवांन ऐसै हीज हौ, पिण आगै जायगा विखम छा तुम तुम्हारी नौकरी सिपागारी आछी करियो ।—जखडा मुखडा भाटी री बात

रू. भे.—सिपाहगिरी, सिपाहीगिरी सिपाहीगीरी ।

सिपाय—देखो 'सिपाही' (रू भे)

सिपारस—देखो 'सिफारिस' (रू भे.)

सिपारसी—देखो 'सिफारसी' (रू भे)

सिपारो—स पु [फा सिपारा] कुरान के तीस भागो में से एक।

सिपाह—स स्त्री [फा] १ सेना, फौज ।

२ देखो 'सिपाही' (रू. भे)

उ०—१ जबदल लिखै जबाव, 'गजण' दिस एम घरै गहि। सो नाहि असल सिपाह, माण तजि मिळै दियै महि ।—सू. प्र.

उ०—२ जरै पैलारा प्रबळ प्रहार हू पडियौ कै पुळियार हुवौ जाणै साहरी सेनारा सिपाहा मतै मतै मारग लागण रौ आरभ करियौ ।

—व. भा.

रू भे.—सिप्पाह ।

सिपाहगिरी—देखो 'सिपाईगिरी' (रू भे)

सिपाही—सं पु [फा] १ सैनिक, योद्धा। (डि को)

सियली–वि —ठण्डी, शीतल ।

उ०—वाडी रा वड रळियामणा ए, सियली वड री छाय । नागा-दडी नाडै भरी ए, झिलती झालर वाव ।—लो. गी.

सियवाय—देखो 'स्यादवाद' (रू भे)

सियांन—देखो 'सान' (रू भे)

सिया–स पु [अ. शीया] १ मुसलमानो का एक धार्मिक सम्प्रदाय जो हजरत अली को पैगम्बर का ठीक उत्तराधिकारी मानते हैं ।

२ ढोलियो की एक शाखा । (मा. म.)

३ देखो 'सीता' (रू भे.) (अ मा.)

उ०—१ वर्णै चत्र धाए रचै पतिव्रता, सिया मडवी उरमिळा सत्यव्रता ।—सू प्र

उ०—२ सिया ऊभी भाबोसा री पोळ, राम रथ हाक दियो । सिया मार्गं सोही माग पीछं रथ हूक जासी ।—लो गी.

सियाइ–वि —शीलवती ।

उ०—नमणी खमणी बहुगुणी, सगुणी अनइ सियाइ । जे घण एही सपजइ, तउ जिम ठल्लउ जाइ ।—ढो. मा.

सियाकरो—देखो 'सिहाखरो' (रू. भे.)

सियापत, सियापति, सियापती—देखो 'सीतापति' (रू. भे.) (अ. मा.)

सियार–सं स्त्री.—१ छेद करने का वढई का एक औजार ।

२ देखो 'स्रगाळ' (रू भे)

सियारो–सं पु —१ वह वैल जिसकी मूत्रेन्द्रिय पर पेशाव करने की जगह भौंरी हो । (अशुभ)

२ देखो 'सीरावो' (रू. भे.)

सियाळ—देखो 'स्रगाळ' (रू भे.) (डि को.)

उ०—१ सूकर स्वान सियाळ सिंह, सरप रहै घट माहिं । कुंजर कीडी जीव सब, पांडै जानै नाहिं ।—दादूबाणी

उ०—२ सीहणी हेकौ सीह जणि, छापर मडै आळि । दूध विटाळण का पुरस, वोहळा जणै सियाळि ।—हा. झा.

(स्त्री. सियाळण, सियाळकी, सियालणी, सियाळी)

सियाल, सियालक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)

सियाळसींगी—देखो 'स्याळसीगी' (रू. भे.)

सियाळियो—देखो 'स्रगाळ' (अल्पा, रू. भे.)

सियाळी–स स्त्री.—१ एक प्रकार का मेवा विशेष जो गाजर की शक्ल का होता है । यह वेल की जड मे लगता है ।

२ मादा सियार ।

सियाळू—देखो 'सीयाळू' (रू भे.)

उ०—वाता रा व्याळू सरब सियाळू, ऊनाळू ऊगंदा है । जूता जतळाया मन मत लाया, बतळाया बीखदा है ।—ऊ का.

सियाळो—देखो 'सीयाळो' (रू भे)

उ०—१ सियाळा री ठाढी हेम राता अतस खीरा उकराळती ही । आमण-दूमणी आपो विसरायोडी ठकराणी पाछी हीगळू ढोल्या माथै सूयगी ।—फुलवाडी

उ०—२ हमकै श्रोळग हुआ मारू देवरजी नै मेल्ह, अवकै सियाळै मद छकया घरै वसो जी म्हारा राज ।—लो. गी.

सियाळयो—देखो 'स्रगाल' (अल्पा; रू भे.)

सियावर–स. पु [सं सीतावर] रामचन्द्र ।

उ०—१ कोयक दिन सेवा इम करतां, ध्यान नरेस सियावर धरता ।—सू. प्र.

उ०—२ हेली नेण निजर भर निरखो, सियावर वीद वण्यो जोवण सरको ।—समान वाई

रू भे.—स्त्रियावर ।

सियासामी—देखो 'सीतास्वामी' (रू. भे.)

उ०—सुतण दासरथ रूप लमवांन कोटक समर जसवान यप सियासामी ।—र ज. प्र

सियाहगोस–स पु —वनविलाव ।

सियो–सं. पु.—सीसा । (डि. को)

सिरंग, सिरंगो—देखो स्रग' (रू भे.)

उ०—१ परसं त्या पिनाकी उरगा हार लोक पावं, वळै घान किनाकी विरगा भूलं वाट । जाह्नवी ताहरी तरंगा बीच झूलै जिका, पेमैर सिरंगा खुलै मोख री कपाट ।—सकरदान सादू

उ०—२ अनग रग तरग घग सिरंग काठळ उपग । जग पतंग निहंग ढग खतग जातो ।—कुभकरण म दू

उ०—३ पाहाड सिरंगे पंथ पवगै गोम निहगै गूघोळं ।—गु रू व

सिरंम—देखो 'सीरम' (रू. भे)

उ०—१ सिरंमां साट हुवै हय थाट, धरा रज-धूळ मुहै अव मूळ ।—गु रू वं

उ०—२ कटकां रा सूर पडिनै रहीआ छै । हाथी लडावीजै छै । पाइक सिरंम सार्फ छै । फूलहाथ फेरीजै छै । भाति भाति रा तमासा लागनै रहीआ छै ।—रा. सा स.

सिर–स पु [स. शिरस्] १ शरीर के ऊपर का वह गोल भ ग जिसने मस्तिष्क रहता है, कपाल ।

२ शरीर का वह भाग जो गर्दन द्वारा घड़ से जुडा रहता है । (अ मा.)

(मि माथो)

उ०—धरणी तळ व्याकुळ छेलो सिर धुणियो, सरणागत वच्छळ हेलो नह सुणियो ।—ऊ का.

मुहा.—सिर रो सेबरो=सर्वश्रेष्ठ, आदरणीय ।

३ मस्तिष्क की विचार शक्ति, वुद्धि ।

४ शिरा, नस । (अमरत)

५ सेना का अग्र भाग ।

६ किसी वस्तु का सबसे ऊंचा भाग या अग, शृग ।

६ डर, लज्जा आदि के कारण सकुचित होना।
७ देखो 'समेटणौ, समेटवौ' (रू. भे)
सिमटणहार, हारौ (हारी), सिमटणियौ—वि०।
सिमटिओडौ, सिमटियोडो, सिमटयोडौ—भू० का० कृ०।
सिमटीजणौ, सिमटीजवौ—भाव वा०।
संवटणौ, संवटवौ, समटणौ, समटवौ, सिंवटणौ, सिंवटवौ, सिमटाणौ, सिमटावौ, सिमिटणौ, सिमिटवौ—रू० भे०।

सिमटाणौ, सिमटावौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटवौ' (रू भे)

सिमटायोडौ—देखो 'सिमटियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. सिमटायोडी)

सिमटियोडौ-भू का कृ—१ क्रम या तरतीब से लगा हुआ. २ काम पूरा हुवा हुआ. ३ फैली हुई चीज या तल मे मिलवट पडी हुई. ४ इकट्ठा हुवा हुआ. ५ समेटा गया, सीमित हुवा हुआ ६ डर, लज्जा आदि से सकुचित हुवा हुआ।
(स्त्री सिमटियोडी)

सिमणौ, सिमवौ—देखो 'सीवणौ, सीववौ' (रू. भे.)
उ०—दमडी लं म्हैं दरजी कै चाली, दरजीडा सौदौ कर लै रे। म्हनैं तौ आगी म्हारा बाईजी नैं चोळी मारूजी नैं कुडतो सिम दै रे।—लो गी

सिमरण—देखो 'स्मरण' (रू भे)
उ०—आछी वाता दोय इळ, सब जाणत संसार। कै सिमरण करतार रौ, सिमरण कै सुदतार।—ऊ का

सिमरणौ, सिमरवौ—देखो समरणौ, समरवौ' (रू भे)
उ०—सिमरण सास उसास का, सुरती सिमरी जेए। अग्र अणी चित्त आणकै, प्रीतम रस पीजेए।—श्रीसुखरामजी महाराज
उ०—२ वाजडिया पुत्र देय भवानी, आद भवानी सकल भवानी। चारू देस मैं चारू कूट मैं, वखाणी सिमरू ए आद भवानी।
लो गी
उ०—३ जोग ध्यान सिमरै सिव ज्यानू, श्री अति भार फन्ने नह ज्यानू।—सू प्र
उ०—४ कमळ नयन मगळकरन, स्रीराधा घनस्याम। कवि-भ्रम-भमर म सोच कर, सिमरि नाम अभिराम।—रा रू
सिमरणहार, हारौ (हारी), सिमरणियौ—वि०।
सिमरिओडौ, सिमरियोडौ, सिमरयोडौ—भू० का० कृ०।
सिमरीजणौ, सिमरीजवौ—कर्म वा०।

सिमरत्थ, सिमरथ, सिमरथ्थ—देखो 'समरथ' (रू भे)
उ०—१ सिमरथ हमकू भेद लखाया, अनुभव तत्व वताई। सहज समाधी लागी घट भीतर, जीवन मुक्ति आनह दिखाई।
—स्रीहरीरामजी महाराज
उ०—२ सोभीजै 'करणेस' सुत, 'सिवौ' अभग सिमरथ्थ। दाह दिळेसा उर दयण, भू विजई भारथ्थ।—द० दा.

सिमरि—देखो 'समीर' (रू भे)
उ०—साभरपुर नौवत निहसता, वड सुख हिमरित सिमरि वहता।
—रा. रू

सिमरिव-स स्त्री—विजली। (ह ना मा)

सिमरी—देखो 'सिंवरी' (रू भे)

सिमल—देखो सिंवल' (रू भे)

सिमांनौ—देखो 'सामियानौ' (रू भे)
उ०—१ सोवन जवाहर अति सरूप, घरि जडित जवाहर पाखि धूप। जयजरी सिमांनां खभ जडाव, तै रूप मेख रेसम तणाव।
उ०—२ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमांन वितान वणाए।—सू प्र

सिमाड़—देखो 'सीमाड' (रू. भे)
उ०—तुडताण जिसौ चउवाण तपै, कर वेढ सिमाड़ मैं वास कपै।
—पा. प्र.

सिमाणौ, सिमावौ—देखो 'सीवाणौ, सीवावौ' (रू. भे.)
उ०—दादासा री लाड, सिमाया कपडा नूंवा। नूंवा कपडा पै'राय, लाड सू बैठायी खूवा।—सातिलाल देवेरा

सिमायोडौ—देखो 'सीवायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री सिमायोडी)

सिमाळीवांमण—देखो 'स्रीमाळीवामण' (रू. भे)

सिमावणौ, सिमाववौ—देखो 'सीवाणौ, सीवावौ' (रू भे.)
उ०—नवलख तारा रे ईसर, चमकि रह्या तै की मख अगिया सिमाव।—लो. गी

सिमावियोडौ—देखो 'सीवायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री सिमावियोडी)

सिमिटणौ, सिमिटवौ—देखो 'सिमटणौ, सिमटवौ' (रू. भे)

सिमिटियोडौ—देखो 'सिमटियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सिमिटियोडी)

सिमेट—देखो 'सीमेंट' (रू भे)

सिमेटणौ, सिमेटवौ—देखो 'समेटणौ, समेटवौ' (रू. भे)

सिम्रती—देखो 'स्म्रति' (रू. भे)

सियभू—देखो 'स्वयभू' (रू भे)

सिय—देखो 'सीता' (रू भे) (डिं. को)
उ०—धरि गुर वचन, वचन पित धारै, प्रभू सिय जुत, वनवास पधारै।—सू प्र

सियरौ-वि—शीतल, ठडा।

सियल—देखो 'सील' (रू भे)
उ०—१ धरम आराधियै ए, धरम ना चार प्रकार। ग्यानी देवा इम कह्यौ, दांन सियल तप भाव।—जयवाणी
उ० —२ गुण सतावीस जेहनइ पूरा रे, सुद्ध किरिया माहि धूरा रे। तप बारै भेदै सूरा रे, सियल व्रत सनूरा रे।—स. कु

बिना घी री लागी। वो कह्यो—डागरा रै सामी बाटी सिरकावै ज्यूं सिरकाय दी।—फुलवाडी

उ०—२ खुद तो दिन-रात माल-मलीदा उडाती रंवै। अर म्हारै सामी सात दिना रा वासी टुकडा सिरकाय देवै।—फुलवाडी

२ खिसकाना।

३ धकेलना।

४ हटाना, दूर करना।

५ मिटाना, खत्म करना।

६ बढाना।

७ व्यतीत करना, गुजारना।

८ कार्य आदि निकालना, पूरा करना।

ज्यू—थूं मनै रिपिया दे'र म्हारो काम सिरका दियो।

९ स्थगित करना, अवधि बढाना।

ज्यू—थारी परीक्षा आगे सिरका दी।

सिरकाणहार, हारो (हारी), सिरकाणियो—वि०।

सिरकायोड़ो—भू० का० कृ०।

सिरकाईजणो, सिरकाईजबो—कर्म वा०।

सरकाणो, सरकाबो, सरकावणो, सरकाववो—रू० भे०।

सिरकापासी—स. स्त्री.—रस्सी मे लगने वाली वह गांठ जो रस्सी का एक छोर खीचने पर सरक कर कडी व दृढ हो जाती है।

सिरकायोडो—भू. का कृ.—१ रखा हुआ, धरा हुआ २ खिसकाया हुआ. ३ धकेला हुआ ४ हटाया हुआ, दूर किया हुआ. ५ मिटाया हुआ, खत्म किया हुआ ६ बढाया हुआ. ७ व्यतीत किया हुआ, गुजारा हुआ ८ कार्य आदि निकाला हुआ, पूरा किया हुआ. ९ स्थगित किया हुआ अवधि बढाया हुआ।

(स्त्री. सिरकायोडी)

सिरकार—देखो 'सरकार' (रू. भे.)

उ०—१ आप झरोखा बैठता, अळवळिया सरदार। हाजर रहती गोरडी, सज सोळै सिणगार। जो सिरकार आपरी सूरत प्यारी लागै म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ चादी को एक बाटको जी मैं बूरा भात। हुकम होय सिरकार को दोन्यू जीमा साथ।—लो. गी

सिरकारी—देखो 'सरकारी' (रू भे)

सिरकियोड़ो—भू का कृ.—१ बीता हुआ, व्यतीत हुवा हुआ, गुजरा हुआ. २ हटा हुआ, खिसका हुआ. ३ चला हुआ, गया हुआ ४ आगे बढा हुआ, पास आया हुआ. ५ खिसका हुआ ६ किसी वस्तु का अपने पूर्व स्थान से कुछ हटा हुआ. ७ चुपचाप कही से गया हुआ. ८ मिटा हुआ, नाश हुवा हुआ ९ चूतड के बल धीरे-धीरे किसी ओर बढा हुआ, रेंगा हुआ. १० साप आदि का रगड खाते हुए पेट के बल चला हुआ ११ कार्यादि निकला हुआ, पूरा हुवा हुआ १२ स्थगित हुवा हुआ, अवधि बढाया हुआ।

(स्त्री. सिरकियोडी)

सिरकी—स. स्त्री.—पतली तीलियो की या सरकडे की बनी हुई टट्टी।

उ०—पीचका वेरा रै पाखती अेक रूपाळी लुगाई सिरकी ताण वासो करियो। साथै फगत अेक डावडो अर अेक कुत्तो।

—फुलवाडी

सिरख—देखो 'सिरक' (रू. भे)

उ०—उठो म्हारा मारू बनडा करो नी पोढणियो, हिंगळू तो ढोरयो बनडा सिरख पथरणा, इसडा पोढणिया थारा दासी जी करावै।—लो. गी.

सिरख-सोडियो—स. पु. यो.—हेमत ऋतु मे रात्रि मे ओढने का लिहाफ व चादर।

उ०—पीस पोयकर त्यार, मलीदा पाटै ल्यावै। सिरख-सोडिया सौड, ढोलिया ढाळ विछावै।—नारी सईकडो

वि. वि.—देखो 'मसोड'।

सिरखुली निसांणी—स. स्त्री.—निसाणी नामक छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक पद में प्रथम १२ मात्रा पर यति और तुकबन्दी होती है तथा फिर नौ मात्राएं और होती हैं। इस प्रकार कुल २१ मात्राएं होती हैं।

सिरखो—देखो 'सारीखो' (रू. भे.)

उ०—१ वधव इक लखमण तू वीजो, तो सिरखो वधव नह तीजो।—सू. प्र.

उ०—२ वलता मात पिता कहै रे, सिरखी वयनी तो नार।

—जयवाणी

उ०—३ रजपूताणी रुच सीचाणी सिरखी, नैणा जळ भरवी सैणा थळ निरखी।—ऊ का.

(स्त्री. सिरखी)

सिरग—देखो स्रंग' (रू. भे.)

सिरगा—स. पु.—घोडे की एक जाति।

सिरगिर—स्रीगिरि' (रू. भे)

उ०—कट्या घण सज्जळ छज्जळ कान, सिरगिर कज्जळ कूट समान।—मे म.

सिरड़—स. स्त्री.—१ एकाएक या सहसा आने वाली क्रोध की तरग।

२ किसी कार्य के प्रति सहसा होने वाला उत्साह, धुन।

३ बुरी लत, कुटेव।

उ०—मिंदर तीरथ मत्र व्रत माळा, मोटी भूल मिटाई। पिंड नख दरसण धत निजलापण, फिर क्यों सिरड़ फंसाई।—ऊ. का.

सिरडि, सिरडो—स स्त्री.—तीव्र आवाज।

उ०—१ पछै कान मैं आगळी खसोल, ऊचो मूंडो करनै डूडी वाळो जोर सूं सिरड़ो देय कंवण लागो।—फुलवाडी

उ०—२ डोकरी झिडक नै कह्यो—राम मारचा, क्यू बिरथा कान खावै। अठै दूजो कुण ऊभो है जको इत्तो जोर सू सिरड़ियां करै,

उ०—भवि भवसउ तै वोलइ वोलइ गिरि सिर टोल ।
—जयसेखर सूरि

७ धान की बालि ।
उ०—बिजडा मुहै वेडतौ बळभद्र सिरा पुज कीधा समरि ।
—वेलि

८ ललाट, भाल ।
उ०—सूरज री उगाळी सुनार सामो मिळै लोग मूढो फेरै सामै सिर सळ घालै वैं'म करै कारण सुभ जातरा रै वखत सुनार नै अवस टाळै ।—दसदोख
क्रि वि.—१ पर, ऊपर ।
उ०—१ मुरधर थया वधावणा, हरखै तेरह साख । ज्यू वन पाळै पीडिया, सिर आयो वैसाख ।—रा. रू
उ०—२ मदिरै गोरव सु पदम रागमैं, सिखरि सिखि रमैं मदिर सिर ।—वेलि
उ०—३ खड देवडा भरै डड खधी, सगपण कर भाटी सनवधी । सारा मिळै तूझ सू सधी, वळ दाखै किण सिर 'गजवंधी' ।
—चतुरो मोतीसर

२ अतिनिकट, नजदीक ।
३ देखो 'सर' (११) (रू भे) (ह. ना. मा)
रू. भे.—सिरि, सिरी ।

सिरक—स स्त्री [स. शीत+रक्षक] सर्दी से वचने के लिए रात्रि मे ओढने का खोला जिसमे रूई भरी हुई होती है, लिहाफ ।
उ०—सेठाणी दौ तीन वळा पीजारी नै ओसीसा अर सिरक-पथरणा भरावण सारू बुलाई तौई वा नौळी रै रिपिया री वात नी करी ।—फुलवाडी
रू भे —सिरख, सीरक, सीरख ।

सिरकण—स स्त्री.—१ खिसकना, हटना या जाने की क्रिया या भाव ।
२ देखो 'सिरकी' (रू. भे)
उ०—१ पाल्है डेरा परठिया, मारग मथै आय । सिरकण ताणै तातिया, डेरा किया वणाय ।—जसमा ओडणी री वात
उ०—२ राव कहै जसमल सुणो, महला देखण आव । महला दीठा बीहिजै, म्हा सिरकणा रौ साव ।—जसमा ओडणी री वात

सिरकणौ, सिरकवौ—क्रि. अ —१ बीतना, व्यतीत होना, गुजरना ।
उ०—ओ जवाब सुणिया मा धकै की वात नी चलाई । दिन सिरकता गिया । अेक पखवाडो सिरकग्यो ।—फुलवाडी
२ हटना, खिसकना ।
उ०—१ टाव्या सिरदार हेटा लुळ नाई रै पगा हाथ लगावण वाळा हा कै वो लप आगो सिरकग्यो ।—फुलवाडी
उ०—२ राजकवर नै आपरी जीत माथै वो अडिग विस्वास हो इज । पछै होड करणा मैं क्यूं पाछो सिरकतो । पण घणा तेरू री राड व्है ।—फुलवाडी

३ चलना, जाना ।
उ०—१ वोली—आपरी गाळिया तो आसीस री गरज सारै । आप कित्ती ई गाळिया काढो तौ ई जीमिया बिना आपनै अठा सू सिरकण नीं दू ।—फुलवाडी
उ०—२ जडाव मासी कह्यौ—थू तो होठा आयोडी वात नै पूरी वारै पटकाया ई रवै । डोळ दीखै कै सुणिया बिना नी सिरकैला ।
—फुलवाडी

४ आगे वढना, पास आना ।
उ०—१ सीढी काढियो कणाकलो आगो सिरकै अर माथै माथै पडै । म्हैं जाणनै गम खाई कै वापडो साधु है, भीड़ मैं दोरो वैठो है, जावण दो, धूड वाळो ।—अमरचूनडी
उ०—२ कूपोजी वोल्या—म्हा थका वैरया री कटक एक पावंडो ई धकै सिरकजाय तो म्हैं कूंभीपाक भागी व्हूला । इण रा सूरज भगवान साखी है ।—कूपा राठौड री वारता
५ खिसकना ।
उ०—१ ज्यू ज्यू अधारो पायरतो गियो चाद रो धोळो रग पीळो पडतो गियो । अर वो तर तर नीचै सिरकतो गियो ।—फुलवाडी
उ०—२ सेवट हिम्मत कर नै एक जणा नै होळैसी'क कह्यौ—भाई जी राज थोडा आगा सिरकज्यो म्हू ई गोडीवाळ लूं ।
—अमरचूंनडी

६ किसी वस्तु का अपने पूर्व स्थान से कुछ हट जाना ।
ज्यू—थांभा रो सिरकणौ, वाड या भीत सिरकणी ।
७ चुपचाप कही से चले जाना ।
८ मिटना, नाश होना ।
९ चूतड के बल धीरे धीरे किसी ओर वढना, रेंगना ।
१० साप, छिपकली आदि जन्तुओ का रगड खाते पेट के वल चलना, रेंगना ।
११ कार्य निकलना या पूरा होना ।
ज्यू—थूं रिपिया दै दिया जणै म्हारो काम सिरकग्यो ।
१२ स्थगित होना, आगे वढना ।
ज्यू—वी री परीक्षा अर व्याव दोन्यू आगे सिरकग्या ।
सिरकणहार, हारो (हारी), सिरकणियो—वि० ।
सिरकिओडो, सिरकियोडो, सिरक्योडो—भू० का० कृ० ।
सिरकीजणौ, सिरकीजवौ—भाव वा० ।
सरकणौ, सरकवौ, सरक्कणौ, सरक्कवौ—रू० भे० ।

सिरकस—स पु —१ श्रेष्ठ, शिरमौर ।
उ०—बारहट केसरी भीम का भीम, सूरा तै सिरकस कविराजा की सीम । —रा रू
२ देखो 'सरकस' (रू भे)

सिरकाणौ, सिरकावौ—क्रि स —१ रखना, धरना ।
उ०—१ वाणियो अेक कवो लियो तो उणनै खीचडी फीकी अर

उ०—२ वर तिलक कीजै वार, अविवेक राज उदार। स्रीकमळ फबि सिरताज, स्रीअनुज अखित सकाज।—सू प्र.

सिरत्रांण-स. पु [स. शिरत्राणम्] सिर की रक्षा के लिए युद्ध आदि मे पहना जाने वाला लोह का बना टोप, झिलमटोप। (डिं. को)

सिरथम-स पु यौ [स शिर+स्तभ] गर्दन। (अ मा)

सिरदार—देखो 'सरदार' (रू भे)

उ०—१ स्वरग रखै जै अब सकै, दै किम पहरेदार। सिर राखै सिरदार नहि, सिर दै सौ सिरदार।—रैवर्तसिंह भाटी

उ०—२ सायव सुघड सुजाण, रसक रिझवार हो। हो म्हारा सिरदार, हिया रा हार हो।—र हमीर

उ०—३ सेवट एक दिन तौ सगळा नै मरणौ इज है, पण सिरदारा री मौत रौ तौ की पतियारो इज नी।—फुलवाडी

उ०—४ रजपूती रैई नही, पूगी समदा पार। पातरिया रा पाद मैं, सीज गया सिरदार।—ऊ का

उ०—५ साथ रै लोक नूं कहण लागौ—जो वीहा कुवरजी रै आगै ही घणा छै पिण समझदार दातार तौ लाडीजी सारखौ कोई नही वडौ सिरदार जाणीया विसेख।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—६ तद प्रोहित अरज कीवी—कुवरजी साहिब लाडीजी मुजरौ मालम करवायौ छै। वडौ सिरदार तारीफ कासु करू।
—कुवरसी साखला री वारता

उ०—७ आपणी बारली बरसाळी मैं एक ताजीमी सिरदार वैठाण पगां'र आयौ हू।—दसदोख

सिरदारगी-स स्त्री —१ सरदार होने का भाव, सरदारगी।

२ सम्पन्नता।

३ अमीरी।

सिरदारडौ—देखो 'सरदार' (अल्पा, रू भे)

सिरदारि, सिरदारी—देखो 'सरदारी' (रू भे)

सिरदुआळी-स स्त्री.—घोडे का एक साज जो चमडे का बना होता है और लगाम के कडो मे लगकर कानो तक होता है।

सिरदौ—देखो 'सरदौ' (रू. भे)

उ०—१ परहरै आन साकार पति, साहै गति साहै चडी। सिर चाडि हाथि सिरदौ करण, अवर देव मुझ आखडी
—सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ पथर देव देहरा पथर, पथर कळस वणाया। पूरब पीठि पछम दिस सिरदा, हिंदू धरम गुमाया।—सुरजनदास पूनियौ

सिरधणी-स पु —मालिक, स्वामी।

उ०—म्हाकै तौ थें पातसाहजी का सायजादा च्यारू बराबर सिरधणी छौ।—द दा.

वि —सिरमौर, श्रेष्ठ।

सिरधर-स. पु —१ मकानो के स्तम्भ के ऊपर का पत्थर।

२ दरवाजे के ऊपर लगाया जाने वाला पत्थर या काष्ट का बना उपकरण विशेष।

उ०—खूंटा खडा, वळा डूचिया, हाला सू हळ ठाटिया। सिरधर अर सेतीर साळा, चूड, भूण, थम, पाटिया।—दसदेव

रू. भे.—सरधर।

सिरधा—देखो 'स्रद्धा' (रू भे)

उ०—उण मैं लिख्यौ हौ—दूजा नै तौ काई लिखूं पण आप नै लिख्या बिना रैय नी सकूं कारण कै आपरी तौ उण नालायक माथै थोडौ घणौ असर पडै है, वोई आपनै सिरधा री निजर सू देखै है।
—अमरचूनडी

सिरधारि, सिरधारी-स. पु.—सिरो को धारण करने वाला, महादेव।

उ०—सिरधारी तौ जटधार सदा रा, करधारी वणिया अब केम। उमा हूंत धुरजटी आखै, जग भू थई आहुवै जेम।
—मोहवत बारहठ

२ मालिक, स्वामी।

सिरनांमी-स पु —स्वामी, मालिक।

उ०—१ वीनति सुणौ रे म्हारा वाल्हाराजि मरुदेवा राणी ना लाल, राजि थारा चरण नमु सिरनामी।—वि कु

उ०—२ घर त्यागी नै वैराग्य लियौ, इद्रा दीक्षा महोत्सव कियौ। गया ठिकाणै सिरनामी, सुमरौ स्रीसीमधर स्वामी।—जयवाणी

सिरनांमौ—देखो 'सरनामौ' (रू भे)

उ०—राजा दोनू रोहडा, रीझ किया कविराज। गण दामा गामा गजा, सिरनांमा सिरताज।—रा रू

सिरपच—देखो 'सरपच' (रू भे)

सिरपाउ, सिरपाव-स. पु —१ सिर से पैर तक पहनने के वस्त्रादि जो बादशाह, राजा, महाराजा द्वारा किसी को सम्मानार्थ दिये जाते थे।

उ०—१ वठै राजि स्रीकल्याणमलजी नू सिरपाव देइ हाथी घोडा देइनै वीकानेर नू विदा किया।—द वि

उ०—२ फेर महाराजा जसवर्तसिहजी रै साथू कुभौ मालावत चारण आयौ सौ घणा दिन रहियौ। महाराज घोडौ कडा मोती सिरपाव देय रहिया तद विरावतै सू गयौ।
—महाराजा पदमसिहजी री वात

२ कपडा, वस्त्र।

उ०—कवरजी दरीखानै आया छै ईसा सुण ढाढीया सिरपाव पहरीया वीण सरू कर मुजरा नै चालीया।—ढो मा

४ विवाह आदि मागलिक अवसरो पर अपने सगे सम्बन्धियो को सम्मान के रूप में दिये जाने वाले वस्त्र आदि।

उ०—मान घणौ ई राखियौ, जाता दिया सिरपाव। व्याह करियौ मन हरख सु, राख्यौ कोड अर चाव।—सातिलाल देवेरा

रू भे —सरपाव, सिरोपाव।

सिरपेच-स पु यौ [स शिर+रा पेच] पगडी या साफे पर बाधा

म्हैं तौ होळै बोलै तौ ई सुण लेवृला ।—फुलवाडी
वि —१ सनकी, तुनक मिजाज ।
२ पागल, बेवकूफ ।
उ०—गळि अमलदार तिरणू गिणै, मरणू डूबि सुमाणसा । खळ भाति सिरडि मन मैं खिटै, मिटै न टिरडि कुमाणसा ।—ऊ का.
३ हठी, जिद्दी ।

सिरचंद-स पु.—हाथी के मस्तक पर पहनाया जाने वाला एक अर्द्ध चद्राकार आभूषण ।

सिरजदौ, सिरजन, सिरजक, सिरजण-वि.—१ सृजन करने वाला, बनाने वाला ।
उ०—पण लुगाई तौ दुनिया रौ सिरजण करण वाळी मां है, उणरी कूख मैं साच रौ पोसण व्है ।—फुलवाडी
२ ईश्वर, परमेश्वर ।
उ०—जप तप तीरथ बोहु कीया, वन वन डोल्या तन । जनहरीया मन थिर भया, जब सिवरचा सिरजन ।—अनुभववाणी

सिरजणहार, सिरजणहारौ—देखो 'सरजणहार' (रू भे)
उ०—१ मानवी को कहा रे वावली हो । तेतीस कोडि देवता सहित सिरजणहार, त्यउ तुहारइ कउतिग देखणहार ।
—ग्र. वचनिका
उ०—२ सिरजणहारौ सिवरियै, सकळ सवारै काज ।—डेल्हजी
उ०—३ हरीया साई एक है, सबका सिरजणहार । मैं गिडत कू कहि रह्या, सुधि जाणै सार ।—अनुभववाणी
उ०—४ बेटी, दुनिया रौ खिलकौ तौ देख कै इण अकल अर इण पोच रा धणी ई थारै म्हारै भाग रा सिरजणहार है ।—फुलवाडी

सिरजणौ, सिरजबौ —देखो सरजणौ, सरजबौ' (रू भे)
उ०—१ हजूर बुलाइ अर कह्यौ भोपति का खुदाइ असा ही सिरजिया हुता ।—द वि.
उ०—२ सीगण काइ न सिरजिया, प्रीतम हाथ करंत । काठी साहत मूठि मा, कोडी कासी सत ।—ढो मा
उ०—३ होणी सो होई थिर नह थिर कोई, सिरजणहारै सिरजी सिर मोई ।—ऊ का
सिरजणहार, हारौ (हारी), सिरजणियौ—वि० ।
सिरजिग्रोडौ, सिरजियोडौ, सिरज्योडौ—भू० का० कृ० ।
सिरजीजणौ, सिरजीजबौ—कर्म वा० ।

सिरजथा-स. स्त्री —डिंगलगीत रचना का नियम विशेष जिसके अनुसार गीत के प्रथम द्वाले मे जो वर्णन किया जाय वह क्रमश अत तक एकसा ही रहता है ।

सिरजनहार—देखो 'सरजणहार' (रू भे)

सिरजळाइग्यारस—देखो 'सरजळाइग्यारस' (रू भे.)

सिरजित, सिरजीत—१ प्रारब्ध, पूर्व लेख ।
उ०—सिरजित मेट न को सकै, करौ कोडि विधि कोई । एहवी हिज बुद्धि उपजै, होणहार जिम होई ।—घ. व. ग्र.
२ देखो 'सरजीत' (रू भे.)

सिरजियोड़ौ—देखो 'सरजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री सिरजियोडी)

सिरजीलौ-वि —सृजन करने वाला, बनाने वाला, निर्माता ।
उ०—उरध ढाकिलै तिसूळू आदि अनादि तौ हम रचीलौ हूमैं सिरजीलौ स कवण ।—वि स. सा.

सिरजोर-वि. [फा. सरजोर] १ जबरदस्त, प्रचण्ड ।
उ०—१ अठी एम पह उभै, दळा पारभ दरसाया । सयद उठी सिरजोर, अगन झळ जिम दळ आया ।—सू प्र.
उ०—२ जुलफकार खा मारियौ, मुगळ थया निरजोर । माह महीनै जेठ ज्यौ, सँद वहै सिरजोर ।—रा. रू.
२ प्रबल ।
उ०—१ मिळिया दळ कमंधा अणमापै, अन सिरजोर गिणै नहि आपै ।—रा. रू
उ०—२ जवन पेख सिरजोर, दियौ छत्रपति छिपाए । भसम जाण भारियौ, अगन कण जतन उपाए ।—रा रू
३ बलवान, शक्तिशाली ।
४ बागी, विद्रोही ।
५ उदड, बदमाश ।
रू भे.—सरजोर ।

सिरजोरी-स. स्त्री [फा. सरजोरी] १ जबरदस्ती ।
उ०—लडथड गळ लजा हतरस हुआ, मनमथ काम मयंदा है । जारी कर जोरी सठ सिरजोरी, कोरी हाय कथदा है ।—ऊ. का.
२ उद्दडता, सरकशी, बदमाशी ।
रू. भे —सरजोरी ।

सिरज्जण—देखो 'सरजण' (रू. भे.)

सिरज्जणौ, सिरज्जबौ —देखो 'सरजणौ, सरजबौ' (रू. भे)

सिरज्जियोडौ—देखो 'सरजियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सिरज्जियोडी)

सिरटी—देखो 'सिटी' (अल्पा, रू भे)

सिरटौ—देखो 'सिटौ' (रू. भे)
उ०—१ बाजरिया सागी-पाग पाकीडी । बास-बास ताळ डोका अर हाथ-हाथ भर सिरटा । दाणा देखौ तौ जाणै परडा रा डोळा ।
—अमरचूंनडी
उ०—२ ओळी तीन देपाळदे खचायी हुती सु तियै मैं जुवार रा धाड छै तिया रा सिरटा नीसरिया नही, मकी रै सिरटै दाई निसरिया ।—देपाळदे री बात

सिरताज—देखो 'सरताज' (रू भे)
उ०—१ वर पच वासै, सत्र नासै, राज कज सुरराज । खर खेत खडै, थूर थडै, सूर कुळ सिरताज ।—र. ज प्र

-ळजौ लोको ।—ऊ का

२ देखो 'स्लोक' (रू. भे)

सिरलौ-वि.—१ समान, बराबर ।

२ देखो 'सिलौ' (रू. भे)

सिरवरी-सं स्त्री.—स्वच्छ आकाश मे कही-कही पर दिखाई देने वाले बादल के छोटे-छोटे टुकडे । (क्षेत्रीय)

सिरवाळै-क्रि वि.—अन्त मे, आखिर मे ।

सिरवाह-स. स्त्री —सिर पर किया जाने वाला प्रहार ।

सिरस—देखो 'सरेस' (रू भे.)

उ०—ऊची डूंगरी पर खडी म्हारी हवेली आम अर सिरस रा बूढा रूखा माय सूं दूर सू ई दीखण लागगी ।—निरसकू

सिरसतौ-स पु.—सलाह, मशविरा ।

उ०—नित्य सिकार चढै मारै तौ हेक हिरण पिण मारी ही रोही रा हिरण घेचै, चरण देवै नही । तद हिरणा वैम अर सिरसतौ कीयौ ।—बूढी ठग राजा री वात

सिरसद-वि —घायल ।

उ०—साहणिया अरज कीवी—महारावजी घोडा जौ कठै चरै, हाथी वाड कठै चरै । जवा माही नै वाड माही तौ जिकौ बनाय आय यह दीवी छै सौ आदमी सौ-सवासौ राव रा काम आया । घोडा पचास सिरसद कै हुइया । जवा रे वास्तै साहणी सागिरद पेसे रा लोग पहला गया तिका सै वेहवाल हुइया ।

—टाढाळा सूर री वात

सिरसव—देखो 'सरसू' (रू भे)

उ०—फाग फाग पण सरिखा नही छासि धोळी नइ दूध धोलु सही । जेवडउ अतर मेरू सिरसव इ, तिम जिलगुण अवर कथा कव्यइ ।—करयाण

सिरसाली-वि —वढिया, उत्तम ।

उ०—बद सास विकारी एव उधारी, इधकारी ओढदा है । साकर सिरसाळी थिर भर थाळी, अगला कर उगदा है ।—ऊ का

सिरसिज-स पु —१ वाल, केश ।

२ देखो 'सरसिज' (रू भे) (प्रा फा स)

सिरसू—देखो 'सरसू' (रू. भे.)

सिरसूत-स पु —पगडी, साफा ।

सिरसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे)

उ०—१ सौ कमरसिंह सिरसौ वडौ भाई विगोई बादसाह री हजूर रहवै छै तीनू रोवै छै ।...... ...—द वि

उ०—२ जाळ जागडी रूख सघन गायडमल गाढौ, वील सरेसा वडौ खजूरा सिरसौ डाढौ ।—दसदेव

सिरस्यू—देखो 'सरसू' (रू भे.)

सिरहर-स पु [स. सरोवर] १ तालाव । (ह ना मा.)

२ शिखर, शृग ।

वि.—१ श्रेष्ठ, शिरोमणि, सरताज ।

उ०—१ जग दताणी जीतणौ, करणा कोड पसाव । सोढ हुओ तू भाण सुत, राजा सिरहर राव ।—बा दा.

उ०—२ गति गगा मति गोमती, सीता सील सुभाय । महिला सिरहर मारवी, अवर न दूजी काय ।—ढो मा.

२ समान, तुल्य ।

रू भे.—सरहर, सरहरउ ।

सिरहाणौ-स. पु —पलग, खाट आदि का वह भाग जिधर सोते समय सिर रहता है ।

उ०—स्रीक्रस्ण जी पौढ्या था । दुरजोधन पहिलौ ही सिरहांणा दिसि आइ बैठौ ।—वेलि टी.

२ सोते समय सिर के नीचे लगाने का तकिया ।

रू भे —सराणौ, सिराणौ, सिरातियौ ।

सिरहार-स. पु —मुडमाल ।

उ०—१ काळिका चडिका पतर भरसी । सदा सिव जिकौ सिरहार करसी । नारद ख्याल जोवसी ।—पना

उ०—२ करै सिरहार हर नचै नारद कहर, खिती पुट मचै चहुवै दसा खेद । जगा अछरा क्रत हूत नरत्तै जितै, अतै अजको रहै भूप 'उमेद' ।—उम्मेदसिंह सिसोदिया री गीत

सिराणौ, सिरातियौ, सिरांतौ—देखो 'सिरहाणौ' (रू. भे)

उ०—१ तु क्यु सूतौ नींद भरि, भजन बिना बेकाज । जनहरीया जोरी करै, खडौ सिराणै बाज ।—अनुभववाणी

उ०—२ वीर पतनी (वीर स्त्री) रा वचन है कै वळती छाया देख भाग गया तौ रात रा सोवता सिराणै गोदवौ नकियौ रहसी पण धण स्त्री कहै म्हारी वाह री सिराणौ नही हुसी अरथात भागगा तौ आपसू घरवास राखना नही ।—वी स टी

उ०—३ सेठ आपरा हरख मैं ई मगन हा कै सेठाणी सिरातियै आयनै बैठगी ।—फुलवाडी

उ०—४ पारवतिया विहू सिरांतौ पगाती, पडिया भड घड आप प्रमाण । समहर अजर जरि सूतौ, साथरि अरि पाथरि 'सुरताण' ।

—सुरताण मांनावत री गीत

सिरामण, सिरावण-स पु. [सं. शीतलामन या स. शिशिराऽम्न]

१ नाश्ता, कलेवा ।

उ०—१ ऊनरिया । दातण कुरळा कीया सिरांवण किया । सेज-वाळौ जैतराय दियौ ।—देपाळदे री वात

उ०—२ ताहरा छोकरी कह्यो—प्राचणा सिगळा ही रौ सिरावण कियौ । ताहरा सारा ही ठाकर अबोला रह्या ।—नैणसी

२ सवल, पाथेय ।

३ स्वल्पाहार ।

रू भे.—सिरामणौ, सिरावणौ, सीरावण, सीरामण, सीरामणौ, सीरावण, सीरावणौ ।

जाने वाला एक आभूषण विशेष। (अ मा)

उ०—१ दोय भाई सावळा दोय ऊजळा घणा, सारा मैं सिरदार राघौराम जी वना सीस पै सिरपेच सोहै सेवरा घणा, मोतिया री लूम लागी हीरा जी पना।—लो. गी.

उ०—२ साहब नौबत सुद्रव, वसन जरकस्स जवाहर। रतन जडत सिरपेच, माळ मुगताहळ सुदर।—रा रू.

उ०—३ जिस बखत स्रीमहाराजा केसरिया ऊप पौसाक पहरि खाघी पाघ पेच वणवाय। जवहर कै सिरपेच सिर सोवा जगजोति जगाय।—सू प्र.

रू भे—सरपेच।

सिरपोस—स. पु—दीपक या पीलजोतो की लौ से उठने वाले धूए को ऊपर उठने से रोकने के लिए उस के ऊपर लगाया जाने वाला टोप।

२ बदूक के ऊपर का कपडा या गिलाफ।

३ सिर का आवरण।

वि.—१ शिरोमणि, श्रेष्ठ।

उ०—१ निडर 'चंडावळ' नाथ, रूप ग्रीखम रवि रावत। उदैभांण बोलियौ, फौज सिरपोस फतावत।—सू प्र.

उ०—२ रहै अवर कथ 'रयण', सूर स्रगार सपेखै। सरब धरम सिरपोस, स्यामध्रम ध्रम सदेखै।—सू प्र

२ देखो 'सिरत्राण'।

उ०—सभि वाळक सिरपोस, नाम किताव निवावा। साह वाळ दळ सबळ सभे भेजत सतावा।—सू प्र

सिरफ—वि [अ सिर्फ] १ केवल, मात्र।

उ०—म्हैं वोल्यौ—थारा साथ्या मूं घिर जाणी पैली म्हनै सिरफ च्यार गोळ्या चलाणी पडेली सरदार।—तिरसकू

२ अकेला, ऐकाकी।

सिरफूल—देखो 'सीसफूल'।

उ०—मागफूल सिरफूल, जडाऊ मडिया। खिण खिण निरखै नाह हिए दुख खडिया।—वा दा.

सिरबद, सिरबध—देखो 'सरबद, सरबंध' (रू भे)

सिरबधण—स. पु—किसी पात्र आदि के मुह पर लपेट कर बाँधी जाने वाली रस्सी।

सिरवधी—स. पु—मोर्चावधी।

उ०—१ वगसी वाळकिसन्न, कहै जरदैता कापू। सिरवधी रातळा, अमल जवना तिण आपू।—सू प्र.

उ०—२ अर जितरी सिरबंधी री लोक छै, इतरी सरब मेवाडी दरवाजै पासै उभी राखजै।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—३ राणी गढ संवाहि उभी रही। ओर सिरवधी लोक लै राव दखणाधै पासै जाय उभी रह्यौ दरवाजै। सहर रै लोक न खबर नही।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—४ जरै भीवैजी अरज कीधी, म्हारै कनै पातिसाहा री सुवौ निजर सू हजार तीन असवार छः वळै सिरवधी रा घोडा साथ राखनै हुई जावू।—अखडा मुखडा भाटी री वात

सिरभेदी भालौ—स. पु.—एक प्रकार का भाला विशेष।

सिरमंड—स. पु. [स. शिर+मड] १ वाल, केश। (अ मा)

२ सिर का आभूषण। (अ मा, ह. ना मा.)

रू भे—सिरिमड।

सिरमणि, सिरमणी—स पु [स शिरमणि] १ शेषनाग।

२ वह सर्प जिसके शिर मे मणि हो।

३ सरप, साप।

उ०—तेज गरुड गोरा हठै तिण ताळ रा, तन जगै फाळ रा दवग तातै। सिरमणि भाळ रा जेम हिंदू सरब मान चंद्रभाळ रा भुजा माथै।—कविराजा वाकीदास

वि.—शिरोमणि।

सिरमाळ, सिरमाळा—स स्त्री [स शिरमाला] मुडमाल।

उ०—१ चौसठि पियै भरि पत्र चड, सिरमाळ सभै आरोह सड।
—सू प्र.

उ०—२ निरख सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै।—रा. रू.

सिरमाळी—देखो 'स्रीमाळी' (रू. भे)

सिरमाळी सुनार—स पु—सुनारो की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

सिरमुडाई—स स्त्री—१ सिर मूडने की क्रिया या भाव।

२ मुण्डन सस्कार।

३ सिर मुंडवाने का पारिश्रमिक।

सिरमौड, सिरमौर—स पु—१ सर्वश्रेष्ठ अंग, सर्वोत्तम अंग या भाग।

उ०—म्हैं तौ कैवू कै किणी री दुस्टी मर भलाई जावै पण उण रा माथै मैं टाट नी व्है। माथौ तौ देह री सिरमौड।—फुलवाडी

२ शिरोभूषण, मुकुट।

३ पति, खाविद।

४ मालिक, स्वामी।

वि—१ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उ०—१ मीरा जनमी मेडतै परणाई चित्तौड। राम भजन परताप सू सकळ मिस्ट सिरमौड़।—मगराम

उ०—२ सुण आवाज सूरमा, एम धज राज उठाया। मौर जीत सिरमौर, जाण पर जोर कि आया।—रा रू

उ०—३ सागरिया रै साग, मती सिरमौड़ सुराणी। खा साग-रिया साग, नरा पर पीड पिछाणी।—दसदेव

२ प्रधान, मुख्य।

सिरलोक सिरलोकौ—१ देखो 'सिलोकौ' (रू भे.)

उ०—सवत छपनै री केवण सिरलोकौ। लौकिक लेवण नै साभ-

उ०—दीठइ सुरगिरि क्षीरहरौ, सुमिणइ सिरि रवि चद ।
—सालिभद्र सूरि

४ देखो 'स्वर'।

उ०—भरर भरर सिरि भेरिग्र साद, पायडीउ ग्रालवीउ नाद ।
— हीराणद सूरि

५ देखो 'सरी' (रू भे)

उ०—सउ सहसैं एकोतरैं, सिरि मोती हरि सुध्घ । नदी निवासउ उत्तरइ, ग्रागू एक ग्रविध ।—ढो मा

सिरिमंड—देखो 'सिरमड' (रू. भे) (ह. ना. मा)

सिरिया—स पु. [सं शिरस्] सिर, मस्तक । (ह ना मा)

सिरियादे—स स्त्री.—कुम्भार जाति की एक भक्त स्त्री जिसने प्रह्लाद को ज्ञान दिया था ।

उ०—सिरियादे धाया करी सहाया, मिनडी जाया मभ ग्राया ।
—भगतमाळ

सिरियारी—सं स्त्री —ग्रौपधि मे काम ग्राने वाली एक जगली बूंटी ।

सिरियौ —देखो 'सरियौ' (रू भे.)

उ०—तीखा तीखा लोखड रा सिरिया रूपी दात लिया वौ हाथिया सूं हब्बीडा लेवण री हिम्मत राखैं तौ मिनख बापडा री काई जिनात सौ उणरैं साम्हौ देख ई सकैं।—ग्रमरचूनडी

सिरिस्ता—देखो 'सरिस्ता' (रू भे)

सिरिस्तेदार—देखो 'सरिस्तेदार' (रू भे.)

सिरिस्तेदारी—स स्त्री [फा] सरिस्तेदार का कार्य या पद ।

सिरी—स. स्त्री. [स शिरस्] १ बकरे के सिर का गोश्त जो भून कर या पका कर खाया जाता है ।

[स शिरि] २ तलवार, खड्ग ।

[सं. शिर:] ३ एक प्रकार का बडा सर्प ।

४ सर्प, नाग । (ग्र. मा.)

५ बकरे, हिरण, खरगोश ग्रादि शिकार के जानवरो के सिर ।

६ देखो 'स्री' (रू भे)

उ०—१ सिरी घटियाळ ग्ररोहित सेर, सख्या मवताहळ माळ सुमेर ।—मे म.

उ०—२ कसैं रेसमी लाल कठा कलावा, किना वेढिया राहु दे भाण कावा । सिरी सीस कुभा तणी हेम साऊ, जथा नारि वक्षोज चोळी जडाऊ ।—व. भा

७ देखो 'सीरी' (रू. भे)

उ०—म्हे तौ रिपिया भागण रौ सिरी हू पण कोई जोगौ ग्रादमी नी मिळैं तौ वै रिपिया सगळा ग्रकारथ जावें ।—फुलवाडी

८ देखो 'सरि' (रू भे)

सिरीकिसन—देखो 'स्रीकिसन' (रू भे)

उ०—ए रुकमइयै री कहीजे जच्चा राणी वैनडी ए केसरिया सिरीकिसनजी री नार । ए म्हानै घणी ए सुहावै जच्चा पीपळी ।
—लो. गी

सिरीख, सिरीखउ, सिरीखौ—देखो 'सारीखौ' (रू भे)

उ०—१ ग्रो राज सिरीखौ दीसे छे। तैसु मैं तौ ग्रापनु हीज जाणीया ।—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ माफ करण मा बाप, खून कियोडा खलक नैं । ग्राप सिरीखा ग्राप, जग माही दूजा 'जसा' ।—ऊ. का

(स्त्री. सिरीखी)

सिरीभरण—स पु [स श्रीभरण.] श्रीविष्णु ।

सिरीमुख—देखो 'स्रीमुख' (रू भे)

सिरीवर—देखो 'स्रीवर' (रू भे.)

सिरीसाप—देखो 'स्रीसाप' (रू. भे)

उ०—सू किण भात रा वागा छे। सिरीसाप, भैरव, चौतार, कसवी महमूदी फलगार ।—र सा. स

सिरीसौ—देखो 'सारीखौ' (रू. भे)

(स्त्री. सिरीसी)

सिरीसृप—स. पु [स सरीसृप.] १ सर्प, नाग । (ह ना मा)

२ रेंगने वाला जानवर ।

सिरूं, सिरू—वि.—१ शीघ्र स्वाहा न होने वाला ।

२ पर्याप्त, पूर्ण ।

३ बरकत ।

उ०—घर मैं ग्रग्टपौर दाता-कसी । बामण रै तौ खायौ-पीयौ ग्रग नी लागतौ । ग्रैडा भगडा मैं लिछमी कद बसै । ग्रर यू ई मागण सिवाय बामण रै दूजौ कोई हलीलौ ई नी हौ । माग्या दाणा री काईं सिरूं व्हैती ।—फुलवाडी

४ देखो 'सरसू' (रू भे.)

५ देखो 'सरू' (रू भे.)

सिरे, सिरै—वि.—श्रेष्ठ, बढिया ।

उ०—१ ग्रथग ग्रचळ धिन 'जोध' ग्रभिनमा, सावज कुळ पैंतीस सिरै । हरि मेलियौ मर्यं हीलोहळ, गाजियौ रावण मेर-गिरै ।
—किसनौ ग्राढौ

उ०—२ छोटकी बीनणी सगळी बहुवा सू सिरै है । नैंडा नैंडा चौखळा मैं ई इणरै जोड री दूजी बीनणी नी लाधै ।—फुलवाडी

२ मुख्य, प्रधान, खास ।

उ०—१ मामै गढ रौ दरवाजौ ढावियौ तौ भाणेज सिरै ड्योढी मैं डेरा किया ।—ग्रमरचूनडी

उ०—२ मिनख रै वास्तै जीभ सू की बोलणौ ई तौ सिरै बात नी है । मिनख री खास पिछाण तौ उणरै करतवा सू व्है ।
—फुलवाडी

३ सिद्ध, सफल ।

उ०—राखवा राज पतसाहु रौ, यौ समाज भड उच्चरै । रस थया

सिरामणी, सिरावणी—स.स्त्री —देखो 'सिरामण' (रू भे.)
उ०—विरमी एक वेस एक जनानो अवल। रुपीया सव इतरा प्रोहित नु विदा रा मेलिया। मण एक सिरांवणी मारग री मेली।—कुवरसी साखला री वारता

सिरा—स स्त्री [स. शिरा] १ रक्त वाहिनी नाडी, खून की छोटी नली, धमनी, रग। (डि. को)
उ०—घटि घटि घरा घाउ घाइ घाइ रत घग, ऊंच छिछ ऊछळै अति। पिडि नीपनो कि नेत्र प्रवाळी, सिरा हुंस नीमरै सति।
—वेलि
वि वि—प्राणी के शरीर मे रक्त शिराएं जाल के समान गुथी हुई होती है। मानव शरीर मे आठ रक्त शिराएं प्रमुख मानी जाती है जिन्हे आठो दिशाओ के स्वामियो के नाम से जाना जाता है यथा—आग्नेयी, ऐन्द्री, महाशिरा इत्यादि।
२ नलिका, नाली।

सिराइचौ, सिराईचौ—देखो 'सिरायचौ' (रू. भे)
उ०—१ तवू ताण सिराइचा, सहु छाया वनखड। इळ पुड ईंडा मेल्हिया, किरि व्यायौ ब्रहमड।—गु. रू वं
उ०—२ असपका खडी हुई छै। तवू समीआण सिराइचा रावटी वाडि समेत करणाटी गूढर ताणीया छै।—रा. सा स.

सिराका—स स्त्री. [स शका] भ्रम, सदेह, शका।
उ०—दानि धरमी एक वीर विचारै, सड नरेंद्र न वलइ अणमारै। हेम नी गजवडिइ पताका, करण्ण जाणिन किसिउं सिराका।
—सालिसूरि

सिराडौ—देखो 'सराडौ' (रू. भे)
उ०—तरै साह कह्यो इणा घोडा री धाव कोस च्यार ताई एकै सिराडै देख्यो, तरै इणा री हाम पूरी पोचसी, तिणसूं महाराज सिराडौ साथै दिरावौ।—कहवाट सरवहियै री वात

सिराचौ—देखो सिरायचौ' (रू भे)
म०—लाल सिराचा तरकस जिहा, मलिक मसूरनि वइसइ तिहा।
—का दे प्र

सिराज—वि —श्रेष्ठ।
उ०—१ सिद्धराज मेह किनियो सिराज, प्रतपाळ करन जस धरम पाज।—करणी प्रकास
उ०—२ घिन भाग वस किनिया धिराज, सव वीस साख उप्रवट सिराज।—करणी प्रकास

सिराजी—स पु.—रग विशेष का घोडा।
उ०—हरिया नीला गुलदार पचरत्याण पवण गुरड समान सदली सीहा चकवा अवलख सिराजी फेर ही अनेक रग रा घोडा तयार कीजे छै।—रा सा. स

सिराणौ, सिरावौ—देखो 'सराणौ, सरावौ' (रू भे.)
सिराणहार, हारौ (हारी), सिराणियौ—वि०।
सिरायोडौ—भू० का० कृ०।
सिराईजणौ, सिराईजवौ—कर्म वा०।

सिरायचौ—स. पु—छोटा तवू, खेमा।
उ०—तवू सिरायचा साथ सारू माणस गमदार कीया।
—कुंवरसी सांखला री वारता
रू भे—सरायचौ, सिराइचौ, सिराईचौ, सिराचौ।

सिरायत—स. पु—राजवश का वडा जागीरदार।
वि—१ हिस्सेदार, भागीदार।
उ०—म्हैं आप सिरायता सू घणा सुखी हा।—फुलवाडी
२ देखो 'सरायत' (रू भे)

सिरायोडौ—देखो 'सरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सिरायोडी)

सिरारौ—क्रि वि—तरफ का, ओर का।

सिरावण—देखो 'सिरावण' (रू भे)
उ०—१ रणछोडै रामा-मामा करनै चिलम आधी करता पूछ्यौ—मेठा सिरावण करौ तौ थोडी माखण नै सोगरौ लाय दू।
—रातवासौ
उ०—२ सावण मैं थळी री उपज वाजरो अर ज्वार, मोठ व कठै'क गेहू काम आवै। कडी मेनत करण सू भोजन दिन मैं चार वेळा व्है—सिरावण या कलेवौ, रोटी, बैंफारौ अर व्याळू।
—जहूरखा मेहर

सिरावौ—देखो 'सीरावौ' (रू भे)
उ०—कुमार सिरावा सोनागरे रे, हुवौ नायक भार लदारो।
—जयवाणी

सिराव्रत—स पु [स सिरावृत्त] सीसा नामक धातु, रागा।

सिराह—देखो 'सराह' (रू भे)
उ०—ग्रीव न मोडै देवणो, करणी सभु सिराह। परगुना घग पेखियौ, ओछी ऊमर नाह।—वी स

सिराहणौ, सिराहवौ—देखो 'सराणौ, सरावौ' (रू भे.)
उ०—अर वार वार सिराहि भोगा मे आसक्त आळसी। श्रौर अवनीसा रा आमय मैं सूनौ वीररस जगायौ।—व भा

सिराही—स पु—सिंध प्रदेश की एक प्राचीन लुटेरा जाति व इस जाति का व्यक्ति।

सिरि—१ देखो 'सिरी' (रू. भे)
२ देखो 'सिर' (रू भे)
उ०—१ वाहे मत्रा सिरि साग विहूंडै, मार नियै थाणा वळ मडै।—रा रू.
उ०—२ अणियाळा नयण वाण अणियाळा, मत्रि कुडळ सुरमाण सिरि।—वेलि
३ देखो 'स्त्री' (रू. भे.)

८ देखो 'सिरटौ' (रू भे.)

उ०—पड़ सीस विना लौटै पठाण, फिर ज्वार सिरै ढूका क्रिसाण ।
—रा. रू.

९ देखो सिरी' (५) (रू भे)

उ०—सिखरी जी सूळै री बोटी आप ही खावै अर भूत नू ही हेक-हेक दै । इसी भात बकरी खाधी । वासं बाकरा री सिरी रह्यौ ।
—नैणसी

सिलंग–स पु —रहंट पर बैलो के घूमने के चक्र मे खुदे हुए गड्ढे के किनारे पर उस चक्र की ओर लगाया जाने वाला लकडी का पाट।

सिल—देखो सिला' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ तौ पै धूळी सिल लग्गी, वारी सारै हि .. । ऊ ही गाधी तरणि उडै छै ग्यौ साको स कुळ छुडै ।—र. ज. प्र.

उ०—२ जनहरीया जुग अधरा, आख्या विच अधार । भेद न जाणै भगति को, सिल पूजै ससार ।—अनुभववाणी

सिळकणौ, सिळकवौ—देखो 'सळकणौ, सळकवौ' (रू भे)

उ०—१ ज्यु मिनख री किडवा हुई त्यु सरप सिळक नै रूख माहै पैस गयौ ।—नैणसी

उ०—२ करै तदवीर गोरा चढण कागुरा, तिलग फररै फुरत फैल ताळी । छूट पिसतोळ पड हौल सापर छिलक, कराबीए सिळक किलक काळी ।—कविराजा बाकीदास जी

सिळगणौ, सिळगवौ, सिळग्गणौ, सिळग्गवौ–क्रि अ.—१ किसी चीज का इस प्रकार धुक-धुक कर जलना कि आग की लपटो की बजाय धूआ ही निकले।

ज्यूं—बीडी, सिगरेट या चिलम री सिळगणौ ।

२ जलना ।

उ०—१ आप अवै सोच करता नी ढब्या तौ म्हैं सगळा सूवटा सिळग नै मरजावाला ।—फुलवाडी

उ०—२ वा सुद कैडा हीण पुन्या गाजरा बाप सू जलमी अर आपरी कूख मैं कैडा अकरमी अर ओछा धणी री अस धारची —आ सोच उणरी आख्या साम्ही सगळी हरियाली सगग सगग सिळगण लागी ।—फुलवाडी

३ प्रज्वलित होना, धधकना ।

उ०—१ वानै जोत वाळी वात बताय नै कह्यौ —पैलका अदाता री गळाई आ अदाता रै माथा मे ई जोत री झाळा सिळगै है ।
—फुलवाडी

उ०—२ धपळ धपळ नाडी री पाळ रथी सिळगण लागी जाणै धरती री कोई नवौ सूरज सिळगै ।—फुलवाडी

उ०—३ सिव चै नयण की आग सिळग्गी, ज्वाळा सेस फणै फिर जग्गी ।—रा. रू

४ प्रकाशयुक्त या प्रकाशमान होना, चमकना।

उ०—१ राजकवर मगन होय कुदरत री रूप निरखतौ रह्यौ । कै अणछक राजकवर नै अधारा री एक खुणौ सिळगतौ ज्यू लखायौ । तर गुलाबी झाळा री गोट ज्यू भळकियौ ।—फुलवाडी

उ०—२ आथूण मैं सिळगता सूरज री उजास मिगसौ पडण लागगी ।—फुलवाडी

५ उत्तेजित होना, भडकना ।

उ०—अदाता तौ ज्यू हाथ जोडिया त्यु तरतर काठा पडता गिया वारी कोप सिळगतौ गियौ ।—फुलवाडी

६ लाक्षणिक अर्थ मे ईर्ष्या-क्रोध आदि के कारण मन ही मन जलना, कुढना ।

७ पेड पौधो आदि का अकुरित होना ।

८ असह्य वेदना होना ।

९ झुलसना ।

उ०—बीद मुळकनै कह्यौ—म्हैं तौ थानै पैला ई कै दियौ कै अै ढालू तौ गिवारा री खाण । अपा बडभागिया नै आछा नी लागै । सेवट नी लावणी आया तौ थानै ई बगावणा पडचा । बळती लाय मैं सिळगिया जकी सवाय मे ।—फुलवाडी

सिळगणहार, हारौ (हारी), सिळगणियौ—वि० ।

सिळगिओडो सिळगियोडौ, सिळग्योडौ —भू० का० कृ० ।

सिळगीजणौ सिळगीजवौ—भाव वा० ।

सळगणौ, सळगवौ, सळग्गणौ, सळग्गवौ, साळगणौ, साळगवौ, सिल्लगणौ, सिल्लगवौ, सुळगणौ, सुळगवौ—रू० भे० ।

सिळगाणौ, सिळगावौ–क्रि स. ['सिळगणौ' क्रि का प्रे रू.] १ धुका धुका कर जलाना, धुकाना ।

२ प्रकाशमान करना, चमकाना ।

३ प्रज्वलित करना, सुलगाना ।

उ०—१ सुधि बुधि बदूक साही, वचन गोळी वाहि । जामगो सुळगाय जतना ढिग दूदर ढाहि ।—अनुभववाणी

उ०—२ सिळगाया दीवा री बाट जगामग करै ज्यू जच्चा रै डील री आब पळापळ करण लागी ।—फुलवाडी

४ जलाना, भस्म करना ।

उ०—ऐडा रूप नै सिळगाय देणौ सातरौ पण जुगा री रीत नै यू अणछक कीकर मेटणी आवै ।—फुलवाडी

उ०—२ गाव मैं तोरण वादियौ इण वास्तै गम खावू नीतर ऊभौ सिळगाय देतौ ।—फुलवाडी

५ उत्तेजित करना, भडकाना।

६ मन ही मन जलाना, कुढाना ।

७ पेड पौधो आदि को अकुरित करना।

८ असह्य वेदना देना ।

सिळगाणहार, हारौ (हारी), सिळगाणियौ—वि० ।

सिळगायोडौ—भू० का० कृ० ।

सिळगाईजणौ, सिळगाईजवौ—कर्म वा० ।

वेळ महाराजरी, सकळ काज चढसी सिरै।—रा रू.

क्रि वि.—पर, ऊपर, सर्वोपरि।

उ०—१ इम जोर्प आवियौ 'गग' वाजता नगारा, सुजस वर्ष घर सिरै, उछक छक वर्ष अपारा।—सू. प्र.

उ०—२ अला लाछिवर पहिलडी साच लीधी, अला किसी मेघा सिरै कोप कीधी।—पी. ग्रं

सिरंपच--देखो 'सरपच' (रू. भे.)

सिरंपची–स. स्त्री —सरपच का कार्य या पद।

सिरंपोत—देखो 'सरूपोत' (रू. भे)

उ०—वा देत री बेटी तौ सिरंपोत श्री इज सवाल करयौ—साप्रत मौत रै मूंडै थे काईं सोचनै आया।—फुलवाडी

सिरैवाजार—देखो 'सदरवाजार'।

सिरै री कुरब–स. पु.—जोधपुर महाराजा द्वारा अपने सामतो को दिया जाने वाला सम्मान, ताजीम।

वि. वि —यह कुछ चुने हुए सरदारो को मिलता था जो राजदरवार के समय अन्य सामन्तो से ऊपर बैठते थे।

सिरोगुहा–स स्त्री. [स शिरोगुहा] शरीर के तीन घटो मे से एक जिसमे सुपुम्ना नाडी का सिरा रहता है।

सिरोग्रह–स पु [स शिरोग्रह] १ शिर का एक वात रोग। (अमरत)

२ सब से ऊपर वाला कमरा या कक्ष।

सिरोतर–वि —समान तुल्य।

उ०—कछ घर तणौ क्रमेत, ताव खगराज सिरोतर। परी भाव पेखजै, वीजळ डक अतर भर। कुरग ताछ कूदतौ, दूरग फरहर तो डाणा, सरस जलूमा साज, वाज सिद गुटक वखाणा।—पना

सिरोधर, सिरोधरि–स. स्त्री [स शिरोधरा.] गला, गर्दन।

(ह ना मा)

सिरोपाव—देखो 'सिरपाव' (रू भे)

सिरोवर–वि.—बरावर, समान।

सिरोभूसण–स पु [स. शिरोभूपण] सिर पर धारण करने का गहना।

सिरोमण—देखो 'सिरोमणि' (रू भे.)

उ०—१ रतन गदज सिरताज, सरब गजराज सिरोमण।

—रा. रू.

उ०—२ नितजय ग्यान निवास, पती गणनायका। लबोदर हरनद, सिरोमण लायका।—बा दा

सिरोमणराय–स. पु [स शिरोमणि+राज] १ परमेश्वर, ईश्वर।

(ह ना. मा)

२ चक्रवर्ती, सम्राट।

सिरोमणि, सिरोमणी–वि [स शिरोमणि] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्व प्रमुख।

उ०—१ अर मामतां मैं सिरोमणि जाणि जैत कुमार सहित प्रामार राज सलख नू आपरै कनै राखण काज अजमेर बुलावियौ।

—वं. भा.

उ०—२ सरब सिरोमणी होवण माह, लागा करण लडाई। मोक्ष गियोडा रिमि मुनिया मैं, अघ बिच टाग लडाई।—ऊ का

२ जिसके सिर पर मणि हो।

रू भे—सरोमण, सरोमणि सरोमणी, सिरोमण।

सिरोमरमा–स पु. [स शिरोमर्मन्] सूकर, सूअर।

(अ. मा; ह. ना मा.)

सिरोमाळी–स पु [स. शिरोमालिन्] शिव, महादेव।

सिरोरुह, सिरोरुह–स पु [स. शिरोरुह] १ शिर के बाल, केश।

(अ. मा, ह ना मा.)

उ०—सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा, तियौ आक भूं वाकडा नेत तीखा।—मे म

२ देखो 'सरोरुह' (रू भे)

सिरोळी, सिरोळी–स स्त्री —१ आमो की एक प्रकार की किस्म या जाति या इस जाति का आम।

२ देखो 'सिरोळौ' (पु) (रू भे)

सिरोळौ, सिरोळौ–वि (स्त्री सिरोळी) जिसमें एक से अधिक व्यक्तियो की साभेदारी हो, सामूहिक।

मुहा —१ सिरोळघा री मा नै स्याळ खावै=साभेदारी अच्छी नही होती २ घिरथी माळ सिरोळी है=घरनी पर उत्पन्न पदार्थ पर सब का हक होता है।

सिरोही–वि स्त्री —सिरोही नगर की बनी। (तलवार)

उ०—ठाकर व्है वहू जाग क समझै अम्बरा, सिरोही तरवार खणक्कै ववकरा।—अग्यात

स पु —१ एक प्रकार का बढिया लोह जिसकी तलवारें बनती है।

स स्त्री —२ तलवार।

उ०—१ तेरा नाम सादा तौ अभी लौ चोट झेनौ, पजै जोर पाया तौ सिरोही दाव खेलौ।—शि व

उ०—२ अर इणरै माथै घणी अमामी सिरोहियां रो फूल धारा री वाढ झडसी।—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री बात

वि वि —यह दो प्रकार की होती है—पत्राणाई और मानाशाई।

३ राजस्थान का एक प्रसिद्ध कस्बा।

रू. भे —सीरोही।

सिरौ–स पु —१ लम्बाई का अन्त, लम्बाई का छोर, सिरा।

२ ऊपर का शीर्ष भाग।

३ नोक, अणी।

४ अग्र भाग।

५ पक्ति, कतार।

६ शुरू का भाग।

७ बाजरी के सिरटे के आकार के सिट्टे वाला एक प्रकार का पौधा जिसके सिरटे को पीसकर फोडे फुसियो पर लगाते हैं।

(मि पनी)

उ०—१ सिलह सदूक सजीत वहु, लई ऊट चलाए गहु ।
—गु रू. व.

उ०—२ उजळै वस छळ सिलह जड ऊजळी, उजळा विरुद सोहै जीतू अग । चोळ बळ कियौ चोळ अस चकवती, गयण छिवतो वहै अमनमी गग' ।—माली सादू

३ युद्ध सामग्री ।

उ०—बारह ऊठाली माथै सिलह लदियोडी हुती । अर पाचसै ५०० असवार सू नरी चढियो आयो ।—नैणसी

रू भे —सलह, सलै, सल्लै, सिलेह, सिलै, सिल्ह, सिल्है ।

सिलहखानो–स पु —अस्त्र-शस्त्र रखने का कमरा, शस्त्रागार ।

उ०—अण कण कनात डेरा तवू, तिका पीठ ऊठा तुल्या । जुत म्होर तूट ताळा सजड, लूट सिलहखाना खुल्या ।—मे म

२ अस्त्र-शस्त्र ।

उ०—एक दिन टिक दूजै दिन सिलहखानौ वाटियो । मारा हुय जोगद्र घोडां पाच सव ऊवर पाखरा घात तयार हुआ ।
—कुवरसी साखला री वारता

रू भे.—सिल्हखानो, सीलैखानो, सील्हैखानो ।

सिलहट–स. पु.—१ ईरान का बना एक प्रकार का मजबूत कपडा जो ढाल, बादले आदि बनाने के काम आता है ।

उ०—सझि अलीवध सिलहट सवरि, धिख चम्प गिडकध घालिया । पाघडा वध ओळा प्रचड, अध जेम उपडाविया ।—सू प्र

२ कवच, बख्तर ।

रू भे —सिलट ।

३ देखो 'सिलहटो' (रू भे)

सिलहटो–वि —सिलहट के कपडे का बना हुआ ।

उ०—१ तठा उपरायत पताका सूं वादळा छोडजै छै । सू किण भात रा वादळा छै । हळवद रा मोरबी रा..... ..हालोर रा छै । रूपै री टूटी साकळी लागी छै । घणी सिलहटी अटायण मैं वीटिया थका, ऊपरा वेवडी-तेवडी झालरी मे गरकाब किया थका छै ।—रा सा स

उ०—तठा उपरायत ढाला रा अलीवध खुलै छै सू ढाला किण भात री छै । सिलहटी छै । सुघ गेडा आरणा री छै ।
—रा. मा स.

रू भे.—सलहटी, सिलहट, सिलेहट, सिलेहटी ।

सिलहडगळी–स. स्त्री. यौ —धड पर पहना जाने वाला छोटा कवच, धड कवच ।

उ०—इणा री सूल अटकळियो । सिलहडगळिया पहरिया वरछीया रा झूल भार, तोरडै री डाडी साथै कोई नही ।
—राव मालदे री बात

सिलहदार–वि [अ] १ अस्त्र-शस्त्र धारी ।

२ योद्धा, वीर ।

३ शस्त्रागार का अधिकारी ।

४ अस्त्र-शस्त्रों का व्यापारी ।

रू. भे —सलहदार, सलहिदार, सलहीदार, सलेदार ।

सिलहपूर–वि.—अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित ।

रू. भे.—सलहपुर, सलहपूर ।

सिलहपोस–स. पु —१ कवचधारी, बख्तरबद ।

उ०—१ सदा आठ पाटा सिलहपोस थाटा ससत्र, नाग माटा अभैसिघ नहियो । जवन घड सीस गज पटै भेळा जठै, पठै गणपत सगत ईस कहियो ।—पीथो सादू

उ०—२ वरियाम सिलहपोसां विचै, भुजा अभै नभ भेटियो । तदि खाग्रि भाण प्रोगम तणो, काळो घटा लपेटियो ।—सू. प्र.

२ शस्त्रधारी ।

सिलहबध–वि —कवच शस्त्र आदि धारण करने वाला, वीर योद्धा ।

उ०—१ किलम सिलहबध लाटै जन कर, प्रवह स्मिन सागूर तणी पर ।—सू. प्र

उ०—२ धम करि फूल अणि असि धाळ, मुगळ सिलहबध नग झट माळ ।—सू. प्र.

उ०—३ पडुत्त वीजळि नेहर' पाणि, सिलहबध हेक करै घमसाणि ।—सू. प्र

रू भे —सिल्हैवध

सिलहेत, सिलहैत–वि —१ अस्त्र-शस्त्र युक्त ।

उ०—सिलहैत दई दम वहै मार, ऊपडै कही वगतर अपार ।
—रा रू.

२ वीर, योद्धा या कवचधारी ।

सिलाम—देखो 'सलाम' (रू. भे)

उ०—विगत सामळ सकळ विदा हुय वीरवर, धणी सज सिलामा घणै छक आया घर ।—रा रू

सिलामत सिलामति—१ देखो 'सलामत' (रू भे)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति मेळवणी जोळी जोळी मगाडीजै छै ।—रा सा. स

२ देखो 'सलामति' (रू भे)

सिलामी—देखो 'सलामी' (रू भे)

उ०—अरु तारवारै ठाकर तेजमाल नूं माजी कहायो जो भाटी छो जिणसू तौ थे म्हारा सिलामी छो, सू म्है इतरा रहसा तो वेई रहसौ ।—द. दा.

सिला–स स्त्री [सं. शिला] १ पाषाण, प्रस्तर खड ।
(अ. मा; ह ना. मा)

उ०—१ सिला रा किला द्वार चित्राम सोहै, विभुसा अलोकीक लोका विमोहै ।—मे म.

उ०—२ सिला तखत केहर चमर, अनड़ दरी आवास । प्रगट लिया अगराज पण, सादूळा स्यावास ।—वा. दा.

सळगाणौ, सळगाबौ, साळगाणौ, साळगाबौ, सिळगावणौ, सिळ-गावबौ—रू० भे० ।

सिळगायोडौ–भू का कृ.—१ धुका-धुका कर जलाया हुआ, धुकाया हुआ २ प्रकाशमान किया हुआ, चमकाया हुआ ३ प्रज्वलित किया हुआ, सुलगाया हुआ ४ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ. ५ उत्तेजित किया हुआ, भडकाया हुआ ६ मन ही मन जलाया हुआ, कुढाया हुआ. ७ असह्य वेदना दिया हुआ ८ अकुरित किया हुआ । (स्त्री सिळगायोडी)

सिळगावणौ, सिळगावबौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगाबौ' (रू भे)

उ०—१ पछै फेर इणी भात बगदी देवणी अर वासदी सिळ-गावणी ।—फुलवाडी

उ०—२ बावौ बाबा मूडा मैं भिलियोडी बीडी सिळगावतौ हौ । —फुलवाडी

सिळगावणहार, हारौ (हारी), सिळगावणियौ—वि० ।

सिळगाविप्रोडौ, सिळगावियोडौ, सिळगाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

सिळगावीजणौ सिळगावीजबौ—कर्म वा० ।

सिळगावियोडौ –देखो 'सिळगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सिळगावियोडी)

सिळगियोडौ सिळगियोडौ–भू का. कृ —१ धुका हुआ, लगा हुआ. २ जला हुआ. ३ प्रज्वलित हुवा हुआ, धधका हुआ. ४ प्रकाशयुक्त या प्रकाशमान हुवा हुआ, चमका हुआ ५ उत्तेजित या भडका हुआ. ६ ईर्ष्या, क्रोधादि से मन ही मन जला हुआ, कुढा हुआ ७ अकुरित हुवा हुआ ८ झुलसा हुआ ।

(स्त्री. सिळगियोडी सिळगियोडी)

सिलडी—देखो 'सिला' (अल्पा, रू भे)

उ०—सुथार, सोनी, राछ पला रै, खाण सिलडिया हरखता । कसौटी कस सोणी सोनी, जवरी गैणौ परखता ।—दसदेव

सिलडौ—देखो 'सिला' (मह, रू भे.)

उ०—विपुळ सिलावटिया, सुवारै सिलडा सारा । जाळी जथिया सुणे, वेल समदर नद तारा ।—दसदेव

सिलट—देखो 'सिलहट' (रू भे)

उ०—मरण वेळा श्री तीतरीयौ इम कहै, कोय न मानौ कूड । अमल करौ सिलट करौ, झटकै पडमी भूड ।

—वरसै तिलोकसी भाटी री वात

सिळणौ, सिळबौ, सिळणौ, सिळबौ–क्रि अ —छुपना ।

ज्यू —काई चोर ज्यू सिळतौ फिरै ।

सिळणहार, हारौ (हारी), सिळणियौ—वि० ।

सिळिग्रोडौ, सिळियोडौ, सिळ्योडौ—भू० का० कृ० ।

सिळीजणौ, सिळीजबौ—भाव वा० ।

सिलता—देखो 'सरिता' (रू भे)

उ०—१ सरवर कह रस भर जळ सिलता, तरवर खपसर ऊन सर त्यार ।—मयाराम दरजी री वात

उ०—२ नको सिंघ सिलता नको ढार भारू, नको तीन लोका नको जुग च्यारू ।—अनुववाणी

उ०—३ सिलता समावै समद मा, रहै न मिलता नाव । यौ जीव समावै सीव मा, जदि नीर सिधि को नाव ।—परमानद वणियाळ

सिलदर सिलधर–म. स्त्री —पत्थर की आयताकार पट्टी जो दरवाजे के ऊपर लगाई जाती है ।

सिलप—देखो 'सिल्प' (रू. भे) (डिं को)

सिलपट, सिलपट्टी–स. स्त्री —१ जनानी चप्पल जो प्राय रब्बर की होती है ।

२ ऐडी की तरफ से खुली जूती ।

३ लकडी का लम्बा एव चौकोर लट्ठा जिससे इमारती सामान बनता है तथा जो रेल की पटरी के नीचे भी बिछाया जाता है ।

४ एक प्रकार का पत्थर जिसमे सलेट पर लिखने की कलमे बनाई जाती है ।

सिलपकर, सिलपकार—देखो 'सिल्पकार' (रू भे) (ना. मा.)

सिलपसासतरी सिलपसास्त्री–स पु [शिल्पशास्त्री] दक्ष एव कुशल शिल्पकार ।

सिलपी, सिलप्पी—देखो 'सिल्पी' (रू. भे) (अ. मा)

उ०—सिलप्पी रचायं जं रूपका असी चार सोभं, विणायं रतन्ना विधा कागरा वुनाह ।—म्होकमसिंघ रूपावत री गीत

सिलल—देखो 'सलिल' (रू. भे)

उ०—सिलल धार जळधर लगौ सुड आकृत सवण, चमकियौ लोक बळ कमण चालै ।—वा दा

सिळवट—देखो 'सळवट' (रू भे)

सिलवाड–स स्त्री —लकडी का वह टुकडा जिसमे रहट को उलटा घूमने से रोकने वाली लकडी फसाई जाती है ।

सिलवाणौ, सिलवाबौ–क्रि स —सिलाई करवाना, सिलाना ।

सिलवायोडौ–भू का कृ —सिलवाई करवाया हुआ, सिलाया हुआ । (स्त्री सिलवायोडी)

सिलसिलावदी–स स्त्री —कतारवदी, क्रम ।

सिलसिलेवार–वि —यथाक्रम, क्रमानुसार, क्रमश ।

सिलह, सिलहक्क–स पु [अ. सिलह] कवच, वख्तर ।

उ०—१ जिण सिर वाहै खग बळ देव सराहै जोय । सिलह अटक्का मोम सम, हुवै वटक्का दोय ।—रा रू

उ०—२ आरोही अत रोस आखडर अग सिलह तुरगै पक्खर ।

—रा रू.

उ०—३ गज हैमर पक्खरै, सिलह सुहडा पहरावै ।—गु रू व

उ०—४ कटै सिलहक्क कहा कसणक्क, भमक्क डवक्क स्रोणक्क भभक्क ।—सू प्र

२ अस्त्र शस्त्र, हथियार ।

२ देखो 'सिलारौ' (रू. भे.)

उ०—घोड़े नू गजदा खुवाई सौ हाथ चालीस पचास उपर जाय खडौ । वरछी सिलार छै, सौ खरळ साग देखता रह्या ।

—कुंवरसी साखला री वारता

सिलारस–स पु —१ रूमी पेड का गोद जिसका रग पीला होता है ।

२ देखो 'सिलाजीत' ।

सिलारौ–स. पु —घोड़े की रकाव पर बना वह स्थान जिस पर बरछी का निचला भाग (बूडी) टिका रहता है ।

उ०—ताहरा रिणमल जी जाणियौ—बरछी सिलारै सू काढि मन मैं आणी ज्यु हाथी ऊपर जाऊ । मु पातसाह माहे वैठे रिणमल जी रौ छोह जाणियौ ।—नैणसी

रू. भे.—सिलार, सेलार ।

सिलाल–स. पु.—पावू राठौड का एक नाम ।

वि —भाला धारण करने वाला ।

सिलालेख–स. पु [स शिलालेख] पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख ।

सिळाव, सिलाव–स. पु —१ आधार, साधन, स्रोत ।

उ०—१ विरह री वीज, काम री कळी, रग री वूटी, जोवण री जड़ी अर सुख री सिलाव ।—फुलवाड़ी

उ०—२ काम री केळि, विरह री वीज सुख री सिलाव सोना री काव हुए तिण भाति री सकेलो, नख मास माहे ऊलाळी आकासि जाएं, चावळ रौ चायौ खाएं, सारयात पदमणी ।—रा. सा. स.

२ देखो 'सिळाउ' (रू भे)

उ०—१ वधि वेल घमाघम सेल वहे, गुणि सीज को वीज सिळाव वहे ।—रा रू.

उ०—२ उर लागी असुहावणी किर दामणी सिळाव । सुण वाणी सारीखियौ 'जोगाणी' जमराव ।—रा रू

उ०—३ गजराज् की हळवळ वाजराजूं की कळहळ । नाळ का निहाव, सावळू का सिळाव ।—सू प्र.

सिलावट–स स्त्री —१ भवन निर्माण एव पत्थर की घडाई-कटाई करने वाली जाति ।

उ०—कव राउ सिलावट् अखर कवाडा, मोटो नीम धरै मन मोट । 'अनरध' किया जगत ऊपरवट, कीरत तणा पडे नह कोट ।

—राजा अलिरुद्धसिंह गोड री गीत

२ देखो 'सिलावटौ' (मह; रू. भे)

रू. भे —सलवाट, सिलाट ।

सिलावटियौ—देखो 'सिलावटौ' (अल्पा, रू भे.)

उ०—विपुळ सिलावटिया, सुवार सिलडा सारा । जाळी जथिया खुणे वेळ, समदर नद तारा ।—दसदेव

सिलावटौ–स पु —भवन निर्माण एव पत्थर की घडाई-कटाई करने वाला कारीगर, सगतराश, शिल्पी ।

अल्पा; रू. भे.—सिलावटियौ ।

मह,—सिलावट ।

सिलावणौ, सिलाववौ—१ देखो 'सीवाणौ, सीवावौ' (रू. भे.)

२ देखो 'सिलाणौ, सिलावौ' (रू भे.)

सिलावणहार, हारौ (हारी), सिलावणियौ—वि० ।

सिलाविओड़ौ, सिलावियोड़ौ, सिलाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

सिलावीजणौ, सिलावीजवौ—कर्म वा० ।

सिलावियोड़ौ—१ देखो 'सीवायोड़ौ' (रू भे.)

२ देखो 'सिलायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. सिलावियोड़ी)

सिलासार–स पु [स शिलासार] लोहा ।

(अ मा, डि को; ह ना मा.)

उ०—विध विध आभूखण जवाहर, लगवगसें जग मुद्रढ लियौ । सिलासार पलटे अग मुकति, कामधज कनकमकर कृताम कियौ ।

—मानजी लाळस

सिलास्वेद–स स्त्री [स.] शिलाजीत । (डि को.)

सिलाह—देखो 'सिलह' (रू भे.)

सिलाहखानौ—देखो 'सिलहखानौ' (रू भे)

सिलिंग–स स्त्री [अ शिलिंग] १ इगलैण्ड का चांदी का एक सिक्का विशेष, इगलैण्ड की मुद्रा ।

२ एक कानून जिसके अनुसार कोई भी व्यक्ति एक निश्चित मात्रा से ज्यादा जमीन नही रख सकता । यह मात्रा जमीन की उपज पर निर्भर करती है ।

सिळिया–वि.—अश्लील, बेहूदा ।

उ०—गोडा सू सिळिया भीतर भिळिया, सिळिया रस सोवदा है । मुख ते रट रामा दिल विच दामा, वामा घट वोवदा है ।

—ऊ का

सिळियार–स. पु [सं. शीलचार] युधिष्ठिर का एक नाम ।

(ह ना मा)

सिळियोड़ौ, सिळियोड़ौ–भू का कृ —छुआ हुआ ।

(स्त्री. सिळियोड़ी)

सिळी–स स्त्री —१ बाण या भाले की नोक ।

२ शलाका, सलाई ।

उ०—वळै वाढ दै सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि ।

—वेलि

३ एक प्रकार के पत्थर का टुकडा जिस पर अस्त्र तेज किये जाते हैं, शाण ।

उ०—वळै वाढ दै सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि ।

—वेलि

४ छोटा तृण, फांस, फूस, 'भुरट' आदि की फांस ।

२ चट्टान।
३ प्रस्तर पट्टिका।
उ०—विद्या जोवा तीरण पलासि, पहिलु सिला रची प्राकासि।
—सालिभद्र सूरि
४ पत्थर की चौडी लम्बी एव समतल पटिया जिस पर प्राय स्नान आदि करते हैं।
५ पत्थर की वह पटिया जिस पर ठडाई, मसाला आदि वाटे जाते हैं।
उ०—रोटा वास्तै आटी गूदीजियो, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालो पीसता सिला लोडी बाजण लागी।
—अमरचूंनडी
६ मैनसिल। (डि. को)
रू. भे.—सिल।
७ देखो 'सिलह' (रू भे)
उ०—घोडा घात पाखरा कर पूरीया सिला लगाय तरगस री कूटा अर घाटी गया।—वरसं तिलोकसी भाटी री वात
अल्पा;—सिलडि, सिलाडी।
मह,—सिलडो।
सिलाई-स स्त्री—१ सीने का कार्य या ढग।
२ इस कार्य की मज्दूरी।
३ देखो 'सलाई' (रू भे)
सिळाउ, सिलाउ-स स्त्री—१ बिजली, विद्युत।
उ०—घडि घडि धर्यक्ति धार वारुजळ सिहरि सिहरि समखें सिळाउ।—वेलि
२ बिजली की चमक।
उ०—१ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमान वितान वणाए। चिग पडदारू चमकें, दामरण जारण सिलाउ दमकें।—सू प्र.
उ०—२ वाजति नाळ निहाउ, किरि कूत वीज सिळाउ। ऊडु ति आगि दवग, नाखअ जाणि निहग।—गु रू वं
३ तोप के छूटने की आवाज, शब्द।
४ शलाका, सलाई।
रू भे—सलाव, सिळाव, सिलाव।
सिळाक सिलाक—देखो 'सळाक, सलाक' (रू. भे.)
उ०—आवा री सिलाक हुए तिरण भाति रा, वारा वारा वरसा रा डाउडा रा कान वीधीजै।—रा सा म
सिलाड-स पु.—१ दो पशुओ को गर्दन से एक साथ बाँधने की रस्सी।
२ वे दो पशु जो एक ही रस्सी से एक साथ बाधे गये हो।
३ समान जाति के दो पशु।
४ युग्म, जोडा। (पशुओ का)
रू. भे—सिल्हाड।
सिलाडणौ, सिलाडवौ-क्रि. स—१ दो पशुओ को गर्दन से एक साथ एक ही रस्सी से बाधना।
२ देखो 'सिलाणौ, सिलावौ' (रू भे)
सिलाडणहार, हारौ (हारी), सिलाड़णियौ—वि०।
सिलाडिओडौ, सिलाड़ियोड़ौ, सिलाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सिलाडीजणौ, सिलाडीजवौ—कर्म वा०।
सलाड़णौ, सलाडवौ—रू० भे०।
सिलाडियोड़ौ-भू का. कृ—१ एक ही रस्सी से बाधा हुआ।
२ देखो 'सिलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सिलाडियोडी)
सिलाडी—देखो 'सिला' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—पेच मुदियाड पर 'बादरी' पीलाडी, कवर रै लीलाडी मांय करकै। हारगा विया सू हलै ना हिलाडी, सिलाडी ती विना नाय सरकै।—ऊमरदान लाळम
सिलाडीवाव-सं. पु.—राज्य द्वारा लिया जाने वाला एक प्राचीन कर जो जूते बनाने वालो से लिया जाता था। (मा. म.)
सिलाजतु, सिलाजीत-स पु [स शिलाजतु] वह लसदार पसेव जो बडी बडी चट्टानो या पहाडो से निकलता है और जो बडा पौष्टिक एव ताकतवर माना जाता है, शलाजीत। (डि को.)
उ०—आळा अर अलमारघा मैं ताकत वेगी लायोडी वग सिलाजीत री सीस्या जचाई पडी है।—दमदोम
पर्याय.—असमज, गिरिज।
रू भे—सलाजीत, सिलाजतु, सीलाजीत।
सिलाट—देखो 'सिलावट' (रू भे)
उ०—आगळि उड ममारइ वाट, वार सहस सूतार सिलाट। माळी तबोळी सोनार, चालइ घाट घाट घडा लोहार।—का दे. प्र.
सिलाणौ, सिलाणौ-क्रि स—१ ठण्डा करना।
उ०—मासूजी दूध सिलाइयौ स रे भरयौ कटोरै दूध। दूधों ठडो होत है वहू! वेग जगावौ म्हारौ पूत।—लो गी
२ क्षतिपूर्ति करना।
३ देखो 'सीवाणौ, सीवावौ' (रू भे)
सिलाणहार, हारौ (हारी), सिलाणियौ—वि०।
सिलायोडौ—भू० का० कृ०।
सिलाईजणौ, सिलाईजवौ—कर्म वा०।
सिलादान-स. पु—ब्राह्मणो को शालिग्राम की मूर्ति का दिया जाने वाला दान।
सिलामयी-स स्त्री.—एक देवी का नाम। (वा. दा ख्यात)
सिलायोडौ-भू का कृ—१ ठण्डा किया हुआ. २ क्षतिपूर्ति किया हुआ।
३ देखो 'सीवायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. सिलायोडी)
सिलार-सं. पु.—१ मुसलमान।

२ शिल्पी का घर।

सिल्पप्रजापत, सिल्पप्रजापति, सिल्पप्रजापती–स पु. [स. शिल्पप्रजापति] विश्वकर्मा का एक नाम।

सिल्पमत–अव्यय —कारीगरी से, व्यवस्थित ढग से।

सिल्पलिप, सिल्पलिपि–स. पु यौ [स. शिल्पलिपि] १ पत्थर या धातु पर अक्षर खोदने की विद्या या कला।

२ पत्थर पर खुदी हुई इबारत।

सिल्पवत–क्रि. वि [सं शिल्प+वत्] शिल्पशास्त्र के अनुसार। (मा म)

सिल्पविद्या–स स्त्री यौ [स. शिल्पविद्या] हाथ से सुन्दर चीजें बनाने की विद्या।

सिल्पसाळा–सं स्त्री [स शिल्पशाला] वह स्थान जहाँ पर बहुत से शिल्पी मिलकर कलात्मक चीजें बनाते हो।

सिल्पसास्त्र–स पु यौ [स शिल्पशास्त्र] वह शास्त्र जिसमे हाथ से तरह-तरह की वस्तुए बनाने का विधान निरूपण हो, वास्तुशास्त्र।

सिल्पी–स पु [स शिल्पिन्] शिल्पकार, कारीगर।

रू भे.—सिलपी।

सिल्लगणौ, सिल्लगवौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगवौ' (रू भे)

सिल्लगियोडौ—देखो 'सिळगियोडौ'

(स्त्री. सिल्लगियोडी)

सिल्लह—देखो सिलह' (रू. भे)

उ०—चढी नह सिल्लह अग बचाव, सादोहीज ताम कहे सिरपाव। —सू प्र

सिल्लाम—देखो 'सलाम' (रू. भे)

उ०—हेत नजर करि हरख, कहे ऊचरै हुकम्मा। दै असीस बिरदाय, करै सिल्लाम कदम्मा।—सू. प्र

सिल्लावटौ—१ देखो 'सिलावटौ' (रू भे)

२ देखो 'सिलावट' (मह, रू भे.)

सिल्लार—देखो 'सिलियार' (रू. भे.) (अ. मा)

सिल्ली–स. स्त्री —हथियार अथवा नाई के उस्तरे आदि की धार तेज करने का पत्थर विशेष का खंड।

सिल्लौ—देखो 'सिलौ' (रू भे)

सिल्ह—देखो 'सिलह' (रू भे)

सिल्हखानौ—देखो सिलहखानौ' (रू भे)

सिल्हाड—देखो 'सिलाड' (रू भे.)

उ०—जाणै पाबासर रौ हस मोती चुगण चालियौ छै। दोय-दोय बाकरा री सिल्हाड़ नै ठरका हुवै छै।—रा. सा स.

सिल्है—सिलह' (रू. भे)

उ०—१ सिल्है खग वाढन खान सरीर, समोभ्रम 'सूर' बाबत सधीर।—सू प्र

उ०—२ घोडा हाथी सुभट पायक रथ सिल्है स जोयत बाजा छतीस बाजै छै।—पचदडी री वारता

सिल्हैखानौ—देखो 'सिलहखानौ' (रू भे)

उ०—इय करतां देव ऊढणी इग्यारस नजदीक आई। तद असवार हजार ऊढ मूं सैन साह असवार हुयौ। कही नूं जतायौ नही। सिल्हैखानौ सारौ गोठ कर गलीता मैं घात लियौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

सिल्हैबध—देखो 'सिलहबध' (रू. भे.)

उ०—घमोडत सेल सिल्हैबध धीर, समोभ्रम 'स्याम' महाक्रमसीर।

—सू. प्र.

सिव–स. पु. [स. शिव, शिव] १ सनातन धर्म के त्रिमूर्ति देव मे से अन्तिम देव, महादेव।

(अ. मा, डि. ना. मा; ना. मा; ह. ना. मा)

उ०—१ सिवा सिव कारण भेजत सीस, ऊमेल्लत पत्र उमा कज ईस।—मे. म.

उ०—२ निरखै मुख नारद वीर नचै, सिव चाल वगै सिरमाळ सचै।—रा रू

पर्याय—अघकार, अव, अकळ, अचळेसर, अज, अनत, अस्टमूरति, अहिग्रीव, ईस, उग्र, उग्रधलिग, एकलिंग, कज, कपरदी, कपाळभ्रत, कपाळी, कमाळी, कैलासपत कोटेसर, क्रतुभी, क्रसानद्रग, क्रसानरेता, खाकी, गगधर, गणनाथ गहीर, गिरजापत, गिरीस, गोरपती, गलो-भाळ, चद्रसेखर जगपति, जटधारी, जटी, जहरजर, जोग, जोगाण, जोगिद, जोगी, जोगेसर, डगंबर डमरूकर, तपस, तापस, त्रिनयण, त्रिपुरारी, त्रिबक, त्रिलोचन, त्रिसूळधर, त्रिह्लोचन, दिगवासा, धमळ-प्रारोहण, धूरजटी, नागपति नीलकठ पचमुख, पचानन, परब्रह्म, परम, परमगुर, पसुपति, पिनाकी, प्रमथापति, बाणपति, बिहारी, व्रखब धुज, ब्रह्म, ब्रह्मा, भगप्रहारी, भडग, भव, भवेस, भारग, भाळचद्र, भीम, भूतनाथ, भूतेस, भैरव, भोळानाथ, महादेव, महेस, महेस्वर, मुडमाळी, मुरनैण, म्रड, म्रत्युजय, म्रिड, रुद्र लोहितभाळ, लोदग, वरद, वामदेव, वामगुर, विरूपाक्ष, विसाळद्रग, विस्वनाथ, वोमकेस व्रखभधुज, सकर, सध्यापति, सभु, सदासिव, समराथ समरारि, सरब, सरवरित, सामी, सारविद, सिघराव, सिवेसुर, सिसमत्थ, सुछान, सूलपाण, सूळहथ, सूळी, स्रीकठ, हर।

२ सत्य, सांच (अ, मा.)

३ वेद।

४ देव, वसु।

५ मोक्ष।

६ सियार, गीदड।

७ खूटा।

८ परमेस्वर, भगवान, ब्रह्म।

९ पारा।

उ०—१ सिळिया तिणकला री सातरी पीजरी वणाय टपरी मैं टेर दियौ। तपतौ तौ हवा करती।—फुलवाडी

उ०—२ खाटी सी दाटी घर खोदै, साथ न चाली हेक सिळी।
—प्रथ्वीराज राठौड

५ बदूक के कान मे फेरने की लोहे की कील।

रू भे.—मळी।

सिळीमुख, सिलीमुख-स. पु [स शिलीमुख] १ भ्रमर, भौरा।
(अ. मा, ना मा, ह ना मा.)

उ०—अनोखो सिलीमुख साह दळ ऊपरै, क्रमै कृरम जही कमर कुता। लागिया समौ वाणास मोह खाचि लै, हस मकरद घट फूल हुता।—तेजसिंघ सेखावत री गीत

२ तीर, वाण। (अ मा; ह ना मा)

उ०—१ सिथळ सुकठ देख अवधेसर, ऊपर करण उमायौ। सारग ताण आण स्तुति सूधौ, बीर सिलीमुख बायौ।—र रू

उ०—२ चाप सिलीमुख पान विमोह सु बाम विभाग सिया जुत है।—र. ज प्र

रू भे.—सलीमुख।

सिळू-स पु —ऊंट के मुह का एक रोग विशेष।

सिलूप-स. पु —नारियल। (अ मा.)

सिलेट—देखो 'स्लेट' (रू. भे)

सिलेटिया-स स्त्री.—रामावत साधुओ की एक शाखा। (मा. म)

सिलेटियौ-स. पु —१ रामावत साधुओ की 'सिलेटिया' शाखा का व्यक्ति।

२ एक प्रकार रग।

वि —स्लेट के समान रग का।

सिलेह—देखो 'सिलह' (रू भे)

सिलेहट—देखो 'सिलहट' (रू भे.)

उ०—सौ ढाला पातसाह जी सिलेहट री ढाला री परदडी मैं पटा घालनै ढाल छानै मेली।—रा व वि

सिलेहटी—देखो 'सिलहटी' (रू भे)

उ०—सु किण भात रा वादळा छै? हळवद रा मोरवी रा अजार रा भरवछ रा हालोर रा छै। रूपै री टूटी साकळी लागी छै। घणी सिलेहटी अटायण मैं वीटिया थका।—रा मा स

सिलै—देखो 'सिलह' (रू भे.)

उ०—१ अह सिलै री पूजा दसरावै नूं ए करावै।—द वि

उ०—२ सिलै अग साथै कटै छै।—सूरै खीवै काधळोत री वात

उ०—३ चलै सर वेधि सिलै घट चोळ, भिणै पट जाणि समीर भकोळ।—सू प्र

सिलोक—देखो 'स्लोक' (रू भे)

उ०—सौ पिडतराज सीमहाराजा को कीरति प्रताप का वरणण का सिलोक पढतै हैं।—सू. प्र

२ देखो 'सिलोकौ' (रू. भे)

सिलोकौ-स पु.—वीस मात्राओ का एक प्रकार का पद्य बध वचनिका।

रू. भे —सरलोकौ, सलोक, सिरलोक, सिरलोकौ, सिलोक।

सिलोच, सिलोचय, सिलोचै-स पु [स शिलोचय] पहाड, पर्वत।
(अ मा, ना मा; ह ना. मा)

उ०—१ सिलोच समान लगै कइ आन, वडै विरदाळ वडै वळवान।—नारायणसिंह सादू

उ०—सेस हिमालय स्रग, सुरगय हय नय पय दरस। रुद्र सिलोचय रग, जय जय लकवरीस जस।—वा. दा

उ०—३ स्व क्रोधा ससूक्षा घगघगित दक्षाधिप सुत्ता। सिलोचै सभूता छजर अवधूता अदभुता।—मे म.

सिलोटी-स. स्त्री.—१ पथरीला और समचौरस भूमि का मार्ग।
(मेवाड)

सिलोप-वि. [अ. स्लॉप] १ ढलुवॉ।

२ तिरछा।

सिळौ-वि. (स्त्री. सिळी) शीतल, ठण्डा।

उ०—जळै चद्र सिळौ थाई जगचख, रेणायर सासतौ रहै। जयमालउत जाइ छाडै जुध, वेणी जळ उपराठ वहै।
—रामदास राठौड मेडतिया री गीत

सिलौ, सिलौ-स पु —१ फसल की कटाई के बाद दूसरी अन्तिम कटाई की क्रिया।

२ गेहू, चावल, चना आदि की फसल काटने के पश्चात गिरा-बिखरा अनाज जिसे प्राय. बच्चे व गरीब लोग चुगा करते हैं।

उ०—साजन सिलौ न खाइयै, जे सोनै की वाळ। वात रहे दिन जावसी, समै पलट ज्या काळ।—अग्यात

३ वाजरी की पकी हुई वालो को काट लेने के पश्चात पुन कोपले फूट कर आने वाली वालें।

रू. भे —सिरलौ।

सिल्प-स स्त्री [स शिल्पम्] १ हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने की कला, दस्तकारी, कारीगरी।

२ पत्थर पर घडाई करने की कला।

रू भे —सिलप।

सिल्पकला-स स्त्री. [स. शिल्पकला] १ हस्तकला।

२ पत्थर पर घडाई करने की कला।

सिल्पकार-स पु [स शिल्पकार] १ कारीगर, शिल्पी।

२ पत्थर का कारीगर।

सिल्पकारी-स स्त्री [स शिल्प+कृ] १ शिल्पकार का कार्य, कारीगरी।

२ घडाई, खुदाई, पत्थर आदि पर कलात्मक खुदाई।

सिल्पगेह सिल्पग्रह-स पु [सं. शिल्पगृह] १ वह स्थान जहाँ पर शिल्प सम्बन्धी कार्य होता हो, कारखाना।

सिवदेवी-स. स्त्री.—चारण वशोत्पन्न एक देवी।

सिवधांम-स. पु [स शिवधाम] १ शिव का निवास स्थान, कैलाश-पर्वत।

२ श्मशान भूमि।

३ राजस्थान के सिरोही प्रदेश का नाम।

उ०—राठौड़ै सिवधाम रहाया, भूप तणा अत जतन भळाया।
—रा. रू.

सिवनद, सिवनदण-स. पु. यौ. [स. शिवनदन] शिव के पुत्र गणेश।

२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवनाथ-स पु [स] शिव, महादेव।

सिवनाभ, सिवनाभि-स. पु. [सं शिवनाभि] एक सर्वश्रेष्ठ शिवलिंग का नाम।

सिवनारायणी-स पु यौ [स शिवनारायणी] हिन्दुओं का एक सम्प्रदाय।

सिवपद-स. पु —[स शिवपद] मोक्ष, मुक्ति।

उ०—हिंसा सू दुरगति मैं जासी, दया सू सिवपद पासी रे।
—जयवांणी

सिवपुर-स. पु, [स शिवपुर] १ मुक्ति स्थान, स्वर्ग। (जैन)

उ०—१ सुमति पदम 'सुपासनी' पहुँता सिवपुर ठाम।—जयवाणी

उ०—२ तै सिवपुर वासउ वसै रे, हुँ तउ मानव गण मइ जोय रे।—वि. कु

२ काशी।

३ भगवान शिव का निवास स्थान, कैलाश।

उ०—मगळाचार सिवपुरी माहे गूडी उछळी देव गति।
—महादेव पारवती री वेलि

सिवपुरांण-स पु. [स. शिवपुराण] अठारह महापुराणो मे से एक पुराण जिसमे शिवमहिमा का वर्णन है।

सिवपुरि, सिवपुरी-सं. स्त्री [सं. शिवपुरी] १ काशी या वाराणसी का एक नाम।

२ राजस्थान के सिरोही नगर का एक नाम।

३ परमपद, मोक्ष।

उ०—चवीयला तुम्हि हूआ पचइ ए भवि ए, सिवपुरि पामियउ ए।—सालिभद्र सूरि

४ स्वर्ग। (जैन)

५ श्मशान।

रू भे.—सवपुरी।

सिवपुरी-स. पु —चौहान वंश का क्षत्रिय।

सिवप्रिय-स पु. [सं. शिवप्रिय] १ रुद्राक्ष।

२ भांग।

३ धतूरा।

४ स्फटिक।

सिवप्रिया-स. स्त्री. [स शिवप्रिया] १ भांग।

२ पार्वती, गिरिजा।

३ दुर्गा।

सिवब्रह्मपोता-सं. पु.—कछवाह वश के क्षत्रियो की एक शाखा।
(बां. दा. ख्यात)

सिवभडारी-सं पु. [सं. शिवभडारी] कुबेर। (ना. मा.)

सिवभाळो-स. पु.—चद्रमा। (अ. मा)

सिवमंडळी-स स्त्री. [स. शिव+मडल+रा प्रा. ई] नाथ सम्प्रदाय के संन्यासियों का वह समूह या मडल जो मृत्युभोज के लिए एकत्रित होता है। (मा म.)

सिवमंदिर-स. पु [स. शिवमदिर] १ शिवालय, शिवमदिर।

२ श्मशान, मरघट।

रू. भे —सवमदिर।

सिवमाळ, सिवमाळा-स. स्त्री. [स शिवमाला] महादेव के गले की मुडमाल।

उ०—धर मूंड अमा सिवमाळ धरू, कछ देसिय देव प्रणाम करू।
—पा. प्र.

सिवरण—देखो 'सुमरण' (रू भे.)

उ०—१ हरीया जी सतगुर मिळै, जो चाहे सो देत। सिवरण सौदा सहज का, विण समझ्या नही लेत।—अनुभववाणी

उ०—२ सासा सोहू सबद है, लख चौरासी माहि। राम नाम नर देह विन, हरीया सिवरण नाहि।—अनुभववाणी

सिवरणौ, सिवरबौ—देखो 'सुमरणौ, सुमरबौ' (रू भे.)

उ०—माया का नर म्हैनती, रांम न जाणै नाम। हरीया वाटण सिवरणौ, पूर नखत का काम।—अनुभववाणी

सिवरणहार, हारौ (हारी), सिवरणियौ—वि०।

सिवरिओडौ, सिवरियोडौ, सिवरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

सिवरीजणौ, सिवरीजबौ—कर्म वा०।

सिवरांणी-स स्त्री [सं शिवराज्ञी] उमा, पार्वती।

सिवराजोत-स. पु.—राठौड क्षत्रियो की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

सिवरात, सिवरातरी, सिवरात्रि, सिवरात्री-स. स्त्री [स शिवरात्रि] १ फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी। इस दिन शिव की पूजा करते हैं, रात्रि को जागरण देते हैं तथा व्रत रखते हैं।

उ०—सिवरात्री मैं सिव दरसण गयौ सुकेरो, अवलोकै आबू सिव जब हुओ उजेरौ।—ऊ का

वि वि —इस दिन शिव-पार्वती का विवाह हुआ माना जाता है। यदि यह चतुर्दशी तिथि त्रिस्पृशा (सूर्योदय, प्रदोष और निशीथ व्यापिनी) हो तो अत्युत्तम होती है और मगलवार हो तो शिवयोग होता है। यह पर्व चारो वर्ण व स्त्री, पुरुष, बच्चो व वृद्धो द्वारा मनाया जा सकता है। ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण

१० लोहा। (डिं को, ह. ना. मा.)
११ समुद्री नमक।
१२ लिंग, जननेन्द्रिय।
१३ जल, पानी। (अनेका)
१४ एक प्रकार का घोडा जिसके गले मे भौंरी होती है। यह अशुभ माना जाता है। (शा. हो)
१५ कुशल, मंगल। (अ. मा; ह ना मा.)
१६ विष्कंभादि सत्ताईस योगो के बीसवें योग का नाम। (ज्योतिष)
१७ आर्या गीति या खधाण (स्कधक) का भेद विशेष।
१८ टगण के प्रथम भेद का नाम ऽऽऽ। (डिं. को)
१९ शुद्ध, सुहागा।
२० एक छद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे ५ और ६ के विराम से ११ मात्राएँ और अन्त मे सगण, रगण, नगण मे से कोई एक होता है तथा तीसरी छठी व नवी मात्राये लघु होती है।
वि [स. शिव] श्वेत, उज्जवल। (अ मा)
२ श्वेत पीत। (डिं. को)
३ ग्यारह।
उ०—१ कीजै दूहो प्रथम यक, सत्तरह मत्ता पाय। तिथ रिव तिश सिव तिथ, मुणय रडु छद कहाय।—र ज. प्र
उ०—२ चव लघु सिव मत चरण, वळ खट पय तिण वरण। —र ज प्र
४ शुभ, कल्याणकारी। (अनेका)
उ०—उर करवत वहि आपरै, साठ भडा सप्रमाण। वीकम सिव मारग वहे, लै दीना मोजाण।—नैणसी
५ मागलिक।
६ स्वस्थ, सुखी।
७ भाग्यवान।
रू भे.—सीव।
सिवकर-स पु [स शिवकर] अतीतकालीन चौबीस जिनो के अन्तर्गत एक जिन का नाम। (जैन)
वि [स शिवकर] मंगलकारी, आनन्ददायी।
सिवकरणी-स स्त्री [स शिवकर्णी] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।
सिवकवच-स. पु [स शिवकवच] शरीर के अगो की रक्षार्थ जप किया जाने वाला शिवस्तोत्र।
उ०—वूभ व्यास प्रोहिता, समर सूरा गुर सिक्षा। सकत-मत्र सिवकवच विसणुपजर हरिरक्षा।—रा रू.
सिवकाता-स स्त्री. [स शिवकाता] १ शिव की पत्नी उमा।
२ दुर्गा।
सिवका—देखो 'सिविका' (रू. भे)
उ०—पोहचि तठै सिवका पोढाणौ, इम पण पूर भरथ अग्र आणै। —सू. प्र.
सिवकाई-स स्त्री —सेवा करने का भाव, सेवकाई।
उ०—वरख चतुरदस बन रघुवर की, करी कठिन सिवकाई। सील व्रत भीखम ने साध्यौ, वरणी व्यास बडाई।—ऊ का
सिवकारी-वि. [स. शिवकारिन्] मगलकारी, कल्याणकारी।
सिवकीरतण, सिवकीरत्तण-स पु [स. शिवकीर्त्तन] भगी का नाम।
सिवकुमार-स. पु यौ. [स शिव+कुमार] स्वामिकार्तिकेय। (अ मा)
२ गजानन।
सिवगत, सिवगति, सिवगती-स. पु. [स शिवगति] १ भूतकाल के चौहदवे तीर्थंकर का नाम। (जैन)
२ मोक्ष, मुक्ति।
वि —१ समृद्ध, सम्पन्न।
२ हर्षित, खुश।
सिवगामी-वि [स. शिवगामिन्] मोक्ष जाने वाला, मोक्ष प्राप्त करने वाला।
सिवगिर, सिवगिरि, सिवगिरी-स. पु यौ [स शिवगिरि] कैलाश पर्वत।
सिवगुर, सिवगुरु-स पु [स शिवगुरु] विद्याधिराज के पुत्र व शकराचार्य के पिता का नाम।
सिवड-स पु —१ श्वेताम्बर, जैन।
२ देखो 'सेवड' (रू भे.)
सिवढाण- स स्त्री —१ श्मशान भूमि।
उ०—मार जुध सार मय सिवपुरी मनायै, ईखता अवर कोई ठौड ओढै। सुख करै सौड पौढै नकू सिवपुरी, पाण तज सौड सिवढाण पोढै।—दुरसौ आढौ
२ कन्दरा, गुफा।
सिवण-स स्त्री —१ एक प्रकार का पौष्टिक घास।
२ शिव, महादेव।
सिवतिलक-स पु [स शिवतिलक] १ स्वर्ण का वह आभूषण जो स्त्रिया ललाट पर धारण करती हैं।
उ०—चाल्ववध चूदडी, आटिया माग सवारी। लियौ वाध सिवतिलक, भाल त्रिवली भवारी।—रमण प्रकास
२ चाद, चद्रमा।
सिवतीरथ-स पु [स शिवतीर्थ] शकर का प्रधान तीर्थस्थान काशी का एक नाम।
सिवदूतिका, सिवदूती-स स्त्री [स. शिवदूतिका] १ कार्तिकेय की एक मातृका का नाम।
२ आठ योगनियो मे से अतिम योगिनी।
३ दुर्गा।

उ०—१ दो वाता सिवाय वानै की चेतो नी हो—कमाई अर कजूसी।—फुलवाडी

उ०—२ इण भात री विरथा भोड मैं थूक उछाळणा रे सिवाय की सार नी दीस्यो तो मेठाणी माडै ई माठ भेली।—फुलवाडी

रू भे—सवाय।

सिवायोडी—देखो 'सीवायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. सिवायोडी)

सिवाराति-स. पु [स शिवाराति] सियारिन का शत्रु, कुत्ता।

सिवाळ—देखो 'सिंवाळ' (रू. भे।

उ०—टीकी फीकी भवर जी पड गई जी हाजी ढोला हींगळू कै चढ गया सिवाळ अब घर आवो जी।—लो. गी.

सिवाळौ, सिवालय-स. पु [स. शिवालय] शिव का मन्दिर।

उ०—१ दूजोडै दिन अठीनै तो ठाकर पूजा सूं निवडनै सिवाळा सू बारै निकळचौ अर उठीनै दरबार सू हलकारो परवाणो लेयनै हाजर व्हियो।—अमरचूंनडी

उ०—२ धरमादै ध्रमसाळ, मुफत मठ गटा सिवालय। सरवर भीला घाट, वावडी चाठ विद्यालय।—दसदेव

सिवाळौ-स. पु. [सं शैवाल] कुछ हल्के रग वाला एक प्रकार का मरकत या पन्ना।

सिवि-स. पु. [स. शिवि] ययाति का दौहित्र तथा राजा उशीनर का पुत्र एक राजा जो अपनी दयालुता और दानशीलता के लिए प्रसिद्ध था।

वि. [स. सर्व] १ सब, समस्त।

उ०—चदवदनी तं सिवि सहि लालइ, रमइ रग रसि अवला वालि। तडकस कचू उर वरि हार, रेणि रगि रीझवइ भरतार।

—प्रा. फा स

२ देखो 'सिवि' (रू भे.)

३ देखो 'सवी' (रू भे)

रू भे—सिविहि, सिवी।

सिविका-सं स्त्री [स शिविका] पालकी, डोली।

उ०—उण समय सिविकारूढ समाज समेत कुमारळ भट्ट उपवन मे आय निसरिया।—वा. दा. ख्यात

रू. भे.—सविका, सिविका, सिवका, सीविका।

सिविता—देखो 'सविता' (रू भे.)

उ०—सिविता रवि सूर पतग सही, रकतबर अबर ज्योत रही।

—पा प्र.

सिविर-सं. पु [स शिविर] १ डेरा, खेमा। (डि को.)

२ सेना का पड़ाव, छावनी। (डि को.)

३ किला, कोट।

सिविल-वि [अ] १ नगर सम्बन्धी, नागरिकी।

२ सभ्य, शिक्षित।

३ दीवानी।

सिविहि, सिवी—देखो 'सिवि' (रू. भे)

उ०—इद्रसभा जई ऊपर करइ चरण उकटच्छी पक्खावज धरइ। सिविहि दीह तीह ए व्यापार, पञ्चसि थिया कइ तै सवि वार।

—वस्तिग

सिवोभदेद, सिवोन्देद-स. पु [स शिवोन्देद] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जहां सरस्वती नदी का दर्शन होता है, जहां पर स्नान करने वाले मनुष्य को सहस्त्र गोदान का फल प्राप्त होता है।

सिसक—देखो 'ससाक' (रू भे)

सिस—देखो 'ससि' (रू भे.)

उ०—१ अग छवि रवि सिस कोटि उदोतां, जोगी ध्यान तजै तिण जोता।—सू प्र.

उ०—२ उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम विखम हिम द्रुम विज्जळं—रा रू.

२ देखो 'सिसु' (रू. भे.)

उ०— सिस वेस पहल तपबल सजेव, भालियो साह 'अवरग' जेव।

—वि स.

३ देखो 'समा' (रू. भे) (ह ना. मा.)

५ देखो 'सीसा' (रू भे.) (हिं. को.)

४ देखो 'सिस्य' (रू भे)

सिसकणौ, सिसकचौ—देखो 'ससकणौ, ससकवौ' (रू. भे)

उ०—१ विरही सिसकै पीड सौं, ज्यौं घाइल रण माहि। प्रीतम मारै बाण जद, दादू जीवै नाहि।—दादूवाणी

उ०—२ रोगली टीगर रै मूंढै मैं झाग आयग्या, आख्या तिरादी अर सिसकण लागगी।—दसदोख

सिसकणहार, हारो (हारी), सिसकणियो—वि०।

सिसकिओडो, सिसकियोडो सिसक्योडो—भू० का० कृ०।

सिसकीजणौ, सिसकीजवौ – भाव वा०।

सिसकानी-स. स्त्री—एक प्रकार की बदूक।

सिसकार—देखो 'सिसकारी' (रू भे.)

उ०—पीव रमायो प्रेम रो, लो घण कठ लगाय। सुदर मुख सिसकार हुय भाभर पग भणणाय।—नारायणसिंह साद्

सिसकारणौ, सिसकारवौ-क्रि अ.—१ किसी प्रकार की वेदना, पीडा या अत्यधिक सर्दी के कारण मुह से बार बार 'सी' 'सी' करना।

२ रति क्रिया के समय नायिका (स्त्री) द्वारा सीत्कार करना।

३ मुह से निश्वास छोडना।

४ किसी को ताडना देते या चुपके से बुलाने के लिये मुह से 'सी' 'सी' शब्द करना।

५ इसी प्रकार पशुओ को भी संकेत देना।

सिसकारणहार, हारो (हारी), सिसकारणियो—वि०।

सिसकारिओडो, सिसकारियोडो, सिसकारचोडो—भू० का० कृ०।

चतुर्दशी को हुआ था अतः इसे महाशिवरात्रि कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ से ब्रह्मा ने रुद्ररूपी शिव को उत्पन्न किया था और रुद्र के अवतीर्ण होने का दिन व तिथि भी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी ही थी। इसी दिन शिव ने ताण्डव नृत्य किया था तथा अपने डमरू के निनाद से सारे वायुमण्डल मे ज्ञान-विज्ञान को सूक्ष्मसूत्ररूपेण व्याप्त कर दिया था।

इस पर्व के प्रधान अग निराहार व्रत व रात्रि जागरण है। सामवेदी व ऋग्वेदीय पद्धति से स्वस्तिवाचन व पूजन के बाद चार वार प्रत्येक प्रहर में शिवपूजन का विधान है। प्रथम प्रहर में दुग्ध से शिव की ईशान मूर्ति को, द्वितीय प्रहर मे अघोर मूर्ति को दधि से, शिव की वामदेव मूर्ति को तृतीय प्रहर मे घृत से और चतुर्थ प्रहर मे सद्योजात मूर्ति को मधु से स्नान करा कर पूजन करने का विधान है। दूसरे दिन अमावस्या को व्रत कथा सुन कर पारण किया जा सकता है। इस दिन शिवलिंग पर जल, विल्वपत्र, आक, धतूरा, गाजर, वेर आदि अर्पण करने का विधान है।

२ प्रत्येक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी एवं इस दिन किया जाने वाला व्रत।

३ माघ कृष्णा चतुर्दशी।

उ०—अहे हीरडा तइ हरी पूजीउ, कि जागु सिवराति। गोरी कठ न ऊतरि, सारी देह न राखि।—गुणचद सूरि

सिवरियोडौ—देखो 'सुमरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सिवरियोडी)

सिवळ—देखो 'सिवल' (रू भे.)

सिवलिंग—स पु [स शिवलिङ्ग] महादेव की पिंडी, लिंग मूर्ति, इसकी शिव-भक्त पूजा करते हैं।

सिवलिंगी—स. स्त्री [सं शिवलिङ्ग+रा प्र ई.] वर्षाकाल में जगलो और झाडियो मे वहुत अधिकता से मिलने वाली एक प्रकार की प्रसिद्ध लता। (अमरत)

सिवलोक—स पु यौ [स शिवलोक] शिवजी का लोक, कैलाश।

सिवलोकवासी—वि. [स. शिवलोकवासी] १ कैलाश पर्वत पर निवास करने वाला।
२ मोक्ष प्राप्त, परम पद प्राप्त।
स पु. यौ—शिव, महादेव।

सिववल्लभा—स. स्त्री [स शिववल्लभा] १ दुर्गा।
२ पार्वती।

सिववाडियौ—स पु—शिववाडो नामक स्थान का ऊंट।
उ०—सू ऊठ कुण कुण दिसावररा छै काछो वोदला छपरी जालोरी वगरू वलोची सिववाडिया खाडालिया।—रा सा. स.

सिववाहण—सं पु यौ [सं. शिववाहन] १ शिव का वाहन, नदी वैल।
२ वैल, वृषभ।

सिवव्रखभ—सं. पु [स शिव+वृषभ] शिवजी की सवारी का वैल, नंदी।

सिवसंकरी—स. स्त्री. [स.शिवशकरी] देवी की एक मूर्ति का नाम।

सिवसगिया—स. स्त्री यौ.—घोडे के दाहिने गले की ओर की भौरी जो शुभ मानी जाती है। (शा हो.)

सिवसंभव—सं. पु यौ [सं. शिवसभव] १ शिव का पुत्र, गजानन।
२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवसखा, सिवसिख—स पु यौ [स शिवसखा] कुवेर।
(अ मा, ना. मा)

सिवसुंदरी—स स्त्री [स शिवसुदरी] दुर्गा।

सिवसुत—स. पु यौ [स शिवसुत] १ गणेश।
२ स्वामिकार्तिकेय।

सिवसेखर—स पु यौ [स शिवशेखर] १ शिव का मस्तक।
२ धतूरा।
३ चन्द्रमा, चाद।

सिवा—स. स्त्री [स. शिवा] १ पार्वती, गिरिजा।
(अ मा, डिं को, ह ना. मा.)
उ०—सिवा सिव कारण झेलत सीस, उभेलत पत्र उमा कज ईस।
—मे म
२ दुर्गा।
३ हर्रे, हरीतकी। (अ. मा, ना मा, ह ना मा)
४ मादा सियार, शृगाली।
उ०—घुमडी नभ ग्रीधणि चील्ह घणी, गहकाय अवाज सिवा गवणी।—मे म
उ०—२ भयकर सोर सिवा अग्र भाग, चोळं मुख होत उदोत चराग।—मे. म
अव्यय.—अलावा, अतिरिक्त।
उ०—म्हैं वापडी सुसीला नं जमारा में दुख रै सिवा काई सुख दियौ।—अमरचूंनडी

सिवाई—देखो 'सवाई' (रू. भे) (डिं को)

सिवाडौ—देखो 'सीमाडौ' (रू भे)

सिवाणौ, सिवावौ—देखो 'सीवाणौ, सीवावौ' (रू भे.)

सिवावळि—स. पु [स. शिववलि] रात्रि के समय देवी के सामने रखा जाने वाला वह नैवद्य जिसमे माँस की प्रधानता होती है।
(तान्त्रिक)

सिवाय—वि—१ विशेष।
उ०—१ सच पियारा साइया, साईं सच सिवाय। सच्चा अगन न जाळ ही, सच्चा सरप न खाय।—ह र
उ०—२ ऊदा धरती आधिया, आहव आध सिवाय। चाळो वाधै साम छळ, ज्या ऊन्हाळै लाय।—रा रू
क्रि. वि.—अलावा, अतिरिक्त।

सिसवदनी नाखै सिसकारा, मीरा कहा हमारा मीर ।
—मीरां सुजस

सिसर—देखो 'सुसिर' (रू भे)

उ०—प्रतिदिन होत वेद विधि पूजन, पुरियत तत ग्रानद सिसिर घन ।—मे म.

उ०—२ तान मान ततकार बजवत, ग्रान सिसर तन मन ग्रानद्वन ।—मे म

२ देखो 'सिसिर' (रू भे.)

उ०—१ हेम सिसर रित सेहनै, रहियो वमधा राव । गंभ जिहांणै ऊगणौ, दिन दिन दूणो चाव ।—रा रू

उ०—२ एणइ ग्रवसरि ग्रावीउ रे, मनोहर मास वसत । सिसर गयु दुख देई करी रे, ठारवा जे जगि मत ।—कल्याण

सिसलौ—स पु —खरगोश ।

उ०—इक दिन नळ राजा तिहा, चढ्यौ सिकार ग्रपार । रमतो सिसलौ तीसरयौ, दीनो घोडो दै लार ।—ढो. मा.

सिसहर, सिसहरि, सिसहरौ—१ देखो 'ससधर' (रू. भे)

उ०—१ ग्रब घट मेरे भया ग्रजादा, सिसहर घर सूर, सूर घर चदा ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ वदन कला सोळह सिसहर वरि, कोमळ मध वरणी केसरि ।—गु रू. ब

२ देखो 'सिसिर' (रू. भे.)

उ०—हिम तै सिसहर रितु जिराई, दखी वसत वात दुखदाई ।
—ऊ. का

सिसहुर—स पु —शख, कबु । (ह ना मा)

सिसि—देखो 'ससि' (रू भे) (ह ना मा.)

उ०—निमा पटता भूंवीयो जुने-ग्रनडा नरमा । जवन दळ सिर सबळ दावि जमरा । सिसि करै जेम उदमाद मत-साहणा, ग्ररक घोखो करै जेम 'ग्रमरा' ।—किसनो ग्राढौ

सिसिगोत, सिसिगोति, सिसिगोती—देखो 'ससिगोती' (रू. भे)
(ह. ना. मा)

सिसिन—देखो 'सिस्न' (रू भे.)

सिसियो—देखो 'सस' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—सिसियौ पाटियौ लाकडी मास भर दी । काल सू थांरै पापै पुन्नै लाग जाया ।—वस्मगांठ

सिसिर, सिसिरि—स. स्त्री [स शिशिर] १ माघ व फाल्गुन मास मे होने वाली एक ऋतु, षटऋतुग्रो मे से एक ।

उ०—१ मैंमव म जु सिसिर वितीत थयौ सह, गुणगति मति ग्रति एह गिणि । ग्राप तणौ परिग्रह लै ग्रायौ, तरुणापौ रितुराउ तिणि ।
—वेलि

उ०—२ प्रगटे मधु कोक सगीत प्रगटिया, सिसिर जवनिका दूरि सिरि ।—वेलि

२ शीतकाल, जाडा । (हि. को.)

रू. भे —ससर, ससरत, ससरित, ससिर, सिसर, सिसहर ।

सिसिवदनी—देखो 'ससिवदनी' (रू भे.)

उ०—सरद हिम तह रिति सिसिर, श्री कीसा गुण ग्रोग । पूजा सिदर ग्रोहरै, सिसिवदनी सजोग ।—गु. रू. ब.

सिसिवौ—वि —१ धनाढ्य, पैसे वाला ।

२ हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

रू भे —ससवौ ।

सिसिसहोदर, सिसिसहोदर—स. पु. यौ [स. शशि + सहोदर] शख ।
(ह. ना मा.)

सिसिहर—देखो 'ससधर' (रू भे.)

उ०—दंत रसन घन सहित, सहित सिसिहर कति ।
—ग्रा. पा स.

सिसी—देखो ससि' (रू भे)

सिसीगोती—देखो 'ससिगोती' (रू. भे.)

सिसीहर—१ देखो 'सिसिर' (रू. भे)

२ देखो 'ससधर' (रू भे.)

सिसु—स पु [स शिशु] छोटा बच्चा । (ग मा, ह. ना. मा.)

उ०—सिसु उपावि इक साह, साह सिसु ग्रवर सदाहै । सिसु सुभटां सिर सभै, षटै सउ देस सवाहै ।—सू प्र

रू. भे.—ससि ।

सिसुचाद्रायण—स. पु यौ [स. शिशुचांद्रायण] चाद्रायण नाम का एक प्रकार का व्रत जिसमे प्रात काल चार ग्रास और सायकाल चार ग्रास भोजन किया जाता है ।

सिसुता, सिसुताई—स स्त्री —बचपन ।

सिसुनामी—स पु —ऊट ।

सिसुनाग—स पु —एक राक्षस का नाम ।

सिसुपाळ—स पु [स. शिशुपाल] कृष्ण द्वारा मारा जाने वाला चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा ।

रू भे —ससपाळ, ससिपाळ, सिसपाळ ।

सिसुमार—स. पु —जलमानस । (हि को)

२ देखो 'सिसमार' (रू भे.)

सिसुमारचक्र—देखो 'सिसमारचक्र' (रू भे)

सिसुमारमुखी—स पु. यौ [स. शिशुमारमुखी] स्वामी कार्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

सिसू—सं. पु.—पोत । (ग्रनेका)

सिसोदिया—स स्त्री.—गहलोत क्षत्रियो की एक शाखा ।

रू. भे.—सीसोदिया ।

सिसोदियौ—स. पु —उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सिसोदौ—स. पु.—सिसोदिया वश का क्षत्रिय ।

सिस्ट—वि [स. शिष्ट] १ वह जो सभ्यतापूर्ण व्यवहार करता हो,

सिसकारीजणौ, सिसकारीजवौ—कर्म वा० ।

सिसकारियोडौ–भू का कृ.—१ पीडा, कष्ट या शीत के कारण मुह से 'सी' 'सी' शब्द किया हुआ. २ सीत्कार किया हुआ ३ निश्वास छोडा हुआ ४ 'सी' करके इशारा किया हुआ. ५ इसी प्रकार पशुओ को सकेत किया हुआ ।
(स्त्री सिसकारियोडी)

सिसकारी–स स्त्री.—१ अधिक दुख, कष्ट या आनन्द के समय मुंह से निकलने वाली 'सी' 'सी' की ध्वनि ।
उ०—१ राजाजी रै तकलीफ रौ पार नी हो। हथाळिया रा छाळा नै देखता अर सिसकारियां न्हाकता।—फुलवाडी
उ०—२ थर थर धूजता सिसकारियां भरता नागा-तडग रावळा कानी वहीर व्हीया।—फुलवाडी
२ प्राय रतिक्रीडा के समय मुंह से होने वाली आह-आह, ऊह ऊह की ध्वनि, नायिका का सीत्कार ।
३ निश्वास, सीत्कार ।
४ भेड, बकरी आदि पशुओ को इकट्ठा करने के लिए किया जाने वाला शब्द ।
५ ताडना या बुलाने के लिये किया जाने वाला इशारा ।
रू. भे—सिसकार ।
अल्पा, —ससकारौ, सिसकारौ ।

सिसकारौ—देखो 'सिसकारी' (अल्पा, रू भे.)
उ०—१ गाव गाव मुकाम, हुवै नित वेस अपारा। सिसकारा हुव सबद, पोट लादै अणपारा।—रमण प्रकास
उ०—२ हाथ भरै चूडी तिडै, रे मूरख मणियार। वै सिसकारा प्रेम रा, तौ सग नही गिवार।—अग्यात
उ०—३ लवखू सिसकारा भरती बोली—बरसा सूं म्हारै औ मोटौ रोग लाग्योडौ। खाज आगै जीव जावै।—फुलवाडी
उ०—४ भूखी को जीमैं सिसकारा भरती, नाखै निसकारा धीमैं पग धरती।—ऊ का.

सिसकियोडौ—देखो 'ससकियोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री सिसकियोडी)

सिसकी–स. स्त्री.—१ रुक रुक कर रोने की क्रिया, भाव, गिगी ।
२ देखो 'सिसकारी' (रू भे)

सिसखांनी—देखो 'सिसकानी' (रू भे)

सिसगोत, सिसगोति—देखो 'ससिगोति' (रू. भे.)

सिसट—१ देखो 'स्रस्टि' (रू भे.)
उ०—१ ताहरा चरित अनूप रूप कुंण लभै माया। सिसट उपाया सकरी, नवनाथ निपाया।—गज-उद्धार
उ०—२ सिरजनहारा सिसट का, करता कहीयै कोय। हरीया करता दूसरा, कहन सुनन का होय।—अनुभववाणी
२ देखो 'सिस्ट' (रू भे.)

सिसटाचार—देखो 'सिस्टाचार' (रू भे.)
उ०—पछै दीवाण नरवदजी रै डेरै पधारिया, वडी सिसटाचार पडवज कीयो।—नैणसी

सिसटी—देखो 'स्रस्टि' (रू. भे)

सिसदा–सं पु—पक्षी विशेष ।
उ०—अटकत पथ जळ जीर अत, सिसदा कंकी सादवै। जिण रित 'कुसाळ' जोवराज सग, भवन चली तज भादवै।
—अरजुणजी वारहठ

सिसधर–स. पु [स. शशधर] १ चन्द्रमा ।
२ कपूर ।

सिसन—देखो 'सिस्न' (रू भे)

सिसपत, सिसपति, सिसपती–स पु. [स शशिपति] शिव, महादेव ।

सिसपाळ—देखो 'सिसुपाळ' (रू भे)
उ०—दाणौ मार दफै किया, नासियौ सिसपाळ। नहचै तै कारज सरघौ, जीतौ स्रीगोपाळ।—पदमभगत

सिसप्रिया—देखो 'ससिप्रिया' (रू. भे.) (ह ना मा.)

सिसवीज–स पु—शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा ।

सिसमत्थ, सिसमथ सिसमाथ—देखो 'ससिमाथ'
(रू भे) (ना डिं. को)

सिसमाद, सिसमादचक्र, सिसमाघ, सिसमाधचक्र—देखो 'सिसमारचक्र'
(रू भे)
उ०—१ तारागण तेताह सौ बाधा सिसमाद रै। जग राजा जेताह आमेरा तौ आसरै—अग्यात
उ०—२ सिसमाध बीच पेरै कितेक।—पाडव यसेंदु चद्रिका

सिसमार–स पु. [स शिशुमार] १ सूस नामक एक जल जन्तु ।
२ श्रीकृष्ण ।
३ देखो सिसमारचक्र' ।
रू भे.—सिसुमार ।

सिसमारचक्र–स पु यौ [स शिशुमारचक्र] समस्त ग्रह, नक्षत्र, तारा मण्डल सहित सूर्य मडल, सौर जगत ।
उ०—अगसत विण आगमै, कवण सामद्र पयाळै। अणसका विण हणू, कवण लका परजाळै। कवण अखंवड विगर, प्रळै सागर सिरसोभै। कवण विना सुखदेव, देव माया नह लोभै। सिसमारचक्र ध्रुव विण सुतौ, भर्जे न कुण सिसि गण भ्रमण। अगमैं साह अवरग सू, कमधा विण चाळौ कवण।—रा रू
रू भे—ससमाद, ससमादचकर, ससमादचक्र, ससमाध, ससमाधचकर, ससमाधचक्र, सिसमाद. सिसमादचक्र, सिसमाध, सिसमाधचक्र, सिसुमार, सिसुमारचक्र ।

सिसवदनी—देखो 'ससिवदनी' (रू भे)
उ०—दस दस पास खवासी दासी, चपक वरण ओढिया चीर ।

कैहै वाय समपी जकण सिहासरी ।—पा प्र.

सिहाय—देखो 'सहाय' (रू. भे.)

उ०—१ घर सिहाय ध्रम न्याय धुरधर, कवि दुज गौ प्रज तपी दया कर ।—रा. रू

उ०—२ ग्राप ग्रजेगट ग्रावियौ, गाप जकै ग्रसमान । थै सिहाय विहारिया, मेलै मुकरबखान ।—रा. रू.

सिहायक—देखो 'सहायक' (रू भे.)

उ०—१ ततपर धरम सरग प्रज तारण, सुरा सिहायक ग्रसुर संघारण ।—रा. रू.

उ०—२ चक्रयन चाट किए चुरावत, रिण रावता सिहायक रावत ।—रा. रू.

सिहायत, सिहायता—देखो 'सहायता' (रू. भे)

उ०—१ दळ रखवाळो रानदनायत, ग्रासतगो ग्रजमेर सिहायत ।
—रा. रू.

उ०—२ गहै ग्रव सुद्रमण ग्राज सुरताण गह, फौध नर सुरां सिहायतनि केहो । ग्रावियौ गरूट गज सुपह ऊवेळियौ, जगळ पै नाथ रुघनाथ जेहो ।—ठाकरसी सिढायच

सिहारी—देखो 'सहारी' (रू. भे)

सिहि-वि—सब समस्त ।

सिहीर—१ देखो 'सिगार' (रू. भे.)

२ देखो 'सिहर' (रू भे)

सींक—देखो 'सीक' (रू. भे.)

उ०—१ पवन री मारी सींक ठाहरै इण भातरी भाग फाड तयार कीजै छै।—रा सा स

उ०—२ उदैपूर सोळै उमरावा नू सात सींक री बीड़ो दिरीजै । देस निकाळी दै जिणनू तीन सीक री बीडो दें ।—बा. दा ख्यात

सींकलो, सींखलो-सं पु—लकड़ी या लोहे का बना एक उपकरण जिसके अन्दर मथानी को फमाकर दही मथा जाता है । इसके लगाने का उद्देश्य मथानी व पात्र की सम्भावित टक्कर को बचाना है ।

सींग-सं पु [स शृग] १ खुर वाले पशुओ के सिर पर दोनो ओर उठे हुए कठोर एव नोकदार वह अवयव जिनसे पशु अपनी रक्षा एव दूसरो पर आक्रमण करता है, पशु शृग । (हि. को.)

उ०—अति सींग अजामव थभ घणइ थट, जाडइ कंध सुं वाधि जिहाज ।—महादेव पारवती री वेलि

मुहा.—१ सीग निकळणा=जानवरो का युवा होना ।

२ सीग री कसर पूछ मे निकळी=एक स्थान की कमी दूसरे स्थान में पूरी होना ।

३ सीगा मे ठोकणी=मर्म वचन कहना, कमजोरी पर चोट करना ।

कहा—भैंस रा सींगडा भैंस नै भारी, आपा नै चाइजै दही रो पारी=किसी के अवगुणो को छोड उसके गुणो का लाभ उठाना ।

२ बदूक का बारूद रखने का एक उपकरण । (पा. प्र)

३ फूक दे कर बजाया जाने वाला एक बाजा ।

४ सीग की बनी एक नली ।

वि. वि—गाव मे जर्राह प्राय: इस नली को शरीर मे विकृत खून चूसकर बाहर निकालने के काम में लेते हैं ।

अल्पा;—सींगड़ी, सींगडो सींगटो ।

सींगड़ी, सींगड़ो—१ देखो 'सींग' (रू. भे) (अल्पा; रू. भे.)

उ०—हिरणां लांबी सींगड़ी, भारत्रण नगो नमाव । नूग छोटी दांतळो, दे घण चट्टां घाव ।—हा. झा

सींगटो—देखो 'सींग' (अल्पा, रू. भे)

उ०—सूका तणगे सींगटो, लपट पड़पा घोटाळ, जी नूपा नै नोमगी आयो हिरणां फाळ ।—नू

सींगण, सींगणि, सींगणी-स. पु [स. शृग] धनुष ।

उ०—सींगण कोई न सिरजिया, प्रीतम हाथ करंत । काठी मारत मुठि मा, फोड़ो कामी गत ।—ढो. मा.

२ एक विशेष प्रकार का धनुष जो सीग का बना होता है ।
(रा. सा. स)

उ०—१ घणा टोप रणाइठि माडा, मेहा पटा कटारो । सींगणि जोड भलो तरवारो, नोजड मार दिमारो ।—ग दे. प्र

उ०—२ कोधी सान मानि मूगलनर, सींगणि परठ्यव तीर । ताणी गयणि पणिणी बोधी, पेमइ मोटा मीर ।—गा. दे प्र.

उ०—३ परठ ग्रोढण पटी भाग नाजा नजर, गुरज गुपती गदा माग सींगण नूपर ।—रुकमणी हरण

३ अशुभ लक्षणो वाला घोड़ा । (शा. हो)

रू भे.—सिगण, सींघण, सीगणि, सगणि, सगणी ।

सींगलदीप—देखो 'सिंहलदीप' (रू. भे.)

उ०—दिन दुलहा माणीगरा इण गट रा धणियाह । आपो सींगलदीप सू, पेमै पदमणियाह ।—बा. दा

सींगळी—देखो 'सिघळी' (रू. भे)

उ०—१ कजळा दात गय सामळा प्रागळी, नुग उळळना हीडळै सींगळी ।—गु. रू बं.

उ०—२ सींगळी गजज गरजत साद । नभ जाण दवादन मेघनाद ।
—गु रू. व

सींगसट, सींगसठ—देखो 'सिगसट' (रू भे.)

सींगसाज-स पु यौ—सीग का बना बारूद रखने का एक पात्र ।
(मा म.)

सींगाडी, सींगाडो—देखो 'सिगोटी' (रू. भे)

उ०—सुगट सींगाड़ो साकवर, आछौ कजळ अग । भारतवाळी भीम पर, नसल नागोरी रंग ।—नारायणसिंह सादू

सींगायल-वि—अवारा ।

उ०—सींगायल तथा सरकायल सो सी रचै है, बाजेगारी अर तेरा-

शिक्षित एव सभ्य।
उ०—नमौ इस्ट निज देव नमौ सब सिस्ट गुसाई।—ऊदोजी नैण
२ बुद्धिमान।
३ देखो 'स्रस्टि' (रू भे.)
रू भे —सिसट।
सिस्टता-स. स्त्री. [स. शिष्टता] १ सभ्य व शिष्ट होने का गुण या भाव।
२ शिष्ट आचरण।
रू भे —सिसटता।
सिस्टसभा-स स्त्री [स. शिष्ट-सभा] राजसभा, शिष्टसभा।
सिस्टा-स पु [स. सृष्टा] ब्रह्मा। (ना. मा.)
सिस्टाचार-स पु [स. शिष्टाचार] १ सभ्य व शिष्ट पुरुषो द्वारा किया जाने वाले व्यवहार, आचरण।
उ०—कागद कौ लिखवौ किसौ, कागद सिस्टाचार। वौ दिन भलो ज ऊगसी, मिलसा बाह पसार।—अग्यात
२ सभ्य व्यवहार, नम्रता।
३ आदर, सम्मान।
उ०—दोनूं महाराजा जाय गादी पर विराजिया सिस्टाचार निराट अव्वल तरह सू कियौ हाथी एक बाकै राव, घोडा दोय, तुररा च्यार दिया। घणी घणी मनुहारा करी।
—मारवाड रा उमरावा री वारता
सिस्टी—देखो 'स्रष्टि' (रू. भे)
उ०—सावत्री पति वीनवाजी, आदि व्र म अवतार। सकळ स्रिस्टी ब्रह्मा रचीजी, पथ चलावण हार।—रुकमणी मगळ
सिस्त-स स्त्री [फा शिस्त] लक्ष्य, निशाना।
रू भे —सिस्ति।
सिस्तबाज-वि [फा शिस्त+बाज] निशाने बाज, लक्ष्य साधने वाला।
सिस्ति—देखो सिस्त' (रू भे)
उ०—रुखमइया का वाण काटिया को ताई। सिस्ति बाधी। अणी मूठि द्रिढि एक सिस्ति की।—वेलि टी
सिस्न, सिस्नु-स पु [स शिश्न] पुरुष लिंग, लिंग, जननेंद्रिय।
(डिं को.)
रू भे —सिसन, सिसिन।
सिस्य-स. पु [स शिष्य] शिष्य, शागिर्द, चेला।
उ०— द्रव्य पूजा सिस्यादिका नु माहरा पुत्र पोता राज नु घणी देसी।—रा व वि.
२ विद्यार्थी।
३ क्रोध रोप।
रू भे —सिक्ख, सिख, सिस, सीमय।
सिस्समत्थ, सिस्समथ, सिस्समथ्थ—देखो 'ससिमाथ' (रू. भे)
सिस्सिहर—१ देखो 'ससधर' (रू. भे.)
२ देखो 'ससिधर' (रू. भे) (ह. ना मा)
सिहंड-स. पु [स शिखंड] मोर, मयूर।
(अ मा; ना मा, ह. ना मा.)
रू. भे.—सिहंड, सिहड।
सिहड-स. पु.—मल्हार नामक एक राग। (सगीत)
सिहण-स. स्त्री —१ मादा शेर, शेरनी, सिंहनी।
स. पु. [स. स्तन] २ स्तन, कुच।
उ०—सरल तरल भुयवल्लरिय, सिहण पीण घण तुंग। उदर देसि लकाउली य, सोहइ तिवल तुरगु।—राजसेखर सूरि
सिहर-सं पु [स. शिर] १ सिर, मस्तक।
[स. शिखर] २ हाथी, गज। (ना. डिं को.)
३ पर्वत, पहाड।
उ०—भल दीसइ फावियउ विसभर, सिहरा छायउ मानमर।
—महादेव पारवती री वेलि
४ पर्वत-शिखर, चोटी, शृंग।
उ०—१ मदन तणा सिहर चइ माथइ, बारइ तेज तपइ बाणाध।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ अवर राव हतउ ओभाडइ, सिहरा रा सीग सहिनाण।
—महादेव पारवती री वेलि
५ बादल, मेघ।
उ०—१ अनेक रग-रग रा जु सिहर उठै छै। सूरच मेघ मानु आपणा घर सवारै छै।—वेलि टी
उ०—२ मिळिया जाणै सिहर बीजळी, माहै कळा चढती रूप।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ खेडपति घूणियौ कूत खीज, वळको किरि काळै सिहर बीज।—गु. रू व
६ श्रेष्ठ वीर।
७ देखो 'सहर' (रू भे)
रू भे.—सिहरि।
सिहरसिलाव-स स्त्री.—बिजली की चमक।
सिहसान-स पु [स सिंहसान] एक सूर्यवशी राजा जो मर्पण का पुत्र था।
उ०—मरवण सुन सिहसांन भूप मणि। भूप विस्वासा द्वै तै सुत भणि।—सू प्र.
सिहसत—देखो 'सिगसट' (रू भे)
सिहाई -देखो 'सहाय' (रू भे)
उ०—१ राम भजीजै भीड तजीजै लाभ सदेही वेद वदेही, संत सिहाई राघवराई वौ हरि गावौ पै उध पावौ।—र ज प्र.
उ०—२ संतो सतगुर करण सिहाई।—अनुभववाणी
सिहाखरौ-स पु.—मस्तक, सिर।
उ०—जपियौ विदरा जाय यम जायल पत आगलै, काळौ हुड

४ यज्ञ मे घृत की आहुति देना।
उ०—वीवाह करण तेथ वैठा ब्राह्मण समधा अगिनि सींचतइ सारि। नवग्रह दस दिगपाळ निजीकी, अथवा वरइ करइ आचार।
—महादेव पारवती री वेलि

५ कूऐ से पानी निकालना।
उ०—वावा म देइस मारूवा, वर कुआरि रहेसि। हाथि कचोळउ सिरि घडउ, सींचती मरेसि।—ढो. मा
६ (चीटियो के बिल पर अनाज) आदि छिडकना, छितराना, डालना।
उ०—आ ऊदरा मारणा रा पाप रै वदळै काले सूं ई दी वेळा कीडी नगरी सीचौ।—फुलवाडी
सीचणहार, हारौ (हारी), सींचणियौ—वि०।
सीचिओडौ, सींचियोडौ, सींच्योडौ—भू० का० कृ०।
सीचीजणौ, सीचीजवौ—कर्म वा०।

सींचांण, सीचांणउ—देखो 'सिचाण' (रू भे)
उ०—उत्तर आज स वज्जियउ, ऊकठियइ केकाण। कामणि काम कमेडिज्यउ, हइ लागउ सींचाण।—ढो मा

सींचांणी-स स्त्री [सं शची] इन्द्राणी, शची।
उ०—रजपूताणी रुच सीचाणी सिरखी, नैणाजळ भरती सैणा थळ निरखी।—ऊ का

सीचाणू, सींचाणौ—देखो 'सिंचाण' (रू. भे)
उ०—चपै सींचांणू मगा असमाणू, पुळत न जाणू पवाणू।
—भगतमाळ

सींचाणौ, सींचाबौ—क्रि॰ स ['सींचणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ कूऐ से पानी निकलवाकर फसल अथवा पेड पौधो को पिलवाना, पानी दिराना, सिंचाई कराना।
२ पानी छिडकवाना, नमी दिराना।
३ उडेलवाना, डलवाना।
४ कूऐ से पानी निकलवाना।
५ (चीटियो के बिल पर अनाजादि) छिडकवाना, छितरवाना।
सींचाणहार, हारौ (हारी), सीचाणियौ—वि०।
सीचायोडौ—भू० का० कृ०।
सींचाईजणौ, सींचाईजवौ—कर्म वा०।
सिंचाणौ, सिंचाबौ, सिंचावणौ, सिंचाववौ—रू० भे०।

सींचायोडौ-भू. का कृ—१ पानी दिराया हुआ, सिंचाई कराया हुआ २ पानी छिडकवाया हुआ, नमी दिराया हुआ ३ उडेलवाया हुआ, डलवाया हुआ ४ कूऐ से निकलवाया हुआ (पानी) ५ चीटियो के बिल पर अनाजादि छिडकवाया हुआ, छितराया हुआ।
(स्त्री सींचायोडी)

सींचारौ-स पु—वह व्यक्ति जो कूऐ से जल खीचने का काम करता है।
उ०—आप दियो तद ईसरी, घट एक न्ह्यौ घर। सींचारै पडतै सबद, कीधो मभ कोहर।—जुझारसिंह मेहतियो
२ सीचाई करने वाला व्यक्ति।

सींचियोडौ-भू का. कृ.—१ सिंचित, सींचा हुआ, पानी दिया हुआ. २ कूऐ से पानी खीचा हुआ, निकाला हुआ. ३ जल, घी आदि उडेला हुआ, डाला हुआ ४ छिडका हुआ, नमी दिया हुआ ५ चीटियोके बिल पर अन्न डाला हुआ, छिडका हुआ, छितराया हुआ. ६ यज्ञ या होम मे आहुति दिया हुआ।
(स्त्री सींचियोडी)

सींचौ, सींचौ-स. पु—१ शौच से निवृत्त होकर मलद्वार की जल से की जाने वाली शुद्धि, आबदस्त। मलद्वार स्वच्छ करने की क्रिया या भाव।
२ अशौच मिटाने के लिए शुद्ध जल का छींटा देने या लेने की क्रिया।

सीठ, सींठ-स. पु.—१ गुप्तेन्द्रिय के आसपास उगने वाले वाल, झाट।
उ०—कपटा काळा कीट, नीठ उठ ऊठ निरोगै। सींट अमल रै माय, सीठ कुवरं जू सोवै।—ऊ का.
२ गुप्तेंद्रिय, जननेंद्रिय।

सींठाणौ, सींठाबौ-क्रि स.—बहकाना, फुसलाना।
सीठायोडौ-भू. का. कृ.—फुसलाया हुआ।
(स्त्री. सीठायोडी)

सींणगार—देखो 'स्रिणगार' (रू भे.)
उ०—जदी गाम धणी री असतरी सींणगार करै आय सलाम कीवी।—गाम रा धणी री वात

सींणियौ, सींणौ-वि.—सफेद लेकिन हल्के कालेपन का।
रू भे.—सणियौ, सणीओ, सिणियौ, सीणौ।

सींतरी, सींतरी-स. स्त्री.—एक प्रकार का घास विशेष।
उ०—अथा डाळा भात भतीली, फूल महक अणमीतरी। ऊभ एक पग साजन सजै, जो'डा स्वागत सीतरी।—दसदेव
रू भे—मणतरी।

सीयाल-स पु—वह बडा चौडा पत्थर जो किसी जलाशय के किनारे कपडे धोने व नहाने के लिए रख दिया गया हो।

सींदडी, सींदरी-स. स्त्री.—१ ससुराल जाते समय कन्या के साथ डाली जाने वाली तेल, इत्र आदि की शीशी।
२ कुऐ से पानी निकालने की रस्सी।
३ पतली रस्सी का टुकडा।
रू. भे.—सिंदडी।

सींदल—देखो 'सिंधल' (रू. भे)
सींदवौ—देखो 'सीधवौ' (रू भे.)
सींदुर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे)
सींदूर—देखो 'सिंदूर' (रू भे)

वाली नो नौ ताल नाचै है।—दसदोख

सींगाळ—देखो 'सींगाळौ' (मह, रू भे) (डि ना मा.)

सींगाळी-म. स्त्री.—१ सींगो वाला मादा पशु।

२ गाय। (डि. को)

सींगाळौ-स. पु [सं शृंगी] (स्त्री. सींगाळी) १ सींग वाला जानवर शृंगी पशु।

उ०—हूर्रं हूर्रं कर देता हलकार, लावा सींगाळां देता लल-कारा।—ऊ का.

२ बैल, वृषभ।

उ०—जो घणदीहो मागडी, न्है विरदावणहार। सींगाळो वळ सो गुणी, जाणावै जिणवार।—बा. दा.

३ वीर, बहादुर।

उ०—सींगाळो अवखल्लणी, जिण कुळ हेक न थाय। जास पुराणी वाड जिम, जिण जिण मत्थै पाय।—हा. झा.

सींगासण—देखो 'सिंहासण' (रू. भे)

सींगी—१ देखो 'सिंगी' (रू भे.)

उ०—भाव भगति का खाणा पीणा, सील सतोखी पतरा। सुरत निरत की सेली सींगी, लीया लगोटा जतरा।—अनुभववाणी

२ देखो 'सिंगण' (रू. भे)

उ०—गुरजा चकमारा अग अयारा डावं पट्टा जमदड्ड। खंडा खुरसाणी तेगा पाणी सींगी नेजा सन्नड्ढ।—गु रू व

सींगीवद, सींगीवध-स. पु—वह तालाव या वापिका जो चारो ओर से पत्थर एव चूने की पक्की चुनाई से बाधा हो।

उ०—तळाव १ कोट माहे, तळाव १ काचो पाको कोट रा पट्टा हेठै खाई री ठौड छै। कोहर ४ कोट माहे सींगीवद पाणी मीठो। वडो कोट हुवो।—नैणसी

रू. भे—सींगीवद, सींगीवध।

सींगीमुहरी—देखो 'सिंगीमुहरो' (रू. भे)

उ०—तमाल पत्र सींगीमुहरा धतूरो भूटटी एक खान इहमदा वादी खान... . . ..।—रा सा स

सींगीरिख, सींगीरिखी, सींगीरिसी—देखो 'स्रगीरिसी' (रू. भे)

उ०—तप कै गुमान सींगीरिख मारि हारिखाई, वेद कै गुमान तैं ब्र भ हूं उठायो है।—सुरजनदास पूनियो

सींगोटी—देखो 'सिंगोटी' (रू भे)

सींगो-स पु—सींग के आकार का लकडी का डडा जो 'चौसगी' या 'जई' के छोर पर लगाया जाता है।

वि. वि—देखो 'चौसगी'।

रू भे.—सिंगो।

सींघण, सींघणि, सींघणी-स. पु.—घोडे के सिर पर होने वाला एक टीका जिसमे दो या अधिक भौंरियां होती हैं। (शा हो)

२ देखो 'सींगण' (रू. भे)

उ०—१ गुण वाण सींघणि गाढ, वाहति ताणुम्र वाढ।

—गु. रू. व

उ०—२ वह छूटैं कंवर सोक नलीसर सींघणि सघर साचवियं।

—गु. रू. व

सींघल—१ देखो 'सिंहल' (रू भे.)

२ देखो 'सिंगल' (रू भे.)

सींघळी—देखो 'सिंघळी' (रू भे.)

उ०—१ सीह वयण समधरै, खडग उपाडै हत्थळ। सीहै रा सींघळी, सीह ऊठिया सहस वळ।—गु. रू वं.

उ०—२ जाणीया ईस विण जहर कुण जीरवै, जोगणी विवर कुण पेम जाणै। मकज मवलो तखत मा'ल रा सींघळी, अगम दरीयाव मु तुहीज आणै।—मालो सादू

उ०—३ पछै लोह साकळ रा प्रास नाखि नै हाथी पकडीजै छै। इणी भात रा सींघळी गजराज वैसास नै आणिआ छै।

—रा सा स

सींघसट, सींघसठ, सींघसत, सींघसथ—देखो 'सिंगसठ' (रू भे.)

सींघाळौ—१ देखो 'सिंघाळौ' (रू भे)

२ देखो 'सींगाळौ' (रू भे)

सींघासण—देखो 'सिंहासण' (रू भे)

सींघोडौ—देखो 'सिंघोडौ' (रू भे)

उ०—भूरी मेवाती अरोही अमल आगराई मिसरी अहिफीण अनै वासग नागरैं मुहडै रा झाग हुए तिण भाति री नेम सींघोडा भज किया।—रा सा स

सींचणियो—स पु.—१ कुए मे पानी निकालने के पात्र के बाधा जाने वाला रस्सा।

२ कूऐ से पानी निकालने का पात्र।

३ कूऐ से पानी निकालने वाला व्यक्ति।

रू भे—सिंचणियो।

सींचणौ सींचबौ-क्रि स. [स सिचन्] १ खेत मे फसल या बाग-बगीचे में पेड-पौधो आदि को कूऐ से निकालकर पानी देना, पानी पिलाना, सिंचन करना।

उ०—१ बावळिया कुण रै लगाया थारी पेड, बावळिया कुण रे सपूती थानै सींचियो।—लो गी

उ०—२ वाईजी सींचै रे आमूनी कोई म्है मींचों म्हारो नीम-नीमोळीडा।—लो गी.

२ पानी छिडकना, नमी देना।

३ उडेलना, डालना।

उ०—१ रावत झाटक रजा, गजा म्हावत गरदाया। सपटाया जळ सींच, वळै चितराम वणाया।—मे. म.

उ०—२ सुणैं सयद उम्मर्स ग्रडर, वाहर पुर वाळा। अगनि कुट ऊछळै, जाणि सींचो घ्रत ज्वाळा।—सू प्र.

सींवायोडो-भू. का कृ.—सिलाई करवाया हुआ, सिलाया हुआ।
(स्त्री सींवायोडी)

सींवाळ—देखो 'सिवाल' (रू भे)
उ०—ज्यारा द्रग कच जीतिया, सोह पकज सींवाळ। पडही लहरा मिस पगा, त्या हुदा ओताळ।—बा दा.

सीह—१ देखो 'सिंह' (रू भे.)
२ देखो 'सिंघ' (रू. भे.)

सी-स पु [स शीत, प्रा सीअ] १ सर्दी, ठंड, शीत। (हि को)
उ०—सीयाळइ तउ सी पडइ, ऊन्हाळइ लू वाइ। वरसाळइ भुइ चीकणी, चालण रत्ति न काइ।—ढो मा
पर्याय—जाडौ, ठंड, तुखार, सिसिर, सीत, सुसीम, हिंव।
२ सिंह, शेर।
३ डर, भय। (डिं. को)
४ जल, पानी। (ना. डिं. को.)
५ शका।
६ सीत्कार।
७ शोभा। (ह ना मा)
८ समानता व तुल्यता सूचक प्रत्यय।
उ०—तरै नागही सारा सोरठ रा लसकर नू नामी सी कोठी माही सूं सीधौ दियौ।—नैणसी
वि स्त्री—१ समान, तुल्य।
उ०—मारू सी देखी नही, ग्रणमुख दोय नयणाह। थोडी मी भोळै पडइ, दशयर उगताह।—ढो मा
सर्व—१ क्या।
उ०—१ इम जाणी नइ प्रत्युपकार करता, राखो छौ सी चिंता हो।—वि कु
उ०—२ हू तुज आगल सी कहूँ कन्हैया वीतक दुख री वात रे।
—जयवाणी
२ कैसी।
उ०—नेह विना सी प्रीतडी, कठ विना स्यउ गान। लूण बिना सी रसवती, प्रतिमा विण स्यउ ध्यान।—वि. कु.
क्रि. वि—१ करीब, लगभग।
उ०—१ बी ए. री परीक्षा देय नै म्है चिन्ही सो सोरी सास ली ही।—तिरसकू
उ०—२ सिरदार ढोलियै पर विराजे है ग्रर सुपियारदे नेडै सी मसद रै सहारै गादी पर वैठे है।—नैणसी री साको
२ को, समय मे।
उ०—ग्रौर म्हारै आवण री कारण ई काइ है? म्हारी डावडी सझ्या सी पूरी वात सुण'र म्हानै खबर दीनी है।
—नैणसी री साको
३ देखो 'सीता' (रू भे.)
उ०—ग्रत घोप सी-वर उचर, ध्यान हू,दय जुत चोप धर।
—र. ज प्र.
४ देखो 'स्त्री' (रू. भे.)
५ देखो 'ही' (रू. भे)
उ०—मी ग्रठै तो ग्रै वही सी उडीक करै ग्रर उठै कुवर नु दूग तरै विलमाय राखियो।—कुवरसी सांखला री वारता

सीग्रा-स. पु. [ग्र. शीग्रा] १ इस्लाम धर्म का एक सम्प्रदाय जो हज्रत ग्रली के सिवाय ग्रन्य खलीफो को नही मानता है।
२ उक्त सम्प्रदाय का ग्रनुयायी।
३ देखो 'सीता' (रू भे.)

सीग्राल, सीग्रालक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू. भे.)
उ०—१ चदन भरी कचोली (भरी) यनि रति रोली, प्रीमट रस घोली, हाथि लिइ पान फूली, पहिरणि पीत पटुली, काचली कानीग्राली उढणि नवरंग फाली, रूप नी चित्रसाली, ग्रहो सीग्रालक वोलि।—व म.
उ०—२ सासूसली ग्रापु सोवनकेरी, हवडा नहो लीजइ चीजो ग्रनेरी, वे कर जोडो वरराज मागइ, सासूसली ग्रापता वार ना लागइ, ग्रहो सीग्रालक वोलि।—व. म

सीए-स पु—ठंड, सर्दी। (जैन)

सीग्रोदग-स. पु [स. शीतोदक] कच्चा पानी। (जैन)

सीग्रो, सीग्रोताव-स पु. यौ [सं शीत+ताप] शीत लगकर ग्राने वाला विषमज्वर, मलेरिया।
रू. भे.—सीयउ।

सीकंत—देखो 'श्रीकंत' (रू. भे)
उ०—कह वुद्ध किळकी ईम ग्रसकी कळ पूरण सीकंता है।
—र. ज प्र.

सीकंठ-स पु [स. शितिकंठः] शिव, महादेव। (ह ना मा)

सीकपी सीकंपी-स स्त्री.—सर्दी के कारण होने वाली कपकपी, कंपन।

सीक-स. स्त्री [स इषीका] १ तीक्ष्ण ग्रौर पतली द्रव पदार्थ की धार।
उ०—रुधर री धारा सरीर माय सू प्रनाळ री सीकां वह नै रही है।—द. दा.
२ लोहे की सलाई पर लपेट कर पकाया जाने वाला मांस।
उ०—१ रोगन मसालै सै सूलू की सीक वणावै। ग्रनेक भाति कै साग तिसका पार न पावै।—सू. प्र.
उ०—२ सीका पासै वर्णी छै। ग्राडा डोरा घो रा दीजै छै। मास रफ्रतै री खसवोय फूट रही छै।—रा सा स
३ पतली सलाई, तूलिका।
४ जलकण, बूद।
५ पतली सलाई के शिरे पर लपेटी हुई रूई जो कि इत्र से भिगोई

उ०—कांम पतसाह रै जरद झळहळ किया, सेल सीदूरियौ सजै जगीस । पवग सींदूर व्रन चाढता पटहथा, सूरै सूर मडळ नामियौ सीस ।—मालौ सादू

सीदूरियौ—उषाकाल ।

उ०—दुत गैंण उदै सींदूरियौ, लाग वाग पाटण लियौ ।—पा. प्र.

२ देखो 'सिंदुरियौ' (रू भे)

उ०—कांम पतसाह रै जरद झळहळ किया, सेल सीदूरियौ सजै जगीस । पवग सीदूर व्रन चाढता पटहथा, 'सूरै' सूर-मडळ नामियौ सीस ।—मालौ सादू

सींधडौ—स पु —१ ऊट के चमडे का बना तेल या घी डालने का पात्र ।

२ ऊट ।

रू. भे —सीदडौ ।

सींधण—देखो 'सिंधी' (स्त्री.) (रू भे)

सींधल—देखो 'सिंधल' (रू. भे)

उ०—सू वालोत देवळा (डा) सींधल, दवि वोडा वाळीसा देवळ ।—रा रू.

रू भे.—सीदल ।

सींधलावटी—देखो 'सिंधलावटी' (रू. भे)

उ०—तितरै सीहैण गुढा डोडियाल नू जावै छै । सींधलावटी छाडी छै ।—नैणसी

सीधवा, सींधवाळ—देखो 'मीधवौ' (रू भे)

सींधवी, सीधवीनाद, सींधवौ, सींधवौराग—देखो 'सिंधुराग' (रू भे)

उ०—१ ऊठि अढगा बोलणौ, कामणि आखे कत । श्रै हल्ला तौ ऊपरा, हूकळ कळळ हुवत । हूकळै सींधवौ वीर कळकळ हुवै, वरण कजि अपछरा सूरिमा वहवुवै ।—हा झा.

उ०—२ ऊठि अचूका बोलणौ, नारि पयपै नाह, घोडा पाखर धमधमी, सीधूराग हुवाह । हुवौ अति सींधवौराग, वागी हका, थाट आया पिसण घाट लागै थका ।—हा झा

उ०—३ रुडै सींधवौराग गुडै हल्ला गज ढल्ला । खळा उथल्ला खाग, वणै वगतर वरघल्ला ।—ऊ का

सीधूर—देखो 'सिंधुर' (रू. भे.)

उ०—सीधूर दळ वळ सवळ, पूर पैदल अणपारा । नदि सर टूटै निवांण, भाण ढकै रज भारा ।—सू प्र.

सींधू—१ देखो 'सिंधुराग' ।

उ०—आळस जाणै ऐस मैं, वपु ढोलै विकसत । सीधु सुणिया सो गुणौ, कवच न मावै कत ।—वी. स

२ देखो 'सिंधु' (रू भे.)

सींधूराग—देखो 'सिंधुराग' (रू भे)

उ०—ऊठि अचूका वोलणा, नारि पयपै नाह । घोडा पाखर धमधमी, सीधूराग हुवाह ।—हा झा

सींप—देखो 'सीप' (रू. भे) (डिं. को)

सींवल—देखो 'सिवल' (रू. भे)

सींम—देखो 'सीमा' (रू. भे.)

सींमल—१ देखो 'सेमल' (रू. भे.)

२ देखो 'सिंवल' (रू. भे)

सींव—१ देखो 'सीमा' (रू भे.)

उ०—१ जैंसलमेर थी कोस ७० सोढा री ऊमरकोट छै तिण माहै कोस ३५ आघोफरै दाग जाळ छै तठै ऊमरकोट जैंसलमेर सीव छै ।—नैणसी

उ०—२ दिल्ली री सींव रै काकड मैं आया तोपा रा घडिंदा उडण लागा । म्है तौ पाछौ लारै फिरनै ई नी जोयौ । मरता खपता ठेट आय पूगा ।—चितराम

२ देखो 'सीम' (रू भे.)

उ०—१ वडौ गाव नदी सूं रेलीजै सारी सीव मैं गेहू हुवै ।—नैणसी

उ०—२ वूझ्यौ सजना गाया रौ गवाळ, सीव वताहौ रे भाईडा । हाडै राव री ।—लो गी.

सीवण, सींवणी—स स्त्री [स. सीवनी] १ अण्ड कोश के मध्य की रेखा जो सीली हुई सी प्रतीत होती है ।

२ सिलाई की क्रिया या भाव ।

३ सुई । (डिं को)

सीवणौ—स पु. [सं सीवनम्] १ सिलाई करने की क्रिया या भाव ।

२ सिलाई का व्यवसाय या कार्य ।

उ० —सीव सीव सींवणौ, नैण आधा हुयग्या म्हारा ।—ऊ का.

३ सिलाई के लिये लाये जाने वाले वस्त्र ।

क्रि प्र.—आणौ, करणौ, देणौ, लाणौ, सीवणौ ।

रू भे —सीवणौ ।

सींवणौ, सींवबौ—क्रि स [स सीवनम्] सिलाई करना, कपडे सीना ।

उ० —वोदा कपडा बहुत रग, सींवणहार कुढग । धड धड टाका ऊधडै, घण मोडता अग ।—जलाल बूबना री वात

सींवणहार, हारौ (हारी), सींवणियौ —वि० ।

सींविग्रोडौ, सींवियोडौ, सींव्योडौ—भू० का० कृ० ।

सींवीजणौ, सींवीजबौ —कर्म वा० ।

सीवणौ, सीवबौ—रू० भे० ।

सींवाणौ, सींवावौ—क्रि. स [स 'सीवणौ' क्रिया का प्रे. रू] सिलाई कराना या सिलाई करने मे प्रवृत्त करना ।

सींवाणहार, हारौ (हारी), सींवाणियौ —वि० ।

सींवायोडौ—भू० का० कृ० ।

सींवाईजणौ, सींवाईजबौ—कर्म वा० ।

सिमाणौ, सिमावौ, सिमावणौ, सिमाववौ, सिलाणौ, सिलावौ, सीमाणौ, सीमावौ —रू० भे० ।

८ दामाद व सम्बन्धियों को विदाई के समय दी जाने वाली भेंट।
९ बहन, बेटी आदि को ससुराल भेजते समय दिया जाने वाला धन, जेवरात आदि।
१० अनुमति, इजाजत, आज्ञा।
उ०—१ सीख करै विगळ वन्हा, घर आया निण वार। भेल्हि सखी तेडाविया, मारू मागणहार।—ढो. मा.
उ०—२ आगलै तीन म्हीना री फीस रै सागै रुपिया इण पोथी माय राख नै जाय रयी हूं। अै रुपिया जद तई थारै कनै हुवैला अर म्हनै जरूरत पड़ी तो लै लूं ला। किणी तरियां री ख्याल मत करजै। पोथी जरूर पढजै। अनुष्ठया सीख मागू हूं।—तिरसकू
११ प्रस्थान, रवानगी।
उ०—पछै धीरमदे जी उण सूं सीख कीवी।—नैणसी
१२ विदाई।
उ० —१ बोली रावत जी थे म्हारै कहै इता फोजा भुगतिया। थारी औ ओसाण जीवू जितै नी भूलूं। बाई री सीख पछै थारी सीख मैं कमी-बेसी रै जावै तो म्हनै कैजो।—फुलवाड़ी
उ०—२ पीछै फेरा लेणरी बगत श्रीकरनीजी मुलतान पधार नै नेतै जी नूं लाया। अर कवर बीकैजी नूं परणाया पीछै रावत नू सीख दी।—द. दा.
रू भे.—सिरख, सिख।
अल्पा,—सीखड़ली।
सीखड़ली—देखो 'सीख' (रू भे)
उ०—१ सीखड़ली हजा मांय दीवी रे नी जाय। म्हारो भतीजे हिवड़ो ऊकळै जी म्हारा राज।—लो. गी
उ०—२ मेडी सूं नीचा पधारो भाभी म्हारी ओ सीखड़ली दयो नी, तेजल तो ऊमाड़ो जावै सासरै।—लो. गी
सीखचौ-स पु [फा. सीखच] १ लोहे की वह सलाख जिस पर मांस लपेट कर भूनते है।
६ लोहे की छोटी सलाखा।
सीखणौ, सीखबौ-क्रि स. [स शिक्षणम्, प्रा सिक्खण] १ किसी से कोई कला, विद्या आदि के ज्ञान की तालीम लेना।
उ०—१ सो राजकवर नै पूछया-ताछया बिना ई वा उडण-खटोलो सीखण सारू भुवा रै पाखती बैठगी।—फुलवाड़ी
उ०—२ जग लोक वाण सीखै जवन, पढै ग्रहण मुख पारसी हित देव सेव आधा हुआ, काई लागा आरसी।—रा रू
२ शिक्षा, नसीहत आदि लेना।
३ स्मरण करना, याद करना, कण्ठस्थ करना।
४ ग्रहण करना, स्वीकार करना।
उ०—क्या मुखिया क्या सीखीया, क्या व्है कथीया ग्यान। जन-हरीया हरि पाईयै, अंगीयै अतर ध्यान।—अनुभववाणी
५ परस्पर एक मत होना।
ज्यूं—नरपत री घर रौ सीखावणौ आया।
सीखणहार, हारौ (हारी), सीखणियौ—वि०।
सीखिओड़ौ, सीखियोड़ौ, सीख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
सीखीजणौ, सीखीजबौ—कर्म वा०।
सीखन—स. स्त्री —१ सीखने की शक्ति या गति।
२ सीखने की क्रिया।
३ स्मरण शक्ति, याददाश्त।
सीखामण—स स्त्री —१ सिखाने की क्रिया या भाव।
२ शिक्षा, नसीहत।
उ०—१ मानव चोळ देई सीखामण, इण माझूढ़ै नाह। पहली प्रीति घणेर मारेसी, रही हवास नाह।—रा दे प्र.
उ०—२ ... सीखामण ... नाह, ... सीरठिड नाह। ... मुड़ना मीर, ... नाह नीर।
—रा दे प्र.
उ०—३ इण सीखामण ... ए, ... ए। ... ए।—... वाणी
२ सलाह, राय।
सीखा—देखो 'सिखा' (रू. भे)
उ०—... सीखा ... है। ... सीखा ... है।—... वाणी
२ देखो 'सिक्षा' (रू. भे)
सीख्या—स. स्त्री.—१ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ... गुरु वर्ण होते है।
२ देखो 'सिखा' (रू भे)
सीगणि, सीगणी—देखो 'सींगण' (रू. भे)
उ०—श्रीठ तोड पाणो तुरंग पलाण, सीगणि चोट लीया हरि-नाम।—पी. ग्रं
सीगी—देखो 'सिंगी' (रू भे)
उ०—सेली सीगी पेखना, ... गुदरा पानि। ... जुगति बिन, पच न मर्ग पाखि।—अनुभववाणी
उ०—२ वाजै सीगी पूरै नादा, अनहद का नहीं जाणै स्वादा।
—अनुभववाणी
सीघ्र–वि [स शीघ्र] १ अविलम्ब, तुरत, जल्द, चटपट।
क्रि वि.—२ जल्दी से, फुरती से, तुरंत।
स. पु —१ पृथ्वी के दो भिन्न भिन्न स्थानों से ग्रहों को देखने में आने वाला अन्तर।
२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम। (सू प्र)
सीघ्रकारी–वि. [स शीघ्रकारिन्] १ शीघ्रता करने वाला।
२ फुर्तीला।
३ शीघ्र प्रभाव करने वाला।

हुई होती है।

क्रि. वि.—१ तक, पर्यन्त।

२ देखो 'सी' (वि) (रू भे)

उ०—म्हारै कान मैं धीरै सीक कानाफूसी माय वोली।—तिरसकू

रू. भे.—सीक।

सीकदार—देखो 'सिकदार' (रू भे.)

सीकदारी—देखो 'सिकदारी' (रू भे)

सीकर-सं पु [स. शीकर] १ जलकण, पानी की बूद।

उ०—१ केवडा कुसुम कुंद तणा केतकी, स्रम सीकर निरझर स्रवति।—वेलि

उ०—२ अराना हुसै डूंगरा रैण आटै, छदीजै करा सीकरां गैण छाटै।—वं भा.

२ वायु द्वारा उत्क्षिप्त जल विंदू, वर्षा की फुआर।

३ स्वेद, पसीना।

सीकल-स. पु. [अ. सैकल] १ हथियार पर लगे जग को छुडाने की क्रिया।

उ०—तांडला दळा ड्गळा टूक रूडला रूळा सीक्ळा रूक।

—गु. रू व.

२ देखो 'सकल' (रू भे.)

सीकाळ-स पु—शीतकाल।

उ०—जळ खूटै सीकाळ, रग मूंगो पड ज्यावै। ज्यू घोस्योडी भाग दूर सू वरण दिखावै।—दसदेव

सीकिरि—एक विशेष प्रकार का छाता।

उ०—दिसि दिसि सीकिरि डामर चामर ढलइ समांति। वाजइ तूर अनाहत नाद् तणइ अनुभावि।—जयसेखर सूरि

सीकिसन—देखो 'स्रीकिसन' (रू. भे)

उ०—करै चित खात निस दिवस रटरै 'किसन'। सीकिसन सीकिसन सीकिसन सीकिसन।—र ज. प्र.

सीकोट-स. पु—१ शीतऋतु मे पश्चिमी क्षितिज पर दृष्टिदोष के कारण दिखाई पडने वाला नगर, मकानात आदि का मिथ्याभास जो सूर्य के कुछ ऊपर चढने पर मिट जाता है, गधर्वनगर।

उ०—१ भुरजां रा कोसीस नै धमळहर धसळगिर पहाड ज्या वादळा रा किरण सारिखा उजळा सीकोट सो नीजरि आवै छै।

—रा. सा स

उ०—२ तू भासकर भाळियळ, वरै घडा अणवोट। भागा जो वड भाखरा, सर हदा सीकोट।—गु. रू व.

२ वायु प्रवाह के कारण पानी, मिट्टी या धुएँ का उठने वाला समूह।

उ०—उत्तर आज स उत्तरइ, ऊपडिया सीकोट। काय दहेसी पोयणी, काय कुवारा घोट।—ढो. मा

३ तेज गति के कारण उत्पन्न ध्वनि।

सीकोतर, सीकोतरि, सीकोतरी-सं. स्त्री.—कलह प्रिय स्त्री।

उ०—धन उमराणो धाट घर, पदमणिया विण पार। सह नारी सीकोतरी, धरती सिंघ धिकार।—वा दा.

२ प्रेतनी।

३ एक युद्ध प्रिय देवी, रणचडी।

उ०—१ सीकोतरी सक्कणी, प्रेत डक्कणी अपारा, विविध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारा।—रा. रू

उ०—२ वंनाळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द।—गु. रू वं

२ पिशाचिनी।

उ०—लख लख नाव महिख धड लावै, सीकोतरी तिण व्रत साधै।

—सू प्र.

सीखड—देखो 'स्रीखंड' (रू भे)

सीख-स. पु—१ शिक्षा, उपदेश।

उ०—१ विकथा तनै वल्लभ लागै, धरम कथा सुण खीजै रे। हिंसा कर कर हुवै तू राजो, किसी सीख तोय दीजै रे।

—जयवाणी

उ०—२ पण म्हारी सीख भळामण ई उणरै माथै मसाणिया वैराग वाळो असर जरूर कियो पण चिकणा घडा माथै छांट नी लागी।—अमरचूनडी

उ०—३ नी वानै आपरै हीया री उपजती अर नी वै किणी दूजा री सीख मानता।—फुलवाड़ी

३ युक्ति, उपाय।

३ परामर्श, सलाह, राय।

उ०—मासी वात नै मरोडता थकै कैवण लागी—विरथा भिकाळ रै लारै धोवा धोवा धूड, अबै थनै लाख रीपिया री सीख वतावू। विसराजै मती।—फुलवाडी

४ किसी को परिश्रम व मेहनत के फलस्वरूप दिया जाने वाला उपहार, इनाम।

उ०—१ जळवा रै दूजै दिन ई इक्कीस मोहरा भनाय दायण मा नै सीख दे दी।—फुलवाडी

५ याचको को रवानगी के समय दिया जाने वाला द्रव्य।

क्रि प्र—दैणी, लैणी।

६ एक लोकगीत जो लडकी को ससुराल विदा करते समय उसके पीहर की औरतें गाया करती हैं।

७ मागलिक अवसरो पर अपने रिश्तेदारो या अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियो को भेट स्वरूप दिया जाने वाला उपहार।

उ०—वोली पिंडतजी थें म्हारै कहै इत्ता फोडा भुगतिया। थारो औ ओसाण जीवूं जित्तै नी भूलूं। वाई री सीख पछै थारी सीख मैं कमी-वेसी रै जावै तो म्हनै कैजो।—फुलवाडी

क्रि प्र—दैणी।

आवाज ।

[अ] ५ नगर, शहर।

रू. भे —सिटि, सिटी ।

सीडी, सीढी-स. स्त्री. [स. निश्रेणी] १ मकान की छत या किसी ऊंचे स्थान पर चढने के लिए पत्थर या लकडी का बना जीना, सोपान, निसैनी, पेडिया ।

उ०—१ वसघर फील कियो फिलवाणं, आरोह्यो सीढी पग आणं ।—रा. रू.

उ०—२ जिस अवास की सीढिय् के ऊपर रगदार सवजूं पसमीन पायदाज राजै ।—सू. प्र.

पर्याय —अवरोह, आरोह, आरोहण, निसेणी, सोपान ।

२ वास का बना लम्बा ढाचा, जिस पर मृतक के शव को श्मशान ले जाया जाता है, अर्थी ।

उ०—१ जीवता सेठा री सीढी वारै निकळताई सेठाणी अरडा अरडा रोवण ढूकी ।—फुलवाडी

उ०—२ ताहरा सहर रै दरवाजे चच आढै नू सीटी मैं लै अर काधीया नीसरीया ।—लाखा फूलाणी री वात

३ लाक्षणिक अर्थ मे क्रमश. विकसित करने वाली अवस्थाएँ, उन्नति के रास्ते ।

रू. भे.—सेढी ।

सीणौं-स. पु —१ कपडे सीने का कार्य ।

उ०—चाकी चूला पोत, छाणनी, पोणौ । तीज तिवार मनाय, माजणो, सीणो, धोणौ ।—सैंज सूझ

२ देखो 'सीणी' (रू भे)

(स्त्री. सीणी)

सीतग, सीतग—देखो 'सितग' (रू भे)

सीतगियौ, सीतगी—देखो 'सितगियौ' (रू भे.)

सीतसु, सीतसू—देखो 'सितासु' (अ मा)

सीत-स. पु —१ पागलपन, सनक ।

उ०—१ या रै मूडा सू वाप रै चेता री वात सुणनै राजो व्है जातो अर वारै सीत री वात सुणनै अणूतो विलखो व्है जातो ।

—फुलवाडी

उ०—२ मेट ताप म्हाराज, भाव मेटो भरणाटै । मेटो करजुर जोर, सीत मेटो सरणाटै ।—अग्यात

२ सन्निपात ।

उ०—१ सेठ तो सीत मैं वकै ज्यूं अरळ-विरळ वकण लागा ।

—फुलवाडी

उ०—२ कंवण लागी—म्हारी काली वाता रो कोई मथारो थोडो ई है । म्हैं तो सीत मैं वेलै ज्यूं अस्टपोर वेलू ।—फुलवाडी

३ जाडा, सर्दी । (डि. को.)

उ०—१ अरक पेख फिर उदो, मिटै तम तारामडळ । गयो सीत भैभीत, जागि पेटै जाळानळ ।—गु रू. व.

उ०—२ घोटै धावै धन करै, सहै घाम सिर सीत । जनहरीया नर छाडियो, साटि गटाउ मीत ।—अनुभववाणी

४ शरद ऋतु, शीतकाल ।

५ लताओ का कुज । (अ. मा.)

वि.—१ ठडा, शीतल । ० (डि. को.)

३ मुफ्त, नि.शुल्क ।

उ०—यो सिर सोंहगो सीत को, पेम अमोलिक थाय । हरीया पीजै पेम कू, तो सिर साटै पाय ।—अनुभववाणी

४ देखो 'सीता' (रू. भे.)

उ०—जुडै तै वार किता छत्रजीत, मझार दहना वाळो सीत ।

—ह. र.

सीतअसु—देखो 'सीतांशु' (रू. भे.) (ना. मा.)

सीतकटिबध-स. पु [सं. शीतकटिबध] पृथ्वी के उत्तर व दक्षिण के कल्पित रेखाओ द्वारा विभाजित वे भूभाग जो २३½ डिग्री के बाद माने जाते हैं । (भूगोल)

सीतकर-स पु. [स. शीतकर] जिसकी किरणे शीतल हो, चद्रमा ।

वि —१ ठडा करने वाला ।

२ ठढदायक, शीतल ।

सीतकसाय-स पु यौ [स शीतकषाय] किसी काष्ठौषध आदि का वह कषाय या रस जो उससे छः गुने ठडे पानी मे रात भर भिगोने पर तैयार होता है ।

सीतकाळ-स पु [स शीतकाल] १ सर्दी का मौसम, हेमत ऋतु ।

उ०—वहतै सीतकाळ वोळायो, औ वैसाख अजैगढ आयो ।

—रा रू

सीतकिरण-स. पु. [स शीतकिरण] जिसकी किरणे शीतल हो, चद्रमा ।

सीतकोट—देखो 'सीकोट' (रू. भे.)

सीतजुर, सीतजुवर, सीतज्वर-सं. पु. [स शीतज्वर] जूडी लग कर आने वाला बुखार, ठडा ज्वर, मलेरिया । (अमरत)

सीतता-स स्त्री [सं शीत+रा. प्र ता] शीतलता, ठडक ।

उ०—सगंधता तो भार ही मांझ हुई । त्रय हुओ छै । एही सीतता हुई । अर घणो भार कांधै लीयो छै । —वेलि टी

सीतनाथ —देखो 'सीतानाथ' (रू. भे)

उ०—निवाह सीतनाथ वाह सत चा नेहडा ।—र ज. प्र.

सीतपत, सीतपति, सीतपती—देखो 'सीतापति' (रू. भे)

उ०—सीतपत अनंत छै पण भेद न पाया ।—रामरासो

२ देखो 'सीतपित्त' (रू. भे.)

सीतपित, सीतपित्त-सं. पु [स. शीतपित्त] एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे खुजली, पीडायुक्त वमन, ज्वर एव दाह सहित त्वचा मे चकते से पड जाते हैं और वायु की अधिकता होती है ।

सीघ्रकोपी-वि. [सं. शीघ्रकोपिन्] १ जल्दी-जल्दी क्रोध करने वाला ।
२ चिड़चिड़े स्वभाव वाला ।

सीघ्रगामी-वि [सं शीघ्रगामिन्] तेज चलने वाला, द्रुतगामी ।

सीघ्रता, सीघ्रताई-स. स्त्री. [स शीघ्रता] जल्दबाजी उतावली, शीघ्रता, तीव्रगति ।
उ०—तुही पच्छ तारच्छ मैं सीघ्रताई. रती मूरती मैं तुही सुंदराई।
—मे. म

सीघ्रपतन-स पु. यौ. [शीघ्रपतन] संभोग या मैथुन मे वीर्य्य के शीघ्र स्खलित हो जाने की अवस्था, स्तंभन शक्ति का अभाव ।

सीट़-स स्त्री.—१ बकरियो के बालो या सूत आदि से बुनी पतली रस्सी जिससे बोरियें आदि सीते हैं।
स. पु.—२ साड, बैल। (क्षेत्रिय)

सीचांण(न)—देखो 'सिचाणौ' (रू. भे)

सीचाणौ-स पु —१ एक प्रकार का घोडा । (शा हो)
२ देखो 'सिचाणौ' (रू. भे)

सीजणौ, सीजबौ—देखो 'सीझणौ, सीझबौ' (रू भे)
उ०—१ रजपूती रंई नही, पूगी समदा पार। पातरिया रा पाद मैं, सीज गया सिरदार ।—ऊ का
उ०—२ दस सेर चावळा रो चरू चूला ऊपर चढाया ऊपरला चोखा सीज्या हाथ सू देख्या ।—भि द्र
उ०—३ खदबद खीचड, खीर, राबडी, रोटी रळीजै। जिनवा सैजळ तणा, सलूणी सोरो सीजै ।— दसदेव

सीजियोडौ—देखो 'सीझियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. सीजियोडी)

सीझणौ सीझबौ-क्रि अ [स सिद्ध] १ आग की आच पर पकना, परिपक्व होना ।
उ०—पण ढकणा रै माय सीझै सो सिरै ।—फुलवाडी
२ तपस्या करना, तपना ।
उ०—वधिया सील पोथी कथा, सुपह पथ सवारियो। सीझत आठ साका किया, वील्ह वैकुंठ सिधावियो ।—वील्हो
३ सिद्ध होना, सफल होना ।
उ०—१ कारज को सीझै नही, मीठा बोलै बीर। दादू साचै सब्द बिन, कटै न तन की पीर ।—दादूवाणी
उ०—२ कहे कहे का होत है, कहे न सीझै काम। कहे कहे का पाइयें, जब लग हिरदय न आवै रांम ।—दादूवाणी
उ०—३ दया थकी दौलत हुवै ए, सीझै सगळा काम। दसमै अगै कह्या ए, साठ दया तणा नाम ।—जयवाणी
उ०—४ जिणंदराय दरसण दीजो आज, जिणंदराय जिम सीझइ मुझ काज ।—वि कु.
४ जलना, भस्म होना ।
५ कमजोर होना, बलहीन होना ।
६ कष्ट, दुख आदि सहन किया जाना।
७ झुलसना।
सीझणहार, हारौ (हारी), सीझणियौ—वि०।
सीझिओडौ, सीझियोडौ, सीझ्योडौ—भू० का० कृ०।
सीझीजणौ, सीझीजबौ—भाव वा०।
सिजणौ, सिजबौ, सीजणौ, सीजबौ—रू० भे०।

सीझाणौ, सीझाबौ-क्रि स ['सीझणौ' क्रि. का प्रे रू.] १ पकाना, परिपक्व करना/कराना।
२ तपस्या करने के लिये प्रेरित करना ।
३ सिद्ध करना, सफल करना ।
४ जलाना, भस्म करना ।
५ कष्ट देना।
६ झुलसाना ।
सीझाणहार, हारौ (हारी), सीझाणियौ—वि० ।
सीझायोडौ—भू० का० कृ०।
सीझाईजणौ, सीझाईजबौ—कर्म वा० ।

सीझातर—देखो 'सय्यातर' (रू. भे)

सीझायोडौ-भू का. कृ.—१ पकाया हुआ, परिपक्व किया हुआ. २ तपस्या के लिये प्रेरित कया हुआ ३ सिद्ध या सफल किया हुआ. ४ जलाया या भस्म किया हुआ. ५ कष्ट दिया हुआ, त्रासित। ६ झुलसाया हुआ ।
(स्त्री. सीझायोडी)

सीझियोडौ-भू. का कृ —१ पका हुआ, परिपक्व हुवा हुआ. २ तपस्या किया हुआ, तपा हुआ. ३ सिद्ध, सफल हुवा हुआ. ४ जला हुआ, भस्म हुवा हुआ ५ कमजोर या बलहीन हुवा हुआ ६ कष्ट या दुख उठाया हुआ ७ झुलसा हुआ ।
(स्त्री सीझियोडी)

सीट-स स्त्री [अ] १ बैठने का स्थान, जगह ।
उ०—म्हैं सीट सू उठ खडचौ हुयौ ।—तिरसकू
२ आसन, गद्दी ।

सीटकी-स. स्त्री —पतली टहनी ।
उ०—नणद बाइ तोडै नीबडली रा पान, पन्ना मारू, देवरियो छिनगारो तोडै सीटकी जी म्हारा राज ।—लो गी.

सीटी-स स्त्री [स. शीतृ] १ वह पतली और महीन ध्वनि जो होठ और जीभ को सिकोड कर मुंह मे हवा बाहर फेंकने पर उत्पन्न होती है ।
क्रि प्र.—दैणी, लगाणी, बजाणी, मारणी ।
२ वह बाजा या खिलौना जिससे उक्त प्रकार की आवाज निकले ।
३ किसी विशिष्ट क्रिया द्वारा उत्पन्न होने वाली उक्त प्रकार की ध्वनि ।
४ निर्धारित समय पर नियमित रूप मे होने वाली किसी भोंपू की

सीतवीरज–स. पु. [स. शीतवीर्य्य] १ पाषाणभेद ।
२ पित्तपापडा ।
३ नीली दूब ।
४ वह जो खाने मे ठण्डा हो ।

सीतसिव–सं पु यौ [स. शीतशिव] सेंधा नमक । (डि को.)

सीतहर–सं पु. [सं शीतधर] १ चन्द्रमा, चाद । (अ मा.)
[स. शीतहर] २ सूय, सूरज । (अ. मा.)
[स. शीताहरण] ३ रावण ।

सीतहरन–सं. पु —गरुड । (ना. डि. को.)

सीतासु—देखो 'सितासु' (रू भे.)

सीता–सं स्त्री. [सं.] १ विदेहराज जनक (सीरध्वज) की पुत्री तथा श्रीराम दाशरथी की धर्मपत्नी । (अ मा.)
पर्याय—जगदवा, जानकी, भूजा, महमाया, महिजा, मैथली, वैदेही, सतवती, सती, श्री, हरिवाम ।
२ जमीन जोतते समय हल की फाल से बनने वाली रेखा ।
३ जोती हुई जमीन ।
४ एक देवी जो इन्द्र की पत्नी मानी जाती है ।
५ लक्ष्मी का एक नामान्तर ।
६ उमा का एक नाम ।
७ आकाश गगा की चार धाराओं में से एक ।
८ मदिरा, शराव ।
रू. भे —सिय, सिया, सी, सीत, सीय ।

सीताकुंड–स. पु. [सं.] सीतादेवी से सम्बन्धित वे कुड जो पवित्र माने जाते हैं ।

सीतानम, सीतानमी–स. स्त्री.—वैशाख शुक्ला नवमी ।

सीतानाथ–स. पु [स.] १ श्रीरामचन्द्र ।
२ श्रीविष्णु । (डि. को)
रू. भे.—सीतनाथ ।

सीतापत, सीतापति, सीतापती–सं पु [सं सीतापति] १ श्रीरामचद्र । (ना. मा)
उ०—सीतापत सुमर सुज अहनिस ।—र ज प्र.
२ परमेश्वर, ईश्वर । (ना. मा, ह ना मा.)
रू. भे.—सीतपत, सीतपती ।

सीताफळ–स पु. [स. सीताफल] १ कुम्हडे का वृक्ष ।
२ उक्त वृक्ष का फल ।
३ सुरवृक्ष । (अ. मा.)

सीतावर—देखो 'सीतावर' (रू भे)

सीतारमण–सं पु [स. सीता+रमण] श्री रामचन्द्र ।

सीताराम–स. पु यौ. [स. सीता+राम] सीता एव राम का युग्म । (डि. को.)

सीतारामी–म पु.—स्त्रियो के कठ का एक प्रकार का स्वर्णहार विशेष ।

सीतावट–स. पु.—चित्रकूट और प्रयाग के बीच का ऐक स्थान जहाँ बनवास काल में श्रीराम ने सीता के साथ निवास किया था ।

सीतावर–स. पु. [स.] श्रीरामचन्द्र ।
उ०—चित करणी अथवा दिमी न चाहै, आप विरद चा पखा उमाहै । पतित खीण कुळ हीण अपारै, तारै रे सीतावर तारै ।
—र. ज. प्र
रू. भे.—सियावर, सीतावर ।

सीतासित—देखो 'सितासित' (रू भे) (ह ना. मा)

सीतासुत–स. पु. [स] लव और कुश । (अनेका.)

सीतास्टमी–सं. स्त्री [स सीताष्टमी] फाल्गुन मास की अष्टमी ।

सीतास्वामी–स पु [स सीतास्वामी] श्री रामचन्द्र ।
रू भे.—सियास्वामी ।

सीतोदक–स. पु [सं. शीतोदक] एक नरक का नाम ।

सीताहरण–सं पु [स] रावण । (ना मा.)

सीयट्ट–स पु [स. शीतटम्] जल, पानी । (ना डि. को)

सीदडौ—देखो 'सीधडौ' (रू भे)

सीदवंत–वि —सिद्धियुक्त ।

सीदी–स. पु [अ. शीदी] हवश की रहने वाली हब्शी जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

सीदोरौ—देखो 'सीधोरौ' (रू भे)

सीदौ—देखो 'सीधौ' (रू भे)
उ०—मन मे सोच्यो कै अेक सीदो लेवण सारू पाच सौ कोस रा कुण गोता खावैला ।—फुलवाडी
२ देखो 'सिद्धौ' (रू भे)

सीध–स. स्त्री —१ किसी निश्चित लक्ष्य की दिशा ।
उ०—राजकवर तौ आगै की वात सुणी ई कोनी । उणी वाग री सीध में घोडौ वडगडायो ।—फुलवाडी
२ ठीक सामने की दिशा, जिसमे कोई घुमाव-फिराव न हो ।
उ०—सीध वाध सामणै चालै, कदै तकै ध्रुव तारियो । कूवं बीच मुह दे बोलै, भलो सुवावै वारियो ।—दसदेव
३ समान्तर दिशा या स्थान ।
४ पक्तिवद्ध, शृखलावद्ध ।
ज्यूं—अै तीनू घर एक सीध में है ।
५ प्रस्थान, रवानगी ।
उ०—घर की घणी भोळावण दीध, सेठ तिहा थी कीधी सीध । प्रोहित आवै सभाल, न सकै कर बाको वाल ।—ध व ग्र
६ देखो 'सिद्ध' (रू. भे)
उ०—ओघा नै वलि मुखपति जीवा, मेरू जितरा लीध । किरिया समकित वाहरी जीवा, एको काज न सीध ।—जयवाणी

रू भे —सीतपत, सीतपति, सीतपती ।

सीतप्रसाद-स पु.—साधु महात्माओ का उच्छिष्ट (जूठा) प्रसाद ।

उ०—काम करै नही काज करै कछु, सीरो चरै सदाई। सीतप्रसाद नाम घर सौंधा, खूब्रहि ऐंठ खवाई ।—ऊ का.

रू भे —सीतळप्रसाद, सीळप्रसाद ।

सीतमाण, सीतभांन, सीतभांनु-स. पु [सं शीतभानु] चद्रमा का एक नाम ।

सीतरित, सीतरितु-स स्त्री. [स. शीतऋतु] हेमन्त ऋतु ।

उ०—ऊठी सरद सीतरित आई, सकळ दळै वणि सोभ सभाई । —रा रू

सीतरूख, सीतरूख-स. पु —चदन । (अ मा; ना मा; ह ना. मा)

सीतळ, सीतल-स पु [स. शीतल] १ चन्दन ।

२ मोती ।

३ चन्द्रमा ।

४ कपूर ।

५ पद्मकाठ ।

६ पीत चदन ।

७ बर्फ ।

८ एक प्रकार का व्रत । (जैन)

वि.—१ शीतलता प्रदान करने वाला, ठडा । (डि को.)

उ०—१ थळ जेथी ऊचा घणा, नीर न लब्भै कोय । सीतळ निरमळ ईख सम, जहा प्रगट जळ होय ।—गज-उद्धार

उ०—२ अग जातै आयो मनै, आयो पोस अवन्न । पसरता उत्तर पवन, घर सीतळ रवि घन्न ।—रा रू.

उ०—३ साई गहरा रूखडा, सदा'ज सीतळ छाह । हरीया पछी वापडा, ता विच केळ कराह ।—अनुभववाणी

२ जिसमे जोश न हो, शात ।

उ०—मोडे मुख मोडै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणने सीतल सतवाळी ।—ऊ. का

३ प्रसन्न, खुश, आनदमय ।

उ०—है जाह जोति सदा तन सीतळ, ताप न तिन कु लागै । तिल विन तेल दीया विन वाती, एक अखडत जागै ।—अनुभववाणी

४ सतुष्ट ।

उ०—हरीया जब सीतल भया, सब तै एक सभाय । राग दोस अतर नही, सुख सतोस समाय ।—अनुभववाणी

५ देखो 'सीतलनाथ' ।

उ०—सीतल दसम इक्यासी गणधर मुनि लख एक । साहुणी पिण इक लख हीज, अधिकी छए विवेक ।—घ व ग्र.

सीतळचीणी-स स्त्री [स शीतल+हि. चीनी]—कवाव चीनी ।

सीतळता, सीतळताई-स स्त्री. [स. शीतलता] १ ठंडक, शैत्य, तरी, नमी ।

उ०—१ लूआ थां लारी लियो, छाणी सा घर आय । सीतळता लीधी सरण, साठीका मैं जाय ।—लू

उ०—२ फूल जु सकुच्या था । अर वास नै ग्रही रहीया था । त्यांह तो वास छोडी । विकस्या । अर ग्रहणा हुता तेहै सीतळता ग्रही ठढा हुआ ।—वेलि टी.

२ शांति, सतोष ।

उ०—१ गही एक मधि अगुली, सुख सीतळता थाय । जनहरीया दुह अंगुली, गहीया आग लगाय ।—अनुभववाणी

उ०—२ अहू आगि जा घट वसै, पेम जिगासा नाहि । हरीया वासा पेम का, मन सीतळता माहि ।—अनुभववाणी

३ जडता ।

सीतलनाथ-स. पु [स शीतलनाथ] जैनियो के वर्तमानकालीन दसवें तीर्थंकर का नाम । (स. कु)

सीतळपुहण-स पु [स. शीतला+प्रवहणम्] १ रासभ गधा । (ह नाँ मा)

रू भे.—सीतळप्रुहण ।

सीतळप्रसाद—देखो 'सीतप्रसाद' (रू. भे)

उ०—वकतौ मैं वाद वाद, बूझन करतौ विवाद । सीतळप्रसाद सरब जात कौ जिमाता ।—ऊ. का.

सीतळप्रुहण, सीतळप्रूहण—देखो 'सीतळपुहण' (रू भे)

सीतळवाह, सीतळवाहण—देखो 'सीतळावाहण' (रू भे)

सीतळमुद्रा-स स्त्री [सं शीत+मुद्रा] शरीर के किसी अग पर केसर की लगाई जाने वाली शख, चक्र, गदा, पद्म की छाप, मुद्रा । (मा. म.)

सीतळरूख-स पु. यौ. [स शीतल+वृक्ष] चदन वृक्ष । (ना. मा)

सीतळा-स स्त्री [सं शीतला] विस्फोटक रोग विशेष, चेचक ।

उ०—१ पछै बुधसिंघ नै कहै छै, सीतळा नीसरी थी, तिण मैं विस हुवो ।—नैणसी

उ०—२ तनि दरसाणी सीतळा, जुगराणी जममाय । सरम ग्रही देवासुरा, सुख कज धरम सहाय ।—रा. रू.

क्रि प्र — ढळणी, दरसणी, निकळणी ।

२ उक्त रोग की अधिष्ठात्री देवी ।

उ०—अस्वालव गवालव आल्यो, झटकै गधो सीतळा झाल्यो । —ऊ का.

३ नीली दूब ।

सीतळावाह, सीतळावाहण-स पु. [स शीतला+वाहन] शीतला देवी का वाहन, गधा । (डि. को)

रू. भे —सीतळवाह, सीतळवाहण ।

सीतळासातम—देखो 'सीळसातम' (रू भे)

सीतलास्टमी-स स्त्री [स. शीतलाष्टमी] चैत्र मास के कृष्ण पक्ष को अष्टमी जिस दिन शीतला माता की पूजा की जाती है ।

रू भे —सीळआठम ।

सीधका–स स्त्री —पडिहार वंश की एक शाखा ।

सीधाई–स स्त्री —१ सीधा, सरल या सहज होने की अवस्था या भाव ।

२ समानतर या सपाट होने की दशा ।

रू भे —सिदाई ।

सीधापण, सीधापणौ–स पु —१ सीधा होने का भाव, सरलता ।

२ भोलापन ।

३ सादगी ।

४ छल, कपट आदि से रहित ।

सीधी–स स्त्री —१ ऊंट की गति या एक चाल विशेष ।

२ देखो 'सीधौ' (स्त्री रू भे)

उ०—**सीधी** सैंणी सी सैंणी सुण सान्है, बैंमक पुरवसणौ हमणौं तजि हालै ।—ऊ का

सीधु, सीधू–स पु' [स शीधु] गुड या ईख के रस से बनी मदिरा, शराब ।

उ०—तिका सुधा रूप **सीधु** रा छाकिया नदनवन रैं नि॰ स सुधरमा सभा मैं बैठि सुरा रै साथ विलास कीधा ।—व भा

सीधोडौ, सीधोरौ–स पु —श्रीमाली ब्राह्मणो मे व्याह से एक दिन पूर्व होने वाली एक रस्म जिसमे वधु पक्ष की कुछ औरते वर के घर जाकर उसके मुंह के दही लगाती है । उनके जाने के पश्चात् कुछ व्यक्ति रसोई (खाद्य सामग्री) का सामान लेकर वर के यहां आते है ।

रू भे —सिधोरौ, सीदोरौ ।

सीधौ–स पु —१ ब्राह्मणो को भोजन के निमित्त दी जाने वाली कच्ची खाद्य-सामग्री जिसमे प्राय घी, आटा, मिर्च, नमक, दाल आदि अनिवार्य होते है ।

उ०—१ गाढा बामण मागै **सीधौ** नै बामणी मागै ठोर । बाईसा रा वीरौ म्हारी नथडी रौ चोर ।—लो गी

उ०—२ ठाकर कैयौ—चोखी वात गुलाब री मा । घरा चालौ, **सीधौ** भेज रह्यौ हू ।—दसदोख

२ भोजन-सामग्री, खाद्य पदार्थ ।

उ०—१ गढ मैं वसण री तयारी कीवी । गाडा ३०१ **सीधा** रा भर चलाया सू जाय गढ पोहता, सु वारहठ रतनू चद्रभाला रौ विखायत थकां महेवै रह्यौ थौ ।—नैणसी

उ०—२ तठा पछै मडळीक नागहीरै घरै आयौ । तरै नागही सारा सोरठ रा लसकर नू नानी सी कोठी माहि सू **सीधौ** दियौ ।

—नैणसी

उ०—३ ताहरा पीठवै ईया नू डेरौ दिरायौ । हाट सू **सीधौ** सुगतौ दिराय दीयौ । हिवै दुनै वखतै मुजरौ करै ।

—पीठवै चारण री वात

३ देवताओ का चढाया जाने वाला प्रसाद ।

उ०—१ बोल्या—गिलपिली, हाजरिया थै दोनू जणा एकर अठीनै आवौ । भडारै सू पूजणी री पूरी **सीधौ** लै लेवौ अर गुलाब री मा रै घरै चढा आवौ ।—दसदोख

उ०—२ ठाकरा रै घर सू देवा रौ **सीधौ** आयौ देख'र गुलाब री मा रौ माथौ ठिणक उठ्यौ ।—दसदोख

४ रसोई, भोजन आदि का कार्य ।

ज्यू—सीधौ करणौ रह्यौ हू ।

वि (स्त्री सीधी) १ जिसमे फेर या घुमाव न हो, अवक्र, समतल एव समानान्तर ।

ज्यू—सीधा मारग, सीधी सडक, सीधी लकडी ।

२ जो किसी ओर ठीक प्रवृत हो, ठीक लक्ष्य, लक्ष्य के अनुसार ठीक ।

ज्यूं—खेतजी रौ निसाणौ सीधौ लागौ ।

३ जो कुटिल या कपटी न हो, सरल, सहज ।

उ०—सुज बीजै नर पका मनह **सीधौ** ।—र ज प्र

४ शांत, सुशील, शिष्ट ।

उ०—जग माही 'जसवत' रौ, **सीधौ** हुतौ सभाव । दिन उजळ नही वदळतौ, रक मिळौ चाहै राव ।—ऊ का

५ जिसका करना कठिन न हो, आसान, सुगम ।

६ जो जल्दी समझ मे आवे, जो दुर्बोध न हो ।

७ जो विरुद्ध न हो, अनुकूल ।

८ उल्टे का विपर्याय, मुख्य बनावट को ऊपर या सामने रखते हुए ।

ज्यू—सीधौ कमीज, सीधी कमीज ।

९ ऊपर की ओर मुंह किये हुए, चित्त ।

उ०—**सीधौ** सुवाण पछै'र करणौ री आस्या सीचावै है ।

—दसदोख

१० स्पष्ट, सही, सत्य ।

ज्यू—गुचळक्या मत खा, **सीधी** वात वतादे ।

११ उद्दण्डता रहित, चुपचाप, शान्त ।

ज्यू—**सीधौ** सीधौ जाई परौ नी'तर मार खावेला ।

१२ उचित, ठीक ।

१३ अपनी ओर ।

ज्यू—फाटक सीधी खीचण सू खुलेला ।

१४ बिना इधर-उधर मुडे गन्तव्य की ओर ।

उ०—पण तौ ई जूझळ रै उपरात देवळी तौ पूगणौ ही हुज । **सीधौ** साइकल वाळा री दुकान मायै गियौ ।—फुलवाडी

१५ बेरोक-टोक, बेहिचक ।

उ०—१ फौजी बूटामे पासोजा पैरचा ही **सीधौ** माळ मे आ धमक्यौ ।—दसदोख

उ०—२ आडी खुलता ई कवर ता **सीधा** जुम्मा मायै ढळमता

२ सीमा पर होने वाला अवरोध।

सीमिका–स स्त्री —चारणकुलोत्पन्न एक देवी का नाम।

सीमीतमुख–स पु [स सीमितमुख] नासमझ, मूर्ख। (ह ना मा)

सीमेंट–स स्त्री [अ] मकान आदि की चुनाई मे काम आने वाला एक प्रकार का महीन चूर्ण जिसमे बालू बजरी मिलाने पर गारा बनता है जो पत्थरो की जुडाई एव प्लास्तर आदि की मजबूती के लिए प्रयोग मे लाया जाता है।

रू भे —सिमट, सीमट, सीमट।

सीमेल–स स्त्री —१ सीमा, सरहद।

२ मर्यादा।

३ वन, जगल।

सीय–स पु [स शीत] १ शीत, सर्दी, जाडा।

उ०—१ उत्तर आज स वज्जियउ, **सीय** पडेसी पूर। दहिसी गात निरध्धणा, धण चगी घर दूर।—ढो मा

उ०—२ माह मास **सीय** पडै अति सार, रामजती घन शवय कुमारि।—वी दे

२ देखो 'सीता' (रू भे)

उ०—इसवर **सीय** चढै रथ ऊपर, तहक सारथी खडै तुरग।
—र रू.

सीयउ—देखो 'सीऔ' (रू भे)

उ०—एकतर ताप **सीयउ** दाह उखद बिण जायइ थइ साह।
—म कु.

सीयमाळ–स पु—शृगाल, स्याल।

उ०—आडी आवज्यौ इधणहार, बूड मल्हालौ वा **सीयमाळ**। चाल्यौ राजा जाई भोवाळ।—वी दे

सीयल–स पु—१ शीतलनाथ स्वामी का एक नाम।

२ देखो 'सील' (रू भे)

३ देखो 'सीतल' (रू भे)

४ देखो 'सीतळा' (रू भे)

उ०—पछै राव उदैसिघ **सीयल** सू मुवो।—नैणसी

सीयळौ–वि (स्त्री सीयळी) १ शीतल, ठडा।

उ०—नही ताता नहि **सीयळा** न ऊडा पगारा।—केसवदास गाडण

२ देखो 'सीयाळौ' (रू भे)

सीया—देखो 'सीता' (रू भे)

उ०—१ अवका पूजण नै आयी **सीया** बाग मै, पूजण नै पूजापो लाई थाल लाइ हाथ मै, सग मै सहेल्या लाई निरखै रघुनाथ नै।
—लो. गी

उ०—२ **सीया** ऊभी भावोसा री पोळ राम रथ हाक दियौ। सीया मागै मोई माग पीछै रथ हक जामी।—लो. गी.

सीयायक—देखो 'सहायक' (रू भे)

सीयार—१ देखो 'सार' (३८) (रू भे)

२ देखो 'सियार' (रू भे)

३ देखो 'स्रगाळ' (रू भे)

सीयाळ, सीयाल—देखो 'स्रगाळ' (रू भे)

उ०—बळ वी बुध अधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल। आवत बाघ विणासियौ, एकलडइ **सीयाल**।—प च चौ

सीयाळइ, सीयालवी–क्रि वि —शीतकाल मे, सर्दी मे।

उ०—आज **सीयाळइ** सी पडै, गात्यूं कूकै स्याळ। ज्यारा साजन घर नही, व्हारा बुरा हाल।—अग्यात

वि —शीतल, ठडी।

सीयाल, सीयालक—देखो 'स्याल, स्यालक' (रू भे)

सीयाळ, सीयाळू–स. पु —१ खरीफ की फसल।

२ शीतकाल मे उत्तर दिशा से बहने वाली ठडी हवा।

वि —१ शीतकाल सम्बन्धी, हेमत ऋतु का।

२ शीतकाल मे पकने वाली।

रू भे —सियाळू, स्याळू।

सीयाळौ–स पु [स शीतकाल, प्रा सीअआल, रा सीयाल+रा प्र औ] शीतकाल, शीत ऋतु, हेमत ऋतु।

उ०—१ सौ **सीयाळा** मैं राजकुमारी रौ जनम हुवौ है जिण सू जचा रै तापण नै तपणी लाया है। - वी स टी

उ० -२ **सीयाळै** पाधारिया, गढ महाराज 'अजीत'। अवतागी मिळियौ 'अभौ', सूरज तेज सप्रीत।—रा रू

उ०—३ उनाळौ आछौ नही, बरसाळौ सहसत। **सीयाळै** मत सचरौ, कामण वरजै कत।—अग्यात

रू भे —स्याळौ, सियाळौ, सीयळौ।

सीयौ—देखो 'सीऔ' (रू भे)

सीयौदाउ–स पु—प्रथम जाडा लगकर बाद मे उष्णता उत्पन्न करने वाला ज्वर।

सीर–स पु—१ साझा, हिस्सा, साझेदारी, हिस्सेदारी।

उ०—१ उणनै पक्कौ विस्वास हौ कै घरवाळा किसै मूडै नटैला। नटण री तौ गुजाइस ई कोनी। कमाई मे बट लेवणिया, करमा मैं ई **सीर** राखैला।—फुलवाडी

उ०—२ म्हारै साथै वौपार मै उणरौ थोडौ घणौ **सीर** राख देवूंला।—फुलवाडी

क्रि प्र —काढणौ, घालणौ।

मुहा —सीर री धन स्याळ खावै=साझेदारी अच्छी नही होती।

२ हिस्सा, भाग।

३ लाभ।

उ०—भाराणी दुख भजणौ, गुण रजणौ गहीर। जाम खजानै जगत रौ, साहिब कीधौ **सीर**। —बा दा

स स्त्री [स सिरा] ४ कुओ मे आने वाली वह झिरी या जलधारा जो भूमि के मध्य तल मे अविरल गति से निरतर बहती है, स्रोत।

५ नरक विशेष का रहने वाला।

सीमतनी—स स्त्री [स सीमतिनी] महिला, स्त्री। (ह ना मा)

सीमतोन्नयन—स पु [स] हिंदुओं के दस सस्कारों में से तृतीय सस्कार जो गर्भाधान के चौथे, छठे, आठवें मास में होता है।

सीमधर—स पु—प्रथम विरहमान जिनेश्वर का नाम। (जैन)

उ०—१ म्हारी सका तौ **सीमधर** स्वाम मेटसी। पद्रह दिन आमरै सथारौ आयौ आऊखौ पूरौ लियौ।—भि द्र

उ०—२ स्री **सीमधर** सुंदर साहिवा मदरगिरि समधीर मलूणा।
—वि कु

सीम—स स्त्री [स] १ जगल, वन।

२ वेला, समय। (ह ना मा)

३ देखो 'सीमा' (रु भे) (डि को)

उ०—१ वैठौ सूर तखत गजवधी, **सीम** जितै सामद्रा सधी।
—रा रू

उ०—२ वारहट केसरी भीम का भीम, सूरा तै सिरकम कविराजा की **सीम**।—रा रू

रू भे—सीव।

क्रि वि—तक, पर्यन्त।

उ०—१ छम्मास **सीम** आविल किया रे, राम्यु सील रतन्न रे। पाछी आणी वलि पाडवै रे, पणि स्रीकृस्ण जतन्न रे।—स कु

उ०—२ आदीस्वर आहार न पाम्यउ, वरस **सीम** कहिवाय जी। खाता पीता दान देवता, मत कौ करउ अतराय जी।—स कु

सीमट—देखो 'सीमेंट' (रू भे)

सीमण—स स्त्री—एक प्रकार का वाम।

सीमति, सीमती—देखो 'स्रीमति' (रु भे)

उ०—नेहइ नव भव वोधिय दीधिय उग्रसेन राय। कुअरि भनीय राजीमति **सीमति** तिहुयण माहि।—जयसेखर सूरि

सीमात—स पु—जहाँ सीमा का अन्त होता हो, सरहद।

सीमा—स स्त्री [स] १ किसी प्रदेश या स्थान के विस्तार का अतिम छोर किनारा सरहद। (टि को)

उ०—१ इत्यादिक अपसकुन तजी, गयौ सनमुख ताम। **सीमा** मेढै उतरचौ, वीरसेन उल्लास।—वि कु

उ०—२ सलै हुई सुख ऊपनौ, भागी दळा दुवाळि। **सीमा** सीमा गढ मुलक, सगळै लिया सभाळि।—गु रू व

उ०—३ अठी भाणपुर रा खीची भरत सेण रै पोतै जयमल्ल तौ आपरी तरफ री **सीमा** रा खेडी रत्नगढ प्रमुख ववदारा गढ गजि भैसरोड सूधी आई अमल जमायौ।—व भा

२ सरहद का पत्थर, सीमा-चिह्न।

३ मर्यादा।

उ०—अविनासी अविकार असीमा, सुभ गुण दियण अनुग्रह **सीमा**।
—रा रू

४ तट, किनारा।

५ जोड।

६ अन्तरिक्ष।

७ खेत, क्षेत्र।

८ गर्दन का पिछला भाग।

९ विभाजक रेखा।

१० अण्डकोश।

रू भे—सीव, सीम।

अल्पा,—सीमाडौ।

सीमाड—स पु—सीमावर्ती राज्य, पडौसी राज्य।

उ०—१ अर अठी सत्रुमडळ रा **सीमाडा** ववावदारा नरेस धीरदेव १८४ रा देस दावण रौ सिवाह कीधौ।—व भा

उ०—२ मालौ **सीमाडा** मोयणा आलौ भाण री करोठी सोहै, दकाळौ काळ री भेरवाण रौ डचाक। विलाला पाण री दूत नाथ री हाक वाळौ, मालौ स्रीराण रौ भूतनाथ रौ भचाक।
—सूरजमल मीसण

उ०—३ जाजनेरा सावरा नू लूटिया जेहान जाणै, मारा जोम हीण होय छूटिया **सीमाड**।—चावडदान महडू

वि—सीमा पर रहने वाला, पडौसी।

उ०—साड **सीमाड** जग जेठ ऊवासिरौ, आवळै थाट 'दूदा' उजाळौ।—अग्यात

क्रि वि—सीमा पर।

उ०—अर वडा वडा देस पति **सीमाड** जिण रा प्रग्यान सू आतक धरै।—व भा

२ देखो 'सीमा' (रु भे)

रू भे—सिमाड।

सीमाडी—वि—सीमा का, सीमा सम्बन्धी।

उ०—गजै दुरग अढगाण सेलासा वका गिरद, तजै डेर **सीमाडी** धरा ताजा। महाकाळी अजड खळा मोसणा सजै, रजै नह धूकळा विना राजा।—हुकमीचद खिडियौ

सीमाडौ—देखो 'सीमा' (अल्पा, रू भे)

सीमाणौ, सीमावौ—देखो 'सीवाणौ, सीवावौ' (रू भे)

उ०—दरजी कै नै वेग बुलाय, हरजी सू हेत लग्यौ। राणी मा सती री पोसाक **सीमाय** हरजी सू हेत लग्यौ।—लो गी

सीमाणहार, हारौ (हारी), सीमाणियौ—वि०।

सीमायोडौ—भू० का० कृ०।

सीमाईजणौ, सीमाईजबौ—कर्म वा०।

सीमायोडौ—देखो 'सीवायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सीमायोडी)

सीमार—स पु—बढई का एक औजार।

सीमावरोध—स पु,—१ सीमा निर्धारण, हदबदी।

२ देखो 'सरदार' (रू भे)

सीरधर—स पु [स.] हल धारण करने वाला, बलराम।

सीरध्वज—स पु [स] १ बलराम का एक नाम।

२ सीता के पिता विदेहराज जनक का एक नाम।

सीरपाण, सीरपाणी—स पु [स सीरपाणि] बलराम का एक नाम। (ना मा, ह ना. मा)

सीरपौ, सीरपौ—स पु—१ भागीदारी, हिस्सेदारी।

२ लाभ।

३ भाग्य का लेख।

सीरबधी—स स्त्री—हिस्सेदारी, साझेदारी।

सीरमा—स. स्त्री—वह भूमि जिसमे बिना सिंचाई के रबी की फसल होती हो।

सीरवाळ, सीरवाळी—स पु (स्त्री सीरवाळण, सीरवाळणी) हिस्सेदार, भागीदार।

सीरवीरज—स स्त्री [अ शीबिरञ्ज] एक प्रकार की खीर विशेष जिसमे १० सेर दूध, १ सेर चावल, १ सेर मिस्री, १ दाम नमक डाला जाता है इससे पाँच रकाबिया भर जाती है।

सीरवी—स पु—१ एक कृषक जाति जो अपना उद्गम राजपूतो से बताते है।

उ०—वीलाडै रा चौधरीया दाखल भेळी **सीरवी** कुमार बसै, अरट ढीवडा सीरवी करै।—नैणसी

३ देखो 'सीरी' (रू भे)

उ०—१ जु रावळै रिजक रौ **सीरवी** श्री हुमी।—नैणसी

उ०—२ साजण संगा **सीरवी** सुखरा, जीव हेकलौ जासी। —भीखजी रतनू

सीरस—स पु [स शीर्ष] १ सिर, मस्तक।

उ०—१ पडै कटि **सीरस** वीर पठाण, मद्राचळ चक्र चमू मह-राण।—मे म

उ०—**सीरस** बिन वाहे सदा, सत्रा दळ समसेर। —नारायणसिंह सादू

२ एक प्रकार का वृक्ष जो अरावली पहाड की तलहटी मे पाया जाता है।

३ काला अजगर।

४ सिर का रोग।

सीरसक—स पु [स शीर्षक] १ किसी विषय का वह परिचयात्मक संक्षिप्त नाम, शब्द या वाक्य जो बहुधा लेखादि के ऊपर लिखा जाता है।

२ सिरा, चोटी। ३ खोपडी।

४ मस्तक, सिर।

५ युद्ध के समय सिर पर धारण किया जाने वाला टोप। (डि. को)

६ पगडी, साफा।

७ फैसला, परिणाम।

८ राहु।

सीरसोदय—स पु [स. शीर्षोदय] शिर से उदय होने वाली मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुभ और मीन राशियो का सामूहिक नाम। (ज्योतिष)

सीरामण, सीरामणी, सीरावण, सीरावणी—देखो 'सिरामण' (रू भे.)

उ०—१ **सीरावण** जीमण दोर्पैरी मारी, पीमण पोवण नै अारी पछलारी।—ऊ का.

उ०—२ साथै फौज छै। तठै जेठ रा दिन हुता। **सीरावणी** री फ्ठोरी साथै छै।—बूढी ठग राजा री बात

उ०—३ पहिरामणी **सीरामणी** नई करै चलावौ साथ। वीवाह कीधौ मुजब लीधौ तेडौ कुअरिनउ तात।—रुकमणी मगळ

सीराज—स. पु [फा. शीराज] १ किताबो की सिलाई के छोर पर लगाया जाने वाला फीता जो पुस्तक की सुन्दरता एव मजबूती के लिए लगाया जाता है।

२ प्रबंध, इन्तजाम।

३ क्रम, सिलसिला।

४ ईरान का एक प्राचीन नगर।

सिराफिणी—स. स्त्री—शिर का एक आभूषण विशेष।

सीरावणौ, सीराववौ—देखो 'सराणौ, सरावौ' (रू भे)

उ०—सीरी **सीरावै** ध्रम धीरावै निरदावै नीरदा है, लपमी नप-कावै तपसी तावै, आपा सीच उठदा है।—ऊ. का

सीरावा—स पु—एक जाति विशेष जो कूऐ खोदने का कार्य करती थी।

सीरावाविदया—स स्त्री—भूगर्भ मे पानी का पता लगाने की विद्या, कला।

सीरावियोडौ—देखो 'सरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सीरावियोडी)

सीरावौ—स पु. [स शिरावाह] १ वह व्यक्ति जो भूगर्भ मे पानी का पता लगा कर उसकी मात्रा एव मीठा या खारा होने की पूर्व जानकारी देता हो।

उ०—पैसठ हाथ रै पछै रेळी कारण बेरी खुदणौ दूभर व्हैगो तौ म्हे अेक वाजिदा **सीरावा** री सोय मैं निकळियौ।—फुलवाडी

२ सीरावा जाति का व्यक्ति।

रू भे—सियारी, सिरावौ, सेरावौ।

सीरी—वि (स्त्री सीरण) १ हिस्सेदार, साझेदार भागीदार।

उ०—१ विरद जात कुळ विना, वात कुळवत विचारी। सुम री **सीरण** खीया, वैठ रहै सोक तयारी।—अरजुणजी वारहठ

उ०—२ **सीरी** मिटिया रा मूल्हा रा सारा, भींडी भूखा रा फूला

उ०—वित जिम वाटै तिम वधै, आ है रीत अनाद। कुवा सूं जळ काढियैं, सीरा वधै सवाद।—वा दा

४ स्रोत, धारा, प्रवाह।

उ०—धरम धीर री धजा, मरम री सीर पुराणी। मालण मोटै मना, जुलम सूं अळगी जाणी।—नारी सईकडी

मुहा—सीर खुलणी=निरन्तर आय का जरिया उत्पन्न होना।

५ हल, लांगुल।

६ प्रवाह, धारा।

उ०—१ वाहे विस की क्यारियां ढोरै अम्रत नीर। जनहरीया क्या जाणसी, हरि रस हदी सीर।—अनुभववाणी

उ०—२ तट त्रिवेणी नीर की, चलै सीर चहू ओर। जनहरीया सौ चखीया, चाख न रखी कोर।—अनुभववाणी

उ०—३ सीरा छूटी चहु दिसा, अंत न कोई पार। जनहरीया पी मगनीया, तन कि सुधि न सार।—अनुभववाणी

७ नस, सिरा।

८ साथ, संग। (अमरत)

उ०—१ डिग सती रै तरवरा, सत मैं रैह सधीर। पाव पलक री बैठणां, घडी पलक रो सीर।—टो मा

उ०—२ जिण दक्खिण धर रो जरै, अरि हूंती 'अवरंग'। सोभी नै अव सीर में, जुटण चलायौ जग'।—व भा

९ सगत, सोहवत।

उ०—नित करस्या समकित निरमलो, निरमल जिम गगा नीर। तजस्या सगति निगुणा तणी, सुगणा सु करिस्या सीर।

—ध व ग्र

१० सम्बन्ध, तालुक, मेल-मिलाप।

उ०—१ अहल्या पद रेण उधरी, कियौ निरभै कीर। विभीखण कूं लक वगसी, साथ रावण सीर।—भगतमाळ

उ०—२ सदा क्षणभगुर जाण सरीर, सखा सुखसागर कू कर सीर।—ऊ का

११ सगम, समागम।

उ०—जिण दीहै पावस झरै, नदी सरवर नीर। तिन दिन कीजै 'जमा', साजणिया स सीर।—जसराज

१२ स्तनों की वह नसे जिसमें से दूध उतरता है।

सीरख—स पु [स शीत+रक्षक, प्रा सी+रक्खअ] १ सर्य।

(ना मा) (र कु को)

[स शीर्ष] २ सिर, मस्तक। (अ मा, ह ना मा)

उ०—नसैं सीरख चरण नीरज, धरै नहचौ करै धीरज। वाळ सरसी एण वाणां, भरम सह भागैं।—र रू

३ देखो 'सिरक' (रू भे)

उ०—१ पिलग पथरणै पौढते, लै नै सीरख सौड। सोवै सीटी सायरै, दौडि सघै तो दौडि।—अनुभववाणी

उ०—२ ताहरा सीरख ससेत दागिया। काटै तो हाट सकळि एक एक जूई हुवै तिण वासतै सीरख ससेत दागिया।—द वि

सीरखौ—देखो 'सारीखौ' (रू भे)

उ०—सीहै आप सीरखा, जोध जारा कायोवर। आसथान अणभग 'अज्ज' 'सोनग' दुनै कर।—गु रू ब

सीरख्ख—देखो 'सिरक' (रू भे)

सीरख्यौ—देखो सिरक (रू भे)

उ०—म्हारी सासू नै यू कह्यौ, वहू पोळ मैं दीवौ मेलजै, हू भोळी नै यू सुण्यौ, वहू मोड मैं दीवौ मेलजै, सोडवळै सीरख्या वळै, सासू वुझावा जाव हो।—लो गी

सीरण—वि [स शीर्ण] १ फटा-पुराना, जीर्ण।

२ मुरझाया हुआ।

३ देखो 'सीरी'।

सीरणकम, सीरणक्रम—स पु [स शीर्णकम] यमराज।

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

सीरणी—स स्त्री—१ किसी को प्रभु या गुरु मानकर चढाया जाने वाला प्रसाद, नैवेद्य।

उ०—१ छिडकी देवै, पूजणी करावै, सीरणी वाटै धजा टगावै।

—दसदोख

उ०—२ रसोई वणाई चूरमौ चूरचौ अर भूत देवता री जगा लै जा'र चढायौ। पोसाक लीनी अर गाव भर मैं सीरणी दीनी।

—दसदोख

[स शीतलिनी, प्रा सियरणी] २ मिठाई।

उ०—१ जीही वाध्या तोरण वाटै सीरणी लाला, चदन केसर हाथा दिराय।—जयवाणी

उ०—२ कदै न ल्याया भवरजी सीरणी जी, हाजी ढोला कदै न करी मनुवार, कदेय न पूछी मनडै री वारता जी ओ जी म्हारी लाल नणद रा ओ वीर था विन गोरी नै पलक न आवडै जी।

—लो गी

उ०—३ थिरसौ एक वेस अव्वल एक रूपयै सौ प्रोहित नू दिराय एक मण सीरणी मारग नू दीवी।—कुवरसी साखला री वारता

३ मनौती, सकल्प।

उ०—तद वादसाह सू अरज कराई जै म्हैं स्रीमदासिवजी नू सीरणी कवूली थी कै हजरत रै कदमा लागू तौ सीरणी करू सो हुकम हुवै तौ करू।—जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

४ नजराना।

उ०—तारा फौज हजार तीन लेर वनमाळीदास वीकानेर आयौ गरु पुराणै कोट कनै डेरौ कियौ। वा नवाव साथै हुतौ तिणनू रुपिया अेक हजार सीरणी रा वा मुझसानी रा दिया दरवार री तरफ सू तथा सिस्टाचार अवल तरै हुवौ।—द. दा.

सीरदार—वि—१ साझेदार, हिस्सेदार।

उ०—सोळै आभूसण साजिया, सुभ लछ सील सुभाव। भला पधारी भट्टण्या, पलका देती पाव।—रमण प्रकास
६ चरित्र, आचरण, चाल-चलन, नैतिक स्तर।
उ०—सील प्रताप सकळ ही सपत अगरेजा घर आई।—ऊ का
७ स्वभाव, आदत, बान। (अ मा, डि को, ह ना मा)
८ गुण, लक्षण।
९ सम्मान, आदर, झुकाव।
१० अनुशासन।
उ०—१ सील सवार रूस री सेना, लेती फिरत लराई। कर्के फतै तुरक लोकन की, हिम्मत खूब हराई।—ऊ का.
उ०—२ सील सहित सिवराज सितारै, खोस लूट धर ग्राई।
—ऊ का
स स्त्री [स शीतल] ११ आर्द्रता, नमी।
उ०—म्हाराज तळाव कोट रै नेडौ घणौ है। कोट री नीव में सील जावसी।—नैणसी री साकौ
१२ गाय के ऋतुमति की अवस्था।
[अ] १३ छाप, मुहर।
१४ वादा, वचन, प्रतिज्ञा।
उ०—१ तिरै हाला नै भीम माहोमाही सील कोल कियो। देवी आसापुरा बिचै दीवी।—नैणसी
उ०—२ सु फौज राव कला री ऊभी थी। तिण माहै माता असवारा सु आय पडीयौ। इणा मार लीयौ। सूली दीयौ। तरै मुगला रा परधान आय वरस दिन रा सील कोल किया।
— राव चद्रसेन री वात
वि —१ प्रवृत्त, तत्पर।
२ स्वभावयुक्त।
३ धैर्य।
४ विनम्र, शिष्ट।
५ पवित्र, निर्मल।
उ०—गति गगा मति गोमती, सीता सील सुभाय। महिला सिरहर मारवी, अवर न दूजी काय।—ढो मा.
रू भे —सियल।
सीळआठम—देखो 'सीतळास्टमी' (रू भे)
सीलणौ—स पु १ एवज, बदला।
उ०—१ राणि सोकळ चून री, कमी दिखावौ काय। औरा पहली सीलणौ, म्हारा रौ सिर जाय।—वी. स
उ०—२ महला लूटण वाडवी, झूंपडिया न सुहाय। झूंपडिया री लूट मैं, जीव सीलणौ जाय।—वी स
२ प्रत्युपकार।
उ०—जिण थी स्वतत्र सभव मे एक आपरा आलय हू काढि दैण रौ उपकार करि जिकण रा सीलणा मैं सहियौ न जाड इसडा अनेक अनरथ कुमाड सनमत्तं वहै तिकण रौ अत तौ इसहौ गटावै।
—व. भा
३ प्रतिकार, बदला।
४ क्षतिपूर्ति, हरजाना।
उ०—टरणौ री कुणसी बात छै कोई जै हिसाब मागसी तौ सीलणौ करस्यू।—ठा. जेतसी री वारता
रू. भे.- सिलवणी, सीलाणी।
सीलणौ, सीलबौ—क्रि, स. [स शील=समाधी, शीलनम्] १ किसी वस्तु के एवज मे अन्य वस्तु देना, प्रत्युपकार करना।
उ०—सावंद कवा खवाडिया, मीठा ने ले मोल। सहस गुणा मैं सीलिया, बोलै मीठा बोल।—बा. दा.
२ चुकाना, देना।
उ०—है बाभीजी मा आपरा गोखडा सू आपरा देवर री हयवाह तरवार वहती देख लेराश्री। बाभीसा आप खरच गिणता हा वो म्हारो पती सीलै छै।—वी. स टी.
३ वसूल करना, लेना।
उ० अजमेर हुवा नर एतला, नवलखरी उग्रह लिया। सीलत पाण सुरताण सू, कदळ सुरताणी किया। मालो आसियौ
४ आर्द्र करना, नमीयुक्त करना, ठंडा करना।
उ०—मधुर सोवणी राग, रीझवै आभो राजा। भीणी छाटा झिलै, सीलवै माळू गाजा।—दमदेव
५ बन्द करना, मुहरबद करना।
सीलणहार, हारौ (हारी), सीलणियौ—वि०।
सीलिओडो, सीलियोडो, सील्योडो—भू० का० कृ०।
सीलीजणौ, सीलीजबौ—कर्म वा०।
सीलवणौ, सीलववौ—रू० भे०।
सीळता—स स्त्री [स शीलत्व] शील धारण करने की अवस्था या भाव।
उ०—उछाही सत्यनिस्ठ, सीळता साहसधारी। समुचित अणद उदार, आण जूं आग्याकारी।- टावर सईकडो
सीलप्रसाद—देखो 'सीतप्रसाद' (रू भे)
सीळवरत, सीलव्रत—देखो 'सीळव्रत' (रू भे)
उ०—१ कठी तिलक दोवडी माळा, सीळव्रत सिणगारो। और सिंगार सोहै नही राणा जी, यौ गुर ग्यान हमारौ।—मीरा
उ०—२ पण सेठा री मन तौ सेठा रै वसू हौ, वै तौ उण दिन सू ई कोडाया होय सीलव्रत धारण कर लियौ।—फुलवाडी
सीलवत—देखो 'सीलवान' (रू भे)
उ०—१ एक साहिब रै गुलाम थौ सौ सीलवंत प्रभू सूं डर करण वाळौ थौ।—नी प्र
उ०—२ नायक देस मै सोतविर सवळा मेलै जिका भला आदमी

रा भारा । – क. का.

२ उत्तरदायित्व ग्रहण करने वाला उतराधिकारी ।

३ मायी, सगाती ।

उ०—१ हा ए म्हारी सोक कलाळी म्हारौ हार नौलखौ राख यै आवेली मदमातौ मारू म्हारौ सेजां रो सीरी जीनै थोडी थोडी दीजै ए दारूडी दाखां री ।—लो गी.

उ०—ए तीनौं मौ मेल छै । इसु श्रै म्हारी देही छै । वेळा बुरी रा सीरी छै । जितरै म्हाराज मया छै इतरै थै मरव म्हारा छौ।

—चौबोली

४ हक पाने का अधिकारी ।

५ मददगार, सहायक ।

उ०—घट घट दादू कह समभावै, जैसा करै सौ तैसा पावै । कौ काहू का सीरी नाही, माहिब देखै सब घट माही ।—दादूबाणी

उ०—२ सती आपनौ वर कियौ, मडा ममाना माहि । हरीया हरि विन दूसरा, मूंवा सीरी नाहि ।—अनुभववाणी

स पु —१ वलराम ।

२ देखो 'सिरी' (रू भे)

उ०—हडोई रा माम पासै चरवा मैं घातजै छै । सीरी होमनाक सुधारै छै ।—रा सा स

३ देखो 'स्री' (रू भे)

सीरीमाळी—देखो 'स्रीमाळी' (रू भे)

सीरियस—वि [अ] १ खराब, नाजुक ।

ज्यूं—उण री तवियत कँडीक है ? हाल तौ सीरियस है ।

२ गम्भीर ।

उ०—छोरया सू तौ उणा रा हमवँड भी कदै ई सीरियस वाता कोनी करै । लवरस रौ तौ सीरियस होवण रौ सुवाल ईज कोनी । जमानौ कितरौ वदळग्यौ है पवन ! छोरया आजन्काल डेटिंग भी सीरियस कोनी लेवै ।—निरसकू

सीरूखौ - देखो 'सारीखौ' (रू भे)

सीरोइयौ—स पु - चौहान वंश का क्षत्रिय ।

सीरोळौ—वि (स्त्री सीरोळी) १ साझेदारी का, सामूहिक ।

२ जिसके वहुत से व्यक्ति हकदार हो ।

सीरोही देखो 'सिरोही' (रू भे.)

उ०—वाकरा नू वरको करण रै पगा अळवळिया मोस्याग नू हुकम कीजै छै । सू अमीला सीरोहिया लेनै ऊठिया छै ।

—रा. सा स.

सीरौ—स पु [फा शीर] १ मैदे, आटे, वेसन, सूजी, दाल, गाजर, आलू आदि को घी मे भूनकर उसमे शक्कर, मेवा आदि पदार्थ मिला कर वनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध व्यञ्जन विशेप, हलुआ ।

उ० —१ थोडी मी हळदी रौ पुट देय गुळ रौ [illegible] सीरौ खवाड़ती । तीन दिन अर तीन रातां खाख मै कस ई नी जियौ ।

—फुलवाडी

उ०—२ आगै घणौ सीरौ पुडी देवजी रोटौ तयार हुवौ छै ।

—वैगसी

मुहा. - सीरौ खाता दात घसीजै तौ त्रौ घसीजता=बडे लाभ मे किंचित हानि हो तो कोई चिंता की बात नही ।

२ सीरौ वादी करणौ=दुर्भाग्यपूर्ण दशा होना ।

३ विगड्यौ तोई सीरौ राव सूं वत्तौ है=अच्छी परतु बिगडने पर भी कुछ तो काम की होती है ।

४ सीरौ गरमी करणौ=देखो 'सीरो वादी करणौ' ।

सीळ—देखो 'सीतळा' (रू. भे.)

उ० – पछै सीजी री कूच दिली नै हुवौ । सवत १७८२ माह मे परवतसर सीजी नु सीळ तुठी ।—रा. व. वि.

सीळ, सील—स पु [स. शील] १ सद् आचारण, सदाचार ।

उ०—१ चकडोळ लगै दृणि भाति सु चाळी, गति री बाला[illegible] न मू । सखी समूह माहि इम स्यामा, सीळ आवरित लाज सू ।

—वेलि

उ० - २ स्याम के सहाय मुरधर के किवाड । [illegible] पौरस के पहाड । दातार सूर सील कौ निवास । दीन के सहाय द्विज गऊ कौ दास । . सू प्र

२ नैष्टिक-ब्रह्मचर्य ।

उ०—१ हनूमान नै सीळ सदै हुय, [illegible] । [illegible] मान असुर की गरज्यौ, जब ही लक जराई ।—ऊ. का.

उ०—२ सील का सगेव भारथ का पाथ, [illegible] जोधाण का नाथ ।—सू. प्र

उ०—३ कोटन रिसी सील कै कारण, परम मुक्ति जिन पाई । ऊमरदान अब सील अराधत, परहर नार पराई ।—ऊ. का.

उ०—४ धुर तै सील फरग धर धारयौ, निगम [illegible] । क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, वार [illegible] बनाई ।—ऊ. का.

३ सयम ।

उ०—१ काम रिपू कू सील सू मारया, [illegible] त्याग । क्रोध कूं आय सतोख भपेट्या, मोह कू नी वैराग ।

—[illegible] महाराज

उ०—२ साध न आगै आपदा, सील सदा[illegible] । हरीया [illegible] न [illegible], सब सूं [illegible] समाय ।—अनुभववाणी

४ पतिव्रत धर्म, पातिव्रत्य ।

उ०— [illegible] गुणी [illegible] । [illegible]

[illegible] । — [illegible]

उ [illegible] । [illegible]

[illegible] ।—[illegible]

[illegible] ।

ऊपर सिंह की आकृति होती है तथा नीचे का हिस्सा मुडा हुआ होता है।

सीळोरा—स पु—पवार वश की एक शाखा।

सीळौ, सीलौ—वि (स्त्री सीळी) १ ठडा, शीतल।

उ०—१ रहे राम कै आसरै, सिर परि खेलै दाव। हरीया लगै न दाम कु, तता सीळा वाव। - अनुभववाणी

उ० २ परभातै गह डवरा, साझै सीळा वाव। डक कहै सुरा भडुली, काळा तरणा सभाव।—अग्यात

२ कायर, कातर।

उ०—राठौडा री कुळत्रिया, सीळा ग्रभ न धरत। ज्या भरतार न भजरणा, सै भजरणा न जरणत।—कैवाट री वात

३ आर्द्र, नम।

सील्हैखानौ—देखो 'सिलहखानौ' (रू भे)

उ०—उठै घोडा ऊठ था सौ सारा खोल लिया। बीजी वस्तु खजाना सील्हैखाना सभाळ लीन्हा।—सूरै खीवै काधलोत री वात

सीव—स पु [स सीमा] १ ईश्वर।

उ०—हरीया हरिजन हेक है, जीव सीव नही दोय। ज्यू नीर मिळाणा नीर मैं, फिर न्यारा नही होय।—अनुभववाणी

२ परब्रह्म।

उ०—१ जीव अर सीव करि एक जागी, मिल्या सिंध मैं सिंध ज्यू बूद पाणी।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया माया मोहनी, जा सु बधै जीव। ता सु तातौ तोडि करि, महज मिळेगे सीव।—अनुभववाणी

उ०—३ हरीया छाया विरख की, वधै घटै वहि जाय। मेळा जीव'र सीव का, न्यारा कवू न थाय।—अनुभववाणी

३ देखो 'सिव' (रू भे)

उ०—देवी नाद तू विद नव्व निन्धि, देवी सीव तू सव्व सिध्धि।

—देवि

४ देखो 'सीमा' (रू भे)

सीवरण—देखो 'सेवरण' (रू भे)

२ देखो 'सीवरण' (रू भे)

सीवरणौ—देखो 'सीवरणौ' (रू भे)

सीवरणौ, सीवबौ—देखो 'सीवरणौ, सीववौ' (रू भे)

सीवन—स स्त्री—१ सिलाई का कार्य, सिलाई।

२ सिलाई का जोड।

३ सीमा, मर्यादा।

उ०—सहु नामत सीवन सोध करै, वह आमत जीवन बोध करै।

—ऊ का

४ देखो 'सीवनी' (रू भे)

सीवनी—स स्त्री [स] लिंग के नीचे से गुदा तक जाने वाली रेखा।

रू. भे—सीवन।

सीवर—देखो 'स्रीवर' (रू. भे.)

उ०—१ अत चोप भजन सीवर उचर, ध्यान ह्रदय जुत चोप धर।

—र ज प्र

उ०—२ सीवर मारणौ जी केना निवळ सता काम।

—र. ज प्र

सीवळ—स पु [स शीतला] चेचक का रोग, शीतला रोग।

उ०—मै'र मैं सीवळ री रोळाटी फैलियौ। घर घर मैं छोटा वडा रै सीवळ निकळै। - वरसगाठ

सीवाडौ—देखो 'सीमाडौ' (रू भे) (डि को.)

उ०—रावा सिरहर राव, राजसिर हर रजवाडा। सथ सथ हर हैजमा, सक थक वरहर सीवाड़ा।—पना

सीविका—देखो 'सिविका' (रू. भे)

उ०—महोसच्छव जमाली नी परै, करि मोटै सडाणौ रे। सीविका मा वेसाणनै दाखै जै जै वाणौ रे।—जयवाणी

सीव्रवख, सीवक्ष, सीव्रख—देखो 'स्रीव्रक्ष' (रू. भे.)

सीस—स पु [स शीर्षम्] १ मस्तक, सिर।

(अ मा, डि को, ह ना मा)

उ०—१ रास रामत रमै ससै नवरातरी, नमौ कही जातरी सीस नासै। मातरी घणी वाता करामात री, पात री जीभ किम पार पासै।—मे म

उ०—२ न लाभत मावत सीस नत्रीठ, देती चक्र दट फिरै त्रण-दीठ।—मे म

२ ललाट, भाल।

उ० पेम प्रीत पतर पावोडी, सीस तिलक तत सारी रे। जन हरिराम लहै निज मन कु, द्यै अपना घर जारी रे।

—अनुभववाणी

३ खोपडी, कपाल।

अल्पा,—सीसडलो, सीसडौ।

[स शिष्य] ४ शिष्य, चेला, सागिर्द।

उ०—१ विद्या निधि वाचक भला रे, मेघ विजय तसु सीस। तस मतीरव्य वाचक वरू रे, हरस कुसल सुजगीस।—वि कु

उ० २ स्रीजिनचद सूरीस, सकलचद तसु सीस। नेह तरणइ सुपसायइ, समयसुदर गुण गायइ।—स कु

क्रि वि —पर, ऊपर।

उ०—१ इड विहारी राठवड, आया सोजत सीस। थिर जोधाणै घेरियौ, किर त्रकुटाचळ कीस।—रा रू

उ०—२ बोल खवास ताम कट वधै, कर डाढी धर सीस कमधै।

—रा रू

सीसकरणौ, सीसकबौ—देखो 'सिसकरणौ, सिसकवौ' (रू भे)

उ०—चाद चढ्यौ गिगनार गौरी रा बना घरै रे पधार। पडी पलग पै सीसकै कर कर बालम री याद, अरे गौरी रा बना घरै रे

भली चाल री होय ग्रर साची **सीलवंत** निरलोभी होय।
—नी प्र.

सीलवती, सीलवती–वि. [स. शीलवती] १ पतिव्रता।
उ०—१ परणवती पारणी **सीळवंती** सतवती, ग्रति मुगती हालियाँ किया माथै कुळवती।—रा. रू
उ०—२ पिण हू **सीलवती** मती रे हा, केम विटालु देह।
—वि कु
उ०—३ कौसल्या दसरथ नी काता महिमा घर राम तणी माता समार सराई **सीलवती**।—जयवाणी
२ ब्रह्मचारिणी।
३ ग्रच्छे ग्राचरण वाली।
४ शील धारण करने वाली।

सीलवणौ - देखो 'सीलणौ' (रू. भे)
उ०—मन सुध हुय मोनू ह, तै दीधी केसर तुरग। वाधव वाई नू ह, **सीलवणौ** कद सील मूं।—पा. प्र

सीलवणौ, सीलववौ—देखो 'सीलणौ, सीलवौं' (रू भे)

सीलवान–वि. (स्त्री सीलवती) १ सदाचारी।
२ ब्रह्मचारी।
३ ग्रच्छे स्वभाव व ग्राचरण वाला।
४ शील को धारण करने वाला।
रू भे—सीलवत।

सीळव्रत, सीलव्रत–स पु यौ [स. शील+व्रत] जैन धर्म के पाँच ग्रणुव्रतो मे से एक जिसमे श्रावक कुछ निश्चित समय या सदा के लिए विषय-वासना, मैथुन ग्रादि को त्याग देता है।
उ०—सेठाणी वीस वरसा ताई माय री माय धुकती री। पण ग्रेक दिन ग्रणूती गोटीजनै सेवट वा होठ खोल्या इज। कह्यौ—थं तौ **सीलव्रत** धारचौ सौ धणी ग्राछी वात। म्हं तौ दादफरियाद नी करी, पण कवारी वीवडी नै सील-व्रत मत लिरावौ।
—फुलवाडी
२ ब्रह्मचर्य व्रत।
३ पातिव्रत धर्म।
उ०—पदमणी पाल्यौ **सीलव्रत**, बादळ गौरा वीर। मीन वीर गावत सदा, खाड सली घ्रत खीर।—प. च चौ

सीलसमजथा–स स्त्री—डिंगल काव्य शास्त्र मे गीत रचना का एक नियम विशेष। (क कु वो)

सीळसातम–स स्त्री [स शीतलासप्तमी] चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की सप्तमी जिस दिन शीतला देवी की पूजा की जाती है।
रू. भे—सीतळासातम।

सीलागौ–वि—ग्रालसी, सुस्त।

सीलाणौ—देखो 'सीलणौ' (रू. भे)

सीलाम—देखो 'सलाम' (रू भे)

सीला—वालु प्रभा नामक नरक। (जैन)

सीलाणौ, सीलावौ–क्रि स ['सीलणौ' क्रि का प्रे. रू] १ हरजाना वसूल करवाना।
उ०—वाघ विघूंसै वाहरा, ग्रारण छरा उपाड। **सीलावा** सुणिया नही, वाघा करै विगाड।—वा दा
२ प्रतिकार करवाना।
३ ठडा करना।

सीलाधु–स. स्त्री—वह कल्पित पाषाण शिला जहाँ नौ लाख देवियाँ एकत्र होकर नृत्य करती है।
उ०—ऊभै रूप धारायणी नाचेली जेहान ग्राखै, तारायणी **सीलाधु** नाचेली निरत्याद। पारायणी प्रवाडा ग्राछेली दसा देण पाता, नारायणी रूप नमौ काछेली ग्रनाद।—नवळजी लाळस

सीलायोडौ–भू का कृ—१ हरजाना वसूल करवाया हुग्रा. २ प्रतिकार करवाया हुग्रा ३ ठण्डा करवाया हुग्रा।
(स्त्री सीलायोडी)

सीलावणौ, सीलाववौ—देखो 'सीलाणौ, सीलावौं' (रू भे)
उ०—दूध **सीळावत** दाझिया, हरजी सू हेत लग्यौ।—लो गी

सीलियोडौ–भू का. कृ—१ ऐवजी मे दिया हुग्रा, चुकाया हुग्रा २ वसूल किया हुग्रा, लिया हुग्रा ३ ग्रार्द्र या नम किया हुग्रा, ठडा किया हुग्रा ४ बन्द या मुहरबन्द किया हुग्रा।
(स्त्री सीलियोडी)

सीळी, सीली–स स्त्री—१ घास, घास ग्रादि का पतला त्रण, फास।
२ एक प्रकार के पत्थर का टुकडा जिस पर उस्तरा तेज किया जाता है।
उ०—कुवध कतरणी विसै पाछणा, काम कळी जाह तारी। सासौ **सीली** चमोठी लालच, मोह नहरणी माही।—ग्रनुभववाणी
मुहा—सीली लगाणी=उत्तेजित करना, उकसाना।
३ भूमि की नमी, ग्रार्द्रता।
४ एक वैवाहिक रस्म जो दूल्हे द्वारा विवाह के दूसरे दिन प्रात ससुराल मे पूरी की जाती है। (मा म)
वि—१ ठडी, शीतल।
उ०—१ काळी पीळी सह **सीली** ककुभाळी, काठळ कावळती वावल वळ वाळी।—ऊ. का.
उ०—२ ग्रोझक ग्रेली मै ग्र‍ावेस ग्रलूझै, **सीळी** रेळी मैं चीमळिया सूझै।—ऊ. का
२ देखो 'सीलवती'।
उ०—किसीयक **सीलो** सास सेरी माय! किसोयक गटपत सेरी सुसरौ? कवसल्या सी सास सेरी माय! दसरथ सौ गढपत सुसरौ।
—लो गी

सीलैखानौ—देखो 'सिलहखानौ' (रू भे.)

सीलोनी–स स्त्री—एक प्रकार की तलवार विशेष, जिसकी मूठ के

उ० —१ घेरै मिकार माहि ममा लुकडी सीह रोभ स्याळ रीछ अनेक हिरणा आदि दै अर भेळा हुया छै ।—द वि

उ०—२ इम मर्जं माज मुख करि अरग, जाणै सीह हकालिया । सुत वळ बधाय कहि कुळ कमव, चढण महावत चालिया ।

—सू प्र

उ० —३ सीहरिण हेकौ सीह जरणै, छापर मडै आठि । दूव विटा—ळरण कापुरस, वोहरा जरणै सियाळी । - हा भा

(स्त्री सीहरग, सीहरिण, सीहरणी)

२ देखो 'सीत' (रू भे)

उ० —उत्तर आज स उत्तरउ, सही पडेसी सीह । वालम घरि किम छडियइ, जा नित चगा दीह । ढो मा

सीहगोस—स पु —काले कानो वाला एक प्रकार का जतु विशेष ।

उ० —तिम पर चित्रू कुतू का धाव सीहगोसू के दाव । - सू प्र

सीहड—स पु —भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सीहदुआर, सीहदुवार, सीहद्वारी—देखो 'सिंहद्वार' (रू भे)

उ० —१ सीहद्वारि जड स्वामी नड, पूछ्या प्रछन कुमार । कवरण देस कवरण गढ राजा, ए कहौ कवरण विचार ।—रुकमरणी मगळ

उ० - २ माघ पडित वोलै तिरण ठाई, चाउघडयय वाजइ सीह-दुवारि ।—वी दे

(मि मिघपोळ)

सीहमनोत—स पु - राठाड वश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सीहरु—स पु —शेर, सिंह ।

उ० सीहा थाहर सीहरू, हुवा न इचरज होरण । काम 'पता' कमवज्ज रा, सुरगरण ललच्च स्रोरण ।—किसोरदान वारहठ

सीहलोर—स पु —डिगल का एक गीत (छद) विशेष ।

वि वि देखो 'पूगियौ' ।

सीहलौ—स पु —१ एक प्रकार का शुभ रग का घोडा । (शा हो)

२ देखो 'सिंह' (अल्पा, रू भे)

सीहवरणौ—स पु डिगल का एक गीत (छद) विशेष ।

वि वि - देखो 'मोहरणौ' ।

सीहवाग—स पु. एक क्षत्रिय वश ।

उ० —एकरण पासै जोईया री राज । एकरण पासै सीहवाग खीचीया रा राज । एकरण पासै पाहुवा रौ राज ।

— कुवरसी साखला री वारता

सीहारणौ, सीहाबौ—क्रि स —प्रशसा करना, सराहना ।

उ० - पडित भी राजी होय आसीरवाद दीधौ । मन माहै घरणौ सीहायौ ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

सीहाय—देखो 'सहाय' (रू भे)

सीहायक—देखो 'सहायक' (रू भे)

सीहायत—१ देखो 'सहायता' (रू भे)

२ देखो 'सहायक' (रू भे)

सीहायता—देखो 'सहायता' (रू भे)

सीहायोडौ—भू का कृ —प्रशसा किया हुआ, सराहा हुआ ।

(स्त्री सीहायोडी)

सीहु, सीहू—देखो 'सिंघ' (रू भे)

उ० काली चऊदसि दीहु, तुम्हे रूडइ जोइजउ । एउ दुरयोधमु सीहू, आइ उपाड मारिसिए ।—सालिभद्र सूरि

सीहौ—स पु —एक रग विशेष का घोडा । (रा सा स)

उ०—गुरड सीहा गुलाल, चीनळा चोरगी चाल । कविळा काळा केकारण, कमेत पचकिल्यारण ।—गु रू. व

सु—सर्व —१ उसका ।

उ० - वाळू, ढोला, देसडउ, जइ पारणी कूवेरण । कू कू वरणा हथ्थडा, नही सु घाढा जेरण ।—ढो. मा

२ क्या ।

उ० —राजा रूपै रीझियौ रे लाल, रारणै कहै इरण रीत । सुतौ सु मुझ आगलै रें लाल, मुझ नै करतु मीत ।—ध व ग्र

३ करण व अपादान का चिह्न ।

क्रि वि —१ से ।

उ० —१ चकडोळ लगे डरिण भाति सु चाली, मति तै वाखारणरण ना सू सखी समूह माहि इम स्याम, सीळ आवरित लाज सू ।

— वेलि

उ०—२ वावहिय पिउ पिउ करइ, कोयल सुरगड साद । प्रिय तिरण रुति अळिग रह्या, ताह सु किसउ सवाद ।—ढो मा

उ०—३ जैसौ ई दातार वडा रजपूत । सो आ भोमीचारो करै । परखडा रा माल लै आवै । तठै गाम माहे लै नै खावै खरचै । गाम माह वडी गढी वळवत । सु देपाळ अठै ईयै भात सु रहे ।

— देपाळ धध री वात

२ द्वारा, मार्फत ।

३ अपेक्षा मे ।

४ आरम्भ से ।

५ पर ।

६ से, को ।

उ०—सउदागर राजा सु कह, सुराउ हमारी कत्थ । मारवरणी छानी रही, से माळवरणी तथ्थ ।—ढो मा

७ के द्वारा ।

उ० —हरीया मरवौ सौ भलौ, सूरातन सु होय । कायर भागा काळ का, जाकौ मुह कुरण जोय ।—अनुभववारणी

८ के साथ, सहित ।

उ०—तरै भाला रै वीहा हुवौ, सौ भाली नु आरणौ आयो । भाली पीहर आई तरै लाजसै सु हलाई । सो पीहर पोहती । पीहर रा

पधार ।—लो गी.

सीसडलौ, सीसडौ – देखो 'सीस' (अल्पा, रू. भे)

उ० – **सीसडलौ** मूमल वागटियौ नाग्ळ, हाजी रे आटी तौ मूमल री वासग नाग ज्यू ।—लो गी

सीसढाळ–स. स्त्री – एक वाद्य यत्र विशेष ।

उ० —तिसा वैग त्रीमटळ जत्र ताळ, महनाय वसी अनै सीसढाळ । —रा रू.

सीसताण–स पु —फारस और अफगानिस्तान के बीच का प्रदेश, सीस्तान ।

सीसत्राण–स पु [स शीर्षत्राण] १ टोप ।

२ टोपी, पगडी या साफा ।

सीसपत्र–स. पु [स.] १ सीसा नामक धातु । (डि को)

२ उक्त धातु की चद्दर या पत्र ।

सीसपाळ देखो 'सिसुपाळ' (रू भे)

सीसफूल–स. पु —१ औरतो द्वारा सिर पर धारण करने का स्वर्ण आभूषण विशेष जो फूल के आकार का होता है ।

उ०—१ वधै सीसफूल बिंदली सुवेस, मोहाग भाग सूरत सुदेस । —रमण प्रकास

उ०—२ **सीसफूल** तारा भलारै, अरध चद सम भाग रे रग । बिंदी जाणै मणी धरी रे, पीवत अम्रत नाग रे रग । —प. च. चौ

रू. भे —सहसफूल, सिरफूल ।

सीसम–स पु [फा शीशम] १ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकडी इमारती कार्यो के काम आती है । यह लकडी दो प्रकार की होती है – एक कुछ श्यामता और ललाई लिए भूरे रग की तथा दूसरी काले रग की ।

उ० —भात भात रा घेरघुमेर रूख-आम, आमली, कदब, खिरणी, नीब, चन्नण, असोक वडला, बावळ, सरेस, गूलर, गूदी, देवदार अर **सीसम** ।— फुलवाडी

२ उक्त वृक्ष की लकडी ।

सीसमेहल, सीसमे'ल–स पु [फा शीश + अ महल] वह कमरा या मकान जिसकी दीवारो मे चारो तरफ शीशे जडे हो ।

सीसय—देखो 'सिस्य' (रू भे)

उ० —गच्छराय जिनचद सूरि **सीसय**, सकलचद्र सुगीस री । तसु सीस पभणइ समयसुदर, हुवइ जिन सुह सुह वरी । – स कु

सीसवद–स पु —सीसोदिया वश का व्यक्ति।

उ० – देवैं अजस दीह, मुळकैलो मन ही मना । दभी गढ दिल्लीह, सीस नमता **सीसवद** ।—ठाकुर केसरीसिंह सौदा

सीसाणी–स स्त्री तोप ।

उ० – चढ हाक वाणी व्है **सीसाणी** वाल्हा ग्याणी चल्लै, धमता ऊफणै गोळा गजाणी धडाक । महासूर अणी-याणी ऊफाणी वाणणा मेळै, लोहै घाणी पडा वीच 'मेखाणी' लडाक । —हुकमीचद खिडियौ

सीसागर–स पु —१ काच की चूडिया बनाने वाला कारीगर ।

२ शीशा बनाने वाला कारीगर ।

सीसागरी–स. स्त्री –१ मांस खाने के उद्देश्य से मारे गये बकरे के सिर का मांस ।

[फा.] २ सीसागर का कार्य या हुनर ।

सीसाडणौ, सीसाडबौ, सीसाणौ, सीसाबौ–क्रि स.—मुंह से 'सी सी' की ध्वनि करने हुए शिशु को टट्टी जाने के लिए प्रवृत्त करना ।

सीसिक–स पु –१ काच, दर्पण ।

[स. सीसक] २ रागा नामक धातु ।

३ सिर, मस्तक ।

सीसी–स स्त्री [फा शीशी] तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम आने वाला शीशे (काच) का पात्र विशेष ।

उ०—१ ससहर सैंद काच री **सीसी**, सारै चतुरंगणि बावीसी । —रा रू.

उ०— २ काचे सवज ए जी ए रूमाल । हाथा में **सीसी** प्यारी प्रेम री जी ।—लो गी

मुहा.—सीसी में उतारणौ=गुमराह करना, फुसलाना, बेवकूफ बनाना, वश मे करना ।

सीसोद–स. पु सीसोदिया वश का व्यक्ति ।

उ० —**सीसोद** कमधा सैफला, वहि सेल भऋहळ बीजळा । —सू प्र

वि सीसोदिया वश का ।

सीसोदणी–स स्त्री —सीसोदिया वश की कन्या ।

सीसोदिया —देखो 'सिसोदिया' (रू भे)

सीसोदियौ —देखो 'सिसोदियौ' (रू भे)

सीसौ–स पु [स सीसक] १ बहुत भारी और नीलापन लिए काले रग की एक मूल धातु जो अत्यधिक नरम एव मजबूत होती है । (अ मा, डि को)

उ० सीसा जामग सोर, भार गाडा बाणा भर । चत्र हजार सुतनाळ, हवस उसनाज वहादर । – सू प्र

पर्याय –कथीर, गडूपदभव, वप्र, नाग सीसपत्र, सुवरणारि हेमअरि ।

रू भे –सस ।

२ बालु या खारी मिट्टी को आग मे गलाने से बनने वाली एक एक प्रकार की मिश्र धातु जो पारदर्शक होती है ।

३ दर्पण ।

४ तेल, इत्र, दवा आदि रखने के काम में आने वाला शीशी से बडा काच का बना एक नलीतरा पात्र, बोतल ।

सीह –१ देखो 'सिंह' (रू भे.) (डि को, ना डि को)

उ०—२ चढ़ी नाळिया वाह यूं राह चल्ली, हलाडै धजा कै गजा पति हल्ली। लसै आग जगाळ सिंदूर सुंडा, डळा मैं वमै धाव रा पाव डंडा।—व भा

२ वेश्या, रण्डी।

३ मदिरा, शराब। (डिं को)

४ कुटनी स्त्री।

सुडाडंड, सुडाडंडू—देखो 'सूडादंड' (रू भे) (डिं ना मा)

उ०—१ जठै जादवराम रै सवधी भ्राता जादवदेव रा किवाण करि चालुक्यराज रा गज रौ सुडाडंड वाहित्य देस सूं विच्छुटि भडियौ।—व भा

उ०—२ हाथियाँ कै हलकै खभूठाण तैं खोलै अरापत कै साथी भद्र जाती कै टोळै अत देह कै दिग्गज विंध्याचळ कै सुजाव रग रग चित्रै सुडाडंडू कै वणाव भूल की जलूमै वीरघंटू कै ठणकै बादलौ की जगमगाट भरै भौंरां की भकी भणकै, ।—र रू.

सुडाडवर—स पु —१ हाथी, गज।

२ गणेश, गजानन।

उ०—रिवि सिधि प्रसिध प्रमाण करीनइ, विस्न तणौ वीवाह। सुंडाडवर करि धर फरमी, लीला लोचन चाह।—रुकमणी मगळ

सुडादंड—देखो 'सूडादंड' (रू भे)

उ०—प्रतापसिंघ तौ माहण सिणगार रै सीस चद्रहास रौ प्रहार कियौ तिण सूं दोही दाता ससेत सुडादंड भडि पडियौ।—व भा

उ०—२ हाथी मद्द पहिरी हलकारै, हलकता नवि हारै। सुडादंड सबल विसतारै, मद उनमत्ता मारै हौ।—वि कु

सुडार—स पु [स शुण्डार] १ हाथी की सूड।

२ साठ वर्ष की आयु का हाथी। (डिं को)

३ देखो 'सूडाळ' (रू भे)

सुडाळ, सुडाळकौ, सुडाळौ, सुडालौ—देखो सूडाळ' (रू भे) (अ मा, डिं ना मा, ना डिं को, ह ना मा)

उ०—१ सुडाळ भिडिया आवि अडिया, सुहड अगोंअगि। नर सीस विहसई वदन विगसई सेल वाहई सगि।—रुकमणी मगळ

उ०—२ मैंद महाबळ सूर कुळ, यौ वग्गा रण ताळ। जुडै अछाया जोम ज्यौं मद आया सुडाळ।—रा रू

उ०—३ मोहै खूबसूरता पैनाग वना सुडाळका, प्रथी माठां भाळ वाळ गाइ पैलै पार। काळा अगा तराजै फाळका वै वै तडा कूदै, नवेला टाळका भूरी वगीसै तोखार।—जवानजी आढौ

उ०—४ सुडाळा सुमेर सा सजिया अमर विमाणगामी असवारी रे। चचळ हय चितचाळ चुकावण, नाचै मोर मनोहारी रे।—गी रा.

उ०—५ काजळ किळकै तनु काळा, सबळा परचड सुडाला। सिंदूरघा सीस मनूकै, जळधर मैं बीज भबूकै।—ध व ग्र

सुडायत—स. पु —एक क्षत्रिय वश। (रा व वि)

सुडाहळ, सुडाहळौ—देखो 'सूडाळ' (रू भे)

उ०—१ वदै राम वरियाम समार रजपूत वट, लोह पागार सुडा-हळा लोध। ऊरडी सामा अणी ऊपरै प्रिसण उरि, अडै जमदाढ तू अभिनमा 'जोध'।—रामसिंह राठौड रौ गीत

सुडी—स. स्त्री [स शौंडिन्] १ पिप्पली नामक लता या उसका फल। (अ मा)

२ देखो 'सूडी' (रू भे.)

सुणणौ, सुणबौ—देखो 'सुणणौ, सुणबौ' (रू भे)

उ०—ढोला, खील्यौ री कहइ, सुणै कुढगा वैण। मारू म्हाजी गोठणी, सै मारू दा सैण।—ढो. मा

सुणणहार, हारौ (हारी), सुणणियौ—वि०।

सुणिओडौ, सुणियोड़ौ, सुण्योडौ—भू० का० कृ०।

सुणीजणौ, सुणीजबौ—भाव वा०।

सुणियोडौ—देखो 'सुणियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुणियोडी)

सुंद—स. पु [स] एक राक्षस जो निकुंभ का पुत्र और उपसुंद का भाई था। इसकी पत्नी का नाम ताडका था, जिससे इसके मारीच व सुबाहु नामक दो पुत्र हुए थे।

सुंदर—वि [स] १ जो दिखने मे अच्छा लगता हो, मनमोहक, चित्ता-कर्षक। (अ मा, ह ना. मा)

उ०—१ सुभ चित्र मदिर चौक सुदर, ओपि रुचि राय अगणे। तन सदन सोभित करण तरणी, विविध मनि उद्दम वणे।

—रा रू

उ०—२ अति सुदर कवळ माडिया ऊपर, सोभा अति पामइ मादीत। चदवदनी मुख दिसउ चाहता, ऊगा किरि बारह आदीत।

—महादेव पारवती री वेलि

२ जो रंग, रूप व वर्ण से आकर्षक लगता हो, रूपवान्, खूबसूरत।

उ०—सुंदर सोभत घणस्याम, तडिता पट-पीत छवि नाम। वामै अग सीता वाम, रूप अनग कौटिग राम।—र ज प्र

३ अच्छा, भला, बढ़िया। (डिं को)

४ ठीक, सही।

५ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उ०—दासरथी सुखदाई सुदर, नमै पगा सुर नर आनूप। नरका मिट जन तारै नकौ, भाख पयोध प्रभाकर भूप।—र ज प्र

६ सुघट, सुघडित।

७ उत्तम, पवित्र, स्वच्छ।

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुदर, असळ अवर ओपय। किरि सुबुधि वधि मत सग कारण, लुबुध होत विलोपय।—रा रू

८ जिसके नख शिख व अग-प्रत्यग सौन्दर्य के मापदण्ड के अनुसार हो।

उ०—अगनयणी, अगपति मुखि, अगमद तिलक निलाट। अग-रिपु-कटि सुदर वणी, मारू अहेहड घाट।—ढो मा

भली तरै राखी। झाली री मा झाली सु बाता कीवी मोका री बाता पूछी।—कुवरसी साखला री वारता

१० क्यो, क्योकर।

वि —११ पूर्वक, सहित।

उ०—इतरौ कहि लाखौजी चढि नै घरै आया। लाखो सुख सु राज करै छै।—लाखै फूलाणी री वात

२ देखो 'सु' (रू भे)

उ०—जैमौ ई दातार वडौ रजपूत। सौ औ भोमीचारौ करै। परखडा रा माल लै आवै। तठै गाम माहै लै नै खावै खरचै। गाम माहै वडी गढी वळवत। सु देपाळ अठै ईयै भात सु रहै।

—देपाळ धध री वात

रू भे —सू, सो।

सुग्राळ—स स्त्री —१ चिकना होने की अवस्था, चिकनाहट, स्निग्धता।

२ देखो 'सुवाळौ' (मह, रू भे) (मा म)

रू भे —सुवाळ सुंहाळ।

सुखडौ—स पु — बादाम, दाख आदि स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ।

उ०—चोली मड चरणा चीर सखरा, **सुखडा** सुमवाद ए। रली रग स्युं लड जमोभद्रा, जाणइ जेठ प्रसाद ए।—म कु

सुखणी, सुंखनी, सुखिणी, सुखिनी — देखो 'सखणी' (रू भे)

उ० - **सुखिनी** सवै सुरताण धरि, कोप हूउ वेजन कमड। लावत मारि खोजा निसुणि, पातिसाह मुरकै हसड।—प च चौ

सुग—स पु [स शुग] १ मगध राज्य पर अन्तिम मौर्यसम्राट वृहद्रथ के पश्चात् राज्य करने वाला क्षत्रियवश।

२ जौ, गेहू, चावल आदि अनाजो के पौधे की बाल या भुट्टा।

(क्षेत्रीय)

३ वरगद, वटवृक्ष।

४ आवला।

५ पाकड वृक्ष।

सुगण—१ देखो 'सुगध' (रू भे)

उ०—थाट भड अगै नर सुरगवासी थिया, गडिया कुपाती लूट लागै गिया। कथन वड लोक रा आद साचा किया, लिगवै नाक कर फूल **सुगण** लिया।—स्यामजी बारहठ

२ देखो 'सकुन' (रू भे)

सुगवस—स पु [स शुगवश] मगध राज्य पर अन्तिम मौर्यसम्राट वृहद्रथ के पश्चात् राज्य करने वाला क्षत्रियवश।

सुगा—स स्त्री [स शुगा] १ फूल की कलियो के नीचे का कोप।

२ गेहू, जौ, चावल आदि अनाजों के पौधो की बाल।

सुघणी, सुघनी—१ देखो 'सूघणी' (रू भे)

२ देखो 'मागणी' (रू भे)

सुघाणौ, सुघावौ—क्रि स [सूघणौ क्रिया का प्रे रू] सूघने की क्रिया करने के लिए प्रेरित करना।

सुघाणहार, हारौ (हारी), सुघाणियौ—वि०।

सुघायोडौ—भू० का० कृ०।

सुघाईजणौ, सुघाईजवौ—कर्म वा०।

सुघायोडौ—भू का कृ —सूघने की क्रिया करने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री सुघायोडी)

सुज—स स्त्री —तैयारी।

उ० कजि उदकजळि **सुज** कराए, जमरा मिनान कियौ नृप जाग। वेदोकत मत्रा सुग वाणी, जळ अजळि आपी जग जाणी।

—रा रू

सुठ, सुठि, सुठी - देखो 'सूठ' (रू भे)

सुड—स पु [स शुण्ड] १ मदमाते हाथी की कनपुटी से बहने वाला मद।

२ देखो 'सूड' (रू भे)

उ०—१ वहै लाम छूटा तुरा नाम वाजै, वडै मेघ ज्यौ मोक धारा विराजै। वणै सिंधुरा कुंडळी **सुड** वाळी, करै चाळ जाणै फणा नाग काळी।—रा रू

उ०—२ सगरूर घतावत मत्त मदा, उनमत्त मुनेस्वर दत्त अदा। फवि हाटक दड धुना कहरै, कुडळी जिम झाटक **सुड** करै।

—मे म

उ० - ३ कत्था वण सजळ छजळ कान, सिरगिर कजळ कूट समान। समूदित साप समाकृत **सुड**, दतूसळ मूसळ रूप दुरड।

—मे म.

सुडडड, सुडदड - देखो 'सूडादड' (रू भे)

सुडभुसड, सुडभुसडि, सुडभुसडी, सुडभुसुड, सुडभुसुडि, सुडभुसुडी—स पु [स शुडभुशडि] हाथी, हस्ती।

वि —मस्त, उन्मत्त।

सुडमुड, सुडमुडी, सुडमुस्टड, सुडमुस्तड—वि —हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, स्वस्थ।

उ०—१ नटालि दै भटालि की जटालि ऐचतै अभै, अगीन मुच्छ मुच्छ दै स्वमुच्छ खेचतै अभै। चलाक रूठ पूठ कै अगूठ चापतै चलै, हरामखोर **सुडमुड** भुड कपतै चलै।—ऊ का

उ०—२ अेकर अेक गाव मैं अेक अैडौ ई भेखधारी महातमा चतरमासा री धूणी जगाई। साथै **सुडमुस्तड** चेला री टोळी। अगारढ, अबूझ अर अग्यानी लोग अर पछै धरम, भगवान, आतमा, परमातमा अर मुगती मै अमिट आस्था! ठगण सारू अैडौ ठोट मानखौ दुनिया मे वळै कठै मिळै।—फुलवाडी

रू भे - सडमुसड, सडमुसडी, सडमुस्टड, सडमुस्तड।

सुडा—स स्त्री [स शुण्डा] १ हाथी की सूड। (टि को)

उ०—१ जघा **सुडा** करि वणी रे, उलटौ कदली खभ रे। सोवन कच्छप सारिखा रे, चरण हरण मन दभ रे।—प च चौ

देहरा सच। —वेलि
४ त्रिपुर सुन्दरी देवी।
६ एक योगिनी।
७ नर्मदा नामक गन्धर्वी की कन्या एव माल्यवान राक्षस की पत्नी का नाम।
८ हलदी।
९ नाव आदि बनाने के काम आने वाली लकडी का वृक्ष।
१० एक प्रकार का वाद्य विशेष।
११ एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसमे प्रत्येक चरण मे प्रथम एक नगण फिर दो भगण व अन्त मे एक रगण इस प्रकार कुल बारह वर्ण होते है।
उ०—नगण वि भगण रगण निरवाणि, पाइ सुदरी छद पिछाण। चरण दु आद स घाटिन बाधि, अनत अजोध्या नाम अराधि।
—पि. प्र
१२ एक प्रकार का वर्णिक वृत्त विशेष जिसमे प्रत्येक चरण मे प्रथम दो सगण फिर भगण फिर सगण और अन्त मे एक तगण, दो जगण व एक लघु एव एक एक गुरु, कुल २३ वर्ण होते है।
उ०—छाजै वि सगण भगण चरण विगता छाता, सगण तगण दुइ जगण लघु गुर सोभाता। महि त्रिह अगाल वीस चरण सव लामणा, सुदरि आ गुण जाणि सुचग सुहामणा। —पि. प्र
रू भे —सुदर, सूदरि, सूदरी।

सुदरु, सुदरू—देखो 'सुंदर' (अल्पा, रू भे.)
उ०—सगला अगज सुदरू जी, इद्रिय नही कोई हीण। प्रथम वय चढती कला जी, चतुर घणा प्रवीण।—जयवाणी

सुदळौ—स पु —१ छत की सुन्दरता व चिकनाहट वढाने के लिए लिपि मे किया गया लेप। इसमे चूने की उम्र भी वढ जाती है।
२ चूना।
३ देखो 'सदळौ' (रू भे)

सुदसण—देखो 'सुदरसण' (रू. भे)

सुदुस—स पु [स.] अत्यन्त महीन एव बहुमूल्य रेशमी कपडा।

सुदूक—देखो 'सदूक' (रू भे)

सुदोपसुद—स पु [स] सुद एव उपसुद नामक दो भाई जो राक्षस थे।
वि वि —इन दोनो को वरदान प्राप्त था कि जब तक ये दोनो आपस मे एक दूसरे को नही मारे तब तक नही मरेगे। अत इन्द्र ने तिलोतमा नामक अप्सरा को इस तरह की स्थिति उपस्थित करने हेतु भेजा। ये दोनो तिलोतमा की प्राप्ति हेतु आपस मे लड मरे।

सुधाखाणी, सुधाखानी—देखो 'सौधाखानी' (रू भे)

सुधौ—देखो 'ऊधौ' (रू भे)
उ०—भली भाति भुजाई जीमिया। ऊपर पान रा बीडा दिया, अतर सुधै री मनवार हुई। डेरै नू सीख दीवी। ताहरा राजा वीरभाण जवाई नै रमा-रमा कर्यो, हाथ नालिया, छाती सू लगाय कह्यो—वावा, कागू काग्ज ठै। —पन्नरा दरियाव री वात

सुन, सुन्य—१ देखो 'सुन्न' (रू. भे)
२ देखो 'सून्य' (रू भे)
उ०—१ सुन महा मन नही अनुरागा, नही हाना नूर निनाना। ज्या दिनकर जागी रागी नी विनागा, तिम विध रच्या संसारा।
—श्रीहरिरामजी महाराज
उ०—२ गोगा देस मे गुरजी मठी वणाऊ, ताहा लगाऊ आसारे जोग। सुन सिखर मे मेला अथावा, अगम लगावो आसारे लोय।
—श्रीहरिरामजी महाराज
उ०—३ सुन सरवर चह फेर मे, सुख सीतल नासीर। हरिया एक अखड मे, स्यान धर्म ना तीर।—अनुभववाणी
उ०—४ जनहरीया मन जाह किया, सुन्य सरवर मे वास। उठै न जामण मरण की, घरै न हसो आस। अनुभववाणी

सुपणी, सुपवौ—देखो 'सुपणी, सुपवौ' (रू. भे)
उ०—नागोरी दरवाजा बारै नाजर हरकरण हस्तै वेगो १ सीरोजियो नै चौरीसी हुवो तीरो हमार चापावत नूनतानसिहजी नै सुपौजियो। तथा दिरीजियो। —मारवाड रो रयात
सुपणहार, हारौ (हारी), सुपणियौ—वि०।
सुपिओडौ, सुपियोड़ौ, सुप्योडौ—भू० का० कृ०।
सुपीजणौ, सुपीजवौ - कर्म वा०।

सुपियोडौ—देखो 'सूपियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुपियोडी)

सुंब—स पु [फा सुब] १ लोहे मे छेद करने का औजार।
२ लकडी मे छेद करने का औजार।
३ पृथ्वी खोदने का एक प्रकार का औजार।
स स्त्री [स शुभ्र] ४ डोरी, रस्सी।
५ देखो 'सुम' (रू भे)
६ देखो 'सूम' (रू भे)
उ०—१ धरै करि करि जोडि धन, सचै राखै सुब। भाग वर्स केइ भागवै, चलै न बाहर बुब।—ध व. ग्र
उ० – २ सुबै मात प्रिया रै माहो, गिरि पुरन्दरो वस गिनो। पुज नठै पिण घरता पगला, न सकै रहि तिण ठाम न नो।
—ध व ग

सुबडौ - १ देखो 'सुम' (रू भे)
२ देखो 'सूम' (रू भे)
उ०—'अभुतो' कीन धाडा करै चहु वळ, सुबडा प्रजाळण नही सुवौ। सौतन कव छोड कम जाय सुरधर अगर, राठवड रतन पुर पथ रवौ। —खेतजी बारहठ

सुबुक—स स्त्री [फा] वडी नाव के साथ रहने वाली छोटी नाव।

सुबुल—स स्त्री १ गेहू या जौ की वाल।

९ जिसे पाने से, देखने मे या अनुभव करने मे आनन्दानुभूति होती हो।
१० कला की दृष्टि से जिसकी रचना अत्यन्त उच्च कोटि की हो।
पर्याय —अभिराम, कमन, कमनीय, दरमणी, दीपन, पेमल, प्रीय, मजु, मजुल मधुर मनहर, मनोगिन, मनोरम, मनोहर, रमण, रमणीय, रुच रुचिर, ललित, वर, वाम सरूप, साधु, सुरम, सुभग, सुलखण, सोभित।
स पु —१ ईश्वर, परमात्मा। (ना मा, ह ना मा)
२ बालक, बच्चा। (अ मा.)
३ कामदेव, मनोज। (ह ना मा)
४ लका मे स्थित एक पर्वत।
५ एक प्रकार का वृक्ष।
६ लकडी के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।
उ०—१ चल सुदर मदिर चल, तुम विण चल्यो न जाय। सात चलाती लाट मे, सौ दिन पहुच्या आय।—अग्यात
उ०—२ चल सुदर मदिर चले, तुम ही जीवजडी। हम टूटे तुम न हुते, जद थी आणद घडी।—अग्यात
७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमे एक लघु एव एक दीर्घ के क्रम मे पच्चीस मात्राए व १६ वर्ण होते है।
उ०—सोलह आखर पय सरस, मात्र पचीस मलूक। कहि गुण लखपती कुअर, सुदर छद मलूक। —ल पि
८ डिंगल के वेलिया सागोर छद का एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले मे ५२ लघु, ६ गुरु, कुल ६४ मात्राऐ होती है तथा शेष द्वालो मे ५२ लघु ५ गुरु, कुल ६२ मात्राऐ होती है। (पि प्र)
स स्त्री —९ पृथ्वी भूमि।
(डि को, डि ना मा, ना डि को)
१० देखो 'सुदरी' (रू भे) (डि को)
उ०—१ कुण माड्या, ओ सुवागण, थारा हाथ, पेम रस महदी राचणी। राच्या राच्या, ओ सुदर, थारा हाथ, पेम रस महदी राचणी।—लो गी
उ०—२ सुदर सोळ सिणगार सजि, गई सरोवर पाळ। चद मुळक्यउ, जळ हस्यउ, जळहर कपी पाळ।—ढो मा
उ०—३ प्रह फूटी, दिसि पुडरी हणहणिया हय थट्ट। ढोलइ धण ढढोळियउ, सीतळ सुदर-घट्ट।—ढो मा
उ०—४ साम्हउ जिण कळस आणियउ सुदर, वदायउ कर भली विधि। जनम जनम वैकुठ पामिस्यइ, वळे वदावइता नवे निधि।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—५ उदमाद थगाइ जगि चढती वानी, वरि निरखती फोरती वाध। माई मिळण कारणे सुदर, वधिया चोळी तणाज वध।
—महादेव पारवती री वेलि
अल्पा, रू भे —सुदर, सुदरू।

सुदरता, सुदरताई—स. स्त्री. [स सुन्दर+ता प्र.] १ सुन्दर होने की अवस्था या भाव।
२ सौन्दर्य, शोभा, झलक।
रू भे —सुदराई, सुदरापौ।
सुदरबाई—स स्त्री —वेला चारण की पुत्री एक देवी विशेष जिसने महाराणा सग्रामसिह को राज्यप्राप्ति का वरदान दिया था।
रू भे —सुदराई।
सुदराई —१ देखो 'सुदरता' (रू भे)
उ०—हरीवच्छ सीलच्छ तू श्रीमहत्थी, तुही पन्नगाधीस रै सीस प्रत्थी। तुही पच्छ तारच्छ मै सीव्रताई, रती मूरती मै तुही सुदराई।—मे म
२ देखो 'सुदरबाई' (रू भे)
सुदरापौ—स पु देखो 'सुदरता' (रू भे)
सुदरि, सुदरी–वि. स्त्री [स सुन्दरी] १ सुदर, रूपवती।
२ प्यारी, प्रियतमा, वल्लभा।
उ०—सेझा आवो सुदरी, ज्यो सोभा दै सेझ। तौ विन सेझ विरगिया, कही न लागे नेह।—कुवरसी साखला री वारता
स स्त्री —१ सुन्दर एव खूबसूरत स्त्री।
उ०—१ गुणदागा इसा अमोलक गाढा, मोती लाट आवळा प्रमाण। सुदरि हार निमउ उर सोहइ, वीजी गग प्रगट की वाण।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी। त्रिय जीत तनि गुण परखि त्रखि, सुख सकल परखि जिम सुंदरी।—रा रू
उ०—३ भाखा सस्क्रत प्राक्रत भणता, सूभ भारती रा सरस। रस दायिनी सुदरी रमता, सेज अतरिख भूमि सम।—वेलि
उ० ४ सुदरि चोरे सग्रही, सव लीना सिणगार। नवफूली नीधी नही, कहि सखि कवण विचार।—ढो मा
२ स्त्री, पत्नी। (अ मा, ह ना मा)
उ०—१ सुणि सुदरि, सच्चउ चवा, 'भाजइ मनची भ्राति। मौ मारू मिळिवा तणी, उरी विलग्गी ख्राति।—ढो मा
उ०—२ माया पास रही मुळकती, सजि सुदरी सोधा सिणगार। बहु परिवार कुटुब चो बाधो, हरि विण गयो जमारो हार।
—प्रथ्वीराज राठौड
३ देवी, दुर्गा, पार्वती।
उ०—भवानी नमो स्वच्छ स्रगार अगा भवानी नमो सुदरी सिभु सगा। भवानी नमो सामरिद्रारि हता, भवानी नमो आसि आभा अनता।—मे म
४ रुक्मिणी।
उ०—आकरखण वसीकरण उनमादन परठि द्रविण सोखण सर पच। चिनवणि हसणि लसणि गति सकुचणि सुदरी द्रारि

उ०—१ तठा उपरायत पाछलै पोहर री ढळती छाया री विसायत कीजै छै। देसोत सिरदार जाजळ मा पधारै छै। केस सुंवारै छै। मोगरै री वेल केवडै रै तेल सूं केस सुवरी कीजै छै। दात रा छला रा चदण रा चगटी रा कागसिया सू केस सुवारजै छै।
—रा सा स

उ०—२ ताहरा घोडै नू सुरी करार्ड। कायळजी घोडो सुरी करावता ताहरा मदा तरा, पुस्तग दुमची, आगवध तूट जावता, सू तूट गया। ताहरा दीकरा राजो, सूरी, नीवो, बीजी ही साथ हुतो तैनू कह्यो कै –थे फोज री मुहडी झालो, जितरै हू तरा सुवार त्या सु साथ ठैहराय न मसयो।—नैणसी

उ०—३ चेना चाटी माल सुवारै, दाम भाव नही कोय दुवारै। लाभ लोभ गवै मन माही, दया धरम कु पालै नाही।
—अनुभववाणी

उ०—४ अवहा नहि अरण मिळता मिनख्या, सुखमिरा सेभ सुवारी। मेल करम आतम कै परचै, दूजा दाव निवारी।
—अनुभववाणी

उ०—५ आहत एक करत मन नाई, मैं तै घसै पसारै। सब ही दुनियादार आहतु, विरण कर मूट सुवारै।—अनुभववाणी

उ०—६ भाख फाटी। ताहरा वडारण आरा जगाया। सो दोनु ढीलै अग जागिया। भरमल री कपडो पासाग्र वडारण सुवार डेरै लै हाली। सो अमला री खुमार सु पग ठाह न पडै छै। नीठ मोहल मैं लै गई।—कुवरसी साखला री वारता

सुवारणहार, हारौ (हारी), सुवारणियौ—वि०।

सुवारिओडौ, सुवारियोडौ, सुवारयोडौ भू० का० कृ०।

सुवारीजणौ, सुवारीजबौ कर्म वा०।

सुवारियोडौ देखो 'सवारियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवारियोडी)

सुवारै, सुवारौ देखो 'सवारै' (रू भे)
उ०—१ नापो कही भली वात सुवारै अरज करस्यू।
—नापै साखलै री वारता

उ०—२ उहा रा कही रै लोग सू रमतै रै लोग सुवारै एक दोय कजियो कर कर सही जीत हुई आवै।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—३ इसी तरै मारै राजलोक री हुई। पाछै मारी आप-आप रै डेरै गई। कुवरसी भरमल रै मोहल पोढियो। परभात सुवारौ उठि नितकरम कर रावजी री मुजरो कीयो।
—कुवरसी सांखला री वारता

सुवाळ—१ देखो 'सुवाळी' (मह, रू भे)
२ देखो 'सुंआळ' (रू भे)

सुवाळौ—वि (स्त्री सुवाळी) १ कोमल, मुलायम।
मुहा —सुवाळी खेजडी मारै सै चढै=सीधे एव सयाने को सभी सताते हैं, कमजोर को सभी दबाते हैं।
२ चिकना, स्निग्ध।
स पु.—लेप लगाये हुए ताने को साफ करने का एक ब्रुश जैसा जुलाहो का औजार जो सिवरण घास की जड का बनाया जाता है।
रू भे.—सुंआळौ, सुहाळौ, सुवाळो, सुवालो।
मह,—सुआळ, सुवाळ, सुहाळ।

सुवौ देखो सवो (रू भे)
उ०—१ निरो तळाव किरण भात रो छै। गती वरती रो। पाटरो नीर। पवन री मारियो फीण आछटतो थको भीला खाय रह्यो छै। लहरा लियै छै। अथग तोय छै। कडिया सुवै पाणी मैं पैठा पगा रा नख भासै छै। इण रै भोळावै विलाव वाणीजै छै।
—रा सा स

उ०—२ आपणी फौज निवळो देख छु। आ फौज सबळो छै। आपा रा लोक धाव लागत सुवा धरती पडै, उनै पूरा लोहा लागा विढै छै। उनै फोज री नगी माहै ऊभी। ऊं वाम्नै रा नी राजा नू चोट पाहचावो, नही नी म्है काम आसा। फौज आपणी भाजसी।
—हाहन हमीर री वात

सुस - देखो 'सूस' (रू भे)
उ० १ करि नाम्य मारिग धरमसी कह, भार अढार वनस्पती। विरा लीया सुस साधा निगर, छह रितु मै हिरण छनी।—ध व ग्र
उ०—२ तरो सुस जैनै कहै, बोल वध नवि साच। हम सुराफ उपारि है विचन्ना नहि वाच। प च चौ

सुसाडो - देखो 'सगाडो' (रू भे)
उ०—सुसाडा करता रे, सु नेम धरता रे। दस दिन रा भूखा रे, ग्यारस नै दूका रे। कुरारी पाडै म्है देव छोडावजो रे।
— जगवाणी

सुह देखो 'सूस' (रू भे)

सुहगौ—देखो 'सूगौ' (रू भे)
उ०—१ इम करता जो को मारइ, तउ जगि कीरति हाइ र भाई। कस्या माटइ पामता सुहगी कीरति मोई रै मारै।
- प च चौ

उ०—२ वाजरी चउला मउठ, के कै धान सुहगा लीधा। सुहगा-सुहगा सरव, लोक तै आणी लीधा।—स कु.

उ०—३ अठयामीयउ अन आणि, करइ वलि सुहगा काई। लागी लरथापथि, किस्यु थास्यइ हो माइ।—स कु
(स्त्री. सुहगी)

सुहाळ—१ देखो सुआळ' (रू भे)
२ देखो 'सुवाळो' (मह, रू भे)

सुहाली—स. स्त्री —एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष।
उ०—सीरा फीणी सुहालिया रे लाल, सावूनी सुखकार। इद्रसा नै दहीवडा रे लाल, इम पकवान अपार।—प च चौ

२ एक प्रकार की सुगंधित वनौषधि विशेष।

३ बारह प्रकार की राशियो मे से कन्या राशि।

४ बालो की लटी, जुल्फ, अलक।

सुंदो–स.पु [देश] १ तोप की नाल को साफ करने का गज।

२ तोप की नाल को ठण्डा रखने के लिए नाल पर फैलाया या फेरा जाने वाला गीला कपडा।

३ एक औजार विशेष जो लोहे मे छेद करने के काम आता है।

सुभ–स. पु [स शुम्भ] देवी दुर्गा द्वारा मारा जाने वाला एक असुर विशेष।

उ०—१ देवी धूमलोचन हूकार घोस्यौ, देवी जाडवा मैं रकत वीज सोख्यौ। देवी मोडियौ माथ नीसुभ मोडै, देवी फोडियौ सुभ जी कुभ फोडै।—देवि

उ०—२ लोयण-धूम्र लुलाय, सुभ निसुभ सहारया। रकत वीज आरोगि, मुड चडादिक मारया।—मे. म

उ०—३ दिती सुत सुभ निसुभ विदारि, कई रतवीज गई अड-कारि। सुणी जिण कीरत पीर ममाज, रजा जिण सीम धरी जमराज।—मे म

सुमघातरण, सुभघातणी, सुमघातनी, सुभघातिरण, सुमघातिणी, सुम-घातिनी–स स्त्री [स शुभ+घातिन्+ई रा प्र.] शुभ नामक असुर का वध करने वाली देवी, दुर्गा।

सुमनिसुममाजरणी–स स्त्री [स शुभ+निसुभ+भञ्जो] १ दुर्गा।

२ पार्वती। (डि को)

सुमपुरी–स स्त्री [म शुभपुरी] शुभ नामक राक्षस की पुरी।

सुंमभाजरणी–स स्त्री [स शुभ+भाजणी रा] शुभ नामक राक्षस का वध करने वाली देवी। (डि को)

सुममरदरणी, सुभमरदनी, सुममरदिरणी, सुममरदिनी–स स्त्री [स शुभ+मर्दिनी] शुभ नामक राक्षस को मारने वाली देवी, दुर्गा।

सुमडौ—१ देखो 'सुम' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'सूम' (अल्पा, रू भे)

उ० –कीठै आया छौ जावौ छौ कीठै पोळ मैं धसो छौ क्युजी, की जी म्हानै म्हाकै धणी बैठाया की काज। चारणा भाटा नै आघा जावादया जी चाल्या चाल्या, न दै म्हानै सुमडौ खावानै सेर नाज।—सुरतौ वोगसा

सुमरणौ, सुमरवौ—देखो 'समरणौ, समरवौ' (रू भे)

सुमरणहार, हारौ (हारी), सुमरणियौ—वि०।

सुमरिओडौ, सुमरियोडौ, सुमरघोडौ–भू० का० कृ०।

सुमरीजणौ, सुमरीजवौ—कर्म वा०।

सुमरियोडौ—देखो 'समरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुमरियोडी)

सुवरणौ, सुवरवौ–१ देखो 'सवरणौ, सवरवौ' (रू भे)

२ देखो 'समरणौ, समरवौ' (रू भे)

सुवरणहार, हारौ (हारी), सुंवरणियौ–वि०।

सुवरिओडौ, सुवरियोडौ, सुंवरघोडौ—भू० का० कृ०।

सुवरीजणौ, सुवरीजवौ कर्म वा०, भाव वा०।

सुवराडणौ, सुवराडवौ—देखो 'सवराणौ, सवरावौ' (रू भे.)

सुवराडणहार, हारौ, (हारी), सुवराडणियौ—वि०।

सुवराडिओडौ, सुवराडियोडौ, सुवराड़्योडौ—भू० का० कृ०।

सुवराडीजणौ, सुवराड़ीजवौ—कर्म वा०।

सुवराडियोडौ—देखो 'सवरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुवराडियोडी)

सुवराणौ, सुवरावौ—देखो 'सवराणौ, सवरावौ' (रू. भे)

सुवराणहार, हारौ (हारी) सुवराणियौ—वि०।

सुंवरायोडौ—भू० का० कृ०।

सुवराईजणौ, सुवराईजवौ—कर्म वा०।

सुवरायोडौ—देखो 'सवरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुवरायोड़ी)

सुवरावणौ, सुवरावबौ–क्रि स —१ हजामत करवाना, दाढी बनाना, बाल मुडवाना।

उ०—परभात रा तुरक री मुहडौ नही देखता। दरबार री मईयत तुरक था तिणरी डाढी सुवरावता काना मैं मोती घालता। बाद-साह चाकरी बदलै अहदी मेलिया सौ भली तरह जापतौ करावता, खावण नै मोकळी देता, पाणी खारी पावतौ।

– महाराजा स्रीपदमसिह री वात

२ देखो 'सवराणौ, सवरावौ' (रू भे)

सुवरावणहार, हारौ (हारी), सुंवरावणियौ—वि०।

सुवराविओडौ, सुवरावियोडौ, सुवराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

सुवरावीजणौ, सुवरावीजवौ—कर्म वा०।

सुवरावियोड़ौ–भू का कृ –१ हजामत आदि बनवाया हुआ, दाढी बनाया हुआ, बाल मुडवाया हुआ।

२ देखो 'सवरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुवरावियोडी)

सुवरियोडौ–१ देखो 'सवरियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'समरियोडी' (रू भे)

(स्त्री सुवरियोडी)

सुवार—देखो 'सवार' (रू भे)

उ०—करणी रफड-रफड, मल-मल न्हायी-धोयी अर मिळणै खातर मन री दीयौ मजोयौ। सुवार कराई, साफ कपडा पैरचा अर फाजल रै कैया मुजब डील रै तेल-फलेल लगायौ। काना मैं सेंट रा फोवा टाग्या, हाथा रै मैंदी माडी अर रोजौ राख्यौ।

—दसदोख

सुवारण—देखो 'सवारण' (रू भे)

सुवारणौ, सुवारवौ—देखो 'सवारणौ, सवारवौ' (रू भे)

आडा वीभ वन, मनह न आटउ कोइ ।—ढो.मा

उ०—२ थळ भूरा, वन भखरा, नहीं सु चपउ जाइ । गुणे सुगधी मारवी, महकी सहु वणराइ ।—ढो मा

रू भे —सू

२ देखो 'सु' (रू भे)

३ देखो 'इसु' (रू.भे.)

उ०—डमिउ विमामी मनि पारथ निद्रा, मेरिह नरेंद्रे सु मम्रत्यमुद्रा । निद्रा ति घूमिइ हथियार छाडइ, कोई किही मिउ नीय भूझ माडइ ।—मालिसूरि

सुग्रटी—देखो 'सूवटी' (रू भे)

सुग्रणी, सुग्रवौ—देखो 'सूवणी, सूववौ' (रू.भे.)

उ०—महि सुइ सट मास प्रात जळ मर्जे, आप अपरम अग जित इद्री । प्रागे वेलि पढता नित प्रति, श्री वछित [illegible] छित श्री ।

—वेलि

सुग्रणहार, हारौ (हारी), सुग्रणियौ—वि० ।

सुयोडौ—भू०का०कृ० ।

सुईजणौ, सुईजबौ—भाव वा० ।

सुग्रन—स पु [स. सूनु] पुत्र, वेटा ।

सुग्रर—देखो 'मूवर' (रू भे)

उ०—उठै ठोळै कन्है खादरियां पगा मे खैस कियो । खग मग मे लगावणौ लागियो । मारा ठाकुर मूग्रर ऊपर ग्रा घिग्यिा । इतरै मुग्रर वळै फौज मे भिळियो सो मारी फौज फरोळती-कचळती फिरै छै ।—डाढाळा सूर री वात

सुग्ररडौ—देखो 'मूवर' (अल्पा, रू भे)

सुग्ररदतौ—स पु.—एक प्रकार का वह हाथी जिसके दांत पृथ्वी की ओर झुके रहते है । (ऐवी)

सुग्रवसर—स पु [स] अच्छा मौका, अच्छा अवसर ।

सुग्रांन—देखो 'स्वान' (रू भे.)

सुग्रांमी—देखो 'मामी' (रू.भे)

सुग्राग—देखो 'सुहाग' (रू भे)

सुग्रागत—देखो 'स्वागत' (रू भे.)

सुग्रागौ—देखो 'सुहागौ' (रू भे.)

सुग्राड़—देखो 'सुवावड' (रू भे.)

सुग्राडी—देखो 'सुवाडी' (रू भे.)

सुग्राद—देखो 'स्वाद' (रू भे)

सुग्रार—स.पु १ नापित, नाई ।

उ०—आय छिपै पुर मैं असुर, निम उर धार विचार । छाना सैया छेडिया, सगि तेतिया सुग्रार ।—रा रू

२ देखो 'सवार' (रू.भे)

सुग्रारथ—देखो 'स्वारथ' (रू भे)

सुग्रारथी—देखो 'स्वारथी' (रू.भे)

उ०—आप सुग्रारथी मगै आदमी, मत छोडै गौ मगै सती । भगणीयो नहीं गौ मरी अहागण, जत्र-मत्र विण मगै जती ।

—अग्यात

सुग्रारव—वि.—मीठे व मधुर शब्द करने या बोलने वाला ।

सुग्राल—स पु. [अ.] १ सवाल ।

२ देखो 'सवाल' (रू भे)

सुग्रावड़—देखो 'सुवावड' (रू भे.)

उ०—इण दौ वरस री छेटी मे तीजा, चौथकी, पाचवी, आयचुकी, धापूडी, पप्पू अर मुनियो धडाधड जनमता उज गया । हरेक सुग्रावड उण रै वास्तै मौत री घाटी बण नै आई पण भगवान उण लाज राखी नीं तो राम जाणै म्हारी काई हालत व्हैती ।—अमर चूनडी

सुग्रावत—देखो 'सूग्रावत' (रू भे)

सुग्रासण, सुग्रासणी—देखो 'सवासणी' (रू भे)

सुग्रासणौ—देखो 'सवासणौ' (रू.भे.)

सुग्रासन—स पु [स] १ बैठने के लिए सुन्दर आसन ।

२ देखो 'सवासणी' (रू.भे)

सुग्रासिण, सुग्रासिणी—देखो 'सवासणी' (रू भे)

सुग्राहित—स पु [स.] तलवार के ३२ हाथो में से एक हाथ, तलवार का एक प्रकार का दाव ।

सुइ—१ देखो 'सूई' (रू भे.)

२ देखो 'सुचि' (रू.भे.)

३ देखो 'स्रुति' (रू भे)

सुइच्छा—स. स्त्री [स] १ अच्छी भावना, सद्भावना ।

उ०—सिच्छा स्वय सिच्छा सिच्छा दीनी सेन सिच्छा सत्रू, इच्छा स्वय इच्छा की सुइच्छा अभिलाखी तै । सत्य मैं प्रमत्त सूर दूर ह्वां असत्य देख, सत्त सत्त साखी भयौ राजी सत्य साखी तै ।

—ऊ का

२ स्व-इच्छा, अपनी इच्छा ।

उ०—श्री तस्मत इच्छा निचरन सुइच्छा जन विखै, लखै द्रष्टि करम परमेस्टी पुनि लिखै । तुही सरजै पाळै हनि पुनि सभाळै उतपती, अई इदू अबा जयति जगदवा भगवती ।—मे म

सुइणौ, सुइबौ—देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू भे.)

उ०—१ अभिग्रह लीधा हो कुमरी मदालसा, प्रीतम न मिलइ जाम । सुइवौ हो धरती निरती भूय मे, जपती रहु प्रिय नाम ।

—वि कु

उ०—२ कर मुकावण अवसरै रे, काइ अरघो दीधौ राज-रे । वलि ग्रह निज पुत्री तणी रे, काइ दीधां सुइवा काज रे ।

—वि कु

सुइणहार, हारौ (हारी), सुइणियौ—वि० ।

सुइयोडौ—भू०का०कृ० ।

सुंहाळौ—देखो 'सुवाळौ' (रू भे)

उ०—पचरग दीघा ढोलिया, पुतळी पागे जाए। सेभ सुंहाळी अति-भली, रेसम वरिणयौ वाए।—ढो. मा.

(स्त्री. सुहाळी)

सुहिणौ, सुंहीणौ—देखो 'सुहिणौ' (रू भे.)

उ०—सदक सूती सुहिणौ लाधौ, लका लाखरण आयौ। लाखरण आयौ लका लीवी, सायर सेत वधायौ।—मेहोजी गोदारौ

सु—स. पु. [स शु] १ पल। (एका.)

२ पलास। (,,)

३ चाद, चन्द्रमा। (,,)

४ शुक, तोता। (,,)

५ पत्थर, पाषाण। (,,)

६ कैलाश पर्वत। (,,)

सं पु —७ घोडा, अश्व। (,,)

८ नख, नाखून। (,,)

९ गधा। (,,)

१० समूह, झुण्ड। (,,)

११ मोर की तेज आवाज, कौहक। (,,)

[सं. सु] १२ रवि, सूर्य। (,,)

१३ ध्वनि, आवाज। (,,)

१४ कुल्हाडी, कुठार। (,,)

१५ छेदन। (,,)

१६ परशु। (,,)

१७ सुथार, बढई। (,,)

१८ सुन्दरता, खूबसूरती।

१९ उन्नति, प्रगति।

२० आनन्द, प्रसन्नता।

२१ समृद्धि।

२२ पूजा, अर्चना।

२३ कष्ट, तकलीफ।

२४ अनुमति, आज्ञा, सहमति।

वि.—१ अच्छा, भला।

२ अच्छा, बढिया।

३ श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ।

४ उत्तम, पवित्र।

५ सुन्दर, खूबसूरत।

६ सहज, सरल, आसान।

७ उचित, उपयुक्त।

८ अधिक, अत्यधिक, खूब।

उ०—पाछइ प्रोहित राखियउ, तेडघा मागरणहार। जे भेदक गीता तरणा, वात करइ सु विचार।—ढो मा

सर्व.—१ स्व, अपना।

उ० – वळिवळ समरथि रथ लै वैसारि, स्यामा कर साहे सु करि। वाहर रै वाहर कोड छै वर, हरि हरिणाक्षी जाइ हरि।—वेलि

२ उन, उन्हें, उन्होंने।

उ०—१ धरती जेहा भरखमा, नमणा जेहि केळि। मज्जीठा जिम रच्चणा, दई, सु मज्जण मेळि। – ढो. मा

उ०—२ मारूराव 'मुकन्न' रै, खीची साथ 'मुकन्न'। सु तो अजेगढ खान सू, मिळ पूछिया प्रसन्न।—रा. रू

३ वह, वे, सो।

उ०—सैसव सु जु सिसिर वितीत थयौ सहु, गुण गति मति अति गिणि। आप तणौ परिग्रह लै आयौ, तरुणापौ रितुराउ तिणि।

—वेलि

उ०—२ रावळ दूदो जसहड रो। जसहड पाल्हण रो। पाल्हण काल्हण रो पोतरो। तिण आयनै जेसळमेर सूनो पडियौ हुतो सु लै नै टीकै वैठो। वरस १० दिन ७ राज कियो।—नैणसी

उ०—३ आरोपित हार घणौ थियौ अतर, उरस्थळ कुभस्थळ आज। सु जु मोती लहि न लहै सोभा, रज तिणि सिर नांखै गजराज।—वेलि

उ०—४ सखी सु सज्जण आविया, हुता मुझ्झ हियाह। सूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह।—ढो मा

क्रि.वि.—एक अव्यय शब्द जो सज्ञावाची शब्दों के साथ कर्मधारय और बहुव्रीहि समासों मे एव विशेषणवाची व क्रिया विशेषणवाची शब्दों के साथ व्यवहृत किया जाता है। इसके निम्नाङ्कित अर्थ होते हैं—

१ भली-भाँति, अच्छी तरह।

२ सरलतापूर्वक, सरलता मे।

३ इसलिए।

उ०—तरै चीवै मावतसी कह्यौ आहेडिए सूअर दाय हेरिया था तठै गयौ, हमार आवै छै। सु यू करता आयण हुवौ, तरै राणा वळै मानसिघ नु याद कीयौ।—नैणसी

४ ही।

उ०—१ इणि परि ऊमा देवडी, जाणी मारूवत्त। सु प्रभाति कहिवा भणी, पिंगळ पासि पहुत्त।—ढो.मा

उ०—२ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस सधि सुहिणा सु वरि। हिव पळ-पळ चढती जि होइसै, प्रथम ग्यान एहवी परि।—वेलि

उ०—३ वधिया तनि सरवरि वेस वधती, जोवण तणौ तणौ जळ जोर। कामणि करग सु ताणे काम रा, दोर सु वरुण तणा किरि डोर।—वेलि

अव्य०—१ पादपूरक वर्ण।

उ०—१ इहा सु पजर मन उहा, जय जाणइला लोइ। नयणा

(स्त्री. मुकचायोटी)

सुकच्छ, सुकछ—वि स्त्री [सं. सु+कच] १ अच्छे केशो वाली।

उ०—नमणी, खमणी, बहुगुणी, सुकोमळी जु सुकच्छ। गोरी गगानीर ज्यू, मन गरबी, तन अच्छ।—ढो मा

[स सु+कक्ष] २ सुन्दर कक्ष वाली।

३ सुन्दर वस्त्रो वाली।

सुकजाणौ, सुकजावौ—देखो 'सकुचणौ, सकुचवौ' (रू.भे.)

सुकजाणहार, हारौ (हारी), सुकजारियौ —वि०।

सुकजायोडौ—भू०का०कृ०।

सुकजाईजणौ, सुकजाईजवौ—भाव वा०।

सुकजायोडौ देखो 'सकुचियोडो' (रू भे.)

(स्त्री सुकजायोडी)

सुकटि—वि स्त्री [स] जिसकी कमर सुन्दर हो, अच्छी कमर वाली।

स.स्त्री १ अच्छी कमर, सुन्दर कमर।

२ सुन्दर कमर वाली स्त्री।

सुकतज, सुकतिज—देखो 'मुक्तिज' (रू भे) (अ मा, डिं को.)

सुकतड, सुकतुड—स पु [स शुकतुड] १ तोते की चोच।

२ तांत्रिक पूजन मे बनाई जाने वाली हाथ की एक मुद्रा विशेष।

वि—तोते की चोच के समान सुन्दर नाक वाला।

सुकथ, सुकथन—स पु [स. सुकथन] १ गुण-कथन, कीर्तिगान।

२ कीर्ति, यश।

उ०—धना हाथ कमवजा महाभडा सूरधीरा, किया पाथ जेम हुइ भारथा कहाय। सुकथा रहावै इळा चौकूठ रा सूरा मारू, रभ मथा रथै बैठा दुनै मारु-राव।—चतुरो खिड़ियो

३ अच्छी बात या चर्चा।

४ कहने का सुन्दर तरीका, ढग या प्रणाली।

सुकथा—स.स्त्री. १ अच्छी बात, चर्चा या प्रसग।

२ कोई प्रेरणाप्रद कथानक।

सुकदायक—देखो 'सुखदायक' (रू.भे.)

उ०—मोरा मेह मछा जळ मानै, करै नही विहगा व्रछ कानै। 'चापा' ज्या सूरज चकवानै, सुकदायक आदू सकव्या नै।

—भभूतसिहजी री गीत

सुकदेव—स.पु—पुराणो के भारी वक्ता एव ज्ञानी एक मुनि जो कृष्ण द्वैपायन व्यास के पुत्र थे।

उ०—१ अहो निस कागभुसुड आराध, पढै तो नाम सदा प्रहळाद। जपै सुकदेव जिसा जोगेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह र.

उ०—२ सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा, सुकवि अनेक तै एक सथ। श्री वरणण पहिलौ कीजै तिणि, गूथियै जेणि सिगार ग्रथ।

—वेलि

रू भे—सुखदे, सुखदेव।

सुकन—वि. [स. सु+कर्ण] जिसके कान सुन्दर हो।

स पु—१ अच्छे कान।

२ देखो 'सुगन' (रू.भे.)

उ०—१ सूर न पूछै टीपणौ, सुकन न देखै सूर। मरणा नू मगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।—बा.दा.

उ०—२ गजि उठा हुती भलै मुहरत राजिया छै, पातिसाहजी सू पणौ सुख हुयौ छै, भला सुकन हुया छै, गजि न पधारै। ताहरा मुहुर्त रै पानियै गजि पर्ग नागण न पधारिया।—द.वि

सुकनभेट—देखो 'सुकुनभेट' (रू.भे)

सुकनाई—देखो 'सुगन' (रू भे)

उ०—आगम काग उडाय, सदा लेनी सुकनाई। रुकम चच पर रजत, बोल वरदाती बाई। आगम काग उडाय, नित तुम बाट निहारी। वर 'जीवा' वासतै राधै जिम कज बिहारी।

—अरजुणजी बारहठ

सुकनाधिप, सुकनाधिपत, सुकनाधिपति, सुकनाधिपती—स पु

[स शकुन+अधिपति] पक्षिराज गरुड।

उ०—वाल्मीक पुळिद रिखी वागो, कीधो गुर सुकनाधिप रागो। भग्न अठित बोर करा कर भीलण, अेम घणा पद अप्पिया।

र ज प्र

सुकनासी—वि [स शुक+नासिका] तोते की चोच तुल्य नाक वाला, सुन्दर नाक वाला।

स.पु—तोते की चोच तुल्य नाक।

सुकनी स.स्त्री [स. सुकन्या] १ पुत्री, कन्या।

उ०—नीराजन सुख विधि नियम, साधि लगन पळ साच। चन्द कवरि नाल सुकनी, आपी 'सेतळ' आच।—व भा

२ देखो 'सकुनि' (रू भे) (अ मा.)

३ देखो 'सुगनी' (रू भे.)

सुकन्या—स स्त्री [स] १ च्यवन ऋषि की पत्नी और शर्याति राजा की कन्या।

२ अच्छी कन्या, शुभ गुणो वाली कन्या।

सुकपिच्छक—स.पु [स. शुकपिच्छक] गन्धक। (डि का)

सुकप्रिय, सुकप्रिया—स स्त्री. [स शुकप्रिय] अनार, दाडम। (अ मा)

सुकमळाकारी—स.पु—एक प्रकार का शुभ लक्षणो वाला घोड़ा।

(शा हो.)

सुकमार—देखो 'सुकुमार' (रू.भे) (ह.ना मा)

उ०—भामणि रा सुकमार भुज, साहब गळै सुहाय। जाण नाळ जळजात रा, काम पताका काय।—बा दा

सुकमारता—देखो 'सुकुमारता' (रू.भे.)

उ०—अधर प्रवाळ सरीखा वणिया, दत जाणै हीरा री कणिया। बाह जिकै तो चपा री डाळ, हात पग री सुकमारता जाणै कमळनाळ।—र हमीर

सुईजणौ, सुईजवौ —भाव वा० ।

सुइयोड़ौ—देखो 'सूवियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री सुइयोडी)

सुइयौ—देखो 'सूवौ' (रू भे.)

सुई—१ देखो 'सूई' (रू भे)

उ०—१ आख्या मैं सुइया महू, सूली महू पचास । ओ दुखडो कैमं सहू, पिव औरा कै पास ।—अग्यात

उ०—२ खुद तौ गुरुजी बेंगण खावै, दूजा नैं परमोद बतावै । खैरणी सुई नै हसैं, तवौ हाडी नैं काळी बतावै ।—फुलवाडी

२ देखो 'सुचि' (रू भे)

३ देखो 'स्रु ति' (रू भे)

सुऐंन—स पु —सूर्य, रवि, सूरज । (ना मा)

सुऔ—देखो 'सूवौ' (रू भे)

उ०—भवारैं हीं भवरी गवरल है फिरौ, होजी वैंरी लिलवट आगळ चार । आखडिया रतनैं जडी, होजी वैंरी नाक सुआ री चोंच ।—लो गी

सुऔरोग—स.पु —सूतिका रोग ।

सुकट,सुकठ—स पु [स सुकठ] किष्किधा नरेश वाली का भाई सुग्रीव ।

उ० —१ गोपाळ गोव्यद खगेस-गामी, नागेस सज्या क्रत मैंन नामी । है जग वागा दसमाथ हना, माहेस वाछल्य 'सुकंठ' मीता ।

—र ज प्र.

उ०—२ अत हेत अहेम सुकठ अनैं, करुणानिध श्री रघुवीर कनैं । दिल मोद महादिल आयर दोई, भेद सकोई भाखियाँ ।—र रू

२ सुरीली आवाज, मधुर ध्वनि ।

रू भे - सुकठी ।

सुकठी वि स्त्री १ मधुर कठ वाली, सुरीली आवाज वाली ।

उ०—कोकिल कठ सुकठी कामिणी, गुणवती उतिम गज गामिणी । मुत्र नमिहर जोवण मदमत्ती सोवन मैं आभूखण मोहै, म्रिघलोचनी ग मन मोहै ।—ल पि

२ देखो 'सुकठ' (रू भे)

उ० - मिळ कपि हणुमत सुकठी म्यता, चौपट मारै वाळ अचता । दान भभीखण लक दीयता, वध पाज जळवानूदा ।—र ज प्र

सुक—स.पु [स शुक] (स्त्री सुकी) १ तोता, कीर, सुग्गा ।

(अ मा, टि को)

उ०—१ वणि कोकिला मोर चाकोर वाणी, सुक सारिकाय सुवाय सुहाणी । मुखै वैण कारडव कोक महै, वळै जीह सू प्रीय वावीय वदै । - रा.९.

उ०—२ नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ सजोति । अहिर विद्रम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति ।—रुकमणीमगळ

२ रावण का एक अमात्य जो अपने सारण नामक मित्र के साथ उसके गुप्तचर का काम भी निभाता था ।

३ मोच, फिक्र । (डि.को.)

४ कई सुगन्धित पदार्थों का मिश्रण ।

५ फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक योग ।

(ज्योतिष बालबोध)

रू भे —सुक्क, सुग्ग, स्रुक ।

६ देखो 'सक्र' (रू.भे)

उ०—वडपुरी सुक कवि लघु अकल वाणि ।—रामरासौ

७ देखो 'सुकदेव' (रू.भे)

उ०—१ कहि सिक सनकाद घू प्रहलाद, अहयत आद जेण जपैं । सुक नारद व्यास जळ कहि जाम, फिर कर तास दास थपैं ।

—र ज.प्र.

उ०—२ दधि वीणि लियाँ जाई वणती दीठी, साखियात गुण मैं समत । नामा अग्रि मुताहळ विदिसति, भजति कि सुक मुख भागवत । - वेलि

८ देखो 'सुक्र' (रू भे)

९ देखो 'सुख' (रू भे)

सुकडणौ, सुकड़वौ — देखो 'सिकुडणौ, सिकुडवौ' (रू भे)

उ० — म्हैं अवार ताणी उठै ईज सुकड़नैं वैठग्यौ ।—तिरसकू

सुकडणहार, हारौ (हारी), सुकड़णियौ —वि० ।

सुकडिओडौ, सुकड़ियोडौ, सुकड़योडौ —भू०का०कृ० ।

सुकडीजणौ, सुकडीजवौ—भाव वा० ।

सुकडाणौ, सुकुडावौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडवौ' (रू भे)

सुकडाणहार, हारौ (हारी), सुकडाणियौ—वि० ।

सुकडायोडौ - भू०का०कृ० ।

सुकड़ाईजणौ, सुकडाईजवौ— भाव वा०।

सुकडायोडौ— देखो 'सिकुडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुकुडायोडी)

सुकटावणौ, सुकडाववौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडवौ' (रू.भे)

सुकडावणहार, हारौ (हारी), सुकडावणियौ— वि० ।

सुकडाविओडौ, सुकडावियोडौ, सुकड़ाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

सुकडावीजणौ, सुकडावीजवौ —भाव वा० ।

सुकडावियोडौ – देखो 'सिकुडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुकडावियोडी)

सुकडियोडौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री सुकडियोडी)

सुकचण— देखो 'सकुचण' (रू भे) (डि को.)

सुकचाणौ, सुकचावौ — देखो 'सकुचणौ, सकुचवौ' (रू भे)

सुकचाणहार, हारौ (हारी), सुकचाणियौ—वि० ।

सुकचायोडौ - भू०का०कृ० ।

सुकचाईजणौ, सुकचाईजवौ—भाव वा०।

सुक[illegible] 'सकुचियोडौ' (रू भे.)

पर राजा या जागीरदार द्वारा भूमि-क्रेता से वसूल किया जाता था, जो प्राय विक्रय-मूल्य के दसवें भाग के बराबर होता था।
रू भे —सकराणौ।

सुकराचारि, सुकराचारिय, सुकराचारी, सुकराचारच—
देखो 'सुक्राचारच' (रू भे)

सुकरि—क्रि वि –१ शीघ्र, जल्दी।
२ देखो 'सुकर' (रू भे)

सुकरियप्रस्ट—स पु –सूर्य, भानु (अ मा.)

सुकरिया—देखो 'सुक्रिया' (रू भे)

सुकलवर, सुकलवरा- देखो 'सुक्रावर' (रू भे)

सुकळ, सुकल—वि [स सुकल] १ अपने धन का सद्व्यय करने वाला।
२ कोमल, मधुर एव अस्फुट स्वर करने वाला।
[स शुक्ल] ३ साफ, स्वच्छ, उज्ज्वल। (अ मा, ना मा)
उ०—बोलति मुहुरमुह बिरह सगै बैं, तिसी सुकळ निसि सरद तणी। हसणी तै न पासै देखै हस, हस न देखै हसणी।
—वेलि
४ श्वेत, सफेद, धवल। (डि को, ह ना मा)
५ चमकीला, चमकयुक्त।
६ सत्त्व गुणो से सम्बन्धित, सात्त्विक।
७ दोषरहित, निर्दोष।
८ शुभ, लाभकर।
९ पवित्र, उत्तम।
उ०—अनत सकति कउ निवास, अनत मुक्ति सुख विलास। अनत वीरज अनत धीरज, अनत सुकल ध्यान री।
—स कु
१० प्रकाशमान, प्रकाशयुक्त।
स पु –१ ब्राह्मणो की एक पदवी।
२ देखो 'सुकळपख' (रू भे)
उ०—जिन्है पख क्रम्म सुकल निधान, जिन्है वपु अग सुदक्षिण वाम। ब्रह्मा दखण अग वदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत।
—रा रूपावली
३ घोडे के तालु कण्ठ मे होने वाली भँवरी (चक्र) जो कि अति शुभ व कीर्ति प्रदीपनी मानी गई है। (शा हो)
रू भे —सुक्र।

सुकळपग, सुकळपाग—देखो 'सुक्राग' (रू भे) (ना मा)

सुकळपक्ष, सुकळपख, सुकळपख्य—स पु [स शुक्ल पक्ष] प्रत्येक पक्ष का उत्तरार्द्ध भाग, सुद पक्ष, उसमे प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का समय होता है। एक चन्द्रमा की कलाये प्रतिदिन बढती रहती है।
उ०—माह मास व्रतमान, अरक वैठौ उत्तराइणि। सुकलपख्य रिति सिसिर, महासुभ जोग सिरोमणि।—ल पि
रू भे —सुकळ, सुक्र, सुकळपक्ष, सुक्रपख।

सुकळाग, सुकलाग—वि. [स शुक्ल+अग] १ गौर वर्ण।
उ०—निसाळगा वक जरमन तणी नीह थी, ववर अगसक पतसाहरी वैर। प्रगत सुकलाग रीमउ सर नीछटगा, उरह पत्र लदन तै रूप ऊभेर।—किसोरदान बारहठ
२ देखो 'सुक्राग' (रू.भे)

सुकळावर, सुकळावरा, सुकळा अवर—देखो 'सुक्रावर' (रू भे)
उ०—वीरगाप राक हात नीसार्री, सुकळा अवर आराद सीरी। मुकतासळ जयै उजळ मार्री, सारद तुज नीसासी नमस्कै।
—रामदान लाळस

सुकळापग, सुकळापाग देखो 'सुक्राग' (रू भे.) (अ मा, ना मा)

सुकळी—स स्त्री [स शष्कुलिन्] मछी मछली। (अ मा)

सुकळीण, सुकलीण, सुकळीणी, सुकलीणी, सुकलीन—देखो सुकुलीण' (रू भे)
उ०—१ उ सुकलीण साहसी, सुवा न सूकै साग। समनद उपराठौ हुवौ, नगौ विमन्दू आग।—बा दा ख्यात
उ०—२ प्रससा घर धुसने 'पतावित', ससळ वन्द लीधा सुकळीण। 'जोधा' रहै वगतरा जडिया, उडीया रहै ब्रहामा जीण।
—मायोसीघ री गीत
उ०—३ अगदीयौ लीजै अगो, नौ ही अन्नादान रै। एम विचारी पनि हरि सुकलीणी सुसर सुजाण रै।—जि.सु
उ०—४ धन दिहाडो धन घडी, धन सुहरत धन वार। सुकळीणी सुदर तणी, साजन पूछी सार।—अग्यात
उ०—५ मोल न सार सभि हरी, सुकलीणी सुविलासी रै। जाणै भवको बीजली, आवी प्रीउ नै पासी रै।—प न चौ
(स्त्री सुकळीणी, सुकलीणी, सकुलिनी)

सुकळीपाग—देखो 'सुक्राग' (रू.भे)

सुकळौ, सुकलौ—देखो 'सकुळोरा'।
उ०—पाहण कु पूजै दुनी, करि करि सुक्ळा देव। हरिया सुकळा छाडिकै, करि निधुला की सेव।—अनुभववाणी

सुकव—देखो 'सुकवि' (रू भे) (अ मा)
उ०—सथाण्यां भाग विन क्रपा फुरमावियौ, तोर वाधवियौ सुकव ताई। साम्हळै बीनती धाविया सुरागी, वैठ रथ आविया उठै वाई।—नेतसी बारहठ

सुकवाह, सुकवाहण, सुकवाहन—स पु [स शुकवाहन] तोते पर सवारी करने वाला, कामदेव।

सुकवि, सुकवी स पु [स सुकवि] १ उत्तम काव्यकर्त्ता, अच्छा कवि। (डि को)
२ चारण।
उ० १ वेईयोक तिही तन पार कोइ, सरख वात साची सिही। किमि करि प्रणाम कीजै सुकवि, नरहर रै इतरौ निहीं।—पी ग्र
उ०—२ मारधरा देस रै माही, सुकव्या गुडद बनाई। रतनू माग

सुकमाळ, सुकमाल —देखो 'सुकोमळ' (रू भे.)

उ०—१ चदवदरण, अगलोयरणी, भीसुर ममदळ भाळ। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ गरभ सुकमाळ।—ढो मा

उ०—२ कोईक कामरण मुख सू इम कहै रे, दीसै नान्हडियाँ सुकमाल रे। कुटुब कबीलो किरण विध छोडियो रे, किरण विध तोडयो माया जाल रे।—जयवारणी

उ०—३ सोवन भारी जल भरी रे लाल, कनक कचोला थाल। लै आवै भावै घरणौ रे लाल, कामरिण अति सुकमाल। —प च चौ

उ०—४ धनख ज्यू ही भुहरा री खच, नासिका जि सूवा री ही चच। अधर प्रवाली जिमा वरिणया, दात जारणै हीरा री करिणया। वाह तो चपा री डाल हाथ पग जिकै कमळ सू ही सुकमाल।

—र हमीर

सुकमाळी, सुकमाली —देखो 'सुकोमळ' (रू भे)

उ०—ए मदिर मालिया रे, ए सुकमाली सेज रे। कुकुम वरगी मा सुदरी रे, मति मूकी अवला सू हेज रे। —जयवारणी

सुकमुख—वि [स शुक+मुख] १ जिसका तोते के समान मुख हो।

२ टेढा, कुटिल। (डि को)

स पु —तोते का मुख।

सुकर—स पु —१ वरछी, भाला। (ना डि को.)

२ हाथ, कर। (डि को)

उ०—१ सुकरै गिर माहै सीम नवाहै, राखि व्रज व्रजराज। सुरलोकि सराहै सौ मन माहे, ताइ प्रभू सिरताज। - पि प्र

उ०—२ आकुळत व्याकुरत चलत नह आवरणै, पीव किरण भात आराम पामै। सुकर दै मकरचा नैरण मूदै सची, नागरणी नाग सिर घडा नामै। —महाराणा राजसिहजी री गीत

उ०—३ इळा नभ भाळ पाताळ खप उपावरण, कपावरण काळ विकराळ कै केवी। सुकर प्रतमाळ किरमाळ जुग सम्हरणी, दिपै डाढाळ घटियाळ देवी। —खेतसी बारहठ

उ० ४ काळ गिरद अथहा कळोधर, प्रतपाळा वधन महाराज। सुरियद भूप 'अमर' निज सुकरा, भाजै कुरद विया भाराथ।

—महाराणा अमरसिहजी री गीत

वि —१ सहज, सरल।

२ सहज साध्य।

३ देखो 'सुक्र' (रू भे.)

उ०—१ आराधी ईसरि मर्द महेसर, पैठिसै कीरति परमसर। जप सै जोगेसर सुकर सैनीछर, मस्त रुसेमर नै ससिहर। —पी ग्र

उ०—२ वळि राजा छत्रिया वहनामी, निविळै सै दोड त्रिख नाखि। एक कीयौ तै इदर ऊपर, एक सुकर री काढी आखि।

—पी ग्र

उ० - ३ सुकर छाई वादळी, रही सनेसर छाय। डक कहै भडळी वा, वरस्या विना न जाय। दीवा वीती पचमी, मोम सुकर गुरु मूळ। डक कहै है भडळी, निपजै सातू तूळ। सोमां सुकरां सुर गुरा, जै चदो ऊगत। डक कहै है भडळी, जळ थळ एक करत।

—वर्षा विज्ञान

४ देखो 'सूवर' (रू भे)

रू भे —सुकरि।

सुकररणी—स.पु [स. सु —कर्मन्] अच्छे कर्म, अच्छे कार्य, शुभ कार्य।

उ०—करी कथ केवळी, करी मत सील सुकररणी। करी जीभ जीकार, करी उदिया घट करणी।— सुरजनदास पूनियो

सुकरत —देखो 'सुक्रत' (रू भे)

उ०—१ अवनी मैं जिकै भलाई आया, करै सदा सुकरत रा काम। दान सदा वित मारु देवै, नित रसरणा लेवै हरिनाम।

— र रू

उ०—२ निसचर ! पाप किया जै मुख हुवै, रावरण ! सुकरत करै न कोय। अभिमानी कुमती रे, निसचर कुमती, म्हारा प्रारणा रा प्रीतम सूं, म्हारा सुखडा रा सागर सू विछवी थे कीयौ।

—गी रा.

उ०—३ नित जप जप जगनायक, वायक मत कहरण सुजस कमळावर। सुकरत कररण सदीवत, सोहत अै करत सत पुरस।

—र ज प्र

सुकरतळ—स पु —छप्पय छन्द का ४५वाँ भेद जिसमे २६ गुरु, १०० लघु से १२६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। (र ज प्र)

सुकरति, सुकरती — देखो 'सुक्रत' (रू भे)

उ०—धीरम, धरिया ही रह्या, का पुरसा का माल। सुकरति सोदा कर गया, जै माई का लाल।—अग्यात

सुकरम—स पु [स सुकर्मन्] अच्छा कार्य, सत्कर्म।

सुकरमा—स पु [स वि सुकर्मिन्] १ अच्छा कार्य करने वाला, पुण्य-कार्यकर्त्ता व्यक्ति।

२ विषकभ आदि सत्ताईस योगो मे से सातवाँ योग। (ज्योतिष)

३ विश्वकर्मा।

४ विश्वामित्र।

सुकरमी—वि [स सुकर्मी या सुकर्मिन्] १ अच्छा कार्य करने वाला।

२ पुण्यवत कार्य करने वाला, पुण्यात्मा।

३ सदाचार का पालन करने वाला, सदाचारी।

रू भे —सुक्रमी।

सुकरवार—देखो 'सुक्र' (रू भे)

सुकराणी—स पु —१ किसी कार्य के सम्पन्न होने पर कार्य-सम्पादन मे सहायको के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के शब्द।

२ उक्त कृतज्ञता या धन्यवाद के रूप मे दिया जाने वाला धन।

३ राजाओ या जागीरदारो द्वारा लिया जाने वाला एक प्रकार का कर विशेष।

वि वि —यह कर ग्रावासी की भूमि का पट्टा (अधिकार-पत्र) करने

उ०—२ आज जनम सुकियारथउ रे, भेट्या स्रीजिनराय । प्रभु सु मन लागौ, छिण इक दूरि न थाय ।—वि कु.

उ०—३ आयउ सिवपुरी हुआे कारिज सिध, परमगुरू चा ग्रहिया पगि । माहोमाहि करइ वाता मिळि, जनम सुकियारथ हूआे जगि ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ प्रथमी पावडेह, भुय उपरि भ्रविया घणा । सुकियारथा जकेह, ती दिन दीन्हा देवजी ।—वील्हौजी

उ०—५ नीम गयौ सुकियारथौ, उणि सुदरि अरथाय । मीम पखै हि मारिस्या, मीत सहै सिर जाय ।—मेहोजी गोदारौ

(स्त्री सुकियारथी)

सुकिरत, सुकिरति सुकिरित सुकिरिति—देखो 'सुकीरति' (रू भे)

उ०—केहिक होवै तौ सुकिरिति करिया, जरणा रै वाता सहि जरिया । डाकण छै ममता थी डरिया स्रीकम सा कितराई तरिया ।—पी ग्र

सुकीय—देखो 'स्वकीय' (रू भे)

सुकीया—देखो 'स्वकीया' (रू भे)

उ०—समर भडा सुकीया सुदरीया, चैवै कवर परगह सुचोख । अफर सत्रा आराण नर अवरा, दीठा तिया वळागौ दोख ।—तेजसी खिडियौ

सुकीरत, सुकीरति, सुकीरती—स स्त्री [स सुकीर्त्ति] १ सुयश, यश, कीर्त्ति ।

२ तारीफ, बडाई, सराहना ।

उ०—सुकीरती समाज रे, प्रसिद्ध सिंघ पाज रे । जना निवाह लाज रे, रहू अधार राज रे ।—र ज प्र

रू भे —सुकित्ति, सुकिरत, सुकिरति, सुकिरित, सुकिरिति ।

सुकुडल—स पु. [स] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक पुत्र ।

सुकुडणौ, सुकुडवौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडवौ' (रू भे.)

सुकुडणहार, हारौ (हारी) सुकुडणियौ—वि० ।

सुकुडिओडौ, सुकुडियोडौ सुकुड्योडौ—भू०का०कृ० ।

सुकुडीजणौ, सुकुडीजवौ—भाव वा० ।

सुकुडाणौ, सुकुडावौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडवौ' (रू.भे.)

सुकुडाणहार हारौ (हारी), सुकुडाणियौ—वि० ।

सुकुडायोडौ—भू०का०कृ० ।

सुकुडाईजणौ, सुकुडाईजवौ—भाव वा० ।

सुकुडायोडौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुकुडायोडी)

सुकुडावणौ, सुकुडाववौ—देखो 'सिकुडणौ, सिकुडवौ' (रू भे.)

सुकुडावणहार, हारौ (हारी), सुकुडावणियौ—वि० ।

सुकुडाविओडौ, सुकुडावियोडौ, सुकुडाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

सुकुडावीजणौ, सुकुडावीजवौ—भाव वा० ।

सुकुडावियोडौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुकुडावियोडी)

सुकुडियोडौ—देखो 'सिकुडियोडौ' (रू.भे)

(स्त्री सुकुडियोडी)

सुकुति—देखो 'सूक्ति' (रू भे)

सुकुनभेंट—स पु—१ एक प्रकार का सरकारी कर विशेष जो अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर शुभ शकुनो के रूप मे लिया जाता था ।

२ रस्मीतौर पर शकुन के रूप मे दी जाने वाली वस्तु या धन ।

रू भे —सकुनभेंट, सुकनभेंट ।

सुकुनि, सुकुनी—१ देखो 'सकुनि' (रू भे.) (डि को.)

२ देखो 'सुगनि' (रू भे)

सुकुमार—वि [स.] १ कोमल, नाजुक ।

उ०—मैं सुकुमार खडी कापत हौं, सिर पर दधि की मटुकिया भारी रे । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, तुम्हरै चरणकमळ वळिहारी रे ।—मीरा

२ सुन्दर ।

३ चिकना, स्निग्ध ।

स पु.—१ नाजुक लडका या वाल ।

२ युवा पुरुष, जवान ।

३ मेरु पर्वत के नीचे का वन ।

४ स्वामी कार्त्तिकेय का नाम । (अ.मा.)

५ ईख ।

६ शाकद्वीप के जलधार पर्वत के निकट का एक वर्ष ।

७ काव्य का एक गुण ।

८ चम्पा का वृक्ष या फूल । (अ मा.)

रू भे —सुकमार, सुकुमाल ।

सुकुमारता—स स्त्री. [स] १ सुकुमार होने का गुण, अवस्था या भाव ।

२ कोमलता, नाजुकता ।

रू भे —सुकमारता ।

सुकुमारवन—स पु [स] सुमेरु के निकटस्थ का एक वन जो शङ्कर-पार्वती का कीडा-स्थल माना जाता है ।

सुकुमारी—स स्त्री. [स] १ पुत्री, वेटी ।

२ सुन्दर कन्या, सुन्दर लडकी ।

३ कुमारी कन्या ।

४ कोमल व नाजुक अङ्गो वाली युवती ।

५ चमली ।

६ ईख ।

७ शङ्खिनी नामक औषधि ।

८ नारद की पत्नी व सृञ्जय राजा की पुत्री का नाम ।

९ परीक्षित-पुत्र राजा भीमसेन की पत्नी का नाम ।

१० शाकद्वीपीय अनुतप्ता नामक नदी का नामान्तर ।

लाख रग लागै, कुळ मैं कमर न काई ।—मे म

उ०—३ अविनासी अविकार अमीमा, सुभ गुण दियण अनुग्रह मीमा । पूरण उरस पुराण प्रमेसर, सुकवि मधार वार अग्रेस्वर ।

—रा रू

३ पण्डित । (ह ना मा)

रू भे —मकव मकवि, मकवी, मुकव ।

सुकसार—स स्त्री —मछी, मछली । (अ मा)

सुकसारकाप्रलापण, सुकसारिकाप्रलापण, सुकसारिकाप्रलापम—स पु [स शुक सारिका प्रलापन] १ तोता-मैना को पढाने की क्रिया ।

२ स्त्रियो की ६४ कलाओ मे से एक ।

सुकाज—स पु [स मुकार्य] १ भलाई, उपकार ।

उ०—१ मासी कह्यौ—थू म्हनै ग्रैंडी अबूझ जाणै हे काई । किणी दूजा रै भरोसै म्है थनै आ मीख नी दी । म्हनै म्पना मैं ई औ पतियारौ नी हौ कै म्हारौ धन सुकाज मारु वरतीजैला ।

—फुलवाडी

२ यश, कीर्ति । (अ मा)

३ अच्छा कार्य ।

क्रि वि —लिए, हेतु ।

उ०—महा दिय मान करि गुह मीत, तारै मह कीर कुटुम्ब महीत । करै कपि मित्र मुग्रीव सुकाज, रहच्चै वालि दियौ कपि राज ।

—ह र

रू भे —मुकाग्ज ।

सुकाणौ, सुकावौ देखो 'मुखाणौ, मुखावौ' (रू भे)

उ०—भीना चीर सुकायवा, रईय गुफा मैं राजुल रग कि । रहनै मैं काउमग रह्यौ, अवलोवी कह्यी मुदर अग कि ।—ध व ग्र

सुकाणहार, हारौ (हारी), सुकाणियौ—वि० ।

मुकायोडौ—भू०का०कृ० ।

सुकाईजणौ, सुका[ई]जवौ—कर्म वा० ।

सुकात—वि —नष्ट होने वाला, नश्वर ।

उ०—काळ ह कराळ औ कराळ भाभरयौ, दूसरे मरै विहाल ह्व ढरयो । यादि तै सुकात गात जात जी जग्यौ, पाहि मा अचाहि ओहि आपना मरयौ ।—ऊ का

सुकातज, सुकातिज—म पु [म शुक्तिज] मोती ।

सुकाय—वि —१ बडे आकार का, दीर्घकाय ।

२ मुन्दर व श्रेष्ठ शरीर वाला ।

३ दृढ, मजबूत, मशक्त ।

उ०—नमौ प्रह्ळाद उबारण प्रम्म, नमौ अंग कामव मारण अम्म । नमौ कमठावर रुप सुकाय, नमा मदराचळ पीठ भ्रमाय ।

—ह र

सुकायोडौ—देखो 'सुखायोडौ' (रू भे)

(स्त्री मुकायोडी)

सुकारज—देखो 'सुकाज' (रू भे)

सुकारथ—देखो 'मुक्यारथ' (रू भे.)

सुकारथौ—देखो 'मुक्यारथौ' (रू.भे)

(स्त्री सुकारथी)

सुकाळ, सुकाल—स पु [स मुकाल] १ दुष्काल का उलटा, सुभिक्ष ।

उ०—अभै नद ग्राम न ग्राम निराम, बस्यौ हरिराम अभै पद वाम । दुरासद मारन ग्राम दुकाळ, मुधा झडि बारह माम सुकाळ ।

—ऊ का

२ वह समय जो अन्न आदि की उपज की दृष्टि से उत्तम व अनुकूल हो ।

उ०—पोकरण सुकाळ हुवै नै मखरी नीपजै तौ रुपिया १५०००) ऊपजै नै पातसाही तरफ मुनसब मैं दाम लाख ८००००००) मे छै । तिण रा रुपिया २०००० हुवै ।—मारवाड री ख्यात

३ प्रचुरता, बहुतायत ।

रू भे —सक्काळ, सुगाळ ।

सुकावणौ, सुकाववौ—देखो 'मुखाणौ, सुखावौ' (रू भे)

सुकावहार, हारौ (हारी), सुकावणियौ—वि० ।

सुकाविओडौ, सकावियोडौ सुकाव्योडौ—भू०का०कृ० ।

सुकावीजणौ सुकावीजवौ—कर्म वा० ।

सुकावियोडौ—देखो 'मुखायोडौ' (रू भे)

(स्त्री मुकावियोडी)

सुकित्ति—देखो 'मुकीरति' (रू भे)

उ०—गुमान मोडि हत्थ जोडि देव कोडि वग्ग ए, अनूप भूप चूप धारि आइ पाइ लग्ग ए । पहू वहू सुकित्ति नित्त सव्व सोभ लायक, प्रगट्ट देव नित्त सेव सेव पास नायक ।—ध व ग्र

सुकिय—देखो 'स्वकीय' (रू भे) (डि को)

सुकिया—देखो 'स्वकीया' (रू भे) (डि को)

उ०—१ सुकिया मिळ जूथ अनेक करै मुख, रवि नाम नरंद मुरच द तणी रुख । चत्र जाम वितीत उदोत जगाचव, मभि गीभ विदा किय तीम छह मख ।—सू प्र

उ०—२ मभि बत्तीस नव मास, मिळै सुकिया जुथ मेळा । वाणी कोकिळ विमळ, चवै चदवदन मचेळा ।—सू प्र

उ०—३ सुकिया समूह मिळ नेह सुख, अत गायन आणद मैं । मुरराज जेम नरराज मुख, 'अभमाल' राजस इद मे ।

—सू प्र

उ०—४ वाजत्र वजत विसाळ, रस रागरग रसाळ । मिळ भूळ सुकिया वाम, क्रत रूप रति जिम काम ।—सू प्र

सुकियाग्ररथ, सुकियारथ, सुकियारथौ—देखो 'मुक्यारथ' (रू भे)

उ०—१ जिण दिन रघुवर जपै, सुकियाग्ररथ दिवस सोय नर सभळ । दर्से न राघव जिण दिन, जाणै सोय आळजजाळ ।

—र ज प्र

वि.—जिसके अङ्ग कोमल हों, कोमलाङ्गी।

सुकुमाल—देखो 'सुकुमार' (रू.भे.)

उ०—राज लीला सुख भोगियउ, म्हारउ रिखभ **सुकुमाल** रे। आज महइ तै परिसहा, भूख त्रसा नित काल रे।—स कु

सुकुळ—स पु [स सुकुल] १ उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश।

२ अच्छा घराना, प्रतिष्ठित परिवार।

३ उत्तम जाति, उच्च वर्ण।

सुकुलीण, सुकुळीणौ, सुकुलीणौ, सुकुलीन—वि [स सुकुलीन] (स्त्री. सुकुलीणी, सुकुलीनी, सुकुलीणी) १ श्रेष्ठ कुल या उत्तम वंश में जन्मा, उच्च कुल का, कुलीन।

उ०—१ सुंदर **सुकुलीणी** भीणी साडी मैं, जुलफां सपणी, जिम अपणी आडी मैं।—ऊ का

उ०—२ मूछ केस खडत नही, नाक न खडत कोर। पडी पुळता पाघडी, **सुकुळीणी** तज मोर।—वा दा

उ०—३ राजुल चाली रग सू रे लाल, यदुपति वदण जाइ **सुकुलीणी** रे। मेह सु भीनी मारगे रे लाल, ऊभी गुफा मांहे आइ सुकुलीणी रे।—स कु

२ अच्छे नस्ल का, नस्ली।

रू भे—सकलीण, सकलीणौ, सकलीन, सकुलीण, सकुलीणौ, सकुलीन, सुकळीण, सुकलीण, सुकळीणौ, सुकलीणौ, सुकलीन, सुकळौ, सुकलौ।

सुकुसुमा—स स्त्री. [स.] स्कद की एक मातृका।

सुकुसुमाकर—स पु—छप्पय छद का ६७वां भेद जिसमे ४ गुरू १४४ लघु से १४७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। इसको कुसुम भी कहते हैं। (र ज प्र)

सुकेडी—देखो 'सुखेडी' (रू भे.)

सुकेतु—स पु [स] १ ताडका नामक राक्षसी का पिता एक असुर।

२ पाण्डव पक्षीय एक राजा जो चित्रकेतु राजा का पुत्र था व कृपाचार्य के साथ युद्ध करते हुवे मारा गया था।

३ ताडका राक्षसी का पुत्र व सुबाहु राक्षस का भाई एक राक्षस का नाम।

४ कपिल ऋषि के शाप से बचा हुआ एक सगर-पुत्र।

५ कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक पुत्र दानव।

सुकेस—स पु. [स सुकेश] विद्युत्केश व सालकटका के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र राक्षस जो राक्षस होते हुवे भी पवित्र जीवन जीता था व धर्मनिष्ठ थे।

सुकेसि, सुकेसी—स पु [स सुकेशि] एक राक्षस जो विद्युत्केशि नामक राक्षस का पुत्र तथा माल्यवान, सुमाली व माली नामक राक्षसो का पिता था।

स स्त्री [स सुकेशी] १ लम्बे, घने एव सुन्दर केशो वाली स्त्री।

२ विराट नरेश की पत्नी का नाम।

३ अलकापुरी की एक अप्सरा जिसने अष्टावक्र के स्वागत मे नृत्य किया था।

४ कृष्ण की एक पत्नी का नाम।

५ परी, अप्सरा। (अ मा, डि.ना मा, ना.मा.)

६ मगध-नरेश केतुवीर्य की पुत्री व मरुत्त (तृतीय) की पत्नी का नाम।

वि स्त्री—सुन्दर व सुकोमल बालो वाली।

सुकोमळ, सुकोमल—वि [स सु कोमल] (स्त्री सुकोमळी, सुकोमली) १ अत्यन्त सुन्दर, कोमल, नाजुक, मनोहर।

उ०—नमणी खमणी बहुगुणी, **सुकोमळी** सु सुकच्छ। गोरी गगा नीर ज्यू, मन गरवी तन अच्छ।—ढो मा

२ मुलायम, नरम।

३ धीमा, मन्द।

४ प्रिय, मधुर।

रू भे—सुकमाळ, सुकमाल, सुकमाळी, सुकमाली।

सुक्क—१ देखो 'सुक' (रू भे)

२ देखो 'सुक्र' (रू भे)

उ०—होळी **सुक्क** सनीचरी, मगळवारी होय। चाक चढोडै मेदनी, विरळा जीवै कोय।—अग्यात

सुक्कर—१ देखो 'सुक्र' (रू भे)

उ०—समत सर विक्रम छत्तीस कम वै सहस, मास आसाढ तिथि सुकल नौमी। वार **सुक्कर** नखत स्वाति सध्या वखत, भवानी ओतस्या खुडद भोमी।—मे म

२ देखो 'सुक्र' (५) (रू भे)

३ देखो 'सुकर' (रू.भे.)

सुक्करवार—देखो 'सुक्रवार' (रू भे)

उ०—उजवाळी वैसाख री, छठी गुर **सुक्करवार**। मुहकमसिंघ 'कल्याण' तणा, रिण जीपो वह वार।—रा रू

सुक्किया—देखो 'स्वकीया' (रू भे)

उ०—रमै हसै नरिंदर, मभार राज मिदर। करै उछाह **सुक्किया**, पचास सातसै प्रिया।—सू प्र

सुक्ख—देखो 'सुख' (रू भे)

उ०—क्षुल्लक रिखि बोल्यउ खरउ, दीक्षा माहि दीठा दुक्ख र। आज आयउ राज लेईनइ, ससार ना भोगवु **सुक्ख** रे।—स कु

सुक्खम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)

उ०—नही तू बाळ न व्रद्ध न मूळ, नही तू थावर **सुक्खम** थूळ।—ह र

सुक्खेण—देखो 'सुखेण' (रू भे)

उ०—कपी बीस कोटेक **सुक्खेण** कीधा, दिसा पाछिम सोधिवा नार दीधा।—सू प्र

सुक्खो—देखो 'सुख' (अल्पा, रू भे)

उ०—घणी हेत पित मात, रह्या घरि वैंसि मया करि। सुखंम सेझ परहरी, आय सूतौ तिणि सारथरि।—वि स मा.

सुख–स.पु [स.] १ मन की वह उत्तम तथा प्रिय अनुभूति, जिसमे वह मानसिक व शारीरिक कष्टो से मुक्त रहकर उत्साहित व सतुष्ट रहता है और इस दशा के बराबर बने रहने की आशा करता है। शान्ति, आराम, दु ख का विपर्याय। (डि को.)

उ०—१ सोळैई थान अचळ इद्रीपुर, अति सुख उदै कियौ अतरि उर। विमन ब्रह्म सिव अरक वखांणौ, जळपति ममि दिस मारुत जाणौ। रा ह

उ०—२ सौय सुहागिन सूदरि, सुख सागर भरतार। दूजी दुखी दुहागनी, हरीया विन इकतार।—अनुभववाणी

उ० —३ सुख लाधै केलि स्याम स्यामा सगि, सखिए मन रखिए सघट। चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाहट।
—वेलि

पर्याय०—आनन्द, निरव्रती, मोद।

क्रि०प्र०—आणौ, करणौ, दैणौ, पाणौ, भोगणौ, मिळणौ, व्हैणौ।

मुहा०—१ सुख आणौ=सुख के दिन आना, आराम मिलना। २ सुख करणौ=आनन्द करना, मौज-मस्ती करनी, क्रीडा करना, रति क्रीडा करना। ३ सुख खोणौ=आफत, परेशानी या कोई झझट गले लगाना। ४ सुख पाणौ=आराम पाना, किसी कार्य मे कम परेशानी या परिश्रम होना। ५ सुख माणणौ=मौज-मस्ती करना, प्रसन्न रहना आनन्द करना। ६ सुख री नीद सोणौ=चैन से दिन काटना, निश्चिंत होकर रहना। ७ सुख लूटणौ=आनन्द करना, सुख-साधनो का उपभोग करना। ८ सुख व्हैणौ=कोई परेशानी या कष्ट समाप्त हो जाना, सुख होना।

[स. सुखम्] २ हर्ष, खुशी, आनन्द।

उ०—१ तरसि पधार हुआ तय्यारी, 'धीर' तणौ आयौ व्रतधारी। राणी जळती 'ऊदै' राखी, सुख नव कोट किया जग साखी।
— रा.रू.

उ०—२ अर्ध कु लोयन दीया ऐसैं मन फूलाय। जन हरीया ज्यु विरहनी, राम मिल्या सुख थाय।—अनुभववाणी

उ०—३ एकत उचित क्रीडा चौ आरभ दीठौ सु न किहि देव दुजि। अदिठ अस्रुत किम कहणौ आवै, सुख तै जाणणहार सुजि।
—वेलि

३ भय, चिन्ता या कष्टो से मुक्तावस्था, निश्चितता, चैन, शान्ति, आराम।

उ०—१ इमी भाति भरमल अरजा कर रजावध कर रीझाय लीयौ। सुख सु पोढ रह्या।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ सूतौ थाहर नीद सुख, सादूळौ वळवत। वन काठै मारग वहै, पग पग हौल पडत।—वा.दा.

४ प्रेम, प्रीति, स्नेह। (अ.मा, ह.ना मा.)

उ०—मिळिया वका राठवड, चित हित दाख वचाव। सुख जाडौ कीधौ सगै, रीधौ हाडौ राव।—रा.रू.

५ दोस्ती, मित्रता।

उ०—राव वीरमदै दूदावत धरती बाहिरौ काढीयौ थौ सु सहसै नै राठौड वेरसी राणौ अखैराजोत रै सुख हुतौ।
—राव मालदेव री वात

६ सुविधा, आराम।

उ०—उर आस पार न वार, चित टरत करत विचार। जग विनी पखी जात, सुख पख जेण सु गात।—रा.रू.

७ समृद्धि, सम्पन्नता।

उ०—१ सुख सपत्ति कै सब कोई साथी, विपति परै सब सटकै।
—मीरा

उ०—२ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख सपति, व्यापत नाहि विपत्ति।—मे.म.

८ कल्याण, मङ्गल। (अनेका.)

९ ध्यावस, तसल्ली, ढाढस।

उ०—१ आया मन विगसै नही, गया न होवै दुख। जनहरीया हरि भगति कौ, कैसे उपजै सुख। - अनुभववाणी

उ०—२ रथ थभि मारथी विप्र छडि रथ, श्री पुर हरि वोलिया इम। आयौ कहि कहि नाम अम्हीणौ, जा सुख दै स्यामा नै जिम।
—वेलि

१० सन्तोष, सब्र।

उ०—आसा तिसना छाडि, निरासा हुय रहै। हरिहा दास कहै हरिराम, साम सुख जब लहै।—अनुभववाणी

११ उमग, उत्साह।

उ०—मुरख मरोरुह खड लिया सुख साजही। कै अरुणोदय कांति रही मिळि राजही।—वा.दा.

१२ निरोगता, स्वस्थता, आरोग्यता।

१३ खामोशी, शान्ति।

१४ सरलता, आसानी।

१५ सन्धि, सुलह।

१६ उपयुक्त, ठीक, उचित।

१७ जल, पानी। (अनेका.)

१८ स्वर्ग।

वि.—१ प्रिय, मधुर, मनोहर।

२ धर्मात्मा, पुण्यात्मा।

३ सरल, करने योग्य।

४ आरामदायक।

उ०—वल्ली तसु बीज भागवत वायौ, महि थाणौ प्रिथुदास मुख। मूळ ताल जड अरथ मडहै, सुथिर करणि चढि छाह सुख।—वेलि

सुक्रगुजार—वि. [अ शुक्र+फा. गुजार] आभार मानने वाला, कृतज्ञ, धन्यवाद देने वाला।

सुक्रत—स पु [स सु-कृत] १ दान, पुण्य, धर्म आदि सत्कर्म, पुण्य-कार्य। (अ मा, डि को)

उ०—१ सुक्रत लगन स्वाधीन सदाई, सदा मगन सुख रामी। मनमुख सपत लगत अग्नि मी, पराधीन दुख पामी।—ऊ का

उ० —२ पिंड पडै पुन ना पडै, परळै पतित न होय। रजब, सगी जीवका, सुक्रत सिवाय न कोय।—रजब वाणी

उ०—३ जगतसिंह वडो दातार विवेकी ठाकुर हुवो. कळजुग माहै वडा वडा सुक्रत कीया। वडा वडा दान कीया।—नैणसी

[स. सुकृत] २ परोपकार, भलाई।

३ इन्द्रासन। (ना मा)

वि [स सुकृत्] १ भाग्यवान।

२ धर्मशील, धर्मातमा।

३ परोपकार, भलाई करने वाला, परहितैषी।

४ दानशील।

[स. सुकृत] भली-भाँति किया हुआ, भली-भाँति बनाया हुआ।

रू भे —सुकरत, सुकरति, सुकरती, सुक्रती, सुक्रत्य, सुक्रित, सुक्रिय।

सुक्रतकरम—स पु [स. सुकृत-कर्म] १ दान, पुण्य, धर्म, भलाई, परोपकार आदि सत्कर्म।

२ शुभ कार्य, उत्तम कार्य।

सुक्रति, सुक्रती—१ देखो 'सुक्रत' (रू भे) (ह ना मा.)

२ देखो 'सुक्रत्य' (रू भे) (अ मा.)

सुक्रतु—स पु [स सुक्रतु] १ अग्नि, आग।

२ शिव, महादेव।

३ इन्द्र।

४ मित्र, वरुण, सूय, सूरज।

सुक्रत्य—स पु—१ ऋषि, तपस्वी, मुनि। (अ मा)

२ देखो 'सुक्रत' (रू भे)

सुक्रमण—स पु—दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य। (अ मा)

सुक्रमी—देखो 'सुकरमी' (रू भे)

सुक्रवार—स.पु [स शुक्र-वार, वासर] सप्ताह का एक दिन जो वृहस्पतिवार के बाद तथा शनिवार से पहले पडता है।

रू भे —सुक्करवार।

सुक्रसिख, सुक्रसिस—स पु [स शुक्र-शिष्य] शुक्राचार्य के शिष्य दैत्य, असुर। (अ मा, डि को, ना मा)

सुक्राम—स पु—इन्द्र। (अ मा, ना मा)

सुक्राचारज, सुक्राचारी, सुक्राचारय्य, सुक्राचारय—स पु [स शुक्राचार्य] दैत्यों व असुरों के गुरु शुक्राचार्य जो महर्षि भृगु के पुत्र थे। (अनेका.)

रू.भे —सुकराचारि, सुकराचारिय, सुकराचारय।

सुक्रित, सुक्रिय—देखो 'सुक्रत' (रू भे)

उ०—१ क्रन रा भोज सुक्रित रा वयावर, वित ग्रवण अछत रा वीर। दत रा करण रजत रा दाता, खित रा रूप प्रक्रत रा खीर।

—आईदान पाल्हावत

उ०—२ जीव गयौ दहवाट, कारिज को सरीयो नही। जनहरीया हरि हाट, सुक्रिय सौदा ना कीया।—अनुभववाणी

सुक्रियय—देखो 'सुक्यारथ' (रू.भे)

उ०—साडै पूजा तूझ महणमय, सकळ सरीर करिस इम सुक्रियय।—ह र.

सुक्रिया—स पु [अ. शुक्रिया] आभार प्रदर्शन, धन्यवाद देने की क्रिया।

रू भे —सुकरिया।

सुक्रीडा—स स्त्री [स] १ एक अप्सरा का नाम।

२ अच्छा खेल।

सुक्रीत—वि [स सुकीर्ति] जिसका सुयश हो, वीर, बहादुर। (अ मा)

सुक्रोध—देखो 'सक्रोध' (रू.भे)

उ० —'जुझार' सुतन 'उमेद' जोध, कोपियो प्रळय पावक सुक्रोध।

—सि.रू

सुक्ल—स.पु [स शुक्ल] १ ब्रह्मावीसी का तीसरा वर्ष। (ज्योतिष)

२ देखो 'सुकलपख' (रू.भे)

उ०—प्रणम्मो समो च्यार छै नौ पहोमी। नमौ मास आसाढ री सुक्ल नोमी।—मे म

सुक्लता—स स्त्री [स शुक्ल-ता] १ शुक्ल होने की अवस्था या भाव।

२ सफेदी, श्वेतता।

३ उज्ज्वलता, स्वच्छता।

४ चमक, आभा।

सुक्लपख, सुक्लपक्ष, सुक्लपस—देखो 'सुकळपख' (रू भे)

सुक्लमास—स पु—ज्योतिष के २७ योगों में से एक योग।

(ज्यो. वा वा)

सुक्लाग—स पु [स शुक्ल+अग या अपाग] मोर, मयूर।

रू भे —सुकळपग, सुक्लपाग, सुकळाग, सुकलाग, सुकळापग सुकळापाग, सुकळीपाग, सुक्लापाग, सुक्लापाग।

सुक्लावर, सुक्लावरा—स.स्त्री [स शुक्ल-अवरा] सरस्वती, शारदा।

रू भे —सुकल अबर, सुकलवरा, सुकलावर, सुकलावरा।

सुक्लापाग—देखो 'सुक्लाग' (रू.भे) (ह ना मा)

सुक्षम—देखो 'सूक्ष्म' (रू.भे)

सुखक ी—स स्त्री —जीवनी, टोडी।

सुखडज—स पु [स शिखण्डज] वृहस्पति। (अ.मा)

सुखद—देखो 'सुखद' (रू.भे.)

सुखम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)

५ भला, अच्छा।
अव्यय–१ सहर्ष, आनन्द से।
२ आराम से।
३ आसानी से।
४ राजी या रजामन्दी से।
५ चुपचाप, शान्ति से।
रू भे —सुक, सुक्ख, सुख, सूख।
अल्पा —सुक्खौ, सुखडी।

सुख आसन—देखो 'सुखासण' (रू भे)

सुखकद–वि [स] सुख देने वाला, आनन्ददायक।
उ०—तू उपगार करै जु अपार अनाथ अधार सवै सुखकदा।
—ध व ग्र
स पु –सुख का मूल।

सुखकर, सुखकरण–वि [स] आनन्ददायक, हर्षप्रद, सुख देने वाला।
उ०—'ऊमर' हुवौ दूसरौ, हूतौ नाम 'हमीर'। तै हमरोट कहावही, सुखकर नीर समीर।—वा दा
स.पु –वैकुण्ठ, स्वर्ग। (ना मा)
रू.भे —सुखकार, सुखकारक, सुखकारी, सुखकारौ।

सुखकार, सुखकारक, सुखकारी, सुखकारौ—देखो 'सुखकर' (रू भे)
उ०—१ प्रथ्वी माहे परराडौ, सिवीयणी गढ सुखकार रे लाल। जेलागर मत्री जेहा, नामै जयतश्री नारि रे लाल।—ध व ग्र
उ०—२ सझि करि सोल सिंगार, अवर विव निज नारिया जी। आवी आणद पूर धवल मगल करती सुखकारी या जी।
—प च चौ
उ०—३ गोखै वैठी गौरडी, अपछर नै अनुहारी रे। केलि करै मन मेलि नै, सहियर सू सुखकारी रे।—वि कु
उ०—४ हुकम हुवौ सुसराजी सा' रौ, वरस चतूरदस वनचारी। प्राण प्रियाजी म्हारा वन मैं पधारै हौ, पति सेवा ही सुखकारी।
—गी रा

सुखगध–वि –जिसकी महक आनन्द देने वाली हो, सुगन्धित।

सुखग–वि –आराम से चलने या जाने वाला।

सुखडी–स स्त्री –१ एक प्रकार का मीठा खाद्य पदार्थ जो गेहूं के सेके हुए आटे मे घी व गुड मिलाकर बनाया जाता है।
२ मिठाई।
३ दस्तूरी, हक।
रू भे.—सुखडी।

सुखडौ–स पु –१ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।
उ०—तांबौ, कासी, पीतळ, जसद, सीसौ, कथीर, गरी, नाळेर, मिरच, पीपळ, मजीठ, हींग, सुखडौ, तेल, मिसरी गुळी, इतरा वसतै दुगाणी ८ मण १ लागै।—नैणसी
२ देखो 'सुख' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ औ तौ, नेह-नीत नागर घणौ, औ तौ, सुखडा री सागर स्याम।—गी रा
उ०—२ दूधा न्हासी, पुतरा फळसी, विपता वढो, सुखडै रळसी।
—दमदोख

सुखचतुरथी, सुखचौथ–स स्त्री [स सुखचतुर्थी] माघ, वैसाख, भाद्रपद व पौष मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को, यदि उस दिन मङ्गलवार हो, किया जाने वाला व्रत विशेष।

सुखचार–स पु –बढिया घोडा। (शा हो)

सुखजनक–वि [स] जिससे सुख उत्पन्न हो, सुखप्रद।

सुखजननी–वि स्त्री [स] आनन्ददायिनी, सुखप्रद।

सुखडी–स स्त्री –देखो 'सुखडी' (रू भे)
उ० पीरसवा माडी सुखडी सारी।—धरमपत्र

सुखण–स पु –१ पग्यु, फरमा। (डिं ना मा)
२ गडासा।

सुखणी–वि स्त्री –सुखी।
उ० बूढापै सुखणी हुस्यूजी, होनी मोटी रे आस। घर सूनौ करि जाय छै रे, माता मूकी नीरास।—जयवाणी

सुखत्रिय–स पु [स सुख=शोभा, सुन्दरता+स्त्री] काजल। (अ मा.)

सुखत्री–स पु [स सुक्षत्रिय] श्रेष्ठ क्षत्रिय, ऐसा क्षत्रिय जिसका चरित्र उज्ज्वल हो।

सुखद–वि [स] १ आरामदेह, आरामदायक, सुविधाजनक।
२ आनन्ददायक, हर्षप्रद।
उ०—आसोज पूरण जगत आसा, भोम अन अति भार ए। सोभतु जतु अनत सुखमय, सुखद सपति सार ए।—रा रू
३ सुन्दर, मनोहर।
उ०—१ सुच्छम रोमावळि सुखद, वरणी उकति विचार। माप्रति रस सिणगार री, वेल कियौ विसतार।—वा दा
उ०—२ सित कुसुमा गूथी सुखद, वेणी सहिया वृद। नागणि जाणै नीसरी, सापडि खीरसमद।—वा दा
४ प्रिय, मधुर।
उ०—अत परमळ पसर पसरिया आवा, सुक पिक बोलै सुखद सराग।—वा दा
स पु –१ विष्णु का आसन।
२ विष्णु।
३ मित्र, दोस्त। (अ मा, ह ना मा)
४ भोजन, खाना। (ह ना मा)
रू भे —सुखद।

सुखदान, सुखदानी–वि –सुख देने वाला।
उ०—१ सुपनै ही डग देसडै, सवण रसण सुखदान। नर नह सुणै खायै नही, पिकवाणी पकवान।—कविराज वाकीदास
उ०—२ दरस विना मोहि कछु न सुहावै, तलफ तलफ मरभानी।

मीरा तो चरणान की चेरी, गुण गीजों सुखदानी ।—मीरा

सुखदा–स स्त्री [स.] १ इन्द्र की एक अप्सरा ।

२ स्वामि कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम ।

३ गङ्गा नदी ।

४ लक्ष्मी । (अ मा)

५ हरितकी, हर्रे, हड । (अ मा)

वि स्त्री –सुखदायक ।

सुखदाइ, सुखदाइक, सुखदाईक—देखो 'सुखदायक' (रू भे)

उ०—१ पाल्यो छ खंड को राज जिर्णा, जिन राय भयो पदवी दु पाइ । सेवहु भाव भलै 'धरमसी' कहै 'साति' जिणद सबै सुखदाइ ।

—ध व ग्र.

उ०—२ साखी पद बद गाय सुणावै, साध सग सुखदाई । साध ठिकाणै थै ठग मारा, दोहू लोक दुखदाई ।—ऊ का

उ—३ होरी नितही निरखी नचिता, आतम दरसी सदा सुखदाई । नहि कोई मित अमिता ।—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—४ दाइ चदन बावना, बर्म बटाऊ आई । सुखदाई सीतळ किये, तीन्यों ताप नसाई ।—दादूवाणी

उ०—५ दसरथ 'अजन' घरै सुखदाई, रूप 'अभो' प्रगट्यो रघुराई ।

—रा रू

उ०—६ जियाराम गुरु साहब साचा, निरवानी अग्ज चितलाई । जन सुखराम साधु की सगत, सदा रहो सुखदाई ।

—स्री सुखरामजी महाराज

सुखदात, सुखदाता–वि [स सुख-दातृ] १ आनन्ददायक, सुख देने वाला ।

२ आराम देने वाला ।

सुखदाप्राण–वि –प्राणो को सुख देने वाला ।

स पु –मित्र, दोस्त । (अ मा)

सुखदाय, सुखदायक, सुखदायी, सुखदायौ–वि [स सुखदायक] (स्त्री सुखदायण, सुखदायणी, सुखदायिनी) १ आनन्ददायक, हर्षप्रद ।

उ०—काय अमावस रैण प्रससा कीजही, दीवाळी सुखदाय प्रभा दरसीजही ।—बा दा

२ सुख पहुँचाने वाला, आरामदायक, भला ।

उ०—१ जग नायक जिनवर पुहवी माहे प्रत्यक्ष, सोलम सतीसर' सुखदायक कल्पव्रक्ष ।—ध व ग्र

उ०—२ सुणै पढै नह सासतर, सेवै नह सतसग । सुखदायक किम सापजै, उर सतोख अभग ।—बा दा

उ०—३ नै वा अचित खूबसूरत, इती छोखी, इती सुबावणी, इती मनहरणी, इती सुखदायी, अर इती लुभावणी लागै कै बात छोडी ।—फुलवाडी

उ०—४ धारी कचन बरणी काया, राजि धारउ रूप सकल सुखदाया ।—वि.कु

३ सतुष्ट ।

४ हितकर, भला करने वाला, हितैषी ।

उ०—दसरथ नद सुखन रा दाता, अनुज जुथा धाता अनेम । निजकुळ मुकुट जान तीनायक, सुखदायक सेवगा सही ।

—र.ज प्र

रू भे.—सुखदायक, सुखदाइ, सुखदाइक, सुखदाई, सुखदाई ।

सुखदे, सुखदेव—देखो 'शुकदेव' (रू भे)

उ०—१ सोई पीयाला पी रिख नारद, सो सिनकादिक व्यास । सोई पीयाला जनक बदेही, सोई सुखदे व्यास ।—अनुभववाणी

उ०—२ सो कैसे बाल वय जिया बुधि सनकादिक जैसे । सुखदेव तरण विध सो वेद व्यास तैसे ।—सू प्र

उ०—३ विमळ कबेसर विलै साधु सुखदेव सरीसा । बालमीक जैदेव नाम नरहर कवि सीसा ।—पी ग्र

सुखधाम–स पु [स सुख+धाम] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ । (अ.मा)

२ सुख का घर, स्थान ।

सुखधामी–स.पु [स सुख+धाम+ई रा.प्र.] १ विष्णु ।

२ इन्द्र ।

३ स्वर्ग का निवासी ।

वि.–१ सुख के घर मे वास करने वाला ।

२ सुखी ।

सुखनवाण–स पु [फा सुखन+वाण] शब्द बाण, शब्द, ध्वनि ।

उ०—वीरबळ माराणो जद पातात् खाना खान नू खत इनायत कियो । अकबर जिणमे लिखियो म्हारी सभा नू नजरलागी जिणसू म्हारी सभा री जेव वीरबळ माराणो । हू वीरबळ री लोथ काढ लै बाळतो तो उण री चाकरी सू उरण होतो । खुदा ताळा री क्रपा सू वीरबळ सो नू मिळियो हो । म्हारा दिल माहली बात बाहर आणतो दारू ज्यू । म्हारा सुखनवाण सवारण नू खुरसाण हुतो ।—बा दा ख्यात

सुखपत, सुखपति, सुखपती—देखो 'सुसुप्ति' (रू भे)

उ०—१ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति । वेस सधि सुहिणा सु वरि, हिव पल पल चटतो जि होइसै । प्रथम ग्यान गहवी परि ।—वेलि

उ०—२ न को सुपन जागै न को सुखपती, न को पद तुरीया न को मोख मुगती ।—अनुभववाणी

सुखपात–स पु –सुख के पात्र ।

उ०—अणघड़ आप अविगत सरूपी, अखै अगाध सुखपात । ग्यान ध्यान पोथी नहि पुस्तक, स्याई कलम नहि हात ।

—स्री हरिरामजी महाराज

सुखपाळ, सुखपाल–स स्त्री –१ एक प्रकार का वाहन जिसे आदमी उठाकर चलते थे, पालकी, डोली ।

उ०—१सुखपाळ चढण चाळीस साठ, असवार हाथिया तणा

५ भला, अच्छा ।

अव्यय-१ सहर्ष, आनन्द से ।

२ आराम से ।

३ आसानी से ।

४ राजी या रजामन्दी से ।

५ चुपचाप, शान्ति से ।

रू भे —सुक, मुक्ख, सुख्ख, सूख ।

अल्पा.—सुक्खौ, सुखडौ ।

सुख आसन—देखो 'सुखासण' (रू.भे)

सुखकद–वि [स.] सुख देने वाला, आनन्ददायक ।

उ०—तू उपगार करै जु अपार अनाथ अधार सबै सुखकदा ।

—ध व ग्र

स.पु –सुख का मूल ।

सुखकर, सुखकरण–वि [स] आनन्ददायक, हर्षप्रद, सुख देने वाला ।

उ०— 'ऊमर' हुदौ दूसरौ, हूतौ नाम 'हमीर' । तै हमरोट कहावही, सुखकर नीर समीर ।—वा दा

स पु –वैकुण्ठ, स्वर्ग । (ना मा)

रू.भे –सुखकार, सुखकारक, सुखकारी, सुखकारौ ।

सुखकार, सुखकारक, सुखकारी, सुखकारौ—देखो 'सुखकर' (रू भे)

उ० १ प्रथ्वी माहै परराडौ, सिवीयणौ गढ सुखकार रे लाल । जेलागर मत्री जेहा, नामै जयतश्री नारि रे लाल ।— ध व ग्र

उ०—२ सभि करि सोल सिंगार, अवर विव निज नारिया जी । आवी आणद पूर धवल मगल करती सुखकारी या जी ।

—प च चौ

उ०– ३ गोखै वैठी गोरडी, अपछर नै अनुहारी रे । केलि करै मन मेलि नै, सहियर सू सुखकारी रे ।—वि कु

उ० –४ हुकम हुवौ सुसराजी सा' रौ, वग्स चतूरदस वनचारी । प्राण प्रियाजी म्हारा वन में पधारै हो, पति सेवा ही सुखकारी ।

—गी रा

सुखगध–वि –जिसकी महक आनन्द देने वाली हो, सुगन्धित ।

सुखग–वि.–आराम से चलने या जाने वाला ।

सुखडी–स स्त्री –१ एक प्रकार का मीठा खाद्य पदार्थ जो गेहूँ के सेके हुए आटे में घी व गुड मिलाकर बनाया जाता है ।

२ मिठाई ।

३ दस्तूरी, हक ।

रू भे.— सुखडी ।

सुखडौ–स पु –१ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।

उ०—तांबौ, कांसी, पीतळ, जसद, सीसौ, कथीर, गरी, नाळेर, मिरच, पीपळ, मजीठ, हींग, सुखडौ, तेल, मिसरी, गुळी, इतरा वसतै दुगाणी ८ मण १ लागै ।—नैणसी

२ देखो 'सुख' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ श्री तौ, नेह-नीत नागर धणौ, श्री तौ, सुखडा रौ सागर स्याम ।—गी रा

उ० – २ दूधा न्हामी, पुतरा फळसी, विपता वढी, सुखडै रळसी ।

—दमदोख

सुखचतुरथी, सुखचौथ–स स्त्री [स सुखचतुर्थी] माघ, वैसाख, भाद्रपद व पौष मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को, यदि उस दिन मङ्गलवार हो, किया जाने वाला व्रत विशेष ।

सुखचार–स.पु –वढिया घोडा । (शा हो)

सुखजनक–वि [स] जिससे सुख उत्पन्न हो, सुखप्रद ।

सुखजननी–वि.स्त्री [स] आनन्ददायिनी, सुखप्रद ।

सुखडी–स स्त्री –देखो 'सुखडी' (रू भे)

उ० पीरसवा माडी सुखडी सारी ।—धरमपत्र

सुखण–स पु –१ परशु, फरसा । (डि ना मा)

२ गडासा ।

सुखणी–वि स्त्री –सुखी ।

उ० वूढापै सुखणी हुस्यूजी, होसी मोटी रे आस । घर सूनौ कर जाय छै रे, माता मूकी नीराम ।—जयवाणी

सुखत्रिय–स पु [स सुख=शोभा, सुन्दरता+स्त्री] काजल ।(अ मा.)

सुखत्री–स पु [स सुक्षत्रिय] श्रेष्ठ क्षत्रिय, ऐसा क्षत्रिय जिसका चरित्र उज्ज्वल हो ।

सुखद–वि [स] १ आरामदेह, आरामदायक, सुविधाजनक ।

२ आनन्ददायक, हर्षप्रद ।

उ०—आसोज पूरण जगत आसा, भोम अन अति भार ए । सोभतु जतु अनत सुखमय, सुखद सपति सार ए ।—रा रू

३ सुन्दर, मनोहर ।

उ० —१ सुच्छम रोमावळि सुखद, वरणी उकति विचार । मासप्रति रस सिणगार री, वेल कियौ विसतार ।—वा दा

उ० – २ सित कुसुमा गूथी सुखद, वेणी महिया व्रद । नागणि जाणै नीसरी, सापडि खीरसमद ।—वा दा

४ प्रिय, मधुर ।

उ०—अत परमळ पसर पसरिया आवा, सुक पिक बोलै सुखद सराग ।—वा दा

स पु –१ विष्णु का आसन ।

२ विष्णु ।

३ मित्र, दोस्त । (अ मा,ह ना मा)

४ भोजन, खाना । (ह ना मा)

रू भे —सुखद ।

सुखदान, सुखदानी–वि –सुख देने वाला ।

उ०– १ सुपनै ही डरण देसडै, सवरण रमण सुखदान । नर नह सुणै खावै नही, पिकवाणी पकवान ।—कविराज वाकीदास

उ०—२ दरस विना मोहि कछु न सुहावै, तलफ तलफ सुरझानी ।

आठ ।—वि म

उ०—२ ताहरा प्रभात नरसघ नु सुखपाळ बैसाण सरव लोक भेळी करनै चालीया ।—राजा नरसिंघ री वात

२ स्वर्ण निर्मित एक प्रकार का बढिया पलङ्ग ।

उ०—पराधारी राजा 'पदम', निरखन किया निहाल । सै सूवता साथरै, सै पौढै सुखपाळ ।—द दा

सुखपूरवक—क्रि वि [स सुख-पूर्वक] १ सुख से, आराम से ।

२ आनन्द से, हर्ष सहित ।

सुखपोस—वि —जो सुखपूर्वक पाला-पोषा गया हो, जिसका पोषण सुखमय स्थिति मे हुआ हो ।

उ०—आथ अटूट अखूट अन, प्रजा घणी सुखपोस । वन 'वाका' ऊ ध्रगडौ, साहिब जै सतोस ।—बा दा

सुखप्रद—वि. [स] १ सुखद, सुखदायक, आरामदेह ।

२ आनन्ददायक, हर्षप्रद ।

सुखवास—स पु [स सुख-वास] १ सुखपूर्वक रहने की जगह । कुछ दिन या समय के लिए आराम से रहने की जगह ।

२ कष्ट या अभाव का समय व्यतीत करने के लिए किसी स्थान पर किया जाने वाला निवास ।

रू भे —सुखवास ।

सुखवासी—वि —१ 'सुखवास' करने वाला ।

२ आनन्द एव सुख से रहने वाला ।

रू भे —सुखवासी ।

सुखम—देखो 'सूक्षम' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ थावर जगम सुखम थूळ ।—केसोदास गाडण

उ०—२ त्रिण कोडा कोडि सागर सुखम वीय अरी, देह दौ कोस दोई पल्ल आयु धरी । बोर परिणाम आहार बीजै दिनै, युगलीया मानवी एह कहिया जिणै ।—ध व ग्र

रू भे —सुख्खम ।

देखो 'सुसमा' (रू भे) (ह ना मा)

सुखमगा—क्रि वि —सीधे रास्ते से, सुगमता से ।

उ०—आवै सघण अचीत, जेम वनि अगनि मिळगगा । सरप विकख मोखवा, मत्र आवै सुखमगा ।—रा रू

सुखमण, सुखमणा, सुखमणि—स स्त्री [स सुषुम्णा] १ शरीरस्थ तीन प्रधान नाडियो मे से एक जो इडा और पिंगला के बीच मे रहती है। (योग)

उ०—१ मनवा देव बसै हिरदा मै, नाभि कमळ पग दैला रै । चद्र सूर रा लिया सरोदा, सुखमण सीर चडैला रै ।

—श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ इळा अर पिंगळा बीच है सुखमणा, होय ताह त्रिगुटी घाट मेळा । अगम का पथ जाह और पुहचै नही, हम परिहम मिळ करत केळा ।—अनुभववाणी

उ०—३ इळा चद रवि पगळा, बिच सुखमणि को घाट । हरीया गुर परताप तै, खुल्हा सहज कपाट ।—अनुभववाणी

२ वैद्यक के अनुसार चौदह प्रधान नाडियो मे से एक जो नाभि के मध्य मे स्थित है और जिससे अन्य सब नाडियाँ लिपटी हुई होती है ।

[स सुषुम्ण] ३ सूर्य की मुख्य किरणो मे से एक का नाम ।

रू भे —सुखमन, सुखमना, सुखमनि, सुखमल, सुखमिण ।

सुखम-दुखम—स पु यौ [स सुख+दुख] जैन मतानुसार काल के प्रमुख छ भागो मे से अवसर्पिणी काल तथा उत्सर्पिणी काल का तृतीय काल विभाग, जिसमे प्रथम सुख तथा पश्चात् दुख हो ।

सुखमन, सुखमना, सुखमनि—देखो 'सुखमणा' (रू भे)

उ०—१ काम धेनु दुहि पीजियै, अलख रूप आनद । दादू पीवै हेत सौं, सुखमन लागा बद ।—दादूवाणी

उ०—२ जाकै बिच सुखमना जागी, नाव निरतर ताळी लागी । जुरा मरण काळ नही ग्रासै, मनवा मिल्या राम इक रासै ।

—अनुभववाणी

उ०—३ सकळ समीपी सकळ सुहावा, तीनि लोक त्रिभुवन पतिरावा । सुखमनि उलटि गगन मैं आणी मुनि मडल मैं खेलै प्राणी ।—ह पु वा

सुखममारग—देखो 'सूखममारग' (रू भे) (अ वा)

सुखमय—क्रि वि [स] सुखपूर्वक, आनन्दपूर्वक ।

उ० —आसोज पूरण जगत आसा, भोम अन अति भार ए । सोभतु जतु अनत सुखमय, सुखद सपति सार ए ।

—रा रू

वि —सुखी ।

रू भे.—सुखम ।

सुखमल—देखो 'सुखमण' (रू भे)

उ०—इळा पिंगळा पूरि कै, मन सुखमल कै माहि । जनहरीया सुख सहज की, इन सेती गम नाहि ।—अनुभववाणी

सुखम-सुख—स पु यौ. [स सुखम्] जैन मतानुसार अवसर्पिणी काल का प्रथम काल विभाग तथा उत्सर्पिणी काल का छठवाँ काल विभाग, जिसमे केवल सुख ही सुख हो ।

सुखमा—स स्त्री [स सुषमा] १ आभा, कान्ति, दीप्ति, शोभा, छवि ।

(अ.मा, ना मा)

२ खूबसूरती, सुन्दरता ।

[स शुष्मा] ३ ज्योति, प्रकाश ।

४ शक्ति, पराक्रम ।

५ तेज ।

६ सूय, रवि ।

७ महिमा ।

उ०—सुखमा बरणू सुखसागर की, अपनी रूप भेष उजागर की ।

का मन माही पैठी, नाना भाति नचाया। —ह पु.वा

सुखियारी—वि (स्त्री सुखियारी) सुखी।

उ०—सुख सू सूती थी विरजा सुखियारी, दुस्टी आता ही करदी दुखियारी। —ऊ का

सुखियौ—वि —सुखी।

उ०—१ सदा वास करि पोढै सुखिया, विसन ममद जामात बखाण।—ह ना मा

उ०—२ माहरा सहू इण राज मैं, थै ही जौ दुखिया होय। तौ कहो इण समार मैं, सुखियौ न दीसै कोय।—जयवाणी

क्रि.वि —सुखपूर्वक, आराम से।

उ०—१ माठ कोड घर वाहिरै जी, माहै वहोतर कोड। लोग सहु सुखिया वसै जी, राम क्रसण री जोड़।—जयवाणी

उ०—२ सखरै महिलै राखयौ सुखियौ, मखरी भगति सजाई। स्वारथ विण जै करणी मेवा, भला तणीय भलाई।

—ध.व ग्र

रू भे —सुखिओ, सु खिओ।

सुखी—वि [स सुखिन्] १ जिसको किसी प्रकार का दु ख, कष्ट, परेशानी या अभाव न हो, कष्ट व अभाव से सर्वथा मुक्त।

उ०—१ वळती लू चाली है अर सुखी जीवण मैं फोडी पड रै'यौ है।—दसदोख

उ०—२ वहेजु वाट वाट मैं पिता पिना महा वहैं। सुखी सुवाट तै सदा दुखी दुवाट मैं दहै।—ऊ का

२ आनन्दित, हर्षित, खुश।

उ०—प्यारी पजर भीतरे, ताहि न जाणै कोय। जन हरीया सौ जाणिसी, सुखी सुहागिन होय।—अनुभववाणी

३ सतुष्ट।

रू भे —सुखि।

सुखीओ, सुखीयौ—देखो 'सुखियौ' (रू भे)

उ०—१ जीव जिकै सुखीआ हूवा रे, वलि हुस्यइ छइ जेह। तै जिणवर ना धरम थी रे, मति कौ करज्यौ सदेहो रे।—स कु.

उ०—२ ताउ ऊपाडिउ वालिउ पाइ पूछिउ कुमुलु युधिष्टिरि राई। भणइ दुरयोधनु अतिअ सुखीया तुम्ह पाय जउ मइ पणमीया —मालिभद्र सूरि

सुखुपती, सुखुसी—देखो 'सुसुप्ती' (रू.भे)

उ०—१ जाग्रत स्वप्न सुखुपती तुरीया, इनतै अलग रहाया। तीन गुणा जहा उत्पति नाही, पाच भूत नहि काया।

—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ जाग्रत काया खड वड, सुपनही डोर हलाय। सुखुसी सावेट मैल दै, तौ सब परळै होय जाय।

—श्री हरिरामजी महाराज

सुखेडी, सुखेडी—स स्त्री —हरी सब्जी जिसे उबाले या बिना उबाले सुखा-कर शाक बनाया जाता है।

वि वि —ये सब्जियाँ है काचरा, मतीरा, ग्वारफली, टीडसी, साँगरी, केर, पाँमा, गाजर इत्यादि।

रू.भे.—सुकेड़ी।

सुखेण, सुखेन—स.पु. [स सुषेण] १ एक वानर जो वालि का श्वशुर व धर्म नामक वानर का पुत्र था। राम-रावण-युद्ध मे वह राम-पक्ष मे था। यह युद्ध-विशारद के साथ ही वैद्यक शास्त्रज्ञ भी था।

उ०—सुखेण नळ नील सुग्रीव साथा। हणू आदि आए मिळै जोड़ि हाथा।—सू प्र

२ एक राजा जो अविक्षित्-पुत्र परिक्षित् राजा का पुत्र था।

३ विष्णु का एक नामान्तर।

४ जमदग्नि एव रेणु के पुत्रो मे से एक।

५ कर्ण का एक पुत्र।

६ दूसरे मनु का एक पुत्र।

७ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीमसेन द्वारा मारा गया था।

८ श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

९ देवकी का एक पुत्र जो कस के द्वारा मारा गया था।

सुखोपति—देखो 'सुसुप्ती' (रू.भे)

उ०—जाग्रत सुपन सुखोपति, पाच ग्यान यत्री पचीस प्रक्रत लोई।

—ह पु.वा

सुख्ख—देखो 'सुख' (रू भे)

उ०—१ काया झबकइ कनक जिम, सुदर केहै सुख्ख। तेह सुरगा किम हुवइ, जिण वेहा बहु दुख्ख।—ढो मा

उ०—२ कहा घाट वाटू सुख्ख ठाटू मुज वेराटू राम ए। गुरु रामदासू चरित गासू नित निवासू नाम ए।—करुणा सागर

सुख्खदाई—देखो 'सुखदायी' (रू भे)

उ०—नमौ नमामी अतरयामी सरव स्वामी स्रस्टि ए। वदौ सदाई सुख्खदाई चित्त आई इस्ट ए।—करुणा सागर

सुख्खम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)

सुख्याति—स स्त्री [स] १ कीर्ति, यश, प्रशसा।

२ प्रतिष्ठा।

सुख्यारत, सुख्यारथ—देखो 'सुक्यारथ' (रू भे)

सुगद, सुगध—स.स्त्री [स सुगध] १ अच्छी और प्रिय गध, महक, खुशबू।

उ०—१ सोन् सुगध सोनू मिळया, वळिहारी इण वात री। साखात सकति 'इदर' सुणै, महिमा 'करनळ' मात री।—मे म

उ०—२ नाहर जौ गाजिस नही, ऐ गज वहता ईख। सर सर कमळ सुगंध री, भमर न मागिस भीख।—वा दा

पर्याय०—कसवोय, गध, डमर, वगर, वास, वासना, वासावळी, महक।

२ गधक।

२ आरामदायक शय्या।

रू.भे. —सुखसज्या।

सुखमोरठ—स पु —एक राग विशेष। (मीरा)

सुखस्यायक—स पु —कल्पवृक्ष। (ना मा)

सुखहारी—वि —सुख को हरण करने वाला।

उ०—दिली लखै दिगदाह, विगत हित माह विचारी। खर भूकै रव खंग, स्वान कूकै सुखहारी।—रा रू.

सुखाछक—स पु.—चन्द्रमा, चांद। (ना मा.)

सुखात—वि [स] जिसका अन्त सुखमय हो।

उ०—सुखी वियोग मै सुखी, दुखी भ्रमैं दिगत मैं। सुखात कात ग्लौमुखी, दुखात तै सुखात मैं।—ऊ का

सुखाकर—वि —सुखकर, सुखदायक।

उ०—पन्न त्रिभाग विना त्रिक सागर, सोलम मातिं जिणद सुखाकर।—ध.व ग्र.

सुखाणौ, सुखावौ—क्रि स ['सूखणौ' क्रि का प्रे रू] १ किसी गीले वस्त्र, कागज या किसी गीली वस्तु को धूप या हवा मे, गीलापन या आर्द्रता दूर करने के लिए फैलाकर रखना।

२ किसी प्रकार से ताप पहुँचा कर या किसी अन्य प्रक्रिया से किसी पदार्थ की आर्द्रता दूर करना।

३ सूखने के लिए डाल देना।

४ पानी सोखने के लिए प्रेरित करना।

५ दुर्बल या क्षीण कर देना।

सुखाणहार, हारौ (हारी), सुखाणियौ—वि०।

सुखायोडौ—भू०का०कृ०।

सुखाईजणौ, सुखाईजवौ—कर्म वा०।

सुकाणौ, सुकावौ, सुकावणौ, सुकाववौ, सुखवाणौ, सुखवावौ, सूखाणौ, सूखावौ, सूखावणौ, सूखाववौ—रू०भे०।

सुखायत—स पु [स] प्रशिक्षित, सधा हुआ तथा शीघ्र वश मे आने वाला घोडा।

सुखायोडौ—भू का कृ —१ गीलापन या आर्द्रता दूर करने के लिए खुली हवा या धूप मे फैलाया हुआ। २ ताप पहुँचा कर या किसी अन्य प्रक्रिया से आर्द्रता दूर किया हुआ। ३ सूखने के लिए डाला हुआ। ४ पानी सोखने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री सुखायोडी)

सुखारथी—वि. [स सुखार्थी] सुख की इच्छा या कामना करने वाला।

उ०—सुखारथी स्वारथी जै स्वसुख, दुख प्रारथी वच् सदै। वदै जी विद्यारथी विसद, परमारथी वच वदै। ऊ का

सुखाळा—वि —१ प्रसन्नचित्त, खुशमिजाज।

२ सुखी।

सुखाळी—स स्त्री —१ सुख की अवस्था या भाव।

२ आराम, चैन, खैरियत।

सुखाळौ—वि (स्त्री सुखाळी) प्रसन्न, सुखी।

उ०—हस सुखाळौ मानसर, चुगि मोताहळ खाय। हरीया इजा ना भखै, लाघणीयो रहि जाय।—अनुभववाणी

सुखावणौ, सुखाववौ—देखो 'सुखाणौ, सुखावौ' (रू भे)

उ०—म्हारा जीवण मैं दुख री आ एक ई हिलोळ आई, इणनै ई थू सुखावणी चावै।—फुलवाडी

सुखावणहार, हारौ (हारी), सुखावणियौ—वि०।

सुखाविओडौ, सुखावियोडौ, सुखाव्योडौ—भू०का०कृ०।

सुखावीजणौ, सुखावीजवौ—कर्म वा०।

सुखावियोडौ—देखो 'सुखायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुखावियोडी)

सुखावेस, सुखावेसु, सुखावेसू—क्रि वि —सुखपूर्वक।

उ०—कहा देस देसू रस प्रदेसू है परमेसू सग ए, दुस्टी विचेसू करि अनेसू खोस लेसू कग ए, मोई मरेसू जन निरभेसू सुखावेसू आज ए।—करुणा सागर

सुखासण, सुखासन, सुखासनि—स.पु —१ पालकी, डोली, सुखपाल।

उ०—१ हरि हरि उच्चार नर पुर हुए हेर वार विसमी हुई। उण वार रथी रथ ऊपडै आप सुखासण आरुही।—रा रू.

उ०—२ तठा उपराति राजान सिलामति घणा घोडा हाथी सुखासण रथ पायक जवहर हीरा मोती माणक सोना रूपा दाइजै दीजै छै।—रा सा स.

उ०—३ दैत्य दमनी हागी राजा जीतियो, सुखासण बैठ दैत्य दमनी घरै आई।—पचदडी री वारता

उ०—४ आवइ सकल कलापति व्यापति साटइ कोटि। वडठा स्वजन सुखासनि वासगि घन दिड कोडि।

—जयसेखर सूरि

२ आरामदायक आसन।

३ पलथी, पालथी।

रू.भे - सुख-आसन।

सुखि—क्रि वि —१ सुखपूर्वक, आराम मे।

उ०—मोटउ नगर लोग सुखि वसइ, चावउ कुवर कुळ छइ चिहु दिसइ। आठ सहस हयवर तसु मिळइ, पच सहस पायदळ तसु जुडइ।—ढो मा

२ देखो 'सुखी' (रू भे)

सुखिओ —देखो 'सुखियौ' (रू भे)

सुखिणी—वि स्त्री —देखो 'सुखी' (रू भे)

उ०—हू जाणू सुखिणी करू रे, परणावू वर सार रे।

—स्रीपाल रास

सुखिम —देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)

उ०—सीगी रिख सूखिम होय सोव्या, नारद रूप फिराया। सकर

सुगडा पान घाम रा तिणका उड जावै त्यू सारौ लोग विखर गयौ।
—डाढाळा सूर री वात

सुगठ—देखो 'सुघड' (रू भे)

सुगढ–स पु –अच्छा गढ, मजबूत गढ या किला।
वि –दृढ, पक्का।
उ०—थाका म्हाका अलग नही, राखौ था निज पास। म्हा तौ थारै आसरै, पायौ सुगढ निवास।—गौड गोपाळदास री वारता

सुगण–स पु –१ इक्ष्वाकुवशीय एक राजा, शङ्खण या शङ्खनाभ।
उ०—वज्रनाभ सुत सुगण धरमवप, तैं सुत विध्रत नरेस उग्र तप।
—सू.प्र.
२ देखो 'सुगन' (रू भे)
उ०—जिण दिन सुगण लैण नू नापौजी नरौजी गया, मू अवार माहाराज रायसिंहजी गढ घातियौ तठै आया।—द दा.
३ देखो 'सुगुणौ' (रू भे)
उ०—इम रहता सुख सु सदा, जै हूऔ छै विरतत। सुणयौ चित्त देइ सुगण, मन थिर करी एकत।—प च चौ
४ देखो सुगुण' (रू भे)

सुगणी–वि स्त्री –१ शुभ लक्षणा, गुणवती, गुणवान।
उ०—१ हा ऐ थारौ विछड्यौ कथ मिळावा, सुगणी म्हानै देस बताद्यौ ऐ।—लो गी
उ०—२ आसी हे उदमादीयौ, रञ्जीरजोवण कत। मौ सुगणी री साहिवौ, मद मातौ मैमत।—पना
उ०—३ वावौ छोड्यौ जलम कौ, छोडी सुगणी माय। भाई छोड्या खेलता, सात सख्या रौ साथ।—लो गी
२ सुन्दरी, रूपसी।
वि स्त्री –३ देखो 'सुगुणौ' (रू भे)
स स्त्री –१ सुन्दर स्त्री, शुभ लक्षणो वाली स्त्री।
२ पुत्री।
रू भे —सुगुणी।

सुगणौ—देखो 'सुगुणौ' (रू भे.)
उ०—१ कछु इक औगुण काढौ म्हामै, म्है भी काना सुगा। मैं तौ दासी थारी जनम जनम की थै साहिव सुगणा।—मीरा
उ०—२ नित करज्या समकित निरमलौ, निरमल जिम गगा नीर। तजज्या सगनि निगुणा तणी, सुगणा सु करस्या सीर।
—ध व ग्र
उ०—३ हसा नै सरवर घणा, सुगणा घणा ज मित। जाय पडया परदेस मैं, साजन आया चित।—अग्यात
(स्त्री सुगणी)

सुगत–स पु [स सुगत] १ बुद्धदेव का नाम।
२ पाँडु-पुत्र अर्जुन। (ह ना मा)
३ हस। (अ मा)
वि. [स सुगत] १ भली प्रकार बीता हुआ, अच्छी तरह गुजरा हुआ।
२ भली-भाँति दिया हुआ।
३ देखो 'सुगति' (रू.भे)
उ०—सुदतारा भल दान द्यौ, चित माभल कर चाव। सुगत दान दीधा मिळै, स्वरग किसू सुख साव।—वा दा

सुगति, सुगती–स स्त्री [स सुगति] १ किसी प्राणी की मृत्यु के उपरात जीव को मिलने वाली उत्तम गति, मोक्ष।
२ अच्छी दशा, अच्छी हालत।
उ०—चौरी पकडी चौहट, दूती पूगौ दाव। सुगति विदर कपूत नै, विदरै न सिर पाव।- वि म मा
३ चलने का सुन्दर ढग, सुन्दर चाल।
उ० - अति चलति सुगति दुति अभित विद्ध, पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध।—रा रू.
४ बढिया रफ्तार, अपेक्षित गति।
५ सदाचार।
६ शक्ति।
७ सीप।
८ एक प्रकार का सात मात्रा का मात्रिक छन्द, जिसके अन्त मे गुरु व लघु का कोई नियम नही होता है। (र ज प्र)
रू भे —सुगत।

सुगन–स.पु [स शकुन] १ यात्रा की शुरुआत या किसी कार्य के प्रारम्भ मे या किसी घटना के सम्बन्ध मे परिवेश मे दिखाई देने वाले या प्रगट होने वाले लक्षण या चिन्ह, जो उस कार्य के सम्बन्ध मे शुभ या अशुभ की सूचना देते है, सगुन, शकुन।
उ०—१ हरभूजी कही राव जोधौ पाहुणौ आज आय सै सुगन अहडा होवै छै।–नापै साखलै री वारता
उ०—२ कह म्हारी चिडिया सुगन री वाता, कद आवैला म्हारा स्याम धणी।–मीरा
२ विभिन्न अवसरो पर शुभ मानी जाने वाली वस्तुएँ।
उ०—आदू तिवार मै सुगन औ देख अमल विन दोघडा। आ रसम फैमाई अमलिया, तार न सोचै टोघडा।—ऊ का
क्रि०प्र०—करणौ, कराणौ, छोडणौ, मानणौ, लैणौ, होणौ।
मुहा०—१ सुगन देखणौ, सुगन विचारणौ=ज्योतिष या सगुन-शास्त्र मे वर्णित आधारो मे किसी कार्य के प्रति शुभ-अशुभ का विचार करना, भविष्य के लिए शुभाशुभ का विचार करना। २ सुगन लेणा = अच्छे लक्षण देखकर कार्य प्रारम्भ करना, शुभ-वेला व शुभ माने जाने वाले प्राणियो का सामना करके प्रस्थान करना। ३ सुगन होणा = अच्छे लक्षण दिखाई देना, अच्छा कार्य होना।
३ विवाह का दस्तूर। (राजा-महाराजा)

[स सुगध] ३ चन्दन ।
४ जीरा ।
५ नीलकमल ।
६ गधेज नामक घास, गन्ध-तृण ।
७ खुशबूदार चीज ।
८ चना ।
९ मरवा ।
१० माधवी-लता ।
११ सफेद ज्वार ।
१२ केवड़ा ।
१३ राल ।
१४ व्यापारी ।
१५ रूसा घास ।
१६ शिला-रस ।
१७ देखो 'सुगधित' (रू भे)
उ०—ब्रह्म वल्ली का परस तै सुगध हुग्री । लता का मन माहै मकोच छै ।—वेलि टी.
रू भे —सगध, सुगण, सुगधि, सुगधउ, सुगधी, सूगध ।

सुगधउ—देखो 'सुगध' (रू भे)
उ०—तनी नाद तबोळ रस, सुरहि सुगधउ जाह । ग्रासण तुरी घरि गोरडी, किसउ दिसाउर त्याह ।—डो.मा

सुगध उर–स पु –१ हिरन, मृग । (ग्र मा)
२ कस्तूरिया हिरण ।

सुगधक–स पु [स सुगधक] १ चन्दन । (ना मा, ह.ना मा)
२ लाल तुलसी ।
३ पुष्प, फूल । (ग्र मा, ना.मा, ह ना मा)
४ नारगी ।
५ गन्धक ।
वि –जिसमे खुशबू हो, खुशबूदार ।
उ०—तद मीट लखत धनतर री, उड धाण सुगधक ग्रतर री ।
—पा प्र
रू भे —सुगधिक, सुगधीक ।

सुगधका–स स्त्री –सोनजुही, कस्तूरी । (ग्र मा.)
रू भे —सुगधिका ।

सुगधता–स.स्त्री –फूल ग्रादि खुशबूदार वस्तुग्रो का गुण-धर्म, महक ।
उ०—केवडा केतकी कुद । या का वास कौ भाग लीयो छै । सुगधता तो भार ही साफ हुई । स्रम हुग्री छै । एही नीलता हुई ।
—वेलि टी

सुगधधर–स पु –केसर । (ग्र मा)
वि –सुगध को धारण करने वाला, महकदार ।

सुगधमल्यका–स स्त्री [स सुगधमल्लिका] मालती । (ग्र मा)

सुगधा–स.स्त्री [स] १ तुलसी ।
२ सौंफ ।
३ रुद्रजटा ।
४ बिजौरा नीबू ।
५ माधवी लता ।
६ काला जीरा ।

सुगधाई–स स्त्री–सुगध, महक, खुशबू ।
उ०—तठै रूप सुगधाई सू काळी भैंस जाडेची रै महल हमेसा ग्रावै ।—जगदेव पवार री वात

सुगधाकर, सुगधाकार–वि –सुगध से भरपूर, ग्रत्यन्त सुगधित ।
उ०—सुगधाकरं सुदर फूल सोहै, महाग्रभ सौरभ सिभू विमोहै ।
—रा.रू.

सुगधि–वि. [स]१ धर्मात्मा, पुण्यात्मा ।
२ खुशबूदार, महकदार ।
३ मधुर ।
स पु [स सुगधि] १ परब्रह्म, परमात्मा ।
२ मधुर सुगधियुक्त ग्राम ।
[स सुगधि] ३ पिपरा मूल ।
४ वन तुलसी ।
५ चन्दर ।
६ देखो 'सुगध' (रू भे)
रू भे —सुगधी ।

सुगधिक–स पु [स सुगधिक] १ चन्दन ।
२ धूप ।
३ गन्धक ।
४ चावल विशेष ।
[स सुगधिकम्] ५ सफेद कमल ।
६ देखो 'सुगधक' (रू.भे)

सुगधिका—देखो 'सुगधका' (रू भे.)

सुगधित–वि [स.] सुगध फैलाने वाला, जिससे से सुगध फूट रही हो, महकदार, सुवासित, सुगधदार ।
रू भे —सुगध ।

सुगधी—१ देखो 'सुगधि' (रू भे)
उ०—मोती-जडी ज हाथि, सुरह सुगधी वाटगी । सूती साभिस राति, जागू ढोलू जागवी ।—ढो मा.
२ देखो 'सुगध' (रू भे)
उ०—थळ भूरा वन भखरा, नही सु चपउ जाइ । गुणे सुगधी मारवी, महकी सहु वणराइ ।—ढो मा.

सुगधीक—देखो 'सुगधक' (रू भे)

सुगड, सुगड़ो—देखो 'सुघड' (रू भे)
उ०—सौ त्यू उठाय नै फौज मै पाछा नाखिया ज्यू बघूळियै ग्राया

विसराम।—पी ग्र.

उ०—२ राम कहै सुगरीव नै, लका केती दूर? ग्राळसिया अळघी घणी, उद्यम हाथ हजूर।—अग्यात

सुगरौ-वि [स स+गुरु] १ ऐहसान मानने वाला, कृतज्ञ।

उ०—१ कंवण लागी—श्री कालिंदर तो व्हियो सुगरौ ग्रर उण नै मारण वाळौ धणी व्हियो नुगरौ।—फुलवाडी

उ०—२ कोण देस मैं गुरुजी अमी भरत है, कोणजू पीवण वाळा रे लोय। गगन मडळ मैं चेली अमी भरत है, सुगरा पीवण वाळा रे लोय।—श्री हरिरामजी महाराज

२ श्रद्धा रखने वाला, आस्था रखने वाला, विश्वास रखने वाला।

उ०—१ सवद गरु का वाण, सहै कोई सुगरा। ग्यान ध्यान गलतान, न सगी जुगरा।—अनुभववाणी

उ०—२ सत् की नाव सतगुरु खेवटिया, सत्सग सुगरा पाई। निरमळ मत समभ की मारग, हिळमिळ नाव चलाई।

—श्री हरिरामजी महाराज

३ विनम्र, विनीत।

४ भला।

५ जिसके गुरु हो। (मा म)

स पु—१ किसी चीज को मजबूती से पकडने का लोहे का एक ग्रोजार।

२ काष्ठ के दो टुकडो मे पेच फिट करके तैयार किया गया एक उपकरण जो छाप, मीनाकारी ग्रादि मे काम ग्राता है। इसमे किसी चीज को फँसाकर इसके तागे मे बल दे देने पर वह चीज हिलती-डुलती नही है।

रू भे—सुगर, सुगुरौ।

सुगळ-स पु—पवन, वायु। (ना डि को)

सुगह-स पु—१ अच्छी तरह कुचलने, पछाडने, भकझोरने की क्रिया या भाव, रोदन, मथन, गाहटन।

उ०—रिण गाहटतै राम खळा रिण, थिर निज चरण स मेढि थिया। फिरि चडियै सधार फेरता, केकाणा पाइ सुगह किया।

—वेलि

२ कूट कर भूसे से निकाला हुआ, अनाज।

वि—१ धुना हुआ।

२ मथा हुआ, कुचला हुआ।

सुगान-स पु [स सुगान] अच्छा गीत, अच्छा गायन।

उ०—वाजै द्वार वधावणा, सोभावणा सुगान। वेर अवेरां वाधिया, डेरा डेरा दान।—रा रू

सुगाणौ, सुगावौ-क्रि स—१ नफरत करना, घृणा करना।

२ किसी के केवल अवगुण ही जताना।

३ न्यून या हेय समझना।

सुगाणहार, हारौ (हारी), सुगाणियौ—वि०।

सुगायोडौ—भू०का०कृ०।

सुगाईजणौ, सुगाईजबौ—कर्म वा०।

सुगावणौ, सुगाववौ—रू०भे०।

सुगात, सुगात्र, सुगाय-स.पु. [स. सु-गात्र] १ सुन्दर शरीर।

उ०—भज रे मन राम सियावर भूपत, श्रग पराक्रम सोम अनूप। नीरज जान सुगाय निरूपित, कोटिक काम सकाम।

—र.ज.प्र

२ चरित्र या गुणकथन।

उ०—किसो वाद गिर स करै, गावळि जनर सुगात्र।

—राम रासो

वि—सुन्दर शरीर वाला, सुकुमार।

उ०—साल्ह कुमार विलमइ सरा, रामिण सुगुण सुगात। मारवणी न एक निस, मारवणी दुइ रात।—ढो मा

सुगायोडौ-भू का कृ—१ नफरत किया हुआ, घृणित। २ अवगुण जताया हुआ। ३ न्यून या हेय समझा हुआ।

(स्त्री सुगायोडी)

सुगार-स पु—गीत, गायन। (डि को)

सुगारि, सुगारी-स.स्त्री.—दीवार या कच्चा आंगन लीपने (लेपन करने) के लिये बनाया हुआ मिट्टी या गोबर का मिश्रण, गारा।

उ०—ग्रिह ग्रिह प्रति भीति सुगारि हीगळू, ईंट फिटक मै चुणी अवभ। चदण पाट कपाट ई नकण, गुंभी पना प्रवाळी सभ।

—वेलि

सुगाळ, सुगाल—देखो 'सुकाळ' (रू भे.)

उ०—१ पिंगळ पूगळ आवियउ, देसै थयउ सुगाळ। नेगि न गाढी मामरइ, अजे स मारू बाळ।—ढो मा

उ०—२ मगलइ हुवउ सुगाल, ग्रन्न चिहु दिसि थी ग्रायउ। आप आपणइ व्यापारी, सको अधिकारइ लायउ।—स कु

उ०—३ सीहा विपत न सभवै, ठाली जाय न ठाळ। हाथळ म पळ हेक मै, सीहा हुवै सुगाळ।—बा.दा.

सुगाळी-वि.—अच्छे समय मे जीवन बिताने वाला।

स स्त्री—एक देवी का नाम।

उ०—आउवा रा नाथ तो सुगाळी पूजै ग्रो, भगडो ग्रादरियौ।

—लो गी

सुगावणौ, सुगावबौ—देखो 'सुगाणौ, सुगावौ' (रू.भे.)

उ०—आरती में भिळिया पछै प्रमाद नै सुगावणिया काला भगवान ग्रर वामण रै सागै ई भक्ता नै ई आप रा वैरी बिणायलै।

—जहूरखां मेहर

सुगावणहार, हारौ (हारी), सुगावणियौ—वि०।

सुगाविग्रोडौ, सुगावियोडौ, सुगाव्योडौ—भू०का०कृ०।

सुगावीजणौ, सुगावीजबौ—भाव वा०।

सुगावियोडौ—देखो 'सुगायोडौ' (रू भे)

४ शुभ मुहूर्त्त।

५ उक्त मुहूर्त्त मे सम्पादित कार्य।

६ ऐसा माङ्गलिक कार्य जो शकुन के रूप मे ही किया जाता है।

७ माङ्गलिक अवसरो पर गाया जाने वाला गीत।

८ गिद्ध पक्षी।

९ चील।

रू भे —सउरण, सकन, सकुन, सकूण, सगुण, सगुन, सघुण, सवण, सहुण, सावण, सुकन, सुकनाई, सुगण, सुगुन, सूण, सूण, सोण, सौण।

सुगनग्य—स पु [स शकुनज्ञ] सगुनो का जानकार, शकुन शास्त्री।

रू भे —सकुनग्य।

सुगनचिडी—स स्त्री —एक प्रकार की चिडिया जिसका रग सफेद, किन्तु परो मे कुछ श्यामता होती है। इसके बैठने व बोलने की दिशा मे शकुन माने जाते हैं।

उ०—**सुगनचिडी** सात दिना ताई उण नै सुगन नी दिया। वौ निरणौ-तिरसौ उठै ई ऊभौ रह्यौ।—फुलवाडी

रू भे —सकुनचिडी।

सुगनावळी—स स्त्री —शकुन-शास्त्र की पुस्तक जिसमे विभिन्न प्रकार के शकुनो का उल्लेख होता है।

वि —शकुनो के बारे मे जानने वाला, शकुन-शास्त्री।

सुगनियौ—देखो 'सुगनी' (अल्पा, रू भे)

सुगनी—वि. [स शकुन+ई प्रत्यय] शकुन-शास्त्र को जानने वाला, शकुन बताने वाला।

उ०—सद **सुगनिया** इसी कही कै दरवाजौ खोदियौ सू आछौ काम नही कियौ।—द दा

स स्त्री —१ श्यामा पक्षी।

२ गौरैया पक्षी।

स पु [स शकुनी] ३ सुश्रुत के अनुसार एक बालग्रह का नाम।

४ अर्जुन।

५ गाडी के अगाडी का नोकदार वह हिस्सा जिस पर जुआ कसा जाता है। (अलवर)

६ देखो 'सुगणी' (रू भे)

वि स्त्री —७ देखो 'सुगुणी' (रू भे)

रू भे —सउणी, सकुनि, सकुनी, सवणी, सावणी, सुकनी, सुकुनि, सुकुनी।

अल्पा —सगुनियौ, सुगनियौ, सौणी।

सुगनौ—देखो 'सुगुणौ' (रू भे.)

उ०—मारौ चाहे छाडौ राणा, नाहि रहू मैं बरजी। **सुगना** साहिब सुमरता रे, मै थारै कोठै खटकी।—मीरा

सुगम—वि. [स] १ जहाँ आसानी से चल कर जाया जा सके, सहज मे जाने योग्य, सहज गम्य।

उ०—हैमरा हीस नर लसकरा क्रह हुई, वहै सिंधुर कहर समर वंडा। आहाडा खड रज-मडळ ओछाडयौ, पहाडा अगम सर **सुगम** पंडा।—गु रू व

२ सहज, सरल, आसान।

उ०—१ राजाजी आपरौ सुभाव बदळ, वारै वास्तै साव **सुगम** मारग बणाय दियौ।—फुलवाडी

उ०—२ असगळ काळ आणद सम ईखियौ, सेन दूभर **सुगम** कीध सारै।—व भा

३ बोध गम्य।

४ जो सहज ही प्राप्त किया जा सके।

उ०—आगया माग्र अगम की, अगम **सुगम** यू होय। हरिदास जन यू कहै, भूलि पडौ मति कोय।—ह पु वा.

क्रि वि —सरलता से, आसानी से।

उ०—दास तन भजन विन तौ सबी दासरथ, थिर बस कोड वातै न थावै। देवपत रूप वैराट थारौ दुगम, अणु मन सेवगा **सुगम** आवै।—र ज प्र

सुगमता—स स्त्री —१ सुगम होने की दशा या भाव।

२ सरलता, आसानी।

३ स्पष्टता।

सुगर—१ देखो 'सुघर' (रू भे)

२ देखो 'सुगुर' (रू.भे)

उ०—१ **सुगर** सीलवत होय, सुगर सत्य सदा सतोषी। सुगर सहज्य सुख, लील सुगर पर जीवा पोखी। सुगर सुमारग दाखव, जण तारण आयौ तरण।—बील्होजी

उ०—२ मुकताहळ जै चवै, ता नग मुकति ही दीजै। अलख जोति भेटियै, गोठि सुगर सिधा कीजै।—वि स सा

३ देखो 'सुघड' (रू.भे)

४ देखो 'सुगरौ' (रू भे)

सुगरथ—वि —१ सद्गुणी, गुणवान।

उ०—मारचा तो मारचा छै ए चारण, ऊदौ-दूदौ था रा ग्वाळ। गाया रै मूड मारची ए, **सुगरथ** था रा स्याम नै।—लो गी

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

सुगरापणौ—स पु —१ 'सुगरा' होने की अवस्था या भाव।

२ कृतज्ञता।

उ०—जभू भूला तेरा विसनोई, भूला तेरा साधू। **सुगरापणौ** साधै नह कोई, थोथा करै उपाधु।—वि स सा.

३ कृतज्ञता मानने का गुण।

४ लिहाज, मुलाहिजा।

सुगरीव—देखो 'सुग्रीव' (रू भे)

उ०—१ इयै पिंड माहि नही अपराध, सही **सुगरीव** वडौ कोई साध। नमो हणमत तणी कहि नाम, वडौ भड सत तणौ

उ०—२ सुखेगा नल नील सुग्रीव साथा, हणू आदि आए मिळै जोडि हाथा ।—सू प्र
पर्याय —सुकठ, सूरजसुत ।
२ हस ।
३ वहादुर, योद्धा ।
४ एक हथियार विशेष ।
वि.—अच्छी गर्दन वाला ।
रू भे —सुगरीव, सुगिरीव, सुग्रीव, सुग्रीवेस ।

सुग्रीवसेन—स पु —श्रीकृष्ण के रथ का एक घोडा ।
उ०—**सुग्रीवसेन** नै मेघपुहप सम, वेग वळाहक इसै वहति । खति लागौ त्रिभुवनपति खेडै, धर गिरि पुर साम्हा धावति ।
—वेलि

सुग्रीवा—स स्त्री [स] १ एक अप्सरा का नाम ।
२ सुन्दर गर्दन ।

सुग्रीवी—स स्त्री [स] घोडे, ऊँट और गधो की जननी कही जाने वाली कश्यप की पत्नी तथा दक्ष की एक पुत्री ।

सुग्रीवेस—देखो 'सुग्रीव' (रू भे)
उ०—अखै नाम ऊभौ **सुग्रीवेस** आगै, लखै राम जोवा कपी पाय लागै ।—सू प्र

सुघड—वि [स सुघट] १ चतुर, निपुण, होशियार, वुद्धिमान ।
उ०—१ झाली वडी ठकुराणी, जिसी ही रूप, जिसी ही महुर, जिसी ही सारी वात मैं **सुघड** । सौ खीवसी घणौ राजी ।
—कुवरसी साखला री वारता
उ०—२ पान पदारथ **सुघड** नर, अण तोल्या विकाय । जिम जिम पर भूयं सचरै, (तिम) तिम मोल मुहगा थाय ।—प च चौ
२ समझदार, विचारवान, विवेकी ।
उ०—१ जोई जुगत करम री कीरत जपी न मुख सू जावै । **सुघड़** सुणी साथा रौ सुजस ऊमरदान उडावै ।—ऊ का
उ०—२ ताहरा वडारण महा चतुर **सुघड़** थी, सौ दोना ही री हेत देख रूप वय देख खुस्याल हुई ।
—कुवरसी साखला री वारता
३ अच्छा, वढिया ।
उ०—महा कपूत मुलक रै माही, लैण सपूत लडाई नै । पोल माय ऊमर पद पढियौ, **सुघड़** लेख सुघडाई नै ।—ऊ का
४ जिसकी वनावट सुन्दर हो, सुनिर्मित, कलात्मक ।
उ०—आटा खावती रूपाळी । लावी भुजावा । वोळी **सुघड** वत्तीसी, जाणै पळकता मोती ई खराद उतरचा ।—फुलवाडी
५ मधुर, प्रिय ।
उ०—१ विविध वजत्री वीण वजावै, **सुघड़** झीण सुर सार । वोळौ कहै खीण व्है वचक, हीण वजावण हार ।—ऊ का
उ०—२ **सुघड** जठै वोली या नवेली, महल मारै ही सिधावज्यो । पण वाग वन सरोवर, कदै भी मत जावज्यो ।—रा सा स.
६ स्वरूपवान, सुन्दर ।
उ०—जहा अव नही वाग नही, फूलै न फुलवाई । राग रग जहा नही, नही जहा **सुघड** लुगाई ।—दूलजी जोइयै री वारता
७ जिसकी स्मरण-शक्ति तीव्र हो ।
८ सुशिक्षित ।
स पु —लखपत पिंगल के अनुसार राजस्थानी का एक छन्द विशेष ।
रू भे —सुगड, सुगडौ, सुगठ्ठ, सुगर, सुग्घडौ, सुघडौ, सुघड, सुघर ।

सुघडइ, सुघडई—देखो 'सुघडाई' (रू भे)

सुघडता—देखो 'सुघडाई' ।

सुघडपण, सुघडपणौ—स पु —१ 'सुघड' होने की अवस्था या भाव ।
२ चतुरता, निपुणता, होशियारी, वुद्धिमानी ।
३ सुन्दरता, खूवसूरती ।
४ समझदारी, दूरदर्शिता ।
५ निर्माण-कला की विशेषता ।
६ माधुर्य ।
रू भे —सुघडापण, सुघडापणौ, सुघडापौ ।

सुघडराई कान्हडा—स स्त्री यौ —सव शुद्ध स्वरो की सम्पूर्ण जाति की एक राग ।

सुघड़राई टोडी—स.स्त्री यौ —सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी ।

सुघड़ाइ, सुघड़ाई—स स्त्री. —१ चतुराई, निपुणता, होशियारी, वुद्धिमानी ।
उ०—१ धोडाव्या नर रात्रिचर स्यु, करि नै सवल लडाई । साप्रत पाणी परगट कीधउ, ससु जाणे **सुघडाई** ।—वि.कु
उ०—२ सौ कमळसी भरमल री कुवरसी रूप रग तौ देखियौ ही थी पण स्वभाव अर **सुघड़ाई** उण वखत करता दीठी ।
—कुवरसी साखला री वारता
उ०—३ काम मै इत्ती ई फुरती अर उत्तीई **सुघडाई** । देख देख भाणजी री तौ अकल ई कह्यौ नी करती ।—फुलवाडी
२ समझदारी, दूरदर्शिता ।
३ सुन्दरता, खूवसूरती ।
४ सुघड होने की अवस्था या भाव ।
५ निर्माण-कला की विशेषता ।
६ माधुर्य ।
७ वर्ण्य विषय ।
उ०—महा कपूत मुलक रै माही, लैण सपूत लडाई नै । पोल माय ऊमर पद पढियौ, सुघड लेख **सुघडाई** नै ।—ऊ का
रू भे —सुघडइ, सुघडई, सुघडाई, सुघराइ, सुघराई ।

सुघडापण, सुघडापणौ, सुघडापौ—देखो 'सुघडपणौ' (रू भे)

सुघडी—स स्त्री [स सुघटिका] १ अच्छा समय, अच्छी घडी, शुभ

(स्त्री, सुगावियोटी)

सुगिरीव—देखो 'सुग्रीव' (रू भे)

सुगीणी—देखो 'सागणी' (रू भे)

उ०—बाहर नीसरती काळ घणी सखरी मालाळी हुई उपरा तुरत लाभ री **सुगीणी** हुई।—कुवरसी सांखला री वारता

सुगुण–स.पु [स] १ अच्छा गुण, श्रेष्ठ गुण।

उ०—कवि कहै छै। जि मुनै उपायौ। जै परमेस्वर **सुगुणां** की निधि छै। जाकै गुण को पार कोई न पावै।—वेलि टी

२ अच्छा व्यवहार, अच्छी आदत।

रू भे — सुगण, सुगुन।

३ देखो 'सुगुणी' (रू.भे)

उ०—१ माल्हकुमर विलमइ सदा, कामिणी **सुगुण** सुगात। माळवणीनू एक निस, मारवणी दुइ रात।—ढो मा

उ०—२ सु एक वडी **सुगुण** मा'तमा। तैरी पोमाळ भेळा भणै। तद इहा री उठै आपस माहै नजर लागी।

—वीजड वीजोगण री वात

उ०—३ इम कहि लेइ सीख सनेह सु, ततखिण चाल्यौ रे ऊठि। **सुगुण** नर एकलडो गिण स्यौ उर तेहनै, जगगुरु जेहनै रे पूठि।

—वि.कु

सुगुणी–वि स्त्री –१ देखो 'सुगुणौ' (रू भे.)

२ देखो 'सुगणी' (रू भे)

सुगुणौ–वि (स्त्री सुगुणी) १ श्रेष्ठ एव उत्तम गुणो वाला, गुणवान, गुणी।

उ०—हसा नै सरवर घणा, कुसुम घणा भमराह। **सुगुणा** नै सजण घणा, देस विदेस गयाह।—प च चौ

२ शुभ लक्षणा।

उ०—रूप अनूपम मारुवी, **सुगुणी** नयण सुचग। साधण इण परि राखिजइ, जिम सिव-ससतक गग।—ढो मा

३ भाग्यशाली।

४ जो किसी विशेष कला का माहिर हो।

रू भे.—सुगण, सुगणी, सुगणौ, सुगनी, सुगनौ, सुगुण, सुगुणी, सुगुन।

सुगुन—१ देखो 'सुगन' (रू भे)

उ०—वासी नरका रा विदर, स्यामी रा सैमोत। सत्यानासी रा **सुगुन**, दामी रा दैमोत।—ऊ का

२ देखो 'सुगुण' (रू भे)

३ देखो 'सुगुणौ' (रू भे)

सुगुर, सुगुरु, सुगुरू–स पु [स सुगुरु] उत्तम या श्रेष्ठ गुरु जो अपने शिष्य को अच्छा ज्ञान सिखाये और सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त करे।

उ०—१ सत्य गुरु कहि **सुगुर** रा, प्रणमु मन सुद्ध पाय। हुता मूढ तै सिरा हुआ, पडित जाणु पसाय।—ध व ग्र

उ०—२ कुपह कुमारग वरजि करि, सुपह साच करणी कहै। महनाण **सुगुर** तणा सुरता सुणौ, प्रसन की प्रगट कहै।

—वि स.मा.

उ० —३ **सुगुरु** साथिय हीण घणु भमिया, विसम वाट किहाइ न वीससिया। - जयसेखर सूरि

सुगुरौ–वि –१ अच्छे गुरु से मत्र लेने वाला।

२ देखो 'सुगरौ' (रू भे)

सुगीव—देखो 'सुग्रीव' (रू भे.)

सुग्घडी—देखो 'सुघडी' (रू भे)

सुग्घडौ—देखो 'सुघड' (रू भे)

उ०—कलग परज कान्हडा, सुरा सवाद **सुग्घडा**। निवास सात नाळिय, त्रिग्राम मूळ ताळिय।—रा रू

सुग्यान–वि [स सुज्ञान] १ उच्च कोटि का ज्ञान, श्रेष्ठ ज्ञान।

२ अच्छी बुद्धि, श्रेष्ठ बुद्धि।

३ चतुराई, बुद्धिमानी।

४ अच्छी जानकारी, सब प्रकार की जानकारी।

५ एक प्रकार का साम।

६ देखो 'सुग्यानी' (रू भे)

उ०—वप रूप स्रोम नव घन वरण, हरण पाप-भय-ताप-हरि। गुण मान दान चाहै सु ग्रहि, कवि **सुग्यान** स्रो ध्यान करि।

—रा रू

सुग्यानी–वि [स सुज्ञानी] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञानी, शास्त्रज्ञ।

२ समझदार, ज्ञानवान, दूरदर्शी, विवेकी।

उ०—ताहरा कुवर री मा नै तो कह्यौ—थे तो **सुग्यानी** छो। इतरा सास्तर सुणिया छै। कथा सुणी तै मैं इतरौ ही हठ सुणियौ छै? यू कहि राणी री हठ छुडायौ।—पलक दरियाव री वात

३ चतुर, दक्ष, निपुण।

रू भे —सुग्यान।

सुग्रह–स पु [स] १ फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ ग्रह।

[स सुगृह] २ अच्छा घर।

[स स्व-गृह] ३ अपना घर, स्वगृह।

उ०—भजति **सुग्रह** हेमति सीत भै, सिळि सिसि तु न कोई वहै मगि। कोई कोमळ वसत्र कोइ कसळि, जण भारियौ रहति जगि।

—वेलि

सुग्रही–स पु [स सुगृह] घर।

सुग्री, सुग्रीव–स पु [स. सुग्रीव] १ वानर राज वालि का छोटा भाई जिसने श्रीराम से मित्रता करके अपने भाई वालि को मरवाया था। बाद मे इसने सीता की खोज व रावण को मारने मे श्रीराम की ससैन्य सहायता की थी। (डि को)

उ० —१ सत्र हरौ वळ समराथ रा, रिण लडै भड रुघनाथ रा। तदि लखण अगद **सुग्री** हणवत, नील नळ नर नाह।—सू प्र

भाग मे रह-रह कर चलने वाली टीस ।

उ०—**सुडफा** चालै मदा दाब दाबू फिर दाबू । पाळै वैमै पास ढाब ढाबू फिर ढाबू ।—ऊ का

रू भे —सुडप ।

सुडफडाट, सुडफुड–स स्त्री –फुसफुसाहट, कानाफूसी ।

सुचग–वि [स सुचङ्ग] १ सुडौल, सुगठित ।

उ०—१ सीलभग जै करइ नरनारि घणाउ काल छइ तै नरग मझारि । आगि वरण पूतलि **सुचग** सहइ दुक्ख नै नव नव भगि । —वस्तिग

उ०—२ अहिल्या रेम दियौ तै अग, सरीर कुवजा कीध **सुचग** । —ह र

२ अत्यन्त सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ रूप अनूपम मारुवी, सुगुणी नयण **सुचग** । मावण इण परि राखिजइ, जिम सिवसमतक गग ।—ढो मा

उ०—२ तिहा किण सकल सभा मिली, त्रिप वैठी मन रग । छत्र विराजै मस्तकै, चामर ढलै **सुचग** ।—वि कु

उ०—३ देखौ (ताइ) चच विहगम दहलइ, रेखा सकति अनोपम रग । भरी किणही (कइ) विचित्र भरावी, सचउ करि नासिका **सुचग** ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ आभूखण सोहै अग अग, सिर पाग बादळाई **सुचग** । —गु रु.व

३ उत्तम, श्रेष्ठ ।

उ०—१ पद्मनाभ पडित सुकवि, वाणी वचन सुरग । कीरति सोनिगिरा तणी, तिणि उच्चरी **सुचग** ।—का दे प्र

उ०—२ उमग अग मै उठै, **सुचग** सत्य सगतै । प्रलापमान अग नीच, कीच कै प्रसग त ।—ऊ का

४ शक्तिशाली, बलवान, बलिष्ठ ।

उ०—१ पैदल प्रबल रथा छिदपगी, चतुरगी अतफौज **सुचग** । —र रू

उ०—२ नागरवेली नित चरइ, पाणी पीवइ गग । ढोला, रयवारी कहइ, करहउ एक **सुचग** ।—ढो मा

५ शुद्ध, पवित्र, निर्मल ।

उ०—१ निज अग लगाय **सुचग** कियौ नह, नीर सुचग कियौ जन रे ।—भगतमाळ

उ०—२ जगपावन त्रिपथा जाह्नवी, सुरगनदी सुरनदी (**सुचग**) । —ह ना मा

६ ओज व कान्तिपूर्ण ।

उ०—ळळवळ भैवै ळळकता, सुथरै दीन **सुचग** । भारतवाळी भौम पर, नमल नागीगी रग ।—नारायणसिंह सादू

७ स्वस्थ, चगा ।

स पु –१ घोडा, अश्व । (डिं को)

२ सात भगण व अन्तिम दीर्घ का एक छन्द विशेष ।

उ०—उगण साठि सौ पाच उचारि, सतरह लाग्व रूप गणि सार । सात भगण गुर अत सभारि, नाम **सुचग** छद निरधारि ।—ल पिं

रू भे —सचग, सुचगौ ।

सुचगौ—देखो 'सुचग' (रू भे)

उ०—पावडिया महत नरम पद पकज, नूपुर हाटक परम पुनीत । छक कडवध **सुचगा** छाजै, पट अगा राजै पुण पीन ।—र रू

(स्त्री सुचगी)

सुच–वि [स. शुचि] १ पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, साफ ।

उ०—१ खलक मही वै खोजणा, **सुच** प्रसन्न सुख सत । धार जिकै सतोख धन, विण परवाह वसत ।—वा दा

उ०—२ कदि जाट जीकारथी, **सुच** सिनान सुभाल्या । करूर करोध कुवाणि, वरजि कणि तीन्यौ राख्या ।—वि स सा

२ धर्मात्मा, पुण्यात्मा ।

३ ईमानदार, निष्कपट, सच्चा ।

४ चमकीला, चमकदार ।

५ श्वेत, सफेद ।

६ ठीक, सही, उचित ।

स पु [स शुच] १ दु ख, शोक, सन्ताप ।

२ पीडा, दर्द ।

३ खेद, अफसोस ।

४ देखो 'सुचि' (रू भे) (अ मा)

सुचक्कर–स पु [स सु-चक्र] सुदर्शन-चक्र ।

सुचत–स पु –कवि । (अ मा)

सुचतौ–वि –प्रसन्न, सन्तुष्ट ।

उ०—तरै परधाना कह्यौ—औ खोटौ आदमी छै नै गरज सारी छै, आज धरती सारी री मदार इण मायै छै इण नु हर भात कर **सुचतौ** कीजै ।—नैणसी

सुचमुखौ–वि –देखो 'सूचिमुख' (रू भे)

उ०—कूण नईरत मै पुरी, राकस वसै विसाळ । **सुचमुखा** सुपड कना, वडा रूप विकराळ ।—गज-उद्धार

सुचरित, सुचरित्र–वि [स सुचरित्र] १ जिसका चरित्र अच्छा हो, चरित्रवान ।

२ जिसका आचरण व व्यवहार उत्तम हो ।

स पु –१ अच्छा चरित्र, शुद्ध चरित्र ।

२ अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार ।

सुचरूप, सुचरूप–स स्त्री –पतिव्रता, सती । (अ मा)

सुचळ, सुचळि–वि –१ अस्थिर, चञ्चल ।

उ०—चळ वैभव सपत **सुचळ**, चळ जोवण चळ देह ।—अग्यात

२ अस्थायी ।

स पु –हस । (अ मा, ह ना मा)

घडी, शुभ वेला।
२ वह समय जब कोई अच्छा कार्य हो।
वि स्त्री —१ चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान।
२ सुन्दर, मनोरम।
३ अच्छी, श्रेष्ठ, उत्तम।
रू.भे.—सुग्घडी।

सुघड़ौ—देखो 'सुघड' (रू भे)
उ०—आनद रौ आगार, आली हैं म्हारौ सुघडा रौ सरदार। हा हे श्रौ तौ निरधारा आधार, हा हे श्रौ तौ निरधन रौ धन सार।
—गी रा

सुघट—वि [स] १ सुन्दर, सुडौल।
उ० —१ थर थर कहावै सुमेरु सु ए रुखमणीजी का स्तन छै। सुमेरु का स्रिंग करि वरणया छै। कटि छै सु घणी खीण छै अरु अति ही **सुघट** छै।—वेलि टी
उ०—२ मुख निकट प्रकासित नास मज। क्रित उलट प्रगट किरि **सुघट** कज।—रा रू
उ०—३ हार डोर **सुघट** मोहई, भरचा माग स्यदूर।
—रुकमणी मगळ

२ सहज, आसान।
उ०—मारवाड मगळी यह महाराजा रै माय। तिण मू या मामल हुवौ **सुघट** वर्णं वौ पाय।—मारवाड रा अमरावा री वारता
३ मजबूत, दृढ।
४ अच्छी तरह बना हुआ।
स पु —१ सुन्दर व सुडौल शरीर।
उ०—कथ नै कामणी सीख इणी विध कीयै, लागवा तणी नह नाव लीजै। धाव लागै जठै दीसवै बुरौ घट, क्रथ घट **सुघट** क्यू कुघट कीजै।—कायर स्त्री री गीत
२ अच्छा पात्र।
रू भे —सुघट्ट, सुघाट।
अल्पा —सुघाटौ।

सुघटित—वि [स] १ सुन्दर, सुडौल।
२ सुगठित।
३ दृढ, मजबूत।

सुघट्ट—देखो 'सुघट' (रू भे)
उ०—कट पीत पट्ट, सुवस्त्र सुघट्ट। गत पचमुख, चलै चाप रुख।
—र ज प्र

सुघड—देखो 'सुघड' (रू भे)
उ०—चाहत जोवन अधिक चित, मदन भई ऊनमत। हीरा टोलत हमगत, **सुघड** सहेली सथ।—बगसीराम प्रोहित री वात

सुघडाई—देखो 'सुघडाई' (रू भे)

सुघर—स पु [स सुगृह] १ अच्छा घर, श्रेष्ठ घर।
२ बया नामक पक्षी।
३ देखो 'सुघड' (रू भे)

सुघराइ, सुघराई—देखो 'सुघडाई' (रू भे)
उ०—ईण सु विरोध नहु बोलिजइ। नावी स साहणी **सुघराई** मान।—वी दे

सुघाट—देखो 'सुघट' (रू भे)
उ०—१ धुरा सुघाट घाट कै कपाट छत्ति कै धरै। घन प्रतच्छ तच्छ कै प्रदच्छ स्कच्छ कै घरै।—ऊ का
उ०—२ सब लोक वसै धनवत सुपह, सोहै रूप **सुघाट** रौ। गहतत विकट जोधाण गढ, वर्णं मुकट वैराट रौ।—सू प्र
उ०—३ वज्र कपाट **सुघाट** विराजत, लखि दृढ दुरग स्वरग गढ लाजत। मठ अदर सुदर मूरत्ती, स्रीकरनी जय जयति सकत्ती।
—मे म
उ०—४ सदगुरु जिनचद सूरिजी, सघलै गुणै देखि **सुघाट** रे लाल। सुभ महोरत सत्योत्तरै, पाटण मैं दीधौ पाट रे लाल।
—ध व ग्र

सुघाटौ—देखो 'सुघट' (अल्पा, रू भे)
उ०—कहै सुपह फरहास कटायौ, घणौ **सुघाटौ** ढोल घडायौ।
—गो रू

सुघोर—स पु —तीव्र आवाज, जोर का शब्द।
उ०—धसी श्रकाम घूमरी, कि वात सेन वित्थुरी। निसाण पाण नद्दय, **सुघोर** जोर सद्दय।—रा रू

सुघोस—स पु. [स सुघोष] १ नकुल के शङ्ख का नाम।
२ एक बुद्ध का नाम।
वि —१ जिसका स्वर सुन्दर हो।
२ अच्छी आवाज, अच्छा स्वर, अच्छा शब्द।

सुडणौ, सुडबौ—क्रि स —१ आनन्द के नगाडे वजाना।
२ बेंत या छडी से बुरी तरह पीटना।
उ०—आप सू फोरा मडकला माथै नाथावती कर उणा नै गळटूपा दे'र घी पिलायोडकी रगाबग हुयोडी पेसला खोसणिया नै गुरासा आप कमाई कैय सडासड़ लीली कामडी सू **सुडता**।—चितराम
३ चाटकर खा जाना।
४ रगडकर इकट्ठा करना।
सुडणहार, हारौ (हारी), सुडणियौ—वि०।
सुडिओडौ, सुडियोडौ, सुड्योडौ—भू०का०कृ०।
सुडीजणौ, सुडीजबौ—कर्म वा०।

सुडप—देखो 'सुडफ' (रू भे)

सुडपौ—स पु —स्वर्ण तथा चाँदी का एक आभूषण विशेष जो पुरुषो के पैर के टखनो के नीचे धारण किया जाता है।
रू भे —सुरपौ।

सुडफ, सुडफ—स स्त्री —वात-विकार के कारण शरीर या शरीर के किसी

२ शुद्ध मन, पवित्र मन।
३ निश्चितता, बेफिक्री, मस्ती।
४ मन की स्थिरता, एकाग्रता।
वि-१ स्थिर मन, एकाग्रचित्त।
उ०—१ सु एतरइ हिजु कारणइ, आगिलउ राजा सभा सहित सुचित हुइ सुणइ, तउ सु-कवि कु-कवि की पारिखा जणाइ। —अ वचनिका
उ०—२ सुचिता होय भजौ साहब नैं, पामै सदगत प्राणी। वेद पुराण कहै पर वामा, नरका तणी निसाणी। —र. ह
२ प्रसन्न, खुश।
उ०—आभ थोभै भुजे 'माल' हर आभरण, वधै साधन छटा विसोवा-वीस। दुचित दिलीस तद सठा मार्थ दुगम सुचित तद परठिजै ऊमरा सीस।—गु.रू ब.
रू भे—सुचीत, सुचील।

सुचितई-स स्त्री.-१ सुचित्त होने की अवस्था या भाव।
२ एकाग्रता, स्थिरता।
३ शुद्धता, पवित्रता।

सुचिता, सुचिताई-स स्त्री-पवित्रता, स्वच्छता।
उ०—पहरण मैला पगरण, सुचिता सु गो साम। पाणी भरै दीवडा, होका चमडपोस।—बाकीदास

सुचितौ-वि-खुश, प्रसन्न।
उ०—जेठी घोडौ छै सु सिखरै उगमणावन नू देई। अर रजपूत दुचिता छै सु तू सुचिता करै।—नैणसी

सुचित्त-वि-जिसका चित्त स्थिर हो, शान्त, निश्चित।

सुचिमुख—देखो 'सूचिमुख' (रू भे)

सुची—देखो 'सुचि' (रू भे) (ह ना मा.)
उ०—देवी कावेरी तापि क्रसना कपीला, देवी सोण गनलज्ञ भीमा सुसीला। देवी सोम गगा देवो वोम गगा, देवी गुप्त गगा सुची रूप अगां।—देवि.

सुचीत-वि-१ सुन्दर, सुहावना, मनोहर।
उ०—दसराहा लग भी रह्यउ, मारवणी री प्रीत। वरिखा रुति पाछी वळी, आवी मरद सुचीत।—ढो मा
२ शुद्ध, निर्मल।
३ देखो 'सुचित' (रू भे)

सुचीमुख—देखो 'सूचिमुख' (रू भे) (ह ना मा)

सुचील—देखो 'सुचित' (रू भे)
उ०—१ जिह नगरी धरम दिढाव, सत सिवरण नर सूरा। सभै सुचील सिनान, जुगति जरणा पण पूरा। वि स सा
उ०—२ सातिळ सनसुखि आय, सुचील जित हुवौ सिनानी। 'साग' राण सुणि सीख, जका गुर कही स मानी।—वील्हौजी

सुचेत—देखो 'सचेत' (रू.भे)

सुचेतन-सं.पु.-१ [illegible]। (डि.ना)
२ देखो 'सचेतन' (रू.भे)

सुच्छद—देखो 'स्वच्छंद' (रू भे)
उ०—[illegible]। —निरमळ

सुच्छ—देखो 'स्वच्छ' (रू.भे)
उ०—[illegible] सुच्छ, [illegible]। सुद्दे [illegible] सुच्छ, [illegible] जेठवा। —जेठवी

सुच्छता—देखो 'स्वच्छता' (रू भे.)

सुच्छम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)
उ०—१ सुच्छम [illegible] सुगद, [illegible] दिखाय। [illegible] सिणगार गो, [illegible] विस्तार। —बा दा
उ०—२ [illegible] सुच्छम [illegible] पाणी [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] अर [illegible] सगळै गुणा सू [illegible], सीतळ, फूटरी, [illegible], सुरीली [illegible] मीठी [illegible] गई।—निरमळ

सुच्छमता—देखो 'सूक्ष्मता' (रू.भे.)
उ० [illegible] सुच्छमता [illegible], [illegible] देखी।—बा दा

सुछद—देखो 'स्वच्छंद' (रू भे)
उ०—उण आपरा सुरगा मैं गमोटा घोडा नै जिरी मन-मान दियो अर रमैन रै वाम्नै वैजू नै सुछद घूमण नो जिरो वचन दियो वै सब बाता बन-दर में म्हनै याद आय रयी ही अर साचै बहादुर री कहाणी नी म्हारा काना माय गूज रयी ही।—निरमळ

सुछम—देखो 'सूक्ष्म (रू भे) (अ मा)
उ०—१ वरतुल सुछम कपोळ रमीनी सामरा, लिया तयारी बेह दरप्पण कामरा।—बा दा
उ० - २ निरालब निरलेप अनत, ईसर अविनासी। थावर जगम थूळ, सुछम जग निखिल निवासी।—ह र

सुछळ, सुछळि—देखो 'छळ' (रू भे)
उ० १ कहै प्रोहित 'केहरी', अम्हा धरवट अधिकाई। साम सुछळ सत्र वाढि, वडा जुध तरै वडाई।—सू प्र.
उ०—२ सुतन 'वीरोच' जिम मागता 'अजन' सुत, कायबा पुराण कथ कहाणी। परम कमधज सुछळ सुपाता पाण गोढवळीयो हात

उ०—ग्रस पाखा ग्रावर 'ग्रजवावत', वावर जुध ग्रावध विखम।
दूढाहडा सतोल जळज ढिग, जै खळ भखिया सुचळ गत।
—कोटा राव रौ गीत

सुचवणौ, सुचववौ–क्रि स –कहना, बोलना।

सुचवन–स स्त्री. [स. सुच्यवन] अग्नि, आग। (ग्र.मा.)

सुचवियोडौ–भू का कृ –कहा हुग्रा, बोला हुग्रा।
(स्त्री. सुचवियोडी)

सुचहिय–वि [स. शुचि-हृदय] शुद्ध हृदय वाला।
स स्त्री –मती। (ग्र मा)

सुचाणक–देखो 'सिचाण' (रू भे.)
उ०—डाकर भर घसळा कुरघ उडाणक, प्रथी वखाणक पेलै पार।
सुलटौ वागा झपट सुचाणक, धज माणक वळवत चत्र धार।
—देवोजी दधवाडियौ

सुचार–वि –१ शुद्ध, पवित्र।
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
३ सदाचारी, चरित्रवान।
स.स्त्री –१ ग्रच्छी चाल-चलन, ग्रच्छा ग्राचरण।
२ देखो 'सुचारु' (रू भे)

सुचारा–वि स्त्री –१ शुद्ध, पवित्र।
उ०—सामगरी ग्रग्र धरै सुचारा, माजे सब साधन सेवा रा।
—सू.प्र
२ उत्तम, श्रेष्ठ।

सुचारु, सुचारू–स.पु [स सुचारु] श्रीकृष्ण का एक पुत्र जो रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न हुग्रा था।
वि –१ ग्रत्यन्त सुन्दर, खूबसूरत, ग्रतिशय मनोहर।
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
३ ठीक, उचित।
रू भे.—सुचार।

सुचाल–स.स्त्री –१ ग्रच्छी चाल, ग्रच्छी गति।
२ उत्तम ग्राचरण, सदाचार।
उ०—सुचाल चाल चाल कै, कुचाल चाल व्है कदा। ग्ररी विचाल चाल व्है, ग्रचाल चाल व्है ग्रदा। – ऊ का.
३ ग्रच्छा रहन-सहन।

सुचाळी–स स्त्री –पृथ्वी, धरती। (डि को)
वि –१ उत्तम चरित्र वाला, सदाचारी।
२ ग्रच्छे रहन-सहन वाला।
३ सुशील।
४ ग्रच्छी चाल या गति वाला।

सुचि–स स्त्री [स शुचि] १ पवित्रता, विशुद्धता, स्वच्छता, सफाई।
उ०—१ नही मोती माळा, नहिन छक हाला सुचि नही। नही नारी प्यारी, वचन छिदगारी रुचि नही।—ऊ का
उ०—२ कागा कुत्ता कुमाणसा, तिहवा एकौ रुचि। ऐसा खाणा खाईयै, जैसी उपजै सुचि।—ग्रनुभववाणी
उ०—३ हरीया खाणा ग्रन का, पीणा जळ का होय। भोजन माखी भखीयौ, सुचि कहा तै होय।—ग्रनुभववाणी
२ ईमानदारी, सच्चाई।
३ भलाई, सज्जनता।
४ ग्रग्नि, ग्राग। (डि को.)
उ०—वहरक चमक खुर सुचि झमक चकमक किलक डक लगि ग्रजक चउ।—व भा.
५ ग्रीष्म ऋतु, गरमी।
६ ग्रासाढ मास की वायु।
७ कश्यप की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न एक कन्या।
[स. शुचिम्] ८ किरण, रश्मि। (ना.मा, ह ना.मा.)
९ चमक, काति, ग्राभा।
स पु.–१० पुण्य, धर्म।
११ ब्रह्मचर्य।
१२ पवित्रजन।
१३ ब्राह्मण।
१४ ईमानदार व सच्चा मित्र।
१५ सूर्य, रवि।
१६ चन्द्रमा, शशि।
१७ शुक्र-ग्रह।
१८ शृङ्गार-रस।
१९ चित्रक वृक्ष।
२० ग्रासाढ मास का नाम। (डि को)
उ०—सुचि नवमी कुज ग्रमित भान वसि चउ तेरह मत।
—व.भा
२१ ज्येष्ठ मास का नाम। (डि को)
वि. [शुचि] १ शुद्ध, पवित्र।
उ०—१ तु तन सुचि किया सुचि होई, तौ पाडै ग्रौर ग्रसुचि नहीं कोई।—ग्रनुभववाणी
उ०—२ ब्रह्म विचार ग्रपार, ग्रजित ग्ररि लगै न नरहरि। ग्रखिल ग्रथिर सुचि सुथिर, गया भजता भै थरहरि।
—ह पु वा
उ०—३ रुत ग्रांत चदण कपूर, सरै सममाण सभाई। विविध ग्रमित सुचि वसत, चेहग्नि निमति-चलाई।
—रा. रू
२ श्वेत, सफेद। (डि को)(ह ना मा)
३ उज्ज्वल, स्वच्छ। (ना मा)
रू भे—सुइ, सुई, सुच, सुची।

सुचित–सपु [स] १ ग्रच्छी बुद्धि, ग्रच्छा ज्ञान।

पाणी ।—सवाईसिंह री गीत

उ०—३ तीन पहर रवि तपै, जिया ऊपर जग जाणै। स्याम सुछळि ग्रत सझिण, अधिक उच्छव चित आणै।—सू.प्र

उ०—४ रिण कोड उठी समना रवद्,सूरमा अठी वड छड सवद्। सामत रूप सामत सीह। 'अजमाल' सुछळ चापो अवीह।

—रा.रू

उ०—५ राजा छळ खीची कुळ राहै, साम धरम ऊभा व्रत साहै। धावळ 'पाल' हरा पण धारी, ऐ 'अगजीत' सुछळ अहकारी।

—रा.रू.

उ०—६ 'चतुरेस' महाबळ चाहुवाण, महाराज सुछळ वळ अप्रमाण। 'अखमाळ' कमधं वळ अथाह, गजवा खळा 'वालौ' सगाह।—रा रू

उ०—७ अनि घणा कीध जुध सुछळि आप। पह जिकौ आज कीजै प्रताप।—रा.रू

सुछांन—स पु.—शिव, शङ्कर। (अ.मा, ना मा)

सुछिम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)

उ०—अवरण वरण करम नहि काया, सुछिम व्रछ सू सीतळ छाया।—ह पु वा

सुजग—स पु—युद्ध।

उ०—हत छाह देख उडता विहग, जौ कर ही काळ हुता सुजग।

—शि रू

सुज—सर्व—१ वह, वे।

उ०—१ आहव छोड फतैखा आसुर, धरम दुवार गयौ छोडै घर। पुर लूटियौ वडी सिध पाई, सभिया सुज मारिया सिपाई।

—रा रू

उ०—२ साहू मत्री मेळ(सी) सकाजा, मिळणै आ हूता महाराजा। कर जोडै अरजा सुज करसी,धणी जेम निजग द्रव धरसी।—सू प्र

२ उसके।

उ०—रूप भाग गुण भजन नरायण, पुत्र हुवौ सुज भगत परायण।

—रा रू

३ उस।

उ०—१ जमदाढ वामै अग भीड जडी, सुज ऊपर पेटीय सावरडी।

—गो रू

उ०—२ सुज कत अत अमरा सुपुरि, चौग्रोडी हरि उच्चरै। छत्रपती सनेह 'चदू' छडी, मेखावत व्रत सभरै।—ग रू

३ वही।

उ० —१ हरि चाहै सुज हुग्रै, लेख माहै मुरलोयी। भूमडळ भोगवै, करम प्राचीन सकोयी।—रा रू

उ०—२ प्रथम करी या रै सुज पर्लै, भल्लौ वाज चिडी जिम झलै। यानै पकड निजर मौ आणौ, रिण गुण पछै सभाळू राणौ।

—ग रू

स.पु—मस्तिष्क, सिर।

वि—१ शुभ।

२ शुद्ध।

क्रि वि—१ मानो।

उ०—पिलवाणा आकम पाण धरै, सुज दामणि जाणि खिवै सिहरै। घज स्याह वरन्नह घम्मळिय, परि लाल सवज्जह पीयळय।

—गु रू व.

२ पुन, फिर।

३ और।

उ०—राम पाट कुस भूप विराजै, सुज कुस पाटि अतिथ दिन साजै। सभ्रम अतिथ निखध भ्रप सोहत, राजा निखध पाटि नभ राजत।—सू प्र

रू भे—सुजि।

सुजगीस—क्रि.वि—शुद्ध भावना से।

उ०—१ हम ऊपरि करुणा तइ कीनी, जग जीवन जगदीस। तोरण थी रथ फेरि सिधारै, जोग ग्रह्यौ सुजगीस।—स कु.

उ०—२ अतिसय कमला हाथिणी रे, परिवरियउ निसदीस। सहजानद नदन वनइ रे, केलि करइ सुजगीस।—वि कु.

सुजड़—स स्त्री.—१ तलवार। (डि को)

उ०—१ घड उवभै नडियाल ज्यू, घट घट वग्गा घाव। रज रज हुयगी 'रूपसी', सुजडा 'कुभ' सुजाव।—रा रू.

उ०—२ साहवै सम्र हौद ताल सिर, सारगखा माथै सुजड। पचमुख माथ घणा पावोरै, पाच खान पाडै अपड।

—द दा

उ०—३ कीधौ विसेख करतै कळह, तरसि तूग 'चादै' तणै। वणियौक चद' सकर वदन, सुजड धाइ सुहि सामणै।

—गु रू व

उ०—४ एक घडी वग्गी सुजड, घड कड लग्गी धार। पिसणा थया विमुहा पगा, गहि वग्गा तोखार।—रा रू

२ कटार।

उ०—१ मल्हपियौ रूप अध्रियामणै, वहमतौ ववाडतौ। उरडतौ सुजड जडतौ असुर, पाच हजारी पाडतौ।

—सू प्र

उ०—२ केहर रै हायळ करी, कीधी दात वराह। मृग काज कीधी सुजड, विध करनापण वाह।—वा दा

उ०—३ नग-जडित सुजड नराज, वडवडा मदफर वाज। पौसाक ऊच अपार, भळि लुटै द्रव्य भडार।

—सू प्र

उ०—४ सौहथा साह सिरपाव, सजि असि गज रवि स्रीनग अथा। स्रीहथा खाग जजर सहित, सुजड वधाए स्रीहथा।

—सू प्र

वालमीक कुम गोतम, हरि भज होय सुजाति ।—अनुभववाणी

सुजाव—देखो 'सुजाव' (रू भे)

उ०—'करन' सुजाव वर्षे तीं करगा, कळहृता गम अगम किया । चाडै घूमटळ चीतोडा, वू धारक जिम ब्रहमरिया ।

—महाराणा जगतसिंह रा गीत

सुजायत-वि -जो अच्छी सलाह दे, उत्तम सलाहकार ।

स स्त्री [अ शुजाअ+रा प्र आयत] वीरता, शौर्य ।

उ०—सुजायत माटी पणी मोटो गुण छै ।—नी प्र.

सुजायोडौ—देखो 'सूजायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुजायोडी)

सुजाळ-स पु -चमडे या सून की बनी एक रस्सी या तस्मा जो बैलों को गाडी या हल मे जोतते समय गले मे बांधकर जुए मे बांधी जाती है ।

सुजाव-स पु [स सुजात] १ पुत्र, बेटा । (डि को)

उ०—१ तास सुजाव प्रमन जीत नव, जिण सुत सुप्रत भूप हुवो जन ।—सू प्र.

उ०—२ हाथियों के हलके गभूठाणा नै मोळै एरावन कै साथी भद्रजाती कै टोळै अर देहुकै दिग्गज विंध्याचळ कै सुजाव रग रग चिरै ।—र.रू

उ०—३ घड उर्भी घडियाळ ज्यू, घट घट वगा घाव । रज रज हुयगो 'रूपसी', मुजडा 'कुभ' सुजाव ।—रा.रू

२ शत्रुघ्न का एक नाम । (डि को.)

३ देखो 'सुझाव' (रू भे)

रू भे —सुजाव, सूजाउ, सूजाव ।

सुजावणी, सुजावबौ—१ देखो 'सूजाणी, सूजाबौ' (रू भे)

२ देखो 'सुझाणी, सुझाबौ' (रू भे)

सुजावणहार, हारौ (हारी), सुजावणियौ —वि० ।

सुजाविओडौ, सुजावियोडौ, सुजाव्योडौ —भू०का०कृ० ।

सुजावीजणौ, सुजावीजबौ —कम वा० ।

सुजावियोडौ—१ देखो 'सूजायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'सुझायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुजावियोडी)

सुजि—देखो 'सुज' (रू भे)

उ०—१ त्रिक सामी किया गुण वीसरै, गुणग्राहक विण हरि तरणि । सुजि त्रिक तरणि पिय अत सुणि, घर तह्नं मोटा घरणि ।

—रा रू.

उ०—२ पान प्रयाग वड तणै पौटियौ, सुजि हरि समरि ऊबर करि मोध ।—ह ना मा

उ०—३ सुजि जळ पियै जग्त विण मूरति, मगरपचीस हुवै दिव मूरति ।—सू प्र

उ०—४ मीसावि मखी राखी आवै सुजि, गागी पूछै रुखमणी । आज कही तो आप जाद आवै अब जाय अविता लगी ।—वेलि

उ०—५ गगसल है सुरभाग, आदि परिता उधार । सुजि भाग्य दूसरी मेग दूजै भिसतार ।—सू प्र

सुजीव-स.पु [स सुजव] घोडा, अश्व । (ह ना मा)

सुजीवण—देखो 'सजीवण' (रू भे)

उ०—रिदा न भूलै नार रस, प्रीते सुजीवण मा । अनति नाए एए नार, एकणि नाथ अनत ।—गुरुनदास पूनियों

सुजोग-स पु [स. सुयोग] १ अच्छा योग, सुयोग ।

२ सयोग, योग, अवसर ।

सुजोधन-स.पु [स सुयोधन] दुर्योधन का एक नाम ।

सुजोर-वि -१ पक्का, दृढ, मजबूत ।

२ बलवान शक्तिशाली ।

सुज्झ—देखो 'सुजड' (रू.भे)

सुझणी, सुझबौ—देखो 'सूझणी, सूझबौ' (रू भे)

उ०—जद पट उळझै ता पग सुळझै, जद मन मना मैं राग सुझै ।

—महुनळा

सुझतो—देखो 'सूझतो' (रू भे)

उ०—स्वामीजी लोगा नै कह्यौ—थै सुझता नो गहणो गमायौ अनै थाथा रता सू नठारो नो गहणो लठा सू साम्रो ।—भि.द्र

सुझाड-स पु—१ चदन । (ना मा, ह ना.मा)

२ वृक्ष । (ना मा)

सुझाणी, सुझाबौ-क्रि स ['सूझणी' क्रिया का प्रे रू.] १ सुझाव देना, प्रस्ताव करना ।

२ दिखलाना, बतलाना ध्यान दिलाना ।

३ मार्ग-दर्शन करना, रास्ता बताना ।

४ देखने के लिए प्रेरित करना ।

५ युक्तियाँ प्रस्तुत करना ।

सुझाणहार, हारौ (हारी), सुझाणियौ — वि० ।

सुझायोडौ —भू०का०कृ० ।

सुझाईजणौ, सुझाईजबौ —कर्म वा० ।

सुजावणौ, सुजावबौ, सूझाणौ, सूझाबौ, सूझावणौ, सूझावबौ

—रू०भे० ।

सुझायोडौ — भू का कृ — १ सुझाव दिया हुआ, प्रस्ताव किया हुआ ।

२ दिखलाया हुआ, बतलाया हुआ, ध्यान दिलाया हुआ । ३ मार्ग-दर्शन किया हुआ, रास्ता बताया हुआ । ४ देखने के लिए प्रेरित किया हुआ ।

(स्त्री सुझायोडी)

सुझाव-स पु—१ प्रस्ताव ।

२ सलाह, राय, मशविरा ।

३ तजवीज, तरकीब ।

रू भे —सुजाव ।

लाडा तरण इजि दरसण लाधइ, प्रियी तणा खाइजम्यइ पाप।
—महादेव पारवती री वेलि

रू भे.—मुजसउ।

सुजाण–वि [स सज्ञान] १ चतुर, बुद्धिमान।

उ०—१ मा मोरी, सूत्याग्रक भवर **सुजाण**। वाईजी रै वीरै मुख पर दुपटौ राळियौ।—लो गी

उ०—२ मेवा वस्त्र ग्राभरण मिस्री, वदजइ किमा किमा वाखाण। वरी घणइ (ताइ) उछाह ल्याया, जानी ईसर तणा **सुजाण**।
—महादेव पारवती री वेलि

२ दक्ष, निपुण, माहिर।

उ०—१ ढोलउ-मारू पउढिया, रसमइ चतुर **सुजाण**। च्यारै दिसि चउकी फिरइ, सोहड भूप जुवाण।—ढो मा

उ०—२ ताई देख धाई ताडका साम्ही राम **सुजाण**।—रामरासौ

उ०—३ वेऊ चतुर **सुजाण**, पेम-रग-रस पिया। वरखा रुति घण वरख, जाणि कु हरखिया।—ढो मा

उ०—४ कवाडउ रतन गारि कुदण री, युगति मिलावट चुणी **सुजाण**। तेज खमइ कुण देख तिया रउ, भुवण भुवण जिहा ऊगइ भाण।—महादेव पारवती री वेलि

३ समझदार, विचारवान, सज्ञान।

उ०—१ वायस वीजउ नाम, तै ग्रागळि लह्मउ ठवइ। जइ तू हुई **सुजाण**, तउ तू वहिलउ मोकळै।—ढो मा

उ०—२ ज्योतिखी तेडै राव **सुजाण**, पूछै जिण पडित वेद पुराण।
—रामरासौ

उ०—३ जाणै जिकै **सुजाण** नर, ना जाणै सौ वोक। जमी'र ग्रसमाना बिचै, ग्ररवद तीजो लोक।—डाढाळा सूर री वात

४ पडित, विद्वान्।

उ०—कठै माग्व इण विध कही, सुणि इम कहै **सुजाण**। माडै कायव 'माघ' मधि, पडित 'माघ' प्रमाण।—सू प्र.

५ प्रियतम, प्रेमी।

उ०—१ म्हारो मन मोह्यो, छै जी स्याम **सुजाण**। माधुरी मूरत सुदरी सूरत, जाणै कोटिक भान।—मीरा

उ०—२ दोउ मयमत **सुजाण**, सेज दिसि वाहुडइ। जाणै धरती-काज, ग्रसप्पति ग्राहुडई।—ढो मा

६ सज्जन।

स.पु –पति, खाविंद।

२ परमात्मा।

उ०—मयै तै वार किता महराण, मुरा लै दीध ग्रम्रत्त **सुजाण**।
—ह र

३ राजा, नृप।

उ०—सहनक तणा **सुजाण**, पारीमा 'पातल' तणा। तै गहविया राण, एकण हूता 'ऊदवत'।—सूरायच टापरयां

रू भे —मजाण, सजान, सुजाणा, सुजाणी, मुजान, मुयाण, सूजाण।

सुजाणी—देखो 'मुजाण' (रू.भे)

उ०—लागी प्रीत मोहि भई पुराणी, भावै जाणी मजाणी। लोक लखी सं कौण काम है, मुदरी माम **सुजाणी**।—ग्रनुभववाणी

सुजान–स पु–१ पँवारवश की एक शाखा। (व भा)

२ देखो 'मुजाण' (रू भे)

उ०—१ सम्रित माख पुरान कु, मीख'रि भया **सुजान**। हरीया ग्रच्छर हेक विन, चतुराई मैं मान।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ हरीया दळ ऊमटि घटा, तवल धुरै निसान। दहल पडै मिर दोखिया, ग्रायै सूर **सुजान**।—ग्रनुभववाणी

सुजाक—देखो 'सूजाक' (रू.भे)

उ०—गरमी, मोज, **सुजाक**, पाव पुरमा रै होवै। मम्मा, नस-नासूर, भगदर भारी रोवै।—नारी सईकडी

सुजाग–१ देखो 'सजग' (रू.भे.)

उ०—१ श्री नवमी उत्तरण वाळी। वीदणी ग्राखै दिन मेडी मैं ई मूती रैवै। तीन तीन दाया हाजरी मैं। ग्रस्टपौर **सुजाग** रैवै।
—फुलवाडी

उ०—२ हाथिया रै गळै भूनता वीरकठ, ऊटा रै गोडा लूमती नेवरिया, घोडा रै पगा खणकता ग्रावळा री गमक सू काकड रौ कण कण जाणै **सुजाग** व्हैगौ।—फुलवाडी

२ देखो 'सूजाक' (रू भे)

सुजागर–वि–१ जो देखने मे ग्रत्यन्त मुन्दर लगे, मनोहर।

२ प्रकाशमान।

सुजाणौ, सुजाव्वौ–देखो 'सूजाणौ, सूजाबौ' (रू भे)

उ०—वो पुटिया रै ग्राळै दूजा पछिया रै मावै नी गियौ। मूटौ **सुजायोडो** उणी ठौड वैठौ रह्यौ।—फुलवाडी

सुजाणहार, हारौ (हारी), सुजाणियौ—वि०।

सुजायोडौ भू०का०कृ०।

सुजाईजणौ, सुजाईजबौ—कर्म वा०।

सुजात–वि [स] जिसका जन्म उत्तम विधि से हुग्रा हो, जो विवाहित स्त्री-पुरुषो की सतान हो।

स पु-जैनियो के वीस विहरमानो मे से पाँचवाँ विहरमान।

उ०—विहरमान जिणवीसै वदीयै, महाविदेह विख्यात। सीमधर १ युगमधर २ वाहुजी ३ स्रीसुवाहु ४ **सुजात** ५।—वृ स्त

उ०—२ **सुजात** तीर्थकर ताहरी, हुयइ देव किण होडि रे। देव वीजे तउ दूखण घणा, तु मइ नही तिल खोटि रे।—स कु

सुजाति–स स्त्री [स] उत्तम जाति या कुल।

वि–१ उत्तम कुल या जाति का, कुलीन।

२ उत्तम, श्रेष्ठ।

उ०—वेद व्याम सीगी रिख वामिट, विस्वामित्र ग्रजानि ग्रगमन

४ किसी की कही बात को ठीक समझ लेना, ध्यान देकर सुन लेना, बात का मर्म जान लेना, ध्यान देना, गौर करना।

उ०—१ सूर छतीमौ साभळै, सूरा तणौ सकाज। 'वाका' रा वायक सुणै, कायरडा किण काज।—वा दा

उ०—२ पायौ म्हारौ ईंडूणी कौ चोर, सुणज्यौ व्रज कै वासी लोग।—मीरा

उ०—३ सउदागर राजासु कह, सुणउ हमारी कथ्थ। मारवणी छानी रही, सै माळवणी तथ्थ।—ढो.मा.

उ०—४ वौ नारकियौ दीवाण तौ पाच पाच घडी ताई अेकलौ मिनखा रै ग्यान री ऊची बाता सुणतौ।—फुलवाडी

५ किसी चर्चा विशेष या बात विशेष को विभिन्न तरह से सुनना, विचार-विमर्श करना।

उ०—वसुदेव कुमार तणौ सुख वीखै, पुणै सुणै जण आप पर। औ रुखमणी तणौ वर आयौ, हर'म करौ अनि रायहर।—वेलि

६ किसी घटना विशेष या बात विशेष को आद्योपान्त विस्तार से समझना।

उ०—१ राजाजी विगतवार आखी बात सुणणी चावता हा। पूछ्यौ—लारला सोळै बरसा मैं काई व्हियौ सौ म्हनै सब बता।
—फुलवाडी

उ०—२ कीरत छपनै री गुणियै कविराजा, महिमा छपनै री सुणियै महाराजा।—ऊ का

७ किसी की विनती या पुकार की ओर ध्यान देना, ग्रहण करना, मान लेना, स्वीकार कर लेना।

उ०—१ राज दिया 'वीका' 'रिडमल' नै, मा करनल मेहाई। प्रणत पुकार सुणत पीथळ री, राजड लाज रखाई।—मे म

उ०—२ बस्ती रा हैरान। खासा दिना ताई वळै सबर राखी। सेवट हाथ जोड फरियाद करणी पडी। सुणता ई राजा रै झाळ झाळ ऊठगी।—फुलवाडी

८ कारणवश कठोर शब्द या फटकार सहन करना, बरदाश्त करना।

उ०—घरवाळा रा भाग समझौ कै इत्ता थोक सुणिया पछै ई म्है वानै जीवता छोड दिया। म्है गलती नाव आ इज करू कै इण कमसल जात नै जीवती छोडू।—फुलवाडी

सुणणहार, हारौ (हारी), सुणणियौ—वि०।

सुणिओडौ, सुणियोडौ, सुण्योडौ—भू०का०कृ०।

सुणीजणौ, सुणीजबौ—कर्म वा०।

सुणणौ, सुणबौ, सुनणौ, सुनबौ—रू०भे०।

सुणयोड़ौ—देखो 'सुणियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. सुणयोडी)

सुणवाई—स.स्त्री—१ सुनने की क्रिया या भाव।

२ कही जाने वाली बात की ओर दिया जाने वाला ध्यान।

उ०—वौ घणौ ई कूकियौ पण की सुणवाई व्ही नी।—फुलवाडी

३ न्यायालय मे किसी मुकद्दमे का वृत्तान्त या तर्कों को न्यायाधीश द्वारा सुनने की क्रिया।

४ किसी की फरियाद या विनती मान लेने की क्रिया।

रू भे.—सुणाई।

सुणामणी—स स्त्री—किसी की मृत्यु के समाचार, मृत्यु-सन्देश।

रू भे.—सुणावण, सुणावणी।

सुणामणौ, सुणामबौ—देखो 'सुणाणौ, सुणाबौ' (रू.भे.)

उ०—राव रक हिंदू रवद, गोला सगळा गेह। मागै जात सुणामिया, छुद्र दिखावै छेह।—वा दा

सुणामियोड़ौ—देखो 'सुणायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. सुणामियोडी)

सुणाई—देखो 'सुणवाई' (रू भे)

सुणाणौ, सुणाबौ—क्रि स ['सुणणौ' क्रिया का प्रे रू,] १ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज़ या ध्वनि का ज्ञान कराना, किसी प्रकार की बोली या आवाज़ का अनुभव कराना, सुनने के लिए प्रेरित करना।

२ किसी बात या घटना की जानकारी देना या कराना, सूचना देना, सूचित करना।

उ०—१ असह खबर जोधाणै आयी, सती महाव्रत लिया सुणायी।
—रा.रू

उ०—२ सूवा एक सदेसडउ, बार मरेमी तुज्झ। प्रीतम वासइ जाइ नइ, मुई सुणावै मुज्झ।—ढो मा

उ०—३ कवराणी सू वधाई माग्या विना ई वधाई री बात सुणाय दी।—फुलवाडी

३ नियमित रूप से चलने वाली कोई आवाज़, शब्द या चर्चा को सुनाते रहना, ऐसा सुनने के लिए अभ्यस्त करना।

४ कोई वृत्तान्त या इतिहास या पूर्व घटित घटना को विस्तार से कहना, बताना।

उ०—१ पछै राजकवर माडनै सगळी बात सुणाई।—फुलवाडी

उ०—२ राजाजी सोळै बरसा री विखौ दौ चार घडी मैं नी सुणाइजै।—फुलवाडी

उ०—३ बाड्या सरप रै कैता ई छोटकी बहू रोवती ढबगी। पीहर अर सासरा रौ सगळौ विखौ सुणायौ।—फुलवाडी

५ गुप्त भेद या रहस्य खोलना, भेद की बात बताना, वास्तविकता प्रगट करना।

उ०—१ बैन रा नेह अर दुख माथै दिवला री मा नै दया आई। पछै वा उण सू की चोज नी राख्यौ। आप रै बेटा सागै ठकराणी री प्रीत रौ सगळौ खातौ उघाडनै सुणाय दियौ।—फुलवाडी

उ०—२ पण नदलाल गैणौ गळा लेणै रौ समाचार खुदाखुद सुणा देवै, जद सेठा रै जी मैं जी आवै है।—दसदोख

सुझियोडौ—देखो 'सूभियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुझियोडी)

सूट्ट–वि [स सुप्] १ स्तम्भित, हत-प्रभ, भौंचक्का।
उ०—पछै राजकवर माटनै मगळी वात सुणाई। सुणण वाळा रै काना रा कीडा झडग्या। सूट्ट होय पाखाण री पूतळिया रै उनमान मगळी वारता सुणता रह्या। —फुलवाडी
२ निश्चल, स्थिर।
३ किंकर्त्तव्यविमूढ, जड-वुद्धि।
उ०—केई जणा तौ इण भात सूट्ट व्हैगा, जाणै मगळी सुध-वुध मार्थ वाण व्हैगी। - फुलवाडी
४ अचेत, वेहोश।
५ तल्लीन, एकाग्रचित्त।
उ० –म्है मगळा ई सूट्ट व्हियोडा वावा रै मूडा मू निकळता वोल सुणता रह्या। —फुलवाडी

सुठाम–स पु [स सुस्थान] १ अच्छा स्थान, अच्छी जगह, उत्तम स्थान।
उ०—ऊच-पणै सहु जोयण वहुत्तर, सोजोयण आया मारै। पिहुल पणै पचास जोयण ना, प्रभु प्रासाद सुठामा। —वृ स्त
२ उत्तम एव सुन्दर पात्र।

सुठि, सुठौ–वि [स सुष्ठु] (स्त्री. सुठि) १ सुन्दर, मनोहर।
उ० –ईसर उठ भग्गा, धोमर अग्गा, वै नै पग्ग, लग वग्गा। सुठि नारि सुहग्गा, मिळियी मग्गा, दाणव पग्गा रच दग्गा।
—भगतमाळ
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
उ०—स्राव्य सुभावत है सुकवी सुठि, काव्य कपूतन भावत कैसै। वध किलीरन कथन कै विधि, अवन आरमि ओपत ऐसै।
—ऊ का

सुड–वि –अच्छा, वढिया।

सुडमक–क्रि वि –अच्छे ढग मे।
उ० –ताहरा राजा चारण नू पूछै छै। 'जु तै मारीखो मोटौ आदमी तौ दरवार आवै सु तौ काई-लतै भली भात सुडमक रहनै हजूर आवै।—मूळवै सागावत री वात

सुडाडड—देखो 'सूडाडड' (रू भे)

सुडौळ–वि –१ जिसके अङ्ग-प्रत्यङ्गो की वनावट सुन्दर हो, सुन्दर, मनोहर, खूवसूरत।
२ अच्छे डील-डौल वाला।
३ जिसकी वनावट कलात्मक हो।

सुढग–स पु –१ अच्छा ढग, अच्छा तरीका।
२ अच्छा व्यवहार, अच्छा आचरण।
क्रि वि –अच्छे ढग से।
उ०—अति ऊचा तिण रै उरज, वणिया विमवा वीम। जोडै लागै जगत में, गिर गज कुभ गिरीम। गिर गज कुभ गिरीम, प्रवीणा गाविया। सुवरण वरण सुढग, कठोर सुहाविया।—वा.दा

सुढाळ, सुढाल–स.स्त्री –१ अच्छी ढाल, उत्तम ढाल।
२ सुन्दर लय या तर्ज।
वि.–१ रक्षक, सहायक।
२ सुन्दर।
उ०—सुभ घाट पिट्ठ उर तट विसाळ, मुख पीठ दीठ जग तिण सुढाळ।—रा रू

सुढाळौ, सुढालौ–वि –१ रक्षक, सहायक।
उ०—१ मेर मास्री मछराळौ, सुयण माणिक सप्पखाळौ। सुकवि ऊपरि सुढाळौ, कुअर गुण किरणाळ।—ल.पिं.
२ सुन्दर, सुडौल।

सुणअ–स पु [स शुनक] श्वान, कुत्ता। (जैन)

सुणघडियौ–स पु –स्वर्णकार, सुनार। (जैन)

सुणण–स स्त्री –सुनने की क्रिया या भाव।
उ०—१ कहण सुणण हय चढ क्रमण, साहस धरण समझ्झ। 'पता' छिहतर वरस पण, हेकण न को हरज्ज।—जैतदान वारहठ
उ०—२ म्हनै वीरी सुणण री अर वाई नै वीरी गावण री कितरी कोड ही, जिणरी कोई पार नी।—अमर चूनडी

सुणणौ–स.पु –सुनने का कार्य।
उ० —रूप री आ छिव नी तौ किणी री आंख्या मैं आज पै'ली देखण मैं आई अर नी किणी रै काना मै सुणणा मैं आई।
—फुलवाडी

सुणणौ, सुणवौ–क्रि स [स श्रवण] १ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का ज्ञान करना, किसी प्रकार की वोली या आवाज का अनुभव करना, सुनना।
उ०—१ ऊपडी रजी सझि अरक एहवौ, वातचक्र सिरि पत्र वसति। सद नीहस नीसाण न सुणिजै, वरहासा वोजति।
— वेलि
उ०—२ वावहिया निल पखिया, सगरि ज काळी रेह। मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह।—ढो मा
उ०—३ हरीया अनहद सवद की, तार न कवहु तुटि। घोर सुणत है गिगन मैं, सुर वाहरि नहिं फूटि।—अनुभववाणी
२ नियमित रूप से होने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनते रहना, ऐसे सुनने का अभ्यस्त होना।
उ०—धुनि वेद सुणति कहु सुगति सख-धुनि, नद झल्लरि नीसांण नद। हेका कह हेका हीलोहळ, सायर नयर सरीख सद।—वेलि
३ किसी वात या घटना की जानकारी प्राप्त करना, सूचना प्राप्त करना।
उ०—गाठौडा पण झल्लियौ, अप 'अगजीत' निमत्त। सुण तहवर उर छीजियौ, अत खीजियौ दुरत्त।—रा रू

उ०—२ जयचद रै राज ११९४ ई रै चदावर जुद्ध मू खतम हूवौ। पछै प्रिथीराज जीत्यौ कीकर। जै वौ जीततौ तौ जिम्मी सारू आपरा काका-बाबा नै खेत राखणियौ, परमाल नै जीवतौ, अर बुदेलखड नै सुततर कीकर छोडतौ।—चितराम

सुततरता—देखो 'स्वतत्रता' (रू भे)

सुततरी—वि [स. स्वतत्रिन्] १ स्वाधीन, मुक्त, आजाद।
२ देखो 'सुतत्रि' (रू भे)

सुतत्र—देखो 'स्वतत्र' (रू भे)

सुतत्रता—देखो 'स्वतत्रता' (रू.भे)

सुतत्रि—स पु [स] तार-वाद्य बजाने मे प्रवीण व्यक्ति, वादक।
रू भे—सुततरी।

सुत—स पु [स सुत] १ पुत्र, बेटा, वत्स। (डिं को)
उ०—१ बोल नवाब सरस द्रढ बधै, सुत पितु हूत महा छळ सधै।
—रा.रू
उ०—२ जै माता सुत जनमीयौ, बिना भगति वसवास। हरीया जिन अर क्या कीयौ, भारि मूई दस मास।—अनुभववाणी
२ जन्म-कुण्डली मे लग्न से पाँचवां घर। (ज्योतिष)
३ राजा, नृप।
रू भे—सुति, सुत्त।
४ देखो 'सूत' (रू भे)
उ०—१ भागीरथ सभ्रम सुत भुवाळ, नाभग हुवौ सूत सुत भ्रपाळ।—सू प्र
उ०—२ जननी तूझ हस्त मस्तक जिह, त्रिदसालय मुख वसत निलय तिह। अस्ट सिद्धि नव निद्धि असडित, परम मती जुवती सुत पडित।—मे म

सुतअरक—स पु. [स अर्क+सुत] १ शनिश्चर। (डिं को)
उ०—अण चपळ नैण लेघु जोम अत्ति, मगि अहू विदिस चेतन सकत्ति। दीपत जुगळ कळ अमळ दत, सुतअरक पागि लग्गि जाणि सत।—रा रू.
२ कर्ण।
३ यम, यमराज।

सुतकासब—स पु [कश्यप+सुत] कश्यप ऋषि का पुत्र, सूर्य।

सुतकीरति, सुतक्रित्या—स स्त्री. [स श्रुतकीर्ति] राजा जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री व श्रीराम के छोटे भाई शत्रुघ्न की पत्नी, श्रुति-कीर्ति।
उ०—मडवा सीत उरमळा सुतक्रित्या स्वरूप।—रामरासौ

सुतगिलका—स स्त्री—शालिग्राम की मूर्ति।
उ०—कर तद सिनान अत धरम कीन, जळ गग आचमन सब मुलीन। पढ गीता निज हर कर प्रणाम, सुतगिलका कठ सु बध सकाम।—गि सु रू

सुतण, सुतण्ण—स पु [स स्व-तनय] १ पुत्र, बेटा। (ह ना मा)
उ०—१ इद्रसिंघ दकवण थी आयौ, साथ लियौ कर तोल सवायौ। राण सुतण विरदै समरायै, सग थयां पहुंचावण सायै।—रा.रू
उ०—२ अत दीरघ सगण भ्रमण फल पत अनल, सुतण कस्यप रयण स्याम रग सोय।—र.रू
उ०—३ दुभ्रळ राघव सुतण दसरथ, लियण भुजबळ लक।
—र ज.प्र.
रू भे—सुतन, सुताण, सुतान।

सुतदीप—स.पु.—काजल।

सुतदेवकी—स पु—देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण। (अ मा)

सुतधर—स स्त्री—रज, धूलि। (अ.मा.)

सुतन—स पु [स सुतनु] १ स्वस्थ एव सुन्दर तन, देह, अच्छा शरीर।
उ०—जाळी सगि चढि चढि पथी जोवै, भुवणि सुतन मन तसु मिळित। लिखि राखै कागळ नख लेखणि, ससि काजळ आसू मिळित।—वेलि
रू भे.—सुतनु, सुतन्न।
२ देखो 'सुतण' (रू.भे.) (डिं को)
उ०—१ ओपै आय अनत बळ, सुतन वियारू साथ। किर सिव ऊपर आवियौ, जाळधर भाराथ।—रा रू
उ०—२ आसउत तणी आकाय देखै अकळ, साहजहा सुतन पटकै घणौ सीस। रीस सुज हुती मन 'नींव' हर ऊसरा, रींद रौदा सरस काढवी रीस।—सवळौ सादू

सुतनउमा—स पु [स उमा-सुत] १ पार्वती के पुत्र, स्वामी कार्तिकेय।
(ह ना.मा)
२ गणेश, गजानन।

सुतनी—वि.स्त्री—सुन्दर शरीर वाली, सुन्दरी।
उ०—सझै खोडस स्रगार सुतनी, वणसा भूल चली रिख वनि।
—रामरासौ
स स्त्री.—पुत्री, लडकी।

सुतनु—देखो 'सुतन' (रू भे)
उ०—मळयाचळ सुतनु मळै मन मौरै, वळी कि काम अकूर कुच। तणौ दखिणादिसि दखिण त्रिगुणमै, ऊरध साम समीर उच।
—वेलि

सुतनेह—स पु [स सुत-स्नेह] काजल, अञ्जन। (अ मा)

सुतन्न—१ देखो 'सुतण' (रू भे)
उ०—१ रिणवत्ता रत्ता रहै, मकता वीर सुतन्न। जोडै साम्हा ईस तण, रिण जगदीस प्रसन्न।—रा रू
उ०—२ सवामण देव सुतन्न सरीन, तिसा सिव नेत्र 'लूण' हर तीन।—सू प्र
उ०—३ 'सूरउत' अनै 'अमरा' सुतन्न, कुरखेत जाण अरजन करन्न।—गु रू व
२ देखो 'सुतन' (रू भे)

६ निकट भविष्य मे होने वाली घटना की पूर्व सूचना देना, आगाह कर देना ।
७ कुछ पढकर या गाकर सुनाना, पढना, गाना ।
उ०—१ चाद वणाय रावळी चिरजा, सनमुख गाय **सुणाई**। दीजै भगति मुकति जगदवा, कीजै जेज न काई ।—मे म.
उ०—२ इण उपरात ई हसनै बोल्या—वौ रोज गावौ जिकी चाकरी वाळी गीत तौ एकर **सुणाय** दी नी लाडू आज तौ म्हू साचाणी चाकरी माथै वहीर व्हियौ हू ।—अमर चूनडी
८ किसी विषय या वात को समझाकर कहना, विषय की व्याख्या करना, वर्णन करना ।
उ०—ग्यान चरित गुण गाइ, पाइ लागै परमेसर। ग्यान बोध **सुणाइ**, मोख पामै नर अमर ।—पी ग्र
९ निवेदन करना, प्रार्थना करना, विनती सुनाना ।
१० कठोर शब्द कहना, खरी-खरी सुनाना, कटु सत्य कहना ।
उ०—एक दिन मूडै मूड दोसा-मोसा करती सुभट **सुणाय** दियौ कै ओळियाकडा वेटा नै घर सू नी तगडियौ तौ वा घर छोडनै जावैला परी ।—फुलवाडी
सुणाणहार, हारौ (हारी), सुणाणियौ—वि० ।
सुणायोडौ—भू०का०कृ० ।
सुणाईजणौ, सुणाईजबौ—कर्म वा० ।
सुणामणौ, सुणामवौ, सुणावणौ, सुणावबौ—रू०भे० ।

सुणायोडौ—भू का कृ.—१ किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का श्रवणेन्द्रिय द्वारा ज्ञान कराया हुआ, बोली या आवाज का अनुभव कराया हुआ, सुनने के लिए प्रेरित किया हुआ, सुनवाया हुआ । २ किसी वात या घटना की जानकारी दिया हुआ, सूचना दिया हुआ, सूचित कराया हुआ । ३ नियमित चलने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनने के लिए अभ्यस्त किया हुआ । ४ विस्तार से कहा हुआ, आद्योपान्त वताया हुआ (कोई इतिहास या घटना) । ५ गुप्त भेद या रहस्य खोला हुआ, भेद की बात वताया हुआ, वास्तविकता प्रगट किया हुआ । ६ निकट भविष्य की घटना की पूर्व सूचना दिया हुआ, आगाह किया हुआ । ७ पढकर या गाकर सुनाया हुआ, पढा हुआ, गाया हुआ । ८ समझाकर कहा हुआ, व्याख्या किया हुआ, वर्णित । ९ विनती सुनाया हुआ, निवेदन या प्रार्थना किया हुआ । १० कठोर शब्द या कटु सत्य कहा हुआ, खरी-खरी सुनाया हुआ ।
(स्त्री. सुणायोडी)

सुणावण—वि —१ सुनाने वाला ।
उ०—नमौ विध वेद समप्पण विद्ध, नमौ सुर-काज करै हर सिद्ध । नमौ तन हस त्रिलोकी-तात, नमौ विध ग्यान **सुणावण** वात ।—ह र.
२ देखो 'सुणामणी' (रू भे)

सुणावणी—देखो 'सुणामणी' (रू.भे.)
उ०—१ जिसै जैसिंघजी री माजी री **सुणावणी** आयी । तद पातसाहजी सू मालम कर राजा लारै रया ।—द दा
उ०—२ जद स्वामीजी कह्यौ—परदेस मैं चल्या री **सुणावणी** आया सोच तौ घणाइ करै, पिण लावी काचळी तौ एक जणी पहरै ।—भि द्र.

सुणावणौ, सुणावबौ—देखो 'सुणाणौ, सुणाबौ' (रू भे.)
उ०—१ खुद नै वाना सुणणा मैं की जोर नी पडै तौ जाणै कै वात **सुणावणा** मै ई की जोर नी आवै ।—फुलवाडी
उ०—२ त्रलोका धुणी पाठ दुरगा **सुणावै**, गुणी माढ रै राग सौभाग गावै ।—मे म
उ०—३ प्रोहत नु कह्यौ, 'तू नाळेर लै जाय कुवरसी साखळै नु दै । पण कही नु **सुणावै** मता ।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—४ कहै **सुणावै** ओर कु, वाचै वेद पुरान । हरीया पिंडत की कथा, नाव विना हेरान ।—अनुभववाणी

सुणावियोडौ—देखो 'सुणायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री सुणावियोडी)

सुणियोडौ—भू का कृ—१ श्रवणेन्द्रिय द्वारा किसी शब्द, आवाज या ध्वनि का ज्ञान किया हुआ, किसी प्रकार की बोली या आवाज का अनुभव किया हुआ, सुना हुआ । २ नियमित रूप से होने वाली कोई आवाज, शब्द या चर्चा को सुनने का अभ्यस्त हुवा हुआ । ३ किसी वात या घटना की जानकारी प्राप्त किया हुआ, सूचना प्राप्त किया हुआ । ४ किसी वात को ठीक समझा हुआ, ध्यान देकर सुना हुआ, वात का मर्म जाना हुआ, गौर किया हुआ । ५ किसी चर्चा या वात को विभिन्न तरह से सुना हुआ, विचार-विमर्श किया । ६ किसी घटना विशेष या वात विशेष को आद्योपान्त विस्तार मे समझा हुआ । ७ विनती या पुकार की ओर ध्यान दिया हुआ, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ । ८ कठोर शब्द या फटकार सहन किया हुआ, वरदाश्त किया हुआ ।
(स्त्री सुणियोडी)

सुणी—क्रि वि —१ पर्यन्त, तक ।
२ देखो 'सुनी' (रू भे)
उ०—जहा **सुणी** पइकन्नी ।—जै त प्र

सुणीक—स पु—सुनना का निश्चयार्थक रूप ।

सुणैग—स पु—शयनागार, शयन-कक्ष ।
उ०—एक दिन आपरी आगली **सुणैर** माहे छै, पोढै तठै सपाडी करै छै ।—वीरमदे सोनगरा री वात

सुततर—देखो 'स्वतत्र' (रू भे)
उ०—१ ११८४ ई रा परमाल रा लेख महोवा अर कालिंजर मू मिळिया है जिणा सू ठा' पडै कै इण वेळा वौ किणरोई दवैल कौ हौ नी अर **सुततर** रूप सू राज करतौ हौ ।—चितराम

सुतुग–स पु [स] ग्रहों का उत्थान। (ज्योतिष)
सुतुग्गाव–स.पु [फा] जिराफा नामक जतु।
सुतुरमुरग—देखो 'सुतरमुरग' (रु.भे।
सुतेई—देखो 'स्वत' (रु भे)
उ०—स्रस्टि कै आदि अर अन परलोकं, मुद्ध मना निरवासी। सुतेई फोरण फुरी मता सू नाम अकाम वरामी।
—श्री सुखरामजी महाराज
सुतेज–स पु [स] १ तीव्र प्रकाश, अच्छा प्रकाश।
२ आभा, कान्ति।
३ जैनियो के अतीतकालीन दसवे तीर्थङ्कर का नाम।
उ०—सग्वानु भूति श्रीधर दत्त नामी, दामोदर श्री सुतेज स्वामी।
—स कु.
सुतेसुभाव – क्रि वि [स स्वत-स्वभाव] १ कुदरतन, सयोग से, स्वयमेव।
उ०—पीछै सुतेसुभाव चापावत हाथीसिंघ गोपाळदासोत सासरै जावता आदमिया २०० सू अजमेर आयौ।—द.दा
२ अचानक, अकस्मात्।
सुतै—देखो 'स्वत' (रु.भे)
सुतैसिद्ध–वि [स स्वतस्-सिद्ध] जो अपने आप ही सिद्ध हो, स्वयसिद्ध।
सुत्त—देखो 'सुत' (रु भे.)
उ०—चढै स्रान पाहाड चलतौ पहाड, वरसिंघदे सुत्त फौजा विभाड।—गु रु व
सुत्तग–स.पु [स सूत्रक] कटिसूत्र, मेखला।
सुत्तरखानौ—देखो 'सुतरखानौ' (रु भे)
उ०—मदभरता धुग्ना ममत, करता दत कठीठ। सुत्तरखानै सोहिया, धुर इमडा गय धीठ।—पे.रु
सुत्तरुइ–स स्त्री –सूत्र सुनने की रुचि। (जैन)
सुत्तसपया–स स्त्री –१ सूत्र-सपदा। (जैन)
२ शास्त्रज्ञ। (जैन)
सुत्याग–स.पु. [स] अच्छा त्याग, श्रेष्ठ त्याग।
रु भे —सुतियाग।
सुत्यागी–वि.–अच्छा त्याग करने वाला, श्रेष्ठ त्यागी।
रु.भे —सुतियागी।
सुत्र—देखो 'सूत्र' (रु भे)
उ०—विरोद कत्र खीनग्गाम धारिय धुजवर, सुसोभित सिखा स सुत्र सेनय पितवर।—सू प्र
सुत्रनाळ - देखो 'सुतरनाळ' (रु.भे)
उ०—सीसा जामग सोर, भार गाडा वाणा भर। चव हजार सुत्रनाळ, हवस उमताज बहादर।—सू.प्र
सुत्रामा–स.पु [स सुत्रामन्] १ पुराणानुसार एक मनु का नाम।
२ इन्द्र। (ह.ना मा.)
रु भे —सत्राम, सूत्राम।
सुत्रिछण—देखो 'सुतीक्ष्ण' (रु.भे.)
सुत्री–स स्त्री [स. सुता] १ पुत्री, वेटी।
[स. सु-स्त्री] २ सुन्दर स्त्री।
उ० –१ कोकिळ निसुर प्रमेद ओमकरण, सुरति अति सुख जिम सुत्री।—वेलि
उ० – २ सुनेत्र विनाण सुत्री सिणगार।—रामरासो
सुथमणौ, सुथंभवौ – क्रि स [स. स्तम्भनम्] १ रोकना, ठहराना, थामना।
२ पकडकर रखना, पकडना।
३ देखभाल करना, सम्हालना।
सुथंभियोड़ौ–भू. का कृ. – १ रोका हुआ, ठहराया हुआ, थामा हुआ।
२ पकडकर रखा हुआ, पकडा हुआ। ३ देखभाल किया हुआ, सम्हाला हुआ।
(स्त्री. सुथभियोडी)
सुयण—देखो 'सूयण' (रु भे)
उ०—तिण सू थै डूगरसीजी नू परणावौ तौ म्है वैर भाजा। तरा उणा परवाना कह्यौ—डूगरसीजी ८० वरस रा हुवा, सुयण रौ नाडी ही चाकर वाधै छै। थै इसडी वात काई कही?—द वि.
सुयर–वि. [स. सुस्थिर] १ दृढ, अडिग, अटल।
उ०—राण दळ पलटतां सुयर झालौ रहै, भाण अस रोक आराण भाळै। राज रै कठ भूखाण उण चौसरा, रभ चौसरल कौ सीम राळै।—कल्याणसिंह झाला रौ गीत
२ मजबूत, पक्का।
स.स्त्री–१ पृथ्वी, भूमि। (ना.डि को)
रु भे —सुथिर।
२ देखो 'सुथार' (रु.भे.)
सुयरसाही—देखो 'सुथरेसाही' (रु भे.)
सुयराई–स स्त्री –१ सफाई, स्वच्छता।
उ०—भाख फाटताई वौ सीधौ गूजरी रै घरै गियौ। जावताई खापाचेक होय कैवण लागौ—सुयराई सू झूम-वाईदौ काढनै वाडा अर गवाडी नै देवता रमै जैडा करदौ।—फुलवाडी
२ चतुराई, निपुणता।
उ०—१ सिझ्या रा कडाई मै दूव रडाय वा सुयराई सू पराता मै राळचौ। परात परात सू वाफा रा न्यारा न्यारा गोट ऊठता।
—फुलवाडी
उ०—२ सुयराई अर खामचीपणौ तौ मामी सू लारै हौ।
—फुलवाडी
उ०—३ नाई पीडिया नै सुयराई सू दवावतौ वोल्यौ – नी वापजी, औ तौ वे'म इज म्हारै माथै मत करौ। फुलवाडी

सुतपड–स.पु –धृतराष्ट्र के छोटे भाई पांडु के पाँचो पुत्र। यथा—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

सुतपवण, सुतपवन–स पु [स पवन-सुत] १ पवन पुत्र हनुमान।
उ०—समद सुतन, सुतपवण, भिरग-सुत, ओखिद म्रित आपौ ऊदार। ऊभौ करौ चियारै आवै, सुत विजमल खट वरन सधार।
—ईसरदास बारहट
२ पाण्डुपुत्र भीम।

सुतपस्वी–स पु [स सुतपस्विन्] कोई बडा तपस्वी, तपधारी।

सुतपा–स पु [स सुतपस्] १ विष्णु।
वि वि –बद्रिकाश्रम मे नर-नारायण रूप से सुन्दर तप करने के कारण उक्त नाम विष्णु को प्राप्त हुआ था।
२ सूर्य।
३ एक मुनि का नाम।
४ एक सूर्यवशी राजा जो राजा अन्तरिक्ष का पुत्र था, इसका दूसरा नाम सुपर्ण भी था। (सू प्र)

सुतपाभगत–स पु [स. सुतपाभक्त] इन्द्र। (ना डि को)

सुतपावाहण, सुतपावाहन–स पु [स सुतपावाहन] गरुड, खगराज। (ना डि को)

सुतर–स पु [फा. शुतुर] ऊँट, उष्ट्र।
उ०—फौजा विलोक नह लीध फेट, भाटिया कीध असि सुतर भेट।
—सू प्र

सुतरखानौ–स पु [फा शुतुर+खान] वह स्थान या कक्ष जहाँ ऊँट बाँधे जाते है, उष्ट्रशाला।
उ०—फीलखाना री दरोगौ, सुतरखाना रौ दरोगौ।—नैणसी
रू भे —सुत्तरखानौ।

सुतरनाळ, सुतरनाळी–स स्त्री [फा शुतुर+स नाली] एक प्रकार की छोटी तोप जो ऊँट पर रखकर चलाई जाती थी।
उ०—तद हजार सात आठ पखरैत तवळ बध, सेर-जुवान सीपाही राखिया। कदेक वारै चढै, तद ५०० घोडची सुतरनाळ रामचगी लिया चढै। – जगमाल मालावत री वात
रू भे —सुत्रनाळ।

सुतरमुरग–स पु [फा शुतुरमुर्ग] अमेरिका, अफ्रिका एव अरब के रेगिस्तानो मे होने वाला एक बहुत बडा पक्षी जिसकी गर्दन ऊँट के समान लम्बी होती है। इसकी ऊँचाई प्राय तीन गज होती है। यह दूब व पत्थर खाता है।
उ०—पसू पणौ पखी पणू, सुतरमुरग रै सग। मरदपणौ महिला पणौ, मावडिया रै अग।—बा दा
रू भे —सतुरमुरग, सुतुरमुरग।

सुतराकस–स पु [स राक्षस-सुत] ऊँट।

सुतरु–स पु [स] १ अत्यन्त सघन एव सुन्दर वृक्ष।
उ०—सुतरु छाह तदि दीध जगत सिरि, सूर राह किय जगत सिरि।
—वेलि
२ उत्तम एव श्रेष्ठ माना जाने वाला वृक्ष।

सुतब्रम–स पु [स ब्रह्म-सुत] कामदेव। (अ मा)

सुतळ–स पु [स. सुतल] सप्त अधो-लोको में से एक।

सुतस्थान–स पु –जन्म-कुण्डली मे लग्न मे पाँचवाँ स्थान। (फलित ज्योतिष)

सुताण, सुतान—देखो 'सुतण' (रू भे)
उ०—१ पहला गुण सारा पणू, भूतेस सुताणा। लबोदर फरमी धरण, मुख मैं करदाणा।—द दा
उ०—२ कुभ गेर सेल जूजी गग गौर भ्रम क्रन, अहूं सता वेमेक मौ छाताळ सुतांन।—भगतराम हाडा रौ गीत

सुता–स पु [स] १ पुत्री, बेटी, लडकी।
उ०—१ तिकण रा कटिया सीस नू थाळ मैं मगाय जवनराज री सुता वरमाळ पटकण रौ विचार कियौ।—व भा
उ०—२ गोतम सुता ताम सुत नागर, धीरज सुचिता ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरौ रिपु प्राणी, ताह न कदै सतावै।—र रू
२ कुदरत, प्रकृति।
३ देखो 'सत्ता' (रू भे)
४ देखो 'स्वत' (रू भे)

सुतार—देखो 'सुथार' (रू भे)
उ०—१ जैतारण था कोस २ पिछम नु था डावौ। सीरवी वाणीया सुतार कुभार वसै। वास १ चारणा रौ जुदौ छै।—नैणसी
उ०—२ सोनी, गाधी, दोसी, नेस्ती साहव, साह, सेठि, सोणावई, पडसूत्रीआ, कसारिआ, बीजउरीआ, खजूरिआ, कणसरा, भणसरा, मयारा, मणीयरा, सुतार, सूत्रधार।—सभा
(स्त्री सुतारी)

सुति—देखो 'सुत' (रू भे)

सुतियाग—देखो 'सुत्याग' (रू भे)

सुतियागी—देखो 'सुत्यागी' (रू भे)
उ०—परठी आभ गयण लग पूहत, कीरत वाडी मोर कळी। सुतियागी आरत कर सीची, फळ किव वयणा सुफळ फळी।
—राणा हमीरसिंह रौ गीत

सुतीक्षण—देखो 'सुतीक्ष्ण' (रू भे)

सुतीक्षण-खडग–स पु यौ –एक प्रकार की तलवार जिसके नीचे का भाग पैना एव चन्द्राकार होता है।

सुतीक्ष्ण – स पु [स] एक ऋषि जो अगस्त्य ऋषि के शिष्य थे। श्रीरामचन्द्र के वनवासकाल में ये उनसे मिले थे। (रामरासौ)
वि –जो बहुत तीक्ष्ण या पैना हो।
रू भे —सुतीक्षण, सुत्रिछण।

सुतीरथ–स पु [स सु-तीर्थ] उत्तम या पावन तीर्थ।
उ०—नाम सुतीरथ नाम व्रत, नाम सलोभी काम। एकौ अक्खर ततफळ, जप जीहा स्रीराम।—ह र

३ पवित्रता, शुद्धता।

उ०—सती उण वगत मूंन धारचा कुत्ता री आरती करती ही। थोडी ताळ पछै वा सुथराई सूं पुरसगारी करनै लागी। पण कुत्तौ मूंडौ फेर लियौ।—फुलवाडी

सुथरापण, सुथरापणौ—स पु —१ सफाई, स्वच्छता।

२ पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता।

३ चतुराई, दक्षता, निपुणता।

सुथरासाही, सुथरेसाही—स पु.—१ एक सम्प्रदाय विशेष जो गुरु नानक के पुत्र सुथराशाह द्वारा चलाया गया है।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

रू भे —सुथरसाही।

सुथरो—वि [स सुस्तर] (स्त्री सुथरी) १ उत्तम, श्रेष्ठ।

२ उम्दा, बढिया।

उ० —दुरगादासजी रथ एक सै जूतै अव्वल बीजौ कपडौ सुथरौ मेलियौ।—सुदरदास भाटी बीकूपुरी री वारता

३ छोटा आसन, बिछौना।

उ० —किण भांत रा हुका छै? सोनै रा, रूपै रा, बिदरी, खाखोळ ठाढा पाणी सूं भरजै छै। नीचै सुथरा बिछायजै छै। ऊपर हुका मेल्हजै छै।—रा.सा स

३ पवित्र, शुद्ध।

४ साफ, स्वच्छ, निष्कटक।

उ०—जै आप हुकम फरमावौं तौ उवौ हमाळ उण ठौर सूं पत्थर उठावै मारग सुथरौ करै उवौ वै मनसब दीसै छै।—नी प्र

५ उज्ज्वल, शुभ्र।

६ सुन्दर।

उ० - झखा खजरीटा अगा, सबर हतक सराह। जैतवार ज्यारा नयण, सरोरुहा सुथराह।—बा दा

७ सुगधित।

उ०—मोगरै री वेल केवडै री तेल स केस सुथरौ कीजै छै।

—रा सा स

८ स्वादिष्ट।

उ०—घ्रित पूरित रस जेण घण, अन मिस्ठान्न अपार। तरकारी सुथरी अतर, अतिसुदर आचार। रा रू

९ साफ, स्वच्छ, निर्मल।

उ०—काई मैल इण गुन्नीम कगेड नै गेटी पुगा देली? काई वा उणा रा उघाडा डील ऊजळा सुथरा गाभा सूं ढक देली? वा नै स्कूल मदरसै भेज देनी?—तिरसकू

सुथळ—स पु —१ प्रत्येक चरण मे २२ मात्राओ का एक मात्रिक छन्द विशेष।

उ०—दीसै मात्रा बीस दुय, पायै एक प्रमाण। सुथळ छद सोभा सहित, वदि लखपत्ति वखाण।—ल पिं

[स सुस्थल] २ अच्छा स्थान, शुभ स्थान।

३ कोई श्रेष्ठ भाव।

क्रि.वि —उचित, ठीक।

रू भे —सुथाळ।

सुथाणौ—स पु [स सुस्थान] ठहरने की जगह, स्थान।

उ०—आवै धकै सुथाणौ ऊठै, पिसणा चमू चढै नह पूठै।

— रा रू.

सुथान—स पु [स. सु-स्थान] १ श्रेष्ठ व उत्तम स्थान, जगह।

उ०—१ पुहकर सुथान कानी सुप्रव, जाम जात्र अहि नर जुटै। वाराह देव दीठा वदन, महा आव दाळद मुटै।—ज.खि

उ०—२ निज सुथान द्रुम अरु लता, डाळ फूल फळ पात। अतै आवत चित्त सब, न्यारी न्यारी भांत।—गज-उद्धार

२ उपयुक्त स्थान।

उ०—'काळ दुकाळी ना मरै, बामण बकरी ऊट'। पण सुथांन वासौ ही तौ चाहीजै।—दसदोख

रू.भे —सुथानौ।

सुथानक, सुथानिक—स पु [स सुरस्थान] १ सुमेरु पर्वत। (ना.मा, ह.ना.मा.)

२ घर, गृह। (अ मा)

रू भे सथानक, सथानिक।

सुथानौ—देखो 'सुथान' (रू भे)

उ०—चैत्र सुदै १ पोथी सपूरण लीखयौ छ वार बुधवारि वचनारथी कान्हा गाव रामीसर सुभ सुथानै दास जी री थापना।

—वि स.सा.

सुथार—स पु [स सूत्रकार] (स्त्री सुथारण, सुथारी) १ वढई नामक जाति।

उ०—तवोळी सुथार ठीक भैसात ठठारू, नव नारू इण नाम कहै हिव पाचै कारू।—ध व ग्र

२ उक्त जाति का व्यक्ति, बढई।

उ०—माई री हजार मोहरा दी जद सुथार हामळ भरी। आखा राज मैं उडण-खटोळा घडणिया फगत एक-दौ ई कारीगर है।

—फुलवाडी

३ एक प्रकार की चिडिया।

रू भे —सुतार, सुथर।

सुथारखानौ—स पु —लकडी का सामान बनाने का कारखाना, जहाँ बढई लोग काम करते है।

सुथाळ—देखो 'सुथळ' (रू भे)

उ० —पाई फतै रोळै पाव ढुढाड दराया पाछा, दुठ वाही ववाही न भूलौ धाव दाव। ऊवावरै 'पता' मार भाला धरा आपणाई, सुथाळा जगी नै पाछी वठाई सुजाव।—गोपाळदान

सुथिर—स पु —१ एक मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे

उ०—दीमै न न्याय भोगवि दमा, पडछौ सुदि वदि पखरी । देखै नै माच दाखै नी, खाडी वादी ए खरी ।—घ व ग्र.

२ देखो 'सुध' (रु भे)

सुदिट्ठ—देखो 'सुदीठ' (रु भे)

सुदिट्ठी—देखो 'सुद्रस्टी' (रु भे.)

सुदिन, सुदिन्न—स पु [स सुदिन] १ कोई पर्व का दिन, शुभ दिन ।

२ खुशी या आनन्द का दिन ।

उ०—वळता तौ दीपक भला, टळता भला विघन्न । गळता तौ वेरी भला, वळता भला सुदिन्न ।—अग्यात

३ शुभ अवसर, सुनहरा मौका ।

रु भे—सुदन ।

सुदी—देखो 'सुद' (रु भे.)

उ०—१ पनरैसै समत (१५१५) पनरोतडै, सुदी जेठ ग्यारस सनढ । अवगाढ 'जोध' रचियौ इमौ, गाढपूर जोधाण गढ ।
—सू. प्र.

उ०—२ सु राजा सूरजसिंघ समत १६७६ भादुवा सुदी २ काळ कीयौ तठा सुधी रही ।—नैणसी

सुदीठ—स.स्त्री [स सु+दृष्टि] १ शुभ-दृष्टि, दया-दृष्टि ।

उ०—१ अब हरि मेरी ओर कू, क्यू न करौ सुदीठ ।
—गज-उद्धार

उ०—२ अनेक सत आसरै, वसै सहीव वानरै । प्रथीप राम पोसणा, अमी सुदीठ अग ।—र ज प्र

२ अच्छी तरह से देखने की क्रिया या भाव ।

रु भे—सुदिट्ठ ।

सुदीस—स पु [स सु-दिवस] शुभ दिवस ।

उ०—लौकिक विधि सहु कीध, तेहनौ स्यू कहीयै हौ लोक जाणै सहू । आव्यौ लगन सुदीस, आरिंभ कारिंभ कीधा तिहा बहू ।
—स्रीपाळरास

सुदुमन—स. पु. [स सुदुम्न] वैवस्त मनु का पुत्र जो इड नाम से प्रसिद्ध है ।

सुदुर, सुदूर—वि [स सुदूर] वहुत दूर ।

उ०—साद करै किम सुदुर हे, पुळि पुळि थक्कै पाव । सयणै घाटा वउळिया, वइरि जु हुआ वाव ।—ढो मा.

सुदेव—स पु [स] १ उत्तम देवता ।

२ श्वेत एव सुरथ के पिता विदर्भ नरेश ।

३ इक्ष्वाकुवशीय एक राजा जो चच्चुराय का पुत्र था ।

उ०—रोहितास तणै ह्वित चचुराय, तप सुत सुदेव तप भाण ताय ।
—सू प्र.

४ देवक राजा का पुत्र एक राजा ।

५ स्वारोचिप मन्वन्तर का एक देवगण ।

६ करधम-पुत्र आविक्षित राजा की पत्नी गौरी का पिता एक राजा ।

७ एक वैदिक यज्ञकर्त्ता ।

८ नाभाग राजा की पत्नी सुप्रभा का पिता, एक राजा ।

सुदेस—स.पु. [स. स्वदेश] १ अपना देश, स्वदेश ।

[स. सुदेश] २ अच्छा देश ।

सुदेसी—वि [स स्वदेशी] १ अपने देश का, स्वदेशी ।

२ अपने देश का बना ।

सुदेह—स.स्त्री. [स.] सुन्दर शरीर ।

सुदैव—स पु [स.] १ शुभ सयोग, अच्छा अवसर ।

२ सौभाग्य, अच्छा भाग्य ।

सुदौ, सुद्दौ—वि. (स्त्री सुदी) सहित, साथ ।

उ०—१ आदमी जाणी, जै जगायस्या तौ मोर करसै तीसू माचा सुदा ही उठाय लीन्हा अर लेय कर हालिया ।
—साई री पलक मैं खलक री वात

उ०—२ सौ सुदरदास नू स्वपनै मैं दरिद्र कही जै तू मोनू चोट लगाई तौ थारौ घर जडा मूल सुद्दौ उपाड नाखस्यू ।
—सुदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता

क्रि वि—तक, पर्यन्त ।

उ०—गोपाळपोळ सु लगाय फतैपोळ सुद्दौ कोट, नै फतैपोळ खास मा'राज जाळोर सू पधारिया तदै १७७४ कमठौ करायौ चहोतरै ।
—मारवाड री ख्यात

रु.भे—सुधौ, सूदौ ।

सुद्ध—वि. [स शुद्ध] १ जो भाषा, व्याकरण, उच्चारण व लिखावट की दृष्टि से सही हो, ठीक, शुद्ध, जिसमें कोई गलती न हो ।

उ०—१ सारद मसि सारद वदन, सारद कविता सुद्ध । अद सारद पारद उकति, करण विसारद वुद्ध ।—रा रु

उ०—२ कुवचन मुख कहणौ नही, सुवचन कहणौ सुद्ध । वचन विवेक पचीसिका, इम आखै अविरुद्ध । वा दा

२ पवित्र, शुद्ध, विशुद्ध ।

उ०—१ नवौ जन्म लै कुड कडीर न्हावै, महा सुद्ध व्है मुद्ध मानू नमावै ।—मे म

उ०—२ जद ब्राह्मण वोलया—हे पापणी ! म्हानै भ्रस्ट किया । अवै गगाजी जाय स्नान पाणी रा लेप करी सुद्ध थास्या ।—भि द्र.

३ जिसमे कोई कमी या खामी न हो, उचित, ठीक ।

४ युक्ति-युक्त, ठीक, सही ।

उ०—जव घणौ कस्ट हुवौ सुद्ध जाव देवा असमरथ ।—भि द्र.

५ निर्दोष, वेदाग, दोष-रहित ।

६ निर्मल, साफ, स्वच्छ ।

७ विना किसी मिलावट का, अमिश्रित, खालिस ।

८ अद्वितीय, असमान ।

९ चमकीला, उज्ज्वल ।

गुरुड तिण, करत वखाण प्रमाण ।—रा रू

उ०—२ मद लख वाह सुपरण तजै माग मैं, चरण ऊवाहणौ धरण चालै । हरण नक्रण वहै सुदरसण हरोळी, पाय तता गरण छिद अपाळै ।—र ज प्र

२ शिवजी का नाम ।

३ गीध, गिद्ध ।

[स सुदर्शनम्] ४ जम्बू द्वीप ।

५ सुमेरु पर्वत का नाम ।

उ०—पहिलौ जबूद्वीप ममड विधि थाल आकार, लावउ पिहुलउ इक लख जोइण नै विस्तार । मोटौ तेहणौ मध्य सुदरसण नामै मेर, तिण थी दस विदिसानी गिणती च्यारै फेर ।—ध व ग्र

६ शुभ दर्शन, महापुरुषो का साक्षात्कार ।

उ०—पूछत पूछत ग्यो अतहपुरि,हुओ सुदरसण तणौ हरि ।—वेलि

७ एक सूर्यवशी राजा ।

उ०—पुक्ष सभ्रम ध्रुव मधि प्रथीपति, सुत सुदरसण-उदारह दति मति ।—सू प्र

८ ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि जो अत्यन्त खारी होती है ।

वि—१ खूबसूरत, सुन्दर ।

२ जो सहज मे देखा जा सकें ।

रू.भे—सुदरसण, सुदरसेण, सुदस्सण, सुद्रसण ।

सुदरसणचक्र—स पु यौ [स. सुदर्शन-चक्र] १ भगवान् विष्णु के हाथ मे रहने वाला चक्र, एक अस्त्र ।

उ०—साह विरत्तौ मारवा, ग्राह जही गज वार । जठै सुदरसणचक्र ज्या रिणमल्ला पण धार ।—रा रू

२ श्वेत, सफेद ।* (डि को)

रू भे — सुद्रसण-चक्र ।

सुदरसणचूरण—स पु यौ [स सुदर्शन-चूर्ण] ज्वर की एक प्रसिद्ध औषधि । (वैद्यक)

रू भे—सुद्रसणचूरण ।

सुदरसणद्वीप—स.पु यौ [स सुदर्शन-द्वीप] जम्बू द्वीप का एक नाम ।

सुदरसेण—देखो 'सुदरसण' (रू भे.) (ना.मा)

सुदराणी, सुदरानी—देखो 'सूद्रणी' (रू भे)

उ०—सूकी सुदराणी भाडा रै मा'रै, लाधी विदराणी वाडा रै लारै ।—ऊ का

सुदस्सण—देखो 'सुदरसण' (रू भे)

उ०—भेळी हीज आवड वाहर भूप, रु नाहर चक्र सुदस्सण रूप ।
—मे म

सुदान—स पु [स. सुदान] अच्छा दान, श्रेष्ठ दान ।

उ०—जोजना उलाळै घडी अडै आसमान जातौ, जोया घणा मोद मानै सराहे जीहान । जमी रौ करोत जाणु पछी हाल छैकै जिसौ, दूजा 'वाघ' जुग अेही तुही दै सुदान ।—जीवणसिंह रौ गीत

सुदानौ—स पु—देखो 'मादियाणौ' (रू.भे)

उ०—फजर हुवा फतै री, सुदानौ जौ घुरायौ । तखत लाख पचास री, कवजा मैं करायौ ।—केहरप्रकास

सुदाम—स पु. [स सुदामन्] १ कृष्ण का सखा, एक गोप ।

स स्त्री—२ सुदामापुरी ।

उ०—सुख धाम नाम परखै सकळ, हित सुदाम विस्राम हरि । नवकोट नाथ नवकोट दळ, किया निरम्मळ जात्र करि ।—रा रू

सुदामा—स स्त्री [स. सुदामा] १ स्कध की एक मातृका ।

२ एक पौराणिक नदी ।

सुदामानगरी, सुदामापुरी—स स्त्री—कृष्ण-सखा सुदामा की नगरी जो श्रीकृष्ण ने बसाई थी ।

रू भे—सदामापुरी ।

सुदामौ—स पु [स. सुदामन्] श्रीकृष्ण का सहपाठी एव परम सखा एक गरीब ब्राह्मण ।

उ०—१ बाळ पणौ का मित सुदामा, अब क्यौ दूर बसै । कहा भावज नै भेट पठाई, तादुल तीन पसै ।—मीरा

उ०—२ सत ज सुदामा सारसा, कोडी धज कियाह ।—ह र.

२ इन्द्र का हाथी ऐरावत ।

३ बादल ।

४ समुद्र ।

५ पहाड ।

रू भे,—सदाम, सदामौ ।

सुदात, सुदातार—वि—१ दातार, दानी । (अ.मा)

२ उदार ।

रू भे—सुदतार, सुदतारी ।

सुदातारी—स स्त्री—दातारी, उदारता ।

रू भे—सुदतारी ।

सुदाय—स स्त्री [स सुदाय] १ ब्रह्मचारी को यज्ञोपवीत-सस्कार के समय दी जाने वाली भिक्षा ।

२ पर्व विशेष पर दिया जाने वाला दान ।

३ दहेज ।

४ शुभ भेंट ।

सुदास—स पु [स] १ च्यवन राजा का पुत्र एव सहदेव राजा का पिता ।

२ एक कुरुवशीय राजा ।

३ अयोध्या का राजा जो आर्तपर्णि (सर्वकाम) राजा का पुत्र था, ऋतुपर्ण राजा इसका पितामह था ।

उ०—पुत्र तासि रितुपरण त्रुवि प्रकास, सुत जासु रितुपरण रै सुदास ।—सू प्र

४ दिवोदास का पुत्र एक प्राचीन राजा ।

सुदि—१ देखो 'सुद' (रू भे)

खत्री दुज वैस गया सुद्र खोज, हुतोज हुतोज हुतोज हुतोज ।
—ह र

सुद्रणि, सुद्रणी — देखो 'सूद्रणी, सूद्रा' (रू भे)
उ०—१ सतावीस लघु वैमी मोई, है लघु अधिक मुद्रणी होई ।
—र.ज प्र
उ०—२ पीत दुकूळ वैमणी पहरण, गाह सुद्रणी स्याम वमन गण । गौरै वरण विप्रणी गाहा, चपक वरण खित्रणी चाहा ।—र ज प्र

सुद्रव, सुद्रव्य—स पु [स, सुद्रव्य] शुभ सम्पत्ति, अच्छा द्रव्य ।
उ०—१ साहव नौवत सुद्रव, वमन जरकम्स जवाहर । रतन जडत सिरपेच, माळ मुगताहळ सुदर ।—रा रू
उ०—२ छाही व्रना सुद्रव्य छेलिया, प्रिथी प्रमाणइ घरइ पगि । दियण तणइ ईसर घणदानी, जगहथ वाघउ तरइ जगि ।
—महादेव पारवती री वेलि

सुद्रसण - देखो 'सुदरसण' (रू भे)
उ०—गहे ग्रव सुद्रसण भाज सुरताण गह, कीध नर सुरा सिहायतनि केही ।—द दा

सुद्रसणचक्र —देखो 'सुदरसणचक्र' (रू भे) (ग्र मा)

सुद्रसणचूरण देखो 'सुदरसणचूरण' (रू भे)

सुद्रस्ट—वि [स सुदृष्ट] कृपालु, दयालु ।

सुद्रस्टि, सुद्रस्टी—स स्त्री [स. सुदृष्टि] शुभ-दृष्टि, दया-दृष्टि ।
रू भे.—सुदिट्ठी ।

सुद्रह—स पु [स.] समुद्र, सागर ।
उ०—वेह रहइ कन्हु जाएवि सुद्रह, ए माहि वारडी ए । आणीय धानुकी पडि देवीय, ए अरि वसि घालीया ए ।—मालिभद्र सूरि

सुध—स स्त्री [स शुद्ध] १ चेतना, सज्ञा, होश ।
उ०—१ मारी मार मचाया मनवौ, आप एक घर आवै । एक ठोड आया सू अनुभव, वम सुध वुध विसरावै ।—ऊ का
उ०—२ उसाकाळ उठणिया वाळक, विद्या विकास पावसी । सुध वुध विमळ सरीर सिरमू, गीत नीत रा गावसी ।—टावर मईकटी
२ बुद्धि, ज्ञान । (ग्र.मा)
३ ध्यान, खयाल, विचार ।
४ खवर, पता, जानकारी ।
उ०—१ वाप नै सै वाता री सुध ही । इण वास्तै वौ वेटी नै समभावण सारु आयो के मोट्यार री रूप नी देखीजै ।—फुलवाडी
उ०—२ जोडी एक पश्चिम दिसा जयसलमेर थटो मुलतान मू लाहोर माही कर आया पण वोडी री कठै ही सुध नही हुई ।
—मूरै खीवै कावळोत री वात
५ याददाश्त, स्मृति, स्मरण ।
उ०—विरछा वेला पर चढणे वुधि चाही । उरमें अलवेला वेलण सुध आई ।—ऊ का.
६ देस-माल, सार-सम्हाल, खोज-खवर ।
उ०—भौसागर मैं वही जात हू, वेग म्हारी सुध लीज्यों जी ।
—मीरा
७ नीयत ।
८ राह, मार्ग ।
उ०—आथणी वीसमी किसौ ग्रव अवरचौ, समी घर सेख रै वणी सादी । सिंघ मुलताण री सुध लै सिधाया, दूध तू सवारै पियै दादी ।—गोपीनाथ गाडण
९ डिंगल का एक छन्द विशेष ।
रू भे —सुद, सुदि, सुद्धि, सुद्धी, सुधि, सुधी ।
१० देखो 'सुद्ध' (रू भे)
उ०—१ ईखै पित मात एरिसा अवयव, विमळ विचार करै वीवाह । सुदर सूर सीळ कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूभै नाह ।—वेलि
उ०—२ सु किण भाति री ढाला सुध गेंडो घणा री मारी वधै, मुहरतौलौ रग लागै ।—रा सा स.

सुधउ—देखो 'सुधौ' (रू भे)
उ०—परदेशी राजा प्रतिवोध्यउ, कसी गुरु स्रावक कियौ सुधउ ।
—स कु.

सुधकर—स स्त्री [स शुद्ध-कर] काली मिर्च । (ग्र.मा)

सुधजथा — स स्त्री — १ डिंगल गीतो की रचना की एक परिपाटी या नियम जिसमे गीत के प्रथम द्वाले मे जो वर्णन किया जाता है, वही वर्णन अन्त तक के द्वालो मे होता है ।
२ इस प्रकार से रचा हुआ गीत ।

सुधधर—देखो 'सुधाधर' (रू भे)

सुधनु—स पु [स सुधनुस्] राजा कुरु का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था ।

सुधन्न, सुधन्वा—वि [स सुधन्वन्] अच्छा धनुर्धर, तीर-अदाज ।
उ०—ममोभ्रम देव 'करन्न' सुधन्न, करै खग भाटक खीवकरन्न ।
—सू प्र
स पु—१ विष्णु ।
२ एक राजा जो मान्धाता द्वारा परास्त किया गया था ।

सुधपिंड—स पु—वहेडा । (ग्र मा)

सुधबायरौ—वि (स्त्री सुधबायरी) १ जिसके होश-हवास ठिकाने न हो, वदहवास, घवराया हुआ ।
उ०—पान खडवक्यां जावता, कोसा छाळोछाळ । वैमागी सुधबायरा, आया जौडा पाळ ।—लू
२ अचेत, वेहोश ।
३ विक्षिप्त, पागल ।
४ मदहोश, मदमत्त, नशे मे चूर ।

सुधबुध—स स्त्री [स शुद्धि-बुद्धि] १ होश-हवास, सावचेती, सावधानी, विवेक ।

१० सफेद, श्वेत ।
११ सीधा-सादा, भोला-भाला ।
१२ केवल, सिर्फ, मात्र ।
स पु [स. शुद्ध] १ शिव, महादेव ।
२ सेंधा नमक ।
३ काली मिर्च ।
४ शुद्ध वस्तु ।
५ सगीत मे राग का एक भेद ।
६ चौदहवे मन्वन्तर के सप्त ऋषियो मे से एक ।
रू भे —सुद ।
७ देखो 'सुध' (रू भे.)
उ०—१ होणी होकर ही रहै, विसर जात है सुद्ध । जाकी जस भवतव्यता, ताकी तैसी बुद्ध ।—पचदडी री वारता
उ०—२ सुद्ध जमाई नी लहु, तौ तेहनै देई राज । हु पिण सजम आदरु, सारु उत्तम काज ।—वि.कु.

सुद्धकुडळियौ—स पु यौ —'कुडळिया' छन्द का एक भेद ।
वि वि —देखो 'कुडळियौ' ।

सुद्धता—स.स्त्री [स. शुद्ध+ता प्र] शुद्ध होने की अवस्था या भाव ।
२ पवित्रता, निर्मलता ।
३ सफाई, स्वच्छता ।
४ सही होने की अवस्था या भाव ।
५ निर्दोषिता ।
६ खालिसपना ।
७ उज्ज्वलता, चमक ।
८ सफेदी ।
९ सादगी, सरलता ।

सुद्धन—स.पु. [म.] एक सूर्यवशी राजा ।
उ०—सभूत सुतण सुद्धन स्रिताज, सुधना सुत त्रिधना त्रप सकाज ।—सू.प्र

सुद्धनीर—स पु.—सात प्रकार के समुद्रो मे से एक ।
उ०—दहकि दहकि दौलेप राज किरि राज पुकारै, लवणोदक सौ सुद्धनीर लग वढन विचारै । वळ सूदन सौं वामदेव लग अजग उसारै, वडवा मुख मौ ब्रह्मलोक लग सोक सम्हारै ।—व भा

सुद्धनिसाणी, सुद्धनीसाणी—स स्त्री —एक प्रकार का 'निसाणी' नामक छन्द जिसके प्रत्येक पद मे प्रथम तेरह फिर दस इस प्रकार २३ मात्राएँ होती है तथा अन्त मे दो गुरु होते है ।
उ०—कळ तेरह फिर दस कळा, दै मोहरै गुर दोय । कळी एक तेवीस कळ, सुद्धनिसांणी होय ।—र रू

सुद्धमति—वि —जिसका मन व भावनाएँ शुद्ध हो ।
स पु —जैनियो के अतीतकालीन इक्कीसवें तीर्थङ्कर का नाम । (स. कु)
उ०—क्रितारथ जिनेस्वर सुद्धमति सिवकर, स्यदन सप्रति चौवीसै तीरथकर ।—स कु

सुद्धमन, सुद्धमन्न—वि [स. शुद्ध-मन] जिसका मन एव भावनाएँ शुद्ध हो, पवित्र हो, निष्कपट ।
उ०—या आद विखै 'चापा' अनूप, भुज गयण धरै पण वयण भूप । 'करनोत' धरा छळ खीवकन्न, महाराज 'अजन' छळ सुद्धमन्न ।—रा.रू.

सुद्धसाणोर, सुद्धसंणोर—देखो 'सुधमाणोर' (रू भे)

सुद्धात—स.पु [सं. शुद्धात] १ अन्त पुर, रनिवास, जनानखाना ।
उ०—१ राणी तौ कळिजुग रौ रूप एहा अभिरूप अवनीस रौ तिरस्कार करि सुद्धात रै आस्रित अनेक जन रहै जिका मैं कोई दौ ही लोक रौ खोवणहार टाळियौ ।—व भा.
उ०—२ अर जैत कुमार जुक्त सब सुद्धांत परिकर सहित प्रामाराज सळख चाहुवाण कुमार सू स्वकीय सुता रौ सवध करण अजमेर द्रग चलायौ ।—व.भा

सुद्धाद्वैत, सुद्धाधीत—स पु [स शुद्धाद्वैत] वल्लभाचार्य द्वारा चलाया हुआ एक वैदान्तिक सम्प्रदाय, जिसमे मायारहित ब्रह्म को अद्वैत तत्त्व माना जाता है ।

सुद्धापह्नुति—स स्त्री [स शुद्धापह्नुति] अपह्नुति अलङ्कार का एक भेद जिसमे वास्तविक (सत्य) उपमेय को निपेधपूर्वक छिपाकर उसके सहधर्मी उपमान का आरोप (स्थापन) किया जाता हे ।

सुद्धि, सुद्धी—स स्त्री [स शुद्धि] १ शुद्ध या पवित्र करने या होने की क्रिया या भाव ।
२ शुद्धता, सफाई, स्वच्छता ।
३ एक प्रकार की वैदिक क्रिया या सस्कार जो किसी अशुद्ध व्यक्ति या पदार्थ को शुद्ध करने के लिए किया जाता है ।
क्रि वि —१ शुद्धता से ।
उ०—मन सुद्धि जपता रुखमिणि मगळ, निधि सपति थाइ कुमळ नित ।—वेलि
रू भे सुधि ।
२ देखो 'सुध' (रू भे)
उ०—१ जिण थी आपरौ सिविर ऊचास्थळ पर होई तौ कुपुत्र नु आदाव राखण री सुद्धि रहै ।—व भा
उ०—२ जिण लागा हुय जाय, बुद्धि वाळी वेबुद्धी । जिण लागा हुय जाय, सुद्धि वाळौ वेसुद्धी ।—ऊ का.
उ०—३ नही तौ सार नही तौ सुद्धि, नही तौ खोट नही तौ बुद्धि ।—ह र
३ देखो 'सुद्ध' (रू भे)
उ०—निरभय नारायण सुद्धी सिर नाऊ, परहर ससय भय बुद्धी वर पाऊ ।—ऊ का

सुद्र—देखो 'सूद्र' (रू भे)
उ०—वाचै चत्र वेद विरच वखाण, प्रकासै व्यास अठार पुराण ।

सुधरी—स स्त्री —१ अच्छी हालत, सम्पन्नावस्था।
उ०—**सुधरी** मैं सौ वार, मदद करै मन-माडिया। विगडी मैं इक वार, कोई न रै'वे किमनिया।—अरयात
२ स्वस्थता।

सुधवटी, सुधवट्टी—स स्त्री —तलवार। (ना डि को)

सुधसाणोर—स पु —डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष जिसके प्रथम और तृतीय चरण मे २०-२० मात्राएँ तथा द्वितीय-चतुर्थ चरण मे १८-१८ मात्राएँ होती है, लेकिन द्वाले के प्रथम पद मे २३ मात्राएँ होती है।
रू भे —सुद्दसाणोर, सुद्धसैणोर।

सुधहीण—वि —१ चेतना, सज्ञा व होश-हवास से रहित, अचेत, वेहोश।
२ जिसको अपने भले वुरे का ज्ञान न हो।
उ०—तड लाग गयौ सग माग तणौ, **सुधहीण** अकव्वर राग सुणौ।
—रा रू

सुधाग—स पु [स] चन्द्रमा, शशि।

सुधाम—स पु [स सुधामन्] १ कोई श्रेष्ठ या उत्तम धाम, तीर्थ।
२ घर।
३ चन्द्रमा।

सुधासु—स पु [स सुधा-अशु] १ चन्द्रमा, शशि। (ह ना मा)
२ कपूर।

सुधा—स स्त्री [स] १ अमृत। (अ मा)
उ०—१ हुवै सुवा विन मुकत नह, भै विन हुवै न प्रीति। सुधा पिया विन अमरपद, व्है न दिया विन क्रीति।—वा दा
उ०—२ आज फल्यौ सुर को तरु अगण, आज चिंतामणि सौ कर आयौ। काम को कुभ धरचौ निज धाम, **सुधा** मनु पान कराइ धपायौ।—ध व ग्र
उ०—३ सव ही मृत्तक देखियै, किहि विधि जीवै जीव। साधु **सुधा** रस आन कर, दादू वरसै पीव।—दादूवाणी
उ०—४ नायक रमा नयण कज नरवर, सुखदायक निज जन सयण। भगत विछळ मन महण सुभायक, निमौ **सुधा** स्रायक नयण।—र ज प्र.
२ पुष्पो का रस, पुष्पो का शहद।
३ मदिरा, शराव।
उ०—तरै जलाल जागीर मैं आदमी भेज्या। भला सिपाही माव्र-दार ग्राप खाप रा राखिया। हमेसा **सुधा** मैं गरकाव रहै।
—जलाल वूवना री वात
४ जल, पानी।
५ गङ्गाजी का नाम।
६ पृथ्वी, धरती।
७ पुत्री, वेटी।
८ विजली।
९ ईंट।
१० सफेदी।
११ थूहर।
१२ दूध।
१३ जहर।
वि —श्वेत, सफेद।* (डि को)
क्रि वि —१ तक, पर्यन्त।
२ सहित।
उ०—१ सवारै दिन पोहर चढता आप रै घरै पाटरा माहै मूळराज सीहाजी नु सारै साथ **सुधा** मोहीला मैं लै गया।—नैणसी
उ०—२ पाठै कन्है आया हता, तिकै दरवाजै आय ठहकीया। अठै ईहा उपर सिरदार भाखरसी **सुधा** तरवार री डीक दीनी।
—राजा नरसिंघ री वात

सुधाई—स स्त्री —सीधापन, सरलता।

सुधाकर—स पु [स] चन्द्रमा, शशि। (ना मा.)
उ०—मधुकर भ्रमत सुवास मद, भाल **सुधाकर** भास। मोदक कर मन मोदमय, नित जय ग्यान निवास।—वा दा

सुधाकुडळी—स स्त्री —एक वाद्य विशेष।
उ०—**सुधाकुडळी** खजरी चग मोहै, वजै चग मिरदग सोभा विमोहे।—रा.रू

सुधागेह—स.पु [स सुधा+गृह] चन्द्रमा, शशि।

सुधाचरण—स पु —गरुड। (अ मा)

सुधातमा—वि [स शुद्ध-आत्मा] जिसकी आत्मा शुद्ध हो, पवित्र विचारो वाला।
स पु —ईश्वर, परमात्मा।
उ०—निरालव निरवाण निरतर, सव प्रकासी वोई। सोई सुख-राम **सुधातमा**, चेतन मत वुध लखै न मोई।
—स्री सुखरामजी महाराज

सुधाधर, सुधाधरण, सुधाधाम, सुधाधार—स पु —चन्द्रमा।
(डि को, ना मा)
रू भे —सुधधर।

सुधाभुज, सुधाभुजीस, सुधाभुजू—स पु —देवता, सुर। (अ मा, ना मा)
उ०—धजराजू कै समाज अत जातू कै अनेक सज, रथू कै घमसाण जिमकू देख लजावै **सुधाभुजू** कै विमाण।—र रू

सुधामद—देखो 'सुधारस'।
उ० - दुनिया मैं सुख देख, तार आवेला तीखी। सतगुरु की परसाद, **सुधामद** घूटन सीखी।—ऊ का

सुधार—स पु —१ सुधरने की क्रिया या भाव।
२ किसी वढिया या वहतर अवस्था मे होने, आने या करने की क्रिया, तरक्की, उन्नति।
उ०—कर **सुधार** सत्रवाट कुळ, रखी अघट रुखवाळ। हक वेहक

उ०—१ अकब्बरसाह गाफल गुमान सू भारची, तहबरखान हाथ सब राज बोझ धारचौ। निवाब निदान पाए सुधबुध विसराई, और सू और विचार बावळे की नाई।—रा रू

उ०—२ मारो मार मचाया मनवो, आप एक घर आवै। एक ठोड आया सू अनुभव, बस सुधबुध विसरावै।—ऊ का.

उ०—३ सेठा री आ धमकी देरयी तो सेठाणी खुद सुधबुध पातरगी।—फुलवाडी

२ चेतना, सज्ञा, होश।

उ०—१ भेरा नू बाथेड़ा करता करता सेवट गजाजी नै अगट ऊग आयगी। चिगा री टिगली रै माथै गुडग्या। नी की चेतौ रह्यौ अर नी की सुधबुध।—फुलवाडी

उ०—२ ठकराणी वेचत होय गुडगी। ठाकर नै मोद व्हियौ कै ठकराणी कित्ती पतिव्रता अर सुलखणी। धणी रै ओखा री बात सुणता ई सुधबुध पातरगी।—फुलवाडी

३ ध्यान, ख़याल, विचार।

उ०—नी किणी चीज रौ कोड अर नी किणी चीज री घिन। घकै आई सौ कबूल। जाणै नटणा री सुधबुध ई नी व्है।—फुलवाडी

४ बुद्धि, ज्ञान।

उ०—देखण वाळा लोगा री आख्या काळजा रै माय वडगी। केई जणा तौ इण भात सुट्ट व्हैगा, जाणै सगळी सुधबुध माथै वाण व्हगी व्है।—फुलवाडी

५ पता, ख़बर, जानकारी।

६ याददाश्त, स्मृति, स्मरण।

सुधभाव—स पु [स शुद्ध-भाव] शुद्ध विचार।

सुधमन, सुधमनो — वि [स शुद्ध-मन] १ जिसका मन शुद्ध हो, शुद्धमना।

२ जो होश-हवास मे हो, सचेत।

सुधमाण—वि. [स शुद्धि-मान्] बुद्धिमान।

उ०—पयोधर पार पय ऊतरै अवध पत, पाजवध चारसै कोस पैरा। हूल असुराट पड भूल सुधमाण हट, फिरै चित्त इन जिम चाक फेरा।—र रू

सुधरणौ, सुधरबौ—क्रि अ [स सु + या शोधन] १ किसी कार्य या बात का बिगडने से रहना, बनना, बात बन जाना।

२ बिगडे हुए मे सुधार होना, कमियाँ या गल्तियाँ दूर होना, ठीक होना।

उ०—आ काठा चढसी अवस, धरणीवर दै बोझ। सठ मन मानै सुधरसी, पातर सू परलोक।—बा दा

३ बीमारी की दशा मे सुधार होना, फायदा होना, स्वस्थता की स्थिति होने लगना।

४ आर्थिक दृष्टि से अच्छी हालत होना, तरक्की होना।

उ०—माईता रौ जमारौ कोई सुधरियोडौ नी हौ, पण नी ई वै छोरा रौ जमारौ विगडण री सोच करता।—फुलवाडी

५ बिगडे हुए आचरण का ठीक होना।

६ सफल होना, सद्गति होना।

उ०—१ आ बात कैय वै थोडा हसिया। नाई कह्यौ—अन्नदाता, म्हारी तौ जलम सुधरग्यौ अर आप मिसखरिया करौ।—फुलवाडी

उ०—२ या सगळा रै हाथा म्हा दोना नै भेळौ दाग दिरीज जावै तौ औ जमारौ सुधरै।—फुलवाडी

उ०—३ मिनखा देही पाय कर, जाण्यौ नही जगदीस। दीन कहै सुधरै नही, बिगडी बीसवा-बीस।—वि स मा

७ वातावरण का तनाव कम होना।

सुधरणहार, हारौ (हारी), सुधरणियौ—वि०।

सुधरिओडौ, सुधरियोडौ, सुधरयोडौ—भू०का०कृ०।

सुधरीजणौ, सुधरीजबौ—भाव वा०।

सुधरम—स पु [स सुधर्म] १ उत्तम व श्रेष्ठ धर्म।

उ०—हरि सुधरम हारै काय हासै, या नरदेह नही उदरि दरि दरि।—अनुभववाणी

२ पुण्य, दान।

३ परोपकार।

४ अच्छा आचरण।

५ महावीर स्वामी का एक शिष्य।

६ देखो 'सुधरमा'।

उ०—दिन दिन दीपै देहरा, जिहा श्रीपास जिणदौ रे। माथै लै सुधरम सभा, आयौ जाणै इदो रे।—ध व ग्र.

सुधरमा—स स्त्री [स सुधर्म्मन्] १ इन्द्र की सभा, देव-सभा। (अ मा)

२ इन्द्र के सभा-भवन का नाम।

उ०—तिका सुवारूप सीधु छाकिया नदन वन रै निवास सुधरमा सभा मैं वैठि सुरा रै साथ विलास कीधा।—व भा

३ दृढनेमि के एक पुत्र का नाम।

४ जैनों के एक गणाधिपति।

वि—अपने धर्म पर अटल रहने वाला, स्वधर्मी।

सुधराई—स स्त्री—१ सुधरने की क्रिया या भाव।

२ किसी कार्य मे किया जाने वाला सुधार।

३ सुधार कार्य की मजदूरी।

सुधरियोडी—भू का कृ—१ बिगडने से रहा हुआ, बना हुआ (कोई कार्य)।

२ कमियाँ, गल्तियाँ आदि दूर होकर ठीक हुवा हुआ, सधार हुवा हुआ। ३ स्वस्थता की स्थिति मे आया हुआ, इस दृष्टि से सुधरा हुआ। ४ अच्छी हालत मे हुवा हुआ, उन्नत दशा मे आया हुआ। ५ आचरण ठीक हुवा हुआ। ६ सफल हुवा हुआ, सद्गति पाया हुआ। ७ तनाव घटा हुआ।

(स्त्री सुधरियोडी)

७ सफल बनाया हुआ, सद्गति दिया हुआ, प्राप्त कराया हुआ। ८ तैयार किया हुआ। ९ सजाया हुआ, सँवारा हुआ। १० तनाव घटाया हुआ। ११ सफाई किया हुआ, साफ किया हुआ।
(स्त्री. सुधारियोडी)

सुधारू–वि –सुधार करने वाला, सुधारक।

सुधारौ–स पु –१ मृतक के पीछे किए जाने वाले वे कर्म जिससे मृतक को पितृयोनि या मोक्ष प्राप्त हो जाय।
२ देखो 'सुधार' (रू भे)
उ०—१ माथा फोडी करनै स्कूल खुलवाई तौ इण वास्तै ही कै गाम रा टाबर पढ-लिख नै हुसियार वर्णैला अर गाम रौ **सुधारौ** व्हैला। पण औ तौ जबरौ सुधारौ व्हियौ।—अमरचूनडी
उ०—२ करियै कृपा अहो अविकारा, अब नही जाऊ लैन उधारा। सब तेरेतै होत **सुधारा**, झल्लरि जू करतौ झनकारा।—ऊ का

सुधासार–स पु [स] अमृत।
उ०—दडकाळ करगा तरेस सी गणेस दत, सूर प्रलैरसम्मा मणेस **सुधासार**। चडी सूळ पारजात मराला पकता चगी, किरमाळा मोज पगी कोसल्या कवार।—र रू.

सुधासुत–स पु [स] १ चन्द्रमा। (ह ना.मा)
२ इन्द्र।

सुधासुती–स पु [स सुधा-सूती] चन्द्रमा। (अ मा.)

सुधास्रव–स पु [स सुधा-श्रव] चन्द्रमा। (ना मा)
उ०—प्रभा रव तणी सू वधै उण री प्रभा, तूझ सू वधै रव प्रभा तैंई। **सुधास्रव** अमर कियौ नह साभल्यौ, किया तै अमर ज्या रीत केई।—र रू.

सुधि—१ देखो 'सुध' (रू भे)
उ०—यू करता योवन अवस्था हुई। अेक तौ रूप हतौ बीजौ यौवन आयौ, तीजै सिणगार कर बैठी सौ उवै नू देख सेठ री **सुधि** बिगडी।—बैताळ पच्चीसी
उ०—२ सहजा **सुधि** बुधि ऊपनी, हीरी चडीयौ हाथि। हरीयौ मगै कौन कु, घट मै पाई आथि।—अनुभववाणी
उ०—३ लागत बेहाल भई, तन की **सुधि** बुधि गई। तन मन व्याप्यौ प्रेम, मानौ मतवारी है।—अनुभववाणी
२ देखो 'सुधी' (रू.भे) (ह.ना मा)
३ देखो 'सुद्धि' (रू भे)
उ०—मधुर करवक ऊपरि, सुपरि परीसइ घोल। मुख **सुधि** करइ ति करविय, करविय करइ तबोल।—जयसेखर सूरि
४ देखो 'सुद' (रू भे)
उ०—हुव सवद नाळि निहाव रा, **सुधि** भाद्र बीज सिळाव रा, धर सपत पुड थर अनड धडहड, हुवै घड असमान खडहड।—रा.रू

सुधिक–स स्त्री –फटकार, धिक्कार।

सुधी–वि. [स. सुधी] १ पण्डित, विद्वान्। (अ.मा; डि.को)
२ बुद्धिमान, चतुर।
३ धार्मिक।
स पु –१ शिक्षक।
२ कवि। (अ मा)
क्रि.वि –१ सहित, साथ।
उ०—पीपळ ऊपर चढनै मत्र पढियौ, पीपळ जडा **सुधी** उडियौ।
—पचदडी री वारता
२ तक, पर्यन्त।
उ०—१ पगा **सुधी** खाल, तौ ही रह्या सयम मा लाल, सुकोमल साध।—जयवाणी
उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या—एक कानी नदी कडिया ताई अनै एक कानी गोडा **सुधी**। एक कानी सुकी तौ म्है सुकी ऊतरा।
—भि द्र.
३ देखो 'सुद' (रू भे.)
४ देखो 'सुद्धि' (रू भे)
उ०—गाया नै गिरमास, ठिकाणौ चौडै ठायौ। सूवै सूतक **सुधी**, तळै छिंगास बिसायौ।—द.दे
५ देखो 'सुध' (रू.भे)

सुधीर–वि [स] धैर्यवान, विवेकवान।

सुधीव, सुधू, सुधया–स स्त्री –सुपुत्री, सुन्दर कन्या।
उ०—१ माळवगढ राजा **सुधू**, कुवरी माळवणीह। ढोलैइतिण बहु-प्रीति छइ, अति रग नेह घणीह।—ढो मा
उ०—२ नळवर नयर निरिदौ, नळराय सुउ सल्लकुमर वरौ। पिंगळराय **सुधया** वनिता मा(र)वणि वरणविसु।—ढो मा

सुधोदक–स पु –सप्त समुद्रो मे से एक।
उ० - दध मडोदक सस्ठमौ, लाख बतीस बखान। **सुधोदक** कहै सपतवौ, चोसठ लाख प्रमान।—गज-उद्धार

सुधौ–स पु (स्त्री सुधी) १ सीधा-सादा, सरल, भला, गरीफ, सज्जन।
२ देखो 'सुदौ' (रू भे)
उ०—१ राव वीरमदे दिन ४ पहली मेडतौ ऊभो मेल नीसरीयौ। अजमेर माणसा बसी **सुधौ** गयौ।—नैणसी
उ०—२ पछै समत १६६१ रा कान्हीदास रौ ही आध राजा सुरजसिंघ नु अकबर पातसाह दीयौ। तिको राजा सुरजसिंघजी जीवीया तठा **सुधौ** मेडतौ रहौ।—नैणसी
३ देखो 'सूधौ' (रू भे)
उ०—आख्या काजळ घालसी फूला रा हार पहरसी **सुधौ** लगावसी।
—पचदडी री वारता
(स्त्री सुधी)
रू भे —सुधउ।

सुनग–स पु.–देखो 'सुनग' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

तोड़ वाळहट, 'पता' पिता प्रतपाळ ।—जैतदान बारहठ
३ बुराइयाँ, विकार, दोष आदि दूर करने की क्रिया ।
उ०—कोर कौ सुधार ग्यानी, गोर तें कियौ । आपनौ उधार पानी, धोर तैं पियौ ।—ऊ.का
४ संशोधन, संस्कार ।
५ अच्छाई ।
६ उपयुक्तता ।
उ०—दरजी फाट दुकूल नू, सीवैं लिए सुधार । इण विध री रचना अठै, जाणैं जाणणहार ।—बा दा
७ परिवर्तन ।
८ फायदा, लाभ ।
९ घृत, घी । (अ मा)
रू भे —सुधारौ ।

सुधारक-वि.—१ सुधार करने वाला ।
२ समाजसेवी ।
३ धर्म, समाज व राजनीति में आई कुरीतियों को दूर करने के लिए आन्दोलन करने वाला, क्रान्तिकारी ।
उ०—चौवटैं जावता दो-तीन पचा नैं लोगा पूछियौ—सुणीक नहीं? सुधारक लोग माईता री पुराणी परम्परा तोडैं है ।—वरसगाठ
४ संशोधन या संस्कार करने वाला ।
५ परोपकारी ।
उ०—उधारक धारक लोक असेस, सुधारक तारक सेस विसेस ।
—ऊ का

सुधारण-वि —सुधारने वाला ।
उ०—नमो गज तारण मारण ग्राह, नमो व्रज-काज सुधारण नाह ।
—ह र
क्रि.वि —सुधारने के लिए ।
उ०—मोटी माफी माग, अमलदारा सू अडग्या । देस सुधारण दसा, लाख विध थासू लडग्या ।—ऊ का
स स्त्री.-सुधारने की क्रिया या भाव ।

सुधारणौ, सुधारबौ—क्रि स ['सुधरणौ' क्रि का प्रे रू] १ किसी कार्य या बात को बिगडते हुए से बचाना, बात बनाना, कार्य सुधारना ।
उ०—१ समरथ सरण तुम्हारी साइया, सरब सुधारण काज ।
—मीरा
उ०—२ काम सुधारैं काज कु, काम ही करैं अकाज । जन हरीया निहकामना, सौ सता सिरताज ।—अनुभववाणी
उ०—३ आप कळा सम अवतरण, मतो कियौ महाराज । असुरा हद रावण इळा, सुरा सुधारण काज ।—रा रू
२ व्यवस्थित करना, जमाना, बैठाना, सुधारना ।
उ०—वै दरबार नैं चोखी सलाह देवणी चावैं, राज काज री ढग सुधारणौ चावैं पण कोई बात भरैं नी पडै ।—अमरचूनडी
३ बिगडे हुए को ठीक करना, कमियाँ, गल्तियाँ, दोष, विकार आदि दूर करना ।
उ०—१ पथ सुधारण कारणैं वील्हजु जगगुर आयुस आविया । रामदास समाद लै वील्ह वैकुठ सीधाविया ।—वि स.सा.
उ०—२ ध्यान विद्या धरैं, ध्यान नहीं देस सुधारैं । धरम ध्यान नहिं धरैं, अलवता ध्यान उधारैं ।—ऊ का.
४ लक्ष्य-सिद्धि करना, उद्देश्य पूरा करना, पूर्ण करना ।
उ०—लाखा काज सुधारणा, लाखा सूंधी बात । लाखा रीझै आवणौ, तै क्यू कटियैं हाथ ।—जलाल बूबना री बात
५ तरक्की कराना ।
६ आदतें ठीक करना, आचरण ठीक करना ।
७ सफल बनाना, सद्गति देना या प्राप्त कराना ।
उ०—१ हा हे म्हारौ जनम सुधारण हार, हा हे म्हारौ मरण-मिटावण हार ।—गी रा
उ०—२ पास आए की लाज, कुळ काज विचारौ । मेरा रण मरणा, कै जीवणा सुधारौ ।—रा रू
८ काम मे लेने के लिए तैयार करना, साफ करना ।
उ०—पत्र सुधारैं जोगणी, माळ सुधारैं रभ । अभ चलेवौ सोम रवि, पेखै व्योम अचभ ।—रा रू
९ सजाना, सँवारना ।
उ०—आहव चापावत असैं, लड कूपावत लाल । कीधौ हार सुधारता, सिव तिण वार खुमाल ।—रा रू
१० वातावरण का तनाव कम करना, कम कराना ।
११ सफाई करना, साफ करना ।
उ०—सीडै कातैं वणैं, जोम सू जगा सुधारैं । करडा दोरा काम, साम घर विपत निवारैं ।—नारी सईकडी
सुधारणहार, हारौ (हारी), सुधारणियौ—वि० ।
सुधारिग्रोडौ, सुधारियोडौ, सुधारयोड़ौ—भू०का०कृ० ।
सुधारीजणौ, सुधारीजबौ—कर्म वा० ।
सुधरणौ, सुधरबौ—अक० रू० ।

सुधारस—स पु—१ अमृत ।
उ०—काज सहौ विसराय, सुणैवौ कीजिए । प्याला स्रवणा पूर, सुधारस पीजिए ।—बा दा
२ कमल । (ह ना मा)

सुधारसम—स पु [स सुधारश्मि] चन्द्रमा । (अ.मा)

सुधारियोडौ—भू का कृ — १ किसी कार्य या बात को बिगडते हुए से बचाया हुआ, बात बनाया हुआ, कार्य सुधारा हुआ । २ व्यवस्थित किया हुआ, जमाया हुआ, बैठाया हुआ, सुधारा हुआ । ३ बिगडे हुए को ठीक किया हुआ, कमियाँ, दोष, विकार आदि दूर किया हुआ । ४ लक्ष्यसिद्धि या उद्देश्यपूर्ति किया हुआ । ५ तरक्की कराया हुआ । ६ आदतें सुधारा हुआ, आचरण ठीक किया हुआ ।

३ स्वर्ण के समान, स्वर्ण-जैसा, सोने के रंग का।
रू.भे —सुनही, सुनेरि, सुनेरी, सोनैरी।

सुनही—देखो 'सुनहरी' (रू.भे)
उ०—सुनही गुलजार करमीर काम, गजरी अगणित मीनें कै विराम।—सू.प्र

सुनाम—स पु [स. सुनाम] १ यश, कीर्ति, ख्याति।
२ शुभ नाम।
उ०—बच्ची नें गोदी लेली, चट प्यार करोडं गागी। पछी मगत नैं देख्यौ, सुनाम सकुतला भाखी।—सकुतला

सुनामा—स पु —४६ क्षेत्रपालों मे से ४८वां क्षेत्रपाल।

सुना—स पु —फूल, सुमन। (अ मा.)

सुनाच—स पु [स सुनृत्य] नाच। (डि.को)

सुनात—देखो 'सनाथ' (रू भे)
उ०—कपाट पाट हिंगळाज तू विराजनी, जगात को सुनात तू प्रभात पाजनी।—मे म.

सुनातन—देखो 'सनातन' (रू भे)

सुनातन-धरम—देखो 'सनातन-धरम' (रू भे.)
उ०—सदा प्रसन कव सदन सीतळ नजर सुपेखै, मन वछत करै हेकै लहर माय। न देखै भाव भगती रगा करनळा, सुनातन धरम लेखै करै स्याय।—नदजी मोतीसर

सुनाथ—देखो 'सनाथ' (रू.भे.)
उ०—१ मैं अब हुओ सुनाथ, पाप कटै भव भव तणा। मेरै सिर पर हाथ, राज दिया रघनाथ जी।—गज-उद्धार
उ०—२ आप मारू भटी कढाइ छौ, आपकै तौ मारवाड की चढाइ छै। जण दारू का दोय पयाला लीजै, जसा नैं सुनायण कीजै।
—मयाराम दरजी री वात
उ०—३ कै नाथ अनाथ सुनाथ किया, सुज जेण वेरी दळ चाप सिया। वळ रावण कुभ जिसा वहिया, है काम भलो भज राम हिया।—र.ज प्र
(स्त्री सुनाथण)

सुनाद—स पु [स.] १ शङ्ख।
२ देखो 'सनाद' (रू.भे)

सुनायक—वि [स] श्रेष्ठ नायक, अच्छा नेता।
स पु—१ कार्त्तिकेय का एक अनुचर।
२ एक दैत्य का नाम।

सुनार—स पु [स. स्वर्णकार] (स्त्री सुनारी) १ एक जाति या वर्ग विशेष जो सोने, चांदी आदि के आभूषण बनाने का कार्य करता है।
उ०—यू सुनार री जात छाटकी गिणीजै।—अमरचूनडी
२ उक्त जाति या वर्ग का व्यक्ति, सुनार, स्वर्णकार।
उ०—१ पछै राजाजी रा देस रा सुनार पकडीया था सो अबु रै छानै लिया।—नैणसी
उ०—२ उठीनै धाडिनिया नावटा रै नै वीन कठ मोविया, नातरा माथै जाजम डाळी, सपडै री दुगान फोड'र मोटला गुराया, गवा माथै नुवा गेग गाळिया अर गव मू पैली सुनार री दुकान लूट'र मोहरत लियो।—अमर चूनडी
रू भे.—सोनार।
अल्पा.—सोनारडौ, सोनिडौ, सोनीडौ।

सुनासीर, सुनासीरी—स पु [स सुनासीर, शुनासीर] १ इन्द्र।
(अ.मा, डि को, ना डि.को, ह.ना मा.)
२ देवता।
३ उल्लू।
रू.भे.—सुनीसीर।

सुनि—१ देखो 'सून्य' (रू भे)
उ०—अछती माही छति है छति माही अछती। वसती माही सुनि है, सुनि माही वसती।—अनुभववाणी
२ देखो 'सूनो' (स्त्री.)
उ०—ब्रह्म वदेही वालमा, और सीवारो नाहि। एक अनादी रम रया, सुनि सेभडीया माहि।—अनुभववाणी
३ देखो 'सुनी' (रू भे)

सुनिखत्र—देखो 'सुनक्षत्र' (रू.भे)
उ०—पुत्र सुनिखत्र आप रै आप पुह्वळ।—सू प्र

सुनिजर—देखो 'सुनजर' (रू भे)
उ०—सुनिजर तारी देखिनि रे जिनजी, सफल थई मुज आस।
—वि कु

सुनिभ—स स्त्री.-आभा कान्ति, प्रभा।
उ०—रवि सुनिभ राजही, सुकर धनु साजही। सुरय धर सीमजी, अवधपुर ईसजी।—र ज प्र

सुनिमडळ—देखो 'सून्यमडळ' (रू.भे)
उ०—तन पाटण तरा वास हमारा, नौ दरवार जडाया। सुनिमडळ, में जोति चमकै, उलटा पवन चढाया।—ह.पु वा

सुनिरूप—देखो 'सून्यरूप' (रू भे)

सुनिहार, सुनिहाल—स.स्त्री —१ गम्भीरता से देखने, समझने या विचार करने की क्रिया या भाव।
उ०—पाम्यौ जनम मनुस्य नो आरिज कुल सुनिहाल। रयण रासि कवडी सटै, कोई गमावौ आलि।—वि कु
२ अच्छी तरह देखने की क्रिया या भाव।

सुनी—स स्त्री [स स्रवणी] नदी। (अ मा)
रू भे —सुणी, सुनि।

सुनीत, सुनीति, सुनीती—स स्त्री [स सु-नीति] १ वह श्रेष्ठ एव उत्तम नीति जिसके माध्यम से देश व राज्य का हित हो, अच्छी राजनीति।

सुनद-स पु [स] १ श्रीकृष्ण का एक पार्षद ।
२ एक देव-पुत्र ।
३ बलरामजी के मूसल का नाम ।
वि -आनन्ददायक ।

सुनदन-स पु -श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

सुनदा-स स्त्री [स.] १ उमा, गौरी ।
२ कृष्ण की एक पत्नी ।
३ दुष्यन्त के पुत्र सम्राट् भरत की पत्नी ।
४ चेदिनरेश सुबाहु की बहिन जो दमयन्ती की मौसेरी बहन थी ।
५ ऋषभदेव की एक पत्नी का नाम ।
उ० -आदि प्रथम ओकार, ओकार पुत्र ब्रमा, ब्रमा पुत्र कासिव, पुत्र सूरय, सूरय पुत्र आत्रैय, पुत्र मनुरिख, पुत्र देवभूत, पुत्र आकूति, पुत्र प्रसूनि, पुत्र प्रीयवरत्ति, पुत्र अग्निध्वज, पुत्र नाभिराजा, मोरादे भारया पुत्र रिखभदेव । रिखभदेव भारया दो— सुनदा१, सुमगळा२ ।—राठौडा री वसावळी
६ स्त्री, नारी ।
७ सुबुद्धि ।

सुन—१ देखो 'सून्य' (रू भे)
उ० - सुन सुभर मैं बाळक जाया, तुचा हाड नही मासु । जाति न पाति वरण नही वाकै, नाव न धरीयै कामु ।—अनुभववाणी
२ देखो 'सुनक' (रू भे) (टि को)

सुनक-स स्त्री [स शुनक] १ कुत्ता, श्वान । (अ मा, डिं को)
२ दोहा-छद का एक भेद विशेष जिसमे ४८ लघु, २ गुरु कुल ४६ वर्ण तथा ४८ मात्राएँ होती है । (र ज प्र)
३ भृगुवशीय एक ऋषि का नाम ।
रू भे —सुन ।

सुनक्षत्र-स पु [स] १ उत्तम नक्षत्र ।
२ मरुदेव राजा के उत्तराधिकारी राजा का नाम ।
उ० - सुत जै नृप मरुदेव वयण मति, पुत्र जास सुनक्षत्र प्रथमि पति ।—सू प्र
रू भे. सुनिखत्र ।

सुनक्षत्रा-स स्त्री [स] स्कन्द की एक मातृका ।

सुनखी-स स्त्री -चील ।

सुनग-स पु [स] चन्दन । (ना मा)
उ० निम-दीह न थाकै वयुहि नाखतो, अम गज कनक सुनग अतर ।—नैणसी

सुनजर-स स्त्री -कृपा-दृष्टि, दया-दृष्टि ।
वि -दयालु, कृपालु ।
रू भे —सुनिजर ।

सुनणौ, सुनबौ—देखो 'सुणणौ, सुणबौ' (रू भे)
उ० —१ न को सुनत बाजी, न को बग ख्वाजा । न को दिन रोजा, मका नाहि ख्वाजा ।—अनुभववाणी
उ० —२ पढत छद वदत पद पुनि पुनि, स्रवनानद बढत धुनि सुनि मुनि ।—मे म
सुनणहार, हारौ (हारी), सुनणियौ—वि० ।
सुनिओडौ, सुनियोड़ौ, सुन्योडौ—भू०का०कृ० ।
सुनीजणौ, सुनीजबौ—भाव वा० ।

सुनत - देखो 'सुन्नत' (रू भे)

सुनफा-स स्त्री -ज्योतिष का एक योग जो चन्द्रमा से एक स्थान मे चाहे पूर्व, चाहे उत्तरार्द्ध मे शुभ ग्रह होने पर होता है ।

सुनमंडळ—देखो 'सून्यमडळ' (रू भे)

सुनमान—देखो 'सनमान' (रू भे)
उ०—तठै हेक रखी तापता हुता । तठै आय पागडो छाड, नमसकार कीवी । रखी सुनमान दीधौ । तरै आप रुजक परै मेलिओ ।
—कल्याणसिंघ बाटेल री वात

सुनमित-वि -विनम्र, नत-मस्तक ।
उ०—सुसमित सुनमित निज वदन सुव्रीडित, पुडरीकाख थिया प्रसन । प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, सिरिगाखी राखिवा मन ।
—वेलि

सुनयणा, सुनयना-स स्त्री [स सुनयना] १ राजा जनक की पत्नी व सीता की माता का नाम ।
२ नारी, स्त्री ।
३ अच्छे नैत्रो वाली स्त्री ।

सुनर-स पु [स सु-नर] १ अर्जुन । (अ मा, डिं को, ह ना मा.)
२ सुन्दर एव वीर पुरुष ।

सुनसान-वि [स शून्य+स्थान] १ निर्जन, वीरान, शून्य ।
उ०—मारै वदन मैं छुटै कपी कपी, भीजै मारी देह । मारुजी सुनसान जगळ मैं, रात अधेरी था रो चालीवो ।—लो गी.
२ जहाँ कोई न हो, एकान्त ।
३ उजाड, उजडा हुआ ।

सुनहरालो—स पु -वह घोडा जिसके पैर सफेद हो और पैरो के अन्दर लाल चकते हो, मतान्तर मे वह घोडा जिसके सुमो के अन्दर चकते हो । (शा हो)

सुनहरी, सुनहरौ - वि [स स्वर्णिम] १ स्वर्ण का, स्वर्ण सम्बन्धी, स्वर्णिम ।
२ जिसमे स्वर्ण का काम किया हुआ हो, स्वर्ण-जडित ।
उ०—१ त्रीमापका मगन खाना । उठा करि सुनहरी की चौकी धरि । तिन परि भोजन पूर कनक थाळ विराजमान करि । खिजमत गारू नै अरज कीवी भौजाई की तयारी ।—सू.प्र.
उ० —२ तद जनाल कही—मात सौ घोडा कवारी, दकमोना हजारी निको सुनहरी रुपहरी साखत दिरायनै और खजाना सू रोकड दिरायजै ।—जनाल वूवना री वात

सुपन—देखो 'स्वप्न' (रू भे)

उ०—जाही वाह्यी ता लुण्यी, सुपन सुवाया गेत। म्हे गीवग गार्चे स्याम नै, म्हारो भाभैजी सू हेत। - रूपी वणियाळ

सुपक-वि.-जो अच्छी तरह पका हुआ हो।

सुपक्ख, सुपक्ष-स पु [स सुपक्ष] १ अच्छा पक्ष, दृढ़ और मजबूत पक्ष। २ अच्छा वंश या कुल, श्रेष्ठ कुल। ३ सुन्दर पख।

वि -सुन्दर पखो वाला।

सुपखाळ, सुपखाळौ-स.पु -१ श्रेष्ठ या उत्तम वंश का, कुलीन।

उ०—१ मलखावत सुपखाळ, सुत सुपहा जोहिया सहत। लग वेरै लकाळ, हिंदू देसग हालिया।—गो रू

उ०—२ आवू सजन सुवो अडमाळौ, सुगियो जेम 'रतो' सुपखाळौ।—कल्याणसिंह रो गीत

उ०—३ क्रोड जुगा राजस करो, प्रथमी 'वूडो' 'पाल'। भूप उभै भुलाविया, सरवैया सुपखाळ।—पा प्र

सुपडकना-वि.-बडे-बडे कानों वाला।

उ०—कूण नईरत मैं पुरी, राकस वसै विसाळ। सुचसुगा सुपडकना, वड रूप विकराळ।—गज-उद्धार

सुपच-वि -जो पाचक हो, आसानी से पचने वाला, सुपाच्य।

उ०—जोडै माया क्रपण पच, राधै सुपच अनाज। वायस सचियो मास-वप, कळ मैं नावै काज।—वा दा

स पु -१ सुपथ्य, पथ्य।

[स श्वपच] २ भगी, डोम।

सुपट्ठ-वि -१ सुपाठ्य, सुवाच्य। २ स्पष्ट, साफ।

सुपण, सुपणौ—देखो 'स्वप्न' (रू भे)

उ०—माई म्हानै सुपणा मा परणी दीनानाथ।—मीरा

सुपतळ, सुपत्तळ-वि -पतला, क्षीण।

उ०—जघ सुपत्तळ करि कुअळ, भीणी नव प्रलब। ढोला ऐही मारुई, जाणिक कणयर कब।—ढो मा

सुपतास, सुपतासव-स पु [स सप्ताश्व] जिसके रथ मे सात घोडे जुते रहते है, सूर्य।

सुपतिक-स पु.-रात को डाला जाने वाला डाका। (टि को)

सुपतिट्ठ-वि -प्रतिष्ठित, सुप्रसिद्ध।

उ०—तीजो ठाणा अग सुपतिट्ठ, सूत्रै सड्त्रीससै सतसट्ठि। चौथो समवायाग सुजाण, सोलेसै सतसठ स्लोक प्रमाण।—ध व ग्र

सुपत्र-वि -१ सुन्दर पत्तो से युक्त, सुन्दर पत्तो वाला। २ सुन्दर पखो वाला।

स पु -सुन्दर पत्ता।

सुपत्री-स स्त्री [स] एक प्रकार का पौधा, गङ्गापत्री।

सुपथ—१ देखो 'सुपथ' (रू भे)

२ देखो 'सुपथ्य' (रू भे.)

सुपथ्य-स पु. [स] वह आहार या खाद्य पदार्थ जो सुपाच्य होने के साथ ही स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हो, पथ्य।

रू भे.—सुपथ।

सुपनतर, सुपनंतरि-क्रि वि [स. स्वप्न-अनन्तर] १ स्वप्न मे, स्वप्न के समय, स्वप्न के दौरान।

उ०—१ जिम सुपनतर पामियउ, तिम परतख पामेसि। सजन मोतीहार ज्यू, कठा सरसा रखेसि।—ढो मा

उ०—२ जिगा रात्र बधामगा, सहीन सीधा काज। जै सुपनतर दीसना, नयणा मिळिया आज।—ढो मा

उ०—३ वासर निस न दीसरउ नितिभरि अजन मोह। नट निद्रा-भरि सोग, तउ सुपनंतरि मोह। —ढो मा

उ०—४ निस पौढी 'अगजीत' ग्रह, पटराणी नहुवाग। सुपनतर सुग सभळै, जै जै सदन वाग।—रा रू

२ स्वप्न के बाद, स्वप्न के अनन्तर।

सुपन—१ देखो 'स्वप्न' (रू भे)

उ०—१ आळस न कर अजाण, निज मन हरस भजन रघुनाथ। सुपन रूप ससार, विग नता देखता वार।—र ज प

उ०—२ सोभा नाम रूप विसतारा, सुपन निद्र रहिया सप सारा।

—सू प्र.

२ देखो 'सुपनक' (डि को)

सुपनउ—देखो 'स्वप्न' (रू भे)

सुपनक-वि [स स्वप्नक] १ निद्राशील, निद्रालु, उनिंदा। (डि को)

रू भे—सुपन।

२ देखो 'सपनो' (रू भे)

सुपनखा-स स्त्री [स शूर्पणखा] रावण की बहन एक राक्षसी, राम के वनवास के समय लक्ष्मण ने दण्डकारण्य मे इसके नाक-कान काटे थे।

उ०—१ सुणे सुपनखा वेण चड हाथिया लाभुरा खर दूसर त्रिसर मळ भाळ आगा, पूर तन पहरिया।—र रू.

उ०—२ नाक राम छेदन सुपनखा, रट मेटण रामण रटराण।

—ह ना मा

वि -जिसके नाखून सूप-जैसे हो।

सुपनदोख, सुपनदोस-स पु -देखो 'स्वप्नदोष' (रू भे)

सुपनू, सुपनू—देखो 'स्वप्न' (रू भे)

उ०—गैली यै मीरा भई बावरी सुपनू छै आळ जजाळ।—मीरा

सुपने, सुपनै-क्रि वि -स्वप्न मे।

उ०—१ जिणनू सुपनै देखती, प्रगट भए प्रिव आइ। डरती आख न मूदही, मत सुपनउ हुय जाइ।—ढो.मा

उ०—२ कै सुवो कै मारियो, कै सुपनै आयो साम्य। श्री राम रो मूदडो, कुण रन मा ल्यायो राम।—मेहोजी गोदारो

२ अच्छा व्यवहार, अच्छा आचरण ।
३ बुद्धिमत्ता, समझदारी ।
४ अच्छी नीयत, अच्छा उद्देश्य ।
५ अच्छी युक्ति, अच्छा उपाय ।
६ ध्रुव की माता का नाम ।

सुनीसीर—देखो 'सुनासीर' (रू भे) (ना मा)

सुनु-स पु —सुत, पुत्र । (डि को)

सुनू—देखो 'सूनौ' (रू भे)
उ०—पिया बिन सुनू सारौ देस, जतन करौ हे आली हे ।
—मीरा

सुनूर-स पु [स सु+फा नूर] सौन्दर्य ।
वि —सुन्दर ।
उ०—सुनूर सूर सभकै, निसभ मैं हुमै नचै । क्रिपाळि काळिका अगेन, बाळि बाळिका बचै । -ऊ का.

सुनेर-स पु —सोलकी राजपूतवंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (बा दा ख्यात)

सुनेरि, सुनेरी-स.पु —१ बंगाली शेर ।
उ०—प्राक्रम निज जै परखणौ, सावज सू भिड मार । साजणौ सुनेरि हुत समर, केहर ! पडै न पार ।—रेंवतसिंह भाटी
२ देखो 'सुनहरी' (रू भे)

सुनोची-स पु —एक प्रकार का घोडा । (शा हो.)

सुन्न-स पु [स शून्य] १ शरीर के किसी अङ्ग मे रक्त-सञ्चार बन्द हो जाने की अवस्था या दशा ।
२ स्तब्ध एव किंकर्त्तव्य-विमूढावस्था ।
वि —१ जिसमे कोई हरकत, हलचल या चेतना अथवा स्पन्दन न हो, निश्चल, निश्चेष्ठ, जड ।
२ किंकर्त्तव्य-विमूढ, स्तब्ध ।
उ०—लेव्या-नेव्या दोय पळ भी कोनी बीत्या होसी कै कोई दरवाजै नै धीरेसीक खटखटायौ । म्हैं सोच भी कोनी सक्यौ, कुण हो सकै है ! रोमनी करी अर दरवाजौ खोल्यौ । दरवाजौ खोलता ई सुन्न होग्यौ ।—तिरसकू
३ निर्जीव ।
रू.भे —सन्न, सुन, सुन्य ।
४ देखो 'सून्य' (रू भे)
उ०—१ सकर ना सुरजेठ ना, आस तुहारी आस । मावतरी थारी सघर, बडौ सुन्न घर बास ।—पी ग्र
उ०—२ सुन्न सिखर कै द्वारै आकै, मोहि मिळै अविनासी । मीरा कै प्रभु गिरधरनागर, जनम जनम की दासी ।—मीरा
उ०—३ सुन्न महल मैं सुरत जमाऊ, सुख की सेज बिछाऊ री । मीरा कै प्रभु गिरधरनागर, बार बार बलि जाऊ री ।—मीरा
उ०—४ पिया गुरु जियाराम मेरा, किया जिन सुन्न मैं मेरा । कहै सुखराम सिमरथ दासा, अन्न हळाबोळ प्रकासा ।
—श्री सुखरामजी महाराज

सुन्नगार—देखो 'सून्यागार' (रू भे)

सुन्नत-स. स्त्री [अ] एक मुसलमानी रस्म जिसमे छोटे बच्चे की लिङ्गेन्द्रिय के अग्रभाग की चमडी को काटकर सुपारी को नगी कर दिया जाता है, खतना ।
रू भे —सुनत ।

सुन्नागार—देखो 'सून्यागार' (रू भे)

सुन्नाळ—देखो 'सून्याड' (रू भे)
उ०—गोदारा रै बास मैं सफा सुन्नाळ पडी है । गटकडा भूमै, बाकी चिडी ही चूकै नहीं है ।—दमदोख

सुन्नी-स पु [अ] १ मुसलमानो का एक वर्ग जो चारो खलीफाओ को प्रधान मानता है । इसी वर्ग के मुसलमानो मे सुन्नत की रस्म की जाती है ।
२ उक्त वर्ग का मुसलमान ।

सुन्य—देखो 'सून्य' (रू भे) (अ मा)
उ०—१ वळे त नमी इद्रबाई, तुही सुन्य रै माहि चैतन्य ताई ।
—मे म.
उ०—२ हरीया बाळ न बिधउ, ना तरणापौ तन । निरालब सुन्य मैं रमै, निराकार निरजन ।—अनुभववाणी

सुन्हरियौ—देखो 'सुनहरी' (रू.भे)

सुन्हली—देखो 'सुनहरी' (रू भे)
उ०—इण भात झालौ ठाकुरसिंह ऊभौ ऊभौ बिसूरणा करै छै । हाथ ससळै छै । घोडलौ आपरी सवारी रौ सुन्हली साखत सू खेत माह्री पडियौ छै ।—डाढाळा सूर री बात

सुपख-वि —१ सुन्दर तीरो वाला ।
२ सुन्दर परोंवाला ।
स पु —अच्छे पख ।

सुपखरो-स पु —डिंगल का एक गीत (छन्द) विशेष जिसके विषम चरणो मे सोलह एव समचरणो मे चौदह वर्ण होते हैं, किन्तु गीत के सबसे प्रथम चरण मे अठारह वर्ण होते है, तुकात मे गुरु लघु होते हैं । (र ज प्र)
रू भे —सपखरौ ।

सुपथ-स पु [स सु-पथ] १ अच्छा रहन-सहन, अच्छा चाल-चलन, अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार जिसमे जीवन मे खुद का भी भला हो और अन्य सम्पर्क मे आने वालो का भी हित हो सन्मार्ग, उत्तम या श्रेष्ठ मार्ग ।
उ० मोक्ष मारग नी रूप करै रे लाल, चालै सूत्र सुपथ सुविचारी रे ।—जयवाणी
२ उत्तम पथ या सम्प्रदाय ।
रू भे —सुपथ ।

उ०—३ दिल्ली हूत रहै चित दावै, डर सुपनै ही भग्म न आवै।
—रा रू

सुपनो—देखो 'स्वप्न' (रू भे)

उ०—१ माई म्हानै सुपना में परणी गुपाळ, राती पीरी चूनर पहरी, महदी पान रसाळ।—मीरा

उ०—२ मनमैं अकबर मोद, कलमा विच धारै न कुट। सुपना में सीसोद, पलै न राण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

सुपवीत—देखो 'सुपवीत' (रू भे.)

सुपरकास—स पु—सूर्य की रोशनी, धूप। (डिं.को.)

सुपरडट, सुपरडेंट—स पु [अ सुपरिंटेन्डेन्ट] १ अधीक्षक का पद।

२ उक्त पद पर कार्य करने वाला अधिकारी।

उ०—थाणेदार नै थावस, सिपाया नै सावस, गिरदावळ नै घी, अर सुपरडेंट नै दूजती गाय पौंचावै है।—दमदोख

सुपरण, सुपरणक—स.पु [स सुपर्णक] १ गरुड, खगराज।
(अ मा, डिं को, ना मा, ह ना मा)

उ०—मद लख वाह सुपरण तजै माग में, चरण उवाहणै धरण चालै।—र ज प्र

२ पक्षी।

३ विष्णु।

४ घोडा, अश्व। (डिं को)

५ एक देव योनि विशेष।

६ सूर्य की किरण।

७ मुर्गा।

८ एक सूर्यवंशी राजा जो अन्तरिक्ष का पुत्र।

वि—सुन्दर पत्तो वाला।

रू भे—सुपरणेय।

सुपरणा, सुपरणी—स.स्त्री [स सुपर्णा, सुपर्णी] १ गरुड की माता का नाम।

२ पद्मनी।

३ कमल-समूह।

४ वह तालाब जिसमें कमलो की बहुतायत हो।

सुपरणेय—स पु [स सुपर्णेय] गरुड। (अ मा, ह ना मा)

सुपरवाण, सुपरवाण—स पु [सुपर्वाण] १ देवता, सुर।
(डिं को, ना मा)

उ०—घुमडै सुपरवाणा घोर किय उनमव घणौ, तन मन जाणियौ प्रमतान अत दससिर तणौ।—र रू

२ बांस।

३ तीर।

४ धूम्र, धुंआ।

सुपरवाइजर—स पु [अ] कार्य की निगरानी या देखभाल करने वाला, निरीक्षक।

सुपरस—देखो 'स्परस' (रू भे) (अ मा)

सुपरसन—देखो 'सपरस' (रू भे) (अ मा)

सुपरि—वि. [स सु+परि] १ श्रेष्ठ, उत्तम।

२ बडी।

क्रि वि—अच्छी तरह से, चतुराई से।

उ०—१ देवडी नाम ऊभा घरणि, साम्वणी तसु धू कुमरि। चौसठि कळा सुदरि कुमरि, चतुर कथा कहिस्यु सुपरि।—ढो मा

उ०—२ मधुर करवक ऊपरि, सुपरि परीसइ घोल। मुखमुखि करइ ति करखिय, करखिय करइ तबोल।—जयसेखर सूरि

सुपरौ—वि—शुभ।

उ०—सूवा सुपरा बोलिए, विपरा वोली वाय। छदा जहा रा छाडिए, जिण रै वसिए गाव।—परमराम

सुपवित्त—देखो 'सुपवीत' (रू भे)

उ०—स्रुत सुणता अति दोहिली, राखै निण सा चित्त। सद्दहणा वलि सांचवी, सयम धरि सुपवित्त।—वि कु

सुपवी—वि—दृढ, मजबूत।

उ०—सू ऊठ किण भात रा छै? थापवी तलीरा, सुपवी नळीरा, नाळेरा गोडा रा, वीळफळ इरकीरा —रा मा.सं

सुपवीत—वि [स सु-पवित्र] विशुद्ध, पवित्र।

उ०—१ पण परि देखी आप परा भव, धन सागर सुपवीत। मान धरी मन माहि नीसरिउ, नयर बाहरि चलचीत।
— हीराणद सूरि

उ०—प्रहविहसी पूरब दिसै, उदय थयौ आदीत। मानु मयणा सुदरी, देखवा सुपवीत।—श्रीपालरास

रू भे.—सुपवीत, सुपवित्त।

सुपसाइ, सुपसाउ, सुपसाय—स पु [स सुप्रसाद, प्रा सुपसाअ] पूर्ण कृपा, अनुग्रह।

उ०—१ सुपसाइ स्त्री गुरु तणै, लब्धोदय गणि भाखै रे। प्रथम खड पूरो कियौ, धरम तणै अभिलाखै रे।—प च.चौ

उ०—२ स्त्री जिणचद सूरीसरु हो, स्त्री जिनसिंघ सूरीस। सकल-चद सुपसाउ लइ हो, समय सुदर भणइ सीस।—स कु

उ०—३ ग्यान तिलक गुरु नइ सुपसाय इ, विनयचद्र गुण गाया जी।—वि कु

वि—अत्यन्त शुभ, अच्छा, ठीक।

उ०—जाण हार हू उ तिहा अछउ, मझ मनि नागउ ढाउ। तुम्ह साथिइ आवउ जउ, तेडउ घणउ करी सुपसाउ।
— हीराणद सूरि

सुपह, सुपहि, सुपहु—स पु [स सुप्रभु] १ श्रेष्ठ नृप, उत्तम राजा, बडा राजा।

उ०—१ हा सा वाप हमीर हीटाऊ, सुपहा दाप सवाया।
— ऊ रा

सुपालग्र, सुपालक–वि [स सुपालक] अच्छी तरह पालन-पोषण करने वाला ।

सुपास—देखो 'सुपारस्वनाथ' ।

उ०—हु गुणरागी हो मागी सेवक ताहरउ, माहिव सुगुण **सुपास** ।
—वि कु

सुपारी–स स्त्री [म सुप्रिय] १ नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसकी ऊचाई चालीस से सौ फुट तक की होती है ।

२ उक्त पेड का फल जो १½ या २ इञ्च का गोलाकार या अण्डाकार होता है । इसको काटकर पान मे डालकर खाया जाता है ।

उ० पान-**सुपारी** चाट, हाट रा ओगण हेटा । मेळा-डोळा डोळ, फिरण फागडदा फेटा ।—नारी सईकडी

३ इसी जाति का अन्य प्रकार का पेड व उसका फल जिसको काट-कर भोजन के वाद मुख-शुद्धि के लिए खाया जाता हे । यह अत्यन्त स्वादिष्ट एव पौष्टिक होता हे । यह औषध मे भी काम आता हे । चिकनी सुपारी ।

उ०—ना होको ना चिलम, पान-बीडी न **सुपारी** । ना सुलफो ना भाग, कदै ना वणै जुवारी ।—नारी सईकडी

पर्याय –क्रमुक, गूवाक, पूग ।

४ सुपारी के आकार का पुरुष-लिङ्गेन्द्रिय का अग्रभाग । (अमरत)

रू भे —सोपारी ।

सुपारीपाक–स पु यौ –सुपारी से वनने वाली एक पौष्टिक औषधि ।
(टॉनिक)

वि वि –आठ टके भर चिकनी सुपारी को कूट, कपड-छान कर आठ टके भर गौ-घृत मे मिलाया जाता है तत्पश्चात् उसको तीन वार गाय के दूध मे डालकर धीमी-धीमी आँच पर पकाकर खोवा वनाया जाता हे । फिर वग, नाग केसर, नागर-मोथा, चन्दन, सौठ, पीपल, काली मिर्च, आँवला, कोयल के वीज, जायफल, धनिया, चिरौंजी, तज-पत्रज, इलायची, सिघाडा, वश लोचन, दोनो प्रकार का जीरा (प्रत्येक पाँच-पाँच टक) आदि दवाओ का चूर्ण वनाकर उक्त खोवे मे मिला दिया जाता है । फिर ५० टक भर मिश्री की चासनी मे मिलाकर इसकी एक-एक टके भर की गोली वना ली जाती है । इसके सेवन से शुक्र-दोष, प्रमेह, प्रदर, जीर्ण-ज्वर, अम्लपित्त, मदाग्नि और अर्श का निवारण होकर शरीर पुष्ट होता है ।

सुपियार–स पु.–१ स्नेह, प्रेम, अनुराग, आदर्श-प्रेम ।

२ लाड-दुलार, प्यार ।

३ देखो 'सुपियारौ' (रू भे)

उ०—सिहाण चढै करवी सहाय, राखजै पीठ नागाण राय । **सुपियार** तणा सायव सधीर, व्रत पाळ करण नव लाख वीर ।
—पा प्र.

रू भे —सुपीयार, सुप्यारी ।

सुपियारौ–वि (स्त्री सुपियारी) जो अत्यन्त प्रिय हो, प्यारा, प्रिय, वल्लभ ।

उ०—सगत तेसु कीजियै **सुपियारा** हौ, जल मच्छिया हुवै जेह नेम सुपियारा हौ ।—स कु

स पु –प्रेमी, प्रियतम, पति ।

रू भे —सुपीयारौ, सुप्यारौ ।

सुपीत–स पु [स] १ ज्योतिष मे पाँचवे मुहूर्त्त का नाम ।

२ पीला वस्त्र, पीताम्वर ।

वि –विल्कुल पीला, पीत ।

उ०—नमौ पच-अन्न-पवित्र **सुपीत,** सु स्याम, सु नील, सु रत्त, सु सीत ।—ह र

सुपीयारौ—देखो 'सुपियारौ' (रू भे)
(स्त्री सुपीयारी)

सुपीहरी–वि स्त्री –अच्छे पीहर वाली, जिसका पीहर उत्तम हो ।

उ०—रूडी घर देखाडिजै रे हा, चलिजै चतुर आचार । **सुपीहरी** कहराविजै रे हा, करिजै सहूनी सार ।—स्रीपाल रास

सुपुण्ण–स पु [स सुपुण्य] शुभ कार्य, पुण्य या पुनीत कर्म, दान ।

उ० पोस मास वदि दसमी तणइ, दिन जायउ जिण **सुपुण्ण** दिनइ । जय जयकार सुखइ पभणइ, सेवइ दिसि कुमरी हरखि घणइ ।—स कु

सुपुत्र–स पु (स्त्री सुपुत्री) गुणवान, योग्य एव सुन्दर पुत्र ।

उ०—पच पुत्र ताइ छठी **सुपुत्री,** कुअर रुकम कहि विमळ कथ ।
—वेलि

सुपुर–स पु –सुन्दर नगर ।

रू भे —सुपुरि ।

सुपुरस–स पु [स सु-पुरुष] भला एव सज्जन व्यक्ति, साधु पुरुष ।

उ०—सिह-सगम, **सुपुरस** वचन, कदळि फळै इक सार । तिरिया तेल 'हमीर' हठ, चढै न दूजी वार ।—अग्यात

रू भे —सुपुरुस ।

सुपुरि—देखो 'सुपुर' (रू भे)

उ०—सुज कत अत अमरा **सुपुरि,** चौओडि हरि उच्चरै । छत्रपती सनेह 'चद्र' छडी, सेखावत व्रत सभरै ।—रा रू

सुपुरुस—देखो 'सुपुरस' (रू भे)

सुपुहुप–स पु [स सुपुष्प] १ सुन्दर पुष्प ।

उ०—पकवानै पानै फळै **सुपुहपै,** सुरगै वसत्रै दरव स्रव । पूजियै कसटि भगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रव ।—वेलि

२ लवग, लौंग ।

३ स्त्रियो का रज ।

सुपूत—देखो 'सपूत' (रू भे)

सुपूती—देखो 'सपूती' (रू भे)

उ०—मात सिहाणी उदर, मझ 'पता' **सुपूती** पाय । पिता पिछाणै

२ पवित्र हृदय से ईश्वर-स्मरण करने की क्रिया ।

सुवहू—स स्त्री [स सु+वधू] १ सुन्दर एव शुभ लक्षणो वाली वधू ।

उ०—वसुदेव पिता सुत थिया वासुदे, प्रदुमन सुत पित जगतपति । मामू देवकी रामा सुवहू, रामा मामू वहू रति ।—वेलि

२ देखो 'सुवह' (रू भे)

सुवाण, सुवाणी—देखो 'सुवाणी' (रू भे.) (ह ना मा)

उ०—सीस दस झडे धनुधार रै सायका, हेर कप भाळ अणपार हरखै । वसू सारी सुजस पयपै सुवाण, विमाण वैठ सुर सुमन वरखै ।—र रू

सुवायत—स पु—सूवेदार ।

उ०—तौ ही अजमेर री सुवायत वैस रही । तिण समै राव सातळ नै कवर वरसिंघ अवणात हुई ।—नैणसी

सुवाळ, सुवाल—स स्त्री—१ सुन्दर वाला, सुन्दर युवती ।

उ०—छटा विसाळ साळतै छवी घटा छपै नही, दिवाळपै सुवाळ दीपमाळसी दिपै नही ।—ऊ का

स पु—२ सुन्दर वालक ।

सुवाव—देखो 'स्वभाव' (रू भे.)

सुवास—देखो 'सुवास' (रू भे)

उ०—लोयण चचळ स्रवण लग, नाया वेणी डड । महकै सहज सुवास वप, किर लायौ स्रीखड ।—वा दा

सुवासना—देखो 'सुवास' (रू भे)

सुवाह, सुवाहु—स पु [स सुवाहु] १ एक राक्षस जो मारीच का वडा भाई था और ताडका का पुत्र था ।

उ०—वाढ सुवाह जिगन रखवाळै, महण वीच डालै मारीच । ताई विमद करै त्रप ताखा, विरदाई जानकी वरी ।—र ज प्र

२ कालिन्दी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

३ चेदि का एक राजा जो वीरवाहु का पुत्र और सुनन्दा का भाई था ।

४ राम की सेना का एक वानर ।

५ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक ।

६ जैनियो के एक तीर्थङ्कर ।

उ०—नलिनावरत्त चउवीसमी पछिम विदेह वखाण, वीतसोका नयरी तिहा चौथौ सुवाहु सुजाण ।—ध व ग्र

स स्त्री—७ एक अप्सरा जो दक्षपुत्री प्राधा के गर्भ मे महर्षि कश्यप द्वारा उत्पन्न हुई थी ।

वि—१ सुन्दर एव दृढ वाँहो वाला ।

२ आजानवाहु ।

सुवियाण—देखो 'सुभियाण' (रू भे)

उ०—'जोदौ' गढ 'जोदाण' हुवौ राठोड हटाळी, 'जोदा' रै जगजीत कमद 'सूजौ' कळ चाळौ । 'सुजा' रै सुवियाण प्रगट 'ऊदौ' खत्रीयापण, सरवा पादर सीदळा जेण लीदी जैतारण ।—अग्यात

सुवीतौ—देखो 'सुभीतौ' (रू.भे)

सुवीर—स पु—१ रवडी ।

२ छाछ की वनी रावडी ।

वि वि—देखो 'रावडी' ।

३ देखो 'सुवीर' (रू भे.)

सुवुक-रदौ—स.पु यौ—१ वरतनो की कोर आदि छीलने का एक औजार विशेष ।

२ वढइयो का एक औजार जिससे लकडी को छील कर साफ किया जाता है ।

सुवुदी, सुवुद्दी, सुवुद्ध, सुवुद्धि—स स्त्री. [स सुवुद्धि] १ उत्तम एव श्रेष्ठ वुद्धि वाला, वुद्धिमान, दूरदर्शी ।

उ०—हुती थेटु क्रपा सौ पै जिहु ही तै जणाई हाता, जुगा जाता जावै नहीं वाता क्रीत जोड । सुवुदी 'अनोप' मारू चीरजी हजार साला, रीज रा वीसाला राजा अगजी राठौड ।

—अनोपसिंह राठौड री गीत

२ जो वुद्धि हमेशा अच्छे कार्यो की ओर प्रवृत्त होती हो, सुमति ।

३ चतुर, निपुण, दक्ष ।

४ कवि, पण्डित, विद्वान् । (अ मा)

५ प्रत्युत्पन्न मति वाला, हाजर-जवाव ।

स स्त्री—१ श्रेष्ठ एव उत्तम वुद्धि ।

२ वुद्धि, अक्ल, समझ, होश, ज्ञान, मति । (डि को, ह ना मा.)

रू भे—सुवध, सुवधी, सुवुध, सुवुधि, सुवुधी ।

सुवुध—वि. [स] १ वुद्धिमान ।

२ सतर्क, सावधान ।

३ देखो 'सुवुद्धि' (रू.भे)

उ०—कनक दान कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर । सुवुध वधै सतसग, ग्यान गुर वाणि उजागर ।—रा रू

सुवुधि, सुवुधी—देखो 'सुवुद्धि' (रू भे)

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुदर, अमळ अवर ओपय । किरि सुवुधि ववि सतसग, कारण लुवुध होत विलोपय ।—रा रू

सुवुद्धिनाथ, सुवुधिनाथ—स पु [स सुवुद्धिनाथ] जैनियो के वर्तमानकाल के नवमे तीर्थङ्कर का नाम । (म.कु.)

सुवेल—देखो 'सुवेल' (रू भे)

सुवेस—वि—१ वयस्क, वालिग ।

२ देखो 'सुवेस' (रू भे)

सुवेसांणी—क्रि वि—वडे सवेरे, ऐन सुवह, प्रात काल के समय ।

रू भे—सुवैसाणी ।

सुवै—देखो 'सुवह' (रू भे)

उ०—जकै दवावौ चीज, घणी री अूची आवै । आयण छिपणौ भाण, सुवै लाली वरसावै ।—नारी सईकडौ

सुवैण—स पु [स सु-वचन] १ अच्छे एव शुभ वचन ।

२ मित्रता, दोस्ती ।

उ० — अथग सीतळ अचळ छौळ कर उपट्टा, वेळ ऊजळ अनम पाळ कुळ वेम। सुफर चाव चकोरा देव मोरा सुकवि, सध सोम समेर सक्र नद-भगतेम।—मनमानसिंघ हाडा री गीत

सुफळ, सुफल — स पु. [स सुफल] १ वह अस्त्र या शस्त्र जिसका फल अच्छा हो, सुन्दर फल वाला।

२ अच्छा परिणाम, इच्छानुकूल नतीजा।

उ०—सेठ नौ महीना ताईं वेटा-वेटा री माळा फेरी तौई सुफळ नी पडी। - फुलवाडी

[स. सुफल] ३ अनार का पेड।

४ वेरी का पेड।

५ मूंग।

वि —१ वहुत फलने वाला।

२ वहुत उपजाऊ।

३ देखो 'सफळ' (रू भे)

उ० —१ बिसरि गई दुख निरखि पिया कू, सुफळ मनोरथ काम। मीरा कै सुखसागर स्वामी, भवन गवन कियौ राम।—मीरा

उ०— २ मेजा कुम्हाळायोडा फूला री पाछी वळी कळी खिलगी। मेडी रौ चानणौ सुफळ व्हियौ। मेडी री अधारौ सुफळ व्हियौ। —फुलवाडी

सुफलक—स पु [स] अक्रूर के पिता एक यादव। (महाभारत)

सुफला—स स्त्री [स] १ मुनक्का दाख, द्राक्षा।

२ तलवार जिसका फल सुन्दर हो।

सुफाळौ—स पु —तीर का अवयव विशेष।

उ० —तिलौर रा पखारा छै, दात रा सुफाळा छै, मोन्है री हळ लिखी छै, नव मूठ रा तीर छै।—रा सा.स

सुफील—स पु [स सुपील] श्रेष्ठ एव वडा हाथी।

उ०—नदी जळनील सुफील निमाण, उभोत छीलर टीलन आण। वगत्तर भीवर जाळ वहत, आवै नह माळ रगत्तर अत।—मे.म.

सुफेर—वि —१ बुद्धिमान, समझदार।

२ सज्जन, सुशील।

सुफी—स स्त्री —छोटी कोटडी। (शेखावटी)

सुब—देखो 'सुभ' (रू भे)

सुबत्त—देखो 'सोबत' (रू भे)

उ० —सुप वीच पडै महाराज सू, समरो लाज सुःत्तिया। कुळ तणी नही वाटै किणी, वाटै मत पण खत्तिया।- रा रू

सबध—देखो 'सुबुद्धि' (रू भे)

उ०—सुरसत मो दीजै सुबध, वरणू ग्रथ विचार। सिवदानी सझियौ समर, (सो) कहू बुध अनुसार।—रि रू

सुबधी—स पु.—१ कवि। (अ मा)

२ देखो 'सुबुद्धि' (रू भे)

सुबनजर — देखो 'सुभनजर' (रू भे)

सुबर—स स्त्री —१ गर्भवती घोडी।

२ गर्भवती ऊँटनी।

रू भे —सुभर।

३ देखो 'सुवर' (रू.भे)

उ०—माडियौ ज्याग कमधा घरै माढहो, लिखत वर सुबर ईसवर लिखायौ।—कर्मा नाई

सुबरण—देखो 'सुवरण' (रू.भे)

उ०—१ सुबरण परवत सौ उञ्यौ रे श्री तौ ज्यू रघुवर री वाण, हनु०। - गी रा

उ०—२ अति ऊचा तियरै उरज, वणिया विसवा वीस। जोडै लागै जगत मैं, गिर गज कुभ गिरीस। गिर गज कुभ गिरीस, प्रवीणा गाविया। सुबरण वरण सुढग, कठोर सुहाविया। —वा दा

सुबरणरासि—स पु —स्वर्ण का ढेर, सोने का ढेर।

उ०—इण ही तरह देवी रा निदेस सू जाचका नू देण काज राजा वडाहर सदा ही सुबरण रासि सिद्ध कीवौ।—व भा

सुबह—स.पु. [अ सुब्ह] १ प्रात काल, सवेरा।

उ०—इक रक्खोगे मुख वचन याद, सब चक्खोगे मनमुख सवाद। सिर कूटोगे फिर सुबह साम, तोवा कर छूटोगे तमाम। —ऊ का

२ ईश्वर का एक नाम।

वि —अत्यन्त पाक, पवित्र।

क्रि वि —प्रात काल के समय, सवेरे।

रू भे.—सुबहू, सुबै।

सुबहान—स पु [अ. सुब्ह+आन] १ ऊषा वेला, प्रात कालीन समय, सवेरा।

२ भजन, सुमिरन का समय, ईश्वर-भजन का समय।

३ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—१ आब आतस अरस कुरसी, सूरतै सुबहान। सरर सिफत करद बूद, मारफत मकाम।—दादूवाणी

उ०—२ काळा मुह कर करद का, दिल थै दूर निवार। सब सूरत सुबहान की, मुल्ला मुग्ध न मार।—दादूवाणी

वि —१ पवित्र, पाक, शुद्ध।

उ०—काया कतेब बोलियै, निख रासू रहमान। मनवा मुल्ला बोलियै, स्रोता है सुबहान।—दादूवाणी

२ महान्, श्रेष्ठ।

क्रि वि —वाह-वाह, धन्य-धन्य, साधु-साधु।

रू भे —सुभान।

सुबहानअल्ला—अव्यय [अ] वाह-वाह, साधु-साधु, धन्य-धन्य।

स पु. — १ किसी की वाह-वाही या साधुवाद मे बोला जाने वाला शब्द।

सागाद, उतर रवि तेरस मगळ ।—रा रू
२ सात प्रकार के चौघड़ियों में से पांचवां चौघड़िया ।
वि वि—'चौघड़ियौ' ।
३ विष्कंभादि सत्ताइस योगों में से तेवीसवें योग का नाम ।
(फलित ज्योतिष, ज्यो. बा बो)
४ वार व नक्षत्रों-सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से बीसवां योग ।
५ एक राग विशेष ।
रू भे. सुभ, सुभ्भ ।
सुभक्द—स पु —गणेश, गजानन । (अ.मा)
सुभकर—वि [स शुभकर] कल्याण करने वाला, मङ्गल करने वाला ।
सुभकरी—स स्त्री —पार्वती ।
सुभकाम—स पु [स शुभ-कर्मन्] अच्छा व श्रेष्ठ कार्य, पुण्य का काम ।
सुभकामकर—स पु [स शुभकामकर] नारियल । (अ मा)
सुभकांमी—वि [स. शुभकामिन्] शुभकामना करने वाला,शुभेच्छु,हितैषी ।
उ०—सद री हिन्दु धरम री धोरी, मता री सुभकांमी रे ।
—गी रा
सुभकार—स पु [स शुभ-कार्य] शुभ कार्य, माङ्गलिक कार्य ।
उ० —ऊजळी उत्तम रेत, ओपळी मू लैं आवै । वेदी जिगा विवाह, साज सुभकार सजावै ।—द दे
सुभकारक, सुभकारि, सुभकारी—वि [स शुभ-कारिन्] १ कल्याण करने वाला, माङ्गलिक ।
उ०—रत नाम गुण भजन नरायण, पुत्र हुवौ सुज भगत परायण । सुर पतन बालक सुभकारी, कवर हुवै सुज आग्याकारी ।
—रा रू
२ पवित्र, शुद्ध ।
३ शुभकामना करने वाला, शुभेच्छु ।
उ०—वानैत अमवार गयद सिंगारिया, हूआ मगळचार कवी सुभकारिया ।—गु.रू व
४ शुभ वाणी बोलने वाला ।
५ उत्तम व श्रेष्ठ फलदायक ।
उ०—तिण री माल प्रभात निस, निरमळ दिवस सनूर । ऊंबै छत्र-धारी 'सजो', सुभकारी ससि सूर ।—रा रू
रू भे —सुभकर ।
सुभकूट—स. पु [स शुभकूट] लंका का एक प्रसिद्ध पर्वत जिस पर रामचन्द्र का आगमन हुआ है ।
सुभकृत, सुभकृत्त—स पु [स शुभकृत] विश्वावसु का सोलहवां वर्ष ।
(ज्योतिष)
सुभग—वि [स] १ सुन्दर, मनोहर । (अ मा, ह ना मा)
उ०—१ अनन्त पहिरा ... भाल अग्रज सुभग महा । मन हरण ... तन स्याम है ।—र ज प्र
उ०—२ मन मेरे परसि हरि के चरन । सुभग सीतळ कमळ कोमळ, त्रिविध ज्वाळा-हरन ।—मीरा
२ मधुर, प्रिय ।
३ भाग्यवान, समृद्धिशाली ।
४ प्रेम-पात्र, प्यारा ।
५ प्रसिद्ध ।
स पु—१ चन्दन ।
२ सुहागा ।
३ अशोक का वृक्ष ।
४ चम्पक वृक्ष ।
५ लाल कटसरैया ।
स स्त्री —सुन्दर योनि ।
रू.भे —सुभग्ग, सोहग ।
सुभगा—स.स्त्री [स] १ वह स्त्री जिसको उसका पति बहुत प्यार करता हो, प्रियतमा पत्नी ।
२ पूज्या माता ।
३ हल्दी ।
४ तुलसी ।
५ पांच वर्ष की कुमारी कन्या ।
६ स्कन्द की एक मातृका ।
वि स्त्री —१ सुन्दरी, मनोहारी ।
उ०—सुभगा सिवा जया स्री अवा, परिया परपार पालवा ।
—देवि.
२ सौभाग्यवती, सुहागन ।
सुभग्ग—वि —१ सौभाग्यशाली ।
उ०—अभंगि अंगि कै अगै सुभग्ग भगतै सुनै । उदग्ग पग्ग विग्गि आसु पग्ग लग्गतै उनै ।—ऊ का
२ देखो 'सुभग' (रू भे)
उ०—हिरनमै पन्न हीरै जटित्त, माकळा कग्गरै सुशोभित । मुद्रका सुकाग-मावा सुभग्ग, मिरण जाण दिपै फुग्ग सेस नग्ग ।—गु रू व
सुभग्रह—स पु [स. शुभ-ग्रह] सौम्य और शुभ माने जाने वाले बृहस्पति व शुक्र-ग्रह । (फलित ज्योतिष)
सुभड़—देखो 'सुभट' (रू भे) (डि को)
उ०—१ है सुभडा थै तरवार उण वीर पुरुस री नाम लेनै बाधी सो ताह री कंठै ही हार न होवै ।—वी स टी
उ०—२ जिको सिकार गयौ सुभडा जुत, सोभावती पवारतणौ सुत ।—सू प्र
सुभचरित—स पु [स शुभ-चरित्र] १ अच्छा चरित्र, शुद्ध चरित्र ।
२ अच्छे चरित्र वाला व्यक्ति ।
सुभचरिता — वि. स्त्री [स. शुभ-चरित्रा] १ शुद्ध चरित्र वाली, चरित्रवान ।

स स्त्री [स. सु-वेणि] ३ स्त्रियो की सुन्दर वेणी, चोटी।
उ०—अही सुवैण अग नैण दीप नामका भणू।—पा प्र
सुवैमाणी—देखो 'सुवेसाणी' (रू.भे)
सुवोध-स पु [स] १ अच्छा ज्ञान, अच्छा वोध, अच्छी जानकारी।
२ अच्छी सलाह, अच्छा मशविरा।
३ श्रेष्ठ ज्ञान।
उ०—हाडा ग्रथ निदान है सौ सब मुख्य सुवोध।—व.भा
वि—१ जिसे वोध हो, जो अवोध न हो।
२ जो सहज ही जाना जा सके।
सुवोल-स पु [स] १ सुन्दर वचन, उत्तम एव मधुर वचन।
उ०—जिन सासन रायउ जिणइ, डोलतउ डमडोल। ससभायउ श्री पातिसाह, सदगुरु खाव्यउ तइ सुवोल।—स कु
२ यश, कीर्ति।
उ०—दिल्ली जैत सुवोल सहसदम, राजा मुहरि मरण रिम राह। सुभ दातार जूझ सुपाता, दान च्यारि वकसिया दुवाह।
—सुभराम गौड री गीत
सुवौ—देखो 'सूवौ' (रू भे.)
सुब्भ—देखो 'सुभ' (रू भे)
उ०—प्राचीन करम सुब्भ ए, पुरखा पाइत उत्तमा महिला। कुळ-दीप पुत्र जिणयै, कुळ धू विनै रुप सजुगता।—गु रू व
सुब्भजोग—देखो 'सुभयोग' (रू भे)
उ०—सुभ वासर सुब्भजोग वेळा, तिल्लक्क निलाट ताण ए। सोळह मुखि कळा चद सपूरण, द्वादस ऊगति भाण ए।—गु रू व
सुब्भट—देखो 'सुभट' (रू भे)
उ०—उड्डि वैसव्वर, सामठा सव्वर। सुब्भटा भूलर, फौज घामाहर।—गु रू व.
सुभ्र—देखो 'सुभ्र' (रू.भे)
सुब्रह्मण्य-क्षेत्र-स पु यौ [स.] मद्रास क्षेत्र के दक्षिण मे कनाडा जिले मे स्थित एक प्राचीन तीर्थ।
सुव्रीडित-वि [स सुव्रीडित] लज्जित, सङ्कोचयुक्त।
उ०—सुगमित सुनमित निज वदन सुव्रीडित, पुडरीकाख प्रिया प्रसन। प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिग्गिाखी राखिया मन।
—वेलि
सुभकर-स पु.—१ छप्पय छन्द का १४वाँ भेद जिसमे ५७ गुरु व ३८ लघु से ६५ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। (र.ज प्र.)
२ देखो 'सुभकारी' (रू भे.)
सुभकरी-स स्त्री [स शुभङ्करी] पार्वती, दुर्गा।
वि स्त्री—कल्याण करने वाली, मङ्गल करने वाली।
सुभग-स पु [स सुभङ्ग] १ देव-वृक्ष। (अ मा)
२ नारियल का वृक्ष। (अ मा)
वि—१ सुन्दर व खूबसूरत।
२ योद्धा, वीर।
उ०—कळ मूळ 'करन' हर खळा काळ, जवना वन दाहण मेख ज्वाळ। 'भगवान' 'हरी' 'चापै' सुभग, 'ऊदळी' 'विजौ' 'अचळौ' अभग।—रा रू
सुभ-वि [स. शुभ] १ कल्याणकारी, मङ्गलमय।
उ०—१ पधराविया सुभ प्रात, छळ हूत सुरधर छात। दळ कमध साह दवार, अन रहै साम उवार।—रा.रू.
उ०—२ तठा उपराति राजान सिलामति तोरण वाधीजै छै। घणा गज डवर पेसाग करि मडोवर महल पधराया छै। सुभ दिन सुभ घडी सुभ मुहरत सुभ लगन सुभ वेळा माहि आणि पाट सिघासण विराजमान किआ छै।—रा सा.स
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
उ०—१ पेखै कोइ कहति एक एक प्रति, विमळ मगळ ग्रह एक वगि। एणि कवण सुभ क्रम आचरता, जाणियै वेलि जपति जगि।
—वेलि
उ०—२ आदि पक्ख अस्टमी मास नभ सुभ गुण मडित। सपति-पुरी मणि मुकट, नेत्र मधुपुरी अखडित।—रा रू
उ०—३ अविनासी अविकार असीमा, सुभ गुण दियण अनुग्रह सीमा।—रा रू.
३ मनपसन्द, सुखप्रद, आनन्ददायी।
उ०—१ डावडी रै मूडै वधाई रा ऐ सुभ समाचार सुणता ई ठकराणी री आत्मा सास्ही धूवा रा गोट ऊठण लागा।
—फुलवाडी
उ०—२ दीवाणजी राजाजी नै सुभ समचार देवण सारू घोडा माथै वैठ न्हाटा।—फुलवाडी
उ०—पुलिण रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ। कान कवार विहरि गली व्रज कुजरी, सुभ रती कीजियै लाडली साथ।—वा दा
४ भाग्यवान, भाग्यशाली।
५ नेक, धर्मात्मा।
६ सुन्दर, खूबसूरत।
७ चमकदार, चमकीला।
८ सुश्री।
९ पवित्र, शुद्ध।
क्रि वि—अच्छी तरह, भली प्रकार से।
उ०—नह तीरथ जगणी ममौ, जगणी ममौ न देव। इण कारण कीजै अवस, सुभ जगणी री सेव।—वा दा
स पु—१ विन्दु, शून्य, सिफर, जीरो, विन्दी का चिह्न।
उ०—१ असपतिया सिर ऊपरै, हेकै नव सुभ होय। सा देसा वेग तुरी, जेहल समयै जोय।—वा दा
उ०—२ सतरै सै सासन, आसू आठै सुभ आगळ। सुरुळ पख

सुभयोग—स पु —शुभ संयोग।
  रू.भे —सुभजोग, सुभजोग।

सुभर—१ ब्रह्माण्ड।
  उ०—सुन सुभर में बाळक जाया, तुचा हाड नही मास। जाति न पाति वरण नही वाके, नाव न धरीयै तास।—अनुभववाणी
  २ देखो 'सुबर' (रू भे.)

सुभराज—स पु —१ अभिवादन, शुभराज।
  उ०—१ ढोलउ मन चमपत थयउ, ऊभउ साहड राज। मारवणि वीसू आवियउ, आय कियउ सुभराज।—ढो मा.
  उ०—२ राणी कूभो राडमल, महा हरि भग पीर। मिगळा रा सुभराज छै, पाबू गोगा पीर।—पी ग
  उ०—३ मामा तो सुभराज, ऊगै दन ऊगउ रगा। जेह धरम जिहाज, सीरत राज दधीच सम।—रा दा
  २ आशीर्वचन या आशीर्वाद में कहा जाने वाला शब्द।
  उ०—१ ज्यू ज्यू मिदर ऊची आयी, गुलाब री मा रै पेट म्याव री मायी। टरती रम सुभराज करै जको कैवत नीरै तर नायी।—दगदोग
  उ०—२ वाप महाराणी रै पावती आता ई सुभराज करी। हाथ जोड नै कह्यो—अदाता, अठै आवण री तो आपनै हा' टज व्हैला।—फुलवाडी
  उ०—३ एक बूढी चरवादार म्हमा घणी तरनै सुभराज करी। पछै खुणिया सूदा हाथ जोडनै कह्यो अदाता, श्री दुम्टी राज रै तवैला री घोडी री माथौ वाट न्हाकियौ।—फुलवाडी
  रू भे —सुभराजू।

सुभराजू—देखो 'सुभराज' (रू भे)
  उ०—अवगत्य तु प्रगट आजू, कोडघा तारण काजू। महि मटण माहराजू, मोह साम्य सुभराजू।—वि म सा

सुभरासी—स पु. [स शुभ-राशि] चन्द्रमा, शशि। (अ मा, ना मा)

सुभव्रत—स पु [स शुभ-व्रत] कार्तिक शुक्ला पञ्चमी को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत।

सुभसात—स पु —शान्त वातावरण, अनुकूल परिस्थिति।
  उ०—रजपूत हिमार जगमाल री मेडतै वससी, सुभसात हुग्रो श्रौ पटा रै गावै वरस १ पछै जाय वससी।—नैणसी

सुभसूचक—वि [स शुभसूचक] माङ्गलिक।
  उ०—राधा चद भागा चद्रावली, भामा ललित सुसीलै। सुभसूचक सुवरण घट सिर धरि, अब बोर जब ही नै।—मीरा

सुभागी—स पु [स. शुभ-अङ्गी] १ कामदेव की पत्नी, रति।
  २ कुबेर की पत्नी का नाम।
  ३ राजा कुरु की पत्नी जिसके पुत्र का नाम विदूरथ था।
  ४ सुन्दर स्त्री।
  वि स्त्री —सुन्दर अङ्ग वाली, सुन्दरी।

सुभान—स पु. [स शुभान] १ अश्लेषादि या नक्षत्रों का वर्ग। (ज्योतिष)
  २ देखो 'सुबहान' (रू.भे)

सुभा—स स्त्री [स शुभा] १ आभा, कान्ति।
  २ सौन्दर्य, शोभा।
  ३ कामना, अभिलाषा।
  ४ दूर्वा, दूब।
  ५ प्रियंगुलता।
  ६ देवताओं की सभा।
  ७ सफेद दूब।
  ८ गोरोचन।

सुभाइ, सुभाई, सुभाउ, सुभाऊ—देखो 'स्वभाव' (रू भे)
  उ०—गति गया मति मन्दमती, सीता सीळ सुभाइ। महिमा सनह-मारई, सवर न दूजी काइ।—ढो मा.

सुभाग—स.पु [स. सौभाग्य] अच्छा भाग्य, सौभाग्य।
  वि—१ भाग्यशाली।
  २ देखो 'सुहाग' (रू.भे)

सुभागण—देखो 'सुहागण' (रू भे.)

सुभागी—वि —सौभाग्यशाली, भाग्यवान।
  उ०—१ अपणा पिया सग हिळमिळ खेलू, अमर सुहाग पागी। मीरा गिरधर के मन मानी, अब मैं भई सुभागी।—मीरा
  उ०—२ दस वसु ग्रट आठ दस पद, पाठ सो पद्मावती छद सही। सो सुरव सुभागी हरि अनुरागी, मन लागी जस राम सही।
  —र ज प्र.
  उ०—३ तसु वधव सुगन्धी तै पग दीपतउ रे, भागचद कुल भाग। विनयवत गुणवत सुभागी नेहरउ रे, वड दाता गुण जाग।
  —वि कु.

सुभाग्य—स पु [स] अच्छा भाग्य, सौभाग्य।
  वि—भाग्यशाली, भाग्यवान।

सुभाय—देखो 'स्वभाव' (रू भे)
  उ०—अडोळ पायन सोह सुभाय रा आसनीक, सिहायरा जना ओधराय रा सुजाव।—र ज प्र.

सुभायक—वि —रुचिकर, मन-भावता, अच्छा लगने वाला, सुहावना।
  उ०—१ भीनै रग केसरी सुभायक, नग मुद्रणी स्याम रग लायक।—र ज.प्र
  उ०—२ सो नित गाव 'किसन' सुभायक, नाथ अनाथ धणी रघुनायक।—र ज प्र

सुभारजा, सुभारिजा, सुभारिया—स.स्त्री [स सुभार्या] श्रेष्ठ स्त्री, श्रेष्ठ पत्नी।
  उ०—स्यान राजा कियौ मन्य विचार, वधवा, चेतन ताहरी वार। सुमति सुभारिजा सू कहै बात, उप उपगार करै दिया हाथ।
  —वि स मा.

२ साध्वी, पतिव्रता ।
स स्त्री –१ चरित्रवान व साध्वी स्त्री ।
२ पतिव्रता स्त्री ।

सुभचित, सुभचितक – वि [स शुभ-चिंतक] भलाई या मङ्गल की कामना करने वाला, शुभ चाहने वाला, शुभेच्छु, हितैषी ।
उ०—१ पूछै व्याम पवित्र, ताम महाराज 'अजण' तण । स्याम ध्रमी बुध सरस, घणू सुभचित देखि घण ।—सू प्र.
उ०—२ एतै कवि वीरता कै अग्रकारी, स्री महाराज कै सुभचितक विद्या जस कै व्योपारी ।—रा रू

सुभट–स पु [स] १ योद्धा, भट, वीर । (अ मा, ह ना मा)
उ०—१ इक चलै सूड आदोळता, अध ऊरध सांचळ अविळ । तम सुभट विछोहौ जाणि तिम, दिवस वहै व रि डग वळि ।—रा रू
उ०—२मती वळै जूझै सुभट, करै ग्रथ कविराज । दाता माया ऊधमैं, नाम उवारण काज ।—वा दा
२ सैनिक, सिपाही ।
३ अर्जुन । (अ मा, ह ना मा)
वि –१ पराक्रमी, बहादुर ।
उ०—सस सिकार तीतर सुभट, कुरजा चिडी कबूतरा । भाया सू नित उठ भिडै, परम धरम रजपूत रा ।—ऊ.का
२ रक्षा करने वाला, रक्षक ।
३ चतुर, दक्ष ।
उ०—जठै आपरा सुभट मत्रिया एकत्र होइ अरज कीधी इण समय वेघम हालिया तौ बूदी घरै रहण मैं द्वापुर हिसावै ।—व भा
रू भे —सहड, सुभड, सुहड, सोहड, सौहड ।
४ सुगम, सहज, सरल ।
उ०—वीनणी नै घणौ ई समभावू पण उण रै तौ आ साव सुभट वात ई समझ मै नी आवै ।—फुलवाडी
५ स्पष्ट, साफ ।
उ०—१ बाई वारणै ऊभी सगळी वाता सुभट सुणी । उण सू की जवाव देवणी नी आयौ ।—फुलवाडी
उ०—२ बादळ रै साम्ही देख बोली—वीरा, थू कह्यौ सो ई वात व्ही । वै तौ सगळा ई सुभट नटग्या ।—फुलवाडी
क्रि वि –१ ठीक तरह से, अच्छी तरह ।
उ०—१ राजकवर सगळा जानिया नै न्यारा न्यारा सुभट समझाय दिया कै वै घरै जाय किणी नै ई औ भेद परगट नी करै ।
—फुलवाडी
उ०—२ मामी जवाब दियौ—म्है हाल थारी वात नै सुभट समझी कोनी कै थू काई जाणणी चावै । भाणजी कह्यौ—तौ पछै म्हनै सुभट ई समझावणी पडैला ।—फुलवाडी
२ प्रगट, चौडे ।
उ०—हथळेवा वाळौ छळ-छद अवै जावता सभट व्हियौ सुभट व्हिया घणी वत्तौ अळूझग्यौ ।—फुलवाडी
३ पूर्णतया, पूर्ण रूप से ।
उ०—पण चार वरसा सू प्रीत रै खोळियै उणरौ अतम वदळग्यौ । झूठ वोलणी चायौ तौ ई उण सू वोलीजियौ कोनी । सुभट साच ई कैवै तौ कींकर कैवै ?—फुलवाडी
रू भे —सुब्भट, सुभट्ट ।

सुभट्ट—देखो 'सुभट' (रू भे)
उ०—१ कवि तद वोलै 'केहरी', मकवी सूर सुभट्ट । वोध समप्पण घूहडा, कुळ रोहडा मुगट्ट ।—रा रू
उ०—२ मिळ थट्ट वगट्ट सुभट्ट मिळ, दुजडाहत 'पाल' भडै दुजळ ।
—पा प्र

सुभत्ती–वि स्त्री –शुभ, अच्छी ।
उ०—तौ पूठै वरजाग साख जैमाण सुभत्ती । पहचौरी परणता चढै नह कौ चकवती ।—रा रू

सुभदता–स स्त्री –पुष्पदत नामक हाथी की हथिनी । (पौराणिक)

सुभदरसण, सुभदरसन–वि [स शुभ-दर्शन] १ जिसके दर्शन से कोई शुभ या मङ्गलकारी काम होता हो ।
२ सुन्दर, खूबसूरत ।

सुभद्र–स पु [स] १ कुशल-क्षेम, खुशहाली । (अ मा)
२ विष्णु का एक नाम ।
वि –१ भाग्यवान, भाग्यशाली ।
२ अत्यन्त प्रसन्न, खुश ।

सुभद्रा, सुभद्रिका – स स्त्री [स] १ श्रीकृष्ण की बहन व अर्जुन की पत्नी ।
२ दुर्गा का एक नाम ।
रू भे —सभद्रा ।

सुभद्रेस–स पु. [स सुभद्रेश] सुभद्रा का पति अर्जुन ।
(अ मा, ह ना. मा.)

सुभनजर–स स्त्री –शुभ दृष्टि, कृपा दृष्टि ।
रू भे —सुबनजर ।

सुभनामा–स स्त्री [स शुभनामा] १ शुक्ल पक्ष की पञ्चमी ।
२ दशमी या पूर्णिमा तिथि ।

सुभप्रद – वि [स शुभप्रद] शुभ या मङ्गल करने वाला, शुभकारी, मङ्गलकारी ।

सुभम–स पु [स शुभ] १ फूल, पुष्प । (अ.मा)
२ जल, पानी ।

सुभमोहरत, सुभमौरत–स पु [स शुभ-मुहूर्त्त] १ शुभ घडी, शुभ लग्न ।
उ०—व्याव रै खरचा रौ सगळौ हिसाव सभळाय म्हनै तीज रै सै दिन दिसावर विणज सारू सिधावणौ है । ऐडौ सुभ-मौरत धकला सात वरसा मै ई कोनी ।—फुलवाडी

सुभयाणी—देखो 'सुभियाण' (रू भे)

के लिए बीस वार पृथ्वी को ब्राह्मणो से शून्य किया ।

(जैन हरिवश)

सुभ्भ—१ देखो 'सुभ्र' (रू भे)

२ देखो 'सुभ' (रू भे)

सुभ्भागियौ–वि –सौभाग्यशाली, भाग्यशाली ।

उ०—सपना तू **सुभ्भागियौ**, उत्तम थारी जात । सौ कोसा साजन वसै, आगा मिळावै रात ।—अग्यात

सुभ्यागत–वि –सौभाग्यशाली, भाग्यवान ।

उ० —सवद सतगुर तणा स्रवणा साभळी, पाल्य क्रिया दया आणि प्रतीति । माल मा माल **सुभ्यागता** आपणा, प्यारौ सोय खरचियै विसन प्रतीति ।—जाभौ

रू भे —सुभीयागत ।

सुभ्र–वि [स. शुभ्र] १ श्वेत, सफेद । (अ मा, ना मा)

२ उज्ज्वल, साफ, शुभ्र । (अ मा)

उ०—सीतावर जसधर सुमति सदन **सुभ्र**, कळुख सघन वन दहन करी ।—र ज प्र

३ चमकीला, कान्तीमान, द्युतिमान, आभा-युक्त ।

४ स्वच्छ, निर्मल, पवित्र ।

स पु –१ चन्दन ।

२ सफेद रग ।

३ चाँदी, रजत ।

४ सेधा नमक ।

५ अभ्रक ।

६ तूतिया ।

रू भे —सुब्भ, सुभ्भ, सुभ्रु, सुभ्रू ।

सुभ्रकर, सुभ्रकरण, सुभ्रकिरण–स पु [स शुभ्र-कर, किरण] चन्द्रमा, शशि । (अ मा, ना मा, ह ना मा)

सुभ्रतटी–स पु –क्षीरसागर ।

उ० —जटी जोग पाखारा धावा **सुभ्रतटी** जेम, गैणवटी तावा ऊच सभावा गोविंद । चीलार पुरेंद्र चावा चद्र ज्यू नखत्र चावा, नरा लोक दावा सरै 'किसनेसनद' ।—हुकमीचद खिडियौ

सुभ्रद्युति–स सु [स शुभ्र-द्युति] इन्द्र का हाथी । (ना मा)

सुभ्रम–स पु –पुत्र, बेटा ।

उ०—१ स्रवण स्रवण कुडळ सारीखा, आख आख प्रत अजन एम । **सुभ्रम** 'सूर' तुहाळी समवड, जुडै नही नक वेसर जेम ।

—साइयौ झूलौ

उ०—२ वाणा पत लखण काय अजण वाणपत, अमर दस लेवण कम सगार । मामौ भाज 'हमाऊ' **सुभ्रम**, अकबर साह कसौ अवतार ।—दुरसौ आढौ

क्रि वि –जैसा ।

सुभ्रा–स स्त्री. [स शुभ्रा] १ गङ्गा, सुरसरि ।

२ वश-लोचन ।

३ स्फटिक, फिटकरी ।

सुभ्रि–स.पु [स शुभ्रि] ब्रह्मा, विरञ्चि ।

सुभ्रु, सुभ्रू—देखो 'सुभ्र' (रू भे) (ह ना.मा.)

सुमगळ–स पु [स. सुमगल] कुशल-क्षेम, खुशहाली, खुशी ।

वि –१ अत्यन्त शुभ ।

२ कल्याणकारी ।

उ०—सदा **सुमंगळ** हरण सकल भ्रम, ब्रह्मानद विराजै । जन हरिराम सुरति कीया वासा, अधर महल कै छाजै ।

—अनुभववाणी

सुमगळा–स स्त्री [स. सुमगला] १ स्कन्द की एक मातृका ।

२ एक अप्सरा का नाम ।

सुमगळी–स स्त्री [स सुमगल] विवाह मे सप्तपदी पूजा के बाद पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा ।

सुमत–स.पु [स. सु-मित्र] १ सूर्य, भानु, रवि । (अ मा)

२ देखो 'सुमत्र' (रू भे)

वि –अत्यन्त बुद्धिमान ।

सुमत्र–स पु [स] राजा दशरथ का मन्त्री सुमत ।

रू भे —सुमत ।

सुमत्रक–स पु [स] कल्कि का बडा भाई ।

सुमत्रसुत [स सुमित्रासुत] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण व शत्रुघ्न ।

(अ.मा)

सुमदर—देखो 'समुद्र' (रू भे)

सुम–स पु [फा] १ घोडे, गधे आदि पशुओ के पैरो के बिना फटे हुए खुर, टाप (पोड) ।

[स सुम, सुम] २ सुमन, पुष्प, फूल ।

(डि को, ना मा, ह ना मा)

उ०—कमनैत तीरन तानिकै पखरैत वेधत पानिकै, बुध तनय हित जय प्रणय नय वय छपय रन **सुम** अलय अतिसय विसय जय भुव वलभ विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नय निलय अतिरय अजय खयकर अखय जय अय अभय सय पय हृदय अपचय कटय भट समय निचय हय गय मार हीन सुमार ।

—व भा.

३ चन्द्रमा ।

४ कपूर ।

५ आकाश ।

६ देवता ।

७ पण्डित ।

८ देखो 'सूम' (रू भे)

९ देखो 'सून्य' (रू भे)

रू भे —सूम ।

सुभाव—देखो 'स्वभाव' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ इमडी अधको बोलणौ भलो नही थो पण हेक था विहुणी नही छै, मारवाड मैं घणा छै पण थारो श्रो ही जै **सुभाव** छै।
—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ उद्दम री आसा करै, मद्दे नही घणराव। घात करै गैवर घडा, सीहा जात **सुभाव**।—वा दा

उ०—३ सूळी दार **सुभाव**, त्रिसूळ दार तैयारी। मरज दार होय माग, आणी कहु दार उधारी।—ऊ का

उ०—४ मेठ रै वेटा री वोली-चाली अर उणरै **सुभाव** री चाइजती सोय करनै वो तो दूजै मारग टळग्यौ।—फुलवाडी

सुभावत—वि—प्यारा लगने वाला, मनचाहा, सुहावना।

उ०—वखतो लडण खळा रम वायौ, अथपति निजर **सुभावत** आयो। 'अमर' तणै जामळ वळ ऐसो, जोडै भीम अरजण जैसो।
। रू

सुभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू भे)

उ०—झवैरी वजार री भीड लिछमी री रेळ-पेळ मैं आपरी **सुभाविक** गति सू चालती री ।—अमरचूनडी

सुभासण—स पु [स सु-भाषण] १ सुन्दर भाषण, कर्णप्रिय भाषण।

[स शुभ+आसन] २ सुन्दर आसन।

सुभासित—वि [स सुभाषित] जो सुन्दर ढग से या अच्छी तरह कहा गया हो।

सुभिक्ष, सुभिख—स पु [स सुभिक्ष] वह समय जब अन्न की पैदावार खूब हुई हो और अन्य फसले भी अच्छी हुई हो, दुर्भिक्ष का विपरीत, सुकाल।

उ०—न पडइ दुरभिक्ष दुकाल कदा, सुभ द्रिस्टि **सुभिक्ष** सुगाल सदा। ततखिन तुम्है असुभ करम तोडउ, नितनाम जपउ श्री नाकउडउ।—म कु

सुभियाण, सुभियान—वि [स शुभ+रा प्र. याण] १ सर्वोत्तम श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—१ धुर मात्रा तेवीस धर, वाकी वीस वखाण। मुहरा मम च्यार मिळै, सावझडो **सुभियाण**।—डिं को

उ०—२ वोह दिन हुवा पौढिया, न जगै निरवाण। चिंता नही लिगार मन, साहिव **सुभियाण**।—गज-उद्धार

२ प्रमुख, मुख्य, खास।

उ०—गुणा भरपूर परसिध रण गिरणीजै, तेज दरियाव घणै वधै तुड-ताण। वेस वळवान कविराव विण कुण वियो, अडर 'चादावता' वणै **सुभियाण**।—रुघनाथसिंह चादावत री गीत

३ योद्धा।

उ०—१ चळवळीया रावत चगा, अळवळिया **सुभियाण**। झळ-हळीया सावळ भूजा, कळहळिया केकाण।—पना

उ०—२ सत्रादिम वीरमदे **सुभियाण**, कमधज ढीलवीया केकाण।
—गो रू

४ शुभ, माङ्गलिक।

रू भे—सुवियाण, सुवियाणी, सुभीयाण, सुभीयाणी, सुभीयान।

सुभीतौ—स पु—आराम, सुभीता, आसानी, सुविधा।

उ०—१ थै मत चालो काका! चालता तो रास्तो ढूढण मैं **सुभीतौ** रैवतो। थारी जिसी निसाणी भी म्हारी थोडी ईज है?
—तिरसकू

उ०—२ मैनेजर आपरी वोली माय घणी पीड भर'र वोल्यो—कठै तू है पवन, कितणी करडी हालता माय पढ रयो है अर कठै म्हारा वेटी-वेटा है! सब तरिया री **सुभीतौ** होता थका हायर-सैकडरी भी पास कोनी कर सक्या।—तिरसकू

सुभीमा—स स्त्री [स] श्रीकृष्ण की एक पत्नी।

सुभीयाण, सुभीयाणी, सुभीयान—देखो 'सुभियाण' (रू भे.)

उ०—१ तू सब बीज अबीज साई **सुभीयाणी**।
—केसोदास गाडण

उ०—२ उण समै ईडर मैं राव रायभाणजी राज्य करै। वडा **सुभीयान**। परखज प्रमाण। आचार री करण।—पना

सुभीयागत—देखो 'सुभ्यागत' (रू भे)

उ०—जो पुन अठसठ जी भाई तीरथो, गुर **सुभीयागत** म्हारो। देह दियावो जी भाई मोमिणो, देत न करो उधारो।—वि स.सा

सुभूखण, सुभूसण—स पु [स. सु-भूषण] सुन्दर आभूषण, अच्छे अलङ्कार।

वि—अच्छे आभूषणो से अलकृत।

सुभूसित—वि [स सु-भूषित] १ अच्छे अलकारो से अलकृत।

२ सुसज्जित।

सुभेद—वि—रहस्य जानने वाला, भेदिया।

सुभेय—स पु—चम्पा का वृक्ष। (अ मा)

सुभेवौ—वि—रहस्यपूर्ण?

उ०—जडकू सेल जैतमभ जेहै, अमि असवार कहे चित्र एहै। 'भूप' कहे सुत 'देव' **सुभेवौ**, काढू देव दाणवा केवो।—सू प्र.

सुभै—वि—सुन्दर।

उ०—वाणी सा थिर हा जुगळ चरण, कुचभाव उठै वैठै थिरकै। कल्पना करा मैं कमळ चारु, आ कविता ज्यू साकार **सुभै**।
—सकुतला

सुभोम, सुभोमि, सुभौम—स स्त्री [स सु-भूमि] १ अच्छी भूमि, उपजाऊ भूमि।

उ०—सगति करीयै साधकी, हरि सु धरीयै हेत। हरीया खाली ना रमै, वीज **सुभोमि** खेत।—अनुभववाणी

स पु—२ कार्त्तवीर्य्य का पुत्र व जैनियो का एक चक्रवर्ती राजा जिसने वडे होने पर परशुराम से अपने पिता के वध का वदला लेने

३ धतुरा।

[स सुमनस्] ४ देवता। (अ मा)

उ०—१ मनुष्य नमैं भूपत पत सुमना, **सुमन** नमैं मघवा ससमाथ। मघवा नमैं अनाद महेसुर, नमैं महेस तनैं रघुनाथ।—र रू.

उ०—२ मौड कुळमीता जुध अरिजीता, लख जस लीता अवन अखै। अत दाम उधारै सरण-सधारै, रामण मारै **सुमन** सखै।

—र.ज प्र.

५ पण्डित या विद्वान् व्यक्ति।

६ मित्र, दोस्त। (डि को)

[स शमन] ७ यमराज। (ना.मा)

८ एक दानव।

वि [स सुमनस्] १ दयालु, कृपालु।

२ अच्छे मन वाला, सहृदय, भावुक।

उ०—आपी खबर अजीत नू, जासूसा जिणवार। सूरातन रत्ता **सुमन**, आया जवन अपार।—रा.रू.

[स. सुमन] ३ सुन्दर, खूबसूरत।

४ देखो 'समन' (रू भे)

रू भे—समण, सुमन्न।

सुमनचाप-स पु [स] १ फूलो का धनुष।

२ उक्त धनुष को धारण करने वाला, कामदेव।

सुमनस-स पु [स सुमनस्] १ गेहूँ।

२ नीम का पेड।

३ देवता। (डि को, ना मा, ह ना मा)

उ०—सेवै पुरुख सुपह पह **सुमनस**, सुमनस सेवै सुरप सुवेस।

—र.रू.

४ पण्डितजन।

५ कवि।

६ वेदपाठी, ब्रह्मचारी।

७ फूल, पुष्प। (अ मा, डि को, ह ना मा)

उ०—पर भाग रग म्रिदग गूजइ, सत्व ताल विसाल ए। ममकित तत्री तत भणकइ, सुमति **सुमनस** माल ए।—वि कु

८ अच्छा या शुद्ध मन।

सुमनरस-स पु-फूलो का रस, पराग।

सुमनसधुज-स पु [स सुमनस्+ध्वज] कामदेव। (डि को)

सुमना-स.स्त्री [स] १ चमेली, जाती पुष्प।

२ सेवती, शतपत्री।

३ कैकयी का एक नाम।

४ पुष्प, फूल। (ना मा.)

५ मालती, मधुमयी। (अ मा)

वि-प्रसन्न, खुश।

उ०—ताहरा आगै लोक सरव एकठा हुवा छै। वसी गाडा एकठा कर रिणमलजी ढूढाडनू लै हालिया। रजपूत मारा **सुमना** किया। जेठी घोडी सिखरै नू दियो।—नैणसी

सुमनौकस-स पु [स] स्वर्ग, बैकुण्ठ।

सुमन्न—देखो 'सुमन' (रू भे.)

उ०—रिस्ट रतन सगवीसै सुनिपदै, सतसठि एकावन्न। मित्तरनै पचास उलास सू, मुगता सेस **सुमन्न**।—श्रीपालरास

सुमफटी-स पु.-घोडो का एक रोग जो उनके खुर के ऊपरी भाग से तलुवे तक होता है। (शा हो)

सुमरण—देखो 'स्मरण' (रू भे)

उ०—१ दिन दिन प्रीत सवाई दूणी, सुमरण आठौं याम। मीरा कै प्रभू गिरधर नागर, चरण कमळ बिसराम।—मीरा

उ०—२ राम नाम को चुडलो पहरूँ, **सुमरण** काजळ सार। माळा ल्यौ हरिनाव की, उतरि चलौ पैली पार।—मीरा

सुमरणी-स स्त्री-१ नाम जपने की माला, इसमें प्राय १०८ मणियें होते हैं।

उ०—१ मैं जपती नाव मेरै सायब का, आण मिळी नदलाला रे। हाथ **सुमरणी** काख कूबडी, ओढ रही मृगछाळा रे।—मीरा

उ०—२ इतरा मैं उण तरवार वाही सो माथै ऊपर पडी। पाघ रा पेच वढ **सुमरणी** जै वाही।—पदमसिघजी री वात

२ सत्ताईस दानो (मणिको) की नाम जपने की छोटी माला।

रू भे—सुमरिणी, सुमरिनी, सुमिरणी।

सुमरणौ, सुमरबौ-क्रि स [स. स्मरणम्] १ ईश्वर या अपने इष्टदेव के नाम का बार-बार उच्चारण करना, नाम जपना, माला जपना, भजन करना।

उ०—मनुआ बावा रै **सुमर** लै सीताराम। वडै वडै भूपति सुलतान, उनकै डेरै भये मैदान। - मीरा

२ किसी कार्य के प्रारम्भ मे या यात्रा के प्रारम्भ मे अपने इष्टदेव का ध्यान करना, याद करना, स्मरण करना।

उ०—१ प्रथम **सुमर** इण विध परमेस्वर, पूरण ब्रह्म प्रताप अपपर।—रा.रू

उ०—२ सो भवानी नै **सुमर**, लै खाडा हाथ मैं अर मामो भाणेज जोधाण रा किला कानी रवानै व्हिया।—अमरचूनडी

उ०—३ सम्त्र बाथ हरि, **सुमर** देह धर प्रीत अदावै। समै तेण साहस, जेण मापियौ न जावै।—रा रू

३ पूर्व की कोई बात या घटना याद करना।

उ०—अकथ कहाणी प्रेम की, किण सू कही न जाइ। गूगा का सपना भया, **सुमर सुमर** पिछताइ।—ढो मा

४ भूली हुई बात को याद करने का प्रयास करना, सोचना, विचारना।

सुमरणहार, हारौ (हारी), सुमरणियौ—वि०।

सुमरिओडौ, सुमरियोडौ, सुमरयोडौ—भू०का०कृ०।

सुमगारो – स. पु – वह घोडा जिसकी एक आँख की पुतली बेकार हो गई हो।

सुमध्य, सुमज्झ–क्रि वि.–मध्य में, मध्य।

उ०—अवखी सकळ अजीत सू, मोती बाग सुमज्झ। देखेवा दरगाह जरा, साह दरम्मरा कज्ज।—रा रू

सुमरा – स पु – १ छप्पय छन्द का ४८वां भेद जिसमें २३ गुरु, १०६ लघु से १२९ वर्ण तथा १५२ मात्राएँ होती हैं। (र.ज प्र)

२ कौस्तुभमरिग।

उ०—विमळानन विबुधेस विहारी, मरा चक्र धारी सुमरा। भव तारण भूधर भय भजरा, हिरण्यगरभ त्रय ताप हरा।—र ज प्र.

३ देखो 'सुमन' (रू भे.)

उ०—वरण रभ क्रत सुमरा वरखरा, मिटरा दुख ग्रह वधरा मोखरा।—सू प्र

सुमत–स स्त्री –१ इन्द्र की सभा। (अ मा)

२ देखो 'सुमति'।

उ०—१ सरन तन सहज दन मुकत दायक सुमत, गज गमरगी जानकी भाम गुरा ग्राम है।—र ज प्र

उ०—२ राज भवन दसमै सन राजै, छित इक छत्र करै मुख छाजै। आव सुमत खग सकत अमामी, मनि गुरा हुवै जगत चौ सामी।—रा रू

उ०—३ जाळधर 'अगजीत' रै, पुत्र 'अभौ' अवतार। दुरमत व्यापै दुरजरा, सयरा सुमत अपार।—रा रू

उ०—४ ओढन लज्जा चीर धीरज कौ घाघरौ, छिमता काकरा हात सुमत की मूदरी।—मीरा

सुमतरास–स पु –घोडे के नाखून या सूम काटने का औजार।

सुमतिजय–स पु [स] विष्णु।

सुमति–वि [स] श्रेष्ठ बुद्धि वाला, बुद्धिमान।

उ०—स्रीपति कुरा सुमति तूझ गुरा जु तवति। तारू कवरा जु समुद्र तरै।—वेलि

स स्त्री –१ श्रेष्ठ मति, अच्छी बुद्धि, सुबुद्धि, सद्बुद्धि।

उ०—१ लाभ नही अहलोक, नही परलोकह निरभय। सुमति नही ज्या स्यान, खात ज्या नही पाप खय।—र ज प्र.

उ०—२ विमळती वेद रघु वचती, आरादति हरत्ती कुमति। 'अभपती' गुरा गावरा उकति, सरस्वती दीजै सुमति।

—सू प्र.

उ०—३ मन अडोळ दृढ बोल, मेर सम तोल अमापै। अत सम्यान ऊधरा, सुमति ऊवरा समापै।—रा.रू

२ अच्छी भावना, सद्भावना।

उ०—१ भूठा जव ही जारगीयै, करै साच कु भूठ। जन हरीया उन जीव कै, सुमति न हिरदै ऊठ।—अनुभववागी

उ०—२ माहो माहि वाता कर हेतु युक्ति सीग सुमति आछी तरै दरसन देई पाछा कटालीयै पधार जाता।—भि द्र.

३ कृपालुता, दयालुता, सहृदयता।

उ०—१ पापोघ हरत अत जन चितवत, तिन हरख करत दुख हरत हरी। सीतावर जमवर सुमति सदन सुभ्र, कळुस मथन वन दहन करी।—र ज.प्र

उ०—२ विखै विकारी जीव कुं, सुमति न उपजै काय। हरीया मिनख मलीन कै, भली न आवै दाय।—अनुभववागी

४ दया, आशीर्वाद।

उ०—पलक एक हुई सुमति मति आई, मती कियो परिग नात न वाही। मनमा केरी वात बीवासै, वाद रूप होय बेठी पासै।

—वि म मा

५ देवताओ का अनुग्रह।

६ प्रार्थना।

७ अभिलाषा, इच्छा।

८ मैत्री, दोस्ती।

९ सगर की भार्या जो ६० हजार पुत्रो की माता थी।

१० कल्कि की माता और विष्णुयश की पत्नी।

११ देखो 'सुमतिजिन'।

रू भे.—सुमत, सुमती, सुमत्ति, सुमत्ती।

सुमतिजिन, सुमतिनाथ – स पु. – १ जैनियो के वर्तमानकाल के पाँचवें तीर्थङ्कर का नाम। (स कु)

२ जैनियो के भूतकाल के तेहरवे तीर्थङ्कर का नाम। (स कु)

रू भे —सुमत्ति।

सुमती, सुमत्ति, सुमत्ती—१ देखो 'सुमति (रू भे)

उ० —१ गरापति मोहि सुमत्ति दै, सुभ अन्यर ततसार। सौ मत सारू वरगावू, हरि गुरा ग्रथ अपार।—गज-उद्धार

उ०—२ जिता हितू जवनेसरा, गुज गिरिग खग सुमत्ति। मेर तरगी दुख सभरै, एता सू असपत्ति।—रा रू

उ०—३ कहै ताम कमधज्ज, सुरगौ साहिब छत्रपत्ती। विख विचार धारियो, सको तिरा आर सुमत्ती।—रा.रू

२ देखो 'सुमतिजिन'।

सुमत्तो–स पु –इरादा, नेक इरादा, इच्छा।

उ०—करै कूच इतकाद, साह दरगाह सपत्तो। गुदरायो घर गुभ, महासुख सुभ सुमत्तो।—रा रू.

सुमन–स पु [स सुमन] १ पुष्प, फूल। (अ मा, ना मा)

उ०—१ असुर प्रळय करि जय करि आई, अदारकत व्रिद विरदाई। वरसिय सुमन घुरिय नवबत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती।

—मे म

उ०—२ सुर करै हरख वरखै सुमन, अमर तरगि घिन उच्चरै। नर भुवरा हूत सतिया अपति, सुरपुर मारग सचरै।—रा रू.

२ गेहूँ। (डि को)

सुमित्त—देखो 'सुमित्र' (रू भे)
सुमिति—१ देखो 'सुमतिमित'।
२ देखो 'सुमति' (रू भे)
सुमित्र—स पु [स] १ श्रेष्ठ व अच्छा मित्र।
उ०—चरित्र में विचित्र रहू, पवित्र में पवित्र जै। अमित्र कै अमित्र रहू, सुमित्र कै सुमित्र जै।—ऊ का
२ श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
३ अभिमन्यु के सारथि का नाम।
४ इक्ष्वाकुवंशीय राजा सुरथ का पुत्र।
उ०—सुरथ सुतन सुमित्र सम्पति, तपसी हुवौ राज तजि जगति।—सू प्र
५ विक्रमादित्य के समसामयिक सौराष्ट्र के अन्तिम राजा का नाम। (कर्नल टॉड)
६ देखो 'सुमित्रा' (रू भे)
उ०—उदर सुमित्र लछण नीसरा अरि, परै सेस अवतार धुरधर।—र रू
रू भे—सुमित, सुमित्र, सुमित्त।
सुमित्रा—स स्त्री [स] १ मगध देशाधिपति सूर राजा की कन्या, जो इक्ष्वाकुवंशीय राजा दशरथ की तीन पत्नियों में से एक थी। लक्ष्मण और शत्रुघ्न इसके पुत्र थे।
उ०—निज [illegible] सुमित्रा नाम, वरण्याम तरण अति हेत धाम।—सू प्र
२ श्रीकृष्ण की एक रानी।
३ मार्कण्डेय ऋषि की माता।
रू भे—सुमित्ता, [illegible]।
सुमित्रानंदन—स पु [स] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न।
सुमित्रासुत, सुमित्रासुतन—स पु [स सुमित्रासुत] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न।
सुमियाणी—स पु—मारवाड़ राज्यान्तर्गत सिवाना नामक कस्बे का गढ या किला।
सुमिरण—देखो 'स्मरण' (रू भे)
उ०—१ राजा विक्रमादित्य आसापुरा वैताल रौ सुमिरण कियौ।
—पंचदंडी री वारता
उ०—२ [illegible] जिण जाणिया मरणैं जोर [illegible]। [illegible] सुमिरण [illegible], जिण जाणिया चारों देखि [illegible]।—[illegible]
उ०—३ [illegible] सुमिरण [illegible], [illegible] सुमिरण [illegible]। [illegible]।—दादूवाणी
सुमिरणी—देखो 'स्मरणी' (रू भे)
उ०—[illegible] सुमिरणी [illegible]।
—[illegible] री वात

सुमिरणौ, सुमिरबौ—देखो 'समरणौ, समरबौ' (रू भे)
उ०—१ रसणा रटै तौ राम रट, आमय लगै न अंग। जै सुख चाहै जीव रौ, सुमिर सुमिर स्रीरंग।—ह र
उ०—२ अपनी जाणै आप गति, और न जाणै कोइ। सुमिर सुमिर रस पीजियै, दादू आनंद होइ।—दादूवाणी
सुमिरन—देखो 'स्मरण' (रू भे)
उ०—थोडा धीरज रक्खो भगत, ससार असार है अर सुख-दुख का जोडा है। साधु मत की मोहब्बत तकदीर वालै कौ मिळती है। सौ मालिक का सुमिरन करौ और प्रेम में सीधै खडे रहौ वेटा।
—अमरचूनडी
सुमुख—स पु [स सुमुख] १ गणेश, गजानन।
उ०—सुकवि सुमुख पग नाय सिर, हिय थिर आण हुलास। कुकवि वतीनी ग्रथ कवि, दाखै बाकीदास।—बा दा
२ शिव, महादेव।
३ गरुड।
४ पंडितजन।
[स सुमुख] ५ नाखून की खरोंच।
वि [स सुमुख] (स्त्री सुमुखा, सुमुखी) १ मनोहर, सुदर।
२ आनन्दकर, सुखप्रद।
३ आतुर, उत्सुक।
४ सुंदर मुख वाला।
सुमुखा, सुमुखी—वि स्त्री. [स] सुन्दर मुख वाली, सुन्दरी।
स स्त्री—१ सुन्दर स्त्री।
२ एक अप्सरा।
३ सगीत में एक मूर्छना।
सुमुखौ—वि. [स. सुमुख] (स्त्री सुमुखी) सुन्दर मुख वाला।
स पु—आइना, काँच, शीशा।
सुमेधा—स पु [स. सुमेधस्] १ पितरों का एक गण या भेद।
स स्त्री—२ मालकगनी।
सुमेर, सुमेरगिर, सुमेरु, सुमेरू—स पु [स सुमेरु] १ पुराणानुसार एक पर्वत जो स्वर्ण का कहा गया है। (अ मा, ना मा)
उ०—१ देखौ अडब पसाव दत, बीर गोड वछराज। गढ अजमेर सुमेर सू, ऊचौ दीठौ आज।—बा दा
उ०—२ हिंदू मुसलमान सलाम कर ठाढे, एक तें एक सुमेर मैं गाढे।—रा.रू.
उ०—३ देवी रूप रेवत सारग राजै, देवी विमाण पालखी पीठ आजै। देवी प्रेत आरूढ पद्म, देवी सागर सुमेरु कूट सद्म।—देवि
पर्याय—अचल, आरकगिर, कचनगिर, काचनअचळ, गरमेर, गिरपति, देवगर, पतरखी, मारुह, रतनसान, सवळ, सुधानिव, सुरगिर, हेमगिर।
२ माला के सिरे पर रहने वाला बडा मनका।

सुमरीजणौ, सुमरीजबौ—कर्म वा० ।
सुमिरणौ, सुमिरबौ—रू०भे० ।
सुमरन—देखो 'स्मरण' (रू.भे)
उ०—दोऊ दयत महादुख दीनौ, कमळयोनि तव सुमरन कीन्हौ ।
—मे म
सुमरिणी, सुमरिनी—देखो 'सुमरणी' (रू भे)
उ०—ग्रनत धणी कै मरणं ग्राई, हाथ सुमरिणी धारी । जोग लियौ जव वाद तजी री, गुर पाया निज भारी ।—मीरा
सुमरियोडौ—भू का कृ—१ ईश्वर या अपने ईष्टदेव के नाम का वार-वार उच्चारण किया हुआ, नाम जपा हुआ, माला जपा हुआ, भजन किया हुआ । २ किसी कार्य या यात्रा के प्रारम्भ मे अपने ईष्टदेव का ध्यान किया हुआ, याद किया हुआ, स्मरण किया हुआ । ३ पूर्व की कोई बात या घटना को याद किया हुआ । ४ भूली हुई बात को याद करने का प्रयास किया हुआ, सोचा हुआ, विचारा हुआ ।
(स्त्री सुमरियोडी)
सुमसायक—स.पु. [स सुमन+सायक] रति-पति, कामदेव । (डि को)
सुमसुखडौ—स पु—१ वह घोडा जिसके सुम सूखकर सिकुड गये हो । २ उक्त प्रकार का घोडो का एक रोग । (शा हो)
सुमाण, सुमाणस—स पु [स. सु+मानस] भला एव सज्जन पुरुष ।
उ०—१ गलि ग्रमलदार लिरणू गिरणै, मरणू डूबि सुमाणसा । खळ भाति सिरडि मन मै खिटै, सिटै न टिरडि कुमाणसा ।
—ऊ का
उ०—२ राजा मित्र म जाणै रग, सुमाणस री करिजै सग । काया रखत तपस्या कीजै, दान वलै धन सार दीजै ।—ध व ग
सुमानी—वि [स सुमानिन्] स्वाभिमानी ।
सुमाग—देखो 'सुमारग' (रू भे)
उ०—चित सुमाग खरचियौ, चित्त लीणै हर पाए । जिमौ वेद वाचियौ, तिमी परसिद्धी पाए ।—नैणसी
सुमात—स.स्त्री—श्रेष्ठ माता, पार्वती । (अ मा.)
सुमात्रा—स पु—वोर्नियो के पश्चिम और जावा के उत्तर-पश्चिम मे स्थित इण्डोनेशिया द्वीप-समूहो मे से एक द्वीप ।
सुमाद्रेय—स.पु. [स माद्रेय] पाण्डु-पुत्र नकुल व सहदेव का एक नामातर जो उनकी माता माद्री के नाम के आधार पर हुआ ।
सुमार—स पु [फा शुमार] १ गणना, गिनती, सख्या ।
उ०—१ करै सुमार भलाई कितरा, जेट तुमार जमाडी । और खुमार चढी नही ग्रतर, एक दुमार ग्रगाडी ।—ऊ का
उ०—२ खिजायौ त्रिनेण प्रळै काळ री रिसा घू खगै, पाखियौ नागेंद्र फतै पाव रो प्रभाव । लेवाळ ग्रत रो गजा धाव री सुमार लागै, मेल मार राव रो कृतात रो सुभाव ।
—राजा बळूतसिंघ रै भाला री गीत
२ लेखा-जोखा, हिसाब-किताब, नाप-तौल ।
३ सीमा, हद, पार, पारावार ।
उ०—१ माह रै धन धणी । विणज री सुमार नही । जहाज हालै ।—पलक दरियाव री वात
उ०—२ जैपुर तै वगरू कै खेत खूर ग्राया, कूरम की सेनि का सुमार हू न पाया ।—सि व.
४ अदद, नग ।
५ चोट, प्रहार ।
उ०—केहका रै सुमार लागी छै । जिका मै वोलण री तौ वकाय रही नही पण मूछा हाथ फेर फेर साथिया नु कोट मै पडण री सैन करै छै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
५ नाश, सहार, ध्वस ।
सुमारग—स पु [स सु-मार्ग] श्रेष्ठ व उत्तम मार्ग, सन्मार्ग ।
उ०—कुण ग्रमली कुण कमसली, ताम पटतर एह । कमसल चलै कुमारगी, ग्रमलि सुमारग लेह ।—ग्रनुभववाणी
रू भे —सुमाग ।
सुमारणौ, सुमारबौ—क्रि स—१ गणना या गिनती करना, गिनना ।
२ लेखा-जोखा करना, हिसाब करना ।
३ वर्गीकरण करना, श्रेणी बनाना ।
४ सीमा या हद निर्धारित करना ।
५ चोट या प्रहार करना ।
सुमारणहार, हारौ (हारी), सुमारणियौ—वि० ।
सुमारियोडौ—भू०का०कृ० ।
सुमारीजणौ, सुमारीजबौ—कर्म वा० ।
सुमाळी, सुमाली—स पु [स अशुमाली] १ सूर्य, रवि ।
(ग्र मा, ना मा)
[स सुमाली] २ एक राक्षस जो सुकेश राक्षस का पुत्र तथा रावण का नाना था ।
३ एक वानर का नाम ।
सुमित, सुमित्र—देखो 'सुमित्र' (रू भे)
सुमिट्ठउ—वि [स सुमिष्टम्] मधुर ।
उ०—साह ग्रालिम एक वयण, विप्र उच्चरइ सुमिट्ठउ । लोयण तै हेतम कीय, जेणि परि रमणि सुह दिट्ठउ ।—प च चौ
सुमिणइ, सुमिणौ—स पु [स स्वप्न, प्रा सुमिण, सुविण] स्वप्न, सपना ।
उ०—१ रोपीउ पवरणिहि कल्पतरो सुमिणइ कुनिदूयारि, पवरगह नदरणु वजसग्रो भीसुमु भूयरण मभारि ।—मालिभद्र सूरि
उ०—२ धनुतु चडावीउ भूयणि भमउ इच्छा इह मन माहि । वइठउ दीठउ हाथिणीय सुन्दड सुमिणा माहि ।—मालिभद्र सूरि
सुमितरा—देखो 'सुमित्रा' (रू भे)
उ०—सुमितरा, कौसल्या दुरगा, विदुसमा वर केकयी । गौरव गाथा घणा नमूना, मदालसा ग्रर मेत्रयी ।—नारी महिमा

३ शिवजी का नाम।

रू भे –मेर, मेरु, समेर, सूमेर।

सुमोज–स पु.–उत्सर्ग, दान। (डि को)

सुमोद–स पु. [स सु+मोद] हर्ष, प्रसन्नता, खुशी।

सुमौरत–स.पु [स सु+मुहूर्त] श्रेष्ठ व उत्तम मुहूर्त।

उ०—ज्यारा मोवन थाळ भलाई वजिया, 'पातल' जनम पखैत **सुमौरत** सजिया।—किशोरदान बारहट

सुय—देखो 'स्वय' (रू भे)

उ०—**सुय** विष्णु रुत्रवसी राजा, वरण आस्रम ध्रम वाधी पाजा। —वि.स.सा

सुयवर, सुयवर —देखो 'स्वयवर' (रू भे) (डि को)

सुय–स पु [स सूत्र] १ जिनेन्द्र की वाणी या सूत्र।

२ देखो 'स्रुत' (रू भे) (जैन)

सुयकरण–स पु [स श्रुतकरण] व्याकरण, दूसरी कलाओ आदि का ज्ञान रूप, अवस्था विशेष। (जैन)

सुयक्खध, सुयखध–स पु [स श्रुति-स्कद] वेदो का एक विभाग।

उ०—१ **सुयक्खध** अध्ययन उद्देसादिक भला हो लाल,सख्यायइ एक एक प्रत्येकइ गुण निला हो लाल।—वि कु.

उ०—२ एक **सुयखध** इणि अग नउजी वरग छइ आठ अभिराम। आठ उद्देसा छइ वलीजी, सख्याता सहस पद ठाम।—वि कु

सुयगडाग–स पु –'सूत्रकृताङ्ग' नामक सूत्र। (जैन)

उ०—स्री आचाराग पहिलो अग, सहस अढी ए सूत्र सुचग। **सुयगडाग** वीजो स्रीकार (सुविचार) सख्या इकवीसमैं सुविचार। —ध व ग्र

सुयण –देखो 'सैण' (रू भे)

उ०—१ **सुयण** लाखौ मदा सालिम, जगत जाणौ वडी जालिम। लहण भेदा गुणा लाइक, निवड दाता नरा नाइक।—ल पि

उ०—२ सिंध भूभार नरसिंघ रा सीघळी, सूरवट **सुयण** वट भुजै सोहै।—जूझारसिंह राठौड रौ गीत

उ०—३ दैवु न गिणई दैवु, न गिणई पुण्यु नइ पावु। सतापु **सुयण**-ह करई, पुण्यहीन जिम राय रोलई।—सालिभद्र सूरि

सुयस–स पु [स सुयश] कीर्ति, यश, वडाई, तारीफ, सुख्याति।

उ०—नाग देव नर तोहि मनावत, पढि पढि **सुयस** पार नही पावत। गावत निगम अगम तव गत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती।—मे म

सुयसा–स स्त्री [स सुयशा] १ परीक्षित की एक पत्नी।

२ एक अप्सरा।

३ दिवोदास की पत्नी व काशीराज भीमरथ की पुत्र-वधु।

सुयाण—देखो 'सुजाण' (रू भे)

उ०—प्रोहित ताम परिछवैं, सुणि दसरथ **सुयाण**।—रामरासौ

सुयुद्ध–स पु [स] न्याय-सम्मत-युद्ध, धर्म-युद्ध।

सुयोग –स पु [स] १ अच्छा योग, शुभ सयोग, शुभ अवसर या मौका।

२ देखो 'सुयोग्य' (रू भे)

सुयोगता–स.स्त्री [स सु-योग्यता] योग्यता, सुयोग्यता।

उ०—अयोग की **सुयोगता**, दई प्रयोग दी नही। लवार कै पुकार की, लगारसी रली नही।—ऊ का

सुयोग्य–स पु [स] बहुत योग्य, काबिल, लायक।

रू भे —सुजोग, सुयोग।

सुयोधन, सुयोधनि–स पु [स. सुयोधन] दुर्योधन का एक नामान्तर।

उ०—१ एहिज परियई भीरि कजि आया, धनजय अनै **सुयोधन**। —वेलि

उ०—२ मरचौ **सुयोधन** गौ भक भारत, आरय्यवरत्त कौ करगौ आरत।—ऊ का.

उ०—३ एहु तु पुरोचन नामि, पुरोहितु दुरयोधनह। तुम्हि वीनविया सामि, राय **सुयोधनि** पय नमीय।—सालिभद्र सूरि

सुयौ—१ देखो 'सुवौ' (रू भे)

उ०—ढोलइ चलता परिठव्यउ, अगणि सोजा सल्ल। ढोलउ गयउ न वाहुडइ, **सुया** मनावण चल्ल।—ढो मा

२ देखो 'सूवौ' (रू भे)

सुर—१ देखो 'स्वर' (रू भे)

२ देखो 'सुर' (रू भे)

सुरग–स स्त्री [स] १ किसी मकान, किले या गढ के अन्दर से या किसी दीवार के अन्दर से जमीन के नीचे-नीचे बनाया हुआ तग रास्ता जो आपात्-स्थिति मे गुप्त रूप से भाग कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचने के काम आता है, गुप्त मार्ग, चोर-रास्ता।

उ०—मगरिहि खणीय **सुरग** विदुरि दिवारीय दूर लगइ, हु ऊगारउ अग ईंण ऊपाइ पडवह।—सालिभद्र सूरि

२ किले की दीवार को उडाने के लिए बनाया जाने वाला बडा गड्ढा या छेद जिसमे बारूद भर कर पलीता लगाया जाता है।

उ०—१ नीसरणी लागै नही, लागै नही **सुरग**। लड नहिं लीधा जाय औ, दीधौ जाय दुरग।—बा दा

उ०—२ गढ नै घणौ ही खसीया बार दोय **सुरग** लगाई सु दखल गढ नु पोहोतौ, पिण गढ नही आयौ।—नैणसी

३ चोरी करने के लिए मकान की दीवार मे किया जाने वाला बडा छेद, सेंध।

४ खान (पहाड) मे पत्थर निकालने के लिए विस्फोट करने बाबत किया जाने वाला छोटा गड्ढा जिसमे बारूद भर कर धमाका किया जाता है।

उ०—ओदी उधरै सिनख, खोदवै ख्यारा भारी। कोलै कवळी रेत, खाणरी **सुरगा** मारी।—दसदेव

५ पहाड की गुफा, गिरि-कन्दरा।

उ०—१ मनी अमीणा कथ री, पूरी एह प्रतीत। कै जासी सुर अगडै, कै आसी रण जीत।—वा दा.

उ०—२ सिव सभव सिव रूप सुरेपुर, सिव गुण दियण प्रणाम वर्थै सुर।—रा रू

२ ऋषि, मुनि, महात्मा।

३ सूर्य, रवि।

४ आकाश।

५ विद्वद्‌जन, पंडित।

६ हिन्दू, आर्य।

उ०—१ हट छोडी हर मत करौ हूरा, नर हिंदू छै तुरक नही। वामीवध केमरी वागौ, सुर सोहड राठौड सही।

—हठीसिह जोधा री गीत

उ०—२ लडथडै पडै कै घर लडै, एम असुर सुर आथडै।

—सू.प्र

उ०—३ आराव साथ वह सुर असुर, फबै गजा धज फरहरा। आगरा हूत चढियौ 'जसौ', कीधा विकटा लसकरा।—सू प्र

उ०—४ राठौड मौड हिंदुवाण सिरि, महा द्रुग्ग गढ जोधपुर। गजमिघ कुवर अप सूरसिंघ, सहुवै वदै सुर असुर।—गु रू.व

७ परमार राजपूतो की एक शाखा। (वा दा ख्यात)

८ ठगण के प्रथम लघु मात्रा का नाम। (डि को)

९ टगण के चतुर्थ भेद का नाम। (र ज प्र)

१० तेतीम की सख्या। (डि को)

११ राग,धुन।

उ०—गत ग्रत करि मिघू सुर गावै, वयड मूडची भेर वजावै।

—सू प्र

१२ देखो 'स्वर' (रू भे) (डि को, ह ना मा)

उ०—१ हिरण रहै थिर होय, वीणा सुर सू वाकला। जिण कारण मू जोय, पारधिया पानै पडै।—बा दा

उ० - २ गहकै आरगपुर, मारग सुर गावै। वाणिक दीठाई नीठा, वणि आवै।—ऊ का

उ०—३ भू भुहरा सुर कोकला, कठ कपोत ठार। खजन चपळा दगह पग, ए पखी लखण च्यार।—ढो मा

उ०—४ राग-रग हुवै छै। छह राग, तीस रागणी। मूरतवत खडा हुवा छै। सात सुर तीन ग्राम री भेद नणियौ छै।

—रा मा म

सुरअंगना—स स्त्री [स] अप्सरा।

सुरआळ, सुरआळय—स पु [स सुर+आलय] देवताओ का निवास स्थान, स्वर्ग। (अ मा, ना मा)

उ०—चार चौहटा चार दिस, वणिया हाट विसाळ। मणिमउत रचन मई, सबै जिसै सुरआळ।—गज-उद्धार

सुरइद—देखो 'सुरेंद्र' (रू भे)

उ०—वरै रभ वैसि रथा रण विंद, अधौ-अध राज लियै सुरइद।

—सू प्र

सुरईस—देखो 'सुरेस' (रू.भे) (डि.को, ना.डि को)

सुरओक—स.पु [स] स्वर्ग, वैकुण्ठ। (डि को)

सुरकत—स पु. [स. सुरकात] इन्द्र। (डि को)

सुरक—स पु. [स स्वर्ग] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

उ०—सरब लघु नगण आयुस द्रवण सुर सुरक। तात विध सावित्री कनक रग तैण।—र रू

२ घबराने या डरने की क्रिया या भाव, डर, घबराहट।

उ०—१ लोगा रै हीयै अस्टपोर मासी रै घर रौ सोरकौ रैवतौ। मन सुरक सुरक करतौ।—फुलवाडी

उ०—२ अबै चोरी नी करनै इज्जत सू ठायौ अपडला तौ सावळ। जीव अस्टपौर सुरक सुरक करै।—फुलवाडी

३ चिता, फिक्र।

उ०—थू क्यू सुरक-पुरक करै, म्हारी अकल माथै थनै भरोसौ कोनी।—फुलवाडी

४ धडकने या फडकने की क्रिया या भाव।

उ०—बाप री तौ हाड हाड कुळतौ हौ। वौ तौ ऐडौ डरयौ कै काळजौ सुरक-सुरक करण लागौ।—फुलवाडी

५ सुडक-सुडक कर पानी पीने की क्रिया।

६ देखो 'सुरख' (रू भे)

उ०—फजर ऊगा समा गजा नैजा फरक, येळा उड रजी असमान ढकियौ अरक। सुर सब अच्छर वेताळ नारद हरक, सुतन 'अजमल' कठी नयण कीधा सुरक।—मेघराज आढौ

सुरकणौ, सुरकबौ—क्रि अ—१ डरना, घबराना।

२ धडकना, फडकना।

३ चिता होना, सोच करना।

४ सुडक-सुडक कर धीरे-धीरे पीना।

५ ऊपर की ओर हवा के साथ धीरे-धीरे खिचना।

सुरकणहार, हारौ (हारी), सुरकणियौ—वि०।

सुरकिओडौ, सुरकियोडौ, सुरक्योडौ—भू०का०कृ०।

सुरकीजणौ, सुरकीजबौ—भाव वा०।

सुरकन्या—स स्त्री [स] १ देवबाला, देव कन्या।

२ अप्सरा।

सुरकरिप्रसठ—स पु [स सुरकरिप्रष्ठ] सूर्य, भानु। (अ मा)

सुरकरी—स पु. [स सुरकरिन्] १ इन्द्र का हाथी।

२ दिग्गज।

सुरकली—स स्त्री—एक रागिनी का नाम। (सगीत)

सुरकानन—स पु [स सुर+कानन] देवताओ का वन, नन्दन वन।

सुरकामणी, सुरकामिणी—स स्त्री [स सुर+कामिनी] अप्सरा।

उ०—सेवी मुहर पूठि सुर-कामिणी, जडाधार पासै व्योम

उ०—२ सदा सुरंगी कामणी, बरसा सदा जवार। जुग जुगतर जावता, कुवरा वरम अठार।—वि न मा.

४ आरामदायक, सुखदायक।

उ०—उमडो वधावो म्हारी मेजा मैं राखा, मेज सुरंगी ढोल्यो नित नवो।—लो गी

५ अच्छे रंग वाली, सुन्दर रंग की।

उ०—१ पेच सुरंगी पाग रा, ढाकै मत धर ढाल। काछी चढ आछी कहू, हजा भीजण हाल।—बा दा

उ०—२ हालता हालता मारग मैं मोची री हाट आई। चौवा री सुरंगी मोचडिया देखी तौ बादळ रौ मन डुळियो।—फुलवाडी

६ देखो 'सुरगौ' (रू भे)

सुरगीयो—देखो 'सुरगौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—भूलू नह कुळवाट सुभाए, अमी सुरगीये खग आए।

—सू प्र.

सुरगौ-वि [स सुरग] (स्त्री सुरगी) १ सुन्दर, मनोहर।

उ०—१ छत्रा रूप छवि परख, सरब चख वदन सुरगै। यो लगै रमरूप, आखिर फिर कागद अगै।—रा रू

उ०—२ टूच अर पजा मैं रग भर-भरनै चित्राम माडणा चालू कर्‍या, सो छात, आगणो, छाजा, मोडा अर गुमटिया मायै सगळै सुरगा माडणा माड दिया।—फुलवाडी

उ०—३ उर धण हुळसण हरख मन, रीझण खीजण रूप। लाज सुरगा लोयणा, राजै अग अनूप।—अग्यात

२ आनन्दमय, सुखमय।

उ०—१ नरपति आयो 'जैनगर', निज उर हरख निवास। सुपह सुरगौ मामरै, लगो गावण मास।—रा रू

उ०—२ वा दुखिया भर-भर नै रोवण लागी। आख्या रै डोळा मैं कुरचोडा सुरगा सपना खारै पाणी बणनै ढळग्या। पण मामी री आख्या मैं बग्योडा मानळ सपना हाल मगसा नी पड्या।

—फुलवाडी

३ उत्साह, जोश व उमङ्ग से पूर्ण, उत्साह-युक्त।

उ०—धन्य कह्यो सब ऊमरा, साहम देख प्रचड। हुवा सुरगा वाग मुख, भुज लागा ब्रहमड।—रा रू

४ रक्ताभ, लाल।

उ०—१ वसुधा अोण सुरगी तुरिया, धमळ विरधुरी रैणा। आदू चपळ सहावो हुइ रत्ती हुइ अगारतह।—गु रू व

उ०—२ कळ रोद्रा वळ दाख कमधा, जीधा खग सुरगा कर।

—रा रू

उ०—३ भिडै रत्थ नाचा नगा भाजि भागै, सुरगौ कियौ राण रो गात सागै।—सू प्र

५ अच्छे रगो का सुन्दर रगो का।

उ०—१ पकवानै पानै फळै सुपुहपै, सुरगै वसत्रै दरब सव।

पूजियै कमटि भगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रब।

—वेलि

उ०—२ नाभी गुलाब रा फूल ज्यु दरसी, रति जाणै अनग री निजर करसी। सुरगा चीर मैं चूडो झमकै छै। जाणै भीणा बादल मैं बीजळी चमकै छै।—पना

६ प्रफुल्लित, प्रसन्न।

उ०—काया झबकइ कनक जिम, सुदर केहै सुरख। तेह सुरगा किम हुवइ, जिण वेहा बहु दुख।—ढो मा

७ शुभ।

उ०—कर कृपाण मोरत किसू, आखै सूर अबीह। रण सर स्वरग मिधावणो, सुतो सुरगो दीह।—बा दा

८ श्रेष्ठ, उत्तम।

९ अच्छा बढिया।

उ०—चोखो केलू हेरै तौ ध्यान तौ सुरगै रग रो उज ठहरचो—इस कहिनै समझाया समझ गया।—भि द्र

१० स्वच्छ; साफ।

११ मधुर, प्रिय।

१२ रसिक।

१३ सुशोभित।

उ०—१ घाट सुरगौ गोरिया, आदू कहवत एह। पदमणिया हमरोट व्है, राख स समो रेह।—बा दा

उ०—२ इसडो वधावो म्हारै घूघट पर राखा, घूघट सुरगो चूनड नित नवी।—लो गी

१४ हरा-भरा।

रू.भे —सरगो, सुरगइ, सुरगई, सुरगउ सुरगलो।

अल्पा,—सुरगियो, सुरगीयो।

सुरद—देखो 'सुरेंद्र' (रू भे)

उ०—१ महा मदध आसुरा, सुरद चाउ मारणा। त्रिलोक नाथ गोह, ग्राह ग्रीध आद तारणा।—र.ज प्र

उ०—२ हीरा को रूप देख, सुरद मन मैं जाणै छै। धन्य छै ऊ पुरुष (जु) इ नारिनै महल मैं माणै छै।

—वगसीराम प्रोहित री बात

सुरपत, सुरपति—देखो 'सुरपति' (रू भे)

उ०—रावळ बापा जसो रायगुर, रीझ गीज सुरपत री रूस।

—बाकजी सोदी

सुरभ—देखो 'सौरभ' (रू भे)

उ०—बाजै सीतल वाय रै र०, लहरी आवै रै सुरभ तणी घणी रै। वहता न वणै काय रै र०, सवली रै सोभा वन माहै वणी र।

—वि कु.

सुरभी—देखो 'सुरभि' (रू भे) (ह ना मा.)

सुर—स पु [स] १ देवता, देवगण।

सुरगति–स स्त्री [स] १ देवयोनि, दैवीगति ।
उ०—मतौ करी मयम लियौ रे, पाँच मैं सिरदार । चोखी पाली सुरगति लही रे, रग्गी लेवाँ पारी रे ।—जयवाणी
२ स्वर्ग ।

सुरगनदी—देखो 'स्वरगनदी' (रू भे) (ह ना मा)

सुरगपत, सुरगपति, सुरगपती—देखो 'स्वरगपति' (रू भे)
(डि को, ह ना मा)

सुरगपहाड–स पु [स स्वर्ग-पहाड] सुमेरु पर्वत ।

सुरगपाताळी–स पु –वह सीग वाला पशु जिसका एक सीग आकाश की ओर तथा दूसरा सीग भूमि की ओर झुका हुआ हो । (अशुभ)

सुरगपुर, सुरगपुरी—देखो 'स्वरगपुरी' (रू.भे)

सुरगवाळी–स स्त्री –कान का एक आभूषण ।

सुरगवेसा, सुरगवेस्या–स स्त्री [स स्वर्गवेश्या] अप्सरा ।

सुरगमदाकनी, सुरगमदाकिनी—देखो 'स्वरगमदाकिनी' (रू भे)

सुरगय—देखो 'सुरगज' (रू भे.)
उ०—सेस हिमालय स्र ग, **सुरगय** हय नय पय दरस । रुद्र सिलोचय रग, जय जय लकवरीस जस ।—बा दा.

सुरगरद–स पु [स सुर-गिरि] सुमेरु पर्वत ।

सुरगरद-माळा–स स्त्री. [स. सुर-गिरी-माला] सुमेरु पर्वत की श्रेणी ।
उ०—भडज वादळ सबळ बीज सावळ झळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा । वार सुरताण दळ अकळ खूटा वरस, 'माल' हर सीस सुर-गरद-माळा ।—अजवौ बारहठ

सुरगर—१ देखो 'सुरगुर' (रू भे)
२ देखो 'सुरगिरि' (रू भे)

सुरगलोक—देखो 'स्वरगलोक' (रू भे.)

सुरगवधू—देखो 'स्वरगवधू' (रू भे)

सुरगवास—देखो 'स्वरगवास' (रू भे.)
उ०—दोनू बेटा परण्या-पात्या हा, माईता री **सुरगवास** व्हियौ जगा थाट सू लारै ओसर-मोसर करयौ ।—फुलवाडी

सुरगवासी—देखो 'स्वरगवासी' (रू भे)

सुरगविहारी—देखो 'स्वरगविहारी' (रू भे)

सुरगसार–स पु [स स्वर्गसार] चतुर्दश ताल के चौदह भेदो मे से एक ।
(सगीत)

सुरगाह–स पु –सोना, वीर । (अ मा)
रू.भे —सुरगाह ।

सुरगाम–स पु [स स्वर-ग्राम] स्वर-ग्राम ।
उ०—सतगुरु नाथ नू बैठ सनमुख अडर, प्रगट **सुरगाम** उतपनि पिछाणौ ।—सिखनाथसिंह मेडतिया री गीत

सुरगादि–स पु (ब ब) [स स्वर्ग-आदि] स्वर्ग-लोक-समूह ।
उ०—रसा पाताळ और रत सुरगादि मैं, सकळ ही देखीया है सार भाई ।—अनुभववाणी

सुरगापगा–स स्त्री [स स्वर्गापगा] स्वर्गगगा, मदाकिनी, गगानदी ।

सुरगापुर, सुरगापुरि–स पु [स स्वर्ग-पुर] स्वर्ग धाम, वैकुण्ठ धाम ।
उ०—१ पार गिराए झभराय वस, **सुरगापुर** सुहावणौ ।
—वि स सा
उ०—२ वीर वटाऊ भाइया, म्हानै पीहर पथ बताय । डावौ डाडौ परहरौ, जीवणौ **सुरगापुरि** जाय ।—वि स सा

सुरगायक–स पु [स] देवताओ के गायक, गधर्व ।

सुरगायत–स.पु –स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

सुरगारोहण–स पु [स स्वर्गारोहण] स्वर्ग या वैकुठ की ओर किया जाने वाला गमन ।

सुरगाह–स पु [स सुर+गाथा] १ देवताओ की कथा ।
२ देखो 'सुरगह' (रू.भे)

सुरगि—देखो 'स्वरग' (रू भे)
उ०—रतन काया **सुरगि** सोहै, छोडि जीव ससार नै । हसि मिळौ मी मिण करौ इकायत, मेल्यसी करतार नै ।—वि स सा.

सुरगिर, सुरगिरि, सुरगिरी–स पु [स सुरगिरि] सुमेरु पर्वत ।
(अ मा, ना मा, ह ना मा)
उ०—दीठउ **सुरगिरि** क्षीरहरौ, सुमिणइ सिरि रवि चद । जनमि युधिरिठरराय तणइ, मिलीया सुखइ विंद ।—सालिभद्र सूरि
वि –पीला ।* (डि को)

सुरगी–वि [स. स्वर्गीय] स्वर्ग का, स्वर्ग सम्बन्धी ।
स पु –१ स्वर्ग का निवासी, देवता, सुर । (डि को)
२ देखो 'स्वरग' (रू भे)

सुरगीनदी— देखो 'स्वरगनदी' (रू भे) डि को)

सुरगुण, सुरगुन—देखो 'सगुण' (रू भे)
उ०—१ त्रिगुण न्यारौ नाव है, **सुरगुण** विना न पाय । किस कु नदीयै बदीयै, हरीया पिता'र माय ।—अनुभववाणी
उ०—२ मन कै भोळै तन गहै, गोविंद भोळै ग्यान । निरगुन के भोळै करै, हरीया **सुरगुन** ध्यान ।—अनुभववाणी

सुरगुर, सुरगुरु, सुरगुरू–स पु [स सुर-गुरु] १ देवताओ के गुरु, वृहस्पति । (अ मा)
२ वृहस्पति नामक ग्रह । (अ मा)
उ०—१ अनग्रह भवन करूरै आवै,दमसै जौ **सुरगुर** दरसावै । दुसह तोइ ग्रह जोर न दाखै, रक्षा जीव परख डर राखै ।—रा रू
उ०—२ निरख छठै रिपु ग्रह ससिनदण, कुळ मातुळ सुख अरी निकदण । राज भवन **सुरगुर** सुभ राजै, विभव छत्र आण विराजै ।
—रा रू
३ वृहस्पतिवार, गुरुवार ।
उ०—सोमा सुकरा **सुरगुरा**,जौ चदी उगत । डक कहै सुण भड्डळी, जळ थळ एक करत ।—वर्षा विज्ञान
४ पीतवर्ण, पीला ।* (डि को)

जोगिणी।—गोकुल राठौड री गीत

सुरका-दुरकी—स.स्त्री.—किसी बात को इधर उधर करने की क्रिया, दौत्य कर्म, चुगली।

उ०— खिलवत हाम खुमामदी, सुरकादुरकी माग। किमव लिया ए कुकविया, माहव हूता माग।—वा दा

सुरकियोडौ—भू का कृ -१ डरा हुआ, घबराया हुआ। २ धडका हुआ, फडका हुआ। ३ चिंता या सोच-फिक्र किया हुआ। ४ सुडक-सुडक कर पीया हुआ। ५ हवा के साथ धीरे-धीरे ऊपर की ओर खिंचा हुआ।

(स्त्री सुरकियोडी)

सुरकी—स पु—सोलकी राजपूतो की एक शाखा।

सुरकुम—स पु [स] देवताओ का कलस, देव-घट।

उ०—पूरे प्रभु ग्राम सदा परतख, वदा सुरकुंभ किना सुरव्रक्ष।
—व व ग्र

सुरकेतु—स पु [स] १ इन्द्र।

२ देवताओ की ध्वजा।

सुरक्ष—स पु [स] १ एक मुनि।

२ एक पौराणिक पर्वत।

वि—रक्षित, सुरक्षित।

सुरक्षा—स स्त्री [स] १ रक्षा, हिफाजत।

२ देखभाल, सभाल।

सुरखडनिका—स स्त्री [स] एक प्रकार की वीणा।

सुरख—वि [फा सुर्ख] १ लाल, रक्ताभ।

उ०—१ किरमजी रेसम कै तणाव दियै, जोतिकै बीचतै सुरख डोरि कैसी खुली। तारा मडळ तै और धार सुरसरी की चली।
—सू प्र

उ०—२ बोलीया सुरख चख कीया चापी वयण, भडा पग माड जोम घर दीण री भुयण। लाभ छत्री धरम वहोमसत्रा लयण, गाज नाळ धरर घुवा ढकीयौ गयण।—रिवदान बारहठ

उ०—३ सुरख सरोरुह खडळिया मुख माजही, कै अरुणोदय कांति रही मिळी राजही।—वा दा

२ क्रोध पूर्ण, रोशपूर्ण।

स पु—१ तावा। (अ मा)

२ एक प्रकार का शुभ रङ्ग का घोडा। (शा हो)

रू भे—सुरक।

अल्पा,—सुरखौ।

सुरखरू—वि [फा] १ सफल, कामयाब।

२ सम्मानित।

उ०—लोका सू ठीक कीयौ, परदेसै माल विकीयौ। नाणौ आयौ। सिगळा सु सुरखरू हूवौ, सरब थोक घरै हुवा।
—सतरी बाधी लिखमी री बात

सुरखानी—वि.—रक्ताभ, लाल।

उ०—कमळा रेसमी नारगी पँवँदूका हूनर अदभूत, रोमनी हमरानी सुरखानी महतूत।—सू.प्र

सुरखाव—स पु [फा सुर्खाब] १ चकवा नामक पक्षी।

२ लाल परो का पक्षी विशेष।

वि—लाल।

उ०—नदि नाम अगै कहता निलाव, सुरखाव होय उभळै सताव।
—सू प्र.

३ ब्राह्मणी बतख।

सुरखिया बगलौ, सुरखिया बुगलौ—स पु—बुगले का भेद विशेष।

सुरखी—स स्त्री [फा. सुर्खी] १ अरुणिमा, लालिमा।

उ०—लडवा भुज अवर जाय लगा, जिणवार फुणावण सेन जगा। सुरखी मुख मूछ बहार चली, किरदत वराह खडी कवली।
—पा प्र

२ नाराजगी, गुस्सा।

उ०—तद कुवर क्यू सुरखी कर कही जै हू पूछ उवा तौ वात बोलौ नही।—कुवरसी साखला री वारता

३ इमारत आदि बनाने मे काम आने वाला ईटो का महीन चूरा।

उ०—पकै ढूढिया ईंट चूनौ, सुरखी हळकी फून घुट। ठठेरा लुहारा मारा, लोह चढावै लाल चुट।—दसदेव

स पु [फा सुर्ख] १ वह घोडा जिसकी दुम लाल हो।

२ वह घोड़ा जिसका रङ्ग सफेदी या भूरापन लिये काला हो।

सुरखौ—स पु [फा सुर्खा] १ लाल रङ्ग का कबूतर।

२ देखो 'सुरख' (अल्पा, रू भे)

उ०—सुत कल्याण माहि भुज सुजडा, अर समहर साझै ग्रीनाड। चुगती चोळ थई चाचाळी, पसगी सुरखा हुआ पहाड।
—धोळूजी वीठू

सुरग—देखो 'स्वरग' (रू भे)

उ०—१ भागीरथ सुत जिण तप अभग, गौ सुरग अहुति जिग आणि गग।—सू प्र

उ०—२ जाजुल गोळा ज्वाळ, गरज जिग काळ उगल्लै। आसै सुरग पताळ, दिगज दिगपाळ दहल्लै।—मे म

उ०—३ तौ सुरसरी तरग, कूची सुरग कपाट री। ऐथ पखाळै अग, जग मैं विन मानव जिकै।—वा दा

सुरगज—स पु [स] इन्द्र का हाथी ऐरावत।

रू भे—सुरगय।

सुरगण—स पु [स] १ देवगण, देवतागण। (अ मा)

२ देखो 'सगुण' (रू भे)

उ०—भुस न भागी भेन गयौ, तिण चर तिण तहा जाय। सुरगण तिण मुख छाडि करि, यम निरगुण का गुण गाय।—ह पु वा

रू भे—सुरियण।

सुरजाण-स.पु.-१ विष्णु।
२ श्री कृष्ण।
३ इन्द्र।

सुरजा-स.स्त्री [स] १ एक अप्सरा।
२ पुराणोक्त एक नदी।
उ०—जगनाथ गगासागर है, साखी गुपाल ब्रजवासी। सेतुबध रामेस्वर ईस्वर, मूळ वटी सुरजा सी।—मीरा

सुरजेठ, सुरजेठि, सुरजेठी, सुरजेठौ—देखो 'सुरज्येस्ठ' (रू.भे) (डिं को, ना मा, ह ना मा)
उ०—१ उमा सहित गण ईस, लच्छि जगदीस पधारै। सावत्री सुरजेठ जती, जगम अण पारै।—रा रू
उ०—२ हमें तठा उपराति करि नै राजान सिलामति सीखम रित माहे जिकै राजाना ठाकुरना सुख जेठ माहे कहीग्रा तिकै सुख सुरजेठ कहता इद्र री ठकुराई पिण नही ऊग्रा राजा रा सुख कहीजै छै।—रा सा स

सुरज्जण—देखो 'सुरजन' (रू भे)
उ०—रावण गुणै सुरार, हार सारखौ वभीखण। ग्रमी वट ग्रासुरा, जोर ग्रत कमी सुरज्जण।—रा रू.

सुरज्येस्ट, सुरज्येस्ठ-स पु. [स सुर-ज्येष्ठ] १ ब्रह्मा, विधाता। (ना मा.)
२ विष्णु।
३ श्री कृष्ण।
४ इन्द्र, जो देवताओ मे बडे माने गए है।
रू भे—सुरजरठ, सुरजेठ, सुरजेठि, सुरजेठी, सुरजेठौ।

सुरझणौ, सुरझबौ—देखो 'सुळझणौ, सुळझबौ' (रू भे)
उ०—१ दादू सब्दै ही मुक्ता भया, सब्दै समझै प्राण। सब्दै ही सूझै सबै, सब्दै सुरझै जाण।—दादूवाणी
उ०—२ जब समझा तब सुरझिया, उलट समाना सोइ। कछु कहावै जब लगै, तब लग समझ न होइ।—दादूवाणी

सुरझाणौ, सुरझावौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझावौ' (रू भे)

सुरझायोडो—देखो 'सुळझायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुरझायोडी)

सुरझावणौ, सुरझावबौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझावौ' (रू भे)
उ०—हमनै कहा सुरझावण राणा, तुम जातै उरझाय राम। हमनै कहा निरमोहित रहना, तुम तौ जात मोहाय राम।—मीरा

सुरझावियोडौ—देखो 'सुळझायोडौ' (रू.भे)
(स्त्री सुरझावियोडी)

सुरझियोडौ—देखो 'सुळझियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुरझियोडी)

सुरटीप-स स्त्री. [स स्वर+रा टीप] गायन मे स्वरालाप, आलाप; टीप। (सगीत)

सुरण-स स्त्री.-१ वह रस्सी जो कुएँ से पानी खींचने वाले पात्र के साथ बंधी हुई हो, नेज, लाव। (शेखावटी)
२ देखो 'सूरण' (रू भे.)

सुरणा, सुरणाइ, सुरणाई, सुरणाय, सुरणौ—देखो 'सहनाई' (रू.भे)
उ०—१ तरै भाटी भीमदे आसकरणोत, आसकरण जगहथोतरै, भेद दियो। नै कोई कहै छै, सुरणाई वजाई, तिण मे काई वात जणाई।—नैणसी
उ०—२ सवदा आगै छत्रीस वाजा रा नाम कहै छै। ढोल ६, दमामा ७, भेरि ८, भुगळि ९, नफेरी १०, मदन-भेरि ११, सुरणाई १२, झाझ १३.. ...।—स मा स.

सुरणौ, सुरबौ-क्रि अ-अपान वायु का निसरना, पाद आना।

सुरतर—देखो 'सुरतरु' (रू भे)

सुरत-स स्त्री [स सु+रत] १ स्त्री सम्भोग, रति क्रीडा, सम्भोग।
उ०—१ पति पवन प्रारथित स्त्री तत्र निपतित, सुरत अत सेहरी स्त्री। गजेंद्र क्रीडता सु विगळित गति, नीरासइ परि कमळिनी।
—वेलि
उ०—२ जैसे निधुवन कहता सुरत सु भोग कै विखै ग्रस्त्री की लाज सरब सरीर छोडि कै नैना माहे जाय रहै छै। तैसे प्रथी छाडि तळावा पाणी जाय रह्यौ छै।—वेलि टी.
उ०—३ जिण मर्म रा रस को सिमी स्नेह, जठै धण जिवा धरती मदवा जिको सावण री मेह, उण भात सुरत जग जूटा थाय हुय छूटा।—र हमीर
२ लहर, ऊर्मी, तरङ्ग।
३ अत्यन्त हर्ष, आनन्द या आह्लाद।
४ न्याय-दर्शन के अनुसार चित्त व शरीर के छ प्रकार के क्लेश यथा भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, लोभ और मोह।
उ०—एक रमा अहनिसा, दोय रवि चद त्रिगुण दरस। च्यार वेद तत पच, सुरत छह सपत सिध सरस।—र ज प्र.
५ पुष्प-गुच्छ जो सिर पर धारण किया जाय।
[स सुरत] ६ अच्छा खिलाडी।
७ देखो 'सूरत' (रू भे)
उ०—१ ध्रुव वन सिधारयौ वचन मारयौ, ध्यान धारयौ एक ए। तजि पान नीरु महाधीरु, परा पीरु पेख ए। सब ब्रह्म सजु उर समजू, सुरत रजू ताम ए। ऐसा गोविंदू क्रपासिधू, दीन वधू राम ए।—करुणासागर
उ०—२ राणी भारी पगा ही। राणी नै किणी सुरत मानता नी देख डावडी रा मन मे एक उपाव सूझियो।—फुलवाडी
रू भे—सुरती, सुरत्त, सुरित।
८ देखो 'स्रुति' (रू.भे) (अ.मा)
९ देखो 'सुरति' (रू भे)
उ०—१ म्हारी आद भवानी यै। टेर लगाई यै हरकै नाव की

रू भे.—सुरगर, मुरगरि, मुरगुरु, सुरुगुरू।

सुरग्यान, सुरग्यानी—देखो 'सुग्यानी' (रू भे)

उ०—१ जमुना के नीरै तीरै, वेनु चरावै मव ही के सुरग्यान। वंसी वजा मेरो मन हर लीन्हो, मार बिरह का वान।—मीरा

उ०—२ यू मूजरो मानो प्यारी कौ, सग छोडो परनारी को। मायर सुरग्यानी प्यारा, अवलेखा आवै थारा।—लो गी

उ०—३ जद हट वोल्यो रै दिल्ली की वादस्या कोठै हू चाल'र आई लोय। सुरग्यानण हरम कुणमी कूटा का यें पड चदा पड़ै।—लो गी

(स्त्री सुरग्यानण)

सुरग्रह, सुरग्राह-स पु [स स्वर+गृह] १ वीणा। (अ मा)

२ श्रवणेन्द्रिय, कान।

सुरघट-स पु -वीरघट।

उ०—अकुस सीस वणै गुण ऐसो, जग वेधियो मधा मनि जैसो। अनुहरता सुरघट अपारै, दीपै किरि भल्लरि हरि द्वारै। रा रू

सुरघण-स पु -मेघनाद, इन्द्रजित।

उ०—रिण कुभ सुरघण मार रावण, कठण खळ जण कीध कण कण।—र ज प्र.

सुरघाती-स पु -दैत्य, असुर, राक्षस। (अ मा)

वि -देवताओ का नाश करने वाला।

सुरड—देखो 'सरड' (रू भे)

सुरडणौ, सुरडवौ-क्रि स -१ कांटेदार छडी, बेंत या चाबुक से बुरी तरह पीटना।

उ०—१ बिरखा रा त्रिछोव पछै उण माथै काई-काई विखो पडयो, किण भांत उणरो सुभाव वदळियो, वो पिणियारचा नै छेडतो, घडा वेवडा फोडतो, पछै कीकर मा एक दिन उणनै कावडिया सू सुरडियो।—फुलवाडी

उ०—२ मतै ई वोहरा रा मोर सडिद सडिद सुरडीजण लागा कै वो जोर सू डाढियो। चौधरी री वेटी जाग्यो जित्तै जित्तै वोहरा री आगी डील वीधीजग्यो। भाटी तो उणी भात सडिद सडिद वाजती री।—फुलवाडी

२ किसी पौधे या पेड की टहनी को हाथ या मुंह (जानवरो द्वारा) से पकडकर इस प्रकार खीचना कि उसके समस्त फल, फूल या पत्ते एक साथ तोड लिये जावे, टहनी को नङ्गा कर देना, सूंतना।

उ०—१ इण निम भरनै सुरड, बुरड भेळी कर राखै। लरड लाय सा भाळ, साल भर सागा नाखै।—दसदेव

उ०—२ खोडै खीलहैरी रा चाग्या, फुरणिया रा वैसणहार। कूमटै ककेडै रा सुरडणहार, आयवैरा चरणहार।—रा.सा स

३ अनर्गल वोलना।

उ०—मेठा री हूस हाल मिटी नी ही। मुधरा मुधरा मुळकता वोल्या—गीगला री मा थामैं अो इज तो मोटो अोगण कै वोलता ढवो ई नी, सुरडता ई जावौ।—फुलवाडी

४ चाटकर खाना।

५ मञ्चय करना, मञ्चित करना।

क्रि अ -खरोचना या खरोचें आना।

उ०—दो च्यारैक धकै आया जिया रा मूडा तो सुरडीज्योडा गोडा अर खुणिया मू लोई चिकै पण घणा खारा घाव नी लागोडा।—चितराम

सुरडणहार, हारो (हारी), सुरडणियो—वि०।

सुरडिओडो, सुरडियोडो, सुरडचोडो—भू०का०कृ०।

सुरडीजणो, सुरडीजवो—कर्म वा०।

सुरडियोडो-भू का कृ -१ कांटेदार छडी, बेंत या चाबुक से पीटा हुआ।

२ हाथ या मुंह मे पकडकर, सूंतकर फल, फूल या पत्ते तोडा हुआ (पेड, पौधा या टहनी)। ३ अनर्गल वोला हुआ। ४ चाटकर खाया हुआ। ५ मञ्चय किया हुआ, सञ्चित। ६ खरोचा हुआ या खरोचें आई हुई।

(स्त्री सुरडियोडी)

सुरडी-वि स्त्री -नाक कटी हुई।

सुरडी-बुरडी-वि.स्त्री -नाक-कान कटी हुई, 'वूंची'।

सुरडौ-वि (स्त्री सुरडी) १ नाक-कान कटा हुआ, वूंचा।

२ निर्लज्ज, वेशर्म?

उ०—सकर सागर हुयगी सुरडा, करण मिलै नही पाणी कुरडा। चोभ साथ ठहरै नहि चुरडा, जिण री पाळ पडै दस दुरडा।—ऊ क

सुरचक्र-स पु -सुदर्शनचक्र। (अ मा)

सुरचाप-स पु [स] इन्द्रधनुष।

सुरचाह-स.स्त्री -अग्नि, आग। (अ मा)

सुरच्छा—देखो 'सुरक्षा' (रू भे)

सुरज-स पु -१ एक देव-जाति। (अ मा)

२ देखो 'सूरज' (रू भे)

उ०—छक वढियो अणछेह, पमग चढियो भुवपत्ती। जाण चढ्यो जेठ रो, सुरज सपतास सपत्ती।—मे म.

सुरजण—देखो 'सुरजन' (रू भे)

सुरजणी-स पु [स सुरञ्जन] सुपारी का पेड।

उ०—आव आवळी सुरजणी सौरसळी भड जाय।—रुखमणी मगळ

सुरजन-स पु [स] १ देवगण, देवता लोग, सुरगण।

२ सज्जन, भला।

३ चतुर, बुद्धिमान।

रू भे —सुरजण, सुरजण।

सुरजमुखी—देखो 'सूरजमुखी' (रू भे)

सुरजरठ—देखो 'सुरज्येस्ठ' (रू भे)

सुरजवसी—देखो 'सूरजवसी' (रू भे)

उ०—२ हरीया हसौ जीव है, सुन्य सागर विसराम। सुरति हमारी सीपडी, निज कल मोती नाम।—अनुभववाणी
५ ध्यान, लगन।
उ०—१ ग्यान विहूणा गुर मिळ्या, सुरति विहूणा सिख। जनहरीया गुर सिख का, ससा मिट्या न चिख।—अनुभववाणी
उ०—२ लगी सुरति मत सबद सु, कवहू खडै नाहि। जनहरीया मन मिळ रह्या, आर पार पद माहि।—अनुभववाणी
६ चित्तवृत्ति, बुद्धि।
उ०—सुरति चली आकास कु, दै जाळधर वध। जनहरीया जाह जाणीयै, हदि वेहद की सध।—अनुभववाणी
७ आत्मा।
उ०—वधन तै त्रिवध भया, मिळ्या सुन्य घरि जाय। हरीया सुरति'र सवद का, त्रिभै ध्यान लगाय।—अनुभववाणी
८ मोक्ष, मुक्ति।
उ०—जन हरिराम कहै घट परचा, अखड एक राम की चिरचा। घट मैं राम-नाम लिव लावै, जब तै सुरति निरत घर पावैं।
—अनुभववाणी
९ ज्ञान।
उ०—अरध उरध कै वीच मैं, हरीया झिळमिळ जोत। सुरति सबद परचा भया, मिळै ओत अर पोत।—अनुभववाणी
१० भावना।
उ०—नर नारी को रूप धरि, नाचै करै निरत। जनहरीया नारी नही, कामी काम सुरति।—अनुभववाणी
११ शब्द, ध्वनि, स्वर।
उ०—हरीया पाव न पख विन, सुरति चडी असमान। नाव निरजन पाईया, न्यारा वेद पुरान।—अनुभववाणी
१२ परमपद, परमधाम।
उ०—१ उलटा मन असमाण कु, मिलै त्रिवेणी तट। जनहरीयै जाह मडीया, सुरति सवद का मट।—अनुभववाणी
उ०—२ सुरति सवद कै मट की, है अजरायल वाटि। जनहरीयै जाह घर कीया, लोक वेद सु फाटि।—अनुभववाणी
१३ प्राण या प्राण-वायु।
उ०—जाळधर वधा उरजै कधा, मन अरु पवन मिळदा है। उलटया है आमण पलटया वासण, सुरति सवद परसदा है।
—अनुभववाणी
१४ देखो 'स्रुति' (रू भे) (ह ना मा)
१५ देखो 'सूरत'।
उ०—१ ओढू लज्या चीर, धीरजि को घाघरो। समता काकण हाथ, सुरति को मूदडो।—मीरा
उ०—२ महासूर सुरति निळै ऊपटै 'सहसमल', मारका तो जिसा मिळै जुध मेच। जडळका कटै विचि गळै ठहरै जकै, परीवरमाळ जिम हिंडुळै पेच।—महसमल राठौड री गीत
१६ देखो 'सुरत' (रू भे)
रू भे—सुरत, सुरती, सुरत्त, सुरित।

सुरतिगोपणा, सुरतिगोपना—स स्त्री [स सुरतिगोपना] वह नायिका जो रति-क्रीडा करके आई हो, परन्तु अपनी सखियों से यह बात छिपाती हो।

सुरतिय—स स्त्री [सुरस्त्री] अप्सरा।

सुरतिवत—वि [स सुरतिवत्, सुरतिमान्] कामातुर।

सुरती—स स्त्री—१ तम्बाखू के पत्तो का चूरा जो चूना मिलाकर या पान मे डालकर खाया जाता है।
२ देखो 'सुरत' (रू भे)
३ देखो 'सूरत' (रू.भे)
४ देखो 'सुरति' (रू.भे.)
उ०—१ होटल माई खाणी हिळता, विटळा बुरी विचारी रे। मानव धरम सास्त्र री महिमा, सुरती नही सभाळी रे।
—ऊ का
उ०—२ अथिर सुख ससार ना जी, काय अळूजो जी जाळ। वचन सुणो मत गुरु तणा जी, चेतो सुरती सभाळ।—जयवाणी
५ देखो 'सुरता' (रू भे)
६ देखो 'स्रुति' (रू भे)

सुरत्त—१ देखो 'सूरत' (रू भे)
उ०—१ वाहू चळी निरम्मळी, चरख वीभळी सुरत्त। आजै 'करनळ' अक्कळी, (तू) सवळी रूप सगत्त।—राव सेखौ
उ०—२ विदर बुराई वीटिया, विदर वडा वाचाळ। विदर पटा लावै सुरत्त, छोगाळा चिरताळ।—वा दा
२ देखो 'सुरति' (रू भे)
उ०—पही भमतउ जउ मिळइ,कहै अम्हीणी वत्त। धण कणयर री कव ज्यउ, सूकी तोइ सुरत्त।—ढो मा
३ देखो 'सुरत' (रू भे)

सुरत्थ, सुरत्थी—देखो 'सुरथ' (रू भे)
उ०—थडै काहूळा विखमीनाद तडैत्रै वीराण थूथ, मडकै धुरदी जोध मट्टा छडै माण। सुरत्था समत्था जुत्था खासा झडा होदा सीस। करी मुडा तूझ वाळी उमडै केवाण।
—भगतराम हाडा री गीत

सुरत्रिय, सुरत्रिया, सुरत्री—स स्त्री [स] अप्सरा, परी, देवाङ्गना।
उ०—१ मिळ सची सग सुरत्रिय समाज, 'जोध' हर वधाया हरख माज।—शि सु रू
उ०—२ सदन कज फरै ग्रहिया फला सुरत्रिया। वदन कज वडा सिध फरै वासै।—माहसिह रावत री गीत
उ०—३ हुवै दिव्य देहा, सुरत्री सनेहा। विवाण विराजै, गय स्रग्गि गाजै।—सू प्र.

सुरत लगाई यैं हरकै ध्यान की ।—लो गी

उ०—२ भजन, यजन कर पिता थानै पाया । अमर अराध्या अवनी पै आप आया । सो सुरत करी सुर-काज सुधारी ।—गी रा

उ०—३ सुरत सब्द रामत रची, सुन महर घर माय । गेबी आवाजा माधा होय रही, भिळमिळ जोत जगाय ।

—स्री हरिरामजी महाराज

उ०—४ वा पातसाह आलमगीर हाथी असवार कुरान मैं सुरत लगाय रयौ है । लारै खवासी मैं मुखनम वैठौ मोरछ्ड करै है ।

—द दा

सुरतग्रही—स पु [स] नाक । (अ मा)

सुरतजग—स पु –रति-क्रिया में होने वाला सङ्घर्ष, रति-क्रीडा ।

सुरतटी—स स्त्री –गङ्गा नदी ।

उ०—लाखीका ऊपरा, चढै भड लक्ख सचेळै । जाण जटी चल्लिया, कुभ सुरतटी समेळै ।—रा रू

सुरतपाक—वि –जिसका चेहरा पवित्र एव शुद्ध हो ।

सुरतर—स पु [स सुरतरु] देव-वृक्ष, कल्प-वृक्ष, मदार, पारिजात ।

(अ मा, ना मा)

उ०—१ कारण विण जगसू करै, आठ पोहर उपगार । जाणीजै सुरतर जिकै, मानव लोक मझार ।—वा दा

उ०—२ सत हरचद समान, प्रगट दरियाव अथघपण । सुरतर आम सपूर, जाण पारस सेवक जण ।—र ज प्र

रू भे—सुरतर, सुरतरु, सुरतरुवर, सुरातर ।

सुरतरण—स स्त्री [स. सुर+तरुणी] अप्सरा ।

उ०—किरण-पत आवियौ, कहै सुण सुरतरण । थियै मत गमजा घिरै थारै ।—द दा

सुरतरु, सुरतरुवर—देखो 'सुरतर' (रू भे)

सुरताण—देखो 'सुलताण' (रू भे)

उ०—१ आवै जो अकलीम, सात हेक सुरताण रै । नही जिका दै नीम, ईछै लेवा आठमी ।—वा दा

उ०—२ आयी ऊपर ऊपरा, सुणी खबर सुरताण । उर अकुळाय् पटक्कियौ, सीस खुदाय कुराण ।—रा रू

उ०—३ मेदपाट खुरसाण, आदि वकवाद मझारै । सहि कीध फुरमाण, खान सुरताण हकारै ।—गु.रू व

सुरताणी—देखो 'सुलताणी' (रू भे.)

उ०—१ करण भारथ महा महाराजा कमध, मिळै भड ताम-गयणि मेळै । चीत सुरताणी आगळि 'चांडरज', चैन सुरिताण तिम न की चेलै ।—केसोदास गाडण

उ०—२ भागा भाट वीड थीउ पाधर, कादव कीधा पाणी । डूगर तणा सिखर जिम चालइ, तिम हाथी सुरताणी ।—का दे प्र

सुरताणोत—स पु –१ कछवाहा राजपूत-वश की एक उप-शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

२ मेडतिया राठौड-वश की एक उप-शाखा व इसका व्यक्ति ।

सुरताणौ—देखो 'सुलताण' (अल्पा, रू भे)

उ०—सडी आस मळेछ, खट्टण खड द्रुग्ग चितगौ । कित्ती खड विहड, जित्ती हार धार सुरताणौ ।—रा रू.

सुरतात—क्रि वि [स सुरत=सम्भोग+अन्त] सम्भोग के पश्चात्, मैथुन के पश्चात् ।

उ०—तठा उपराति करि राजान सिलामत रगमहल मैं प्रेम भड लागिनै रही छै । सुरतांत समय हुवौ छै ।—रा मा स

सुरता—स स्त्री –१ चित्तवृत्ति, बुद्धि ।

उ०—१ पुनि पुन्य उदै भए पूरव कै, उघरै उर अक अपूरब कै । सुरता विकसी सरसायन मैं, परि प्रेम पयोनिधि पायन मैं ।

—ऊ का

उ०—२ मिली सुरता घम सिद्धि समद्ध, पिली प्रभुता वस बुद्धि प्रवद्ध । हिली जुगती जस वार हजार, मिळी सुगती दस द्वार मझार ।—ऊ का

उ०—३ तू तौ समझि सुहागण सुरता, नारि पलक मेरी राम सू लगी ।—मीरा

२ आत्मा ।

उ०—कुपह कुमारग वरजि करि, सुपह साच करणी कहै । सेहनाण सुगुर तणा सुरता सुणौ, प्रमन की प्रगट कहै ।—वि.स मा

३ लगन, ध्यान ।

४ याद, स्मृति ।

५ देखो 'स्रोता' (रू भे)

उ०—१ सुरता अर वकता वौह ग्यानी, विन गुर गम आतम नहीं जानी ।—अनुभववाणी

उ०—२ सकळ प्रताप सुरसरी, हरि पद रुद्र सहित । सुरता राम सुमित्र सुत, वकता विसवामित्र ।—रामरासौ

६ देखो 'सुरत' (रू भे)

७ देखो 'सूरत' (रू भे)

८ देखो 'सुरति' (रू भे)

सुरतात—स पु [स] १ देवताओ के पिता कश्यप ।

२ देवताओं के अधिपति इन्द्र ।

सुरताभीलणी—स स्त्री –एक राजस्थानी लोक-गीत ।

सुरति—स स्त्री [स सु+रति] १ जमकर या छककर किया जाने वाला उपभोग, अच्छा भोग ।

२ तसल्ली, सन्तोष ।

३ अप्सरा, देवाङ्गना । (ना मा)

४ याद, स्मरण ।

उ०—१ तद वर श्री नीसर विलाप करण लागियौ—हा हा प्रियै ! केथी गई मोनू वाणी देय । है प्रियै ! थारा जोवन री सुरति कर जीवू छू ।—वैताळ पचीसी

उ०—'ग्रभसाह' न्रप दुख हरण ग्राया, जोधपुर सुन जाणियैं। सुरनयर की कविलास सोभा, वाधि ताग बखाणियैं।—रा रू

सुरनरजयकारी–स पु यौ—वह घोडा जिसका समस्त शरीर श्वेत हो ग्रौर एक कान श्यामवर्ण का हो। ऐसा माना जाता है कि ऐसे घोडे के स्वामी मे देवताग्रो को जीतने की भी शक्ति ग्रा जाती है। (शा हो)

सुरनाथ–स पु [स] इद्र, सुरपति।

उ०—१ सुरनाथ व्रितासुर साखियात। प्रगटै कि गस्त्र रव वज्रपात।—रा रू

उ०—२ माथ पगा सुहनाथ नमावै, गौरव सारद नारद गावै। —र ज प्र

रू भे—सुरनाह।

सुरनाथरथ–स पु [स] इद्र का हाथी, ऐरावत। (ग्र मा)

सुरनायक–स पु [स] १ ईश्वर, परमात्मा। (ह ना मा)

२ विष्णु। (ना मा)

उ०—सुनरायक सेव्य समृद्धि वहै, वळ वायक तै वज व्रिद्धि वहै। नव नैनन मैं नव निद्धि वहै, सव हाजर रिद्धिय सिद्धि वहै'—ऊ का

सुरनारी–स स्त्री [स] देवबाला, देवागना, ग्रप्सरा।

सुरनाह—देखो 'सुरनाथ' (रू भे)

सुरनैज–स पु [स सुर+नदी+ज] पितामह भीष्म, गागेय।

उ०—धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैंज। सो सूरा सिर सेहरौ, नर पुगव सुर-नैंज।—वा दा

सुरप, सुरपत, सुरपति, सुरपती–स पु [स सुरप, सुरपति] १ देवताग्रो का राजा इन्द्र, सुरराज। (ग्र मा, डि को)

उ०—१ लहर हेक दीधी लछीस थानक लकसा। सुज पय नमै ग्रविरळ सीस सुरप ग्रसकसा।—र ज प्र

उ०—२ सेवै पुरुख सुपह पह सुमनस, सुमनस सेवै सुरप सुवेस। सेवै सुरपतादि उर ईसर, ईसर तौ सेवै ग्रवधेस।—र रू

उ०—३ रट नर ग्रधिका राज, राजा ग्रधिका सुर रटै। सुरा ग्रधिक सुरराज, ग्रवधेसर सुरपत ग्रधिक।—र ज प्र

उ०—४ ब्रह्मा विसन सेस सिव नारद, नर सुरपति लै ग्रादि। गिरही रिखवदेव ग्रौतारा, ग्रौर की कौन सुनादि।—ग्रनुभववाणी

२ विष्णु।

३ दुर्गा, देवी। (क कु वो)

४ पार्वती। (,,)

५ टगण के चतुर्थ भेद का नाम। (डि को)

६ ढगण के द्वितीय भेद का नाम। (र ज प्र)

७ ग्रादि गुरु त्रिकळ मात्रा का एक नाम।

रू भे—सुरपति, सुरपती, सुरपत्ती, सुरापत, सुरापति, सुरापत सुरापति, सुरापती।

सुरपतगुरु, सुरपतिगुरु–स पु यौ [स सुरपतिगुरु] बृहस्पति।

सुरपतिचाप–स पु यौ [स] इन्द्रधनुष।

सुरपतितनय–स पु [स] १ इन्द्र का पुत्र, जयत।

२ ग्रर्जुन।

सुरपतिपाट–स पु—इन्द्रासन। (ना मा)

सुरपती, सुरपत्ती—देखो 'सुरपति' (रू भे) (ग्र मा)

उ०—१ चालेसो चक्रवती, निजर सुरपती निहारै। भाग भल भूपती, एम सोभाग उचारै।—रा रू

उ०—२ तिलोतमा मेनका सची, उरबसी रंभादि। सुरपत्ती सेवता, ईठ न धरै तिण ग्रोगरि।—रा रू

सुरपथ–स पु [स] ग्राकाश, ग्रासमान। (ग्र मा)

सुरपरवत–स पु [स सुर+पर्वत] सुमेरु पर्वत।

सुरपाज, सुरपाजा–स पु—श्रीरामचन्द्र, श्रीराम। (ना मा)

सुरपादप–स पु [स] कल्पवृक्ष, देववृक्ष।

सुरपाळ, सुरपाळक, सुरपालक–स पु [स सुरपाल, सुरपालक] १ इन्द्र, सुरराज।

२ क्षत्रियवर्ग। (डि को.)

वि—देवताग्रो की रक्षा या पालन करने वाला।

उ०—देवी दानवा काळ सुरपाळ देवी, देवी साधक चारण सिध सेवी।—देवि

सुरपीर—देखो 'सुरपी' (रू भे)

सुरपी–रस पु—देवताग्रो के पूजनीय, देव पूज्य।

उ०—वळि वळ वळी महावता, ग्रागवे सुरपीर। छत्रिति मदोपति छोडिया, किरि गिरि ग्रटु सरीर।—रा रू

सुरपुर–स पु [स] १ ग्रमरावती, स्वर्ग, वैकुण्ठ।

उ०—१ सुरपुर तू गयो ग्रभिनवा 'सेगा' सुजस रासि घर स्याम सनाह।—वा दा

उ०—२ सुर करै हरख वरखै सुमन, ग्रमर तरणि थिन उच्चरै। नर सुवरण हूत सतिया न्रपति, सुरपुर मारग सचरै।—रा रू

२ किसी विषय, घटना या बात की गुप्त रूप से या दबी जवान से चलने वाली चर्चा, जिक्र, गुप्त वार्ता।

उ०—१ इण बात री सुरपुर वाणियैं सुणी तौ वौ माय रावळा मैं सीधौ ठकराणीसा' रै पाखती गियौ।—फुलवाडी

उ०—२ कालै थारै भाग रौ म्है निपटनै पाछौ ग्रावतौ हो कै एक वाटका लारै म्है दो लुगाया री सुरपुर सुणी।—फुलवाडी

३ गुप्त मत्रणा।

उ०—पछै घडी भर ताई दोनू लोग लुगाई सुरपुर करता रह्या। —फुलवाडी

४ फुसफुसाहट, ग्रस्पष्ट ग्रावाज।

उ०— बरसाळी मैं ऊभा चोर साळ में सुरपुर सुणी तौ किवाड रै पाखती कान लगाय ध्यान सू सुणण लागा।—फुलवाडी

सुरथ—स पु [स] १ पुराणानुसार स्वारोचिष मनवन्तर का एक राजा जिसने सर्वप्रथम दुर्गा की आराधना की थी।
उ०—देवी गाजता दैंत ता वस गमिया, देवी नवै खड त्रिभुवन तूझ नमिया। देवी वन्न मैं समाधी सुरथ व्रत्ती, देवी पूजतै आस पुरण प्रसन्नी।—देवि
२ राजा द्रुपद का एक पुत्र।
३ जनमेजय का एक पुत्र।
४ हसध्वज का एक पुत्र जो चपकपुरी का राजा था।
५ सुरथ नामक द्वीप का राजा।
६ एक द्वीप का नाम।
७ सूर्यवश मे रणक नामक राजा का पुत्र, एक सूर्यवशी राजा।
उ०—तास सुनाव प्रसेनजित तत्र। जिण सुत खुद्रक भूप हुवौ जत्र। खुद्रक सुतण रिणक्क दहण खळ। हुवौ सुरथ जिण सुत झाळाहळ।—सू प्र
८ शस्त्रो से सज्जित सुन्दर रथ।
उ०—लखि फौज तुग लडग, ऊवध किर दधि अग। वणि सुरथ पायक व्र द, जग जाण दळ जयचद।—रा रू
९ उक्त प्रकार के रथ पर चढने वाला वडा योद्धा।
रू भे—सुरत्थ, सुरत्थी, सुरथि।

सुरथांण, सुरथान—स पु [स सुर+स्थान] १ देवालय, देव मन्दिर।
उ०—जितै 'जसौ' पहु जीवियौ, थिर रहियौ सुरथांण। आगळ ही अवरग सू, पडियौ नह पाखाण।—वा दा
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ।
उ०—रिघ नेह वैस पटराणिया, देह न गाळी दुक्ख मैं। सुरथान काजि महाराज सगि, मिळी एम सुरमुक्ख मैं।—रा रू.
रू भे—सुरथानक, सुराथान, सुराथानि।

सुरथानक—स पु—१ सुमेरु पर्वत। (अ मा)
२ देखो 'सुरथाण' (रू भे)

सुरथि—देखो 'सुरथ' (रू भे)

सुरदारू—स पु [स] देवदारू का वृक्ष।

सुरदुदुभि—स स्त्री [स] देवताओ का नगाडा।

सुरदेव—स पु [स] जैनियो के भविष्यकाल के दूसरे तीर्थंकर का नाम। (स कु)
रू भे—सूरदेव।

सुरदेवि, सुरदेवी—स स्त्री [स सुरदेवी] यशोदा के गर्भ से अवतार लेने वाली योगमाया जो, कस द्वारा पछाडी जाते समय उसके हाथ मे छूटकर आकाश मे चली गई थी।

सुरदेस—स पु [स सुरदेश] स्वर्ग।

सुरदोखी—स पु [स सुर+द्वेपिन्] देवताओ का दुश्मन दैत्य, दानव, असुर। (अ मा)

सुरद्रुम, सुरद्रुमी—स पु यौ [स सुरद्रुम] देववृक्ष, कल्पवृक्ष।

सुरद्रोही—स पु यौ [स] १ असुर, दैत्य, दानव, राक्षस। (अ मा)
२ रावण, दशानन। (अ मा.)
३ यवन, मुसलमान।
उ०—सुरद्रोही जाग्रत सुपन, प्रगट लखै उतपात। वार सुरगी वीच तै, करै विरगी वात।—रा रू.
रू भे—सुरध्रोही।

सुरद्वार—स पु यौ [स] स्वर्ग-द्वार।
उ०—देवारी सुरद्वार, अडियौ अकवरियौ असुर। लडियौ भड ललकार, पोळा खोल 'प्रतापसी'।—दुरसौ आढौ

सुरद्विप—स पु यौ [स] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत।
२ देवताओ का हाथी।

सुरधनुख, सुरधनुस—स पु यौ [स सुर+धनुष] इन्द्रधनुष।

सुरधरम—स. पु [स सुर+धर्मी] वृहस्पति। (अ मा.)

सुरधाम—स पु [स सुरधामन्] स्वर्ग।
उ०—पगी वर होय विमाण पधारि। मिळै सुरधांम आराम मझारि।—सू प्र

सुरधि—स स्त्री—१ सफाई, स्वच्छता, शुद्धि।
२ अशुद्ध को शुद्ध करने का भाव, शुद्धि।
उ०—उच लगन लखि रिखि अरधि। सव कूण प्राचिय सुरधि।—रा रू

सुरधुनी—स स्त्री [स सुर+ध्वनी] गगा नदी।

सुरधेन, सुरधेनु—स स्त्री [स सुर+धेनु] १ इच्छित फल देने वाली देवताओ की वह गाय जो समुद्र मथन मे निकलने वाले १४ रत्नो मे से एक थी, कामधेनु।
उ०—१ राजा तिण नगरी तणौ होजी, मछरालौ महसेन। मानी महिपति अछै सभा दौ सुभमती होजी, दायक जिम सुरधेन।—वि कु
उ०—२ धेन पूज सुरधेन, विमधु चरणाम्रत वदा। धनुस माण न्रप कळप, सरव जस मह्ह विरद्दा।—रा रू
२ वशिष्ट मुनि की शवला नामक (नदिनी) गाय जिसके लिये विश्वामित्र से युद्ध हुआ था।

सुरध्रमरिप—स पु [स सुर+धर्म+रिपु] दैत्य, दानव, असुर, राक्षस। (ना मा)

सुरध्रोही—देखो 'सुरद्रोही' (रू भे) (ना मा)

सुरनगर—स पु [स] स्वर्ग।

सुरनद, सुरनदि, सुरनदी—स स्त्री [स सुरनदी] १ गगा नदी। (अ मा, ह ना मा)
उ०—पोमप्प पान कपूर प्रिथवी, वरणत जण वन वान ए। इवकार तीरथ जात उद्दम, आदि सुरनदि आन ए।—रा रू
२ आकाश गगा।

सुरनयर—देखो 'सुरनगर' (रू भे)

५ भनक।

उ०—उण देस री राजा अदल न्यायी हौ। इण सौदा री सुरपुर ई सुणली तौ पीढिया री कमाई तक खोस लेवैला।—फुलवाडी

६ खबर।

उ० ज्यारू टाट्या मिरदारा री गत विगडी उण सू चौगणी सुरपुर उण रे काना पूगगी ही।—फुलवाडी

७ उडती खवर, अफवाह।

उ०—इण गवाडी राजाजी री ढूक नी व्ही जित्तै कित्ता मिनख प्रीत करण रौ स्वाग रचियौ, पण राजाजी री सुरपुर सुणता ईं एक ई इण गवाडी माम्ही मूटौ नी करियौ।—फुलवाडी

८ चक-चक।

उ०—जानिया रै डैरा सू ठौड ठौड सुरपुर सळवळण लागी कै वीदराजा नै किणी काळजीभा री निजर लागगी। तपास करनै उणरी जीभ डाभौ।—फुलवाडी

९ चर्चा, वात, जिक्र।

उ०—मेडी रै वारणै ऊभा घणी नै अवै जावता चेतौ व्हियौ पण चेतौ वावडता ई जकी सुरपुर काना सुणीजी तौ जाणै काळजा मैं अणचीती सुरग छूटी।—फुलवाडी

१० विचार-विमर्श, सलाह।

उ०—खिलकौ जोवण सारू गाव रा सगळा वूढा-ठाडा चोवटै भेळा होय सुरपुर करण लागा।—फुलवाडी

सुरपुरनाथ, सुरपुरनाह—स पु यौ [स सुरपुरनाथ] इन्द्र। (अ मा)

सुरपुरी—स स्त्री [स] देवताओ की पुरी, स्वर्ग, वैकुण्ठ।

सुरपोढणी—स स्त्री—आसाढ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। यह दिवस भगवान के शयन करने का माना जाता है।

सुरप्रिय—स पु [स] १ इन्द्र का एक नामान्तर।

२ वृहस्पति का एक नामान्तर।

वि—जो देवो को प्रिय हो।

सुरफाकताल—स स्त्री—मृदग की एक ताल।

सुरवधु—स पु [स] दैत्य, दानव। (डि को)

सुरवाग—स स्त्री [स स्वर+फा वाग] अजान की आवाज।

उ०— सुर झालर घटा सरसाया। महजीता सुरवाग मिटाया।
—रा रू

सुरवाणी—स स्त्री [स सुर+वाणी] देव भाषा, सस्कृत।

उ०—साच वाच सभळै, सोचि बोलै सुरवाणी। जीहा जपि जीकार, कथा भ्रम सिघ कहाणी।—वि स सा

सुरवाळ, सुरवाळा—स स्त्री [स सुरवाला] देवागना, अप्सरा।

उ०—वरै सुज हिंदु वरै सुरवाळ। चलै सुख हूर धरै चुगलाळ।
—रा रू

रू भे—सुरवाळी।

सुरवाळी—स स्त्री—१ पृथ्वी, धरती। (डि ना मा)

२ देखो 'सुरवाळ' (रू भे)

सुरभग—स पु [स स्वर+भग] १ एक प्रकार का रोग जिसके कारण स्वर वैठ जाता है और भर्राई हुई आवाज निकलती है।

२ उच्चारण मे होने वाली वाधा।

३ साहित्य मे एक सात्विक अनुभाव जिसमे हर्ष, भय, क्रोध आदि के कारण स्वर मे रूपान्तरण हो जाता है।

सुरभख—देखो 'सुरभिक्ष' (रू भे)

उ०—मेटै दुरभक मुरधरा, सुरभख चारू चाळ। रायपाळ पायौ विरद, महीरेलण घणमाळ।—पा प्र.

सुरभमण, सुरभवन—स पु [स सुर+भवन] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ।

२ देवस्थान, मदिर, देवालय।

रू भे—सुरभुयण, सुरभुवण।

सुरभाका, सुरभाख, सुरभाखा—स स्त्री [स सुर+भाषा] सस्कृत भाषा, देववाणी। (अ मा)

उ०—१ ससक्रत है सुरभाख, आदि पहिला उच्चारू। सुजि भाखा दूसरी, सेस दूजै विसतारू।—सू प्र.

उ०—२ भाखा व्रज मारू सुरभाखा, भाखा प्राक्रत जान भर। पायौ रचण रूपगा पैंडौ, 'मेहाही' थारी महर।—वा दा

सुरभि—स स्त्री [स सुरभि] १ वसत ऋतु।

२ महक, सुगध, खुशवू।

उ०- पुहप सुरभि पाचैवरण, वरखा करण विसेख।—ध व ग्र

३ गौ, गाय।

उ०— सुरभि रसा नू स्याम सौ, खड खगट खाटेह। स्रोण सादिदै सावरत, विप्रा नित वाटेह।—रैवतसिह भाटी

४ पृथ्वी, धरती। ५ शराव, मदिरा।

६ अष्ट मातृकाओ मे से एक।

७ वन तुलसी।

८ एक प्रकार की सुगधित घास।

९ साल वृक्ष की राल।

१० गधक।

११ कस्तूरी।

१२ हरीतकी, हर्रे।

स पु—१३ चैत्र मास, मधुमास।

१४ चदन।

१५ पुष्पहार।

१६ नारियल।

१७ चपक वृक्ष।

१८ समी वृक्ष।

१९ कदव वृक्ष।

२० जातिफल, जायफल।

उ०—१ इण ह्वीज वस मैं भटनेरपुर रै अधीस जसराज सोनगिरै कही वार जवना री जोरदार कटक भाजियौ अर अतरै समय आप री पत्नी री मस्तक गळै बाधि धारा चढि टूक टूक होय सुरलोक मैं निवास कीधौ।—व भा

उ०—२ झळहळ खेडि विवाण झोका। सुर हुय इम जाऊ सुरलोका।—सू प्र

रू भे—सुरालोक।

सुरवइ—स पु [स सुरपति, प्रा सुरवइ] १ इन्द्र।

उ०—दीठउ सुरगिरी क्षीर हरी, सुमिणइ सिरि रवि चद। जनमि युधिष्ठरराय तणइ, मिलीया सुरवई विद।—सालिभद्र सूरि

२ देवता।

उ०—धनुख चडावीउ भूयगि भमउ, इच्छा छइ मन माहि। वड-ठउ दीठउ हाथिणीय, सुरवइ सुमिणा माहि।—सालिभद्र सूरि

सुरवधू—स स्त्री [स] देवागना, अप्सरा।

सुररिखभवन—स पु [स सुर+ऋषभ=श्रेष्ठ+वन=आवासस्थान] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ। (ह ना मा)

२ नन्दन-वन।

सुरवर, सुरवरि—स पु [स सुरवर] देवताओ मे श्रेष्ठ इन्द्र।

उ०—धूलि मिलीय झलमलीय, मयल दिसि दिणयरु छाइउ। गयणैं दूदुभि द्रमद्रमीय, सुरवरि जमु गाईउ।—सालिभद्र सूरि

सुरवल्लभा—स स्त्री [स] १ सफेद दूब।

२ देवागना, अप्सरा।

सुरवल्ली—स स्त्री [स] तुलसी।

सुरवां—स पु [स स्वर] आवाज, कोलाहल, शोर।

उ०—कैसी लगै सुवावणी, धुरवा धुरवा कत। जळ झुरवा सुरवा करै, मुरवा-गण महमत।—अग्यात

सुरवाणी—स स्त्री [स सुरवाणी] १ देव वाणी।

२ सस्कृत भाषा।

उ०—कर खेचा ताणी चूदी काणी, सुरवाणी सोकदा है।
—ऊ का

सुरवाम, सुरवामा—स स्त्री [स सुर+वामा] देवागना, अप्सरा।

उ०—दुति ज्या विघन करण तप दामा। विदा कीध सुरपति सुरवामा।—सू प्र

सुरवास—स पु [स] स्वर्ग वैकुण्ठ।

सुरविटप—स पु [स] कल्पवृक्ष।

सुरवीण, सुरवीणू—स स्त्री [स स्वर+वीणा] एक प्रकार का तार वाद्य।

उ०—देवतू कै मन भूलतै होलतै है अदगू कै परन धीलकू कै टिकोर। सुरवीणू कै झणहण तवूर कै घोर।—सू प्र

सुरवीथी—स स्त्री [स] नक्षत्रो का मार्ग।

सुरवीर—स पु [स.] १ इन्द्र।

२ देखो 'सूरवीर' (रू भे)

सुरवेस्म—स पु [स सुरवेश्मन्] स्वर्ग, देवलोक।

सुरवेस्या—स स्त्री [स सुरवेश्या] अप्सरा। (डि ना मा)

सुरवैरी—स. पु [स सुर वैरिन्] दैत्य, दानव, असुर, राक्षस।

सुरव्रक्ष, सुरव्रख—स पु [स सुर+वृक्ष] कल्पतरु। (अ मा)

उ०—पूरै प्रभु आस सदा परतख, बदा सुरभ्रभ किना सुरव्रक्ष।
—ध व ग्र

रू भे—सुरव्रिक्ष, सुरव्रिख, सुरव्रिछ।

सुरव्रतक—स स्त्री [स सुरवृतक] अग्नि, आग। (डि को)

सुरव्रिक्ष, सुरव्रिख, सुरव्रिछ—देखो 'सुरव्रक्ष' (रू भे)

सुरव्रिति स स्त्री [स सुर+वृति] देव-पूजन, गणेश-पूजा।

उ०—सुभ छवि माडह नयर सचेळौ। सुरव्रिति मिळण थयौ साम्हेळौ।—रा रू

सुरसत—देखो 'सरस्वती' (रू भे)

सुरसपति, सुरसपती—स स्त्री [स सुरसम्पति] कल्पवृक्ष। (अ मा)

सुरस—वि [स] १ रसीला, रसदार।

२ मधुर, मीठा।

३ सुन्दर, मनोहर।

४ स्वादिष्ट, सरस।

सुरसख—स पु—देवताओ का सखा, इन्द्र।

सुरसत—देखो 'सरस्वती' (रू भे) (डि को)

उ०—१ मामी री जीभ माथै जाणै सुरसत ई आय विराजगी व्है। उण रा एक एक बोल मैं इमरत घुळियोडी हो।—फुलवाडी

उ०—२ मामै गढ री दरवाजौ ढावियौ तौ भाणैज मिरै डचोटी मैं डेरा किया। कविया री वाणी माथै सुरसत आय विराजी।
—अमरचूनडी

सुरसतजनक—स पु यौ—ब्रह्मा। (डि को)

सुरसती—देखो 'सरस्वती' (रू भे)

उ०—१ ममतगि ओऊकार, वेद लिखि उवरि मेळा। गग जमना सुरसती, वीणी नाद विद का मेळा।—वि स मा

उ०—२ जोति कै बीच तै सुरख डोरि कैसी खुली। तारा मडळ तै और धार सुरसती की चली।—सू प्र

सुरसत्रु—स पु [स सुर+शत्रु] असुर, दैत्य, दानव, राक्षस।

सुरसदन—स पु [स] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

सुरसक्ष—स पु [स] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

सुरसर, सुरसरि, सुरसरित, सुरसरिता, सुरसरी—स स्त्री [स सुर-सरित्] गगा नदी। (डि को, ह ना मा)

उ०—१ सुरसर सुजळ त्रमळ, सजोगी, दळ मळ अघ ओघी दुख दद।—र ज प्र

उ०—२ अत सीनळ उतराद सू, ऐथ वह्योडौ आय। जळ सुरसरि अघ जाळतौ, करै विलव न काय।—वा दा

उ०—१ ग्रौर सहेली म्हारी मैंहदी माडी। नैंणा सुरमौ सारचौ।
—लो गी

उ०—२ वडी वडी ग्राखिया भीणा भीणा सुरमा ज्योत सी ज्योत मिळाइ लेती।—मीरा

उ०—३ चौथै फेरै री चूनडिया, हीगळू री कूपिया, सुरमा री डविया, काजळ री कूपळिया, स्नोपाउडर री डविया।
—ग्रमरचूनडी

सुरम्य–वि [स] ग्रत्यन्त मनोरम, सुन्दर, रमणीक।
रू भे—सुरम।

सुरयद, सुरयद्र—देखो 'सुरेंद्र' (रू भे.) (ग्र मा, डिं को)
उ०—सुक्रिया मिळ जूथ ग्रनेक करै सुख। रविनाम नरद सुरयद तणौ रुख।—सू प्र

सुरयान–स पु [स सुरयान] देवताग्रो का रथ।

सुरयंद—देखो 'सुरेंद्र' (रू भे)

सुरयौ–स पु—वछडा, वच्छ। (ग्र मा)

सुररग–स पु—फूल, पुष्प। (ग्र मा)

सुररखव–स पु [स सुरर्षभ] इन्द्र। (ना मा)
रू भे—सुररिखभ, सुररिखव।

सुरराण, सुरराणी–स स्त्री [स सुर+राज्ञी] १ पार्वती, गिरिजा।
(ग्र मा)
२ दुर्गा, देवी।
उ०—१ रीझ एम कहियौ सुरराणी। भूपति वर मागौ मन भाणी।—सू प्र
उ०—२ राणमरी वाजी रहै, जद भव जीतौ जाण। धोळा रौ रखमी धरम, 'सचियादै सुरराण।—पा प्र
३ इन्द्राणी, शची।
उ०—ग्राय वइठा माया तणइ ग्रागळि, भरिया थाळ रतन वहु भाति। सनमुख हुऐ कहउ सुरराणी, ग्रवचळ गवरि नणउ ग्रहवाति।—महादेव पारवती री वेलि
रू भे—सुराण, सुराणी, सुराराण, सुराराज, सुराराय, सुराराव।

सुरराइ, सुरराई, सुरराज–स पु [स सुर+राजा] १ देवताग्रो का राजा, इन्द्र।
उ०—१ भूप रूप रतिराज, प्राण ग्रगराज प्रकासण। कौरवराज धन करण, विमळ सुरराज विलासण।—सू प्र
उ०—२ हिय लोभ धरौ वख पुन्य धरौ। क्रत ऊच करौ सुरराज सरौ।—र. ज प्र
२ ईश्वर, परमात्मा।
उ०—घट घट घणनामी स्वामी सुरराई। ग्रतरजामी हुय ग्रोळज न ग्राई।—ऊ का
स स्त्री—३ देवी, दुर्गा, पार्वती।
४ पूर्व दिशा।
५ श्यामापक्षी।
६ भैरवी (कोचरी पक्षी)
वि—१ श्वेत। ꠸
२ श्याम। ꠸
रू भे—सुरराजा, सुरराय, सुरराव, सुराराण, सुराराज, सुराराय, सुराराव।

सुरराजगज—स पु यौ [स] १ इन्द्र का हाथी, ऐरावत।
२ श्वेत। ꠸ (डिं को)
३ कृष्ण, श्माम। ꠸ (डिं को)

सुरराजगुरु–स पु यौ—१ वृहस्पति।
२ पीत, पीला। ꠸ (डिं को)

सुरराजा, सुरराय, सुरराव सुराराय—देखो 'सुरराइ' (रू भे)
उ०—१ दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उतराध विचारै। मकत वाम सुरराय, सोम दाहिणै मभारै।—रा रू
उ०—२ राखियौ निजपुर राय, सुरराय जेण सुहाय। जग कमण फेरै जाव, कळ ग्रकळ 'सेर' नवाव।—रा रू
उ०—३ कई सुरराय डकाय कठीग, वणै छवि छूटक मूठ ग्रवीर।
—मे म
उ०—४ धुरा तू सुराराय नौ नाम वेई।—मे म

सुररास–स पु [स स्वरराशि] मुख, मुह। (ग्र मा)

सुररिखभ,—देखो 'सुररखव' (रू भे)

सुररिखभवन–स पु यौ [स सुरर्षभवन] स्वर्ग। (ह ना मा)

सुररिखव—देखो 'सुररखव' (रू भे) (ग्र मा)

सुररिप, सुररिपु–स पु [स सुररिपु] देवताग्रो का शत्रु, दैत्य, दानव ग्रसुर, राक्षस। (ना मा)

सुररुख–स पु [स सुरवृक्ष] कल्पवक्ष।

सुररिसी–स पु [स सुर+ऋषि] देवर्षि।

सुरळक—देखो 'सीवल' (शेखावाटी)

सुरललिता–स स्त्री—श्वेत, सफेद। ꠸ (डिं को)

सुरळा–स पु—थूक।
ज्यू—सत्त वजै नै सुरळा उडै।

सुरळियामणा–वि [स स्वर+रा+रळियामण] १ कर्णप्रिय, मधुर, मीठा।
उ०—गावइ गीत सुरळियामणा, जिणवर ना लीजइ भामणा।
—स कु
२ मनोहर, सुन्दर।

सुरळियौ–स पु—१ एक ग्राभूपण विशेष।
उ०—वीनणी ग्रावै रामलौ कदैई वैरौ वोरियौ तौ कदैई सुरळियौ पार कर देवै।—वरसगाठ
२ कान का ग्राभूपण विशेष।

सुरलोक, सुरलोकि–स पु [स सुरलोक] स्वर्ग, वैकुण्ठ। (ना मा)

उ०—रूणभूण बैल भवरजी ! मैं वरणू जी, हांजी ढोला ! थारा ज्याऊ सुरही रा बैल हार लगे जद मारूजी बैठ स्योजी, घोजी म्हारी सेजा रा सिणगार !—लो गी

२ देखो 'सुरभि' (रू भे)

उ०—१ तै थप्पे सुर धरम धरम उसरा उथप्पे। देवळ नीरवदेव सुरही उपकार समप्पे।—रा रू

उ०—२ मानि श्रगनि दोय गरुवगन, प्रकट परम पद रूपि। कामधेनि सुरही सवै, सोतो कामधेनि तहा गाथि।—ह पु वा

उ०—३ छोड चल्या भवर जी बाछडी जी, हाजी ढोला रो गई सुरही गाय। दूध पीवरण री रुत चाल्या चाकरी, हा जी म्हारी सेजा रा सिणगार।—लो गी

सुरहौ-वि [स सुरभि+रा प्र श्रौ] १ गाय का।

उ०—१ इण भातिरा मूंगरा श्राकरां रा मूळा रजर्वे रा मासिया घरणै सुरहै घीरा भाग्यिा, श्राडीग्रां गोटळिग्रा ऊपरि भरराट करिनै रहिया छै।—रा सा स

उ०—२ मूग मोठ तूग्रर वणी रे लाल, गाली दाल मसूर। उडद चिणा उपरी घणा रे लाल सुरहा घ्रत भरपूर।—प च चौ

उ०—३ जद इण गवारी जाडी रोटियां कर माथै सुरहौ घी घाल्यौ।—भि द्र

२ सुरभि सबधी, सुरभि का।

सुराचर-स पु [स सुर+चरणम्] श्राकाश नभ। (ना डि को)

सुराण-स पु ब व [स सुर] १ देव गण, सुरगण। (ना डि को)

उ०—सुग वर सुराणा गो दुजाणा मापवाणा सुग मिळे।

—र ज प्र

२ देखो 'सुरराण' (रू भे)

सुराणी—देखो 'सुरराणी' (रू भे)

उ०—सागरिया रै साग सती निरमोह सुराणी। सा सागरिया साग, नरा पर पीड पिछाणी।—दमदेव

सुरातर—देखो 'सुरतर' (रू भे)

उ०—'पातल' सू श्रजमेर प्रथी, नवकोट नरातर। काळ भयकर केविया, सेविया सुरातर।—मोडजी श्रासियौ

सुरायाण, सुरांयाणी, सुरायान, सुरायानि—देखो 'सुरथान' (रू भे)

उ०—णट छळि ऊधरै वम विरदा प्रगट, वरै श्रछरा सुरांयानि वसियौ।—बिहारीदास राठौड रौ गीत

सुरापत, सुरापति, सुरापती—देखो 'सुरपति' (रू भे)

उ०—१ 'जगा' तण राज मामुद्र जग जाणियौ, वयण वाणारियौ येह वारू। 'करन' हर तमामै हेल माटै कियौ, सुरापत विमासै वेल मारू।—महाराणा राजसिंह री गीत

उ०—२ इद्र पूछिया तरइ ब्रह्मादिक, मेछ कीयट रइ हाय मरइ। देव ग्रनइ महात दूहवइ, तिण कहर सुरापति मेद करइ।

—महादेव पारवती री वेलि

सुरापुर—देखो 'सुरपुर' (रू भे) (ना डि. को, ह ना मा)

सुरांराज, सुराराज, सुराराव, सुराराय—१ देखो 'सुरराज' (रू. भे)

उ०—१ [illegible] सुरांराज [illegible] ।—र ज प्र

उ०—२ [illegible] । सुरांराज [illegible] ।—सू प्र

उ०—३ [illegible] । सुराराव [illegible] ।—सू प्र

२ देखो 'सुरराय' (रू भे)

उ० - [illegible] । [illegible] सुराराय [illegible] ।—सू वि

सुरांमोर—देखो 'सुरमोर' (रू भे)

उ०—[illegible] सुरांमोर [illegible] ।—र रा

सुरा-स स्त्री [स] १ शराब, मदिरा। (डि को)

उ०—१ सुरा [illegible] । [illegible] ।

—सू प्र

उ०—२ [illegible] । सुरा [illegible] ।—मे म.

२ [illegible] शराब।

३ अप्सरा, देवांगना।

उ०—तिण सुरा [illegible] सुधरमा सभा मैं बैठि सुरा रै साथ विलास कीधा।—व भा

४ पाणी, जल।

५ पान पात्र।

६ सर्प।

सुराई—१ देखो 'सुराही' (रू भे)

उ०—सा हमारा भाग, मात सुराई सराब री, सा सीसा जमनाजळ री हूळयान पीडा मान, सीटया मूळा सराब वस्त भाव माहै पान उभौ छै।—निमरसिंग पानसार री वात

२ देखो 'सूराई' (रू भे)

सुराक, सुराख—देखो 'सूराख' (रू भे)

उ०—फाडै नाहर काळजा, इक मा श्रचरज छाक। वेस जाम लग काळजै, नालै करै सुराक।—बा दा

सुराग-स पु [स सु+राग] १ श्रत्यन्त गाढा प्रेम।

उ०—यौं व्रिताची यौ प्रयाग सुराग रचाया।—व भा

[तु ।-सुराग] २ किसी गुप्त बात, रहस्य या किसी की वास्तविकता को जानने का सूत्र, इशारा, सकेत।

उ०—उण गवाडी री भेद जाणरण सारू माय रा माय परणाई तडफा तोडता पण भेद री सुराग लगावण सारू डरता घणा।

—फुलवाडी

उ०—३ 'सूर' तणी सुरसरी तणी सर, मानव विहडिया वजावै मार ।—किसनौ आढौ

रू. भे —सुरसुर, सुरसुरी ।

सुरसाम-स पु [स सुर+स्वामी] १ इन्द्र ।

उ०—रमा कत ची वक वे भ्रूह रजी । लखै काम सुरसाम ची चाप लजी ।—रा रू

२ विष्णु ।

३ महादेव ।

४ ईश्वर ।

सुरसामणी, सुरसामिणी-स स्त्री [स सुर+स्वामिनी] पार्वति, दुर्गा ।

उ०—सुभराज करै तना सुरसामिणी, ताहरै नाम साम्हेई तरा । जयौ निमी तुना जग जामिणी, कतियाणी आदेम करा ।—पी ग्र

रू भे —सुरस्यामण, सुरस्यामणी ।

सुरसा-स स्त्री [स] नागो की माता जिसने समुद्र पार करते समय श्रीहनुमान का रास्ता रोका था ।

२ एक अप्सरा ।

३ तुलसी ।

४ ब्राह्मी ।

५ दुर्गा ।

रू भे —सुरस्सा ।

सुरसाइ, सुरसाई-स पु [स सुर+स्वामिन्] १ इन्द्र ।

२ स्वर्ग मे ले जाने का प्रथम दिया जाने वाला द्रव्य या दान ।

उ०—कमधं फतमालोत 'किसोरी', जिण दीठा खळदळा निजोरी सोहै 'माहव' तणौ सवाई, रिण जिण खडग वसै सुरसाई ।
—रा रू

३ देखो 'सूरसाही' (रू भे)

उ० —तरै उमराव दरवार आया, तरै ढाल देखण रै मिस लीनी । तरै परदडी माह सु पटा लीना नै मोदीया री हाटा सू मोहग सुरसाइ आइ ।—रा व वि

सुरसाखी-स पु [स सुर+शाखिन] कल्पवृक्ष ।

सुरसाज-स पु—वृहस्पति । (अ मा)

सुरसाल-स पु [स सु+रसाल] अच्छे व मीठे आमो का वृक्ष ।

उ०—किहा सायर किहा छिल्लरू, किहा केसरि किहा साल । किहा कायर किहा वर सुहड, किहा वण किहा सुरसाल ।
—हीराणद सूरि

सुरसालु, सुरसालू-वि [स सुर+शल्य] देवताओ को सताने वाला, असुर, राक्षस ।

सुरसिंधु-स पु [स] गगा नदी ।

सुरसुदरी-स स्त्री [स] १ देवकन्या, देवागना, अप्सरा ।

२ दुर्गा, पार्वती ।

सुरसुर-स स्त्री —१ फुसफुसाहट, सुरसुराहट ।

२ देखो 'सुरसरी' (रू भे)

उ०—चाव घणौ कर चेत, सापडता थारै सु-जळ । सुरसुर पाप समेत, ताप मिटै जीवा तणा ।—वा दा

सुरसुरभि, सुरसुरभी-स स्त्री [स] देवताओ की गाय, कामधेनु ।

सुरसुराट, सुरसुराहट-स स्त्री —१ खुजलाहट ।

२ गुदगुदी ।

३ फुसफुसाहट ।

सुरसुरी—देखो 'सुरसरी' (रू भे) (अ मा)

उ०—जग अघ हरण सुरसुरी जामी । राज तणा चरणा रघुराज ।
—र ज प्र.

सुरसेनप-स पु [स सुरसेनप] देवताओ का सेनापति, कार्त्तिकेय ।

सुरसेना-स स्त्री —देवताओ की सेना ।

रू भे —सेनसुर ।

सुरस्थान-स पु [स सुरस्थान] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ, स्वर्गलोक ।

२ देवालय, मदिर ।

सुरस्याम—देखो 'सुरस्वामी' (रू भे)

उ०—नटणी ज्यू मुगती नचैं, सदावाम सुरस्यांम ।—ह ना मा

सुरस्यामण, सुरस्यामणी—देखो 'सुरसामणी' (रू भे) (ह ना मा)

सुरस्यामी, सुरस्वामी-स पु [स सुरस्वामिन्] १ विष्णु ।

२ ईश्वर ।

३ इन्द्र, सुरेन्द्र ।

रू भे —सुरस्याम ।

सुरस्सती—देखो 'सरस्वती' (रू भे)

उ०—सुरस्सती द्वारमती विचि सूर । पयौ अतस 'रैण' वडै ध्रूम पूर ।—सू प्र

सुरस्सा—देखो सुरसा' (रू भे)

उ०—सुरस्सा असी जोजना डाव साहै । थमाऊ निवै जोजना है अथा है ।—सू प्र

सुरह—देखो 'सुरभि' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ मोती-जडी ज हाथि, सुरह सुगधी वाटली । सूती माभिम राति, जाणू ढोलू जागवी ।—ढो मा

उ०—२ सुरह दुज देव तीरथ निगम सासतर, जनेऊ तिलक तुळसी निरजणु जाप ।—नरहरदास वारहठ

उ०—३ सूर वाहर चढै चारणा सुरह री, इतै जस जितै गिरनार आवू ।—वाकीदास आसियौ

सुरहउ, सुरहर, सुरहरि, सुरहरी, सुरहळ—देखो 'सुरभि' ।

उ०—१ सिंघु परइ सत जोअणै, खिविया वीजळियाह । सुरहउ लोद्र महक्किया, भीनी ठोवडियाह ।—ढो मा.

उ०—२ सुरहळ रे तेरी खेचा जाय, वारी, म्हारा गूगा भल रही वौ ।—लो गी

सुरहि, सुरही-स स्त्री —गाडी जो वैलो द्वारा खीची जाती है ।

३ पाव का चिन्ह, खोज, निशान ।

४ पता, खबर, ठिकाना ।

५ तलाश, अनुसधान ।

६ जिज्ञासा ।

७ देखो 'सूराख' (रू भे)

सुरागाय—देखो 'सुरेगाय' (रू भे)

सुरागार—स पु [स सुरा+आगार] जहा मद्य बिकता हो, शराव-खाना ।

सुरागी—वि —अनुरक्त, आशक्त ।

सुराचार—स पु [स सुर+आचार] १ देवताओ के आचार-विचार ।

२ रीति, ढग ।

उ०—सुराचार घटारव तार साजै । वणै नौवती सोभती रीत वाजै ।—रा रू

सुराचारज—स पु [स सुर+आचार्य] देवताओ के गुरु वृहस्पति । (अ मा)

सुराज—स पु [स] १ श्रेष्ठ राजा द्वारा शासित देश, अच्छे राजा वाला देश ।

२ देखो 'सुराज्य' (रू भे)

उ०—१ मलयानिळ वाजि सुराज थिया महि, भई निसकित अकभरि ।—वेली

उ०—२ कुडळिय्या उदिय्यापुर की छव अधिक सपति नगर समाज । घर घर परजा लखपती राणौ 'भीम' सुराज ।

—वगसीराम प्रोहित री वात

सुराजा—स पु [स] श्रेष्ठ राजा जो प्रजा पालन एव शासन व्यवस्था ठीक रखता हो ।

सुराजीव—स पु [स] विष्णु ।

सुराज्य—स पु [स] ऐसा राज्य जिसमे प्रजा के हितो की रक्षा की जाती है और शासन का प्रवध अच्छा रखा जाता हो ।

रू भे—सुराज ।

सुराट—स पु [स] सुरराज, इन्द्र सुरपति । (ह ना मा)

सुराडौ—स पु [देश] खाद्य पदार्थ के स्वाद पर ध्यान न देकर उदर पूर्ति करने वाला पशु या व्यक्ति ।

सुराति—देखो 'सूरता' (रू भे)

उ०—दुरजोण माण, अरजणह वाण । भुजवळी भीम सुराति सीम ।—वचनिका

सुराद—स [स सुराध्य] सूर्य रवि ।

उ०—निमो जग आसाय पूरणजद, निमौ विस्वनाद सुराद सुरद ।

—सूरजनारायण री अस्तुति

सुराद्रि—स पु [स] सुमेरु पर्वत ।

सुराधिप—स पु [स सुर+अधिप] इन्द्र, सुरराज ।

सुराधीस—स पु [स. सुर+अधीश्वर] इन्द्र, सुरपति ।

सुरानक—स पु [स] देवताओ का नगाडा ।

सुरानीक—स स्त्री [स] देवताओ की सेना ।

सुरापगा—स स्त्री [स] गगा नदी ।

सुरापत, सुरापति, सुरापती—देखो 'सुरपति' (रू भे)

सुरापान—स पु [स सुरापान] १ मद्यपान की क्रिया या भाव, मद्यपान ।

उ०—सुरापान आमुख सँहैत, करी गोठ तिण ठौड । रात सरोवर पर रह्यौ, राजसी राठौड ।—पा प्र

२ शराव, मदिरा ।

उ०—पी जाय भठी इक सुरापांन । भख जाय अरद्ध भैसा भय न ।

—वि स

३ शराव के साथ खाये जाने वाले चटपटे पदार्थ ।

सुरापात्र—स पु —१ मदिरा रखने का पात्र ।

२ मदिरा पीने का पात्र ।

सुराब्धि—स पु [स] सुरा का समुद्र, मदिरा सागर ।

सुरामुख—देखो 'सुरमुख' (रू भे)

उ०—सुरामुख हूतौ नै वळै व्रत सीचियौ ।—दूदौ आसियौ

सुरायण—स पु —वहादुर दल, योद्धा-समूह ।

उ०—सुरायण पूर किया रिणसाज । विढै देविचद अनै वछराज ।

—सू प्र

सुरार, सुरारि, सुरारी—स पु [स सुर+अरि] १ देवताओ का शत्रु, असुर, दैत्य, दानव, राक्षस ।

उ०—रावण गुणै सुरार, हार सारखौ वभीखण, अमी वट आसुरा, जोर अत कमी सुरज्जण ।—रा रू

२ एक प्रकार की वरसाती घास ।

सुराळ—स पु —देवता ।

उ०—सुराळ नराळ व्याळ आळ पाळ ढाळ सक्र । सिघाळ अकाळ काळ टाळ वेद साख ।—र ज प्र

सुरालय—स पु [स] १ देवताओ के रहने का स्थान, मदिर, देवालय ।

२ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

३ सुमेरु पर्वत ।

४ शराव-खाना ।

सुराळी—देखो 'सुरावळी' (रू भे)

सुराव—स पु [स] १ एक प्रकार का घोडा ।

२ उत्तम ध्वनि ।

सुरावट—स स्त्री [स शूरत्व] वहादुरी, शूरता ।

सुरावती, सुरावनि—स स्त्री —कश्यप की पत्नी और देवताओ की माता अदिति ।

सुरावळि, सुरावळी—स स्त्री [स स्वरावली] १ गायन मे स्वरो का थाट, स्वर पक्ति ।

विराजै रे सुरेगलो सुरेंगलो। रोहणाई गिर गिर गिरवी रे सुरेंगलो सुरेंगलो।—लो गी

सुरेंद्र-स पु. [स] १ सुरराज, इन्द्र।

उ०—१ नरेंद्र की सुरेंद्र की पगपरेंद्र की प्रिय। [illegible] नाहि कान्नीक ही प्रिय।—रु का

उ०—२ तेरा ही पग ताला मिळ लोक में नाम सुरेंद्र नमें नरनारी।
—नि द

२ विष्णु।

३ सूर्य्य, रवि।

४ देवगण, देवता।

रू भे —सुरद, सुरदर, सुरंदर, सुरयद्र, सुरविंद, सुरिंद, सुरिंद्र, सुरिंद्द, सुरिंद्र, सुरिय, सुरियंद, सुरीद, सुरींद, सुरींद्र, सुरयंद।

सुरेंद्रचाप-स पु यौ [स] इन्द्रधनुष।

सुरेंद्रलोक-स पु यौ [स] इन्द्रलोक।

सुरे-स पु —१ स्वरवाला वाद्य।

२ देखो 'सुरै' (रू भे)

सुरेख, सुरेखा-स स्त्री [स] १ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हाथ या पैर की शुभ मानी जाने वाली रेखा, सुन्दर रेखा।

२ सुन्दर रेखा।

उ०—अणियाळा नयण आंजिया अंजण, राजळ रेख सुरेख सर। उद्र तणाउ दिन मूठ प्रगुठी, भळहर नागर धाम घर।
— महादेव पारवती री वेलि

सुरेगाय-स स्त्री —गायों की नस्ल विशेष जो हिमालय की तराई वाले क्षेत्र में पाई जाती है। इसी के पूंछ का चंवर बनता है।

सुरेज्यजुग-स पु [स सुरेज्ययुग] बृहस्पति का युग जिसमें निम्नलिखित पांच वर्ष होते हैं —

१ अंगिरा, २ श्रीमुख, ३ भाव, ४ युवा व ५ धाता।

सुरेली-स स्त्री —एक प्रकार का घास। (शेखावाटी)

सुरेस-स पु [स सुर+ईश] १ सुरराज, इन्द्र।
(अ मा, ह नां मा)

उ०—१ कहै सनकादिक नाम प्रवीन, पढै नित नारद धारि प्रवीन। रहै नित सेव रमाय सुरेस, आदेस, आदेस, आदेस आदेस।
—ह र

उ०—२ ध्यार चक्र गाजन समय पछपा रे, घरहर धूजे सेस। रज उठी रे गयणां रवि ढांकियौ रे, सरसी मन ही सुरेस।
—प च चौ

२ विष्णु, ईश्वर।

३ कृष्ण।

४ शिव।

५ लोकपाल।

रू भे —सुरेंस।

सुरेसर—देखो '[illegible]' (रू भे)

सुरेसी-स स्त्री [स सुरेशी] दुर्गा देवी।

सुरेसुर, सुरेस्वर स पु [स सुरेश्वर] १ देवताओं का स्वामी, इन्द्र।
(अ मा)

२ शिव, ईश्वर।

उ०—[illegible]

[illegible] सुरेसर।—[illegible]

३ [illegible]

उ०—[illegible] सुरेसर। [illegible]

[illegible]

रू भे —[illegible]।

सुरेस्वरी-स स्त्री [स सुरेश्वरी] १ देवताओं की स्वामिनी, दुर्गा देवी।

२ लक्ष्मी।

सुरै—देखो 'सुर' (रू भे)

उ०—[illegible]

[illegible]

सुरैगडो-स पु —[illegible]।

वि —[illegible]।

रू भे —सुरैगो।

सुरै-स स्त्री [स सुरभि] १ गाय, गौ।

२ [illegible]

३ [illegible]

[illegible] होती है।

४ [illegible]

स पु [स सुर] ५ देवता, सुर।

सुरोतरि—देखो 'सुरतरु' (रू भे)

उ०—[illegible] सुरोतरि। [illegible]
—रा रू

सुरोदय-स पु [स सुरोदय] १ सूर्योदय।

२ स्वरोदय।

सुरोमा-वि —जिसकी रोमावलि सुन्दर हो।

सुरयद—देखो 'सुरेंद्र' (रू भे,)

उ०—इम जीते सनवज्र धायो, प्रति द्वार धरी धमाह। सुरयद तीन वहु लीध सुग, जगजीत स्याह।—सू प्र

सुलक-स स्त्री —सुन्दर कटि, श्रेष्ठ कटि।

वि —सुन्दर कटि वाली।

सुलकी-वि स्त्री —सुन्दर कटि वाली सुन्दरी।

सलव—देखो 'सुलव' (रू भे) (ह ना मा)

सुलक्ष, सुलक्षण-स पु [स सुलक्षण] १ किसी के शरीर पर होने

सीगा चद्र ग्रहा मैं दिनेस। पारजत व्रछा सीगा सुरा मैं सुरींद्र पवै, पवै सीगा प्रथी नरा मैं नरीद 'सावतैस'।—सावतसीघ रौ गीत

सुरी–स स्त्री [स सुरभि] १ सीमा या सरहद का पत्थर।

२ पुण्य निमित्त छोडी हुई भूमि के सरहद का पत्थर जिस पर गोवत्स का चित्र अकित हो, गोचर भूमि की सीमा का पत्थर।

३ देवी, दुर्गा।

उ०—रगता सेता रगा, नमौ मा क्रमना लीला। सीकोतरी आसुरी, सुरी सुसिला गरवीला।—देवि

४ देवागना, अप्सरा।

उ०—उगा भवग वमग राजा 'अजन', आप सुखासग ऊतरी। लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी।—रा रू

सुरीत, सुरीति, सुरीती–स स्त्री [स सुरीति] अच्छी या उत्तम रीति, तरीका, ढग।

उ०—१ सुभ कठ राग छत्रीस, सुख ग्रोप जोप सुरीत। जगमगत तोरग जोत, गगलाल नग ससि गोत।—रा रू

उ०—२ हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा।—गु रु व

सुरीयद—देखो 'सुरेंद्र' (रू भे)

सुरीयाग—वि —शूरवीर, बहादुर।

उ०—वाता जाता जुगा 'जोधा' नरा, जाय नई आदू वडा सुरीयाग।—रावत जोधसिह कोठारिया री गीत

सुरीली–वि स्त्री [स] कर्णप्रिय, मधुर, मीठी।

उ०—उगी वेळा रसाळ रै लीला पत्ता माय लुक नै बैठी कोयलडी आपरी कूक री सुरीली तान छेडी अर छोटी काळी चिडकोली प्रेम मैं लीन आपसरी मे बाथ्या मैं बथ्यै जोडै कनै आनै आपरी लाबी सुरीली बिगल वजादी।—तिरसकू

स स्त्री —मधुर आवाज, मधुर ध्वनि।

सुरीलौ–वि [स्त्री सुरीली] १ कर्णप्रिय, मधुर, मीठा (कठ, स्वर)।

उ०—डाळ डाळ पछिया रा सुरीला गीत सुणीजग लागा।

—फुलवाडी

२ मधुर या मीठे स्वर वाला।

उ०—म्हनै रोज सुगाई देवग आळा सुच्छम सदेसडला सू कितरी ई घगी सापरत, परस, गध, सवरग अर सुवाद रै मगळै गुगा सू छळकती, सीतळ फुटरी, नसीली सुरीली वा म्हनै आपरी मीठी बाथा माय भरनै चाली गई।—तिरसकू

सुरीस–स पु [स सुर+ईश] इन्द्र, सुरेन्द्र।

उ०—साल निवार सुरीस कियौ सुख, वीस भुजा हग वाक रौ। वैख दियौ रघुराज भुजावळ, राज भभीखग लक रौ।

—र ज प्र

सुरु—देखो 'सरु' (रू भे)

उ०—नोवना सुरु हुई जद वारली फौज मैं जागीयौ आज नोबन सुरु हुई है सौ जागा किलागदासजी सासरै सू आय गया दीसै है।

—नैगसी

सुरुगुरु, सुरुगुरू—देखो 'सुरगुरु' (रू भे)

उ०—सुकीर नासिका सरूप, वेस रीत राजियै। सुरुगुरु र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै।—सू प्र

सुरुचि–स. स्त्री [स] १ राजा उत्तानपाद की दूसरी पत्नी जो ध्रुव की विमाता थी।

२ उत्तम रुचि, सदिच्छा।

वि —१ उत्तम रुचिवाला।

२ स्वाधीन, स्वतत्र।

सुरुज—देखो 'सूरज' (रू भे)

सुरुजमुखी—देखो 'सूरजमुखी' (रू भे)

सुरुताम–स पु [स सुर+राज+तमाम] सब देवता, देवगग।

उ०—तिहा जक्ष क्यनर मिध माधिक, आविया सुरुताम। सुरा नारी धवळ गावइ, रची चउगी ताम।—रुकमगी मगळ

सुरुद–स पु [स सुहृद] मित्र, दोस्त। (अ मा)

सुरू—देखो 'सरु' (रू भे)

उ०—१ स्रीडाढाळी ग सुरू, वद्या पद अरविंद। अव वदू अवसाग मैं, ए पद पकज 'इद'।—मे म

उ०—२ दौलतखाना रौ म्हेल नवौ करायौ। नाव इग रौ पैं'ला अजीतविलास दीयौ थौ, पछै दौलतखानौ कैगौ सुरु हुवौ १७७५।

—मारवाड री ख्यात

सुरूप–वि [स] १ सुन्दर, मनोहर, खूबसूरत।

उ०—१ कोई रसायग औसध खाय कुरूप सू सुरूप हुवौ।

—पवदडी री वारता

उ०—२ काळी भोत कुरूप, कस्तूरी काटै तुलै। सक्कर वडी सुरूप, नरजा तुलै नाथिया।—नाथियौ

२ समान, सदृश्य।

३ पडित, विद्वान, बुद्धिमान।

४ कवि। (अ मा)

स पु —१ अच्छा रूप, सुन्दर रूप, अच्छी आकृति।

२ प्रकृति, स्वभाव।

३ ढाचा, डौल।

[स सुरूप] ४ शिव।

५ कामदेव।

६ तरह, प्रकार, किस्म।

७ देखो 'स्वरूप' (रू भे)

सुरूपा–स स्त्री —पुराणानुसार एक गाय।

वि —रूपवती, सुदरी।

सुरेंगलौ—देखो 'सुरैंगलौ' (रू भे)

उ०—वाडी वाडी भवरौ भिगकै रे सुरेंगलौ, चद्रमाजी री पाग

मत हाथ लगावौ काटै रै, श्री फूल देखलौ खडचौ जळै ।—सगुंतला

२ किसी प्रकार की गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटना, समस्या का समाधान होना ।

३ किसी गूढ विषय का आशय समझ मे आना, समझना ।

४ भ्रम का निवारण होना, भ्रम मिटना ।

उ०—उळझ'रि सुळझया साधकं, जै कोई सरणं जाय । जनहरीया जब ऊबरै, राम नाम सिश्राय ।—अनुभववाणी

५ रस्सी, डोरे, तार आदि मे पडी हुई गुत्थिया मिटना, गुत्थिया निकल कर सीधा होना, गुत्थी खुलना ।

६ किसी प्रकार की लडाई या झगडे का निपटारा होना, फैसला होना ।

उ०—केई दीह ताई तौ जमी का झोड कीना, पाछै न्याय तावै सीम काटि सुळझ लीना ।—शि व

७ किसी प्रकार के बधन से मुक्त होना ।

सुळझणहार, हारौ (हारी), सुळझणियौ—वि० ।

सुळझिश्रोडौ, सुळझियोडौ, सुळझ्योडौ—भू० का० कृ० ।

सुळझीझणौ, सुळझीझबौ—भाव वा० ।

सळूझणौ, सळूझबौ, सुरझणौ, सुरझबौ—रू० भे० ।

सुळझाड, सुलझाडौ—स पु १—जब किसी प्रकार की उलझन न हो, उलझनरहित स्थिति, अवस्था या भाव ।

२ साफ-सफाई, स्पष्टता ।

३ फैसला, निपटारा ।

४ किसी समस्या का समाधान ।

उ०—उहारौ सुळझाडौ कराइयौ, सारी धरती पागडै लगाय पाछा भटनेर आइया ।—ठाकुर जेतसी री वारता

रू भे—सळझाड सळूझाडौ ।

सुळझाणौ, सुळझाबौ—क्रि स ['सुळझणौ' क्रि का प्रे रू] १ किसी प्रकार की उलझन से दूर करना, उलझन मिटाना ।

२ किसी प्रकार की गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटाना, समस्या का समाधान करना ।

उ०—एक दिन उणरै गाव लखपति सेठ खुद चलायनै कुमार रै घरै आया । कुमार चाक छोडनै वारै सामी गियौ । तद सेठ केवण लागा—भाया एक वात अळूझगी है, थू चावै तौ सळझा सकै ।
—फुलवाडी

३ किसी गूढ विषय के आशय को समझाना, स्पष्ट करना, व्याख्या करना ।

४ भ्रम निवारण करना, दूर करना ।

५ किसी तार, डोरे रस्सी आदि मे पडी गुत्थियो को निकालना, गुत्थिया खोलना, सुलझाना ।

उ०—धूजतै हाथा चवरण री काघसी सू केस सुळझाय, टाळ काढती वा घकै कैवण लागी—म्हारी काली वाता री कोई सथारौ थोडौ ई है ।—फुलवाडी

६ किसी प्रकार के बधन से मुक्त करना ।

उ०—नैन हमारे यार सू, रहीया उळिझि उळिझि । हरीया न्यारा ना हुवै, सुळझाया न सुळिझि ।—अनुभववाणी

७ किसी प्रकार झगडे को निपटाना, फैसला करना ।

सुळझाणहार, हारौ (हारी), सुळझाणियौ—वि० ।

सुळझायोडौ—भू० का० कृ० ।

सुळझाईजणौ, सुळझाईजबौ—कर्म वा० ।

सळूझाणौ, सळूझाबौ, सळूझावणौ, सळूझावबौ सुरझाणौ, सुरझाबौ, सुरझावणौ, सुरझावबौ, सुळझावणौ, सुळझावबौ
—रू० भे० ।

सुळझायोडौ—भू का कृ —१ किसी प्रकार की उलझन दूर किया हुआ, उलझन मिटाया हुआ २ कोई गुत्थी, जटिलता या पेचीदगी मिटाया हुआ, समस्या का समाधान किया हुआ ३ किसी गूढ विषय के आशय को समझाया हुआ, स्पष्ट किया हुआ, व्याख्या किया हुआ ४ भ्रम निवारण किया हुआ, भ्रम दूर किया हुआ ५ गुत्थिया खोला हुआ, सुलझाया हुआ (तार, डोरा, केश) ६ किसी प्रकार के बधन से मुक्त किया हुआ ७ झगडा निपटाया हुआ, फैसला किया हुआ ।

(स्त्री सुळझायोडी)

सुलझावणौ, सुलझावबौ—देखो 'सुळझाणौ, सुळझाबौ' (रू भे)

उ०—एक दिन सोनल-वरणी कवराणी झिरोखा मैं बैठी सोना री काघसी सू केस सुळझावती ही ।—फुलवाडी

सुळझावणहार, हारौ (हारी), सुळझावणियौ—वि० ।

सुळझाविश्रोडौ, सुळझावियोडौ, सुळझाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

सुळझावीजणौ, सुळझावीजबौ—कर्म वा० ।

सुळझावियोडौ—देखो 'सुळझायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुळझावियोडी)

सुळझियोडौ—भू का कृ —१ किसी प्रकार की उलझन से मुक्त हुवा हुआ, छुटकारा पाया हुआ २ समस्या का समाधान हुवा हुआ, पेचीदगी, गुत्थी या जटिलता मिटा हुवा ३ गूढ विषय के आशय समझ मे आया हुवा, स्पष्ट हुवा हुआ ४ भ्रम निवारण हुवा हुआ ५ गुत्थिया खुला हुवा, सुलझा हुआ (तार, डोरा आदि) ६ निपटा हुआ, फसला हुवा हुआ (झगडा) ७ बधन मुक्त हुवा हुआ ८ सजा हुआ, चतुर ।

(स्त्री सुळझियोडी)

सुळटौ, सुलट्टौ—वि (स्त्री सुळटी) १ उल्टे का विपरीत ।

२ औंधे का विपरीत, सीधा, सीधा ।

३ उचित, सीधा, ठीक ।

उ०—१ छतीस राजकुळी हुई । सुलटै राह चाल्या । रिखभदेवीजी रै पुत्र बाहुबळी हुवौ ।—रा वसावळी

वाला ऐसा कोई चिन्ह, जो उसके भाग्यशाली होने का द्योतक हो, शुभ लक्षण।

उ०—सालहोत्र सुलक्षण साख, लेखा हय चौवीस लाख। सोल सहस घणौ सनमान, राजै साथै राजान।—घ व ग्र

[स सुलक्षण] २ व्यावहारिक दृष्टि से अच्छी आदत, अच्छा स्वभाव।

३ विद्वान, पंडित।

४ कवि।

वि —सुन्दर, मनोहर।

रू भे —सुलक्षण, सुलखण, सुलखण, सुलक्खण, सुलख्यण, सुलच्छण, सुलछण।

सुलक्षणौ–वि [स सुलक्षण] (स्त्री सुलक्षणी) १ जिसके भाग्य के लक्षण अच्छे हो, शुभ लक्षण, भाग्यशाली।

२ जिसकी आदतें अच्छी हो।

३ चतुर, निपुण, गुणवान, व्यवहारकुशल।

४ सुन्दर मनोहर।

५ विद्वान, पंडित।

६ कवि।

७ सीधा, सयाना।

रू भे —सुलखणौ, सुलखणु, सुलखणौ, सुलच्छणौ, सुलछणौ।

सुलखण—देखो 'सुलक्षण' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

सुलखणु, सुलखणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू भे)

उ०—१ यत धन्ना होइ सुलखणा, कुसती होइ सलज्ज। खारा होइ सीयला, वहु फल फलै अकज्ज।—वि कु

उ०—२ ओगण कुवाण री जान नी। काछ द्रढौ। सुलखणौ। इतवारी। जूनी वाता-विगता रौ पगतस अवतारी।—फुलवाडी

उ०—३ हू भवरौ सुलखणौ, कैर मूळ नहि खाय। का वैठू उड केतकी, का सतलघण रह जाय।—अग्यात

उ०—४ भोळौ ठाकर समझ्यौ के धणी रै जोगा री वात सुणनै सुलखणी नार सुध-वुध पातरगी।—फुलवाडी

उ०—५ रावळ मानसिह, रावळ परताप रै खवास पदमा, विणी रै पेटरौ, रावळ प्रताप रै और वेटौ को न थौ, नै मानसिह निपट सुलखणौ हुतौ, पाच रजपूत देसरा मिळनै मानसिह नू टीकौ दीयौ, राज करै छै।—नैणसी

उ०—६ मेरौ साम सुलखणौ, कोई करै घणेरा लाड।—लो गी

(स्त्री सुलखणी)

सुलख्खण, सुलख्यण—देखो 'सुलक्षण' (रू भे)

उ०—तखधीर सुलख्यण, वीर विचख्यण काइम रख्यण कीति। 'सामौ' मति सागर सूरम गागर राज उजागर रीति।—ल पि

सुळगणौ–वि (स्त्री सुलगणी) १ शीघ्र जलने वाला, ज्वलनशील।

२ भली प्रकार अकुरित होने वाला।

सुळगणौ, सुळगवौ—देखो 'सिळगणौ, सिळगवौ' (रू भे)

उ०—अरै पपीहा वावला, आधी रात न कूक। होळै होळै सुलगती सौ तै डारी फूक।—अग्यात

सुळगणहार, हारौ (हारी), सुळगणियौ—वि०।

सुळगिओडौ, सुळगियोडौ, सुलग्योडौ—भू० का० कृ०।

सळगीजणौ, सुळगीजवौ—भाव वा०।

सुळगाणौ, सुळगावौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगावौ' (रू भे)

उ०—म्हैं छकडा रा पाटिया रै आपो लगाय नै पग लावा कर लिया अर सिगरेट सुळगाय ली।—अमरचूनडी

सुळगाणहार, हारौ (हारी), सुळगाणियौ—वि०।

सुळगायोडौ—भू० का० कृ०।

सुळगाईजणौ, सुळगाईजवौ—कर्म वा०।

सुळगायोडौ—देखो 'सिळगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुळगायोडी)

सुळगावणौ, सुळगाववौ—देखो 'सिळगाणौ, सिळगावौ' (रू भे)

सुळगावियोडौ—देखो 'सिळगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुळगावियोडी)

सुळगियोडौ—देखो 'सिळगियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सुळगियोडी)

सुलग्न–स पु [स] ज्योतिष के अनुसार श्रेष्ठ लग्न।

सुलग्नौ–वि [स सुलग्न] ज्योतिष के अनुसार श्रेष्ठ लग्न का।

उ०—रायधण पाछौ फिरियौ सुलग्नौ साहौ जोयनै कुवर रायधण नू मजनळ परणाई छै।—रायधण भाटी री वात

सुलच्छण—देखो 'सुलक्षण' (रू भे)

उ०—तखत तपत जोधाणपत, वरण 'विजौ' विचार। तेज सुलच्छण धरम रत, सव री लेवै सार।—सि सु रू

सुलच्छणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू भे)

उ०—सोई पुरस सुलच्छणौ, मोइज पूत सपूत। मोइज कुळरौ सेहरौ, ताडै जस रथ जूत।—वां दा

(स्त्री सुलच्छणी)

सुलछ, सुलछण—देखो 'सुलक्षण' (रू भे)

उ०—वोह चद्र वदन सुलछण वतीस। सोलै सिणगार आभ्रण छतीस।—सू प्र

सुलछणौ—देखो 'सुलक्षणौ' (रू भे)

(स्त्री सुलछणी)

सुळझ, सुळझण–स स्त्री —१ सुलझने की क्रिया या भाव।

२ उलझन का विपर्याय।

सुळझणौ, सुळझवौ–क्रि अ —१ किसी प्रकार की उलझन से मुक्त होना, छुटकारा पाना।

उ०—जद पट उळझै तौ पग सुळझै। मद मस्त मना मैं हाम सुझै।

४ सीधा, सयाना।
उ०—पछै सिवरामदासजी सतोकचदजी दोनू सुलभ पणै रह्या। उवै दोनूइ विमुख रह्या तौ पिण स्वामीजी उणारी गिणत राखी नही।—भि द्र
रू भे—सलभ, सुलभौ, सुल्लभ, सुल्लभौ।
सुलभता—स स्त्री [स] १ सरलता, आसानी, सुगमता।
२ उपयोगिता।
सुलभौ—देखो 'सुलभ' (रू भे)
उ०—आप्या सीस सु तौ ऊवरिया, वसुधा वादीजै वड गात। 'सीधल' कहै, हमै जस सुलभौ, गरथ सटै बोलै गुण पात।
—सीधळ खगार रायपालौत रो गीत
सुललित—वि [स.] अत्यन्त सुन्दर।
उ०—आव्या पूज्य उपासरइ रे, सुललित करइ रे वखाणि। सग सहु श्रम साभलइ रे, धन जीव्यु परमाण।—स कु
सुललौतर—स पु—शुभ लक्षण।
सुलव—स पु [स शुल्व] तावा, ताम्र। (अ मा)
वि—सूक्ष्म, वारीक।
रू भे—मुलव।
सुळसुळ, सुळसुळाहट—स स्त्री—१ कानाफूसी, फुसफुसाहट।
२ अफवाह, जनश्रुति।
उ०—लुचा हरदयाल सू अडगौ लगायौ, छळ करै आपसू रया छानै। सतावी हुई सुळसुळ मुलक सेर मै, मुसी कोठरिया तणी मानै।—ऊमरदान लाळस
सुलह—स स्त्री [फा सुलह] मेल-मिलाप, सधि, समझौता।
उ०—इतरौ सुणता दीवाण रै मुहडै रौ रग फुरगयौ। साखलै नापै नू कह्यौ—किण ही भात सुलह पण हुवै ?—नैणसी
रू भे—सलै, सुलै, सुल्लह।
सुलहनामौ—स पु [फा सुलहनामा] वह पत्र या दस्तावेज जिसमे सधि या समझौते की शर्तें लिखी गई हो, राजीनामा।
रू भे—सुलेनामौ।
सुळाणौ, सुळाबौ—क्रि अ.—१ प्रसव के पूर्व मादा पशुओ के पेट मे दर्द होना।
क्रि स—२ लकडी या धान मे कीडे पडने का अवसर देना।
सुळावणौ, सुळाववौ—रू भे।
सुलाणौ, सुलाबौ—क्रि स—१ शयन कराना, लिटाना, सोने के लिये प्रेरित करना।
२ मैथुन या सभोग के लिये किसी को साथ मे लेटाना।
सुलाणहार हारौ (हारी), सुलाणियौ—वि०।
सुलायोडौ—भू० का० कृ०।
सुलाईजणौ, सुलाईजवौ—कर्म वा०।
सुलावणौ, सुलाववौ—रू० भे०।
सुलायोडौ—भू का. कृ—१ शयन कराया हुआ, लिटाया हुआ, सोने के लिये प्रेरित किया हुआ २ साथ मे लिटाया हुआ।
(स्त्री. सुलायोडी)
सुळावणौ, सुळाववौ—देखो 'सुळाणौ, सुळावौ' (रू भे)
सुलावणौ, सुलाववौ—देखो 'सुलाणौ, सुलावौ' (रू. भे)
उ०—उन्हाळै दै ईल, नील चौमास खुलावै। सीयाळै न्यायास, आखरचा सुखी सुलावै।—दमदोख
सुलावणहार, हारौ (हारी), सुलावणियौ—वि०।
सुलाविओडौ, सुलावियोडौ, सुलाव्योडौ—भू० का० कृ०।
सुलावीजणौ, सुलावीजवौ—कर्म वा०।
सुलावियोडौ—देखो 'सुलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुलावियोडी)
सुळावख, सुळावख—देखो 'साळावक' (रू भे)
उ०—वेहु भैरवा तणौ सुळावख, वळै सगत नाहर असवार। मछ-मनोज मोरखट मुखरै, हुओ न राणै भीम जुहार।—पूरजी भादौ
सुलिताण, सुलितांन—देखो 'सुलताण' (रू भे)
उ०—गहि गुरु ग्यान जागि जीव जोगी, झूठै भरमि भुलाना रे। हरि सू विमुख नाचि नाना विधि, छाडि तजै सुलितांना रे।
—ह पु वा
सुळियोडौ—भू का कृ—१ कीडो द्वारा खाया हुआ (अनाज या लकडी) २ निरर्थक या वेकार हुवा हुआ (धन या सामान) ३ कमजोर हुवा हुआ।
(स्त्री सुळियोडी)
सुलूक—देखो 'सलूक' (रू भे)
सुलेक—स पु [स] एक आदित्य का नाम।
सुलेख—स पु [स] सुन्दर लेख, सुन्दर लिखावट।
सुलेनामौ—देखो 'सुलहनामौ' (रू भे)
सुलेमानी—स पु—१ सफेद आखो वाला घोडा।
२ एक प्रकार का पत्थर जिसका कुछ अश सफेद व कुछ अश काला होता है।
३ एक प्रकार का नमक विशेष।
सुलै—देखो 'सुलह' (रू भे)
सुलोक—स पु [स] १ स्वर्ग या वैकुण्ठ।
२ अच्छा व भला आदमी।
सुलोचण, सुलोचन—स पु [स सुलोचन] १ मृग, हरिण।
२ रुक्मिणी के पिता का नाम।
३ अच्छे एव सुन्दर नैत्र।
वि—अच्छे नैत्रो वाला।
सुलोचणा, सुलोचना—स स्त्री [स सुलोचना] १ एक अप्सरा का नाम।
२ मेघनाद की स्त्री व वासु की पुत्री, यह पतिव्रता थी।

उ०—२ जुग चालै जुग राह में, इनकी सुलटी चालि । हरियाजन उलटा चलै, जुग डग सवै न हालि ।—अनुभववाणी

४ प्रत्यक्ष ।

उ०—१ काळ किमी सारै नही, मारै सुलटी मूठ । हरीया हरिजन ऊवरै, उलटि चढै वैकूठ ।—अनुभववाणी

उ०—२ दान दया दिल मैं धरौ, दुख जाइ दहट्टा । धरम करौ कहै धरममी, सुख होइ सुलट्टा ।—ध व ग्र

५ जिसमे कोई घेराव नही हो, जो टेढा मेढा न हो ।

उ०—सपनला संग हीडा-सुमन, उलटा झटखला ज्यु भुरडीजै है। कुभावना हाला काळी नस रा कीडा कुसुम सुलटा तिणखला सा तुरडीजै ।—दसदोख

सुळणौ, सुळवौ, सुलणौ, सुलवौ–क्रि अ —१ लकडी या अनाज के दानो मे कीडे पडना, कीडो द्वारा खाया जाना ।

उ०—१ मान वसै वेचै घणा ए, पद्रह करमादान कै । लोभ कै कारणै ए, विणजै सुलिया धान कै ।—जयवाणी

उ०—२ कावड तै जूनी थई रे लाल, घुणादिक जीव खाय सुवि । तणिया छीको वोदौ थयौ रे लाल, डाडो सुलियौ जाय सुवि० ।
—जयवाणी

२ अधिक दिन तक कोई वस्तु निरर्थक पडी रह जाने से कार्य-लायक न रहने की दशा मे आना, वेकर होना, निरर्थक होना ।

उ०—आड ई घडावणी व्है तौ तिजौरी माय सू मोहरा काढौ, पडी पडी सुळ जावैला ।—फुलवाडी

३ कमजोर होना ।

उ०—राजाजी नीचौ माथौ करिया खासी ताळ ताईं सोचता रह्या । अणछक वोल्या—नाईडा, अपारै वटेरा री अकल ई साव सुळियोडी ही ।—फुलवाडी

सुळणहार, हारो (हारी), सुळणियौ—वि० ।

सुळिओडो, सुळियोडो, सुळयोडो—भू० का० कृ० ।

सुळीजणौ, सुळीजवौ—भाव वा० ।

सळणौ, सळवौ—रू० भे० ।

सुळताण, सुलताण–स पु [फा सुल्तान] वादशाह, सम्राट ।

उ०—१ जूसरा धवळ अप्रमाण जव, की विमाण पवमाण कथ । सुलताण मुगळ मायै सज्या, राजथाण वीकाण रथ ।—मे म

उ०—२ हिंदुओ राउ आइ दिली लेमी हिवै, सवल मन माहि सुलताण सोचै ।—ध व ग्र

रू भे—सुरताण, सुरिताण, सुळतान, सुलतान, सुलताण, सुल्तिान, सुल्तान ।

सुळताणी, सुलताणी–स स्त्री [फा सुल्तानी] वादशाहत, वादशाही ।

रू भे—सुरताणी, सुरिताणि ।

सुळतान, सुलतान—देखो 'सुळताण' (रू भे)

उ०—१ वडै वडै भूपति सुळतान उनकै डेरै भयै मदान ।—मीरा

उ०—२ अलाउद्दीन दिल्ली सल्तनत रै सुलतानां मैं सगळा सू भारी भिडमल गिणिजै । उण कनै फौज वळ अणूतौ । न्याताळी घुडमेना अडधम देती खडवडा खडवडा जाय पडती ।—चितराम

सुलता—देखो 'सलिता' (रू भे)

सुलप–वि [स स्वल्प] सूक्ष्म, छोटा ।

उ०—करामाति दै लै कहू कहुं पेगवर कहु पीर । गुपत प्रगट विचरत फिरत, करि दीरघ सुलप सरीर ।—ह पु वा

सुळफ सुलफ–वि —१ श्वेत, सफेद ।

२ साफ, सुन्दर ।

३ देखो 'सुलफौ' (रू भे)

सुळफसिला–स स्त्री —स्फटिकशिला ।

उ०—सुळफसिला छाया जळ सुदर, पेख प्रभा ठम रहै पुरदर । निरख तठै हरि लीध निवास ।—र रू

सुलफी–स स्त्री —जर्दा या तम्वाखू पीने की चिलम ।

उ०—सुलफी गुडगुडिया, चिलम होकारी हळकी । हाडी वूरै हरख, आभूखण रिपिया रळकी ।—दसदेव

सुलफेवाज–वि [फा सुल्फ+वाज] गाजा या चरस पीने वाला ।

सुलफौ–स पु [फा सुल्फ] वह सूखा तम्वाखू जिसे गाजे की तरह चिलम मे भर कर पीते हैं ।

उ०—१ एक नाथ सोनजी री दातारी सू रीझ'र गाव मैं आसण ही लगा वैठ्यौ । वस ! सुलफै अर भाग री रगत छिडगी हैं ।
—दसदोख

उ०—२ ना होकौ ना चिलम, पान-वीडी न सुपारी । न सुलफौ ना भाग, कदै ना वणी जुवारी ।—नारी सईकडी

रू भे—सुळफ, सुलफ ।

सुलभ्भ, सुलभ–वि [स] १ जो सहज ही उपलब्ध हो, जो आसानी से मिल सके ।

उ०—१ अथ ओंमकर अक्षर उचार । निस दिवस नाम रट राम राम । द्वै सुलभ दीप स्रद्धा समीप, रुचि व्है सु राख दुहु दिव्य दाग ।—ऊ का

उ०—२ पिंड विहूंढ होय चुग चुग पड्, ताय वरू रभ हित तिको । सुलभ ही जिकौ पाऊ सुरग, जगत घणौ दुरलभ जिकौ ।
—सू प्र

२ सहज, आसान, सुगम ।

उ०—१ कै वरि दभ सुलभ्भ अभ्भ आछादि रहै घर । तर तमाळ वन तरळ, मिळै किर डाळ समजर । रा रू

उ०—२ महासमुद्र तिरवौ भुजा, दोहिलो तू जाण । नीगा भाला ऊपर चालवौ, सुलभ नही लै सयाण ।—जयवाणी

उ०—३ हरीया कठण वूझिवौ, दुलभ चलिवौ गह । सौ सुलभ ससार मैं, ता दिस जाहि घणाह ।—अनुभववाणी

३ उपयोगी, लाभकारी ।

भोहा मिळै ।—हा भा

उ०—२ मन गगाजळ निरमळ, वदन किरि पूनम ससिहर । सुवप वन्न सोवन्न, गात मैंमतक गैमर ।—गु रू व.

उ०—३ सुवपि सोळ सिंगार, लाज बत्रीसैंइ लक्खण । खम्या धरम धीरज्ज, सीळ सतोख सनोगुण ।—गु रू व

वि —जिसका शरीर सुन्दर हो, सुन्दर देहधारी ।

सुवयण-स पु [स सुवचन] १ उत्तम व श्रेष्ठ वचन ।

२ मधुर या मीठे वचन ।

सुवर-वि [स] सुन्दर व श्रेष्ठ ।

उ०—१ स्रीपति भगति सकाज, रिध सिध सुवर नमो सकर सुत । सुर अगिवाण समाज स्रेस्ठ, बुधि दीजियै गणेस्वर ।—सू प्र

स पु —१ पति, खाविंद ।

उ०—तारग मत्र आदेस तौ, दिढ चा रग निस सवि दिव । सारग नयण उमय सुवर, सीस गग धारंग सिव ।—सू प्र.

२ श्रेष्ठवर, उत्तम वरदान ।

उ०—करि जोरि सुवर राखी किना, अमर देह अत्रकारिया । सदेह तजौ कवि इम सुवस, रघुवसी छत्रधारिया ।—सू प्र

३ सम्मुख या सामने करने की क्रिया ।

उ०—इतरै माही वात कहता वार लागै, पाच सव सावता सौं राव तीडै पागडौ छाडीयौ । वाट छोड अर वरछीया री सुवर कर अर राव तीडौ भील लडता हता, तिका रै मगरै आयौ ।

—तीडा राठौड वीरा री वात

रू भे —सुवर ।

३ देखो 'सूवर' (रू भे)

उ०—इसा सुवरां रा मोरा ऊपरा राजाना घोडा लगाया छै । वरछिया रा घमोडा लाग रह्या छै । चूकमारा री खाटखड लाग रही छै । कैई घोडा सुवरा रा तूडा सू उछल परै पडै छै ।

—रा सा स.

सुवरजित-स पु —वह घोडा जिसके तीन पैर सफेद और सिर मे तिलक हो ।

सुवरण-स पु [स सु+वर्ण] १ अच्छा वर्ण, अच्छा रग, अच्छा रूप ।

२ अच्छा कुल, अच्छी जाति ।

३ काव्य मे शुभ और सुन्दर माने जाने वाले वर्ण, अक्षर ।

उ०—१ देणा उत्तर कविजणा, सुवरण अरथ सनेह । सुकवि सूम सम दाखिए, नही तफावज रेह ।—वा दा

४ राजा दशरथ का एक मत्री ।

५ एक वृक्ष विशेष । (ना मा)

६ कचन, कनक, सोना, स्वर्ण ।

उ०—१ पारस वदन वचन चिंतामणि, ग्यान गुण लाया ए । परसत चरण सुवरण होय काया, दया पद पाया ए ।

—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वळि हरियाला मणमिल पारौ सुवरण आदि धातु नीहाल ।—वृ स्त

७ धन, सपति ।

रू भे —सुवरण, सुवन्न, सुवरण्ण, सुवरन, सोवंण, सोव्रन ।

सुवरणक-स पु.—एक प्रकार का भाला या साग ।

सुवरणकार-स पु [स स्वर्णकार] सुनार, स्वर्णकार ।

सुवरणकेतकी-स स्त्री —लाल केतकी ।

सुवरणगिर, सुवरणगिरि, सुवरणगीरी-स पु [स स्वर्णगिरि]

१ सुमेरु पर्वत ।

२ लका का पर्वत ।

३ जालोर का पर्वत ।

सुवरणधेन, सुवरणधेनु-स स्त्री [स स्वर्णधेनु] दान देने के उद्देश्य मे बनवाई हुई सोने की गाय ।

सुवरणचूड, सुवरणाचूडक-स पु —सोने का एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

रू भे —सुवरण्णचूड, सुवरण्णचूडक ।

सुवरणपख-स पु [स स्वर्ण+पक्ष] गरुड ।

सुवरणपरपटी-स. स्त्री. [स स्वर्ण+पर्पटी] वैद्यक की एक रसौषधि जो प्राय सग्रहणी रोग के काम आती है ।

सुवरणमालिनीवसत-स स्त्री [स्वर्णमालिनीवसत] वैद्यक की एक रसौषधि जो स्वर्ण के योग से बनती है ।

सुवरणवजर, सुवरणवज्र-स पु —एक प्रकार का भाला या साग ।

सुवरणा-स स्त्री [स सु+वर्णा] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक ।

सुवरण्ण— देखो 'सुवरण' (रू भे)

उ०—सुवरण्ण वेदी अहिनाणि जाणि, सरदद्वती सूनु रूपाण पाणि ।—सालिसूरि

सुवरण्णचूड, सुवरण्णचूडक—देखो 'सुवरणचूडक' (रू भे)

उ०— तिस्रनायक चतुस्रनायक त्रिसरनायक आद्यगुलीयक मध्यागुलीयक मरवागुलीयक लघुचूडक मुक्ताचूडक सुवरण्णचूडक मोतीसरी करगी ककणी पादवेस्टक पोलरकत्रिक चतुसरक नवसरक अस्टादमरक इति आभरणानि ।—व स

सुवरन—देखो 'सुवरण' (रू भे)

उ०—जथा आप कविता जथा, कीरत 'पता' कमध । उभय सग मिळ अधिकता, सुवरन जथा सुगध ।—जैतदान वारहट

सुवराडणौ, सुवराडबौ—१ देखो 'सुवराणौ, सुवरावौ' (रू भे)

उ०—तितरै राणीजी री दीकरी रामसिंघजी री वहू आवा राम कहिग्रौ । तिण ऊपरि रामसिंघजी विरागिया । दाढी न सुवराडै । कपडा न धोवाडै । वागौ न पहिरौ ।—द वि

२ देखो 'सवराणौ, सवरावौ' (रू भे)

सुवराडणहार, हारौ (हारी), सुवराडणियौ—वि० ।

उ०—सिव ऊमिया पेमा सुलोचना तुज तणा अवतार त्या ।
—पा प्र

स. स्त्री —सुन्दर नेत्रों वाली ।

सुलोमा–वि. [स] सुन्दर रोमावाली वाला ।

सुलोह, सुलोहक, सुलोहित–स पु [स सुलोहक] पीतल ।

सुलोहिता–स स्त्री [स] अग्नि की सात जिव्हाओ मे से एक जिव्हा ।

सुलोही–स पु —एक ऋषि का नाम ।

सुळो–स पु —१ किसी लकडी या अनाज मे लगने वाला कीडा, घुन ।
२ उक्त घुन लगने की अवस्था या भाव ।
३ शूल, दर्द ।
४ बीमारी, रोग ।

सुल्क–स पु [स शुल्क] १ किराया, भाडा ।
२ मूल्य, कीमत ।
३ फीस ।

सुल्तान – देखो 'सुलताण' (रू भे)
उ०—फरिस्ता रै लिखण मैं की साच है तौ अलाउद्दीन री फौज मैं अस्तर वस्तर बधियोडा चार लाख पिचतर हजार घुडसवार हर घडी टच हुवोडा सुल्तान रै भालै री वाट जोवतौ करता ।
—चितराम

सुल्लभ, सुल्लभौ—देखो 'सुलभ' (रू भे)
उ०—पर जिण त्रिनेत्र गजण त्रिपुर, समहर पायौ सुल्लभौ । जुग अत मेघ वरसै जिसौ, इसौ भात दरसै 'अभौ' ।—रा रू

सुल्लह—देखो 'सुलह' (रू भे)

सुल्लौ–स पु —१ एक प्रकार का मास के साथ बना व्यजन ।
वि वि —इसमे १० सेर मास के साथ ३½ सेर चावल, २ सेर घी, १ सेर चना, २ सेर प्याज, ½ सेर नमक, १ पाव अदरक, दो-दो दाम लहसुन तथा गोल मिर्च, एक-एक दाम दालचीनी, इलायची, लौंग आदि सामग्री पडती है ।
२ देखो 'मूळी' (रू भे)

सुवक–वि —सुन्दर व मनोहर ।
उ०—साहिब कछू छ न जाइयइ, तिहा परेरउ दंग । भीभळ नयण सुवक घण, भूलउ जाइसि सग ।—ढो मा

सुवछक–स स्त्री —सखी, सहेली । (अ मा)
वि —शुभचिन्तक, शुभेच्छु ।

सुवस–स पु [स सु+वश] १ वसुदेव का एक पुत्र ।
२ अच्छा व श्रेष्ठ वश ।

सुव —देखो 'सुत' (रू भे)
उ०—धरम खट वरन रौ जितौ हुवतौ धग । 'करण' सुव राहतौ माहि केवाण ।—द दा

सुवक्ता–वि [स] सुन्दर व्याख्यान देने वाला, वाक्पटु ।

सुवक्षा–स स्त्री.—१ विभीषण की माता और मयदानव की पुत्री थी ।
२ वह स्त्री जिसके वक्ष का उभार सुन्दर हो ।

सुवखत–स स्त्री—अच्छा समय, शुभ अवसर ।
उ०—धरावेध खत्रवेद चत्रकोट गढ ढेलडी । पूरवा नखत्र सुवखत प्रमाणी । माह 'अवरग' अवतार सिसपाळ रौ, 'राजसी' किसन अवतार राणी ।—कम्मौ नाई

सुवग–स पु —डिंगल का एक गीत (छद) विशेष, जिसके प्रत्येक द्वाले के प्रत्येक पद मे चौदह मात्राएँ और अत मे चौकल होता है एव चौथे चरण मे वीप्सा रखते हुए तुकात मिलाया जाता है ।
उ०—चरणै चौकळ अत उचारै, चोथै चरण वीपसा धारै । सम मोहरा चारु सरसावै, गीत सछ सुवग इम गावै ।—र रू

सुवड–स पु [स सुवट] वट वृक्ष । (ना मा)

सुवच, सुवचन–स पु [स सुवचन, सुवचस्] अच्छा वचन, सत्य वचन ।
उ०—झूठा खाणा वकणा, ए जमपुर का काम । हरीया सुवचन साचका, विसन परा विसराम ।—अनुभववाणी

सुवचनो–वि —१ अच्छा वक्ता, वाक्पटु ।
२ मृदुभाषी ।

सुवटियौ, सुवटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ सुवटा रे मीनकी डर करणा, वाळक गिणै न वूढा तरणा ।—वि स सा
उ०—२ मा ! वाग-वगीचा मैं गयी जै, मा ! पाक्या सै दाडम-दाख । कोयल-सुवटा खाय रह्या जै ।—लो गी

सुवण—देखो 'स्वर्ण' (रू भे)

सुवणौ, सुववौ —देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू भे)
उ०—१ जिणि देसै विसहर घणा, काळा नाग भुयग । सुवइ निचती मारुई, ढोला मेल्है अग ।—ढो मा
उ०—२ जै जागै तौ राम जप, सुवै तौ राम सभार ।—ह र
उ०—३ दिन मैं पोहर सुवणौ, उपरत आखडी ।—रा सा म

सुवदन–वि [स] जिसका मुख सुन्दर हो, सुमुख ।

सुवदना–स स्त्री [स] सुन्दर मुख वाली, सुन्दरी ।

सुवद्द–स पु —तीर वाण । (डि ना मा.)

सुवधि–स स्त्री —अच्छा समय या अवधि ।

सुवन–स पु —१ सूर्य, रवि । (ना डि को)
२ चन्द्रमा, शशि । (अ मा)
३ अग्नि, आग । (ना मा)
४ पुत्र, वेटा, सुत ।
उ०— सुवन 'सीन-सादूळ' भूळ वनचरा विचाळै । जिमौ चद जग वद, वीज रव व्र द सभाळै ।—रा रू

सुवन्न—देखो 'सुवरण' (रू भे)
उ०—नरक सात दडक पढम । असुरा नाग सुवन्न ।—वृ स्त

सुवप, सुवपि, सुवपु–स पु [स सु वपु] सुन्दर शरीर ।
उ०—१ नडी नाचै भिडै छोह लोहा मिळै । ऊससै सुवप मुख मूछ

सुवागौ—१ सुन्दर पहनावा, सुन्दर वेश ।
उ०—पुखती एक पोळियौ राख्यौ। माय सू सुवागो मगाय दियौ। पछै राजा जगदेव, सै साथै करि दरबार आया ।
—जगदेव पवार री बात
२ देखो 'सुहागौ' (रू भे)

सुवाड—देखो 'सुवावड' (रू भे)

सुवाड़णौ, सुवाडबौ—देखो 'सुवाणौ, सुवावौ' (रू भे)
उ०—१ जुम्मा रो माथौ ठणकियौ। अधरसेक आगणै सुवाड नाड अर सास भाळियौ । की नी। डील ठाडौ हेम ।—फुलवाड़ी
उ०—२ वा लुगाई रात दिन उणरी सेवा बदगी करै। उणनै पिलग माथै सुवाड़ै अर आप आगणै सूवै ।—फुलवाड़ी
सुवाड़णहार, हारौ (हारी), सुवाडणियौ—वि० ।
सुवाडिग्रोडौ, सुवाडियोडौ, सुवाड्योडौ—भू० का० कृ० ।
सुवाडीजणौ, सुवाडीजवौ—कर्म वा० ।

सुवाडियोड़ौ—देखो 'सुवायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री सुवाडियोडी)

सुवाडी-स स्त्री [स सूता] वह गाय या भैंस (बकरी) जिसे प्रसव किये हुऐ बहुत ही थोडे दिन हुऐ हो। (लवाई)
उ०—रसोई री बारी सू ऊलळी जाणै सुवाडी गाय लुवारै टोघ-डियै पर राभी है ।—दसदोख
रू भे —सुवावडी, सूवाडी ।

सुवाडी-जान-स स्त्री यौ—दूध-मुहे बच्चे की बारात जिसमे वर की माता भी बारात के साथ जाती है। (विश्नोई)

सुवाट-स स्त्री —अच्छी राह, अच्छा मार्ग ।

सुवाणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू भे)
उ०—१ नीम पेस्टी दात उजाळै, मोती मा चिलकै जवर। मुखडै मैं खुसबू सुवाणी, दुरगध डर दुबकी कबर ।—दसदेव
उ०—२ पतळी केळू कामडी है, सरम सुवाणी डाळिया। छाट छील लै'रा लपेटा, करड़ पटीली बाळिया ।—दसदेव
उ०—३ काबुल काती माय, मतीरा मीठो मेवौ। सुधिया नित कसमीर, सुवाणी सुसमा सेवौ ।—दसदेव
(स्त्री सुवाणी)

सुवाणौ, सुवाबौ-क्रि स —१ सोने के लिये प्रेरित करना, सुलाना ।
२ सुलाना, लिटाना ।
उ०—१ राजकवरी नै पाछी मै'ला लाय सुवाणी। जै वौ बगत माथै नी जावतौ तौ राजकवरी रा पाछा सपना मैं ई दरसण नी व्हैता ।—फुलवाडी
उ०—२ हेटै सुवाण देह री सावळ जाच करी। नी सास, नी नाड अर नी किणी भात मुडदावाली विडरूपता।—फुलवाडी
३ बच्चे को नीद लाने के लिये थपकी देना, नीद लाने का उपक्रम करना ।
४ किसी को अपने साथ लिटाना, सुलाना ।
५ मार गिराना ।
६ विश्राम या आराम कराना ।
७ पटकना ।
८ देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू. भे)
उ०—१ पाना फूना गहगही, सुर नरा सुवाई गेळ। सुरगा नीरस आवै घणी, आगणी नागरबेल ।—नि. स गा
उ०—२ श्रौ तो सुघट सुवायौ, छवि छायौ रघुवर ।
—पी ग
उ०—३ त्रिहुए पग तारणी सोभ जुग च्यार सुवाणी। पाव तत्त होमणी रीत मोटी राट राणी ।—रा. रू
उ०—४ धूड छिनकारी धणी, धरा ला तानी देवौ। गोसड माय बिछाय, सुवाती सूता देवौ ।—दसदेव
सुवाणहार, हारौ (हारी), सुवाणणियौ—वि० ।
सुवायोडौ—भू० का० कृ० ।
सुवाईजणौ, सुवाईजबौ—कर्म वा० ।
सुवाणणौ, सुवाणवौ, सुवाडणौ, सुवाडबौ, सुवाणणौ, सुवाणवौ
—रू० भे० ।

सुवाणियोडौ-भू का कृ.—१ सोने के लिये प्रेरित किया हुआ, सुलाया हुआ २ लिटाया हुआ, सुलाया हुआ ३ नीद लाने के लिये थपकी दिया हुआ ४ मार गिराया हुआ. ५ विश्राम या आराम कराया हुआ ६ किसी को अपने साथ लिटाया हुआ, सुलाया हुआ ७ पटका हुआ ।
८ देखो 'सुहायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवायोडी)

सुवाद—देखो 'स्वाद' (रू भे.)
उ०—१ मडतै रगाळा मतीरिया जीमण मैं घणा सुवाद लागै है, ऊपर सू काकडिया गटकावण नै ही जी जागै है'—दसदोस
उ०—२ यू रग मैं राति बितीत भई। हीरा को अवलासा पूरण भई। रग महळ कौ समाज बणायौ। प्राणपियारी नै रति विलास कौ सुवाद आयौ ।—बगसीराम प्रोहित री बात

सुवाद्य-स पु —श्रेष्ठ व उत्तम वाद्य ।

सुवापी-स स्त्री —जर्दे के साथ चूना मिला कर खाने योग्य बनाने की क्रिया ।
उ०—तन कर कूडी, प्यारै मन कर घोटा, सुस्ती री सुवापी बणाई ।—मीरा

सुवायत-स स्त्री —शान्ति ।
उ०—सुख सुवायत करी, दुख दुवायत टाळी। तेरी रजा करी सैतान की बेरजा करी, आई बलाय दफै करी ।—वि स सा

सुवाय, सुवायौ—देखो 'सवायौ' (रू भे)
उ०—तद मारग मैं जावता आदमी सायवाळा वाता करण लगा—

सुवराडिश्रोडौ, सुवराडियोडौ, सुवराड़चोडौ—भू० का० कृ० ।
सुवराडीजणौ, सुवराडीजवौ—कर्म वा० ।
सुवराडियोडौ—१ देखो 'सुवरायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'सवरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवराडियोडी)
सुवराणौ, सुवरावौ–क्रि म—१ सुधरवाना, ठीक करवाना ।
२ वालो की कटिंग करवाना ।
३ वालो मे कघी आदि करवाना ।
४ सज्जित करना, सजाना ।
५ दाढी आदि वनवाना ।
६ देखो 'सवराणौ, सवरावौ' (रू भे)
सुवराणहार, हारौ (हारी), सुवराणियौ—वि० ।
सुवरायोडौ—भू० का० कृ० ।
सुवराईजणौ, सुवराईजवौ—कर्म वा० ।
सुवराडणौ, सुवराडवौ, सुवरावणौ, सुवराववौ—रू० भे० ।
सुवरायोड़ौ–भू का कृ—१ सुधरवाया हुआ, ठीक कराया हुआ २ वालो की कटिंग करवाया हुआ. ३ वालो मे कघी करवाया हुआ ४ सजाया हुआ, सज्जित कराया हुआ ५ दाढी आदि वनाया हुआ ६ देखो 'सवरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवरायोडी)
सुवरावणौ, सुवराववौ—१ देखो 'सुवराणौ, सुवरावौ' (रू भे)
उ०—परभात रा तुरक री मुहडौ नही देखता। दरवार री सईयत तुरक था तिण री दाढी **सुवरावता** काना मैं मोती घालता।
—पदमसिंह री वात
२ देखो 'सवराणौ, सवरावौ' (रू भे)
सुवरावणहार, हारौ (हारी), सुवरावणियौ—वि० ।
सुवराविश्रोडौ, सुवरावियोडौ, सुवराव्योडौ—भू० का० कृ० ।
सुवरावीजणौ, सुवरावीजवौ—कर्म वा० ।
सुवरावियोडौ—१ देखो 'सुवरायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'सवरायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवरावियोडी)
सुवरियौ—देखो 'सूवर' (रू भे)
उ०—**सुवरियौ** रे हुवैलो जीवडा सहरि फिरैली, ठरडक्य ठरडक्य नास करै।—ऊदीजी नैण
सुवस स पु [स] अच्छा या श्रेष्ठ निवास, आवास ।
वि—१ उत्तम, श्रेष्ठ ।
उ०—आप भलाई आविया, **सुवस** वमावौ देस। जवक ए क्यू जीविया, आसौ, 'किसनौ', महेस।—महाराजा जसवतसिंह री दूहौ
२ सीधा, सरल ।
उ०—म्हारै तौ माता ओहीज डायजौ है म्हनै तौ सुख रै वास परणाजै अरथात ऐडौ **सुवस** होवै किण सूई लडै न भिडै गरीव होवै तो सुख है।—वी स टी
३ सुव्यवस्थित ।
उ०—**सुवस** वमीजै सहर मितारौ, हथणपुरै मैं वेढ हुवै।
—ओपौ आढौ
सुवह–वि—योद्धा, वीर ।
सुवहू–स स्त्री [स सुवधू] पुत्रवधू ।
उ०—वसुदेव पिता सुत थिया वासुदे, प्रद्युमन सुत पित जगतपति। सासू देवकी रामा **सुवहू**, रामा सासू वहू रति।—वेलि
सुवा–क्रि वि—तक, पर्यन्त ।
सुवांणणौ, सुवाणवौ—देखो 'सुवाणौ, सुवावौ' (रू भे)
उ०—दुसमण री फौज गढ घेरियौ तठै गढ रा धणी साकौकर मरण री विचारी तद स्त्री वोहत ममझाय नै **सुवाणिया** कि सुवार रा लडजौ।—वी स टी
सुवाणणहार, हारौ (हारी), सुवाणणियौ—वि० ।
सुवांणिओडौ, सुवाणियोडौ, सुवांण्योडौ—भू० का० कृ० ।
सुवाणीजणौ, सुवाणीजवौ—कर्म वा० ।
सुवांणियोडौ—देखो 'सुवायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवाणियोडी)
सुवाणी–स स्त्री [स सु+वाणी] १ सरस्वती, शारदा ।
२ श्रेष्ठ व उत्तम वाणी ।
रू भे—सुवाण, सुवाण ।
सुवाणौ–वि (स्त्री सुवाणी) १ सुवक्ता, अच्छा वक्ता ।
२ मधुरभाषी, मृदुभाषी ।
३ देखो 'सुहाणौ' (रू भे)
सुवान–स पु [स श्वान] कुत्ता ।
सुवाई–स स्त्री [स सु+वायु] १ शुद्ध एव शीतल हवा, अच्छी हवा ।
२ सुलाने की क्रिया भाव ।
सुवाक्य–स पु [स] सुन्दर वाक्य ।
वि—सुन्दर वाक्य वोलने वाला, सुवक्ता ।
सुवाग—देखो 'सुहाग' (रू भे)
उ०—१ **सुवाग** रा एक-दो साल ही सोरा नी नीसरै। वाकी तौ सगळी जिंदडी दुखरी इकरजी वरतीजै।—दसदोख
उ०—२ जद वुढली मन मैं हरखाई, हो जौ थारौ, अमर **सुवाग** ववडिया सखणाती।—लो गी
सुवागण—देखो 'सुहागण' (रू भे)
उ०—१ पहली व्रह्म ग्यान, सुरी वन राखडी। पहरि **सुवागण** नारि, झरोखै आवडी।—मीरा
उ०—२ सज सोळै सिणगार, **सुवागण** जळ लै जावै। साझ सवारै व्रढ, हथाई होका लावै।—दसदेव
सुवागत—देखो 'स्वागत' (रू भे)
सुवागथाळ—देखो 'सुहागथाळ (रू भे)

उ०—३ जामे जद मू भेद भावा, कुळ कुळ सवै सुवावणी। समर्फ घर में सीर स्याणा, ताता राखै तासणी।—नारी सईकडी
(स्त्री सुवावणी)

सुवावणी, सुवाववौ—देखो 'सुहाणी, सुहावौ' (रू भे)
उ०—१ छाटी सी पेट, लाडू सा होठ, लोतर वा'री, वरड़ी वोली हाली लुगाई, लोगा नै तीजै घर नीं सुवावै।—दसदोख
उ०—२ मीच वाघ सामणै चलै, कदै तकै ध्रुव तारियौ। कूवै वीच मुह दै वोलै, भली सुवावै वारियौ।—दमदेव
सुवावणहार, हारौ (हारी), सुवावणियौ—वि०।
सुवाविओड़ो, सुवावियोडो, सुवाव्योडो—भू० का० कृ०।
सुवावीजणौ, सुवावीजवौ—कर्म वा०।

सुवावियोड़ौ—देखो 'सुहायोडो' (रू भे)
(स्त्री सुवावियोडी)

सुवास—स. स्त्री [स सु+वास] १ सुगध, महक, खुशवू।
उ०—१ चदण सुवास पखा चमर ग्रत गगाजळ दास करि। छिटकत कत्त राणी छह, पाणी खेल वमत परि।—रा रू
उ०—२ तरै छोकरी भारी भर ल्याई। तरै सोनगरी पूछियौ—पाणी माहे इसडी सुवास इसडो तिरवाळी किण भात पडै छै।
—नैणसी
स पु—२ निवास, आवास, रहवास।
उ०—दळे अग्र अरा मिर ईस दियौ, कयळास मैं जाय सुवास कियौ।—पा प्र
३ घर, मकान, निवास स्थान।
४ डेरा, पडाव।
५ स्थान, जगह।
६ पोशाक, पहरावा, वेशभूषा।
७ अच्छा, पडौस।
८ शिवजी का एक नामान्तर।
९ श्वास, सास
रू भे— सवास, सुवास, सुवासि, सुवासी।

सुवासणी —१ देखो 'सवासणी' (रू भे)
उ०—पोळा मायना हसती वै जेठ तुम्हारा, जी राज हरी-हरी दूब सुवासणी, राज।—लो गी
२ देखो 'सुवासिणी' (रू भे)

सुवासणौ— १ देखो 'सवासणौ' (रू भे)
२ देखो 'सुवासिणौ' (रू भे)

सुवासमद—सं पु—चदन। (अ मा.)

सुवासव—स पु—चदन।
उ०—किरणपत सुवासव वर गिरगत वहा, एतळा थोक देवा अंग्रा। जनमैं माय विसतार दै पयोजित, भाटिया छात दरगाह भेजा।—रावळ अनैराज री गीत

सुवासि—देखो 'सुवास' (रू भे)
उ०— पाटवर पग पावडै सुदर गान सुवासि। मुख निरखै हरखै महल, गायण दासि खवासि।—रा. रू.

सुवासिणी—वि स्त्री —१ खुशवूदार, सुगधित।
२ देखो 'सवासणी' (रू भे)
रू भे—सुवासणी।

सुवासिणौ—वि —१ खुशवूदार, सुगधित।
२ देखो 'सवासणौ' (रू भे)
रू भे—सुवासणौ।

सुवासी—वि [स सुवासिन्] १ किसी अच्छे या भव्य निवास स्थान मे रहने वाला।
२ देखो 'सुवास' (रू भे)

सुवाह—स पु [स] अच्छा घोडा, उत्तम श्रेणी का अश्व।

सुवि—अव्यय—सभी, सव, समस्त।
उ०—चतुर विघ वेद प्रणीत विकित्सा। ससत्र उखध मत्र तंत्र सुवि।—वेलि

सुविख्यात—वि [स] अच्छा, ख्याति प्राप्त, प्रसिद्ध, मशहूर, लव्घ प्रतिष्ठित।

सुविग्य—वि [सं सुविज्ञ] १ पडित, विद्वान।
२ अतिशय, वुद्धिमान, चतुर।

सुविचार—स पु—अच्छा व उत्तम विचार, नेक इरादा।
उ०—१ 'सोनग' आद कमधा सारां। वात सुणै मानी सविचारा।
—रा रू
उ०—२ मिळिया मेज आप रइ समुचइ, वाता रस रहियउ सुविचार। कहइ मती प्रभु रूप प्रगट करि, सिगळउ ही देखइ समार।—महादेव पारवती री वेलि

सुविधा—स स्त्री [स] किसी प्रकार के कार्य से मिलने वाली छूट, रहन-सहन मे किसी वस्तु को उपयोग लेने की छूट, आराम, सुख।
उ०—१ वस आखा ऊमर कैदी वारकर फिर जावै है अर आप आपरी कोटडी री मोरप सुविधा वतावण लाग जावै है।
—दसदोख
उ०—२ जनवासा मैं सुख सुविधा री पूरौ इतजाम हौ। म्हैं स्नान ध्यान सू निपटनै कपडा पलटिया अर थोडी ताळ आराम करण रौ विचार कियौ।—अमरचूनडी

सुविनीत—वि [स] १ विनम्र, वहुत ही नम्र।
२ सुशिक्षित। (पशु)

सुविसाल—वि [स सुविशाल] भव्य एव विशाल।
उ०—चालता सावि पाणी तलाव, ए सहु पुण्य तणउ परभाव तेत्रीस सइ दातना देवाला, वारइ सइ माग न सुविसाला।
—स कु
रू भे—सव्विसाल।

जौ सिरदार जिसौ सुणीयौ थौ, तिण सु सुवाय निजर आयौ ।
—कुवरसी साखला री वारता

सुवार—क्रि वि [स श्व.] १ आने वाला कल, आगामी दिवस ।
उ०—तद सूरेजी कही आज न बाधी तौ सुवार दोय फेरा बाधजौ ।
—सूरै खीवै काधळोत री वात

२ प्रात काल, सवेरा ।
उ०—कुवरजी पधारि अर सुख कियौ । सुवार हुया कूच हुयौ ।
—द वि.

३ देखो 'सवार' (रू भे)
उ०—न क्यु वाना पहरिया, न क्यु घसीया छार । न क्यु केस वधारिया, न क्यु कीया सुवार ।—अनुभववाणी

४ देखो 'सवार' (रू भे)
उ०—तद आ इहा नै मैहल माहै लै जाय अर उडण खटोलणी सुवार अर इतरा वैठा ।—चौबोली
रू भे—सुहार ।

सुवारणौ, सुवारबौ—क्रि स—१ तराशना ।
उ०—विपुल सिलावटिया, सुवारै सिलडा सारा । जाळी जयिया खुणै, वेल, समदर, नद, तारा ।—दसदेव
२ देखो 'सवारणौ, सवारबौ' (रू भे)
उ०—१ च्यारु तौ राव सुवारिया, अडिया है सगळा भाड ।
—लो गी
उ०—२ आज सहेली अगणै, ऊभी अग सुवारि । हरीया साझ'क स्वार मैं, सूती पाव पसारि ।—अनुभववाणी

सुवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू भे)
उ०—१ मितराई न दोस्ती, आपौ न प्यार । लोगा नै धका देवै, मोटा-मोटा मै'ल दिखाळै । मुतळव ले'र सुवार करै, लोभ अर सुवारथ मैं मरै ।—दसदोख
उ०—२ विणज वटा धन वौह कीया, आप सुवारथ जानि । निज परमारथ वाहिरौ, आखरि व्हैगी हानि ।—अनुभववाणी

सुवारथी—देखो 'स्वारथी' (रू भे)

सुवारियोडौ—भू का कृ—१ तराशा हुआ ।
२ देखो 'सवारियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुवारियोडी)

सुवारा, सुवारि, सुवारी, सुवारे, सुवारै—क्रि वि [स श्व] कल ।
उ०—१ झाझरकौ घडी च्यार-री रहै ताहरा जाय कदोई नै वोलाय ल्याया, सीरौ करावज्यौ, परभात महाजन सुवारां ही जिमावा ।—राजा भोज अर खापरा चोर री वात
उ०—२ जै प्रभात म्हारी गोठ छै सो सवार होयजै, सुवारै पधारजै ।—कुवरसी साखला री वारता
—स पु—१ आने वाले कल का दिन, आगामी दिवस ।
उ०—१ जद भीमराजजी कही काकाजी सुवारै तौ खामद्या अरज करौ ।—ठाकुर जेतसी री वारता
उ०—२ तारा रावजी कयौ, 'साणीजी वाणिया तौ गेर रमै है, अठै कद आवै ऊ ? तद माहणी कयौ, 'जी आप सुवारै थाणा आय सभाळज्यौ ।—द दा
२ प्रात.काल ।
उ०—तद सुवारा ही कारीगर नू बुलाय कै कहियौ सो तिण भाति दरिद्र भीत माही दिगइयौ ।—सुदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता
रू भे—सुहारे, सुहारै, स्वार, स्वारै ।

सुवाळ—स स्त्री—सुदरवाला, सुवाला ।
उ०—छटा विसाल सालतै छवी घटा छपै नही । दिवाळपै सुवाळ दीपमाळसी दिपै नही ।—ऊ का

सुवाल—देखो 'सवाल' (रू भे)
उ०—१ गार्गी उण वेळा चुप होगी । मिनख रै अभिमान, आड्पणै अर रागडाई रै कारण एक भणीज्योडी, समझदार अर लुगाई नै सुवाल रौ जवाव नी मिल्यौ । उणरै वजाय उणनै धमकाय दी ।—तिरसकू
उ०—२ छोरचा सू तौ उणा रा 'हमवैण्ड' भी कदै ई 'सीरियस' वाता कोनी करै । 'लवरस' रौ तौ 'सीरियस' होवण रौ सुवाल ईज कोनी ।—तिरसकू

सुवालख—देखो 'सवालख' (रू भे)
उ०—मू वेहलिया किण भात रा छै ? थेट काकरेच रा छै, सोरठ रा छै, हालार रा छै, सुवालख रा छै, देस देस रा इकरंग सपेत छै ।
—रा सा स

सुवालखपट्टी—देखो 'सवालखपट्टी' (रू भे)

सुवाव—वि—उत्तम, श्रेष्ठ ।
उ०—रवि तता जळ सीवळा, सिख सतगुर का भाव । हरीया रवि गुर ताप तै, सव गुण होत सुवाव ।—अनुभववाणी

सुवावड—स पु—१ प्रसव के समय खाने के लिये तैयार किया जाने वाले खाद्य पदार्थ विशेष जो वहुत पौष्टिक होते हैं ।
उ०—कोठचा रै मूडै ई सुवावड साधीजी । पैलडा सात दिना एक टक अजमौ अर टक सीरौ । पछै सूठ, लोद अर गूद रा लाडू । विदामा रा लाडू ।—फुलवाडी
२ सन्तानोत्पत्ति से प्रसूतिका स्नान तक का समय ।
रू भे—सवाड, सवावड, सुआड, सुआवड, सुवाड, स्यावड ।

सुवावडी—देखो 'सुवाडी' (रू भे)

सुवावणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू भे)
उ०—१ म्हारै आगण आम पिछोकडै मरवौ, औ घर सदा ए सुवावणौ ।—लो गी
उ०—२ म्हारै चानण चौक सुवावणौ, जै मै खेलै भतीजौ नदलाल । आगण मैं ऊभौ केवडौ, जै मैं खेलै भतीजौ नदलाल ।
—लो गी.

सुसधि—स पु [स] एक सूर्यवशी राजा।
रू भे—सधि।

सुस—१ देखो 'ससा' (रू भे)
२ देखो 'सम' (१) (रू भे)
३ देखो 'सूस' (रू भे)
उ०—अभयसिंघजी तो गुजरात रा कजिया पड़े काजियो करता री सुस घालियो नै राजाधिराज जयसिंह सू राजियो किया पछै मारवाड सारै जैसिंह सूभै छै।—मारवाड रा समरावा री वारता

सुसकणौ, सुसकबौ—देखो 'ससकणौ, ससकबौ' (रू भे)
उ०—उणी काहिनै घीस घीस नै नाट वने म्हागिया, नै भ्रातार्ई भीतनै सुसकतौ देख धावा नु रड्यो नाख्यो।
—जगदा सुगणा भाटी री वात

सुसकल्यौ—देखो 'सम' (१) (अल्पा, रू भे)

सुसकार, सुसकारौ—स स्त्री —१ कपडा धोते समय धोबी के मुह से निकलने वाली ध्वनि।
२ ध्वनि, आवाज।
३ देखो 'सिसकारी' (रू भे)
रू भे—सुस्कार, सुस्कारौ।

सुसकियोटी—देखो 'ससकियोटी' (रू भे)
(स्त्री सुसकियोटी)

सुसज्जित—वि [स] १ भली-भाति सजा हुआ।
२ शोभायमान, शोभित।

सुसणौ, सुसबौ—क्रि अ —१ सिकुडना, सकुचित होना।
२ सूखकर कम होना, सोखा जाना।
उ०—स्वामीजी बोल्या—ज्यू निण आह्मण कोरा कल्या में घी चोरायो। सुसजाए तो पिण जाण्यो पाने पड्यो सोही नरी।
—भि द्र

सुसत—स पु—१ सुख-शाति, कुशलता। (अ मा)
उ०—श्री ताठो पाणी पीवै, इण मैं जळ छै। तिण मैं स्यै सु अरोगी तरै जळ पीवो। सुसत जीव मैं हुवो।
—राय रिणमल री वात
२ सत्य, सच। (अ मा)
३ देखो 'सुस्त' (रू भे)

सुसता, सुसताई—स स्त्री [फा सुस्ती] १ शाति, तसल्ली।
उ०—१ सुसता उतावळ नाहि, धीरज धरै मन माहि, सुकोमल साव।—जयवाणी
उ०—२ धीरज सुसताई विचार सारा काम सुधारै। अर उतावळी सू निस्चय सारा काम बिगडै।—नी प्र
२ उदासी, खिन्नता।
३ आलस्य, प्रमाद, सुस्ती।

सुसताणौ, सुसताबौ—देखो 'सुस्ताणौ, सुस्ताबौ' (रू भे)

सुसतापोटी—देखो '[illegible]' (रू भे)
(स्त्री सुसतापोटी)

सुसती—देखो '[illegible]' (रू भे)
उ०—[illegible]
—[illegible]

सुसते, सुसतै—क्रि वि—धीरे, [illegible]।
उ०—[illegible]
—[illegible]

सुसतौ—देखो '[illegible]' (अल्पा, रू भे)
उ०—[illegible]
—[illegible]
(स्त्री सुसती)

सुसद—देखो 'सुसबद' (रू भे)
उ०—[illegible]
—[illegible]

सुसाद—स पु [illegible]

सुसच—स स्त्री [illegible]
उ०—[illegible]
—[illegible]

सुसबद, सुसबद्द—स पु [स सु+शब्द] १ कीर्ति, यश, बडाई।
(अ मा)
उ०—१ [illegible] सुसबद लियो निज [illegible]।
—र ज प्र
उ०—२ [illegible] सुसबद [illegible]।—[illegible]
उ०—३ [illegible] सुसबद्द। [illegible]।—[illegible]
२ श्रेष्ठ एव उत्तम शब्द।
३ मधुर शब्द।
रू भे—सुसद।

सुसमय—स पु.—अच्छा समय, अच्छा अवसर।

सुसमा—स स्त्री [स सुषमा] १ सुन्दरता, शोभा, छवि।
उ०—१ काबुल कानी माय, मतीरा मीठो मेवो। सुधिया नित कसमीर, सुवाणी सुसमा मेवो।—दमदेव
उ०—२ कोमळ वेल कालिया वर्णी सुसमा-सग्रह सुरधरा। कठै

सुविसाला–स स्त्री. [स सुविशाला] कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम ।

सुविहांण–स पु—१ शुभ सवेरा, उत्तम दिन ।

उ०—१ हितू जाण सुविहांण, ग्यान इतकाद ग्राद भ्रत । कियौ विदा ग्रालोभ, सोभ सुख वात घात चित ।—रा रू

उ०—२ ग्राज तौ ग्रडडौ कै सीस डड धारै । ग्राज सुविहांण प्राण ताकै माण मारै ।—रा रू

उ०—३ सूरि जिनोदय उदयउ भाण, स्रीजिनराज नमू सुविहांण । स्रीजिनभद्र सूरीसर भलउ, स्रीजिनचद्र सकल गुण निलउ ।

—स कु

सुविहि–स स्त्री [स सुविधि] ग्रच्छी विधि, सुविधि ।

सुविहित–वि [स] सुव्यवस्थित ।

उ०—मन लागउ रे मोरउ सूत्र थी, एतउ भव वइराग तरग रे । रस राता गुण ग्याता लहइ, परमारथ सुविहित सग रे ।—वि कु

सुवीर–स पु [स] १ स्कन्द का एक नाम ।

२ शिव का एक नामान्तर ।

३ उत्तम व श्रेष्ठ योद्धा ।

४ देखो 'सौवीर' (रू भे)

सुवीरक—देखो 'सौवीरक' (रू भे)

सुवेण–स पु—सुन्दर व मृदु वचन ।

उ०—सुवेण कुवेण लोक ना, खमणा परीसा-मार । राजकुवर सुकमाल छै, करवी न देह री सार ।—जयवाणी

रू भे—सुरवैण ।

सुवेता–स पु [स सवितृ] सूर्य्य, सूरज । (ना मा)

सुवेध–वि—१ पडित, विदग्ध ।

उ०—तेहमाहि सगुण सुवेध सुजाण, करइ सहू को तेह नू वखाण । गभीर गिरुउ नइ गुणवत, वुद्धि पराक्रमी ग्रति वलवत ।

—नळदवदती रास

२ रसिक ।

रू भे—सुवेघ ।

सवेल–स पु—लका के पास का एक पर्वत जिस पर रामचन्द्रजी ने ग्रपनी वानर सेना सहित पडाव डाला था ।

सुवेलडी–स स्त्री—सुन्दर लता, वल्लरी ।

उ०—वीठू वेल सुवेलडी, ऊगी ठाय कुठाय । एक घडी रै कारणै, कुळ वोडत दह माय ।—कुवरसी साखला री वारता

सुवेळा–स स्त्री—ग्रच्छा समय, शुभ वेला ।

सुवेस–स पु [स सुवेश] सुन्दर वेश ।

वि—सुन्दर, स्वरूपवान ।

रू भे—सुवेस ।

सुवै–क्रि वि—तक, पर्यन्त ।

सुवैण–स. स्त्री. [स सुवेणि] १ किसी स्त्री की सुन्दर चोटी, सुन्दर वेणी ।

२ मित्रता, दोस्ती ।

३ देखो 'सुवेण' (रू भे)

सुवैन–स पु—सूरज । (ग्र मा)

सुवोरोग–स पु—सूतिका रोग ।

सुवौ–स पु [स शुक] १ तोता, कीर, सुग्गा, शुक । (ग्र मा)

उ०—१ सिंघ सी कमर । कुच नारगी । नख लाल ममोला । ग्रीवा मोर सी । वोली कोकल सी । ग्रधर प्रवाळी । दात दाडमी-कुळी । नाक सुवा री चाच ।—रा सा स

उ०—२ भोगावती नाम नगरी छै । तेथी रूपसेन राजा राज करै । तीरै विदग्ध चूडामणि नाम सुवौ पीजरा माही रहै । सौ महा पडित छै ।—वैताळ पच्चीसी

२ प्रसवकालीन समय, सूतक ।

उ०—मूठावै खग मूठ, चालै भारत सामहौ । सुवै ज खाधी सूठ, मात भळाही मोतिया ।—रायसिंह सादू

३ देखो 'स्रुवौ' (रू भे)

४ देखो 'सूवौ' (रू भे)

सुव्रख–स पु [स सु+वृक्ष] पीपल का वृक्ष ।

(ग्र मा, ना मा, ह ना. मा)

सुव्रत–स पु [स] १ उत्तम व श्रेष्ठ व्रत ।

उ०—सुव्रत साधु समीपै कारतिक । लीधउ सजम भारजी ।

—स कु.

२ जैनियो के ८८ ग्रहो मे से ७८ वा ग्रह ।

३ जैनियो के भविष्यकाल के ग्यारहवें तीर्थंकर का नाम ।

(स कु)

सुव्रन—देखो 'सुवर्ण' (रू भे)

सुव्रिंद–स पु [स सुर+वृन्द] १ इन्द्र ।

२ देवगण ।

सुव्रीडणौ, सुव्रीड़वौ–क्रि ग्र—लज्जित होना, सकुचित होना ।

सुव्रीडणहार, हारौ (हारी), सुव्रीडणियौ—वि० ।

सुव्रीडिग्रोडौ, सुव्रीडियोडौ, सुव्रीड्योडौ—भू० का० कृ० ।

सुव्रीडीजणौ, सुव्रीडीजवौ—भाव वा० ।

सुव्रीडियोडौ–भू का कृ—लज्जित हुवा हुग्रा, सकुचित हुवा हुग्रा । (स्त्री सुव्रीडियोडी)

सुव्विसाल—देखो 'सुविसाल' (रू भे)

उ०—विसाल भाल सुव्विसाल ग्रद्धचद छज्जिय । रउद्द्थी रिसाइ जाणि एथि ग्राइ रज्जिय ।—ध व ग्र

सुसग–स पु—१ ग्रच्छा सग, उत्तम सगति ।

२ सत्सग ।

सुसगत–वि [स] युक्तियुक्त, उचित, ठीक ।

सुसगति–स स्त्री—ग्रच्छी सगत, सत्सग ।

[स सुशिखा] २ सुन्दर वेणी, चोटी।

[स सुशिष्य्] ३ सुशिष्य।

सुसियोड़ौ–भू का कृ—१ सिकुडा हुआ, सकुचित हुवा हुआ २ सूखा हुआ, सोखा गया हुआ।

(स्त्री सुसियोडी)

सुसियौ—देखो 'सस' (१) (अल्पा, रू भे)

उ०—लूकड खावै वोरिया लिप, **सुसिया** सरणां ओट है। ठाया ठाया टोपली, अर वाकीरा लगोट है।—दसदेव

सुसिर–वि. [स सुशिर] जिसका सिर सुदर हो।

स पु [स सुषिर] १ वेंत।

२ वास।

३ अग्नि।

४ एक प्रकार का वाद्य।

उ०—तत वितत घन **सुसिर** पच वरण्ण वाजित्र वाजइ छद्द।

—का दे प्र

रू भे—सिसर, सुसिर, सुसरि।

सुसिला—देखो 'सुसीळा' (रू भे)

सुसीतळ–वि [स. सु+शीतल] अत्यन्त ठण्डा, शीतल।

सुसीतळताई–स स्त्री—अत्यन्त ठण्डा होने की अवस्था या भाव, शीतलता।

सुसीम–स स्त्री—शरदी, शीत।

उ०—कहिचौ सोलकिया रौ ओज तौ इण समय हिंदुस्थान रा अधकार नू मइद आगळी मजा करि वाधवजणा रा दुक्ख रूप **सुसीम** नै उडावै छै।—व भा

सुसीर–स. पु—चन्द्रमा, चाद। (ना मा)

सुसीळ, सुसील–वि [स सु+शील] १ उत्तम स्वभाव वाला, सज्जन, भला।

उ०—१ **सुसील** सम्य साच्छर, स्रुति प्रमान सोहनै। अभग पुत्ति ओज कै मनोज मूरति मोहनै।—ऊ का

उ०—२ वैजू मुळक्यौ, लीना म्है गळती मार्थं हौ। पे'ली मुलाकात मैं म्हनै पवन नै अडियल अर घमडी समझ्यौ, पण लीना थारी परख माची निकळी। पवन **सुसील**, निस्वारथ अर माहसी है।

—निरमकू

२ उत्तम चरित्र वाला, चरित्रवान, सच्चरित्र।

उ०—जै हुता जगि जाचव, तै हुवा गुर ग्यानी। जै हुता मदा अमोच, हुवा **सुसील** मिनानी।—उदौजी नैण

३ सरल-चित्त, मीधा-मादा, भोला-भाला।

उ०—फूटरी **सुसील** गुणवान किन्यावा नै सुखी वणा'र देस रौ ढाचौ वदळौ।—दमदोम

४ विनीत, नम्र।

सुसीलता–स स्त्री—सुशील होने की अवस्था या भाव, मज्जनता।

सुसीला–स स्त्री [स सुशीला] १ श्रीकृष्ण की आठ पटरानियो मे से एक।

२ यमराज की पत्नी का नाम।

३ सुदामा की पत्नी का नाम।

४ देवी, दुर्गा।

५ एक नदी का नाम।

उ०—देवी कावेरी नापि क्रस्ना कपीला, देवी सोण नतलज्ज भीमा **सुसीला**। देवी गोम गगा देवी वोम गगा, देवी गुप्त गगा सुचीव्प अगा।—देवि

६ राविकाजी की एक अनुचरी का नाम।

सुसुक्षा–स स्त्री—अग्नि, आग।

उ०—स्वक्रोधा **सुसुक्षा** धगधगित दक्षाधिप-सुता। सिलोचै सभूता धजर अवधूता अदमुना।—मे मा

सुसुपत–वि [स सुषुप्त] १ प्रगाढ निद्रा मे सोया हुआ, निद्रित।

२ अचेतन, वेहोश।

३ लकवा मारा हुआ, सुन्न।

सुसुपति, सुसुपती, सुसुप्ति, सुसुप्ती–स स्त्री [स सुषुप्ति] १ गहरी नीद, प्रगाढ निद्रा।

उ०—साधौ भाई आ मत लै कोई नर रे, जाग्रत माय **सुसुप्ती** वरतै निज स्वरूप थित कर रे।—स्रीमुखरामजी महाराज

२ अचेतनता, जडता, अज्ञानता।

उ०—१ मत्वगुण विस्णु भरण न सुपन, सूक्षम जोत न जूप। तमगुण सिव सघार न **सुसुपती**, नही ज्या सुन अनूप।

—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ **सुसुप्ती** कास्ठ ज्यू भाया, ज्या माई चेतन अग्नि समाया। सत् सब्द मू काम्ठ मथाणी, ज्या मैं ग्यान अग्नि प्रगटाणी।

—स्रीसुखरामजी महाराज

३ पातजल दर्शन मे सुपुप्ति, चित्त की उस वृत्ति या अनुभूति को माना है, जिममे जीव, नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता है किन्तु जीव को इम वात का ज्ञान नही रहता कि उमने ब्रह्म की प्राप्ति की है।

४ वेदान्त के अनुसार जीव की अज्ञानावस्था।

रू. भे—सुखपत, सुखपति, सुखपती, सुखुपती, सुखुप्ती, सुखोपति।

सुसुमण–स स्त्री [स सुषुम्ण] १ सूर्य की मुख्य किरणो मे से एक।

२ देखो 'सुसुमणा' (रू भे)

सुसुमणा–स स्त्री [स सुषुम्णा] १ शरीर की नौ प्रमुख नाडियो मे से नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरध्र) मे स्थित रहने वाली एक नाडी। (हठयोग व तत्र)

२ देखो 'सुखुमणा' (रू भे)

सुसुरुत–स पु [स सुश्रुत] १ आयुर्वेदीय चिकित्मा शास्त्र के एक प्रसिद्ध आद्याचार्य।

लामी केल कहीजै, गोळ झुड सर मुनवरा ।—दसदेव

२ मद मुस्कराहट, मृदु हास्य ।

[स. सुष्म, सुष्म] ३ अग्नि । (डिं. को)

रू भे —सुखम, सुखमा ।

सुसमाय-वि —सामर्थ्यवान, समर्थ ।

उ०—'राजड' नै 'कुमै' जिमा, मागळिया सुसमाय । रूकहथा 'जसराज' रा, पोरस भीम क पाथ ।—रा रू

सुसमित-स पु [स सुस्मित] १ आनन्द से मुस्कराता हुआ, मुदित ।

उ०—सुसमित सुनमित निज वदन सुव्रीडित । पुडरीकाख थिया प्रसन ।—वेलि

२ प्रस्फुटित, प्रफुल्लित ।

सुसमौ—देखो 'ससमौ' (रू भे)

(स्त्री सुसमी)

सुसर-स पु —१ छप्पय छद का ३६ वा भेद जिसमे ३५ गुरु, ८२ लघु से कुल ११७ वर्ण या १५२ मात्राऐ होती है । (र ज प्र)

२ देखो 'ससुर' (रू भे)

उ०—सुसर इ वळै जवाई सरिसउ, क्यु हेक्र खाटउ जीव कियउ ।
—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'सुसरि' (रू भे)

उ०—नरनाथ कोडि मथुरा नयर, वाजै सुसर वधामणा । वाजत्र सुतान खट त्रीस वगि, सोभै ग्यान सुहामणा ।—रा रू

४ देखो 'सुसिर' (रू भे)

सुसरनद-स पु [सुसुर=शकर+नदन] हनुमान । (ना मा)

सुसरमा-स पु [स सुशर्मा] त्रिगर्त्त नरेश वृद्धक्षेम का पुत्र जो द्रौपदी स्वयवर मे उपस्थित था, एव महाभारत युद्ध मे कौरव पक्ष मे लडता हुआ अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

वि वि —दुर्योधन के कहने पर इसने मत्स्यदेशाधिपति विराट पर उस समय आक्रमण किया था जबकि पाडव लोग विराट के यहा अपने अज्ञातवास की अवधि बिता रहे थे । उक्त युद्ध मे इसने विराट को बन्दी बना लिया था किन्तु अर्जुन, भीमादि ने युद्ध करके पुन छुडवा लिया ।

रू भे —ससरम, ससरमा ।

सुसराळ-स पु [स श्वशुर+आलय] श्वशुर का घर, ससुराल ।

उ०—कुण नगर म्हारो सुसराल मेरी माय, कुण नगर म्हारो पीवरियौ ।—लो गी

सुसरि-स स्त्री [स सु+सरित] १ सुन्दर हार, सुन्दर लडी या माला ।

उ०—काळ मोतिया सुसरि हरि कीरति । कठसरी सरसती किरि ।
—वेलि

[स सुरसरी] २ गगा नदी ।

३ तालाव, सर ।

क्रि वि —१ मधुर एव मीठे स्वर मे ।

उ०—१ वाजै सुसरि राजगढ वाजा । राणी गौड परणियौ राजा ।—रा रू

उ०—२ आणद मोर सुसरि आवाजै । वीणा वम मधुर सुर वाजै ।—आसौ वारहठ

२ देखो 'सुसिर' (रू भे)

३ देखो 'ससुर' (रू भे)

सुसरौ—देखो 'ससुर' (रू भे)

उ०—१ सुदर गोरी ओळू थारी परी रै निवार, चपक चरणी वावोसा री ओळू सुसरौ जी भागसी ।—लो गी

उ०—२ सुसरैजी रै हुकम कवरडो चालै, सासड रै कवराणीजी । सुसरौजी तो पूत सरावै, सासूजी कुळ व्याहीजी ।—लो गी.

उ०—३ 'सवळै' नू सुसरौ करण, 'मिरजै' किया मुकाम । 'आसावत' छळ ऊजळै, वळ भरियौ वरियाम ।—रा रू

सुसलौ, सुसल्यौ—देखो 'सस' (१) (अल्पा, रू भे.)

उ०—एक सुसला रै पाछै दोय छाली नाहर दोड्या । जद सुसळो न्हास नै विल मैं पेस गयौ ।—भि द्र

सुसवट-पु —कीर्ति, यश ।

उ०—घण दळ लिया 'घासी' घण नामी, सुसवट सुवद वदीती साखि । भैरू घड पाडि वाड विधि वैरो, करि भेळा येळा कमळाखि ।—घासीराम हाडा रौ गीत

सुसवद, सुसवाद-स [स सु+स्वाद] स्वादिष्ट, जायकेदार ।

उ०—चोली मइ चरणा चीर मखरा, सुखडा सुसवाद ए । रली रग स्यु लइ जसोभद्रा, जाणइ जेठ प्रसाद ए ।—स कु

सुसात-वि [स सु+शात] अत्यन्त शान्त, स्थिर, गंभीर ।

सुसा—देखो 'ससा' (रू भे)

उ०—१ गुरु गेहि गयौ गुरु चूक जाणि गुरु, नाम लियौ दमघोख नर । हेक वडौ हित हुवै पुरोहित, वरै सुसा सिसुपाळ वर ।
—वेलि

उ०—२ रथ गज त्रिखभ तुरग रय, दन अनमिति सत दाम । सुसा विदा किय नेम सू, पूरण प्रेम प्रकाम ।—रा रू

सुसाध्य-वि [स] जो सहज मे किया जा सके, जो सहज मे पूरा किया जा सके, सुगसाध्य ।

सुसार-स पु —कमल । (अ मा)

सुसाणौ, सुसावौ, सुसावणौ, सुसाववौ-क्रि स ['सुसणौ' क्रिया का प्रे रू] सकुचित करना, सिकोडना, सिकुडाना ।

उ०—भग्यिौ हव्वाहोळ, उवक्र नाळानै आवै । आन-भोमरै मेह, पेटनै भळै सुसावै ।—दसदेव

सुसायोडौ, सुसावियोडौ-भू का कृ —सकुचित किया हुआ, सिकोडा हुआ ।

(स्त्री सुसायोडी, सुसावियोडी)

सुसिख-स स्त्री [स सुशिख] १ अग्नि का एक नाम ।

हुग्रा ४ प्रतीक्षा या इतजार किया हुग्रा. ५ ग्रालस्य या सुस्ती फैलाया हुग्रा ६ नीद लिया हुग्रा ।
(स्त्री सुस्ताग्रोडी)
सुस्तावणी, सुस्तावबौ—देखो 'सुस्ताणी, सुस्तावौ' (रू. भे)
उ०—१ मास **सुस्तावौ** सू एक वात री बुहानौ कर ग्रठै सू विदघा होसां ।—द दा
उ०—२ सामी दीखती प्याऊ मैं थोडी ताळ **सुस्तावण** री मतौ करियौ ।—फुलवाडी
उ०—३ पाणी पावण री कह्यौ तद वा डावडी बोली—थोडी ताळ सुस्तावौ, परसेवौ सूख जावै तौ पछै पावू ।—फुलवाडी
सुस्तावियोडौ—देखो 'सुस्तायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुस्तावियोडी)
सुस्ती—स स्त्री [फा] १ ग्रालस्य, प्रमाद ।
२ शिथिलता, ढीलापन ।
३ दुर्वलता, कमजोरी ।
४ मलिनता, उदासी, खिन्नता ।
५ गति माद्य, दीर्घ सूत्रता ।
६ बुद्धि माद्य ।
७ काम शक्ति का ग्रभाव ।
८ निस्तेजावस्था ।
९ रुग्नावस्था ।
रू भे—सुसती, सुस्ताई ।
सुस्थित—स पु—घोडे का एक ग्रह विशेष, इसके ग्रसित होने पर घोडा वरावर हिनहिनाता रहता है ग्रौर ग्रपने ग्रापको देखता रहता है ।
सुस्याम—वि [स सुश्याम] सुन्दर एव श्याम, श्याम सुन्दर ।
उ०—नमौ पच व्रन्न-पवित्र सुपीत । **सुस्याम** सुनील, सुरत्त, सुसीत ।—ह र
सुस्यौ—देखो 'सस' । (१) (ग्रल्पा, रू भे)
सुस्री—स स्त्री [स सुश्री] १ सुन्दर-शोभा ।
उ०—गौ खीर स्रवति रस धरा उदगिरति, सर पोइणिए थई **सुस्री** । वळी सरद-स्रग लोग वासिए, पितरै ही स्रत लोक प्री ।
—वेलि
२ कुमारी, मिस । (MISS)
सुस्रूसा—स स्त्री [स शुश्रूपा] १ सेवा-चाकरी, टहल-वदगी ।
२ देख-भाल, सभाल, सुरक्षा ।
उ०—ग्रजन न घालै ग्राख, मसी न लगावै दात । **सुस्रूसा** देह तणी ए, वरजी सासन कै धणी ए ।—जयवाणी
सुस्रेय—स पु [स सुश्रेय] १ कुशल-क्षेम । (ह ना मा)
२ यश, प्रशसा ।
सुस्वधा—स स्त्री. [स] कल्याण, मगल, सौभाग्य ।
सुस्वप्न—स पु [स] ग्रच्छा सपना, शुभ सपना ।
सुस्वर—स पु—मधुर व मीठा स्वर, मीठी ग्रावाज ।
वि.—जिसका स्वर मधुर हो, सुरीला ।
सुहगौ—देखो 'सूगौ' (रू भे)
उ०—मुळताणी घर मन वसी, **सुहगा** नइ सेलार । हिरणाखी, हसि नइ कहइ, ग्राणउ हेडि तुखार ।—ढो. मा
(स्त्री सुहगी)
सुह—१ देखो 'सुख' (रू भे)
२ देखो 'सुभ' (रू भे)
उ०—धन धन तै नर धरणीयै, जेहनी सफली जीह । जस कहै पास जिणद नौ, सुह भावै धरमसीह ।—ध. व ग्र
सुहग्गा—देखो 'सुहागण' (रू भे)
उ०—ईसर उठ भग्ग घोमर ग्रग्ग, वै वै पग्ग लग वग्ग । मुठि नारि सुहग्गा मिळियौ मग्गा, दाणव पग्गा रच दग्गा ।—भगतमाळ
सुहड, सुहडौ—देखो 'सुभट' (रू भे)
उ०—१ सौ पडिया दूजा सुहड, ग्रन ऊपडिया खेत । ग्रग नत्रीठा वाजिया, ग्राद 'दुरग्ग' सचेत ।—रा. रू
उ०—२ हीयाफट हठ न करौ हूरा, नर हिंदु छै तुरक नही । बामीवध केमरियै वागै, सूर सुहड़ राठौड सही ।
—हठीसिह राठौड जोगावत री गीत
सुहट—देखो 'सुभट' (रू भे)
सुहटौ—देखो 'सूवौ' (रू भे)
उ०—ईं समय दैत्य दमनी कन्हा सैं **सुहटौ** एक कागद लेयनै जयमाला कन्है ग्रायौ ।—पचदडी री वारता
सुहणौ—देखो 'स्वप्न' (रू भे)
उ०—१ मैं **सुहणौ** इम पाइयौ, हू गयौ इद्र सभाय । तह तू दीठी नाचती, वैठा सुरपती राय ।—पचदडी री वारता
उ०—२ **सुहणा** ही मा ताहरौ ध्यान, वाल्हौ लागै जेम निधान ।
—वि. कु
सुहद्र—स पु.—यम । (ग्र मा)
सुहद्रागिर—स पु [स सुभद्रागिरि] भाद्राजून नामक ग्राम (जोधपुर) के पास की पहाडी, सुभद्रागिरी ।
उ०—ग्रायौ **सुहद्रागिर** ग्रमुर, छायौ खेह निहग । ग्रागै 'भाण' तरस्सियौ, गह केवाण ग्रभग ।—रा रू
सुहाणी—स स्त्री—१ लोहे का नुकीला ग्रौजार विशेप जो वारीक चीजो को पकडने के काम ग्राता है ।
२ देखो 'सुहावणी' (रू भे)
उ०—१ वोलै सीतापत इमडीजी वाणी, सुरनर नागा नै लागै **सुहाणी** ।—र रू
उ०—२ माहरै हिव था धणीयाणी, तु हिज मन माहि **सुहांणी** जिम राजा नै पटराणी ।—वि कु
रू भे—सुणी ।

२ उक्त आचार्य द्वारा रचित आयुर्वेद चिकित्सा का ग्रंथ 'सुश्रुत-संहिता'।

वि—१ अच्छी तरह सुना हुआ।

२ वेद विद्या में निपुण।

३ प्रसिद्ध, मशहूर।

सुसेण-स पु [स सुषेण] १ रामायण के अनुसार एक वानर जो वरुण का पुत्र, वाली का श्वसुर तथा सुग्रीव का वैद्य था।

२ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।

सुसेत-वि [स सु+श्वेत] श्वेत एव उज्जवल, शुभ्र, चमकीला।

उ०—मारू देस उपन्निया, ताहका दंत सुसेत। कूंझ-बचा गोरंगिया, खंजर जेहा नेत।—ढो मा

सुसैंधवी-स. स्त्री [स] सिंध देश की अच्छी घोडी।

सुसोभित-वि [स सुशोभित] १ शोभायमान, शोभित।

उ०—भाळ विसाळ सिंदूर सुसोभित, हाल मराल, हमत्ती।
—मे म

२ सुन्दर, मनोहर।

रू भे—ससोभित, सुसोहत, सुसोहित।

सुसोहणौ, सुसोहबौ-क्रि अ—शोभायमान होना, शोभित होना।

उ०—जाहर जस सुसबोह जुत, सुदता कुसम सुसोह। काटा सू मूंडौ कृपण, वप अपजस वद वोह।—बा दा

सुसोहत, सुसोहित—देखो 'सुसोभित' (रू भे)

सुसोहियोडौ-भू का कृ—शोभित या शोभायमान हुवा हुआ। (स्त्री सुसोहियोडी)

सुसौ-स पु—शशक, खरगोश।

उ०—अगरा रिण सुसा वाह रस हास यण, कळदीराव कुळ वैस्य अय कज।—र रू

रू भे—सूसौ, सूसौ।

सुसौभ-स स्त्री [स सुशोभा] शोभा, आभा, कान्ति, छवि।

उ०—नग वधण अग्र सुसौभ नई। थिर मेहरि दामणि जाणि थई।—रा रू

सुस्क-वि [स शुष्क] १ जिसमे किसी प्रकार की नमी न हो, जिसमे तरलता न हो, शुष्क, सूखा।

२ जिसमे कोई रस न हो, नीरस।

३ जिसमे हर्ष, आनन्द आदि की अनुभूति न होती हो, नीरस, विरक्त, उदास।

४ सूना हुआ।

५ कृश, दुबला।

६ झूठा, बनावटी।

७ रीता, खाली।

८ व्यर्थ, निरर्थक।

९ कटु, कर्कश।

१० जीर्ण-शीर्ण, पुराना।

सुस्कार, सुस्कारौ—देखो 'सुसकार' (रू भे)

उ०—आट, भाटा, थळिया, मोया, गावेडी अर वारतू कैईजण, मोसा बोल सुणण अर मस्करी जोग विचै सुस्कार ई नी करण री धारली।—चितराम

सुस्त-वि [फा सुस्त] १ जिसमे तत्परता या स्फूर्ति की कमी हो, आलसी, प्रमादी।

२ दुर्बल, कमजोर, अशक्त, शिथिल।

३ खिन्न, मलिन, उदास।

४ मद गति वाला, धीमा, दीर्घ सूत्री।

५ जिसमे काम-शक्ति कम हो।

६ जिसकी बुद्धि तीव्र न हो, मद-बुद्धि।

७ आभा या कान्ति से रहित, निस्तेज।

८ रोगी।

रू भे—सुसत।

अल्पा,—सुसतौ।

सुस्ताई—देखो 'सुस्ती'।

उ०—जिण काम में विचार सुस्ताई सू काम करै तौ सही मन मानी सुधरै।—नी प्र

सुस्ताणौ, सुस्ताबौ-क्रि स—१ थकावट दूर करने के लिये विश्राम करना, श्रम दूर करना।

उ०—घुडला नै रास्तो रोक्या देख नै म्हैं सोच में पडग्यो। सरवर री पाळ मायै लीना री बाया माय सुस्ताता जिकी घुडला री आवाज सुणी वा साचली कोनी निकळी।—तिरसकू

२ किसी कार्य को करने से कुछ समय के लिए रुकना, ठहरना।

उ०—तद वखत जिहजी कही दिन दोय सुस्तायजै।
— मारवाड रा अमरावा री वारता

३ धैर्य रखना, धीरज धरना।

उ०—मन्त्रीपुत्र कहियौ—महाराजकुमार! चंदण अपणै हाथ मैं लगाया चपेटा मारिया छै तौ री यौ विचार छै—दस दिन चानण पछै मिळस्या, तितरै था सुस्ताय रहौ।—वैताळ पच्चीसी

४ प्रतीक्षा या इतजार करना।

५ आलस्य या सुस्ती फैलाना।

६ नींद लेना।

सुस्ताणहार, हारौ (हारी), सुस्ताणियौ—वि०।

सुस्तायोडौ—भू० का० कृ०।

सुस्ताईजणौ, सुस्ताईजबौ—कर्म वा०।

सुसताणौ, सुसताबौ, सुस्तावणौ, सुस्तावबौ—रू० भे०।

सुस्तायोडौ-भू का कृ—१ थकावट दूर करने के लिये विश्राम [illegible] हुआ, श्रम दूर [illegible] २ किसी [illegible] करने से के लिये रुका [illegible] ३ [illegible] हुआ,

सुहाणी–वि (स्त्री सुहाणी) १ शोभा देने वाला, शोभायमान, शोभित।
२ सुवासित।
३ अच्छा, बढिया।
४ सुन्दर, मनोहर।
५ स्वादिष्ट।
६ सुरुचिकर, मनभावना, प्रिय।
रू भे—सुवाणी, सुवाणौ, सुवावणौ, सुहामणौ, सुहावणौ।

सुहाणौ, सुहावौ–क्रि स—१ अच्छा लगना, मन भाना, रुचिकर लगना, प्रीतिकर लगना।
उ०—१ जवतै मोहि नद नदन द्रस्टि परचौ माई। तवतै परलोक लोक कछु ना सुहाई।—मीरा
उ०—२ सतसूरा री वात, हरीया भावै सूर कु। कायर कु न सुहात, चौर न चाहै चादणौ।—अनुभववाणी
उ०—३ दुनीया भूठै रचणी, माच न पैडे जाय। साई भूठ न रचई, हरीया सचि सुहाय।—अनुभववाणी
२ बरदाश्त होना, सहन होना।
उ०—१ वेटा रा वाप नै ग्रौ सगळौ ठरकौ सुहायौ कोनी। वात वात मैं घणी ई खामिया काढण री ग्रटकळा करी, पण माढिया कसूर मैं नी ग्राया जकौ नी ग्राया।—फुलवाडी
उ०—२ हरीया वचन वमेक का, सवकु कह्या सुणाय। ग्राडा वगतर भरम का, एक न ग्रग सुहाय।—ग्रनुभववाणी
क्रि ग्र.—३ शोभायमान होना, शोभित होना।
उ०—१ दळ फूलि विमळ वन नयण कमळ दळ। कोकिल कठ सुहाइ सर। पापणि पख सवारि नवी परि, भ्रूहा रै भ्रमिया भ्रमर।—वेलि
उ०—२ ग्रतही सुहायौ मेरौ साहिवौ सेरौ प्रम दयाळ। ग्रालिम प्रभूजी रौ लाडिलौ गिरधरलाल गुवाळ।—ग्रालमजी
सुहाणहार, हारौ (हारी), सुहाणियौ—वि०।
सुहायोड़ौ—भू० का० कृ०।
सुहाईजणौ, सुहाईजबौ—भाव वा०।
सउहाणौ, सउहाणौ, सवाणौ, सवाबौ, सुवाणौ, सुवावौ, सुवावणौ, सुवावबौ, सुहामणौ, सुहामबौ, सुहावणौ, सुहावबौ, सूग्राणौ, सूग्राबौ, सोहामणौ, सोहामबौ—रू० भे०।

सुहाय—देखो 'सहाय' (रू भे)
उ०—राखियौ निज पुर राय, सुरराय जेण सुहाय। जग कमण फेरै जाव, कळ ग्रकळ सेर' नवाव।—ग रू

सुहार—देखो 'सुवार' (रू भे)
उ०—१ दुसमणा फौज गढ घेरियौ तठै गढ री धणी साकौ कर मरण री विचारी तद स्त्री बोहत समभायनै सुवारिणया कि सुहार रा लडजौ।—वी स टी
उ०—२ इण सारू उण वीर पुरस री स्त्री नकीव नै कहै रे वैरी दोय घडी तो थू ही जीभ नै जक दै, सुहार होवण री वेळा नकीव वोलण लागौ तिण सू कहै छै।—वी स. टी

सुहारे, सुहारै—देखो 'सुवारै' (रू भे)
उ०—१ तरै ग्रासथान कही—ग्राज ऐ ग्रापा नु गाव माहै दया कर ऊतारै छै, सुहारे उरौ वीजै गाव करसा तरै ग्रापा नै कुण डेरा गाव मैं करण देसी।—नैणसी
उ०—२ मह कुपी ग्राज धरौ महाराज, सुहारै लीजौ वैर नकाज।—गो रू

सुहाली–वि स्त्री—सुन्दर, सुहावनी।

सुहालीसेज–स स्त्री यौ—सुन्दर व सुहावनी शय्या।

सुहावणि, सुहावणी–वि स्त्री—१ सुन्दर, मनोहर।
उ०—१ स्वामी भगति समनेहनि, ग्रति सुकुमाळ सुहावणी। कहै राघव सुलतान सुणी, पहोवी हुइ इसी पदमणी।—प च चौ
उ०—२ जगळ वोर सुहावणि राजै, फिरै नकति री ग्राण। मढ मैं ग्रापूग्राप विराजौ, भळहळ ऊगौ भाण।—राघवदास भादौ
२ जो रुचिकर लगे, मन भावन।
उ०—हिरकणिया ज्यू दमकता नख। मीठी ग्रर सुहावणी वोली।—फुलवाडी
३ शोभायमान, शोभित।
रू भे—सुहाणी।

सुहावणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू भे)
उ०—१ जव लागै छै खेत रमणीक सुहावणा।—जयवाणी
उ०—२ काती कत सुहावणौ प्यारी कियौ वणाव।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—३ सायण ढोल सुहावणौ, दैणौ मो दाह।—वी. स
(स्त्री सुहावणी)

सुहावणौ, सुहावबौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू भे)
उ०—१ मती दीयै ग्रासीस सहु परवार सुहावै। तो ऊमै गढ घणी कमण वळ वीयै कहावै।—ग्र वचनिका
उ०—२ तु धरम तणउ छइ धोरी, माहरउ मन लीधउ चोरी रे। तुझ दीठा विण न सुहावइ, मुझ जीव ग्रसाता पावइ रे।—वि कु
उ०—३ म्हारा भाग कै म्है तौ ग्रठा री सूळा नैई नी सुहावू।—फुलवाडी
उ०—४ ताहरा मूळ-पमाव ग्रापरी रजपूताणी नू कैयौ, 'गोत री गाळ मैस नू सुहावै नही। सु पेथड, म्है जाणा, तोनू नही सुहावै।—तीन राठौड वीरा री वात

सुहावियोड़ौ—देखो 'सुहायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सुहावियोडी)

सुहांणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू भे)

उ०—हरियळ केरा केरां कमूवल ढाळू ई ढाळू पळकता हा। कित्ता सुहाणा। किता रूपाळा।—फुलवाडी

सुहामणउ, सुहामणौ—देखो 'सुहावणौ' (रू भे)

उ०—१ नरवर देम सुहांमणउ, जइ जावउ पहियाह। मारू तणा संदेसडा, ढोलइनू कहियाह।—ढो मा

उ०—२ फागण मास सुहामणउ, फाग रमइ नव वेस। मौ मन खरउ उमाहियउ, देखण पूगळ देस।—ढो मा

उ०—३ एहिज व्रिक्ष सुहामणा सखी, घणा वली फल फूल।
—वि कु

उ०—४ वित हूत मेटी राय चिंता, वधै चाय वधामणा। दुरदीह चा दुखगया दुरै, सपजि दीह सुहांमणा।—ग रू

(स्त्री मुहामणी)

सुहामणौ, सुहामवौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू भे)

सुहा, सुहाग–स पु [स सौभाग्य] १ स्त्री के मधवा रहने की अवस्था, वह समय जब स्त्री का पति जीवित हो, सौभाग्य।

उ०—१ सुहा ताइ विसन ब्रह्म ताइ सुहा, इद्र सुहा आसीस दीयइ। न कहइ सुहा घणू नान्हडियउ, कवळ मजीठउ राव कीयउ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कहै वेलि वर लहै कुमारी, परणी पूत सुहाग पति।
—वेलि

उ०—३ कुलीन नारि केकय, आणद मैं अनेकय। सुहाग भाग सू भरी, अनेक राग उच्चरी।—सू प्र

२ स्त्री के शरीर पर का ऐसा पहरावा जो उसके पति के जीवित होने का प्रतीक हो, सौभाग्य चिन्ह।

उ०—१ अवै सुहाग रै इण ओछौ वाहा रै कचुवै (काचळी) सू मोनै बरावरी री स्त्रिया मैं हाथ देखावती नै लाज आवै छै।
—वी स. टी

उ०—२ हू माची रावत जोधार री वेटी हू तौ ए आपरी सुहाग री चूडिया पग पग माथै पछट जमी माथै पटक नै सुहाग आघौ न्हाकूला।—वी स टी

३ पति की आयु।

उ०—१ गनी कौ राज तपतौ जाय, म्हाकौ सुहाग वधतौ जाय।
—लो गी

उ०—२ म्हनै पूरौ भरोसौ है बीरा थारै वाहुवळ री अर इण भरोसा रै पाण इज तौ था मू सुहाग री भीख मागती अमरचूनडी री ओढामणी चावू।—अमरचूनडी

४ पति का ससर्ग, सौभाग्य-सुख, पति का प्रेम।

उ०—पण अणी सौ ठाकुर मया करै सौ या सुहागण। दुजी तीनों सौ मया थोडी। जदी वेटा री माउवा विचार कीधौ सौ ईणी नै ठाकुर सुहाग दीधौ।—गाम रा धणी री वात

५ विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले मागलिक गीत।

६ यश, प्रशसा, तारीफ।

रू भे—सवाग सवाग, सुआग, सुभाग, सुवाग, सुहागि।

सुहागण, सुहागणि, सुहागणी–स स्त्री—१ वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा, सुहागन, सौभाग्यवती, जो विधवा न हो।

उ०—१ सूरा खोटौ सूरपण, चूडा अजव उतार। हू वळिहारी कायरा, सदा सुहागण नार।—वी स.

उ०—२ अणी घड कहि, फवै फळ एम। जाळी मझि हत्थ, सुहागणि जेम।—सू. प्र

उ०—३ फागुन फरहरै वात, प्रभात नौ सीत अपार। नाह सु फाग रमैं वहु, राग सुहागणि नारि।—ध. व ग्र

उ०—४ सुरति सुहागन सुदरी, दुलहौ सवद सुजान। सदा सनेही ऊपरै, वारू मन अर प्रान।—अनुभववाणी

२ वह स्त्री जिसे उसका पति विशेष प्रेम करता हो, मानवती, मानेती।

उ०—१ माडण री वेटी सुहागण, सीहै री वेटी दुहागण।
—नैणसी

उ०—२ गरीवनाथ उण डावडा दुहागण रा नू दिया, सु आवा लै डावडी घरै आयी। तरै सुहागण वैर करन है (रे) हुती, तिण रै छोरू वै आवा दीठा।—नैणसी

रू भे—सवागण, सवागण, सुआगण, सुभागण, सुवागण, सुहागिण, सुहागिन, सुहागिनी।

सुहागथाळ–स पु—भोजन परोसा हुआ वह थाल जिसमे कुछ सुहागिनी स्त्रिया नवागतुक वधू के साथ भोजन करती है।

रू भे—सवागथाळ सवागथाल, सुवागथाळ।

सुहागदार-विडलौ, सुहागदार-वीडौ–स पु यौ—दूल्हे के स्वागत के समय वधू-पक्ष की स्त्रियो द्वारा दी जाने वाली पान की गिलोरी।

सुहागवती—देखो 'सौभाग्यवती' (रू भे)

सुहागि—देखो 'सुहाग' (रू भे)

उ०—वेळा तिणि व सुहागि धडहडती घूवा पखइ। तणौ अतेवर ऊठिखी अग्गहु जाणइ आगि।—अ वचनिका

सुहागिण, सुहागिन, सुहागिनी—देखो 'सुहागण' (रू भे)

उ०—१ या मैं एव वदेही पुरखा, डळा पिंगळा राणी। सुखमिण सदा सुहागिण सूदरी, मोख मुगति जाह जाणी।—अनुभववाणी

उ०—२ सौय सुहागिन सूदरी, सुख सागर भरतार। दूजी दुखी दुहागनी, हरीया विन इकतार।—अनुभववाणी

सुहागौ–सं पु—१ एक प्रकार का क्षार, इससे स्वर्ण के आभूषण साफ किये जाते हैं।

उ०—ऐसी प्रीत लगी मन मोहन ज्यू सोनै मैं सुहागा।—मीरा

२ सुन्दर वागा, सुन्दर पौशाक।

रू भे—सुआगौ, सवागौ, सवागौ, सुवागौ, सोहागौ।

सूक-स स्त्री — रिश्वत, घूस

उ०—१ तीन दिना सू साक मिळै तोई, धोवी हियै न धारो रे !
सूक लेर पधरावै सीरी, नहिं नीकौ निरधारो रे ।—ऊ का

उ०—२ राजाजी नैं उपाव सूज्या पछै काई ढील ! राज रा असवारा नैं हुक्म दियौ सो अणगिण मिनखा रा हाथ पुगता माय सू उतार न्हाकिया । धपावू सूक दी फगत उणनै छोड्यौ । —फुलवाड़ी

सूकखोर-वि —रिश्वत लेने वाला, रिश्वतखोर ।

सूकडी—१ देखो 'सुखडी' (रू भे)
२ देखो 'सूक' (अल्पा, रू भे)

सूकेडी-वि —रिश्वतखोर ।

सूखडी-स स्त्री —१ एक प्रकार का प्राचीन कर ।

उ०—सुरताण कुतबदीन नैं पाट सुरताण महमद बैठो । महमद वारै लोका नैं १८ कर लागा । ते कही—१ (प्रथम) लाग । २ (बीजो) पूछी । ३ हळगत । ४ भोम । ५ भेट । ६ तलार । ७ सूखडी । ८ वधामणी लाग । ९ मळबो लाग ।—नैणसी

२ खलिहान से ब्राह्मण, साधू आदि को दिया जाने वाला अनाज । (मेवाड)

३ देखो 'सूकडी' (४)
रू भे—सूकडी ।

सूखलौ-स पु —गेहू या जौ की भूसी जिसे मारवाड मे 'सागलो' कहते है ।

सूगणी—देखो 'सागणी' (रू भे)

उ०—सूखोडौ मूडौ, मैला-मैला गाभा, मावौ जाणै सूगणिया रो माळौ ।—अमरचूनडी

सगा, सगाकलाल-स पु —एक वैश्य जाति जो शराब बनाने व बेचने का व्यवसाय करती थी । (मा म)

सूगी-स स्त्री —१ सूगा जाति की स्त्री ।
वि —२ देखो 'सूगौ' (पु)

उ०—थू खुद जाणै कै म्हारी नेह अर म्हारी प्रीत इत्ती सूगी कोनी ।—फुलवाडी

सूंगीवाडौ-स पु —बाजार मे वस्तुएँ सस्ती होने की अवस्था या भाव, सस्तापन, मदी ।

सूगौ, सूंगौ-वि [स समर्घ] (स्त्री सूगी) १ कम दामो मे प्राप्त होने वाला, सस्ता ।

उ०—सेठ रै जाता ई माल इत्तो सूगौ कर दियौ कै आखा चौवळा री उठै ढूक व्हैगी ।—फुलवाडी

२ महत्वहीन, जिसकी कोई कदर न हो ।

उ०—१ माणस मुरधरिया माणक मम मूगा । कोडी कोडी रा करिया स्रम सूगा ।—ऊ का

उ०—२ सुपियारी मुहगी सदा, नायक थारै नाम । अब सूरजमल आंगणी, रमै न सूगी गाम ।—पा प्र.

३ जो कम खर्च या थोडे से प्रयास से पूरा हो गया हो ।

उ०—ऐडी सूगी व्याव सो उण जमानै मे ई [illegible] निरख्यो । बेटी रो व्याव [illegible] ।—फुलवाडी

४ सहज, आसान, सुलभ ।
रू भे —सूहगौ, सूघौ, सूरगौ ।

सूघ-स स्त्री —[illegible] की क्रिया ।

उ०—[illegible] ।
—अनुभववाणी

सूघणी-स स्त्री —१ नाक से सूघने की नसवार ।
२ देखो सागणी (रू भे)
रू भे —सूघणी, सूघनी ।

सूघणौ, सूघवौ-क्रि स [स जिघ्र] १ नाक द्वारा किसी प्रकार की गध का अनुभव करना ।

उ०—[illegible] ।—[illegible]

२ घ्राण शक्ति द्वारा किसी पूर्व परिचित गध का अनुमान लगाना, अनुभव करना, जानना ।

उ०—१ [illegible] ।—अमरचूनडी

उ०—२ [illegible] सूघती अर [illegible] ।—अमरचूनडी

३ गध लेने के लिये किसी वस्तु का नाक से स्पर्श कराना ।

उ०—१ नाहरा सूंघनै चार पाचेक छीका [illegible] जीव मे जीव आयौ ।—फुलवाडी

उ०—२ ठाकर तमाखू सोनी तो है नही [illegible] है । जद तिण रजपूत चिमठी भरनै सूघी अनै बोल्यौ—ठीक [illegible] है ।—भि द्र

४ ध्यान या तवज्जाह देना, देखना ।

उ०—राड रुपिया री च्यार सेर पक्की मिळती अर गुड नै तो कोई सूघतो ई कोनी ।—अमरचूनडी

सूघणहार, हारौ (हारी), सूघणियौ—वि० ।
सूघिओडौ, सूघियोडौ, सूघ्योडौ—भू० का० कृ० ।
सूघीजणौ, सूघीजबौ—कर्म वा० ।

सूघियोडौ-भू का कृ —१ नाक द्वारा किसी प्रकार की गध का अनुभव किया हुआ २ घ्राण शक्ति द्वारा किसी पूर्व परिचित गध का अनुमान लगाया हुआ, अनुभव किया हुआ ३ गध लेने के लिये किसी वस्तु का नाक से स्पर्श कराया हुआ ४ ध्यान या तवज्जा दिया हुआ ।
(स्त्री सूघियोडी)

सुहावौ-वि —सुन्दर, सुहावना।

उ०—त्रीजै प्रहरै रैणकै, मिळिया तैहातेह। धन नहि धरती हुइ रही, कत सुहावौ मेह।—ढो मा.

सुहासणी—देखो 'सवासणी' (रू भे)

उ०—बाजा वाजै अति भला, वरत्या मगल-माल। सतोखै याचक सुहासणी, हरख्या बाल गोपाल।—जयवाणी

सुहाहीणौ-वि —मूर्ख, नासमझ।

सुहिणइ, सुहिणउ, सुहिणौ-स पु —सपना, स्वप्न।

उ०—१ सहिए फिरि समझावियउ, सुहिणइ दोस न कोइ। सउ जोयण साहिब वसइ, आण मिळावइ तोइ।—ढो मा

उ०—२ जिण दिन ढोलउ आवियउ, तिण अगलूणी रात। मारू सुहिणउ लहि कह्यउ, सखिया सू परभात।—ढो. मा

उ०—३ संसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस सधि सुहिणा सु वरि। हिव पळपळ चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यान एहवी परि।
—वेलि

वि —प्रिय, वल्लभ, प्यारा।

रू भे —सुहिणौ, सुहीणौ।

सुहित-स पु [स स्वहित] अपना हित, अपना भला, स्वार्थ।

उ०—उत्तम धाम दुवारिका, महिमा सुहित सभारि। लियौ महा सुख एक पख, न्रप परसियौ मुरारि।—रा रू

वि —१ हितैषी, हितु।

२ लाभदायक, शुभ।

उ०—सुभ जोग सकळ नव ग्रह सुहित, इसैइ महूरत ऊधरै। असपती मिळण खडिया 'अभै', जैत हथा जोधाहरै।
—रा रू

३ देखो 'सहित' (रू भे)

रू भे —सुहित्त।

सुहितौ—देखो 'सोहितौ' (रू भे.)

उ०—उणी भाति वौ मास, उणि भाति रौ सुहितौ, उणि भाति रा झरहता सूळा रौ निकुळ कीजै छै।—रा सा स

सुहित्त—देखो 'सुहित' (रू भे)

उ०—राज्येंद्रौ जोग्येंद्रौ सगौ सामरथ नेह एकगौ। लेखै सेव सुहित्त, आसगौ नइव लेखतौ।—रा रू

सुहिद्रा-स स्त्री —सुभद्रा।

उ०—चौरी वैठै चक्रधर वळि सुहिद्रा रौ वीर। वावै ना सवळा विरिद, पुणै कवेसर पीर।—पी ग्र

सुहिलौ-वि —सुलभ।

उ०—कीजै रयण तणौ नित कुळ क्रत, वैरा ऊपरी वत्र अवत्र। जेह्र अहोनिस दुहिला जगम, सुहिला तइया म गिणि सत्र।
—गु रू व

सुहो-सर्व—१ वही, वह।

उ०—सुहो नर 'केहर' वीजळसार, रखी निज पास वडै रिझवार।
—पे रू

२ देखो 'सुखी' (रू भे)

सुहुड़—देखो 'सुभट' (रू भे)

उ०—सोलकी वाघेला सुहुड रोसाला राउत राठउड।
—का दे प्र.

सुहेल-स पु. [अ] यमन देश मे उगने वाला एक प्रसिद्ध चमकीला तारा।

सुहेलु, सुहेलू, सुहेलौ—देखो 'सोहिलौ' (रू भे)

उ०—माल्हतौ घरि आगणै, सखी सुहेलौ काम। जो जाणू पिय माल्हणौ जै मल्है सग्रामि।—हा झा

सुहृत-स पु [स सुहृत्] १ मित्र, दोस्त, सखा।

२ राज्य के सात अगो मे से एक।

सुहृद-वि [स] प्रिय, प्यारा, मित्र। (ह ना मा)

उ०—अणू तै व्याणू तै व्रहदळ विभूतै अति विभू। तुजै ना जानै को सुहृद स्वसु जानै भल अभू।—ऊ. का

सूं-क्रि वि —१ ही।

उ०—वदनारविंद गोविंद वीखियै, आलोचै आपौआप सूं। हिव रुखमणी क्रतारथ हुइस्यै, हुऔ क्रितारथ पहिलौ हू।—वेलि

२ देखो 'सु' (रू भे)

उ०—१ सखी समूह माहि इम स्यामा, सील आवरित लाज सूं।
—वेलि

उ०—२ नरनारी सू क्यू जळइ, नर सूं नारि जळत। साल्हकुवर जोगी कहइ, अहलउ केम मरत।—ढो मा

उ०—३ एक देस वाहणी न आण। सुरसरि समसरि वेलि सूं।
—वेलि

उ०—४ मा रै मूडै औ नाव म्हारै काना डमरत ज्यू लागतौ। हेलौ मारता उणरौ गळौ माखण सू भरचौ ज्यू लखावतौ।
—फुलवाड़ी

उ०—५ धिन आजूणौ दीहडौ, या कहियौ रघुनाथ। धरम निभाहा साम छाळ, माहा सू भाराथ।—रा रू

३ देखो 'स्यू' (रू भे)

सूंई-क्रि वि —से ही।

उ०—१ सेवट तौ वारी कमाई सूंई पार पडैला, किणी रै दियां लिया मू की साधी नी लागै।—फुलवाडी

उ०—२ थू भरोसौ राख। इण सूंई वेमी चावै तौ थनै उणरी फोटू वताय सका। पण ऐन मौका माथै रूबरू देखण री हूर करणी कम अकल री वात है।—अमरचूनडी

वि स्त्री —१ उल्टी का विपर्याय, सीधी, सुलटी।

२ चित्त, सीधी।

३ देखो 'सूई' (रू भे)

पतसाह री, घिरियौ घातै घेर ।—नैणसी

उ०—२ सूडाळ दरगह सावता, वेगाळ रौग वडाळ । किरमाळ वळ रिण ताळ केता जीरणा-जमजाळ ।—नैणसी

वि—जिसके सूड हो, सूड वाला ।

रू भे—सुडार, सुडाळ, सूडाळकौ, सडाळौ, सूडाहळ, सूडाहळौ, सडाहळ, सूडाहळौ, सूड्याळौ, सूडाहळ ।

सूडाहळ, सूडाहळा–स स्त्री—१ हाथी की सूड ।

उ०—१ गजराजा रा भाळ कपोळ सडाहळ वर्णं गाल सिंदूर सू चरचिग्रा ।—रा सा स

उ०—२ भुयग सरस नीसरीग्रा छै । सो तू नै तारई री सगति सू वळता थका द्रौडि द्रौडि नै हाथीग्रारै गीरळ सूडाहळा माहे पेसि पेसि रहीग्रा छै ।—रा सा. स

२ देखो 'सूडाळ' (रू भे)

रू भे—सूडाहळ ।

सूडियौ–स पु—१ एक प्रकार का चरस (मोट) जिसका पानी निकलने का हिस्सा सूड के आकार का बना होता है ।

२ ऐसा कूप जिसका पानी सूडदार चरस द्वारा निकाला जाता हो ।

३ मोठ की फसल मे लगने वाला एक कीडा विशेष जिसका आकार सूड के अनुरूप बना होता है । (शेखावाटी)

३ हाथी, गज ।

४ देखो 'सूडी' (अल्पा, रू भे)

रू भे—सूड्यौ ।

सूंडी–स० स्त्री—१ ऊट के मुख की आकृति ।

२ हाथी, गज ।

उ०—नित नित सूडी नइ गढि आवइ साव दळड गुरताण ।

—का दे प्र

३ नाभि ।

उ०—सगर मान मसतूल ना है, सूडी स्तन वचेळिया । जाव थामलो देवल जिसो, पाव पानडा ओळिया । —नारी नखसिख

रू भे—सुडी ।

सूडीर–स पु [स शुण्डीर] १ हाथी ।

२ हाथी की सूड ।

उ०—भौरा नू बैठा सानहे नही, सूडीर वरा वळाका साहनै रहीग्रा छै ।—रा सा स

सूडौ–स पु—खपचियो का बना हुग्रा टोकरा जो तगारी के स्थान पर अनाज नापने के काम मे लिया जाता है ।

अल्पा,—सूडळौ, सूटलो, सूडियौ ।

सूड्याळौ—देखो 'सूडाळ' (रू भे)

सूड्यौ—१ देखो 'सूडियौ' (रू भे)

२ देखो 'सूडौ' (अल्पा, रू भे)

सूढा–स पु—पवार वश की शाखा ।

सूढि—१ देखो 'सूड' (रू भे)

उ०—[illegible] सूढि [illegible], [illegible] । [illegible] मे [illegible] ।— का. दा. प्र

२ देखो 'सूढी' (रू भे)

सूण—देखो 'सूगन' (रू भे)

उ०—१ [illegible] । [illegible] सून [illegible] ।—कुकवा [illegible]

उ०—२ [illegible] सूण वनाई, [illegible] । [illegible] गाऊ रे [illegible] ।—बो. बी

सूणावणी, सूणावबौ—देखो 'सूगनणी, सूगनबौ' (रू भे)

उ०—[illegible] सूणावीवी । [illegible] ।

—बी दे

सूणावियोडौ—देखो 'सूगनावोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूणावियोडी)

सूणी–स स्त्री—१ छोटी [illegible] वस्तुओ या [illegible] आदि को पकडने के काम आती है । (स्वर्णकार)

२ [illegible], सडसी ।

सूणौ, सूवौ—देखो 'सूवणौ, सूवबौ' (रू भे)

सूतणौ, सूतबौ–क्रि स [स सूत्रण] १ [illegible] धार वाले शस्त्र से शरीर का कोई अग काटना, विच्छेद करना ।

उ०—१ कागज [illegible] री गाडी सूत [illegible] पर [illegible] भगवान री नी [illegible] दियौ ।—फुलवाडी

उ०—२ [illegible] री गाडी सूतणा [illegible] तलवार री ई मान घटै ।—फुलवाडी

उ०—३ [illegible] सूत्यौ । पाचणा सू नाळी मोळ [illegible] दियौ ।—फुलवाडी

२ गीली वस्त्र या गीले वस्त्र को मुट्ठी मे दबा भीचकर खीचना । (इससे इसमे से पानी भर जाता है अथवा सुरदरापन या सलवटें मिट जाती है ।)

३ इसी तरह किसी रसदार पदार्थ का रस निकाल लेना ।

४ लाक्षणिक अर्थ मे किसी की ताकत या नरज निकाल लेना, मोटे ताजे को कमजोर दुबला कर देना ।

५ खीचकर एकत्र करना, इकट्ठा करना ।

६ पतग उडाने की डोर पर पके हुए मैदे (लेई) मे पीसा हुआ काच मिलाकर लेपन करना, सूती देना ।

७ किसी पौधे या पेड की टहनी को हाथ या मुह (जानवरो द्वारा) मे पकडकर खीचते हुए उसके समस्त पत्ते, फूल व फल तोड लेना ।

उ०—बाग मे मोज कठैई नी अर इण सागी चोरी री नेम कदैई टळै नी । चोर पान फळ अर फूल सगळा साथै ई सूतै ।

—फुलवाडी

८ उजाड करना, उजाडना ।

सूघौ–वि —१ रोचक वचन कहने वाला ।
२ देखो 'सूगौ' (रू भे)
उ०—घिरत घणौ सूघौ हुवौ, मद मूघौ अणमाप । कह कहनै कितरी कहू, प्रभुता तूझ 'प्रताप' ।—चिमनदान रतनू

सूज, सूझ–स पु —विवाह के समय दहेज के रूप मे तथा प्रथम प्रसव के बाद विदाई के समय कन्या को उसके माता-पिता द्वारा दिया जाने वाला आभूषण, वस्त्र एव अन्य सामान ।
उ०—सझ विसाल अवर जरीय, नख चख सूज सिंगार राज रवन गुरजन अलन, कृत कर लग्न कुआर ।—कूभकरण सादू
रू भे —सौंज ।

सूट–स पु —एक प्रकार का कीडा, कीट ।

सूटी–स स्त्री [स सूत्थिता] नाभि ।
उ०—१ सूरजमल वागरी जेह झाल नै कटारी गळा नीचा सू वाही सूटी आवती रही ।—नैणसी
उ०—२ सु कारी न हिंदुस्तान न खुरासाण माहै सुणी न दीठी । सूटी रै पाखेडि कारी की ।—द वि
रू भे —सूठि, सूठी ।

सूटौ–स पु —वर्षा के साथ चलने वाली तेज हवा जो खडी फसल को आडी पटक देती है तथा पेडो को तोड देती है । (शेखावाटी)

सूंठ–स स्त्री [स शुण्ठी] सूखी अद्रक, सोठ । (अ मा, डि को)
उ०—१ काचा हाडा मैं कुचमाध हुयगी । गूद सूठ अर पीपळामूळ जिसा ओखदा मैं तौ वोतौ मारया पडचौ ही रैणौ चाहीजै ।
—दसदोख
उ०—२ खाड, सूत, सूठ, पीपळामूळ, घीरत मण १ दुगाणी ६।। लागै ।—नैणसी
रू भे —सुठ, सुठि, सुठी ।

सूठि, सूठी—१ देखो 'सूटी' (रू भे)
उ०—१ आगणौ धोय-वाय, पूछ-पाछनै घी हळदी रा सूठी माथै सावता सावता चोपा दिया ।—फुलवाडी
उ०—२ पछै एक सूठी तणौ ऊडो निम्कारौ न्हाकनै राजाजी कैवण लागा—जै इण दुनिया मे सगळा ई मिनख राजा व्हेता तौ कैडी नामी काम वणतौ ।—फुलवाडी
२ देखो 'सूठ' (रू भे)

सूड–स स्त्री [स शुण्डा] १ हाथी की नाक जो हाथी की ऊचाई से जमीन तक लम्बी होती है । खाने पीने आदि क्रियाओ मे हाथी अपनी सूड को हाथ की तरह प्रयोग मे लाता है ।
(डि को)
उ०—वाजता घट विहुवै वळा, ऊरध सूड उछाजता । दाझता क्रोध ज्वाळा दग्या, गज मतवाळा गाजता ।—मे म
२ हाथी की सूड के आकार का मोट का वह भाग जिसमे पानी वाहर आकर मोट को खाली करता है ।
३ हरे रग का एक कीडा, कीट ।
रू भे —सड, सुड, सूडा, सूढि ।

सूडकियौ, सूडक्यौ—देखो 'सूडौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—चालौ ए साथणिया अपे, कामडियौ नै जावा । ऐ तौ कामडिया चोखी म्हारी, सूडकियौ गुथाऊ ।—लो गी

सूडडड, सूडदड—देखो 'सूडाडड' (रू भे) (डि को)

सूडधर–स पु [स शुण्ड+धर] १ हाथी, गज । (डि को)
२ गणेश, गजानन ।

सूंडर–स पु —राठौड वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।
(वा दा ख्यात)

सूडळौ, सूडलौ—देखो 'सूडौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—मालणि आपि मोगरा, तवोळी दिइ पान । सपरि समविउ सूडलै, साहमु आवइ धान ।—मा का प्र

सूडहळ–स पु [स. शुण्डा+धर] हाथी, गज । (डि को)

सूडा–स पु —१ राठौडो की एक उपशाखा ।
२ पवारो की एक शाखा ।
३ देखो 'सूड' (रू भे)

सूडाडड, सूडादड–स पु [स शुण्डादण्ड] १ गणेश, गजानन ।
उ०—सूडादड अहेम राग रीझेस समोसर ।—सू प्र
२ हाथी, गज । (डि ना मा)
उ०—गेंघमैं आराण घाण मथाण नीसाण घोक, मूकै डाण सूडाडड वीछुडै सीवाण । दोवळा विवाण ठहै खडा गरवाण देखै, भडै दखणाण हूत हिंदवाण भाण ।—पहाडखा आढौ
३ हाथी की सूड ।
उ०—दीयै खभू ठाणा मचौळा, अचाळा झाट सूडाडडा ।
—चैनकरण सादू
वि —जिसके सूड हो, सूडधारी ।
रू भे —सुडडड, सुडदड, सुडाटट, सुडाडडू, सुडादड, सूडडड, सूडदड, सूडाडडौ ।

सूडाडडौ—देखो 'सूडाटट' (रू भे)

सूडाळ, सूडाळौ–स पु [स सुण्डार] १ गजानन, गणेश ।
(ह ना मा)
उ०—१ डसण एक सूडाळ, वरदायक रिध सिध-वरण । विद्या वयण विसाळ, आपीजै आखिर उकत ।
— वगसीराम प्रोहित री वात
उ०—२ सूडाळौ लाइक सुग, राम सरीखौ रूप । ब्रह्म सतगुरु हूता वडी, ईसरदास अनूप ।—पी ग्र
उ०—३ सूडाळा दुख भजणा, सदा जो वाळक भेस । सारा पैं'ली सिवरीयै, गौरी पुत्र गणेस ।—जाभौ
२ हाथी, गज । (अ मा, डि को, डि ना मा, ना डि को)
उ०—१ सूडाळा घड सामही, फैरी जेसलमेर । पाछौ दळ

उ०—वडौ दुगमी देम जोधै विलूधौ । सुधै अगद अतरानेर सूधौ ।
—सू प्र

३ देखो 'सीधौ' (रू भे)

उ०—१ सीसी खुलै छै, मोती पडै री सीपरा प्याला मैं । घात हाजर कीजै छै, सूधौ वगला लगायजै छै ।—रा सा स

उ०—२ पछै पोसाख गहणौ पहिरिया, सूधौ चोवौ अतर लगाय कस्तूरी री कठी वणाइ, मेलरा थेगा दै ताडूकनौ ताडूकनौ आयौ ।
—जगदेव पवार री बात

उ०—३ अलायदौ महल करायौ तिण माहे घणा गुण भोग विलास करै । अतर सूधा अरगजा माहे गरकाव रहे ।
—वीरमदे सोनगरा री बात

४ देखो 'सूदौ' (रू भे) (मा म)

उ०—रावळ चाचगदे करमसी रौ, चाचगदे सूधा रै भाखरै देहुरौ चावडजी रौ करायौ, समत १३१२ ।—नैणसी

सूंन—देखो 'सून्य' (रू भे)

उ०—राम कहत राडी भली, नीकी जिनकी भाग । राम विमुख सौ जाणियै, हरीया सून सुहाग ।—अनुभववाणी

सूनउ—देखो 'सूनौ' (रू भे)

उ०—सज्जण चाल्या हे सखी, पाछै पीळी पज्ज । नव पाडा नगर वसई, मौ मन सूनउ अज्ज ।—ढो मा

सूनत, सूनित—देखो 'सुन्नत' (रू भे)

उ०—१ काजी मन का भरम न पाया, तातै सूनत कीन्ही काया ।
—अनुभववाणी

उ०—२ मुला सूनित तै करी, तै कीया विसमल । खलटी गळा कटाय कै क्या कीया वे'कल ।—अनुभववाणी

सूनी—देखो 'सुन्नी' (रू भे)

उ०—खुरसाणी रहमान असूनी, सीदी हवस राफसी सूनी । मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक मगुर जसयानी ताई ।—रा रू

सूनौ—देखो 'सूनौ' (रू भे)

सून्य—देखो 'सून्य' (रू भे)

(स्त्री सूनी)

उ०–अग्नि उसण अरु जळ दसरता, जैसे पवन सफदारै । सून्य पोळस भूमि कठोरा, यू जग ब्रह्म कहदा रै ।—स्रीसुखरामजी महाराज

सूप–स स्त्री —सौपने की क्रिया या भाव ।

उ०—क्यू जै जेर दस्त लोक प्रभूरी सूप वादसाह नू छै तौ इणा री पर दाखत यतन रैयत रा करै तौ आराम सू रहै ।—नी प्र

सूपणौ, सूपवौ–क्रि स —१ किसी कार्य का भार, उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी किसी के कधो पर डालना, सभलाना, सुपुर्द करना ।

उ०—१ नै सीसोदियौ छाजू, सिवौ चद्रावत, ऐ वडा रजपूत छै, नै वडा भोमिया छै, यानू गाव रौ सासर सूपा तौ ऐ जतन करै ।
—नैणसी

उ०—२ भण्यां गुण्यां नै कला-कारीगरी री किमत सूपै । मोटा ताजा नै टील मारू मराई री गोरखनी भोळावै ।—दसदोख

२ सुपुर्द करना, देना, सभलाना, हस्तान्तरण करना ।

उ०—१ सेठाणी विचाळै ई बोली—जै म्हारै मायै भरोसौ नी हौ तौ म्हनै आ जोखम क्यू सूपी ?—फुलवाडी

उ०—२ गाम री भली-बुरी बाता कीनी अर आपरी टटा री पचायता वैठनी, टट-मूळ पतीजना अर टट रो गामगाळ हिसाब सासर नै सूपीजतौ ।—समस्तूनरी

उ०—३ सोनजी रै हटडै मे कोई दिना सू धमचक बाजै ही । सेर सेर पक्को सोनौ मारी ही एक एक नाहरा नै सूपै हौ ।
—दसदोख

३ भेंट करना, देना, समर्पण करना, न्योछावर करना ।

उ०—१ कोई दूजौ जीव अरोजतौ कै तो थारी ऊमर किणी नै सूप दू । विना अरोजिया म्हे कर तौ काई कर ।—फुलवाडी

उ०—२ देंन अरडायौ—चवाळा अबै ई मान जावै । थानै धन री असूट खजानौ सूपूंला ।—फुलवाडी

४ किसी की देख-रेख मे करना, ध्यान रखने के लिये सौंपना, चौकसी मे रखना या देना ।

उ०—१ जद स्वामीजी तेजाय नै जैमलजी नै सूप्यौ । जद जैमलजी बोल्या—देखौ भीखणजी री बुद्धि । तिणनोंजी नै म्हानै सूपता तीन घर बधावणा हुवा ।—भि द्र

उ०—२ गोव री इण वैटी पढै दो भाया वळै व्हिया । वै उठै ई दादी रै पाखती रैगा । आपरै सूप्योडा टाबरा री आपनै ई जाच कोनी ।—फुलवाडी

५ सिखाना, बताना ।

उ०—इण परमेस्वर रै कारज री कूतौ आक लियौ वेटी ! म्है थनै म्हारौ औ इज ग्यान सूपणौ चावतौ ।—फुलवाडी

सूपणहार, हारौ (हारी), सूपणियौ—वि०

सूपिओडौ, सूपियोडौ, सूप्योडौ—भू० का० कृ० ।

सूपीजणौ, सूपीजवौ—कर्म वा० ।

सपणौ, सपवौ, सापणौ, सापवौ, सुपणौ, सुपवौ, सोपणौ, सोपवौ सौंपणौ, सौपवौ—रू० भे० ।

सूपियोडौ–भू का कृ —१ किसी कार्य की जिम्मेदारी, भार या उत्तरदायित्व किसी के कधो पर डाला हुआ, सभलाया हुआ, सुपुर्द किया हुआ २ सुपुर्द किया हुआ, दिया हुआ, सभलाया हुआ, हस्तातरण किया हुआ ३ भेट किया हुआ, सुपुर्द किया हुआ. ४ किसी की देखरेख मे रखा हुआ, चौकसी मे रखा हुआ ५ सिखाया हुआ, बताया हुआ ।

(स्त्री सूपियोडी)

सूफ–स स्त्री [स शत पुष्पा] १ भारत मे प्राय सर्वत्र पाया जाने वाला पाच या छै फुट ऊचा एक पौधा ।

उ०—राजाजी ई देखियौ कै इण भात वाडी नै **सूतणी** ती चोरा रै वस री वात कोनी । इण मैं ग्रवस की न की रामौ है ।
—फुलवाडी

६ दूसरे के धन या दौलत को धीरे धीरे करके अपने कब्जे मे कर लेना ।

१० पीटना ।

उ०—राज री हाथ माथै रैवैला ई सौ ग्रकडू ग्रर हेकडीवाज हा जिका साळा री ग्रातडिया-ग्रोजरिया काढ न्हाखाला, **सूत** दा ला, पासलिया रा भचका वोलाय दा ला, तिनका कर काढाला, ग्रर गोडा, खुरिणया, पुणछा, हासळिया ग्रर गट्टा ताई उतारता री ग्रारी-वारी हाक दी ।—जहूरखा मेहर

सूतणहार, हारौ, (हारी), सूतणियौ—वि० ।

सूतिग्रोडौ, सूतियोडौ, सूत्योडौ—भू० का० कृ० ।

सूतीजणौ, सूतीजवौ—कर्म वा० ।

सूत्रणौ, सूत्रवौ—रू० भे० ।

सूतियोडौ–भू का कृ—१ तीक्ष्णधार वाले शस्त्र से शरीर का कोई ग्रग काटा हुग्रा, विच्छेद किया हुग्रा २ मुट्ठी मे गाढा भीच कर पानी निकाला हुग्रा, खुरदरापन मिटाया हुग्रा (वस्त्र या रस्सी) ३ रस निकाला हुग्रा, निचोडा हुग्रा (फल, रसदार पदार्थ) ४ ताकत या सत्त्व निकाला हुग्रा, दुवला-पतला किया हुग्रा ५ खीचकर एकत्र किया हुग्रा, इकट्ठा किया हुग्रा ६ पतग की डोर पर लेपन किया हुग्रा ७ फल, फूल व पत्ते तोड कर नगा किया हुग्रा (पौधा, वृक्ष की डाल) ८ उजाडा हुग्रा ९ ग्रपने कब्जे मे किया हुग्रा (धन) ।
(स्त्री सूतियोडी)

सूती–स स्त्री—१ सूतने की क्रिया या भाव ।
२ मुट्ठी मे भीचकर दिया जाने वाला खीचाव, मरोड ।
उ०—चकमक सू वगदौ सिळगाय ग्रणू ता कोड सू पूख सेकिया । **सूती** देय दाणा भाडिया ।—फुलवाडी
३ पतग की डोर पर पके हुऐ मेदे मे पीसा हुग्रा काच मिलाकर किया जाने वाला लेपन ।
४ तीक्ष्ण या पैनी वस्तु की रगड ।
उ०—ऐडी लखावती जाणी काटा री भाटी सू उणरी नसा ग्रर काळजा मैं कोई **सूती** देवै ।—फुलवाडी

सूंत्रणौ, सूत्रवौ—१ देखो 'सूत्रणौ, सूत्रवौ' (रू भे)
उ०—राठोडै रिण **सूत्रियौ**, सू दखणाव दळाह । जोगणपुर री जूवटौ, मार्यं जोधपुराह ।— गु रू व
२ देखो 'सूतणौ, सूतवौ' (रू भे)

सूत्रियोडौ—१ देखो 'सूत्रियोडौ' (रू भे)
२ देखो 'सूतियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सूत्रियोडी)

सूथण, सूथणि, सूथणी—देखो 'मूथण' (रू भे)
उ०—१ वेटा भणग्या ग्रगरेजी'र वणग्या किम्टाण, पैरली **सूथण** ग्रर लगाय लियौ तेली रै वळध दाई चसमौ ।—वग्सगाठ
उ०—२ टोळै टोळै पडइ कराखि, नीर प्रवाह वडइ जिम ग्राखि । एक फाडइ पहिरण **सूथणी**, पाए नेउरी वाजइ घणी ।
—का दे प्र

सूथारियौ—देखो 'सूथार' (ग्रल्पा, रू भे)

सूथौ—देखो 'मूतौ' (रू भे)

सूद—देखो 'सूद्र' (रू भे)
उ०—पाच तत्व का पूतळा, रज वीरज की वूद । ऐकै घाटी नीसरचा, वामरिण क्षत्री **सूद** ।—ह पु वा

सूदरि, सूदरी—देखो सुदरी' (रू भे)
उ०—१ दै दै थकी मदेमडा, सुणि **सूदरि** का कत । मछी जीवै जळ विना, तौ तौ विन मैं जीवत ।—ग्रनुभववाणी
उ०—२ घर घर मैं दाता नही, फन फन मिणन न होय । पतिवरता काई **सूदरी**, यु जुग मै जन होय ।—ग्रनुभववाणी

सूदाराय–स स्त्री—सूधा पर्वत पर निवास करने वाली देवी ।

सूदौ–स पु—१ जालोर जिले के जसवतपुरा के पाम वाला पहाड ।
२ देखो 'सूधौ' (रू भे)

सूधा, सूंधा–क्रि वि—१ सहित, ममेत ।
उ०—तद वादमाह ग समुद्र रै टापू माही तीर सू कोम एक ऊपर महल था उठै वूवना नू परगह **सूंधा** राखी ।
—जलाल वूवना री वात
२ देखो 'सौंधौ' (रू भे)
उ०—लिव मुधि वुधि का **सूधा** लाउ, चित चदन चर्चाय ऐसै राम वदेही दुलहौ, रयु ग्रतर लपटाय ।—ग्रनुभववाणी

सूधावास–स स्त्री—सुवास, सुगध, खुशवू ।
उ०—१ **सूधावास** ग्रनै नेउर सद, कमि ग्रागै ग्रागमन कहं ।
—वेलि
उ०—२ ऊचा मदिर चौवणा, ऊचा धणु ग्रावास । ग्रजव भरोखा जाळीया, सीस्या **सूधावास** ।—ढो मा

सूधै–क्रि वि—१ सुगध से, खुशवू से ।
उ०—१ रजधानी उच्छव रहसि मणि दीपक ग्रप्रमाण । **सूधै** महळ सिगारिया, सोरभी लहराण ।—रा रू
उ०—२ परभोम पचायण, घण दियण जस लियण, कळायरौ मोर, **सूधै** भीनै गात ।—रा सा स

सूधौ–वि—१ उलटा या सौंधा का विपर्याय, सुलटा, सौंधा, सीधा ।
उ०—उलटी न सुलटी कहै, ऊधी नै **सूधी** । जन हरिदास सौंसै उसी, दुनिया चकचूधी ।—ह पु वा
२ देखो 'सूधौ' (रू भे)

उ०—१ अर भूंडण रै डावै पसवाडै सूसाड करती गोळी वडगी ।
—फुलवाडी

उ०—२ मतीरी घडा रै उनमान टणकौ, सीसा री गळाई भारी । वौ उणनै तोडण वास्तै नीचौ लुळियौ, जितरै तो सूंसाड करतोडौ एक गोफणियौ उणरै माथै होय नै निकळग्यौ ।—अमरचूनडी

उ०—३ लीला सूवटा री एक लाठी टोळी सूसाड वजावती मेडी रै माथा कर निकळगी ।—फुलवाडी

२ क्रोधावस्था या दौडने के कारण नाक से तेज श्वास निकलने से होने वाली आवाज, शब्द ।

३ सू-सू की ध्वनि ।

उ०—सागै सीयाळा री रात सऊ सऊ सूंसाडा मारै ।—दसदोख

रू भे—सुसाडौ ।

सूसाणौ, सूसावौ—क्रि स—१ अत्यन्त तीव्र गति से फेंकना या चलाना कि उसके चलने से सू-सू की आवाज हो ।

२ सू-सू की आवाज करना ।

उ०—कैर लडै विन पानडा, रोकै लूआ रोस । सुण सूसाता जोर सू, भूलै हिरणा होस ।—लू

रू भे—सूसावणौ, सूसावणौ ।

सूसायोडौ—भू का. कृ—१ तीव्र गति से चलाया या फैंका हुआ २ सू-सू की आवाज किया हुआ ।

(स्त्री सूसायोडी)

सूसावणौ, सूसाववौ—देखो 'सूसाणौ, सूसावौ' (रू. भे)

उ०—१ गोफणियौ सूसावती वा मोसा सुर मैं वोली—भाटिया सू हाल थारौ पानी नी पटियौ दीसं, इणी खातर ऐडी विलळी वात करी ।—फुलवाडी

उ०—२ अचूक निसाणा मैं तौ पारगत हा इज । सूसावता तीर छोडता जकौ भाडा रै आरपार ।—फुलवाडी

उ०—३ मतीरिया-काकडिया सू वापोडी धिगै ही । डकार लेवै ही, सागीडी सूसावै ही अर रागळी गुण-गुणावती गैळै वगै ही ।
—दमदोख

सूसौ—देखो 'सुसौ' (रू भे)

उ०—लकाळ'र सूसौ लुकै, पिण लुकवा मैं फेर । आकै वो अर मौत अर, औ निज मौत अवेर ।—रैवतसिह भाटी

सूहगौ—देखो 'सूगौ' (रू भे)

(स्त्री सूहगी)

सूहणौ—स पु—सोहणौ नामक गीत (छद) ।

उ०—सुज पचम सूंहणौ, छठौ जागडौ सु छज्जत ६ । सौरठियौ सातमौ ७ । विहद सुखकृत वज्जत ।—र ज प्र

सूहरौ—देखो 'सू'गै' (रू भे)

(स्त्री सूहरी)

सूहाळी—स पु—एक प्रकार का व्यजन ।

उ०—सेव सूहाली लाडू गल्या, आछा माडा पापड तूल्या खाजे खडक सालणे वडी, कूर कपूर तली पापडी ।—का दे प्र

सू—देखो 'सु' (रू भे)

उ०—१ द्वादस मेघ नै दुवौ हुवौ, सू दुगियारी री आस हुवौ ।
—रा सा स

उ०—२ सखी सू सज्जण आविया, हुता मुझ्झ हियाह । मूका था सू पाल्हव्या, पाल्हविया फळियाह ।—ढो मा

उ०—३ तठा उपरायत माळी फूला री छावा । आण हाजर कीजै छै । सू फूल कुण भात रा छै ?—रा सा सं

उ०—४ आयै भीव भडा आहाडा, मोटी सेव खटी मेवाटा । सू जुध वध कमवा साथै, भिडिया जोड भला भारायै ।—रा रू

सूअउ—देखो 'सूवौ' (रू भे)

उ०—तव आकरिग सूअउ ऊडियौ, पहरि एक चदेरी गयउ । ढोलउ सरवरि दातणि करइ, सूटौ जाए इम ऊचरइ ।—ढो मा

सूअटौ—देखो 'सूवौ' (रू भे)

उ०—कौतुक घरि ते आदमी, लेइ आव्या न्रप परमद माहि । राय वोलाव्यौ सूअटौ, नर भाखा वोल्यौ ते साहि ।—वि. कु

सूअणौ, सूअवौ—देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू भे)

उ०—माचा विना धरती माथै ऊगराणौ सूईज सकै, रजाईया विना फाटौडा पूरा मे जळेवी वणनै रात काटीज सकै पण पेट रौ खाडौ तो टेमसर भरणोइज पडै ।—अमरचूनडी

सूअर—देखो 'सूवर' (रू भे)

उ०—हिरण खिरगोस, सूअर, तीतर, वट्टा, तिलोर रै मास री तौ फगत वाता ईं वाता रै'गी ।—फुलवाडी

सूअरडौ—देखो 'सूवर' (अल्पा, रू भे)

उ०—राव आदमी पाच-सात मिळ सम्भाळ हीदै माही वैठाणै और राव ईं वेळा मुह मू आहिज कहै छै—जे वडा मरदारा सूअरडै री जावतौ राखजो, ।—डाढाळा सूर री वात

सूअरदतौ—देखो 'मुअरदतौ' (रू भे)

सूआगचूडी—स स्त्री यौ—स्त्रियो के हाथ कगन जो सुहाग चिन्ह माना जाता है।

सूआणौ, सूआवौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू भे)

सूआयोडौ—देखो 'सुहायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूआयोडी)

सूआरोग—स पु—सूतिका रोग ।

सूआवडि, सूआवडी—१ देखो 'सुवाडी (रू भे)

उ०—सूआवडि ना दोख कीया वलि थापण मोस, वोल्या वलि उत्सूत्र कीया गुरु ऊपर रोस ।—ध व ग्र

२ देखो सुवावड (रू भे)

सूआवत—स पु—गहलोत वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

२ उक्त पौधे का बीज जो जीरे के समान कुछ बडा व पीले रग का होता है।

रू भे—सौंफ।

सूब—देखो 'सूम' (रू भे)

उ०—१ दातारू मरू कै दिल कै खुस्याळ। सूबू कायरू कै नाटसाल।—सू प्र.

उ०—२ ह्रीया माया सूब की, हाथिन दीनी जाय। का डंडै का घर मुसै, का कोई ठगि लेजाय।—अनुभववाणी

उ०—३ कहा सूंब कै मिळै, कहा विणि अवसर मागै। कहा पर नग्री सू प्रीति, सील बीणि त्रिया सुहागै।

—सूरजनदास पूनियौ

सूंबडौ—देखो 'सूम' (अल्पा, रू भे)

उ०— लगर तळै सूबडा लटकै, जस उप्रवट कै जणोजण।

—भारतदान बारहठ

सूम-स पु—१ दाव के समान पत्तो वाला एक पौधा जिसके पत्तों की महीन रस्सिएँ बनती हैं जो खाट बुनने के उपयोग मे ली जाती है।

२ देखो 'सूम' (रू भे)

उ०—फाटक रखवाळी करै, फाटक हरै फसाद। सूम कहै सुख सू सुवा, फाटक तणै प्रसाद।—वा दा

३ देखो 'सुम' (रू भे)

उ०—ढाला जैडा पुट्ठा। लावौ वाळचौ। केमावळी लावी। चौडा सूम। लावै वेलै। चोडौ लिलाड।—फुलवाडी

सूमरा-स पु—यादव वश की एक शाखा विशेष जिसके सदस्य अधिकतर मुसलमान हो गये हैं।

उ०—पछै वाहड री बेटौ मोढौ तौ सूंमरा कनै गयौ तिण नू सूमरा रातौ कोट दियौ, ऊमरकोट सू कोस १४।—नैणसी

सूमरौ-स पु—उक्त जाति का व्यक्ति।

उ०—सहर वसायौ सूंमरै, ऊमरकोट कराय। कहजे ऊमरकोट तै, सोढा लीधौ आय।—वा दा

सूमेर—देखो 'सुमेरु' (रू भे)

सू'रौ-वि (स्त्री सू'री) सीधा, सामने की दिशा मे, आर-पार।

उ०—तीर सू'रौ निकळ गयौ खायौ पीयौ अग ही नही लागो।

—फुलवाडी

रू भे—सूमरउ, सूमरो, सूहरो।

सूलियौ-स पु—खरहा, खरगोश।

सूवाळौ—देखो 'सुवाळौ' (रू भे)

(स्त्री सूवाळी)

सूवौ-वि (स्त्री सूवी) १ सीधा, सुलटा, सौंधा।

२ सीधा, चित, सीधे मुह।

क्रि वि—१ तक, पर्यन्त।

उ०—गुवार चिडी-मोठ रा खावणहार, भाहरै सादरा, कडकती नळीरा, कवाडिया दातारा, कमर सूवा ऊचा, चिलकता मोरारा, माडरै खेतरा।—रा सा म

२ ठीक ऊपर।

उ०—सूवौ सिखर दिन आवै जद कठै ही जेल मैं पूरी सूरज दीखै।—दसदोख

सूस-स पु—१ शपथ, सौगन्ध, कसम।

उ०—१ तरै वीकमसी कह्यौ—'हू कठी जाऊ? पण रावळ सूंस दे वीकमसी नू जाणौ थपायौ।—नैणसी

उ०—२ उदर भरण घर घर अटै, रटै नही स्त्रीराम। सूंस करै कवडी सटै, तै गुण घटै तमाम।—वा दा

२ सकल्प, प्रण।

उ०—१ ताहरा श्री जाव कल्याणमल साभळियौ। नाहरा वान री सूस घातियौ। कहियौ—वध छुडायनै जीमीस।—नैणसी

उ०—२ सूस वरत पचखाण मैं, लागी जावै कोई दोखौ रे।

—जयवाणी

उ०—३ जाय तू ही करम करण नै, परनारी घर मायौ रे। पचा मैं सतगुरु नै मूढै, सूस लेता सरमायौ रे।—जयवाणी

३ त्याग।

उ०—जद स्वामीजी बोल्या—किणहि भाठौ उछाल नै हेठौ माथौ माड्यौ अनै पछै भाठौ उछालण रा त्याग किया, तौ आगै भाठौ उछाल्यौ तै तौ लागै, पछै सूस किया तौ पछै न लागै।—भि द्र

४ वादा, कौल।

उ०—त्रिविध छकाय हणवा तणाजी, सूस किया नव कोटि। तिरिया तिरै तिरसी घणाजी, ग्यान दया तणी ओट।—जयवाणी

५ एक जानवर जिसके चमडे की ढाल बनती है।

उ०—सूस गवय कछ स्लेट री, खेटक गे नह खत। भेलण आवध भाटका, बक्ख ढाळ वळवत।—रैवतसिह भाटी

रू भे—साम, सुस, सुस, सोस, सौंस।

सूसतौ-वि (स्त्री सूसती) समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—तरै कह्यौ—डूगरसी जैतारण छै। धणी छै। सूसतौ ठाकुर छै। नै इण कन्है साथ घणौ थौ, तद पवारै नीमाज लूटी।

—राव मालदेव री वात

सूसर-स पु—मगर विशेष।

सूसरउ, सूसरौ—देखो 'स'रौ' (रू भे)

उ०—१ सपगणा सीगिणी गुण गाजइ, तीन्दा तीर विछूटइ। जरहजीण आगा वीधीनइ, अगि सूसरा फूटइ।—का दे. प्र

उ०—२ सीगिणि तणा विकोसा मेली प्राणि तीर विछूटउ। हस्तक वरि सोलहीनइ वाज्यु, अगि सूसरउ फूटउ।—का दे प्र

(स्त्री सूसरी)

सूसाड, सूसाडौ-स पु—१ अत्यन्त तीव्र गति से चलने या फेंके जाने के कारण हवा के टकराव से होने वाली सू-सू की आवाज, शब्द।

उ०—सीवारा देवळियै रा धणी, ४ सूग्रारा सूग्रावत ।
—नैणसी

सूइ, सूई–स स्त्री [स सूची] १ पक्के लोहे के पतले तार का बना सिलाई का एक उपकरण जिसके एक सिरे मे छेद होता है जिसमे धागा पिरोया जाता है तथा दूसरा अत्यन्त तीक्ष्ण होता है ।

उ०—१ सूई कै नाकै जिती, सेरी ताहि समान । हरिया हसती नीसरै, हुय कीडी उनमान ।—अनुभववाणी

उ०—२ थारा डील माथै सूई री तवोडो ई लागै तो केडीक पीड व्है ।—फुलवाडी

वि वि —सिलाई मशीन की सूई का छेद उसकी नोक के ठीक ऊपर बना होता है ।

२ ग्रामोफोन रिकार्ड बजाने की सूई जिसके पीछे छेद नही होता तथा वह अत्यन्त छोटी होती है ।

उ०—ग्रामोफोन रेकार्ड रा खाडा मैं सूई अटकीजगी व्है ज्यू वार वार एइज समाचार उणरै काना मैं गूजण लाग्या ।—अमरचूनडी

३ किमी बीमार के शरीर मे दवाई प्रवेश (नाडी या मास मे) कराने का सूई के आकार का उपकरण जो अन्दर से थोथा होता है, इजेक्शन की निडल ।

रू भे —सुइ, सुई ।

सूग्रौ—देखो 'सूवौ' (रू भे)

उ०—१ सिंघ री गुफा माहै नीपनी, थोहररै विडै री, भाखर रै खुडै री, सूऐ री पाख, परडगी ग्राख, रोज मारि, स्त्रिघ मारि ।
—रा सा स

उ०—२ विधि वतावै छै सूग्रा इहै पाठक वकता हुग्रा । सारस छै मरस वाछक छै ।—वेलि टी

सूकडि, सूकडी–स स्त्री —१ चदन ।

उ०—१ धनसार केसर अगर सूकडि, अगलूहण दीस ए । पाच पाच सगली वस्तु ढोवइ, मगति सहु पचवीम ए ।—स कु

उ०—२ काला पीला नीला धउला इस्या पटोला, सूकडिना समूह, कपूरना पूर, घणा केसरना अलवेसरपणा, अगरना भर, सुगधपणा-पूरी इमी कस्तूरी ।—व स

२ एक वनस्पति विशेष ।

उ०—सेवत्री सवेसरा, सूकडि सरकडि साय । सीमतक सोहइ भला, सरव सदाफळ खाय ।—मा का प्र

३ एक खाद्य पदार्थ विशेष ।

४ मारवाड की एक नदी जो लूनी नदी की एक सहायक नदी है ।

उ०—१ भाई वै भेळा हुवा, असुर नदी सिर ग्राय । सिंधुर घोडै सूकटी, मेळ न मापी जाय ।—रा रू

रू भे —सूखडी, सूखटी ।

सूकडौ—देखो 'सुखटी' (रू भे)

सूकणौ, सूकवौ—देखो 'सूखणौ, सूखवौ' (रू भे)

उ०—१ क्यू नह सूकी कवर मै, हातम हदी हत्थ । हातम लै उण हत्थ मू, अपहड वाटी ग्रत्थ ।—वा दा

उ०—२ सूकी सुदराणी झाडा रै सा'रै । लाधी विदाराणी वाडा रै लारै ।—ऊ का

उ०—३ हियडइ भीतर पइसि करि, ऊगउ मज्जण रूख । नित सूकइ नित पल्हवइ, नित नित नवला दूख ।—ढो मा

उ०—४ वहै थाट दहुवळा, सरा नदिया जळ सूकै । चाकै दहु दळ चढै, धरा गुजरात धधूकै ।—सू प्र

सूकणहार, हारौ (हारी), सूकणियौ—वि० ।

सूकिग्रोडौ, सूकियोडौ, सूक्योडौ—भू० का० कृ० ।

सूकीजणौ, सूकीजवौ—भाव वा० ।

सूकनद–स पु [स शूकनद] ४९ क्षेत्रपालो मे से ४६ वा क्षेत्रपाल ।

सूकर—१ देखो 'सुक्र' (रू भे)

२ देखो 'सूवर' (रू भे) (अ मा, डिं को, ह ना मा)

उ०—१ वधन देखी ससि ग्रग सूकर सोक रसत । पूछइ प्रभु ग्राधोरण तोरण वारि पहूत ।—जयसेखर सूरि

उ०—२ अपणौ जाण अभाग, गजब नहिं खाय गवेडौ । सूकर मूडी समज, निपट निकळै नहि नेडौ ।—ऊ का

(स्त्री सूकरी)

सूकरक्षेत्र, सूकरखेत–स पु [स सूकरक्षेत्र] मथुरा जिले मे स्थित एक प्राचीन तीर्थ ।

सूकरमुखी–स स्त्री —एक प्रकार की तोप जिसके मुख का आकार सूवर के मुख के अनुरूप होता है ।

सूकरी–स स्त्री —मादा सूवर, 'भूडण' ।

सूकरौ—देखो 'सूवर' (अल्पा, रू भे)

उ०—हरीया साकट सूकरा, दोउ की परि एक । गयद चलै गय ग्रापनी, कूकर लवै अनेक ।—अनुभववाणी

सूकळ–स पु —बुरी चाल से चलने वाला, अशिक्षित घोडा ।

सूकळापाग—देखो 'मुक्लाग' (रू भे)

सूकविक–स पु —एक प्रकार का पक्षी । (सभा)

सूकाणौ, सूकावौ—देखो 'सूखाणौ, सूखावौ' (रू भे)

सूकाणहार, हारौ (हारी), सूकाणियौ—वि० ।

सूकायोडौ—भू० का० कृ० ।

सूकाईजणौ, सूकाईजवौ—कर्म वा० ।

सूकायोडौ—देखो 'सूखायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूकायोडी)

सूकावणौ, सूकाववौ—देखो 'सूखाणौ, सूखावौ' (रू भे)

उ०—ज्या'रै जोग वणै, मरतौ मरै, एक टेम जीमै, पेट री दौल सूकावै है ।—दमदोख

सूकावणहार, हारौ (हारी), सूकावणियौ—वि० ।

सूकाविग्रोडौ, सूकावियोडौ, सूकाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

उ०—होळै-होळै कसाया में ई चौखा-मूडा, गोरा चिट्ट' काळा किट्ट फूटरा'र सूगला, राता-माता'र मुडदार मिनमिनिया, गळतियौ हुयोडा मडकल'र ।—चितराम

सूगावणी, सूगावबौ—देखो 'सुगाणी, सुगावौ' (रू भे)

उ०—अमुच अपवित्र सूगावणा हे, मनुस्य तणा काम भोग । वाय पित्त सलेसमाए सुक्र, सोणित स्रवै रोग ।—जयवाणी

सूगावियोड़ौ—देखो 'सुगायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूगावियोडी)

सूड—स पु—१ खेत मे उगने वाले कटीले पौधे, झाडी आदि ।

२ खेत की सफाई के लिये उक्त प्रकार के पौधो को जडामूल मे काटने की क्रिया ।

उ०—१ मु आगै रायधण बाप हमीर नै बेटौ भीम हळ खडै छै, भीव सूड करै छै ।—नैणसी

उ०—२ आखातीज रा सुगन मनावण सारू वौ गाव चौधरी खावै कस्सी लेय सूड करण सारू आपरै खेता वहीर व्हियौ ।

—फुलवाडी

३ नाश, ध्वस ।

उ०—तप सरिखउ जगि को नही, तप करइ करम नौ सूड हो ।

—स कु

४ सफाई ।

उ०—तन मन माहिलै ख्यात खेती करौ । पहल सासे तणा सूड कीजै ।—अनुभववाणी

रू भे—सूडि ।

सूडउ—देखो 'सूवौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—साल्ह कुअर सूडउ कहइ, माळवणी मुख जोइ । प्राण तजेमी पदमणी, लखण देस्यइ लोइ ।—ढो मा

सूडि—देखो 'सूड' (रू भे)

उ०—सबद कुहाडी सूडि मासौ, सुक्रिय करि किरसान । नाज निज कण बौहत नेपै, भूख दुग नसान ।—अनुभववाणी

सूडौ—१ देखो 'सूवौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—सुणि सूडा सुदरि कहय, पखी पडगन पाळि । प्रीतम पूगळ पय गिरि, किम ही पाछउ वाळि ।—ढो मा

२ देखो 'सूड' (रू भे)

(स्त्री सूडी)

सूचक—वि [स] १ सूचना देने वाला, सूचित करने वाला, बताने वाला ।

२ बोधक, ज्ञापक ।

उ०—१ भावी सूचक थिया कि भेळा । सिघरासि ग्रहगण सकळा ।—बेलि

उ०—२ तिका राणा री सभा में जाय समता रा सूचक पत्र दिया ।—व भा.

३ दिखलाने वाला, बतलाने वाला, मुखबिर ।

४ सिद्ध करने वाला ।

५ छेद करने वाला ।

स पु—१ शिक्षक ।

२ किसी नाटक का प्रधान नट, सूत्रधार ।

३ दर्जी ।

४ सूई ।

५ कुत्ता, श्वान ।

६ काग, कौआ ।

७ बुधदेव ।

८ सिद्ध ।

९ दुष्ट, गुण्डा ।

१० राक्षस, शैतान ।

११ बिल्ली ।

सूचना—स स्त्री [स] १ बात का परिचय, घटना की जानकारी, (इन्फोरमेशन) ।

२ किसी अभियान, षडयन्त्र या योजना की कार्यवाही की जानकारी जो भिन्न-भिन्न स्रोतो से प्राप्त की जाती है ।

३ विज्ञापन व विज्ञति, इश्तिहार ।

४ ऐसा राजकीय आदेश जिसके द्वारा किसी नीति सम्बन्धी निर्णय, नियम या प्रणाली को प्रसारित किया गया हो, नोटिस ।

५ दुर्घटना की रिपोर्ट ।

६ टोह ।

सूचना-पत्र—स पु—१ वह पत्र जिसमे किसी प्रकार की सूचना प्रकाशित की गई हो, परिपत्र ।

२ विज्ञप्ति-पत्र, इश्तिहार ।

सूचनिका—स स्त्री—१ विगत, सूची, विवरणिका, लिस्ट ।

२ एक प्रकार का छन्द । (ल पि)

सूचि—स स्त्री—किरण । (ह ना मा)

सूचिका—स स्त्री—१ सुई ।

२ हाथी की सूड ।

सूचिपत्र—देखो 'सूचीपत्र' (रू भे)

सूचिमुख—स पु—मूसा, चूहा । (अ मा)

वि—जिसका मुह तेज व तीक्ष्ण हो ।

रू भे—सुचमुखौ, सुचिमुख, सुचीमुख, सूचीमुख ।

सूचियौ—देखो 'सूचक' ।

उ०—जिण समै महामारी रै मडाण नरा रौ नास देखि कोईक कच्चा मत्र रा देणहार आहव रा अमेध सामतर सूचिया घोडै चढण री हूस धारि दारासाह हाथीरूप नखत हू हेठौ उतरियौ ।—व भा

सूची—स पु [स सूचि, सूची] १ सेना का व्यूह ।

२ इशारा, सैन ।

४ रसहीन होना, नीरस होना ।
५ दुर्बल होना, क्षीण होना ।
उ०—नागण तौ नीठ गिण-गिण ग्रै विरवा रा दिन तोडचा । सूखनै साकळ व्है ज्यू व्हैगी ।—फुलवाडी
सूखणहार, हारौ (हारी), सूखणियौ—वि० ।
सूखिग्रोडौ, सूखियोडौ, सूख्योडौ—भू० का० कृ० ।
सूखीजणौ, सूखीजबौ—भाव वा० ।
सूकणौ, सूकबौ—रू० भे० ।
सूखम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)
उ०—महिला ग्ड सगति मिळचा, सूखम जीव मरइ नव लाख । भगवतइ इम भाखीयो, सूत्र सिद्धातै लाभै साख ।—ध व ग्र
सूखमसरीर—देखो 'सूक्ष्मसरीर' (रू भे)
सूखमा-स स्त्री [स सुषमा] १ शोभा, छवि, ग्राभा, कान्ति ।
२ एक प्रकार का वृक्ष ।
३ देखो 'सूक्ष्मा' (रू भे)
सूखाणौ, सूखावौ—देखो 'सुखाणौ, सुखावौ' (रू भे)
सूखायोडौ—देखो 'सुखायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सूखायोडी)
सूखावणौ, सूखाववौ—देखो 'सुखाणौ, सुखावौ' (रू भे)
सूखावियोडौ—देखो 'सुखायोडौ' (रू भे)
(स्त्री सूखावियोडी)
सूखिम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)
उ०—सूखिम गळी नजरि मैं राखै, पाच चरण तळि चूरै । परम जोति कै परचै खेलै, ग्रनहद सीगी पूरै ।—ह पु वा
सूखियोडौ-भू का कृ—१ ग्रार्द्रता या तरावट समाप्त हुवा हुग्रा, गीलापन न रहा हुग्रा (वस्त्र) २ जलहीन हुवा हुग्रा, रिक्त हुवा हुग्रा (जलाशय) ३ जीवन शक्ति नष्ट हुवा हुग्रा (वृक्ष ग्रादि) ४ रसहीन या नीरस हुवा हुग्रा ५ दुर्बल व क्षीण हुवा हुग्रा ।
(स्त्री सूखियोडी)
सूखी खासी-स स्त्री [स शुष्क+कास] शुष्क कास का एक रोग ।
सूखेडौ-स पु—१ शुष्क वातावरण या ग्रागण ।
२ ग्रार्द्रता या नमीविहीन मौसम ।
सूखौ-वि [स शुष्क] (स्त्री सूखी) १ ग्रार्द्रता, नमी या तरावट से विहीन, शुष्क ।
उ०—धोवण उन्हौ पाणी पाज्यौ । सूखौ चारौ न्हाखज्यौ । साधा रौ एवर न्यारौ उछेरज्यौ ।—भि द्र
२ चिकनाई, स्निग्धता से रहित, फरका, लूका ।
उ०—१ वो मुखिया नै कह्यौ कै पटिया मैं थोडौ तेल घालण मारू मन तालडा तोडै । सपाडौ तौ बावडी माथै कर लियौ, पण केस साव सूखा है ।—फुलवाडी
उ०—२ हरीया ग्राधी लाभता, सारी सुरति न धारि । लूखी सूखी खायकै, साई नाव सभारि ।—ग्रनुभववाणी
३ उदास, विरक्त ।
४ कोमल भावो से रहित, हृदयहीन ।
५ कोरा, केवल, निरा ।
स पु—१ ग्रनावृष्टि, दुर्भिक्ष, ग्रकाल ।
उ०—वारह-मासी नीपजै, तहा किया परवेस । दादू सूखा नापडै, हम ग्राये उस देस ।—दादूवाणी
२ जल या वर्षा की कमी वाला प्रदेश (Desert) ।
३ सूखा हुग्रा तम्वाखू का पत्ता ।
रू भे—सूकौ ।
सूखौडौ-भू का कृ—सूखा हुग्रा, शुष्क ।
(स्त्री सूखौडी)
सूखौसपाक-वि—विल्कुल सूखा ।
सूग-स स्त्री—घृणा ।
उ०—१ देख थारै डील माथै किनरौ मैल जमग्यौ है ग्रर कुडतौ किसौक मैलौ घाण व्हैग्यौ है । थनै सूग ई नी ग्रावै भोळा ?
—ग्रमरचूनडी
उ०—२ माणस पापी मस, ग्रस पिण सूग न ग्राणै । परगट्ट जीवां पिंट, जीभ स्वादै नवि जाणै ।—ध व ग्र,
सूगणी-वि स्त्री—शुभ लक्षणा ।
उ०—ईस ग्रहनिसि ग्रवगणु, गिर सूगणी नगुरि । घणा ग्रणूरा मेलीई, तेह माहि हू धूरि ।—मा का प्र
सूगती-स स्त्री [स शूक्ति] शुक्ति, सीप ।
सूगतीज-स पु [सं शूक्तिज] मोती, मौक्तिक ।
सूगलवाडौ-स पु—गदगी ।
उ०—वै नी जाणै ग्रा मेवा नी सूगलवाडौ है, जिंदगी ग्रलीण करणै रौ ग्रखाडौ है ।—दसदोख
सूगलियौ-स पु—वर्षा ऋतु मे गाय, वैल, भैस ग्रादि पशुग्रो के मुह मे होने वाला रोग विशेष ।
सूगलौ-वि (स्त्री सूगली) १ गदा, घृणित, घिनौना ।
उ०—१ डील मे मरगडा पणैरी सूगली गिंव सी ग्रावै सी ग्रावै है ।—दसदोख
उ०—२ पण नाव थारौ सूगलौ घणौ । वोलता ताळवा मैं मुरट ज्यू खडकै ।—फुलवाडी
२ वुरा, खराव, गदा ।
उ०—१ समज तमाकू सूगली, कुत्तौ न खावै काग । ऊंट टाट खावै न ग्रा, ग्रपणौ जाण ग्रभाग ।—ऊ का.
उ०—२ मेठाणी मूटा मू थूकती थकी वोली—थूकौ थारा मूडा मू, ग्रै सूगली वाता मुटा सू निकळै कीकर है ।—फुलवाडी
३ कुरूप, भद्दा ।

(स्त्री सूजायोडी)

सूजाव-स पु —१ सूजन शोथ ।

२ देखो 'सुजाव' (रू भे)

सूजावरणौ, सूजाववौ—१ देखो 'सूजाणौ, सूजावौ' (रू भे)

उ०—पैलडी लटवा करै-हाथ जोडै । बीजी मू' सूजावै, माथौ फोडै ।—दसदोख

२ देखो 'सूझावरणौ, सूझाववौ' (रू भे)

सूजावियोडौ—१ देखो 'सूजायोडौ' (रू भे)

२ देखो 'सूझायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूजावियोडी)

सूजियोडौ-भू का कृ—१ किसी प्रकार की चोट आघात या विकार के कारण सूजन आया हुआ, फूला हुआ, शोथ आया हुआ (शरीर, अग)

२ देखो 'सूझियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूजियोडी)

सूजी-सर्व—वह, वही ।

स पु [स सूचिक] १ दर्जी ।

उ०—ताहरा राजा भोज वात कहै छै । एक हुतौ ब्राह्मण रौ वेटौ । एक हुतौ सिलावट रौ वेटौ । एक हुतौ सूजी रौ वेटौ । एक हुतौ सुनार रौ वेटौ या चारै ही मैं मित्रा-चारी थी ।

—चौवोली

स. स्त्री —२ सूजन, शोथ, फुलाव ।

३ एक प्रकार का दानादार मेदा जो हलवा वनाने के काम आता है ।

सूझ-सं स्त्री —१ सूझने-समझने की क्रिया या भाव ।

२ दृष्टि, नजर ।

३ वुद्धि, समझ, अक्ल ।

उ०—दोनू राजावा रै वैर सारू दियोडा सावूता नै काट-छाट अर सूझ रौ अेक हळकोक पट्टौ ई घणौ ।—चितराम

४ वह वौद्धिक-शक्ति जिसके द्वारा कोई अद्‌भुत वात, नई उद्‌भावना जागृत होती है, समस्या को सुलझाने की शक्ति ।

५ समझदारी, दूरदर्शिता ।

सूझणौ, सूझवौ-क्रि अ —दिखाई देना, दृष्टिगत होना, दिखना ।

उ०—१ वयळ न सूझै वोम, पोहोम धूजै हय पोडा ।—मे म

उ०—२ सुदर सूर सीळ कुळ करि मुध । नाह किसन सरि सूझै नाह ।—वेलि

उ०—३ अहि खग म्रिग दम हस अळूझै । सुरणै न सवद गात नह सूझै ।—सू प्र

२ समझ मे आना, ध्यान मे आना, मन मे आना ।

उ०—१ नाम लियता नाम, सामि नूझै सहि सूझै । राम तरणै रस माहि सेस, वूझै सिवि वूझै ।—पी ग्र

उ०—२ थै मरद होय इण भात हारग्या तौ म्हैं लुगाई री जात काई करती अर काई नी करती, अवै ई थानै आ वात नी सूझै ?

उ०—३ लारै आई हू, इण वारतै थारै साथै पाप रा भाग म्हारै ई वधै । आ ई नी जचती व्है तौ थानै ज्यू सूझै त्यू करौ ।

—फुलवाडी

३ वुद्धि द्वारा उपजना, मस्तिष्क मे आना, ज्ञान चक्षुओ मे समझ मे आना ।

उ०—१ हरीया सरवर ढूकडै, पग-पग पैठै माहि । सुरति विना सूझै नही, आस पास वहि जाहि ।—अनुभववाणी

उ०—२ टूक चावटौ राव राजा नै कवर वीज नामै राज करै छै । तिकौ राजाराज तौ आरया सजम छै, पिण हीयारा नेत्र खुल्या छै । आरया देखता सू वणौ सूझै ।—जगदेव पवार री वात

उ०—३ मन का आमन जै जिव जानै, तौ ठौर ठौर सव सूझै । पचा आनि एक घर राखै, तव अगम निगम सव वूझै ।

—दादूवाणी

४ याद रहना, स्मरण रहना ।

उ०—मालजदा मन माहि, राड सूझै दिनराती । मालजादि मन माहि, यार सूझा अकुळाती ।—ऊ का

५ प्रवृत्ति होना, मन मे आना ।

उ०—जद तद सूझै जूझणौ, वाघ न लागा वीर । इण रै जात सुभाव औ, सौहै समै सरीर ।—वा दा

६ योग वनना, सयोग होना ।

उ०—हिवै ईया रा साहा सूझै नही । घणु ही ढूढि धाया ।

—देवजी वगडावता री वात

७ चलना ।

उ०—ओझक ऐली मैं आवेस अळूझै । सीळी रेळी मे चीसळिया सूझै ।—ऊ का

८ उत्पन्न होना, उठना ।

उ०—कह्यौ—वापजी, म्हनै तौ वैराग सूझियौ । म्हारी मुगती अवै आपरै हाथ है ।—फुलवाडी

९ अनुभव होना, समझ आना ।

उ०—१ नागण मूडौ मस्कोरनै कह्यौ—म्है तो कठै ई आवौ कोनी, म्हनै तौ तीन भौ री सूझै ।—फुलवाडी

उ०—२ पछै स्वामीजी आहार कर अ.यनै कह्यौ—अोगुण आपरी आतमा रा सूझै है कै म्हारा ।—भि द्र

सूझणहार, हारौ (हारी), सूझणियौ—वि० ।

सूझिग्रोडौ, सूझियोडौ, सूझ्योडौ—भू० का० कृ० ।

सूझीजणौ, सूझीजवौ —भाव वा० ।

सुझणौ, सुझवौ, सूजणौ, सूजवौ—रू० भे० ।

सूझतउ, सूझतौ-क्रि वि (स्त्री सूझती) १ आखो वाला, दृष्टि वाला ।

उ०—१ राज काज रीत नीत वूझती रह्यौ । वाट आवरै कि

३ भेदन ।
४ हावभाव ।
५ छेदन ।
६ नृत्य विशेष ।
७ गुप्तदूत, भेदिया ।
८ चुगलखोर ।
९ दुष्ट, खल ।
१० कपडा सीने की सुई ।
११ किरण, आभा ।
१२ दृष्टि ।
१३ अप्सरा ।
१४ विगत, तालिका, फहरिश्त ।
१५ सुई की नोक ।
१६ कील की नोक ।
१७ विषयानुक्रमणिका ।
१८ पिंगलशास्त्र के ८ प्रत्ययो के अन्तर्गत एक प्रत्यय जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कुछ निश्चित वर्णो या मात्राओ से कितने प्रकार के छद या वृत बनते हैं तथा उनके आदि और अन्त मे कितने लघु व कितनी मात्राएं होती हैं ।
वि [स शुचि] १ उजला, शुभ्र ।
२ सफेद, श्वेत ।
३ पवित्र, शुद्ध ।

सूचिकरम—स पु [स सूची+कर्म] सीने पिरोने की कला जो चौसठ कलाओ मे से एक मानी जाती है ।

सूची-पत्र—स पु [स] वह पत्र, पत्रिका या पुस्तिका जिसमे कई वस्तुओ की विगत दी गई हो, तालिका, फहरिश्त ।
रू भे—सूचिपत्र ।

सूचीमुख—देखो 'सूचिमुख' (ना मा)

सूचौ—वि [स शुचि] स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध, पवित्र ।
उ०—छोटे वडे नीच कुळ ऊचा, राम कहत सब ही नर सूचा । कहा भयौ जे ऊच कहायौ, राम नाम हिरदै नही गायौ ।
—अनुभववाणी

सूछम—देखो 'सूक्ष्म' (रू भे)
उ०—कळह घणा ही कटक नू, सूछम गर्णं समाय । नव हत्या वाळी नरा, हैं छाती सौ हाथ ।—वा दा

सूज—देखो 'सूझ' (रू भे)

सूजड, सूजडी—स स्त्री—देखो 'सुजड' (रू भे)

सूजणौ, सूजवौ—क्रि अ—१ किसी चोट, रोग या वात-विकार के कारण शरीर के किसी अग मे सूजन आना, फूलना, शोथ आना ।
उ०—१ पण मार खाय-खाय नै ज्यारा डील सूज्योडा हा वारै मन मैं तौ ओ भी तीर री गळाई मालतौ हो कै जै खूनी रो पतौ नी लाग्यौ तौ सगळा नै'ई पाछौ थाणै जावणौ पडैला ।
—अमरचूनडी
उ०—२ सगळा रै हीयै हरख री पार नी हो । पण छोटकी वहू री रोय रोय आख्या सूजगी ।—फुलवाडी
२ देखो 'सूझणौ, सूझवौ' (रू भे)
उ०—इण मारवण रै थै नेडा चाल जो । ज्यू मारग सूज्यौ जाय ।
—रमीलैराज रा गीत
सूजणहार, हारौ (हारी), सूजणियौ—वि० ।
सूजिओडौ, सूजियोडौ, सूज्योडौ—भू० का० कृ० ।
सूजीजणौ, सूजीजवौ—भाव वा० ।

सूजन—स स्त्री—१ चोट आघात या रोग के कारण शरीर के किसी अग में आने वाली शोथ, फुलाव ।
२ सूजने की अवस्था या भाव ।

सूजनम—स स्त्री [स सूर्यनवमी] आपाढ मास के शुक्लपक्ष की नवमी ।
रू भे—सूझनम , सूनम ।

सूजाण—देखो 'सुजाण' (रू भे)

सूजाउ—देखो 'सुजाव' (रू भे)
उ०—१ 'मलखा' सहि अभिनमी 'सकतौ', सोह चडावै 'करन' सुजाउ ।—रूकमागद राठौड री गीत
उ०—२ घण वीटियौ कवी मोटा घण, घण सात्रवा वहतौ घाउ । अनिकारा मुहरी ऊचवहो, सौहै सूरजमल सूजाउ ।
—दयालदास राठौड रो गीत

सूजाक, सूजाग—स पु [फा सूजाक] दूपित लिंग और योनि के ससर्ग से उत्पन्न मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग विशेष जिसमे लिंग का मुह और छिद्र सूज जाता है तथा मूत्रनलिका मे वहुत जलन होती है तथा मूत्रेंद्रिय मे घाव हो जाते हैं ।
रू भे—सुजाक, सुजाग ।

सूजाणौ, सूजावौ—क्रि स ['सूजणौ' क्रिया का प्रे रू] १ मार-मार कर या पीट-पीट कर किसी के शरीर मे शोथ लाना, सूजा देना ।
२ रो रो कर आखे सूजा लेना ।
३ रूठकर या नाराज हो कर मुंह फुलाना ।
उ०—मूडो सूजायं रै'नी, आयोडा पर भुजती-बळती . .... ।
—दसदोख
सूजाणहार, हारौ (हारी), सूजाणियौ—वि० ।
सूजायोडौ—भू० का० कृ० ।
सूजाईजणौ, सूजाईजवौ—कर्म वा० ।
सूजाणौ, सूजाबौ, सूजावणौ, सूजाववौ—रू० भे० ।

सूजायोडौ—भू का कृ—१ मारपीट कर शोथ लाया हुआ, सुजाया हुआ २ रो-रो कर आंखें सुजाया हुआ ३ मुह फुलाया हुआ ४ देखो 'सूझायोडौ' (रू भे)

३ उक्त तागो से बुना हुआ वस्त्र, कपडा, सूती वस्त्र।
४ साफा, पगडी।
उ०—१ पीठ तुरस केवाण कर, आस पास रजपूत। मादडिया सोहै नही, मुख मूछा सिर सूत।—वा दा
५ रूई।
६ रस्सी, डोरी।
उ०—१ भार सोर भातडा सूत सिलहा सामाना। सरब भार सिरताज, भार पुरकार खजाना।—सू प्र
उ०—२ वात करता करता ई मेठ सूत सू वणियोडा माचा माथै वैठग्या।—फुलवाडी
७ दीवार बनाते समय दीवार की सीध मापने की टोगी, इससे आगण या छत की समतलता भी नापी जाती है।
८ सूत का ढेर।
९ द्विजो की जनेऊ।
[रा] १० आभूपण, गहना।
उ०—१ मैं बीजा भूप अनेक मागिया, मौजा वार अनेक मिळी। सुत 'किसनेस' वीर गुरु सचियौ, कुजमाना रा सूत कळी।
—ओपौ आढौ
उ०—२ लाडू वडा री सभाळ रिपिया-खोपरा री मनुवार। साळ्या नै वीरी छल्ला अर साळैल्या नै सूत साकळी।—दसदोख
११ सपति, धन, पूजी।
उ०—एक एक कहे वारी जाऊ एहनी रे, इण वैरागै छोड्यौ घर सूत रे। जोवन वय मे मुदर परहरी रे, राजा 'स्रेणिक धारिणी' केरौ पूत रे।—जयवाणी
१२ सचय, सग्रह।
उ०—निरधन नै घरि धन नौ सूत। आपै अपुत्रीया नै पुत्र, कायर नै सूरापण धरै।—वृ स्त
१३ सवध।
उ०—१ पूरणमल की नू राज तिरमळ कै पूत। सावक रजवाडा को वाध्यौ यक सूत।—शि व
उ०—२ फेर जोग्र छै तौ एक-दोय सखरी जायगा करि। इणरौ नाळेर फेर दै। आपा मु इहा री किसौ सूत छै? काल गाडा भरीया माणस मारीया छै। जाह सु क्रिमौ सनमव।
—कुवरसी साखला री वारता
१४ विवान, नियम, कायदा।
उ०—१ वैरागर हीरा हुए, कुळवतिया सपूत। सीपै मोती नीपजै, सब अम्मारा सूत।—वा दा
उ०—२ वोल नवाव सरस द्रढ वधै, सुत पितु हूत महा छळ सधै। यू रिम सूरत सूत प्रवधै। नेम लियौ विधि जेम निमवै।
—रा रू
उ०—३ हरीया हरि कै नाव विन, सब ही सूत कसूत। ऐसैं गारी वाभडी, दूध न वाकै पूत।—अनुभववाणी
१५ विधि, तरीका।
उ०—यसा सूत सू काम वरियाम तू यम करै, लकड़ मानै तरस जवाड लागा।—नगराज री गीत
१६ ढग, हाल, हालत।
१७ कार्य, काम।
उ०—१ हरीया सोच विचार करि, अपना सूत समोय। या अलपल समार सु, कहा पडी है तोय।—अनुभववाणी
उ०—२ पण मैवासा रै मवव करै चोरी गोहरी री पण सूत।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंह री वात
१८ उपक्रम।
उ०—रावळा घर माहे छै एक एक ईसा रजपूत। जिको वाघै दिली नै चीतोड मू लडवा री सूत। जिणमू किणही नै फरमाय हाथ देसीजै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
१९ प्रभाव, प्रताप।
उ०—इद्र नरेंद्र नै ज्योतिमी ए, रहै ज्यू किकर भूत कै। सुर नर सेवा करै ऐ दया धरम ना सूत कै।—जयवाणी
२० मार्ग।
उ०—अवविग्यान प्रयूजियौ, देण मुगतरा सूत। आपै चव किहा ऊपजा, यासा 'भ्रगु' रा पूत।—जयवाणी
२१ रूप, सौदर्य।
उ०—जणी छोरी है जाती फिरती देखे नै एक दिन अणी री सूत देखनै काणा रा मन मै पाप उपज्यौ।
—काणा राजपूत री वात
२२ वदीजन, भाट।
उ०—कितरोइ पुर उच्छव कियौ, दूणौ सुख दरवार। कथै महागुण सूत कवि, चित हित मत्र उचार।—रा रू
२३ वेदव्यास के शिष्य, एक ऋषि का नाम।
उ०—'वाका' वेद पुराण विच, सायद आ छै सूत। मुख सतोख सराहियौ, आपदत अवधूत।—वा दा
२४ रथ हाकने वाला, सारथि।
२५ वढई।
२६ एक प्राचीन वर्ण शकर जाति जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता से होना माना गया है।
२७ इस जाति का व्यक्ति।
वि वि—पुराणो मे प्राप्त जानकारी के अनुसार सूत कुल मे उत्पन्न लोग प्राचीनकाल से ही देव, ऋषि, राजा आदि के चरित्र एव वशावली का कथन या गायान का कार्य करते थे जो कथा आख्यायिका गीत (गाथा) आदि मे समाविष्ट थे। इसी प्राचीन लोक साहित्य को एकत्रित कर व्यास ने अपने आद्य पुराण की रचना की थी।

यार सूझतौ वह्यौ ।—ऊ का

उ०—२ नाई राजाजी रै पगा हाथ लगाय वोल्यौ—हा, अदाता म्हारा मन ई कवै कै आधा इण रूप रै साम्ही ऊभा व्है जावै तौ वानै सूझतौ व्हैणौ पडै ।—फुलवाडी

२ विशुद्ध निर्दोष ।

उ०—आहार विहरावइ सूझतउ, गति पामइजी, साभलइ सूत्र सिद्धात, देवगति पामइजी ।—स कु

क्रि वि —१ देखते व समझते हुऐ।

२ दिखता, दिखाई देते हुऐ ।

सूझनम—देखो 'सूजनम' (रू भे)

सूझबूझ—स स्त्री —सोचने-समझने की बुद्धि, दृष्टि और बुद्धि ।

सूझाणौ, सूझावौ—देखो 'सुझाणौ, सुझावौ' (रू भे)

सूझायोडौ—देखो 'सुझायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूझायोडी)

सूझावणौ, सूझाववौ—देखो 'सुझाणौ, सुझावौ' (रू भे)

सूझावियोडौ—देखो 'सुझायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूझावियोडी)

सूझियोडौ–भू का कृ —१ दिखाई दिया हुआ, दृष्टिगत हुवा हुआ, दिखा हुआ २ समझ मे आया हुआ, ध्यान मे आया हुआ, मन मे आया हुआ ३ युक्ति से जाना हुआ, बुद्धि द्वारा उपजा हुआ, मस्तिष्क मे आया हुआ ४ याद रहा हुआ, स्मरण रहा हुआ ५ प्रवृत्त हुवा हुआ, मन मे आया हुआ ६ वना हुआ (योग, सयोग) ७ चला हुआ ८ उत्पन्न हुवा हुआ, उठा हुआ ९ समझ मे आया हुआ, अनुभूत ।

(स्त्री सूझियोडी)

सूटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा; रू भे)

सूठ–वि [स सुष्ठु] उत्तम, श्रेष्ठ ।

सूडाहळ—१ देखो 'सूडाहळ' (रू भे)

२ देखो 'सूडाळ' (रू भे)

सूण—१ देखो 'सगुन' (रू भे)

उ०—१ ताहरा सूण भला हुआ ।—पचदडी री वारता

उ०—२ चढती वाई नै ए सूण भला होया राज । लाड जवाई नै ए सूण भला होया राज ।—लो गी.

उ०—३ सारै-सारै दिन थारा सूण मनावै तो उभा जोवै थारी वाट वदळी । मारुजी रै खेता जावौ वदळी ।—लो गी

२ देखो 'सकुन' (रू भे)

सूणघर, सूणहर–स पु [स शयन+गृह] शयनाघर, सोने का कक्ष या कमरा ।

उ०—दूलह हुइ आगै पाछै दुलहणि । दीन्हा क्रम सूणहर दिसि ।
—वेलि

सैणापौ, सूणापौ– स पु —सौन्दर्य ।

उ०—१ सूणापौ खुल्लो वटै हो, अब प्यार कठै न अटै हो ।
—सकुतळा

उ०—२ आ वरा धरी या नीर परी, या नभम्यू उतरी देवनार । पलका मैं सदा रखण जोगी, कै सूणापौ आग्यौ अपार ।
—सकुतळा

सूणौ–वि (स्त्री सूणी) सुहावना, सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ आ थमी कमळणी नैडै-सी, ईं सूणै रूप चुरावण नै ।
—सकुतळा

उ०—२ अवर री रग सुरगी हौ, चदै गी आभा सुणी ही ।
—सकुतळा

क्रि. वि —१ तक, पर्यंत ।

२ सहित, युक्त ।

स पु —किसी मोटे व गर्म धातु खण्ड को पकडने का एक लोहे का चिमटा ।

सूणौ, सूवौ—देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू भे)

उ०—१ सूतौ थाहर नीद सुख, सादूळौ वळवत । वन काठै मारग वहे, पग पग हौल पडत ।—वा दा

उ०—२ तै भाग खाधी न छै । इसा अथी मैं कुण छै सौ सूतै काळ नु जगावै ?—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ गई रवि किरण ग्रहै थई गहमह, रहरह कोइ वह रहै रह । सु जु दुज पुग नीसरै सूतौ, निसा पडी चालियौ नह ।—वेलि

सूणहार, हारौ (हारी), सूणियौ—वि० ।

सूयोडौ—भू० का० कृ० ।

सूईजणौ, सूईजवौ—भाव वा० ।

सूत–स पु [स सूत्र] १ धुनी हुई रूई को कातकर तैयार किया हुआ वारीक कच्चा धागा, ततु या रेशा ।

उ०—१ छोरा छोरी छोड वरागण सग वण्यो है नीकोरै । सूत उन का साग वणायौ, गोपीचद कौ टीकौ रे ।—रैदास धत्तरवाळ

उ०—२ वौ आछी नरै जाणतौ हौ कै सनी रौ परची उणनै अठा ताई काचै सूत वाधनै लावैला ।—फुलवाडी

वि वि —ऐसे धागो के समूह से लटिकाऐं, लच्छियें तथा कोकडियें वनाई जाती हैं । इनसे विभिन्न प्रकार के डोरे, रस्सिया आदि वनाई जाती है । कपडा वुनने के लिये ऐसे रेशो के वडे-वडे गट्टे वनाऐ जाते है ।

२ उक्त प्रकार के कच्चे रेशो से वनाया हुआ वारीक डोरा जो सिलाई आदि मे काम आता है ।

उ०—मन माळा सतगुर दई, सुरति सूत सु पोय । हरीया घट मैं फेरीयै, जाप अजपा होय ।—अनुभववाणी

वि वि.—ये डोरे विभिन्न रगो मे मोटे, वारीक कई प्रकार के वनाये जाते है । इनमे आवश्यकतानुसार तीन तार, चार तार, पाच तार आदि जोडे जाते है ।

सूतियौ—देखो 'सूत' (रू भे)

उ०—रोटी फलका दही भिडका, रोट वाटिया घूतियौ। फोगलाग् सूकी लकडया, लट्टा कातै मूतियौ।—दमदेव

सुती–वि —१ सूत का, सूत सम्बन्धी।

२ सूत का बना हुआ।

स पु —सूत का वस्त्र।

सूतोडौ–वि (स्त्री सूतोडी) सोया हुआ।

उ०—१ पदमणि पुरखा रै पगरण नह पूरा। भूखा सूतोडा सगरण वे भूरा।—ऊ का

उ०—२ चिणा री ढिगलो मायै सूतोडी डोकरी नै आठ दस वार देख देख नै गिया तौ ई मावळ पिछाण नी व्ही।—फुलवाडी

सूतौ–वि [स सुप्त] (स्त्री सूती) १ सोया हुआ, सुप्त।

उ०—१ तू तो सूतौ नींद भरि, लिवै नचीतो धम। हरीया आया जोवता, एक जुरा एम जम।—अनुभववाणी

उ०—२ फौजी वूटा मैं पामोजा पैरया ही सीधो माळ मैं आ धमक्यौ। लोर मे सूती राजी री घणी नराजी सू नाउ देस'र मूडौ मिचकोडया।—दमदोस

२ वेहोश, बदहवास।

सूत्र–स पु [स सूत्र] १ बहुत थोडे शब्दो मे कही हुई बात, वचन या पद जो गहरा अर्थ प्रकट करे, सारगर्भित एव गूढार्थी पद, वाक्य।

२ कटिप्रदेश पर करधनी की तरह धारण किया जाने वाला डोरा, कटिसूत्र।

३ यज्ञोपवीत, जनेऊ। ४ जैनशास्त्र, जैनागम।

उ०—१ जद उरजोजी वोल्या, भीखणजी पिण म्हानै कहै, उ थानै दोस लागै। जद सेठ वोल्या उवै तो सूत्र री साख सू समचै दोस कहै। साधा नै औ काम करणो नही।—भि द्र

उ०—२ दस स्रवक तउ इहा भाखिया, पिण सूत्र भण्यउ नहि कोई रे।—वि कु

४ सक्षेप मे जीव अजीव आदि पदार्थो की सूचना करने वाला पद या वाक्य। (जैन)

५ किसी प्रकार की व्यवस्था करने का नियम।

६ कठपुतली का तार या डोरा जिसे थामकर कठपुतली नचाई जाती है।

७ किसी समस्या का हल निकालने की युक्ति या उपाय।

८ काष्ठ, लकडी।

९ देखो 'सूत' (रू भे)

उ०—१ आजाति जाति पट घूघट अतरि, मेळग एक करण अमिळी। मत दपति कटाछि दूति मैं, नियमन सूत्र कटाछि नळी।—वेलि

उ०—२ जरै हाथ वाला पड्या माथ जाया पडी साप री काचळी सूत्र काचा।—ना द

रू भे—सूतर।

सूत्रकठ–स. पु [स] १ ब्राह्मण, द्विज।

२ कबूतर।

३ खजन।

सूत्रक–स पु [स] लोहे के तारो का बना कवच।

सूत्रकरम–स पु [स सूत्रकर्मन्] १ बढई का कार्य या कर्म।

२ बेल-बूटे आदि कसीदा निकालने की क्रिया।

३ चौसठ कलाओ मे से एक।

सूत्रकार–स पु [स] १ सूत्र का रचयिता, सूत्र बनाने वाला।

उ०—अनेक सूत्रकार मत धरम रा सरवणहार वैराग्य ना करणहार धज वधी'''''।—रा सा स.

२ बढई, सूथार।

३ जुलाहा।

४ मकडी।

सूत्रक्रीडा–स स्त्री [स] एक प्रकार का सूत्त या खेल जिसकी गणना ६४ कलाओ मे होती है।

सूत्रग्रथ–स पु [स] सूत्र के रूप मे रचा हुआ ग्रथ।

सूत्रणौ, सूत्रवौ–क्रि स [स. सूत्रणम्] १ आरम्भ करना, प्रारम्भ करना, रचना।

उ०—१ कर ऊभियै सहेस कळोधर, सवळा सू सूत्रै समर।—अमरसिंह राठौड रो गीत

उ०—२ वाजतै नगारै कटक चालै विसम, जैत हूत सूत्रियौ रसी रण जग।—नरहरदास बारहठ

२ गूथना, गुत्थिया डालना।

सूत्रणहार, हारौ (हारी), सूत्रणियौ—वि०।

सूत्रिओडौ, सूत्रियोडौ, सूत्र्योडौ—भू० का० कृ०।

सूत्रीजणौ, सूत्रीजवौ—कर्म वा०।

सूंत्रणौ, सूंत्रवौ—रू० भे०।

सूत्रधार–स पु [स] १ नाट्यशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट जो भारतीय नाट्यशास्त्र के अनुसार नादी पाठ के अनन्तर खेले जाने वाले नाटक की प्रस्तावना सुनाता है।

२ बढई, सूथार।

३ भवन निर्माण करने वाला शिल्पी। (नमा)

उ०—तरै राजा रै मन आई 'जु एक इसडौ देहुरौ कराऊ, जिसडौ म्रत्युलोक माहे अचभौ हुवै, सु हमै देसरा सूत्रधार तेडीजै छै।—नैणसी

४ सूत्रो को बनाने वाला।

५ जुलाहा।

६ इन्द्र।

रू भे—सूतधार।

सूत्रविपाक—देखो 'विपाकसूत्र' (रू भे)

२८ व्यवस्था, प्रवन्ध ।

उ०—राडौ सालूळै अत्यगा वेध वधै सोवा रायजादा, सतारा उछाजा जूह उमडै सजीन । घोर वेळा प्रथम्मी आगता सूत हेक घाटै, आसमान फाटै थम लगायाँ 'अजीत' ।

—रावत अजीतसिंह चुडावत रौ गीत

२९ सीव, सीवाई ।

३० घाडी या मादा ऊट की योनि ।

वि —१ सीधा ।

उ०—पडियौ सेडौ पेखि भवन भेडौ भणणावै, भीताहि सेडभरी गरट मांख्या गणणावै । आवै देख उवाक थूव ग थेचा थाया, उतरचा सूत अगूत मत रेला नह माया । करजोड अरज कामणि कहै, हाय हमै, हू हारगी । भरतार मती भुगताय रे निलज जीवतोई नारगी ।—ऊ का

२ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू भे —सूतर, सूत्र ।

अल्पा,—सूतियौ ।

सूतक–स पु [स] १ सतान होने पर घर या परिवार मे होने वाला अशौच, प्रसूतिका-अवधि, जन्म-सूतक, जनन अशौच ।

उ०— १ तीस दिन सूतक, पाच रुतवती न्यारौ, सेरौ करौ स्नान, सीख सतोख सुच प्यारौ ।—जाभौ

उ०—२ गाया नै गिरमास ठिकाणौ चोडै ठायौ । सूवै सूतक सुधी, तळै छिगाम विमायौ ।—दसदेव

२ सूर्य या चन्द्रग्रहण के समय की कुछ घटो पूर्व की अवधि, ग्रहण अशौच ।

३ मृत्यु, अशौच ।

४ पारा, पारद ।

रू भे —सूतग ।

सूतका–स स्त्री [स] वह स्त्री जिसके हाल ही मे वच्चा हुआ हो, सद्य प्रसूता ।

रू भे —सूतिका ।

सूतकाळौ–स पु —किसी की मृत्यु के नवे दिन परिवार एव सवधियो द्वारा किया जाने वाला सामूहिक स्नान । (मेवाड)

सूतकी–वि स [सूतकिन्] जिसके घर या परिवार मे 'सूतक' हो ।

सूतग—देखो 'सूतक' (रू भे)

सूतगड–स. पु [स सूतकृत] तीर्थंकरो द्वारा अर्थ रूप मे उत्पन्न पर गणधरो द्वारा ग्रथ रूप दिया गया हुआ । (साहित्य) (जैन)

सूतडा-चींटूडी–स स्त्री —पैर का आभूषण विशेष । (म मा)

सूतडौ–स पु —हाथ का आभूषण विशेष । (म मा)

सूतज–स पु [म] दानवीर राजा कर्ण

सूतण—देखो 'सूथण' (रू भे)

उ०—सूतण विराजै धरमी रे केसरिया नाडौ लाल गुलाल ओ ।

—लो गी

सूततनय म पु [म] राजा कर्ण । (ह ना मा)

सूतधार—देखो 'सूत्रधार' (रू भे)

सूतनदन स पु [स.] राजा कर्ण ।

सूतनउमा–स पु यौ [स उमा+सुत] १ स्वामिकार्त्तिकेय ।

२ गणेश, गजानन ।

सूतपाळ–स पु [स सूतपाल] कर्ण । (अ मा)

सूतवी–स स्त्री —सीध, सीधाई ।

क्रि वि —सीधे लक्ष्य की ओर ।

सूतर—१ देखो 'सूत्र' (रू भे)

उ०—१ मनुख जनम अति दोहलौ, सुतर सुणवौ सार । सतगुरु मरधा दोहिली, उत्तम कुल अवतार ।—जयवाणी

उ०—२ सूतर खडग्गू सार नग्गू जन प्रतग्गू राख ए । कर माग दग्गू जिए जग्गू दुस्ट अग्गू गाख ए ।—करुणासागर

उ०—३ जैसै सूतर पूतळी, चित्रकार चित्राम । मैं अनाथ ऐसै सदा, तुम इच्छा सोइ राम ।—करुणासागर

२ देखो 'सूत' (१, २) (रू भे)

उ०—१ औ सूतर रौ ढौलियौ अर ए पडवा ग थेपडा इण वात रा साखी है ।—अमरचूनडी

उ०—२ कवळा सूतर गी सूतमी नाथा नै छेडा माथै मोर पाखा री तीखी तुगिया मू बाधनै त्यार कर राखी है ।—अमरचूनडी

सूतळ–वि —सूत का, सूत सवधी ।

उ०—सूतळ नाथा सर नासा मणकारी, फुरणी घूधाता रासां फणकारी ।—ऊ का

सूतळी–स स्त्री—१ जूट के वारीक रेशो की वनी पतली डोरी जो वोरे सीने के काम आती है ।

उ०—पण अकल तौ वळै ई काम नी दियौ । जाणै सूतळी सू सीलीजगी व्है ।—फुलवाडी

२ सून की डोरी ।

उ०—कदै न ल्याया भवरजी ! सूतळी जी हाजी ढोला ! कदै वी बुणी नही ग्याट ।—लो गी

सूतहार, सूतार—देखो 'सूथार' (रू भे)

उ०—१ तद ब्राह्मण कही जी हू थानै कठै मिळीस । तद कवर कही सूतहार उडण खटोलणी लै आसी तेरै साथ आयजौ ।

—चौवोली

उ०—२ भोई सोई भरडीया, सोनी नइ सूतार । व्यवसाईया सहू जातिना, जै जोईइ तिणी वारि ।—मा का प्र

सूतिका—देखो 'सूतका' (रू भे)

सूतिका-रोग–स पु यौ —प्रसव के कुछ समय वाद स्त्री के होने वाला रोग । (अमरत)

उ०—मीरा महला सें ऊतरयाजी, ऊटा भार कसाय। डावी छोड्यौ मेडतौ, कोई सूदा द्वारका जाय।—मीरा

(स्त्री सूदी)

सूद्र-स पु [स शूद्र] (स्त्री सूद्रणी, सूद्रा, सूद्री) १ स्मृत्यनुसार या हिन्दू धर्म शास्त्रानुमार मानव-समाज के चार वर्णों मे से चौथा एव अन्तिम वर्ण, शूद्र।

उ०—रुळ्या सुळ्या रजपूत, विरामण मिळगा विटळा। वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा।—ऊ का

२ उक्त वर्ण का कोई व्यक्ति।

उ०—अम्ह कजि तुम्ह छडि अवर वर आणै, ऐठित किरि होमै अगनि। साळिगराम सूद्र ग्रहि सग्रहि, वेद मन्त्र म्लेच्छा वदनि।—वेलि

३ सेवक, अनुचर, दास।

४ नैऋत्यकोण स्थित एक देश।

रू भे—सुदर, सूद, सूदर।

सूद्रक-स पु [स शूद्रक] १ मृच्छकटिका नामक ग्रथ का रचयिता, शूद्रक।

२ शबूक नामक शूद्रकुलोत्पन्न एक व्यक्ति जो श्रीराम का समकालीन था, यह बडा तपस्वी था।

सूद्रणी, सूद्राणी, सूद्रा, सूद्री-स स्त्री [स शूद्रा, शूद्राणी] १ शूद्र जाति की स्त्री।

२ गाथा छद का एक भेद जिसमे २७ से अधिक लघु वर्ण होते है।

रू भे—सुदराणी, सुदरानी, सुद्रणि, सुद्रणी।

सूध-स पु—१ शुक्ल (पक्ष)।

उ०—आसाढऊ सूध, नम स्रीनरपती 'अजन्न'। राजा आयौ रोहचै, परणीजण सुप्रमन्न।—रा रू

२ देखो 'सुद्ध' (रू भे)

उ०—१ वेपख सूध जिकै सालहोतरमा वखाणिया तिहडा इण भाति रा तेजी, धरा रा सूदणहार, खुरताळा रा अधखुरा सू धरती ध्रमकिनै रही छै।—रा सा स

उ०—२ कनेम्ट वस सूध छतीस ही वस छतीस ही राजकुळी एक एक हवइ लोहडड मिळी।—अ वचनिका

उ०—३ वस्त्र तणी चोगी करी, सात आबिल सूध थायौ जी। काती सात दिन तप कीया, रतन हरण पाप जायौ जी।—स कु

उ०—४ सूध मन सेव गुरुदेव री साचवै। सखर समझै अरथ सूत्र सिद्धत।—ध व ग्र

३ देखो 'सूद' (रू भे)

सूधउ-वि—१ सहज, सरल, आसान।

उ०—दूसम कालै दोहिलउजी, सूधउ गुरु सयोग। परमारथ प्रीछइ नही जी, गडर प्रवाही लोग।—स कु

२ देखो 'सूधौ' (रू भे)

सूधणौ, सूधवौ-क्रि स. [स शोधनम्] १ खोजना, ढूढना, पता लगाना।

उ०—१ मालक अर्थ सेवक मझ, विरळै सूधा।—केसोदास गाडण

२ शुद्ध करना, निर्मल करना।

उ०—अवपम सूधति विष्ट माग वै। बगत ताइ मारियौ वहनि।—वेलि

सूधर-स स्त्री. [स सु+धरा] अच्छी भूमि।

उ०—कीधी फौज चळै कमधज्जा, सूधर सोधण प्राण सकज्जा।—रा रू

सूधरणौ, सूधरवौ—देखो 'सुधरणौ, सुधरवौ' (रू भे)

उ०—गुरु लोक गप्पा चरै, धरै न राजा ध्यान। सो निण विध सू सूधरै, दारू ऊमरदान।—ऊ का

सूधरियोडौ—देखो 'सुधरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूधरियोडी)

सूधलौ—देखो 'सूधौ' (अल्पा, रू भे)

उ०— सामू सूधली नटै, फोग आलडो बाळै।—नो गी

(स्त्री सूधली)

सूधा, सूधा-वि—१ सहित, युक्त।

उ०—१ यु कहीनै पचास असवार जीन सालिया सस्त्र सूधा था त्यारी गोळ करनै उपाड नालिया।—नैणसी

उ०—२ जीवों माही जिव रहै, ऐसा माया मोह। साई सूधा सब गया, दादू नहि अदोह।—दादूवाणी

२ सहज, सरल, आसान।

उ०—पूणी का मन मितर हूवा, उनकु राम नाम नही सूधा। अपनै तन की आसा वरतै, नाव निरासन की नही सुरतै।—अनुभववाणी

क्रि वि—१ रहते हुए, होते हुए।

उ०—चापावत 'लाखौ' 'फतौ', 'कूपौ' 'केहर' 'राम'। या सूधा कळ जोधपुर, मिटै न आठू जाम।—रा रू

२ लक्ष्य की ओर, सीधा।

उ०—राजा नर ब्रह्म रौ नाम लियौ तौ' दूतरा हाल होयनी कै सूधा चली आ।—पचदडी री वारता

सूधारणौ, सूधारवौ—देखो 'सुधारणौ, सुधारवौ' (रू भे)

उ०—सुणि कहै बादल बात, धन धन माताजी ताहरौ हीयौजी। सतवती तू साच, धन तै, आपोआप सूधारीयौ जी।—प च चौ

सूधारियोडौ—देखो 'सुधारियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूधारियोडी)

सूधियोडौ-भू का कृ—१ खोजा हुआ, ढूढा हुआ, पता लगाया हुआ

२ शुद्ध किया हुआ, निर्मल किया हुआ।

उ०—सूत्रविपाकै इग्यारम अग, स्लोक वारसै सोलै सग। अग इग्यार सूत्र मिलै थाय पैंत्रीस सहस दोइ सै प्राय।—ध व ग्र

सूत्रसपदा–स स्त्री [स] सूत्र-ग्रथो का सग्रह।

वि—शास्त्र के अर्थ-परमार्थ का ज्ञाता।

सूत्रस्थविर–वि—स्थानागसूत्र, समवामागसूत्र के मार या अर्थ को जानने वाला। (जैन)

सूत्राम, सूत्रामा—देखो 'सुत्रामा' (रू भे) (ना डि को)

सूत्रा–स स्त्री—मकडी। (ग्र मा)

सूथण, सूथणि,, सूथणी–स स्त्री—१ जजीरनुमा कवच विशेष जो शरीर के अधोग्रग मे धारण किया जाता था।

उ०—१ हथियार सारा सातरा करण लागा। वगतर, झिलम, जिरह-सूथण जिरै-जूता, घोडा री पाखरा काढजै छै, मुवारजै छे। मनै ग्यानै मारी तेवड कर रह्यौ छै। सखरा रजपूत तैयार कीजै छै।—कुवरसी साखला री वारता

२ शरीर के अधोभाग मे धारण किया जाने वाला वस्त्र, पजामा, पायजामा।

उ०—१ इतरै माहै रळै पण घर माहै जाय, मिनान कर सूथण पहिर पाछीया सौ सूथण फाडी।—रळै गढवै री वात

उ०—२ सूथणि वागा इकळग सीया, कोडि ग्रहुठ कसीदा कीया। —सूरजनदासजी पूनियौ

रू भे—सुथण, सूथण, सूथणि, सूथणी।

सूथानक–स पु [म सुस्थानक] सुमेरु पर्वत। (ह ना मा)

सूथार, सूथारियौ—देखो 'सुथार' (रू भे)

सूद–स पु [फा] १ उधार या ऋण के रूप मे दिये जाने वाले रुपयो पर वनने वाला व्याज।

२ लाभ, नफा।

३ वृद्धि।

४ शूद्र।

[स सूद] ५ नाश, वध।

६ कूप।

७ सोता।

८ चश्मा।

९ रसोइया।

१० पकवान।

१० चटनी, कढी।

११ दली हुई मटर।

१२ पाप, गुनाह, कसूर, दोप।

रू भे—सूव।

सूदकसाला–स स्त्री यौ [स सूद+शाला] पाकशाला, रसोईघर। (डि को)

सूदखोर–स पु [फा] व्याज लेने वाला, निर्ममता मे व्याज वसूल करने वाला।

सूदणौ, सूदवौ–क्रि स [स मूद्] १ काटना, काटकर ग्रलग करना।

उ०—ग्रवा सिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि स्त्रिग प्लवगम तेम। —मे म

२ मर्दन करना, हनन करना।

३ घायल करना, चोटिल करना।

४ वध करना, सहार व नाश करना।

५ निकलना।

६ जमा करना।

७ स्वीकार करना, मानना।

८ पकाना, पकाकर तैयार करना।

सूदन–स पु [स] १ काटने, नष्ट करने या वध करने की क्रिया या भाव।

२ विनाश, नाश।

३ वध, कत्ल।

४ निष्कासन, निकास।

५ पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र।

उ०—दहकि दहकि दौलपराज किरिराज पुकारै, लवणोदक सौं सुद्धवीर लग वढन विथारै। वळ सूदन सौ वामदेव लग ग्रजग उसारै, वडवा मुख सौं ब्रह्मलोक लगसोक सम्हारै।—व भा

वि—१ विनाश करने वाला, नाशक।

२ वधिक।

३ प्रेम-पात्र, प्यारा।

४ माशूक, ग्राशिक।

सूदनकिरमर, सूदनकिरमिर–म पु [म मूदन+किर्मीर] भीम। (ह ना मा)

सूदर—देखो 'सूद्र' (रू भे)

सूदियोडौ–भू का कृ—१ काटा हुग्रा, काटकर ग्रलग किया हुग्रा २ मर्दन किया हुग्रा, हनन किया हुग्रा ३ घायल व चोटिल किया हुग्रा ४ वध किया हुग्रा, महार व नाश किया हुग्रा ५ निकला हुग्रा, उडेला हुग्रा ६ जमा किया हुग्रा ७ स्वीकार किया हुग्रा, माना हुग्रा ८ पकाया हुग्रा, पकाकर तैयार किया हुग्रा। (स्त्री सूदियोडी)

सूदौ—१ देखो 'सुदौ' (रू भे)

उ०—१ पछै खुणिया सूदा हाथ जोडनै कह्यौ—ग्रदाता, ग्रौ दुम्टी राज रै तवेला री घोडी री माथौ वाढ न्हाकियौ।—फुलवाडी

उ०—२ इतरौ कहै नै साह परदेस गयौ। यौ वरस ५ सूदौ रयौ। —वधी वुहारी री वात

उ०—३ धवूस व्है ज्यू ढूकौ जकौ कडिया सूदौ खाड खोद न्हाकियौ।—फुलवाडी

२ देखो 'सीधौ' (रू भे)

३ देखो 'सुनी' (रू भे.)

सूनीयाड—देखो 'सून्याड' (रू भे)

सूनु, सूनू, सूनू-स पु [स सूनु] १ पुत्र, बेटा, लड़का ।

२ देखो 'सूनौ' (रू भे)

सूनोडी—देखो 'सूनी' (रू भे)

उ०—ऊभी सज सणगार, सूनोडी बाडी रा माळी ।—[illegible]

सूनोपण, सूनोपणौ—निर्जनता, शून्यता ।

सूनौ-वि. [स शून्य] (स्त्री. सूनी) १ जनरहित, निर्जन, सुनसान, उजाड ।

उ०—१ सज्जण चाल्या है सखी सूना करै प्रवास । गळेय न पांणी ऊतरइ, हियै न मावइ सास' ।—ढो मा

उ०—२ ईण प्रकारै श्री नगर सूनौ हुवौ दै ।—[illegible]

२ रिक्त, खाली, शून्य ।

उ०—१ रात बीत्या दिन उग्यो । आज [illegible] सूनौ पड्यो हो अर लगातार तीन बरस सू बीनती लोटर्यैकर मनी लटकाया नीवडा माथै चुपचाप पड्यो हो ।—अमरचूनडी

उ०—२ सूना घर मैं उण वास्तै मन नी लागै । थोड़ा मैंगा आय जावै तौ आछौ ।—फुलवाडी

३ बन्धनमुक्त, खुला, स्वतन्त्र ।

उ०—ताळ-सूणा साड सा नगोट बेटा-बेटी सूना फिरै । पेमजी खुद दूजै जुवान बणै है ।—दसदोख

४ अरक्षित ।

रू भे—सूनउ, सूनौ, सूनउ, सूनु, सूनू, सूनू ।

सून्य-स पु [स शून्य] १ खाली स्थान, रिक्त स्थान ।

२ जिसका कोई आकार या रूप न हो, निराकार ।

३ अभय स्थान ।

उ०—जनहरीया गुर आपना, लै पहुचै सून्य गाय । जिन गुर सबद न जाणिया, धका काल का खाय ।—अनुभववाणी

४ परमधाम ।

५ आकार ।

६ एकान्त स्थान ।

७ गणित मे अभावसूचक चिन्ह ।

८ बिन्दी, बिन्दू ।

९ भवरगुफा ।

उ०—अधर धरै रे कोई अधर नरै, सून्य सिखर मैं वास करै । निरमल नाव नकेवल सहजा, रोम रोम रसना उचरै ।

—अनुभववाणी

१० सहस्राधार चक्र ।

११ त्रिकूटि ।

१२ विष्णु ।

१३ ईश्वर, परमात्मा ।

१४ स्वर्ग ।

वि.—१ कुछ नहीं, सिफर ।

२ गुणातीत ।

३ जिसका अस्तित्व न हो ।

४ जो वास्तविक न हो, असत् ।

५ जो खाली हो, रीता, रिक्त ।

६ निर्जन, सुनसान ।

७ एकाकी, विरक्त, निर्लिप्त ।

उ०—दादू मन फकीर जग थैं रह्या, सतगुर लीया लाइ । अह निसि लागा एक सौं, सहज सुन्य रस खाइ ।—दादूवाणी

८ उदास, [illegible] ।

९ [illegible] ।

१० [illegible] ।

११ नंगा, नग्न ।

१२ [illegible] ।

उ०—[illegible] सुनि [illegible] । [illegible] उतर सुन्य घाट ।—[illegible]

रू भे—सुन, सुन्न, सुनि, सुन्न, सुन्य, सून, सून्न, सून ।

सून्यमंडल-स पु—१ [illegible], आकाश ।

२ ब्रह्मरंध्र (योग) ।

रू भे—सुनमंडळ, सुनिमंडळ ।

सून्यवाद-स पु [स शून्यवाद] बौद्धों का एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार जीव व ईश्वर मे कुछ भी नहीं माना जाता है ।

सून्यवादी-स पु—उक्त सिद्धान्त को मानने वाला बौद्ध ।

सून्या-स स्त्री [स शून्या] १ नलिका नामक गंध द्रव्य ।

२ बन्ध्या स्त्री ।

सून्यागार-स पु [स शून्यागार] १ आकाश, गगन ।

२ सूनाघर या मकान ।

३ सूना कक्ष ।

रू भे—सुन्नगार ।

सून्याड-स स्त्री—१ सुनसान जगह, एकान्त स्थान, निर्जन स्थान ।

उ०—१ ओकनी उण सून्याड रोही मैं रोवण सारू घणी ई खपी, पण रोईजियो ई नी ।—फुलवाडी

२ खाली एव रिक्त होने की अवस्था, रिक्तता ।

उ०—उण वगत म्हे थाग सू काई काम बेचैनै ही बेटी जिण चिंता री वेळा माथा मैं फगत थोथी सून्याड़ घरणावै, उण सू वत्ती की दुख कै सताप नी व्है ।—फुलवाडी

रू भे—सूनियाड, सुन्नाळ ।

सूपखी-वि.—सुवापखी रग का, हरे रग का ।

उ०—तरै ऊंग कह्यौ—महाराजा थारै थारै माम कोरड घास सूपखी म्हांकै माथै छै ।—कहवाट सरवहियै री वात

(स्त्री सूवियोडी)

सूधी–क्रि वि —१ तक, पर्यन्त ।

उ०—१ प्रमुख ववावदारा गढ गजि मैंसरोड **सूधी** आय अमल जमायौ ।—व भा

उ०—२ तरै इणं राणा री तळाई खरड री पोकरण थी कोस १६, फळोधी सू कोस ८, उठा थी लेनै वीठणोक **सूधी** इण धरती मागी ।—नैणसी

२ लक्ष्य की ओर, सीधी ।

उ०—राण ढिली कर वक पण, लीधी **सूधी** वाट ।—रा रू

वि —सहित, युक्त ।

उ०—१ इण करमसीजी नू रिणी पटै हुती पडगनै **सूधी** । अरु करमसीजी बारट आसै भाद्रेसै नू कोड री दान कियौ ।

—द दा

उ०—२ ईसौ केहनै घोडचढी नै रौही मै जावता एक तुरत री व्याई हीरणी वच्चानै चूघावती देखी नै वचा **सूधी** लघू-लाघवी कळासू राणी रै वास्तै पकड लाया ।—रीसालू री वात

सूधौ–वि [स शुद्ध] (स्त्री सूधी) १ सीधा-सादा, भोला-भाला, सरल, शान्त ।

उ०—१ वावा म देइस मारुवा, सूधा एवाळाह । कधि कुहाडउ सिरि घडउ, वासउ मभि थळाह ।—ढो मा

उ०—२ ऊजळौ सुभाव, चडड चल्लौ, गाव री वेटी पण सगला सू गूघटी पल्लौ । सूधी गऊ रा ऊपरला दात ।—दसदोख

उ०—३ ओठी कठैई पडग्यौ कै उणनै कोई मार न्हाकियौ । सायड तौ **सूधी** अर टाळकी दीसै ।—फुलवाडी

२ शुद्ध, निर्मल ।

उ०—ध्यावै जेह **सूधै** मन सदगुरु, दिन दिन सुभ परिणामै ।

—ध व ग्र

३ उचित, यथोचित, उपयुक्त ।

उ०—चिता कुण वैठा जड मूढ ए, वाग महू मारौ रूधौ रे इत्यादिक सवणं सुणी, चित्त उत्तर देवै **सूधौ** रे ।—जयवाणी

४ सहित, युक्त ।

उ०—१ धीर मेर रा खडग प्रहार सूं कन्ह महर री अस पसुली **सूधौ** भडियौ ।—व भा

उ०—२ नै कोई नारायणजी रा चक्र थी तेजसी तीन सै रजपूता **सूधौ** भूत री गति पाई ।—जगमाल मालावत री वात

रू भे —सूदौ, सूंधौ, सूधउ ।

अल्पा,—सूधलौ ।

क्रि वि —१ तक, पर्यन्त ।

उ०—१ मोटै राजा केलावौ पटै दियौ थौ । समत १६६२ **सूधौ** रह्यौ । केलावौ, लवेरौ, विक्कोहर गाव सू पटै थौ ।—नैणसी

उ०—२ तिण पछै गोळ री लोक भी मोरछा माडि तुपक तीरा री वेभौ वणाइ पहर दोय **सूधौ** लडियौ ।—व भा

२ से ।

उ०—वादसाह री इजाजत **सूधा** दोनू एक कवर मैं दफनाया गया ।—जलाल वूवना री वात

३ की ओर, को ।

उ०—हदि को लोपि वेहद **सूधौ** चल्यौ, गाव मुनि गोरिवै निजर गाडी ।—अनुभववाणी

सून–स पु —१ फूल, पुष्प। (अ मा, ना मा, ह ना मा)

२ देखो 'सून्य' (रू भे)

उ०—१ देख सरप व्है दाहुरा, मव्द कळा कर **सून** । पुरख असँदौ पेख व्है, मावडिया मुख मून ।—वा दा

उ०—२ गोला मू न सरै गरज, गोला जात जवून । ऊखाणौ सायद भरै, मौ गोला घर **सून** ।—वा दा

सूनउ—देखो 'सूनौ' (रू भे)

उ०—सत्यवाह मोकलावीय मन रगि धन सागर पुर जोइ । सजन विहूणउ सहूइ **सूनउ**, सुद्धि न पूछइ कोइ ।—हीराणद सूरि

सूनम—देखो 'सूजनम' (रू भे)

उ०—१ इणी महीना री **सूनम** रै सं दिन सावा री वात सुणी तद वा मा नै कह्यौ—म्हनै एकर पूछतौ लेणौ हौ ।—फुलवाडी

उ०—२ राजा विचार करण लागौ—आज धनतेरस है अर कालै रूपचवदम । आ **सूनम** (असाढ सुदनम) गई तौ उणनै परणीया नै पूरा तीन वरस व्हिया अर चौथौ वरस लागग्यौ ।

—अमरचूनडी

सूनसान—देखो 'सुनसान' (रू भे)

उ०—धवळै दिन रा गाव विल्कुल **सूनसान** मसाण व्हे ज्यू लागै ।

—रातवासौ

सूनसायर–स पु [स सुनु+सागर] समुद्रपुत्र, कामदेव ।

सूनादोख–स पु [स सूनादोष] वह दोष या पाप जो, चूल्हा, चक्की, ओखली, मूसल, झाडू आदि से जीव हिंसा होने पर लगता है ।

(जैन)

सूनापण, सूनापणौ—देखो 'सूनौपणौ' (रू भे)

सूनासीर—देखो 'सुनासीर' (रू भे)

सूनी–वि [स शून्य] १ निर्जन, शून्य, खाली, रिक्त ।

उ०—१ व्रज **सूनी** ऐ महेल्या एक राम विना व्रज **सूनी** ।

—लो गी

उ०—२ विज्जुळिया नीळज्जिया, जळहर तू ही लज्जि । **सूनी** सेज, विदेस प्रिय, मधुरइ मधुरइ गज्जि ।—ढो. मा

उ०—३ **सूनी** ढाणी मैं सेठाणी सोती, रैगी विणियाणी पाणी नै रोती ।—ऊ का

रू भे —सूनोडी ।

२ देखो 'सुनी' (रू भे)

सूवं ।—मे म

सूवौ–स पु [फा सूब] १ किसी राज्य का कोई प्रान्त, जिला या सूबा ।

उ०—१ माल कितराहीक लै गयौ । नवाव रौ सूवौ उतरीयौ । समत १७१६ रा ग्रासाढ सुदि ६ नवाव कूच कीयौ ।—नैणसी

उ०—२ नवाव महोवतखा वुरहानपुर सू पूरव नू रवाना हुवा खुरमनू हरावण तद वुरहानपुर रौ सूवौ राव रतन नू भोळायौ ।
—वा दा ख्यात

उ०—३ सारा ग्रहमड इकीसा सूवा, पुरद गुणा सूवायतपूर ।
—र रू

[ग्र. शुवहा] २ शक, सदेह ।

रू भे—सुवौ, सोवौ ।

सूभग–वि—सुदर ।

सूभभद्र–स. पु—कुशल, मगल, खैरियत ।

सूभर–वि—१ सुन्दर ।

उ०—१ सव्द सरोवर सूभर भरा, हरिजळ निरमळ नीर । दादू पीवै प्रीति सौ, तिनकै ग्रखिल सरीर ।—दादूवाणी

उ०—२ भाप करै सर सूभर भरिया, धरती रूप ग्रनेरा धरिया । 'हमीरौत' हूवा गिर हरिया, सीख समापौ, घर साभरिया ।
—ग्रासी वारहठ

२ सुख, सुख रूप ।

उ०—ग्रहपुर महपुर इद्रपुर, स्यौ ब्रह्मा लौ जोय । जनहरिदास दुभर दुनी, सूभर भरचा न कोय ।—ह पु वा

स पु—१ पुष्कर ।

२ छोटा तालाव ।

३ देखो 'सूवर' (रू भे)

उ०—१ दूभर द्वीहायन त्रीहायन दोरी । सूभर चतुरव्दा सव्दारथ सोरी ।—ऊ का

उ०—२ भूरी सूभर भर भावडदा भागी, मोटी झोटी री ग्रावडदा मागी ।—ऊ का

सूभरा–वि—सुन्दर ।

उ०—रतन मैं राखडी वेणी वासग जडी, सूभरा वाहडी लहक लोहै ।—रुकमणी मगळ

सूभाव—देखो 'स्वभाव' (रू भे)

उ०—म्हा सगळा हाथा-जोडी करा, राज रै पगा पडा । वाई भोळी ग्रर की ग्राकरा सूभाव री है । ग्राप मोटा हौ मोटी विचारौ ।
—फुलवाडी

सूभ्र, सूभ्रू—देखो 'सुभ्र' (रू भे)

सूम–वि [ग्र शूम] (स्त्री सूमण) कृपण, कजूस ।

उ०—१ नीत रीत सूमा नही, सूमा नही सवाव । सूमा घरै सुगाळ मैं, रधै रसोडे राव ।—वा. दा

उ०—२ थोथा गंटवर सवर विण थाया, छपनै सूमां सा ग्राडवर छाया । तुरत तिजोरी मैं जळ नै जड दीनू, दे दे ताडेला खडनै खड दीनू ।—ऊ का

स पु—१ पुष्प, फूल ।

२ देखो 'सुम' (रू भे)

रू भे—सुव, सूव, सूव्र, सूम, सूव ।

ग्रल्पा,—सुवटौ, सुमटौ, सूवटौ, सूमडौ, सूमौ ।

सूमडापण–स पु—कजूसी, कृपणता ।

उ०—हकीमा सू पूछियौ ऐव तिका तमाम गुणा नू टाकै सौ काई छै—तरै कही—सूमडापण ।—नी प्र.

सूमडौ—देखो 'सूम' (ग्रल्पा, रू भे)
(स्त्री सूमडी)

सूमपण, सूमपणौ–स पु—कृपणता, कजूसी ।

सूममन–वि—कठोर । ❀ (डि को)

सूमरा–स पु—१ पवारवश की एक शाखा ।

२ सिंधी मुसलमानो का एक भेद जो पहले राजपूत थे ।

सूमि—देखो 'सुम' (रू भे)

उ०—लई पद चपि ग्रगूठनि भूमि, मरव्वसु दव्व लई मनो सूमि ।
—ला रा.

सूमेर—देखो 'सुमेरु' (रू भे)

सूमौ–स पु—१ ग्राकाश ।

२ दूध ।

३ जल ।

४ देखो 'सूम' (ग्रल्पा, रू भे)

सूयभू—देखो 'स्वयभुव' । (ना मा)

सूयटौ—देखो 'सूवौ' (रू भे)

उ०—सूयटा सोभागी कहि किहा सगुरु दीठा । साकर दूध सेती, मुख करावु मीठा रे ।—स कु

सूयर—देखो 'सूवर' (रू भे)

उ०—जउ गढ नावड करीय तु पराण, सूयर भक्ष करइ सुरताणी ।
—का दे प्र

सूयावडि–स पु—प्रसूति काल ।

उ०—सूयावडि दूखण घणा, वलि गरभ गलाया । जीवाणी ढोल्या घडा, सीलवरत भजाया ।—स कु

सुयीधार—देखो 'सूईदार' (रू भे)

सूर–स पु [स शूर, सूर, सूरि] १ शूरवीर, वहादुर, योद्धा ।
(ग्र मा , डि ना मा, ना मा)

उ०—१ धकै फरसधर चक्रधर, पाळी जिण निज पैज । सो सूरा सिर सेहरौ, नर पुगव सुर-नैज ।—वा दा

उ०—२ थाट थडै जमदाढ जुडी, उठै वळावळ लूर । सूर खडा पिड ले रहचा, कायर भागा दूर ।—ग्रनुभववाणी

सूप–स पु [स] १ पकी हुई दाल, भाजी।
२ रसदार सब्जी।
३ सब्जी का रस, शोरवा।
४ कढी।
५ चटनी।
६ तीर, बाण।
[स शूर्प, सूर्प] ७ अनाज फटकने का एक उपकरण जो बत, बास, सीक का बना होता है।
उ०—१ मोतिए विसाहण ग्रहि कुण मूकै, एक एक प्रति एक अनूप। किळ सोभण मुख सूझ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न सूप।—वेलि
उ०—२ कुळ मोटै वहुवा कुळ धुवा, मान महातम निरवहै। कण सूप जिही ओगण तजै, गुण मोताहळ जिम ग्रहे।—गु रू व
उ०—३ सामी सेवग सूप ज्यु, एकै मतै वहत। कण छाडै कूकस गहै, खाली आप रहत।—अनुभववाणी
[स सूप] ८ रसोइया।
९ करुण रसपूर्ण एक राग विशेष।
१० एक नायिका विशेष।
११ एक प्रकार का कपडा विशेष।
उ०—वेहद्द हद्द वागै वणाव, चम्मीर हीर जम्मै जडाव। जगमगै जोप कसवी अनूप, नीलक्क मसजर लाल सूप।—गु रू व
१२ देखो 'सुपनखा' (रू भे)
उ०—हेक दाणव व्याधि हणियौ, खरा त्रिसरा मूळ खणियौ। लाछि वर सिर सूप लुणियौ, सातवै सुणियौ।—पी ग्र

सूपकनौ–वि [स सूर्प+कर्ण] सूप के समान बडे बडे कानो वाला।
उ०—ऐकळ जघा आइया, विमळ वहिथिया वाज। जळ माणसिया जोइया, सूपकना सुभराज।—पी ग्र
स पु—हाथी।

सूपकार–वि [स सूपकार] भोजन बनाने वाला, रसोईया।

सूपडौ—देखो 'सूप' (७) (अल्पा, रू भे)
उ०—नी राड रोवण नै ही, नी भैस दोवण नै अर नी सूपडो सोवण नै।—अमरचूनडी

सूपनखा, सूपनिखा, सूपनेखा—देखो 'सुपनखा' (रू भे)
उ०—१ सूपनखा री स्रवण, नाक वाढियौ निमै नरि। निमौ अकलि रुघनाथ, अनत पचवटी ऊपरि।—पी ग्र
उ०—२ जका सूपनेखा कटा फूल जाई। अवध्येस रा रूप सू रीझ आई।—सू प्र

सूपरसन–स स्त्री [स स्पर्शन] वायु, हवा।

सूफजर–स पु—वह ऊनी वस्त्र जिस पर स्वर्ण का काम किया हुआ हो।
उ०—पाटवर पैहरत, सूफजर वाफ़ मसजर। जमदाढा नमि जडित, वडा जडिया जरकवर।—गु रू व

सूफी–स पु [अ सूफी] (स्त्री सूफिनि) १ वहुत उदार विचार वाले एव सभी धर्मो से प्रेम करने वाले मुसलमानो का एक वर्ग।
उ०—कुतव गौस अवदाळ सूफी अनै कळंदर, पीरजादा मिळै साझ परभात।—नरहरदास वारहठ
वि० वि०—यह वर्ग ब्रह्मवादी व अध्यात्मवादी विचार एव एकेश्वरवाद को अधिक महत्व देता है।
२ उक्त वर्ग का अनुयायी, कोई सत या फकीर।
उ०—१ सोइ जोगी, सोइ जगमा, सोई सूफी सोइ सेख। सोइ सन्यासी, सेवडा, दादू एक अलेख।—दादूवाणी
उ०—२ योगिनि है योगी गहै, सूफिनि व्है कर सेख। भक्तनि व्है भक्ता गहे, कर कर नाना भेख।—दादूवाणी

सूब—देखो 'सूम' (रू भे)
उ०—ऊख गिरी घर ऊपरै, यळ खाडामय आव। तूवा मीठम होय तौ, सूबा होय सवाव।—बा दा

सूबर–स स्त्री—गर्भवती घोडी या मादा ऊट।
उ०—तेरै पेट री उठै घोडी सूबर आई थी सौ जोगिया कन्है राजूखा रा आदमी मोल लाया था।
—सूरे खीवे काधळोत री वात
रू भे—सूभर।

सूबाण—देखो 'सुवाणी' (रू भे)

सूबादार—देखो 'सूबेदार' (रू भे)

सूबादारी—देखो 'सूबेदारी' (रू भे)

सूबायत—देखो 'सूबेदार'।
उ०—१ वादसाह लाहोर रै सूबायत नू ताकीद कीवी जै चोर नू पकडौ।—दूलजी जोइयै री वारता
उ०—२ पाचवै चौथै वरस सूबायत नवौ आवै सो खेचल हुवै।
—गोपाळदास गौड री वारता

सूबेदार–स पु [फा सूब दार] १ किसी प्रान्त या सूबे का अधिपति, अधिकारी।
उ०—जै थटै री अमल नही आयौ, सूबेदार फिराऊ हुवौ।
—गोपाळदास गौड री वारता
२ फौज या सेना मे एक ओहदा या पद।
३ उक्त पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति।
रू भे—सूबादार, सोबेदार।

सूबेदारी–स स्त्री [फा] १ सूबेदार का कार्य।
२ सूबेदार का पद।
रू भे—सूबादारी।

सूबै—देखो 'सुबह' (रू भे)
उ०—हूवै चम्मरा झाटका जोति हूवै, सदा ऊनरै आरती साझ

५ बारह की सख्या। ❀
वि.—१ श्वेत, सफेद। ❀ (डिं को)
२ रक्तवर्ग।
रू भे—सुरज, सूरज्ज, सूरज्जि, सूरिज, सूरिजि।
सूरजकातमणि–स स्त्री—सूर्यकान्तमणि।
वि—श्वेत, सफेद। ❀ (डिं को)
सूरजकाळ–स पु [स सूर्यकाल] १ दिन का समय।
२ फलित ज्योतिष का एक चक्र जिससे शुभाशुभ का निर्णय किया जाता है।
सूरजकुड–स पु—आबू का एक तीर्थ स्थान।
उ०—सो विधना रै लेख सू मूडण प्रातकाळ घडी दोय रै तडकै सूरजकुड मैं स्नान करणै नू गई।—डाढाळा सूर री वात
सूरजकुळ–स पु [स सूर्य्य+कुल] क्षत्रियो का एक वश, सूर्य-वश।
उ०—विखै अग्यान धरम वीसारौ। सूरजकुळ चौ धरम सभारौ।—सू प्र
सूरजग्रह–स पु [स सूर्य+ग्रह] १ सूर्य, रवि।
२ सूर्य का ग्रहण।
३ राहु व केतु के नामान्तर।
४ जल घट की तली।
सूरजग्रहण–स पु [स सूर्य ग्रहण] १ सूर्य और पृथ्वी के मध्य मे चद्रमा के आ जाने पर और सूर्य आड मे हो जाने के कारण होने वाला ग्रहण।
२ हठ योग की वह प्रक्रिया जब प्राण पिंगला नाडी मे होकर कुडली मे पहुचता है।
सूरजछट–स स्त्री—कार्त्तिक शुक्लाषष्टी।
सूरजनम—देखो 'सूजनम' (रू भे)
सूरजनारायण–स पु—सूर्यदेव, सूर्यनारायण।
उ०—ऐ तौ सूरजनारायण सुणी वीणती, आ तौ वेहमाता सुणेला पुकार।—लो गी
सूरजपाख–स स्त्री—सूर्यकिरण, सूर्य प्रभा। (१)
उ०—यातै हीरा कै सरीर ऊपर सूरज रूपी जोवन आयौ छै। हावभाव दरसायौ छै। पाछै सूरजपांख जागी छै।
—वगसीराम प्रोहित री वात
सूरजपुत्र–स पु [स सूर्यपुत्र] १ यम।
२ शनि।
३ कर्ण।
४ सुग्रीव।
सूरजपुत्री–स स्त्री [स. सुर्य+पुत्री] १ यमुना।
२ विद्युत, बिजली।
सूरजपुर–स पु [स सूर्यपुर] काश्मीर का एक प्राचीन नगर।
सूरजपुराण–स पु [स सूर्यपुराण] एक ग्रथ विशेष जिसमे सूर्य्य का माहात्म्य वर्णित है।
सूरजपूजणौ, सूरजपूजबौ–क्रि स—प्रसव के पांच, सात, नौ या अट्ठारह दिनो के बाद जच्चा द्वारा स्नान करके बाहर आकर सूर्य की पूजा करना, सूर्य पूजा का सस्कार करना।
सूरजपूजा–स. स्त्री—१ सूर्य की पूजा।
२ प्रसव के कुछ दिन बाद प्रसूता द्वारा की जाने वाली सूर्य-पूजा।
सूरजप्रकास–स पु—१ सूर्य का प्रकाश, उजाला।
२ धूप।
सूरजप्रदीप–स पु [स सूर्य+प्रदीप] एक प्रकार का ध्यान या समाधि। (बौद्ध)
सूरजमडळ–स पु [सूर्यमण्डल] सूर्य की परिधि।
उ०—जितरा-जितरा पग दीजइ तितरा तितरा अश्वमेध ज्याग का फळ लीजइ। इणि विधि जीवण वेदिजइ तठै सूरजमडळ भेदिजइ।—अ वचनिका
सूरजमंडळभिद–स पु—वीर, योद्धा। (टि ना मा)
सूरजमणि–स स्त्री [स सूर्यमणि] सूर्यकान्तमणि।
सूरजमयबा–स पु—सूर्यावर्त्त नामक सिर दर्द का एक रोग जो सूर्योदय से पूर्व शुरु होता है और सूर्यास्त के बाद स्वय मिट जाता है।
सूरजमल–स पु [सूर्यमल्ल] दुल्हा के लिए प्रयुक्त शब्द।
उ०—जास्या घडी दोय लागसी ऐ अम्मा मोरी गायडमल रै डेरै, ए सइया मोरी, सूरजमल रै डेरै।—लो गी
२ पति।
३ राजस्थानी का प्रसिद्ध कवि सूर्य्यमल्ल मिश्रण।
सूरजमाल–स पु [स सूर्यमाल] शिव का एक नामान्तर।
रू भे—सूरिजमाल।
सूरजमुखी–स पु [स सूर्यमुखी] १ पीले रंग के पुष्प का एक प्रसिद्ध पौधा विशेष तथा जिसके पुष्प का मुख सूर्य की दिशा मे ही रहता है।
२ उक्त पौधे का फूल।
३ राजाओ, बादशाहो के सिर पर धारण करने का एक प्रकार का राजछत्र विशेष, राज्य चिन्ह।
उ०—इण भात हाथी रै मेघाडवर चंवर ढुळता थका सूरजमुखी लागिया जलाल आइयौ।—जलाल बूबना री वात
४ एक प्रकार का रोग जिससे सारा शरीर श्वेत हो जाता है।
सूरजमुखौ–स पु—आभूषणो मे सूर्यमुखी का फूल खोदने का एक औजार विशेष। (स्वर्णकार)
सूरजरोटौ–स पु—१ चैत्रमास मे रविवार का किया जाने वाला स्त्रियो का व्रत विशेष।
२ इस व्रत के अवसर पर सूर्यदेव को नैवेद्य मे चढाया जाने वाला प्रसाद।

२ सूर्य, रवि सूरज। (ना मा)
उ०—१ वदि रुद्र खाग स्रीहथा वाहै। सूर थभि रथ हाथि सगहै।—सू प्र
उ०—२ सुतरु छाह तदि दीव जगत सिरि। सूर राह किय-जगत सिरि।—वेलि
३ सिंह, शेर। (ह ना मा)
४ चीता।
५ श्रीकृष्ण का पितामह।
६ विष्णु का एक नाम।
७ सूरदास, अधा।
८ नाक का दाहिना छिद्र। (योग)
उ०—१ साध मडळि साथि विराजै, अनहद नाद अखडित वाजै। चद सूर समि अरथ विचारै, धुनि मैं ध्यान कमळ दळ धारै।
—ह पु वा
उ०—२ मनवा देव वसै हिरदा मैं, नाभि कमळ पग देलारै। चद्र सूर रा लिया सरोदा, मुखमण सीर चडेलारै।
—स्रीहरिरामजी महाराज
९ भूरे रग का घोडा।
१० पठानो की एक जाति।
११ राठौडो की एक शाखा अथवा इस शाखा का व्यक्ति।
१२ उत्तर और वायव्य के मध्य की दिशा जिधर सप्तर्षि अस्त होते हैं। इसे ऊध भी कहते है।
१३ आक, मदार।
१४ सालवृक्ष।
१५ शूरवीर राजा।
१६ छप्पय छद का एक भेद जिसमे १६ गुरु, १२० लघु कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राऐ होनी है।
१७ छप्पय छन्द का ५७ वा भेद जिसमे १४ गुरु, १२४ लघु, १३८ वर्ण या १५२ मात्राऐ होती हैं। (र ज प्र)
१८ मतान्तर से छप्पय छन्द का एक भेद जिसमे २ गुरु व १४८ लघु होते हैं।
१९ देखो 'सूरि' (रू भे)
उ०—सेवै पग मत्रक जत्रक सूर।—ह र
वि—१ तत क्ष। (टि को)
२ देखो 'सूवर' (रू भे) (अ मा)
उ०—१ हिरणा लावी मीगडी, भाजण तणौ सभाव। सूरा छोटी दातळी, दै घण थट्टा घाव।—हा झा
उ०—२ सूरा रै मोरै भूखावाज ज्यों असवार नै घोडी आफळि रहिआ छै।—रा सा स
३ देखो 'सुर' (रू भे)

सूरकिरण—स पु—१ छाते के आकार का राजचिह्न।
उ०—सिर चमर चौमर सोह, व्रत्ति सूरकिरण विमोह।—रा रू.
वि. वि—देखो 'किरणियौ'।

सूरखनीलौ—स पु—एक प्रकार का शुभ रग का घोडा। (शा हो)

सूरगुर—वि [स शूरगुरु] १ श्रेष्ठ वीर।
उ०—गयौ खीजियौ थकौ सैं देस हू सूरगर, टळण परदेस री न कर टाळौ।—राव भीमसिंघ हाडा रौ गीत
२ देखो 'सुरगुरु' (रू भे)

सूरगुलू—स पु—एक प्रकार का पुष्प।
उ०—गुललाल कै डवर सूरगुलू का प्रकास। दावदी अजूवा गुलरोसन् का उजास।—सू प्र

सूरडौ—देखो 'सूवर' (अल्पा, रू भे)
उ०—हरमा वीर मेरा रे, वोजै वोजै मेरै ना'री ना'र। जामण का रे जाया थूरा रामडा रे सूरा सूरडी।—लो गी
(स्त्री सूरडी)

सूरज—स पु [स सूर्य] १ सूर्य, रवि, दिनकर (अ. मा, ना मा)
उ०—सूरज खाखळ रतन सळ, पोहमी रिण जळ पक। कायर-कटक कलक इम, कुकवी सभा कळक।—वा दा
उ०—२ आवड रूप पवारचा अवा, वणि मामडा रा वाई। सरवर सोखि रोकियौ सूरज, भाल कियौ निज भाई।—मे म.
पर्याय—अगारक, असुमाळी, अजनमा, अपी, अरक, अरीअवार, अरुण, अहि, अहिकर, अहिपति, आदीत, आराण, उतग, उद्योत, उमनरसम, कपी, कमळविकासण, करनाळ, करमसाखी, कामिप-सुतन, किरमाळ, खग, गगणमिण, गगनवटी, गगनपति, ग्रहपति, चक्रधर, चक्रवीर, चित्रभाणु, चोरणअपा, छतरपत, जगचख, जगदीप, जगनैण, जगसाखी, जनककरण, जनकजम, जनकजमण, जनकसनि, जमजनक, जमपिता, जोतप्रकासण, ज्योत, तपवण, तपन, तपी, तमचर, तमरार, तरण, तिमग, तिमगअस, तिमरहर, तीखसक्रम, तेज, तेजपुज, दणियर, दिनद, दिनकर, दिनेस, दिव, दिवाकर, दीत, दुतिवान, दुनियण, दोमिण, द्वादसआतमा, धरधूपरा, धात, धीर, धुजअसमाण, नभमिण, निसारिप, पकजबधु, पकजहती, पतग, पदमणपति, पपी, पिंगळ, पीय, पुनीत, प्रकास, प्रद्योतन, प्रभाकर, प्रभू, प्रवीत, बनकर, बयळ, विव, भग, भगवान, भरळाटतन, भाण, भामकर, भामवान, मणगयण, महचक्र, महाग्रह, मारतड, मित्र, मिहर, मेटणछपा, रतन, रवि, रातवर, रानळपति, रानापति, लोकबधु, विकरतन, विभाकर, विभावसु, विरळ, विरोचन, विवसवान, विवसाण, वेदउदय, सपतसपती, सपतहर, सविता, सहसकर, सामल, सीतहर, सुमाळी, सुमत, हस, हरि, हिरळवत, हीर।
२ नाक का दाहिना स्वर स्थान।
३ टगण के तृतीय भेद की छ मात्रा का नाम, ।ऽ।ऽ।
४ आक का पौधा।

सूरतन—देखो 'सूरातन' (रू भे)
उ०—१ तरस्सीया अहटाळ, जोध लियाँ जीणसाळ। सूरतन चडी सीह, लिया खटत्रीस लोह।—गु रू व
उ०—२ भूडड वधै अहमड लग, धन्न पराक्रम सूरतन। पाडियौ जोध अउडुमौं, दोढौ रावत कूभकन।—गु रू व
सूरता, सूरताई—स स्त्री [स शूरता] १ शूरवीर होने की दशा, अवस्था या भाव।
२ शौर्य, पराक्रम।
उ०—१ सील सतोख सूरता सारा, तूटण लगा दिवस मैं तारा।—ऊ का
उ०—२ किनू कायरी सूरताई दई है, जिनौ अप्पनी अप्पनी ई ही लई है।—ला रा
रू भे—सूराति।
सूरति, सूरती—देखो 'सूरत' (रू भे.)
उ०—१ मैं परणती परखियौ, सूरति पाक सनाह। थडि लडिसी गुडिसी गयद, नीठि पडेसी नाह।—हा झा
उ०—२ मोह तणै वस आज, सूरती चलती रही रे जाया। सीतल पवन घाल, माता बैठी थई।—जयवाणी
सूरद—स पु [स सुहृद] १ मित्र, सखा।
२ वीर, वहादुर।
उ०—गज समैप गाढा गरू, सिंह सूरदा छत्र। 'दुरगा' भोपानै दई, कोळू तावापत्र।—पा प्र
सूरदात—स पु—वाराह का दात जो मुह से वाहर निकला हुआ रहता है।
वि—कुटिल, टेढा। ❀ (डि को.)
सूरदास—स पु—१ अधे व्यक्ति के लिये आदरसूचक सम्बोधन।
२ व्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि जो अष्टछाप कवियो मे प्रमुख थे।
सूरदेव—देखो 'सुरदेव' (रू. भे)
सूरपथ—स पु [स सूर्य+पथ] आकाश, नभ। (ह ना मा)
रू भे—सूरपथ।
सूरपकार—स पु—कामदेव, मदन। (ह ना मा)
सूरपण, सूरपणौ—स पु—शूरत्व, शौर्य, पराक्रम, पौरुष।
उ०—१ सूरा खोटौ सूरपण, चूडा अजब उतार। हू वळिहारी कायरा, सदा सुहागण नार।—वी स
उ०—२ सूरवीर री सुभाव चाहे जिण खोलिया मैं होवौ सूरपणौ पलटै नही।—वी स टी
रू भे—सूरमण, सूरापण, सूरापणौ, सूरापौ।
सूरपत, सूरपति—स पु—राजा, नृप। (डि ना मा)
सूरपथ—देखो 'सूरपथ' (रू भे) (अ मा)
सूरपनखा—स स्त्री. [स शूर्पणखा] रावण की वहन का नाम जिसके नाक कान लक्ष्मण ने काट डाले थे।
सूरप्रभ—स पु—जैनियो के नौवें विहरमान स्वामी के नाम।
सूरवीर—देखो 'सूरवीर' (रू भे)
सूरवीरतन—वि—कठोर। ❀ (डि को)
सूरभि, सूरभी—देखो 'सुरभि' (रू भे)
सूरभूमि—स स्त्री [स. शूरभूमि] १ उग्रसेन की एक कन्या का नाम। (भागवत)
२ जहा पर वीर अधिक उत्पन्न होते हो, वीरभूमि।
सूरभेई—देखो 'सूरभि' (रू भे)
सूरमडळ—स पु [स सूर्य+मण्डल] १ सूर्य का वृत्त, वेरा या परिधि।
उ०—१ कांम पतसाह रै जरद झन्हळ किया, सेल सीदूरियौ सजै जगीस। पवग सीदूर व्रन चाढता पटहथा 'सूरै' सूरमडळ नामियौ सीस।—मालौ सादू
उ०—२ रजपूती रा रीजवारा नै जीलै चढावस्या, सूरमडळै भीळस्या।—पना
२ सूर्य व उसकी परिक्रमा करने वाले ग्रह, उपग्रहो का समूह।
सूरमडळभिद—वि—सूर्यमडल को भेदकर जाने वाला, अर्थात युद्ध मे अद्भुत शौर्य दिखलाकर वीरगति प्राप्त करने वाला वीर, योद्धा।
सूरम—देखो 'सूरमौ' (रू भे)
उ०—वीर महावळ धीर उर, सूरम सूरत धार। आवी आदर ऊठियौ, भावी सीस विचार।—रा रू
सूरमटौ (ठौ)—वि—कायर, डरपोक।
उ०—मलियेच सुणी यम सूरमटौ। तिण बूपर नाळ दियौ अवटौ।—पा प्र
सूरमण—देखो 'सूरपण' (रू भे)
उ०—जगी मसाला जोत पाळ आभास वडौ पण। साथ सरव सिरदार, मैंहर मरजाद सूरमण।—पा प्र
सूरमानी—वि [स शूरमानिन्] जिसे अपनी शूरता का वहुत गर्व हो।
सूरमा—स स्त्री—राठौडो की १३ शाखाओ मे से एक।
सूरमाई—स स्त्री—वीरता, वहादुरी।
उ०—वारला गावा मैं चुव्हाण-सिरदार वाजै, सूरमाई री वाता करै अर आपनै अन्नदाता सू अडा'र वसमें वतावै हे।—दसदोख
सूरमापण, सूरमापणौ—स पु—१ वीरता या वहादुरी की अवस्था या भाव।
उ०—म्हारौ पती म्हारा वूढापणा पहला मारीजसी इसौ सूरमापणौ दीसै छै।—वी स टी
सूरमू—देखो 'सूरमौ' (रू भे)
सूरमौ—स पु—१ शूरवीर, वहादुर, पराक्रमी, साहसी।
उ०—१ त्या हूत अती वाघू तरणि, अगन कत हित आगमै। साराह तेज दीठा सती, सीह वराह न सूरमै।—रा रू
उ०—२ रामायण भारथ्थ, विगत रण चारण वाचै। साचै दिल सूरमा, खडग ग्रहि मूछा खाचै।—मे म

सूरजवस-स पु [स सूर्य+वश] क्षत्रियो का एक वश, कुल, सूर्यवश।
सूरजलोक-स पु—सूर्यलोक।
सूरजवसी-स पु—सूर्यवशी क्षत्रिय।
उ०—कुळ महिमा वरणै कवरण, बुध वळ पीढी वध। सारा सूरजवंसिया, कुळ रखवाळ कमध।—रा रू
सूरजसक्रमण-स पु [स सूर्य्यसक्रमण] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे प्रवेश करने की क्रिया या भाव।
सूरजसुत—देखो 'सूरजपुत्र' (रू भे)
सूरजसुता-स स्त्री—१ सूर्य की पुत्री, यमुना। (डि. को)
२ विद्युत, विजली।
सूरजा-स स्त्री [स सूर्य+जा] १ यमुना।
२ विद्युत।
रू भे—सूरिजिजा।
सूरजालोक-स पु [स सूर्यालोक] १ सूर्य का तेज प्रकाश।
२ देखो 'सूरजलोक' (रू. भे)
सूरजि—देखो 'सूरज' (रू भे)
उ०—किरणावळि सूरजि जेम कळक्कळ, घूण घजव्वड खेड घणी।
—गु रू व
सूरज्ज, सूरज्जि—देखो 'सूरज' (रू भे)
उ०—१ 'अमर' धरम आकूर, पटौ दीधौ पाटौधर। राजहस प्रेम अस, जिसौ सूरज्ज सुधाकर।—गु रू व
उ०—२ सूरज्जि जेम सपत्तास चढि, पदमपाण आवध ग्रहै। गजसिंह लोह खटत्रीस लै, इम 'जै' पूठी आरुहै।—गु रू व
सूरज्या-स स्त्री [स सूर्या या सूर्य+जा] सूर्य की पत्नी, सज्ञा।
वि वि—वैदिक मत्रो मे इसे सूर्य की पुत्री कहा गया है। कही कही इसे सविता या प्रजापति की कन्या और अश्विनीकुमारो की स्त्री कहा गया है।
उ०—अला सावित्री सूरज्या सती सीता। अला ग्यान आदेस उणिहारि गीता।—पी ग्र
सूरझटकाकरण-स स्त्री—तलवार, खड्ग।
सूरण-स पु [स शूरण, सूरण] १ जमीकद, सूरन, ओल।
उ०—१ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति भाति-भाति रा अवरस, सिखरण, आवा, नीवू, सूरण, आदा। भाति भाति रा आचार अथाणा। भाति भाति री तरकारी।—रा सा स
उ०—२ अमरकद आदू अला, सूरण रोझ रताळ। वच्छनाग वाकुभीया, भेडागारी भाळि।—मा का प्र
उ०—३ आदा सूरण केला हूआ, वीजोरा दाडिम लीवूआ।
—का दे प्र
रू भे—सुरण।
सूरत-स स्त्री [फा] १ मुखाकृति, चेहरा, शक्ल, आकृति।
उ०—१ नाव वताम्या, गाव वताम्यां। सूरत वताम्या, म्हारै साजन की।—लो गी
उ०—२ जठै कवर मन मैं तौ आवात घणी चाही, चौडै नटवा की सूरत दरसाइ।—पना
उ०—३ लोई ओढण नै साडौ लूमाळौ, फूटर लटकतौ नाडौ फूदाळौ। पावा पचडोरी पगरखिया पै'रै। सूरत सिघण सी वन जगल वैरै।—ऊ. का
२ रूप, सौंदर्य।
उ०—१ सिव दाखियौ झळाहळ सूरत। पौरस नृपत तूझ भरपूरत। राजा ज तु अवस ठहरावै, अवै समैं विण हाथ न आवै।—सू प्र
उ०—२ जेवर की न जरूरत सूरत मन मोहै। जयमात करनी।
—मे म
३ दशा, हालत, स्थिति।
उ०—नोसेरवा बुजरखी मैं हकीमा नू पूछी जै माटीपणै री सूरत काई छै।—नी प्र
४ चित्र, तस्वीर, फोटो।
५ उपाय, तरकीव, तदवीर, युक्ति।
उ०—वोल नवाव सरस द्रढ वधै, सुत पितु हूत महाछळ सधै। यू रिम सूरत सूत प्रवधै, नेम लियौ विधि जेम निमधै।—रा रू
६ रूपरेखा, डौल।
७ इच्छा, विचार।
उ०—१ सौ दक्षिण गी सूरत धारी जै वीजापुर रै वादशाह री जाय नोकरी करस्या।—गोपाळदास गौड री वारता
उ०—२ इतरै मैं चापावत 'वलु' गोपाळदासोत अर भावसिंह जोधपुर छाडि सुराणै जावण री सूरत कीवी।
—अमरसिंह राठौड री वात
८ शोभा, छवि, आभा।
९ चित्त वृत्ति, वुद्धि।
१० देखो 'सुरत' (रू भे)
उ०—वीर महावळ धीर उर, सूरम सूरत धार। आवी आदर ऊठियौ, भावी सीस विचार।—रा रू
वि [स सूरत] १ सहृदय, दयालु, कृपालु।
२ कोमल, नाजुक।
३ शान्त, स्थिर।
४ अनुकूल।
रू भे—सुरत, सुरता, सुरति, सुरत्त, सूरति, सूरती, सूरते।
अल्पा,—सूरतडी।
सूरतडी—देखो 'सूरत' (अल्पा, रू भे)
उ०—आनत रह उण सूरतडी री, रही तन मन मैं छाय, मत्री जत्री सुकनी जोतसी, यारै हाथ न उपाय।—लो गी

उ०—घट घट घरण नामी, सामी सूराई। अतरजामी हुय, श्रोळज न आई।—ऊ का

रू भे—सुराई।

सूराख–स पु [फा] १ छिद्र, छेद।

२ रास्ता, मार्ग।

रू भे—सुराक, सुरास।

सूराचद–स पु—मारवाड का एक प्रदेश जो साचोर तहसील के अन्तर्गत आता है। (बा दा ख्यात)

सूरातन–स पु—१ वीरता, शौर्य, पराक्रम।

उ०—१ हरीया मरिवौ सौ भलौ, सूरातन सु होय। कायर भागा काळ का, जाकौ मुह कुण जोय।—अनुभववाणी

उ०—२ सूरातन सहजै सदा, साच सेल हथियार। साहिव केवल भूझता, केतै लियै सु मार।—दादूवाणी

२ शौर्य, पराक्रम।

उ०—१ सूरातन सूरा चढै, मत मतिया सम दोय। आडी धारा ऊतरै, गर्णै अनळ नू तोय।—बा दा

उ०—२ सूरातन जाही घणइ सूरातन, ईसर तणा वाधिया अग।
—महादेव पारवती की वेलि

३ वीरत्व की अवस्था या भाव।

उ०—विजडा झाट त्रमाट वाजता, स्यामध्रम सूरातन साहि। सत छाडै टेभा अवछडिया, गिड भूरा मडिया गज-गाहि।
—वैरीसालोत हाडा री गीत

रू भे—सुरातन, सूरतन, सूरातण।

सूरापण, सूरापणौ—देखो 'सूरपणौ' (रू भे)

उ०—१ सूरापण मसलत वळ सधतौ। 'विलद' 'निजाम' हूत पणि वधतौ।—सू प्र

उ०—२ जुद्ध मैं त्रवाळ नगारा त्रह-त्रहिया वाजिया थका पडै कारण औ हे जुध रा वाजा सुण सूरवीरा नै तो सूरापणौ छूटसी नै कायरा जुद्ध नगारा सुण धूजणी चढसी।—वी स टी

सरापौ—देखो 'सूरपणौ' (रू भे)

सूरभिमुह–क्रि वि [स सूर्याभिमुख] सूर्य के सम्मुख, सूर्य के सामने।

सूरामडळ—देखो 'सूरमडळ' (रू भे)

उ०—माहै सौ साम ठाम न मायौ, गहमह पूर सपूर गनै। राजापुरी वसायौ राजा, 'केहर' सूरामडळ कनै।—अग्यात

सूरावत–वि—वीर, वहादुर, पराक्रमी।

सूरि–स पु [स] १ पडित, विद्वान।

उ०—१ मकू रा वणाया रससिंधु, रसरत्न आदिक साहित्य रा प्रवध सूरि जना रा स्रवणा नू पवित्र करै।—व भा

उ०—२ सास्वत स्वरूप अवगन अनूप, सुव गगन भूरि सव साक्षि सूरि।—ऊ का

२ सूर्य, रवि।

उ०—१ करी केटि तुरकाणा पूठि, ग जाणस्यइ दूरि। पूठि सिरया ताग्या तेजी, जई आथिमतइ सूरि।—का दे प्र

उ०—२ जागतउ देव तू हाजर हजूरि, दुख दोहग अलगा करि दूरि। सदा जुहारू उगतउ सूरि, समयसुदर कहइ करि तू पडूरि।—स कु.

३ जैन आचार्यों के नाम के पीछे उपाधिस्वरूप प्रयुक्त होने वाला शब्द।

रू भे—सूरिहि, सूरी।

सूरिज—देखो 'सूरज' (रू भे)

उ०—१ सरण हेम दिसि लीधौ सूरिज। सूरिज ही विण आसरित।—वेलि

उ०—२ प्रति सूरिज कोटिक प्रकास। आतम जगमग जोति उजास।—सू प्र

सूरिजन–स. पु (स व)—विद्वान लोग, विद्वद्‌जन।

उ०—सूरिजन साभलजो कथा जी।—धरमपत्र

सूरिजमाळ—देखो 'सूरजमाल' (रू भे)

सूरिजि—देखो 'सूरज' (रू भे)

उ०—महि गिलै मेह पाणी पवन, सूरिजि ससि भाजै सरै। त्रैभुयण नाथ विद्या तणी, धरणीधर मनछा धरै।—पी ग्र

सूरिजिजा—देखो 'सूरजा'। (ह ना मा)

सूरिमौ—देखो 'सूरमौ' (रू. भे)

उ०—१ गजराज चढै कमधज गरूर। सूरिमा मोड महाराज सूर।
—सू प्र

उ०—२ 'राजौ' भिडत सूरिमा राह। 'विसनावत' सीहक सिंधुराह।—गु रू व.

सूरियौपवन—देखो 'सूरयौ'।

सूरियौवायरौ—देखो 'सूरयौ' (रू भे)

उ०—खेत जाणै ऊभाण आयोडौ। सूरियौवायरौ पूगी वजावै अर वाजरी लै'रा लेवै।—रातवासौ

सूरिवौ–स स्त्री—१ शूल।

२ देखो 'सूरमौ' (रू भे)

उ०—साध सती अर सूरिवा, सिध सेवग अर सत। आचारै वीर जिग जतन, जोग जत कै मत।—सूरजनदास पूनियौ

सूरिस, सूरिसर, सूरिसरू, सूरिसरौ, सूरिस्वर—देखो 'सूरीस, सूरीसर' (रू भे)

उ०—अरिहत, सिद्ध सूरिसरू उवज्झाया सहुसाध। दसण नाण चरण वली तम नवदद आराध।—स्रीपाळ रास

सूरी–स स्त्री—१ आभूषणो मे छेद करने का कीलनुमा उपकरण विशेष। (स्वर्णकार)

२ एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

वि स्त्री—१ वीर स्त्री, सती।

सूरयौ-स पु—सप्तर्षि के अस्त स्थान से चलने वाला वायु जो श्रावण मास मे वर्षासूचक माना जाता है।

उ०—१ विरछा चढ किरकाट विराजै, स्याह सफेद लाल रग साजै। विजनस वाव सूरयौ वाजै, घडी पलक माहे मेहा गाजै।
—वर्षा विज्ञान

उ०—२ सूरया वीर वदली ल्याइ रे। झाला दै दै तोय बुलाऊ।
—लो गी

रू भे—सूरियौ, सूरचौ।

सूरलोक-स पु [स सूर्यलोक] १ सूर्यलोक, सौरजगत।

२ वह कल्पित लोक जहा वीरगति प्राप्त योद्धागण पहुचते हैं, सुरलोक।

उ०—चढ विमाण चलाविया, सकौ कमधज सिरदारै। सूरलोक सतलोक, जाइ 'अमरेस' जुहारै।—सू प्र

सूरवादी-स पु—योद्धा, सुभट, वीर, वहादुर।

उ०—जोइ गात्र टोळी मळी नाग जादी, वढै सापनै सामळौ सूरवादी। अमै जग्ग जेठी फरी नीर उडै, काळी नाग सू आविआे 'कान' कूडै।—ना. द

सूरवाळौ-स पु—एक प्रकार का घास जो छप्पर छाने मे उपयोग लिया जाता है।

सूरविद्या-स स्त्री—युद्ध विद्या।

सूरवीर-वि [स शूर+वीर] १ वीर, वहादुर, योद्धा।

उ०—१ सूरवीर की रीत सूरवीर जाणै। एती अवमाण आया हिम्मत प्रमाणै।—रा रू

उ०—२ सूरवीर अवसाण, न चूकै एक रे। हरिहादास कहै हरिराम, न छडै टेक रे।—अनुभववाणी

उ०—३ आपणी आपणी वाणी राजवसी राजावा कै रूपक सुणाए। सूरवीर सामत्त ताकू अनत सुहाए।—रा रू

२ ताकतवर, वलवान।

३ साहसी, हिम्मतवर।

४ पुरुषार्थी।

रू भे—सूरवीर।

सूरवीरता-स स्त्री—वीरता, शूरत्व, वहादुरी।

सूरवौ—देखो 'सूरमौ' (रू भे)

उ०—१ प्रिसणा आगै सूरवौ, हरिया भाजि न जाय। घाव सहै समसेर का, इणीया मडै आय।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया डरै न सूरवौ अधर ओट निरधार। कायर डरपै वापडौ, हरीया कै आधार।—अनुभववाणी

सूरसज्जा-स स्त्री [स शूर+शय्या] वीरो की शय्या, रणक्षेत्र।

उ०—हड्डाधिराज हालू सूरसज्जा सोवण रै साधन सपादन करते वाणवै वरस री वय वासै वाळियौ।—व भा

सूरसरौ-स पु—वहादुरो, वीरो की परम्परा, परिपाटी।

सूरसागर-स पु—महाकवि सूरदास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध ग्रथ जिसमे अनेक राग-रागनियो मे श्रीकृष्ण लीला वर्णित है।

सूरसामत-स पु—१ युद्धमत्री।

२ सेनानायक, सरदार।

सूरसाही-स पु—वादशाह शेरशाह सूरी द्वारा चलाया गया सिक्का।

रू भे—सूरसाइ, सुरसाई।

सूरसुत-स पु [स सूर्य+सुत] १ शनि।

२ यमराज। (ह ना मा)

३ कर्ण।

४ सुग्रीव।

सूरसुता-स पु [स सूर्य+सुता] १ यमुना।

२ विद्युत, विजली।

सूरसेत-स पु—सिंह, शेर। (अ मा)

सूरसेन-स पु—१ श्रीकृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा।

२ मथुरा के आस-पास के भू भाग का नाम।

सूरसेनप-स पु [स शूरसेनप] १ शूरवीरो की सेना का पालन करने वाला।

२ स्वामिकार्त्तिकेय।

सूरसेनपुर-स पु—मथुरा नगरी।

सूरसेनी-स पु—शौरसेनी भाषा।

उ०—तै अपभ्र स तीसरै, मगध देसी चवथम्मै। सरस सूरसेनी पढू थानक पचम्मै।—सू प्र

सूरस्वारथौ-स पु—वह घोडा जिसके चारो पैरो के वाल पीले केसर के समान हो एव नैन काले हो। (शा हो)

सूरागुर-स पु—वीरो मे श्रेष्ठ, वीर शिरोमणि।

सूराण-स पु (व व) शूरवीर व वहादुर लोग।

उ०—चाडिया चाक जुध पहल चाय। सूराण हूत केवाण साय।
—वि स

सूराणौ-क्रि वि—शूरवीर, वहादुर।

उ०—धीरजौ लज माणौ, अवसाण मैं सिध अणभगौ पौरस पराक्रमी, सूराणै सपत चिहनानि।—गु रू व

सूरातण—देखो 'सूरातन' (रू भे)

उ०—लडता जग लहरि तुरगै लागा, सूरातण जोवता सधीर। अग छावडइ जिसा लोचन मुख, तीखा जिसा खुतगी तीर।
—महादेव पारवती री वेलि

सूरायर-वि—वीर वहादुर।

सूरा-स. पु—चौहान क्षत्रिय वश की एक शाखा।

सूराई-स स्त्री—१ वीरता, वहादुरी।

स पु [स सुरराज] २ इन्द्र।

मामनै लागी हिवडै सूळ ।—लू

१० मृत्यु, मौत ।

११ दुख, पाप ।

उ०—नमो सिध सकर भजरण सूळ । सुकुद सुरारि महातत्व मूळ ।—ह र

वि —नुकीला, तीक्ष्ण ।

सूल–स पु —१ रक्षा, बचाव ।

२ हाल-चाल, रग-ढग ।

उ०—१ या जुग माहि जीवरणा, त्यु तरवर का फूल । जनहरिया इन जीव का, तन करि पहली सूल ।—अनुभववाणी

उ०—१ तद ऊ गयौ । उवं- नै आवतौ देख खाफरै री वहू रोवरण लाग गयी । ऊ परण देखरण-नै लाग गयौ । पूछियौ—कासू सूल छै ।

—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

उ०—२ अन भावै नही । मुहडै मिळकरणी रहै । खाली ओकारी रहै । तद वडारण पूछरण लागी, कासु सूल छै ?

—कुवरसी साखला री वारता

३ दशा, हालत, अवस्था ।

उ०—राव कटारी लागा पछै पोहरेक जीविया, तरै रजपूतै पूछियौ 'रावळी तौ श्री सूल छै, राव रै बेटी न छै, टीका रौ किरणनै हुकम छै ?—नैरणसी

४ प्रवन्ध, व्यवस्था ।

५ सस्कार, सुधार ।

उ०— हसराज तौ मूवौ पडीयौ । ताहरा वछराज विचारी, 'जु हमै भाई री सूल करा ।—हसराज वछराज री वात

६ उपाय, तरकीव, प्रयास, प्रयत्न ।

उ०—गैलकौ असूल सूल धूल मैं गयौ । मूळकौ गमाय मूळ फूल क्यौ रह्यौ ।—ऊ का

७ उद्देश्य, इरादा, मकसद ।

उ०—वुरहान पिरण राहवेघी रजपूत थौ । इरण री सूल अटकळियौ ।—राव मालदेव री वात

८ काररण, वजह ।

उ०—१ हू पूछू उवा तौ वात बोलौ नही अर बीजा ही परण घूमाला मारै सौ काम सूल छै ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ राठौड तेजसी पवारा नु नीवाज रै दावै झूबियौ तद पवार राव जगमाल चाट नू किरण ही सूल छोडनै आवर कन्है खोह वसीयौ हुतौ ।—राव मालदेव री वात

९ तरह, भाति, प्रकार ।

उ०—तरै रवायत घरणी सुख हुवौ । पछै घरणी अजीजी की—जु किरणही सूल देवराज नू अठै आरणौ तिका वात करौ ।—नैरणसी

१० आराम, चैन ।

उ०—एहिज अन्न मुहामरणा सखी, घरणा वली फल फूल । तौ हिव इरण हिज थानकै सखी, वसियै करनै सूल रे ।—वि कु

११ विष्कम आदि सत्ताईस योगो मे से नोवा योग । (ज्योतिष)

१२ वस्तु, पदार्थ ।

उ०—आरणौ तिरण समै निपट वेखरच छै, सूल सामान मामूर कू न छै ।—नैरणसी

वि —१ कुशल, प्रवीरण ।

२ ठीक, दुरुस्त ।

उ०—अर सावळ साह नु बोलावौ । औ वडौ अकलवत छै । उवं नु आपा काम सोपसा । औ आपा री काई वात सूल पाडसी ।

—वीजड वीजोगरण री वात

क्रि वि —१ दशा मे, हालत मे, स्थिति मे ।

उ०—औ तौ मोनु इरण हीज सूल घरै लै जावतौ हुतौ । मैं उरण नु कह्यौ, गाम किसौ ? ताहरा औ बोलियौ, गाम आपरणौ । तरै हु बोली, मोनु उतारौ, ज्यु कपडौ सवाहु ।

—कावळौ जोईयौ नै तीडी खरळ री वात

२ उपाय से, तरकीव से, ढग से ।

उ०—तरै रावळ मन माहै जारिणयौ जु-'जरा तौ नेडी आई, यू ही मर जाईजसी, किरणीक सूल नाम रहै तिका वात कीजै ।—नैरणसी

३ देखो 'सूळ' (रू भे)

उ०—१ ताप सन्निपात जारणी अतीसार मग्रहरिण, फीही विध राल पाडु गोला सूल खैरण है ।—ध व ग्र

उ०—२ फीहै जौ विधि कहु वखारिण, गुलम रोग पिरण सौ विधि जारण । पेट सूल जो होई अगाध, सूलं डभ तै नासै व्याध ।

—ध व ग्र

सूळक–स पु [स शूलक] १ दुष्ट और उद्दण्ड घोडा

२ विदकने वाला या चमकने वाला घोडा ।

सूळगजकेसरीरस–स पु यौ [स शूलगजकेसरीरस] शूल का नाश करने वाली एक औषधि विशेष या इस औषधि की गुटिका ।

सूळग्रह–वि [स शूलग्रह] शूल या त्रिशूलधारी ।

स पु —शिव या महादेव का एक नामान्तर ।

सूळचित–स पु —शृ गार मे एक आसन ।

सूळझरणौ, सूळझवौ—देखो 'सुळझरणौ, सुळझवौ' (रू भे)

सूळझियोडौ—देखो 'सुळझियोडौ' (रू भे)

सूळटकेस्वर–स पु [स शूलटकेश्वर] प्रयाग वट के पास शिव की एक मूर्ति ।

उ०—तिल भडेस्वरी १, सूळटकेस्वर २, प्रयाग राजेस्वर ३, ऐ तीन सिव प्रयाग वट कनै है ।—वा दा ख्यात

सूळदावानळरस–स पु [स शूलदावानकरस] एक प्रचार की रसौषधि । (वैद्यक)

सूळधन्वौ–स पु [स शूल+धन्वन्] शिव, महादेव ।

सूळधर–स पु [स शूल+धर] शिव, महादेव ।

उ०—नरा न ठीणौ नारिया, ईखौ सगत एह। सूरा घर सूरी महळ, कायर कायर गेह।—वी स

२ देखो 'सूरि' (रू भे)

सूरीस, सूरीसर, सूरीसरु, सूरीसरू, सुरीसरौ, सूरीस्वर–स पु [स सूरि=पडित+ईश, ईश्वर] १ आचार्य (जैन)

उ०—१ गिरुयउ गच्छ खरतर तणउ ए, स्रीजिणचद **सूरीस** प्रथम सिस्य स्रीपूज्य ना ए, सकलचद सुजगीस।—स कु

उ०—२ युगप्रधान जिनचद **सूरीसर**, सकलचद तसु सिस्य जी समयसुदर सतोख छत्तीसी, कीधी सघ जगीस जी।—स कु

उ०—३ स्रीजिनकुसल **सूरीसरु** दादा, चिंता आरति चूरि। समयसुदर कहइ माहरा दादा, मन वछित फल पुरि।—स. कु

उ०—४ गच्छराज स्रीजिनचद्रसूरि, स्रीजिनसिंह **सूरीसरौ** गणि सकलचद्र विनेय वाचक, समयसुदर सुखकरौ।—स कु

उ०—५ स्रीजिनरतन **सूरीसरू**, जोग जाणी हौ, जसु दीधौ पाट। जसु जस जागै इण जगत मैं, गावइ गावइ हौ गीता रा गहगाट।
—ध व ग्र

उ०—६ गच्छ मोटौ खरतर गायौ, महावीर पाट चल आयौ रे। **सूरीस्वर** स्रीजिनरग रे, तसु सासन स्रावक चग रे।—प च चौ

२ महापडित।

रू भे—सूरिस, सूरिसर, सूरिसरू, सूरिसरौ, सूरिस्वर।

सूरु—१ देखो 'सरु' (रू भे)

२ देखो 'सूर' (रू भे)

उ०—फतूहकै फरसतै, साम काम मैं सधीर, सूरू कै सहायक।
—र रू

सूरेह—देखो 'सुरभि' (रू भे)

सूरौ–स पु—१ छदशास्त्र मे ठगण का दूसरा भेद जिसका रूप यह है—ऽऽ। या ठगण की पाच मात्राओ के द्वितीय भेद का नाम।

२ देखो 'सूर' (रू भे)

उ०—१ स्रीआदीसर भेटियउ, प्रह ऊगमतइ **सूरौ** जी। दुख दोहग दूरि दल्या, प्रगट्यउ पुण्य पडूरौ जी।—स कु

उ०—२ **सूरा** लडै धणी कै कारण, सती साम कै हेत। हरीया भागा मुय घणी, मुख न सोभा देत।—अनुभववाणी

उ०—३ **सूरौ** मरणौ आसगै, पूठा धरै न पाव। हरीया आगै साम कै, चूक न जावै दाव।—अनुभववाणी

३ देखो 'सूवर' (रू भे)

उ०—हरसा वीर मेरा रै, बोजै बोजै मैं रे ना'री ना'र, जामण का रै जाया, थूरा रामैडा रै सूरा सूरडी।—लो गी

सूरघधज–स पु [स सूर्यध्वज] कायस्थ जाति का भेद विशेष।
(मा म)

वि—जिसके रथ पर सूर्य के चित्र का ध्वज हो।

सूरचाभ–वि [स सूर्याभ] जिसकी आभा सूर्य के समान हो।

उ०—'परदेसी' न्रप पापियौ, अविनीत नै अभिमान। इण धरम तणै प्रसादथी, लह्यौ **सूरचाभ** विमान।—जयवाणी

सूरचावरत–स पु [स सूर्यावर्त] एक प्रकार का सिर दर्द का भयकर रोग जो सूर्योदय से पूर्व शुरू होता है और सूर्यास्त के बाद स्वय मिट जाता है।

सूरचावली–स पु—एक प्रकार का आभूषण विशेष।

उ०—हार अरद्धहार प्रलव प्रालव नवसर कटक ककण केयूर नूपुर करणकूडल एकावली कनकावली रत्नावली वज्रावली पत्रावली चद्रावली **सूरचावली** नक्षत्रावली स्रोणींसूत्र काचीकलाप रसना किरीट चूडामणि मुद्रानतक ' 'इति आभरणानि।—व स

सूरचौ—देखो 'सूरयौ' (रू भे)

सूलधरा स स्त्री—शूल नामक शस्त्र को धारण करने वाली देवी, दुर्गा।

उ०—देवी वाहन नाम कै वप्पवाळी, देवी खग्ग **सूलधरा** खप्पराळी
—देवी

सूळ–स पु [स शूल] १ बरछे के आकार का प्राचीनकाल का शस्त्र, बरछा, भाला।

उ०—कर **सूळ** विकटह सुभट कौचट। राम थट झपट रौझट।
—सू प्र

२ त्रिशूल।

उ०—१ वदन बिंदु ललाट विराजत। रूप अनूप तेज मय राजत। पान **सूळ** वाहन वनपत्ती। स्रीकरनी जय जयति सकती।—मे म

उ०—२ विजै तू सजै आहवा वाह वीसा, सजै तू हियै हार झूझार सीसा। तु ही हाथ लै **सूळ** सादूल हक्कै। त्रणा मात्र तू सुक्र रा छात्र तक्कै।—मे म

३ प्राण-दण्ड देने की प्राचीन काल की सूली।

४ बबूल आदि वृक्षो का लम्बा काटा।

उ०—मासी की आगै ई कैवती ही कै उगरा पग मैं **सूळ** खुबगी। उठै ई हेटै बैठ **सूळ** बारै काढनै कह्यौ—इण घर री तौ सूळा ई म्हारा सू खोडीलाया करै।—फुलवाडी

५ तीक्ष्ण या नुकीला कोई पदार्थ।

६ काटा या नुकीली चीज के चुभने से होने वाला दर्द।

७ वात-विकार के कारण होने वाला तीव्र दर्द।

८ भय, डर।

उ०—टरै लोग वन डाडिया, सूतं ही साहूळ। जै सूता ही जागता, सबळा माथा **सूळ**।—वा दा

९ टीस, कसक, दर्द।

उ०—१ साझ पडै दिन आथवै, छैला माळण लावै फूल काई करू ऐ माळण फूलनै हे म्हारी आलीजै बिना लागै **सूळ**।
—लो गी

उ०—२ सूरज किरणा चाव मैं, फूटी कळी समूळ। लूआ दीसी

देता है तथा लकडी को खोखली कर देता है, घुन ।

२ शरीर मे होने वाला घुन के समान कोई रोग जो शरीर को अन्दर अन्दर ही खोखला बना देता है ।

उ०—पण थारै लखण मुजब थारौ रूप अर जोबन सूळौ लागनै रिब रिब खूटै तद जायनै गुमेज ठाणै आवैला ।—फुलवाडी

३ लोहे की छड से घी या तेल के साथ आग पर सेका हुआ एक प्रकार का मास विशेष ।

उ०—१ एकठा बैठा । वैर नु कह्यौ । उठि अलगी हू । वैर उठि मुहडै आगै आणि सूळा री काव मेल्ही । —चौवोली

उ०—२ भरमल प्यालौ भर, उठ, मुजरो कर कूवरसी नु दीयौ । मोछण नु सूळा अवल उवै माह काढ देण लागी ।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ ताह खाजरूआ उवेडिआ री कासु एक वखाण । वजाज रौ हाट वास्तेरा थान रू री वरकी, पीजी अंरूरा गोटा, गुजराती कागलरा पाठ, इण भाति रा खाजरू नीसरिया छै । भीतर वाडिआ हुसनाका नू सूळा रौ हुकम हुऔ छै । तिके सूळा कीजै छै ।

—रा सा स

रू भे—सूळी ।

सूलौ, सूल्हौ—क्रि वि—१ सीधे हाथो ।

२ दाहिनी ओर ।

वि (स्त्री सूली) १ श्रेष्ठ, उत्तम ।

२ सीधा, शरीफ, सज्जन ।

उ०—पीहर पतला रा सैणा रा प्यारा । तारक तूटा रा नैणारा तारा । सीरी सिटियारा सूल्हारा सारा, भीडी भूखा रा फूला रा भारा ।—ऊ का

३ कुशल, प्रवीण ।

सूवउ—देखो 'सूवौ' (रू भे)

उ०—ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पछी ग्रह वास । उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी-कइ पास ।—ढो मा

सूवड—स पु—पवार वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

(वा दा ख्याता)

सूवडौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—इण भवि थी सूवडौ कोइ जो, रास्यौ रे तै तौ सहस्रल मै भवै रे लौ ।—वि कु

सूवटियौ, सूवटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ थै घण होस्यौ वागा री कोयलडी । पनौ-मारू सूवटियौ, होय ज्यासी म्हा रा राज ।—लो गी

उ०—२ वहा गिनका वेद पढियौ, जातकी कुळ हीन । सूवटा कौ प्यार करता, मुक्त मारग लीन ।—भगतमाळ

सूवणौ, सूवबौ—क्रि स [स शयनम्] १ नीद लेने के लिये सोना, शयन करना, नीद लेना ।

उ०—१ जियै ठौड सूवता तिका ठोड हेर आया छा । हेरौ चौकम कर गया हूता सूवण री ठोड ।—नैणसी

उ०—२ राजा नै नीद नी आवती तौ उणरा सिपाही आवा नगर मैं ई किणी नै सूवण को देता नी ।—फुलवाडी

२ विश्राम करना, आराम करना, लेटना ।

उ०—बेटी बुढापै कडिया भाग दी, नीतर म्है ई बाडा रा नीवडा हेटै ढळियोडा ढुकलिया माथै सूवतौ अर रामजी रौ नाव लेवतौ ।

—फुलवाडी

३ रूठकर सोना ।

उ०—राजकवर रै वाल्हा दिया । मूडा माथै हाथ फेरचौ । कह्यौ आ थारै सूवण री ठौड है काई । व्है जकी वात निसक वता ।

—फुलवाडी

सूवणहार, हारौ (हारी), सूवणियौ—वि० ।

सूवोडौ—भू० का० कृ० ।

सूवीजणौ, सूवीजवौ—भाव वा० ।

सुअणौ, सुअवौ, सुइणौ, सुइवौ, सुवणौ, सुववौ, सूणौ, सूवौ, सूअणौ, सूअवौ, सूणौ, सूवौ, सोणौ, सोवौ, सोवणौ, सोववौ ।

—रू० भे० ।

सूवर—स पु [स शूकर] वराह, सूअर, शूकर ।

उ०—१ भाखरा रा खुडा वेहडा माहा सूवर नीचा उतरिया छै ।

—रा सा स

उ०—२ हीदू कै पण जाणि गऊ कौ, सूवर कौ तुरकाणं । दोउ मार भखै मुख मासा, घटि वधि, कौण वखाणं ।—अनुभववाणी

रू भे—सुअर, सुकर, सुवर, सूअर, सूकर, सूहर ।

अल्पा,—सुअरडौ, सुवरियौ, सूअरडौ, सूकरौ ।

सूवाणणौ, सूवाणबौ देखो 'सुवाणौ, सुवावौ' (रू भे)

उ०—वाता करता करता च्यारू जणा दुगेह सू वारै आयगा । गूगी री बेटी नै तप रै पाखती ई बिछावणा करनै सूवाण दी ।

—फुलवाडी

सूवाणियोडौ—देखो 'सुवाणियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सूवाणियोडी)

सूवाड—स पु [स सूतिका+वृत्ति] १ प्रसव, सौरी ।

२ देखो 'सुवावड' (रू भे)

सूवाडी—देखो 'सुवाडी' (रू भे)

उ०—खोली खीना री डेढा ढिग ढीली, पोली सेढा री लीला विण पीली । खडती सूवाडी वाडी विन खटकै मरती मोछडिया पूछडिया पटकै ।—ऊ का

सूवाभळकौ—स पु—स्त्रियो के सिर का आभूषण विशेष ।

सूवारथ—देखो 'स्वारथ' (रू भे)

उ०—पूत कलित परवार मे, सकल रहै उळझाय । सूवारथ का सबको सगा, अति अकेला जाय ।—ह पु वा

उ०—सैंचल सैंधव जाण, आगर री परवाण। समुद्र-पार जाणियो ए, कालौ लूण आणियौ ए।—जयवाणी

सैंजणौ स पु—एक प्रकार का वृक्ष जिसके लाल, नीले व सफेद तीन रंग के फूल होते है।

सैंजोडै—१ देखो 'सैंजाडै' (रू भे)

उ०—म्हारो कणौ मानौ अपा दोनू सैंजोडै काटा मैं भेळा ऊभनै सात वार जवार जोमनै कबूड़ा नै चुगावा, तौ घोडौ घणौ पाप धुपैला।—फुलवाडी

२ युग्म से।

सैंट—देखो 'सैंट' (रू भे)

सैंटर–स पु [अ] १ मध्यस्थल, मध्यबिन्दु।

२ केन्द्र, प्रधानस्थान।

सैंटौ—१ देखो 'साठौ' (रू भे)

२ देखो 'सैंठौ' (रू भे)

(स्त्री सैंटी)

सैंट्रल–वि [अ] केन्द्र का, केन्द्रीय।

सैंठाइ, सैंठाई—देखो 'सैंठाई' (रू भे)

उ०—पछै एकदा विहार करता उजाड में त्रसा घणी लागी। गुरा नै कहै मोनै त्रसा घणी लागी गुरा कह्यौ—साधु री मारग है सैंठाइ राखौ।—भि द्र

सैंठौ—१ देखो 'सैंठौ' (रू भे)

उ०—१ अणछक डाढाळौ टरियौ। जाणै कोई उणरै चारू पगा नै सैंठा झाल जरू कर दिया व्है।—फुलवाडी

उ०—२ ऐसा अहकारी रे, हुआ पाप सू भारी रे। नीचा जाय बैठा रे, परवम किया सैंठा रे।—जयवाणी

उ०—३ साधु मूल छकाय मैं, ससय समकित जाय। नि सकपणौ सैंठौ हुवै, स्वरग मुक्ति सुख थाय।—जयवाणी

उ०—४ पीडिया अर जाघा थरहर कापण लागती जगा रा दात भीच सैंठौ रैवण री घणी ई चेस्टा करती।—फुलवाडी

उ०—५ अठै रा कळा-साहित भी भूगोल रै असर सू कोरा को रै' सकया नी। खुदाई अर मीनाकारी री इमारता नीजरा, मडोर, जोधपुर, सीवाणा, जालोर, बीकानेर, जैसलमेर अर तन्नोट रा सैंठा दुरग चूणीजिया जिणा री भीता ताई बीस बीस फिट चवडी है।—चितराम

२ देखो 'साठौ' (रू भे)

सैंण—देखो 'सैंण' (रू भे)

सैंणप—देखो 'सैंणप' (रू भे)

सैंताळीस, सैंतालीस—देखो 'सैंताळीस' (रू भे)

सैंताळीसौ, सैंतालीसौ—देखो 'सैंताळीसौ' (रू भे)

उ०—असल थाणा तो अमीचदजी री सौ सैंतालीसै मारवाड मैं विखौ पड्यौ जद दूजा ठाणा वाला तौ चौमासा मै पगा २ विहार कर गया श्री अमीचदजी नौ चौमासा मैं पीपाड सू परबतसर मै भादवा सुद १४ नै रात रा बाजरी रा गाटा ऊपर देवगति गया।

—भि द्र

सैंताळौ, सैंतालौ—देखो 'सैंताळीसौ' (रू भे)

उ०—तेरै सैंतीसै समै, जायौ सुभ दिन जयकार रे ज्ञान। सैंतालै सयम लीधौ, नहु अविर गिणजो गणार रे ज्ञान।—र च ग्र

सैंतीर, सैंहतीर—देखो 'सहतीर' (रू भे.)

उ०—सागा राज में जाग सैंतीर लिरै। मोटा मोटा धारापतिया रा बरसा ताई, पछै श्री कुलमादी रिग सेन री मूळी।

—फुलवाडी

सैंतीस—देखो 'सैंतीस' (रू भे)

सैंतीसमौ, सैंतीसवौ—देखो 'सैंतीसमौ' (रू भे)

सैंतीसे'क—देखो 'सैंतीसेक' (रू भे)

सैंतीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू भे)

सैंद—१ देखो 'सैंद' (रू भे)

२ देखो 'सैंध' (रू भे)

सैंदरप—देखो 'सैंदरप' (रू भे.)

उ०—एक प्रगट गोरियावर नै बीजौ कालिंदर। आगै सैंदरप दो मोता श्रद्धमढै। काळ सू काळ जूझै।—फुलवाटी

सैंदी–स स्त्री—१ खजूर का आसव।

वि वि—सर्दियो के मौसम मे (मार्च तक) खजूर के ठीक मस्तक के पास छिद्र करके एक मिट्टी का पात्र बांध दिया जाता है। रात मे उस पात्र मे रस टपककर भर जाता है। यह एक स्वादिष्ट व मीठा पेय पदार्थ होता है।

सैंदेमूडै–क्रि वि.—जान-पहचान का होते हुए।

वि—परिचित।

रू भे—सैंदा-मुहा।

सैंदेस, सैंदेह—देखो 'सैंदेह' (रू भे)

उ०—जग अनत प्रवाटा करै जाम। सैंदेस मान कैलास वाम।

—रामदान लाळस

सैंदौ, सैंदौ—१ देखो 'सैंदौ' (रू भे)

ज्यू—सैंदौ आवै पामणौ, हत्यौ आवै चोर।

२ देखो 'सैंधौ' (रू भे)

सैंध–स स्त्री [स सधि] १ चोरी करने की दृष्टि से किसी मकान की दीवार मे किया जाने वाला बडा छेद, सुराख।

२ बडा छेद, सुरग, नकब।

३ देखो 'सैंद' (रू भे)

रू भे—सधि, सैंध।

सैंधव, सैंधवौ—देखो 'सैंधव' (रू भे)

सैंधियौ–वि—'सैंध' लगाने वाला, सुराख करने वाला।

स पु—१ चोर।

सूवारे—देखो 'सुवारा' (रू भे)
उ०—आज तौ आप डेरा करावौ, भोजन करावौ, सूवारे जवाव सारौ ही हुय जासी।—गीसाळू री वात
सूवौ–स पु [स शुक] १ कीर, तोता, सुग्गा, शुक।
उ०—१ दादू यहु तन पिंजरा, माही मन सूवा। एक नाम अल्लाह का, पढ हाफिज हूवा।—दादूवाणी
उ०—२ सूवा एक सदेसडउ, वार मरेसी तुझ्झ। प्रीतम वासड जाइ नइ, मुई सुणावै मुझ्झ।—ढो मा
२ किसी के घर या परिवार मे शिशु जन्म से होने वाला सात से सत्ताईस दिन (जैसा आवश्यक हो) प्रसूतिकाकाल।
उ०—१ मूठावै खग मूठ, चालै भारत साम हा। सूवे ज खाधी सूठ, मात भलाई मोतिया।—रायसिंह सादू
उ०—२ गाया नै गिरमास, ठिकाणी चौडै ठायौ। सूवै सूतक सुधी, तळै छिगाम विमायौ।—दसदेव
३ लोहे की वडी सूई जो वोरा आदि सीने के काम आती है, सूवा।
४ एक मारवाडी लोकगीत।
रू भे—सुइयौ, सुग्रो, सुवौ, सुहटौ, सूग्रउ, सूग्रौ।
अल्पा,—सुवटियौ, सुवटौ, सूग्रटौ, सूडउ, सूडौ, सूटौ, सूयटौ, सूवडौ, सूवटियौ, सूवटौ, सूहटौ।
सूस–स पु—१ मगर की तरह का एक वडा जल जन्तु।
२ देखो 'सुस'।
३ देखो 'सिसु' (रू भे)
सूसतौ—देखो 'सुसतौ' (रू भे)
सूसमदूसम—देखो 'सुखमदुखम' (रू भे)
उ०—सूसमदूसम त्रीजउ जाणि, विहु कोडा कोडि हुई परिमाण। त्रीजइ भागइ मरीर दीमति, एक पल्योपम आउ धरति।—वस्तिग
सूसमसूसम—देखो 'सुखमसुख' (रू भे)
उ०—सूसमसूसम आरउ विचारि, कोडा कोडि सागर सुइ च्यारि। त्रिणि गाऊ मणि ऊचउ देह, त्रिहु पल्योपमि आउखा छेह।
—वस्तिग
सूसमार—देखो 'सिसमार' (रू भे)
सूसी–स स्त्री—१ ऊट के चारजामे के नीचे लगाई जाने वाली गद्दी।
२ एक प्रकार की धारीदार चारखानो की चादर।
सूसीम–स स्त्री—शीत, सर्दी, ठड।
सूसौ—देखो 'सुसौ' (रू भे)
उ०—हरिण सूसा नै वाकरा, सूर सावर नै मोर। दयालराय कोई वाडै केई पिंजरै, दुखिया कर रया सोर।—जयवाणी
सूहड—देखो 'सुभट' (रू भे)
सूहटौ—देखो 'सूवौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—कुच अनार आवा अधर, देह सुरगी फूल। मो मन मधुकर सूहटौ रह्यौ ज जित तित डूल।—कुवरसी साखला री वारता
सूहणौ—१ देखो 'सोहणौ' (रू भे)
२ देखो 'स्वप्न' (रू भे)
सूहर—१ देखो 'सूर' (रू भे)
२ देखो 'सूवर' (रू भे)
उ०—तरै पवार कह्यौ 'ओ सूहर म्हे दीठौ। उणरौ नाव थे मत ल्यौ।—नैणसी
सूहव–स स्त्री—सौभाग्यवती या सुहागन स्त्री, सधवा।
उ०—१ फिरियौ पछि वाउ ऊनर फरहरियौ। सहुए सूहव उर मरग।—वेली
उ०—२ सूहव अस्त्रो मगळ गावै छै। जै जै कार हुय रह्यौ छै।
—लाली मेवाडी री वात
उ०—३ वहु मोतीय तदुल थाल भरे, नित सूहव नारी वधावत है।—ध व ग्र
सूहाकान्हडा–स पु—सव शुद्ध स्वरो का सम्पूर्ण जाति का एक राग।
(संगीत)
सूहाटोडी–स स्त्री—सव कोमल स्वरो की सम्पूर्ण जाति की एक सकर रागिनी। (सगीत)
सूहाविलावल–स पु—सम्पूर्ण जाति का एक सकर राग। (सगीत)
सूहास्याम–स पु—सव शुद्ध स्वरो का सम्पूर्ण जाति का एक सकर राग।
सूहौ–स पु—स्त्रियो के ओढने का वस्त्र विशेष।
उ०—सूहौ कसूभी ओढ डुपट्टो, झुरमट खेलन जासी। झुरमुट खेल मिळै यदुनदन, खोल मिळी मिळ छाती।—मीरा
सेंग—देखो 'सैंग' (रू भे)
उ०—१ वोदा रै आडा वहै, गोदा मिलनै सेंग। भूकोडा भवता फिरै, लाडू खावै लेंग।—ऊ का
उ०—२ मरघा घटगी सेंग, वेग विरधापण वळियौ। निकळण री रथ नही, कळण ऊडी मैं कळियौ।—ऊ का
सेंगटी, सेंगटीघाट–स स्त्री [देशज] तक्र मे पकाया हुआ वाजरी का खीचडा या घाट।
सेंगत–वि [स सम+दाति, सह+गति] १ जिसका वातावरण के साथ तारतम्य वैठ रहा हो, जो परिस्थिति के अनुकूल वन गया हो, किसी परिस्थिति या वातावरण विशेष का आदी।
उ०—खालडा री वास सू तौ वौ खासौ सेंगत व्हैण लागौ हौ पण दोनू धणी-लुगाया री सप उणनै भरियौ कोनी।—फुलवाडी
२ हमसफर, हमराही।
रू भे—सैंगत।
सेंगर–स पु [देशज] १ राजपूतो का एक वश।
२ इस वश [illegible] राजपूत।
[illegible]कार का नमक।

२ शिखर। (एका)
३ गिरि, पर्वत। (,,)
४ सरस, मीठा। (,,)
५ तरु, पेड। (,,)
६ तोता, कीर। (,,)
७ पक्षी। (,,)
८ वकरी। (,,)
९ नभ, आकाश। (,,)
१० पाताललोक। (,,)
११ देखो 'सेह' (रू भे)
१२ देखो 'सेही' (रू भे)
१३ देखो 'सह' (रू भे)

सें'—१ देखो 'सेही' (रू भे)
उ०—लास, फोगल, घिंटाळ ऊटा, कातीसरौ हर मास रौ। से' सेला, घुरी घरस्याळा, आळा पछ्या आम रौ।—दसदेव
२ देखो 'सेह' (रू भे)
३ देखो 'सेस' (९) (रू भे)
४ देखो 'सह' (४, ८, ९) (रू भे)

सेइया—देखो 'सय्या' (रू भे)
उ०—जितरौ मुहगौ परोटियौ होवै इण हीज तरै सत्रुवा नै मार तडळ कर रण सेइया सुवै तौ कवी कह है मुभडा थै तरवार उण वीर पुरस रौ नाम लै नै वाधौ मौ ताह री कठै ही हार न होवै।
—वी स टी

सेई-सर्व—वे ही।
उ०—१ तौ कु जाचि और नही जाचु, जाचिग होय अजामका। सेई जाम अजाम न राता, माता दमटी चामका।
—अनुभववाणी
उ०—२ कहीयौ जु देखा अजैलग सत्रा री साय सावतौ ऊभौ छै। वूठै उपरि वाह देण री इहै वेळा छै। सेई जीपमी जु हाथ वाहसी।—वेलि टी
स स्त्री—१ अनाज मापने का एक पात्र विशेप जो प्राय आधा मन अनाज का होता है।
२ आधा मन अनाज।
उ०—हाट १ महमूदी वरस १ री लागै। जाणै परणियै महमूदी २ लागै। देस सिगळै हळ १ सेई।—नैणसी
२ अनाज की वह मात्रा जो उक्त पात्र मे समा जाती हो।
३ देखो 'सेही' (रू भे)

सेकड-स स्त्री. [अ] समय का वह भाग जो एक मिनट के साठवे भाग के वरावर होता है।

सेक-स पु—१ आच, गर्म पानी या अगारो द्वारा गर्मी या ताप पहुचाने की क्रिया।
२ भुनाई, सिकाई।

सेकणौ, सेकवौ-क्रि स—१ पास मे अग्नि जलाकर गर्मी पहुचाना, गर्म पानी किसी पात्र मे डाल कर उससे जरिये गर्मी पहुचाना, ताप देना, तपाना, गर्म करना।
उ०—आसा लुध्धी हू न मुइय, सज्जन-जजाळेइ। मारू सेकइ हथ्थडा भीणी अगारेइ।—ढो मा
२ आच पर रखना, पकाना, भूनना।
उ०—१ पछै सेजडी री मूखी किटकिळिया अर वगदौ भेळौ करियौ चकमक सू वगदौ मिळगाय अणू ता कोट सू पूत्र सेकिया।
—फुलवाडी
उ०—२ जिमो लाय जाळियौ, फजर मिळ जाय फकीर। माह दहण सेकियौ, इमो पेगियौ अमीर।—रा रू
३ दग्ध करना, जलाना।
उ०—१ रह रह मुदरि माठ करि, हळफळ लगी काइ। डाभ दिगवट करहलउ, सेकता मरि जाइ।—ढो मा
उ०—२ जिन दिन झडता देखिया, पायौ दुख अणमाप। वळमी आर्प वेलड्या, मतना सेको ताप।—लू
सेकणहार, हारौ (हारी), सेकणियौ—वि०।
सेकिओडौ, सेकियोडौ, सेक्योडौ—भू० का० कृ०।
सेकीजणौ, सेकीजवौ—कर्म वा०।

सेकता—देखो 'सिकता' (रू भे)

सेकसन-स पु [अ सेक्शन] उपविभाग, अनुभाग।

सेकाणौ, सेकावौ-क्रि स ['सेकणौ' क्रिया का प्रे रू] १ पास मे अग्नि जलाकर गर्मी पहुचवाना, गर्म पानी किसी पात्र मे डलवाकर गर्मी पहुचवाना, ताप दिलवाना, तपवाना, गर्म करवाना।
२ आच पर रखवाना, पकवाना, भुनवाना।
३ दग्ध कराना, जलवाना।
सेकाणहार, हारौ (हारी), सेकाणियौ—वि०।
सेकायोडौ—भू० का० कृ०।
सेकाईजणौ, सेकाईजवौ—कर्म वा०।
सेकावणौ, सेकाववौ—रू० भे०।

सेकायोडौ-भू० का कृ—१ पास मे अग्नि जलवाकर गर्मी पहुचवाया हुआ, किसी पात्र मे गर्म पानी डालकर गर्मी पहुचवाया हुआ, ताप दिलाया हुआ, तपवाया हुआ, गर्म करवाया हुआ २ आच पर रखवाया हुआ, पकवाया हुआ, भुनवाया हुआ ३ दग्ध कराया हुआ, जलवाया हुआ।
(स्त्री सेकायोडी)

सेकावणौ, सेकाववौ—देखो 'सेकाणौ, सेकावौ' (रू भे)
उ०—वावन चदन वालि करि, सोविन-सगडि आणि। ससिवयणी सज्जण-तणा, सेकावइ पय पाणि।—मा का. प्र
सेकावणहार, हारौ (हारी), सेकावणियौ—वि०।
सेकाविओडौ, सेकावियोडौ, सेकाव्योडौ—भू० का० कृ०।

२ देखो 'सैंदो' (अल्पा, रू भे)
३ देखो 'सेंधो' (अल्पा, रू भे)

सेंधो-स पु [स सैंधव] १ एक प्रकार का खनिज नमक।
उ०—वामण माग-ताग नै सेंधा लूण अर अजमा री फाकी लायो। वामणी घाटी हिलाय वोली—मौत रै मूडै तो इमरत ई विरथा व्है, नद वापडी इण फाकी सू काई साधो लागैला।
—फुलवाडी
रू भे—सीधो, सूधो, सेंदो, सैधो।
अल्पा,—सेंधियो।
२ देखो 'सैंदो' (रू भे)
उ०—कितरी एक दूर तो लाखो पाळो गयो, पछै आगै जाता एक वामण कठैक सेंधो थो तिण कन्हा घोडी मगाय नै चढनै खडीया।
—राव लाखै री वात

सेंन-स पु—१ सकेत, इशारा।
उ०—तारै उमर जाणीयो, ढोलोजी हिवै माहरै सारू छै। पछै उमर आपरा सिरदारा नै सेंन करनै समझावण लागा।—ढो मा
२ शयन, विश्राम।
३ देखो 'सैण' (रू भे)
रू भे—सेंनी, सैंन।

सेंनप—देखो 'सैणप' (रू भे)

सेंनी—देखो 'सेन' (रू भे)
उ०—सेंनी मैं समझावै सतगुरु, साध सगत विन मुकति न सुपनै सतगुरु वोल सुणावै।—ऊ का

सेंभा-स पु—घोडो का एक वात रोग।

सेंमुख—देखो 'सनमुख' (रू भे)
उ०—इण कलि सेंमुख नवि मिलइ रे, वलि पहुचइ नही कागल मात रे। दूर थकी जै रग इसी परि रे, राखिस ए पटोलै भाति रे।
—वि कु

सेंव-स स्त्री—१ एक प्रसिद्ध फल।
उ०—नवरग, नारगी, आवा, अगूर, अजीर, जामुन, जामफळ, सीताफळ, केळा, दाडम, सेंव, इरटकाकडी, विदाम' ' ' ।
—फुलवाटी
२ उक्त फल का पेड।
रू भे—सेव, सेव।

सेंवज-स स्त्री—१ रवी की वह फसल जो वरसात के पानी से होती है, जिसमे सिचाई की आवश्यकता नही रहती है।
उ०—परगनै माहे इतरा गावा सेंवज गेहू हासलीक गावा हुवै।
—नैणसी
२ वह जमीन या खेत जिसमे विना सिचाई के वरसात के पानी से फसल होती है।
उ०—कोस ६ रूपारास मैं। सदा वसी रहै। सीव घणी, खेत सेंवज भला चिणा हुवै।—नैणसी
रू भे—सेवज, सैवज।

सेंस—१ देखो 'सहस्र' (रू भे)
उ०—सेठाणी वो ई हमेसा वाळो पडूत्तर दियो कै लुगाई रा सेंस धरम व्है, मिनख समझणी चावै तो नी समझ सकै।—फुलवाडी
२ देखो 'सेस' (रू भे)

सेंसनाग—देखो 'सेसनाग' (रू भे)

सेंसपा-स पु—सेना का एक वर्ग विशेप।
उ०—माहाराजा जसवतसिघ सात हजारी असवार तिण मै पाच हजार दोसपा सेंसपा, दोय हजार वावरदी २५८० आसामी ५ कासमखान वगेरै ' ' ।—नैणसी

सेंहतीर—देखो 'सहतीर' (रू भे)

से-वि [स सह] सव, समस्त।
उ०—१ राजा 'गाजी' सारिखा, से वड्डा सिरदार। दखणी मार मनाविया, मार कहीजै सार।—गु रू व
उ०—२ से नर आपै थानै घ्यावता वारी जाऊ जाकी थै पूरी आस आज अजमलजी रै छावो कलम घोकस्या।—लो गी
उ०—३ खळ धारा सिगळाई खूटा, तु सा वाद कियो से त्रुटा। करनळ मात निमो किनियाणी, तू जोरावर दइता जाणी।
—पी ग्र
सर्व—१ वे, वह।
उ०—१ राम नाम नही चेतीयो, आलस करि करि अग। हरीया से रीता रह्या, सूरा कूकर सग।—अनुभववाणी
उ०—२ घ्यायो तोनै घ्यान धरि, आराह्यो जग ईस। त्या पायो वैकुठपुर, से जीता जगदीस।—पी ग्र
उ०—३ साई तू वड्डा धणी, तुझ न वड्डा कोय। तू जिन्ना सिर हाथ दै, से जग वड्डा होय।—ह र.
उ०—४ आखटिया डवर हुई, नयण गमाया रोय। से साजण परदेस मइ, रह्या विडाणा होय।—ढो मा
२ जो।
उ०—जनहरीया सरवर सवै, ठाम ठाम भरपूर। जाह पायो ता परम सुख, दुखी रह्या से दूर।—अनुभववाणी
विभक्ति—१ तृतीया और पचमी की विभक्ति जो नीचे लिखे अर्थो मे प्रयुक्त होती है—
१ द्वारा, मार्फत।
२ अपेक्षा मे।
३ आरभ से।
४ पर।
५ को।
२ करण और अपादानकारक का चिन्ह।
स पु—१ शेप। (एका)

४ सिर पर धारण करने का आभूषण।
५ सिर पर धारण की जाने वाली पुष्पमाला।
६ श्रेष्ठतावाचक शब्द।
७ संगीत मे ध्रुव या स्थायी पद का एक भेद।
[स शेखर] ८ लौंग।
९ आर्यागीति या खधाण (स्कधक) का एक भेद विशेष।
(पिं प्र)
१० ठगण की पाच मात्राओ के पाचवे भेद का नाम, ।।ऽ।।
(डिं को, र ज प्र)
११ छप्पय छन्द का ६६ वा भेद जिसमे ५ गुरु, १४२ लघु कुल १४७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती है। (र ज प्र)

सेखरापीडयोजन–सं स्त्री —स्त्रियो की चौसठ कलाओ के अन्तर्गत एक कला।

सेखसद्दी–स पु —एक पीर जो मुसलमान स्त्रियो के उपास्य है और कभी-कभी भूत की तरह उनके सिर पर आते है।

सेखसली—देखो 'सेखचिल्ली' (रू भे)
उ०—१ साफल्य स्वप्न सपति समान, पानी मथन मैं व्रत प्रमान। चाचल्य चित्त सिद्वात चूक, सब सेखसली कै है सलूक।—ऊ का
उ०—२ सेखसली सरखा हुवै, मावडिया रै मीत। पोप। वाई प्रगट व्है, नवी चलावै नीत।—वा दा

सेखासाय, सेखसायी–स पु [स शेष+शायी] १ श्रीकृष्ण। (अ मा)
२ विष्णु।

सेखा–स पु —१ दो भगण या छ गुरु का वर्णवृत विशेष।
२ देखो 'सेखावत'।

सेखाअवतार, सेखाअवतारी–स पु [स शेषावतार] दसरथ सुत लक्ष्मण जो शेष का अवतार माने जाते हैं। (ना मा)
रू भे —सेखावतार।

सेखाक्षर–स पु [स शेषाक्षर] परब्रह्म, ईश्वर।
उ०—नमामी नखेसा विलख लय सेसाक्षर नमो। नमो सरवग्यात्मा परम परमात्मा वर नमो।—ऊ का

सेखाटी, सेखावटी–स स्त्री —जयपुर डिविजन के अन्तर्गत एक भू प्रदेश जहा पहले शेखावत क्षत्रियो का राज्य था। (शेखावाटी)
उ०—कागज नै वाचना ही भडेच ऊठि जाजै। सेखाटी देस मैं विचारि फौज ल्याजै।—शि व
रू. भे —सेखावाटी।

सेखावत–स पु —कछवाहा क्षत्रियो की एक शाखा तथा इस शाखा का व्यक्ति।
उ०—१ वरसिंघ आवेर री गादी वैठो जिणरा राजावत। नरसिंघ रा नरूका। वाला रो मोकळ मोकळ रै सेखो, सेखा रा सेखावत।
—वा दा ख्यात
उ०—२ 'अभै' ताम पूछै वड रावत, सूरवीर कूरम सेखावत।
—सू प्र
उ०—३ सुज कत व्रत अमरा सुपुरि, चौग्रोडी हरि उच्चरै। छत्रपती सनेह 'चद्र' छडी, सेखावत व्रत सभरै।—रा रू
२ भाटी वश की शाखा विशेष।
उ०—अरु तीजो वाघैजी री रायमल वाळो। ऐ सेखैजीरा वेटा री औलाद सेखावत भाटी पूगळिया।—द दा
रू भे —सेखावत।

सेखावतार—देखो 'सेखाअवतार' (रू भे.)

सेखावत्त—देखो 'सेखावत' (रू भे)
उ०—चित वूनै चहुवाण, भाळ वूनै भटियाणी। तूवरि सेखावत्त रीझ चावोडी राणी।—रा रू

सेखावाटी—देखो 'सेखावटी' (रू भे)

सेखी–स स्त्री [तु शेखी] १ अहकार, घमड, गर्व, हेकडी, अकड।
उ०—१ पण तौ ई सेठजी मैं व्ही नामी। लखणा जैडी वीतगी। अकल री तौ जाणै अपची इज व्हियोडी। जबरी सेखी निकळी।
—फुलवाडी
उ०—२ नी मिळी जितै राजाजी री ई कित्ती मोटी भरम हौ, म्हारा मन मैं। मिळिया तौ जबरी सेखी निकळी।—फुलवाडी
२ अहकार भरी वात, डीग।
उ०—माता रुधिर पिता वीरज नो जीवा, दीनो प्रथम तू आहार। भूल गयो जनम्या पछै जीवा, सेखी करै अपार।—जयवाणी
३ झूठी शान शौकत।
४ तारीफ, वडाई।
क्रि प्र —दिखाणी, निकळणी, वगारणी, मारणी।

सेखीवाज—वि — १ अहकारी, घमडी, अभिमानी।
२ शेखी वगारने वाला, डीग मारने वाला।

सेखू–स पु —वादशाह।
उ०—प्रगट कोट गढपाड, माही धरा पलटजै, सुणै सेखू तणो उवर सीधो। जान कर परणवा जावता जैतहत, 'करण' तै माळवो फतै कीधो।—महाराणा करणसिंह रो गीत

सेखो–स पु —पीली चोच और सफेद रंग का एक प्रकार का मासाहारी पक्षी विशेष।
उ०—रज्ज भम्या डावर रगत, दमगळ दोम्या दाव। डुवकी लै उण डावरा, सेखा ल्हा सुरखाव।—रैवतसिह भाटी

सेगार—देखो 'सागार' (रू भे)

सेडे–क्रि वि —१ एक तरफ, किनारे, एक ओर, परे।
२ अलग, दूर।
३ एकान्त मे।

सेडो–स पु [फा सरहद] १ सीमा, हद।
उ०—पण वापजी, चुगलखोरा री काई सेडो। पावडै-पावडै

सेकावीजणौ, सेकावीजवौ—कर्म वा० ।

सेकावियोटौ—देखो 'सेकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री सेकावियोडी)

सेकिम-स पु [स सेकिम] १ मूली ।

२ सलजम ।

उ०—कै उद्धत सग्रहि कलाप । हठि दत निकारै, सुडादड खड सेरि, ग्रहि रूप उतारै । सेकिम मालाकार सोभ, अतिजोर उपारै, आथोर घुम्मैं अचेत, कपि ज्यौं द्रुमकारैं ।—व भा

सेकियोटौ-भू का कृ—१ पास मे अग्नि जला कर गर्मी पहुचाया हुआ, किसी पात्र म गर्म पानी डालकर गर्मी पहुचाया हुआ, ताप दिया हुआ, तपाया हुआ, गर्म किया हुआ २ आच पर रखा हुआ, पकाया हुआ, भुना हुआ ३ दग्ध किया हुआ, जलाया हुआ ।

(स्त्री सेकियोडी)

सेकिळगर—देखो 'सिकळीगर' (रू भे)

सेक्रेटरी-स पु [अ] १ सचिव, अमात्य ।

२ मुन्शी, कारींदा ।

३ वर्तमान समय मे किसी राज्य के सचिवालय या विभाग का प्रशासनिक अधिकारी, शासन-सचिव ।

सेक्रेटरियेट-स पु—सचिवालय ।

सेख-स पु [अ शेख] १ मुहम्मद साहब के वशजो की उपाधि ।

२ मुसलमानो का एक वर्ग ।

उ०—१ सोवा आद जोधपुर सोजत, च्यारू तरफ रहे चक्राकित । सेख रहै भड मेड़ समाहे, नूरअली जैतारण माहे ।—रा रू

उ०—२ जादम भाण पठाण जुमल्ला । सैद रहीम सेख सादुल्ला ।

—सू प्र

३ उक्त वर्ग का मुसलमान ।

उ०—मत्रा दळ मूगळ सैयद सेख, वर्ण ग्रह बाज कबूतर वेख । सरा अप्रमाण पठाण सहारि, लिया कर सेल नरा ललकारि ।

—मे म

३ सरदार, अध्यक्ष, नायक ।

उ०—१ सेख मैण आगै अरज, केरळनाथ करत । आवण नह दीजै अठै, गूजरनै वळवत ।—बा दा

उ०—२ हरवळ पठाण तरियल हलाय, बदसाह तणा सडदा बुलाय । सूरमा सेख अति वळ समद, बावरी बगाळी तबल-बध ।

—वि स

४ मुसलमान धर्मोपदेशक, पीर, मुसलमान फकीर ।

उ०—१ जिदा होय जिद नही जाणी, उलटा नाद विद नही आणी । फकर जलाली सेख कहाया, राम रहीमा दूरि रहाया ।

—अनुभववाणी

उ०—२ सोइ जोगी सोइ जगमा, सोइ सूफी सोइ सेख । सोइ सन्यासी सेवडा, दादू एक अलेख ।—दादूवाणी

उ०—३ जोगी जगम सेवडे, बौद्ध सन्यासी सेख । षट् दरसन दादू राम बिन, सबै कपट के भेख ।—दादूवाणी

५ बडा-बूढा, वृद्ध, बुजुर्ग ।

६ कुल का नायक ।

७ प्रतिष्ठित या श्रेष्ठ व्यक्ति ।

८ नामर्द, शिखडी ।

उ०—आगै कुबत्री एक, तौ जेही हूनौ विपट । साप्रत कीनौ सेख, नाच नचायौ नागवी ।—पा प्र.

स स्त्री—९ आग की लपट, अग्निशिखा ।

१० देखो 'सेस' (रू भे)

उ०—१ हुई दौड हैमरा, नरा ऊथरा करारा । सेख ज्वाळ सल्लळी, कना सिव चवत्र विकारा ।—रा रू

उ०—२ सेख सळळसला । नाग नव्वै कुळा । प्रव्वता प्रज्जळा । टक टळा टळा ।—गु रू व

उ०—३ सीय वाम अग मुख अग्र सेख । बजरग पाय सेवत विसेख ।—र ज प्र

उ०—४ पूछै अन कवि छद पढि, गिण जिण मत्त प्रमाण । वटै स गुर कह गुरु घटै, सेख रहै लघु जाण ।—र ज प्र

उ०—५ यहा विवेक उहा मोहदळ, सेत बुहारचा देख । ऐ मारै कै वै मारिलै, सचर रहै न सेख ।—ह पु वा

सेखइकाल-स पु—चातुर्मास के उपरान्त का काल ।

उ०—जे नव कल्पी नवि करै रे हा, उद्यत मुदित विहार । मास दिवस ऊपरि रहइ रे हा, सेखइकाल अपार ।—वि कु

२ शैशवकाल, बाल्यकाल ।

सेखचिल्ली-स पु—१ झूठ-मूठ बडे बडे मसूबे बाधने वाला व्यक्ति ।

२ एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके विषय मे बहुत सी हसाने वाली कहानिया प्रचलित है ।

रू भे—सेखसली ।

सेखनाग—देखो 'सेसनाग' (रू भे)

उ०—धड हडै सात पयाळ धूजे, सेखनाग धडक्क ए । विन भार दाढ बाराह सडकै, कोम कध कडक्क ए ।—गु रू व

सेखज्वाळ, सेखज्वाळा-स स्त्री [स शेष+ज्वाला] शेषनाग के मुह से निकलने वाला वह फुत्कार जो आग की लपट के समान होती है ।

उ०—जोधै 'किसन' तणौ 'गजोधर' सेखज्वाळ सम आयौ समहर । 'जूझारोत' 'फतौ' तिण जामळ, ज्यौं विप्र कोप पवन पेरै जळ ।

—रा रू

सेखर-स पु [स शेखर] १ शिखर, चोटी, शृग ।

२ माथा, मस्तक, सिर ।

३ मुकुट, कीरीट ।

उ०—जाट रजपूत वाणीया वसै, सेजो नही, सेवज चिणा हुवै ।
—नैणसी

२ स्रोत, उद्गम ।

३ भूमिगत जल-प्रवाह ।

रू भे —सेझौ, सैझौ ।

सेज्जातरदोख–स पु [स शय्यान्तरदोष] जिसकी आज्ञा लेकर मकान मे उतरे, उसके घर का आहार लेने पर लगने वाला दोष । (जैन)

सेज्जा—देखो सेज' (रू भे)

उ०—देव सेज्जा सिहासण जाणौ रे, ज्योत ऊगा दह दिस भाणौ रे ।—जयवाणी

सेज्जासण–स पु [स शय्यासन] शय्या का आसन ।

सेज्जा, सेझ—१ देखो 'सेज' (रू भे)

उ०—१ हे सखी म्हारै बिना एकलौ हीज रण मैं सूतौ है पण सेझ री रीत नही छोडी छै।—वी स टी

उ०—२ विरह सौ फाटत हृदय मेरौ, दुख धनै री होहि । यह माह मास उलास धरि कै, सेझ कौ सुख जोहि ।—वि कु

उ०—३ सावण की लूवा आवै छै । भीजता साजै घरा नू जावै छै । आपका रेहवास में आय पना सेझ की त्यारी कराई । अगर चनण री ढोलणी कसाई ।—पना

२ देखो 'सहज' (रू भे)

सेझ—१ देखो 'सेज' (रू भे.)

उ०—भीतर सरस विछाइता, सेझा अधिक अनूप । नानाविध सू वण रही, कवण वखाणै रूप ।—गज-उद्धार

२ देखो 'सहज' (रू भे)

सेझखानौ—देखो 'सेजखानौ' (रू भे)

उ०—सेझखाना रा ढोली नु-मोहोर १, वेस १ खबर देण आवै तिण नु ऊल गुडुव नु मोहोर १ वेस १ ।—मारवाड री ख्यात

सेझडली, सेझडी—देखो 'सेज' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ मुख नीसासा मूकती, नयणै नीर प्रवाह । सूळी सिरखी सेझडी, तौ विण जाणौ नाह ।—ढो मा

उ०—२ ब्रह्म विदेही वाल्हा, नीयारौ नाहि । एक अखडी रम रहचा, सुनि सेझडीया माहि ।—अनुभववाणी

सेझण–स स्त्री —तलाश, खोज, शोध ।

सेझरी—देखो 'सेज' (अल्पा, रू भे)

उ०—आसि पासि सब सखी सहेली, चाबत पान तबोळी । सेझरीयां सुख राम विलासा, अमल कटोरा घोळी ।—अनुभववाणी

सेझवट–स स्त्री —शय्या, विस्तर, विछावन ।

उ०—उणि भाति री गरम ठौड माहे ऊची सोड तलाई सेझवट नकिया घणू ऊजळा गरकाव मदरा परानै रू सू भरिआ धका घणा ऊजळी गरकाव विछात कीजै छै ।—रा सा स

रू भे —सेजवट ।

सेझवाळौ, सेझवालौ—देखो 'सेजवाळौ' (रू भे)

उ०—१ अठै पाणी ऊपर सोनगरी री पिण सेझवाळौ आण ऊभौ राखियौ छै ।—नैणसी

उ०—२ तिण हीज वेळा आपरा कडा, मोती, सिरपाव दीवा, नै अमल री गोटी एक, मिठाई री करडियौ, दारू री वतक, पाना सू भरनै पानदान दीवी और सेझवाळौ जोताय आदमी च्यार साथै देनै विदा कीयौ ।—जेतसी ऊदावत री वात

सेझौ—देखो 'सेजौ' (रू भे)

उ०—१ जह तन मन का मूळ है, उपजै ओकार । अनहद सेझा सब्द का, आतम करै विचार ।—दादूवाणी

उ०—२ दादू अनुभव काटै रोग कौ, अनहद उपजै आइ । सेझे का जळ निरमळा, पीवै रुचि ल्यौलाइ ।—दादूवाणी

उ०—३ मावणू बडा रेला रा खेत । सेवज चिणा हुवै । ऊनाळी सिगळी सीव मैं सेझौ । पाणी हाथै ७ तथा ८ घणौ मीठौ ।
—नैणसी

उ०—४ ज्यु जळ सेझै सिंध का, थाका थाह न कोय । हरीया सिवरन सहज का, निसदिन घट मैं होय ।—अनुभववाणी

सेटौ–स पु —वह उत्तम नस्ल का साड जिसे अच्छी नस्ल पैदा करने के लिये विशेष रूप से पाला-पोषा गया हो ।

सेट्ठि—देखो 'स्रेस्ठी' (रू भे)

सेठ—स पु [स श्रेष्ठिन्] (स्त्री सेठाणी) १ प्रतिष्ठित एव श्रेष्ठ व्यक्ति ।

२ धनी व्यक्ति ।

३ व्यापारी, महाजन, साहूकार, वणिक ।

उ०—१ सेठ हाथ जोड नै उरवाणै पगा दौडचा सामी आया । ठाकरसा नै सेठ अण्ता दुमना निगै आया ।—फुलवाडी

उ०—२ लिया दिया विना कैडाई मोटा सेठ रै सरै कोनी ।
—फुलवाडी

उ०—३ पण धनवती सेठ साहूकारा रा तौ उण परवाना पछै हौसला इज गुम व्हेगा हा ।—फुलवाडी

४ वणिक या व्यापारी की उपाधि ।

५ दलाल ।

६ व्यापरियो की पचायत का मुखिया ।

रू भे – सेट, सेठि ।

अल्पा,—सेठडौ, सेठियौ, सेठौ ।

सेठडौ—देखो 'सेठ' (अल्पा, रू भे)

सेठाणी–स स्त्री — १ किसी व्यापारी या वणिक की स्त्री ।

उ०—सूनी ढाणी मै सेठाणी सोनी, रैगी विणियाणी पाणी नै गेती ।— ऊ का

२ धनी औरत ।

चुगलखोर भरया। एक री इबकीस मेळ राजाजी नै भिटावैला।

—फुलवाड़ी

२ किनारा, छोर, सरहद।

रू भे—सेडौ, सेढी, सैंडौ, सैंहडी।

सेचरलूण—स पु [स सौवर्चल+लवण] एक प्रकार का नमक।

सेज—स स्त्री [स शय्या, प्रा सज्जा] १ वह चारपाई या खाट जिस पर बिस्तर बिछा कर सोने योग्य बनाया गया हो, शय्या, पलग, सेज। (अ मा)

उ०—१ एक बार तौ द्वारै आय कान दै आहाट सुणै छै। बहुरि सेज छै, तठै पधारै छै।—वेलि टी

उ०—२ सूर बाहर चढै चारणा सुरहरी, इतै जम जितै गिरनार आबू। विहड खळ खीचिया तणा दळ बिभाडै, पोढियौ सेज रण भोम 'पाबू'।—बा दा

उ०—३ रामा अभिरामा कामातुर रोवै, हडमल हुइदगी सेजा मैं सोवै।—ऊ का

२ बिस्तर, बिछावन।

उ०—चौकी रूप पिलग चढाए, विमळ पुहप तरण सेजा बिछाए।

—सू प्र

रू भे—सेजड सेज्जा, सेज्या, सैज सैझ।

अल्पा,—सेजडली, सेजडी, सेजरी, सेभरी।

मह,—सेजडौ।

३ देखो 'सहज' (रू भे)

उ०—च्यार ही वरण सुण जो चतुर, पात पुकारै पेज मैं। आ लाज सरम कुळरी अवै, साध गमावै सेज मैं।—ऊ का

सेजड—१ देखो 'सहज' (रू भे)

२ देखो 'सेज' (रू भे)

सेजखानौ—स पु—वह कक्ष जहाँ शय्या लगी हो, शयनकक्ष।

रू भे—सेझखानौ।

सेजडली, सेजडी, सेजडी—देखो 'सेज' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ गिरधर आवणा हे, ऊदाबाई सेजडली सवार। आवण री विरिया भई जी, अब महला ढोल्यौ ढार।—मीरा

उ०—२ चदमुखी री चूदडी, पिय पिचरगी पाग। सेजडली नै सुण सखी, रह्यौ आज रग लाग।—अग्यात

उ०—३ सीहीअ समाणी सेजडी रे, चदन जेहवी भार। दावानल जिम दीवडउ रे, कमल जिस्या करवाल।—हीराणद सूरि

उ०—४ सूता हूता सेजडी, साथ न सूझइ नाथ। सहस-गुणउ सुख ऊपजइ, जिम जिम भीडउ बाथ।—मा का प्र

सेजडौ—स पु—१ विश्राम स्थल।

उ०—भूल कस्ट निज, करै भलाई, सत दरोगी सेजडौ। हेरत करत हेजडौ पछी, जिगरी जूनौ सेजडौ।—रामदेव

२ देखो 'सेज' (अल्पा, रू भे)

सेजपथ, सेजपथ—देखो 'सहजपथ' (रू भे)

सेजपाळ—स पु [स शय्या पालक] शयनागार का पहरेदार।

सेजबध—स पु [स शय्या+बन्धन] शय्या का बन्धन।

उ०—आगै जायनै देखै तौ ऊदीजी पोढिया छै। ताहरा सेळै जायनै हथियारा री बाघरचा वाढी। सेजबध वाढिया। अस्त्री री चोटी वाढी।—नैणसी

सेजबरदार—स पु—शय्या बिछाने वाला कर्मचारी।

उ०—आळै री कूची मोहरण सेजबरदार रन्है छै।

—पलक दरियाव री वात

रू भे—सेजब्रदार।

सेजरी—देखो 'सेज' (अल्पा, रू भे)

उ०—विसर गया माहरा नेहडौ ल्याय, नैणा रा तीर चलाय। रसराज साबरा सैण सेजरिया मैं, नई नई रमक बनाय।

—रसीलैराज री गीत

सेजरीओवरी—स स्त्री—महाराणा साहब के आराम करने के पलग आदि तैयार करवाने का महकमा। (वी वि)

सेजलदेवी—स स्त्री—एक देवी विशेष।

उ०—परमार सवरसेन राजा री बेटी सेजळदेवी हुती। सोजत मैं सेजळ रै नामै सोजत सहर वसियौ हौ।—बा दा ख्यात

सेजवट—देखो 'सेझवट' (रू भे)

सेजवाळौ, सेजवालौ—स पु—१ पर्दानशीन स्त्रियो के बैठने की वह गाडी, रथ या वग्घी जिस पर बिस्तर लगाकर तकियो के सहारे चारो ओर ऊपर से पर्दे से बद कर दिया जाता है।

उ०—१ आगै मारग मैं तळाव आयौ। ताहरा वडेरा ठाकुर हुता सु बोलिया—जु सिनान करौ, सेवा-पूजा कर असल करौ। सेजवाळौ एकै आतरै छोडावौ।—नैणसी

उ०—२ नेमिकुवर वर नीद बिराजै, यादव यानी केसरीया। असीय सहस सेजवाला साथै मगल सुख गावै गोरीया।—वि कु

उ०—३ ताहरा राव जेसौ फोज करि सेजवाळा जोरा रा नै फुल नु लेनै हालीयौ।—राणा फताखी री वात

२ पालकी, डोली।

३ पर्दानशीन स्त्रियो के रथ या गाडी पर वस्त्र डाल कर किया जाने वाला पर्दा।

रू भे—सिजवाळौ, सेझवाळौ, सेझवालौ।

सेजब्रदार—देखो 'सेजबरदार' (रू भे)

उ०—'बहादर' इसर सेजब्रदार। सजा रिण सेना सू वीहन सार।

—सू प्र

सेजौ—स पु—हृदय।

उ०—दादू निरन्तर पिव पाइया, तीन लोक भरपूर। सब सेजौं साई बसै, लोक बतावै दूर।—दादूबाणी

सेजौ—स पु [स स्रोत] १ कुए का जल-स्रोत।

२ देखो 'सैणी' (रू भे)

सेणियौ—स पु—एक गुरु एक लघु इस क्रम से ११ वर्ण का एक वर्णिक वृत्त विशेष। (पि प्र)

सेणी—१ देखो 'सैणी' (रू भे)

२ देखो 'स्रेणी' (रू भे)

सेणीयौ—देखो 'सेणियौ' (रू भे)

सेणौ—वि [स सज्ञान] (स्त्री सेणी) १ समझदार, योग्य, व्यवहार-कुशल।

उ०—१ तरै नीवै इणनू तेड नै यू हीज पूछियौ। यू हीज काळ कियौ। पछै वेगौ ही राव सूजौ जोधपुर सेणौ सौ ठाकुर हुवौ।
—राव जोधा रै बेटा री वात

उ०—२ सारी वाता नीकी सोहै, रघुवर जस सहजग यस सारै। भाळी रूडी खोजै सेणा, भव समि निगम ब्रह्म रवि भाखै।
—र ज प्र

२ सीधा-सादा, सरल, विनम्र।

उ०—होवै सुविनीत सेणा रे, धारै गुरु वेणा रे। जैसी ढळती छाया रे, राखै प्रीत सवाया रे।—जयवाणी

३ अनुभवी, दूरदर्शी, विवेकशील।

४ वयस्क, बालिग।

उ०—नगराज काम आयौ। धरती छूटी। बेटा वालक हुता। तठा माउ अरज करै उठै ढाणी दै रहै। उण हीज देस माहे। कतराक दीहाडा गिए सेणा हुआ।—कल्याणसिंह वाढेल री वात

५ चालाक, धूर्त, कपटी।

६ सज्जन, शरीफ।

७ बुद्धीमान, चतुर, दक्ष।

रू भे—सैणौ, सैणौ।

सेणौ, सेवौ—१ देखो 'सेवणौ, सेववौ' (रू भे)

२ देखो 'सहणौ, सहवौ' (रू भे)

सेतवर—देखो 'स्वेतावर' (रू भे)

उ०—ब्राह्मण सेतंवर वळै जोगी जगम जाणि। दान सन्यासी सोफिया, खट दरसण वाखाणि।—रा सा स

सेतवरी—देखो 'स्वेतावरी (रू भे)

सेतवळ—स पु—पानी, जल। (ना डि को)

सेत—क्रि वि—प्रत्यक्ष।

उ०—दिअौ सेत वरदान तू परमेसरि प्रसताव। राजानारी रम-कथा विधि कहि वात वणाव।—रा सा स

वि—सहित, साथ।

स पु—१ आकाश, नभ। (ना डि को)

२ देखो 'सहृद' (रू भे)

३ देखो सेतुबध' (रू भे)

उ०—हेम सेत मझार न को हिव अत्थ न रावह। इत्थ चवत्थी राव हुवत जपियै सरोवह।—नैणसी

४ देखो 'सेतु' (रू भे)

उ०—वाराधिप सेता वधण रौ, कुळ राखस जूथ निकदण रौ। दिल तू 'किसना' जग वदण रौ, नहचौ रख कोसदळ नदण रौ।
—र ज प्र

५ देखो 'स्वेत' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ मैलौ अत अदतार मन, रुच जस तणी रहै न। तन काळौ विसहर तणौ, कचुक सेत सहै न।—वा दा

उ०—२ क्षणु राता क्षणु पीअला, क्षणु नीला क्षणु सेत। चोली चरणा पालटइ, हेडउ पूछी हेत।—मा का प्र

उ०—३ तन घण घटा तराज, धरर धर वाज निळक धन। पत दत वक पाज, वर्ण सोभाज सेत व्रन।—सू प्र

उ०—४ चौरग खग असुर विहडिया चतुरै, करी न ऐसी दुजै अचड कही। वासग सेत लाल रग वेरियौ, नागणि तन ओळखै नही।—चतुरा राठौड री गीत

उ०—५ प्यारी तेरै रूप की, उपमा कही न जाय। कवळ सेत तडता चपळ, चद मकळक कहाय।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—६ साजन ऐसी प्रीत कर, निस अर चदै हेत। चदै विन निस सावळी, निस विन चदौ सेत।—अग्यात

उ०—७ ज्यारी जीभ न ऊपडै, सेणा माही सेत। वारा कर किम ऊपडै, खळा घिरचा बिच खेत।—वा दा

उ०—८ अनि आया असपति आवाहनि, मुअवै सुयग हुआ दळ सग। रहियौ रेण खत्री ध्रम राणौ, सेत उरग कळौवर 'सग'।
—गोरधन वोगसौ

उ०—९ नमौ स्रा सेत सवै गुण सेस, नवै-कुळ-नाग पयाळ नरेस।
—ह र

उ०—१० उतग चग भीत चीत, सड सड सदर। कळौ सपेत जाणि सेत, धार धम्मलागिर।—गु रू व

रू भे—सैत, सैद।

सेतअस, सतअसव, सेतअस्व—स पु [स श्वेताश्व] अर्जुन। (अ मा, ह ना मा)

सेतकरण—स पु [स श्वेत+किरण] चन्द्रमा। (डि को)

सेतकुळी—स पु [स श्वेत+कुलीन] सर्पो के आठ कुलो मे 'सेत' कुल का सर्प जो सफेद होता है।

सेतखानौ—स पु [फा सेहतखान] मल त्याग करने का स्थान, शौचालय, पाखाना।

उ०—१ सेतखाना रै माय, कोई भगी कहै बतलाय। आवौ पग धरौ ए, मोसू वाता करौ ऐ।—जयवाणी

उ०—२ घडी एक नू जागिया वडारण लोटौ रखियौ आप ऊठ सेतखानै गया।—कुवरसी साखला री वारता

रू भे—सहतखानौ, सेतिखानौ, सेथखानौ, सेदखानौ, सेहतखानौ,

सेठाई, सेठायी–स स्त्री —१ धनाढ्यता, मालदारी ।

उ०—मिनख हसता मुळकता राज अर ठकराई छोड दी, सेठाया छोडावण खातर छापा पडण ढूका, मागडी धणिया म् छूट गिया पण बापडै कमाई री मूडीजणी अजै ताई नी छूटी ।—चितराम

२ सेठ होने की अवस्था, भाव या स्थिति ।

सेठि—देखो 'सेठ' (रू भे)

उ०—तिणि पुरि निवसइ सेठि, धनावह धरमी नइ धनवत । पदमसिरि तसु घरणी भणीइ, महजिइ अति गुणवत ।

—हीराणद सूरि

सेठियौ—देखो 'सेठ' (अल्पा, रू भे)

सेठौ—देखो 'सेठ' (अल्पा, रू भे)

उ०—नर-नारी वादण गया, आयौ कारत्तिक सेठौ जी । जिनवर वदना करी, बेठौ छै जिनवर भेटी जी ।—जयवाणी

सेड–वि [स शौण्ड]१ मदोन्मत्त, मस्त, नशे मे चूर ।

२ निपुण, दक्ष ।

३ अभिमानी, घमडी ।

४ शराबी, मद्यप ।

५ देखो 'सेढ' (रू भे)

उ०—१ सवार मिझ्या नानी-मा रै जोडै बैठ दुवारी सीखती घणकरी सेडा वारै हो ढोळ देती—फुलवाडी

सेडळ, सेडल–स स्त्री —चेचक रोग की अधिष्ठात्री देवी विशेष, शीतला-माता, शीतला-देवी ।

सेडळमाइ, सेडळमाता, सेडळमाय–स स्त्री —१ शीतला-माता ।

उ०—जै तळै वाळौ खेलनी जी, खेलत चड गयी ताप । वला ल्यू सेडळमाता ए ।—लो गी

२ उक्त माता के नाम से या उक्त माता के लिये गाया जाने वाला एक लोक-गीत ।

सेडाउ, सेडाऊ, सेडावू—देखो 'सेढावू' (रू भे)

उ०—१ घटी रै उपरात पाछी चेतौ बावडिआ उणनै अेडौ लखायौ जाणै उणरा छळी मन मै सेडाऊ दूध घुळग्यौ ।—फुलवाडी

उ०—२ दात जाणै सेडावू दूध रा इज भाग । हमणा मुळकणा रै समचै दूध झरतौ ।—फुलवाडी

सेडी–स स्त्री [स चेटि, प्रा चेडि] सखी, सहेली ।

सेडौ–स पु —१ प्राय जुकाम के कारण नाक मे निकलने वाला एक गाढा द्रव पदार्थ या मल जो श्लेष्मा मिश्रित होता है, रेट ।

उ०—पडियौ सेडौ पेच, भवन भेडौ भणणावै । भीता ही सेडै भरी, गरट माख्या गणणावै । आवै देख ऊबाक, थूक रा थेचा थाया । उतरया सूत असूत, मूत रेला नह माया ।—ऊ का

२ देखो 'सेढौ' (रू भे)

रू भे —सेढौ ।

सेढ–स स्त्री —१ चौपाया मादा जानवरो के स्थनो मे निकलने वाली दूध की धारा ।

उ०—मायड झेरावै सेढा रै सारू । वेरै वैढाकर हेरै हथवारू ।

—ऊ का

२ स्तन ।

उ०—खोळी खीला री डेढा ढिग ढीली, पोली सेढा री लीला विण पीळी । खडती सुवाडी बाडी विन खटके, मरती मोछडिया पूछडिया पटकै ।—ऊ का

रू भे —सेड ।

सेढकढियोडो, सेढकढियौ–वि —तुरन्त का दूहा हुआ, धारोष्ण । (दूध)

सेढाउ, सेढाऊ, सेढाव्–वि —तुरन्त दूहा हुआ, ताजा निकाला हुआ, धारोष्ण । (दूध)

स पु —ताजा निकाला हुआ दूध जो फेनिल होता है और अत्यन्त पौष्टिक माना जाता है ।

रू भे—सेडाउ, सेडाऊ, सेडावू ।

सेढितव–स पु —श्रेणितप । (जैन)

सेढी–स स्त्री —सीढी, जीना । (अ मा)

सेढूगारी–स स्त्री [स सेध+कारी] तत्र-मत्र या तात्रिक विद्याओ से दूध, दूही या घी चुराने वाली स्त्री ।

सेढे, सेढै–क्रि वि —१ समीप, निकट, पास, नजदीक ।

उ०—१ इत्यादिक अपसुकन तजी, गयौ सनमुख ताम । सीमा सेढै ऊतरचौ, वीरमेन उल्लास ।—वि कु

उ०—२ धोवौ हेक भाई काठिया माहे मोरवी रै सेढै गयौ, उण रै केड रा मोरवी हळोद्र विचै छै ।—नैणसी

२ पार्श्व मे ।

सेढौ—१ देखो 'सेडौ' (रू भे)

२ देखो 'सेडौ' (रू भे)

सेण–स स्त्री —१ औजारो की धार को घिसकर तेज करने का पत्थर या काच का टुकडा, सिल्ली ।

२ देखो 'सैण' (रू भे)

उ०—ज्यारी जीभ न ऊपडै, सेणा माही सेत । वाग कर किम ऊपडै, गळा घिरचा विच गेत ।—वा दा

३ देखो 'स्येन' (रू भे)

सेणतियौ–स पु —१ वह कुआ जिसमे से सिंचाई के लिए रात-दिन पानी निकाला जाता रहा हो ।

२ उक्त प्रकार के कुऐ मे निरन्तर पानी निकालने वाला व्यक्ति ।

सेणप—देखो 'सैणप' (रू भे)

सेणावइ—देखो 'सेनापति' (रू भे) (जैन)

सेणि—१ देखो 'स्रेणि' (रू भे)

उ०—वजत घाव जूसणं, निहाव उट्ठनेणिय । सग्राम पड कैरवै कि, खड वाग सेणिय ।—रा रू

सूदरी, मन विंध्यौ ससार ।—अनुभववाणी

उ०—२ जाणि बूझि हरि कू तजै, औरा सेती चित्त । हरीया जम दरगाह मै, मार पडेसी नित्त ।—अनुभववाणी

५ द्वारा, मार्फत, जरिये ।

उ०—१ वैर वध्यो हिज बुरौ, अधिक उपद्रौ व्है आगै । वध्यौ बुरौ वासदै, लाय जिण सेती लागै ।—ध व. ग्र

उ०—२ प्रथम गरु सिव जानि, नाव पारवती दीयी । ता सेती नारद, नाव तन मतै लीयी । दै नारद उपदेस, नाव सिनकादिक जान्यौ, गुर तै जनक विदेह, पीव उर माहि पिछान्यौ ।

—अनुभववाणी

६ मे ।

उ०—कर सेती माळा फिरै, मन विखीया कै माहि । हरीया कूड'र कपट मैं, पलै पडै कुछि नाहि ।—अनुभववाणी

७ सग, साथ, निकट ।

उ०—१ रहता सेती रचीयै, क्या वहता सु काम । भाव जहा हसि वोलीयै, वै भावत वेकाम ।—अनुभववाणी

उ०—२ ताहरा माया सेती जु मिल्यौ तै जीवात्मा (अर) माया थकी जु भिन रह्यौ तै परमात्मा ।—द वि

उ०—३ हरीया चलता सु चलै, थिर सेतो थिर होय । काया वधी करम सु, छाया लिपै न कोय ।—अनुभववाणी

८ पर ।

उ०—हरीया अदर ऊपजै, ऐसा निकसै वैन । मिळीया सेतौ मन कहे, यौ दुरजन यौ सेंन ।—अनुभववाणी

९ नीचे ।

उ०—राम नाम नही चेतीयौ, करी विडाणी आस । जनहरीया घर गोरिवै, सरिक्या सेती वास ।—अनुभववाणी

रू भे—सेथी ।

सेतीर, से'तीर—देखो 'सहतीर' ।

सेतु—स पु [स] १ किसी नदी, जलाशय, नहर या समुद्र के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पानी के ऊपर वनाया हुआ पुल, किसी प्रकार का रास्ता जिसके द्वारा एक किनारे से दूसरे किनारे आसानी से आया-जाया जा सके ।

२ पानी के वहाव को रोकने के लिये तथा पानी को एकत्र कर रखने के लिये वनाया हुआ वाध, रोक, रुकावट ।

३ घाटी, दर्रा ।

४ वधन, प्रतिवध ।

५ टीला ।

६ खेत की मेड ।

७ भू-सीमा, हद ।

८ सीमा, मर्यादा ।

९ किसी कार्य की कोई निर्धारित विधि, प्रणाली, नियम ।

१० ओंकार, प्रणव ।

रू भे—सेत, सेतु ।

सेतुक—स पु [स] १ पुल, सेतु ।

२ वाध ।

३ घाटी, दर्रा ।

सेतुज—देखो 'सेत्रुज' (रू भे)

उ०—सेतुज वदिअ तीरथराउ, गुरुया गणहग करउ पमाउ । वाग वाणि हुउ समरउ देवि, चिहु गति गमण कहउ सखेवि ।

—वस्तिग

सेतुवध—स पु [स] दक्षिणी भारत मे रामेश्वरम् के आगे लका की ओर समुद्र मे वना पथरीला मार्ग या पुल जिसके लिये ऐसा माना जाता है कि लका पर चढाई के समय श्रीरामचन्द्रजी ने इस पुल का निर्माण नल-नील नामक वानरो से करवाया था ।

२ रामेश्वर, महादेव ।

उ०—सेतुवध सिव नै भजा, परमेस्वरजी । ए भोळा भगवत ईस्वरजी । आप हळाहळ पी गया परमेस्वरजी गैरा नै अमरत पाय, ईस्वरजी ।—गी रा

३ द्वादश शिवलिंग मे से एक ।

४ ईश्वर, परमेश्वर । (ना मा)

५ पुल की वनावट ।

६ पुल वनाने की क्रिया या भाव ।

रू भे—सेत, सेतवद, सेतवध ।

सेतुवध, सेतुवधन—स पु [स] पुल वनाने का कार्य ।

सेतुवध-रामेसर, सेतुवध-रामेस्वर—स पु [स सेतुवध+रामेश्वर] भारत की दक्षिणी सीमा पर स्थित वह स्थान जहा शिव का विशाल मन्दिर है । इस शिव मन्दिर की स्थापना श्रीरामचन्द्रजी ने लका पर चढाई करते समय की थी और इसके आगे समुद्र मे पुल का निर्माण करवाया था । यह हिन्दुओ का प्रमुख तीर्थ स्थान है ।

उ०—जगनाथ गगासागर है, साखी गुपाळ व्रजवासी । सेतुवध-रामेस्वर ईस्वर, मूळ वटी सुरजा सी ।—मीरा

रू भे—सेतवद-रामेसर, सेतवध-रामेस, सेतवध-रामेसर, सेतवध-रामेस्वर ।

सेतूत—देखो 'सहतूत' (रू भे)

सेतौ—वि—सहित, पूर्वक ।

उ०—१ खळा भाजतौ माण कैवाण साहै खवा । सुहाणै आपरै माण सेतौ ।—द दा

उ०—२ लखै सूळ सिंदूर री झोक लेतौ, रुज्यौ मात सीहाथ री नोक सेतौ ।—मे म

सैंदखानौ।

सेततरग—स स्त्री [स श्वेत+तरग] गगा नदी। (अ मा)

सेतदती—स पु [स श्वेत+दतिन्] सफेद हाथी।

सेतद्युत—स पु [स श्वेत+द्युति] चन्द्रमा। (डि को)

सेतधज—स पु [स श्वेत+ध्वज] १ श्वेत ध्वजा।

२ जिसके रथ पर श्वेत ध्वजा हो।

सेतपिंग—स पु [स श्वेत+पिङ्ग] शेर, सिंह।

(अ मा, ह ना मा)

सेतबद—देखो 'सेतुबध' (रू भे)

सेतबद-रामेसर—देखो 'सेतुबध-रामेसर' (रू भे)

सेतबध—देखो 'सेतुबध' (रू भे) (ना मा)

उ०—१ कुकरण कनवज नइ कलहटी, मरहठ नइ मुलतारी। स्यछळ सेतबध नौ राजा, तैं मविलीया हकारी।

—रुकमणी मगळ

उ०—२ छाजा मेर स्रग रूप बाजा सपताल छतौ, पाजा सेतबध बाजा दुदभी प्रमाण। साजा सूर राजा जेण सकाजा आजरा सिंघ आजा ओप चाढ रूप राजा चहुवाण।

—राव वखतसिंघ चुवाण रौ गीत

सेतबध-रामेस, सेतबध-रामेसर, सेतबध-रामेस्वर—देखो 'सेतुबध रामेसर' (रू भे)

उ०—१ ककरण दामण मघरण काछ पचाळ निरतर, सेतबध-रामेस लगै नव दीपा सायर। झाडखड मेवाड खड गुज्जर वैरागर। बागड महियड सहित खेड पावट पारकर।—नैणसी

उ०—२ सेतबध रामेस्वर मुणीड, वानरि बाधी पाज। वरनइ आण तिहा जग माहरा, इसू अम्हारू गाज।—का दे प्र

सेतवळ—स पु—जल, पानी। (ना डि का)

सेतवाह—स पु [स श्वेत+वाहन] १ अर्जुन। (डि को)

२ चन्द्रमा। (डि को)

रू भे—सेतवाह।

सेतरग—स पु [स श्वेत+रग] सफेद रग, श्वेत रग।

उ०—दिसरण ऊथाळ 'जमराज' जिमडा दुरस, प्रकासै लाल झडा वरण पूर। रावता दिसरण सरणै सुजस सेतरग, मरस बाधी भुजा अभनमा 'सूर'।—महाराजा मानसिंहजी रौ गीत

सेतरगी—स स्त्री [स श्वेतरग+रा प्रा ई] कीर्ति, यश। (डि को)

सेतरुख—स पु [स श्वेत+वृक्ष] चन्दन का वृक्ष। (ह ना मा)

सेतळ—१ देखो 'सैतळ' (रू भे)

२ देखो 'सैंतळ' (रू भे)

सेतलै—स पु—श्वेत रग का घोडा।

उ०—१ प्राखिडिया पूछाडिसै, पिंडता सिंहि पिछाण। साहिब चढिसै सेतलै, हुइसै निगुरा हाणि।—पी ग्र

उ०—२ सत वरस तणै कजि आव वडा छत्त, ग्यान रही गति-वाळी ग्रामि। गिर भाखर वाळा गोसाई, सेतलै चढि प्रिथिमी'रा सामी।—पी ग्र

वि वि—ऐसा कहा जाता है कि कल्कि अवतार श्वेत घोडे पर सवारी करेगा।

रू भे—सेतिलौ।

सेतवाजौ—स पु—एक अद्भुत पदार्थ जो सिद्धि प्राप्त पुरुषों के पास मिलता है।

सेतवाह—देखो 'सेतवाह' (रू भे)

सेतावर—देखो 'स्वेतावर' (रू भे)

सेतावरी—स्वेतावरी' (रू भे)

सेतिखानौ—देखो 'सेतखानौ' (रू भे)

उ०—रात घडी चार रही तरै जगदेवजी नै जगाया। सेतिखानै गया। हाथ पग ऊजिळा करि, कुरळा करि दातण कीनौ।

—जगदेव पवार री वात

सेतिलौ—देखो 'सेतलौ' (रू भे)

उ०—प्रवाडा तणौ लेखौ किसौ प्रमेसर, नरिंदि घोडै सेतिलै निमै नर।—पी ग्र

सेती—क्रि वि—१ से।

उ०—१ सिवदान 'भीमाजळ' 'करनेस' आद। राह नेती रखवाळै माह सेती वाद।—रा रू

उ०—२ वीदौ गुहिलोत भारमल ग्रामाइच त्याह नू कहियौ न्यू करौ ज्यू दळपतकुवर सेती वेढि हुवै।—द वि

उ०—३ जनहरीया निसदिन भजौ, रसना सेती राम। नाव विना नर निफल है, ज्यु वसती विन गाम।—अनुभववाणी

२ सहित, पूर्वक।

उ०—१ इण भाति महीना च्यार नौ सुख सेती विताइया।

—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ इण भाति घणी खरी करुणा सेती हाथ जोड नमस्कार कर आगा हालिया।—पलक दरियाव री वात

उ०—३ इण भानि प्रेम सेती कागज लिखनै वडारण सू कही जै इतर लगाय पछै खाम कर थैली रै माही घाल और प्रोहित नू दे देय।—कुवरसी साखला री वारता

३ को।

उ०—१ जै सतगुर सेती वदीयै, धरीयै हरि को ध्यान। हरीया जब तै पाईयै, परापरी को ग्यान।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया मारग अगम को, मो सेती गम नाहि। कहि कैसी विध पाईयै, चित गयौ ता माहि।—अनुभववाणी

उ०—४ चावड सेती भैसा चाडै, भलौ आपणौ चाहै। जुगमै जीव दया विन देख्या, साईकै नही राहै।—अनुभववाणी

४ लिये, वास्ते, प्रति।

उ०—१ हरीया सोई सूदरी, हरि सेती हितकार। ताहि वद् नही

निरत की चढ़चा पावडी, सतगुरु **सेन** बताई। **सेन** समझ कै साहब पाया, सौ साहब अपरमपारा, हरिराम वेरागी बोलै, हे सब मैं सबसू न्यारा।—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ साथिया नू कोट मैं पडए सेन री करै छै।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ देखो 'सैए' (रू भे)

उ०—चैन कौ कुचैन मैं गमावनौं चह्यौ। सेन साथ नैन कौ गमावनौं रह्यौ।—ऊ का

६ देखो 'स्येन' (रू भे)

सेनप—स पु [स सेनापति] १ सेनापति। (डि को)

२ देखो 'सैएप' (रू भे)

सेनपत, सेनपति, सेनपती—देखो 'सेनापति' (रू भे)

उ०—वभए वजीर राजा विरद, भारथ ओडवि उभै भुअ। सुरताए खुरम दळ **सेनपति**, 'वींकम' खड विहड हुअ।—गु रू व

सेनसुर—देखो 'सुरसेना' (रू भे)

सेनाए, सेनांए—देखो 'सैनाए, सैनांए' (रू भे)

उ०—१ नीचै मतीरा रै वीजा जिसी छोटी दो आख्या। आख्या तौ काई, आख्या रा दो **सेनाए**।—फुलवाडी

उ०—२ निरभय नीसाएा सद **सेनाएा**। जन उमरेस जयदा है।

—ऊ का

२ देखो 'सैनाएी' (रू भे)

सेनाएी, सेनाएी—१ देखो 'सैनाएी' (रू भे)

२ देखो 'सैना'ए' (रू भे)

सेनाएू—देखो 'सैनाए' (रू भे)

उ०—वपु तौ म्यान समान वखाएू, सार सनान जीव **सेनाएू**।

—ऊ का

सेनानायक—देखो 'सेनानायक' (रू भे)

(अ मा, डि को, ना मा, ह ना मा)

सेनानी—देखो 'सेनानी' (रू भे) (ह ना मा)

सेनानीरथ—स पु यौ [स सेनानीरथ] १ मोर, मयूर। (अ मा)

२ सेनापति का रथ।

सेना—स. स्त्री [स] १ युद्ध के लिये प्रशिक्षित तथा शस्त्रास्त्र से सज्जित मनुष्यो का दल, समूह, फौज, वाहिनी, कटक।

(डि को)

उ०—**सेना** सितर हजार सू विचित्र अमित्र बळवान। कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वरखान।—रा रू

वि वि—प्राचीन समय मे भारतीय युद्ध कला मे इसके चार अग माने जाते थे—पदाति, अश्व, गज (हाथी), रथ। वर्तमान समय मे मुख्यत तीन प्रकार की सेना होती है—स्थल सेना, जल सेना, वायु सेना। इनके कई उपविभाग भी होते हैं।

२ सेना की अधिष्ठात्री देवी जो कार्तिकेय की पत्नी मानी जाती है।

३ जैनियो की एक देवी विशेष।

उ०—**सेना** मात कूखि मानस सर, राज हस लीला राजेसर।

—स कु

रू भे—सेन, सेन्या, सैना, सैन, सैनया, सैना, सैन्या।

सेनाउलि—स स्त्री [स सेना+अवलि] १ फौज की कतार, सेना की पक्ति।

२ सेना, फौज।

सेनाद, सेनादार—स पु—फौज का अफसर, सेनानायक, सेनापति।

उ०—मिळ रजी दहू दळा अप्रमाएा, जिए वार सेसट चौथी सुजाए। **सेनाद** हुवा जाव जस काज, अत हरख सूर कायर अकाज।—शि रू

सेनाधपत, सेनाधपति, सेनाधिप, सेनाधिपत, सेनाधिपति—स पु [स सेना+अधिपति] सेना का अधिपति, सेनापति।

उ०—१ सहू विलायत एक सथ, एकै इगळ ईस। 'पतौ' कमध **सेनाधपत**, आगळ फौज अधीस।—किसोरदान वारहठ

उ०—२ तरै राव गागै राठौड जैताजी नु कहनै कूपाजी नु रावजी वसाया। पछै वळै रावजी रै कूपोजी **सेनाधिपत** हुवा।

—राव मालदेव री वात

उ०—३ सहतैररि तावीन समप्पै, **सेनाधपति** सेन मझि थप्पै।

—गु रू व

सेनानायक—स पु [स] सेना का अधिकारी, सेनापति।

रू भे—सेनानायक।

सेनानी—स पु [स सेनानी] १ स्वामिकार्त्तिकेय। (ह ना मा)

२ सेनापति, सेनाध्यक्ष।

उ०—१ सामत सूरा सुहुड घए, हय गय सख्य न पार। **सेनानी** साहसिक भट, मत्रेश्वर सुविचार।—मा का प्र

उ०—२ ध्रस्टद्युमनु **सेनानी** कीउ, वीजउ कन्हडदल सामह्यउ। पवित्र भूमि सरसति नइ स्रोत्रि, दलु आवाठउ तिरिए कुरुखेत्रि।

—सालिभद्र सूरि

सेनानीरथ—स पु—मोर, मयूर। (अ मा)

सेनापत, सेनापति, सेनापती—स पु [स सेनापति] १ सेना का प्रधान अधिकारी, सेनाध्यक्ष, फौज का प्रमुख अफसर।

उ०—१ **सेनापति** दूजौ सगह, तडै पह तिए वार। विखम भडा लीधौ 'वीजौ' आयौ मत्री उदार।—सू प्र

उ०—२ लहै अगद दक्खए, माग लीधा, दवादस्स **सेनापती**, लार, दीधा।—सू प्र

२ सेना के किसी एक विभाग का अधिकारी।

३ शिव।

४ हिन्दी साहित्य का एक कवि।

रू भे—सेएावइ, सेनपत, सेनपति, सेनपती, सैनपति, सैनपती।

सेनापाल—स पु—सेनापति, सेनानायक।

सेत्तुजि, सेत्र ज—देखो 'सेत्रुज' (रू भे)

उ०—प्रह ऊठी नै नित प्रणमीजइ, तीरथ सेत्तुजि प्रमुख प्रधान। —स कु

सेत्र–स पु [स श्वेत, प्रा सेअ, अप सेत्त] १ श्वेत, सफेद।

उ०—कडि मणि मेहल नूपर, रूप रहावइ पाय। पहरणि सेत्र पटउलीय, कूलीय पान न माइ।—जयसेखरसूरि

२ देखो 'खेत'।

३ देखो 'खेत्र'।

सेत्रुज, सेत्रुजय, सेत्रुजि, सेत्रुजौ–स पु [स शत्रुजय] जैनियो का एक प्रमुख तीर्थ स्थान, शत्रुजय।

उ०—१ राजा मन आणदीयौ रे, रामति जीपै एह। सुणि पथी सेत्रुज नी रे, रामति जीपै जेह।—प च चौ

उ०—२ इति स्री सेत्रुजय स्तवन सपूरणम्।—वृ स्त

उ०—३ सी सेत्रुजि गिरि सिखर समोसरया, त्रेवीस तीरथकर नेमीअरिहत। आठ करम नउ अत करी नइ, सीधा मुनिवर कोडि अनत।—स कु

उ०—४ सेत्रुजा सिखरै मन लागौ, साहिबनी सूरति चित लागौ। —वि कु

उ०—५ तठा पछै कितरै हेक दिनै ऐ मोरठ नू गया। सेत्रूजा सू कोस ४ सीहोर गाव छै, तठै जाय रह्या छै।—नैणसी

रू भे—सेत्रुज, सेत्तुजि, सेत्रज, सैत्रुज, सैत्रुजौ।

सेथखानौ—देखो 'सेतखानौ' (रू भे)

सेथर–वि [स स्थिर] १ स्थिर, अचचल।

२ दृढ, मजबूत।

सेथी—देखो 'सेती' (रू भे)

सेद–क्रि वि—ठीक निकट।

उ०—वैसाख सुद ५ कानी लाखण कोहर री सेद तळाई डेरा हुवा। भा लालचद सीवाणा री साथ आदमी ८०० नै आयौ। —नैणसी

स पु—तरह, प्रकार।

उ०—जिका री मूडहथ मोहनाळ, हाथ भर नस, वड रै पान जिसा कान, ताजणा सेद पूछ, नाहरसा पजा। —रा सा स

सेदखानौ—देखो 'सेतखानौ' (रू भे)

उ०—स्रीमुख सिर्ड सेदखाना जिसौ, नाक झरै ज्यू नारदौ। भव जाण नरक भोगै जकानै, लानत दै ललकार दौ।—ऊ का

सेदज—देखो 'स्वेदज' (रू भे)

सेदेव, से'देव सं'देव—देखो 'सहदेव' (रू भे)

उ०—देवी कुति रै रूप तै करण कीधा, देवी सासत्रा रूप सेदेव सीधा।—देवि

सेध–स पु—१ काम, कार्य।

उ०—भडा दुवाहा वकडा, हुई सनाहा सत्थि। सेध निवाहा सूरमा, राहा वेध अरत्थि।—रा रू

२ सिद्धि।

उ०—आखै 'भीव' भडा आह्राडा, मोटी सेध खटी मेवाडा। सू जुध वध कमधा साथै, भिडिया जोड भला भारायै।—रा रू

सेधणौ, सेधवौ–क्रि स—कार्य साधना, कार्य सिद्ध करना, उद्देश्य पूर्ति करना।

उ०—करण निवेधी वेघडा, सेधी साम छळाह। अस तीरै साम्हा किया, फौरै सेल फळाह।—रा रू

सेधाळ–वि—कार्य सिद्धि करने वाला, यशस्वी।

उ०—वडो देवोत माणीगर हुवौ कवि राव, भाट लोगा नू घणा दान, मान दीन्हा, वडौ ही सेधाळ राजसधारी सिद्धिवत हुवौ। —कुवरसी साखला री वारता

सेधियोडौ–भू का कृ—कार्य सिद्धि किया हुआ, उद्देश्य पूर्ति किया हुआ।

(स्त्री सेधियोडी)

सेन–स पु [स] १ नाई जाति का एक भक्त। (भक्तमाळ)

उ०—सेना काज भयै हरि नाई, भगत आपनौ जानी। —अनुभववाणी

उ०—२ 'सेन' लागौ सत सेवा, भाव धर उर भूर। रूप धर कर सेन कौ हरि, करी दुविधा दूर।—भगतमाळ

२ बगाल का एक राजवश जिसने ११ वी से १५ वी शताब्दी तक राज्य किया था।

३ नाई जाति।

४ प्राचीन भारतीय व्यक्तियो के नाम के पीछे लगने वाला एक शब्द।

५ दिगम्बर जैन साधुओ का एक भेद।

६ बगाल की वैद्य जाति का खिताब।

७ तन, शरीर।

८ जीवन।

९ शयन, बिछौना, शय्या।

वि—१ जिसका कोई प्रभु हो, सनाथ।

२ आश्रित, अधीन।

३ देखो 'सेना' (रू भे) (अ मा, डि को, ह ना मा)

उ०—पारस प्रासाद सेन सपेखै, जाणि मयक कि जळहरी। मेरु पाखती नखित्र माळा, ध्रूमाळा सकर धरी।—वेलि

उ०—२ चढै सेन चतुरग, मपत किरि साइर फट्टा। एक लाख असवार, आवि मेवाड निहट्टा।—गु रू व

उ०—३ साथ निहाव थयौ नीसाणै, जग सामद्र मथाणै। मुग्गळ तुग चढै ससमाथा, सेन हडव्वड एकण साथा।—रा रू

४ देखो 'सैन' (रू भे)

उ०—१ कचन एक काच मैं देख्या, है दीपक देह माई। सुरत

उ०—२ ज सेय त समायरै ।—जैन

सेयर—म पु [अ शेयर] हिस्सा, भाग, अश ।

सेयर-होल्डर—म पु [अ] हिस्सेदार, भागीदार ।

सेयली—देखो 'सेही' (अल्पा, रू भे) (डि को)

सेयवख—स पु —धर्म । (अ मा)

सेर—स पु [म सेर] १ सोलह छटाँक या अस्सी तोले का एक मान या तौल ।

उ०—ऋपग मतोख करै नही, सौ मग जाणै सेर । कर टाकी लै काटही, सुपना माहि सुमेर ।—वा दा

२ उपर्युक्त मान का तौल, वाट या पात्र ।

उ०—कीरै सारै—माया तेरा तीन नाव, फरसियौ, फरसौ अर फरसराम । लारला दिन भूलग्यौ । सेर री हाडी मैं सवासेर ऊरीजग्यौ । फाटण लागग्यौ ।—दसदोख

३ किसी वस्तु की उक्त मान के बराबर की मात्रा ।

उ०—१ उहा तौ विचार काम कीयौ छै, जी आधी बेटी नु सेर धान ऊ देसी । मौ म्हारै सिर माथै । आ किमी वात छै ! चालौ, डेरै ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ जद साधा उपदेस दियौ—सेर धान खाणौ पडै तिण रै अरथै इसा पाप करै । जद कमाइ बोल्यौ—मोनै तौ भगवान कसाइ रै घरै मेल्यौ ह सौ मोनै दोख नही ।—भि द्र

[फा शे'र] (स्त्री सेरणी, सेरनी) ४ सिंघ, शेर, व्याघ्र ।

उ०—१ दगै तोफा वहै गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जौ लार सकै सूता सेर नै जगाय । भूरजाळ वाकडौ वीटीयौ दूजा गढा भौळी, लोहा जाळ धमै केहौ नसैणी लगाय ।—वा दा

उ०—२ दुहाडत सेर हल्यारण धीठ, देव्या कर चक्र चल्या अगादीठ ।—मे म

उ०—३ सिरी घटियाळ अरोहित सेर । मन्या मुक्ताहळ माळ सुमेर ।—मे म

५ उर्दू या फारसी कविता के दो चरण या दो चरण का कोई छन्द ।

वि —वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा ।

उ०—गोपाळदास गरुअत मेर, पर घड विभाड पक्खरह सेर । 'सुदर' सुतन्न सात्रवा सल्ल, मरजाद महा नेठाह-मल्ल ।

—गु रू ब

सेरगीर—स पु [स शेरगीर] एक प्रकार का हाथी विशेष ।

सेरडौ—स पु —एक प्रकार का कर विशेष ।

उ०—कणवारीया री लागै । पेटीयौ आटौ घीरत पावै । भोग वण १) सेरडा, ताली १ दुगोणी ६, वटै जाई दुगोणी ३, लवायचै रा दु० २) छूट नवै थान री दु० वोरा २) छूटा ।—नैणसी

सेरण—स स्त्री —राजस्थान व मध्यप्रदेश के पहाडी हिस्सो मे पाई जाने वाली एक घास विशेष ।

सेरणी—१ देखो 'सीरणी' (रू भे)

२ देखो 'सेर' (रू भे)

सेरणौ—देखो 'सैरीणौ' (रू भे)

सेरदहां, सेरदा—स स्त्री [फा] १ पुराने ढग की एक बन्दूक विशेष ।

२ एक प्रकार की तोप ।

उ०—हणू हाक चामड फनैलस्कर काळिक्का, झिमुवाण सेरदा कडक वीजळी किलक्का ।—रा रू

वि —शेर के समान मुख वाला ।

सेरपजौ—स पु —१ सिंह का पजा ।

२ सिंह के पजे के आकार का एक अस्त्र, बघनखा ।

सेरबच्चौ—स पु —१ शेर का बच्चा, सिंह शावक ।

२ वीर पुरुष ।

३ एक प्रकार की छोटी बन्दूक जिसकी एक ही गोली से शेर का शिकार हो जाता था ।

उ०—सेरबच्चा करावीणी खजर कटार, सिर ही असील तेग बाहै असवार ।—शि व

सेरबबर—स पु —केसरीसिंह, बब्बरशेर ।

सेरवानी—स स्त्री —एक प्रकार का कोट जो घुटनो तक लम्बा एव नीचा होता है, चोगा, अगा ।

सेरावौ—देखो 'सीरावौ' (रू भे)

सेराह, सेराहौ—स पु [स सेराह] दूध के समान सफेद रग का घोडा । (डि को)

उ०—१ रोझौ निलौ गगाजळ, हसला नैण काजळ । अस सेराहा अऊव, खैग रोहला हावूब ।—गु रू व

उ०—२ पाणीपथा । ऊराहा । सेराहा । कालीकठा । किहाडा । करडा । करडागर । नीलडा ।—का दे प्र

रू भे —सेरुराह, सेरूराह ।

सेरि—देखो 'सेरी' (रू भे)

सेरियौ—स पु —खेतो की मेढ के बीच का तग रास्ता ।

उ०—१ चामडियास रै मारग करभावा रै सेरियौ बीजी तरफ रामासणी री मीठवाणियौ छै । सागवौ मुहता री टीवडी अठै छै ।—सोजत रै मडल री वात

उ०—२ पैं'ली पनजी चव्हाण री बेरौ आवैला अर पछ अरणा वाळौ सेरियौ । लावा सेरिया रे दोनू कानी कोरा अरणा इज अरणा ।—अमरचूनडी

रू भे —सेरीयौ, सैरियौ ।

सेरी—स स्त्री —१ वीथिका, गली, तग रास्ता । (अ मा)

उ०—सिंधु परइ सउ जोयणा खिविया वीजुळियाह । ढोलउ नरवर सेरिया, धण पूगळ गळियाह ।—ढो मा

२ मार्ग, रास्ता ।

उ०—१ महाराणी नै ओडौ देवण री सगळी सेरिया थै थारै

सेनावेध—स पु—सुभट, वीर, योद्धा। (डिं को)

सेनामुख—स पु—सेना का अग्र भाग, हरावल।

सेनाय—देखो 'सहनाई' (रू भे)

सेनायची—देखो 'सहनायची' (रू भे)

सेनावास—स पु—सैन्य-शिविर, छावनी, सेना का पडाव।

सेनियौ—स. पु—सिपाही, सैनिक।

सेनी—स पु—सहदेव का एक नाम जो विराट के यहाँ अज्ञातवास करते सयय रक्खा गया था।

सेनेस—स पु [स सेना+ईश] १ सेना का मालिक।
२ सेनापति।

सेन्या—देखो 'सेना' (रू भे)
उ०—१ भड मेलै दुरजणसल भाटी, असुरा सेन्या रहै उचाटी।
—रा रू
उ०—२ हरनाथ 'भीमग' रु भीम का अवतार, जवन की सेन्या कुरु वस ज्या लिगार।—रा रू
उ०—३ स्रीमाहादेवीजी रो अग्या सु ककर सव सकर हुवा सु प्रीत रौ इक भाखर मैं सारा लिगाकार रा दरसण हुवा, तरै सेन्या सारी नै दरसण हुवा।—नैणसी

सेपटा—स पु—चौहान राजपूत वश की एक शाखा।
उ०—चहुवाणा री चोईस साख लिखतै—हाडी १, खीची २ मोनगरो ३, बानी ४, सोभादार ५, चोमालहण ६, गोरवाळ ७, भदोरिया ८, मीरवाण ९, वाकुर १०, चील ११, थेथा १२, दूदळोत १३, सेपटा १४, गगावा —वा दा स्यात

सेपटौ—स पु—चौहानो की 'सेपटा' शाखा का व्यक्ति।
उ०—ताहरा मेलो सेपटो भाद्राजण रै काठै रहै।—नैणसी
रू भे—सेभटी।

सेफ—स स्त्री—एक प्रकार की तलवार।
उ०—सू तरवारया किण भातरी छै? सीरोही री नीपनी, वेग्रा आगळा वाढ झेग्यिा थका जनैव मगरेव पुडतकाळ सेफ विलायती भुजरी विराणपुरी हवसानी फिरगी।—रा सा स

सेव—स स्त्री—१ शीत लहर।
उ०—मेघवाळा रौ वास, ऊचावै माथै घर अर राज रै कोटवाळ री तिरवारी मैं दिवली चम 'यौ है। उघाड वारणा सू सेव आवै मारजा मेळा भेळा हुवै है।—दसदोख
२ देखो 'सेव' (रू भे)

सेवक—देखो 'सेवक' (रू भे)
उ०—जुडै आय सव्वामण्या रायजादी, दरस्सै कई सेवका माय दादी।—मे म

सेवळौ—स पु—रास्ते का खर्च, सबल।
उ०—वरस दीहा को सेवळौ, घी घणौ खाज्यौ पगाहपराण।
—वी दे

सेंवू—देखो 'सेंव' (रू भे)
उ०—वेदानै दाखा वेदानै अनार। चिलकौचै वेह ओर सेवू का विस्तार। कपूर-गरभ केळी का जूथ केळू की झूब।—सू प्र

सेभटउ—देखो 'सेपटौ' (रू भे)
उ०—जइत देवडउ लखण सेभटउ, लूणकरण वोलाव्या। साल्हु सोभतु वळवत राउत, लसकर भणी चलाव्या।—का दे प्र

सेमती—स पु [स] सफेद गुलाब।

सेमळ, सेमल—स पु—एक बहुत बडा वृक्ष जिसके लाल-लाल फूल लगते हैं और फल मे केवल रूई होती है, गूदा नही होता।
उ०—दादू जतन जतन कर राखियै, द्रढ गह आतमा मूळ। दूजा द्रस्टि न देखियै, सवही सेमल फूल।—दादूवाणी
२ उक्त पेड का फल जिसमे केवल रूई होती है गूदा नही। इसमे चोच मारने वाले पक्षी का परिश्रम व्यर्थ जाता है क्योकि उसके हाथ कुछ नही लगता।
उ०—जब लग प्राण पिंड है नीका, तव लग ताहि जनि भूलै। यहु ससार सेमल कै सुख ज्यौं, तापर तू जनि फूलै।—दादूवाणी
रू भे—सैवळ, सैमळ, सैमल।

सेमान—देखो 'सामान' (रू भे)
उ०—ओर गढ मैं चोकेळाव मैं वेरो भाखर मैं मुरगा सु खोदाय करायौ नै ऊपर अरठ मडायौ नै दोय कोठार वाग मैं सेमान रा कराया।—मारवाड की ख्यात

सेमुडे, सेमुडै—देखो 'सेमूडै' (रू भे)

सेमुदौ—देखो 'सेमूदौ' (रू भे)
उ०—इण परिग्रह रै कारणै ए, वाढी डोढी खाय कै। कोडक इसडौ मिलेए, सेमुदा ही गिल जाय कै।—जयवाणी

सेमूडे, सेमूडै—क्रि वि—१ प्रत्यक्ष, सामने, मुह के आगे।
२ रुजु, रूबरू।
३ आमने-सामने।
४ मौजूदगी मे, उपस्थित रहते हुए।
रू भे—सेमुडे, सेमुडै।

सेमूदौ—वि [स समुदित] (स्त्री सेमूदी) समस्त, सम्पूर्ण, समूचा, सबका, सब।
उ०—हाल नी तौ म्है मरियौ अर नी म्हारी कारीगरी मरी। पूतळी नै सेमूदी गाळ ऐडी पाछी वणावू कै जाणै फूकोजी परतख मूडै वोलण लागा।—फुलवाडी
रू भे—सेमुदौ, सैमुदौ, सैमूदौ, सैंमूदौ।

सेमूळौ—वि [स समूल] (स्त्री सेमूळी) १ मूल या जड सहित।
२ सम्पूर्ण, सब, समस्त।

सेय, सेय—देखो 'स्रेय' (रू भे)
उ०—१ छौरू छत्रपतिवा तणा, दोळा सेय दुवाह। न्रप सगाह दीठौ 'अजै', साह तणौ दरगाह।—रा. रू

की टहनियाँ काटते है ।

उ०—हैदाळा भड हेक मथ, खीच खीच खसकाय । सूर ग्वाळ लै सेलडी, चील्हा 'ग्रजा' चराय ।—रैवतसिंह भाटी

रू भे —सहलडी ।

सेलडौ—स पु —१ स्त्रियो की वेणी मे गूथा जाने वाला एक रौप्य ग्राभूषण । (पुष्करणा ब्राह्मण)

२ देखो 'सेल' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ एरण ठमक्कौ म्है सुण्यौ, रे लोहा घडै लुहार । सूरा मारू सेलडा, भूडण सारू भाल ।—लो गी

उ०—२ भळक रह्या छै तीखा सेलडा । ग्रमा कमधजियो रमै छै सिकार ।—लो गी

सेलणौ, सेलबौ—क्रि स —१ चुभाना, घुसेडना ।

उ०—सुणै हाक साम्हा गजा दत सेलै । खगा भाटि थाटा विचै डाग्गि खेलै ।—वचनिका

२ भाले, बरछे या तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार करना ।

३ कष्ट देना, त्रास देना, पीडा देना ।

४ देखो 'सालणौ, सालबौ' (रू भे)

सेलणहार, हारो (हारी), सेलणियौ—वि० ।

सेलिग्रोडौ, सेलियोडौ, सेल्योडौ—भू० का० कृ० ।

सेलीजणौ, सेलीजबौ—कर्म वा० ।

सहलणौ, सहलबौ—रू० भे० ।

सेलपी—स स्त्री —वनस्पति विशेष ।

उ०—गळी गीवळ तणस त्रवठ, करजनइ कैळास । विदाम वण कड सेलपी, फिरसागणि पळास ।—रुकमणी मगळ

सेळभेळ, सेळमेळ—स पु —१ मिश्रण ।

२ गिल-मिल ।

सेलवण—स स्त्री —एक प्रकार का क्षुप विशेष जिसकी पतली टहनियो से टोकरिया एव टाटे वनाये जाते हैं ।

सेलवणी—देखो 'सेवलणी' (रू भे) (ह ना मा)

सेलसुत—देखो 'सैलसुत' (रू भे) (ह ना मा)

सेलहत्थ, सेलहथ—वि —१ योद्धा, वीर ।

२ जिसके हाथ मे भाला हो ।

उ०—१ भालागीरी भेद मै, बळ साह वखाणै । सेलहथा 'तखनेस' सुत, हिंदु तुरकाणै । राजा रावळ राव राण, जग सारौ जाणै, ग्राज 'प्रताप' इळ वड वार वखाणै ।—मोडजी ग्रासियौ

उ०—२ बारहठ ईसर । १ सेलहथ वाळो । १ मागळियौ किसनौ । १ धाधू खेतसी । · ।—नैणसी

रू भे —सेल्हथ ।

सेलाणी—स स्त्री —१ कोल्हू मे पिले हुऐ ग्रधकचरे तिल, कच्चर ।

२ देखो 'सेनाणी' (रू भे)

उ०—१ सिधायौ सूरज घरती छोड, देग्यौ सेलाणौ मैं साभ । कारै ग्राथूण घणी ग्रवेर, लुकावै पीळा टुकिया माभ ।—ग्रज्ञात

उ०—२ वा गळियारा मैं काणची छोरी नै रमावती ही । विछडता भाई नै काई सेलाणी देवै । उणरै पागती ग्रासुवा रै सिवाय हो ई काई ।—फुलवाडी

सेला—वि —शीतल, ठण्डा ।

उ०—१ तन सू तन मन सू मन मेळा, ग्रतरि ~ भेला रे । ग्रौर सकळ सुग्व विम भरि लागत, तुम लागत हो सेला रे ।

—ह पु. वा

उ०—२ मन ही न् मन मेळा, वैनही सू वैन सेला । निज घर नैन समाए हो ।—ह पु वा

सेलाक—वि —भाला धारण करने वाला योद्धा, वीर ।

उ०—हाक डाक जोगणी नवाक थुठ हाक हुवै, ऐराक भचाक छाक सेलाक ऊनाळ । जाक सजै मुराक वैडाक तै वेटाक जादा, केण माथै ऊपडै धडाक प्रळै काळ ।—पहाडखा ग्राढौ

सेलार, सेलारौ—स पु —पहाडी घोडा ।

उ०—१ मुळताणी घर मन वसी, सुहगा नइ सेलार । हिरणाखी हसि नइ कहइ, ग्राणउ हेठि तुखार ।—ढो मा.

उ०—२ कटक्क काधार, समूह सेलार । पयाण करत, मेल्हाण दियत ।—गु रू व

२ भाला, वरछा ।

उ०—१ वार विकरार सिरदार विध वाहियौ, समर भर भार घर भार सूरै । सार सेलार ऊग्रार भभार सर, पार चौधार कर पार पूरै ।—गायौ माद्

उ०—२ 'दुरग' वडाई दाग्ववै भाटक्कै कोमीस । ग्रचळ लडेवा ग्रूठियौ, ग्रवर लागौ सीम । नवरग टोप ग्रहादरा, ग्रर हज्जारी तार, राव पधारौ गढ मिरै खळ मिळिया सेलार ।—ग्र वचनिका

३ डिंगल का एक मात्रिक छन्द (गीत) जिसके प्रत्येक पद मे सोलह-सोलह मात्राऍ होती हैं ग्रौर ग्रन्तिम पद मे विधि ग्रलकार होता है । मतान्तर मे रघुवर जस प्रकाश के ग्रनुसार प्रथम चरण मे सोलह, द्वितीय चरण मे चौदह तथा तृतीय चरण मे पुन सोलह ग्रौर चतुर्थ चरण मे चौदह मात्राऍ होती हैं । प्रथम ग्रौर तृतीय चरण मे मगणान्त तुकात होता है तथा द्वितीय ग्रौर चतुर्थ चरण मे यगणान्त तुकात होता है ।

४ तीन सगण ग्रौर ग्रन्त मे लघु वर्ण का एक छन्द विशेष ।

उ०—सगण तीनि लघु ग्रति सभि, तेर मात्र प्रसतार । सहि बत्रीस ग्रनै सातसौ, रूप छद सेलार ।—ल पि

५ प्रत्येक चरण मे चौदह मात्राग्रो का एक छन्द ।

उ०—चवदह मत्ता चरण दुव, इण विध च्यारै ग्रख्य । सौ सेलारौ सेस कहि, देव सेस इम दख्य ।—पि सि

सेलारसी—स पु —एक भक्त का नाम ।

उ०—साध विजैसी सारखा, सेलारसी सरीख । पदवन रै लागा

हाथा ई वद करदी ही, अबै यै चावी तौ ई वै खुल नी सकै ।
—फुलवाडी

उ०—२ समरथ सौ सेरी समभाइ नै, कर अण कर्ता होइ। घट घट व्यापक पूर सब, रहै निरन्तर सोइ ।—दादूवाणी

३ वह छोटा गुप्त मार्ग जो प्राय छुपकर भागने के काम आता है ।

उ०—१ मुनि-घातक ब्राह्मण जिको, डरप्यौ मन मैं अपार। सेरी कानी नीकल्यौ, जावै नगरी वार ।—जयवाणी

उ०—२ उठी सैदजादा तगा थाट आया, सपेखै अठी जोस मारू मचाया। भणकै नफेरी सुरै तूर भेरी, सुणै कातुरा आतुरा लीध सेरी ।—रा रू

४ किसी वाड या दीवार को थोडी सी तोडकर वनाया जाने वाला छोटा रास्ता जो मुख्य दरवाजे से भिन्न होता है, छोटा द्वार ।

५ छेद, सूराख, दरार ।

उ०—१ ताहरा किंवाड री सेरी मा हाथ घात केवरण लागी ।
—पलक दरियाव री वात

उ०—२ गोमती ओरै मैं वडती-ही पण वाता सुणन लागगी। जाणियौ माय कोई वीजौ मिनख हुवैला। किंवाडा री सेरी माय सू जोवै तौ आगै कोई न काई ।—वरसगाठ

६ मुख्यद्वार के वगल मे वना छोटा फाटक जो मवेशियो को भीतर आने से रोकने व आवागमन की सुविधा के लिये वनाया जाता है ।

७ स्थिति ।

उ०—ससहर सूरिज वस नी, सेरी मरली जाणि । हू नाचसि त्रिवटी नीराइ, लज्जा लेस न आणी ।—मा का प्र

८ दो अगो के वीच का अवकाश, अतर ।

उ०—सू ऊठ किण भातरा छै ? थापवी तळी रा, सुपवीनळी रा, नाळेरा गोडा रा, वीलफळ डरकीरा, हथाळियै ईडर रा, समा सेरी वगना रा ।—रा सा स

रू भे —सेरि, सैरि, सैरी ।

सेरीणौ—स पु —प्राचीन कालीन एक प्रकार का कर ।

उ०—वोपारी वार था वसत आणै तिण नू सेरीणौ मण धान घीरत दुम्त सिगळी वसत लागै । नै वीछाहीत नु दाण नै विकरी लागै ।—नैणसी

रू भे – सेरणौ ।

सेरीयौ—देखो 'सेरियौ' (रू भे) (सि सेडौ)

सेरुराह, सेटराह—देखो 'सेराह' (रू भे) (शा हो)

सेरे'क—वि —एक सेर के लगभग, करीव एक सेर ।

सेरौ—स पु —१ खेत का किनारा ।

२ सूराख ।

३ वाड या दीवार के वीच वनाया छोटा मार्ग ।

सेलग—स पु —रहट के खडे चक्र के गट्टे के किनारे पर लगी हुई लकडी या पत्थर जो उनमे खाद आदि गिरने से रोकता है ।

क्रि वि —१ लगातार, एक साथ, निरतर ।

२ शृ खलावद्ध ।

३ देखो 'सलग्न' (रू भे)

रू भे —सेलग, सैलग ।

सेल—स पु [स शल , प्रा सेल] १ भाला, वरछा, वरछो, साग ।
(ना डि को)

उ०—१ सेल घमोडा किम सह्या, किम सहिया गज दत । कठिण पयोहर लागता कसमसतौ तू कत ।—हा झा

उ०—२ रण आमागळ रोडि, जोडि अछरा गठजोडा । सेल घमोडा मार, मार मुगळा दळ मोडा ।—मे म

उ०—३ मच धाम घूम सर सेल मार । पड आम आस आठू पुकार । दिन लाख घटै हैंवर दरक्क, जवना न पटै निस दिवस जक्क ।—रा रू

[अ शेल] २ तोप का वह गोला जिसमे गोलिया आदि भरी रहती है ।

३ वज्र ।

४ छिद्र, सूराख, विल ।

५ दर्द, टीस, पीडा ।

६ देखो 'सैर' (रू भे)

उ०—गगेव खीची काग भडा किंवाड वैरिया जडा ऊपाड, जिण की सेल कहू वणाय, सुणिया मन प्रमन थाय ।—रा सा स

७ देखो 'सैर' (१) (रू भे)

रू भे—सेल्ह, सैल ।

अल्पा —सेलडौ ।

सेलक, सेलक्क—स पु —भाला, वरछा ।

उ० –१ धमक सेलक ववक धकधक । तदि उवकि पत्र चडकि त्रपतक ।—सू प्र

उ०—२ विजक्क वळक्क जुरक्क जरक्क । सेलक्क धमक्क भचक्क सहक्क ।—सू प्र

सेलखडी—स स्त्री —१ खरियामिट्टी ।

२ एक प्रकार का मुलायम व चिकना पत्थर जो वरतन वनाने के काम आता है ।

सेलग—देखो 'सेलग' (रू भे)

सेलडी—स स्त्री —१ ईख, गन्ना ।

उ०—वीजी लागत घणी छै । पाणी घटै तद माहै वेरी दोय सौ च्यार सौ आखारी सी हुवै छै । ऊपर छोतरा, गेहू, तरकारी हुवै । पाणी मीठौ । विणा फागुणिया-मूग, जवार, सेलडी सोह हुवै ।
—नैणसी

२ वास के लम्बे डडे पर लगा हुआ लोह का हासिया जिससे वृक्ष

लेह ।' ताहरा एक सेलो लै दीयो । छलो हाथ लीयै केरडा चारै ।
—लाखा फूलाणी री वात

रू भे—सेल्हौ, सेवलौ, सेहलौ ।

सेल्लि स स्त्री—प्रस्तरपट्टिका, सल्ली ।

सेल्ह—देखो 'सेल' (रू भे)

उ०—जमडड्ढा तरवारिया, सेल्ह बदूका सत्थ । आगै धूप उखेविया, पाछै झालीहत्थ ।—रा रू

सेल्हथ—देखो 'सेल्लहथ' (रू भे)

उ०—कठालीया किन्या । भटार भरीया । आलोनि आत्मानद आव्या । मत्र मुहाडि हुई । सल्हथ सीमामरण हुई । गोत्र दव्यानद नैवेद्य नीपना ।—का दे प्र

सेल्हा—स स्त्री—चावलो की एक जाति जो सफेद न होकर कुछ मैले रग के होते है । इनके भी कई प्रकार होते है ।

सेल्हारस—स स्त्री—१ केसर या चन्दन ।

उ०—अगै सेल्हारस अगर, पूगै सुर्ग कपूर । अरिहत पूजा आठमी, करम आठ कर दूर ।—ध व ग्र

सेल्ही—देखो 'सेली' (रू भे)

सेल्हौ—१ देखो 'सेलो' (रू भे)

उ०—१ अर वागै नू बाफना सेल्हा अव्वल तरह रा लेती आव ।
—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ पाघा उतार माथै सेरहा बाधिया छै ।
—सूरै खीवै काधळोत री वात

२ देखो 'सेळो' (रू भे)

सेवति, सेवती, सेवत्री—देखो 'सेवती' (रू भे)

उ०—१ फबै मोगरी सेवती जाय फूली, अगी पति सेवति भूली अभूली । लता माधुरी मालती फूल लेखै, दमा आप भूलै तपी रूप देखै ।—रा रू

उ०—२ कणियर तरु करणि सेवत्री कूजा, जाती सोवन गुलाल जत्र । किरि परिवार सकळ पहिरायौ, वरणि वरणि ईए वसत्र ।—वेलि

उ०—३ कणेर व्रक्ष करणी सेवत्री । कूजा जाय । सोवन जाइ । गुलाल । जु फूलि रह्या छै । सु वनसपती कै पुत्र प्रसव हुआ । सु मानो रग रग कै वसत्रै आपणो परिवार पहिरायो छै । वरण २ का वसत्र पहिराया छै ।—वेलि टी

उ०—४ सेवत्री सवेसरा सूकडि सरकाडि साय । सीमतक सोहड भला, सरव सदाफळ खाय ।—मा का प्र

सेव—स स्त्री [स सेविका] १ एक प्रकार का नमकीन खाद्य पदार्थ, जो बेसन मे नमक, मिर्च व ससाले मिलाकर, आटे की तरह गूदकर, झारे के माध्यम से तेल मे तल कर लबे डोरो के रूप मे तैयार की जाती है ।

वि वि—सेवें इच्छानुसार मोटी, बारीक तरह तरह की बनाई जाती है । उनकी बनावट 'झारे' पर निर्भर करती है ।

२ उक्त पदार्थ के अनुरूप ही मैदे का बनाया हुआ खाद्य पदार्थ जो प्राय रक्षा-बधन के त्यौहार व ईद पर बनाया जाता है ।

वि वि—इसे पानी मे उबाल कर घी-शक्कर मिला कर खाई जाती है ।

३ कुशल-क्षेम, सुख-शान्ति, खुशहाली । (अ मा)

४ एक प्रकार का ऊचा पेड, जिसकी लकडी कुछ पीलापन या ललाई लिये हुए सफेद रग की होती है । यह चमकीली एव मजबूत होती है ।

५ देखो 'सेब' (रू भे)

उ०—१ खोरसरा नारगिया, अखरोटा, अजीर । सेव सेवरी अति सरस, गहरा बिरख गहीर ।—गज-उद्धार

उ०—२ खरबूजा जग सह जाय रे, सौ अनोख अमर सदै । सेमळ सरीस लज आन सुग, दाख नामफळ सेव दै ।—र ज प्र

६ देखो 'सेवा' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ कुळ देवी ग्रह पूज सकारण, विजन नव नेवज विसतारण । धूप अगर दीपक सुभ धारण, अन देवा पन सेव अपारण ।
—रा रू

उ०—२ नह तीरथ जगणी समौ, जगणी समौ न देव । इण कारण कीजै अवस, सुभजणणी री सेव ।—बा दा

उ०—३ भूपती सकळ सर्म उठ भरै कुळ लाट तीस सेव सह करै ।
—सू प्र

उ०—४ दादू जै साहिब मानै नहीं, तऊ न छाडू सेव । इहि अवलबन जीजियै, साहिब अलख अभेव ।—दादूबाणी

रू भे—स्येव ।

सेवक—स पु [स] (स्त्री सेवकण, सेवकाणी) १ आराधना करने वाला, भक्त, सेवा करने वाला, उपासना करने वाला, उपासक ।

उ०—१ दाढाळी देसाण हू, दूर घणू दरियाव । नारी हाथ पसारि ते, निज सेवक री नाव ।—मे म

उ०—२ अतुळीबिळ तपड सिवपुरी ईसर, अनडा नडण अनाथा नाथ । सिगळा ही सुख दयण सेवका, हयवर हसत वरीसण हाथ ।
—महादेव पारवती री वेलि

[स सेवक] २ नौकर, चाकर, दास, अनुचर, परिचायक ।

उ०—१ अदभुत रेख सोभा अमित, कळप तरोवर सेवका । अग अग सोभ वाधै 'अभौ', असह रूप असेवका ।—रा रू

उ०—२ गिरधर गास्या सती न होस्या, मन मोह्यौ घण नामी । जेठ बहू को नहि रागाजी, ये सेवक म्हे स्वामी ।—मीरा

उ०—३ सेवक की सेवक यह स्वामी, जग सब कौ है अतरजामी ।
—ऊ का

३ पूजा, अर्चना करने वाला, पुजारी ।

४ सिलाई का कार्य करने वाला, दर्जी ।

पगै, ऐ जोइ नयणे ईख ।—पी ग्र

सेलारियौ–सं पु —ववूल वृक्ष की फली ।

सेलाळ–वि.—भालाधारी वीर, योद्धा ।

उ०—**सेलाळ** जरद्द मरद्द मकाज । वेधै वस्त्र भाखर पाखर वाज ।
—सू प्र

सेलि—देखो 'सैली' (रू भे)

उ०—गय घड गुड गडमडत धीर वयवड धर पाडइ । हसमसता मामत सरसु, सर **सेलि** दिखाडइ ।—सालिभद्र सूरि

सेलिया–स स्त्री —१ घोडो की एक जाति ।

२ पीलू नामक लाल रग का एक फल विशेष ।

सेलियोडौ–भू का कृ —१ चुभाया हुग्रा, घुसेडा हुग्रा २ तीक्ष्ण शस्त्र से प्रहार किया हुग्रा ३ कष्ट पीडा या त्रास दिया हुग्रा ४ देखो 'सालियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सेलियोडी)

सेळी–स स्त्री —घोडे की वागडोर मे कान के पास लगाया जाने वाला एक उपकरण ।

सेली–स स्त्री —१ ऊन, सूत, रेशम या वालो की वनी एक मोटी डोरी जिसे योगी लोग गले मे डालते हैं या सिर पर लपेटते हैं ।

उ०—१ **सेली** सीगी मेखळा, कानि मुदरका घालि । हरीया जोगी जुगति विन, पच न सधै पालि ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ काना बिच कुडळ गळै बिच **सेली**, अग भभूत रमाई रे । तुम देख्या विन कळ न पडत हे, ग्रह ग्रगणौ न सुहाई रे ।—मीरा

२ स्त्रियो के सिर का एक ग्राभूपण ।

३ पगडी पर वाघने का एक ग्राभूपण ।

४ छोटा भाला, वरछी ।

५ देखो 'सैर' (रू भे)

रू भे —सेल्ही ।

सेलीसद, सेलीसमद, सेलीसमध–स पु —एक प्रकार का उत्तम जाति का घोडा ।

उ०—१ जिलहरी ग्रावनूसी जमद, मुरहरी हरी **सेलीसमद** ।
—सू प्र

उ०—२ ग्रौर ही ग्रनेक जात रा घोडा तयार कीजै छै । कुमेत नीला समदा मकडा **सेलीसमद**, भूवर वोर सोनैरी कागडा गगाजळ नुकरा केळा महुवा घूमरा ।—रा मा स

उ०—३ मौहरी चपा **सेलीसमध**, पचकल्याण पहचाणियै । ग्रनेक रग पसमा ग्रलल, जेहा मुखमल जाणियै ।—सू प्र.

सेलीहालौ–वि —जिस की पगडी पर सेली वधी हो । (दुल्हा)

उ०—करवा मारू देस का ढोला कै ढमकै ग्राव, वनडा धीमा चलौ महाराज, **सेलीहाला** धीमैं चलौ महाराज ।—लो गी

सेलुत–वि —भालाधारी ?

उ०—तिहा नगर मध्यै किसा लोक वसइ । भणइराय राणा । मडलीक । महाधर । मउडधर । सामत । **सेलुत** । वरवीर । राउत । पायक । डिडिमायन ।—सभा

सेलुस–स पु [स शेलुप] एक प्रकार का लिसोडा ।

सेलून–स पु [ग्र] १ कमरे के समान सजा हुग्रा रेल का डिव्वा जिसमे उच्चाधिकारी यात्रा करते हैं । (ग्रधियान)

२ नाई की दुकान ।

सळै–क्रि वि —चिता मे ।

उ०—भड जै खुद न भज दै, ग्रघ व्है ग्रानम घात । **सेळै** दव मेल्हे सती, सदेह सुरग सिघात ।—रैवतसिंह भाटी

सेलोट—देखो 'सैलोट' (रू भे)

उ०—विरद पत जवर प्रताप 'विजपत' विया, मद त्रिजै ग्रवाटा पिसत्र **सेलोट** । उरड जाता वडा करै वा गरदवा, ग्रभै पद वसै वै राज री ग्रोट ।—महाराजा मानसिंह रौ गीत

सेलोत–स पु —गरासिया जाति मे मुख्या ग्रथवा प्रधान ।

सेळौ–स पु —१ एक प्रकार का छोटा जतु जिसकी समस्त रोमावली काटेदार होती है । खतरे का ग्राभास पाते ही यह ग्रपना मुह व पाव रोमावली मे छुपाकर गोल गेद के समान हो जाता है । यह सप को मार सकता है ।

उ०—लाम, फोगलू घिटाल ऊटा, कातीसरौ हर मासरौ । से' सेळा घुरी घरस्याळा ग्राळा, पछया ग्रासरौ ।—दमदेव

२ गाय को दूहते समय उसके पिछले पैरो मे वाधी जाने वाली छोटी रस्सी । (नाजणौ) (पोहकरण)

रू भे —सहळौ, सेवळौ ।

सेलौ–स पु —१ एक उत्तम कोटि का वस्त्र ।

उ०—तठा उपरायत वागा रा चिहरवद छूटै छै । सू किण भातरा वागा छै । सिरीसाप सैरव चौतार कसबी महमूदी कूतगार ग्रव-रस **से'ला** वाफता डोरिया सोमनी तनजेव सासाहिवी तरै-तरै रै कण्डै रा वागा छै । सू उतार-उतार उणाहीज दरखतारी साखा ऊपर उरळा कीजै छै ।—र मा स

२ मेघवाल (चमार) जाति मे लडकी की सगनी तय हो जाने पर वधू के पिता द्वारा वर के लिये भेजा जाने वाला ग्राठ हाथ लम्बा लाल कपडा । (मा म)

३ लाल रग का साफा ।

४ ग्रश्लेपा नक्षत्र का एक नाम ।

५ सीधा-सादा भोला व्यक्ति ।

उ०—मेळ तणौ कज मेत्रियौ, व्रत रज गन बुधिवान । सरवगी **सेलौ** सुमति, चेलौ नाहरखान ।—रा रू

६ देखो 'सेल' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—१ वीना ग्रधुरा वार पूरा, वेध सूरा वच्चए । **सेले** प्रहार धार सार, मार मार मच्चए ।—ग रू

उ०—२ एक दिन फूल मानु कह्यौ 'मा मानु एक **सेलौ** भोल

२ एक ग्राम्य देवता ।

सेवज—देखो 'सेंवज' (रू भे.)

उ०—ऊनाळी करै तितरी हुवै । रेल माहे सेवज घणा हुवै । नदी लूणी नजीक । तळाव मास ६ पाणी । कुवौ पुरस १० मीठौ ।
—नैणसी

सेवट—क्रि वि [स सीमट्ट] अन्त मे, आखिर, अन्ततोगत्वा ।

उ०—१ अरै भोळा काही डर सू भागौ देखै अत (काळ) सेवट ही छोडण वाळो नही अर्थात् जै जलमैं है तै मरै ।—वी स टी

उ०—२ काळी मासी री घणी ना दियोडौ ही, इण वास्तै इत्ता वरस कोई समची नी भेज्यौ । सेवट गोटीजता-गोटीजता सवूरी नी व्ही तौ तीरथा रौ ओळावौ लेय, सौ कोस रौ गोतौ खाय, वै मिळण सारू आया ।—फुलवाडी

उ०—३ वीसा हीरा देख्या पण उण जिसौ हीरौ तौ निगै नी आयौ मो नी ज आयौ । सेवट हार खायनै सेठ कलकत्ता कानी रवानै व्हिया अर देसाई नै दिल्ली कानी दौडायौ ।—अमरचूनडी

उ०—४ भीखम मात अभाव, मात गग कीकर मनै । सो पख हीण सभाव, सेवट मिटग्यौ सावरा ।—रामनाथ कवियौ

सेवढ—देखो 'सावढ' (रू भे)

सेवण-स स्त्री—एक प्रकार की घास ।

उ०—१ मूकी सेवण री हेला उरहाई, मैंदी देवण री वेळा मुरझाई । खावण रूणी धन ऊणी मन खूणी, घामण तामण विन जामण सिर धूणी ।—ऊ का

उ०—२ जोड नाचणी जैसलमेर था कोस २ ऊगवण नू कोस १, घास करड, ऐहख री । जैसलमेर था दिखण नू कोस २ घास सेवण, कोस २ रै फेर ।—नैणसी

२ उपासना, भक्ति या आराधना करने की क्रिया या भाव ।

३ सेवा-चाकरी या टहल-वदगी करने की क्रिया या भाव ।

४ मादा पक्षियो द्वारा अण्डे पकाने की क्रिया या भाव ।

५ देखो 'सेवन' (रू भे)

सेवणौ, सेववौ—क्रि स [स सेवन] १ पूजा करना, अर्चना करना ।

उ०—गिलका-सिला सिला-गोमत्ती, मडावै मजम मूरती । साळग-राम । सिला सुव सेविस, अग्गर चदण धूप उखेविस ।—ह र

२ वदना करना, नमस्कार करना, प्रणाम करना ।

३ उपासना करना, आराधना करना, भक्ति करना, स्मरण करना ।

उ०—नाथन कै नाथु मसतग हाथु, सिव ब्रह्मा सेवदा है । हरिजन हरिजानी वेद वखानी, सेम विसन ध्यावदा है ।
—अनुभववाणी

४ सेवा-शुश्रूषा करना, टहल करना, चाकरी करना ।

उ०—सेवत ही रहै साव कु, आलसि कवू न जाय । हरीया जव तव राम कु, आपा भीतरि पाय ।—अनुभववाणी

५ उपभोग करना, भोग करना, भोगना ।

उ०—१ जद ईख स्वाद पी ऊम रस, जिम अवर चार अनारस । मुख परम दिनपति नृपति सेवत, विवध भोग विहारस ।—रा रू

उ०—२ सेवति नवै प्रति नवा नवै सुख, जग चा मिसि वामी जगति । रुखमिणि रमण तणा जु सरद रितु, मुगनि रामि निमि दिन भगति ।—वेलि

६ सानिध्य करना, ससर्ग करना ।

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पडउ खद । का वामदर सेविवइ, कइ तरुणी कइ मद ।—ढो मा

उ०—२ वाबळि काइ न सिरजिया, मारू मझ थळाह । प्रीतम वाढत कावडी, फळ सेवत कराह ।—ढो मा

उ०—३ अटमट तीरथ नणो आभरण, चावो पावन चार चक । रामण वात सेवियो ल्हमन, जग जणणी वाळो जनक ।—बा दा

८ मादा पक्षियो द्वारा अपने अण्डो को पकाने के लिये उन पर बैठना, पोषण करना ।

९ रहना, वसना ।

१० कोई औषधि या पथ्य लेना ।

११ लिप्त होना ।

उ०—सेवतौ पाय अठार, नमता मोह विकार । मरयादा लोपतौ ऐ, अधरम मैं ओपतौ ऐ ।—जयवाणी

१२ पालन करना ।

उ०—इम अव्रत सीच्या व्रत वधै तौ तिण रै लेर नावक रुनी सेवै तिण पिण अव्रत सेवी तिण सू व्रत पुस्ट हुवै ।—भि द्र

सेवणहार, हारौ (हारी), सेवणियौ—वि० ।

सेविओडौ, सेवियोडौ, सेव्योडौ—भू० का० कृ० ।

सेवीजणौ, सेवीजवौ—कर्म वा० ।

सेणौ, सेवौ, सेवणौ, सेववौ, सैणौ, सैवौ, सेवणौ, सेववौ
—रू० भे० ।

सेवति, सेवती—स स्त्री [स सेमती] १ एक प्रकार का सफेद गुलाव का फूल ।

उ०—१ मालती सेवती केतकी प्रफुल्लमान । फूलू की सोभा असमान कै तारू का विधान ।—सू प्र

उ०—२ तोही आणू भेडरव चापा का फूल, चोवा चदन अग कपूर । पाका पान घउटहूली, जाई सेवती नीरवाली का फूल ।—वी दे

२ उक्त गुलाव का पौधा ।

उ०—१ फवै मोगरी सेवती जाय फूली, अगी पति सेवति भूली अमूली । लता माधुरी मालती फूल लेखै, दमा आप भूलै तपी रूप देखै ।—रा रू

उ०—२ वोलसरी नारगिया, अखरोटा अजीर । सेव सेवती अति सरस, गहरा विरख गहीर ।—गज-उद्धार

रू भे —सेवति, सेवती, सेवत्री ।

सेवन—स पु [स] १ सेवा करने की क्रिया या भाव ।

५ वोग ।

त्रि [स मेवक] १ सेवा, टहल व शुश्रूषा करने वाला ।

२ पूजा, उपासना व भक्ति करने वाला, अनुयायी, उपासक ।

३ नौकरी करने वाला, चाकरी करने वाला ।

४ पराधीन ।

५ मेवन करने वाला, उपभोग करने वाला ।

६ मदद या सहायता करने वाला ।

ज्यू— समाज मेवक ।

रू भे —सेवक, सेवकर, सेवक्क, सेवग, मेवगर, मेवग्ग, सेवागर ।

सवकरण सेवकरणी–स स्त्री — दासी, सेविका, नौकरानी ।

रू भे —सेवकारणी, सेवगरण मेवगारणी ।

सेवकपरण, सेवकपरणौ–स पु —१ मेवक होने की अवस्था या भाव ।

२ सेवक का कार्य, मेवक का धर्म ।

३ सेवा, चाकरी ।

सेवकर—देखो 'सेवक' (रू भे) (अ. मा)

सेवकारणी—देखो 'सेवकरण' (रू भे)

सेवकाइ, सेवकाई–स स्त्री —१ सेवक का कार्य, सेवा, चाकरी, शुश्रूषा ।

२ आवभगत ।

३ नौकरी । ४ भक्ति ।

रू भे —सेवगाइ, मेवगाई ।

सेवक्क—देखो 'सेवक' (रू भे)

उ०—नमो बहुनामिय माधव बुद्ध, सेवक्क साधार सदासिव सुद्ध ।
—ह र

सेवग–स पु [स मेवक] (स्त्री सेवगरण, सेवगरणी, सेवगारणी) १ शाकद्विपीय, ब्राह्मरण वर्ग । (मा म)

वि वि —इन ब्राह्मरणो का उद्‌गम शकद्वीप से माना गया है । श्रीकृष्ण के पुत्र साब ने सूर्य मन्दिरो की पूजा एव सौर यज्ञ के लिए इन्हे आमन्त्रित कर भारतवर्ष मे बसाया था । कालान्तर मे मन्दिरो की पूजा करना ही इनका मुख्य कार्य रह गया । इन ब्राह्मरणो को मग, भोजक, व्यास आदि नामो से पुकारा जाता है ।

२ उक्त वर्ग का व्यक्ति ।

उ०—नाटोलाइ रै सोभाचद सेवग तिरण नै वावेचा कह्यो, भीखरणजी गैरवै है सो त्यारा अवरणवाद विस्वर जोड ।
—भि द्र

३ देखो 'मेवक' (रू भे)

उ०—१ मन मेरा सेवग भया, लगा सवद गुर कान । रोम रोम मैं भिद गया, हरीया किधू न जान ।—अनुभववाणी

उ०—२ किता तै सेवग सारण काज । रचै हयरणापुर पडव राज ।
—ह र

उ०—३ पालै दळद सेवगा पारणा, दुरग पालटै 'सुरम' दुवै । 'सूजा' हरो असहता सालै, हालै मन मानियै हुवै ।—नाथो साद्र

सेवगरण—देखो 'सेवकरण' (रू भे)

सेवगर—देखो 'सेवक' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ केतेक हजूर कै सेवगर दुज कवि उमराव मत्री तिनकू वगमावै ।—सू प्र

उ०—२ विरदाळो जी विरदाळो, दुज गाय पखी विरदाळो । सीताचो साम सिघाळो, पौह सेवगरा प्रतपाळो जी विरदाळो ।
—र ज. प्र

सेवगसाधार–स पु —१ भक्तो के परिपालक, ईश्वर, विष्णु, श्रीकृष्ण । (ह ना मा)

२ अपने चाकर या दास की रक्षा करने वाला स्वामी ।

सेवगारणी—१ देखो 'सेवकरणी' (रू भे)

२ देखो 'सेवग' (स्त्री)

सेवगाइ, सेवगाई—देखो 'सेवकाई' (रू भे)

सेवगी—देखो 'सेवक' (रू भे)

उ०—१ कहू स्वामी कहू सेवगी, माया ही पर मूठि । लडत जुडत यू ही करत, गया किताहि ऊठि ।—ह पु वा

उ०—२ धररण एक धाररण १ पार परमोद अपवर । सात वाच २ सजमी ३ वाह न करै ४ भागळ पर । माताजीत मनजीत ५ सेवगी रो पख साचो ६ । सुरगं हाक सात्रवा 'पाल' न देवै पग पाछो ।—पा प्र

सेवग्ग—१ देखो 'सेवग' (रू भे)

२ देखो 'सेवक' (रू भे)

उ०—प्ररणम्मै पग्ग परम्म प्रवीत, गायत्री गोरि सावित्री मीत । जुहारै पग्ग जिसा जयदेव, सेवग्ग अनेक करै पग सेव ।—ह र

सेवग्रह–स स्त्री —सेवा, चाकरी, टहल, वन्दगी ।

सेवड–स पु —१ राजगुरु पुरोहितो का एक गोत्र जो राठोडो के गुरु माने जाते हैं । (मा म)

२ उक्त गोत्र का पुरोहित ।

३ देखो 'सेवडो' (रू. भे)

४ देखो 'सावढ' (रू भे)

सेवडो–स पु [स श्वेत+पट] १ जैन साधुओ का एक वर्ग विशेष तथा इस वर्ग का साधु ।

उ०—१ जोगी जगम सेवड़े, बौद्ध सन्यासी सेख । खट दरसन दादू राम विन, सबै कपट कै भेख ।—दादूवाणी

उ०—२ सोइ जोगी, सोइ जगमा, सोइ सूफी सोइ सेख । सोइ सन्यासी, सेवडा, दादू एक अलेख ।—दादूवाणी

उ०—३ एक दिन पातिसाह आगरइ कोपियो, दरसनी एक आचार चूकउ । सहर थी दूरि काढो सवइ सेवडा, मेवडा हाथ फुरमारण मूक्यउ ।—स कु

२ सेवा-शुश्रूषा, तीमारदारी, टहल-बंदगी ।

उ०—१ बींदणी ज्यूं त्यूं आपरा मन नै समझाय धणी री सेवा बंदगी करण लागी । गिरस्ती री अरटियौ गणण-गणण घूमण लागौ ।—फुलवाडी

उ०—२ रूंकाटा खडा ठगै, सुख रा सीला सास बगै । आयण सुख-दुख री दिनग सेवा, दिन भर हसी ठठा, मन रा मेत्रा । मत्त री जाणौ, हित री कैवै, गाळचा-तकात सुणै अर मिर मैं दी ही सेवै ।—दसदोख

३ नौकरी ।

४ आदर-सत्कार, आवभगत ।

उ०—१ सब विधि की सेवा सधी, आदर भयौ अमाप । माननीय गुरु मानियौ, परतापी 'परताप' ।—ऊ का

उ०—२ धरम उपदेस नितप्रति सुणती हू, मन कुचाल सै भी डरती हू । सदा साधु सेवा करती हू, सुमरन ध्यान मैं चित करती हू ।—मीरा

५ उपासना, आराधना, भक्ति ।

६ आश्रय, शरण ।

७ अनुरक्ति, प्रेम ।

८ उपयोग, भोग ।

९ श्रम, परिश्रम ।

उ०—पखी जु वसत कै विखै पाखा फूलावै छै ताह आपणी सेवा कौ फळ पायौ छै ।—वेलि टी

१० समाज-सुधार के कार्य, समाज-सेवा ।

उ०—१ वळौ इसी सेवा, ठठा री लागगी तौ कुण आडौ आसी ? इयै साल तौ पूरा गाभा ही कराया नही । एकली वैठी फूसी कळपै-कुढै । वठै मा'रजा, हरिजण वाळका मैं रीझै-मुळकै ।—दसदोख

उ०—२ म्हारी काम तौ फगत जनता री सेवा करणी है । म्हू गरीबा रौ दुख नी देख सक्यौ इण वास्तै इज तौ म्हनै चुणाव मैं खडौ होवणौ पड्यौ ।—अमरचूनडी

११ उक्त कार्य के लिये बनी हुई सस्था ।

उ०—मा'रजा, सेवा लाईब्रेरी रा मित्री, सनातन धरम रा सभापति, ग्राम सेवा सघ रा उपाध्यक्ष, अर आरच समाज रा सदा सू सदस्य है ।—दसदोख

१२ चापलूसी, जी-हजूरी ।

रू भे—सेव ।

सेवागर—देखो 'सेवक' (रू भे)

उ०—सरण असरण अमैंकरण सेवागरा, धरण सरीखा चरण धावै । जोन सगट हरण वरण वै हुवै 'जसा', गिरा तारण तरण किऊ न गावै ।—जसजी आढौ

सेवाधरम—स पु [स सेवा+धर्म] १ सेवक का धर्म या कर्तव्य ।

सेवाधारी—सं पु [स सेवा+धारिन्] पुजारी, सेवक ।

वि—जिसके मूर्ति की पूजा करने का नियम हो ।

सेवापण, सेवापणौ—स पु—१ सेवा-वृत्ति, टहल-बन्दगी ।

२ नौकरी, चाकरी ।

सेवार—देखो 'सेवाळ' (रू भे)

उ०—वाळू वावा देसडउ, जहा पाणी सेवार । ना पणिहारी झूलरउ, ना कूवइ लैंकार ।—ढो मा

सेवाळ, सेवाल—स स्त्री [प शैवाल] १ पानी के ऊपर जमने वाली काई, लील ।

उ०—१ भूपाळ विया सेवाळ तणी भत, कळिया सह ससार कहै । माया जळ कळजुग चै माहे, राजा कमळ सरूप रहै ।

—जगन्नाथ सादू

उ०—२ चदह वैरी वादळौ, जळ-वैरी सेवाळ । माणस वैरी नीदडी, माछा वैरी जाळ ।—अग्यात

२ एक प्रकार की घास जो जलाशय या सरोवर के पानी पर जाल की तरह बिछ जाती है ।

उ०—एक दिवस सर नै कूलै गयौ रे, जहा बहुला सेवाल । अणजाणता माहि अलूझियौ, कठइ आयौ काल ।—वि कु

३ किसी पदार्थ (विशेषकर द्रव पदार्थ) पर जमने वाली मेल की परत ।

उ०—१ हिंगळू मैं जाळौ, भवरजी, पडगयौ जै, हाजी मारू, कजळ मैं पडग्या सेवाळ । अिव घर आवौ, अवेरं घर का पावणा जै ।

—लो गी

उ०—२ आलोयण सावुडौ सुद्धि करी रे, रखै आवै नी माया सेवाल निस्चय पवित्रपणौ राखजै, पछइ आपणौ नेम सभाल ।—स कु

४ आवरण, पर्दा ।

वि—आसमानी, नीला । ❀ (डिं को)

रू भे—सेवार ।

सेवावरती—वि [स सेवा+वृत्ति] जिसके सेवा करने का व्रत हो ।

उ०—सेवावरती थाऊ सार ।—धरम-पत्र

सेवि—देखो 'सेवी' (रू भे)

सेविका—स स्त्री—१ दासी, नौकरानी ।

२ परिचारिका, सेवा करने वाली ।

सेवियोडौ—भू का कृ—१ पूजा किया हुआ, अर्चना किया हुआ २ वदना, नमस्कार या प्रणाम किया हुआ ३ उपासना, आराधना या भक्ति किया हुआ ४ सेवा-शुश्रूषा, टहल वदनी या चाकरी किया हुआ ५ उपभोग किया हुआ, भोग किया हुआ, भोगा हुआ ६ सानिध्य किया हुआ, ससर्ग किया हुआ ७ सरक्षण किया हुआ, रक्षा किया हुआ ८ अण्डो पर वैठा हुआ, पोपण किया हुआ ९ रहा हुआ, वसा हुआ १० औपधि या पथ्य खाया हुआ ११ लिप्त हुवा हुआ १२ रस लिया हुआ १३ सहन किया हुआ, सहा हुआ ।

२ उपासना, आराधना, भक्ति।
३ उपभोग, भोग, इस्तेमाल।
४ स्त्री मैथुन की क्रिया, भोग।
५ टहल, चाकरी।
६ सानिध्य, समर्ग।
७ सरक्षण, रक्षा।
८ मादा पक्षियो की अपने अण्डो पर बैठने की क्रिया पोषण।
९ औषधि पथ्य का खान-पान।
१० सीना, सिलाई।
रू भे —सेवरण, सैवरण।

सेवनी–स स्त्री —१ सिलाई, सीवन।
२ टाका।
३ सुई।
४ सधिस्थान।
५ दासी, सेविका।

सेवभद्र–स पु —कुशलता।

सेवमाण–वि —सेवन करने योग्य।

सेवर—देखो 'सेहर' (रू भे)

सेवरडौ, सेवरियौ—१ देखो 'सेवरौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ नगरी कुवारा परणसी, म्हारै नवल वनै कौ व्याव, चोखा सेवरडा गूथ ल्याय।—लो गी
उ०—२ सेवरियौ सिरपेच कलगी सोरठडी तरवार। मीरा कै प्रभु गिरधर नागर पूरवलै भरतार।—मीरा
२ देखो 'सेहर' (अल्पा, रू भे)
उ०—उमराव वनाजी घुड़ला थै लाडजौ है खुरसाणी देस रा। सिरदार वनाजी सेवरियै झबूकै औ आवा बीजळी।—लो गी

सेवरौ–स पु [स शिखर] १ विवाह की एक रश्म जो विवाह मण्डप मे कन्या के भाई या मामा द्वारा वर के सामने 'मरवा' घुमाकर अदा की जाती है।
ज्यू—वीरा सेवरा, मामा सेवरा।
२ विवाह मे प्रत्येक भावर के समय गाया जाने वाला एक मागलिक लोक गीत।
३ सेहरा जो विवाह के समय सिर पर बाधा जाता है, शिरमौर।
उ०—१ ठाकरा खवारी करता थका कयौ—हू सेवरौ बाध'र चालसू जद लोग हसाई हुसी।—दसदोख
उ०—२ आधी गिण्यौ न मोपौ, सारी-सारी वदनामी रौ सेवरौ ही बाधता रैया हा।—दसदोख
उ०—३ ओरा रै बाधण पाए ए सुदर ओरा रै बावण पाग-काछवियां रै वको सेवरौ ए।—लो गी
उ०—४ सौ माथा पर किलगी अनै सेवरौ केसर रगिया दुकूळ कपडा वागौ केसर मैं रग दौ, आपरा सिरदारा नै कहै औ म्हारी चलावण करदौ।—वी स टी
४ पगडी मे बाधकर मौर के नीचे दूल्हे के मुख के सामने लटकाई जाने वाली फूल मालाएं। (मुसलमान)
५ खजूर का बना हुआ एक प्रकार का मौर जिसके दो गुच्छे नीचे तक लटकते हैं। यह विवाह के समय पहना जाता है। राजस्थान म उत्तरप्रदेश मे आए व्यक्ति उपयोग मे लाते हैं।
६ माला, हार, विशेषकर रेशमी माला।
७ व्याह की एक रश्म विशेष जिसके अनुसार भावर के समय कन्या का भाई हवन का मरवा दोनों हाथो मे पकडकर चार बार वर के सामने करके घुमाता है। इसे सेवरा देना या अदा करना कहते हैं। (श्रीमाली)
८ एक राजस्थानी लोकगीत।
९ मुकुट।
१० द्वार के छज्जे के नीचे वाले पत्थर के नीचे शिल्प कलापूर्ण लगाया हुआ पत्थर।
वि —१ उत्तम, श्रेष्ठ।
२ शिरोमणि।
रू भे —सहेरउ, सहेरौ, सेहरि, सेहरौ, सेहुरौ, सेहुरौ, सैंवरौ।
अल्पा, —सेवरडौ, सेवरियौ, सेहरउ, सेहरियौ।

सेवलणी, सेवलनी–स स्त्री [स शैवलिनी] नदी, सरिता, तटनी। (डि को)
रू भे —सेलवणी।

सेवळी—देखो 'सेही' (अल्पा, रू भे)

सेवळौ–स पु —१ सेमल वृक्ष।
उ०—सेवला रा पाट अणावौ, जठै बैठा औ दसरथजी रा सीय। बधावौ म्हारै घर आवियौ।—लो गी
२ कलई पर धारण की जाने वाली एक प्रकार की चूडी जो बिलकुल वृत्ताकार न होकर कुछ बल खाई हुई होती है।
३ देखो 'सेळौ' (अल्पा, रू भे)
उ० —क्रन प्रगत खोट परताप कर, अक्रन रहण अकेवळौ। 'मौकमा' कमध मोटा मिनख, स्याळ हुसी कन सेवळौ।
—अरजुणजी वारहठ

सेवाजळि, सेवाजळी–स स्त्री [स सेवाजलि] दोनो हथेलियो के जुडे हुए सम्पुट से भक्त या सेवक द्वारा अपने उपास्य या स्वामी को कुछ अर्पण करने की क्रिया।

सेवा–स स्त्री [स] १ देवताओ की पूजा, अर्चना।
उ०—१ सेवक सुकवि करत नित सेवा, मधु मिस्ठान्न चढन अति मेवा।—मे म
उ०—२ सामगरी अग्र धरै सुचा रा। साजै सब साधन सेवा रा। हर पूजिया पछै न्रप चितहित, खडग पात्र जळ पूर धरै खित।
—सू प्र

(स्त्री सेवियोडी)

सेवी–वि [स सेविन्] १ सेवन करने वाला, खाने या पीने वाला।
२ उपासना करने वाला, आराधना करने वाला, भक्त।
उ०—हालिया फेर गजनेर करवा महळ, देखिया कोठिया महल देवी। भाळि दोनू सहर आय पूठा भळै, सहर देसाण दीवाण सेवौ। —मे म
३ सेवा करने वाला, चाकरी करने वाला।
रू भे —सेवि।

सेवौ, सेंवौ–म पु —१ पानी का सोता, श्रोत।
२ मस्तक नीचा करके चलने वाला।
३ अपेक्षाकृत कम गहराई पर मिलने वाला भूगर्भीय जल।

सेव्य–वि —१ जिसकी आराधना या उपासना करना उपयुक्त हो।
उ०—सुरनायक सेव्य सम्रद्धि वहै। वळ वायक तै वज व्रद्धि वहै। —ऊ का
२ जिसकी सेवा या वदगी करना उचित हो।

सेस–स पु [स शेष, प्रा सेस] १ पाताल मे रहने वाला सहस्र फनो वाला सर्प, जिसकी शय्या पर विष्णु शयन करते हैं और जिसके फन पर पृथ्वी टिकी रहती है। लक्ष्मण और वलराम इसी के अवतार माने गये है, शेषनाग। (ह. ना मा)
उ०—१ जिणि सेस सहस फण, फणि फणि वि वि जीह, जीह जीह नवनवौ जस। तिण ही पार न पायौ त्रीकम, वयण डेडरा किसौ वस।—वेलि
उ०—२ जिण समय दो २ ही फोजा रा हिलोळा समुद्र रैं समाण प्रमाण मैं आया। अर तोपा री गाज हु सेस रा सीसा १ समेत मकराकर मेखळा मही २ रैं मचोळा लगाया।—व भा
२ लक्ष्मण।
उ०—१ सुण सेस रे सुण सेस रे, दिल कंकई उपदेस रे। वनवास जावण वेस रे, इम आखियौ अवधेस रे।—र रू
उ०—२ कोपै तू मौ राज कज, माभळ वायक सेस। गरवा मत ग्रहियौ नही, यू कहियौ अवधेस।—र ज प्र
३ वलराम, वलभद्र।
४ परमेश्वर, ईश्वर।
५ एक प्रजापति।
६ एक दिग्गज।
७ हाथी, गज।
[स स=पक्षी+ईश] ८ पक्षिराज गरुड। (अ मा, ना मा)
उ०—सट पटत भर सेस अति चक्रित अरेस। दिन घूघळ दिनेस, थरराहइ अर साथ।—र ज प्र
[स शेष] ६ देवताओ की मनौती मनाने के लिये चढाया जाने वाला प्रसाद।
उ०—महळी कुसळ विराणै मूडै, सूक हमेस वाटणी सेस। कजियारौ कीजै मुह काळौ, कजिया मैं नित नवौ कळेस। —वा दा
रू भे —'से', सेह।
१० पुरुषो की जनेऊ के स्थान पर धारण किया जाने वाला एक स्वर्ण आभूषण विशेष।
११ वाक्य का अर्थ पूरा करने के लिये ऊपर से लगाया जाने वाला शब्द।
१२ वडी सख्या मे से छोटी सख्या घटाने पर शेष वचने वाली सख्या।
१३ वाकी वचा हुआ भाग, अश या मात्रा।
१४ मुक्ति, छुटकारा।
१५ परिणाम, नतीजा।
१६ समाप्ति, अन्त।
१७ मृत्यु, मौत।
१८ नाश, विनाश।
१६ किसी की यादगार, अवशेष।
२० सोलकी राजपूत वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।
२१ छप्पय छन्द का २५ वा भेद जिसमे ४६ गुरु ६० लघु कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। (र ज प्र)
२२ टगण का पाचवा भेद, ।।।।ऽ। (डिं को) पिं प्र)
२३ टगण के छठे भेद का नाम, ।ऽऽ। (र ज प्र)
२४ छप्पय छन्द का एक भेद जिसमे ७० गुरु तथा १२ लघु होते हैं।
वि [स शेष] १ जो वाकी वचा हुआ हो, अवशिष्ट, वाकी, शेष।
उ०—१ सूरा जमदाढ लई उण सग, लई रवि रेवत माड मलग। हुवौ असताचळ ओट ग्रहेस, सक्यौ नह देख कुतूहल सेस।—मे म.
उ०—२ वसुदेव देवकी सू ब्राहमणौं, कही परसपर एम कहि। हुए हरण हयळेवौ हूओ, सेस ससकार हुवइ सहि।—वेलि
२ उच्छिष्ट, छूटा हुआ।
३ अन्य, और, वाकी, शेष।
उ०—१ 'सुरजन' परिकर सेस सह, देखौ नयण दयाळ। लेता जस १ अपजस २ लहै, चूकै जै कुळचाल।—व भा
उ०—२ द्रोण भीस्म न्रप ही जयवता, सेस कौरव जिकै वलवता। तीह हु सविहु प्रतिमल्ल, एक्लु त्रिजगती रि पुसल्ल। —सालसूरि
४ सफेद, श्वेत। (डिं को)
रू भे —सैंस, सेस, सस, सैस।

सेसजी–स पु —१ शेषनाग।
उ०—हेकण जीहा किम कहू, मारू वौत गुणाह। इद्र सेसजी गुण कहै, थाह न लाभै ताह।—अग्यात
२ श्रीलक्ष्मण।

सेहरा, उडगरा मधि जिम इद ।—रामरासो
उ०—२ साळै दीधा सेहुरा वरिण सखराळा विंद ।—रामरासो
२ देखो 'सेहर' (रू भे)

सै–क्रि वि —१ ठीक, एकदम ।
उ०—१ यू करता कोस ६ पोहच्या । आगै मारग रै सै विचै नाहरी बैठी छै ।—जगदेव पवार री वात
उ०—२ थोडी ताळ मैं इज टावर मे'ल माळिया सू कुदता री फडक भरतै पाछी आयौ अर ऊभो ऊभो इज वानै आगरा रै सै वीच नाखनै रमण नै वारै नाठग्यौ ।—अमरचूनडी
२ प्रत्यक्ष ।
उ०—स्रीजिणचदसूरिंदजी रे, सै हथ दीधो पाट । महोछव सूरेत मडिया रे गीता रा गहगाट ।—घ व ग्र
वि —१ खास ।
उ०—१ पूनमौ कैवरा लाग्यौ—थारै आया पछै दीवाळी रै सै दिन गाव मैं धाडौ पडयौ ।—रातवासौ
उ०—२ मा ठीमर सुर मैं आगै वोली—थारै जनम रै दो वरसा पे'ळ री वात है वेटा, आपरणै गाम मैं धाडो पडयौ हो, धनतेरस रै सै दिन ।—अमरचूनडी
उ०—३ इरणी महीना री सूनम रै सै दिन मावा री वात सुरणी तद वा मा नै कह्यौ—म्हनै ग्रेकर पूछ तौ लेरणी ही ।—फुलवाडी
२ सौ ।
उ०—आया उमराव रायमल का तमाम । ग्यारा सै घोडा का वरिणगा कमाम ।—शि व
३ सव, समस्त ।
उ०—मासी रा नेह मैं समदर रै उनमान तूफान, गरजरण, छोळा, हिवोळा इत्याद सै वाता ।—फुलवाडी
स पु —खास दिन, विशेप दिवस ।
उ०—सै होळी नै ढळी जाजमा, होय रही मतवाळ । वोतल तौ जगजग करै, कोई प्याला करै पुकार ।
—डूगजी जवारजी री छावली
सर्व —हम ।
उ०—ढोला खील्योगे कहइ, मुरणै कुढगा वैरा । मारू म्हाजी गोठणी, सै मारू दा सैरा ।—ढो मा
रू. भे —सं ।

सैकडी, सैकडौ—देखो 'सैकडी' (रू भे)
उ०—पछै थोडा दिना मैं मेह घरणौ आया थी पहिली उतरिया तिरण हाट रौ पाट भागौ । सैकड़ी मरणा वोझ पडयौ ।—भि द्र

सैग–वि. [स सकल] १ सव, समस्त, सभी, तमाम ।
उ०—१ तौ समान तोलू तुला, खावद 'जसवत' खेग । तेज लैरग जावै त्रपत, सूरज मडळ सैग ।—ऊ का
उ०—२ सेठ रै जाता ई माल इत्तौ सूगौ कर दियौ कै आखा चौगळा री उठै हुरा व्हैगी । दूजी सैग दुकाना री कमाई ठाय रै'गी ।
—फुलवाडी
उ०—३ जिनावरा मैं सोधौ स्याळियौ, पंखेरुग्रां मैं कागौ काळियौ अर मिनखा मैं नाई-नागौ तथा जाळियौ वाजै है । जिया ही सैग जातया मैं सुनार लखरणहीरण अर बेविसवासी गिरणी जावै है ।
—दसदोख
२ पूर्ण, पूरा, सम्पूर्ण ।
उ०—जिका नै म्हैं सैग उमर दवाय नै राखया परण म्राज वै आपा माथै सुगीवत आई देखनै काख्या फूटै है ।—अमरचूनडी
रू भे —सैग ।

सैगत—देखो 'संगत' (रू भे)
उ०—जटियै पटूतर दियौ—वात तौ है ज्यू री ज्यू है । थू उंज सैगत व्हैगी । थारै नाक री फुगळ वळगी ।—फुलवाडी

सैगमैग–वि —हतप्रभ ।
उ०—लिखमी सैगमैग हुयोडी टुग-टुग जोय रही ही अर विधै री आल्या माय-सू झर-झर'र मोती रा दारणा अनेन पति रै पगा मे पड रया हा ।—वरसगाठ

सैगू–वि —१ सग, साथ वाला, साथी ।
२ देखो 'सैग' (रू भे)

सैचनरण, सैचनरण, सैचन्नरण–स पु —प्रकाश की अत्यन्त तीव्र किरण, झलक या लौ जिसके कारण परिवेश मे पूर्ण उजाला हो जाय, पूर्ण प्रकाश, तेज रोशनी ।
उ०—वीजळिया रा छै मिळाव, सैचनरण वर हुवै ग्यौ जी ।
—रमीनेराज रौ गीत
वि.—पूर्णतया प्रकाशित, जगमगाता हुआ, ज्योतिर्मय ।
उ०—दीय वीजा री जड सदा हरी । पारणी नै मैरणत री । पारणी सू ई आ धरती हरियळ । मैरणत सू ई आ दुनिया सैचन्नरण । मैरणत आगै मादेवजी नै ई निवरणौ पडै ।—फुलवाडी
रू भे —सैचन्नरण ।

सैजोड–स पु —दम्पति ।
वि —१ जोड सहित ।
२ समान, सदृश ।

सैजोडे, सैजोडै–क्रि वि —पति-पत्नी साथ-साथ, पति सहित ।
उ०—सारस केळ करै सैजोडे, ऊचा भमग चढै अर ओडै । दिस पिछमारण वादळा दोडै, तद जळ नदिया टावा तोडै ।
—वर्षा विज्ञान

सैजोत, सैजोती–स स्त्री [स स+ज्योति] जीवात्मा का परमात्मा से मिलन, ज्योति मे ज्योति का मिलना, मोक्ष, सामुज्य मुक्ति ।
उ०—अच्छरा वरा पळवरा आमख, सिर सकर सूरा सैजोत । जिम दीरघ व्हैता जमजेठी, दीरघ मरण कियौ दैसोत ।
—केसरीसिंघ सेखावत री गीत

सैंताळी पाय मैं, पच वदन सौ जाण ।—र ज प्र
रू भे – सैताळी, सेताळीस, सैतालीस ।

सैंताळीसमौ, सैंताळीसवौं–वि —छियालीस से आगे वाला, ४७ वा, सैंतालीस के स्थान पर होने वाला ।
स पु —सैंतालीसवा वर्ष ।

सैंताळीसे'क–वि —सैंतालीस के लगभग, करीबन् ४७ ।

सैंतालिसैं–क्रि वि —सैंतालीसवें वर्ष मे ।
रू भे —सैंताळीसैं, सैंतालीसैं, सैंताळै, सैंताले, सैंताले ।

सैंताळीसौ–स पु —४७ का वर्ष ।
रू भे —सैंताळीसौ, सेंतालीसौ, सैंताळौ ।

सैंताळै—देखो 'सैंताळीसैं' (रू भे)

सैंताळौ—देखो सैंताळीसौ' (रू भे)
उ०—आद इता नवकोट उजाळा, राजा जतन उतन रखवाळा । तुरका असह थयौ सैंताळौ, चढियौ 'दुरग' करण धर चाळौ ।
—रा. रू

सैंतिस—देखो 'सैंतीस' (रू भे)

सैंतीर, सं तीर—देखो 'सहतीर (रू भे)
उ०—१ खूटा खटा वळा दूचिया, हाला सू हळ ठाटिया । सिरवर अर सैंतीर साळा खूड भूण थम पाटिया ।—दसदेव
उ०—२ ओ पाप फूट फूट नै निकळैला । आज तो थारा सैंतीर तिरै-मन चाया करलौ ।—फुलवाडी

सैंतीस–वि [स सप्तत्रिंशत्] तीस और सात का योग, छत्तीस से एक अधिक ।
स पु —तीस और सात के योग से बनने वाली सख्या, ३७ ।
रू भे —सेतीस, सैंतिस, सैंत्रीस, सैंतीस ।

सैंतीसमौं, सैंतीसवौं–वि —सैंतीस के स्थान पर होने वाला, छत्तीस से आगे वाला ।
स पु —सैंतीसवा वर्ष ।
रू भे —सैंतीसमौ, सेतीसवौ, सैंतीसमौ, सैंतीसवौ ।

सैंतीसे'क–वि —सैंतीस के लगभग ।
रू भे —सैंतीसे'क, सैंतीसे'क ।

सैंती–क्रि वि —धीरे-धीरे ।
उ०—सैंती-सैंती पीड ताडौ, लपेट लकडी लीरडा । तीजै दिन वन पयान करै, त्याग दुवाई चीरडा ।—दसदेव

सैंतीसौ–स पु —३७ वा वर्ष ।
उ०—सैंतीसौ पूरौ थयौ, अडतीसै वरसात । असमर चाळौ उठियौ, समहर साभ प्रभात ।—रा रू
रू भे —सेतीसौ, सैंत्रीसौ, सैंतीसै, सैंतीसौ ।

सैंत्रीस—देखो 'सैंतीस' (रू भे)

सैंत्रीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू भे)
उ०—'अकबर' 'तहवर' वूझनै, मेलै ताजतखान । सैंत्रीसै रा मारवाड, नमि रस थयौ निदान ।—रा रू

सैंद–स स्त्री —१ जान-पहचान, परिचय ।
२ जानकारी ।
रू भे—सैद, सैध, सैंध ।

सैंदरूप, सैंदरूप–क्रि वि —१ सम्मुख, सामने, प्रत्यक्ष, साक्षात ।
उ०—फकीर्जा सैंदरूप म्हनै दरसण दियो । ठाकरां के रै अगन गियोडा है ।—फुलवाडी
२ वास्तविक रूप, असली रूप ।
उ०—पण मिनख मुंडोमुंड ईस्वर री ठैर सक साचेलो नै सैंदरूप प्रमाण है ।—फुलवाडी
स पु —रेशेदार व कडे छिलके वाला नारियल, श्रीफल ।
रू भे —सदरूप, सैदरूप, सैंदरूप ।

सैंदाण—देखो 'सादियाणी' (रू भे)

सैंदाणी—देखो 'सैनाणी' (रू भे)
उ०—अमरत केरी रतन मूदडी, या सैंदाणी लीज्यो । कामण टूना सब जडजासी, जाय भवर नै दीज्यो ।—लो गी

सैंदाणी, सैंदान, सैंदानौ—देखो 'सादियाणी' (रू भे)
उ०—तिसै दासी दोहि दरबार जाय बधाई दीधी, जवाई पधारया छै । सैंदाना सरू हुवा, बधाई वाटी, बगाया बाटण लागा ।
—जगदेव पवार री बात

सैंदेस–स पु [स स्व+देस] १ अपना देश, अपना वतन, स्वदेश ।
उ०—१ हम वहे वयण सैंदेस आय । परदेस दबाबौ सळ पजाय ।
—सू प्र
उ०—२ 'सोहै' जाइ सैंदेस, कथन रहियौ क्रमधज्जा । मारि लियौ मारका, किमा पुरदीप मवज्जा ।—गु रू ब
२ देखो 'सैंदेह' (रू भे)

सैंदेह, सैंदेहौ, सैंदेहे, सैंदेहै–वि —देह के साथ, सशरीर, सदेह, जीवित ।
उ०—१ नागजा कै भडे सूर अच्छरा लगावै नेह । छेह पेलै केही सूर आभडै न छोत । देह त्यागै केही सूर जीरणा बस्या दाय, सैंदेह नेवाणा बैठ जावै कै साजोत ।—बद्रीदास खिडियौ
उ०—२ सैंदेहौ स्वग गयौ, रायराया ऊरप्पै । अनरीख लै अम्रत, सिद्ध पिण आघौ कीन्हौ ।—नैणसी
उ०—३ परगिर हौ गिरिरगि परमेस गात्र, जीव रहि करै सैंदेहे जात्र ।—पी ग्र
उ०—४ जरा व्याध तीर ताण, प्रभु कै लगायौ बाण । ताही कू विवाण सुरग, सैंदेही पठायौ है ।—ऊदोजी अडीग
रू भे —सैंदेस, सैदेह, सैदेस, सैंदै, सैंदेह ।

सैंदै—देखो 'सैंदेह' (रू भे)
उ०—नै रावजी खीकरनीजी रौ दरसण कियो । अरु हाथ जोड इण्या मागी । तद खीकरनीजी सैंदै विराजै हे । सू खीकरनीजी फुरमायौ, 'बीका', भलौ हुसी, सिद्ध कर' ।—द दा

२ ज्योतिर्मय, ज्योतियुक्त, प्रकाशमान, प्रकाशित ।

उ०—रतना सुण रोतीह, भाटी नै पूगो भली । जद जम सैंजोत-ह थान पान थप थापना ।—पा प्र

सैंजोर—वि [फा शहजोर] बलवान, ताकतवर ।

सैंट—स पु [अ] इत्र, सुगंधित द्रव्य ।

उ०—काना में सैंट रा फोवा टाग्या, हाथा रै मैंदी माडी अर रोजो राख्यो । आज दोनू ड्यूटी सू छुट्टी लै आया अर करसी आपरा मन चाया ।—दमदोख

रू भे—सेंट ।

सैंठाइ, सैंठाई—स स्त्री—१ बलशाली या ताकतवर होने की अवस्था या भाव ।

२ जोरावरी, जबरदस्ती ।

३ बल, शक्ति, ताकत ।

रू भे—सैठाड, सेंठाई ।

सैंठो, सं ठो—वि [स साधीष्ठ, प्रा साहिट्ठ] (स्त्री सैंठी) १ किसी प्रकार के भय, त्रास, चिंता कमजोरी या हीन भावना से मुक्त, साहसयुक्त, साहसी, निर्भय, निश्चित, दृढ ।

उ०—जगरूपसिंघ विहारीदासजी नू इसी लिखावट करी थी कै मोहतो थानू मारणनू आदूणी सू हुकम लेयनै आयो है, सू थे घणा सैंठा रहज्यो ।—द दा

२ आवेश, जोश, उत्तेजना या आक्रोशपूर्ण विचारो पर काबू रखा हुआ, सब्र किया हुआ, विवेकशील, दृढ विचार वाला, धैर्यवान ।

उ०—टीकरी घणी ई सैंठी रही तो ई उण री रीस काबू बारै व्हैगी ।—फुलवाडी

३ कष्ट, पीडा, हानि आदि को झेलने वाला, सहनशील, सहिष्णु ।

४ अपने उद्देश्य, सिद्धान्त या धर्म पर कायम, दृढ, अडिग ।

५ थकान, आलस्य आदि से मुक्त, तरोताजा, स्वस्थ ।

६ बलवान, शक्तिशाली ।

७ विचलित न होने वाला, अविचल ।

८ अटल, अडिग, निश्चल ।

९ मजबूत, दृढ, पक्का ।

१० सावधान, सचेत ।

११ सख्त, ठोस ।

१२ देखो 'साठो' (रू भे)

रू भे—सहटो, सहटो, सहठो, सठो, साठो, सेटो, सेठो, सैठो ।

सैंण—देखो 'सैण' (रू भे)

उ०—१ स्याणा स्याणा सैंण देस में गैला दीठा । पुरख कठण पारखा, माहि खारा मुख मीठा ।—ऊ का

उ०—२ तन झूठा जोबन भी झूठा, झूठी सैंण सगाई । माता-पिता सब ही सुत झूठा, आडा कोय न आई ।—अनुभववाणी

उ०—३ बहु आदर सू बोलियै वारू मीठा वैण । धन विण सागा 'धरमसी', सगला ही व्है सैंण ।—ध व ग्र

उ०—४ कहै तू वधू सैंण हकारू, कोट गढा का राजा । जोगी जगम सह चुग मारू, एक न मेलू गाजा ।—मेहोजी गोदारी

सैंणकी—देखो 'सैंगी' (अल्पा, रू भे)

उ०— बापडी सैंणकी गाय रै गाडी मे जुतणी तो बस री वात ही पण नीचै सू मूतणो हाथ री वात ही कोनी ।—अमरचूनडी

सैंणप— देखो 'सैणप' (रू भे)

उ०—तनै काई पचायती है ? तू थारै पापै-पुन्नै लाग । आयो घणी-ई गाड री भाई बण'र । कानून छाटै है, कोरी सैंणप लगावै है ।—वरसगाठ

सैंणर— देखो 'सज्जन' (रू भे)

सैंणला—स स्त्री—वेदा की पुत्री, सैणीदेवी ।

उ०—नै पावड वडा ब्रिदि पाया, तै जगदीस जिसा नर जाया । डमिया खिमिया साम अहारिणी, चारिणी निमो सैंणला चारिणी ।
—पी ग्र

सैंणाई—स स्त्री—१ शहनाई ।

उ०—चारू कानी वाजा वाज है । सैंणाई रै सुर सू दिसावा गूजै ह ।—वरसगाठ

२ देखो 'सैणप' (रू भे)

सैंणी—देखो 'सैंणी' ।

उ०—बाबर बीखरिया ओढणियै आडै । डाबर नयणा री टावर वय डाडै । नवळा सगाती सगाती सैंणीं । निरणी नव अगा गगा जळ नैणी ।—ऊ का

सैंणो—देखो 'सेणो' (रू भे)

उ०—१ आदर ऊचै कुल अधिक, रिद्धि घणी निरोग । धरम थकी व्है धरमसी, सैंणा रो सयोग ।—ध व ग्र

उ०—२ सौ पनियो सैंणो साळम अर निरदोस व्हेता थकाई एक चोरी रा मामला मै पकडीजग्यो ।—अमरचूनडी

(स्त्री सैंणी)

सैंतळ—स स्त्री—१ हलवा बनाने के लिये घी मे भुना हुआ मेदा, आटा, पीसी हुई दाल या सूजी ।

उ०—खुरपै सू सैंतळ हलावण लागो ।
—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

रू भे—सेतळ ।

२ देखो 'सैतळ' (रू भे)

सैंता—देखो 'सैता' (रू, भे)

सैंताळिस, सैंताळी, सैंताळीस—वि [स सप्तचत्वारिंशत्] चालीस व सात का योग, छियालीस से एक अधिक ।

स पु—चालीस व सात के योग से बनने वाली सख्या, ४७ ।

उ०—सात टगण फिर त्रिकळ यक, अत रगण इक आण । मत

लघु के क्रम से २१ वर्ण होते है ।

सैफळ, सैफळियौ—देखो 'सैफळौ' (रू भे)

उ०—आ व्रत कळ ऊकळगह्ण गळोवळ, सिलहा सकळ ऊजडिय ।
भड भिडै भुजा वळ सुजडै सैफळ, धोमग उच्छळ धडहडिय ।
—गु रू व

सैफळौ–स पु —युद्ध, समर ।

उ०—१ झाट नागजिया वहता झेलतौ, जोरवर बुधा री वेळ जोपै । सभजीवत हुवौ माजि गळ सैफळै, अवळ 'दोला' कमळ लोह ओपै ।—दौलतसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ सैफळै लडै भड असुर सुर, जडै सैल खागा जरक । कौतक्क जेण देखै कळह, ऊभौ रथ थामै अरक ।—सू प्र

वि —अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित, शस्त्रधारी योद्धा ।

उ०—१ प्रळैकाळ रण ताळ वडौ इक आव्रत वूहौ । सीसोदा सैफळा, सरिस राठोडा हुओ ।—गु रू व

उ०—२ स्रीराम खळ हुय सैफळां, हुव वाण वहजळ झळहळा ।
—सू प्र

रू भे—सइफळउ, सैफळ, सैफळियौ, सैफल, सैफळी ।

सैंबळ—देखो 'सेमळ' (रू भे)

उ०—ददा देही कारमी, गरब करौ मत कोय । सैंबळ कै मैं फूल हैं, देखण कै दिन दोय ।—जाभौ

सैंभर—१ देखो 'साभर' (रू, भे)

उ०—१ अधिप डडै अजमेर न् चढियौ सैंभर सीस । सिर लका किर साम घण, राम विचारी रीस ।—रा रू

उ०—२ रामूजी ! थै उस्ताद किसौ पीसणी उठाय लाया । मजौ किरकिर कर दियौ । मरण दो-नी साळी मगतवाड नै, किसी सैंभर सूनी हुवै है ?—वरसगाठ

२ देखो 'साभरियौ' (रू भे)

उ०—वजी हक गृभ उठी सहवेड, खगा मुह भूटत सैंभर खेड ।
—पा प्र

सैंभरियौ—देखो 'साभरियौ' (रू भे)

उ०—'इद्रोखै' आथाण रौ, सैंभरियौ माखैत । खित पुड धड सिर खूद रै, हरक नमप्पण हेत ।—किसोरदान वारहठ

सैंभरी–स स्त्री —१ साभर नगर के निकट पहाडी पर स्थित एक देवी की मूर्ति जिसे शाकभरी देवी भी कहते है ।

२ देखो 'साभरियौ' (रू भे)

सैंमुख, सैंमुखि, सैंमुखी—देखो 'सनमुख' (रू भे)

उ०—१ सैंमुख गुरु रै मुजस, प्रसिद्ध कीजै परससा । मगा सणेजा मैण, वरणवौ पूठा वासा ।—व व ग्र

उ०—२ ताहरा राव स्रीकल्याणमलजी पातिसाहजी सैंमुखि तेडि घणी दिलासा दे नै वीकानेर नू विदा किया ।—नैणसी

उ०—३ सैंमुखी काम न कीजिइ रे लाल, जै पर पूठे थाय रे सौ० । आलोची मन आपणी रे लाल, माठ्यौ एह उपाय रे सौ० ।
—प च चौ

सैंलोट—देखो 'सैलोट' (रू भे)

उ०—१ अव जट तोड मोड वैरिया, धर धारूजळ दान धरै । मारू राव अमी मद मैंगळ, कोट गढा सैंलोट करै ।
—महाराजा जसवतसिंहजी रौ गीत

उ०—२ मोकमसिंघ कलियाण रौ, मेडतियौ मन मोट । दिस गुज्जर अस नेडियौ, धरकरवा सैंलोट ।—गा रू

सैंवणौ, सैंवबौ—१ देखो 'सेवणौ, सेववौ' (रू भे)

२ देखो 'सहणौ, सहवौ' (रू भे)

उ०—ऐ सै ऊमर भर ऊघा-सूवा लोगा रा कोरडा ही सैंवता रै'वै है ।—दसदोख

सैंवज—देखो 'सेंवज' (रू भे)

उ०—घणा सैंवज गोहू सारी सीव काठा नीपजै छै । मण १ गोहू वाया मण ६० गोहू हुवै छै । घणी ज्वार हुवै ।—नैणसी

सैंवियोडौ—१ देखो 'सेवियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'सहियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सैंवियोडी)

सैंस—१ देखो 'सहस्र' (रू भे)

उ०—१ मोळा सैंस गोपी तज दीनी, कुवजा सग लगाई ।—मीरा

उ०—२ सतमेल सद, अज सैंस अद । मिमटान मद, अण अव हद ।—र रू

२ देखो 'सेस' (रू भे)

सैंसकार—देखो 'सस्कार' (रू भे)

उ०—१ आगै वोली—वापडा रा सैंसकार थारै घर रा हुयग्या, महाराज ! म्हारै घर रौ अन-जळ चूकग्यो ।—वरसगाठ

उ०—२ वापूजी सू चोखौ जी रळचोडौ है । आगला रा सैंसकार है । जणा ही अफसोच आवै है ।—दसदोख

सैंसक्त—देखो 'ससक्त' (रू भे)

सैंसमूळी–स स्त्री —थोर नामक पौधे के आस-पास होने वाली एक जडी विशेष ।

सैंसार—देखो 'ससार' (रू भे)

उ०—खडग कएत नणा तका लागा खडै, ऊवरै तका जळधार वारै । गहर भर तारियौ 'छत्रौ' खत्रिया गुर, तवै सैंसार गुण सदा तारै ।—राव सत्रसाल हाडा री गीत

सैंसारी—देखो 'ससारी' (रू भे)

उ०—आढगी केकाण फेर सुरभी एखठी आणी, जाणी मही सूर चद्र रिसी तौ जुगाद । देवळा सभाळौ वाई आपरी गाय नै देखौ, ऊचारी सैंसारी वात निभाई अनाद ।—वादरदान दधवाडियौ

सैंसी—देखो 'सासी' (रू भे)

उ०—ठगी मायै कमर बाधी, सोखीनाई नै धोखा वडी सू साधी ।

सैंदोई–स पु —महदोई नामक एक प्रकार का क्षुप ।
सैंदो–वि [स सधित] (स्त्री सैंदी) जान-पहचान का, परिचित ।
ज्यू—सैंदो मसाण, अमैंदो निवाण ।
२ जिससे किसी प्रकार का सम्पर्क हो ।
रू भे—महदी, सैंदो, सैंधो, सैंधो, सैंहदो ।
अल्पा,—सैंधियो ।
सैंध—१ देखो 'सैंद' (रू भे)
उ०—तद इबराहीम कही मोनू तो मू आगली पिछाण नही तिण री फेर सैंध करू ।—नी प्र
२ देखो 'सेंध' (रू भे)
सैंधणी–वि —स्वामी, मालिक ।
उ०—१ महाराजा साजा गुणा कविराजा प्रतिपाळ । तेरह साखा सैंधणी, सौ लक्खा देवाळ ।—रा रू
उ०—२ करम री सैंधणी मरम री कोट । मरम री जाणगर कुअर मन मोट ।—ल पि
क्रि वि —१ प्रत्यक्ष, सामने ।
२ देखो 'सधीणी' (रू भे)
सैंधव–स पु [स सैंधव] १ सिंधु देश का एक घोडा विशेष, अश्व । (डि ना मा)
२ घोडा, अश्व ।
उ०—१ स्रीफळ रतन जडित सुखदाई । सैंधव दस दोय गयद सवाई ।—रा रू
उ०—२ ऐ जो अकबर काह, सैंधव कुजर सावठा । वासै तो वहताह, पजर थया प्रतापसी ।—दुरसो आढो
२ सैंधा नमक ।
उ०—१ दादू सैंधव के आपा नही, नीर क्षीर परसग । आपा फटक पखाण कै, मिळै न जळ कै सग ।—दादूवाणी
उ०—२ सैंचल सैंधव जाण, आगर री परमाण । समुद्र-खार जाणियो ऐ, कालो लूण आणियो ऐ ।—जयवाणी
३ सिंधु देश ।
४ उक्त देश का निवासी ।
५ उक्त देश का राजा, जयद्रथ ।
६ सिंधु राग विशेष, वीररस पूर्ण राग ।
उ०—तुटै कइ सीस कटै तन त्रान, उठै कइ सूर जुटै कइ आन । लुटै कइ भोम छुटै सर लाग, रटै कइ जोगड सैंधव राग ।—पे रू
वि [स सैंधव] १ सिंधु देश का, सिंधु देश सम्बन्धी ।
२ समुद्र सम्बन्धी, सामुद्रिक ।
३ सिंधु नदी सम्बन्धी ।
रू भे—सिंधव, सैंधय, सैंधवो, सैंधू, सैंधो, सैंधव ।
सैंधवपति–स पु—सिंधु देश का राजा जयद्रथ ।
सैंधवादिचूरण–स पु [स सैंधवादिचूर्ण] वैद्यक का एक अग्निदीपक चूर्ण ।
सैंधवी–स पु —१ सिंधु राग ।
२ भैरव राग की पुत्र-वधू, सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी ।
उ०—तीज गळै अलवैला झूलै, सखिया गाय रही छै समाजी । मिळ रही तान सैंधवी रा सुर सु, वण रही रग री बाजी ।
—रसीलैराज री गीत
वि —सिंधु देश की, सिंधु देश सम्बन्धी ।
सैंधा-मुहा—देखो 'सैंदेमूडे' (रू भे)
उ०—'सूर' री दिली दरगाह असहा सिरै, हियै चड प्रवाडा लियण हिळियो । मूहा सैंदा तणा मार हिंदु मुगळ, मच्छर सैंधा-मुहा आण मिळियो ।—देवराज रतनू
सैंधो-मैंधो–वि —परिचित ।
उ०—लूणासर मैं रेल वगै जकी ही मा'रजा रै गाव रै ठेसण लागै । सैंधा-मैंधा घणा आवै अर रेल चढै उतरै ।—दसदोख
सैंधी—देखो 'सैंदी' (पु)
सैंधू—१ देखो 'सैंधव' (रू भे)
२ देखो 'सैंदो' (रू भे)
सैंधो—१ देखो 'सैंदो' (रू भे)
उ०—१ अठा थी भ्रवर गयो । उठै सैंधो पटेल १ थो तिण कन्है घोडी १ माग नै घुघरट गयो ।—नैणसी
उ०—२ सेवट सेठा री सैंधी बोली सुणनै पाछा मुडग्या ।
—फुलवाडी
उ०—३ मारू सैंधै मुहै, दुरति धोळै दीहाडै । जग-जेठी जमदूत, 'मल्ल' जाणै आखाडै ।—गु रू ब
उ०—४ बच्चा नू छोट कठै जाय न सकी व सहर अण सैंधो थो ।
—साह रामदत्त री वात
२ देखो 'सेंधो' (रू भे)
(स्त्री सैंधी)
सैंन—१ देखो 'सैण' (रू भे) (डि को)
उ०—१ सूती ही सपनै मैं जानु, सहीत आयै सैंन । आधी हुय हुय मिळवा लागी, ऊघरि आयै नैन ।—अनुभववाणी
उ०—२ हरीया अदर ऊपजै, ऐसा निकमै बैन । मिळीया सेती मन कहै, यो दुरजन यो सैंन ।—अनुभववाणी
उ०—३ सूती सपनै रैन कै, पाय बिलवी सैंन । हरीया जाणु उठि मिळु, ऊघरि आयै नैन ।—अनुभववाणी
२ देखो 'सेंन' (रू भे)
उ०—साम सखी मिळवा कै कारन, दै दै याकी सैंन सदेसै । उन मुन ध्यान आतम कौ, एको आठु पौहर हमेसै ।—अनुभववाणी
सैंनणी—देखो 'साजणी' (रू भे)
सैंना—देखो 'सेना' (रू भे)
सैंनिका–स पु —एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक गुरु, एक

सैंकळगर—स पु [अ] तलवार, छुरी, चाकु, कैंची आदि पर धार लगाने वाला ।

सैंगार—देखो 'सांगार' (रू भे)

सैंडौ—देखो 'सेडौ' (रू भे)

सैंचन्नण—देखो 'सैंचन्नण' (रू भे)

उ०—वीजळी काई किडकी, आभा नै सैंचन्नण कर दियौ ।
—फुलवाडी

सैंचाल—स स्त्री—शतरज के खेल की एक चाल विशेष ।

सैंचेत—देखो 'सावचेत' (रू भे)

उ०—प्रोहितजी सैंचेत होय मारू कनै आय ऊभो रह्यौ, ताहरा मारू बोली ।—ढो मा

सैंज—देखो 'सेज' (रू भे)

सैं'ज—देखो 'सहज' (रू भे)

सैं'जे, सैं'जै—देखो 'सहज' (रू भे)

ज्यू—सैं'जे चूडौ फूटियौ, हळकौ हुयग्यौ हाथ । वाई रा वधण कट्या, भली करी रघुनाथ ।—ऊ का

सैंजोरी—स स्त्री [फा शहजोरी] १ जबरदस्ती, जोरावरी ।

२ शक्ति, बल, ताकत ।

सैंझ—देखो 'सेज' (रू भे)

उ०—सैंझ फूला माह् गडकर वछाई छै ।
—कल्याणसिंघ वाढेल री वात

सैं'झ—देखो 'सहज' (रू भे)

उ०—तद पचायण उठै सू ईज पाछौ घिरियौ । तद कूंपै मैंराजोत कयौ, 'जी वीरमदे सू सैं'झ सू मरै नहीं ।'—द दा

सैंझडौ—स पु—लगातार एक ही समान होने वाली वर्षा ।

सैंझौ—देखो 'सेजौ' (रू भे)

उ०—मऊरा कोटरा पठा हेठै नदी उजार सदा वैहती रहै छै, सैंझौ की महा सेवज गोहू चिणा, धरती काळी ।—नैणसी

सैंण—स पु—पति, खाविंद ।

उ०—कथण इसा कामण कहे, सुण हौ कुंजर सैंण । अब कब वाहिर आय हौ, सौ हम देखौं नैंण ।—गज-उद्धार

वि [स सज्जन] १ सज्जन, शरीफ, भला ।

उ०—यतौ न भेद जाणियैह, ज्याग सैंण दूजण । सधाण-बाण जाण ए न, ताण ऐ सरासण ।—सू प्र

२ प्रियतम, प्रेमी ।

उ०—सातम दिन साची हुई, सात बरस री रैंण । नैंण न आवै नीदडी, सालै घट मैं सैंण ।—अग्यात

३ मित्र, दोस्त । (डि को)

४ सहायक, मददगार ।

५ हितैषी, शुभेच्छु ।

उ०—१ वाता वैर विगाडणा, सैंणा तोडै नेह । हामै विस पीणा हरख, आछा काम न एह ।—वा दा

उ०—२ किणी भाई सैंण री भलौ व्है तौ म्हनै गावतरै फिरणा मैं काईं हाण ।—फुलवाडी

६ मेल-मुलाकात वाला, मेल-जोल वाला, मुलाकाती ।

७ सम्बन्धी रिश्तेदार ।

उ०—रजपूताणी रूप सीचाणी सिरखी । नैंणा जळ भरती सैंणा थळ निरखी ।—ऊ का

८ सरक्षक ।

९ सीधा-सादा, भोला-भाला ।

१० चतुर, होशियार, समझदार । (व्यग्य)

रू भे—सइण, सइयण, सइयणि, सईण, सयण, सहण, सैंन, सेण, सेन, से'ण, सैंणा, सैंन ।

सैंणप—स स्त्री—१ भलमनसाहत, सज्जनता ।

२ सीधापन, सरलता ।

३ प्रेम, स्नेह, मेल-जोल ।

उ०—तोछी कथा गरीबा री, सैंणप सू झिळकै । थू रै वैभव सुणता, मत घिरणा सू मुळकै ।—फुलवाडी

४ होशियारी, चतुरता ।

ज्यू—घणी सैंणप मैं किरकिर पडै ।

रू भे—सयाणप, सयानप, सेणप, सेनप, सेणप, सेनप, सैंणप, सैंणाई, सैंणाई, स्याणप ।

सैंणल—देखो 'सैंणी' (रू भे)

उ०—वीझाणद वळेह, सैंणल घर सपजै नहीं । चित डूगर चढेह, जीवा जितै जोवा घणी ।—अग्यात

सैंणाई—१ देखो 'सैंणाई' (रू भे)

२ देखो 'सैंणप' (रू भे)

सैंणाचार स पु—१ सज्जनतापूर्ण आचरण, सौजन्यतापूर्ण व्यवहार ।

उ०—जाहर जग जीवाडणौ, मानै दोयण मेह । किण सू राखै केहरी, सैंणाचार सनेह ।—वा दा

२ मित्रता, दोस्ती, प्रेम ।

३ मेल-जोल ।

४ भलाई ।

रू भे—सैंणाचार ।

सैंणी—स स्त्री—१ वेदाचारण की पुत्री, जो दुर्गा का अवतार मानी गई है, इसका जन्म कच्छ मे हुआ था ।

उ०—सिघाळी तुही सीभिका होल सैंणी । त्रिदाळी तुही गूगिका नागवैणी ।—मे म

वि स्त्री—१ सीधी-सादी, भोली-भाली ।

उ०—सीधी सैंणी सी मैंणी सुण माल्है । वैसक पुरवसणौ हसणौ तजि हालै ।—ऊ का

सैसी अर मैं'तर ताई मार्ग विना नही छोडचौ ।—दसदोख

सैहते–क्रि वि —धीरे-धीरे ।

उ०—छळ सू अव धेंच लयौ सैहतै, पुळ पूगोय 'पाल' विना पैहतै ।
—पा प्र

सैहदौ—देखो 'सैदौ' (रू भे)

उ०—जद सुसलौ वोल्यौ—मैहदौ जागा छूटै नही । ज्यू साची स्रद्धा री रहिम वेठी तौ पिण आगला सैहदा कुगुरु त्यारौ सग छोडै नही ।—भि द्र

(स्त्री सैहदी)

सैहस—देखो 'सहस्र' (रू भे)

उ०—रण जोर अलेख लहै जोरावर, भिडै कायमखा छळि भरै । सैहस एक दस लिया सकरडै, कूरम तौ न सतोख करै ।
—सादूळसिंघ सेखावत री गीत

सैहसकर, सैहसकिर—देखो 'सहस्रकर' (रू भे)

सैहसकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू भे)

उ०—आरभ राम आरभ गुरु, पारधही फरसा धरण । गजसिंघ महण गभीर पण, कळा तेज सैहसकिरण ।—गु रू व

सैहात, सैहाथ—देखो 'सेहथ' (रू भे)

उ०—सैहात जोड गाडौ सकत, सेवग पुचायौ कुसळ सत ।
—रामदान लाळस

सै–वि —१ समान, अनुरूप, वरावर ।

उ०—१ दळ भागा विंदुर नीवक निठुर, चूहड मच्छर वन्न हिय । वूहा किरि वज्जर चौरगि चक्कर, गज्ज गिरव्वर सै गुडिय ।
—गु रू व

उ०—२ लखण वतीसै मारुवी, निधि चद्रमा निलाट । काया कूकू जेहवी, कटि केहरि सै घाट ।—ढो मा

२ सव, समस्त ।

उ०—१ सहू दईरा दीकरा, लीला लाडै लीक । दई हूत छाना दिवस, सै काटै विण सोक ।—वा दा

उ०—२ लारै फुर'र देखियौ तौ आगै लुगाया, टावर-टीगर, मिनख, सै मिळा'र कोई १५ जणा ऊभा ।—वरसगाठ

उ०—३ पछै राजा जगदेव, सै सार्थं करि दरवार आया । वैठा वाता करी । राजा निपट राजी हुवौ ।—जगदेव पवार री वात

क्रि वि —१ मे ।

उ०—तिसडै फोज विचळी । ताहरा पठाण नाठा । नासता हीज माहै हेमू नाठौ जाइ छै । तिसडै सै साहु कुळीखान धळीवेग आपडियौ ।—द वि

२ से ।

उ०—१ जाहरा ऊ वाभी गाम लाविया रै कनारै सै गयौ । ताहरा वाभी दीठौ—नगारा तौ वजाय लेवा ।—नैणसी

उ०—२ सिरकार पातसाही सै जान कर सत गुमास्तै अर आदमी अपनै कै ताकीद तमाम करै ।—द दा

उ०—३ साम्रित साख पुरान कु, मीख'रि भया सुजान । हरीया अच्छर हेक विन, चतुराई सै मान ।—अनुभववाणी

स पु [फा शह] १ शह, किस्त । (शतरज)

२ पक्षपात, तरफदारी ।

३ वल, शक्ति ।

४ सहारा ।

५ वचत ।

रू भे —सय, सैह, सैहे, सैहेत ।

६ देखो 'सै' (रू भे)

उ०—तिणनु ढोलै पूछीयौ, मारवणी विरतत । वोलै वारट सै-मुखै केता गुण कहत ।—ढो मा

७ देखो 'सौ' (रू भे)

उ०—१ अठारै सै समत वरस अैसियौ माह सुद । वुद्धवार तिथ चौथ हुवौ प्रारभ ग्रथ हद —र ज प्र

उ०—२ गुरज धरा री कपाट होय आपरा वारह सै वानैता समेत ।—व भा

उ०—३ चित्तोड भिळियौ जद साढै तीन सै लुगाया री जवर हुवौ ।—वा दा ख्यात

८ देखो 'है' (रू. भे)

उ०—करहौ कत कवेरियौ, सुगणी मारु सग । वौ सै उमर सुमरौ, ताता खडै तुरग ।—ढो मा

९ देखो 'सह' (रू भे)

सैइ–स स्त्री —सखी, सहेली ।

उ०—वीरो तौ आयौ सैया काकडै, गोरीडा सू लटक जुहार ।
—लो गी

रू भे —सैई ।

सैइकौ—देखो 'सईकौ' (रू भे)

सैई—देखो 'सेइ' (रू भे)

सैकडी—देखो 'सैकडौ' (रू भे)

सैकडू–वि —कई सौ, सैकडो ।

उ०—दुकाना रा सैकडू माथै करचा, वोरा रा हजारू घर सरच मै ऊपरचा ।—दसदोख

सैकडे–क्रि वि —प्रतिशत, फीसदी ।

सैकडौ–वि [स शतकाण्ड, प्रा सयकंड] सौ, पूर्णांनी, शत ।

उ०—खेल तमासा सरु कराया, सैकडा री सराव वाळी । वडार रै नातै गाव नूत्यौ, मोनजी रात सुखरी नीद सूत्यौ ।—दसदोख

स पु —सौ की सख्या, १०० ।

रू भे —सईकडौ, सैकडी, सैकडौ, सैकडी ।

सैकळ–स पु [अ] हथियारो को साफ करके उन पर सान चढाने का कार्य ।

दयाल तुम्हानै दाखिवु, अतर वीनग श्राम ।—ध व ग्र
सैद–क्रि वि —१ लिये, वास्ते, निमित्त ।
२ देखो 'सैयद' (रू भे)
उ०—१ आया असुराण अप्परमाण, किरार जाण जमराण ।
ऊगता भाण रैण विहाण, सैद पठाण घमसाण ।—रा रू
उ०—२ इसै रूप सू 'भीम' सग वाहतो आवीयो, विग्रम भारथ तणी वणी वेळा । श्राज दळ सैद गजसिंघ सू भेळिया, श्राज गजसिंघ 'जैसघ' भेळा ।—भीम सीसोदिया री गीत
उ०—३ जादम भाण पठाण जुमरला, सैद रहीम सेग माकुला ।
—सू प्र
३ देखो 'सेद' (रू भे.)
४ देखो 'सेत' (रू भे)
सैदखानौ—देखो 'सैनखानौ' (रू भे)
सैदजादौ—देखो 'सैयदजादौ' (रू भे)
उ०—उठी सैदजादा तणा थाट आया । नपेरै अठी जोग माहै सवाया ।—रा रू
(स्त्री सैदजादी)
सैदरूप—देखो 'सैदरूप' (रू भे)
उ०—रामपुर सू नूतौ श्रायौ घोडा च्यार हाथी एक सैदरूप रुपया १५००) रोकडी नूतौ ।—बा दा ख्यात
सैदाण—१ देखो 'सैयद' ।
उ०—काजि चकचाण सैदाण वाळे हुकम, श्रमो जगनग्नि रचायौ अचूका ।—भीवसिंघ हाडा व गजसिंघ कछवाहा री गीत
२ देखो 'सादियाणौ' ।
सैदाणी, सैदान, सैदानी—देखो 'सादियाणौ' (रू भे)
उ०—सैदानी वाजता राजा महर भीतर आवौ ।
—पलक दरियाव री वात
क्रि वि —साक्षात, प्रत्यक्ष ।
उ०—दळ अनेक जोधा प्रभु जीत्या, मोहि विवाह करि आणी ।
कृपानिध कृपा अब कीजै, प्रगट होय सैदाणी ।—रुकमणी मगळ
सैदानौ—देखो 'सादियाणौ' (रू भे)
उ०—१ राठौड कूंपै भदै पिण वेत श्राप रै हाथ श्रायौ सु उण ठौड सैदाना वजाय ऊभा रह्या ।—नैणसी
उ०—२ यु करता दरबार श्राणि उतरीया, सैदाना घुरिया ।
—पना
सैदेव, सैंदेव, सैदेव—देखो 'सहदेव' (रू भे)
उ०—वापडो जोसी यू री यू वतायनै गियौ । एक-एक वात मिळै । जोसी काई हौ सैदेवजी हौ परतख सैदेवजी ।—फुलवाडी
सैदेह—देखो 'सैदेह' (रू भे)
उ०—भार उतारै भोमि अवधि सैदेह उधारै । वसै राम वैकुठ, विमळ जग जस विसतारै ।—सू प्र
सैधव–स पु —१ द्रव्य, धन, वित्त । (ह ना मा)
२ देखो 'सैधव' (रू. भे.)
सैधौ–स पु —तुरग ।
उ०—श्राय छिडै पुर मे असुर, निज उर धार विकार । हाला सैधा हेरिया, सदि भेळिया सुधार ।—रा रू.
सैन–स स्त्री [स सज्ञपन] १ इशारा, सकेत ।
उ०—१ श्रर दो ...री वीरा रा सरदारा रावत री वीरा रै सरव वणा मलार री भस्सु री सैन दीधी ।—व भा
उ०—२ पीछै दूजै फौजा रा मुसाहिब हूवा री नठै कागदै सैन करी । तद जोधसिंघजी दुर रै हाजर होई री कागज नै हाल पानियौ ।—द दा
२ निशान, चिह्न, यादगार ।
३ ज्ञान, शिक्षा ।
४ मार्गदर्शक ।
रू भे —सैन, सैनी ।
५ सेटना, शयन ।
उ०—गौराळ गोविंद गगेन-गामी, नागेन सज्जा पर सैन नामी ।
—र ज प्र
६ कामदेव, मदन । (श्र मा)
७ देखो 'सेन' (रू भे)
उ०—१ मीर री सेन 'विमना' तणी भेळियो, धीन री सैन री चसम पाई । सुरह चहुवाण री मवर घाई सरण, वरण दीधा सरण उछराई ।—सै म
उ०—२ पण माता सू नीची उतारियौ तौ मरा नटग्यौ—यै म्हनै वी ठा' है नौ सैन सगत री मोदन ।—समरचूनडी
८ देखो 'सैण' (रू भे)
उ०—हाथ पाव कर हुवटी, नीनै सुन श्रर नैन । इन पन्ना पोथी लिखी, तुम सीर्क दियौ सैन ।—जयवाणी
९ देखो 'सेना' (रू भे)
उ०—१ महीं के कुघाटा घाट नगाटा विछाटै तथ, महा धोम पाटा घू निगटा माळ सैन । बौजै 'रुपै' वीरोगी अगवा सूधी श्राटा-वाटा, मार भाटा वीजूरी सतारा नाळी रौन ।
—अनुदान मोतीसर
उ०—२ सैन रिजमट श्रमन पलटण तणी सग, भट तिलग वग किळग तणा भिळिया । श्रमम जग श्रगताऊ पारका ऊमर ऊवै, मारका 'वजद्र' रै दुरग मिळिया ।—कविराजा बाकीदास
सैनक–स पु —सर्प ।
उ०—जाणै काळे सैनक पूंछ दविया फुफकारै मारै त्यू उभी उभी सूनाटा मारै छै ।—सूरै खीवै कापळोत री वात
सैनपति, सैनपती—देखो 'सेनापति' (रू भे)
सैनभोग–स पु [स शयन+भोग] शयन के समय देवताओं के चढाया जाने वाला भोग ।

२ भली, सज्जन, शरीफ ।

रू भे—सयणी, सेणि, सेणी, सैणकी, सैणल ।

सैणू, सैणौ—१ देखो 'सेणौ' (रू भे)

उ०—१ रसराज आ मिळमा मिळ रहै मेरा स्याणा । नहीं सहतौ विरहा सैणू दा ।—रसीलैराज री गीत

उ०—२ राजा महलै वैमकै, चमर ढुळाविया । सैणा मनै मतोख, खळा नह भाविया ।—गु रू व

उ०—३ सैणा ठरिया नयण हिया प्रसणा परजळिया । जस प्रताप वाधियौ, धाउ नीसाणा वळिया ।—गु रू व

उ०—४ ना कीज्यौ सैणा, नरा, काचौ वीजौ काम । राखै लाजा सतरी, राजा साचौ राम ।—र ज प्र

उ०—५ दस मेर चावला री चरू चूला ऊपर चढाया ऊपरला चोखा सीज्या हाथ मू देख्या तौ सैणौ हुवैतै हेठला पिण सीज्या जाणै अनै मूरख हुवै तै जाणै ऊपरला तौ सीज्या पिण हेठै कोरा नही ।—भि द्र

सैत—१ देखो 'सेत' (रू भे)

उ०—१ जिण घेन्यिौ मुज जाय, दळ प्रवळ सैत दवाय । वर कीध परवस धाव, रहि कोट ओटा राव ।—रा रू

उ०—२ भोपर्तसिघ भादरसिघजी कौ एक भाई । जैनै पाच गावा सैत सीवोटा वताई ।—शि व

२ देखो 'महद' (रू भे)

उ०—वेटा रै मुळमुळावता ई काली मासी रा हाचळ सैत री कोकडचा ज्यू भरीजग्या ।—फुलवाडी

सै'त—देखो 'महद' (रू भे)

सैतळ—वि—१ नाश, नष्ट, ध्वस्त ।

उ०—मद तोसू मन मेळ, जादु कुळ सैतळ हुवौ । मद तोमू मन मेळ, भोज रावत घर खोयौ ।—अरजुनजी वारहठ

२ समतल, वरावर ।

रू भे—सेतळ ।

३ देखो 'मैतळ' (रू भे)

सैतान—स पु [अ शैतान] १ ईश्वर विरोधी एक अदृश्य शक्ति जो समस्त दुष्ट प्रवृत्तियो एव दुर्दैवो की अधिष्ठाता के रूप मे मानी जाती है । इसका कार्य मनुष्यो मे क्रूर व नीच भावनाएँ भरकर ईश्वर विरोधी पाप कर्मो (अमानवीय कार्य) की ओर प्रेरित करना है ।

उ०—डडा डर करि चालियै, डाहा होय सुजाण । विसन नाय विलव्यौ रही, जुवर न मलिसी माण । जुवर न मलिसी माण, तान सैतान न चालै, श्री मन राखी ठाय, गोठि सुरा की माल्है ।
—वील्होजी

२ भूत, प्रेत आदि अधम योनि तथा इस योनि का कोई भूत या प्रेत ।

३ दुष्ट, अत्याचारी, क्रूर या आततायी व्यक्ति ।

४ अत्यन्त क्रोध व वामनापूर्ण दुष्ट प्रवृत्ति ।

वि—१ अत्यन्त दुष्ट, क्रूर, अत्याचारी, दुराचारी, आततायी ।

उ०—पण एक उपाय है, अवार मुमलमान वद सैतान बौहत जवर है, सू आपा आ कहना कै म्हे हिंदू हा, मू थासू पैहला उतरसा, तिण माथै ऐ वाद कर पै'ला उतरसी, पीछै आपा सारी वात करसा ।—द दा

२ वदमाश, उद्दण्ड, उपद्रवी, शरारती ।

३ प्रचण्ड, रौद्र ।

४ शक्तिशाली, प्रवल ।

उ०—१ अला महा सैतान तोफान मोडै, अला त्रिधारै खडग मा दईत तोडै ।—पी ग्र

उ०—२ कवड्डी घिन तारा, सैतांन बीरू मारा ।—चितराम

५ विशाल, भीमकाय ।

उ०—मामौ-भाणेज दोन्यू डील रा सैतान अर छाती रा वज्जर । काळजौ इसौ कै दोन्यू मिळनै हजारा मिनखा री सामनौ करण री हिम्मत राखै ।—अमरचूनडी

६ धर्म-विरोधी, विधर्मी ।

उ०—देवजी न मेळी दुज, पथ ता पासै टळिया मेल्हि सुगुर की गोठि, जाय सैताना मिळिया ।—वील्होजी

सैतानी—स स्त्री [अ शैतानी] १ शैतान का काम ।

२ अत्याचार, दुष्टता ।

३ उद्दण्डता, वदमाशी, शरारत ।

४ शक्ति, वल, पराक्रम ।

सैता—वि—१ सव, समस्त ।

उ०—सैता गोपाळ वस गावा दो च्यारि । मारी अणहोती वात सैता विचारि ।—शि व

२ सहित ।

रू भे—सैता ।

सैतार—देखो 'सितार' (रू भे)

उ०—स्लोका धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माड रै राग सौभाग गावै । ववी वीण सैतार मैनाय वाजै, त्रमाळा धुरै मेघ माळा तराजै ।—मे म

सैतीर—देखो 'सहतीर' (रू भे)

सैतीस—देखो 'सैंतीस' (रू भे)

सैतीसमौ, सैतीसवौ—देखो 'सैंतीसमौ' (रू भे)

सैतीसे'क—देखो 'सैंतीसे'क' (रू भे.)

सैतीसै, सैतीसौ—देखो 'सैंतीसौ' (रू भे)

सैतूत—देखो 'सहतूत' (रू भे)

सैत्रुज, सैत्रुजौ—देखो 'सेत्रुज' (रू भे)

उ०—सैत्रुजै नायक वीनति, सामलौ, श्रीरिखहेसर स्वाम । दीन

(स्त्री सैमुदी, सैमूदी)

सैमे—देखो 'समय' (रू भे)

उ०—बाभण नें प्रची दीया, तै सैमे की सबद सीखागरू । गुर चीन्हो गुर चीन्ह पिरोहित, गुर मुखि धरम वखाणी ।—जाभो

सैय—स पु —पक्ष ।

उ०—दुसट तथा दै णोगां मिनख नैं मार देणौरी सै साग सगा देवै पण मारया पछै कोई ही सैय अर मागता नी करै ।—दसदोख

सैयद—स पु —१ मुसलमानो के चार वर्गो मे से एक वर्ग ।

उ०—१ सझा दळ मूगळ सैयद सेख, वर्गो ग्रह बाज [illegible] बेख ।
—से स

उ०—२ घटं दळ मुगळ सैयद धाण, पटंन कटं कई सेख पठाण ।
—सै स

२ मुहम्मद साहब का नाती तथा हुसैन का वंशज ।

३ मुसलमान ।

रू भे —सइद, सइयद, सय्यद, सईद, सईया, साईयद, सयद, सैद, सैय्यद ।

सैयदजादौ—स पु (स्त्री सैयदजादी) मुसलमानो के 'सैयद' वर्ग का व्यक्ति, मुसलमान ।

रू भे —सैदजादौ ।

सैया—स स्त्री (ब व) सखिया, सहेलिया ।

उ०—चादा थारी निरमळ रात सैया म्हारी ए, चादा थारी निरमळ रात नणद भोजाई सैला साचरी म्हारा राज ।—लो गी

स पु —प्रियतम, पति ।

ज्यू—सैया भए कुतवाळ, अब डर काहे का ।

रू भे —सैय्या ।

सैयारौ—देखो 'सहारौ' (रू भे)

सैयोग—देखो 'सहयोग' (रू भे)

सैयोगी—देखो 'सहयोगी' (रू भे)

सैय्यद—देखो 'सैयद' (रू भे) (अ मा)

सैय्या—देखो 'सैया' (रू भे)

उ०—मैं अपनें सैय्यां सग साची । अब काहे की लाज सजनी, प्रगट व्है न्है नाची ।—मीरा

सैरधिका, सैरंध्रि, सैरध्री—स स्त्री [स सैरन्ध्री] १ द्रौपदी का वह नाम जो उसने अज्ञातवास के समय रखा था ।

उ०—सैरध्रि वाची इम सल वोलइ, गधरव देवा तुम्ह कौ न तोलइ, चूकी अच्छइ तउ तुम्हि मइ म राखि ।—सालिसूरि

२ दूसरे के घर मे रहने वाली स्वाधीन शिल्पकारिणी स्त्री ।

३ अन्त पुर मे काम करने वाली दासी, जिसकी उत्पत्ति वर्णसकर जाति विशेष मे हुई हो ।

४ दासी, सेविका, परिचारिका ।

५ नीच जाति की चाकरानी । ६ वर्ण सकर जाति ।

रू भे —सैरिध्री ।

सैर, सै'र—स स्त्री [फा] १ मनोरंजन के लिये की जाने वाली यात्रा, पर्यटन, तफरीह, सैर-सपाटा, घुमाई, भ्रमण ।

उ०—[illegible] दुनिया नै [illegible] सैर करता ।—फुलवाड़ी

२ मौज, मस्ती, बहार, मनोविनोद ।

उ०—[illegible] सैर, सैर करता [illegible] । [illegible] जैर जिसो जग [illegible] 'जसा' ।—ऊ का

३ शिकार, मृगया ।

रू भे —सैल, सैल, सैहर, सैहर ।

४ देखो 'सहर' (रू भे)

उ०—१ सै'र री जाई गांव में आई पर सगी [illegible] रैगी ।—दसदोख

उ०—२ [illegible] मारवाड़ रा सीरूर में [illegible] सैर पाणी [illegible] में पाणी ढैई नहीं । [illegible] सीरूर सैर बणायो ।
—मारवाड़ री ख्यात

उ०—३ सहर सुधार र [illegible], डाटी सै'र सुधार । [illegible] सुगर सहित, [illegible] ।—ऊ का

सैरगाह—स स्त्री [फा] पर्यटन स्थल, सैर करने का स्थान ।

सैरडौ—देखो 'सहर' (अल्पा, रू भे)

उ०—मुरधर रा भूपर [illegible], [illegible] सैरडा । [illegible] किमही वाय लागी, [illegible] सैरडा ।—दसदेख

सै'रपना, सै रपनाह, सै रपनो, सै'रपनाह, सै'रपनौ—देखो 'सहरपनाह' (रू भे)

उ०—१ सै'रपना री कोट, सै'र में मसीता तथा [illegible] पाड नैं सै'रपनौ करायो, समत १७८८ में ।—मारवाड़ री ख्यात

उ०—२ सै'रपना रो कोट पक्को करायो नै गढ नै सै'र बिचलो कोट मिळतो करायो नै पायगा कराई ।—मारवाड़ री ख्यात

सैरसपाटा—स पु (ब व) भ्रमण, पर्यटन ।

सै'रसारणी—स स्त्री [फा शहर+स सारणी] वह भोज जिसमे शहर के समस्त व्यक्तियो को भोजन कराया जाता हो ।

उ०—१ सै'रसारणी पर काळो चढग्यो, पाणी फिरग्यो । भूगरै विखै सगळा भाई आव-उतार हुयग्या अर गाव छोडग्या ।
—दसदोख

उ०—२ गिटाकउ बामण बिरमपुरी अर सै'रसारणी जीमी, जिनै तौ जसरी थोथी पोथी सी उघाडी, धजा फुरकाई ।—दसदोख

सैरिध्री—देखो 'सैरध्री' (रू भे)

सैरि—स स्त्री [स,] १ कातिक मास ।

२ एक प्राचीन जनपद ।

३ देखो 'सेरी' (रू भे)

सैरियौ, सैरी—देखो 'सेरियौ' (रू भे)

सैनया—देखो 'सेना' (रू भे)
सै'नसील—देखो 'सहनसील' (रू भे)
सै'नसीलता—देखो 'सहनसीलता' (रू भे)
सैनाण, सै'नाण—स पु—१ निशान, चिन्ह।
उ०—नीचै मतीरा रै बीजा जिमी छोटी दौ आल्या, आरया तौ काई आग्या रा सैनाण हा।—फुलवाडी
२ पहिचान, चिन्ह।
उ०—वेलै कही मोनू तौ मारा समाचार ठावा कहि सैनाण दिखाय घोडा लेगयौ।—नापै सांखलै री वारता
३ स्मृति, चिन्ह।
उ०—अरु फरीदखा री कबर पथर री है तिण ऊपर तरवार वाही जिको सैनाण अद्याप है।—द दा
४ धव्बा, दाग, खरोच।
५ प्रतीक।
६ सकेत।
७ झण्डा, पताका।
रू भे—सनाण, सहनाण, सहलाण, सहिनाण, सहिलाण, सहीलाण, सेनाण, सै'नाण, सेनाणी, सेनाणू।
सैनाणी, सै'नाणी—स स्त्री—१ वह वस्तु या यादगार जो किसी की यादगार हो, स्मृतिचिन्ह।
२ पहिचान, शिनाख्त।
३ लक्षण, गुण।
४ न्यादर्श, नमुना।
उ०—हू जौ मोज देऊ तिण मा सू सैनाणी ३ छानै सी लै लेवै।
—पचदडी री वारता
रू भे—सहनाणी, सेनाणी, सै'नाणी, सेलाणी, सैदाणी, सैळाणी।
सैना—देखो 'सेना' (रू भे)
सैनाई, सैनाय—स स्त्री [फा शहनाई] शहनाई, नफीरी, वाजा।
उ०—ववी वीण सैतार सैनाय वाजै। त्रमाळा धुरै मेघ माळा तराजै।—मे म
सैनिक—स पु [स] १ सेना या फौज का आदमी, सिपाही।
२ सुभट, योद्धा।
३ प्रहरी, सतरी।
सैनी—स पु—१ नाई, हज्जाम।
२ देखो 'सैन' (रू भे)
सैनीच्छर—देखो 'सनिस्चर' (रू भे)
उ०—जपसै जोगेसर सुकर सैनीच्छर सप्त रसेसर नै ससिहर।
—पी ग्र
सैन्या—देखो 'सेना' (रू भे)
उ०—१ धर पतसाही तूपटै, वळपाण वहादुर। आयौ 'कमरौ' पातसाह, सज सैन्या आमुर।—जूझारसिंह मेडतियौ
उ०—२ सैन्या महर माहैं पेसती किसी सोभै छै। ताकौ द्रस्टात। जैसै समुद्र माहै नदी आय मिळै छै।—वेलि टी
सैपाठी—स पु—सहपाठी, साथ पढने वाला, साथी।
सैपीडौ—वि—निरन्तर दर्द या पीडा बना रहने वाला।
सैप्रत, सैप्रत्त—देखो 'साप्रत' (रू भे)
उ०—दोइ रगण गण देखिजै, पाय जेण सैप्रत्त। विजोहा, एही विगत्ति, तवा राम गुण तत्त।—पि प्र
सैफ—देखो 'सेफ' (रू भे)
सैफळ—देखो 'सैफळी' (रू भे)
सैफळी—देखो 'सैफळी' (रू भे)
उ०—झूझारा आवध झळहळेय, ब्रहमडक वीजा वळवळेव। सैफळी वाजियौ सामसाह, सेलियौ लोह मुह रावताह।—गु रू ब
सैफौ—स पु [अ सैफा] जिल्दसाजी का एक औजार जिससे किताबो का हाशिया काटा जाता है।
सैवास—देखो 'सावास' (रू भे)
उ०—ताहरा रावळजी कह्यौ—'सैवास ! ऊदा सैवास !' नाहरा वाघ रावळजी ऊदै नू वगसियौ।—नैणसी
सैवासी—देखो 'सावासी' (रू भे)
सैवुलवुल—स स्त्री—शह वुलवुल नामक पक्षी।
सैमत—देखो 'सहमत' (रू भे)
सैमळ, सैमल—१ देखो 'सेमळ' (रू भे)
उ०—खरबूजा जग सह जाय रे, सौ अमोक अमर सदै। सैमळ सरीम तज आन सुण, दाख रामफळ सेवदै।—र ज प्र
२ देखो 'सामल' (रू भे)
उ०—जद किणही पूछ्यौ करियावर में गुल गालवा मैं तौ थेंई सैमल ईज हुसौ नै वारदानी घट्यौ क्यू ?—भि द्र
सैमान—देखो 'सामान' (रू भे)
उ०—नीत काज इगळ न्रपत, सझियौ जुध सैमान। वेलजियम औ सरविया, थिरा उवारण थान।—किसोरदान वारहठ
सैमात—स स्त्री—शतरज के खेल मे एक प्रकार की मात, किश्त, शिकश्त।
सैमुदौ, सैमूदौ, सैमूदौ—देखो 'समूदौ' (रू भे)
उ०—१ किणी प्रिथीराज नै चौहान वस रौ सूरज, वारवी सदी रै सगळै राजाधिराजा सू लूठौ भिडसल अर मरोड आळौ वतायौ तौ वीजा उणनै सैमूदै भारत नै वारला वैरचा रै हमला सू बचावण आळौ ढाल मानी।—चितराम
उ०—२ रामजी नै दया आयगी अर उणा द्रमकुल्य कानी वाण म्हा दियौ। इण व्रह्मदड नाव रै अग्निवाण सू सैमूदै द्रमकुल्य रौ पाणी तौ कळकळीज अर हवा हुय गियौ अर उणा ममेत मलेच्छ वळ'र भसम हुवा।—चितराम

४ दो पशुओ का जोडा, युग्म ।

५ देवी को एक साथ वलि चढाये जाने वाले दो वकरे या वकरो का युग्म ।

सैलाडणौ, सैलाडवौ–क्रि स —दो वैल, वकरे, ऊट आदि चौपायो को एक रस्सी से एक साथ गर्दन से वाधना ।

सैलाडियोडौ–भू का कृ —उक्त प्रकार से एक साथ गर्दन से वाधा हुआ।

(स्त्री सैलाडियोडी)

सैलात्मजा–स स्त्री [स शैलात्मजा] पार्वती ।

सैळी– देखो 'सेही' (रू भे)

सैली–स स्त्री [स शैली] १ वाक्य-रचना का ढग, लिखने का ढग ।

२ चाल, ढग, तरीका ।

३ परिपाटी, प्रणाली ।

४ रीति, रिवाज, प्रथा ।

५ आचरण, चाल-चलन ।

रू भे —सेलि, सेली ।

सैलोट–स पु —१ ध्वस, नास, नष्ट ।

उ०—गजा रत पोट पड चोट त्रमागळा, वचन ग्रर ग्रोट लै वीसा वीसै । धसै मन मोट जा सिर ग्रहे घजवडा, दीवाला कोट **सैलोट** दीसै ।—कुभकरण सादू

२ समतल ।

उ०—ऊपडी वग्ग 'ग्रभसाह' री, ग्रति ग्रातग कजि ग्रासुरा । किर नीरथळा **सैलोट** कज, सीर पलट्टै सागरा ।—रा रू

रू भे —सइलोट, सहलोट, सेलोट, मेलोट ।

सैळौ, सैलौ–स पु —१ मटमैले रग का ऊट या कुत्ता ।

२ देखो 'सेळौ' (१) (रू भे)

सैव–वि [स शैव] १ शिव का, शिव सम्बन्धी ।

२ शैव सम्प्रदायी ।

३ जिसकी सेवा करना उचित हो, सेव्य ।

उ०—देवादिदेव, सुर ग्रसुर सैव, राजाधिराज सविता समाज ।
—ऊ का

स पु —१ शैव सम्प्रदाय व इस सम्प्रदाय का ग्रनुयायी ।

उ०—१ वीरा जगम साक्षज सैव ।—धरमपत्र

उ०—२ एक कहै परतिख फल जोइ, सैव धरम थी स्यू नवि होइ ।
—स्रीपाल रास

२ शिव का भक्त, उपासक ।

३ अष्टादश पुराणो मे से एक ।

सैवण—देखो 'सेवण' (रू भे)

सैवणौ, सैववौ—देखो 'सेवणौ, सेववौ' (रू भे)

उ०—वेटा विना वहुवा कद रै'वै ? कीरी सैवै ? सासू एकली जान, घर रौ खोरसौ करै ग्रर कुढकुढ मरै ।—दसदोख

सैवपुराण–स पु [स शैवपुराण] शिव पुराण ।

सैवरौ—देखो 'सेवरौ' (रू भे)

सैवळी—देखो 'सेही' (रू भे)

सैवान—देखो 'सादियाणौ' (रू भे)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति राजान राजावत ऐरावरै रिणखेत हाथी ग्रायौ छै । रिणजीत नगारौ घुवै छै, फतै रा **सैवान** वागा छै ।—रा मा स

सैवाळ—देखो 'सेवाळ' (रू भे)

सैवालमालना–स पु —एक प्रकार का भाला या साग ।

सैवी–स स्त्री [स शैवी] १ पार्वती, दुर्गा ।

२ मनसादेवी ।

३ कल्याण ।

सैव्या–स स्त्री [स शैव्या] ग्रयोध्या के प्रसिद्ध सत्यव्रती राजा हरिश्चद्र की पत्नी, शैव्या ।

सैस—१ देखो 'सेम' (रू भे)

२ देखो 'सहस्र' (रू भे)

सैं'सकिरण—देखो 'सहस्रकिरण' (रू भे)

सैसजीभ—देखो 'सहसजीभ' (रू भे)

सैसदळ—देखो 'सहसदळ' (रू भे)

सैसनैण—देखो 'सहसनयण' (रू भे)

सैसफण—देखो 'सहसफण' (रू भे)

सैसवाहु—देखो 'सहस्रवाहु' (रू भे)

सैसमुख—देखो 'सहसमुख' (रू भे)

सैसरनाव—देखो 'सहसनाम' (रू भे)

उ०—मगळ सम भागीरथी, स्रीगीता **सैसरनांव** । गायन ग्रमरापुर वसैजी पवन व्है सव गाव ।—रुकमणी मगळ

सैसव–स स्त्री [स शैशव] वाल्यकाल, वचपन, लडकपन, वाल्यावस्था ।

उ०—१ **सैसव** सु जु सिसिर वितीत थयौ सहु, गुण गति मति ग्रति एह गिणि ।—वेलि

उ०—२ **सैसव** तनि मुखपति जोवण न जाग्रति ।—वेलि

वि —शिशु सम्बन्धी ।

सैसवदन–स पु [स सहस्र+वदन] शेषनाग ।

सैसाजळ–स पु —लक्ष्मण ।

उ०—वोलै सीतापत इसडीजी वाणी, सुरनर नागा नै लागै सुहाणी । **सैसाजळ** हणमत जिम ही सरसाई, वीरा ग्रवरारी कीधी वडाई ।—र रू

सैसार—देखो 'समार' (रू भे)

उ०—धाट पालट करै नाट रावत धणा, मेळि ऊभा गजै क मेळा । ऊजळी सनस **सैसार** सोहौ ऊपरै, चालियौ 'भोज' खत्रीवाट चेळा ।
—राव भोज हाडा रौ गीत

सै'रियौ, सै'री—देखो 'सहरी' (अल्पा, रू भे)

सैलग—देखो 'सेलग' (रू भे)

उ०—माथै गिगन री अनत सून्याड, असीव सोसनी रगत, सूरज री सैलग उजास अर हैटै कुदरत री बेजोड बणाव।—फुलवाडी

सैल-स पु [स शैल] १ पहाड, पर्वत,। (डिं को)

उ०—१ हुवै गैल चौडा जठै सैल हूता, हलै बैल जोटा घणा बैल हूता। ठही चोट दै झफरी कोट ठाणै, छकी पान जै अट्टरै वट्ट छाणै।—व भा

उ०—२ गुण गव अहित गिरि गरळ ऊगळित, पवण वाद ए उभय पख। स्रीखड सैळ सयोग सयोगिणि, भणि विरहिणी भुयग भख।—वेलि

२ कोई बडा पत्थर, चट्टान।

३ हिमावल का राजा जो पार्वती का पिता था।

रू भे—सईल, सयल।

वि—१ पत्थर का, पत्थर सम्बन्धी।

२ कडा, कठोर।

३ देखो 'सैर' (रू भे)

उ०—१ सैल करण सायबौ गयौ हुय लीली असवार। कै जगळ की मिरगळीया म्हारौ लियौ छै स्याम विलमाय।—लो गी

उ०—२ राज पाट राणा का छोड्या, ओर कचन का म्हैल। हाती घोडा माल खजाना, ओर दुनिया की सैल।—मीरा

उ०—३ मेह सुजळ पोटा मही, सावण करता सैल। मोटौ हुवै सिताब मन, छोटा री ही छैल।—वा दा

४ देखो सेल' (रू भे)

उ०—कुभा सीस चच गौम विहगी कराळ कौ सौ, कै ठाठ कौ तराळ लाय झाळ कौ कै ठेल। लेण सिधा फाळ कौ प्रजाळ कौ कै लका पूछ। सवाई 'अजा' री धकौ काळ कौ कै सैल।

—महादान मेहडू

रू भे—सयल।

सै'ल—देखो 'सहल' (रू भे)

उ०—१ सेठा धन नै केवटणौ सै'ल काम नी है।—फुलवाडी

उ०—२ छोरौ इण वात नै इत्ती सै'ल नी जाणी ही।

—फुलवाडी

सैलकन्या-स स्त्री [स शैल+कन्या] पार्वती, उमा।

सैलकुमारी-स स्त्री [स शैल+कुमारी] पार्वती, उमा।

सैलगगा-स स्त्री [स शैल+गगा] गोवर्द्धन पर्वत से निकलने वाली एक नदी।

सैलगुर, सैलगुरु-स पु [शैल+गुरु] १ वडा, पहाड।

२ हिमालय पर्वत।

३ सुमेरु पर्वत।

सैलजा-स स्त्री [स शैलजा] पार्वती, उमा।

सैलडौ—देखो 'सेल' (अल्पा, रू भे)

उ०—झळक रया छै तीखा सैलडा। अमा कमधजियौ रमै छै सिकार।—रसीलैराज रौ गीत

सैलधन्वा-स पु [स शैलधन्वन्] शिव, महादेव।

सैलधर-स पु [स शैलधर] १ श्रीकृष्ण, गिरिधारी।

२ श्रीवजरग, हनुमान।

सैलनंदनी-स स्त्री [स शैल+नन्दिनी] पार्वती।

सैलपत, सैलपति, सैलपती-स पु [स शैल+पति] १ हिमालय पर्वत।

२ सुमेरु पर्वत।

सैलपुती, सैलपुत्ती, सैलपुत्री-स स्त्री [स शैल+पुत्री] १ नौ दुर्गाओ मे से एक, पार्वती, दुर्गा।

उ०—प्रथसमा तुही पव्वई सैलपुत्ती। दुरगा तुही ब्रह्मचारण्य दुत्ती।

—मे म

२ आठ विशिष्ठ देवियो मे से एक।

सैलराज-स पु [स शैलराज] १ हिमालय पर्वत।

२ सुमेरु पर्वत।

सैलसपाटा, सैलसिकार-स पु—आमोद-प्रमोद के लिये किया जाने वाला भ्रमण, सैर।

उ०—बीच हाळा दलाला नै खावकी दी अर सैर मैं सागीडा सैलसपाटा तथा चरघा कराया।—दमदोख

सैलसुत-स पु [स शैलसुत] १ स्वर्ण, सोना।

२ शिलाजीत।

रू भे—सेलसुत।

सैलसुता-स स्त्री [स शैलसुता] पार्वती, उमा।

सैलाण—देखो 'सेनाण' (रू भे)

उ०—आखी दुनिया मैं तावडा री उजास छितरावणिया री की सैलाण नी वच्यौ।—फुलवाडी

सैलाणी-वि—१ सैर करने वाला, भ्रमणशील।

उ०—लागै परदेसा री पाणी, अबै घर आज्या सैलाणी।

—लो गी

२ देखो 'सेनाणी' (रू भे)

३ देखो 'सेलाणी' (रू भे)

उ०—इण रै उपरात दोन्यू वखत जव-ज्वार री बाटौ सियाळा मैं तिला री सैलाण्या अर ऊपर सू गाया रै घी री नाळा।

—अमरचूनडी

सैलान-स पु—१ नग, नगीना। (अ मा)

२ देखो 'सेनाण' (रू भे)

सैलाड-स पु—१ एक साथ गर्दन से वधे हुऐ दो वैल, वकरे, ऊट आदि चौपाये।

२ उक्त प्रकार से वाधने की रस्सी।

३ उक्त प्रकार से वाधने की क्रिया।

(स्त्री सी) ५ समान, तुल्य।

उ०—१ एक दिन रै समैजोग रावत प्रतापसिंघ कनै एक पंडित पुराणीक आयौ जिकण वडा वडा ग्रथा री समुद्र की सो पार दरसायौ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
उ०—२ 'सवळौ' माधवदास समोभ्रम। आहव कर मझ सो जम आतम।—रा रू
अव्य—किसी अनिश्चित मात्रा, माप और मान पर जोर देने के लिये प्रयोग किया जाने वाला प्रत्यय, शब्द।
ज्यूं—बटाऊ बोल्यौ बाबाजी थोडो सो दूध घाल दौ तौ न्याल कर दौ चाय विना नाडा तूटै।—फुलवाडी
क्रि वि—१ तक, पर्यन्त।
उ०—उदै-अग्रजी बारमी भाण ऊगै, पर्व अस्त सो पूगिग्गा नीठ पूगै।—मे म
२ ऐसा, इस प्रकार से।
उ०—१ जै जै मरणी जुग मरै, सो मरणी आसान। हरीया विन मरणी मरै, सो तौ कठण जान।—अनुभववाणी
उ०—२ सो सुनत ही कुतबुद्दीन अटक नदी को उल्लघि उतकी आरय अवनी को अपनै ही अधीन करत आयौ सो सुनि रत्नसिंह सविनालौ सम्मुह जाइ विग्रह विरचन विचारचौ।—व भा
३ अत, इसलिए।
उ०—१ जेज व्हिया नाकाबदी होवण रौ भौ हौ सो भीमडौ विजळी रै पळाका रै ज्यू किला रै माय नै वळियौ।
—अमरचूनडी
उ०—२ जद हाट री धणी बौल्यौ-अवारू तौ स्वामी जी उतरचा है सो आखी पेडी रुपिया सू जड देवौ तौ ही न द्यू।
—भि द्र
सर्व—१ वह, वे।
उ०—१ करहा नीरू सोइ चर, वाट चलतउ पूर। द्राख विजउरा नीरती, सो धण रही स दूर।—ढो मा
उ०—२ धनौ धन्य सो लोक जौ नोक धोकै। वळै गोर हू और वाता विलो कै।—मे म
उ०—३ स्याम धरम्मी काम द्रढ, खीची 'सिवौ' 'मुकन्न'। सो रहिया साजा परणै, राजा तणै जतन्न।—रा रू
२ वही।
उ०—१ पीछै वाघजी कवर स्रीवीकैजी नू कयौ, "हू तौ आपरी मदत मैं हू सू आप कहौ सो तरतोज करू जिण सू आपरै फायदौ हुवै।"—द दा
उ०—२ अधुरा डसणा सू उदै, विमळ हास दुतिवत। सो सध्या सू चद्रिका, फैली जाण फवत।—वा दा
३ उस, उसके।

उ०—छकीयौ घूमै घाव कौ, सो घट घायल पीर। हरीया घूमै घाव विन, भीतर मार सरीर।—अनुभववाणी
४ उन।
उ०—सारह चलतइ परठिया, आगण वीगडियाह। सो मइ हियइ लगाडिया, भरि भरि मूठडियाह।—ढो मा
५ जो।
रू भे—सौ।
सोअणौ—देखो 'सोवणौ' (रू भे)
सोअणौ, सोअवौ—देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू भे)
सोअहम-अव्य [स सोऽहम्] वही मैं हू, अर्थात् मैं ही ब्रह्म हू।
रू भे—सोउ, सोह, सोहग, सोहगम।
सोइ—देखो 'सोई' (रू भे)
उ०—१ दादू जै जै चित बसै, सोइ मोड आवै चीति। बाहर भीतर देखिये, जाही सेती प्रीति।—दादूवाणी
उ०—२ सगिए सज्जण वल्लहा, जइ अणदिट्ठा सोइ। खिण खिण अतर सभरइ, नही विसारइ सोइ।—ढो म
उ०—३ सदेसा ही लख लहइ, जउ कहि जाणइ कोइ, ज्यू धणि आखइ नयण भरि, ज्यउ जइ आखइ सोइ।—ढो मा
उ०—४ जोइ जळद पटळ दळ सावळ ऊजळ, घुरै नीमाण सोइ घणघोर। प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मडै किरि तडव गिरि मोर।—वेलि
सोइतौ—देखो 'सोहितौ' (रू भे)
उ०—साथीडा रै भोजन भात, कोडीला रै मूळामद सोइता।
—लो गी
सोई-स स्त्री—१ एक जाति विशेष।
उ०—भोई सोई भरडीया, मोनी नइ सूतार। व्यवसाईया सहू जातिना, जै जोईह तिणी वारि।—मा का प्र
सर्व—वही, वह।
उ०—१ साच बोलिया टुकडा सूका, मिळ जावै सोई मीठा। कूड बोल पकवान करावै, धूड बराबर धीठा।—ऊ का
उ०—२ हरीया करता हेक है, दूजा करता नाहि। सोई करता सिसट का, न्यारा घट घट माहि।—अनुभववाणी
उ०—३ पेम भगति नित नेम का, वौह कठण वहवार। हरीया सोई लै निभै, सुख दुख तज्य ससार।—अनुभववाणी
वि—१ शुभचिंतक, हितैषी, मित्र।
उ०—१ डुबी वात छै, कदाचित झूठी होय जावै तौ पाग्वती रा सोई तथा गोई डूबी वात जाण कोई हससी।
—पलक दरियाव री वात
२ सभी, समस्त।
३ देखो 'सोजौ' (पु) (रू भे)
उ०—जीण मेरी बाई यै, लट्टू सा होग्या ज्यारा होठ, जामण

सैसारजुन—देखो 'सहस्रारजुन' (रू भे)
उ०—वळिराजा, पुत्र वाणासुर २५, पुत्र स्त्र गर्दैत्य २६, पुत्र राजा दक्ष २७, दक्ष पुत्र **सैसारजुन** २८, पुत्र करूप २९, । —रा वसावली

सैस्रणी—देखो 'सहस्रिन' ।
सैह—देखो 'सैं' (रू भे)
सैहडौ–स पु [स सुभट] १ योद्धा, सुभट ।
उ०—कर ग्रातुर वूढेय राव किही, मैहडा थट वाटिय सोर सिही । —पा प्र
२ देखो 'सेडौ' (रू भे)
सैहटा–स पु—राठौड वश की एक उपशाखा ।
सैहत, सैहती—१ देखो 'मेहत' (रू भे)
२ देखो 'सहित' (रू भे)
उ०—लै मजा॰ द्रट वचन लै, कोळू गयौ कमद । वरणी ग्रतहुपुर वसै, 'ग्राणद' सैहत ग्रणद ।—पा प्र
सैहनाई—देखो 'सहनाई' (रू भे)
उ०—सोभ वरण वणि जान सवाई, सुर नौवत वाजै **सैहनाई** । —रा रू
सैहर—१ देखो 'महर' (रू. भे)
उ०—सू **सैहर** जोवपुर सू कोम एक उरै मुहमेजा हुवा । —द दा
२ देखो 'सैर' (रू भे)
सैहल—देखो 'सैर' (रू भे)
उ०—तरै राणाजी सु कह्यौ—कदैही **सैहला** नीकळौ नही सौ दीवाण पधारौ, काळीयैद्रह विराजज्यौ, म्है पिण ग्रावा छा । —राव रिणमल री वात
सैहे, सैहेत—१ देखो 'सैं' (रू भे)
२ देखो 'महित' (रू भे)
सों—१ देखो 'सु' (रू भे)
उ०—तद भाली सीवसीजी नु वोलाया । दरवार सो ऊठि भीतर ग्रायाँ ।—कुवरसी साखला री वारता
२ देखो 'सोगन' (रू भे)
सोक—देखो 'सूक' (रू भे)
उ०—उणनू **सोक** चाहिजै सौ म्हारै कनै नही छै । —राव ग्रमरसिह री वात
सोगणी—देखो 'सागणी' (रू भे)
सोगसी–स स्त्री—घोडे के कानो के नीचे ग्रौर ग्रांखो के ऊपर होने वाली भवरी (चक्र) जो ग्रशुभ मानी जाती है । (शा हो)
सोगाडौ–म पु—वढई का एक ग्रौजार विशेष ।
सोझ—देखो 'सौज' (रू भे)
उ०—ऊठी सरद सीतरित ग्राई, सकळ दळै वणि **सोंझ** सझाई । —रा रू
सोधौ—देखो 'सौंधौ' (रू भे)
उ०—१ तिणि **सोवै** रै डोरै लगी जाय छै । ऊजळी ठकुराणी उजळा ठाकुर प्रीतम मू जाइ जाइ मिळै छै ।—रा सा स
उ०—२ घणै **सोवे** घणी केमरि ग्रगरचै सू गरकाव किया थका घोडा रजपूता रै घूमरै मू ग्राइ तोरण वादिग्रौ छै । —रा सा स
सोपड—देखो 'सापड' (रू भे)
सोपणौ, सोपवौ—देखो 'सूपणौ सूपवौ' (रू भे)
उ०—१ भाली री मा उठा जती नु वुलाय कामण करवाया । मो कामण वेटी नु **सोप** पेई मैं घात राखीया । —कुवरसी साखला री वारता
उ०—२ ग्रवु ग्रमीन होय ग्रायौ । कीगेडी एक हाजी इतवारी दूजौ मीरसकारै हवालै ग्राधो-ग्राध परगनौं **सोपीयौ** । वरम २ ग्रवु री हाकमी रही ।—नैणमी
सोपणहार, हारौ (हारी), सोपणियौ—वि० ।
सोपिग्रोडौ, सोपियोडौ, सोप्योडौ—भू० का० कृ० ।
सोपीजणौ, सोपीजवौ—कर्म वा० ।
सोपियोडौ—देखो 'सूपियोडौ' (रू भे)
(स्त्री सोपियोडी)
सोवौ–स पु—एक प्रकार का घाम ।
सोस—देखो 'सूस' (रू भे)
उ०—१ ग्रजीज रावजी रा उमगवा मोनू नामा भेज्या छै । ग्रौर **सोस** खाय लिखियौ छै ।—नैणमी
उ०—२ इण रा वखत मैं इसडौ हीज लिखीयौ । थै ग्रारनी करौ । ताहरा **सोस** काढि नै पाछी गई । —कावळै जोईयौ नै तीडी खरळ री वात
सोहगौ—देखो 'सूगौ' (रू भे)
उ०—मसलत नू मुम्किल कै ताई ग्रासान करणै री वडी वात जाणै । मत्य जाणै इतरी मारी ग्रकला रौ विचार कर ग्रकल मू **सोहगौ** ग्रौर नफा सू भरियौ होमी ।—नी प्र
(स्त्री सोहगी)
सो–म पु—१ शोक । २ दुख । ३ मनुष्य । ४ शरीर । ५ पण्डित । ६ चन्द्रमा । ७ मत्र । ८ शुक्रवार । (एका)
स स्त्री—९ पार्वती ।
वि—१ शुद्ध, पवित्र । २ मलीन, म्लान ३ स्थिर । ४ मव, समस्त ।
उ०—ग्रवै तौ **सो** काम उलटौ हुयग्यौ । थानै महीणै-मामरी छुट्टी लैणी पडसी । ग्राज पूरौ महीणौ ग्राडौ रै'यौ है ।—दमदोख

२ अपौष्टिक ।

सोकाकुळ-वि [स शोकाकुल] शोक से व्याकुल, दुखी, चिंतित ।

उ०—इक नही आक्राता क्रातातुर आडी, डाई अवतीरा सोकाकुळ डाडी ।—ऊ का

सोकातिसार-स पु —शोक एव चिंता से होने वाला एक अतिसार रोग । (अमरत)

रू भे —सौकातिसार ।

सोख-स पु —१ वह घोडा जिसके गले मे वकरी के समान "गलथने" हो ।

२ देखो 'सौख' ।

सोखण—देखो 'सोसण' (रू भे)

उ०—आकरसण वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सरपच ।—वेलि

सोखणी-स. स्त्री —१ सहार करने वाली ।

उ०—तुही सोसणी पोखणी तीन लोक तुही जोगणी सोगणी दूर दोख ।—मे म

२ शोपण करने वाली ।

सोखणी, सोखवौ-क्रि वि [स शोपणम्] १ पीना, आचमन करना ।

उ०—१ सकौ सोखियो हाकडो नाम सिंधू, वहतो थको रोकियो लोकवधू ।—मे म

उ०—२ वीर वचायौ व्याळ रुप वणी, तूटी लाव सघाय । समद हाकडो आप सोखियौ, सेठ जिहाज तराय ।—राघवदास भादौ

२ सुखाना ।

उ०—१ विढवा चद गोरधन वाळो अरि सर सोखण जाण उन्हाळा ।—रा रू

उ०—२ उरध रोम उल्लसै, जोम अरि करण रसातळ । भजि त्रिसळौ निज भाळ, कळा सोखण सत्र कम्मळ ।—रा रू

उ०—३ वीर वचन सुणि विहरण चाल्यउ, सालिभद्र मन मतोखी रे । आयउ घरि ओलरवउ नही माता तप करि काया सोखी रे ।
—स कु

३ चूसना, शोपण करना ।

उ०—धोरावोरा धर घूधळ धुरधाई, थळ थळ ऊथळनी वळती वुरकाई । पडती पुळ पुळ पर मुल मुन भरभुजै, मरकर सर सोखत गिरवर दरगूजै ।—ऊ का

ज्यू—पुडिया मायली घी तौ गळणौ सोख लियौ ।

४ मारना, सहार करना ।

उ०—ऊची रीत उजाळगौ, खीची सुदरदास । खळ मोखै पडियौ खहे, पोखै चद्रग्रहास ।—रा रू

५ नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—१ खूटोडा खोळा गाफल गोळा भोळा डस्क भणदा है । आस्तिक विन डदुक नास्तिक निदुक, सास्तिक मत सोखदा है । तजधरम मिटदी, अधिक अफटी, पापटी पोगदा है ।—ऊ का.

उ०—२ आप लेते है प्याला तव ओनते है कविराव । मत्र सोखियै मित्र पोखियै ।—सू प्र

६ विप आदि उतारना ।

उ०—आवै गयण अचीन, जेम वनि अगनि मिळगा । सरप विसर सोखवा, मत्र आवै मुनमगा ।—रा रू

सोखणहार, हारो (हारी), सोखणियो—वि० ।

सोखिओडो, सोखियोडो, सोखयोडो—भू० का० कृ० ।

सोखीजणो, सोखीजवौ—कर्म वा० ।

सोखता-स स्त्री [स शुष्] एक प्रकार की काल्पनिक पिशाचिनी जिसके सहवास से मनुष्य कृशकाय होकर धीरे-धीरे मृत्यु को प्राप्त होता है । (वि पोखता)

उ०—साप्रत जागी सोखता, चितनी नाग चुटैल । हार गयौ अछतो हुयौ, छतो थको ही छैल ।—वा दा

सोखायत—देखो 'सौगात' ।

उ०—करी एक उन्मत्त अस्व ऊंगन विनायत । पाटवर जरतार, भार मेवा सोखायत ।—ला रा

सोखियोडो-भू का कृ —१ पिया हुआ, आचमन किया हुआ २ सुखाया हुआ ३ चूसा हुआ, शोषा हुआ ४ मारा हुआ, सहार किया हुआ ५ नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ ६ विप उतारा हुआ ।

(स्त्री सोखियोडी)

सोखी-वि —१ मित्र, दोस्त, हितैपी ।

उ०—१ मन का सोखी मन है, मन का दोखी मन । हरीया सोखी सकल का, एको राम भजन ।—अनुभववाणी

उ०—२ तव थी सो मति अव नही, तव टोटा अव लाह । दोखी मत्र सोखी भया, चोर भया सबसाह ।—ह पु वा

२ शौकीन ।

रू भे —सोगी, सौखी ।

सोकीटगवरत—स पु —वह घोडा जिसके पेट या घुटनो के मोड पर भवरी (चक्र) हो (अशुभ) । (शा हो)

सोखीन—१ देखो 'सौखीन' (रू भे)

उ०—खोबा मे सोखीन खावे, जाट सदीनी नेवता । अयाचित अपूरव आणद, समी विरख दत देवता ।—दमदेव

सोखीनाई—देखो 'सौखीनाई' (रू भे)

उ०—१ ठगी माथै कमर वाधी, सोखीनाई नै धोखा-धडी सू साधी । सैसी अर मैंतर ताई मागै विना नही छोड्या ।—दमदोख

उ०—२ तेल सावण लगावै, सलाजीत खावै अर गोटा पीवै है तो ही वूढापो वैरी लुक्यो नी चावै । जद ई सोखीनाई मैं ही मजो नी आवै, गजो ऊपरली गली जावै है ।—दसदोख

सोगध-स स्त्री —शपथ ।

की यै जाई, आल्या पर फिरगी सोई मारा की ।
—जीणमाता री गीत

सोउ—देखो 'सोग्रहम्' (रू भे)
उ०—ओउ सोउ सबद की, सहजा सुणी अवाज । जनहरीया इन ऊपरै, ररकार का राज ।—अनुभववाणी

सोऊ-सर्व — वह ।

सोक-स पु [स शोक] १ परिवार मे किसी की मृत्यु के उपरात प्राय आगामी त्यौहार तक रक्खा जाने वाला रज, जिसमे कोई खुशी या मागलिक कार्य न तो परिवार मे किया जाता है और न ऐसे कामो मे भाग लिया जाता है, दुख, रज ।
उ०—१ रावजी बोलिया—इण महा सूरवीर रै मुह चढ काम आया सौ वैकुठ री वाट बुहा, जिणा रौ सोक न करणौ ।
—डाढाळा सूर री वात
उ०—२ तद रावजी फुरमायी—आज अठै गोठ हुवै सौ सगळा री सोक भाजै । आदमी जिनस रै पगा सहर मेलिया ।
—डाढाळा सूर री वात
क्रि प्र —करणौ, भगाणौ, भाजणौ, राखणौ, होणौ ।
२ दुख, रज ।
उ०—झगडा मैं भाजो तिण सू सारौ जगत इण नै हसियौ नै एक वीर स्त्री न हसी सौ उण रै पतिरा भागलपणा री मैहणी लागी तिण कारण हसी नही सोक कीधौ ।—वी स टी
३ कष्ट, पीडा ।
उ०—रोग सोक दुख पाप रिण, अै मत करौ प्रवेस । रहौ अनीत अनीत विण, दाता हदै देस ।—वा दा
४ विपत्ति, सकट ।
५ चिंता सताप, पश्चाताप ।
उ०—जिकै वज्रपात जिसडा वचन सुणना ही पातसाह रा मन मैं भी पतसाही करण री आधी आस रही । जठै दारा नू उपालभ देर पछतावा रै प्रमाण सोक रा समुद्र मे मग्न सुगळेस इण रीति कही ।—व भा
६ साहित्य मे ३३ प्रकार के सचारी भावो मे से एक ।
उ०—वाह बदन सुगम सेव्यइ, भाव सचारिक बखड । तेत्रीस ध्रनि मति स्मरण, लज्जा सोक निद्रादिक सबइ ।—वि कु
वि वि —साहित्य ग्रथो मे आये सचारी भाव के ३३ भेदो मे शोक का नाम नही मिलता है ।
रू भे —सोग ।
मह,—सोक ।
७ देखो 'सौक' (रू भे)
उ०—१ सर सोक बजत पग सगणौ, तिम हीज जडाव तुरग तणौ ।—सू प्र
उ०—२ रुडै सिवडौ राग पडै सर सोक अपारा ।—रा रू
उ०—३ विवाण अछरा सोक बाजी हाक डाक वीर, वींटीयै सवीर घणा धारिया विमन ।—नैणसी
उ०—४ श्रीगडा भालोडा रा बूम पडिया छै । सवायै सेहरी जोगि सोक बाजै निण भाति पवारी रुण बाजिनै रही छै ।
—रा मा म
उ०—५ ग्रीध पवारा ससारी सोक बाजि नै रहिया छै । मेला रा धमोडा पडै छै ।—रा मा म
उ०—६ अमी तरै थी सोकां ठाकर आगै मुहागण री बुरी कही तद ठाकुर साची मानी अर घणौ इतराज हवौ ।
—गाम रै धणी री वात
उ०—७ अणख वयण हर ईसकौ, चित्त नित्त आही चाल । सहस्यौ क्यु कर यै इमा, सोकां वाळा साल ।—पना
उ०—८ झाली री मा झाली सू बाना कीवी सोका री वाता पूछी ।
—कुवरसी सांखला री वारता

सोकड—१ देखो 'सौक' (१, २, ३, ४) (रू भे)
उ०—१ अौ कुचमादी तौ राजाजी नै ई नी बगसिया । डोकरी रा गाभा बदळाय खुद राजाजी रा गाभा पैर घोडा मायै वैठ सोकड मनाई ।—फुलवाटी
उ०—२ पछै तौ अेक सोकड न्हाटी । पण न्हाटणौ सब अकारथ गियौ ।—फुलवाडी
२ देखो 'सौक' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ भला न कैसी कोयक भोग्या भायली, सोकड काई थानै मणगा ऊपर लै जायली ।—लो गी
उ०—२ प्रीतम तुम मत जाणियौ, दूर देस का वास । खोट हमारी यहा पडी, प्राण तुम्हारै पास । जी उमराव थानै किण सोकड विलमाया म्हारा प्राण, उमराव अौ रसिया ।—लो गी
३ देखो 'सोक' (मह, रू भे)

सोकडली—१ देखो 'सौक' (१) (अल्पा, रू भे)
उ०—जला रे ठडौ पाणी साहिबजी नै पाइजै रे म्हारी जोडी रा जला सिरगानेणी रा जला खारोडौ म्हारी सोकडली नै पाइजै रे जला ।—लो गी

सोकण—देखो 'सौक' (१) (अल्पा, रू भे)
उ०—डाक्या टोडा टोडडी, लोपी नदी बनास । आडावळौ उलाघियौ, जद छोडी धण आस । जी उमराव थानै कुण सोकण विलमाया म्हारा राज ।—लो गी

सोकरडौ—देखो 'सौकरडौ' (रू भे)
उ०—देवर भाभी देखणौं, ढाहण गजा निसाण । सोकरडा रा सिधू मैं, पुगौ पवन प्रमाण ।—वी स

सोकळ-स पु —१ शुष्क, साधारण ।
उ०—राणी सोकळ चून री, कमी दिखावौ काय । औरग पदमी मीलणौ, म्हारा रौ सिर जाय ।—वी स

चिक] दरजी। (टि को)

साचकस—देखो 'सोचीकोस' (रू भे) (अ मा)

सोचणौ, सोचवौ—क्रि स—१ चिंता या फिक्र मे पडना, चिंतित होना।

उ०—१ रवद स्याम के रूम कै, मुनी राफमी मोय। माह हुकम चोडै स्रवण, सुण सोचिया सकोय।—रा रू

उ०—२ मोडै मुख मोडै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरणनै मीतळ सतवाळो। लुच्चा ललचावै लालच धिन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण छिण लागै।—ऊ का

२ किसी विषय पर मन मे विचार करना, कल्पना करना।

उ०—१ नगर रा सगळा कवि भेळा होय गुजरी रै रूप री ओपमावा सोचण लागा।—फुलवाडी

उ०—२ वौ दरबारिया नै नवा नवा सवाल पूछतौ। सही जवाब मिळिया मूडै माग्यौ इनाम देवतौ। सोचण सारू मोलगत देवतौ।—फुलवाडी

३ निश्चय करना, इरादा करना, विचार करना।

उ०—दैत री मौत अर उणरा रगत सू बिरथा ओसया नी वैठ जावै, इण वास्तै नाहरसिंघ तडकै सगळी वात वतावण री सोची।—फुलवाडी

४ विशेषत किसी कार्य परिणाम या प्रणाली के विषय मे विचार करना, विचार-विमर्श करना।

५ किसी कार्य के उचित अनुचित का विचार करना।

उ०—आ कैयनै वै तौ मूंटी सोची नी कोई भली। मिठाइया माथै किडकायनै पडिया जकौ गपाक गपाक मिठाइया खावणी चालु करदी।—फुलवाडी

६ अनुमान करना, अदाजा लगाना।

७ असमजस मे पडना, पशोपेश मे पडना।

सोचणहार, हारौ (हारी), सोचणियौ—वि०।

सोचिओडो, सोचियोडो, सोच्योडो—भू० का० कृ०।

सोचीजणौ, सोचीजवौ—कर्म वा०।

सोचिकेस—देखो 'सोचीकेस' (रू भे)

सोचियोडो—भू का कृ—१ चिन्ता या फिक्र मे पडा हुआ, चिंतित २ मन मे विचारा हुआ ३ निश्चय किया हुआ, इरादा या विचार किया हुआ ४ विचार-विमर्श किया हुआ ५ औचित्य पर विचार किया हुआ ६ अदाजा लगाया हुआ, अनुमानित ७ असमजस या पशोपेश में पडा हुआ।

(स्त्री सोचियोडी)

सोची—स स्त्री [स शोचिस्] १ प्रकाश, ज्योति।

२ आभा, काति, चमक। (ह ना मा)

३ अग्नि, आग।

सोचीकेस—स पु [स शोचिष्केश] अग्नि, आग। (ह ना मा)

रू भे—सोचकेस, सोचिकेस।

सोज—१ तैयारी।

उ०—गुण प्रोहित सुभट गाजी, तेट मत्री अकल ताजी, सरा कीध सधीर। सोज लावा करै सादी, गुमर धारै अवर गादी, विराजै रघुवीर।—र रू

२ देखो 'सोच' (रू भे)

उ०—आध कोस अनरै, रटक आपणो चलावा। न को रहा अण सोज, न कू आलोज उपावा।—रा रू

सोजणौ, सोजवौ—देखो 'सोधणौ, सोधवौ' (रू भे)

उ०—पुरस तौ ईणा गटा अठैहीज छिपायो है। जो थे ही सोज ल्यो।—राजा रा गुर रा बेटा री वात

सोजाक—देखो 'सूजाक' (रू भे)

सोजि—देखो 'सोजी' (रू भे)

सोजियोडो—देखो 'सोधियोडो' (रू भे)

(स्त्री सोजियोडी)

सोजी, सोजी—स स्त्री—१ विवेकशक्ति, बुद्धि, ज्ञान।

उ०—यू हाल टावर है। भूंडो-भलो सोचण री यनै अजै ई सोजी कोनी यू जाणै कै म्है थारो भूंडो चीता ला।—फुलवाडी

२ ध्यान, पता, जानकारी।

उ०—१ वाजरी री तो म्है फेर ई गम खाय लेती. पण थानै इण वात री सोजी होवणी चाहीजै कै भाटिया रै सरणै आया सूवर री सुद भगवान ई लारो करै तो उणरी पार नी पडै।—फुलवाडी

उ०—२ जै मिनख नै सापरत दीठ न आगै दीसण लाग जावै, आगला छिण री सोजी पडण लाग जावै तो उणी पलक वाता री पीदो आय जावै।—फुलवाडी

३ अकल, बुद्धि, विचार शक्ति।

उ०—१ वेटी लूखी वाणी मैं जवाब दियौ—म्हारो भूंडो-भलो चीतण री म्हामै पूरी सोजी है।—फुलवाडी

रू भे—सोधी।

४ देखो 'सोजो' (अल्पा, रू भे)

उ०—होठा री सोजी मिटचा दीवाणजी ई थोडा वाळी वात नै खामी भूलग्या हा। याद राखणा सू लाज आवती।—फुलवाडी

सोजो, सोजो—सूजन, शोथ।

अल्पा,—सोजी, सोई।

सोभण—स स्त्री—शुद्ध करने या सशोधन करने की क्रिया।

सोभणौ, सोभवौ—देखो 'सोधणौ, सोधवौ' (रू भे)

उ०—१ हितू जाण सुविहाण, खान इतकाद आद भ्रत। कियौ विदा आलोभ, सोभ सुख वात घात चित्र।—रा. रू

उ०—२ वेटा री मग रण वधण, वहु री वळणी मग्ग। सोभी पीहर सासरा, लारै रजवट लग्ग।—रैवतसिंह भाटी

उ०—३ दिस दिक्खण ब्बडिया 'दुरग', सूरधरा छळ सज्भ।

उ०—सोगध लीव सिकारिया, नह लाहोरी ग्राय । थारी सेकी एक वस, लूग्रा प्राण सुकाय ।—लू

रू भे—सोगन, सौगद, सौगध, सौगध ।

सोग—देखो 'सोक' (रू भे)

उ०—१ सज्जण चाल्या हे सखी, नयणाँ कियौ **सोग** । सिर साडी गळि कचुवौ, हुवउ निचोवण जोग ।—ढो मा

उ०—२ बेटा ताहरा तात नैं मार तू जहर सस्त्र नैं जोग रे लाला जिम राज्य वेसाणू तौ भणी, म्हारौ मिट जाय दुख नै **सोग** रे लाला ।—जयवाणी

उ०—३ मन मैं धारै ग्रधिकौ सोग, हीयडौ फाटइ नाह वियोग । —वि कु

सोगटावाजी—स स्त्री—शतरज या चौसर का खेल ।

सोगटी, सोगट्टी—देखो 'सोगटौ' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—जैं थाणाँ भड ऊठिया, वैठा तै थाणाँह । **सोगट्टी**, सतरज जिम, ग्रापौ ग्रापाणाँह ।—गु रू व.

सोगटौ, सोगठौ—स पु—शतरज या चौसर की गोट, गोटी ।

उ०—१ वरस २ तथा ३ हुवा सु कमालदीनू **सोगठा** रमण घणी चूप हुती सु एक दिन मूळराज सादौ सी वागौ पेहर सादा हथियार वाध नैं कमालदी चौपड रमतौ थौ तठै ग्राय ऊभौ रह्यौ दाण वतावण लागौ ।—नैणसी

उ०—२ इण भाति वागारा चिहुरवध छूटै छै । कडिग्रा लोल लीजै छै । वीजणाँ वाउ ढोळीजै छै, घोडा वाउठा कीजै छै, ग्रंगकी टहलावीजै, चौरगा **सोगठा** री खाटखड पडि नैं रही छै ।
—रा सा स

उ०—३ करि भोजन वइटा एकठा, ग्राण्या पासा नइ **सोगठा** ।
—ढो मा

सोगन—१ देखो 'सोगध' (रू भे) (डिं को)

उ०—१ माईता री लोई पीवण री **सोगन** दिराया पछै ई डीकरी ग्रापरी ठौड वैठी थेपडी रै मापै ढिगली सू गोवर री पीडौ लेय नीची वूण करिया थापण री काम उणी भात चालू करियौ ।
—फुलवाडी

उ०—२ हरसा वीर म्हारा रे **सोगन** मैं खायी रे सरवर पाज पै ।
—लो गी

२ देखो 'सुगनी' (रू भे)

सोगरौ, सोगरी स पु—वाजरी की मोटी रोटी ।

उ०—पछेवडी मैं **सोगरा** वावता चौधरण वोली—दो च्यार जागा भाव ताव पूछनै चीज लीजौ इमी नी व्है कै भोगनौ भगाय नैं ग्रावौ ।—रातवासौ

उ०—२ चौधरण कनै भाती हौ । दोय **सोगरा** ग्रर चटणी उणनै भिलाय उणरौ नाव पूछ्यौ ।—फुलवाडी

सोगात—देखो 'सौगात' (रू भे)

सोगियौ—वि—१ भेद लेने वाला ।

२ देखो 'सोगी' (ग्रल्पा, रू भे)

सोगी—वि [स शोक+रा प्रा ई] १ शोक-सतप्त, दुखी, चिंतित ।

उ०—कोप करि लोक तिण पकडी कवजै किया, विगर घर वार हूवा वियोगी । नासता मूड भारी पडी त्या नरा, सवळ पानै पड्या थया **सोगी** ।—वि कु

२ देखो 'सुहागौ' (रू भे)

३ देखो 'सोखी' (रू भे)

सोड़—स स्त्री—१ रजाई, सिरख ।

उ०—चम चीर वेज वणाय दावण घलाग्रौ मलमूल री । सुग्रा भरणी **सोड** भराय गाल मसीरा गादी गीडवा ।—लो गी

२ देखो 'मसोड' (रू भे)

रू भे—सौड ।

सोडक—स पु—लाव के साथ घूमने वाले चक्र मे लगने वाला लोहे का डडा ।

सोडव—स पु [म पाडव] छ स्वरो का एक राग विशेप ।

सोडम—देखो 'मोटस' (रू भे)

सोडसकळा—देखो 'मोडसकळा' (रू भे)

सोडसगण—देखो 'सोडसगण' (रू भे)

सोडसदान—देखो 'सोडसदान' (रू भे)

सोड़सपूजन—देखो 'सोडसपूजन' (रू भे)

सोडसमात्रका—देखो 'सोडसमात्रका' (रू भे)

सोडसससकार—देखो 'सोडमसस्कार' (रू भे)

सोच—म पु—१ चिंता, फिक्र ।

उ०—१ भूपति इम भाखियौ, हमैं सुभडा किम व्हीजै । वोल्या भड धजवध, कमधपति **सोच** न कीजै ।—मे म

उ०—२ **सोच** कगी मत ठाकरा, मौ धड जेतै मत्थ । की नाकत जमराज री, नौ सिर घालै हत्थ ।—मुकनदान खिडियौ

२ पश्चाताप, पछतावा ।

उ०—जव लोक कहै—भीखणजी जगूजी ममजता वीजा नैं इ दोरौ लागौ पिण खेतमी जी लुणावत नैं तौ दोहरौ घणौं इज लागौ । **सोच** घणौ करै ।—भिक्खु

३ दुख, रज ।

४ ग्राश्चर्य, विस्मय ।

उ०—गिरवर रइ सिखर माडियउ गाहड, तिकौ ग्रचरिज पेखीयउ तिण । **सोच** हुग्रौ मन माहि मपेखै, वध कमळ किम वार विण ।
—महादेव पारवती री वेलि

रू भे—सोज ।

५ देखो 'सौच' (रू भे)

उ०—माहै वामण थौ जणी री तौ सत छूट गयौ । नौ माहै हीज **सोच** गयौ ।—राजा रा गुर रा वेटा री वात

सोढा—स पु —पवार वश की एक शाखा।

सोढौ—स पु —१ पवार वश की सोढा शाखा का व्यक्ति।

२ वर, पति।

उ०—भावी न मिटै कुयरी, तुम्है थया छौ एक। मन मान्यौ **सोढौ** मिळ्यौ, परणी ग्राणि विवेक।—वि कु

३ एक प्रसिद्ध लोक गीत जो विवाह के समय रात्रि मे गाया जाता है। (वा दा ख्यात)

सोण—स पु [स शोण] १ अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

२ देखो 'सोणित' (रू भे)

उ०—मचायौ **सोण** री कीच द्रोण सौ दिखायौ मानू, तेगा सू रचायौ ख्याल ग्रनोखौ तमास। छकै छाक लोहा पूर ग्रारवा विमाणा छायौ, हैकपै भूलोक ग्रायौ मुनिंद्रा सहास।

—बादरदान दधवाडियौ

३ देखो सुगन' (रू भे.)

उ०—म्हारा **सोण** सैफळिया वै पाचौ ही मिळ राजा रै पगा लागी।—चौबोली

४ देखो 'सोणभद्रा' (रू भे)

उ०—देवी कावेरी तापि ग्रस्ना कपीला, देवी **सोण** सलज्ज भीमा सुसीला।—देवि

सोणक—वि —लाल।

सोणगिर, सोणगिरि, सोणगिरी—देखो 'स्वरणगिर' (रू भे)

सोणत—देखो 'सोणित' (रू भे)

सोणभद्रनद—स पु यौ [स शोणभद्रनद] विंध्याचल से निकलकर पटना के पास गगा मे गिरने वाला एक नद।

सोणभद्रा—स स्त्री [स शोणभद्रा] पजाव की सोन नदी का एक नाम।

रू भे—सोण।

सोणहर—स पु —शयनघर।

उ०—ताहरा सोनगरा रिणमल जी सू चूक तेवडियौ। **सोणहर** रिणमल जी पोढिया हुता।—नैणसी

सोणित—स पु [स शोणित] १ रुधिर, खून, रक्त।

उ०—१ जुद्ध मैं माझिया नै विरोळै मारनै **सोणित** लोही सू रूक तरवार रग नै पाछौ मुडै छै। इणमैं पती री वीरता दिखाई हे।

—वी स टी

उ०—२ इणी रीति रतळाम रै राजा राठौड रत्नसिंह सारथी ममेत तरणी नू तमासै लगाइ केही गजदता सहित सुडाव्ड सुना करि दीठा दोयणा रै **सोणित** भद्रकाळी री खप्पर भराइ वीर वेताळा नू गूदरा गाळा जिमाइ विना माथै भी साहजादा नू सकाइ लोह छक घूमता गजा री घडा मैं सूरसज्जा सूतै इच्छा रै ग्रनुसार परलोक लियौ।—व भा

२ सिंदूर।

३ केसर।

४ तांवा।

५ शूर राजा का पुत्र एक यादव राजा।

वि —लाल, रक्तवर्ण। ❀ (डिं को)

रू भे—सोणत, सोण, सोणी, स्रूण, स्रूणि, स्रूणी, स्रोण, स्रोणित, स्रोणी।

सोणितचदण, सोणितचदन—स पु [स शोणितचदन] लाल चदन।

सोणितपुर—स पु [स शोणितपुर] १ वाणासुर की राजधानी का नाम।

२ सोजत नगर का एक प्राचीन नाम।

सोणितोद—स पु [स शोणितोद] एक यक्ष का नाम।

सोणी—१ देखो 'सोणित' (रू भे)

उ०—वळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सू सर सावळ झळहळ ए। ग्रडडै काछूसळ कुटकै कम्मळ, **सोणी** रळ-चळ खळहळ ए।

—गु रू व

२ देखो 'साणी' (रू भे)

सोणू—देखो 'सोहणौं' (रू भे)

उ०—**सोणू** तीतर वोल्यौ जाय डोडो ज्वार री।—लो गी

सोणौ, सोवौ—१ देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू भे)

उ०—जव **सोऊ** तव जागवइ जव जागू तव जाइ। मारू ढोलउ सभरइ, इणि परि रयण विहाइ।—ढो मा

२ देखो 'सोहणौ, मोहवौ' (रू भे)

सोत—स स्त्री —१ जयपुर राज्य की एक नदी जो झाडली ग्रौर जैतगढ की पहाडियो मे से निकलकर सावी मे गिरती है। (वीर विनोद)

२ देखो 'स्रोत' (रू भे)

३ देखो 'सौत' (रू भे)

सोतपत, सोतपति, सोतपती—देखो 'स्रोतपति' (रू भे) (डिं को)

सोतौ—देखो 'स्रोत' (रू भे)

सोथ—स स्त्री [स शोथ] सूजन।

सोदति—स पु [स] एक ग्राचार्य जिस पर विश्वामित्रजी ने विजय प्राप्त की थी।

सोदकुभ—स पु —पितरो के उद्देश्य मे किया जाने वाला एक प्रकार का कृत्य।

सोदणौ, सोदबौ – देखो 'सोधणौ, सौधवौ' (रू भे)

उ०—ताकत डोलै तीसरा, साथरवाडा **सोद**। पैला घर पटकी पडै, माखा रै मन मोद।—ऊ का

सोदणहार, हारौ (हारी), सोदणियौ—वि०।

सोदिग्रोडौ, सोदियोडौ, सोदयोडौ—भू० का० कृ०।

सोदीजणौ, सोदीजबौ—कर्म वा०।

सोदर, सोदरज—स पु [स सहोदर, स स+उदर] एक ही मा के कोख से उत्पन्न भाई, भ्राता। (ग्र मा, ह ना मा)

छोडै मका ज्यो हणू , लका सोभण कज्ज ।—रा रू

उ०—४ मोतिए त्रिमाद्रण ग्रहि कुण मूकै, एक एक प्रति एक अनूप । किल सोभण मुख मूभ वयण कण, मुकवि कुकवि चालणी न मूप ।—वेलि

उ०—५ सुरिन निरत करि सोभीया, पाया राम रतन । तन ताळा मन ताकडी, विणजणहार वचन ।—अनुभववाणी

सोभणहार, हारौ (हारी), सोभणियौ—वि० ।

सोभिश्रोडौ, सोभियोडौ, सोझ्योडौ—भू० का० कृ० ।

सोभीभणौ, सोभीभवौ—कर्म वा० ।

सोभियोडौ—देखो 'सोधियोडौ (रू भे)

(स्त्री सोभियोडी)

सोट, सोट—स पु—१ गोढवाड मे बच्चे के जन्म के बाद प्रथम होली पर उसकी 'ढूढ' के सस्कार के अवसर पर अपनी जाति मे बाटा जाना वाला खाजा जो पापड के आकार का होता है ।

रू भे—सोठौ ।

२ देखो 'सोटौ' (रू भे)

उ०—गाव मैं वडतारै सामै केई वेलीडा भळै मिळ्या । सोट साभ लिया ।—दसदोख

सोटण, सोटी—स स्त्री—१ वह लबी लकडी जिससे ज्वार बाजरा आदि की सिट्टियो को कूटकर दाना निकालते हैं । (लकडी)

२ देखो 'सोटौ' (अल्पा, रू भे)

सोटौ—स पु—१ मोटी लकडी का मजबूत डडा, लाठी, लट्ठ ।

उ०—तद गाम रै धणी आपरी असतरी रौ वचन सुणनै छोकरी रै सोटा री मारी ।—राजा रा गुर रा बेटा री बात

२ भैसा-साड ।

उ०—मोडा अेक बहुत ह्वं महिला, ज्यू भैसिन मैं सोटा । दै छाटा नारी परवोवै, ससम बतावै खोटा ।—ऊ का

३ देखो 'सोठौ' (रू भे)

रू भे—सोट ।

सोठागारौ—वि (स्त्री सोठागारी) १ मितव्ययी ।

२ कृपण, कजूस ।

सोठौ, सोठौ—स पु—१ तगी, अभाव ।

उ०—या 'राजोधर' अखियौ, सू जादवा सप्राण । सोठै नाणा जीवणौ, तौ पूठै 'जैसाण' ।—रा रू

२ मितव्ययता ।

३ कृपणता ।

४ देखो 'सोटौ' (रू भे)

रू भे—सठौ ।

सोडस—वि—सोलह ।

स पु—सोलह की सख्या ।

रू भे—सोडस ।

सोडसकळा—स स्त्री [स पोडश्+कला] चन्द्रमा की सोलह कलाएँ जिसमे वह क्रमश घटता-बढता रहता है ।

वि वि—देखो 'कळा' (२)

रू भे—सोडसकळा ।

सोडसगण—स पु [स पोडशगण] ५ ज्ञानेन्द्रियो, ५ कर्मेन्द्रियो, ५ भूत और एक मन इन सोलह का समूह ।

रू भे—सोडसगण ।

सोडसदान—स पु [स पोडसदान] १ धर्मानुसार इन 'सोलह चीजो का दान—पृथ्वी, जल, आसन, वस्त्र, अन्न, पान, दीपक, छत्र, सुगन्धित द्रव्य, फल, पुष्पमाला, खडाऊ, शास्त्र, गाय, सोना और चाँदी ।

रू भे—सोडसदान ।

सोडसपूजन—स पु [स पोडशपूजन] पूजन के सोलह अग या कृत्य ।

२ पोडशोपचार से की जाने वाली पूजा ।

रू भे— सोडसपूजन ।

सोडसमात्रका—स स्त्री [स पोडश्+मातृका] सोलह मातृकाओ का समूह या वर्ग जिनके नाम इस प्रकार हैं—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शालि, पुष्टि, धृति तुष्टि, मातृ और आत्म देवता ।

रू भे—सोडसमात्रका ।

सोडसवारखी—वि स्त्री [स पोडस+वार्षिका] सोलह वर्ष की ।

उ०—बाळी-भोळी अबळा प्रउढा सोडसवारखी राणी रवताणी । वहदा वहदी ही आपणा देवर जेठ भरतार का सत देखती फिरइ छइ ।—अ वचनिका

सोडससस्कार—स पु [स पोडशसंस्कार] गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक वैदिक विधान के अनुसार किये जाने वाले सोलह-सस्कार ।

रू भे—सोळैसस्कार ।

सोडसी—वि [स पोडशी] १ सोलह वर्ष की आयु वाली ।

२ युवती ।

स स्त्री—१ सोलह वर्ष की युवती ।

२ दस महाविद्याओ में से एक ।

३ इन सोलह वस्तुओ का समूह—ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, जल, अग्नी, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मत्र, कर्म और नाम ।

सोडसोपचार—स पु [स पोडशोपचार] पूजन के सोलह उपचार या अग—आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्रा-भरण, यज्ञोपवीत, चदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताबूल, परिक्रमा और वदना ।

सोडौ—स पु [अ] सज्जी को रासायनिक क्रिया द्वारा साफ करके बनाया जाने वाला एक प्रकार का क्षार ।

सोढाण, सोढायण—स पु—ऊमरकोट का प्राचीन नाम ।

४ विचार करने के लिये प्रेरित करना।
५ वैद्यक मे धातुओ का शोधन कराना।
६ छान-बीन कराना, जाच-पडताल कराना।
७ अन्वेषण कराना, गवेषणा कराना।
सोधाणहार, हारौ (हारी), सोधाणियौ—वि०।
सोधायोडौ—भू० का० कृ०।
सोधाईजणौ, सोधाईजबौ—कर्म वा०।
सोदाणौ, सोदाबौ—रू० भे०।

सोधायोड़ौ–भू का कृ —१ ढुढवाया हुआ, खोज कराया हुआ २ शुद्ध या साफ कराया हुआ ३ ठीक या दुरुस्त कराया हुआ ४ छान-बीन करवाया हुआ ५ गवेषणा या शोध करवाया हुआ।
(स्त्री सोधायोडी)

सोधिया–स स्त्री —पडिहार वश की एक शाखा जो मालवे मे आबाद है।

सोधियोडौ–भू का कृ —१ ढूढा या खोजा हुआ २ छान-बीन किया हुआ ३ शुद्ध या साफ किया हुआ ४ सोचा हुआ, विचारा हुआ ५ ठीक या दुरुस्त किया हुआ ६ गवेषणा किया हुआ।
(स्त्री सोधियोडी)

सोधी—देखो 'सोजी' (रू भे)
उ०—१ **सोधी** नही सरीर की, औरौ कौ उपदेस। दादू अचरज देखिया, यै जायेंगे किस देस।—दादूवाणी
उ०—२ **सोधी** नही सरीर की, कहै अगम की वात। जान कहावै वापुडै, आयुध लीयै हाथ।—दादूवाणी

सोधौ—देखो 'सौदौ' (रू भे)
उ०—जिनावरा मैं **सोधौ** स्याळियौ, पखेरूआ मैं कागौ काळियौ अर मिनखा मै नाई नागौ तथा जाळियौ वाजै है।—दसदोख

सोनग, सोनगर, सोनगरौ—देखो 'सोनगरौ' (रू भे)
उ०—'केहरी' पडै **सोनगरौ** 'दलौ' लडै आगा दळा।—रा रू

सोन–स स्त्री [स शोण] १ एक नदी जो मध्यप्रदेश के अमरकटक की अधित्यका से निकलती है तथा अत मे गगा मे मिलती है।
२ एक सदावहार लता।

सोनइयौ–स पु —१ स्वर्णमुद्रा।
उ०—१ इम कही हय गय सार, लाख **सोनइया** रोकडा जी।
—प च चौ
उ०—२ लाख **सोनइया** रोकडा रे लाल।—प च चौ
२ एक प्रकार की घास।
रू भे —सोनेयौ, सौनइयौ।

सोनउ—देखो 'सोनौ' (रू भे)।
उ०—जी हौ **सोनउ** स्याम न होय।—स कु

सोनगढ–स पु —१ जालोर का दुर्ग।
२ देखो 'स्वरणगिरि'।

सोनगर–स पु —जालोर नगर का एक प्राचीन नाम। (ऐतिहासिक)

सोनगरा–स स्त्री —चौहान वश की एक शाखा।

सोनगरौ–स पु —चौहान वश की सोनगरा शाखा का व्यक्ति।
रू भे —सोनग, सोनगर, सोनिगरौ, सोनगिरौ।

सोनगिर, सोनगिरि, सोनगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू भे)
उ०—जिण जाळोर रौ दूजौ परयाय आग्यात्रत मैं विदित **सोनगिरि** इसौ कहावै।—व भा

सोनचिडी–स स्त्री —एक प्रकार की छोटी चिडिया जो सफेद एव काले रग की होती है, इसके सकुन माने जाते हैं।
रू भे —सोवनचिडी, सोहनचिडी, सौनचिडी।

सोनजरद–स पु —पीली जूही।

सोनजाय, सोनजुही–स स्त्री —पीले रग के फूलो वाली जूही, स्वर्ण यूथिका।
उ०—१ औ विचारा भवरा भेद कहै है वीजू **सोनजुही** तौ अग मैं मिल रहै है।—र हमीर
उ०—२ **सोनजुह** रियावेल चवेल चवेली कै फुलवाद। मोगरैकी महक गुलाव फुलूकी सुगध जवाद।—सू प्र.
उ०—३ तठा उपरायत माळी फूला री छावा आण हाजर कीजै छै। सू फूल कुण भातरा छै। हजारा नौरग तुररौ मैंहदी किलगी **सोनजुही** इसकपेचौ खेरी कोयल मालती चादणी मुखमल नरगस हवास गुलअनार दाऊडी केवडौ।—रा सा स
उ०—४ कुमुद ढाक कल्हार, वेण कचनार विराजै, **सोनजाय** पल्लव असोक सुर धोकसु साजै।—रा रू
रू भे —सोवनजाई, सोवनजुही।

सोनडौ–स पु —एक प्रकार का घोडा विशेष। (शा हो)

सोनभद्र, सोनभद्रा—देखो 'सोन' (रू भे)

सोनमेनी–स स्त्री —एक नगरी का नाम जो कराची से ३० कोस है।
उ०—नग्री **सोनमेनी** पछै गाम नाही, महा कासटा घोर ऊजाड माही।—मे म

सोनल–वि —१ सोने का, स्वर्णमय, सुनहरा।
उ०—राजकवरी रौ रूप सुभट दीसतौ हौ **सोनल** केस। चाद रै उनमान पळकतौ उणियारौ।—फुलवाडी
२ गौर वर्ण।
उ०—वादळा नै छोड आ कोई बीजळी नाळ उतरै है कै गिगन छोड कोई चाद नाळ उतरै। सोना रा केस अर **सोनल** वरणी।
—फुलवाडी
३ चमकदार, चमकीला।

सोनलभींग, सोनलभींगी–स स्त्री —१ वर्षा ऋतु के बाद एव शरद ऋतु के प्रारम्भ मे पाया जाने वाला एक कीट विशेष जिसकी गर्दन पर हरे रग का ठोस चमकदार आवरण (पदार्थ) होता है।
२ एक राजस्थानी लोकगीत।

सोनलिया–स स्त्री —मागणियार जाति का एक भेद विशेष। (मा म)

उ०—१ सोदर इम 'सादूळ' री, पूरण राज वळ पूर। राज भदावड जिण रचै, सात्रव दळ दळि सूर।—व भा

उ०—२ लालसिंह री सोदर हरिसिंह सिंधु देस रौ अधीस हुवौ जिणरै पुत्र घुघट उपजियौ जिकण री वस धुधटिया चहुवाण कहावै।—व भा

सोदरा, सोंदरी–स स्त्री [स महोदरा, स. स+उदरा] १ सगी वहिन, भगिनी। (ह. ना मा)

[स सुभद्रा] २ श्रीकृष्ण की वहिन का नाम।

उ०—सावळियौ वहनोई मागा, सोदरा वहन मागौ, हाडा धोवण फूको मागा, झाडू देवण भूवा।—लो गी

२ दुर्गा देवी का एक नामान्तर।

सोदागर—देखो 'सौदागर' (रू भे)

उ०—लिछमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सू वसै छै।—रा सा स

सोदियोडौ—देखो 'सोधियोडौ' (रू भे)

(स्त्री सोदियोडी)

सोदौ—देखो 'सौदौ' (रू भे)

उ०—१ वा घर घर हाट चोवटै सगळै फिरी, नेवरा करचा पण कोई वाणियौ सोदौ जोखण सारू राजी नी व्हियौ।—फुलवाडी

उ०—२ गाहै सोदै ग्राहका, ढाहै जै गज ढल्ल। लाही लोटै वाणियौ, आ है साची गल्ल।—वा दा

उ०—३ काम करै नही काज करै नही, सीरी चरै मदाई। सीत-प्रसाद नाम घर सोदा खूवहि ग्रेंठ सवाई।—ऊ का

सोध–स स्त्री [स शोध] १ खोज, तलाश और खबर।

उ०—१ पाछा आय खान नू कह्यौ—जै घोडी कठै पाई नही। सोध पण नही हुई।—सूरे खींवै काधळोत री वात

उ०—२ पछै रावतजी नु खवर हुई सो पाछी वुलावण री तलास तौ घणौ ही कीधौ पण इणरी सोध किण ही न लीधौ।

—प्रतापसिंह म्होकमसिंघ री वात

२ शुद्धि, सस्कार।

३ अन्वेपण, गवेपण।

४ दुरुस्ती।

५ छिपी हुई रहस्यपूर्ण वातो की खोज।

स पु—६ घर, मकान। (अ मा)

७ महल, प्रासाद। (डि को)

८ विचार।

उ०—१ वारलौ अमेस सोध वोध तै करयौ, सोधना विसेस माहि सोध ना करधौ।—ऊ का

उ०—२ पान प्रयाग वड तणौ पौढियौ, सुजि हरि समरि अवर करि सोध। (ह ना. मा)

४ देखो 'सौध' (रू भे)

सोधक–वि [स शोधक] १ शुद्ध करने वाला।

२ ढूढने या पता लगाने वाला।

३ शोध करने वाला।

४ सुधार करने वाला।

सोधणी–स स्त्री [स शोधनी] वुहारी, झाडू (डि को)

रू भे—सोधनी।

सोधणौ, सोधवौ–क्रि स [स शोधन] १ खोजना, ढूढना, तलाश करना।

उ०—१ चरवादार सोधतौ सौधतौ राजकवरा रै पाखती पुगौ।

—फुलवाडी

उ०—२ पछै राजा घणौ कह्यौ तौ वौ भाया नै सोधण सारू पाछौ वहीर व्हियौ।—फुलवाडी

उ०—३ भात भात रा साग भर, प्रभू सू करै न प्रेम। सोधै लिछमी साधडा, नाभ कवळ री नेम।—ऊ का

२ साफ करना, शुद्ध करना।

३ ठीक और दुरुस्त करना, सुधारना।

४ विचार करना, सोचना।

५ आयुर्वेद के अनुसार धातुओ को दोपरहित करना, शोधन करना।

६ छान-वीन करना।

७ गवेपणा या अन्वेपण करना।

सोधणहार, हारौ (हारी), सोधणियौ—वि०।

सोधिओडौ, सोधियोडौ, सोध्योडौ—भू० का० कृ०।

सोधीजणौ, सोधीजवौ—कर्म० वा०।

सोजणौ, सोजवौ, सोदणौ, सोदवौ—रू० भे०।

सोधन–स पु [स शोधन] १ शुद्ध या साफ करने की क्रिया या भाव।

२ दोप, भूल आदि का सुधार।

३ रहस्यपूर्ण एव नई वातो की खोज करना, अन्वेपण।

४ प्रायश्चित।

५ सजा, दड।

६ दस्त लगाकर कोठा साफ करना, विरेचन।

७ धातुओ को दोपरहित करना, शोधन करना।

८ नीवू।

सोधनी—देखो 'सोधणी' (रू भे)

सोधाणौ, सोधावौ–क्रि स ['सोधणौ' क्रिया का प्रे रू] १ खोज या तलाश कराना, ढूटाना।

२ शुद्ध कराना, साफ कराना।

३ ठीक या दुरुस्त कराना, सुधराना।

भुजग १० सोळमौ सोनौ=खरी वस्तु, खरा आदमी, अत्यन्त शुद्ध ११ सोना रै सूळी लागी है=असभव बात होना ।

२ बहुमूल्य पदार्थ, वस्तु ।

वि —पीत । ※ (डि को)

रू भे —सोनू ।

सोन्हैरी—१ देखो 'सौनेरी' (रू भे)

२ देखो सौनहरी' (रू भे)

सोपट—वि —प्रत्यक्ष, खुल्लमखुल्ला, सामने ।

उ०—घर घर घाटा ससोवन घालै, हर हर हाटा विन हसौ उड हालै । दुरग्घट अटव्यासरण सोपट दुख दीखै, अज्जरण मज्जरण विरण सज्जरण मुख ईखै ।—ऊ का

सोपान—स पु [स सोपान] १ जीना, सीढी ।

उ०—कोमल कमल रै ऊपरै त्रिवली समर सोपान रै रग । कटि तटि अति सुछिम कही रे, थूल नितव वखारण रे रग ।

—प च चौ

२ किसी पुस्तक का अध्याय, पाठ ।

३ जैन धर्मानुसार मोक्ष का उपाय ।

सोपारी—देखो 'सुपारी' (रू भे)

उ०—माग साल मलियागरी, वळि नारेळ विदाम । सोपारी खिरणी सरस, हेम हवा तिहि ठाम ।—गज-उद्धार

सोपारौ, सोपारौ—स पु —१ अलगोजा से मिलता-जुलता एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

२ लिंगेंद्रिय का अग्र भाग, मरिण ।

सोपौ, सोपौ—स पु [स स्वाप] १ रात्रि का वह समय जब सन्नाटा छा जाता है, रात्रि का दूसरा प्रहर, सन्नाटा, शान्ति ।

उ०—१ अवावाती नगरी । चद्रसेन राजा । तावा री खा'न हुती । तिरण रै सोजल नावै वेटी हुई । तिका चौमठ जोगणीया साथै रमती । सु सोपौ पडतौ तरै नीसरथी '—सोजत रै मडल री वात

उ०—२ मोरौ गाव, छोटौ घर, सीयाळै रौ मै' अवारी रात मैं, सफा सोपौ पड रैयौ है ।—दसदोख

उ०—३ ताहरा रात पोर डोढ गई । सहर मैं सोपौ पडियौ ।

—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

२ स्तब्धता, सुनमान, सूनापन ।

उ०—सोपौ पड्यौ, सरणाटौ छायौ । वत्ती काटी, लोटियौ बुझायौ ।

—दसदोख

३ शाति ।

उ०—पूरी रात गाम मैं सोपौ कोनी पड्यौ । मिनख भीकता रहता । कुत्ता ऊचौ मूडौ कर कर नै कूकता रहता ।

—अमरचूनडी

रू भे —स्यापौ ।

सोफियानी, सोफियानौ—वि [अ सूफी+इयाना] १ सूफियो का, सूफी सम्बन्धी ।

२ हल्का-फुल्का, साधारण ।

सोफियौ—स पु —सूफी सम्प्रदाय का व्यक्ति ।

उ०—ब्राह्मरण सेतबर वळै, जोगी जगम जारण । दान सन्यासी सोफिया, खट दरसरण वाखारण ।—ग सा स

सोफी—स पु —वह व्यक्ति जो किसी प्रकार का नशा न करता हो ।

उ०—तद ईयै कही, 'अठै दारू री चाळौ छै । अर यै नही पीसी तौ थानै साळा हमसी । अर मोनै पिरण सहेल्या हसमी । अर कहिसी सोफी छै । ईयै मू कामू हुमी ।—वूटी ठग राजा री वात

सोफोदर—स पु [म शोफ+उदर] उदर पर सूजन आने से होने वाला एक रोग विशेष ।

उ०—पाडू रोग सोफोदर सही, तीजौ रोग जलोदर लहि ।

—ध व ग्र

सोव—स पु —१ पोशाक, पहनावा ।

उ०—वीरा श्री अबकै तौ भेजौ म्हारी सोव, सुसरौ जी मुसा वोलिया ।—लो गी

२ देखो 'सोभा' (रू भे)

सोवरण—स स्त्री —लकडी घिमने का औजार ।

सोवत—स पु —१ व्यापारियो का काफिला, समूह, ।

उ०—१ डूगरसी दुरजरणसल रौ, विकमपुर धरणी हुवौ । वडौ ठाकुर हुवौ । तद मोटौ राजा फळोधी वसै छै । तद दारण घरणौ धरती माहै लागतौ । तद सोवत सोदागरा री आवती हुती । सु राव डूगरसी आपरा भाई भानीदास न सोवत साम्ही मेल, सोवत तेडाय, दारण लेनै सोवत आघी चलाई ।—नैरणसी

उ०—२ भानीदास दुजरणसल रौ सिरहड वसियौ । पछै सोवत रै मामलै मोटै राजा फळोधी थका समत १६२५ रै टाणै मारियौ ।

—नैरणसी

२ घोडो का झुण्ड, समूह ।

उ०—१ पातसाह रै पारणीपथा घोडा री सोवत आवती थी सु मार ली ।—नैरणसी

उ०—२ कितराइक दिन हुवा, ताहरा एक घोडा री सोवत आई । सु सोदागरा कना घोडा खोस लिया ।—नैरणसी

उ०—३ ताहरा प्रथीराज चढ नै गयौ असवार १००० जाय कहीयौ, 'अखा जारणै इनरा रुपीया लै परण घोडौ दै । नही तौ मार नै सोवत मरव लेमा ।—हाहुल हमीर री वात

३ देखो 'सोहवत' (रू भे)

सोवा—देखो 'सोभा' (रू भे.)

उ०—जिस वखत स्रीमहाराज केमरिया ऊच पोसाक पहिर खाघी पेच वरणवाय । जवहर कै मिरपेच सिर सोवा जग जोति जगाया ।

—सू प्र

सोनळवौ, सोनळहलवौ, सोनळहलुवौ—देखो 'सोहनहलवौ' (रू भे)

सोनवाणी—स पु—वह पानी जिसमें सोना डुबोया गया हो या स्वर्ण स्पर्श किया हो।

रू भे—सोनावाणी।

सोनहरौ—स पु (स्त्री सोनहरी) वह घोडा जिसके काले सुमो पर सफेद रेखा या सफेद सुमो पर काली रेखा हो। (अशुभ) (शा हो)

वि—चमक, दमक, रग आदि मे सोने जैसा, सुनहला।

उ०—तठा उपरान्ति करि नै राजान सिलामति कटारी किण भाति री कुनारवधी, कुनाग्गामी, जमदाढ सोनहरी नकमी जड़ाव सातरी। घणी मुखमल घणी कतीफै माहै गरकाब कीधी थकी।

—रा सा म

सोनागर, सोनागिर, सोनागिरि—देखो 'स्वरणगिरि' (रू भे)

उ०—सत कै सोनागिर वाचा हरचद।—रा रू

सोनागेरू—स पु [स स्वर्णगैरिक] साधारण गेरू से अधिक लाल एव मुलायम एक प्रकार की मिट्टी विशेष।

सोनानामी—स पु—रुक्मिणी का भाई, रुक्मि।

उ०—निराउध कियौ तदि सोनानामी, केस उतारि विरूप कियौ।—वेलि

सोनामक्खी, सोनामखी—देखो 'सोनामुखी' (रू भे)

सोनामछी—स स्त्री—रेतीले मैदान मे पाया जाने वाला विषैला जतु।

सोनामुखी—स स्त्री [स्वर्णमक्षिका] १ एक प्रकार का खनिज पत्थर जो सोने के अभाव मे औषधियो मे काम लिया जाता है, इसका रग पीला होता है।

२ एक पौधा विशेष जिसकी पत्तियाँ विरेचन के काम आती है, सनाय।

३ एक प्रकार का रेशम का कीडा।

रू भे—सोनामक्खी, सोनामखी।

सोनार—देखो 'सुनार' (रू भे)

उ०—माडणा माडया। सोनार सू गेणौ-गाठौ घडवायो।

—फुलवाडी

(स्त्री सोनारी)

सोनारूपौ—स पु—एक मारवाडी लोक गीत।

सोनावाणी—देखो 'सोनवाणी' (रू भे)

सोनावेल—स स्त्री—वन मे तथा पर्वतो पर होने वाली लता विशेष।

सोनाहरणी—स स्त्री—वेश्या।

उ०—करहै असवारी किया, सोनाहरणी सग। उण ढोला ज्यू आपरौ, ढोलौ मानै ढग।—वा दा

सोनिक—स. पु—१ खटीक। (डि को)

२ कसाई।

सोनिगरा—देखो 'सोनगरा' (रू भे)

उ०—खुमाण सोनिगरा, कर ऊधरा मरीम। आद पमारा साम छळ, आया वस छत्रीस।—रा रू

सोनिडौ—देखो 'सुनार' (अल्पा, रू भे)

सोनी—देखो 'सुनार' (रू. भे)

सोनीडौ—देखो 'सुनार' (अल्पा, रू भे)

उ० - सोनीडा नै वेग बुलाय, हरजी मू हेत लग्यौ। राणी मा'सती रै गं'णौ पैराय हरजी मू हेत लग्यौ।—लो गी

सोनू—देखो 'सोनौ' (रू भे)

सोनेयौ—देखो 'सोनइयौ' (रू भे)

सोनेरण—स स्त्री—सोने की मूठ वाली तलवार या कटार।

सोनेरौ—स पु—एक प्रकार का घोडा।

वि—१ स्वर्ण सम्बन्धी, सोने का।

२ देखो 'सोनहरौ' (रू भे)

सोनेली—स स्त्री—१ वर्षा ऋतु मे होने वाला एक छोटा पौधा जिसके छोटे २ पीले फूल आते हैं, इसे पशु खाया करते हैं।

सोनेलौ—१ देखो 'सोनेली' (अल्पा, रू भे)

२ स्वर्ण के समान रग वाली।

सोनौ—स पु [स स्वर्ण] १ एक प्रसिद्ध बहुमूल्य धातु जिसके आभूषण आदि बनते है, इसका रग पीला होता है, कचन, स्वर्ण।

उ०—खीर खाड री जीमण जीमाऊ, सोना चाच मढाऊ कागा, जद म्हारा पिवजी घर आवै।—लो गी

पर्याय—अगनीबीज, अष्टपाद, कचन, कनक, करबुर, कळधोत, कुनण, कुरमदन, गागेय, गारुड, गैरुक, चामीकर, जाबूनद, जातरूप, तपनीय, धातामार, धातोपम, पीतरग, भरम, भूतम, भूर, भूरम, भूरि, महारजत, रजत, रजतधाम, रुकम, लोहतम, वसू, मातकूभ, साळ, सुवरण, मेलसुत, सोनू, सोव्रण, स्वरण, हरन, हाटक, हिरन, हेम।

मुहा—१ सोना मैं सुगध=जब दो अच्छी बातो का सयोग हो २ सोना रा थाल मैं तावा री मेख=उत्तम वस्तु मे घटिया वस्तु का योग होने पर उसके सौन्दर्य मे कमी हो जाती है। स्वच्छता पर दाग होने की दशा मे, बेमेल कार्य ३ सोना नै काट नी लागै=सच्चे व ईमानदार अपने प्रण से नही डिगते ४ सोनौ गयौ करण री लार=भले और महान व्यक्तियो का अभाव होना ५ सोनौ घडाई सू मूगौ पडै है=आभूषण की घडाई स्वर्ण की कुल कीमत से अधिक होने पर मुख्य कार्य से गौण कार्य जब अधिक भारी पडता हो ६ सोनौ देख्या मुनी रौ ई मन डिगै=लालच बुरी बला होती है सुन्दर व मूल्यवान् वस्तुओ मे आकर्षण होता है ७ सोना री कटारी पेट मैं नी मारीजै=कीमती वस्तु भी यदि प्राण लेने वाली हो तो त्याग देना चाहिये ८ सोना री सूरज ऊगणौ=अत्यन्त खुशी की घडी आना ९ सोना रै छोत थोडीइ लागै=चदन विष व्यापै नही लपटे रहत

२ देवी दुर्गा का नाम ।

रू भे —सोभणी ।

वि —सोभा देने वाली ।

सोभय–स स्त्री —सुख प्रदान करने वाली एक देवी का नाम ।

सोभरधाम–स पु —सोभर ऋषि का धाम अर्थात् यमुना नदी का ह्रद ।

उ०—दुजराज त्रास काळी डरै, **सोभरधाम** सभारियौ । कूरमा तेम कमधज्ज रौ, ध्यान नेम कर धारियौ ।—रा रू

सोभवती–वि —सुदर, आकर्षक ।

उ०—**सोभवती** सजती सोळ स्रगार सकत्ती । हमगत हालती हम आरोह हकत्ती ।—सू प्र

सोभवान–वि —१ सौभाग्यवान, सौभाग्यशाली ।

२ शोभा वाला ।

३ आभा व कान्ति वाला ।

४ कीर्तिवान ।

सोभा–स स्त्री [स शोभा] १ दीप्ती, आभा, काति, चमक । (डि को)

उ०—१ **सोभा** सारिख किरण सविता, दीपै मदर राज दुहिता । —गु रू व

उ०—२ लळक्कै गजा पोगरा नाळ लोभा, भळक्कै मुखा सूरमा भाण **सोभा** ।—सू प्र

पर्याय —अनोपम, आभा, ककळा, कळा, काति, कोमळता, छिब, द्युति, परभा, प्रभा, बिब, भा, राढा, विभूखा, विभ्रभा, विमळा ।

२ सुन्दरता, छवि, रूप ।

उ०—१ रूपक कुकवी रसण सू, बिगडै यू रसवत । ज्यू विसफोटक रोग वस, वप **सोभा** बिगडत ।—बा दा

उ०—२ पण बगेची री **सोभा** देखनै की चेती नी रह्यौ । —फुलवाडी

३ रग, वर्ण ।

४ सौंदर्य को बढाने वाला तत्व ।

५ प्रशसा, बडाई, कीर्ति ।

उ०—१ हरीया कदै न कीजीयै, अपनी **सोभा** मुख । अपने मुख सरावता, और पडै कोई दुख ।—अनुभववाणी

उ०—२ कचन काच कथीर कौ, पहिर अभूसन अग । हरीया **सोभा** होत है, ऐसा करियै सग ।—अनुभववाणी

उ०—३ सिरोही री सबजी, बरणी नही जाय । साखियात इन्दरलोक, समान **सोभा** छै ।—डाढाळा सूर री वात

६ अच्छा गुण ।

७ हल्दी ।

८ गोरोचन ।

९ बीस अक्षरो का एक वर्ण वृत्त जिसमे क्रमश यगण, मगण दो नगण दो तगण और दो गुरु होते हैं ।

१० आर्या या गाहा छद का एक भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे ८ गुरु और ४१ लघु से कुल ५७ मात्राए होती है ।

रू भे —सोव, सोवा, सोभ ।

सोभाऊ–स स्त्री —वह स्त्री या कन्या जिसे, विवाहित कन्या के प्रथम वार सुसराल जाते समय साथ भेजा जाता है । (मेवाड)

वि — शोभा बढाने वाला, केवल सुदर ही ।

सोभाग—देखो 'सौभाग्य' (रू भे)

उ०—१ ऊलौ पेलौ साथ घणौ काम आयौ । पिण वेढ मूळराज जीतौ, नै राजा सीहा री वडौ **सोभाग** हुवौ ।—नैणसी

उ०—२ जस **सोभाग** थयउ जग माहे ।—स कु

उ०—३ इवडा वखत किहा थकी, कायम रहै **सोभाग** । सिर कद आवै माहरै, अगूठानी आगि ।—वि कु

उ०—४ जपू जीह **सोभाग** मो भाग जागौ, लुळं आय स्रीमाय रै पाय लागौ ।—मे म

उ०—५ वागै करै बणाव, ओपि सुदर पट अवर । गौखवर ऊधरा, पाघ **सोभाग** कि मदर ।—रा रू

सोभागण, सोभागणी—देखो 'सौभाग्यवती' (रू भे)

सोभागियौ, सोभागी–वि —सौभाग्यशाली, भाग्यवान ।

उ०—१ सातिनाथ **सोभागी** हौ लाल, सोलम जिन सागी हौ । विनयचद्र रागी हौ लाल, जयौ तू वड भागी हौ ।—वि कु

उ०—२ जाग्यौ जैन चद सागी, **सोभागी** रागी जैन धरम । वैरागी पुण्याइ जागी अधिकै उछाह ।—ध व ग्र

सोभादर–स पु —१ चौहान वश की एक शाखा ।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सोभायमान–वि —शोभायुक्त, शोभित ।

सोभाळू–वि —१ सुन्दर, बढिया, प्रशसनीय ।

उ०—इण देसरा घणा काम **सोभाळू** होय विधा वधै नै हिकमत उपजै ।—नी प्र

सोभाळौ–वि (स्त्री सौभाळी) १ यशस्वी, कीर्तिवान ।

उ०—सूरौ खीवौ वीर अत, **सोभाळौ** दातार । हीमतधारी मनगरा, हुवा न होणहार ।—सूरे खीवै काधळोत री वात

२ सुन्दर, मनोहर ।

सोभाव—देखो 'स्वभाव' (रू भे)

सोभावटी–वि स्त्री [स शोभा+वती] एक प्रकार की पत्थर की पटिया या लकडी का मोटा तख्ता जो खिडकी व दरवाजे के ऊपरी भाग पर पाटन के रूप मे लगाया जाता है, करगहना ।

रू भे.—सोवावटी ।

सोभावत–स पु —१ राठौड वश की एक उप-शाखा ।

२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।

सोबादार—देखो 'सूबेदार' (रू भे)

उ०—डडै खान रौ मेवास दिली आगरो साह रौ डडै, ग्रान रौ की गिणा वेहू राह रौ ग्रनेक। ग्राटीपणौ सोबादार सतारानाथ नू ग्राखै, हिंदुवा मैं माटीपणौ 'राजान' गै हेक।

—महाराजा वहादरसिंघ रौ गीत

सोबायत—देखो 'सूबेदार'।

उ०—१ ग्रजमेर री सोबायत नु फरमान हुवौ—ग्री कहै सु काम सरभरा कर देजौ।—नैणसी

उ०—२ ग्रजमल भड गाघाणी ग्राया, सुण सोबायत सहर समाया।—रा रू

उ०—३ सोबायत साभर तणौ, पक्ड लियौ पडवेस। उर द्रढ पायौ कूरमा, ग्रव घर ग्रायौ देस।—रा रू

सोबावटी—देखो 'सोभावटी' (रू भे)

सोवौ—१ देखो 'सूवौ' (रू भे)

उ०—१ लसियौ निवाव कटिया किलम, ग्रह न्रप धरि गजगाह री। लसकरी खान लूटै लियौ, सोवौ ग्रौरगसाह रौ।—सू प्र

उ०—२ सामधरम छळ 'खीमसी', साह कियौ सुप्रसन्न। सोवौ गुजर खड रौ, दीनौ खूद जवन्न।—रा रू

२ देखो 'सूवेदार' (रू भे)

उ०—ग्रसमर भुज ग्रहिया 'ग्रखौ', मोकळसर मेवास। सोवा ग्राया तीन सिर, माह वहतै मास।—रा रू

सोव्रण—देखो 'सुवरण' (रू भे)

उ०—जायोडा जोडरा, थाट पाटा थायोडा। दिल ग्रायोडा दाय, तिकै सोव्रण तायोडा।—मे म

सोव्रणकार—देखो 'स्वरणकार' (रू भे)

सोव्रन—देखो 'सुवरण' (रू भे)

उ०—जरीतारा जरीवाफा नीलका जडाव जामा, दामा पार पावै नकौ देता चित दत्ति। कहा खोटी वार विचै मोटी रीभा 'सेवौ' करै, सासणा सोव्रन्ना कडा समापै हसत्ति।—नाथौ वारहठ

सोभ—देखो 'सोभा' (रू भे)

उ०—१ मातै मैंगळ ज्यू ढळै, सोभ समदा पार। चद वदन ग्रग लोचनी, ग्राप करी करतार।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ महि नयर घर प्रति दीप मडित, माळ जोत मनोहर। किर व्योम नाखत्र परखि कमळा सोभ धारत सुदर।—रा रू

उ०—३ भज रै मन राम सियावर भूपत ग्रग घणा घण सोभ ग्रनूप।—र ज प्र

उ०—४ म्है कीधौ तौ मीत, जोय लाखा मैं 'जसा' पलटै हव क्यू मीत, पलट्या सोभ न पाइजै।—जसराज

उ०—५ छुटी ग्रलक्क नाग छौन, सोभ एम साज ही। रयस जाण चद्रराासि, रूप मैं विराज ही।—सू प्र

सोभक–वि—सुन्दर, सजीला।

सोभग्रीवा–स स्त्री—१ गले मे धारण करने का ग्राभूपण विशेप।

२ कण्ठ की शोभा।

सोभण–स पु—१ प्रत्येक चरण मे चार रगण ग्रौर गुरु लघु वर्णं का २३ मात्राग्रो का छन्द विशेप। (ल पि)

२ वस्त्र, कपडा।

रू भे—सोभन।

सोभणौ—१ देखो 'सोभा' (रू भे)

उ०—सूर वागा सभै रौद्र हिंदू रजै, सोभणौ मकजै ग्रमेळा ग्रकजै।—रा रू

२ देखो 'सोभनी' (रू भे)

उ०—देवी खेचरी भूचरी भद्र खेमा, देवी पद्मणी सोभणी कलह प्रेमा।—देवि

सोभणौ, सोभवौ–क्रि वि—१ शोभित होना, शोभायमान होना।

उ०—१ नाह विकसै घणौ कमळ जिम भड निवड। भड घणा पाडतौ सोभियौ महा भड।—हा झा

उ०—२ ग्रासोज पूरण जगत ग्रासा, भोम ग्रन ग्रति भार ए। सोभंतु जतु ग्रनत सुखमय, सुखद सपति सार ए।—रा रू

उ०—३ सोभति रिखगण चद्र सोभा, किरण जगमग कास ए।

—रा रू

२ जचना, फवना, शोभा देना।

ज्यू—वडै मूडै ग्रोछी वात सोभै कोनी।

३ सज्जित होना, सजना।

सोभन–स पु [स शोभन] १ शिव, महादेव।

२ सूर्य।

३ मालकोश राग का एक पुत्र। (सगीत)

४ ज्योतिप शास्त्र के २७ योगो मे से पाचवें योग का नाम।

उ०—नखत विसाखा तिथी चवदस। घडी च्यार पल वीस गया निस। मियन लगन सोभन मिळ जोगै। सकुन करण दुख हरण सजोगै।—रा रू

५ ग्रग्नि, ग्रग्निदेव।

६ ग्राग।

७ ग्रह।

८ चौवीस मात्राग्रो का एक छद जिसके ग्रत मे जगण होता है ग्रौर १४ व १० पर यति होती है।

९ विष्णुवीसी का सत्रहवा वर्प। (ज्योतिप)

वि—१ मगल, कल्याण।

२ सुदर, मनोहर। (ग्र मा)

३ देखो 'सोभण' (रू भे)

सोभना–स स्त्री [स शोभना] कुमार कार्त्तिकेय की ग्रनुचरी एक मातृका।

सोभनी–स स्त्री—१ मालकोश राग की स्त्री रागिनी। (सगीत)

मे निवास करते है, इन्हे ब्रह्मत्व प्राप्त है ।
२ स्कद का एक सैनिक ।
३ रैवत मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक ।
४ एक सनातन विश्वदेव ।
वि —जिसने यज्ञ मे सोमरस का पान किया हो ।
सोमपुत्र—स पु [स] चन्द्रमा का पुत्र बुध ।
सोमपुर—स पु —चन्द्रलोक ।
सोमपुरा—स पु —एक जाति विशेष जो तोप ढालने, तसवीर बनाने और स्थापत्य कला का कार्य करती थी । (मा म)
सोमप्रदोख—स पु [स सोमप्रदोष] सोमवार को होने वाला प्रदोष जो विशेष महत्व का माना जाता है ।
सोमप्रिया—स स्त्री [स] १ रात्रि । (ना मा)
२ चादनी ।
सोमबधु—स पु —१ बुधग्रह ।
२ सूर्य ।
३ कुमुद ।
सोमबल्लि—स स्त्री —सोमलता ।
उ०—कळि कळप वेलि वळि कामधेनुका, चिंतामणि **सोमवल्लि** चत्रा ।—वेलि
सोमभू—स पु [स] १ बुध का एक नाम ।
२ चद्रवशी ।
सोमरस—स पु [स] सोम नामक लता का रस जिसका वैदिक काल मे ऋषि मुनि पान करते थे ।
सोमभूपाळ—स पु —कर्नाटकी पद्धति का एक राग । (सगीत)
सोमभैरवी—स स्त्री —कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (सगीत)
सोममजरी—स स्त्री —कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (सगीत)
सोममद—स पु —सोमरस पीने से होने वाला मद या नशा ।
सोमयग्य—स पु [स सोमयज्ञ] एक प्रकार का यज्ञ जिसमे सोमरस का पान किया जाता था ।
२ हठयोग मे तालू की जड मे स्थित चन्द्रमा से निकलने वाला रस, योगी जीभ उलट कर इसका पान करते है ।
सोमराज—स पु [स] चन्द्रमा ।
सोमराज्य—स पु [स] चन्द्रलोक ।
सोमरोग—स पु —अति मैथुन, शोक, परिश्रम के कारण शरीरस्थ जलीय धातु के योनि मार्ग से बहने के कारण होने वाला स्त्रियो का एक रोग ।
सोमल—स पु —१ शखिया नामक विष का एक भेद ।
उ०—कहा होत है रूप तैं, गुण तैं होत निदान । उजळ **सोमल** तैं मरत है । रखत ममाई प्रान ।—जैतदान बारहठ
२ एक वृक्ष ।
वि —कडवा, खारा ।
सोमलसार—स पु —मल्ल नामक विष जिसका शोधन करके औषधि के रूप मे प्रयोग मे लिया जाता है ।
सोमलता—स स्त्री —१ गिलोय ।
२ ब्राह्मी ।
३ सोम नाम लता ।
सोमवस—स पु [स सोमवश] १ क्षत्रियो का एक वश, चद्रवश ।
२ युधिष्ठिर ।
सोमवसपत—स पु [स. सोमवशपति] १ युधिष्ठिर का एक नाम । (अ मा)
२ चन्द्रवशी राजा ।
सोमवसराजा—स पु —युधिष्ठिर । (ह ना मा)
सोमवसी—स स्त्री —१ चन्द्रवशी क्षत्रिय ।
२ चन्द्रवशीय व्यक्ति ।
सोमवती—स स्त्री —१ एक प्राचीन तीर्थ ।
२ देखो 'सोमवतीअमावस' ।
सोमवतीअमावस, सोमवतीअमावस्या—स स्त्री [स सोमवती+अमावस्या] सोमवार को आने वाली अमावस्या जो पुराणो के अनुसार पुण्यतिथि मानी जाती है ।
रू भे —सोमवती, सोमैती, सोमोती ।
सोमवरचा—स पु [स सोमवर्चा] १ एक सनातन विश्वदेव का नाम ।
२ एक गन्धर्व का नाम ।
सोमवल्लि—देखो 'सोमलता' ।
सोमवार—स पु [स] प्रत्येक सप्ताह मे रविवार के बाद तथा मगलवार से पहले होने वाला दिन जो चन्द्रमा का माना जाता है ।
सोमवारी—वि —१ सोमवार का, सोमवार सबधी ।
२ सोमवार को पडने वाला या आने वाला ।
सोमवारीव्रत—स पु —सोमवार को किया जाने वाला व्रत जो प्राय श्रावण मास मे किया जाता है ।
सोमसद—स पु [स] विराट के पुत्र तथा साध्यगण के पितर-मनु ।
सोमसुत—स पु [स] चद्रमा ।
सोमसेन—स पु [स] शबर राक्षस का एक पुत्र ।
सोमा—स स्त्री [स] १ एक प्राचीन नदी ।
२ एक अप्सरा का नाम ।
सोमायन—स पु —महीने भर किया जाने वाला व्रत जिसमे २७ दिन दूध पीकर रहने तथा तीन दिन उपवास करने का विधान है ।
सोमावती—स स्त्री [स] चन्द्रमा की माता का नाम ।
सोमास्टमी—स स्त्री —सोमवार के दिन पडने वाली अष्टमी ।
सोमास्टमीव्रत—स पु —सोमाष्टमी के दिन किया जाने वाला व्रत ।
सोमास्रम—स पु [स सोमाश्रम] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।
सोमिज—देखो 'सोमज' (रू भे) (ह ना मा)
सोमित्र—स पु [स सौमित्र, सौमित्रि] सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न ।

सोभित-वि [स शोभित] १ सुन्दर, मनोहर। (ह ना मा)
२ शोभायमान।
३ शोभायुक्त, सजा हुआ, शृ गारित।
उ०—तन सदन **सोभित** करण तरणी, विविध मनि उद्दम वर्ण।
—रा रू

सोम-स पु [स सोम] १ चन्द्रमा। (अ मा, ह ना मा)
उ०—१ गाण गीत साखी वेद ऊचारै गैणाग गाजै, राजे रूप आगणे इद्र सौ सची रूप। सोळाही कळा सू **सोम** ऊगियौ प्रकास सारै, वळोवळी ऊचारै न आयौ इसौ भूप।—बादरदान दधवाडियौ
उ०—२ पत्र सुधारै जोगणी, माल सुधारै रम। थभ चलेवौ **सोम** रवि, पेऐ व्योम अचभ।—रा रू
२ अमृत। (ह ना मा)
३ यम।
४ सोमवार।
५ स्वर्ग।
६ एक लता विशेष जिसका रस यज्ञ मे काम आता था।
७ मोमवल्ली का रस।
८ किरण।
९ कपूर।
१० जल, पानी।
११ पवन, वायु।
१२ कुबेर।
१३ शिव का एक नाम।
१४ मन का एक नाम।
१५ एक प्राचीन वैदिक देवता।
१६ एक प्रकार की औपधि।
१७ आठ वसुओ मे से एक वसु।
१८ पितरो का एक गण या समूह।
१९ स्त्रियो को होने वाला एक प्रकार का रोग। (श्वेतप्रदर)
२० माड।
२१ मालकोश राग का पुत्र। (सगीत)
२२ एक ऊँचा व विशाल पेड जिसकी लकडी मजबूत एव चिकनी होती है।
२३ मेवाड की एक नदी का नाम। (वीर विनोद)
२४ भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
२५ देवता।
२६ यज्ञ की सामग्री।
२७ एक प्रकार का यज्ञ।
२८ आकाश।
२९ काँजी।
३० जैनियो के ८८ ग्रहो मे से बारहवा ग्रह।
३१ जरासन्ध के चार पुत्रो मे से एक।
३२ एक ग्रह जो सूर्यमडल से आठ लाख मील दूर है।
३३ एक अग्नि जो भानु एव निशा का पुत्र था।
३४ अगिरस कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
वि—१ श्वेत। ❀
२ लाल। ❀
३ शात, निर्मल।
उ०—रोग रहित पचेन्द्री परगडा **सोम** प्रकृति सुसनेही जी।
—म कु

सोमइयौ, सोमईड, सोमईयौ-स पु—सोमनाथ नामक महादेव का लिंग जिसकी गणना बारह ज्योतिर्लिंगो मे की जाती है।
उ०—१ सोरठ माहै देवकै पाटण **सोमईयौ** महादेव वडौ जोतलिंग हुतौ, तिकौ समत १३०० अलावदी पातसाह जाय उपाडियौ।
—नैणसी
उ०—२ देखै तौ पातसाह **सोमइयै** ऊपरा खडीया आवै छै। ताहरा एक दीहाडौ कटक मे रह नै पाछौ बाहडै। आय खबर दीवी, 'माहाराजा पातिसाहा आवै छै।—अरजन हमीर री वात
रू भे—सोमीईयौ।

सोमक-स पु [स] १ कृष्ण एव कालिंदी का पुत्र।
२ सोमकवशीय क्षत्रिय।
३ एक प्राचीन ऋषि।
४ स्त्रियो का एक रोग।

सोमकर-वि—मधुर। ❀ (डि को)

सोमकात-स स्त्री [स] १ चन्द्रकातमणि।
२ सुराष्ट्र देश का एक राजा जो गणेश भक्त था।

सोमकीरती-स पु—धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

सोमग्रह-स पु—घोडो का एक रोग विशेष, इस रोग से ग्रसित होने पर घोडा कापने लग जाता है। (शा हो)

सोमग्रहण-स पु—चन्द्रग्रहण।

सोमघ्रत-स पु [स सोमघृत] स्त्रियो के सोम रोग की दवा।

सोमज-स पु [स] दूध। (अ मा, ह ना मा)

सोमदत्त-स पु—१ शन्तनु के बडे भाई के पुत्र का नाम।
२ एक कुरुवंशीय राजा जो प्रतीप राजा का पौत्र था।
३ पाचाल राजा कुशाश्व के पुत्र का नाम इसने सौ अश्वमेध यज्ञ किये थे।

सोमदा-स स्त्री—उर्मिला नामक गधर्व की कन्या।

सोमधात-स पु—सूर्य, भानु। (अ मा)

सोमनाथ-स पु [स] १ काठियावाड मे स्थित महादेव का एक लिंग जिसकी गणना प्रसिद्ध बारह ज्योतिर्लिंगो मे की जाती है।
२ वह स्थान जहाँ यह लिंग स्थित है।

सोमप-स पु [स] १ पितरो का एक समूह जो मानस नामक स्वर्ग

सोरभणौ, सोरभबौ–क्रि अ —सुगन्धयुक्त होना, सुगंधित होना, महकना।

उ०—ढोलउ मन आणंदिउ, चतुर तणैं वचनेह। माल्ह-मुख सोरभियउ, आवि भमर भणकेह।—ढो मा

सोरभचर—देखो 'सौरभचर' (रू भे)

सोरभमूळ—देखो 'सौरभमूळ' (रू भे) (ह ना मा)

सोरभी—देखो 'सौरभ' (रू भे)

उ०—रजधानी उच्छव रहसि, मणि दीपक अप्रमाण। सूर्य महल सिंगारिया, सोरभी लहराण।—रा रू

सोर–स पु [फा शोर] १ कोलाहल, हल्ला।

२ बारूद।

उ०—१ औरंगसाह महाबळी, विसव तणैं बडवाग। गीम तरस्सी पूत मिर, सोर परस्सी आग।—रा रू

उ०—२ वडकै उर कातर सोर धुवै, मच हक्क किलक्क अनेक मुखै।—रा रू

२ ऊँची तथा तीक्ष्ण आवाज, ध्वनि।

उ०—१ पहाडा पाखर पडी घटा ऊपडी मोर सोर मडै इंद्र वार न खडै।—रा सा स

उ०—२ लूबा झड नदिया लहर, वक पगत भर बाथ। मोरा सोर ममोलिया, सावण लायौ साथ।—वा दा

उ०—३ हरै लीनी हियौ तना हरिआलिया, सोर कर सरै दादुर सुहाया।—वा दा

३ मधुर ध्वनि, मोहक ध्वनि।

उ०—१ दै घररी तज देहळी, पणघट सामा पाय। वाजै घूघर पार विण, सोर सरोवर जाय।—वा दा

उ०—२ कोकिल सोर मोर तटवि ऋत, नटवर गान सगीत करै व्रत।—सू प्र

उ०—३ मतवाळी रग माणता, घुघर पडती घोर। आज मुणी आली अधिक, मिसकारा री सोर।—नारायणसिंह सादू

४ ध्वनि, आवाज।

उ०—भयकर सोर सिवा अग्र भाग, चोळै मुख होत उदोत चराग।—मे म

५ आतिशबाजी, पटाखा।

रू भे—सौर।

सोरकौ–स पु—१ डर, भय, आतंक।

उ०—लोगा रै हियै अस्टपौर मासी रै घर री सोरकौ रै'वतौ। मन सुरक मुरक करतौ।—फुलवाडी

२ चिंता, फिक्र।

सोरखानौ–स पु [फा शोरखाना] बारूद बनाने व रखने का स्थान, बारूद कक्ष।

सोरगर–स पु [फा शोरगर] बारूद व आतिशबाजी बनाने व बेचने वाला। (मा म)

सोरजत्र–स पु [फा शोर+स यत्र] १ बदूक।

उ०—महम फणा मल्लळै, मुगट भळहळै महरा। सोरजत्र मुज माझ, कृत धानख सवम्मा।—रा रू

२ तोप।

सोरट, सोरठ–स स्त्री—१ राजस्थान के दक्षिण पश्चिम मे स्थित सौराष्ट्र प्रदेश।

उ०—तठा पछै वै पठाण गिरनार रै थाणैवाळा पातसाह रै बेटै सू फिर बैठा। सारी सोरठ इणा खाधी।—नैणसी

२ हिंडोल का पुत्र औडव जाति का एक राग। (सगीत)

अल्पा,—सोरठडी।

सोरठगेट–स स्त्री—शकुनशास्त्र के अनुसार दुलहा-दुलहिन के परिभ्रमण की गति का नाम।

सोरठडी–वि स्त्री—१ सौराष्ट्र देश की।

२ अच्छी लगने वाली।

३ देखो 'सोरठ' (अल्पा, रू भे)

सोरठमलार–स पु—सब शुद्ध स्वरो का सपूर्ण जाति का एक राग।

सोरठियौ–स पु—डिंगल का एक गीत (छद), जिसके प्रथम चरण मे १८ मात्रा, द्वितीय चरण मे १० मात्रा, तीसरे चरण मे १६ मात्रा तथा चौथे चरण मे १० मात्राए होती हैं। दूसरे सभी द्वालो मे प्रथम चरण १६ मात्रा व चौथे मे १० मात्रा इसी क्रम से हो तथा तुकात लघु होता है। (र ज प्र)

सोरठी–स स्त्री—एक रागिनी जो मेघराग की पत्नी कही गई है।

उ०—रजै मलार सारग, रितग रग मारग। रसाल ताल सोरठी, सगान तान सामठी।—रा रू

सोरठौ–स पु—१ एक छद जिसके पहले और तीसरे मे चरण ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण मे तेरह-तेरह मात्राए होती हैं।

सोरदाणी–स स्त्री [फा. शोरदानी] बारूद रखने का ढक्कनदार धातु का बर्तन।

सोरप—देखो 'सोरापौ' (रू भे)

उ०—बस आखा ऊमर कैदी वारकर फिर जावै है अर आपरी कोटडी री सोरप सुविधा बतावण लाग ज्यावै है।—दसदोख

सोरबौ—देखो 'सोरबौ' (रू भे)

सोरभ—देखो 'सौरभ' (रू भे)

उ०—१ सावण मास सुहावणौ, लागै झड जळ लूम। उण दिन ही आसव तणी, सोरभ नह लै सूम।—वा दा

उ०—२ हसा राखि हजूर मा, सखरी वास सुवास। सोरभ आवै सामिरी, दाखै वारठ दास।—पी ग्र

सोरभमूळ—देखो 'सौरभमूळ' (रू भे)

सोरभेय—देखो 'सौरभेय' (रू भे)

सोरभखी, सोरभक्खी–स स्त्री [फा शोर+स भक्षी] तोप, वन्दूक।

सोमीईयौ—देखो 'सोमइयौ' (रू भे)
उ०—इस करता एक दिन माहादेव **सोमीईयै** उपर पातसाही फोज आई।—अरजन हमीर री वात

सोमेसर, सोमेसुर, सोमेस्वर-स पु [स सोमेश्वर] १ महादेव, शिव। २ काशी मे स्थित एक शिवलिंग जिसकी स्थापना सोम द्वारा किया जाना माना जाता है।

सोमैती, सोमोती—देखो 'सोमवतीग्रमावस' (रू भे)

सोम्य-वि [स] १ सोम-सम्बन्धी, सोम का।
२ सुन्दर, मनोहर।
३ जो सोम-पान करने का अधिकारी हो।
४ यज्ञ मे सोम की आहुति देने वाला।
५ अच्छा, सुन्दर।
६ शात, गम्भीर।

सोयप्रभा—देखो 'स्वयप्रभा' (रू भे)
उ०—अह नाम **सोयप्रभा** धाम एता, जिकै तात विस्वंक्रमा कीध जेता। हिमानी सखा माहरै एक हूती, अठाहूत सौ उद्धरी भागवती।—सू प्र

सोय-स स्त्री—१ जानकारी, ध्यान, समझ।
उ०—१ तद लिछमी कह्यौ—हाल ताई थानै इण री **सोय** नी व्ही। पछै कैणा धूड रा पिडत हौ।—फुलवाडी
उ०—२ जकी वात थनै वताया ई समझ मैं नी वैठै, म्है विना वताया ई उणरी **सोय** करलू हू।—फुलवाडी
२ सीध, ठीक सामने की दिशा।
उ०—१ उपरलौ होठ नाक री **सोय** तणियोडौ अर हेटलौ ठोडी कानी लुलियोडौ।—फुलवाडी
उ०—२ धणी मू दवायती लेय वा राखी रै मगळ त्यूहार वणाव सिणगार करनै अणू ती उमाई होय नाटी री **सोय** मैं वहीर व्ही। —फुलवाडी
३ टोह।
उ०—१ चारू दिस सामी धाटी घुमाय घुमायनै चारा री **सोय** करणी चाही।—फुलवाडी
उ०—२ राजकवरी विना जीवणौ अवस दूभर व्हैगौ, पण विना **सोय** कग्या मरणौ ई कीकर व्है।—फुलवाडी
४ पता, जानकारी।
उ०—१ वीद रै उणियारै औ कोई रूप है, कै रूप रौ वीज है। रूप रै वीज री तौ आज **सोय** व्ही।—फुलवाडी
उ०—२ अर जद उणनै इण वात री **सोय** व्ही कै कालै कस्मीर रा राजाजी रै मागै सुद अदाता वाडी जोवण नै आवैला तौ उणरौ तौ जाणै भ्रम ई निकळग्यौ।—फुलवाडी
५ कद्र, इरादा, ध्यान।
उ०—नाई खूदनै दव्यौ तौ सेठ सदरी माथै वगतरी ठनाई। वालावदी रा ज्यू त्यू आटा दिया। कालै वाळौ जोम नी हौ। नाई तौ हाजरी साज गवाडी री **सोय** करी।—फुलवाडी
सर्व—१ वह, वे।
उ०—जिण दिन रघुवर जपै, सुकिया अरथ दिवस **सोय** नर सभळ। दखै न राघव जिण दिन, जाण **सोय** आळ जजाळ।—र ज प्र
उ०—२ **सोय** नर सुभागियौ, वरमाळै वाळाह। पाटा वाधण पदमणी, मुख पूछण साळाह।—अग्यात
२ उसे।
उ०—१ मुला हरता तु भयौ, तुंहीज करता होय। तुहीज मारै हाथ सू, तुही जीवारै **सोय**।—अनुभववाणी
उ०—२ हरीया सारी सिसट का, ठाकुर कहीयै **सोय**। पटा परित नहीं ऊनरै, कै कलि उथल होय।—अनुभववाणी
३ जो।
उ०—१ हरीया दिल मावति भया, चितवा निहचळ होय। रसीया सोई जाणीयै, निज मन वसीया **सोय**।—अनुभववाणी
उ०—२ हरीया हरि की क्या कहै, राम सकळ मैं होय। जाणत होमी वावरौ, हिरदै धरमी **सोय**।—अनुभववाणी
४ वही।
उ०—हरीया हिरमच लायकै, वैठै विरकत होय। विरकत सोई जाणीयै, विसै विरता **सोय**।—अनुभववाणी
५ देखो 'सौ' (रू भे)
उ०—वाडौ तौ भरियौ करहला रे, जिण माय आछा सा **सोय**। सोया मायला दस भला, कोई दसा मायलो एक।—लो गी
रू भे—सोय।

सोयण-स पु [स सज्जन] चारण कवि।
उ०—चदाणणि चीर अमीर न चचळ, कुवर भडार न चित करिया। माहव समा 'खगार' मरण दिन, **सोयण** सुणिजी सभरिया।
—खगार सोढा रो गीत

सोयतौ—देखो 'सोहितौ' (रू भे)

सोयम-वि—तीसरा, तृतीय।

सोयली-स स्त्री—साडी।

सोयलौ-स पु—१ एक प्रकार का घास।
२ देखो 'सोहिलौ' (रू भे)
(स्त्री सोयली)

सोयसी-स स्त्री [स श्रेयसी] हरीतकी, हरै। (ना मा)

सोरभ—देखो 'सौरभ' (रू, भे)
उ०—१ दहू हाथ जोडचा पढै छद दोहा, वढै सेमदादीक **सोरभ** सोहा।—मे म
उ०—२ **सोरभ** अवीर कमकमी केसर, परिमळ जाणक हट्ट ए।
—गु रू व

ग्रभ, हस को वच्चो ।—लाली मेवाडी री वात

२ लाक्षणिक ग्रर्थ मे ग्रच्छे गुणो वाला ईमानदार व्यक्ति ।

रू भे —सोलमोसोनो ।

सोळह –वि [स पोडस्] पन्द्रह ग्रौर एक का योग ।

स पु —उक्त योग से वनने वाली सख्या, १६ ।

रू भे —सोळ, सोळा, सोळे, सोळै ।

सोळहकळस्वामी–स पु [स पोडशकलास्वामी] चन्द्रमा ।

सोलहसिगार, सोलहसिणगार, सोलहस्रंगार–स पु [स पोडश+श्रृगार] स्त्रियो की वह सोलह प्रसाधन-क्रियाए, जो उन्हे ग्रौर ग्रधिक सुन्दर चित्ताकर्षक एव मोहक बनाती है। ये क्रियाएँ निम्नलिखित है—१ ग्रग मे उवटन लगाना २ नहाना ३ स्वच्छ वस्त्र घारण करना ४ वाल सवारना ५ काजल लगाना ६ सिंदुर से माग भरना ७ महावर लगाना ८ भाल पर विन्दिया लगाना ९ चिवुक पर तिल वनाना १० मेहदी लगाना ११ फूलो की माला पहनना १२ मिस्सी लगाना १३ पान खाना १४ होठो को लाल रगना १५ इत्र का प्रयोग १६ ग्राभूपण पहनना ।

रू भे —सोलासणगार, सोलासिणगार ।

सोलहो—देखो 'सोळो' (रू भे)

उ०—ग्रापनामी हुवा दातार भूझार नमक हलाल हुवा **सोलहो** गायो थो सो साचो कियो ।—पदमसिंघ री वात

सोळा—देखो 'सोळह' (रू भे)

उ०—पदमावत री पदमणी **सोळा** सौ पालकिया मैं घूम धडाकै सू दिल्ली वईर हुई । ग्रा वात चारु मेर विखेर दी कै उण सुल्तान रो कैं'णो मानण री धारली है ।—चितराम

सोलाळी, सोलाली–स स्त्री —धरती, पृथ्वी । (डि को)

रू भे —सहिलाळी, सोहळाळी, सोहिळाळी ।

सोळासणगार, सोळासिणगार, सोळासगार—देखो 'सोलहस्रंगार' (रू भे)

उ०—वह रिमझिम करती महला सू ऊतरी, ग्रातो कर **सोळासिणगार** ।—लो गी

सोळासारी—देखो 'सोळैकाकरी' (रू भे)

सोलियाळ–वि [स सुखलन्+रा प्र ईयार] १ जिसके पास कोई कार्य न हो, किसी कार्य की जिम्मेदारी से मुक्त, कार्य निवृत्त ।

२ जो किसी प्रकार का शारीरिक श्रम न कर सकता हो, नाजुक ।

३ ग्रालसी, निकम्मा ।

सोळियो–स पु —किसी लकडी मे दूसरी लकडी फसाने के लिये किया गया छेद ।

सोळी, सोली–स स्त्री —रहट के चक्र के पृथक भागो के वीच के भाग को जोडने वाला लकडी का टुकडा, यह एक चक्र मे चार होते है ।

सोळे, सोळै—देखो 'सोलह' (रू भे)

उ०—पछै राजाजी **सोळै** घोडा री सोनल रथ जुताय राजकवर नै साथै लेय, राणी नै मनावण सारू वहीर व्हिया ।—फुलवाडी

सोळे'क–वि —सोलह के लगभग ।

सोळेसंस्कार—देखो 'सोडससस्कार' (रू भे)

सोळैकाकरी, सोळैसारी–स स्त्री —दोनो पक्षो से सोलह-सोलह ककरियो मे खेला जाना वाला एक शतरज-नुमा खेल जो ग्रधिकतर राजस्थान के देहातो मे खेला जाता है ।
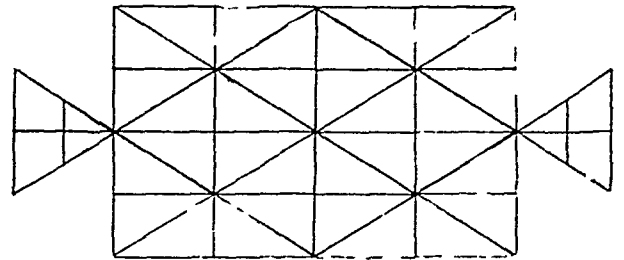
सोळो, सोळो–स पु —१ वच्चे के जन्मोत्सव एव विवाह से पूर्व गाया जाने वाला राम-सीता के विवाह सम्वन्धी मागलिक लोकगीत ।

२ उक्त गीत के प्रभाव से उत्पन्न होने वाला जोश, ग्रावेश, उत्साह ।

उ०—सौ जाणै वाभीसा तोरण माथै वीद जाय ज्यू थारो देवर **सोळो** चढियोडा जाय रचा छै ।—वी स टी

३ खुशी एव हर्ष के गीत ।

उ०—ग्रागै जगदेव रोवै छै त्या तीरै गयो । तरै वोली ग्रावो जगदेव । कह्यो, थे हिवारू ग्राधी रातरी रोवो छो, सौ थानै काई दुख छै । तरै उवै वोली, पाटण री जोगणिया छा, तिको प्रभात सवा पौ'र दिन चढतै सिवराव जैसिह री ग्रत्यु छै, तिण सू रुदन करा छा । म्हारी सेवा पूजा घणी करतो, सौ ग्रवै कुण करसी । तिणसू रोवा छा । राजा पिण सुणै छै । तरै जगदेव वोलियो, उवै गीत कु गावै छै । जोगणी कह्यो, तू उणनै ही पूछ ग्राव । तरै जगदेव उणा कनै गयो । ज्यू उणा पिण कह्यो–ग्रावो ग्रावो जगदेव । तठै राजा पिण ऊभो नेडो सुणै छै । जगदेव पगै लागिनै कह्यो, ग्राप खभायची राग माहे **सोळो** गावो छो, वधावो छो । सौ थे कुण छो नै किसी वधाई खुस्याल माहे गावो छो । जरै कह्यो, म्हे दिल्ली री जोगणिया छा, जिकै राजा जैसिह नै लेणनै ग्राई छा । तिण सू वधावा गीत गावा छा ।—जगदेव पवार री वात

४ क्राति, दीप्ति, तेज ।

५ ग्रगारा ।

उ०—ग्राज सूरत **सोळे** उडै, ग्रर उर **सोळे** उट्ठ । वाळ जय जिण उरवसी, विण **सोळै** विण कट्ठ ।—रैवतसिह भाटी

६ सोलह का वर्ष, सोलहवा वर्ष ।

रू भे.—सोळहो, सौहळो ।

सोल्लास–वि —१ उल्लासयुक्त ।

सोवन, सोवन्न—देखो 'स्वरण' (रू भे)

सोरम—देखो 'सौरभ' (रू भे)

उ०—धूप-दीप अर अगरवती री **सोरम** तथा गायें घीरी जोत ।
—दसदोख

सोरमदे—स स्त्री—एक देवी का नाम ।

सोरमौं—देखो 'सोरवौं' (रू भे)

सोरवौं—स पु—१ पके हुए मास का रस ।
२ सब्जी का मसाला युक्त झोल, वसा ।
रू भे—सोरवौ, सोरमौं ।

सोराई, सोराई—स स्त्री—१ आराम, शाति, तसल्ली ।
उ०—जीव में **सोराई** वापरिया पछै कँवण लागी ।—फुलवाडी
२ सुख ।

सोरापौ, सोरापौ—स पु—आराम, सुख, शान्ति, चैन ।
उ०—इण खेतर में जीवणौ दोरौ, मेनत घणी, मिनख रात-दिन अवखती रेवै, भूझती रेवै, जद जीवै **सोरापौ** नाव री की चीज नेडी ई कोयनी ।—चितराम
अल्पा,—सोरप ।

सोराष्ट्र—देखो 'सौराष्ट्र' (रू भे)

सोरीघर—स पु—प्रसूतीगृह ।

सो'रौ, सोरौ—वि (स्त्री सोरी) १ आरामदायक, सुखप्रद ।
उ०—फूठरी नुवावै । सगळा गाभा धोवै अर **सोरी** मुट्ठी देय'र सुवाणै आखी रात छाती माथै हाथ फेरै अर मनरळी वात वणावै ।
—दसदोख

२ सहज, सरल और आसान ।
उ०—१ नाई कह्यौ—समझै जका नै तौ समझावणौ ई **सोरौ**, नी समझै जका नै कीकर समझावा ।—फुलवाडी
उ०—२ इण रेगिस्तान अर पाणी री कसर रौ असर अठै रै मिनखा, जीव-जिनावरा अर रुखडा माथै ताई साव **सोरौ** दीसै ।
—चितराम
उ०—३ हरीया **सोरी** चोट सर, हाड पासळी छेक । चोट सहेसी सवद की, गरवा ग्यान वमेक ।—अनुभववाणी
३ सम्पन्न, समृद्ध ।
४ प्रसन्न, खुश ।
५ सुखी, आरामपूर्वक ।
उ०—छोटा भाई री पाती खाया सपना में ई **सोरा** नी व्हैला । म्हारौ काळजौ वाळचौ वारी भगवान वाळैला ।—फुलवाडी
क्रि वि—आसानी से, आराम से ।
उ०—१ वापजी पेट पापी है, **सोरौ** गुजारौ व्है जावैला ।
—फुलवाडी

उ०—२ काजळ टीकी विन फीकी द्रग कोरा, मवत्रा विवधा विच विवरौ नहिं **सोरौ** ।—ऊ का

स पु—१ वारूद ।
[फा शोर] २ सफेद रग का एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी मे से निकलता है ।
३ देखो 'सुमरौ' (रू भे)
रू भे—सोहरौ, सौरौ ।

सोलकी—स पु (स्त्री सोलकणी) १ क्षत्रियो का एक प्राचीन राजवश ।
२ उक्त वंश का व्यक्ति ।

सोळ, सोल—स स्त्री—१ वह गाय जिसके स्तन वडे हो किन्तु दूध कम देती हो ।
२ पीतल या लोहे का वना छोटा लट्टू जिमको रस्सी के एक छोर पर वाधकर दीवार वनाते समय ईंट या पत्थर की सीव देखने मे काम लेते है ।
रू भे—सौळ ।
३ देखो 'सोळह' (रू भे)
उ०—१ सुदर **सोळ** सिंगार सज, गई सरोवर पाळ । चद मुळक्कयउ जळ हस्यउ, जळहर कपी पाळ ।—ढो मा
उ०—२ पहल अठारह थी चवद, **सोळ** चवद लघु अत ।
—र ज प्र

सोळपगौ—स पु—१ कनखजूरा ।
२ वे रेंगने वाले जन्तु जिनके सोलह पाव होते हैं ।

सोळमौं—देखो 'सोळवौ' (रू भे)

सोळमौंसोनौ—देखो 'सोळवींसोनौ' (रू भे)

सोळवीं—स स्त्री—१ एक प्रकार की लपसी जिसमे पाच व दो के अनुपात से अर्थात एक मन दलिये मे सोलह सेर घी पडता है ।
उ०—लापी रघाड्ू औ म्हारा इदर राजा **सोळवीं** मईनै नीळडियो नारेळ ।—लो गी
२ देखो 'सोळवौं' (पु)

सोळवौं—वि (स्त्री सोळवी) १ पन्द्रह और एक के योग से होने वाला क्रमश पन्द्रह के वाद वाला ।
२ जो सोलह के स्थान पर हो ।
रू भे—सोळमौं ।

सोळवौंकुनण—देखो 'सोलवींसोनौ' ।

सोळवींसोनौ—स पु यौ—१ सोलह वार तपा कर शुद्ध किया हुआ सोना, पूर्णतया शुद्ध और श्रेष्ठ सोना ।
उ०—मेह कौ ममोलौ वावनौ चदण **सोळवींसोनौ** रायकेळ रौ

सोवायत—देखो 'सूवेदार'।
सोवियोडौ—१ देखो 'सूवियोडौ' (रू भे)
२ देखो 'सोहियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. सोवियोडी)
सोविन, सोव्रन—देखो 'स्वरण' (रू भे) (ह ना मा)
उ०—१ वायस मोती घूघगी, **सोविन** केरइ थालि। मिलीस जिहारी माधवड, हू मुकिसि तिणि तालि।—मा का प्र
उ०—२ करि उच्छव सूरजकवर, कीध विदा 'ग्रभसाह'। रिध **सोव्रन** मोती रतन, वसन ग्रमोल्य विसाह।—रा रू
सोवणी—वि—स्वर्ण का, स्वर्णयुक्त।
सोव्रनतन—स पु [स सुवर्णतन] गरुड।
(ग्र मा, ना मा, ह ना मा)
वि.—जिसका शरीर स्वर्ण का हो।
सोव्रनगिर, सोव्रनगिरि, सोव्रनगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू भे)
सोव्रनौ—देखो 'सोव्रणौ'।
उ०—काज ग्रहोणी ही करै, एक प्रक्रत खळ ग्रग। रामण पठियौ राम दिस, करै **सोव्रनौ** कुरग।—वा दा
सोव्रन्न—देखो 'स्वरण' (रू भे)
उ०—रवै कुभ **सोव्रन्न** थभा ग्ररेह, वणै ग्राद्रवै वम **सोव्रन्न** वेह।
—सू प्र
सोव्रन्नगिर, सोव्रन्नगिरी, सोव्रन्नगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू भे)
सोस—स पु [स शोष] १ ग्रफसोस, खेद।
उ०—समय सुदर कहइ साभलिज्यौ देतउ नही छू चेला दोस। जिन ग्राग्या न पाली जमतरि, तउ सिस्या दिसि किसउ करू **सोस**।
—स कु
२ जिसमे मन न लगता हो।
३ चिन्ता, फिक्र, सोच।
४ सूजन।
५ दबने का भाव या क्रिया।
५ देखो 'सूस' (रू भे)
उ०—घोडौ एराकी छै। राजा जाणै सौ दिवावौ। ताहरा राजा कहीयौ **सोस** करौ।—हाहुल हमीर री वात
सोसक—वि [स शोपक] १ शोपण करने वाला, चूसने वाला।
२ सुखाने वाला।
३ नाश करने वाला।
४ क्षीण करने वाला।
५ वह जो दूसरो का धन हरण करता हो।
स पु—समाज का वह धनी वर्ग जो गरीबो का धन हरण करता है।
सोसण—स पु [स शोपण] १ सुखाना या खुश्क करने की क्रिया या भाव।
२ शोपण।
३ सोखने की क्रिया।
४ कामदेव के पांच वाणो मे से एक वाण जो मनुष्य को चिंतित करके उसका रक्त सोखता है।
रू भे—सोसन।
सोसणौ, सोसबौ—क्रि स—१ सुखाना, खुश्क करना।
उ०—१ साठीका पर नह चल्यौ, लूग्रा री जद दाव। भूभ्ळ मैं सह **सोसिया**, वेरचा कुड तळाव।—लू
उ०—२ ज्यू ज्यू मूकै जीव जग, त्यू त्यू लूग्रा तेज। वाळै जाळै **सोसवै**, दूणी चढै मगेज।—लू
२ चूसना।
३ लाक्षणिक ग्रर्थ मे किसी नाजायज तरीके से किसी का धन कब्जे करना या किसी के श्रम का शोपण करना।
४ किसी की ग्राद्रता या नमी दूर करना, सोखना।
सोसणहार, हारौ (हारी), सोसणियौ—वि०।
सोसिग्रोडौ, सोसियोडौ सोस्योडौ—भू० का० कृ०।
सोसीजणौ, सोसीजबौ—कर्म वा०।
सोसन—स पु—१ वस्त्र। (ग्र मा)
२ देखो 'सोसण' (रू भे)
सोसनग्रह—स पु—पारसियो के ग्रनुसार रात्रि के १२ वजे से प्रातःकाल तक का समय। (मा म)
सोसनपता—स स्त्री—एक विशेप प्रकार की तलवार, कृपाण।
सोसनिया, सोसनी—वि [फा सौसनी] ग्रासमानी, नीला।
उ०—सिर **सोसनिया** ग्रोढणी, लहगौ लाल सुरग। पिय पै ग्राई सुदरी, सेज्या माणण रग।—कुवरसी साखला री वारता
स पु—१ ग्रासमानी रग।
२ ग्रासमानी रग का घोडा विशेप।
उ०—तेलिया मुहा मदनी तुरग, **सोसनी** सब्ज हमा सुरग।
—सू प्र
रू भे—सौसनी।
सोह, सोहग, सोहगम—देखो 'सोग्रहम्' (रू भे)
सोह—वि—१ सब, समस्त।
उ०—१ सु ग्रावतौ राव वाता करतौ ग्रावै छै—जै कदाच घाटा माहै लखौ देवल उठै तौ हिमार कासु हुवै। सु लखै वात **सोह** साभळी।—राव लाखै री वात
उ०—२ ग्रजामेळ पर ग्राविया, साठ सहस जम साज। नाम लिया हिक नारियण, भड **सोह** छूटा भाज।—र ज प्र
२ सहित, युक्त।
उ०—तुरक्का लेखौ किमू तेवडौ, सदी हजारी मिळिया सोह। महाराजा गिरवर मेवाडौ, सरगि पुहतौ सिलै **सोह**।
—हिंदू जोधा री गीत

उ०—सोवन जडित सिंगार, वहु, मारुवणी मुकळाई। गय हेवर दासी वहुत, दीन्ही पिंगळराई।—ढो मा

सोवड, सोवडि—स स्त्री —१ किसी भारी ओढने के वस्त्र के नीचे ओढा जाने वाला हल्का वस्त्र, कम्बल।

उ०—सीत ठठार सवलउ पडई जी, चेलणा प्रीतम साथि। चारित्रियउ चित मा वस्यउ जी, सोवडि वाहिर रह्यउ हाथि।
—स कु

२ सर्दी मे ओढने का विस्तर, रजाई।

सोवडौ—स पु —मुँह, मुख। (शेखावटी)

सोवणग्रह, सोवणघर—स पु —शयनगृह, शयन कक्ष।

सोवणौ—देखो 'सोहणौ' (रू भे)

उ०—१ ताकू तेरौ सोवणौ लाल गुलाबी माळ, चरकू मरकू फिरै घेरणी, मुघरी-मुघरी चाल।—लो गी

उ०—२ कोई कोठै उतरै पावू वनडौ सोवणौ।
—पावू जी रा परवाडा

सोवणौ, सोववौ—१ देखो 'सूवणौ, सूववौ' (रू भे)

उ०—१ रामा अभिरामा कामातुर रोवै, हुडमल हुडदगी सेजा मैं सोवै।—ऊ का

उ०—२ सोवै अळगी सायधण, सुपनै ही नह सग। गणिका सु राखै गुसट, रसिया तौनू रग।—वा दा

२ देखो 'सोहणौ, सोहवौ' (रू भे)

उ०—१ म्हारौ मन नही पतीजै हौ राज, थइ ज श्री केसरिया। सायव गाव सिधाया, श्री अजमौ कुण सोवसी श्री राज।
—लो गी

उ०—२ नी राड रोवण नै ही, नी भैस दोवण नै अर नी मूपडी सोवण नै।—अमरचूनडी

सोवणहार, हारौ (हारी), सोवणियौ—वि०।

सोविश्रोडौ, सोवियोडौ, सोव्योडौ—भू० का० कृ०।

सोवीजणौ, सोवीजवौ—कर्म वा०।

सोवन—देखो 'स्वरण' (रू भे)

उ०—१ आ तौ सोवन सिलाडिया घोटाश्रौ भाग। रग भर दिवलौ झिग रह्यौ।—लो गी

उ०—२ सुदरि सोवन वरण तसु, अहर अलत्ता रग। केसरि लकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरग।—ढो मा

सोवनकार—देखो 'स्वरणकार' (रू भे)

उ०—सोवनकार घर आगणइ जी, मुनिवर पहुतउ जाम। आहार भणी तै माहि गयउ जी, क्रौच गळया जव ताम।—स कु

सोवनगर, सोवनगिर, सोवनगिरि, सोवनगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू भे)

उ०—१ पाणी खग रहियौ कुळ पाणी, हर कर गयौ सवळ दळ हार। सोवनगर कीन्हौ 'राजड' सुत, साद्गुळा वाळौ सिणगार।
—लादूराम बारहठ

उ०—२ सोवनगिर कि सिखर, वजरवी छत्रवारी। धौळागिर कौ राव, मृग मुगतै इत्रकारी।—सूरजनदास पूनियौ

सोवनचिडी—देखो 'सोनचिडी' (रू भे)

उ०—भात भात रा रळियावणा रूडा पखेरू रळिया करता हा—तीतर, तिलोर, वाटवड, मैना, कूकडा, फूदिया, भवरा, खातीचिडा, मुगनचिडी कावर कोचर गोगू कुरज जळकाग वटेर अर सोवनचिडी सरव इत्याद पछी मीठा वोल सुणावता हा।—फुलवाडी

सोवनजाई, सोवनजुही—देखो 'सोनजुही' (रू भे.)

उ०—कणेर व्रछ (व्रक्ष) करणी सेवत्री। कूजा जाय। सोवनजाइ गुलाल। जु फूलि रह्या छै।—वेलि टी

सोवनथाभ—स पु —स्वर्ण स्तभ।

उ०—म्हारै गाय गळाडै भैस्या वाडै, सोवनथाभ विलोवणौ।
—लो गी

सोवनथाळ—स पु [सुवर्णस्थाल] सोने का थाल।

उ०—तणदल करयौ रसोवडौ, सरै पुरस्यौ सोवनथाळ।
—लो गी

सोवनदे—स स्त्री [स सुवर्ण+देह] वधु के लिए प्रयुक्त होने वाला समान सूचक शब्द।

उ०—म्हारी माता नै ठडौ सौ पाणी, कुण ज प्यावै ओ माय! ओ म्हारी वहु सोवनदे, अमर चुडै सुहाग ओ माय!—लो गी

वि —स्वर्ण के समान सुन्दर देह वाली।

सोवनमाखी—स स्त्री [स स्वर्ण+मक्षिका] १ एक विशेष प्रकार की मक्खी जिसका शरीर सुनहरा होता है।

उ०—राकमणी सोवनमाखी राजा नु करि नै जटा माहै राखीयौ। राजा च्यारै ही धरम भाई समरिया।—चौवोली

२ देखो 'सोनामक्खी (रू भे)

सोवनसींगी—वि स्त्री [स स्वर्णशृगी] सोने के सींग वाली या जिसके सींग स्वर्ण से मडित हो।

उ०—माम एक बीनत्रा अवधारी दुजइ फेरइ प्रथि समभाई। देइस हाथ कउ मुदडउ, सोवनसिगी नई कपिला गाई।—वी दे

सोवनौ—वि (स्त्री सोवनी) १ स्वर्ण का, सोने का।

उ०—१ कर तयार हाजर किया, ओवादारा आय। साज जरकसी सोवना, विध विध नोख वणाय।—सू प्र

उ०—२ ममणी लका सोवनी, दीन भभीखण दान।—र ज प्र

उ०—३ हुय कुरग सोवनौ दरसण दरसाया।—केसौदास गाडण

२ सुदर, सुनहला, सुनहरा।

सोवरण—देखो 'स्वरण' (रू भे)

सोवरणगिर, सोवरणगिरि, सोवरणगिरी—देखो 'स्वरणगिरि' (रू भे.)

सोहीजणौ, सोहीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

सोणौ, सोवौ, सोवणौ, सोववौ—रू० भे० ।

सोहतौ—देखो 'सोहितौ' (रू भे)

उ०—सारा ईदा अेकठा हुवा छै, अमल पाणी किया छै। वाकर मारिया छै। सोहता हुवै छै।—उदै उगमणावत री वात

सोहनचिडी—देखो 'सोनचिडी' (रू भे)

सोहनहलवौ—स पु—जमे हुए कतरो के रूप मे घी से तर एक मिठाई विशेष।

रू भे—सोनळवौ, सोनळहलवौ, सोनळहलुवौ।

सोहवत—स स्त्री [अ सोहवत] १ सग, साथ।

उ०—एक विनय री निसाणी चाहना करणी छै, सोहवत पडिता धरमवता री नै भला साचा महा पुरसा रै दरसणा री।—नी प्र

२ दोस्ती, मेल।

३ देखो 'सोवत' (रू भे)

सोहवरदिया—स पु—सूफी मुसलमानो का एक सम्प्रदाय विशेष। (मा म)

सोहमणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू भे)

सोहरौ—देखो 'सोरौ' (रू भे)

उ०—१ राघोदास वडौ मरदा ऊपरलौ मरद ऊट जमी री घणौ सोहरौ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ ताहरा वळद ऊपर सखरा वीछावणा, तिण उपर विणयाणी नू सोहरी वैसाणी।—रळै गढवी री वात

(स्त्री सोहरी)

सोहलाली—देखो 'सोलाळी' (रू भे) (ना डि को)

सोहली—स. स्त्री—स्त्रियो का ललाट पर पहनने का आभूषण विशेष।

उ०—भमुहा ऊपरि सोहली, परिठिउ जाणिक चग। ढोला एही मारुवी, नव नेही नव रग।—ढो मा

सोहळौ—देखो 'सोळौ' (रू भे)

उ०—दूलह दुलहणि री सोहळा गाईजवा वीकानेर पधारिया छै।
—द वि

सोहान—देखो 'साण' (८) (रू भे)

उ०—दूजै वध लोहै री जिण अग नू दीजै सो सोहांन खुरसान सू घिसियौ जाय।—नी प्र

सोहामणौ—देखो 'सुहाणौ' (रू भे)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरइ, वाजइ लहर असाधि। सजोगणी सोहांमणइ, विजोगणी अग दाधि।—ढो मा

उ०—२ जबू नामइ दीप है, दक्षिण भरत मझार। सोरठ देस सोहामणउ, तिहा छइ तीरथ सार।—स कु

उ०—३ साझी गीत सोहामणा, ऐ मइ गाया इकवीस रे। समयसुदर कहइ सघ नइ, नित पूरवउ मनह जगीस रे।—स कु

उ०—४ सहु कु सुखदायक मुख सोहै, देखता ही दुख जावै दूर। जगु सुरति अति सोहामणी, मोहै सोहै हो श्रीजिनचद्रसूर।
—ध व ग्र

(स्त्री सोहामणी)

सोहामणौ, सोहामवौ—देखो 'सुहाणौ, सुहावौ' (रू भे)

सोहा—१ देखो 'सोभा' (रू भे)

२ देखो 'स्वाहा' (रू भे)

सोहाग—स पु—१ वृक्ष विशेष।

उ०—सीवली सादडीआ, सग्घू सीसव साग। सिवनी अनइ सिंदूरीया, सरिता-सगिम सोहाग।—मा का प्र

२ देखो 'सुहाग' (रू भे)

उ०—ताहरा श्री भोजाई बोलियौ, थै उण माटी सू ठरिस्यो नही। उण सोहाग मैं लछण कोई नही।
—कावळै जोइयै नै तीडी खरळ री वात

सोहागण, सोहागणी, सोहागवति, सोहागवती, सोहागिण—देखो 'सौभाग्यवती' (रू भे)

उ०—१ सोहण याई फर गया, सइ नर भरिया रोइ। आव सोहागण नीदडी, वळि प्रिय देखू सोइ।—ढो मा

उ०—२ पुत्रवती सोहागवति पतिवरता पिण सोय। सीराणी चूडी सयिर, वाणी भणै सकोय।—रा रू

उ०—३ उत्तर आज स उत्तरउ, सीय पडेसी थट्ट। सोहागिण घर आगणइ, दोहागिण रइ घट्ट।—ढो मा

सोहागौ—देखो 'सुहागौ' (रू भे)

सोहापति—स पु [स स्वाहापति] अग्नी, आग। (ह ना मा)

सोहारद—स पु [स सौहार्द] १ मित्र, दोस्त। (डि को)

२ सहृदय होने का भाव।

३ सहानुभूति, सहृदयता।

४ कृपा, अनुग्रह।

सोहावणौ, सोहावबौ—देखो 'सोहणौ, सोहवौ' (रू भे)

उ०—१ दसमउ अग सुरग सोहावइ, प्रस्नव्याकरण नामइ। सूत्र कल्पतरू सेवई तेतउ, चितानद फल पामइ।—वि कु

उ०—२ मन दुरमत आवी रे, सगला मन भावी रे। वीरभाण सोहावी, भावी जै हुवै रे।—प च. चौ

सोहितौ—स पु—चावल व गोश्त को एक साथ पकाकर वनाया जाने वाला नमकीन मासोदन।

उ०—तठा उपरायत सीरो-पूडी वणै छै। सोहितै सारू देवजीभि जोयजै छै। विरजै सारू चोखा मगायजै छै। पुलाव सारू कमोद वीणजै छै।—रा सा स

वि वि—सोहिते मे मिर्च, हल्दी, धनिया आदि सब मसाले डाल कर चावलो के साथ मास पकाया जाता है। कहीं२ पर चावलो के अभाव मे वाजरे या काठे गेहू के दलिये के साथ भी पकाया जाता है। यह पुलाव से भिन्न होता है, क्योकि पुलाव मे नमकीन मसाले

स पु —१ जोश, उत्साह ।

उ०—१ मारा सिरदार आय हाजर होवौ । नकारी करौ । मौ सूरा पूरा सोह चढी । कायरा न कापणी छूटी ।

—टाटाळा सूर री वात

उ०—२ सोह चढै समहर समै, आहस द्रढै अमाप । वेम चटै ज्यू ज्यू वटै, पौरस अग 'प्रताप' ।—किसोरदान वारहठ

२ कीर्ति, सुयश ।

उ०—जमु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदे महुच्छव किय । ढढरी किरिया नयरि विक्कमि, वस सोह चडाविय ।—स कु

३ तेज ।

उ०—हु माया सू मोहीयउ, मइ कीधा पर द्रोह । अधम तणी सगति ग्रही, न रही सयम सोह ।—वि कु

४ इज्जत, प्रतिष्ठा ।

उ०—मइ तउ कीधउ मौ दिमा रे, जि० ताहरइ ऊपरि मोह विनयचद्र कहै माहरी रे, जि० सगली तुझ नै सोह ।—वि कु

५ शोभा ।

उ०—१ चैत्रइ विचित्र थइ रही, अव तणी वनरायौ जी । थुड साखा अकुरित थइ, सोह वमतइ पायौ जी ।—वि कु

उ०—२ पाई वसतइ सोह जिण परि, प्रिया गमनइ पदमिनी । सिणगार विन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित अगिनी ।

—वि कु

६ सिंह, शेर । (ना डि को)

रू भे—सौह ।

सोहग—१ देखो 'सुभग' (रू भे)

उ०—१ सुदर सोहग सुदरी, अहर अलत्ता रग । केहर लकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरग ।—अग्यात

उ०—२ पहिली सोहग सुदरी रे लाल सोहग तणौ निधान ।

—स्रीपाल रास

२ देखो 'सोहाग' (रू भे)

सोहगी—१ देखो 'सुहागौ' (रू भे)

उ०—मन सोनौ मन सोहगी, मन ही काच कथीर । हरीया राखै हेकठौ, सव रस पावै सीर ।—अनुभववाणी

२ देखो 'सोगी' ।

सोहड, सोहड–स पु—१ राठौड वस की एक उपशाखा, इस शाखा का व्यक्ति ।

२ देखो 'सुभट' (रू भे)

उ०—१ तराछत सोहड आछत त्राण, कलेवर सावण तात कृपाण ।—मे म

उ०—२ हिव सूमर हेरा हुवइ, मारू भूवणहार । पिंगळ वोळावा दिया, सोहड सौ असवार ।—ढो मा

सोहण–स पु—१ डिंगल का एक गीत (छद), जिसके प्रथम द्वाले की प्रथम पक्ति मे १८ मात्रा, दूसरी मे १४, तीसरी मे १६ तथा चौथी मे १४ मात्राएँ होती है ।

२ देखो 'स्वप्न' (रू भे)

उ०—सोहण वाई फर गया, मइ सर भग्गिया रोइ । आव सोहागण नीदडी, वळि प्रिय देखू सोइ ।—ढो मा

सोहणीनिमाणी स स्त्री—अत गुरु सहित प्रत्येक चरण मे २९ मात्रा तथा १३ और १६ पर यती वाला डिंगल का मात्रिक छद विशेष । इसका दूसरा नाम मच्छटयल भी है ।

सोहणौ–वि (स्त्री सोहणी) १ सुहावना, सुन्दर, मनोहर ।

२ प्रिय, मधुर ।

३ शोभा देने वाला ।

४ देखो 'स्वप्न' (रू भे)

उ०—हुता सज्जण हियडै, सयणा हुदा हत्त । जउ सोहणौ साचइ हौ, सोहणौ वडी वमत्त ।—टो मा

सोहणौ, सोहवौ–क्रि अ—१ शोभा देना, शोभित होना ।

उ०—१ घर आगण माहै घणा, त्रासै पडिया ताव । जुध आगण सोहै जिकै, वालम वाम वसाव ।—वा दा

उ०—२ मिला रा किल्ला द्वार चित्राम सोहै, विभूसा अलोकीक लोका विमोहै ।—मे म

उ०—३ चौधारा लाखीक चाडतौ, किलम पचाहर कीर्या कर । राड विभाड सोहियौ राजा, अरक्क ज्यूई दळ फाड यर ।

—चावडदान वारहठ

२ जचना, फवना, सुन्दर लगना ।

उ०—१ अजहु तरु पुहप न पल्लव अकुर, थोड डाळ गादरित थिया । जिम सिणगार अकीधै सोहति, प्री आगमि जाणियै प्रिया ।—वेलि

उ०—२ वाजूवध वधे गोर वाहु, विहु स्याम पाट सोहत मिरी मणि मैं-हीडि हीडलै मणिधर, किरि साखा स्रीखड किरी ।

—वेलि

३ कीर्ति, यश आदि फैलना, प्रसिद्ध होना ।

उ०—महाराज आजानभुज राम रघुवसमणा, राड रिमजूथ अवनाड रोहै, गढा गह गजणा । वार निरधार आधार आधार आलम वणै, सरण साधार जिण विरद सोहै, भिडै दळ भजणा ।

—र ज प्र

क्रि स—४ सूप मे डाल कर अनाज साफ करना ।

उ०—गोरी म्हारी ए हरियाळौ सोहीजै क्यू, यू म्हारा सायव यू जी यू, गोरी म्हारी ए, हरियाळौ पीसीजै क्यू, यू म्हारा सायव यू जी यू ।

—लो गी

सोहणहार, हारौ (हारी), सोहणियौ ।—वि० ।

सोहिओडौ, सोहियोडौ, सोह्योडौ—भू० का० कृ० ।

पौधा या घास, जिससे सुगधित तेल, इत्र आदि निकाला जाता है, रोहिष।
२ इस घास से निकाला हुआ सुगधित तेल या इत्र।
उ०—१ अगनाभ अतर **सौंधा** प्रमळ, वटि अरगजा वळोवळ। जदि चढै अनुज अग्रज गजा, हूता हाल किलोहळा।—सू प्र
उ०—२ वेनी फूल गूथ **सौंधै** भीनै आज कारै कारै वार सवार भारी।—रसीलै राज री गीत
उ०—३ घरिया तनि वसत्र कुमकुमै धोया, **सौंधा** प्रखोळित महल सुख। भर स्रावणि भाद्रवि भोगविजै, रुखमिणि वर एहवी रुख।
—वेलि

वि वि—उक्त प्रकार का घास राजस्थान, मध्यप्रदेश, नेपाल, शिमला, अलमोडा, काश्मीर, पजाव आदि के पहाडी प्रदेशो व ववई व मद्रास के पर्वतो मे पाया जाता है। इससे गुलाव की (मतान्तर से नारियल की) सी सुगध आती है और इसका तेल निकाला जाता है। मुख्यत इसकी दो जातियाँ होती है। एक के फूल सफेद व दूसरे के नीले रग के होते है। जव यह घास नरम रहता है तो पत्तियो का रग नीला होता है तव इसे मोतिया कहते है एव पकने पर पत्तियाँ लाल हो जाती है तव इसे सौफिया कहते हैं। इसकी पत्तियाँ सावन-भादो से कातिक अगहन तक फूलती है। इसी समय इसकी पत्तियाँ तेल निकालने के योग्य हो जाती हैं।

जव घास फूलने लगती है, तव काटकर छोटी-छोटी पूलियाँ वनाली जाती है। उक्त पूलियो को पानी भरे वर्तन मे डालकर उवाली जाती है। उक्त वर्तन पर तीन-चार अगुल मोटी व तीन-चार फुट लम्वी नलियो सहित सरपोश लगा रहता है। उक्त नलियो के सिरे तावे के दो घडो से लगे रहते है। इस प्रकार इसका आसव खीच लिया जाता है। आसव को किसी चौडे मुह के वर्तन मे उडेल लेते है। रोहिष का अर्क थोडी देर रहता है। ऊपर से तेल को धीरे-धीरे निकाल लेते है। यह तेल गुलाव के इत्र मे मिलाकर इसमे ताडपीन या मिट्टी का तेल मिलाया जाता है। इस प्रकार सुगन्धित पदार्थ तैयार किया जाता है।
३ विभिन्न प्रकार के इत्रादि सुगन्धित पदार्थ।
रू भे—साघौ, सुधौ, सूधौ, सोधौ।

सौंन—देखो 'सुगन' (रू भे)
उ०—जाकै सिर हरि की रजा, कजा करैगा कौंन। जनहरीया वसवास विन, दुनिया देखै **सौंन**।—अनुभववाणी

सौंवणौ, सौंपवौ—देखो 'सूपणौ, सूपवौ' (रू भे)
उ०—१ निगुण गुण मानै नही, कोटि करै जै कोइ। दादू सव कुछ **सौंपियै**, सौ फिर वैरी होइ।—दादूवाणी
उ०—२ घेर नै वाघ नू पाकडियौ। आण नै रावळजी नू **सौंपियौ** ताहरा रावळजी कह्यौ। सावास ऊदा।
—उदै उगमणावत री वात
उ०—३ हरीया निस दिन धिन घरी, वार पूरव धिन जानि। अपनै साई कारणै, तन मन **सौंपूं** आनि।—अनुभववाणी
उ०—४ तिसा ही रजपूतवट रा आचार देखनै महाराजा राजेसर अजमेर रै थाणै राखेआ छै। हसम हुकम **सौंपीआ** छै।
—रा सा स

सौंफ—स स्त्री—१ पाँच छ फुट ऊँचा पौधा जिसकी पत्तियाँ सोए के के समान ही वारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते है। फूल लम्वे सीको मे गुच्छो के रूप मे लगते है।
२ उक्त पौधे के वीज जो मसाले व औपधि के काम मे लिए जाते है।
रू भे—सूफ।

सौंलौ—देखो 'सवळौ' (रू भे)
उ०—अजरामर का मारग औला, **सौंला** सत पिछाणै। वक नाळि मेर सचरि कै, भवरगुफा सुख माणै।—अनुभववाणी

सौंस—देखो 'सूस' (रू भे)
उ०—१ महाराज विच रहमाण, करि **सौंस** छिवी कुराण। तदि धरै दिल परतीत, वोलियौ 'अगजीत'।—सू प्र
उ०—२ तेज पुज आसप आरोगीजै छै। प्यार करनै **सौंस** दै दै नै प्याला दीजै छै।—रा सा स

सौ—स पु—१ शख २ शनि ३ वालक ४ सूर्य ५ बुध ६ भाई ७ मित्र ८ जप ९ अच्छा वाक्य। (एका)
स स्त्री—१ पृथ्वी, जमीन, धरती। („)
२ क्षुधा, भूख। („)
३ उपासना आराधना। („)
४ सौ की सख्या, १००।
वि—१ वलवान, पराक्रमी। (एका)
२ शुद्ध, पवित्र। („)
३ सव, समस्त, सम्पूर्ण।
उ०—१ सासू गहणै नै काई पूछौ, गहणौ औ म्हारौ **सौ** परवार।
—लो गी
उ०—२ दाळरोटी खाव्या वैठौ आगण **सौ** परवार।—लो गी
[स शत] ४ निन्नानवे से एक अधिक, पचास का दुगुना।
उ०—चरख्या चटीट अगीठ चख, पीठ समोवड पाळणा। पाकेट सज्या **सौ** कोस पथ, हेकण चाटी हालणा।—मे म
मुहा—१ सौ ई मरज्यौ पण मौवा नै पूरण वाळौ मत मरज्यौ = आश्रित मिट जाय पर आश्रय-दाता नही मिटना चाहिये २ सौ गुडा पर एक मूंछ मुडा = हिजडे के साथ कोई क्या वदमाशी करे ३ सौ गोला ई घर सूनौ = केवल नौकरो से घर की शोभा नही होती। गुलाम गैर जिम्मेदार होते है ४ सौ ज्यू पचास = असमर्थो

मिर्च, हल्दी, धनिया आदि नही डाले जाते सिर्फ सूखा मेवा, काजू, कालीमिर्च, घी आदि डाले जाते है।

रू भे —सुहितौ, सोइतौ, सोयतौ, सोहतौ, मौहतौ।

सोहियोडौ—भू का कृ —१ शोभायुक्त या शोभित हुवा हुआ २ जचा हुआ, फवा हुआ, सज्जित, सुन्दर लगा हुआ ३ फैला हुआ, प्रसिद्ध हुवा हुआ (यश)। ४ सूप मे डालकर साफ किया हुआ। (स्त्री सोहियोडी)

सोहिलौ—वि (स्त्री सोहिली) १ आसान, सुगम, सरल।

उ०—१ ए अवसर रे आवता वली दोहिलउ, पुण्य योगइ रे घन पामता सोहिलउ।—स कु

उ०—२ मयमत्ता मेगल महा, मणिधरि केहरि मल्ल। सगला दमता सोहिला, मन दमणौ, मुसकल्ल।—ध व ग्र

उ०—३ कर जोडी कहइ कामिनी जी, बधव सम नही कोइ। कहिता वात सोहिली जी, करता दोहिली होय।—स कु

२ सुखी।

उ०—१ 'मरणौ' राय कृपा करि साहिब, ज्यू पारेवौ पल्यौ री। समयसुदर कहइ तुम्हारी कृपा तै, हिव रहस्यू मोहिली री।
—स कु

उ०—२ सोहिलौ थाय ससार, दोहिलौ कोई देखू नही।
—सूरो टापरियौ

३ सम्पन्न।

स पु —आराम, सुख।

रू भे —सोयली।

सोही—वि —शुभचिंतक, हितैषी।

सर्व —वही, सो।

सोहोड—देखो 'सुभट' (रू भे)

उ०—१ असमर अगनि कडाई आरियण। लाकड सोहोड धुखै कुळ लाज।—प्रथीराज राठोड री गीत

उ०—२ साकुर झपट सोहोड थट सामट, थरहर जगि जस थह थरट। दोयण दताळ करण गट दुजडा, मळे औ होट दूछर मरट।
—छतरसिंह हाडा री गीत

सोहृद, सोहिद—वि [स सहृदय] १ मित्र, हितैषी। (डि को)

२ दयावान, कृपालु।

सौं—स. स्त्री —शपथ, सौगध।

सौंज—स पु —१ साज-सामान, साधन, सामग्री।

उ०—१ दादू अतर आतमा, पीवै हरि जळ नीर। सौंज सकल लै उद्धरै, निरमळ होइ सरीर।—दादूवाणी

उ०—२ सदगुरु दाता जीव का, स्रवण सीस कर नैन। तन मन सौंज सवारि सव, मुख रसना अरु वैन।—दादूवाणी,

उ०—३ आजम दक्खण हृत उलट्टौ, विकट धनुख सर जाण विछुट्टौ। उत्तर धरा मु आलम आयौ, सौंज नेज दळ तेज सवायौ।
—रा. रू

२ भाला चलाने की विद्या या खेल।

उ०—मोती बाग हूत सब मारु, सौंज नेज खडि रमणा सारू।
—रा रू

३ खेती, फसल।

उ०— क्रम नेदाण करि रात्ति भ्रम आपणौ, और उजाड कुण करत तेरौ। गोफणी ग्यान अग्यान गेरा उडै, सत की वाडि गुर सवद फेरौ। आय अनेक जुगमाहि जन नीपना, नाव लिव लावणी सौंज लागा। दास हरिराम गुण गाहि गाडा भरी, भूख मैं दुख ग्या दूर भागा।—अनुभववाणी

३ राह, मार्ग।

उ०—सील सतोख की सनाह, अगिय पहरिवा। सुमरण की सौंज लेवा आगम कू चालिवा।—ह. पु वा

४ ख़जाना, भण्डार।

उ०—सकल सुखौं की सौंज हरि, वार पार मधि नाहि। देहं गेह दुनिया तरक, प्रान गरकता माहि।—ह पु वां

५ विशिष्ट कार्य या क्रिया।

६ वह पूजनीय चित्र, वस्त्र आदि जिसे साम्प्रदायिक नियमानुसार किसी स्थान विशेष मे रख कर पूजा जाता है।

वि —सव, समस्त।

उ०—काया कोट विन्यौ विन टाची, कळी न चूनौ लाया। करता पुरख भया कारीगर, नख चख सौंजि वनाया।—अनुभववाणी

७ देखो 'सूज' (रू भे)

सौंडिक—स पु [स] शराव बनाकर बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति व इस जाति का व्यक्ति। (वं भा.)

सौंण—१ देखो 'सुगन' (रू भे)

उ०—ताहरा गोगैजी पावूजी नू कही—आपे 'परभातै सौंण लेस्या, जो सौण आछा हुआ तो चढस्या।—नैणसी

२ देखो 'सयन' (रू भे)

सौंणहर—स पु [स शयनगृह] शयनागार। (डि को)

सौंणी—देखो 'सुगनी' (रू भे)

उ०—पछै उठारा चढिया साखला हरभौ रै गाव वैहगटी आया। हरभोजी सौंणी हुता।—नैणसी

सौंधाखानौ—स पु —इत्र, तेल आदि सुगधित द्रव्य रखे जाने का स्थान या कक्ष।

उ०—सौंधाखाना वेल सजि, वटा कहार कहाय। कावड सरवण धारि कध, जाणै तीरथ जाय।—सू प्र.

रू भे —साधाखानौ, सुधाखाणौ, सुधाखानौ।

सौंधौ—स पु.—१ राजस्थान एवं मध्यप्रदेश मे पाया जाने वाला एक

वाला ।

२ दिल बहलाव या मनोरंजनार्थ किये गये कार्य ।

सौकीन—देखो 'सौखीन' (रू भे)

उ०—माफ कराई जो म्हू थोडो सौकीन तबीयत रो आदमी हू । इण वास्तै म्हारै साथै इण नसा री गैळ चढयोडी ही ।
—अमरचूनडी

सौकीनी—देखो 'सौखीनी' (रू भे)

सौकूतरौ, सौकूतौ—देखो 'साकूतरौ' (रू भे)

(स्त्री सौकूतरी)

सौख—स पु [अ शौक] १ किसी पदार्थ की प्राप्ति या निरन्तर भोग के लिए अथवा कोई कार्य करते रहने के लिए होने वाली तीव्र लालसा ।

उ०—पेख सिव नौख रिम सीस चाढै पौहप, श्रोख सत्रवाट कुळवट अराधौ । सौख मारणै जमी रमै रामत सगत, जोख मारणै अमी रायजादौ ।—बहादरसिंघ री गीत

क्रि प्र—करणौ, राखणौ, होणौ ।

२ आकाक्षा, लालसा ।

३ व्यसन, चसका, चाट ।

४ प्रवृत्ति, झुकाव ।

५ देखो 'सौक' (रू भे)

उ०—विवाणा परा ता चला सौख वागी, लखै हूर रभा वहै वादि लागी ।—सू प्र

रू भे—सोक, सोख, सौक ।

सौखी—१ देखो 'सोखी' (रू भे)

२ देखो 'सौखीन' (रू भे)

सौखीन—वि [अ शौकीन] वह व्यक्ति जिसे किसी बात का बहुत शौक हो, चाव रखने वाला ।

२ वह व्यक्ति जो सदा बना-ठना रहता हो, सदा बना-ठना रहने वाला ।

३ ऐय्याश, तमाशबीन, रडीबाज ।

रू भे—सोकीन, सोखीन ।

सौखीनाई—स स्त्री—१ शौकीन होने का भाव या अवस्था ।

२ रडीबाजी, तमाशबीन, ऐय्याशी ।

रू भे—सोखीनाई ।

सौखीनी—१ देखो 'सौखीनाई' (रू भे)

२ देखो 'सौखीन' (रू भे)

३ देखो 'सोखी' (रू भे)

सौगद, सौगध—देखो 'सोगध' (रू भे)

सौगधिक—स पु [स] कुबेर का एक वन जिसकी सुगध के साथ पवन कुबेर सभा मे कुबेर की सेवा करता है ।

सौगधिकवन—स पु यौ [स] एक प्राचीन तीर्थ जहां ब्रह्मादि-देवता, सिद्ध, मुनि, नाग, गधर्व, किन्नर आदि निवास करते हैं ।

सौगंधिका—स स्त्री [स] एक प्राचीन नदी जो कुबेर नगरी मे बहती है ।

सौगत—स पु [स] धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

सौगन—देखो 'सोगध' (रू भे)

उ०—१ थानै आपणा री सौगन धकै अेक पावटी ई वधियौ तो । नदी री टाढौ पाणी पीवौ, धमेक बिगाड़ै गावौ ।—फुलवाडी

उ०—२ म्हैं तो भायजी री सौगन पोहरै चढ्या पछै अठै वरै आयौ हू ।—फुलवाडी

सौगात—स स्त्री [तु] उपहार के रूप मे व्यक्ति विशेष को दी जाने वाली स्थानीय उपज की कोई वस्तु या चीज ।

रू भे—सोगायत ।

सौगाळौ—स पु [स शोक+आलुच्] एक रस्म विशेष जिसमे मृतक के परिवार वालो को उनके सगे-सबंधियो द्वारा मद्यपान आदि करवा कर शोक-भजन कराया जाता है । (मेवाड)

सौड—देखो 'सोड' (रू भे)

सौच—स पु [स शौच] १ शरीर की शुचिता के लिये सवेरे सो कर उठने ही किया जाने वाला कृत्य ।

२ शुचिता, शुद्धता ।

३ टट्टी जाना, मल त्यागना ।

४ देखो 'सोच' (रू भे)

सौण—१ देखो 'सुगन' (रू भे)

२ देखो 'सोणित' (रू भे)

सौणी—१ देखो 'सुगनी' (रू भे)

२ देखो 'सोणित' (रू भे)

सौत—स स्त्री [स सपत्नी] किसी स्त्री के प्रेमी या पति की दूसरी प्रेमिका, सपत्नी ।

सौति—स पु [स] उग्रश्रवा ऋषि का एक नाम ।

सौतेलौ—वि (स्त्री सौतेली) सपत्नी का, सौत का ।

स पु—विमाता का पुत्र ।

सौदरा—१ देखो 'सुभद्रा' (रू भे)

२ देखो 'सोदरा' (रू भे)

सौदामणी, सौदामनी, सौदामिणी—स स्त्री [स सौदामनी] १ विद्युत, बिजली । (ह ना मा)

उ०—अर उच्छाह रै अनुसार भाला नू भमाय सौदामिणी रा सा सळाव देता अति ही समीप आय अडिया ।—व भा

२ कश्यप ऋषि की एक पुत्री ।

३ एक अप्सरा का नाम ।

सौदागर—स पु [फा] १ व्यापारी, व्यवसायी ।

उ०—१ बीकमपुर रा पिण आदमी तेडण आया । सु सौदागर माडणसर बीकानेर सू कोस १२ तठै आयौ । कह्यौ अठै मोनु आप

के लिये पचास की सख्या भी सौ के बराबर होती है ५ सौ दिन चोर रा एक दिन साहूकार रौ=चोर कभी तो पकड मे आता ही है ६ सौ नीच नै एक आख मीच=एक काना सौ बदमाशो से बढकर होता है ७ सौ बरस रौ सिलावटी नै बारै बरस रौ घर धणी=शिल्पकार को वही करना पडता है जो मकान मालिक कहे, शिल्पकार के अनुभव की मकान-मालिक आगे कोई कीमत नही ८ सौ बाता री एक बात=सार बात, सार वस्तु, साराश. ९ सौ राडा भाग नै एक रडवौ घडचौ=रडुवे या विधुर मे सौ विधवाओ के गुण होते हैं। अधिक छल-छन्द करने वाले के लिये है १० सौ रा भाई साठ=देखो 'सौ ज्यू पचास' ११ सौ री एक खोवै=नासमझ के लिये है जो अपने कई पूर्वजो की सचित पूजी व्यर्थ गमाता हो १२ सौ री विनती नै एक रौ सोठौ=जहाँ विनय व शराफत से काम न बने तो शक्ति प्रयोग करना चाहिये १३ सौ सुल्टी नै एक कुल्टी=एक कुटिल कई शरीफो से बढकर होता है १४ सौ सोनार री नै एक लवार री=बलवान की एक ही चोट पर्याप्त होती है १५ सौ सोगी नै एक दोगी=एक दुश्मन सौ मित्रो के बराबर होता है। दुश्मन कभी छोटा नही होता १६ सौ स्याणा रौ एक मतौ=समझदारो मे मतान्तर नही होता, समझदारो का मत एक होता है।

५ देखो 'सो' (रू भे)

उ०—१ दुनिया मैं कोई ऐडी चीज नी सौ वारै कोठै नी मिळै। —फुलवाडी

उ०—२ मादा मिनखा नै तौ बतावै सौ ई ओखद जचै। —फुलवाडी

उ०—३ कुतरा रै कनारै धवळौ सौ देखै तौ क्यू पडियौ छै जोयौ। देखै तौ अमल रौ पोतौ छै।—ऊदै उगमणावत री वात

उ०—४ रघुवर सौ प्रभू तज कर औयण जे अवरा अमर अभि-यासत। त्रखित सुरसुरी तीरह, खिली कूप खणत नर मूरख। —र ज प्र

रू भे —सउ।

सौक—स स्त्री [स सहपत्नी] १ सौत।

उ०—१ सौ अठै ही सेझ री रीत नही भूलौ और ओधा सू काम लियौ तौ सायत सुरग मैं अपछरा वर ली तौ म्हारै सौक होय जायला सौ चाल सीस लै ताकीद सत कर हाजरी मैं जाऊ। —वी स टी

उ०—२ आ नित दीसै साजना, रीस रखू की रोळ। साजनिया सालै नही, सालै ल्होडी सौक।—अग्यात

२ एक प्रकार की ध्वनि जो बाण, वायु, विमान अथवा पक्षियो आदि के तीव्र गति से चलने या उडने से उत्पन्न होती है, सर-सराहट।

उ०—१ परा सौक पक्खरा, धमक वागी धजराजा। अनळपख उड्डिया, गिळण जाणै गजराजा।—सू प्र

उ०—२ सौक पडै सायका, सेल धमरोळ सतावा। मिळै लोह मारका, नरिंद हरवळा नवावा।—सू प्र

३ तीव्र गति या रफ्तार।

४ तीव्र गति से भागने की क्रिया।

रू भे —सउक, सउकि, सोक।

अल्पा, —सोकड, सोकडली, सोकण, सौकड, सौकडली।

५ देखो 'सौख' (रू भे)

सौकड—देखो 'सौक' (अल्पा, रू भे)

उ०—आगणियै रे ढोला हवद खुणाय, पितकळनै पडै रे म्हाजी सौकड वैरण गालती दी रे म्हाराज।—लो गी

सौकडली—देखो 'सौक' (१) (अल्पा, रू भे)

उ०—आडी रे आडी ढोला भीतडली रे चुणाय, निजर नही देखा रे इयै सौकडली नै मालती रे म्हाराज।—लो गी

सौकण—देखो 'सौक' (१) (रू भे)

सौरकडौ—स पु—१ बन्दूको का वह समूह जो प्राचीन काल मे घोडा-गाडी या ऊटगाडी के पिछले हिस्से मे कसा जाकर काम मे लिया जाता था।

उ०—१ सौकरडा भड तणा सह्या, नरी सही गगनाळ। बीजड झड सह वस पर, आण न दी अवगळा।—अग्यात

उ०—२ अनै सौकरडा रा सिंधु मैं सोकरडा री गाडिया होवै है वा गाडिया रा सिंधु दरियान मैं पवन ज्यू पुगौ।—वी स टी

वि वि —प्राचीन समय मे आधुनिक मशीनगनो की जगह प्रयोग होने वाला लगभग सौ डेढ सौ बन्दूको का समूह जो घोडागाडी, ऊँटगाडी और बैलगाडी के पिछले भाग मे फिट कसा रहता था। युद्ध मे इन गाडियो को तीव्रगति से दौडाते हुए शत्रु सेना के बिलकुल समीप ले जाकर गाडियो को वापिस उल्टा घुमाकर शत्रु सेना को बन्दूको की मार मे लेकर बन्दूको को पलीता लगा देते थे। इससे गाडी पर कसी बन्दूकें एक साथ मशीनगन की तरह गोलियो की बौछार करने लगती। युद्ध-स्थल मे इस प्रकार की बन्दूकें कसी गाडियो के समूह एक के बाद एक क्रमश आते रहते थे। सभी बन्दूको की नालो का मुँह पीछे की तरफ होता था।

२ देखो 'सौक' (२) (मह, रू भे)

रू भे —सोकरडौ।

सौकरतीरथ—स पु [स सौकरतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ स्थान।

सौकलटौ—स स्त्री—१ स्त्री के सिर के वे बाल जो आगे लट के रूप मे निकले रहते है। (अशुभ)

वि वि —समाज मे ऐसी धारणा है कि इस प्रकार की लट वाली औरत को सौत का मुँह देखना पडता है।

सौकातिसार—देखो 'सोकातिसार' (रू भे)

सौकिया—क्रि वि—१ शौक की प्रवृत्ति के वश होकर कार्य करने

उ०—भाटा थूज सौभागियौ, पिछौळा री टग्ग । गुल हजा पाणी भरै, ऊपर दै दै पग्ग ।—अग्यात

सौभाग्य–स पु —१ अच्छा भाग्य, अच्छी किस्मत ।
२ यश, कीर्ति ।
३ शुभत्व, कल्याणत्व ।
४ मनोहरता, सुन्दरता ।
५ धन, सम्पत्ति, वैभव ।
६ स्त्री के सधवा रहने की अवस्था, सुहाग, सौभाग्यपन ।
७ शुभ-सन्देश, मगल-कामना ।
८ ज्योतिष के २७ योगो मे से चतुर्थ योग का नाम । (ज्योतिष)
९ एक छद जिसके प्रत्येक चरण के अन्त मे एक लघु वर्ण सहित नगण, रगण और यगण आता है । (ल पिं)
रू भे —सभाग, सोभाग, सौभाग ।

सौभाग्यतीज, सौभाग्यत्रतीया–स स्त्री [स सौभाग्यतृतीया] भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो अति उत्तम मानी जाती है ।

सौभाग्यवती–स स्त्री —१ सधवा या सुहागिन स्त्री ।
२ सुदर स्त्री ।
वि —१ अच्छे किस्मत वाली ।
२ शुभ लक्षणो वाली ।
रू भे —सुहागवती, सोभागण, सोभागणी, सोहागण, सोहागणी, सोहागवती, सोहागिणी ।

सौभाग्यवान–वि — १ खुशकिस्मत, अच्छे भाग्यवाला ।
२ वैभवशाली, सम्पन्न ।

सौभाग्यव्रत–स पु [स] फाल्गुन शुक्ला तृतीया को किया जाने वाला व्रत ।

सौभाग्यसूठी–स स्त्री —सूतिका रोग के लिए बहुत उपकारी माना जाने वाला एक आयुर्वेदिक पाक ।

सौमत्रेय–स पु —१ लक्ष्मण । (ना मा)
२ शत्रुघ्न ।

सौमन–स पु [स] एक प्राचीन अस्त्र ।

सौमनस–स पु [स] १ पश्चिम दिशा का दिग्गज । (पौराणिक)
२ उदयगिरी पर्वत के एक शिखर का नाम । (पौराणिक)

सौमनसा–स स्त्री [स] एक प्राचीन नदी । (रामा)

सौमनस्य–स पु [स] १ आनन्द, खुशी ।
२ पारस्परिक सद्भाव ।
३ श्राद्ध मे पुरोहित के हाथ मे फूल देने का कार्य ।

सौमित्रा— देखो 'सुमित्रा' (रू भे)

सौम्य–वि —१ शात, गभीर ।
२ नम्र, कोमल ।
३ ठडा, शीतल, स्निग्ध ।
४ स्वच्छ, निर्मल ।
५ सदर, मनोहर ।
६ प्रसन्न, खुश ।
७ उज्ज्वल, चमकीला ।
८ चन्द्रमा सबधी ।
९ शुभ, मगलमय ।
स पु —१ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम ।
२ चन्द्रमा का पुत्र बुध ।
३ साठ सवत्सरो मे से एक ।
४ फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक ।
५ वार व नक्षत्र सबधी बनने वाले २८ योगो मे से पाचवा योग ।

सौम्यगिरि–स पु —एक प्राचीन पर्वत ।

सौम्या–स स्त्री —दुर्गा ।

सौयवर—देखो 'स्वयवर' (रू भे)

सौय—देखो 'सोय' (रू भे)

सौरंभ—देखो 'सौरभ' (रू भे)
उ०—१ सुगधाकर सुदर फूल सोहै, महाथभ सौरभ सिंभू विमोहै ।
—रा रू
उ०—२ मुकट परखि मुख ताम रूप किर काम परट्टै । अगराग आरभ परम सौरभ प्रगट्टै ।—रा रू

सौरभचर—देखो 'सौरभचर' (रू भे) (ना मा)

सौरभमूळ—देखो 'सौरभमूळ' (रू भे)

सौरम—देखो 'सौरभ' (रू भे)
उ०—ताम छोळा घ्रत तणी, वणै ऊपरा वहौतरि । छकै मसाला टमर, तकै सौरमा अम्मरि ।—सू प्र

सौर–स पु [स] १ सूर्य का पुत्र, शनि ।
२ यमराज ।
३ दाहिनी आख ।
४ तुबरु ।
वि —१ सूर्य का, सूर्य सबधी ।
२ सूर्य से उत्पन्न ।
३ देखो 'सोर' (रू भे)
उ०—वहै सेल दूधारा चौधारा धारा रुद्र वहै, उडै सीस केवाण निराळा हुवै अग । काळा सौर ऊछळै कराळ झाळ दहू कानी, जोधपुरा आमेरां मडाणौ महाजग ।—बखतसिंघ रौ गीत

सौरकौ—देखो 'सोरकौ' (रू भे)
उ०—राजा री खीझ रा डर सू उणरौ जीव तौ सौरका चढण लागौ । अबै करै तौ काई करै —फुलवाडी

सौरत—देखो 'सौहरत' (रू भे)

सौरभ–स स्त्री [स] १ सुगन्ध, खुशबू, महक ।

नै तेड जासी पिण मारग जाय सू ।—राजा उदैसिंघ री वात

उ०—२ सौदा एक सकल तन भीतरि, विणजै विरळा भाई जनहरिराम मिळै सौदागर, सौदै साट मिलाई ।—अनुभववाणी

२ घोडो का व्यापारी ।

रू भे—सोदागर ।

सौदागरी—स स्त्री [फा] १ व्यापार का कार्य, रोजगार, व्यवसाय ।

२ सौदागर का कार्य ।

सौदास—स पु—१ कौसल के राजा सुदास के पुत्र तथा ऋतुपर्ण के पौत्र का नाम ।

२ च्यवन के पुत्र सुदास के पुत्र का नाम ।

सौदौ—स पु [अ सौदा] १ क्रय-विक्रय का सामान, माल ।

उ०—गरु घलाली वाहिगौ, सिवरन सौदौ लेह । हरीया भाव'र भगति कौ, भाजै नाहि मनेह ।—अनुभववाणी

क्रि प्र—लाणौ मगाणौ, खरीदणौ ।

२ लेन-देन की बात-चीत, व्यवहार, व्यवसाय, व्यापार ।

उ०—१ जीव गयौ दहवाट, कारिज कौ सरीयौ नही । जनहरीया हरि हाट, सुक्रित सौदा ना कीया ।—अनुभववाणी

उ०—२ कालै अेक सौदा मैं खासो नफौ रैग्यौ हौ । सेठ राजी हा ।—फुलवाडी

उ०—३ मैंहघा मौल दियै मेघाउत, लियै अपार नफौ जसलाह । आडावळै मोतिया अमडौ, सौदौ करै वळापति साह ।

—महाराजा छतरसिंह रौ गीत

क्रि प्र—वैठणौ, करणौ, व्हैणौ ।

३ शरीर की एक धातु ।

४ मस्तिष्क-विकार, पागलपन ।

५ प्रेम, इश्क ।

६ वस्तु-विनिमय ।

७ पशुओ का क्रय-विक्रय, आदान-प्रदान, सट्टा ।

८ कार्य ।

वि—१ चालाक, धूर्त ।

रू भे—सोदौ ।

सौध—स पु—१ भवन, महल, अट्टालिका । (अ मा)

उ०—अटै सोध अवरोध अचाणक, बोध मोद बिसराए प्राणनाथ हा नाथ जोधपुर, गौख सौध गणणाए ।—ऊ का

रू भे—सोध ।

सौधरमइद्र—स पु [स सौधर्मइन्द्र] वह इन्द्र जिसने भगवान महावीर के विश्वकल्याणकारी उपदेश के लिए उपदेशशाला-समवशरण अपने कोपाध्यक्ष कुवेर को आदेश देकर बनवाया था ।

सौधन्वा—स पु [स] सुधन्वा के पुत्र ऋभु का एक नाम ।

सौनद, सौनद—स पु [स] १ बलराम का एक नाम विशेष, जो मूसल रखने के कारण पडा ।

२ बलराम का मूसल ।

सौनइयौ—देखो 'सोनइयौ' (रू भे)

उ०—अणसै कोडि अठयासी कोडि असी लाख उपर वलि जोडि । इतरा सौनइया नौ मान, दै सहु अरिहत वरसीदान ।—ध व ग्र

सौनक—स पु [स शौनक] भृगुवशी शुनक ऋषि के पुत्र एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य ऋषि ।

सौनचिड़ी—स स्त्री—१ वह नटी जो कलाबाजियाँ दिखाने मे अत्यधिक निपुण हो । (मा म)

२ देखो 'सोनचिडी' (रू भे)

सौनहरी, सौनेरी—स पु—१ सिंह की एक जाति व इस जाति का सिंह । (अ मा)

उ०—तहा सौनहरी-पटंत विकराळ रूप बाघ भभकार उठै रोस का रूप जाणि जमराज रूठै —सू प्र

२ देखो 'सानैरी' (रू भे)

सौवरण—स पु [स सौपर्ण] विष्णु के वाहन गरुड के अस्त्र का नाम ।

सौपाक—स पु—एक प्राचीन वर्णसकर जाति ।

सौवत—१ देखो 'सोहवत' (रू भे)

२ देखो 'सोवत' (रू भे)

सौवल्य—स पु [स] एक प्राचीन जनपद का नाम ।

सौबायत, सौवाहौ—देखो 'सूबेदार' ।

उ०—'अखई' माधौदास रौ, तिण वेळा तुडताण । यू सौवाहा ऊठियौ, साहा गजण माण ।—रा रू

सौभ—स स्त्री—१ एक काल्पनिक नगरी का नाम जो आकाश मे स्थित मानी जाती है, राजा हरिश्चन्द्र की नगरी ।

२ शाल्वो का एक नगर ।

सौभद्र—स पु [सं] एक प्राचीन तीर्थ ।

सौभाग—देखो 'सौभाग्य' (रू भे)

उ०—१ स्लोका धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ रै राग सौभाग गावै ।—मे म

उ०—२ आतल नै पिण ओहटै, वलि सवाहै काठी वाग कि । तारै आपणपौ तिकौ, सहु माहै पामै सौभाग कि ।—ध व ग्र

उ०—३ गुण रा जाण ग्यान रा गौरख, तप रा भाण माण रा त्याग । वित रा पाण 'हणू' रा वरसै, सत रा ढाण घणौ सौभाग ।—आईदान पाल्हावत

उ०—४ काम वखतेस चै भाजतै कूरमा, प्रथी मा वाह सौभाग पायौ । वाहि विहाडि वधि पूरिजळ चाडिवस, अभिनवौ करमसी कुसळ आयौ ।—कीरतदान बारहठ

सौभागण, सौभागणी, सौभागिणी—देखो 'सौभाग्यवती' ।

सौभागिनेय—स पु [स] उस स्त्री का पुत्र जो अपने पति को प्रिय हो ।

सौभागियौ—देखो 'सोभागियौ' (रू भे)

वात है ।—गाव रा धणी री वात

स्कद—स पु [स स्कद] १ स्वामिकार्तिकेय का नाम ।

२ शिव, महादेव ।

३ राजा, नृप ।

४ विद्वान, पण्डित ।

५ शरीर ।

६ वालको के नौ प्राणघातक ग्रहो या रोगो मे से एक ।

वि वि —उक्त नौ ग्रहो के नाम इस प्रकार है—स्कन्द, स्कन्दापस्मार, शकुनी, रेवती, पूतना, अन्धपूतना, शीतपूतना, मुखमण्डिका और नैगमेष ।

रू भे —सकद ।

स्कदछट, स्कदछटी, स्कदछठ, स्कदछठी—देखो 'स्कदमसटी' (रू भे)

स्कदजणणी, स्कदजननी—स स्त्री [स स्कदजननी] स्कन्द की माता, पार्वती ।

स्कदजित, स्कदजीत—स पु [स स्कदजित्] विष्णु ।

स्कदधर—स पु [स] भगवान् विष्णु का नाम ।

स्कदपुराण—स पु [स स्कदपुराण] अठारह पुराणो मे से एक पुराण का नाम ।

स्कदमात, स्कदमातरी स्कदमाता, स्कदमात्री—स स्त्री [स स्कदमातृ] १ स्वामिकार्त्तिकेय की माता, पार्वती ।

२ नवदुर्गाओ मे से एक दुर्गा ।

रू भे —सकदमात, सकदमाता, स्कदमात, स्कदमातरी, स्कदमाता, स्कदमात्री, स्कधमात, स्कधमाता, स्कधमात्री ।

स्कदससटी, स्कदसस्टी, स्कदसस्ठी—स स्त्री [स स्कन्दषष्ठी] १ चैत्रमास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी, इस दिन स्वामिकार्त्तिकेय देवसेनापति पद पर आसीन हुए थे ।

२ स्कद की भार्य्या एक देवी का नाम । (तान्त्रिक)

रू भे —स्कदछट, स्कदछटी, स्कदछठ, स्कदछठी ।

स्कदापसमार, स्कदापस्मार—स पु [स स्कदापस्मार] वालको के प्राणघातक नौ ग्रहो या रोगो मे से एक ।

स्कध—स पु [स स्कन्ध] १ कन्धा ।

२ शरीर, वदन ।

३ तना ।

४ नृप, राजा ।

५ नारियल ।

६ शाखा, डाल ।

७ आर्या छन्द का एक भेद ।

८ मूर्छित राम-लक्ष्मण की रक्षा करने वाला वानर ।

९ एक नाग ।

स्कधकवच—स पु [स] कवच का वह भाग जो कधे पर धारण किया जाता है ।

स्कधतर, स्कधतरु—स पु [स स्कन्ध+तरु] नारियल का पेड ।

स्कधतराण, स्कधत्राण—स पु [स स्कन्धत्राण] कन्धे पर धारण किया जाने वाला एक प्रकार का कवच विशेष ।

स्कधफळ, स्कधफल—स पु [स स्कन्ध+फल] १ नारियल का पेड या नारियल ।

२ विल्ववृक्ष ।

स्कधमण, स्कधमणि, स्कधमणी—स पु [स स्कन्धमणि] एक प्रकार का मत्र या तावीज ।

रू भे —स्कधमिण, स्कधमिणि, स्कधमिणी ।

स्कधमात, स्कधमाता, स्कधमात्री—देखो 'स्कदमात' (रू भे)

स्कधमिण, स्कधमिणि, स्कधमिणी—देखो 'स्कधमण' (रू भे)

स्कधाक्ख, स्कधाक्ष, स्कधाख—स पु [स स्कधाक्ष] देवताओ के एक गण का नाम ।

स्कधावार—स पु [स स्कधावार] १ सेना, फौज ।

२ सेना का पडाव ।

३ शिविर ।

रू भे —सकदवार, सकदावार, सकधवार, सकधावार ।

स्काउट—स पु [अ] वालचर ।

स्काउटिंग—स स्त्री [अ] वालचर का कार्य, अवस्था या भाव ।

स्कूल—स स्त्री [अ] १ पाठशाला, विद्यालय ।

उ०—पण औ सगळी वाता मन मैं सोचतौ ई रह जावतौ अर कदै स्कूल अर कदै कालेज अर उण री ढेर सारी पोथ्या, उणा नैं पढावण नैं भाभरकै ई प्रोफेसर आ धमकतौ ।—तिरसकू

२ विद्यालय की इमारत, भवन ।

रू भे —सकूल ।

स्खलन—स स्त्री [स स्खलन] १ चुवन, रिसन, टपकन ।

२ रगडन ।

३ भूल-चूक ।

स्खलित—वि [स] १ चुआ हुआ, टपका हुआ ।

२ गिरा हुआ ।

स्टाप—स पु [अ] १ डाक का टिकट ।

२ मोहर ।

३ एक प्रकार का सरकारी कागज जो भिन्न२ मूल्यो के होते हैं । इस पर किसी प्रकार की पक्की (अपरिवर्तनीय) लिखा-पढी की जाती है ।

स्टाप, स्टाफ—स पु [अ स्टाफ] किसी कार्यालय मे काम करने वाले कर्मचारी ।

स्टीयरिंग, स्टीरिंग, स्टेयरिंग, स्टेरिंग—स पु [अ] कार, जीप, ट्रेक्टर, ट्रक आदि को नियन्त्रित करने का यत्र ।

उ०—जीप त्यार खडी है । वैं तू खुद स्टीयरिंग सम्हाळचा वैठचौ है । दूजी कानी लीना है अर वीच मैं मनैं वैठाण्यौ है ।—तिरसकू

उ०—पळकै ही आभा चदं ज्यू, मटकै ही नैण लाज री ज्यू।
सासा मैं सौरभ सामेडी, होठा मैं हास राज ही ज्यू।—सकुतळा
२ केसर।
३ सुरभि, गाय।
४ तुवरु।
५ धनिया।
६ बोल नामक गध-द्रव्य।
७ आम।
रू भे—सोरभ, सोरभी, सौरभ, सौरम।

सौरभचर—स पु [स] भौरा, भ्रमर।
रू भे—सोरभचर, सौरभचर।

सौरभमूळ—स पु [स सौरभ+मूल] चदन।
रू भे—सोरभमूळ, सौरभमूल।

सौरभेई—स स्त्री [स सौरभेयी] गाय। (ह ना मा)

सौरभेय—स पु [स सौरभेय] बैल। (डि ना मा, ह ना मा)
रू भे—सोरभेय।

सौरभेयी—स स्त्री [स] एक अप्सरा का नाम।

सौरम—देखो 'सौरभ' (रू भे)
उ०—१ किरियौ तौ सौरम रा चार सरडाटा खाचिया अर मस्त व्हैगौ। मस्ताई मै मडोवर रा बगीचा री सोय मैं सौरम रै समचै आपरी घाटी बधावण लागौ।—फुलवाडी
उ०—२ वौ नैना टावर री गळाई खोळा मैं पसरग्यौ अर आख्या मीचनै उण सौरम री अणछक आणद लूटण लागौ।
—अमरचूनडी

सौरमास—स पु—सूर्य के किसी एक राशि मे रहने मे रहने तक माना जाने वाला महीना, एक सूर्य सक्रान्ति से दूसरी सूर्य सक्रान्ति तक का समय।

सौरसेन—स पु [स शौरसेन] १ वर्तमान ब्रजमण्डल का प्राचीन नाम।
२ उक्त जनपद के निवासी।

सौरसेनी—स स्त्री [स शौरसेनी] शौरसेन प्रदेश मे बोली जाने वाली एक प्राचीन भाषा का नाम, सौरसेनी अपभ्र श।

सौरसेय—स पु [स] स्वामिकार्त्तिकेय का एक नाम।

सौरास्ट्र—स पु [स सौराष्ट्र] राजस्थान के दक्षिण पश्चिम मे स्थित गुजरात, काठियावाड का एक प्राचीन नाम।
रू भे—सोरट, सोरठ।

सौरि—स पु [स शौरि] १ विष्णु।
२ वसुदेव।
३ कृष्ण।
४ बलदेव।
३ शनिश्चर ग्रह।

सौरी—स स्त्री. [स] राजा कुरु की माता का एक नाम।

सौ'रौ, सौरौ—१ देखो 'सोरौ' (रू भे)
उ०—१ ज्यू त्यू करनै बीस बरस तौ सौरा दौरा काढ सकू।
—फुलवाडी
उ०—२ जवाब दियौ—माड पचायती करणौ सौरौ काम नी है। थारी समझ व्है तौ थै ई करौ।—फुलवाडी
(स्त्री सौरी)
२ देखो 'सुसरौ'।

सौरच—स पु [स शौर्य] १ वीरता, साहस।
२ पराक्रम, पौरुष।
३ शक्ति, बल।

सौळ—देखो 'सोलह' (रू भे)

सौवस्तिक—स पु [स] जैनियो के ८८ ग्रहो मे से ५९ वा ग्रह।

सौवीर—स पु—सिधु नदी के आस-पास स्थित एक प्राचीन प्रदेश का नाम अथवा इस प्रदेश का निवासी।
रू भे—सुवीर।

सौस—देखो 'सूस' (रू भे)
उ०—पण भागणी, तै सूरज री सौस खाधी हतौ तौ परमेस्वर पर दाद नही पावै।
—नाहरी हरणी धरमै कै बावत सावतसी री वात

सौसनी—देखो 'सोसनी'।

सौह—देखो 'सोह' (रू भे)
उ०—१ सौह चढावण तेरह साखा, 'लखौ' 'प्राग' तण ओडण लाखा।—रा रू
उ०—२ आवै दाव कळहण दुनियान सौह ऊचरै, वडी घर राव रूका विभाडी। उधारी राडि रजपूत आवेरि धरि, पहाडी कामा लै भोग पाडी।—रावराजा फतैसिंघ नरूका रौ गीत

सौहगी—देखो 'सुहागी' (अल्पा, रू भे)
उ०—हरिराम हम राम का, राम हमारा यार। ज्यू सोनौ अर सौहगी, मिळग्या तारौतार।—अनुभववाणी

सौहड—देखो 'सुभट' (रू भे)
उ०—आसत खग लिया करामत ईजत, सौहडा चेळा लिया समाथ। आठौ पौहर जरद ऊपावै, नाथ नवा जिम गोपीनाथ।
—गोपीनाथ रौ गीत

सौहतौ—देखो 'सोहितौ' (रू भे)

सौहरत—स पु—१ प्रसिद्धि, ख्याति।
२ कीर्ति, यश।
रू. भे—सौरत।

सौहागण—देखो 'सुहागण' (रू भे)
उ०—तद सौहागण बोली कथा माहै काही ओगण है धरम री

स्तोम-स पु [स स्तोमः] १ यज्ञ, हवन, होम।
 २ सग्रह।
 ३ विरुदावली, प्रशसा।
 ४ धन, दौलत।
 रू भे—सतोम, सातोम, सातोमि।

स्त्रसतर, स्त्रसत्र, स्त्रस्तर, स्त्रस्त्र-स पु [स तृण+सस्तर] तृण शय्या।

स्त्रींद्रिय, स्त्रींद्री-स स्त्री [स स्त्रीद्रिय] भग, योनि।

स्त्री-स स्त्री [स] १ नारी, औरत। (डि को)
 २ पत्नी, जोरू।
 ३ व्याकरण मे स्त्रीलिंग का सक्षिप्त रूप।
 ४ मादा जन्तु या प्राणी।
 रू भे—असतरी, अस्तरी, अस्त्रिय, अस्त्री, अस्त्रीय।

स्त्रीकरण-स पु [स] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीकाम-स स्त्री [स स्त्री+काम] १ मैथुन हेतु अभिलाषी।
 २ भार्या प्राप्ति की कामना।

स्त्रीगमण, स्त्रीगमन-स पु [स स्त्रीगमन] स्त्री से सम्भोग करने की क्रिया, मैथुन।

स्त्रीग्रह-स पु—ज्योतिष के अनुसार बुध, चन्द्र और शुक्र ग्रह जो स्त्री जाति के माने जाते है। (ज्योतिष)

स्त्रीचिन, स्त्रीचिह्न-स पु [स स्त्रीचिह्न] १ स्त्री जाति के लक्षण।
 २ भग, योनि।

स्त्रीधन-स पु—स्त्रियो के छ प्रकार के वे धन जिन पर उनका पूर्ण अधिकार हो।

स्त्रीधरम-स पु [स स्त्रीधर्म] १ पत्नी या स्त्री का कर्तव्य।
 २ स्त्री का रजस्वला होना।
 उ०—दिन उगो। ताहरा अहीरणी फूल नु कह्यो, राज आडेचा ठाकुर छो। अर हु स्त्रीधरम हुती। म्हारी छोरू नीमीयो छै एक कागद रावळै हाथ रो करि द्यो।—लाखै फूलाणी री वात
 ३ मैथुन, सभोग।

स्त्रीधरमणी, स्त्रीधरमिणी-स स्त्री [स स्त्री+धर्मिणी] रजस्वला स्त्री।

स्त्रीपरसग, स्त्रीप्रसग-स पु [स स्त्रीप्रसग] सभोग, मैथुन।

स्त्रीभोग-स पु [स] सभोग, मैथुन।

स्त्रीमत्र-स पु [स] ऐसा मत्र जिसके अत मे 'स्वाहा' हो।

स्त्रीमानी-स पु [स स्त्रीमानी] भौत्य मनु के एक पुत्र का नाम।

स्त्रीरासि, स्त्रीरासी-स स्त्री [स स्त्रीराशि] ज्योतिष के अनुसार स्त्री जाति की राशियाँ यथा—वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन।

स्त्रीलक्खण, स्त्रीलक्षण, स्त्रीलखण-स पु [स स्त्रीलक्षण] पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक।

स्त्रीलिंग-स पु [स] १ व्याकरण मे स्त्रीवाचक शब्द प्रकार का लिंग।
 २ भग, योनि।

स्त्रीवरत—देखो 'स्त्रीव्रत' (रू भे)

स्त्रीवार-स पु [स] ज्योतिष के अनुसार तीन वार जो स्त्रीजाति के माने जाते है—यथा—बुध, चन्द्र और शुक्र।

स्त्रीवास-स पु [स] १ सभोग या मैथुन के समय उपयुक्त वस्त्र।
 २ सभोग या मैथुन के लिए उपयुक्त स्थान।

स्त्रीविसय, स्त्रीविसै-स पु. [स स्त्रीविषय] सभोग, मैथुन।

स्त्रीव्रत-स पु [स] १ वह पुरुष जो अपनी पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री की कामना न करता हो।
 २ अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य स्त्री की कामना न करने की क्रिया या भाव।
 रू भे—स्त्रीवरत।

स्त्रीसग-स पु [स] मैथुन, सम्भोग।

स्त्रीसभोग-स पु [स] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीसमागम-स पु [स] सम्भोग, मैथुन।

स्त्रीसुख-स पु [स] १ गृहस्थाश्रम का आराम व आनन्द।
 २ स्त्री से मिलने वाला आनन्द।
 ३ मैथुन, सम्भोग।

स्त्रीसेवण, स्त्रीसेवन-स पु [स स्त्रीसेवन] सम्भोग, मैथुन।

स्थनणी-स पु—पार्श्वनाथ का नाम।

स्थग-वि [स] १ धूर्त, कपटी।
 २ ढीठ, लापरवाह।
 ३ गुण्डा, बदमाश।

स्थपत, स्थपति, स्थपती-स पु [स स्थपति] १ राजा, शासक।
 २ कारीगर।
 ३ रथ हाकने वाला, सारथी।
 ४ कुबेर।
 ५ बृहस्पति।
 ६ अन्त पुर का रक्षक।

स्थर—देखो 'स्थिर' (रू भे)

स्थळ-स पु [स स्थल] १ भूमि, जमीन।
 २ भू-भाग।
 ३ जलरहित भूमि या वह भू-भाग जहाँ पानी की कमी हो।
 ४ मरुभूमि।
 ५ पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।
 रू भे—असतळ, असथळ, अस्तळ, अस्थळ।

स्थळकाळी-स स्त्री [स स्थलकाली] दुर्गा देवी की एक सहचरी का नाम।

स्थाणु-स पु [स स्थाणु] १ शिव, महादेव।

स्टेसण, स्टेसन—देखो 'टेसण' (रू भे)

स्टैंट—स पु [अ] १ पडाव, रुकाव।
२ अड्डा।
३ गाडियों के रुकने का स्थान।
४ सहारा।
५ स्थाम।
उ०—वैजू रै कनै वारा बीर री दुरबीण लाग्योडी दुनाळी भारी वदूक अर नीना कनै हलकी अमरीकी गन जी नै जीप माथै लाग्योडै स्टैंड माथै राखनै निसानो वाध्यो जा सकै है।—तिरसकू

स्टोव—स पु [अ] एक प्रकार का आधुनिक चूल्हा जो टंकी मे भरे तेल आदि से गर्म होकर (जल कर) ताप उत्पन्न करता है।

स्तब—स पु [स] १ गुच्छा, बाल।
२ झाडी।
३ गुच्छा।
४ स्वरोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक।

स्तबतरण, स्तंबत्रण, स्तबत्रिण—सं पु [स स्तब+तृण] घास, झाडी।

स्तबवन—स पु [स] १ सुर्पा।
२ हसिया।

स्तभ—स पु [स स्तम्भ] १ खम्भा।
२ मूर्खता।
३ रोग आदि के कारण होने वाली मूर्च्छा।
४ गतिहीनता।
५ सुन्नता, सज्ञाहीनता।
६ तना।
७ प्रतिबन्ध, रुकावट।
८ साहित्य दर्पण के अनुसार एक प्रकार का सात्त्विक भाव।
९ स्वरोचिष मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक सप्तर्षि का नाम।

स्तंभक—वि [स] १ रोकने वाला, स्तभन करने वाला।
२ सम्भोग करते समय वीर्य को स्खलित होने से कुछ समय तक रोके रखने वाला।

स्तभकी—स स्त्री [स स्तभकिन] एक देवी।

स्तभण—स पु [स स्तभन] १ रुकावट, अवरोध।
२ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक।
३ वीर्यपात रोकने वाली दवा।
४ सम्भोग आदि के समय वीर्य को स्खलित होने से रोकने की क्रिया, अवस्था या भाव।
५ देखो 'थभण'।

स्तभेसतीरथ—स पु [स स्तभेशतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ का नाम जिसमे सौरभेयी नामक अप्सरा शाप वश ग्राह रूप मे रहती थी। इसका उद्धार पाडुनदन अर्जुन ने किया था।

स्तभेस, स्तभेसवर, स्तभेसुर, स्तभेस्वर—स पु [स स्तभेश्वर] एक शिवलिंग का नाम जो विश्वकर्मा द्वारा प्रस्तुत व स्कद द्वारा स्थापित किया गया था।

स्तन—स पु [स स्तन] १ किसी स्त्री के उरोज, चूची।
उ०—एजु रुक्मणीजी कै कठिन स्तन छै सु करि कहता हस्ती तिण का कपोल करि वरणाया छै। नवी वेस का कवि कहै छै। वाणी करि रूडा वखाणी। स्तना उपरि स्यामता सोभै छै। सु जाणै जोवन का दाण दिखाळिया छै।—वेलि टी
२ मादा पशु या जानवरो के थन।

स्तनधय—स पु [स स्तनधय] बालक, शिशु। (ह ना मा)

स्तनातर—स पु [स] १ हृदय, दिल।
२ एक प्रकार का सामुद्रिक चिन्ह विशेष जो स्त्रियो के स्तन पर होता है एव वैधव्य का सूचक माना जाता है।

स्तब्ध—वि [स] १ गतिहीन, गतिरहित।
२ सुन्न।
३ सुस्त।

स्तब्धता—स स्त्री [स] स्तब्ध होने की अवस्था, दशा या हालत।

स्तव, स्तवण, स्तवन—स पु [स स्तव, स्तवनम्] १ स्तोत्र, स्तव।
२ प्रशसा, स्तुति, गुणगान।
उ०—गुरु नायइ रे चैत्य प्रवाडि करइ खरी, देवइ वादइ रे सक्र स्तव पाचै करी। उपासिइ रे आवी इरिया पडी कमी, आगमणउ रे आलोयइ नीचउ नमी।—स कु
रू भे—सतवन।

स्तुति, स्तुती—स. स्त्री [स स्तुति] १ प्रशसा, तारीफ।
उ०—निज रोम न ख्वेस मैं काम नही, उर हास आराम हरांम नही। गरवै स्तुति निंद समान गिनै, हरवै न वनै नहि विंद हनै।—ऊ का
२ विरुदावली।
३ ठकुरसुहाती, चापलूसी।
४ देवी-देवताओ के गुणो का आदर भाव से पाठन करने की क्रिया या भाव।
५ देवी का एक नाम।
स पु—६ शिव का एक नाम।
रू भे—सतुति, सतूति, सतूती।

स्तुभ—स पु [स] भानु नामक अग्नि के छ पुत्रो मे से एक।

स्तोक—वि [स स्तोक] १ तनिक, थोडा। (अ मा)
२ ह्रस्व, लघु।
३ कुछ।
४ निम्न।

स्तोतर, स्तोत्र—स स्त्री [स स्तोत्र] १ प्रशसा, तारीफ।
२ विरुदावली।

१० स्वामिकार्तिकेय ।
११ वृष, साड ।
१२ देखो 'थिर' (रू भे)
रू भे—सिथर, सिथिर, स्थर ।

स्थिरता—स स्त्री [स] स्थिर होने की अवस्था, भाव या स्थिति ।
उ०— सौम्यता चद्र, क्षमा करी प्रथ्वी, गभीरि मा रत्नाकर, निरवलेपता कमल, स्थिरता द्रूमडल, अनियतविहारता समीर, गुप्तेंद्रियता कूरम्म, अप्रमत्तता भारुड ।—व स

स्थिरासण, स्थिरासन—स पु [स स्थिरासन] योग के चौरासी आसनो के अतर्गत वह आसन जिसमे पलथी मारकर बैठना होता है ।

स्थूण—स पु [स] विश्वामित्र के ब्रह्मवादी पुत्र का नाम ।

स्थूळ, स्थूल—देखो 'थूळ' (रू भे)
उ०—१ पद्रह तत्व का स्थूळ सरीरा, जग्रत सब ही जजाळ । इद्रिया अपनै अपनै कामा, रही विखय रस माळ ।
—स्रीसुखरामजी महाराज
उ०—२ ज्यू दरपण कै अतर वहिर, मुखा भास विचारी । अतर सूक्ष्म बाहिर स्थूळा, मध सता हमारी ।—स्रीसुखरामजी महाराज

स्थूलकेस—स पु [स स्थूलकेश] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

स्थूलजघा—स स्त्री [स] नौ समिधाओ मे से एक ।

स्थूळपाद—स पु [स स्थूलपाद] हाथी, हस्ती ।

स्थूळहसत, स्थूळहस्त—स स्त्री [स स्थूलहस्त] हाथी की सूड ।

स्थूळा—स स्त्री [स स्थूला] १ सौफ ।
२ इलायची ।
३ मुनक्का ।
४ कपास ।
५ ककडी ।

स्थूळाक्ष, स्थूळाक्ष, स्थूलाख—स पु [स स्थूलाक्ष] १ एक महर्षि का नाम ।
२ एक राक्षस जो श्रीराम के द्वारा मारा गया था ।

स्नान—स पु [स स्नान] १ जल से शरीर को साफ करने की क्रिया, नहाने की क्रिया ।
उ०—१ जद ब्राह्मण बोल्या—हे पापणी ! म्हानै भ्रस्ट कीया । अबै गगा जी जाय स्नान पाणी रा लेप करी सुद्ध थास्या जद आ दोनू डावडा नेड् लै जावो अनै सुद्ध करो ।—भि द्र
उ०—२ इसडा पुराण रा वचन साभळ, सग साथ करि-गयाजी हालियो । तेथी जाय स्नान दान स्राद्ध क्रिया करि पिंडदान करण लागियो नो तीन हाथ प्रकटिया ।—वैताळ पच्चीसी
२ धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना कि सारे शरीर पर उसका प्रभाव पडे ।
३ धार्मिक दृष्टि से कुछ दिनो तक बराबर नियमपूर्वक किसी नदी या जलाशय मे नहाने की क्रिया ।
ज्यू—काति स्नान ।
४ पानी या किसी तरल पदार्थ से भीगने की क्रिया ।
रू. भे—असनान, सनाण, सन्नान, सिनाण, सिनान ।

स्नानग्रह, स्नानघर—स पु [स स्नानगृह] गुसलखाना, बाथरूम ।
रू भे—सनानघर, साणग्रह, साणघर, सिनानघर ।

स्नानजातरा, स्नानजात्रा, स्नानयात्रा—स स्त्री [स स्नानयात्रा] विष्णु की मूर्ति को महास्नान कराने का एक उत्सव विशेष जो ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है ।
रू भे—सनानजात्रा, सनानयात्रा ।

स्नानसाळ, स्नानसाळा, स्नानागार—स पु [स स्नानशाला, स्नानागार] गुसलखाना, स्नानगृह ।

स्नायु—स पु—नहरुआ । (अमरत)

स्नायुवरम—स पु [स स्नायुवर्मन] आख का एक प्रकार का रोग विशेष जिसमे कोडी या सफेद भाग पर छोटी गाठ निकल जाती है । (वैद्यक)

स्निग्ध—वि [स] १ चिकनाहट से युक्त, चिकना ।
उ०—स्निग्ध गार रा खग सुवण, घड मचाय घमसाण । बाप लख्यौ जद वाहसी, कठ कट्यौ केवाण ।—रैवतसिंह भाटी
२ कोमल, मुलायम ।
३ प्रिय, प्यारा ।
४ तर, नम ।
स पु [स स्निग्ध] १ तेल ।
२ मोम ।
३ मित्र, दोस्त ।

स्निग्धता—स स्त्री [स] स्निग्ध होने की अवस्था या भाव ।

स्नेह—स पु [स] १ चिकना पदार्थ ।
२ दूध, दही आदि पर आने वाली मलाई ।
३ हिंडोल राग का पुत्र ।
४ प्रेमियो, बच्चो आदि के साथ होने वाला प्रेमभाव ।
५ सरसो ।
६ नमी, तरी ।
७ चरबी ।
८ तेल ।
९ वीर्य, शुक्र ।
१० कोमलता, मुलायमता ।
११ चिकनाहट ।
वि [स स्नेह] १ चिकना, स्निग्ध ।
२ नमी से युक्त, नम ।
३ देखो 'सनेह' (रू भे)
रू भे—सनेस ।

२ ग्यारह रुद्रो मे से एक ।
३ एक प्रजापति का नाम ।
४ घोडे का एक प्रकार का रोग विशेष ।
५ एक प्राचीन तीर्थ ।
६ एक प्राचीन ऋषि ।

स्थान-स पु [स स्थान] १ जगह, स्थल ।
२ भू-भाग, जमीन ।
३ मकान, घर आदि रहने की जगह ।
४ व्यर्थ या किसी कार्यवश हमेशा बैठने की जगह ।
५ मदिर, देवालय ।
६ पद, ओहदा ।
७ उदासीन होकर बैठने की क्रिया, भाव या अवस्था ।
रू भे —सथान ।

स्थानक—देखो 'थानक' ।
उ०—ज्यू पाच महाव्रत पचखी आधाकरमी स्थानक निरतर भोगवै । इत्यादिक अनेक दोख सेवै । तिण रौ प्रायस्चित पिण नही लेवै । औ मोटौ देवालौ लोच सू नै तपस्या सू कठै ऊतरै ।
—भि द्र

स्थानकवासी—देखो 'थानकवासी' ।

स्थानजफ-म पु —मुसलमानो का एक तीर्थ स्थल । (वा दा ख्यात)

स्थाई—देखो 'स्थायी' (रू भे)

स्थापन—देखो थापन' ।

स्थापननिक्षेप-स पु यौ —अर्हत् की मूर्ति का पूजन । (जैन)

स्थापना—देखो 'थापना' ।

स्थापनानिक्षेप-स पु यौ —एक वस्तु के गुणो की किसी दूसरी ऐसी वस्तु मे उसके गुणो की कल्पना करना जिसमे वह गुण न हो ।

स्थायी-वि [स.] १ हमेशा बना रहने वाला । (परमानेंट)
२ गीत का पहला चरण या पक्ति, टेक ।
३ दृढ, मजबूत ।
रू भे —थायी, स्थाई ।

स्थायीभाव-स पु [स] मनुष्य के मन मे सदा रहने वाले वे मूल तत्व या भाव जो विशिष्ट अवसर पर या अन्य कारण मे स्पष्ट रूप से प्रकट होते है । (साहित्य)
वि वि —इन्ही भावो के आधार पर साहित्य के नौ रस स्थिर हुए है । ये भाव दूसरे भावो के आने पर भी स्पष्ट रूप से व्यक्त होने के कारण स्थायी भाव कहलाते है ।
रू भे —थायीभाव ।

स्थाळ—देखो 'थाळ' (रू भे)

स्थाळी—देखो 'थाळी' (रू भे)

स्थावर-स पु [स] १ अचेतन, पदार्थ ।
२ पहाड, पर्वत ।
३ स्थूल-शरीर ।
४ अचल सम्पति ।
वि —१ जो हट न सके, स्थिर ।
२ जगम का विलोम ।
३ अचल ।

स्थावरता-स स्त्री —स्थावर होने की अवस्था या भाव ।

स्थित-स पु [स] १ निवास, अवस्थान ।
२ अचल ।
३ उपस्थित, मौजूद ।
४ दृढ, पक्का ।
५ वसा हुआ ।
६ वर्तमान ।
७ तैयार ।

स्थितव्विवेकासण, स्थितविवेकासन-स पु [स स्थितविवेकासन] योग के चौरासी आसनो मे से एक प्रकार का आसन विशेष, जिसमे हाथो तथा पैरो की अलग-अलग पलथी मारकर सीधा मर्यादापूर्वक बैठना होता है ।

स्थितता-स स्त्री —स्थित होने की अवस्था या भाव ।

स्थिति-स स्त्री [स] १ स्थित होने की क्रिया या भाव ।
२ टिकाव, ठहराव ।
३ हालत, दशा ।
४ पद, मर्यादा आदि के अनुसार समाज मे मिलने वाला स्थान ।
५ ढग, तरीका ।
६ सीमा, हद ।
रू भे —सथिति ।

स्थिर-वि [स] १ स्थायी ।
२ सदा एक ही स्थिति मे रहने वाला, निश्चल ।
३ जिसमे किसी प्रकार की चचलता आदि न हो, शान्त ।
४ निश्चित, पक्का ।
५ दृढ, मजबूत ।
६ निर्दय, निष्ठुर हृदय ।
स पु [स स्थिर] १ २८ योगो मे से एक योग ।
२ फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व नक्षत्रो सवधी तृतीय योग ।
३ स्थिर राशियाँ—वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुभ । (ज्योतिष)
४ ४९ क्षेत्रपालो मे से एक ।
५ शनिग्रह ।
६ देवता ।
७ पर्वत, पहाड ।
८ वृक्ष, पेड ।
९ शिव, महादेव ।

रू भे—समारक ।

स्मारत–स पु [स. स्मार्त] स्मृतियों के अनुसार चलने वाला एक सम्प्रदाय या व्यक्ति ।

स्म्रति, स्म्रती–स स्त्री [स स्मृति] १ धर्म संहिता ।

२ स्मरण शक्ति, याददाश्त ।

३ अगिरा ऋषि की पत्नी का नाम ।

४ एक प्रकार का छद ।

५ अठारह की सख्या का सूचक शब्द । ❀

रू भे—सम्रत, सम्रति, सम्रित, समरति, समरती, सम्रती, सम्रिति, सरइ ।

स्म्रतिकार–स पु [स स्मृतिकार] धर्म संहिता बनाने वाला, धर्माचार्य ।

रू भे.—समरतिकार ।

स्म्रतिवेता–वि [स स्मृतिवेता] स्मृतियो का जानकार ।

रू भे—सम्रतवेता, सम्रतिवेता ।

स्यगार—देखो 'स्रगार' (रू भे)

उ०—रस स्यगार य हासरस, बिच जिण कवित वखाण । जाता-सख जिण नु कहै, वरणव राम वखाण ।—र ज प्र

स्यगासण, स्यगासन—देखो 'सिंहासन' (रू भे)

स्यघल, स्यंघलदीप, स्यंघलद्वीप—देखो 'सिंहल' (रू भे)

उ०—कुकण कनवज नइ कलहटी, मरहठ नइ मुलवारी । स्यंघल सेतबंध नौ राजा, तै सवि लीया हकारी ।—रुकमणी मगळ

स्यंघासण, स्यघासन—देखो 'सिंहासन' (रू भे)

उ०—वीच आगण स्यघासण वणाय, आभूसण कर त्रियं बैठ आय । अतर फुलेल चिरचत अग, सभळिया किनका गोद अग ।—वगसीराम प्रोहित हीरा की वात

स्यद–स पु [स स्यन्द] रथ, गाडी ।

रू भे—स्यध ।

स्यदण, स्यंदन–स पु [स स्यदन] १ विशेषत युद्ध मे काम आने वाला एक प्रकार का रथ, गाडी । (डि को)

२ बहाव, कटाव ।

३ जैनियो के अतीतकालीन तेईसवें तीर्थंकर का नाम । (स कु)

४ वायु, हवा, पवन ।

५ जल, पानी ।

६ चन्द्रमा, चांद ।

७ घोडा, अश्व ।

रू भे—सदण, सदन, सदि, सदी, सिदण, सिदन ।

स्यदूर—देखो 'सिंदूर' (रू भे)

उ०—हार डोर सुघट सोहइ, भरया माग स्यदूर । राखडी रतन अनेक झळकइ, जाणि उग्या सूर ।—रुकमणि मगळ

स्यंध—१ देखो 'स्यद' (रू भे)

२ देखो 'सिंधु' (रू भे)

उ०—१ अधर व्यव सम अरुण, ममह भुज नागरी ज मग । सिल समान उर समर, अथघ मम स्यध उदर अग ।—र ज प्र

उ०—२ राघव अनुरागी भव बडभागी, मति सुम लागी पथ मही । हरि सत कहाही जम भय नाही, स्यध तिरा ही सुभ वसही । —र. ज प्र

स्यभ—देखो 'स्वयभू' (रू भे)

उ०—तिण दी विण जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै सव कच्चा है । वोलै स्रुत सम्रत स्यभ अज वायक, सीतानायक सच्चा है । —र ज प्र

स्यमतकमण, स्यमतकमणि, स्यमतकमणी, स्यममिण, स्यमतमिणि, स्यममिणी, स्यमतकमण, स्यमतकमणि, स्यमंतकमणी, स्यमतकमिण, स्यमतमिण, स्यमतमिणी–स स्त्री [स स्यमतकमणि] एक प्रकार की बहुमूल्य मणि जिसको सत्यभामा के पिता ने सूर्य की तपस्या करके प्राप्त की थी ।

स्याणप—देखो 'सैणप' (रू भे)

उ०—१ होणहार सौ हीज हुवौ, स्याणप थी क्या होय वै । राजा कोपै भी भरयौ, वरजण सकौ कोय वै ।—रीसाळू री वात

उ०—२ जान रै आछै हीडै-चाकरी री हकारी भरली, अर बाकी सारी वाता भरमा-भरमी मैं ही राखी । स्याणप सू सौदौ पटायौ, वेटै री बाप नाव-नामून मैं आयौ ।—दसदोख

उ०—३ हूनर करौ हजार, स्याणप चतुराई सहित । हेत कपट विवहार, रहै न छाना राजिया ।—किरपाराम

स्याणौ—देखो 'सेणौ' (रू भे)

उ०—१ अर स्याणा लोका कयौ है मी कणी रा जनाना माहै जाजै नही ।—गाम रा धणी री वात

उ०—२ हरीया दुरमति सठकी, पिंड प्राण लग होय । भावै स्याणा वौह मिळौ, सठ न समझै कोय ।—अनुभववाणी

उ०—३ सब ही स्याणा हुय रह्या, नही ईयाणौ कोय । स्याणौ सोई जाणीयै, अलख ओळखै सोय ।—अनुभववाणी

उ०—४ सगळी गाया इत्ती स्याणी अर समझणी कै उण वेळा पूछडी ई नी हिलावती । बादळ मन करतौ जणा ई दूध चुरड लेतौ ।—फुलवाडी

उ०—५ लाड, मोह अर प्रीत मैं अबूझ, नादान, छोटौ टाबर जित्तौ समझै, उत्तौ स्याणौ, समझणौ अर लाठौ मौट्यार ई नी समझै ।—फुलवाडी

उ०—६ जिकै मूरवा अजरायत था, त्यारो री तौ रग लाल हुवण लागौ । अर जिकै स्याणा काचा था, त्यारो रग सपेती पकड लागौ ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—७ मूळी रौ पापा रजवाडा मैं रैवणियौ स्याणौ हाजरियौ, राजनीत सू रगयोडौ-सुधरयोडौ मिनख । स्यात अर जात नै जाणै,

अल्पा, —मनेसडो।

स्नेहन–स पु [स स्नेह्न] १ पाच प्रकार के पित्तो मे से एक। (अमरत)

२ तेल की मालिश।

स्नेहपातर, स्नेहपात्र–वि [स स्नेहपात्र] जिसके प्रति स्नेह हो, प्रिय।

स्नेही—देखो 'सनेही' (रू भे)

उ०—दादू सोता स्नेही राम का, सो मुझ मिळव हु आणि। तिम आगै हरि गुण कथू, सुनत न करई काणि।—दादूवाणी

स्पदण, स्पदन–स पु [स स्पदन] १ धडकन।

२ कपन।

स्पदणी, स्पदिणी–स स्त्री [स स्पदिनी] १ रजस्वला स्त्री।

२ कामधेनु।

स्परधा–स स्त्री [स स्पर्द्धा] १ बराबरी, समता।

२ ईर्ष्या, डाह।

३ प्रतियोगिता, होड।

स्परस–स स्त्री [स स्पर्श] १ सटने या छूने की क्रिया, अवस्था या भाव।

उ०—तुरक री तनया रौ स्परस अनुचित जाणि जाळोर नू जळ देर बाजी मैं प्राण रौ ही पण लगायौ।—व भा

२ एक प्रकार का रतिबध।

३ हवा, पवन, वायु।

४ ज्योतिष मे ग्रहो का समागम।

५ रोग, बिमारी।

रू भे—परस फरस, सपरस, सपरस्स, सफरस, सुपरस, सुपरसन।

स्पस्ट–वि [स स्पष्ट] १ साफ, प्रकट।

२ साफ-साफ, बिना छिपाव या दुराव का।

रू भे—सपस्ट।

स्पस्टता–स स्त्री [स स्पष्ट+ता] स्पष्ट होने की अवस्था या भाव।

स्पीच–स पु [अ] भाषण, व्याख्यान।

स्पीड–स स्त्री [अ] गति, चाल।

स्पेसल–वि [अ] विशेष, खास।

स्प्रिंग–स स्त्री [अ] कमानी।

स्प्रिंगदार–वि [अ] जिसमे कमानी लगी हो, कमानीदार।

स्फटक–स पु [स स्फटिक] १ सूर्यकान्तमणि।

२ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

३ कपूर।

४ फिटकरी।

रू भे—फिटक, सफटीक।

स्फटिकमणि–स स्त्री [स स्फटिकमणि] सूर्यकान्तमणि।

स्फटिकी, स्फटी–स स्त्री [स स्फटिका] फिटकिरी।

स्फरण, स्फुरण–स पु [स स्फुरण] अग के फडकने की क्रिया या भाव।

स्फूरति, स्फूरती–स स्त्री [स स्फूर्ति] १ चचलता, फुर्ति।

२ तेजी। ३ ताजगी।

४ दिलचस्पी।

स्मर–स पु [स स्मर] १ कामदेव, मनोज।

२ यादगारी, स्मृति।

३ प्रेम, प्यार।

रू भे—समर।

स्मरकूप–स पु [स] भग, योनि।

स्मरग्रह–स पु [स स्मरगृह] भग, योनि।

स्मरण–स पु [स] १ याद आने की क्रिया या भाव।

२ नौ प्रकार की भक्तियो मे से एक प्रकार की भक्ति जिसमे उपासक अपने आराध्य देव को बराबर याद रहता है।

४ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार विशेष।

रू भे—समरण, सुमरण।

स्मरणपतर, स्मरणपत्र–स पु [स स्मरणपत्र] किसी को कोई बात याद दिलाने हेतु लिखा जाने वाला पत्र, चिट्ठी।

स्मरणसकति, स्मरणसक्ति–स स्त्री [स स्मरण+शक्ति] याद रखने की शक्ति, याददाश्त।

स्मरदसा–स स्त्री [स स्मरदशा] वह अवस्था जो प्रेमी प्रेमिका के न मिलने पर होती है।

स्मरदहण, स्मरदहन–स पु [स स्मरदहन] कामदेव को भस्म करने वाले शिव, महादेव।

स्मरवधु, स्मरवधू–स स्त्री [स स्मर+वधू] कामदेव की पत्नी, रति।

स्मरसख, स्मरसखा–स पु [स स्मरसखा] चाँद, चन्द्रमा।

स्मररिप, स्मररिपु–स पु [स स्मर+रिपु] १ शिव, महादेव।

२ सयमी, सयमधारी।

स्मरारि–स पु [स] शिव, महादेव।

रू भे—समरारि, समरारि।

स्मरसासतर, स्मरसास्तर, स्मरसास्त्र–स पु [स स्मर+शास्त्र] कामशास्त्र।

स्मसाण—देखो 'समसाण' (रू भे)

स्मसाणकाळिका—देखो 'समसाणकाळिका' (रू भे)

स्मसाणपत, स्मसाणपति, स्मसाणपती—देखो 'समसाणपति' (रू भे)

स्मसाणपाळ—देखो 'समसाणपाळ' (रू भे)

स्मसाणभैरवी—देखो 'समसाणभैरवी' (रू भे)

स्यमसाणवासण, स्मसाणवासणी, स्मसाणवासिण, स्यमसाणवासिणी—देखो 'समसाणवासणी' (रू भे)

स्मसाणवासी—देखो 'समसाणवासी' (रू भे)

स्मारक–स पु [स. स्मारक] वह कार्य या रचना जो किसी की स्मृति मे बनायी गई हो।

सफेद हो परन्तु कान, नाक या नेत्रों का रंग श्याम हो। (शुभ) (शा हो)

रू भे.—सामकरण, सावकरण।

स्यामकल्याण–स पु [स. श्यामकल्याण] एक राग विशेष जो सध्या के समय गायी जाती है। (सगीत)

स्यामकारतिक, स्यामकारतिकेय, स्यामकारितिक–देखो 'स्वामीकारतिकेय' (रू भे) (ना मा, ह ना मा)

स्यामग्रीव–स पु [स श्यामग्रीव] एक प्रकार का सारस विशेष जिसकी गर्दन काली होती है।

स्यामचिडी–स स्त्री—एक प्रकार की चिडिया विशेष।

स्यामज–स पु [स शामज] १ हाथी, हस्ती। (अ मा)

२ श्याम देश का निवासी।

रू भे—सामज, सावज, सामाज, सावज।

स्यामजीरौ—देखो 'स्याहजीरौ' (रू भे)

उ०—कमोद तुलछी स्यामजीरा दधि मोगर चीनी एळची पूरब कपूर पोहप प्रसग हरेवी सौरभ कुसुमवा किय जगनाथ भोग अैसी चौरासी भाति जिन्हु कै गज दरसावै।—सू प्र

स्यांमण—देखो 'सामण' (रू भे)

स्यांमणी—देखो 'सामणी' (रू भे)

स्यामतवाळ, स्यामतमाळ–स पु [स श्यामतमाल] एक प्रकार का वृक्ष विशेष।

उ०—स्याम नदी काठै सघण तरवर स्यामतमाळ। संजुत स्यामा सायघण, साहब स्याम समाळ।—वा. दा

स्यामतर, स्यामतरु–वि [स श्यामतर] १ श्यामवर्ण का, सावला।

२ श्याम के समान।

उ०—धर स्यामा सरिस स्यामतर जळधर, घेघूचै गळि बाहा घाति। भ्रमि तिणि सध्या वदन भूला, रिखिय न लखै सकै दिन राति।—वेलि

स्यामता–स स्त्री [स श्यामता] १ सावलापन, कालापन।

उ०—१ कामिणि कुच कठिन कपोळ करी किरि, वेस नवी विधि वाणि वखाणि। अति स्यामता विराजति ऊपरि, जोवण दाण दिखाळियाँ जाणि।—वेलि

उ०—२ तजि स्यामता जाणि वपि ताजै, राकापति निकळक छवि राजै। अौ चक्र एण रूप वणि आवै, आच हूत पतिव्रता उठावै। —सू प्र

उ०—३ सुदर रूप अनूप स्यामता, अजण नयण मुनी रिख अजै। तीनकाळदरसी व्है ततपुर, गौरव कांम क्रोध अघ गजै। —र ज प्र

स्यामताळ, स्यामताळु, स्यामाताळू–स पु [स श्यामतालु] एक प्रकार का घोडा विशेष जिसका तालू श्याम वर्ण का होता है। (अशुभ) (शा हो)

स्यामतीतर–स पु [स श्याम+तित्तर] लगभग डेढ बालिश्त लबा और सदा अकेला रहने वाला एक प्रकार का पक्षी।

स्यामद्रोह—देखो 'स्वामीद्रोह' (रू भे)

स्यामद्रोही—देखो 'स्वामीद्रोही' (रू भे)

स्यामधरम—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

उ०—रजपूता रै स्त्रीया रौ तो धरम पती रै लारै काठो बह जाणौ नै रजपूता रौ धरम स्यामधरम मारू तथा निज कुळ मारू तरवारा री धारा सू वह जावणौ।—वी स टी.

स्यामधरमाई, स्यामधरमी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

उ०—याकूब फरमायो नू बधारणौ लायक छै। स्यावास थारी स्यामधरमाई नू पछै उणनू बजार मोटी कियौ।—नी प्र

स्यामधरम्म, स्यामध्रम, स्यामध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

उ०—रटै अवर कथ 'रयण', सूर स्रगार सपेखै। सरब धरम सिरपोस, स्यामध्रम ध्रम सदेखै।—सू प्र

स्यामधरमी, स्यामध्रमी, स्यामध्रम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्यामनद, स्यामनदी–स स्त्री [स श्याम+नदी] यमुना नदी का नाम।

उ०—स्यांमनदी काठै सघण, तरवर स्यामतमाळ। सजुत स्यामा सायघण, साहब स्याम समाळ।—वा दा

स्याममजरी–स स्त्री—जगन्नाथजी के आस-पास की भूमि मे पाई जाने वाली एक प्रकार की मिट्टी जिसे वैष्णव लोग पवित्र मानते हैं तथा उसका तिलक लगाते हैं। इसका रग काला होता है।

स्यामळ–स पु [स श्यामल] काला रग।

वि—श्यामवर्ण का।

स्यामला–स स्त्री [स श्यामला] एक देवी।

स्यामवायक–स पु [स सामवाक्य] मित्र, दोस्त। (अ मा, ह ना मा)

स्यामसुदर–स पु [स श्यामसुदर] श्रीकृष्ण का एक नाम।

स्यामाग–स पु [स श्याम+अग] बुध ग्रह।

वि—जिसका रग श्याम हो।

स्यामा–स, स्त्री [स श्यामा] १ राधिका का एक नाम।

उ०—स्यामनदी काठै सघण, तरवर स्याम तमाळ। सजुत स्यामा सायघण, साहब स्याम समाळ।—वा दा

२ लक्ष्मी, रमा। (अ मा)

३ पृथ्वी, भूमि। (ना मा)

४ रात, रात्रि। (ना मा)

५ कोयल नामक पक्षी।

६ छाया।

७ छाया, प्रतिबिम्ब।

८ रुक्मिणी का नाम।

विडद ग्रर वडाई वखाणै ।—दसदोख

उ०—८ स्याणा पडित ग्रावै, भाडोळा काजी जावै । पडित जाप करै, पूजारी माळा फेरै । जोतकी टीपणाँ मैं गिरै-गोचर सभाळै, कोतकी धूप खेवता थका जोत करै ।—दसदोख

(स्त्री स्याणी)

स्यान—देखो 'सान' (रू भे)

उ०—१ लाभ नही ग्रहलोक नही परलोकह निरभय । सुमति नही ज्या स्यान, खात ज्या नही पाप खय ।—र ज प्र

उ०—२ पोहरै पधरावेह, स्यान गमावै सहज मैं । दावै वेदावेह, मुनसी खावै मुरधरा ।—ऊ का

उ०—३ स्यान छोड वहै साध, रसा माता पितु रोवै । सुत तिरिया दुख सहै, जिकण दिस फेर न जोवै ।—ऊ का

स्यानमठ-वि —मूर्ख, वेवकूफ । (ग्र मा)

स्यानै-क्रि वि —किसलिए ।

उ०—स्यानै राखै छै इहा, स्यु रहिवा नौ काम । हू छाया जिम ताहरै, कहिवौ न घटै ग्राम ।—वि कु

स्याम-स पु [स श्याम] १ श्रीकृष्ण का एक नाम । (ग्र मा)

उ०—१ स्याम नदी काठै सघण, तरवर स्याम तमाळ । सजुत स्यामा सायवण, साहग स्याम समाळ ।—वा दा

उ०—२ *कद म्हारी चिडिया सुगन री वाता, कद ग्रावैला म्हारा* स्याम घणी । मीरा कै प्रभु गिरधरनागर, वाट जोऊ थारी कदकी खडी ।—मीरा

२ रामचन्द्रजी का एक नाम । (ग्र मा)

उ०—सुत तिण तणौ तिर सायर करि निज, स्याम तणौ सिध काम । लका जाळि सीत सुध लायौ, रुळीयाईती कीधी स्रीस्याम ।

—र ज प्र

३ भगवान, ईश्वर ।

४ एक प्राचीन देश का नाम ।

उ०—१ रवद स्यांम कै रूम कै, सुनी राफसी सोय । साह हुकम चौडै स्रवण, सुण सोचिया सकोय ।—रा रू

उ०—२ तिण री धाक ईरान तूरान रूम स्याम फिरग रूस चीन्ह म्हाचीन्ह ईव देसा देसा रा पातसाह ईण रा हुकभ रा ग्राधीन सारा डरै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ प्रयाग का ग्रक्षयवट ।

६ श्रीराग का पुत्र एक राग । (सगीत)

[स श्यामक] ७ सावा नामक एक प्रकार का (कगनी या चने की जाति का) कदन्न । (डि को)

रू भे—साऊ ।

[स श्यामा] ८ रात, रात्रि ।

उ०—खासौ खुलासौ जितौ भी कदै ग्रासौ करौ खुसी, वासौ वसै जासौ वळै पासौ नही वार । हासौ रखै करासी ज्यू 'ग्रोपै' कहै भजौ हरि, स्याम सौ विमासौ नरा तमामौ ससार ।—ग्रोपौ ग्राढौ

९ कृष्ण पक्ष ।

उ०—१ ग्रठारै तैयासियै, चैत मास नम स्यांम । रूपक 'वक' वणावियौ, ववळ पचीसी नाम ।—वा दा

उ०—२ एकोतरै ग्रठारसौ, सावण दसमौ स्याम । वुध धुर रची वतीसका, पोखण सुकव तमाम ।—वा दा

१० स्वामिकार्तिकेय का नाम । (डि को)

११ वादल, मेघ । (ग्र मा)

१२ समय, वक्त । (ग्र मा, ह ना मा)

१३ छप्पय का पन्द्रहवा भेद । (र ज प्र)

वि—१ काला कृष्ण । (ह ना मा)

उ०—१ रेन रेत रेत मैं परेत सौ परचौ, स्यांम वारसेत ह्वै सचेत सौ करचौ । काळ है, ग्रदेस ना सदेस ग्रौ करचौ, देसनै विदेस वास ग्रामतै डरचौ ।—ऊ का

उ०—२ सरळ सच्चिकण स्याम कच, मुकता माग मझार । तरणि तनुजा मधि तसि, धसी सुरसरी धार ।

—सिववक्स पाल्हावत

उ०—३ पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह सुद्रणी स्याम वसन गण । गौरै वरण विप्रणी गाहा, चपक वरण खित्रणी चाहा ।

—र ज प्र

२ देखो 'सामी' (रू भे) (ग्र मा)

उ०—१ 'पाता' वोधस ग्रग्गळा, वोलै जोध 'मुकन्न' । स्याम गरज्जा ग्रोछणा, तिकै ग्रकज्जा तन्न ।—रा रू

उ०—२ कमध स्याम कामय, जुटै ग्ररद्ध जामय । मुडै धडा मलेछणी, विचार धार भज्जणी ।—रा रू

उ०—३ सुख सेज दैण ढीलौ सदा, ग्रमल लैण नै ग्राखतौ । इण स्याम हूत ग्राछी हुती, राम कवारी राखतौ ।—ऊ का

उ०—४ स्याम विना फागण इसडौ फीकौ लागै ग्रे, साग फीकौ ग्रे लूण विना, फागण फीकौ ग्रे ।—लो गी

उ०—५ किसोयक समरथ स्याम मेरी माय, किसोयक छोटौ देवरियौ । चदरमा सौ स्याम मेरी माय, लिछमण सौ छोटौ देवरियौ ।—लो गी

३ देखो 'साम' (रू भे)

४ देखो 'स्यामा' (रू भे)

रू भे—साम्य ।

स्यामकठ-स पु [स श्यामकठ] १ शिव, महादेव ।

२ मोर, मयूर ।

स्यामक-स पु [स श्यामक] १ एक देश का नाम ।

२ रामकपूर ।

स्यामकरण-स पु [स श्यामकर्ण] वह घोडा जिसका सम्पूर्ण शरीर

स्यावासी—देखो 'मावासी' (रू भे)

उ०—१ म्हैं कह्यौ-कालै गाडी चूकणा सू तौ घणौ नामी काम रह्यौ। जै वेठनै श्राय जावू तौ गजब व्है जाता। म्हैं चलायनै **स्यावासी** देवण सारू मोटर माथै श्रायौ हू।—फुलवाडी

उ०—२ **स्यावासी** छै श्रापनै, हिंदू मरद सुजान। मोटी जायगा श्रापरी, श्रौर न दीसै श्रान।—जयसिह श्रामेर रै धणी री वारता

स्याय—देखो 'सहाय' (रू भे)

स्यार—१ देखो 'सार' (रू भे)

उ०—१ कै चाराचक डाढाळै रै लिलाड मैं तत्र करती गै श्रेक तीर वडग्यौ। श्रर भूडण रै डावै पसवाडै सूसाड करती गोळी वडगी। पछै क्यू पूछौ! जाणै मौत रै **स्यार** लागी।—फुलवाडी

उ०—२ राजाजी री रीम रै जाणै **स्यार** लागी। पग पटकता वोल्या—भूठ माथै तौ म्हनै भाळ भाळ ऊठै। क्यू नाईडा, सेठा रै कैणा सू म्हारै साम्ही हळाहळ भूठ वोलग्यौ।—फुलवाडी

२ देखो 'स्रगाळ' (रू भे)

स्यारी—स स्त्री—वह स्त्री जो मत्रो द्वारा घी, दूध श्रादि की चोरी करती हो, डायन।

उ०—१ गाया चूगै गाम री, सोच करै **स्यारी**। धान वणी री ऊपडै, कळपै कोठारी।—श्रग्यात

उ०—२ राम, वुध श्रर गाधी जैहडा गुणी मिनखा जामै तथा मिनख नै देवपणौ दिरावणै मैं सफल हुवै, वियैनै श्राज री इक्कसवी सदी मैं ही मूरख-मुसटडा लोग खामखा डाकण-**स्यारी** कैवणै री हिम्मत कर लेवै हे श्रर निरपराव निस्सहाय श्रवलावा री दुरदसा भी कर नाखै।—दमदोख

रू भे—सारी।

स्याळ—देखो 'स्रगाळ' (रू भे)

उ०—१ करसण सेही **स्याळ** विळ, गिर त्रिय वामण गाय। समरागण मह साधणा, चाहै चित्त चलाय।—वा दा

उ०—२ कारज सरै न कोय, वळ प्राक्रत हिम्मत विना। हल-कारचा की होय, रग्या **स्याळा** राजिया।—किरपाराम

(स्त्री स्याळण, स्याळणी)

मुहा—१ स्याळचा कद सिकार करी=कायर व्यक्ति कभी वहादुरी का कार्य नही कर सकता, भूठन खाने वालो के प्रति कथन, (मि भिलणिया कद दही भिलोयौ) २ स्याळ कैडा नोल्या कै मूटा व्हैता जेडा=जो जैसा होगा वह वैसा ही कार्य करेगा ३ स्याळ वात करी श्रर लूकी माथ भरी=एक ही प्रकृति के प्राणी एक दूसरे की वात पर जल्दी ही सहमत हो जाते है, श्रप्रतिष्ठित व्यक्ति की साख श्रन्य श्रप्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा दी जाने पर प्रयुक्त कथन ४ स्याळ री मौत श्रावै जणै गाव कानी जावै=विनाश वाले विपरीत वुद्धि, जव हानि का योग होता है तव वुद्धि भी विपरीत दिशा मे कार्य करती है ५ स्याळ मू साड थोडौ ई फाटै=श्रपनी क्षमता से श्रधिक कोई कार्य नही कर सकता।

स्याल, स्यालक—स पु [स श्याल, श्यालक] जोरू का भाई, शाला। (व स)

उ०—... सत्तरि सहस्स गुजरात नु वणी, जुनुगढ चापानेर प्रमुख विखम गढ लीधा, मनवछित काज हेला सीधा, मघला राजा श्राण मनाव्या, सेव कराव्या, इसिउ एक राजाधिराज स्रीमहिमुद पातसाह वरणवीतउ सोभइ, श्रहो **स्याळक** वोलि।—व स

रू भे—साल, सालक, मालिक, सिश्राल, सिश्रालक, सियाल, सियालक, सीश्राल, सीश्रालक, सीयाल, सीयालक।

स्याळकियौ, स्याळकौ, स्याळक्यौ—देखो 'स्रगाळ' (श्रल्पा, रू भे)

(स्त्री स्याळकी)

स्याळभुश्रा, स्याळभुवा, स्याळभूश्रा, स्याळभूवा—स स्त्री—लोमडी।

उ०—लुळ खाखुय सायक वैण लगै, परधान जगायौ दै हाथ पगै। ध्रख वोलत भूखिम **स्याळभुश्रा**, वरजाता ऐ मारग ना'र वुवा।—ण प्र

स्याळसींगी, स्याळियासींगी—स स्त्री—सिद्ध-योगियो के पास मिलने वाली एक श्रलौकिक वूटी, जिससे किसी व्यक्ति को श्रपने वश मे किया जा सकता है।

उ०—पाघ ऊपर चौकडी तरवारिया री पड री छै। पण श्रेक श्रतीत रौ दियोडौ यत्र पाघ मै रहतौ श्रौर म०राजा करणसिहजी री दोन्ही **स्याळियासींगी** सदा पाघ रै माही रहती तिणसू सरीर री रक्षा रहती।—पदमसिह री वात

रू भे—सियाळसीगी।

स्याळियौ—देखो 'स्रगाळ' (श्रल्पा, रू भे)

स्याळू—१ देखो 'सीयाळू' (रू भे)

उ०—सी एक जागा कन्हा म्हा मुकातौ कराय लेवौ। उपरा कर साख **स्याळू** श्राई छै सौ लोगा कन्है वहावौ।

—गोपाळदास गौड री वारता

२ देखो 'साळु' (रू भे)

स्याळचौ—देखो 'स्रगाळ' (श्रल्पा, रू भे)

स्यावक—स पु [स श्यावक] एक प्राचीन राजर्षि का नाम।

स्यावड—१ देखो 'सावढ' (रू भे)

२ देखो 'सुवावड' (रू भे)

स्यावडमाता—देखो 'सावढ' (१) (रू भे)

स्यावज—१ देखो 'सावज' (रू भे)

२ देखो 'स्यामज' (रू भे)

स्यावळ, स्यावल—स पु [स स्यावल] १ सूत की डोरी मे वधा लोह, पत्थर या श्रन्य धातु का वह गोल लट्टू, जिससे कारीगर दीवार की सीध देखते हैं।

२ देखो 'सावळ' (रू भे)

रू भे—सहावळ।

उ०—१ साभळि अनुराग थयी मनि स्यामा, वर प्रापति वछती वर। हरि गुण भणि अपनी जिका हर, हर तिणि वदै गवरि हर।—वेलि

उ०—२ मगि मति सखीजण गुरुजण स्यामा, मनमि विचारि ए कहि महनि। कुमनथळी हूता कुदणपुरि, किसन पधारचा लोक कहति।—वेलि

८ कालिका।

९ कस्तूरी।

१० यमुना नदी।

११ सोलह वर्ष की युवती।

१२ श्यामवर्ण की गौ, गाय।

१३ सुन्दरी, स्त्री।

१४ हल्दी।

१५ गुग्गुल।

१६ शीशम।

१७ तुलसी।

१८ नील।

१९ हर्रे।

२० गोरोचन।

२१ हरी दूब।

२२ पीपल, पिप्पली।

२३ मेरु की नौ पुत्रियों मे से एक पुत्री का नाम।

२४ सवा या डेढ वालिश्त लबा काले रग का एक पक्षी जिसके पैर पीले होते हैं।

वि स्त्री—काले रग की।

रू भे—स्याम।

स्यामाधार—स पु [स श्यामाधार] पीपल, पिप्पल। (अ मा)

स्यामायन—स पु [स श्यामायन] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

स्यामी—देखो 'सामी' (रू भे) (ना मा, ह ना मा)

उ०—१ जिण विलोकि कहियौ जगजामी, सिव छै सुखी सिवा तौ स्यामी। कहि इम प्रभु आनिय-भ्रम कीधौ, दखि प्रमाण आसण नण दीधौ।—सू प्र

उ०—२ व्रत जिग वर उपवान, धणी इग्या विना सुना। स्यामी सेवा तणा, धणग्ररा सुरग नमूना।—नारी मईकडो

स्यामीद्रोह—देखो 'स्वामीद्रोह' (रू भे)

स्यामीद्रोही—देखो 'स्वामीद्रोही' (रू भे)

स्यामीधरम—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

स्यामीधरमी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्यामीधम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

स्यामीधरम्मी, स्यामीध्रमी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्यामीध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

स्यामीध्रमी, स्यामीध्रम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्या—देखो 'सा' (रू भे)

स्याई—देखो 'स्याही' (रू भे)

स्याजस, स्याजिस—देखो 'साजिस' (रू भे)

उ०—पछै पताई रावळ रै साळौ मडयौ वाकनियौ निकेरौ वडौ मामलौ, वडौ इतबार, गढी री कूची तै वसू। तद पातस्याह सू स्याजस कीवी। कह्यौ जू - म्हनै मगळा ऊपर करौ तौ हू गढ री कूची देऊ।—नैणसी

स्यात, स्याति, स्याती—क्रि वि—१ पूर्ण, पूरा।

स. पु—१ समय, वक्त।

२ देखो 'सायद' (रू भे)

(यौ घडीस्यात)

स्यातेक, स्याते'क—वि—करीब, लगभग।

स पु—१ घडी भर समय या तनिक समय।

२ देखो 'साते'क' (रू भे)

स्यादवाद, स्याद्वाद—स पु—जैन दर्शन जिसमे नित्यत्व, अनित्यत्व, सत्त्व, असत्त्व आदि मे से किसी एक को निश्चित न मानकर कहा जाता है कि स्यात यही हो, स्यात वही हो आदि।

रू भे—सियवाय।

स्यापौ—देखो 'सोपौ' (रू भे)

उ०—गाव मैं स्यापौ छायोडौ, पानडौ ई नही हिलै, चिडी री जायौ ई नही फरकै, कुत्ता ई जाणै पताळ मैं पेठग्या। धवळै दिन रा गाव विलकुल सून-मान ममाण व्है ज्यू लागै।

—रातवासौ

स्याफी—देखो 'साफी' (रू भे)

स्यावास—देखो 'सावास' (रू भे)

उ०—१ राणी कही स्यावास नापै नू नापौ आपणौ हीज छै।

—नापा साखला री वारता

उ०—२ देस देस मह कौ दियै, सूरा नू स्यावास। ज्यारौ कौतक देख जग, हुवै मुनिंद्रा हास।—वा दा

स्यावासणौ, स्यावासबौ—देखो 'सावासणौ, सावासबौ' (रू भे)

उ०—१ सुत स्यावासै सुपह, पान दीवा निज पाणै। कम धरि कमै कटार, 'अजै' वह छक चित आणै।—सू प्र

उ०—२ रट्ट जेणिहू कहू वाधि रिण, तौ आपरौ ववव 'अजमल' तण। इम सुणि वयण हुवौ आणदवर, स्यावासियौ ववव राजेसुर।—सू प्र

स्यावासणहार, हारौ, (हारी), स्यावासणियौ—वि०।

स्यावासिओडौ, स्यावासियोडौ, स्यावास्योडौ—भू० का० कृ०।

स्यावासीजणौ, स्यावासीजबौ—कर्म वा०।

स्यावासियोडौ—देखो 'सावासियोडौ' (रू भे)

(स्त्री स्यावासियोडी)

तेम। थावै गज कायल खाय सयाप, झुकै घट घायल आय झुवाफ।
—मे म

उ०—३ ज्यौ जघस्थळ अर उरस्थळ वधै त्यौ हेमाचळ का स्रग लागा। जैसै जोवन कै आयै नायिका की कटि खीण होइ। त्यौ नदी खीण हुई। अर नितव कहता जघस्थळ अर उर कुच ऐ वढै।
—वेलि टी

२ गाय, वैल, भैंस आदि पशुओ के सीग।

उ०—१ तिनू परि महिमू कै चख भ्काळ तूटै। जमराज कै राजवाण आरणौ जूटै। सौ कैसै भयाणक गजराजू कै आकार प्रारोध कवै। चोगजै सावळ सै स्रग जोम सै अवै।—सू प्र

उ०—२ उस तरफ केसरसिंघ पटैत नळै भ्काड भभकार सामुहै आए। नळू हाथळू का दाव ओझडि झड स्रंगू का घाव दारुणू कै हाथळ लगणौ न पावै।—सू प्र

३ मकान, दुर्ग आदि का ऊचा भाग, कगूरा।

४ वृक्ष, विटप। (अनेका)

५ ऊँचाई।

६ सीगी नामक वाद्य जो फूककर वजाया जाता है।

७ निशान, चिन्ह।

८ कमल।

९ अदरक।

१० सोठ।

११ कुच, स्तन।

१२ पानी का फुहारा, पिचकारी।

१३ काम-वासना।

१४ प्रमुखता, प्रधानता।

१५ एक ओपधि विशेप।

१६ एक प्राचीन ऋपि का नाम। (रामरासौ)

उ०—आणौ रिख स्रंग कहै विप्र एह, मुगता होय इदरा जिम मेह।—रामरासौ

१७ एक शिवपार्पद का नाम।

[स शृक] १८ माला।

उ०—चळवळा जोगण खपर चढवै, सिभ कमळा स्रग। जग गीत चिहुवै-वळा जाहर, सुजस हुवै सुढग।—र ज प्र

१९ देखो 'स्रगी' (रू भे)

उ०—१ तन मछ जोजन स्रग लख तण, रेण जन सत वरत रखण।—र ज प्र

उ०—२ सोहिया सामळा वप्पि वीजा-चळा, स्रग कूभायळा वोम किरि वद्ळा।—गु रू व

रू भे—सिरग, सिरग, स्रिग, स्रिगी, स्रीग।

स्रंगक—स पु [स शृगक] १ सीग।

२ कोई नोकदार चीज।

३ शिखर, चोटी।

रू भे—स्रिगक।

स्रंगणि, स्रंगणी—स स्त्री [स शृगिणी] १ गाय, गौ।
(अ मा, ह ना मा)

२ देखो 'सीगण' (रू भे)

उ०—वारण सिर तोडै खग वकी, ताणै स्रंगणि अढारह टकी। ताणै तठी जोम खळ तूटै, फील पाच एकणि सर फूटै।—सू प्र

स्रगधर—स पु [स. शृगधर] १ पर्वत, पहाड।

२ वृषभ, वैल।

३ सीगधारी पशु।

स्रगवेर—देखो 'स्रगवेर' (रू भे)

स्रगरिख, स्रगरिखि, स्रगरिखी, स्रगरिस, स्रगरिसि, स्रगरिसी—स पु [स शृगीऋपि] शमीक ऋपि के पुत्र का नाम।

रू भे—सीगीरिख, सीगीरिखी, सीगीरिसी, स्रगीरिख, स्रगरिखी, स्रगीरिसी।

स्रगवण—स पु—शृगार, वनाव।

स्रगवाण, स्रगवान—स पु. [स शृगवान्] एक ऋपि का नाम।

स्रगवेस—स पु [स शृगवेस] कौरव कुलोत्पन्न एक नाग।

स्रगवेर—स स्त्री [स शृगवेर] १ अदरक। (डिं को)

२ सोठ।

३ गगा के तट पर वसे एक प्राचीन नगर का नाम जो वर्तमान मे मिर्जापुर के पास है, शृगवेरपुर।

रू भे—स्रगवेर।

स्रगवेरपुर—स पु—एक प्राचीन नगर जो निपादराज गुह की राजधानी थी।

स्रगाटक—स पु [स शृगाटक] १ सिंघाडा।

२ दरवाजा, द्वार।

३ चौराहा।

४ प्राचीनकाल मे खाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य-पदार्थ जो मास से वनाया जाता था।

५ मस्तिष्क मे वह स्थान जहा नाक, कान, आख व जीभ से सबधित चारो शिराएँ होती है।

स्रगार—स पु [स शृंगार] १ साहित्य के नौ रसो मे से एक प्रसिद्ध एव प्रमुख रस जो रसराज व रससम्राट माना जाता है।

वि वि—शृगार दो शब्दो के योग से वना है—शृग तथा आर। शृग का अर्थ कामोद्रेक अथवा काम की वृद्धि होता है। दूसरे शब्दो मे काम अकुरित होने को शृग कहते हैं। 'आर' गत्यर्थ 'ऋ' धातु से वना है जिसका अर्थ यहाँ प्राप्ति है। इस प्रकार शृगार कामोद्रेक अथवा काम वृद्धि की प्राप्ति का द्योतक है। साहित्य के नौ रसो मे यह प्रधान माना गया है। इसी कारण शृगार को विद्वान साहित्यकारो ने रस सम्राट माना है।

स्याह–वि [फा] कृष्ण, काला ।
उ०—जरद्द लाल सेत स्याह, जाळिया पखाण ए । सपत्त मैं खणा आमास, ओपि असमाण ए ।—गु रू व
स पु —१ काला रग ।
२ देखो 'साह' (रू भे)
स्याहगोस–वि [फा] जिसके कान काले हों, काले कान वाला ।
स पु —वन-बिलाव ।
स्याहजबान–स पु यौ —वह हाथी, घोडा या बैल जिसकी जीभ श्याम रग की हो । (अशुभ)
स्याहजादौ—देखो 'साहजादौ' (रू भे)
उ०—जिका पातसाह री दसतूर जिका ही बसत वा आदमी दोढी मैं जाय जिणा नू देखनै जावा देवै । घणौ हाजर रहै । किणही सू स्याहजादौ छानौ वात करै तद औ भी आय कान देवै ।
—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात
स्याहजीरौ–स पु यौ [फा स्याह+हिं जीरा] १ काला जीरा ।
२ गर्म ममाले मे दाने वाला एक प्रकार का मसाला । (अमृत)
रू भे —स्यामजीरौ ।
स्याहज्यादौ—देखो 'साहजादौ' (रू भे)
स्याहताळ, स्याहताळु, स्याहताळू—देखो 'स्याहजवान' ।
स्याहाय—देखो 'सहाय' (रू भे)
उ०—करी ज्याग स्याहाय मूनेस कज्ज, दसै जै ज्या वोल आनेक दुज्ज ।—र ज प्र
स्याही–स स्त्री [फा] १ लिखने एव छपाई आदि मे काम आने वाला रगीन तरल पदार्थ, इक, मसि ।
२ देखो 'सेही' (रू भे)
३ देखो 'साही' (रू भे)
रू भे —सई, स्याई ।
स्याहीचूस, स्याहीचूस, स्याहीसोख, स्याहीसोखतौ–स पु —वह कागज जो स्याही को सोख लेता हो, सोखता कागज ।
रू भे —सईचूस ।
स्यु, स्यूं–सर्व [गु] १ क्या ।
उ०—१ मन लोभीडा मानुस तन पावी नै कारज स्यु कीधौ ।
—व स
उ०—२ तुम पासै आव्या तणौ रै, अधिक उमाहउ थाय । पिण स्यु कीजइ साहिवा, आव्या नै छै अतराय ।—वि कु
२ क्यो ।
उ०—सोहागिण रग रगीली, तु प्रेम महारस झीली, साभलि मुझ वात रसीली । हठीली तेहनै स्यु झूरै, तै नजर थकी थयौ दूरै, हिव मुझ नै थापि हजूरै ।—वि कु
क्रि वि —१ कैसे, किस प्रकार ।
उ०—स्यु कहु कीरति राज तुम्हारी, तुमै छउ बाल ब्रह्मचारी हौ । राजुल नारी तै विरहागर क्यारी, पोता नी कर तारी हौ ।
—वि कु
२ साथ, से ।
रू भे —सिउ, सू ।
स्यूढ–वि [स समूढ] दीर्घ, बडा । (अ मा)
स्येन–स पु [स श्येन] १ बाज नामक पक्षी ।
२ एक महर्षि ।
३ दोहे का एक भेद जिसमे १६ गुरु और १० लघु मात्राऐं होती है ।
स्येनगामिण, स्येनगामिन, स्येनगामी–स पु [स श्येनगामिन्] खर राक्षस के बारह अमात्यो मे से एक ।
स्येनजित, स्येनजीत–स पु [स श्येनजित्] १ इक्ष्वाकुवशीय एक राजा का नाम ।
२ भीभ के मामा, एक महारथी का नाम ।
स्येनी–स स्त्री [स श्येनी] १ दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम ।
२ कश्यप ऋषि की एक पुत्री का नाम, जो पक्षियो की माता कही जाती है ।
३ पुरुवशीय प्रवीर राजा की पत्नी का नाम ।
स्यौं, स्यौ–सर्व —क्या, कैसा ।
उ०—इम कहि लेइ सीख सनेह सु, ततखिण चाल्यौ रे ऊठि, मुगुण नर एकलडौ पिण स्यौ डर तेहनै, जगगुरु जेहनै रे पूठि ।
—वि कु
स्रखळ—देखो 'स्रखळा' (रू भे)
स्रखळक–स पु [स शृखलक] ऊट ।
स्रखळता–स स्त्री [स शृखलता] क्रमबद्ध या सिलसिलेवार होने की अवस्था या भाव ।
स्रखळा, स्रखला–स स्त्री [स शृखला] १ जजीर, साकल ।
२ हाथी के पैरो मे बाधने की जजीर ।
३ बेडी, हथकडी ।
४ क्रम, सिलसिला ।
५ सिवकड ।
६ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार ।
रू भे —स्रखळ ।
स्रखळाबद्ध, स्रखलाबध–वि [स शृखलाबद्ध] १ जजीर से बधा हुआ, जकडा हुआ ।
२ सिलसिलेवार, क्रमबद्ध ।
स्रग–स पु [स शृग] १ चोटी, शिखर । (डिं को)
उ०—१ कपोत कठ पोत केम, मोह ओपमा मिळी । जिका तनूज भाणि जाणि, मेर स्रग मडळी ।—सू प्र
उ०—२ अवा सिर सूदत कूदत एम, तजै गिरि स्रग प्लवङ्गम

२ पवन, हवा ।
३ कमल ।
४ वाण, तीर ।
५ भाला ।
६ ज्योतिष मे एक प्रकार का योग ।
रू भे—स्रग, स्रज, स्रिक, स्रिज ।

स्रकवरण स पु [स सृक्क, सृक्कणी, सृक्कन] १ कपोल, गाल । (डि को)
२ मुख के दोनो ओर के कोने ।

स्रग—१ देखो 'स्वरग' (रू भे)
२ देखो 'स्रक' (रू भे)

स्रगदवार, स्रगदुवार, स्रगद्वार–स पु. [स स्वर्ग+द्वार] सूरज, सूर्य । (ना मा)

स्रगम–स पु—जल, पानी । (ह ना मा)

स्रगलोक, स्रगलोग—देखो 'स्वरगलोक' (रू भे)
उ०—गौ खीर स्रवति रस धरा उदगिरति, सर पोइणिए थई सुस्री । वळी सरद **स्रगलोक** वासिए, पितरै ही ग्रतलोक प्री ।
—वेलि

स्रगवाट–स पु—स्वर्ग जाने का रास्ता ।

स्रगविहारी—देखो 'स्वरगविहारी' (रू भे) (ना मा)

स्रगसुखदा–स पु [स स्वर्गसुखदा] कल्पवृक्ष । (अ मा)

स्रगाळ, स्रगाल–स पु [स शृगाल] (स्त्री स्रगाळी) १ गीदड, सियार । (डि को)
२ कायर, डरपोक व्यक्ति ।
३ निर्दय व्यक्ति ।
४ धूर्त, चालाक व्यक्ति ।
रू भे—सयाळ, साळ, सियार, सियाळ, स्यार, स्याळ, स्र गाळ ।
अल्पा,—सयाळियौ, साळियौ, साळयौ, साळचौ, साळचौ, सियाळियौ, सियाळचौ, स्याळियौ, स्याळचौ ।

स्रग्ग—देखो 'स्वरग' (रू भे)
उ०—१ देवी मगळा वीजळा रूप मध्धं, देवी अव्वळा सव्वळा वोम अध्धै । देवी **स्रग्ग** सू उतरी सिव साथै, देवी सगर सुत हेत भगिरथ्थ साथै ।—देवि
उ०—२ नमौ मच्छ **स्रग्ग**-मडाण मुकुद, नमौ कळि रास दइत निकद । नमौ है-ग्रीव निगस्म सहेत, नमौ खळ-मार हयानन खेत ।—ह र

स्रज–स पु—१ एक विश्वदेवा का नाम ।
२ देखो 'स्रक' (रू भे)

स्रजण—देखो 'सरजण' (रू भे)

स्रजणियौ—देखो 'सरजणियौ' (रू भे)

स्रजणौ, स्रजवौ–क्रि स—१ प्राप्त करना ।
२ देखो 'सरजणौ, सरजवौ' (रू भे)
उ०—विर्जं तू **स्रजै** आहवा वाह वीसा, सर्जं तू हियै हार भूभार सीसा । तुही हाथळै मूळ सादूळ हक्कं, अणा मात्र तू मुक्र रा छात्र तक्कं ।—मे म
स्रजणहार, हारौ (हारी), स्रजणियौ—वि० ।
स्रजिओडौ, स्रजियोडौ, स्रज्योडौ—भू० का० कृ० ।
स्रजीजणौ, स्रजीजवौ—कर्म वा० ।

स्रणिका–स स्त्री [स मृणिका] लार । (डि को)

स्रणी–स पु [स श्रणि·] १ अकुश ।
उ०—दरसै मुख आगळ दात दुवै, वक वादळ आगळ जाण वुवै । दुति चातक घट **स्रणी** दमकै, चपला घण जाण घणी चपकै ।
--मे म
[स सृणी] २ चद्रमा, चाद ।

स्रणीक–स पु [स सृणीक] १ वायु, हवा ।
२ आग, अग्नि ।

स्रत, स्रति, स्रती–स पु [स सृति] मार्ग, रास्ता । (ह ना मा)

स्रद्धणौ, स्रद्धवौ—देखो 'सरधणौ, सरधवौ' (रू भे)
स्रद्धणहार, हारौ (हारी), स्रद्धणियौ—वि० ।
स्रद्धिओडौ, स्रद्धियोड़ौ, स्रद्धचोडौ—भू० का० कृ० ।
स्रद्धीजणौ, स्रद्धीजवौ—कर्म वा० ।

स्रद्धाजळि, स्रद्धाजळी–स स्त्री [स श्रद्धाजलि] १ किसी वडे व पूज्य व्यक्ति के लिए श्रद्धा व आदरपूर्वक कही जाने वाली वाते ।
२ श्रद्धापूर्वक दी जाने वाली अजलि ।

स्रद्धा–स स्त्री [स श्रद्धा] १ किसी धर्म, ईश्वर या पूज्य लोगो के प्रति मन मे उत्पन्न होने वाला आदरपूर्ण भाव, आस्था या भावना ।
उ०—परतख पग जळती पेखै नह पाई, डूगर वळती नै देखै दुखदाई । रचना ईस्वर री ईस्वरता रोचै, सम दम **स्रद्धा** विण सभव नहि सोचै ।—ऊ का
२ किसी काम या वात की प्रवल इच्छा, वासना, उग्र कामना ।
३ गर्भवती स्त्री के मन की अभिलाषा, वासना, दोहद ।
४ घनिष्ठ परिचय, घनिष्ठता ।
५ सम्मान, प्रतिष्ठा ।
६ चित्त की प्रसन्नता ।
७ विश्वास ।
८ वेद शास्त्र और आप्त वाक्यो मे विश्वास ।
९ वैवस्त मनुकी एक पत्नी, कामायनी ।
१० दक्ष प्रजापति की कन्या एव धर्म ऋषि की पत्नी जो शुभ व काम की माता थी ।
११ सूर्य की एक कन्या का नाम ।
१२ कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थी, अनुसूया ।

इसके मुख्य दो भेद माने जाते है—सयोग तथा वियोग। मनुष्य की कामवासना से सबधित बातो मे मिलने वाला आनद या सुख ही इस रस का मूल आधार है।

२ अपने आपको अधिक आकर्षक एव सुदर बनाने के लिए सुदर वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने की क्रिया, सजावट।

३ किसी मूर्ति, शरीर आदि मे ऐसी चीज जोडना या लगाना कि वे और अधिक आकर्षक बन जाय।

४ शोभा, सौंदर्य।

५ स्त्रियो के सौभाग्य व सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री, आभूषण आदि।

६ मैथुन, रति, सम्भोग।

७ श्याम, कृष्ण। ❀

८ देखो 'सिणगार' (रू भे)

रू भे—सगार, सणगार, सणगार, सयगार, सिंगार, सिंघार, सिणगार, सिणगार, सीणगार, स्यगार, स्रिगार।

स्र गारजनमा, स्र गारजन्मा—स पु [स शृ गारजन्मा] कामदेव, मनोज।

स्र गारजोनि, स्र गारजोनी—देखो 'स्र गारयोनि।

स्र गारणौ, स्र गारबौ—देखो 'सिणगारणौ, सिणगारबौ' (रू भे)

उ०—सू दिल्ली ग्रभसाह, चित्त ओछाह विचारै। कमधज्जा नव कोट, सुभट मन मोट स्र गारै।—रा रू

स्र गारणहार, हारौ (हारी), स्र गारणियौ—वि०।

स्र गारिग्रोडौ, स्र गारियोडौ, स्र गारयोडौ—भू० का० कृ०।

स्र गारीजणौ, स्र गारीजबौ—कर्म वा०।

स्र गारभूखण, स्र गारभूसण—स पु [स शृ गारभूषण] सिंदूर।

स्र गारमडळ, स्र गारमडल—स पु [स शृ गारमडल] १ वह स्थान जहा प्रेमी-प्रेमिका क्रीडा करते है।

२ व्रज का वह स्थान जहा श्रीकृष्ण ने राधिका का शृ गार किया था।

स्र गारयोनि, स्र गारयोनी—स पु [स शृ गारयोनि] कामदेव, मनोज।

रू भे—स्र गारजानि, स्र गारजोनी।

स्र गारवेख, स्र गारवेस—स पु [स शृ गारवेश] प्रेमी द्वारा प्रेमिका के पास जाते समय धारण किया जाने वाला वेश, पौशाक।

स्र गारहाट—स स्त्री [स शृ गारहाट] १ वह स्थान या बाजार जहा प्राय वेश्याए रहती हो, चकला।

२ वह स्थान जहा सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री मिलती हो।

स्र गारिण, स्र गारिणी—स स्त्री [स. शृ गारिणी] १ शृ गार करने वाली स्त्री।

२ एक प्रकार की रागिनी विशेष।

३ यथेष्ट शृ गार की हुई स्त्री।

स्र गारियोडौ—देखो 'सिणगारियोडौ' (रू भे)

(स्त्री स्र गारियोडी)

स्र गारियौ—स पु—१ वह व्यक्ति जो शृ गारकला मे दक्ष हो।

२ देवमूर्तियो का शृ गार करने वाला व्यक्ति।

३ बहुरूपिया।

स्र गारी—वि [स शृ गारिन्] शृ गार सम्बन्धी, शृ गार का।

स्रगाळ—देखो 'स्रगाळ' (रू भे)

स्र गी—स पु [स शृ गी] (स्त्री स्र गणी) १ बैल, वृष।

(अ मा, ह ना मा)

२ सीग वाला पशु।

उ०—कै दती स्र गी किता, किता नखी वन जत। समझाया दै दै सजा, माडूळै वळवत।—वा दा

३ पर्वत, पहाड। (अ मा, ना मा)

४ वह घोडा जिसके कान की मौंरी के पास ही दो और भौंरिया हो। (शा हो)

५ हाथी, हस्ती।

६ पेड, वृक्ष।

७ सिंगिया नामक जहर, विष।

८ महादेव, शिव।

९ एक प्राचीन देश का नाम।

१० शमीक के पुत्र एक ऋषि जिसके शाप से तक्षक ने परीक्षित को डसा था।

११ बरगद, वट।

१२ सोना, स्वर्ण।

१३ आवला।

१४ देखो 'सिंगी' (रू भे)

रू भे—स्र ग, स्रीगी।

स्र गीगिर, स्र गीगिरि, स्र गीगिरी—स पु [स शृ गीगिरि] एक प्राचीन पर्वत जिस पर शृ गी ऋषि ने तपस्या की थी।

स्र गीरिख, स्र गीरिखी, स्र गीरिसी—देखो 'स्र गरिखी' (रू भे)

स्र गेरी—स पु [स शृ गेरी] दक्षिण मे स्थित शकराचार्य के मतानुयायी सन्यासियो का मठ।

स्र गोत—स पु—बीकावत राठौडो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

स्र गोन्नति—स स्त्री [स शृ गोन्नति] नक्षत्र, ग्रह आदि की एक प्रकार की गति। (ज्योतिष)

स्र जय—स पु [स सृञ्जय] १ उग्रसेन का दामाद व वसुदेव के भाई का नाम।

२ सूर्यवशी राजा श्विलि के पुत्र का नाम, इनके सुवर्णष्ठीवी नामक पुत्र था।

३ उत्तम मनु के पुत्रो मे से एक।

स्र जयी—स स्त्री [स सृ जयी] भजमान की दो पत्नियो के नाम।

स्रक—स स्त्री [स स्रक्] १ माला, पुष्पहार। (अनेका)

८ तपस्या ।

९ आप नामक वसु के एक पुत्र का नाम ।

रू भे —सरम, स्रम्म ।

स्रमकण–स पु [स श्रमकण] परिश्रम करने से निकलने वाली पसीने की बूंदें ।

स्रमजळ, स्रमजल–स पु [स श्रमजल] पसीना, स्वेद ।

स्रमण–स पु [स श्रमण] १ सर्व पाप, दोषादि से रहित साधु, मुनि । (जैन)

२ भगवान महावीरस्वामी का उपनाम ।

उ०—माहण **स्रमण** साक्यादिकै, माडी मोटी साल । असनादिक निपजाय नै, दान देऊ दग चाल ।—जयवाणी

३ बौद्ध भिक्षुक ।

वि [स श्रमण] १ परिश्रमी, मेहनती ।

२ तपस्या करने मे तत्पर, तपस्या का कष्ट सहन करने वाला ।

३ दुष्ट, पतित ।

४ पाखडी, ढोगी ।

५ देखो 'स्रवण' (रू भे)

उ०—१ नइणि नै **स्रमण** वेवइ निही, कठै तात माता कठै । निगुण ना किणही जायौ नही, उठै आप आतिमि अठै ।—पी ग्र

उ०—२ सूपनखा रौ **स्रमण**, नाक वाढियौ निमै नरि । निमौ अकलि रुघनाथ, अनत पचवटी ऊपरि ।—पी ग्र

उ०—३ धरी **स्रमण** मत्री परधानै, अकस अमीर लगौ असमानै । गुदरावी सुज वात सुग्यानै, कमधानाथ सुणी सुज कानै ।

—रा रू

स्रमबिंदु–स पु [स श्रमविन्दु] पसीना स्वेद ।

स्रमविभाग–स पु [स श्रमविभाग] मजदूरो के सबध का विभाग ।

स्रमसीकर–स पु [स श्रमशीकर] श्रमबिंदु ।

स्रमिस्ठ–स पु [स श्रमिष्ठ] अक्रूर एव अश्विनी के पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम ।

स्रम्म—देखो 'स्रम' (रू भे)

स्रयाणी–स स्त्री —स्त्री, औरत ।

स्रक–स पु [स सरक] घोडा, अश्व । (डि ना मा)

स्रलोक, स्रलोकौ—१ देखो 'स्लोक' (रू भे)

उ०—**स्रलोका** धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ रै राग सौभाग गावै । वबी वीण मैतार सैनाय वाजै, त्रमाळा घुरै मेघ माळा तराजै ।—मे म

२ देखो 'सिलोकौ' (रू भे)

स्रवति, स्रवती–स स्त्री —नदी, सरिता । (अ मा, ह ना मा)

स्रव–स पु [स श्रव] १ कान, कर्ण । (अ मा, डि को)

२ झरना, स्रोता । (डि को)

३, मूत्र, पेशाब । (डि को)

४ देखो 'सरव' (रू भे)

उ०—१ तू **स्रव** वीज अवीज साइ सुभीयाणी ।

—केसौदास गाडण

उ०—२ माता मारीछ तणी तै मारि, आयौ इहिला ना आज उधार । वळाक्रम तुझ निमौ **स्रव** वाप, चत्रभुज आप चढावै चाप ।

—पी ग्र

स्रवजाण—देखो 'स्रवजाण' (रू भे)

स्रवण–स पु [स स्रवन] १ चुआव, टपकाव ।

२ पसीना, स्वेद ।

३ मूत्र, पेशाब ।

[स श्रवण] ४ कान, कर्ण । (अ मा, डि को, ह ना मा)

उ०—१ धर अवर रज डवर अधारा, जोगण करि चवमठि जैकारा । आतसवाण चिला मझि आणै, तेज अमोघ **स्रवण** लगि ताणै ।—सू प्र

उ०—२ जिहा न वोलै झूठ, **स्रवणा** झूठ न साभळै । वरजै कुण वैकूठ, माधव दरगह मोतिया ।—रायसिह सादू

उ०—३ सुणि **स्रवणि** वयण मन माहि थियौ सुख, ऋमियौ तासु प्रणाम करि । पूछत पूछत ग्यौ अतहपुरि, हुऔ सुदरसण तणौ हरि ।—वेलि

५ गर्भपात ।

६ स्तन ।

७ कान से प्राप्त होने वाला ज्ञान, अनुभूति ।

[स श्रवण] ८ तीर के आकार का सत्ताईस नक्षत्रो मे से बाइसवा, नक्षत्र । (ज्योतिष) (अ मा, ना मा)

उ०—**स्रवण** नखित्र मझ जनम तास सुण, कहियौ सरव गाह चौ कारण । गाथा नाम छतीस गिणावै, ग्रथ अनेक वडा कवि गावै ।—र ज प्र

९ नवधा भक्ति मे से एक प्रकार की भक्ति जिसमे आराध्य देव के चरित्र कथा आदि का श्रवण करते हैं ।

१० शेषनाग ।

११ मुरासुर के सात पुत्रो मे से एक, जो कृष्ण द्वारा मारा गया था ।

१२ सोम की सत्ताईस स्त्रियो मे से एक स्त्री का नाम ।

१३ अक्रूर एव अरुणा के ससर्ग से उत्पन्न पुत्रो मे से एक ।

१४ एक तपस्वी जो वैश्य पिता एव शूद्र माता का पुत्र था । इसकी मृत्यु दशरथ के हाथो हुई ।

वि वि —यह अपने माता-पिता का वडा ही भक्त था । अपने अधे माता-पिता की काशीयात्रा की अभिलाषापूर्ति हेतु उन्हे कन्धे पर बिठाकर काशीयात्रा प्रारम्भ की । यात्रा के दौरान यह एक बार रात को जलाशय से पानी लेने गया था । उस समय इसके पानी भरने की आवाज से इसे कोई वन्य प्राणी समझकर मृगया हेतु

१३ कर्दन प्रजापति की पुत्री जो अगिरा ऋषि की पत्नी थी।

रू भे —सरधा, सिरधा, स्रधा।

स्रद्धादेवी–स स्त्री [स श्रद्धादेवी] वसुदेव की पत्नी व गवेषण की माता का नाम।

स्रद्धाळ, स्रद्धालु, स्रद्धाळू, स्रद्धालू–वि [स श्रद्धालु] १ श्रद्धा रखने वाला, श्रद्धावान।

२ अभिलाषी, इच्छावान।

स स्त्री [स श्रद्धालु] वह गर्भवती स्त्री जिसके मन मे तरह-तरह की अभिलाषाएँ उत्पन्न हो।

स्रद्धावति, स्रद्धावती–स स्त्री [स श्रद्धावती] वरुणदेव की नगरी का नाम।

स्रद्धियोडौ—देखो 'सरधियोडौ' (रू भे)

(स्त्री स्रद्धियोडी)

स्रधा—देखो 'स्रद्धा' (रू भे)

उ०—स्रधा सुपनँ सुख सपति सोइ, कृपा हरिराम विना नहि कोइ। सुनू हरिराम गुन किय साफ, महाप्रभु मागत आगत माफ।

—ऊ का

स्रप—देखो 'सरप' (रू भे)

उ०—गोम गज है पाए गाही, स्रप फुण महम तपै सगळाही। लागा अवर करण लडाई, पूरव दळ आय, पतसाही।—गु रू व.

स्रपाटी–स स्त्री —चोंच, चचु। (डि को)

स्रपी–वि —तृप्त, सतुष्ट।

उ०—लगी नर है तिल हेक लगाए, जरद मरद्द कटै जगमाण। सदा सिव ताम लियै खळ सीस, स्रगी स्रपी चड देत असीस।

—सू प्र

स्रप्प—देखो 'सरप' (रू भे)

उ०—१ विनै जडाव वाजुबध, सम्म पाट सोहिया। त्रिखड साखि जाणि स्रप्प, मैणधार मोहिया।—सू प्र

उ०—२ मामळा गात डोहत्ति गै-सूडय, स्रप्प हीडै किरै साख सीसडय। घूघरा पाखरा रोळ घटा-सुर, चोळ कप्पोळ सिंदूर मैं चम्मर।—गु रू व

स्रव—देखो 'सरव' (रू भे)

उ०—१ असख्यात दत कमण गिणावै, असि गज द्रव नग पार न आवै। धिन धिन नृप नभ वाणि हुई धुर, स्रव जग सिरै ज तू दानेमुर।—सू प्र

उ०—२ सुणि प्रोहित हित वात सुहाई, विध स्रव कहि नृप दसा वताई। सोभा नाम रूप विमतारा, सुपन चिहन कहिया नृप सारा।—सू प्र

उ०—३ पकवानै पानै फळै सुपुहपै, सुरगै वसत्रै दरव स्रव। पूजियै कसटि भगि वनसपती, प्रसूतिका होळिका प्रव।—वेलि

स्रवकामधुन, स्रवकामधुनि–स पु —वेद। (अ मा)

स्रवकारण–स पु [स सर्व+कारण] ईश्वर, प्रभु।

उ०—नमौ वहुनामिय वुद्ध, सेवक्क साधार सदासिव सुद्ध। नमौ स्रवकारण सारण स्याम, उवारण गोकुळ इद्र उदाम।—ह र

स्रवजाण, स्रवजाणग–वि [स सर्वज्ञ] सब कुछ जानने वाला, सर्वज्ञ।

उ०—१ तू स्रवजाण राज प्रभुताई अजै अतीत परख नह आई। दिव नयणा चेतनै दरसियौ, हू नृप तूझ देखि इम हसियौ।

—सू प्र

उ०—२ सीखत वेद पडत सकळ, दाता दान विध दसदमौ। स्रवजाण उतम विद्या प्रसध, जगतगरु राजा 'जसौ'।—सू प्र

रू भे —स्रवजाण।

स्रवथा–क्रि वि —सर्वथा।

स्रवदायक–स पु. [स सर्वदायक] कल्पवृक्ष। (अ मा, ना मा)

स्रवसेव–स पु —सूर्य, सूरज।

स्रव्व—देखो 'सरव' (रू भे.)

उ०—विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रैण पै हूत गोतम्म तारी। पति स्रापहु देह पाई पखाणं, जिका दिव्य देहा हुई स्रव्व जाणं।—सू प्र

स्रव्वेस–सर्व —१ सर्व, सब, समस्त।

उ०—मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजगेस देवेस स्रव्वेस भेळा। विदेह प्रतग्या कहै एम वाक, पुत्री जौ वरै सो ज ताणै पिनाक।

—सू प्र

२ देखो 'सरवेस' (रू भे)

स्रव्वबियाप, स्रव्वबियापी, स्रव्वबियाप, स्रव्वबियापी–वि [स सर्वव्यापिन्] जो सर्वत्र और सर्व पदार्थों मे व्यापक है।

स पु —१ ईश्वर।

२ परब्रह्म।

३ शिव, महादेव।

स्रम–स पु [स श्रम] १ परिश्रम, मेहनत।

उ०—१ जिण दीध जनम जगि मुख दे जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै। कहण तणौ तिणि तणौ कीरतन, स्रम कीधा विणु केम सरै।—वेलि

उ०—२ धर कवि कोट जनम स्रम धावै, इण कुळ गुण पर पार न पावै। धर हरि अस हुवै धरपत्ती, मस्त्रवध सामरथ सकत्ती।

—रा. रू

क्रि प्र —करणौ।

२ साहित्य मे सचारी भावो के अतर्गत एक भाव।

३ दौडधूप, प्रयत्न, प्रयास।

४ थकावट, थकान।

५ व्यायाम, कसरत।

६ अभ्यास।

७ खेद, रज।

इतरै एक आली लै आवी, आनन आगळि आदरस ।—वेलि

स्त्रिगी—देखो 'स्रग' (रू भे)

उ०—गज रूपा सीस फावि फरहरिया, उण उणिहार इक्ख ए । आरुहि करि अच्छर मेरगिरि स्त्रिगी, विभ्रम स्त्रिगक पेख ए ।

—गु रू ब

स्त्रि—देखो 'स्री' (रू भे)

स्त्रिक—देखो 'स्रक' (रू भे) (अनेका.)

स्त्रिखड—देखो 'स्रीखड' (रू भे)

उ०—विन जडाव बाजुवध, सम्म पाट सोहिया । स्त्रिखड साखि जाणि स्रप्प, मैण धार मोहिया ।—सू प्र

स्त्रिज—देखो 'स्रक' (रू. भे) (अनेका)

स्त्रिय—देखो 'स्री' (रू भे)

उ०—१ दिन रात सम तुल रासि दिनकर, सरकि अनुक्रमि सरवरी । स्त्रिय जीत पति गुण परखि चखि, सुख सकस पखि जिम सुदरी ।—रा रू.

उ०—२ रमा हुतासणि सरणि न्हाए, हथि रामण स्त्रिय छाह हराए । छाया हरण हुवा दुख छाया, माया अवसि मोहवसि माया ।

—सू प्र

उ०—३ करि वनफळ जळ अग्र जोडि कर, वदन करि वन हलै स्त्रियावर । छलता उमा एह नह छळिया, चित प्रणाम स्त्रिय राम न चलिया ।—सू प्र

स्त्रियखड—देखो 'स्रीखड' (रू भे)

उ०—स्त्रियखड वर अगसार, सग अवर तर घणसार । सुभ आज समधि प्रसिद्ध, करि गार तिण जुति किद्ध ।—रा रू

स्त्रिया—देखो 'स्री' (रू भे)

उ०—कवि ओपम ऐसी कहा, ओपम और विचार । जाणिक भायौ रुप मन, पायौ स्त्रिया मुरार । रा रू

स्त्रियावर, स्त्रियावर—देखो 'सीतावर' (रू भे)

उ०—१ करि वनफळ जळ अग्र जोडि कर, वदन करि वन हलै स्त्रियावर । छलता ऊमा एम नह छळिया, चित प्रमाण स्त्रिय राम न चलिया ।—सू प्र

उ०—२ भुजा दुय च्यारि भुजा बळ भूप, रचै गजग्राह स्त्रियावर रूप । वहै खग सावळ तात विनाण, कटै जरदाण जुवाण केकाण ।

—सू प्र

स्त्रिलोक, स्त्रिलोकू—१ देखो 'स्लोक' (रू भे)

उ०—ऐसो विध पडतराज चातुर्य्य कळा प्रवीण स्त्रिलोकू का प्रवध अनेक विध विमळ वाणी सै उच्चरै जिनू सै रीझ स्रीमहाराज कनक जग्योपवीत चढाया ।—सू प्र

२ देखो सिलोकौ' ।

स्तिस्ट, स्त्रिस्टि, स्त्रिस्टी—देखो 'स्रस्टि' (रू भे)

स्त्रींगी—देखो 'स्रगी' (रू भे) (अ मा)

स्री—स स्त्री [स श्री] १ लक्ष्मी, रमा । (एका) (अ मा)

२ पृथ्वी, भूमि, जमी । („)

३ धन-दौलत, सम्पत्ति । („)

४ कीर्ति, यश । („)

५ कान्ति, चमक । („)

६ मर्यादा, सीमा । („)

७ इज्जत, प्रतिष्ठा ।

८ कुशलक्षेम । („)

९ प्रकाश । („)

१० शोभा, सौन्दर्य । („)

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

११ सरस्वती ।

१२ सिद्धि ।

१३ गिरजा, पार्वती । (अ मा.)

१४ सीता । (अ मा)

१५ हाथी के मस्तक का आभूषण विशेष ।

१६ त्रिवर्ग-धर्म, अर्थ और काम ।

१७ धूप ।

१८ साल वृक्ष ।

१९ पैर के तलुए मे होने वाली एक रेखा जो शुभ मानी जाती है । (सामुद्रिक)

२० एक रागिनी जो सूर्यास्त के समय गाई जाती है ।

२१ स्त्रियो के माथे का आभूषण विशेष ।

२२ बुद्धि, प्रतिभा ।

२३ स्त्री, पत्नी ।

२४ अलौकिक शक्ति ।

२५ सजावट ।

२६ बेल का पेड ।

२७ कमल ।

२८ सफेद चदन ।

२९ एक औषधि विशेष ।

३० ऊर्ध्व पुड्र के बीच लम्बी नोकदार लाल रग की रेखा ।

३१ अविकार ।

३२ उच्च पद ।

३३ एक आदर सूचक शब्द जिसका प्रयोग देवी-देवताओ, राजाओ, धार्मिक ग्रन्थो के नाम के पूर्व किया जाता है ।

ज्यू—स्रीपाबूजी राठौड, स्रीभागवत, स्रीमहमाय साय छै ।

३४ धर्म ऋषि की पत्नी का नाम ।

स पु—१ ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

३ कुबेर ।

आये दशरथ ने इस पर शरसधान किया और इसकी मृत्यु हो गई।

अपनी असावधानी से हुई ब्रह्महत्या से दशरथ विह्वल हुआ किन्तु इसने उसका समाधान किया। तत्पश्चात् इसके माता-पिता ने दशरथ को पुत्र के शोक से पीडित होकर मृत्यु पाने का शाप दिया। इसकी अकाल मृत्यु के कारण इसके माता-पिता की भी दुख से मृत्यु हो गयी।

रू भे—सरवरा, सवरा, स्रमरा, स्रव्वरा।

स्रवणद्वादसी—स स्त्री [स श्रवणद्वादशी] भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की श्रवण नक्षत्र मे होने वाली द्वादशी।

स्रवणपथ—स पु—वह इन्द्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है, कान।

स्रवणपाल, स्रवणपालि, स्रवणपाली—स पु [स श्रवण+पालि]
१ कान की नोक।
२ कान मे धारण किया जाने वाला एक प्रकार का आभूषण विशेष।
उ०— मणिजालक रत्नजालक मानक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वरणसर कदवपुस्प कललमगक अभ्रमेसक नुटक सकलिक स्रवणपीठ **स्रवणपाल** वैस्टिक हस्तसकलिका इति आभरणानि।
—व स

स्रवणपीठ—स पु [स श्रवणपृष्ठ] कान मे धारण करने का एक आभूषण विशेष।
उ०— मणिजालक रत्नजालक मानक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वरणसर, कदवपुस्प कललमगक अभ्रमेसक नुटक मकलिक **स्रवणपीठ** स्रवणपाल वैस्टिक हस्तसकलिका इति आभरणानि।
—व स

स्रवणौ, स्रववौ—क्रि अ [स श्रवण=स्राव] १ बहना।
२ बरसना।
उ०—१ जळजाळ **स्रवति** जळ काजळ ऊजळ, पीळा हेक राता पहल। आघोफरै मेघ ऊधसता, महाराज राजै महल।—वेलि
उ०—२ नाइका आउस दीध नरीद आणौ रिख स्रग **स्रवै** जिम इद।—रामरासौ
३ झरना, रिसना, चूना।
उ०—लागी दळि कळि मळयानिळ लागै, त्रिगुण परसतै खुधा त्रिस। रटति पूत मिमि मधुप रुखराइ, मात **स्रवति** मधु दूध मिसि।—वेलि
४ टपकना, गिरना।
५ सुनना।
उ०—वभण मिमि वदै हेतु सु वीजौ, कही **स्रवणि** सभळी कथ। लिखमी आप नमै पाइ लागी, अचरिज कौ लाघै अरथ।—वेलि

स्रवणहार, हारौ (हारी), स्रवणियौ—वि०।

स्रविओडौ, स्रवियोडौ, स्रव्योडौ—भू० का० कृ०।

स्रवीजणौ, स्रवीजवौ—भाव वा०।

स्रवल—स पु [स स्रष्ट] ईश्वर। (ना मा)

स्रवता—स पु [स सविता] सूर्य, सूरज। (डि को)

स्रवती—स स्त्री—नदी। (ह ना मा)

स्रवदायक—स पु [स सर्वदायक] कल्पवृक्ष। (अ मा, ना मा)

स्रवमगळा, स्रवमगला—देखो 'सरवमगळा' (रू भे) (अ मा)

स्रवस—स पु [स श्रवस्] १ दक्षसावर्णि मनु के पुत्रो मे से एक।
२ भृगु ऋषि के पुत्रो मे से एक।
३ अमिताभ देवो मे से एक।

स्रवसार—स पु—शब्द, ध्वनि। (अ मा)

स्रवाडा—स पु—कथा, बात, वृत्तान्त।

स्रवियोडौ—भू का कृ—१ बरसा हुआ २ टपका हुआ, गिरा हुआ ३ रिसा हुआ, चूआ हुआ ४ बहा हुआ ५ सुना हुआ। (स्त्री स्रवियोडी)

स्रविस्टा, स्रविस्ठा—स पु [स श्रविष्ठा] १ धनिष्ठा नक्षत्र।
२ श्रवण नक्षत्र।

स्रवेति, स्रवेती—स स्त्री—नदी, सरिता। (ह ना मा)

स्रव्व—देखो 'सग्व' (रू भे)

स्रसतर—देखो 'स्रस्तर' (रू भे.) (डि को)

स्रस्ट, स्रस्टा—स पु [स स्रष्टृ] १ ब्रह्मा।
२ विष्णु।
३ शिव, महादेव।
४ ईश्वर।
वि—१ सृष्टि का निर्माता, कर्त्ता।
२ देखो 'स्रस्टि' (रू भे)
उ०—जग रखवाळ जगतचौ जामी, सुरनर इस्ट **स्रस्ट** चौ सामी।
—रा रू

स्रस्टि—स स्त्री [स सृष्टि] १ ससार, विश्व।
उ०—१ नमौ नमामी अतरयामी, सरब स्वामी **स्रस्टि** ए। वदौ सदाई सुखदाई, चित्त आई इस्ट ए।—करुणासागर
उ०—२ नमौ अपरम्म नमौ अखिलेस, नमौ अव्यक्त नमौ सरवेस। नमौ ऊ रूप नमौ ऊकार, नमौ अजरामर **स्रस्टि** आधार।—हं र
२ ससार के चराचर प्राणी व पदार्थ।
३ पृथ्वी, जमीन।
४ निर्माण, रचना।
५ कस के एक भाई का नाम।
६ एक देवी का नाम।
रू भे—ससटी, सिसट, सिसटी, सिस्टी, स्रस्ट, स्रस्टि, स्रस्टी, स्रिस्ट, स्रिस्टि, स्रिस्टी।

स्रस्टिकरता—स पु [स सृष्टिकर्तृ] १ ब्रह्मा।
२ सृष्टि की रचना करने वाला, ईश्वर।

'स्रीकरणिक' (रू भे)

उ०—१ एकदा सभाइ वइठउ भूप, इद्र सरीखु उद्मुत रूप। स्रीगरणा वइगरणा घणा, मडलीक मुडुधा नही मणा।
—नळदवदती रास

उ०—२ राइ मनसिउ मेल्हिउ रोस, प्रजा सहूनइ हवु सतोस। स्रीगरणा वइगरणा मिली, प्रधान सहू विमासइ वली।
—नळदवदती रास

उ०—३ किरणइ करी जीवनइ सुख होइ, ग्रह नक्षत्र नु नायक जोइ। पुण्य राजा नु आदेस ज पालइ, स्रीगरणा ए च्यारइ माहलइ।—नळदवदती रास

स्रीगिर, स्रीगिरि, स्रीगिरी—स पु [स श्रीगिरि] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

रू. भे —सिरगिर, सिरगिरि, सिरगिरी, सिरिगिरी।

स्रीचकर, स्रीचक्कर, स्रीचक्र—स पु [स श्रीचक्र] भगवान् का दिव्य आयुध, चक्र, जिसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया था।

स्रीजी—स पु—राजा-महाराजाओ, ठाकुरो एव प्रतिष्ठित व्यक्तियो के नाम के स्थान पर प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान-सूचक शब्द।

उ०—१ तठा पछै वेगी हीज स्रीमहाराजाजी री फौज पोकरण ऊपर आई। रावळ सवळसिंघ खारै रा डेरा आदमिया ७०० सू आय स्रीजी रा साथ भेळो हुवौ।—नैणसी

उ०—२ पछै स्रीजी घणी आदर कर वडौ पटौ ८०००) रेख लवेरौ घणा गावा सू भोवाळ वधारै दी।—नैणसी

स्रीजुकत, स्रीजुक्त, स्रीजुत—वि [स श्रीयुक्त] श्री से युक्त।

रू भे —स्रीयुत।

स्रीतळ, स्रीतल—स पु [स श्रीतल] एक नरक का नाम।

स्रीतीरथ—स पु [स श्रीतीर्थ] एक तीर्थ का नाम।

स्रीद—स पु [स श्रीद] १ कुवेर।
(डि को, ना मा, ह ना मा)

२ विष्णु।

स्रीदत—स पु [स श्रीदत] १ कुवेर। (अ मा)

२ पृथ्वी, जमीन। (ना मा)

स्रीदाम, स्रीदामण, स्रीदामन—देखो 'सुदामौ'।

स्रीदेवा—स पु—वसुदेव की एक पत्नी का नाम।

स्रीदेवियाण, स्रीदेवीयाण—स स्त्री—१ बीज मत्राक्षरो मे से एक बीज मत्राक्षर।

२ बीजाक्षर।

३ बारहठ ईश्वरदास कृत देवी की स्तुति का छोटा ग्रन्थ।

स्रीधन्वी—स. पु—एक प्राचीन तीर्थ का नाम।

स्रीधर—स पु—१ जैनियो के अतीतकालीन सातवे तीर्थकर का नाम।

२ विष्णु का एक नाम।

३ श्रीरामचन्द्र भगवान का एक नाम।

४ श्री कृष्ण। (अ मा)

५ ईश्वर, परमेश्वर। (ना मा)

उ०—स्रीधर स्रीरग सियावर, स्रीपत, करणाकरण कारण करण। ब्रजनायक विससेम विसभर, घणनामी आणद घण।—र ज प्र

६ त्रेतायुग का एक राजा।

स्रीधाम—स पु [स श्रीधाम] १ लक्ष्मी का निवास स्थान।

२ स्वर्ग, वैकुठ।

स्रीनदण, स्रीनदन—स पु [स श्रीनदन] १ कामदेव, मनोज।
(अ मा)

२ श्रीरामचन्द्र।

३ विष्णु।

४ श्रीकृष्ण।

स्रीनाथ—स पु [स श्रीनाथ] १ लक्ष्मीपति विष्णु।

उ०—विराजै नगा आप सू रूप वीठौ, दळानाथ स्रीनाथ रौ रूप दीठौ। वणै सामळै गात झीणै वसन्नं, तिकी भूखणै जोत मोती रतन्नं।—रा रू

२ श्रीकृष्ण।

३ श्रीरामचन्द्र।

४ महादेव, शिव।

स्रीनितवा—स स्त्री [स श्रीनितम्बा] राधिका।

स्रीनिध, स्रीनिधि, स्रीनिधी—स पु [स श्रीनिधि] भगवान् विष्णु का नाम।

स्रीनिवास—स पु [स श्रीनिवास] विष्णु का नामातर।

स्रीपचमी—स स्त्री [स श्रीपचमी] माघ मास के शुक्लपक्ष की पचमी जिसे वसतपचमी भी कहते है।

स्रीपत, स्रीपति, स्रीपती—स पु [स श्रीपति] १ विष्णु। (डि को)

उ०—स्रीपत सरण सरोज रौ, गगाजळ मकरद। अनियळ ज्य कर पान अब, अधिकावण आणद।—वा दा

२ श्रीकृष्ण। (अ मा)

उ०—स्रीपति कुण सुमति तूझ गुण जु तवति, तारू कवण जु समुद्र तरै। पखी कवण गयण लगि पहुचै, कवण रक करि मेरु करै।—वेलि

३ ईश्वर, परमेश्वर। (ह ना मा)

४ श्रीरामचन्द्र।

उ०—स्रीधर स्रीरग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण। व्रजनायक विसवेस त्रिसभर, घणनामी आणदघण।—र ज प्र

५ कुवेर। (अ मा)

रू भे —सीपत, सीपति, सीपती।

स्रीपाठी—स स्त्री—सोठ। (अ मा)

स्रीपूज, स्रीपूजनीय, स्रीपूज्य—स पु—१ जैन धर्मानुसार सप्रदाय के अधिपति, सघनायक, आचार्य।

४ सपूर्ण जाति का एक राग। (सगीत)
५ वैष्णवो का एक सम्प्रदाय विशेष।
६ एक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक पद मे एक गुरु होता है।
७ मगल-सूचक शब्द जो किसी लिखावट के आरम्भ मे प्रयुक्त होता है।
वि —१ बुद्धिमान। (एका)
२ श्रेष्ठ, सुन्दर।
३ शुभ, उत्तम।
४ योग्य, लायक।
सर्व—अपने, स्वय के। (सम्मान)
उ०—१ महाराज कै जोधाण कै राव हथळू पहल कीए बीजळू कै घाव। केतेक वाघ पर आप असि धरै। सेल तरवारू का घाव स्री हथू सँ करै।—सू प्र
उ०—२ बोही लोह भूप सुभडा वकसि, स्री हार्थं खग साहियो। करि क्रोध मधू माथै किना, लखमी-वर नदक लियो।—मे म
रू भे —सरी, सिरि, सिरी, सी, स्रि, स्रिय, स्रिया, स्रीय, स्रीया।

स्रीकठ—स पु [स श्रीकठ] शिव, महादेव। (अ मा, ना मा)
रू भे —सीकठ।

स्रीकठसखा—स पु यौ [स श्रीकठसखा] कुबेर।

स्रीकठी—स स्री [स श्रीकठी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी। (सगीत)

स्रीकत—स पु [स श्रीकात] लक्ष्मीपति, विष्णु।
रू भे —सीकत।

स्रीकमळ—स पु [स श्रीकमल] मुख।

स्रीकर—स पु [स श्रीकर] १ विष्णु।
२ लालकमल।
वि —शोभा वढाने वाला।

स्रीकरी—स स्री [स श्रीकरी] कर्नाटक पद्धति की एक रागिनी। (सगीत)

स्रीकरण, स्रीकरणा, स्रीकरणिक, स्रीकरणीक, स्रीकरिणिक—वि [स श्रीकरण] १ खजाने की देखरेख करने वाला, कोपाध्यक्ष।
उ०—जुवराजकुमार राजेस्वर महामडलेस्वर सामत लघुसामत तलवर तत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मत्रि महामत्रि ग्रहकहक स्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक ।—व स
२ वैभव की वृद्धि करने वाला।
३ धन इकट्ठा करने वाला।
रू भे —स्रीगरण, स्रीगरणा, स्रीगरणिक, स्रीगरणीक, स्रीगरिणिक।

स्रीकात—स पु [स श्रीकात] १ विष्णु।
२ श्रीरामचद्र भगवान।
३ श्रीकृष्ण।
४ महादेव, शिव।

स्रीकार—वि [स श्रीकार] १ श्रेष्ठ, उत्तम, कल्याणकारी।
उ०—१ चौ विधि देव मिली रच्यौ, समवसरण स्रीकार। स्वामि वैठा सिहासणै, वैठी परसद वार।—ध व ग्र
उ०—२ नदी सूत्र मइ मान वखाण्यउ, मान ना पाच प्रकार रे। मति सुति अवधि अनइ मन, परयन केवल मान स्रीकार रे।
—स कु
उ०—३ जठै तठै इण जगत मैं, जीकारी स्रीकार। वालो जस रा वायका, तूकारी तन सार।—वा दा
२ श्री अक्षर का आकार, वनावट।
३ एक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १७ मात्राएँ होती है। (ल पि)

स्रीकिसण, स्रीकिसन—देखो 'स्रीक्रस्ण' (रू भे)

स्रीकीरति—स पु—ताल के आठ भेदो मे से एक भेद।

स्रीकास्ट, स्रीकास्ठ—स पु [स श्रीकाष्ठ] वह प्रदेश जिसे नल राजा ने विजय किया था।
उ०—पस्चिम दिसिना एतला देस, सवल सैन्यइ करी जीपइ नरेस। वरवर वूजर कासमीर कार, स्रीकास्ठ स्रीराज्य हिमालय सार।
—नळदवदती रास

स्रीक्रसण, स्रीक्रस्ण, स्रीक्रिसण, स्रीकिस्ण—स पु [स श्रीकृष्ण] श्रीकृष्ण भगवान् का नाम।
रू भे —सीकिसण, सीकिसन, स्रीकिसण, स्रीकिसन।

स्रीखड, स्रीखंडस—स पु [स श्रीखण्ड] १ चदन। (अ मा, ना मा, ह ना मा)
उ०—१ वाजूवध वधै गोर वाहु विहु, स्याम पाट सोहत सिरी। मणिमैं हीडि हीडळै मणिधर, किरि साखा स्रीखड की।—वेलि
उ०—२ डोहत सूडा डड ए, स्रीखड सरपक हिंड ए। गज-वाग मत्यै मैंगळा, वळकत्त वीजक वद्दळा।—गु रू व
२ दही, चीनी, केशर, कपूर, मेवे आदि के मिश्रण से वनाया जाने वाला एक प्रकार का गाढा पेय पदार्थ, शिखरन।
रू भे —सीखड, स्त्रियखड।

स्रीखडसेल—स पु यौ [स श्रीखडशैल] मलयागिरि पर्वत।

स्रीखावद, स्रीखाविद, स्रीखावद, स्रीखाविंद—स पु [स श्री+फा खाविद] १ विष्णु।
२ श्रीरामचन्द्र।

स्रीगण—स पु—नैऋत्य और दक्षिण के मध्य की उपदिशा।

स्रीग—देखो 'स्रग' (रू भे)

स्रीगणेस—स पु [स श्री+गण+ईश] १ किसी ग्रथ, पत्र आदि के आरभ मे लिखा जाने वाला शब्द।
२ आरभ, शुरुआत।

स्रीगरण, स्रीगरणा, स्रीगरणिक, स्रीगरणीक, स्रीगरिणिक—देखो

व्रजनायक विसवेस विसभर, घणनामी आणदघण ।—र ज प्र

२ श्रीकृष्ण ।

उ०—सतवार जरासध आगळ, स्रीरग विमहा टीकम दीव वग ।
मेलि घात मारै मधुसूदन, असुर घात नारी अलग ।
—जमणाजी गोदी

३ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ अहि सारीसौ त्रिमव अौ, रगवाळै स्रीरग । तना न
भुजिसै श्रीकमा, अग्नि मे तिका भुजग ।—पी ग्र

उ०—२ रसणा रटै तौ राम रट, आमय लगै न अग । जै सुग
चाहै जीव री, (तौ) सुमरि सुमरि स्रीरग ।—ह र

४ श्रीरामचन्द्र ।

उ०—सघट तोड अघा घण स्रीरग, कोउ जमा भय कापै । आना
राघव पूर अनेका, थानक दामा थापै ।—र ज प्र

स्रीरमण, स्रीरवण-स पु [स श्रीरमण] १ एक सकर राग ।
(सगीत)

२ विष्णु भगवान् ।

उ०—देवै भव दरियाव, रची पगा सू स्रीरमण । नग अपूरब
नाव, नाविक विण निरझर नदी ।—वा दा

३ श्रीकृष्ण ।

४ श्रीरामचन्द्र ।

स्रीरामलय-स पु —हनुमान, पवनसुत । (अ मा)

स्रीराग-स पु—सगीत मे छ रागो मे से तीसरा सम्पूर्ण जाति का
एक राग ।

स्रीराज, स्रीराज्य-स पु [स श्रीराज्य] वह प्रदेश जिसे नल राजा ने
विजय किया था ।

उ०—पस्चिम दिसिना एतला देस, मवल सैन्यइ करी जीपइ
नरेस । वरवर बूजर कास्मीर कार, स्रीकारठ स्रीराज्य हिमालय
सार ।—नळदवदनी रास

स्रीवंति, स्रीवती- स स्त्री — नदी, सरिता । (अ मा)

स्रीवक्खस्यळ, स्रीवक्षस्थळ, स्रीव्रखस्थळ-स पु [स श्रीवक्षस्थल]

१ श्रीकृष्ण । (अ मा)

२ श्रीविष्णु ।

३ ईश्वर, परमेश्वर । (ना मा)

स्रीवच्छ, स्रीवछ, स्रीवत्स-स पु [स श्रीवत्स] १ भगवान् विष्णु का
एक नाम ।

२ भगवान् के वक्षस्थल पर लगा भृगु के चरण-प्रहार का चिह्न ।

उ०—चूडामणि बोलई सुणि ब्राह्मण, आदि विस्नु अहिनाण ।
पाई पदम उर स्रीवछ लछन, कोटइ कौस्तुभ मयण ।
—रुकमणि मगळ

वि वि—मतान्तर से भगवान् विष्णु के वक्षस्थल पर स्थित चिह्न
भृगु के चरण-प्रहार का नही है । दक्ष यज्ञ के समय, भगवान्
शकर ने एक प्रज्वलित त्रिशूल चलाया था । दक्ष यज्ञ का विध्वस
करके, वही त्रिशूल भगवान् विष्णु की छाती मे आ लगा । भगवान्
के वक्षस्थल पर स्थित चिह्न उसी त्रिशूल-प्रहार का है ।

३ फलित ज्योतिष के २८ योगो मे से एक । (ज्योतिष)

४ वार, नक्षत्र, सम्बन्ध से बनने वाले २८ योगो में आठवां योग ।

स्रीवर-स पु [स श्रीवर] १ भगवान् विष्णु । (ना मा)

२ श्रीरामचन्द्र ।

उ०—१ कीजै रावरी छिब राम कोटिक, सीन दुख दाधी ।
गाभाव सरसा-सगार स्रीवर, रागो रासी ।—र ज प्र

उ०—२ जेतवध रघुनद नाहर, दसौ सरसा हिन ऊछाहर । अभीसर
फर नर स्रीवर, मोत की सरसाज ।—र ज. प्र

३ परमेश्वर, ईश्वर । (ना मा)

उ०—१ ऊपणी दूग जळना अगन, अग तेम सर ऊरणी । स्रीवर
सहाय धारै सती, घाय गाञी गायसणी ।—रा रू

उ० - २ राम भजन विण ब्रह्म जनम रे, नाम समर पद सिर
नित नम रे । नाम अनत नन चरमसु सळ रे, स्रीवर रट रट रसण
सफळ रे ।—र. ज प्र

४ श्रीकृष्ण ।

रू भे —सिरीवर, सीवर ।

स्रीवलभ, स्रीवल्लभ-स पु [सं श्रीवल्लभ] १ भगवान् विष्णु ।

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ ईश्वर, परमेश्वर ।

स्रीवास-स पु [स श्रीवास] १ भगवान् श्रीविष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

३ कमल ।

स्रीव्रख, स्रीवृक्ष, स्रीव्रक्ष-स पु [स श्रीवृक्ष] १ पीपल का वृक्ष ।
(अ मा, ना मा, ह ना मा)

२ बेल का वृक्ष ।

३ घोडे के माथे व छाती पर की भौंरी ।

रू भे —सीव्रख, सीव्रक्ष, स्रीव्रछ, सीव्रक्ख, सीव्रछ, सीव्रख ।

स्रीव्रखक-स पु [स श्रीवत्सकिन] वह घोडा जिसकी छाती पर भौंरी
हो । (शा हो)

स्रीव्रत-स पु [स श्रीव्रत] चैत्र शुक्ला पचमी को किया जाने वाला
व्रत ।

स्रीसग-स पु [स श्रीसङ्ग] लौग, लवग । (अ मा)

स्रीसघ-स पु [स श्रीसघ] १ जैन धर्मानुसार जहाँ श्रावक, श्राविका,
साधु और साध्वी इन चारो का सगम या मिलाप हो ।

२ जैन धर्मानुसार श्रावक, श्राविका, साधु व साध्वी इन चारो का
समूह ।

उ०—गाम नगरपुर विहरता रे, आव्या जिणचदसूरि । स्रीसघ

२ जतियो के आचार्य ।

स्रीफळ, स्रीफल–स पु [स श्रीफल] १ नारियल । (डि को)

उ०—१ कटं पळ कमळ स्रीफळ कीध, लुही घट काढ जिकौ व्रत लीध । धुवै रणताळ मभाळ व्रधोम, हका धुनि वेद करै इम होम । —सू प्र

उ०—२ पणघट पर पणिहार, नीर कज नीसरी । स्रीफळ तणै प्रमाण क सोभा सीम री । कच वेणी गूथी कुसुम लपेटा लागणी सापडि खीर समदक निकसी नागणी ।—भिववक्स पाल्हावत

२ आवला ।

३ वेल का वृक्ष । (ह ना मा)

स्रीवध, स्रीवधव, स्रीवधु–स पु [स श्रीवधु] १ चद्रमा, चाद । (अ मा, ना मा, ह ना मा)

२ अमृत ।

रू भे —सीवध, सीवधव, सीवधु ।

स्रीभरतार–स पु [स श्रीभर्तृ] १ विष्णु ।

उ०—हम मीन कूरम हुओ स्रीभरतार समत्थ । सरित हुवौ द्रव मोय सौ, किसू अच्छेरा कत्थ ।—वा दा

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

स्रीभाण, स्रीभाणु, स्रीभानु–स पु [स श्रीभानु] श्रीकृष्ण व सत्यभामा के एक पुत्र का नाम ।

स्रीभ्रात स्रीभ्राता–स पु [स श्रीभ्रातृ] १ चन्द्रमा, चांद ।

२ घोडा, अश्व ।

३ अमृत, सुधा ।

स्रीमडळ, स्रीमडळू–स पु [स श्रीमडल] १ एक वाद्य विशेष । (रा सा स)

उ०—देवतू कै मन भूलतै डोलतै हैं म्रदगू कै परन धौलकू कै टिकौर । सुरवीणू कै झणहण तबूरू कै घोर । ताळू की झमक झमरू कै झणकार । काम कै घुघर जैमै जत्र कै तार पिनाकू का परवेज स्रीमडळू का सवाद ।—सू प्र

२ एक राग विशेष ।

उ०—इण भाति री आखाडै रभा पात्र निरत कारणी सोळै सिणगार किआ थका कान रा झाझर वाजि नै रहिआ छै । स्रीमडळ राग कलावत घमड राग जमावि नै रहिआ छै । —रा सा स

स्रीमत–स पु [स श्रीमत] १ एक प्रकार का शिरोभूषण ।

२ किसी आदरणीय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक सम्बोधन ।

स्रीमति, स्रीमती–स स्त्री [स श्रीमती] १ परणीता स्त्रियो के लिए सम्मानसूचक शब्द जो उनके नाम के पूर्व लगाया जाता है ।

२ सुदरी, स्त्री ।

३ एक गन्धर्व कन्या का नाम ।

४ सृ जय राजा की कन्या दमयती का नामातर ।

रू भे —सीमति, सीमती ।

स्रीमदभगवतगीता—देखो 'भगवदगीता' ।

स्रीमदभागवत—देखो 'भागवत' ।

स्रीमाण, स्रीमान–स पु [स श्रीमान] १ आदरणीय व्यक्तियो के नाम के पहले लगाया जाने वाला आदरसूचक शब्द ।

२ सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र ।

वि —१ धनाढ्य, वैभवशाली ।

२ श्री से युक्त ।

स्रीमात, स्रीमाता–स स्त्री [स श्रीमाता] कर्नाटक नामक राक्षस की वधकर्तृ एक माता नामक देवी का अवतार ।

स्रीमाळ–स पु [स श्रीमाल] १ भीनमाल कस्बे का एक प्राचीन नाम ।

२ वैश्यो की जैनमतावलम्बी जाति । (मा म)

स्रीमाळी–स पु (स्त्री स्रीमाळण) १ ब्राह्मणो की एक प्रसिद्ध जाति ।

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

रू भे —सिरमाळी ।

स्रीमुख–स पु —विष्णु का मुख, वेद ।

२ सन्त, महात्मा, राजा, महाराजा तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति के 'स्वय' के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।

उ०—१ जुधवार मुत 'अगजीत' रौ, रिण खळा अतक रीतरौ । दिसि अस्ट स्रीमुख दाखवि, मोरचै फुरमाण ।—रा रू

उ०—२ हुवौ मूरछा मत्रिया लीध हामा, तकै रान लेगा रथा चाढि तामा । कहै स्रीमुखा राण जोधा करारा, हणू पूछ रू व्रत वाधौ हजारा ।—सू प्र

३ ब्रह्मावीसी का सातवा वर्ष । (ज्योतिष)

सर्व —अपने, स्वय के ।

रू भे —सिरीमुख ।

स्रीय, स्रीया—देखो 'स्री' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ फळ कदळी स्रीय स्वादै अफारा, छयै स्रेय बादाम पिस्ता छुहारा । सुधा साव नारगिया रग सोहे, महादेव देवेस मेवै विमोहै ।—रा रू

उ०—२ आपना आप मारै अनत इसी ग्यान महाराज रौ । माहरौ कत प्यारौ मना, स्रीय सुहावै बुरौ छौ ।—पी ग्र

स्रीयुत—देखो 'स्रीजुत' (रू भे)

स्रीरग–स पु [स श्रीरग] १ भगवान विष्णु का एक नाम । (डि. को)

उ०—१ तन मछ जोजन स्रग लख तण, रेण जन सत वरत रखण । समद प्रळय विहार स्रीरग, वेद मुख वाणी ।—र ज प्र

उ०—२ स्रीधर स्रीरग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण ।

३ विष्णु का एक पार्षद ।

स्रुतदेवा–स स्त्री [स श्रुतदेवा] वसुदेव की बहन और दन्तवक्त्र की माता का नाम ।

स्रुतदेवी–स स्त्री [स श्रुतदेवी] १ शूर राजा की कन्या जो करूप-देशीय वृद्धधर्मन को व्याही गई थी, यह वसुदेव की बहन थी ।

२ सरस्वती देवी ।

स्रुतधज—देखो 'स्रुतध्वज (रू भे)

स्रुतधर–स पु [स श्रुतधर] कान, श्रवण ।

स्रुतधुज, स्रुतध्वज–स पु [स श्रुतध्वज] विराट राजा का एक भाई । रू भे —स्रुतधज ।

स्रुतसेण, स्रुतसेन–स पु [स श्रुतसेन] १ भीमसेन व द्रौपदी के ससर्ग से उत्पन्न पुत्र जो अश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

२ एक नाग ।

३ परीक्षित राजा का पुत्र, एक राजा ।

४ गरुड के द्वारा मारा गया एक असुर ।

५ जनमेजय के एक भाई का नाम ।

स्रुतस्रवा–स पु [स श्रुतश्रवा] १ सोमश्रवा के पिता एक महर्षि का नाम ।

२ मगधनरेश जरासध का पौत्र व अयुतायु का पिता ।

३ सूर्यपुत्र शनैश्चर का नामातर ।

४ गरुड के द्वारा मारा गया एक असुर ।

५ सावर्णि मनु का नामातर ।

स स्त्री —६ शिशुपाल की माता, वसुदेव की बहन और चिदिनरेश दमघोष की पत्नी का नाम ।

स्रुतात–स पु [स श्रुतात] भीमसेन द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

स्रुतानीक–स पु [स श्रुतानीक] विराटनरेश के एक भाई का नाम ।

स्रुतायु–स पु [स श्रुतायु] १ अवष्टनरेश, जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

२ कलिगनरेश, जो अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

३ पुरुरवा का पुत्र व वसुमान का पिता एक राजा ।

स्रुतावति, स्रुतावती–स स्त्री [स श्रुतावति] भरद्वाज ऋषि व घृताची नामक अप्सरा के ससग से उत्पन्न एक पुत्री ।

स्रुति–स स्त्री [स श्रुति] १ सुनने की क्रिया या भाव, श्रवण ।

२ शब्द, ध्वनि ।

३ कान, कर्ण ।

उ०—१ ऊभी सहु सखिए प्रमहिता अति, क्रितारथी स्री मिळण क्रत । अटत सेज द्वार विचि आहुटि, स्रुति दै हरि घरि समास्रित ।—वेलि

उ०—२ अघ कळ घोर अधार, विव रवि चद्र विकासण । प्रगट घरम द्रुम उभय, यम स्रुति नयण सुभासण ।—र ज प्र

उ०—३ वभूती की टीकी निज अलिक नीकी नित वमै । कडा डोरी मूरती लवग पुगिपूरती स्रुति लमै ।—मे म

४ वेद । (अ मा)

उ०—१ अविणासी को हलकारो जग मैं आयौ, लोकन मैं सक्ति अलौकिक लारै लायौ । स्रुति समाचार को सार पुकार सुनायौ, घरमी सुख धार अधरमी सीम धुनायौ ।—ऊ का

उ०—२ सेस धनेस दिनेस रटै सुर, ईस्वण जै अभिलाख । माथ पगा सुरनाथ नमावै, गौरव सारद नारद गावै । पार गुणा करतार न पावै, सौ स्रुति सम्रत साख ।—र ज प्र

५ ध्वनि, आवाज ।

६ चौसठ योगनियो के अनर्गत वत्तीसवी योगनी ।

७ युक्ति, कथन ।

८ जनश्रुति ।

९ अत्रि ऋषि की कन्या तथा कर्दम ऋषि की पत्नी ।

१० अनुप्रास का एक भेद ।

११ सगीत मे किसी स्वर का अन्तराल ।

१२ श्रवण नक्षत्र ।

१३ चार की सख्यासूचक शब्द । ❀

रू भे —सुरति, सुरती स्रुत ।

स्रुतिकटु–स पु [स श्रुतिकटु] काव्य रचना मे एक प्रकार का दोष ।

स्रुतिकीरत, स्रुतकीरति, स्रुतिकीरती—देखो 'स्रुतकीरति' (रू भे)

स्रुतिधर–वि [सं श्रुतिधर] वह व्यक्ति जिसकी स्मरण शक्ति अत्यन्त तीव्र हो । (अमरत)

स्रुतिमुख–स पु [स श्रुतिमुख] जिसके चार मुख हो, ब्रह्मा ।

स्रुतिरजण, स्रुतिरजणी, स्रुतिरंजनी–स स्त्री [स श्रुतिरजनी] कर्नाटकी पद्धति की एक रागनी । (सगीत)

स्रुतिवाण, स्रुतिवाणी, स्रुतिवान–स स्त्री [स श्रुति+वाणी]

१ वेद वाक्य, वेदो की वाणी ।

उ०—ससकार स्रुतिवाण सुणि, क्रम कै सक्कार । परणावै पधरावियौ, महलै राजकवार ।—रा रू

२ जो वेदो मे आस्था रखता हो ।

उ०—गुनवान कुरान पुरान गुनै, स्रुतिवांन स्रुती सब सास्त्र सुनै । मतभेदन खेद खुवी मत की, सत चूप चुभी उपनीसत की ।

—ऊ. का

स्रुतिविदा–स स्त्री [स श्रुतिविदा] कुशद्वीप मे प्रवाहित होने वाली एक नदी का नाम ।

स्रुवौ–स पु [स स्रुवा] यज्ञाग्नि मे घी इत्यादि की आहुति देने के लिए प्रयोग मे लाया जाने वाला लकडी का चम्मच ।

स्रूत–स पु —कान, कर्ण ।

स्रूल–स पु —गढ, किला ।

स्रेणता–स स्त्री —पक्ति ।

साम्हउ मचरड रे, वाजइ मगल तूर ।—स कु

स्रीसप्रदाय–स पु—वैरागी साधुग्रो का एक सम्प्रदाय विशेष ।

स्रीसमूता–स स्त्री—ज्योतिष मे कर्ममास (श्रावण) की छठी रात्रि ।

स्रीसमाध, स्रीसमाधि, स्रीसमाधी–स पु [स श्रीसमाधि] १ श्री, शुद्ध, मालश्री, भीमपालश्री टक को मिलाकर बनाया जाने वाला एक राग ।

२ भविष्यकाल के सतरहवें तीर्थंकर का नाम ।

स्रीसहोदर–स पु [स श्रीसहोदर] १ चद्रमा, चाद ।

२ मोती ।

३ समुद्र-मथन के समय समुद्र से निकलने वाले चौदह रत्नो मे से कोई एक ।

स्रीसाप, स्रीसाफ–स पु—१ एक प्रकार का बहुमूल्य कपडा ।

उ०—१ मिकलात मुखमल खास, तहताज ग्रतलस तास । खुल इलायची खमखाप, सुजि सुलसुल स्रीसाप ।—सू प्र

उ०—२ वागा रा चिहुरवध छूटै छै । सौ किए भात रा वागा ? स्रीसाफ सैरव चौतार हजारी, गगाजळ खासा वासता, इए भाति वागा रा चिहुरवध छूटै छै ।—रा सा स

रू भे—सिरीसाप ।

स्रीसुत, स्रीसुतए–स पु [स श्रीसुत] कामदेव, मनोज । (डि को)

स्रीसुपास–स पु [स श्री पार्श्वनाथ] जैनियो के २४ तीर्थंकरो मे से तृतीय तीर्थंकर, श्रीपार्श्वनाथ का नाम ।

स्रीस्याम–स पु [स श्रीश्याम] १ विष्णु भगवान् ।

२ श्रीरामचन्द्र ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ शिव, महादेव ।

५ ईश्वर, परमेश्वर ।

स्रीस्रीमाल–स पु—जैन धर्म के ग्रतर्गत एक जाति विशेष । (मा म)

स्रीहजूर–स पु—एक प्रकार का प्राचीन कर ।

रू भे—स्रीहुजूर ।

स्रीहर, स्रीहरि–स पु [स श्रीहरि] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

स्रीहुजूर—देखो 'स्रीहजूर' (रू भे)

स्रुक—देखो 'सुक' (रू भे)

उ०—भर फूल फळित ग्रढारभार, जुथ करत भ्रमर भणहण गुजार । मिळि करत नाच छत्र कोहक मोर, स्रुक चात्रिग कोकिल करत सोर ।—सू प्र

स्रुग, स्रुगि, स्रुगी—देखो 'स्वरग' (रू भे)

उ०—इम करि करि बहुग्रचड, मोह परहर वप माया । दिव धरि धरि सुर देह, ग्रच्छर वर स्रुगि ग्राया ।—सू प्र

स्रुण, स्रुणि, स्रुणी—१ देखो 'सोणित' (रू भे)

उ०—लगी नर है तिल हेक लगाए, जरद्द मरद्द कटै जगमाए । सदा सिव ताम लियै खळ सीस, स्रुणी लपी चड देत ग्रमीस ।

—सू प्र

२ देखो 'स्रोण' (रू भे)

३ देखो 'स्रोणि' (रू भे)

स्रुतंजय, स्रुतजै–स पु [स श्रुतञ्जय] १ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा का भाई जो ग्रर्जुन द्वारा मारा गया था ।

२ पुरुरवा का पौत्र व सत्यायु का पुत्र ।

स्रुत–स पु [स श्रुत] १ राजा भगीरथ के एक पुत्र का नाम ।

उ०—भगीरथ सुत जिए तप ग्रभग, गौ सुरग ग्रहुति जिए ग्रागि गग । भगीरथ सभ्रम सुत सुवाळ, नामग हुवौ स्रुत सुन त्रपाळ ।—सू प्र

२ कृष्ण एव कालिंदी के पुत्रो मे से एक ।

३ वासुदेव एव शातिदेवा के पुत्रो मे से एक ।

४ पाचालराज द्रुपद का एक पुत्र ।

[स श्रुत] वेद, श्रुति ।

उ०—१ सुरसरी राघव सुजस मजए जिए कीध सुध चित मानव । तीरथ ग्रडसठ तेए, बोलै स्रुत लाभ ग्रह बासत ।

—र ज प्र

उ०—२ तिएदी विए जोत गोत मिट्टी तन, 'किसन' कहै कच्चा है । बोलै स्रुत सग्रत स्यभ ग्रज वायक, सीता नायक सच्चा है ।

—र ज प्र

रू भे—सुत ।

स्रुतकरमए, स्रुतकरमन–स पु [स श्रुतकर्मन्] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक ।

२ सहदेव का एक पुत्र जो महाभारत मे ग्रश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

३ ग्रर्जुन के एक पुत्र का नाम ।

स्रुतकीरत, स्रुतकीरति, स्रुतकीरती–स पु [स श्रुतकीर्ति] १ ग्रर्जुन व द्रौपदी के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो ग्रश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

स स्त्री—२ दशरथ-पुत्र शत्रुघ्न की पत्नी व जनक-भ्राता कुशध्वज की पुत्री का नाम ।

३ वसुदेव की बहन का नाम ।

रू भे—सुतकीरति, सुतक्रिता, स्रुतिकीरत, स्रुतिकीरति, स्रुतिकीरती ।

स्रुतग्यान–स पु [स श्रुतज्ञान] वह ज्ञान जो शास्त्रो को पढने व सुनने से इन्द्रिय ग्रौर मन को प्राप्त होता है । (जैन)

स्रुतग्यांनी–वि. [स श्रुतज्ञानी] श्रुतज्ञान को जानने वाला, समझने वाला ।

स्रुतदेव–स पु [स श्रुतदेव] १ कृष्ण के महारथी पुत्रो मे से एक ।

२ एक विरागी कृष्ण भक्त ब्राह्मण ।

'गोपाळ' तणौ मजन कियौ, रिण तळाई भूपाळ लै ।—गु रू व

उ०—३ 'अमरावत' ऊपरि दळ अचाळ, माथै किरि आवू मेघमाळ ।
सीसोद सीस स्रोणी निवेस, मस्तक्क जाण गगा महेस ।
—गु रू व

३ देखो 'स्रोणि' (रू भे)

स्रोणीसूतर, स्रोणीसूत्र–स पु [स श्रोणि +सूत्र] एक प्रकार का आभूषण विशेष, कटिमेखला ।

उ०—हार अरद्धहार प्रलब प्रालव नवसर कटक ककण केयूर नूपुर कर्णकुडल एकावली कनकावली रत्नावलि वज्रावली पत्रावली चद्रावली सूर्यावली नक्षत्रावली स्रोणीसूत्र काचीकलाप रसना किरीट इति आभरणानि ।—व स

स्रोत–स पु [स श्रोत] १ कर्ण, कान । (अ मा, डि को)

२ हाथी की सूड ।

[स स्रोत] १ चश्मा, सोता, धार । (अ मा)

२ जलप्रवाह, तेजप्रवाह वाली नदी । (अ मा)

३ वह आधार या साधन जिससे कोई वस्तु वरावर निकलती या आती रहे ।

४ वश-परम्परा ।

५ लहर, तरग ।

६ जल, पानी ।

७ इन्द्रिय ।

रू भे—सरोत, सोत, सोतौ ।

स्रोतईस–स पु [स स्रोत+ईस] नदियो का स्वामी, समुद्र ।

स्रोतपत, स्रोतपति, स्रोतपती–स पु [स श्रोतपति] समुद्र, सागर ।
(डि को)

रू भे—सोतपत, सोतपति, सोतपती ।

स्रोतस्वी, स्रोतस्विनी–स स्त्री [स स्रोतस्विनी] नदी, सरिता ।
(ह ना मा)

स्रोता–वि [स श्रोता] सुनने वाला ।

स पु—१ सुनने वाला व्यक्ति ।

उ०—१ दादू स्रोता स्नेही राम का, सौ मुझ मिळव हु आणि ।
तिस आगै हरि गुण कथू, त्रुगत न करई काणि ।—दादूवाणी

उ०—२ साहिव चुगल समान है, सौ हिज बुरी सुणत । स्रोता वकता होन मम भणिया लोक भणत ।—वा दा

[स श्रोतस्] १ नदी, सरिता ।

२ जल, पानी ।

३ चश्मा, सोना, जलप्रवाह ।

स्रोत्र–स पु [स श्रोत्र] १ कान, कर्ण ।

२ वेदो का ज्ञान ।

३ वेद ।

४ नुपित देवो मे से एक ।

स्रोन—देखो 'स्रोणित' (रू भे)

स्लिप–स स्त्री [अ] कागज का छोटा टुकडा, जिस पर कुछ लिखा जाता हो, चिट, पर्ची ।

उ० —१ आपरै हुकम विना कोई इसपेक्टर किणी नै पकड'र नी लै जा सकै । इसपेक्टर कनै कोई 'सर्च नोटिस' कोनी हौ, सर । उण रै कनै, माय घुसणै री आपरी स्लिप भी कोनी ही ।
—तिरसकू

स्लीपद–स पु [स श्लीपदम्] एक रोग विशेष जिससे पैरो मे सूजन आ जाती है । (अमरत)

स्लीपर–स पु [अ] १ एक प्रकार की लकडी जिसके वडे-वडे पाटिये (तख्ते) वनते है ।

२ एक प्रकार की चप्पल ।

स्लेट–स स्त्री—१ चिकने पत्थर, लोह व गत्ते की वनी चौकोर तखती या पटरी जिस पर वच्चे लिखने का अभ्यास करते है ।

२ मलमल के तह डालकर वनाई जाने वाली ढाल, ईरानी ढाल ।

स्लेस–स पु [स श्लेष] १ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे एक शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हो ।

२ आलिगन ।

३ जुडन, मिलन ।

स्लेसम–स पु [स. श्लेष्म] १ लिसोडे का वृक्ष ।

२ देखो 'स्लेस्म' (रू भे)

स्लेस्म–स पु [स श्लेष्म] पाँच प्रकार के कफो मे से एक प्रकार का कफ । (अमरत)

रू भे—स्लेसम ।

स्लोक–स पु [स श्लोक] १ प्रशसा, तारीफ ।

३ यश, कीर्ति ।

४ पुकार, आह्वान ।

५ प्रशसात्मक छद, कथन ।

उ०—राजा देवसरमा रा मुख सू स्लोक सुण पूछी—हे ब्राह्मण देवता, था कुण छौ, अर कठा सू आइया छौ सौ कहौ । तौ देवसरमा आपरी सारी वात कही । राजा सुण'र वहोत प्रसन्न हुवौ छै ।—साई री पलक मैं खलक

६ सस्कृत का पद्य, छद ।

उ०—कोई पडितराज कविराज पूछै मनकै वीच सदेह राखि तिस सदेहकै मेटणैकौ दोइ ग्रथ एक व्रतरत्नाकर दूसरा स्रुतवोध साखि और फिर एक आगलै पडितका वणाया स्लोक इसही साखिका सौ कहणैमैं आवै साखि उही सच्ची जौ औरका कह्या वतावै सौ कैसै कहि दिखाय ।—सू प्र

७ ध्वनि, आवाज ।

८ लोकोक्ति, कहावत ।

रू भे—सरलोक, सलोक, सिरलोक, सिलोक, स्रलोक,

उ०—सरी नौसरै हार मोती सजोया, पडै स्रेणत हीराता सुक्र पोया। परीवै सरीकठ मैं हीर पूरी, सुमें मूर ग्राकास जाणैं मनूरी।—रा रू

स्रेणि, स्रेणी–सं स्त्री [स श्रेणि] १ रेखा, पक्ति।
२ समूह, दल।
३ कारीगरो का सघ, व्यापारियो का सगठन।
४ शृ खला, सिलसिला।
५ सेना, फौज।
६ जीना, सीढी।
७ वर्ग, विभाग, दरजा। (क्लास)
रू भे—सेणि, सेणी।

स्रेणीबद्ध–क्रि वि—पक्तिबद्ध, कतार मे।

स्रेय–वि [स श्रेयस] १ बहतर, उत्कृष्टतर।
२ उत्तम, श्रेष्ठ।
३ मगलकारी, कल्याणकारी।
४ शुभ।
५ यश, कीर्ति देने वाला।
स स्त्री—१ उत्तमता, अच्छापन।
२ शुभ आचरण।
३ भलाई, कल्याण।
रू भे—सेय।

स्रेयसी–स स्त्री [स श्रेयसी] हरडै। (ह ना मा, ना मा)

स्रेयस्कर स पु [स श्रेयस्कर] जैनियो के ८८ ग्रहो मे से ६६ वा ग्रह।

स्रेयास, स्रेयांसनाथ–स पु [स श्रेयासनाथ] जैनियो के वर्तमान काल के ११ वें तीर्थंकर का नाम (स कु)

स्रेवडा–स पु—१ जैन साधु।
२ साधु, सन्यासी।

स्रेस्ट—देखो 'स्रेस्ठ' (रू भे)
उ०—नमो सुक्र सध्या घणी स्रेस्ट सम्मो, नखित्रा तणी पातिसा स्वाति नम्मो। महालक्ष्मी मात 'वापा' नमामी, नमो मात री तात 'सामुद्र नामी'।—मे म

स्रेस्टता—देखो 'स्रेस्ठता' (रू भे)

स्रेस्टास्त्रम—देखो 'स्रेस्ठास्त्रम' (रू भे)

स्रेस्टी—देखो 'स्रस्ठी' (रू भे)

स्रेस्ठ–स पु [स श्रेष्ठ] १ विष्णु।
२ कुबेर।
३ ब्राह्मण।
४ राजा, नृप।
५ सुधामन् देवो मे से एक।
[सं श्रेष्ठ] ६ गाय का दूध।
वि—१ सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट।
२ मुख्य, प्रधान।
३ वृद्ध, बूढा।
रू. भे—स्रेस्ट।

स्रेस्ठता–स स्त्री [स श्रेष्ठता] १ प्रधानता।
२ खासियत, विशेषता।
रू भे—स्रेस्टता।

स्रेस्ठास्त्रम–स पु [स श्रेष्ठाश्रम] श्रेष्ठ आश्रम, गृहस्थाश्रम।
उ०—मिळगा वूळी ज्यू जेस्ठास्त्रम जूना, मालै मूळी ज्यू स्रेस्ठास्त्रम सूना।—ऊ का
रू भे—स्रेस्टास्त्रम।

स्रेस्ठी–स पु [स श्रेष्ठिन्] प्रतिष्ठित व्यवसायी, सेठ।
रू भे—स्रेस्टी।

स्रोण–स पु [स श्रोण] एक प्रकार का रोग विशेष।
वि—१ लगडा, लूला।
२ लाल, रक्तवर्ण।
३ देखो 'सोणित' (रू भे) (अ मा)
उ०—१ विटै मल्ल पाण जिही जुझवाण, पठाणै कमध कमवै पठाण। खळा स्रोण रगै वहै खग्ग खग्गै, अकासै घटा जाण माळा उमगै।—रा रू
उ०—२ वहै लोह वका, घटा ह्वै धणका, विनै तीर वारा, वडा स्रोण धारा। कर पाव केक, उडै धू अनेक, करै लै कराळा, महारुद्र माळा।—सू प्र
४ देखो 'स्रोणि' (रू भे)
उ०—पदमनी रुखमणीजी को जु नाभि सु प्रियाग करि वरणायौ। नाभि कै विखै जु त्रिवलि छै सु त्रिवेणि करि वरणवी छै। स्रोण कहता नितब सोई तट हुउ।—वेलि टी
रू भे—स्रुण, स्रुणि, स्रुणी, स्रोन।

स्रोणि–स पु [स श्रोणि श्रोणी] १ चूतड, नितम्ब।
उ०—धरधर स्र ग सघर सुपीन पयोधर, घणौ खीण कटि अति सुघट। पदमणि नाभि प्रियाग तणौ परि, त्रीवलि त्रिवेणी स्रोणि तट।—वेलि
२ कटि, कमर।
३ मार्ग, रास्ता।
रू भे—स्रुण, स्रणि, स्रुणी, स्रोण।

स्रोणित—देखो 'सोणित' (रू भे)

स्रोणी–स स्त्री [स क्षोणी] १ भूमि, पृथ्वी। (ना मा.)
२ देखो 'सोणित' (रू भे)
उ०—१ मुजडा मुहि सधर लडिया लसकर, डिगमिग काइर कळह डरै। खागा पळ खडर कटि सिर कूपर, स्रोणी खप्पर सकति भरै।—गु रू व
उ०—२ पणिहार सकति पाणी भरै, स्रोणी खप्पर कू भलै।

दरगाह सदर दोलत दराज, तालावुलद इस्लाम ताज ।—ऊ का

स्वत.—अव्यय [स स्वतम्] अपने आप, आप से आप, स्वय ।

रू भे—सुता, सुतेई, सुतै ।

स्वत्त्व—स पु [स स्वत्त्व] १ किसी वस्तु को अपने अधिकार मे रखने व काम मे लाने का अधिकार, हक ।

२ अपनापन ।

स्वदेस—सं पु [स स्वदेश] अपना देश, वतन ।

स्वदेसी—वि [स स्वदेशी] १ अपने देश का ।

२ अपने देश मे होने वाला ।

स्वधरम—स पु [स स्वधर्म] १ अपना धर्म ।

२ अपना कर्तव्य ।

स्वधा—स स्त्री [स] १ पितरो के निमित्त दिया जाने वाला भोजन, पितृ अन्न ।

२ दक्ष की एक कन्या, जो पितरो की पत्नी मानी जाती है ।

३ अगिरा ऋषि की पत्नी का नाम ।

अव्य—४ देवताओ तथा पितरो को हवि देते समय उच्चारण किया जाने वाला मत्र ।

स्वधाधिप, स्वधाधिपत, स्वधाधिपति, स्वधाधिपती—स पु [स स्वधा+अधिपति] आग, अग्नि ।

स्वधाप्रिय—स पु [स.] आग, अग्नि ।

स्वधोद—स पु—लागल नामक राजा जिसका दूसरा नाम राहुल था ।

उ०—तिण सुत सजय रघुकुळ तारण, साक्य सजय सुत दुमह सधारण । सभ्रम साक्य स्वधोद सकाजा, राजै जै सुत लायक राजा ।—सू प्र

स्वनदा—स स्त्री—दुर्गा ।

स्वन—स पु—१ सत्य के एक पुत्र का नाम ।

२ शब्द, ध्वनि ।

[स श्वन्] ३ कुत्ता, श्वान ।

स्वनचकर, स्वनचक्र—स पु [स स्वनचक्र] एक प्रकार का रतिबध या सभोग का आसन ।

स्वनांमधन्य—वि [स स्वनामधन्य] जो अपने नाम से प्रसिद्ध हो ।

स्वपच—स पु [स श्वपच] १ श्वान का मास पकाकर खाने वाला व्यक्ति, चाडाल ।

२ पतित जाति का व्यक्ति ।

स्वपथ—स पु—स्वर्ग का मार्ग या रास्ता ।

स्वपन, स्वपनौ—देखो 'स्वप्न' (रू भे)

स्वपाळ, स्वपाल—स पु [स स्वपाल] स्वर्ग का रक्षक ।

स्वप्न—स पु. [स] १ सोने की क्रिया या अवस्था, नीद ।

उ०—जाग्रत स्वप्न सुसुपती तुरीया, इनतै अलग रहाया । तीन गुणा की जहा उत्पती नाही, पाच भूत नही काया ।

—स्रीहररामजी महाराज

२ निद्रावस्था मे किसी काल्पनिक घटना, विचार, चित्र आदि का मस्तिष्क मे आना जो प्राय अवास्तविक होता है ।

३ निद्रावस्था मे आने वाले विचार, बात आदि जो कभी-कभी सत्य भी होते है ।

उ०—थिरू मूरती सूर रै नूर थाई, तिका स्वप्न रै माहि पिडा बताई ।—मे म

४ मन ही मन की जाने वाली बडी-बडी कल्पनाऐं और योजनाऐं आदि, ख्वाब ।

५ एक राजस्थानी लोक-गीत ।

वि.—१ क्षणभगुर, नाशवान ।

२ मिथ्या ।

रू भे—सपणौ, सपनौ, समणउ, समणौ, सुपण, सुपणौ, सुपन, सुपन, सुपनउ, सुपनू, सुपनू, सुपनौ, सूहणौ, सोहण, सोण, सोहणौ, स्वपन, स्वपनौ ।

स्वपनदोस—स पु [स स्वप्नदोष] १ निद्रावस्था मे कोई कामोदीपक या शृगारिक दृश्य देखने के कारण वीर्यपात होने का रोग ।

रू भे—सपनदोख, सपनदोस, सुपनदोस ।

स्वभाउ, स्वभाव—स पु [स स्वभाव] १ अपना या नेज का भाव ।

पर्याय—अनिज, आतम, गत, गति, गुणआतम, चलगत, चलगति, निसरग, प्रगति, रीति, लखण, विसव, समिध, ससिधि, सतत्त्व, सभाव, सरग, सहज, सानिज, सुभाव ।

२ सदा बना रहने वाला मूल गुण, तासियत ।

३ जीव-जन्तुओ और प्राणियो की वह प्रकृति जो जन्म से होती है ।

४ मनुष्य के मन का वह पक्ष जो बहुत कुछ जन्मजात होता है तथा सदैव देखने मे आता है ।

ज्यू—सुरेसजी तौ स्वभाव सू ई रीसद्र है ।

५ आदत, बान ।

रू भे—सबाव, सभाय, सभाव, सासाय, साभाव, सुभाई, सुभाई, सुभाउ, सुभाऊ, सुभाय, सुभाव, सोभाव ।

स्वभाविक—देखो 'स्वाभाविक' (रू. भे)

स्वभावोकति, स्वभावोक्ति, स्वभावोगत, स्वभावोगति—स स्त्री [स स्वभावोक्ति] एक प्रकार का अलकार जिसमे किसी जातिवाचक पदार्थ व व्यक्ति के स्वाभाविक गुणो का वर्णन होता हो ।

स्वभू—देखो 'स्वयभू' (रू भे)

स्वय—वि [स स्वयम्] अपने-आप अपना कार्य करने वाला ।

सर्व—१ खुद, आप ।

अव्यय—२ अपने आप ।

रू भे—सव, सुय ।

स्वयजोत, स्वयजोति, स्वयंज्योत, स्वयज्योति, स्वयज्योती—स पु

स्रलोको, स्रिलोक, स्रिलोकू ।

स्व-सर्व वि [स] १ निजू, अपना, स्वय का ।
२ अपनी जाति का, सजातीय ।
३ स्वाभाविक, प्रकृतिगत ।
स पु [स स्व] १ नातेदार, रिश्तेदार ।
२ जीवात्मा ।
[स स्व, स्व] ३ धन-दौलत, सम्पति । (ह ना मा)

स्वकरमी-वि [स स्वकर्मिन्] १ स्वार्थी, मतलबी ।
२ अपने कर्त्तव्य व धर्म का पालन करने वाला ।

स्वकीय-स पु [स] १ स्वजन, कुटुम्बी ।
उ०—इसडी कहाई तौ भी नरेस सुरजन आपरा डेरा जुदा न टाळिया । अर एक ही घर रौ जु जाणि अठी उठी दौ ही तरफ रा सरव ही स्वकीय भाळिया ।—व भा
२ अपना, निजी ।
उ०—तिण समय चद्रमा रै चोतरफ परिवेस रै प्रमाण भालैमिह देव साठि हजार सेना सू स्वकीय स्वामी रा सिविर रै छवीना रौ चक्र चलायौ ।—व भा
रू भे —सुकिय ।

स्वकीया-स स्त्री [स] वह नायिका या स्त्री जो केवल अपने पति से अनुराग करती हो । (साहित्य)
रू भे —सुकिया, सुकीया, सुक्किया ।

स्वगत-वि [स] १ मन मे आया हुआ ।
अव्य —२ स्वत, अपने-आप ।

स्वच्छद, स्वछद-स पु [स स्वछद] १ कार्तिकेय या स्कद का एक नाम ।
सं स्त्री —२ अपनी इच्छा या मर्जी ।
वि [स स्वछद] १ मनमाना काम करने वाला, मनमौजी ।
२ किसी अकुश, नियत्रण या मर्यादा का ध्यान न रखते हुए अपनी इच्छानुसार आचरण करने वाला ।
३ भयरहित, निर्भय ।
उ०—रही स्वछद रैत तव राजम, सुभ अमद सुखियारी । आणद कद एक दम उठग्यौ, 'तखत' नद अवतारी ।—ऊ का
क्रि वि —१ अपनी इच्छानुसार, अपनी मर्जी से ।
उ०—स्वछद कियौ निज काम सोर, उडि गयौ चद्र की वाम ओर । उपमा कवि ऊमर दै अमोल, ततकाळ समय टकार तोल ।
—ऊ का
२ विना किसी भय, विचार या सकोच के ।
रू भे —सच्छद ।

स्वछदचारण, स्वछदचारणी, स्वछदचारिण, स्वछदचारिणी-स स्त्री —१ वेश्या, रडी ।
२ वदचलन स्त्री ।

स्वछंदचारी-वि (स्त्री. स्वछदचारण, स्वछदचारणी, स्वछदचारिण, स्वछदचारिणी) स्वेच्छाचारी, मनमौजी ।

स्वछदता-स स्त्री —स्वछद होने का गुण, भाव या अवस्था ।

स्वच्छ-वि [स] १ जिसमे किसी प्रकार का मेल या गन्दगी न हो ।
२ साफ, निर्मल ।
३ सुन्दर, मोहक ।
उ०—स्वच्छ कपोल महेळिया, मझ छवि नकू मिणाह । पात समर सोनी किया, जर जाफरी तणाह ।—वा दा.
४ स्वस्थ, तन्दुरुस्त ।
५ पवित्र, शुद्ध ।
६ निष्कपट ।
७ स्पष्ट ।
उ०—गौ तिमर गच्छ सूझन स्वच्छ दरसन दयाळ कृपया कराळ । स्वामी सचेत अति गुन उपेत, सेवक विसार सौ लीन सार ।
—ऊ. का.
रू भे —सुच्छ ।

स्वच्छता-स स्त्री [स] १ स्वच्छ रहने का भाव, गुण या अवस्था ।
२ निर्मलता, सफाई ।
३ स्पष्टता ।
रू भे —सुच्छता ।

स्वजन-सं पु [स] १ आत्मीयजन ।
२ रिश्तेदार, सवधी ।

स्वजनता-स स्त्री [स] १ आत्मीयता ।
२ रिश्तेदारी ।

स्वजात-स पु [स] पुत्र, वेटा ।
वि —अपने से उत्पन्न ।

स्वजाति-स स्त्री —अपनी जाति, अपनी कौम ।

स्वजातीय-वि —१ अपनी जाति का ।
२ एक ही जाति या वर्ग का ।

स्वतत्र-वि [स] १ जिस पर किसी का दवाव या शासन न हो ।
२ जो किसी प्रकार के वधन मे न पडा हो, आजाद ।
३ काम या वात जिसमे किसी दूसरे का सहारा न लिया गया हो ।
४ अलग, जुदा, भिन्न ।
५ नियमो आदि से वन्धनरहित ।
रू भे —सुततर, सुतत्र ।

स्वतत्रता-स स्त्री —१ स्वतत्र रहने या होने का भाव ।
२ आजादी ।
३ स्वाधीनता ।
रू भे —सुततरता, सुतत्रता ।

स्वतिस्री—देखो 'स्वस्तिस्री' (रू भे)
उ०—स्वतिस्री दिल्लीपुर सुथान, सल्तनत मुगळ कुळ सावधान ।

उ०—१ सरद घटा जिम ऊजळी, दिस दिस घटा विलद । नगर थटा रुख निरखिया, स्वरग छटा व्है मद ।—वा दा

उ०—२ तिण मै रूडा राजपूत तिकै स्वरग रा उतावळा, वैकुठा लोडाऊ, अवधा विरदा रा वहणहार, तिणा री वाग ऊपडी । कोस दोय-तीन ऊपर जावता वै मृडण-रेढा नू पहूचिया ।
—डाढाळा सूर री वात

पर्याय—अपवरग, अमरापुर, अमरालय, अमरावती, अवय, अवयदिव, उरधगति, उरधलोक, गऊ, ग्यानसत, तविखि, त्रदसतप, त्रिदख, त्रिदसासदन, त्रिदिव, त्रिवस्ट, दिवत, दिविओक, धरमफूल, नाक, पतावख, भुव, सुखधाम, सुरआलय सुररिखय-वन, सुरलोक ।

मुहा—१ स्वरग जाणौ या सिधाणौ=मरना, मृत्यु होना २ स्वरगपुरी होणौ=अत्यन्त रमणीक स्थान होना ३ स्वरग री मौज करणी=अत्यन्त सुख भोगना, आनन्द लूटना ।

२ अन्य धर्मो के अनुसार एक विशिष्ठ स्थान जो आकाश मे माना जाता है ।

३ कोई ऐसा स्थान जहाँ सर्व सुख प्राप्त होता हो ।

४ आकाश, आसमान ।

५ ईश्वर ।

६ सुख ।

७ देखो 'सरग' (रू भे)

रू भे—सग, सग्ग, सरग, सरगि, सरग्ग, सुरग, स्रग, स्त्रग, स्त्रुग, स्त्रुगि ।

स्वरगगमण, स्वरगगमन–स पु [स स्वर्गगमन] स्वर्ग जाने की क्रिया, अवस्था या भाव, मरना ।

स्वरगगामी–वि [स स्वर्गगामिन्] १ स्वर्ग की तरफ जाने वाला ।

२ मरा हुआ, मृत ।

स्वरगगिर, स्वरगगिरि, स्वरगगिरी–स पु [स स्वर्गगिरि] सुमेरुपर्वत ।

स्वरगतरगिण, स्वरगतरगिणी–स स्त्री [स स्वर्गतरगिनी] आकाश-गगा ।

स्वरगतर, स्वरगतरु–स पु [स स्वर्गतरु] १ कल्पवृक्ष ।

२ पारिजात ।

स्वरगद–वि [स स्वर्गद] स्वर्ग देने वाला ।

स्वरगधेन, स्वरगधेनु–स स्त्री [स स्वर्गधेनु] कामधेनु ।

स्वरगनद, स्वरगनदी–स स्त्री [स स्वर्गनदी] आकाश-गगा ।

रू भे—सरगनद, सरगनदी, सुरगनदी, सुरगीनदी ।

स्वरगपत, स्वरगपति, स्वरगपती–स पु [स स्वर्गपति] स्वर्ग का मालिक, इन्द्र ।

रू भे—सरगपत, सरगपति, सरगपती, सुरगपत, सुरगपति, सुरगपती ।

स्वरगपुर, स्वरगपुरी–स स्त्री [स स्वर्गपुरी] अमरावती, वैकुण्ठपुरी ।

रू भे—सरगपर, सरगपुर, सरगपुरी, सरगापुर, सरगापुरी, सुरगपुर, सुरगपुरी ।

स्वरगमदाकनी, स्वरगमदाकिनी–स स्त्री [स स्वर्गमदाकिनी] आकाश-गगा ।

रू भे—सुरगमदाकनी, सुरगमदाकिनी ।

स्वरगलोक–स पु [स स्वर्गलोक] १ देवलोक ।

उ०—जिण री सगति रै प्रभाव स्वरगलोक रौ मारग मुद्रित कराय कुभीपाक री निवास भाळियौ ।—व भा

२ मृत्यु को प्राप्त होना, मरना ।

क्रि प्र—व्हैणौ, जाणौ ।

रू भे—सरगलोक, स्रगलोक, सुरगलोक, स्त्रगलोक, स्वरलोक ।

स्वरगलोकेस, स्वरगलोकेसर, स्वरगलोकेसु, स्वरगलोकेसुर–स पु [स स्वर्गलोकेश, स्वर्गलोकेश्वर] १ इन्द्र ।

२ तन, शरीर ।

स्वरगवधु, स्वरगवधू–स स्त्री [स स्वर्गवधू] अप्सरा ।

रू भे—सवरगवधू, सुरगवधू ।

स्वरगवास–स पु [स स्वर्गवास] १ वैकुठवास, देवलोक ।

उ०—कायर घर आवण करै, पूछै ग्रह दुज पाम । स्वरगवास सारौ गिणै, सव दिन प्यारौ सास ।—वा दा

२ स्वर्ग का निवास ।

३ देहावसान, मृत्यु, मौत ।

रू भे—सरगवास, सुरगवास ।

स्वरगवासी–वि [स स्वर्गवासी] १ स्वर्ग मे रहने वाला ।

२ स्वर्गीय ।

रू भे—सरगवासी, सुरगवासी ।

स्वरगविहारी–स पु [स स्वर्गविहारी] देवता, देव ।

रू भे—सुरगविहारी, स्त्रगविहारी ।

स्वरगात्री–स स्त्री [स] अप्सरा ।

स्वरण–स पु [स स्वर्ण] १ सुवर्ण, सोना, कनक ।

२ धतूरा ।

३ कामरुप देश की एक नदी ।

रू भे—सवरण, सोवन, सोवन्न, सोव्रण, सोवन, सोवरण, सोविण, सोव्रण, सोव्रन, सोव्रन्न ।

स्वरणकाय–स पु [स स्वर्णकाय] गरुड का एक नाम ।

स्वरणकार–स पु [स स्वर्णकार] स्वर्ण के आभूपण बनाने का व्यवसाय करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति ।

रू भे—सोव्रणकार, सोवनकार ।

स्वरणगिर, स्वरणगिरि, स्वरणगिरी-स पु [स स्वर्णगिरि]

१ सुमेरुपर्वत ।

२ लका का दुर्ग ।

३ जालोर का दुर्ग ।

[सं स्वयज्योति] १ परमेश्वर, ईश्वर।
२ परब्रह्म।
स्वयदूत–स. पु [स] वह नायक जो अपना प्रेम नायिका पर स्वय प्रकट करता हो। (साहित्य)
स्वयदूति, स्वयदूती–स स्त्री [स] नायक के समक्ष स्वय ही अपना दूतत्व करने वाली परकीया नायिका।
स्वयप्रभ–स पु. [स] १ जैनियो के भविष्यत्काल के चौथे तीर्थंकर का नाम। (स कु)
२ जैनियो के ८८ ग्रहो मे से ६४ वा ग्रह।
स्वयप्रभा–स स्त्री [स] १ इद्र की एक अप्सरा जिसे मयदानव चुरा ले गया था। इसी के गर्भ से मदोदरी का जन्म हुआ था, मदोदरी की माता।
वि वि—यह मेरुसावर्णि की पुत्री, रावण की सास व मेघनाद की नानी थी। यह ऋक्षबिल मे रहती थी। सीता की खोज करते समय हनुमान आदि से इसकी भेंट हुई थी। इसने सब वानरो की आँखें बद कराकर ऋक्षबिल से समुद्र के किनारे भेज दिया था।
२ अर्जुन के स्वागत-समारोह मे इन्द्रभवन मे नृत्य करने वाली एक अप्सरा का नाम।
रू भे—सोयंप्रभा।
स्वयप्रभु–स पु [स.] अट्ठाईस व्यासो मे से एक।
स्वयफळ–स पु [स स्वयफल] जो आप ही अपना फल हो।
स्वयबर—देखो 'स्वयवर' (रू भे)
स्वयभुव, स्वयभू–स पु [स स्वयभु] १ ब्रह्मा, विरचि।
[स स्वयभुव] २ प्रथम मनु का नाम।
३ शिव, महादेव।
[स स्वयभू] ४ विष्णु।
५ कामदेव, मनोज।
६ काल जो मूर्तिमान हो।
७ जैनियो के नौ वासुदेवो मे से एक।
वि—[स. स्वयभू] आप से आप उत्पन्न होने वाला।
रू भे—सभुमन, सभुमनु, सभूमुनी, सभूमन, सभूमनु, सभूमुनी, सयभू, सियभू, सूयभू, स्यभ, स्वभू।
स्वयभोज–स पु [स] राजा शिवि के एक पुत्र का नाम।
स्वयवर–स पु [स] १ स्वयं वरण करने की क्रिया, स्वयवरण।
२ वह उत्सव या समारोह जिसमे कन्या स्वय अपने लिए उपस्थित व्यक्तियो मे से वर को वरण किया करती थी या चुनती थी।
उ०—फेर मारग चालता सहो वोनियो—राजा सांभळ। चपावती नाम एक नगर, तेथी चपकेस्वर राजा, तिण रै एक पुत्री भुवनसुदरी। सो वर प्रापति लायक हुई। तठै राजा विचार कियो पुत्री रै कारण स्वयवर रचायजै। जोग वर आणिजै।
—वैताळ पच्चीसी
३ कन्या द्वारा स्वय के लिए वर को वरण करने की रीति या विधान।
४ विवाह, शादी।
रू भे—सइवर, सइवरि, सयबर, सयवर, सयवरु सुयवर, सुयबर, स्त्रयवर
स्वयंसेवक, स्वयसेवी–स पु [स] किसी ऐसे सगठन का सदस्य जिसका मुख्य उद्देश्य लोगो की सेवा करना होता है।
स्वयमेव–क्रि वि [स स्वय+एव] स्वय ही, खुदबखुद।
स्वर–स पु [स स्वर] १ किसी पदार्थ पर आघात पड़ने या प्राणी के कठ से उत्पन्न शब्द।
२ आघात अथवा सघर्षण से उत्पन्न स्निग्ध एव अनुरागात्मक ध्वनि जिसका निश्चित स्वरूप हो और जो सुनने वाले के मन को अनुरजित कर सके।
३ सगीत मे वह शब्द जिसका कुछ निश्चित रूप हो, ये सात प्रकार के माने गये हैं यथा—षडज, ऋषभ, गाधार, मध्यम, पचम, धैवत, और निषाद।
४ व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसका उच्चारण आप से आप हो, तथा जिसके बिना किसी व्यजन का उच्चारण नही हो सकता हो। स्वर वर्ण–ये तेरह होते हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, ऋ।
५ किसी वाद्य की ध्वनि, आवाज।
उ०—घणा माळ ज्युही अमुगण घडा, जित आग्रत सेन किसेन खडा। रिण तूर नफेरिय भेर रूडै, गहरै स्वर ताम दमांम गुडै
—रा रू
६ वेदपाठ मे शब्दो का उतार चढाव जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित नामक तीन प्रकार का होता है।
७ पवन जो नथुनो से होकर निकले।
८ सोते समय नाक से निकलने वाला शब्द खर्राटा।
९ सात की सख्यासूचक। ※ (डि को)
[स स्वर्] १० स्वर्ग।
११ आकाश, अन्तरिक्ष।
१२ सूर्य और ध्रुव के बीच का स्थान।
१३ तीन व्याहृतियो मे से तीसरी व्याहृति।
रू भे—सर, सुर।
स्वरकळानिध, स्वरकळानिधि, स्वरकळानिधी–स स्त्री [स स्वर+कलानिधि] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत)
स्वरक्षस–स पु [स] अट्ठाईस व्यासो मे से एक।
स्वरगगा–स स्त्री [स स्वर्+गगा] आकाशगगा।
स्वरग–स पु [स स्वर्ग] १ अन्तरिक्ष मे स्थित सात लोको मे से तीसरा लोक, जहा देवता, पुण्यात्मा तथा सत्कर्मी निवास करते हैं, देवलोक, वैकुठ।

के लिए होता है।

स्वल्प—वि [सं.] बहुत थोडा, अल्प।

स्ववस—वि [स स्ववश] जो अपने वश मे हो।

स्वसन—स पु [स श्वसन] १ हवा, पवन। (ह ना. मा)
२ धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग का नाम।

स्वसरिता—स स्त्री. [स स्व+सरित्] गगा।

स्वसा—स स्त्री [स स्वसृ] बहन।
उ०—सिसु 'गगा' थारी स्वसा, एक तजै आमैर। क्रम ईखै देणी कवर, वर वय कुळ घर वैर।—व भा

स्वसाद—स पु—एक सूर्यवशी राजा, शशाद।
उ०—सुत विकुख सकुनिज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद। जै सुत अनन प्रथु पुत्र जास, राजै प्रथु नदन विस्टरास।
—सू प्र

स्वसुदरी—सं स्त्री [स स्व.सुदरी] अप्सरा।

स्वसुर, स्वसुरौ—देखो 'सुसरौ'।

स्वस्ति—स स्त्री [स] १ ब्रह्मा की तीन पत्नियो मे से एक।
२ पत्रो के प्रारम्भ मे मगलकामना हेतु लिखा जाने वाला शब्द।
उ०—लिखि स्वस्ति स्री स्री स्री विराज, लिखियै जु प्रिय जोग आज। उपमा जु लिखौ जेती वनाय, सौ सकळ अग तुम्हरै लखाय।
—समानबाई

अव्य—१ मगल हो, भला हो। (आशीर्वाद)
२ मान्य है, ठीक है।
३ कल्याण, क्षेम।
उ०—हुतौ थयौ मूरख रे दाक्षिणवत थी, वात कही सहु तुझ रे। राज चाहु पाछै, खोटी मति आछै, याज्यौ तौ तुझनं रे स्वस्ति महीपति।—वि कु
४ देखो 'स्वस्तिक' (रु भे)
उ०—कुडी चढतइ वेडि विचि, महिला मूकी जाइ। ऊदिरडु मुखि मूजरइ, तु तै स्वस्ति मणाइ।—मा का प्र

स्वस्तिक—स पु [स] एक प्रकार का मागलिक चिन्ह जो मागलिक अवसरो पर भवनादि मे अकित किया जाता है।
२ सखिया जैसा सामुद्रिक चिह्न जो प्राय हथेली या पैर मे होता है एव शुभ माना जाता है। (सामुद्रिक)
३ एक प्रकार का शुभ द्रव्य जो विवाहादि के समय भिगोये हुए चावलो को पीसकर बनाया जाता है।
४ सखिया जैसा चिन्ह।
५ एक विशेष प्रकार का राजप्रासाद।
६ चौराहा।
७ एक प्रकार का पकवान।
८ एक प्राचीनकालीन यत्र जो शरीर मे गडे हुए शल्य आदि निकालने के काम आता था।
९ साप के फन पर की नीली रेखा।
१० एक विशेष प्रकार का मकान जिसके पश्चिम व पूर्व की ओर दो दालान हो।
११ लहसुन।
१२ मूली।
१३ रतालू।
१४ लपट, रसिया।
१५ जैनियो के ८८ ग्रहो मे से ५८ वा ग्रह।
१६ एक प्रकार का योगासन।
रू. भे—सठिक, सखियौ, सतियौ, सथियौ, साकियौ, साखियौ, साख्यौ, साथियौ, स्वस्ति।

स्वस्तिका—स स्त्री—चमेली।

स्वस्तिकासण, स्वस्तिकासन—स पु—योग के चौरासी आसनो मे से एक, जिसमे दोनो जघाओ के बीच के भाग मे और दोनो पावो की पिंडलियो के बीच मे दोनो पावो के पजो को रखना और शरीर को सीधा रखकर बैठना होता है। (योग)

स्वस्तिमत, स्वस्तिमति, स्वस्तिमती—स स्त्री. [स स्वस्तिमती] स्वामी-कार्त्तिकेय की एक मातृका का नाम।

स्वस्तिस्री—स पु—पत्र के प्रारम्भ मे लिखा जाने वाला मागलिक शब्द।
उ०—स्वस्तिस्री चद्रगढ सुभ स्थान अनेक ओपमा लाइक वाज़मान प्यारी सजीली लजीली फवीली छबीली नसीली रसीली चकीली ककीली अगीली रगीली बकीली लीरकली रमकीली समकीली चटकीली।—र हमीर
रू भे—स्वतिस्री।

स्वस्न—स पु [स स्वश्न] एक असुर का नाम।

स्वस्रप, स्वस्रिप—स. पु [स श्वसृप] सैहिकेय नामक असुर जो हिरण्यकशिपु का भतीजा था।

स्वस्व—स पु [स स्वश्व] एक राजा जिसके पुत्र रूप मे सूर्य ने जन्म लिया था।

स्वाग—स पु [स] १ किसी दूसरे की वेश-भूषा अपने शरीर पर इस प्रकार धारण करना कि देखने वालो को वही दूसरा व्यक्ति जान पडे।
उ०—१ दूजी वाता तौ राजाजी रै घणी मोडी समझ मैं आवती, पण मरजी रा खवास री आ वात वारै तुरत समझ मैं आयगी। वोल्या—हा, आ वात तौ थारी साची, वौ जात रौ नाई नी हौ, नाई रौ स्वाग लायौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ जै डौकरी रै वदळै वौ किणी दूजा वेस मैं व्हैतौ तौ

४ मगध देश की प्राचीन राजधानी ।

रू भे—सोणगिर, सोणगिरि, सोणगिरी, सोनगढ, मोनगिर, सोनगिरि, मोनगिरी, सोनागर, सोनागिर, सोनागिरि, सोनागिरी, सोवनगर, सोवनगिर, सोवनगिरि, सोवनगिरी, सोवरणगिर, सोवरणगिरि, सोवरणगिरी, सोव्रनगिर, सोव्रनगिरि, सोव्रनगिरी, सोव्रन्नगिर, सोव्रन्नगिरि, सोव्रन्नगिरी ।

स्वरणचूड–स पु [स स्वर्णचूड] १ नीलकठ नामक पक्षी ।

२ महादेव, शिव ।

स्वरणजात, स्वरणजाति, स्वरणजाती–स स्त्री [स स्वर्णजाति] पीली चमेली ।

स्वरणपक्ख, स्वरणपख, स्वरणपक्ष–स पु [स स्वर्णपक्ष] गरुड ।

स्वरणप्रस्थ–स पु [स स्वर्णप्रस्थ] जबू द्वीप का एक उपद्वीप । (पुराण)

स्वरणभूखण, स्वरणभूसण–स पु [स स्वर्णभूषण] १ सोनागोरू ।

२ सोने के आभूषण ।

स्वरणाद्रि, स्वरणाद्री–स पु [स स्वर्णाद्रि] भुनेश्वर नामक तीर्थ । (उडीसा)

स्वरभग–स पु [स] १ आवाज बैठ जाने व ठीक-ठीक स्वर न निकलने का एक प्रकार का रोग विशेष । (वैद्यक)

२ उच्चारण मे होने वाली बाधा ।

स्वरभाण, स्वरभाणु, स्वरभानु–स पु [स स्वरभानु] १ श्रीकृष्ण एव सत्यभामा के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

२ राहु नामक ग्रह ।

स्वरभूखणी, स्वरभूसणी–स स्त्री [स स्वरभूषणी] कर्नाटिकी पद्धति की एक रागिनि । (सगीत)

स्वरमडळ–स पु [स स्वरमडल] एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

स्वरलोक—देखो 'स्वरगलोक' (रू भे)

उ०—पातरा पाच नाजर उमै, भल बाई व्रत भावियौ । 'जसवत' सुतन सतिया सहित, यौं स्वरलोक सिधावियौ ।—रा रू

स्वरवीथी–स स्त्री [स स्वर्वीथी] ध्रुव-पुत्र वत्सर की पत्नी का नाम ।

स्वरवेस्या–स स्त्री [स स्वर्वेश्या] अप्सरा ।

स्वरवैद्य—स पु [स स्वर्गवैद्य] अश्विनीकुमार ।

स्वरसक्रम–स पु [स] सगीत मे स्वरो का उतार और चढाव ।

स्वरसधि–स स्त्री [स] व्याकरण मे दो या अधिक पास-पास आने वाले स्वरो का मिलकर एक होना ।

स्वरस–स पु—औषधि का रस । (अमरत)

स्वरा–स स्त्री [स] १ ब्रह्मा की पत्नी, गायत्री की सपत्नी ।

२ उत्तानपाद एव सूनृता की एक कन्या का नाम ।

स्वराज्य–स पु [स] १ अपना देश, वतन ।

२ वह राज्य जिसकी शासन-व्यवस्था विदेशी शासको के हाथ से निकलकर देशवासियो के हाथ मे आ चुकी हो ।

स्वराट–स पु [स] १ इद्र, देवराज । (ना डि को)

उ०—छत्रीलौ घणौं खास-आवास छाजै, लखै घाट स्वराट रौ पाट लाजै ।—मे म

२ ब्रह्मा ।

३ परमेश्वर, ईश्वर ।

स्वराभरण–स पु [स] कर्नाटकी पद्धति का एक राग । (सगीत)

स्वरालाप–स स्त्री [स] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (सगीत)

स्वरास्ट्र–स पु [स स्वराष्ट्र] अपना राष्ट्र, वतन ।

स्वरूप–स पु [स] १ आकार, बनावट, आकृति ।

२ रूप, शक्ल ।

३ सौंदर्य, सुन्दरता, रूप ।

उ०—इतरै एक जख आइयौ सौ मदनावती रौ रूप देख उठाय वीनू विंध्याचळ पर लेय गयौ । तेथी कहियौ छै—अति स्वरूप नाही भलौ, नाही भलौ गुमान । अति की चाह भली नही, ऐ त्रय वचन प्रमाण ।—वैताळपच्चीसी

४ मूर्ति या चित्र ।

५ किसी चीज का ढग या पद्धति ।

६ स्वभाव, आदत, प्रकृति । (ह ना मा)

७ आत्मा ।

८ विद्वान, पडित ।

९ ईश्वर, भगवान् ।

उ०—तुरीयै नाम कहण सू न्यारा, निज अपरोक्ष अनूपा । कारज कारण लेस न कोई, सोई सुखराम स्वरूपा ।

—स्रीसुखरामजी महाराज

१० पाच प्रकार की मुक्तियो मे से सारूप्य नामक मुक्ति ।

वि—१ मनोहर, सुन्दर, रूपवान ।

उ०—और सुरसुदरी आवास थकी अपणी पाळतू मदनमजरी, सारिका, तीनू पूछियौ कै तू जाणै तौ बताय, सौ लायक बीद कुण होसी ? सारिका कही—भोगावती नगरी रौ राजा रूपसेन, सौ नाम सकळ गुण जाण, अति स्वरूप सौ थारै भरतार होयसी ।

—वैताळपच्चीसी

२ तुल्य, समान ।

३ देखो 'सरूप' (रू भे)

रू भे—सारूप ।

स्वरूपमान, स्वरूपवान–वि [स स्वरूपवत्] सुन्दर, खूबसूरत ।

स्वरूपी–वि—स्वरूप वाला, स्वरूपवान ।

रू भे—सरूपी ।

स्वरेणू–स स्त्री [स] सूर्य-पत्नी सज्ञा का एक नाम ।

स्वरोदय–स पु [स] वह ज्ञान जो दाहिने और बाएँ नथुने से निकलते हुए श्वासो के आधार पर सब प्रकार के शुभाशुभ फल जानने

देवो का सेनापति जो तारकासुर का वध करने के लिए अवतरित हुआ था।

वि वि—पुराणो मे सर्वत्र इसे शिव और पार्वती का अथवा अग्नि का पुत्र माना गया है एव इसे छ मुख वाला भी कहा गया है। इसके जन्म के विषय मे कई प्रकार की कथाएँ पुराणो मे प्रसिद्ध है। ब्रह्माण्ड के अनुसार एक समय शिव और पार्वती एकान्तवास मे थे, उस समय इद्र ने अनल नामक अग्नि से उनके एकान्त का भग करवाया। इस कारण शिव के वीर्य का अर्द्धांश भूमि पर गिर पडा। अग्नि के इस प्रकार की उद्दण्डता के कारण पार्वती ने इस पर कोप किया एव अग्नि को शाप देकर शिव के वीर्य को धारण करने के लिए बाध्य किया। ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार शिव के वीर्य को अग्नि अधिक समय तक धारण न कर सका अत उसने गगा को दे दिया। गगा भी धारण न कर सकी अत उसने भूमि पर छोड दिया। आगे चलकर उसी वीर्य से स्वामिकार्त्तिकेय का जन्म हुआ।

महाभारत मे यह वृत्तान्त भिन्न रूप से प्राप्त होता है। एक समय सप्तऋषियो के यज्ञ मे अग्नि सप्तऋषियो की पत्नियो पर आसक्त हो गया और अपनी पत्नी स्वाहा को त्याग दिया और अरुधति के अतिरिक्त छ ऋषि-पत्नियो के साथ यह रमण करने लगा। अग्नि-पत्नी स्वाहा को यह पता लगा तो उन छ ऋषि-पत्नियो मे वह समाविष्ठ हो गई, पश्चात् उसे ही ऋषि-पत्नी समझ कर उसके साथ सभोग करने लगा। स्वाहा ने अग्नि से प्राप्त उसका सारा वीर्य एक कुड मे रख दिया। आगे चलकर स्वामिकार्त्तिकेय का जन्म हुआ। तारकासुर का वध करने के लिए ही इनका अवतार हुआ था। ब्रह्मा ने तारकासुर को अवध्यत्व का वर दे दिया था और कहा था कि इसका वध सात वर्ष की आयु वाला ही बालक कर सकेगा। इस कारण जन्म के पश्चात् सात दिन की अवधि मे ही इसने तारकासुर से युद्ध कर उसका वध कर दिया था। महाभारत मे तारकासुर के साथ महिषासुर का भी वध इसने ही किया था। इसकी पत्नी का नाम देवसेना था।

पर्याय—अगनीभू, आसुतरेस्वर (श्वर), उमाकुमार, क्रतकाकुमार, क्रौचार, खटमातर, खटमुख, गुह, गगासुत, चखबारह, चखदेव, छमा, तारकारि, द्रढक, परभ्रति, प्रखतवाह, ब्रह्मचार, भूरिअक्ष, महासेन, मोररथ, रुद्रात्मज, विसाख, सरभू, सिखडी, सुकुमार, सेनानी।

रू भे—स्यामकारतक, स्यामकारतिक, स्यामकारतिकेय, स्वामिकारितिक।

स्वामीद्रोह—स पु [स स्वामिन्+द्रोह] स्वामी या मालिक के प्रति विद्रोह, वलवा।

रू भे—सामद्रोह, सामीद्रोह, स्यामद्रोह, स्यामीद्रोह, स्वामिद्रोह।

स्वामीद्रोही—वि [स स्वामिन्+द्रोह+ई प्रत्य] स्वामी या मालिक के विरुद्ध, विद्रोह करने वाला, स्वामी के विरुद्ध विद्रोह-कर्त्ता व्यक्ति।

रू भे—सामद्रोही, सामीद्रोही, स्यामद्रोही, स्यामीद्रोही, स्वामिद्रोही।

स्वामीधरम—स पु [स स्वामिन्+धर्म] स्वामि के प्रति वफादारी, स्वामीभक्ति।

रू भे—सामधरम, साभधरमाई, सामधरम्म, सामध्रम, सामध्रम्म, सामिधरम, सामिधरम्म, सामिध्रम, सामिध्रम्म, सामीधरम, सामीधरम्म, सामीध्रम, सामीध्रम्म, स्यामधरम, स्यामध्रमाई, स्यामधरम, स्यामधरम्म, स्यामध्रम, स्यामध्रम्म, स्वामिधरम, स्वामिधरम्म, स्वामिध्रम, स्वामिध्रम्म, स्वामीधरम्म, स्वामीध्रम, स्वामीध्रम्म।

स्वामीधरमी—स पु [स स्वामिन्+धर्म+ई प्रत्य] १ स्वामी के प्रति वफादारी रखने वाला, स्वामीभक्त।

२ स्वामिभक्ति, स्वामी के प्रति वफादारी।

रू भे—सामधरमी, सामधरमौ, सामधरम्मी, सामध्रमी, सामध्रम्मी, सामिधरमी, सामिधरम्मो, स्यामधरमाई, स्यामधरमी, स्यामधरम्मी, स्यामध्रमी, स्यामध्रम्मी, स्वामिधरमी, स्वामिधरम्मी, स्वामिध्रमी, स्वामिध्रम्मी।

स्वामीधरम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

स्वामीधरम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्वामीध्रम—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

स्वामीध्रमी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्वामीध्रम्म—देखो स्वामीधरम' (रू भे)

स्वामीध्रम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्वागत—स पु [स स्वागत] १ अगुवानी, अभिनदन।

उ०—जाळ खेजडा झाडखा, झट खनै बुळा स्वागत करै। मरु दातार देव वना विच, छाय सुला विपता हरै।—दसदेव

२ उक्त अवसर पर पूछा जाने वाला कुशल-मगल।

३ किसी के आने के बाद उसकी की जाने वाली आवभगत, खातिरी।

उ०—ती नू देखता ही लुगाई ऊठी, गरम जळ स हाथ पग धुलाया, आगत स्वागत करण लागी।—जैमौ खाय तैसी बुद्धि री वात

४ किसी के विचारो आदि को मान्य करने की क्रिया या भावना।

५ शकुनि राजा का पुत्र, एक राजा।

रू भे—सवागत, सुआगत, सुवागत।

स्वात—स पु [स] १ कश्यप एव ब्रह्मधना के पुत्रो मे से एक पुत्र राक्षस।

२ देखो 'स्वाति' (रू भे) (अ मा)

उ०—१ पथो एक मदेसडउ, लग ढोलइ पीहचाइ। निकसी

म्हूँ किणी भाव फिटक मैं नी ग्रावतौ। मारधा ईं छोटतौ। पण उणरा भाग कै वौ डोकरी री इज स्वाग लायौ।

—फुलवाडी

२ कोई वहाना बनाकर दूसरो को भ्रम मे डालने या ग्रपना काम निकालने के लिए धारण किया जाने वाला भूठा रूप।

उ०—राईको ऊचौ मूटौ करनै जोयौ। देखता ईं तुरत पिछाणग्यौ कै ग्रौ निस्चै कोई भाड है। पै'ला तौ लुगाई रौ वेम बरनै ग्रायौ। दाळ नी गळी तौ ग्रवै दूजी स्वाग लायौ। —फुलवाडी

क्रि प्र—करणौ, लाणौ।

३ ढोग, ग्राडम्बर।

उ०—१ मेठानै तौ लडण सारू मिस चाहीजतौ हौ। व्याव री वात घणी धकै नी वधै इण वास्तै सेठ लडण रौ तुरत स्वाग रच लियौ। सेठाणी री माजनौ पाडता कैवण लागा—थैं तौ ग्रा इज चावौ कै म्है मर जावूं तौ पाप कटै।—फुलवाडी

उ०—२ उणी भात थैं मिनख लुगाया रा तोख उठावौ, वारा सू प्रीत करण री स्वाग रचौ। प्रीत करण सारू तौ थारी मूडी घणौ वळै ग्रर प्रीत रौ जोखौ उठाता माईत मरै। ग्रौ किण रै घर रौ न्याव।—फुलवाडी

क्रि प्र—रचणौ।

४ देखो 'साग' (रू भे)

स्वागी—वि—१ ढोगी।

उ०—स्वागी सव समार है, साधु सोध सुजाण। पारस परदेसा भया, दादू बहुत पखाण।—दादूवाणी

२ नकल करने वाला, नकलची।

३ वहुरूपिया।

स्वात, स्वाति—स पु—१ ग्रपना ग्रत, मृत्यु।

२ मन, ग्रत करण।

३ देखो 'स्वाति' (रू भे) (ग्र मा)

उ०—१ तव कीति स मोर भगौर करै, घन वूठा तूठा दोख हरै। सुख सारग स्वाति जिसि पपियै, मुखि मीठी वाणी सदा जपियै।

—गोकळजी

उ०—२ स्वाति वूद वुघवत सरजिया, वाणी जौति नीर वाखांण। कीमति नारी तणा गहणा कजि, चाहि लिया ग्रमज चहूवाण।

—महाराजा छतरसिंघ रौ गीत

स्वान—स पु [स श्वान] १ कुत्ता।

उ०—१ करै चाड पर काचडा, ग्रठी उठी नू ईख। पगविच हाडक परछिया, तिण सू स्वान सरीख।—वा दा

उ०—२ वदियौ स्वान वनचरा, नहिं लाज निहारै। मुख भख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै।—सू प्र

२ दोहा नामक छद का एक भेद जिसमे २ गुरु ग्रौर ४४ लघु होते है।

३ छप्पय का एक भेद जिसमे ५६ गुरु, ४० लघु कुल ९६ वर्ण व १५२ मात्राएँ होती है।

[स स्वान] ४ शब्द, ध्वनि, ग्रावाज। (डि को)

उ०—भवानी नमौ कच्छपी स्वान भामा, भवानी नमौ ऐन ईमान ग्रासा। भवानी नमौ व्योम गगा वलच्छा, भवानी नमौ चेतना देन दच्छा।—मे म

वि—क्रूर। ꠶ (डि को)

रू भे—सुग्रान।

स्वाननिद्रा—स स्त्री—थोडे से खटके या ग्राहट मे खुलने वाली निद्रा, हल्की नीद, ग्रल्पनिद्रा।

स्वाम, स्वामि—देखो 'सामी' (रू भे)

उ०—१ रति रयण सुदि नर नारि रामति गाळि प्रमदति गावही, सुख गान दिन निम स्वाम मगळ वैण चग वजावही।—रा रू

उ०—२ वीनति एक करू मोरा स्वाम, द्यौ मोहि मुगतिपुरी कौ धाम। किसकै हरि हर विनकै राम, समयसुदर करै जिनगुण ग्राम।—स कु

उ०—३ दियै गुण निम्मल मुत्तियदाम, सेवु मन सुद्ध तिकौ हिज स्वाम। सुरासुर सरव करै जसु सेव, दियै सुख वछित रिखभदेव।

—ध व ग्र

स्वामिकारतिक, स्वामिकारतिकेय—देखो 'स्वामीकारतिकेय' (रू भे)

स्वामिद्रोह—देखो 'स्वामीद्रोह' (रू भे)

स्वामिद्रोही—देखो 'स्वामीद्रोही' (रू भे)

स्वामिधरम—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

स्वामिधरमी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

उ०—तौ सू दूजा नू पण चाहना स्वामिधरमी जोव देखणी री हीवै।—नी प्र

स्वामिधरम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

उ०—ठावै हम ठक्कुर सुकुळ ठीक, नोकरी चहत नजदीक नीक। सुभ स्वामिधरम्म सेवक सुसील, ग्रनुसरन ग्रसुर ईमान ईल।

—ऊ का

स्वामिधरम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्वामिध्रम, स्वामिध्रम्म—देखो 'स्वामीधरम' (रू भे)

स्वामिध्रमी, स्वामीध्रम्मी—देखो 'स्वामीधरमी' (रू भे)

स्वामी—देखो 'सामी' (रू भे)

उ०—१ गज तजता पुळिया गिणै, स्वामी कासिम सग। दळ भगौ दिल्लीस रौ, जाणै परवळ जग।—व भा

उ०—२ स्त्री पुत्र जगाय लक्ष्मी रा वचन कहिया। तठै स्त्री वोली—ग्रेतौ कारज नही करौ तौ ग्रेती दिहाडी खाता क्यौ छूटोला। पाछै पुत्र कही—हू धन्य छू, म्हारी सरीर स्वामी रै ग्ररथदेव रै काम ग्रावै।—वैताळ पच्चीसी

स्वामीकारतिक, स्वामीकारतिकेय—स पु [स स्वामिकार्त्तिकेय]

२ मधुर, मीठा।

३ मनोहर, प्रिय।

४ स्वादिष्ट चीजें खाने का लोभी, चट्टू।

अल्पा,—स्वादियौ।

स्वाधिस्ठाण—स पु [स स्व+अधिष्ठान] कुडली के ऊपर पडने वाले छः चक्रो मे से दूसरा चक्र जिसका रग लाल होता है। इसका स्थान शिश्न के मूल मे माना जाता है। इसके देवता विष्णु माने गये है। (हठयोग)

स्वाधीन—वि [स] १ जो पराधीन न हो, आत्मनिर्भर। (डि को)

उ०—सुकृत लगन **स्वाधीन** सदाई, सदा मगन सुख रासी। सन्मुख सपत लगत अग्नि सी, पराधीन दुख पासी।—ऊ का

२ स्वतत्र, निरकुश। (आजाद)

उ०—राव राय राणं सहित, सकौ थया **स्वाधीन**। या छूटा जग जाळ ज्यौं, जळ विछुट्टा मीन।—रा रू

स्वाधीनता—स स्त्री [स] १ स्वाधीन होने का भाव, आजादी।

२ स्वतत्रता।

स्वाधीनपतिका—सं स्त्री [स] वह नायिका जिसका पति उसके वश मे हो। (साहित्य)

स्वाध्याय—स पु [स] १ वेदो का निरतर अभ्यास करने की क्रिया या ढग।

२ किसी गभीर विषय का भली प्रकार से किया जाने वाला अध्ययन।

स्वापतेय, स्वापतेयक—स पु [स स्वापतेय] धन, दौलत।

(अ मा, ना मा, ह ना मा)

स्वापद—स पु [स श्वापद] १ हिंसक पशु।

उ०—रौद्र घोर भयकर। मनुष्य रहित। अनेक **स्वापद** सहित। किहा इक सिवा फूत्कार। घूहड तणा घू घू सब्दकार। सिंह तणा सिंहनाद। वाघ तणा गुजारव। सूअर तणा घरघरा रव।

—सभा

२ चीता।

वि —हिंसक, भयकर।

स्वाभाविक—वि [स] १ जो स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो, जो आप ही हुआ हो, प्राकृतिक।

उ०—रूप चतुरता माधुरी, **स्वाभाविक** गुण एह। सुमधुर स्वर भासणी, विना चपळता देह।—वैताळपच्चीसी

२ जो या जैसा प्रकृति के या स्वभाव के अनुसार साधारणत हुआ करता हो।

रू भे—सभाविक, साभाविक, स्वभाविक।

स्वायत—स पु—१ सतोष, शान्ति।

उ०—मन परचै विना ध्यान कैसे धरै, त्याग परचै विना **स्वायत** नावै। अरध परचै विना उरध कैसै चरै, नाद परचै विना विंद जावै।—अनुभववाणी

२ देखो 'स्वाति'।

उ०—ब्रह्म आणद मैं पेम विरखा वणी, उलटि वरसाल चहू दिस धारू। **स्वायत** की वूद आकास मैं घर कीया, नाव नग हीर पाया अपारू।—अनुभववाणी

स्वायभु, स्वायभुव, स्वायभू—स पु [स स्वायभुव] एक सुविख्यात राजा जो स्वायभुव नामक पहले मन्वतर का अधिपति (स्वायभुवमनु) माना जाता है। मनुस्मृति नामक धर्म-शास्त्र का कर्ता यही माना जाता है।

स्वार—देखो 'सुवारै' (रू भे)

उ०—१ आज सहेली आगणै, ऊभी अग सुवारि। हरीया साझ'क **स्वार** मैं, सूती पाव पसारि।—अनुभववाणी

उ०—२ साझि सभ **स्वार** क्या करत नर वावरा, वैग भजि वैग हरि दाव आई। दाम हरिराम तन खाक मिळ जाहिगै, चूक सब जाणि जुग चतुराई।—अनुभववाणी

स्वारथ—स पु [स स्वार्थ] १ स्वय का भला या हित सोचने की क्रिया या भाव, मतलब।

उ०—१ एक कहै आपरै, कियौ मत **स्वारथ** कज्जै। एक कहै अणगम, रीत अण प्रीत मु रज्जै।—रा रू

उ०—२ हर राम रु राम गिनै हरसै, जग मैं गुरु निमल मैं दरसै। सुपनै मनसा नहिं **स्वारथ** की, प्रभू प्रारथना परमारथ की।

—ऊ का

२ केवल अपना हित, लाभ।

उ०—१ वेटी कह्यौ—थू समझावै अर म्हैं समझू कोनी, काई थारौ समझावणौ ग्रैडौ ई हे मा! इण भुळावण मैं थारै विचै म्हारै **स्वारथ** वत्तौ है।—फुलवाडी

उ०—२ लुगाया री विणास करिया तौ था मिनखा री पैला विणास व्है जावै, इण वास्तै खुद री **स्वारथ** पूरण सारू थै वानै जीवती राखौ।—फुलवाडी

३ उद्देश्य, प्रयोजन।

रू भे—सवारथ, सुआरथ, सुवारथ, सूवारथ।

स्वारथता—स स्त्री—खुदगरजी, स्वार्थपरता।

स्वारथत्याग—स पु—दूसरो के हित के लिए अपने हित या लाभ को छोडना।

स्वारथी—वि [स स्वार्थिन्] १ अपना मतलव सिद्ध करने वाला, मतलबी, अपना उल्लू सीधा करने वाला, खुदगरज।

उ०—१ घर रा चानणा सारू तौ दीवौ ई घणौ, पण आखी दुनिया मैं उजास छितरावणिया सूरज नै कोई घर री मेडी मैं वद करणी चावै तौ वौ निपट **स्वारथी**।—फुलवाडी

उ०—२ वारी भोळप अर कालो वाता सू कोई **स्वारथी** लोगा री मतलव सरतौ हौ। घरवाळा आपरै नाता रै कारण साथै

वेणी मापणी, स्वात न वरमउ आइ ।—ढो मा

उ०—२ सीप उडेकै स्वात जळ, चकई उडेकै सूर । नवा उडेकै रण निडर, मूर उडेकै हूर, दारूडौ दाखा रौ ।—लो गी

स्वातग–स पु —१ चातक ।

उ०—हिया पीतम परहग्त, स्वातग भई सुभाय । भीर तवै कर ग्रक भर, प्रोहित ऊर लपटाय ।—वगमीगम प्रोहित री वात

२ देखो 'स्वाति' (रू भे)

स्वातज–स पु —मोती, मुक्ता । (ग्र मा)

स्वाति–स पु [स] १ मोती, मुक्ता ।

उ०—रतन मैं राखडी वेणी वासग जडी, सूभरा वाहडी लहक तोडै । स्वाति नौ विदलौ नासिका निरमयौ, ग्राज ग्रारयगन क्रम्न क्रोडै ।—रुकमणी मगळ

२ शुभ माना जाने वाला सत्ताईस नक्षत्रो मे से पन्द्रहवाँ नक्षत्र ।

उ०—१ हाटी जै साहिब मिळइ, यू दाखविया जाइ । ग्राग्या सीप विकासिया, स्वाति ज वरसइ ग्राय ।—ढो मा

उ०—२ नमौ सुक्र सव्या घणी स्रेस्ट सम्मी, नखित्रा तणी पातिसा स्वाति नम्मौ । महालक्ष्मी मात 'धापा' नमामी, नमौ मात रौ तात 'सामुद्र' नामी ।—मे म

३ सूर्य की एक पत्नी का नाम ।

रू भे —स्वात, स्वाति, स्वात, स्वातग, स्वाती ।

स्वातिसुत, स्वातिसुतण, स्वातिसुतन–स पु —मोती, मुक्त ।

स्वाती—देखो 'स्वाति' (रू भे)

स्वाद–स पु [स] १ किसी चीज को खाने या पीने पर रसनेद्रिय को होने वाला ग्रनुभव, जायका ।

उ०—१ जद ग्रा वोली वीरा काचरी रा स्वाद री तौ तिखण मिली हुती तौ खवर पडती । जद ग्रे वोल्या—तीखण काई । जद ग्रा वोली—काचरिया वदारवा नै छुरी न मिली ।—भि द्र

उ०—२ मीठा री स्वाद ग्राया पछै सेठ ग्रागै पाणी ई नी पीयौ । इण भात री मीठौ पाणी पीया ग्रागै पीवण री लत पड जावै तौ ! ग्रौ तौ मारग ई खोटौ ।—फुलवाडी

२ भोजन ।

३ किसी काम वात या चीज मे प्राप्त होने वाला ग्रानद, मजा ।

उ०—१ जद लूकडी वोली—ग्ररै चोवरपण मै तौ वडौ स्वाद है । जद सुमलौ वोल्यौ—थारौ मन हुवै तौ तू लै । म्हारै तौ कोई चाहीजै नही ।—भि द्र

४ सभोग ।

उ०—विभचार माय पायौ विभौ, जाता जुगा न जावसी । नित स्वाद लियौ परनार मैं, याद घणा दिन ग्रावसी ।—ऊ का

५ ग्राराम, सुख, ग्रानद ।

उ०—१ जद मूलजी मूहतौ वोल्यौ—इण चरचा मैं स्वाद न पावोला । मोकळौ कह्यौ पिण मान्यौ नही ।—भि द्र

उ०—२ म्हनै हाल ताई ठा' नी पडी कै ग्रौ हित्यारौ ग्रापरै स्वाद री खातर क्यू जगळ रै जीवा रा प्राण लेवतौ भवै । पण म् मोरै सास इण दुस्ट रै हाथ ग्रावणियौ म्हैं ई कोनी ।

—फुलवाडी

६ रस, ग्रानद ।

उ०—सुगण सुणंज्यौ स्तुतिधरी, परहौ तजौ प्रमाद । वीजै खड वखाणता, सुणता उपजै स्वाद ।—प च चौ

७ इच्छा, कामना ।

उ०—मन वरज्यौ लागै नही, जागै विस्वीया स्वाद । हरीया मन की कीजियै, मन ही मू फरियाद ।—ग्रनुभववाणी

८ ग्रादत, लत ।

९ मीठा, रस ।

१० तत्व, गुणाश, सार ।

वि —स्वादिस्ट ।

रू भे —सवाद, सवादौ, साद, साव, सुग्राद, सुवाद ।

स्वादक—देखो 'सवादक' (रू भे)

स्वादियौ—देखो 'स्वादु' (ग्रल्पा, रू भे)

स्वादिस्ट, स्वादिस्टि–वि [स स्वादिष्ठ] जिसका स्वाद ग्रच्छा हो, जायकेदार ।

उ०—जक्षणी ग्राय प्राप्त हुई । ग्राई हाथ जोडि कही—कीसू ग्राग्या छै ? जोगी कही—इयै विदेसी नू सत्कार कियौ चाहिजै । इतरी ग्राग्या पाय सौ महल रचियौ । नाना प्रकार रा व्यजन रचिया । तीनू स्वादिस्ट यथेच्छा भोजन कराय सुख भुगाया ।

—वैताळपच्चीसी

स्वादी–स स्त्री —दाख, द्राक्ष । (ग्र मा)

वि.—१ स्वाद वाला, स्वादपूर्ण ।

२ स्वाद लेने वाला ।

३ रसिक, रसिया ।

४ हठी, जिद्दी ।

रू भे —सवादी ।

स्वादीलौ–वि (स्त्री स्वादीली) १ स्वादिष्ट, स्वादयुक्त, जायकेदार ।

२ स्वाद लेने वाला, स्वादरसिक ।

स्वादु–स पु [स स्वादु] १ मधुर रस ।

२ गुड ।

३ मीठास ।

४ महुग्रा ।

५ वेर ।

६ दुग्ध, दूध ।

वि —१ स्वादिष्ट, जायकेदार ।

उ०—१ एक दिन राजा रै ग्ररथ कोई तपस्वी महारसायण रौ निदान एक ग्रपूरव स्वादु फळ दीधौ ।—व भा

२ निर्मल, साफ।
३ उज्जवल, उजला।
४ उदासीन, मद, कातीहीन, कमजोर।
५ दोपरहित, निष्कलक।
६ स्पष्ट, साफ।
स पु—१ सफेद रग।
२ चादी, रजत।
३ शख।
४ कौडी।
५ शिव का एक अवतार।
६ पुराणानुसार एक द्वीप।
७ शुक्र ग्रह का एक नाम।
८ स्कन्द का एक अनुचर।
९ सर्पो के आठ कुलो मे से एक तथा इस कुल का सर्प।
१० सफेद घोडा।
११ पुच्छल तारा।
१२ नील व शृ गवान पर्वत के पास के एक पर्वत का नाम।
१३ विराट नरेश का भाई जो भीष्म द्वारा मारा गया था।
१४ विप्रचित्ति नामक असुर का पुत्र।
१५ राम-रावण युद्ध मे राम पक्षीय एक वानर का नाम।
१६ मणिवर एव देवजनी के पुत्रो मे से एक पुत्र, यक्ष।
रू भे—सेत।

स्वेतअजणी, स्वेतअजनी—स पु [स श्वेत+अजनी] अशुभ माना जाने वाला वह घोडा, जिसकी पसलिया श्वेत हो। (शा हो)

स्वेतकुजर—स पु [स श्वेतकुन्जर] ऐरावत का एक नाम।

स्वेतगडक, स्वेतगडकी—स स्त्री [स श्वेत+गडकी] गडक नदी की एक सहायक नदी। (वीरविनोद)

स्वेतगज—स पु [स श्वेत+गज] ऐरावत हाथी।

स्वेतनायक—स पु [म श्वेत+नायक] एक प्रकार का आभूषण विशेप।
उ०— सकलिक स्रवणपीठ स्रत्रणपाल वैंस्टिक हम्तसकलिका पादसकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक मरवहार मध्यनायक ऋस्णनायक नीलनायक पीतनायक स्वेतनायक रक्तनायक व्रतनायक तिम्रनायक चतुस्रनायक त्रिमरनायक • इति आभरणानि।
—व स

स्वेतपक्ख, स्वेतपख, स्वेतपक्ष—स पु [स श्वेत+पक्ष] शुक्ल पक्ष।
उ०—महाराजकुमार स्रीदळपतिजी दिन दिन स्वेतपक्ष चद्रमा री ज्यू परिव्रधवत होता पूरणिमा रै चद्रमा री परिसकळ कळा भरित विभूसित गात्र नीपना छै।—द वि

स्वेतपिगळ—स पु [म श्वेतपिगल] शिव, महादेव।

स्वेतम्रग, स्वेतम्रिग—म पु. [म श्वेत+मृग] एक प्रकार का मृग।

स्वेतरगी—स स्त्री—यश, कीर्ति।

स्वेतवक्त्र—स पु [म श्वेतवक्त्र] स्वामिकार्तिकेय के एक सैनिक अनुचर का नाम।

स्वेतवाहण, स्वेतवाहन—स पु [म श्वेतवाहन] १ अर्जुन का एक नाम।
२ चद्रमा का एक नाम।

स्वेतावर—स पु [म श्वेताम्बर] १ जैन धर्म की दो प्रमुख शाखाओ मे से एक जो श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।
२ उक्त शाखा का अनुयायी।
रू भे—सयवर, सितावर, सेतावर।

स्वेतावरी—वि [स श्वेताम्बरी] जैन धर्म के श्वतेतावर शाखा का अनुयायी।
रू भे—सितावरी, सेतवरी, सेतावरी।

स्वेता—स स्त्री [स श्वेता] १ अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक।
२ स्कंद की अनुचरी एक मातृका का नाम।
३ कश्यप एव क्रोधा के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्री।

स्वेतोदर—स पु [स श्वेतोदर] १ एक पर्वत का नाम।
२ कुबेर का एक नाम।

स्वेद—स पु [स] पसीना।

स्वेदज, स्वेदज्ज—स पु [स] पसीने से उत्पन्न होने वाला जतु।
उ०—अडज्ज स्वेदज्ज जग उद्भिज्ज, माया सव तूझ स भूलव मुज्झ। स राम पडद्दी आडी सूह, जहा कुछ देखू त्या सब तू ह।
—ह र
रू भे—सेदज।

स्वेदण, स्वेदन—स पु—पसीना, स्वेद।
उ०—भूरं मुखडै पर स्वेदण कण भारी, पहुची पोळछ में प्रीतम री प्यारी। नाचै खेलावण मेलावण नाही, जोवण जोगी वा वेळा जग माही।—ऊ का

स्वै—वि—अपना, निज का।

स्वैरी—वि [स स्वैरिन्] (स्त्री स्वैरिणी) १ व्याभिचारी।
२ दुराचारी, बदचलन।

रैवरणी चावता ग्रर कुलालची ग्रापरै लालच सारू ।—फुलवाडी

२ देखो 'सारथी' (रू भे)

उ०—लकाळ सेवग तूझ लागौ, भ्रात लिछमरण खळा भागौ ।
पतीकुळ स्वारथी पागौ, करण ग्रसह निकद ।—र ज प्र

रू भे —सवारथी, सारथि, सारथी, सुग्रारथी, सुवारथी ।

स्वारै—देखो 'सुवारै' (रू भे)

स्वाल—देखो 'सवाल' (रू भे)

उ०—१ जवनपती जारिणयौ । हेक इण वात हरक्खै । महाराजा 'ग्रभमाल' स्वाल सुण ग्रौर न ग्रक्खै ।—रा रू

उ०—२ मती विचारै राण रा स्वाल माथै उदैपुरा वीच माही, वेर लेण हाल माथै हाकिया व्रहास । माटीपणा स्याल मावै छत्रौ ग्रायौ देवगढा वेरिमाल माथै वियौ 'माल', भैरूदाम ।

—भैरूदास सादू रौ गीत

स्वालक—देखो 'सवाळख' (रू भे)

स्वालकपट्टी, स्वालखपट्टी—देखो 'सवाळखपट्टी' (रू भे)

स्वास–स पु [स श्वास] १ एक रोग विशेप जिसमे सास बहुत जोर-जोर से चलता है, दमा ।

उ०—हिरणा न मावै हियै, मडवौ दीठा स्वास । वाघ घणा मिळ वीटिया, तौ पिण तिल नह त्रास ।—वा दा

२ देखो 'सास' (रू भे)

स्वासकुठार–स पु [श्वासकुठार] ग्रायुर्वेद की वह रसौषध जो श्वास रोग के मरीज को दी जाती है ।

स्वासरिण, स्वासणी—देखो 'सवासणी' (रू भे)

उ०—भाइ सहु हूं भीर, गुणी जन कीरति गावै । स्वासरिण द्यै ग्रासीस, सामरै रह्यौ सुहावै ।—ध व ग्र

स्वासा–स स्त्री [स श्वासा] दक्ष प्रजापति की एक कन्या ।

स्वास्थ्य–स पु—निरोगता, तदुरुस्ती ।

स्वाहा–स स्त्री—स्वायभुव मन्वन्तर के दक्ष एव प्रसूति की एक कन्या जो ग्रग्नि की पत्नी थी ।

वि वि—इसने ग्रपने पूर्वायुष्य मे ग्रधिक तप किया जिसके कारण देवो को हवि भाग पहुचाने का शुभ कार्य इसको सौपा गया । ग्रग्नि से इसका पावक, पवमान एव शुचि नामक तीन पुत्रो एव स्वारोचिपमनु नामक मन्वतराधीश राजपुत्र उत्पन्न हुग्रा । एक वार इसने सप्तर्पियो की पत्नियो का रूप धारण कर ग्रग्नि से सभोग किया जिस कारण इसे स्कद नामक पुत्र उत्पन्न हुग्रा । ग्रागे चलकर स्कद ने ग्रपनी माता को ग्राशीर्वाद दिया कि तुम समस्त प्राणी मात्र के लिए पूज्य रहोगी एव ग्रग्नि मे ग्राहुति देते समय लोग स्वाहा कह कर तुम्हारा नाम लेगे ।

२ वैवस्वत मन्वतर के वृहस्पति एव तारा की एक कन्या जो वैश्वानर ग्रग्नि की पत्नी थी ।

३ माहिष्मती के नील ध्वज राजा की पुत्री जो ग्रग्नि की पत्नी थी ।

वि—जो जलाकर नष्ट कर दिया गया हो ।

२ जिसका पूर्णतया नाश या ग्रत कर दिया गया हो ।

ग्रव्य—एक शब्द जिसका प्रयोग यज्ञ मे ग्राहुति देते समय मत्रो के ग्रत मे किया जाता है ।

स्वाहाग्रसण, स्वाहाग्रहण–स पु [स स्वाहा+ग्रसन] देवता ।

(डि को)

स्वाहापत, स्वाहापति, स्वाहापती–स पु [स स्वाह +पति] ग्राग, ग्रग्नि । (ग्र मा, ह ना मा)

स्विच–स पु [ग्र] विद्युत-प्रवाह को सयुक्त या ग्रसयुक्त करने का यत्र ।

स्विचवोरड–स पु [ग्र] वह काष्ठफलक जिस पर स्विच ग्रादि लगाये जाते हैं, सयुक्तफलक ।

उ०—उण ग्रापरै हाथ सू कमरौ वद कर दियौ—वोली, रोसनी घणी तेज है । उण स्विचवोरड रै कानी देख'र तेज रोसनी वद करदी ग्रर मदरी सोसन्या रोसनी जगा दी ।—तिरसकू

स्वीकार–स पु [स स्वीकार] १ ग्रगीकार, मजूर, कवूल ।

उ०—सोही स्वीकार करि गौळवाळ री दोही दुहिता नू साथ लेर राजकुमार देवसिह ऊमरथूणी ग्राइ पिता हू प्रच्छन्न ग्रापरी प्राणप्रिय छोटी कुमराणी गोडि मदनावती ।—व भा

२ रजामदी ।

स्वीकारणौ, स्वीकारवौ–क्रि स—ग्रगीकार करना, कवूल करना, स्वीकार करना ।

उ०—जद ग्रैनी ग्रापा री दोना री है, ज्यू कै ग्रा ग्रापरा मूडै सू स्वीकारै, फेर एकलौ धणियाप लगावणौ खुदगरजी है ।

—एक वीनणी दौ वीन री वात

स्वीकारणहार, हारौ (हारी), स्वीकारणियौ—वि० ।

स्वीकारिग्रोडौ, स्वीकारियोडौ, स्वीकारचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

स्वीकारीजणौ, स्वीकारीजवौ—कर्म वा० ।

स्वीकारियोडौ–भू का कृ—ग्रगीकार किया हुग्रा, कवूल किया हुग्रा, स्वीकार किया हुग्रा ।

(स्त्री स्वीकारियोडी)

स्वीकृति–स स्त्री [स स्वीकृति] मजूरी, रजामदी ।

स्वेच्छा–स स्त्री [स] ग्रपनी इच्छा ।

स्वेच्छाचार–स पु [स] ग्रपनी इच्छानुसार कार्य करने की क्रिया, ग्रवस्था या भाव ।

स्वेच्छाचारी–वि [स] मनमानी करने वाला, निरकुश ।

स्वेत–वि [स श्वेत] १ धवल, सफेद ।

उ०—वूठौ सार मेघ ग्रत वूठौ, जळरत खूठौ जुवौ जुवौ । स्वेत नीर वहतौ मर साभर, हमकै भाद्रवि लाल हुवौ ।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

किया, तद राव जोधैजी मदत री हकारो भरियो नही ।
—द दा.

उ०—२ भुगानै री वेटी सुखली, पूरै पनरा वरसा री जुवान, व्याह रै जोग । पण कठै परणावै । काग नै देवै क मोर नै ? छोरो तो लाधै नही । ईं घर सू माख री हकारो कुण भरै । कनळ करणिया सू कुण नी कतरावै ।—दसदोख

उ०—३ दोनू वा हुकम सू हकारो दियो अर ढाळ्या रै घर रो गेलो लियो ।—दसदोख

२ देखो 'हुकार' (अल्पा; रू भे)

उ०—हराम खोरा नू नैडा आवण देवो । जाहरा तीर-वह माहे आसी, ताहरा म्हे हकारो करसा ।—राजा नरसिंघ री वात

हकियोडो—देखो 'हकियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री हकियोडी)

हंगणो, हंगवो–क्रि अ.—मल त्याग करना, टट्टी करना ।

उ०—वो जाट अणू ता मळीच सुभाव री हो । हगनै तारै माळतो ।
—फुलवाडी

हगणहार, हारो (हारी), हगणियो—वि० ।
हगिओडो, हंगियोडो, हग्योडो—भू० का० कृ० ।
हगीजणो, हगीजवो—भाव वा० ।

हगाम—देखो 'हगामो' (रू. भे)

उ०—१ धाम धाम मगळ धवळ, हुए हगाम हलोर । छडक पगारा नीर छित, घुरै नगारा घोर ।—र रू.

उ०—२ लिगन्ना नारेळ लेर देर सावो नको लीधो, सजायै ठिकाणा वेह व्याव का सामान । हगामा होकवा राग रग रा हमेस हुवै, अठी जान वाळी सोभा वणावै आजान ।—वादरदान दधवाडियो

उ०—३ ईसो सूणत पाण कुवरजी मूछा हाथ घालनै राजी हुय-नै कहीयो — हिरणजी ! हिवै हु थाहरै पूठी रखो छु । आप नित्य सदा ही हगांम करो ।—रिसाळू री वात

उ०—४ सुदि फागण माही सरस होळी गोठि हंगांम ।
—सिववक्स पाल्हावत

हगामी–वि. [फा हगाम+रा प्र. ई] १ क्रान्तिकारी, उपद्रवी ।
२ उत्साही, साहसी ।
३ योद्धा, वीर ।
४ हुल्लड मचाने वाला, हल्ला करने वाला ।
रू. भे —हगामी ।

हगामो–स पु [फा हगाम:] १ युद्ध, जग, लडाई ।

उ०—१ तरवार वरछिया री खडाखड लाग रही छै । घोडा पाखा तळ जावै छै । हगामो माच रहियो छै ।
—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ राड री मोरचै वधी हुई, हगामो हुवो सो महीना नव राड हुई ।—गोपाळदास गौड री वारता

२ क्रान्ति, विप्लव, विद्रोह, उपद्रव ।

उ० —ओर वाहर घोटै हंगामो कियो ।
—सुदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता

३ कोलाहल, शोरगुल, हुल्लड ।

उ०—१ आठों पहर अणद हगामा होकवा । राग रंग रस रीझ अणद अलोकवा ।—सिववक्स पाल्हावत

उ०—२ घोडा दोड रह्या छै । नोकारा हंगांमा हुय रह्यो छै ।
—रा सा स.

४ दगा फसाद, मारपीट, छीना-झपटी ।

उ०—'सो' रै बीच मे किणी इनसपेक्टर नै म्हैं माय घुम'र हगामो कोनी मचावण देवूला ।—तिरसकू

५ सेना, सैन्य-दल ।

उ०—अठो हगामो नगायो गाम माम्हो कूच कियो ।
—महाराजा जयसिंह री वारता

६ जन-समूह, भीड, मेला ।

उ०—१ घर उठै दिन पाच कुवरसी टिकीयो । सो ज्यु ही तो भुजाई हुवै, ज्यु ही वळगुळै । लोक आय भेळो हुवो । केई दवण नु आवै । कई मागण नु आवै । सो वडो हंगामो लाग रह्यो छै ।
—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ जिण नु कठै ही मिळै नही नु उण वखत भुजाई लै जलाल रो रहवास आवै सो मलिया भोजन जीमै । वडो हगामो लागियो रहै ।—जलाल वूवना री वात

७ धूम-धाम ।

उ०—फेर तीसरे वरस रो स्रावण आवियो । गोठा रो हगामो लाग रहियो छै ।—कुवरसी सागला री वारता

८ हर्ष, खुशी, आनन्द ।

उ०—हगामा होकवा राग रग रा हमेस हुवै ।
—वादरदान दधवाडियो

क्रि. प्र —करणो, कराणो, मचणो, मचाणो, हुणो ।
रू. भे —हगामी, हिंगामो ।
मह.—हगाम, हगाम ।

हगाडणो, हगाडवो—देखो हगाणो हगावो' (रू भे.)
हंगाडणहार, हारो (हारी) हगाड़णियो—वि० ।
हंगाडिओडो, हगाडियोडो, हगाड्योडो—भू० का० कृ० ।
हंगाडीजणो, हगाडीजवो—कर्म वा० ।

हगाडियोडो—देखो 'हगायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री. हगाडियोडी)

हगाणो, हंगावो–क्रि स. [हगणो क्रिया का प्रे. रू] मल त्याग करने के लिए प्रवृत्त करना, टट्टी कराना ।
हगाणहार, हारो (हारी), हगाणियो—वि० ।
हंगायोडो—भू० का० कृ० ।

हं

हं—देवनागरी वर्णमाला का तेंतीसवां व्यञ्जन (अंतिम वर्ण) जो उच्चारण तथा भाषा विज्ञान की दृष्टि से कण्ठ्य-घोष, महाप्राण तथा ऊष्म माना जाता है।

हंऊडौ-स. पु —कूए मे पत्थर तोडने का लोहे का बना एक भारी औजार।

हंकणौ, हंकबौ—देखो 'हकणौ, हकबौ' (रू. भे.)

उ०—की हूंवै तूंवा बाधिया, सूमा हंके सत्थ। नर डूबै वहती नदी, सायर तरण समत्थ।—बा. दा.

हंकणहार, हारौ (हारी), हंकणियौ—वि०।

हंकिग्रोड़ौ, हंकियोडौ, हंक्योडौ—भू० का० कृ०।

हंकीजणौ, हंकीजबौ—भाव वा०।

हंकरणौ, हंकरबौ—देखो 'हाकरणौ, हाकरबौ' (रू. भे)

हंकरणहार, हारौ (हारी) हंकरणियौ—वि०।

हंकरिग्रोडौ, हंकरियोडौ, हंकरचोडौ—भू० का० कृ०।

हंकरीजणौ, हंकरीजबौ—भाव वा०।

हंकराडणौ, हंकराडबौ—देखो 'हंकराणौ, हंकराबौ' (रू भे)

हंकराडणहार, हारौ (हारी), हंकराडणियौ—वि०।

हंकराडिग्रोडौ, हंकराडियोडौ, हंकराडचोडौ—भू० का० कृ०।

हंकराडीजणौ, हंकराडीजबौ—कर्म वा०।

हंकराडियोडौ—देखो 'हंकरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हंकराडियोडी)

हंकराणौ, हंकराबौ–क्रि. स 'हाकरणौ' क्रिया का प्रे रू १ स्वीकार कराना, स्वीकृत कराना।

२ मानने के लिए मजबूर करना, मनवाना, कबूल कराना।

३ किसी को कोई कार्य करने के लिए राजी कर लेना, सहमत कर लेना।

उ०—लोगा थर पेडा पचा सागै लड-भिड'र आछी रडका काढी। नो'रा कढाया, चिणी री सीरौ'र चिणा-चावल हंकराया।—दसदोख

४ मन मे छिपी या गुप्त बात को उगलवा लेना।

हंकराणहार, हारौ (हारी), हंकराणियौ—वि०।

हंकरायोडौ—भू० का० कृ०।

हंकराईजणौ, हंकराईजबौ—कर्म वा०।

हंकराडणौ, हंकराडबौ, हंकरावणौ, हंकरावबौ—रू० भे०।

हंकरायोडौ–भू का. कृ —१ स्वीकार कराया हुआ, स्वीकृत कराया हुआ २ मानने के लिए मजबूर किया हुआ, मनवाया हुआ, कबूल कराया हुआ ३ किसी कार्य को करने के लिए राजी किया हुआ, सहमत किया हुआ ४ गोपनीयता प्रकट कराया हुआ।

(स्त्री हंकरायोड़ी)

हंकरियोड़ौ—देखो 'हाकरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. हंकरियोडी)

हंकाड़णौ, हंकाडबौ—देखो 'हंकाणौ, हंकाबौ' (रू भे.)

हंकाडणहार, हारौ (हारी), हंकाडणियौ—वि०।

हंकाडिग्रोडौ, हंकाडियोडौ, हंकाडचोडौ—भू० का० कृ०।

हंकाडीजणौ, हंकाडीजबौ—कर्म वा०।

हंकाडियोडौ—देखो 'हंकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. हंकाडियोडी)

हंकाणौ, हंकाबौ—देखो 'हंकाणौ, हंकाबौ' (रू भे)

हंकाणहार, हारौ (हारी), हंकाणियौ—वि०।

हंकायोडौ—भू० का० कृ०।

हंकाईजणौ, हंकाईजबौ—कर्म वा०।

हंकायोडौ—देखो 'हंकायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री हंकायोडी)

हंकार—देखो 'ग्रहंकार' (रू. भे)

उ०—१ दादू धरती व्है रहै, तज कूड कपट हंकार। साईं कारण सिर सहे, ता को प्रत्यक्ष सिरजनहार।—दादूवाणी

उ०—२ सतगुरु वचन बाण सत लागा, मोहा जाळ नींद माहु जागा। काम क्रोध मोह लोभ हंकारा, बोध खडग ले सबी सघारा।—स्रीसुखराम जी महाराज

२ देखो 'हुंकार' (रू. भे.)

हंकारणौ, हंकारबौ–क्रि स —१ स्वीकार करना, स्वीकृत करना।

उ०—लिगतौ नही सभाव, जीवडौ वस रै सारै। माण राखणौ रूप, वसत नो'रा हंकारै।—नारी सईकडौ

क्रि अ —२ किसी कार्य को करने के लिए राजी होना, सहमत होना।

३ मानने के लिए मजबूर होना।

४ मन मे छिपी या गुप्त बात उगल देना।

हंकारणहार, हारौ (हारी), हंकारणियौ—वि०।

हंकारिग्रोडौ, हंकारियोडौ, हंकारचोडौ—भू० का० कृ०।

हंकारीजणौ, हंकारीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

हंकारियोडौ–भू. का. कृ —१ स्वीकार किया हुआ, स्वीकृत किया हुआ. २ किसी कार्य को करने के लिए राजी हुवा हुआ, सहमत हुवा हुआ ३ मानने के लिए मजबूर हुवा हुआ ४ मन मे छिपी या गुप्त बात को उगला हुआ।

(स्त्री हंकारियोडी)

हंकारौ—१ देखो हुंकारौ' (रू भे.)

उ० —१ पीछे उण भाय जोधपुर जोधैजी नूं समाचार मालम

हंडुळाहट—देखो 'हिंडळाट' (रू. भे.)

उ०—आवादा नर ईत, फिलै हंडुळाहट भूला। जमी नोख गुल-जार, फवै सुव्रण मय फूला।—सू. प्र.

हडो–स पु—१ मिट्टी या धातु का बना जल पात्र। (जयपुर)

२ देखो 'हाडो' (रू. भे.)

३ देखो 'हाडी' (रू भे)

हणू—देखो 'हनुमान' (रू. भे.)

हंणे—देखो 'हणा' (रू. भे)

उ०—बिछैरी छै हंणे तो हूं फेरा छा। हिडोकै साल चराय पछै मुहड़ै आगै आण फेरीस।—राठोड रिणमल खावडियै री वात

हंत–अव्य.—१ दुख या खेदजनक दशा मे बोला जाने वाला अव्यय शब्द, हाय, ओह।

उ०—१ होय सबद हा हंत, पड पुढकर भयकर। कर हूता घर काम, नाख थावै नारी नर।—साहिबो सुरताणियो

उ०—२ मेरखान भर समर, कहर परगे घर कदळ। लोथ लोथ ऊवग, गरा भिडजा गज तडळ। दंत कुळी अगुळी, मस्थ पग हत्थ निराळा। अत तत्र विख्युरी, हंत दाढाळ हठाळा। रिव सेख महूरत एक रहि, ईख वेर वै भाव री। फुरमाय हाय गज फेरियो, वीती लज नवाब री।—रा. रू.

२ आश्चर्य सूचक शब्द।

३ उद्दीपक या उत्तेजक दशा मे वोला जाने वाला अव्यय शब्द।

उ०—आधा चारण खावका, वीडी मौज वटत। दूरा केम दका-ळता, हूचकता भड हंत।—वी. स.

४ आशीर्वचनात्मक सौभाग्य सूचक शब्द।

५ दया व रहम सूचक शब्द।

६ देखो 'हूत' (रू. भे)

उ०—राजा राकसणी री जटा माहै विमासै छै। म्हारी अकल चूक जु गगाजी रै कठ मरण हुवै हत तो मुगति जावंत।—चौवोली

हतकार–स स्त्री.—पितरो की तृप्ति के लिये ब्राह्मण अथवा जोशी को दी जाने वाली रोटी या रोटियाँ।

रू. भे—हतकार।

हता—देखो 'हूंत' (रू. भे.)

उ०—१ तद राणी कही, थानै जै वास्तै बर्म राखिया हता सु विद्या सीखी क नही।—चौवोली

उ०—२ अठै खोखर रा हेर हेता हीज।

—खोखर छाडावत री वात

हंतो—१ देखो 'हूंतो' (रू भे.)

उ०—१ तद कुवर फूलमती नु हाथ पकड अर फेरा लै नै परणीज अर उठै मोगवी। तैसो अै राकस री डर री मारी सकोचीज अर रही हतो तद कुवर रो हाथ लागो तोसु फूल गई।—चौवोली

उ०—२ उठै एक रोही हंतो तठै रोही माहै एक सूयार घर वासी-दार रहे।—चौवोली

२ देखो 'हाती' (रू. भे.)

हतोया—देखो 'हूता' (रू. भे.)

उ०—तठै ठकुरी साह उवा दिनै पाच सव जिहाज री जोखम लीयो हतो। सु काई वाव वाजी, तैसू जिहाज कही पसवाड़ै जाय नीस-रीया। जद जेरै जिहाज हंतोया, जिकै ठकुरै पासै आया।

—ठाकुरै साह री वारता

हंतोगत, हतोगति–स. स्त्री.—कृपा, दया, अनुग्रह।

(अ मा; हृ. ना मा.)

हंतो–वि. [स. हतृ] (स्त्री. हती) १ मारने वाला, वध करने वाला।

२ देखो 'हूतो' (रू. भे)

उ०—१ राजा रै मछ तेल करावणो हतो। तद नदी माहै जाळ नाखीयो।—चौवोली

उ०—२ ऊभो राहा सीस भांण जेतै अत ऊगो, अनोखा अदग गोखा पूगो आसमान। भूरो जमा काम जोगो हतो वेढीगारो भूप, जसै काम काम आयो जाणीयो जिहान।—चावडदान महड

हंद—देखो 'हद' (रू भे)

हंदइ, हदा–अव्य.—षष्टी विभक्ति का चिन्ह, जो सम्बन्ध-सूचक होता है।

उ०—१ पीहर-सदी डूमणी, ऊंमर-हंदइ सथ्थ। मारवणी नू तत-मद्द, कहि समझावर कथ्थ।—ढो. मा.

उ०—२ हुता सज्जण-हीयडै, सयणा-हंदा हत्त। जउ मोहणो साचइ होअइ, सोहणो वडी वसत्त।—ढो. मा

उ०—३ जोर दिखायो साह रो, फोर घरै प्रसताव। घर घर हदा माझिया, कर कर वात द्रढाव।—रा. रू.

उ०—४ अनमता इद्रजीता, अहिनिस रता राम। मन मीता परमारथी हरिजन हंदा कांम।—स्रीहररिामदासजी

हंदी–अव्य—षष्टी विभक्ति के सम्बन्ध सूचक शब्द का स्त्री रूप, की।

उ०—अग अग मझ ऊफणै, जोवण आठो जाम। त्यां हदी तसवीर रो, कलम हुवै नह काम।—वा दा.

हदे, हदै–अव्य—षष्टी विभक्ति का बहुवचनात्मक रूप के।

उ०—१ पो फाटा चालै पछी, मिर आया किरणाळ। नीठ नीठ पहुवै कहै, घोरा हदै ढाळ।—यळवट वत्तीसी

उ०—२ दहू प्रवाडा एक दिन, गो वाको गुजरात। विह हजूर वोलावियो जोधा हदै छात।—रा रू.

रू. भे.—सदै।

हदो–अव्य.—षष्टी विभक्ति का चिन्ह, का।

उ०—१ यळ हदो फूटी रखो, अेवड जाणै आय। सुतर ज जाही करण रो, हूनर ज्या रै हाय।—यळवट वत्तीसी

उ०—२ डाढाळी सूं रूडो लागै, यळवट हदो देस। माऊजी सूं प्यारो लागै, देसाणा रो देस।—अग्यात

हंगाईजणो, हंगाईजवो—कर्म वा० ।

हंगाडणो हगाडवो, हंगावणो, हंगाववो—रू० भे० ।

हंगायोडो–भू का क्र —मल त्याग कराया हुग्रा, टट्टी कराया हुग्रा ।
(स्त्री. हगायोडी)

हंगावणो, हंगाववो—देखो 'हगाणो, हगावो' (रू. भे)

हंगावणहार, हारो (हारी), हगावणियो—वि० ।

हगाविग्रोडो, हगावियोडो, हंगाव्योड़ो—भू० का० क्र० ।

हंगावीजणो, हगावीजवो—कर्म वा० ।

हगावियोडो—देखो 'हगायोडो' (रू भे.)
(स्त्री हगावियोडी)

हगियोडो–भू का. क्र.—मल त्याग किया हुग्रा, टट्टी किया हुग्रा ।
(स्त्री. हगियोडी)

हंगोडो, हंगोडो, हगोरी, हगोरो–वि (स्त्री हगोरी) वह जो वार वार मल त्याग करता हो, जो इस रोग का मरीज हो ।

हचणो, हचवो—देखो 'हिचणो, हिचवो' (रू भे)
उ०—खुचती खुरी रुधिर खीची री, घणा ग्रसुर हंचे घण घाय ।
कुभडा री कुटकै क्रम देतो, गळ-त्रिया ली गोरी राय ।
—कुभा खीची री गीत

हचणहार, हारो (हारी), हंचणियो—वि० ।

हचिग्रोडो, हचियोडो, हच्योडो—भू० का० क्र० ।

हंचीजणो, हचीजवो—कर्म वा० ।

हंचियोडो—देखो 'हिचियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री हचियोडी)

हंज—देखो 'हम' (रू भे)
उ०—पावास री तीजणी, मान सरोवरि हंज। सीह वीलुधा साकळे, ज्यों घण दीसं सभ ।—जाभो

हंजर–वि —मुन्दर, सुरूप, खूबसूरत ।

हजरणो, हजरवो—देखो 'हिजरणो, हिजरवो' (रू भे)
उ०—हजा तमीणो हेत, सर सारो ही डोवियो । सर मे पखी ढेर, नही मु ग्रावि हजरै ।—ग्रग्यात

हंजरियोडो—देखो 'हिजरियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. हजरियोडी)

हंजलोमारू–स पु —१ एक राजस्थानी लोक गीत जो वर वधू के स्वागत मे वर के यहां गाया जाता है ।
२ देखो 'हजामारू' (ग्रल्पा; रू. भे)

हजा–स स्त्री [स. हञ्जे] १ दासी, चेरी ।
२ पति, प्रियतम ।
उ०—हाजी ल्याया पनामारू तुरराजी टाग, वारी घण वारी ग्रो हंजा ।—लो गी.
३ प्रेमी ।
उ०—पेच सुरगी पाघ रा, ढाकं मत घर ढाल । काछी चढ ग्राछी कहू, हजा भीजण हाल ।—वा. दा.
४ लोक गीतो की एक लय ।
क्रि वि.—ढग से, उचित तरीके से ।

हंजामारू–मं पु —१ पति, प्रियतम ।
उ०—सूता हंजामारू सुख भर नींद । इतरै मैं राडको हेलो मारियो जी म्हारा राज ।—लो. गी
२ रसिक प्रेमी ।
उ०—रुपये री देळ हो हजामारू ग्रधोडी छटाक । हे कोई मोहर री देळ म्हारा मदछकिया मोकळी हो म्हारा राज ।—लो. गी.

हंजीरो–मं पु —नाश विध्वंस, तहस-नहस ।

हजो—देखो 'हंजा' (२,३) (रू भे.)
उ०—नाच गा कर निलजता, रच त्रप भूसण रास। मार निजाग मोहियो, हजो ग्रधरे हास ।—वा दा.
२ देखो 'हम' (ग्रल्पा; रू. भे.)
उ०—१ हंजा घरि हजा हुवै, कग्गा कगा विहाय । ऊढाणी घर जल्खडो, नग नीपजै म न्याय ।—जखडा मुखडा भाटी री वात
उ०—२ वतक सरदा घरट हजा तरै है, मारसा रा टोळा भिगोर करै है ।—र हमीर

हझ हझि, हझो—देखो 'हस' (रू भे)
उ०—१ डी भू लक, मराळि गय, पिक-सर एहि वाणि । ढोला एही मारुई, जेहा हझ निवाणि ।—ढो. मा.
उ०—२ दादू हिण दरियाव, माणिक मझेई । टुवी डेई पाण मे, डिठो हझेई ।—दादूवाणी
२ देखो 'हजा' (रू भे)

हटर–म पु [ग्र] १ लम्वा चावुक, कोड़ा ।
२ शिकारी ।

हंडक—१ देखो 'हाडक' (मह; रू भे.)
उ०—ग्रायो मास ग्रसाढ, हंडक लै लारै हुयो ।—भगवानजी रतनू
२ देखो 'हडियो' (मह, रू भे)

हंडवाई—देखो 'हाडी' (रू भे)
उ०—उमादे गुरवाणी उठ ने उन्हो पाणी कियो, सापडी हडवाई धोई ।—पचदडी री वारता

हडिज्जणो, हडिज्जवो–क्रि. ग्र —भ्रमण करना, घूमना ।
उ०—दीसइ विवहचरीय, जाणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो । ग्रप्पाण च कळिज्जइ, हडिज्जइ तेण पुहवीए ।—ढो. मा

हडिज्जियोडो–भू का क्र.—भ्रमण किया हुग्रा, घूमा हुग्रा ।
(स्त्री हडिज्जियोडी)

हडियो–स पु —१ लकडी, धातु या हाथी दात की वनी ग्रफीम रखने की डिविया ।
मह.—हडक ।
२ देखो 'हाडी' (मह, रू. भे)

हडी—देखो 'हाडी' (रू. भे)

३२ रव, ध्वनि। (अनेका.)

३३ सफेद रंग। * (डिं को)

वि.—सफेद श्वेत। *

रू. भे.—हज, हंभ, हसल।

अल्पा —हजो, हभो, हसलउ, हसलो, हसो, हासो।

मह —हसाल।

हसक—स पु. [स. हसक:] १ पैर की अगुली का बिछुवा।

उ०—हसक पाव हसगत, हस हस, असक अथा उदत्त। वाभि नारि कुळ लीक विवुसक, कहत नपुसक कत्त।—ऊ का.

२ नूपुर।

३ देखो 'हिंसक' (रू भे)

हसग–स. पु [स.] ब्रह्मा, विधाता। (ना मा)

हसगत, हंसगति–स स्त्री.—१ ब्रह्मत्व की प्राप्ति, सायुज्य की प्राप्ति।

२ हस के समान सुन्दर धीमी चाल, गति।

उ०—हसक पाव हसगत हस हस, असक अथा उदत। बाभ नारि कुळलीक विवुसक, कहत नपुसक कंत।—ऊ का.

३ एक प्रकार का मात्रिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे २०-२० मात्राएँ होती है।

रू भे.—हसागति।

हसगमण, हसगमणा, हसगमणि, हसगमणी —देखो 'हसगामिणी' (रू भे)

उ०—१ हसगमण अगली अणी, मुहि बोलइ हे मगल चार।

—हीराणद सूरि

उ०—२ प्रीतवनी मुख आगालेजी, मुळकती मोहन-वेल। चतुरा ना मन मोहतीजी, हसगमणी सू करता वहु केल।—जयवाणी

हसगरव्य, हसगरभ–स. पु —एक रत्न विशेष।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरचकात चद्रकात नील महानील इद्रलील सवकर विभकर ज्वर हर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्यणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरव्य पुलक अंक अजन अरिस्ट चितामणि।—व स.

हसगवणी, हसगामणि, हसगामणी, हंसगामिणी, हंसगोणी–स. स्त्री — [स. हसगामिनी] हस के समान सुन्दर धीमी चाल चलने वाली स्त्री, सुन्दरी।

उ०—१ दीठउ आनासागर ममदतणी वहार, हसगवणी अग लोचणी नार। एक भरइ बीजी कलरव करइ, तीजी घरी पीवजै ठडा नीर।

—वी. दे.

उ०—२ छती तू सनी भूपती दच्छ छोणी, गती मत्त मातग तू हसगोणी।—मे म.

वि स्त्री.—हस के समान सुन्दर चाल वाली।

रू भे.—हमगमणि, हसगमणी, हसागमणी, हमीगवणी।

हसड़—देखो 'हसी' (मह; रू. भे.)

उ०—देखो काकाजी! मान जावो। लोगा मे हसड़ मत करावो।

—वरसगांठ

२ देखो 'हस' (मह, रू. भे.)

हसडो—देखो 'हस' (अल्पा; रू भे)

उ०—आसा लूंध उतारियउ, धण कुचुवउ गळाह। घूमइ पडिया हंसडा, भूता मानसराह।—ढो मा.

हंसचर–वि [स. हस=प्राण, जीव] मासाहारी।

उ०—पतीव्रती धारि चौज सकरा ग्रीधरा पोखे, हंसचरां पोखे भरा पत्रा चडी हाम। परी वरै चापा छात सुरा तणो लोक पूगो, धणी 'दूदा' तणो पूगो परम्म रै धाम।

—कुसळसिंघ मेडतिया रो गीत

स. पु.—मोती।

हंसजा–सं. स्त्री. [स] १ सूर्य की पुत्री, यमुना।

२ हस की पुत्री।

हसण–सं. स्त्री.—हसने की क्रिया या भाव, हसी।

रू भे.—हसन।

हंसणो–सं. पु.—हसने की क्रिया।

उ०—भटियाणी रै डावै दै जेड़ी। दोनू एक लखणी। हसणो तो जाणती ई नी।—फुलवाडी

हसणो, हसवो–क्रि अ. [स हसे] १ आनन्द या खुशी के आवेग मे चेहरा खिलना और आंखो मे कुछ फैलाव आकर गले से 'ह-ह-ह-ह' की ध्वनि निकलना, हंसना, खिलखिलाना, ठहाका मारना।

उ०—१ पडै कटि सीरस वीर पठांण, मुद्राचळ चक्र चमू महराण। गुड़ै गिडकध मदंध मुगल्ल, ख्याली रिखराज हंसै खलखल्ल।

—मे म.

उ०—२ हंसती दै ताळी हरखि, कसती लक क्वाण। मद ममती भरिया मदन, जोवन हसती जाण।—सिववक्स पाल्हावत

उ०—३ एकला मिनख सू नी तो हंसीजै नीं रोईजै। कोई वावलो व्है तो वात न्यारी।—फुलवाडी

२ मुस्कराना, मद मद हसना।

उ०—मनि सकाणी मारुवी, खुणसउ राखइ कत। हसतां प्रीमू बीनवड, समळि प्री विरतंत।—ढो. मा.

३ खुश होना, आनन्दित होना।

उ०—सुदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर-पाळ। चद मुळक्कयउ जळ हस्यउ, जळहर कपी पाळ।—ढो. मा

मुहा —१ हसणो-बोलणो=खुशी मे बातें करना, मन की बात कह कर खुश होना, आमोद-प्रमोद करना।

२ हस-हस नै दोवडो हुणो=खूब हसना, हसते हुए लोट-पोट हो जाना।

४ किसी स्थान या वस्तु का सुन्दर लगना, शोभित होना।

उ०—सोई सज्जण आविया, जाह की जोती बाट। थाभा नाचइ

रू. भे.—सदइ, सदउ ।
हफणी —देखो 'हाफणी' (रू. भे)
हवा हवँ–अव्य.—स्वीकृति सूचक अव्यय शब्द, हाँ ।
हम—देखो 'हम' (रू. भे)
उ०—मोरी आदि न जाणत, महियळ धूं वा वखाणत; उरध ढाकिलै तिसूळूं आदि अनादि तौ हम रचीलौ ।—जाभौ
हंवुक–सं पु —४९ क्षेत्रपालो मे से अन्तिम क्षेत्रपाल ।
हंस–सं. पु. [स.] (स्त्री हसणी, हसी) १ बडे वडे सरोवरो या झीलो के किनारे रहने वाला, वतख के आकार का एक सफेद जल-पक्षी । (ह ना. मा)
उ०—१ हस हाल परहरै, वचन पलटै दुरवासा । मह मोरा झड मडै, इद नहि पूरै आसा ।—चौथ वीठू
उ०—२ वोलति मुहुरमुह विरह गमै वै, तिसी सुकळ निमि सरद तणी । हसणी तै न पासै देखै हस, हस न देखै हसणी ।—वेलि
उ०—३ केहर हाथळ घाव कर, कुजर ढिगलौ कीध । हसा नग हर नू तुचा, (अर) दात किराता दीध ।—वा दा
२ सूर्य, भानु, रवि ।
(अ. मा, ना डि. को; ना मा, ह. ना मा)
उ०—१ लोथ वथ्था भिडै सूर पीठाण, राचवा लागौ, वेखै ख्याल हस भी खाचवा लागौ वाज । वैणतार भणका दै मुनिंद्र नाचवा लागौ, कपाळी जाचवा लागौ मुडमाळी काज ।
—सुखदान कवियौ
उ०—२ हेत किरण हरि हस, अग अवतस उजासै । अरत्त हुवा सगि अस्त, उदै सग उदै प्रकासै ।—रा रू
३ शिव, महादेव । (रुद्र)
उ० – गैणरा ऊछाह भूल वारगा रा बाधै गथी । महाभाण रत्था खाग खुराटा माडीस । हस वीर पेखवा तमासा ताळी देदै हत्थी, तत्तथेई थेई करै आहुदै ताडीस ।—करणीदान कवियौ
४ ब्रह्मा । (ह ना मा)
उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विश्व चतुर जुग विधायक । सरवजीव विस्वक्रत ब्रह्मसू, नरवर हस देहनायक ।—वेलि
५ विष्णु के चौबीस अवतारो में से एक । (ना मा.)
उ०—१ तू बलि तू द्विज व्यास, पित्थ हरि हस मुनितर । जरा राख्यौ हय ग्रीव, ध्रुव तू आप धनतर ।—गज-उद्धार
उ०—२ देवी नारद रूप तै प्रस्न नाख्या । देवी हस रै रूप तत ग्यान भाख्या । देवी ग्यान रै रूप तू गहन गीता, देवी क्रस्ण रै रूप गीता कथीता ।—देवि
६ परमात्मा, परब्रह्म, ईश्वर ।
उ०—रमै तू राम जुवा धरि रग, तुं हीज समद तु हीज तरग । अनोअन माय तुहाळो अस, हमै न सताय छतौ थयौ हंस ।
—ह. र

७ विष्णु का एक नामान्तर ।
८ मन ।
उ०—१ सगीत अत सोहती, मुनेस हस मोहती । अनग रग आतुरी प्रिया नचत पातुरी ।—सू. प्र.
उ०—२ विछायत समियान वणिया, तई जरकसि हीर तणिया । सिघ आसण छत्र सोहै, महा जगमग हंस मोहै ।—सू. प्र.
९ जीवात्मा, प्राण ।
उ०—१ घटि घटि घण घाउ घाइ घाइ रत घण, ऊच नीच छिछ ऊछळै अति । पिडि नीपनौ कि खेत्र प्रवाळी, सिरा हस नीसरै सति ।—वेलि
उ०—२ मारयो वाण सरीर मैं, विण साठी विण भालि । जन हरिया मन मरि रह्यौ, हंस गयौ सर हालि ।—अनुभववाणी
उ०—३ अरू सावत राय समेत घोडौ भागौ । सू जादूराय रै हाथी कनै जावतौ पडियौ । पडता घोडै रा हंस गया ।—द दा.
१० शरीरस्थ प्राण वायु ।
क्रिया प्र —उडणौ, जाणौ, निकलणौ, हालणौ
१२ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र जो जीवन पर्यन्त ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता रहा ।
१३ साध्यदेवो मे से एक ।
१४ एक गधर्व विशेप ।
१५ जरासध का एक मत्री ।
१६ रजत, चादी । (अ मा, ह ना मा)
१७ पर्वत, पहाड ।
१८ एक प्रकार का शुभ रग का घोडा । (शा हो)
१९ घोडा, अश्व । (डि को)
२० कामदेव, अनग ।
२१ सन्यासियो का एक भेद, एक सम्प्रदाय विशेप ।
२२ अनिरुद्ध का एक नाम ।
२३ ज्ञानी और भक्त पुरुप ।
२४ शिवदेवो मे से एक ।
२५ वसुदेव एव श्रीदेवा के पुत्रो मे से एक ।
२६ जरासध की सेना का एक राजा जो कृष्ण-जरासध युद्ध मे वलराम के द्वारा मारा गया ।
२७ एक श्रेष्ठ पक्षी जाति जो कश्यप-पत्नी ताम्रा का पौत्र एवं धृतराष्ट्री की संतान मानी जाती है ।
२८ दोहे का एक भेद, जिसमे १४ गुरु और २० लघु होते है ।
२९ प्रथम एक यगण व अन्त मे दो गुरु वर्णो का एक वर्णिक छन्द ।
३० हस के आकार का वनाया जाने वाला प्रासाद जिस पर शृग वना हो ।
३१ एक मत्र विशेप ।

[illegible] करै नै इण मद, अगि आगै आगमन रहै ।—वेली

२ देखो 'हंसगति' (रू. भे)

हंसागमन-सं. स्त्री [सं. हंस+गमन] हंस की चाल ।

उ०—हंसा री निरधार । अनुछ पोरस धर चढ मुड बोलिया—हंसागमन री हाम पुगा ।—मा वचनिका

हंसागमणि, हंसागमणी—देखो 'हंसगामिणी' (रू. भे.)

उ०— [illegible] हंसागमणि, कोमळ दीरघ केस । कचन वरणी कामणी, देखउ आवि निठउ ।—ढो मा.

हंसाइणौ हंसाइबौ—देखो 'हंसाणौ, हंसाबौ' (रू भे.)

हंसाइणहार, हारौ (हारी), हंसाइणियौ—वि० ।

हंसाइग्रोडौ, हंसाइयोडौ, हंसाइयोडौ —भू० का० कृ० ।

हंसाईजणौ, हंसाईजबौ—कर्म वा० ।

हंसाइयोडौ—देखो 'हंसायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. हंसाइयोडी)

हंसाणौ हंसाबौ-क्रि स. ['हंसणौ' क्रि का प्रे रू] १ हँसने के लिए प्रेरित करना, हँसाना ।

२ खुश करना, आनन्दित करना ।

३ शोभित करना, सुन्दर लगने लायक करना ।

४ मजाक कराना, व्यग कराना, चुहलबाजी कराना ।

५ हंसी उडवाना दिल्लगी कराना, परिहास कराना ।

हंसाणहार, हारौ (हारी), हंसाणियौ—वि० ।

हंसायोडौ—भू० का० कृ० ।

हंसाईजणौ, हंसाईजबौ —कर्म वा० ।

हंसाडणौ, हंसाडबौ, हंसावणौ, हंसावबौ —रू० भे० ।

हंसायोडौ-भू का. कृ.—१ हंसने के लिये प्रेरित किया हुआ, हसाया हुआ. २ खुश किया हुआ, आनन्दित किया हुआ ३ सुन्दर लगने लायक बनाया हुआ, शोभित किया हुआ. ४ मजाक, व्यग या चुहलबाजी कराया हुआ. ५ हंसी उडवाया हुआ, दिल्लगी कराया हुआ, परिहास कराया हुआ ।

(स्त्री. हंसायोडी)

हंसारी-सं. पु —एक प्रकार का घोडा । (शा हो)

हंसारूढ-सं. पु [सं. हंस+आरूढ] १ ब्रह्मा ।

सं. स्त्री—२ सरस्वती ।

वि —हंस पर सवार, हंस पर आरूढ ।

हंसाळ-सं पु.—१ अश्व विशेष ।

२ घोडा, अश्व । (डि ना. मा)

३ देखो 'हंसराज' (रू. भे)

४ देखो 'हंस' (अल्पा, रू. भे)

हंसाळू, हंसाळौ-वि —१ हंसी मजाक या मनोरंजन करने वाला, विनोद प्रिय ।

२ खुश मिजाज ।

सं. पु —१ विदूषक, [illegible] ।

२ किसी नाटक या खेल का मजाकिया पात्र (कोमेडियन)

रू भे —हसाळ ।

हसावणौ, हंसावबौ—देखो 'हसाणौ, हसाबौ' (रू. भे)

हसावणहार, हारौ (हारी), हंसावणियौ—वि० ।

हंसाविश्रोडौ, हसावियोडौ, हंसाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

हसावीजणौ, हसावीजबौ—कर्म वा० ।

हसावळी-सं. स्त्री —१ निसाणी छद का एक भेद ।

वि वि.—देखो 'रूपमाळा' ।

[स हस+श्रवली] २ हँसो की पक्ति ।

हसावळी-स पु.—डिंगल का वह गीत जिसमे 'वेलिया' नामक छद मे 'रा' 'रा' शब्द रीति सहित आकर उल्लेखालकार का प्रयोग होता है।

वि. वि.—देखो 'वेलियौ' ।

हसावियोडौ—देखो 'हसायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. हसावियोडी)

हसासण-स. पु —योग के ८४ आसनो के अन्तर्गत एक आसन, जिसमे प्रथम मयूरासन की तरह स्थिर होकर पीछे दोनो पावो के पजों को पृथ्वी मे स्पर्श कराकर स्थिर होना होता है ।

हसासणी स स्त्री यौ [स. हस+आसन+रा. प्र ई अथवा हसासना] सरस्वती, शारदा । (अ मा)

उ०—स्री सारद विधि सुता धरण, वीणा धवलावर । हसासणी हुलास परम बोधक त्रिभुवनपुर ।—केहर प्रकास

हसि—देखो 'हसी' (रू. भे)

उ०—दवँ रद गोट न ओट दकूल, फवँ हसि होठ चढ्या मुख फूल ।—मे. म.

हसियौ—स. पु. —१ लोह-निर्मित अर्द्ध चन्द्राकार ओजार जिससे फसल आदि काटी जाती है ।

२ हाथी के अकुश का अग्र टेढा भाग ।

हसी—स स्त्री —१ राजस्थान में दूध देने वाली गायो की एक अच्छी जाति तथा इस जाति या नस्ल की गाय ।

२ हँसने की क्रिया या भाव, खिलखिलाहट ।

उ०— हसण जोग बात तौ समझ-समझाया पछँ ऊमर मे ईं नी व्है. बाळपणा सागै हसी ई छूटगी ।—फुलवाडी

क्रि प्र.—आणी, करणी, कराणी, निकळणी, होणी ।

३ मुस्कान, मृदुहास्य ।

उ०—मायड वा म्हारी हसी सू घायल होयगी ।—तिरस

४ मजाक, परिहास, दिल्लगी ।

उ०—१ सरै आदमी रोय मारण पर न चाढनै मेलिया—'मैं भूगा माहरा हाथी आमिया अदीठ किया या मु डरा दोवँ । नहीं ती तो म्हानै घी बुराई होसी । ये रावळ रा आदमी धार गया । पवार नु जाय मिळिया । रावळ कठाडियो भी मु पड़ी । यात हँसी

घर हसइ, विलग्ग लागी खाट ।—ढो मा.

क्रि स.—५ मजाक करना, व्यग करना, चुहलबाजी करना।

६ हंसी उडाना, दिल्लगी करना, परिहास करना ।

उ०—पिरोळ माथै पूगा तौ दरवाजौ वद । किला रौ दरवाजौ भाखर रै उनमान ऊचौ माथौ किया मानखा री निवळाई माथै हंसण लाग्यौ ।—ग्रमरचूनडी

मुहा —१ (किणी माथै) हसणौ=किसी की कमजोरी की हसी उडाना, किसी को मजाक वनाना ।

२ हस'र वात टाळणी=किसी विषय या प्रस्ताव की अवहेलना करना । किसी वात को तुच्छ समझ कर उसकी उपेक्षा करना ।

हंसणहार, हारौ (हारी), हसणियौ —वि० ।

हसिग्रोडौ, हसियोडौ, हस्योडौ—भू० का० कृ० ।

हसीजणौ, हसीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

हसणौ, हसवौ, हासणौ, हासवौ—रू० भे० ।

हसन—देखो 'हसण' (रू भे)

हंसपदी, हंसपादी-स. स्त्री. [स हंसपदिका] एक प्रकार की औषधि जिसका क्षुप जलाशयों के पास पाया जाता है । इसे हसराज भी कहते हैं।

हसवाहण—देखो 'हसवाहण' (रू. भे) (डि को)

हसवाहणी—देखो हसवाहणी' (रू भे.)

उ०—हसवाहणी होय, गिरा वाकवाणी गवै । सुरसत सारद सोय, वेधाधी भारती वणै ।—डि. को.

हंसभख-स पु [स हस-भक्षणम्] मौक्तिक, मोती । (ह ना. मा)

हसमगळा-स स्त्री —सगीत मे एक सकर रागिनी ।

हसमाळा-स पु —एक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे प्रथम सगण, फिर रगण और अत मे गुरु होता है ।

हसमुख-वि —प्रसन्न-वदन, विनोदशील, हास्य-प्रिय ।

हसमोती-स पु —शुभ रग का घोडा । (शा हो)

हसरथ-स पु [स] ब्रह्मा । (डि को)

हसराज-स पु —स्वर्णकारो के काम आने वाला एक लोहे का कीला विशेष, जिससे आभूषणो पर खुदाई की जाती है ।

२ देखो हसपदी' ।

हसराजा-स पु —प्राण, जीव।

उ०—तरै रीस आई लाग्वान्, सु कनै भलकौ पडियौ थौ तिकौ काल नै लारै सोलकी राज नू चूकलियौ, सु राज रै घण रै लाग गयौ, सु वात करता राज सोलकी रौ हसराजा उड गयौ ।

—नैणसी

हसल—देखो 'हस' (मह, रू भे) (ना मा)

हसलउ—देखो 'हस' (ग्रल्पा, रू भे)

उ०—मानसरोवर हसलउ रे, जेम करइ भकझोल । तिम साहिब सूं मन मिलयउ रे, करइ सदा कल्लोल ।—वि कु

हंसलिपि, हंसलिवी-स. स्त्री [स. हसलिपि] लिपि विशेष ।

उ०—हसलिवी, भूयलिवी जक्खा तह रक्खसीह बोधव्वा । उड्डी जवणि तुरक्की कीरी, दविडी य सिंघविया । मालविणी नडि नागरि लाडलिवी पारसीय बोधव्वा । तह य निमित्ती अ लिवी, चाणक्की मूलदेवी अ ।—व स

हसली—देखो 'हासली' (रू. भे.)

उ०—थ्रौ लै ए म्हारी सोक कलाली म्हारी हसली गणै राखौ ए ए ग्रावेचो मद छकियौ आलीजौ जीनै थोटी दीज्यौ ए दारूडी ।

—लो गी

हंसलौ—देखो 'हस' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—१ अनइ कालुग्रा किहाडा किसोयरा गगाजला हसला नीलटा हरीग्रडा कछेला भुगरा इस्या तुरगम ।—व स

उ०—२ सावरिया ! तू सरवर म्हे हसला, राम प्यारा रे ! म्है चातक तूं मेह ।—गी. रा.

उ०—३ साधु सदा संयम रहै, मैला कदे न होइ । सून्य सरोवर हंसला, दादू विरळा कोइ ।—दादूवाणी

उ०—४ सोना रा रथ मे वैठ कवूडी रै वहीर व्हैता ई डोकरी रौ हंसलौ उडग्यौ, जाणै उण कवूडी मे ई उण रा प्राण व्है ।

—फुलवाडी

(स्त्री हसली)

हसवस-स. पु यौ [स. हस+वश] सूर्य वश ।

उ०—सीगनेस गिरिजा गिरा, गुरु गिरीस मनाय । हंसवस कुळ कच्छ गुन, वरनूं ग्रथ वनाय ।—शि. व.

हसवडि-स पु.—वस्त्र विशेष ।

उ०—ग्रथ वस्त्राणि—देवदूष्य, देवाग, चीनासुक, पट्टदुकूल, नील-नेत्र, वायगणनेत्र, पाट्ग्र, पट्टहीर, पट्टमाडलि, पचराइग्रा, नरमर-वरव, फूलपगर, जादर, नेत्रपट्ट, धौतपट्ट, राजपट्ट, गजवडि, सुवर-णवडि, हसवडि कालपडि ।—व स

हसवाहण-स पु यौ [स हस+वाहन] १ ब्रह्मा ।

२ देखो 'हसवाहणी' (रू. भे.)

रू भे —हसवाहण ।

हसवाहणी, हसवाहिणी-स स्त्री यौ [स. हस+वाहन] वह जिसकी सवारी हस है, सरस्वती । (डि को)

रू भे हसवाहणी, हमवाहण ।

हसमुता-स स्त्री यौ [स हस+सुता] सूर्य की पुत्री, यमुना ।

हसाई—देखो 'हसी' (रू भे.)

उ०—ठाकरा खखारो करता थका कैयो हू सबरो वाघ' र चाल सू जद लोग हंसाई हुसी ।—दसदोख

हंसागति-वि स्त्री —१ हस के समान सुदर व मद चाल वाली ।

उ०—हंसागति तणौ ग्रातुर थ्या हरि सू, वाघा कृपा जेही वहे ।

सेजइं एकली, हइ हइ दइव म मारि ।—ढो. मा.

उ०—२ हइ रे जी, निलज्ज तू, निकस्यू जात न तोहि । प्रिय विछुडत निकस्यउ नही, रह्यउ लजावरा मोहि ।—ढो. मा.

२ देखो 'है' (रू भे)

उ०—१ पाखडिया ई किउ नही, दैव अवाद्रू ज्याह । चकवीकइ हइ पखडी, रयरिए न मेळउ त्याह ।—ढो मा.

उ०—२ लगन कुसुघउ आपिय पाविय अम्ह घरवोल । जीतइ जारगइ जारगसु मारगसु न हइ तं ढोर ।—जयसेखर सूरि

३ देखो 'हृदय' (रू भे)

उ०—पचाली केसि [ग्रहीनि] तारगी, आरगी सभा मुझारि । तं दु:ख हई थी [नवि] जाइ करता कोडि पुकार ।—नळाख्यान

हइकप—देखो 'हैकप' (रू भे)

उ०—हइकंप हिदूकार घर-घर प्रति हूवउ घरगउ । मिळियइ महप-राइ-कइ, कुण ऊपरइ कधार ।—अ वचनिका

हइमर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—मोटा मुगल्ल मद्दोन्मत्त, अमिळित दियइ अरि आवरत्त । 'कम्मरइ' कोपि कीया कटक्क, हइमरां हीस भड हुइ हक्क ।
—रा ज मी

हइरान—देखो 'हैरान' (रू. भे.)

उ०—चवेल चोग्रा कम्ा मरदन, दरद होइ असमान । प्रिय पोस मास सरीर सोसत, हू भई हइरांन ।—वि कु.

हइवइ–स पु यौ. [स हय+पति] १ राजा, नृप ।

उ०—१ हइवइ अनगइ हाथि, पाडै कवर पचाहरइ । आन्नावळि आरूदतउ, मेळउ हुइ भारथि ।—अ. वचनिका

२ देखो 'हैवै' ।

३ देखो 'हयवर' (रू भे)

उ०—पनर समत अेकारगव पवगरि, पुरिग मागसिरि प्रथम पखि पूंगरि । हठमल हइवइ सउ हथियारै । विढियउ जइन चउथि सिनिवारै ।—रा. ज. मी.

हइवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—हइवर गइवर पाइदळ पुहवि न पारावार । गोरी राउ गिरि आसनउ, गउ गढ गजरगहार ।—अ. वचनिका

हई –१ देखो हय' (रू भे)

उ०—छोगी मिर सोनहरी छत्रगाळ, भळकत सूरज रूप भळाळ । वर्वं खळ लेत नटा जिम वस, हई घट फटत छूटत हस ।—सू प्र.

२ देखो 'है' (रू भे)

उ०—हई हई ! देव किसू करिउ, रत्न ऊदालिउ हत्थि । कालि किसूं कारण हतू, आज अनेरी भत्ति ।—मा. का. प्र

हईअग्रग्रीव—देखो 'हयग्रग्रीव' (रू भे.) (अ मा)

हईइइ—देखो 'हिरदो' (रू भे)

उ०—द्रुपदी नु नचावणहार, ए ब्रिहन्नट कलासिरगगार । अस्ववध एह वीर नकीजइ, अस्व विद्य सबली हरइ हईइइ ।—सालिसूरि

हईइइ, हईडो—देखो 'हिरदो' (रू. भे)

उ०—१ कठ ग्रहण करी रहियइ, हईडइ दीधइ हेलि । तं संघातइ स्या थिकी, नेतना नर रोनि ।—मा का. प्र.

उ०—२ दैवइ लिगिउ तं नवि टलइ, वाउय रहिउ विचारी । धीर धरी धर उरितु, हईडा ! हुयइ म हारि ।—मा. का प्र.

हईदळ—देखो 'हयदळ' (रू भे.)

उ०— जुटे रायसिंघ घटे घरग जोम, रमें भट तेग 'अनावत' रोम । समोभ्रम राजड' रूप समत्थ, हईदळ वाहन बीजळ हाथ ।—सू प्र.

हईवर–स पु.—१ योद्धा, वीर ।

उ०—हईवर पाव असीसत हूर, समोभ्रम 'केहर' कायम सूर । समै जुध बीजळ मूगळ साथ, रिघु 'जमराज' तरगो रघनाथ ।—सू. प्र

२ देखो 'हयवर' (रू. भे.)

हउ—देखो 'हु' (रू. भे)

उ०—देवि पाडव नरेंद्र पुरेंग्री द्रूवदी तरगइ हउं जि सुलिद्री ।
—मानि सूरि

हउस—देखो हूस' (रू भे)

उ०—ढोलउ नितु पेरवइ प्रभाति, सउदागर पूंगि तेहइ साथि । भगति जुगति जीमरग तसु-तरगी, पूगी हउंस स.नह तसुतरगी ।
—ढो मा.

हउ–अव्य —अरे ।

उ०—भाई कहि वतळावस नागर वेल निरेस । हउ हउ करहा, कुवर-नइ मत लै जाव विदेस । - ढो मा.

हउरगो, हउवो—देखो 'होगो होवो' (रू. भे)

उ०—१ हउओ (हुइतो) मभालु, [मन] मारु ठारु । सोकाग निजया [ला लागी] छि, सीतल [वचनि] वारु ।—नळाख्यान

उ०—२ खोडउ हउ तउ डाभिजउ, वधियउ मूग मनेह । जाउ ढोल रइ सासरइ, सफळा मूग चरेह ।—ढो मा.

हऊरगो हऊवो—देखो 'होगो, होवो' (रू. भे.)

उ०—घरगी पडि पाछो पडी, हऊउ हाहाकार । हृदय सिद्धि राजा रउइ, सूझइ नही विचार ।—मा. का. प्र.

हए-भू का कृ —हते मारा ।

उ०—हरि हुए वराह हए हरिरगाकस, हू ऊधरी पताळ हूं । कहो तई करुणामें केसव, सीच दीध किरग तुम्हा सू ।—वेली

हकड—देखो हैकड' (रू. भे)

उ०—उरड अकुळाय आधा पडे आय अत, पडावें माजनू लाजनू खो अपत । रीछलें तमाखू दाम दे रोकडा हकड भूडा लगे हाथ में होकडा ।—ऊ. का.

हक–स पु [अ. हक] १ स्वत्व, अधिकार, दावा ।

उ०—१ भटियारगी कहयो—म्हैं क्यू भूडो मानूं । जायोडो भलाई व्हो म्हारे विचें इरग माथै थारो हक वत्तो है, म्हैं इरग बात नै भूलरगा विचें मरगो आछो समझू ।—फुलवाडी

री विख-सी हुई ।—नैणसी

उ०—२ वो बोल्यो—नी, नी, इण री कोई जरूरत नहीं है। ओ कतल रो केस है, कोई हसी ठट्ठा नी है ।—अमरचूंनडी

मुहा —१ हसी उडाणी=मजाक करनी, व्यग्यपूर्ण निंदा करना।

२ हसी-खेल समझणौ=किसी कार्य को साधारण या तुच्छ समझना ।

३ हसी मे उडाणौ=तुच्छ समझ कर (किसी वस्तु की) उपेक्षा करना ।

४ हसी रा बुडबुडिया उठणा=मन्द मन्द हसी आना ।

५ हसी समझणौ=किसी गम्भीर बात को मजाक समझना ।

यौ.—हसी-खेल, हसी-मजाक, हसी-खुशी ।

५ वह बात जो हसी के क्रम मे की जाय ।

६ वक्रोक्ति-युक्त निंदा ।

७ जग हसाई, निंदा ।

८ मादा हस ।

९ आर्या या गाहा छद का भेद, जिसके चारो चरणो में मिलाकर २ गुरु और ५३ लघु सहित ५७ मात्रा हो ।

१० प्रत्येक चरण मे ८ गुरु वर्ण फिर १२ लघु वर्ण और अन्त मे दो गुरु का वर्णिक छद विशेष ।

११ २२ अक्षरो का एक वर्णिक छंद, जिसके प्रत्येक चरण मे दो मगण एक तगण, तीन नगण, एक सगण और एक गुरु होता है।

रू भे.—हसाई, हंसि, हसि, हसी, हासी, हासा, हासी ।

मह —हसड, हसौ, हासौ ।

हसीगवणी—देखो हसगामिणी' (रू. भे)

हसौ—१ देखो 'हस' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ म्हा में कुडा ओगुण काढै छै सो जै म्हारी गति हुई जिकी थारी गति हुइज्यो, इतरी ही कहि हसौ चलतौ हुवो ।
—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ सो ज्यू हाथ जमी रै मारियो त्यू ही दळ पडियो हसौ चलतो रहियो। —मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—३ आख्या सू दीसै नही, पगा सू चालीजै नी अर काना सू सुणीजै नी पण उमर री डोर तूटै नी अर हसौ काया रौ पिंजरो छोडै नी ।—अमरचूनडी

उ०—४ एक समय मोतियन के धोकै हसा चुगत जुवार। सरवर छाड तलैया बैठे, पख लपट रही गार ।—मीरा

उ०—५ परम तेज प्रकास है, परम नूर निवास । परम ज्योति आनद मैं, हसा दादू दास ।—दादूवाणी

उ० —६ हंसा होय हंसगति जाणै, परम हस करै सेवा । आवागमण आवै नहि कबहूँ, वै जाहिर योगी देवा ।—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—७ कई जनम का सोता हसा हमकै जाग गया । तन मन खोज जोरा री वाता, इसमें लाग रया ।—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—८ जनहरिया मन जाह कीया, मुन्य सरवर मैं वाम । वळै न जामण मरण की, धरै न हसौ आस ।—अनुभववाणी

२ देखो 'हसी' (मह; रू भे.)

हहकार—देखो 'हाहाकार' (रू भे)

ह—१ हरख । (एका)

२ चोर । („)

३ हर, शिव । („)

४ काष्ट । („)

५ निरवेधा । („)

६ मृगाक्ष । („)

७ शून्य ।

८ आकाश ।

९ जल, पानी ।

१० चन्द्रमा, शशि ।

११ ध्यान ।

१२ स्वर्ग ।

१३ ज्ञान ।

१४ कल्याण, मगल ।

१६ खून, रक्त ।

१६ डर, भय ।

१७ कारण, सबब ।

१८ विष्णु, लक्ष्मीपति ।

१९ वैद्य, चिकित्सक ।

२० घोडा, अश्व ।

२१ लडाई, युद्ध ।

२२ अभिमान, घमड ।

२३ योग मे एक प्रकार का आसन ।

२४ हास, हसी ।

२५ राजस्थानी कविता मे पाद-पूर्ति मे अधिक उपयोग किया जाने वाला, व्यजन ।

अव्यय —पाद-पूरक अव्यय, तक ।

उ०—ढोला ढीली हर किया, मूक्या मनह विसारि । सदेसउ ह न पाठवइ, जीवा किसइ अधारि ।—ढो मा.

हआ—देखो 'हा' (रू. भे.)

हइवर—देखो 'हयवर' (रू. भे.)

उ०—वसि करिय मीरि गढ वास वत्थ, पाघरा किया तेरहइ पत्थ । हइवरा भडा दुह हुइ हल्लि, मुलिताण मन्त्रि घातिय मुगुल्लि ।
—रा. ज सी.

हइ–अव्यय —हे, अरे, ओ ।

उ०—१ गिरह पखाळण, सर भरण, नदी हिंडोळणहारि । सूती

से, व्यर्थ मे, वेकार मे।

उ०—१ कह्यो—वाई वगा, हकनाक इतो वगत खराब करयो। एक नाकुछ काव ई नी वढी तो मैं कांई नय री तेहर करैला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ पीढ्या सू नर जोर मारै, पण ऊनागो कद मिळै। सब्द जोग सदीनो लफै, फफै हकनाहक गळै।—नारी सईकरी

२ अनुचित।

उ०—सेवट नाई हीमत करी। धड़ाग करतो रो ऊभो ऊभो ई राजाजी रे पगा पडयो। जोर सू कूकयो—अन्याव व्है, अदाता हळाहळ अन्याय व्हे। वेकसूर दीवाणजी नै हकनाक राज रै हाथां डड मिळै।—फुलवाड़ी

हकवक-वि.—हक्कावक्का, भौचक्का, स्तभित।

रू. भे.—हकरक, हकवाक।

हकवकणौ, हकवकबौ—देखो 'हकवकाणौ, हकवकावौ' (रू. भे.)

उ०—धकधकै लोण मिळ करद धूर, हकवकै काण बकवकै दूर। कर कोप अठी कमधज करूर, पिमादीय लोक भर रोस पूर।
—वे. रू.

हकवकाणौ, हकवकावौ-क्रि. अ—१ हक्का-बक्का होना, स्तभित होना।

क्रि स.—२ किसी को हक्का-वक्का करना, स्तभित करना।

हकवकाणहार, हारौ (हारी), हकवकाणियौ—वि०।

हकवकायोडौ—भू० का० कृ०।

हकवकाईजणौ, हकवकाईजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

हकवकणौ, हकवकवौ—रू० भे०।

हकवकायोडौ-भू. का. कृ—१ हक्का-वक्का हुवा हुग्रा, स्तभित हुवा हुग्रा।

२ किसी को हक्का-वक्का या स्तभित किया हुग्रा।

(स्त्री. हकवकायोडी)

हकवकियोडौ—देखो 'हकवकायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री हकवकियोडी)

हकवाक—देखो 'हकवक' (रू. भे.)

उ०—डहकीय डायण वामै डाक, वहकीय रग हुग्रा हकवाक।
- गो रू

हकमोरूसी-स पु [अ] पितृ-परम्परा से प्राप्त होने वाला अधिकार, उत्तराधिकार।

हकळाणौ, हकळावौ-क्रि अ—जीभ तेजी से न चलने के कारण अटक-अटक कर वोला जाना, हकलाना, वोलते-वोलते अटकना।

हकळाणहार, हारौ (हारी), हकळाणियौ—वि०।

हकळायोडौ—भू० का० कृ०।

हकळाईजणौ हकळाईजवौ—भाव वा०।

हकडाणौ, हकडावौ, हकळावणौ, हकळावबौ—रू० भे०।

हकळायोडौ-भू का. कृ.—बोलते-बोलने अटका हुग्रा, हकलाया हुग्रा।

(स्त्री. हकळायोडी)

हकळावणौ, हकळावबौ—देखो 'हकळाणौ, हकळावौ' (रू भे.)

हकळावणहार, हारौ (हारी), हकळावणियौ—वि०।

हकळावियोड़ौ, हकळावियोड़ौ, हकळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हकळावीजणौ, हकळावीजबौ—भाव वा०।

हकळावियोडौ—देखो 'हकळायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. हकळावियोड़ी)

हकलौ—देखो 'हाकलौ' (२) (रू. भे)

(स्त्री. हकली)

हकशफा-स पु [अ. हक+शफ़ः] पड़ोसी अथवा गांव के हिस्सेदार को किसी जमीन को खरीदने मे अन्य लोगों की अपेक्षा प्राप्त पूर्व-अधिकार।

हका—देखो 'हाक' (रू भे)

उ०—ऊठि चवड़ा सोनगरा, नाटि पड़ै नाह। पोड़ा पाखर धमधमी, रोपू राग हकाह। [illegible] अति मीठवी राग साकी हर्वा, थाट पावा विगरा घाट मार्ग पर्वा। ऊनाडा ओीग लग पटि घटा सोनगरा, ऊठि हरधवड़ नुप सवूवा सोनगा।—रा. सा.

हकाडणौ, हकाडवौ—देखो 'हकाणौ, हकावौ' (रू भे.)

हकाडणहार, हारौ (हारी), हकाडणियौ—वि०।

हकाडियोडौ, हकाडियोडौ, हकाड्योडौ—भू० का० कृ०।

हकाडीजणौ, हकाडीजवौ—कर्म वा०।

हकाडियोडौ—देखो 'हकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री हकाडियोडी)

हकाणौ, हकावौ-क्रि स. ['हकणौ' क्रिया का प्रे रू] १ गतिमान कराना, चलाना, रवाना कराना।

उ०—तिगाल धवळ मोटी तुरग, पेडै पीळी अमाड पर। बाहडा मेल सामी वळी स्याळ हकाई टोळ पर।—पा. प्र.

२ जुताना, चलाना।

३ युद्ध करने के लिए प्रेरित करना, भिड़ाना।

४ द्रव पदार्थ को आग पर गर्म करके भाप बनाकर उडाना।

हकाणहार, हारौ (हारी), हकाणियौ—वि०।

हकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

हकाईजणौ, हकाईजवौ—कर्म वा०।

हकाडणौ, हकाड़वौ, हकावणौ, हकावबौ—रू० भे०।

हकायोड़ौ-भू का कृ—१ गतिमान कराया हुग्रा, चलाया हुग्रा, रवाना कराया हुग्रा २ जुताया हुग्रा, चलवाया हुवा (हल). ३ युद्ध के लिये प्रेरित किया हुग्रा, भिडाया हुग्रा. ४ भाप वना कर उडाया हुग्रा।

(स्त्री हकायोडी)

हकार-स. पु—१ 'ह' अक्षर या वर्ण।

२ शब्द, ध्वनि, पुकार।

उ०—२ लेणी-देणी कीकर नी है वोफा ! राजा इण धरती रो धणी है, इण मुलक रो मालिक है। इण धरती माथै जिकी चीज निपजै उण माथै उणरो हक है।—अमर चूनडी

२ न्याय, प्रथा आदि से प्राप्त अधिकार।

उ०—२ ओ कैडो राज ? किणरो राज ? आ राज करणिया नै कुण ओ हक सूंप्यो जको वै नवरधा बैठी किणी लुगाई नै झप-टलै।—फुलवाडी

उ०—२ किणी री मसा परवारो दुख देवण रो ओ हक जे राजा नै भगवान ई सूंप्यो तो अेडा भगवान री पूजा ई किताक दिन तक व्हैला।—फुलवाडी

३ किसी कार्य को करने का अधिकार।

४ सत्य, यथार्थ।

उ० हफन-हजारी हफन सर्भ हक सद जै सायत। आय हफत ईसफा, मिळी हफनम सभि हिम्मत।—सू प्र.

५ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—हका वेली हक है, वेहका वेहक। हरीया हेकै हक विन, सब दिन जाहि अन्हक।—अनुभववाणी

६ ठीक कार्य, सीधा कार्य।

उ०—काजी सरै हक है तेरै तो अनहक जीव क्यु मारै। कुछी एक दीन तणी डर दुनिया, मिर अपनै सु टारै।—अनुभववाणी

७ पक्ष, हिस्सा, भाग।

उ०—उण दोनू घोडा आपा रै हक मैं छोड दिया। सोनै री गाठडी भी दी। इण सगळी वाता रै अलावा वचन दियो कै आज सू उण री तरफ सू वैर-भाव खतम है।—तिरसकू

८ पारिश्रमिक, मेहनताना।

उ०—मुई मिटीया मुरदार कहत हैं, हाथै हक हलाळा। काजी धणी'र और धलाली, सब स्वारथ का चाळा।—अनुभववाणी

वि—१ मृत।

उ०—१ पातिसाही करता थका एक दिन मुणा रै पातिसाह हमाअू चढिया हुता तिहाथी पडिया अर हक हुआ।—द वि.

उ०—२ इतरी कहता पाण तो अमरसिहजी ऊभा तिकी जगा सू तमक जाय खान सू भेळा हुइ गया। कटारी दोन्ही सो पेट मे हाथ सक गरक हो गयो। और कही पाजी मुह सू सावळ बोल। यू कही फेर दूजी दी सो मिया तो हक हो गयो।

—अमरसिह गजसिहोत री वात

२ जायज, ठीक, वाजिब।

उ०—१ हिमत हक हिसाव है, रहमाण रवाकी। मोह सराव खराव है, छत उमत छाकी।—केमोदास गाडण

३ युक्ति सगत, युक्ति-युक्त।

४ देखो 'हाक' (रू. भे)

रू भे.—हक्क।

हकडक-स. स्त्री—१ हसने की ध्वनि, खिलखिलाट।

२ देखो 'हकवक' (रू. भे.)

हकडाणौ, हकड़ावौ—देखो 'हकलाणौ, हकलावौ' (रू. भे)

हकड़ाणहार, हारो (हारी), हकड़ाणियो—वि०।

हकड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

हकडाईजणौ, हकड़ाईजवौ—कर्म वा०।

हकड़ायोडो—देखो 'हकलायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री हकडायोडी)

हकडी—स स्त्री—अटक कर वोलने या तुतलाने की क्रिया, हकलाहट।

उ०—जीभरै फाला जकै सू हकड़ी खा'र वोलै। मन मैं वसै दुनिया फर्स।—दसदोख

हकडौ—देखो 'हाकडौ' (रू. भे)

हकणौ, हकवौ—क्रि अ—१ गतिमान होना, चलना, रवाना होना।

उ०—थे जीमो थारा कवर जिमावो, थे जीमो थारा कवर जिमावो। म्हारी रेल हक जाय म्हारा ए साथीडा उठ जाय।

—लो गी.

ज्यू—ई गाडी रै हकण रो टेम कणेक रो है।

२ जुतना, चलाना।

उ०—नहचो थळ निरधार, इळ तो आसाढा हकै। ह्वै मण धान हजार मासै कातिक 'मोतिया'।—रायसिह साद्दू

३ युद्ध करना, भिडना।

उ०—भुजगी लचकै देत कोम धकै भोम भार, वकै वळोवळी खेळा किलकै वीराण। छिळै घाव चळूळा सूरमा घावा लोह छकै, उभै सेन हकै ऊचकै आराण।—हुकमीचद खिडियो

४ आग पर गरम करने से द्रव्य पदार्थ का भाप वनकर उडना।

५ कमहोना, घटना।

६ देखो 'हाकणौ, हाकवौ' (रू. भे.)

उ०—महा कोवगी गनीमा हुता हुचकै नरिंद 'माधो', भू-लोक भूचकै वाधो चकै कोम भार। वोमगी अरावा भाळ वेताळ वभकै वकै, वाजेंद्रा 'वहादरेस' हकै तेणवार।—हुकमीचद खिडियो

हकणहार, हारो (हारी), हकणियो—वि०।

हकिओडो, हकियोडो, हक्योड़ो—भू० का० कृ०।

हकीजणौ, हकीजवौ—भाव० वा०।

हाकणौ, हाकवौ—रू० भे०।

हकदार—वि यौ. [अ हक+फा दार] १ स्वत्व या अधिकार रखने वाला, अधिकारी।

उ०—प्रीत री कूख सू जलमियो राजगीदी रो हकदार नी व्है अर व्याव री कूख सूं जलमियो राज रो हकदार व्है।—फुलवाडी

२ पात्र।

३ दावेदार।

हकनाक, हकनाहक—अव्य. यौ [अ. हक+फा. नाहक] १ निष्प्रयोजन

उ०—२ हकालै अभाडा चौतरफा नरा फौज हल्लै, भल्लै जठै बोल दै हकालै कै भाराथ।—सूरजमल मिसण

५ उत्साहजन्य वाक्य बोलना, आवाज करना।

उ०—उडै गति गेंद नरा उतमग, गहै भट कज करा जट-गग। महानट हाथ हकालत मुड, रोळा मभ घुम्मर घालत रुंड।

—मे. म

६ पुकारना, आवाज लगाना।

७ ललकारना।

उ०—उपजै घणा ज ईख, चरै मन मोज सू, बिचरै मावा बीच, फिरै नही फौज सू, घातै सिहा घात, हकालै हेरुला। मिळै रमता मग माह, टळै नहि टेकला।—सिववक्स पाल्हावत

हकालणहार, हारो (हारी), हकालणियो—वि०।

हकालिओडो, हकालियोडो, हकाल्योडो—भू० का० कृ०।

हकालीजणो, हकालीजबो—कर्म वा०।

हकालियोडो—भू का. कृ.—१ खदेडा हुआ २ आवाज लगाया हुआ ३ चलाया हुआ, हांका हुआ ४ उत्तेजित किया हुआ. ५ विड्डाया हुआ. ६ ललकारा हुआ।

(स्त्री हकालियोडी)

हकालो—देखो 'हाकौ' (रू भे)

उ०—तठै आम री छाया नै चमेली मोगरै नजीक महर कारज कन्हे सूअर डार नूं लिया सूती छै। सो देख बागवान हकालो देय गाळो काडी।—डाढाळा सूर री वात

हकावणो, हकावबो—देखो 'हकाणो हकावो' (रू भे)

हकावणहार, हारो (हारी), हकावणियो—वि०।

हकाविओडो, हकावियोडो, हकाव्योडो—भू० का० कृ०।

हकावीजणो हकावीजबो—कर्म वा०।

हकावियोडो—देखो 'हकायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. हकावियोडी)

हकीकत—सं. स्त्री [अ.] १ वृतान्त, हाल, विवरण।

उ०—१ ताहरा माम्या नु सलाम की छै। ताहरा राजा अजैपाळ मानधाता नु वात पूछी। सारी हकीकत मालीम की।—चौबोली

उ०—२ ताहरा धीरीयै नु मूळवै पूछीयो, 'जु वेमवटो कठै?' ताहरा घोडै री हकीकत पूछी।—मूळवै सागावत री वात

उ०—३ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति फेर पातसाहजी हुकम कीयो। हकीकत इत कही छै।—रा. सा. स.

उ०—४ तठा उपरायंत सातलजी नू लै आयो। आपरी कोटडी माहै उतारीयो। अठै वडा हीडा कीया, अर पूछीयो, 'था किम जोधपुर सो छाडीया?' ताहरा ईहा सरव हकीकत माड नै कही।

—सातल जोधावत री वात

२ सचाई, वास्तविकता, यथार्थ।

उ०—एक कहै असपत्ति, लिखै खत हफत विलायत। हफत नकल लिख हफत, कमध फुरमाण हकीकत।—सू प्र.

३ सूचना, खबर, समाचार।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति अतरा माहे महमद मुसतफा खान रा चार दूत विचारिआ हुता त्या हकीकत राजान रा पातसाह आगै पोहचाई।—रा. सा. स.

४ घटना।

उ०—अठी-उठी री मोकळी आही डोडी वाता हुई पण दोन्यू जणा उण दिन वाळी हकीकत जबान माथै ई नी लाया। पण मन मैं छकै पजै सावधान।—अमर चूनडी

५ मन्तव्य।

२ इतिहास।

रू भे.—हकीगत, हगीगत।

हकीकी—वि. [अ] १ सच्चा, असली।

२ आत्मीय।

३ वास्तविक, यथार्थ।

हकीगत—देखो 'हकीकत' (रू भे.)

उ०—१ सीहैजी वीरमदे नुं आदर दीयो नै कयो, वीरमदे ये मारा भेळा होय नै किण काम आया छो। सब थारी हकीगत कहो।—रा. व वि.

उ०—२ राव कल्याणमिधजी मदत करी अह ...तिया पण इणा रै मामल हा निका हकीगत इण तरै है—पठाण हाजीखान कार अजमेर राव मालदे फौज मेली।—द दा

उ०—३ बनी (बीच मे ई) अबळा रूपी गाया नही, साचेली गाया। इत्तो कै'र सारी हकीगत समझायी।—वरसगाठ

उ०—४ फूलचन्दजी रै पूछणै पर वेगराजजी रै ओसर री सारी हकीगत बतावै है।—दसदोख

उ०—५ सझ्या समै रावजी महिला पधारिया तरै अपछरा मुजरो करै नै सीख मागी। अबै तो माहिबजी मोनै लोका दीठी। राज पीण हकीगत कीही सो म्हे तो जावसु।

—वीरमदे सोनगरा री वात

हकीम—सं. पु [अ.] १ यूनानी पद्धति से चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक।

उ०—हकीम वैद्य सरव पचि हारघा दीनी बहुत दवाई। जाण असाध्य व्याध जगदबा, अबा वामै आई।—मे म.

२ मीमासा का पण्डित, मीमासक।

उ०—सौ आ वचना मू सीख मानै नीयत रैयत रै ऊपर किरपा करै हकीमां कही छै अदल भलो खरौ गुण छै।—नी प्र.

हकीमी—स. स्त्री. [अ] १ यूनानी चिकित्साशास्त्र।

२ यूनानी चिकित्सा का कार्य।

वि.—यूनानी चिकित्सा से सम्बन्धित।

हकीयत—सं पु. [अ हक+रा. प्र. यत] हक होने का भाव, स्वत्व,

[प्रा. हक्कार] ३ ललकार, हुंकार।

उ०—१ हाथिया कपोळा केक झूमै लूयवत्या होय, केक आय लूमै दौळा साथिया हकार। वसा नीर चाढै भूप अबीहा जनेवा वाहै, सभरी वाघळा सीहा विभाडै सिकार।

—रामसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ उड पडै पोगरा धरति आंण, जनमेज जाग रा नाग जाण। हाथिया दात पग धर हकार, मीरजा जगी हवदा मझार।

—वि स.

४ देखो 'अहकार (रू. भे.)

उ०—विसन नाम तौ सवही भूडा, पच बडा जोधार। काम क्रोध मोह लोभ हकारा, यै तजे सो साधू सार।

—स्रीसुखरामजी महाराज

रू भे. हकारि, हकाळ, हक्कार, हेकार।

हकारणौ, हकारबौ–क्रि स —१ बोलना, कहना।

उ०—वारे आवरै रिण रोपण बका, बध सुग्रीव बकारे। ऊठै मुग्ग घमजघड अघायौ, धींग क्रोध उर धारै। हू हिव आवियौ पगमाड हकारै।—र रू.

२ जोश दिलाना, उत्साहित करना।

उ०—लहै जोत सोभा भडा मैं सलोभा, सदा खेत आमै गैहल्लोत सोभा। सवै मत्रवी व्यास प्रोहित्त साथै, हकारै कवी वाहता खग्ग हाथै।—रा. रू

३ बुलाना।

उ०—१ हिंदू तुरक हकारिया, नरपति अनै निवाव। आगवा भेळौ अटक, मेलो भडा मताव।—रा रू

उ०—२ हिंदू ताम हकारिया सिंघ 'जसो' जैसिंघ। किया विदा कूरम कमंध, अै वेवै अरडिंग।—वचनिका

४ चलाना।

उ०—राजा भडा हकारिया तोलै खग्ग करग्ग। उर पैला लग्गी तिकर, जग्गी अग्ग सिळग्ग।—रा रू

५ ललकारना।

उ०—१ वधिया भुज भोम लगै विमळा, क्रम देतेय टीकम जेम कळा। भड वीर हकारत 'पाल' भला, वरियाम चढै वहळा वहळा।

—पा. प्र

उ०—२ सीसोद कमधा संफळा, वहि सेल झळहळ वीजळा। हुय लूयवाथ हकारिया, कर खजर वाह कटारिया।—सू प्र

उ०—३ हत्यौ महारावण तेण हकारि, वध्यौ महिखासुर वीर वकारि।—मे म

६ सचेत करना।

उ०—जिहा हकारइ मोहि, तोहि साचउ करि जाणइ। आदि अंत उतपत्ति, विपति तौ सहु पीछाणइ।—प च चौ.

क्रि अ —चलना।

हकारणहार, हारौ (हारी), हकारणियौ—वि०,

हकारिओड़ौ हकारियोडौ, हकारचोडौ—भू० का० कृ०।

हकारीजणौ, हकारीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

हक्कारणौ, हक्कारबौ—रू० भे०।

हकारवाड़ा–म पु.—१ ध्वनि, आवाज।

उ०—हुवै वाननेस वीरा विखमी हकारवाड़ा, धरां पारवाडा सरा सावला सधोम। सिंधु राग रेडतै आहुटै कै सिगारवाड़ा, भूटकै मेडतै मारवाडा वीर-भोम।—हुकमीचद खिडियौ

२ हुंकार।

हकारियोडौ–भू. का कृ.—१ बोला हुआ, कहा हुआ. २ जोश दिलाया हुआ, उत्साहित किया हुआ ३ चला हुआ, रवाना हुवा हुआ ४ बुलाया हुआ ५ चलाया हुआ ६ ललकारा हुआ ७ सचेत किया हुआ.

(स्त्री. हकारियोडी)

हकारौ–म पु —१ आवाज, ध्वनि।

उ०—तठा उपरायत कमाणा कुरमाणा माहे मेलजै छै। तिकै कमाणा किण भातरी छै ? वारै वरस दरियावा माहि जहाजां हेठै वधी आइ चिलेवाइ हकारा करती गुण-भार वंकी अढार-टंकी, असली जादी पठाण री वेटी ज्यू तुही तुही करती थकी, वलोचणी ज्यू लचकार करती थकी, इण भात री कमाणा उणहीज दरखता री साखा सू नागळजै छै।—रा सा. स.

२ देखो 'हुंकारौ' (रू भे)

उ०—ठाकर सगळी वाता री हकारौ भरचो, गुलाव री मा धूप-दीप करचो।—दसदोख

हकाल—देखो 'हकार' (२) (रू. भे)

हकालणौ, हकालबौ–क्रि. स.—१ वलपूर्वक अथवा डरा धमका कर कही से भगाना, खदेडना।

उ०—हकावै अभाडा चौतरफा नरा फौज हल्लै, भल्लै जठै बोल दै दकालै कै भाराथ। 'अजो' दूजो गाढेराव गयदा वकाळै असा, प्रळै काळा मयदा हकालै प्रथीनाथ।—सूरजमल मीसण

२ चलाना, हांकना।

उ०—दवै रद खोट न ओट दकूळ, फवै हसि होठ चढ्या मुख फूल। हकालत वीस हथ्या नव-हथ्थ, रूड़ा सुखपालक हालत रथ्थ।

—मे म

३ उत्तेजित करना, ललकारना।

उ०—काळी पत्र झालै ईदै धरा धमै कूभकाळी, हकालै दवाळीवध वराका हणेस। चाव स्रोण लाली पीठ लाली पीठ लेंण वूथमाती चालै, गुलाली वणाव कीधा दकालै गणेस।—नदजी सादू

४ विरुदाना, वकारना।

उ०१ —पडै आरपारं। जुधाण जुधार। हकालै हेआर। पीउमै पयार।—कल्याणसिंघ नगराजोत री वात

वण वार असक बाधा रक, रूक भटवकं रहचवक ।—रा म
हवकौ–स. पु.—१ बारह फूक-वाद्यो मे से एक ।
उ०—द्वादस तूरय निरघोष नादा नाम—हक्का, डक्का, मरम, काहल, पुष्फभेर, भाणग, पहडो, जुग, सग, करउ, पागय, मुद्दल, कसाल, रणनदी, इति रणनदी तूरय ।—व. स.
२ यश, कीर्ति ।
३ ललकार, हाक ।
४ देखो 'हाको' (रू. भे.)
हगमगो–वि. (स्त्री. हगमगी) प्रसन्नचित्त, प्रफुल्लित ।
हगांम—देखो हगामो' (मह; रू. भे.)
उ०—१ अवार रात रा ही मयू गोळा री गजर मारी हो सुहारै फजर परभात रा हीज हगांम जुद्ध है—नेठाव किया नजर देख लेसो ।—वी स टी.
उ०—२ जोरावर कदै इद्र अखाडै आवसो जाणु, लगावणो कदै खळा ताळवै लगाम । रीझ वळी-वळी कदै कमुवो पावणो राजा, हळोवळी भडा कदै थावसो हगांम ।—बलूतसिंघ रो गीत
उ०—३ घड बोळ सश्रा घर, जोम घणो । तंय होय हगांमां कूच तणो ।—गो. रू.
उ०—४ हगांमा हमेसा वजत त्रिदवेसा नववती । अई 'इदू' अबा जयति जगदंबा भगवती ।—मे. म.
हगामी—देखो 'हगामी' (रू. भे)
उ०—आप पधारिया वेलीडा रे साथ हगांमी ढोना रे । थारी ओलूडी घण ने आवती हो राज ।—लो. गी.
हगामो—देखो 'हगामो' (रू. भे)
उ०—आठू पहर ही दरीखानै हगामो लागियो रहै ।
—ठाकुर जयतसी री वारता
हगीगत—देखो 'हकीकत' (रू. भे.)
उ० —अवे करोज वाकबी हगीगतू अवेलनै । प्रचड जूझ मल्लनै, वुलाय वीर पालनै ।—पा. प्र.
हड़–क्रि वि.—जल्दी, शीघ्र ।
हड़कायो—देखो 'हिडकियो' (रू भे)
उ०—काटै ज्या गडक हडकायो, खोल विलाय नीकळे खाग । आप तणा नावरी ओखद, अग न दूखै न दूखै आख ।
—वखतो आसियो
हडकियावाव—देखो हिडकियावाव' (रू भे)
हडकियौ—देखो 'हिडकियो' (रू. भे.)
हडड–स. स्त्री. [अनु,] १ ध्वनि विशेष, जो प्राय. परत के रूप मे जमी हुई वस्तुओ के गिरने से उत्पन्न होती है । दीवार आदि के ढहने की आवाज ।
उ०—इतरा में तो न मालम कीकर ई साकळ नीकळगी अर हडडड .. ...ड धम्मीड करती पट्टी आंगणा पर । जे म्हैं फुरती सू भागो नही मरक जावतो तो पटणी........पटणी ।—रानवासो
२ देखो 'हडहड' (रू. भे.)
उ०—रिग हडुड ठहड धम दहड, रन वहबड्ड अड्डया धामणो । गडगड अवाट तटाग प्रगट, उरड थाट अधियांमणो ।
—बगतो मिढियो
उ०—२ फीफर ताळज हुय फडड दहड रुधिर धर डार । मडड गजा मद मू किया हडड बीर हुय हाक ।—सिवबगस पाल्हावन
उ०—३ चडड ऊपट प्रगट पग ग्राग, गडड नरहड स्वर गड-गड । हडड नारद बीर हडहड, घडड घातम सिगर घड्हड ।
—र. ज. प्र.
हडडाट–स स्त्री.—हडड की ध्वनि ।
हडताल–स स्त्री [सं. हट्ट+ताला] १ असतोष, विरोध या रोष प्रगट करने हेतु कर्मचारियो द्वारा काम बन्द करके व्यापारियो द्वारा दुकानें बन्द करके एवं विद्यार्थियो द्वारा अध्ययन बद करके किया जाने वाला सामूहिक प्रदर्शन या अभियान ।
उ०—आगरै सहर हडताळ पडिया 'अमर', मारया गव दरियाव माहे । हाथ पाठ पहिरै तठै हाथ हुय ही गिया । तोह वहै छोह असमान ताई ।—अमरसिंह राठौड री वात
२ न होने की स्थिति, अभाव ।
उ०—मयू मौत री मन्नी माथै, जीवण री पडगी हडताळ । हिरणी बोली रया करै कांई, रखवाळा रो पड्यो काळ ।
—चेतमानखा
३ देखो 'हरताळ' (रू भे)
रू भे —हटताळ, हठताळ, हडताल, हरताळ, हरताल ।
हडताळतीज–स स्त्री.—हरियाली तृतीया ।
हडदे–क्रि. वि.—१ शीघ्रता से, जल्दी से ।
२ देखो 'हिरदो' (रू भे)
हडदो–सं पु —१ अत्यधिक परिश्रम का घरेलु कार्य ।
२ देखो 'हिरदो' (रू. भे)
हडप–वि —१ अनुचित रीति से प्राप्त कर अपने अधिकार मे किया हुआ ।
२ गले मे उतारा हुआ, निगला हुआ ।
३ गायब, अलोप, पार ।
उ०—नई तो वो समभेलो के गाठडी म्हे राखली । वो आ भी समझ सकै है कै गाठडी तू बीच मे ई हडप करग्यो ।—तिरसकू
स. स्त्री —हडपने की क्रिया या भाव ।
रू. भे.—हडफ ।
हडपणो, हडपवो–क्रि. स.—१ अनुचित रूप से किसी की वस्तु प्राप्त कर अधिकार कर लेना, दवा लेना ।
२ गायब करना, उडाकर लेना, पार कर देना ।

अधिकार ।

हकूक-स. पु [अ. हुकूक हक व व] कई प्रकार के स्वत्व या अधि-कार ।

हकूमत-स. स्त्री [अ] १ राज्य, सरकार ।

२ शासन, प्रशासन ।

उ०—मोकळा महीणा वीतग्या । मा'राजा लूणसर मे चोखीतरां रसवसग्या । चोखो खावै-कमावै अर मडी रा मिनखां माथै आछी प्रेम हकूमत करै ।—दसदोख

क्रि. प्र.—करणी ।

मुहा.—हकूमत करणी या चलाणी=दूसरो को साधिकार आज्ञा देना ।

३ सत्ता, अधिकार ।

हकूमत जताणी=रोब या प्रभुत्व प्रदर्शित करना ।

रू भे.—हुकमत, हुकूमत ।

हको—देखो 'हाको' (रू भे.)

उ०—१ सत्रा महपति करत सधार, धडा पग दै खग वाहत धार । करै भ्रप वीर जय जय कार, हका करि जाणि रमै होळियार ।

—सू. प्र.

उ०—२ गहर पग मांडो ठकराहा, हू आयो सुण वाहर हको । मोनु मा अतरी छै मालम, सालम धन लै जाय न सको ।

—ठाकर रामसिंघ री गीत

हकोवको—देखो 'हक्कोवक्को' (रू. भे)

हक्क—देखो 'हक' (रू. भे)

उ०—जिन्हा तज जुलमाणी, हक्क सराहिया । रुख चुगलक व...... जांनी, सिरहद सझिया ।—र ज. प्र.

२ देखो 'हाक' (रू भे)

उ०—१ हुअं रिणि हक्क किलक्क हमस्स, उडै रत छोळि दिसेह अरस्स । अखै धिन धिन्न रतन्न अरक्क, चढावै मेछ घडा खग चक्क ।

—र वचनिका

उ०—२ मोटा मुगुल्ल मद्दोनमत्त, अमिळित्त दियइ अरि आव-रत्त । 'कम्मरइ' कोपि कीया कटक्क, हइमरा हीस भड इइ हक्क ।

—रा. ज सी

उ०—३ फोजक्क रोसक्क फारक्क फग्क्क, हूरक्क वरक्क हुवै खळ हक्क । सीसक्क सभक्क हारक्क हरक्क, ग्रिधक्क गहक्क गूदक्क गटक्क ।—सू. प्र.

हक्कणौ, हक्कवौ-क्रि. अ.—१ कमजोर होना ।

२ देखो 'हकणी. हकवौ' (रू भे)

उ०—१ घटा काळ सी इकाळ सी तोपा यौ सावात धक्की, मैंगळा है सुरा जम्मी मचक्की प्रमाण । वीर छडा लीधा साथ चटका किलक्की वक्की, आमेरनाथ री मेना यौ हक्की आराण ।

— सुखदान कवियौ

उ०—२ ईन भाण आराण तमासै तुरी ताण ऊभो, वारगा विवाण हक्कै, काथा मगा वोम । फौला झडा फरक्कै, वमक्कै धावा तना फावै, धधक्कै लोयणा क्रोध, जुटै रूपी धोम ।

—बुधसिंह सिंढायच

हक्कणहार, हारौ (हारी), हक्कणियौ – वि० ।

हक्किअोडौ, हक्कियोडौ, हक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हक्कीजणौ, हक्कीजवौ—भाव वा० ।

हक्कवक्क—देखो 'हक्कोवक्को' (मह, रू भे)

हक्कल—देखो 'हैकल' (रू भे.)

हक्काबुक्को—देखो'हक्कोवक्को' (रू. भे.)

उ०—अथ राजप्रस्थानं, पवनोद्धद धूलि पट सहस्त्रसछन्नतरणि-किरणि, सुभट विमुक्त हक्काबुक्कार विशित कातर जन.......

—व स.

हक्कार—देखो 'हकार' (रू. भे)

हक्कारणौ, हक्कारवौ – देखो 'हकारणौ, हकारवौ' (रू. भे.)

हक्कारण हार, हारौ (हारि), हक्कारणियौ—वि० ।

हक्कारिग्रोडौ, हक्कारियोडौ, हक्कारयोडौ—भू० का० कृ० ।

हक्कारीजणौ, हक्कारीजवौ—कर्म वा० ।

हक्कारियोडौ – देखो 'हकारियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. हक्कारियोडी)

हक्कियोडौ-भू का कृ —१ कमजोर हुवा हुआ ।

२ देखो 'हकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री हक्कियोडी)

हक्कोवक्को-वि. [स्त्री. हक्कीवक्की] १ आश्चर्यचकित, विस्मित ।

उ०—पण म्हारै डरावणा विचारा रै बीच लीना री मीठी पण तीखी किलकारी कोयल री कूक ज्यूं गूंजगी—'पवन' । अर म्हें सब कुछ भूल नै की सोच्या विना ई हक्कोवक्को सो उठै ईज अभो रह्यो ।—तिरसकू

२ अचानक किसी घटना के कारण जो घबरा गया या शिथिल पड़ गया हो, किंकर्तव्यविमूढ ।

उ०—कागद देखता ही वो भू भू रोवण लागग्यो । छोटकी साळी ती हक्कीवक्की हुयगी, सासू खट मगळो खेल समझ गयी ।

—दसदोख

३ स्तभित, भौंचक्का ।

रू. भे —हकोवको, हुक्कोवुक्को ।

मह; —हक्कवक्क ।

हक्कोहक्क-वि.—१ ठीक, उचित ।

२ देखो 'हाक' ।

उ०—१ नीसाणि धाइ वलइ, पताका झलहलइ, आरेणि माडी-यइ, अरधचद्र वाल खडियइ, भट हक्कोहक्क करइ, देवागना वीर वरइ ।—व. स

उ०—२ वध वीर किलक्कं हक्कोहक्क, धूप मवक्क धमचक्क ।

हड़वड़ावियोड़ौ—देखो 'हडबडायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हडवडावियोडी)

हडवडियोडौ—देखो 'हडवडायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री हडवडियोडी)

हडवड़ियौ–वि. (स्त्री. हडवडी)—जल्दबाज, उतावला, आतुर।

हड़वडी–स. स्त्री.—१ सेना की हलचल की ध्वनि।
कि. प्र —चलणी।
२ वहुत से प्राणियो के एक साथ चलने से उत्पन्न ध्वनि।
३ वह स्थिति, जिसमे हडवडाते हुए कोई काम करना पडता है, घबराहट, व्याकुलता।
कि. प्र.—मचणी, लागणी।
४ शीघ्रता, जल्दबाजी, उतावलापन।
रू. भे.—हडबड, हडवडाट, हड्व्वड़, हडवड, हडवडाट, हड्व्वड, हडहड, हडवड।

हडवच–स स्त्री.—मुह से किसी को काटने की क्रिया या भाव।
ज्यू—कुत्ते हडवच घाल दी।
क्रि प्र.—घालणी, भरणी।
रू भे —हडभच।

हडवी—देखो 'हिडवी' (रू. भे.)
उ०—असी रे कोडा तू उजळा मैं, हडवी काच विडाया रे, म्हारो गोरवद ळूवाळो।—लो गी.

हडवू–स. पु.—[देश.] १ राजपूत कुलोत्पन्न एक सिद्ध पुरुष जिनकी कई लोग पूजा करते है।

वि वि–'हडवूजी' पवार वशीय साखला शाखा के राजपूत थे इनके पिता का नाम मेहराज (मेहाजी) था। इन्होने राव जोधाजी का कष्ट के दिनो मे सहयोग दिया। इनमे अतिथि सत्कार की असीम श्रद्धा थी। मडोवर पर जव चित्तौड के महाराणा का अधिकार हो गया तब राव जोधाजी अपने १२० अनुगामियो सहित हडवूजी के पास पहुँचे। दुर्भाग्य वश जोधाजी के पहुँचने तक सदाव्रत वँट चुका था। ऐसे समय हडवूजी को 'मुज्द' नामक एक लकडी, जो रगाई के काम आती है, याद आई। इन्होने उस लकडी का एक टुकडा छीला और उसके वुरादे को आटे चीनी और मसालो के साथ पकाया इससे वह एक स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ बन गया। राव जोधजी, अपने साथियो सहित इस पदार्थ को खाकर सुख की नींद सो गये। वे मडोर के दुख को कुछ काल तक भूल गये। प्रातः काल उठने पर प्रत्येक व्यक्ति ने देखा कि उनकी मूछो पर सायकालीन भोजन का रग लगा हुआ है। इसमे सभी व्यक्तियो को आश्चर्य हुआ। हडवूजी ने इस घटना को जादूइक रूप दिया और जोधाजी को आशीर्वाद दिया कि इस पदार्थ के पेट मे रहते तुम अपना घोडा जितनी दूर फेरोगे वहा तुम्हारा राज्य हो जाएगा। हडवूजी की बात सही निकली और राव जोधाजी को राज्य वापस मिल गया। इसके बाद राव जोधाजी ने इनका सम्मान किया और फलोदी के पास 'वेंगटी' नाम गाव शासन मे दिया। वहा पर आज भी हडवूजी का प्रभाव लक्षित होता है।

हडवूजी ने सिद्ध पुरुप रामदेवजी तवर की सत्सग की थी इनकी योग्यता एव श्रद्धा को देखकर रामदेवजी के गुरु योगी बालकनाथजी ने इनको अपना शिष्य वना लिया। यही से ये हथियार त्याग साधु वन गये और भजन मे लीन हो गये। ये एक वीर सिपाही एव तपस्वी भक्त थे। इनका जीवन कठोर तपस्या से युक्त एव पवित्र था। सिद्ध पुरुप रामदेवजी की समाधि के ठीक आठवें दिन इन्होने भी, उन्ही के पास समाधि ले ली।

२ भट्टी से कोयले निकालने व डालने का एक लोहे का उपकरण जिसके पीछे लकडी का डडा लगा हुआ होता है।
रू भे–हग्वू, हरभू।

हडव्वड—१ देखो 'हडवड़ी' (रू. भे.)
उ०—हुई हडव्वड़ सेन मैं, भेर भणके सद्ध। पडियौ हाकौ त्रवक्कै, चढ़ियौ व्याळ रवद्ध।—रा. रू
२ ध्वनि विशेप।

हड़वोचौ–स. पु.—मुह द्वारा काटने की क्रिया या ढग।

हडभच – देखो 'हडवच' (रू भे.)

हडमत, हडमत—देखो 'हनुमान' (रू भे)

हडमल–वि.—कुलटा, पुश्चली, छिनाळ।
उ०—रामा अभिरामा कामातुर रोवै, हडमल हुडदगी सेजा मैं सोवै।—ऊ. का.

हडमान—देखो 'हनुमान' (रू भे)
उ०—१ कै तौ जिवावे माता सीता सतवती, कै तौ जिवावै हडमान जती। लिछमन कै वाण लग्यौ सकती लिछमण कै।
—लो. गी
उ०—२ तौ रामजी भला दिन देवै हडमानजी री वगेची रा उण पुजारी नै।—अेक गाव मे अेक निपोचियौ वाणियौ रै'वतौ।
—फुलवाडी

हडमानौ—देखो 'हनुमान' (अल्पा; रू. भे.)

हडवड—देखो 'हडवडी' (रू. भे)
उ०—१ कटका विहू हुइ कूच, गडगड त्रवागळ गुडै। हडवड भड हुइ हैवरा, चढिआ पौरस चूच।—र वचनिका
उ०—२ हडवड जोगण खेतल होय, सडवड कायर पंथ सजोय।
—गो. रू

हड़वड़णौ, हड़वडवौ—देखो 'हडवडाणौ, हडवडावौ' (रू भे.)
हडवडणहार, हारौ, (हारी), हडवडणियौ—वि०।
हडवडिओडौ, हडवडियोडौ, हडवडयोडौ—भू० का० कृ०।
हडवडीजणौ, हड़वड़ीजवौ—भाव वा०।

हडवड़ाणौ, हडवड़ावौ—देखो 'हडवडाणौ, हडवडावौ' (रू. भे.)

हड़पणी, हड़पवौ–क्रि. स.—अनुचित रूप से किसी की वस्तु प्राप्त कर अधिकार कर लेना, दवा लेना।
२ गायब करना, उडा लेना, पार कर लेना।
उ०—वैजू अर वापू गाठडी हड़पणी चावै है। लीना उण नै ठोकर मार'र चली गई है।—तिरसकू
३ पेट मे उतार लेना, निगल जाना।
४ झपटना, छीनना।
हड़पणहार, हारौ (हारी), हड़पणियौ—वि०।
हड़पिग्रोडौ, हड़पियोडौ, हड़प्योडौ—भू० का० कृ०।
हड़पीजणौ, हड़पीजवौ—कर्म वा०।
हड़प्पणौ, हड़प्पवौ, हड़फणौ, हड़फवौ, हड़प्फणौ, हड़प्फवौ —रू० भे०।

हड़पियोड़ौ–भू. का कृ.—१ अनुचित रूप से किसी का माल (पदार्थ) प्राप्त कर अधिकार किया हुआ, दवाया हुआ. २ गायब किया हुआ, उडाया हुआ, पार किया हुआ ३ पेट मे उतारा हुआ, निगला हुआ ४ झपटा हुआ, छीना हुआ।
(स्त्री. हड़पियोडी)

हड़प्पणौ, हड़प्पवौ—देखो 'हड़पणौ, हड़पवौ' (रू. भे.)
हड़प्पणहार, हारौ (हारी), हड़प्पणियौ—वि०।
हड़प्पिग्रोडौ, हड़प्पियोड़ौ, हड़प्प्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हड़प्पीजणौ, हड़प्पीजवौ—कर्म वा०।

हड़प्पियोड़ौ—देखो 'हड़पियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हड़प्पियोडी)

हड़फ—देखो 'हड़प' (रू भे)

हड़फणौ, हड़फवौ—देखो 'हड़पणौ, हड़पवौ' (रू. भे)
हड़फणहार, हारौ (हारी), हड़फणियौ—वि०।
हड़फिग्रोडौ, हड़फियोडौ, हड़फ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हड़फीजणौ, हड़फीजवौ—कर्म वा०।

हड़फियोडौ—देखो 'हड़पियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. हड़फियोडी)

हड़प्फणौ, हड़प्फवौ—देखो 'हड़पणौ, हड़पवौ' (रू. भे)
उ०—सडप्फै वीजूजळा हास मोहा वडप्फै सूर, सीसहार झडप्फै पहवखे नयी सभ। ग्रीधणी हड़प्फै पळा सामळी हड़प्फै गूद, रुड केई ग्रडप्फै पडप्फै वरा रभ।—वद्रीदास खडियौ

हड़प्फियोडौ—देखो 'हड़पियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. हड़प्फियोडी)

हड़वड—देखो 'हड़वडी' (रू. भे)
उ०—हड़वड़ जोगण सेनल होय, सडवड कायर पथ सजोय।
—गो. रू
क्रि प्र.—लागणी, होणी, मचणी।

हड़वड़णौ, हड़वडवौ—देखो 'हड़वडाणौ, हड़वडावौ' (रू भे.)
उ०—केई जणा तौ इण भात सुट्ट व्हैगा, जाणै सगळी सुध-वुध माथै वाण व्हैगौ व्है। केई जणा मिनकी रै प्रगट व्हिया ऊदरा हड़वडै ज्यू कानी कानी न्हाटा।—फुलवाडी
हड़वडणहार, हारौ (हारी), हड़वडणियौ—वि०।
हड़वडिग्रोडौ, हड़वड़ियोड़ौ, हड़वड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हड़वीजणौ हड़वीजणौ—भाव वा०।

हड़वड़ाट–स स्त्री.—१ हड़वड की ध्वनि, कोलाहल, शोरगुल।
उ०—सारा जिणसा लिया थका सिरोही पोळ मैं वैठा, हड़वड़ाट सुण जाळी में मूढौ काढ रावजी पूछियौ—साथ किणरौ।
—वा दा. ख्यात
२ शीघ्रता, जल्दवाजी।
३ देखो 'हड़वडी' (रू भे.)
क्रि प्र—लागणौ।
रू. भे.—हड़वड़ाट, हुटुहुडाट।

हड़वड़ाणौ, हड़वडावौ–क्रि. अ—१ वहुत जल्दी करना, अत्यन्त शीघ्रता करना।
उ० – ग्रेक दिन वमी तावड़ै मे ऊभौ ग्राप रै विचारा मे गरक हौ। इत्ते मे ग्रेक जणै कैयौ—ग्रा देखो, वसी भाई! थारी गाय'र वच्छी। वसी हड़वडाय'र उठियौ।—वरसगाठ
२ अधिक जल्दी के कारण घवडाहट उत्पन्न होना। ग्रातुर होना, अधीर होना। सतुलन खो देना।
३ भय या खुशी के मारे इधर उधर भागना।
क्रि स—४ जल्दी या शीघ्रता करने के लिए प्रेरित करना।
ज्यू—म्है थोडौ उणा नै हड़वडाय'नै ग्राऊ।
हड़वडाणहार, हारौ (हारी), हड़वडाणियौ—वि०।
हड़वडायोडौ—भू० का० कृ०।
हड़वडाईजणौ, हड़वडाईजवौ—कर्म मा०।
हड़वडणौ, हड़वडवौ, हड़वड़ावणौ, हड़वडाववौ, हड़वडणौ, हड़वडवौ, हड़वडाणौ, हड़वडावौ—रू० भे०।

हड़वडायोडौ–भू का. कृ.—१ जल्दी किया हुआ, शीघ्रता किया हुआ. २ अधिक जल्दी के कारण घवराया हुआ, ग्रातुर, अधीर, असतुलित ३ इधर उधर भागा हुआ. ४ जल्दी या शीघ्रता के लिए प्रेरित किया हुआ।
(स्त्री. हड़वडायोडी)

हड़वडावणौ, हड़वड़ाववौ—देखो 'हड़वडाणौ, हड़वडावौ' (रू. भे)
उ०—दोय जणा-ग्रेक कईक ढलती ग्रोस्था-री ग्रर ग्रेक मोटियार जिकै-रै हाथ मे लालटेण, वारणौ खोल'र हड़वडावता खाया-खाया टुर पडया।—वरसगाठ
हड़वडावणहार, हारौ (हारी), हड़वड़ावणियौ—वि०।
हड़वडाविग्रोडौ, हड़वडावियोड़ौ, हड़वडाव्योडौ—भू० का० कृ०।
हड़वडावीजणौ, हड़वड़ावीजवौ—कर्म वा०।

हचकाडियोडो—देखो 'हिचकायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री हचकाडियोडी)
हचकाणी, हचकावो—देखो 'हिचकाणो, हिचकावो' (रू. भे.)
हचकाणहार, हारो (हारी), हचकाणियो—वि०।
हचकायोड़ो—भू० का० कृ०।
हचकाईजणो, हचकाईजवो—कर्म वा०।
हचकायोडो—देखो 'हिचकायोडो' (रू भे)
(स्त्री. हचकायोडी)
हचकावणो, हचकाववो—देखो 'हिचकाणो, हिचकावो' (रू भे)
हचकावणहार, हारो (हारी), हचकावणियो—वि०।
हचकाविओडो, हचकावियोडो, हचकाव्योडो—भू० का० कृ०।
हचकावीजणो, हचकावीजवो—कर्म वा०।
हचकावियोड़ो—देखो 'हिचकायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री हचकावियोडी)
हचकियोडो—देखो 'हिचकियोडो' (रू भे.)
(स्त्री हचकियोडी)
हचको—देखो 'हिचको' (रू. भे.)
उ०—१ हे! असि तरवार रा धावण सुधारण वाळा री स्त्री असिधावण री लुगाई थारै पीव रै हाथा री बळिहारी वारणा लेऊ इसी तरवार खुरसाण चढाय तयार कर दीधी है। सो रिण मैं दुसमणा ऊपरै झाटकता हाथ रै नाम भर झटको हचको नही आवै जिण दुसमण माथै वहे सो निरलंग होतो निजर आवै।
—वी. स. टी.
उ०—२ इण समे रा कापुरसा (कायरा) नै विरदाय माडाणी जोतिया पिण गाडो किणसूं ही खचियो नही। सो खेंचाताण करी पण उठै हीज हचका खावै पण चलै नही जद उण हीज वीर धवळा रो बाळक वाघडो, तिको हीज इण सकट रै कध लगाय नै ताडूके छै—अरथात म्हारो पिता जिण गाडा रै बोझ वुहो वो कायरा सू खचै नही हू ईज खेंचसू।—वी. स. टी.
हचक्कणो, हचक्कवो—देखो 'हिचकणो, हिचकवो' (रू. भे.)
हचक्कणहार, हारो (हारी), हचक्कणियो—वि०।
हचक्किओडो हचक्कियोडो, हचक्क्योडो—भू० का० कृ०।
हचक्कीजणो, हचक्कीजवो—भाव वा०।
हचक्कियोडो—देखो 'हिचकियोडो' (रू. भे)
(स्त्री हचक्कियोडी)
हचण—देखो 'हिचण' (रू. भे.)
हचणो, हचवो—देखो 'हिचणो, हिचवो' (रू. भे)
उ०—१ जमी पुड धरहरै उडै रूका जरक, देख क्रपणा थरक पीठ दीधी। हचण रण सुकर जम दाढ ग्रहियां हरक, करी वाळे मसुड कीधी।—गुलावसिंघ रावत रो गीत
उ०—२ 'हमता' हर भाळे जुध हचियो, उजवाळो कुळ नाम अभग। चख चख धुपै सेचर ताळी, भूतेसर वाळो चित भग।
—केसरीसिंह चुडावत रो गीत
हचणहार, हारो (हारी), हचणियो—वि०।
हचिओडो, हचियोडो, हच्योडो—भू० का० कृ०।
हचीजणो, हचीजवो—भाव वा०।
हचा—क्रि. वि.—शीघ्रता से, जल्दी से।
उ०—आ कैयनै वा तो साचाणी वेरा में पडण सारू हचां हचा वहीर व्हैगी।—फुलवाडी
हचियोडो—देखो 'हिचियोडो' (रू भे)
(स्त्री. हचियोडी)
हचीडो, हचीडो—स. पु—१ जोर का धक्का, जोर का झटका।
उ०—१ उदास मन सू वानै कियाई ठिरडतो ठिग्डतो मोटर मैं आय नै वैठ्यो तो दैठता पाण एक जोर रा हचीडा सागै वा स्टारट होगी।—अमरचूनडी
उ०—२ मोटर री चाल रै सागै वा खुसी पण तर तर वधतीज जावती और मोटर रा हचीड़ा रै सागै उणमैं उछाळ पण आवता रैवता।—अमरचूनडी
उ०—३ आख्या साम्ही ओळू री कावड घूमण लागी इज ही कै राहडी रो हचीड लाग्या उणनै चेतो व्हियो।—फुलवाडी
२ जोर की टक्कर।
हचोळणो, हचोळवो—देखो 'हिचोळणो, हिचोळवो' (रू भे)
उ०—हाथळा खळा कुभायळा हचोळै, मंगळा दळा भुजवळा मारै। वाधा इदा गळै साकळो मडोवर, धणी देवै 'अभो' अजस धारै।—लखपत इदा रो गीत
हचोळणहार, हारो (हारी), हचोळणियो—वि०।
हचोळिओड़ो, हचोळियोडो, हचोळ्योडो—भू० का० कृ०।
हचोळीजणो, हचोळीजवो—कर्म वा०।
हचोळियोड़ो—देखो 'हिचोळियोडो' (रू. भे)
(स्त्री. हचोळियोडी)
हचोळो—सं पु—वाहनो पर चलते समय आने वाला हल्का झटका या झोका।
उ०—लोभाणी नवोढा नेह नसा रा कचोळा लेती, भासै अग अचोल सचोळा लेती भाव। करा केतमक्र रै लचोळा लेती तूजी कना, नक्र रै मचोळा सू हचोळा लेती नाव।—र हमीर
२ धक्का, टक्कर।
३ तरग, लहर, हिलोर।
हज—देखो 'हज्ज' (रू. भे)
उ०—१ मैं सुणी छै थें हज घणी कीवी छै। था एक हज रो फळ म्हानू वेचो तो थानूं सपति मिळै मोनू धरम जुडै।—नी. प्र.
उ०—२ अकवर कसमीर मे जद खबर मक्का री हज करण मुसळमान जाता हा हिंदसू ज्यानूं वळोचा लूटिया। आ वात

हड़वडाणहार, हारी (हारी), हड़वडाणियो—वि० ।
हड़वडायोडो—भू० का० कृ० ।
हड़वडाईजणो, हड़वडाईजवो—कर्म वा० ।
हड़वडायोड़ो—देखो 'हड़वडायोडो' (रू भे)
(स्त्री. हड़वडायोडी)
हड़वडियोडो—देखो 'हड़वडायोडो' (रू भे)
(स्त्री. हड़वडियोडी)
हड़वडाट—देखो 'हड़वडाट' (रू. भे.)
हड़वा-स. पु —भाटी वश की एक शाखा । (वा दा ख्यात)
हड़व्वड—देखो 'हड़वडी' (रू भे.)
उ०—हय जीण हड़व्वड हूत हुवा, जवना पण लीधा पथ जुवा ।
खग बाध चढै श्रम तूग खडा, घण थाट कमध अवीह घडा ।
—रा. रू.

हड़सोली—देखो 'हीयोडी' (रू. भे)
हड़हड-सं. स्त्री.—१ जोर से हंसने या अट्टहास से उत्पन्न ध्वनि, खिल-खिलाहट ।
उ०—१ वीर हड़हड सूर वर चड, धार सर झड भिदे अरि घड ।
वूर पडि जवूर विहु घड, भुरज वीछडि पडै खडभड ।—रा रू.
उ०—२ वढि कथड मुख करत वडवड, फरड फिफरड कळिज
फडफड । फील घड पड ग्रझड झडफड, हुय दडड रत मुनद
हड़हड़ । पडै दळ अणपार । - सू प्र
उ०—३ हड़हड हसत मसत मदिरा मद, धड हड सेर धुवाडै ।
चड चड चाव जोगण्या चोसट, धड धड भूमि धुजाडै ।—मे म.
२ ध्वनि विशेष ।
रू भे —हड़ड, हड़ाहड, हटहड ।
हड़हडणो, हड़हडवो-क्रि अ.—१ जोर से हंसना, अट्टहास करना, खिल-खिलाना ।
उ०—१ हरचद वीर मुनद हड़हड़िया, खेत समर साम्हा असि
खडिया । पुर वाहिर इकवार वधूपुर, आया उठै न्रपति दळ आतुर ।
—सू. प्र.
उ०—२ पीठ वडवडाट कूरम, छटा प्रळै री, मही खडखडात
हैजम मचोळा । मुनि हड़हडात, धडडात तोपा महत, गयण गडडात
पड झाट गोळा ।—कविराजा वांकीदास
२ गुंजित होना, गूंजना ।
उ०—फींफरड भूट गोळा गजां फरहडै, जगी होदा गजा खडहडै
जोम । धडहडै धोम वै मुसाहव लडै घर, विहु साहव हसै हड़हडै
वोम ।—हुकमीचद खिडियो
हड़हड़णहार, हारो (हारी), हड़हडणियो—वि० ।
हड़हडिग्रोडो हड़हडियोडो हड़हड्योडो—भू० का० कृ० ।
हड़हडीजणो हड़हडीजवो—भाव वा० ।
हड़हड़णो, हड़हड़वो—रू० भे० ।

हड़हड़ाट-स. स्त्री.—१ जोर से हसने की ध्वनि ।
२ हड़हड की आवाज ।
हड़हड़ियोड़ो-भू का कृ.—१ जोर से हंसा हुआ, अट्टहास किया हुआ
२ गूंजा हुआ ।
(स्त्री. हड़हड़ियोडी)
हड़ाहड —देखो 'हड़हड' (रू भे)
उ०—हड़ाहड रिखि हुवै हर हार, जयज्जय जोगणि किद्ध
जिग्रार । महारिणि पोढै सूर मसत्त, दिगवर जाणि अखाडै दत्त ।
—र. वचनिका
हड़ींदो-स. पु [अनु] ऊंचे स्थान से किसी भारी वस्तु के यकायक
गिरने से उत्पन्न ध्वनि ।
मि. धडीदो ।
हड़ीप-वि —१ साहसी, वीर ।
२ शक्तिशाली, वलवान ।
३ दृढ मजबूत ।
हड़ूमांन —देखो 'हनुमान' (रू. भे)
उ०—गळा में जरख री दात अर मत्रायोडो मादळियो । चोटी में
हड़ूमान जी री मिळाई ।—फुलवाडी
हड़ूडी-स पु [देश] परस्पर मस्तक भिडाकर खेला जाने वाला एक
खेल ।
उ०—झडै भ्रसुडा झूमि झूमि इण भाव सूं । खरी हड़ूडी खेल
रमै महाराव सू ।—सिववख्स पाल्हावत
हड़ूमान - देखो 'हनुमान' (रू भे) (डिं. को)
उ०—परालवध का पावणा, देख दई का खेल । भभीखण नै
लक, अर हड़ूमांन नै तेल ।—अज्ञात
हड़ोई—देखो 'हड़ोई' (रू भे)
हड़ो-स पु —१ वायु का ववडर, वातचक्र, वतूला ।
२ देखो 'हूडो' (रू भे.)
हच—देखो 'हिचण' (रू भे)
उ० —पीरस सारा है प्रथी, 'कला' पराई चाड । रावत मच्छरा
राखता, हच लोही वल हाड ।—कल्याणसिंघ वाढेल री वारता
हचकणो, हचकवो —देखो 'हिचकणो, हिचकवो' (रू. भे.)
उ०—हचकै वहु वैल करै हमला, टहलै लगि गैल गयद टला ।
—मे म.
हचकणहार, हारो (हारी), हचकणियो—वि० ।
हचकिग्रोडो हचकियोडो हचक्योड़ो—भू० का० कृ० ।
हचकीजणो, हचकीजवो—भाव वा० ।
हचकाडणो, हचकाडवो—देखो 'हिचकाणो, हिचकावो' (रू. भे)
हचकाडणहार, हारो (हारी), हचकाडणियो—वि० ।
हचकाडिग्रोडो हचकाडियोडो, हचकाड्योडो—भू० का० कृ० ।
हचकाडीजणो हचकाडीजवो—कर्म वा० ।

व्है जावै ।—फुलवाडी

हजारी-स पु.—१ एक हजार मुद्रा के मूल्य का घोड़ा ।

उ०—त्राण पाखर भरण हजारी तडड़िया, रोळ भुज वडड़िया रचण राटा । कर मछर घाटवी लियण वित कटड़िया, घड़ीया 'चंदरज' भुजा घाटा ।—हम्मीरसिंघ चूंडावत री गीत

२ एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा ।

उ०—असली जादा गोल बोल रा रागमहार, गाजी बहादर ताजक नीलक तार, जरवाफ, बादलै धामावरी, किनारी, हजारी कपड़ै रा पहरणहार, देस देस रा, जाति जाति रा मीरजादा भेळा हुआ छै ।—रा. सा स

३ एक हजार सिपाहियों का सरदार, सेना नायक ।

उ०—१ हजूर अमीर राठे नामदार मरद । कमरदीखान दोग तुररावाज वगस । साह का दरगाह घवाह् जिकर आवै, वारै वारै हजारिया की गिनत को पावै ।—रा रू.

उ०—२ असुरा झाट झड दीयतो अमरसिंघ, साट हजारी तणो घड़ियो । हुआ कोई सीम पुड वीम पुड हेकठा । सिरो दामण किना वजर खिरियो ।—राव अमरसिंह राठोड री गीत

वि —१ हजार के मूल्य का ।

उ०—उवा घोड़ा दीठा । रस नै राजा नै कह्यौ, 'घोड़ा सगरा आया । राज, हजारी छै पण लाखी नहीं ।—हाडूल हमीर री वात

२ हजार का, हजार से सम्बन्धित ।

३ हजार की गणना मे, तादाद मे ।

उ०—पण करणी गोमदै री भायेलो, हजारी रकम भळै घावै ।
—दसदोख

४ हजार वर्षों की ।

उ०—लोटो पाछो पकड़ावता बोल्या—जीवतो रै भाया—राम थारी हजारी ऊमर करै ।—बिज्जी

५ वर्ण सकर, दोगला ।

६ हजारे का ।

उ०—कुसुमल पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी । मुकुट ऊपरे छत्र विराजे, कुडळ की छवि न्यारी ।—मीरा

७ देखो 'पचहजारी' (रू भे.)

हजारीगुल-स पु —एक प्रकार का पुष्प ।

उ०—वन्ना मैं थानैं फूटरमल यू कयो, जटके ने सरवरियै मत जाय वन्ना, विणियारिया री नीजर लागणी, रायजादो हजारीगुल रो फूल, तूरा री तीजी पाकडी ।—लो. गी

हजारीघास-स स्त्री.—एक विशेष प्रकार की घास, जिसे महीन पीस कर फोड़े फुन्सी के लगाते हैं ।

हजारीसद्दी-स पु [फा हजारी+अ. सद्] हजारवाँ महोत्सव ।

हजारीहफत—देखो 'हफतहजारी' (रू. भे)

उ०—मुरतबो हजारीहफत महि, पान अहता पावियो । इम विदा होय मुजफ्फरखानी, 'धवल' सूर दिन पावियो ।—सू. प्र.

हजारूं-वि [फा. हजार+रा प्र. ऊं] १ कई हजार, सहस्त्रों ।

उ०—१ पण घटघत जामें न ढंग, सोगी नदरावण री रग । हजारूं भेळा करै घर ठ्या गुवा मनावै, धीर-वीर नै सूडी पावतो जावै ।—दसदोख

उ०—२ सागर सुड सुह करै, रमावै अग री रोटा । पन नदा रै पीड, हजारूं छिन्दै रोटा । ... री ढीग, दिखावै धाटम धाणो । लागी फोला लगै, नोकाळै लूण नाणो ।—दसदेव

२ अत्यधिक, बहुत ।

३ हजारों की तादाद मे ।

उ०—१ बहला रै नीचै हजारूं मनुष्य भेळा हवा । पना उण ... स्वामीजी रै हाथै दीक्षा लीनी ।—भिक्खु

उ०—२ सेवट हजारूं जीवां नै मार एक दिन मरणो तो है ईज ।
— फुलवाडी

रू भे—हजारां ।

हजारेक-वि. यौ [फा. हजार+रा. प्र. एक] एक हजार के लगभग ।

उ०—पीर केई हिंदू रजपूत काम आया सा ... भाई ... हजारेक बाहरला साथा सा ... जे टिकाया था ।—सुरतीण ... री वात

हजारो-स. पु.—१ पीले और लाल रंग का छोटी छोटी पंखडियों का फूल ।

उ०—रैयद की वाड़ी सिम्ब का विहान । नाफरमा हजारा और गुलहुनास । गुलसाल के ऊपर गुरगुल का प्रमान ।—सू प्र

२ उक्त फूल का पौधा, जो प्रायः सर्दी मे फूल देता है ।

अल्पा.—हजारि ।

हजुरि—देखो 'हजूरी' (रू भे)

उ०—याद कियो हरि पदमणी नै, दिया जिवारा पठाय । करा कागी हरि पत्रि, लियो हजुरि बुलाय ।—रुकमणी मगळ

हजूमी-वि —प्राकृतिक, नैसर्गिक ।

उ०—धूमी घणहर री घटा, गिरधा सूनी गैन । नरा बिलूमी नागिया, गगो हजूमी गैन ।—सिवबगस पाल्हावत

हजूर—देखो हजूर' (रू भे)

उ०—१ भाळगवा अरजाणवा, दिन खोटता दूर । साहिब नाचा साधवा, है हाजरा हजूर ।—ह. र.

उ०—२ मीरा कू प्रभु परच्यो दीन्हो, दिया रे खजीना भरपूर । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, धणी मिळ्या छै हजूर ।—मीरा

उ०—३ तेरे तो आसान सब, मरे बौहत जरूर । हरीयैं कु आपनो राखी राम हजूर —अनुभववाणी

उ०—४ दोडीया जाय दरवान नै राजा है कहवायो । वारै ढाडी ऊभा छै । कवरजी कह्यो हजूर आवै ।—ढो. मा.

उ०—५ जात री दरोगो, हजूर रो धाभाई दादो । डरतो सो

सुणता ही अकवर नाक सळ घालियौ तीरै मार वफादार राजा वीरवळ वलोचा माथै विदा होतौ हुवौ ।—वा. दा ख्यात

हजम–वि. [अ] जो खा लेने के वाद आमाशय मे पच गया हो, पचा हुआ ।

२ दवाया हुआ, अधीकृत किया हुआ ।

स. पु —सिंह के अगले स्कन्ध के पास की एक हड्डी जिसे चाट कर वह खाना हजम करता है।

उ०—डावया घर डाकी सुहड, डट लै ले न डकार । हजम चाट जिम सिंह हजम, करे खूव खज खार ।—रैवतसिंह भाटी

हजरत, हजरति–स पु [अ हज्रत] १ आदर या सम्मान-सूचक शब्द, श्रीमान ।

उ०—१ उठै जायनै साहिजादी सिसोदिया सिवारी सैमान कराय दियौ । नै पातसाहजी सू मालम कियौ—'पातसाह सलामत' ! मोनू नदी माहै सू वूडती नूं एकै सिसोदियै राणा रै भाई काढी छै । तिणनू म्हैं भाई कहि वोलायौ छै, सो हजरत उस कू पावा लगावौ नै चाकर करौ ।—नैणसी

उ०—२ जे ये वादसाही चाकर सै छौ थे हरामखोर सू क्यू सामल हुवा ? तद इहा कहाई—जे हरामखोर हजरत का भी न है । पाजी मुह से हजूर मे गैरजवान वोलै सो कैमे ।

—अमरसिंह गजसिंहोत री वात

उ०—३ म्हारौ लोक आधौ मुलक सीरोही रौ पातसाही खालसे कीयौ छै, तठै थाणौ राखियौ छै। हजरत रै दाय आवै तिण जागीरदार नू दीजै, भावै करोडी भेजीजै, राव हुकमी चाकर छै ।

—नैणसी

२ वादशाह ।

उ०—पीछै घोडा हजार तीन सूं मीर हमजो चढियौ । पीछै प्रथीराजजी कासीद अमरसिंघजी नू मेलियौ, कै मैं वोय वात री हजरत सू पैज करी है, सू मारण वालै नू मारजे वा पकडीजै मती ।

—द. दा

३ महात्मा, महापुरुप ।

४ चालाक, दुष्ट या लुच्चा व्यक्ति । (व्यग्य)

रू. भे.—हजरति, हजरत्ति, हजरथ, हजरिति ।

हजरतसलामत–स पु. [अ. हजरतसलामत] प्रतिष्ठित व्यक्तियो के लिए सम्वोधन वाचक शब्द ।

२ माननीय पुरुप, सज्जन पुरुप ।

हजरति, हजरत्ति, हजरथ, हजरिति—देखो 'हजरत' (रू भे.)

उ०—१ अवलीए आसलीक कवलै जिहानिआ हजरति पातिसाह मुहमद मुसतफाखान रा उमराउ हुसन हुसेनखा अलीखान सरीखा गोरी, पठाण, सैद, मुगळ, उजवका मुमलमान आकीनदार, त्रीस सीपारा रा पढणहार, पाच वखत निवाज रा करणहार, सुद्ध कलमे रा पढणहार, पेसता, आरवी, पारसी रा वोलणहार, आउखी ढाढी राखाणहार ।—रा. सा सं.

उ०—२ सहर देखै दिली मिळै पातिसाह मूं, खलक देखत सिवौ नाम खारै । आवियौ वळै कुसळै वळै आप रे, हाथि घसि रह्यौ हजरत्ति हारै । —घ. व. ग्र.

उ०—३. हसम हुकम सोपीआ छै । हजरिति सू मालिम छै। राजान कुअर वत्रीस लक्षणौ छै ।—रा. सा स

हजांम–स पु [अ हज्जाम] हजामत वनाने वाला, नाई ।

हजाज–स. स्त्री. [अ. हजाज] १ वफा ।

उ०—अर हजाज री वात चालै तरै उण नूं अन्याय रे कारण सारा धक धक करै नै स्राप देय ।—नी. प्र

हजामत, हजामति–स. स्त्री [अ] १ मिर या दाढी के वाल कटाने या वनवाने की क्रिया, क्षौर ।

उ०—हजामति कराडि अर सहु कही ठाकुरा नै कहियौ जु ढाढी रखावौ ।—द. वि.

क्रि. प्र.—करणी, कराणी, वणवाणी, वणाणी ।

२ वढे हुए वाल जो हजामत की श्रेणी मे आते है।

क्रि प्र —कराणी, वढणी, वढाणी, वधणी, वधाणी ।

३ ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा किसी से जवरन कुछ ले लिया जाय, ठगी । (व्यंग्य)

क्रि. प्र.—करणी, होणी ।

मुहा —विना पाचणै हजामत करणी=जवरदस्ती खर्चा कराना ।

हजार–वि. [फा] सौ का दस गुना, दस सौ, सहस्त्र ।

सं पु —२ एक सख्या जो सौ की दस गुणी होती है, सहस्त्र की सख्या ।

उ०—१ सेना सितर हजार सू, विचित्र अमित्र वळवान । कियौ विदा रवि चै उदै, मुदै तहव्वरखान ।—रा रू.

उ०—२ दलाल सै चीज वसत मिला'र हजार खड तौ देणा ही पडेला नही चौखी कोनी लागै ।—दसदोख

२ उक्त सख्या का सूचक अक जो इम प्रकार लिखा जाता है—१००० ।

हजारमेखी–वि —जिसकी वनावट मे हजार मेखें (कीलें) लगी हो, हजार मेखो वाला ।

स. पु —एक प्रकार का कवच ।

उ०—हजारमेखी दसतौ हाथ मे पहरिया जैमळजी रात रा तीनू पहरारी चोकी मे आप फिरता । संग्राम नामा वदूक अकवर रा हाथ री छूटी । गोळी जैमल रै लागी ।—वा दा. ख्यात

हजारवौं–वि —१ हजार के स्थान पर होने वाला ।

२ ९९९ के वाद वाला ।

स पु.—किसी इकाई का हजारवा अग या भाग ।

उ०—ऐडी अकल रौ हजारवौं रेसोई हाथ आय जावै तौ निहाल

७ नियंत्रण ।

हटकणो, हटकबो-क्रि स —१ मना करना, वर्जन करना, रोकना ।

उ०—१ जीवतो देख दया उपजी । सामीवार री क्रोध ऊजवो । उणा नू हटकविया । तरै वै मसाणी करण लागा ।

—वरसांगजीसपि माटेम री वात

उ०—२ यारो रूप देख्यां ग्रटकी । कुळ कुटंब सजण सकळ बार बार हटकी, बिसरयां ना लगन लगी मोर मुगट नटकी ।—मीरा

उ०—३ किणारोई रह्यो न हटकियो, निज हट कियो निभाव । बाळे ज्यूं ह वळियो नहीं, बाळापणं ई सुभाव ।—जैतदान बारहठ

२ डांटना, धमकाना, फटकारना ।

उ०—ताहरा आनें रैं कुंवर नू खबर गई सु जोगियै, जिनावर मारियो छै । ताहरा कुंवर आयो । जोगियां नू हटकिया ।—नैणसी

३ पीछे हटाना, परास्त करना ।

उ०—वामें वरदेत समध बळ दाखै, छतीस कुळ कह नेस । गाढा रावळ राव गुरजता, दोयण हटक्या वीरम देव ।

—वीरमदेव मेड़तिया री गीत

४ प्रतिबन्ध लगाना, रोक लगाना ।

उ०—गोविंद सू प्रीत करी, तब ही क्यों न हटकी । अब तो बात फैल गई, जैसे बीज बटकी, बोध को विचार छाडि, पारि प्रीति ग्रटकी ।—मीरा

५ हटाना, दूर करना ।

६ नियंत्रण मे रखना, नियंत्रण रखना ।

उ०—१ हरीया पांच पचीस कू, हटकिया रहै न राखि । जिन राख्या जिन सहज सू, राम नाम कू ग्राखि ।—अनुभववाणी

उ०—२ चाढी चटकी भव मटकी, नाच्यो हूं बिधि नटवो राजि । दिव मन हटकी ग्रापसों ग्रटकी, लागो तुम्ह पाय लटकी ।—मीरा

उ०—३ मन नै हटक, भटक मती मूरख । घट में घीरप राख घणी ।—मोडजी रतनू

हटकणहार, हारो (हारी), हटकणियो—वि० ।

हटकिग्रोड़ो, हटकियोड़ो, हटक्योड़ो—भू० का० कृ० ।

हटकीजणो, हटकीजबो—कर्म वा० ।

हटकारणो, हटकारबो—रू० भे० ।

हटकारणो, हटकारबो—देखो 'हटकणो, हटकबो' (रू भे)

हटकार-स स्त्री.—लानत, फटकार ।

हटकारियोड़ो—देखो 'हटकियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. हटकारियोड़ी)

हटकारो-वि.—१ वर्जन, निषेध ।

२ डाट, फटकार ।

३ हटने की क्रिया या भाव ।

४ मूंछो पर ताव देने का भाव ।

उ०—मीरू ग्रारातुर मूफाडा भाजै, वैंता फुरणा रा फूफाडा वाजै। हाळी मूंछ्यां रैता हटकारा, फिरता फुरणा रा फैला फटकारा ।

—ऊ. का

हटकियोड़ो-भू. का. कृ —१ मना किया हुआ, रोका हुआ, निषिद्ध वर्जित. २ डांटा, फटकारा हुआ, धमकाया हुआ. ३ पीछे हटाया हुआ, परास्त किया हुआ. ४ रोक लगाया हुआ, प्रतिबंधित, ५ हटाया हुआ, दूर किया हुआ ६ नियंत्रित ।

(स्त्री. हटकियोड़ी)

हटको हटको-अव्य. [अनु.] खटक-खटक कर. टप-टप कर ।

उ०—माधव ! मन माहुरा-माठि, पट पलिक हीदोर । हटको-हटको होयगो, हईहद राम कमोर ।—बा दां. ख

हटड़ु—देखो 'हटक' (रू भे)

उ०—दुग पाये दस दुग्गा, ताही मोर हटड़ु । गगन गुर्यां गिर गज्जे, धीगी जेठ पटाक ।—दां. द.

हटड़ी-स स्त्री. १ काष्ठ या धातु निर्मित खानेदार छोटा पात्र, जिसमें नमक, मिर्च आदि मसाले रखे जाते है ।

२ दीवार में आले (ताक) की तरह बने खाने वाली जगह, जिसमें कपाट भी लगाते है । (शिखावटी)

३ देखो 'हाट' (अल्पा; रू भे.)

उ०—धरा ध्यान रा सीचा रकबी, जिणै न मन की डाली । गुरु निरख सू तोलण लागा, ताला हटड़ी माली ।—अनुभववाणी

हटड़ो-स पु—१ वह स्थान जहां पर ही व्यवहार की वस्तुएं हों ।

उ०—हाट बजार री घर गुवाड़ी रै हटड़ै री सोना रेत'र बना री थाग्या गुरी री गुरी रैवै ही ।—दसदोख

२ देखो 'हटड़ी' (मह, रू भे.)

हटणो, हटबो-क्रि अ — १ किसी स्थान की ओर पर इधर-उधर होना, खिसकना, सिसकना । स्थान से टल जाना, हट जाना ।

उ०—भरि भाद मांहे 'बगसीर' रख्, बहे जोर धारे वहै । घर नाथ जसो कहा' धरा, पाहुड़ पाघ न मो हटै ।—रा. रू.

उ०—पटियो वळ देता पछी, हटियो नह हारे । राम दुरमि चढ राग रै, धरि झाटि धरारे ।—सू प्र

३ किसी बात या काम का नियत समय न आने सरकना, समय टलना । स्थगित होना ।

४ दूर होना, न रहना, मिटना ।

५ किसी बात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ न रहना । विचलित होना ।

६ दूर रहना, अलग रहना, अन्यत्र रहना ।

उ०—मारान वीर पुरसा री पकती विमय दुर वासना सू हटीयोड़ी रहे है नै आपरा पुराणा वैर नेवरणा रात दिन घाटघड़ मे वणिया रह है ।—वी. स. टी

हटणहार, हारो (हारी), हटणियो—वि० ।

सिंघ लिखै, मरतौ सो ग्रापरो नाव माडै ।—दसदोख

उ०—६ ग्रर ग्रोर भी भाई भतीजा वडा वडा रजपूतवट रा सुभाव लीधा थका रावत प्रतापसिंघ री हजूर रहे।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—७ सो ग्रमरसिंघ सिरसौ वडौ भाई विगोई वादसाह री हजूर रहवै छै तीनू रोवै छै।—राजसिंघ री वात

उ०—८ तिको फौज सु ग्रळगो निसरै थौ, तरा रजपूता दीठौ। गोहरी नै पकडियौ, तिको रावजी रै हजूर ग्राण्यौ।

—राव रिणमल री वात

उ०—९ सु हाथी लिया लिया सहर ग्राया। ताहरा सेतरामजी राजा री हजूर ग्राया।—नैणसी

उ०—१० दिस वमधा पैसौर, ज्याम मोकळै दिलासा। ग्रावौ मूझ हजूर, मूर साखेत सज्यामा।—रा रू

उ०—११ ताहरा राजा कह्यौ, माणस किसडोक छै? हजूर ग्रावण लायक छै क ना? विदा नाहर सो ही दीजै।

—मूळवै सागावत री वात

उ०—१२ जनहरि राम जहा घर पाया, जनम मरण संदेह मिटाया। विन गुर गम देखै नर दूरा, ब्रह्म वताया ग्राप हजूरा।

—हरिरामदास जी महाराज

हजूरि—देखो 'हजूरी' (रू. भे)

उ०—भूरसिंघ नाथावत डूंगरचा ठिकाणे। भेज्यौ हजूरि को तमाम फौज जाणे।—शि. व

उ०—२ पछतावैगो प्राणिया, हरि सू पडसै दूरि। हरीया पहली चेत लै, तन मन थकै हजूरि।—हरिरामदासजी महाराज

उ०—३ पतिवरता सो जाणियै, हरि सू नित हजूरि। जनहरिया विभचारणी, तन नैडी मन दूरि।—हरिरासदास जी महाराज

हजूरिय—देखो 'हजूर' (रू. भे)

उ०—पूर ग्रपूरिय ग्रास, तो पिण उमरथी पूरिय। हाथ जुडत तिल चढ न, हाथ दुळ हाथ हजूरिय।—र ज प्र.

हजूरियौ—देखो 'हजूरी' (ग्रल्पा; रू भे)

उ०—१ तद एक हजूरियै कही—जी हजरत सलामत, जे तकसीर माफ हुवै तौ ग्ररज करू, वेग्रदवी की ग्ररज छै।

—जलाल वूबना री वात

उ०—२ इतरै कुवर विचित्र नूं बुलायौ सो कुंवर पोसाख भली भाति सू करि, ग्रापरा हजूरिया नै साथै ले ग्रायौ।

—पलक दरियाव री वात

हजूरी—देखो 'हजूरी' (रू. भे)

उ०—१ कुवर दैपाळदे री हजूरी पासै मुहतौ वेणादास, चवन छडीदार सारा ही नै राजा कनकरथ ज्यूं था त्यूंही राख्या।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ ग्रं चहुवाण हजूरी ग्राया, भूपति तणै सदा मन भाया। खगि ऊधरौ 'दलावत' 'खेतौ', दीठौ वळ वाका छळ देतौ।

—रा रू

उ०—३ म्हारा हरिजी, चाकरी री चाह म्हारे मन राखोला सरण हजूरी। बैल वधावौ भावै घोडा वंधावौ, चाहै करावौ मजूरी।—मीरा

उ०—४ तठा उपरायत गगेव नीवावत का भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखा करै छै। कसूमल केसरिया हरी सवज सपताळू सोसनिया नारगिया सपेत।—रा सा स.

उ०—५ सेवग हाजरि चाहिजै, साहिव सदा हजूरि। पून्यू पूरा चद ज्यू, जहा तहा भरपूरि।—ह. पु वा.

उ०—६ हर रोज हजूरी होइ रहु, काहे करै कळाप। मुल्ला तहा पुकारियै, जह ग्ररस इलाही ग्राप।—दादूवाणी

उ०—७ ग्रन्त—'रग छहरते हैं। कपडे पहरते हैं। तोसक मीलयावता है। हजूरी पावता है। चढते उतरते पाव दे सलाम करावदे है।—रा मा. स

हजूरीवान – देखो 'हजूरीवान' (रू भे)

उ०—हरीया हौदै वैस करि, निजर लगी ग्रसमान। कै ग्रागै पूठा खडा, केई हजूरीवांन।—हरिरामदास जी महाराज

हज्ज–स पु [ग्र] मुसलमानो का एक धार्मिक कृत्य, जो उन्हें मक्का ग्रौर मदीना मे जाकर करना पडता है, तीर्थ यात्रा।

वि वि.—धनाढ्य लोगो को उम्र मे एक बार इसके करने का हुक्म है।

क्रि प्र.—करणी।

रू भे.—हज।

हझार—देखो 'हजार' (रू भे)

हट—१ देखो 'हाट' (रू भे.)

उ०—१ हट ग्रटा हेम नग जटित हीर, धज कोटि कोटि ऊपर सधीर। हिम हीर गोख जाळी हजार, दमकत जोति ग्रति जिलहदार —सू. प्र

उ०—१ जनहरीया मन एक विन, मिळै न सौदै सट। जुग सारौ फिर ग्रावीयौ, लख चौरासी हट।—ग्रनुभववाणी

२ देखो 'हठ' (रू भे.)

हटक, हटकण–स. पु—१ भय, डर।

मुहा०—हटक मे रखणौ=ग्रातक में रखना।

२ ग्राज्ञा, ग्रनुशासन।

मुहा —हटक मे रहणौ=ग्रादेशो का पालन करना।

३ रोव, धाक।

४ मर्यादा, सीमा, वधन।

मुहा —हटक मे राखणौ=मर्यादा या सीमा मे रखना।

५ मना करने का भाव, वर्जन।

६ हांकने की क्रिया या भाव।

कळ अजर गूडर माग किया, लख भारोय डूगर ठेक लिया ।
—पा. प्र.

उ०—२ सालिया घणा छाती वचन साल रा, वेतरफ काळ रा नाद वागा । हटाळा 'सादवत' मोहर भड हाल रा, भीम जे माल रा बिनै भागा ।—जसवंतसिंह चूडावत री गीत

हटावणौ, हटाववौ—देखो 'हटाणौ, हटावौ' (रू. भे.)

उ०—चगत्था सथा हेडवै खग 'चापा', करै हाथिया हाथ भाराथ 'कूपा'। 'करन्नोत' कूता अरी नाग काळा, हटावै धुजै सिंघ जेहा हठाळा ।—रा रू.

हटावणहार, हारौ, (हारी), हटावणियौ—वि० ।

हटाविओड़ौ, हटावियोडौ, हटान्योडौ—भू० का० कृ० ।

हटावीजणौ, हटावीजवौ—कर्म वा० ।

हटावियोडौ—देखो 'हटायोडौ' (रू भे)

(स्त्री हटावियोडी)

हटि—स. स्त्री —१ शरीर की बनावट ।

२ शक्ति, बल, ताकत ।

३ देखो 'हठ' (रू भे.)

उ०—हरीया होडा होड करि, हटि पचि मरौ न कोय । सहज रांम सुख पाईयै, भाव भजन गुर होय ।—हरिरामजी महाराज

४ देखो 'हाट' (रू. भे.)

५ देखो 'हठी' (रू भे)

रू. भे —हटी, हट्टि ।

हटियाळ—देखो हठी' (रू भे.)

उ०—लुळ वाळ करा पुण चाळ लियूं, कर क्रोध कवाण कुडाळ कियू । घुरजाळ उलाळ अताळ धसै, हटियाळ काघाळ कराळ हसै ।—पा प्र

हटियोड़ौ—भू. का कृ.—१ किसी स्थान को छोडकर इधर-उधर हुवा हुआ, सिरका हुआ, खिसका हुआ, टला हुआ, हटा हुआ २ सामने से हटा हुआ, विमुख हुवा हुआ. ३ कोई वात या काम समय से आगे सरका हुआ, समय टला हुआ, स्थगित हुवा हुआ. ४ दूर हुवा हुआ, मिटा हुआ. ५ किसी वात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ न रहा हुआ, विचलित हुवा हुआ ६ दूर, अलग या अन्यत्र हुवा हुआ ।

(स्त्री हटियोडी)

हटी—१ देखो 'हटि' (रू. भे)

२ देखो 'हठी' (रू. भे.)

हटीलौ—देखो 'हठी' (रू. भे.)

उ०—सास की जाई मोरी ननद हटीली, यह दुख किण से सहू । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, जग उपहास सहू ।—मीरा

(स्त्री. हटीली)

हटैल—वि.—हठ वाला, हठी, जिद्दी ।

उ०—कूभायळा लागै नरां हैमरा ढोहता कोप, हाथळा हाथिया घडा ढोहता हटैल । हाक वागा फौज नू रोहता लयोरथ्या होय, पाछै असा दूजो 'सतो' नोहथ्या पटैत ।—रामसिंघ हाडा रो गीत

हटोकटौ—देखो 'हट्टोकट्टौ' (रू. भे.)

हटोटी—मं स्त्री —कला, बुद्धि, चतुराई ।

उ०—१ आणिया रै माई ई हटोटी हाथ लागी । आपरा घर मू कदै ई सपत खाटी नी होवण दी पछै सपत रो वासो छोड नै लिछमी जावै तो कठै जावै ।—फुलवाडी

उ०—२ बुढापै मरधा मृत्या पछै वेटा पोता नै सगळी माया मूप दी । वानै ई विणज री सगळी हटोटियां वताय दी ।—फुलवाडी

हट्ट, हट्टण, हट्टन—देखो 'हाट' (रू. भे.)

उ०—१ जावो जोभा ना कहूं, वधो सवाई वट्ट । ऊचडमी या आविया, हेतारथ रा हट्ट ।—जलाल वूवना री वात

उ०—२ तु जा भूडण मालरा, म्है जाऊ रण थट्ट । मै'ला रोवाळ कामणी, मास विकाऊ हट्ट ।—ढाढाळा मूर री वात

उ०—३ पुर पट्टण ज हट्टण बीजपुर, अरि हुवै न जैसिंघ तेणी डर । पुर पटण न हटण न बीजपुर ।—मिरजा राजा जैसिंघ री गीत

हट्टसोभा—स. स्त्री.—दुकानो की छवि ।

उ०—सरवत्र मारग चोखानिया, गोमय पाणी सिंचाइ, मंचोनमच बाधा, वानरवालि बाधी, हट्टसोभा सरवत्र रची । -व. स

हट्टस्रे'णि—स स्त्री.—दुकानो की कतार, पक्ति ।

उ०—जे नगर माहइ दानसाला पौसधसाला, धरमसाला, गढ मढ मदिर प्रकार, चुगली चुहुटानी हट्टस्रे'णि, माहइ वस्त सपूरण वरतइ........ ।—व स.

हट्टांत—अव्य—दुकानो से, दुकान से ।

उ०—कलसात प्रासाद, नरकांत राज्य, गोरसात भोजन, वधनात नियोग, वियदाळ खलमैत्री, गजात लक्ष्मो, नायकान समर, हट्टात व्यवहार, कसवटात सुवरण्ण, राजसभात वाद, प्रवासात स्नेह, नामात जोस, हारात स्रंगार, वच्चात गणित ।—व. स.

हट्टि—१ देखो 'हट' (रू भे.)

उ०—मारू आवी चउहट्टइ, गाधी-केराइ हट्टि । हट्ठ लूटायउ वाणीयइ बळद गमाना जट्टि । ढो. मा.

२ देखो 'हठी' (रू भे)

हट्टीका—देखो 'हट' (रू. भे.)

उ०—सस्त्र सूत्र भ्रत तैळ कठा इत्यादि विचित्र हट्टिका सोभा विसाल रमणीय चतु साल द्विभूमिक, त्रिभूमिय, चतुर भूमिकादि नदावस्त, स्वस्तिकादि विचित्र प्रासादमाल ।—व. स.

हट्टोकट्टौ—वि. [स. हृष्ट+काष्ठ] (स्त्री. हट्टोकट्टी) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा ।

रू. भे —हटोकटौ

हट्ठ—देखो 'हठ' (रू भे.)

हट्ठुट्ठ—वि.—हृष्ट-पुष्ट ।

हटिओडौ, हटियोडौ, हटयोडौ—भू० का० कृ० ।
हटीजणौ, हटीजबौ—भाव० वा० ।
हठणौ, हठबौ—रू० भे० ।

हटताळ—देखो 'हडताल' (रू. भे.)

हटवाणीयौ-स पु —व्यापारी, दुकानदार ।
उ०—तो कह्या—'मुहर केथी करौ ?' कह्यौ—जी हटवाणीयौ नु देवा छा । तीयं मुहर में इतरौ रोज लेवा छा ।
—स्यामसुदर री वात

हटवाडी, हटवाडौ-स पु —१ सप्ताह मे किसी नियत दिन लगने वाला बाजार या हाट ।
उ०—१ सतगुरु माथै कर घरचा, सोवत लिया जगाय । सोवण री विरीया नही, यहि हटवाडे आय ।—ह पु वा
उ०—२ काचो देह तणौ कमठाणौ, पडता नह लागै पलक । दुनिया तणी निहली दौलत, हटवाडा वाली हलक ।—वा दा.
२ हाट समूह । वह स्थान जहा बाजार लगता हो ।
उ०—दुनिया सब काम पाच दिन आया महमाणा, हटवाड़ा ससार है बाजार मडाणा । सब आयै व्यापार कू ले करम किराणा एका लाभ विसाविया, मुळ हेक ठगाणा ।—केसोदास गाडण
३ बाजार ।
रू भे —हठवाडौ ।

हटवाणौ, हटवावौ-क्रि स.— ['हटणौ' क्रिया का प्रे. रू] १ किसी स्थान को छुडा कर इधर-उधर कराना, खिसकवाना, टलवाना ।
२ सामने से दूर चले जाने मे प्रवृत्त करना, विमुख कराना ।
३ किसी वात या काम को नियत समय से टलवाना, स्थगित करवाना, आगे सरकवाना ।
४ दूर करवाना, न रखवाना, मिटवाना ।
४ किसी वात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ न रहने मे प्रवृत्त करना, विचलित करना ।
६ दूर, अन्यत्र या अलग रहने के लिये प्रेरित कराना ।
हटवाणहार, हारौ (हारी), हटवाणियौ—वि० ।
हटवायोडौ—भू० का० कृ० ।
हटवाईजणौ हटवाईजबौ—कर्म वा० ।
हटवाडणौ, हटवाडबौ, हटवावणौ, हटवाववौ—रू० भे० ।

हटवायोडौ-भू का कृ —१ किसी स्थान को छुडा कर इधर-उधर कराया हुआ, सिरकाया हुआ, खिसकाया हुआ. २ सामने से दूर चले जाने मे प्रवृत्त किया हुआ विमुख कराया हुआ. ३ किसी वात या काम को नियत समय से टलवाया हुआ, स्थगित कराया हुआ, आगे सरकवाया हुआ ४ दूर कराया हुआ, न रखवाया हुआ, मिटवाया हुआ ५ किसी वात, वचन, प्रतिज्ञा आदि पर दृढ न रहने मे प्रवृत्त किया हुआ, विचलित कराया हुआ ।
६ दूर, अलग या अन्यत्र रहने के लिये प्रेरित करवाया हुआ ।
(स्त्री हटवायोडी)

हटवावणौ, हटवाववौ—देखो 'हटवाणौ, हटवावौ' (रू भे.)

हटवावियोड़ौ—देखो 'हटवायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री हटवावियोडी)

हटवौ-स पु —हाट पर वैठकर सौदा वेचने वाला, दुकानदार, व्यापारी ।
उ०—मा, सहस वजारा मे मैं गयी जे, मा, हटवा सै खोली अै हाट, बाजीगर का कम रह्या जे ।—लो गी.

हटाडणौ, हटाडवौ —देखो 'हटाणौ, हटावौ' (रू. भे)
हटाडणहार, हारौ (हारी), हटाडणियौ—वि० ।
हटाडिओडौ, हटाड़ियोडौ, हटाडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
हटाडीजणौ, हटाडीजबौ—कर्म वा० ।

हटाडियोडौ—देखो 'हटायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. हटाडियोडी)

हटाणौ, हटावौ-क्रि स —१ किसी स्थान से इधर-उधर करना, सिरकाना, खिसकाना, स्थान से टालना, हटाना ।
२ सामने मे दूर करना, विमुख करना ।
३ किसी वात या काम को नियत समय से आगे सरकाना या समय टालना, स्थगित करना ।
४ दूर करना, मिटाना, न रखना ।
उ०—मीरा के प्रभु सदा सहाई, राखै विघन हटाय । भजन भाव मे मस्त डोलती, गिरधर पै वळि जाय ।—मीरा
५ किसी वात, वचन, प्रतिज्ञा आदि मे डिगाना, विचलित करना ।
६ दूर अलग या अन्यत्र रखना ।
हटाणहार, हारौ (हारी), हटाणियौ—वि० ।
हटायोडौ—भू० का० कृ० ।
हटाईजणौ, हटाईजवौ —कर्म वा० ।

हटायोडौ-भू का कृ —१ किसी स्थान से इधर-उधर किया हुआ खिसकाया हुआ, टाला हुआ, हटाया हुआ २ सामने मे दूर किया हुआ. ३ किसी वात या काम को नियत समय से आगे सरकाया हुआ, या समय टाला हुआ, स्थगित किया हुआ ४ दूर किया हुआ, मिटाया हुआ, न रखा हुआ. ५ किसी वात, वचन, प्रतिज्ञा आदि से डिगाया हुआ' विचलित किया हुआ ६ दूर, अलग या अन्यत्र किया हुआ ।

हटारडी —देखो 'हाट' (अल्पा, रू भे)
उ०—अकवर सै रूप लोभी रे खोभी नही कटारडी । पर नार वेटो वळ वोल्यौ, हटवै हाट हटारडी ।—नारी सईकडो

हटाळ, हटाळौ—देखो 'हटी' (मह; रू. भे)
उ०—१ कमठाळ हटाळ डला कळता, वह लावेय पीठ वसै वळता ।

उ०—२ हरोळाय हूत हरोळ हठाळ, तठै 'कुसळेस' वधै रिणताळ। धरा वळ क्रोध ग्रोरै धजगाज, जिसी विध सामंद वीच जिहाज।
—सू. प्र

उ०—३ पटाळा हठाळा महागात पूरा, सुरगा सगाहा सकोपा मनूरा। सलीता कन्हैं भेंकवै प्राण साहै, लिया हाथ लट्ठी ममा सेल ठाहै।—रा रू

उ०—४ तेगाळा वीजाळा करा सिमाळा जीवता सको, ग्रडाळा हठाळा जुटाळा भीम दाव। सचाळा वाचाळा वोल जगाळा पगाळा साचा, भीछाळा ग्रेहाळा हालै हाडा रै सुभाव।
—सनमानसिंघ हाडा रो गीत

हठावणो, हठाववो—देखो 'हटाणो, हटावो' (रू. भे.)

उ०—म्हे वाइसटोला साचा ज्या नेंइ भूठा पाटै है तो ग्रो तो साक्षात तावा रो रुपडयो है सो इणनै तो हठावणो सोरो है।
—भि द्र.

हठावणहार, हारो (हारी), हठावणियो—वि०।

हठाविग्रोडो, हठावियोडो, हठाव्योडो—भू० का० कृ०।

हठावीजणो, हठावीजवो—कर्म वा०।

हठावियोड़ो—देखो हटायोडो' (रू भे)

(स्त्री हठावियोडी)

हठी–वि. [स हठिन्] १ हठ करने वाला, जिद्दी, दुराग्रही।

उ०—भालीजी सारी कुवराणिया नु बुलाय कही वेटा था जाणो छो। कुवरसी घणो हठी वादी छै।—कुवरसी साखला री वारता

२ योद्धा, वीर।

उ०—१ हठी रणखेत सगराम 'कुभा' हरै, घडा दाणव तणी सभै रण धाय। घणो तो सूर ससि ग्रहणह्वं दुयघडी, पख उभै सरव-गल कीध पतसाय।—महाराणा सग्रामसिंघ रो गीत

उ०—२ सूर मुरडि इम साहसू, लूटै हय जय लाह। हणि रच्छक 'दूदा' हठी, ग्रायो घरत उछाह।—व. भा.

३ दुश्मन को पराजित करने वाला, जीतने वाला, ग्ररिमर्दन।

उ०—रेवा सागर ग्रमल मैं, ग्रागै हो ग्ररडीग। हूंमें सिंघ सागर हठी, ग्रपणायो तैं 'सीग'।—वा दा.

रू भे—हटाळ, हटाळो, हटियाळ, हटियाळो, हटीलो, हठाळ, हठाळो, हठीलो।

मह—हठेल।

हठीलो—देखो 'हठो' (रू भे)

उ०—१ हीचता वाछडिया तावाड, मिळै जद गाया ग्रडवड जाय। टाळता भूल ग्रापणी गाय, हठीला टावरिया लड जाय।—साभ

उ०—२ सास वुरी ग्रर नणद हठीली, लड लड दं मोहि गाळी, हे माय। मीरा कै प्रभु गिरधर नागर, चरण कमळ की वारी, हे माय।—मीरा

उ०—३ छच्छ मास छाकिया, हुवा डाकिया हठोला। प्रचड नील जमि पीठ, निलै ग्रसळै जमि नीला।—सू. प्र.

उ०—४ माग ग्रोर पाटी उतार धरूगी, ना पहिरू कर चूडी। मीरा हठीली कहे सतन सौं, वर पायो छै मैं पूरो।—मीरा

(स्त्री. हठीली)

हठेल—देखो 'हठी' (मह; रू भे.)

उ०—चहूं छत्रधारी सुणे वाग्वाणिया रायथाना, हका वका फटै सका उजवकै हटेल। लेवा ग्रायो छाक जकै पाछो माग लागो, ऊभो जेत-खभ हुग्रा (थको) मंभरी ग्रठैल।
—रावत जोधसिंघ कोठारिया रो गीत

हड—देखो 'हाड' (रू भे)

हडजोड, हडजोडा–स स्त्री.—एक ग्रोपधि विशेप जो वात कफ नाशक एवं टूटी हड्डी को जोडने वाली होती है।

हडताल—देखो हडताल' (रू. भे.)

उ०—व्यापारी विधि विधि मिल्या, हाटै सहू हडताळ। करि कूचो कधि करण, फरि फरि देता फाळ।—मा का. प्र.

हडफूटण, हडफूटणी–स. स्त्री—एक प्रकार का रोग विशेप जिससे शरीर की प्रत्येक हड्डी या जोड मे तीव्र पीडा होती है।

२ चमगादड।

हडफोड–स स्त्री—१ एक प्रकार की चिडिया।

२ देखो हडफूटण'।

हडव—देखो 'हाड' (रू भे.)

उ०—श्रीमत घरमाहि पइमी सूयइ, दारिद्रि लोक सीतइ कांपइ, सकल लोक ग्रगीठै तापयइ, टाढि हडवा खडइ, राति मरि जिम साकुडइ.... ...।—व. स

हडवडी–सं स्त्री—१ एक वनस्पति विशेप।

उ०—हनुमती नइ हडवडी, हीराउलि हर-मज्जि। हाथा जोडी हीकणी, हेला ग्रानइ कज्जि।—मा का प्र

२ देखो 'हडवडी' (रू भे.)

हडमंत, हडमत—देखो 'हनुमान' (रू. भे)

उ०—१ काका भतीजा विहूं, गोरउ ग्ररू वादल्ल। पद्मनी काज भारथ कीउ, हडमत जिम सर भल्ल।—प. च चौ

उ०—२ किप हडमत विना समद कुण कूदै, ग्ररण विना कुण गमै ग्रधार। 'माडण' विना थाणा कुण मारै, सारै यम कहियो संसार।—तेजसी खिडियो

हडवड—देखो 'हडवडी' (रू. भे)

उ०—घू नाचै भड धड, फीफड फडहड, लोडै लड थट लोहि लडै। वीयै दळ वड चढ हुई हडवड, जोवै धडतड ग्रनड ग्रडै।
—गु. रू. व

हडसहारी, हडसेलि–स स्त्री. [स हड्डशकरी] एक प्रकार की लता व उसका डठल।

उ०—दातण पाणी तउ करू, जउ वभ वइसाउ वेलि। कामसेन

हठ–म पु. [स] १ जिद्द, दुराग्रह ।

उ०—१ तरै इण चारण तौ घणी ही उजर कियौ, पण पातसाह हठ पटियौ कहै—एक वार जेसौ म्होनूं ग्रायिया दिखाव ।

—नैणसी

उ०—२ लाया वाता हठ लागौ, ग्रायौ खड सोवायत ग्रागौ । वापू तणी नगारी वागौ, जागौ सा कमधजिया जागौ ।—वरजू बाई

२ अत्यन्त श्रद्धा, भक्ति या स्नेह पूर्वक किया जाने वाला ग्राग्रह ।

उ०-१ वाणियौ तौ ई तिथ नी छोडी । ज्यू वापजी नटिया त्यू वौ घणी ग्राडी लियौ। सेवट वापजी नैं ई भगत रौ हठ देख नैं निवणी ई पडयौ ।—फुलवाडी

उ०—२ मा, साथणिया ग्रर भाई हठ भेरयौ तौ राणी नौ दिन वळै ढवगी ।—फुलवाडी

मुहा —१ हठ करणौ, हठ पडणौ=किसी वात का जिद्द करना, ग्राग्रह करना, वात पकड कर बैठ जाना ।

२ हठ मानणौ, हठ राखणौ=किसी के हठ की पूर्ति करना, किसी की वात, इज्जत या मर्यादा रखना ।

३ योग के दो भेद राज-योग व हठ योग मे से एक ।

उ०—१ साध सोई जाकै सहज समाधि, हठ पचि मरै न ग्रौर न उपाधि ।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ सन्यासिए जोगिए तपसि तापसिए, काइ इवडा हठ निग्रह किया । प्राणी भवसागर वेलि पढता, थिया पार तरि पारि थिया ।

—वेलि

४ दृढ सकल्प, प्रतिज्ञा ।

५ दुश्मन के पीछे से किया जाने वाला ग्राक्रमण ।

६ मर्यादा, टेक ।

७ जवरदस्ती ।

८ ग्रनिवार्यता ।

रू. भे —हट, हटि, हट्ट, हट्ठ ।

हठजोग–स. पु. यौ. [स हठ+योग] योग का वह भेद, जिसमें ग्रासन-सिद्धि, प्राणायाम, नेति, धोति ग्रादि कठिन मुद्राग्रो ग्रौर ग्रासनो द्वारा चित्तवृत्ति को हठात् वाह्य विषयों से हटाकर ग्रन्तर्मुख किया जाता है।

वि वि —इसमे शरीर के ग्रन्दर कुण्डलिनी ग्रौर ग्रनेक प्रकार के चक्र भी माने गये हैं । इसके सवसे वडे ग्राचार्य योगी मत्स्येन्द्रनाथ (मछदरनाथ) ग्रौर उनके शिष्य गोरखनाथ माने जाते हैं ।

हठणौ, हठवौ–क्रि. स —१ हठ करना, दुराग्रह करना, जिद्द करना ।

उ०—ग्रहह रूप ग्रसमय भूयलइ, कवण कामिनि एह समी तुलइ । हिय हठिउ गम्भ मन्मथ मारिवा, एह ऊडण ग्रग ऊगारिवा ।

—सालिसूरि

२ देखो 'हटणौ, हटवौ' (रू भे)

हठणहार, हारौ (हारी), हठणियौ —वि० ।

हठिग्रोडौ, हठियोडौ, हठ्योडौ—भू० का० कृ० ।

हठीजणौ, हठीजवौ—भाव वा० ।

हठधरम–स. पु यौ [स. हठ+धर्म] १ विना उचितानुचित का विचार किए किसी वात पर ग्रडे रहने या जिद्द करने की क्रिया या भाव, दुराग्रह ।

२ धर्म, मत या सम्प्रदाय में होने वाला कट्टरपन ।

रू भे —हठधरमी ।

हठधरमी–वि —१ हठ पर दृढ रहने वाला, हठ करने वाला ।

२ देखो 'हठधरम' (रू भे.)

हठधारी–वि. [स हठ+धारिन्] १ हठ को धारण करने वाला, हठी, जिद्दी, दुराग्रही ।

२ दृढ-प्रतिज्ञ ।

३ हठयोग की साधना करने वाला ।

हठनाळ–सं. स्त्री.—दुकानो की पक्ति ।

उ०—हठनाळ पेठ वाजार हाठ, प्राजळै महल चदण कपाट । चाचरै गयण चक चूर चोट कागरा ग्रवारय भुग्ग कोट ।

—वि. स.

२ देखो 'हडताळ' (रू. भे) (जयपुर)

हठमल, हठमल्ल–स. पु.—१ योद्धा, वीर ।

उ०—१ हायळ खळ पटकै केहरी हठमल, रायमाल दूजो रिम-राह । चौडै खेत ग्रखाडै ग्रणचळ, वाकडमल ग्रोयळ खगवाह ।

—नवलसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ राठउड उदियउ 'चउडराउ', वेगडइ साह वीरम वियाउ । साळवडी थाणउ दे सधीर, हठमल्ल राउ थाणै हमीर ।

—रा ज सी

हठवाडौ—देखो 'हटवाडौ' (रू भे)

हठाडणौ, हठाड़वौ—देखो हटाणौ, हटावौ' (रू भे)

हठाडणहार, हारौ (हारी), हठाडणियौ—वि० ।

हठाडिग्रोडौ, हठाडियोडौ, हठाड्योडौ—भू० का० कृ० ।

हठाडीजणौ, हठाडीजवौ -कर्म वा० ।

हठाडियोडौ—देखो 'हटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री हठाडियोडी)

हठाणौ, हठावौ—देखो 'हटाणौ, हटावौ' (रू. भे.)

हठाणहार, हारौ (हारी), हठाणियौ —वि० ।

हठायोडौ —भू० का० कृ० ।

हठाईजणौ, हठाईजवौ—कर्म वा० ।

हठायोडौ—देखो 'हटायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. हठायोडी)

हठाळ, हठाळौ —देखो 'हठी' (रू. भे.)

उ०—१ उठै भीम हरवला, हुवौ नूगाण हठाळौ । ग्रयण ताण ऊवरा, नदै नगारा कळिचाळौ ।—सू. प्र.

२ नष्ट करने या मिटाने की क्रिया या भाव ।

उदा—पाप हणण ।

३ आघात या प्रहार ।

४ गणित मे गुणन या गुणा करने की क्रिया ।

हणणाट, हणणाहट—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे)

उ०—अळगौ डर ऊभोए जूथ अरी, काळवौ हणणाहट हीस करी । लिण तोडिय साकळ लोह तणी, चपळागत आवत सीस सुणी ।
—पा. प्र.

हणणौ, हणवौ-क्रि. स. [स. हन्] १ वध करना, सहार करना, मारना । (उ. र.)

उ०—१ मूकं सर हेक ताडका मारी, चड सुबाहु हणं कर चाव । जिग मैं कियौ धनुस भग जालम, रग भुजा थारा रघुराव ।
—र. रू:

उ०—२ सोढा ऊमरकोट रा, सिर कटिया समसेर । वाहे हणिया वैरहर, 'बाका' भारथ वेर ।—बा. दा

उ०—३ रथगजास्ट सहस्त्र जउ निरजणइ, दस सहस्त्र महाभट जो हणइ । फुरसराम महाहवि निरजणिउ, इसिउ भीस्म पितामह मइ थुणिउ ।—सालिसूरि

२ आघात या प्रहार करना ।

उ०—हे कथ थे भागळ वण जुद्ध सू जीवता श्राय काही कीधौ इयू कह हाय हाय कर बळती थकी छाती मे दोनू हाथ हणिया छाती मे मूकीया वाही तद भागळ कही हे धण थारै इण घणौ हेत बुलाय लीधौ ।—वी स. टी.

३ मारना, पीटना ।

४ कष्ट देना, सताना ।

५ हराना, परास्त करना ।

हणणहार, हारौ (हारी), हणणियौ—वि० ।

हणिओडौ, हणियोडौ, हण्योडौ—भू० का० कृ० ।

हणीजणौ, हणीजवौ—कर्म वा० ।

हनणौ, हनवौ, हिणणौ, हिणवौ—रू० भे० ।

हणमत, हणमति, हणमंतौ, हणमत, हणमति, हणमतौ—देखो 'हनुमान' (रू भे) (अ मा, डि को)

उ०—१ नजर वछेक का हुन्नर अगूंगा वचाव । हणमत रूप जगजेठू नै भुजग दडू पर दस्तताळ दिया ।—सू प्र.

उ०—२ चक्री विचाळ रघुवर विसाळ, जपै जरूर सुण भरथ सूर । हणमंत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुसेव, किनी कपेस ।
—र रू

उ०—३ हणमति किया हमल सहल दाणव सघारै ।—पी. ग्रं.

उ०—४ रुद्रा री रुद्र हणमत राम, नारायण तूझ तणौ नह नाम ।
—पी ग्रं

उ०—५ जै नामी गढ-लक जयंता, सिव एकादसमा निज सता । कीधौ अमर जांनकी कता, हुकमीदास जाण हणमंता ।
—र. ज. प्र

उ०—६ हणमत सिवौ बरोबरि हुआ । पौरिस बळ दाखिवै प्रमाण, अेक गयौ गढ लक उचीडै, दिली अेक गमणं डाण ।
—जोगीदास चारण

हणमांन—देखो 'हनुमान' (रू भे.)

उ०—बगलै मैं हणमान बाबौ जाग्या, परीडै पीतर देवता जाग्या, मिंदर मैं सती माता जाग्या, मठ मैं भैरू बाबौ जाग्या ।
—लो गी

हणमांन-चाळीसौ—स. पु —१ चालीस छन्दो का एक लघु काव्य जिसमें हनुमानजी की महिमा वर्णित है ।

उ० —म्हैं मन मैं हणमान-चाळीसौ जपणौ सरु कियौ अर लट्ठ लेय'र एक दम ऊभौ व्हैगौ ।—रातवासौ

२ उपर्युक्त पदो के सग्रह की पुस्तक ।

हणवंत, हणवत—देखो 'हनुमान' (रू भे) (डि को.)

उ०—१ तदि लखण अगद सुग्रीव हणवंत, नीळ नळ नर नाह । जामवत क्रुध भळ जळहळी, सुखेण मयदह सतवळी ।—सू प्र

उ०—२ तन वरतै काली कळस तेम, जुध गिणं सनी नाळेर जेम । साम रै काम एहा सधीर, राम रै काम हणवत वीर ।—वि स

हणहण—देखो 'हिणहिणाट' (रू भे)

उ०—जूजूइ जाति-तणा घणा, प्लवग न लब्भइ पार । वेगि वहता वाचनइ, हणहण घण हीसार ।—मा. का. प्र.

हणहणणौ, हणहणबौ—देखो 'हिणहिणणौ, हिणहिणवौ' (रू भे)

उ०—१ प्रह फूटी, दिसि पुडरी, हणहणिया हय-थट्ट । ढोलइ धण ढढोळियउ, सीतळ सुदर घट्ट ।—ढो मा

उ०—२ कटक माहि हाथी पाखरिया, पटा दतूसलि घाल्या । वीटिउ नगर तुरी हणहणिया, पोलि पाधरा चाल्या ।—का दे प्र

हणहणा—स स्त्री —घोडे के बोलने की ध्वनि, हिनहिनाना ।

उ०—न जाणीइ पूरव न जाणीइ पस्चिम, केवल गज गलगला रवि करी जाणीइ, तुरगम हणहणा रवि करी जाणीइ, रथ चक्र चिरकार करी जाणीइ . ... .।—व. स

हणहणियोड़ौ—देखो 'हिणहिणियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. हणहणियोडी)

हणां, हणा—क्रि वि. [स अधुना, प्र अहुणा] इमी समय, अभी ।

उ०—तद राजा 'जैंत' नू कहियौ, 'जु मैं तौ था नू सगळी उपर कीयौ थौ, तिको तू वाहर चढ नै वाणीया री हणा वखतौ माल छोड आयौ ।—जैतमाल पुमार री वात

रू भे —हणं, हणे हणं, हणं, हाणे, हाणं, हेणा, हैणा ।

हणियोडौ—भू. का कृ —१ वध या सहार किया हुआ मारा हुआ २ आघात या प्रहार किया हुआ. ३ मारा हुआ, पीटा हुआ ४ हराया हुआ, परास्त किया हुआ ५ कष्ट दिया हुआ, सताया हुआ ।

कूलौ करउ, सइ काढउ हडसेलि ।—मा. का. प्र.

वि वि.—इसकी लकडी का दातुन भी करते हैं । यह बात कफ नाशक तथा टूटी हड्डी को जोडने वाली मानी जाती है।

हडहड—देखो 'हडहड' (रू. भे)

उ०—हडहड हडती तै इसी, तालोटा कर वेय । 'माधव' तु मूरिख खरु ! मइ जाणिउ भल भेय ।—मा. का प्र

हडहडणौ, हडहडवौ—देखो 'हडहडणौ, हडहडवौ' (रू. भे)

उ०—रथचक्र चाणीती करोडि कडकडइ, वेताल हडहडइ, भाग्य-वत जयलक्ष्मी वरइ, आपणु काज करइ, युद्ध ।—व स

हडहडियोडौ—देखो 'हडहडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री हडहडियोडी)

हडा—देखो 'हाडा' (रू भे)

हडाराहा-स. स्त्री.—घोडे की एक जाति विशेष ।

उ०—घोटक जाति, केहाडा नीलडा हरियाडा सेसहा । हडाराहा कोहाणा भरयणा ताई तुरगी ऊघसीया नीधसीया डाटकिया डोट-किया खेलवि (या) मल्हाविया लडाविया पुलाविया सरला तरला छोट करणा एकरणा ।—व. स

हडूंबी—देखो 'हिडबी' (रू भे)

हडूमान—देखो 'हनुमान' (रू भे) (अ ना)

हडोई-स. स्त्री.—१ वक्षस्थल की हड्डी ।

उ०—मोरा पसवाडा पीडा रो मास देगचा मैं घात जै छै । हडोई रा मास पासै चरुवा मैं गातजै छै ।—रा सा स

२ मास रहित अस्थियो का समूह, मासहीन अस्थियाँ ।

उ०—हडोई ऊपर चीलका, कागला झडफडा करनै रह्या छै । तिका कागला नूं मलूकजादा कुवर गिलोळा री चोटा कर रह्या छै ।—रा. सा. स.

रू. भे —हडोई ।

हडोती—देखो 'हाडोती' (रू भे)

उ०—दो ही वीर साकडं मिळिया दाव करता बचता हडोती कै मारग वहिया आवै ।—व भा

हडौ—देखो 'हाडौ' (रू. भे)

उ०—सरगुण निरगुण हो ही. हस होय न हडा

—केसोदास गाडण

हड्ड—देखो 'हड्डी' (मह; रू भे)

उ०—१ कसूमल छोळ भरै नद खड्ड, करद्दम आमिख हड्ड कवड्ड । गजा ढळ पड्ड गरद्दन गोप, हिया भ्रम भजत कज पहोप ।—मे म

उ०—२ सूवर वाही दातळी, आण खटक्की हड्ड । भाई व्है तौ वावडै, गया विराणा छड्ड ।—लो. गी

हड्डा-स. पु —१ घोडों के होने वाला एक रोग विशेष ।

२ देखो हाडा' (रू भे.)

हड्डी-स स्त्री. [स अस्थि, प्रा अत्थि, अट्ठि] शरीर के भीतर सफेद रग का वह कठोर अग या तत्व जो रीढ वाले प्राय सभी प्राणियो के होता है, अस्थि ।

मह —हड्ड, हड्ढ ।

हड्ढ—देखो 'हड्डी' (मह, रू भे)

उ०—वसन वेधि कटाक्ष, कोर कुलटा द्रग कढ्ढिय । हड्ढ वेधि जमदड्ढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय ।—ला रा.

हण—१ देखो 'हनुमान' (रू. भे)

उ०—एको हि जादम भीड न आवै, रौद पेख उग्रसेण रहै । आवै हण न गुरड न आवै, कमध आव रिण छोड कहै ।

—सिवा वाढेल रौ गीत

२ देखो 'हणैं' (रू. भे.)

उ०—हण फूल खिल्यो ईं रज मे, मा वोली 'धरती' माजी, जामण री वेळा आई, हू करम धरम स्यू बाधी ।—सकुलता

हणकस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—देवी छकारा रूप तै राम छळिया, देवी राम रै रूप दसकध दळिया । देवी कान रै रूप गिरि नक्ख चाडै, देवी नक्ख रै रूप हणकस फाडै ।—देवि

हणकणौ, हणकवौ–क्रि अ —हाक करना, हुकार करना ।

हणकणहार, हारौ (हारी), हणकणियौ—वि० ।

हणकिओडौ, हणकियोडौ, हणक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हणकीजणौ, हणकीजवौ——भाव वा० ।

हणक्कणौ, हणक्कवौ—रू० भे० ।

हणकियोडौ–भू का कृ —हाक किया हुआ, हुँकार किया हुआ.

(स्त्री. हणकियोडी)

हणक्कणौ, हणक्कवौ—देखो 'हणकणौ, हणकवौ' (रू. भे)

उ०—रत्ता पी गणक्कै कै भणक्कै, यै विमाण रभा, लोयणा भणक्कै डड मणक्का लेवाण । हुवै पखा झडफ्फा ग्रीधाण वीर है हणक्कै, कैमरा सणक्कै वाजै खडक्का केवाण ।—प्रभूदान मोतीसर

हणक्कियोडौ—देखो 'हणकियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री हणक्कियोडी)

हणणाक–स. स्त्री —घोडो के हिनहिनाहट की ध्वनि ।

उ०—ठणणाक घट गदळा ठहै, गणणाकै पळचर गयण । हणणक हीस हैगाम हय, जय कणणाकै वदीजण ।—व भा.

हणणाकणौ, हणणाकवौ–क्रि अ —घोडो का हिनहिनाना ।

हणणाकणहार, हारौ (हारी), हणणाकणियौ—वि० ।

हणणाकिओडौ, हणणाकियोडौ हणणाक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हणणाकीजणौ, हणणाकीजवौ—भाव वा० ।

हणणाकियोडौ–भू का कृ.—हिनहिनाया हुआ । (घोडा)

(स्त्री. हणणाकियोडी)

हणण–स पु [स हन्] १ मार डालने या वध करने की क्रिया, वध, हत्या ।

की करै, नरा नखत परमाण। नखत परमाण वागाण वाघो नरै। आवगो झूझ री भार भुजि आपरै। मैटणो भीड भुंजि गयद री मोटिया। छावड बळ हतै कळाइया छोटिया।—हा. झा.

उ०—२ पूजै सिव वरहू म्रप पाई, कनिया हतण अजोग्य कमाई। अनुचित काज न कीजै ऐहो, जुध म्रप उचित काज तो जेहो।

—सू. प्र.

२ आघात करना, पीटना।

३ पीडित करना।

४ घायल करना, जख्मी करना, आहत करना।

उ०—भमरडउ मरिवा अख बीह तउ, पसरि पइसइ केतकिई हतउ कठिन कटक कोडि कुटीरडइ पडिउ, वेधि पछइ पुणि आरडइ।

—सालिसूरि

५ हराना, परास्त करना।

६ हटाना, ले जाना।

७ वंचित करना।

८ परेशान करना, दुःखी करना।

९ नाश करना, ध्वस्त करना, मिटाना।

१० हताश करना, निराश करना।

हतणहार हारो (हारी), हतणियो—वि०।

हतिओडो, हतियोडो, हत्योडो—भू० का० कृ०।

हतीजणो, हतीजवो—कर्म वा०।

हथणो, हथवो—रू० भे०।

हतवाह—देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—देखीजै निज गोखडै, देवर री हतवाह। भाभी थै गिणता खरच, सो सीलै मो नाह।—वी स.

हतभाग, हतभागी, हतभाग्य-वि यो. [स. हत+भाग्य] भाग्य-हीन, अभागा, बदकिस्मत।

हतरस-वि.—हस्तमैथुन करने का अभ्यस्त।

उ०—लड थड गळ लजा हतरस हजा, मनमथ काम मददा है। जारी कर जोरी सठ सिर जोरी, कोरी हाय फथंदा है।—ऊ का

रू भे—हथरस, हथळस।

हतळेवो—देखो 'हथळेवो' (रू भे)

हतवा—देखो 'हथवाह' (रू. भे.)

उ०—हिंदू तुरक वखाणै हतवा, माफी धन कमधज मन मोट। राजा ओट रखै कै रावत, असपत तुज कटारी ओट।

—दुरगादासजी आसकरनोत री गीत

हतवाओ—देखो 'हथवाहो' (रू. भे.)

हतवार, हतवारु—देखो 'हथवार' (रू. भे.)

हतवाह—देखो 'हथवाह' (रू भे.)

उ०—साकडडै 'रतनेस' समोभ्रम, घोळै दिन देखता घणी। कथ जुग च्यार रहसी कमधज, तो वाळी हतवाह तणी।

—महाराजा मानसिंह (जोधपुर)

हता, हता—भू. क्रि—थे।

उ०—१ मुता तोमरमल तेजमालोत परगनै फलोदी सूं साथै छै नै दीना २ नोर गयो हता पछै आया भेळा हुवा।

—राठोड वंस री विगत

उ०—२ ताहरा सरब हजूरी, पासवान, खवास तेह हता तिकै सरब तळाव ढूंढियो।—पलक दरियाव री वात

रू भे—हूता, हूतीया।

हतायळी, हतायली—देखो 'हथायळी' (रू. भे.)

हतास—वि. [स हत+आशा] १ जिसकी आशा टूट चुकी हो, निराश।

२ साधनहीन।

३ मजबूर, विवश।

हतियारो—देखो 'हत्यारो' (रू. भे.)

उ०—१ मित्र जाणियो मनन, हुवो दुसमण हतियारा। किसा किसा मे कथू, विरा मे ओगण थारा।—ऊ. का.

उ०—२ मिरगानेणी आयो थारी भामा पजोय हा ए मनै सोगन थारी ए, कोई हा ए हतियारी ए। कोई आस निराम्यो गजवण तैं करयो जी गज।—लो. गी

उ०—३ सुण रे मन सगराम, कहू इती रीस मत राख। बोय म्हासी पापणी, हतियारण हकनाक। हतियारण हकनाक कह्यो जो मानै म्हारो। कर जरणा सू प्रीत भलो व्है आसी थारो।

—सगराम

(स्त्री हतियारण, हतियारी)

हतियोडो—भू का. कृ—१ मारा हुआ, वध किया हुआ, प्रहार किया हुआ. २ आघात किया हुआ, पीटा हुआ ३ ग्रस्त हुआ, पीडित ४ घायल किया हुआ, जख्मी, आहत. ५ हटाया हुआ. ६ हराया हुआ, परास्त किया हुआ. ७ वंचित किया हुआ. ८ हताश या निराश किया हुआ. ९ दुःखी या परेशान किया हुआ १० नाश किया हुआ, ध्वस्त या मिटाया हुआ।

(स्त्री हतियोडी)

हती—देखो 'हूंती' (रू भे)

हतीक—क्रि. वि—निश्चय ही।

उ०—सही आज इग्यारसी, म्हारै हिवडै तीख। करसा तो ही पारणो, जो पिय मिळै हतीक।—अज्ञात

हतीको—वि. [स. हस्तकृत] (स्त्री. हतीकी) १ ठीक स्थान पर।

२ प्रत्यक्ष, हाथोहाथ।

३ विश्वासपात्र।

४ हाथ का रखा हुआ।

५ प्रसिद्ध, मशहूर।

रू. भे—हथीको।

हतीयारो—देखो 'हत्यारो' (रू भे.)

(स्त्री. हणियोडी)

हणु, हणुंमान, हणु, हणुग्रगी, हणुमत, हणुमत, हणुमांन—देखो 'हनुमान' (रू. भे.) (ना. मा)

उ०—१ हणु हुवा जिण जग होय, हरखित चाह वेद चियार। तत पच कर खट तरक तें, दरियाव सात उदार।—र ज. प्र.

उ०—२ पवें उठाहै हणु जिऊ चाहै, मुनि जैम सिघ पीण, विजै की सवाहै मही डाड जिऊ वाराह। गाढा भीम मतारा गनीमा गजा जैम गाहै, सतारा सु तेंग तुही साहो 'विजैसाह'।

—हुकमीचद खिडियो

उ०—३ सुग्रीव ग्रगद हणूमत सहत, ग्रातम धनि ग्राहसिया। जिण वस राम प्रगटै जिको, वस सुधिन रघुवसिया।—सू. प्र.

उ०—४ सदा पग ग्रागळ लोटै सेस, गुणा ग्रसतूति करंत गणेस। पगा हणुमंत करत प्रणाम, सोहै पग ग्रागळ कातकसाम।

—ह र.

उ०—५ चढे इम वैरिसाल ग्रभग, रचावण जुद्ध रमायण रग। चढै हरिसीह मुछा धर हाथ, मनो हणुमत लका गढ माथ।

—शि. सु. रू.

उ०—६ स्रीमुख सू हणुमांन जी रा बखाण।—र रू.

हणुमा-स पु—१ भारी दाढ या जबडे वाला।

२ देखो 'हनुमान' (रू. भे)

हणुरत्तम-स पु—एक प्रकार की वात व्याधि। (ग्रमरत)

हणूं, हणू मान, हणू—देखो 'हनुमान' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रमरावत 'नाथो' दळ ग्रागळ, कळहण गैलो जाण दवी कळ। 'तेजावत' 'वाघो' रिण तैसो, जुध वळ घणू हणूं कपि जैसो।—रा रू.

उ०—२ रिमाखेसै लागो दीखै इद्र ज्यूं जभ पैं रूठो, ग्राहसी भाराथा ऊठो हणूं ज्यू ग्रोपाळ। छूटा डाण लाठा मदा पाण हू भूरेस छूटो, गोरा गजा माथै रूठो सीघळी 'गोपाळ'।

—गुलावसिंह महड्ड

उ०—३ सको राकसा एकणी हाथ साहे, मेलु लक साहेत पाताळ माहे। जपै वैण ऐहा हणूंमांन ज्यारा, तेडै मान वभीखण भ्रात त्यारा।—सू प्र

उ०—४ मारू जोधा रिणमला, भळै सग्रोधा भार। जाण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार।—रा. रू

हणूग्रो—देखो 'हनुमान' (रू. भे)

उ०—त्राण यथा ग्ररजुन-तणा, हणूग्रा पूछड जेम। तिम तनि वद्धइ माहरइ, माधव-केरु प्रेम।—मा का प्र

हणूफाळ—देखो हनुफाळ' (रू भे)

हणूमत—देखो 'हनुमान' (रू भे)

उ०—महवळ सूर दिना मकरद, चखा करि चोळ लडै भड 'चंद'। जठै भड 'तेज' हणूमत जाति, जुडै हरनाथ करूर जमाति।

—सू. प्र.

हणूमांन—देखो 'हनुमान' (रू. भे) (डि. को)

हणूयो—देखो 'हनुमान' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—जिसी प्रीति हणूया सुग्रीव, जाणै नही जूजूग्रा जीव। सीकरि छत्र चमर ढालीइ, साचइ न्याइ लोक पालीइ।

—का दे प्र.

हणे—देखो 'हणा' (रू. भे.)

हणेहण-स. स्त्री. [ग्रनु] मार-काट की ध्वनि।

हणें, हणैं—देखो 'हणा' (रू. भे.)

उ०—१ हणें तो चालो, क्यूं जिक्कर करो हो। काल हडमानजी री वगेची मे पाच वजी सिज्या नें सैं भेळा हो जासा।—वरसगाठ

उ०—२ दरखत रा गात हरया हा, सापडदै प्राण भरया हा। सूका ठूंठा सा होग्या, की खातर हणैं खड्या हा।—सकुतळा

हत-वि. [स] १ मरा हुग्रा, मृत।

२ ग्राहत, घायल, जख्मी।

३ पीडित, ग्रस्त।

४ रहित, विहीन, वचित।

५ विगडा हुग्रा।

६ ध्वस्त, नष्ट।

७ परेशान, दु खी, त्रस्त।

८ निर्वल, कमजोर।

९ हताश, निराश।

स. पु,—१ रिपु, वैरी।

रू. भे.—हत्त।

२ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—लोक कुटवी वरज वरज ही, वतिया कहत वणाय। चचळ चपळ ग्रटक नहिं मानत, पर हत गयै बिकाय।—मीरा

हतग्रासा-वि—निराशा।

हतक-स स्त्री.—१ वेइज्जती, तोहीन।

२ हत्या, सहार।

वि.—१ मारा हुग्रा, हत।

२ घायल।

उ०—झखा खजरीटां ग्रगा, सवर हतक सराह। जैतवार ज्यारा नयण, मरोरुहा सुथराह।—वा दा.

हतकडी—देखो 'हथकडी' (रू भे)

हतकार—देखो 'हतकार' (रू भे.)

हतणपुर, हतणापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू भे)

हतणी—देखो 'हथणी' (रू भे)

हतणो, हतवो-क्रि. स. [स. हन्] १ मार डालना, वध करना, संहार करना।

उ०—१ केहरि छोटो वहुत गुण, मोडै गयदा माण। लोहड वडाई

४ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

५ देखो 'हत्थौ' (अल्पा; रू. भे.)

हत्थु, हत्थौ–स. पु.—१ मशीन या किसी औजार का वह भाग जिसे हाथ में पकड़ कर घुमाया, चलाया या सचालन किया जाता है, दस्ता, मूठ।

२ विशिष्ट प्रकार का ऐसा उपकरण या औजार जो हाथ का सा काम देता है।

३ कसरत (दण्ड-बैठक) करते समय हाथ के नीचे रखने का पत्थर या ईट।

४ अहाता, चार दिवारी।

५ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ तीण परीक्षा गुर तणी, पूगउ एकु जु पत्थु। राहावेहु तउ सिखवइ, मच्छइ देविणु हत्थु।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ चात्रग भौजाई पचा नै माल-मलीदा खवाड अर की मूठी निंवाई कर खासो हत्थौ मार लियौ।—फुलवाडी

हत्थ—देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

उ०—फत करण अकरण अन्नथा करण, सगळै ही थोकै ससमरत्थ। हालिया जाइ लगाया हूता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ।—वेलि

हत्थोहत्थ—देखो 'हाथोहाथ' (रू. भे.)

उ०—मास पलच्चर सीस सिव, हस अपच्छर हत्थ। 'चपौ' चवा फूल ज्यू, होग्यौ हत्थोहत्थ।—राव चाशा री दूहो

हत्या–सं. स्त्री. [स] किसी शस्त्र, लाठी या किसी अन्य साधन या तरीके से किसी जीव का किया जाने वाला प्राणान्त, कत्ल, वध।

उ०—१ आज पै'ली थू कित्ती हत्यावां करी वा थू इज जाणै।
—फुलवाडी

उ०—२ जगडइ ए जासक जुहिय यू हियडउ निरधार, देखउ केवडी केवडी जेवडी करवत धारि। प्रिय विण चगि नारग रग ना आवइं आजु, हिव मइ हत्या साधवी माधवी वेलि न काजु।
—जयसेखर सूरि

उ०—३ 'तो तूं हत्या, वध अर मिरतू माय भेद कोनी कर सकै? 'हत्या अर वध करया जावै, मिरतू हो जावै।—तिरसकू

मुहा.—हत्या लागणी=किसी की आह लगना, वध करने का पाप लगना, अभिशप्त होना।

क्रि. प्र.—करणी, कराणी, टळणी, टाळणी, लागणी, व्हैणी, होणी

रू. भे.—हितिया, हित्या।

हत्यारौ–वि. [स्त्री हत्यारण, हत्यारणी, हत्यारी] १ किसी का वध या कत्ल करने वाला, वधिक।

उ०—१ हा हा रावण मा हत्यारी रे, नही आणी दया लिगारी। देखो राणी री कमाई रे, जोयजो स्वारथ नी सगाई।—जयवाणी

उ०—२ पुलिस समझेली विचारै नै हत्यारणी डोरी सू बाधणी। दण स् पुलिस तनै तंग नईं करैली।—तिरसकू

२ सताने वाला।

३ क्रूर, निर्दयी।

उ०—तू हाल 'जात हीण' अर 'वरगहीण' समाज री बात 'यूटोपिया' मान'र 'असमानता' री हत्यारी आधी रै दुख अर पीड सू दूर है।—तिरसकू

रू. भे.—हतियारौ, हतीयारौ, हथियारौ, हितियारौ, हित्यारौ।

हथ—देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ आज सहेली दत को, चूडो पहरयो हथ। हरीया सिझ सवेर मैं, चली अडोळी वथ।—अनुभववाणी

उ०—२ हुय चौप कोड चमंड हथं कर कोड नवै कतियाण कथं। खट कोडलखे ब्रहमाण खडी, नव लाखइ लोवाळियाळ लडी।
—पा. प्र.

उ०—३ ऊठि अ गा बोलणा कामणि आखै कत, अै हल्ला तो ऊपरा हूकळ कळळ हुवत। हूकळै सीधवौ वीर कळहळ हुवै, वरण कजि अपछरा सूरिमा वह वुवै। त्रिजड-हथ मयद जुध गयद-घड तोलणा, ऊठि हरधवळ सुत अढगा बोलणा।—हा झा.

उ०—४ वा व्रत किया अनेक, हिरण दे दे विप्रा हथ। ज्या सधिया मठजोग, त्या किया कोटक तीरथ।—र ज. प्र.

मुहा.—हथउधार=देखो 'हाथउधार'।

हथकडो–स. पु. [व व. हथकडा] १ किसी कार्य मे दिखाई जाने वाली कुशलता, हस्तकौशल।

२ किसी कार्य को करने मे वरती जाने वाली चालाकी या धूर्तता।

३ साधन, स्रोत।

उ०—म्हे तो आ-भी करा हा उस्ताद। थै जाणो कोयनी, अै औ इण रा हथकंडा है। हूं तो पाच-सात सस्थावा नै जाण-बूझ'र गळै घालियै राखू हू।—वरसगाठ

रू. भे.—हथखंडो।

हथकड़ी–स. स्त्री [स. हस्तकट्टक] शासनिक अधिकारी द्वारा अपराधी को पहनाई जाने वाली लोहे की कडी या जंजीर।

उ०—१ सिफाईडा ज्यूं ही रायफला मैं रीझ्या, भुगानै रा एकला भाई त्यूं ही सासै मैं सागीडा सिक्या अर सीझ्या। हथकड़ो देखता ही आकळ-वाकळ हुयग्या।—दसदोख

उ०—२ नित नूवा ऊंधा-पाधरा कानून निकळै। जै इण देवतावा नै टैमसर अर मरजी परवाणै धूप नी खेवो तो हथकड़ियां त्यार। अबै आप इज विचार करो कै केडो'क मजो है अबार विणज वैपार मैं।—अमरचूनडी

रू. भे.—हतकडी, हाथकडी।

हथकती–सं. स्त्री [स. हस्तकृति] १ हाथ की बनाई हुई वस्तु, दस्तकारी।

२ हाथ की लिखी प्रति या पुस्तक।

हथखडो—देखो 'हथकडो' (रू भे)

उ०—सीसडलौ मूमल रौ सरूप नारेळ ज्यो, हाजी रे केसडला हतीयारी रा वामग नाग ज्यौ, मारी साचोडी मूमल हालौ नी रे ग्रमराणँ रे देस।—लो गी.

(स्त्री. हतीयारी)

हतूडिया–म. पु —राठौड वश की एक उप शाखा।

हतेरण–स. पु. [सं. हस्तकरण] १ लेख या साक्षी-पत्र, दस्तावेज, सनद।

उ०—ग्राखियौ जिती ध्रर ग्रोयण थायौ डळा, मुभोजन चाखियौ थाळ साथै। ताम्रपत्र ढाकियौ चाखडौ थान तळ, हतेरण राखियौ ग्राप हाथै।—खेतसी वारहठ

२ ग्राभूषण या वह वस्तु जिसको गिरवी रख कर रुपये उधार लिये जाते है।

रू. भे —हथेरण।

हतेरी—देखो 'हथेळी' (रू भे)

उ०—ग्रब कै पार लगावौ, नातर, हंसेगे वजा के हतेरी। मीरा के प्रभु गिरधरनागर, मेरी सुध लीज्यौ प्रभुग्रान सवेरी।—मीरा

हतोटी—देखो 'हथोटी' (रू भे)

हतोडौ—देखो 'हथोडौ' (रू भे.)

हतोळियौ–स पु —वह हल जिसे ग्रादमी ग्रकेला खीचता हो।

हतौ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—१ सहर रै नैकाळ वडौ तळाव हतौ।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ हू वराकी घणी ! मोकियउ रोस। पाव की पाणही मु कियउ रोस। मे य हसती वोलीयौ, ग्रापणड मान हतौ मानस छइ सास।—वी दे.

उ०—३ कान्हडदे नी घरणी हत्ती, तेह भणी लिखी विनती। ऊमादे नइ कमळादेवि, जइतलदे नइ भावलदेवि।—का दे. प्र.

हत्त—१ देखो 'हाथ' (मह; रू भे)

उ०—हुना सज्जण-हीयडै, सयणा-हदा हत्त। जउ सोहणौ साचइ होग्रइ, सोहणौ वडी वसत्त।—ढो. मा

२ देखो 'हत' (रू. भे)

हत्तीवीस—देखो 'वीसहती' (रू भे.)

उ०—महाराव छडेव छडेव व्है न दै न गूड, वजडेव डम्मरू चडेव हत्तीवीस। सडेव छडेव मेख पाथ वाण पाय साच, उमडेव मडेव तडेव नाच ईस।—वद्रीदास खिडियौ

हत्तोडौ—देखो 'हथोडौ' (रू भे.)

हत्थ, हत्थ—देखो 'हाथ' (मह; रू. भे)

उ०—१ सत्थ न को वळ हत्थ के, ना जापै छळ मत्त। जै पामै रिप सग्रहै, तप हूता छत्रपत्त।—रा. रू

उ०—२ क्रित करण ग्रकरण ग्रन्नथा करण, सगळै ही थोकै ससमरत्थ। हा लिया जाइ लगाया हूता, हरि साळै सिरि थापे हत्थ।—वेलि.

उ०—३ तवेरम कुभ दुहाथळ तत्थ, ग्राडागिरि मत्थ क हत्थ ग्रगत्थ। प्ररोहत होफर खोफ ग्रपार, ग्रधोफर ग्राभ डरै ग्रमवार।

—मे म

उ०—४ इद वधू ग्रणपार क वारिज वित्थरी, मूगफळी ममतूळ क ग्रगुळी हत्थ री।—सिववक्स पाल्हावत

हत्थडौ - देखो 'हाथ' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—राणँ भीम न राखिणौ, दत विन दीहाडौ ह। हय गय देणौ हत्थडौ, मरणौ मेवाडौ ह।—महाराजा मानसिंह जोधपुर

हत्थळ—देखो 'हाथळ' (रू भे)

उ०—भूख री लाय सू उणरा रू-रू मे काळ रमण लागौ। पछै वा तौ भली सोची नी कोई भूडी गाय रै माथै हौकारा रै सागै मलापनै ताचकी जकौ एक ई हत्थळ मे ठायै राख दी।—फुलवाडी

हत्थाण—देखो 'हाथ' (मह; रू. भे)

उ०—मीत तुम्हारी होइयौ, मेरे हत्थाण। जव देन मन जाणियौ वोलै वधाण।—गज-उद्धार

हत्थि—देखो 'हाथी' (रू भे)

उ०—१ हटी पुमाय हत्थ तै, हुले घुमाय हत्थि कौ। प्रनेल ग्रत खेल मे, भिखार दे प्रमत्थि कौ।—ऊ का

उ०—२ चिरे वहित्थ हत्थि के, चिकार चूर चूर है, भिरे भटालि भाल मे, भिखार भूर-भूर है।—ऊ का.

२ देखो 'हाथ' (रू भे)

उ०—रहि रे तू चाली म कहि, इम ग्रवनी-तटि नत्थि। कहिता कोडि सवा-तणउ, माणिक ग्रापिउ हत्थि।—मा का. प्र.

उ०—२ हई ! हई ! देव किसूं करिउ, रत्न ऊदालिउ हत्थि। काली किसू कारण हतू, ग्राज ग्रनेरी भत्ति।—मा का प्र

हत्थिप–म पु. [स हस्तिप] १ हाथी का ग्रकुश।

२ महावत।

हत्थी–क्रि वि [स. हस्त] हाथ से, हाथ पर।

उ०—गैणाग ऊछाह भूल वारगा रा वावै ग्रथी, महामाण रत्था खाग खुराटा माडीस। हसवीर पेखवा तमासा ताळ दे दे हत्थी, तत्तथेई थेई करै ग्रारूढै ताडीस।—करणीदान कवियौ

वि स्त्री —१ हाथ के माप वाली, हाथ की।

उ०—एक विकराळ नौ हत्थी सिंघणी रै कारण जगळ मे डण भात सून्याड व्हैगी ही।—फुलवाडी

२ हाथो वाली, हाथो की।

उ०—हरी वच्छ स्रीलच्छ तू वीस हत्थी। तु ही पन्नगाधीस रै सीस प्रत्थी।—मे म.

३ देखो 'हाथी' (रू भे.)

उ०—एक महूरत सार भड, मातौ ताती वाण। लग्गा हत्थी भग्गणौ, या वग्गा ग्राराण।—रा रू.

स्त्रिया वर वधू के साथ भोजन करती है।

उ०—पछै भरमल सासू रै पगा लागी, बीजी सासुवा रै पगै लागी। सो रूप देख सारी चकत रही। हथबोलणै री जीमण तयार हुवो। सारी एकण थाळ आय बैठी। सो सोका भरमल री रूप देख चकत रही जीमणौ भूल गई।

—कुवरसी साखला री वारता

२ उक्त अवसर के लिये बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

उ०—फेरा ले चुका। अतरपट कर सहेल्या हथबोलणै री कसार मुह आगै आण धरियो। ताहरा भरमल अरज होळै सै कीवी—'जो आज रात चाकर ऊपर किरपा कर विराजै तौ मोटी करै।'

—कुवरसी साखला री वारता

हथमार, हथमारौ—वि.—अपने हाथ से दूसरो का सिर काटने वाला, सहारक, आघात या प्रहार करने वाला।

उ०—१ मो पित हथमारोह, वेगा वेग वतायदै। तज दू घर थारोह, नानी हू रहसू नही।—पा. प्र.

उ०—२ आप पाछी आवतो मोहनसिहजी कही—भाभीजी, हथमारो जावै, सो पहोच साळै रै दीवी सो दोय वटका हुवा अर तरवार माही नीसर थाभै मे लागी सो पत्थर रो टुकडो दूर जाय पडियो।—पदमसिहजी री बात

स. पु—जल्लाद।

उ०—१ राजाजी री आदेस मिळता ई हथमार अर राज रा असवार पगा रा जूता हाथा मे लै लिया।—फुलवाडी

उ०—२ सूळी चढावता हथमार उण नै मन री कोई इछा दरसावण सारू पूछ्यो, तद वो कह्यौ—म्हारै पडोसी सेठा री फरजन साथै लेय नै मरणो पडै, इण री अवस पिछतावो है।—फुलवाडी

हथमेळौ—देखो 'हथळेवौ' (रू. भे.)

उ०—हथमेळा रै हाथ, घरै नाळेर हसती, सलभ सदा मनसमी, वल्लभ घर तणी वसती।—अरजुण जी बारहठ

हथमोडौ—देखो 'हथबोलणौ'।

हथयार—देखो 'हथियार' (रू. भे.)

उ०—आदमी १२०० राणी आय साम्ही लडाई कराई छै। लोका नू बापूकारै छै, जणै जणै पाछी लागी हथयार बाधा थका।

—राजा नरसिंघ री बात

हथरस—देखो 'हतरस' (रू. भे)

हथळ—१ देखो 'हाथ' (रू. भे)

उ०—महाराज के जोधाण के राव। हथलू पहल कीए बीजळू के घाव।—सू प्र.

२ देखो 'हाथळ' (रू भे.)

हथळस—देखो 'हतरस' (रू भे.)

हथळेबौ—देखो 'हथळेवौ' (रू भे.)

उ०—माध पडित बोलइ तिणि ठाय, हथळेबो बेगो मगाय। माध पडित ईम उचरई, ब्रह्माण देवतणा भुणकार।—बी. दे.

हथळेव—देखो 'हथळेवौ' (रू भे.)

उ०—१ कवर वाण जमूर अणति कढि, हाथा किये जमदढि हथळेव। फिरि फिरि अफिरि किये सुज फेरा, जोगणि घेरा राग जमेव।—कल्याणदास राव

उ०—२ अेधूळै आरै करी, सत थाल सुणांणा, कमध प्रणावै 'कूपसी', धीय आप घराणा। गत पामे वैकूटग्या, जेकार जपाणा, वीरा जद दीघा बचन, हथळेव छुडाणा।—वी. मा.

हथळेवडौ—देखो 'हथळेवौ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—आदि विस्नु नइ आदि माया, हूआ अचळ गठि। मधु-पुरख हथळेवडौ, वरमाळ वीठळ कठि।—रुकमणी मगळ

हथलेवौ—स. पु. [स. हस्त+लग्न] १ विवाह में वर द्वारा वधु का प्रथम बार हाथ पकडने का सस्कार, पाणिग्रहण।

उ०—१ एक गढ मांहे पधारो तरै कहिजो—'म्हर उमरकोट सारीखो नही। एक सोनगरी सू हथळेवो जोडो तरै कहीजो—सोढी सारीखो सोनगरी रो हाथ नही।—नैणसी

उ०—२ वसुदेव देवकी सू आहमणै, वही परसपर एम कहि। हुए हरण हथलेवो हूओ, सेस ससकार हुवइ सहि।—वेलि

उ०—३ हरीया चोरी चहु दिसा, सत व्रत रोप्या थभ। हरि हयळेवो हरख सू, फिरत कमाई कभ।—अनुभववाणी

क्रि. प्र—छुडाणौ, छूटणौ, छोडणौ, जुडणौ, जोडणौ, जोडाणौ।

मुहा.—१ हथळेवो जुडणौ=विवाह होना, रिश्ता होना।

२ हथळेवो जोडणौ=विवाह करना, पाणिग्रहण सस्कार करना।

३ हथळेवो छूटणौ=वैवाहिक रश्म पूरी होना।

२ उक्त अवसर पर गाया जाने वाला लोक गीत।

३ उक्त अवसर पर वधु के सम्बन्धी व मित्र-गणो की तरफ से दी जाने वाली भेंट।

४ हाथ पकडने की क्रिया या भाव।

रू भे.—हतळेवो, हथळेवो, हथळेव।

अल्पा.—हथळेवडो।

हथवडौ—देखो 'हथोडौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरा ईयै तिमरलिंग दोना ही हाथ सो दोय हथवडा सबाया। सभाय नै जिकै भात कूभार रा पग गार मांहे जावै, तिकै भात, डाडै सुधा घणा माहे हाथवडा जावै छै।

—तिमरलिंग री बात

हथवा—देखो 'हथबाह' (रू भे)

उ०—पडिय सिर 'पाल' धरा न पडै, हथवा हथ साम्रव सेन हुडै। लग आभ भुजा धड जग लहै, मुख मार बकै पिड खेत महै।

—पा. प्र

हथवार, हथवारू—वि. [स हस्त+वृणतीति, हस्तवार. (री)] वह गाय या भेंस जो एक ही व्यक्ति के हाथ से दुहाने की आदी हो गई हो।

हथखरच—देखो 'हाथखरच' (रू भे)

उ०—बादसाह कही—दस हजार री जागीर पावो छो, सागै तीन हजार रोकड हथखरच रा ही पावो छो, तो ही निवाह क्यू ना हुवै ?—जलाल बूबना री बात

हथखारो-वि.—१ हाथो का खार खाया हुआ, कुपित, झल्लाया हुआ।

उ०—ताहरा ईंदा छै सु सारा ही हथखारै सातरा थका रहै। यु करता छव मास हुवा।—नैणसी

२ गुस्सैल, जिसके हाथ की चोट भारी पडती हो।

हथडो—देखो 'हाथ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—करहा काछी काळिया, भुइ भारी घर दूर। हथडा काइ न खचिया, राह गिलतइ सूर।—ढो. मा.

हथजोडो-वि—सदा हाथ जोड कर खडा रहने वाला, खुशामदी, चाटुकार।

उ०—हथजोडा रहिया हुयै, गढवी काज गरथ। ऊ 'राजड' छत्र-धारिया, गयो जोडावण हत्थ।—महाराजा गजसिंह जोधपुर

हथडो—देखो 'हाथ' (अल्पा, रू भे)

हथणांपुर, हथणाउर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू भे.)

उ०—१ इण महामुनि ना ए अधिकारा, नित सांभलता ह्वै निसतारा। एण भरतखेत्र चउथा आरा, हथणाउर सुरपुर अणु-हारा।—ध व ग्र.

उ०—२ किता तै सेवग सारण काज, रचै हथणांपुर पडवराज। जलतो उग्रा ग्रब्भ (गब्भ) मझार, अनत परीखत सत उवार।

—ह र.

हथणी-स. स्त्री. [स. हस्तिनी] १ सरोवर आदि की सीढियो के बगल मे तल से ऊपर तक क्रमवार बना हुआ चबूतरा।

२ मादा हाथी।

उ०—तिल मातर भीत न बीत तणी, थमि हालत अग्रकिया हथणी।—मे म.

३ हरिजन जाति की स्त्री।

रू. भे.—हथिणी, हाथणी, हाथिणी।

हथणो, हथबो-क्रि स. [स हस्त+रा प्र णो] १ हाथ मे पकडना, हाथ मे लेना।

२ हस्तगत करना, अधिकार मे करना।

३ अपने प्रभुत्व या सरक्षण मे लेना।

४ दूसरे की वस्तु पर बलात् या धूर्त्तता से अधिकार कर लेना, हथिया लेना।

५ देखो 'हतणो, हतबो' (रू भे.)

उ०—रमा हुतासणी सरणि रहाए, हथि रामण त्रिय छाह हराए। छाया हरण हुवा दुख छाया, माया अवसि मोह वसि माया।

—सू प्र.

हथणहार, हारो (हारी), हथणियो—वि०।

हथिओडो, हथियोड़ो, हथ्योड़ो—भू० का० कृ०।

हथीजणो, हथीजबो—कर्म वा०।

हथियाणो, हथियाबो—रू० भे०।

हथनाळ, हथनाल, हथनाळि, हथनाळी-स. स्त्री.—१ हाथ की बन्दूक।

उ०—१ कुहक बाण हथनाळ, विसख बरखै तिण वारा। अति खामण वद्दळा, जाण घण मत्तो धारा।—रा रू.

उ०—२ हथनाळ दगण आरब हमम, माहुत चढिया मैगळा। देवळा तरा घर करि हुगम, जगम जूथ बीझाजळा।—सू प्र.

२ देखो 'गजनाळ'।

उ०—१ सबलै संग्रामै भिडता भूप भूपाळ। अति राता ताता वहै, गोळा हथनाळ।—ध. व. ग्र

उ०—२ सहस बार गज धुज अनि साथी, हथनाळियां मुहर लख हाथी, जोड जबूर रहकळा जमला, इसी तरह दोहू दिस अमला।

—सू. प्र.

उ०—३ फौजा आगै आतस चालै जै। जबरजग नाळि, किलकिला नाळि, जबूरनाळ, गजनाळ, हथनाळ, सुतरनाळ, कुहकबांण, राम चगी कई भाति भाति रा आराबा रहहए घाती आवै छै।

—रा. सा स.

उ०—४ हथनाळि हवाई कुहकवाण याको सोर आघात होण लागो वीरजु वडा वडा जोधा। त्याको वीर हाक होण लागी।

—वेलि टी

हथपाह—देखो 'हथवाह' (रू भे)

उ०—हाफा पीथळ हाक हक हथपाह हडदै। वाघण व्याई वेढ मैं कुण दूर करदै।—पा. प्र.

हथफूल-स पु यौ [स हस्त+पुष्प] स्त्रियो का एक पुष्पाकार आभूषण विशेष जिसको हथेली के ठीक पृष्ठ भाग पर पहना जाता है। इसका एक सिरा कलाई से तथा दूसरा अगूठियो से जुडा रहता है।

उ०—१ हस्ती दात रो चूडो। मजीठ सू रगियोडो। विलिया रै घर्के चादी री पुणचिया। हाथा चादी रो हथफूल।—फुलवाडी

उ०—२ वगडी बाजूबद चोळ रग चूडला। फबि पहुची हथफूल छाप मुंदडी छला।—सिववक्स पाल्हावत

हथफेरी-स स्त्री.—हाथ की सफाई, तान्त्रिक क्रिया।

उ०—फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणै माथै हथफेरी करणी पैलाई।—दसदोख

हथवाह-स. पु—शस्त्र प्रहार की कला।

उ०—वीर अवसाण केवाण उजवक वहै, राण हथवाह दुयराह रटियो। कट झलम सीस बगतर वरग अग कटै, कटै पाखर सुरग तुरग कटियो।—गोरधनजी बोगसो

रू भे.—हतवाह, हतवा, हतवाह, हथपाह, हथवा, हथवाह।

हथबोलणो-सं. पु—१ शादी के बाद आगन्तुक नव वधू के प्रथम परिचय निमित्त अदा की जाने वाली एक रस्म जिसमे घर की सब

हथिणाउरि जाएवि मुकलावइ, निय माय पीय ।—सालिभद्र सूरि

हथिणी—देखो 'हथणी' (रू. भे)

हथिनापुर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू भे.)

उ०—हथिनापुरै सहसाव वन मझै, उतरया हो ग्यानी बुध सार । —जयवांणी

हथिनाळ –१ देखो 'गजनाळ'।

उ०—मगरूर होद जगिया मझार, धुर चढै अरव हथिनाळ धार । साझदा केयक वध साधि, वह वीजळ सूडाडंड बाधि ।—सू. प्र.

२ देखो 'हथनाळ' (रू. भे.)

हथियाणौ, हथियावौ—देखो 'हथणौ, हथवौ' (रू. भे.)

हथियाणहार, हारो (हारी), हथिणियो—वि० ।

हथियायोडो—भू० का० कृ० ।

हथियाईजणौ हथियाईजवौ—कर्म वा० ।

हथियायोडो—देखो 'हथियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री हथियायोडी)

हथियार–स पु.—१ वह चीज जिससे किसी पर प्रहार किया जाय, अस्त्र शस्त्र ।

उ०—१ कव्वड जीण, कमाण-गुण, भीजइ सव हथियार । इण रुति साहिब ना चलइ, चालइ तिकै गिमार ।—ढो. मा.

उ०—२ काम क्रोध को फेंक के रे, सील लियें हथियार । जीती मीरा एकली रे, हारी राणा की धार ।—मीरा

उ०—३ रुहल्या पदचार सवार रथा, हथियार छतीस प्रेकार हथा । —मे म.

२ ओजार ।

३ लिंगेन्द्रिय, शिश्न । (वाजारू)

४ हाथी का शिश्न । (,,)

रू भे.—हथयार, हथिआर हथीआर, हथीयार, हथ्थार ।

हथियारबंद–वि —अस्त्र शस्त्रो से सुसज्जित, सशस्त्र ।

हथियारो —देखो 'हत्यारो' (रू भे)

उ०—हरिजन हथियारा है हुसियारा न्यारा हुय नाचदा है, रमणी में राजी कुळ में काजी, हाजी हूस हरदा है ।—ऊ वा.

हथियोडौ–भू. का कृ.—१ हस्तगत किया हुआ, हाथ मे पकडा हुआ. २ दूसरे की वस्तु पर बलात् या कौशल से अधिकार किया हुआ, हथियाया हुआ ३ अपने प्रभुत्व या सरक्षण मे लिया हुआ । ४ अधिकार मे किया हुआ ।

५ देखो 'हतियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री हथियोडी)

हथी–स. स्त्री.—१ कपाट के मध्य लगा हुआ पकडने का हत्था ।

वि.—१ हाथो वाला ।

२ देखो 'हाथी' (रू. भे.)

हथीआर—देखो 'हथियार' (रू. भे)

उ०—हरि हथीआर हलावता, मुकत्यह रुधी वट्टि । तै मुझ-लीधइ आविजै, नाकि घणा जिणि घट्टि ।—मा. का. प्र.

हथीकौ—देखो 'हतीकौ' (रू. भे.)

उ०—कीजै मया मुझ सेवक कीजै साचौ, कीजो मत अवर हथीकौ ।—ध व ग्र.

हथीड़ौ, हथीडौ —देखो 'हाथी' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—सूज हर, मिळै अप्रियामण साज सू, जेत रुम आज री किना जेरै । वारण लियण हेरै नह विसाती, हथीडा दूकळा खळा हेरै । —राजा उम्मेदसिंह सिसोदिया री गीत

हथीणाउर, हथीणापुर – देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे.)

उ०—'राजग्रही' वैभारगिरी, यात्रा करी सघ साथ । 'हथीणापुर' जिन वादीया, साति कुथु अरनाथ ।—साह लाधो

हथीयार—देखो 'हथियार' (रू. भे)

उ०—सुगतन हथीयार गहि, मारि किसो कू नाहि । मारै तो मन मोह कु, पाच वसी हुय जाहि ।—हरिरामदासजी महाराज

हथूंडिया–स. पु —राठौड वश की एक उपशाखा ।

हथूंडियो–स. पु —राठौड व'श की हथूडिया शाखा का व्यक्ति । (वां. [illegible] गात)

हथेरण—देखो 'हतेरण' (रू भे)

उ०—तिमणियै रै ग्राद माई वाहली, कातरिया नै कडोलिया री वारी । क्यूकै पेट मैं तो भूखो रैंवीजै नी घर विना हथेरण सेठ लोग पेढी माथै ई चढण देवै नही ।—रातवासो

हथेळी–स. स्त्री. [स. हस्ततल प्रा. हत्थतल] कलाई और अगुलियो के मध्य का कोमल भाग, हस्ततल, करतल ।

उ०—छोरा केवैला रात नै पवन आपरै कमरै माय कोई छोरी लियायो हो। म्है झट देणी सी उठ र उण मूडै माथै म्हारी हथेळी लगा दीनी ।—तिरसकू

मुहा —१ हथेळी माथै जान राखणी=जान हाथ मे रखना, जोखिम का काम करना ।

२ हथेळी माथै थुकाणी=भारी खुशामद करना, अत्यन्त प्यार करना ।

३ हथेळी माथै राखणी=बहुत सावधानी से रखना, बिलकुल कष्ट न देना ।

४ हथेळी में खाज हालणी=हथेली मे खुजलाहट होना, द्रव्य प्राप्ति की सूचना होना ।

५ हथेळी मे सरसू उगाणी=बहुत शीघ्रता करना ।

६ हथेळी रो छाळो=अत्यन्त प्रिय ।

७ हथेळी लगाणी=सहारा देना, हा मे हा मिलाना, चापलूसी करना ।

रू. भे.—हथाळि, हथाळिय, हथाळी, हाथाळो।

मह.—हथाळो, हथेळो ।

हथेळौ–सं. पु —१ हल की वह लकडी जो हल चलाते समय हाथ मे

रू भे.—हतवार, हतवारू ।

हयवावो–वि.—१ घात करने वाला, प्रहार करने वाला, घातक ।

२ वधिक, मारने वाला ।

रू. भे.—हयवाहो ।

हयवासो–वि. [स. हस्त+वाह] ढाल पकडने का हत्था ।

उ०—१ सोनही री फूला नकसी फूला मुखमल गादी घातिया, साबरा हयवासा, वुलगारी डावा सहित ऊग्रास राजाना रा हाथा री उद्दाग्रीज वडा नै ग्रा पीपलारी ग्रा साखा सू नागलिग्रा । —रा. सा स.

उ०—२ ग्रागे ग्राय साथ रै दे हयवासै ढाला नै उतर पडिया, सारो साथ मारियो।—नैणसी

रू. भे.—हयवाहो, हथोसो ।

हयवाह—देखो 'हथवाह' (रू भे)

उ०—१ सत जरण तरण चख्र क्रपा रुख साहरै, साह रै विरद भुजडड सिघाळा । वीस भुज भाजणा समर हयवाह रे, वाह रे राम ग्रवधेस वाळा ।—र. ज प्र.

उ०—२ हे वाभीजी सा ग्रापरा गोखडा सू ग्रापरा देवर री हयवाह तरवाह वहती देख लेराग्रो वाभीमा ग्राप खरच गिणता हा वो म्हारो पति सीलै छै ग्ररथात् हाथी रै चैवचै (होदै) पर तरवार वाहै छै।—वी. स टी.

हयवाही–स स्त्री —प्रहार करने की क्रिया या भाव ।

उ०—कोई लडाई मे पचा मे हयवाही ग्रधिक कर ग्रावै तो उणा नू इनाम देणो ।—नी. प्र.

हयवाहो–वि.—१ मारने वाला, शत्रु ।

उ०—तद भूणसिघजी कयो, 'भाभीजी, हयवाहो जीवतो जावै है ।—द दा

२ देखो 'हयवासो' (रू. भे)

हयसंकळ, हयसकळी, हयसांकळ, हयसांकळि, हयसाकळी–स स्त्री —[स. हस्त+श्रृखला] हाथ का ग्राभूपण विशेप । (व स.)

उ०—जदि राजा कडा मोती कठसरी, दुगदुगी, जनेऊ, हयसांकळां सिरपेच, कडीया री तरवार, ढाल कटारी, खजर तरगस, वाण, सरव वगसीया ।—जगदेव पवार री बात

हयसाळ–स स्त्री [स हस्ती-शाला] हाथियो को रखने का स्थान । (उ. र)

हयाई–स. स्त्री [सं. ग्रस्थाई] १ गाँव के मध्य का वह स्थान या जगह जहाँ गाव के व्यक्ति फुरसत मे वैठकर इधर-उधर की बातें करते हैं, बैठक, चौपाल ।

उ०—१ रात रा हयाई मे इण वात री ईज चरचा छिडगी । —फुलवाडी

उ०—२ भरी हयाइया वैठा वाईसा रा वाप, कागदियो दीधो वारै हाथ ।—लो. गी

उ०—३ जसवतजी चाग गया । ग्रागै मेर माणस ३०० तथा ४०० हयाई वैठा था ।—राव मालदेव री वात

२ वार्तालाप, वातचीत, गपशप ।

उ०—१ रात री हयाई ठाकरा रै जमानै री जुगती वण रैयी ही ।—दसदोख

उ०—२ वगत वटावा हेत, खेत किरसाणां ताई । वन में पसवा प्रेम, हमीरा ग्राम हयाई ।—दसदेव

उ०—३ सैन सपाटा नार, नही नर होड हयाई । पर पुरखा री पात, जुड गिणै जामी भाई ।—नारी सईकडो

क्रि. प्र —करणी, जुडणी, वैठणी, वैसणी, होणी ।

हयायली–स स्त्री —१ हल के ऊपरी छोर की लकडी ।

२ कुम्हार का चाक घुमाने का काष्ठ का डडा ।

रू. भे.—हतायली ।

हयाळि, हयाळिय —देखो 'हथेळी' (रू भे)

उ०—१ उणा हयाळिया रै मूडै ग्रमल जमायो ।—फुलवाडी

उ०—२ हयाळिया रा छाळा नै देखता सिसकारिया न्हाकता । —फुलवाडी

हयाळियो–वि. —१ हथेली जैसा ।

२ हथेली के ग्राकार का ।

३ हथेली मे समाने योग्य ।

उ०—सू ऊठ किण भात रा छै ? थापवीतळी रा, सुपवी नळी रा, नाळे रा, गोडा रा वीलफळ इरकी रा, हयाळियै ईडर रा, ससा सेरी वगला रा .... ।—रा सा स.

हयाळी – देखो 'हथेळी' (रू. भे)

उ०—१ टुकडा करि करि ग्रर हिंदुवा नू हेक हेक पाघडी रो टुकडो ग्रर गगोदक हयाळी माहे दिया ।—द वि.

उ०—२ फेरा रै पै'ली हथळेवा में वीदराजा रो हाथ काई झिलियो, जाणै गिगन रा नवलख तारा वीदणी री हयाळी में ग्राय खिरिया । —फुलवाडी

हयाळो–स. पु [स. हस्त+ग्रालुच्] १ वीर, योद्धा ।

उ०—चूडा वीरम सळख, साख तेरह ग्रजुग्राळा । छाडा तीडा छात्र हुग्रा, कमधज्ज हयाळा ।—र वचनिका

२ दानी, दातार ।

हथि—देखो 'हाथ' (रू. भे)

उ०—धन दिहि सइ हथि थाविय, वापी ग्र वर ग्रारामि । मणि कण धण सपूरिय, पूरिय द्वारका नामि ।—जयसेखर सूरि

हथिग्रार—देखो 'हथियार' (रू भे.) (गु. रा)

हथिणाउर, हथिणापुरि, हथिणापूर—देखो 'हस्तिनापुर' (रू. भे)

उ०—१ तिण कालै नै तिण समै, जवू द्वीपै ही भरत क्षेत्र माय। हथिणाउर नगर हुतो, धन धानै हो सम्रद्ध कहाय ।—जयवाणी

उ०—२ ग्रह दैवट्ट वसि तेवि पच ए पडव वणि चलिय ।

उ०—घर प्रीत पूछै गहर भूधर, कहै विध कवि राव। उर वधत हरख अमाप सुण सुण, अवै कोड पसाव। वळ करत नाटक अगर नटवर चवत हाटक चाव, हद अवर हूनरदार भेट दे वहु भाव।
—र. रू.

रू भे —हंद, हदि, हदेस, हद्द, हद्दि।

हदकी-सं स्त्री —कपन, थरथराहट।

उ०—मिदर जावणिया लुगाई-टावर धूजता-कापता दरसण करै, काळजो हदकी खावै।—दसदोख

हदगा-स स्त्री.—वात, पित्त, कफ आदि नाशक एक औषधि विशेष।

हदधज-स पु —मन्दिर, देवालय। (ह ना. मा.)

हदनीरोअर-स पु —समुद्र, सागर।

हदफ-स. पु [अ.] १ लक्ष्य, निशाना।

उ०—ऊगाव कर सोगुणा जोस में आवें छै। तीरमदाज वदुकजी हदफा उतारै छै।—वगसीराम प्रोहित री वात

२ वह गोलाकार निशान जिस पर निशाना सीखने के लिए गोलिया चलाते हैं, चादमारी।

उ०—वेपरवाह हुवा थका वाह करै छै। जिण भात वाग माहि हदफ री चोट धारै ईण भात ईण वेळा में चोप धारै छै।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

हदवंत-स पु [अ हद+सं वत] देश, मुल्क। (अ मा)

हदवाट-क्रि. वि —सीमा की ओर, सीमा पर।

उ०—डावडी ओरठै परणायी। जिण कारण सू नैणसी वाडमेर हदवाट मेलियौ वाडमेर प्रोळ रै कगार रै काठ रा किवाड हुता जिकै आण जाळोर गढ री पोळ चढाया।—वा दा ख्यात

हदवाळौ-वि [अ हद+स. आलुच्] मर्यादा मे रहने वाला।

हदवि, हदवी-क्रि वि [अनु] धीरे-धीरे, शनैः शनैः।

उ०—स्रीराम चरण महाराज इसी दीवी है पदवी, जिका वताऊ थनै हमै तौ हदवो हदवी। हदवी या हदवो हमैं करो भजन रा ढेर, जैडी दूजी नही तीन लोक में फेर।—अग्यात

हदसाही-स. स्त्री.—वादशाहत, राज्य।

हदि-स. पु —१ ससार।

उ०—१ जनहरिया हदि मैं घणा, सुख दुख भरम सनेह। वेहद काम न कलपना, अति आनद अछेह।—अनुभववाणी

उ०—२ हदि वैठा हदि की कहै, वेद पुराना वाचि। हरीया वेहद वावरा, रह्या राम सु राचि।—अनुभववाणी

उ०—३ सहज का भेद सोई सत जाणै, हदि कु जीत वेहद माणै। सहज का आसण सहज आसा, सहज मैं खेलणा सहज पासा।
—अनुभववाणी

२ अज्ञान।

उ०—१ हदि छाडि वेहद भया, हरीया राम हजूर। अखड उजाळा गैव का, निसा न ऊगै सूर।—अनुभववाणी

उ०—२ हरीया वेहद के घरा, नही हदि री आस। संसा सोग न ताप न, नाय निरासा वास।—अनुभववाणी

३ असत्य झूठ।

उ०—१ हदि का रता हदि मैं, वेहद का वेहद। हरीया वेहद पाय कै, हदि भई सव रद।—अनुभववाणी

उ०—२ हदि सू जाणै दूरि हरि, वेहद ठावौ ठीक। हदि वेहद की सुधि हुय हरीया राम नजीक।—अनुभववाणी

उ०—३ जनहरीया हम कुं कह्या, सतगुरु ऐसा दाव। हदि का पासा छाडि दै, वेहद साम्हा आव —अनुभववाणी

४ मृत्युलोक।

उ०—वेहद कु पुहचै नही, हरीया हदि के लोक। तन तो माटी मैं मिल्यो, मनग्यो मामै सोक।—अनुभववाणी

वि —१ सासारिक, लौकिक।

उ०—हरीया हदि आमामुखी, ताहि न करीयै हेत। वेहद वास निरास घर, ताकु तन मन देत।—अनुभववाणी

२ अज्ञानी।

उ०—वचन सुन्या वेहद का, हदि न आवै दाय। हरीया सुन्य मैं साईया, ता सु ध्यान लगाय।—अनुभववाणी

३ देखो 'हद' (रू. भे.)

हदियौ-सं. पु.—सीमा पर गडा हुआ पत्थर।

वि —लौकिक।

हदीस-स स्त्री. [अ] १ नई वात, नई खवर।

उ०—तन मन सीज सवार सव, राखै विसवा वीस। सो साहिव सुमिरे नही, दादू मान हदीस।—दादूवाणी

२ हिन्दुओ मे 'स्मृति' ग्रन्थ जैसा मुसलमानो मे मुहम्मद साहव की कही हुई वातो का सग्रह-ग्रन्थ।

उ०—जुमलै तीन ईदगा। हदीस मे कहै है ईदगा सहर उत्तर तरफ करावणी।—वा दा. ख्यात

हदेस—देखो 'हद' (मह; रू. भे.)

उ०—रूपजी वास रो हदेस रै फळसै छै।—नैणसी

हदोहद-वि.—हठपूर्वक।

उ०—निहाव सवद्दा चडा सोक नीर पूर नद्दा, मद्दा छाका दुग्द्दा छककी फरकै समाथ। कै भडा सधीणा जग छकावै जरद्दा कीधा, हदोहद्दा मरद्दा करद्दा भलै हाथ।—सुखदान कवियौ

हद्दविहद्द-वि —अपार, असीम।

उ०—जिकै वार वोलै वडा पात जद्द, वडा वस वाखाण हद्दं-विहद्द। त्रुटै अम्रताधार अप्पार छद, चवै वंस वाखाण वै भाण चद।—सू प्र

हद्द—देखो 'हद' (रू भे)

उ०—१ पडै निहाव भेरि, धाव उल्लटा पभगय। महा समुद्र लोप हद्द जाण लीध मग्गय।—रा. रू.

रहती है।

२ देखो 'हथेळी' (मह, रू. भे)

हयोडी—देखो 'हथोडो' (अल्पा; रू भे.)

हथोडो-स पु [सं हस्त-घोट:] स्वर्णकार, लोहार, सुथार आदि कारीगरो के काम आने वाला एक मुष्ठिकाकार ठोस लोहे का उपकरण जिसके ठीक मध्य मे एक बडा छेद होता है जिसमे लक्डी या लोहे का (बेंट) दस्ता लगा रहता है। वि. वि.–यह उपकरण चोट मारने के काम आता है। इसकी बनावट आवश्यकतानुसार छोटी वडी होती है।

रू. भे –हतोडो, हत्तोडो, हथवडो, हथोडो, हाथोडो।

अल्पा,—हथोडी।

हथोटी-स स्त्री. [स. हस्तकृति] १ किसी काम मे हाथ डालने की क्रिया या भाव।

२ हस्तकौशल, दक्षता, निपुणता।

रू भे –हटोटी, हतोटी,

हथोहत्थ—देखो 'हाथोहाथ' (रू. भे.)

उ०—हर्स दीध आसीस आणद हूती, अखै भाग सोभाग हो पुत्रवती। जुवा खेल जीता हयोहत्थ जूटा, खुमै छेहडा तेहड ताम खूटा।—सू. प्र

हथौसो—देखो 'हथवासो' (रू. भे.)

उ०—सोनै-रूपै रा चांद-फूल, मुखमल री गादी, सावर रा हथौसा, बोयदार री डावा कसा इण भात री ढालां सू उणहीज दरखता री साखा सू नागळीजै छै।—रा सा सं.

हथ्य—देखो 'हाथ' (रू. भे)

उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, वीजा सहू अकयथ्य। जिए घडघा दळ उत्तरइ, तरणि पसारइ हथ्थ।—ढो. मा

हथ्यड, हथ्यड़ौ—देखो 'हाथ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—ऊलवै सिर हथ्यडा, चाहदी रस-लुब्ध। विरह-माहघण ऊमटघउ, थाह निहाळइ मुध्ध। –ढो. मा.

हथ्यळ—१ देखो 'हाथ' (मह; रू. भे.)

२ देखो हाथळ' (रू. भे)

उ०—देख गुडाल्या हालै उण दिन, डूगर डिगणी चहीजै। अेडी हथ्यळ मेलै, रे वेटा, आभौ झुकणी चहीजै।—चेतमानखा

हथ्यहेक-स स्त्री —कटारी। (ना डि को.)

हथ्यार—देखो 'हथियार' (रू. भे)

हथ्यी–वि स्त्री —हाथो वाली।

उ०—भवानी नमो जोगनी जुध्य सथ्यी, भवानी नमो भैरवी वीस हथ्यी।—मे म.

हथ्या–क्रि. वि —हाथो से, हाथ से।

उ०—हकाळत बीस हथ्या नवहथ्य। रूडा सुखपाळक हालत रथ्य।
—मे. म

हद–स स्त्री. [अ] १ आखिरी किनारा, सीमा, छोर।

उ०—१ सु पातसाह महिपै नू राख अर हद ऊपर साम्हो आयो। लडाई हुई पातसाह सू।—नैणसी

उ०—२ नागोर सु तरफ दिखणाद गाव कोणेचो कोस १८ मेडता री हद लागै।—नैणसी

उ०—३ पाखती भाई वध छाजू रा भोमिया था, तिण रा चोर कसवा नू लागता सु छाजू मनह कराया। वार वार चोरी कीवी थी। तिण नू आपड नै मारिया। सु उठा सू ही हद पड गई।
—नैणसी

उ०—४ अगम निगम दोई जाण न पावै, हद वेहद के पारा। केवल पद कथणी मैं नाही, सव्द थकेगा सारा।
—हरिरामजी महाराज

मुहा.—१ हद करणी=किसी वात या विषय को चरम सीमा तक पहुँचाना। सीमा से वाहर का कार्य करना।

२ हद होणी=आवश्यकता से अधिक होकर रहना।

२ मर्यादा, सीमा।

उ०—१ साहा ऊथप थप्पणो, पह नर नाहा पत्त। राह दुहू हद रक्खणो, 'अभैसाह' छत्र पत्त।—रा. रू.

उ०—२ आदर अणी धणी छळि आया, सेहर सजळ जिसा दरसाया। उदियाभाण प्राण अणमायो, औ किर हद न जवन सिर आयो।—रा रू.

३ तारीफ, साधुवाद।

उ०—हद हाथा जी हद हाथा, है लक अवी हद हाथा। सत्र भज जुधा समराथा, गुण राखण विसुधा गाथा। जी हद हाथा।
—र ज॰ प्र

४ तह, परत।

५ औकात।

वि.—१ अत्यन्त, वहुत, खूब।

उ०—१ इण मे थारी कुछ चूक नही छै, आ सूरत मोमू साह सू हुई सो हद नरमाई भारी रकमाई छै।—नी. प्र.

उ०—२ असि धावक आविया, सस्त्र माजिया सताबी साण चढिया सुक्र, फूल झडिया हद फाबी।—मे. म.

२ असाधारण, विशेष।

उ०—१ हद डाण म्रिगा अभिमाण हरै, प्रलवी कुरवाण उडाण परै।—मे. म.

उ०—२ हद चाटी हालता हवा हालत रद होवै। तवि जूनौं सपतास, जिका कानी रवि जोवै।—मे म.

३ भयकर, भीषण।

उ०—जरदाळ घण पखराळ जुडि विहड खाल नारग वहै। हद रूरा इसो जुध विहद हू, करा झोको सूरिज कहै।—सू. प्र.

४ पूर्ण, पूरा।

लोग इसको सकटमोचक देव एवं राम के परमभक्त व दासानुदास के रूप मे मानते हैं।

वि —१ वीर, वहादुर।

२ भारी दाढ या जवडे वाला।

रू भे —हणू, हडमत, हडमत, हडमान, हड़मान हड़मान, हडमत, हडमत, हडुमान, हड़ूमान, हण, हणमत, हणमत, हणमनि, हणमान, हणरथि, हणवत, हणवत, हणु, हणू मान, हणु, हणुअगी, हणुमत, हणुमत, हणुमान, हणुमा, हणूं, हणूंमान, हणू, हणूमत, हनुमत, हनुमत, हनू, हनूमत, हनूमत।

अल्पा.—हडमानी, हणमती, हणमतियौ, हणमतौ, हणूयौ।

हनुमानजयती-स. स्त्री. यौ [स हनुमत्+जयन्ती] चैत्र की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला उत्सव, जो महावीर हनुमान का जन्म-दिवस माना जाता है।

हनुमानवैठक-सं स्त्री —एक पैर पैंतरे की तरह आगे वढाते हुए वैठने उठने की एक कसरत विशेष।

हनू, हनूमत, हनूमत—देखो 'हनुमान' (रू भे.)

उ०—१ माघवान वैनतेह अमीधार मुनी तेज, कूज नाग ज्वाळा गणै सिंघ कहू सेस। ईंम मेर साह हनू अघी अर्जं जाप ओप, अहू व्वटा वै मेक सौ राजै 'भगतेस'।—भगतराम हाडा रौ गीत

उ०—२ लीला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रतिग्या स्रीराम तणी, पवनवेग कला हनूमत तणी, मर्म दुरयोधन तणी।

—व स.

हनोज, हन्नोज, हन्नोज-क्रि वि. [फा हनोज] १ अव तक, अभी तक।

उ०—१ काविल कलाम कहियत करीम, रहमान इल्म रय्यत रहीम। खातरी नजर धर करहु खोज, हम हैं न सजा लायक हनोज।—ऊ का.

उ०—२ विलूव्यौ निधी नीर स्रीहाथ वांमै, पुरी मैं सको सीर हन्नोज पामै। सजा हू छुडायौ आई राव सेखो, लाई पुत्र पित्रेस रौ लोप लेखौ।—मे. म.

२ नित्य, हमेशा।

३ नही तो।

४ अन्यथा, वरना।

हप, हप्प-स. पु —मुह से जोर से श्वास छोडते हुए एक दम होठ वद कर लेने से उत्पन्न शब्द।

वि वि.—प्राय. छोटे बच्चो को सिखाते समय या प्रताडना देते हुए ऐसी क्रिया की जाती है।

क्रि. वि.—शीघ्रता से, जल्दी से, तुरन्त, सहसा, एकदम।

उ०—मासी तुरत की जवाव देवण वाळी ही कै दोनू टावर हप्प करती रा माय आय पाधरा मासी सू लद्गग्या।—फुलवाडी

हफत-वि. [फा. हफ्त] १ सात की सख्या।

उ०—एक कहै अमपत्ति, निर्गं मत हफत विलायत। हफत नकल लिख हफत, कमध फुरमाण हकीकत।—सू प्र.

२ सात दिन की अवधि, सप्ताह।

हफतहजारी-स. पु. [फा. हफ्त+हजारी] मुगलकालीन एक पदवी, जो सात हजार सैनिकों के सरदार को दी जाती थी।

उ०—हफतहजारी हफन, सर्भ हक सद जं सायत। धाय हफन ईसफा, मिळी हफतम सभि हिम्मत।—सू प्र.

रू. भे.—हजारीहफन।

वि.—सात हजार वाला, सात हजार का।

हफतौ, हप्तौ-स. पु. [फा. हफ्त:] सात दिनो के समूह की एक अवधि, सप्ताह।

उ०—वठै सू फारम लियौ अर भर्यौ एक हफतै ताई इण वास्तै विना काम घूमतौ फिरधो क्यू कै भरती रै वास्तै 'टैस्ट' आगले सोमवार नै होवणी ही।—तिरसकू

हव-क्रि. वि. [अनु] १ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त।

२ आसानी से। ३ अब।

हवकणौ, हवकवौ-क्रि अ.—१ छलकना, उछलना।

२ फिरना, घूमना।

३ निरुद्धेश्य घूमना, आवारा फिरना।

४ काटने के लिए झट से मुंह खोलना।

५ द्रव पदार्थ का तेज गति से ध्वनि करते हुए वहना, उछलना।

हवकणहार, हारौ (हारी), हवकणियौ —वि०।

हवकिओड़ौ, हवकियोडौ, हवक्योडौ —भू० का० कृ०।

हवकीजणौ हवकीजवौ —भाव वा०।

हवक्कणौ हवक्कवौ—रू० भे०।

हवकियोड़ौ-भू का कृ —१ छलका हुआ, उछला हुआ. २ काटने के लिए झट से मुह खोला हुआ ३ आवारा फिरा हुआ।

(स्त्री. हवकियोडी)

हबको-स पु [व व हवका] मृत्यु के समय अन्तिम श्वास लेने की क्रिया।

उ०—ढैण हवका खावण लागौ। ओझाजी आया। गीता सुणाई, दखणा ली।—वरसगाठ

हवक्कणौ, हवक्कवौ—देखो 'हवकणौ, हवकवौ' (रू भे)

उ०—म्हारै पती तौ जोधारा रै लागोडा घाव हव्वकै बोलै, अर्न रिण वावळा हुवोडा जोधार वकै जिकै तमासा म्हारै पती रै देखण लायक जाणणा।—वी. स टी.

हवक्कणहार हारौ (हारी), हवक्कणियौ—वि०।

हवक्किओडौ, हवक्कियोडौ, हवक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हवक्कीजणौ, हवक्कीजवौ—भाव वा०।

हबक्कियोडौ—देखो हवकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. हवक्कियोडी)

उ०—२ फिरग जना री फौज मैं, 'पातल' प्रथी प्रसिद्ध। करनळ व्हैणी है कठण, हुयगौ जनरल हद्द।—जुगतीदान देथौ

उ०—३ ताहरा तिणि कहियौ—पातिसाहजी सलामति मिरी हद्द है जु हूं हजरत रै पाए आवतं नु पालू।—द वि

उ०—४ देण सेवग लक दाता, घलन व्याध कवध घाता। विसू रखण कीत वाता, हद्द हाता हद्द हाता।—र ज प्र.

हद्दि—देखो 'हद' (रू भे)

उ०—धनि आखै सारी धरा, मनि कापै महमद। साकावध कमंध रा, वाका हद्दि समद।—रा रू

हधूण-स. पु —आधा मन, वीस सेर।

उ०—मण पक्कै पाणी री लोट, कच्चै हधूण आटै रौ पाव रौ, खीर हाळो तवलो अर ओढण-विछावण रा गाभा काधै नाख्या, न्हास्या वगता।—दसदोख।

हधूर-स स्त्री —दुत्कार।

उ०—केई दाति आगुली लेई ओलगइ, केई वेलगाडी ओलगइ, केई स्कधि कुठार घाली ओलगइ, केई हधूर चालइ लोटइ लीलई ओलगइ, इसिउ प्रतापी राजा राज्य करइ।—व स

हनकणौ, हनकबौ—देखो 'हिणहिणणौ, हिणहिणवौ' (रू भे.)

उ०—हनकिय वाजि मिळै दुहूँ ओर, घुनकिय तोप धुनि उडि सोर। गनकिय तोप तुपक्कनि-भक्ख, भनकिय आमिख-हारन लक्ख।
—ला रा

हनकणहार, हारौ (हारी) हनकणियौ—वि०।

हनकिओडौ, हनकियोडौ, हनंक्योडौ—भू० का० कृ०।

हनकीजणौ, हनकीजबौ—भाव वा०।

हनकियोडौ—देखो 'हिणहिणियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हनकियोडी)

हनणौ, हनबौ देखो 'हणणौ हणबौ' (रू भे)

उ०—१ जनमें रक्त बीज तन ज्यौं ज्यौं। तै निर्वीज कियै हनि त्यौं त्यौं।—मे. म

उ०—२ तुही सर्जै पाळै हनि, पुनि सभाळै उतपती। अई 'इद्र' अत्रा जा'नि, जगदवा भगवती।—मे. म

हनणहार, हारौ (हारी) हनणियौ—वि०।

हनिओडौ, हनियोडौ हन्योडौ भू० का० कृ०।

हनीजणौ, हनीजबौ—कर्म वा०।

हनफी-वि [अ] इमाम अबू हनीफा के अनुयायी। (मुसलमान)

हनुग्रह-स पु [स] जवडे वैठने का एक रोग विशेष। (अमरत)

हनुफाळ-स पु —प्रत्येक चरण मे १२ मात्राओ व अन्त मे एक लघु वर्ण वाला मात्रिक छद।
रू भे.—हणूफाळ।

हनुमंत—देखो 'हनुमान' (रू भे)

उ०—जिम राम कज्ज हनुमत करि, महिरावण वंध्यउ तिखिणि। काटउ ज वंध राउ रत्न कै, तु साहस भंजउ साह हणि।
—प. च चौ

हनुमंती-स. स्त्री.—एक वनस्पति विशेष।

उ०—हनुमती नइ हडवडी, हीराठलि हर-मज्जि। हाथाजोडी हीकणी, हैला आवइ कज्जि।—मा. का प्र.

हनुमत—देखो 'हनुमान' (रू. भे)

हनुमत्कवच-स पु [स] १ हनुमानजी का एक स्तोत्र।
२ हनुमानजी को प्रसन्न करने का एक मत्र, जिसे तावीज मे लगा कर वाधा जाता है।

हनुमांन-सं पु [सं हनुमत्] एक सुविख्यात वानर जो सुमेरु के राजा केसरिन् एव गौतम कन्या अजना का पुत्र था। यह राम का अनन्य भक्त था।

उ०—१ राम लखन अरु भरत सत्रुहउ, अगवाणी हनुमांन। मीरा कै प्रभु राम सियावर, तुम ही कृपानिधान।—मीरा

उ०—२ दीन्हौं जीवदान हनुमान हिंगळाज दान। धरनी पै भूंमि परै धरनी-धरन कौं।—मे म.

वि० वि०—वैशाली नगरी के उत्तर-पूर्व पर्वत प्रदेश मे मरुत्त नामक एक पौराणिक मानव जाति निवास करती थी। हनुमान की उत्पत्ति इसी मरुत्त जाति मे होनी मानी गई है। इसीलिए इसका नाम मारुति भी है। पौराणिक मतानुसार इसे शिव और वायु के अश से उत्पन्न होना माना गया है।

यह किष्किन्धा के वानरराज सुग्रीव का मुख्य अमात्य था। यह एक सभाषण चतुर राजनीतिज्ञ, वीर सेनानी था। साथ ही यह, विनम्रता, निर्भीकता, निरभिमान, वाणी-माधुर्य आदि सत्व गुणो से युक्त था। राम एव सुग्रीव की मैत्री मे इसने प्रमुख भूमिका निभाई और सुग्रीव का राज्य स्थापित करवाया। इसने राम दाशरथी की वहुत सेवा की। सीता की खोज, लंका-दहन एवं राम-रावण-युद्ध मे इसने कई असाध्य कार्य किये।

इन्द्र, यम, वरुण सूर्य, ब्रह्मा, शिव आदि देवो से इसको कई प्रकार के वरदान प्राप्त हुऐ। इन्द्र ने इसको वज्र दिया और अवध्यत्व व हनुमत् नाम दिया। सूर्य ने इसको शास्त्रविद् वनाया। इस प्रकार यह दैवीगुणो से युक्त हुआ।

देवताओ मे शास्त्रास्त्रो से युक्त होने के कारण एक वार यह अत्यन्त ही उत्सृखल हो गया, तव भृग, अगिरस आदि ऋषियो ने इसको शाप दिया कि 'इसकी अगाध दैवी सामर्थ्य इसे स्मरण नही रहेगी और कोई देवतातुल्य व्यक्ति ही इसे याद दिलायेगा तभी उसका सदुपयोग होगा।

यह अखण्ड ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय एव उर्ध्वरेतस् था। ब्रह्मचारी होने के कारण इसका अपना कोई परिवार नही था लेकिन इसके पसीने की वूद से मछली के गर्भ से उत्पन्न मकरध्वज नामक मत्स्यराज को इसका पुत्र होना आनन्द रामायण मे माना गया है।

उ०—लफगा खीच्या वेह हाळा वास । अर दोना पखा हाळा हुया आपस मे हवोथवो भिडग्या, हाथ वाथ नी रैया ।—दसदोख

स. पु —२ डिंगल का एक छन्द विशेष । (किराड रासौ)

३ पूर्ण भरा हुआ, छिलोछिल ।

हवोळौ–स. पु —१ लहर, तरग, हिलोर ।

उ०—१ भरिया जोडला मारै छै हवोळा ।—पाबूजी रा परवाडा

उ०—२ मासी रा नेह मैं समदर रैं उनमान तूफान, गरजण छोळा, हवोळा इत्याद सैं वाता ।—फुलवाडी

२ उमग ।

३ झूमते हुए चलने की क्रिया या भाव ।

उ०—चद बदनी मुख चोज, हसगति चालवौ । हाव-भाव गावत, हवोळै हालवौ ।—बगसीराम प्रोहित री वात

४ समूह, झुड ।

उ०—१ घटा घोर त्रवक घरहरिया, फीला पर झडा फरहरिया । फौजा तणा हवोळा फिरिया, ओळा जिम गोळा ओसरिया ।

—वरजू वाई

उ०—२ सोनै री झाड नीलाड रै ऊपर दीना । कुरजा री टोळी । सहेल्या रौ हवोळौ । साथ लीना ऐ लागणा लोयणा ।—पना

उ०—३ फागण फाग राग फरहरिया, फोज मनोज हवोळा फिरिया । मानौ जी मानौ मुरधरिया, क्यू ऐ भेस विदेसा करिया ।

—बारामासा रौ गीत

उ०—४ मिळ 'पेम' विसाल 'ढेवाळ' मुणौ, तिणताळ हवोळोय जान तणौ । दत वालाय बाहिर झोल दिया, कमठाळय तेल चपेल किया ।—पा. प्र

५ चमक ।

उ०—हव सावण घण वीज हवोळै, हीडा कामण तीज हिलोळै । झुक सरतर नद नीर झकोळै, वालम चढण न कीजै भोळै ।

—अग्यात

६ मन की इच्छा, मौज ।

७ जलसा ।

८ टक्कर, भिडत ।

उ० —ओळा ज्यू आसार अट, गोळा गैण गरज्ज । पर टोळा सिर 'पातलौ', करै हवोळा कज्ज ।—किसोरदान वारहठ

रू भे —हिवोळौ ।

हव्बंद—देखो 'हविंद' (रू भे.)

उ०—तीजी टक्कर तौ किला रौ दरवाजौ चूळिया समेत उखलनै नीचौ पडियौ । हव्बद हव्बद करतोडौ ।—अमरचूनडी

हव्बीड, हव्बीडौ—देखो 'हबीड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ खडीड खडीड हव्बीड़ हव्बीड मोटर रा छाजला मे मिनखा रा छोटा मोटा दाणा उछळ उछळ नै नीचा पड़ता ।

—अमर चूनडी

उ०—२ चौधरी रा घै छिलग्या । भवळ सी आवण लागी । पण हिम्मत वाधी । अबै उखळ मे माथौ देयनै हव्बीड़ा नू काई डरणौ । व्हैला जिकौ भाग री ।—अमर चूंनडी

उ०—३ तीखा तीखा लोखड रा मिरिया रूपी दात लिया वौ हाथिया सू हव्बीडा लेवण री हिम्मत राखतौ, मिनख वापडा री काई जिनात ।—अमर चूनडी

हव्बोडव्वौ–स. पु —प्राय बच्चो को होने वाला श्वसन रोग, न्यूमूनिया ।

हव्सेवेजा–स. पु. [अ.] अवैध रूप से रोकने की क्रिया ।

हमंचौ–स. पु.—१ गाँव मे कृषि कार्य शीघ्रतापूर्वक करते हुए उच्चारण किया जाने वाला शब्द ।

२ सदेश, सूचना, समाचार ।

हमस–सं पु —कोलाहल, शोर ।

उ०—विलहिया तुरी सह राजवस, हइमरा भडा हूई हमस । जइ जिसउ तुरी तइ दीन्ह जाणि पाट रठ पवग पडव पलाणि ।

—रा. ज सी

हम–सर्व [स. अस्मत्] मैं का बहुवचन, हम ।

उ०—नारी हू सिख नाथ री, गोरख ध्यान ग्रहाह । जिस कारण कमधज कहै, हम झड देख रहा ।—पा. प्र

स. पु.—अहम्, घमण्ड ।

वि. [फा. हम'] सर्व, सब, समस्त ।

रू भे.—हुम्म ।

हमअसर–वि [फा. हम +अ असर] एक ही समय मे होने वाला, एक समान प्रभावशाली ।

हमउमर, हमउम्र–वि [फा. हम +अ. उम्र] समान आयु का, सम-वयस्क ।

हमकर–स. पु —१ गर्व, अभिमान ।

उ०—फकर देता हमकर परहरण, दे दिलाय सौ खुदाय, पिंड पोखण भरण ।—केसोदास गाडण

२ देखो 'हिमकर' (रू. भे.)

उ०—हे नभ जतै अहमकर हमकर, नर पुर अतै रहण री नीम । महत सुजस विसतार न मावै, भरत खड मझ राणा भीम ।

—महाराजा मानसिंह

हमकली, हमकलै, हमकै–क्रि वि.—इस बार, अबकी वार ।

उ०—१ ताहरा वीरमदेजी कह्यौ—हमकै हू काम आइस । हमकै नीसरू नही, घणी ही वार नीसरियौ ।—नैणसी

उ०—२ हमकै 'अजमल' होत, असधारी वागड इळा । गढ छोडै गहलोत, जातौ नह रावळ 'जसू' ।—दलजी महडू

उ०—३ कई जनम का सोता हंसा, हमकै जाग गया । तन मन खोज जोग की बाता, इसमे लाग रया ।—हरिरामजी महाराज

हमकोम–वि. [फा हम +अ कौम] अपनी जाति का, स्वजातीय ।

हमगीर–वि [फा हम गीर] १ समस्त, समग्र, पूर्ण, कुल ।

हबड़-हबड-क्रि. वि —१ शीघ्रतापूर्वक, शीघ्रता से, तेज गति से ।
२ 'सबड़का' मारते हुए ।
हबडाक-क्रि वि.—तुरन्त, शीघ्र, उसी समय ।
हबद—देखो 'हौदो' (मह; रू भे.)
उ०—उड पडै पोगरा धरति आए, जनमेज जाग रा नाग जाए।
हाथिया दात पग धर हुकार, मीरिजा जगी हुबदां मझार ।
—वि स.
हबवाहण—देखो 'हव्यवाहन' (रू. भे) (डिं. को)
हबरकै—देखो 'अबरकै' (रू भे)
उ०—भारथा देखि साथी घणा भाजिया, समर रौ हुवौ गजगाह साथी । आगै भीमडै हाथी घणा उछाळीया, हबरकै भीव नखि गुडै हाथी ।—गजसिंघ कछवाहा रौ गीत
हववाहण—देखो 'हव्यवाहन' (रू. भे.)
रू. भे.—हववाहण ।
हवस-स पु [अ हवस] १ मिश्र के दक्षिण मे पडने वाला अफ्रीका का एक प्रसिद्ध देश ।
२ देखो 'हविस' (रू. भे)
३ देखो 'हवसी' (रू भे.)
उ०—१ सीसा जामग सोर, भार गाडा वाणा भर । चव हजार सुत्रनाळ, हवस उसताज बहादर ।—सू प्र
उ०—२ खुरसाणी रहमान अखूनी, सीदी हवस राफसी सूनी । मीर पाक ऐराक मकाई, तुरक सगुर जस थानी ताई ।—रा रू.
हवसनफस-स. पु.—प्राणायाम । (मा म.)
हवसाणी, हवसानी-स स्त्री —१ घोडों की एक जाति विशेष ।
उ०—सू घोडा कुण जात रा छै, कुण रग भात रा छै ? ऐराकी, आरबी, तुरकी, खधारी, ताजी, सिकारपुरी, धारी, काछी, माळवी, हवसांनी, पूरबी, टाघण, पहाडी, चिन्हाई और ही अनेक जात रा घोडा तयार कीजै छै ।—रा. सा. स
२ उक्त जाति का घोडा ।
३ एक प्रकार की तलवार ।
उ०—सू तरवारिया किण भात री छै। सीरोही री नीपनी वै आगळ वाढ फेरिया थका जनैव मगरैव फुडतकळ सेफ विलायती गुजरी विराणपुरी हवसानी फिरगी सू म्याना माहा काढ घास मैं नाखजै ।—रा सा स
हवसी-स पु. [अ. हवशी] १ उत्तरी अफ्रिका के प्रसिद्ध देश 'हवश' का निवासी जिसका शरीर बिल्कुल काला होता है ।
२ हवश देश के मुसलमान जो सुन्नी मुसलमानो का धर्म पालन करते हैं । (मा म)
उ०—हवसी साह हुसेन, तरह मवला तूरानी । सेरसाह इसफहा, अभग ग्रहियौ ईरानी ।—सू. प्र.
३ एक प्रकार का काला अगूर ।
वि.—हवश देश का, हबश देश सम्बन्धी ।
रू. भे.—हबस ।
हवास—देखो 'हवास' (रू भे.) (अ. मा.)
हविंद, हविंदौ, हवींद, हवींदौ-स. पु [अनु.] किसी के गिरने या टकराने से उत्पन्न होने वाली एक तेज व भारी आवाज ।
उ०—१ डोलर हीडा ज्यू, सिळगती गवाडी घूमण लागी। काळजा मे जाणै तोपां रा हविंदा गूजण लागा ।—फुलवाडी
उ०—२ चार पोहरा खाया जद नीठ वौ वावडी माथै पूगौ। पाज माथै धरनै बोरी माय सिरकाय दी। जोर सू अेक हविंदौ सुणी-जियौ ।—फुलवाडी
उ०—३ तद वौ खेसला रै पल्लै बध्या काछवा नै खोल हविंद करतो हेटै थरकाय बोल्यौ—अर म्हारी जू इत्ती लाठी ।
—फुलवाडी
रू भे —हव्वद ।
हवीड—देखो 'हवीडौ' (मह; रू. भे)
हवीडणौ, हवीडबौ-क्रि. स.—१ गिराना, पटकना ।
२ मारना, पीटना ।
हवीड़णहार, हारौ (हारी), हवीडणियौ—वि० ।
हवीडिओडौ, हवीडियोडौ, हवीड्योडौ—भू० का० कृ० ।
हवीडीजणौ, हवीडीजबौ—कर्म वा० ।
हवीड़ियोडौ-भू. का कृ —१ गिराया हुआ, पटका हुआ. २ मारा हुआ, पीटा हुआ ।
(स्त्री. हवीडियोडी)
हवीडौ-स पु [अनु] १ किसी भारी वस्तु के ऊपर से गिरने पर उत्पन्न ध्वनि, धमाका ।
उ०—झटक झाडवड रटक सूड़ पर उठण दै हवीडौ रे वेली। धीरै रे ।—कानदान कल्पित
२ चोट, प्रहार ।
३ जोर का धक्का, जोर की टक्कर।
रू भे.—हव्वीडौ।
मह —हवीड़, हव्वीड।
हवीव-स पु [अ.] १ मित्र, दोस्त ।
२ प्रेमपात्र, माशूक ।
हवूब-स. पु. [अ.] १ आधी, तूफान ।
२ पानी का बुलबुला ।
३ निस्सार बात ।
हबै—देखो 'हवै' (रू. भे.)
उ०—बाका जेह न लागा बीजा, साहिगाजी औरंग सुकठि । हठि हठि घणौ चढायौ हिंदू, हबै उतरसी घणै हठि ।
—जैसिंघ कछवाहा रौ गीत
हवोथव, हवोथबौ-क्रि. वि.—१ गुत्थम-गुत्था ।

नायकू की हमराह सं छूटै ।—सू. प्र.

वि.—१ एक मत ।

२ एक ही रास्ते पर चलने वाला, राह का साथी ।

हमरोट—देखो 'ग्रमरकोट' (रू भे.)

उ०—१ सभरात सजै सवगात सलै, हमरोट धरात वारात हलै । करहा ग्रस धाधल तूग कियू, ग्रमराण जती खड ग्रावहियू ।

—पा. प्र.

उ०—२ ऊमर हुवौ दूसरौ, हूतौ नाम हमीर। तै हमरोट कहावही, सुखकर नीर समीर ।—बा. दा

हमरोटी-स. स्त्री —ऊमरकोट की स्त्री ।

उ०—ग्राभूसण तन ग्राभरण, जकै ग्रावता भूल । हसगती हमरोटिया, दिपै सुरग दकूल ।—पा प्र.

हमल-स पु —१ समुद्र, सागर ।

उ०—पडियाळग मेर सभै पिंड संग्रह, हमल हिलोळै ग्राय हथ । किसन किसन जिम रतन काढिया, महण मडोवर मड मथ ।

—द. दा.

२ समूह, झुण्ड, दल ।

उ०—हैवराण एराकिया हुवता, हाथिया मद वहता हमल । देसै गजवध तणा दूथिया, दूजै देसौता दहल ।—किसनो ग्राढो

हमलकै—देखो 'हमरकै' (रू. भे.)

हमलौ, हमल्ल, हमल्लौ-स पु [ग्र. हम्लः] १ ग्राक्रमण, हमला ।

उ०—१ रह तोप हरोल चदोल रूखी, मफ़ कोल गयद मयंद मुखी । हचकै वहवैल करै हमला, टहलै लगि गैल गयद टला ।

—मे म.

उ०—२ भरणै री तळाई रै च्यारू मेर चमगादडा हमलौ बोल दियौ ग्रर उण री चामडी री वडी पाखा सू साय साय री डरावणी ग्रवाज सगळी घाटी माय फैलगी ।—तिरसकू

उ०—३ किता तै वार विखै कल्पत, वाधी लै लंग ग्रथी वळवंत । हलायी केता वार हमल्ल, मर्थ महराणव हेकल-मल्ल ।—ह र.

उ०—४ हलै हमल्ल मल्लको करीन ढल्लपै हलै । वहे न ढल्ल घल्लकै स्वढल्ल ग्रौर की वनै ।—ऊ का

उ०—५ पायका के हमल्लै वाक पट्टै फूलहत्यू दाव । नजरवद्धेक का हुंन्नर ग्रगूगा वचाव । हणमन रूप जगजेठून भुजग दडू पर ।

—सू प्र.

२ ग्राघात, चोट, वार, प्रहार ।

उ०—धरा मोर खेंगा खुरा जोर धूजें, मरै वग्ग विच्छोहिया ग्रग्ग मूजे । हमल्ला ग्रसा सेस चा सीस हल्लै, दिसा ग्रग्र वाजू सकाजू दहल्लै ।—रा रू

३ चढाई, युद्ध प्रयाण ।

उ०—१ हमलौ कर ग्रादमी हजार डेढ सूं ग्रपाणचक गया । सो गाव सू ग्रेक कोस उरै जाय नौवत वजाई ।

—सूरे खीवे काधळोत री वात

उ०—२ जुटै ग्राय सव्वासण्या रायजादी, दरस्सै कई नेयका माय दादी । हमल्लै घनौ उदरी मेन हृदै, मनौ मैयली वदरी मेन वदै ।

—मे. म.

४ झटका ।

उ०—तद गूसल्लै ग्रायनै देपाळ नु वाधीयौ । पातसाह री बेटी नु ऊठाण दीवी । तद देपाळ हमला दीया पिण रसी तुटी नहीं ।

—देपाळदे धध री वात

५ टक्कर, भिडत ।

६ दाव-पेंच ।

हमस-सं. पु.—१ सेना, फौज ।

उ०—ज्यू 'दुरग' 'ग्रगजीत' मुग्द्धर माभळी । ग्राहव ग्राहव ग्रग्ग वणायौ भुजवळी । सधर 'पता' कर सार इळा ढगळेम रै, हमस हलावणहार सहायक देसरै ।—किसोरदान वारहठ

२ गर्व, ग्रभिमान ।

३ भूमि, पृथ्वी ।

४ कोई वडा कार्य ।

५ इच्छा, ग्रभिलाषा ।

रू. भे —हमस्स ।

हमसर-सं. पु.—वरावरी के दरजे का व्यक्ति ।

हमसरी-स स्त्री.—वरावरी, समानता ।

हमसाया-स पु [फा] पडौसी ।

हमस्स—देखो 'हमस' (रू. भे.)

हमा-सर्व.—हम ।

हमाम-सं. पु. [ग्र. हम्माम] १ नहाने या स्नान करने का कमरा या कक्ष, स्नानागार ।

उ०—सूरज कुड चादपोळ वारै १६७२ रा जेठ वद २ नै ऊपर हमाम करायो ग्रोर वगळो १ सूरजकुड माथै नागै करायो १७२६ मे, जिण रा दाम सिरकारी लागा, जसवंतसिघजी री वार मैं ।

—नैणसी

२ वह ग्रन्धकारमय तहखाना, जिसमे दण्डित ग्रपराधी को डाल दिया जाता है, तलगृह ।

उ०—होय न हिकमत लख हुणै, हीणा डाल हमाम । धारण करणौ पर धरम, हिय विच गिणै हराम ।—रेवतसिह भाटी,

३ कोई कमरा या कक्ष विशेष ।

उ०—जाणै सातमसररी सुहागण हमाम रै झरोखै भापा खाइ नै रही नै च्यार टाक चावळ खाएं तौ सरीर ग्रहार-विकार धाए ।

—रा सा. स.

[ग्र. हमामः] १ कपोत, कबूतर ।

२ गले पर कण्ठीदार पक्षी ।

२ विस्तारपूर्ण, विस्तृत।
उ०—बणी दहु काळ तणी तसवीर, गणी नह जाय घणी हमगीर।
सझ्या खग खप्पर चक्र त्रसूळ, भल्या कर डेरव भैरव भूळ।
—मे म.

३ अग्रगण्य, अगुआ नेता।
उ०—१ हमगीर जिको वागा हका, सिंधुर ऊपर सेर सो। 'सूरज' पसाव ऐराक सुध, सूरज तुरगा एरसो।—सू प्र
उ०—२ नाहर वस निपाति हुवो हमगीर सो। वसुधा करै वखांण बहादर वीर सो।—सिवबक्स पाल्हावत
४ वीर, वहादुर, योद्धा।
उ०—१ तिण सोमेसर तनय, हुवा उभै हमगीर। एक भरत दूजो उरथ, निज कुळ चाढण नीर।—व. भा
उ०—२ हमगीर करण जुध हैमरा, घोम अराबा धरहरै। चिलतह छत्तीस आवध चुरस, कुळ छतीस राजस करै।—सू. प्र.
५ मारने व नष्ट करने वाला।
उ०—दुख मेटण पोट कबीर घरा दिस, हाकल कीध वईर हरी। करवा दुय चीर सरीर झुकायो, काप रयो हमगीर करी।
—भगतमळ

६ सभा के नियमो को तोडने वाला, उद्दण्ड, उत्पाती।
उ०—होय सभा हमगीर, दुय हाथा खेंचै दुसट। चळ्यो पुराणो चीर, सिर सू चाल्यो सावरा।—रामनाथ कवियो
७ अनुगामी।
उ०—वध्यो वळ धी गळ कज विकास, प्रभा परिपूरण प्रेम प्रकास। हुदै हुय नाम हली हमगीर, सवी रग रोम खुली सुख सीर।
—ऊ का

८ उत्तेजित।
उ०—हुवो अधिक हमगीर हाथ नहि होवसी। सीहा वस सताव खणै, जड खोवसी।—सिवबक्स पाल्हावत
९ मित्र, दोस्त, सहायक, साथी।
१० मस्त, उन्मत्त।
११ प्रसन्न, खुश।
क्रि वि.—साथ।
उ०—पच अयुत लग सग दळ, होय किलम हमगीर। कियो मुकाम उलघि जळ, खळ वासिस्टी तीर।—ला रा.

हमगीरता-स. स्त्री —१ मित्रता, दोस्ती।
उ०—वीरता 'पता' की, रनधीरता 'पता' की। हमगीरता 'पता' की, पर पीरता 'पता' की जू।—किसोरदान बारहठ
२ नेतृत्व।

हमची-स पु —१ नौवतखाने मे वाद्य-वादन के समय शहनाई के अतिरिक्त नगारे, दमामे एव धूंसे पर किया जाने वाला वादन।
२ उक्त वाद्य के साथ किया जाने वाला नृत्य।
क्रि. प्र.—लेणो।
३ रावळो द्वारा रात्रि का खेल (रामत) समाप्त करने के वाद प्रातः देवी के सामने किया जाने वाला नृत्य।

हमचौ-स पु —१ आक्रमण।
२ तैयारी।
३ वीर-ध्वनि।
४ सदेश, समाचार।

हमजोळी, हमझोळी-स पु.—साथी, सखा, मित्र।

हमणो-सर्व —हमारा।
उ०—कुखत्री लोपी कार, बूढे नै जीदै वहू। चौडै चूंथ चकार, हमणो वत लै हीडिया।—पा. प्र.
क्रि वि —अव।

हमतम, हमतमो-स. पु.—तूतूं-मैंमैं, लडाई।
उ०—१ विण ओठ रीठ उडु विखम, हमतम ऊधम हैमरा। सक फौज कीध सका सहित, जाण क लका वन्नरा।—रा रू.
उ०—२ उण देस चालो जठै प्राणा रो वोपार जिण सिरदार रै हमतम होवै कठैई सत्रुवा ऊपर चढै है कठा सू ई दुसमणा री फौज ऊपर आय गई है इण तरै प्राणा रो वोपार होवै जठै लै चालो।
—वी स टी.

रू भे —हमतम्म।

हमतम्म—देखो 'हमतम' (रू. भे.)
उ०—सुणे कीध 'अभसाह', किलम ताकीद हुकम्मा। विहुवै फौज नकीव, ताम फिरिया हमतम्मा।—सू. प्र

हमदरद-वि. [फा. हमदर्द] सुख-दुख का साथी, सहायक।

हमदरदी-स. स्त्री. [फा] सहानुभूति।

हमपेसा-वि. [फा हमपेश] एक ही तरह का पेशा करने वाला, सह-व्यवसायी।

हममजहव-वि. [फा] एक ही धर्म को मानने वाले, सहधर्मी।

हमरग-वि —समान रग वाला।
उ०—ज्वाव ज्वाव कै ऊपर सवज हमरंग वर मतगै धरै। सुनही गुलजार कस्मीर कै काम।—सू प्र.

हमरकै—देखो 'हमकै' (रू. भे.)
उ०—१ जायै जीव नू मरणो छै, हमरकै आपै भेळा हुय जास्या, देखा गोविंद कासू करै।—नैणसी
उ०—२ अठै देवडा रै खवर आई। आज हमरकै जीवण री सोस कोई नही। पैहली हाबी दीठा हुता। हमरकै ता वडाळियो।
—राव तीडै री वात

रू. भे.—हमलकै।

हमराह-स पु. [फा.] १ साथी, मित्र।
२ संग, साथ।
उ०—आसमानी मोहरा किये पल्ले सै झिलतै आए। छछोहै हौस-

उ०—२ झलै सिर छत्र चमरा हुवै झापटा, हमेसां दोपहर सांझ होता। बत्र री घोख कवि लोग बोलै विरद, जगै जगदब री दोय जोता।—मे. म

उ०—३ दिवस आठ दुरगा तणै, व्है बलिदान हमेस। पूजि दुरद मुरतब पमग, निस अस्टमी नरेस।—सिवबक्स पाल्हावत

३ हर वक्त।

उ०—१ लखीजै असी भाति आकास लागो। भवानी सदा पाण लीधा अभागो। हमेसा रहै सत्रु रो सीस हाथै। मुखे रत्र रोतासळो छत्र माथै।—मे म

उ०—२ हगामा हमेसा बजत त्रिदवेसा नववती। अई इदू अवा जयति जगदबा भगवती।—मे म

४ प्राय अधिकतर।

उ०—१ महळी कुसळ विराणै मूडै, सूक हमेस बाटणो मेस। कजियारो कीजै मुह काळो, कजिया मे नित नवो कळेस।

—वा दा.

उ०—होवण लगी हमेस गोठ अजगैब री। अरज जिकण री गाय फरबला सह करी।—सिवबक्स पाल्हावत

रू भे —हिमेस।

हमै, हमैं, हमो—क्रि. वि.—१ अब।

उ०—१ रेवा सागर अमल मै, आगै ही अरडीग। हमे सिंध सागर हुठी, अपणायो तै सीग।—वा दा.

उ०—२ आया पछै कहण लागो जु—'राज मोनू कूडो कळक दे चोरी रो काढियो थो सो हमै सात कूड रो आसकरण नै पूछै नै नवेडो लीजै।—नैणसी

उ०—३ प्रवाडा किसू हेक जीहा पुणीजै; फरा जोडिया कोडि आदेस कीजै। धजाळी हमै फेर औतार धारघो, वडो काम स्री-जोगमाया बिचारघो।—मे म.

२ इस बार, इस समय।

रू भे.—हिमे, हिमे, हिमै, हिमै।

हम्म—देखो 'हम' (रू भे)

हम्मर—स. पु. [स हय+वर] घोडा।

हम्मांम—देखो 'हमाम' (रू भे)

हम्माल—देखो 'हमाल' (रू भे.)

उ०—ग्रहि अमीरस वेगार, हम्माल जेम हजार। तदि जवहरी हट ताम, जवहार लूटिय जाम।—सू-प्र

हम्मीर—स. पु,—१ प्रसिद्ध रणथम्भोर गढ का एक चौहान राजा जो अलाउद्दीन खिलजी के साथ युद्ध मे सन् १३०० ई० मे मारा गया था।

२ योद्धा, वीर।

३ सम्पूर्ण जाति के सगीत का एक सकर राग।

रू भे.—हमीर।

हम्मीरनट—स. पु.—नट और हम्मीर के योग से बनने वाला एक सकर राग।

हयं, हयद, हय—स. पु. [स. हय] १ अश्व, घोडा।

(अ. मा; डि. नां. मा)

उ०—१ जसोल जवाव, सजत सताब। हिमार हयद, गराज गयद।

—सू. प्र

उ०—२ वनै बगोळ बावनी, हरोळ होय हारमी। हलै हयद हेमतै, सजै गयद सारमी।—ऊ. का

उ०—३ लै भड भिडजा लार हयदा हाकिया। वीर धीर अणवीह सीह उपडाकिया।—सिवबक्स पाल्हावत

उ०—४ झळहळ पाखर मिलह अत्र झाले, हय असवार दोय लख हालै। सीहा तेज पराक्रम सहसै, बरकदाज दोय लख बहसै।

—सू. प्र.

३ तुषित एव साध्य देवो मे से एक।

रू भे.—हयण, है।

अल्पा,—हइयो।

क्रि वि.—हा।

उ०—सोहड सहु भेळा किया, तिण वेळा तिण वार। नर नारी सहु बिल बिनढ, हय हय सरजणहार।—ढो. मा.

हयअगवीन—स. पु. [स हैयङ्गवीनम्] १ मक्खन, नवनीत।

२ घी, घृत। (ह ना मा.)

रू. भे —हईयगवन।

हयग्रीव—सं. पु.—१ विष्णु का एक अवतार। (ना मा)

उ०—तूवळि तूहिज व्यास, पित्य हरि हस मुनितर। जग रात्यो हयग्रीव, ध्रुव तूं आप धनतर।—गजउद्धार

२ एक असुर, जो कश्यप एव दिति के पुत्रो मे से एक था।

३ एक दानव, जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक था।

४ एक असुर, जो नरकासुर का प्रमुख अनुयायी एव उसके राज्य की रक्षा करने वाले प्रमुख असुरो मे से एक था।

५ एक राजा, जिसने क्षात्र धर्मानुसार उत्तम रीति से राज्य कर मुक्ति प्राप्त की।

६ विदेहवश का एक कुलगार राजा।

७ कल्पात में ब्रह्मा की निद्रावस्था मे वेदो को चुराने वाला एक राक्षस।

रू भे —हेग्रिव, हेगीव, हैग्रीव।

हयग्रीवा—स स्त्री —दुर्गा देवी का एक नामान्तर।

हयण—देखो 'हय' (रू. भे.)

हयथट्ट—स पु.—१ अश्व समूह, अश्वदल, अश्वसेना।

२ अश्व सेना।

हयदळ—सं पु [स हय-दल] अश्वदल, अश्वसेना, घुडसेना।

रू. भे. —हईदळ।

हमांमदस्तो-स पु [फा. हावनदस्तः] लोहे की ग्रोखली व मूसल ।
उ०—तथा लोह रा हमांमदस्ता ग्रादि पिण पाडिहारा रात्रि ग्रहस्थ रा थका रहै तिण में दोस नहीं तौ सूई कतरणी छुरी ए पिण ग्रहस्थ रा थका पाडिहारा रात्रि रहै तिण में दोस नहीं ।
—भि द्र

रू. भे.—ग्रमामदस्तो, मामदस्तो, हिमामदस्तो ।

हमाऊ-स. पु—सुरखाव नामक पक्षी, जिसके बारे में किंवदती है कि जिस किसी पर उसकी छाया पड जाय, वह बादशाह बन जाता है ।
उ०—१ हमाऊ रस सारस राजहस, ग्रखै भोर झकार वेपार वस ।
—रा. रू.

उ०—२ हमाऊ परां तोकरा छांह हेकी । न को पार ग्रोतार थारा ग्रनेकी ।—मे म

रू भे—हमायु, हमायू ।

हमाट-स. स्त्री.—ध्वनि विशेष ।

हमात—देखो 'हमायत' (रू भे)

हमायचौ-स पु—एक माप या परिमाण विशेष ।
उ०—सात हमायचा भाग, सात सुराई सराव की, सात सीका जमनाजळ री.. . ... ।—तिमरलिंग पातसाह री वात

हमायत-सर्व—हम, मैं ।
रू. भे.—हमात ।

हमायु, हमायू—१ देखो 'हमाऊ' (रू. भे)
उ०—सिर छाया राज हमायु समपै, सो इक पीढी राज समाज । कर छाया थारी राजा कमधज, रेणव ग्रनत पीढिया राज ।
—सावळदास कवियो

हमार-क्रि वि—ग्रभी, इस समय ।
उ०—भाटियै कह्यौ—टीको काढां ।' तरै देवीदास कह्यौ—टीको हमार हू कोई कढाऊ नहीं ।—नैणसी
रू. भे.—हमारू, हमारू, हिमार, हिमारू, हैमार ।

हमारउ—देखो 'हमारो' (रू. भे)
उ०—बाबहिया डूगर-दहण, छाडि हमारउ गाम । सारी रात पुकारियउ, लइ लइ प्रिउकउ नांम ।—ढो मा

हमारूं, हमारू—देखो 'हमार' (रू. भे.)
उ०—फेर मन मैं ग्रा विचारै छै—कै हमारू वह सू नीचै उतरनै हाथ पकड घरै लै जाऊ ।—पलकदरियाव री वात

हमारो-सर्व [स्त्री. हमारी] हमारा, मेरा ।
उ०—मारू नू ग्रावइ सखी, एह हमारी बुझ्झ । साल्ह कुवर सुहिणइ मिल्यउ, सुदरि सउ घर तुझ्झ ।—ढो मा
रू भे.—हमारउ ।

हमाल-स. पु. [ग्र] १ बोझा ढोने वाला मजदूर, भारवाहक, कुली ।
उ०—१ मल पेह पंठै करै भेस मल्लां, हमाला लखां ग्राणियौ नीठ हल्ला । हरी वाळ चमाट जेही चहोडै, तमासा ज्युही खांचि धानख तोडै ।—सू प्र.
उ०—२ किस्तुरी काळी भली, राती भली गुलाल । राजन तो पतळा भला, जाडा भला हमाल ।—लो गी
२ सभालने वाला, रक्षक ।
रू भे.—हम्माल ।
वि [ग्र.] मदृश, समान ।

हमासत-सर्व—हमारे जैसे ।

हमीणो-सर्व.—हमारा ।

हमीर-स पु—१ भाटी वश की एक शाखा । (बा दा ख्यात)
२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।
३ देखो 'हम्मीर' (रू. भे.)

हमीरकोट—देखो 'ग्रमरकोट' ।

हमेल, हमेलवेग-स पु [ग्र. हमाइल] १ बगल मे लटकाने की वस्तु ।
२ छोटा कुरान, जिसे गले मे लटकाया जा सके ।
३ घोडे के गले मे पहनाने का एक ग्राभूषण विशेष ।
४ स्त्रियो के गले में पहनने का एक स्वर्णाभूषण ।
उ०—१ हमेळवेग चद्रहार, सोभयं सकाजय । उडत नेक चद्र ग्रग्र, राज पत राजय ।—सू. प्र.
उ०—२ 'भाऊ' ग्रप सिवराज भूजाळा, हद गजरा गज देवण हार । 'मान' भूप 'वळवत' महाराजा, हुग्रा हमेल ग्रनै चद्रहार ।
—स्वामी गणेसपुरी
उ०—३ रतना' मैं धिठाई प्रगट हुई लाज थी सू भागी, पायल बिछिया मौन कीवी कटि मेखला वागी । छिन मैं छिलिया, हार हमेल हिलिया । छातिया थहरै, केस छूटा छहरै ।—र. हमीर
वि वि—उक्त ग्राभूषण स्वर्ण मोहरो का हार होता है, जिसके बीच मे एक बडी चौकी होती है । इस चौकी में तसवीर भी जडी जाती है ।
रू भे—हुमेल ।

हमेलहार—देखो 'हमेल' (३ व ४)

हमेळो—देखो 'हामेळो' (रू. भे.)
उ०—नैणा दीठा थया हुवै, जै न हमेळौ थाय । पेट पडघा ही धापियै, ऊवै खेत गमाय ।—जलाल बूबना री वात

हमेस, हमेसां-क्रि वि. [फा. हमेश'] १ सदा, सर्वदा ।
उ०—१ ज्या घण बूद तळाव जळ, मिळ पर दियण हमेस । इण सग्रह गुण लेहु उण, सुण 'प्रताप' उपदेस ।—जैतदांन बारहठ
उ०—२ ग्राइदा हमेसां वास्तै पूरा सौ रिपियां रौ महीनौ बाध दियौ ।—फुलवाडी
२ प्रतिदिन, नित्य, रोजाना ।
उ०—१ कुमार कुमारी भेळा बैठ नित हमेसां नी नी छै जैडी मजोगती बातां विचारता रैवता ।—फुलवाडी

स स्त्री. [स. स्मर] १३ उत्कृष्ट आकांक्षा, प्रबल इच्छा।
उ०—साभळि अनुराग थयौ मन स्यामा, वर प्रापति वंछती वर।
हरि गुण भणि ऊगी जिका हर, हर तिण वंदै गवरि हर।
—वेलि
१३ इच्छा, चाह।
उ०—१ जो देसांतर ऊनरै, वाधीजै दळ सग। हर मकोचै गीरजा, तो सीचै 'अवरग'।—रा. रू.
उ०—२ वसुदेव कुमार तणौ मुख वीनै, पुरौ सुणै जण आप पर।
श्री रुखमणि तणौ वर आयौ, हर म करौ अनि राय हर।—वेलि
१५ आशा, उम्मीद।
उ०—समझ मैं नी आई कै वात काई व्ही। सगळा ही म्हारी हर पाल ली दीसै।—फुलवाड़ी
१६ ध्यान।
उ०—तरै मानौ वैठौ छै। अठै साथ घणौ काम आयौ। पैलौ पाचार पाडिया, नै उणै मानै साथ वेढ जीती देख नै नगारौ दीयौ। साथ जुदौ जुदौ फूटौ थौ सु नगारा री हर कर नै नगारा री तरफ गयौ।—राव मालदेव री वात
१७ स्मरण, याद, स्मृति।
उ०—१ ढोला, ढीलों हर किया, मूक्या मनह विसारि। मदेसउ न पठावइ, जीवा किसइ अधारि। —ढो. मा
उ०—२ ढोला, ढीली हर मुझ, दीठउ घणै जरोह। चोळ वरन्नै कप्पडै, सावर धन अरोह। —ढो. मा.
१८ जिद्द, दुराग्रह, हठ।
१९ ऊट पर लदे हुए वोझे का एक तरफ अधिक झुकाव।
२० हरियाली।
अव्यय—१ एक विशेपण प्रत्यय जो यौगिक शब्दो के अन्त मे लगकर निम्न अर्थ प्रकट करता है —१ हरण करने वाला, लूटने वाला, छीनने वाला। २ दूर करने वाला, हटाने वाला। ३ धारण करने वाला।
ज्यू.—धनहर, पापहर, रोगहर, जळहर आदि।
२ प्रत्येक, हर एक, एक-एक, हरेक।
उ०—मासी एक सूटी तणौ ऊडौ निस्कारौ न्हाका नै वोली—वेटी! जुगा-जुगा सू हर लुगाई रै मुडै-अो सवाल भभकै पण आज दिन ताई कुण जवाव दे सक्यो ? —फुलवाड़ी
३ श्वेत, सफेद। * (डि. को.)
क्रि. वि—१ पूर्व कालिक क्रिया सूचक अव्यय शब्द, कर।
उ०—वठै राजा वेटै सूं मिळ हर राजी हुवौ। —चौवोली
२ देखो 'हरि' (रू. भे) (अ मा.)
उ०—हस मायला मूढ रे, कर हर सर विसराम। मर मर घर घर नह फिरै, उर घर गिरधर नाम। —ह. र
३ देखो 'हरौ' (रू. भे)

हरई–स. पु—एक प्रकार का शुभ रग का घोडा (शा. हो.)
हरककण—देखो 'हरकांकण' (रू. भे.)
हरक–वि. [स] १ हरण करने वाला।
२ ले जाने वाला, पहुंचाने वाला।
स. पु.—१ गणित में भाजक।
२ प्रलयकर रूप मे शिव का एक नाम।
३ देखो 'हरम' (रू. भे.)
उ०—१ हात कमाई घाट हरक सू, पतळी गट गट पीणी। घोर रेत सम चेत घमटी, चोर लियोड़ी चीणी। —ऊ. का.
उ०—२ तप तेज परख हिंदू तुरक, सदा हरक मन गज्जणा। कोमळ किसोर तौ ही कमध, दुनि कठोर उर दुज्जणा।—रा रू.
हरकण—देखो 'हरत' (रू. भे.)
उ०—हरकण छाई दिस चिनकारी हरियो, करमण करसणिया किलकारी करियो। झेलण हलवेडर झलकी तन झाई, मरिया टेहर ज्यूं हरिया मन माही।—ऊ. का.
हरकणौ, हरकवौ—देखो 'हरसणौ, हरसवौ' (रू. भे)
उ०—ब्रह्मा विस्णु सिव मनकादिक, हरकत निस दिन ख्याल। सुर नर मुनि सव जोवण आयै, ऐसो ध्यक की ख्याल।
—श्रीहररिामजी महाराज
हरकणहार, हारौ (हारी), हरकणियौ—वि०।
हरकिओड़ौ, हरकियोड़ौ, हरखयोड़ौ—भू० का० कृ०।
हरकीजणौ, हरकीजवौ—भाव वा०।
हरकत, हरकति–स. स्त्री. [अ.] १ गति, चाल।
२ चेष्टा।
उ०—पण कवर री तरफ सू की हरकत नी व्ही। वै तौ मडा री गळाई जुम्मा रै आसरै टिक्योड़ा ऊभा हा।—फुलवाड़ी
३ स्पदन, धडकन।
उ०—कामेती खासा जमेडिया तौ ई की हरकत नी। नाड अर सास जोयौ तौ हमलौ आप रै ठाणै पूगौ हो।—फुलवाड़ी
४ उद्दण्डतापूर्ण कार्य, वदमाशी, शैतानी।
उ०—जसोदा मैया नित सतावै कनैया। वाकी हरकत क्या कहू मैया।—मीरा
५ खुशी, उत्साह।
उ०—सुकरत करता हरकत आवै, तौ ना पछतावौ करियौ।
—जाभोजी
हरकवनोळौ–स. पु [देशज] श्रीमाली ब्राह्मणो मे एक वैवाहिक प्रथा, जिसमे प्रथम कन्या के विवाहोपलक्ष मे कन्या का पिता, लग्न से पहले दिन अपने कुटुंबियो को लपसी, कढी, चावल आदि का भोजन कराता है। (मा. म.)
हरकांकण–स. पु.—महादेवजी का ककण।
उ०—'वखतेस' सळा सिर वेढगरौ, हरकांकण सो 'अमरेस' हरौ।

हयनाळ-स. स्त्री. [स. हय+नाल.] १ घोडो द्वारा खीची जाने वाली या घोडो की पीठ पर रख कर चलाई जाने वाली तोप।

उ०—पिव ग्रभ गजण पैंडसी, हैरें की हयनाळ। घण जीवण वाल्हा थुवै, एण जाव तज ग्राळ। —रैंवतसिंह भाटी

२ घोडो की टाप (क्षुर) मे, सुरक्षार्थ लगाई जाने वाली चन्द्राकार लोहे की पत्ती, खुरताल।

हयमेध—देखो 'ग्रश्वमेध'

हयवर-स. पु. [स] १ श्रेष्ठ घोडा, उत्तम जाति का घोडा।

उ०—१ हयवर गयवर हीमता, गौ महिसी थट्टा। लाछ दु लीधी भूबका, पल्लिग सु घट्टा।—ग्र. व. ग्र.

उ०—२ जीहो-दीधा मेगळ मोतीडा, लाला दीधा हयवर हार। जीहो-दीधा सोनौ सावट्ट, लाला दीधा ग्ररथ भडार।—जयवाणी

२ घोडा, ग्रश्व।

उ०—सवल दान वहुमान करणय कव्वाहि समप्पइ, हेला हयवर कोडि जोडि मगगण थिर थप्पइ।—व. स.

रू. भे.—हइवर, हइमर, हडवर, हईवर, हेवर, हेमर, हैंमर, हैंवर, हैमर, हैराव, हैवर।

ग्रल्पा, —हैमरौ, हैवरौ।

हयसाला-स. पु यौ [स हय+शाला] वह स्थान जहा पर घोडे वाधे जाते हैं, ग्रश्वशाला, घुडशाला।

हयहरि-स पु —पीले रग का घोडा।

हयाणी हयांणीग्रा-स स्त्री. [स. हय+ग्रनीक'] ग्रश्व-सेना, घुडसेना।

हयाणौ-स पु —एक जाति विशेष का घोडा।

उ०—तेजी वरडा गहवरा, तोरणा खुरसाणा मयाणा हयाणा रोहवाला, रूडवाला तोरका, मदकोरा, पीलूग्रा भादिजा ग्रोराहा केकाणा सूनडा सिरखडा महूडा दक्षिणपथा पाणपथा माकडा नीलडा वयाहडा गगाजल मिघूया पाखरा ग्रस्वजातय।—व स

हयाराज-स. पु. [स हयराज] १ वडा घोडा, हयेन्द्र।

२ घोडा। (डिं को)

हया-स स्त्री. [ग्र] १ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—स्याळ मौत ग्रावै ज्यू साप्रत, गाव तरफ गडवडिया है। हया गमावण इण हवाल मैं, ऊमर सू ग्रव ग्रडिया है।—ऊ का.

२ शर्म, लज्जा।

३ दया, करुणा।

उ०—१ इसं सगत माणस नै घोखँ रै जाळ मैं लेय'र मारता दया नही ग्राई, पथर हिडदा मैं हया नही वापरी।—दसदोख

उ०—२ तन छीजै जोबन हटै, घटै वयस धन धरम। मदगत पसगत एक-सी, ज्या मैं हया न सरम।—ग्रग्यात

४ भावुकता।

उ०—वाणियै री वेटौ हया दया वा' यौ, हिसाव किताव मैं कामण गारौ।—दसदोख

हयाऊत-म पु.—एक पक्षी विशेष।

हयात-सं. स्त्री. [ग्र.] जीवन, जिन्दगी।

उ०—१ वै महर गुमराह गाफिल, गोस्त खुरदनी। वै दिल बदकार ग्रालम, हयात मुरदनी।—दादूवाणी

उ०—२ जिण भाति वादसाह हयात मू वणी मूरत हाल इण भाति थी।—नी. प्र

हयादार-वि [ग्र हया+फा दार] १ लज्जाशील, शर्मीला।

२ दयावान, करुणाशील।

३ भावुक।

४ मान, प्रतिष्ठा व इज्जत वाला।

हयानन-स पु [सं हय+ग्रानन] विष्णु का एक ग्रवतार, हयग्रीव।

उ०—नमौ मछ स्रग-मडाण मुकद, नमौ काळि रास दइत निकंद। नमौ है-ग्रीव निगम्म सहेत, नमौ खळ मार हयानन खेत।—ह. र.

हय्येक [स स्त्री.] एक ही वात।

उ०—तरै भील माहो-माहे वोल्या, म्हारै डीकरै रपत्रूयै हय्येक दाख्यु छै, व ह्यौ हनौ त्यू हीज ग्रायौ।

—जखड़ा मुखडा भाटी री वात

हर-स पु [स. हर.] १ शिव, महादेव।

(ग्र. मा, डि को; ना मा, ह ना. मा)

उ०—१ ढोला साय घण माणजै, भीणी पासळियाह। कइ लाभै हर पूजिया, हेमाळै गळियाह। —ढो. मा

उ०—२ साभळि ग्रनुराग थयौ मनि स्यांमा, वर प्रापति वछती वर। हरि गुण भणि ऊगनी जिका हर, हर तिण वर्दै गवरि हर।

—वेलि

उ०—३ केहर हायळ घाव कर, कुजर ढिगलौ कीध। हूंमा नग हर नू तुचा, दात किराता दीध। —वा दा.

२ ग्रग्नि, ग्राग।

३ सूर्य, भानु। (ना डिं को)

४ एक दानव जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक था।

५ विभीपण का ग्रमात्य एक ग्रसुर।

६ राम की सेना का एक प्रमुख वानर।

७ गणित में वह सख्या जिसका किसी ग्रन्य सख्या मे भाग दिया जाता है, भाजक-सख्या।

८ छप्पय छद का दसवां भेद जिसमे ६१ गुरु, ३० लघु से ६१ वर्ण तथा १५२ मात्राएँ होती है।

६ तीन दीर्घ वर्ण वाले टगण के प्रथम भेद का नाम।

१० पौत्र, वशज।

उ०—या 'मधकर' हर वजिया, ग्राद विसै ग्रणरेह। ज्या उलटै मेघा रवी, सिद्ध पलट्टै देह।—रा. रू

११ पानी, जल। (ना. डिं. को)

१२ गधा, गर्दभ।

उ०—३ पिउ मैं घणो प्यार, मिळना मन हरखित मिळे। वै हेतु लखवार मिळजो दिन मैं 'मोतिया'।—रायसिंह साहू

हरखीलौ–वि. [स. हर्ष+रा. प्र. ई लो] (स्त्री हरखीली) हर्षित, प्रसन्न।

उ०—हरखीला देवर भाभी नै प्यारा लागोजी देवर म्हारा जी।
—लो गी.

हरख–देखो 'हरस' (रू. भे)

उ०—'जोध' हर्ष आवियो सहर जोध, कर ऊच थान उेरा समोध। 'विजपाळ' सुणे इम माहजीर, धारै हरख मन श्रत सधीर।
—शि सु रू

हरगज, हरगिज–अव्यय [फा. हरगिज] कदापि, कभी भी।

उ०—१ मुनीम दोनू हरामी, इन्याव रा काम करै। हरगज तीन सो नी हकारै।—दसदोख

उ०—२ अधविसवासी मिनख हरेक आदमी री कैयोडी वात नै माची मानण खातर ही बण्यो है। नटणै खातर हरगिज नही।
—दसदोख

हरगिर हरगिरि–स. पु [स हरगिरि] कैलाश पर्वत।

उ०—हरगिर हाथी दात धवळ इण वेळ चिराणी, काळै काज्ळ होड मेघ वठ सीस धराणी। दुग दुग जोवण जोग उणी पुळ गोभा होवै, हळधर कावै जाण सावळी दुपटी सोवै।—मेघ

रू भे—हरगिर।

हरगीता–स स्त्री.—प्रत्येक चरण मे अन्तिम गुरु वर्ण सहित २८ मात्राओ का एक मात्रिक छद। (पि प्र.)

हरगौरीरस–स पु—एक आयुर्वेदिक रसौषधि विशेष।

हरग्गिर—देखो 'हरगिर' (रू भे)

उ०—हय सफ नच्च हरग्गिर खिज्ज। लिखै गुरतार गनो घन विज्ज।—ला. रा.

हरड–देखो 'हरडै' (रू भे)

उ०—हरड बहेडा आवळा, घी सक्कर मैं खाय। हाथी दावै खाव मैं, साठ कोस लै जाय।—अज्ञात

हरडकौ–स पु—१ भैस के दौडने की क्रिया।

२ दौडते समय भैस के मुख से होने वाली आवाज।

हरडाट, हरडाटौ–स पु.—१ तेज वायु आंधी, बरसात या किसी के अत्यन्त तीव्र गति से चलने, होने या गिरने से होने वाली आवाज।

उ०—१ अपटा घी पीयोडा घोडा ईं बीचली छेनी पूरता हरडाट दौडता जावै हा।—फुलवाडी

उ०—२ अणचीत्यौ हरडाटौ सुण्यो तो दोनू जणिया वारै आई।
—फुलवाडी

उ०—३ चारेक खेतवा ताई तो मामूली छाटा-छिडका व्हिया पण पछै तो हरडाट माचग्यो।—फुलवाडी

रू भे.—हरराट।

हरडी, हरड़ै–स. स्त्री. [स हरीतकी] १ एक पेड़ विशेष जिसके पत्ते महुए के पत्तों की तरह चौड़े होते हैं।

(अ मा; ना मा, ह. ना मा.)

२ उक्त पेड़ का फल जो औषध मे काम आता है।

उ०—हरड़ै बहेडा आवळा, चौथी नीम गिलोय। मूट ऊंट कर धर लै बैठा, राम करै सो होय।—अज्ञात

३ शक्ति, सामर्थ्य, औकात।

४ गुदेन्द्रिय का भीतरी मांसल भाग।

उ०—बेटी रो ब्याव मांडणो री हरडै टाट दै।—फुलवाडी

मुहा—हरडै काढणी=शक्तिहीन करना, बर्बाद करना।

रू भे—हरड, हरड, हरडी, हरडू।

हरडौ–स. पु—रग विशेष का घोडा।

उ०—कै नीला कै काणडा, कल्डा हरडा केक। मुसकी कुहरा मेटिया, दगटा तुरग अनेक।—पे रू

हरचद–अव्यय [फा] १ कितना ही, कितना भी।

२ यद्यपि, अगरचे।

३ जितना कुछ, जिस कदर।

४ देखो 'हरिस्चद्र' (रू भे)

उ०—१ सत हरचद समान, प्रगट दरियाव अचपपण। सुर तर ग्राम सपूर, जाण पारस सेवक जण।—र. ज प्र.

उ०—२ देवी दान रै रूप बळराव दीधी, देवी सत रै रूप हरचद सीधी। देवी रठु रै रूप दसकध रूठी, देवी नीत रै रूप सौमित्र मूठी।—देवि

हरचदर—देखो 'हरिस्चद्र' (रू. भे.)

हरचदवारा–स पु—१ राजा हरिश्चन्द्र का शासन काल।

२ आनन्द का समय।

रू. भे.—वाराहरचद।

हरचदि—देखो 'हरिस्चद्र' (रू. भे.)

उ०—इव नद घरि जल वहिउ हरचदिइ। भालडी मरण लाघ मुकुदिइ।—सालिसूरि

हरचदोत–स पु—राठौड वश की एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

हरचनण—देखो 'हरिचदन' (रू. भे)

हरज–स पु [अ] १ हानि, नुकसान।

२ उपद्रव, गडबड।

३ अडचन, बाधा, रुकावट।

४ आपत्ति, विरोध, ऐतराज।

रू भे.—हरज्ज।

अल्पा.—हरजौ।

हरजक्ष—देखो 'हरिजख' (रू भे)

हरजट–वि—पीला, पीत। ✱ (डि. को.)

सग 'राम' 'हर्ष' जैमिघ सही, गजरूप सफै रिम टेक ग्रही ।
—रा. रू.

रू. भे —हरककण ।

हरकाईचद्रा-म स्त्री —एक प्रकार की ओपधि विशेप।

हरकारौ—देखो 'हलकारौ' (रू. भे)

उ०—अेक दिन राजा री हरकारौ कागद लेय ठिकाणा मैं आयो ।
—फुलवाडी

हरकियोड़ौ—देखो 'हरसियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री हरकियोड़ी)

हरक्क, हरक्ख—देखो 'हरस' (रू भे.)

हरक्खणौ, हरक्खवौ—देखो 'हरसणौ, हरसवौ' (रू. भे)

उ०—सुरा गुर पूर भिलै अगि सार, तजै असि भोमि वढै तिण-वार। हरक्खि कटंज घरै रभ हार, अत्रावळि पाय रळत अपार।
—सू प्र.

हरक्खणहार, हारौ (हारी), हरक्खणियौ—वि० ।
हरक्खिओडौ, हरक्खियोडौ हरक्ख्योडौ—भू० का० कृ० ।
हरक्खीजणौ, हरक्खीजवौ—भाव वा० ।

हरक्खियोड़ौ—देखो 'हरसियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री हरक्खियोडी)

हरख—देखो 'हरस' (रू भे)

उ०—१ सो आधी रात तांई तौ हरख खुमहाळी रही।
—सूरै खींवै काधलोत री वात

उ०—२ कुमाए मता लै घरै आया छै। अठै घणा हरख सू रहै छै।—पचमार री वात

उ०—३ मा रै हिवडै हरख रौ सरवर हिबोळा खावण लागौ ।
—फुलवाडी

हरखण—देखो 'हरसण' (रू. भे)

हरखणौ, हरखवौ—देखो 'हरसणौ, हरसवौ' (रू भे.)

उ०—१ राजा राणी हरखिया, हरख्यउ नगर अपार। साल्ह कुवर पध्धारियउ हरखी मारू नार।—ढो मा

उ० - २ हिंदमथान हरखियौ ताम दहलै तुरकाणौ। जगत सरव जाणियौ, जोध लेसो जोधाणौ।—सू प्र.

उ०—३ वधू वध्या ध्यावै हुलर हुलरावै हरखती। अई इदू अबा जयत्ति जगदवा भगवती।—मे म.

उ०—४ हरखिउ अरजुनु जारथि चडिउ दाणव घरि वुवाखु पडिउ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—५ नयणे करि निरखौ जी, हियडै वलि हरखौ। सत्रुजय सरीखौ जी, पुहवि न को परखौ।—घ व. ग्र.

उ०—६ ताळ्या दै तिण वार हरखि हुलसै हसै। केकी ज्या छद करै केक गरदन कसै।—सिवबक्स पाल्हावत

हरखणहार, हारौ (हारी), हरखणियौ—वि० ।
हरखिओडौ, हरखियोडौ, हरख्योडौ—भू० का० कृ० ।
हरखीजणौ, हरखीजवौ—भाव वा० ।

हरखत—१ देखो 'हरसित' (रू. भे)
२ देखो हरकत' (रू भे)

हरखमाण-वि. [सं. हर्षमान] हर्षित, प्रसन्न, खुश, हर्षायमान ।
(डिं. को.)

हरखवंत-वि —प्रसन्न, हर्षित ।

उ०—कुवर रै कुंवर हुवौ। वडो हरख हुवौ। नानाणै सहर वधाई गई। तद राजा हरखवंत होय घोडौ अेक, सिरपाव, कडा-मोती, रिपिया हजार दोय देनै विदा किया।—पलक दरियाव री वात

हरखा-स स्त्री. - राठोडो की एक उप शाखा ।

हरखाडणौ, हरखाडवौ—देखो 'हरमाणौ, हरसावौ' (रू भे.)

हरखाडणहार, हारौ (हारी), हरखाडणियौ—वि० ।
हरखाड़िओड़ौ, हरखाड़ियोडौ, हरखाड़्योडौ—भू० का० कृ० ।
हरखाड़ीजणौ, हरखाडीजवौ—कर्म वा० ।

हरखाड़ियोडौ—देखो 'हरसायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हरखाडियोडी)

हरखाणौ, हरखावौ —देखो 'हरसाणौ, हरसावौ' (रू. भे)

उ०—१ मात पिता मैं दोमण मोटौ, प्रथम मिल्या सुख पाई नै। नग दोना मिळ ओ निपजायौ, हिया फूट हरखाई नै।—ऊ का

उ०—२ परस्पर दपति सपति पाय, हिकोहिक भेट करै हरखाय।
—मे म.

हरखाणहार, हारौ (हारी), हरखाणियौ—वि० ।
हरखायोडौ—भू० का० कृ० ।
हरखाईजणौ, हरखाईजवौ—कर्म वा० ।

हरखायोडौ—देखो 'हरमायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हरखायोडी)

हरखावणौ, हरखाववौ—देखो 'हरसाणौ, हरसावौ' (रू भे)

उ०—ओय वावडी पागोडा थिर नीलम जडिया, रतन-नाळ जुत हेम-कवळ जळ फूटर भरिया। तिरती हसा डार कचोळै मन हरखावै, पानासर की याद पेखिया तोय न लावै।—मेघ

हरखावणहार, हारौ (हारी), हरखावणियौ—वि० ।
हरखाविओडौ, हरखावियोड़ौ, हरखाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
हरखावीजणौ हरखावीजवौ—कर्म वा० ।

हरखावियोडौ – देखो 'हरसायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरखावियोडी)

हरखित—देखो 'हरसित' (रू भे)

उ०—१ इतरी वात सुणै राणी खुसी हुई। वहुत हरखित हुई छै। कितरै हेकै दिनै पुत्र हुवा।—नैणसी

उ०—२ हरण हुवा जिण जग होय, हरखित चाह वेद चियार। तत पच कर खट तरक तै, दरियाव सात उदार।—र ज. प्र

उ०—३ भीर परी पहलाद उबारै, हरणाकस हिणताज ।
—अनुभववाणी

हरणाक्ष, हरणाक्ष्य, हरणाख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे.)

उ०—वळ थियौ दित हरणाक्ष्य अप्रबळ, तेज मीहर धर रसातळ ताम ।—र. ज. प्र

हरणाखी—देखो 'हरिणाक्षी' (रू. भे.)

उ०—काछौ करह विथूंभिया, घडियउ जोइण जाइ । हरणाखी जउ हसि कहइ, आणिसि एथि विसाइ ।—ढो. मा.

हरणाट-स स्त्री —१ नगाडे की ध्वनि ।

उ०—घूघरा तणा झरणाट हुय धमाधम, वेण रा तत्र तरणाट वाजै । नकीवा वोल हरणाट हुय नोवता, गयण धर सवद गरणाट गाजै ।—खेतसी वारहठ

२ ध्वनि विशेष ।

३ देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे)

हरणामछ-स पु —१ एक रंग विशेष का घोडा । (शा हो)

२ एक प्रकार का घोडा ।

उ०—हरणामछ वागळ वोदलीया हद, भुतडीया मलीया भलीया ।
वादरदान दधवाडियौ

हरणायख—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे)

उ०—हरणकस्यप हैमुख हरणायख, खाधा कै फिर खासी । तोपण भूख न गी तिण तावौ, वावौ खाय उवासी ।—र. ज. प्र

२ देखो 'हिरणकस्यप' ।

हरणी-वि स्त्री.—१ हरण करने वाली ।

२ देखो 'हरिणी' (रू. भे)

हरणीमन-वि स्त्री.—१ मन को लुभाने वाली, सुन्दर, आकर्षक ।

२ देखो 'मनहरण' (रू भे)

हरणौ-वि. [स. हर] (स्त्री हरणी) १ हरण करने वाला, चुराने वाला ।

२ छीनने वाला, लूटने वाला ।

३ मिटाने वाला, दूर करने वाला, हटाने वाला ।

४ नष्ट करने वाला ।

५ खीचने वाला ।

६ आकृष्ट करने वाला ।

हरणौ, हरबौ-क्रि. स [स. हरण] १ दूसरे की वस्तु को उसकी इच्छा के विपरीत या उसकी जानकारी के विना, अपने अधिकार मे कर लेना या ले लेना, छीनना, लूटना, चोरी करना ।

२ हटाना, दूर करना, मिटाना । (उ. र)

उ०—छेदण दैत भूत छळ छेहा, पीडा कसट रोग दळ पाण । विघना हरै साद मुण वहली, देसणोक हुदी दीवाण ।—दोनौ

३ किसी को वल पूर्वक, चोरी से, धोखे से या फुसला कर, उडा ले जाना तथा ले जाकर छुपा देना, अपहरण करना ।

उ०—१ हुवा राम अोतार सीता हरांणी । पखै जोइवा आविया देखि पाणी ।—सू. प्र.

उ०—२ वळिवध समरथि रथ लै वैसारी, स्यामा कर साहै सु करि । वाहर रै वाहर कोइ छै वर, हरि हरिणाखी जाइ हरि ।
—वेलि.

उ०—३ अस्ववध एह वीर नकीजइ, अस्व विद्य सघली हरइ हईइ ।—सालिसूरि

४ अपनी अोर खीचना, आकर्षित करना ।

ज्यू—मन हरणौ ।

५ पकडना ।

६ पूर्ण करना, पूर्ति करना ।

उ०—हरौ अभिलाख कव 'अमर' री हमरकै, जोगणी वीसरौ मती जाता । कदम दे दास रौ नेस पावन करौ, मूझ सिर धरौ धणियाप माता ।—खेतसी वारहठ

७ सहार करना, नाश करना ।

८ विभाजन करना ।

९ वहन करना ।

हरणहार, हारौ (हारी), हरणियौ—वि० ।

हरिग्रोडौ हरियोडौ हरचोडौ—भू० का० कृ० ।

हरीजणौ, हरीजबौ—कर्म वा० ।

हरत—देखो 'हरित' (रू भे.)

उ०—अत लघु तगण धन नाम पत अकास, पिता जम मात दिखण हरत पेख । विसिस्ट रिख वेंल आरूढ रस सात वण, उजेणी सूद्र लोयण उभै भेख ।—र रू

हरतण, हरतणू हरतनु, हरतनू-स. पु [स हरतनु] प्रातः काल मे तृणादि पर दिखाई देने वाला जल विन्दु, अोस-कण ।

हरता-वि [स. हर्त्ता, हर्तृ] १ हरण करने वाला, चोर ।

२ जवरदस्ती छीनने वाला, डाकू, लुटेरा ।

३ सहार व नाश करने वाला, मारने वाला ।

उ०—१ मुला हरता तु भयौ, तू हीज करता होय । तु हीज मारै हाथ सु तुही जीव रै सोय ।—अनुभववाणी

उ०—२ दीन विनां दाता नही कोई, हरता करता सब का सोई । ग्यान ध्यान गलतान गभीरा, पेम सहत मन वचन सरीरा ।
—अनुभववाणी

४ दु ख, शोक, पीडा आदि मिटाने, दूर करने वाला ।

५ आकर्षित करने वाला ।

६ उडा कर ले जाने वाला ।

७ विभाजक ।

८ सूर्य ।

रू. भे —हरत्ता ।

हरतार-वि. [स. हर्त्तरि] हरण करने वाला, हर्ता ।

हरजटा—देखो 'हरिजटा' (रू. भे)

हरजस-स. पु [स. हरि+यश] १ ईश्वर सम्बन्धी गायन, स्तुति या भजन।

२ ईश्वर का यश या कीर्ति।

हरजांणौ, हरजानौ-स. पु —१ वह धन, जो किसी हानि की पूर्ति हेतु दिया जाय, मुआवजा।

२ नुकसान, हानि।

हरजाई-वि. स्त्री.—१ उजाड करने वाली, आवारा।

उ०—पळ खावण चसकौ पड्यौ, प्रदत्त पुस्कळ पीव। थिर रह हरजाई थिरा, जाच्या देसी जीव।—रेंवतसिंह भाटी

२ व्यभिचारिणी स्त्री, वेश्या।

हरजौ-स. पु.—१ किसी सतह को चौरस करने की संगतराशी की टाकी।

२ देखो 'हरज' (अल्पा; रू. भे.)

हरज्ज — देखो 'हरज' (रू. भे)

उ०—कहण सुणण हय चढ क्रमण, साहस धरण समझ्झ। 'पता' छिहतर वरस पण, हेकण न की हरज्ज।—जैतदान बारहठ

हरड, हरडइ, हरडि, हरडू —देखो 'हरडै' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—हरडू हरडि हीमजी, हरडा हलद्रह वेर। हरबी हाथुडी हरी, हुफर हुसि हसेर।—मा का प्र

हरणक, हरणकस, हरणख, हरणखुर—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे.)

उ०—हुयौ जेम हरणक, ज्यम साह 'अवरंग' हुओ, ग्रहै सुर नरा छोडै दियौ गाढ। अवन अणथाह जाता हुई अवरकै, 'दुरग' री तेग वाराह री दाढ।—भोजराज मईयारियौ

२ देखो 'हिरण्यकस्यप' (रू भे)

उ०—नख हरणख उघेडि नाखियौ, असुरा रिपि जुग-जुग अलख। —ह ना. मा.

हरण-स पु [स. हरण] १ दूसरे की वस्तु को उसकी इच्छा के विपरीत या उसकी जानकारी के बिना, अपने अधिकार मे करने या ले लेने की क्रिया। छीनने, लूटने या चोरी करने की क्रिया या भाव।

२ वंचित करने की क्रिया या भाव।

३ हटाने, मिटाने या दूर करने की क्रिया या भाव।

ज्यू—पीड हरण, संकट हरण।

४ किसी को बलपूर्वक, चोरी या धोखे से उडा कर ले जाने तथा लेजाकर छुपा देने की क्रिया, अपहरण।

उ०—निरगै ततकाळ त्रिकाळ निदरसी, करि निरणै लागा कहण। सगळै दोष विवरजित साहौ, हुतौ जई हूओ हरण।—वेलि

५ अपनी ओर खीचने की क्रिया, भाव या अवस्था।

ज्यू —मन हरण, चीर हरण।

उ०—दुख-वीसारण, मन हरण, जउ ई नाद न हुंति। हियडउ रतन-तळाव ज्यउ, फूटी दह दिसि जंति।—ढो मा.

६ पकडने की क्रिया।

७ संहार, नाश।

८ विभाजन।

९ वहन।

१० विद्यार्थी के लिये दिया जाने वाला दान।

११ यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को दी जाने वाली भिक्षा।

१२ बाहु।

१३ वीर्य धातु।

१४ स्वर्ण, सोना।

वि.—१ चुराने वाला, चोरी करने वाला।

२ मिटाने वाला, दूर करने वाला, नष्ट करने वाला।

उ०—वप रूप ओप नव धन वरण, हरण पाप-त्रय-ताप-हरि। गुणमान दान चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान ओ ध्यान करि।

—रा. रू.

३ देखो 'हिरण' (रू भे)

रू. भे.—हरन, हिरण।

हरणकस्यप, हरणकुस, हरणकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे.)

उ० —१ हरणकस्यप हेमुख हरणायख, खाधा कै फिर खामी। तौ पण भूख न गी तिण तावै, वावौ खाय उवासी।—र. ज प्र.

उ०—२ जै जुध हरणकुस नू जरियौ, धड नाहर मानव चौ धरियौ। जिण कारण देव दितेस दुजेसर, न्याय नमै रघुनाथ सू।

—र ज प्र.

हरणक्ख, हरणख—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे)

२ देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे)

हरणगरभ—देखो 'हिरण्यगरभ' (रू भे)

उ०—चीजा इतरी दीवी, (१) तखत, (२) छत्र, (३) चवर, (४) ढाल, (५) तरवार, (६) साखलै हरवू दीवी तिका कटार, (७) लक्ष्मीनारायण हरणगरभ, (८) नागणेची कुळ-देवी री स्वरूप अठार भुजी, (९) करड, (१०) भवर ढोल, (११) वैरीसाल नगारौ थापन जाभै दियौ तिको, (१२) दळ सिणगार घोडौ, (१३) भुजाई री वेगा वगेरै चीजा लीवी। पीछै माजी मू सीख कर रावजी फौज री कूच कियौ।—द दा.

हरणांखु—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

हरणाखुर-स. पु.—घोडा।

हरणाकस, हरणाकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे)

उ०—१ हरणाकुस हत्तं महणसु मत्थं, छितलं वळि छळता है।

—र ज प्र

उ०—२ द्रुपद सुतारौ चीर वढाया, दुसासण मद मारण। प्रहलाद परतग्या राख्या, हरणाकुस नौ उद्र विदारण।—मीरा

लगते है। (अमरत)

हरफो–स. पु —कटा हुआ चारा या भूसा रखने का घर या कक्ष जिसके चारो ओर लकडी का घेरा बना होता है।

हरवडाहट–स. पु.—ध्वनि विशेष।

उ०—हडवडाट उठ्यौ तपोवन मैं, भभडक्या सगळा खडघा हिरण।
—सकुतला

हरवळ—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)

उ०—आणै गाडा ऊपरा भाळ घास भराया, चानै वेली पाचसो तिण मायँ छिपाया। छळ कीधा बळ दाखिया घर कारण घाया, हरवळ ईंदा राण होय गाडा गणणाया।—वी. मा.

हरवाम, हरवांमा—१ देखो 'हरवाम' (रू. भे) (अ. मा.)

२ देखो 'हरिवाम' (रू भे)

हरवी–स पु —एक वृक्ष विशेष।

उ०—हरडू हरहि हीमजी, हरडा हलद्रह वेर। हरवी हाथुडी हरी, हुफट हुसि हसेर।—मा, का. प्र

हरवू—देखो 'हडवू' (रू. भे.)

उ०—वुणता नर माथा चुणता घर धाडा, पावू हरवू रा सुणता परवाडा।—ऊ. का.

हरभात, हरभाति–क्रि वि —हर तरह से, हर प्रकार से, तरह-तरह से।

उ०—तरै फेर अरज कीधी—जैसळमेर सु म्हारै कोई काम नही हुवै। ठीड भाटीया रो कदीम ऊतन छै। नै पोकरण सदा म्हारी छै। म्हारी जागीर माहै पातसाही दफतर लीखीजै छै। हजरत फरमाण कर दै तो माहारी हरभांत कर उरी लेवा।—नैणसी

हरभू हरभौ—देखो 'हडवू' (रू. भे)

उ०—पछै उठारा चढिया साखला हरभौं रै गाव वेंहगटी आया। हरभौं जी सौंणी हुता।—नैणसी

हरम–स पु [अ.] १ महल या राज-प्रासाद का वह भाग या कक्ष जिसमे रानिया रहती है, जनान खाना, अन्तःपुर।

उ०—१ पातसाह री हजूर अमराव ममूसाह, मीर गाभरू, सु हरम री खुटक नै मुरगाव्या पगा उवांणा सो तीजै भाई नू आपडियो थो सु आ घणी वात छै, सु ऐ पचीस हजार घोडा रा धणी दिलगीर थका वैठा था।—नैणसी

उ०—२ गहिर महिर अलावदीन, राघव, हकारीय, नयण नारि निरखेवि, देखीइ हरम हमारीय।—प. च चौ.

उ०—३ नित नाम जपै जे निजमन करि अति नरम। हरखै ते पहुचै, मुगति-रमणि ने हरम।—ध व ग्र

२ अन्त पुर मे रहने वाला स्त्री-समाज।

[सं. हर्म्य] ३ बडा महल, अट्टालिका। (अ. मा)

उ०—जेहल ताळ खडीण व्हैं, तरवर लाकड होय। हरम ढहै ढूढा हुवै, जस अविकारी जोय।—वा दा.

४ मक्के के आसपास का वह क्षेत्र जिममे किसी जीव की हिंसा करना महापाप माना जाता है।

५ गुदद।

६ बुढापा,।

स. स्त्री.—७ पत्नी, स्त्री।

८ वादशाह की वेगम।

उ०—मोकलाणि सरोवरि हुतउ, हरम सहित्त आणयउ जीवतउ। साहमु राउल माडहीइ गयउ, मालदेव सिर नामी रह्यउ।
—का. दे. प्र

९ वह स्त्री जिसे पत्नी बना कर रख लिया गया हो, रखेल।

१० दासी, वादी, चेरी।

रू. भे —हरम्म, हरम्य, हुरम, हुरंम, हुरम।

हरमखांनो–स पु. [अ. फा] जनानखाना, अन्त:पुर।

रू. भे.—हुरमखानो।

हरमजदगी—देखो 'हरामजादगी' (रू. भे.) (मा. म)

हरमजादो—देखो 'हरामजादो' (रू भे)
(स्त्री. हरमजादी)

हरमजी-दाडिम–स. पु. यौ.— एक प्रकार का अनार। (व स)

हरमज्जि–सं स्त्री.—एक प्रकार की हरी सब्जी।

उ०—हनुमती नइ हहवडी, हीराउलि हरमज्जि। हाथाजोडी हीकणी, हेला आवइ कज्जि।—मा का प्र.

हरमल–स स्त्री —एक प्रकार की भाडी जो करीव डेढ दो हाथ ऊची होती है।

हरमी-खजूर–स. पु. यौ.—एक प्रकार का खजूर, छुहारा।

उ०— चगाल खजुर, फउद खजुर, पेंमी खजुर, रतवी खजुर, नवइसाक खजुर, मधुफलद खजुर, हरमी-खजुर, मधुरु माकडु, दीप सिखा समान।—व. स

हरमीजीसीरु–स पु यौ —एक प्रकार का फल।

उ०—हरमीजीसीरु, आदनी सखु, सेलडीना कटकडा, तरुणा करणा नागिगा जत्रीरा कमरक दोडगा सदाफल...... ।—व स.

हरमेखलिक–वि.—सिद्धाई रखने वाला, सिद्ध।

उ०—भोजिक सूपकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य व्रखभवैद्य मत्रिक तत्रिक गारुडिक हरमेखलिक लेखक कथक कविकर तालचर कविराज सभ्य सभापति ... .। —व. स.

हरम्म हरम्य–स पु [स हर्म्य] १ राजभवन, महल।

उ०—१ चले कुचार वार को सुचार मै चलावनो। हुले हसति हिवकली हरम्म को हलावनो।—ऊ का.

उ०—२ दसा विसम्य सम्यहा अगम्य गम्य है नही। रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नही।—ऊ का.

२ हवेली, वहुत वडा मकान।

३ देखो 'हरम' (रू. भे)

हरयंदुदर—देखो 'हरियदुदर' (रू. भे) (अ. मा)

हररथ–स. पु यौ. १ शिव का नन्दी।

हरताळ, हरताल–स. स्त्री [स हरिताल] संखिया और गंधक के योग का एक खनिज पदार्थ, उप धातुग्रो मे से एक, गोदंत। (अ मा.)
वि —१ पीला, पीत। * (डिं. को.)
रू भे.—हरिताल, हरियाळ, हरियाल।
२ देखो 'हडताल' (रू भे)

हरतेज–स पु [स. हरतेजस्] पारद, पारा।

हरत्ता—देखो 'हरता' (रू भे.)
उ०—तु ही करत्ता धरत्ता भुवन त्रिय भरत्ता हित तु ही। तु ही नाही मरत्ता अभय भय हरत्ता नित तु ही।—ऊ का.

हरथानक–स. पु. [स. हर-स्थानः] १ शिवमन्दिर, शिवालय।
२ हिमालय पर्वत।
[स हरि-स्थान'] ३ विष्णु का मन्दिर।

हरद—देखो 'हल्दी' (रू भे.)

हरदम–क्रि. वि. [फा] १ प्रति क्षण, हर-क्षण, हर वक्त, हर समय।
उ०—१ दादू हरदम माहि दिवाण, सेज हमारी पीव है। देखू सो सुबहान, यह इस्क हमारा जीव है।—दादूवाणी
उ०—२ अठै करणी तो जूनां कैदया वेगी की कोनी, पण पुराणा कैदी तो करणी सूं भारी हमदरदी दिखाळै। करणी रै मुढै माथै हरदम ऊमर कैद री डरावणी सूनाळ नीद लेवै है।—दसदोख
उ०—३ उठता-बैठता, खावता-पीवता हरदम उण री आख्या रै आगै वा काळी अंधारी मौत सू ई डरावणी रात फिरण लागती।
—अमरचूंनडी
२ निरन्तर, लगातार।
उ०—माटी नै पगा हेटै खूदणा सूं हरदम औ चेतो रंवै के वगन आया आ माटी अपानै पाछी खूंदैला।—फुलवाडी
३ सर्वदा, सदा।
उ०—जठै ब्राजै रे राम कस्ण महाराज। ज्यारै हरदम रे हरिजी सू काज।—गी रा.
रू भे—हरधम।

हरदय—देखो 'हिरदौ' (रू भे.)

हरदास—देखो 'हरिदास' (रू भे.)
(स्त्री हरदासी)

हरदासियौ—देखो 'हरिदास' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—हर भज रे हरदासिया, दाखै ईसरदास। मोल लिया सू नहि मिळै, कोट मोहर इक सास।—ह र.

हरदासी—देखो 'हरिदासी' (रू भे) (अ. मा)

हरदी—देखो 'हळदी' (रू भे) (अ मा.)

हरदोखी, हरदोसी–स. पु. यौ [स हर+दोषी] कामदेव, मदन।
(डिं. को)

हरदौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे.)
उ०—आठो पहर अखाडै आनद, झरणम्रत झरजावै। हरदा वीचि हुवै हरियाळी ठीक आख ठर जावै।—ऊ. का.

हरद्वान–स पु.—एक स्थान का नाम जहाँ की तलवार प्रसिद्ध है।

हरधम देखो 'हरदम' (रू. भे.)
उ०—नमो हरधम निराकार, नमो निगम निरुपन। नमो अवचळ नमो अनुभै, नमो एक अनूपन।—अनुभववाणी

हरन—१ देखो 'हिरण्य' (रू भे.) (ह ना मा.)
२ देखो 'हिरण' (रू भे.)
३ देखो 'हरण' (रू भे)
उ०—करि सहाय कमलासन केरी। हरन दनूज दसो दिस हेरी।
—मे म.

हरपुर–स पु. [स.] १ शिव-धाम, कैलाश।
२ देखो 'हरिपुर' (रू भे)
उ०—चीतवियउ चहवाणि, जउहर की माडउ जुगति। हुय हुइस्या हरपुर दिसा, वेगावेगि विहाणि।—अ वचनिका

हरपैडी, हरपैंडी—देखो 'हरिपैंडी' (रू. भे)

हरप्रि, हरप्रिय–स पु [स हर+प्रिय] १ धनपति कुवेर। (ना. मा.)
२ देखो 'हरिप्रिय' (रू भे.) (अ. मा)

हरप्रिया–स स्त्री. [स हर+प्रिया] १ उमा, पार्वती।
२ दुर्गा, भवानी।
३ देखो 'हरिप्रिया' (रू भे) (अ मा)

हरफ–स पु [अ हर्फ] १ अक्षर, वर्ण।
२ शब्द, आवाज।
उ०—दूजा रा मन ल्यै, आप तो होठा सू हरफ ही नही काढै। पिडतजी हा ! हा ! कर'र हस्या अर फूलचदजी रै घर री गळी लीनी।—दसदोख
३ दोष, ऐब, बुराई।
४ लक्ष्य, निशान।

हरफगीर–वि [अ फा. हर्फगीर] १ बहुत बारीकी से अक्षर-अक्षर का गुण-दोष निकालने वाला।
२ ऐब या गलती निकालने वाला, छिद्रान्वेषी।
३ आलोचना करने वाला आलोचक।

हरफगीरी–स. स्त्री. [अ फा. हर्फगीरी] १ हरफगीर का कार्य या धर्म, छिद्रान्वेषण।
२ आलोचना।

हरफोरवडी–स. स्त्री.—कमरख की जाति का एक वृक्ष विशेष जो अति सुन्दर होता है तथा जिसके गूलर के आकार के खट्टे-मीठे फल

उ०—हररथ माठी होय, सक्रत रथ होयै सयाणौ। मितरथ देवै पूठ घटै उतराध पयाणौ। —चौयवीहू

२ बैल। (ह ना मा)

३ देखो 'हरिरथ' (रू भे)

हरराणी—स. स्त्री. [स. हर+राज्ञी] १ उमा, पार्वती।

उ०—तज वरम्रण कुळवाट समर्थ आपो एडो। मिव हरराणी हेत चढ़ण नै सरणी जेडो।—मेघ

२ देखो 'हरिराणी' (रू भे.)

हरराट—देखो 'हरडाट' (रू. भे.)

हरराया—स पु.—विष्णु।

हररोज—क्रि. वि —नित्य, प्रतिदिन, रोजाना।

हरलोयण—स पु [स. हर+लोचन] १ शिव का नेत्र।

२ तिकोनी वस्तु। *

वि.—त्रिकोण। * (डि को)

हरवकत, हरवक्त, हरवखत—क्रि वि. [फा. अ हरवक्त] हर क्षण, हर समय, हर दम।

उ०—फाजल हरवखत इयै धारणा मैं डूब्योडो रैवै। पण जेळ मैं आ बात जावक निजोरी।—दसदोख

हरवळ—देखो 'हरावळ' (रू. में)

उ०—१ पछै कटक कर राव कोटवाळ हरवळ हुवा।

—मुंदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता

उ०—२ पेखै चद हरवळ खळ पाडै। उरडै फोजा वाग उपाडै।

—सू प्र.

हरवळी—देखो 'हरावळी' (रू. भे.)

हरवल्ल—देखो 'हरावळ' (रू भे)

उ०—१ इंदा आहव आगळा, पडिहारा पण भल्ल। हुरवल्ला आगै हुवा, चढै अलल्ला मल्ल।—रा रू

उ०—२ लोधा हलकौ साथ सह, आप हुवा हरवल्ल।

—गज-उद्धार

हरवाम, हरवांमा—सं. स्त्री. [स. हर+वामा] १ उमा, पार्वती।

२ गगा।

३ देखो 'हरिवामा' (रू. भे.) (अ मा)

रू भे—हरवाम, हरवामा।

हरवाइ, हरवाई—स स्त्री —नीचता, कुकर्म, दुष्टता।

हरवाहण, हरवाहन—स पु [म हर+वाहन] १ शिवजी की सवारी, नन्दी।

२ बैल।

३ देखो 'हरिवाहण' (रू भे.)

हरवौ—देखो 'हळवौ' (रू भे)

हर-सकरौ—स पु.—एक प्रकार का मादक पदार्थ विशेष।

उ०—इण भात तमासो करता पाछली चौघडियो आय रह्यो छै। अमला री वखत हुवौ छै। तद खिजमतगारा नै हुकम हुवौ छै—सतावी सू हर-सकरौ तयार कीजै। सू हर-संकरै री तयारी कीजै छै। सू हर-सकरौ किण भात रौ छै। भागेपुर घोटिया री पीडी घणौ मसाला समेत री आणजै छै। गळिया अमल मे भाग गाळजै छै। फेर दारू सू उलटाय काढजै छै। रूमाल सू तिवारा छाणजै छै।—रा. सा स.

हरस—म पु [म हर्ष] १ आनन्द, खुशी, प्रसन्नता।

उ०—गिउ कौरवाधिपति सैन्य समस्त हारी, गिउ पारथ उत्तर सहित मनु हरस भारी।—सालिसूरि

२ उत्फुल्लता, प्रफुल्लता, रोमाच।

३ सयोग शृगार के अन्तर्गत साहित्य मे एक सचारी भाव जिसमे प्रसन्नता के कारण रोए खडे होने या चेहरे पर कुछ पसीना आने की क्रिया होती है।

४ धर्म के तीन पुत्रो मे से एक।

५ देखो 'हरसवरद्धन'।

रू भे—हरक, हरक्क, हरक्ख, हरख, हरन्ख, हरिख, हरिखि, हरिस, हरीख।

हरसक, हरसकर—वि. [स. हर्षक, हर्ष-कर] आनन्दप्रद, प्रसन्न-कारक, खुश करने वाला।

हरसकीलक—सं पु [म हर्ष+कीलक] कामशास्त्र के अनुसार एक आसन।

हरसखा—स. पु [स] धनपति कुबेर। (ह ना मा)

हरसचरित—स. पु [स हर्ष-चरित्र] बाणभट्ट द्वारा रचित एक सस्कृत गद्य-काव्य, जिसमे सम्राट हर्षवर्द्धन के जीवन वृत्त का वर्णन है।

हरसण—स पु [स हर्षण] १ कामदेव के पांच बाणो मे से एक।

२ काम की तीव्रता से पुरुष की इन्द्रिय का तनाव।

३ एक नेत्र रोग विशेष।

४ श्राद्ध कर्म का अधिष्ठाता एक देवता।

५ फलित ज्योतिष के २७ योगो मे से चौहदवा योग।

स स्त्री—६ प्रसन्न या खुश होने की अवस्था या भाव।

७ प्रसन्नता, खुशी।

८ एक प्रकार का श्राद्ध।

वि—१ आनन्द दायक, प्रसन्न कारक।

२ हर्ष-उत्पादक।

रू. भे—हरखण।

हरसणाकल—स स्त्री —हर्ष ध्वनि।

उ०—जिम आकासि माहि सरव पदारथ आवड तिम दधि दुरवा अक्षत चदन कुमम कुकम, पूज्य वृद्धासीरवाद, द्व दमतूरघनिनाद, विवाहादि हरसणाकल, अनेरायइ पुत्र जन्मादि महोत्सव ....।

—व. स.

हरसणौ, हरसवौ—क्रि अ [स हर्षण] १ खुश होना, प्रसन्न होना,

'अगजीत' पूजै ।—प्रतापसिंह ऊदावत री गीत

उ०—२ कूरमा नाथ जगा धार आटीपणै, सामी फौजा फाटीपणै हरामी सधीग । आसमान फाटै थाभो लागतौ ऊछाटी पणौ, माटी पणै थारै झोका लागै मानसीग ।—महादान महडू

४ मुफ्तखोर, हरामखोर, निकम्मा ।

अल्पा.—हरामडौ

हरांमीखोर—देखो 'हरामखोर' (रू भे)

उ०—मति गति लखै न कोय, राम तुम सब के दाता । जीव हरामीखोर, अहूँ माया मद माता ।—ह. पु. वा.

हरा–स स्त्री —१ उमा, पार्वती, गिरिजा । (अ. मा; ह. ना. मा.)

२ हरितकी, हर्रे, हरड । (अ. मा.)

हराउळ—देखो 'हरावळ' (रू भे)

हराड–स स्त्री.—हार, पराजय ।

उ०—मन चीता न मीटै चत्र मासै, जैत हराड जाणौ । घुरै नगारौ कहै कंथ घरणी, प्रसण भगा तज पाणौ ।

—ठाकुर रामसिंह री गीत

हराणौ, हरावौ–क्रि. स. [स ह] १ युद्ध, लडाई, द्वन्द्व या प्रतियोगिता मे अपने प्रतिपक्षी को परास्त करना, हराना, शत्रु को पछाडना ।

२ शिथिल करना, थकाना, नाकामयाव करना ।

३ तर्क या युक्ति द्वारा हार मानने के लिए विवश करना, निरुत्तर करना ।

४ हरण करने या चुराने के लिए प्रेरित करना ।

उ०—देवी लख्खण राम पीछै पठाई, देवी रावण रूप सीता हराई ।

—देवि

हराणहार, हारौ (हारी), हराणियौ—वि० ।

हरायोडौ— भू० का० कृ० ।

हराईजणौ, हराईजबौ —कर्म वा० ।

हरावणौ, हरावबौ, हारावणौ, हारावबौ—रू० भे० ।

हराद–स पु [स. ह्लाद] ध्वनि, आवाज ।

उ०—वळि निसिवान हराद नाम वदि । की गजराज आवाज पुकार ।—ह. ना. मा

हरायण, हरायणौ–स पु —१ हरे होने की अवस्था या भाव, हरितता ।

२ हरे रग या वर्ण की झलक ।

हरायत–स. पु.—१ सदेश वाहक, खवर नवीश ।

२ देखो हेरायत' (रू. भे)

उ०—पछै लाहौर सू फौज लाख अेक सू दिल्ली चलाय आया । अर दिल्ली मैं पातसाह हमायू थौ सू भाज नीसरियौ नै हरायत गयौ छुछम साथ सू । पीछै सूरसा नै सलेमखा दिल्ली रै गढ दाखल हुवा ।—द. दा

हरायोडौ–भू. का. कृ.—१ अपने प्रतिपक्षी को परास्त किया हुआ, शत्रु को पछाड़ा हुआ २ शिथिल किया हुआ, नाकायाव किया हुआ, थकाया हुआ. ३ तर्क या युक्ति द्वारा हार मानने के लिए विवश किया हुआ. ४ हरण करने या चुराने के लिए प्रेरित किया हुआ (स्त्री. हरायोडी)

हरारत–स. स्त्री [अ.] १ मंद ज्वर, हल्का ज्वर, बुखार का हल्का सा असर ।

२ गर्मी, उष्णता ।

हरालउ–वि —हर्षित ।

उ०—तीह कूयरह तीह कूयरह माहि दो वीर । इकु अरजुनु आगलऊ अनइ करणु हीयडइ हरालउ ।—सालिभद्र सूरि

हरावणौ–वि (स्त्री. हरावणी, हरावनी) १ हार या पराजय दिलाने वाला ।

२ हराने वाला, पराजित करने वाला ।

उ०—हरामखोर चोर पौ कुहाक दे हरावणौ । कराळ कठ कनीय उक्तनी डरावणौ ।—ऊ. का.

३ हरण कराने वाला ।

हरावणौ, हरावबौ—देखो 'देखो 'हराणौ, हरावौ' (रू. भे) (उ. र.)

उ०—१ जे पासा वईनि हरावु ते अह्मो छूं, महाराज ।

—नळाख्यान

उ०—२ चरण चारिहिं हस हरावती । वचनि जीणइ जीती भारती ।—सालिसूरि

उ०—३ पवन चदनगध हरावतउ । वदनि वासि वसइ दिसि वासतु ।—सालिसूरि

हरावणहार, हारौ (हारी), हरावणियौ—वि० ।

हराविओडौ, हरावियोडौ हराव्योडौ—भू० का० कृ० ।

हरावीजणौ, हरावीजबौ—कर्म वा० ।

हरावळ हरावल–पं. पु [फा] १ सेना का अग्र भाग ।

२ फौज मे सब से आगे चलने वाला सिपाहियो का दल ।

३ अग्र भाग, आगे का हिस्सा ।

उ०—दूर अगूणा परवता री हरावळ रै लारै सूं परभात री गेरौ कसूमल पल्लो अवार ताई अधारै माय सिमट्यौ पडचौ हो ।

—तिरसकू

रू भे.—हरवळ, हरव्वळ, हरव्वल, हराउळ, हरोळ, हरोल, हरोळाई, हिरावळ, हिरौल ।

हरावियोडौ - देखो 'हरायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. हरावियोडी)

हरास—१ देखो 'ह्रास' (रू. भे)

२ देखो 'हरारत'

हराहर–स पु —सोलकी क्षत्रियो की एक शाखा ।

हरि–स. पु [स] १ ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा । (ना. मा)

उ०—१ साभळि अनुराग थयौ मनि स्यांमा, वर प्रायति वछती

स. पु —१ अधर्म, पाप।

उ०—१ आपरा सत आगै तौ म्हारी अकल कह्यौ ई नी करै। पूतळी री कारीगरी रो एक टको ई लेवणौ म्हारै वास्तै हराम है।

—फुलवाडी

उ०—२ हराम का हठवाडा, हराम जादु की हाट, खोटु का खजाना, परं तु की पाट।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ मिनख मारणिया सू लोग वात करणी ही माडो काम समझै। घर रो पाणी पीणी ही हराम गिणै।—दसदोख

२ बुराई।

३ स्त्री-पुरुष का नाजायज सम्बन्ध, व्यभिचार।

४ निषिद्ध की हुई वस्तु।

मुहा.—हरांम मूंडै लागणौ=बुरी आमदनी का चस्का लगना, रिश्वत की आदत पडनी, मुफ्त का माल खाने की प्रवृत्ति बननी।

हरांम री कमाई=रिश्वत की आय, चोरी का माल, नाजायज ढग से की जाने वाली कमाई, काला बाजारी।

हराम समझणौ=बुरा व अनुचित समझना, पाप समझना।

(नींद) हरांम होणौ=जीना दूभर होना।

(रोटी) हराम होणौ=सुख मे दुख आना, रस बेरस होना, विषमय वातावरण होना।

हरामकारी—स. स्त्री. [अ फा. हरामकारी] पर-स्त्री गमन, व्यभिचार।

हरामखोर—वि [अ. फा. हरामखोर] १ कृतघ्न, नमक हराम।

उ०—१ पछै लाखै' री मा, 'लाखै' री राजलोक आयी। खेत माहे लाखो' पोढियो छै। जीव नही नीसरियो छै। ताहरा राखायत निजीक पडियो दीठो। ताहरा लाखै' री राजलोक कहण लागो—'ओ हरामखोर अठै क्यू पडियो ? दूर करो।' तरै लाखोजी बोलिया—'ओ राखायत सामधरमी छै हरामखोर नही छै।

—नैणसी

उ०—२ लायो मस्तक काटकर, हरामखोर नू मार। आवै सारो लोग जे हमैं करो करनार।—गोपाळदास गौड री वारता

२ अनुचित रूप मे धन कमाने वाला, हराम की कमाई खाने वाला।

३ कामचोर, निकम्मा, मुफ्तखोर।

४ दगाबाज, धोखेबाज।

उ०—१ होळे सी कुवरजी नूं जगाइया अर कही जे हरामखोर बाहर खडा छै।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ मूडी भूडो बापडा चोणिया रो जो काकड री मायली कानी ई पग देय दे। पग कलम नी कर नासू हरांमखोरा रा।

—अमरचूनडी

रू भे —हरमखोरो, हरामखोरो, हरामीखोर।

हरामखोरी—स स्त्री [फा. हरामखोरी] १ हरामखोर का कार्य।

२ कृतघ्नता, नमकहरामी।

उ०—इसडी हरामखोरै हरामखोरी की, तिण ऊपरि रामसिंघजी बुलावण नू आया समाधि पूछिवा।—द. दा.

३ कामचोरी, मुफ्तखोरी, निकम्मापन।

४ पाप की कमाई, चोरी।

५ धृष्टता, बदमाशी।

उ०—तद कुसळसिंह कही हरामखोरी म्हा कीवी, बीजा ऊभोडा किसी म्हासू परभारी साम-धरमी कीवी।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

हरामखोरौ—देखो 'हरामखोर' (रू भे.)

उ०—आमेरनाथ कौ लून खाय, ल्यौ हरामखोरौ उठाय। जो करहि चेत 'जगतेस' राय, तव काढि खाल भूमी भराय।

—ला. रा.

हरांमडौ - देखो 'हरामी' (अल्पा, रू भे)

उ०—हरीया देख हरामडौ, रोस न कीजै राम। अब तो तेरो हुय रह्यो, और न मेरै काम।—अनुभववाणी

हरांमजादगी—स स्त्री. [फा हराम+जादगी] १ हरामजादे का कार्य, हरामखोरी।

२ धृष्टता, कृतघ्नता।

३ चोरी, बेईमानी।

४ दुष्टता, बदमाशी।

५ मुफ्तखोरी, निकम्मापन।

६ दोगलापन।

रू भे —हरमजदगी।

हरामजादौ—वि. [अ फा हरामजाद] (स्त्री हरामजादी) १ हराम की औलाद, दोगला, जारज, वर्णसकर।

२ धूर्त, दुष्ट, पाजी।

३ हरामखोर, निकम्मा।

रू. भे —हरमजादौ।

हरामी—वि [अ हरामी] १ हराम की पैदाइस, व्यभिचार से उत्पन्न, दोगला।

उ०—मर स्साळा हरामी तेरी . .. .थाणादार एक बजनी गाळ ठरकाय दी अर कागदिया पूरा करनै मुलजिम नै हवालात मैं बंद कर दियो।—अमरचूनडी

२ दुष्ट, धूर्त, पाजी।

उ०—आ भूल कीरै वगी ? कूडी कलम कैया चाली ? मुनीम दोनू हरामी, इन्याव रा काम करै। हरगज तीन सौ नी हाकरै।

—दसदोख

३ कृतघ्न, नमकहराम।

उ०—१ कुळ अजस धरै जोय 'पता' री पराक्रम, धणी रा हरामी जका धूजै। प्रवाडा सदा नत नवा खाटै 'पतो', 'पता' रा भुजा

रू भे —हर, हरी।
ग्रल्पा —हरियौ।
हरिग्राळी—देखो 'हरियाळी' (रू. भे)
हरिक-स पु [स.] १ पीले या भूरे रग का घोडा।
२ जुआरी।
३ चोर।
वि.—पीला-हरा। (डि. को)
हरिकथा-स स्त्री [स हरि+कथा] १ ईश्वर के अवतारो एव चरित्रो का वर्णन, कथानक।
२ उक्त कथानको के सग्रह की पुस्तक।
हरिकाय-स पु. [स हरितक] शाकाहार, फलाहार।
उ—कद मूल फल वीज नो, भोजन हरिकाय। साध ने भोगवणी नही, पाप दोखण थाय।—जयवाणी
हरिकीरतन, हरिकीरत्तन-स पु [स हरिकीर्त्तन] भगवान के नाम का कीर्त्तन, भजन, गायन।
रू भे —हरीकीरतन, हरीकीरत्तन।
हरिकेत-स. पु.—एक तीर्थ का नाम।
उ०—भूतेस्वर भूयतलि खरू, हरिस्चद्र हरिकेत। वइतरणी-विचि थई जता, सरगि सधावइ प्रेत।—मा का प्र.
हरिकेस-स पु [स. हरिकेश] १ सूर्य की एक कला।
२ शिव, महादेव।
हरिकेसि, हरिकेसी-स पु [स हृषिकेश] १ श्री कृष्ण।
उ०—तडि पहुतउ जल गाहिय, नाहिय प्रभु हरिकेसि। मानि न परियण उत्सव कुत्स वयण म भणेसि —जयसेखर सूरि
२ एक ऋषि चाडाल कुल मे उत्पन्न होने पर भी सयम प्रताप से ऋषीश्वर हो गये।
उ०—ऊचै कुल 'ब्रह्मदत्त' हुवौ, नीचै कुल हरिकेसी रे।
—जयवाणी
हरिक्षेत्र-स पु [स] पटना के पास का एक तीर्थ स्थान।
रू भे —हरिखेत, हरिखेतर।
हरिख-स पु.—१ एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम चार ह्रस्व तथा फिर दो दीर्घ वर्ण इसी क्रम से बारह वर्ण होते है। (ल. पि)
२ देखो 'हरस' (रू भे)
उ०—सकल लक्षण सुदरी, जाणै रभानु अवतार। नयणे निरखी हरिख पाम्यु विप्र तेणि ठार।—नळाख्यान
हरिखि—देखो 'हरस' (रू भे)
हरिखेत, हरिखेतर—देखो 'हरिक्षेत्र' (रू भे)
हरिगीतिका-स. स्त्री [स] अट्ठाईस मात्राओ का एक छन्द जिसकी पाचवी, बारहवी, उन्नीसवी और छब्बीसवी मात्रा लघु होती है। सोलह व बारह पर यति होती हे तथा अन्त मे लघु गुरु होता है।

हरिचद—देखो 'हरिस्चद्र' (रू. भे.)
उ०—१ सतवादी हरिचद से राजा, नीच घर नीर भरै। पाच पाडु ग्रर कुती द्रोपदी, हाड हिमाळय गरै।—मीरा
उ०—२ धु कवार ग्रप मोरधुज, ग्रवगीत हरिचद। पद गेया परि पडवा, की नव कोट नरिद।—रा. रू.
हरिचंदण, हरिचदन-स. पु. [स.] १ एक प्रकार का चन्दन विशेष।
२ स्वर्ग का एक वृक्ष।
उ०—१ कळपव्रक्ष मतान, पारिजाती हरिचदण। तर मंदार दुवार, ग्राण ऊगा सुत ग्रप्पण।—रा. रू
उ०—२ मदार पारजाती रतन, हरिचदन संतान तर। परगियो 'ग्रभै' व्र दा विपन, कुज पुज तरवर निकर।—रा. रू.
रू भे.—हरचदण, हरचनण, हरीचदण, हरीचंदन।
हरिचरित, हरिचरित्र-स. पु.—ईश्वर का चरित्र या उसका गुणगान।
रू. भे.—हरीचरित, हरीचरित्र।
हरिचाप-सं. पु. [स] इन्द्र धनुष।
हरिजख-स. पु [स. हर्यक्ष] सिंह, शेर। (ह ना मा)
रू. भे.—हरजक्ष, हरीजख।
हरिजटा-स. स्त्री [स] रावण की ग्रनुचरी एक राक्षसी, जो अशोक वाटिका मे सीता को समझाने के लिये नियुक्त थी।
रू. भे.—हरजटा
हरिजण, हरिजन-स. पु [सं हरि+जन] १ ईश्वर का भक्त।
उ०—जो रज हुवा ज वया भरा, उडि उडि लागै ग्रग। हरीया हरिजन जाणीयै, जैसा पाणी रग।—ग्रनुभववाणी
२ भगी, मेहतर।
उ०—एकली बैठी झूमी कळपै-कुढै। वठै मा'रजा, हरिजण बाळका मैं रीझै-मुळकै।—दसदोख
हरिजस-स. पु [स हर्यश्व] १ दृढाश्व के पुत्र एक सूर्यवशी राजा।
[स. हरियश] २ ईश्वर का यश, ईश्वर की कीर्त्ति जो भक्तो द्वारा बखान की जाती है, भक्तो द्वारा गाई जाती है, ईश्वर का स्तुति-गान।
३ देखो 'हरिकीरतन'।
हरिण-स पु [स हरिण] (स्त्री हरिणी) १ एक सीगदार प्रसिद्ध चौपाया जगली जानवर, मृग, हिरन। (ग्र. र)
उ०—सर साधी राउ केडइ धाइ, हरिणउ हरिणी सहितु पुलाइ।
—सालिभद्र सूरि

वि. वि —इसके शरीर के बाल अत्यन्त मुलायम होते हैं और इसकी खाल ऋषि-मुनियो के पहनने के काम आती है। इसके नेत्र बडे सुन्दर होते है जिनकी उपमा स्त्री के सुन्दर नेत्रो को दी जाती है (मृगनयनी)। यह चौकडिया भरते हुए अत्यधिक तेज दौडता है। हिरन प्राय सफेद, पीले व काले रग के होते हैं, इनका कद

वर। हरि गुण भणि ऊपनी जिका जिका हर, हर तिणि वदै गवरि हर।—वेलि
उ०—२ वप रूप ओप नव घन वरण, हरण पाप-त्रय-ताप-हरि। गुण मान दान चाहे सु ग्रहि, कवि सुग्यान औ ध्यान करि।
—रा. रू
उ०—३ हरीया सब हरि हाथि हे, हरि मारै जीवारि। हरि धारै जो कुछि करै, त्यै डूबता तारि।—अनुभववाणी
२ विष्णु।
उ०—हेलौ कवि हिंगळाज रो, कान करो करनैल। खाथी डग मारग खडो, हरि हाथी री हेल।—मे म
३ श्रीकृष्ण। (अ. मा)
उ०—१ नर मारगि एक एक मगि नारी, क्रमिया अति उछाह करेउ। अकमाळ हरि नयर आविवा, वाहा तिकरि पसारी वेउ।
—वेलि
उ०—२ पुरातन प्रीत जिसी हरि पथ, राजा लोमज हनै दसरथ।
—रामरासौ
४ श्रीरामचन्द्र, श्रीराम।
५ ब्रह्मा।
६ इन्द्र।
उ०—वग रिखि राजान सु पावसि बैठा, सुर सूता थिउ मोर सर। चातक रटै वलाहकि चचळ, हरि सिणगारै अवहर।—वेलि
७ सूर्य, रवि। (ह ना मा)
८ शिव, महादेव।
उ०—हरि कहइ जिके करि भाव घणइ हित, दासा तिया तणउ हूं दास।—महादेव पारवती री वेलि
९ चन्द्रमा, चाद।
१० वायु हवा।
११ अग्नि, आग।
१२ कामदेव, मदन। (ह ना मा)
१३ मानव, मनुष्य।
१४ यमराज।
१५ शुक्रग्रह।
१६ सिंह, शेर। (डि. को)
१७ हाथी, गज।
उ०—रथ पदाति रूपक तणा स्वामी नीलजण रिद्धजस हरि एरावण मातलि दामिठ्ठी हरिणेगमेखी सरवागि सन्नाह पेहिरि, द्रढ कसा वांधि, धनुखि गुण चडावी रह्या।—व. स
१८ वानर, वदर, लगूर। (ना मा)
१९ अश्व, घोडा।
२० इन्द्र का घोडा।
२१ हिरन, मृग। (ह ना मा)
२२ भ्रमर, भौंरा। (ह ना मा.)
२३ मयूर, मोर।
२४ तोता, कीर।
२५ गीदड।
२६ हंस।
२७ जल, पानी।
उ०—हरि नै कहा, हरि नै सुना, हरि गये हरि कै पास। हरि तौ हरि मैं गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात
२८ सर्प, सांप।
उ०—हरि नै कहा, हरि नै सुना, हरि गये हरि कै पास। हरि तौ हरि मैं गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात
२९ मेढक।
उ०—हरि नै कहा, हरि नै सुना, हरि गये हरि कै पास। हरि तौ हरि मैं गयै, हरि भयै उदास।—अग्यात
३० एक प्राचीन पर्वत।
३१ एक वर्ष या भू भाग का नाम।
उ०—तेह युगलीयाना च्यारि भेद, छप्पन्न अतरदीप १ हैमवत, हैरण्यवत २ हरि वा रम्यक तणा ३ देवकुरु उत्तरकुरु ४ एक ठि पाहि अनुक्रमइ अनत गुण वल रूव सुख ......।—व स
३२ गरुड के पुत्रो मे से एक।
३३ भर्तृहरि का नामान्तर।
३४ तारकाक्ष का पुत्र एक असुर।
३५ तामस मन्वन्तर का एक देवगण।
३६ भूरा या पीला रग।
३७ जैनियो के ८८ ग्रहो में से उनचालीसवां ग्रह।
३८ छप्पय छन्द का ९ वा भेद जिसमे ६२ गुरु, २८ लघु से १५२ मात्राऐं तथा ९० वर्ण होते हैं। (र ज प्र)
३९ मतान्तर मे छप्पय छन्द का एक अन्य भेद जिसमे ५५ गुरु तथा ४२ लघु मात्राऐं होती हैं।
स स्त्री—४० किरण, रश्मि।
४१ सिंह राशि।
४२ इच्छा, कामना।
४३ कोयल।
४४ घोडो की एक जाति। (इस जाति के घोडो की गर्दन पर बडे बडे वाल होते हैं, शरीर के रोयें सुनहले रग के होते हैं)
वि—१ भूरा, कपिल, वादामी।
२ पीला।
उ०—लाल हरी सिकळात, जिलह जाळिया अजीदा। रसा कसै रेसमा, हेम रूपी हरि हौदा।—सू प्र
३ हरा, धानी।
४ काला-सफेद। (डि को)

२ पीला।
३ धानी।
रू. भे.—हरत।
हरितकाय-स पु.—शाक-सब्जी। (जैन)
हरितकी—देखो 'हरीतकी' (रू. भे.)
हरितमणि-स. स्त्री. [स.] पन्ना, मरकत।
हरिताळ, हरिताल-स. पु [सं हरिताल] १ पीले रग का कबूतर।
२ देखो 'हरताळ' (रू. भे.)
रू भे.—हरियाळ, हरियाल।
हरिताळिका, हरितालिका-स. पु. [स. हरितालिका] १ भाद्र शुक्ला चतुर्थी।
२ दूर्वा घास, दूब।
रू भे.—हरिताळी।
हरितालिका-व्रत-स. पु. यौ [स.] भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को किया जाने वाला व्रत विशेष।
हरिताळी, हरितालो-स. स्त्री —१ तलवार का धारदार अग्र भाग, तलवार की धार।
२ देखो 'हरितालिका' (रू. भे.) (डि. को.)
हरितिय-स स्त्री [स. हरि+तिय] १ सरस्वती, शारदा।
उ०—पीठ धरणि-धर पट्टडी, हरितिय चित्रण हार। तोइ तोरा चरिता तणौ, परम न लाभे पार।—ह. र.
२ लक्ष्मी।
हरिदरभ-स. पु. [सं. हरिदर्भ] हरे घोडे वाला सूर्य।
हरिदवार—देखो 'हरिद्वार' (रू. भे)
हरिदास-स. पु. [स.] (स्त्री. हरिदासी) १ ईश्वर का भक्त।
२ रामस्नेही सम्प्रदाय के एक महात्मा।
३ विष्णु भक्त।
रू भे.—हरदास।
अल्पा;—हरदासियो।
हरिदासी-स पु [स. हरिदासिन्] १ ईश्वर की भक्त, भक्तिन, साध्वी-स्त्री।
२ लक्ष्मी, रमा।
३ पार्वती।
४ रिद्धि-सिद्धि।
५ दौलत, माया।
रू भे.—हरदासी।
हरिदिन, हरिदिवस-स पु. [स.] विष्णु की उपासना का दिन, एकादशी।
हरिदिसा-स स्त्री. [स. हरि+दिशा] पूर्व दिशा।
हरिदेव-स पु [स.] १ विष्णु।
२ श्रवण नक्षत्र।

हरिद्वार-स. पु [स.] उत्तर भारत मे स्थित वह तीर्थ स्थान जहाँ पर 'गगा' पहाडों को छोड कर मैदान में प्रवेश करती है।
उ०—१ हरिद्वार कुरखेत जनकपुर, गोदावरी हुलासी। तीरथ बद्री प्रयाग गयाजी, कासी सरजर वासी।—मीरा
उ०—२ अनुहरता सुरघट अपारै, दीपै किरि भन्तरि हरिद्वारै। कोपि अगम ओपम नवकोटा, सम् गढ कोट करण गैलोटा।
—रा. रू
रू. भे.—हरिदवार।
हरिधनुख, हरिधनुस-स पु. [स. हरिधनुष] इन्द्र धनुष।
हरिधांम-सं. पु [स हरि+धाम] विष्णु लोक, स्वर्ग।
हरिध्रम-स. पु. [स. हरि+धर्म] १ ईश्वर का भजन।
उ०—विसै करम कुं सब कोई आधा, हरिध्रम सेती पाछा। जन हरिराम राम रस पीजै, छाडि सूवर गऊ वाछा।—अनुभववाणी
२ विष्णु धर्म।
हरिन—१ देखो 'हरिण' (रू. भे.)
२ देखो 'हिरण' (रू भे)
हरिनख-स. पु —१ बाघ का नाखून लगा एक तावीज।
२ एक प्रकार का शस्त्र विशेष।
वि वि.—देखो 'बाघनख'।
वि.—कुटिल, टेढा।
हरिननैणी-स. स्त्री —मृगनयनी।
हरिनाम-स. पु.—ईश्वर का नाम, स्मरण।
हरिनामी-स. पु —एक प्रकार का अशुभ रग का घोडा। (शा. हो)
हरिनाकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे)
हरिनाक्ष—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)
हरिनाथ-स पु [स] हनुमान का एक नामान्तर।
रू. भे —हरीनाथ।
हरिन्मणि-स स्त्री [सं] हरे रग की मणि, पन्ना।
उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुखराग वज्र वैडूर्य सूरयकात चंद्रकात नील महानील इद्रलील सवकर विभकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हसगरभ पुलक अक अजन अरिस्ट चिंतामणि।—व. स.
हरिपद-सं. पु [सं] १ स्वर्ग, वैकुण्ठ।
२ मोक्ष, मुक्ति।
३ वसत कालीन वह दिन जब दिन व रात बराबर होते है, २१ मार्च।
रू. भे.—हरीपद।
हरिपदि, हरिपदी-स. स्त्री. [स] गगा नदी का एक नाम, विष्णुपदी। (ह ना मा.)
रू. भे.—हरीपदि, हरीपदी।
हरिपुर-स. पु. [सं.] स्वर्ग, वैकुण्ठ।

वकरे के समान होता है, परन्तु इनकी कई नस्लें होती हैं जिनके अनुसार इनके रग व कद में विभिन्नता पाई जाती है। सबसे प्रसिद्ध हिरन 'वारहसिगा' होता है जिसके मुख्य दो सीगो मे से कई छोटे-छोटे अन्य सीग निकले हुए होते हैं। इसका रग काला होता है।

२ हस। ३ सूर्य।

४ विष्णु।

५ शिव।

६ सफेद रग।

७ ब्रह्मा।

वि.—१ श्वेत।

२ पीला।

३ देखो 'हिरण्य' (रू भे)

रू भे—हरण, हरन, हरिन, हिरण, हिरणण, हिरण्य, हिरन, हिरिण।

अल्पा—हिरणलौ, हिरण्यौ।

हरिणईख, हरिणख—१ देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे)

उ०—पहलाद सभरियौ ग्रायौ जमपति, चत्रभुज नमौ भगत री चाड। वहनामी रै दाढ तणै वळ, हरिणख तणौ जाणियौ हाड।

—पी. ग्रं.

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

हरिणनयणा हरिणनयणी-स स्त्री—मृग के नेत्रो के समान सुन्दर नेत्रो वाली स्त्री, मृगनयनी।

हरिणनाभ-स. पु—१ हरण्यनाभ नामक एक सूर्यवशी राजा।

उ०—सुत जय हरिणनाभ सुभियाणै। पुरव अव जै सुत इद्र प्रमाणै।—सू. प्र.

२ मृगनाभि जिसमें किस्तूरी होती है।

हरिणलौ—देखो 'हरिणी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—रानह न सिरजी हरिणलौ। सूरह न सिरजी धीणु गाई।

—वी दे

हरिणांकुस—१ देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे)

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू. भे)

हरिणाखी—देखो 'हरिणाक्षी' (रू भे)

उ०—जे कै घरि हरिणाखी नारि। तौ किम भमइ पार कइ वारि।—वी. दे.

हरिणाकस, हरिणाकुस—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे.)

उ०—कोपमान नरसिंघ रूप करि, विकट विराट वदन विकराळ। सोखै रगत असुर हरिणाकुस, प्रभु प्रहळाद भगत प्रतिपाळ।

—ह ना मा.

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—हरि हुए वराह हए हरिणाकस, हू ऊधरी पाताळ हू। कहौ तई, करुणा मैं केसव, सीख दीध किए तुम्हा सू।—वेलि.

हरिणाक्षी, हरिणाखी-सं स्त्री [स हरिणाक्षी] मृग के नेत्रो के समान सुन्दर नेत्रो वाली स्त्री, मृगनयनी।

उ०—१ हरि समरण रस समझए हरिणाखी, चात्रख खळ खगि खेत्र चढि। वैसै सभा पारकी वोलए, प्राणी वच्छइ त वेलि पढि।

—वेलि.

उ०—२ मुझ वर गयौ हरिणाखी नाखी दीध निरास, विलविलै राजुल आखीय भरि भरि नाखी निरास।—ध व. ग्र

रू. भे—हरणाख, हरणाखी, हरणाखी, हरिणांखी, हरिणाखी, हिरणाखी, हिरणाखि, हिरणाखी, हिरणाखिख।

हरिणि, हरिणी-स स्त्री [सं. हरिणी] १ मादा हिरन, मृगी।

उ०—जड तु पूछइहौ घरह नरेस। वन खड रहती हरिणि कइ वेस।—वी. दे

२ कामशास्त्र के अनुसार चित्रणी नामक स्त्रियो की जाति का नाम।

३ आर्या या गाहा छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे ७ गुरु और ४३ लघु वर्ण सहित ५७ मात्रायें होती हैं।

(ल. पिं.)

४ सुन्दर स्वर्ण प्रतिमा।

५ मोनजुही नामक लता।

रू भे—हरणी, हिरणि, हिरणी।

अल्पा—हरिणली।

हरिणेगमेखी-स पु—जैन मान्यतानुसार शकेन्द्र की पैदल फौज के सेनापति देव का नाम।

उ०—...१६ सहस्र वाह्य सभा तणा देव, ७ कटक, नाट्य गधरव हय गज व्रखभ रथ पदाति रूपक तणा स्वामी नीलजणा रिद्धजस हरि एरावण मातलि दामिट्ठी हरिणेगमेखी सरवागि सन्नाह पेहिरि, द्रढ कसा वधि, धनुखि गुण चडावी रह्या,......।

—व. स.

वि वि.—गर्भ परिवर्तन सतान समस्या मे इसका आराधन करने का विधान भी जैनागमो मे आता है।

हरित-सं पु [स.] १ विष्णु का एक नामान्तर।

२ सूर्य।

३ सूर्य का एक घोडा, कुम्मेद घोडा।

४ सिंह, शेर।

५ हरा, पीला या धानी रग।

६ घास, तृण।

७ दिशा।

८ द्वादश मनवन्तर का एक देव गण।

९ मान्धाता के पौत्र व युवनाश्व के पुत्र का नाम।

वि—१ हरे रग का, हरा।

म पु —भारत का एक प्रान्त विशेष जिसकी सीमाएँ राजस्थान व पजाब से मिलती है ।

उ०—मथुरा अवध्या वणारसी चदेरी मल्लिवाल महवर महोव हरियांणउ भयाणउ रतनपुर कामरू ओडियाण जालधर सिंधु आरव बगाल त्रिहूण भोट महाभोट चीण महाचीण.........।—व. स

हरियामूळ-स पु —गाय, भैस, बैल आदि पशुओ को होने वाला एक रोग जो वर्षा ऋतु मे हरा घास अधिक खाने से होता है।

हरियाळ हरियाल-स पु [स हरिचाल] १ वक्त, समय। (अ. मा)

२ देखो 'हरताळ' (रू. भे) (उ र)

३ देखो 'हरिताळ' (रू भे)

४ देखो 'हरियळ' (रू भे.)

हरियाळी हरियाली-स. स्त्री.—१ हरे भरे वृक्ष, पौधो या वनस्पतियो का समूह।

उ०—१ वधज्यो, कडवा नीम ज्यूं, वीरा वधज्यो, ओ हरियाळी री दूब, वधावो जी म्हारै घर आवियो ।—लो. गी.

उ०—२ मटकिया मे पाणी जम जातो । पाना माथै पडी ओस री कथीरियो बण जातो । नित री कारुपी सू हरियाळी पीळी पडगी। —फुलवाड़ी

२ हरा घास, दूब ।

उ०—सूकी अर पागळी नदिया नै पगा हलावै । सूखा मे हरियाळी उगावै फूला रा माडणा माडै । धान निपजावै ।—फुलवाडी

३ पेड-पौधो, घास व वनस्पतियो की प्रस्फुटित, पुष्पित-पल्लवित होने की अवस्था या दशा ।

उ—वाजरिया हरियाळिया, विचि विचि वेला फूल । जउ भरि वूठउ भाद्रवउ, मारू देस अमूल ।—ढो मा

४ आर्द्रता, गीलापन, नमी, सूखे का विपर्याय ।

५ हरापन।

उ०—पीलू पीयुस सनै, ऊजळी छिब उणियारै । जाणै वणै अंगूर, मळक हरियाळी सारै ।—दमदेव

६ पावस, वर्षा।

उ०—च्यारइ पासइ घण घणउ, वीजळि खिवइ अगास। हरिय ली रुनि तउ भली, घर सपति पिउ पास ।—ढो मा.

७ लाक्षणिक अर्थ मे आनन्द, खुशहाली ।

रू. भे.—हरिआळी, हरीआळी, हरीआली, हिराळी ।

हरियाळी अमावस-स. स्त्री. यौ —श्रावण मास की अमावस्या ।

हरियाळी-टाली-स स्त्री यौ.—लड़कियो द्वारा गाया जाने वाला एक मारवाड़ी लोक गीत ।

हरियाळी-तीज-स. स्त्री. यौ.—श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया। स्त्रियो के लिये यह एक त्योहार माना जाता है ।

हरियाळी-वनडौ-स पु यौ.—१ नया दूल्हा ।

उ०—जद हरियाळी-वनडो, सहेळ पधारची ए, सहेळै मैं नहर सरायो, ए वाईजी म्हारा राज ।—लो. गी.

२ एक लोक गीत।

हरियाळौ, हरियालौ-स पु.—१ हरे-भरे पौधो का समूह, विस्तार ।

उ०—हेरै हरियाळौ भूतळ हरखाती, गहरो ऊचै गळ हरियाळो गाती । घिन धण छकि जाती छाती लग छाती, जाफर भणकाती जाती मदमाती ।—ऊ का.

२ खेतो मे कार्य करते समय किसान स्त्रियो द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

उ०—१ गोरी म्हारी ए, हरियाळो वूठोजै वयू, यू म्हारा सायब यू जी यू । गोरी म्हारी ए हरियाळो बायो जै वयूं, यू, म्हारा सायब यू जी यू ।—लो गी.

उ०—२ हेरै हरियाळो भूतल हरखाती । गहरो ऊचै गळ हरियाळो गाती ।—ऊ का.

३ हरा घास ।

४ हरा-भरा वातावरण ।

५ एक खास जाति का घोडा ।

वि.—१ जो सूखा न हो, हरा, आर्द्र, ताजा ।

उ०—हरियै हरियाळै डाळै काळी कोयल वोलै राज। वोरै वोलावै, सैया सबद सुणावै राज ।—लो. गी

२ हरे रग का, हरा ।

उ०—एवड छेवड सात चिडकली, वीच मैं हरियालो सूवटो। चक-वक वोलै सात चिडकली, इम्रत वोलै हरियो सूवटो ।—लो. गी.

३ हरा-भरा ।

उ०—१ सुत 'अजमल' रुन घणी सहामण, सीख दियो हरियाळै सावण ।—अरयात

उ०—२ हेत रा गिगना री परनाळा उघाडा परवता माथै रपट'र गुदगुदे हरियाळै मैदान नै कद पार करग्या अर कद ऊची-ऊची ल्हैरवया खाता समदर माय समायग्या ।—तिरसकू

हरियो-भरियो-वि. यौ —१ हरा-भरा।

२ पुष्पित-पल्लवित ।

३ सुखी, प्रसन्न, प्रफुल्लित, सम्पन्न ।

४ पर्याप्त, पूर्ण ।

उ०—हरियो भरियो धान, ऊतरै सदा सतोलो। ढिगला लगै ललाम, घोर धन देवण पोलो ।—दसदेव

हरियो-स पु [सं. हरित] १ हरा घास, हरा चारा, वनस्पति ।

२ हरे रग का विस्तार ।

३ एक प्रकार का घोडा ।

उ०—कुमेत नीला समदा मकडा मेली समद, भूवर बोर सोनेरी कागडा गगाजळ नुकरा केला महुवा घूमरा हरिया लीला गुलदार पचकल्याण पवण गुरड सजाव सदळी सीहा चकवा अवलख

रू. भे.—हरपुर, हरीपुर।

हरिपैंडी-स स्त्री.—१ हरिद्वार में गंगा का एक प्रसिद्ध घाट।
२ उक्त घाट पर बनी सीढिया।
रू. भे.—हरपेडी, हरपैंडी।

हरिप्रिय-सं. पु. [स.] एक प्रकार का चदन।

हरिप्रिया-स स्त्री [स] १ लक्ष्मी, कमला।
२ पृथ्वी, धरती।
३ तुलसी।
४ द्वादशी तिथि।
५ शराब, मद्य।
६ शहद, मधु।
७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे १२, १२, १२, १० के विराम से ४६ मात्राएँ होती है और अन्त मे गुरु होता है।
रू. भे —हरप्रिय, हरप्रिया।

हरिप्रबोधणी, हरिप्रबोधनी-स स्त्री [स. हरिप्रबोधिनी] कार्तिकशुक्ला एकादशी।
वि. वि.—चातुर्मास मे देवशयनी के दिन विष्णु शयन करते हैं और कार्तिक मास की शुक्लएकादशी के दिन जागृत होते हैं। इस दिन का अत्यधिक माहात्म्य है। इस दिन लक्ष्मी अपने गुणो से अपने पति (विष्णु) को जीत कर नैत्रो से देख कर सुख पाती है।

हरिप्रीता-स स्त्री.—ज्योतिष मे एक मुहूर्त।

हरिवल्लभा—देखो 'हरिवल्लभा' (रू. भे)

हरिवाहण, हरिवाहन—देखो 'हरिवाहण' (रू. भे) (डि. को)

हरिबोधनी, हरिबोधिनी-स स्त्री. [स. हरिबोधिनी] कार्त्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

हरिभक्त-स. पु [स] जो ईश्वर मे विश्वास एवं श्रद्धा रख कर निरन्तर ईश्वर की भक्ति करता हो, ईश्वर-भक्त।
रू भे.—हरिभगत।

हरिभक्ति-स. स्त्री. [स] ईश्वर की भक्ति, ईश्वर-प्रेम।
रू. भे.—हरिभगति।

हरिभगत—देखो 'हरिभक्त' (रू भे)
उ०—वन मे हुती स्योरी भीलणी, ज्याका आरोग्या ठाकुर बोर। ऊच नीच हरि ना गिणै, ऐसी म्हारा हरिभगता री कोर।
—मीरा

हरिभगति—देखो 'हरिभक्ति' (रू. भे.)
उ०—कुण ऊचा नीचा कवण, जास पटतर जोय। हरीया ऊची हरिभगति, करै स ऊचा होय।—अनुभववाणी

हरिमथक-स पु [स हरि+मन्थक] १ छोटा मटर।
२ चना।

हरियंदुदर-स पु [स. हरितेन्दुदर] भ्रमर, भौंरा। (अ. मा)

हरिय-स. पु [स हरित] १ वनस्पति।
२ पीत रग का घोडा। (डि को)

हरियर-स. पु.—एक प्राचीन राजकुल।
उ०—राजकुली ३६, सूरयवस सोमवस यादववस कदव परमार इक्ष्वाक चहुमान चालुक्य मोरी सेलार सैंधव विदक चापोत्कट प्रतिहार लव्धक रास्ट्रकूट सक करवट कान्ट पाल चादिल गोहिल गुहलिपुत्रक धान्यपाल राजपाल अनग निकुभ दधिकर कालामुह दाधिक हूण हरियर डोसमार।—व स.

हरियळ, हरियल-वि —१ हरे रग का, हरा।
उ०—१ उतरतौ भादरवौ। सरस हरियळ धरती री कूख पावडै पावडै हिवडा रौ हरख दरसावती ही।—फुलवाडी
उ०—२ गाम सूं उगमणा आयोडा डूंगर नीला हेवन व्हैग्या हा अर वारै ढाळ में आयोडा कोसा लावा खेत, इसा लागता हा जाणै हरियळ जाजम विछयोडी व्है।—अमरचूनडी
उ०—३ मेडी रा छाजा माथै एक हरियल सूवटी आयनै वेठ्यौ। वौ आखतौ होय वोल्यौ—मा, सूवौ, सूवौ!—फुलवाडी
२ जो सूखा न हो, हरा। (पेड, पौधे, घास, वनस्पतियाँ आदि)
उ०—१ कैता पाण ठाकर रा मन मे आ वात जचगी। अजेज ऊभा ज्यू ई वाग मे गिया। हरियल पाना रै विचाळै फूल दीप दीप करता हा। सौरम सूं ठाकर री रग रग नाचण लागी।
—फुलवाडी
उ०—२ उण री आ विकट दरद भरी वतळावण सुणनै एकण सागै गिगन रा सात तारा तूट्या, रूखा री कूपळा बळगी, हरियल पान झडग्या अर वाग-वगेच्या रा केई फूल मुरझायग्या।
—फुलवाडी
३ हरा भरा, प्रफुल्लित, पुष्पित-पल्लवित।
उ०—तबुआ उतरै राठोडा री जान कोई, हरियल वागा पावू वनडो सोवणो ए मोरी सइया।—पावूजी रौ गीत
४ जो फलने-फूलने लायक हो, विकासशील।
स०—दुनिया रौ सिरजण करण वाळी हरियल कूख नै म्है म्हारै ई हाथा मसाण वणायौ, इण अथाग दुख रौ थू कूंतौ कर सकै वेटी।—फुलवाडी
स. पु —एक प्रकार का पक्षी, जिसका मास बढिया होने के कारण इसका शिकार किया जाता है।
रू. भे.—हरियाळ, हरियाल, हरीयाल।

हरियांणउ, हरियांणौ, हणियानौ-वि. (स्त्री हरियाणी) १ हरा-भरा, सर सब्ज।
उ०—सक्कर पय खाणा हैं हरियांणा। जहा सिंधु दा थिर थाणा। वसतै अवधूता सिद्ध सबूता, जोग जगूता सवजाणा।—पा. प्र.
२ प्रसन्न, हर्षित।
३ पुष्पित, पल्लवित।

हरिव्रती-वि. [स. हरि+व्रतिन्] १ ईश्वर भक्त, हरिभक्त।
२ धर्मात्मा, व्रतधारी, भक्त।
स पु [स. हरिवर्त्ती] पवन चारी पक्षी विशेष।
हरिसकर-स. पु. [स हरि+शकर] १ विष्णु का एक नामातर।
उ०—ईसर तो सरणइ ऊवरिजइ, हरिसकर समरीयौ हर।
—महादेव पारवती री वेली
२ विष्णु व शिव की जोडी।
हरिहर-स. पु. यौ [स.] विष्णु व शिव।
उ०—दीवासर देदासर करनीसर यूथा। फदम फपरद फमडळ हरिहर विधि हूवा।—मे. म.
हरिस-स. पु. [स. ह्लस] १ अर्श रोग।
२ देखो 'हरस' (रू भे)
हरिसखा-स. पु [स. हरिसख] १ अर्जुन का एक नामान्तर। (अ मा)
२ गधर्व।
रू. भे—हरीसखा।
हरिसेण, हरिसेन-स पु.—१ एक चक्रवर्ती राजा। (जैन)
२ ब्रह्म सावर्णि मनु का एक पुत्र।
हरिस्चंद्र-स पु [स हरिश्चन्द्र] एक सूर्यवशी राजा जो त्रिशकु के पुत्र थे। ये विख्यात सत्यवादी एव दानी थे।
उ०—भूतेस्वर भूयतलि खरू, हरिस्चद्र हरिकेत। वइतरणी-विचि थई जता, सरगि सधावइ प्रेत।—मा का. प्र.
रू. भे—हरचद, हरचदर, हरचदि, हरिचंद।
हरिहस, हरिहसल—देखो 'हरहस' (रू. भे)
उ०—ऊपरि पद पलव पुनरभव ओपति, त्रिमळ कमळ दळ ऊपरि नीर। तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरिहंस सावक ससिहर हीर।—वेलि
हरिहरक्षेत्र, हरिहरखेत-सं. पु—विहार मे स्थित एक तीर्थ स्थान जहाँ कार्तिक पूर्णिमा को गगास्नान का बडा माहात्म्य माना जाता है।
हरी-स. पु.—१ एक वृक्ष विशेष।
उ०—हरड़ हरडि हीमजी, हरडा हळद्रह वेर। हरबी हाधुडी हरी, हुफट हुसि हमेर।—मा का. प्र.
२ भलाइ, हित।
उ०—अर उण री वेटो पनियौ तो उण सू ई दो पावडा आगै हो। सफा अल्ला री गाय। नी कोई री हरी मे अर नी कोई री भरी मे।—अमर चूनडी
३ देखो 'हरौ' (पु)
उ०—१ वधाउआ ग्रहे ग्रहे पुरवासी, दळिद्र तणौ दीधौ दळिद्र। उध्व हूआ अखित उछळिया, हरी द्रोव केसर हळिद्र।—वेलि
उ०—२ हरी कुस समुद्र हाथ, चित्र भाळ चदण। करंत पाण जोड़ि केक, वेणि भाणि वदण।—सू. प्र.
उ०—३ उठा उपरायत गगेव नीवावत रा भाई-भतीजा उमराव हजूरी पोसाखा करै छै। कसूमल केसरिया हरी नवज गगनाळू नारगिया सपेत।—रा सा. स.
४ देखो 'हरि' (रू. भे.) (डि. को.) (उ. र.)
उ०—गुण मतन की सोहनि मूरति उर बिचि आद अरी। मीरां के प्रभु हरि अविनासी, सरणै राखि हरी।—मीरा
हरीअटो-स. पु.—एक प्रकार का घोडा।
उ०—अरव दहक जे घोडा, केरमा हरीअटा नील नीलडा कानूआ काजला किहाडा कोमीरा अहिठाणा पइठाणा ऊजळा जौहटा...।
—व स.
हरीआळी, हरीआली—देखो 'हरियाळी' (रू. भे.)
उ०—हरै लीनी हियो तना हरीआलियां, सोर कर मरै दादुर सुहाया। गाज ऊठी करै मेघ आया गयण, नागरी मानजी घरै नाया।—वा दा.
हरीकीरतन, हरीकीरत्तन—देखो 'हरिकीरतन' (रू. भे)
हरीख-क्रि. वि.—१ हर्षित होकर।
उ०—श्रीपाल राजा कीधी परीख, कोढ रोग गयो हुतो बहु वरीख। निरधार मूरति नयणे निरीख, समयसुंदर गुण गावइ हरीख।
—स कु.
२ देखो 'हरख' (रू. भे.)
उ०—आवी अग्रामई मासरी। हीयडइ हरीख मन रग अपार।
—वी. दे
हरीखणो, हरीखबौ—देखो 'हरखणो, हरखबौ' (रू. भे)
उ०—पूजी देव्या मनी हरीखीयो। वहू मादळ वाजे तिणी ठाई।
—वी दे
हरीखियोडौ—देखो 'हरखियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. हरीखियोडी)
हरीछौ—देखो 'हरसित'।
उ०—ढोलाजी रै ऊटिया बोलावो, टोलाजी रै काठिया मडावो। ढोनाजी रै होई नै हरीछा, ढोलाजी रै आणु लेवा जाए।
—लो गी
हरीचदण, हरीचदन—देखो 'हरिचदण' (रू भे)
उ०—फुकार अहेस, हरीचदण पयोध फैण, माहेम त्रिनेण इद्र जुन्हाई समाथ। गिरवाणा सहाई मनोज धेनु ध्यान गोभा, नाराज, वरीस, सोभा इसी प्राणनाथ।—र. रू
हरीचरित, हरीचिरत—देखो 'हरिचरित' (रू भे)
हरीजस—देखो 'हरिजस' (रू. भे) (ना डि. को)
हरीतकी-स. स्त्री [स] १ हरडे, हर्र।
२ हर्र का पेड।
रू. भे—हरितकी।
हरीतणोपिलंग-स पु—१ शेषनाग की शैया।

सिराजी। फेर ही अनेक रंग रा घोडा तयार कीजें छै।
—रा. सा. स.

वि.—१ हरे रंग का, हरा।

उ०—१ सू मूंग किण भातरा छै? मगरै रा नीपना, भरत रै खेतरा, हरियै रग रा, चुवळा जेडा, इण इण भात रा मूग हाथा सू रळकाय जै छै। —रा सा स.

उ०—२ चक वक बोलै सात चिडकली इम्रत बोलै हरियो सूवटो।
—लो गी.

२ जो सूखा न हो, जो मुरझाया हुआ न हो, ताजा, हरा, आर्द्र, नम।

उ०—हरिये हरियाले डाळै काळी कोयल बोलै राज। बोलै बोलावै मैया सवद सुणावै राज।—लो गी.

३ पुष्पित, पल्लवित।

ऊ०—१ भार करै सर सूभर भरिया, धरती रूप अनेका धरिया। हमीरोत, हूवा गिर हरिया, सीख समापो घर सामरिया।
—आसो बारहट

उ०—२ हरिया गिरवर घर तर हरिया, गै वूर्वे अवर घर हरिया। धारोळा वादळ घर हरिया, सुकव विदा कर घर समरिया।
—अज्ञात

४ हरियाली से भरा हुआ।

५ प्रसन्न, प्रफुल्लित।

उ०—दोमती-मितराई मोटी चाल, कितो ही तुलावो चावै मंडी मूं माल। मा'रजा रो मन सतवाडै हरियो हुयग्यो। ऊचो उछळ पडयो।
—दसदोख

६ देखो 'हरि' (अल्पा, रू भे)

हरिरक्षा-स. पु —राम रक्षा नामक एक स्तोत्र विशेष।

उ०—वूफ व्यास, प्रोहिता समर सूरा गुर सिक्षा। सकत मत्र सिव कवच विरणु पजर हरिरक्षा।—रा रू

हरिरथ-स पु [स हरि+रथ] विष्णु का वाहन गरुड।

उ०—हरिरथ माठो होय, सगत रथ होय सयाणो। सितरथ देवै पूठ, घटै उतराद पयाणो।—चोथ वीठू

रू. भे —हररथ।

हरिरस —देखो 'रामरस'।

उ०—ज्यु लाभै ज्यु लीजीयै, हरीया हरिरस जानि। तन मन देता सीस कु, मन पछतावो आनि। —अनुभववाणी

हरिराणी-स स्त्री.—१ लक्ष्मी।

२ पार्वती।

३ सरस्वती।

रू भे.—हरराणी।

हरिराय-स. पु —ईश्वर, परमात्मा।

हरिरूपा-स स्त्री [स] विष्णु रूपा, गगा।

उ०—देवी हारणी पाप श्री हरिरूपा, देवी पावणी पतिता तीर्थ भूपा।—देवि

हरिलंकी-वि स्त्री [स हरि+लंक] जिसकी कमर सिंह की कमर के समान पतली हो, सुन्दरी।

उ०—ससि-वदन म्रगलोचना रे, हरिलंका सुविसाल। राजा मानै अति घणी रे, जीव सू अधिक रसाल।—जयवाणी

सं. स्त्री —पतली कमर वाली सुन्दर स्त्री।

हरिलीला-स. स्त्री. [स] १ ईश्वर की माया, ईश्वर की लीला।

२ चौदह अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त।

हरिलोक-स पु [स] विष्णु-लोक, स्वर्ग, वैकुण्ठ।

हरिवंस-स. पु [स हरि+वंश] १ सूर्य वश।

२ कृष्ण का वश।

३ महाभारत का एक परिशिष्ट, जिसमे कृष्ण के वश का वर्णन है।

हरिवंसपुरांण-स. पु. यौ [स हरि+वंश+पुराण] एक पुराण का नाम।

उ०—परभात सवरो महूरत देख महला में देवसरमा नू बुलाइयो अर उण सू श्रीहरिवंसपुरांण कथा आरंभ कराई।
—माई री पलक मे खलक री वात

हरिवल्लभा—देखो 'हरिप्रिया'।

उ०—लोकमाता सिंधुसुता स्त्री लिखमी, पदमा पदमालया प्रभा। अवर ग्रहे अभ्यिग इंदिरा रामा हरिवल्लभा रमा।—वेलि

हरिवसु-वि [स हरि+वश] ईश्वर के अधीन।

उ०—दाणा पाणी हरिवसु, जाह जावै ताह देह। खाणा पीणा जिद कु, हरि का करि करि लेह।—अनुभववाणी

हरिवाम, हरिवांमा-स स्त्री. [स हरि+वामा] १ लक्ष्मी, कमला।
(अ मा)

२ सरस्वती।

३ पार्वती।

४ सीता।

रू भे.—हरबाम, हरवामा, हरवाम, हरवामा।

हरिवासर—देखो हरिदिन'।

उ०—देव दसमि एकादसी, हरिवासर जो होइ। पुन्य प्रथम ते पारणइ, द्वादस नी दिनि जोइ।—मा. का. प्र.

हरिवाहण, हरिवाहन-स पु [स. हरि+वाहन] विष्णु का वाहन, गरुड। (अ मा)

वि —पीला, पीत। * (डि. को)

रू भे.—हरवाहण, हरवाहन, हरिबाह, हरिबाहन।

हरिविक्रम-स पु —शृंगार मे एक आसन विशेष।

हरिव्रत-स. पु. [स. हरि+व्रत] हरि भक्ति, ईश्वर की आराधना।

उ०—हरीया हरिव्रत छाडिकै, करै और ही वास। जेमै गिनका पीव बिन, औरा सु घरवास।—अनुभव वाणी

वि [सं हरित] (स्त्री हरी) १ हरे रंग का, हरा।
२ जो नक्त रंग की पत्तियों से भरपूर हो।
ज्यूं—हरी खेत, हरी मैदान।
३ जो मुरझाया या सूखा हुआ न हो।
४ जो भरा या सूखा न हो (घाव)।
५ थकावट या शिथिलता से रहित, प्रसन्न, प्रफुल्लित।

हरौळ, हरौळी—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)
उ०—१ 'जैता' जैतहया रण जीवै, दळा हरौळ ढाल भ्रम दीवै। गारू 'करन' साथि महवेचो, धजवडहथ 'अमरेस' धवेचो।
—रा. रू
उ०—२ समत १६८१ रा काती सुदि १५ टूस नदी ऊपर साहजादै परवेज नु खुरम ,लड़ाई हुई। राजाजी नु हरौळ कीया था, फतै पाई।—नैणसी
उ०—३ केई वाग तोखारा हरौळा ओरै फतै किधी। केई फोजा मार दीधी खिषळी कमध।—किरपाराम कवियौ

हर्‌यौ—देखो 'हरियौ' (रू. भे.)
उ०—१ नग चग ही नाडा भरया, हरया अठारै भार। विण फूना फळ मोरीया, हरिजन चाखण हार।—अनुभववाणी
उ०—२ दरगत रा गात हर्‌या हा, सापड दै प्राण भरया हा। सूरा ठूठा सा होग्या, की खातर हर्‌ण खड्या हा।—सकुतला

हलत-वि —जिसका अन्तिम अक्षर या वर्ण हल् हो।
रू भे —हलित।

हळ-स. पु [स हल] १ कृषि कार्य का एक प्रमुख उपकरण या यंत्र जो जमीन को जोतने तथा बीज बोने में काम आता है। यह पहले लकडी का और अब लोहे का भी बनता है।
उ०—१ 'हरिया' हळ हाक मती कर मन हठ, जाच किसन ज्यू दाळर जाय। घवरा नरा न भाजै ऊणत, गीत फिटा कर फोग गुदाय।—हरदान बारहठ
उ०—२ बरसात रा दिन छै। सु आगै रायघण बाप हमीर नै बेटो भीम हळ गई छै।—नैणसी
२ श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम के हाथ मे रहने वाला आयुध जो उक्त उपकरण (हल) के आकार का बना होता था। (व. स)
उ०—बळिभद्रजी का हळां सु दुसमणा का माथा टूटै छै। जैसे बीजा हळां सौ रूखा का मूळ जड सूं टूटना आघात होय। इणि भांति रुक्मिधरिजी को हळ वहै छै।—वेलि टी.
३ खेत का उतना भाग जितना एक हल द्वारा एक दिन मे बोया जाता है, खेतों का एक माप।
४ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार पैर की एक रेखा या चिन्ह।
५ खग शास्त्रों के ऊपर बनी क्षैतिज रेखा।
उ०—मुरधरा रा उजाळिया, माटी रा निलारिया, ऊपर रूपै रा गाबा रै, पीतळ मांडे रा खुरा है, रान री चौरडी छै, निलोर रा पखा छै, दातरा सुफाळा छै, सोन्हे री हळ लिखी छै।—रा सा. म.
रू. भे.—हळि, हळी, हल,।
अल्पा.—हळियौ।

हल-स पु [अ] १ किसी समस्या का समाधान, निराकरण,।
२ गणित मे किसी सवाल का उत्तर निकालने के लिए तैयार किया जाने वाला विवरण।
३ किसी सवाल का उत्तर।
[स. हल्] ४ वह शुद्ध व्यंजन जिसमे स्वर न मिला हो।
[देशज] ५ गति, चाल।
उ०—वदळै डार गई दस वाटा, हुई लार अण पार हल। धकै चाढ सरदार धकाया, मार घणौ ओखाळमल।—महादान महडू
६ हिलने डुलने की अवस्था या भाव, झटका, कम्पन।
रू भे.—हल्ल।

हलक-स. पु [अ हल्क] १ गले की नली, कंठ।
२ गला।
३ मण्डली।
४ मण्डल, घेरा, वृत्त।
५ क्षेत्र, इलाका।
६ चहल-पहल।
उ०—काचौ देह तणौ कमठाणौ, पडता नह लागै पलक। दुनिया तणी निहली दौलत हठवाडा वाळी हलक।—बा. दा.
[स. हल्लक] ७ कुसुम, फूल। (अ. मा; ह ना मा)
८ लाल कमल।
९ सुन्दरता, शोभा।
उ०—१ पेख्या हलक हिमाळ सारस-वार पयाण। कोच-रग्र अखियात, पारस कीरत आण।—मेघ
उ०—२ जोधाणौ जसराज रो, खूबी करै खलक। खाणा पीणा गाठ रा, जोवण री बडी हलक।—अग्यात
१० आनन्द।
११ देखो 'हलकौ' (रू भे.)
उ०—१ हस्ती थे लाई जो कजळी देस री। हस्तिया रै हलक पधारजो रे तोरै आवजौ।—लो. गी.
उ०—२ नगर हलक हालै नर नारी, घर धधौ छोडै परवारी। मिळ ताजू दी सीख उमग।—र रू
रू भे.—हलक्क, हलग।

हलकणौ, हलकबौ-क्रि. अ.—१ भरे हुए पात्र मे द्रव पदार्थ का हिलना डुलना।
२ हिलना-डुलना, हिलोरे खाना।
उ०—पगाळी जोडा एडी पर अडै है। लेगै री नाडो लारनै ले लियो। ढील हवा ज्यू हलकै है। ऊमर मे ना बोली जकी आज गाडाछा मारै है —दगदोस

२ शेषनाग ।

हरीतन-स पु.—हरियाली ।

उ०—सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतन । अण वल्ली विसतरी, वर्ण ग्रह वरी दिमा वन ।—रा रू.

हरीनाथ—देखो 'हरिनाथ' (रू. भे)

हरीपडौ-स. पु.—एक प्रकार का घोडा । (शा हो.)

हरीपद—देखो 'हरिपद' (रू. भे)

हरीपदि, हरीपदी—देखो 'हरिपदि' (रू भे)

हरीपुर—देखो 'हरिपुर' (रू भे.)

उ०—फिरै मुहडै गजा फोजा, धजा नेजा ढाहि । 'भाण' रौ गौ गयरण भेदै, 'मान' हरीपुर माहि ।—जैतौ महियारियौ

हरीफ-वि' [फा] प्रतिद्वन्दी, शत्रु, दुश्मन ।

उ०—वर रौ वी व्हाली वसै, हरीफ रे हिरदेह । भैखज दे थाकै भिसग, छुटै न रूज निच छेह ।—रेवतसिंह भाटी

स पु.—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—सारीपी तिलवास गरभसूत्र राजिउ वयराजीउ महिदउरउ तीतआगिउ कचीयउ पीठ समुसी पीठ देवगिरू मदील होलीउ तलपकाउ नरम्म हरीफ प्रभ्रति वस्त्रजाति ।—व स.

हरीभरीवाडी-स स्त्री —१ लताओ, पौधो एव पुष्पो से भरी वाटिका ।

२ हरा भरा खेत ।

३ ऐसा परिवार या घर जो सुखी और सम्पन्न हो ।

हरीभाजी-सं. स्त्री.—हरा शाक, सब्जी ।

हरीयड़-स. पु —एक क्षत्रिय वश विशेष ।

उ०—चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायगणि गया । जयवता यादव वीहल्ल, नर निकुभ गिरूया गोहिल्ल ।—का दे. प्र.

हरीयड़ौ, हरीयडौ-स पु.—एक प्रकार का घोडा ।

उ०—१ देवसीह भोजउ भड वेउ अणतउ धडसी तेजउ जेउ । एक सहस पल्हाणा कीध, एह हरीयडा तेजी दीध ।—का. दे. प्र.

उ०—२ हासइ हयवर नीलडा हरीयडा गगाजळा सामळा । तेहै यादव सचरया परवरचा तेजी तुखारै चढ्या ।—धनदेवगणि

हरीयल, हरीयाळ—देखो हरियळ' (रू. भे)

हरीयोनीलौ-स पु —एक प्रकार का शुभ रग का घोडा । (शा हो.)

हरीरौ-स पु —एक प्रकार का पतला हलवा जो प्राय. रोगियो को खिलाया जाता है ।

हरीस-स. पु. [स. हरीश] १ वानरो का राजा ।

२ हनुमान ।

हरीसखा—देखो 'हरिसखा' (रू. भे)

हरीसरी-स. स्त्री —गगा नदी ।

हरीसौ-स. पु —एक प्रकार का व्यजन विशेष जो १० सेर मास, ५ सेर कुटा हुआ गेहू, २ सेर घी, १/२ मेर नमक, २ दाम दारचीनी आदि मिश्रण से बनता है । उक्त सामग्री से पाच रकाबिया भर जाती है ।

हरीहय-स. पु.—देवराज इन्द्र ।

हरी होणी-स. स्त्री [देशज] गाय, भैस आदि का गर्भ धारण करना ।

हरेई-स पु.—एक प्रकार का शुभ रंग का घोडा ।

उ०—हरेई चल्यौ बाजि साहाव दीन, भयै कथ केकीन के मान हीन ।—ला. रा.

हरेक-वि. [फा. हर+स. एक] प्रत्येक, हरएक ।

उ०—१ अध विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कैयोडी वात नै साची मानण खातर ही वण्यौ है ।—दसदोख

उ०—२ हरेक वार नवौ हीरौ देखता ई एक वार तो मैंमडी री आख्या चमकण लागती पण थोडीक जेज मे पाछी मगसी पड़ जावती ।—अमर चूनडी

हरेवौ-स पु.—१ एक प्रकार का घोडा ।

उ०—के आरव ऊधरा हेक धजराज हरेवौ । आरूहता उत्तग अग जुगि लगै रकेवौ ।—रा रू.

२ देखो 'हरेवी' (रू. भे)

हरेवा-स स्त्री.—१ हरे रग की बुल-बुल ।

२ छोटा मकान ।

हरेवी-स. स्त्री —१ एक प्रकार की खटाई युक्त दाल ।

उ०—कमोद तुळछी स्यामजीरा दधि मोगर चीनी एळची पूरब कपूर पोहप प्रसग हरेवी सौरभ क्सुभवा किय जगनाथ भोग ऐसी चौरासी भाति जिन्हु के गज दरसावै ।—सू. प्र.

२ देखो 'हरेवौ' (रू. भे)

हरोळ, हरोल—देखो 'हरावळ' (रू भे.)

उ०—१ 'दळपति' अमर विदा करि दीधा, कूरम अपति हरोळां कीधा ।—सू प्र.

उ०—२ उणनै सरणं राखीजै । अरु मौनै हरोल कीजै नै अवरगजेवसू लडाई अर आटा री बात दाखीजै ।

—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री वात

हरोळाई, हरोलिय, हरोळी—देखो 'हरावळ' (रू. भे.)

उ०—१ धुर लूंटण धाधळ पूत धरा । चव मुज्ज हरोळिय सारग रा ।—पा प्र.

उ०—२ साजी मेळा साग देव राखी चदोली । मिंदर मडी मसाण होळिका फाग हरोळी ।—ऊ का.

उ०—३ लेखै राम सुलिखमण वाळक, तेज रिखी अण तोली । हेरै भूप कह्यौ हू हाजर, हालू साथ हरोळी ।—र रू.

उ०—४ हरण नक्रण वहे सुदरसण हरोली । पाय तता गरण छिद अपाळै ।—र. ज. प्र.

हरौ-स पु.—१ पौत्र, वशज ।

२ ताजी घास या पत्ती का सा रग ।

३ उक्त प्रकार के रग का घोडा ।

क्रि स — ३ ललकारना, उकसाना ।

उ०—सवार हुवौ, तरै रावळ आपरौ साथ हलकनै तूट पडियौ । पैली कानी सूं राव रौ साथ आयौ ।—नैणसी

हलकणहार, हारौ (हारी), हलकणियौ—वि० ।

हलकिओडौ हलकियोडौ, हलक्योडौ—भू० का० कृ० ।

हलकीजणौ, हलकीजवौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

हलक्कणौ, हलक्कवौ—रू० भे० ।

हलका–स स्त्री —एक प्रकार की कमान ।

उ०—१ सो किण भाति री कवाण थेट विलाती, सीगरी सिगणी, तूजी हलका, अठारै टाक चिलैरी खाअणहार... .. ।

—रा सा सं.

उ०—२ इण भाति री तूजी हलका ज्यौं लचकती, रतनाळा लोचना, अणियाळा काजळ सारीजे छै ।—रा सा. स.

हळकाई–स स्त्री.—१ हल्कापन ।

उ०—हळकाई तीर की ज्यू जाण जै सो कमान सू निकाळिया पछै पाछौ नही फिरै ।—नी प्र.

२ विनम्रता ।

उ०—जिको काम नरमी हळकाई सू आदरै तो सही आछै अरथ नही सुधरै आगलै दुख रो कारण होय ससार सू सरमिंदगी होय ।

—नी प्र

३ लघुता, तुच्छता ।

हलकाणौ, हलकावौ–क्रि स.—१ हिलाना-डुलाना, हिलोरे देना ।

२ ललकारना ।

हलकाणहार, हारौ (हारी), हलकाणियौ —वि० ।

हलकायोडौ—भू० का० कृ० ।

हलकाईजणौ, हलकाईजवौ—कर्म वा० ।

हळकापण, हलकापण, हळकापणौ, हलकापणौ–स पु.—१ वजन या भार की दृष्टि से हल्का होने की अवस्था, गुण, हलकापन ।

उ०—लकडा ने पाणी में न्हाख्या ऊचो आवै तो कुण ही ल्यावै नही पिण हलकापणा रा योग सू तिरै ।—भि. द्र.

२ तुच्छता, ओछापन ।

३ लघुता, छोटापन ।

हलकायोडौ–भू. का. कृ.—१ हिलाया हुआ, डुलाया हुआ, हिलोरे दिया हुआ ।

२ ललकारा हुआ ।

(स्त्री. हलकायोडी)

हलकार–स स्त्री —ललकार ।

उ०—१ पन्नामारू हलचल हुई हलकार । खळमळ हुई राठोडा री चाकरी हो म्हारा राज ।—लो गी.

उ०—२ हलकार भीरू वडा हिंदू, ताहरा तुडताण । समसेर झालै करो सेहरा, साभळै सुरताण ।—जसौ बारहठ

हलकारणौ, हलकारवौ–क्रि. स —१ ललकारना, चुनौती देना, उकसाना, जोश दिलाना ।

उ०—१ कपि पकडौ पकडौ कहै राकस हलकारै । जूटा हुकम प्रमाण, जोध कपि हूँ अधिकारै ।—सू प्र.

उ०—२ अभै दळा हलकारिया, कळ आगळा लकाळ । चडिया सायक वेग ज्यौ, पायक ऊपरि माळ ।—रा रू.

उ०—३ रिण रसीयो आलिम रढाळ, हळकारचा जोधा जिम काल । करी किलकी जिम दोडचा देत, कायरपाण तजै निकसी जैत ।—प च चौ

२ हाकना, प्रेरित करना ।

उ०—काती ! छाती माहिं तइ, हलकारिउ हीमान्त । धूजइ अग अम्हारडु, अै ताहरी चक चाल ।—मा का प्र

३ बुलाना, पुकारना ।

उ०—'राजड' राण तणै हलकारै, अग्र कमधा वात उचारै । ऐ दीवाण तणा पत्र ईखो, समहर राखो मेळ सरीखो ।—रा रू.

हलकारणहार, हारौ (हारी), हलकारणियौ—वि० ।

हलकारिओडौ, हलकारियोडौ हलकारचोडौ—भू० का० कृ० ।

हलकारीजणौ, हलकारीजवौ—कर्म वा० ।

हलकारियोडौ–भू का. कृ.—१ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ, उकसाया हुआ, जोश दिलाया हुआ. २ हाका हुआ, प्रेरित किया हुआ ३ बुलाया हुआ, पुकारा हुआ ।

(स्त्री हलकारियोडी)

हलकारु, हलकारू, हलकारौ–स पु —१ दूत, सदेशवाहक, पत्रवाहक ।

उ०—१ याही समै हलकारू कही आन ऐसी । तहवरखा साह मारा, जैसी की तैसी ।—रा रू

उ०—२ पीछै मालदेजी हलकारा मेल खबर करायी सू इणारै खरची री मौकाळ देखी नै हलकारा आय कयौ—राज, खरची तो घणी है ।—द दा.

उ०—३ सो गौड आया जिकारी हलकारा अरज करी ।

—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—४ कोस पद्रह रौ डेरौ ठहरायौ ओर आप पण तोपखानौ सारौ साथ लेय थटै भखर साम्ही कूच कियौ । कोस दोय गयौ तद जोहिया नू हलकारा जाय कही—जं जलाल नू इमी ताकीद आई छै सो दर मजल ताकीदी सू जायसी ।—जलाल बूबना री वात

२ ध्वनि, आवाज ।

रू भे.—हरकारौ ।

हलकियोडौ–भू का कृ.—१ हिला हुआ, डुला हुआ २ ललकारा हुआ, उकसाया हुआ ।

(स्त्री हलक्योडी)

हळकौ–वि. (स्त्री हळकी) १ जो वजनी न हो, गुरुता या भार हीन, भार का विपर्याय ।

उ०—हलक्का गजा बाजा हुवै हकाळा, भडा छक आवळा ओध भाळा। हेतुवा पातुवा तणौ दाळद हरौ, हरौ इद राजीव इद न्हाळा।—छत्रसिंह हाडा री गीत

हलख—देखो 'हलक' (रू भे.)

उ०—हार जितोही आतरौ, हियँ न सहियौ रात। राज हलख रौ आतरौ, किम सहसौ परभात।—अग्यात

हळखड, हळखडौ—सं. पु.—कृषि पर जीविका उपार्जन करने वाला व्यक्ति।

उ०—१ चदाणा जाति रा हळखड रजपूत री पुत्री नू वळ मैं अतुळ जाण परणियौ।—व भा.

उ०—२ जमीरत टूटिया पछै कोई आगै ही ग्रौर न करसी। ग्रौर ग्रठै हळखड़ हुय जासी।—गोपाळदास गौड री वारता

हळगणत—स. पु —मुफ्त मे काम आने वाले हल।

उ०—पूनियै रै परगनै मैं हळगणत-आवै। डोडवाणै रा साहूकारा री वरसोत आवै। परवतसर चौरासी मारोठ री दाळ आवै ग्रौर चारू पासा री माल खायजै।—सूरै खीवै काधलोत री बात

हळगत—स पु —खेत को जोतने पर हलो के हिसाब से लिया जाने वाला कर।

उ०—सुरताण कुतवदीन नै पाट सुरताण महमद बैठौ। महमद्र वारै लोका नै १८ कर लागा। तै कही—१ (प्रथम) दाण। २ (बीजो) पूछी। ३ हळगत। ४ मोम। ५ भेट . .।—नैणसी

हलगल—स स्त्री.—१ अफवाह, गप्प।

२ चर्चा।

हलचल—स स्त्री.—१ घवराहट, वेचैनी, खळवळी, हडवडाहट।

उ०—१ पन्नामारु हलचल हुई हलकार। खळ भळ हुई राठौडा री चाकरी हो म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ भला रावता ठाकुरा माही हा-हू हलचल हुई रही छै। डाढाळौ सूअर रात्र सू विकराळ होय लडियौ, भला भरोसावध राजपूता रा घोडा रुळ रहिया छै।—डाढाळा सूर री बात

२ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला।

उ०—परदळ आया जाणि हो रा, कोलाहल हलचल हुई अति घणीजी। चित चमक्यौ वीरभाण हो रा., धाया सुर सुभट जूझण भणीजी।—प. च. चौ.

३ झगडा, अव्यवस्था।

४ कपन, आतक, भय।

५ युद्ध, लडाई।

उ०—सग्रहुरा नारि नह नीद भरि सोवसी, हलचलां सही हाला घरै होवसी।—हा झा

६ धूमधाम, रौनक, चहलपहल।

उ०—मेहला मैं वैठी हो राणी कमलावती, झीणी तौ ऊडै मारग रोह, जोवै तमासौ हो इखुकार नगर नो। कोतुक उपनो मनमैं एह। साभळ हे दासी आज नगर मैं, हलचल किम घणी।—जयवाणी

७ गतिशीलता।

उ०—हलचल सास सरीर मैं, मन छाड्यौ अहकार। पूत पिता परवार मैं, सग न चालणहार।—अनुभववाणी

८ असर, प्रतिक्रिया।

उ०—निजर रै पैल झबकै ई तीनू जणा एक दूजा नै सुभट ओळख लिया। काली मासी रा मन मैं तौ की विसेस हलचल नी व्ही, पण बाप बेटी माथै तौ ओळखाण रै समचै ई जाणै बीजळी पडी।

—फुलवाडी

९ स्वागत, सत्कार।

उ०—कछवाहौ मानसिंह कवरपदै अकवर पातसाह गुजरात मेलियौ छौ, तद चीतोड धणी प्रताप छै सु राणैजी मानसिंह कनै सोनगरौ मानसिंह अखैराजोत डोडियौ भीव साडावत मेल नै हलचल कराई हुती, सु मानसिंह कछवाहौ पाछौ वळतौ डूगरपुर आयौ।—नैणसी

१० किसी प्रकार की क्रिया, हरकत।

रू. भे.—हलचली, हलचल्ल, हलचल्ली, हलचल्लै।

मह.—हलचलौ।

हलचलणौ, हलचलबौ—क्रि. अ —१ घबराहट होना, बेचैनी होना, हड-बडाहट होना, खलबली मचना।

२ शोर गुल होना, हल्ला-गुल्ला होना।

३ झगडा मचना, अव्यवस्था होना।

४ आतकित होना, भयभीत होना।

५ युद्ध होना, लडाई होना।

६ धूमधाम होना, रौनक होना, चहल-पहल होना।

७ गतिशील होना।

८ असर होना, प्रभाव होना, प्रतिक्रिया होना।

९ स्वागत-सत्कार होना।

१० किसी प्रकार की क्रिया होना, हरकत होना।

हलचलणहार, हारौ (हारी), हलचलणियौ वि.।

हलचलिग्रोडौ, हलचलियोडौ, हलचल्योडौ—भू. का कृ।

हलचलीजणौ, हलचलीजबौ—भाव वा।

हलचल्लणौ, हलचल्लबौ—रू भे.।

हलचलियोडौ—भू. का कृ.—१ घबराया हुआ, बेचैन, हडबडाया हुआ, खलबली मचा हुआ. २ शोर-गुल या हल्ला-गुल्ला हुवा हुआ. ३ झगडा मचा हुआ, अव्यवस्थित. ४ आतकित हुवा हुआ, भयभीत, कपित।

५ लडाई या युद्ध हुवा हुआ।

६ धूम-धाम या चहल-पहल युक्त।

७ गतिशील।

८ प्रभावित, प्रतिक्रिया युक्त।

९ आदृत, सत्कारित।

लटकी करो पगा थे लागगौ, काले होसी पटा री काज। हळफळ करै कादरी पहरै, ऊपर वावै पाघ अमेळ। वरणत हार जिसी वाडी री, मूठ अनै ताडी रो मेळ।—कपूत री गीत

३ परेशानी, हैरानी।

४ वातचीत, विचार-विमर्श, हलचल, सलाह मशविरा।

उ०—सु आजमखान गिरनार लेवण मतै। तरै जाम इण री ऊपर करे। तरै आजमखान जाम सू हळफळ करी।—नैणसी

हळफळणौ, हळफळवौ, हलफलणौ, हलफलवौ—क्रि. अ.—१ व्याकुल होना, आतुर, अधीर और वेचैन होना।

उ०—१ अपछरा एक हाथ सू तो वर माळा पैरावै छै। अर एक हाथ सूं आपरा कपडा वुजावै छै। अपछरा वी उतावळ मैं इसी हळफळै छै। कपडा तो भूल गई अर हार समाळै छै।—पना

उ०—२ कै अचाणचक उण नै आपरी छाती माथै किण री जीभ रै लपरका री परस लखायो। वो हळफळियौ भिभककनै वैठो व्हियो।—फुलवाडी

उ०—३ कूकै पाडोसण हळफळी खोल किमाड़। ताहरा पति ना कागल माहे मोटी धाड।—ध व. ग्र.

२ घवराना, डरना।

उ०—१ अणचीत्यौ खतरौ जाण गोरियावर हळफळती वाटका मे चापळग्यौ।—फुलवाडी

उ०—२ हळफळ आछट हाथ, सुपियारी ऊठी चमक। नाथ अभी अणनाथ, किम कीधी होसी किसू।—पा. प्र

उ०—३ सादतै अटकळियौ हळफळियौ कोटवाळ, मुझ नै जाणि मुहतै कुड करी ततकाळ।—ध व. ग्र.

३ आश्चर्य चकित होना, विस्मित होना चौंकना।

उ०—म्है इण साधारण चूनडी वास्तै थारी डोरी नी वाध्यौ है वीरा, थारै कानी सू तो म्हनै अमर चूनडी मिळणी चाहिजै। ठकराणी ठीमर सुर मे वोली।—अमर चूनडी ? दोन्यू मामौ भाणेज एक सागै इज हळफळता वोल्या।—अमर चूनडी

४ दौडना, भागना।

ऊ०—पखी टळवळ्या, माळे जावा नै खळभळ्या, चोर सळमळ्या आवइ हळफळ्या। आकास राता, मेह करि माता।—रा सा स.

५ परेशान होना, हैरान होना।

उ०—ओ अणचीत्यौ खिलको देखनै वाई री तो अकल ई कह्यौ नी करयौ। वा हळहफळियोडी खाथी खाथी आय नै कैवण लागी, वा, यू गालाया काई करौ। कसूर करियौ जका रै पगा माथौ निवाय माफी मागौ। ओ कठा रो न्याव ! म्हैं की ऊधौ काम नी करियौ।

—फुलवाडी

६ शीघ्रता करना, ताकीद करना।

उ०—हल हल करवा हलफल्या, पुहता मदिर-पासि। अवसि थया ते अधला, रोता जाहि नासि।—मा. का प्र

हळफळणहार, हारौ (हारी), हळफळणियौ—वि०।

हळफळिओडौ, हळफळियोडौ, हळफळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

हळफळीजणौ, हळफळीजवौ—भाव वा०।

हळपळणौ, हळपळवौ, हळफळाणौ, हळफळावौ—रू० भे०।

हळफळाणौ, हळफळावौ—देखो 'हळफळणौ, हळफळवौ' (रू. भे)

उ०—१ वा डरनै उठा सू दौडी। भाखर री ढाळ मैं ई वा हळफळ ई वेग सू न्हाटण ढूकी कै अणछक उण री पग रपटग्यौ।

—फुलवाडी

उ०—२ दरवार मैं पूगता ई सेठजी जोर सू वाग मैल कूक्या तो राजाजी री भेर खुली। भिभककनै ऊभा व्हिया। हळफळाया होय माय दौडण लागा।—फुलवाडी

उ०—३ राजाजी नाई नै देखता ई हळफळाया होय उणरै साम्ही दौडिया। थूक उछाळता पूछ्यौ—वोल, म्हारी नवी जुगत सू काम पटियो कै नी।—फुलवाडी

हळफळाणहार, हारौ (हारी), हळफळाणियौ—वि०।

हळफळायोडौ—भू० का० कृ०।

हळफळाईजणौ हळफळाईजवौ—भाव वा०।

हळफळायोड़ौ—देखो 'हळफळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हळफळायोडी)

हळफळियोडौ—भू. का कृ.—१ व्याकुल हुवा हुआ, आतुर हुवा हुआ, अधीर और वेचैन हुवा हुआ २ घवराया हुआ, डरा हुआ. ३ आश्चर्य चकित व विस्मित हुवा हुआ, चौंका हुआ. ४ दौडा हुआ, भागा हुआ. ५ परेशान हुवा हुआ, हैरान हुवा हुआ ६ शीघ्रता किया हुआ, ताकीद किया हुआ. ७ वातचीत किया हुआ, सलाह किया हुआ।

(स्त्री हळफळियोडी)

हळफळौ—वि (स्त्री. हळफळी) १ जिसका सतुलन खो गया हो, असतुलित।

उ०—जान मैं चालो चालो हुई। वैनोई वीन नै वागौ पैरायौ हळफळो सो बीन री वाप मड-मडी कर उठ्यौ अर आपरा भायला नै पैडघा मैं लेजा'र सागीडा समझाया।—दसदोख

२ आतुर, व्यग्र।

३ शीघ्रता करने वाला।

हलव—स. पु [फा] फारस की तरफ का एक प्राचीन देश जहाँ का शीशा प्रसिद्ध था।

हळवळ—देखो 'हळवळ' (रू भे)

उ०—१ हाळ आगली अणी रा रावत है तिकै कहै आघा रहजौ आघा रहजौ उण वेळा रावता रा पग खरडै डिगण [ढूक जावै हळवळ न्हासण री आगत री लाग जावै।—वी स. टी

उ०—२ हळवळा दळा मुजरा हुवै, गह हाका पहाड गह। तण 'अजण' नगारै तीसरै, सुदर गज चढियौ सुपह।—सू प्र

हळदी–सं. स्त्री [सं. हरिद्रा] १ हल्दी नामक पौधे की जड जो सोंठ के समान ही होती है और जिसका रंग पीला होता है। यह मिरच मसालों मे तथा औषधि मे काम आती है।

उ०—१ लेपन रै पैला नास्काटा री जडा मीठा तेल मैं उकाळ खासी ताळ ताईं मालिस करती। थोडी सी हळदी री पुट देय गुळ री भरभरतो सीरो खवाडती।—फुलवाडी

उ०—२ ठौड ठौड रेसम वाळ नै दाव्यो। घी हळदी रा फूवा लगाया।—फुलवाडी

उ०—३ हळदी तो पीठी म्हारै अग लगाई। महदी सू राच्या म्हारा हाथ।—मीरा

२ दूल्हे को उबटन करते समय हल्दी के नाम से गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—म्हारी हळदी रो रग सुरग, निपजै माळवै। हळदी मोल पसारी री हाट, वनडै रै सिर चढै।—लो गी.

रू भे—हरद, हरदी, हळद, हलद, हळद्द, हळिद्र, हल्द, हल्दी।

हळदीघाटी—मेवाड स्थित नाथद्वारा-गोगूदा के मार्ग पर अरावली की पर्वत श्रेणियो का सकरा दर्रा विशेष, जहा पर ४०० वर्ष पूर्व जून १५७६ मे महाराणा प्रताप व आमेर (जयपुर) के राजा मानसिंह (अकबर के सेनापति) के बीच भयकर युद्ध हुआ था।

वि. वि—नाथद्वारा-गोगुदा के मार्ग पर पहाडियो के बीच एक सकरा दर्रा है। आज से चार सौ वर्ष पहले यह दर्रा इतना सकरा गलियारा था कि दो घुडसवार भी एक साथ रास्ता पार नही कर सकते थे। मुगल सेना का बाया पक्ष खमनौर गाव से २-३ मील दूर इस घाटी के मुहाने पर रखा गया था। मुगल सेना का दाहिना पक्ष तथा मध्य भाग पूर्वी घाटी के मुहाने से लेकर पश्चिम मे बनास तक फैला हुआ था। राणा की सेना दर्रे के पीछे से आयी थी और हाकिम खा सूर के नेतृत्व मे हरावल दस्ता पहाडी के पश्चिम भाग से निकला था। स्वय राणा हाकिम खां सूर के पीछे 'अज-मियाने-धारी' से बाहर आये थे।

हल्दी घाटी की पीले पत्थरो से जडी कठोर पीली मिट्टी की दुर्गम भूमि उस समय घनी कटीली झाडियो से ढकी हुई थी। इसी घाटी मे दोनो सेनाओ का तीन प्रहर का यह भीषण सग्राम इस युग का इतिहास बनता है।

हल्दी घाटी के क्षेत्र मे मिट्टी का रग हल्दी के समान पीला है। इसीलिये इसे हल्दी घाटी का नाम दिया गया। महाराणा प्रताप और अकबर के सेनापति व आमेर (जयपुर) के राजा मानसिंह की सेनाओ मे जिस स्थल पर सबसे घमासान लडाई हुई उसे आज भी 'रक्त तलाई' के नाम से पुकारा जाता है।

रू. भे—हळदघाटी, हरदघाट, हल्दघाटी।

हळद्द–वि—१ पीला, पीत।

२ देखो 'हळदी' (रू भे)

उ०—वसिस्ठ आदि व्रह्मयं, करत जात क्रमय। हळद्द कुंकम हरी, करत छोह केसरी।—सू प्र.

हळद्दर—देखो 'हळधर' (रू भे)

हळद्दरजोड, हळद्धरजोड़–स पु. यौ—बलराम के भाई, श्रीकृष्ण।

उ०—नमो जदुराज हळद्दर-जोड, रैणायर-रूप नमो रणछोड।—ह. र.

हळधर, हलधर–स पु [स. हलधर] १ श्रीकृष्ण के भाई बलराम का एक नामान्तर। (ना. मा.)

उ०—१ विसरिया विसर जस वीज वीजिजै, खारी हाळाहळा खळाह। त्रूटै कध मूळ जड-त्रूटै, हळधर का वाहता हळाह।—वेलि

उ०—२ गज घोडा देख भुलाणो रे, देव दानव नै चक्री हलधर, व्रह्मा विस्णु वखाणो रे।—जयवाणी

२ हल चलाने वाला व्यक्ति, किसान, कृषक।

उ०—ऊटा हळधर आकरा, ऊटा दुद्ध पियत। सदा सोक दुख मैं रहै, मुख मैं पीळा दत।—थळवट बत्तीसी

रू. भे.—हळद्दर, हळिधर, हळिधरि।

हळधरबधव–सं. पु यौ—श्रीकृष्ण।

उ०—हळधर-बधव गोकुळ-वाळ, खिमाग्र त साधुव दुस्ट खेंगाळ।—ह र.

हळनागळ–स पु—हल से सम्बन्धित उपकरण, हल की सामग्री।

हळनाडियौ, हळनाडौ–स पु—हल मे हरिस के साथ जूवा बाधने का का चमडे का रस्सा।

हळपळणौ, हळपळबौ—देखो 'हळफळणौ, हळफळबौ' (रू. भे)

उ०—सेठ निपटनै घर रै माय वडता हा कै हळपळियोडौ बामण सीधो बारा घर मैं वडग्यो।—फुलवाडी

हळपळणहार, हारौ (हारी), हळपळणियौ—वि०।

हळपळिओडौ, हळपळियोडौ, हळपळ्योडौ—भू० का० कृ०।

हळपळीजणौ, हळपळीजबौ—कर्म वा०।

हळपळियोडौ—देखो 'हळफळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हळपळियोडी)

हळपाणि–स पु [स. हलपाणि] हल-आयुध रखने वाले, बलराम का एक नामान्तर।

हलफ–स. स्त्री [अ.] किसी कार्य के सम्बन्ध में न्यायालय या न्यायालय द्वारा अधिकृत व्यक्ति के समक्ष ली जाने वाली शपथ, सौगध।

हलफ नामौ–स. पु [अ हलफ नामा] शपथ-पत्र।

हळफळ–स स्त्री—१ व्याकुलता, व्यग्रता, आतुरता, घबराहट, बेचैनी।

उ०—रह रह सुदरि माठ करि, हळफळ लग्गी काइ। डाभ दिरावइ करहलउ, मेकता मरि जाइ।—ढो मा

२ शीघ्रता, ताकीद, उतावलापन।

उ०—वगसी अरज करै बोलावै, आच्छो सो मोहरत है आज।

उ०—३ बीजळ हळवळ वळवला, दरलिय यळ दरियाव। घटा प्रघळ वाजण लगी, विरह जगावण वाव।—र. हमीर

हळवळणौ, हळवळवौ—देखो 'हळवळणौ, हळवळवौ' (रू. भे)

हळवळाणौ हळवळावौ—देखो 'हळवळाणौ, हळवळावौ' (रू भे.)

उ०—घरवाळी घणी हळवळायी तौ एक दिन वौ काटीजियोडा राचा नै उजाळिया। सवारनै टच करचा।—फुलवाडी

हळवळायोड़ौ—देखो 'हळवळायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. हळवळायोडी)

हळवळाहट–स स्त्री —१ भय, घबराहट आदि के कारण होने वाली मन स्थिति, घबराहट।

२ शीघ्रता।

३ भगदड।

हळवळियोड़ौ—देखो 'हळवळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हळवळियोडी)

हळवळौ, हलवलौ–स पु.—१ भय, आतक।

उ०—पछै फौज री हलवलौ पडचौ जद भाया तौ रात्रि रा कानी २ म्हास गया।—भि द्र

२ शोर-गुल, हल्ला।

उ०—डागळा अर पाडोस्या रै घरा वारणा ही कान पडगौ नी सुणीजै है। हळवळी हुवै, सावण रा सा वादळ घुटै है।—दसदोख

३ भगदड, अव्यवस्था।

४ शीघ्रता, ताकीद।

हळवाणी–स. पु.—लोहे की लम्बी छड, जिसका एक शिरा तीक्ष्ण एव नोकदार होता है।

वि वि.—यह हल मे लगाने का एक उपकरण होता है जो हल के नीचे की ओर फसा रहता है। हल चलाते समय इसका नोकदार शिरा जमीन मे घुसकर चलता है जिससे सीता बनती जाती है।

रू भे—हळवाणी हलवाणी।

हळवाणौ—देखो 'हलमाणौ' (रू भे)

उ०—दळिया रावै दळवळिया हळवाणौ। वेचण बीदणिया ई धणिया आणौ।—ऊ का.

हळवा—देखो 'हळवा' (रू भे.)

उ०—नीव थोडी हळवा ६० तथा ७० खेत सखरा। जवार तिल कपास हुवै।—नैणसी

हळवी–वि स्त्री —हलव देश की, हलव देश सवधी।

स स्त्री —१ एक प्रकार की तलवार।

२ एक प्रकार का काच, आईना, शीशा।

३ देखो 'हळवी' (रू भे)

हळवेडर–स स्त्री —हल के पीछे वधा रहने वाला बीज वोने का एक उपकरण जो वास के खोखले डडे का बना होता है।

उ०—भेनण हळवेडर भळकी तन भाई। मरिया डेडर ज्यू हरिया मनमाही।—ऊ का

हळवोळ, हलवोल–स. पु —कोलाहल, शोरगुल।

उ०—आडवर करता थका, न धरै किसि प्रवाह म.। कोलाहल हलवोल सु, मत्री कहै सुणि नाह।—श्रीपालरास

हळमळ—देखो 'हळवळ' (रू. भे.)

उ०—१ सूरजमल रीस करी राणै कह्यौ, 'हाथी माडा आयौ' घणी हळमळ की। दिन १ आडी घात नै कह्यौ, 'आवै सिकार सूअरा री मूळा री खेलसा।'—नैणसी

उ०—२ पछै मुदायन राणै रायमल जैमल नू कीयौ, तिको राव सुरताण नू जोर कुमया करै, इणै तौ घणी ही हळभळ की, जैमल मानै नही, पण पडियो आवै।—नैणसी

उ०—३ तरै राव हजूर तेड नै इणा नु हळभळ कर सीख दी। वीरमदे मेडतै आयौ।—नैणसी

उ०—४ पछै सीहोजी तौ आपरै डेरै माहै गयौ नै मूळराज नु वारै वेमाण नै वीच आपरा परधान हुता सु फेरनै पुछायौ—ये म्हासु इतरी हळमळ करौ छौ, सु म्हासु थाहारै कोई काम हुवै सु फुरमावौ।—नैणसी

हळमळी–स. स्त्री.—१ खलवली, भगदड।

२ घबराहट, बैचेनी।

३ हलचल।

हलभ्रत–स पु [स हलभृत] बलराम का एक नामान्तर।

हलमाणै–क्रि वि —साथ-साथ।

उ०—पावस हुया व्यतीत, टिकै ना टीव ठिकाणै। दुन-गन भागा दौड, हेड रमवा हलमाणै।—दसदेव

रू भे—हळवाणै।

हळमुख, हळमुखी–स पु —पिंगल मे एक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, नगण, सगण, क्रमश होते हैं।

उ०—रगण नगण सगणौ, भगण ए हळमुख भणौ। ईसरी गिरज अखीयै, सत्र मगळ सुख दीयै।—पि सि.

हलरावणौ, हलरावबौ–क्रि स —१ छोटे वच्चे को गोद मे उठाकर दाये-बाये घुमाना, एक हाथ से थपकी देते हुए दुलराना।

२ वच्चे को सुलाने के लिये या चुप कराने के लिये कुछ गाना गुनगुनाना।

३ पालने मे सुलाकर झूला देना।

उ०—माता धोता अमल, झुलरायौ झोली। हालरि हलरावियौ, हीडोल हिचोली।—ध व ग्र.

हलरावण हार, हारौ (हारी), हलरावणियौ—वि।

हलराविओडौ, हलरावियोडौ, हलराव्योडौ—भू० का० कृ०।

हलरावीजणौ, हलरावीजबौ—कर्म वा०।

हलरावियोडौ–भू का. कृ.—१ गोद मे उठाकर दाये-बाये घुमाया हुआ, थपकी देते हुऐ दुलराया हुआ २ सुलाने या चुप कराने के लिये कुछ

नई। [illegible] भूत सिनाच घनो, हळवै पग गैल चुडैल हली।
—मे म

उ०—२ तरै [illegible] न चमका मू पिडमंधी दीठी, जाणियो उळ-[illegible] । निसै सूनी हळवै नै ऊठी नै तरवार काटी नै [illegible] ऊभी।—मग्वडा मुग्वडा भाटी री वारता

रू भे—हळवट, हलवट हळवई, हलवई, हळवे, हळिवइ, हळिवई, हळे, हळवै।

हळवै-हळवै, हलवै-हलवै—देखो हळवे हळवे' (रू. भे)

उ०—तरै रिणधीर राजणियो, पैहरा खगार करै रहतो, सु रिण-धीर कयो—यु कांइ जोवो ? 'ग्रावो साढिया ल्या। खगार विण ग्रावडियो नहीं रहै।' तरै फेरनै नाटि लो नै हळवै-हळवै जाण लागा।—नैणसी

हळवौ-वि—१ छोटा, लघु।

२ मन्द, धीमा।

३ तुच्छ, ग्रोछा।

४ हलका, भारमुक्त।

५ जो ग्राघात, प्रभाव, ग्रसर की दृष्टि से हल्का हो।

उ०—एक तीर हळवौ सो चाई रायमलोत रै लागो।—द. वि.

रू. भे—हळवो, हलवो, हलुवउ, हलुवो।

हलवौ-स पु.—१ मैदा, सूजी, ग्राटा ग्रादि को घी मे भून कर उसमे निश्चित ग्रनुपात मे शक्कर एव गर्म पानी डाल कर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ, हलवा, सीरा, मिष्ठान्न, मिठाई।

उ०—पापडा, पीढा, लागवा भत, पेई, विलाण, पाचरा। हलवै मरघा कडाव हालै, घोल भूरगे ग्राचरा।—दमदेव

२ मोहन भोग।

रू भे.—हलुवउ, हलुग्रो।

३ देखो 'हलवो' (रू भे)

उ०—१ हलवा बासूदे नी भूखरी, बलै चोखा पेडा जोत रे लाला।
—जयवाणी

उ०—२ ललणा देवी सरीर लाडो कीवो १, मामरादेवी सरीर हलवो कीवो २, सांगदेवी सरीर [illegible] कीनो ३, तारादेवी सरीर [illegible] कीवो ४।—रा. व. वि.

हळवोडौ हळवोडियौ—देखो हळोडियौ' (रू. भे)

हलहल, हलहला—स. स्त्री.—१ शीघ्रता, ताकीद।

उ०—[illegible] वाहा, हलहल ग्ररद [illegible]। [illegible] सिया, [illegible]।—डो. मा

२ [illegible], [illegible], [illegible]।

उ०—[illegible] विगवै, [illegible]। [illegible]

[illegible]।—रा रू

३ [illegible]।

उ०—[illegible] री हलहल [illegible] रा निसाण। कौतू के

वीन मैं जोति का उजास।—सू प्र.

४ कोलाहल, शोर-गुल।

उ०—तीरा री साठी टूटी, भाला री गास माही रही सो लोहा सू पूर हुवौ थको पार होय जा बरछी ऊपर खडो रहियो। भला रावता ठाकुरा माही हा-हू हलहल हुई रही छै।
—डाढाला सूर री बात

५ घबराहट, बेचैनी।

क्रि वि.—धीरे-धीरे, शनै -शनै।

उ०—परससी पाछा वल्या, सेना सकल विहाण। हलहल हय गय सतरिया, निरघोस्या नीसाण।—मा का प्र.

रू. भे—हलहल्ल।

हलहलणौ, हलहलबौ—क्रि अ.—१ कांपना।

उ०—१ उण वार रत नद ऊभळे, हुय हाक धर गिर हलहले।
—सू प्र.

उ०—२ इद्र नै चद्र नागेंद्र चित चमकीया, धडहड्यो सेस। नै धरा घूजे। लचकि किचकीच करै पीठ कूरमतणी, हलहलै मेरु दिगदत कूजे।—प. च. चौ.

२ डरना, घबराना।

उ०—तइ पतिमाह तणैह पायाणउ पारभ सुणी। हलहलिया हेका-णवइ गढपति गर्म-गमेह।—ग्र. वचनिका

३ ग्रधीर होना विचलित होना।

उ०—१ हामलै जवान ग्रवर नर हलहले, ग्रवरकै धीर मन धरै ग्रेहवो। 'जसो' महाराज नाराज ग्रहे जरै, कसै कुळराज नाराज केहवो।—जयसिंह कछवाहा री गीत

उ०—२ गढ ऊपरि वाता गई रै, हलहलियौ हिंदुग्रान। गढपति भ्रायो ग्रापणोजी, कीजयै केही पान।—प. च. चौ

४ भगदड मचना, खलबली मचना।

५ कोलाहल होना, शोर-गुल होना।

६ हिलना-डुलना।

७ शीघ्रता करना, ताकीद करना।

हलहलणहार, हारौ (हारी), हलहलणियौ—वि०।

हलहलिग्रोडौ, हलहलियोडौ, हलहलयोडौ—भू० का० कृ०।

हलहलीजणौ, हलहलीजबौ—भाव वा०।

हलहलणौ, हलहलबौ—रू० भे०।

हलहलाणौ, हलहलाबौ—क्रि स.—१ कंपायमान करना।

२ डराना।

३ ग्रधीर करना, विचलित करना।

४ भगदड मचवाना, खलबली मचवाना।

५ कोलाहल कराना, शोर-गुल कराना।

६ हिलवाना, डुलवाना।

७ शीघ्रता कराना, ताकीद कराना।

४ तेज या द्रुत गति से चलाना।

५ चहल-पहल कराना, हलचल कराना, आवाज कराना, बोलाना, शब्द कराना।

६ भगदड मचवाना।

७ डराना।

८ परेशान करना/कराना, हैरान करना/कराना।

९ आदर-सत्कार कराना, स्वागत कराना।

हळवळाणहार, हारौ (हारी), हळवळाणियौ—वि०।

हळवळायोडौ—भू० का० कृ०।

हळवळाईजणौ, हळवळाईजबौ—कर्म वा०।

हळवळाणौ, हळवळावौ—रू भे.।

हळवळायोडौ-भू का कृ.—१ हल्ला-गुल्ला या शोर कराया हुआ, कोलाहल कराया हुआ. २ शीघ्रता कराया हुआ, ताकीद कराया हुआ, त्वरा कराया हुआ. ३ उत्सुक, व्यग्र, व्याकुल या आतुर होने के लिये प्रेरित किया हुआ. ४ तेज या द्रुतगति से चलाया हुआ. ५ चहल-पहल या हलचल कराया हुआ, आवाज या शब्द कराया हुआ. ६ भगदड मचवाया हुआ. ७ डराया हुआ. ८ परेशान या हैरान करवाया हुआ. ९ आदर-सत्कार या स्वागत कराया हुआ।

हळवळियोडौ-भू का कृ.—१ हल्ला-गुल्ला या शोरगुल हुवा हुआ, कोलाहल हुवा हुआ २ शीघ्रता, ताकीद या त्वरा किया हुआ. ३ उत्सुक, व्यग्र या आतुर हुआ हुआ. ४ तेज या द्रुत गति से चला हुआ. ५ डरा हुआ. ६ परेशान या हैरान हुवा हुआ. ७ आदर, सत्कार या स्वागत हुवा हुआ।

(स्त्री. हळवळियोडी)

हळवळी—देखो 'हळवळ (रू भे.)

उ०—घुवि तवळ वब चडि अरणघज, हलं धमळ हुय हळवळी। हाथिया टिला वेला हमल, हठां नीठ कठठं हली।—सू प्र.

हळवा-हळवा-क्रि. वि [अनु.] धीरे-धीरे।

उ०—वीरा रे, तू हळवां-हळवा बोल, मेरी देराणी-जेठाणी सौ सुणं जी, म्हा रा राज।—लो गी.

रू. भे.—हळवा-हळवा।

हळवाणी, हलवाणी—देखो 'हळवाणी' (रू भे)

उ०—१ जद स्वामीजी कह्यौ -रोग तो गभीर रौ चढयौ अनै कहै म्हारै सूजाळो। विण सूजाळया साता न हुवै। हलवांणी रा डाम दिया साता हुवै।—भि द्र.

उ०—२ हलवांणी रा छेहडा दोनू कानों वळै अनै वीचै ठडी। उठी सू पकडया हाथ वळै ने दूजा छेहडा सू पकडै तोही हाथ वळै।—भि. द्र

हळवा-स स्त्री.—१ उतनी जमीन १०० या ४० हलों से एक दिन में जोती जा सके।

उ०—१ जैतारण या कोस ३ दिखण था डावो। जाट वाणिया वसै। धरती हळवा १०० वाजरी मोठ हुवै। खेत कवळा ढन्हाळी अरट ८ ढीवड़ा १०, सेंवज विणा हुवै।—नैणसी

उ०—कोस ५ ऊगवणी, वेरी १ तळाव १। हळवा ५०। गाव देवड़ा रौ छै। गाव जमीया पछै एक साखीयो।—नैणसी

२ बोऐ हुए खेत मे फसल मे खाली रह जाने पर बीच बीच में दुबारा की जाने वाली बोवाई। (बीकानेर)

३ ऐसी वर्षा जिससे हल चल सके।

४ देखो हलवाह' (रू. भे)

हळवा-हळवा—देखो हळवा-हळवा' (रू. भे)

हलवाइ, हलवाई, हलवायी-स. पु—मिठाई बनाने व मिठाई का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति, कदोई।

वि.—बातूनी, वाचाल, वाक्पटु।

हळवाह-स. पु.—१ श्रीकृष्ण के बडे भाई, बलराम।

२ देखो 'हळवा' (रू. भे.)

हळवाहण-स पु—वैल।

हळवी, हलवी-वि स्त्री—१ तुच्छता, ओछी।

उ०—१ तरै झालै रायसिंघ कह्यौ—'म्हारा ठाकुर। इसडी वात हळवी कासू करौ छौ? पेंडा रौ गाव छै। घणा ही पेंडै नीसरसी, थै किण किण सू वेढ करसौ?—नैणसी

उ०—२ हळवी वात हराम तजि, धरणि धर सू ध्यान धरि। मोसरि मिनखा देह कौ, इणि अवसर उपगार करि।—जामी

२ छोटी, लघु पतली।

३ निर्वल, अशक्त।

उ०—प्रथीराज नु कह्यौ—राव मालदे रै आगै ही वडा ठाकुर था सु सारा काम आया छै। नै आपे ही मरस्या तौ ठकुराई हळवी पडसी।—नैणसी

४ भारमुक्त, हल्की।

उ०—पाप टलै नही आलोयण पखै, कहै ग्यानी सहु कोय। परही मूक्या सिरनी पोटली हलवी गावडी होय।—ध. व ग्र.

५ सुख साध्य।

क्रि. वि.—धीरे-धीरे, शनै शनै।

रू भे—हळवी।

हळवे—देखो 'हळवै' (रू भे.)

हळवे-हळवे, हलवे-हलवे-क्रि. वि. [अनु] धीरे-धीरे, शनै शनै।

उ०—१ पछै सीसोदियौ परवतसिंघ देवडै रांमै सिलावट तेडाय हळवे-हळवे भीत खोलाय नै अगैराज नुं काढ लीयो।—नैणसी

उ०—२ हलवे-हलवे उतरघा रै, वाद्या मुनि ना पाय। मात पिता नै पूछनै रै, मैं लेसा सजम सुखदाय।—जयवाणी

रू. भे—हळवै-हळवै, हलवै हलवै, ह्वले-ह्वले, ह्वलै-ह्वलै।

हळवै, हळवै-क्रि. वि.—धीरे।

उ०—१ करि माकणि डाकणी मग कई, नगटा मग जग मनग

२ गतिमान करना।

३ आगे बढ़ाना, अग्रसर करना, भेजना।

उ०—ताहरा माता मादू माळवै नुं कासीद हलायो।

—देवजी बगडावत री वात

४ रवाना करना, सीख देना।

उ०—थें हलाणो करो, ज्यों म्हे जाय जातां करा। तद केसरिदे दात दायजो दे नै बेटी हलाई।— ठकुरै साह री बात

५ घुमाना, फिराना।

६ देखो 'हिलाणौ, हिलावौ' (रू भे.)

हलाणहार, हारो (हारी), हलाणियो—वि०।

हलायोड़ो—भू० का० कृ०।

हलाईजणौ, हलाईजवौ—कर्म वा०।

हलावणौ, हलाववौ, हल्लाणौ, हल्लावौ—रू० भे०।

हलाणौ-चलाणौ—देखो 'हलावौ-चलावौ' (रू. भे)

हळाबोळ-वि —१ बिलकुल नितान्त, सरासर।

२ प्रकट।

उ०—हळाबोळ ओघाळ दंतेस हच्छ। अणी सूळ में बाधिया वाघ अच्छ।—सू प्र.

३ ऊपर तक भरा हुआ, लबालब, परिपूर्ण।

४ समुद्र के समान लहरें देता हुआ।

उ०—गभि दळ झळहळ सकळ, गयद चढियो गह घारं। हळाबोळ दळ हलै, वाजि दुदुभ जिण वारं।—सू प्र

५ अत्यधिक, बहुत।

६ तेज।

उ०—दिया गुरु निर्नाम मेरा, किया जिन सुन्न में मेरा। कह सुखराम सिमरथ दासा, ब्रह्म हळाबोळ प्रकाशा।

—श्री सुखरामजी महाराज

८ खरा, खराब।

रू. भे —हाळबोळ।

हलाभ-स. पु —वह घोड़ा जिसकी पीठ पर काले या अति गहरे रग के बाल बराबर फूटे हुए हों।

हलायुध, हलायुध-सं. पु [स हलायुद] १ हल के आकार-प्रकार का एक आयुध जिसे कृष्ण के भाई बलराम रखते थे।

उ०—हलायुध हलायुधह मुसलायुध मुसलायुधह, सूलायुध सूलायुध, दै दस दिसह गरदभ धुनि पटल उच्छटह।—व. स

२ बलराम का एक नामान्तर। (ह ना मा.)

हलायोड़ो-भू. का कृ.—१ चलाया हुआ, चलायमान किया हुआ, चलने के लिए प्रेरित किया हुआ. २ गतिमान किया हुआ, शुरू किया हुआ ३ अग्रसर किया हुआ, आगे बढ़ाया हुआ, भेजा हुआ. ४ रवाना हुआ, सिधाया हुआ. ५ रवाना किया हुआ, सीख दिया हुआ।

६ देखो हिलायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री हलायोड़ी)

हलारकी-स. पु. [देशज] हलार देश में उत्पन्न एक प्रकार का घोड़ा।

हलारियौ-स पु [देशज] कुंमट व बबूल की फली।

हलाल-वि [अ.] १ उचित, वाजिब।

उ०—हैवान आलम गुमराह गाफिल, अव्वल सरीयत पद। हलाल हराम नेकी बदी, रसं दानि समद।—दादूवाणी

२ जिसका खाना पीना धर्म शास्त्र मे वर्जित न हो।

३ मुसलमानी शरअ के अनुसार खाने वाले जानवर की गरदन पर धीरे धीरे छुरी चलाते हुऐ मारने की क्रिया।

उ०—फाजल हरवखत इयै धारणा मे डूब्योड़ो रेवै। पण जेळ मैं आ वात जावक निजोरी। काटण वेगी जानवर कठै सू आवै। हलाल विना ही हराम वर्ण।—दसदोस

हलालखोर-स. पु [अ , फा.] मेहत्तर, भगी।

उ०—ताहरा रुपीयौ १ रा टका मगाया। मंगाइ नै राखीया। कह्यो, जा हलालखोर बुलाई ल्याय। हलालखोर बुलायो। घर फूस राख मू भरीयो पडियो हुतो, सु आछो भटकायो बुहारि आछो कियो।—स्याम सुदर री वात

वि.—मेहनत या श्रम की कमाई खाने वाला।

हलालखोरी-स पु [अ. फा.] १ हलालखोर का कार्य।

२ मेहनत, परिश्रम।

३ परिश्रम से की जाने वाली कमाई।

हलालियौ-वि.—कृतज्ञ।

हलाली-वि [फा] १ जिसका कत्ल किया जाय, जिसका हलाल किया जाय।

उ०—बकर का हलाली खाणा, सूकर का कोन खाणा।—शि. व

२ हलाल करने वाला। (गा म)

३ उत्तम, अच्छा।

उ०—घरि फिरि आवै सहजि दुहावै तिहको खीर हलाली।

—जाभो

स पु.—हलाल करने की क्रिया या भाव।

उ०—असल मुसलमान हुवै जको मजब रै कायदै सू निवाज पढै रोजा राखै अर बरस मैं दो-चार वार हलाली कर परो'र मालकनै मूढो दिखाळै।—दसदोस

हळाव-स पु.—१ हल की बारह सीताओं (रेखाओं) की एक ईकाई।

वि वि —जुताई या बुवाई करते समय खेत का कुछ अश, प्राय बारह सीताएँ निकलने योग्य अश, खाली छोडकर एक सीता निकाली जाती है। फिर आते जाते उस सीता के आजू-बाजू दूसरी सीताएँ निकाली जाती है। इस प्रकार जब छोड़ा हुआ अश भर जाता है तब फिर इतना ही अश खाली छोड कर दूसरी सीता निकाली जाती है। यह क्रम पूरे खेत की जुताई-बुवाई तक चलता

८ सलाह करवाना, विचार करवाना ।

हलहलाणहार, हारो (हारी), हलहलाणियो—वि० ।

हलहलायोडो—भू० का० कृ० ।

हलहलाईजणो, हलहलाईजबो—कर्म वा० ।

हलहलायोड़ो-भू. का कृ.—१ कम्पायमान किया हुआ. २ डराया हुआ. ३ अधीर किया हुआ, विचलित किया हुआ. ४ भगदड मचवाया हुआ, खलबली मचवाया हुआ. ५ कोलाहल कराया हुआ, शोरगुल कराया हुआ. ६ हिलाया हुआ, डुलाया हुआ ७ शीघ्रता कराया हुआ, ताकीद करवाया हुआ. ८ सलाह करवाया हुआ, विचार करवाया हुआ ।

(स्त्री. हलहलायोडी)

हलहलियोडो-भू का कृ—१ कम्पित २ डरा हुआ, घबराया हुआ ३ अधीर या विचलित हुवा हुआ ४ भगदड या खलबली युक्त. ५ कोलाहल पूर्ण हुवा हुआ. ६ हिला हुआ, डुला हुआ. ७ शीघ्रता किया हुआ, ताकीद किया हुआ. ८ सलाह किया हुआ, विचार किया हुआ ।

(स्त्री हलहलियोडी)

हलहली-वि स्त्री—सजी हुई ।

उ०—जीमा जूठ्या रम रमा ए मांमी पोढण ठौर बताय । ऊंची मडी हलहली जी दिवलो चसै यें मुमाल रानी सोरठी ।—लो. गी.

हलहल्ल—देखो 'हळहळ' (रू भे.)

हलहल्लणो, हलहल्लबो—देखो 'हलहलणो, हलहलबो' (रू भे.)

उ०—हलहल्लिय लंक गढ वकसो, दस-धू पै हल काहल्लिय । हल्लिय पताख गजराज पै, विजै कटक राघव हल्लिय ।—र ज प्र.

हलहल्लियोडो—देखो 'हलहलियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. हलहल्लियोडी)

हलांण-स स्त्री—गति, चाल ।

उ०—राणो सूरजमाल रै, पमगा हुवा पलाण । पोह फाटी परभात री, हलचल हुई हलांण ।—पा प्र

हलांणो-स पु.—१ विवाह के बाद कन्या की पिता के घर से विदाई, गौना ।

उ०—१ चौरी माहे बैठा, परणायो । परणाइ नै कावळो जानी-वासै गयो । तोडी नु घर मैं ले गया । प्रभात हुवो । जान नु भगति हुई । दिन ४ राखीया । हीडा किया । जांनी बोलीया, हलांणो करो ।—कावळो जोइयो नै तोडी खरल री वात

उ०—२ आज पछै टिक मिजमानी जीमो बीजो म्हैं झट तयारी कर हलांणो ही कर देयस्यां ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ विदाई के समय कन्या के पिता द्वारा दिया जाने वाला धन, दहेज ।

३ प्रथम प्रसव के बाद कन्या की पिता के घर से वस्त्राभूणो सहित की जाने वाली विदाई ।

उ०—जैतपुर माही एक तेली रहै, तिण रै भटनेर रो तेली परणियो सो सासरै हलांणै नू आयो ।—ठाकुर जेतसी री वारता

४ प्रस्थान, गमन ।

उ०—तरै सोलंकणी आसथान नु समझाय नै कह्यो—अठै थांहां रो टिकाव कोई नही । ऐ साम्ही कोहीक ऊखाव कर मारसी । आपै हालो, म्हारै पाटण जावां । तरै इण हलांणा री दिन ५ तथा ६ माहे तयारी कर, दस मांणस रजपूत राख नै पाटण नै चालीया ।
—नैणसी

रू. भे—हलणो, हलावणो, हल्लाणउ, हल्लांणो, हहलाणउ, हह-लांणो, हालाणो ।

हलांम-स. पु.—सेना, फौज ।

उ०—धरा पै हमला हलांम चोळा मु नाग धूजे, सफै बोज नवी डढा कोल रा समेत । घमु देस सोगणी जे ऊपरा चखा, यइडा नाखीया बाभी ओळरा वानैत ।—ठाकुर महेसदास रो गीत

हला-सं स्त्री. [स.] १ पृथ्वी, धरती ।

२ सखी ।

३ शराब ।

४ पानी, जल ।

हळाई-स. स्त्री—१ हल की बारह सीताओं (रेखाएं) की एक इकाई ।

उ०—जमी माथै मडियोडी आ हळाइयां रा आगरां नै कुण पुग सकै ।—फुलवाडी

वि. वि—देखो 'हळाव'

२ खेत या भूमि का वह भाग जिसमें उक्त सीताएं आती है ।

३ हल जोतने का समय । (शेखावाटी)

हलाक-वि [फा] १ मृत हुआ, मृत, हत, वध किया हुआ ।

२ नष्ट ।

उ०—प्रांण जितै जग आपणो, प्राण जितै तन पाक । प्राण प्रयाण किया पछै, व्है नर नाम हलाक ।—बा दा.

हलाकत-स स्त्री [फा.] हत्या, मृत्यु, वध, नाश ।

हलाकुएल-स. पु [फा] सेना का भयंकर आक्रमण ।

उ०—हलाकुएल सेन तें सदा उथेलतै हलें । चिनार पेट भेट कै चपेट मेलतै चलें ।—ऊ का

हलाकू-वि [फा.] मारने वाला, वध करने वाला, हत्यारा ।

हलाडणो, हलाडबो—देखो 'हलाणो, हलाबो' (रू भे)

हलाडणहार, हारो (हारी), हलाडणियो—वि० ।

हलाडिओडो, हलाडियोडो, हलाडयोडो—भू० का० कृ० ।

हलाडीजणो, हलाडीजबो—कर्म वा० ।

हलाडियोडो—देखो 'हलायोडो' (रू भे.)

(स्त्री हलाडियोडी)

हलाणो, हलाबो-क्रि. स. ['हालणो' क्रि या प्रे रू] १ चलाना, चलायमान करना, चलने के लिए प्रेरित करना ।

हलिप्रिय-सं. पु [सं हलिन्+प्रिय] १ कदंब का वृक्ष। (डि को)
 २ मद।
 ३ बलराम का एक नामान्तर। (अ. मा.)

हलिप्रिया-सं स्त्री [सं हलिन्+प्रिया] १ शराब, मदिरा।
 २ बलराम की प्रिय वस्तु।

हलिमा-सं, स्त्री [सं] स्कन्ध की एक मातृका।

हळियो-सं. पु [सं हलिन्] १ हल चलाने वाला कृषक।
 उ०—हळियां हल संजोडिया, गळियो ग्रीखम गाढ। ग्रासुवा [illegible] दियौ, ग्रायौ गुर ग्रासाढ।—पा प्र
 २ खेलने का हलनुमा छोटा खिलौना।
 ३ देखो 'हळ' (अल्पा, रू भे)
 उ०—१ एक तो म्हानै हळियो दीजो हाल दीज्यो जाडो। दोय तो म्हानै बेहडा दीजो बिच मे दीज्यो गाडी।—लो. गी
 उ०—२ झिरमिर झिरमिर मेहडो बरसै, बादळियो घररावै ऐ। खेतडी नो बूना पाटै, परण्यो हळियो बावै ए।—लो गी.

हळिवइ हळिवई—देखो 'हळवै' (रू भे)
 उ०—सज्जण दुज्जण कै पडै, भडिक न दीजइ गाळि। हळिवइ हळिवइ छंडियइ, जिम जळ छंडइ पाळि।—ढो मा.

हळी—१ देखो 'हळि' (रू. भे.) (ह ना मा)
 २ देखो 'हळ' (रू भे)

हळीपण, हळीपणी, हळीपणि-सं. पु [सं. हल+पाणि] बलराम का एक नामान्तर। (ह. ना मा)

हलीम, हलीम-सं पु [अ हलीम] १ केतरी।
 [अ. हलीम] २ मुहर्रम मे बनने वाला एक प्रकार का खाना।
 ३ एक प्रकार का मांस जो हसन और हुसेन के लिये पकाया जाता है।
 ४ खिचडी।
 ५ [illegible]
 ६ एक प्रकार का व्यंजन विशेष जो गोश्त, गेहूं, चना, मसाले व केसर की बहुत सी तरह १ सेर घी, पाव-पाव भर शलजम, गाजर, [illegible] आदि के मिश्रण से बनता है। उक्त सामग्री से १० रका-बियां भर जाती है।
 वि [अ. हलीम] १ सहनशील, गम्भीर।
 २ [illegible]
 उ०—१ [illegible] रण रचा उदावत, [illegible] घण सिर घाव दिया। [illegible] हलीम किया।
 —तेरसी साद्दू
 उ०—२ [illegible] हलीम री [illegible] निराली है।—नी. प्र

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पगै। हलीलां हिलै सप फौजा हसत्ती, प्रिथी सग लग्गा केई देस-पत्ती।—वचनिका

हलीलौ-स. पु [देशज] साधारण गृह-कार्य।
 उ०—दाई ग्रावै दिन ऊठै ई रैवती। नित री हलीलौ करती। पोतडिया धोवती। ग्राटा री लोई फेरती। जच्चा रै पीठी करती।
 —फुलवाडी

हलीसक-सं. पु.—एक प्रकार का नृत्य विशेष।
 उ०—मिळ मझ साकणि डाकणि भोत, हलीसक नाच भली विधि होत।—मे. म

हलुग्रउ—१ देखो 'हळवौ' (रू. भे)
 २ देखो 'हलवौ' (रू. भे)

हलुग्रापण, हलुग्रापणू, हलुग्रापणौ-सं. पु [राज हळवौ+पणौ] १ लघुत्व, लघुता।
 २ ग्रोछापन, तुच्छता।
 उ०—ताजि सीम नीचा नमै याचवू ग्रति हलुग्रापणू। मू करि जु मन वसि नही तेज ढाक्यू तै तगू।—नळाख्यान

हळुग्रौ—देखो 'हळवौ' (रू भे)

हलुग्रौ—देखो हलवौ' (रू भे)

हलुकरम-स पु—हल्का कार्य।
 रू भे—हलूक्रमउ।

हलुकरमी-वि—हल्के कर्मो वाला, जिसके कर्म न्यून स्तर के हो।
 (जैन)
 उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या—दाल हुवै तो मूग मोट चणा री हुवै पिण गोहा री दाल न हुवै। ज्यू हलुकरमी बुद्धीवत हुवै तै समझै पिण बुद्धी हीण न समझै।—भि द्र.
 उ०—२ सत गुरु सब्द ज साभलू, जद मनडो हुवै राजी जी। हलुकरमी हरखै घणा, मिथ्यात-मत जावै भाभी जी।—जयवाणी
 रू भे—हलूकरमी, हलूकमी।

हलुहार-स पु—एक प्रकार का घोडा जिसके ग्रडकोश काले होते हैं ग्रौर माथे पर दाग होते है।

हलू, हलूइ-वि—हल्का, धीमा, मन्द।
 उ०—१ ग्रनट ग्रनपय पुहतिनइ सयोगि, मननइ ऊनटि, मडोग मगनी दानि, बुभक्षानी कालि, फोतिरै छाडी, हलू हथीय साडी, त्रिडइ तीधी घणइ पाणी मीधी .. ...।—व स
 उ०—२ एक लगै पाटउ, माहइ दीजइ माटउ, वेलणम्यु वेलीइ, हलू हस्यु मेल्हीइ, ग्रन स्युं मिल्या, लोह जडा है तल्या।—व. स.

हलूक्रमउ—देखो 'हलुकरम' (रू भे)
 उ०—दरम कुमर हलूक्रमउ, ग्रनि बूधउ तनकालो नी। नेमि म गेरि सजम लीयउ, जिन ग्राज्ञा प्रतिपालो जी।—स कु.

हलूकरमी, हलूकमी—देखो हलुकरमी' (रू भे)

हलूर-स स्त्री—तरग, लहर।

रहता है। इस प्रकार से बनने वाली इकाइयो को 'हळाव' कहा जाता है। बुवाई-जुताई के बाद गौर से देखने पर ये इकाइयाँ स्पष्ट लक्षित होती है।

२ खेत का वह अश जिसमे उक्त इकाई आती है।

हलावणी—देखो 'हलाणी' (रू. भे)

उ०—वडारण सगळा समाचार कहिया सो सुण राजी हुवा सरवरा तयारी हलावणी री होवै छै।—कुवरसी साखला री वारता

हलावणौ, हलावबौ—१ देखो 'हलाणौ, हलावौ' (रू. भे)

उ०—१ माता जसोदा पालना हलावै, हलावै हाथ मैं लेकर दोरा।
—मीरा

उ०—२ लाखो लडता जेज न लावै, हरी तणो लख धकै हलावै। नाहर वखत सिंघ वै नाहर, सुत लखधीर मीर लखि सिंधुर।
—रा रू.

उ०—३ हरि हथिग्रार हलावता मुकरथह रुधी वट्टि। तै मुरूलीधइ ग्राविजे, नाकि घणा जिणि घट्टि।—मा का प्र

उ०—४ सुक साहमु जोइ नही जागतु जोगेस। सास न चूकु सीलवर सीस हलाविउ सेस।—मा. का प्र

२ देखो 'हिलाणौ, हिलावौ' (रू भे.)

हलावणहार हारौ (हारी), हलावणियौ—वि०।

हलाविग्रोडौ, हलावियोडौ, हलाव्योडौ—भू० का० कृ०।

हलावीजणौ, हलावीजवौ—कर्म वा०।

हलावियोडौ—१ देखो 'हलायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो हिलायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री हलावियोडी)

हलावौ-चलावौ—स पु.—मृतक के शव को श्मसान ले जाने का कार्यक्रम।

उ०—म्है दुनिया मैं कजूसी रै वेजोड गुण री मिसाल थापनै जावूला। हलावौ-चलावौ करो ग्रर म्हनै सीढी मैं घाल ठेट मसाण ताई रोवता-रोवता लेय जावौ।—फुलवाडी

रू भे—हलाणौ-चलाणौ।

हळासीक—वि—विपयुक्त।

उ०—महाभारता क्रतत किना पट्ठो ग्रढी मंत, नदी हळासीक किना ग्ररदीक नाग। जळावोळ सिंधवाळी मानौ प्रळैकाळ जाळ, खळा तळावोळ वीजा तूफ वाळी खाग।—भैरुदान वारहठ

हळाह—स पु [स] कवरे रग का घोडा। (डिं को)

हळाहळ—स पु [स हलाहल] प्रचड-विप, महाविप जो समुद्र मथन के समय समुद्र मे निकला था।

उ०—१ घर घर घट कोल्हू चलै, ग्रमी महारस जाइ। दादू गुरु के ग्यान विन, विसय हळाहळ खाइ।—दादूवाणी

उ०—२ पीव पीव मैं रटू रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री। विरह भवग मेरो डसो है काळजो, लहरि हळाहळ जागी री।
—मीरा

२ देखो 'हळाहळयोग'।

वि.—१ प्रचण्ड, तेज।

उ०—दुतिय ग्रनग रूप दरसाणा, पाण पाच दीरघ निज पाणा। वाहग्रजान तेज ग्रतुळीवळ। हरचाव झळ मधि जेठ हळाहळ।
—सू प्र.

२ कुपित, नाराज।

उ०—पातसाहजी रा० वीरमदे सु राजी हुवा। पातसाह ग्रागै ही राव मालदे सूं हळाहळ हुय रह्यो छै। तिण समै वीकानेर रा धणी पण कवर भीवराज जैतसीयोत मु नगो ऐ ही फिरीयाद गया छै।
—नैणसी

३ विलकुल, कतई।

उ०—तिण देस रा स्तभ मैं वेगी खळळ पडै नीव वादसाहत री मैं उत्पात हळाहळ हलचल हुवै।—नी. प्र

४ सरासर, साफ, स्पष्ट।

उ०—१ जोर सू कूक्यौ—ग्रन्याव व्है, ग्रदाता हळाहळ ग्रन्याव व्है। वेकसूर दीवाणजी नै हकनाक राज रे हाथा डड मिळै।
—फुलवाडी

उ०—२ वै खुद चलाय-चलाय नै मौन रै मूडै कीकर गिया। ग्रो तौ हळाहळ इण पाचवा रो ग्रन्याव है।—फुलवाडी

रू भे—हळाहळि, हाळाहळ, हालाहल।

हळाहळयोग—सं पु [स हलाहल+योग] फलित ज्योतिप के ग्रनुसार तिथि व नक्षत्र सम्बन्धी चतुर्थ योग।

हळाहळि—देखो हळाहळ' (रू भे)

उ०—सप्रति वरत्तइ कळिकाळ, महाकूड कपट काळ। चाड चवाड साक्षात् हळाहळि, सामु वहु परस्पर कळि।—रा सा. स

हलाहिव—ग्रव्य—ग्रभी, तुरन्त।

उ०—मुछ वल घालि वहू रोस भाखै रतन। हलाहिव साहि नइ करा सीधो।—प. च. चौ.

हळि—स पु [स हलिन्] १ वलराम का एक नामान्तर। (ग्र मा)

२ हल चलाने वाला कृपक।

रू भे.—हळी।

३ देखो 'हळ' (रू भे)

हळिद्र—देखो 'हळदी' (रू भे)

उ०—वधाउग्रा ग्रहे ग्रहे पुरवासी, दळिद्र तणो दीधो दळिद्र। ऊछव हुग्रा ग्रखित ऊछळिया, हरी द्रोव केसर हळिद्र।—वेलि

हळिधर, हळिधरि—देखो 'हळधर' (रू. भे)

उ०—जैसे वीजा हळा सो रूखा का मूळ जड ग्रूटता ग्राघात होय। इणि भाति हळिधरि जी को हळ वहे छै।—वेलि टी.

बद गया, हसा सीसण हल्ल ।—अग्य त

४ देखो 'हळ' (रू. भे)

हल्लणो, हल्लवौ—देखो 'हालणौ, हालवौ' (रू भे)

उ०—१ हल्लउ हल्लउ मत करउ, हियडइ साल म देह । जै साचेई हल्लस्यउ, सूता पल्लाणेह ।—ढो मा.

उ०—२ दुहाडत सेर हल्या रण धीठ । देव्या कर चक्र चल्या अणदीठ ।—मे म

उ०—३ पिय पचह पेखता द्रुपदधीय कडिचीर कट्टीय । द्रोण विदुर गगेय गुरा न हल्लि कोहग्गि दट्टीय ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ वरस छत्रीसमै जेठ सुद, तेरस सोम प्रभात । खेतासर तज हल्लियौ, राव मुरद्धर तात ।—रा. रू.

हल्लणहार, हारौ (हारी), हल्लणियौ—वि० ।

हल्लिओड़ौ हल्लियोड़ौ, हल्ल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

हल्लीजणौ, हल्लीजवौ—भाव वा० ।

हल्लर-फल्लर—स. पु. यौ —१ टालमटोल, उपेक्षा ।

उ०—माहव सूम मिलाव मत, ऐडा घरा हिमाव । कै हल्लर-फल्लर करै, पावै कल्लर राव ।—बा. दा.

२ अतिथि-सत्कार ।

३ खुशामद ।

हल्लाणउ—देखो 'हलाणौ' (रू. भे.)

उ०—ढोलउ हल्लाणउ करइ, धण हल्लिवा न देह । भव भव झूबई पागडइ, टबहब नयण भरेह ।—ढो मा.

हल्लाणौ, हल्लावौ—देखो 'हलाणौ, हलावौ' (रू. भे)

हल्लाणहार, हारौ (हारी) हल्लाणियौ—वि० ।

हल्लायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

हल्लाईजणौ, हल्लाईजवौ—कर्म वा० ।

हल्लायोड़ौ—देखो हलायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री हल्लायोड़ी)

हल्लीसक—सं. पु —१ वर्तुलाकार नृत्य ।

२ बहुत सी स्त्रियों द्वारा एक साथ किया जाने वाला वर्त्तुलाकार नृत्य ।

उ०—अर प्रथ्वीराज री साथ बी महाकाली री तरफ हल्लीसक वास रौ कटाक्षा देतौ साम्है चलायो ।—व. भा.

हल्लौ—स पु —१ हमला, धावा, आक्रमण

उ०—१ कुमार पाछो आइ ततकाल ही हल्लौ करि दहिया 'जसकरण' नू मारि कर उर मैं आपरो झडो झुकायौ ।—व भा

उ०—२ हटै मीढवो राग गुडै, हल्ला गज हल्ला । खळा उथल्ला खग्ग, वणै बगतर वरघल्ला ।—ऊ का.

२ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल ।

३ आवाज, पुकार, शब्द ।

उ०—१ ताहरा राजा कही— 'वहोत भला', ताहरा ए चढ हल्लौ कर, अर दरवाजै आय लागा ।—नैणसी

उ०—२ पछै गाव नू हल्लौ कियौ ।—नैणसी

४ युद्ध की ललकार, चुनौती ।

५ काम-काज, धधा, कार्य ।

उ०—१ दिन रै अधारै सगली दुनिया हल्लै लागै । उण वगत म्हनै अधारा मैं मुळगी दीखै ई नी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ लोगा नै हेला पाड पाड जगाया । कैवता—ऊठो रे वेल्या ऊठो, हाल ताई कीकर सूता हो । घर रौ हल्लौ करो । हाट बजार सूना पड्या-खोलो खोलो ।—फुलवाड़ी

हव—स. पु [स] १ यज्ञ की अग्नि मे किसी देवता के निमित्त दी जाने वाली आहुति, बलि, चढावा ।

२ आग, अग्नि ।

३ यज्ञ ।

क्रि वि.—१ अब, इस समय, अभी ।

उ०—१ जगपत राण तणा जाळाहळ, जगत कथै जस जुवौ जुवौ । हैवर दखियर अघर हालतौ, हव सवर आधार हुवौ ।

—महाराणा राजसिंह रो गीत

उ०—२ म ग्रीह रे मूरख मूछ मोडी, तू बोलतु रावै नि कूडी । मई ओलखी तउ हव अगु साति, भाजउ जिसिइं कौरव सैन्य वाति ।

—सालिसूरि

हवइ हवई—क्रि. वि —अब, अभी, इस समय ।

उ० —१ जां मज्झि हउ फिरउ ससार ता तुम्ह ध्यान करउ सविचार । अविचल भगतिइ मागउ योग, क्षण इकु रखै हवइ वियोगु ।—वस्तिग

उ०—२ हवइ कूकडा बोल्या, लगारेक नीद थी डोल्या । नीदड झकोल्या, मूकी सभोगनी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या ।

—रा मा स

हवख हवखि—स पु —१ वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय, हवि ।

उ०—वडै अन्न दीधो अन हवखि ।—रामरासो

२ घृत, घी । (अ मा, ह ना मा)

हवट—स पु —घोडा, अश्व ।

उ० —तो जाया करनेस का, मेलू घममाण । हवटा अत कढू भडा, थट्टा सूजाण ।—द. दा.

हवड—स पु —समय, वेला ।

क्रि वि —अब, अभी ।

हवडा, हवडा—क्रि. वि [सं अधुना] १ अब, अभी । (उ. र.)

उ० —१ मैं जाणूं मारु हू हवडा दुस्यासन माहापापी । जेणै केस ग्रहीनै आंणी द्रुपदसुता सतापी ।—नळाख्यान

उ०—२ महीपति ! को माधव इहा, हूतउ हवडा तेह । ऊजेणी माहि आज छइ, पणि सही पाटसि देह ।—मा. का प्र.

२ इधर ।

उ०—ग्रहा सिरि सग देवा सिरै गढपत्या, स ऊजळ हलूरा उरड माभाव ।—भगनराम हाडा री गीत

हलूस-स पु —उत्साह, उमग ।

उ०—फिळै मैं ग्राई घर्णु हलूस, लागी पर्ग सुहागण भूख ।—माभ

हलूसणौ, हलूसवौ-क्रि. ग्र —१ उत्साहित होना, उमगित होना, प्रसन्न होना ।

२ यकायक उचकना या झपटना ।

हलूसियोडौ-भू का. कृ —१ उत्साह या उमग से भरा हुग्रा, प्रसन्न २ उचका हुग्रा, झपटा हुग्रा ।

(स्त्री हलूसियोडी)

हळोचळ-वि —विचलित, व्याकुल ।

हळोटौ-स पु.—जैसलमेर राज्य का एक प्राचीन कर जो प्रति हल चार रुपये के हिसाव से वसूल किया जाता था ।

हळोतियौ-स पु.—बीज वोने लायक होने वालो मौसम की पहली वर्षा जिस पर पहली बार हल चलाया जाता है ।

उ०—हळिया जोतो रे कामेती, खेती निपजै घणिया हेती, हाळी बीज रौ हळोतियौ ।—चेतमानखौ

रू भे —हळसोटौ, हळसोतियौ हळोतरौ, हळोतियौ ।

हळोद, हळोदपुर-स पु —एक प्राचीन शहर का नाम ।

उ०—१ तरै मारग मैं हळोद जसा भाला सु लडीया । जसो हळोद सु नीसर गयौ । तरै सेहर लूट लीनौ नै सेहर कोट पाडीयौ ।

—रा वं वि

उ० —२ साथ भंडारी थानमी, सकतै ग्राद कमध । ग्राया मार हळोदपुर, पथ लाया छत्रवध ।—रा रू.

हलोर—देखो 'हिलोर' (रू. भे)

उ० - धाम धाम मगळ धवळ, हुए हगाम हलोर । छडक पगारा नीर छिन घुरै नगारा घोर ।—र रू

हलोरणौ, हलोरवौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडवौ' ।

हलोरणहार, हारौ (हारी), हलोरणियौ—वि० ।

हलोरिग्रोडौ, हलोरियोडौ, हलोरयोडौ—भू० का० कृ० ।

हलोरीजणौ, हलोरीजवौ कर्म वा० ।

हलोरियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हलोरियोडी)

हलोळौ—देखो हिलोळौ' (रू. भे)

उ०—हाका तीरदाजा होय, हलोळा वाहरा हदा, ग्रासै प्रथी मारी वीरा हरा हदा येम । हीदू पती गळै नेत वाधीया वाहरा हदा, जोव ज्यो नाहरा ग्राभूमणा जेम ।—महादान महडू

हळोवळ, हळोवळा, हळोवळी-क्रि वि,—१ चारो ग्रोर, चौ तरफ ।

उ०—फजर गज पीठ पीचरग नेजा फरक, हळोवळ पाखरा हुडड भडै हरक । गुमर घर पतसाह सुभट मीलहा गरक, चठठ हम लाट टला वोत तोपा चरक ।—रामलाल वारहठ

२ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ।

उ०—परखिया ग्रनळ चळ दळ सुपरि, वळवळ सुचळ हळोवळा । चक्रवति सर्तार मिर चल्लियौ जाणि महण छिळियौ जळा ।

—रा. रू.

हलौ-स पु.—१ ग्राक्रमण, हमला ।

उ०—१ ग्रर लाख दोय पोठिया रेत सू भराय नै हलौ कियौ सू ग्रठै वडी झगडौ हुवौ ।—द दा.

उ०—२ कोई एक वीर पुरख मारीज गयौ नै लारै नावाळक जाण सत्रुग्रा हलौ करणौ विचारियौ तठै उण वीर खतरी री स्त्री ग्रापरा वाळक री परिचै सत्रुग्रा नै करावै छै ।—वी. स टी

२ हल्ला-गुल्ला, शोर गुल ।

हळोतरौ, हळोतियौ—देखो 'हळोतियौ' (रू भे.)

उ०—१ मेह तौ पे'लो हळोतरौ कराय नै गयौ सो गयौ ईज गयौ ।—रातवासौ

रू०—२ म्हनै इण वरस ई ग्रासार माडा निजर ग्रावै । सूनम रै टाणै हळोतियौ व्है जावै तौ पग टिकै ।—फुलवाडी

हळकौ—देखो 'हळकौ' (रू भे)

उ०—१ वोलो इणा पर काई ग्रमर पडै ? ग्रर ससार मै 'मा' सवद काई इतरौ हळकौ व्हैग्यौ है के उण रौ यूं ग्रपमान कियौ जावै ।—ग्रमरचूनडी

उ०—२ मजाल है पेढी चढ्यौ कोई गिराक जेव हळकी किया विना नीचौ उतर जावै ।—ग्रमरचूनडी

(स्त्री हळकी)

हल्कौ—देखो 'हलकौ' (रू भे.)

हल्द—देखो 'हळदी' (रू भे)

हल्दहात, हल्दहाथ-स. पु —विवाह के समय वर या वधू के हल्दी लगाने की प्रथा ।

हल्दियौ-वि —हल्दी के रग का, पीला ।

स पु —१ एक शुभ रग का घोडा । (शा हो)

२ एक प्रकार का कामला रोग ।

हल्दी—देखो 'हळदी' (रू भे.)

हल्दीघाट, हल्दीघाटी—देखो 'हलदीघाटी' (रू भे.)

हल्ल-स स्त्री —१ ग्रावाज, शब्द ।

उ०—१ हुई ग्रप्रमाण ग्रचाणक हल्ल, कभी हय सैयद सेख कत्तल्ल । पडे कटि सीरस ग्रार पठाण, मद्राचळ चक्क चमू महराण ।

—मे म.

उ०—२ घमघम वाग ग्रमागळा, हुवै नकीवा हल्ल । सादा ग्राजै सम्मळी, किनियाणी करनल्ल ।—महाराजा वखतावर सिंह ग्रलवर

२ सेना, फौज ।

३ देखो 'हल' (रू. भे)

उ०—कद यै नाग विसासिया, नैण लिया ग्रग झल्ल । मानसरोवर

हवा-स स्त्री [अ] १ समस्त प्राणियो के लिये परमवाश्यक एक तत्व जो सूक्ष्म प्रवाह रूप से समस्त भूमण्डल मे व्याप्त रहता है। यह पचभौतिक पदार्थो मे से एक है, वायु, पवन ।

उ०—१ उण रा डील नै पतवाणिया म्हनै ऐडी लखायो कै ओ वावो धान, पाणी अर हवा रै पाण नी जीवै, आपरा विस्वास रै आपै जीवै है।—फुलवाडी

उ०—२ हद चाटी हालता, हवा हालत रद होवै। तवि जूनो सपतास, जिका कानी रवि जोवै।—मे. म.

२ झपट, झोंका ।

उ०—झरोखा, जाळिए, छाणिएं पवन रो हवा पडि नै रही छै। श्री महल केसर गुलाव सू छाटीजै छै।—रा सा स

मुहा —हवाई किल्ला वणाणा=कल्पना मे महल आदि वनाना, मन मे वैभवशाली होने के भाव आना, स्वाव देखना ।

हवाई वाता करणी=निराधार या निर्मूल वात कहना ।

हवा ज्यू हळको=अत्यन्त हलका, जिसका वजन इतना कम हो जो देखने मे आश्चर्यजनक लगे ।

हवा भखणो=वायु के आधार पर जीवन-यापन करना ।

हवा मैं उडणी=विना सिर-पैर की वातें करना, व्यर्थ की शेखी दिखाना, किसी वात को महत्व न देना ।

हवा मे वाता करणी=स्वगत कथन करना, अकेले वातें करना, वडवडाना ।

हवा मैं मे'ल वणाणा=देखो 'हवाई किल्ला वणाणा' ।

हवा होणी=अत्यन्त तीव्र भागना, चपत हो जाना ।

३ वातावरण ।

उ०—फळजुग री हवा मैं सास लेवणिया क्यू कळजुग रो धरम नी निभावो। वै हाल ताई साच जैडा पाप री क्यू मोद करै।

—फुलवाटी

३ धुन, सनक ।

५ भूत, प्रेत ।

६ मातृका का प्रभाव ।

मुहा —हवा वहणी=किसी वालक के शरीर मे मातृका का प्रभाव हो जाना ।

हवाइ, हवाई-स पु १ एक प्रकार का आग्नेयास्त्र ।

उ०—१ हथनाळि हवाई कुहक वाण याको सोर आघात होण लागो वीर जु वटा वडा जोधा। त्याकी वीर हाक होण लागी।

—वेलि टी.

उ०—२ घर मुहर तोपखाना सधीर, ज्या पीछ अराना गज जजीर। सजतोह फिरगी लिया साथ, हथनाळ हवाई वाण हाथ।

—वि. स

२ एक प्रकार की आतिशवाजी ।

उ०—सीफोतरि गणहूत सवाई, हुवै जिया हथफाळ हवाई।

—सू. प्र.

३ चार मास या दो ऋतुओ का समय ।

वि.—१ हवा का, हवा सम्बधी ।

२ हवा मे चलने वाला ।

३ हवा मे छोडा जाने वाला ।

४ व्यर्थ, निर्मूल, निरर्थक ।

५ असत्य ।

हवाई-जत्र-स पु —तोप ।

उ०—जोगणी उवक्कै पत्र हुवक्कै हवाई-जत्र, लोथि छक्कै घुवक्कै लटक्कै गजा लोध ।—राजा वखतसिंघ रो गीत

हवाईमे'ल-स. पु.—१ काल्पनिक महल ।

२ देखो 'हवामेल' (रू. भे)

हवाचक्की-स स्त्री.—अनाज पीसने की वह चक्की जो हवा के प्रभाव से चलती है ।

हवादार-वि. [अ.] जिसमे हवा के आवागमन की पर्याप्त गुजाइश हो, वातायनो से युक्त ।

हवामहल, हवामेल-स. पु —वह महल जिसमे, हवा आने के विशेष साधन, वातायन झरोखे आदि हो ।

उ०—१ वादळी वरसै क्यू नी ए। वीजळी चमकै क्यू नी ए। म्हारा भवर सा रा हवामहल मैं चपो सूखै ए।—लो गी.

उ०—२ ओर गढ मैं हवामेल हमारै वाजै तिको करायो। ओर कपडा रो कोठार करायो।—नैणसी

रू भे —हवाईमेल ।

हवाल-स. पु. [अ. हाल] १ दशा, अवस्था, हालत, गति ।

उ०—१ देख हवाल भाल कर देवी, चाल मराल चलाई। मोखमपुरै 'किसन' हुय मादो, पूरण अडचल पाई।—मे म

उ०—२ तरै इण हीज हवाल परणाया, नै मैं थारी चाकरी कीवी। परमेसर आछी कीवी, आपरा दिन ऊभा, नै मोनू जस आवणहार।—नैणसी

२ दुर्दशा, बुरा हाल, शोचनीय दशा ।

उ०—१ नरसिंघ नु खवर पोहती। सुपीयारी पाछी आई। तरै नरसिंघ घणा हवाल कीया।—नैणसी

उ०—२ तिण भारमल नु तो रायमल पखनोत मारियो नै कूपेजी मेरा माहै घण हवाल कीया।—राव मालदे री वात

३ हाल-चाल, हालात ।

उ०—म्हारी वाईजी रो काई छै हवाल। राजिद चालै छै चाकरी।

—रसीलै राज रो गीत

४ समाचार, खवर ।

५ विगत, विवरण ।

उ०—झाल झाभी झटका करइ, जिम जाणै दव दाह। हूँ हरणी हवडा वलू, सार करिसिन ? नाह।—मा का प्र.

३ कभी-भी।

उ०—सासूमली आयु सोवन केरी, हवडा नही लीजइ वीजी अनेरी, वै कर जोडी वरराज मागइ, सासूमली आपता वार न लागइ, अहो सीग्रालक वोलि।—व. स.

हवडो–क्रि वि [सं. अधुना] १ अब, अभी।

उ०—गूजर फतै नदगिर गोरभ, जुड कावल दळ कीध जुवो। कीधा सामा जेर कलासुत, हवडौ कै जग जेठ हुग्रो।—द दा

२ देखो 'हिवडो' (रू भे)

हवणार—देखो 'होणहार' (रू. भे)

उ०—पद्धाण्याय जीद वूडो पोहवाल। वूहो राव हेकल काढ वै गाळ। हनो वित्त लाग घणूं हवणार। वुरै मुग्व कीनव जीद जवार।—पा. प्र

हवणो–क्रि वि—इस समय, अब।

उ०—आगै वरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग। हवणो का अलियळ हुआ, वारवधू वध वाग।—वा दा.

हवणो, हववो—देखो 'होणो, होवो' (रू भे.)

उ०—आ वात हवण की नही।—नैणसी

हवद—देखो 'हौद' (रू भे)

उ०—१ राणीसर रै वुरज ऊपर अरट मडाय नै नाळा घलाय नै अरट नग ४ रा कुडीया कराय फतैमैल रा हवद मैं पाणी लावण वास्तै कराया।—नैणसी

उ०—२ घण रै तो आगण हवद खिणावो साहिब भूलण रै मिस आवो रे। हाजी रै ऊजळ दतीरा साहिव केण बिलमाया रे।

—लो गी

२ देखो 'हौदो' (रू. भे)

उ०—१ रुहल्या पदचार सवार रथा, हथियार छतीस प्रकार हथा। हुवि रोस कईक चढ्या हवदा, रण कारण जोस वढ्या रवदा।

—मे म

उ०—२ जगी हवद जडिया जम जाळा, पाच हजार गयद पखराळा।—सू प्र

हवदो—देखो 'हौदो' (रू. भे.)

उ०—हाथिया तणा जगी हवदा मैं, रोपू सेल घडा रवदा मैं।

—सू. प्र

हवदाळो–वि—अवारी या चारजामा-युक्त।

उ०—वहता घण गोळा विकराळा। हाथी उडै जगी हवदाळा।

—सू प्र.

हवद्द—१ देखो 'हौदो' (रू. भे)

उ०—हाथिया मेव डबर हवद्द, जगी कसि हवदा विखम जद्द।

—सू प्र

२ देखो 'हौद' (रू. भे.)

हवद्दो—देखो 'हौदो' (रू भे)

उ०—सेखावत हाथिया हवद्दा मैं सेल वायो, कूडि कै ठिकाणै वखतेस कामि आयो।—शि व

हवन–स पु [स] १ घी, जौ, तिल आदि पदार्थो का मिश्रण कर उन्हे मन्त्रोच्चारण के साथ, किसी देवता के निमित्त अग्नि मे डालने की क्रिया, होम, यज्ञ।

२ चढावा, वलि, नेवैद्य।

३ आह्वान, आमन्त्रण, प्रार्थना।

४ ललकार।

हवनिया–स पु—चार मास का समय।

हवनीय–वि.—हवन करने योग्य।

स. पु—घी, घृत।

हवरु, हवरू–क्रि वि—अभी, इस समय।

उ०—ताहरा नरसघ घरा वताना कहायो, 'पैहलोकै तो म्हाहरो निवाह थो सु हुसी। म्हारी धरती तुरका हेठै छै। दिन म्हारो उपर घणो कीजो। हवरू तो म्हानू त्रिखो छै।

—राजा नरसिंघ री वात

हवल—देखो 'हवाल' (रू. भे)

हवलवार–स पु—१ सेना का एक छोटा अधिकारी जिसके अधीन थोडे से सिपाई होते है।

२ राज्य कर की ठीक-ठीक वसूली तथा फसल की निगरानी के लिये तैनात किया जाने वाला अधिकारी।

रू भे—हवालदार।

हवळै, हवलै—देखो 'हळवै' (रू भे.)

उ०—१ वहिया पथ डाक पाछा न वळै। हय ठाभय चद कह्यो हवळै।—पा. प्र

उ०—२ ओछा कुळ मै ऊपना, दोभा डावडियाह, हवळै वोलै होट मैं, मूरख मावडियाह।—वा दा.

हवलै-हवलै—देखो 'हळवै-हळवै' (रू. भे)

हवल्ल—देखो 'हवाल' (रू भे)

उ०—चपा मारणै निर चढै, आंवा भखै अवल्ल। अरवद सू अळगा रहै, ज्यारा कूण हवल्ल।—डाढाळा सूर री वात

हववाह—देखो हव्यवाह' (रू. भे)

हवा—देखो 'हो' (रू भे)

उ०—माणस हवा त मुख चवा, म्है छा कूंकडियाह। प्रिउ सदेसउ पाठविसु, लिखि दै पगडियाह।—ढो. मा

हवाभाव—देखो हावभाव' (रू भे.)

उ०—धर कामची उर धाक, अपछर छत्र धरै, हवांभाव कर अद्—हेर वोली सुण हरै।—र. रू

६ परिणाम।
रू. भे —हवल, हवल्ल, हुवाल।
हवालगीर–स पु [फा.] एक अधिकारी ?
उ०—आठू मिसल कै हवालगीर केन धाए। फरासू नै आवामू बीच विछायत वणवाए।—सू प्र.
हवालदार—देखो 'हवलदार' (रू भे)
उ०—हाजरिया हवालदार एका-तागा तथा बैल्या री कतार सजाई। बीन-बीनणी खातर रूडो रुणझुणी रथ लाया खडो कियो।—दसदोख
हवालात–स. स्त्री.—१ जेल, कैद खाना।
उ०—थाणादार एक वजनी गाळ ठरकाय दी अर कागदिया पूरा करनै मुलजिम नै हवालात मैं वद कर दियो।—अमरचूंनडी
२ नजर वदी।
हवाली-मुवाली–स पु यौ —परिग्रह।
उ०—कुवर राजा रै मुजरै गयो, आगै जाय वैठो। इतरै सारा ही हवाली-मुवाली मुजरो कर वैसै छै।—पलक दरियाव री वात
हवाले, हवालै–वि —[अ हवाल.] १ सुपुर्द।
उ०—१ अवु नु मेहमद मुराद कह्यो—राजा रा लोग सु थे अमनाव छो। इणा री रदल-वदल थै करो। पछै राजाजी रा देस रा सुनार पकडीया था सो 'अवु' रै हवालै कीया।—नैणसी
उ०—२ माया दोरी घणी भेळी करी। यू कमसला री धमकीया सू वारै हवालै करदा तो कीकर पार पडै।—फुलवाडी
क्रि. वि —१ अधिकार मे, कब्जे मे, अधीन।
उ०—१ साकर सूरावत। वडो राजपूत राव मानदेव रो। साकर रै हवालै अजमेर रो गढ थो।—नैणसी
उ०—२ सवत १५९४ रावजी जैतमालोत कना सू सिवाणो लियो जद मागळिया देवा रै हवालै कियो।—वा दा. ख्यात
२ वश मे, कावू मे।
उ०—१ ताहरा राजा कह्यो—दैपाळदै विना म्हारै घडी एक सरै नही। वासनी सरम सारी वात री थाहरै हाथ हवालै छै।
—पलक दरियाव री वात
उ०—२ जेर हवालै जाण चढावै गढै चोडै। वेडी लीना वहै खास पग धरदै खोडै।—ऊ का
रू भे —हुवाले, हुवालै।
हवालो–स पु [अ हवाल:] १ उल्लेख, वर्णन।
उ०—वात सुणावती वगत वावा रो ई काळजो चिपग्यो। थोडी ताळ रुकनै कैवण लागो—उण वगत वा दोना रा मन माथै काई वीती व्है नाढ आदमी उण रो कीकर हवालो दै सकू।—फुलवाडी
२ उदाहरण, मिसाल, दृष्टान्त।
उ०—अथा मैं जठै कठै ही रूढी-रिवाजा री वात आवै, पानो मोड देवै अर आपरै लेखा मैं हवालो देवै।—दसदोख
३ सदर्भ, प्रसग।
४ प्रमाण।
५ हवलदार का कार्यालय।
६ अधिकार, कब्जा।
७ हस्तान्तरण, सुपुर्दगी।
८ खालसे का गाव।
९ कर, लगान।
उ०—१ गुनहगारी आप लीवी और मारै परगनै रै सिर हवालो ठहरायो।—ठाकुर जेतसी री वारता
उ०—२ तद कही भली वात छै पण वरस एक रो गाह रो हवालो दोनू फसला रो देवो।—ठाकुर जेतसी री वारता
१० एक विभाग जो भूमि-लगान वसूल करता था। (प्राचीन)
रू. भे.—हुवालो।
हवास–स पु —पुष्प, फूल। (अ मा.)
२ घोडा, अश्व।
रू. भे —हुवास।
हवि, हवि–क्रि वि. [स अथवा, प्रा अहवा] १ अव।
उ०—१ हवि पकवान आणि तै केहवा वखाणि सतपुडा खाजा, तुरत कीधा ताजा, मदला नि साजा, मोटा जाणै प्रासादना छाजा।
—व. स.
उ०—२ हवि ए उपकार करि, तेहनि पासि परवरु, [जूठा एह मुझ गुण] कहीनि चित्त ता तेहनू हरु।—नळाख्यान
२ अग्नि, आग। (डि. को.)
रू. भे —हवी।
स. पु [स हविस्] १ यज्ञ की अग्नि मे मत्र पढ कर डाला जाने वाला पदार्थ, हवन-सामग्री।
उ०—होम जजै हवि कवि हुतासण, सेवत स्याम कितै दर भामन। पिड किता हद जोग प्रकासण, पूरक कुभ करै चक आमण।
—रा. वी गी.
२ घृत, घी। (अ मा.)
हविख–स पु [स हविष] घी, घृत।
वि [स हविष्य] हवन करने योग्य पदार्थ।
हवियोडी—देखो 'होयोडी' (रू. भे)
(स्त्री हवियोडी)
हविवाह, हविवाहण, हविवाहन—देखो 'हव्यवाहन'। (ह ना मा.)
हविस—देखो 'हविस्य' (रू भे)
हविस्मती–स स्त्री [स हविष्मती] कामधेनु।
हविस्मांन–स पु [स हविष्मन्] यज्ञ करने वाला।
हविस्यद–स पु. [सं हविष्पद] विश्वामित्र के पुत्र का नाम।
हविस्य–वि. [स हविष्य] १ हवन करने योग्य।
२ जिसकी आहुति दी जाने वाली हो, अग्नि, हवि।

हालिया सेन हइ वाजि इम्म, हिंदुवइ राउ साम्हा हमम्म ।

—रा. ज. सी

उ०—२ पाए हसम्मि हालइ पयाळ, फडफडइ नाग फाटइ फुणाळ ।
राया राउ ऊपरि असुरि राइ, जळराइ जाणि मेरहो अजाद ।

—रा ज. सी.

हसर—स पु [अ. हजर] रिसाले के सवारो का एक भेद ।

हसाइ, हसाई—स. स्त्री—१ हंसी, मजाक ।
२ अपकीर्ति ।

हसाणौ, हसावौ—देखो 'हसाणौ, हसावौ' (रु भे.)
हसाणहार, हारौ (हारी), हसाणियौ—वि० ।
हसायोडौ—भू० का० कृ० ।
हसाईजणौ, हसाईजवौ—कर्म वा० ।

हसाव—वि —१ उचित, ठीक, श्रेष्ठ, उत्तम ।
उ०—हरीया रोटी अरम की, आधी मिळै हसाव । जो चाहै लो सावती, तो तुझि नही सवाव ।—अनुभववाणी
२ देखो 'हिसाव' (रु भे)
उ०—एकर पैल-पोत चिड्या रै बुगै रा रिपियै सइक्डै रै हसाव सू देणा पडसी ।—दसदोष

हसायोडौ—देखो 'हसायोडौ' (रु भे)
(स्त्री हसायोडी)

हसारथ—स. स्त्री—हसी ।
उ०—मान्यउ बोल देई सीखामण, इम कान्हडदे राइ । पइसी प्राणि असुर मारेज्यो, रखै हसारथ थाइ ।—का दे प्र.

हसावणौ, हसाववौ—देखो 'हसाणौ, हसावौ' (रु भे)
हसावणहार, हारौ (हारी), हसावणियौ—वि० ।
हसाविओडौ, हसावियोडौ, हसाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
हसावीजणौ, हसावीजवौ - कर्म वा० ।

हसावियोडौ—देखो 'हसायोडौ' (रु भे)
(स्त्री हसावियोडी)

हसि—देखो हसी' (रु भे)

हसित—स पु —पुरुषो की बहत्तर कलाओ में से एक ।
वि.—हसा हुआ, खुश, प्रसन्न, हर्षित ।

हसियसद्द—स पु.– हास्य शब्द ।

हसी—देखो 'हसी (रु भे)
उ०—कुसलराय पूछिऊ तव हसी हस वाणी वदि । विरहि वेदन जगावो सि सवल सामनि रिदि ।—नळाख्यान

हसीम—देखो 'हसम' (रु भे)
उ०—सूरा हसीम, भारय भीम, नरपति नीम । सेनाधिपत, हमीर मत, सातलह चित ।—अ वचनिका

हसेर—स पु —एक वृक्ष विशेष, पेड ।
उ०—हरद्द हरडि हीमजी, हरडा हलद्रह बेर । हरबी हाथुडी हरी, हुकट हसी हसेर ।—मा का प्र

हसौ—स पु —हसने की क्रिया या भाव, हंसी विनोद, हास्य ।
उ०—इण सारू गहणा रै भेळी नाळेर राखियो सो देखनै उण में हसी रो कारण ओ है कै नणद तो सती है और नणदोई सूरवीर है इण सुमी रो हसौ आयो ।—वी स टी.

हस्त—स. पु [स] १ कुहनी से अगुलियो तक का भाग, कर, हाथ ।
२ कुहनी से अगुलियो तक के हाथ की लबाई का एक माप, परिमाण ।
३ तेरहवा नक्षत्र जो हाथ के आकार का व पाच तारो का होता है । (ना मा.)
४ हस्त लिपि ।
५ सबूत, प्रमाण ।
६ सहायता, मदद ।
७ नृत्य का एक भाव ।
८ वसुदेव के रोचना के गर्भ से उत्पन्न पुत्रो मे से एक पुत्र ।
९ देखो 'हस्ति' (रु भे) (अ मा.)
रु. भे —हसत ।

हस्तउड—स पु [स हस्त-उडु] पाच तारो वाला, हाथ के आकार का एक नक्षत्र ।

हस्तक—स पु. [स] १ हाथ, हस्त ।
२ सगीत का एक ताल ।

हस्तकौसळ—स पु [स हस्तकौसल] हस्त-लाघव, हाथ की सफाई, हस्त कला ।

हस्तक्रिया—स स्त्री [स] १ हाथ के कार्य की निपुणता ।
२ हाथ से इन्द्रिय सचालन ।

हस्तक्षेप—स पु [स] किसी कार्य मे या बात मे किया जाने वाला दखल ।

हस्तगत—वि [स] जो हाथ मे आ गया हो ।
क्रि वि —अधिकार मे, काबू मे ।

हस्तग्रह—स पु [स] पाणि ग्रहण, विवाह सस्कार ।

हस्तणी, - देखो 'हस्तिनि' (रु भे)
उ०—सुविचारी राघव कहै, स्त्री की चारु जाति । पदमणी चित्रणी हस्तणी सखणी ऐसी भाति ।—प च. चौ

हस्तत्राण—स पु [स हस्तत्राण] अस्त्र शस्त्रो से रक्षा के लिये हाथ मे पहना जाने वाला दस्ताना या कवच ।

हस्तनक्षत्र, हस्तनखत्र—स पु [स हस्तनक्षत्र] पाच तारो वाला, हाथ के आकार का एक नक्षत्र ।
उ० - हस्तनखत्र जाणौ चद्रमा कै वीचि वेढ्यो छै । दूसरी भाव । जाणै आधा कमळ कै विखै । अलि कहता भ्रमर ताहरी पकति फिरी छै ।—वेलि टी

हस्तनी—देखो 'हस्तिनी' (रु. भे)

उ०—पछै इण कोटडी ठौड राग कोटडी री भगाई। राव वरसिंघ हुदै आ ठौड समत १५१८ चैत्र सुदी ६ नु हसतनखतर कहै छै वासी।—नैणसी

हसतबध—देखो 'गजबध'।

उ०—सक हसतबध सगाह, सग दिया महमद साह। उरि वेण प्रीत उचारि, सुख वार वार सभारि।—रा रू

हसति, हसती—देखो 'हस्ति' (रू. भे) (ना डि को, ह ना मा)

उ०—१ पदमिणि रखपाळ पाइदळ पाइक, हिलवळिया हलिया हसति। गमै गमै मदगळित गुडता, गात्र गिरोवर नाग गति।—वेलि

उ०—१ हालै जिण मगर घूमता हसती, ताता गयण भूपता तुरग। पैदल प्रबळ रथा हृदपगी, चतुरगी गत फौज सुचग।—र रू

उ०—२ हसत्या रै होदै राणै काछवो जी म्हारा राज।—लो गी

हसतीवद, हसतीवध—देखो 'गजवध' (रू भे)

उ०—१ गजै भुरती कण घर रतनो, धजवद खाटण नवी धरा। वीजा होड करै कुण वापी, हसतीवद दळमीग हरा।—ठाकुर महेमदास रो गीत

उ०—२ गास धरै विद्याधर आया, कवि सुज हसतीवध कह या।—रा रू

हसतेजामा—प पु—एक प्रकार का सरकारी कर।

हसत्ति, हसत्ती—देखो 'हस्ति' (रू भे.)

उ० —१ दिग्रा वधारा देस दै, हैवर द्रव्व हसत्ति। पातिसाही था ऊपरा, यू कहिश्री असपत्ति।—वचनिका

उ०—२ भाळ विसाम सिंदूर सुसोभित, हान मराळ हसत्ती। रूप अनूप तेज मय राजत, मिलक पलक मदमत्ती।—मे म.

उ०—३ ज्या कर जोड ऊभा समजत्ती, ज्या आगै गडि पडै, महा मैमत हसत्ती।—जगो खिडियो

हसन—स स्त्री. [स.] १ हसने की क्रिया या भाव, हसी।

२ मजाक, दिल्लगी, विनोद, हास-परिहास।

स पु—३ अली के दो बेटों मे से एक, जिसका शोक मुहर्रम के दिन मनाया जाता है।

हसब—अव्य. [अ] अनुसार, मुताबिक।

हसम—स पु [अ] १ सेना, फौज।

उ०—१ हयनाळ दगण आरव हसम, माहुत चढिया मैंगळा। देवळा तरा धर करि दुगम जगम जूथ वीभाज्ळा।—सू. प्र.

उ०—२ मुलक लेवणै नू लसकर सेवक हसम सामान सै चाहिजै पण सारा सूं बुद्धि बळ नू भलो जाणी जै।—नी प्र.

२ अश्व, घोडा।

उ०—तिण वेर नदी ऊपर वडो जगल छै। तिण मैं द्रोब, कडब री वडी ऊगम छै। तिका ठोड जोय आया। जाणियो-आहरी हसम थाट अठै चरसी।—नैणसी

३ लश्कर, समूह।

उ०—सुक्त इमारत मोटा बाग वैकुंठ जिमा री घर बाग रैयत रा माही चाकरा हसम नू उतरणै न देवणौ।—नी. प्र.

४ नौकर-चाकर, सेवक।

उ०—१ ओर भार सरव हसम लोक मोहडै कनै धातीयो पठाणा तो डेरो जाय कीयो छै अर रात पहर गई। घोडा नूं रातब दे खाणी-दाणी कर नै गढ माहा नीसरीया।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ राजपूत वट रा आचार देख नै महाराजा राजेसर अजमेर रै थाणै राखेआ छै। हसम हुक्म सौंपीआ छै।—रा सा. स

५ भाग्य।

उ०—हिंदुआ मौड राठौड मोटै हसम, पुहवि पत्ति माहि परताप आभो। अनूपसिंह राजवी अटक वटके अडिग, आप स्रीजी करै जास आभो।—ध. व. ग्र

६ वैभव।

रू. भे—हसब, हसम, हसम्म, हसम्मि, हसम्मी, हसीम, हस्मम, हाम्म।

हसमपत, हसमपति, हसमपती-स पु—सेनापति।

उ०—कमद मुरड कुमळेस जम प्रथी चळ-चळ करण, खलपहा चारवा वण साव खारी। देएसा कोय तण दनै वळै दाखमा। हसमपत धूकळा करण हारी।—ठाकुर कुसाळसिंघ जी रो गीत

हसमस—स पु—१ धक्का, प्रहार।

२ उत्साह जोश।

उ०—१ हियडइ हसमस करता, प्रकट थिया घण वेउ।—प्राचीन फागु-सग्रह

उ०—२ रज रमी रूप हारतउ गगन आच्छादिउ, आदित्यकिरण निरुद्ध हूआ, हसमस हयदलै हेपारवि हरिण वन्हा।—व. स

हसमसणो, हसमसबो—क्रि स.—१ धक्का देना, ढकेलना।

२ उत्साह दिखाना, जोश दिखाना।

उ०—गयघडगुड गडमडत घीर घयवड धर पाटइ। हसमसता सामत सरसु मरसेलि दिखाडइ।—सालिभद्र सूरि

हसमसणहार हारौ (हारी), हसमसणियौ—वि०।

हसमसिओडौ, हसमसियोडौ, हसमस्योडौ—भू० का० कृ०।

हसमसीजणौ, हसमसीजबौ—कर्म वा०।

हसमसियोडौ—भू का कृ—१ धक्का दिया हुआ, धकेला हुआ।

२ उत्साह दिखाया हुआ, जोश दिखाया हुआ।

(स्त्री हसमसियोडी)

हसम्म, हसम्मि, हसम्मी—देखो 'हसम' (रू. भे)

उ०—१ गाजणइ तणा चडिया गरट्ट, यनवाह पईठा खिहिय थट्ट

उ०—२ घूम रह्यो दुरयोधन राजा, जैसे गज मतवारो। सिंह होय कर हस्ती मारे, बडो भरोसो थारो।—मीरा

हस्तीवद, हस्तीवध—देखो 'गजवध'।

हस्ते, हस्तै—क्रि. वि. [स. हस्त्य] १ हाथ से, मार्फत, द्वारा।

२ हाथ मे, हाथ पर।

उ०—हस्तै खग पटवर कटि छुरी विद्या विनोदा मुख। तावूल मति सलिवत चतुर स गारक खोडस।—रा. सा. स.

३ तालके, हवाले।

हस्म, हस्म्म—देखो 'हुसम' (रू. भे)

हस्स—देखो 'ह्रस्व' (रू. भे)

हहकार, हहक्कार, हहकारौ—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

उ०—१ पळचर उदमाद गयो अत पायो, थान वडो हहकार थयो। वाको भड 'सागो' खगवाहो, ग्रीध धपावण हार गयो।

—सागा पीपाडा रो गीत

उ०—२ सुर तेतीसू कोट, आण नीरता चारी। नह खावत नह चरत, मनै करती हहकारी।—महाराणा कुभा रो कवित्त

उ०—३ वाहि तेग समाहि आसो, हहकारो अतियो। धन्य तेरो ध्यान करमणि, सीझती साको कियो।—जाभो

हहयाधीस—स पु [स. हहयाधीश] सहस्त्रार्जुन।

हहरणौ, हहरबौ—क्रि. अ.—१ कापना, थर्राना, धूजना।

२ डरना, घबराना, भयभीत होना, दहलना।

हहराणौ, हहरावौ—क्रि. स.—१ कपाना, धूजाना।

२ डराना, भयभीत करना, दहलाना।

हहरायोडौ—भू का. कृ.—१ कपाया हुआ, धूजाया हुआ।

२ डराया हुआ, भयभीत किया हुआ, दहलाया हुआ।

(स्त्री हहरायोडी)

हहरियोडौ—भू का कृ—१ कापा हुआ, थर्राया हुआ, धूजा हुआ।

२ डरा हुआ, घबराया हुआ, भयभीत, दहला हुआ।

(स्त्री हहरियोडी)

हहलाणउ, हहलाणौ—देखो 'हलाणौ' (रू भे)

उ०—जदि ग्रेवडि करिस्या अवभ्भणउ, तदि हहलाणउ कुमरी तणउ पीहरि राखी राजकुमारी, पिंगळ राय चाल्यउ तिणि वारि।

—ढो. मा.

हहा—स स्त्री—१ हँसने की ध्वनि।

२ हँसी, मजाक, ठट्ठा।

३ दुख या पश्चाताप को व्यक्त करने के लिये कहा जाने वाला शब्द 'हा'।

उ०—हरी ओम् ओम् प्रानी जुगति नहिं जानी अग हहा। महा हानी ठानी मुगति नहि मानी अग महा।—ऊ. का

४ विनती।

५ गिडगिडाहट।

६ गधर्व विशेष।

हहाकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे.)

हहो—स. पु—१ हसी, मजाक, परिहास, विनोद।

२ देवनागरी वर्णमाला का अन्तिम वर्ण 'ह', जो काव्य मे दग्धाक्षर माना जाता है।

उ०—हहो करे हित हाण, भक्षो तन व्याध जगावे। धधो राज भय धरे, ररो धन नाम करावे।—र. रू.

हा—अव्यय [स आम्] १ स्वीकृति या सम्मति सूचक अव्यय।

उ०—घर नु सूत्र सहो मनि गणी तिणि अवसरि तिणइ 'हा' भणी घरि आविउ मनि चिंता करइ 'एह काज हिव किण परि सरइ।'

—हीराणद सूरि

२ किसी प्रश्न, आवाज या सम्बोधन के प्रत्युत्तर मे बोला जाने वाला स्वीकृति सूचक शब्द।

उ०—स्वामीजी बोल्या—त्याग है थारे। चट त्याग करावताइ हुवा। त्याग कराय नें बोल्या : परणीजवारे वासते नव वरस थे राख्या है के ? हा स्वामीनाथ।—भि. द्र

३ होने की अवस्था या दशा।

उ०—पण अरजनिये रो तो नयानाम ही खोय दयो। जाटणी रो जायो, जाट सू ही अडे अर मेडे। जात-जात मेंं ही भेद भरे। वाणिया थोडा ही हा, जको कैद-फासी सू डरा।—दसदोख

रू. भे—हुआ।

हाक—देखो 'हाक' (रू भे.)

हाकणौ, हाकबौ—क्रि स—१ रथ मे जुते घोडो को या गाडी मे जुते बैलो को अथवा किसी जानवर या जानवर समूह को चलने या आगे बढने के लिये प्रेरित करना, चलाना, चलाने के लिये मुह से कुछ शब्द करना, हाँकना।

२ प्रोत्साहन देना, उत्साहित करना।

३ बढ-बढ कर बातें करना, शेखी बघारना, गप्पें मारना।

४ चलाना।

उ०—जरै कवर रो परिकर नागोर आय सो सासन प्रामारा रा दाहिमा नु सुणाय रस्सा रा ततुवा रै समान एक मतै हुवो अर नागपुर री लज्जा केमास नू भळाय अणिहलपुर गजनवी रा अनीक मेंं रातिवाह देण हाकियो वणाय हुवो।—व. भा.

५ आवाज देना, पुकारना।

६ चिल्लाना।

हाकणहार, हारौ (हारी), हाकणियौ—वि०।

हाकिओडौ, हाकियोडौ, हाक्योडौ—भू० का० कृ०।

हाकीजणौ, हाकीजबौ—कर्म वा०।

हाकणौ, हाकवौ, हाकरणौ, हाकरवौ—रू० भे०।

हाकरणौ, हाकरवौ—क्रि स.—१ हा करना, स्वीकार करना।

२ मानना, कबूल करना।

उ०—हस्तनी चित्रणी कर सखिनी, पुहवी वडी पदमावती। इम भणइ विप्र साचउ वछ्रण, ग्रालमसाह ग्रलावदी।—प. च. चौ.

हस्तपुर-स.—देखो 'हस्तिनापुर'। (रू. भे)

हस्तपुरपत, हस्तपुरपति-सं. पु. [सं हस्तिनापुर-पति] युधिष्ठिर का एक नामान्तर। (ग्र मा)

हस्तवध—देखो 'गजवध' (रू भे)

उ०—राजा ग्रगर री वाम सू मन मैं विचारियो-जै एथ कोई हस्तवध राजा छै। कै पवनवध योगी छै। तैरै ग्रगर वळै छै।
—चौबोली

हस्तभुजासण, हस्तभुजासन-स. पु.—योग के चोरासी ग्रासनो के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन जिसमे बाये पाव को हाथ के कंधे पर चढाकर उसी हाथ मे गर्दन को पकडा जाता है। इसे वामहस्त भुजासन कहा जाता है। इसके विपरीत करने पर दक्षिणहस्त भुजासन होता है। दोनो साथ करने पर हस्तभुजासन कहा जाता है।

हस्तमैथुन-स. पु [स] हाथ से किया जाने वाला मैथुन।

हस्तरेखा-स स्त्री [स] हाथो की रेखा। (सामुद्रिक शास्त्र)

हस्तलक्षण-स. पु [स] हथेली मे पडी रेखाग्रो के ग्राधार पर शुभाशुभ भाग्य का निर्णय।

हस्तलाघव-स. पु [स] १ चौसठ कलाग्रो मे से एक।

२ हस्तकौशल।

हस्तलिखित-वि [स] १ किसी कवि, पडित या विद्वान के हाथ का लिखा हुग्रा।

२ हाथ से लिखा हुग्रा।

हस्तवृक्षासन, हस्तव्रखासण, हस्तव्रखासन, हस्तव्रिक्षासण, हस्तव्रिक्षासन-स पु [स हस्तवृक्षासन] योग के चौरासी ग्रासनो मे से एक जिसमे दोनो हाथो के ठेउनी से मोडकर पजे को पृथ्वी पर लगा कर शिर को जमीन पर रख कर हाथ के ग्राधार मे उल्टे खडे रहना होता है।

वि वि.—केवल सिर से खडे रहकर हाथ के ग्राधार को छोड देना मुक्त हस्तव्रिक्षासन कहलाता है।

हस्तसकलिका-स स्त्री [स.] हाथ का एक ग्राभूषण विशेष।

उ०—ग्रभ्रमेसक नुटक सकलिक स्रवणपीठ स्रवणपाल वैस्टिक हस्तसकलिका पादसकलिका उतरिका पादक ग्रैवेयक .... इति ग्राभरणानि।—व स

हस्तसूत्र-स. पु [स] रक्षा बन्धन।

हस्तागुलक—स पु—एक प्रकार का वस्त्र। (व.स)

हस्ताक्षर-स. पु [स] किसी प्रकार की लिखावट या लेखन के नीचे ग्रपने हाथ से लिखा जाने वाला ग्रपना नाम, दस्तखत।

उ०—प्राणात पहुमि परिणामयस्य, रट्ठौर सकळ मत्रत रहस्य। हस्ताक्षर हेरह हिय हुलास, दुग्द्धर दुरुहरु दुरगदास।—ऊ का.

हस्ति-स पु [स] १ हाथी, गज।

उ०—मल्ल हस्ति तुरग रथ पायक टंकसाली व्यायाम कारक।
—व. स.

२ ऐरावत।

३ हाथी की सूंड।

४ बरछी। (ना. डि को)

रू भे—हसत, हसति, हसती, हसत्ति, हसत्ती, हस्त, हस्ती।

हस्तिणि, हस्तिणी—देखो 'हस्तिनि' (रू भे)

हस्तिनागपुर, हस्तिनागपुरु, हस्तिनापुर-स पु [स. हस्तिनापुर] वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूर एक प्राचीन नगर जहा कौरव-पाण्डवो की राजधानी थी। (पौराणिक)

उ०—इदपत्थु तिलपत्थु पुरु वारणु कोसी च्यारि। हस्तिनागपुरु पाचमु ग्रापीउ मत्सरु वारि।—सालिभद्र सूरि

रू भे.—पुरहथण, हतणपुर, हतणापुर, हथणाउर, हथिणाउर, हथिणापुर, हथिनापुर, हथीणाउर, हस्तपुर।

हस्तिनी-स. स्त्री. [स] १ मादा हाथी।

२ चार प्रकार की स्त्रियो मे से एक, जिसके ग्रधर, नितंब, ग्रगुलिया, वक्षस्थल ग्रादि ग्रग स्थूल काय होते है तथा जो रतिक्रिया मे ग्रधिक रुचि रखती है।

३ सुगन्ध द्रव्य या रूखरी विशेष।

४ ग्रार्या (गाथा) छन्द का एक भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे कुल मिलाकर चार 'सकार' का प्रयोग होता है। (र. ज. प्र.)

रू भे—हसतणी, हस्तणी, हस्तनी, हस्तिणि, हस्तिणी।

हस्तिमुख-स पु—गणेश का नामान्तर।

हस्तिसाळ, हस्तिसाल, हस्तिसाळा, हस्तिसाला-स. स्त्री. [स. हस्ति+शाला] हाथियो को बाध कर रखने का स्थान।

उ०—१ जिनमदिर धवलमदिर राजकुल देवकुल ग्रट्टाल प्रासादमाल लेखसाल, पौसधसाल रथसाल हस्तिसाल तुरगसाल व्यायामसाल टकसाल ग्रास्थान सभा .. . .।—व स

उ०—२ क्षण एक जाइ वयगरणि, क्षण एक जाइ राजगरणि, क्षण एक जाइ हस्तिसालां, क्षण एक जाइ ग्रायुधसाला, क्षण एक जाइ वाहणि . ।—व स

हस्ती-स पु [फा] १ कोई ग्रस्तित्ववान या प्रभावशाली व्यक्ति।

२ ग्रस्तित्व, सामर्थ्य, शक्ति।

उ०—बाप माडाणी फीटी हमी रा दात काढतो कैवण लागो—म्हारी हस्ती ई काई कै म्हे रावळी सोच करा।—फुलवाडी

[सं] ३ सुहोत्र का पुत्र एक चन्द्रवंशी राजा जिसने हस्तिनापुर बसाया था।

४ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

५ देखो 'हस्ति' (रू. भे.) (ग्र मा)

उ०—१ ढाढी, जै राज्यद मिळइ, यूं दाखविया जाइ। जोवण हस्ती मद चढ्यउ, ग्रकुस लइ घरि ग्राइ।—ढो. मा

हाडलउ, हाडलौ—देखो 'हाडो' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—जै खावु तैं खाव्, सेद माखी भिणहणतउ, मेल्हइ. हांडलउं कूडलु खरडिउ मेल्हइ, खर ऊपरलु, माकुण माचा भिरिया......।

—व. म.

हाडाडोयौ-स पु—रसोईघर या पाकशाला सम्बन्धी कार्य।

हाडियोडौ—देखो 'हाडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री हाडियोडी)

हाडी-स स्त्री [स हण्डिका] १ मिट्टी का बना, बटलोई के आकार का मझोला बरतन जो प्राय. खाद्य वस्तु पकाने के काम आता है।

उ०—१ कुभार हांडी घडइ।—उ. र.

उ०—२ नगरपालिका री नोकरी, भाग री बात ! गाव री गाव में एक हांडी रो भात।—दसदोख

२ पात्र।

उ०—काचा ऊछळे ऊफणै, काया हांडी माहि। दादू पाका मिळ रहै, जीव ब्रह्म द्वै नाहि।—दादूवांणी

मुहा.—(१) चढी हाडी जाणी=बने हुए भोजन को छोडकर जाना।

(२) चढी हाडी रैणी=भोजन बनने के बाद ज्यो का त्यो रहना, उपयोग न होना।

(३) मोटी हाडी=ऐसा घर या स्थान जहा बहुत कुछ करने की गुजाईश हो, जहा बहुतो का गुजारा होता हो।

(४) राध्योडी हाडी रैणी=देखो 'चढी हाडी रैणी'।

(५) सेर री हाडी मे सवा सेर घालणी=क्षमता से अधिक उत्तरदायित्व डालना, गुजाईश से ज्यादा।

(६) हाडी खोटी होणी=कुपात्र होना।

(७) हाडी चोखी होणी=सुपात्र होना।

(८) हाडी बद रै'णी=रसोई न बनना।

(९) हाडी मे खटाणी=घर मे रख लेने की क्षमता होना।

रू भे—हंडवाई, हडी।

हांडौ-स पु—१ बडे पेट का मिट्टी का बर्तन, बडी हडिया।

उ०—१ जदी रजपूताणी ओडी लै जणी माहै हाडा चाटु ओर बसत मेल माबै लै चाल्या।—पवमार री बात

उ०—२ सावळियौ बहनोई मागा, सोदरा बहनड़ मांगौ। हांडा धोवण फूफो मागा, झाडू देवण भूवा।—लो गी

२ कोई बडा पात्र।

३ बडे पेट वाला व्यक्ति।

४ मोटा-ताजा आदमी।

रू भे.—हडो।

अल्पा—हडियौ, हाडलउ, हाडलौ।

हाढणौ, हांढबौ-क्रि म [स. हिण्ड] १ भटकते हुए फिरना, भटकना, दर दर की ठोकरें खाना।

उ०—कोई अवगुण मन बस्या, चित ये धरी उतार। दादू पति बिन सुदरी, हाढे घर घर बार।—दादूवाणी

२ आवारा घूमना, आवारा फिरना।

हाढणहार, हारौ (हारी), हांढणियौ—वि०।

हाढिओड़ौ, हाढियोडौ, हांढ्योडौ—भू० का० कृ०।

हांढीजणौ, हाढीजबौ—कर्म वा०।

हाडणौ, हांडबौ—रू० भे०।

हाढियोडौ-भू. का कृ.—१ दर दर की ठोकरें खाया हुआ, भटका हुआ २ आवारा घूमा हुआ फिरा हुआ।

(स्त्री हाढियोडी)

हांण-स स्त्री.—१ ऊट के जवानी के दात।

उ०—सो किण भाति रा ऊठ, किण भाति रा हांण किण भाति रा डाण, किण भाति रा पलांण नै किण भाति रा बखाण......।

—रा मा स.

२ ऊट के आयु की दातो द्वारा की जाने वाली पहचान।

३ आयु।

४ दात।

५ देखो 'हांणि' (रू भे)

उ०—१ एम 'दुरग' आखियौ, सुणौ कमधा समरत्थां। हांण लाभ जै हार, हुई करतार सु हत्था।—रा. रू.

उ०—२ 'बाका' हरख न वध्धि सू हांण हुवां नह सोक। हरि सतोख दियो हियै, तिण नू दीध त्रिलोक।—बा दा.

उ०—३ सुहाग री लाखीणी रात बीद बींदणी नैं सीख री बात बताई के वा घर-घर नी तो कदेई बामदी लावण मारू जावैं अर नी कदेई परीडो रीतो राखै। आ दोनूं बाता मैं खामी रै'गी तो सुहाग मै हाण पड जावैला।—फुलवाडी

हांणक-स. पु. [स हानिक] दुश्मन, शत्रु. वैरी।

(अ मा, ह ना. मा)

उ०—विवूसण जाणक हाणक भूप। रच्या अप्रमाण सुदस्सण रूप।—मे म.

वि.—१ हानि या नुकसान पहुचाने वाला।

२ चोट करने वाला।

हाणफाण-स स्त्री—१ किसी कार्य या चलने मे की जाने वाली अत्यन्त शीघ्रता।

२ श्वास की तीव्र गति।

वि—१ अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त।

उ०—वै बिरगोडा रूख, जठै सूखी छाहड़लो। हाणफाण सो घास काय काया री ढिगली।—सत्तिदान कवियौ

२ भयभीत, डरा हुआ, विकल, व्याकुल, बदहवास।

उ०—आदमी 'र लुगाया सब हाण-फाण व्हियोडा, पेट रा गोळा

हांकरणहार, हारो (हारी), हाकरणियो—वि० ।
हांकरिओड़ो, हाकरियोडो, हाकरयोड़ो —भू० का० कृ० ।
हाकरीजणो, हाकरीजवो —कर्म वा० ।
हुंकरणो, हुकरवो, हाकरणो, हाकरबो—रू० भे० ।

हांकरियोड़ो–भू का. कृ.—१ हा किया हुआ, स्वीकार किया हुआ । २ माना हुआ, कबूल किया हुआ ।
(स्त्री हाकरियोडी)

हांकल–स. स्त्री.—१ जोर की पुकार, आवाज ।
उ०—यूं जाण घोड़ी नूं कायजो देय, गट्टी सुद्दा बाहर काढी । खाच अर धूळ कोट रो बुरज थो, हाथ दसे 'क ऊचो, उण ऊपर चाढी । फदाकी मार ऊपर चाढियो । चढने हाकल कीवी—जे सरदारा हूं राजूखा छू, घोडी म्हारी लियां जाऊ छू ।
—मूरे खीवे कांधळोत री वात

२ ललकार ।
३ देखो 'हाक' ।

हांकलणो, हांकलवो —देखो 'हाकलणो, हाकलवो' (रू. भे)
हाकलणहार, हारो (हारी), हाकलणियो —वि० ।
हाकलिओडो, हाकलियोडो, हाकल्योडो —भू० का० कृ० ।
हाकलीजणो, हाकलीजवो –कर्म वा० ।

हांकलियोडो—देखो 'हाकलियोडो (रू भे.)
(स्त्री हाकलियोडी)

हाकांधाकां—देखो 'हाकाधाका' (रू भे)

हांकार–स. पु.—१ हा, स्वीकृति ।
२ देखो 'हुकार' (रू. भे.)

हांकारणो, हांकारवो–क्रि स.—१ स्वीकार करना अगीकार करना ।
उ०—है तो ओ-ई मौत-री जागा ताव हाकारणो । पण खैर धणी, वुराई तो टळ जासी ।—वरसगाठ
२ मनवाना, कबूल कराना ।
हांकारणहार, हारो (हारी), हाकारणियो—वि० ।
हाकारिओडो, हांकरियोडो, हाकारयोडो—भू० का० कृ० ।
हाकारीजणो हाकारीजवो —कर्म वा० ।

हांकारियोडो–भू का. कृ —१ स्वीकार किया हुआ, अगीकार किया हुआ. २ मनवाया हुआ, कबूल कराया हुआ ।
(स्त्री. हाकारियोडी)

हांकारो —देखो 'हुकारो' (रू भे.)
उ०—१ ताहरा हासू कह्यो—थे माह रै घरै आवेज्या, मावीतां कन्हा मो नूं मागो, हू मावीता कन्हा हांकारो भणायीस, हू घरै जाऊ छू, थे वासै वेगा पधारिज्या ।—कूगरै वळोच री वात
उ०—२ पीछै ऐ पूलो वगैरै सागई नरसिंघ सू मिळिया, अरु कयो, 'म्हारो वदळो घेरावो थानू वारै महीना मैं इतरो मासूल भरसा । पीछै कर ठहराई, तद उणा हाकारो भरियो, अरु लाधडियै हेरा मेलिया ।—द. दा
उ०—३ दोना रै घणो सवाद हुवो चोर हांकारो करै नही, अ गार मजरी छोडै नही ।—पचदडी री वारता

हांकियोड़ो–भू का. कृ.—१ घोडे, वैलो या मवेशियो को चलाया हुआ, चलाने के लिये मुह से शब्द किया हुआ. २ प्रोत्साहन दिया हुआ, उत्साहित किया हुआ ३ वढ-वढ कर बातें किया हुआ, शेखी बघारा हुआ, गप्पे मारा हुआ ४ आवाज दिया हुआ, पुकारा हुआ. ५ चिल्लाया हुआ ।
(स्त्री हाकियोडी)

हाचळ–म पु, ब. व [स. अञ्चल] १ किसी स्त्री के उरोज, स्तन ।
उ०—१ माता जुद्ध मैं जाता कहै म्हारा हाचळ चूगियो है सो लजाजै मती, लुगाई दिलिया देखाय कहै चूडा री लाज राखजो ।
—वी. स. टी.
उ०—२ जाहरा माता रै हाचळै पान्हो आयो । कह्यो वाळक ल्यावो ज्यूं चूघावा ।—देवजी वगड़ावता री वात
उ०—३ दोवडी कमर, पिचक्योडा गाल नै वैया रै, ओला जिशा लटकता हांचळ ।—फुलवाडी
२ मादा पशु या जानवरो के स्तन ।
उ०—१ सिड्या रा सिंघणी चूघावण आई तो वो हाचळां मूढो नी घाल्यो ।—फुलवाडी
उ०—२ मा मरती रै हाचळा लाग रह्या वाखोट । लूआ मती उघाडज्यो, आता जाता ओट ।—लू

हांजी–स. पु.—१ 'हा' करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति सूचक शब्द ।
२ हा में हा मिलाने की क्रिया या भाव ।
उ०—१ न जाणू हांजी चुप गहि, मेट अग्नि की झाळ । सदा सजीवन सुमरियै, दादू वचै काळ ।—दादूवाणी
उ०—२ ऐ लोग रईस अर हू जूवारो खायोडो कगलो कलीर । थरका पडता, लोग हांजी कग्ता । अर अवै कै हुयग्यो ? छोडी है तो नोकरी छोडी है ।—दसदोख
३ वडे व्यक्ति के पुकारने पर प्रत्युत्तर में वोला जाने वाला आदर-युक्त शब्द ।
४ लोकगीतो मे प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक सम्बोधन ।
उ०—१ धण रै तो आगण हवद खिणावो साहिव झूलण रै मिस आवो रे । हांजी रे ऊजळ दती रा साहिव केण विलमाया रे ।
—लो गी
उ०—२ होठडला मूमल रा रेसमीयै रा तार ज्यों, हाजी रे दांतडला ऊजळ दतीरा दाडम वीज्यो ।—लो. गी.

हांजीडो–वि —हा मे हां मिलाने वाला, चापलूस ।

हाडणो–वि. [स. हिण्ड] १ आवारा घूमने वाला, आवारा ।
२ भटकने वाला ।

हाडणो, हाडवो—देखो 'हाढणो, हाढवो' (रू भे.)

हांभाड-स. स्त्री.—गाय के रंभाने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—फुरणावज वाह हिहाड फरै, कल गाय हांभाड़ आमाड करै ।
—पा. प्र.

हांम-स स्त्री.—१ मन की इच्छा, कामना, अभिलाषा, चाह, मनोरथ ।

उ०—उर ढाळ सारीख चोड़ा अलल्ला, भिडज्जा वाह जप वै पक्ख भल्ला । पुडच्छी जिग्रा तोछ पै कथ पूरा, सग्राम विचै हांम पूरत सूरा ।—वचनिका

उ०—२ सिव दौडै सग्राम, सिर जोडै माळा सफै । वर सूरा अछरा वरै, हूरा पूरै हाम ।—रा रू.

उ०—३ मडै जुध 'नाथ' तणो 'फतमाल', तई खग झाडि भरै रत ताळ । 'दलो' 'अणदेस' 'सुत्तन्न' दुगाम, 'हरी' खळ ढाहत पूरत हाम ।—सू. प्र.

उ०—४ तेज भूप देख ताम निमै पाय तीस नाम । हेतवा सपूर हाम, वरमाळ लिया वाम ।—र. रू.

२ उत्कण्ठा, लालसा ।

उ०—जसा सरीखी जगत मैं, महिल नही म्याराम । पद्मोलण है पदमणी, ह्वाली पूरण हांम ।—मयारांम दरजी री वात

३ उत्साह, उमग, जोश ।

उ०—१ हांम घणी हरदास रै, जोडै राम दुझल्ल । हरी सुजूभा माड पह, सूजा दुरजण सल्ल ।—रा. रू.

उ०—२ काम घणी हररांम का, हाम घणी जूभार । पाछै कहिया वीर वर, यासू आगळियार ।—रा. रू

४ क्षमता, योग्यता ।

उ०—१ सखी भणइ सामिणि हिव सुणउ, एह दोस नवि कुणह तणउ । दैविहि कीधा छइ जै कांम, तेह मांजिवा धरइ कुण हांम ।
—हीराणद सूरि

उ०—२ तरै साह कह्यो, इणा घोडा री धाव कोस च्यार ताई एकै सिराडै देस्यो, तरै इणा री हांम पूरी पोचसी, तिण सू महाराज, सिरडो साथै दिरावा ।—कहवाट सरवहियै री वात

५ धैर्य धीरज ।

[अ हाम] ७ कपाल, खोपडी, मस्तक ।

८ अपने गोत्र या जाति का मामक ।

रू. भे.—हामू ।

हामकांम-सं. पु —मनोवेग, मन का आवेग ।

हामकांमलोचनी-सं स्त्री —१ वह स्त्री जिसके नेत्रो मे काम भावना का निवास हो, मदिरेक्षणा ।

२ अत्यन्त सुन्दर ।

उ०—भरमल पोसाक आभरण पहर हांमकामलोचनी आभैरी बीजळी सावण री तीजणी पावासर रो हस ज्यू मलहफती थकी सुधे भीनै गात रमझम करती आई —कुवरसी साखला री वारता

हांमकांमा-स. स्त्री.—१ अत्यन्त सुन्दर नैत्रो वाली स्त्री ।

२ इच्छा पूर्ण करने वाली स्त्री ।

३ रति की इच्छा करने वाली स्त्री ।

हांमगीर-वि.—देखो 'हमगीर' (रू. भे.)

उ०—लोग सारो हांमगीर थयो आपो आप कांम सू लाग गयो ।
—मुदरदास भाटी बीकूपुरे री वारता

हामळ-स. स्त्री—स्वीकृति, स्वीकारोक्ति, सहमति ।

उ०—१ राजा रो सिपायो कसाई वानै पटाया । वै तो ई हांमळ भर दी ।—फुलवाडी

उ०—२ सेठजी पिडतजी नै इचरज सू नरावता दूजी वार वळै पूछ्यो—जान रो ई सगळो नरचो ओढण सारू हांमळ भरी, फर्ठ ई जात-पात मैं काण-कोचर तो नीं है ।—फुलवाडी

क्रि प्र —भरणी ।

हांमलो-वि.—१ प्रसन्नचित्त, खुश ।

२ सौहार्द पूर्ण ।

हामस-सं. स्त्री.—इच्छा, कामना ।

उ०—राजसी पर्ण मोदन रहै माट खाय निज खागरी । पल करै प्रवाडा रवि उदय सदा हामस भाग री ।—पा. प्र

हांमी-स स्त्री.—१ हां करने या स्वीकार करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति ।

२ सहमति ।

वि.—शुभ चिंतक, हितैषी, मददगार ।

हांमू—देखो 'हाम' (रू. भे.)

उ०—अजामेळ जैसो महा अपराधी, लियो वार हैको तिकै गत लाधी । हियै पुत्र बोलाडवा तेण हांमू, निमो राम नामू, निमो रांम नामू ।—भगतमाळ

हांयली—देखो 'हासली' (रू भे)

हांस-स पु —१ स्त्रियो के गले मे धारण करने का एक आभूषण विशेष । (व. स.)

उ०—१ सपत लडी कचन सुमग, हास हार मुहेल । नवसर कण नवरग कै, चोसर फूल चमेल ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ म्हारी रखडी रतन जडाओ सा, म्हारा हिवडा नै हांस मंगाओ सा ।—लो. गी.

२ देखो 'हूंस' (रू. भे)

उ०—तठा उपरायत सिरदारा देसोतां सळाव मैं भूलण री हांस करै छै । लाल लागीरी पोता पहरजै छै ।—रा. सा. स

हांसउ—देखो 'हासो' (रू भे)

उ०—राजा राणी नू कहइ वात विचारउ जोइ । आज विखइया दीकरी, हासउ हसिसी लोइ ।—ढो. मा.

हासडो-स. पु —१ एक प्रकार का घोडा । (शा. हो)

२ देखो 'हांसो' (अल्पा, रू. भे.)

हासल-स. पु —१ एक प्रकार का घोडा । (शा हो)

ऊचा चढचोडा, छाती मैं सास मावै नी। आदमी धोतियौ पकडै तौ पोतियौ विखर जावै अर पोतियौ सभाळै तौ धोतियौ खुल जावै।
—रातवासौ

हाणि, हाणी-स स्त्री. [स. हानि] १ नुकसान, हानि, क्षति।
२ नाश, सहार, बरबादी।
३ ह्रास, क्षय।
४ अभाव, कमी।
५ बुराई, अपकार, अनिष्ट।
६ घाटा।
७ छूट, त्याग।
८ असफलता।
९ अनुपस्थिति।
१० कष्ट, तकलीफ, दुख।
रू भे.—हाण, हान, हानि, हानी।

हाणीकर, हाणीकारक-वि. [स हानिकारक] १ नुकसानदायक, हानिकारक, हानिप्रद।
२ कष्ट-प्रद, दुखदायी।

हांणू-वि —१ हनन करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला।
२ हानि पहुचाने वाला, नुकसान पहुँचाने वाला।

हाणे हाणैं—१ देखो 'हणा' (रू. भे)
उ०—दादू भाती पावै पसु पिरी, हांणैं लाइ न वेर। साथ सभोई हल्लियो, पौइ पसदौं केर।—दादूवाणी
२ देखो हानें' (रू. भे)

हांती-स. स्त्री. [स हिन्त+अण्=हान्ती] विवाहादि कुछ विशिष्ट (शुभाशुभ) अवसरो पर बनने वाले विशिष्ट खाद्य पदार्थ का वह अश जो पडोसियो, सगे-सम्बन्धियो एव बधु-बाधवो मे बाटा जाता है।
उ०—वडार रै नातै गाव नूत्यो, सोनजी रात सुख री नीद सूत्यो। लापसी'र घी रो घूत्रो नूनो कर दियौ है। हाती अर हरख री मजो लै लियो है।—दसदोख
रू भे.—हती।

हातौ-स पु —स्थापना नवरात्रि के अवसर पर देवी के निमित्त रग-बिरगे कागजो द्वारा बनाये गये चिन्ह जो दीवार पर चिपकाये जाते हैं।

हान—१ देखो 'हाण' (रू. भे)
२ देखो हाणि' (रू भे.)

हानि, हांनी—देखो 'हाणि' (रू. भे)

हांने, हानै-क्रि. वि. —१ यथा स्थान।
२ अधिकार मे, कब्जे मे, वश मे।
रू. भे.—हाणे, हाणैं।

हांनौ-स. पु.—१ ऊट के चारजामे के आगे का वह भाग जहां सामान लटकाया जाता है। जीन का अग्रिम भाग।
उ०—१ वस्तुवा नू तयार कर ऊट पर घाल गगाजळी पाणी री एक हानै घाली। वाक एक पताकै बाधी।
—साह रामदत्त री वारता
उ०—२ सो एक दिन सिकार नू वन मैं गयो, हिरणी भाग गई एक छोटी बच्चो थो सो भाग नही सक्यो, सो पकड हाथ पग बाध हानै ऊपर मेरह सहर नूं हालियो।—नी प्र.

हापणौ, हापवौ—देखो 'हाफणौ, हाफवौ' (रू. भे)
हापणहार, हारौ (हारी), हांपणियौ—वि०।
हापिअोडौ, हापियोड़ौ, हांप्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हापीजणौ, हापीजवौ—भाव वा०।

हापियोडौ—देखो 'हाफिग्रोडौ' (रू भे)
(स्त्री हापियोडी)

हाफ-स स्त्री.—उमग, इच्छा, स्वाहिश।
उ०—नीठ माळा फेरतै फेरतै औ सजोग वणियौ हौ, पण भाग-मैं भाठो लिखियो। कदास भळै' जिसो होवतो तो तनै राजी करता' र मन री हाफ ....—वरसगाठ

हाफणी-स स्त्री—१ तीव्र गति से श्वास आने की दशा या भाव।
२ श्वास रोग, दम की बिमारी।
रू. भे —हफणी, हाफी।

हाफणौ, हाफवौ-क्रि. अ [स उष्मायते, प्र. उम्हायइ] तीव्र गति से या जोर जोर से श्वास लेना, उसासें लेना, हांफना।
उ०—दीपि कापइ, पय भारि मेदिनी हांफइ, घाट खलकई .. ..।
—व स
हांफणहार, हारौ (हारी), हाफणियौ—वि०।
हाफिअोडौ, हाफियोडौ, हांफ्योडौ—भू० का० कृ०।
हांफीजणौ, हाफीजवौ—भाव वा०।
हापणौ, हापवौ, हूफणौ, हूफवौ—रू० भे०।

हाफरडै-क्रि वि —तीव्र गति से, तेज, जोर से, हाफने की स्थिति में।
उ०—सोनजी री बूढी मा बहू रै कोड मैं डागळै चढै अर ऊतरै है। सैंर हालै दरै मारग कानी जोवता-जोवता आख्या दूखण लागगी, पग थकग्या अर साम हाफरडै सह हुयग्यो।—दसदोख

हांफळणौ, हाफळवौ-क्रि अ —उतावला होना, त्वरित होना।
उ०—तन अखत रोड़ाडोलै तिकै, उर अतर सू आफळै। इम पिवण घूट पेछू उमग, होका दीठा हाफळै—ऊ. का

हाफळियोडौ-भू का. कृ —उतावला, त्वरित।
(स्त्री हाफळियोडी)

हाफियोड़ौ-भू का कृ —तीव्र गति से या जोर जोर से श्वास लिया हुआ।
(स्त्री हाफियोडी)

हाफी—देखो 'हाफणी' (रू भे.)

फिरता-फिरता रै पेट मैं ग्राळा जमग्या ।—दमदोख

हाउ-भाउ—देखो 'हावभाव' (रू भे.)

हाउस-सं पु [ग्र.] मकान, भवन, घर ।

हाऊ-स पु [देशज] एक काल्पनिक भयानक जतु जिसका जिक्र बच्चों को डराने-धमकाने के लिये किया जाता है, होवा ।

उ०—हाऊ बेठो छै तिहा, कन्हैया, ग्रळगो तू मति जाय रे ।
—जयवाणी

हाऊ-बोर-स. पु —एक प्रकार के बेर ।

रू भे.—हाहूबोर ।

हाक-स स्त्री [स हक्क] १ जोर से पुकारने की ग्रावाज, बुलाने के लिये की जाने वाली जोर की पुकार । (उ र.)

उ०—१ तद रावजी भीवै नू साथि ले-नै, जठै भरमल राखी हुती तठै ग्राया । माय हाक मारी, बोलै काई नही ।
—ऊमादे भटियाणी री वात

उ०—२ इत्ता जीवा री हळवळ सुणी तो बाजरी रै माय ऊभो एक डोकरो खाधै गोफण लिया 'कुण व्है ई, कुण व्है ई 'री हाक लगावतो वारै ग्रायो ।—फुलवाडी

२ हल्ला-गुल्ला, शोरगुल ।

उ०—हुवै कि हाक हक्कय, तवै क्रतत तक्किय । घडै ग्रनत धारय, सजोर घाव सारिय ।—रा रू

३ हुकार, वीर ध्वनि ।

उ०—इण रो सुर नर, मुनिवर जस जपै । इण री हाक हुवा कोणप कपै, जग जननी जोड न जायो रे, हनु ।—गी. रा.

४ ललकार ।

उ०—१ 'हरी' सवळेस' तणो करि हाक । करै खग भूक घणा किलमाक ।—सू प्र

उ०—२ ग्रवर री ग्रग्राज सू, केहर खीज करत । हाक धरा पर हुई, केम सहै वळवत ।—वा दा

४ ललकारने या प्रोत्साहन देने के लिये बोले जाने वाले जोश पूर्ण शब्द ।

उ०—१ तरवारिया रो रीठ वागियो । माथै चोकडी पड रही छै । हाक ऊपर हाक हुय रही छै । वीर नाच रहिया छै ।
— सूरै खीवै काधळोत री वात

उ०—२ फिरि फिरि झटकै जे सहै हाका वाजताह । त्या घरि हदी वदडी धरणी कापुरसाह ।—हा झा

५ चिल्लाहट ।

उ०—दह दिसि वाजइ हाक वहु जीव विणासइ । एक धुसइ एक धायइ एकि ग्रागनि नासइ ।—सालिभद्र सूरि

६ ऊची ग्रावाज, जोर का शब्द ।

उ०—१ चडी हाक वागता घूमडी भेरू डाक चोडै, नार तडी तमामै लागता नेण माग । मडी तोगा नागणी जागता ग्रायो रोस माथै, नवी परा पीथळै उडडी काळो नाग ।—जसो ग्राढो

उ०—२ चढि ग्राभ छडाळ चमक चुभी, खुरताळ घमक पताळ खुभी । वढि हाक ग्रमागळ डाक बजी, त्रिपुरासुर-सभु समाधि तजी ।
—मे म

७ बहुत से लोगो के सम्मिलित स्वर मे बोलने से होने वाली भारी ध्वनि ।

उ०—दूजै भळाकै ई सगळा नगरवासी ग्राडा जडनै सूवग्या । एक ई गळी मैं फिरतो निगै नी ग्रायो । नी खम्माघणी री हाक सुणीजी ।—फुलवाडी

८ डाट-फटकार, प्रताडना ।

९ डर, भय, ग्रातक ।

रू भे —हक्क, हका, हाक, हाकणी, हाकल, हाकि ।

हाकडणौ, हाकडवौ-क्रि ग्र [स हिक्कतिम्] ग्रटकते-ग्रटकते बोलना, हकलाना ।

हाकडणहार, हारौ (हारी), हाकडणियौ - वि० ।

हाकडिग्रोडौ, हाकडियोडौ, हाकड़चोडौ —भू० का० कृ० ।

हाकडीजणौ, हाकडीजवौ—भाव वा० ।

हाकड़ियोडौ-भू का कृ —ग्रटकते-ग्रटकते बोला हुग्रा, हकलाया हुग्रा । (स्त्री हाकडियोडी)

हाकडियौ-वि —१ तेज चाल से चलने वाला ।

२ देखो 'हाकडौ' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—खाती कूप वचायो ग्रहिवण, तूटी लाव सधाणी । हाकडिया री हेक चळू कर, पीगी ग्रावड पाणी ।—राघवदास भादो

हाकड़ौ-स. पु [देशज] १ सतलज नदी की शाखा के रूप मे वहने वाला एक नद जिसे ग्रावड देवी ने एक बनजारे की सहायता के लिये रोक दिया था ।

उ०—थिरा ग्रावडा नाम विख्यात थायो, छिगा-सत्रु मो तेमडै छत्र छायो । सको सोखियौ हाकडौ नाम सिंधू, वहतौ थको रोकियो लोकवधू ।—मे म

[स्त्री. हकडी, हाकडी] २ हकलाते हुए बोलने वाला व्यक्ति ।

उ० —खागडा विरुद साजण खत्रीठ, रागडा बजावै खाग रीठ । हाकडा तणी मुण सुण हकाळ, सडवडै सत्र उर पडैय साळ ।
—पे रू

रू भे.—हकडौ, हकलौ ।

ग्रल्पा, रू भे —हाकडियौ ।

हाकडाक-स स्त्री. [स हक्क+डाकृति] १ रण भेरी, रण वाद्य ।

२ वीरो की हुकार ।

उ०—हुवै हाक-डाक वकी कायरा ऊचकै हियो । डक डकै भैरवी बजावै रुद्र डाक ।—ठाकुर सुरताण सिंह रो गीत

हाकणौ-वि —१ ललकारने वालो, हाकने वालो ।

२ देखो 'हासिल' (रू. भे.)

उ०—१ थेट्ट छोड बवा थोक मह अध दीध हांसल मोक। सातू ईतरो नह सोक, लगर सुखी सगला लोक।—र. रू.

उ०—२ और सवाई राजपूता सू हासल मागै ती सूं उवै दोहरा।

—सुंदरदास भाटी वीकूपुरी री वात

उ०—३ जै वाग री दसूध दरबार मैं आवै तो घणो हांसल वधै अर रैयत रो पण कुछ विगड़ै नही हमैं वाग रो हांसल सगळा सु लेयस्या।—नी. प्र.

हांसली-स. स्त्री—१ गर्दन के नीचे व छाती के ऊपर की धनुषाकार हड्डी।

२ गले मे पहनने का एक चन्द्राकार आभूषण।

रू भे.—हसली, हायली, हास।

हांसलीओ हांसलीयौ-स पु.—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—मूगीआ चलवलीआ चारूलीआ परवालीआ माडलीआ खाजलीआ पिपलीआ पोपटिआ हांसलीआं चपकदुरगीआ विद्यापुरीआ देकापाटकीआ कास्मीरीआ .... —व. स

हांसलौ-स पु.—एक प्रकार का घोडा।

उ०—१ घोडो तो भीजै धरमी हांसळो, मोतीडै जडी लगाम औ। जामो विराजै धरमी रै केसरिया, पाच मोहर गज पाग औ।

—लो गी.

उ०—२ मेघउ लोलु नइ देवाइत, मूळराज महियडउ जइत। वालि माहि जे तेजी भला, एक सहस दीधा हासला।—का दे. प्र.

हासिल—देखो हासिल' (रू. भे)

उ०—तद नेणसी अरज कीवी जै हूं तो राज मैं हासिल वधतो लियो राज रो विस्वो गमायो नही।—रा. सि.

हांसी-स स्त्री—१ श्वास रोग से पीडित एक प्रकार की गाय विशेष।

उ०—कपला कवळी नैं वारै पुचकारै, लाखर लाखर ऐं आखर मन मारै। हासी वासीसी सूकी हिय हारै, ससणी लसणी लख द्वैदसणी सारै।—ऊ का

२ देखो 'हसी' (रू भे)

उ०—१ याळ आइयो। दोनू सरदार भैळा वैठिया ठट्ठो मसकरी हांसी हो रही छै।—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ उठै दोनू मिळिया हासी करणै लागिया।

—भाटी सुदरदास वीकपुरी री वारता

उ० —३ लोगा मैं वात जाहर होय सै तो लोग हासी करसै।

—नापै साखलै री वारता

उ०—४ गोकुळ की नारि देखत, आनद सुखरासी। एक गावत एक नाचत, एक करत हांसी।—मीरा

उ०—५ झालि झलामल नागला, नाग लागा छइ गालि। देसि हू ओपम तिहा भीय ? हासी य जोपए चालि।—आगम माणिक्य

हासौ-स. पु [स हास्य] १ हसने की क्रिया या भाव।

२ हसी, विनोद, मजाक, परिहास।

उ०—सीता छाडै सत्त, जत्त लिछमण सू जावै। महा जोध हणमत कळा वळहीण वहावै। नारद जुध निरखता, तिको पिण हासौ तज्जै, भयण अभ भोजन, भूख जीगिया न भज्जै।—चोथ वीठू

३ किसी की उपेक्षा करने या अपमान करने के लिये किया जाने वाला मजाक, दिल्लगी, वदनामी, खिल्ली।

उ०—१ तरै सिधराव निसासो मेलि नै कह्यो, कवरजी, दुख छै तिको तो माहिलो सरीर जाणं छै, वहद्या सू हासो हुवै नै गरज पिण किणही सू सरै नही, नै राज म्हारा जीवरा दातार छो, नै म्हारै भलो परताप दीसै छै सो राज रो उपगार छै।

—जगदेव पवार री वात

उ०—२ म्है तो राज रा रजपूत छा पिण लाकडी रा गोढ दिसा अठै थाहरो हांसो जोर हुवो।—राव रिणमल री वात

४ हँसने की ध्वनि।

५ सफेद जीभ वाला वैल।

६ देखो 'हसी' (मह, रू. भे.)

७ देखो हस' (अल्पा, रू भे)

रू. भे. —हासउ, हासडो हासउ, हासू, हासी।

हां-हां-अव्य —मुह से बोला जाने वाला एक शब्द जिसके उच्चारण भेद से ही स्वीकृति सूचक या निषेधात्मक अर्थ प्रकट होते हैं।

हा-अव्य. [स] १ दुःख, उदासी, पीडा का द्योतक एक अव्यय।

२ आश्चर्य या आह्लाद सूचक शब्द।

३ क्रोध या भर्त्सना सूचक शब्द।

४ है का भूतकालिक रूप, था, थे।

उ०—१ क्रत करण अकरण अन्नथा करणं, सगळै ही थोकै समरत्थ। हा लिया जाइ लगाया हूता, हरि साळै सिरि थापै हत्थ।

—वेलि

उ०—२ दरखत रा गात हरया हा, सापड़दे प्राण भरया हा। सूका ठूठा सा होग्या, की खातर हणं खड्या हा।—सकुतला

५ एवम्, अथ। (उ र)

हाइफण, हाइफन-स पु [अ] यौगिक शब्दो के बीच मे लगने वाला एक चिह्न विशेष जो अत्यन्त छोटी आडी लकीर के रूप मे होता है।

हाइ-भाइ—देखो 'हावभाव' (रू भे)

उ०—अवसरि तिणि प्रीति पसरि मन अवसरि, हाइ-भाइ मोहिया हरि। अग अनग पया आपाणा, जुडिया जिणि वसिया जठरि।

—वेलि

हाईकोट, हाईकोरट-स पु [अ हाईकोर्ट] उच्चन्यायालय।

हाईस्कूल-स. पु [अ हाईस्कूल] वह विद्यालय या पाठशाला जहाँ दशवी या ग्यारहवी कक्षा तक की पढाई होती है।

उ०—हाईस्कूल वेगी तो जैपर अर वीकानेर रै बीचाळै मूखा-तिसा

नू जोर पोहचै नही ।—हाहुल हमीर री वात

उ०—४ हुरीया वाडी वीगडै, सिर परि धणी न होय । यु चिडिया खाया खेतडा, हाकल करै न कोय ।—अनुभववाणी

उ०—५ जन हुरीया मन मिरघ कै, पाच पचीसु नारि । न्यारी न्यारी फिर चरै, हाकल गिणै न वारि ।—अनुभववाणी

रू भे —हाकलि, हाकली, हाकल्ल ।

हाकलणौ, हाकलवौ–क्रि. स.—१ चलाना, हाकना ।

उ०—नखायुध हाकलियौ करनल्ल । चराचर स्रस्टि थई हलचल्ल ।
—मे म

२ ललकारना, चुनौती देना ।

उ०—हाकलै राणा सूं साम्है चालतो जै पूदी हाडा । बूदी आडा-वळा सूधी राळतौ बखेर ।—जीवौजी भादौ

३ प्रोत्साहन देना, उत्साहित करना ।

४ डाटना, फटकारना, दुत्कारना ।

५ जोश दिलाना, उत्तेजित करना ।

६ जोर से पुकारना, आवाज देना ।

७ हुकार करना, गरजना ।

८ डराना, भयभीत करना ।

उ०—जसवत गुरड न उड्डही, ताळी अजड तणेह । हाकलियां डूला हुवै, पछी अवर पुणेह ।—हा. भा.

हाकलणहार, हारौ (हारी), हाकलणियौ—वि० ।

हाकलिओड़ौ, हाकलियोडौ, हाकल्योडौ—भू० का० कृ० ।

हाकलीजणौ, हाकलीजवौ—कर्म वा० ।

हाकळणौ, हाकळवौ, हाकालणौ, हाकालवौ—रू० भे० ।

हाकळि—१ देखो 'हाकळ' (रू भे)

२ देखो 'हाकळी' (रू. भे)

हाकळिका–स स्त्री —पन्द्रह अक्षरो का एक वर्ण वृत्त ।

हाकलियोडौ–भू का कृ —१ चलाया हुआ, हाका हुआ. २ ललकारा हुआ, चुनौती दिया हुआ ३ प्रोत्साहन दिया हुआ, उत्साहित किया हुआ ४ डांटा हुआ फटकारा हुआ, दुत्कारा हुआ. ५ जोश दिलाया हुआ, उत्तेजित किया हुआ. ६ जोर से पुकारा हुआ, आवाज दिया हुआ. ७ हुंकार किया हुआ, गरजा हुआ. ८ डराया हुआ, भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री हाकलियोडी)

हाकळियौ–वि —हकलाकर बोलने वाला, हकलाने वाला ।

रू. भे —हाकळू ।

हाकळी–स स्त्री.—१ दस अक्षरो वाला एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तीन भगण और एक गुरु होता है ।

२ देखो 'हाकल' (रू. भे)

रू भे —हाकळि ।

हाकल्ल–स पु —१ फौज, सेना ।

२ घोडा, अश्व ।

उ०—सिर विलंद झलै भुज भार सार । हाकल्ल इसा वारह हजार । आवता देख कहि वाह-वाह । इम कियौ मारवा मन उछाह ।—सू. प्र.

३ सिपाही, सैनिक ।

वि —१ हाका जाने वाला ।

२ देखो 'हाकल' (रू. भे.)

हाकहीक, हाकहूक—देखो 'हाकाहाक' (रू भे.)

उ०—१ विविध प्रकारि जै छइ पालखी, चकडोल, अनइ तरुआरि स रमता, भाला उछालता, हाकहीक करता एहवै पायकै परिवा-रउ ।—व. स

हाकाणौ–सं पु.—दुर्भिक्ष के समय मवेशियो को ऐसे स्थान पर ले जाने की क्रिया जहा पानी व घास अधिक मात्रा मे हो ।

हाकांताकां, हाकांधाका–क्रि वि —१ देखते-देखते, खुले-आम ।

उ०—१ देखण वाळा नै तो फगत धूड री गोट इज निजर आयो । हाकाधाका मैं जोडी आगै निकळगी अर घोडो लारै रैग्यो ।
—अमरचूंनडी

उ०—२ वीदणी सानी सू की समझावै उण पैला ई कामेती रै सागै आठ-दसे'क आदमी उणनै माडाणी हाकाधाकां रथ माथै थरकाय दी ।—फुलवाडी

२ बलवान्, हठात् ।

रू. भे.—हांकाधाका ।

हाकादड़बड़–स. पु. [अनु] शोरगुल, हल्ला-गुल्ला ।

उ०—दरबार रै पाखती-पूगी तो साम्ही हाकादड़बड़ सुणीजी । राज रै तबेला सूं एक बोछरडी घोडी न्हाटती आई । लारै चरवा-दार ।—फुलवाडी

रू. भे —हाकंदिड़बड, हाकोदड़बड ।

हाकार—देखो 'हाहाकार' (रू. भे)

हाकारौ—देखो 'हाहाकार' (अल्पा; रू भे)

उ०—समहि खाग आण्यौ उर ऊपरि, हिरण करै हाकारौ । मेरी वारी मोहि विणासो, अवळा मूळि न मारौ ।—जाभौ

हाकालणौ, हाकालवौ – देखो 'हाकलणौ, हाकलबौ' (रू भे)

उ०—हाकालीया केहरी 'गुमान' वाळा वगां हाका, रारीया भभका क्रोध डका ववी रोड । गजा काळा मोड वाळा रखै तूं दूसरा 'गजा', जोड वाळा पोहा री मरोड जाडी जोड़ ।
—गोपाळजी धधवाडियो

हाकालणहार, हारौ (हारी), हाकालणियौ —वि० ।

हाकालिओड़ौ, हाकालियोडौ, हाकाल्योडौ—भू० का० कृ० ।

हाकालीजणौ, हाकालीजवौ—कर्म वा० ।

हाकालियोडौ – देखो 'हाकलियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री हाकालियोडी)

उ०—देवी कटका हाकणी वीर कवरी, देवी मात वागेस्वरी महा- गवरी।—देवि

२ देखो 'हाक' (रू भे)

हाकणो, हाकबो—देखो 'हाकणो, हाकवो' (रू भे)

उ०—१ पडिया पचायणनी परि हाकइ, रोस लगि मुछ मुंछ फरकावइ। रथ चक्र चापी ती-करोडि कडहडइ।—रा. सा. स.

उ०—२ आसमुद्द धरहि वणिय दक्केक्कड कडिचीरि। हाकीउ रल जिम काढीइउ आयमतई सूरि।—मालिभद्र सूरि

उ०—३ हाकी भड ऊठाडइ आगला ति पाडइ। सरसै जपउ ढाडइ राउत रु साडइ।—सालिभद्र सूरि

उ०—४ घर रा लोग राजस करै हा। कमाई मे सर्फ अर वरकत ही। सगळा सिरज्योडा चाले, एक-रा हाक्या हालै।—दसदोख

हाकणहार, हारौ (हारी), हाकणिडौ—वि०।

हाकिओडौ हाकियोडौ, हक्योडौ—भू० का० कृ०।

हाकीजणौ, हाकीजवौ—कर्म वा०।

हाक्बवाळ-वि—वहादुर, वीर, पराक्रमी।

उ०—आसथानजी रा धूहडजी, धूहडजी रा वेटा री विगत— रायपाळ महिरेळण १ जोगाइत उडणो २. वेगड कटारमल ३ जाळू गज उछाळ ४ कीतपाळ अभैउर सिणगार ५ पेथड हाक- बवाळ ६ कहाणी।—बा. दा ख्यात

हाकवक, हाकवाक—देखो 'हाकियौ-वाकियौ' (रू. भे)

उ०—१ भलवा भलूस साज सहेल्या री साथ जोवै, वादी वीजी हुइ रूप देखै हाक-वाक। कुरवा वधारै लाडी जसा नै मुनाथ कीजै, चैल (छैल) वना लीजै दुवारै की चाक।

—मयाराम दरजी री वात

उ०—२ कानजी हाक-वाक व्हैग्यो। वो आपरी लुगाई री रीस नै आछी तरिया जाणै हो। उणै कह्यो—थोडी धीरै वोल भली मिनख, कोई वाड काटो सुणैला, कतल रो मामलो है अर हाल मुकद्मो ई दरज व्हैणो है।—अमरचूनडी

हाकम—देखो 'हाकिम' (रू. भे.)

उ०—१ समत १७८१ मे महाराजा स्री अभैसिघजी पाट वैठा नै हाकम मुणोयत सावतसिघ आयो। नै समत १७८५ रा गनीमा जाळोर मारी। पछै समत १७९१ मुतो किसनचद हाकम आयो।

—नैणसी

उ०—२ पछै वावेचा जेठमलजी हाकम कनै जाय कूचीआ न्हाख कह्यो-के तो भीखणजी रहसी के म्हे रहस्या। जद हाकम वोल्यो इसो अन्याय तो म्हे नही करा।—भि द्र

हाकमारीघरलाग-स स्त्री—प्रजा मे वसूल किया जाने वाला एक प्रकार का कर या लगान विशेष जो हाकिम के निजी व्यय के लिये होता था।

हाकमी—देखो 'हाकिमी' (रू भे)

हाकर-डाकर-स स्त्री.—वीरो की हुँकार।

हाकरणौ, हाकरबौ-क्रि. स.—१ गरजना, दहाड़ना।

उ०—नाथ परताप नह धरै धडक नरपति, चमू सग्रहरा चकरै धकै चाळ। डाखियो सेर साजी अणी हाकरै, पेसकस भरै किम वियो 'विजपाळ'।—जवानजी आढो

२ ललकारना, चुनौती देना।

३ चिल्लाना।

४ देखो 'हाकणो, हाकवो' (रू. भे)

उ०—हिवा हाथिया आस्वासायइ उधा मउड पडइ, रेवत रडवडइ, पडिया पचायणनी परि हाकरइं, रोस लगी मुच्छ भूच्छ फरकावइ, रथचक्र चापीती करोडि कडकडइ. ......।—व स.

५ देखो 'हाकरणो, हाकरवो' (रू भे)

हाकरणहार, हारौ (हारी), हाकरणियौ—वि०।

हाकरिओडौ, हाकरियोडौ, हाकरचोडौ—भू० का० कृ०।

हाकरीजणौ, हाकरीजवौ—कर्म वा०।

हाकरियोड़ौ-भू का कृ.—१ गरजा हुआ, दहाडा हुआ।

२ चुनौती दिया हुआ, ललकारा हुआ।

३ चिल्लाया हुआ।

४ देखो 'हाकियोडौ' (रू. भे)

५ देखो हाकरियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. हाकरियोडी)

हाकळ-स. पु.—१ एक चौकल तथा पचकल युक्त १४ मात्रा का एक छन्द विशेष।

२ प्रथम और द्वितीय चरण मे ग्यारह-ग्यारह तथा तृतीय और चतुर्थ चरण दश-दश वर्ण का एक वर्णिक छन्द। इसके प्रत्येक चरण मे पद्रह मात्राएँ और अन्त मे एक गुरु होता है।

३ तीन चौकल तथा अन्त मे गुरु से १४ मात्रा का एक मात्रिक छन्द।

४ प्रथम और तृतीय चरण मे दश वर्ण सहित १४ मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण मे ग्यारह वर्ण सहित १४ मात्राओ का एक छन्द।

उ०—आदि त्रियै पायै दस आखर, पठि इग्यार वियै चौथै पर। दीजै तात्रा पाइ चउद्दह, हाकळ एम कहीजै छद्दह।—पि प्र.

हाकल—देखो 'हाक' (रू भे.)

उ०—१ खा भी नू कही हाकल मारू थारो नाव कामू उण कही जी जमाल छै।—नापै साखळै री वारता

उ०—२ गोळी लागता ई इक्कड अरडाट कियो अर सन्मुख आई झाडी मे वडग्यो कुवर अर उणारा साथीडा सगळाई झाडी नै घेर नै ऊभा व्हैग्या। जोर री हाकल हुई।—अमरचूनडी

उ०—३ माहै सिरदार ऊभो छै—तिण वास्तै टूक टूक हुय पडै छै, राजा री हाकल सो। का तो राजा सो कोई दाव करो, राजा

उ०—२ दिन ऊगताई गाम में हाकौ रो फूटग्यो । जणीका-जणीका री जबान माथै एक इज बात ।—अमरचूनड़ी

६ धिक्कार, फटकार, डाट, प्रताडना आदि के लिए कहा जाने वाला शब्द ।

उ०—राजा हाकौ कियो—म्हारै ओरणा री पन्नी तौ थोटी म्हारै माथा पर नाख दी रै ना जोगा । मूछाळा व्हैनै एक मांमूली टोगड़िया सु डरनै भागग्या ।—अमरचूनड़ी

७ चिल्लाहट, हाय-त्राय ।

उ०—अबै वाणिया रै काई ढील । वो चुट्टी भालनै थोटी जभेडी । विणियाणी हाकौ करियो । आडोस-पाडोस रा लोग भेळा हुवा ।
—फुलवाडी

८ गर्जना, हुँकार ।

९ बहुत से लोगो के या प्राणियो के एक साथ बोलने पर सम्मिलित स्वर मे होने वाली आवाज ।

उ०—'अभेमाल' पान कपूर अरोगाए । जदी गुलाबी अतर पहरि करि घूप धारै । खमा खमा हाकै होतै अदर सै बाहर पधारै ।
—सू. प्र.

क्रि. प्र.—करणौ, कराणौ, फूटणौ, मचणौ, मारणौ होणौ ।

रू भे —हकौ, हवक, हवकौ, हकाळौ ।

हाक्यौ-वाक्यौ—देखो 'हाकियौ-वाकियौ' (रू. भे.)

उ०—१ वै हाक्या-वाक्या व्हियोडा परकोटा रै माय वडिया । अठी जोयनै उठी जोवै, सामी जोय नै पाछौ लारै जोवै ।
—फुलवाडी

उ०—२ नाई डोकरी नै समझावण सारू की नवी वात माथै विचार करण लागो ई ही कै उण रै काना रथ री आवाज साव सलवै सुणीजी । हाक्यौ-वाक्यौ होय फिळो खोल्यो । थरथरावती आवाज मैं वोल्यो—अन्नदाता तो पधारग्या । —फुलवाडी

हागडधाट—स. पु.—१ आमोद-प्रमोद, क्रीडा, विनोद ।

२ वैभव, ठाट-बाट ।

रू भे.—हागडाधाट ।

हागडदि, हागग्डदि—स स्त्री —हाहाकार, त्राहि-त्राहि ।

उ०—धागड्दि धमक ओयण धहलै धर, दागड्दि दिसा दहलै दिगपाळ । हागग्डदि हुवै आलम हैकपै, कागड्दि कयामत जाण कराळ ।—र. रू

हागडाधाट—देखो 'हागडधाट' (रू. भे)

उ०—हागडाधाट गहमह हरख, जोख इसी कर जांणणौ । 'जीवराज' मन वेग गरुड ज्यू, मगरै मजलिस माणणौ ।
—अरजुणजी बारहठ

हाडहोड—देखो 'हाडहोड' (रू. भे.)

हाडी—स स्त्री —रबी की फसल । (गंगानगर)

हाजत—स स्त्री. [अ.] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा, इश्तिहा ।

२ मल त्याग की इच्छा, टट्टी की शका ।

३ शका, सदेह ।

रू भे.—हाजित ।

हाजमो—स. पु. [अ. हाजिम] पाचन शक्ति, पाचन क्रिया ।

उ०—चाय मे आधो चिमचो भेग री दूध हो, उण री निरणाई सू हाजमो विगड्यो ।—फुलवाडी

मुहा.—(१) हाजमो खराब होणौ=पाचन क्रिया बिगडना, बदहजमी होना, पेट मे खराबी होना, सहनशीलता की कमी होना, विवेकहीन होना, बात को मन में न रख पाना । (२) हाजमो दुरुस्त होणौ=पाचन क्रिया ठीक होना, सहनशील होना, विवेकशील होना, बात को मन मे रख पाने की क्षमता होना । (३) हाजमो विगडणौ=देखो 'हाजमो खराब होणौ' ।

हाजर—देखो 'हाजिर' (रू. भे)

उ०—१ लेवै राम सुमित्रासुत आळा, तेज रिम्नि त्रण तोली । ऐरै भूप कह्यौ हु हाजर, हानू गाय हगोळी ।—र. रू.

उ०—२ तठा उपरायत पुराणै अगर री चिकायो सघो मगायजै छै—मोती सुलै छै । मोती पुरै री सीप रा प्याला मे प्रात हाजर कीजै छै ।—रा सा म

उ०—३ गुजराती कसमीरी सलूरी मारवाडी दखणी मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजारमेखी घणी रग-रग री कनात मुलतान कलाबूती सोनै रूपै रा वणिया जीण हाजर कीजै छै ।
—रा. सा न.

हाजर-जवाव—देखो 'हाजिर-जवाव' (रू भे)

हाजर-जवाबी—देखो 'हाजिर-जवाबी' (रू. भे)

हाजर-नाजिर—स पु [अ हाजिर=तैयार+नाजिर=कर्मचारी] वह नोकर या सेवक जो सेवा के लिये तैयार रहता है ।

उ०—थे जो पलक उघाडो दीनानाथ, म्हे हाजर-नाजिर कब की खडी ।—मीरा

क्रि. वि —खुले आम, दिन दहाडे ।

हाजरात—देखो 'हाजिरात' (रू भे)

हाजरि—देखो 'हाजिर' (रू भे)

उ०—१ ऊजळा प्राचा री खवास्या ऊजळा रूपोटा लीया हाजरि खडी मिसरी, अफीण सू अरोगाडी जै छै ।—रा मा. स

उ०—२ राम सकळ मे रमि रह्या, हाजरि खडा हजूर । हरीया अध न देखई, चहु दिस ऊगा सूर ।—अनुभववाणी

२ देखो 'हाजरी' (रू. भे.)

हाजरियौ—स. पु.—१ सेवक, अनुचर, नोकर ।

उ०—दिन ऊग्यो, सिनान-पाणी करचा अर बीन-बीनणी रै मौड बाध्या । हाजरिया-हवालदार एका ताणा तथा बेल्या री कतार सजाई ।—दसदोख

हाकाहाक–स स्त्री.—१ बहुत से व्यक्तियो के सम्मिलित स्वर से होने वाली ऐसी आवाज जिसमे एक आवाज पर दूसरी आवाज तीव्र-तर होकर उठती हो, शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला।

उ०—१ हर रावत भीडया ऊभा छा। ज्या ऊपरै कोरडी तरवार ही वाही, फुलधारा का बाढ जडया हर बारा पडया, हाकाहाक हुई, कोहक माची।—पना

उ०—२ हाका दडबड अर कोपरिया रा बणवट सुणनै आडोसी पाडोसी जाग्या। मार हाकाहाक मची। सिरदार लुकता छिपता साव नैडा आयग्या।—फुलवाडी

२ हुकार पर हुकार, वीर ध्वनि।

क्रि प्र —करणी, मचणी, मचाणी, होणी।

रू भे.—हाकहीक, हाकहूक।

हाकि—देखो 'हाक' (रू भे)

उ०—बिहु पखा हाकि हाकि, हिणि-हिणि मारि-मारि।

—रा मा म

हाकिनी–स स्त्री.—तत्र की एक प्रकार की घोर देवी।

हाकिम–स. पु. [अ] १ राजा, नरेश, बादशाह।

२ स्वामी, मालिक।

३ शासक।

४ किसी प्रान्त या जिले का सब से बडा अधिकारी।

५ अध्यक्ष, सरदार, नेता।

वि.—हुकूमत करने वाला, शासन करने वाला, हुक्म चलाने वाला।

रू. भे.—हाकम।

हाकिमी–स. स्त्री. [अ] १ हाकिम का कार्य।

२ शासन, हुकूमत।

३ स्वामित्व, मालिकी।

रू भे —हाकमी।

हाकियोडौ—देखो 'हाकियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. हाकियोडी)

हाकियौ-वाकियौ–वि यौ (स्त्री हाकीवाकी) हक्का-बक्का, भौंचक्का, हतप्रभ।

उ०—माहिलो साथ हाकियौ वाकियौ हुवौ, रग माहे भग कीयो। इणा तो लोह वजायो। आदमी सो दोढ मारिया।

—जेतसी ऊदावत री बात

रू भे —हाक-वाक, हाकवाका, हाकी-वाकी, हाक्यौ-वाक्यौ।

हाकी–स स्त्री [अ हॉकी] १ गेंद खेलने की एक विशेष प्रकार की छडी जो आगे से कुछ अर्द्धचन्द्राकार मुडी हुई होती है।

२ उक्त छडी एव गेंद से खेला जाने वाला एक विश्व प्रसिद्ध खेल।

हाकीवाकी–वि. स्त्री.—१ हक्की-बक्की, हतप्रभ।

उ०—जठै पना की माथण्या तो हाकीवाकी रही, हर रावत भीडया ऊभा छा, ज्यां ऊपरै कोरडी तरवार ही वाही।—पना

२ देखो 'हाकियौ-वाकियौ' (रू भे)

हाकैदडबड, हाकोदडबड—देखो 'हाकादडबड' (रू भे.)

हाकोटणौ, हाकोटबौ–क्रि स.—हाकना।

उ०—पचाइण दळ पूर, पैठो ईसर कां प्रगट। हेवै थट हाकोटिआ, अणी चढावै ऊर।—वचनिका

हाकोटा–वि —१ प्रसन्न, खुश।

२ स्वस्थ, स्वच्छ।

हाकोटियोडौ–भू. का कृ —हाका हुआ।

(स्त्री हाकोटियोडी)

हाकोबेवौ–स. पु. यौ.—शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला, कोलाहल।

हाकौ–स पु. [राज हाक] १ जोर की आवाज, जोर का शब्द।

२ पुकार, आवाज।

उ०—१ बीदणी अळगा सू ई हाका करया पण मुभट सुणीजियो कोनी।—फुलवाडी

उ०—२ बीजै दिन कुवरि जोरावरी कर वेस्या रै घर सू बाहर निसरी बाजार माहे ऊभी रही नै हाकौ दियो।

—पन्नदडी री वारता

३ शोर, हल्ला, कोलाहल।

उ०—सुणता हाकौ सहज ही, कीधी जेज कधी न। नीदाळ अब छोडणा भीडाणा कुच पीन।—वी. स.

४ ललकार, चुनौती।

उ०—कळह बिहू कूरमा कजाका, हिणियौ 'अभै' मेन करि हाकां।

—सू प्र

५ किसी को बुलाने या लोगो को एकत्र करने के लिये किया जाने वाला शब्द, आवाज।

उ०—१ पैला तो म्हैं भूत जाण्यो। भगवान भूठ नीज बुलावै, अदाता, म्है डरप्यो। म्हारा सू हाकौ ई नी व्हियो।—फुलवाडी

उ०—२ आ बात कैय वा हाकौ करण वाळी ही के दीवाणजी हाथ जोडनै बोल्या—थानै थारा धणी री सोगन हाकौ करयो तो। साचाणी म्हैं दीवाण इ हू। कुचमादी रै भरोसै हाकौ कर दियो तो अबार लोग भेळा व्है जावैला।—फुलवाडी

उ०—३ म्हैं धापू नै हाकौ कियो तो वा पाडोस रा घर सू दौडी आई। पण सदेई का ज्यू आयनै पगा मे बाथ नी घाली।

—अमरचूनडी

६ गुली चर्चा, खबर, अफवाह।

उ०—१ राजाजी अर महाराणी रै डर सू भेळा होय पचायती के हाकौ करण री हीमत तो किणी री नी ही, पण राना रै कांना मे हळाहळ फूटण लागो जको रात पटचा पैं'नी पैं'लो किणी सू आ बात अछानी नी री........।—फुलवाडी

क्रि. प्र.—खुलणौ, मडणौ, माडणौ, लागणौ ।
रू. भे.—हट, हटण, हट्ट, हट्टि, हट्ठ, हाटक, हाटी, हाट्ट ।
अल्पा;—हाटकी, हाटडी, हाटडि, हाटडी ।

हाटक-स. पु [स.] १ स्वर्ण, सोना । (अ. मा, ह ना मा)
उ०—१ दाटक राम आलाटक दडण, हाटक-कोट अधीस विहडण ।—र. ज प्र.
उ०—२ मणि ककण अगद अमूल्य पद हाटक नूपर । नवलासी नवरग, सग भुज वसी सुदर ।—रा रू.
उ०—३ मगरूर धताधन मत्त मदा, उनमत्त मुनेस्वर दत्त अदा । फबि हाटक दड धुजा फहरै, कुडळी जिम भाटक सुड करै ।
—मे म.
२ देखो 'हाट' (रू. भे)
उ०—एक जोइ नव हाटक हाटक दान प्रवीण । करइ ति गायण आलवि, आलवि मन्नइ वीण ।—जयसेखर सूरि

हाटककोट, हाटकपुर-स पु यौ. [स] स्वर्ण निर्मित नगर, लका ।

हाटकलोचण-स. पु. यौ [स हाटक+लोचन] हिरण्याक्ष नामक दैत्य ।

हाटकी—१ देखो 'हाटक' (रू. भे)
२ देखो 'हाट' अल्पा, रू भे.)

हाटकेस-स. पु [स हाटकेश] शिव की एक मूर्ति जिसकी उपासना गोदावरी के तट पर होती है ।

हाटडी, हाटडि, हाटडी—१ देखो 'हाट' (अल्पा, रू भे.) (उ र)
उ०—१ कुलड कटोरदान, कचोळा लोटा, उपळ माटडी । साह खवेड दास प्रजापत, न्याही नगरा हाटड़ी ।—दसदेव
उ०—२ म्है तोनूं पाच रुपया देयस्या तीसू तू हाटडी कर भावै खूमचौ कर सौ थारौ गुजरान हुवौ जायसी ।
—साह रामदत्त री वारता
२ देखो 'हटडी' (रू. भे)

हाटी-स पु [स. हाट्टिक] १ हाट लगाने वाला वणिक, व्यापारी ।
उ०—इम आवै इक ऊपग हाटी लोप हटक्क । सलभ मुपा सिर सक्रमें, कीडी जेम कटक्क ।—बा दा
२ देखो 'हाट (रू भे)

हाटू—देखो 'हाट' (रू भे)

हाटेडी-स पु. [स. हाट्टिक] हाट लगा कर माल-बेचने वाला, दुकानदार ।

हाटोहाट-क्रि. वि.—एक दुकान से दूसरी दुकान, दुकान-दुकान पर ।
उ०—तु सरवर की मछली, कौण पिता कुणमाय । अलप सनेही कारणै, हाटोहाट विकाय ।—अनुभववाणी

हाठ—देखो 'हाट' (रू. भे.)
उ०—पाली में भिखणजी स्वामी आग्या लेइ नै एक हाठ में ठहरचा ।—भि. द

हाठु, हाठू—देखो 'आठू' (रू भे)

उ०—होकारै होतारो होइ नै रह्यिौ छै । लाल बरछी सरी न रही छै । पगेज बराबर चालता घोडा रा हाट्ठआं ऊपरि अध लोही ए रा भाग तजारै री वाडी री भांति विराज नै रहिग्रा छै । फौज बराबर चालता आकास उरै गैहरा ऊपर हुइ नै रहिग्रा छै ।
—रा. सा स

हाड, हाडक-स. पु. [स हड्ड] १ किसी प्राणी के शरीर का अस्थि समूह, हड्डी, अस्थि । (उ र.)
उ०—१ बाप रो हाड-हाड धूळतो हो । यो तो ऐंठो ठरचो कै काळजो सुरक सुरक करण लागो । ठगाई करण वाळा ठग खुद ठगीजै तो वै पूरा हाथ-पाव व्हे जावै ।—फुलवाडी
उ०—२ पुलिस गाम मायनै सू पनरै आदमिया नै पकड'र नेयगी अर लेजायनै ठरकावणा सरू किया तो पछै मजलो रै मोहू गाम नैं । मार-मारनै सगळा रा ई हाड जोजरा कर नाख्या ।
—अमरचूनडी
२ मृत प्राणी के शरीर की हड्डी या टुकडा अस्थि खण्ड ।
उ०—१ मीन पून अवलजा, लज पर हथि अलजे । रूळै हाड एकळ, गीध माडी स्यावजै ।—जासौ
उ०—२ तो मैं च्यार कळस, त्यां रै म्होडा बद, च्यारा पर अळग-अळग च्यार नाम लिखिया । सो राजी राजी लेय म्होडा खोलिया तो ककर कोयला तुस अर हाड नीसरिया ।—सिघासण बत्तीसी
३ शरीर, पिंड ।
उ०—१ पाच पाडु अरु कुती द्रोपदी, हाड हिमालय गरै । जग किया बळि लेण इद्रासण, सो पाताळ धरै ।—मीरा
उ०—२ अधारी रात, फळसो उघाडो, ससोड़ ठरै, तुलसी जाडौ । ठडा फिरता बिछावणा में मारजा किया आपारा सोयसी । कोडियै जाडै हाड धोळा कर राख्या है । - दसदोस
उ०—३ आह्मण बिना वरण करता सिधु न ध्यु मारुआडि । तु नू पुण्य करघू मि मनसू, चिता पामि हाडि ।—नळाख्यान
४ वश का गौरव, वश की मर्यादा, कुलीनता ।
वि —सफेद, श्वेत । * (डि. को)
मह,—हाडख, हाडळ हाडाळ ।
रू भे —हाडि, हाडी ।

हाडकाडौ-स पु—वह स्थान जहा मृत पशुओ की हड्डिया पडी रहती है ।
रू भे.—हाडकोड ।

हाडकी—देखो 'हाड' (अल्पा, रू भे)
उ०—किण हि सूं डरता नही, एतो हुता औ जोरावरी जोध कै । मारी नै गाड दिया ज्यारी हाडकिया नही सकिया सोध कै ।
—जयवाणी

हाडकौ—देखो 'हाड' (मह, रू. भे)
उ०—१ ठौड ठौड गावा रै बारै ढोर-डागरा रै हाडका रा ढिग लाग्योड़ा पड्या हा अर जठै तठै बाटका रै ओलै मिनखा री लासा

२ सदेशवाहक।

उ०—१ पण जूता री हुकम मिळता ईं वादळ पाछौ पंतरौ वद-ळियौ। एक हाजरिया नै भेज पोळिया नै तेडायौ।—फुलवाडी

३ हाथ मे रखने का डंडा।

हाजरी—स स्त्री [अ. हाजिरी] १ उपस्थिति, मौजूदगी या वर्तमान होने की अवस्था या भाव।

२ किसी कार्य विशेष या अवसर पर उपस्थित रहने की अवस्था, मौजूदगी।

३ कार्यालय या नौकरी पर नियत समय पर उपस्थित होने की क्रिया, उपस्थिति।

उ०—छठै दिन दरवार मैं पाछी हाजर व्हैणौ। डोढ दिन मारग री। आधी ढळिया ईं घोडै नी चडिया तौ हाजरी मैं चूक व्है जावैला।—फुलवाडी

४ विद्यार्थियो, मजदूरो, सिपाइयो आदि की ली जाने वाली रोजाना की उपस्थिति।

उ०—सोपौ पडग्यौ, सरणाटौ छायौ। वत्ती काटी, लोटियौ बुझायौ। हाजरी हुई अर सोवण री घंटी वाजी।—दसदोख

क्रि. प्र —देणी, बोलणी, लैणी होणी।

५ उपर्युक्त उपस्थिति के फलस्वरूप किसी पजिका मे किया जाने वाला अकन, हस्ताक्षर आदि।

क्रि प्र.—करणी, कराणी, माडणी, लगाणी, लिखणी, लैणी।

६ कर्त्तव्य, ड्यूटि।

उ०—भाग सू उणरी ड्यूटी बी. डी. ओ. सा'व रै घरै इज लागी। वौ जितरौ नाचण-गावण मैं हुसियार हो, उतरौ ई हाजरी माजण मैं पण पाटक हो।—अमरचूनडी

७ सेवा, चाकरी, टहल।

उ०—१ वठै म्हारै ही काम वेगौ, चौधरीजी री हाजरी मैं आखी रात खडा अटकता रैया।—दसदोख

उ०—२ वेटौ इग्याकारी ऐडौ कै वाप नै सपना मैं ई ओडो को देवै नी। आठ पौ'र वाप री हाजरी मैं हाथ जोडया एक पग रै पाण ऊभौ रैवतौ।—फुलवाडी

८ अपने स्वार्थ के लिये या उद्देश्य पूर्ति के लिये किसी के पास वार-वार जाने की क्रिया या भाव।

उ०—खासा दिना ताईं सेठ री बीणती साव ऐळी गी तौ वौ कायौ होय जमराज री तिथ छोड आपरा मन समझावणौ ईं सावळ जाणियौ। जणा जणा री हाजरी साझिया काडै सार।—फूलवाडी

९ देखो 'हाजिर' (रू. भे.)

रू भे.—हाजरि, हाजिरि।

हाजित—देखो 'हाजत' (रू. भे)

उ०—मध सिवरन जू ऐसै भाई, राम विना हाजित नही काई। गद गद कठा कवळ विगासा, पाया पेम भया परगासा।

—अनुभववाणी

हाजिर—वि [अ] १ उपस्थित, मौजूद, वर्तमान, विद्यमान।

२ प्रस्तुत।

३ सन्नद्ध, सावधान, तैयार।

४ उपलब्ध।

रू भे.— हाजर, हाजरि, हाजरी, हाजिरि, हाजिरी।

हाजिर-जवाब—वि. यौ [अ.] प्रत्येक वात का तत्काल युक्तियुक्त उत्तर देने मे निपुण, प्रत्युत्पन्न-मति।

रू भे —हाजर-जवाव।

हाजिर-जवाबी—स स्त्री. [अ] १ 'हाजिर-जवाब' होने की अवस्था या भाव।

२ प्रत्युत्तर की निपुणता, प्रत्युत्पन्नमतित्व।

रू भे —हाजर-जवाबी।

हाजिरात—स स्त्री. [अ.] भूत-प्रेत आदि को वुलाने की क्रिया।

रू. भे.—हाजरात।

हाजिरि—स. पु —१ छडीदार, प्रतिहार। (ह नां. मा)

२ देखो 'हाजरी' (रू भे)

रू भे —हाजिरी।

हाजिरियौ—देखो हाजरियौ' (रू भे)

उ०—गळ विच मेली हाथ हाजिरियौ, अग विभूति रमायौ। मीरा कै प्रभु हरि अविनासी, भाग लिख्यौ सोही पायौ।—मीरा

हाजिरी—१ देखो 'हाजरी' (रू. भे)

२ देखो 'हाजिरि' (रू. भे)

हाजी—स पु [अ.] वह व्यक्ति जिसने हज की यात्रा करली हो, हज किया हुआ।

हाजी-विट्ठल—स पु —मुसलमान हिंजडो का एक पीर। (मा म)

हाट—स. स्त्री [स हट्ट] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहा वस्तुओ का क्रय-विक्रय किया जाता है, दुकान।

उ०—१ तूं सरवर की मछली, कोण पिता कुण माय। अलप सनेही कारणैं, हाटो हाट विकाय।—अनुभववाणी

उ०—२ सावळगढ रै अडूड च्यानणै मैं सेठ-साहूकारां री माल-मत्ता री सत्ता सरूप सागो-पाग ठा' पहरैयौ हो। हाट वजार री अर सुनारा रै हटडै री सोमा देख'र वगता री आंख्या खुली री खुली रैवै ही।—दसदोख

क्रि. प्र —करणी, खुलणी, मटणी, माडणी, लगाणी, लागणी।

२ वस्तुओ के क्रय-विक्रय का केन्द्र वाजार।

उ०—१ पेम न निपजै खेत मैं, हाट न विकतौ जोय। हरीया गाहक पेम कौ, सिर दै लेमी सोय।—अनुभववाणी

उ०—२ जगळ जाट न छेडियै, हाटां वीच किराड। रागड कदै न छेडियै, पटकै टाग पछाड।—अग्यात

रू. भे.—हाडि।

हाडेराव—देखो 'हाडोराव' (रू. भे.)

उ०—सजना बूझी पाणी री पणियार, होद बतावो, ऐ पणिया-रया हाडेराव री।—लो गी.

हाडोघास-स पु.—वर्षाऋतु मे होने वाला एक प्रकार का घास।

हाडोतण-स. स्त्री —१ हाडोती प्रदेश की।

२ हाडोती प्रदेश मे उत्पन्न तमाखू।

उ०—होको राज री रायरंगीलो नै है बूटादार चिलम सवागण यू कहै म्हनै फेर भरी सरदार, अनवीराजा ढळियोडी जाजम पर होको मडियोडी मिजल में होको गहरो गूजै राज हाडोतण प्यारी लागै राज।—लो गी.

३ देखो 'हाडी' (१) (रू भे.)

हाडोती-स स्त्री.—राजस्थान का वह भाग या प्रदेश जहां कोटा तथा बूदी के जिले स्थित है और जहां पर हाडा शाखा के चौहानो का राज्य था।

उ०—वीसल लावण री, तिण रा हाडोती नू छै।—नैणसी

रू भे.—हडोती।

हाडोराव-स पु —१ हाडा शाखा का क्षत्रिय राजा।

२ एक प्रकार का लोक गीत जो दुल्हे के तोरण पर आने पर गाया जाता है।

रू. भे —हाडेराव।

हाडोहाड—देखो 'हाडोहाड' (रू. भे.)

उ०—जणै म्हारै तो पिडतजी-आळी बात हाडोहाड बैठगी।
—वरसगाठ

हाडो-स. पु (स्त्री हाडी) १ हाडा जाति का क्षत्रिय।

उ०—१ हाडो भारथसिंघ छत्रसालोत साथै काम आयो।
—बां. दा ख्यात

उ०—२ दहुव पटा लगो खग दानै, गोडै खळ करणा गरद। लख दळ मिल्या दळा चो लाडो, हाथी हाडो मसत हद।
—महाराज छत्तरसिंह रो गीत

२ कौवा।

उ०—सवी सिंझ्या फौज कूच कीधो। खत्र रा गोट इण विध आभै चढ्या कै ढळतो गुलाबी उजास मगसो पडग्यो। हळवळ होकारा रै सागै फौज आगै वधती गी। कांकड में इण हळवळ रै समचै हाडा कांव-कांव करता कानी कानी उडण लागा।—फुलवाडी

रू भे —हड, हडो।

हाडोहाड-क्रि वि —१ अग प्रत्यग में, सम्पूर्ण अग मे।

२ यथोचित, ठीक।

रू. भे —हाडोहाड।

हात—देखो 'हाथ' (रू भे.)

उ०—१ उडै पग हात किरका हुवै अग रा, वहै रत जेम सावण वहाळा। आप आपो वगै जोय नै आदियां, लहै रिण भळ भळा निराताळा।—र. रू.

उ०—२ भई हू दिवानी तन सुध भूली, कोई न जाणी म्हारी बात। मीरां कहै बीती सोई जाणै, मरण जीवण उन हात।
—मीरां

हातकमाई-स स्त्री.—१ स्वय का उपार्जित धन, खुद की कमाई।

२ जो वस्तु अपने हाथ की या अपनी मेहनत से बनी हो।

उ०—हात-कमाई घाट हरक सू पतळी गट गट पीणी। घोर रेत सम चेत घमडी, चोर लियोडी चोणी।—ऊ का.

हातम—देखो 'हातिम' (रू. भे)

हातमताई-स. पु. [फा] फारस देश का एक व्यक्ति जो दीन-दुखी जनो की सहायता करने के लिये प्रसिद्ध था।

उ०—हातमताई हरग सू, पाछतो पहियाह। अमर नाम उण रो अजे, की जादा कहियांह।—बां. दा.

रू. भे —हातिमताई।

हातळ—देखो 'हाथळ' (रू. भे)

उ०—पाडतो अरी हातळ सदस पद्धटोनो, देग दमगळ सगळ पटै दारू। गोड करता गयद खदमाथै गयो, मयद हद टाकीया जेम मारू।—रामदान लाळस

हातळियो—देखो हाथ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—पुगो पातळियाह, हातळिया जोडत हुवा। कूकै कावलियाह वावनिया तै वोविया।—जुगतीदान देथो

हातळी-स. स्त्री —आरा की मूठ या बेंट जिसे दोनो हाथों से पकड कर आरा को खीचा जाता है।

हातवीसाळी—देखो 'वीसहथी' (रू भे)

उ०—वीणापत सक्त हातवीसाळी, सुकळा अवर आंणद सीदी। मुक्तागळ जयै उजळ माळी, सारद तुज नीमामी नमस्तै।
—रामदान लाळस

हाता-वि स्त्री.—सहार करने वाली, हनन करने वाली।

उ०—देवी नारसिंघी वराही विख्यात्ता, देवी इला माघार आसूर हाता।—देवि

हातापाई-स स्त्री —१ द्वन्द्व युद्ध, झगडा।

२ परस्पर की छोटी लडाई जिसमे हाथो पैरो से प्रहार होता है।

हाताळो—देखो 'हाथाळ' (रू. भे.)

हातिम-वि. [अ.] १ दानी, उदार।

२ निपुण, चतुर।

स पु.—१ न्यायाधीश, जज।

२ काजी।

३ एक बडा कौवा।

रू भे —हातम।

हातिमताई—देखो 'हातमताई' (रू भे)

पड़ी ही ।—रातवासो

उ०—२ फगत पनरै दिना मैं ईज मेथकी भूँटी दीखण लागगी । ग्रास्या घसगी जवाड़ा वैठग्या ग्रर हाडका निकळ गया ।
—रातवासो

उ०—३ जच्चा-राणी रै हळद, तेल ग्रर गुज्जी रै ग्राटा री पीठी करनै ग्राखो डील मसळियो । वाटा उतारी । हाडका लुळाया । साधो-साधी दवायो ।—फुलवाडी

मुहा —१ हाडका कुळणा=शरीर मे ग्रत्यन्त दर्द होना २ हाडका-हाडका खुलणा=शरीर की जकडन दूर होना. ३ हाडका जोजरा करणा=वुरी तरह पीटना ४ हाडका दूखणा=शरीर में दर्द होना ५ हाडका फोडणा=पीटना. ६ हाडका भांगणा=वुरी तरह पीटना ७ हाडका भागणा=जगह-जगह शरीर में दर्द होना ८ हाडका निकळणा=कमजोर होना, कृशकाय होना. ९ हाडका बधणा=शरीर में जकडन पडना. १० हाडका वोलणा=कमजोरी के कारण चलते समय हड्डियो से कट-कट की ग्रावाज होना. ११ हाडका मे रीळा ऊठणी=रह-रह कर शरीर मे कसक होनी, दर्द की चीस चलनी १२ हाडका लुळाणा=उवटन ग्रादि करके शरीर के ग्रगो को इधर-उधर मोडना, व्यायाम कराना ।

हाडकोड़—देखो हाडकाडो' (रू भे)

हाडख—देखो 'हाड' (मह; रू भे.)

हाडजळ-स पु —ग्रग्नि, ग्राग । (ना डिं को.)

हाडजुर-स पु —हड्डियो का ज्वर, ग्रस्थि-ज्वर ।

हाडजोड-स पु —शरीर की हड्डियो का सधिस्थल, हड्डियों का जोड ।

हाडफूटणी, हाडफूटि, हाडफूटी-सं स्त्री [स. हड्डस्फूटि] हड्डियो मे होने वाली पीडा, दर्द । (ग्रमृत)

हाडफोड-वि —१ बलवान ।
२ मांसाहारी ।

हाडवरड-वि.—जवरदस्त । (बांकीदास)

हाडवेर, हाडबैर-स. पु. [स. हड्ड-वैर] वह दुश्मनी या वैर जो किसी निकट सम्बन्धी को मारने से उत्पन्न होता है ।

उ०—१ भूगडा चुगायनैं ऊगैं कह्यो, सुणि हो सावळा, ठाकर मोटा मोटा गढपती छत्रपती था, तिण रै नैं थारै कोई लावो वैर नही, धरती रो विरोध नही, कोई हाडवैर नही। तैं इणा री इसी भात इज्जत गमाई ।—कहवाट सरवहियै री वात

उ०—२ खून किया जाणो खलक, हाडवैर जो होय । वणै सगाई वयण तो, कल्पत रहै न कोय ।—र. रू.

रू भे —हाडवैर ।

हाडवडियो-स. पु —कृषि कार्य मे खेत मे काम कराने के बदले काम करने वाला । वि वि.—परस्पर सहयोग की दृष्टि से एक किसान दूसरे किसान के खेत मे कार्य करता है । इस कार्य की कोई मजदूरी न लेकर वह ग्रपने खेत मे वापस उसमे ग्रपने खेत मे कार्य करवा लेता है। इस प्रकार की चढी हुई पार को उतारने वाले को 'हाडवडियो' कहा जाता है ।

हाडवड़ी-स. स्त्री —'हाडवडियै' का कार्य, कार्य के वदले किया जाने वाला कार्य । (कृषि)

हाडवैर—देखो 'हाडवैर' (रू. भे.)

हाडसकलि-स स्त्री [स. हड्ड+शृखला] ग्रस्थि-पजर, ग्रस्थि-समूह ।

उ०—ताहरा भोपतजी रा नळ छूटि छूटि पडिया । ग्राखि ग्रर इद्री छूटि पडिया । हाडसकळि जुदी हुई ।—द. वि

हाडहोड, हाडहौड-सं स्त्री.—१ प्रतिस्पर्धा ।
२ वहस, तर्क, दलील ।
३ शोरगुल, हल्ला ।
रू. भे.—हाडहोड ।

हाडा-स. पु —१ चौहान क्षत्रियो की एक शाखा ।

उ०—१ कुळ हाडा कूरमा, किया विण ग्राडा कारण । ज्या ग्रागै ग्रगराज, धरै गजराज न धारण ।—रा. रू.

उ०—२ सोनीगरा का हू करू वखाण, हाडा वूदी का धणी ।
—बी दे

२ राठौडो की एक उपशाखा ।

उ०—खोखर २९, मूळा ३०, वाढेल ३१, हाडा ३१, सीमाळिया ३३...... ..।—वा. दा. ख्यात

रू. भे —हडा, हड्डा ।

हाडारौखेत-स. पु. यौ.—वर्षा ऋतु मे होने वाला एक प्रकार का क्षुप ।

हाडारौतिल-स. पु. यौ —एक प्रकार का तिलहन जो बिना बोये होता है ।

हाडाळ—देखो 'हाड' (मह, रू भे.)

हाडाहोड—देखो 'हाडहोड' (रू भे)

हाडि—१ देखो 'हाड' (रू भे)

उ०—तन मन पहली झाडि दै, हरीया नेह न छाडि । सूर सहै रिण खेत मैं, यु मासा चूकी हाडि ।—ग्रनुभववाणी

२ देखो 'हाडी' (रू भे.)

हाडी-स स्त्री [देशज] १ हाडा राजपूतो की कन्या ।

उ०—सीसोदणी वहूजी हाडी जो री मा' कछवाही भगवतसिंघजी री मा ३ ।—वा. दा. ख्यात

२ मादा कौवा ।

३ ऊट का एक रोग जिसमे उसके पिछले पैर की हड्डी वाहर निकल जाती है।

४ देखो 'हाड' (रू भे.)

दिखाना, दान करना । ३५. हाथ ढीलौ तौ जगत गोलौ=देखो 'हाथ पोलौ तो जगत गोलौ' । ३६. हाथ ढीलौ तो जगत लीलौ=उदारता रखने वाले पर सभी प्रसन्न रहते हैं । ३७. हाथ तग होणौ=घर मे तगी होना, स्थाई या अस्थाई तौर पर रुपये-पैसे की तगी आना । ३८ हाथ तपावणौ, हाथ तापणौ=सर्दी उड़ाने के लिए आग के सामने हाथ करना । ३९. हाथ दबावणौ, हाथ दावणौ=दर्द कम करने के लिए हाथो को धीरे धीरे दबाना, किसी के हाथ को दबा कर कोई गुप्त सकेत करना । ४०. हाथ दिराणौ=सहायता या मदद करना पाणिग्रहण करना । ४१. हाथ दिखाणौ=किसी ज्योतिषी को हाथ की रेखाऐं दिखाकर भाग्य जानना, चतुराई, बहादुरी या हस्त कौशल दिखलाना । ४२ हाथ देखणौ=भविष्य बताने के लिए हाथ की रेखाओ का अध्ययन करना, हस्तकौशल देखना । ४३ हाथ देणौ, हाथ धरणौ=सहायता रखना, सहायता देना । ४४ (माथै) हाथ देणौ, (माथै) हाथ धरणौ=वरद हस्त रखना । ४५ हाथ धरणौ=हाथ रखना । ४६. हाथ धूजणौ=हाथ में कम्पन होना, हाथो मे वात रोग होना, भय के कारण हाथ कापना, कामासक्त होना । ४७. हाथ धोय बैंठणौ=खो के बैठ जाना । ४८ हाथ धोय लारै पडणौ=किसी का पीछा करना, किसी को बात-बात मे तग करना । ४९. हाथ नी धरण देणौ=किसी का वश नही चलने देना, होशियार रहना । ५० हाथ नी लगावणौ=स्त्री का रजस्वला होना, अशौच होना, कार्य नही करना, छूना तक नही । ५१ हाथ नै हाथ नी सूझणौ=गहन अन्धकार होना । ५२ हाथ नैं हाथ खाणौ=नितात अविश्वसनीय स्थिति होना, एक दूसरे को नुकसान पहुँचाने मे तैयार रहने की दशा होना । ५३ हाथ पकडणौ=किसी का हाथ पकड़ना, पाणिग्रहण करना, सहारा देना, सभाल करते रहना । ५४. हाथ पकड पुणचौ पकडणौ=अगुली पकड कर पहुँचा पकडना, धीरे धीरे या शनै शनैः काबू मे करना, बधन मे लेना । ५५. हाथ पग चलाणा=देखो 'हाथ पग पटकणा' । ५६ हाथ पग चिपणा=जहां का तहां खडा रह जाना, हिलने-डुलने की स्थिति मे नही रहना, भाग नही सकना । ५७. हाथ पग जोडना=हाथा-जोडी करना, अनुनय-विनय करना । ५८. हाथ पग टूटणा=अस्वस्थता के कारण हाथो-पावो मे दर्द होना । ५९. हाथ पग टेढा होणा=वात रोग से ग्रसित होना । ६० हाथ पग ठडा पडणा=मरणासन्न होना, शरीर की गर्मी समाप्त हो जाना । ६१ हाथ पग पटकणा=छटपटाना, हाथ पाव मारना, छूटने का भरसक प्रयत्न करना । ६२ हाथ पग फूलणा, हाथ पग फूलीजणा=घबरा जाना । ६३. हाथ पग मारणा=पानी से निकलने के लिये हाथ-पाव हिलाना, देखो 'हाथ पग पटकणा' । ६४. हाथ पग हालणा=अपने कार्य मे समर्थ होना, कार्य करने योग्य होना, शरीर काम करने की दशा में होना । ६५ हाथ पग हिलाणा=हाथ-पावो मे हरकत होना, चेतन्य होना, किसी कार्य के लिये प्रयास करना । ६६. हाथ पडणौ=हाथ मे आना, उपलब्ध होना, सहसा कही से मिल जाना, वश में या काबू मे आना । ६७ हाथ पसारणौ=हाथ फैलाना, अपना अभुदर फैलाना, बाहु पसारना, भीख मागना । ६८. हाथ पांणी घालणौ, हाथ पाणी घालणौ, हाथ पांणी देणौ=किसी को करने, किसी बात को कहने या किसी वस्तु को उपयोग मे लेने के निषेध में हाथ में पानी देकर शपथ दिराना, निषेध कराना । ६९ हाथ पांणी लेणौ=हाथ में पानी लेकर शपथ लेना । ७०. हाथ पाधरा राखणा=हाथ सीधे रखना, सीधा एवं सरल व्यवहार करना । ७१. हाथ पीळा करणा=शादी कर देना. ७२ हाथ पोलौ नै जगत गोलौ=उदारता दिखा कर जगत को गुलाम बनाया जा सकता है । ७३. हाथ फेंकणौ=शस्त्र फेंकना, पासा चलाना । ७४. हाथ फेरणौ=किसी के [illegible] पर आशीर्वाद का हाथ रखना, किसी पर धीरे-धीरे हाथ फि[illegible], ठग लेना । ७५ हाथ फैलाणौ=देखो 'हाथ पसारणौ' । ७६ हाथ बधणौ=किसी प्रकार के बधन में आना । ७७ हाथ बळणौ=आग मे हाथ जलना । ७८ हाथ बारै करणौ=मुक्त करना, छोडना । ७९ हाथ बारै होणौ=वश मे नही रहना, अधिकारच्युत होना । ८० हाथ बाळणौ=आग मे हाथ जलाना । ८१. हाथ बिकाणौ=किसी के पूर्ण अधीन होना । ८२. हाथ बैंठाणौ=अभ्यास करना । ८३. हाथ भरीजणौ=धन या आभूषणो मे हाथ परिपूर्ण होना । ८४ हाथ भीजणौ=हाथ गीला होना, कृपण होना । ८५ हाथ मलणौ=देखो 'हाथ मसळणौ' । ८६. हाथ मसळणौ=दोनो हाथो को परस्पर रगडना, विवशता या मजबूरी मे पछताना, पश्चाताप करना । ८७ हाथ माजणौ=हाथ धोना, हाथ साफ करना, अभ्यास करना । ८८. हाथ माडणौ=मेहदी आदि से हाथ पर चित्रकारी करना, याचना करने के लिए किसी के आगे हाथ फैलाना, कुछ लेने के लिए हाथ पसारना । ८९. हाथ माथै हाथ देय बैंठणौ=काम-काज कुछ नहीं करना, निकम्मा हो जाना । ९०. हाथ माथौ कूटणौ=हाय-त्राय मचाना, कुहराम मचाना । ९१ हाथ मारणौ=चोरी करना, माल हडपना । ९२. हाथ मिळाणौ, हाथ मिळावणौ=किसी से हाथ मिलाना, दोस्ती करना, मुलाकात करना, सधि करना । ९३ हाथ मीजणौ=देखो 'हाथ मसळणौ' । ९४. हाथ में आणौ=हाथ आना, हाथ लगना, अधिकार मे आना । ९५ हाथ मे की नी होणौ=हाथ खाली होना, आभूषणो का अभाव होना, धन का अभाव होना, किसी कार्य को करने का कोई अधिकार नही होना । ९६. हाथ में खाज हालणौ==हाथ मे खुजली चलना, रुपये-पैसे की आमदनी का सकेत होना । ९७ हाथ में गगाजळ उठावणौ या लेणौ=अपनी बात को सत्य प्रमाणित करने के पक्ष मे गगाजल का कोई पात्र हाथ मे लेना । ९८ हाथ में ठीकरौ लेणौ=भिक्षा मांगना, मागते हुए फिरना ।

हातो—देखो 'हाथी' (रू. भे)
हाते, हातै-क्रि वि —१ हाथ मे।
सर्व —२ स्वयमेव, अपने-आप, स्वतः।
उ०—हमै कोई नै उलँ पासँ मता आवण देज्यो। घडी दोय रात गया हू हातै आऊं छू।—पलक दरियाव री वात
३ हाथ मे।
हातोताळी-क्रि वि.—शीघ्र, जल्दी।
हातोपाई-स स्त्री —१ हाथो का प्रक्षालन, हाथ धोने की क्रिया।
उ०—मु गुरु कहै वेगा हुवो उठो, गुरु हातोपाई करण गयो।
—पचदडी री वारता
२ देखो हातापाई' (रू भे)
हातोहात, हातोहाथ—देखो 'हाथोहाथ' (रू भे)
हातौ-स पु —१ घेरा हुआ स्थान, अहाता।
२ सीमा, हद।
३ रोक, निषेध।
४ स्थापना नवरात्रि के अवसर पर देवि के लिये बनाये गये रग विरगे कागजो के चिन्ह जो दीवार पर चिपकाये जाते हैं।
५ देखो 'हाथो' (रू भे)
हात्यियौ, हात्यीयौ—देखो 'हाथी' (अल्पा, रू. भे)
उ०—इसिइ समय [पर] दलइ वरत्तमानि राजा सन्नद्धवद्ध लोह चूरण हुई सुहुड सुहडइ, सुगड हात्यीया लूडइ. .... ।
—व स.
हाथ-स. पु. [स हस्त] १ मनुष्य जाति के प्राणियो के शरीर का कधे से लेकर पजे तक का अग, भाग या हिस्सा, हस्त, हाय, कर।
(उ र.)
उ०—१ पण खवास री आख्या में आसू छळक आया। वळै पगा रै हाथ लगाय बोल्यो—अदाता, औ काई हाको व्हियो।
—फुलवाड़ी
उ०—२ तिसोता जिसो नीर गभीर टाको, विलूमै विचै जाळ भुज्जाळ वाको, जिका कोट नू देवता हाथ जोडै, चहूँ कूट रै बीच वैकूट चोडै।—मे म
पर्याय—आच, आचित, कर, करग, जुवजय, तस, दोर, पचसाख, पाचूसाख, पण, पाणि, बाहू, भुज, भुजा, सय, सुकर, हसत, हात।
मुहा०—१ हाथ अजळी करणो—हाथ जोडना, दोनो हाथो की अगुलियो को परस्पर ऐसे गुथाना कि दोनो हाथो की स्थिति एक पात्रनुमा हो जाय। २ हाथ अटकणो—कार्य करते समय एका-एक हाथ रुकना, किसी वस्तु या उपकरण के अभाव में कार्य रुकना, अर्थाभाव के कारणवश कार्य रुकना। ३. हाथ अटकाणो—बाधा या रुकावट उत्पन्न करना। ४. हाथ आणो—मिलना या उपलब्ध होना। ५ हाथ उठावणो—उपस्थिति अथवा समर्थन मे हाथ ऊपर करना, मारपीट करना। ६. हाथ उतरणो—किसी चोट या झटके के कारण हाथ की हड्डी चटखना, सन्धिस्थलो मे हड्डी का अलग हो जाना, अधिकार या कब्जे मे चला जाना। ७ हाथ उत्तर देणो—मांगने वाले को न्यूनाधिक कुछ देकर विदा करना। ८. हाथउधार, हाथ उधारो—ऐसा ऋण जो बिना लिखा-पढी के जबानी तौर पर अल्प समय के लिए लिया जाता है। ९ हाथ ऊचो करणो—देखो 'हाथ उठावणो'। १० हाथ ऊपर हाथ धर नै वैठणो—अकर्मण्य होकर बैठना, निकम्मा हो जाना, कुछ करने धरने की दशा मे न होना। ११ (दो-दो) हाथ करणा—प्रतिस्पर्धा करना, मुकाबला करना। १२ हाथ काटणो—देखो 'हाथ वाढणो'। १३ हाथ काठो व्हैणो—मितव्ययता का स्वभाव होना, कजूस होना। १४ हाथ खडो करणो—उपस्थिति अथवा समर्थन मे हाथ ऊपर करना। १५ हाथ खाणो—किसी के हाथ का बनाया हुआ खाना खाना, किसी को मारने-पीटने के लिए तत्पर रहना, किसी पर क्रोध करना। १६ हाथ खीचणो—खाना खाते हुए रुक जाना, खर्च से हाथ खीच लेना, तटस्थ हो जाना। १७ हाथ खाली होणो—धन या आभूषणो का अभाव होना। १८ हाथ खुजाळणो—आय होने की स्थिति होना, कही से रुपये पैसे प्राप्त होने के सकेत मिलना। १९ हाथ खुलणो—खर्च करने की प्रवृति होना, अधिक खर्च करना, कुछ करने का हौसला होना। २० हाथ खोळो व्हैणो—मन से उदार होना, दानी होने का गुण होना, अधिक खर्चीला होना। २१. हाथ घालणो—किसी कार्य मे हाथ डालना, शरीक होना, कार्य संभालना। २२ हाथ घिसाई करणी—किसी कार्य का अभ्यास करना, व्यर्थ श्रम करना। २३. हाथ चढणो—हाथ में आना, काबू मे आना, वश मे आना। २४. हाथ चालणो—धन की कमी न रहना, यथा अवसर साधन मिल जाना, गुजारा होना, प्रहार होना, दक्ष और चतुर होना। २५. हाथ छोडणा—किसी की मदद करना छोड देना। २६ हाथ झटकणो—झटका देकर हाथो को साफ करना, गीले हाथो को झटका देना जिससे पानी छूट कर गिर जाय, किसी कार्य से इन्कार करना, अपनी असमर्थता प्रकट करना। २७ हाथ जमणो—किसी कार्य मे दक्षता प्राप्त करना, कुशल होना। २८ हाथ भाट-कणो—देखो 'हाथ झटकाणो'। २९ हाथ जोडणो—अभिवादन करने के लिए दोनो हाथो को मिलाकर ऊपर उठाना, कर-बद्ध होना, क्षमा मागना, झझट के कार्यों से दूर रहना, छुटकारा पाना। ३०. हाथ झालणो, हाथ झेलणो—किसी का हाथ पक-डना, वर द्वारा वधु का पाणिग्रहण करना, किसी को सहारा देना, किसी के कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। ३१ हाथ झाडणो—देखो 'हाथ झटकाणो'। ३२ हाथ टाळणो—अलग हट जाना, बचाव करना। ३३ हाथ ठरणो—सर्दी से हाथ ठिठु-रना, हाथ सुन्न होना। ३४ हाथ ढीलो करणो—उदारता

१६०. हाथा वारै काढणो=किसी कार्य की अच्छी तरह से जाच करना, किसी की अच्छी तरह पिटाई करना। १६१ हाथा माथै उठावणो=अपने हाथो पर उठाना, गोद मे लेना, कधे पर उठाना, किसी को प्यार व इज्जत देना। १६२. हाथा माथै राखणो=अत्यधिक लाड प्यार रखना, समाल कर रखना। १६३. हाथा मैं जलमणो=अपने सामने जनमना, किसी का अपने से अत्यधिक छोटा होना। १६४ हाथां मैं मोटो होणो=बचपन मे लेकर बडे होने तक अपने सामने खेलते कूदते बडे होना। १६५. हाथा मैं सरसूं उगावणो=कठिन कार्य करना, असम्भव कार्य करना। १६६. हाथा री सत निकळणो=अत्यन्त शिथिल होना, अत्यन्त अशक्त होना। १६७. (आडै) हाथा लैणो=किसी को बुरी तरह से फटकारना। १६८ हाथा छूट=खुले हाथो, अत्यधिक तेज। १६९ हाथा पाई करणो=मारपीट करना। १७०. हाथै ही करम फोडणो=अपना अनिष्ट स्वय करना। १७१. हाथोहाथ=तुरन्त खडे-खडे, एक हाथ से दूसरे हाथ, कई हाथो के सहयोग से।

२ कुहनी से पजे तक की लम्बाई के बराबर का एक माप।

उ०—छट्ठउ आरउ आवतउ जोइ एक वीस वरिस सहस तै होइ। हाथ भुइ देह, विहु अगुल नी ओटि सोल वरिस माहि आउखा खोटि।—वस्तिग

३ ताश के खेल मे जीता जाने वाला 'सर'।

ज्यूं—म्हारा पांच हाथ तो बणग्या अवै जीतणै नैं दो हाथ भळै बणावणा है।

४ (चौपड) चौसर के खेल मे बडे पासे के साथ आया हुआ छोटा पासा।

५ पारी।

क्रि वि —१ वश में, काबू में, अधिकार में।

उ०—दाणा पाणी रिजक धन, हरीया हरि कै हाथ। मतो करै जाकु दिवै, भरि भरि नंखै बाथ।—अनुभववाणी

२ देखो 'हा'सिल'।

रू भे.—हत, हत्त, हत्थ, हत्थि, हत्थी, हत्थु, हत्थो, हथ, हथा, हथ्थ, हाथि, हा्थी।

अल्पा,—हथडो, हथडो, हथ्थांण, हाथड, हाथडो।

मह;—हथ्थड, हथ्थळ, हथ्थाण, हाथड़, हाथळ।

हायकड़ो—देखो 'हथकडी' (रू. भे)

उ०—देवीदास रै हायकडियां लागै छै। सु रा जैमल सरफदीन नजीक उण रै माथै माहे उण गेडी री दी, सु भेजी फूट नै नाक दिसा नीसरी।—नैणसी

हाथ-कांम-स पु. यौ—यज्ञोपवीत या वैवाहिक कार्य की शुरुआत जिसमें पहले गणपति का पूजन कर आगे के कार्य प्रारम्भ किए जाते हैं। (पुष्करणा ब्राह्मण)

हाथखरच-स. पु. यौ [स. हस्त+फा. खर्च] निज का खर्च, जो भोजन या आवश्यक खर्च के अलावा होना है।

२ उक्त खर्च की निर्धारित धन राशि।

३ राजाओ द्वारा सामन्तो को उनकी जागीर के बदले मे दिया जाने वाला वह समस्त खर्च जिससे वे अपना निर्वाह करते थे।

रू. भे.—हथ-खरच।

हाथगरो-वि.—आश्रित।

हाथड—१ देखो 'हाथ' (मह; रू भे.)

उ०—अर गोइद टेमाणी सेठो नाठि, अर वे हाथड तरवार उतारी अर मदनै ऊपरि घाइ अर वहियो केथ रै मदनो।—द. वि

२ देखो 'हाथळ' (रू. भे.)

हाथडो—१ देखो 'हाथ' (अल्पा, रू भे)

उ०—जलाल हृदा हाथड़ा न जोगा अहीयाह। सार पहूटण वैरिया, का रमावण सहिया।—जलाल बूबना री बात

२ देखो हाथळ' (अल्पा; रू. भे.)

हाथणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

हाथफूल—देखो 'हथफूल' (रू. भे)

उ०—हाथां रा हाथफूल भामी ढीला कीकर पडग्या हो।

—लो. गी

हाथबाथ-वि. स्त्री.—इच्छानुसार तीव्र गति से चलने वाली। (साट, ऊटनी)

उ०—तरै देवराज री धाय डाही थी, तिण देवराज नूं प्रो। लूगा नू सूपियो, कह्यो—थारै साढ १ हाथबाथ छै, तिका नावजादीक छै। थे इतरो आपणा धणी री बीज उबारो, ले नीसरो।

—नैणसी

हाथरू-स. पु —हाथी, गजराज। (बांकीदास)

हाथ री कूरब-स. पु —देशी राजाओ द्वारा दिया जाने वाला सम्मान या ताजीम।

वि. वि.—जिसको यह ताजीम मिलती है उसे बाह पसाव वाले की तरह महाराजा का घुटना या दामन छूने पर महाराजा उसके कधे पर हाथ लगाकर अपने हाथ को अपने वक्षस्थल तक ले जाते थे। यह ताजीम इकहरी व दोहरी दोनो प्रकार की होती थी। और उन्ही के अनुसार महाराजा खडे होकर आदर देते थे।

हाथळ-स. स्त्री [स हस्त+तल] १ सिंह का अगला पजा।

उ०—१ केहरि मरू कळाइया रूहिरज रतडियाह। हेकणि हाथळ गै हणै, दत दुहत्था ज्याह।—हा भा

उ०—२ केहर रै हाथळ करी, कीधी दात वराह। सूर काज कीधो सुजड, विध करतापण वाह।—वा दा

२ मनुष्य के हाथ का पजा, हथेली, करतल।

उ०—१ इसै मोकै अचाणचकै ही भोवी गुलाब री मां अगाडी उबासी तोडती थकी घूजण लाग ज्यावै है। हाथळ पटकै है अर तोतली आवाज मैं तै. तै., पं: पं: करै है।—दसदोख

९९. हाथ मैं डुळावणो=हाथो में डोलाना, झुलाना। १००. हाथ मैं नी होणो=हाथ में न होना, वश मे या अधिकार मे न होना। १०१. हाथ मैं माळा अर पेट मैं कुदाळा=बकध्यानी होना, बुगलाभक्ति करना। १०२ हाथ मैं राखणो=हाथ मे रखना, काबू मे रखना। १०३. हाथ मैं हाथ देणो=हाथ से हाथ मिलाना, आत्म समर्पण करना, शादी करना या करवाना। १०४ हाथ मैं हुनर होणो=उद्यम जानना, हाथ मे कला या व्यवसाय होना, हाथ का कारीगर होना। १०५ हाथ मैं होणो=हाथ में होना, वश मे होना, अधिकार मे होना। १०६ हाथ मेळावणो=हाथ से हाथ मिलवाना, शादी करवाना। १०७. हाथ रगणो=हाथ मैं किसी प्रकार का रग लगाना, हाथ से किसी का खून करना। १०८. हाथ रखावणो=सहारा देना, मदद करना। १०९ हाथ रगडणो=कठिन परिश्रम करना। ११०. हाथ राखणो=सहारा देना, मदद रखना। १११ हाथ री कमाई=खुद के परिश्रम से अर्जित धन, स्वय की आय। ११२. हाथ री करामात=हस्तकौशल, हस्तलाघव, हाथ की सफाई। ११३ हाथ री कलम=हाथ की लिखावट, हाथ से की गई कोई चित्रकारी, हस्ताक्षर। ११४. हाथ री खाज=अपना स्वय का कार्य एव उत्सुकता। ११५ हाथ री खाज हाथ सू भागणी=अपना कार्य अपने से ही होना। ११६ हाथ री बात=वश की बात। ११७ हाथ री सजावट=हाथ से की गई सजावट, हाथ से की गई बारीकी या तकनीकी विशेष। ११८ हाथ री सफाई=हस्तलाघव, जादुई चमत्कार, चोरी। ११९ हाथ रुकणो=चलता कार्य रुकना, बाधा आना, अडचन पडना, रुपये-पैसे की कमी होना। १२०. हाथ रै नीचै आणो=अधिकार मे आना, अधीन होना, काबू मे रहना। १२१ हाथ रोकणो=मदद बन्द करना, कार्य बन्द करना। १२२ हाथ रोडणो=तगी मे होना, तग करना। १२३ हाथ रो उत्तर=मागने वाले को कुछ न कुछ देना। १२४. हाथ रो काम=हस्तलाघव, हाथ की कारीगरी, वश का काम, अपने अधिकार का काम, हाथ से किया हुआ कार्य। १२५ हाथ रो कूडो=झूठा, चोर, उचक्का, अविश्वसनीय। १२६. हाथ रो छालो=बहुत महत्वपूर्ण, जिसका अधिक ध्यान रखा जाता हो। १२७ हाथ रो दियो=अपने से दिया हुआ, जो चुराया हुआ न होकर किसी का दिया हुआ हो, पुण्य, धर्म। १२८ हाथ रो धधो=हाथ की कारीगरी, अपने काबू का कार्य। १२९ हाथ रो बळियो नै पंला री सुधारियो=अपना स्वय का बिगाडा हुआ दूसरो के सुधारे हुए ठीक होना। १३०. हाथ रो मेल=अत्यन्त तुच्छ, साधारण, मामूली। १३१ हाथ रो राजा=अत्यन्त उदारवृत्ति वाला। १३२ हाथ रो साचो=इमानदार, विश्वसनीय, दक्ष। १३३ हाथ रो हुनर=हाथ की कारीगरी, हाथ का काम। १३४ हाथ लगावणो=स्पर्श करना, छूना, किसी कार्य मे सहायता करना। १३५ हाथ लागणो=किसी का हाथ लगना, सहयोग मिलना, हाथ में कार्य होना, नफा होना, उपलब्धि होना, कुछ मिलना, हाथ मे आना, वश मे आना, पकड मे आना। १३६. (ई) हाथ लियो'र बी हाथ डकारग्यो=इधर से लिया और उधर हजम कर लिया, माल हडपने में दक्ष होना। १३७ हाथ लेणो=किसी की लडकी को अपने लडके के लिए स्वीकार करना, सहायता के लिए किसी को रजामन्द करना। १३८. हाथ वाढ नै देणो=अपने हाथ काट के देना, ऐसा लिख कर दे देना जो सामने वाले का पक्ष मजबूत करे, लिखावट द्वारा स्वत: बधन मे आना। १३९ हाथ वाढ नै लेणो=किसी से ऐसा लिख कर लेना कि लिखावट से अपना पक्ष मजबूत हो, लिखावट मे किसी को बंधन मे कर लेना। १४०. हाथ सकडीजणो, हाथ सकराइजणो=देखो 'हाथ तग होणो'। १४१. हाथ समेटणो=अपना हाथ खीच लेना, कार्यक्षेत्र से हट जाना, खर्चा बन्द कर देना, तटस्थ हो जाना। १४२. हाथ साधणो=टूटे हुए या उतरे हुए हाथ को ठीक बैठा कर इलाज करना। १४३ हाथ साफ करणो=हाथो की सफाई करना, डट कर खाना, माल उडा जाना, चोरी करना। १४४ हाथ सिरकणो=आसानी से रुपयो आदि का काम निकलना। १४५ हाथ सुमरणी=हाथ मे माला। १४६ हाथ सू काम निकाळणो=खुद काम करना, किसी उपकरण के बिना भी कार्य करना। १४७. हाथ सू जाणो=अपने पास किसी वस्तु का खो जाना, वश के बाहर होना, अधिकार मे न रहना। १४८ हाथ सू राख उडावणो, हाथ सू राख नाखणो=अपने हाथ से खुद अपनी इज्जत उडाना, अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान नही रखना, अपना कार्य खुद ही बिगाडना। १४९ हाथ सू हाथ नी बढै=अपनी हानि खुद के द्वारा नही होती। १५० हाथ सोरो चालणो, हाथ सोरो सरकणो, हाथ सोरो हालणो=ऐसी आय होना कि जिसमे अपना खर्चा आसानी से चल सके। १५१. हाथ हळको करणो=पास मे जो है वह खर्च देना, उत्तरदायित्व से मुक्त होना, किसी रोग पीडित व्यक्ति या प्राणी पर मंत्र जपते हुए हाथ घुमाना। १५२. हाथ हिया माथै आणो=हाथ दिल पर आना, किसी कार्य को पूरा करने की चिन्ता होना, जोखम सिर पर आना। १५३ हाथ हिया माथै धरणो, मेलणो=दिल पर हाथ रखना, कुछ त्याग करना, दिल की धडकन सभालना। १५४ हाथ हिया माथै होणो=देखो 'हाथ हिया माथै आणो'। १५५ हाथ ई बळिया नै पखई दुळिया=परिश्रम का व्यर्थ जाना, कुछ भी हाथ न आना। १५६ माथै हाथ होणो=किसी की छत्रछाया होना, किसी का वरद हस्त मिलना, बडे आदमी का सहारा मिलना। १५७ हाथ होणो=अधिकार में होना, वश की बात होना, सहायक होना, समर्थन करना। १५८. हाथा पगा दिया बळणा=अत्यन्त उद्दण्ड होना, अत्यन्त चचल होना। १५९ हाथा पगा बायरो होणो=हाथ पाव रहित होना, अविश्वास का पात्र होना, विश्वास न करने योग्य।

५ योद्धा, वीर।

उ०—पड़ै प्राण सधाण वांणै वटक्कै, हुकै मेद हाथाळ रोसै हटक्कै। झला झाल गोलेहु नाळै भटक्कै, तुटै तुड मुंडां प्रचंडा तटक्कै।—ध. व. ग्र.

स. पु.—सिंह, शेर।

रू. भे.—हाताळो, हाथाळो।

हाथालगि—वि.—हस्तगत किया हुआ, प्राप्त।

उ०—देवाळै पैंस अधिका दरसे, घणैं घणैं भाग हित प्रीति घणी। हाथैं पूजि कियो हाथालगि, मन वंछित फळ रुखमणी।—वेलि

हाथाळी—देखो 'हवेली' (रू. भे.)

उ०—राति ज रुनी निसह भरि, सुणि महाजनि लोइ। हाथाळी छाळा पड्या, चीर निचोइ निचोइ।—ढो. मा.

हाथाळो—देखो 'हाथाळ' (रू. भे.)

उ०—१ हाथाळो बहुत 'हरी', गळ गढ हदी लज्ज। 'दूदो' 'भोज' महाबळी, 'रामो' देद सकज्ज।—रा. रू.

उ०—२ जद सहर रूस छिब गामडा मैं वणावण सारू ग्रोट (जीवरखो) वणायो ग्राण नै हाथाळै सिंघ' हाथीयां नै हुण 'मार' नै ग्ररथात हाथीया री फौज मारनै हाथीया रा पिंजर तर री कोट गाम दोळो वणाय दीधो।—वी. स. टी

उ०—३ 'सवळ' तणो वळ दाख सवायो, ग्रण भग रूप घणो एळ ग्रायो। 'हरजी' 'वळू' तणो हाथाळो, चाहडदे ग्रायो वळ चाळो।

—रा. रू.

हाथि—१ देखो 'हाथ' (रू. भे.)

उ०—१ खाटी दाटी रहि गई, कुछ न चली साथि। जनहरीया नर दीन विन, हाल्यो रीतै हाथि।—ग्रनुभववाणी

उ०—२ लोक तणै हाथि वीणा, वस्त्राडंबर भीणा। धवळ स्रगार सार, मुक्ताफळ तणा हार। सरवाग सुंदर, वन माहि रमइ भूप पुरदर।—रा. मा. स

२ देखो 'हाथी' (रू. भे.)

उ०—जेतइ वीर मस्तक पडइ तेतइ कायर पणि विंडि चडइ, हाथि उ हाथि इ, घोडो घोडइ, रथ रथइ, पायक पायकइ... .....।

—व. स.

हाथिणी—देखो 'हथणी' (रू. भे.)

उ०—१ धनुखु चडावीउ भूयणि भमउ, इच्छा छइ मन माहि। वइठउ दीठउ हाथिणी य सुखइ सुमिणा माहि।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ हेमागिरि थी हाथिणी, ग्रावइ पवन पराणि। ऊमाडी ऊपरि चढी, मारइ मन्मथ-बाण।—मा. कां. प्र

हाथियौ—देखो 'हाथी' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—१ इद चद पमुख देध वीहना, हाथिया जिम निनादि सीह ना। पुछ दड गउरी सवि वाली, भूरइ नगर ऊपरि चाली।

—सालिसूरि

उ०—२ महुरांणी सुमन दांतें गही, मांटकू भकन मांट भया। 'जोधा' तणो गामड़ा जातां, माथो भय हाथिया गया।

—गोहोजी गिड़ियो

हाथी—स. पु. [सं. हस्तिन्] १ एक विशाल एवं स्थूल शरीर वाला, प्रसिद्ध स्तन पाई चौपाया जानवर, गज, हस्ती।

(अ. मा.; ह. नां. मा.)

उ०—१ हाथी हण मारण हुओ, हरि हाथी री हेत। ... मेहाई मारा थाई सांभी ... उवेत।— मे. म.

उ०—२ दिन दूजै मिळ मारवा, हाथी सिंह सुरंग। दरगाह दीवांण नूं, फिर जोधा 'पदम'।—रा. रू.

वि० वि०—इसकी नाक (सूंड) बहुत लंबी जमीन तक लटकती हुई होती है, चारो पैर बड़े स्तंभ के समान होते हैं, कान बड़े तथा आंखें अपेक्षाकृत छोटी होती हैं। इसके दो दांत बहुत बड़े होते हैं जो मुंह के दोनों ओर डंडे की तरह निकले रहते हैं। इन दांतों का चूरा बनता है जो बहुत कीमती होता है, इसके अतिरिक्त इससे खिलौने सजावट का सामान आदि कीमती वस्तुएं भी बनती हैं।

२ शतरंज का एक मोहरा।

३ हस्तिजन, भगी।

४ एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो भूमि मे गड्ढा बना कर रहता है तथा चीटियो को खाता है।

उ०—गढ घुत घरिया गजरा, सहै भवर सादोह। हाथी जिम कोट्यां हुणैं, मरण निज विच साढोह।—रैवतसिंह भाटी

रू. भे.—हस्ति, हत्थी, हथी, हाथि।

ग्रल्पा,—हथीडो, हथीडो, हात्थीयो, हाथियो, हाथीडो।

हाथीखांनो—स. पु. [स. हस्तिन्+फा. खाना] वह कक्ष या स्थान जहा हाथियो को रखा जाता है, हस्तीशाला, फीलखाना।

हाथीडो—देखो 'हाथी' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—बावं डायो हाथीडा री मूढ।—पाबूजी रा प्रवाडा

हाथीदांत—स. पु.—हाथी के वे बडे बडे दांत जो मुंह से बाहर निकले रहते हैं। ये बहुत मजबूत एव कीमती होते हैं। इनसे चूडे, सजावट का कीमती सामान, खिलोने ग्रादि बनते हैं।

उ०—चुडलियो चुडलियो, गोरी काई चिलगै, मेह विन धरती तरसै मेहडो हुवण दे। चुडलो चिरावूं हाथीदांत रो मेहडो हुवण दे।—लो. गी

हाथीनाळ—सं. स्त्री.—हाथी की पीठ पर रख कर चलाई जाने वाली एक पुरानी तोप विशेष।

हाथीपगो—स. पु.—फील पांव नामक एक रोग विशेष, जिसमे पैर फूल कर हाथी के पैर जैसा हो जाता है।

हाथीबंध—स. पु.—वह व्यक्ति जिसकी स्थिति हाथी रखने लायक हो, जिसके घर हाथी बधा रहता हो।

३ बाहु, भुजा।

उ०—आपरी पौरस सीहू बाजण रो नही—हायळ (भुजा रा) जोर सू हाथिया नै भाजै अरथात जिका री तरवार मू हाथिया रा असुड (सीस) वैरीजै वै भडसिंघ वाजै।—वी स टी.

४ शस्त्र प्रहार।

उ०—१ दाखै ऐ गज घडा दमगळ। वाहू करै हायळ वीजूजळ।

—सू. प्र.

उ०—२ 'राम' मुतन बोलै 'सिंघ राजड'। घण खग हायळ वहूँ त्रविध घड़।—सू प्र

५ हाथ का कवच।

उ०—१ बीस लाख असवार पाखरीआ लोहमी वाड किग्रा वगतर, हायळ, टोप, झिलमैं, चिलकता ऊपरै पूरी सिलहा किग्रा, गरकाव हूआ थका छत्रीस आउध डाविया रहे छै।—रा. सा. स

उ०—२ कसै हायळां टोप मोजा कगल्ल, जमद्दाढ वामैं जिकै खाग ढल्ल।—वचनिका

रू भे.—हत्थळ, हयळ, हथ्थड, हथ्थळ, हातळ, हाथड।

अल्पा,—हाथडो।

५ देखो 'हाथ' (मह, रू. भे)

हायळचेरी—स स्त्री —हर समय उपस्थित रहने वाली दासी।

उ०—वारै गायण वळै, वळै नव पडदा वेगण। हायळचेरी उभै दो जणी हजूरण।—रा. रू

हायळणौ, हायळवौ—क्रि. स.—हाथ के पजे से प्रहार करना।

हायळियोडौ—भू का. कृ —हाथ के पजे मे प्रहार किया हुआ।
(स्त्री हायळियोडी)

हायलियौ—स पु —हल के ऊपर का वह भाग जो पकडने के काम आता है।

हायलूहाण—स पु —हाथ पोंछने का कपडा।

उ०—हाथे मिलिउ गलणे गलिउ, अत्यत धवल प्रीणीइ मुखकमल कपूर इस्या थोल, ऊपरि उन्हा टाढा पाणी सीकरी वासितावासित पाडलवासित एलचीवासित इस्या पाणी, खीरोदक चीर हायलू-हाण।—व. स.

हायलौ—स पु —बैलगाडी का एक उपकरण विशेष।

हायसाडइ—स पु —हाथ पोछने का रूमाल।

उ०—तदनतरु करपूर पाडल चपक सुगध सीकिरी वास्या पाणी तेहे मुख पवित्र करी, हायसाडइ हाथ लूही, बीडा आप्या...।

—व. स.

हायां—क्रि. वि. [स हस्त] हाथो, मे, हाथ मे।

उ०—१ नवै चढाव री तात, रेसमैं रो मेदान गूँथिया थका, राजा ना देसौता रै हायां दीजै छै।—रा सा स.

उ०—२ इसै मस्तानै रूप सू दुनिया हरै है। हायां भळै आकड हाळी गेड, घरा लौ री तिरसूल अर साकळ मढ मैं मेल राखी है।

—दसदोख

२ अपने हाथ से, खुद के द्वारा।

उ०—१ पछै वौ दीवाणजी रो घोडो लेजाय पायगा मैं बाध्यौ। हायां दाणौ दियौ। - फुलवाडी

उ०—२ हाया करनै आफत निवती। अबै काई उपाव व्है सकै।

—फुलवाडी

हायाहेल—वि —वडा दानी, वडा त्यागी, उदारचित्त।

उ०—मिजलस हदो मोडै, हगामा माण रो, हायाहेल 'हमीर', नाथ हिंदवाण रो।—महादान महडू

हायाछूट, हायाछूटौ—क्रि. वि —तीव्र गति से, तेजी से।

हायाजोड़ी, हायाजोडी—स स्त्री —खुशामद, नम्रता, आजीजी।

उ०—नकीब फेरनै सारौ लमकर भेळो कराय नै आप चढनै वाड़ी वेरी। हायाजोडी करी, नै कह्यौ—'मको हुसियार हूजो। जिण माहै हुय जेमो जासी तिण नू हू मारीस।—नैणसी

उ०—२ मावीडा हायाजोडी करण लाग्या—आप वडा हो, आप मालक हो, आप धणी हो, आप रोटिया रा देवाळ हो।

—रातवासो

२ औषधि के काम आने वाला एक पौधा विशेष।

उ०—हनुमनी नइ हडवडी, हीराउलि हर-मज्जि। हायाजोडी हीकणी, हेला आवइ कज्जि।—मा. का. प्र.

हायाताळी—स स्त्री. [स हस्त+ताल] १ दोनो हाथो से बजाई जाने वाली ताली।

२ दोनो हाथो मे ताली बजाने मे लगने वाला समय।

हायापाई—स. स्त्री —१ हाथ-पाव चलाकर की जाने वाली लडाई।

उ०—च्यारू जणा परणीजण सारु माहोमाह वाद करण लागा। कोई नी मान्यो नौ राड वधगी। होठा-जीभी सू हायापाई माथै उतरग्या।—फुलवाडी

२ मस्ती, मौज।

उ०—हमै-थोलै अर हायापाई करै है। अडचा-भडचा अर ओलै—छानै, सूग अर स्याणप ही नी राखै।—दसदोख

३ हाथ-पाव धोने की क्रिया।

रू भे —हायोपाइ, हायोपाई।

हायाळ—वि —१ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—माझी 'मेघ' हरो मछराळ, हूलल्लमल्ल हायाळ। जैत्र वादी जमजाळ, केविया रो काळ, सूरधीर सप्पखाळ।—ल. पिं

२ आजान बाहू।

उ०—हायाळ हेम हमीर हूतल, आप कुळ अजुआळ। हीमति वहा-दर हीमती, कळि भडा घोडा कीमती।—ल पिं.

३ शस्त्र चलाने मे प्रवीण, निपुण, चतुर।

४ हाथल वाला।

उ०—१ हाथोहाथ घर री सफाई कर नै नीवड़ा री छिया मैं माथा माथै बैठ्यो तो मन जाणै विवाई व्हैग्यो।—अमरचूनड़ी

उ०—२ थू तो राम जाणै कद चुट्टो व्हासनै काठै नागणै ठिरसैला, म्है तो थनै हाथोहाथ परचो बताय दू।—फुलवाड़ी

हाफज, हाफिज-स. पु [अ. हाफिज] वह मुसलमान जिसको कुरान कंठस्थ हो।

उ०—दादू यहु तन पिंजरा, माही मनसूवा। एक नाम अल्लाह का, पढ हाफिज हुवा।—दादूवाणी

वि. [अ मुहाफिज] रक्षक।

उ०—मगतू का महोला कंगालू का कोट, हीजड़ो का हाफज आफ का जोट।—दुरगादत्त बारहठ

हाफुस-स. पु.—आमों की एक जाति।

हाफे, हाफै-सर्व.—खुद, स्वय।

क्रि वि —स्वत, अपने आप।

हाव-गाव-वि.—१ जिसके मस्तिष्क का सतुलन बिगड़ गया हो, अस्थिर चित्त, उद्विग्न, व्यग्र, आश्चर्ययुक्त।

उ०—सेठाणी हाव-गाव व्हियोड़ी वरसाळी मैं आई। रावरज घर हरख रा मूर मैं बकाई सावती बोली।—फुलवाड़ी

२ भयभीत, घबराया हुआ, स्तभित।

उ०—१ ठगाई करण वाळा ठग खुद ठगीजै तो वै पूरा हावगाव व्है जावै। वो गिरणावतो बोल्यो—म्हनै छोड नै कठै ई मत जाजो।—फुलवाड़ी

उ०—२ हावगाव व्हियोड़ो चित्रगुप्त डरतो डरतो कैवण लागो—अबै अकेला सू औ काम वण नी आवै। कै तो आप हरदिन वधती इण आबादी माथै आकस राखो कै मुनीम वधावो।

—फुलवाड़ी

हावर-वि.—सुन्दर, मनोहर।

उ०—बिडरी हिरणीसी फिरणी बिजकाती, मुलटी मुळकाती जोरो जतळाती। ओलै भक आटा कोलै जिम फुयिगी, हावर भांमणिया सामणिया हुयगी।—ऊ का

हावी-स. स्त्री.—जबड़ा।

हावु-स पु —वर्षा ऋतु में होने वाला एक प्रकार का कीट (पतग)।

हावूब-स. पु —रग विशेष का घोड़ा।

उ०—रोझो नीलो गगाजळ हसला नैण काजळा अस सेराह अबलख खेंग रोहळा हाबूब।—गु. रू. व.

हावो-स. पु —१ शोरगुल, हल्ला-गुल्ला।

२ रोने की आवाज, क्रदन।

उ०—पछै घर माहे पैस कूकवो कीयो, जु म्हारो माटी कीयो, जु म्हारो माटी चोर मारियो, जाय छै, कूकवो हुवो, सको लोक हावो सुण नै आयो।—नैणसी

३ करुण-पुकार, चिल्लाहट।

उ०—ममता पगारा पैलू [illegible], भूखा ममता रा [illegible] भागोड़ा। [illegible] बोरिया [illegible] बोलै, [illegible] हाय कर बोली।—ऊ का

हाय-स. स्त्री. [स हा] १ शारीरिक दुख, शोक या शारीरिक पीड़ा के कारण तड़फते या तड़पते हुए मुख से [illegible], चिल्लाने की क्रिया, दशा या भाव, त्राहि-त्राहि।

उ०—[illegible] बाहर [illegible], [illegible] दिन [illegible]। [illegible] दिन माही मुख तै, आप [illegible] हाय हाय।—अनुभववाणी

२ शाप, बद्दुआ, दुराशीष।

उ०—[illegible] हाथ लागै। दुबळा नै सतावता तो पगन हाय पोनै पडै।—फुलवाड़ी

३ पश्चाताप के कारण मुख से निकलने वाली ध्वनि।

उ०—[illegible] हाय [illegible] हाय। [illegible] देखतो, [illegible] हाथ।—दादूदास

हायदो-स स्त्री. - घृणित वस्तु, घृणित बात, मल, विष्ठा।

हायणी-स स्त्री —जन्म से आठ वर्ष तक की आयु या अवस्था। (जैन)

हायतराय हायत्राय-स. स्त्री —१ चिल्लाहट, करुण-क्रदन, विलाप, व्याकुलता, [illegible]।

उ०—१ [illegible] रै [illegible] करतां हायतराय करै।—मि. द्र

उ०—२ झुर झुर हायत्राय कर [illegible] नैन पर, नर को न काम सके काम धरमा को व्है।—[illegible]दान बारहठ

उ०—३ पिणयारयाँ भूखी, हायत्राय मचाई। बेवड़ा फूटग्या। कोई हैटै गुडी, कोई पिसगी।—फुलवाड़ी

२ किसी कार्य के लिये किया जाने वाला अत्यधिक परिश्रम, भागदौड, चिन्ता।

क्रि. प्र.—करणी, मचणी, मचाणी, होणी।

हायधाय-स. स्त्री —दुख भरी आवाज।

उ०—सुकाय मीत भीत में निसोय धूजती सही। निकाय हायधाय मैं उपाय सूझती नही।—ऊ. का

हायन-स. पु —१ वर्ष, साल, सवत्सर।

२ शोला, अगारा।

३ एक प्रकार का चावल विशेष।

वि —१ गुजरा हुआ, बीता हुआ, विगत।

२ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, परित्यक्त।

हायबोय-स. स्त्री —१ कूकने की आवाज, शोरगुल, हल्ला।

२ विलाप, क्रन्दन।

उ०—हे सखी जुद्ध री वेळा आन कहता दूसरा भट दीठा सो वे निरदय (बिना दया रा) है, क्यू कि कूकावै यमै न दुसमणा री फौज नै कूकावै अरथात हायबोय करावै।—वी. स टी.

३ प्रलाप, बकवास।

हाथीवच-स. पु.—एक प्रकार का पौधा जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

हाथीमती-स स्त्री.—ईडर की एक नदी विशेष जो पूर्वी सीमा मे आकर प्रदेश के बीच मे से गुजरती हुई अहमदनगर के पास साबरमती मे मिलती है। (वी वि)

हाथीमोगरौ-स. पु —मोगरे की जाति का पौधा विशेष।

हाथीयउ—देखो 'हाथी' (रू. भे)

हाथीयौ—देखो 'हाथी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—साधिइ साधि जूजूई कीधी, थर पाडेवा लागा। ऊपरि थिका हाथीया घोडा, घण तर्ण घाए भागा।—का. दे प्र.

हाथीवान-स पु —हाथी को चलाने व उसकी देख रेख करने वाला व्यक्ति, महावत, फीलवान।

हाथी-सिरोपाव-स पु —राजाओ के समय मे दिया जाने वाला एक पुरस्कार, सिरोपाव।

वि वि —जिसको यह सिरोपाव मिलता था उसको राज्य से कपडो वगैरा के सब मिला कर ७८० रु० दिए जाते थे। (जोधपुर)

हाथुड़ी, हाथुडी-स स्त्री.—एक प्रकार की वनस्पति।

उ०—हरड़ हरडि हीमजी, हरडा हलभद्र वेग। हरवी हाथुडी हरी, हुँफट हुसि हमेर।—मा का प्र.

हाथुलि, हाथुली-स स्त्री [स हस्त+लि] हाथ का एक आभूषण विशेष।

उ०—गलइ नगोदर नइ झूमणू, घणु सणगार हव केहु भणू। हाथि हाथुलि करि मूद्रडी, माणिक मोती हारे जडी।

—प्राचीन फागु-सग्रह

हाथूडिया-सं पु.—राठौड राजपूतो की एक उपशाखा। (वा दा ख्यात)

हाथूडियौ-स पु —राठौड राजपूतो की 'हाथूडिया' शाखा का व्यक्ति।

हाथेवालइ—देखो 'हथलेवौ'।

उ०—हाथेवालइ हाथ नवि धरू, नही वइसू जीमण माहिरू। चाहू आणनउं कुल निकळक, जिस्यउ पूनिम तणउ मयक।

—का दे. प्र.

हाथे हाथैं-क्रि. वि —१ हाथ मे।

उ०—१ हाथे न लेवइ वस्त्र, आधा ओढै वस्त्र। लोक सीसिआट करइ, चौपू उछरइ, ताटइ न चरइ।—रा सा. स.

उ०—२ लगीजै असी भाति आकास लागो, भवानी खडा पाण लीधा नभागो। हमेसा रहै सत्रु रो सीस हाथैं, मुखै रत्र रोतासळो छत्र माथैं।—मे म.

२ काबू मे, पकड मे, वश मे।

उ०—जदी कोट वाळ घणी ही जावतो राखै। पण चोर हाथैं आवै नही।—पचमार री वात

३ हाथ से।

उ०—१ टोनउ चाल्यउ हे सखी, वाज्या विरह निसाण। हाथे चूडी खिस पडी, ढीला हुया सधाण।—ढो. मा

उ०—२ देवाळै पैसि अविका दर मैं, घणैं भाव हित प्रीति घणी। हाथैं पूजि कियौ हाथालगि, मन वछित फळ रुखमणी।—वेलि

३ खुद व खुद, स्वतः, अपने आप।

उ०—आखियौ जिती घर ओयण थायौ इळा, सुभोजन चाखियौ थाळ साथैं। ताम्रपत्र ढाकियौ चावडा थान तळ, हतेरण राखियौ आप हाथैं।—पेतसी बारहठ

हाथोगळ-सं. स्त्री —गले पर हाथ रखकर शपथ लेने की क्रिया या भाव।

उ०—मुरौं वैण खग तोल सेस उठ्यौ रोसा जळ, करमाणद परधान आय दाढी हाथोगळ।—पा प्र.

हाथोडी—देखो 'हथोडी' (अल्पा; रू. भे)

हाथोड़ौ—देखो 'हथोडौ' (रू भे)

हाथोताळी—देखो 'हाथाताळी' (रू भे)

हाथोपाइ हाथोपाई—देखो 'हाथापाई' (रू भे)

हाथोहाथ-क्रि वि —१ एक हाथ से दूसरे हाथ, प्रतिहस्त।

२ लगे हाथ, तुरन्त, शीघ्र।

उ०—१ यैं तौ सगळा जाणो ईंज हीं कै म्हारै इत्तो नैठाव कठै हाथोहाथ फारगती करी।—फुलवाडी

उ०—२ नाहरसिंघ नैं ई चकवा री बात रौ हाथोहाथ परचौ मिळग्यौ। जद खैखार रैं मिस लाल वाळी बात साची निकळी तौ राजा वाळी बात ई साची निकळैला इणमैं की मीनमेख नी।

—फुलवाडी

३ प्रत्यक्ष।

४ खुद, स्वय।

५ किसी कार्य को कई लोगो द्वारा मिल कर शीघ्र ही पूरा करने की क्रिया या भाव।

रू भे.—हत्थोहत्थ, हथोहत्थ, हातोहात, हातोहाथ, हाथौहाथ।

हाथौ-स पु [स. हस्तक] १ किसी औजार या उपकरण का दस्ता, मूठ, बेट।

२ हाथ मे पकडने का वह भाग जो कघी के ऊपर नीचे दोनो तरफ होता है तथा जिससे कपडा बुनते समय कपडे को ठोका जाता है। (जुलाहा)

३ शहर के द्वार पर किसी वीर योद्धा या सती स्त्री के हाथ का चिन्ह।

उ०—भोजो जोधावत। समत १६०० सईकै सूर पातसाह आयौ तद जोधपुर गढ री प्रोळ हाथौ दे तुरका सू विढ मुओ।—नैणसी

४ देखो 'हातौ' (रू. भे.)

हाथौडौ—देखो 'हथोडौ' (रू भे)

हाथौहाथ—देखो 'हाथोहाथ' (रू भे)

५ कोई वस्तु बिना उचित उपयोग के व्यर्थ गुमा देना, व्यर्थ खोना, सदुपयोग न करना।

उ०—१ राम नाम कु सिवर कै, हरिजन उतरै पार। दूजी दुनीया दीन बिन, गए जमारौ हार।—अनुभववाणी

उ०—२ माखी पडि पडइ खापण आपण रूप विचारि। नारी नयन सजीवन यौवन अफल म हारि।—जयसेखर सूरि

५ वचन देना, वचन हारना।

उ०—अनी विसेख इकु बीजउ जोर रमणी रिद्धि रजिउ सहु कोइ। मोह वध पडिया छड सात धरम तणी चित्ति हारती वात।

—वस्तिग

हारणहार, हारौ (हारी), हारणियौ—वि०।

हारिश्रोडौ, हारियोडौ, हारचोडौ—भू० का० कृ०।

हारीजणौ, हारीजबौ—कर्म वा०।

हारद-स पु [स. हार्द] १ प्रेम, स्नेह, प्यार। (अ मा; ह ना. मा.)

२ कृपालुता, दयालुता।

३ कोमलता, नाजुकता।

४ अभिप्राय, इरादा, मन की वात।

उ०—सूर नू बबावदं भेजि आपरी हारद पिता नु जणायौ।

—व. भा.

५ दृढ सकल्प।

६ प्रेमी, मित्र। (अ मा)

हारदा-स. पु [स हृदय] हृदय, दिल, मन।

हारदिक-वि. [स. हार्दिक] १ हृदय का, हृदय से सम्बन्धित, हृदय से निकला हुआ।

२ सच्चा, वास्तविक।

हारवद, हारवध-स. पु [स. हार+वध] एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमे पद्या के अक्षर हार के आकार मे रक्खे जाते हैं।

हारहमेल—देखो 'हमेल' (३)

उ०—'रतना' मैं धिठाई प्रगट हुई। लाज थी सू भागी, पायल विछिया मौन कीवी कटिमेखळा वागी। छिब्र छिलिया हारहमेल हिलिया।—र. हमीर

हारमोनियम-स पु [अ] सन्दूक के आकार का एक वाद्य, जिसमे एक तरफ हवा भरने का पर्दा लगा रहता है तथा ऊपर स्वर लगते रहते है। पर्दे से हवा भर कर, स्वरो को अगुलियो से दबाते हुए विभिन्न राग रागिनियो की धुने बजाई जाती है, पेटी बाजा।

हारमोर-वि —१ गायब, अलोप, ओझल।

उ०—१ काकळ समै कुवेलिया, म दं सग महमाय। निजरा आगै निमख मैं, हारमोर व्है जाय।—बा. दा

उ०—२ घर, गळिया, खेत, खळा, आकरिया, तळाव, कुआ-बावडी मगळाई देख-देख नै तळा री माटी कर नाखी, पण टावर तौ जाणै हारमोर हुज व्हैग्यौ, जाणै मोर ऊबी गिटली कै जाणै जीवता नै धरती डकारगी।—अमरचूनडी

२ नष्ट, समाप्त।

हारल-स. स्त्री.—एक प्रकार की चिडिया जो हर वक्त अपनी चोच मे कोई लकडी या तिनका दावे रहती है, यह झुड मे रहती है।

रू. भे.—हारिल।

हारवणौ, हारवबौ—देखो 'हराणौ, हराबौ' (रू भे)

उ०—हामावत एकौ हारवसी, दळ अर दाख दहण खग दाहि। कुजर कोड मिळै जो कारी, सीह झडफतौ सकै न साहि।

—साहित्र हमीरोत रौ गीत

हारवल्ली-सं. स्त्री.—माला।

उ०—वानरी हारवल्ल्या किं करोति, विधवा स्त्री किं करोति, वणिक खगेन किं करोति, दिगबर पट्टकूलेन किं करोति .... ..।

—व स.

हारसणगार, हारसिंगार, हारस्त्रिगार-स पु. [सं. हार+शृगार] १ शरद ऋतु मे होने वाला, मझोले कद का एक प्रकार का वृक्ष, जिसके पुष्प अत्यन्त सुन्दर एव सुगन्धित होते हैं, पारिजातक वृक्ष।

[स हार+शृगार] २ वस्त्राभूषणो द्वारा किया जाने वाला शृगार।

हारहूर-स पु [सं] एक प्रकार का मद्य।

हारहूरा-स स्त्री.—१ मुनक्का दाख, द्राक्षा। (डिं को)

२ अगूर।

हाराड-स स्त्री —१ लडाई, झगडा।

२ युद्ध, जग।

हारावणौ हारावबौ -देखो 'हराणौ, हराबौ' (रू भे)

उ०—अगावती मुझ नै मिलै, चढि आयौ न्रप चड प्रद्योत कि हिकमति करि हारावीयौ, पाल्यौ नै उदय नै पोत की।

—ध. व ग्र

हारावियोडौ—देखो 'हरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री हारावियोडी)

हारि—देखो 'हार' (रू भे)

उ०—१ जूइ राजा केरी हारि, पूछि नाम गोत्र विस्तार। जै आगलि जई कन्या रहि, पिहिलू, तेहना मननि ग्रहि।—नळाख्यान

उ०—२ का तौ पासौ हारि कौ, का तौ पासौ जीत। हरीया दोउ दूरि करि, एकौ मतौ अजीत।—अनुभववाणी

उ०—३ हाडै राव लीनी मास एक की लडाई। बूदी सैर लूट्यौ देखि पाछै हारि पाई।—शि व.

हारिक—देखो हारक' (रू. भे)

उ०—बिया 'गिरमेर' यौ हारबौ जीतबौ, सारिखा तणौ करनार सारै। हारिका तणी तौ जीत मारै नही, मारिका तणी तौ हारि मारै।—धीरतसिंघ खीची रौ गीत

हायहाय—देखो 'हायत्राय'।

हार–स. स्त्री. [स हारः, हारि.] १ युद्ध, लडाई तथा खेल-कूद, भाग-दौड आदि प्रतियोगिता मे होने वाली पराजय, शिकस्त, जीत का विपर्याय।

उ०—१ एम 'दुरग' आखियौ, सुणौ कमधा समरत्था। हाण लाभ जै हार, हुई करतार सु हत्था।—रा. रू

उ०—२ 'जेत' भूप 'जैतरी' हार 'कमरा' री होसी। अड पोसी मुडमाळ जगतचख कौतुक जोसी।—मे म

उ०—३ हार जीत मन आपनी, और किसी की नाहि। जनहरीया मन हैकलौ, सारी वाता माहि।—अनुभववाणी

२ वह दशा अवस्था या भाव जब आदमी किसी कार्य मे सब तरफ से असफल हो कर थक कर बैठ जाता है, निराशा, असफलता, थकान।

उ०—१ अडसठ तीरथ भ्रमि भ्रमि आयौ, मन नाही मानी हार। या जग मैं कोई नही अपणा, सुणियौ स्रवण कुमार।—मीरा

उ०—२ आप लोगा नै समझावण री बाद भगवान ई करै तौ वण नै हार मानणी पडेला। म्हैं तौ आप लोगा री वाता रै मिस आपरी अकल री पीदौ देखणी चावू। –फुलवाडी

स पु.—३ स्वर्ण, चादी, पुष्पो, मोतियो आदि की माला, जो गले मे धारण की जाती है।

उ०—१ डाडी रा चौक मैं स्याम वृद विराजै छै. जाणै चद्रगा रै सरीर हार राजै छै।—पना

उ०—२ माथै सोना रो ई मुगट। अमोलक नग पळपळाट करै। गळै सोना रो ई हार। तरवार अर कटारी रै सोना री मूठ अर सोना री म्यान।—फुलवाडी

४ मुडमाला।

उ०—आभूखण वज्रतणा अथाहे। माथातणा हार गळि माहे।

—सू प्र

५ युद्ध. लडाई, सग्राम।

६ एक दीर्घ या गुरु मात्रा का नाम।

उ०—अठ दुजबर खटकळ सुयक, एक हार गण अत। मवनहरा सौ छद मुणि, राघव सुजस रटत।—र. ज. प्र

७ प्रथम गुरु के सगण का नाम। (र ज. प्र)

८ छन्द शास्त्र के अनुसार ठगण का चौथा भेद जिसमे मात्रा क्रम दो गुरु एक लघु इस प्रकार होता है—(SSI)। (डि. को)

९ अक गणित का भाजक, विभाजन।

१० वन, जगल।

११ खेत।

१२ राज्य द्वारा किया जाने वाला हरण, जब्ती।

१३ पक्ति।

१४ देखो 'हारौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया प्याणी दुलभ है, ज्यु खाडै की धार। इन सरवर कै नीर कु, विरही पीवन हार।—अनुभववाणी

उ०—२ बाप बाप हो! थारा आरभ पारभ लागि गढ लेयण हार, किना बाप बाप हो! थारा सत तेज अहकार, राइ दुरग राखण हार।—रा सा स

हारक–स पु [स] १ चोर।

२ हरण करने वाला, लुटेरा।

३ धूर्त कपटी।

४ मुक्ताहार।

५ विभाजक।

वि.—हारने वाला।

रू. भे—हारिक।

हारणौ–वि (स्त्री हारणी) १ हरण करने वाला, नष्ट करने वाला, पाप हरने वाला।

उ०—१ देवी रोग भव हारणी त्राहि माम, देवी पाहि पाहि देवी पाहिमाम।—देवि.

उ०—२ देवी हारणी पाप स्री हरि रूपा, देवी पावणी पतिता तीरथ भूपा।—देवि.

२ हारने वाला, पराजित होने वाला।

३ निराश होने वाला, थकने वाला।

हारणौ, हारबौ–क्रि म. [स हृ, हारयति प्रा हारणै] १ युद्ध, लडाई, मुकद्दमे खेल, प्रतियोगिता आदि मे अपने प्रतिद्वन्द्वी से पराजित होना, शिकस्त खाना, हारना।

उ०—अमीरखान नै जाम सतै माहोमाह एको छै। पछै अजमखान गिरनार, नवानगर ऊपर असवारी की, वेढ हुई। जाम सतो नै अमीरखान वेहू हारिया।—नैणसी

२ अपना दाव गमा देना, खो देना।

उ०—प्रहरै प्रहर ज ऊनरधु, दिवला साख भरेह। धण जीतो प्रिव हारियउ, वेल्हा मिळण करेह।—ढो मा

३ किसी कार्य मे परिश्रम करने के बावजूद असफल होना, परिश्रम करके थकना, असफल होकर निराश होना, हतोत्साहित होना।

उ०—१ हकीम वैद्य सरब पचि हारघा, दीनी बहुत दवाई। जाण असाध्य व्याध जगदवा, अबा वार्सं आई।—मे म

उ०—२ कुसळ विहावउ सज्जणा, पर मडळै थयाह। जउ विह हिया न हारिस्यइ, वळै मिळेवउ त्याह।—ढो. मा

उ०—३ नानी पोटाय पोटाय, बिलमाय बिलमाय हार थाकी पण दस बरसा रो बाळ-हठ रागै नी आयो सो नी आयो।—फुलवाडी

४ अपनी हार मान लेना।

उ०—पण अत मेनका हारी, बोली 'हू' नारी माडी। तू जोगी जग रो जीत्यो, आ काया धरणा डाळी।—सकुतळा

१५ एक प्रकार का पक्षी ।

[प्र] १६ एक बहुत बड़ा व लम्बा चौड़ा कमरा, बड़ा कक्ष, हॉल ।

अव्यय [अ., फा.] २ अभी, इसी समय, तुरन्त, तत्काल ।

उ०—१ तुम थें तब ही होइ सब दरस परस दर हाल । हम थें कबहु न होइगा, जे बीतहिं युग काल ।—दादूवाणी

उ०—२ काई करां ओर सग भावर, म्हांनै जग जजाळ । मीरां प्रभु गिरधरन लाल सूं, करी सगाई हाल ।—मीरां

२ अभी तक, वर्तमान काल तक, अब तक ।

उ०—१ हाल दळियो अर पाट गावणो नी सीख्या तो पछै कांई करू । हाचळ नी चूपावू तो सगळा बेटा नै मरणो पड़ै ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ आज ई पांणी री वेळा व्हैगी दीसै । गाम हाल सगळोई पड्यो है । वाटो भरणो है, विलोवणो करणो है ।—अमरचूनड़ी

उ०—३ हाल नसा री मैलो ई को धुपियो नी । या नाळिदर रा जिचिया नै कित्ता दोरा पाळ पोस नै मोटा करिया, वानै इण बात री कांई चेतो । गाडिया रै मूडै पोतडिया धोवा अर हाल धोवूं ।

—फुलवाड़ी

३ तुरन्त, शीघ्र ।

४ फिलहाल ।

उ०—बाई हाल मादी है भाई, वा सफा ठीक नी व्है जितरै उण नै सफाखाना सूं छुट्टी मिळै कोनी । म्हैं उण नै गोदी में ऊपाय लियो ।—अमरचूनड़ी

हालक-स पु. [स] बादामी या भूरे रग का घोडा । (शा. हो)

वि.—पीला, हरा । (हिं. को.)

हालडो-स पु [देश] हेगा या पटेला नामक कृषि उपकरण ।

हाल-चाल-स. पु यौ.—१ दशा, हालत, अवस्था, स्थिति ।

२ रग-ढग, व्यवस्था ।

३ समाचार, खबर ।

४ विवरण, वृत्तान्त ।

५ रहन-सहन का ढग ।

हालण-सं. स्त्री —१ चलने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ घणी सकोप रहै कर घेरा, फौजा साह तणी चौफेरा । आगम निस दिस विदिस अवेरा, हालण सोध नकांम गहेरा ।

—रा. रू.

उ०—२ उण दिन म्हैं वानै म्हारै साथै हालण री बात करी जद वै सूवर रै माथै हाथ फेरता गळगळा कठ सूं सूवर रै सांम्ही देखनै कह्यो के उणनै अठै छोड वारो कठै ई दूजी ठोड जावणो नी व्है ।—फुलवाडी

२ गतिमान होने की क्रिया या भाव ।

हालण-डोलण-स. स्त्री.—हिलने-डुलने की क्रिया या भाव ।

उ०—हालणडोलण कोइ [illegible], मन [illegible] फिर नाहि । हरिया [illegible] मुण, उहँ [illegible] नाहि ।—[illegible]

२ छोटा मोटा कार्य, साधारण फुटकर कार्य ।

हालणगींणो-स. पु. (स्त्री. हालणगींणी) वह बैल जिसके सींग हिलते हों ।

हालणो हालबो-क्रि अ. [सं. हल्लन] १ गतिमान होना, चलना ।

(ज र.)

उ०—१ ऐनी, थारै दिनां, लागै भाभर री भार [illegible] मारैला नै गैडी नी [illegible] देती, पण पछै म्हारा दिन [illegible] बैठग्या, थारै जोडै कीकर हाल मकू ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हद पाटी हालतां [illegible] हालत रह जाई । [illegible] सवगास, [illegible] पाणी [illegible] ।—[illegible]

उ०—३ इम हालियो पाट [illegible] । [illegible] सघ [illegible] । [illegible] मधुर संक, [illegible] पाणी [illegible] पावै ।

—[illegible]

२ आगे चलना, आगे बढना, [illegible] ।

उ०—१ चोधरण री आखो दूधो मन बुभग्यो । तोई वा ठेठ नी न्हाखी । घणी ताळ एक कुटरा नाव री मोद में वा धकै हालती री ।—फुलवाड़ी

उ०—२ मास बड़ रै इण भाग वनळ होवती ही अर चोधरी तो ऊडी ऊडी डकारां न्हाखतो जोधांणा रै मारग भरणाटै हालतो रह्यो ।—फुलवाड़ी

३ कहीं जाना, जाना, चलना ।

उ०—१ मा साळ रै माथ वड़ घाटो जड दियो । बेटी होळै होळै चितवंगी व्है ज्यूं बारा कांनी हालती लागी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ तरै महा वैराग ऊपनो । रह्यो न गयो । तद पुत्र भीम-सीहे, काका मेमसी नू मारोही भळाय नै हालियो ।

—कल्याणसिंह बाटेल नगराजोत री वात

४ प्रस्थान करना, रवाना होना, चलना ।

उ०—१ मा आंपा जाय सदा माही मपु बैठ सै । इतरो कहि आगानै मेहते नाम्है हालिया ।—मारवाड रा अमरावां री वारता

उ०—२ हालिया पटा-भर तणी हाल, मिळ पातसाह वह दीव माळ । कुसळान पूछ इम हेत कीध, देवो रसाळ जब हार दीध ।

—वि स.

उ०—३ तरै हेक दीहाडै रजपूतांणी सू कहीयोज म्हे हमै पर भोम रजक रै आटै हालां तो बैठा काहूं करा । तरै हालण लागो ।

—कल्याणसिंघ बाटेल नगराजोत री बात

५ घूमना, फिरना, टहलना, विचरण करना ।

उ०—१ जिन की कळा से हालत चालत धरण अकास अधारा । जिन कोकळ में सब जग भूल्यो, ये ही पुरस है न्यारा ।—मीरा

हारिख–स पु.—एक प्रकार का रोग ।
उ०—१२ जवर, १३ सनिपात, १८ प्रमेह, ५००० आमवात, ८४ वायु ३६ महावायु दोख, ४५ खाधाविकार, १०८ फोडि । ५ गुलमक्षयन, २० स्लेसमा, ८ उदर, १० व्याधि, १०० सइमउ अत्यु, ७६ चक्षुरोग, कास, स्वास, हारिख, अतिसार, गुड, गूंवड, देह रोगा ।—व. स

हारित–स पु [स] १ एक प्रकार का कबूतर ।
२ हरा रग ।
वि —१ हारा हुआ, पराजित ।
२ भेंट किया हुआ ।
रू भे.—हारीत ।

हारिनास्वा–स स्त्री. [स हरिनाश्वा] सगीत में एक मूर्च्छना जिसका स्वर ग्राम इस तरह का है—ग म प ध नि स रे। स रे ग म प ध नि, स रे ग म प ।

हारिल—देखो 'हारल' (रू भे)

हारी—देखो 'हार' (रू भे)

हारीत–स पु [स हारीत] १ एक कबूतर विशेष ।
२ धूर्त या कपटी व्यक्ति ।
३ जावाल ऋषि के पुत्र का नाम ।
४ सूर्यवंशी राजा युवनाश्व का पुत्र ।
५ एक स्मृतिकार, जिसके पुत्र का नाम कमठ था। इसने कई स्मृति ग्रथो की रचना की ।
६ विश्वामित्र ऋषि का एक पुत्र ।
७ एक अगिरस कुलोत्पन्न तत्त्वज्ञ, जिसके द्वारा प्रणीत सन्यास मार्ग का तत्त्वज्ञान 'हारीतगीता' नाम से विख्यात है ।
८ एक ऋषि जो युधिष्ठिर की सभा मे उपस्थित था और शरशय्या पर पडे भीष्म से मिलने भी गया ।
९ देखो 'हारित' (रू भे.)

हारु, हारू–वि —१ कायर, डरपोक ।
२ कमजोर, अशक्त ।
३ हार मानने वाला ।
४ देखो 'हार' (रू भे)
उ०—हारु ओडती वलय मोडती । आभरण भाजती, वस्त्र गांजती। किंकणी कलाप छोडती, मस्तक फोडती । वक्षस्थल ताडती, कचुउ फाडती ।—रा सा स
५ देखो 'हारो' (रू भे)

हारो–प्रत्यय—एक प्रत्यय जो क्रिया शब्दो के पीछे लगकर उन्हे विशेषण बनाता है, वाला ।
उ०—फूलाना पगर भरचा, अगरना गध सचरचा । धांन गादी चातुरि चाकळा, वइसण हारा वइठा पातळा ।—रा सा स
स. पु.—१ चूल्हा ।
२ देखो 'हार' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—ठलक ठलक आसू पडै, जाणै तूट्यो मोत्या री हारो जी । कुंवर कनै माता आय नै, भाखै वचन उदारो जी ।—जयवाणी
रू भे —हारु, हारू ।

हालदियो–वि (स्त्री हालदी) चलने वाला ।
उ०—हम जही हालंदियां, धाटेचिया तियाह । कनक लता कठयाणिया, जोडै नही जियाह ।—वा दा

हाल–स पु [अ] १ दशा, अवस्था, हालत ।
उ०—१ राणीजी वेचेतै व्हियोडा सूता हा । वै मरग्या तौ पेट री आसा री काई हाल व्हैला ।—फुलवाडी
उ०—२ च्यारू जणिया कह्यो—नी ओ मा'राज, इत्ती भुळावण दिया पछै काई धोवो खावा । थारो भो भो ई भलो व्हे, जको सगळी वात बताय दी । नीतर राम जाणै काई हाल व्हैता ।
—फुलवाडी
२ रग-ढग, स्थिति ।
३ समाचार, खबर, सवाद ।
४ ब्योरा, विवरण, वृत्तान्त बयान ।
उ०—तथा स्रीचद फरजद परतू तणो, पाय सकट घणो खुडद पुणो । कमट सहियो जिको हाल मालुम कियो, हाल कहियो अतै व्हाल हुणो ।—मे म
५ आख्यान कथा ।
६ व्यवस्था ।
७ चलने का ढग गति, चाल ।
उ०—१ तो कुवर विचारी हाल तो माटी री नही वैर री दीसै छै ।—रायघण री वात
उ०—२ दाता री पाणी, कडीया री केहरी, हाल री हस, भूंआरी भमर, कुरज री नस । अलका री नागण, पलका री कुरग, कठ री कोयल, सोनै री अग ।—मयाराम दरजी री वारता
उ०—३ हम हाल परहरै, वचन पलटै दुरवासा । मह मोरा झड मडै, इद नहि पूरै आसा ।—चौथ बीठू
उ०—४ भाळ विसाळ सिंदूर सुसोभित, हाल मराल हमत्ती । रूप अनूप तेज मय राजत, मिळत पलक मदमत्ती ।—मे. म
८ सुख, चैन ।
९ वर्तमान काल ।
१० वर्तमान मे कुछ पहले का समय ।
[स हालः] ११ हल ।
१२ हल की वह लम्बी पट्टी या लट्ठा, जिसका एक शिरा हल के बीच मे फसा रहता है तथा दूसरे शिरे पर जूआ बाधा जाता है, हरिसा ।
१३ बलराम का एक नाम ।
१४ शालिवाहन का एक नाम ।

जिसा बाजणा मारिया है सो हालवताई उणरो मोलो मालो है। जेठाणी गीगा नै हालरियो गावै जद उणा रै मानी देस देस नै कितरो गुमेज सू गावै ।—ग्रमरचूनड़ी

उ०—४ रात रा मामी बेटा नै केई बाता सुणावती । जेठ देवर नै नित नवा हालरिया गावती ।—फुलवाड़ी

३ बच्चो को झुलाने का पालना, झूलना, झूला ।

४ बच्चे को पालने मे सुला कर झुलाने की क्रिया, झुलाने के लिये दिया जाने वाला धक्का, हिलोरा, झोंका ।

उ०—रोवतो मैं राख्यो नही कन्हैया, पालणियै पोढाय रे, जिर० । हालरियो देवा तणी, कन्हैया, म्हारै रुस रही मन मांय रे, जिर० ।

—जयवाणी

५ बच्चे के जन्मोत्सव पर गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

६ दामाद को गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

७ गले मे धारण करने का एक ग्राभूषण ।

रू भे.—हालरो ।

मह,—हालर ।

हालरो—स पु —१ वीर रस पूर्ण गायन ।

उ०—दुभ्काल रा मघ ज्यू रहे न कोइ गीज घोटी, फरै कै लाल रा जर्कै छोटी वूंघ कूत । घागळा भालरा नागा ग्रणोठी पाळ रा घूवै, हालरा चोमटी दे ग्रनोठी वाण हूत ।—वद्रीदास खिड़ियो

२ घोड़े के गले का एक ग्राभूषण विशेष ।

उ०—करै हालरा काल रा नाद कठा, ग्रथोला मगी भालरा लूम गंठा ।—व. भा

३ किसी दूरस्थ को हाथ के इशारे से बुलाने की क्रिया या भाव ।

४ देखो 'हालरियो' (रू भे.)

उ०—१ ए तो देरांण्या-जेठाण्या जाया हालरा मरवण थें काई जायो है धीव । लाय दो नी, भंवर, म्हा नें चौणोटियो ।

—लो गी

उ०—२ हुवै वीर हक धधक चोसट दीयै हालरा, जुधां प्रण चाव रा पाव जड़कै । तंग्छ ळ्ळ हुऐं स्रोणत भरै तालरा, करस कत-माल रा भुजा ग्रड़कै ।—गोपाळ दधवाड़ियो

उ०—३ हरखी न दीधो हालरो जी, वहू नही पाढी रे पाय । एक ही पुत्र न जनमियो जी, हस रही मन-माय रे जाया ।—जयवाणी

उ० —४ थे सिणगार दे जी ए जायो हालरो, उजळदती ए जायो हालरो ।—लो गी

हालवद—स. पु.—तग, तस्मा ?

उ०—बीजै फेरै हमीर बाप नू सलाम कर कहे छै, हेर्डोकै म्हारा हाथ देखो । पाखरीयो घोडो दोना ही पाखती वाजूवा हालवद वाधा थका माथै सिरो चोतारी वध हजार मेखासिरी घोड़ै रै छै ।

—ग्ररजन हमीर भीमोत री वात

हालवो—स. पु —अतिचार या रति क्रीड़ा के लिये चलने आदि की क्रिया या भाव ।

उ०—राजा प्रथीराज चहुवांण री वैर गहुरई जोधपाली सगरै, वादरै पर हूती, जिण नूं साहुरी आवरी ठण रै बात वाहियो मगायो, हमो कयो, जिण री दोनी वाविर हीमें, जिणू मुद्राग हालवो माहिलो सु हमरां मरण ए नगाई, जिणा नगरै गार री सुरवदै रै माहिलैं हाला थ रै —नैणसी

हालहवाल—स. पु यौ —१ दशा, अवस्था, हाल-चाल ।

२ समाचार, खबर, वृत्तान्त ।

हालहुकम हालहुक्कम, हालहुकम—सं पु यौ —हुकूमत, शासन ।

उ०—१ अखाण रो मुदो, सर हमाबद धाम रो मसार, सांच्या रो हाल हुकम, वालिया भुआर । दोयणां-निवाई मोटी धाम, तिणो रो मुआणो चावै मही मु मान ।—ग्रवदान

उ०— २ जिम चोडा हो नगहर आधार, पड मलिनारी मनि जिम मनड । जिण वीयट नो मदा हालहुक्कम, तठ पै मरारवड जिम मयड ।—स कु

हालांणी—देखो 'हलांणी' (रू. भे)

हाला—स. स्त्री. [स] १ भाटी वंश की एक शाखा ।

२ शराब, मदिरा । (ग्र मा)

उ०—१ हूवै धत्त मोहिल मैंगल हाला, ममा न किसा पार मूळा रिसाला । मधु-पान ग्रामोद में गात मद्दे, बिहू नीर री होकरी तेणि वद्दै ।—मे म.

उ०—२ घोड़ा सवार ऐहिज पगा, पाखर वर मार्ग चरण । मैं पटै पीठ हालामयँ, लै हाला भाई लारण ।—मे म.

हालाडूलो, हालाडोई, हालाडोली, हालाडोलो—स पु —१ घर का छोटा-मोटा कार्य ।

२ कार्य का गोरख-धधा ।

रू. भे —हालादोळी हालाड़ोलो ।

हालादोळी—स. स्त्री —१ प्रार्थना, स्तुति, वंदगी ।

उ०—ग्रागै देखै तो राजाजी उघाडै माथै माताजी रै ग्रागै हाला-दोळी करै छै ।—जैतसी ऊदावत री वात

२ देखो 'हालाडोई' (रू भे)

हालार—स पु.—गुजरात का एक प्राचीन प्रदेश, जहाँ पहले हाला भाटियों का राज्य था ।

उ०—जिसो देस हालार मैं वन जगळ ।—नैणसी

रू. भे —हालाहर ।

हालाहर—स. पु —१ यादव या भाटी वश की हाला शाखा का व्यक्ति ।

उ०—रिम गजण सिंध मधुरियो राजा, जो जिण ठांम स जुवा जुवा । भ्काला चौडा समा भळहळे, हालाहर है-कर हुवा ।

—द दा.

२ देखो 'हालार' (रू. भे.)

उ०—२ विना अजाद हालतौ वहतौ, वधतौ क्रोध हीळोल वप।
नीर विना कीधौ आमेरौ, ताहारौ सोखा वीर तप।
—राव दुरजण साल हाडा री गीत

६ हिलना-डुलना, झोले खाना।
उ०—नगर माहि चतुरग कटक चालतइ, तेहनइ भारि सेसनाग हालतइ तुरग चडिउ,. ......।—व. स
७ कापना, धूजना।
८ उडना।
उ०—जद पून चली आथूणी, पत्ता साग सै हाल्या। वी अटकया वीच मगा मैं, की दूर दूर तक चाल्या।—सकुतला
९ होना, चलना।
उ०—१ घरा मैं तौ काना ई कांना वाता हालती, पण काकड मैं ई डरता धूजता छानै-ओलै वात करता।—फुलवाडी
उ०—२ राड वैठा-सूता केडा भवरजाळ मैं न्हाक दिया। इण भात री कचकच खासी ताळ ताई हालती री।—फुलवाडी
१० आना, चलना।
उ०—पाचवै महीनै टावर पेट मैं टळवळण लागौ। माय हुरडिया देवतौ सौ लखायौ। जच्चा राणी नै होवरडा हालण लागा।
—फुलवाडी

११ किसी से व्यभिचारिक सम्वन्ध रखना, किसी के साथ व्यभिचार करना।
उ०—सु सातमी वार गगोदक कावड भरी नै आणतौ हुतौ सु किणहेक सहर वटाउ थकौ किणहेक रै चौंतरै उतरियौ हुतौ सु उणरी वैर किणीहेक जिदा सूं हालती हुती।—नैणसी
१२ प्रचलन मे होना, व्यवहार मे होना, जारी होना या रहना।
उ०—किण ही पूछ्यौ—आप रो इसौ साकडौ मारग किताक वरस चालतौ दीसै है। जद स्वामी बोल्या—सरधा आचार मैं सैठा रहै। वस्त्र पात्र उपगरण री मरयादा न लोपै। थानक नही वधीजै। जठा ताईं मारग चोखौ हालतौ दीसै है।—भि द्र.
१३ किसी वस्तु का ठीक तरह से उपयोग मे आते रहना।
ज्यू—औ कमीज थारै हाल ताई हालै।
१४ चलना।
उ०—लखखू सिसकारा भरती बोली—वरसा सू म्हारै औ मोटौ रोग लाग्योडौ। खाज आगै जीव जावै। हालणौ सरू व्हिया पछै ढवै ई नी।—फुलवाडी
हालणहार, हारौ (हारी), हालणियौ—वि०।
हालिओडौ, हालियोडौ, हाल्योडौ—भू० का० कृ०।
हालीजणौ, हालीजवौ—कर्म वा०।
हलणौ, हनवौ, हलवणौ, हलववौ, हल्लणौ, हल्लवौ—रू० भे०।

हालत—स. स्त्री. [अ] १ दशा, अवस्था।
उ०—१ बाई रामचरण हुया पछै वारी काई हालत ही, म्हैं सगळा समाचार सुण लिया हा। जै इण टावरा री वधण नी व्हैतौ तौ वै कदैई औ घर वार छोडनै नाठ गया व्हैता।—दसदोख
२ घर की अवस्था, आर्थिक स्थिति।
उ०—कै—जदी छोटू मारजा री हालत दुरवळ नी होती तौ अवम एम० ए० ताई पढ लिख जावता।—दसदोख
२ परिस्थिति, वातावरण।
४ वृत्तान्त, हाल, विवरण।
५ समाचार, खवर।

हालतसींगौ—स पु (स्त्री हालतसीगी) वह वैल जिसके सीग झुके हुए तथा हिलते हुए हो।

हालताई—क्रि वि—अभी तक, अब तक।
उ०—पण हालताई उणनै कोई इसौ मौकौ नी मिळ्यौ हौ कै वौ कानजी सू राजीगौ करतौ।—अमरचूंनडी

हाळवोळ—देखो 'हळावोळ' (रू. भे.)
उ०—हाळवोळ छक हूत, हलै असि चढण झळाहळ। इम दीसै उण वार, समद मथसी साहस वळ।—सू प्र.

हालमकर—स पु—अनार, दाडिम। (अ. मा.)

हालर—देखो हालरियौ' (मह, रू भे)
उ०—पिलग म्हारौ हालर पोढसी, काई पाटी वाधी हालरिया री मायजी।—लो. गी

हालर-फालर—स. पु यौ.—चापलूसी, खुशामद।

हालर-हूलर—स पु यौ—१ व्यर्थ का प्रलाप।
२ व्यर्थ का कार्य, झझट।
३ व्यर्थ की हसी या हसी की आवाज।

हालरि, हालरियु, हालरियौ—स पु—१ वच्चा, पुत्र, वेटा।
उ०—१ हमै काई करसा औ हालरिया रा वाप, माताजी चमकिया देस मैं।—लो. गी
उ०—२ मण भर धागडो मैं फिर घर ल्याई जी गोद मेरी हालरियौ मेरो स्याम लटकौ आयोजी।—लो गी.
उ०—३ थेइज औ मानेतण राणी हालरियौ जिणजौ। वेनडियौ जिणजौ औ अजमौ मारा भावोसा मोलवै औ राज।—लो गी
२ वच्चे को मीठी थपकी दे कर या किसी झूले मे डाल कर सुलाते समय गाया जाने वाला लोक गीत, लोरी।
उ०—१ रूडा रिखभजी घरि आवउ रे, हालरियु गाऊ रे गाउ। मरुदेवी माता इण परि वोलइ, जीवन तोरी वलि जाउ रे।
—स. कु.

उ०—२ माता धोता अमल झुनरायौ झोली, हालरि हुलरावियौ हींडोल हिंवोली। वलि रमीयौ अठ दस वरस तु वालक टोली, परणावै तु नइ पछै दयिता हुइ दोली।—ध व ग्र
उ०—३ उणै इज किण रा काळा तिल चोरिया है, उणै इज

उ०—२ हाळीडै री गवरादै जावी रे वलाय। गय हाळीडै रा वाया माजे मोती नीपजै।—लो गी

हाली-चाली—स. स्त्री.—चाल-चलन, आचार-व्यवहार, ढग।

हाळीचिट्ठी, हाळीचीट्ठी—स स्त्री.—जागीरदार द्वारा किसान को लिख कर दिया जाने वाला खत जिसमे उसे (किसान को) कूआ या खेत जोतने की स्वीकृति दी गई हो।

हाळीपरा, हाळीपणौ, हाळीपौ—स पु —१ 'हाळी' का कार्य, 'हाळी' के रूप में की जाने वाली नौकरी।

उ०—१ पाच किनोडिया हक हाळीपणौ, सील सतोख की रासि वाधौ। साज अर वाज सब मून करि सातरा, निरत की सीव सु सुरति सधौ।—अनुभववाणी

उ०—२ तद वै कह्यौ—थानै 'ठा' कोनी कै अठा सूं निरळै जको वटावू सोवनी लका रै दहन री वात सुणाय जावै। नी सुणावै जको आखै वरस हाळीपौ करै।—फुलवाडी

२ 'हाळी' के कार्य का वेतन या पारिश्रमिक।

हाळीबाळदी—स. पु.—नौकर-चाकर।

उ०—१ आदमी पर आदमी, बुलावै पर बुलावौ, न्हाना-ल्होडा आखा पगदौडी करै। पग दौडी मैं पाछ नी राखे। हाळी-बाळदी तकात भाज्या वगै।—दसदोख

उ० —२ हाळीबाळदी, रथ अर वैल्या नै खीचता ल्यामी।
—दसदोख

हाळीवीज—सं. स्त्री —वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया। इस दिन छोटे बच्चे हल जोतते हैं, बहनें पाथेय ले जाती हैं। जागीरदार अपने किसानो को भोजन करवाता है।

उ०—खेती निपजै धणिया हेती, हाळीवीज री हळौतियौ।
— चेतमानखी

हाळेड, हालेड़—वि —१ जो किसी स्थान पर जाने या किसी वस्तु को खाने का आदी हो गया हो, आदी। (पशु)

२ आवारा, बधन रहित।

स पु.—वह गाय या पशु जो किसी स्थान पर जाने या स्थान विशेष का कोई पदार्थ-विशेष खाने का आदी हो और बधन से छूटते ही सीधा वही जाता हो।

हाळेती—देखो हाळी' (रू भे.)

उ०—हळिया जोतौ रै हाळेती, खेत निपजै धणिया हेती। हाळी वीज री हळौतियौ।—चेतमानखौ

हालोचालौ—स. पु. यौ.—हो-हल्ला, शोरगुल, हलचल।

उ०—भोजन करणौ भूल खेलै वूढा लारी खडभडै। हेठै हालो-चालौ भणै, रुळा रुखाळी रडभडै।—दसदेव

हालोर—देखो 'हालार (रू भे)

उ०—तठा उपरायत पताखा सू वादळा छोडजै छै। सू किण भांत रा बादळा छै? हळबदरा मोरवीरा, अजाररा भरवछरा, हालोर रा छै।—रा. सा. सं

हालोहळ, हालोहाल—स. पु.—१ शोरगुल।

उ०—१ नौबतू कै निहाव वीरारस बाजै। जिस वखत जळावोळ हालोहळ सै फौज हल्ली। नाळू के निहाव सेती धरती थरमली।
—सू. प्र.

उ०—२ हुई चाल हळवळ, हम तम हालोहळ। अराबा नाळि उपाडि, चोटा नू नगारा चाडि।—गु. रू. ब.

उ०—३ सिंहमल सिळकिया करमट कूदिया। कटका हुई ज हालोहाल।—अमरसिंह राठौड री वात

२ देखो 'हळाहळ' (रू भे)

हालौ—सं. पु —१ चलने का सकेत, हाथ का इशारा।

२ चलने या आचरण-व्यवहार करने की क्रिया या भाव।

३ भाटी वश की 'हाला' शाखा का व्यक्ति।

उ० —१ रायधणां विचै हालां रै वयु पांच दस गाव इधके ' था। दस माणसा री जोड इधकी थी। भीव हमीरोत लाखडी री नाहबी ली, तरै हालै जाणियौ, भीव ठाकुराई रौ धणी हुवौ नो म्हे काईक ठोड ओटहा तो रूडा।—नैणसी

उ०—२ हाला अरु झाला जोड हाथ, 'माला' हर आगळ नाय माथ। जत कोळी काढी पुर प्रजाळ, आगेट रंमता कीध आळ।
—वि स.

हाळौ, हालौ—प्रत्यय—वाला।

उ०—१ सावळ कावळ करण हाळौ तो मालक है, पर राजी रै चेडै मैं काढण री तजवीज करस्यू।—दसदोख

उ०—२ घर हाळा घणौ ही समझावै, पण सिर मैं गूग चढायोडो, भुवाळी खातो फिरै।—दसदोख

हालौचळ—देखो 'हलचल' (रू. भे.)

हालोहल, हालोहाल,—स स्त्री —हलचल।

उ०—डेरै हालोहळ हुई, हुआ मचाळा सत्य। आज विहाणै रद्दुवड, करिसी को भारत्थ।—गु रू. व.

हाल्ट—स. पु [अ.] १ रुकने की क्रिया या भाव, रुकाव।

२ सेना के किसी दल को या अन्य किसी को सहसा रुकने के लिये दिया जाने वाला आदेश।

हाल्यौ-मोल्यौ—वि —तुच्छ, ओछा।

उ०—हाल्या-मोल्या सू काम नही रे, सीख नही सिरदार कामदारा सू काम नही रे, मैं तो जाव करू दरबार।—मीरा

हाब—म. पु [सं.] १ संयोग श्रृंगार मे नायिका की वे चेष्टाऐं जिनके द्वारा वह नायक को आकर्षित करती है, नाज, नखरा।

उ०—नव यौवन निज सुदरी, मन्मथ आलि अकत्थ। हाव भाव हुई व्रथा, चढौ नपुसक-हत्थि।—मा. का प्र.

२ साहित्य मे होने वाले ग्यारह हाव, यथा—लीला, विलास, विच्छति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टयित, कुट्टमित, विब्बोत, विहृत, ललित और हेला।

उ०—राव खगार हालानू कछ माहे सू काढिया । उवै जाय हाला-हर वसिया ।—वा. दा ख्यात

हाळाहळ, हालाहल—देखो हळाहळ' (रू भे.) (अ मा; ह. ना मा.)

उ०—१ विसरिया विसर जस वीज बीजिजै, खारी हाळाहळी खळाह । त्रूटै कध मूळ जड त्रूटै, हळधर का वाहता हळाह ।
—वेलि

उ०—२ जन्म पछी ता जनक नइ, हेला हवु जघान । पासइ घरता पांमयु, हर हालाहल पान ।—मा का. प्र.

उ०—३ जो हालाहल जरयो, जोइ मन्मथ रिपु तै । भाल नैत्र महि भरयो, वलै वन अनल वदीतै ।—ध. व. ग्र.

हालाहीलौ—देखो 'हालाहूलौ' (रू भे)

हाळि हालि—देखो 'हाळी' (रू भे)

उ०—सूर खळा सिर साखती, हरीया आज'क कालि । लाटी लूटै लोभीयां, हकै आयौ हाळि ।—अनुभववाणी

हाळिडौ—देखो 'हाळी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—म्हारै वैता नै चारौ मोठ रौ, म्हारै हाळिडां नै गुदळी खीर आज वदळी म्हारी वरसेगी ।—लो गी.

हालिद्दौ–वि [सं हारिद्र] पीत, पीला । (जैन)

स पु.—१ पीला रग ।

२ कदव का वृक्ष, क्षुप ।

हालियोडौ–भू का कृ —१ गतिमान हुवा हुआ, चला हुआ. २ रास्ते चला हुआ, आगे बढा हुआ, गया हुआ ३ कही गया हुआ, चला हुआ, गया हुआ ४ प्रस्थान किया हुआ, रवाना हुवा हुआ, चला हुआ ५ घूमा हुआ, फिरा हुआ, टहला हुआ, विचरण किया हुआ ६ हिला हुआ, डुला हुआ, झोले खाया हुआ. ७ कापा हुआ, धूजा हुआ ८ उडा हुआ ९ हुवा हुआ, चला हुआ. १० आया हुआ, चला हुआ ११ व्यभिचारिक सम्बन्ध हुवा हुआ या किया हुआ. १२ प्रचलन मे हुवा हुआ, व्यवहार मे हुवा हुआ, जारी हुवा हुआ १३ किसी वस्तु का ठीक तरह से उपयोग मे आया हुआ. १४ चला हुआ ।

(स्त्री हालियोडी)

हाळियौ – देखो 'हाळी' (अल्पा, रू भे)

उ०—सातमी वार गगोदक री कावड भरि नै आणती हुतौ सु किणहेक सहर वाटाउ थकी किणहेक रै वारणै चौंतरै उतरियौ हुतौ, सु उण री वैर किणीहेक जिदा सूं हालती, सु वा सासती जिदा रै जाती, सु तिण दिन उण री माटी कठै कै हाळियौ हुतौ सु घरै आयौ ।—नैणसी

हाळी, हाली–स. पु [स. हलिन्, हालिक] १ हल चलाने वाला, किसान, कृषक ।

उ०—१ ताहरा राव चवडौजी एक दिन दरबार जोड वैठा छै । जितरै हेक हाळी आयौ ।—नैणसी

उ०—२ आकास धडहडै खाळ खडहडै । पखी तडफडड, वडा माणस लडथडइ, काठ सडइ, हाळी हळ खडइ ।—रा. सा. स.

उ०—३ ग्वाळा नै म्हारै गळछट चूरमौ हाळ्यां नै खीर लापसी ए ।—लो. गी.

उ०—४ जाट वसै । धरती हळवा ४५ वाजरी मोठ खेत कवळा । ऊनाळी अरट ७ हुवै । हाळी घोडा छै सु वसी एक गाव मैं राखै छै ।—नैणसी

२ कृषि कार्य मे रखा जाने वाला वह नौकर जो हल चलाने, वैल हांकने से लेकर समस्त कृषि सम्वन्धी कार्य करता है ।

उ०—१ राम नाम चेत्यौ नही, गाफिल परो गिवार । हरीया रहिसै पारकै, हाळी घर घर वार ।—अनुभववाणी

उ०—२ कुवारै री कमाई, जोर अर घूस खोर री माया तथा वादळी री छाया कितीक दूर चालै ? हटडौ जड दियौ, खेत खड लियौ । ऊट लीनौ हाळी राख्यौ, ल्हास करी अर खेत वुह यौ ।
—दसदोख

३ कृषि कार्य मे मजदूरी करने वाला मजदूर, श्रमिक ।

उ०—सु जीजी खेत मैं हुती । जुवार रौ खेत हुतौ । सु चूटावण गई हुती । ....राव खेत मैं पधारिया । हाळीया नु पूछीयो, 'जीजी केथ' ? ताहरा हाळीया कह्यौ, 'घरै गई' । ताहरा राव घरै आयौ ।—जीजी डाभी री वात

४ पति, खाविद । (किसान)

वि —१ हांकने वाला, चलाने वाला, चालक ।

२ लोभी ।

उ०—रात रा सेठ मतै ई वात छेडी । कैवण लागा—अवै सन्यास लेलू तौ सावळ है । फगत थारौ ध्यान आया मन डिगमिगै । आ माया रै हाळी वेटा रै भरोसै था मै फोडा पडैला, नीतर कदै ई हेमाळै गुफा मैं वास कर लेतौ ।—फुलवाडी

३ पापी ।

उ०—जेवडउ अतर वहिन नइं साली, जेवडउ अतर दीवाली (नइ होली), जेवडउ अतर पुण्यवत नइ हाली जेवडउ अतर हस नइ काग ।—व स

रू. भे.—हाळि, हालि ।

अल्पा;—हाळिडौ, हाळियौ, हाळीडौ ।

हाली–स स्त्री —१ चलने का ढग, चाल, गति ।

२ रहन-सहन का ढग, आचरण, व्यवहार ।

३ वूदी राज्य का प्राचीन रुपया ।

हाळीअमावस–स. स्त्री यौ —वैशाख मास की अमावस्या ।

हाळीडौ—देखो हाळी' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ टीवै तौ ओळै, ए लाडौ वेटी, टीवडी, जे तळै हाळीडै रौ खेत वावैजी नै कहियौ ए, हाळी नै वेटी क्यू दयी ।—लो. गी.

उ०—तउ राउ दुरयोधन ए विमासइ। हासउ हसीतु पडिउ विखासइ।—सालिसूरि

हासक–स पु [स] १ हसी-मजाक, विनोद।

२ मजाकिया, विनोदी व्यक्ति।

३ देखो 'हास'।

उ०—सुण मेछ खत्री जुध काज सजै। रस रुद्रस हासक वीर रजै।
—रा. रू

हासकारी–वि [स ह्रास+कारक] १ ह्रास करने वाला, क्षीण करने वाला, कम करने वाला।

उ०—हिम्मत कौ हासकारी विद्या कौ विनासकारी। तितिक्षा कौ तासकारी भीरू भरवाई कौ।—ऊ. का

[स. हास्य+कारक] २ मजाक करने वाला, हसाने वाला, विनोदी।

३ हसने योग्य, हास्यास्पद।

हासक्रीडा–स. स्त्री [स हास्य+क्रीडा] मजाक, दिल्लगी, हसी।

हासणौ, हासबौ—देखो 'हसणौ, हसबौ' (रू भे.)

हासपरिहास–स. पु यौ—हसी-मजाक, ठिठोली।

हासम–स पु [अ हाशिम] १ मुहम्मद साहब के वशज, मुसलमान।

२ रोटी बनाने वाला, बावर्ची।

उ०—इसकदर कू आणि जगायौ, करहा की असवारी। हासम कासम दरजी रोक्या, फिर काफर मुरदारी।—गोकलजी

३ देखो 'हसम' (रू. भे)

हासरस–स. पु [स. हास्य+रस] साहित्य मे नौ रसो मे से एक रस। यह शृंगार रस से उत्पन्न होता है और शुभ माना जाता है। इसका स्थाई भाव 'हास्य' होता है। यह शृगार, वीर और अद्भुत रसो का पोषक माना जाता है।

उ०—सरस वीरै वीररस किअा, रौद्रै रौद्ररस किअा। अपछरा सिंगार रस किअा। नारद हासरस किअा।—वचनिका

रू भे.—हासारस।

हासल—देखो 'हासिल' (रू. भे)

उ०—१ वेगार वेठऊडा हासल पान चराई न देवै। चवरी माफ चहुं देस मैं (जिकी) विस्णोई नहीं देवै।—वि. सं. सा

उ०—२ रु० ३१,००) गावा री हासल। वाभणी कै गावै लागै गाव ६० तथा ७० छै। भोग दं हैंसी ५ मौ, मण री दौढ मण लीजै।—नैणसी

उ०—३ वरस दोय तो सीहे नु राव दुदं हासल मेडतै री आधी-आध लीयौ। मुदौ सारौ दुदै रै हाथ छै।—नैणसी

हासलीक–वि.—१ हासिल का, हासल सम्बन्धी।

उ०—१ ८९ हासलीक। चूडौ-राणपुर, वढवाण नू लागै।
—नैणसी

२ हासिल के रूप मे प्राप्त होने वाला।

उ०—परगनै माहे इतरा गावा सेवज गेहूं हासलीक गावा हुवै।
—नैणसी

३ हासिल देने वाला।

उ०—कसवै सोजत हळ २०१ दरवार हासलीक वरसाळु जुपै छै।
—सोजत रा मंडळ री वात

हासविलास–स. पु. यौ.—आमोद-प्रमोद, हसी-मजाक, मनो-विनोद।

हासा—देखो 'हसी' (रू. भे.)

उ०—हरीया संगति साध की, हासा खेल न जांनि। अपना सीस उतारिकै, धरै पगा तलि आनि।—अनुभववाणी

हासारस—देखो 'हासरस' (रू. भे)

उ०—आद सगत रीझीया, त्रोण किधा तर प्याला, रुद्र रीझीया ऊवर, पहरी रुड माळा। रिख नारद रीझीया, जिका हासारस पाया, हूर अछ रीझीया, महासूर वर पाया।—अरजुनजी वारहठ

हासियौ–स पु.—१ फैली हुई वस्तु का किनारा, गोट, मगजी।

२ लेखन के समय कागज के दायें-बायें छोडा जाने वाला स्थान।

३ उक्त छोडे हुए स्थान मे लिखी जाने वाली टिप्पणी।

हासिल–स पु. [अ] १ जागीरदार, जमीदारो अथवा राजाओ द्वारा किसानो मे लिया जाने वाला, कृषि उपज का वह निश्चित भाग, जो राज्य कर के रूप मे वसूल किया जाता था, राजस्व।

उ०—१ कह्यौ म्हानुं वास करण नु २४ ठाम द्यौ। म्हे थाहरी चाकरी करिस्या नै हासिल ही देस्या।—देवजी वगडावता री वात

उ०—२ सोई निपज्या साध, हरीया हासिल नाव कौ। दूजा दाध वळाध, एकै हासिल वाहिरौ।—अनुभववाणी

२ जमीन की उपज से होने वाली आय।

३ उपज, पैदावार।

४ लाभ, जमा, फायदा।

५ लगान कर।

६ नतीजा, परिणाम।

७ गणित मे किसी सख्या का वह भाग या अक जो शेष भाग के कही रखे जाने पर बचता हो।

वि.—१ प्राप्त, उपलब्ध।

उ०—हक हासिल नूर दीदम, फरारै मकसूद। दीदार अर वाहै, आमद मौजूदै मौजूद।—दादूवाणी

२ वसूल किया हुआ।

रू भे—हासल, हासिल, हासल।

हासी—देखो 'हसी' (रू भे.)

उ०—दिली को नाम सुण कमान कूं खाचै। मोरै फुरमाण हासी तै वाचै।—रा रू.

हासू—देखो 'हासौ' (रू भे)

उ०—करी कूच जाई नई लेज्यौ, मारूआडि नू पासू। पातिसाह एहवू मुखि वोलइ, वचौ रखै हुइ हासूं।—का. दे. प्र.

३ प्रेमालाप ।

४ बुलावा, पुकार ।

हावउ–क्रि. वि.—१ ऐसे, इसी तरह ।

उ०—नीरि निरक्षिय नीरज, नीरज हावउ केमु । टालइ ए केलीहर दोहर खल जिम खेमु ।—जयसेखर सूरि

२ जैसे, जिस तरह।

हावनगह–स. पु. [फा] पारसियो के अनुसार पौ फटने से लेकर दोपहर तक का समय जिसमे वे पहली बार नमाज पढते हैं ।

हावभाव–स पु यौ. [स] १ प्रेमिका की वे शृगारिक चेष्टाएँ जिनके द्वारा प्रेमी को आकर्षित करती है, नाज, नखरा ।

उ०—१ पण हे अतरजामी, थू म्हारी इत्ती करडी परख क्यू ली । जिण नै घुरकार मेडी सू बारै काढियो, उणनै ई हावभाव सूं पाछो रिझावणो है ।—फुलवाडी

उ०—२ वूबना आप बादसाह सलामत नू अमल-पाणी कराय, हावभाव बताय नै वस करिया ।—जलाल वूबना री वात

उ०—३ बचन बिलास विनोद रस, हावभाव रति हास । प्रेम प्रीति सभोग रस, कै सिणगार आवास ।—ढो मा.

उ०—४ हावभाव लावै मद हासा, अेवट आट करत तमासा । सोभा रूप गान व्रत सोहै, महीप किसू इद्र मन मोहै ।—सू प्र.

२ नृत्य की मुद्राएँ चटक-मटक ।

उ०—१ अमरावती माही दैत्य दमनी इद्र कनै अखाडी नाचै छै । गावै छै । हावभाव ख्याल करै छै ।—पचदडी री वारता

उ०—२ गायणी व्रत सगीत, रग करत उरस रीत । करि हावभाव अनेक कटाच्छ मनमथ केक ।—सू प्र

३ प्रभाव ।

उ०—या तै हीरा के सरीर ऊपर सूरज रूपी जोबन आयो छै । हावभाव दरसायो छै ।—वगसीराम प्रोहित री वात

४ सकेत, भाव ।

उ०—गूगी रै धणी खवासजी सूं भेटका व्हिया तौ ई वै नी एक दूजा नै वतळायो अर नी सैध-पिछाण ई काढी । सुभट पिछाण लिया तौ ई की हावभाव नी जतळायो । —फुलवाडी

क्रि प्र.—करणा, दिखाणा ।

रू भे —हाइभाई, हाउभाउ ।

हावर–स पु —एक प्रकार का वृक्ष जो राजस्थान, मध्यप्रदेश, तथा मद्रास मे प्रचुर मात्रा मे होता है ।

हावै–वि —१ भयभीत, स्तभित ।

उ०—चली फौज चावै, हुवौ लोक हावै । अठी ऐ अछाया, उठी खेप आया ।—रा. रू

२ हर्षित, प्रसन्न ।

उ०—पूघरणा कोई पार न पावै, हारीया असुर हुआ सुर हावै । वनो द्रौपदी तणो वधावै, गुण जेरा नारायण गावै ।

—सिवदानजी बारहट

३ आश्चर्यान्वित, चकित ।

उ०—भडा वाघि सोभा सुरा हून आजे, रहै इद हावै जिसौ बीद राजे । अनेकं अनोपं गजं रूप ऐसो, करै एक ऐरापती दाप कैसो ।

—रा. रू.

४ किंकर्त्तव्य विमूढ, हतप्रभ ।

उ०—हुवौ सोच आसुरा, हुवौ मद मोच दिलेसर । हुवा देस भैचक्क, हुवा अवनेस भयकर । हावै हुए जिहान, हुए सामान दुरंगा । सादर गढ साहवा हुवौ आदर अण-भगा ।—रा रू

हावौ–स. पु —१ भय, आतक ।

उ० –हुवै सतं होमता हुए देखत जग हावौ ।—भगवान रतनू

२ आश्चर्य, अचभा ।

हास–स. पु. [स हास] १ हसने की क्रिया या भाव ।

२ हसी, मुस्कान ।

उ०—१ सखिया रै साथ इसी सोवै, ज्यू चिरम्या मैं मोती अनूप । होठा पर हास इसौ मोहै, ज्यू तारा री जोती सरूप ।—सकुतला

उ०—२ फिरि जिनुका जसका प्रकास मनु हसका सा विलास । किधु हर जू का हास, किधु सरद पुन्यु का सा उजास ।

—रा. सा. स.

उ०—३ सुदर भाळ विसाळ, अलक सम माळ अनोपम । हित प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम ।—रा. रू.

उ०—४ अधुरा हसणा सू उदै, विमळ हास दुतिवत । सो सध्या सू चद्रिका, फैली जाण फबत ।—बा दा

३ विनोद, मजाक, ठिठोली, दिल्लगी, व्यग, मसखरी ।

उ०—१ फाग खेलीजै छै । नाचीजै छै । हास विणोद कीजै छै ।

—रा. सा. स

उ०—२ वाहन विसी आणिग साचरि सव आकास । इद्र केहि 'ठाला पडि अप्सरा करसि हास ।—नळाख्यान

४ हर्ष, खुशी, उल्लास ।

उ०—१ नेत्रो मैं हास की लहर दरसावै, मुख राग की सोभा कमळ कू लजावै ।—रा रू

उ०—२ नदिखेण विहरण गयउ, गणिका कीधु हास हो । व्रस्टि करी सोनातणी, मइ तसु पूरी आस हो ।—स. कु.

५ निंदा, अपकीर्ति, अप्रतिष्ठा, जग हसाई ।

उ०– मैं पग छडू किस वजै, हुय हास हमारी । तेग वधी मैं तखत सैं, काची नह धारी ।—सू प्र

६ उपहास, खिल्ली, हसी ।

७ साहित्य में नौ प्रकार के रसो मे से एक ।

वि.—श्वेत । * (डिं को.)

हासउ—देखो 'हासौ' (रू. भे.)

चिन्ह निम्न प्रकार है —
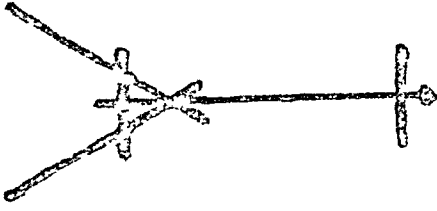
रू भे — हिंगोडी, हिंयोडी, हींयोडी, हींसोडी, हींगोळी।

हिंग्रोडौ–स पु. [देशज] काष्ट के मोटे डडो का कैंचीनुमा बना बढई का एक उपकरण जिस पर मोटे लट्ठे रख कर आरे से चीरे जाते है।

हिंगरडी–स. स्त्री.—किसी कार्य के लिए या किसी बात के लिए लगातार की जाने वाली ताकीद।

उ०—सगळी दोग्गत डूबगी। अर वाणियौ वसूली सारू हिंगरड़ी घाल दी। सगळी जायदाद बरडै घाल्या ई लेणौ नी चूकौ।

—फुलवाडी

हिंगळाज–स स्त्री —सिंध और बलूचिस्तान की पहाडियो मे स्थित लासबेला राज्य की हिंगोल नदी पर दुर्गादेवी की एक मूर्त्ति विशेष। यह स्थान करांची बदरगाह से उत्तर की ओर समुद्र के किनारे मे ४५ कोस दूर है।

उ०—१ माकडा भाड आराडमल, चाटया मसती चालिया। सिधराज जाग माजम ममत, हिंगळाज मग हालिया।—मे म

उ०—२ देवा दुरभि वज्जिया, हिंगळाज दरबार। माता सू गुण भज लिया, मुण नभ वयण मुरार।—रा रू.

रू भे.—हिंगुलाजा।

हिंगळू–स पु [स हिंगुल] इंगुर। (अमरत)

हिंगळू-ढोलियौ–स पु.—वह चारपाई या पलग जिसके पाये लाल रग से रगे हुए होते हैं।

उ०—हाय करा रे हिंगळू-ढोलिया रे, आछी, खातण होय-होय जाय। म्हासीजो रे जोवमा म्हारा राज।—लो गी.

हिंगामौ—देखो 'हंगामौ' (रू भे)

हिंगाटेल–वि —प्रचुर, पर्याप्त।

हिंगाष्टक-चूरण–स. पु. [स. हिंग्वष्टक-चूर्ण] वैद्यक का प्रसिद्ध, अजीर्ण नाशक व पाचक चूर्ण, इसमें हींग की प्रधानता रहती है।

हिंगुणी—देखो 'हिंगुण' (रू भे)

हिंगुळा–स स्त्री —वह प्रदेश जहा 'हिंगलाज' देवी की मूर्ति स्थित है।

वि० वि०—देखो 'हिंगळाज'।

हिंगुलाजा—देखो 'हिंगळाज' (रू भे.)

हिंगुलेश्वर–स पु.—ज्वर की एक आयुर्वेदिक औषधि विशेष।

(अमरत)

हिंज—देखो 'हिंग' (रू भे.) (हि को.)

हिंगूण–सं. पु —इगूदी का वृक्ष। (शेखावाटी)

रू भे —हीगण हिंगुणी।

हिंगूणियौ–स स्त्री.—इगूदी वृक्ष का फल। (शेखावाटी)

हिंगोडी—देखो 'हिंग्रोडी' (रू. भे)

हिंगोट–स पु. [स हिंगुपत्र] मझोले कद का एक झाडदार, कटीला जगली वृक्ष। इसका तना सफेदी लिये हुए मटमेले रग का होता है। फल मजबूत कपडे धोने के काम आता है।

रू भे — हिंगोटी हिंगोटौ, हिंगोरौ, हिंगोटौ।

हिंगोटियौ–स पु — हिंगोट' वृक्ष का फल।

हिंगोटी —देखो हिंगोट' (रू भे)

हिंगोटौ – देखो 'हिंगोट' (रू. भे.)

हिंगोरौ —देखो 'हिंगोट' (रू भे)

हिंगोळ —देखो हिंगळाज' (रू भे)

उ०—१ मनछा परब्रह्म हिंगोळ माता। समैं सात पोरा रमैं दीप साता।—मे. म

उ०—२ देवी माइ हिंगोळ पच्छम्म माता, देवी देव देवाधि वरदान दाता।—देवि

हिंगोळराय —देखो 'हिंगळाज'

हिंग्वादि-चूरण–स पु [स हिंग्वादि चूर्ण] हीग के योग से बनने वाला एक प्रकार का चूर्ण जो आनाह, अर्श, सग्रहणी, गुल, उन्माद आदि रोगो मे दिया जाता है।

हिंचणौ, हिंचबौ—देखो 'हिंचणौ, हिंचबौ' (रू भे)

उ०—'पदम' 'कुसळ' अवसाण सापनै, हिंचियौ खागा खडग हथ। कामण सदा जिका कथ कहतौ, कीध जिका हिज साच कथ।

--द. दा

हिंचणहार, हारौ (हारी), हिंचणियौ—वि०।

हिंचिओडौ, हिंचियोडौ, हिंच्योडौ—भू० का० कृ०।

हिंचीजणौ हिंचीजबौ—कर्म वा०।

हिंचियोडौ --देखो 'हिंचियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. हिंचियोडी)

हिंचोळणौ, हिंचोळबौ—देखो 'हिंचोळणौ, हिंचोळबौ' (रू भे.)

उ०—तनु तरणा सरखु हुवु, श्रूटइ रखै हिंचोळि। वनिता तुझनइ वागस्यइ, रहि रिदयानी खोळि।—मा. कां. प्र.

हिंचोळियोडौ—देखो 'हिंचोळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हिंचोळियोडी)

हिंजडौ—देखो हीजडौ' (रू भे.)

हिंजरणौ, हिंजरबौ–क्रि स —१ वियोग, विरह या किसी की याद मे निरन्तर रोना, करुण विलाप करना, सिर धुनना, झुरना।

२ वात्सल्य प्रेम मे विलाप करना।

३ किसी की ओर टकटकी लगा कर देखना।

४ किसी की शरण या आश्रय लेना।

हासौ —देखो 'हासौ' (रू भे)

उ०—१ उडं खाग ऊपरा, हसं नारद रिख हासौ। विढण एम वेखवं, तरण रथ थामि तमासौ।—सू प्र

उ०—२ काफी सेखोजी काम आया, तरं राजा सूडा रौ वंर पहरियौ थौ, सौ दसराहो पिण दिन २० मैं आयौ नै बोल रै सलूक दीसै नही छै। भाया मैं हासौ होसी। सूराचद पिण अळगौ नै राजा सू मामलौ करणौ, तिण सूं फिकर घणौ।

—जेतसी उदावत री वात

उ०—३ हायभाव लावै मद हासा। अेवट आट करत तमासा।

—सू प्र

हास्य-वि [स हास्य] १ हसने योग्य, उपहास करने योग्य।

उ०—सुणं हास्य विध कहै नरेसुर। गनिका ग्रेह आसण जोगेसुर। वनखड गिर झगर नह वसियौ, हुं औ देख कतूहळ हसियौ।

—सू. प्र

२ देखो 'हास' (रू. भे)

उ०—१ जुरं समीप दीपसो, प्रदीप जोवनी नही। मयक हास्य अक मैं निसक सोवनी नही।—ऊ का

उ०—२ रुखमणीजी का योवन आया अणद प्रकट हुअौ। इहा तौ चद्रमा का उदौ। रुखमणीजी कौ मद हास्य छै। सोई चद्रमा कौ प्रकास भयो।—वेलि टी

हास्यकथा-स स्त्री [स] हसी की बात, मनोरजक कहानी।

हास्यकर-वि [स] १ हसी आने लायक, हास्यास्पद।

२ हसाने वाला।

हाहत-अव्य.—अत्यन्त शोक सूचक शब्द।

हाहा-सं स्त्री. [अनु] १ हसी की आवाज।

उ० - सब धन कर स्वाहा, उठता आहा, हाहा हास हसदा है।

—ऊ का

२ रोने की आवाज, रुदन।

उ०—सारी सस्टी मैं कुंडळ छळ करियौ। भारी हाहा रव भूमडळ भरियौ। वसुधा काळी री ताळी तड वागी। भिडिया सोना री चिडिया पड भागी।—ऊ का

३ त्राहि-त्राहि।

४ अत्यन्त दुखी होने पर मुह से निकलने वाला शब्द 'हा', आह।

उ०—खारी रे आ समं दूखारी, हाहा वडी हत्यारी रे।—ऊ. का

हाहाकार-सं पु [स] बहुत बडी खलबली, होहल्ला, तहलका।

उ०—१ धना सेठ व स्रिगार मजरी नू लेय गया। गाव माहे हाहाकार हुवौ।—पचदडी री वारता

२ करुण पुकार, करुण विलाप, क्रदन, हायत्राय, कुहराम, रुदन।

उ०—१ देखं तौ देही निरजीव देखी तद हाहाकार सवद हुअौ।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ चखि पेखं साह धरा खगचाळो, जिद विना कळ नीद जुई। मचि दुद अपार दिली पुर मडळ, हाहाकार पुकार हुई।

—रा रू.

रू भे.—हहकार, हहकार, हहकार, हहाकार, हाकार।

अल्पा;—हहकारौ, हाकारौ, हाहाकारौ।

हाहाकारौ—देखो 'हाहाकार' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ भाई मारि भूडउ कियउ, हुयउ हाहाकारौ जी। सील राखण नारी सती, सील वडउ ससारौ जी —स कु

उ०—२ मुगल वसत लूट घणी, माम कोठार भडारो रे। माथै कीधी मेदनी, हुअौ गढ हाहाकारौ रे —प च चौ.

हाहाठीठी-सं स्त्री [अनु] हसी की आवाज।

हाहाहूहू-स पु —१ व्यर्थ का हल्ला, शोर।

२ व्यर्थ की हसी।

३ जोर की हसी।

हाहुळि हाहुळी स पु [देशज] १ उदार, दातार।

उ० —वाहुडं फतै कर सधर ऊभावरा, हाहुळी समद वढ चीत जेता'-हरा। भुजा अद लिया दत्त देण 'क्रण' भोज रा, महपता मुदी 'खुसियाळ' दध मोज रा।—विसनदासजी बारहठ

२ योद्धा, सूरवीर।

उ० —आरुहे गयद अवदळ अली, सँद महाबळ सद्दळा। हाहुळि असख मिळि हल्लिया, जाणक बावळ वद्दळा।—रा रू.

हाहू, हाहू-स पु [अनु] शोर, हल्ला, हलचल, चिल्लाहट।

उ०—१ अर इहा री फौज डेरा ऊपर आय खडी रही तद डेरा रै बाजार रौ लोग हाहू करणं लागियौ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ गोर मैं हाहू मचग्रोडी ही। एक कानी मोत्यार लाठिया मैं मजबूत गाळा घाल नैं घेरौ दिया ऊभा हा।—अमरचूनडी

हाहूवोर—देखो 'हाऊवोर' (रू भे)

हिं—देखो 'ही' (रू. भे)

उ० – अकळ तु हिज कै कोई अवर बोहोनामी बुभव्व।—ह. र

हिंग्रोडी-स स्त्री [देशज] दो मोटी लकडियो के एक-एक सिरे को परस्पर फसा कर बनाया हुआ एक प्रकार का कृषि उपकरण।

वि वि —करीब २-२ फुट की लम्बी दो लकडियो को एक सिरे से परस्पर फसा दिया जाता है। इसकी शक्ल अंग्रेजी के 'वी' (V) की तरह हो जाती है। किसान लोग नए वछडो (बैलो) को गाडी हल आदि के लिये प्रशिक्षण देने मे इस उपकरण को काम मे लेते हैं। एक लट्ठ के एक सिरे मे आडी लकडी फसा (बाध) कर उसे उक्त उपकरण मे फसा देते है और दूसरे सिरे मे जूआ बाध कर उससे वछडो को जोत कर दूर-दूर तक घुमाया जाता है। इस उपकरण का प्रयोग हल एव कुछ भारी सामान (चारा आदि) खेत मे ले जाने हेतु भी करते हैं। इसके लिए हल को इसमे फसा दिया जाता है और हरिसा के सिरे पर जूआ बाधा जाता है। इसका

हींडोळणो, हींडोळवो, हींडोलणौ, हींडोलवौ, हीडोलणौ, हीडोलवौ —रू० भे०।

हिंडोळाट-स. पु —एक पलग विशेष।

उ०—हिंडोळाट सुघाट हद, कचन मणि को काम। सेज सकोमळ मूं जुगन, झूल रहे नव ठाम।—गज-उद्धार

रू. भे —हिंडळाट, हींदोळाट।

हिंडोळि—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे)

उ०—ग्रह पुहर तणौ तिणि पुहपति ग्रहणी, पुहप ई ओढण पाथरणि। हरखि हिंडोळि पुहप मैं हिंडति, सहि सहचरि पुहपा सरणि। —वेलि

हिंडोळियोडौ-भू. का. कृ.—१ किसी पालने या झूले मे झुलाया हुआ २ लटका हुआ, लटकते हुए हिला हुआ, झूला हुआ ३ मथा हुआ, लहरें उठा हुआ, भावर पडा हुआ ४ हिलाया हुआ, झकझोरा हुआ।

(स्त्री हिंडोळियोडी)

हिंडोळी-स स्त्री [स] सगीत की एक रागिनी।

हिंडोळौ-स पु [स हिंदोलक] १ किसी पेड की मोटी डाल के लम्बी-लम्बी रस्सिया बाध कर बनाया जाने वाला झूला, जो प्राय श्रावण-मास मे बाधा जाता है तथा जिस पर नव युवतिया व नव वधूएँ झूलती है।

उ०—१ बनराह में हिंडोळौ माड्यो, रेसम री पट डोर; ओ जी। राणी रैणादे हीडण बैठ्या, धरती न झेलै भार, ओ जी। —लो गी

उ०—२ मेल्हइ बैराग, खेलइ फाग। अति सुविसाल आवानो टान। तिहा बाधहि हिंडोळा, रमइ नर भोळा।—रा. सा स.

उ०—३ सरिता री कळ कळ कामणिया, रम्मे ही घणी किलोळा मैं। हो रूप निहारे चारु कमळ, झूले हो लहर हिंडोळा मैं। —सकुन्तला

उ०—४ तव बलतो 'हरि' झुवियो रे मारघो 'नेम' नो हाथो। हिंडोला जिम हीसिया रे, गोप्या तणो इज नाथो।—जयवाणी

२ पालना।

३ वह वणिक जो व्यवसाय न करके माग कर खाता हो।

४ एक लोक गीत विशेष।

उ०—कोटडिया रामाजी मारनै साडा पाछी आणी तै नोर तळै पाणी पाय दोह कराय गईरानूं दूध पायो। उणमसै रा हिंडोळा—माटो लोव सो टतरो, गाधो माड री माघ। चढ्दि महोरा नेनमी, राजो तरवर बाध। नळो वटाऊ नीळो, लप धी अमावियो खाय। हाथ बैनरे मानरे, मैं कोटडिया जाय।—वा दा. ख्यात

वि.—मूर्ख, अज्ञानी।

रू. भे —हिंडोरो, हिंडोळि, हींडोल, हींडोलणो, हींडोळो, हींदाल, हिंदालक।

हिंडौ—देखो 'हींडौ' (रू भे.)

उ०—सात सहेल्या रै सागै आयी, बीरा गोद भतीजो ल्याई रे। पहली हिंडा दे मेरी सात सहेली, मनै फेर हिंडायी रे।—लो गी.

हिंताळ—सं पु [स हिंताल] एक प्रकार का जगली खजूर तथा उसका पेड़।

हिंद—स. पु [फा] भारत वर्ष, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त।

उ०—१ ऐळची हिंद सै इहा आय। जिस पास करी रद वदळ जाय।—सू. प्र

उ०—२ सतरज री रामत, केसा री कळप, पचाख्यान ग्रथ—ऐ नोसेरवा रै वकत तीन चीजा हिंद सू ईरान मैं गयी। —वा दा. ख्यात

रू भे —हींद।

हिंदआण—देखो 'हिंदवाण' (रू. भे.)

हिंदगी स स्त्री —हिन्दी भाषा। (अमरत)

हिंदव—देखो 'हिंदू' (रू भे.)

हिंदवाण, हिंदवाणौ —देखो 'हिंदवाण' (रू भे)

हिंदव —देखो 'हिंदू' (रू. भे)

उ०—१ नेत-बध बळा-नाथ दोय राहा 'छता' नंद, तुरक्का हिंदवा वदं तूझ वाळी तेग।—भगतराम हाडा रो गीत

उ०—२ जवन जोस वरजोर, हेक सम तोर हजारा। होण तवै हिंदवा एक लेखवै अपारा।—रा रू.

हिंदवसयाण, हिंदवसयान—देखो 'हिंदुस्तान' (रू भे.)

उ०—फतै तेग जेहान फैलता घणा राजडड रान घणा। राजा हिंदवसथान राखियो, तो भुजडड 'गुमान' तणा।

—नाथूराम लाळस

हिंदवाण-स. पु —१ भारतवर्ष, हिन्दुस्तान।

उ०—१ खत्रवट सरम सदा था खोळै, श्री हिंदवांण वचावो ओळै। समहर मो दळ लियो समेळा, 'भीम' सहत खुमाणा भेळा। —रा. रू

उ० —२ कठळ्यो घमसाण प्रमाण किसा, दहल्यो हिंदवाण दिसा विदिसा। त्रिदसालय चाव चढ्या तरुण्या, समचार थळी छत्रधार सुण्या।—मे म

२ हिन्दू-समाज, हिन्दू, आर्य।

उ०—१ हिंदूपति 'परताप', पत राखी हिंदवांण री। सहै विपति सताप, सत्य सपथ कर आपणी।—महाराणा प्रताप री सोरठौ

उ० —२ परीछत साहिजिहान सुत कोपियो, तक्षक हामण गहण स ह सुन तांणि। तपोधनि जही हिंदवाण चाढण प्रभति, जरू रखपाळ जैसिघ सुत जाणि।—राजा रामसिघ रो गीत

उ०—३ जगा रा आगि वरजागि घनो जैतसी, खाग ताहरै खैर छ गड गुरसाण। मगज रा कोटि मेधाण मूढै मरै, ऊबरै राजि री पीठि हिंदवाण।—राव जैतसिघ सेखावत रो गीत

५ घोडो का हिनहिनाना।

हिंजरणहार, हारौ (हारी), हिंजरणियौ—वि०।

हिंजरिश्रोडो, हिंजरियोडौ, हिंजरचोडौ—भू० का० कृ०।

हंजरणौ, हजरवौ, हींजरणौ, हींजरवौ, हीजरणौ, हीजरवौ —रू० भे०।

हिंजरियोडौ-भू. का कृ—१ विरह मे रोया हुआ, विलाप किया हुआ, सिर धुना हुआ, झुरा हुआ. २ वात्सल्य प्रेम मे विलाप किया हुआ ३ टक टकी बाध कर देखा हुआ. ४ शरण या आश्रय लिया हुआ. ५ हिनहिनाया हुआ।

(स्त्री हिंजरियोडी)

हिंजीर-म. स्त्री – हाथी के पैर मे बाधने की रस्सी या जजीर।

हिंडणौ, हिंडवौ—देखो 'हीडणौ, हीडवौ' (रू भे.)

उ०—ग्रह पुहर तणौ तिणि पुहपति ग्रहणौ पुहप ई ओढण पाथरणि। हरणि हिडोळि पुहपमें हिंडति, सहि सहचरि पुहपा सरणि। —वेलि

हिंडणहार, हारौ (हारी), हिंडणियौ—वि०।

हिंडिश्रोडो, हिंडियोडौ, हिंड्योडौ—भू० का० कृ०।

हिंडीजणौ, हिंडीजवौ—भाव वा०।

हिंडळणौ, हिंडळवौ—देखो 'हिंडुळणौ, हिंडुळवौ' (रू. भे)

हिंडळाट—देखो 'हिंडोळाट' (रू भे.)

उ०—कटहडा मडप कराळ, झळि काठ वभकत झाळ। हिम हीर जळि हिंडळाट, अगीर दमग उपाट।—सू. प्र.

हिंडळियोडौ—देखो 'हिंडुळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हिंडळियोडी)

हिंडाणौ, हिंडावौ—देखो 'हीडाणौ, हीडावौ' (रू भे.)

उ०—पहली हिंडा मेरी सात सहेली, मनै फेर हिंडायो रे। —लो गी.

हिंडाणहार हारौ (हारी), हिंडाणियौ—वि०।

हिंडायोडौ -भू० का० कृ०।

हिंडाईजणौ, हिंडाईजवौ—कर्म वा०।

हिंडायली-स पु—कूऐ के अन्दर की ओर लटकती हुई लकडी को बाधने वाली रस्सी। (मालेरियौ)

हिंडायोडौ—देखो 'हीडायोडौ' (रू भे)

(स्त्री हिंडायोडी)

हिंडी-स स्त्री [स] दुर्गा का एक नाम।

हिंडुक-स पु [स] शिव का एक नाम।

हिंडुळणौ, हिंडुळवौ-क्रि अ—१ हिलना, डुलना, झोले खाना, लटकना।

उ०—१ भर्ग भाळ सिंदूर ज्यौ ज्वाळ झाळा, मुद्राळी गळै हिंडुळै मुंडमाळा। भुजा भामणा ककणा सज्ज कीधा, लसै सूळ डैरू खडखप्प लीधा।—मे म.

उ०—२ महासूर सुरति मिळै ऊपटै 'सहसमल', मारका तो जिसा मिळै जुध मैंच। जडळका कटै बिचि गळै ठहरै जकै, परी वरमाळ जिम हिंडुळै पेच।—सहसमल राठौड री गीत

२ झूला-झूलना।

३ मस्त चाल मे झूमते हुऐ चलना।

४ मस्ती मे घूमना।

हिंडुळणहार हारौ (हारी), हिंडुळणियौ—वि०।

हिंडुळिश्रोडौ, हिंडुळियोडौ, हिंडुळयोडौ—भू० का० कृ०।

हिंडुळीजणौ, हिंडुळीजवौ—भाव वा०।

हिंडळणौ, हिंडळवौ—रू० भे०।

हिंडुळियोडौ-भू का कृ.—१ हिला हुआ, डुला हुआ, झोले खाया हुआ लटका हुआ. २ झूला झूला हुआ. ३ मस्त चाल से झूमते हुवे चला हुआ ४ मस्ती मे घूमा हुआ।

(स्त्री हिंडुळियोडी)

हिंडोरचौ—देखो 'हीडोरचौ' (रू भे.)

हिंडोरौ—देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे.)

उ०—१ अराहै सराहै घणू अव्वलोकं, रघौ नाग लोका तणौ राज लोकं। इसी भागणी कोण जै कूख जायो हिंडोरौ घलायो घरै हुल्लरायो।—नागदमण

उ०—२ आज आई छै सावणिया री तीज मिजाजीडा, खेलण चालौ चपाबाग मैं। ऊचै विरछ हिंडोरौ वाध्यौ, झोटा दैदै झुलावै मायण मोरी।—रसीलैराज री गीत

हिंडोल-स पु [स. हिन्दोल] १ गाधार स्वर की सन्तान एक राग विशेष।

२ देखो 'हिंडोळौ' (रू. भे)

हिंडोळणौ हिंडोळवौ-कि स. [स. हिण्डनम्] १ किसी झूले या पालने मे बैठाकर या सुलाकर झुलाना, झूले के हल्का सा धक्का देना, झूले के रस्सी बाधकर उस रस्सी को खीचना व छोडना।

उ०—कामण चली हिंडोळणै, गावै आल जजाळ। 'जस' अचभो न गावही जो वचै जभ काळ।—वि. स. मा.

२ हिलाना झकझोरना।

क्रि अ—३ रस्सी, माला, हार आदि का किसी आश्रय पर लटकना, लटकते हुऐ हिलना-डुलना, झूलना।

उ०—पेर्या नाग छोडिया जी, छोडो मीरा कै महल, हिवडै हार हिंडोळिया, कोई तुम जागो रघुनाथ।—मीरा

४ पानी की लहर या भावर उठना।

उ०—गिरह पनाळण, सर भरण नदी हिंडोळणहार। सूनो मेजड एकली, हइ हइ दइव म मारि।—ढो मा.

हिंडोळणहार, हारौ (हारी), हिंडोळणियौ—वि०।

हिंडोळिश्रोडो, हिंडोळियोडौ, हिंडोळयोडौ—भू० का० कृ०।

हिंडोळीजणौ, हिंडोळीजवौ—कर्म वा०, भाव वा०।

हिंदुमथान, हिंदुस्नान-स पु [फा. हिंदुस्नान] भारतवर्ष, आर्यावर्त, हिन्दुस्तान।

उ०—१ थू हिंदुमथान में, जगळधर देम न जाणै। जठै चवद्दह जणा, हुता राजा हिंदवाणै।—मे म.

उ०—२ कोपै हिंदुमथान पर, ग्रो ग्रायो ग्रजमेर। पाछै ग्रवरग हल्लियो, उड वाघै समसेर।—रा रू

उ०—३ दरमण तो परमेसर री, ताल मान सरोवर री, हस्ती तो कजळी बन री, पदमणी तो सिंहल द्वीप री, चतुराई गुजरात री, वासो तो हिंदुस्तान री, स्वाद तो जीभ री।—रा सा स

रू भे—हिंदवमथान, हिंदमथाण, हिंदसथान, हिंदुस्थान, हींदुमथान, हींदुस्तान, हींदूमथान, हींदूस्थान।

हिंदुस्तानी-स पु.—१ भारत का नागरिक, भारत का निवासी, भारतीय।

स. स्त्री.—२ भारत की भाषा, हिन्दी भाषा।

वि.—भारत का, भारत सम्बन्धी।

हिंदुस्थान—देखो 'हिंदुस्नान' (रू. भे.)

हिंदू-स पु [फा] १ भारत में वसने वाले मनुष्यो का वह वर्ग जो वैदिक संस्कृति का ग्रनुयायी हो, हिन्दू धर्म को मानने वाला भारतीय, ग्रार्य।

उ०—१ इंद्र धग व्रज ऊपरै, ज्या पेलै जळ जाळ। धर हिंदू सुर पोढवा, ग्राया चामरग्राळ।—रा रू.

उ०—२ हिंदू महाराजाधिराज स्रीराजान राजावत मारू ऐरावत सूरजवसी इण भांति रो छै।—रा सा. सं

२ हिन्दू धर्म का ग्रनुयायी।

रू भे.—हिंदव, हिंदव, हिंदु, हींदव, हींदु हींदू, हैंदू।

हिंदूकार-स पु—हिन्दू होने की ग्रवस्था या भाव, हिन्दुत्व।

उ०—१ हुवा तेणै वम हुवो हिंदूकार हरि हम। राव राजा जाणै राणा रावळ रढाळ।—नैणसी

उ०—२ हटकइ हिंदूकार घर घर प्रति हूवउ घणउ। मिळियइ मडप-राउ-तइ कुण ऊगरइ कधार।—ग्र. वचनिका

उ०—३ वेगम मरण वडा मड बणव्या, वोहो राजिया वदळियो भेम। हिंदूकार तणी हद हाडा, करता किया तेज मिर केम।

—राव भोज हाडा री गीत

रू भे.—हिंदूकर, हिंदुकार, हींदूकार।

हिंदूकुश-स. पु [फा. हिन्दूकुश] हिमालय मे मिली हुई ग्रफगानिस्तान के उत्तर में एक पर्वत श्रेणी।

हिंदूधरम, हिंदूध्रम-स. पु [फा हिन्दू+स धर्म] १ वह धार्मिक मत जिसका प्रतिपादन वेद, पुराण तथा उपनिषदो मे किया गया है, ग्रार्य संस्कृति।

उ०—१ धारो धणी रहै ग्रडावत, साम्हो ग्रालम ग्रनम मुणो। राणै ग्रकवर वार राखियो, 'पातल' हिंदूधरम पणो।

—दुरसो ग्राढो

उ०—२ राम धाम जसराज, गयो हिंदूध्रम ग्रागळ। मास सपत 'ग्रजमाल', मात ग्रभवास महावळ।—रा. रू.

२ हिन्दुग्रो के ग्राचार-विचार, हिन्दुग्रो के सिद्धान्त।

३ हिन्दुग्रो के रीति-रिवाज।

हिंदूपण, हिंदूपणौ-स. पु—१ हिन्दू होने की ग्रवस्था या भाव, हिन्दुत्व।

२ हिन्दुग्रो का गौरव।

हिंदूपत, हिंदूपति, हिंदूपती-स पु [फा हिन्दू+स. पति] हिन्दुग्रो का राजा।

उ०—हिंदूपत परताप, पत राखी हिंदवाण री। सहै विकट सताप, सत्य सपथ कर ग्रापणी।—दुरसो ग्राढो

रू. भे—हिंदुपत, हिंदुपति, हिंदुपती, हींदूपत, हींदूपति।

हिंदूवांण—देखो 'हिंदवाण' (रू भे)

उ०—हिंदूवांण री घ्राण देसाण हूगो, उणा री ग्रलकार प्राकार ऊगो। वुरज्जा चहूँ जाण लोकेस-वाका, प्रथी ग्राभ री वीच भागै पताका।—मे म

हिंदोरणौ, हिंदोरवौ-क्रि स—किसी तरल पदार्थ मे हाथ डाल कर इधर उधर घुमाना, मथना।

हिंदोरणहार, हारौ (हारी), हिंदोरणियौ—वि०।

हिंदोरिग्रोडौ, हिंदोरियोडौ, हिंदोरयोडौ - भू० का० कृ०।

हिंदोरीजणौ, हिंदोरीजवौ—कर्म वा०।

हिंदोरियोडौ-भू. का. कृ—हाथ डाल कर इधर-उधर घुमाया हुग्रा, मथा हुग्रा। (तरल पदार्थ)

(स्त्री. हिंदोरियोडी)

हियालो-स पु.—एक मारवाडी लोक गीत।

हियोड़ो—देखो 'हिग्रोडो' (रू. भे)

हियो—देखो 'हियौ' (रू भे)

उ०—मूळी रो हियो फूटण लागग्यो, चळभग्यो होल उपडग्यो चित्त भरम हुयग्यो।—दसदोव

हिम्र—१ देखो 'हिम' (रू. भे)

२ देखो 'हुव' (रू भे)

हिवणा, हिवणा-क्रि वि—ग्रभी, तत्काल।

उ०—पचम भगवती सूत्र सुधन्न, पनर सहस सतसैवावन्न। ग्याता धरम कथा ग्रंग छट्ठ, हिवणा पच हजारै दिट्ठ।—ध. व ग्र.

हिवळास-सं पु—धीरज, धैर्य, ढाढस।

उ०—कवरा माथै हाथ फेरज्यो, राणी नै हिवळास। भाई-भतीजा नै मुजरा कहज्यो, माजी नै घणा सिलाम।

—डूंगजी जवारजी री छावली

हिवाड़-क्रि. वि.—ग्रभी, इसी समय, तत्काल।

३ हिन्दू-धर्म, हिन्दुत्व ।

उ०—अजमेर कूच कर आवियौ, आण फेर घर ऊपरा । 'अवरंग' अग छिवतै वरस, हुटै मग्ग हिंदवांण रा ।—रा. रू.

रू भे—हिंदआण, हिंहवाण, हिंदवाणी, हिंदवाणी, हिंदुआण, हिंदुआन, हिंदुवाण, हिंदूवाण, हीदवाण ।

हिंदवांणी-स स्त्री.—हिन्दू जाति की स्त्री, हिन्दू-स्त्री ।

उ०—तठै मुलतान मैं पातसाह पातसाही करै । तैरै एक हुरम तिका हिंदवाणी, नाम गगा ।—देपाळ धघ री वात

वि —१ हिन्दुओ का, हिन्दू सम्बन्धी ।

उ०—१ धाणी तोपा भुजाणी दाखियौ कासवाणी धाड, फरंगां की मजौ चाखियौ सेला फूट । मिळतै पारका भीम ठाणी हिंदवांणी मौड, खरदै 'माधाणी' जगा जोणी च्यार कूट ।

—जसा आढा री गीत

उ०—२ वकसी मात राव 'वींका' नै, घर थळवट रजधाणी । रिडमल तणै मुरधरा राखी, है साखी हिंदवांणी ।—मे. म.

२ देखो 'हिंदवाण' (रू. भे)

उ०—बाधोडी कमरा ओ भाभीसा नही खोलो, लाजै म्हारी जरणी रो दूध ए । हिंदवाणी झगडै जूजिया ।—लो गी

रू. भे —हिंदुआणी, हिंदुवाणी, हीदणी, हीदूआणी ।

हिंदवाणी-वि —१ हिन्दुओ का, हिन्दू सम्बन्धी ।

उ०—१ थू हिंदुसथान मैं, जगळधर देस न जाणं । जठै चवद्दह जणा, हुता राजा हिंदवांणं ।—मे म.

उ०—२ एकादसी वरस हिंदवाणं, रोजा ईद भया तुरकाणं । करि करि ईद इग्यारसि रोजा, राम रहीम न पाया खोजा ।

—अनुभववाणी

उ०—३ वडा घरा की छोरी कहावो, नाचो दै दै तारी । वर पायौ हिंदवाणौ सूरज, अब दिल मैं कहा धारी ।—मीरा

२ देखो 'हिंदवाण' (रू भे.)

उ०—१ राजा करण माधव बाभण नागर तियैरी पुत्री घर माहै घाती । तिको जाय नै पातस्याह अलावदीन आगै पुकारियो । पातसाही फौजा लायो । पछै गुजरात तुरकै लियौ । पछै तुरकाणी राज हुवौ । हिंदवाणी मिटियो ।—नैणसी

उ०—२ महिहूत खप्पराणौ मिटै, हिंदवाणां मुरधर हुवौ । जोधाण 'अजौ' आयौ जदिन, दुजड पाण 'गजवध' दुवौ ।—सू प्र.

रू भे.—हिंदुवाणी ।

हिंदवाद-स पु —हिन्दुस्तान, भारतवर्ष ।

उ०—दाखै दाद हिंदवाद राज रीज वना भाखी । लाग्वा वाता गौरा दळा रटक्का लेवाड ।—राघोदास सादू

हिंदवासूरज-स पु —उदयपुर के महाराणाओ की उपाधि ।

हिंदवी-स स्त्री —१ हिन्दू-स्त्री ।

२ देखो 'हिंदी' (रू. भे.)

उ०—नकल फुरमाण पडगना बावना री । नकल हिंदवी अखर मैं । जलालुदीन महमद अकबर पातसाह गाजी ।—द. दा

हिंदवेराय-स. पु —हिन्दू-राजा ।

हिंदसथाण, हिंदसथान—देखो 'हिंदूस्तांन' (रू भे.)

उ०—१ 'केहर' रूप 'करन्न' रो, सब हिंदसथांणा । तेण प्रवाडा चितवा, खत्रवाट वखाणा ।—द दा.

उ०—२ जसवत विना जिहान, पान चळ जाणै पवनै । कना केतु साकप, थया मन हिंदसथानै ।—रा रू

हिंदी-स. स्त्री —१ भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा जो देवनागरी लिपि मे लिखी जाती है तथा सस्कृत की उत्तराधिकारिणी मानी जाती है ।

रू भे.—हिंदवी ।

२ किसी की भद्द, दिल्लगी, मखौल, खिल्ली ।

क्रि. प्र.—करणी, कराणी, होणी ।

हिंदु—देखो 'हिंदू' (रू. भे.)

उ०—अनेक हिंदु आसुरै प्रकोप सेल पिंजरै । वहै सहेत वारय, मुणत मार मारय ।—रा रू.

हिंदुआण—देखो हिंदवाण' (रू भे)

हिंदुआंणी-स स्त्री —१ हिन्दू-स्त्री ।

स पु [फा. हिंदुआन] २ तरबूज नामक एक देशी फल ।

३ देखो 'हिंदवाणी' (रू. भे.)

हिंदुआन-स पु [व व] १ हिन्दू-गण, आर्य ।

उ०—गढ ऊपरि वाता गई रे हलहलियो हिंदुआन । गढपति झाल्यो आपणो जी, कीज्यै केहोपान ।—प. च चौ.

२ देखो हिंदवाण' (रू भे)

हिंदुकर, हिंदुकार—देखो 'हिंदूकार' (रू भे)

२ हिन्दू-लोग, हिन्दू-जगत ।

हिंदुग-वि. —हिन्दुओ का, हिन्दू राजाओ द्वारा शासित ।

उ०—मिरजै इब्राहम इम कहियो जु न करै खुदाय जु घर की पातिसाही खोवूं । पातिसाह गुजरात ल्यो । हूं हिंदुग देस जाइ करि लेइसि ।—द वि.

हिंदुपति, हिंदुपती—देखो हिंदूपति' (रू. भे)

उ०—मैं अपणा क्रत करम सु असुर कुलै अवतारो रे । पूरव पुण्य प्रमाण सु, तू हिंदुपति सारो रे ।—प च चौ

हिंदुयछात-स पु —हिन्दुओ का राजा ।

हिंदुवाण—देखो 'हिंदवाण' (रू भे)

उ०—हिंदुवाण खुरसाण पाणि ग्रह पद्धर आया । कर मोसू घमसाण कुणै निज माण वचाया ।—रा रू

हिंदुवाणी—देखो 'हिंदवाणी' (रू भे)

हिंदुवाणौ—देखो हिंदवाणौ' (रू भे)

उ०—विमळ कतूहळ वधै, हुवौ उच्छव हिंदुवाणं । 'अवरग' चित ओदकै, तेज घाटियौ तुरकाणं ।—सू प्र

उ०—१ हिक मिवड पडै ग्रण ग्रारहट, सो पडिया वका सुहड। वैकुंठ गयो वीठल्न रो, ग्रजवसाह रावै ग्रचड।—रा रू.

उ०—२ छळी हिक मूणि सराव छकै, भर धूण पुलाव्र कवाव भखै। गहनो घट विड प्रतीत गणै, घरसै नभ मुड घमड घणै।

—मे म.

हिकमत-स स्त्री [ग्र. हिकमत] १ वुद्धि, ग्रक्ल, वुद्धिमानी।

उ०—१ पैदा किया घाट घट, ग्रापै ग्राप उपाइ। हिकमत हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाइ।—दादूवाणी

उ०—२ पाछै एक उमराव पूछी उण मैं हिकमत इसी काई थै इण पाणी नूं नही चखाइयो।—नी. प्र

२ उपाय, तरकीव, युक्ति।

उ०—हिकमत करो हजार, गढपतिया जाचो घणा। धीरज मिळसी धार, करम प्रवाणै किमनिया।—ग्रग्यात

३ विद्या ज्ञान।

उ०—इण देस रा घणा काम सोभाळ् होया विध्या वढै नै हिकमत ऊपजै।—नी प्र.

४ कला, कारीगरी, कौशल।

५ चतुराई, चालाकी।

६ नीति, चाल।

उ०—वचन उणरो दस्तूर ग्रक्ल नै कायदा हिकमत रा सू न फिरियो।—नी. प्र.

७ युनानी चिकित्सा।

८ चिकित्सा शास्त्र, ग्रायुर्वेद।

९ विज्ञान।

रू भे.—हिकमति, हिकमती, हिगमत, हीगमत।

हिकमति, हिकमती-वि [ग्र. हिकमत] १ ग्रपने कार्य मे कुशल, चतुर।

२ चालाक, नीतिज्ञ।

३ ज्ञानवान, पडित।

४ वुद्धिमान, ग्रक्लमद, व्यवहार-कुशल।

स. पु —१ वैद्य, हकीम।

२ देखो हिकमत' (रू भे)

उ०—१ गुड मीठो ऊडी नदी, ग्राय मिल्यो ए न्याय। हिकमति सो कोजो हिमैं, कोजे कोउ उपाय।—प. च. चौ.

उ०—२ माथै मुमट हुँता निर्प रे, तेह हुग्रा मति मद। हिकमति कांइ न केलवी, राय पडघो वहु फद।—प. च चौ.

उ०—३ नगावती मुक्त नै मिलै, चढि ग्रायो ग्रप चडप्रद्योतकि हिकमति करि हारावीयो, चाल्यो नै उदय नै पोत कि।—ध. व ग्रं.

हिकमन-स पु —१ दो या दो से ग्रधिक व्यक्तियो के परस्पर सम्बन्ध की वह दशा जिसमे भावात्मक एकता होती है। ग्रर्थात् जैसे किसी एक का मन वैसा सभी का मन, मिलकर रहने की ग्रवस्था, प्रेम, ऐक्य।

उ०—साहरो जोध जोता समद, कठहडै चढण मलफै कमद। किलमाण मीर हिकमन्न कीद, दइवाण पाण जमदाढ दीद।—वि. स.

२ एक मन।

वि.—एकाग्रचित्त, दत्तचित्त।

हिकरंगौ-वि.—१ जिसका रग कभी बदलता नही हो, एक ही रग मे रहने वाला।

२ जो ग्रपने ग्राचार विचार व सिद्धान्तो को कभी नही बदलता हो, ग्रपने ग्राचरण पर दृढ रहने वाला।

उ०—रैहणा हिकरंगाह, केहणा नही कूडा कथन। चित ऊजळ चगाह, भला ज कोई 'भैरिया'।—बळवतसिह

३ किसी रग से मिलते हुऐ रग का।

४ समान ग्रवस्था वाला।

हिकरदन-सं. पु [स. एक+रदन.] गणेश, गजानन।

उ०—रज गुलाल सोणित रगी, बरबर तण पर वाय। रमै फाग जण हिकरदन, सिंधुर इस्यो सुहाय।—रेंवतसिह भाटी

हिकोहिक-क्रि वि.—१ सव के सव, सभी।

उ०—परस्पर दपति सपति पाय, हिकोहिक भेट करै हरखाय। हली विहु ग्रोड भली चद्रहास, तणी तद वाग धणी सपतास।

—मे. म

२ एक-एक करके।

उ०—रही कटि फोज गई ग्रधरात, वेर्ई तद तेण हियै मझवात। जडै समसेर हिकोहिक 'जैत', पडै रण जूझि ग्रनेक पटैत।

—मे. म

३ परस्पर, ग्रापस मे।

हिक्कली-वि —ग्रकेली।

उ०—चलै कुचार वार को सुचार मैं चलावनी, हलै हसति हिक्कली हरम्म को हलावनी।—ऊ का.

हिगमत —देखो 'हिकमत' (रू. भे)

उ०—चद्रावती जूनै चद्रगढ रहै, तठै इमरती नू मेली। ग्रागै खबर देण री तो मिस नै हिगमत खेली।—र हमीर

हिगळग्रो-वि —'हिंगळाज' देवी के दर्शनार्थ यात्रा करने वाला।

हिगैमिग-स. पु.—हर्षोल्लास।

उ०—थाळी रै झणझणाटा सूं हवा रा रेसा चीरीजण लागा। मासी री गवाडी तो हिगैमिग लागी पण लागी। पण ग्राखा गाव माथै जाणै किहकिडायनै वीजळी पडी।—फुलवाडी

हिगोटो —देखो 'हिंगोट' (रू भे.)

हिगोणियो—देखो 'हिंगाणियो' (रू. भे)

हिडकणो-सं. पु.—१ पागल कुत्ता।

२ पागलपन के रोग वाला कोई पशु या मनुष्य।

हिडकणो, हिडकबो-क्रि स.—१ काट खाने के लिए टूट पडना, उचक कर ग्राना।

उ०—तठै देखें तो अस्त्री छै। देख नै माथो धूणै छै। मैं जांण्यो परमेस्वर रा घर-माहे घणी रीघ छै, नै आ जो म्हारै वैर होयनै इण रै पेट रो कोई नग नीपजै तो हू प्रथ्वी माहे अमर होवूं पिण हिंवारू वतळाऊ तो माथो वाढै।—जखडा मुखडा भाटी री वात

हिंस—देखो 'हींस' (रू भे)

हिंसक-वि [स] १ हिंसा करने वाला, मारने या वध करने वाला, हत्यारा।

उ०—चोर हिंसक नै कुसीलिया, यारै ताइ ही साधा दियो उपदेस। यानै सावद्य रा निरवद्य किया, एहवी छै हो जिन दया धरम रेस।—भि द्र

२ हानिकारक, अनिष्ट-कर।

३ दूसरो को कष्ट या पीडा पहुँचाने वाला।

स पु. [स] १ शत्रु, वैरी, दुश्मन।

२ जगली जानवर।

रू भे—हसक।

हिंसा-स. स्त्री [स.] १ किसी जीव को मारने की क्रिया या भाव, जीव हत्या, शिकार, वध, हत्या।

उ०—१ मारण मारण समझै मूरख, तारण लखै न ताई नै। रात दिवस हिंसा सू राजी, कर दै मात कसाई नै।—ऊ. का.

उ०—२ ससार सुपहु करता ग्रह सग्रह, गिणि तिणि हीज पचमी गाळि। मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारै करि मूकिया चडाळि।—वेलि

उ०—३ इम हिंसा झूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्या सेवाया अव्रत सीची तो उण रै लेखै व्रत पिण वधती कहिणी।—भि. द्र.

२ अहिंसा का विपर्याय।

३ ऐसा कार्य, हरकत या प्रवृत्ति जिससे किसी अन्य को पीडा, कष्ट या आघात पहुचे।

४ पीडा, कष्ट।

५ विनाश, नाश।

६ अनिष्ट, बुराई।

७ उत्पात, लूट-मार।

रू भे—हिंस्या।

हिंसा-करम-स पु. यौ [स हिंसा+कर्म] १ ऐसे कार्य जो हिंसा की सज्ञा मे आते है, हिंसात्मक कार्य।

२ वध, हत्या।

३ कष्ट, पीडा।

हिंसात्मक-वि [स] जिसमे हिंसा निहित हो, हिंसायुक्त।

हिंसा-धरमी-वि. [स. हिंसा+धर्मी] हिंसात्मक कार्यो मे विश्वास करने वाला।

उ०—हिंसाधरमी कहै हिंस्या बिना धरम नही हुवै।—भि. द्र.

हिंसार, हिंसारव-स पु. [स. हेषा+रव] घोडो की हिन-हिनाहट।

उ०—१ जसौल जवाव, सजत सताव। हिंसार हयद गराज गयद।—सु प्र.

उ०—२ हक होय हिंसारव साद हुवै, धूसा छक काहुळ भैर धुवै।—गो रू

हिंसावांन-वि—हिंसात्मक भावना रखने वाला, हिंसक, हत्यारा।

उ०—चोरी करमी चोर, जार करसी नित जारी। हिंसा हिंसावान, जवा रमसी जूवारी।—ऊ का

हिंस्या—देखो 'हिंसा' (रू भे)

उ०—१ आप नफो चाहे भलो, परको भलो न चाय। जनहरीया ता दिस्ट मैं, हिंस्या उपजी आय।—अनुभववाणी

उ०—२ थे हिंस्या मैं धरम कहो सो थारै लेखैं कुसील मैं पिण धरम ठहरचो।—भि द्र

हिंस्र-वि. [सं] १ हिंसक, हिंसात्मक प्रवृत्ति वाला, हिंसालु।

२ खूंखार, खतरनाक, भयानक।

३ अनिष्टकर, घातक।

५ निष्ठुर।

५ उपद्रवी।

स. पु [स] १ हिंसक पशु या जानवर।

२ शिव।

३ भीम का एक नामान्तर।

हि-स स्त्री [स] १ एक प्राचीन विभक्ति।

उ०—सुपनइ प्रीतम मुझ मिळ्या, हूँ लागी गळि गेइ। डरपत पलक न खोलही, मति हि विछोहउ होइ।—ढो मा.

२ टिटहरी। (एका)

स. पु [स हय] ३ अश्व, घोडा।

उ०—हाथ्या हि गज रथ वाहन दिवस दिवसि नित्य। नारि कहि करू, रायजी, काइ धरम केरा कृत्य।—नळाख्यान

४ खेद, अफसोस। (एका)

५ सर्प, साँप। („)

६ मोर, मयूर। („)

७ हाथ, पाणि। („)

वि.—१ हरा। („)

२ देखो 'ही' (रू भे)

हिअ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

हिअकाम—देखो 'हितकाम' (रू. भे)

हिअय—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

हिआउ हिआव-स पु. [स हृद] साहस, हिम्मत।

हिएसी, हिऐसी—देखो 'हितैसी' (रू. भे.) (जैन)

हिओ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे)

हिक-वि. [स. एक] एक।

वायु जो मुह से निकलते समय कण्ठ मे आघात करती है तथा इसके निकलने से कुछ आवाज होती है।

उ०—१ उठता-बैठतां खावता-पीवता हरदम उणरी आंख्यां रै आगै वा काळी अधारी मौत सू ई डरावणी रात फिरण लागती, जिण रात पनियै दिनूगा ताई सून थूकयौ अर सेवट हिचकी खाय नै गावड एक कानी लटकाय नाखी ही।—अमरचूनडी

उ०—२ मरतौ हिचकी लेवै टाबर, तूटै नभ मै तारौ। वेचै रमणी लाज, चानणौ कम पडग्यौ चदा रौ—चेतमांनखौ

उ०—३ जीव जोसै पडै सास हिचकी अडै, सैन ही सैन समभाय हारचौ। दास हरजी कहै जीव वासै रहै, धोग सू धकौ ऊन काय मारचौ।—जाभौ

वि० वि०—छीक की तरह इसमे भी वात गुल्म बनता है। वह मुह से निकलते समय गले मे झटका देकर आवाज करता है।

२ एक प्रकार का वात रोग जिसमे उक्त क्रिया वार-वार होती है।

३ ठोडी, चिवुक।

उ०—१ निनाण करती उणरी मा आयगी अर कस्सी रै हिचकी टेक नै ऊभी व्हैगी।—रातवासौ

उ०—२ पछै डोकरी हिचकी रा काळा मस्सा नै गिणती कॅरण लागी—थै दोनू मिळ परा नै बूढी डोकरी सू कोगता तौ नी करौ हो।—फुलवाडी

४ रह रह कर सिसकने का शब्द।

५ रहट को उल्टा घूमने से रोकने के लिये लगाई जाने वाली लकडी।

६ ऊट का एक रोग जिसमे वह खाना पीना बद कर देता है।

क्रि प्र—आवणी, चालणी, हालणी।

हिचकौ-स. पु.—१ धक्का।

२ लचका।

३ कष्ट, पीडा, तकलीफ।

४ परिश्रम, जोर।

क्रि. प्र.—आवणौ, खावणौ, देणौ, लागणौ।

रू भे—हचकौ।

हिचडगौ-स पु.—बडी-बडी टांगो वाला कीडा जो मदगति से चलता है। (शेखावटी)

हिचण-स. पु—१ युद्ध, लडाई।

उ०—घण बोलै जोधार, हिचण तोलै नभ हाथै। रण प्रारभ रूपरा, मडै आरभ किण माथै।—मे. म.

२ देखो 'हीचण' (रू भे.)

रू. भे—हचण, हिचावण, हिचि, हीचण।

हिचणौ, हिचबौ-क्रि स.—१ युद्ध करना, लडाई करना।

उ०—१ दहू दळ वाघक आण दुवाह, हिचै खग कुत मचै हथवाह। करै फिरमाळ यहै तिण काळ, गटै भटपाळक भाळ कपाळ।

—रा. रू.

उ०—२ अथा इण घादक घोर अनेक, हिचै रण हेकण हूं बहि हेक। सेना वण ओपम कोप कमाण, जाळै मक पडव गहर जाण।—मे. म.

उ०—३ ममोभ्रम 'बेहरि' पाय ममाय, हिचै 'फिरमाळ' भटां 'हरनाथ'। 'धनावत' 'अम्मर' जोर धियाग, गळा घट भूर करै भट माग।—नू प्र.

उ०—४ मभे मग भाट हणै गळ गाय, हिचै 'भगवांन' तणौ 'हरनाथ'। तठै 'करनौत' लडै मग ताहू, भटा मनि सामत अगद थाह।—नू. प्र.

२ टक्कर लेना, सामना करना, भिडना।

उ०—१ काळ हूकमि जिम काळ रा, फिकर फहरारै। होय नटा-पट्टा हिचै, विकटा वाकारै।—नू प्र

उ०—२ मचियै काकळ मदन रो, वीर न देगै वाट। एक अनेकां सू हिचै, छाती वजर कपाट।—बां. दा.

३ युद्ध मे वीर गति प्राप्त होना।

उ०—१ जगन्नाथ भाळत कौतुक जुद्ध, माळा कज मकर ठाठव मुद्ध। विनै बहू क्रूर किया गळबाहू। मिया रजपूत हिचै रण माहू।

—मे. म.

उ०—२ निहमै मळा 'नवल्ल' रौ, अगै दळां दुकाळ। हिच पडियौ रज रज हुवै, सादू सूरजमाल।—रा रू.

उ०—३ ईसतै अरक गंदळ अतुळ, गजा कमळ कीधा गरा। खळ प्रबळ मीर झडिया खगै, हिचि पडिया 'चापा' हरा।

—रा रू.

हिचणहार, हारौ (हारी), हिचणियौ—वि०।

हिचिग्रोडौ, हिचियोडौ, हिच्योडौ—भू० का० कृ०।

हिचीजणौ, हिचीजबौ—कर्म वा०।

हचणौ, हंचबौ, हचणौ, हचबौ, हिंचणौ, हिंचबौ, हींचणौ, हींचबौ, हीचणौ, हीचबौ—रू० भे०।

हिचरमिचर-सं. पु. यौ.—१ किसी कार्य मे आगा-पीछा सोचने की अवस्था या भाव, झिझक, हिचकिचाहट।

२ टालमटूल।

हिचावण—देखो 'हिचण' (रू. भे)

उ०—जणणी किणी न खाधौ जापै, खारण खाटौ खारौ। हेवै दळा हिचावण हीदू, हेको तेडण हारौ।—वीरभाण रतनू

हिचि—देखो 'हिचण' (रू. भे)

हिचियोडौ-भू. का. कृ.—१ युद्ध या लडाई किया हुआ. २ टक्कर लिया हुआ, सामना किया हुआ, भिडा हुआ. ३ वीर गति प्राप्त किया हुआ।

(स्त्री. हिचियोडी)

२ किसी पर अनावश्यक चेंटना, नाराज होना, लडाई करना ।
३ पागल होना । (पशु)

हिडकवा-सं. स्त्री.—१ पागल कुत्ते या गीदड आदि के काटने से होने वाली बीमारी जिसमे मनुष्य प्यास से व्याकुल रहता है पर पानी देख कर चिल्ला कर भागता है । इस बीमारी मे मनुष्य जिंदा नही रह सकता ।
२ पागलपन का रोग जो अधिकतर कुत्तो को होता है ।
३ पागलपन का कार्य, शैतानी ।
रू भे.—हिडकाव, हिडकियावाव, हीडकियावाव ।

हिडकायौ—देखो 'हिडकणौ' (रू. भे.)

हिडकाव—देखो हिडकवा' (रू. भे.)

हिडकियावाव—देखो 'हिडकवा' (रू भे.)

हिडकियौ, हिडक्यौ-स पु —१ पागलपन के रोग वाला कुत्ता। इस रोग के प्रभाव से कुत्ते के जबडे खराब हो जाते हैं और लार टपकने लगती है । किसी को जबरदस्ती काटने की ताक मे रहता है और यह जिसको काटता है उसे भी पागलपन का रोग हो जाता है ।
उ०—१ सौ पचास पावडा आगै निकळ्या बाद ठाकर बोलतौ—डरजै मत ए बाइ । ए हिडकिया कुत्ता है तौ म्हूँ ई भाटी भीमौ हू। फाड नै खाय जाऊ साळा नै समझ्या कै नी ।—रातवासौ
उ०—२ आम्ही-साम्ही तरवारा री लडाई मैं तौ आप सिरदारा सूं सिंघ अर हिडकिया कुत्ता ई डरै । उठै म्हारी अकल नी भवै ।
—फुलवाडी
२ पागल ।
उ०—दुसमणा लाभ दाना दहण, खुली न काना खिडकिया । नर परम धरम बूझै नही, हूकौ सूझै हिडकिया ।—ऊ. का.
क्रि प्र —उठणौ, होणौ ।
रू भे —हडकायौ, हडकियौ, हीडकियौ ।

हिडचाळ, हिडचाळौ-स पु [स हुडुचाल] १ सिंह, शेर।
२ भिडने वाला या टक्कर लेने वाला, योद्धा ।
उ०—१ चाळागारौ हिडचाळ करग करमाळ करारौ ।—रा. रू.
उ०—२ 'चाडा' रै वडचीत हुवौ रिणमल हिडचाळौ —रा रू

हिडदौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे.)
उ०—१ अदाता आपनै काई ठा' टाटघा रै हिडदा री पीड कैडी व्है । म्हे तौ जाणू कै टाट्या रा नाव बिचै कोळ्यौ हजार गुणौ वत्तौ ।—फुलवाडी
उ०—२ आध घडी रै उपरात वेद टिचकारी देवतौ कैवण लागौ, देखौ म्हारौ राम निकळियौ । एक ग्वास बूटी तौ भूल ई गियौ। बुढापा मैं हिडदौ काम ई नी करै ।—फुलवाडी
उ०—३ इमै सगत माणस नै धोवै रै जाळ मैं लेय'र मारता दया नी आई, पथर हिडदा मैं हया नी वापरी ।—दमदोख

हिडमच-स. स्त्री [अ. हिरमिजी] १ एक प्रकार की लाल मिट्टी विशेष ।
२ उक्त मिट्टी को घोल कर बनाया हुआ रग ।
रू भे —हिरमच, हिरमची ।

हिडमची-वि —उक्त मिट्टी के अनुरूप लाल रग का ।
स पु.—इसी रग का घोडा ।

हिचक-स स्त्री.—१ किसी कार्य को करते समय होने वाली झिझक, आगा-पीछा सोचने की प्रवृत्ति, सकोच, मन की रुकावट । किसी कार्य से पीछे हटने की क्रिया या भाव ।
उ०—कूजडौ मोळौ पडता कह्यौ—भला, आप ई आ काई बात करी, आपरै साथै वधौ करण मैं कैडी हिचक ।—फुलवाडी
२ भय, डर ।
३ अनिच्छा, उदासीनता ।
४ लचक ।
५ धक्का ।

हिचकणौ, हिचकवौ-क्रि. स.—किसी कार्य को करते समय झिझकना, सकोच करना, आगा-पीछा सोचना ।
२ अनिच्छा या उदासीनता दिखाना ।
३ पीछे हटना, मुख मोडना ।
उ०—वडौ हिम्मत रौ मरद मेहनत रा भार सू हिचकै नही ।
—नी. प्र.
४ डरना, भय खाना ।
५ लचकना ।
६ हिलना डुलना ।
हिचकणहार, हारौ (हारी), हिचकणियौ—वि० ।
हिचकिओडौ, हिचकियोडौ, हिचक्योडौ —भू० का० कृ० ।
हिचकीजणौ, हिचकीजबौ—कर्म वा० ।
हचकणौ, हचकवौ, हचक्कणौ हचक्कवौ, हिचकिचाणौ, हिचकिचाबौ—रू० भे० ।

हिचकिचाणौ, हिचकिचावौ—देखो 'हिचकणौ, हिचकवौ' (रू भे)
हिचकिचाणहार, हारौ (हारी), हिचकिचाणियौ—वि०
हिचकिचायोडौ —भू० का० कृ० ।
हिचकिचाईजणौ, हिचकिचाईजवौ—भाव वा० ।

हिचकिचाट, हिचकिचाहट—देखो 'हिचक' ।

हिचकिचायोडौ देखो 'हिचकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हिचकिचायोडी)

हिचकियोडौ-भू का कृ.—१ किसी कार्य को करते हुऐ झिझका हुआ, सकोच किया हुआ, आगा-पीछा सोचा हुआ. २ अनिच्छा या उदासीनता दिखाया हुआ ३ पीछे हटा हुआ, मुख मोडा हुआ. ४ डरा हुआ, भय खाया हुआ ५ लचका हुआ. ६ हिला-डुला हुआ ।
(स्त्री हिचकियोडी)

हिचकी-स. स्त्री. [सं हिक्का] १ पेट मे स्थित एक विशेष प्रकार की

हिणहिणाट, हिणहिणाहट–स. स्त्री.—१ घोडे के बोलने की आवाज।
उ०—चारेक घडी रात ढळिया मासी री गवाडी हिणहिणाट करतो घोडौ हीसियो।—फुलवाडी
रू भे —हणणाट, हणणाहट, हिणणाट, हिणणाहट, हिणहिण।

हिणहिणाणौ, हिणहिणावौ–क्रि. अ.—१ घोडे का बोलना, आवाज करना, हिनहिनाना।
२ हसना।

हिणहिणायोडौ–भू. का कृ.—१ बोला हुआ, हीसा हुआ २ हसा हुआ। (स्त्री. हिणहिणायोडी)

हिणा–क्रि वि [स अधुना] इस समय, इस वक्त।
उ०—फेर साहू विचारी—जे कदाचित्त हू हाथ पकडियो तौ हू तौ एकलो छू अर ए घणा छै। मनै मारि इयै नै परहो नै जासी। तौ वाणिया बुद्धि करनै हिणा तौ चुप रहू जावणौ।
—पलक दरियाव री वात

हिणियोडौ—देखो 'हणियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. हणियोडी)

हिणोडी–स स्त्री —वह गाय या भैंस जो दूध न देती हो। (ग्रांडणी)

हित–स पु [स] १ लाभ, फायदा, मुनाफा।
उ०—दया मया कौ माडहो, जीव जनेती साथि। हरीया तोरण तत का, हित लै वदू हाथि।—अनुभववाणी
२ भला, कल्याण, मगल।
३ आनन्द, सुख।
उ०—लखि तन प्रभा नयण सुख लीधो। कनिया दहू मिळै हित कीधो।—सू प्र.
४ शुभ कार्य, उपयुक्त कार्य।
उ०—गुरु गेहि गयौ, गुरु चूक जाणि गुरु, नाम लियौ दमघोख नर। हेक वडौ हित हुवै पुरोहित, वरै मुसा सिसुपाळ वर।
—वेलि
५ उपकार, भलाई, हित।
६ शुभ कामना।
७ तदुरुस्ती, स्वस्थता।
८ देखो 'हेत' (रू भे.) (अ. मा)
उ०—१ देवाळै पैसि अबिका दरसे, घणै भाव हित प्रीति घणी। हाथै पूजि कियौ हाथालगि, मन वछित फळ रुखमणी। वेलि
उ०—२ हित तिण प्यारा सज्जणा, छळ करि छेनरियाह। पहिली लाड लडाइ कई, पाछइ परहरियाह।—ढो. मा.
९ देखो हितु' (रू भे.)
१० देखो हेतु' (रू. भे)
उ०—१ हित पत धरम कैद वस हूवो, दियौ साह पूछण कौ दूवो।
—रा रू
उ०—२ आलम हाथ रो रघुनाथ धणरिज, प्रथम भूप अनक। दिल गहर दीधौ सरण हित दत, नहर हेकण नक।—र. ज. प्र.
रू. भे.—हिति।

हितकर–वि. [स.] १ हित करने वाला, हितकारी।
२ लाभप्रद, फायदेमद, फलदायक।
३ अनुकूल, उपयोगी।
४ स्वास्थ्यप्रद, स्वास्थ्य के लिए लाभकारी।
५ माफिक पड़ने वाला।

हितकाम–स. पु.—१ भलाई की इच्छा या भाव।
२ भलाई का कार्य।
वि.—१ भलाई करने वाला।
२ शुभेच्छु, हितेच्छु।
रू. भे.—हितकाम, हितकामी।

हितकामी—देखो 'हितकाम' (रू. भे.)
उ०—'सीमधर' युग मदिर स्वामी, वाहुजी सुवाहुजी हितकामी।
—जयवाणी

हितकार, हितकारक, हितकारी–वि [स हित—कार, कारक] १ हित करने वाला, भला करने वाला, उपकार करने वाला, उपकारी, शुभेच्छु।
उ०—१ मेरा सो हरिजन हितकारी, वाकै पेम भगति अधिकारी। समझि बूझि ऐसै नर भाई, मनवा एक दोय फळदाई।
—अनुभववाणी
उ०—२ हितुआ हितकारी हुवै, वाको ही कोइ वैण। पारिख रतन परीखतां, निरखे वाकी नैण।—ध व ग्र
उ०—३ वळ गहलोत वडा व्रत धारी, कमधा घणी तणा हितकारी। वीरमर्द पत धरम सवायो, जोम भुजै दूणी जाणायो।
—रा. रू.
उ०—४ कहे दास सगराम सुणौ सज्जन हितकारी। कर मुकत भज राम पनौती आई भारी।—सगरामदास
२ लाभ पहुँचाने वाला, फलदायक।
३ गुणकारी, फायदेमद।
४ कल्याणकारी।
उ०—उत्पतिया बुद्धि आगला, भिक्षु गुण भडार। हितकारी दृस्टत तसु, साभळता सुखकार।—भि. द्र
५ प्रेमी, स्नेही।
६ दया करने वाला, कृपालु।
७ आनन्ददायक, सुखप्रद।
रू भे.—हितकारौ, हितिकारी, हेतिकरण।

हितकारौ—देखो 'हितकारी' (रू. भे.)
उ०—खात खणी, गाठी छोडी नै, ताला कूची घर वाट वाडोजी। लाधी वस्तु नटू नही, ए कराय दौ हितकारौ जी।—जयवाणी

हिचोळणौ, हिचोळवौ–क्रि. स.—१ झूला झुलाना, झूले के धक्का देना, हिंडाना।
उ०—माता धोता अमल झुलरायो झोली, हालरि हुलरावियो, हीडोळ हिचोळी।—ध. व ग्र.
२ पकड कर हिलाना।
हिचोळणहार, हारौ (हारी), हिचोळणियौ—वि०।
हिचोळियोड़ौ, हिचोळिग्रोड़ौ, हिचोळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
हिचोळीजणौ, हिचोळीजवौ—कर्म वा०।
हचोळणौ, हचोळवौ, हिंचोळणौ, हिंचोळवौ—रू० भे०।
हिचोळियोड़ौ—भू. का कृ—१ झूला झूलाया हुआ, झूले मे धक्का दिया हुआ २ पकडकर हिलाया हुआ।
(स्त्री. हिचोळियोड़ी)
हिचोळौ–स पु.—१ धक्का, झोका।
२ झटका।
हिज—देखो 'हीज' (रू भे.)
उ०—१ वाधव पूरव अरध एण विध, यम हिज जाण जगण उत्तरारध। काय छठं थळ यक लघु कीजै, दुमट विखम थळ जगण न दीजै।—र ज प्र
उ०—२ अम्ह विसटाळै आवियो, लगि ज्या हिज लारै। कटक सुणि अगद कहै, पित तुझ प्रकारै।—सू. प्र.
उ०—३ साधु पणो लेइ चोखो पालै तै मोटा पुरुख। कइ कहै पाच में आरा में साधु पणौं पूरो पलै नही, इसो हिज अवारू निर्भं।—भि द्र
हिजरी–स स्त्री. [अ हिज्री] १ मुहम्मद साहब के मदीने भागने की तारीख।
२ इस्लामी सवत्सर जो हजरत मुहम्मद की हिज्रत से आरंभ होता है।
वि वि—इसका प्रारम्भ १५ जुलाई ६२२ ई. या श्रावण शुक्ला द्वितीया विक्रम सवत ६७९ से माना जाता है।
हिजारौ–स पु.—कमर तक की ऊचाई तक दीवार मे लगाया जाने वाला पत्थर।
हिजूर—देखो 'हुजूर' (रू. भे)
उ०—हाथी तुरग सवै लै हालौ। साह हिजूर सतावी चालौ।
—रा रू.
हिज्जे–स पु. [अ. हिज्ज] किसी शब्द के वर्ण, वर्णों की ठीक अवस्था व किसी शब्द के मात्रा सहित अक्षर।
वि. वि.—किसी शब्द में आने वाले वे वर्ण जो निर्धारित ढंग से रक्खे जाने पर ठीक अर्थ व्यक्त करते हैं। इस मे स्वर तथा व्यजनो की ठीक योजना की जाती है।
हिठाकर–वि—युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर।
हिडब—देखो 'हिंडिब' (रू. भे)

हिडवा—देखो 'हिंडिवा' (रू. भे)
उ०—चलण निहाइ जागिउं सहू पणमी वोलइ हिडवा वहू। माइ माइ ऊठाडउ राउ ए रूठउ अम्हारउ ताउ।—सालिभद्र सूरि
हिडवी–स. स्त्री [स हिडवक] १ भैंस, महिषा। (डिं. को.)
२ एक प्रकार का आइना, काच।
रू. भे.—हडवी, हडूबी।
४ देखो 'हिंडिवा' (रू भे.)
हिडवु—देखो 'हिंडिव' (रू. भे)
उ०—विस खप्पर कीचका वकु हिडंवु कमीरु मारिउ। लहु वधवि अरजुनि दुन्नि वार तुह जीउ ऊगारिउ।—सालिभद्र सूरि
हिडायलौ–स. पु.—कुए के अन्दर की ओर लटकती हुई लकडी (मालटियो) को वांधने वाली रस्सी।
हिंडिव–स. पु [स] १ एक राक्षस जो पाडवो के वनवास के समय भीम द्वारा मारा गया था।
२ भैंसा, महिष।
रू. भे.—हिडव, हिडवु।
हिंडिवा–स स्त्री [स,] हिंडिव राक्षस की वहन और भीम (पाडव) की पत्नी। इसका पुत्र घटोत्कच वडा वीर व पराक्रमी था।
रू. भे.—हिडवा, हिडवी।
हिडोकै–क्रि वि—इस वार, अव की।
उ०—इण च्यारा ही आय आप री माता नू सवण कहीया, माता, सवण तौ हिडोकै वारुसा छै।—वरसं तिलोकसी भाटी री वात
हिण—देखो 'इण' (रू. भे)
उ०—दादू हिण दरियाव, माणिक मझेई। ढुवी डेई पाण में डिठो हमेई।—दादूवाणी
हिणणाट, हिणणाहट—देखो 'हिणहिणाट' (रू. भे.)
उ०—मवती हिणणाट करै मवरी।—पा प्र.
हिंणणौ, हिणवौ—देखो 'हणणौ, हणवौ' (रू भे)
उ०—चढियो जस-कळस आदि लग 'चूडा', पै गज घाट गिळण गोपाळ। दाणव, देव, मानव कोय दाखौ, पग सू गज हिणतौ प्रित माळ।—गोपाळदास चूडावत रौ गीत
हिणणहार, हारौ (हारी), हिणणियौ—वि०।
हिणिओड़ौ, हिणियोड़ौ, हिण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हिणीजणौ, हिणीजवौ—कर्म वा०।
हिणहिण—देखो 'हिणहिणाट' (रू भे.)
हिणहिणणौ, हिणहिणवौ–क्रि स—१ घोडे का वोलना, हिनहिनाना।
२ जोर-जोर से हसना।
हिणहिणणहार, हारौ (हारी), हिणहिणणियौ—वि०।
हिणहिणिओड़ौ, हिणहिणियोड़ौ, हिणहिण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
हिणहिणीजणौ, हिणहिणीजवौ—कर्म वा०।
हणहणणौ, हणहणवौ, हनकणौ, हनंकवौ—रू० भे०।

हिदै, हिदौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ तजै नाम हिदै हु जो राजू, नही तजै तो मारि हूँ आजू। कहै प्रहलाद त्रिलोक म मावै, राज पाट की कोन चलावै।
—वि सं. सा.

उ०—२ हथळेवडै हरि जाणज्यो, आणज्यो हीयडइ गाढ। मोरो हिदौ वाजइ गयण गाजई, मेघ जिमि आसाढ।—रुकमणी मगळ

हिना-स. स्त्री. [अ] मेहदी, रक्तगर्भा।

हिफाजत-स. स्त्री [अ. हिफाजत] १ सुरक्षा, रक्षा, बचाव।

२ किसी वस्तु की ऐसी व्यवस्था जिसमे उस वस्तु की क्षति या नाश न हो, उचित प्रबन्ध, माकूल इन्तजाम।

उ०—पछै नोट उठायनै कोट री मायली जेब मैं हिफाजत सू घालतौ बोल्यो।—अमरचूनडी

३ देखरेख, देखभाल।

४ निरीक्षण, जाच।

५ होशियारी, सतर्कता, सावधानी।

हिवडौ—देखो 'हिवडौ' (रू भे.)

हिबोळौ, हिबौळौ—देखो 'हबोळौ' (रू भे)

उ०—१ उण एक दात रै पाण तो जाणै हंमी रौ अथाग समदर ई हिबोळा मारण लागो।—फुलवाडी

उ०—२ एक ठौड हिबोळा खावतौ सरवर देखनै वा उठै ढवगी। पाणी देखता ई उणनै तिरस लखाई।—फुलवाडी

हिमंचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू भे)

हिमत—देखो 'हेमत' (रू भे)

हिमस—देखो 'हिमासु' (रू भे)

हिम-स पु. [स. हिमम्] १ वर्फ, पाला, तुषार।

उ०—अब हिम विध सुसत अचवावै, पूरण हुय चूरण सुध पावै।
—सू प्र

[स हिम] २ ठडक, जाडा, सर्दी, शीत।

उ०—१ पिव चालै पदमण कहै, आयो मिगसर मास। चहू दिसा हिम चमकियौ, बालम हियै बिसास।—अग्यात

उ०—२ हिम वाधि हिम रित निसा हरणै, दिवस क्रिस गुणि देखियै। चित मोद निस प्रति मिटै चकवा, सुख चकोर विसेखियै।
—रा रू.

३ सर्दी का मौसम, शीतकाल, जाडे की ऋतु।

४ हिमालय पर्वत।

उ०—वामण चरण प्रताप विध, हिम पित गोरी विहन।
—रा. रा.

५ चद्रमा, चाद।

६ चदन।

७ मोती।

८ कमल।

९ कपूर।

१० मक्खन।

११ औषधि बनाने की एक प्रक्रिया विशेष जिसमें औषध को रात भर ठडे पानी मे भिगोकर सवेरे मल कर छान लिया जाता है।

१२ उक्त प्रकार स बनाई जाने वाली दवा, ठडा क्वाथ।

वि. [स. हिम] १ श्वेत, सफेद।

२ शीतल, ठण्डा।

३ देखो 'हेम' (रू. भे)

उ०—१ सर गिरवर तारै पदम अठारै, सेन उतारै जगत सनै। भिड रांवण भजै गढ हिम गजै, समरा रजै अहम अनै।
—र ज प्र.

उ०—२ ऊचो गढ लागो आकास, दूर सूझ्यो जाण्यो दविलास। दूर राणी तब वीधी हाम, हिम गढ चढीयो हेमाचळ पास।
—प. च चौ.

रू. भे.—हिंव, हिव।

हिमउपल-स. पु. [स.] वर्षा की बूदों के साथ कभी कभी पडने वाले वर्फ के छोटे छोटे खण्ड, ओला, हिम-खण्ड।

हिमकण-स. पु. [स. हिमकण] १ वर्फ का छोटा कण।

२ ओस की बूद।

हिमकर, हिमकरि-स. पु [स. हिमकर] चद्रमा, शशि।

उ०—१ है नभ जितै अहिमकर हिमकर, नरपुर अतै रहण री नीम। महत सुजस विसतार न मावै, भरत खड सभ गंगा 'भीम'।
—महाराजा मानसिंह

उ०—२ नयण कज सम निपट, सुभग आणण हिमकर सम। जप सम 'ग्रीवह' जळद, तवत सम हीर दसण तिम।—र ज प्र.

उ०—३ गजरा नवग्रही ओचिया ओचे, वळै वळै विधि विधि वळित। हसत नखित्र वेधियो हिमकरि, अरध कमळ अलि आवरित।—वेलि

२ कपूर।

रू भे—हमकर।

हिमकिर, हिमकिरण-स पु. [सं] चन्द्रमा, शशि।

हिमखड-स. पु. [सं] १ वर्फ का टुकडा।

२ हिमालय पर्वत।

हिमगर, हिमगिर—देखो 'हिमगिरि' (रू. भे)

उ०—अत थारो जस ऊजळो, जेहल दिस दिस जोय। हिमकर तौ घटवध हुवै, हिमगिर गळ जळ होय।—वा. दा.

हिमगिरसुता-स. स्त्री [स हिमगिरि+सुता] पार्वती, उमा।

हिमगिरि, हिमगिरी-स. पु [स. हिमगिरि] हिमालय पर्वत।

उ०—यौवन! जा रे पापीया, तू हिमगिरि पारि। भूडा! तुझनइ भोग विसि, भवि वीजइ भरथारि।—मा का प्र.

रू. भे.—हिमगर, हिमगिर।

हितचकोर–स पु [स चकोर+हित] चद्रमा, चांद।
हितचितक–सं पु [स] शुभचितक, शुभेच्छु।
हितचिंतन–स पु. [स] १ हित करने की इच्छा।
 २ हित व भलाई के लिये की जाने वाली कामना, शुभकामना।
हितव–स. पु —चारण कवि।
 उ०—हितवां स बीटिया अळग न होवै, छाए ऊपरि घर छात।
 मणिधर तेथि जेथि मळयातर, 'पाचौ' जेथि तेथि कवि पात।
 —नादण बारहट
हितवादी–वि.—हित की बात कहने वाला।
हितवारज–स. पु [स वारज+हित] सूर्य, रवि।
हितापन–वि —जिससे अपना हित हो।
 उ०—छोड गुमान कान दै सजनी, सौत लगाय रही है घतिया।
 रामलला सिखमान हितापन हरि हिय लाय जुडावै छतिया।
 —रामलला
हितारथ–क्रि वि [स. हितार्थं] हित के लिये, भलाई हेतु, कल्याणार्थ।
 उ०—हरि कौ हितारथ ऐसौ लखै न कोई। दादू जे पीव पावै अमर होई।—दादूवाणी
 सं. पु.—प्रेम, स्नेह।
 उ०—सुख सेझ रमता ढोलो मारवणी हितारथ सु धापै न छै।
 —ढो. मा.
 रू भे —हेतारथ, हैतारत, हैतारथ।
हिति —१ देखो 'हित' (रू भे.)
 २ देखो 'हितू' (रू. भे) (ह ना. मा)
 उ०—अनत देवकी अभ उपना, हिति देवा देतां अति हाणि।
 —ह ना मा
हितिकारी—देखो 'हितकारी' (रू भे.)
 उ०—हितिकारी हिरदै वसै, यु गुडीयन की डोरि। जनहरीया तन अतरै, मन मिळग्यो ता ओरि।—अनुभववाणी
हितिया—देखो 'हत्या' (रू भे.)
हितियारौ—देखो हत्यारौ' (रू भे)
 उ०—जीव मारया हितियारै रे, पाप लागा लारै रे।—जयवाणी
 (स्त्री हितियारण, हितियारी)
हितु, हितू–वि —१ हित करने वाला, भला करने वाला, हितेच्छु, शुभेच्छु हितैषी।
 उ०—१ आपै मारै आप कौ, यहु जीव विचारा। साहिब राखण-हार है, सो हितू हमारा।—दादूवाणी
 उ०—२ लेख हितू राजो थयो, देख अकब्बर साह। दक्खी साम 'दुरग' नू, सोच तमाम सलाह।—रा रू
 उ०—३ आगळ अपती वात उग्गारी, समै पाय निज अत सु विचारी। मुकनदास कर अरज मिळाया, लेख हितू अप पाय लगाया।—रा. रू.
 २ काम में आने वाला, उपयोगी।
 ३ अपने पक्ष वाला, पक्षधर।
 उ०—विगत सुणी सारी विपर, आया हितू हजूर। अरि भमराणी आवियौ, दळा न वै था दूर।—रा. रू.
 ४ दयालु, कृपालु, खैरख्वाह।
 ५ प्रेमी प्रिय।
 स पु.—१ मित्र, दोस्त, प्रेमी।
 २ भाई, सहोदर।
 ३ नातेदार, रिश्तेदार, सम्बन्धी।
 रू. भे —हित, हिति, हेतव, हेतु, हेतू।
हितेच्छु–वि [स.] १ हित चाहने वाला, भला चाहने वाला, शुभ-चिन्तक।
 २ कृपालु, दयालु।
 ३ सहयोगी।
हितैसी—देखो 'हितेच्छु'।
 रू. भे.—हिएसी, हिऐसी।
हितोपदेस–स पु [स हितोपदेश] १ सस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमे व्यवहार-नीति की बहुत सी अच्छी बातें कहानियो के रूप मे कही गई हैं।
 २ किसी का हित करने या भलाई करने के उद्देश्य से दिया जाने वाला उपदेश, अच्छी नसीहत।
हित्या—देखो 'हत्या' (रू भे)
 उ०—१ वीलहदेव अस कीन्ह विचारा, छोड देवौ सव राज दवारा। इनकै हित्या कर सतसगी, इह सब लोगन करै कुसगी।
 —वील्होजी
 उ०—२ तद आसकरण जाणियो, 'जो भाई हित्या लागी, अरु राज पण मिळियो नही।' तिण सूं लाज खाय नै तीरथा गयो।
 —द. दा.
हित्यारौ—देखो 'हत्यारौ' (रू भे)
 उ०—१ राजकंवर नै देखता ई दीवाणजी अर लक्खी विणजारा माथै तो जाणै वाण वेगो। दोनू जणा आधा होय न्हाटण लागा कै राजकवर आदेस करयौ—आ हित्यारां नै पकडो, जावण मत दो।—फुलवाडी
 उ०—२ खाधी जवै तो ई उण हित्यारा नै दया नी आवै। पूछ मरोड मरोडनै आटा कर दिया —फुलवाडी
 (स्त्री हित्यारण, हित्यारी)
हिदायत–स स्त्री [अ] १ आदेश, हुक्म, निर्देश।
 २ सन्मार्ग, पथ-प्रदर्शन।
 ३ गुरुमत्र।
 ४ चेतावनी।

रू भे—हिमचळ, हिमाचळ, हिमाजळ, हीमाचळ, हेमाचळ, हेमाचल, हेमाछळ, हेमाजळ।

हिमाजळ—देखो 'हिमाचळ' (रू. भे.)

हिमाद्रि—स पु. [स.] हिमालय पर्वत।

रू भे.—हेमाद्रि, हेमाद्री।

हिमायत—स. स्त्री [अ] १ पक्षपात, तरफदारी, समर्थन।

२ सहायता, मदद।

उ०—हिमायत अदल री जै नही होवै तो सबळा निबळा नूं मार खुआर करै।—नी प्र.

३ सरक्षण, रक्षा।

उ०—फेर उण री बचन इण भांति छै जिको हिमायत जीव री भाजणा मैं देखै छै सो विचार भूठो छै।—नी. प्र.

४ दोस्ती, मित्रता।

उ०—जै तू लडणै रो मतो राखै छै तो तोनू दस सरत री हिमायत करणी।—नी प्र.

५ प्रोत्साहन, थपकी।

रू. भे—हिमाइत, हीमायत, हेमायत।

हिमायती—वि—१ हिमायत करने वाला।

उ०—चौधरी रा सिगायोडा लोग छैनकी-बैनकी लगावणा जुटग्या। सागै-सागै वूढली रै हिमायत्या नै गाळ भी ठोरणा लागग्या।

—दमदोस

२ सहायक, मददगार।

३ पक्षपाती, समर्थक, तरफदारी करने वाला।

४ रक्षक, सरक्षक।

५ मित्र, दोस्त।

रू भे.—हीमायती।

हिमार—देखो 'हमार' (रू भे)

उ०—सीहै कह्यो—हिमार बात परगट करणी नही। हू रिण-छोडजी री जात कर आऊ। पछै लाखा ऊपर जामा।—नैणसी

हिमाराति—स. स्त्री [स. हिम+अराति] १ अग्नि, आग।

२ सूर्य, सूरज।

हिमारू, हिमारु—देखो 'हमार' (रू भे)

उ०—१ अर कह्यो—मोनू रावळजी देस भळायो छै, जै हूं हिमारू परणीजण आऊं तो हेमो तुरत महेवै आवै। हू आय न सकू।—नैणसी

उ०—२ जसवत नु कही इसडीक वात छै। तरै जसवत कह्यो—हु हिमारू भूखो थको अठै आयो छु।—राव मालदेव री वात

हिमाळय, हिमालय, हिमाळिय, हिमाळे, हिमाळै, हिमाळो—स पु [स हिमालय] भारत की उत्तरी सीमा पर फैला हुआ एक बहुत बडा पर्वत जिसकी माउट एवरेस्ट नामक चोटी विश्व की समस्त पर्वत चोटियो से ऊची है।

उ०—१ मतवाळी हरिचंद सं राजा, नीच घर नीर भरै। पांच पांडु घर कुंती द्रोपदी, हाड हिमाळय गरै।—मीरां

उ०—२ पोस करै निस बासर पाळो, इसो परहरै विकट हिमाळो। सेज ठरै एकला सियाळो, पदमण विहेनां छोडो पाळो।

—प्रयाग

रू भे.—हीमाळइ, हीमालउ, हीमाळै, हीमाळो, हेमाळ, हेमाळइ, हेमाळई, हेमाळय, हेमाळे, हेमाळै, हेमाळो, हैमाळै, हैमाळो।

हिमे, हिमै—देखो 'हमे' (रू भे.)

उ०—१ ऐ गांव छै हिमे बास जीवण मालदे रा नै हरदास रायपोदास रा छै।—नैणसी

उ०—२ दुय विलास मन प्रेम हुय धारै सविता प्रग। जपूं हिमें सो मत जथा, सियवर कथा प्रसग।—र रू.

हिमेण—स पु—प्रथम गुरु के गणगण का नाम। (र. ज. प्र.)

हिमेस—स. पु [स. हिमेश] १ हिमालय पर्वत।

२ देखो 'हमेस' (रू भे)

हिमैं, हिमै—देखो 'हमैं' (रू भे)

उ०—१ तरै डूगर रावळ समरसी नै राखियो सु डूगर सीस मासर थम, हिमैं डूगरपुर बसायो छै तठै रहता।—नैणसी

उ०—२ हिमैं दिन च्यार आरा घाल नै उमादै आपरा भरतार सो कहियो थे जुबान या तद मैं बोलणो बोलायो थो।

—पचदडी री वारता

हिम्मत—स स्त्री [अ] १ साहस, हौसला, उत्साह, जोश।

उ०—१ मूळी भूजी-बळै। पेमजी धूजं-दळै। ओपरी अर उलाडी तावै नी आवै। पेमजी दबग्यो. कैणी री हिम्मत नही पटै। मूळी सिर चढगी।—दसदोख

उ०—२ ईराण वतन हिम्मत अथाह, सिर दिलद तुज्ज सिरखा सिपाह। सामहो न हालै ग्रह सार, भूम रो न झालै सेस भार।

—वि स.

२ बल शौर्य, पराक्रम।

उ०—१ झगडो अबकै जबरो चेत्यो, अलेखा चीणी कीडिया रै ज्यू आपणी काकड माथै चढनै आया है। आपणा जवान हिम्मत अर बा'दरी सू वारै मुकाबला मैं भिडियोडा है।—अमर चूनडी

उ०—२ मामो-भाणेज दोन्यू डील रा सैतान अर छाती रा वज्जर। काळजो इसो कै दोन्यू मिळनै हजारा मिनखा रो सामनो करण री हिम्मत राखै।—अमर चूनडी

३ कठिन व दुस्साध्य कार्यों के लिये रखी जाने वाली मानसिक दृढता।

उ०—म्हारी चिंता नै म्हू सहन कर सकू हू, पण टाबरियां रा दुख नै सहन करणो म्हारै हिम्मत रै आगै री बात है।

—अमर चूनडी

रू भे.—हिमत, हीमत, होमत, हीमत्त।

वि —श्वेत, सफेद । (डि. को.) *

हिमगु–स. पु. [स.] चन्द्रमा, शशि ।

हिमचळ —देखो 'हिमाचळ' (रू. भे.)

हिमची—देखो 'हमची' (रू भे)

हिमजा–स. स्त्री. [स.] १ पार्वती, उमा ।

२ गगा नदी ।

३ हरड, हर्रे, हरितकि । (अ. मा, ह ना. मा.)

४ आवा हल्दी का पौधा ।

हिमत —देखो 'हिम्मत' (रू. भे.)

हिमतण-स. स्त्री.—वह स्त्री जो साहसी हो, निर्भीक हो ।

हिमतभरियो–वि.— १ साहसी, निर्भीक ।

२ बहादुर, पराक्रमी ।

रू भे.—हिम्मतभरियो ।

हिमताळू–वि —साहसी, हिम्मतवान ।

उ०—मारग री अवळी वेळा मे जै ईनक जिसा हिमताळू चलार नही हुवता तो आज ठिकाणो लागणो मुसकल हो ।

—एक वीनणी दो वीन

हिमद्रजा–स स्त्री [स हिम+अद्रि+जा] पार्वती, उमा ।

उ०—रमै हिमद्रजा तुही अनेक रूपनी, अवै 'ममुद्रजा' स्वरूप मद्र ऊपनी ।—मे म.

हिमप्रकास–स पु [स हिमप्रकाश] १ शीतल प्रकाश ।

२ चांदनी ।

हिमभान, हिमभानु–स. पु. [स. हिमभानु] चन्द्रमा, शशि ।

हिममयूख–स पु [स] चन्द्रमा, चांद ।

हिमरके, हिमरकै–क्रि वि —इस बार, अब की ।

उ०—तरै ईडर रै धणी कह्यो—हिमरकै आपै ही खेडा री बाधण करस्या । पछै ऐ मेवाड आया ।—नैणसी

हिमरस्मि–स पु [स हिमरश्मि] चन्द्रमा, शशि ।

हिमरा–स स्त्री —तरफदारी, पक्षपात ।

उ०—जीया जितै पूरी सारी पख पाळी अर हियाळी सू राख्यो । हर वात मैं हिमरा चढ्या अर भीर बोल्या ।—दसदोख

हिमरित, हिमरितु–स स्त्री [स हिम+ऋतु] हेमन्त ऋतु ।

उ०—सोळसै साक चववीस तास, मधि हिमरित वर अघण मास ।

—सू. प्र.

रू भे —हिमरुत ।

हिमरुचि–स पु [स] चन्द्रमा, चांद ।

हिमरुत—देखो 'हिमरितु' (रू भे)

उ०—यी वरखा रित वौळवी, वीती सरद अदुंद । हिमरुत आधी वीच त्यौं, फेर प्रगट्टयो फद ।—रा रू

हिमवत, हिमवत–वि.—१ हिम के समान, बर्फ जैसा ।

२ शीतल, ठडा ।

स. पु. [स हिमवत्] हिमालय ।

रू भे.—हैमवत ।

हिमवतपरवति–स. पु [स हिमवत्+पर्वत] हिमालय पर्वत ।

उ०—एतला प्रदेस माहरी वास भूमि, पुण हिमवत-परवति पद्म-द्रहि एक कोडि वीस लाख साधिक पद्मि परिवरिउ तिहा माहरउ वास ।—व स.

हिमवांन–स पु [हिमवत्] १ हिमालय पर्वत ।

२ चन्द्रमा ।

वि —१ जिसमे हिम हो, बर्फीला

२ ठडा, शीतल ।

हिमवार–स स्त्री —हेमन्त ऋतु का समय, शीतकाल ।

उ०—समत मेक सपत्त, मिळै गुणसठो छमच्छर । सरप पार हिमवार, सकळ रित हूं रित सुदर ।—रा. रू

हिमसैलजा–स स्त्री. [स हिमशैलजा] पार्वती, उमा ।

हिमसुत–स पु [स] चद्रमा ।

हिमहित–स पु.—चद्रमा ।

हिमाचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू भे)

उ०—नदी जु पूर वहती थी सु घटि होण लागी । अर हिमांचळ परवत्त का स्रिग वधण लागा । जैसे जोवन कै आयै नायिका की कटि खीण होय । त्यौं नदी खीण हुई ।—वेलि टी

हिमांणी, हिमानी —देखो 'हेमाणी' (रू भे.)

हिमामदस्तो—देखो 'हमामदस्तो' (रू भे)

हिमासु हिमासू, हिमासु–स पु [स हिमाशु] १ चन्द्रमा ।

उ०—कन्ध्वसो विस्णू कमळ भव जिस्णू स्तुति करै । हिमासू उस्णासू पदम-पद पासू सिरधरै ।—मे म

२ कपूर ।

३ रजत, रूपा, चादी । (ह. ना मा)

रू भे —हिमस, हेमसु, हेमसू ।

हिमाइयत—देखो 'हिमायत' (रू भे)

उ०—बहराम नू इणरी हिमाइयत पसद आई । घोडो तो लीन्हो नही आपरै घर पाछो आयो ।—नी प्र

हिमाकत–स स्त्री [अ] मूर्खता, बेवकूफी ।

हिमाचळ–स पु [स हिम+अचल] १ हिमालय पर्वत ।

उ०—१ देख तपती ताव सू, मुरधर अख रै भाण । हियो हिमाचळ आभळचो, वह चाल्यो वरफाण ।—लू

उ० —२ सबळ जळ सभिन्न सुगध भेट सजि, डिगमिग पाउ वाउ क्रोध डर । हालियो मळयाचळ हूत हिमाचळ कामदून हर प्रसन कर ।—वेलि

२ शिव के श्वसुर का नाम जो हिमप्रदेश का शासक था, पार्वती का पिता ।

हिरण–स पु [स. हिरण्य] १ स्वर्ण, सोना।

उ०—वा व्रत किया अनेक, हिरण दै दै विप्रा हथ। ज्या सधिया अठ जोग, त्या किया कौटक तीरथ।—र. ज प्र

२ द्रव्य, धन, दौलत, सपत्ति। (ह ना मा)

उ०—तीरथ जात समस्त, सफळ साधा मिळ सगा। रास तमामा रमै, हुलस नाचै हुडदगा। साजी मेळा साग देव राखी चंदोळी। मिदर मडी मसाण, होळिका फाग हरोळी। भागवत कथा भूतावळी हिरण दरस हिंडोरचा, परवीण होय जाणै पुरस, मालजादा रा मोरचा।—ऊ का

३ देखो 'हरिण' (रू. भे.) (ह ना. मा)

उ०—१ इतरै बीच हिरणा रा डार आय नीसरै छै। तिकै किण भात रा हिरण छै।—रा सा स

उ०—२ तीतर, सूवटा री बोली सुणिया अबै उण नै ऊबका आवता। अबै नी हिरण आछा लागता अर नी खिरगोस।

—फुलवाडी

४ देखो 'हरण' (रू भे)

उ०—जग रा रूप वाच रा जुजठिळ इळ रा थभ कुळ रा अजुआळ। दुख रा हिरण देव रा हिरसण पन रा प्रवित्त छै ब्रंन रा पाल।—ल. पि

रू. भे.—हरण, हरन, हिरिण।

हिरण-उपवन–स. पु. यौ —ब्रह्मा। (डिं ना. मा.)

हिरणक, हिरणकस—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—हुय सूअर हिरणक हणौ, धरती उर चारै। चद रवी चलै, धूतै थिर सारै।—भगतमाळ

२ देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे)

उ०—हिरणक राकस तू ही नर सिंघ निदाणा।

—केसोदास गाडण

हिरणकसप हिरणकसिपु, हिरणकस्यप–स पु [स हिरण्यकशिपु] १ एक दानव जिसने शिव के वरदान से एक अर्बुद वर्षो के लिए सारे देवताओ का ऐश्वर्य प्राप्त किया था। इसने मेरुपर्वत को भी हिलाया था।

२ कश्यप एवं दिति की दैत्य सन्तानो मे से एक सुविख्यात असुर, जो दैत्यवश का आदिपुरुष माना जाता है।

उ०—१ नरहर डर प्रहलाद निवारै, हिरणकसप वप नखा प्रहारै। ईखै दुरयोधन अनियाई, सकळ पाडवा चीत सभाई।—रा रू

उ०—२ हिरणकस्यप जिसा प्रथमी साल प्रचड।—अ मा.

वि वि —दैत्यवश मे उत्पन्न तीन इन्द्रो मे से यह एक था। शेष दो इन्द्रो के नाम थे—प्रह्लाद व बलि। यह एव इसका भाई हिरण्याक्ष वशकर दैत्य माने जाते हैं क्यो कि अधिकाश दैत्यकुल इन्ही के पुत्र-पौत्रो के द्वारा चलाये गये थे। मगध नरेश जरासध भी इसी के अश से उत्पन्न हुआ था।

कश्यप ऋषि द्वारा किये गये अश्वमेध यज्ञ के समय कश्यप-पत्नी दिति गर्भवती थी और दस हजार वर्षो मे उक्त गर्भ को पेट मे ही पाल रही थी। जब दिति यज्ञ मण्डप मे होतृ के लिए रखे मुख्य सुवर्णासन पर जा बैठी तब उसी सुवर्णासन मे प्रसूत हुई, एव उसका नवजात शिशु वही सुवर्णासन पर अधिष्ठित हुआ। इस प्रकार जन्म से ही सुवर्णासन पर अधिष्ठित होने के कारण इसे 'हिरण्यकशिपु' कहा गया।

इसने अपने भाई हिरण्याक्ष के वध का बदला विष्णु से लेने हेतु ब्रह्मा की कठोर तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने इसे वर दिया कि घर मे या बाहर, दिन मे या रात मे, मनुष्य से या पशु से, शस्त्र से या अस्त्र से, सजीव से या निर्जीव से, शुष्क से या आर्द्र से, यह अवध्य रहेगा। इस वर के कारण इसने घोर अत्याचार शुरु कर दिये।

इसकी तपस्या-काल मे इसकी पत्नी कयाधु गर्भवती थी। इसकी अनुपस्थिति मे नारद ने उसे विष्णु-भक्ति का उपदेश दिया, जिसका प्रभाव उसके गर्भ में स्थित बालक प्रह्लाद पर भी पडा। इससे वह जन्म से पूर्व ही विष्णुभक्त हो गया। हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद की विष्णुभक्ति नष्ट करने के अनेकानेक प्रयत्न किये पर इसे असफलता ही मिली। अत तग आकर इसने प्रह्लाद से कहा, 'सारे चराचर मे भरा हुआ तुम्हारा विष्णु इस खम्भे मे भी होना चाहिये। तुम इसे बाहर आने के लिए क्यो नही कहते?' इतना कहते ही खम्भे से श्रीविष्णु का रौद्र नृसिंहावतार प्रकट हुआ एव नाखुनो से सायकाल के समय इसका वध किया।

पूर्वजन्म मे यह व इसका भाई हिरण्याक्ष भगवान् विष्णु के जय व विजय नामक द्वारपाल थे। पुनर्जन्म में यह रावण बना।

रू भे —हणकस, हरणक, हरणख, हरणखुर, हरणकस्यप, हरणकुस, हरणकुस, हरणक्ख, हरणख, हरणाकस, हरणाकुस, हरणाख, हिरणायख, हरिणाईख, हरिणख, हरिणाकुस, हरिणाक्स, हरिणाकुस हरिणख, हिरणक, हिरणकस, हिरणाक, हिरणाकस, हिरणाकुस, हिरणाख, हरिण्यकसिपु, हिरण्यकस्यप, हिरनकस्यप।

हिरणखुरी–स. स्त्री —१ वर्षा ऋतु मे उगने वाली एक लता विशेष, जिसके पत्ते हिरन के खुर से मिलते-जुलते होते हैं।

२ रात्रि मे हरिन के बैठने का स्थान।

उ०–हिरणखुरी दो आगळी, धरती लाख पसाय। लिखिया भखिया ना टळै, जहा पासा तहा दाव।—अग्यात

रू. भे —हिरनखुरी।

हिरणखिख—देखो 'हिरणाक्षी' (रू भे.)

उ०—लागा कुसुप सरीख वप, ज्यारै पडै खरोट। हद नाजक हिरणखियां, हे माभळ हमरोट।—बा दा.

हिरणगरभ—देखो 'हिरण्यगरभ' (रू. भे.)

(अ. मा; ना. मा, ह. ना. मा.)

हिम्मतभरियौ—देखो 'हिंमतभरियौ' (रू. भे.)
हिम्मति, हिम्मती—देखो 'हीमती' (रू भे)
उ०—वड विना क्रामति न को वीरति, पिंड हुई मत जाय सपति।
हमैं इण भति घरौ हिम्मति, पुळौ पर खिति रहौ नरपति।
—रा. रू.
हिय—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)
उ०—१ वाररी वात वालावकस विए रैं, हियैं रैं मांहि तकलीफ हूगी। जरा हू याद पोहकरी जिम करी जद, पयादा हूरी ज्यौ इद्र पुगी।—मे. म
उ०—२ सान्ह चलतइ परठिया, आगण वीखडियाह। सौ मई हियइ लगाडिया, भरि भरि मूठडियाह।—ढो मा.
हियडलु, हियडलौ—देखो 'हिरदौ' (अल्पा, रू भे.)
उ०—१ हियडलु राति नइ दिवस हीसैं।—स. कु.
उ०—२ अरध मडित नारी नागिला रे, खटकइ म्हारा हियडला वारि रे।—स. कु.
हियडौ—देखो 'हिरदौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ सदेसडैं न जिवाय, जा नयणां दिन दीस। नेडौ नीर न तिस हरैं, जा हियडैं नही पीस।—पचदडी री वारता
उ०—२ प्रीतम तोरइ कारणइ, ताता भात न खाहि। हियड़ा भीतर प्रिय वसइ, दाझणती डरपाहि।—ढो मा
उ०—३ दादू इस हियडैं यह साल, पिव बिन क्योंहि न जाइसी। जब देखू मेरा लाल, तब रोम-रोम सुख आइसी।—दादूवाणी
हियड, हियडउ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे)
उ०—१ हियडइ ताहरइ हे सखी, यण हरनु थड वक। अलग घरइ आलिगता, रायगणि जिम रक।—मा का प्र.
उ०—२ जगडड ए जासक जूहिय, मू हियडउ निरधार। देखउ केवडी केवडी, जेवडी करवत धारि।—जयसेखर सूरि
हियडलइ, हियडलउ, हियडलौ—देखो 'हिरदौ' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ नेम नगीनउ मइ पायउ, सखिजी, एह अमूलिक नग्ग। गुण गुफी प्रेम कुदन जडी जी, राखिसि हियडलइ रग।—स कु
उ०—२ हु तउ मूरख ए अतिजाण ए असरीखउ किम घटइ ए। वली विमासिइ हियडला माहि, दैवचिता नवि जाणीइ ए।
—हीराणद सूरि
हियडौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)
उ०—चोली नीला नेत्रनी, कणयर वन्नु चीर। आभरणे उद्योत अति, हरतो हियडा हीर।—मा का प्र
हियत्थ-स. पु —हितार्थ, मोक्ष। (जैन)
हियरौ—देखो 'हिरदौ' (रू. भे.)
हियां-अव्यय —यहा, इस जगह।
हियाखाई-स स्त्री [स हृदय-खाति] १ किसी बात या कार्य के प्रति होने वाली हिचक, सकोच।
२ भय, डर।
३ शका, सदेह।
हियाफूट, हियाफूटोडौ, हियाफूटौ-वि. (स्त्री हियाफूटी, हियाफूटोडी)
१ मूर्ख, नासमझ, बेवकूफ, शिर-फिरा।
उ०—१ अकबर कूट अजांण, हियाफूट छोडैं न हठ। पगा न लागण पाण, पणधर राण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ
उ०—२ मात पिता मैं दोसण मोटो, प्रथम मिळ्या सुख पाई नें। नग दोना मिळ श्रो निपजायो, हियाफूट हरखाई नैं।—ऊ का.
२ खिन्नचित्त, उदास।
रू. भे —हीयाफूटौ, हीयाफूट, हीयाफूटोडौ, हीयाफूटौ।
हियाळी, हियाली-स स्त्री.—१ वात्सल्य, प्रेम, स्नेह।
उ०—हुस्यार करचौ, मुनीम वणायौ, व्याह माड्यौ, अर घर पक्कौ करायौ। जीया जितै पूरी सारी पख पाळी अर हियाळी सू राख्यौ।—दसदोख
२ तसल्ली, धैर्य, ढाढस।
३ हसी, मजाक।
४ बदतमीजी, अभद्र व्यवहार।
रू. भे.—हीयाळी, हीयाळि, हीयाळी, हीयाली।
हियाव-स पु.—लगाव।
उ०—लोह अकोड करैं अनियाव, चाडी चुगली सू घणौ हियाव।
—वील्होजी
हियाहीण, हियाहीन-वि [स हृदय+हीन] १ मूर्ख, अज्ञानी।
२ कायर, डरपोक।
३ क्रूर, दयाहीन, हृदयहीन।
रू. भे —हीयाहीण।
हियु, हियु, हियू, हियौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)
उ०—१ दव जिम दीठइ करुणए, करणइ ए हियुं निकामु। मरूउ वरूउ दमनकि मन, किहि नही य विस्रामु।—जयसेखर सूरि
उ०—२ रही कटि फौज गई अधरात, वेई तद तेण हियै मझ वात।—मे म.
उ०—३ नित समरू एहनौ नाम रे, सहु वातैं समरथ स्वाम रे। हिव पूगी हिया नी हाम रे, श्रोहिज मुझ आतम राम रे।
—ध व. ग्रं.
उ०—४ जब जब सुरत लगै वा घर की, पल पल नैनन पानी। ज्यौं हियैं पीर तीर सम लागत, कसक कसक कसकानी।—मीरा
उ०—५ हियैं तहव्वर खान रै, व्यापी यौं विपरीत। दाह अकब्बर भोगयौ, 'नौरग' साह नचीत।—रा. रू.
हिरणख—देखो 'हिरणकस्यप' (रू. भे)
हिरणखी—देखो 'हरिणाक्षी' (रू भे.)
उ०—जिम नौ गुण अवनी अमर, जिम हिरणखी हार। इम गढवा बाधा गळैं, जेहल राजकुवार।—बा. दा

उ०—विमळानन विबुधेस विहारी, सख चक्र धारी सुमरण। भव तारण भूधर भय भजण, हिरणगरभ त्रय ताप हरण।—र ज प्र

हिरणचवौ—स पु—एक प्रकार का घास।

हिरणजप, हिरणझप—स पु—१ डिंगल का एक छद (गीत) विशेष जिसके प्रथम चरण मे १६ मात्रा, द्वितीय मे १४ मात्रा, तृतीत चरण मे २४, चतुर्थ और पचम चरण मे १४-१४ तथा छठे चरण मे २४ मात्राऐ होती हैं। इसके पहली, दूजी, चौथी व पाचवी तुक के अंत मे भगण तथा नगण और अंत मे लघु होता है। तीसरी व छठी तुक के अंत मे जगण होता है।

२ मृग की छलाग।

हिरणदा—स स्त्री [स हिरण्यदा] पृथ्वी। (डिं को)

हिरणरेत—स पु [स हिरण्यरेतस्] १ अग्नि, आग।

२ शिव, महादेव।

३ सूर्य, रवि।

४ बारह आदित्यो मे मे एक।

रू भे—हिरण्यरेत, हिरण्यरेता।

हिरणलौ—देखो 'हरिण' (अल्पा, रू भे)

उ०—किहा गया कुवरजी प्रभात का, किण ठामै किण ठोर वे। राणी कहै रे हिरणला, ताहरी वाहर जोय वे।—रीसालू री वात

हिरणाखी—देखो 'हिरणाखी' (रू भे)

हिरणाक, हिरणाकस, हिरणाकुस—१ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

२ देखो 'हिरणाकस्यप' (रू भे)

उ०—१ करकै तरवार ग्रहै हिरणाकुस, मूढ निरोस निवार मुडै। सुत कै वळ एक मुरार तणौ सज, थभ विडार गिलार थडै।—भगतमाळ

उ०—२ करचौ रूप नरसिंघ कौ, सुण्यौ सत कौ साद। हिरणाकुस फाडचौ उदर, राख लियौ पहळाद।—गज-उद्धार

उ०—३ हिरणाकुस प्रल्हाद सतायौ, जार अगन विच डाल दियौ री। राज छाड दियौ नाव न छाडचौ, खभ फाड प्रभु दरस दियौ री।—मीरा

उ०—४ पुत्र हिरणाकुस २०, पुत्र पहिलाद २१ पुत्र वैरोचन २२, पुत्र वलिराजा २६।—रा वमावळी

उ०—५ जेण कसासुर मारियौ, मध कीचक समदर मथै। मुर हिरणाकुस हिरणाख, अगज गज उनथ नथै।—वि स सा

हिरणाख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—१ जेण कसासुर मारियौ, मध कीचक समदर मथै। मुर हिरणाकुस हिरणाख, अगज गज उनथ नथै।—वि स सा

उ०—२ प्रथम्मी जाती रेस पयाळ, दाढा विच राखी दीन-दयाल। रामी धरवार किता तै राम, सभै हिरणाख विखै सग्राम।

—ह र

हिरणाखि, हिरणाखी—१ देखो 'हरिणाक्षी' (रू भे)

उ०—१ हिरणाखी रुखमणीजी त्याका कठ कै विखै। अतरि जु सरसती थी। सु मानौ वाहरि लाल रूप करि प्रगट हुई छै।

—वेलि टी

उ०—२ हिरणाखी हस हाली चरजा उचारै। सेवक पढत सतूती देवळ निज द्वारै।—मे म

उ०—३ माळवणी तू मन समी, जाणइ महू विवेक। हिरणाखी हसिनइ कहइ, करउ दिसाउर एक।—ढो मा

२ देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—लकापति रावण कहा, कुभ करण कहा वस। हिरणाकुस हिरणाखि कहा, महकासुर कहा कस।—ह पु वा

हिरणायख—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)

उ०—हिरणायख हाणै सख सभाणै, हयग्रीवा खळ हता है। हरणाकुस हत्तै महण सु मथ्थै छित लै वळि छळता है।

—र ज प्र

हिरणावटियौ—स पु—कच्चे झोपडे के मध्य मे स्तम्भ रूप खडे किये हुए काष्ठ के ऊपरी हिस्से पर चारो ओर लगाई जाने वाली लकडी।

हिरणावटी—स स्त्री—मोट के खाली होने वाले स्थान पर लगे पत्थर मे सीधी खडी लगाई हुई लकडी।

हिरणियौ—स पु—१ गरीव व्यक्ति।

२ देखो 'हरिण' (अल्पा, रू भे)

हिरणी—स स्त्री—१ मादा हरिन, मृगी।

उ०—१ जिणि दीहे तिल्ली त्रिडइ, हिरणी झालइ गाभ। ताह दिहा री गोरडी, पडतउ झालइ आभ।—ढो मा.

उ०—२ विडरी हिरणीं सी फिरणी विजकाती, मुखडौ मुसकाती जोरौ जतळाती। आलै भक आटा कोलै जिम कुयिगी, हावर भामणिया सामणिया हुयगी।—ऊ का

२ सोन जुही। (अ मा, ना मा)

३ स्वर्ण की चमक।

४ मृगशिरा नक्षत्र।

५ देखो 'हिरणीखूटौ'।

रू भे—हरणी।

हिरणीखूटौ—स पु—गाडी मे लगाया जाने वाला लकडी का डडा जो बोझा ढोने के निमित्त माकडे मे सीधा खडा किया जाता है। ऐसे चार डडे लगाये जाते हैं।

हिरण्ण—देखो 'हिरण्य' (रू भे)

हिरण्मय—स पु [स] १ ब्रह्मा।

२ जबू द्वीप के नौ खण्डो मे से एक खण्ड जो कि श्वेत व शृंगवान पर्वतो से घिरा हुआ है।

३ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

वि—१ सोने का।

हिराळी—देखो 'हरियाळी' (रू भे)
उ०—परवत रै सयत सीनै पर, उफणै हो रूप हिराळी रौ। हो हियौ मुळकतौ दरसावै, पत्तै पत्तै ग्रर डाळी रौ।—सकुतळा

हिरावडौ-वि (स्त्री हिरावडी) हरियाया।
उ०—विदवाना ग्रर धनवाना री सगत, साथै देस सेवा भी। मारजा तौ सै चीजा छोड'र हिरावडै पमुरो सी लक्कड, गळै में वैर वाध लियौ है।—दसदोख

हिरावळ—देखो 'हरावळ' (रू भे)

हिरासत-स स्त्री [ग्र] १ कैद, हवालात।
२ निगरानी, चौकीदारी, पहरा।
३ नजरवदी, नजर कैद।
४ निरीक्षण, जाँच।
५ देख-रेख, चौकमी।
६ गिरपत, कब्जा।

हिरिण—१ देखो 'हरण्य' (रू भे)
२ देखो 'हिरण' (रू भे)
३ देखो 'हरिण' (रू भे) (ह ना मा)

हिरिदौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)
उ०—हरीया ढूढत मै फिरू, पेम पीयारा मित। ता हिरिदै की दाखवु, मेट हमारी चित।—ग्रनुभववाणी

हिरिम-वि [स ह्रीमान्] १ लज्जावान, लज्जाशील।
२ शिष्ट, सभ्य।

हिरौळ—देखो 'हरावळ' (रू भे)

हिळणौ, हिळवौ-क्रि ग्र [स हिल्] १ चस्का लगना, लगाव होना, लगना।
उ०—१ हरि सुख सागर पर हरया, कीच रह्या लपटाय। जन हरिदास ता जीव कू, हिळीयौ हाडौ खाय।—ह पु वा
उ०—२ हिळता हिळता हाय भिळी मत दुख सू भाई। मिळ मुरदा मनवार करौ मन वुरी कमाई।—ऊ का
उ०—३ भख ग्रवर न भावै घणा भरोसै, ग्रोमभि ग्रावै नही दळै। करणा तूझ कटारी कटका, गटका हिळी पठाण गिळै।
—करणसिंघ चहवाण रौ गीत
२ ग्रादी होना, निर्भर होना, प्रवृत्ति का भुकाव एक ही तरफ होना।
उ०—१ वूठा वरसै मेह ग्रर दीठा राचै चोर। हिळ्योड़ो वळै हवेली ग्रावैला।—फुलवाडी
उ०—२ मोचगा लागा कै कीकर कुचमादी नै पकडै। डोकरी नै तौ धारै कोनी। हिळ्योडो घडी-घडी ग्रठी इज ग्रावै।
—फुलवाडी
३ ग्रनुरक्त होना, ग्राशक्त होना, ग्राकर्पित होना।
४ घुसना, पैठना।
हिळणहार, हारौ (हारी), हिळणियौ—वि०।
हिळिग्रोडौ, हिळियोडौ, हिळ्योडौ—भू० का० कृ०।
हिळीजणौ, हिळीजवौ—भाव वा०।
हेळणौ, हेळवौ—रू० भे०।

हिलणौ, हिलवौ-क्रि ग्र [स हिल्] १ चलायमान होना, चलना।
उ०—सनाहै ग्रमत्ली, हिलै फौज हल्लौ। लडगै ग्रलेखै, दिली ख्याल देखै।—रा रू
२ स्थिर न रहना, हिलना, डुलना।
उ०—लडफा उतारण वाळौ मी। मोग माथै पाणी री कोरी मटकी। उघाडी डील। पण वै टिमची री गळाई हिल्या नी कोई डुल्या।—फुलवाडी
३ चलना, जाना, सरकना, ग्रपने स्थान मे टलना, इधर उधर होना, खिसकना।
उ०—गोडा जाणै मुडग्या व्हे ज्यू, उण सू तौ ग्रागै लारै हिलीजियौ ई कोनी।—फुलवाडी
४ कापना, धूजना।
उ०—वापडा भोळा पछिया रा तौ चुग्गा-पाणी हा जठै रा जठै ई छूटग्या। वारी कुरळाट सुणनै ग्राभौ हिलण लागौ।—फुलवाडी
५ झूमना, लहराना।
उ०—'रतना' मै धिटाई प्रगट हुई लाज थी सू भागी, पायल विछिया मौन कीवी कटि मेखळा वागी। छिव मैं छिलिया, हार हमेल हिलिया। छातिया थहरै केस छूट छहरै। कुचा पर फावी ग्रलकरी वोकस, कलभरा कुभा जाणै मदन महावत रा हीज ग्राकस।—र हमीर
६ जमकर न रहना, विचलित होना, डिगना, चचल होना।
७ कोई हरकत होना, हिलना।
८ चचल होना।
९ फिरना, घूमना।
हिलणहार, हारौ (हारी), हिलणियौ—वि०।
हिलिग्रोडौ, हिलियोडौ, हिल्योडौ—भू० का० कृ०।
हिलीजणौ, हिलीजवौ—भाव वा०।
हलणौ, हलवौ—रू० भे०।

हिलब-स स्त्री—एक गुफा विशेप।
उ०—मुसलमान रै कितावा मैं लिखै है—ग्रगरेजा रै ग्रागै रूम रौ पातसाह भाजि हिलब मैं जावसी, पछै इमाम महदी हुसी, कित्ताहीक वरस पातसाही करसी, पछै ग्रगरेजा रै हाथ ग्रौ सहीद पछै कयामत हुसी।—वा दा ख्यात

हिलबी—देखो 'हिलवी'।

हिलम-स स्त्री [स हिल्म] १ भल मनसाहत, भलाई।
उ०—काई छै घणी हिलम नरमी जिकी जहर दै तोनू तिण नू मिस्त्री देय कम मत ना रहै।—नी प्र

धारण कर लेना कि वह कभी भुलाई नही जा सके।
वि — हृदय या चित्त मे समाहित।
रू भे — हीयागम।

हिरदै, हिरदौ–न पु [स हृदय] १ प्रत्येक प्राणी के शरीर मे वक्ष-स्थल के नीचे स्थित वह शारीरिक अवयव जो समस्त शरीर मे रक्त सचालन करता है तथा जिसके स्पदन से श्वास प्रक्रिया चलती है। (Heart)
उ०—१ हिरदै रोग स्वास अरू खास, डभ क्रिया तिहा पच प्रकास। हुदै लीक अरू वरत्तुल च्यार, दभ अस्थि कै मध्य विचार। —ध व ग्र
उ०—२ रसना प्रथम सत सवद कु दिढ करि, दूसरै कठ लिव पेम आया। तीसरै सास उसास हिरदै उठै, चतुरथै नाभ घट खेल लाया।—अनुभववाणी
उ०—३ राम राम रसना लीया, मास दोय विसराम। हरीया हिरदै कठ मैं, सागर वरस मुकाम।—अनुभववाणी
२ मस्तिष्क या चित्त की वह चेतना शक्ति जिसके द्वारा प्राणी के मन मे रागद्वेष, हर्ष-शोक, प्रेम आदि की अनुभूतिया होती है तथा जिसके द्वारा वह प्रत्येक वात के औचित्य पर विचार करता है। अन्त करण, चित्त, मन।
उ०—१ साधु मिळै तव ऊपजै, हिरदै हरि का भाव। दादू सगति साधु की, जव हरि करै पसाव।—दादूवाणी
उ०—२ हिरदै ऊणा होत, सिर धूणा अकवर सदा। दिन दूणा टैंसोत, पूणा व्है न प्रतापसी।—दुरसौ आढौ
उ०—३ द्रढ हिंगळाज दान हिरदा मैं, ढावी कवि ढूढाडै। गति अदभूत रमत गिरजा नै, चिरजा अम्रत चखाडै।—मे म
३ ज्ञानेन्द्रिय।
उ०—१ पहली स्रवण द्वितीय रसना, त्रितीय हिरदै रमइ। चतुरथी चिंतन भया, तव रोम-रोम ल्यौ लाइ।—दादूवाणी
उ०—२ प्रथम राम रसना सवरि, दुतीयै कठ लगाय। त्रितीयु हिरदै ध्यान धरि, चौथै नाभ मिलाय।—अनुभववाणी
४ वक्षस्थल, छाती, सीना।
५ मुख, जवान।
उ०—छोटै वडै नीच कुल ऊचा, राम कहत सवही नर सूचा। कहा भयौ जै ऊँच कहायौ, राम नाम हिरदै नही गायौ।
—अनुभववाणी
६ किसी वस्तु का सार या मर्म, मूल तत्व।
७ अत्यन्त प्रिय-जन, अत्यन्त प्रिय वस्तु।
८ जीवन, प्राण।
९ प्रेम, प्यार।
१० स्मरण-शक्ति।
रू भे — रदि, रदी, रदे, रदै, रदौ, रिदय, रिदि, रिदौ, हईड, हईडइ, हईडौ, हडदै, हडदौ, हरदय, हरदौ, हिग्र, हिग्रौ, हिडदौ, हिदे, हिदै, हिदौ, हिय, हियडइ, हियडलु, हियडलौ, हियडौ, हियडइ, हियडउ, हियडलइ, हियडलौ, हियडौ, हियरौ, हिरद, हिरदय हीयौ हीग्र, हीइ हीग्रौ, हीय, हीयइ, हीयइ हीयउ, हीयऊ, हीयडई, हीयडलौ, हीयडौ, हीयडइ, हीयडउ, हीयडौ, हीयरौ, हीयौ, हीरद्द, हीरद्दौ, हैये, हैयै।

हिरन—१ देखो 'हरिण' (रू भे)
२ देखो 'हिरण्य' (रू भे) (अ मा)

हिरनकस्यप—देखो 'हिरणकस्यप' (रू भे)
उ०—भक्त कारण रूप नर हरि, धरचौ आप सरीर। **हिरनकस्यप** मार लीनौ, धरचौ नाहिन धीर।—मीरा

हिरनखुरी—देखो 'हिरणखुरी' (रू भे)

हीरनहीरनाछी–स पु — वह घोडा जिसका आधा शरीर हरे रग का तथा आधा शरीर सफेद रग का हो। (अशुभ) (शा हो)

हिरनाख्य—देखो 'हिरण्याक्ष' (रू भे)
उ०—उस विरयाँ वज्जीर दौल कू कहै कुतब्बी। जानिक सुरगै लेन कौ, हिरनाख्य मुरब्बी।—ला रा

हिरमच, हिरमची—देखो 'हिडमच' (रू भे)
उ०—हरीया **हिरमच** लायकै, वैठै विरकत होय। विरकत सोई जाणीयै, विखै विरता सोय।—अनुभववाणी

हिरळवत–स पु [स हिरण्यवत्] सूर्य, रवि। (अ मा)

हिरस–स स्त्री [स हिर्स] १ तृष्णा, वासना, लोभ, लालच।
उ०—१ नफस गालिव किब्र काविज, गुस्स मनी एस्त। दुई दरोग **हिरस** हुज्जत, नाम नेकी नेस्त।—दादूवाणी
उ०— २ लोका रजन होत है, मनुख जनम का भग। **हिरस** धका दै जात है, गहैस काचा रग। - -ह पु वा
२ ईर्ष्या, द्वेष, विद्वेष।
उ०—जिकौ क्रोध वास्तै **हिरस** रै नै लालच नै अहकार आय दिखाई रा नू होय सौ भुडौ छै।—नी प्र
३ डर, भय, खतरा।
उ०—अफरासियाव लसकर आपरा नू फरमायौ मरणै री **हिरस** मै रहौ तौ उमर घणी पावौ अर मरणै नू तयार रहौ तौ दौलत इजत पावौ।—नी प्र
४ हविस, ख्वाहिस।
उ०—है **हिरस** जोधपुर हरन हाल, खालसौ करन खाली खयाल। किल मारवारि वस करहिं कोय, हम हस-वस निरवस होय।
—ऊ का
५ कार्य करने की स्पर्धा।

हिराती–स पु —औसत दर्जे के डील-डौल वाला तथा दोहरे हाथ-पैर वाला एक विशेष जाति का घोडा जो गरमी मे नही थकता।

हिराबोल–स पु —एक पौधा विशेष।

६ जमकर न रहने देना, विचलित करना, डिगाना, चचल करना ।
७ कोई हरकत करना, हिलाना ।
८ चचल करना ।
६ फिराना, घुमाना ।
हिलाणहार, हारौ (हारी), हिलाणियौ—वि० ।
हिलायोडौ—भू० का० कृ० ।
हिलाईजणौ, हिलाईजवौ—कर्म वा० ।
हलाणौ, हलावौ, हलावणौ, हलाववौ, हिलावणौ, हिलाववौ, हीलाणौ, हीलावौ—रू० भे० ।

हिळायोडौ-भू का कृ—१ चस्का लगाया हुआ, लगाव पैदा किया हुआ, लगाया हुआ २ आदी किया हुआ, निर्भर किया हुआ ३ अनुरक्त किया हुआ, आशक्त किया हुआ, आर्कषित किया हुआ ४ घुसाया हुआ, पैठाया हुआ ।
(स्त्री हिळायोडी)

हिलायोडौ-भू का कृ—१ चलायमान किया हुआ, चलाया हुआ २ चलाया हुआ, भेजा हुआ, सरकाया हुआ, अपने स्थान से टाला हुआ, इधर-उधर किया हुआ, खिसकाया हुआ ३ कपायमान किया हुआ, धूजाया हुआ ४ भूमने व लहराने के लिये प्रेरित किया हुआ ५ जमकर न रहने दिया हुआ, विचलित किया हुआ, डिगाया हुआ, चचल किया हुआ ७ कोई हरकत किया हुआ, हिलाया हुआ ८ चचल किया हुआ ६ फिराया हुआ, घुमाया हुआ ।
(स्त्री हिलायोडी)

हिलारियौ-स पु—बबूल की फली ।

हिलारी-स स्त्री—देखो 'हिलारियौ' (पु)
उ०—वीदणी रै सागै पाच डावडिया ही । वै तौ सगळी डण खेजडी री छीया मैं जाजम ढाळ बैठगी । पाखती ई अेक लाठी बावळियौ हा । पीळै लूगा छायोडौ । रूपा रै उनमान धोळी हिलारिया । दूजोडा जानी उण बावळिया री छीया ढावली ।
—फुलवाडी

हिलारौ-स पु—१ किसी वस्तु, पदार्थ या बोझ की वह मात्रा जो एक बार मे ढोई जाती है ।
२ उक्त प्रकार से ढोवाई का क्रम ।
३ उक्त ढोवाई के प्रत्येक क्रम मे लगने वाला समय ।
४ उक्त प्रकार मे ढोवाई के लिये दिया जाने वाला पारिश्रमिक ।

हिळावणौ, हिळाववौ—देखो 'हिळाणौ, हिळावौ' (रू भे)
हिळावणहार, हारौ (हारी), हिळावणियौ—वि० ।
हिळाविग्रोडौ, हिळावियोडौ, हिळाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
हिळावीजणौ, हिळावीजवौ—कर्म वा० ।

हिलावणौ, हिलाववौ—देखो 'हिलाणौ, हिलावौ' (रू भे)
उ०—१ म्हारी वात उणरै हीयै ढूकगी—घाटकी हिलावती बोल्यी—अबै गेज मिनान करूला कपडा ई नवा पेहरूला ।
—अमरचूनडी
उ०—२ धाकल करनै बूझ्यौ—कुण व्है ई ? ठोकरियौ घाटी हिलावतौ बोल्यौ—औ तौ म्हे वेद ।—फुलवाडी
उ०—३ थोडी ताळ ताई वौ घरवाळी री देह माथै नूड हिलावतौ रह्यौ । पछै उठा सू तूटता तारा रै वेग न्हाटौ ।—फुलवाडी
उ०—४ वाणियौ घाटी हिलावतौ कैवण लागौ—थारी आ वात म्हे मरिया ई नी मानूला ।—फुलवाडी
हिलावणहार, हारौ (हारी), हिलावणियौ—वि० ।
हिलाविग्रोडौ, हिलावियोडौ, हिलाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
हिलावीजणौ, हिलावीजवौ—कर्म वा० ।

हिळावियोडौ—देखो 'हिळायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हिळावियोडी)

हिलावियोडौ—देखो 'हिलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हिलावियोडी)

हिळियोडौ-भू का कृ—१ चस्का लगा हुआ, लगाव हुवा हुआ, लगा हुआ २ आदी हुवा हुआ, निर्भर हुवा हुआ ३ अनुरक्त, आशक्त या आर्कषित हुवा हुआ ४ घुसा हुआ, पैठा हुआ ।
(स्त्री हिळियोडी)

हिलियोडौ-भू का कृ—१ चलायमान हुवा हुआ, चला हुआ २ स्थिर न रहा हुआ, हिला हुआ, डुला हुआ ३ चला हुआ, गया हुआ, सरका हुआ, अपने स्थान से टला हुआ, इधर-उधर हुवा हुआ, खिसका हुआ ४ कापा हुआ, धूजा हुआ ५ भूमा हुआ, लहराया हुआ ६ जमकर न रहा हुआ, विचलित हुवा हुआ, डिगा हुआ, चचल हुवा हुआ ७ हरकत हुवा हुआ, हिला हुआ ८ चचल हुवा हुआ ६ फिरा हुआ, घूमा हुआ ।
(स्त्री हिलियोडी)

हिळियौ-मिळियौ-वि—घनिष्ठ परिचित ।

हिळीमिळी, हिळीमीळी-वि स्त्री—घनिष्ठ प्रेम मे बधी हुई, स्नेह युक्त, प्रेम युक्त ।
उ०—इम मारवणी कुमरी प्रतै, समभावी सुभ वाण । हिळी-मीळी हित हेजमु, कीधी सुख सुजाण ।—ढो मा
स स्त्री—स्नेह या प्रेम युक्त होने की अवस्था या भाव ।

हिलूर—देखो 'हिलोर' (रू भे)
उ०—१ है गै हिलूर आसुर हलै पूर वगत्तर पक्खरा । वन अगन सवायै सग विध वळ उतग मीरा वरा ।—रा रू
उ०—२ चापावत करनोत साहस कै सुर । एक ओर ऊदा जोर सागर हिलूर ।—रा रू

हिलूसणौ, हिलूसवौ—देखो 'हुलसणौ, हुलसवौ' (रू भे)
उ०—आडा डूगर, दूरि घर, वणइ न जाणइ भत्त । सज्जण-सदई कारणइ, हियउ हिलूसइ नित्त ।—ढो मा

२ गभीरता, धीरता, शान्ति ।
६ सहिष्णुता, महनशीलता ।
४ विवेक ।

हिळमिळ–स स्त्री—१ मिलने-जुलने की अवस्था या भाव ।
२ परस्पर सहयोग, किसी उद्देश्य या कार्य के लिये एक साथ होने की दशा ।
उ०—१ सत् की नाव सतगुरु खेवटिया, सतसग सुगरा पाई । निरमळ सत समझ को मारग, **हिळमिळ** नाव चलाई ।
—स्री हरिराम जी महाराज
उ०—२ तन की ताप मिटी सुख पाया, **हिळमिळ** मगळ गाया जी ।—मीरा
३ प्रेम और मित्रता से एक साथ रहने की अवस्था ।
उ०—१ सात सहेलिया रै झूलरै औ पणिहारी ए लो । **हिळमिळ** गई रै ताळाव वालाजी औ ।—लो गी
उ०—२ मिनखा जन्म अमोलक मूरख पामर फेर न पावै । **हिळमिळ** हसणौ वेवळ वसणौ औ मौसर कद आवै ।—ऊ का
४ स्नेह, प्रेम ।
उ०—मजस अँजन करै करै, करै पोसाक सुरगी । कुटुव सू **हिळमिळ** करै, दुनि दिस दोय दुरगी ।—अरजुनजी वारहठ
५ घुल-मिल जाने की स्थिति, अवस्था या भा भाव ।

हिळमिळणौ, हिळमिळवौ–क्रि अ—१ प्रेम से हिल-मिल जाना, भेद-भाव रहित प्रेम होना, एकाकार होना ।
उ०—१ हिवडै री कळिया खिलगी, काया नै ममता मिळगी । मनमधु री सरस हिलोरा, वै इकरम मैं **हिळमिळगी** ।—सकुतळा
उ०—२ महात्मा आत्मा ए परम परमात्मा **हिळै मिळै** । झिलै जीवौ ज्योती झगमगत ज्योती झिळमिळै ।—ऊ का
२ मित्रता या दोस्ती होना ।
३ परस्पर सहयोग के लिये एकत्र होना ।
उ०—आखती-पाखती रै सै वना रा जीव-जिनावर इण जगळ मैं आय वसग्या । वौ नाहर वारौ साचैलौ राजा वण्यौ । जगळ रा मै कायदा-कानून वदळ दिया । सगळा जिनावर **हिळमिळ** नै रैवण लागा ।—फुलवाडी
४ मिल-जुलकर चलना ।

हिळमिळियोडौ–भू का कृ—१ भेदभाव रहित प्रेम हुवा हुआ, प्रेम से हिल-मिल गया हुआ, एकाकार हुवा हुआ । २ मित्रता या दोस्ती हुवी हुई । ३ परस्पर सहयोग के लिये एकत्र हुवा हुआ । ४ मिल-जुल कर चला हुआ ।
(स्त्री हिळमिळियोडी)

हिलमोचिका, हिलमोची–स पु [स हिलमोचिका] १ एक प्रकार का पौधा विशेष ।
२ एक प्रकार का शाक ।

हिलराणौ, हिलरावौ—देखो 'हुलराणौ, हुलरावौ' (रू भे)
हिलराणहार, हारौ (हारी), हिलराणियौ—वि० ।
हिलरायोडौ—भू० का० कृ० ।
हिलराईजणौ, हिलराईजवौ—कर्म वा० ।

हिलरायोडौ—देखो 'हुलरायोडौ' (रू भे)

हिळवळणौ, हिळवळवौ—देखो 'हळवळणौ, हळवळवौ' (रू भे)
उ०—पदमिणि रखवाळ पाइदळ पाइक, **हिळवळिया** हलिया हसति । गमै गमै मदगळित गुडता, गात्र गिरोवर नाग गति ।
—वेलि

हिळवळियोडौ—देखो 'हळवळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हिलवलियोडी)

हिळवाळियौ–वि—१ उत्तेजित, उतावला ।
२ घवडाया हुआ, भयभीत ।
३ हडवडाया हुआ, जल्दी किया हुआ ।

हिलवी–स पु—१ हलव जाति का मुसलमान ।
२ हलव देश का निवासी ।
३ एक प्रकार का दर्पण विशेष ।
वि—१ हलव देश का, हलव देश सम्वन्धी ।
२ हलव का ।
रू भे—हिलवी ।

हिळा—देखो 'इळा' (रू भे)
उ०—जग जळध जरमन जहर, **हिळा** प्रजाळण हार । सुत 'तखतेस' महेस रौ, इळ पातळ अवतार ।—किसोरदान वारहठ

हिळाणौ, हिळाणौ–क्रि स [हिळणौ' क्रि का प्रे रू] १ चस्का लगाना, लगाव पैदा करना, लगाना ।
२ आदी करना, निर्भर करना ।
३ अनुरक्त करना, आशक्त करना, आकर्पित करना ।
४ घुसाना, पैठाना ।
हिळाणहार, हारौ (हारी), हिळाणियौ—वि० ।
हिळायोडौ—भू० का० कृ० ।
हिळाईजणौ, हिळाईजवौ—कर्म वा० ।
हिळावणौ, हिळाववौ—रू० भे० ।

हिलाणौ, हिलावौ–क्रि स ['हिलणौ' क्रि का प्रे० रू०] १ चलायमान करना, चलाना ।
२ स्थिर न रहने देना, हिलाना-डुलाना ।
उ०—मोट्यार अर पोठा थापती छोरिया-सगळी गाम एक माथै इज माथा **हिलाय** नै गुणगुणावण लाग जावै ।—अमरचूनडी
३ चलाना, भेजना, सरकाना, अपने स्थान से टालना, इधर-उधर करना, खिसकाना ।
४ कपाना, धूजाना ।
५ झूमने व लहराने के लिये प्रेरित करना ।

हिलोळीजणो, हिलोळीजबौ—कर्म वा० ।

हिलोळियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हिलोळियोडी)

हिलोळौ-स पु [स हिल्लोल] १ आनन्द की लहर, उमग ।

उ०—१ किन सग खेलु खेल सजनी, हीयौ हिलोळा लेस । आवौ आज अजोनी मेरै, अवळा अरज करेस ।—अनुभववाणी

उ०—२ पपिहा बोलत पीव कहै म्है कै कियो, मारी नै मति मार हिलोळा लै हियो । लागै दाभै लूण जळण हुव जीव री, वैरी बोल न बोल पपीहा पीव री ।—सिववक्स पाल्हावत

२ लहर, तरग ।

उ०—१ नक्कामी कियोडा खरडिया मे असल कसूबौ केसर रै उनमान हिलोळा खाय रह्यौ ।—अमरचूनडी

उ०—२ समदरसास्त्र सू भी आ बात पक्की व्हे कै मारवाड री ठौड कदै ई समदर हिलोळा लेवतौ हो । ढाणिया रै पागती रेतूट रै धोरा माथै रमतै टाबरा नै अजु ताई कदैई गुळगुचिया तो कदैई सीप अर सख मिळै है ।—चितराम

३ उमग, जोश, उत्साह ।

४ झौका, झौंना ।

५ गति, चाल, प्रवाह ।

६ आक्रमण हेतु तैनात होने की अवस्था ।

उ०—१ सूवर सूती नीद मैं भूडण पहरा देत । उठो सूवर नीदाळका फौज हिलोळा लेत ।

उ०—२ फोजा लै हिलोळा ओळा दोळा अज्र सिंधू फूटा । महा गज्र गोळा वज्र तूटा जज्र माग ।—हुकमीचद खिडियो

७ घबराहट का दौरा, भय का सचार ।

उ०—'चावै' परतक कटक चलाया, ऊपरि खान तणै फिर आया । दमगळ मछै निवावा दोळा, हुवा खळा फिर प्राण हिलोळा ।

—रा रू

८ धक्का, आघात ।

९ प्रहार, चोट ।

उ०—सारा मार परक्खै सची, खान तहव्वर वागा खची । हेकण दिस था मार हिलोळौ, आहाडा कीधी दळ ओळौ ।—रा. रू

रू भे—हलोळौ, हिलोडौ, हीलेडौ, हीलोळौ ।

हिळोहणौ, हिळोहबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' (रू भे)

उ०—पुळिंद प्रीति खत्रवट पारिखतै, जीति जौति सत्रहर जस जीति । सोहै तोहि हिळोहि गौडा सरव, चढियौ रुख सारग रणि चीति ।—वीरमदै गौड री गीत

हिळोहणहार, हारौ (हारी), हिळोहणियौ—वि० ।

हिळोहिओडौ, हिळोहियोडौ, हिळोह्योडौ—भू० का० कृ० ।

हिळोहीजणौ, हीळोहीजबौ—कर्म वा० ।

हिलोहळ-स पु [स हिल्लोवर] १ समुद्र, सागर । (ना डि को)

उ०—१ अचग अचळ धिन 'जोध' अभिनमा, सावज कुळ पैनीम सीर । हरि मेलियौ हये हिलोहळ गाजियौ गवग मेरगिर ।

—किसानो आढौ

उ०—२ मेर गिर हून गिरवर किसो मीटजै । हिलोहळ मीढ सरवर किसो होय ।—अग्यात

२ मथन, विलोडन ।

उ०—'जसै' धरि अोध धरै जगजाळ, तठै गिज काढिय राग उताळ । हिलोहळ रोद चहवळ होय । दळा रग टूक करै दोय दोय ।—सू प्र

३ लहर, तरग ।

उ०—ऐसै कविराज जिस वगत महाराजा री राजसभा कै बीच भाति भाति गुण गावनै है । विद्यावाणी कै हिलोहळ दरियाव का सा हिलोहळ दरसावतै है ।—सू प्र

वि —पूर्ण, परिपूर्ण ।

उ०—साईवान देविया सकै, पावन जागा ठोड पत । व्है दरबार सिरै हिलोहळ, चत्रन रहै चळ विचळ चित ।—कपूत री गीत

रू भे—हिलोहिल, हीळोहल ।

हिलोहियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हिलोहियोडी)

हिलोहिळ—देखो 'हिलोहळ' (रू भे)

उ०—वादळ छाया देस मैं, ए लौ, नदिया नीर हिलोहिळ रे । वादळ चमकै बीजळी, चमक चमक झड लाय ।—ना गी

हिलौ—देखो 'हीलौ' (रू भे)

हिलौळणौ, हिलौळबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडबौ' (रू भे)

उ०—वीळी चसम्मा मजीठ रौळी नखरी धूप रै वागा, पैना तीर गोळी साग लाया आरपार । हौळी फागा जेम खागा उनरी 'पीयळै' हाडै, हिलौळी फिरगी सेना पैतीस हजार ।—जसौ आढौ

हिलौळियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हिलौळियोडी)

हिल्लोण—देखो 'हिलोर' (रू भे)

हिल्लोळ—देखो 'हिलोर' (रू भे)

उ०—वधै लूर सापूर फौजा वणाणै, जळानिद्र उच्छेदियौ वध जाणै । महाराज सेन्या वहै राज मग्गै, वधै वाजुवा लोल हिल्लौळ वग्गै ।—रा रू

हिव—१ देखो 'हिम' (रू भे)

२ देखो 'हिव' (रू भे)

हिव-क्रि वि [स अधुना] १ अब, अभी ।

उ०—१ कसन राखि हिव हु तू करतौ, धरणीधर ममता मन धरतो । तूझ विखै मत दै धू तारण, कूप ससार काढ सव कारण ।—ह र

उ०—२ एक वीनती हिव अम्हतणी, सभळि तू सोवनगिरि-धणी ।

हिलोडणौ, हिलोड़वौ–क्रि स [स उल्लोलनम्, उल्लोडनम्] १ जल या किसी द्रव पदार्थ को हाथ, लकडी या किसी वस्तु से हिलाना, तरंगित करना, विलोडित करना।
२ द्रव पदार्थ को मथना, विलोडित करना।
३ लहराना, डुलाना।
४ विचलित करना, तितर-वितर करना। (सेना)
५ तरंगित करना।
६ चलायमान करना, चलाना।
हिलोडणहार, हारौ (हारी), हिलोडणियौ—वि०।
हिलोडिग्रोडौ, हिलोडियोडौ, हिलोड़योडौ—भू० का० कृ०।
हिलोडीजणौ, हिलोडीजवौ—कर्म वा०।
हलोरणौ, हलोरबौ, हिलोरणौ, हिलोरबौ, हिलोलणौ, हिलोलवौ, हिलोहणौ, हिलोहवौ, हिलौळणौ, हिलौळवौ, हीलोळणौ, हीलोळवौ, हीलौळणौ, हीलौळवौ, हौलोळणौ, हौलोळवौ—रू० भे०।

हिलोडियोडौ–भू का कृ—१ हाथ, लकडी या किसी वस्तु मे तरंगित किया हुआ (द्रव पदार्थ) २ मथा हुआ ३ लहराया हुआ, डुला हुआ ४ तरंगित किया हुआ ५ चलायमान किया हुआ ६ विचलित या तितर-वितर किया हुआ। (सेना)
(स्त्री हिलोडियोडी)

हिलोडौ—देखो 'हिलोळौ' (रू भे)
उ०—पग धूजण लागा, माथौ धूमण लागौ। हीयै मैं **हिलोडौ** उठियौ अर आत्या आडी रात आयगी।—वरसगाठ

हिलोर–स स्त्री—१ उमंग, आनन्द की लहर।
उ०—१ वालभ एक **हिलोर** दै, आइ सकइ तउ आइ। वाहडिया वै थक्किया, काग उडाइ उडाइ।—ढो मा
उ०—२ हिवडै री कळिया खिलगी, काया नै ममता मिळगी। मनमधु री सरस **हिलोरा**, वै इकरस मैं हिळ मिळगी।—मकुतळा
२ तरंग, लहर।
उ०—घेर-घुमेर खेजडी री जाडी छीया। साम्ही हव्वा-होळ **हिलोरा** भरती नाडी। कमोद री जात निरमळ पाणी।
—फुलवाडी
३ झौंका, झौला।
४ प्रवाह।
५ कल्लोल, क्रीडा।
रू भे—हलोर, हिलूर, हिलोळ, हिलोल, हिल्लोरा, हिल्लोल, हीलोळ, हीलौळ।

हिलोरणौ, हिलोरबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडवौ' (रू भे)
हिलोरणहार, हारौ (हारी), हिलोरणियौ—वि०।
हिलोरिग्रोडौ, हिलोरियोडौ, हिलोरयोडौ—भू० का० कृ०।
हिलोरीजणौ, हिलोरीजबौ—कर्म वा०।

हिलोरव–स पु—१ डोलने, झूलने या झौका खाने की क्रिया या भाव।
उ०—सात मैं पाताल वासग नागरै माथै टपूकडा खाइ नै रहिआ छै। त्यारी सौरभ री वास्तै तेत्रीस कोडि देवता सरग सू हेलूम नै उतरै देवासुरा रा विवाण **हिलोरव** खाइ नै रहिआ छै।
—रा सा स
२ चक्कर, भावर।
३ तरग, लहर।
४ समुद्र।

हिलोरियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हिलोरियोडी)

हिलोळ, हिलोल—देखो 'हिलोर' (रू भे) (डिं को)
उ०—१ अनग न अग उमग इलोल, हरी पद सगम गग **हिलोल**। निराळिय नीति उदगळ नाय, मुनी किय मगळ जगळ माय।
—ऊ का
उ०—२ भला अगराज चढी छळ भूप, रच्यौ रण तीरथ राज सरूप। हाथ्या मदताहळ गग **हिलोळ**, छिलै रत्रधार सरस्वति छोळ।—मे म
उ०—३ घडाळ नौवती घुरत, जैदराज नागर। **हिलोळ** मै किलोळ होत, सद्द जेम सागर।—सू प्र
उ०—४ म्हारा जीवण मै सुख री आ एक ई **हिलोळ** आई, इणनै ई थू सुखावणी चावै।—फुलवाडी
उ०—५ सरसा सगेवर विमल जल सै भरै है भरपूर। लख लोल व रत **हिलोल** हरसित हस पक्षि पडूर।—वि कु

हिलोळणौ, हिलोळवौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडवौ' (रू भे)
उ०—१ मैंगळ कुटव सहत उनमत्त रै, आव **हिलोळ** चोळ की अतरै। घूम मुणौ चख आग धकतरै, जाजुळ ग्राह जागीयौ जतरै।
—र ज प्र
उ०—२ **हिलोळि** छडाळ ग्रहै चद्रहास। तछै घण मीर कलम्म तरास।—सू प्र
उ०—३ चद्रमानै कुण सीतल करइ, अग्निनै कुण दाह करइ। दूध नै कुण छोळै छै, समुद्र नै कुण **हिलोळै** छै।—रा मा म
उ०—४ हेजमा **हिलोळ** हथा तेगा उछाटीली हलै, साथ वीरा चतौ चडी चाटीळौ सवध। वेध धकी जगा मेळै वारगा वाटीलौ वीद, केकाणा कोमखी वागी आटीलौ कमध।
—हुकमीचद खिडियौ
उ०—५ रावण साह तणा दळ रोळै, जोध **हिलोळै** जुवाजूओ। हालियौ 'सिवौ' झापा भरि हणमत, हेक डगाळ वगाळ हुओ।
—जोगीदास चारण
हिलोळणहार, हारौ (हारी), हिलोळणियौ—वि०।
हिलोळिग्रोडौ, हिलोळियोडौ, हिलोळयोडौ—भू० का० कृ०।

उघा मउड पडइ, रेवत रडवडइ, पडिया पचायणनी परि हाकरड ··· · ··· ।—व स.

उ०—२ हिवि युगलियाना सुख साभलउ ।—व स

उ०—३ मोसा तौ वोल्या मुनैं, जइ मैं राख्यौ मान । हिवैं परणु तरुणी पदमणी, गालु तुझ्‌झ गुमान ।—प. च चौ

उ०—४ हा हा करू हिवै कासू रे । माहरी हिवडी फटै मा सू । —जयवाणी

उ०—५ इहि विचि की सधि सु वयसधि कहावै । जैमैं सुपिणौ । न सोवैं छै न जागैं छै । आगैं पल पल चढती होसी । पिणि हिवैं वैसधि कौ इमौ प्रथम ग्यान ताकी इसी परिछै ।—वेलि टी

उ०—६ हिवै जगदेवजी हवेली भाडै लेनैं पाछा घोडा री ठौड आवै तौ चावडी, घौटा दीसैं नही नै रथ रा खोज दोमैं । —जगदेव पवार री वात

उ०—७ मुजा वलै आलिम सु एम, वोलै वादल गोरी जेम । दिली सु चढि आयौ सहि हिवैं, भिडतौ भागैं मति जाय ।—प च चौ

हिस—स स्त्री [स हिंस्] १ पशु-पक्षी या किसी जानवर को ताडने, दुत्कारने की क्रिया या भाव ।

२ उक्त क्रिया के लिये मुह मे श्वास को दवाकर निकालते हुए किया जाने वाला शब्द, ध्वनि, हुस्ट ।

उ०—जवार रा कणुका मूठी सू छूटता ई हसतौ । पछै कवूडा चुगता जणा हसतौ । वानै हिस हिस करनै उडावतौ । किल-कारिया करतौ । कूदतौ-फादतौ रमतौ ।—फुलवाडी

[अ हिस] ३ सवेदन, एहसास, अनुभव ।

४ सवेदन शक्ति, अनुभव शक्ति ।

हिसाट, हिसाटि—देखो 'हीस' (रू भे)

उ०—ढोल तणै ढमढिमाट, परह तणै गुमगुमाटि, रणतुर तणै रण रणाटि, घोडा तणै हिसाटि, गजेंद्र नै गडगडाटि, राजा स्रीदसारण्णभद्र चालउ ।—व म

हिसाव—स पु [अ] १ वह विद्या जिसमे, विभिन्न प्रकार की सख्याओ की जोड, वाकी, गुणा, भाग करके कुछ निश्चित परिणाम निकाला जाता है, गणित विद्या ।

ज्यू—म्हनै हिमाव आवै, थू म्हनै ठग नी सकै ।

२ उक्त विद्या के अनुसार किसी वस्तु की कीमत का निर्धारण ।

उ०—कामदारा ! सईसा रा तौ हीया फूटगा । आटा मैं लूण जित्तौ खोट तौ खटै । वै तौ साव धाडा ई मारण लागग्या । तवेला रौ आधा सू वत्तौ दाणौ डकार जावै । म्है लीद जोखन सव हिसाव कर लियौ ।—फुलवाडी

३ व्यापार मे आय-व्यय का रक्खा जाने वाला विवरण, व्यौरा, लेखा ।

उ०—१ पचास वरसा मैं कदैई भूल-चूक सू ई हिसाव रै मेळ मैं भूल नी व्ही ।—फुलवाडी

उ०—२ वीस वरस री कवारी किन्या धोटी व्है ज्यू आगणै घूमै, थोटी घणौ तौ विचार करी । हिसाव रा आगर तौ अधारा मैं ई वाचलौ, पण धीवडी रौ आगैं छायौ जोवन वानै निजर ई नी आवै ।—फुलवाडी

४ लेन-देन का विवरण, खाता ।

उ०—वाणियै री वेटी हया-दया वा'रौ, हिसाव किताव मैं कामण गारौ । धरमादै रै पीसिया सू घर रा काम काढनौ ही नी सकै । —फुलवाडी

५ वकाया देनदारी ।

उ०—१ मू'ता रै आदमी दाळ-चावळ माग्या । वळनैं मैं पूळौ पडयौ, चोटी मैं झटकौ वोटयौ अर कैयौ—आगलौ हिसाव कर'र पीसा चुकावौ, पछै पल्लौ माडौ ।—दमदोग

उ०—२ मा'रजा मर-पच'र पाच सौ रा नोट जोडया, अर घर-वाला रौ हिसाव करण खातर आपरै गाव नै दौडया । —दमदोग

६ गणना, शुमार, गिनती ।

उ०—सवत अर तिथ सू हिसाव लगाया जाच व्ही कै वादळ सूणी री वेटी सू फगत चाळीस दिन मोटौ हौ ।—फुलवाडी

७ किसी वस्तु का मान, परिभाषा या मात्रा का निर्धारण करने की क्रिया ।

८ दर, मूल्य, भाव ।

९ नियम, कायदा, परिपाटी ।

उ०—टावर जितरा पढण नै आवै, वारै हिसाव सू वारी वाध दी जावै ।—अमरचूनडी

१० चाल, ढग, तरीका, रीति, युक्ति ।

उ०—सेठ सगळा नै ई आपरै हिसाव सू कूतै ।—फुलवाडी

११ व्यवस्था, प्रवन्ध ।

उ०—कामेती घणकरी वेळा ठिकाणा रै हिसाव मैं रुध्योडौ रैवतौ ।—फुलवाडी

१२ हृदय की प्रकृति की परस्पर अनुकूलता ।

१३ मितव्ययता की अवस्था या भाव ।

१४ मत-सम्मति, विचार ।

१५ आमदनी या जायदाद का निरीक्षण, जाच ।

उ०—तिण दिन पातसाहजी रै कचेडी दीवान खोजौ अवलहुसेन छै सौ गजाजी सु खुणस राखै छै । सुजणै जागीरी रौ हिसाव कीयौ ।—नैणसी

१६ मूल्याकन ।

उ०— · · · जिका आपरी जिदगी देस सू ऊँची मानता हुवै वानै देस नै गद्दार रै अलावा काई मानणौ चाईजै । वीरता अर वहादरी नै लोग आप-आप रै विचार सू कई तरिया कूतै अर हिसाव लगावै ।—तिरमकू

कुअरि तुम्हारी अपछर जिमी, पिंगळराय-नणंड मनि वसी।
—टो मा

उ०—३ वदनारविंद गोविंद वीखियै, आलोचै आपो-आप सू। हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यै, हुआ कतारथ पहिली हू।—वेलि

२ इसके वाद, तदन्तर।

उ०—१ रीगेया करता राउत हथियार हलइ, घाइ घूमिया सुभट ढळइ। पडिया पाइक न ऊससीयइ। हिव हाथिया आस्वासीयइ।
—रा सा स

उ०—२ कोई न त्रिहु जगि हुईय नारि हिव पछी कोइ न होइसि ए। एक महेलीय पच भरतार सतीय सिरोमणी गाई ए।
—सालिभद्र सूरि

रू भे—हिव, हिवइ, हिवा, हिवि, हिवें, हिवे, हिवैं, हिवै।

हिवइ—देखो 'हिव' (रू भे)

उ०—१ वळतउ चाचिगदे वीनवइ, रखै कटक नै अखउ हिवइ। नही सोनगिरि केहनइ पाडि, जाम्यइ आपण ही गढ छाडि।
—का दे प्र

उ०—२ हिवइ रितिराउ कहता वसत रिति मरुपियो जोवन- मु आपणा नाना प्रकार गुणगतिमति महित यौ परिगह लै आयौ।
—वेलि टी

हिवकै—क्रि वि—अव की, इस वार।

उ०—मोनु परणीया वरस २ हूआ। पिण म्हारी मा मोनु मेल्हती नहो। हिवकै इण रजपूत आइ नै गाढ कीयौ, ताहरा मोनु मेल्ही।
—तीडी खरळ री वात

हिवडउ—देखो 'हिवडौ' (रू भे)

उ०—मारू-मारू कळाइया, उज्जळ-दती नारि। हमनउ दै हुकार- डउ, हिवडउ फूटणहारि।—ढो मा

हिवडलौ—देखो 'हिवडौ' (रू भे)

उ०—पेटडलौ मूमल रौ पीयळियै रौ पान ज्यू हाजी रे। हिवडलौ हतीयारी रौ मचै ढाळीयौ, मारी नाजुकडी मूमल।—लो गी

हिवडा, हिवडा, हिवडै—क्रि वि—अभी, इस समय।

उ०—१ हिवडा तो जीव पचै रे घणौ, कोई पार नही रे दुखा तणौ। तेर तिण गाटी लागै लारी।—जयवाणी

उ०—२ कह्यौ—हिवडा री घडी माहै जिकू मागीस सू पावीस।
—सयणी चारणी री वात

रू भे—हिवडा, हिवडा।

हिवडौ—स पु [स हृदय] १ मन, दिल, चित्त, हृदय, अन्त करण।

उ०—१ वीमारिया न वीसरइ, चितारिया नावत। मारू सायर लहर जू हिवडै द्रव काढत।—टो मा

उ०—२ ओ जी म्हारै हिवडै रा जीवडा। मत ना सिधारी पूरव री चाकरी जी।—लो गी

उ०—३ थारी माता की हिवडौ ऊकळै, वा तो नैणा नीर टरकावै यै म्हारै हरियै वन री कोयली।—लो गी

उ०—४ म्हानै गुर मिळिया अविनासी दई ग्यान की गुटकी। लगी चोट निज नाव धणी की, म्हारै हिवडै खटकी।—मीरा

२ वक्षस्थल, छाती, सीना।

उ०—१ थारौ हाथ म्हारै हिवडै ऊपर राख। पेम रस महदी राचणी।—लो गी

उ०—२ लीनी हजा मारू हिवडै लगाय। आसुडा तो पूछ्या हरियै रूमाल सू जी म्हारा राज।—लो गी

उ०—३ हिवडै हाम घडाय भवर म्हारै हिवडै नै हाम घडाय, हो जी म्हारी तिमण्यौ हीरा जडाय भवर म्हानै खेलण दो गणगोर।
—लो गी

उ०—४ दूजै दिन ई धणी सू छानै-ओलै आपरै हिवडा रौ हार अेक सुनार नै वेच दियौ।—फुलवाडी

उ०—५ हिवडै ऊपर हार, म्हारै गळै मे टोरी रै। कसूवडै री कामळी नै डील गोरी रै। लूअर लेवण दै।—भवरलाल सुथार

३ वक्षस्थल के नीचे, शरीर के अन्दर स्थित अवयव, जो शरीर मे रक्त सचार करता है।

उ०—हा हा करू हिवै कासू रे, माहरौ हिवडौ फटै सास।
—जयवाणी

रू भे—हवडौ, हिवडौ, हिवडउ, हिवडलौ, हिवडौ।

हिवडा, हिवडा—देखो 'हिवडा' (रू भे)

उ०—१ आगउ अह्म वरासउ वीतउ, हिवडा छळ नवि छाडू। असपत्तिना दळ साम्हउ चाल्यउ, लेई ऊघाडउ खाडू।
—का दे प्र

उ०—२ राउ भणइ तेहनी तम्हे हिवडा काई जाणउ मार। भेठि भणइ कइ तूं ह जि जाणइ कइ जाणइ करतार।
—हीराणद सूरि

हिवडौ—देखो 'हिवडौ' (रू भे)

हिवार, हिवारु, हिवारु, हिवारू; हिवारू—क्रि वि—अभी, इस समय, अवार।

उ०—१ ताहरा वीजाणद कहियौ—भला। हिवार री वरिया वही जावै छै सू छै मास माहै भरि लेयीस।—सयणी री वात

उ०—२ हुकम हुवै तो काई खारौ मीठौ गावा, हुकम हुवै तो परमेस्वर-रौ जस गावा। आप कह्यौ—हिवारू परमेस्वर-रौ काई छै।—प्रतापमल देवडा री वात

उ०—३ म्हारै वाप री छाह म्हारौ वचन छै, हिवारू मागै सू पावै।—सयणी री वात

उ०—४ मीह हिवारू काची व्याधि छै। परहौ मरौ म्हानु कोई दुख न सुख।—देवजी वगडावता री वात

हिवा, हिवि, हिवें, हिवे, हिवैं, हिवै—देखो 'हिव' (रू भे)

उ०—१ पडिया पाइय न ऊसासीइ, हिवा हाथिया आ[illegible]मायइ,

हींगवण—देखो 'हींगोट'।

उ०—सू किण भात रा वाकरा छै, रातडियै रिण रा, उजळा थळा रा, घणी गागुवण **हींगवण** रा चरणहार।—रा सा स

हींगाठेल—वि —वहुत, काफी, पर्याप्त। (वा दा ख्यात)

हींगापाई—स स्त्री —खलवली, हलचल, परेशानी।

उ०—पण राज री परधै अर धनवतिया रै तौ **हींगापाई** लागी पण लागी। औ कुचमादी तौ आपरी कुचमाद मू राज री सगळी नीवा हिलाय दी।—फुलवाडी

हींगु—देखो 'हीग' (रू भे)

उ०—सूयर कदाचित् वालीयइ, ऐरावण कदाचित् दामीयइ, चिंतामणि कदाचित् पामीइ, कामगवी कदाचित् वाहीइ, **हींगु** कदाचित् वघारीइ,' ' ' "।—व स

हींगोट, हींगोटौ—स पु [स इगुदी] इगुदी नामक वृक्ष विशेष।

वि० वि०—इसके वडे वडे वृक्ष जगल मे पाये जाते है। इसके फल-फूल नीवू के समान कुछ लम्बे व गोल होते है। इसके काटे भी होते है। यह कफ, रक्ताम, ग्रन्थि और व्रणविनाशक है। इसका फल स्वादिष्ट, कडवा, स्निग्ध, गरम तथा कफ व वात विनाशक होता है।

हींगोरौ—देखो 'हीगोटो'।

उ०—**हींगोरै** हैइउ घरिउ, जौ सहिकार सवाद। मद्य न दीठउ माटि तइ, मूत्रि चढि उनमाद।—मा का प्र

हींच—स पु —१ युद्ध, लडाई।

उ०—**हींच** मही घायल हुआ, जोया जखमी जेताह। फिर स्रीमुख फुरमावियौ, रैवत वाधर ताह।—पा प्र

२ प्रहार, चोट, आघात।

उ०—**हींच** उडै हाथेह, लग गागी दोली लडै। मचियै जुध माथेह, कमधज ओरी काळवी।—पा प्र

रू भे —हीच।

हींचकौ—स पु —१ झूला, हिडोला।

उ०—हेलि वधावइ **हींचका**, सुरतर केरी साख। माधव-साथि हीचसिउ, लीला लटकइ लाख।—मा का प्र

२ देखो 'हिचकौ' (रू भे)

उ०—तूल तलाई ढोलिया, पछेडा चोली चग। हीर अछोडइ **हींचका**, हीडोलाटि सुचग।—मा का प्र

रू भे —हीचौ।

हींचण—स स्त्री —१ मकडी की जाति का एक जतु जिसकी वनावट केंकडे के समान होती है।

२ देखो 'हिचण'।

हींचणी—स पु —एक प्रकार का अशुभ घोडा। (शा हो)

हींचणू, हींचणौ—स पु —झूला, हिंडोला, पालना। (डि को)

हींचणौ, हींचवौ—क्रि स —१ झूला झूलना।

उ०—१ एकि वादिइ फूल चुटइ, अक्ष तणा पल्लव त्रूटइ। हिडोळइ **हींचइ**, झीलता वादिइ जालिइ मीचइ।—रा मा म

उ०—२ हेलि वधावइ हीचका, सुरतर-केरी साख। माधव साथि **हींचसिउ**, लीला लटकइ लाख।—मा का प्र

२ हिलना-डुलना, लटकना, लटकते हुए झूलना।

उ०—माणिक मूटा जेवडु, तिणइ कि **हींचइ** हार। कामिनि कीजइ ग्रेहनइ, अलगा-थिका जुहार।—मा का प्र

३ भ्रमण करना, विचरण करना।

उ०—विसहर! तू निरविस जरी, गरी न आवइ गति। सगिहर सिर-ऊपरि रहइ, तू हेठिली **हींचति**।—मा का प्र

४ खूटे से वधे वछडे का मुक्त होने के लिये तडफना, आतुर होना।

उ०—**हींचता** वाछडिया तावाड, मिळै जद गाया अडवड जाय। टाळना भूल आपणी गाय, हठीला टावरिया लट जाय —साफ

५ मुरट नामक घास की वाले काटकर एकत्र करना।

६ उपलब्ध होना, मिलना।

उ०—पीनल ता लगि पहिरिइ, जा नह **हींचइ** हेम। जा मू-सिऊ मिलती नथी, ता माधव-सिउ प्रेम।—मा का प्र

७ देखो 'हिचणौ, हिचवौ' (रू भे)

उ०—वेढ हुता पण घणी वेळा हुई थी। माहोमाही **हींचिया** था।
—नैणसी

हींचणहार, हारौ (हारी), हींचणियौ—वि०।

हींचिओडौ, हींचियोडौ, हींच्योडौ—भू० का० कृ०।

हीचीजणौ, हीचीजवौ—कर्म वा०।

हीचणौ, हीचवौ, हीचवणौ, हीचवणौ—रू० भे०।

हींचाहींच—स स्त्री —खीचा तान, लूट-खसौट।

उ०—अत काल इन जीव की, व्हैगी **हींचाहींच**। जनहरीया नर देह मैं, कुण ऊच कुण नीच।—अनुभववाणी

रू भे —हीचाहीच।

हींचियोडौ—भू का कृ —१ झूला-झूला हुआ २ हिला हुआ, डुला हुआ, लटका हुआ, लटकते हुऐ झूला हुआ ३ भ्रमण किया हुआ, विचरण किया हुआ ४ मुक्त होने के लिये तडफा हुआ, आतुर हुवा हुआ ५ काटकर एकत्र किया हुआ ६ उपलव्ध हुवा हुआ, मिला हुआ ७ देखो 'हिचियोडौ' (रू भे)।

(स्त्री हीचियोडी)

हींचोल, हींचोळौ, हींचोलौ—स पु —झूले या पालने के दिया जाने वाला धक्का हिलोरा।

उ०—१ सुण जोइ नितु टेपरी, माता दइ **हींचोल**। नितु नितु मानि घूघरी, अेम करी रग रोल।—मा का प्र

उ०—२ हीडी मैं टावर हीडै हौ, मा दै रही **हींचोळा**। हालरिया रै मागै मगै, टावर कर रह्यौ किलोळा।—सातिलाल देवेग

हींचौ—१ देखो 'हीचकौ' (रू भे)

रू भे —हसाव, हैसाव, हैमाव ।

हिसाब-वही—म स्त्री —वह पुस्तक, पजिका या वही जिसमे ग्राय-व्यय या लेन-देन का विवरण रखा जाता हो ।

हिसार—म पु —एक प्रदेश का नाम ।

उ०—परगनै जैतारण रा गाव ७ मेरा रै दाखल छै । तिकै जैतारण री फिरसत माहै अगै न छै नै **हिसार** मेरा रा गाव माडीया तरै मेरा रा ऐ गाव जैतारण दाखल माडीया छै ।—नैणसी

हिस्ट—वि [म हृष्ट] हृष्ट पुष्ट, मोटा-ताजा, स्वस्थ ।

क्रि वि —हट, वत् ।

हिस्ट-पुस्ट—वि [हृष्ट-पुष्ट] स्वस्थ, मोटा-ताजा ।

हिस्टीरिया—स पु —एक प्रकार का मूर्छा रोग जो प्रधानत स्त्रियो को होता है ।

हिस्सादार—देखो 'हिस्सेदार' (रू भे)

हिस्सादारी—स स्त्री —किमी मे हिस्सेदार, भागीदार या साझेदार होने की ग्रवस्था या भाव, साझेदारी ।

उ०—मोटोडी बेटौ मिडिल फेल हौ, वौ जिला मे एक सेठ री **हिस्सादारी** मैं सिमट री होल-सेल डीलर बरगयौ अर छोटोडौ इजिनियरिंग कालेज जोधपुर मैं पढण लाग्यौ ।—ग्रमरचूदडी

रू भे —हिस्सेदारी ।

हिस्सेदार—म पु —किसी कार्य, व्यापार, लेन-देन सम्पति ग्रादि मे कुछ ग्रधिकार या हक रखने वाला, भागीदार, साझेदार ।

रू भे —हिस्सादार ।

हिस्सेदारी—देखो 'हिस्सादारी' (रू भे)

हिस्सौ—स पु [ग्र हिस्स] १ उतनी वस्तु जो किमी ग्रधिक वस्तु से ग्रलग हो गई हो, ग्रश, भाग ।

२ विभक्तिकरण या विभाजन के कारण होने वाला खण्ड, टुकडा, विभाग ।

३ वटवारे मे मिलने वाला ग्रश, भाग ।

४ किमी का ग्रश, छोर, भाग ।

उ०—मूडौ पिलकावतौ समदर गिडगिडायौ कै ग्रमकुल्य नाव री म्हारौ ग्रेक **हिस्सौ** बोराऊ दिख मैं है । उठै री पाणी पी ग्रर मलेच्छ पाप करै ग्रर मनै ई पाप री भागी विणावै । ग्री वाण जै उठै टोकीज जावै तौ म्हारा पाप ई भसम परा व्है ।—चितराम

५ किमी कार्य मे दिया जाने वाला योग-दान ।

६ साझेदारी ।

७ किसी कार्य मे विशेपता रखने का गुण ।

८ मिश्रित वस्तुग्रो मे प्रत्येक वस्तु का एक निश्चित ग्रश ।

९ वर्गीकरण या फैलाव के कारण होने वाला कोई उपविभाग, शाखा ।

१० किसान से कृपि उपज मे से जागीरदार द्वारा लिया जाने वाला ग्रनाज का निश्चित भाग या ग्रश ।

रू भे —हेसौ, हैमौ, हैमौ ।

हींकणी—स स्त्री —एक वनस्पती विशेप ।

उ०—हनुमती नइ हडवडी, हीराउलि ह्र मज्जि । हाथा जोडी **हींकणी**, हेला ग्रावइ कज्जि ।—मा का प्र

हींकार, हींकारी—स स्त्री [स हूकार] वीज मत्र की ध्वनि ।

हींग—स पु [स हिंगु] १ ग्रफगानिस्तान ग्रौर फारस मे स्वत होने वाला एक पौधा विशेप ।

२ उक्त पौधे से निकलने वाला गोद, दूध या तरल पदार्थ, जिसे जमाकर ग्रौपध या शाकादि मे मसाले के रूप मे काम लिया जाता है । (डि को)

उ०—१ तिलोर तीतर करचानक मुरगावी होसनाक वणावै छै । पोटा चीरजै छै । पेटाळजी चीरजै छै । मुहडै मैं **हींग** भरजै जै । पेट मैं जीरौ भरजै छै ।—रा मा म

उ०—२ तावौ, कासी, पीतळ, जमद, सीसौ, कथीर, गरी, नाळेर, मिरच, पीपळ, मजीट, हींग, सुखडी, तेल, मिसरी, गुळी, डतरा, वसतै दुगाणी ८ मण १ लागै ।—नैणसी

३ वास की वह लम्बी तीली या खपची जो पतग के वीचोबीच सीधी लगती है ।

४ देखो 'सीग' (रू भे)

रू भे —हिंगू, हीगू ।

हींगड—देखो 'सीग' (मह, रू भे)

हींगडौ—देखो 'सीग' (ग्रल्पा, रू भे)

हींगण—देखो 'हिंगूण' (रू भे)

हींगणौ, हींगवौ—क्रि स —१ लालयित होना, ललचाना ।

२ दीनता दिखलाना ।

हींगळू, हींगलू—स पु [स हिंगुल] एक प्रकार का खनिज, जो सप्त उप धातुग्रो मे से एक माना जाता है । यह चीन ग्रादि देशो मे पाया जाता है । स्त्रिया इसे विंदी लगाने या माग भरने के काम मे लाती है । ईंगुर सिंदूर । (ग्र मा, डि को)

उ०—१ मोतिया री माग भरजै छ । ललाड ऊपर ग्ररधचद्र विराज रह्यौ छै । केसर री खोळा कीजै । **हींगळू** री वदी दीजै छै ।—रा सा स

उ०—२ ग्रिह ग्रिह प्रति भीति सुगारि **हींगळू**, ईंट फिटक मै चुणी ग्रचभ । चदण पाट कपाट ई चदण, खुभी पना प्रवाळी खभ ।

—वेलि

हींगळू-ढोलियौ—म पु यौ —वह पलग, चारपाई या खाट जिसके पाये सिंदूर से रगे हुए हो ।

हींगवघार—स पु —१ पुष्करणा ब्राह्मणो की एक प्रथा जिसके ग्रनुसार वारात व वर जब भोजन के लिये ग्राते है तब हीग को जलते ग्रगारे पर डाल कर उनका स्वागत किया जाता है ।

२ हीग का वघार, छौका ।

हींड-स स्त्री —१ झूले मे झूलने की क्रिया या भाव ।
२ एक किवदती के अनुसार, वीरगति प्राप्त किमी प्रसिद्ध योद्धा की आत्मा का, रात्रि के समय, मसाल लेकर लगने वाला चक्कर या गश्त ।
उ०—मिनख झीकता रह्या, कुत्ता ऊचौ मूडौ कर कर नै कूकता रह्या अर धानपुर री काकड मै रात भर मामाजी री हींड री गळाई झपाझप करती लालटेणाँ फिरती री ।—अमरचूनडी
३ देखो 'हीड' (रू भे)
४ देखो 'हीडौ' (मह, रू भे)
उ०—१ सौ गाव रै निकाळै एक वडी खेजडी छै जठै हींड वाधी छै ।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—२ लचकै गोडी लागता, मचकै हींड मचौळ । तन दमकै दामणि तरह, झमकै पग रिमझोळ ।—सिववक्स पाल्हावत
हींडण-स स्त्री [स हिण्डनम्] १ झूला झूलने की अवस्था या भाव ।
२ लम्वे पैरो वाला एक प्रकार का जन्तु ।
वि —झूलने वाला । (डि को)
हींडणियौ-वि —१ झूलने वाला ।
२ लटकने वाला ।
हींडणौ, हींडवौ-क्रि स [स हिण्डनम्] १ झूला झूलना, हीडना ।
उ०—१ गाव री लुगाई छोकरी खडी छै गीत गावै छै । मोटियार हीड हींडै छै ।—कुवरसी साखला री वारता
उ०—२ नीवूडै री छइया हीडौ घालै हे श्रौ धणवारी रे हजा । छैलौ नै मारवण दोइ हीडौ हींडसी श्रो राज ।—लो गी
२ छोटे वच्चो का पालने मे झूलना ।
उ०—१ आगै माहे पैस देखै तौ पालणै मै वाळक हींडै छै ।
—देवजी वगडावता री वात
उ०—२ जठै एक कन्या कही राजा री छै । तिका राखस लै आयौ छै । सु पालणै मै वैठी हींडै छै ।—चौवोली
३ मस्ती मे झूमना ।
उ०—१ मातै हाथी ज्यू हींड रह्या छै । तीन भात रौ पवन वाज रह्यौ छै —सीतळ मद सुगध । गरमी मिटायजै छै ।
—रा सा स
उ०—२ तरा आप उठिया छै । मातै गजराज ज्यू हींडता थका खवास-पासै वाणा रै हाथ ऊपर हाथ दिया घूमता थका घोडै पधारै छै ।—रा सा स
४ लहरे लेना, हिलोरे खाना ।
उ०—अर तीन पाडुवा रै विचाळै मारग वेवती काळी मासी रै सळा पडचा जूना खोळियाँ मैं जाणै श्रेकर पाछौ वाळपणौ हींडण लागौ ।—फुलवाडी
५ लटकना ।
उ०—वाजूवध वधै गोर वाहु विहु, स्याम पाट सोहत मिरी । मणिमै हींडि हीडलै मणिधर, किरि माखा श्रीपट की ।—वेलि
६ विचरण करना, भ्रमण करना ।
उ०—१ हस चटी हींडइ मदा, वीणा पुस्तक पाणि । निगम निरतर श्रालवइ, धोरतार मधि वाणि ।—मा का प्र
उ०—२ मन तौ उण री हवा रै मागै उडतौ, उजास रै भेळौ पळकतौ, चादणी सायै झोला खावतौ अर वादळा रै माथै हींडतौ ।
—फुलवाडी
७ भटकते हुए फिरना, भटकना ।
उ०—क्षणु एक थ्यु छाडी गया, ता-मिस मडिउ माड । नाहूनडलीनइ सोधती, वनि-वनि हींडसि राड ।—मा का प्र
८ गमन करना, जाना ।
उ०—कुपत्री लोपी कार, 'वूढै' नै 'जीदै' वहू । चोडै चूथ चकार, हमणी वत लै हींडिया ।—पा प्र
९ चलना, दौडना । (डि को)
हींडणहार, हारौ (हारी), हिंडणियौ—वि० ।
हींडिओडौ, हींडियोडौ, हींडचोडौ—भू० का० कृ० ।
हींडीजणौ, हींडीजवौ—कर्म वा० ।
हिडणौ, हिडवौ, हींडळणौ, हींडळवौ, हीडणौ, हीडवौ—रू० भे० ।
हींडळ-स पु —झूला, पालना ।
हींडळणौ, हींडळवौ—देखो 'हीडणौ, हीडवौ' (रू भे)
उ०—१ हाथी घणा घरा हींडळसी, मूर हरा असा मभाव । दूणा पटा वधारा देसी, आप जसा करसी अमराव ।—तेजसी खिडियौ
उ०—२ जाणै नागण हींडळै, खभा सोनारा । श्रोपन लाडी ऊमदा तखताण तैयारा ।—मयाराम दरजी री वात
उ०—३ है थाटा वीच हींडलै हाथी, छत्रपत जिसा चालिया चढै । गजवध तणा श्रावता गढवा, गढपत जडै किंवाड गढै ।
—किसनौ आढौ
हींडळणहार, हारौ (हारी), हींडळणियौ—वि० ।
हींडळिओडौ, हींडळियोडौ, हींडळचोडौ—भू० का० कृ० ।
हींडळीजणौ, हींडळीजवौ—कर्म वा० ।
हींडळियोडौ—देखो 'हीडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीडळियोडी)
हींडाणौ, हींडावौ-क्रि स ['हीडणौ' क्रि का प्रे रू] १ झूला झूलाना, हीडाना ।
२ छोटे वच्चो को पालने मे झूलाना ।
३ मस्ती मे झूमाना ।
४ लहरे खिलाना, हिलोरे खिलाना ।
५ लटकाना ।
६ विचरण कराना, भ्रमण कराना ।
७ भटकाना, भटकते हुए फिराना ।
८ जाने या गमन करने के लिए प्रेरित करना ।

२ देखो 'हिचकी' (रू भे)

हींजडौ–न पु—१ मनुष्य जाति का वह विकृत हुआ प्राणी जो न स्त्री होता है न पुरुष होता है, अर्थात् जिसके न तो पुरुषेन्द्रिय का विकास होता है और न उसमे स्त्रियोचित चिन्ह होते हैं, नपुसक। वि० वि०—हीजडे का सीधा एव प्रत्यक्ष अर्थ नपुसक होता है अर्थात् मनुष्य जाति का वह प्राणी जो न पुरुष श्रेणी मे आता है न स्त्रियो की श्रेणी मे गिना जाता है। यह बीच की स्थिति का होता है। पहिचान के तौर पर इसके पुरुष चिन्ह का कुछ अश होता है।

जो प्राणी इसी अवस्था मे पैदा होते हैं वे प्राकृतिक हीजडे होते हे। लेकिन बच्चो के पुरुष चिन्ह को क्षत करके बनावटी हीजडे भी तैयार किये जाते है।

इन प्राणियो की बोली का स्वर मर्दाना होता हे तथा हाथ, पाव, नाक-नक्शे मे भी स्त्रियो की सी कोमलता न होकर मर्दानापन ही झलकता है। लेकिन ये वस्त्र स्त्रियो के पहनते हैं, नाम भी स्त्रियो के ही रखते हैं और हाव-भाव भी स्त्रियो के से ही दिखाते हैं। हीजडे हिन्दू-मुस्लिम दोनो वर्गो मे है और समाज मे हसी-खुशी के मौको पर नाचना-गाना इनका पेशा है।

चूकि शारीरिक बनावट मे मर्दानापन अधिक होता है इसलिये इनके डाढी-मूछ भी आती है और स्त्री वेष मे रहने के कारण ये डाढी-मूछ रख नही रख सकते, इसलिये इनका डाढी मूछ मुडाई का खर्चा अधिक होता है।

स्त्री एव पुरुष वर्ग की तरह हीजडो का भी एक बहुत बडा वर्ग है, परन्तु इसमे नाजर, फातडा, खोजा आदि कुछ उप वर्ग भी हैं और उनमे कुछ भिन्नता भी होती है। यथा —

(१) फातडा या पवैया—गुजरात मे हीजडे को फातडा या पवैया कहते हैं। लेकिन वास्तव मे पवैया हीजडे न होकर उनका एक सहवर्ग है। ये लोग हीजडो के साथ रहकर नाचने गाने मे सहयोग करते हैं तथा हीजडो के ही अन्य छोटे-मोटे कार्य करते हे।

२ **नाजिर या खोजा**—नाजिरो के इतिहास की शुरुआत चीन की तवारीखो से मानी है। इन तवारीखो मे ऐसा उल्लेख है कि जो व्यक्ति चोरी छुपे व्यभिचार करते पाये जाते थे उन्हे नपुसक बना कर राज महलो या शाही महलो मे टहलबदगी करने के लिये रख दिया जाता था। कभी कभी बागियो को भी यही सजा दी जाती थी। नाजिरो का मुख्य कार्य शाही महलो मे जनानखानो की चौकीदारी करना था। लेकिन मुस्लिम शासन काल मे इनका महत्व बहुत बढ गया और शाही महलो मे नाजिर रखना एक आम रिवाज हो गया। इससे इनका वर्ग भी बहुत बढ गया और इनको बडे बडे पद या ओहदे दिये जाने लगे। सुलतान अलाउद्दीन ने अपने ख्वाजासरा मालिक कपूर (नाजिर) को जो सम्मान दिया वह इतिहास प्रसिद्ध है।

हीजडो एव नाजिरो मे इतना फर्क है कि नाजिरो के हीजडो की तरह डाढी मूछे नही आती, वे मर्दाने वेष मे रहते और शाही महलो मे ही कार्य करते। हीजडो की तरह नाचने गान का पेशा नही करते।

इतिहास—इन प्राणियो की उत्पत्ति आदि सृष्टि से ही मानी जाती है। पुराणो मे भी इनका उल्लेख मिलता है महाभारत युद्ध मे राजा द्रुपद के पुत्र शिखडी को भीष्म पितामह ने नपुसक की श्रेणी मे मानकर उस पर शस्त्र नही उठाया था। अज्ञातवास के समय अर्जुन ने भी बृहन्नला नामक हीजडे का वेष धारण किया था और विराट की पुत्री को नाच-गान सिखाने का कार्य किया था। मध्य युगीन मुस्लिम हीजडो की उत्पत्ति मक्का-मदीना से मानी जाती है।

मोजत व जैतारण के पास एक गोरम नामक पहाड है जिसके नीचे प्रति वर्ष फागुण कृष्ण १४ को एक मेला लगता है वहाँ बहुत से हीजडे एकत्र होते है। और नाच-गान करते हैं।

ऐसे प्राणी मनुष्य जाति मे ही हो ऐसी बात नही है वरन्—चौपाये जानवरो मे भी ऐसे प्राणी होते हैं।

२ वह व्यक्ति जो अपना पुरुषत्व खो चुका हो, नामर्द।

उ०—लालचिया सतोम ज्यू, मन हींजडा मनोज। ऊमर मैं-नह उपजै, इम मावडियाँ मौज।—बा दा

६ कायर व डरपोक व्यक्ति।

वि —१ नपुसक, नामर्द।

२ कायर, डरपोक।

उ०—अर फेर ज्यू किसन भगवान अरजुन नै नपुसक, **हींजडौ**, नामरद कह'र जिण तरिया 'महाभारत' री लडाई करवाई उणी तरियाँ म्हनै बुजदिल कह'र म्हारै कनै सू पूरी आतम समरपण करवाय लियौ।—तिरसकु

३ अशक्त, कमजोर।

४ उत्साहहीन।

रू भे—हिंजडौ, हीजरौ।

हींजडापण, हींजडापणौ–स पु—नपुसक, नामर्द या क्लीव होने की दशा या भाव, क्लीवता।

हींजरणौ, हींजरबौ—देखो 'हिंजरणौ, हिंजरबौ' (रू भे)

उ०—गजराजा अग्राज, गाज हुवै आवागळा। फौजा धज नेजा फररि, बहता हींजरि बाज।—वचनिका

हींजरियोडौ—देखो 'हिंजरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हींजरियोडी)

हींजरौ–स पु—१ वियोग जनित दुःख, विछोह की पीडा।

२ देखो 'हीजडौ' (रू भे)

हींट, हींठ–स पु—१ अगूठा।

२ लिंग या योनि के पास के बाल, केश।

हींणी—देखो 'हीणी' (रू भे)
हींद—देखो 'हिंद' (रू भे)
हींदणी—देखो 'हिंदवाणी' (रू भे)
हींदव—देखो 'हिंदू' (रू भे)
उ०—१ गिरा मैं सुमेर ओपै सुरताण राहा गणा, जत्या मैं मारुत प्रजापति रिखा जाण। जाप मैं अजपा जहि साचौ वळी राजा जिसौ, महाराजा तपै लीया हींदवां चौ माण।
—भगतराम हाडा रौ गीत
उ०—२ अर रांणी नै भाखरसी भगाया हता तिका पठाण उवा नू आदमी मेलीया—यारी पाछा आवै। हींदवा चूक कीयौ।
—राजा नरसिंघ री वात
हींदवाण—देखो 'हिंदवाण' (रू भे)
उ०—हींदवाण छात हीदवाण सूर, अजमेर जोधपुर माण पूर। अजवाळ वस अस गाव अरोड, ढीलडी वीच महिपत्या मोड।
—रा सा स
हींदवाछात, हींदवोछात—स पु—हिंदू राजा, हिंदुओ का राजा।
उ०—कठठ काठळ कटक रौस चामास कर, जवन पत हींदवाछात जूटा। अमग जसराज सर करणेंगर ऊपरा, खाग वादळ वरस वार खूटा।—अरजुण जी बारहठ
हींदणौ, हींदवौ—देखो 'हीडणौ, हीडवौ' (रू भे)
उ०—सावण आया घरै यारै हीदा जिकी घालेला। हींदिया छै तौ परिया घोकै परिया खाच जावेला।—रा सा स
हींदियोडौ—देखो 'हीडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीदियौडी)
हींदु—देखो 'हिंदू' (रू भे)
उ०—अकवर गरव न आण, हींदु सह चाकर हुवा। दीठौ कोई दिवाण, करतौ लटका कटहडै।—अग्यात
हींदुसथान, हींदुस्तान—देखो 'हिंदुस्तान' (रू भे)
उ०—१ समत १६८४ काती वद १३ माहै पातसाह जाहागीर फौत हुआ। जुनेर था माहजादा माहावतखान हींदुसथान नु आया।—नैणसी
उ०—२ सिवलाल जसा कौ रूप देखनै मन मै उदास हुऔ—जसा री जोड रौ आदमी हींदुसथान मै एक ही नजर न आवै।
—मयाराम दरजी री वात
हींदू—देखो 'हिंदू' (रू भे) (डिं को)
उ०—१ सुर असुरा इण आहुडै, आही एक अवक्क। पिंडि जितरा हींदू दडै, तेता महस तुरक्क।—रा सा स
उ०—२ हींदू पूजै देहरा, मुसलमान ममीत। हरीयै चेतन चेतीया, क्या अचेतन प्रीत।—अनुभववाणी
हींदूआणी—देखो 'हिंदवाणी' (रू भे)
हींदूकार—देखो 'हिंदूकार' (रू भे)
उ०—१ हीदू हींदूकार, राणा जै राखन ... पौ सौ करत प्रतापसी।—अग्यात
उ०—२ हींदूकार तणा हलकारै, घणा ... इडर वळै वेद इधराया, ताडै दळ सुरताण ...
—...
हींदूपत, हींदूपति—देखो 'हिंदूपति' (रू भे)
हींदूसथान, हींदूस्थांन—देखो 'हिंदुस्तान' (रू ...
उ०—सधु सवालक्ष, ऊच मलतान हींदू... माहाचीण भोट माहाभोट सखोद्वार ... देसाउर . .।—व स
हींदोल, हींदोलइ—देखो 'हिंडोळौ' (रू ...
उ०—१ माधव मन माहरा मा... हटकी हीचता, हईडइ हाल क...
उ०—२ सिर वधी क्षिण ना... हींदोलइ चढी उल्लालिसी आ...
हींदोलाट—देखो 'हिंडोळाट' (रू ...
उ०—१ क्षणु पालखि क्षणु ... पाथरी, अतिलसना ऊछाट।—...
उ०—२ घम घम वाजइ घूघरी ... क्रीडा करइ, नीलज वेडा नाट।—...
हींदोलि, हींदोलु—देखो 'हिंडोळौ' (रू ...
उ०—१ हींदोलि हरखई चढी, ... अवर भवनि, माधव दीठइ ठेलि।—...
उ०—२ घट माहरु घर ताहरु, ना... वाधिउ, माधव हीचणहार।—मा ...
हींदौ—देखो 'हीडौ' (रू भे)
उ०—जावती न आग माथै चहरा नै ... घरै थारै हींदा जिकौ घालेला।—रा ...
हींप, हींफ—स स्त्री—शीतल वायु।
उ०—घणै सीतळ पाणी सू मीचिआ ... हींफा खाइ रहीआ छै।—रा सा स
रू भे—हीप।
हींवाण—स पु—एक जाति विशेष का घोडा
उ०—भारिज सीधूया हींवाणा, पहिठाण... कनूज देसना, कुलथ हासला मध्याही।—...
हींमजी—स पु—एक वृक्ष विशेष।
उ०—हरडू हरडि हीमजी, हरडा हलद्रह ... हुफट हुंसि हसेर।—मा का प्र
हींमत—देखो 'हिम्मत' (रू भे)
उ०—हीमत मत छाडौ नरा, मुख तै कहता सु कीया, धू का अटल वाम।—अनुभववाणी

९ चलाना, दौडाना ।

हींडाणहार, हारौ (हारी), हींडाणियौ—वि० ।

हींडायोडौ—भू० का० कृ० ।

हींडाईजणौ, हींडाईजवौ—कर्म वा० ।

हींडायोड़ौ–भू का. कृ —१ झूला झूलाया हुआ, हीडाया हुआ २ पालने मे झूलाया हुआ ३ मस्ती मे झूमाया हुआ ४ लहरे लिराया हुआ, हिलोरें खिलाया हुआ ५ लटकाया हुआ ६ विचरण कराया हुआ, भ्रमण कराया हुआ ७ भटकाया हुआ, भटकते हुए फिराया हुआ ८ जाने या गमन करने हेतु प्रेरित किया हुआ ९ चलाया या दौडाया हुआ ।

(स्त्री हीडायोडी)

हींडियोडौ–भू का कृ —१ झूला झूला हुआ, हीडा हुआ २ पालने मे झूला हुआ ३ मस्ती मे झूमा हुआ ४ लहरें लिया हुआ, हिलोरें खाया हुआ ५ लटका हुआ ६ विचरण किया हुआ, भ्रमण किया हुआ ७ भटका हुआ, भटकते हुए फिरा हुआ ८ गमन किया हुआ, गया हुआ ९ चला हुआ, दौडा हुआ ।

(स्त्री हीडियोडी)

हींडी–स स्त्री —बच्चो का झुलाने का झूला ।

उ०—हींडी मैं पडियौ टाबर गट्टा-पट्टा सू रमै जद मावड उणनै रम्मत मैं लागोडौ गिणै ।—चितराम

हींडोळ, हींटोल—देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)

उ०—१ माता वोता त्रमल झुलरायौ झोली, हालरि हुलरावियौ हींडोल हिचोली । वलि रमीयौ अठ दस वरस नु वालक टोली, परणावौ तु नइ पछै दयिता हुइ दोली ।—ध व ग्र

उ०—२ कइरी हींडोलइ चढी, कोकिल किहा कुहुकाय । कामकदला तू चढी, माहारा हियडा माहि ।—मा का प्र

हींडोलणौ—देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)

उ०—हरख हींडोलणइ झूलइ नेमिप्रभ जिनराय । जिहा सुद्ध आसय भूमि पटली, लोहित्रइ थिरवाय ।—वि कु

हींडोळणौ, हींडोळवौ, हींडोलणौ, हींडोलवौ—देखो 'हिंडोळणौ, हिंडोळवौ' (रू भे)

उ०—१ हींडोळै झरोखा हेटै, खुभाला झाटका देता ।

—माधोसिंह सीसोदिया रौ गीत

उ०—२ पालणडइ पउढचउ रमइ म्हारउ वालुयडउ, हींटोलइ अचिरा माय म्हारउ नान्हडियउ ।—म कु

उ०—३ भूपति धिनौ आखै धनि भूरा, सह पूरा खत्रवाट साराह । थरि मह गळै हींडोळै थारै, वळै वीर वदीयौ वाराह ।

—भगतसिंघ हाडा रौ गीत

हींडोळाखाट–स स्त्री —चारपाईनुमा झूला या पालना ।

हींडोलाट, हींडोलाटि–स पु —१ झूला, धक्का ।

२ देखो 'हिंडोळौ' (रू भे)

उ०—तूल तलाई ढोलीया, पछेडा चोली चग । हीर अछोडड हीचका, हींडोलाटि सुचग ।—मा का प्र

रू भे—हीडोलाट ।

हींडोळि, हींडोळी—देखो 'हिंडोळी' (रू भे)

उ०—मयण कला मदोदरी, उन्नत उयर पवित्र । कइरी-सरिखु कुच-युगल, चडी हींडोलि चडत्रि ।—मा का प्र

हींडोळियोडौ—देखो 'हिंडोळियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हीडोळियोडी)

हींडोळौ, हींडोलौ—१ देखो 'हिंडोळौ' (रू भे.)

उ०—१ जा वसै तेतीसू कोडि छल्या कचौळा अमी का । वै गुर परसाद पीवाहि हींडोळै पणि वैसि कै ।—वि स सा

उ०—२ गजेद्र कुभस्थल सीस ढोलइ । कोई हींडोला जिय मीस डोलइ ।—सालिसूरि

उ०—३ चापवी ना सद्रिस भ्रलता, विकसित लोचन वदन कपोल, चैत्रमासि हींडोला समान स्रवण, द्वितीया ससि सद्रिसविसाल भाल, एव विध वाला ।—व स

२ देखो 'झूलौ' ।

हींडौ–स पु [स हिंडनम्, हिंदोल] १ किसी पेड की मोटी डाल के लम्बी रस्सिया वाध कर वनाया जाने वाला झूला, जो प्राय श्रावण मास मे वांधा जाता है तथा जिस पर नव युवतिया व नव वधूऐं झूलती है, झूला । (डिं को)

उ०—१ ए मा, चपा वाग मैं हींडौ घला दै, तीज नुहेली आई । ए मा, और महेल्या रे घर रौ हींडौ, म्हारै हीडौ नाही ।

—लो गी

उ०—२ गुड्डी वालै, हींडा हीडै है अर खेलै कूदै पण म्हाकाळी चिडकली री विछोवौ करौ हौ, जकौ ठीक नी है ।—दसदोख

उ०—३ कुवरसी दीठौ वडौ जावतौ हींडा वाधिया ।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—४ माघ री पूनम नै धणिया रोपणी रोपाई रै । आवळकी इग्यारस नै हींडौ मडियौ रै । वडलै री साखा मे, कै हीडा लेवण दै ।—भवरलाल सुथार

२ पालना ।

३ पालने मै झुलाने की क्रिया ।

उ०—एक वीर सुया सती आपरा पुत्र नै हींडा देती घर री रीत सिखावै है ।—वी स टी

४ वह चारपाई जौ झूले के समान झूलती हो, चारपाईनुमा झूला ।

रू भे—हिंडौ ।

मह,—हीड ।

हींण—देखो 'हीण' (रू भे)

उ०—हींण दोख सौ हुवै, जात पित मुदौ न जाहर । निनग जेण नै निरख, विकळ वरणण विन ठाहर ।—र रू

हींमती—देखो 'हीमती' (रू भे)
उ०—हीमति वहादर **हींमती** कळि भडा घोडा कीमती। देमपति मभ्रम दमरा ऊदम अगम गम हीदुआ ओपम।—ल पि
हींयाफूटी—देखो 'हियाफूटी' (रू भे)
हींयाळी—देखो 'हियाळी' (रू भे)
हींयोडी—देखो 'हिओडी' (रू भे)
हींयोडौ—देखो 'हिओडी' (रू भे)
उ०—तीन वरस व्हैता व्हैता वां म्हानै गायै देय दाग काढै, पछै **हींयोडौ** फेरै, हळ जोतै अर गाडी खड़ै।—फुलवाडी
हींयौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)
उ०—**हींयै** खट्का लागगी, विरहन मेती आय। का घरि आवौ सजना, का मोकू लै जाय।—अनुभववाणी
हींस—स स्त्री [स हेष, हेष] १ घोडे के वोलने का शब्द, हिनहिनाहट। (डिं को)
उ०—१ वप तीर छरा छरा रथ्रवरा, हय **हींस** हरा हरा मचग हरा। तरवार खरा खरा तूट तरा, परा मत्र भरा भरा रमरा परा।—र रू
उ०—२ होवै भड हाकळ हैवर **हींस**। चढै मारका भड पावुअ सीस।—पा प्र
रू भे—हीस।
२ देखो 'हूंस' (रू भे)
रू भे—हिंस, हिसाट।
हींसणौ—स पु [स हेषण] घोडे के वोलने की क्रिया, शब्द या आवाज।
उ०—कै इत्ता मैं वादळ रै घोडा री **हींसणौ** सुणीजियौ।
—फुलवाडी
हींसणौ, हींसवौ—क्रि अ [स हेषण] १ घोडे का वोलना, हिनहिनाना।
उ०—१ मसत हसत वहु मोल द्वार घूमै खळदाहरा। बाळा हींसै वाज वर्णं जाणै रविवाहरा।—वा दा
उ०—२ घोडां तौ वादळ री मसा परवाणै हुकम वजावतौ। गनाटी सूडागै हिणहिणाट करतौ **हींसतौ** जगा आगणै मोत्या री भड लागती।—फुलवाडी
२ उमगित होना, उत्साहित होना, प्रसन्न होना।
उ०—१ ज्यानै वाद्या हिवटौ **हींसौ**, स्त्री विहग्मान वदू वीसौ।
—जयवाणी
उ०—२ सुदर मूरति प्रभु तणी, निरखता सुख थायौ जी। हियडौ **हींसइ** माहरौ, पातिक दूर पुलायौ जी।—स कु
३ तरसना, लालायित होना।
उ०—केवल जिम दूर थकी दीसै, हीयडौ जिन देखण नै **हींसै**। वाखाणै सहु विस्वा विसै, यात्रा दीधी ए जगदीसै।—ध व ग्र
हींसणहार, हारौ (हारी), हींसणियौ—वि०।
हींसिओडौ, हींसियोडौ, हींस्योडौ—भू० का० कृ०।
हींसीजणौ, हींसीजवौ—भाव वा०।
हींमवणौ, हींसववौ, हीसणौ, हीसवौ—रू० भे०।
हींसळ, हींसल—स पु [स हृषित्] घोडा, अश्व।
उ०—१ वाजिद गज वाकर मानव वळ, पोहौ अनि होम हुवा वोहौ पूर। हाडा रिण तीरथ करि **हींसळ**, मग्यिौ राज मेध जगि सूर।—गव सूरजमल हाडा री गीत
हींसवणौ, हींसववौ—देखो 'हीमणौ, हीमवौ' (रू भे)
उ०—वोल नक्कीवरा **हींसवै** हैमरा, धज वैधीगग ऊपरा ऊछळै।
—सू प्र
हींसवणहार, हारौ (हारी), हींसवणियौ—वि०।
हींसविओडौ, हींसवियोडौ, हींसव्योडौ—भू० का० कृ०।
हींसवीजणौ, हींसवीजवौ—कर्म वा०।
हींसवाटा—स स्त्री—मोलकी राजपूत वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
हींसवियोडौ—देखो 'हीसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीसवियोडी)
हींसाण—स स्त्री—घोडे के हीसने या हिनहिनाने की क्रिया या आवाज।
उ०—निहसत नीसाण हुवै वाज **हींसाण**। सभ्र काज घमसाण अपाण भड ओघ।—र ज प्र
हींसार, हींसारव—स स्त्री—हिनहिनाहट।
उ०—१ जाक्या जाता ऊचरड, हयवर मुखि **हींसार**। चियार छत्र चामर ढळड, भूप चढिउ गज भारि।—मा का प्र
उ०—२ हय **हींसारव** गज घमक, वळीया सुहड वहन्त। क्रमि क्रमि मारग मूकता, कामावती पहूत्त।—मा का प्र
रू भे—हीमाल।
हींसियोडौ—भू का कृ—१ हिनहिनाया हुआ, वोला हुआ २ उमगित, उत्साहित व प्रसन्न हुवा हुआ ३ तरसा हुआ, लालायित हुवा हुआ।
(स्त्री हीमियोडी)
हींसी—स पु—घोडा, अश्व। (डिं को)
हींसू—स पु—भूमि खोदने का एक औजार विशेष।
उ०—भारी सत्र कवाडा भाजै, अणिया भेडै भात अनी। हैसळ हून वडा अर **हींसू**, कूट 'लालियै' किया कमी।
—लालसिंह राठौड री गीत
रू भे—हैसु, हैसू।
हींसोडी—स स्त्री—१ जुलाहो का एक कैंचीनुमा औजार जिस पर ताना फैला कर पाई करते है।
२ देखो 'हिओडी' (रू भे)
हीं-हीं—स स्त्री [अनु] १ हँसी, खिलखिलाहट।

हीचियोडौ—देखो 'हिचियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीचियोडी)

हीज-अव्यय—१ केवल, मात्र ।
उ०—१ म्हारै परण कन्या नही जिण थी म्हारी धन लगाइ भाड जसराज री पुत्रिया रा कन्यादान री फळ लेण री म्हे हीज विचारी है ।—व भा
उ०—२ हरीया पीजै पेमरस, रसना लीजै राम । जब लग जुग मैं जीव जै, कीजै यौ हीज काम ।—अनुभववाणी
उ०—३ राजान कुमार घरणै हरख सू आणद सू उछाह सू नवळ रग, नवळ नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम सुख मेफ वात उहा हीज जाणी पिण बीजौ उण सुख उण वाता कुण जाणै ।—रा सा स
उ०—४ मोभत था कोस ११ परवाण कूण माहे । मेर हीज रहै छै । धरती हळवा ३० तथा ३५, बाजरी मोठ, तिग हुवै ।
—नैणसी

२ तैयार, तत्पर, सन्नद्ध ।
उ०—रजपूत रै घर माथै जावता माथौ साथै नई लै जावणौ क्यू कि इसा रजपूत केसरिया करियोडा हीज बैठा है निकै माथौ पाछौ लाण देवै नही उरौ हीज लेवै ।—वी स टी

३ लगभग, करीब, प्राय ।
उ०—१ अर फेर ही म्हे तौ थारा ही चाकर छा । था बिना म्हारी आ दसा हुई सौ आप दीठी हीज हुती ।
—पलक दरियाव री बात
उ०—२ यू कहि व्यासजी मोड बाघ ऊभा रहिआ, तद मारा चुप रहिया । इतरै मैं फौज आई हीज ।—अमरसिंघ री बात

४ एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी बात पर जोर देने के लिये किया जाता है ।
उ०—१ चतुरग फौजा बौहरग बाना किणि भाति सू विराजमान दीसै । जाणै अढार भार बनसपती रित बसत फिलि फूलि रही । दीठा हीज बणि आवै । न जाइ कही ।—वचनिका
उ०—२ वजि थाळ सकळ वाजित्र वजै, कुसम सघण सुरियद किया । वेखिया हीज आवै वणै, उण दिन तणी अजोधिया ।
—सू प्र

५ निश्चय या दृढता सूचक अव्यय ।
उ०—१ ताहरा पहिली नौ नटि गयौ पछै कहियौ जी—बमतराय औ हीज छै ।—द वि
उ०—२ धाडौ आणियौ वामी गरवणौ नही, साढीया तुरत वैच दीनौ, उण हीज वेला ।—रा सा स

६ अन्ततोगत्वा, आखिरकार ।
उ०—१ अनै रुघनाथजी रा गुरु बुदरजी तौ घर मैं थका ऊट हीज मारचौ ।—भि द
उ०—२ तारा वीरमदै यूतौ ठौड देवरण नू गया ताहरा गोयौ मुहतौ आधौ हीज हालियौ अर वीरमदै नू कह्यौ—मरण री ठौड तौ मेटतै हुती ।—द. दा
उ०—३ भायरगी भानीदास री । चैगाई पटै । समत १६७७ वैरू पटै । समत १६६३ अमरसिंघजी रै गयौ, उठै हीज मुवौ ।
—नैणसी

७ अनन्यता सूचक अव्यय ।
८ अल्पता या परिमिती सूचक अव्यय ।
९ देखो 'ही' (रू भे)
उ०—थारी धरती जेठवा केलवै रहै छै, सु त्यानू मारजौ । उण हुकम दियौ हीज थौ, नै जेठवै काठिया भेळा हुयनै कह्यौ—'औ आपणी धरती माहै मारी आय पैठौ ।—नैणसी
रू भे—हिज ।

हीजर—स पु [अ हिजार] पाषाण, प्रस्तर, पत्थर ।
उ०—हीर पगौ हीजर करै, डाका तणा डभीड । गुरु हीणा गळ कटणा, न जाणै पर पीड ।—वि स सा

हीजरणौ, हीजरबौ—देखो 'हिजरणौ, हिजरबौ' (रू भे)

हीजरियोडौ—देखो 'हिजरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीजरियोडी)

हीजरौ—स पु—वियोग का दुख ।

हीटौ—वि—१ बधन मुक्त, स्वतन्त्र, आजाद ।
उ०—हू बळिहारी राणिया, थाळ बजाणै दीह । बीर जमी रा जै जणै, साकळ हीटा सीह ।—वी स
२ रहित, बिना ।
३ ढीठ, धृष्ट ।

हीड—स पु—समूह, भीड ।
उ०—छुटै तीर सा जोम त्या व्योम छायौ, उडै चील कै हीड कै तीड आयौ ।—रा रू

हीडणौ, हीडबौ—देखो 'हीडणौ, हीडबौ' (रू भे)
उ०—माथै भीडै हीडइ पलतु इद्र वाहणि डकि जई ऊपजति । गजह रूप तउ करि रै आज तीह नइ वासड चडइ देवराज ।
—वस्तिग

हीडणहार, हारौ (हारी), हीडणियौ—वि० ।
हीडिओडौ, हिडियोडौ, हीडयोडौ—भू० का० कृ० ।
हीडीजणौ, हीडीजबौ—कर्म वा० ।

हीडवरण स स्त्री—एक प्रकार की मिश्री विशेष ।
उ०—तिकौ आरणा माहै घणौ खामा पकाय, पछै अवल घ्रत सेर ७ मगरै री नीपनौ आणियौ । आण सेर ७ गुळ हीडवरण मिसरी हुवै तिसडौ सेर ७ गुळ आणीयौ नै रोटा घ्रत माहै जोजर छिट-काय जिसडा पई तिसडा पछै घ्रत गुळ माहै घणौ काठा मसळ चूरमै रा पीडा सात करीया ।—तिमरलिंग पातसाह री बात

उ०—निराकार निरमै रे सतौ, जौ अकार सजावै । हीडागर हीडा कू दौडै, सो भी धणी कहावै ।—ह पु वा

२ वेगार मे काम करने वाला वर्ग, वेगारी लोग ।

उ०—१ तरै जोधपुर सु वरसिघ साथै चाकर वावर हीडागर परज लोग आया था सु सारा परा जाण लागा ।—नैणसी

उ०—२ तरै गुढा री लोग महाजन, छोकरी, हीडागुर, घाची-मोची सिको महेसजी री गिलौ करै—जै वीजौ साथ रावजी रा तौ घाची मोची हीडागर कम करै छै ।—राव चद्रसेन री वात

हीडौ–स पु—१ सेवा, सुश्रुषा, टहल, वदगी ।

उ०—१ ताहरा वीरमदैजी कह्यौ—राजमलजी ! थे म्हारै वडा सगा, था माहरा वडा हीडा किया । पछै वीरमदैजी उठामू सीख कीवी ।—नैणसी

उ०—२ अवै म्है ई थनै सुभट ओळख लियौ । थारा नी नी व्है जैडा हीडा करिया जका री थू म्हनै ओ फळ दियौ ।—फुलवाडी

उ०—३ सवत १६२८ राव काणू जै वसियौ । रावत पचायण घणा हीडा कीया ।—राव चद्रसेन री वात

२ चाकरी, नौकरी ।

उ०—तरै जैतेजी नु वीरमदै कहाडीयौ—राव सु वीणती करौ नै म्हा कन्हा राव रा हीडा करावौ । ज्यु थै चाकरी करौ छौ त्यु म्है ही राव री चाकरी करा ।—राव मालदेव री वात

३ रोगी या अस्वस्थ की सेवा, तीमारदारी, इलाज ।

उ०—१ तद एकै दिन वीदणी वोली, म्हारै धणी रौ डील चाक नही छै, तौ पण म्हानु एकै कोटडी माहै राखौ ज्यौ हीडा करती जावा ।—ठाकुरै साह री वात

उ०—२ वापडा नासतिक मिनख साची कैया करै है कै—दायजौ देय'र वेटी री मौत मोल लेवणी है । धन रा ठोकाकड लोभी लोग मरज-मादगी रै मर्म भी वह रौ हीडौ क्यू करै ?—दसदोख

उ०—३ कहसी—ओ मुवौ, इण रा हीडा न किया । पछै आपनु तपाया, सेकिया, चेतौ वाहुडै नही । तरै गाव मैं स्याणा था त्यानू पूछियौ, कह्यौ—कोई उपाव करौ जिणसू ओ जीवै ।—नैणसी

४ आदर, सत्कार, खातरी ।

उ०—१ परगनै मेडतै री गाव रायण पटै थौ । पातावता रौ भाणेज हुतौ । केईक दिन चोटीलै रह्यौ थौ, तद पातावतै घणा हीडा किया ।—नैणसी

उ०—२ इण भाति दिन पाच राणा कनै रहा । राणौ वडा हीडा हरख किया ।—कुवरसी साखला री वारता

उ०—३ प्रभात हुवौ । जान नु भगति हुई । दिन ४ राखीया । हीडा कीया । जानी वोलीया हलाणौ करौ ।

—तीडी खरळ री वात

उ०—४ राव स १६३५ डूगरपुर था पाछा आया तद तणा ठाकुरा रै गुढै आया । भला कीया, पछै रतनसी रै वेटै घणा धरती रै छळ राव चद्रसेन रा हीडा कीया ।

—राव चद्रसेन री वात

५ इज्जत, सम्मान ।

उ०—ताहरा ओ भोकाई वोलियौ, 'थै इण माटी सु ठरिम्यौ नही । इण मोहाग मै लक्षण कोई नही । हु रजपूत छु । जै म्हारै साथै हालौ तौ हु थाहरा हीडा करू ।

—तीडी खरळ री वात

६ मनो-विनोद, क्रीडा ।

७ ऐसा कार्य जो किसी की चापलूसी करने के उद्देश्य से वेगार मे किया जाता है ।

उ०—सूधा अर भोळा नै भरमावै है । स्याणा, चतर अर हुस-नाका री हीडौ चाकरी तथा गरज करतौ रेवै ।—दमदोख

८ काम-काज, कार्य ।

उ०—१ ठाकर नैडा वैठ परा'र पूछै है—हे महाराज ! माग-जाग'र लेवौ, हुकम रा चाकर हा अवला नै क्यू पीडौ । म्हा लायक हीडौ ओढावौ ।—दमदोख

उ०—२ लोक भेळौ हूवौ । ताहरा रावत सामै आपरा आदमीया नू कहीयौ, 'अजमेर रौ धणी परणायौ, तिकै रौ हीडौ काढणौ ।

—राजा नरसिघ री वात

हीच—देखो 'हीच' (रू भे)

उ०—असुर सर विलद भागौ पडै आवळा, खग खहण हीच चत्र पौहर खहिया । आठ मौ उदध लियौ 'अभौ' अवपति, रौद हौदा महित डूब रहिया ।—अमैसिह राठौड री गीत

हीचडणौ, हीचडवौ—देखो 'हिचणौ, हिचवौ' (रू भे)

उ०—जेतइ दल आधा खिसइ तेतइ कायर खुणौ खिसइ, जेतइ वै दल हीचडइ तेतइ तत्काल कायर तापडइ ।—व स

हीचण—१ देखो 'हीचण' (रू भे)

२ देखो 'हिचण' (रू भे)

हीचणौ, हीचवौ—देखो 'हिचवौ, हिचवौ' (रू भे)

उ०—रावळ रै साथ दीठौ—जु राव जीवै छै । वेढ हूता पण घणी वेळा हुई थी । माहोमाही हीचिया था ।—नैणसी

हीचणहार, हारौ (हारी), हीचणियौ—वि० ।

हीचिग्रोडौ, हीचियोडौ, हीच्योडौ—कर्म वा० ।

हीचीजणौ, हीचीजवौ—कर्म वा० ।

हीचवणौ, हीचववौ—१ देखो 'हिचणौ, हिचवौ' (रू भे)

उ०—'रुघपत्ती' सोढ' री, विढै वढियौ व्रतधारी । हीचविया हरदास, 'जगौ' 'सगतौ' 'गिरधारी' ।—रा रू.

२ देखो 'हीचणौ, हीचवौ' (रू भे)

हीचवियोडौ—देखो 'हिचियोडौ' (रू भे)

(स्त्री हीचवियोडी)

हीचाहीच—देखो 'हीचाहीच' (रू भे)

६ बुरे कर्म ।
७ लघुता, अल्पता ।
८ कायरता ।
९ मूर्खता ।
रू भे—हीनता ।
हीणदत, हीणदती, हीणदतौ–स पु—एक प्रकार का अशुभ चिन्हो वाला घोडा । (शा हो)
रू भे—हीनदत ।
हीणदोस–स पु—डिंगल साहित्य मे (विशेपकर गीतो मे) नायक के माता-पिता व जाति का अर्थ ठीक न होने पर, होने वाला एक साहित्यिक दोप ।
हीणपक्ख, हीणपक्ष, हीणपख–स पु [स हीन+पक्ष] १ कमजोर या दुर्वल पक्ष ।
२ वह वात जो दलील या तर्क से प्रमाणित न की जा सके ।
३ किसी विपय का कमज़ोर पक्ष । (Weak Poin)
रू भे—हीनपक्ख, हीनपक्ष, हीनपख ।
हीणपण, हीणपणौ–स पु—१ हीन होने की दशा या भाव ।
२ लघुता, अल्पता ।
३ दुर्वलता, कमजोरी ।
४ नीचता, धृष्टता ।
५ कायरता ।
उ०—वोल उवारण वाहुवळ, जण जण मुख जस जाप । पख नह धारण **हीणपण**, पौरस इण परताप ।—जैंतदान वारहठ
हीणपद–वि—पदच्युत, पद से हटा हुआ, पद से गिरा हुआ ।
उ०—'अभौ' कहे रीझै अमर, वैगी कीजै वात । मिच्छ मिधावै **हीणपद**, ग्रह आवै गुजरात ।—रा रू
हीणपुण्ण, हीणपुण्या, हीणपुण्यौ, हीणपुन्या–वि [स हीण+पुण्य] १ भाग्यहीन, हतभाग्य ।
उ०—१ वाप नै मरावती वेळा जैडी काठी छाती करी, वैडी छाती इण **हीणपुण्या** राजकवर नै छिटकावता नी कर सकै ।
—फुलवाडी
उ०—२ पछै वारा स्वारथ माथै थूकती कह्यौ—वापडा **हीणपुन्या** जादू मतरा सू ई सगळी वाता सारणी चावै ।—फुलवाडी
२ जिसके पुन्य क्षीण हो ।
हीणमाण, हीणमान–वि [स मान+हीन] १ जिसका मान घट गया हो, वेइज्जत, अप्रतिष्ठित, हतवीर्य्य ।
उ०—राज राव अनै राण, पिनाक पै धरै पाणा । हिलै होय **हीणमान** दईवाण दईवाण ।—र रू
२ हताश, निराश ।
हीणमेध–वि [स मेधा+हीन] १ मूर्ख, वेवकूफ, अज्ञानी । (ह ना मा)
२ जिसकी वुद्धि कमजोर हो, अल्प वुद्धि ।
हीणरस—देखो 'हीनरस' (रू भे)
हीणी–वि. स्त्री—ओछी, हलकी, न्यून ।
उ०—ठेलै गिर अग्यिाण थट, कहै न **हीणी** कन्थ । वहै भ गमै वाहुवळ, 'पातळ' लहै प्रभत्त ।—जैंतदान वारहट
२ छोटी, लघु ।
३ नीची, हीन, निम्न ।
हीणु, हीणौ—देखो 'हीण' (अल्पा, रू भे)
उ०—१ दाम्रा वहुली द्रव्य हुवै अधिकौ कुल **हीणौ** । वल पामौ अति वहुल प्रवल हुइ सरवै पीणौ ।—ध व ग्र
उ०—२ थान **हीणा** जिता थान थिर थापिया, थान धारी दिया नरा उथाप । प्रथी माधार चा विडद हद पामिया, प्रकट इण हणूमत तणौ प्रताप ।—रतनसिंघ राठौड री गीत
उ०—३ खितपति देख हुवौ सिर खीणौ, हाथी जेम महामद **हीणौ** ।—सू प्र
उ०—४ पाप तणा फल देखो रे प्राणी, पाप सव दुख रोई रे । **हीणा** दीणा दीसै दुमना, सार न पूछै कोई रे ।—जयवाणी
उ०—५ वर **हीणौ** अपणौ भलौ है, कोढी कुष्टी कोई । जाकै मग सीवारता है, भला कहै सव लोइ ।—मीरा
रू भे—हीणी, हीणउ ।
हीणौदाव–स पु—१ कायरता, भीरुता ।
उ०—पग पग काटा पाथरै, वादीलौ वन राव । होणौ ज्यू ही होवसी, दियै न **हीणौदाव** ।—वा दा
२ कमजोर पक्ष ।
३ दीन वचन ।
हीतळ हीतल–स पु [स हृदय+तल] हृदय तल, अन्त करण, अन्त स्थल ।
उ०—१ मौडै मुख मौडै **हीतळ** हतवाळी, पीतळ पैरण नै सीतळ सतवाळी । लुच्चा ललचावै लालच विन लागै, लोचण जळ मोचण सोचण खिण लागै ।—ऊ का
उ०—२ ताप सताप मिटै भवकै सव, दड दसा कवहु नहि देखै । सीतल कौ मुख देखत ही मुझ, **हीतल** सीतल होत विसेखै ।
—ध व ग्र
हीन—देखो 'हीण' (रू भे)
उ०—किसु पहूतउ द्वापरि प्रलउ, ईह लगइ कइ अम्ह घरि विलउ । अरजुन वोलइ रे अकुलीन, अरजुन झूझिती मइ सु **हीन** ।
—सालिभद्र सूरि
हीनक्रम–स पु [स] काव्य मे होने वाला दोप जो, गुण गिनाने के क्रम मे गुणी न गिनाने पर होता है ।
हीनता—देखो 'हीणता' (रू भे)
उ०—नारद कै मन भया अनेमा, फिर वूज्या गुरु कू उपदेसा ।

हीडाऊ—देखो 'हेडाऊ' (रू भे)
हीडियोडौ—देखो 'हींडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीडियोडी)
हीडोलणौ, हीडोलवौ—देखो 'हिंडोळणौ, हिंडोळवौ' (रू भे)
उ०—सारग चाप चडाविय डाविय वाहु नइ प्राणि। हरि हेला हीडोलिय तोलिय तसु वलु प्राणि।—जयसेखर सूरि
हीडोलाखाट, हीडोलाखाटणी—स पु — छत के कडो मे रस्सी के सहारे झूले की तरह लटकाई हुई खाट, चारपाई।
उ०—नितु नवा अलकार वावरइ, उत्फुल्ल पुल्यसिय्या आदरइ, हीडोलाखाटणी लीना धरई, भोग पुरदर, होठ फुरइ।—व स
हीडोलाट—देखो 'हीडोलाट' (रू भे)
उ०—कवि कहइ रतिपति तगु विचार आछा अवर पहिरणि सार। वावनिचदन सिर लाइड, हीडोलाट खाट पुठीइ।
—प्राचीन फागु सग्रह
हीडोलियोडौ—देखो 'हिंडोळियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीडोलियोडी)
हीण-वि [स हीन] १ निम्न स्तरीय, न्यून, घटकर, घटिया, हल्का, ओछा।
उ०—१ द्रोण मोण तुरगं रथ दीसइ, जेउ युद्धि कुण हीण कलीसइ। युद्धसत्रि जिम गाउ जि मत्रइ, एक दीहि भड कोडि निमत्रइ।—सालिसूरि
उ०—२ भाई अर माइता रै उठै टवनै दिन तोडणा उणनै सपनै ई कवूल नी हा, पण वाण रौ औ हीण अर ओछी वरताव देखनै उणरी सारी सुध-वुध मार्यं जाणै पाळी पडग्यौ।—फुलवाडी
२ कायरता पूर्ण।
उ०—सौ सपूत जै पीछो गखै, दुरजन हीण कदै ना भाखै। वैरा तिणा विसारै वेहा, सौ जाया ही अणजाया जेहा।
—डाढाळा सूर री वात
३ रहित, विना, हीन, अभाव ग्रस्त।
उ०—१ अकममात मिळियौ इदोखै, नैण हीण इक नाई। दोनी हाथ जोड दुरगा नै, दुरवळ दसा दिखाई।—मे म
उ०—२ प्रथी करण थिर वेद पुराणा, करम जिका वळ हीण कुराणा।—रा रू
४ अशक्त, कमजोर, क्षीण।
उ०—१ महिपति अमीर तन हीण मान, पाना दिस कोई धर न पाण। तद तेज वाण नरसिंघ ताय, 'अभमाल' पान लीन्हौ उठाय।—वि स
उ०—२ भडिया सनाह तन तुरग जीण, हुय गया मुगळ दुख दहळ हीण।—रा रू
५ क्षीणकाय, पतला, दुवला।
उ०—चगा वरनी, नाक सळ, उर सुचग विचि हीण। मदिर वोली मारुवी, जाणि भणक्की वीण।—ढो मा.
६ तुच्छ, नगण्य, निरर्थक, महत्वहीन।
७ लघु, छोटा।
८ रिक्त, खाली।
९ छोडा हुआ, त्यागा हुआ, त्यक्त।
१० दोपयुक्त, त्रुटियुक्त, अशुद्ध।
११ अल्पतर, कम।
१२ वर्जित।
१३ नप्ट।
१४ कायर, डरपोक।
१५ साहित्य मे खलनायक, अधम नायक।
१६ धर्म शास्त्र के अनुसार ऐसा साथी जो विश्वसनीय न हो।
१७ काव्य सम्वन्धी एक दोप।
१८ मूर्ख। (ह ना मा)
१९ नीच, पामर।
रू भे—हीण।
अल्पा,—हीण, हीणौ, हीन।
हीणअग—देखो 'हीनाग' (रू भे,)
हीणउ—देखो 'हीणौ' (रू भे)
उ०—वालभ दीपक पवन भय, अचळ मरण पयट्ठ। कर हीणउ वूणउ कमळ, जाण पयोहर दिट्ठ।—ढो मा
हीणउपमा—देखो 'हीनोपमा' (रू भे)
हीणकरम-स पु [स हीन+कर्म] १ नीच कार्य, कुकृत्य।
२ वुरे कर्म, वुरे भाग्य।
हीणकरमी, हीणकरमौ-वि [स हीन+कर्मिन्] १ भाग्यहीन, हत-भाग्य।
२ वुरे कर्म करने वाला, कुकर्मी।
३ अन्यायी, दुप्ट।
हीणचरित्त-वि [स हीन+चरित्र] दुश्चरित्र, चरित्रहीन।
हीणता-स स्त्री [स हीनता] १ हीन होने की दशा या भाव।
२ अभाव, कमी।
उ०—सरी नौसरै हार मोती सजोया, पडै स्नेणता, हीणता सुक्र पोया। परीखै सरीकठ मैं हीर पूरी, सुमै सूर आकाम जाणै मनूरी।
—रा रू
३ तुच्छता, ओछापन।
उ०—वुदी कोटी वीकपुर, सारा भूप अवक। राज दिखावै हीणता, ज्या धन खावै रक।—रा रू
४ कमजोरी, दुर्वलता।
उ०—'हैमत' हिम्मत ऊधरी, 'सगतावत' उण वेर। विखै वरज्जै हीणता, ऊठ गरज्जै फेर।—रा रू
५ वुराई, नीचता, निकृप्टता।

अम्हारडु, ए ताहरी चकचाळ।—मा का प्र
२ देखो 'हिमालय' (रू भे)

हीमाळइ, हिमाळउ, हीमाळै, हीमाळौ—देखो 'हिमालय' (रू भे)
उ०—१ महा—उपग्रह उपजइ, जै नर उलग ईण महूरत जाई। श्रावण का सासा पडई, जाणि हीमाळइ राजा गलीया हो जाई।
—वी दे
उ०—२ हीमाळउ हाली बळइ, हुई हाल कल्लोल। उगळा डोटी पहिरीइ, मुखि भरीइ तवोल।—मा का प्र

हीय, हीयइ, हीयइ, हीयउ, हीयऊ, हीयडइ, हीहडलौ, हीयडौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)
उ०—१ रामि रसाउलु चरीउ थुणीजइ, किम रणणायरु हीयइ तरीजइ। मानिधि सासण दिवि तणइ।—सालिभद्र सूरि
उ०—२ नाह उतरीगौ नदीय वनास। नारि का नाडि नू, हीयउ नै साम।—वी दे
उ०—३ मारवणी तू अति चतुर, हीयइ चेत गियार। जउ कता सू कामडउ, करहउ कावै मार।—ढो मा
उ०—४ वारमइ वरस मील्यौ धन-नाह। हीयऊ लइ हाथि गला मही वाह।—वी दे
उ०—५ लाजइ नाकारउ नवि करयउ, दीक्षा लीधी भाई वहु मानि रे। वार वरस व्रत मांहि रह्यउ, हीयडइ धरतउ नागिला नउ ध्यान रे।—स कु
उ०—६ अरध मडित नारी नागिला रे, खटकइ म्हारा हीयडला वारि रे।—स कु
उ०—७ केवल जिम दूर थकी दीसै, हीयडौ जिन देखण ने हीसै। वाखाणै सहु विस्वा विसै, यात्रा दीधी ए जगदीसै।—ध व ग्र

हीयडु, हीयडइ, हीयडउ, हीयडलू, हीयडलौ, हीयडौ, हीयरौ—देखो 'हिन्दौ' (रू भे)
उ०—१ तु रगि रमवा गयु, जिहा अवरनी आण। होळी हीयडइ माहरइ, कीवी कत सुजाण।—मा का प्र
उ०—२ चीरी रही धन हीयडउ लगाई। जाणिक वाछरू हे मेल्ही गाई।—वी दे
उ०—३ दाखी डाहिम आपणी रे, रजि मुझ मनमोर। छयलपणइ छानउ रहचु रे, हीयडउ करी कठोर।—हीराणद सूरि
उ०—४ हीयडु हेजइ उल्हसइ।—स कु
उ०—५ हीयडलू घणू गहिवरिउ, तु सुणि न अम्हारा नाथ जी। तु अमरापुरि सचरचउ, हु मरणि न मेल्हु साथ जी।
—का दे प्र
उ०—६ करि कागळ लेखिणि करी, माधव हीयडा माहि। वाई वेहू वलि गया, नीसासा नइ दाहि।—मा का प्र

हीयणइ—क्रि वि [स अधुना] अभी, अब।
उ०—जाणै हीयणइ हरणी हणी। ओकी गन उघाडिज्यौ जोवन पूर।—वी दे

हीयतल—स पु. [स हृदय+तल] अन्तस्थल, हृदयतल।
उ०—जल करै सीतल हीयतल, जेठ मे ए ठहराय। जो ठीक जोनवी तै कहो, कदि मिलै जेठ को भाय।—ध व ग्र

हीयागम—देखो 'हिरदेगम' (रू भे)
उ०—हीयागम आगम उलटा पग होवै। माध्वी दुत देनै कुलटा मुख सोवै।—ऊ का

हीयाफूट, हीयाफूटोडौ, हीयाफूटौ—देखो 'हीयाफूटौ' (रू भे)
(स्त्री हीयाफूटी, हीयाफूटोटी)
उ०—मदेसउ जिन पाठवइ, मरिस्यइ हीयाफूटि। पारेवाका भूल जिऊ पडिनइ आगणि त्रूटि।—ढो मा

हीयालि, हीयाली—देखो 'हियाळी' (रू भे)
उ०—१ भूटि भृविय महिलनि गेनी। काढिवा वमन कीय हीयाली, अतरालि थई राधिमी राखी। तीणइ हुई हिव होअन चाखी।—सालिसूरि
उ०—२ वात वाजत गई कुलेहिं, दाघ दुरजन पडिउ अति देहिं। ए इसिउ वल न पाडव टाली, कूड काजि अह्म एह हीयाली।
—सालिसूरि
उ०—३ कहो पडिन ए हीयाली, मत करिज्यो वात विचाली रे। निरखी मे सुदर नारी, धरमी आदर करि धारी रे।—ध व ग्र
उ०—४ अरथ कहो तुम वहिलो, एहणी सखर हीयाली रे सार। चतुर नर एक पुरख जग माहे परगडो, सहु जाणै समार।
—ध व ग्र

हीयाळै—देखो 'हिमालय' (रू भे)
उ०—१ कासी करवत सिर सहे, गळै हीयाळै देह। हरीया निज फल दूरि है, लागो फूल वनेह।—अनुभववाणी
उ०—२ जाय हीयाळै गळत जिद, उलटि राखत नाद विद। कोटि गउ दिज दान देन, मरत कासी मुगति लेत।—अनुभववाणी

हीयौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)
उ०—१ लाभ लेइजै लोयणा, सजन रवै सजरी। उलसै देखण नै हीयौ, वैरण लाभ बुरी।—पना
उ०—२ धी को बोलनू मानीयो वाप, काई न मागी राजा पाई वचन। काई कहेमी सामरइ, गाव न उतरचौ हीया थी एक।
—वी दे
उ०—३ सूरजना किरण पच्छिम ढरया, पथी सगा नइ मिल्या। विरहीना हीया वल्या, गोवाळ घरै वल्या।—रा सा म
उ०—४ एतलइ सुसरमा दलि ढोल वाजइ। जाणै आसढू किरि मेह गाजइ। हीया ध्रसूकइ सर मेस सूकइ, भय बीहता कायर जीव मूकइ।—सालिसूरि
उ०—५ ताप सन्निपात जाणी अतीसार सग्रहणि, फीहौ विध राल पाडु गोला सूल खैण है। हीया रोग सास खास रुधिर प्रवाह

नारद आप हीनता भाखी, गुरु कु गुभि हिरदै की दाखी।
—अनुभववाणी

हीनदत—देखो 'हीणदत (रू भे)

हीनपक्ख, हीनपक्ष, हीनपख—देखो 'हीणपख' (रू भे)

हीनबळ—वि [स बल+हीन] जिसका बल क्षीण हो गया हो, अशक्त, कमजोर।

हीनयान—स पु [स हीनयान] बौद्धो की एक प्राचीन शाखा जिसके ग्रन्थ पाली भाषा मे हैं।

हीनयोग—स पु [स] औपधियो का ऐसा योग जो उचित परिमाण से कम हो।

हीनयोन, हीनयोनि—स स्त्री [स] १ नीच जाति, नीच कुल।
२ नीच योनि, अधम योनि।
वि—नीच योनि का, नीच जाति या कुल का।

हीनरस—स पु [स] काव्य रचना का एक दोष जो प्रसग के विपरीत रस की योजना करने पर होता है।

हीनवाद—स पु [स] १ मिथ्या तर्क, झूठा या निरर्थक वाद।
२ झूठी गवाही।

हीनवादी—वि [स हीनवादिन] १ मिथ्या तर्क देने वाला, झूठा या निरर्थक वाद प्रस्तुत करने वाला।
२ परस्पर विरोधी कथन कहने वाला।
३ झूठी गवाही देने वाला।

हीनवीरज, हीनवीरज—वि [स हीन+वीर्य्य] १ कमजोर, अशक्त, दुर्बल।
२ कायर, डरपोक।
३ निस्तेज, मद।

हीनाग—वि [स अग+हीन] १ जिसके कोई अग न हो, अग-भग, अग-हीन।
२ खण्डित, अधूरा।
रू भे—हीणअग।

हीनोपमा—स स्त्री [स] उपमा अलकार का एक भेद जो, किसी बडे उपमेय के लिये छोटे उपमान की योजना करने पर होता है।
रू भे—हीणउपमा।

हीप—देखो 'हीप' (रू भे)

हीवणौ, हीववौ—क्रि स—१ युद्ध करना, लडाई करना।
२ मारना, पीटना, कूटना।
३ सहार करना, वध करना।
४ पछाडना, पटकना।

हीवर—देखो 'हयवर' (रू भे)
उ०—**हीवर** वोह हळवळ सुडि सळवळ, पदमा पुवगा कोई पार नही। अवतार असा दस आप तणा, जुध जीपण जाणि विसन मही।—वि स सा

हीवियोडौ—भू का कृ—१ युद्ध किया हुआ, लडाई किया हुआ २ मारा हुआ, पीटा हुआ, कूटा हुआ ३ सहार किया हुआ, वध किया हुआ ४ पछाडा हुआ, पटका हुआ।
(स्त्री हीवियोडी)

हीमसु—स पु [स हिमाशु] १ चन्द्रमा, शशि।
२ रूपा, चादी।

हीमत—देखो 'हिम्मत' (रू भे)
उ०—१ आयौ 'करन' 'मुकन्न' तणा, भड मेळै चद्रभाण। 'हैमत' **हीमत** अग्गळी, 'पीथौ' पत्थ प्रमाण।—रा रू
उ०—२ किणी री **हीमत** नी ही कै राजाजी रै ऊधी पज्योडी वात नै मावळ सवी करनै केवटै। सगळा रा मूडा उतरियोडा हा।
—फुलवाडी
उ०—३ **हीमत** मत छाडौ नरा, मुख तै कहता राम। हरीया हीमत मु कीया, घू का अटळ धाम।—अनुभववाणी
उ०—४ माळी रा है जठै ई पग चिपग्या। थोडी ताळ पछै नीठ **हीमत** करनै थकै हालियौ।—फुलवाडी

हीमतण—वि स्त्री—हिम्मत वाली, साहसी।

हीमतभरियौ—वि—१ जिसमे हिम्मत हो, साहस हो, हिम्मती, साहसी।
२ बल, पौरुष वाला।

हीमतवर—वि—हिम्मती, साहसी।
उ०—कवर अणू तौ समझवान, निडर अर **हीमतवर** हौ।
—फुलवाडी

हीमति, हीमती—वि (स्त्री हीमतण) साहसी, निडर, वहादुर।
उ०—हाथाळ हेल हमीर हूतल आप कुळ अजुआळ। **हीमति** वहादर **हीमती** कलि भडा घोडा कीमती।—ल पि
रू भे—हिम्मति, हिम्मती, हीमती।

हीमत्त—देखो 'हिम्मत' (रू भे)
उ०—थेटू धर सवर ऊडा मर थागै, आ रै माळागर मूडा रै आगै। मारी कीमत हे करियोडा सारै, हीमत्त भरियोडा **हीमत्त** नह हारै।—ऊ का

हीमाचळ—देखो 'हिमाचळ' (रू भे)
उ०—**हीमाचळ** नारद सू हसिया, कुवरि आविया गोदकियइ। वर कोड एक साखइत वतावउ, दष्टी जियइ रइ भ्रगुटि दियइ।
—महादेव पारवती री वेलि

हीमायत—देखो 'हिमायत' (रू भे)
उ०—तठै मेडतौ जागीर माहै मडियौ नही, कह्यौ—औ माहावतखान थानु **हीमायत** कर दीरायौ थौ, दरगाही मनसप माहै दीयौ नही।—नैणसी

हीमायती—देखो 'हिमायती' (रू भे)

हीमाळ, हीमाळ—स स्त्री—ठण्डी लहर, शीतलहर।
उ०—काती छातिमाहि तइ, हलकारिउ **हीमाळ**। धूजड अग

उ०—२ विरहन मारी विरह की, सुधि बुधि विसरी सार । टगीया सिर सु डगीया, हीर चीर सिणगार ।—अनुभववाणी

उ०—३ विछायत समियान वगिया नई जरकसि हीर नगिणा । सिंघ आसण छत्र सोहै महा जगमग हेम सोहै ।—सू प्र

१४ रेशम का डोरा ।

१५ रेशम का वस्त्र ।

१६ नैषध चरितकार श्रीहर्ष के पिता का नाम ।

१७ शिव का एक नामान्तर ।

१८ छप्पय छन्द का ६४ वा भेद जिसमे, ७ गुरु, १३८ लघु से अनुसार १५२ मात्राएं तथा १४५ वर्ण होते है ।

१९ २३ मात्राओ का एक मात्रिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण के अन्त मे रगण होता है । रघुवर जस प्रकास मे इसे २१ मात्राओ का माना है ।

२० ठगण की पाच मात्राओ मे से चौथे भेद का नाम ।

२१ प्राय सारे भारत मे पाई जाने वाली एक प्रकार की लता ।

२२ रजा की प्रेमिका हीर जो रजा स्याल की मुख्य नायिका है ।

हीरइ, हीरउ—देखो 'हीरौ' (रू भे)

उ०—१ सीहइ वनिइ सीह, पाय सुरां, सुरां पाय, सीनउ हीरइ हीरउ सोनइ, अमात्यइ राज्य राज्यइ अमात्य सोभइ ।—व स

उ०—२ पदक प्रियु तउ हू मोतिन माला, हीरउ तउ हू मूदरडी रे वहिनी । चद्र प्रियु तउ हू रोहिणी थाऊ, चदन मलय डूगरडी रे वहिनी ।—स कु

हीरक, हीरकण—स पु [स] १ हीरा नामक रत्न । (डि को)

उ०—नीरधर माहमा मीर तयतेम नद । हीरकण माह नौ पतो नृप हेम ।—जुगतीदान देथौ

२ वज्र ।

रू भे—हीरकि, हीरकी ।

हीरकणी—स स्त्री —१ हीरे का छोटा कण, टुकडा ।

उ०—सदा खैर री खायनै रहै विरिणया सगा, नूप सिरिणया जवर चाल चीठा । दात तौ हीरकणिया जिमा दिपावै, फिटक सिरिणया जिमा सहज फीटा ।—उदैभाण बारहठ

२ काच काटने का वह औजार जिसमे हीरे का कण लगा होता हे ।

रू भे—हीराकणी, हीराकणी ।

हीरकि, हीरकी—देखो 'हीरक' (रू भे)

उ०—निपुण निवेसइ त्रेवडी, केवडी आलउ रूप । दीसइ मुकुट कटीरकि, हीरकि नव नवउ रूप ।—जयसेखर सूरि

हीरडु, हीरडौ—१ देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—अहै हीरडा तइ हरि पूजीउ कि जागु सिवराति । गोरी कठ न ऊतरि, मारी दीह नि राति ।—गुणचद सूरि

२ देखो 'हीरौ' (अल्पा, रू भे)

हीरणी, हीरवी—देखो 'हरणी, हिरवौ' (रू भे)

हीरद, हीरदौ—देखो 'हिरदौ' (रू भे)

उ०—दाता सिरा हीरदां री सौ माळै दरसण दाय, ... छाजै नगजै जाता ... ।—जैतसिंह राठौड़ री गीत

हीरपट, हीरपट्ट स पु—रेशमी वस्त्र ।

उ०—... पाट-सीया हीरपट्ट ... ।.. —व स.

हीरबुद-स पु—पारसी धर्म का पुजारी । (सा म)

हीरवडि-स पु—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—... हीरवडि ... —व स

हीरयणी-स स्त्री—... का पौधा । (शेखावाटी)

हीरांकणी—देखो 'हीरकणी' (रू भे)

उ०—... हीरांकणी ।—...

हीराउलि, हीराउली-स स्त्री—वनस्पति विशेष ।

उ०—... हीराउलि ... ।—सा सा प्र

हीराकणी—देखो 'हीरकणी' (रू भे)

उ०—दुरै निहारै दन्ता, वादळ दामणियाह । ... आगळी, की हीराकणियाह ।— अज्ञात

हीराकसी, हीराकसीस-स. पु—१ गधक के रासायनिक योग से होने वाला लोहे का विकार जो देखने मे कुछ हरापन लिये मटमैले रग का होता है ।

२ विधवाओ के वस्त्र रगने का एक प्रकार का रग विशेष ।

हीरागर, हीरागरउ—स पु—१ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—१ वइरागरउ हीरागरउ फूलवागरउ पूलसीउ वहसून पूरणोसिय सीगीय काल फूटउउ रातउ फूटउउ सूरउली मेघावलि मेघउवर पद्मावलि पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्राणि ।—व स

उ०—२ वयरागरा हीरागरा पुस्पागर जादर मेघाडवर नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट राजवडि हसवडि ।—व स

२ एक जाति विशेष ।

३ उक्त जाति का व्यक्ति ।

हीरानानीचोपरण—स पु—१ सोने, चादी के आभूषणो पर खुदाई करने का स्वर्णकारो का एक औजार ।

हीरानामी—१ चादी का एक आभूषण विशेष जिसे स्त्रिया पैरो मे पहनती है ।

२ सोने-चादी के आभूषणो पर खुदाई करने का स्वर्णकारो का एक औजार ।

३ आभूषणो पर की गई एक प्रकार की खुदाई ।

रूप, सीस पीड रोग अरु जेतै रोग नैन हैं ।—ध व ग्र

उ०—६ वौ आपरी घरवाळी नै समझावरण सारू वात करी कै वा तडकनै कह्यौ—म्हनै समझावरण नै आया हे, पैला थारा हीया माथै हाथ धरनै सोचौ कै एकाएक वेटा नै दिमावर भेजरण सारु थे राजी व्हिया इज कीकर ।—फुलवाडी

मुहा०—१ हीया गाव जाणा=अक्ल व समझ चली जाना, नासमझी की दशा होना, वेवकूफी के काम करना । २ हीया फूटणा=वुद्धि समाप्त हो जाना, समझ चली जाना, सूझ-वूझ न रहना । ३ हीया माथै हाथ धरणौ=तसल्ली एव धैर्य के साथ किसी वात पर विचार करना, विवेकपूर्ण वात करना । ४ हीया माथै हाथ होणौ=जोखम या जिम्मेदारी वहन करना, जोखमपूर्ण कार्य की चिंता होना । ५ हीया मैं कागसी फेरणौ=किसी वात पर व्यावहारिक वुद्धि से विचार करना, सोच विचार कर काम करना, अपने कार्यो का पुनरावलोकन करना । ६ हीया मैं गोटौ ऊठणौ=हृदय मे उत्साह भरना, उमगित व उत्साहित होना, शोक पूर्ण वात पर मन मे घुटन होना । ७ हीया मैं वसणौ=किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु की याद दिल मे हर वक्त रहना, अत्यन्त प्रिय होना । ८ हीया मैं वैठणौ=कोई वात या कार्य समझ मे आ जाना, कोई वात दिल मे घर कर जाना । ९ हीया मैं लाय लागणी=अत्यन्त दुख या शोक के कारण मन मे पीडा होना, दिल मे आग लगना, शोक सतप्त होना, दुख मे तडफना । १० हीया री दाझ या हीया री दाह=दुख की आग, मन की तडफन, वेदना, दुख, शोक, पीडा । ११ हीया री पीर=देखो 'हीया री दाझ' । १२ हीया री हाम=हृदय की उत्कण्ठा, इच्छा, तीव्र आकाक्षा । १३ हीया सू उतरणौ=किसी के प्रति अनिच्छा या अरुचि होना, किसी व्यक्ति के प्रति अच्छे खयाल न रहना, इम्प्रेशन विगडना । १४ हीयै ऊकळणौ=मस्तिष्क से कोई वात उपजना, कुछ याद आना, युक्ति निकलना । १५ हीयै झरणौ=किसी वात या परिस्थिति को महन करना, वरदाश्त करना, मन मे मान लेना । १६ हीयै वनूळिया ऊठणा=मन मे कई तरह के विचार उठना, तरह-तरह के तीव्र भावो का सचार होना । १७ हीयै वात ढूकणी=वात समझ मे आना, वात मान लेना, जचना, उचित लगना । १८ हीयै वैठणौ=समझ मे आना, सीख मे आना, हृदय मे वसना । १९ हीयै भाटौ होणौ=पत्थर दिल होना, दया, ममता, प्रेम, क्षमा आदि कोमल भावो का हृदय मे अभाव होना । २० हीयै राम वापरणौ=किसी के मन मे भलाई की वात आना, भला कार्य या भली वात करना । २१ हीयै रोग होणौ=मानसिक व्यथा होना, मानसिक व्यथा के कारण शारीरिक एव वौद्धिक क्षति होना, उत्साह व उमग न रहना । २२ हीयै रा हूम=मन की तमन्ना, लालसा । २३ हीयौ उळसणौ=हृदय उत्साहित होना, उमगित होना, लालायित होना, खुश होना, प्रसन्न होना । २४ हीयौ खुलणौ=वुद्धि का विकास होना, सकोच मिटना, वौद्धिक विकास होना । २५ हीयौ गोटीजणौ=मन के अन्दर घुटन होना, मन कुण्ठित होना, अन्दर ही अन्दर घुटना । २६ हीयौ ठडौ करणौ=दिल को तसल्ली देना, सतोप करना, आशा पूरी करना । २७ हीयौ दवकणौ=आतकित होना, भयभीत होना, घवराना, प्रभावित होना । २८ हीयौ देणौ=किसी के प्रेम मे फस जाना, दिल दे देना । २९ हीयौ फूटणौ=वुद्धि या समझ समाप्त हो जाना । ३० हीयौ वैठणौ=घवराहट होना, अनिष्ठ की आशका से चिंतित होना, परेशान होना, भयातुर होना । ३१ हीयौ सालणौ=मानसिक व्यथा के कारण अन्दर ही अन्दर कष्ट पाना, दुखी होना, मन मे कोई टीस लगना । ३२ हीयौ हथाळी लैणौ=साहसिक कार्य हेतु तत्पर होना । ३३ हीयौ हीयौ दळीजणौ=घुटन होना, पिसना, दम घुटना ।

हीर—स पु [स] १ हीरा नामक रत्न ।

उ०—१ सग तेरा विराजति याळ सगी, रमणी अलकावलि सोभ हरी । सुभ सोभत पकज हीर सिरै, क्रति नौ ससि हस्ति अमोभ करै ।—ऊ का

उ०—२ ऊपरि पद पलव पुनरभव ओपति, त्रिमळ कमळ दळ ऊपरि नीर । तेज कि रतन कि तार कि तारा, हरिहम सावक ससि हर हीर ।—वेलि

उ०—३ नयरा कज सम निपट, सुभग आरारण हिमकर सम । जप मम 'ग्रीवह' जळज, तवत मम हीर डमरा तिम ।—र ज प्र

२ मोतियो की माला, हार ।

उ०—मानहु रूप मनोज अधिक वाकी अदा, जर पवसावा जोख सोभ भूखरा सदा । पहरि पना पुखराज मुकताहळा, ऊगै फजर अदीत किना चढती कळा ।—सिववक्स पाल्हावत

३ सूर्य, भानु । (ना डि को)

४ विद्युत, विजली ।

५ इन्द्र का वज्र ।

६ शक्ति, वल ।

७ सर्प, साप ।

८ शेर, सिंह ।

९ लाक्षणिक अर्थ मे किसी अमूल्य वस्तु के लिये उपमा ।

उ०—इयै रै वनै री क्या जोवमी रे, ओ तो हाटा मायली हीर, विलालौ रै जोवसा म्हारा राज ।—लो गी

१० किसी वस्तु के भीतर का मूल तत्व, सार भाग, मत, गूदा ।

११ लकडी के नीचे का सार भाग ।

१२ धातु, वीर्य्य ।

१३ रेशम ।

उ०—१ सुचि कीजै स्नान सपाडा, सहु पहिरै नवि नवि साडा । हीर चीर पाटवर हेम, पहिरौ, सहु भूखरा प्रेम ।—ध व ग्र

जणा चौपड-पासा रमण बैठा । सेठ लगता ई तीन दाव हारग्या ।
—फुलवाडी

हीलाणौ, हीलाबौ—क्रि स ['हीलणौ' क्रि का प्रे रू] १ वन्धन मे लिवाना, वधवाना ।
२ वन्द कराना, रोक लगवाना, प्रतिवन्ध लगवाना ।
४ ठण्डी हवा खाने के लिये प्रेरित करना, ठण्डी हवा लगवाना ।
५ डराना, भय पैदा करना ।
६ ठण्डा करना, शीतल करना ।
७ देखो 'हिलाणौ, हिलाबौ' (रू भे)
हीलाणहार, हारौ (हारी), हीलाणियौ—वि० ।
हीलायोडौ—भू० का० कृ० ।
हीलाईजणौ, हीलाईजवौ—कर्म वा० ।
हीलावणौ, हीलाववौ—रू० भे० ।

हीलायोडौ—भू का कृ—१ वन्धन मे लिराया हुआ, वधवाया हुआ २ वन्द कराया हुआ, रोक लगवाया हुआ, प्रतिवन्ध लगवाया हुआ ३ सीलवन्द कराया हुआ, मुहरवन्द कराया हुआ ४ ठण्डी हवा खाने के लिये प्रेरित किया हुआ, ठण्डी हवा लगवाया हुआ ५ डराया हुआ, भय पैदा किया हुआ ७ ठण्डा किया हुआ, शीतल किया हुआ ७ देखो 'हिलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीलायोडी)

हीलावणौ, हीलाववौ—१ देखो 'हीलाणौ, हीलावौ' (रू भे)
उ०—रावत लै मौ उर-रगत, हथ-छाला **हीलाव** । मठड्या ऊनी मसळ पय, पाई पडिया थाव ।—रैवतसिंह भाटी
२ देखो 'हिलाणौ, हिलावौ' (रू भे)

हीलावियोडौ—१ देखो 'हीलायोडौ' (रू भे)
२ देखो 'हिलायोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीलावियोडी)

हीलियोडौ—भू का कृ—१ वन्धन मे लिया हुआ, वाधा हुआ २ वन्द किया हुआ, रोक लगाया हुआ, प्रतिवन्ध लगाया हुआ ३ सीलवन्द किया हुआ, मुहरवन्द किया हुआ ४ ठण्डी हवा खाया हुआ, ठण्डी हवा लगा हुआ ५ ठण्डा या शीतल हुवा हुआ ६ भय खाया हुआ डरा हुआ ।
(स्त्री हीलियोडी)

हीलेडौ—देखो 'हिलोळौ' (रू भे)
उ०—दिल्ली सर वादस्या फौजा तौ दीनी हकवाय, **हीळेडौ** वादस्या ज निवेमड म्हौ रै ढावण देवरा ।—लो गी

हीलोळ—१ [illegible]रकि नव नवउ (रू भे)
उ०—[illegible]र चढ आ[illegible]रदौ' (रू वहतौ, वधतौ क्रोध **हीलोळ** वप । नीर विर्ना[illegible]लोर' (रू [illegible] पुजीउ किनेखा वीर तप ।
[illegible]द हालतौ, [illegible]—गुणाच्व दुरजनसाल हाडा री गीत
उ०—२ जळा वा[illegible] [illegible]डा । अणी आरवा पूग्वा ताहारी स[illegible]
—रा[illegible]
मा[illegible]

थाट आडा ।—सू प्र
२ देखो 'हिलोळी' (रू भे)

हीलोळणौ, हीलोळवौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडवौ' (रू भे)
उ०—१ कर मेर अकव्वर साह नू, मेम जोम नेतै सर । सुरताण महण **हीलोळियौ**, दुरगदास आसगरू ।—रा रू
उ०—२ तिहि गग **हीलोळेहे** जाय मतगुर चीन्है महेजै न्हाय ।
—वि स मा

हीलोळियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीलोळियोडी)

हीलोळौ—देखो 'हिलोळौ (रू भे)
उ०—१ झाग नाग झारिया, कई ऊझलै कचोळा । घण केसर घोळिया, होद लेवै **हीलोळा** ।—मे म
उ०—२ मा, सहस तळावा मैं मैं गयी जै मा, भरिया **हीलोळा** साय, हसा वुगला खेल रह्या जै ।—लो गी

हीलोहळ—देखो 'हिलोहळ' (रू भे) (डि को)
उ०—१ हळहळ वळ विस्तरै जाण **हीलोहळ** फट्टौ । पवन सग पेरिया प्रवळ दव दग प्रगट्टौ ।—रा रू
उ०—२ धुनि वेद सुणति कहु सुणति सख धुनि, नद झल्लरि नीसाण नद । हेका कह हेका **हीलोहल**, सायर नयर सरीख सद ।
—वेलि
उ०—३ हेदळ पैदळ हसत, हलै दळ दळ **हीलोहळ** । उदध सात उलटिया, जाणि वारह घण वद्दळ ।—सू प्र
उ०—४ लक नगर **हीलोहळौ** रुधा च्यारु घाट ।—वि स सा

हीलौ—स पु—१ किसी कार्य की सिद्धि के लिये सोचा हुआ मार्ग, उपाय, रास्ता ।
२ काम, कार्य ।
उ०—लकडीकार लुहार, खामिया सेव रगीला । छोड कूवटौ करै, हरामी खासा **हीला** ।—दसदेव
३ व्यवसाय, रोजी ।
४ द्वार, दरवाजा ।
५ व्याज ।
६ बच्चो को सुलाने के लिये गाया जाने वाला गीत, लोरी ।
उ०—**हीलौ** नै हालरियौ म्हारा लाडला नै गाऊ ।—लो गी
क्रि वि—मिलजुल कर, शामिल ।
उ०—तद राजा कह्यौ, थाहरौ दरवार छ अठै ही रोजगार मिळसी, घर तौ छता ही छ, तिण सु पाच दिन अठै **हीला** रहा ।
—जखडा मुखडा भाटी री वात
रू भे—हिलौ ।

हीलौळ—देखो 'हिलोर' (रू भे)
उ०—थाट तण विसन ऊपाट रजवट अथग, जगत **हीलौळ** वळेवळ जोस ।—राव दुरजणसाल हाडा री गीत

हीराबेधी-स पु —राजस्थानी छप्पय छन्द का एक भेद विशेष जिसमे एक शब्द के दो अर्थ होते हैं।

हीरामण, हीरामन-स पु —१ तोते की एक जाति।

२ उक्त जाति का तोता जिसका रग सोने के समान माना जाता है। (कल्पित)

उ०—विखम क्रिया विखमी साधन वक्र। चौकै पचभेदवै खट-चक्र। वकीनाळ चढावै वाटा, घण अटकै हीरामण घाटा।
—सू प्र,

हीराळ-स पु —तेज गति से चलने वाला एक प्रकार का घोडा।

उ०—चमराळ लखी फुलमाळ चकवीयै, केहर लाळ प्रवाळ किसै। अकडाळ चगी वोही राळ अजवीयै, जोजव वाज हीराळ जीसै, वसनाग सीगाळटी ताजी यै वैगड, माणक रूप मलाळ कीयै।
—किसनजी दधवाडियौ

हीरालूलि-स पु —एक प्रदेश का नाम।

उ०—देस सख्या, आदिइ अयोध्या नगरी, ··· कामरु ७० सहस्र डाहला नवलक्ष, लोहर ९ लक्ष, लाड नव लक्ष, हीरालूलि ७२ सहस्र। —व स

हीरावणी-स स्त्री —१ ससुराल मे नव वधु को प्रतिदिन प्रात काल कलेवे के रूप मे दिया जाने वाला खाद्य पदार्थ, नाश्ता।

२ देखो 'सिरावण' (रू भे)

हीरावळ, हीरावळी-स पु —१ ओढने का एक बहुमूल्य वस्त्र विशेष जिसके बीच मे काली काली धारिया होती है।

उ०—तू हीरावळ हीर, (म्हनै) मोहराता मिळसी घणा। पाटण री पटचीर, नवौ ओढाग्यौ नागजी।—अग्यात

स स्त्री —हीरो की पक्ति, कतार या माला। (व स)

३ एक प्रकार की ऊन की कम्बल विशेष।

हीरावोल—देखो 'हीरावोल' (रू भे)

हीरू-स स्त्री —वापद की पुत्री व बहुचराय की बहन जो देवी का अवतार मानी जाती है।

हीरौ-स पु [स हीर.] १ एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर या रत्न जो खानो मे पाया जाता है और अपनी कडाई एव चमक के लिये प्रसिद्ध है, हीरा नामक रत्न। (अ मा)

उ०—१ वारू सोवनमि वीटी घडावु, जु लोभ हुइ तु भडार रखावु।—व स

उ०—२ केसरी अगिया, घणी विराणपुरै री कोर पटै लागा थका, सीस ऊपर हीरा री सीस फूल बणायजै छै।—रा सा स

उ०—३ हरि हीरा पाया, विणज हलाया, तोल न मोल लहदा है। हरि हीरा होती, पारिख कोती, खोट न चोट चडदा है।
—अनुभववाणी

२ महत्वपूर्ण वस्तु।

उ०—१ हरिजन हीरा पेमरस, सौदा राम सनेह। जब इनका गाहक मिलै, हरीया गाठि खुलेह।—अनुभववाणी

उ०—२ गरीब, निवळा अर अभ्यागता सारू सोना री वौ सूरज राम जाणै ऊगतो ऊगतो कद ऊगैला। पण वारै ऊग्योडा हीरा-मोत्या वाला सूरज नै वस पूगता कीकर वडो होवण दै।
—फुलवाडी

३ बहुत अच्छा व्यक्ति।

उ०—चाय री चुस्किया अर चिलमा री फूका रै विचाळै माखा मलूकदास री तारीफा रा पुळ वावता-वाह रे मास्तर वाह! है पूरी खानदानी आदमी। दूजोडौ कैवती—वस्ती रा भाग है जरै इसौ हीरौ मिळचौ है।—अमरचूनडी

वि —कठोर। ❀ (डि को)

रू भे —हीरड, हीरउ।

हीळ, हील-स स्त्री —१ बधन।

उ०—तूटी वूढी सू तरा, हेतारथ री हील। कालू सामा कदमई, भूप भरै नह भील।—पा प्र

२ रोक, निषेध, प्रतिबन्ध।

३ डर, भय, आतक।

उ०—धूत वजारी धरम री, हिए न मानै हील। मन चलाय खापण मही, काढै नकौ कुचील।—वा दा

४ शका, सदेह।

५ शीतलवायु, ठण्डी हवा।

६ वात रोग, वायु।

उ०—१ थै जायनै कैदी कै मेठा री पेट घणी दूखै। हील री उठाव व्हियौ दीसै। कालै आयनै मिळज्यौ। म्हारै नो जीव री पडी है नै थानै सीदी भावै।—फुलवाडी

उ०—२ हील री पेट दूखणा री वात सुणी जद पटै कह्यौ—उण मैं डरण जैडी की वात नी। म्है हील रै दरद री नामी ओखद जाणू।—फुलवाडी

७ वृत्तान्त, हाल।

रू भे—हेळ, हेल।

हीलणौ, हीलवौ-क्रि स —१ बधन मे लेना, बाधना।

२ बन्द करना, रोक लगाना, प्रतिबन्ध लगाना।

३ सीलवन्द करना, मुहरबन्द करना।

४ ठण्डी हवा खाना, ठण्डी हवा लगना।

५ ठण्डा होना, शीतल पडना।

६ डरना, भय खाना।

हीलणहार, हारौ (हारी), हीलणियौ—वि०।

हीलिओडौ, हीलियोडौ, हील्योडौ—भू० का० कृ०।

हीलीजणौ, हीलीजवौ—कर्म वा०।

हीलहुज्जत-स स्त्री —आनाकानी, वहम, प्रतिवाद।

उ०—छोटकियौ भाई तौ पछै की हील-हुज्जत करी नीं। दोनू

रू भे—हुकार, हाकार, हुकारव, हूकर, हूकार ।

हुकारडउ—देखो 'हुकारौ' (रू भे)

उ०—मारू-मारू कळाइया, उज्जळ दती नारि । हसनड दै हुकारडउ, हिवडउ फूटणहारि ।—ढो मा

हुकारणौ, हुकारवौ—क्रि स [स हुकार] १ हुकार करना, गर्जना, गुर्राना, जोशपूर्ण आवाज करना ।

२ जोर का शब्द या ध्वनि करना घोप या टकार करना ।

३ चिल्लाना, चीत्कारना, चीधाडना ।

४ ललकारना, चुनौति देना ।

५ डाटना, फटकारना ।

६ बुलाना, पुकारना, आवाज देना ।

उ०—गई कुवरि बोलई ईक चित । वीप्र हुकारै वेग तुरत । आवियौ प्रोहित राव कौ, पाडचा हु थारै गुणदाम ।—वी दे

७ रोना, करुण क्रन्दन करना, हा-हा कार करना ।

८ किसी बात के साथ मे 'हु-हु' शब्द कहना । (इसलिये कि उस बात को सुन रहा है और समझ रहा है)

हुकारणहार, हारौ (हारी), हुकारणियौ—वि० ।

हुकारिग्रोडौ, हुकारियोडौ, हुकारयोडौ—भू० का० कृ० ।

हुकारीजणौ, हुंकारीजवौ—कर्म वा० ।

हुकारव—१ देखो 'हुकार' (रू भे)

२ देखो 'हुकारौ' (रू भे)

हुकारियोडौ—भू का कृ—१ हुकार या गर्जना किया हुआ, जोशपूर्ण आवाज किया हुआ, गुर्राया हुआ २ जोर का शब्द या ध्वनि किया हुआ, घोप या टकार किया हुआ ३ चिल्लाया हुआ, चीत्कारा हुआ, चीधाडा हुआ ४ ललकारा हुआ, चुनौति दिया हुआ ५ डाटा हुआ, फटकारा हुआ ६ बुलाया हुआ, पुकारा हुआ, आवाज दिया हुआ ७ करुण क्रन्दन किया हुआ, रोया हुआ, हा-हा किया हुआ ८ किसी बात के साथ मे 'हु हु' शब्द कहा हुआ ।

(स्त्री हुकारियोडी)

हुकारियौ—स पु—बात के साथ 'हुकारा' देने वाला, 'हा' या 'हु' कहने वाला ।

उ०—म्हारी बात रा हुकारिया थै अखी उमर हुयज्यौ, थारै काना मैं इमरत घुळै ।—फुलवाडी

हुकारौ—स पु [स हुकार, आमकार] १ 'हु' कहने की की क्रिया या भाव ।

२ किसी चलती हुई बात के साथ मे 'हु हु' करते चलना जो इस बात का सूचक होता है कि वक्ता की बात सुनी व समझी जा रही है ।

उ०—१ किसी हुकारा विन बात, किसौ मित विहूणी साथ । किसी चद विहूणी रात, किसौ कडूवा विन भात ।—फुलवाडी

उ०—२ मुनि मून पारसी भणै, हुकारै सट काया हणै । अण बोल्या ई उदम करै, तौ बोल्या कहौ काह गति करै ।—भि द्र

उ०—३ अबकी जडाव मामी म्हारै मायै जया देवती बोली—राम-मारचा बात रै बिचाळै हुकारौ तौ दिया कर । विना हुंकारै बात री सगळी मठ ई मर जावै ।—फुलवाडी

२ स्वीकृति, इजाजत, अनुमति, स्वीकारोक्ति ।

उ०—१ ठाकरा थोडा मुळक नै हुंकारौ दै दियौ । पटेल री जोडी चोखळै चावी ही तौ रावळौ घोडौ पण हजारा मैं एक हौ ।

—अमरचूनडी

उ०—२ घरवाळी पगातियै ऊभी कँवण लागी—पूरी इक्कीस राता उपरात काल्है ई तौ पाछा बावडिया अर झाझरकै ई चौधरी-बावा रै बेटा री जान मैं जावण रौ हुकारौ भर लियौ ।—फुलवाडी

उ०—३ चार दाडया रा आडा भचीड, बानै जगाई, रोय रोय पग झाल्या, घणा ई नेवरा करचा, पण एक ई हुकारौ नी भरचौ ।

—फुलवाडी

२ सहमति, हा ।

उ०—सिरदार हुकारौ भरता बोल्या—सुणी तौ म्हा ई हा, पण निजरा नी देखी ।—फुलवाडी

रू भे.—हुकारौ, हुकारडउ, हुकारव, हूकारौ ।

हुकाळ—देखो 'हूकळ' (रू भे)

उ०—सूघै मेगळ-सूड हुकाळा चोळ करता । फळिया गूलर अन्न, सुहाणी चाल वहता ।—मेघ

हुछ, हुंछ—देखो 'हूछ' (रू भे) (उ र)

हुड—देखो 'हुड' (रू भे)

हुडन—स पु [स] शिव के एक गण का नाम ।

हुडी—स स्त्री—१ पुराने जमाने मे सेठ साहूकारो या व्यापारियो द्वारा लिखा जाने वाला एक भुगतान पत्र जिसके आधार पर एक स्थान के व्यापारी को रुपये देकर दूसरे स्थान के व्यापारी से रुपये ले लिये जाते थे । यही प्रणाली आजकल बेंक ड्राफ्ट द्वारा चलती है, भुगतान पत्रो मे इसका प्रतिहस्तान्तरण या बेचान भी होता है ।

उ०—तै बोल्या—म्है चोर छा । थै हुडी वटायनै हजार रुपइया री थैली माय नै मेली, सौ म्है देखता हा ।—भि द्र

२ किसी साहूकार या महाजन द्वारा लिखा जाने वाला वह पत्र जिसको किसी भी स्थान पर दिखाकर उसमे अकित रुपये या उतने रुपये की वस्तु प्राप्त की जा सकती थी । यही दशा वर्तमान समय मे रिजर्व बैक आफ इण्डिया द्वारा जारी किये गये नोट या अमेरिकन डालर की है, नोट ।

३ ऋण लेते समय ऋण लेने वाले द्वारा लिखा जाने वाला पत्र जिसमे रुपयो के साथ भुगतान की अवधि व ब्याज की दर भी लिखी होती है, प्रोमेजरी नोट ।

४ हुक ।

हीलौळणौ, हीलौळबौ—देखो 'हिलोडणौ, हिलोडवौ' (रू भे)
उ०—हेळा आगथी सिंघ ज्यू अेकै आच हूत हीलौळिया, धीस खगा अेकै ज्यू वोळिया नाग धीग ।—हुकमीचद खिडियौ
हीलौळियोडौ—देखो 'हिलोडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीलौळियोडी)
हीव—देखो 'हिरदौ' (रू भे)
उ०—वेलण वेली वाह, लाल होठा रग भीनौ । साचै ढळियौ हीव, कवळ चुण कर मैं लीनौ ।—नारी सईकडी
हीवर—देखो 'हयवर' (रू भे)
उ०—हीवर वौह हळवळ सुडि सळवळ, पदमा पुवगा कोई पार नही । अवतार अमा दस आप तणा, जुध जीपण जाणि विमन सही ।—वि स सा
हीस—देखो 'हीस' (रू भे)
उ०—किसतूरी आसी उसाय, वार वार मैं वाही वात । आलू आवै ओलगणारी, वा घोडा री हीस पियारी ।—पना
हीसणौ, हीसबौ—देखो 'हीसणौ, हीसवौ' (रू भे)
उ०—१ सघालानि मन भावी, पहिलु फलहल प्रीसइ, सघलाना हीया हीसइ, पाका आवा नी कातली ।—व स
उ०—२ लोक सगना कन्है जीजीया लिजियै, देहरा ठाम महिजीद दीसै । थरहरै गाय इण राव इद्रसी थका, हियौ इण राज सु केम हीसै ।—ध व ग्र
हीसाळ—स पु—१ घोडा, अश्व ।
२ देखो 'हीसार' (रू भे)
हीसियोडौ—देखो 'हीसियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हीसियोडी)
हीसू—स स्त्री—हसने की क्रिया ।
उ०—न कुण हीसू हसइ, सदा नीमसइ, वोलावि खीजइ, दिहाडइ दिहाडइ देह खीजइ ।—रा सा म
ही ही—देखो 'ही ही' (रू भे)
हु—अव्यय [स हु, हुम्] १ स्वीकृति सूचक, अव्यय, हा ।
२ किसी बात, आवाज या प्रश्न के प्रत्युत्तर मे वोला जाने वाला शब्द, हा, जी, हुकारा आदि, प्रश्नद्योतक अव्यय ।
३ स्मृति, याद ।
४ सदेह, शक ।
५ क्रोध, गुस्सा ।
६ घृणा, अरुचि ।
७ भर्त्सना, निंदा ।
वि० वि०—उपर्युक्त सभी भावो की अभिव्यक्ति 'हु' शब्द मे होती है । जैसा भाव व्यक्त करना होता है वैसी ही आकृति वना कर यह शब्द 'हु' कहा जाता है ।
८ देखो 'हू' (रू भे)
उ०—१ आगइ द्वापर माहि जु वीती, पचह पडव तणउ चरीती । हरखि हिया नइ हु भणउ ।—मालिभद्र सूरि
उ०—२ कर जोडि हुं पणमउ पाय, मइ तुम्हि परणउ पाडवराय । तुम्ह उपकार करिसु हु घणा दूख दलिसु वण वासह तणा ।
—सालिभद्र सूरि
उ०—३ उचै चित्रसाळी माळिग्रा, या हु चतुरा नार । साहिव चतुर सुजाण रम, नित विलमौ भरतार ।—ढो मा
उ०—४ ताहरा जीजी कह्यौ, 'हु घरै जाऊ छु । यै कह्या, घरै गई ।' ताहरा जीजी घरै गई ।—जीजी डाभी री वात
उ०—५ ताहरा माताजी वीडौ झालियौ । हुं ईयान् छेनगीम । पिण ईया रो वैर कुण लेमी । ताहरा ठाकुर फुरमायौ हु लेईस ।
—देवजी वगडावत री वात
उ०—६ रे कलियुग गज मत गरज, हु हिज आज अवीह । तुझ मद उत्तारण तणै, सकजौ जिन भ्रमसीह ।—ध व ग्र
उ०—७ कामण काई मीखिउ नही, कामकदळा नारि । वळद थई हुं वाझनु, वभण ताहरउ वारि ।—मा का प्र
हुकळ—देखो 'हूकळ' (रू भे)
उ०—आप वळ पाण जै मीगहर आभरणा, दाखवै उमीना वमै दूजा । करै हीदु तुरक जोड दोहु हुकळां, 'पाळ' रा तणी कीरमाळ पुजा ।—वळजी री गीत
हुकळकळळ—देखो 'हूकळकळळ' (रू भे)
हुकार—स स्त्री [स हुकार] १ सिंह, व्याघ्र या किमी वीर पुरुष की जोशपूर्ण आवाज, गर्जना ।
उ०—प्रतापसिंह पडता ई जोर री हाकौ व्हियौ अर भीमडा नै च्यारु मेर सू घेर लियौ । आटक वाजण लाग्यौ । तडाक-तडाक करता माथा उडण लाग्या । जोर री हुकार हुई ।—अमरचूनडी
२ जोर का शब्द, ध्वनि, घोष, टकार ।
उ०—चिलैरी ताणी, हुकार करती, वडै पठाण री वेटी ज्यू तूही तूही करती, इण भाति री कवाणा री चकारौ उतरै छै सु उआ-हीज वडा नै पीपला री आ साखा म् नागळीजै छै ।—रा सा म
३ लडने-भिडने, ललकारने या चुनौति देने का शब्द ।
४ डाटने या फटकारने का शब्द ।
५ चिल्लाहट, चीत्कार, चीघाड ।
उ०—मीह ज्यू लका चढिया थका, भागा गाडा ज्यू वठठाठ करता थका, वैस्या ज्यू भाला करता थका, मातै हाथी ज्यू हुकारा करता थका । इसा ऊठ भेकजै छै ।—रा सा म
६ करुण क्रन्दन, रुदन, हाहाकार ।
उ०—१ जु उमादै मडळ माडियौ थौ तिण मांहै विघ्न हुवौ, मह वाळक मारिया सू घर घर हुकार पडियौ छै ।—पचदडी री वारता
उ०—२ विद्यारथिया नू कही थाहरै घरै जावौ, सु उण रै घर रोवै पीटै छै, घणौ हुकार पडियौ छै ।—पचदडी री वारता

लिख'र हुसियार वर्णीला ग्रर कुळ री नाम वधावैला ।
—ग्रमरचूनडी

हुंसियारी—देखो 'होसियारी' (रू भे)
हुंसेर—स स्त्री —उत्कण्ठा, ग्रभिलापा । (मरु भारती)
हुस्यार, हुस्वार—देखो 'होसियार' (रू भे)
उ०—१ राजाजी नै वळै हसी ग्रायगी । वा टाटचा मिरदारा ग्रर नगर मेठा साम्ही देखनै हसता हसता पूछ्यौ—म्हनै ठा' नी पडी कै थै लोग ई इत्ता हुस्यार होय कीकर ठगीजग्या ।—फुलवाडी
उ०—२ भौजाई हुस्यार ही । धणी नै कह्यौ—कै वौ गाटिया रै पाखती जाय ऊभ जावै तौ भाई नै ई थोडी धणी सकी ग्रावैला ।
—फुलवाडी
उ०—३ कपनी सा' निरखण नै ग्रायौ, गाघड वडौ हुस्यार । भळ-भळ ती माथौ करै, नैणा जळै मसाळ ।
—डूगजी जवारजी री छावली
हुंस्यारी—देखो 'होसियारी' (रू भे)
उ०—गुटियौ हुस्यारी करनै भाईया री ठौड डाकण रै सातू वेटा नै सुवाण, नाखौ गाव, डाकण रै घर सू मोकड मनाई ।
—फुलवाडी
उ०—२ वेटा री हुस्यारी देखनै सेठ ग्रणूता राजी व्हिया । कह्यौ—म्हे कद थारै माथै चिडू हू । म्है तौ ग्रठै वैठी ई सब समझग्यौ ही ।—फुलवाडी
उ०—३ तठा उपरात दीवाणजी हाजरिया नै भेज ग्रापरै विस्वास रा ग्रादमिया नै बुलाया । जणा जणा नै ग्राप ग्रापरै काम री मुळावण दैदी । ग्रैडी हुस्यारी वरतणी कै पीढचा ताई कोई कुच-मादी माथौ ऊचौ नी करै ।—फुलवाडी
हु—स पु [स] १ नृप, राजा । (एका)
२ निंदा, ग्रालोचना । (")
३ निश्चय, निर्णय । (")
४ मभारण । (")
५ ग्रतिरेक ।
६ निवेदन ।
७ भेंट ।
८ यज्ञ ।
९ खाना ।
हुग्रण—देखो 'होणी' (रू भे)
हुग्रणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)
उ०—पिण भावी ग्रति प्रवळ सकळ वस प्राण ग्रमेखा । हुग्रणहार सिध करै, वार न घरै विध रेखा ।—रा रू
हुग्रणी—देखो 'होणी' (रू भे)
२ देखो 'हुवा' (रू भे)
हुग्रा—वि —१ पर्याप्त, वहुत ।

हुग्रासण, हुग्रासन—देखो 'हुतासन' (रू भे) (जैन)
हुउं—ग्रव्यय—नकारात्मक, नही, इन्कार ।
हुक—स पु —१ ग्रकुस की तरह मुडी हुई काटादार मोटी कील जो किसी चीज को फसाने या दीवार मे लगा कर किसी चीज को लटकाने के काम ग्राती है, काटा ।
२ देखो 'हूक' (रू भे)
हुकम—स पु [ग्र हुक्म] १ राज्य या शासन की ग्रोर से जारी की जाने वाली किसी प्रकार की राज्याज्ञा जिसका पालन करना ग्रनिवार्य हो ग्रादेश, फरमान । (ग्र मा, डि को, ह ना मा)
उ०—श्री सूरसिंघजी साहायवा कवरजी श्री गजसिंघजी नै हुकम दीयौ कै पातसाह सलामत ग्राया नै जाळोर माचोर इनायत कीया है मु थे सारी साथ ले जाळोर जाईजो ।—नैणसी
२ किसी कार्य विशेष या व्यक्ति विशेष के लिये दिया जाने वाला ग्रादेश ।
उ०—१ वै दोन्यू जणा तौ ग्राज बजार कानी गयोडा है, कुण जाणै पाछा करै ग्रावडै ग्रर ग्रापनै तौ हुकम परवाणै तुरत किनै पूगणौ चाहिजै ।—ग्रमरचूनडी
उ०—२ जुववार सुन ग्रगजीत रौ, रिण खळा ग्रनक रीन री दिसि ग्रस्ट श्रीमुख हुकम दाखवि मोरचै फुरमाण ।—रा रू
उ०—३ पाय हुकम पागडै पाव दीधौ छत्रपत्ती । भैरव दोनौ भेजि सकति तेडी त्रिसकत्ती ।—मे म
उ०—४ लगर मैं वैठ'र जीमै, कतार मैं वामरण माजै, नू वा डरता रैवै वोदा रौ भौ भाजै । ग्रफसर रै हुकमा हालै जकौ मौज सू मालै ।—दसदोख
उ०—५ सैला-मिकारा रौ दुवौ हुवौ छै, भाई ग्रमराव माहणिया नै हुकम हुवौ छै ।—रा सा म
३ निर्देश, मार्ग-दर्शन ।
४ ग्रधिकार, शासन ।
उ०—१ हुकम हामल सारौ राणी रौ । मुहता ग्रागै मुत्सद्दी वैठ सारौ काम करै ।—गौड गोपालदास री वारता
उ०—२ कीरा ही वाण चालै, कीरा ही हुकम हालै । कोई घूस दावै, कोई ल्हाज सू दावै ।—दसदोख
५ स्वीकृति, ग्रनुमति, इजाजत ।
उ०—जद ब्राह्मण ववेचा नै जाय कह्यौ- वापूजी पाच रुपइया रौ हुकम कियौ है ।—भि द्र
६ प्रभुत्व, प्रभाव ।
७ नियम, विधान विधि ।
८ शिक्षा ।
९ व्यवस्था, प्रवध ।
१० वडो का या गुरुजनो का वचन जिसका पालन करना कर्त्तव्य होता है ।

उ०—घोडा रै उपरै पाखर पडै छै। म्होड जग्द भीडिया हुडीया जडै छै उण वेळा कवर कनै मिदवी ग्रासावरी गाइजै, दूसरा डका लागत, मागळ गरहरै छै।—पना

रू भे—हूडी।

हुडीपुरजी—देखो 'हुडी'।

हुडीवही—स स्त्री—वह वही या किताव जिसमे हुडी की नकल रखी जाती है।

हुडीवाळ—स पु—वह महाजन जिसकी लिखी हुडी मे ग्रासानी से रुपया प्राप्त हो जाता हो या जिसकी हुडी ग्रासानी से पटती हो।

रू भे—हूडीवाळ।

हुणहार—देखो 'होणहार' (रू भे)

उ०—जोत्यग मा सव कुछ्छ लीखा। ह मव जोतिग माहि। हुंणहार होत्यव की। ग्रागति लखी न जाय।—वि स मा

हुत—देखो 'हूत' (रू भे)

हुतउ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—१ मातळसीह हुतउ भूमार, तिराइ कटक करिउ सिधार। कान्हड देवउ किमउ वखाण, हठि चडीउ हाकइ सुरताण।
—का दे प्र

उ०—२ एक भणइ ए हुंतउ भरू सउ, जै छोटउ वमड कान्ह। कीधउ मेळ मिल्या दळि ग्रावी, तेह तणा परधान।—का दे प्र

उ०—३ ग्राखि हुतउ काजल हरड, कोसि बाधी सिल थरड, जीराड बोलतइ माथाना केस ऊभा थाइ।—व म

हुंतासण, हुतासन—देखो 'हुतासन' (रू भे)

उ०—१ गज ग्रस ग्रवि नागौर गट, दै वहु कुरव दिलेस। ताव हुतासण देखि तन, राव कहै 'ग्रमरेस'।—सू प्र

हुति, हुती—देखो 'हूती' (रू भे)

उ०—१ सरसती हुति विद्या सिरै विमळ ग्रकळ कहिजै विसन। सूर सा तेज विणियौ सरस कोडि कोडि वधती-किसन।
—पी ग्र

उ०—२ वाइ वाजइ प्रवल, उडइ धूलिना पटल। सीयानइ-हुति मोटी रात्र तै नान्ही थई रात्रि।—रा सा स

उ०—३ तावदिद सकलजगज्जीवनि ईस्वरै विस्व रह त्रित्वमासनति मनीखिण, एकि ससारनी स्रस्टि ईस्वर हुति-कहइ एकि ब्रह्मा, वैस्णवी, एकि माव माया।—व म

उ०—४ राजि उठा हुती भलै मुहूरत खडिया छै, पातिसाहजी सू घणो सुख हुयो छै, भला सुकन हुया छै, राजि न पधारै।
—द वि

उ०—५ दुरजण-केरा बोलडा, मत पातरजउ कोय। ग्रणहूनी हुति कहइ, सगळी साच न होय।—ढो मा

उ०—६ जइ रूखा मारू हुई, छवडउ पडियउ नाम। तइ हुती चदउ कियइ, लइ रचियउ ग्राकास।—ढो मा

हुंतु—देखो 'हूती' (रू भे)

उ०—चिहु पुरुस देवता वाट उठाडिइ, वगनि करति ग्रावालुवि नोडइ पगछेहि गाठि छोडइ, ग्राखि हुंतु काजल हरड, केसवधी मिला धरइ।—व म

हुतौ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—१ चीतारनी चुगनिया, कुझी रोवणियाह। दुरा हुता नउ पलइ, जऊ न मेल्ह हियाह।—ढो मा

उ०—२ चदमडल हुता किमिउ ग्रग्निस्फुलिग उच्छलइ, किम करपूरजल विरधाइ, किम मयूराश्रुजल कलुस थाई।—व म

उ०—३ राजान जान मगि हुता जु राजा कहै सु दीध ललाटि कर। दूरा नयर कि कोरण दीसै, धवळागिरि किन धवळहर।
—वेलि

उ०—४ कसबौ ग्रातरी वडौ सहर छै, नै सहर माहै वडौ महाजन हुतौ। सो कसबा माहे चोर-घणा लागै।—नैणसी

उ०—५ पडिया राणी री फेट, सदक महला हेट। सुकोमल साध, एसौ हुतौ सुज ववधौ ए।—जयवाणी

हुदउ—देखो 'हूतौ' (रू भे)

उ०—ढोलइ चित्त विमासियउ, मारू देस ग्रळग। ग्रापण जाए जाइयउ, करहा-हुदउ वग।—ढो मा

हुफट—स स्त्री—एक प्रकार की वनस्पति।

उ०—हरडू हरडि हीमजी, हरडा हलद्रह वेर। हरवी हाथुटी हरी, हुफट हुसि हसेर।—मा का प्र

हुवड—स पु—पवार राजपूत वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

हुंरस—देखो 'हरम' (रू भे)

हुमायु, हुमायू—देखो 'हुमायू' (रू भे)

हुस—देखो 'हूस' (रू भे)

उ०—१ माह मैं माहट माड्यौ मेह तै ग्राहट रस। तौ पिण माहरै नाह न पूरी माहरी हुस।—ध व ग्र

उ०—२ राय वीहतइ तीराइ ग्रवसरि दीधी ताम चपेट। मझ घरि म रहिसि रे तू लपट पुरु हुस पूरिउ पेट।—हीराणद सूरि

हुसरडौ—स पु—वह ऊट जो चलते समय नकेल खीचने पर भी नही रुकता और ग्रागे वढ जाता है, ग्रडियल ऊट।

हुसि—स स्त्री—एक प्रकार की वनस्पति।

उ०—हरडू हरडि हीमजी, हरडा हलद्रह वेर। हरवी हाथुटी हरी, हुफट हुसि हसेर।—मा का प्र

हुसियार—देखो 'होसियार' (रू भे)

उ०—१ भाग सू उणरी ड्यूटी बी० डी० ग्रो० साव रै घरै इज लागी। वौ जिणरी नास्रण-गावण मै हुंसियार' हो, उतरौई हाजरी साजण मै पण पाटक हो।—ग्रमरचूनडी

उ०—२ लडका नै सहर मैं भेज्यौ तौ इण वास्तै हौ कै पट

उ०—फुरणी बाज रही छै। गोसा लाल चिरमी हुया छै। आख्या छिटक रही छै। मधरै मधरै हुक्का सू तमाखू खायजै छै।
—रा सा म

हुक्म—देखो 'हुकम' (रू भे)
उ०—१ दुस्मन दूर है, सब दुनी मैं हुक्म मजूर है। मगरूरा की मगरूरी दफै करतै है, छत्रधारी की सी रीस धरतै है।
—रा सा स
उ०—२ म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण रो हुक्म मिल्यो है।—अमरचूनडी

हुक्मनामौ, हुक्मनावौ—देखो 'हुकमनामौ' (रू भे)

हुक्मबरदार—स पु [अ हुकम+फा बरदार] १ हुक्म उठाने वाला व्यक्ति, अनुचर, सेवक, आज्ञाकारी।
२ शासन चलाने वाला, हुक्म चलाने वाला।
३ शासक।
४ हाकिम।
रू भे—हुकमबरदार।

हुक्मबरदारी—स स्त्री [अ] १ 'हुक्म बरदार' होने की अवस्था या भाव।
२ आज्ञाकारिता, अनुपालना, सेवा, चाकरी।
३ शासन या हुक्म चलाने की क्रिया।
४ शासन, हुकूमत।

हुक्मी—देखो 'हुकमी' (रू भे)
उ०—१ ज्यौ राखै त्यौं रहेंगे, मेरा क्या सारा। हुक्मी सेवक राम का, बदा बेचारा।—दादूवाणी
उ०—२ तौ जिको मुणौ तौ विरुद्ध विचारै जो इणा न कूव्रत सामर्थ्य छै नै लोक जेर दस्त इणा रा हुक्मी छै।—नी प्र

हुड—स स्त्री—१ आशा, अभिलाषा, इच्छा।
२ जोश, आवेश।
३ उमग, उत्साह।
४ देखो 'हुड' (रू भे)
उ०—१ खाग प्रहार छाग हुड खडत, मुड रुड लोहित झड मडत। पान रुधिर करि लहह्य त्रिप्त्ती, स्री करनी जय जयत्ति सकत्ती।
—मे म
उ०—२ वगा बीचाळै काढिया, हुड जिम पग झलै। ऊभी मेली साहवी, गढ गोख महलै।—केसोदास गाडण
उ०—३ फिट बीका फिट काधळा, फिट जगळधर लेडाह। दळपत हुड ज्यू बाधियौ, भाज गई भेडाह।—अग्यात

हुड़क—स पु [स हुडुक्क] एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल।
रू भे—हुडक्क।

हुडकणौ, हुडकवौ—क्रि स—१ उमग, साहस और उत्साह के साथ कूदना, उछलना।
२ जोश के साथ भाग कर आना।
३ हमला करना।
हुडकणहार, हारौ (हारी), हुडकणियौ—वि०।
हुडकिओडौ, हुडकियोडौ, हुडक्योडौ—भू० का० कृ०।
हुडकीजणौ, हुडकीजवौ—कर्म वा०।
हुडक्कणौ, हुडक्कवौ—रू० भे०।

हुडकळ—स स्त्री—१ एक प्रकार की चिडिया।
२ भीलो की एक याचक जाति।

हुडकळी—स स्त्री—एक चिडिया विशेष।

हुडकियोडौ—भू का कृ—१ उमग, साहस और उत्साह के साथ कूदा हुआ, उछला हुआ २ जोश के साथ भाग कर आया हुआ ३ हमला किया हुआ।
(स्त्री हुडकियोडी)

हुडकौ—स पु—१ 'हुडकल' जाति का व्यक्ति।
२ पशु का आक्रामक भाव।

हुडक्क—देखो 'हुडक' (रू भे)

हुडक्कणौ, हुडक्कवौ—देखो 'हुडकणौ, हुडकवौ' (रू भे)
उ०—मही चौ धडक्कै तठ लटक्कै सेसरा माथा, मडक्कै हुडक्कै काळी कटक्कै खाणास।—प्रभूदान मोनीसर

हुडक्कियोडौ—देखो 'हुडकियोडौ' (रू भे)
(स्त्री हुडक्कियोडी)

हुडखौ—स पु—सोच, विचार, चिन्ता, फिक्र।

हुडतपौ—स पु—१ तेज धूप की गर्मी के कारण घर की दीवारें तपने से अन्दर महसूस होने वाली गर्मी, उमस।
२ किसी मकान या कक्ष का द्वार सूरज के रुख की ओर होने के कारण सीधी किरणें पडने से होने वाली गर्मी।

हुडदग—वि—१ मजबूत।
२ मस्त, मोटा-ताजा।
३ देखो 'हुडदगौ' (रू भे)

हुडदगी—स स्त्री—१ मजबूत स्त्री।
२ मोटी-ताजी, हृष्ट-पुष्ट स्त्री।
३ बेचाल, छिनाल।
उ०—रामा अभिरामा कामातुर रोवै, हडमल हुडदगी सेजा मैं सोवै। ललना लातरिया खातरिया खारी, भडवी भगतणिया पातरिया प्यारी।—ऊ का

हुडदगौ—स पु (स्त्री हुडदगी) १ उत्पात, उपद्रव।
२ मस्त आदमी।
वि—१ उपद्रवी, उत्पाती।
उ०—सुर मैं फोग महेस, रेत भसमी पर राचै। चाद आगिया माथ, जटा लासूडा जाचै। गाठ गठीली माळ, महक फूलीरी गगा, आक धतूरै पास, कैर भूता हुडदगा।—दमदेव

उ०—रवा मै ग्राया तौ ग्राथण ही पीरा री धोक—ध्यावना कर परा'र सोवूली जै सदा दाई सपनै मैं ग्राया तौ ग्रापरी मानी वात वूझ नाखूली। जिमी हुकम देवैला विमी ही ग्रापनै भुगता देवूली।
—दसदोख

११ वडे व्यक्ति की वात के उत्तर मे वोला जाने वाला ग्रादरयुक्त शब्द। यथा–हाँ जी, जी, हुकम ग्रादि।

उ०—ठाकरा फरमायौ–गुलाव री मा नै कः दिया–हू खुद(ठाकर) सिझ्या वेळा धूप दीप कर परा'र चडावौ-परसाद लिया ग्रारैयौ हू। जोत करावूला, कळस मडावूला। दोनू वा हुकम नृ हकारौ दियौ ग्रर ढाढ्या रै घर री गैलौ लियौ।—दसदोख

१२ किसी पर चलाया जाने वाला व्यर्थ का रौव।

उ०—मूळी सिर चढगी हुकम ग्रोढावै ग्रर घर रौ काम करावै है।
—दसदोख

१३ तास का एक रग, काला।

रू भे—हुक्माण, हुकमेण, हुकमौ, हुकम्म, हुकम्मा, हुक्म।

हुकमखरच–स पु—महाराणा साहव के निजी खर्च का हिमाव रखने वाला महकमा। (वी वि)

हुकमणौ–वि—ग्राज्ञा या हुकम देने वाला।

हुकमत—देखो 'हकूमत' (रू भे)

हुकमदार–वि—१ ग्रधिकार रखने वाला।

उ०—पैला री पटवारी, हाल मैं पूगळ–पट्टै री ग्राधूतौ हुकमदार! जात रौ दरोगौ, हजूर री धा भाई दादौ! डरतौ मौ मिघ निर्वं, मरतौ सौ ग्रापरी नावौ माडै।—दसदोख

२ हुकम देने वाला।

हुकमनामौ, हुकमनावौ–स पु [ग्र हुकमनाम] १ वह पत्र जिसमे कोई ग्रादेश जारी किया गया हो, ग्रादेशपत्र।

२ ग्रादेश।

३ किसी राजा के उत्तराधिकारी को उत्तराधिकार सौंपने का ग्रादेश जो वादशाह द्वारा जारी किया जाता था।

उ०—सवत १६५६. मगनसिंह नू सोजत हुई हुकमनावौ नालकी राठौड भाण जैतमाल लै ग्रायौ।
—महाराज सूरजसिंह रै राज री वात

वि० वि०—परम्परा के ग्रनुसार किसी राजा के मरने पर उसकी जागीर या राज्य जब्त समझा जाता था ग्रौर उस राज्य पर वादशाह का सीधा ग्रधिकार हो जाता था। मृत्यु के वारहवे दिन मातमपुरसी के ग्रवसर पर वादशाह एक हुकम जारी करके राजा के उत्तराधिकारी को उस राज्य का पट्टा इनायत करता था, उसके वदले मे इस नवीन राजा के राज्य की एक वर्ष की ग्राय जो पट्टे मे ही लिखी होती थी, वादशाह के नजर करनी पडती थी। छोटे ठाकुरो की जागीर के विषय मे यही प्रथा राजाग्रो द्वारा पूरी की जाती थी।

रू भे—हुक्मनामौ, हुक्मनावौ।

हुकमवरदार—देखो 'हुक्मवरदार' (रू भे)

हुकमवरदारी—देखो 'हुक्मवरदारी' (रू भे)

हुकमाण—देखो 'हुकम' (रू भे)

हुकममय–स पु—नौकर, चाकर। (ग्र मा)

हुकमी–वि [ग्र हुक्मी] हुकम मानने वाला, ग्राज्ञा पालन करने वाला, ग्राज्ञाकारी, ग्रनुयायी, तावेदार।

उ०—१ कर जोडै माहाराज का, सिर हुकम चढाया। पटौ समापै कर कृपा, थिर हुकमी थाया।—द दा

उ०—२ कथन कीया सौ कवरजी मिर माथै धरस्या म्हे तौ हुकमी रावळा कहम्यौ मौ करस्या।—पना

उ०—३ जै नामी गढ लक जयता, सिव एकादसमा निज सता। कीधौ ग्रमर जानुकी कता, हुकमी दास जगण हणमता।
—र ज प्र

उ०—४ सकत रा हुकमी विनौ घावळ-मुतन, जगत विन जिका पित मात जणियौ। कहै कवि गिरवरौ उकत परवाण कथ, समदरा ग्रळग वाखाण सुणियौ।—गिरवरदान सादू

उ०—५ उजर करै ना हम कछु, हुकमी चाकर जाण। रुपया है करडा वहुत, सुणलै साह पठाण।—गौड गोपाळदास री वारता

हुकमेण, हुकमौ—देखो 'हुकम' (रू भे)

हुकम्म, हुकम्मा—देखो 'हुकम' (रू भे)

उ०—१ कारण ग्ररजणसिंघ न, भूप निवारण भ्रम्म। भाटी नै चापावता मिर धारियौ हुकम्म।—रा रू

उ०—२ ज्वाळानळ जाळण काळ जवन्न, कियौ मुचकुद हुकम्म किसन्न।—ह र

उ०—३ हाजर हुकम्म फुरमाण होय। दूदौ उमेद चहुवाण दोय।
—वि स

हुकहुकी–स स्त्री—वोलने की उत्कण्ठा।

ज्यू—नन्नै हुकहुकी ग्रावै तौ मन्नै लुटलुटी ग्रावै।

हुकाधारी—देखो 'होकाधारी' (रू भे)

हुकौ–स स्त्री—शृगाल की वोली या वोली की ग्रावाज।

हुकुम—देखो 'हुक्म' (रू भे)

हुकुमनामौ—देखो 'हुक्मनामौ' (रू भे)

हुकूमत—देखो 'हकूमत' (रू भे)

हुकौ—देखो 'होकौ' (रू भे)

उ०—तठा उपरायन हुका री होस कीजै छै। चाकरा नै हुकम हुवौ छै। हुका तयार कीजै छै।—रा सा स

हुक्काम–स पु [ग्र हुक्काम] हाकिम ग्रादि उच्च-पदाधिकारी वर्ग।

उ०—हुक्काम हुकम हाजिर हजूर, करियै न तदारुक वेकसूर।
—ऊ का

हुक्कौ—देखो 'होकौ' (रू भे)